मैथिलीक आइ धरिक सभसँ पैघ उपन्यास

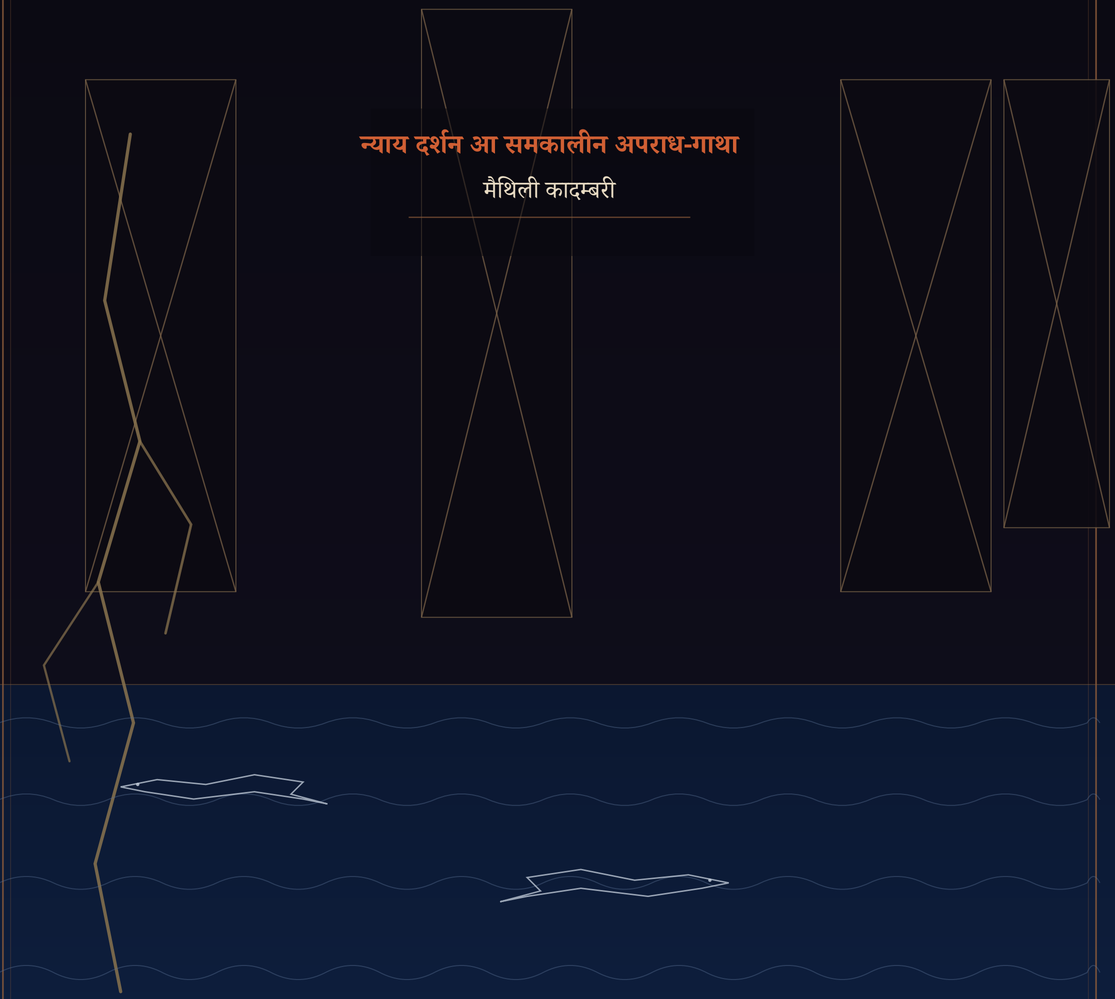

न्याय दर्शन आ समकालीन अपराध-गाथा

मैथिली कादम्बरी

गोहि सभक बीच जलसमाधि

गजेन्द्र ठाकुर

गोहि सभक बीच जलसमाधि — सम्पूर्ण त्रयी

अनुक्रमणिका

गोहि सभक बीच जलसमाधि

मैथिली कादम्बरी

खण्ड-०

अध्याय [−१००] सँ [−१] (पूर्व-कथाकाल)

६×९ इञ्च हार्डबैक संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर

प्रकाशन एवं कॉपीराइट

गोहि सभक बीच जलसमाधि — खण्ड-०

अध्याय [−१००] सँ [−१] (पूर्व-कथाकाल)

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण

सम्पूर्ण उपन्यासक अध्याय-सङ्ख्या तीनू खण्डमे निरन्तर अछि —

खण्ड-० (पूर्व-कथाकाल): अध्याय [−१००] सँ [−१]

खण्ड-१: अध्याय ० सँ १००

खण्ड-२: अध्याय १०१ सँ २०० (तथा परिशिष्ट)

सम्पूर्ण शृंखला: अध्याय [−१००] सँ २०० — कुल ३०१ अध्याय

विदेह: मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

www.videha.co.in

ISSN 2229-547X

ISBN 978-93-5987-762-4

फ्रण्ट कवर, शीर्षक-पृष्ठ, कॉपीराइट-पृष्ठ आ अनुक्रमणिका मुख्य रनिंग पृष्ठ-सङ्ख्यामे नहि गनल गेल अछि। एहि खण्ड-०क पृष्ठ १ अध्याय [−१००] सँ आरम्भ होइत अछि आ अध्याय-सङ्ख्या ऋणात्मक घटैत क्रममे (−१००→−१) चलैत अछि। खण्ड-० कथा-कालक्रमे मुख्य उपन्यास (खण्ड-१ आ खण्ड-२) सँ पूर्ववर्ती अछि। अनुक्रमणिकाक सभ पृष्ठ-सङ्ख्या एहि ६×९ संस्करणक वास्तविक अध्याय-आरम्भसँ मिलाओल गेल अछि।

अनुक्रमणिका

खण्ड-० · अध्याय [-१००] सँ [-१] · पूर्व-कथाकाल

सम्पूर्ण शृंखला: अध्याय [−१००] सँ २०० (खण्ड-० सँ खण्ड-२) — कुल ३०१ अध्याय।

(ऋण-सङ्ख्या मुख्य उपन्यासक कथाकालसँ पूर्ववर्ती क्रम दर्शबैत अछि; कथा −१०० सँ आरम्भ भ' −१ धरि अबैत अछि, आ खण्ड-१ केर अध्याय ० सँ मुख्य कथा शुरू होइत अछि।)

अध्याय [-१००] — शंख आ रजत....१
अध्याय [-९९] — आत्मसिद्धि-वाद....२२
अध्याय [-९८] — केऽ बनौलक ई जगत?....४५
अध्याय [-९७] — चिंतामणि रत्न....६५
अध्याय [-९६] — स्मृति-रक्षा....८८
अध्याय [-९५] — जलमग्न पाण्डुलिपि....१००
अध्याय [-९४] — चारि मुखक मौन....१११
अध्याय [-९३] — शंखक अन्तिम प्रश्न....१२०
अध्याय [-९२] — जल-घड़ीक कैदी....१३१
अध्याय [-९१] — चर्मकार टोलाक उजास....१३८
अध्याय [-९०] — बुधुआक जलसमाधि....१४५
अध्याय [-८९] — पहिल राति, पहिल बाढ़ि....१५२
अध्याय [-८८] — डाइनक आरोप....१५८
अध्याय [-८७] — टोलाक द्वारपर....१६४
अध्याय [-८६] — समयक गोहि....१६९
अध्याय [-८५] — आमिलक आदेश....१७४
अध्याय [-८४] — जंगलक मौन....१८०
अध्याय [-८३] — सोनमा माझिन....१८४
अध्याय [-८२] — पहिल कबड्डी....१८८
अध्याय [-८१] — आक्रमणक छाया....१९३
अध्याय [-८०] — गीतक पहिल पाँति....१९७
अध्याय [-७९] — क्षमाक पारी....२०१
अध्याय [-७८] — पंजीक बाहर....२०५
अध्याय [-७७] — बूढ़बाक मौन....२०९
अध्याय [-७६] — नारिकेल पातक पहिल पाठ....२१३
अध्याय [-७५] — तर्कक पहिल विद्रोह....२१७
अध्याय [-७४] — गाछक रोग....२२१
अध्याय [-७३] — मोहनक धुन....२२५
अध्याय [-७२] — विवाहक साक्षी....२२९
अध्याय [-७१] — महामारीक राति....२३३
अध्याय [-७०] — चन्ना गाछीक रोपाई....२३७
अध्याय [-६९] — गज-ग्राहक कथा....२४१
अध्याय [-६८] — अदालतक पहिल तारीख....२४५
अध्याय [-६७] — परदेशक पुकार....२४९
अध्याय [-६६] — स्त्री सभक राति-सभा....२५३
अध्याय [-६५] — नकली भूतक जुलूस....२५७
अध्याय [-६४] — सुखदेवक बदला....२६१
अध्याय [-६३] — छापाखानाक पहिल पन्ना....२६५
अध्याय [-६२] — राहतक प्रतीक्षा....२६९
अध्याय [-६१] — आकाशक पुच्छलतारा....२७३
अध्याय [-६०] — अगिनक राति....२७६
अध्याय [-५९] — दोसर बाढ़ि....२८०
अध्याय [-५८] — तेसर बिपत्ति....२८४
अध्याय [-५७] — साहेबक नोटबुक....२८८
अध्याय [-५६] — स्वाधीनताक पुकार....२९२
अध्याय [-५५] — स्वतंत्रताक भोर....२९६

अध्याय [-५४] — जमींदारीक अन्त....३००
अध्याय [-५३] — बिजलीक पहिल दीप....३०४
अध्याय [-५२] — सीमाक पुकार....३०६
अध्याय [-५१] — हरित क्रान्तिक बीया....३०८
अध्याय [-५०] — आपातकालक अन्हार....३१०
अध्याय [-४९] — सूखाक बरख....३१२
अध्याय [-४८] — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज....३१४
अध्याय [-४७] — खाड़ी देशक बजार....३१६
अध्याय [-४६] — सद्भावक परीक्षा....३१८
अध्याय [-४५] — उदारीकरणक हवा....३२०
अध्याय [-४४] — पहिल कम्प्यूटर....३२२
अध्याय [-४३] — सुखल होइत धार....३२४
अध्याय [-४२] — हाँथक फोनक चमत्कार....३२६
अध्याय [-४१] — शहरक बजार....३२८
अध्याय [-४०] — सूचनाक अधिकार....३३१
अध्याय [-३९] — कोजक गारंटी....३३४
अध्याय [-३८] — इंटरनेटक जाल....३३६
अध्याय [-३७] — स्क्रीनक पहिल छाया....३३९
अध्याय [-३६] — अनदेखल ठगक पहिल आहट....३४१
अध्याय [-३५] — देहक बजार खुजैत अछि....३४३
अध्याय [-३४] — उज्ज्वलक स्वप्न....३४५
अध्याय [-३३] — वकीलक कोटक छाया....३४७
अध्याय [-३२] — समुद्रपारक साये....३४९
अध्याय [-३१] — सत्यव्रतक मौन....३५१
अध्याय [-३०] — गोप कुमारक दस्तावेज....३५३
अध्याय [-२९] — चन्द्रपालक सपना....३५६
अध्याय [-२८] — राघवक कोड....३५९
अध्याय [-२७] — आरुणिक निर्माण....३६१
अध्याय [-२६] — देविकाक गीत....३६३
अध्याय [-२५] — मीराक निजता....३६५
अध्याय [-२४] — निशांतक बैंक....३६७
अध्याय [-२३] — नन्दक जन्म....३६९
अध्याय [-२२] — बारह सयक निकट....३७१
अध्याय [-२१] — अनन्याक प्रश्न....३७३
अध्याय [-२०] — छपाकक पहिल हिसाब....३७५
अध्याय [-१९] — सत्यव्रतक निर्णय....३७७
अध्याय [-१८] — अनन्या आ नन्दक भेंट....३८०
अध्याय [-१७] — शीशाक मीनारक जाल....३८२
अध्याय [-१६] — बटुकनाथक अंतिम मोड़....३८४
अध्याय [-१५] — चन्द्रपालक खाता....३८६
अध्याय [-१४] — पुलक निर्माण....३८८
अध्याय [-१३] — गोप कुमारक संकलन....३९१
अध्याय [-१२] — चन्ना गाछीक कँपकँपी....३९४
अध्याय [-११] — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद....३९६
अध्याय [-१०] — पुलपर पहिल छपाक....३९८
अध्याय [-९] — जाँचक आरम्भ....४००
अध्याय [-८] — प्रमाणक बाहर आएब....४०२
अध्याय [-७] — आधा-भूतक अनुभव....४०५
अध्याय [-६] — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना....४०७
अध्याय [-५] — जालक उजागर होएब....४०९
अध्याय [-४] — नामक अन्तिम सूची....४११
अध्याय [-३] — बारह सय बरखक पूर्णता....४१३
अध्याय [-२] — अगिला पीढ़ीक वचन....४१५
अध्याय [-१] — अन्तिम साक्षी....४१७

सम्पूर्ण उपन्यास-अनुक्रम — सभ ३०१ अध्याय

खण्ड-० (पूर्व-कथाकाल): अध्याय [−१००] सँ [−१]

अध्याय [−१००] — शंख आ रजत

अध्याय [−९९] — आत्मसिद्धि-वाद

अध्याय [−९८] — केऽ बनौलक ई जगत?

अध्याय [−९७] — चिंतामणि रत्न

अध्याय [−९६] — स्मृति-रक्षा

अध्याय [−९५] — जलमग्न पाण्डुलिपि

अध्याय [−९४] — चारि मुखक मौन

अध्याय [−९३] — शंखक अन्तिम प्रश्न

अध्याय [−९२] — जल-घड़ीक कैदी

अध्याय [−९१] — चर्मकार टोलाक उजास

अध्याय [−९०] — बुधुआक जलसमाधि

अध्याय [−८९] — पहिल राति, पहिल बाढ़ि

अध्याय [−८८] — डाइनक आरोप

अध्याय [−८७] — टोलाक द्वारपर

अध्याय [−८६] — समयक गोहि

अध्याय [−८५] — आमिलक आदेश

अध्याय [−८४] — जंगलक मौन

अध्याय [−८३] — सोनमा माझिन

अध्याय [−८२] — पहिल कबड्डी

अध्याय [−८१] — आक्रमणक छाया

अध्याय [−८०] — गीतक पहिल पाँति

अध्याय [−७९] — क्षमाक पारी

अध्याय [−७८] — पंजीक बाहर

अध्याय [−७७] — बूढ़बाक मौन

अध्याय [−७६] — नारिकेल पातक पहिल पाठ

अध्याय [−७५] — तर्कक पहिल विद्रोह

अध्याय [−७४] — गाछक रोग

अध्याय [−७३] — मोहनक धुन

अध्याय [−७२] — विवाहक साक्षी

अध्याय [−७१] — महामारीक राति

अध्याय [−७०] — चन्ना गाछीक रोपाई

अध्याय [−६९] — गज-ग्राहक कथा

अध्याय [−६८] — अदालतक पहिल तारीख

अध्याय [−६७] — परदेशक पुकार

अध्याय [−६६] — स्त्री सभक राति-सभा

अध्याय [−६५] — नकली भूतक जुलूस

अध्याय [−६४] — सुखदेवक बदला

अध्याय [−६३] — छापाखानाक पहिल पन्ना

अध्याय [−६२] — राहतक प्रतीक्षा

अध्याय [−६१] — आकाशक पुच्छलतारा

अध्याय [−६०] — अगिनक राति

अध्याय [−५९] — दोसर बाढ़ि

अध्याय [−५८] — तेसर बिपत्ति

अध्याय [−५७] — साहेबक नोटबुक

अध्याय [−५६] — स्वाधीनताक पुकार

अध्याय [−५५] — स्वतंत्रताक भोर

अध्याय [−५४] — जमींदारीक अन्त

अध्याय [−५३] — बिजलीक पहिल दीप

अध्याय [−५२] — सीमाक पुकार

अध्याय [−५१] — हरित क्रान्तिक बीया

अध्याय [−५०] — आपातकालक अन्हार

अध्याय [−४९] — सूखाक बरख

अध्याय [−४८] — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज

अध्याय [−४७] — खाड़ी देशक बजार

अध्याय [−४६] — सद्भावक परीक्षा

अध्याय [−४५] — उदारीकरणक हवा

अध्याय [−४४] — पहिल कम्प्यूटर

अध्याय [−४३] — सुखल होइत धार

अध्याय [−४२] — हाथक फोनक चमत्कार

अध्याय [−४१] — शहरक बजार

अध्याय [−४०] — सूचनाक अधिकार

अध्याय [−३९] — काजक गारंटी

अध्याय [−३८] — इंटरनेटक जाल

अध्याय [−३७] — स्क्रीनक पहिल छाया

अध्याय [−३६] — अनदेखल ठगक पहिल आहट

अध्याय [−३५] — देहक बजार खुजैत अछि

अध्याय [−३४] — उज्ज्वलक स्वप्न

अध्याय [−३३] — वकीलक कोटक छाया

अध्याय [−३२] — समुद्रपारक साये

अध्याय [−३१] — सत्यव्रतक मौन

अध्याय [−३०] — गोप कुमारक दस्तावेज

अध्याय [−२९] — चन्द्रपालक सपना

अध्याय [−२८] — राघवक कोड

अध्याय [−२७] — आरुणिक निर्माण

अध्याय [−२६] — देविकाक गीत

अध्याय [−२५] — मीराक निजता

अध्याय [−२४] — निशांतक बैंक

अध्याय [−२३] — नन्दक जन्म

अध्याय [−२२] — बारह सयक निकट

अध्याय [−२१] — अनन्याक प्रश्न

अध्याय [−२०] — छपाकक पहिल हिसाब

अध्याय [−१९] — सत्यव्रतक निर्णय

अध्याय [−१८] — अनन्या आ नन्दक भेंट

अध्याय [−१७] — शीशाक मीनारक जाल

अध्याय [−१६] — बटुकनाथक अंतिम मोड़

अध्याय [−१५] — चन्द्रपालक खाता

अध्याय [−१४] — पुलक निर्माण

अध्याय [−१३] — गोप कुमारक संकलन

अध्याय [−१२] — चन्ना गाछीक कँपकँपी

अध्याय [−११] — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद

अध्याय [−१०] — पुलपर पहिल छपाक

अध्याय [−९] — जाँचक आरम्भ

अध्याय [−८] — प्रमाणक बाहर आएब

अध्याय [−७] — आधा-भूतक अनुभव

अध्याय [−६] — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना

अध्याय [−५] — जालक उजागर होएब

अध्याय [−४] — नामक अन्तिम सूची

अध्याय [−३] — बारह सय बरखक पूर्णता

अध्याय [−२] — अगिला पीढ़ीक वचन

अध्याय [−१] — अन्तिम साक्षी

खण्ड-१: अध्याय ० सँ १००

अध्याय ० — गढ़ नारिकेल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना

अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी

अध्याय २ — दहिन कातक गाम

अध्याय ३ — छपाकक हिसाब

अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश

अध्याय ५ — तारीखक गोहि

अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स

अध्याय ७ — श्वासक भाव

अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि

अध्याय ९ — देहक बाजार

अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल

अध्याय ११ — धनक कारी नदी

अध्याय १२ — डार्क-जालपर नारिकेल पात

अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण

अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता

अध्याय १५ — नामक जल

अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत

अध्याय १७ — जीतक शोक

अध्याय १८ — खाली अदालत

अध्याय १९ — नामक अभिलेख

अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला

अध्याय २१ — निजताक शपथ

अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण

अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज

अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू

अध्याय २५ — मोन टांगल

अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा

अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन

अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी

अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना

अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत

अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज

अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी

अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा

अध्याय ३४ — सुनैत नदी

अध्याय ३५ — नामक देहरी

अध्याय ३६ — घर, भय, सपना

अध्याय ३७ — तीन कंकड़

अध्याय ३८ — नामक उच्चारण

अध्याय ३९ — बीजक शान्ति

अध्याय ४० — ओसक अक्षर

अध्याय ४१ — नामक नाव

अध्याय ४२ — भारक वृत्त

अध्याय ४३ — चलैत भार

अध्याय ४४ — पोतीक कापी

अध्याय ४५ — भीतरक हवा

अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार

अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान

अध्याय ४८ — पुकार

अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख

अध्याय ५० — देहक बादक नाम

अध्याय ५१ — साक्षीक भार

अध्याय ५२ — अगिला आवाज

अध्याय ५३ — कटानक बादक बिहान

अध्याय ५४ — ठूँठक चारू कात

अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र

अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा

अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न

अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग

अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड

अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव

अध्याय ६२ — ठूँठमे हरियर बिंदु

अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना

अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा

अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन

अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल

अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार

अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग

अध्याय ६९ — नामक चोरी

अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही

अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस

अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी

अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि

अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र

अध्याय ८० — हरिहरनक संतान

अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम

अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह

अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला

अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित

अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा

अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव

अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास

अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई

अध्याय ९० — नामक संविधान

अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति

अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह

अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि

अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी

अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश

अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही

अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

खण्ड-२: अध्याय १०१ सँ २०० (तथा परिशिष्ट)

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण

अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी

अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ

अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि

अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा

अध्याय १०६ — बीजक गवाही

अध्याय १०७ — बीजक चोरी

अध्याय १०८ — माटिक मुँह

अध्याय १०९ — जलक स्मृति

अध्याय ११० — आगिक साक्षी

अध्याय १११ — वायुक प्रश्न

अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति

अध्याय ११३ — शब्दक देह

अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा

अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा

अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार

अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण

अध्याय ११८ — देहक अधिकार

अध्याय ११९ — श्रमक देह

अध्याय १२० — न्यायक देह

अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा

अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति

अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात

अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि

अध्याय १२५ — निर्णयक धान

अध्याय १२६ — अन्नक न्याय

अध्याय १२७ — भूखक नाम

अध्याय १२८ — प्यासक नाम

अध्याय १२९ — नूनक शपथ

अध्याय १३० — स्वादक न्याय

अध्याय १३१ — साझा थारी

अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य

अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा

अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही

अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस

अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच

अध्याय १४० — चल चौपाल

अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला

अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार

अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही

अध्याय १४४ — नामक यात्रा

अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार

अध्याय १४६ — मुहरक दाग

अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक

अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

अध्याय १४९ — जालक नक्शा

अध्याय १५० — मुहरक छाया

अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ

अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत

अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम

अध्याय १५४ — बाबाक वचन

अध्याय १५५ — सेवाक खाता

अध्याय १५६ — दानक ऋण

अध्याय १५७ — लोहेक संदूक

अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान

अध्याय १५९ — मृतकक सहमति

अध्याय १६० — गोदामक छाया

अध्याय १६१ — फोनक कैद

अध्याय १६२ — आवाजक मोहर

अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान

अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट

अध्याय १६५ — छायाक देह

अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार

अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज
अध्याय १६८ — शहरक गला
अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा
अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल
अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत
अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ
अध्याय १७३ — पंजीक पहरा
अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट
अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम
अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार
अध्याय १७७ — घर-घरक कागज
अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी
अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह
अध्याय १८० — शहरक खाता
अध्याय १८१ — सिमक छाया
अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा
अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा
अध्याय १८४ — आवाजक नकाब
अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा
अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम
अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी
अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर
अध्याय १८९ — लोहेक पेटी
अध्याय १९० — नील पंजी
अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी
अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर
अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा
अध्याय १९४ — साँसक समन
अध्याय १९५ — रोकल खाता
अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ
अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम
अध्याय १९८ — अपराधीक धरती
अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान
अध्याय २०० — नामक पहरुआ

अध्याय **[−१००] (सैया)**

शंख आ रजत

चमकैत सभटा चानी नहि, आ नाम सभटा देह नहि— जे शंखकेँ रजत बुझै, से गामकेँ नक्शा बुझै।

— गढ़ नारिकेल

॥ प्रवेश ॥

गढ़ नारिकेल — मिथिलाक ओहि कोनमे बसल एकटा गाम, जकर नाम कोनो पैघ नक्शापर नहि भेटत, मुदा जकर स्मृति बारह सय बरखसँ, एकटा गाछक जड़िमे, जीबैत आयल अछि। गामक बीचोबीच चन्ना गाछी, आ ओहि गाछीक

हृदयमे एकटा पुरान पीपर; ओहि पीपरक छाहरिमे, आ ओहि गामक हर सुख–दुःखमे, एकटा साक्षी सदिखन उपस्थित रहल अछि — जकरा गाम, पीढ़ी–दर–पीढ़ी, केवल “बूढ़बा” कहैत आयल अछि।

बूढ़बा के छथि, ई गाम आइ धरि पूर्ण रूपसँ नहि बुझि सकल। केओ कहैत अछि जे ओ जोड़ी पोखरिक ओहि जलसमाधिसँ उठल एकटा स्वर छथि, जे बारह सय बरख पहिने, पोखरिक तलमे अपन देह छोड़ि, अपन नाम राखि गेल छलाह। मुदा एतबा सम्पूर्ण गाम जनैत अछि — बूढ़बा गामक हर नाम धेने छथि, हर हिसाब राखने छथि, आ हर पीढ़ीकेँ ओ एक्के बात सिखबैत आयल छथि: गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।

आ बूढ़बाक ई कथा, जकरा गाम युग–युगसँ दोहरबैत आयल अछि, आरम्भ होइत अछि आइसँ बारह सय बरख पूर्व — ओहि दिन, जखन गढ़ नारिकेल अखनहु नव छल। ओहि साँझ, गामक एकटा वाद–शालामे, मंद होइत दीपक इजोतमे, दर्शनक विद्वान् एकटा प्रश्नपर जुटल छलाह जे देखबामे छोट, मुदा भीतरसँ ओतबे गहींर छल — जँ एकटा मनुष्य दूरसँ शंखकेँ चानी बुझि लैत अछि, तँ ई भूल ठीक–ठीक कोन थिक? आ ओहि एक प्रश्नमे, बिनु जनने, ओ सभ ओहि सम्पूर्ण कथाक बीया रोपि रहल छलाह जे आगू बारह सय बरख धरि — सत्य आ भ्रमक, नाम आ देहक, गोहि आ गामक — फैलैत जायत।

किएक तँ जे शंखकेँ रजत बुझैत अछि, से गामकेँ नक्शा बुझैत अछि; जे चमककेँ सत्य बुझैत अछि, से नामकेँ देह बुझैत अछि। इएह भूल, ओहि साँझक वाद–शालासँ लऽ कऽ आजुक स्क्रीनक जालधरि, एहि सम्पूर्ण कथाक मूल थिक। तेँ, बूढ़बाक कथा ओतहिसँ आरम्भ होइत अछि — ओहि वाद–शालामे, जतय पहिल बेर, पूरे मनोयोगसँ, पुछल गेल छल: भ्रम की थिक?

पात्र–परिचय

सूत्रधार — मंच–संचालक

वाचस्पति मिश्र — टीकाकार, वादक यजमान, सिद्धांती

आक्षेपक (शंकालु) —– सभाक दिससँ संशयक एकटा संयुक्त स्वर

नैयायिक तार्किक — अन्यथाख्यातिक समर्थक, ई सिद्धांत जे भ्रम एक सत् वस्तुक दोसराक रूपमे ज्ञान थिक

प्रभाकर मीमांसक — अख्यातिक समर्थक, ई सिद्धांत जे भ्रम खाली भेदक अनवधानता थिक

मीमांसक कर्मकांडी — भाट्ट आ जैमिनीय सम्प्रदायक, जे मानैत छथि जे वेद खाली कर्मक विधानक लेल अछि

परिषद् — सभाक कानाफूसी

स्थान: एकटा वाद–शाला। साँझमे एकटा सेवक दीप लऽ कऽ प्रवेश करैत अछि, आ मंद होइत प्रकाशमे द्वारक कात एकटा डोरी आ, हाथ भरिक दूरीपर, कइएक बर्खक उपयोगसँ उज्जर भेल एकटा छोट शंख राखि दैत अछि — एकटा तर्कक हेतु उपकरण, जइपर सभा अखनहु ध्यान नहि देने अछि।

प्रस्तावना

(सूत्रधार प्रवेश करैत अछि।)

सूत्रधार: सभ वाद कैँ आरंभ करय हेतु एकटा भूल चाही, आ एहिमे दुइ–दुइ टा भूल अछि, द्वार लग पड़ल, जँ अहाँ ताकब तँ देखि सकैत छी: एकटा डोरी, आ एकटा शंख। कनेक अन्हारमे, एक बेर एकटा मनुष्य डोरीकैँ साँप बुझि लेने छल आ हृदय धड़कैत पाछू कुदि गेल छल, यद्यपि ओतय कहियो कोनो साँप नहि छल। आन एकटा, सिक्का बुझि हाथ बढ़ौलक, शंखकैँ चानी बुझि लेलक, आ ओकर हाथ आनंदसँ किछुओ नहि भेटलापर जेना पाछू भऽ बन्न भ' गेल।

एहि सभामे सभ सम्प्रदाय मानैत अछि जे ओ मनुष्य भूल केने छल। जकरापर सहमति नहि भ' सकैत अछि, से इएह अछि जे *की भेल* जखन ओ भूल केने छल — कतय, जँ कतहु, चानी छल, जाबे ओ ओकरा देखि रहल छल। वाचस्पति मिश्र अपन जीवन एहि एकहि गपपर बितओलनि, किएक तँ हुनका पेबाक छलनि जे *भ्रम की थिक* आ *संसार की थिक* क उत्तर, जाँचमे ई दू बेर पुछल एकहि प्रश्न सिद्ध होइत अछि। शंखपर नजरि राखू। जाबे धरि वाद ओकरा सँ निपटि नहि जाइत अछि, ओ मंच नहि छोड़त।

(सूत्रधार, वादक आरम्भसँ पूर्व, एकटा लोकगीत गबैत अछि —)

चमकैत सभटा चानी नहि हे, नाम सभटा देह नहि,
जे शंखकैँ रजत बुझै रे, से गामकैँ नक्शा बुझै।
दूरसँ चमक देखल, लग जा शंख बुझल;
जे पुछलक 'ई की थिक?', ओकर भ्रम टूटल।
भ्रम क्षण भरि हे, सत्य युग–युग रे —
जे पुछब जनै, से शंखकैँ रजत नहि बुझै।

(प्रस्थान)

अंक प्रथम

ओ स्वर जे "हम" कहैत अछि

की आत्मा अन्वेषणक विषय भ' सकैत अछि

(वाचस्पति आसीन छथि। आक्षेपक प्रवेश करैत अछि आ प्रणाम करैत अछि।)

आक्षेपक: अहाँ हमरा सभकेँ ब्रह्मकेँ अन्वेषण–योग्य कहबासँ पहिने, आचार्य, एकटा सरल कठिनाह गपक उत्तर दिअ। अन्वेषण ओहि वस्तुक हेतु अछि जे संशयास्पद अछि, वा जकरा जानब उपयोगी अछि एक बेर संशय निपटलापर। मुदा केओ अपन अस्तित्वपर संशय नहि करैत अछि। बच्चा, ऋषि, खेतक पशु — जतेक प्राणी कहियो साँस लेने अछि, सभ अपनाकेँ "हम" रूपमे जनैत अछि, तुरंत, बिनु प्रमाणक, बिनु एक क्षणक हिचकिचाहटक। जँ आत्मा पहिनहि सँ संसारक सबसँ नीक–ज्ञात वस्तु थिक, तँ कोन आधारपर अहाँ ओकरा *अन्वेषण* करय चाहैत छी, जेना ओ नुकायल होइक?

वाचस्पति: अहाँ एहि आक्षेपकेँ बहुतो लोकसँ नीक ढंगसँ कहलहुँ, जे एकरा आनैत छथि, आ हम एकर धार कुंठित नहि करब। ई सत्य अछि: केओ संशय नहि करैत अछि "हम छी वा नहि।" मुदा देखू अहाँ की सिद्ध केलहुँ, आ की नहि। अहाँ ई सिद्ध केलहुँ जे "हम" शब्दकेँ बुझाओल जाइत किछु संशयसँ परे ज्ञात अछि। अहाँ ई सिद्ध नहि केलहुँ जे हम जनैत छी *ओ किछु* की थिक। एकटा मनुष्य अन्हार कोठलीमे निश्चित भ' सकैत अछि जे एकटा चेहरा हुनका देखि रहल अछि आ पूर्णतः भूल भ' सकैत अछि केकर चेहरा। अस्तित्वक निश्चितता आ स्वभावक ज्ञान दुइ भिन्न उपलब्धि थिक, आ एहि अंकक सम्पूर्ण विवाद ओहि अंतरालमे अछि।

आक्षेपक: तखन ओ अंतराल देखाउ। "हम" क सामान्य अनुभवमे की भूल भ' सकैत अछि?

वाचस्पति: विचारू सामान्य बोलचालमे "हम" शब्दकेँ की वहन करैत अछि। "हम पातर छी।" "हम जा रहल छी।" "हम अन्ध छी।" प्रत्येक "हम" केँ शरीरसँ बान्हैत अछि। जँ शरीरे "हम" क संदर्भ होइत, तँ एकटा मनुष्य जे अपन बालक–शरीर आ वृद्ध–शरीर जनैत अछि — दुइ शरीर जे साठि वर्षक पार एकटा केश, एकटा दाँत, एकटा त्वचाक कण सेहो साझा नहि करैत अछि — कहियो एतेक विश्वाससँ नहि कहि सकैत जतेक ओ वस्तुतः कहैत अछि, "हम, जे अपन पिताक कोरामे खेलल छी, अखन अपन नातिकेँ अपन कोरामे राखने छी।" ओहि दुइ शरीरकेँ किछुओ निरंतर नहि जोड़ैत अछि सिवाय ओहि "हम" क जे दुनूकेँ अपन दावा करैत अछि — आ जे बदलैत वस्तुक पार बनल रहैत अछि, से स्वयं बदलएवाला वस्तु नहि भ' सकैत अछि, ठीक जेना मालामे पिरोएल फूलक पार चलएवाला डोरी स्वयं फूलमेसँ एक नहि थिक।

आक्षेपक: तखन एकटा स्वप्नद्रष्टा अहाँकेँ उत्तर द' सकैत अछि: हम स्वप्नमे एकटा राजाक शरीर धारण केलहुँ, रत्नजड़ित आ ऊँच, आ जागिकऽ इएह छोट, सामान्य देह पाओल। जँ स्वप्नक आत्मा जागृतिक आत्मासँ भिन्न अछि, अहाँक डोरी पहिनहि सँ टूटि गेल।

वाचस्पति: ठीक विपरीत — अहाँ हमरे उदाहरण हमरा पहुँचएबासँ पहिनहि हमरा दऽ देलहुँ। स्वप्नद्रष्टा जागि क' कहैत अछि, "हम राजा नहि छी; हम एकटा मनुष्य छी" —– ओ *राजसी शरीर* थिक जे जागृतिद्वारा खंडित होइत अछि, जखन कि "हम" क बोध, जे स्वप्न आ जागृति दुनूकेँ समान रूपसँ अपन कहैत अछि, से किछुओसँ खंडित नहि होइत अछि। एकटा मनुष्य जे

योगशक्तिसँ बाघक रूप धारण करैत अछि, से ओहि रूपमे, अपनाकेँ ओहिसँ भिन्न अनुभव नहि करैत अछि जे एक क्षण पहिने मनुष्य छल। शरीर–पर–शरीर एकटा यात्रीक बदलएवाला कोटक जकाँ धारण आ त्याग कएल जाइत अछि; यात्री ओहिसँ कोटमेसँ एक सिद्ध नहि होइत अछि।

आक्षेपक: तखन इंद्रिय "हम" क आधार होइ, जँ शरीर नहि — किएक तँ जे आँखि देखलक से ओ हाथ नहि थिक जे अखन स्पर्श करैत अछि।

वाचस्पति: आ तइयो हम, बिनु कोनो संशयक झलकीक, कहैत छी, "जे हम देखलहुँ, से हम अखन स्पर्श करैत छी" — एकटा "हम" दुइ भिन्न उपकरणकेँ जोड़ैत, ठीक जेना एकटा "हम" एक क्षण पहिने दुइ भिन्न शरीरकेँ जोड़ने छल। इंद्रिय ज्ञाताक उपकरण थिक; ओ स्वयं ओ ज्ञाता नहि भ' सकैत अछि जकर ओ सेवा करैत अछि, ठीक जेना कुरहड़ि ओ लकड़हारा नहि भ' सकैत अछि जे ओकरा चलबैत अछि।

आक्षेपक: ई सभटा मानि लिअ। हमरा अखनो नहि बुझाइत अछि जे *अन्वेषण* करय हेतु की बाकी अछि। अहाँ केवल "हम" केँ शरीरसँ शरीरक पाछू किछुमे स्थानांतरित केलहुँ — ओकरा चैतन्य कहू, आ काज समाप्त करू।

वाचस्पति: एतय अहाँक मूल आक्षेपक दोसर अदहा अछि, आ ई अधिक तीक्ष्ण अदहा थिक — अहाँ ठीक छलहुँ जे ई अस्तित्वमे छल, आ हम एकरा ओकर उचित स्थानक हेतु राखि छोड़ने रही। अन्वेषण ओतय व्यर्थ अछि जतय ज्ञान कोनो प्रयोजन नहि सेवा करैत अछि। मुदा विचारू: सभ प्राणीकेँ जे "हम" क अनुभव अछि, से एकटा *सीमित* वस्तुक अनुभव थिक — "हम एहि कोठलीमे छी," "हम छोट छी," "हम इएह दुःख भोगैत छी, ओ नहि।" शास्त्र जे

आत्माक कथा करैत अछि — श्रुति, स्मृति, पुरान महाकाव्य — एहन किछु वर्णन करैत अछि जे ओहिमेसँ एकहु सीमाकेँ साझा नहि करैत अछि: अनंत, अखंड, चेतना आ आनंदक एकटा अटूट राशि। या तँ सामान्य "हम" आ शास्त्रक आत्मा एकहि यथार्थ थिक जकरा भुलसँ देखल गेल, वा ओ केवल दुइ भिन्न वस्तु थिक आ शास्त्र झूठ बजैत अछि। जँ ओ एकहि यथार्थ थिक जकरा भुलसँ देखल गेल, तँ सभटा एकहि शब्दपर टिकल अछि *भुलसँ*— आ जाबे धरि हम ई नहि बुझी जे भूल स्वयं की थिक, हम नहि जानि सकैत छी जे शास्त्र वा सामान्य अनुभवक हमरापर बेसी सत्य दावा अछि। ई कोनो उत्तरित प्रश्न नहि थिक। इएह सभटा थिक जे अन्वेषण करबाक बाकी अछि।

आक्षेपक: तखन अहाँ जे सम्पूर्ण भवन बनाबय जा रहल छी, से ई जानबापर टिकल अछि जे भूल की थिक।

वाचस्पति: ठीक। एहि लेल हम एक कदम सेहो ब्रह्म दिस आगू नहि बढ़ब जाबे धरि ई प्रश्न एहि सभामे, हर सम्प्रदायद्वारा जे ओकर विवरण देबय तैयार अछि, अपन तह धरि नहि लड़ल जाइत। अपन सबसँ मजबूत विरोधी आनू। हम एहि विवादकेँ ईमानदारीसँ हारब बेसी पसिन्न करब, बजाय एकरा जीतय क', बादमेक हेतु सबसँ कठिन भाग छोड़ि क'।

अंक द्वितीय

हल्का अन्हारमे शंख

भ्रमक स्वभाव पर वाद

(द्वार लगक दीप अधिक उज्ज्वल कएल जाइत अछि। शंख, जतय सेवक राखने छल ओतहि पड़ल, अखन सभार्कें दृश्यमान अछि। नैयायिक तार्किक उठैत छथि।)

नैयायिक: जखन अहाँ सभा खोलि देलहुँ, आचार्य, तखन हमरा एकरा जल्दी बन्न करय दिअ। एकटा मनुष्य हल्का अन्हारमे ओ शंख देखैत अछि आ चिकड़ैत अछि, "चानी!" जे भेल अछि, से रहस्यमय नहि थिक: चानी एकटा वास्तविक वस्तु थिक, संसारमे कतहु अस्तित्वमे — एकटा दोकानदारक दोकानमे, हुनक अपन स्मृतिक एकटा सिक्कामे — आ हुनक ज्ञान केवल ओहि वास्तविक चानीकेँ *एतय* लागू क' देने अछि, एकटा वास्तविक वस्तुकेँ दोसर वास्तविक वस्तुक स्थानपर भुलसँ लऽ लैत। किछुओ अनिर्वचनीय आवश्यक नहि अछि। भ्रम केवल *अन्यथाख्याति* थिक: एकटा वास्तविक वस्तु, भुलसँ राखल।

वाचस्पति: एकटा सुव्यवस्थित उत्तर, तार्किक, आ हम एकरा ठीक ओतबे सुव्यवस्थितरूपसँ जाँचब जतबे ई योग्य अछि। पहिने बताउ: अहाँक विवरणें, की हुनक ज्ञान शंखकेँ बिलकुले पकड़ैत अछि?

नैयायिक: केवल अस्पष्ट रूपसँ — ओकर "इहाँ–होएब" पकड़ल जाइत अछि, मुदा ओकर शंख–स्वभाव छूटि जाइत अछि, आँखि वा प्रकाशक कोनो दोषक कारणे।

वाचस्पति: आ जे चानी ओ एतेक स्पष्टतासँ देखैत छथि — ओहि क्षण, ओ वास्तवमे कतय अछि?

नैयायिक: बाजारमे, कतहु आर, ओतबे वास्तविक जतबे सदा — हुनक ज्ञान केवल दूरीक पार पहुँचि ओकरा, ओहि दोषक कारणे, एतय भुलसँ लागू करैत अछि।

वाचस्पति: आह! गरीब ज्ञान केहन असाधारण भाग्यशाली अछि, जे ओ दोकानदारक दोकान धरि पहुँचि सकैत अछि आ एकटा चानीक टुकड़ाकेँ साक्षात् एहि मनुष्यक हाथमे घीचि आनि सकैत अछि, आ तइयो एकरा केवल एकटा सामान्य स्थान–भ्रम मात्र कहल जाइत अछि! विचारू जे अहाँक अपन सम्प्रदाय आर कतहु सिखबैत अछि: एकटा दोष एकटा कारणकेँ ओकर *उचित* कार्य उत्पन्न करबासँ केवल बाधित क' सकैत अछि; एकटा दोष ओहिमे कोनो पूर्णतः भिन्न, विजातीय कार्य उत्पन्न करबाक शक्ति उत्पन्न नहि क' सकैत अछि। एकटा सूखल, अगिनसँ झुलसल गन्नाक बीज, अपन उचित शक्ति खोइकऽ, केराक थम्ब नहि उत्पन्न करैत अछि। तइयो अहाँ हमरा विश्वास करय कहैत छी जे एकटा दोषपूर्ण आँखि, अपन उचित काज — मनुष्यकेँ एकटा शंख देखएबाक — सँ बाधित भ' कऽ, कोनहु प्रकार एकटा पूर्णतः भिन्न शक्ति प्राप्त क' लैत अछि, वास्तविक चानीकेँ एकटा शहरक पार घीचि आनबाक आ ओकरा हुनक हथेलीमे राखबाक। ई कोनो छोट दोष नहि थिक। ई एकटा चमत्कार थिक जे "भ्रम" क विनम्र वस्त्र पहिरने अछि।

नैयायिक: *(संभलैत)* तखन केवल इएह कहू जे स्मृतिक चानीक *रूप* उठैत अछि आ एतय लागू होइत अछि, चानी स्वयं साक्षात् यात्रा नहि करैत।

वाचस्पति: तखन अहाँ पहिनहि सँ "एक वास्तविक वस्तु दोसराक रूपमे ज्ञात," जे अहाँक पूरा सिद्धांत छल, ओकरा छोड़ि चुकल छी आ बिनु भाड़ा देने आधा हमर घरमे खिसकि गेल छी। जँ ई मात्र एकटा *रूप* थिक, स्मृतिसँ उठएवाला आ एतय लागू भेल, तँ हमरा स्पष्ट बताउ: की ओ रूप चानी थिक, वा नहि? जँ ओ सचमुच चानी थिक, तँ हमर पहिलुक प्रश्न पूरा बलसँ लौटैत अछि — चानी बुद्धिगम्य रूपसँ *एतय* नहि भ' सकैत अछि, एकटा एहन वस्तु जे चानी नहि थिक, बिनु ठीक ओहि विरोधाभासक जकरा टारय हेतु अहाँ निकलल छलहुँ। जँ ओ सचमुच चानी नहि थिक, तँ अहाँ चुपचाप हमरा सभटा मानि लेलहुँ, किएक तँ इएह ठीक थिक जकरा हम *अनिर्वचनीय* कहैत छी — न सरल रूपसँ वास्तविक, न सरल रूपसँ अवास्तविक — आ अहाँ हमर निष्कर्ष धरि घुमैत रस्तासँ पहुँचि गेलहुँ, पूरा रस्ता भरि दृश्यक शिकायत करैत।

परिषद्: *(हल्की हँसीक एकटा तरंग, तुरंत दबाओल गेल)*

नैयायिक: *(गरिमासँ)* हम एहि आक्षेपक विस्तारसँ उत्तर आर कतहु, न्यायकणिकामे, दऽ चुकल छी, आ एहि साँझक ठंढामे ठाढ़ भऽ ओकर पूरा पुनरावृत्ति नहि करब।

वाचस्पति: ओकर आवश्यकता सेहो नहि — अहाँ मूल बिन्दु मानि चुकल छी, आ जे वादी एकटा दुर्गक केंद्र छोड़ि दैत अछि, ओकरा साक्षीक सोझाँ बाहरी दीवाल सेहो समर्पित करबाक आवश्यकता नहि। बैसू, मित्र। अहाँ ईमानदारीसँ तर्क केलहुँ, जे एहि सभामे जीतबासँ बेसी मूल्यवान थिक।

अंक तृतीय

लुप्त होएवाला भेद

प्राभाकरक अख्याति, आ ओकर असफलता

(प्राभाकर मीमांसक आगू बढ़ैत छथि, हुनकासँ पहिने बजनिहार तार्किकसँ बेसी सावधान।)

प्राभाकर: हम हमर सहयोगीक चानीकेँ शहरक पार घिचाइत देखलहुँ आ हम हुनक भूल दोहरायब नहि। हम एतेक असाधारण किछुओ स्थापित नहि करैत छी। जे वास्तवमे घटित होइत अछि, जखन शंख भुलसँ बुझल जाइत अछि, से इएह अछि: दुइ ज्ञान एकसंग उठैत अछि — एकटा नग्न प्रत्यक्ष "इहाँ," अखन आ एतय, आ एकटा चानीक स्मृति, बहुत पहिने देखल, शंखक धुँधली चमकसँ जगाओल। दोष केवल एतबेमे अछि: मनुष्य ई ध्यान नहि दैत अछि जे एकटा वर्तमान प्रत्यक्ष थिक आ दोसर मात्र एकटा स्मृति। ओ दुनूकेँ मिला दैत अछि, बिनु चिह्नक, आ एना बजैत अछि जेना ओ एकहि वस्तु देखलक होइक। एहि कथामे कतहु कोनो तेसर, अनिर्वचनीय सत्ता नहि अछि — केवल सामान्य प्रत्यक्ष, सामान्य स्मृति, आ दुनूकेँ अलग राखबाक एकटा सामान्य असफलता। एकरा *अख्याति* कहू: बिलकुल कोनो मिथ्या ज्ञान नहि, केवल एकटा हराएल ज्ञान — एकटा भेदक हराएल जागरूकता।

वाचस्पति: पहिलुकसँ बहुत बेसी सावधान सिद्धांत, आ हम एकरा एकटा तेजगर सवाल पूछिकऽ सम्मान देब, जल्दीक बजाय। बताउ: अहाँक विवरणें, की प्रत्यक्ष "इहाँ" —– नग्न, वर्तमान, तत्काल — कोनो ढंगसँ मिथ्या थिक?

प्राभाकर: बिलकुल नहि। ओ सरल आ पूर्णतः सही अछि, जतबे दूर ओ जाइत अछि।

वाचस्पति: आ चानीक स्मृति — की *ओ*, अपने आपमे, मिथ्या थिक?

प्राभाकर: कोनो स्मृतिसँ बेसी मिथ्या नहि। ओ ठीके पहिने देखल चानीकेँ स्मरण करैत अछि। दोष केवल *मिश्रणमे* अछि, कहियो कोनो घटकमे नहि।

वाचस्पति: तखन सुनू ई कठिनाई जे ई अहाँक हेतु उत्पन्न करैत अछि, आ ई घातक थिक, केवल असुविधाजनक नहि। सम्पूर्ण संसार, बिनु अपवादक, एहि अनुभवकेँ एकहि वाक्यमे वर्णन करैत अछि: "इएह चानी अछि।" "इएह, आ, अलगसँ, हमरा चानी स्मरण अछि" नहि — एकटा सरल, एकीकृत, प्रथम–पुरुष पहचानक दावा, ठीक ओहि आत्मविश्वासी व्याकरणसँ बाजल जतबे "इएह एकटा घैल अछि।" जँ वास्तवमे ई घटित भेल होइत जे दुइ सही ज्ञान निर्दोष रूपसँ बगलमे ठाढ़ छल, केवल अचिह्नित, तँ दुनूक बीच *एकत्वक भुलसँ दावा* कतएसँ आएल? दुइ सत्य वस्तु एक–दोसराक निकट ठाढ़, चाहे हुनक निकटताकेँ ध्यान नहि देल जाए, तइयो एकटा मिथ्या *पहचानक* दावा उत्पन्न नहि करैत अछि। अहाँ एकटा भेद देखबामे असफलताक व्याख्या केलहुँ। अहाँ ओहि मनुष्यक भूमिपर चानी उठएबाक हेतु उत्सुक हाथक व्याख्या नहि केलहुँ। एकटा भेद छूटब एकटा प्रकारक अन्हापन थिक; एकटा एहन सिक्काक हेतु हाथ बढ़ाएब जे ओतय नहि अछि, एकटा प्रकारक विश्वास थिक — आ अहाँक सिद्धांत, अपन सम्पूर्ण सावधानीक बावजूद, हमरा अन्हापन दैत अछि आ रस्तेमे विश्वासकेँ चुपचाप हेरा दैत अछि।

प्राभाकर: *(विरामक बाद)* मिश्रण स्वयं भ्रम कहल जा सकैत अछि, दुनू मिश्रित ज्ञानसँ परे कोनो तेसर सत्ता मानने बिनु।

वाचस्पति: तखन मिश्रण या तँ स्वयं एकटा ज्ञान थिक — जकरामे, कोन वस्तुक, जँ "चानी–इहाँ" उत्तर देवएवाला किछु वस्तुक नहि, जे ठीक ओ अनिर्वचनीय वस्तु थिक जकर हम तर्क क' रहल छी आ अहाँ ओकरा घुमबाक प्रयास क' रहल छी — वा मिश्रण कोनो ज्ञाने नहि थिक, जकरामे ई एकटा मनुष्यक उत्सुक हाथकेँ भूमि दिस बढ़ब स्पष्ट नहि क' सकैत अछि, किएक तँ हाथ ओहिसँ नहि हिलैत अछि जे ज्ञात नहि थिक। अहाँ शंखक चारू कात एकटा बहुत नीक दीवाल बनौलहुँ, मित्र, आ दुनू कात द्वार खुजल छोड़ि देलहुँ।

अंक चतुर्थ

न वास्तविक, न अवास्तविक

अनिर्वचनीयक स्थापना, आ संसारपर ओकर प्रभाव

(वाचस्पति उठैत छथि आ आचार्य–आसनसँ नीचाँ आबैत छथि, सभाक बराबरमे।)

वाचस्पति: दुइ सम्प्रदाय, ईमानदारीसँ, शंखकेँ हम जे मूल्य मांगैत छी ओ चुकौने बिनु व्याख्या करय प्रयास केलनि, आ दुनू चुपचाप ओ मूल्य बादमे, छोट सिक्कामे, चुका देलनि। अखन हमरा स्पष्ट कहय दिअ जे हम की सोचैत छी घटित भेल जखन ओ मनुष्य चानीक हेतु हाथ बढ़ौलक जे ओतय नहि छल, आ सभाकेँ एकरा ओतबे कठोरतासँ जाँचय दिअ जतबे बाकीकेँ जाँचल गेल।

जे चानी ओ देखलनि, से *वास्तविक* नहि छल — किएक तँ जँ ओ होइत, तँ हुनक ज्ञान ठीक ढंगसँ "शंख" वा, बहुत दूर, "चानी, बाजारमे वापस" क रूप लैत, कहियो "चानी, इहाँ" नहि। कोनो सत्य वस्तु एकहि समय स्वयं आ ओतय स्थित नहि भ' सकैत अछि जतय ओ प्रत्यक्षतः नहि अछि।

न ओ चानी *केवल अवास्तविक* छल, कोनो वस्तुए नहि, खरहाक सिंग वा बाँझ स्त्रीक पुत्रक समान — किएक तँ पूर्णतः अनस्तित्व कहियो अनुभवमे प्रवेश नहि करैत अछि। संसारक इतिहासमे कहियो, एकहु बेर, केओ खरहाक सिंग दिस उत्सुकतासँ हाथ नहि बढ़ौलक ई विश्वास करैत जे ओ ओकरा भूमिपर चमकैत देखलक। जे किछु ओकरा चमकल, से *किछु* छल, हुनक हाथकेँ हिलएबाक हेतु पर्याप्त।

आक्षेपक: तखन कहू ई दुनू एकसंग वास्तविक आ अवास्तविक छल, आ ईमानदारीसँ विरोधाभास पूर्ण करू, बजाय एकटा तेसर शब्द गढ़ि ओहिमे छिपबाक।

वाचस्पति: हम नहि क' सकैत छी, आ इएह कारण अछि, जतेक स्पष्टतासँ हम कहि सकैत छी: "वास्तविक" आ "अवास्तविक" एकहि पैमानापर दुइ छाया नहि थिक जकरा कोनो वस्तु मिला सकए, जेना धूसर कारी आ उज्जरकेँ मिलबैत अछि। ओ प्रत्यक्ष विरोधी थिक, बीचक सम्पूर्ण क्षेत्रकेँ समाप्त करएवाला — एककेँ मानब पहिनहि सँ, एकहि साँसमे, दोसराकेँ अस्वीकार करब थिक। एकहि वस्तु एकहि संबंधक अंतर्गत एकसंग मानल आ अस्वीकृत नहि भ' सकैत अछि बिनु वाक्यक शोरमे ढहलाक। तँए चानी न पूर्णतः वास्तविक छल, न पूर्णतः अवास्तविक, न दुनूक कोनो सुसंगत मिश्रण — ओ *अनिर्वचनीय* छल: ओहि भेदक संदर्भमे अवर्णनीय, वास्तविकताक सम्पूर्ण जीवंततासँ प्रकट, किछुओ ओहिपर टिकल नहि जे ओकरा वास्तविक रूपमे बचा सकए, आ एकटा स्थिर प्रकाशद्वारा सुधारल जाइते लुप्त भ' जाएवाला।

आक्षेपक: एकटा सुखद सूत्र, ओहि सिक्काक हेतु जे कहियो केकरो थैलीसँ हराएल नहि छल। मुदा हमरा एकरा एकटा दोकानदारक अलमारीसँ बेसी बड़ किछुक कुंजी रूपमे किएक विश्वास करबाक चाही?

वाचस्पति: किएक तँ इएह त्रि-भागीय परीक्षा, एक शब्दो बदलने बिनु, ओहि सम्पूर्ण संसारपर लागू होइत अछि जकरामे अहाँ ठाढ़ छी जखन अहाँ हमरासँ ई प्रश्न पूछैत छी। मृगमरीचिका विचारू: गरम बालूकेँ पार करएवाला एकटा यात्री आगू पानि चमकैत देखैत अछि — केवल स्मृति नहि, किएक तँ ओ अखन, हुनक सोझाँ देखल जाइत अछि; सरल सत्य सेहो नहि, किएक तँ जँ

एकटा प्यासल मनुष्य ओहि दिस दौड़ल आ पीबय चेष्टा केलक, ओकरा मुँहमे बालू पाओत, आर किछुओ नहि। पानि *ओतय* अछि, ठीक जे चानी केलक ओहिना करैत: जीवंत, स्थित, अग्राह्य, अनिर्वचनीय। अखन इएह तर्ककेँ एक कदम आर विस्तारित करू, आ अहाँ ठीक ओहि तर्क धरि पहुँचब जकरा ई सम्पूर्ण गुच्छ — ई सम्पूर्ण अन्वेषण — अहाँकेँ पहुँचाबय हेतु बनल छल। जकरा अहाँ अपन शरीर कहैत छी; जे इंद्रियसँ अहाँ हमरासँ तर्क करैत छी; ई सभा, ई दीप, ई साँझ स्वयं — सभटा *नव* थिक, हमरा सभक आँखिक सोझाँ उठैत आ बदलैत, ठीक जेना मृगमरीचिकाक पानि नव छल ओहि क्षण जखन प्रकाश बालूपर ठीक ओहि ढंगसँ पड़ल। आ सभटा अध्यस्त थिक, ठीक जेना मृगमरीचिकाक पानि आ शंखक चानी अध्यस्त छल, एकटा एहन आधारपर जे स्वयं नहि बदलैत अछि: एकल, चेतन आत्मा जे अहाँक बालकपनक शरीरक देखबामे उपस्थित छल, बिनु बदलल, आ अहाँ आइ राति जे शरीर धारण केने छी ओकर देखबामे सेहो। सम्पूर्ण दृश्य, स्पर्शयोग्य, तर्कयोग्य संसार आत्माक संग ठीक ओहिना ठाढ़ अछि जेना चानी शंखक संग ठाढ़ छल — न अंततः वास्तविक, किएक तँ एकटा स्थिर दृष्टि ओकरा बिनु कोनो चिह्नक विलीन क' दैत अछि, न सरल रूपसँ अवास्तविक, किएक तँ हम दुनू एतय छी, ओकरा उपयोग करैत तर्क करय हेतु।

आक्षेपक: *(शांततासँ)* तखन जखन दोकानदार बाजारमे मूर्खकेँ सुधारैत अछि, आ मूर्खक आँखि साफ होइत अछि, आ शंख फेर मात्र शंख भ' जाइत अछि — अहाँ हमरा कहि रहल छी जे ई ओहि एकटा सुधारक एकटा छोट, सामान्य पूर्वाभ्यास थिक जकरा हम सभकेँ, देर–सबेर, गुजरबाके चाही।

वाचस्पति: इएह ठीक अछि जे हम अहाँकेँ कहि रहल छी। ई सम्पूर्ण विद्या — ई सम्पूर्ण भामती, जँ अहाँ एकटा पुरान टीकाकारकेँ अपन हॉलमे अपन पुस्तकक नाम लेबय दिअ — किछुओ आर नहि थिक सिवाय दीपक धीरे–धीरे, धैर्यसँ सुधार्ने, जाहिसँ जखन हम सभ अंततः देखी ओ किछु जकरा हम सभ पूरा जीवन चानी कहैत रहलहुँ, हम सभ, बिनु घबरएने आ बिनु कोनो क्षतिक, देखी जे ई एकटा शंख छल — आ, शंख होएबाक कारणे आ आर किछुओ नहि, कहियो हमरा सभक सुखक आधार नहि रहल।

(एकटा लम्बा स्थिरता। प्राभाकर आ नैयायिक एक–दोसरा दिस देखैत छथि मुदा बजैत नहि छथि।)

उपसंहार

(सूत्रधार वापस आबैत अछि, आ द्वार लगसँ शंख उठबैत अछि, दीपक प्रकाशमे एक बेर घुमाकऽ फेर ओकरा नीचाँ राखि दैत अछि।)

सूत्रधार: एहि सभामे आइ राति केओ तर्क नहि केलक जे ओ मनुष्य चानीक हेतु हाथ बढ़ाएब ठीक छल। विवाद केवल इएह छल जे *चानी कतय छल, जखन ओ भूल केने छल* — आ ओ विवाद, एक बेर ओकरा ओकर अंत धरि अनुसरण कएलापर, दर्शन जे प्रश्न पूछब जनैत अछि, ओहिमेसँ सबसँ बड़ प्रश्न पुछैत अछि, सबसँ छोट वेशमे। वाचस्पति मिश्र शंखक आविष्कार नहि केलनि। एहि सभामे प्रतिनिधित्व करएवाला हर परंपरा एकरा एकहि पुरान उदाहरणसँ विरासतमे पाओलक, शताब्दियोंक हाथसँ घुमाओल, ठीक जेना हम अखने एकरा घुमौलहुँ। ओ जे केलनि, से इएह छल जे केकरो सेहो सभासँ बाहर जाय नहि देलनि जाबे धरि ओ स्पष्ट नहि कहलक जे भूल पकड़लासँ आधा–सेकंड पहिने की भेल छल, ओ की सोचैत छल। जँ अहाँ आइ राति घर एहि प्रश्नकेँ अपने हाथमे घुमबैत जाइत छी, तँ नाटक इएह क' चुकल अछि जकरा प्रेरित करएवाला टीका करय हेतु लिखल गेल छल।

(सभ पात्र प्रस्थान करैत छथि। दीप अंतमे बाहर लऽ जाओल जाइत अछि, आ शंख, जेना ओ भेटल छल, द्वार लग छोड़ि देल जाइत अछि।)

वाचस्पति मिश्रक भामतीक आरंभिक (अध्यास) खंडक केंद्रीय ज्ञानमीमांसीय तर्कक अनुसरण करैत अछि — "हम" क अनुभवक विश्लेषण, भ्रमक तीन शास्त्रीय सिद्धांत (नैयायिकक अन्यथाख्याति, प्राभाकरक अख्याति, आ अद्वैतवादीक अपन अनिर्वचनीय–ख्याति, शंख–चानी आ मृगमरीचिका–जलक उदाहरणद्वारा एतय स्थापित), आ एकटा एकल भुलायल प्रत्यक्षक स्थितिसँ आत्माक संबंधमे सम्पूर्ण दृश्यमान संसारक स्थिति धरिक विस्तार। ई चारि ब्रह्मसूत्र (अथातो ब्रह्मजिज्ञासा, जन्माद्यस्य यतः, शास्त्रयोनित्वात्, आ तत्तु समन्वयात्) संबंधी बादुक अध्यायकेँ स्पर्श नहि करैत अछि, जे ब्रह्मक परिभाषा आ वेदक अधिकारक अलग प्रश्न उठबैत अछि, आ जकरा एकटा आर अंक अपन अधिकारमे नाट्यरूपित क' सकैत अछि। ई संवाद ग्रंथक तर्क–संरचनाक चारू कात निर्मित रचना थिक; आ नैयायिक, प्राभाकर, आ आक्षेपक संयुक्त पात्र थिक जे टीका स्वयं परखल आ उत्तरित मतकेँ स्वर दैत अछि, नामित ऐतिहासिक व्यक्तिक चित्रण नहि।

भामती

कथा, आख्यान, दृष्टान्त आ उद्धरण

सभा शान्त भेल। सूत्रधार शिष्यसभ आ गामक लोकक बीच ठाढ़ भऽ, धीर स्वरमे कहलनि—“आब ओ पुरान दृष्टान्त सुनू, जे एहि वादक जड़िमे बसल अछि। ई कोनो एकक थाती नहि; जे सुनल, से बुझल।” आ ओ एक-एक कऽ सुनाबय लगलाह।

राजपथक पानि आ गङ्गाक धारा—जहिना राजपथक पानि गङ्गाक धारमे पड़ि शुद्ध भऽ जाइत अछि, तहिना हमरा सन लोकक तुच्छ वचन आचार्यक रचनासँ जुड़ि पवित्र भऽ जाइत अछि।

स्वप्नक दिव्य देह आ योगबलसँ बाघ—एहि अतिरिक्त, जे व्यक्ति स्वप्नमे दिव्य देह धारण कऽ तदनुकूल सुख भोगैत अछि, ओ जागलापर अपनाकेँ मानवी देहसँ युक्त देखि “हम देव नहि, मनुष्य छी” कहैत अछि। एतय दिव्य देह बाधित भऽ जाइत अछि, मुदा देहसँ भिन्न “हमपन”क अधिष्ठान अबाधित रूपमे अनुभूत होइत अछि। फेर,

योगबलसँ बाघ बनि जाएबवाला व्यक्ति देहक भिन्नताक बादो आत्माक अभिन्नता अनुभव करैत अछि; तेँ देह "हमपन"क अधिष्ठान नहि अछि।

स्फटिक आ जपाकुसुम—उदाहरणार्थ, स्फटिक फूलसँ भिन्न बुझल जाइत अछि; तैयो ओकर पूर्ण पारदर्शिताक कारण जपाकुसुमक प्रतिबिम्ब पड़लासँ "लाल स्फटिक"क अनुभवमे लालिमाक भ्रान्ति उत्पन्न होइत अछि।

पर्वतक वृक्ष आ घासक पत्ती—कारण "हम एही निवासमे छी आ ज्ञान करैत छी" एहि निर्णयमे सर्वव्यापी आत्मा सीमित रूपमे ज्ञात होइत अछि—जहिना समतल भूमिपर ठाढ़ व्यक्तिक दृष्टिमे ऊँच पर्वतक शिखरक विशाल वृक्षसभ घासक पत्ती सन देखाइत अछि।

कालाक्षी, स्वस्तिमती आ देवदत्त—कारण कालाक्षी नामक गाएमे पहिने स्वस्तिमती गाएमे देखल गोत्वक प्रतीति होइत अछि। तहिना पाटलिपुत्रमे पहिने देखल देवदत्त कैँ माहिष्मतीमे देखलापर आन ठाम ओही देवदत्तक प्रतीति होइत अछि। ई दुनू यथार्थ ज्ञान अछि।

शुक्तिक पीतता आ चीनीक तीतता—एही परिभाषा "शुक्ति पीयर अछि" आ "चीनी तीत अछि" सन अनुभवपर सेहो लागू होइत अछि। प्रक्रिया ई अछि—आँखिसँ निकलैत अत्यन्त निर्मल किरणक सम्पर्कमे आयल पित्तमे स्थित पीत वर्ण पित्तसँ पृथक अनुभव होइत अछि; शुक्तियो अनुभव होइत अछि, मुदा इन्द्रियदोषक कारण ओकर श्वेतता आच्छादित रहैत अछि। पीत वर्णक शुक्तिसँ असम्बन्ध अनुभव नहि होइत अछि। असम्बन्ध नहि बुझल जाएबक समानताक कारण पहिने "पीयर सोनाक ढेरी" वा "पीयर बेलक फल" इत्यादि अनुभवमे देखल समानाधिकरण-सम्बन्ध पीतता आ शुक्तित्वपर आरोपित होइत अछि, आ व्यक्ति "पीयर शुक्ति" कहैत अछि। "चीनी तीत अछि" एहि अनुभवक व्याख्या सेहो एही प्रकार होएत।

शुक्ति-रजत आ द्विचन्द्र—ई असत्यता केवल तत्त्वजिज्ञासुसभक मतमे नहि, साधारण लोकक अनुभवमे सेहो सिद्ध अछि; तेँ भाष्यकार कहैत छथि—"लोकमे हमरासभक अनुभव एहेन अछि—शुक्ति रजत जकाँ प्रकट होइत अछि।" "मुदा ई रजत नहि अछि"—ई पहिल वाक्यक पूरक अछि। मानि लिअ। एक वस्तु दोसरक स्वरूपक अछि—एहन भ्रम अनुभवसिद्ध अछि; मुदा जे वास्तवमे एक आ अभिन्न अछि, ताहिमे

भेदक भ्रम देखल नहि जाइत अछि। तखन चैतन्य आत्मासँ अभिन्न जीवसभमे भेदभ्रम कतयसँ आएल? एकर उत्तर भाष्यकार दैत छथि—“एक चन्द्रमा होइतहुँ ओ दोसर चन्द्रमासहित जकाँ प्रकट होइत अछि।”

अन्हरक शृङ्खला—तीनूक परस्पर आश्रय सेहो कोनो लाभ नहि देत; कहबियो अछि—“अन्हर अन्हरक हाथ पकड़ि प्रत्येक डेगपर खसैत अछि।”

गान्धार देशक मार्ग—श्रुति कहैत अछि—“एकरा सुनबाक, मनन करबाक अछि”; आ “पण्डित बुद्धिमान व्यक्ति गान्धार देश पहुँचि जाइत अछि”—अर्थात् आचार्यवाला मनुष्य अपन बुद्धिसँ सहायता पबैत अछि।

भृगु आ वरुण—भृगु, वरुणक पुत्र, अपन पिता वरुणक समीप गेलाह आ कहलनि—“भगवन्, हमरा ब्रह्मक उपदेश दिअ।” एतयसँ आरम्भ भऽ कऽ कहल गेल अछि—“जाहिसँ ई सभ प्राणी उत्पन्न होइत अछि, उत्पन्न भऽ कऽ जाहिसँ जीवित रहैत अछि, आ जाहिमे अन्ततः प्रवेश करैत अछि, ओहि केँ जानबाक इच्छा करू; ओ ब्रह्म अछि।” ई एहि विषयक निर्णायक वाक्य अछि। “आनन्दहि सँ ई सभ प्राणी उत्पन्न होइत अछि; आनन्दहि सँ उत्पन्न भऽ कऽ जीवित रहैत अछि; आनन्दहि मे प्रवेश करैत अछि”—ईहो निर्णायक वाक्य अछि।

रस्सी आ सर्प—‘ई रस्सी अछि, सर्प नहि’ एहन तथ्यवचन भ्रमजनित भय हटबैत अछि; तइ प्रकार आत्मा संसारधर्मी नहि छथि—एहि सत्यक ज्ञान संसारित्वक भ्रम हटबैत अछि।

वामदेव ऋषि—श्रुति एहि बातकेँ आरो दृढ़ करैत अछि—एकरस ब्रह्मस्वरूप देखने व्यक्ति लेल फेर की भ्रम आ की शोक? वामदेव ऋषि ब्रह्मकेँ देखि तत्काल बुझलनि—“हम मनु भेलहुँ, हम सूर्य भेलहुँ।”

शोकक पार लऽ जानिहार सनत्कुमार—“अहाँ हमर पिता छी, जे हमरा अज्ञानक पार लऽ जाइत छी”; “हम आत्मज्ञानी व्यक्तिसँ सुनने छी जे आत्माकेँ जाननिहार शोकक पार उतरैत अछि; हम शोकमे छी, हमरा शोकक पार लऽ चलू”; “सनत्कुमार हुनका अन्धकारक पार लऽ गेलाह”—एहन श्रुतिसभ ब्रह्मज्ञानक फल मोक्षमे बाधक अज्ञानक निवृत्ति मात्र बतबैत अछि।

नाविक आ समुद्रक शान्त मध्यभाग—नाविक नावमे रहि परिवर्तनशील समुद्रतट, फेनसमूह आ तरङ्गसभ छोड़ि तरङ्गरहित, शान्त, स्वच्छ, स्थिर आ अपरिवर्तनशील मध्यभागमे पहुँचैत अछि। मुदा जीव ब्रह्मसँ भिन्न नहि, स्वयं ब्रह्म छथि; तखन जीव की प्राप्त करथि आ कोन साधनसँ? प्राप्ति भेदपर आधारित अछि। जँ जीव ब्रह्मसँ भिन्न मानल जाए, तखनो सर्वव्यापी ब्रह्म नित्यप्राप्त छथि; एहि कारण 'अपन स्वभावसँ भिन्न होइतहुँ' शब्दसँ आपत्ति निरस्त कएल गेल अछि।

दुइ पक्षी—'हम' प्रत्ययक विषय, ज्ञानक कर्ता आ कर्मफल भोक्ता जीव छथि। मन्त्र कहैत अछि—"एक पक्षी मधुर फल खाइत अछि, दोसर नहि खाइत केवल देखैत अछि।" फल खेनिहार जीवात्मा छथि; नहि खेनिहार साक्षी परमात्मा छथि।

सुमेरु—"पर्वतराज सुमेरु इन्द्रादि लोकपालसभ, सिद्ध, विद्याधर, गन्धर्व आ अप्सरासभक समूहक निवासस्थान अछि; ब्रह्मलोकसँ झहरैत मन्दाकिनीक जलधारासँ धोएल सुवर्णशिलासँ बनल अछि, आ नन्दनवनसदृश रमणीय उपवनमे खेलैत स्फटिकसदृश पक्षीक स्वर सँ मनोहर अछि"।

द्रविड़, देवदत्त आ पुत्रजन्म—आर्यभाषाक अर्थ नहि जाननिहार एक द्रविड़ नगर जाय लेल राजमार्गक कात देवदत्तक घरमे बैसल अछि। ओ जानैत अछि जे पुत्रजन्म पिताक आनन्दक कारण होइत अछि। ओ दूतक संग नगरमे देवदत्तक लग जाइत अछि। दूत शिशुक पयर धोएल केसरजलमे भिजाओल वस्त्र अर्पित कऽ कहैत अछि—"देवदत्त, अहाँक समृद्धि बढ़य; अहाँक पुत्र जन्मल अछि।" ओ तत्क्षण देवदत्तक रोमाञ्च, आँखि आ मुखकेँ पूर्ण विकसित कमल जकाँ खिलल देखैत अछि। ओ देवदत्तमे उत्पन्न आनन्दक अनुमान करैत अछि, आ ईहो अनुमान करैत अछि जे जे आनन्द पहिने नहि छल आ वचन सुनितहि उत्पन्न भेल, ओकर कारण ई वचन अछि। ओ बुझैत अछि जे वाक्य एहन अर्थ कहलक जे आनन्दक कारण अछि; कारण आनन्दक कारण अर्थ नहि सिखबैत ई कथन स्वयं आनन्द उत्पन्न नहि कऽ सकैत। दोसर कोनो आनन्दकारण देखाइत नहि, आ पुत्रजन्म आनन्दक कारण बुझल जाइत अछि; अतएव ओ निश्चय करैत अछि जे दूत एहि बातेक सूचना देलक। भय, शोक आदि विषयमे सेहो एही प्रकार उदाहरण बुझबाक चाही।

वृद्ध व्यक्ति आ सीखयवला बालक—“ज्वर भेलापर पथ्य भोजन करू” अथवा “साँपकेँ अपन औँठी नहि दिअ” सुनि वृद्ध व्यक्ति पथ्य ग्रहण करैत छथि, वा औँठी देबाक प्रवृत्ति छल ताहिसँ निवृत्त होइत छथि। ई देखि सीखयवला बालक अनुमान करैत अछि जे वृद्धक प्रवृत्ति आ निवृत्तिक कारण क्रमशः इच्छा आ द्वेष अछि। वृद्धक प्रवृत्ति-निवृत्ति स्वतंत्र अछि आ इच्छा-द्वेषसँ उत्पन्न अछि, जइ प्रकार हमर अपन प्रवृत्ति-निवृत्ति।

धनवान् गृहस्थ—धनवान् गृहस्थ धनमे अपनत्वबुद्धि रखैत अछि, ताहि कारण धन चोरी भऽ जयबाक भय ओकरामे रहैत अछि; मुदा ओही व्यक्ति धन त्यागि धनाभिमानसँ मुक्त भऽ गेलापर धन चोरी भऽ जयबाक ओ भय नहि रहैत।

कुण्डलधारी व्यक्ति—तहिना कुण्डल धारण कएनिहार व्यक्ति कुण्डलधारणक अभिमानसँ सुख अनुभव करैत अछि; मुदा ओही व्यक्ति कुण्डल त्यागि कुण्डलधारणक अभिमानसँ मुक्त भऽ गेलापर कुण्डलधारणजन्य सुख ओकरामे नहि रहैत।

सिंह, खम्भा आ सीप—उदाहरणार्थ, अयाल आ विशिष्ट आकृतिवला पशुमे सहस्थिति आ सहाभावद्वारा ‘सिंह’ शब्द आ सिंहबुद्धिक मुख्य अर्थ सिद्ध होइत अछि। क्रूरता, साहस आदि सिंहक सामान्य गुणसँ युक्त कोनो मनुष्य लेल ओही ज्ञानी व्यक्तिक ‘सिंह’ शब्द आ सिंहबुद्धि गौण रूपेँ प्रयुक्त होइत अछि। मुदा जकरा सिंह आ मनुष्यक भेद ज्ञात नहि, ओकरामे एक वस्तुक शब्द आ बुद्धि दोसर वस्तुमे गौणतासँ नहि, भ्रमसँ उत्पन्न होइत अछि। साँझक धुँधलकामे जकर विशिष्टता स्पष्ट नहि भेल, ओहि खम्भाकेँ ‘ई मनुष्य अछि’ बुझल जाइत अछि; एतय मनुष्य-शब्द आ मनुष्यबुद्धिक विषय खम्भा भऽ जाइत अछि। तहिना सीपमे अज्ञात कारणसँ ‘ई चानी अछि’ एहन शब्द आ बुद्धि उत्पन्न होइत अछि।

साँपक त्यक्त केंचुली—जइ प्रकार साँपक त्यक्त केंचुली बाँबीपर मृत आ फेकल पड़ल रहैत अछि, तहिना ई शरीर पड़ल रहैत अछि; तखन ई अशरीर, अमृत प्राण ब्रह्म मात्र, ज्योति मात्र अछि।

दृष्टान्त कहि चुकलाक बाद सूत्रधार किछु काल मौन रहलाह। फेर बजलाह—“आब ओ वचन सुनू, जे युग-युगसँ श्रुति, ऋषि आ शास्त्र कहैत आयल छथि।” आ ओ एक-एक कऽ पुरान उद्धरण सुनाबय लगलाह।

विधिवाक्यमे शब्दक अर्थ ओकर मुख्य अर्थसँ भिन्न नहि भऽ सकैत अछि। जतय पूर्व आ उत्तरक सम्बन्ध हो, ओतय पूर्व पक्ष दुर्बल होइत अछि, जहिना प्रकृति-कर्मक प्रसङ्गमे। जतय दुनू ज्ञान परस्पर निर्भर नहि रहि क्रमशः उत्पन्न होइत अछि, ओतय पछिलुक ज्ञानक श्रेष्ठता पहिलुक पर ज्ञात होइत अछि। अभाव दोसर वस्तुक सम्बन्धमे विचारल आन भाव मात्र अछि। कोनो समय कोनो व्यक्ति वस्तुक सत्ता कैँ या तँ ओहि वस्तुक अपन स्वरूपक सम्बन्धमे अथवा आन वस्तुक सम्बन्धमे सत्य वा असत्य रूपमे ग्रहण करैत अछि। अभाव आन रूपक भावे अछि, आन किछु नहि; कारण एहन कोनो पृथक् वस्तु सिद्ध नहि अछि। ब्रह्म सत्य, ज्ञान आ अनन्त अछि।

अन्हर अन्हरक हाथ पकड़ि प्रत्येक डेगपर खसैत अछि। ओ प्रकाशित भेलापर सभ किछु प्रकाशित होइत अछि; ओकर इजोतसँ ई समस्त प्रकाशित अछि। जे स्वर्ग चाहैत अछि, से ज्योतिष्टोम यज्ञ करए। कोनो प्राणी कैँ चोट नहि पहुँचाउ। जे अपन शत्रु कैँ अभिचारकर्मसँ मारए चाहए, से श्येन यज्ञ करए। अध्यास ओहि वस्तुक ज्ञान ओहि रूपमे होएब अछि जाहि रूपमे ओ नहि अछि। पहिने देखल वस्तुक स्मृतिसदृश रूपमे अन्यत्र प्रकट होएब।

अतः आब ब्रह्म कैँ जानबाक इच्छा। ॐ आ अथ—ई दुइ शब्द ब्रह्माक कण्ठसँ पहिने प्रकट भेल; अतः दुनू मङ्गलकारी अछि। दीर्घकाल धरि, निरन्तर आ सत्कारपूर्वक अभ्यास कएल चित्तानुशासन दृढ़ आधार पबैत अछि। ओहि एक कैँ जानि विद्वान ब्राह्मण प्रज्ञाक अभ्यास करए। जकर ई अड़तालीस शुद्धिकारक संस्कार सम्पन्न भेल अछि। तीन ऋण चुकाए मनुष्य मोक्षमे चित्त लगाबए। ब्राह्मण वेदाध्ययन, यज्ञ आदि द्वारा ओकरा जानबाक इच्छा करैत छथि।

न कर्मसँ, न सन्तानसँ, न धनसँ, केवल त्यागसँ अमृतत्व प्राप्त होइत अछि। शुद्ध बुद्धिवाला मनुष्य ध्यान द्वारा ब्रह्म कैँ देखैत अछि। पापक क्षय भेलापर ज्ञान उत्पन्न होइत अछि। योग प्राप्त करबाक इच्छुक मुनिक लेल कर्म कारण कहल गेल अछि; योगारूढ़क लेल शम कारण कहल गेल अछि। अथवा छात्रावस्थासँ सेहो सीधे संन्यास ग्रहण करए। गृहस्थ भऽ, तखन वनवासी हो; वनवासी भऽ, तखन संन्यास ग्रहण कर। नियमानुसार वेद पढ़ि, पुत्र उत्पन्न कऽ, अपन सामर्थ्यानुसार यज्ञ कऽ, मन कैँ मोक्षमे लगाबए।

जे द्विज वेद नहि पढ़ि, सन्तान नहि उत्पन्न कऽ आ यज्ञ नहि कऽ मोक्षक इच्छा करैत अछि, ओ अधोगति पबैत अछि। अथवा छात्राश्रम, गृहस्थाश्रम अथवा वनप्रस्थाश्रम—कोनो अवस्थासँ संन्यास ग्रहण करए। जहि दिन वैराग्य उत्पन्न हो, ओही दिन संन्यास ग्रहण करए। शम, दम, उपरति, तितिक्षा, समाधान आ श्रद्धासँ सम्पन्न भऽ मनुष्य आत्मा कैँ आत्मामे देखैत अछि, आ आत्मामे सभ किछु देखैत अछि। हम सोम पी चुकल छी, अमर भऽ गेल छी। जाहिसँ एहि जगतक उत्पत्ति आदि होइत अछि। ब्रह्म कैँ जाननिहार स्वयं ब्रह्म भऽ जाइत अछि।

आरम्भमे केवल अस्तित्व छल, हे प्रिय। जाहिसँ ई सभ प्राणी उत्पन्न होइत अछि, उत्पन्न भऽ कऽ जाहिसँ जीवित रहैत अछि, आ जाहिमे अन्ततः प्रवेश करैत अछि, ओहि कैँ जानबाक इच्छा करू; ओ ब्रह्म अछि। आनन्दहि सँ ई सभ प्राणी उत्पन्न होइत अछि; आनन्दहि सँ उत्पन्न भऽ कऽ जीवित रहैत अछि; आनन्दहि मे प्रवेश करैत अछि। सदेव सोम्य इदमग्र आसीत्। एकमेवाद्वितीयम्। आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्। ई ब्रह्म पूर्व-पश्चिम, भीतर-बाहर सभसँ रहित अछि।

ई आत्मा ब्रह्म अछि, सभक अनुभवकर्ता। अमर ब्रह्म मात्र सभ दिशामे अछि। तत्त्वमसि। अहं ब्रह्मास्मि। अयमात्मा ब्रह्म। शरीरधारी रहैत सुख-दुःखक सम्पूर्ण नाश सम्भव नहि। अशरीरीकैँ प्रिय-अप्रिय स्पर्श नहि करैत।

बुद्धिमान पुरुष देहमे रहैतहुँ आत्माकैँ अशरीर, परिवर्तनशीलमे स्थिर, महान् आ सर्वव्यापी जानि शोक नहि करैत। ई आत्मा प्राणरहित, मनरहित, शुद्ध अछि। धर्मसँ भिन्न, अधर्मसँ भिन्न, कृत-अकृतसँ भिन्न, भूत-भविष्यसँ भिन्न जे अछि, से कहू। जे ब्रह्म जानैत अछि, ओ ब्रह्म भऽ जाइत अछि। परावर ब्रह्म देखलापर ओकर कर्म नष्ट भऽ जाइत अछि। ब्रह्मानन्द जाननिहार कतहुँसँ भय नहि पबैत। हे जनक, अहाँ अभय प्राप्त कऽ लेलहुँ।

आत्माकैँ 'हम ब्रह्म छी' रूपेँ जानल, ताहिसँ ई सम्पूर्ण जगत भऽ गेल। हृदयक ग्रन्थि छिन्न होइत अछि, समस्त संशय नष्ट होइत अछि, कर्मसभ क्षीण भऽ जाइत अछि। हम मनु भेलहुँ, हम सूर्य भेलहुँ। अहाँ हमर पिता छी, जे हमरा अज्ञानक पार लऽ जाइत छी। हम आत्मज्ञानी व्यक्तिसँ सुनने छी जे आत्माकैँ जाननिहार शोकक पार उतरैत अछि; हम

शोकमे छी, हमरा शोकक पार लऽ चलू। सनत्कुमार हुनका अन्धकारक पार लऽ गेलाह। ओ ज्ञातसँ भिन्न छथि, अज्ञातसँ सेहो परे छथि।

जकर द्वारा सभकेँ जानल जाइत अछि, ओकरा केना जानब? जे वाणी सँ प्रकट नहि होइत, बल्कि जकर कारण वाणी प्रकट होइत अछि, ओहि केँ ब्रह्म जानू, उपास्य वस्तु नहि। जकरा द्वारा ई विचारल जाइत अछि, ओ ओकरा नहि जानैत; जे कहैत अछि 'हम जानैत छी', ओ नहि जानैत। दृष्टिक द्रष्टाकेँ नहि देखि सकैत, श्रवणक श्रोताकेँ नहि सुनि सकैत, मननक मनिताकेँ नहि सोचि सकैत, ज्ञानक ज्ञाताकेँ नहि जानि सकैत। एक पक्षी मधुर फल खाइत अछि, दोसर नहि खाइत केवल देखैत अछि। शरीर, इन्द्रिय आ मनसँ संयुक्त आत्माकेँ ज्ञानीजन भोक्ता कहैत छथि। एक देव सभ प्राणीमे गुप्त, सर्वव्यापी, सभक अन्तरात्मा, कर्माध्यक्ष, सभ प्राणीमे निवास करनिहार, साक्षी, चेतन, एक आ निर्गुण छथि।

ओ सभमे व्याप्त, तेजस्वी, अशरीरी, घावरहित, स्नायुरहित, शुद्ध आ पापरहित छथि। आत्माकेँ देखबाक, सुनबाक चाही। जखन ई सभ आत्मे अछि, तखन केकर द्वारा आ केकरा देखल जाएत?... केकर द्वारा आ केकरा जानल जाएत?... ज्ञाताकेँ केकर द्वारा जानल जाएत? जँ मनुष्य आत्माकेँ 'हम ओ छी' एहि रूपमे जानि लैत, तखन कोन वस्तुक इच्छा आ कोन प्रयोजनसँ शरीरक दुःखक संग दुःखी होयत? ई जानि मनुष्य ज्ञानी आ कृतकृत्य भऽ सकैत अछि, हे भारत। ओकर प्रकाशसँ दोसर सभ प्रकाशित होइत अछि; ओकर प्रकाशेँ ई सम्पूर्ण जगत् प्रकाशित अछि। आत्मासँ उच्चतर किछु नहि; ओएह सीमा आ परम गति छथि।

सभ वस्तु सभ वस्तुक प्रेमक कारण प्रिय नहि, आत्माक प्रेमक कारण सभ वस्तु प्रिय अछि। जइ प्रकार साँपक त्यक्त केंचुली बाँबीपर मृत आ फेकल पड़ल रहैत अछि, तहिना ई शरीर पड़ल रहैत अछि; तखन ई अशरीर, अमृत प्राण ब्रह्म मात्र, ज्योति मात्र अछि। आँखि रहितहुँ मानू आँखि नहि, कान रहितहुँ मानू कान नहि, वाणी रहितहुँ मानू वाणी नहि, मन रहितहुँ मानू मन नहि, प्राण रहितहुँ मानू प्राण नहि। विद्या आ अविद्या दुनूकेँ संग-संग जाननिहार अविद्याद्वारा मृत्युकेँ पार करैत अछि आ विद्याद्वारा अमरत्व प्राप्त करैत अछि।

एतबा कहि सूत्रधार हाथ जोड़ि सभाकेँ प्रणाम कयलनि। “जे सुनल, से मनन करू; जे मनन कयल, से जीबू,” ओ कहलनि, आ मौन भऽ गेलाह।

अध्याय **[−९९] (निनानबे)**

आत्मसिद्धि–वाद

जे 'हम' कहै छै, तकर गवाह ओकर अपने साँस— पोखरि अपन गहिराइ केकरो सँ नहि पुछै।

— गढ़ नारिकेल

(भूमिका, चारि अंक आ उपसंहारमे विभक्त एकटा मौलिक नाट्य–रचना; तर्क–संरचना पर आधारित ।)

पात्र–परिचय

सूत्रधार — नाटकक आरंभ आ समापन करएवाला

उदयनाचार्य — मिथिलाक नैयायिक, आत्माक अस्तित्वक समर्थक (सिद्धांती)

क्षणभद्र — क्षणभंगवाद आ विज्ञानवादक बौद्ध भिक्षु–तार्किक, पूर्वपक्षी — ग्रंथमे परीक्षित बौद्ध मतक प्रतिनिधित्व करएवाला एकटा संयुक्त काल्पनिक पात्र

शिष्य — उदयनक शिष्य, जे सभाक जिज्ञासाकेँ शब्द दैत अछि

परिषद् — विद्वत्सभा, जे कतहु सहमतिमे मुँड़ी हिलबैत अछि, कतहु संशयमे

स्थान: मिथिलाक एकटा राजसभाक वाद–शाला। दिन रहितहुँ दीप जरैत अछि। घटिका–यंत्र (जल–घड़ी) प्रत्येक वक्ताकेँ देल गेल समय नापि रहल अछि, जेना प्राचीन वादक नियम छल।

भूमिका

(सूत्रधार प्रवेश करैत अछि, सभार्कें प्रणाम करैत अछि।)

सूत्रधार: वाद शुरू होएब सँ पहिने एकटा प्रणाम — ओहि परमेश्वरकेँ नहि, जकरा तर्कें सिद्ध कएल जा सकैत अछि वा असिद्ध, अपितु ओहि सत्ताकेँ, जकरा कोनो तर्क न त दए सकैत अछि आ न छीनि सकैत अछि। जे किछु अहाँ सुनब, से इतिहास नहि थिक। उदयन भेल छलाह; हुनक विरोधी केवल हुनक पन्नामे जीबैत छथि, जेना दीपकेँ रोकनिहार बाँहिक छाया दीपसँ भिन्न किछु नहि होइत छै। ओहि सभ छायाकेँ मे एकटा वस्त्रमे, एकटा स्वरमे बटोरि केँ ओकरा नाम देने छी क्षणभद्र — "क्षणक भाग्यवान" —– किएक तँ ओ ओहि प्रत्येक आचार्यक हेतु बजैत छथि, जे मानने छलाह जे किछु स्थिर नहि रहैत अछि, जे भीतरसँ बाहर देखएवाला केओ नहि अछि, आ "मे" शब्द केवल एकटा अभ्यास थिक जकरा भ्रमवश सत्य मानि लेल जाइत अछि।

जे विवाद अहाँ सुनब, से एकहि प्रश्नकेँ चारि कोठलीमे पुछैत अछि: *पूछनिहार के अछि?* की केओ अछि जे दुःख भोगैत अछि, स्मरण करैत अछि, बद्ध अछि, आ मुक्त सेहो भ' सकैत अछि — वा केवल एकटा नदी अछि, जे अपनहि लहरिकेँ किनार बुझि बैसैत अछि?

घटिका–यंत्र, आरंभ हुअ। दुनू पक्ष बारी–बारी सँ बाजथि, जेना वादक नियम अछि, आ केओ जीतक दावा तखन धरि नहि करए, जखन धरि दोसराकेँ ओकर पूरा समय न भेटि जाए।

(सूत्रधार, वादक आरम्भसँ पूर्व, एकटा लोकगीत गबैत अछि —)

जे 'हम' कहै छै हे, तकर गवाह अपने साँस,
पोखरि अपन गहिराइ रे, केकरोसँ नहि पुछै।

आत्मा प्रमाण मांगय, मुदा प्रमाण आत्मे;
जे भीतर देखल, से बाहरक गवाह नहि मांगल।
साँस–साँस साक्षी हे, हम–पन थिर रहै रे —
जे अपनाकेँ चिन्हल, से दोसरक गवाहीसँ मुक्त।

(प्रस्थान)

अंक प्रथम

ओ नदी जे अछिये नहि

सर्वस्व–क्षणभंगवाद पर विवाद

(उदयन आचार्य–आसन पर आसीन छथि। क्षणभद्र प्रवेश करैत अछि, हाथ जोड़ने, आ पूर्वपक्षीक आसन ग्रहण करैत अछि। शिष्य उदयनक चरणक लग बैसल अछि।)

क्षणभद्र: आचार्य, घटिका–यंत्रक जल औपचारिकतामे नहि खर्च करब। अहाँ शिक्षा दैत छी जे ई आँखिक पाछू एकटा अचल द्रष्टा बैसल अछि, जे अन्हारसँ डरएवाला बच्चा सँ लऽ क' अन्हारसँ नहि डरएवाला बूढ़ा धरि एकहि रहैत अछि। हम विपरीत सिखबैत छी: जे किछु सत् अछि से एके क्षणमे उत्पन्न होइत अछि आ नष्ट भ' जाइत अछि, आ ओकर स्थानमे एकटा नव वस्तु उत्पन्न होइत अछि, जे पुरनाकेँ केवल एहन बुझाइत अछि जेना धुआँ धुआँकेँ बुझाइत अछि। जकरा अहाँ "एकटा शिखा" कहैत छी, से सैकड़ों शिखा थिक, एक–दोसरकेँ एतेक जल्दी अभिवादन करैत जे विदाई कहाँ समाप्त होइत अछि आ अभिवादन कहाँ आरंभ, से देखबे नहि होइत अछि। कोनो एक देखनिहार नहि अछि। केवल देखब अछि, आ फेर आर देखब, प्रत्येक बेर नव।

उदयन: तखन हम ओ प्रश्न पुछैत छी जकर हेतु वाद बनल अछि: अहाँक प्रमाण की अछि? कविता नहि — प्रमाण।

क्षणभद्र: जे किछु सत् अछि, से क्षणिक अछि। अहाँक अलमारीक घैल क्षणिक अछि — ई तँ अहूँ मानब जे ओ अंततः टूटि जाइत अछि। आ विवादित वस्तु — आत्मा, चिरस्थायी शब्द — सत् अछि। तेँ ओहो क्षणिक होएब चाही।

उदयन: *(शिष्यकेँ)* बुझलहुँ, ई तर्कक रूप? हमरा एकटा टूटएवाला घैल देखा क' ई निष्कर्ष निकालबाक हेतु कहल जा रहल अछि जे एकटा *आत्मा* — जकरा टूटैत आइ धरि केओ नहि देखलक — से सेहो टूटत, एहन सादृश्यक बलपर जे स्थापित कएल नहि गेल अछि। ई प्रमाण नहि, अनुमानक वेश धएने एकटा इच्छा थिक। कहू, क्षणभद्र — "सत् होएब" आ "मात्र एक क्षण रहब" के बीच व्याप्ति कतए अछि? वर्षों धरि रहएवाला घैल ओतबे सत् अछि, जतबे एक क्षण रहएवाला चिनगारी, जतेक काल ओ रहैत अछि। अहाँ एकटा उदाहरण देखौलहुँ। नियम नहि देखौलहुँ।

क्षणभद्र: नियम एना देखाओल जाइत अछि: सामर्थ्य आ असामर्थ्य एकहि वस्तुमे एकहि समयमे नहि रहि सकैत अछि। घैल, पकबाक क्षण भरिक बाद पानि रखबामे समर्थ अछि; पकबासँ पहिने असमर्थ। जँ ई एकहि घैल दुनू — समर्थ आ असमर्थ — होइत, तँ अहाँ एकहि बीजमे एकटा विरोधाभास रोपि देने रहितहुँ। केवल जँ प्रत्येक क्षण अपन अलग वस्तु होइ, तखनहि ई विरोधाभास दूर होइत अछि।

उदयन: अखन हम बातक जड़िमे पहुँचि गेलहुँ, आ हम अहाँकेँ धन्यवाद दैत छी जे एतेक जल्दी एतए पहुँचलहुँ — घटिका–यंत्र सतर्क सँ बेसी शीघ्र विरोधीकेँ पुरस्कृत करैत अछि। स्पष्ट कहू: जकरा अहाँ "सामर्थ्य" कहैत छी, से की कार्यकेँ उत्पन्न करबाक क्रिया स्वयं अछि, वा उत्पन्न करबाक मात्र योग्यता, क्रियासँ पहिनहि?

क्षणभद्र: ...योग्यता। बीज अंकुरित होएबासँ पहिनहि अंकुरित होएबाक योग्य अछि।

उदयन: तखन सुनू ओ फाँस जे अहाँ अपने पएरमे बान्हि लेलहुँ। जँ सामर्थ्य क्रिया स्वयं होइत, तखन अहाँक हेतु अहाँक निष्कर्षमे विलीन भ' जाइत — अहाँ एहन क्रियाक हवाला दैत क्षणभंगवाद सिद्ध करि रहल होइतहुँ जे पहिनहि सँ क्षणभंगवादकेँ मानि लैत अछि, जे कोनो अनुमान नहि, केवल पुनःकथन थिक। तँए अहाँ ठीके योग्यता चुनलहुँ। मुदा योग्यता एक क्षणमे समाप्त नहि होइत अछि। भंडारमे राखल बीज एहि अर्थमे अंकुरणक योग्य अछि जे ओकर अपन स्वभावमे किछु एहन नहि अछि जे अंकुरणकेँ मना करैत होइ — ओकरा केवल जल नहि भेटल अछि, ताप नहि भेटल अछि, माटि नहि भेटल अछि जकरा ओ अखन धरि नहि भेटलक। की बीजक योग्यता ओहि क्षण नष्ट भ' जाइत अछि जखन ओ अंकुरित नहि भ' रहल अछि? जँ एना होइत, तँ कोनो बीज कहियो वर्षाक प्रतीक्षा नहि क' सकैत। मुदा बीज प्रत्येक ऋतुमे वर्षाक प्रतीक्षा करैत अछि, आ प्रतीक्षाक पूरा समय बीजे रहैत अछि। तँए अहाँक "सामर्थ्य" किछु एहन होएब चाही जे ओकर प्रयोगसँ पहिनुक अंतरालमे बनल रहैत अछि — जे स्वयं ओ चिरस्थायी वस्तु थिक जकरा अहाँ अस्वीकार करैत छी।

क्षणभद्र: ई कहू जे प्रत्येक क्षणिक बीज अपन योग्यता अगिला क्षणकेँ सौंपि दैत अछि, जेना मशाल हाथसँ हाथ पहुँचाओल जाइत अछि, प्रत्येक धावक नव, केवल शिखा देखबामे निरंतर।

उदयन: रिले-दौड़केँ एकटा मार्गक आवश्यकता होइत छैक जाहिपर धावक क्रमबद्ध होइत छथि — कोनो कारण जे ई क्षणक योग्यता ओहि क्षणक योग्यताकेँ किएक मिलैत अछि, आन कोनो अलग-थलग क्षणकेँ किएक नहि, कोनो आर क्षेत्रमे, आर देशमे? अहाँ अपन रूपकक पछबाड़ि सँ एकटा

चिरस्थायी वस्तुकेँ भीतर आनि लेलहुँ, जखन कि सोझहाँ सँ ओकरा बाहर देखा रहल छी। आ एहिमे दोसर घाओ अछि, पहिलासँ गहीर: अहाँ कहैत छी जे कोनो वस्तु नष्ट *होबाके चाही किएक तँ ओ अनिवार्यतः नष्ट होइते होएत* — जे विनाशकेँ आर कोनो कारणक आवश्यकता नहि, से सत्ताक स्वभावे थिक। तखन बताउ — धूपमे दस वर्ष धरि ठाढ़ एकटा पाथर, अहाँक मतें, गुप्त रूपसँ दस हजार पाथर भऽ चुकल अछि, प्रत्येक "अपन स्वभावें" नष्ट होइत, तइयो कोनो हथौड़ी, कोनो मौसम, कोनो कारण बिनु ध्यान देने। की ई अहाँकेँ विचित्र नहि लगैत जे परिवर्तन बुझएबाक हेतु बनल एकटा सिद्धांत ओहि एक परिवर्तन — विनाश, जे सभसँ बेसी महत्त्वपूर्ण अछि — क' हेतु कोनो स्पष्टीकरणक आवश्यकता नहि रखने अंत होइत अछि?

क्षणभद्र: *(किछु काल रुकि क')* अहाँ एकटा कठिन जोड़ पर जोर दैत छी, आचार्य। हम मानैत नहि छी — क्षणिक वस्तुक अंत ओहि रूपमे "कारित" नहि होइत अछि जेहन ओकर आरंभ होइत अछि, ठीक एहि लेल जे अस्तित्व आ अनित्यता दू नहि थिक।

उदयन: तखन अहाँ उत्तर नहि देलहुँ; अहाँ कठिनाईकेँ "पहिचान" नाम दऽ देलहुँ आ आशा केलहुँ जे कियो ध्यान नहि दैत घटिका–यंत्र समाप्त भऽ जाइत। ई समाप्त नहि भेल अछि। मुदा हम एहि थाकल बिन्दुकेँ आर नहि घीचब — वैद्यक जकाँ वादीकेँ सेहो बुझबाक चाही जे रोगी निदान बुझि चुकल अछि। एकरा अप्रमाणित छोड़ैत छी — बलपूर्वक अस्वीकार नहि, अपितु कहियो *देखाओल नहि गेल,* आ अहाँक दोसर स्तंभ दिस चलैत छी, जे बेसी भव्य अछि आ बेसी बरी सँ खसत।

अंक द्वितीय

दर्पणक सभागार

बाह्यार्थ–भंग: मनसँ बाहर किछु नहि अछि, एहि मत पर विवाद

(दीप ठीक कएल जाइत अछि। क्षणभद्र उठि क' टहलैत अछि, बेसी उत्साहित।)

क्षणभद्र: तखन ई मानू, आचार्य, अहाँकेँ सोझ प्रश्न पसिन्न अछि तँए: जखन अहाँ एकटा बगीचाक सपना देखैत छी, तखन ओ बगीचा अहाँसँ बाहर अछि की?

उदयन: नहि।

क्षणभद्र: आ तइयो, सपना देखैत काल, ओ बगीचा ओतबे बाहर बुझाइत अछि जतबे ई सभागार अखन अहाँकेँ बुझाइत अछि। जागृत ज्ञान आ स्वप्न–ज्ञान, जे बिन्दु महत्त्वपूर्ण अछि — *बाहर होएबाक अनुभूति* — ओहिमे एके अछि। जँ बाहर होएबाक अनुभूति स्वप्नमे बिनु कोनो बाह्य वस्तुक भ' सकैत अछि, तँ अहाँकेँ अखन ओहि अनुभूतिक पाछू कोनो बाह्य वस्तु मानबाक बाध्यता कतए अछि? शायद ई सम्पूर्ण सभा, ई घटिका–यंत्र, हमर वस्त्र सेहो, एकटा दीर्घ स्वप्न थिक जे अखन धरि समाप्त नहि भेल अछि, ज्ञान अपनहि बाहरी होएबाक रूप रंगैत अछि, किएक तँ ई ज्ञानक स्वभावे थिक, ओकरा रंगबाक हेतु कोनो बाहरक आवश्यकता नहि।

उदयन: एकटा सुखद चक्कर, आ पुरान। एकर त्रुटि इएह अछि: अहाँ कतोक ज्ञानक वस्तुहीन होएबासँ *सभ* ज्ञानक संभावित वस्तुहीन होएबा दिस तर्क करैत छी — मुदा एकटा घर काल्पनिक नहि भ' जाइत अछि केवल एहि लेल जे किछु घर रंगमंचक कपड़ापर चित्रित होइत अछि। आर बढ़िक: अहाँ आ

हम आइ अपराह्न कोना सहमत होइत छी जे स्वप्न आ जागृति एतेक भिन्न अछि जे तुलना कएल जा सकए? अहाँ स्वयं दुनूकेँ अलगबैत छी — अहाँ ई मंच छोड़ैत अखन ई विश्वास क' कऽ नहि छोड़ब जे फर्श नहि अछि, तइयो कोनो स्वप्नमे अहाँ एना क' सकैत छी। ई अलगएब स्वयं दुइ प्रकारक ज्ञानक बीचक भेदक ज्ञान थिक, जे दुनूसँ बाहरक एकटा स्थान सँ कएल गेल अछि। ई की थिक, जँ ओहि किछुक प्रतिवेदन नहि जकरा स्वप्नावस्था नहि द' सकैत अछि आ संसार द' सकैत अछि — यानी, एकटा स्थिर वस्तु जे जाँचबाक हेतु, सुधारबाक हेतु, वापस अएबाक हेतु बनल रहैत अछि?

क्षणभद्र: ई कहू जे "भेद" जकर अहाँ कथा करैत छी, से केवल स्पष्टता आ संगतिक भेद थिक, ज्ञानक भीतरे। ज्ञान अपनहि क' प्रकाशित करैत अछि, जेना दीप देखल जएबाक हेतु दोसर दीपक आवश्यकता नहि। जकरा अहाँ "एकटा बाह्य घैल" कहैत छी, से एतबे थिक: ज्ञान किछु काल घैलपनक रूप धारण करैत अछि, ओहि रूपकेँ बुझएबाक हेतु अपनासँ बाहर किछुओ आवश्यक नहि।

उदयन: तखन ई बताउ, बौद्ध: हम दुनू, अहाँ आ हम, एकहि क्षणमे एकहि घैलकेँ देखैत छी आ एकहि आकृति, उठएलापर एकहि भार, ठोकलापर एकहि ध्वनिक प्रतिवेदन दैत छी। जँ हम दुनूमे सँ प्रत्येक केवल अपनहि क' प्रकाशित करएवाला ज्ञान होइतहुँ, हमर सभक दुनू "घैल" दुइ निजी चित्रकारी होइत, बिनु कोनो साझा कैनवासक — संयोगकेँ ई सामंजस्य बुझएबाक हेतु पड़त, ई संयोग प्रत्येक भोजनमे, प्रत्येक बाजारमे, प्रत्येक एहन सभामे दोहरायल जाइत, प्रत्येक ओहि व्यक्तिक हेतु जे कहियो जीबल अछि। हम घैलकेँ मानब बेसी सहज बुझब। आर विचारू: अहाँक अपनहि अनुमान — जे अहाँ हमरा अखन

दऽ रहल छी — एहि पर निर्भर अछि जे हमर मन अपनासँ बाहरसँ एकटा कारण ग्रहण करए, यानी अहाँक स्वर, हमर कानसँ प्रवेश करैत, एकटा श्रोताकेँ संबोधित जकरा अहाँ ध्वनिसँ आ स्वयं अपन उत्पादक मनसँ अलग मानि रहल छी। जँ किछुओ ज्ञानसँ बाहर नहि अछि, तखन अहाँ अखनो केकरा सँ, आ कोन माध्यमे, बाजि रहल छी?

क्षणभद्र: *(लम्बा मौन; परिषद्मे कानाफूसी)* अहाँ वस्त्रमे ओ सिवना ताकि लेलहुँ, आचार्य — वाद करबाक क्रिया स्वयं एकटा दोसर पक्षकेँ पूर्वापेक्षित करैत अछि, जे हमर अपन ज्ञान–धारासँ बाहर अछि, जकरा विज्ञानवादक सिद्धांत बिना संकोचक स्वीकार नहि क' सकैत अछि। हम एहि स्तंभक टूटब मानैत छी, यद्यपि हम अखन धरि ई नहि मानैत छी जे पूरा घर खसि गेल अछि। एकटा कोठली बाकी अछि जकरा अहाँ अखन धरि नहि प्रवेश केलहुँ: भले बाहरी संसार ठाढ़ रहए, की ओकरा देखबाक पाछू कोनो *आत्मा* ठाढ़ रहबाके चाही? शायद संसार अछि, आ ओकर प्रत्यक्षीकरण अछि, उठैत आ समाप्त होइत, आ बस — कोनो स्वामी नहि, कोनो द्रष्टा नहि, केवल देखब, स्वयं–प्रकाशित, स्वामीविहीन, जेना दीपमाला जे एक–दोसरासँ जरैत अछि, ओकरा पाछू मशाल लऽ चलएवाला एकहि दीप–रक्षकक आवश्यकता नहि होइत अछि।

उदयन: अखन अहाँ असली रणक्षेत्रकेँ नाम देलहुँ, आ हम खुशीसँ ओतए अहाँसँ भेंट करब, किएक तँ ई एहि सम्पूर्ण अन्वेषणक असली गंतव्य थिक।

अंक तृतीय

ज्ञानक पाछू ज्ञाता

आत्माक यथार्थता पर

(उदयन पहिल बेर आचार्य–आसनसँ उठि क' नीचाँ आबैत छथि, क्षणभद्रक बराबरमे — वादक परम्परा अनुसार ई संकेत जे अखन ओ अधिकारसँ नहि, केवल प्रमाणसँ तर्क करता।)

उदयन: क्षणभद्र, हरेक शास्त्र, हरेक सम्प्रदाय, हरेक विरासतमे भेटल शब्दकेँ किछु काल हेतु किनार राखू, आ केवल एहि क्षणमे जे देल गेल अछि, ओहिसँ उत्तर दिअ: जखन अहाँ कहैत छी "हम थाकल छी," वा "हम बुझलहुँ," वा वस्तुतः "हम अस्वीकार करैत छी जे हम अछि" —— तखन "मे" शब्द की प्रतिवेदन करैत अछि?

क्षणभद्र: एकटा सुविधाजनक कल्पना। एकटा नाम जे ज्ञान–धारा अभ्यासवश अपनापर लगबैत अछि, जेना नदीकेँ नाम देल जाइत अछि, यद्यपि "नदी" नामक कोनो एक अलग वस्तु पानिसँ बाहर नहि अछि।

उदयन: एकटा कल्पना, अहाँ कहलहुँ — मुदा कल्पना सेहो केकरो द्वारा कहल जएबाके चाही, वा केकरो द्वारा मानल जएबाके चाही, वा कम सँ कम केकरो *होएबाके चाही*। "हम अछि" ई ज्ञान ओहन नहि थिक जेहन "आकाश नील अछि" ई ज्ञान, जकरा सैद्धांतिकतः संदेह कएल जा सकैत अछि, विवाद कएल जा सकैत अछि, कोनो नीक आँखिसँ सुधारल जा सकैत अछि। की कहियो कोनो व्यक्ति, जागृत वा स्वप्नमे, विद्वान वा अविद्वान, अपन अस्तित्वक विचार बनबैत काल अपन अस्तित्वपर संदेह केलक अछि? अहाँ अपन अस्वीकार — "हम नहि अछि" —— केँ बिनु ओहि "हम" क बजने बना नहि

सकैत छी जकरा अहाँक वाक्य मेटएबाक प्रयास करैत अछि, से मेटएबाक पाछू ठाढ़ रहितहुँ।

क्षणभद्र: प्रत्येक व्याकरण–शास्त्र सिखबैत अछि जे कोनो शब्दकेँ ओकर पाछू कोनो वस्तुकेँ नाम देबाक आवश्यकता नहि। "बरखा भ' रहल अछि" कोनो अलग "बरखा करएवाला" केँ नाम नहि दैत अछि। तँए "हम जनैत छी" सेहो कोनो *हम* केँ नाम नहि दए सकैत जे जनैत अछि — केवल जनबकेँ, जकरा व्याकरण एकटा कर्ताक वस्त्र पहिरा दैत अछि जकर आवश्यकता नहि।

उदयन: एकटा उचित प्रत्युत्तर, आ हम एकरा हल्केमे नहि लेब — "बरखा भ' रहल अछि" वस्तुतः कोनो अलग बरखा–करएवालाकेँ नाम नहि दैत अछि। मुदा दुनू स्थितिक बीचक भेदकेँ ध्यानसँ देखू, किएक तँ इएह सम्पूर्ण बातक जड़ि थिक: हमरा देखाओल जा सकैत अछि जे "बरखा भ' रहल अछि" व्याकरणिक सुविधा थिक, किएक तँ हम खसैत पानिकेँ देखा सकैत छी आ पूछि सकैत छी "एहिमे, अलग बरखा–करएवाला कतए अछि?", आ केओ नहि भेटत — बरखा करब आ पानि खसब एकहि घटना थिक, किछुओ बाकी नहि। अखन इएह परीक्षा जानबपर करू। हमरा घैलक ज्ञान देखाउ, आ पूछू: की, जानबसँ अलग, कोनो कर्ता अछि जकरा जानब सेवा दैत अछि? अगिला बेर जखन अहाँ एहन तथ्य जानब जे अहाँ सुनए नहि चाहैत छलहुँ, तखन अपनहि देखू — घटनाक एक भाग ज्ञानक उत्पत्ति अछि; दोसर, अलग बुझल जाए योग्य भाग, प्रतिरोध थिक, ई इच्छा जे काश एहन नहि होइत, असुविधाक स्वामित्व। "हम काटैत छी," हम कहैत छी, आ काटब एक वस्तु, काटएवाला दोसर — लोहा ओहि घाओकेँ अपन नहि मानैत जे ओ बनबैत अछि। तहिना "हम जनैत छी": जानब एकटा क्रिया थिक, आ हर क्रिया, जतेक आन क्रियाकेँ

हम कहियो जाँचि चुकल छी, ओकर स्पष्ट प्रमाणें, क्रियासँ अलग एकटा कर्ताक आवश्यकता रखैत अछि, जे क्रियासँ पहिने आरंभ भऽ चुकल रहैत अछि आ क्रियाक बाद बाकी रहैत अछि, किएक तँ काटबाक बाद हँसुआ पहिनेसँ बेसी कुन्ह भ' जाइत अछि, मुदा *काटएवाला* काटबसँ नष्ट नहि होइत अछि।

क्षणभद्र: तखन "कर्ता" कें शरीर मात्र मानल जाउ, वा इन्द्रिय आ बुद्धिक समूह जे मिलिकें काज करैत अछि — एहि पाँच स्कन्धक सहयोगसँ बाहर आर कोनो आत्माक आवश्यकता नहि।

उदयन: तखन अपनासँ पूछू, किएक कोनो शरीर हर व्यक्तिक आत्म–ज्ञानक सेवा नहि करैत अछि। जँ आत्म–ज्ञान शरीरकें *केवल शरीर रूपमे* लैत, तँ हमर हाथकें अहाँक हाथक हेतु ओतबे "हम" कहबाके चाही जतबे हमर हाथ हेतु — शरीर अपन नग्न शारीरिक स्वभावमे एहन भेद नहि रखैत अछि जे स्वयं सटीक रूपसँ अरबों निजी "हमर" दावामे विभक्त भ' सकए। किछु पहिनहि सँ ई शरीरकें ज्ञाताक बुझाइत अछि, ओहिसँ पहिने जे ज्ञाता ओकरा "मोर" कहि सकए — आ ई पहिचान शरीरसँ स्वयं नहि आबि सकैत अछि, नहि तँ चक्रीय दोष होएत, शरीरकें पहिनहि सँ "अपन" जानल जएबाक आवश्यकता होएत ई बुझएबाक हेतु जे ओ "अपन" जानल जाइत अछि।

शिष्य: आचार्य, हम एकटा प्रश्न पूछी जे हमरा व्यथित करैत अछि? मानि लिअ आत्मा सत् अछि — अहाँ ज्ञानमे ओकरा ओहि अनुभवक प्रवाहसँ कोना अलगबैत छी जकर ओ स्वामी मानल जाइत अछि? भीड़ ओहि लोकसँ बेसी किछु नहि थिक जे ओहिमे अछि।

उदयन: एकटा नीक प्रश्न, आ एहि सभामे उठाओल गेल आधासँ बेसी आपत्तिसँ नीक, जँ शिष्यकेँ तुलना क्षमा हो। स्मृति पर विचार करू। आइ हम बीस वर्ष पहिने बचपनमे चाखल एकटा आम स्मरण करैत छी। चाखब एकटा घटना छल, दशकों पहिने बीति चुकल, ओकर क्षण पुनः प्राप्त करबासँ परे नष्ट। स्मरण दोसर घटना थिक, एहि क्षण, एकटा शरीरमे जे हर दृश्य विवरणमे बूढ़ भ' गेल अछि आ बदलि गेल अछि। एहि स्मरणकेँ *हमर* स्मरण होएबाक हेतु — केवल कोनो आन व्यक्तिक बितल आनंद पर एकटा प्रतिवेदन नहि, जतेक अपरिचित हमरा हेतु जतेक कोनो अजनबीक डायरी — एकटा वस्तुकेँ चाखबाक समयमे उपस्थित होएबाके चाही आ स्मरणक समयमे सेहो बाकी रहबाके चाही, जे दुनू क्षणकेँ *एक व्यक्तिक* इतिहास रूपमे जोड़ए, नहि कि दुइ असंबद्ध व्यक्तिक घटना रूपमे। भीड़, एक बेर तित्तर-बित्तर भेलापर, किछुओ स्मरण नहि करैत अछि; स्मरण करबाक हेतु कोनो भीड़ बाकी नहि रहैत अछि। मुदा हम स्मरण करैत छी। क्षणिक ज्ञान, प्रत्येक अगिला उठबासँ पहिने पूर्णतः नष्ट भ' जाएवाला, एहि पुलकेँ ओतबे नहि बुझा सकत जतेक एकटा एकल लहरि ओहि लहरिक आकृति स्मरण नहि क' सकैत जे ओकर जन्मसँ एक घंटा पहिने किनारा पर टूटि गेल छल।

क्षणभद्र: *(धीरे सँ)* हमरहि किछु आचार्य एकटा आलय-विज्ञान, एकटा गुप्त निरंतरताक कथा करैत छथि, सतहक क्षणिक चमकक नीचाँ, ठीक एहि भारकेँ उठएबाक हेतु।

उदयन: तखन, क्षणभद्र, हम अहाँकेँ पहिनहि सँ सभाक आधा राह स्वागत करैत छी, किएक तँ अहाँ अभी-अभी, बौद्ध वेशमे, ठीक ओहि वस्तुक वर्णन केलहुँ जकरा हम एहि सम्पूर्ण वादमे आत्मा कहैत रहलहुँ — किछु एहन जे

गुजरैत चमकक नीचाँ आ पाछू बनल रहैत अछि, जे ओहिमे सँ कोनो एककेँ नहि थिक, आ जकर आवश्यकता स्मृति, स्वामित्व, आ अहाँक हमरा एकहि श्रोता रूपमे एहि वादक आरंभसँ अंत धरि संबोधित करबाक संभावनाकेँ बुझएबाक हेतु अछि। एकर नाम बदलू जँ अहाँ चाहू। एक बेर ओ यथार्थता स्वीकार भेलापर, जकरा बुझएबाक हेतु ई नाम गढ़ल गेल अछि, हम नामपर विवाद नहि करब।

अंक चतुर्थ

तर्कसँ परक मौन

आत्माक मुक्तिक आधारपर

(घटिका–यंत्रक जल लगभग समाप्त। क्षणभद्र अपन आसनपर वापस अछि, दबल मुदा अखनहु पराजित नहि।)

क्षणभद्र: मानि लिअ, आचार्य, हम अहाँकेँ आत्मा स्वीकार करैत छी — बनल रहएवाला, स्मरण करएवाला, शरीरसँ आ जानबाक नग्न क्रियासँ भिन्न। एकटा प्रश्न बाकी अछि, आ इएह ओ प्रश्न थिक जे हमरा बचपनमे पहिल बेर गुरुक लग पठेलक, "क्षणिक" शब्द सुनबासँ पहिनहि: *दुःख किएक अछि, आ की एकर कोनो निकास अछि जकरा कोनो कल्पित कथाक आवश्यकता नहि?* अहाँ हमरा एकटा आत्मा जीतल। की अहाँ हमरा एकटा एहन आत्मा जीतल जे रखबा लायक होइ?

उदयन: इएह अंततः ओ एकमात्र प्रश्न थिक जकर उत्तर देबाक हेतु हमर दुनू सम्प्रदाय बनल छल — एहिसँ पहिने जे किछु भेल, से केवल एहि हेतु भूमि साफ करब छल। विचारू: जँ कोनो आत्मा नहि अछि, केवल एकटा स्वयं–प्रकाशित प्रवाह अछि, तँ केओ बद्ध नहि अछि आ केओ मुक्त नहि अछि, आ जे–जे आचार्य दुःखसँ निकासक मार्ग सिखौलनि, से एकटा खाली कोठलीकेँ सिखा रहल छलाह छोड़बाक हेतु। मुदा जँ कोनो आत्मा अछि — जे त्रुटि आ सुधारक बीच, निद्रा आ जागृतिक बीच, आमक चाखबाक आ ओकर तीस वर्ष बादक स्मरणक बीच बनल रहैत अछि — तखन इएह निरंतरता मुक्तिकेँ मात्र एकटा शब्दसँ बेसी बनबैत अछि। ओ आत्मा जे अपनाकेँ शरीर बुझि भूल केलक, जे ओहि भूलसँ दुःख भोगलक, ओहि भूलकेँ अशिक्षित क' सकए बला

आत्मा सेहो इएह थिक, आ ओकरा अशिक्षित क' कऽ दुःखसँ मुक्त भ' सकैत अछि — अहाँक क्षणिक चमकक जकाँ लोप भ' कऽ नहि, अपितु *बनल रहि कऽ*, अंततः, सही ढंगसँ, पुरान भ्रमक बिनु। एकटा लहरिक हेतु किछुओ नहि अछि जकरा मे मुक्त कएल जाए; केवल ओ पानि जे एतेक काल टिकैत अछि जे ई ध्यान द' सकए जे ओ कहियो केवल एकटा लहरि नहि छल, से एहि भ्रमसँ मुक्त भ' सकैत अछि।

क्षणभद्र: आ एकर पाछूक क्रम — ओ नियम जाहिसँ ज्ञान मुक्त करैत अछि आ अज्ञान बान्हैत अछि, ई तथ्य जे एहि प्रकारक अन्वेषण विश्वसनीय अछि — अहाँ एकरा कोनो आर सत्तामे, एकटा सृष्टिकर्तामे स्थापित करब न, की? हम सुनने छी जे अहाँक मार्ग एतएसँ आगू ओतए जाइत अछि।

उदयन: जाइत अछि, यद्यपि घटिका–यंत्र हमरा आइ राति ओहि पूरा मार्गक अनुमति नहि देत, आ एकटा बुद्धिमान वादी अपन स्वागतसँ पहिने रुकैत अछि। हम एतबे कहब, आ एकरा आइ राति क अंतिम शब्द रहए दियौ, बातक समापन नहि: एकटा नियम जे मनकेँ एहन संसार जानबाक योग्य बनबैत अछि जकरा कोनो मन नहि रचलक, से या तँ एकटा असीम दोहराओल संयोग थिक, वा ओ किसिम कोनो अभिप्रायक चिह्न थिक — जेना एहि सभागारक खंभापर सधल अक्षर या तँ मौसमक दुर्घटना थिक जकरा गंभीरतासँ केओ नहि मानत, वा एहन हाथक काज थिक जकर तात्पर्य छल। हम दोसर मत रखैत छी। की हम एकरा अहाँक संतुष्टि तक सिद्ध केलहुँ, से आर दिनक, आर पूरा घटिका–यंत्रक विवाद थिक। आइ राति एतबे पर्याप्त अछि जे अहाँ एहि सभासँ ई निश्चितता लऽ कऽ नहि जाउ जे केओ छोड़एवाला नहि अछि।

(क्षणभद्र उठैत अछि, हाथ जोड़ैत अछि — पराजयक भाव नहि ठीक–ठीक, अपितु ओ विशेष सम्मान जे एक वादी दोसराकेँ दैत अछि जे ओकर तर्ककेँ एतेक गंभीरतासँ लेने अछि जे ओकरा मात्र अस्वीकार नहि केलक, अपितु सावधानीसँ तोड़लक।)

क्षणभद्र: हम एहि सभामे आत्माकेँ खाली करबाक हेतु आयल छलहुँ, आचार्य, आ अखन एहो नहि खाली क' सकैत छी जे आयल के अछि।

उदयन: तखन घटिका–यंत्र अपन काज क' चुकल अछि। जाउ आ एहि प्रश्नसँ आर बैसू — इहो एकटा साधना थिक। एकटा नीक ढंगसँ लड़ल वाद एक व्यक्तिक मौनमे समाप्त नहि होइत अछि; ओ दुनू व्यक्तिक बेसी नीक चिंतनमे समाप्त होइत अछि।

उपसंहार

(सूत्रधार वापस आबैत अछि जखन दीप नीचाँ कएल जाइत अछि।)

सूत्रधार: तेँ वाद समाप्त होइत अछि, यद्यपि जकर ओ परीक्षा केलक, से प्रश्न समाप्त नहि होइत अछि — ई प्रत्येक युगमे प्रत्येक सोचएवाला प्राणी द्वारा पुछल गेल अछि जे कहियो वाक्यक बीचमे रुकि क' आश्चर्य केलक जे आखिर के बाजि रहल छल। उदयनक उत्तर एहि मंचपर बीतल शताब्दियोंमे अंतिम शब्द नहि छल; हुनक विरोधी आर वस्त्रमे, आर तीक्ष्ण उपकरणसँ वापस आयल, आ एहि प्रदर्शनक बाद फेर आओत। इएह दर्शनक पराजय नहि, अपितु ओकर काज थिक। जँ अहाँ एहि सभासँ प्रश्नकेँ सुलझल नहि, अपितु तीक्ष्ण भऽ कऽ छोड़ैत छी, तँ ई नाटक — ओहि ग्रंथक जकाँ जकरासँ ई अपन हड्डी उधारमे लेने अछि — अपन काज क' चुकल अछि।

(सभ पात्र प्रस्थान करैत छथि।)

उदयनक आत्मतत्त्वविवेक क चारि मुख्य आंदोलनक अनुसरण करैत अछि — सर्वस्व–क्षणभंगवादक समालोचना, बाह्यार्थक अस्वीकार (विज्ञानवाद) क समालोचना, मुख्यतः आत्म–ज्ञान आ स्मृतिसँ आत्माक सकारात्मक प्रमाण, आ ईश्वर आ मुक्ति दिस ग्रंथक मोड़। क्षणभद्रक पात्र एकटा संयुक्त काल्पनिक रचना थिक जे ग्रंथमे, ओकर विभिन्न अध्यायमे, विभिन्न बौद्ध तार्किकक (जाहिमे धर्मकीर्ति, रत्नकीर्ति, आ ज्ञानश्री सम्मिलित छथि) मतकेँ स्वर दैत अछि, नहि कि कोनो एक ऐतिहासिक व्यक्तिक चित्रण।

आत्मतत्त्वविवेक सँ कथा, दृष्टान्त आ उद्धरण

कथा

सभा शान्त भेल। सूत्रधार शिष्यसभ आ गामक लोकक बीच ठाढ़ भऽ, धीर स्वरमे पुरान कथा सुनाबय लगलाह—

मूर्ख आ राजमहलक फाटकपर ठाढ़ हाथी—एकटा मूर्ख राजमहलक फाटकपर हाथी देखलक आ अटकल लगाबय लागल—'ई मूली निगलैत अन्हार अछि? अथवा गर्जैत, बिजुरी बरसबैत मेघ? अथवा कुटुम्ब, कारण आचार्य कहने छथि—जे महल-द्वार वा श्मशान धरि संग जाए, से कुटुम्ब? अथवा भूमि पर ठाढ़ देखायवला वस्तुक छाया?' फेर अपन कल्पना सभ स्वयं काटलक—'अन्हार नहि, कारण तखन दू सूप-जकाँ कानसँ झापड़ नहि लगैत; मेघ नहि, कारण मेघक चारि खम्भा नहि; कुटुम्ब नहि, कारण कुटुम्ब पैघ लाठी नहि घुमबैत; छाया नहि, कारण छाया सैकड़ों मनुष्यक माथ नहि उगलैत; अतः ई किछुओ नहि।'

की एहन अटकल आ ओकर निरस्तीकरण हाथीक वास्तविकता समाप्त कऽ देत? वा दोसर मूर्ख 'जे अछि, से अछि' कहि अधिक विश्वसनीय मानल जाए?

मुँहमे दाल भरने गृहिणी—ज्ञानक स्वसंवेदनक ई प्रतिरक्षा ओहि गृहिणीक दशा जकाँ अछि जे मुँहमे दाल भरने पतिकेँ रिझाबय चाहैत छल, मुदा अपन मुँहक दुर्गन्ध छिपा नहि सकल।

नील-उज्जर कबूतर, आँवला, कपास आ स्फटिक—उदाहरणतः नील आ उज्जर दू कबूतरमे नील कबूतरकेँ नियमित रूपेँ दूध आ उज्जर कबूतरकेँ जामुनक रस पिआओल जाए, तँ हुनकर सन्तान क्रमशः उज्जर आ नील भऽ सकैत अछि। तेँ कोनो वस्तुसँ उत्पन्न होयब मात्र आगामी वस्तुक स्वरूप निर्धारित नहि करैत। नील वस्तुक अनुभवक बाद चलएवला ज्ञान-सन्तति, नीलज्ञान रहित सन्ततिसँ भिन्न विशेषता रखि सकैत अछि—एहन उदाहरण आन वस्तुमे भेटैत अछि। दूधसँ सींचल आँवला गाछक फल बादमे मिठगर भऽ जाइत अछि; लाखक रससँ सींचल कपासक बीज अपन उज्जरता छोड़ि लाल रङ्ग ग्रहण करैत अछि आ ओ रङ्ग फूल धरि पहुँचा दैत अछि। मुदा ज्ञान आ स्मरणक प्रसङ्गमे एना नहि। जपा अथवा आन फूलक समीप रहितो स्फटिक हुनकर रङ्ग नहि लैत आ अपन उज्जरता बनाए रखैत अछि; तहिना ज्ञान अपन विषयसँ प्रभावित रहितो ज्ञानरूपेँ मात्र रहैत अछि।

नवजात शिशुक पहिल गति—जँ शरीर स्वयं चेतन होइत, तँ नवजात शिशु अपन पहिल गति नहि कऽ सकैत, कारण इच्छा आ द्वेषक अभावमे कोनो प्रयत्न सम्भव नहि। इच्छाक उत्पत्ति ताबत नहि होइत, जाबत ई प्रत्यभिज्ञा नहि हो जे अमुक वस्तु इच्छित फलदायक अछि। आ ई प्रत्यभिज्ञा अमुक वस्तु आ ओकर प्रियफलताक अविनाभावक स्मरण बिना नहि होइत; मुदा एहि जन्ममे शिशु ओकर अनुभव नहि कएने अछि। ई अविनाभाव अनुभव करएवला शरीर पूर्वजन्मक छल; ओ शरीर राख भऽ गेलापर ओकर स्थान लेने दोसर शरीर पूर्व अनुभव स्मरण नहि कऽ सकैत।

ओझा आ सर्पदंशित व्यक्ति—तखन सर्पविद्या जानयवला व्यक्ति दोसरक शरीरकेँ छूने बिना विष कोना उतारैत अछि? एहि प्रसङ्गमे ओझाक प्रयत्न देवताक चेतनासँ प्रत्यक्ष रूपेँ जुड़ैत अछि, जे सर्पदंशित व्यक्तिकेँ पुनर्जीवित करैत छथि। अथवा मन्त्रक सहायक ओकर अपन प्रयत्न, ईश्वरक प्रयत्न, वा मन्त्रसँ उत्पन्न पुण्य विष दूर करयवला गतिसँ कारणरूपेँ जुड़ैत अछि।

मूस सभक विश्वास लेल तपस्या करैत बिलाड़ि—ई ओहि प्रसिद्ध बिलाड़िक कथा जकाँ अछि जे मूस सभक विश्वास जीतय लेल तपस्या करैत छल।

अभिनय द्वारा अभिनयक शिक्षा—धर्ममार्गक प्रचारक इच्छासँ ईश्वर स्वयं गुरु आ शिष्यक अनेक मानवरूप रचैत छथि, आ अभिनय सिखाबयवला आचार्य जेना स्वयं अभिनय कऽ शिक्षा दैत अछि, तेना तत्कालीन महापुरुष सभकेँ एहि रूपमे प्रवृत्त कऽ वेदक प्रमाणिकता स्थापित करबैत छथि।

उदुम्बरगर्तक जुलाहा—किछु आलसी आ भीरु व्यक्ति अपन वर्णधर्मक कर्तव्य सँ बचय चाहैत अछि—जेना उदुम्बरगर्त नामक गामक एक जुलाहा धार्मिक दायित्वक आलस्यवश वेदमार्ग छोड़ि बौद्धमत स्वीकार कएलक।

उज्ज्वल ढोलक छेदसँ झाँकैत बालक—किछु लोक उज्ज्वल ढोलक छोट छेदसँ झाँकयवला बालक जकाँ भ्रमित होइत अछि—बालक एक प्रकाशकेँ अनेक बुझैत अछि—तेना कपटी उपदेशकसँ ठकल जा कऽ बुराकेँ नीक मानि बाह्य ग्रन्थ अपनबैत अछि।

दृष्टान्त, रूपक आ लोकोक्ति

फेर सूत्रधार पुरान दृष्टान्त सुनाबय लगलाह—

देवता सभक सय-सय श्राप—जँ कोनो वस्तुक स्वभाव तत्काल उत्पादन करब हो आ ओ स्वभाव ओकरामे पहिनहिसँ रहैत हो, तँ देवता सभक सय-सय श्रापो ओकरा पहिनेहि समयमे अपन कार्य उत्पन्न करबासँ बलपूर्वक रोकि नहि सकत।

कुहनी धरि बहल गुड़क रस—ई ओहि गुड़क रस-जकाँ अछि जे हथेली सँ बहैत कुहनी धरि पहुँचि गेल हो आ चाटल नहि जा सकय। जेना कुहनीक रस चाटब सम्भव नहि, तहिना बेर-बेर चर्चित क्षणिकताक विषय फेरसँ उठायब उचित नहि।

सौ मुद्रा आ बीस-बीसक पाँच समूह—जे व्यक्ति माथ काटल जाएबाक भय परो सौ मुद्रा देबासँ मना करैत अछि, मुदा बीस-बीसक पाँच समूह सहजहि दऽ दैत अछि, ओकर विषयमे की कहल जाए!

अपनहि विषसँ डँसल नागिन—ई अपनहि विषसँ स्वयं कैँ डँसि अचेत भेल नागिन-जकाँ अछि।

अपन सन्तानसँ मारल नेउर—अपन सन्तानसँ मारल नेउर-जकाँ चिन्तन अपनहि परिणामसँ समाप्त होयत।

रक्तबीज-जकाँ परमाणु—ई परमाणु एक विचित्र सत्ता अछि—मानू ‘रक्तबीज’ नामक दानव, जे तर्करूपी राक्षसीक पेट फाड़ि फेर परमाणु रूपेँ बाहर निकलि अबैत अछि। आशय ई जे परमाणुक खण्डन लेल देल गेल कारण सभ अन्ततः परमाणुकहि सिद्धि करैत अछि।

एक दीपकसँ दोसर दीपक बुझायब—बौद्ध जतेक चेतनाकेँ मिटाबय चाहैत छथि, चेतनाक प्रकाश ओतबे तेज होइत जाइत अछि। चेतनाक निषेधो ज्ञात होयब आवश्यक अछि। अतः बौद्ध एक दीपकसँ दोसर दीपक बुझा अन्हार उत्पन्न करबाक चेष्टा कऽ रहल छथि।

सपनाक धूम, पर्वत आ अग्नि—सपनामे अनुमान हो तँ स्वप्नक धूमसँ स्वप्नक पर्वतमे स्वप्नक अग्निए अनुमानित होइत अछि।

बकरीक गरदनिक दूधहीन थन—निरवयवताक अनुमानमे ‘वास्तविकता’ नामक हेतु बकरीक गरदनिपर रहएवला दूधहीन थन जकाँ निष्फल अछि।

खेतमे बोओल आ संयोगवश खसल बीज—केवल मजदूर द्वारा खेतमे बोओल बीजे अंकुरित होइत अछि, संयोगवश खेतमे खसल बीज नहि—एना नहि।

नर्तकीक भौंहक हिलन—एहि दुनू पदक सकारात्मक अविनाभावक उदाहरण नर्तकीक भौंहक हिलनमे सेहो भेटैत अछि। भौंहक हिलन अथवा भौंह बनएवला परमाणु-समूहकेँ ओही मानि कएल प्रत्यभिज्ञा अज्ञानपर आधारित नहि अछि।

विषधर जीवक ज्ञाता वनवासी—जहिना विषधर जीव सभक संग व्यवहार करएवला वनवासी साँपकाटल अचेत व्यक्तिकेँ चेतना देबाक प्रयत्न करैत अछि, तहिना आत्मसाधक आत्मचेतनाक साक्षात्कार लेल प्रयत्न करैत अछि।

अन्हराकेँ बाट देखायब—जेना साधारण व्यक्ति अन्हराकेँ बाटपर कहैत अछि—‘दहिना मुड़ू, बाम नहि’—तेना ईश्वरो सभ मनुष्यकेँ मार्ग देखबैत छथि।

मधु आ विषक मिश्रित भोजन—अत्यधिक आसक्त व्यक्ति कोनो वस्तुक दोषक उपेक्षा कऽ ओकरा दिस आकृष्ट होइत अछि; तहिना अत्यधिक विरक्त व्यक्ति ओकर गुणक अवमूल्यन कऽ ओकरासँ हटि सकैत अछि। मधु आ विषक मिश्रणसँ बनल भोजन एकर उदाहरण अछि।

गरामे पहिरल सोनाक हार—की भ्रमवश प्राप्त वस्तुओक इच्छा हो सकैत अछि—जेना गरामे पहिरल सोनाक हार फेर पाबय लेल कियो खोज करैत अछि?

वासनाग्रस्त युवक—प्रसिद्ध कथन अछि—अत्यन्त सुन्दरी स्त्री उपलब्ध नहि भेला पर वासनाग्रस्त युवक पशुधरि दिस जा सकैत अछि।

अन्हरा सभक प्रशंसा आ चित्रकार—अन्हरा सभक झुंड जँ कोनो चित्रक प्रशंसा करए, तँ चित्रकारक गौरव कोना बढ़त?

शास्त्रीय उद्धरण आ सूक्ति

फेर सूत्रधार पुरान वचन आ उद्धरण सुनाबय लगलाह—

स्तुतिपरक वचन—प्राचीन आचार्य सभमे सर्वश्रेष्ठ, समस्त लोकक अधिपति आ सृष्टिकर्ता परम सत्ताकेँ प्रणाम। हुनका द्वारा रचल लोक सभपर हुनकर स्वामित्व स्वभावसिद्ध अछि। लोकक सृष्टि कएलाक बाद ओ सभक अस्तित्व बनाए रखैत छथि, संसारक जीव सभकेँ शब्दक शुद्ध प्रयोग सिखबैत छथि, आ हुनका सभक कल्याण लेल हितकर कर्म करबाक आदेश तथा अहितकर कर्मसँ बचबाक निषेध निर्धारित करैत छथि। हुनकर उपदेश प्रमाणिक अछि, जीव सभपर हुनकर दया स्वाभाविक अछि, आ सभक मंगल लेल हुनकर प्रयत्न कोनो शर्तसँ बान्हल नहि अछि।

धर्मकीर्तिक कथन—"अस्तित्ववान वस्तुसँ भिन्न कोनो अनस्तित्व अथवा विनाश नहि।"

लोकायतक घोषणा—"जाबत जीवित छी, ताबत सुख भोगी।"

शरीररहित आत्मा—"शरीररहित सत्ताकेँ ने शुभ स्पर्श करैत अछि, ने अशुभ।"

आत्माक सूक्ष्मता आ महत्ता—"आत्मा अति सूक्ष्मसँ सेहो सूक्ष्म अछि।"

"आत्माकेँ महानसँ सेहो महान कहल गेल अछि।"

व्यासक चार कथन—"मनुष्य अल्पायु आ क्षीण प्राणशक्तिवला जन्म लैत अछि।"

"प्रत्येक मन्वन्तर-परिवर्तनपर एहन लोक लेल नूतन शास्त्र आवश्यक होइत अछि।"

"कलियुगमे दानहि मुख्य पुण्यकर्म अछि।"

"एहन लोक जन्म लेत जे केवल जिह्वा आ कामेन्द्रियक तृप्तिमे लीन रहत।"

आत्मा कर्म नहि—"आत्मा कर्म नहि, आ ने कर्मसँ सम्बन्धित वस्तु अछि।"

समस्त सत्ता आत्मा—"जे किछु अछि, से आत्मे अछि।"

सृष्टिक आरम्भ—"सृष्टिक आरम्भमे केवल असत् छल।"

आत्मविनाशक अन्हार—"आत्माक विनाश मानयवला घोर अन्हारमे पड़ैत अछि।"

आत्मा प्रकृतिसँ परे—"आत्मा प्रकृतिसँ परे अछि।"

आत्मासँ भिन्न सत्ता—"आत्मासँ भिन्न कोनो वास्तविक सत्ता नहि।"

ब्रह्मज्ञानक अवस्था—"ब्रह्मज्ञान भेला पर आन किछु नहि देखाइत, द्रष्टा दृश्यसँ एक भऽ जाइत अछि।"

द्वैतक निषेध—"ब्रह्ममे न द्वैत अछि, न द्वैतक विपरीत किछु।"

वाणी आ मनसँ परे आत्मा—"शुद्ध आत्मा वाणी आ मनसँ परे अछि।"

आत्माक अपनेमे प्रत्यावर्तन—"समस्त भोग्य वस्तुसँ तृप्त, अपन स्वरूप आ अस्तित्वकेँ जानि आत्मा पुनः अपनेमे लौटि अबैत अछि।"

समापन पद्य—अनेक परमतक परित्यक्त प्रदेशमे पसारल घोर अन्हारसँ भयभीत आ दिशाहीन लोकक मार्गदर्शक उदयन तर्क, लोकबुद्धि आ शास्त्रप्रमाणक अवरोध हटाकऽ हुनका लेल मोक्षक बाट उद्घाटित कएलनि।

ग्रन्थक आलोचनासम्बन्धी अन्तिम वचन—जे व्यक्ति एहि ग्रन्थक गुण बुझबाक योग्य नहि, ओकर प्रशंसासँ हम प्रसन्न नहि होयब। अन्हरा सभक झुंड जँ कोनो चित्रक प्रशंसा करए, तँ चित्रकारक गौरव कोना बढ़त? लोक एहि ग्रन्थक दोष देखबैत मात्र एकर आलोचना करथि। ज्ञानी लोक अनजानमे कएल अपन तथ्यगत भूल दिस ध्यान आकृष्ट कएल जाएबासँ निश्चय प्रसन्न होइत छथि।

एतबा कहि सूत्रधार किछु काल मौन रहलाह, फेर हाथ जोड़ि सभाकेँ प्रणाम कयलनि।

अध्याय **[-९८]** **(**अनठानबे**)**

केऽ बनौलक ई जगत?

गाछ पुछलक—हमरा केऽ रोपलक? माटि हँसलि—जे रोपलक, से पुछबे नहि करै छै।

— गढ़ नारिकेल

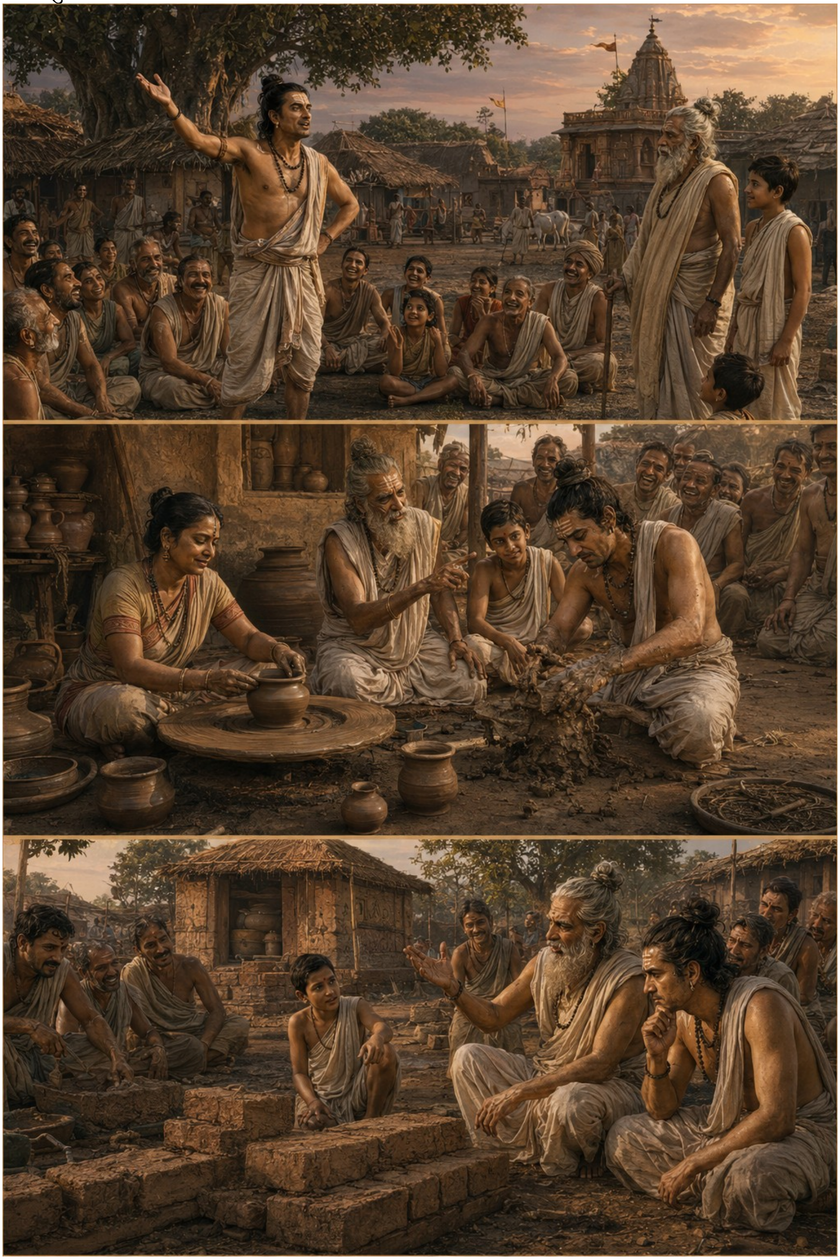

(उदयनाचार्यक न्यायकुसुमाञ्जलि पर आधारित)

विद्यालयक बच्चा आ गामक दर्शकक लेल

पात्र-परिचय

सूत्रधार — कथावाचक, जे दर्शकक सँ सीधे बात करैत छथि

आचार्य — बूढ़, स्नेही तर्कशास्त्री (उदयनक स्वरूप)

चार्वाक — बुद्धिमान, हाजिरजबाब गामक संशयवादी

कुम्हारिन — चाकपर बासन बनओनिहारि

मोधू — जिज्ञासु गामक बालक, आचार्यक शिष्य

गामक कोरस (दू वा बेसी बच्चा; कोनो अतिरिक्त बच्चा एहि भूमिकामे राखल जा सकैत अछि)

बूढ़ काका — गामक अत्यन्त बुजुर्ग, नाम आ रीति-रिवाजक रखवार

लेखनी दीदी — एकटा बुढ़िया जे सारा जीवन अपन हाथेँ पवित्र श्लोक लिखैत रहलीह, गामक ताड़पत्रीय पाण्डुलिपिक रखवारि

मंच-निर्देश : कोनो विशेष सामग्रीक आवश्यकता नहि। एकटा खटिया वा नीचा पीढ़ी, एकटा कुम्हारक चाक (असली वा गाड़ीक पहिया सँ अभिनीत), किछु माटिक बासन, आ मुट्ठीभर ईंट — एतबे पर्याप्त अछि। कोरस पूरा नाटकमे मंचक एक कातमे बैसल रहि सकैत अछि आ संगे बाजि/गा सकैत अछि। कुल खेलाइक समय : लगभग ३० मिनट।

दृश्य एक — गामक चौकपर चुनौती

(सूत्रधार अकेले प्रवेश करैत छथि, मंचक चारूकात एक बेर घूमैत छथि, ध्यान आकर्षित करबाक लेल दू बेर ताली बजबैत छथि।)

सूत्रधार : लगक बैसू, लगक बैसू, सभ लोकनि! आइ राति हम अहाँकेँ राजा आ राक्षसक कथा नहि सुनबय एलहुँ अछि। आइ राति हम अहाँक लग एकटा झगड़ा अनने छी — संसारक सभसँ पुरान झगड़ा। (ऊपर देखबैत, फेर धरतीपर देखबैत) के बनौलक ई सभटा — उगैत सुरुज, बरसैत पानि, पाकैत धान? कियो बनौलक — वा एहन्ना भऽ गेल, जेना बरखाक बाद खाबड़ि बनि जाइत अछि? देखू, आ स्वयं निर्णय करू।

(सूत्रधार, दर्शककेँ सम्बोधित कऽ, एकटा लोकगीत गबैत छथि —)

गाछ पुछलक हे, हमरा केऽ रोपलक,
माटि हँसलि रे, जे रोपलक, से पुछबे नहि करै।
जे बनाबय, से चुप; जे बनल, से पुछै;
आकाश ऊँच, माटि नीचाँ, मुदा दुनू संग बसै।
प्रश्न पैघ हे, उत्तर मौनमे रहै रे —
जे रोपनिहारकेँ खोजल, से अपने जड़ि पाओल।

(कोरस प्रवेश करैत अछि, एक कातमे बैसैत अछि, एकटा सरल दुइ-पाँतिक धुन गुनगुनाब शुरू करैत अछि। आचार्य धीरे-धीरे लाठी टेकैत प्रवेश करैत छथि, मोधू आगू-आगू दौड़ैत।)

मोधू : गुरुजी, गुरुजी! जल्दी करू — चार्वाक फेर सँ चौकपर ठाढ़ भऽ सभकेँ कहि रहल छथि जे ईश्वर बिल्कुल नहिये अछि!

आचार्य (मुस्कुराइत, बिना जल्दी कएने) : तखन चलू, हम ओकर बात सुनी। जोरसँ पुछल प्रश्नकेँ शांतिसँ दिहल उत्तर चाही।

(चार्वाक दोसर कातसँ हाथ पसारने, तमाशा देखओनिहारक तरहेँ प्रवेश करैत अछि।)

चार्वाक : गामक भल लोकनि! केऽ देखलक ई "ईश्वर" केँ, जकरा पंडित लोकनि सधा बजैत रहैत छथि? माटिमे ओकर पएरक निशान देखाबू! एकहु बासनपर ओकर हाथक निशान देखाबू! हम कहैत छी — केओ ई जगत नहि बनौलक। ई बस अछि। जेना आगि गरम अछि,

पानि भीजल अछि, ओहिना जगत सेहो... बस जगत अछि। कोनो बनओनिहारक जरूरति नहि!

कोरस (एक संग, ठिठोलीसँ) : कोनो बनओनिहारक जरूरति नहि! कोनो बनओनिहारक जरूरति नहि!

मोधू (आचार्यसँ, चिंतित) : गुरुजी, सभ केओ ओकर संगे हँसि रहल छथि!

आचार्य (शांत, आगू बढ़ैत) : चार्वाक, हे मित्र, अहाँ नीक तर्क करैत छी — बचपनहुँमे करैत छलहुँ। मुदा एकटा बात पहिने कहू। (लग्गेक दोकानसँ एकटा खाली माटिक बासन उठबैत) हमर हाथमे ई बासन — केऽ बनौलक?

चार्वाक (हँसैत) : ई तँ सभ केओ जनैत अछि! बुढ़िया कुम्हारिन आइए भोरमे चाकपर बनौलक!

आचार्य : अहाँ कोना जनलहुँ? अहाँ तँ ओकरा बनबैत नहि देखलहुँ।

चार्वाक : कारण बासन अपने-आप नहि बनैत अछि! माटिकेँ कियो-न-कियो आकार जरूर दैत अछि!

आचार्य (मुस्कुराइत, दर्शककेँ) : ई बात मोन राखू, मित्र। जोरसँ राखू। राति खतम होएसँ पहिने हम फेर एहिठाम अबब।

(आचार्य आ मोधू कुम्हारक चाक दिस प्रस्थान करैत छथि। चार्वाक अबाक भऽ माथ खुजबैत ठाढ़ रहैत अछि, कोरस हँसैत अछि।)

दृश्य दू — कुम्हारक चाकपर (बनल वस्तुक तर्क — कार्यात्)

(कुम्हारिन अपन चाकपर बैसल एकटा नव बासन बनबैत, गुनगुनाइत। आचार्य आ मोधू लग अबैत छथि। चार्वाक पाछू-पाछू, हाथ बन्हने, अनिश्चित मुदा जिज्ञासु।)

कुम्हारिन : आचार्यजी! आउ, बैसू। हम बस काल्हिक बजारक लेल ई अन्तिम बासन बनाबि रहल छी।

मोधू : मौसी, हम पुछी — माटिकेँ छूबासँ पहिने की ई बासन छल?

कुम्हारिन (हँसैत) : छूबासँ पहिने? ओ तँ बस गीला माटि छल, मोधू! ई बासन तखने बनल जखन ई दुनू हाथ, ई चाक, आ हमर मोनमे राखल आकार — तीनू संगे काज कएलक।

आचार्य : सुनलहुँ चार्वाक? माटिक ढेला अपने-आप एक दिन उठि कऽ गोल आ काजक बनि नहि जाइत अछि। पहिनहियेे गोल आकारमे सोचल — एकटा बासन — केँ तीन टा चीज चाही : एकटा बनओनिहार जे आकार जनैत होथि, हाथ जे काज कऽ सकैत होथि, आ सामग्री जे आकार लेबाक लेल तैयार होअए।

चार्वाक : हँ, हँ — एकटा बासनक लेल। मुदा पूरा जगत बासन नहि थिक, आचार्य! अहाँ आकाशकेँ चाकपर नहि राखि सकैत छी!

आचार्य : की नहि राखि सकैत छी? राति मे आकाश देखू, चार्वाक। तारा सभ अपन-अपन ठाम रहैत अछि, ऋतु-दर-ऋतु। नदी बिना एकोटा गलत मोड़ लेने समुद्र धरि पहुँचि जाइत अछि। धान बीजसँ बाल धरि, एकही नीक क्रममे, साल-दर-साल बढ़ैत अछि। की ई कुम्हारिनक बासनसँ कम आकार लेल गेल अछि? जे वस्तु "बनल" अछि — जकर शुरुआत

भेल, जे टुकड़ा-टुकड़ा जोड़ल गेल, जे आन प्रकारसँ सेहो भऽ सकैत छल मुदा एहने भेल — ओहन वस्तुकेँ एकटा बनओनिहार चाहबे करैत। हमर कहलासँ नहि — ओहिना साधारण बुद्धिसँ, जेना अहाँकेँ पताह छल जे बासन कुम्हारिनक हाथेँ बनल, बिना ओकरा बनबैत देखने।

(कुम्हारिन बनल बासन सभकेँ देखाबैत उठबैत छथि। ढोलक बाजैत अछि।)

कुम्हारिन : लिअ। जे केओ शंका करैत होथि जे बनओनिहारक जरूरति नहि, ओ स्वयं एहि चाकपर, एखने, एकटा बासन बना लेथि!

(चार्वाक चाक लग जाइत अछि, बेढंगे कोशिश करैत अछि, माटि मुँहपर लागि जाइत अछि। कोरस जोरसँ हँसैत अछि। चार्वाक हाथ पोछैत हार मानि लैत अछि, मुदा किछु मुस्कुराइत।)

चार्वाक : ठीक अछि, ठीक अछि! बासनकेँ कुम्हार चाही, ई हम मानि लेलहुँ। मुदा एहिसँ तँ बासनक लेल कुम्हार सिद्ध भेल — पूरा जगतक लेल ईश्वर नहि!

आचार्य (सौम्यतासँ) : धैर्य राखू, मित्र। एक-एक फूल कऽ कऽ — एहिना तँ मन्दिरक माला सेहो बनैत अछि। आउ। मोधू अहाँकेँ अगिला फूल देखाओत।

दृश्य तीन — अनाजक कोठीपर (मेल आ टिकाबक तर्क — आयोजनात् / धृत्यादेः)

(मंच बदलैत अछि। गामक लोकनि/कोरस ईंट सजाकऽ छोट कोठीक देबार बनबैत अभिनय करैत छथि। मोधू सबकेँ निर्देश दैत, अपन काजपर गर्वित।)

मोधू : सावधान, सावधान! एकटा ईंट गलत लागल तँ पूरा देबार टेढ़ भऽ जाएत!

चार्वाक (अबैत, अझुका तर्ककेँ आगू बढ़बैत) : ओहो मोधू — आइ कोठी बनाबि रहल छी?

मोधू : देखू ई ईंट सभ, चार्वाक काका। एक्केला तँ किछु नहि — बस पोढ़ल माटि, ठोकर खएबाक लेल नीक। मुदा देखू जखन ई सभ सही क्रममे, सही हाथसँ, एक-संग होइत अछि तखन की होइत अछि।

(देबार, अभिनय द्वारा वा असली ईंटसँ, उठैत अछि।)

मोधू (आगू) : कोनो देबार अपने-आप, ईंट सभ भाग्यसँ एक-संग खसि कऽ, नहि बनि जाइत अछि। आ एक बेर बनलाक बाद — देखू — ई अपने-आप ठाढ़ो नहि रहैत अछि! केओ ई क्रम चुनलक। केओ एकरा बरखा आ हवामे ठाढ़ राखैत अछि।

चार्वाक : मोधू, अहाँ गुरुजीक बात बहुत ध्यानसँ सुनैत छी।

मोधू : सुनैत छी! ओ कहैत छथि : एहि जगतक सभसँ छोट-छोट कणक सभसँ पहिल मेल — आ ई तथ्य जे जगत, एक बेर बनलाक बाद, हर सबेर टूटि नहि जाइत बल्कि टिकल रहैत अछि — दुनू पाछू एकटा बुद्धि चाही। ईंट अपन क्रम स्वयं नहि चुनैत अछि। बरखाक बादर स्वयं नहि चुनैत जे सावनहि आबय, माघमे नहि। कियो शुरुआतमे क्रम राखलक। कियो एकरा अखनो चलओने अछि।

(आचार्य प्रवेश करैत छथि, स्वीकृतिमे माथ हिलबैत।)

आचार्य : नीक कहलहुँ, मोधू। चार्वाक — अहाँ हमरासँ ईश्वरक हाथक निशान मँगने रही। चारूकात देखू : एकटा निशान नहि, ओहि क्रमकेँ खोजू। बासनकेँ आकारक लेल बनओनिहार चाही छल। एहि देबारकेँ उठबाक लेल राजमिस्त्री चाही छल। पूरा जगतकेँ आकारक लेल बनओनिहार, आ ठाढ़ रहबाक लेल टिकओनिहार दुनू चाही — जेना ई कोठी, एक बेर बनलाक बाद, हवा सामने अपन देबार सलामत राखबाक लेल सेहो कियो चाही।

चार्वाक (किछु शांत, मुदा अखनहु हारल नहि) : तैयो, आचार्य — क्रम एकटा दुर्घटना सेहो भऽ सकैत अछि जे संयोगसँ ठीक भऽ गेल, आ सभटा असफल दुर्घटना जकरा हम कहियो नहि देखलहुँ!

आचार्य (मुस्कुराइत) : आह — इहो एकटा असली प्रश्न थिक, ताना नहि। आउ। बैसू, हम सभ मिलिकऽ, एकरा ठीकसँ खतम करी — विद्वानक तरहेँ, माटि उछालैत भीड़क तरहेँ नहि।

दृश्य चारि — विवाद आ आशीर्वाद

(सभटा पात्र मंचक बीचमे जुटैत छथि : आचार्य, चार्वाक, कुम्हारिन, मोधू, कोरस गामक पंचायतक तरहेँ चारूकात बैसल।)

आचार्य : चार्वाक, अहाँ कहैत छी : शायद बस संयोगसँ चीज सभ ई नीक क्रममे आबि गेल, आ हम सभ, जे एहि सुभाग्य संयोगक कारणे अछि, बचल एकमात्र छी बात करबाक लेल — जखन कि हजारो दुर्भाग्य संयोग पाछू शिकायत करबाक लेल केहू नहि छोड़लक। की एतबे अहाँक तर्क अछि?

चार्वाक : एतबे हमर तर्क अछि, आचार्य। सरल आ तीक्ष्ण।

आचार्य : तखन एकरा सरल आ तीक्ष्ण उत्तर दिअ। संयोगकेँ सेहो कोनो चीजपर काज करबाक चाही — किछु माटि, किछु ईंट, किछु धानक कण जे पहिनहिये सूक्ष्म वस्तुसँ बनल अछि। ओ सूक्ष्म वस्तु सभ — जकरा विद्वान लोकनि "परमाणु" कहैत छथि — जखन पहिल बेर जगत शुरू करबाक लेल एक-संग होइत अछि, तखन ओ एक-संग किएक होइत अछि, आ किएक ओहन क्रममे जे बासन, नदी, धान, आ बच्चा सभक जोगर होइक, कोनो क्रम नहि तेकर बदला? चाक सदिखन घुमैत रहत मुदा बासन तखने बनत जखन कुम्हारिनक हाथ माटिकेँ दिशा देत। संयोग, सचमुच अकेल छोड़ल गेल, दोबारा कोशिश करबो नहि जनैत।

चार्वाक (लम्बा रुकाव; फेर, ईमानदारीसँ) : ...हमरा लग एहि प्रश्नक तैयार उत्तर नहि अछि, आचार्य। आइ राति तँ नहि।

(कोरस पहिलुका धुनकेँ धीरेसँ गुनगुनाइत अछि, अखन नरम भऽ गेल।)

आचार्य (आत्मीयतासँ, चार्वाकक कान्हपर हाथ राखैत) : हमहूँ अहाँकेँ आइ राति उत्तर तैयार राखबाक लेल नहि कहलहुँ, मित्र। हम बस अहाँकेँ देखबाक लेल कहलहुँ — सचमुच देखबाक लेल — बासन, देबार, घुमैत आकाशकेँ, जेना अहाँ आन कोनो शंकाक वस्तुकेँ देखितहुँ। तर्क एतबे तँ माँगैत अछि। अन्ध विश्वास नहि। समर्पण नहि। बस ईमानदार दृष्टि।

चार्वाक (दर्शककेँ, हाथ पसारैत, अधा हँसैत) : निक, भल लोकनि — हम आइ राति एहि गामक चौकपर ई सिद्ध करबाक लेल एलहुँ जे कोनो बनओनिहार नहि अछि। हम बस एतबे निश्चयसँ जाइत छी जे बासनकेँ कुम्हार चाही, देबारकेँ राजमिस्त्री चाही — आ जे एकटा नीक प्रश्नकेँ धैर्यवान उत्तर चाही, जोरगर नहि। पूरा जगतक बनओनिहारकेँ हम मानी वा किछु काल आर शंका करैत रही, मुदा आब हम नीक प्रश्न पुछैत छी। शायद एतबो किछु मोल राखैत अछि।

आचार्य (सभकेँ, आशीर्वादक तरहेँ दुनू हाथ उठबैत) : तखन एतबे आइक फसल होअय। अहाँ ई चौकसँ विश्वाससँ जाउ वा हमर चतुर मित्रक तरहेँ शंकासहित — एतबे घर लऽ जाउ : निर्णय करबासँ पहिने जगतकेँ ईमानदारीसँ देखू। एतबे तँ पुरान विद्वान लोकनि सिखेबाक चाहैत छलाह।

(सूत्रधार फेर आगू आबैत छथि, दर्शककेँ सीधे संबोधित करैत।)

सूत्रधार : आ एहिना, भल लोकनि, पुरान पोथी शंकाकर्ताकेँ चुप करा कऽ नहि, बल्कि एहि तर्कक फूलक सुगंध विश्वासी आ शंकाकर्ता दुनूकेँ पहुँचएबाक कामना कऽ कऽ खतम होइत अछि — जाहिसँ दुनू घर थोड़ेक बेसी बुद्धिमान भऽ कऽ जाथि। जँ आइ राति एहू टा बच्चा सामान्यसँ एक बेर बेसी "मुदा किएक?" पुछलक, तँ हमर छोट बासन आइ राति अपन आकार पा लेलक।

(कोरस उठैत अछि, सभटा पात्र हाथ जोड़िकऽ कतारमे ठाढ़ होइत छथि, संगे अन्तिम दोहा गबैत छथि, आ प्रणाम करैत छथि।)

कोरस (गाओल, सरल दोहरायल दोहा) :

घट बनल घटिया के हाथे, देबाल उठल राजमिस्त्री के साथे;

जग के रचनहार केकर? पूछो, सोचो, अपनहि साथे!

(सभ प्रणाम करैत छथि।)

दृश्य तीन-ख — शब्दक बजारमे

(शब्दक निश्चित अर्थक तर्क — पदात्)

(बजारक एक कात। बच्चा सभक भीड़ एकटा टोकरीमे राखल अनकहल फल/वस्तुक चारूकात जुटल अछि — एहन वस्तु जकरा एहिसँ पहिने केओ नहि देखने अछि। मोधू सेहो एहि भीड़मे अछि। सभ जोरसँ बहस करैत छथि जे एकरा की कहल जाय।)

बच्चा १ : एकरा "गोंगा" कही!

बच्चा २ : नहि, नहि — "झलमू" बेसी नीक सुनाइत अछि!

बच्चा ३ : अहाँ दुनू गलत छी, एकरा कहल जएबाक चाही —

(बूढ़ काका लाठी टेकैत प्रवेश करैत छथि, हल्लाकेँ सुनि हँसैत।)

बूढ़ काका : रुकू, रुकू, नान्हि-नान्हि गौरैया सभ! जँ अहाँ सभटा अपन-अपन नाम राखब तँ अहाँक माए सभ अहाँकेँ कोना कहती जे टोकरीसँ ओकरा आनि आउ?

मोधू : बूढ़ काका, केओ नहि मानि रहल अछि! सभकेँ चाही जे हमरहि नाम जीतय!

बूढ़ काका : एहि लेल तँ गाममे बुजुर्ग राखल जाइत अछि, मोधू। किछु बात चिचियाकऽ तय नहि होइत अछि। आउ — बैसू।

(ओ वस्तुकेँ उनटि-पुनटि कऽ देखैत छथि, सोचैत छथि, फेर घोषणा करैत छथि :)

बूढ़ काका : एकरा हम सभ "तिनकोली" कहब। आइसँ, एहि गाममे, जखन केओ "तिनकोली" कहत तँ सभकेँ ठीक-ठीक बुझि जाएत जे की कहल जा रहल अछि।

(एतबे कालमे चार्वाक सेहो एतय आबि गेल छथि, रुचिसँ सुनैत।)

चार्वाक : आ फेर सँ भऽ गेल, बूढ़ काका! अहाँ अपन जिह्वासँ एखने ओ काज कऽ देलहुँ जे हमर आचार्य मित्र सधा कहैत छथि जे केवल ईश्वरे कऽ सकैत छथि। की "तिनकोली" शब्द स्वयं चुनलक जे ओ एहि फलक अर्थ होयत? नहि, कहियो नहि — अहीं तखने तय कऽ देलहुँ, अपन बुजुर्गक अधिकारसँ, आन किछु नहि!

बूढ़ काका (प्रसन्न भऽ जे केओ ध्यानसँ सुनि रहल अछि) : ठीके कहलहुँ, चार्वाक। आ चतुराई देखबिते-देखबिते एकटा आर बात नोट करू। एक बेर हम कहि देलहुँ, तँ हमरा प्रत्येक बच्चाकेँ अलग-अलग समझाबए नहि पड़त। मोधू काल्हि "तिनकोली" सुनतथि तँ तुरत बुझि जेतथि जे हमर मतलब की छल — एहि लेल नहि जे ओ चरण-दर-चरण सोचि कऽ तर्क करैत छथि, बल्कि एहि लेल जे शब्द आ ओकर अर्थ पहिनहिये एक-संग बन्हल छथि, जेना डोरीसँ बाल्टी बन्हल रहैत अछि।

चार्वाक : हँ — कारण अहीं ओकरा एखने, हम सभक सामने, बन्हलहुँ!

बूढ़ काका : आ जगतक सभसँ पहिल शब्दकेँ ओकर सभसँ पहिल अर्थसँ केऽ बान्हलक, चार्वाक? हम नहि — हम तँ बस एकटा पुरान, बड़ पुरान डोरीमे नव-नव शब्द जोड़ैत छी, जे डोरी हमर बाबाक बाबासँ पहिनहिये बन्हल छल। ओहि डोरीक शुरुआतमे कतौ, कियो-न-कियो केँ सभसँ पहिल गाँठ मारय पड़ल होयत — सभसँ पहिने कियो केँ ई कहय पड़ल होयत "ई ध्वनि ओहि वस्तुक अर्थ देत," तखने हम सभ ई गाँठ मारब विरासतमे पओलहुँ।

(चार्वाक मुँह खोलैत छथि उत्तर देबाक लेल, फेर बन्न कऽ लैत छथि, सोचैत।)

मोधू (प्रसन्न) : बूढ़ काका अहाँकेँ सोचबामे पकड़ि लेलनि, चार्वाक काका!

चार्वाक (सम्हरैत, मुस्कुराइत) : सोचब हारबाक समान नहि होइत अछि, मोधू! शायद पहिल डोरी अपने-आप बनि गेल होयत, धीरे-धीरे, बहुत-बहुत सालमे, लोक सभ आपसमे

सहमत होइत गेलाह, थोड़-थोड़ करैत — कोनो एकटा गाँठ मारओनिहारक जरूरति नहिये पड़ल होयत!

बूढ़ काका (कान्ह उचकबैत, हँसैत) : शायद। ई प्रश्न अपन आचार्यसँ पुछू — हमर घुटना बूढ़ भऽ गेल अछि, आ ई टोकरी अपने-आप घर नहि जाएत।

(बूढ़ काका टोकरी लऽ कऽ हँसैत बिदा होइत छथि। बच्चा सभ छितरा जाइत छथि, आब खुशीसँ फलकेँ "तिनकोली" कहैत। चार्वाक ठाढ़ रहि जाइत छथि, विचारकेँ घुमबैत, मोधू ओकर बाहाँ खींचैत छथि।)

मोधू : आउ, चार्वाक काका — लेखनी दीदी फेर सँ पुरान पत्रा पढ़ि रहलि छथि। चलू, देखी।

चार्वाक (चलैत, अपने-आपसँ) : एक-एक गाँठ करैत, ऐ गाम आइ राति हमरा चैन नहि लेबाक देत जेकाँ बुझना जाइत अछि...

दृश्य तीन-ग — पुरान लेखनी दीदीक घरपर

(विश्वसनीय कर्तृत्वक तर्क — प्रत्ययतः)

(एकटा छोट बरामदा। लेखनी दीदी पुरान ताड़पत्रीय पन्ना सभक ढेरी लऽ कऽ आसनमे बैसल छथि, किछु बैसल गामक लोकनि/कोरसकेँ धीरेसँ पढ़ि कऽ सुनबैत। मोधू आ चार्वाक आबि कात मे बैसैत छथि।)

लेखनी दीदी (एकटा पाँति खतम करैत, ऊपर देखैत) : ...आ एहि लेल, हे मित्र सभ, पुरखा लोकनि सधा कहैत छलाह : सत्य बाजू, जे अपनहि रक्षा नहि कऽ सकैत छथि तकर रक्षा करू, आ नीक कर्मक अनदेखल फलसँ नहि डरू। एहिना पुरान श्लोक हमरा सभकेँ सिखबैत अछि।

चार्वाक (आदरसँ, मुदा सीधे) : लेखनी दीदी, की ई शंकाकर्ता मूर्ख अहाँसँ किछु पुछि सकैत अछि?

लेखनी दीदी (मुस्कुराइत) : अहाँ हमरासँ किछु सेहो पूछि सकैत छी, चार्वाक। अहाँ सधे पुछैत छी।

चार्वाक : ई जे पन्ना सभसँ अहाँ पढ़ैत छी — हम सभ कोना जानब जे एहिमे जे लिखल अछि से सत्य अछि? हम सभमेसँ केओ ई "अनदेखल फल" नहि देखने छी। हम सभमेसँ केओ ओहि स्वर्गमे नहि गेल छी जकर वादा ई पुरान श्लोक करैत अछि, आ नहिये कियो ओतएसँ घुरि कऽ खबरि देलक अछि!

लेखनी दीदी : ई नीक प्रश्न थिक, आ पुरान सेहो। पहिने हमरा एतबे कहू — जखन अहाँक माए अहाँकेँ छोट रहितहिं कहलनि, "आगिमे हाथ नहि दिअ, ई अहाँकेँ जरा देत" — तखन की अहाँ स्वयं कहियो जरल छलहुँ?

चार्वाक : नहि... मुदा हम ओहि पर विश्वास कएलहुँ, कारण ओ पहिनहि आगि देखने छलीह, आ कारण ओ हमरासँ कहियो कुआँक बारेमे, अनाजक कोठीक साँपक बारेमे, वा आर कोनो बातमे झूठ नहि बजलीह।

लेखनी दीदी : ठीके तेहने। हम कोनो बजनिहारक बातपर, जकरा हम स्वयं जाँचि नहि सकैत छी, तखने विश्वास करैत छी जखन दूटा बात सत्य होइत अछि : बजनिहार स्वयं ओहि विषयकेँ प्रत्यक्ष जनैत छथि, आ बजनिहारकेँ हमरा धोखा देबाक कोनो कारण नहि अछि। आब — ई श्लोक ओहन बातक चर्च करैत अछि जकरा हम सभमेसँ केओ स्वयं जाँचि नहि

सकैत छी : कोन कर्म वास्तवमे कोन अनदेखल फल आनैत अछि, एहि जीवनसँ आगू की अछि, धर्म आ अधर्मक सभसँ गहींर व्यवस्था वास्तवमे की अछि। एहन बातकेँ विश्वास योग्य होबाक लेल — बुझू, केवल सुनबामे नीक कविता नहि, बल्कि विश्वास योग्य, जेना अहाँ अपन माएकेँ आगिक बारेमे विश्वास कएलहुँ — कियो-न-कियो ओहि अनदेखल बातकेँ प्रत्यक्ष जनने होयत, जेना अहाँक माए प्रत्यक्ष जनैत छलीह जे आगि जराइत अछि।

चार्वाक : शायद बुद्धिमान ऋषि लोकनि बहुत सालमे नीक अनुमान लगओलनि, आ ओहि अनुमान सभ समयक संग एहि श्लोकमे सँवरैत गेल!

लेखनी दीदी : एकटा अनुमान, कतबो पुरान होअय आ कतबो बेर दोहरायल जाय, अनुमाने रहि जाइत अछि, चार्वाक — दोहराएब अनुमानकेँ ज्ञान नहि बना दैत अछि, जेना सए बेर कहल गेल कथा स्मृति नहि बनि जाइत अछि। आ इहो सोचू : ई श्लोक सभ एक-दोसरसँ मिलैत अछि, बहुत-बहुत शाखामे, दूर-दूरक गाममे ओहन लोकनिसँ कहल गेल जे कहियो एक-दोसरासँ भेंटो नहि कएलनि, शब्द-दर-शब्द, अक्षर-दर-अक्षर, जतबा दूर धरि केओक बाबाक बाबाकेँ मोन अछि। एहि पूरा श्रृंखलाकेँ शुरुआतमे सभसँ पहिने केऽ सिखओलक — एहन श्रृंखला जे एतबे लम्बा आ एतबे स्थिर अछि, जे केवल भुलक्कड़ मानवीय स्मृतिसँ एकर आरम्भक कारण नहि बुझना जाइत अछि?

(मोधू ध्यानसँ सुनि रहल छथि, ठोढ़ी हाथपर टेकने।)

मोधू : गुरुजी सेहो बासनक बारेमे इहो कहैत छथि, लेखनी दीदी! जे वस्तु व्यवस्थित अछि, आ स्थिर अछि, आ स्पष्टतः अपने-आप नहि भऽ गेल अछि — तकरा पाछू कियो चाही जे ओकरा स्वयं ओहन बनओलक।

लेखनी दीदी (माथ हिलबैत, अपन पन्ना सावधानीसँ समेटैत) : ठीके तेहने, बौआ। अनदेखल बातपर विश्वास योग्य शब्दकेँ पाछू अनदेखल बातक विश्वस्त जाननिहार चाही — ठीक तेहने जेना तिनकोलीकेँ बूढ़ काकाक नामकरण चाही छल, आ बासनकेँ कुम्हारिनक हाथ चाही छल। ओ जाननिहार के छथि, जकरा आचार्य अहाँकेँ ईश्वर कहय लेल कहताह —

इएह प्रश्न तँ अहाँक पएर आइ राति अहाँकेँ ओम्हर लऽ जा रहल अछि, चार्वाक। हम तँ बस पन्ना नकल करैत छी; हम तर्क बन्न नहि करैत छी।

चार्वाक (ठाढ़ होइत, अंग तानैत, अखन ताना मारबासँ बेसी विचारशील) : एकटा नामकरण करओनिहार बुजुर्ग आ एकटा विश्वास करओनिहार माएक बीच, ई गाम हमरा आइ राति कोनो आसान उत्तर नहि छोड़य पर तुलल अछि।

लेखनी दीदी (हँसैत) : नीक! आसान उत्तर कहियो कोनो मोलक नहि रहल अछि। जाउ — हम बुझैत छी जे अहाँक आचार्य चौकपर अहाँक बाट देखि रहल छथि।

(चार्वाक आ मोधू संगे मुख्य विवाद दिस बिदा होइत छथि। लेखनी दीदी अपन पढ़ाइमे फेर लागि जाइत छथि, कोरस धीरेसँ गुनगुनाइत अछि, आ दृश्य समाप्त होइत अछि।)

(नाटक समाप्त।)

न्यायकुसुमाञ्जलि

कथा, दृष्टान्त आ उद्धरण

कथा आ दृष्टान्त

सभा शान्त भेल। सूत्रधार शिष्यसभ आ गामक लोकक बीच ठाढ़ भऽ, धीर स्वरमे पुरान दृष्टान्त सुनाबय लगलाह—

कस्तूरीक गन्ध आ गर्भस्थ शिशुक दृष्टान्त—स्रोत-खण्ड: चार्वाक सिद्धान्तक विवेचन आ खण्डन

एक अङ्गक अनुभवक संस्कार शरीरक दोसर अङ्गमे ओहिना पहुँचैत अछि जेना वस्त्रक एक टुकड़ामे लागल कस्तूरीक गन्ध सम्पर्कमे आएल दोसर टुकड़ामे पहुँचैत

अछि—ई उत्तर सेहो नहि टिकैत। एना होइत तँ गर्भस्थ शिशु माताक शरीरक अत्यन्त निकट रहला कारण माताक अनुभव स्मरण कऽ सकित, मुदा एहन कखनो नहि होइत अछि।

स्वप्नमे पोखरिमे डूबबाक प्रसंग—स्रोत-खण्ड: ज्ञानक प्रामाण्य बाह्य रूपेँ जानल जाइत अछि—एहि मतक प्रमाण

स्वप्नावस्थामे सेहो स्वप्न देखनिहार व्यक्ति अपन संशयक एहि घटकसभक ज्ञान पूर्णतः अस्वीकार नहि कऽ सकैत। भ्रम, मिथ्या ज्ञान, स्वप्न आदि कखनो-कखनो ओहि ज्ञानसभपर प्रश्न उठबैत अछि जे व्यवहारमे सत्य आ निर्विवाद बुझाइत अछि। उदाहरणार्थ, हम स्वप्नमे देखैत छी जे पोखरिमे पौड़ैत काल अचानक हमर गोड़ किछु फँसा लैत अछि आ हम डूबि जाइत छी। बचबाक उतावली चेष्टासँ स्वप्न टूटि जाइत अछि आ हम जाग्रत अवस्थामे आबि जाइत छी। तखन अनुभवसिद्ध स्पष्ट भेदसँ बुझैत छी जे स्वप्नक समस्त घटना भ्रम छल।

स्वप्नमे मिठाइ खाइत भूखल व्यक्ति—स्रोत-खण्ड: ज्ञानक प्रामाण्य बाह्य रूपेँ जानल जाइत अछि—एहि मतक प्रमाण

ज्ञानक बादक सफल क्रियासँ ई संशय दूर होइत अछि। सफलताक अनुभव सत्यताक अन्तिम कसौटी अछि। ई अनुभव ज्ञानसँ भिन्न सुखरूप सेहो भऽ सकैत अछि, तेँ स्वयं संदेहास्पद मानल जा सकैत अछि। स्वप्नमे भूखल व्यक्ति मिठाइ खाइत देखैत अछि, मुदा जागला पर भूख जसक तस रहैत अछि। एतयसँ बुझाइत अछि जे सुखानुभव भ्रमात्मक भऽ सकैत अछि। तथापि भ्रम रहितो सत्य ज्ञान आ भ्रमक भेदक दृष्टि पूर्णतः नष्ट नहि होइत। स्वप्नानुभव जाग्रत अनुभवसँ अलग होइत अछि, तेँ दुनूकेँ अलग करनिहार किछु लक्षण अवश्य अछि।

कठपुतलीक माध्यमसँ भाषाशिक्षा—स्रोत-खण्ड: सृष्टि आ प्रलय होएबाक सम्भावनाक औचित्य

भाषिक संकेतक ज्ञान परमेश्वर भिन्न जीवित मानव-देहमे प्रकट भऽ, शिक्षक आ शिक्षार्थीक भूमिका निभबैत आ उचित शब्द प्रयोग करैत पहिल मानवसभ केँ दऽ सकैत छथि। डोर खींचनिहार व्यक्ति जेना कठपुतलीक हाथमे डोर वा छड़ी पकड़ा कऽ दूरक

वस्तु दिस संकेत करबैत अछि, आ ई गति देखि बालक उच्चरित शब्दक अर्थ अनुमान करैत अछि, तहिना सृष्टिक आरम्भमे भाषाशिक्षा सम्भव अछि। कुम्हार, जुलाहा आदि शिल्पीसभ धरि ई शिक्षा एही प्रकार क्रमशः पहुँचि सकैत अछि।

पहिल बिच्छू, वनस्पति आ आरम्भिक मानवक उत्पत्ति—स्रोत-खण्ड: सृष्टि आ प्रलय होएबाक सम्भावनाक औचित्य

नव सृष्टिक आरम्भमे भिन्न-भिन्न जाति आ समुदायमे मनुष्यक उत्पत्ति केना भेल —एकर व्याख्या किछु वनस्पति आ बिच्छूक उत्पत्तिक उदाहरणसँ कएल जा सकैत अछि। देखल जाइत अछि जे आरम्भमे किछु वनस्पति आ बिच्छू सड़ल, भीजल गोबरसँ उत्पन्न होइत अछि; मुदा पछिला पीढ़ीक पौधा आ बिच्छू अपनहि जातिक माता-पितासँ जन्म लैत अछि। तहिना भिन्न जातिक आरम्भिक मानवसभ सामान्य दम्पतिक सन्तान नहि रहि, सृष्टिक प्रारम्भमे विशेष कारण-सामग्रीसँ उत्पन्न भऽ सकैत छथि।

भिन्न जातिक आरम्भिक मनुष्यसभक उत्पत्ति बिच्छू आ वनस्पतिक प्रारम्भिक उत्पत्तिक समान बुझाओल जा सकैत अछि। पहिल बिच्छू सड़ल गोबरसँ उत्पन्न होइत अछि, मुदा ओकर पछिल पीढ़ी बिच्छू-माता-पितासँ। किछु वनस्पतिक पहिल पौधा आन पौधाक बीजसँ नहि, विशेष प्राकृतिक स्थितिसँ उत्पन्न होइत अछि; बादक पौधा अपन बीजसँ जन्म लैत अछि।

अग्निक उदाहरण सेहो एही प्रकारक अछि। साधारणतः अग्नि आन अग्निसँ प्रज्वलित होइत अछि, मुदा पहिल अग्नि अरणिक मन्थनसँ उत्पन्न होइत अछि। दूधसँ दही, दहीसँ मथल मक्खन आदि क्रममे सेहो प्रारम्भिक कारण आ पछिल क्रमक कारण भिन्न होइत अछि। तहिना मनुष्य, पशु, ब्राह्मण आदि जातिक पछिला सन्तान अपन-अपन माता-पितासँ जन्म लैत अछि, मुदा सृष्टिक आरम्भिक पूर्वज भिन्न आत्माक नियतिसँ उत्पन्न विशेष तात्त्विक संरचनासँ प्रकट भऽ सकैत छथि।

संस्कार-परम्पराक क्रमिक परिवर्तन—स्रोत-खण्ड: विनाशक प्रमाणसभ

सभ परम्पराक इतिहास देखि ई बुझबाक चाही जे जन्म, संस्कार, शिक्षा, अध्ययन, कर्तव्यपालन आदि क्षेत्रमे क्रमिक अधःपतन होइत रहल अछि। पहिने सन्तान केवल मानसिक इच्छासँ उत्पन्न मानल जाइत छल; तकर बाद माता-पिता सन्तानक उद्देश्यसँ

सहवास करैत छलाह; फेर कामप्रेरित अनिवार्य सहवाससँ सन्तान उत्पन्न होमय लागल; आ आब संयम, स्थान, काल तथा आचारक मर्यादा नहि रहला कारण पशुवत् सम्बन्धसँ सेहो बालक जन्म लैत अछि।

पहिने गर्भवती स्त्री जे खाद्य पदार्थ ग्रहण करथि से संस्कारित कएल जाइत छल; तकर बाद खाद्यक बदला स्त्रीक संस्कार होमय लागल; फेर गर्भस्थ शिशुक संस्कार कएल गेल; आ आब लौकिक प्रथाक अनुसार जन्मल बालकक संस्कार होइत अछि। ई सभ उदाहरण संस्कार-प्रक्रियामे पीढ़ी-दर-पीढ़ी घटैत सूक्ष्मता देखबैत अछि।

अन्हराक हाथ पकड़ि अन्हरा चलबाक दृष्टान्त—स्रोत-खण्ड: विनाशक प्रमाणसभ

एक स्मृति दोसर स्मृति कैँ प्रमाणित करय, आ एक धार्मिक व्यवहार दोसरक समर्थन करय—एना चलब अन्हराक हाथ पकड़ि अन्हरा चलबाक समान होएत। जे मौखिक शिक्षण-परम्परासँ न चलि आबि रहल अछि से वेद नहि। बिना क्रमबद्ध ध्वनि-समूहक अक्षर अर्थहीन अछि; उच्चारणक प्रयत्नसँ उत्पन्न भेल असम्बद्ध ध्वनिसमूह अर्थ प्रकट नहि कऽ सकैत।

विषपान वा फाँसी द्वारा आत्महत्याक उदाहरण—स्रोत-खण्ड: ईश्वरक अस्तित्वक एकटा आन प्रमाणक विवेचन

शारीरिक गति कैँ ‘कल्याण उत्पन्न करनिहार आ अनिष्ट हटौनिहार गति’ कहबो ठीक नहि। विष खाकऽ वा गला मे फाँसी लगाकऽ आत्महत्या करबाक चेष्टा कर्ता लेल केवल अनिष्टकारी अछि, कल्याणकारी नहि। ‘कल्याण-अनिष्ट’क स्थानपर ‘इच्छित-अनिच्छित’ कहल जाए तँ आत्महत्याक इच्छुक लेल विषपान इच्छित क्रिया भऽ सकैत अछि। मुदा ई इच्छित वा अनिच्छित फल ककरा लेल हो—कर्ताक लेल वा दोसर व्यक्तिक लेल? दुनू अर्थमे परमाणुक गति सेहो शारीरिक कहल जा सकैत अछि, कारण ओकर फल ईश्वरक लेल आ हुनकर सृष्ट जीवसभक लेल सुखद वा उपयोगी भऽ सकैत अछि। भ्रमित व्यक्ति जखन अनिष्ट कैँ इष्ट बुझि काज करैत अछि, तखन सेहो ओकर क्रिया भ्रमवश इच्छिते होइत अछि।

उड़ैत पक्षी आ अनेक रूप धारण करैत जादूगर—स्रोत-खण्ड: ईश्वरक अस्तित्वक एकटा आन प्रमाणक विवेचन

विश्वक धारणसँ सेहो ईश्वरक अस्तित्व अनुमानित होइत अछि। पृथ्वीसँ समस्त ब्रह्माण्ड धरि सभ किछु प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ कोनो धारणकारी प्रयत्नसँ टिकल अछि। विश्व असाधारण रूपेँ भारी होइतहुँ खसैत नहि, जेना आकाशमे उड़ैत पक्षीक भारी शरीर ओकर अपन प्रयत्न वा शरीरसँ सम्बद्ध प्रयत्नद्वारा धारण कएल जाइत अछि। ईश्वरक प्रयत्न समस्त विश्व आ इन्द्र, यम आदि देवतासभक लोकमण्डल केँ धारण करैत अछि। ईश्वर सभ देवतामे व्यापक छथि, तेँ हुनका सभक संग अभिन्न भावेँ वर्णित कएल जाइत अछि—जेना एक जादूगर घोड़ा, सूअर, बाघ, बाँदर, देवदूत वा संन्यासी आदिक अनेक रूप धारण करैत अछि।

कच्छप-वराह अवतारक आख्यान—स्रोत-खण्ड: ईश्वरक अस्तित्वक एकटा आन प्रमाणक विवेचन

शास्त्र गार्गी केँ सम्बोधित कऽ कहैत अछि जे पृथ्वी आ आकाश एकटा अपरिवर्तनशील चेतन सत्ताक नियन्त्रणकारी प्रयत्नसँ टिकल अछि। स्मृति आ गीता सेहो कहैत अछि जे तीनू लोकमे व्यापक अपरिवर्तनशील परम सत्ता एहि सभक धारणकर्ता छथि। हुनकर सर्वोच्चता सर्वज्ञता आ लोकातीत स्वरूपमे अछि; सभक उपास्य होएबाक कारण ओ परम छथि। तीनू लोक सम्पूर्ण अस्तित्वक प्रतीक अछि। हुनकर विश्वसँ व्याप्ति ज्ञान, संकल्प आ प्रयत्नसहित संयोगरूप अछि। 'धारण' सँ सँभार, 'अपरिवर्तनशील' सँ विकाररहितता, आ 'स्वामी' सँ पूर्ण स्वतन्त्र इच्छाशक्ति अभिप्रेत अछि। कच्छप, वराह आदि अवतारक आख्यानमे सेहो ईश्वर केँ विश्वक धारक रूपमे वर्णित कएल गेल अछि।

कुम्हार, सामाजिक व्यवहार, पत्रलेखन आ पाणिनिक दृष्टान्त—स्रोत-खण्ड: ईश्वरक अस्तित्वक शेष प्रमाणसभक स्पष्टीकरण

मूल पाठमे प्रयुक्त 'पद'क व्युत्पत्तिगत अर्थ वृद्ध, अनुभवी वा कुशल लोकक कला-कौशल सेहो अछि—कारण हुनकर कृति आ व्यवहारसँ वस्तु बनौनाइ आ व्यवहार चलौनाइ ज्ञात होइत अछि। एहि अर्थकेँ मध्यपद बनाकऽ सेहो ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध कएल जाइत अछि। बुनाइ, शिल्प, अन्य निर्माण-कौशल, वयस्क मनुष्यक विविध व्यवहार, वर्णमालाक उपयोग आ बच्चासभ द्वारा ओकर शिक्षण—ई सभ भिन्न-भिन्न प्रकारक सुव्यवस्थित व्यवहार अछि, तेँ ओकर कोनो स्वतन्त्र आरम्भकर्ता चाही। जेना

विशेष प्रकारक घैल कुशल कुम्हार बनबैत अछि, चैत्र-मैतृक सामाजिक व्यवहार कोनो ज्ञानी समाजसँ सीखल जाइत अछि, पत्रमे अक्षर लिखनाइ लेखन-कौशलपर निर्भर अछि, आ उपसर्ग-प्रत्ययक क्रम पाणिनि-जकाँ व्याकरणाचार्य निर्धारित करैत छथि, तहिना विश्वव्यापी व्यवहारसभक मूलमे एहन स्वतन्त्र सत्ता चाही जे सभक ज्ञान रखैत हो।

पुरान सुखद घटनासँ उठल हँसीक प्रसंग—स्रोत-खण्ड: ईश्वरक अस्तित्वक शेष प्रमाणसभक स्पष्टीकरण

प्रतितर्क हो सकैत अछि—शास्त्रक विषयवस्तु आन कोनो ज्ञानस्रोतसँ ज्ञात नहि, तेँ ओकर लेखक कोनो चेतन सत्ता नहि। ई कथन सत्य नहि, कारण ईश्वर शास्त्रक विषयक प्रत्यक्ष ज्ञान रखैत छथि। जँ 'आन व्यक्ति द्वारा न जानल गेल' एहि अर्थमे मध्यपद लेल जाए, तँ व्यभिचार होइत अछि। कोनो व्यक्तिक पुरान सुखद घटना ओकरा हँसौने हो, मुदा सामनेवला व्यक्ति कारण नहि जानैत; तथापि हँसीक व्याख्या करनिहार कथनक लेखक होइत अछि। अतः गैर-शास्त्रीय स्रोतसँ विषय अज्ञात होएब आ वचनक लेखकविहीन होएबक बीच व्याप्ति नहि। शास्त्रक काल्पनिक लेखकक बाहरी इन्द्रिय वा मन शास्त्रीय विषय नहि जानि सकैत—एहन सभ अनुमान आश्रयासिद्धि-दोषसँ ग्रस्त अछि। अनित्य ज्ञानक सम्भावना हटाओल गेलो पर नित्य ईश्वरीय ज्ञानक सम्भावना शेष रहैत अछि।

गङ्गाक कातक गोठ—स्रोत-खण्ड: मूल पाठमे प्रयुक्त हेतु-पदसभक वैकल्पिक अर्थ

दोसर सम्भावना ई अछि जे श्रोताक रुचि वा अरुचिए शब्दक अभिप्रेत अर्थ हो। उदाहरणतः 'गङ्गामे गोठ अछि' कहला पर प्रत्यक्ष अर्थ असम्भव भेलासँ 'गङ्गाक कातमे' अर्थ ग्रहण होइत अछि। मुदा गङ्गाक तट प्रति श्रोताक रुचि वा अरुचि हो अथवा नहि हो, 'गङ्गा' शब्दसँ तट अर्थ ग्रहण कएल जा सकैत अछि। तेँ रुचि-अरुचि तात्पर्यक अनिवार्य अङ्ग नहि।

प्रेमिका आ पथिकक पद्य-प्रसंग—स्रोत-खण्ड: मूल पाठमे प्रयुक्त हेतु-पदसभक वैकल्पिक अर्थ

तीसर सम्भावना ई अछि जे शब्दक गौण अथवा सङ्केतित अर्थे तात्पर्य हो। मुदा सभ गौण अर्थ अभिप्रेत नहि होइत। प्रसिद्ध पद्यमे प्रेमिका अपन प्रियतम कैँ कहैत अछि —‘हे पथिक, जतय हमर प्रिय गेल छथि ओतय जाउ; कदाचित् हमरो जन्म ओतहि हो।’ प्रत्यक्ष वाक्य यात्रा लेल प्रेरित करैत जकाँ बुझाइत अछि, मुदा वास्तविक अभिप्राय यात्रा रोकब अछि। एतय प्रत्यक्ष अर्थक विपरीत अर्थ अभिप्रेत अछि; तैँ प्रत्येक गौण वा सङ्केतित अर्थ कैँ तात्पर्य नहि कहल जा सकैत।

मचानपर चिचियाइत लोक—स्रोत-खण्ड: मूल पाठमे प्रयुक्त हेतु-पदसभक वैकल्पिक अर्थ

तात्पर्य कैँ सदा मुख्य अर्थसँ व्यापक मानबो अनुचित अछि। ‘मचानपर लोक चिचिया रहल अछि’ वाक्यमे ‘मचान’ शब्दसँ मचानपर बैसल लोक अभिप्रेत अछि, यद्यपि मचान आ बैसल लोकक बीच कोनो अभिन्न सम्बन्ध नहि। एतय प्रसङ्गानुसार अर्थ ग्रहण होइत अछि, मुदा एतयसँ ई नियम नहि बनैत जे सभ अप्रत्यक्ष अर्थ तात्पर्य हो।

मोट देवदत्तक दृष्टान्त—स्रोत-खण्ड: मूल पाठमे प्रयुक्त हेतु-पदसभक वैकल्पिक अर्थ

उदाहरणतः ‘मोट देवदत्त दिनमे नहि खाइत अछि’ सुनला पर ‘ओ रातिमे खाइत अछि’ ई अर्थापत्ति तखने उठैत अछि जखन पहिल वाक्यक वक्ता अपन कथनक लेल आवश्यक उच्चारण-क्रिया करैत अछि आ श्रोता ओकर अभिप्राय ग्रहण करैत अछि। जे बात कहल वा कहल जा सकय से नहि हो, ओकरा कथनक अन्तर्निहित अर्थ मानब सम्भव नहि। तैँ शास्त्रमे अभिप्राय अछि तँ अभिप्रायक आधाररूप लेखक सेहो अछि।

अन्हरा पाछाँ अन्हराक शास्त्रीय परम्परा—स्रोत-खण्ड: मूल पाठमे प्रयुक्त हेतु-पदसभक वैकल्पिक अर्थ

अतः कोनो एहन सत्ता मानय पड़त जिनका सभ शास्त्र आ ओकर सम्पूर्ण विषयक प्रत्यक्ष ज्ञान हो; नहि तँ शास्त्रीय परम्परा अन्हरा द्वारा अन्हराक पाछाँ चलबाक शृंखला बनि जाएत। ई सत्ता या तँ सर्वज्ञ होएत, नहि तँ हुनकासँ ऊपर आन सर्वज्ञ व्याख्याता मानय पड़त। ईश्वरकैँ छोड़ि एहन के अछि जे सम्पूर्ण शास्त्रक सीमा आ विषय प्रत्यक्ष

जानैत हो? सीमित दृष्टिवला व्यक्ति न शास्त्रक सम्पूर्ण अध्ययन कऽ सकैत अछि, न आरम्भसँ सभ शिष्य कैँ यथार्थ रूपैँ पढ़ा सकैत अछि।

तोता आ सरकारी अधिकारीक दृष्टान्त—स्रोत-खण्ड: पूर्वोक्त तर्कसभक समापन

ई नहि कहल जा सकैत अछि जे वैदिक शिक्षकसभ अपन गुरु सँ सुनल वचन बिना निजी अभिप्राय दोहरबैत छथि, तेँ मूल स्वतन्त्र वक्ता आवश्यक नहि। ओ सभ तोता जकाँ मात्र पुनरुक्ति करैत छथि; हुनकर वचनक अभिप्राय अन्ततः पहिल वक्ताक अभिप्राय होइत अछि। जेना सरकारी अधिकारी अपन आदेश नहि, सरकारक आदेश सुनबैत अछि, तहिना वेदाध्यापक परम्परासँ प्राप्त ईश्वरीय अभिप्राय व्यक्त करैत छथि।

उद्धरण, प्रार्थना आ सूक्ति

फेर सूत्रधार पुरान वचन आ उद्धरण सुनाबय लगलाह—

मंगलाचरणक पुष्पार्पण—स्रोत-खण्ड: मंगलाचरणक विनय-पद्य

“न्याय जकाँ शुद्ध, उचित उपायसँ प्राप्त आ एकदम ताजा ई फूलक गुच्छ परम प्रभुक दुनू चरणमे अर्पित भऽ कऽ हमर मनमे निर्विघ्न आनन्द भरय। सूर्यक किरणक चुम्बन पाबिते एकर पाँखुरिसभ पसारि जाइत अछि। एकर सुगन्धक प्रसार पहिल बेर सुवास लेनिहार कैँ दीर्घकालिक सुख दैत अछि। दबाओल गेलो पर ई फूलसभ मुरझाइत नहि। ई अमर अमृतरसक द्राक्षासव-जकाँ बहैत धाराक स्रोत अछि।”

श्रवण, मनन आ ध्यान—स्रोत-खण्ड: जिज्ञासाक आवश्यकता पर बल

“पहिने शास्त्र-वचन सुनबाक चाही, तकर बाद ओकर मनन करबाक चाही। शास्त्रीय अध्ययन, तर्कपूर्ण विचार आ आनन्दमय ध्यानाभ्यास द्वारा ईश्वरक ज्ञान विकसित करनिहार व्यक्ति अपन बुद्धिक एहि तीन प्रकारक उपयोगसँ आत्माक वास्तविक स्वरूपक परम साक्षात्कार प्राप्त कऽ सकैत अछि।”

लोकसूक्ति—स्रोत-खण्ड: संसारक अदृष्ट कारणक पक्षमे चतुर्थ तर्कक विवेचन

“जनताक अनुरागसँ धन प्राप्त होइत अछि।”

अन्तरात्मा साक्षी—स्रोत-खण्ड: उपर्युक्त प्रश्नक उत्तर

“देवता विभिन्न परीक्षासँ गुजरनिहार मनुष्यसभ पर दृष्टि रखैत छथि; आ प्रत्येक मनुष्यक हृदयमे रहनिहार अन्तरात्मा सेहो ओकर कर्मसभ देखैत रहैत अछि।”

धर्मक रक्षा लेल अवतार—स्रोत-खण्ड: विनाशक प्रमाणसभ

“जखन धर्मक हानि आ अधर्मक वृद्धि होइत अछि तखन भगवान अवतार लैत छथि; प्रत्येक युगमे सज्जनक रक्षा आ दुष्टक विनाश लेल प्रकट होइत छथि।”

शिवभक्ति-प्रार्थना—स्रोत-खण्ड: समापन-प्रार्थना

“जीवनक अन्तिम क्षण धरि हमर हृदय भगवान शिवक भक्तिसँ परिपूर्ण रहय। समस्त जीवक नियतिक सहायतासँ जे एहि अद्भुत आ आश्चर्यमय विश्वक पुनः-पुनः सृष्टि

करैत छथि, फेर जादूगर जकाँ अपनहि रचनाक बारम्बार संहार करैत छथि, जिनकर इच्छा समस्त ब्रह्माण्डपर निर्विवाद रूपेँ चलैत अछि आ जे विश्वक परम कारण छथि—ओहि प्रभु शिवमे हमर अटूट भक्ति बनल रहय।”

दिव्य सत्ताक जागरण आ विश्वक गति—स्रोत-खण्ड: ईश्वरक अस्तित्वक एकटा आन प्रमाणक विवेचन

“जखन ई दिव्य सत्ता जागैत छथि, तखन संसार सक्रिय होइत अछि; जखन ओ विश्राम करैत छथि, तखन संसार लीन भऽ जाइत अछि। मनुष्य अपन सुख-दुःखक नियन्त्रणक वास्तविक सामर्थ्य नहि जानैत; हमर प्रेरणासँ ओकरा स्वर्गीय सुख वा नरकीय दुःख भेटैत अछि। हमर नियन्त्रणमे प्रकृति चलैत अछि, जकरा द्वारा चल-अचल संसार उत्पन्न होइत अछि। ईश्वर अपन शक्तिसँ संसारक शासन, विस्तार आ विनाश करैत छथि।”

पृथ्वी आ आकाशक धारण—स्रोत-खण्ड: ईश्वरक अस्तित्वक एकटा आन प्रमाणक विवेचन

“पृथ्वी आ आकाश एकटा अपरिवर्तनशील चेतन सत्ताक नियन्त्रणकारी प्रयत्नसँ टिकल अछि। तीनू लोकमे व्यापक अपरिवर्तनशील परम सत्ता एहि सभक धारणकर्ता छथि।”

सृष्टि-प्रलयक शास्त्रीय वचन—स्रोत-खण्ड: ईश्वरक अस्तित्वक एकटा आन प्रमाणक विवेचन

“ईश्वर अनेक अवताररूपेँ सभ जीवमे व्यापक भऽ उत्पत्ति, वृद्धि आ क्षयक चक्रसँ हुनका पार करबैत छथि; प्रत्येक सृष्टि-चक्रक अन्तमे सभ जीव हुनकामे लीन होइत अछि आ नव सृष्टि आरम्भ भेलापर ओ फेर हुनका प्रकट करैत छथि।”

ईश्वरक प्रथम पुरुष वचन—स्रोत-खण्ड: ईश्वरक अस्तित्वक शेष प्रमाणसभक स्पष्टीकरण

“हम पिता छी, माता छी, धारक छी आ विश्वक पितामह छी।”

निरन्तर कर्मक आवश्यकता—स्रोत-खण्ड: ईश्वरक अस्तित्वक शेष प्रमाणसभक स्पष्टीकरण

“जँ हम निरन्तर कर्म नहि करी, तँ मनुष्य हमर मार्गक अनुसरण करैत कर्म छोड़ि देत आ संसार नष्ट भऽ जाएत।”

प्रेमिकाक वचन—स्रोत-खण्ड: मूल पाठमे प्रयुक्त हेतु-पदसभक वैकल्पिक अर्थ

“हे पथिक, जतय हमर प्रिय गेल छथि ओतय जाउ; कदाचित् हमरो जन्म ओतहि हो।”

अर्थापत्तिक प्रसिद्ध वाक्य—स्रोत-खण्ड: मूल पाठमे प्रयुक्त हेतु-पदसभक वैकल्पिक अर्थ

“मोट देवदत्त दिनमे नहि खाइत अछि—ओ रातिमे खाइत अछि।”

शास्त्रीय पूजा-वचन—स्रोत-खण्ड: मूल पाठमे प्रयुक्त हेतु-पदसभक वैकल्पिक अर्थ

“हमर पूजा करू।”

जगत्क मूलक वचन—स्रोत-खण्ड: मूल पाठमे प्रयुक्त हेतु-पदसभक वैकल्पिक अर्थ

“हम सभक मूल छी, हमरहि सँ सभ वस्तु प्रवाहित होइत अछि।”

निषेध-वचन—स्रोत-खण्ड: पूर्वोक्त निष्कर्षक औचित्य-स्थापन

“विष नहि खाउ।”

अग्नि उत्पन्न करबाक वैदिक आदेश—स्रोत-खण्ड: पूर्वोक्त निष्कर्षक औचित्य-स्थापन

“जे अग्नि उत्पन्न करय चाहैत अछि, से काष्ठ मथय।”

प्रथम पुरुषक वैदिक वचन—स्रोत-खण्ड: संख्यासँ सेहो ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध भऽ सकैत अछि

“हम अनेक होऊँ। हम एना भेलहुँ।”

उपनिषदक आदेश—स्रोत-खण्ड: संख्यासँ सेहो ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध भऽ सकैत अछि

“दुइ परम सत्य जानबाक अछि।”

वैदिक-गीता वचनक सङ्कलन—स्रोत-खण्ड: संख्यासँ सेहो ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध भऽ सकैत अछि

“परम सत्य इन्द्रियविहीन होइतहुँ देखैत आ सुनैत अछि। ब्रह्मक उच्च आ निम्न रूप जानबाक अछि। यज्ञ ईश्वरमय अछि। सभ धर्म छोड़ि ईश्वरक शरण जाउ। आसक्तिरहित भऽ काज करू। यज्ञार्थ कर्म बन्धन नहि दैत।”

भगवानक भक्तियोग-वचन—स्रोत-खण्ड: संख्यासँ सेहो ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध भऽ सकैत अछि

“मन हमरा मे लगाउ, हमर भक्त बनू, हमर लेल यज्ञ करू, हमरा प्रणाम करू; एना हमरामे तल्लीन भऽ अहाँ निश्चित हमरा प्राप्त करब।”

सद्बुद्धिक प्रार्थना—स्रोत-खण्ड: संख्यासँ सेहो ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध भऽ सकैत अछि

“करुणामय प्रभु विकृत बुद्धिवला व्यक्ति केँ सेहो उचित समयपर सन्मार्ग प्रदान करथि।”

मुक्तिक प्रार्थना—स्रोत-खण्ड: संख्यासँ सेहो ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध भऽ सकैत अछि

“प्रभु अनुग्रह करथि, मन पूर्णतः हुनकामे निमग्न हो, जन्म-मरणक भय फेर नहि उठय, बन्धनसँ सम्पूर्ण मुक्ति भेटय।”

अन्तिम पुष्पार्पण—स्रोत-खण्ड: संख्यासँ सेहो ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध भऽ सकैत अछि

“एहि तर्क-पुष्पगुच्छक दहिना-बाम नथुनी सुवासित होउ; जँ ई सम्भव नहि, तँ देवतासभक गुरुकेँ गुरु भगवान शिव लेखकक चरणार्पित एहि पुष्पगुच्छसँ प्रसन्न होथि।”

एतबा कहि सूत्रधार किछु काल मौन रहलाह, फेर हाथ जोड़ि सभाकेँ प्रणाम कयलनि।

अध्याय **[–९७] (**सनतानबे**)**

चिंतामणि रत्न

मन थिर तँ ढेलो हीरा, मन डोलल तँ हीरो ढेला— रत्न बाहर नहि, चिन्हैबला आँखिमे छै।

— गढ़ नारिकेल

पात्र–परिचय

सूत्रधार — मंच–संचालक

गंगेश उपाध्याय — तार्किक, वादक यजमान, जे विरोधीसँ पहिनहि अपन परिभाषाकेँ स्वयं परिष्कृत करैत छथि

बौद्ध (एकटा बौद्ध तार्किक) — मुख्य विरोधी, ग्रंथक अपन भूमिकामे नामित; तीक्ष्ण, अदृश्य कारण आ अदृश्य कर्ता दुनूपर संशयी

शिष्य — गंगेशक शिष्य, जकर सरल प्रश्न तकनीकी वादकेँ संसारसँ जोड़ने राखैत अछि

मीमांसक — एकटा कर्मकांड–विद्वान, जे आरंभिक वादमे सम्मिलित होइत छथि

परिषद् — सभाक कानाफूसी

स्थान: मिथिलाक एकटा वाद–शाला। गंगेशक कात एकटा नीच मेजपर धुआँ छोड़एवाला एकटा दीप, एकटा दोसर, नहि जरल दीप, आ, आधा अन्हारमे, एकटा सामान्य मिट्टीक घैल रखल अछि।

प्रस्तावना

(सूत्रधार प्रवेश करैत अछि।)

सूत्रधार: हर राजमिस्त्री दीवालकेँ भरोसा देबासँ पहिने अपन गारा परखैत अछि। गंगेश उपाध्याय, तर्ककेँ एकहु निष्कर्षक भार उठाबय देबासँ पहिने — ई सिद्ध करय देबासँ पहिने जे अगिन धुआँक कारण अछि, वा संसारक पाछू कोनो कर्ता ठाढ़ अछि — पहिने गारा परखलनि: वैध ज्ञान वस्तुतः की थिक? एक वस्तुक दोसरासँ *अनिवार्य* संबंध वस्तुतः की थिक? ओ एक इंच सेहो नहि हिलताह जाबे धरि परिभाषा स्वयं हर आक्रमणकेँ, अपन आक्रमण सहित, सहन नहि क' लेत।

ओ हमरा सभकेँ अपन आरंभिक श्लोकहिमे स्पष्ट कहैत छथि जे ओ एहि दुर्गकेँ केकर विरुद्ध बनौलनि: अपन युगक बौद्ध तार्किक, जे संसारक कोनो अदृश्य कर्ताकेँ ओतबे विश्वाससँ अस्वीकार करैत छलाह जतबे ओ कोनो अदृश्य आत्माकेँ अस्वीकार करैत छलाह। आइ राति, हुनकामेसँ एक जन स्वयं दुर्ग परखय आयल छथि। देखू गंगेश हुनका कोना उत्तर दैत छथि — बेसी जोरसँ बजिकऽ नहि, अपितु ओहिसँ बेसी सटीकतासँ परिभाषित कऽ जतेक कोनो विरोधी सोचि सकैत छलाह, आ फेर, एकसँ बेसी बेर, ओतबे सटीकतासँ जे अपन प्रथम प्रयासकेँ स्वयं ओहि जालमे पकड़ि लैत छथि।

(सूत्रधार, वादक आरम्भसँ पूर्व, एकटा लोकगीत गबैत अछि —)

मन थिर तँ ढेलो हीरा हे, मन डोलल तँ हीरो ढेला,
रत्न बाहर नहि रे, चिन्हैबला आँखिमे बसै।
जे भीतर थिर, तकरा माटियो रत्न लागय;
जे भीतर डोलल, तकरा रत्नो माटि बुझाय।
चिन्तामणि दूर नहि हे, अपने मनमे रहै रे —

जे आँखि चिन्हल, ओही आँखिमे सभटा रत्न।

(प्रस्थान)

अंक प्रथम

अनमना विद्वान

मंगलाचरणपर, आ की अदृश्य कारणक अनुमान भ' सकैत अछि

(गंगेश आसीन छथि, कात एकटा दीप जरैत। मीमांसक आ बौद्ध दुनू उपस्थित छथि।)

गंगेश: *(सभाकेँ संबोधित करबासँ पहिने अदृश्य प्रतिमा दिस हाथ जोड़ैत)* हर लेखक जे कोनो कार्य आरंभ करैत अछि, से मंगलाचरण करैत अछि, कार्यक पूर्णताक कामना करैत। हम सेहो आइ राति इएह केलहुँ। एहि सभामे केकरो सँ कोनो कठिन दावा स्वीकार करय कहबासँ पहिने, हमरा सबसँ सरल दावा पहिने परखय दिअ: की मंगलाचरण वस्तुतः किछुओ *कारित* करैत अछि?

बौद्ध: एकटा उचित आरंभ–बिन्दु, आ हम अहाँकेँ एहिसँ सस्तामे नहि निकलय देब। जँ मंगलाचरण पूर्णताक कारण अछि, तँ दुनू एकसंग उठब आ खसब चाही — कार्य पूर्ण भेलापर उपस्थित, असफल भेलापर अनुपस्थित। मुदा हम अहाँकेँ एहि परम्परे मे एकटा विद्वानक नाम द' सकैत छी — उदयन स्वयं, प्रवादसँ, एकटा अनमना घड़ीमे — जे किरणावलीकेँ बिनु कोनो नाम–लेवा योग्य मंगलाचरणक पूर्ण केलनि। इएह अहाँक विपरीत–उदाहरण थिक। नियम ठीक ओहि घरमे टूटैत अछि जे ओकर आविष्कारक दावा करैत अछि।

गंगेश: *(शांततासँ)* ओ उदाहरण नजदीक राखू, मित्र, किएक तँ हम एहि अंकक समाप्तिसँ पहिनहि ओकरा अहाँक विरुद्ध उपयोग करय चाहैत छी, केवल उत्तर नहि। मुदा पहिने हमरा अहाँक आपत्तिक पूरा बल स्वीकार करय दिअ, ईमानदारीसँ कहल: जँ कारण आ कार्य वास्तवमे बान्हल छथि, तँ कार्य

कारण बिनु कहियो नहि प्रकट होएबाके चाही, न कारण कार्य उत्पन्न कएने बिनु कहियो रहबाके चाही। उदयनक कार्य पूर्ण भेल। हुनक मंगलाचरण, अहाँक विवरणें, अनुपस्थित वा लापरवाहीपूर्ण छल। सतहपर, अहाँ एकटा विचलन देखाओलहुँ, आ विचलन कोनो दावाकृत कारणिक नियमक हेतु घातक थिक।

बौद्ध: तखन अहाँ बिन्दु मानि लेलहुँ।

गंगेश: हम बिन्दुक *आभास* मानि लेलहुँ, जे एकटा पूर्णतः भिन्न स्वीकृति थिक। विचारू मंगलाचरण वस्तुतः की उत्पन्न करैत अछि, ई कहल जाइत अछि। पूर्णता स्वयं प्रत्यक्ष नहि — जेना केवल एकटा श्लोक जपने ईँट राखल जा सकैक — अपितु ओहि *बाधाक हटाएब* जे अन्यथा कार्यमे व्यवधान डालितए। एकटा सांसारिक कार्य, एक बेर ओकर बाधा हटलापर, सांसारिक साधनद्वारा स्वयं पूर्ण होइत अछि: कौशल, सामग्री, निरंतर प्रयास। अखन अपन अनमना विद्वानसँ पूछू: की हुनक कार्य, ओहि विशेष दिन, कहियो वास्तवमे बाधित छल? जँ कोनो बाधा हुनक मार्गमे शुरूएमे नहि छल, तँ मंगलाचरण हेतु हटाबय हेतु किछुओ नहि छल, आ ओकर अनुपस्थिति किछुओ सिद्ध नहि करैत अछि — एकटा तालाकारक अनुपस्थिति ओहि नियमसँ विचलित नहि होइत अछि जे तालाकार ताला खोलैत छथि, ओहि दिन जखन कोनो द्वार बन्न नहि छल।

बौद्ध: एकटा सुविधाजनक बचाव। अहाँ अग्रिम कोना जानब जे कोनो बाधा प्रतीक्षामे पड़ल छल वा नहि? अहाँ अपन कारणिक नियमकेँ अपरीक्षणीय बना देलहुँ — अखन ई सफलता आ असफलता दुनूकेँ समान रूपसँ स्पष्ट करैत अछि, जे किछुओ स्पष्ट नहि करबाक दोसर ढंग थिक।

गंगेश: अपरीक्षणीय नहि — केवल, हमरा–अहाँ दुनूकेँ भरोसा योग्य अधिकांश कारणिक दावाक जकाँ, एकटा शर्तसँ बान्हल, बिनु–शर्तक घोषित होएबाक बदला। अगिन धुआँ केवल ओतय उत्पन्न करैत अछि जतय इंधन एतेक भीजल अछि जे सुलगए; सूखल इंधन साफ जरैत अछि, आ केओ ओकरा अगिन आ धुआँकेँ जोड़एवाला नियममे विचलन नहि कहैत अछि। अहाँ हमरा एकटा नियम त्यागय कहैत छी किएक तँ ओहिमे एकटा शर्त जुड़ल अछि, जखन कि हमरा–अहाँ दुनूकेँ भरोसा भेल हर नियम, रसोइघरसँ लऽ कऽ एहि सभा धरि, एकहि प्रकारक शर्त बहन करैत अछि।

मीमांसक: तखन हमरा अपने कातसँ अहाँपर दबाव देबय दिअ, गंगेश, किएक तँ बौद्ध आ हम सामान्यतः एकहि जमीनपर नहि ठाढ़ होइत छी। मानि लिअ मंगलाचरण सीधे पूर्णता निर्माण नहि करैत अछि, केवल बाधा हटबैत अछि। तइयो — ओ हटाएब कोना *जानल* जाइत अछि, जँ ओहि वैदिक विधानसँ नहि जे सर्वप्रथम सुसंस्कृत लोककेँ कोनो कार्य आरंभसँ पहिने ई करय सिखौलक? शास्त्रीय अधिकार हटाउ, आ अहाँक कारणिक श्रृंखलाक कोनो प्रथम कड़ी नहि बचैत अछि।

गंगेश: हम एकरा नहि हटाएब — हम कहियो एकरा हटाबय क' प्रस्ताव नहि रखने रही। श्रुति सामान्य नियम बतबैत अछि; सुसंस्कृत लोकक साधारण अवलोकन, पीढ़ी–दर–पीढ़ी, एहि प्रकारक कार्यसँ पहिने ई कर्म करैत, ई पुष्ट करैत अछि जे नियम कोरा कविता नहि थिक। जतय दुनू सहमत होइत अछि, जेना एतय होइत अछि, ओतय एकटा कारणपर भरोसा कएल जा सकैत अछि ठीक जेना हम कोनो कारणपर भरोसा करैत छी जे स्थिर, दोहरायल, संयोगसँ अव्याख्यायित सहसंबंधद्वारा स्थापित होइत अछि — इएह विधि, बौद्ध, जकरा

अहाँ स्वयं हर बेर उपयोग करैत छी जखन अहाँ धुआँसँ अगिनक अनुमान करैत छी बिनु अगिनकेँ प्रत्यक्ष देखबाक मांग केने।

बौद्ध: *(एकटा शुष्क सिर–नमन)* अहाँ अपन वचन पूरा केलहुँ, आचार्य। अहाँ अंततः हमरे उदाहरण हमरे विरुद्ध उपयोग केलहुँ।

गंगेश: आ हम सम्पूर्ण साँझ इएह वचन दोहराइते रहब। हम कहियो अहाँकेँ कोनो अदृश्य कारण श्रद्धापर स्वीकार करय नहि कहैत छी। हम केवल इएह मांगैत छी जे अहाँ *हमर* अदृश्य कारणकेँ अनुमानक इएह शिष्टाचार दिअ जे अहाँ बिनु दोसर सोचक अपन अदृश्य कारणकेँ पहिनहि सँ दैत छी।

अंक द्वितीय

ओ शंख जे कहियो चानी नहि छल

वैध ज्ञानक परिभाषापर

(एकटा सेवक मेजपर घैलक कात एकटा शंख राखैत अछि। गंगेश ओहि दिस इशारा करैत छथि।)

गंगेश: आगू किछुओ बनएबासँ पहिने, हमरा सहमत होएबाके चाही जे *सत्य* ज्ञानसँ हमरा सभक तात्पर्य की अछि — की सत्य अछि, ई नहि, अपितु से किछु किछुकेँ सत्य *बनबैत* अछि, केवल उत्पन्न भेने बजाय। इहाँ हमर प्रथम प्रयास अछि: एकटा ज्ञान वैध अछि जखन ओ एकटा गुणकेँ ठीक ओतय प्रस्तुत करैत अछि जतय ओ गुण वास्तवमे अछि। हम चानी देखैत छी, आ चानी ओतय अछि — वैध। हम एहि शंखमे चानी देखैत छी, आ चानी ओतय नहि अछि — अवैध।

शिष्य: ई कहबाक हेतु बहुत सरल बुझाइत अछि, आचार्य।

गंगेश: एहि विद्यामे जे किछुओ सरल अछि, से पहिनहि सँ कोनो घातपर बचि चुकल अछि, नहि तँ ओ अहाँक सोझाँ एतय सरल ठाढ़ नहि होइत। अखन ओ घात देखू। साँझक समय आम एकटा भ्रमित ज्ञान लिअ, "इएह शंख चानी थिक।" हमर परिभाषाकेँ ईमानदारीसँ ओहिपर परखू: ओहि ज्ञानक *शंख*–घटक — नग्न "इहाँ" —– सही स्थानपर राखल अछि, किएक तँ एकटा शंख सचमुच ओतय अछि। *चानी*–घटक गलत स्थानपर राखल अछि, किएक तँ चानी ओतय नहि अछि। एकटा ज्ञान, एकटा वाक्य, आ तइयो हमरे परिभाषासँ ओ एकहि संग एक आधामे वैध आ दोसर आधामे अवैध अछि।

शिष्य: की ई केवल अहाँक परिभाषामे एकटा विरोधाभास नहि थिक?

गंगेश: ई होइत, जँ एकटा ज्ञान एक अखंड ढेरक रूपमे वैध वा अवैध होएबाके बाध्य होइत। मुदा "इएह शंख–चानी" क ज्ञान एक अखंड दावा नहि थिक; ई एकहि दृष्टिसँ जुड़ल दुइ दावा थिक — एकटा *इहाँ* क विषयमे, एकटा *चानी–होएब* क विषयमे — आ हरेककेँ संसारक विरुद्ध अलग–अलग परखल जा सकैत अछि, ठीक जेना दुइ उपवाक्यवाला एकटा वाक्यमे एकटा उपवाक्य सत्य आ दोसर मिथ्या भ' सकैत अछि बिनु अविरोध–नियम तोड़ने। हमर परिभाषा बचि जाइत अछि, एक बेर हम ईमानदारीसँ मानि लिअ जे एकटा मिश्रित ज्ञान वस्तुतः की समाहित करैत अछि।

बौद्ध: तखन परीक्षाकेँ एक कदम आर विस्तारित करू, आ देखू ई *हमरा* सामने बचैत अछि की नहि। एकटा गाछ हमरा सभक सोझाँ ठाढ़ अछि; ओकर शीर्षमे एकटा चिड़ैसँ संयोग अछि, आ ओहि संयोगक अभाव ओकर जड़िमे अछि। अहाँक परिभाषासँ, ज्ञान "एहि गाछमे संयोग अछि" वैध अछि वा अवैध?

गंगेश: अहाँ चतुरतासँ जाल राखलहुँ, आ हम जानि–बूझि ओहिमे प्रवेश करब, किएक तँ बाहर निकलबाक रस्ता शिक्षाप्रद अछि। संयोग आ ओकर अभाव पूरा गाछपर विवेकहीन रूपसँ कब्जा नहि करैत अछि — एक शीर्षपर, दोसर जड़िमे, आ एकटा ज्ञान जे उचित रूपसँ *कोन भाग* क विषयमे बाजल जा रहल अछि ई निर्धारित करैत अछि, से न अस्पष्ट अछि, न स्वविरोधी। "गाछ, अपन शीर्षमे, संयुक्त अछि" सत्य अछि; "गाछ, अपन जड़िमे, ओकरासँ रहित अछि" ओतबे सत्य अछि; केवल एकटा ज्ञान जे भाग स्पष्ट करय अस्वीकार करैत, से अहाँक आरोपक योग्य होइत, आ कोनो सावधान वक्ता एकटा ज्ञानकेँ एतेक अनुद्घोषित नहि छोड़ैत अछि।

बौद्ध: अहाँ अपन परिभाषामे हमरा आपत्ति उठएबासँ तेज पैबन्द जोड़ि रहल छी। कतय ई बिन्दु आबि जाइत अछि जतय एतेक बेर पैबन्द कएल गेल परिभाषा एकटा परिभाषा होएब बन्न क' कऽ प्रथम प्रयासक असफलताक स्वीकृति बनि जाइत अछि?

गंगेश: *(अविचलित)* जखन एकटा वैद्य हड्डी सोझ बैसबासँ पहिने दुइ बेर पट्टी सोझ करैत अछि, तखन हम सभ नहि कहैत छी जे पट्टी असफल भेल — हम कहैत छी वैद्य प्रथम प्रयासक विषयमे ईमानदार रहलाह आ ओकरा सुधारय हेतु ओतबे कुशल छलाह जे रोगीक पूरा भार ओहिपर भरोसा करय देबासँ पहिने। हम अहाँकेँ एकटा तीन–पैबन्दयुक्त परिभाषा देब बेसी पसिन्न करब, हरेक पैबन्द जे अहाँक सबसँ नीक प्रहारसँ बचि चुकल अछि, बजाय एकटा सुंदर वाक्यक जे अहाँ ओहिपर टेकैते ढहि जाए। एकरा फेर परखू, जँ अहाँमे आर एकटा प्रहार बाकी अछि।

बौद्ध: एकटा आर, तखन, आ ई सबसँ तेज अछि जे हमरामे अछि। एकटा घैल, ताजा बनल, आगिमे पकबासँ पहिने कारी छल आ पकलाक बाद रक्त–रंग अछि। "इएह घैल कारी अछि" एक बेर सत्य छल आ अखन मिथ्या अछि — इएह वाक्य, इएह घैलक विषयमे, बदलैत सत्यता संग, अहाँक परिभाषामे किछुओ नहि जे एकर व्याख्या करए।

गंगेश: किएक तँ हमर परिभाषा कहियो समयसँ मुक्त तैरएवाला वाक्यक दावा नहि छल — ई, आरंभसँ, एकटा गुणक *एकटा निश्चित समयपर* एकटा आधारमे उपस्थितिक दावा छल, ठीक जेना ओ एकटा निश्चित भागमे उपस्थित होइत अछि। "घैल, आगिमे पकबासँ पहिने, कारी छल" सदा सत्य रहत, भट्ठासँ अपरिवर्तित; "इएह घैल, अखन, कारी अछि" सदा एकटा भिन्न दावा छल,

एकटा भिन्न क्षणसँ बान्हल, आ ई कोनो नियमक दोष नहि थिक जे ओ एकटा समय–सूचित प्रश्नकेँ एकटा समय–सूचित उत्तर दैत अछि। भट्ठा हमर परिभाषा नहि तोड़लक। ओ केवल ई सिद्ध केलक जे जे केओ *कखन* स्पष्ट करय बिसरि गेल, से एकरा परखय हेतु पहिनहि सँ पर्याप्त सावधानीसँ बजबे नहि केने छल।

शिष्य: *(शांततासँ, आधा अपने आपसँ)* हम अखन बुझय लगलहुँ जे ई ग्रंथ किएक एकटा जीवनकाल लऽ लेलक लिखय हेतु।

गंगेश: ई एकटा जीवनकाल लेलक किएक तँ एहिमे हर वाक्य पहिनहि सँ एकटा एहन विरोधीक सोझाँ बैसि चुकल अछि जतबे तेज आइ राति हमर सोझाँ बैसल अछि। ई कोनो शिकायत नहि थिक, मित्र। इएह एकमात्र प्रकारक वाक्य थिक जकरापर आर किछुओ बनएब योग्य थिक।

अंक तृतीय

धुआँ आ अगिनक बीचक बन्धन

व्याप्तिपर, आ एकटा सामान्य नियम कोना जानल जाइत अछि

(गंगेशक कातक दीप ठीक कएल जाइत अछि। ओकर बत्तीसँ हल्का धुआँ उठैत अछि।)

गंगेश: अखन हम सभ ओहि इंजिनक हेतु तैयार छी जे हमरा–अहाँ दुनूक हर अनुमानकेँ चलाओत: *व्याप्ति* नामक बन्धन — एकटा चिह्न, जेना धुआँ, आ जे ओ सिद्ध करैत अछि, जेना अगिन, क बीचक अनिवार्य बन्धन। ओहि बन्धनक सटीक विवरण बिनु, "धुआँ, तँए अगिन" एकटा आदत थिक, प्रमाण नहि। इहाँ एकटा पहिल प्रयास अछि: बन्धन ओतय टिकैत अछि जखन चिह्न कहियो ओतय नहि होइत जतय सिद्ध कएल जाएवाला वस्तु अनुपस्थित अछि।

बौद्ध: सरल, आ हमरा लगैत अछि पहिनहि सँ टूटल। एकटा पूर्णतः सकारात्मक दावा विचारू जकर कतहु कोनो विपरीत–उदाहरण परखय हेतु उपलब्ध नहि अछि — "इहाँ नामकरणयोग्य अछि, किएक तँ ई ज्ञेय अछि।" जे किछु ज्ञेय अछि से सभटा नामकरणयोग्य सेहो होइत अछि; कतहु ज्ञेय–मुदा–नामकरण–अयोग्यक कोनो मामला अस्तित्वमे नहि अछि जकरामे अहाँक "कहियो नहि होइत जतय अनुपस्थित" जाँचल सेहो जा सकए। अहाँक परिभाषा हमरा एहन क्षेत्र खोजय कहैत अछि जकर कोनो दूर कोन जाँचय हेतु नहि अछि।

गंगेश: अहाँ एकटा वास्तविक कमी पाओलहुँ, आ हम एकरा ढाँकब नहि — हम ओ पहिल प्रयास बिलकुल त्यागैत छी, इहाँ, एहि सभाक सोझाँ, ठीक ओतबे तैयारीसँ जतबे हम एक अंक पहिने हमर वैध ज्ञानक पहिल परिभाषा

त्यागने रही। हमरा फेर प्रयास करय दिअ: बन्धन ओतय टिकैत अछि जखन चिह्नक अपन स्थान कहियो ओ जकरा ओ सिद्ध करैत अछि ओकर स्थानसँ भिन्न नहि होइत।

बौद्ध: ओहिसँ नीक नहि। एकरा धुआँ आ अगिनक *भिन्न* स्थानपर होएबाक रूपमे फेर कहू, आ इएह कमी फेर प्रकट होइत अछि जतय कोनो एहन भिन्न स्थान कल्पना सेहो नहि कएल जा सकैत अछि परखय हेतु।

गंगेश: फेर सही — आ इहाँ तेसर प्रयास अछि, आ चारिम, प्रत्येक ओ द्वार बन्न करैत जकरा पछिलका खुजल छोड़ने छल, जाबे धरि हम ओहि धरि पहुँचैत छी जकर हम अहाँक हर पहिनहि सँ लागल प्रहार आ जकर अहाँ अखन धरि सोचल नहि केलहुँ ओहिसँ रक्षा करय तैयार छी: बन्धन स्वयं *सह–स्थिति* थिक, चिह्नक ओहिसँ संग रहब जकरा ओ सिद्ध करैत अछि, एहन ढंगसँ जे चिह्नक अपन उपस्थिति कहियो ओहि स्थानमे नहि पाओल जाइत अछि जे, कतेक अप्रत्यक्ष होइक, ओहिक पूर्ण आ वास्तविक अनुपस्थितिद्वारा निर्धारित होइत अछि। अखन पहाड़केँ परखू। ओहिसँ धुआँ उठैत अछि; अगिन, पहाड़पर कतहु, ठीक ओहि धुआँक संग सह–स्थित अछि। कतहु अगिन–सामान्यक अभाव ओहि विशेष धुआँक एकहि स्थानमे ठाढ़ नहि अछि। बन्धन टिकैत अछि, बिनु कोनो कोनक कहल गेल जे कोनो सीमांत मामला छिपि सकए।

बौद्ध: अहाँ एकटा उदाहरणकेँ बचाबय हेतु चारि परिभाषा बनौलहुँ। हमरा क्षमा करू जँ हम अखनहु चमत्कृत नहि भेल छी।

गंगेश: विधिसँ चमत्कृत होउ, गिनतीसँ नहि। ध्यान दिअ हम एहि चारि प्रयासमेसँ कोनहुमे की नहि केलहुँ: हम केवल अपन निष्कर्ष घोषित क' अहाँकेँ ओकरा खंडित करय चुनौती नहि देलहुँ। हम जान–बूझि पहिने अपन दावाक

सबसँ कमजोर रूप बनौलहुँ, आ अहाँकेँ — वा, दुइ बेर, स्वयं हमरा — ओकरा एकटा मजबूत रूप प्रस्तावित होएबासँ पहिने तोड़य देलहुँ। एकटा दीवार जे अपन राजमिस्त्रीद्वारा चारि बेर परखल गेल आ ठाढ़ रहल, ओ एकटा एहन दीवारसँ बेसी मूल्यवान थिक जकरा केओ अखन धरि धकेलय नहि सोचलक।

शिष्य: मुदा आचार्य — हम सभ एहन बन्धनकेँ पहिने कोना जानैत छी, एक बेर उचित रूपसँ परिभाषित भेलापर? हम रसोइघरमे धुआँ आ अगिन एकसंग देखने छी। हम संसारक हर अगिन नहि देखने छी।

गंगेश: बार–बार अवलोकनसँ, एकटा पैटर्नकेँ तोड़य हेतु, कतेक कठिन खोजल जाए, कोनो एक मामलाक असफलतासँ जुड़ल — आ, जतय अकेल पुनरावृत्ति संशयक एकटा छाया छोड़ैत अछि, अहाँक अपन बौद्ध मित्र स्वयं बिनु ध्यान देने आधा–मानल एकटा आर समर्थनसँ: जँ धुआँ वास्तवमे अगिन बिनु उठि सकैत, तँ धुआँक अगिनपर *निर्भरता* — जे तथ्य कि सुलगैत इंधन, आ केवल सुलगैत इंधन, ओ विशेष धूसर स्तंभ पठबैत अछि — हर रसोइघरमे, हर पहाड़पर, हर युगमे दोहरायल जाएवाला एकटा अव्याख्यायित संयोग होइत, बिनु केओकेँ कहियो एकहु अपवाद देखने। एकटा संयोग जे कहियो असफल नहि होइत अछि, ओ आर उपयोगी रूपसँ संयोग नहि कहल जाइत अछि। ओ कठिनतर नाम कमाइत अछि: एकटा नियम।

अंक चतुर्थ

माटिक पाछू एकटा कर्ता

ईश्वरक अनुमान, आ विषयकेँ सटीकतासँ नामित करबाक अनुशासन

(गंगेश मेजसँ घैल उठबैत छथि आ ओकरा सभाक सोझाँ राखैत छथि।)

गंगेश: आइ रातिक हर तर्क एकहि उपकरणकेँ तेज करैत रहल अछि। अखन हम ओहि उपकरणकेँ ओकर सबसँ कठिन उपयोगमे लगबैत छी। माटि, आ एहि संसारक बाकी तत्त्व, *कार्य* थिक — उत्पन्न, उठल, नित्य नहि — ठीक जेना ई घैल एकटा कार्य थिक। कोनो उत्पन्न वस्तुमे उत्पादकक कमी नहि होइत अछि। तँए: माटि आ बाकी तत्त्वक एकटा कर्ता अछि, ठीक जेना एहि घैलक एकटा कुम्हार अछि।

बौद्ध: अहाँक तर्कक शरीरपर आक्रमण करबासँ पहिने, हम ओकर कंकालपर आक्रमण करब, आ हम अहाँकेँ वचन दैत छी जे ई पलायन नहि थिक — ई ओहि अनुशासन थिक जे अहाँ आइ राति भरि हमरासँ मांगल। एहि अनुमानक *विषय* सटीकतासँ की थिक? अहाँ केवल "माटि आ बाकी तत्त्व" नहि कहि सकैत छी, किएक तँ कोनो एक शब्द हरेककेँ अलग–अलग सूचित नहि करैत अछि, आ कोनो एक बेर–बेर होएवाला विशेषता हुनका सभकेँ एक सामूहिक विषयमे सेहो एक नहि करैत अछि। अपन विषयकेँ सटीकतासँ नाम दिअ, अपन शैलीमे, वा अनुमानक हेतु ठाढ़ होबय क' कोनो स्थान नहि रहत आरंभ होएबासँ पहिनहि।

गंगेश: एकटा मांग जे हम अहाँसँ करितहुँ, जँ हमर स्थिति उलटल होइत, आ हम एकरा टारबाक बदला ओहिना उत्तर दैत छी। विषयकेँ इएह होएब दिअ:

जे किछुओ एकटा कार्य थिक, आ जकरा हमरा–अहाँ दुनू पहिनहि सँ नहि जनैत छी जे एकटा देहधारी मानवीय कर्ताद्वारा उत्पन्न भेल छल। ई घैलकेँ बाहर करैत अछि, जकरा हमरा–अहाँ दुनू पहिनहि सँ मानि लेने छी कि एकटा कुम्हारद्वारा बनल छल, आ ई किछुओ बाहर नहि करैत अछि जे हमरा–अहाँ दुनूक बीच वास्तवमे विवादित बाकी अछि।

बौद्ध: बहुत संकीर्ण, आ खतरनाक रूपसँ। एहि वाक्यांशपर, एकटा अंकुर — उत्पन्न, निश्चित रूपसँ, तइयो कोनो देहधारी शिल्पकारद्वारा नहि — अहाँक विषयमे ओतबे सहजतासँ भीतर पड़ैत अछि जतबे माटि पड़ैत अछि। अपन निष्कर्षकेँ अंकुरक हेतु प्रमाणित करू, चुपचाप, आ अहाँ किछु प्रमाणित केने भेल, मुदा अहाँ *संसारक* कर्ता प्रमाणित नहि केलहुँ; अहाँ केवल एकटा छोट, असाधारण मामलाकेँ एकहि द्वारसँ भीतर घुसा देलहुँ आ ओकरा एकहि विजय कहि देलहुँ।

गंगेश: एकटा सटीक आपत्ति, आ हम एकर उत्तर विषयकेँ आर नरम कऽ नहि देब, जे प्रलोभनकारी भूल थिक — हम अंकुरकेँ माटिक स्थान लेबय बिलकुल नहि देब, ओहिसँ उत्तर देब। अंकुर कहियो आइ राति हमरा–अहाँ दुनूक बीच विवादित विषय नहि छल; माटि छल। एकटा अनुमान अपन निष्कर्ष केवल ओहि विषयक हेतु सिद्ध करैत अछि जे ओकर आरंभमे वास्तवमे नामित छल, आ जँ हम चुपचाप बीचमे अंकुरकेँ प्रतिस्थापित क' देने रहितहुँ, तँ हम ठीक ओ दोष केने रहितहुँ जकर हम एक अंक पहिने अहाँपर आरोप लगौने रही, एकटा परिभाषाक भीतर छिपाओल — तर्कक तलहटी बदलब एक बेर ओ असुविधाजनक भेलापर। विषय माटि, पानि, अगिन, आ हवा बनल रहैत अछि,

ठीक ओहि विवादित कार्यक रूपमे लेल गेल जे ओ वस्तुतः थिक; अंकुर अपन साँझक प्रतीक्षा क' सकैत अछि।

बौद्ध: तखन एकरा स्वयं ठीक ढंगसँ संकीर्ण करू, किएक तँ हम अहाँक संकीर्णताकेँ अस्वीकार करैत छी। स्पष्ट कहू: कर्तृत्व, इहाँ, इएह अछि जे केओद्वारा उत्पन्न भेल जकरा उपादान कारणक प्रत्यक्ष ज्ञान, कर्म करबाक इच्छा, आ प्रयास अछि — ठीक तीन वस्तु जे एकटा कुम्हार, अपन चाकक सोझाँ ठाढ़, राखैत अछि।

गंगेश: हम एक क्षण पहिने ठीक इएह कहबे केने रही, आ हमरा खुशी अछि जे अहाँ हमरा एहिपर टेकबासँ पहिने परखय बाध्य केलहुँ, किएक तँ ई अपन भारसँ ढहि जाइत अछि। अहाँ आ हम दुनू पहिनहि सँ प्रत्येक दिन असंख्य उपादान कारणक विषयमे ज्ञान, इच्छा, आ प्रयास राखैत छी, आ तइयो माटि सम्पूर्णतः स्पष्ट रूपसँ हमरा–अहाँ दुनूमेसँ कोनहुद्वारा ओहि सामान्य ज्ञान आ इच्छाक बलपर उत्पन्न नहि भेल अछि। जँ "कर्तृत्व" क अर्थ केवल कोनो–न–कोनो व्यक्तिमे ओ तीन शक्तिक नग्न उपस्थिति होइत, तँ ई गुण पहिनहि सँ सामान्य जीवित प्राणीद्वारा हजारो बेर संतुष्ट भ' चुकल होइत, आ हमर अनुमान किछुओ नहि सिद्ध करितए जकरा ओकरा पहिनहि सँ मानय आवश्यक नहि छल।

बौद्ध: तखन अहाँ अपने प्रमाणकेँ हमरासँ बेसी जल्दी आइ राति खंडित क' देलहुँ, हम अपनहि क' सकितहुँ।

गंगेश: हम अपन *लापरवाह* प्रमाणकेँ खंडित केलहुँ, जे प्रमाण स्वयंकेँ खंडित करबासँ भिन्न उपलब्धि थिक, आ इएह ठीक ओ उपलब्धि थिक जकरा

पहचानय हेतु ई पूरा साँझ सभाकेँ प्रशिक्षित करैत रहल अछि, पराजयक बदला प्रगति रूपमे। तर्ककेँ वस्तुतः जकर आवश्यकता अछि, से आरो संकीर्ण अछि: एकटा कर्ता जकर ज्ञान, इच्छा, आ प्रयास केवल माटिक उत्पत्तिक संग उपस्थित नहि अछि, जेना हमर ज्ञान हजारों वस्तुक संग उपस्थित अछि जकरा हम कहियो नहि केने रही, अपितु जे ओकर *प्रभावी* कारण थिक — ठीक ओहि कारणिक संबंधमे ठाढ़ जे कुम्हारक ज्ञान, इच्छा, आ प्रयास एहि घैलक संग ठाढ़ अछि, आ केवल माटिक उत्पत्तिक संग ओहि संगतिमे नहि जे एकटा निष्क्रिय दर्शक एकटा अगिनक संग राखैत अछि जकरा ओ नहि जरौलक।

शिष्य: आ की ओ संकीर्ण कर्तृत्व हमरा–अहाँ सभक बीच पाओल जा सकैत अछि, आचार्य — कोनो देहधारी व्यक्ति, कतबो छिपल, जे अंततः ओकरा संतुष्ट क' सकए?

गंगेश: एकरा ईमानदारीसँ परखू आ देखू ई कतय लऽ जाइत अछि। एकटा देहधारी कर्ताक प्रयास एकटा शरीरकेँ पूर्वापेक्षित करैत अछि; एकटा शरीर, हमरा–अहाँ दुनूकेँ स्वीकार्य हर विवरणें, स्वयं ओहि उत्पन्न वस्तुमेसँ अछि जकरा ठीक एहन कर्ताक आवश्यकता अछि। माटिकेँ कोनो पहिनुक देहधारी कर्ताक अपीलसँ स्पष्ट करब एहन ऋण उधार लेब थिक जे कहियो चुकाओल नहि गेल — हरेक उम्मीदवार जकरा अहाँ हमरा शरीरक संसारसँ देब, ओ स्वयं अपन अस्तित्व ठीक ओहि प्रकारक कारणसँ ऋणी सिद्ध होइत अछि जकरा हम सभ खोजि रहल छी। शृंखला एकटा देहधारी कर्तामे समाप्त नहि भ' सकैत अछि बिनु या तँ अनंततः, अव्याख्यायित, पाछू चलने, वा अंततः रुकने, एकटा ज्ञाता, इच्छुक, आ कर्तापर जकर प्रयास स्वयं कोनो पहिनहि सँ ऋणी शरीरपर निर्भर नहि अछि। इएह सम्पूर्ण थिक जकरा हम ईश्वर कहैत छी, आर किछुओ

नहि: कोनो बड़का मनुष्य नहि, अपितु कर्ताक शृंखलामे ओ एकटा कड़ी जकरा स्वयं ओतय होएबाक हेतु कोनो पूर्ववर्ती कर्ताक आवश्यकता नहि।

बौद्ध: *(एकटा लम्बा विरामक बाद)* अहाँ पूरा साँझ बितओलहुँ हमरा– अहाँ दुनूकेँ कोनो शॉर्टकट लेबय नहि देबामे — हमर आपत्तिसँ नहि, आ, आइ राति दू बेर, अपन स्वयंक पहिल उत्तरसँ सेहो नहि। हम अखनहु अपनाकेँ मनाएल नहि कहैत छी। मुदा हम अब ई नहि विश्वास करैत छी, जेना हम बैसैत काल करैत रही, जे ई निष्कर्ष कोनो छोड़य योग्य कदम छोड़िकऽ पहुँचल गेल।

गंगेश: इएह एकमात्र परिणाम थिक जे हम एहि सभासँ कहियो मांगल अछि। हम आइ राति एतय अंतमे बजिकऽ बहस जीतय नहि आयल छी। हम एकटा वाक्य एक बेरमे बनबय आयल छी, ओहन साक्षीक सोझाँ जे तेज छथि जँ दीवारक कोनो पाथर लापरवाहीसँ राखल गेल होइक तँ हमरा पकड़य सकथि। जँ दीवार ठाढ़ रहत, से एहि लेल नहि जे हम अंतमे अपन स्वर उठौलहुँ। से एहि लेल होएत जे दीप जरतो जरतो, ओहिमे किछुओ अपरीक्षित नहि छोड़ल गेल।

उपसंहार

(सूत्रधार वापस आबैत अछि जखन दीप मंद कएल जाइत अछि।)

सूत्रधार: ध्यान दिअ ई साँझ की नहि छल। ई ओहि वादसँ जोर नहि छल जे एहिसँ पहिने आर हॉलमे, आर साँझमे, आर ग्रंथपर भेल छल। गंगेश उपाध्यायक सम्पूर्ण विधि ध्वनिक विपरीत छल: दावाकेँ ओतेक कमजोर आ सटीक कहू जतेक ईमानदारी अनुमति दैत अछि, सबसँ तेज प्रहार उपलब्ध आमंत्रित करू, आ जँ प्रहार लागए, विरोधीकेँ धन्यवाद दिअ आ बड़बड़ाहटक बदला पुनर्निर्माण करू। ओ अपन ग्रंथकेँ एकटा चिंतामणि रत्न नाम देलनि, आ हमरा सभकेँ अपन आरंभिक पंक्तिहिमे स्पष्ट कहलनि जकर अन्हार ओ साफ करय चाहैत छलाह — अपन युगक बौद्ध तार्किकक शक्तिशाली संशय, जे न मंगलाचरणक शक्ति, न संसारक कर्ता, किछुओ अदृश्य कारण नहि मानैत छलाह। ओ ओहि संशयकेँ ओकर भार अनुभव करय अस्वीकार कऽ उत्तर नहि देलनि। ओ ओकरा एहि आग्रहसँ उत्तर देलनि, एक साँझमे चारि बेर, जे हुनक अपन प्रथम उत्तर अखनहु बिनु चुनौतीक ठाढ़ रहबाक अधिकार नहि कमाओने छल। की ई ठीक होएबाक समान वस्तु थिक, ई सभा, जेना ओ सदा करैत अछि, ओहि व्यक्तिपर छोड़ैत अछि जे प्रश्नकेँ द्वारसँ बाहर लऽ जाइत अछि।

(सभ पात्र प्रस्थान करैत छथि।)

ई गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिंतामणिक चारि प्रतिनिधि आंदोलनक अनुसरण करैत अछि — मंगलाचरणक कारणिक शक्तिपर आरंभिक वाद (ग्रंथक अपन उदयनक किरणावलीक अनमना पूर्णताक संदर्भ सहित), शंख–चानीक शास्त्रीय भ्रमक उपयोग सँ वैध ज्ञान (प्रामाण्य) क क्रमिक परिभाषा, धुआँ–अगिन संबंधद्वारा व्याप्तिक परिभाषाक क्रमिक परिष्करण, आ ईश्वरक अनुमान (ईश्वरानुमान) क तकनीकी निर्माण, ग्रंथक अनुमानक विषय आ "कर्तृत्व" क अर्थ सटीक रूपसँ निर्दिष्ट करबामे उठाओल वास्तविक कठिनाई सहित। ई ग्रंथक उपमान वा शब्द खंड, न प्रत्यक्ष आ अनुमान खंडक पूरा तकनीकी उपकरण, जे एहि एक साँझक वादसँ बहुत आगू परिभाषा आ आपत्तिमे चलैत अछि, ओकरा छूबय क' प्रयास नहि करैत अछि। ई संवाद ग्रंथक तर्क–संरचना आ ओकर अपन क्रमिक स्वयं–खंडन आ परिष्करणक कथित विधिक चारू कात निर्मित अछि, आ बौद्ध, मीमांसक, आ शिष्य संयुक्त पात्र थिक जे ग्रंथ स्वयं उठाओल आ उत्तरित मतकेँ स्वर दैत अछि, नामित ऐतिहासिक व्यक्तिक चित्रण नहि।

तत्त्वचिन्तामणि

कथा, दृष्टान्त आ उद्धरण-संग्रह

कथा आ दृष्टान्त

सभा शान्त भेल। सूत्रधार शिष्यसभ आ गामक लोकक बीच ठाढ़ भऽ, धीर स्वरमे पुरान दृष्टान्त सुनाबय लगलाह—

गङ्गेशक बाल्यकालीन जनश्रुति—जनश्रुति आ पारम्परिक कथाक अनुसार, गङ्गेश बाल्यावस्थामे अत्यन्त मन्दबुद्धि, जड आ निरक्षर छलाह। हुनक पिता हुनका पढेबाक बहुत प्रयास कएलन्हि, मुदा जखन कोनो लाभ नहि भेल तँ हुनका ननिहाल पठा देल गेल। ओतय हुनक मामा आ मामाक शिष्यलोकनि सेहो हुनका पढेबाक चेष्टा कएलन्हि, मुदा विफल भेलापर हुनकासँ चिलम भरबाक आ हुक्का अनबाक नीच काज कराएल जाइत छल। एकटा कथाक अनुसार श्मशानमे शव-साधना कऽ रहल एक तान्त्रिकक कृपा वा देवी कालीक वरदानसँ हुनकामे अकस्मात् अपूर्व ज्ञानक स्फुरण भेल, जकर बाद जखन ओ घर घुरलाह तँ हुनक मामा हुनकासँ शास्त्रार्थ कएलन्हि आ गङ्गेशक तर्क सुनि कऽ अवाक रहि गेलाह।

सीपकेँ चानी बुझबाक दृष्टान्त—एहिमे सीप (शुक्ति) केँ चानी (रजत) बुझि लेबाक प्रसिद्ध उदाहरण अछि। जखन व्यक्ति सीपकेँ चानी बुझि कऽ ओकरा उठाबय लेल प्रवृत्त होइत अछि, तँ प्राभाकर मीमांसकक (अख्यातिवाद) दृष्टिसँ

प्राभाकर मीमांसकक अनुसार, जखन सीपक चमक देखि कऽ चानीक स्मरण होइत अछि, तखन वास्तवमे ई दूटा अलग-अलग ज्ञान अछि:

पहिल: "ई किछु अछि" (सीपक सामान्य प्रत्यक्ष ज्ञान)।

दोसर: "चानी" (स्मृतिसँ आयल ज्ञान)।

मुदा व्यक्ति एहि दुनूक बीचक 'भेद' केँ ग्रहण नहि कऽ पाबैत अछि, जाहिकेँ दर्शनमे 'भेदाग्रह' (भेद + अग्रह) कहल गेल अछि। एहि अलगावक ज्ञान नहि भेलाक कारण, ओ दुनूकेँ एक बुझि लैत अछि आ चानी उठाबय लेल प्रवृत्त भऽ जाइत अछि।

देवदत्त घरसँ बाहर छथि—प्रसिद्ध उदाहरण: जेना कोनो व्यक्ति (देवदत्त) जीवित अछि, मुदा ओ दिनमे घरपर नहि देखाइ दैत अछि। एतय "जीवित रहब" आ "घरपर अनुपस्थित रहब"—ई दूटा कुरा अछि। जखन घरपर ओकर अनुपस्थिति निश्चित अछि, तँ ओकर जीवित रहब तखनहि सम्भव अछि जखन ओ घरसँ

बाहर बाहरे कतहु गेल होब। एहि प्रकार बाहर होएबक कल्पना अर्थापत्ति प्रमाणसँ होइत अछि।

अग्नि, मणि आ मन्त्रक दृष्टान्त—ओ कहैत छथि जे साधारणतः जखन हाथ अग्निक सम्पर्कमे अबैत अछि, तँ जरैत अछि (दाहानुभूति होइत अछि)। मुदा जँ ओतय कोनो विशिष्ट 'मणि' वा 'मन्त्र' उपस्थित कऽ देल जाए (जकरा प्रतिबन्धक कहल जाइत अछि), तँ अग्नि रहितहुँ हाथ नहि जरैत अछि। आ जखन ओ मणि हटा लेल जाइत अछि, तँ अग्नि फेरसँ हाथकेँ जरा दैत अछि।

मीमांसक सभक अनुसार, मणि वा मन्त्र एकटा 'प्रतिबन्धक' (अवरोधक) थिक। जखन अग्निक लग मणि राखल जाइत अछि, तँ ओ मणिक प्रभावसँ अग्निक ओहि अदृश्य 'दाहशक्ति' (जराएबाक शक्ति) केर नाश भऽ जाइत अछि वा ओ अनुत्पादक अवस्थामे चलि जाइत अछि। शक्ति नष्ट वा अवरुद्ध भेलाक कारणेँ, अग्नि आ हाथक सम्पर्क रहितहुँ दाहानुभूति नहि होइत अछि। फेर जखन मणि हटा लेल जाइत अछि, तँ अग्निमे ओ शक्ति पुनः आबि जाइत अछि आ हाथ जरैत अछि।

जखन हाथ अग्निक सम्पर्कमे अबैत अछि आ ओतय मणि नहि रहैत अछि, तखन प्रतिबन्धकाभाव उपस्थित रहैत अछि, कारण-सामग्री पूर्ण होइत अछि आ हाथ जरैत अछि।

जखन मणि आबि जाइत अछि, तखन मणिक अभाव नहि रहैत अछि। फलतः कारण-सामग्री अपूर्ण भऽ जाइत अछि आ अग्नि रहितहुँ हाथ नहि जरैत अछि।

"ॐ" आ "अथ" शब्दक उत्पत्ति—"अथ" शब्द विघ्ननाशक होयबाक कारण अपने मङ्गल अछि। स्मृतिमे कहल अछि—सृष्टिक आरम्भमे ब्रह्माक कण्ठ फोड़ि "ॐ" आ "अथ" शब्द पहिने प्रकट भेल; अतः दुनू मङ्गल अछि। "अथ" केवल शुभारम्भक सूचक अछि—ई नहि कहल जाय; नहि तँ महर्षि गौतम द्वारा न्यायशास्त्रक आरम्भमे एहि शब्दक प्रयोग अनावश्यक पुनरुक्ति होइत।

गवयक परिचय—जखन कोनो जिज्ञासु पूछैत अछि—"गवय कोना देखाइत अछि?", तखन वनवासी उत्तर दैत अछि—"गवय गायक समान अछि।" पछाति ओ व्यक्ति वनमे जा कऽ गाय-जकाँ पशु देखैत अछि, उपदेशवाक्यक अर्थ स्मरण करैत

अछि—“ई गवय गायक समान अछि”—आ निश्चय करैत अछि—“ई गवय ‘गवय’ शब्दक वाच्यार्थ अछि।”

गदहाक परिचय—उत्तरक व्यक्ति दक्षिणक जिज्ञासुकेँ उत्तर दिशामे जाएबाक मार्ग बतबैत कहैत अछि—“अत्यन्त लम्बा गरदनि, लम्बा हिलैत ठोर, कठोर कोमल टहनी खायवला, जूँसँ भरल देह आ पशुसभमे नीच गदहा धिक्कारयोग्य अछि।”

दक्षिणक व्यक्ति ई उपदेश सुनि उत्तर दिशामे जा कऽ ओहि प्रकारक पशु देखैत अछि आ निश्चय करैत अछि—“ई पशु गदहा अछि।”

ब्रोकलीक परिचय—मानि लिअ जे कोनो व्यक्ति कहियो 'ब्रोकली' नहि देखने अछि आ नहि ओकर नाम जनैत अछि।

उपदेश: ओकर कोनो मित्र ओकरा बताबैत छथि जे, "ब्रोकली एकदम फूलगोभी जकाँ होइत अछि, मुदा ओकर रङ्ग गाढ़ हरियर होइत अछि।"

प्रत्यक्ष आ स्मरण: किछु दिनक बाद ओ व्यक्ति सब्जी बजार जाइत अछि आ ओतय एकटा हरियर रङ्गक फूलगोभी जकाँ सब्जी देखैत अछि। ओकरा देखि कऽ ओकरा मित्रक बात मोन पड़ैत अछि (स्मरण होइत अछि)।

उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।"

जेबराक परिचय—मानि लिअ जे कोनो बालक कहियो 'जेबरा' नहि देखने अछि।

उपदेश: ओकर शिक्षक ओकरा बताबैत छथि जे, "जेबरा बिल्कुल घोड़ा जकाँ देखाइत अछि, मुदा ओकर देहपर कारी आ उज्जर रङ्गक धारी होइत अछि।"

प्रत्यक्ष आ स्मरण: किछु दिनक बाद ओ बालक चिड़ियाघर जाइत अछि आ ओतय धारीदार घोड़ा जकाँ एकटा पशु देखैत अछि। तखन ओकरा शिक्षकक बात मोन पड़ैत अछि।

तखन ओ बालक निश्चय करैत अछि—“ई पशु जेबरा अछि।”

काठक पुतरी आ बालक—सूत्रधारक डोरिसँ चलाओल काठक पुतरीकेँ “घट आनू” जकाँ शब्द सुनलाक बाद घट अनबाक क्रिया करैत देखिकऽ बालक घटक ज्ञानमे “घट” शब्दक कारणत्व बुझैत अछि।

पुत्रजन्मक समाचार आ बालक—पुत्रजन्मक समाचार सुनि चैतक मुखपर हर्ष देखिकऽ बालक समाचारजन्य पुत्रजन्मज्ञानकेँ हर्षक कारण बुझैत अछि।

उद्धरण

फेर सूत्रधार पुरान वचन आ उद्धरण सुनाबय लगलाह—

मङ्गलाचरण—असीम महिमावान्, तीनू पुरक संहारकर्ता भगवान् ईश्वरकेँ प्रणाम; जे गुणातीत रहितो अचूक संकल्पवाला छथि; तीन गुणक सहाय्यसँ जगत्क कारण छथि; ज्ञान, इच्छा आ प्रयत्न—एहि तीन नित्य स्वरूपेँ युक्त छथि; ब्रह्मा, विष्णु आ महेश—एहि तीन रूपमे सृष्टि, पालन आ संहारक कार्य करैत छथि; दयाक अथाह सागर तथा तीनू लोकक एकमात्र परम आश्रय छथि।

मङ्गल-विधान—"जे समाप्तिक इच्छुक अछि आ फलवान् कर्म आरम्भ करऽ जा रहल अछि, सँ मङ्गलाचरण करय।"

विनायक-स्तुति—"विनायकक स्तुतिसँ समस्त विघ्न शान्त होइत अछि।"

देवता-स्तुति—"जे निर्विघ्न कर्म-समाप्तिक इच्छुक अछि, सँ देवताक स्तुति करय।"

प्रभातक मङ्गल-दर्शन—"मङ्गलकर्ममे प्रवृत्त, देवभक्त, मौनशील आ पाप-निवारक यज्ञ करऽवला लोक प्रभातमे दर्पण देखथि।"

सदाचार—"ककरो प्रदेशमे परम्पराक क्रमसँ युग-युगान्तरसँ चलि आबि रहल लोकाचार, जँ श्रुति-स्मृतिक विरुद्ध नहि आ ओकर अनुकूल अछि, तँ सदाचार मानल जाइत अछि।"

संसार-वैराग्य—"ई संसार क्रुद्ध सर्पक फणाक छायाजकाँ अछि।"

संसाररूपी वन—"एहि संसाररूपी वनमे दुःखक कतेक दुर्दिन आ सुखक कतेक आकाशदीप अछि!"

आत्मश्रवण आ आत्मानुभव—"आत्माकेँ सुनबाक, विचारबाक, ध्यान करबाक अर्थात् साक्षात् अनुभूत करबाक चाही।"

ब्रह्मनिष्ठा—"जे ब्रह्ममे निष्ठावान् अछि, सँ अमरत्व प्राप्त करैत अछि।"

गृहस्थक मुक्ति—"न्यायपूर्वक धन अर्जन करयवला, तत्त्वज्ञाननिष्ठ, अतिथिप्रिय, श्राद्धकर्ता आ सत्यवादी गृहस्थ मुक्त होइत अछि।"

कर्मसंन्यास—“समस्त कर्मक संन्यास कऽ मोक्ष प्राप्त कएल जा सकैत अछि।”

भगवद्गीता: स्वकर्म आ सिद्धि—“मनुष्य अपन कर्ममे अनुरक्त रहि सिद्धि प्राप्त करैत अछि; अपन कर्मसँ ईश्वरक पूजा कऽ मनुष्य सिद्धि प्राप्त करैत अछि।”

विष्णुपुराण: ज्ञान आ कर्म—“बुद्धिमान् लोक ब्रह्मप्राप्तिक प्रयत्न करथि; ज्ञान आ कर्म दुनू ब्रह्मप्राप्तिक कारण विहित अछि।”

हारितस्मृति: पक्षीक दू पाँखि—“जेना आकाशमे पक्षीक गमन दूनू पाँखिसँ सम्भव अछि, तहिना सनातन ब्रह्मक प्राप्ति ज्ञान आ कर्म दुनूसँ होइत अछि।”

श्रुति: सत्यतप आ सम्यक् ज्ञान—“सत्यतप, सम्यक् ज्ञान आ संयमसँ प्राप्त होमयवला परमात्मा ज्ञान आ कर्म दुनूसँ प्राप्त होइत छथि।”

जातिस्मरण—“जे द्विज पूर्वजन्म स्मरण करैत अछि, सँ समस्त विज्ञानसँ सम्पन्न आ समस्त शास्त्रार्थक तत्त्वज्ञ होइत अछि।”

जडभरतकथा—“गुरुद्वारा उपदिष्ट वेद नहि पढ़ने, वैदिक कर्मक अनुष्ठान नहि कएने आ शास्त्र ग्रहण नहि कएने दीक्षित व्यक्ति।”

भगवद्गीता: त्याग—“बुद्धिमान् लोक काम्यकर्मक त्यागकेँ संन्यास बुझैत छथि; नित्यकर्मक संन्यास संगत नहि। मोहवश नित्यकर्मक त्याग तामस त्याग कहल जाइत अछि।”

आत्मज्ञान—“आत्माकेँ जानबाक चाही; आत्मज्ञानी फेर संसारमे नहि अबैत अछि।”

मृत्युकेँ पार करबाक मार्ग—“परमात्माकेँ जानिकऽ मनुष्य मृत्युकेँ पार करैत अछि; शरणक आन कोनो मार्ग नहि।”

हृदयग्रन्थि—“परमात्माक साक्षात्कार भेलापर हृदयग्रन्थि खुलि जाइत अछि, समस्त संशय कटि जाइत अछि आ जीवक कर्म क्षीण भऽ जाइत अछि।”

ज्ञानाग्नि—“हे अर्जुन, ज्ञानाग्नि समस्त कर्मकेँ भस्म कऽ दैत अछि।”

कर्म आ भोग—“भोग बिना कर्म क्षीण नहि होइत अछि।”

नीलकमलक पात—“जेना नीलकमलक पातसँ जल अलग रहैत अछि, तहिना कर्म तत्त्वज्ञानीसँ अलग भऽ जाइत अछि।”

व्याजस्तुति—“हे प्रिय, जँ अहाँ जाएबामे रुचि रखैत छी तँ जाउ।”

व्याजस्तुतिक अभिप्राय—“नहि जाउ।”

वेदक उत्पत्ति—“ओहि तपसँ चारि वेद उत्पन्न भेल।”

ईश्वरक उपासना—“ईश्वरक उपासना करू।”

ब्रह्मक स्वरूप—“नित्यं विज्ञानम् आनन्दं ब्रह्म।”

स्वर्गक स्वरूप—“एहन सुख जे दुःखसँ मिश्रित नहि, साधारण सुखसँ बाधित नहि, आ इच्छामात्रेँ प्राप्त होइत अछि, स्वर्ग कहल जाइत अछि।”

इन्द्रक स्वरूप—“इन्द्र सहस्राक्ष छथि।”

ईश्वरक कर्तृत्व—“हम समस्त कार्यक कारण छी।”

ईश्वरक कर्तृत्वक दोसर वचन—“समस्त कार्य हमर द्वारा उत्पन्न अछि।”

स्मृतिक यथार्थता—“स्मृतिक यथार्थता फेर कतएसँ?”

एतबा कहि सूत्रधार किछु काल मौन रहलाह, फेर हाथ जोड़ि सभाकेँ प्रणाम कयलनि।

अध्याय [–९६] (छियानबे)

स्मृति–रक्षा

देह माटिमे मिलै छै, नाम पातपर टिकै छै— जे गाम मन राखै, तकरा केओ मेटा नहि सकै।

— गढ़ नारिकेल

(भूमिका, चारि अंक आ उपसंहारमे विभक्त एकटा मौलिक नाट्य–रचना; अध्याय [–१००] आ ९९–९८ केर वाद–शालाक निरन्तरतामे स्थित।)

पात्र–परिचय

सूत्रधार — मंच–संचालक

वाचस्पति मिश्र — वृद्ध आचार्य, जीवनक अन्तिम वर्ष, शरीर क्षीण मुदा वाणी अखनहु दृढ़

बुधुआ — वाचस्पतिक चिरसेवक, वर्षोंसँ वाद–शालाक द्वार लग दीप आ शंख रखनिहार (अध्याय [–१००] मे उल्लिखित सेवक इएह छथि)

हुलासा — वाद–शालाक पोथी–प्रतिलिपिकार कन्या, बुधुआक भगिनी, राति भरि ग्रंथ नकल करैत छलि

शिष्य वामदेव — वाचस्पतिक युवा शिष्य, जिज्ञासु, प्रमाण–मीमांसाक विद्यार्थी

आचार्य कर्णपूर — कर्मकांडी मीमांसक, समाजक "प्रतिष्ठा" क रक्षक, शीघ्रताक पक्षधर

मुखिया रत्नेश — ग्रामप्रमुख, विवादसँ बचय चाहैत छथि

परिषद् — सभाक कानाफूसी

स्थान: वाद–शालाक पाछाँक आँगन, जतय एकटा पुरान इनार अछि। भोरुका पहर, कुहेस अखनहु छाँटल नहि। इनारक कातमे एकटा टूटल दीप आ किछु भिजल ताड़पत्र पड़ल अछि।

भूमिका

(सूत्रधार प्रवेश करैत अछि।)

सूत्रधार: शंख आ रजतक कथा हम पहिनहि सुना चुकल छी — जतय एक मनुष्य भ्रमवश शंखकेँ चानी बुझि लेने छल। मुदा भ्रमक ओ चर्चा एकटा सुविधा छल, किएक तँ ओतय केओ मरल नहि छल, केवल हाथ खाली रहि गेल छल। आइ हम एकटा दोसर भ्रमक कथा सुनाबय जा रहल छी, जतय हाथ खाली नहि, इनार भरल अछि, आ प्रमाणक सभटा यंत्र — प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द — एक संगे बजैत अछि आ एक संगे चुप रहि जाइत अछि। एहि वाद–शालाक बाहर, द्वार लग, एकटा सेवक तीस बरखसँ बैसल अछि, दीप जरबैत, शंख आ डोरी सम्हारैत, हर वादक अंतिम शब्द सुनैत। आइ ओकर कथा सेहो शुरू होइत अछि, यद्यपि ओ स्वयं एकरा कथा नहि मानत। देखू, आ स्वयं जाँचू, कतय भ्रम छल आ कतय सुविधा।

(सूत्रधार, वादक आरम्भसँ पूर्व, एकटा लोकगीत गबैत अछि —)

देह माटिमे मिलै छै हे, नाम पातपर टिकै,
जे गाम मन राखै रे, तकरा केओ मेटा नहि सकै।
राजा मेटा सकै कागच, आगि जरा सकै पोथी;
मुदा जे कण्ठमे बसल नाम, से कोनो हाथ नहि मेटाबय।
देह क्षणिक हे, नाम अमर रहै रे —
जे स्मृति गाम राखल, से बारह सय बरख बाँचल।

(प्रस्थान)

अंक प्रथम

इनारक कातमे

(बुधुआ इनारक कातमे बैसल अछि, माथ पर हाथ धेने। भोरुका उजास अखनहु धूसर अछि। वाचस्पति डण्टा टेकैत प्रवेश करैत छथि।)

वाचस्पति: बुधुआ, राति भरि द्वार लग तोहर दीप जरैत रहल, मुदा भोरे हुलासा नहि आयल पोथी लेब। की भेल?

बुधुआ: (स्वर काँपैत) आचार्य, ओ... ओ इनारमे भेटलि। भोर होइतहि माझी लोकनि देखलक। हम... हम अपनहि हाथें ओकरा एहि जगहसँ निकालल छल, जखन ओ छोट छलि, कतेको बेर। आइ हम ओकरा निकालि नहि सकलहुँ।

वाचस्पति: (एक क्षण स्तब्ध, फेर धीरे) कहाँ अछि ओ आब?

बुधुआ: कर्णपूर आचार्य पहिनहि सँ मुखियाक संग अछि। ओ सभ कहि रहल छथि — आत्महत्या।

वाचस्पति: एतेक शीघ्र? हम एखन धरि ई सेहो नहि जनलहुँ जे ओ मरलि कोना, आ ओतहि "आत्महत्या" शब्द ठाढ़ भऽ गेल?

बुधुआ: आचार्य, कर्णपूर आचार्यक भय अछि — जँ ई हत्या सिद्ध होइत अछि, तँ वाद-शालाक नाम बिगड़त। एतय राति-राति एकटा कुमारि कन्या पोथी लिखैत छलि, ई बात सेहो कतेको लोककेँ नीक नहि लगैत छल। हुलासा एक बेर हमरासँ कहने छलि — "काका, हमरा शिष्या मानि लेल जाइत, तँ लोक हमर लेखनीकेँ आदर देत। सेविका मानि लेल जाइत अछि, तेँ हमर लेखनी सेहो केवल सेवा गनल जाइत अछि।" हम ओकरा उत्तर नहि दऽ सकलहुँ।

वाचस्पति: (कठोर होइत) तखन ओकर मृत्यु सेहो ओहि अनिष्टकेँ ढाकबाक साधन बनि जाएत जकरा ओ जीवनमे सहैत छलि? नहि। हम पहिने एतय जा कऽ देखब जे भेल की छल।

(वाचस्पति आ बुधुआ इनार दिस बढ़ैत छथि। हुलासाक शिष्या–सहचरी सभक कानाफूसी दूरसँ सुनाइ पड़ैत अछि।)

(कर्णपूर आचार्य आ मुखिया रत्नेश प्रवेश करैत छथि।)

कर्णपूर: आचार्य, अहाँ आबि गेलहुँ, नीक भेल। हम मुखियाजीकेँ कहि रहल छलहुँ — शास्त्र स्पष्ट अछि, आत्महत्या करनिहारक कोनो साक्षी–विधि आवश्यक नहि, केवल शवक विधिवत् संस्कार पर्याप्त अछि। एहिमे विलम्ब उचित नहि।

वाचस्पति: कर्णपूर, अहाँ जे शास्त्रक बात करैत छी, ओही शास्त्रमे ई सेहो अछि जे मृत्युक कारण निश्चित करब प्रमाणक विषय थिक, इच्छाक नहि। अहाँ ई कोन प्रमाणसँ जनलहुँ जे ओ स्वयं खसलि?

कर्णपूर: प्रमाण साफ अछि — इनार एकान्तमे अछि, आ रातिमे कियो ओकरा हेरएबाक कारण नहि देखलक।

वाचस्पति: ई तँ अनुपस्थितिक प्रमाण थिक, उपस्थितिक नहि। अभावक प्रमाण अभावेक प्रमाण दैत अछि, कर्तृत्वक नहि। अहाँ अभावसँ कर्तृत्व सिद्ध करय चाहैत छी, ई तँ ओहिना थिक जेना कोनो अन्हार कोठलीमे धुआँ नहि देखलासँ ई सिद्ध करब जे ओतय अगिन कहियो नहि जरल।

मुखिया रत्नेश: आचार्य, हमरा क्षमा करू, मुदा गामक शांतिक हेतु शीघ्र निर्णय आवश्यक अछि। जँ ई प्रश्न उठत जे वाद–शालामे कोनो अनिष्ट भेल, तँ बहुत घर अपन बेटी एतय पढ़ाएब बन्न कऽ देत।

वाचस्पति: (धीरे, मुदा दृढ़) तखन अहाँ सभ ई कहि रहल छी जे सत्यक मोल गामक प्रतिष्ठासँ कम अछि? रत्नेशजी, जँ आइ हम सत्यकेँ प्रतिष्ठाक हेतु बलिदान करी, तँ काल्हि प्रतिष्ठा सेहो टिकत केना, किएक तँ ओ स्वयं झूठक नींहपर ठाढ़ रहत।

(परिषद्क कानाफूसी: "आत्महत्या कहब सरल अछि।" — "मुदा साँच की? " — "साँच सुनबाक समय केकरा लग अछि? ")

अंक द्वितीय

शब्दक साक्षी

(वाद–शालाक भीतर, दिनक उजास। वाचस्पति, कर्णपूर, मुखिया, शिष्य वामदेव, बुधुआ। बीचमे टूटल दीप आ भिजल ताड़पत्र रखल अछि।)

वाचस्पति: बुधुआ, ई ताड़पत्र कतय भेटल?

बुधुआ: इनारक कातमे, हुलासाक हाथक लग। ओ राति ई पत्र लिखैत रहलि होएतीह।

वाचस्पति: (पत्र उठा कऽ, आँखि सामने आनैत) स्याही अखनहु ताज़ा अछि, मुदा अन्तिम अक्षर अधूरा अछि — "हम..." फेर रेखा टूटि गेल अछि, जेना हाथ बीचहिमे रुकि गेल हो।

कर्णपूर: ई कोनो प्रमाण नहि, आचार्य। लिखैत–लिखैत मोन बदलब सम्भव अछि।

वाचस्पति: सम्भव अछि, कर्णपूर, मुदा सम्भावना निश्चयताक स्थान नहि लऽ सकैत। अहाँ जे "आत्महत्या" कहि रहल छी, ओ सेहो एकटा सम्भावनामात्र अछि, अहाँ ओकरा निश्चयताक वस्त्र पहिरा रहल छी।

शिष्य वामदेव: आचार्य, क्षमा करू, मुदा हमरा एकटा प्रश्न अछि। हम शास्त्रमे पढ़लहुँ अछि जे शब्द प्रमाण तखने मान्य होइत अछि जखन बजनिहार आप्त हो। जे मरि गेल, ओकर शब्द आप्त कोना मानल जाए? की मृतकक अन्तिम पत्र प्रमाण थिक, कि केवल स्मृति–चिन्ह?

वाचस्पति: प्रश्न नीक अछि, वामदेव। ध्यान राखू — आप्तताक कसौटी ई नहि जे वक्ता जीवित अछि कि मृत, अपितु ई जे वक्ताकेँ भ्रम, राग वा प्रवंचनाक कोनो कारण छल कि नहि। हुलासाकेँ हमरासँ झूठ बजबाक की प्रयोजन? ओ अपन अन्तिम शब्द कागचपर, अकेलेमे, कोनो श्रोताक हेतु नहि, अपने हेतु लिखने छलि। एहन शब्द छल–रहित होइत अछि, किएक तँ छल हेतु सदिखन एक श्रोता चाही।

कर्णपूर: मुदा आचार्य, मीमांसा–शास्त्र स्त्रीक स्वतंत्र साक्ष्यकेँ पूर्ण प्रमाण नहि मानैत, जाबे धरि ओकर संग कोनो पुरुष–साक्षी नहि होइक। ई स्थापित व्यवस्था अछि, हमहूँ एकरा बनौने नहि छी।

वाचस्पति: (तीक्ष्ण स्वरमे) कर्णपूर, कहू, प्रमाण–शास्त्रमे प्रमाणक वैधता की वक्ताक जाति वा लिंगसँ निर्धारित होइत अछि, कि ज्ञान–उत्पत्तिक कारण–सामग्रीसँ? न्यायशास्त्र स्पष्ट कहैत अछि — प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द चारू क वैधता ओकर करण (साधन) क शुद्धतासँ बनैत अछि, वक्ताक कुलसँ नहि। जँ अहाँ ई कहब जे स्त्रीक शब्द अल्प प्रमाण अछि, तँ अहाँ प्रमाण–शास्त्रकेँ नहि, समाजक अभ्यासकेँ शास्त्रक वस्त्र पहिरा रहल छी।

शिष्य वामदेव: आचार्य, तखन शब्द कहिया पूर्ण प्रमाण बनैत अछि?

वाचस्पति: शब्द तखन प्रमाण बनैत अछि जखन बजनिहारक अभिप्राय, सुननिहारक विश्वास, आ समयक सत्यनिष्ठा — ई तीनू एक संग ठाढ़ रहैत अछि। हुलासाक बजनिहारक अभिप्राय हमरा स्पष्ट अछि — ओ अपन जीवनक अन्तिम सत्य लिखय चाहैत छलि। सुननिहार आब हम सभ छी। सत्यनिष्ठाक

भार आब हमरापर अछि, किएक तँ ओ स्वयं आब बाजि नहि सकैत। जँ हम एहि भारकेँ इन्कार करब, तँ प्रमाण नहि मरत, हम मरब।

(परिषद् स्तब्ध रहैत अछि। मुखिया रत्नेश अस्थिर भऽ इनार दिस देखैत छथि।)

मुखिया रत्नेश: आचार्य, मुदा वादक विषय अनन्त होइत अछि। की एहि प्रश्नकेँ सेहो हम अनन्तकाल धरि खुला राखब?

वाचस्पति: नहि, रत्नेशजी। एहि प्रश्नकेँ हम अनन्तकाल धरि खुला नहि राखि सकब, किएक तँ हमर आयु सीमित अछि। मुदा एकरा हम बन्न सेहो नहि करब झूठसँ। जँ प्रमाण नहि भेटत, तँ हम ई लिखाएब — "कारण अज्ञात।" ई स्वीकृति लज्जाक विषय नहि, ई नीक विद्याक चिन्ह थिक।

कर्णपूर: "कारण अज्ञात" लिखलासँ शास्त्रार्थक प्रतिष्ठा घटत, आचार्य। लोक कहत, वाचस्पति मिश्र सेहो एकटा साधारण मृत्युक कारण नहि जनलनि, तखन ब्रह्मक कारण की जनताह?

वाचस्पति: (शान्त, मुदा तीक्ष्ण) तँ अहाँक चिन्ता हमर प्रतिष्ठाक अछि, हुलासाक न्यायक नहि? कर्णपूर, हम आइ धरि जे किछु सिखेलहुँ, ओ सभटा एहि एक पलमे परखल जा रहल अछि — जे हम अपन प्रतिष्ठा बचाबय लेल एकटा मृत कन्याक नामकेँ बलिदान करब, कि हुलासाक नामक रक्षा हेतु अपन प्रतिष्ठाकेँ जोखिममे राखब।

(परिषद्क कानाफूसी: "आचार्य आब कोन दिस जेताह?" — "प्रतिष्ठा कि नाम?")

अंक तृतीय

राति, द्वारक बाहर

(राति। कर्णपूर आ मुखिया रत्नेश वाद–शालाक द्वार लग, बुधुआसँ किछु दूरी पर, एकान्तमे बात करैत छथि। बुधुआ छाहमे बैसल सुनैत अछि, अनदेखल।)

मुखिया रत्नेश: कर्णपूर आचार्य, अहाँ एतेक शीघ्रतामे किएक छलहुँ? कोनो आर बात अछि की?

कर्णपूर: (चुप्पी, फेर धीरे) रत्नेशजी, तीन मास पहिने हुलासा हमरा लग आयल छलि। ओ अपन नामसँ एकटा टीका लिखय चाहैत छलि, आ चाहैत छलि जे ओकर नाम प्रतिलिपिपर लिखल जाए, केवल "लिखितम्" नहि। हम मना कऽ देने रहिऐ। हम कहने रहिऐ — "स्त्रीक नाम शास्त्रपर नहि शोभैत।"

मुखिया रत्नेश: तखन?

कर्णपूर: तखन किछु नहि। ओ चुप भऽ गेलि। मुदा हमरा आब लगैत अछि — जँ हम ओकरा ओहि दिन नाम देने रहितहुँ, तँ आइ ओ शायद एतय बैसल रहितीह, इनारक कातमे नहि। हमरा नहि बुझल जे ओ आत्महत्या केलक कि नहि, मुदा हम जानैत छी जे हम ओकर एकटा इच्छा मारि देने रही, आ ओ इच्छा नामक इच्छा छल।

मुखिया रत्नेश: तखन तँ अहाँकेँ आचार्यकेँ ई कहबाक चाही, कर्णपूर, "कारण अज्ञात" नहि।

कर्णपूर: (कठोरतासँ) नहि। ई स्वीकृति हमरा एतय सँ हटा देत, आ हुलासाकेँ ओ वापस नहि आनत। हम चुप रहब। मुदा... मुदा हम आइसँ प्रतिज्ञा करैत छी, आगू केओ हमरा लग नाम मँगत, तँ हम मना नहि करब।

(बुधुआ छाहसँ उठैत अछि, दुनू कैँ देखैत, मुदा किछु नहि बजैत। ओ धीरे–धीरे इनार दिस घुरि जाइत अछि।)

अंक चतुर्थ

पुनः इनारक कातमे

(संझा। वाचस्पति आ बुधुआ मात्र। इनार लग एकटा नव, छोट दीप जरैत अछि।)

वाचस्पति: बुधुआ, हम आइ मुखिया आ कर्णपूरकेँ कहि देलहुँ — "कारण अज्ञात, मुदा नाम हुलासा, आ न्याय बाकी।" ई शिलापर खोदा जाएत।

बुधुआ: आचार्य, ई ताड़पत्रक अन्तिम अक्षर — "हम..." — की अहाँ एकरा पूरा कऽ सकैत छी? अहाँक बुद्धि तँ ब्रह्मक स्वरूप धरि पहुँचैत अछि, ई एकटा टूटल वाक्यमात्र थिक।

वाचस्पति: (गंभीर) नहि, बुधुआ। जे वाक्य अधूरा छूटल, ओकरा हम पूरा नहि करब। ई हमर अधिकार नहि। जँ हम अपन अनुमानसँ ओकर अन्तिम शब्द गढ़ब, तँ ई हुलासाक स्मृतिक रक्षा नहि, हमर कल्पनाक विजय होएत। स्मृतिक रक्षाक अर्थ अछि — अधूरापनकेँ ओहिना राखब, बिनु ओकरा झूठे पूरा केने।

बुधुआ: आचार्य, हम अहाँक शंखक कातमे तीस बरखसँ बैसल छी, दीप जरबैत, डोरी आ शंख राखैत, अहाँक वादक हर शब्द सुनैत। मुदा आइ हम बुझलहुँ जे तर्कक ओ सभटा यंत्र — प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान — जँ एकटा गरीब प्रतिलिपिकार कन्याक नामकेँ नहि बचा सकए, तँ ओकर उपयोग कतय अछि?

वाचस्पति: बुधुआ, यएह प्रश्न हमरो जीवन भरि सतबैत रहत। तर्क सत्यकेँ प्रकाशित करैत अछि, मुदा प्रकाशित सत्यकेँ रक्षा करब अलग कर्म थिक। ई कर्म हम अहाँकेँ सौंपैत छी — हुलासाक नाम, आ ओहि सभ नामक, जिनका प्रमाण भेटलाक बादो न्याय नहि भेटल।

बुधुआ: (काँपैत, मुदा दृढ़ स्वरमे) आचार्य, तँ हम एतय, एही डोरी आ शंखक कातमे, प्रतिज्ञा करैत छी — जाबे धरि एकोटा नाम अन्यायसँ मेटाओल जाइत रहत, ताबे धरि हम एतय बैसल रहब। साक्षी बनि कऽ, जँ आर किछु नहि भ' सकए तँ।

वाचस्पति: (हल्का मुस्कान, मुदा आँखिमे नमी) एहन प्रतिज्ञा एक मनुष्यक आयुसँ बेसी लम्बा होइत अछि, बुधुआ।

बुधुआ: तखन ओ आयुसँ बेसी बचत, आचार्य। जे कर्म आयुसँ बेसी बचैत अछि, ओ फेर मनुष्यक कर्म नहि रहैत — ओ गाछक, पानिक, आ अन्हारक कर्म बनि जाइत अछि।

(दीप हिलैत अछि। इनारक जल एक क्षण चमकैत अछि, जेना भीतरसँ कोनो आँखि ऊपर तकैत हो।)

उपसंहार

(सूत्रधार पुनः प्रवेश करैत अछि।)

सूत्रधार: कर्णपूरक भय सत्य निकलल — गामक कतेको घर अपन बेटी वाद–शालामे पढ़ाएब बन्न कऽ देलक। मुदा वाचस्पतिक शिला अखनहु ठाढ़ अछि, आ ओहिपर लिखल अछि — "कारण अज्ञात, नाम हुलासा, न्याय बाकी।" कर्णपूर आचार्य बादमे अपन प्रतिज्ञा निमाहलनि; कहल जाइत अछि जे हुनकर बादक शिष्या–सभमे कतेको स्त्रीक नाम प्रतिलिपिपर लिखल गेल, यद्यपि हुलासाक नाम कहियो टीकापर नहि आयल। बुधुआक बारेमे कथा बेसी नहि भेटल; कहल जाइत अछि जे ओ बूढ़ भेलाह, तखनो शंखक कातमे बैसल रहलाह, आ एक दिन गाम कहय लागल — "बूढ़ सेवक अखनहु ओतय बैसल छथि।" कालक्रममे "बूढ़ सेवक" "बूढ़बा" भेल। वाचस्पति मिश्रक देहावसानक बाद, बुधुआ अपन शंख आ डोरी उठा कऽ मिथिलाक दोसर कात, उदयनाचार्यक उगैत मठ दिस प्रस्थान केलनि, किएक तँ प्रतिज्ञा एक आचार्यक जीवनसँ बान्हल नहि रहैत। ई कथा एतय समाप्त नहि होइत; ई मात्र आरम्भ अछि ओहि दीर्घ प्रतीक्षाक, जकरा अहाँ बहुत बादक, बहुत दूरक एकटा चन्ना गाछीमे, "बारह सय बरखसँ एक्के डारिपर बैसल" रूपमे फेर सँ भेटब।

(प्रस्थान)

वाचस्पति मिश्र सँ जुड़ल कथा आ दृष्टान्त

सभा शान्त भेल। सूत्रधार शिष्यसभ आ गामक लोकक बीच ठाढ़ भऽ, धीर स्वरमे पुरान दृष्टान्त सुनाबय लगलाह—

भामती-नामकरणक जनश्रुति—भामती-नामकरणक जनश्रुति अनुसार वाचस्पति मिश्र शंकराचार्यक ब्रह्मसूत्र-भाष्यपर अपन प्रसिद्ध टीका लिखबामे एतेक तल्लीन रहलाह जे कतेको बरख धरि हुनका अपन पत्नीक सेवाक होश नहि रहलनि — ओ दीप जरबैत छलीह, भोजन राखि दैत छलीह, मुदा आचार्य कहियो मुँह उठा कऽ नहि देखलनि। ग्रंथ पूर्ण भेलाक बाद, पहिल बेर पत्नीक नाम पुछलापर हुनका बुझल जे ओकर नाम भामती अछि। कृतज्ञतावश आचार्य अपन ग्रंथकेँ ओकरे नाम पर "भामती" नाम देलनि। एहि जनश्रुतिमे ओ प्रश्न पहिनहि सँ नुकाओल अछि जे अध्याय [−९६] केर केन्द्रमे अछि — शास्त्रक चमकक पाछाँ कतेक अनाम सेवा, आ ओ सेवा कहिया नाम पबैत अछि।

शंख-रजतक भ्रम पर संक्षिप्त टिप्पणी—अध्याय [−१००] मे विस्तारसँ चर्चित शंख-रजतक भ्रम — जतय शंखकेँ चानी बुझि लेल जाइत अछि — न्याय, मीमांसा आ अद्वैत तीनू सम्प्रदायमे भ्रमक भिन्न-भिन्न सिद्धान्तक हेतु प्रसिद्ध दृष्टान्त थिक। अध्याय [−९६] एहि दृष्टान्तकेँ एकटा नव प्रश्नक सोझाँ राखैत अछि — जँ भ्रमक सिद्धान्त एतेक सूक्ष्मतासँ विवेचित भऽ सकैत अछि, तँ मृत्युक कारण जकाँ गंभीर विषयपर प्रमाणक ओतबे सूक्ष्मता किएक नहि लगाओल जाइत, जखन विषय शक्तिहीन व्यक्तिक होइक?

एतबा कहि सूत्रधार किछु काल मौन रहलाह, फेर हाथ जोड़ि सभाकेँ प्रणाम कयलनि।

अध्याय [−९५] (पचानबे)

जलमग्न पाण्डुलिपि

बाढ़ि पोथी डुबा सकै छै, कण्ठ नहि— जे बोल हृदयमे लिखल, से पानिसँ नहि भीजै।

— गढ़ नारिकेल

(भूमिका, चारि अंक आ उपसंहारमे विभक्त एकटा मौलिक नाट्य–रचना; अध्याय [–९६] केर बुधुआक प्रतिज्ञाक निरन्तरतामे, उदयनाचार्यक मठमे स्थित।)

पात्र–परिचय

सूत्रधार — मंच–संचालक

उदयनाचार्य — दार्शनिक–यजमान, किरणावलीक रचयिता, गंभीर आ मितभाषी

बुधुआ — अब वृद्ध, वाचस्पतिक पुरान चिरसेवक, आब उदयनक मठमे, स्मृति–रक्षाक प्रतिज्ञाधारी

जीवन्ती — पोथी–रक्षिका शिष्या, बुधुआक शिष्या, पाण्डुलिपि–प्रतिलिपि आ रक्षाक काज करैत छलि

शिष्य सोमेश्वर — उदयनक जिज्ञासु शिष्य, मंगलाचरणक प्रश्न पूछनिहार

मठाधीश शम्भुनाथ — मठक प्रबंधक, प्रतिष्ठाक रक्षक

परिषद् — सभाक कानाफूसी

स्थान: उदयनाचार्यक मठक पोथी–शाला, आ ओकरा लगक एकटा पोखरि। शरद ऋतुक राति, आकाशमे बादर घुमैत अछि।

भूमिका

(सूत्रधार प्रवेश करैत अछि।)

सूत्रधार: वाचस्पति मिश्रक शिला ठाढ़ रहलनि, आ हुनकर सेवक बुधुआ अपन शंख आ डोरी उठा कऽ मिथिलाक दोसर कात आबि गेलाह, जतय एकटा नव आचार्य उठि रहल छथि — उदयनाचार्य, जे अपन किरणावली नामक ग्रंथमे प्राभाकर–मीमांसाकेँ खण्डित करबाक बीड़ा उठौने छथि। बुधुआक संग हुनकर एकटा शिष्या सेहो अछि, जीवन्ती, जकरा ओ ओहि पुरान प्रतिज्ञाक भाषा सिखा रहल छथि जे हम अहाँकेँ पहिनहि सुना चुकल छी। आइ राति आकाशमे बादर घुमैत अछि, आ पोथी–शालाक भीतर एकटा दीप बेसी हिलि रहल अछि जतेक ओकरा हिलबाक चाही।

(सूत्रधार, वादक आरम्भसँ पूर्व, एकटा लोकगीत गबैत अछि —)

बाढ़ि पोथी डुबा सकै छै हे, कण्ठ नहि डुबा सकै,
जे बोल हृदयमे लिखल रे, से पानिसँ नहि भीजै।
पानि आयल, पन्ना बहल, स्याही घुलि गेल;
मुदा जे कण्ठमे कण्ठ धरि पहुँचल, से बाढ़िसँ बाँचल।
पोथी भीजल हे, गीत सूखल रहल रे —
जे मुँहसँ मुँह धरि बहल, से कोनो बाढ़िसँ नहि मेटल।

(प्रस्थान)

अंक प्रथम

पोथी–शालामे आगि

(राति। पोथी–शाला — ताड़पत्रक गट्ठर, कपड़ामे बान्हल पाण्डुलिपि, दीपाधार। शिष्य सोमेश्वर आ जीवन्ती गट्ठर बान्हि रहल छथि। बुधुआ द्वार लग बैसल अछि, शंख आ डोरी अपन कातमे धेने।)

शिष्य सोमेश्वर: जीवन्ती, आचार्यक किरणावली आइ राति यात्रा पर जाएत — पूर्ब दिससँ कोनो विद्वान् एकर प्रतिलिपि माँगने छथि। मुदा एकर आरंभमे कोनो मंगलाचरण नहि अछि। ई कोना संभव, एतेक पैघ ग्रंथ, आ मंगल–श्लोक बिना?

जीवन्ती: आचार्यसँ पुछू, सोमेश्वर। हम त केवल पत्ता बान्हैत छी, मंगल नहि जनैत छी।

(उदयनाचार्य प्रवेश करैत छथि।)

उदयनाचार्य: (शान्त स्वरमे) सावधानी, अध्ययन, स्पष्ट लेखन आ समयपर संशोधन — इएह हमर मंगल थिक, सोमेश्वर। श्रद्धा मनक अनुशासन अछि; ओकर अनादर नहि। मुदा तर्कक प्रश्न ई अछि जे कार्यक समाप्ति वास्तवमे कोन कारणसँ होइत अछि — देवताक स्तुतिसँ, कि ग्रंथकारक निष्ठासँ?

शिष्य सोमेश्वर: तखन अहाँक ग्रंथ स्वयं अपन मंगलक प्रमाण थिक?

उदयनाचार्य: जकर रचना निर्विघ्न पूर्ण होइत अछि, ओ स्वयं अपन मंगलक प्रमाण थिक। एकरासँ बेसी दावा हम नहि करैत छी।

(अचानक बाहरसँ चिचिआहट। एकटा शिष्य दौड़ैत प्रवेश करैत अछि।)

एक शिष्य: आचार्य! दीपाधार खसि गेल, पछिला कोठलीमे परदा पकड़ि लेलक — आगि लागि गेल अछि!

बुधुआ: (तुरंत उठैत) पोथी! पहिने पोथी बाहर करू!

(हड़बड़ी। शिष्य सभ गट्ठर उठा कऽ बाहर भागैत छथि। धुआँ भरि जाइत अछि।)

उदयनाचार्य: कतेक गट्ठर बाकी अछि भीतर?

जीवन्ती: तीन, आचार्य! सबसँ पुरान प्रति, आ किरणावलीक मूल हस्तलेख!

उदयनाचार्य: आगि बढ़ि रहल अछि, भीतर जाएब आब सम्भव नहि।

जीवन्ती: पोखरि लग अछि, आचार्य! जँ हम गट्ठरकेँ तेल–चढ़ल कपड़ामे बान्हि पोखरिमे डुबा दी, आगि ओतय नहि पहुँचत, आ भोर होइते हम फेर सँ निकालि लेब।

बुधुआ: (कठोर स्वरमे) जीवन्ती, नहि। ओहि पोखरिमे एकटा पुरान गोहि रहैत अछि, माछुआर सभ राति ओतय नहि जाइत। हम स्वयं जाएब।

जीवन्ती: काका, अहाँक हाथ आब कँपैत अछि, आ अहाँक आँखि राति देखबामे धुँधलाइत अछि। हम जल्दी छी, हम तैरब जनैत छी। हमरा जाए दिअ।

(बुधुआ एक क्षण रुकैत अछि, फेर सिर झुका दैत अछि। जीवन्ती गट्ठर उठा कऽ पोखरि दिस दौड़ैत अछि।)

अंक द्वितीय

पोखरिक कात

(पोखरिक कात। जीवन्ती कपड़ामे बान्हल गट्ठर लऽ कऽ पानिमे उतरैत अछि। बुधुआ किनारे ठाढ़ अछि, दीप हाथमे। दूर पोथी–शालाक धुआँ आकाशमे उठैत देखाइ दैत अछि।)

बुधुआ: जीवन्ती, गहराइमे मत जइहऽ। किनारेक जड़िक कात राखि दे, बस।

जीवन्ती: काका, किनारेक जड़ि उथिल अछि, आगिक ताप ओतहु धरि पहुँचि सकैत अछि। हमरा बीच धरि जाए पड़त।

(ओ पानिमे गहीर उतरैत अछि। गट्ठर ऊपर उठाकऽ राखैत अछि, ताकि भिजए नहि। दीपक इजोतमे ओकर छाया पानिपर लमकैत अछि।)

जीवन्ती: (हाँफैत) भेल! गट्ठर ऊपर अछि, डूबल नहि। आब हम...

(अचानक ओ रुकि जाइत अछि। पानिक भीतर किछु हिलल अछि।)

जीवन्ती: काका... हमर केश... कोनो जड़िमे अटकि गेल अछि...

बुधुआ: (चिचिआइत) जीवन्ती! गट्ठर छोड़ि दे, अपना दिस मोन दे!

जीवन्ती: (हाँफैत, मुदा दृढ़) नहि छोड़ब, काका। एकरा भिजाएब असंभव, एकरा डुबाएब जरूरी। हम... हम अहीं कहने छलहुँ नऽ — साक्षी बनब सिखाएल छी। पोथीक साक्षी बनब सेहो...

(पानि हिलैत अछि। ओकर स्वर पानिक भीतर टूटि जाइत अछि। बुधुआ पानिमे कुदैत अछि, मुदा ओकर बूढ़ पएर धार पकड़ि नहि सकैत। जखन ओ जीवन्ती लग पहुँचैत अछि, गट्ठर हाथमे अछि, मुदा जीवन्ती नहि।)

बुधुआ: (चीत्कार) जीवन्ती! जीवन्ती!!

(सन्नाटा। केवल दूर आगिक भभक आ पानिक हिलबाक आवाज।)

अंक तृतीय

भोरुका सभा

(भोर। पोथी–शालाक जरल अवशेष लग। उदयनाचार्य, मठाधीश शम्भुनाथ, शिष्य सोमेश्वर, बुधुआ (गीला वस्त्रमे, अखनहु काँपैत)। गट्ठर सुरक्षित रूपसँ राखल अछि।)

मठाधीश शम्भुनाथ: आचार्य, दु:खद घटना अछि, मुदा हमरा प्रसन्नता अछि जे पाण्डुलिपि बाँचि गेल। किरणावली सुरक्षित अछि। ई मठक हेतु सबसँ पैघ बात।

उदयनाचार्य: (कठोर आँखिसँ) शम्भुनाथ, अहाँ पहिने पोथीक हिसाब लेलहुँ, कि जीवन्तीक?

मठाधीश शम्भुनाथ: आचार्य, हम एहन नहि कहलहुँ... मुदा ओ त एकटा शिष्या–सेविका छलि, आचार्य। एहन दुर्घटना दुर्भाग्यपूर्ण थिक, मुदा पोथी हजारो वर्ष धरि टिकत, आ...

उदयनाचार्य: (बीचहिमे रोकैत) आ जीवन्ती एक राति सेहो नहि टिकलि। शम्भुनाथ, अहाँक तराजू देखू — एक दिस ग्रंथ, दोसर दिस एकटा प्राण, आ अहाँक हाथ ग्रंथ दिस झुकल अछि।

शिष्य सोमेश्वर: आचार्य, हम राति कहने रही जे अहाँक ग्रंथमे मंगलाचरण नहि अछि, आ अहाँ कहने रही — जकर रचना निर्विघ्न पूर्ण होइत अछि, ओ स्वयं अपन मंगलक प्रमाण थिक। मुदा आइ भोरे हम पूछब चाहैत छी — की ई रचना सचमुच निर्विघ्न पूर्ण भेल? एकटा प्राण एहिमे होमि गेल।

(उदयनाचार्य एक लम्बा क्षण चुप रहैत छथि। बुधुआ माथ नीचाँ केने बैसल अछि।)

उदयनाचार्य: (धीरे, भारी स्वरमे) नहि, सोमेश्वर। ई रचना निर्विघ्न नहि भेल। हमर शब्द राति मिथ्या नहि छल, मुदा अधूरा छल। हम कहने रही जे रचनाक निर्विघ्नता स्वयं मंगलक प्रमाण थिक — मुदा हम ई कहय बिसरि गेलहुँ जे निर्विघ्नता केकर मूल्यपर खरीदल गेल, ई प्रश्न सेहो प्रमाणक विषय अछि, आ हम ओकरा प्रश्नहि नहि केलहुँ। शास्त्र जँ अपन रक्षाक मूल्य नहि पूछए, तँ शास्त्र स्वयं ओहि मूल्यक ऋणी रहि जाइत अछि।

मठाधीश शम्भुनाथ: आचार्य, मुदा एकरा शास्त्रार्थमे लिखब उचित नहि...

उदयनाचार्य: (दृढ़ स्वरमे) शम्भुनाथ, हम शास्त्रार्थमे नहि, मठक स्मृति-पोथीमे लिखाएब। आजुसँ, ई मठ जतय-जतय ग्रंथ रक्षित करत, ओतय-ओतय ओकर रक्षककेँ सेहो नाम देत। जीवन्तीक नाम हमर पोथी-शालाक द्वारपर खोदा जाएत, ठीक ओतय जतय ग्रंथसूची लिखल जाइत अछि।

(बुधुआ माथ उठबैत अछि, आँखिमे नमी।)

बुधुआ: आचार्य, वाचस्पति मिश्र हमरा एक बेर कहने रहथिन — "तर्क सत्यकेँ प्रकाशित करैत अछि, मुदा प्रकाशित सत्यकेँ रक्षा करब अलग कर्म थिक।" आइ हम फेर सँ ओ शब्द सुनलहुँ, दोसर मुँहसँ, दोसर मठमे। शायद ई प्रतिज्ञा एक्केटा आचार्यक नहि, ई विद्याक स्वयंक प्रतिज्ञा थिक।

अंक चतुर्थ

पोखरिक कात, संझा

(संझा। पोखरिक कात। बुधुआ अकेले ठाढ़ अछि। उदयनाचार्य आबि कऽ हुनकर कातमे ठाढ़ होइत छथि।)

उदयनाचार्य: बुधुआ, अहाँक प्रतिज्ञाक कथा हमरा सोमेश्वर सुनौलक। अहाँ तीस बरखसँ बेसी एहि भार लऽ कऽ घुमि रहल छी।

बुधुआ: आचार्य, आब ई भार बेसी भारी भऽ गेल। हुलासाक नाम, आब जीवन्तीक नाम। हमरा डर लगैत अछि जे ई सूची कहियो समाप्त नहि होएत।

उदयनाचार्य: सूची समाप्त नहि होएत, बुधुआ। जाबे धरि मनुष्य शास्त्रकेँ मनुष्यसँ बेसी प्रेम करत, ताबे धरि ई सूची बढ़ैत रहत। मुदा एकटा बात हम अहाँकेँ कहय चाहैत छी — जीवन्ती हमरा अन्तिम बेर की कहने रहथि, बुझल अछि? "पोथीक साक्षी बनब सेहो..." —– वाक्य टूटि गेल। बिल्कुल हुलासाक ताड़पत्र जकाँ।

बुधुआ: (चौंकैत) अहाँकेँ हुलासाक ताड़पत्रक बारेमे कोना बुझल, आचार्य?

उदयनाचार्य: अहाँ राति मे सुतबाक समय बड़बड़ाइत छी, बुधुआ। हम तीन राति सुनने छी। "हम..." अहाँ ओ अधूरा शब्द अखनहु ढोइत छी।

बुधुआ: (दीर्घ श्वास) आचार्य, ई शब्द कहियो पूरा नहि होएत, से हमरा बुझल अछि। मुदा शायद एकर पूरा होएब जरूरी नहि। शायद ई अधूरापन स्वयं एकटा प्रमाण थिक — जे प्रेम आ न्याय दुनू ओतय शुरू होइत अछि जतय वाक्य पूरा नहि होइत।

(पोखरिक जल हिलैत अछि, यद्यपि हवा शांत अछि। दुनू गोटे किछु काल चुप ठाढ़ रहैत छथि।)

उदयनाचार्य: बुधुआ, हम आइसँ एकटा नियम बनबैत छी — एहि मठमे, जे कियो ग्रंथ वा प्राणक रक्षामे अपन देह होमि दैत अछि, ओकर नाम "स्मृति–कक्ष" मे लिखल जाएत, चाहे ओ शिष्य होइक, सेवक होइक, वा स्त्री होइक। शास्त्रक सूची आ स्मृतिक सूची, दुनू संगे चलत।

बुधुआ: (हल्का मुस्कान, आँखिमे आँसू) आचार्य, वाचस्पति मिश्र अहाँकेँ नहि जनैत छलाह, मुदा अहाँ हुनकर शिष्य जकाँ बजलहुँ।

उदयनाचार्य: शायद विद्या एहने चलैत अछि, बुधुआ — शिक्षकसँ शिष्य धरि नहि, प्रश्नसँ प्रश्न धरि।

उपसंहार

(सूत्रधार पुनः प्रवेश करैत अछि।)

सूत्रधार: उदयनाचार्यक "स्मृति–कक्ष" मठमे बहुत बरख धरि रहल, यद्यपि पछाति ओ नष्ट भऽ गेल जखन मठ स्वयं उजड़ि गेल — इतिहास एहने अछि, स्मारक सेहो कालक शिकार होइत अछि, केवल कथा नहि। जीवन्तीक नाम गामक जीभपर "जल–कन्या" बनि रहल, फेर धीरे–धीरे अपभ्रंश होइत "पनिडुब्बी" भऽ गेल। पोखरिक माझी लोकनि आइयो कहैत छथि जे कोनो साँझ पानिमे लम्बा केश हिलैत देखाइ दैत अछि, आ जे कियो ओतय डूबय बला होइत अछि, ओकर पएर कियो अदृश्य हाथ पकड़ि लैत अछि — बचेबाक हेतु, डुबेबाक हेतु नहि। बुधुआ, कहल जाइत अछि, आर बूढ़ भऽ गेलाह, मुदा मरलाह नहि। गामक लोक हुनका "बूढ़बा सेवक" कहय लागल, फेर केवल "बूढ़बा।" हुनकर प्रतिज्ञा, हुलासा आ जीवन्ती दुनूक नाम लऽ कऽ, आगू बढ़ैत रहल — गंगेश उपाध्यायक कालक दिस, आ ओकरो बाद, बहुत आगू, ओहि चन्ना गाछी दिस जतय अहाँ हुनका फेर सँ भेटब, डारि पर बैसल, बारह सय बरखक धैर्य लऽ कऽ।

(प्रस्थान)

उदयनाचार्य सँ जुड़ल कथा आ दृष्टान्त

सभा शान्त भेल। सूत्रधार शिष्यसभ आ गामक लोकक बीच ठाढ़ भऽ, धीर स्वरमे पुरान दृष्टान्त सुनाबय लगलाह—

किरणावलीमे मंगलाचरणक अभावक जनश्रुति—परम्परागत जनश्रुति अनुसार उदयनाचार्यक किरणावली (प्रशस्तपादभाष्यक टीका) मे प्रचलित रीतिक विपरीत कोनो मंगलाचरण-श्लोक नहि अछि। एहिपर टीकाकार सभ भिन्न-भिन्न व्याख्या देने छथि — किछुक मतें ग्रंथक निर्विघ्न समाप्ति स्वयं मंगलक प्रमाण मानल गेल, त किछुक मतें ई आचार्यक अत्यन्त आत्मविश्वासक चिन्ह। अध्याय [−९५] एहि जनश्रुतिकेँ जीवन्तीक बलिदानक संग जोड़ि एकटा प्रश्न उठबैत अछि जे परम्परागत व्याख्यामे प्रायः अनुपस्थित रहैत अछि — निर्विघ्नताक मूल्य कतय चुकाओल गेल?

उदयनाचार्य आ जगन्नाथक जनश्रुति—एकटा प्रसिद्ध भक्ति-जनश्रुति अनुसार उदयनाचार्य, बौद्ध आ नास्तिक मतक खण्डनमे एतेक प्रवृत्त छलाह जे एक दिन ईश्वरक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि भेटलापर व्याकुल भऽ पुरीक समुद्र-तट पर पहुँचि गेलाह, आ वहाँ भगवान् जगन्नाथ बालकरूप धारण कऽ हुनका दर्शन देलनि। ई जनश्रुति एहि तथ्यक स्मारक थिक जे तर्क आ भक्ति, प्रमाण आ अनुभव, मिथिलाक न्याय-परम्परामे कहियो पूर्णतः अलग नहि रहल।

एतबा कहि सूत्रधार किछु काल मौन रहलाह, फेर हाथ जोड़ि सभाकेँ प्रणाम कयलनि।

अध्याय [–९४] (चउरानबे)

चारि मुखक मौन

चारू मुँह बाजल, तैयो एक बात नुकाएल रहल— हर उत्तरक पाछाँ एकटा मौन ठाढ़ छै।

— गढ़ नारिकेल

(भूमिका, चारि अंक आ उपसंहारमे विभक्त एकटा मौलिक नाट्य–रचना; अध्याय [–९५] केर उदयनाचार्यक मठमे, बुधुआक प्रतिज्ञाक निरन्तरतामे स्थित।)

पात्र–परिचय

सूत्रधार — मंच–संचालक

उदयनाचार्य — दार्शनिक–यजमान, अब अत्यन्त वृद्ध, सभाक अध्यक्ष

बुधुआ — अति वृद्ध, वाचस्पतिक पुरान चिरसेवक, आब उदयनक मठमे, स्मृति–रक्षाक प्रतिज्ञाधारी

सांख्य आचार्य विश्वम्भर — शांत, प्रकृति आ त्रिगुणक व्याख्याता

चार्वाक कवि रुद्रदत्त — सांसारिक, तीक्ष्ण–वाणी, अदृश्य किछुओसँ अधीर

बौद्ध भिक्षु शीलभद्र — कोमल–स्वर, करुणा आ शून्यताक व्याख्याता, मुदा तर्कमे उलझल

मीमांसक हरिनाथ — कर्मकांडी, विधि–वाक्यक बिनु कोनो कर्तव्य नहि माननिहार

सोहन — भूखल ग्रामीण, अकालसँ पीड़ित

परिषद् — सभाक कानाफूसी, आ अकालसँ पीड़ित ग्रामीण सभक भीड़

स्थान: उदयनाचार्यक मठक आँगनमे एकटा पैघ पीपरक गाछ, जकर छाहमे सभा बैसल अछि। बाहर, मठक फाटक लग, अकालसँ पीड़ित ग्रामीण सभक भीड़ जमा अछि। ग्रीष्मक अंत, आकाश धूसर, धरती फाटल।

भूमिका

(सूत्रधार प्रवेश करैत अछि।)

सूत्रधार: उदयनाचार्यक किरणावली मिथिलामे पसरि गेल, आ ओकर संग बुधुआक बाल सेहो पूर्ण उज्जर भऽ गेल। ओ आब डण्टाक सहारे चलैत छथि, मुदा शंख आ डोरी अखनहु हुनकर हाथमे अछि। एहि बरख मिथिलामे अकाल पड़ल — नदी सुखा गेल, खेत फाटि गेल। मठमे आइ चारि सम्प्रदायक विद्वान् जुटल छथि, शास्त्रार्थक हेतु, जेना प्रथा छल। मुदा फाटकक बाहर एकटा दोसर सभा सेहो जुटल अछि, जकरा भूख बजबैत अछि, शास्त्र नहि। देखू, ई दुनू सभा कहिया मिलैत अछि, आ कहिया नहि।

(सूत्रधार, वादक आरम्भसँ पूर्व, एकटा लोकगीत गबैत अछि —)

चारू मुँह बाजल हे, तैयो एक बात नुकाएल,
हर उत्तरक पाछाँ रे, एकटा मौन ठाढ़ रहै।
जतेक कहल, ततेक बचल; जतेक बुझल, ततेक शेष;
जे सभ उत्तर देलक, ओकरो एक प्रश्न रहि गेल।
बोल सीमित हे, मौन असीम रहै रे —
जे मौनकेँ सुनल, से चारू मुखसँ आगू बुझल।

(प्रस्थान)

अंक प्रथम

पीपरक छाहमे

(पीपरक गाछक छाहमे सांख्य आचार्य विश्वम्भर, चार्वाक कवि रुद्रदत्त, बौद्ध भिक्षु शीलभद्र आ मीमांसक हरिनाथ बैसल छथि। उदयनाचार्य मध्यमे, बुधुआ एक कातमे ठाढ़। दूर फाटक लग भीड़क कोलाहल सुनाइ दैत अछि।)

सांख्य आचार्य विश्वम्भर: आचार्य, हम पुनः कहब — दुःख प्रकृतिक त्रिगुणसँ उत्पन्न होइत अछि, आ मुक्ति विवेक–ख्यातिसँ, नहि कि बाह्य उपचारसँ। जाबे धरि पुरुष प्रकृतिसँ अपनाकेँ भिन्न नहि जानत, ताबे धरि दुःख चलिते रहत, चाहे कतबो अन्न बाँटल जाए।

चार्वाक कवि रुद्रदत्त: (हँसैत) विश्वम्भर, अहाँक विवेक–ख्याति भूखल पेटमे नहि उतरत। जे प्रत्यक्ष अछि, से अछि — भूख अछि, अन्न नहि अछि, बस एतबे। बाकी सभटा पण्डितक बतकही।

बौद्ध भिक्षु शीलभद्र: रुद्रदत्त, अहाँ प्रत्यक्षकेँ मानैत छी, मुदा करुणाकेँ नहि। सभ प्राणी दुःखसँ मुक्त होउ, इएह त हमर मार्गक मूल अछि।

मीमांसक हरिनाथ: शीलभद्र, करुणा नीक शब्द थिक, मुदा कर्तव्य शब्दसँ नहि, विधि–वाक्यसँ बनैत अछि। कोन श्रुतिमे लिखल अछि जे अनजान ग्रामीणकेँ मठक अन्न देब हमर धर्म थिक? जाबे धरि विधि नहि भेटत, ताबे धरि ई दान नहि, प्रमाद थिक।

(फाटक लग भीड़क कोलाहल बढ़ैत अछि। एकटा शिष्य दौड़ैत आबैत अछि।)

एक शिष्य: आचार्य! फाटक लग तीस सँ बेसी लोक जमा भऽ गेल छथि। किछु बच्चा सभ तीन दिनसँ भूखल छथि। ओ सभ मठक अन्न–भंडार दिस तकैत छथि।

उदयनाचार्य: (गंभीर) हुनका सभकेँ कहू, हम एतय शास्त्रार्थ समाप्त होइते आबि रहल छी।

बुधुआ: (धीरे, मुदा स्पष्ट) आचार्य, क्षमा करू, मुदा भूख शास्त्रार्थ समाप्त होएबाक प्रतीक्षा नहि करैत।

अंक द्वितीय

प्रश्न जे सभाकेँ हिलबैत अछि

(उदयनाचार्य उठि कऽ चारू विद्वानक बीच ठाढ़ होइत छथि।)

उदयनाचार्य: विद्वान् सभ, आइक शास्त्रार्थक विषय हम बदलैत छी। मंगलाचरण वा व्याप्ति नहि, आइ हम एकटा सरल प्रश्न पूछब — फाटक लग जे भूखल भीड़ अछि, ओकर हेतु अहाँ सभक दर्शन की कहैत अछि? एकटा–एकटा उत्तर दिअ।

सांख्य आचार्य विश्वम्भर: (सोचैत) दर्शनक अनुसार, दुःखक तीन प्रकार — आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक — केर निवारण हेतु ज्ञान चाही, ने कि क्षणिक उपचार। अन्न देब क्षणिक शमन थिक, मूल कारणक निवारण नहि।

चार्वाक कवि रुद्रदत्त: आचार्य, हमर दर्शन साफ अछि — जँ अहाँक भंडारमे अन्न अछि आ बाहर भूखल पेट अछि, तँ अन्न दिअ, बस। एहिमे शास्त्रक प्रश्न कतय अछि? ई त सीधा बुद्धिक बात थिक।

मीमांसक हरिनाथ: रुद्रदत्त, "सीधा बुद्धि" धर्म नहि थिक। धर्मक स्रोत वेद अछि, बुद्धि नहि। जँ वेदमे विहित नहि अछि, तँ ओ कर्म ऐच्छिक थिक, अनिवार्य नहि। मठक अन्न मठक अछि, ग्रामक नहि।

बौद्ध भिक्षु शीलभद्र: हरिनाथ, ई कठोर बात थिक। बुद्ध कहने छथि — करुणा सभ धर्मक मूल थिक। मुदा... (रुकैत) मुदा हमहूँ स्वीकार करब, दान–पारमिताक शास्त्रीय विवेचनमे दाता, दान आ ग्राहीक त्रिपुटीक शून्यताक प्रश्न पहिने आबैत अछि, तखन कर्म...

चार्वाक कवि रुद्रदत्त: (बीचहिमे) शीलभद्र! अहूँ शुरू भऽ गेलहुँ शून्यताक जालमे? बाहर बच्चा भूखल अछि, आ अहाँ पूछि रहल छी जे दाता वस्तुतः अछि कि नहि?

बौद्ध भिक्षु शीलभद्र: (लज्जित) हम... हम केवल शास्त्रीय स्पष्टताक हेतु कहलहुँ।

उदयनाचार्य: (तीक्ष्ण स्वरमे) चारू विद्वान् सुनू। हम अहाँ सभक शास्त्रक गहराइपर कोनो आक्षेप नहि करैत छी। मुदा आइ हम देखि रहल छी — चारू दर्शन, अपन–अपन ढंगसँ पूर्ण, चारू मिलिकऽ एकटा सरल कर्महुँ नहि कऽ सकैत, किएक तँ प्रत्येक अपन सिद्धान्तक सीमाक बाहर एक डेग नहि बढ़ैत। ई दर्शनक दोष नहि, दर्शनकेँ पकड़बाक हमर ढंगक दोष अछि।

(दूर सँ चीत्कार सुनाइ दैत अछि। सोहन डगमगाइत प्रवेश करैत अछि, अत्यन्त दुर्बल।)

सोहन: (क्षीण स्वरमे) महाराज... तीन दिनसँ... बच्चा सभ... (ओ लड़खड़ाइत अछि)

अंक तृतीय

पीपरक जड़िमे

(सोहन पीपरक जड़ि लग खसि पड़ैत अछि। सभ स्तब्ध। बुधुआ सबसँ पहिने ओकरा लग पहुँचैत छथि।)

बुधुआ: (घुटना टेकैत) सोहन! सोहन, आँखि खोलू!

(सन्नाटा। सोहन नहि उठैत। परिषद्क बीच रोदन।)

उदयनाचार्य: (स्तब्ध, धीरे–धीरे उठैत) अन्न... आब अन्न बाँटू! तुरंत!

(शिष्य सभ भंडार दिस दौड़ैत छथि। मुदा बुधुआ सोहनक निष्प्राण देहसँ उठैत नहि।)

बुधुआ: (भारी स्वरमे, चारू विद्वान् दिस घुरैत) विश्वम्भर, अहाँ त्रिगुणक कथा कहैत रहलहुँ। रुद्रदत्त, अहाँ प्रत्यक्षक कथा कहैत रहलहुँ। शीलभद्र, अहाँ शून्यताक कथा कहैत रहलहुँ। हरिनाथ, अहाँ विधि–वाक्यक कथा कहैत रहलहुँ। सोहन एहि चारू कथाक बीच बैसल, सुनैत, आ मरि गेल। की एहि सभामे एको कथा एहन नहि छल जे तुरंत बाजि सकल होइत — "पहिने अन्न, फेर वाद"?

(चारू विद्वान् चुप। सांख्य आचार्य आँखि नीचाँ करैत छथि। चार्वाक पहिल बेर निरुत्तर देखाइ दैत छथि।)

सांख्य आचार्य विश्वम्भर: (धीरे) बुधुआ, अहाँ ठीक कहैत छी। हमर सिद्धान्त सत्य अछि, मुदा हम ओकरा एहि क्षणक हेतु गलत ढंगसँ उपयोग केलहुँ।

मीमांसक हरिनाथ: (दबल स्वरमे) आ हम... हम विधिक प्रतीक्षामे एकटा प्राणक प्रतीक्षा नहि करबाक चाही छल।

उदयनाचार्य: (गंभीर, चारू दिस देखैत) सुनू, विद्वान् सभ। अहाँ चारूक ज्ञान असत्य नहि। मुदा आइ अहाँ चारू, एक संग बैसलो, एक स्वरमे एकटा प्राणक हेतु नहि बाजि सकलहुँ। ई दर्शनक पराजय नहि, ई हमरा सभक — जे दर्शनकेँ जीवनसँ बेसी प्रेम करैत छी तिनकर — पराजय थिक।

अंक चतुर्थ

चारि मुख

(संझा। सोहनक दाह–संस्कार भऽ चुकल अछि। पीपरक गाछ लग बुधुआ, उदयनाचार्य आ चारू विद्वान् जमा छथि। भीड़मे अन्न बँटि रहल अछि।)

बुधुआ: (पीपरक गाछकेँ स्पर्श करैत) आचार्य, हम अहाँसँ एकटा आग्रह करैत छी। ई गाछ आइ जे देखलक, ओकरा भुलाए नहि दिअ। जेना वाचस्पति मिश्रक शिलापर हुलासाक नाम खोदाएल, जेना अहाँक मठक स्मृति–कक्षमे जीवन्तीक नाम लिखाएल, तहिना एहि गाछकेँ सोहनक साक्षी बनाऊ।

उदयनाचार्य: कोना, बुधुआ?

बुधुआ: एहि गाछक छाहमे चारि दर्शन बैसल छल, आ चारू अपन–अपन सत्य कहैत छल, मुदा एक स्वर नहि बनि सकल। हम चाहैत छी जे ई गाछ ओहि चारि स्वरकेँ सदिखन धारण करय — जेना चारि मुख एक धड़पर — ताकि आगू केओ एतय बैसि शास्त्रार्थ करय, तँ पहिने पूछय: "आइ फाटक लग केओ भूखल त नहि? "

चार्वाक कवि रुद्रदत्त: बुधुआ, अहाँ हमरा सभकेँ ई गाछमे बान्हि रहल छी?

बुधुआ: (धीरे मुस्कुराइत, मुदा आँखिमे दृढ़ता) नहि, रुद्रदत्त। हम अहाँकेँ बान्हि नहि रहल छी। हम केवल ई चाहैत छी जे अहाँ सभक आइक मौन — जे सोहनक मृत्युक क्षणमे भेल — कहियो नहि बिसरल जाए। जँ अहाँ सभ सहमत छी, तँ अपन–अपन हाथ एहि गाछक छालपर राखू।

(चारू विद्वान् एक–एक कऽ अपन हाथ पीपरक छालपर राखैत छथि। हवा एक क्षण हिलैत अछि, यद्यपि साँझ शांत अछि।)

उदयनाचार्य: (धीरे) आजुसँ ई गाछ मठक साक्षी–वृक्ष कहाएत। जे कियो एहि छाहमे शास्त्रार्थ करत, ओकरा पहिने फाटक लग तकबाक चाही।

बौद्ध भिक्षु शीलभद्र: (फुसफुसाइत) आचार्य, हमरा लगैत अछि जेना ई गाछ आब हमरा सभक तर्क सुनि रहल अछि, बजबाक हेतु नहि, स्मरण राखबाक हेतु।

उपसंहार

(सूत्रधार पुनः प्रवेश करैत अछि।)

सूत्रधार: ओहि अकालक बाद मिथिलामे फेर वर्षा भेल, आ खेत फेर हरियर भेल। सांख्य आचार्य विश्वम्भर, चार्वाक कवि रुद्रदत्त, बौद्ध भिक्षु शीलभद्र आ मीमांसक हरिनाथ — चारू आगू सेहो शास्त्रार्थ करैत रहलाह, मुदा कहल जाइत अछि जे ओ सभ हर सभाक आरंभमे एकटा नियम मानय लगलाह — पहिने फाटकक हाल पूछब, फेर वाद आरंभ करब। गामक लोक ओहि पीपरक गाछकेँ "साक्षी–वृक्ष" कहय लागल, फेर कालक्रममे केवल "पीपरक ब्रह्मा" —– किएक तँ चारि मुखसँ चारि दर्शनक स्वर, कहल जाइत अछि, अखनहु ओहि छालक भीतर सुनाइ पड़ैत अछि, खास कऽ ओहि राति जखन केओ भूखल एकर छाहमे सूतल होइक। बुधुआ ओहि राति सबसँ बेसी बूढ़ लगलाह, आ सबसँ बेसी शांत सेहो — जेना हुनकर प्रतिज्ञा आब तीन नाम धारण कऽ चुकल छल: हुलासा, जीवन्ती, आ सोहन। ई कथा एतय समाप्त नहि होइत। बहुत आगू, बहुत दूर, एकटा चन्ना गाछीमे, ई पीपरक गाछ फेर सँ ठाढ़ भेटत, चारि मुखसँ चारि उत्तर दैत, आ चारू बेर, कहल जाइत अछि, चारू उत्तर झूठ निकलत — किएक तँ सत्य ओतय नहि रहैत जतय ज्ञान करुणासँ पहिने बाजय चाहैत अछि।

(प्रस्थान)

सांख्य, चार्वाक, बौद्ध आ मीमांसा सँ जुड़ल कथा आ दृष्टान्त

चार्वाकक प्रसिद्ध सूक्ति

चार्वाक–दर्शनक एकटा सुप्रसिद्ध सूक्ति अछि जकर भाव थिक — जाबे धरि जीवित रही, सुखपूर्वक जीबू, ऋण लऽ कऽ सेहो घी पीबू, किएक तँ शरीर भस्म भेलाक बाद पुनः वापसी असम्भव थिक। ई सूक्ति प्रायः चार्वाक–विरोधी ग्रंथकारद्वारा उद्धृत होइत अछि, चार्वाकक स्वयंक कोनो मौलिक ग्रंथ आब उपलब्ध नहि अछि। अध्याय [–९४] मे रुद्रदत्तक चरित्र एहि परम्पराक ओहि पक्षकेँ उभारैत अछि जे प्रायः उपेक्षित रहैत अछि — प्रत्यक्षवादक भीतर निहित तात्कालिक करुणाक सम्भावना।

मीमांसाक विधि–वाक्य सिद्धान्त

पूर्व–मीमांसा दर्शनमे धर्मक एकमात्र प्रमाण वेद–विहित विधि–वाक्य मानल गेल अछि — जे कर्म वेदमे स्पष्ट रूपसँ आदिष्ट नहि, ओ धर्म–कोटिमे नहि आबैत। ई सिद्धान्त कर्मकाण्डक स्पष्टता आ अनुशासनक हेतु प्रसिद्ध अछि, मुदा अध्याय [–९४] एकटा व्यावहारिक कठिनाइ उठबैत अछि — नव, अभूतपूर्व परिस्थिति (जेना अचानक अकाल) मे, जाबे धरि विधि–वाक्यक प्रतीक्षा होइत अछि, ताबे धरि करणीय कर्म रुकल रहि सकैत अछि।

अध्याय [–९३] (तिरानबे)

शंखक अन्तिम प्रश्न

जकरा एक बेर चिन्हलहुँ, तकरो भोर फेर पुछै छै— मुदा उत्तर जकर थिर, से प्रश्नसँ नहि डरै।

— गढ़ नारिकेल

(भूमिका, चारि अंक आ उपसंहारमे विभक्त एकटा मौलिक नाट्य–रचना; अध्याय [–१००] केर शंख–रजतक भ्रमकैँ अध्याय [–९४] केर उदयनाचार्यक मठमे पुनः आनैत।)

पात्र–परिचय

सूत्रधार — मंच–संचालक

उदयनाचार्य — दार्शनिक–यजमान, अब जीवनक अन्तिम वर्ष

बुधुआ — अति वृद्ध, वाचस्पतिक पुरान चिरसेवक, आब उदयनक मठमे, स्मृति–रक्षाक प्रतिज्ञाधारी

आक्षेपक — अति वृद्ध शंकालु, जीवन भरि गाम–गाम घूमि शास्त्रार्थमे संशय उठौनिहार, अध्याय [–१००] मे प्रथम बेर देखल गेल स्वर इएह छथि

शिष्य केशव — उदयनक युवा शिष्य, आक्षेपकक सेवामे नियुक्त

परिषद् — सभाक कानाफूसी

स्थान: उदयनाचार्यक मठक पाछाँक एकटा शांत आँगन, पीपरक साक्षी–वृक्षसँ किछु दूर। संझाक बेर, आकाश केसरिया, हवा शांत।

भूमिका

(सूत्रधार प्रवेश करैत अछि।)

सूत्रधार: अहाँकेँ मोन होएत — बहुत बरख पहिने, वाचस्पति मिश्रक वाद–शालामे, एकटा स्वर छल जे आत्माकेँ पहिनहि सँ ज्ञात कहबासँ इन्कार केने छल, आ शंख–रजतक भ्रमक कथा पहिल बेर उठाओने छल। ओ स्वर, आक्षेपक, ओहि दिनसँ आइ धरि गाम–गाम, सभा–सभा घुमैत रहल, हर उत्तरमे एकटा नव संशयक बीया बोइत। आइ, अत्यन्त वृद्ध भऽ, ओ अन्तिम बेर एतय आयल अछि, उदयनाचार्यक मठमे, एकटा अन्तिम प्रश्न लऽ कऽ। देखू, की जीवन भरिक संशय अंततः कोनो उत्तरपर टिकि सकैत अछि, कि संशय स्वयं एकटा घर बनि जाइत अछि जकरा छोड़ब कठिन भऽ जाइत अछि।

(प्रस्थान)

अंक प्रथम

आगमन

(शिष्य केशव एकटा अत्यन्त वृद्ध, दुर्बल पुरुषकेँ डण्टाक सहारे लऽ कऽ प्रवेश करैत अछि। ई आक्षेपक थिकाह। बुधुआ, जे स्वयं अति वृद्ध छथि, ओकरा देखितहि ठमकि जाइत छथि।)

शिष्य केशव: आचार्यजी! ई अतिथि द्वार लग खसि पड़ल छलाह। कहैत छथि जे उदयनाचार्यसँ भेंट करय आयल छथि, मुदा अपन नाम नहि बतबैत छथि।

बुधुआ: (स्तब्ध होइत, धीरे लग जाइत) ई... ई स्वर हम पहिचानैत छी। साठि बरख भऽ गेल, मुदा हम पहिचानैत छी। अहाँ... अहाँ वएह छी जे वाचस्पति आचार्यसँ पुछने रहथिन — "आत्मा पहिनहि सँ ज्ञात अछि तँ अन्वेषणक प्रयोजन की? "

आक्षेपक: (क्षीण हँसी) तोहर स्मरण–शक्ति तोहर देहसँ बेसी बूढ़ नहि भेल, बुधुआ। हँ, हम्मे छी। साठि बरख धरि हम हर वाद–शालामे गेलहुँ, मिथिलाक एक कात सँ दोसर कात, हर उत्तरमे एकटा नव छिद्र ताकैत। आइ हमरा बुझायल जे शरीर आब बेसी दिन नहि चलत, आ हम एतय घुरि आयल छी — जतयसँ शुरू केने रही, ओतहि समाप्त करय।

बुधुआ: उदयनाचार्यकेँ बजाबी। ओ अहाँक अन्तिम प्रश्न सुनताह।

(उदयनाचार्य, स्वयं वृद्ध, धीरे–धीरे प्रवेश करैत छथि।)

उदयनाचार्य: (आक्षेपककेँ देखि) अतिथि, अहाँक स्वर हम पहिनहि सँ जनैत छी, यद्यपि अहाँकेँ कहियो साक्षात् नहि भेटलहुँ। हमर गुरुपरम्पराक हर कथामे अहाँक संशय अछि। बैसू।

आक्षेपक: (बैसैत, हाँफैत) आचार्य, हम एकटा प्रश्न लऽ कऽ आयल छी, आ ई प्रश्न शास्त्रार्थक हेतु नहि, स्वयं हमरे हेतु अछि। बहुत बरख पहिने वाचस्पति मिश्र शंख–रजतक भ्रमपर कहने रहथिन — भ्रम तखन होइत अछि जखन एक वस्तु दोसराक रूपमे देखाइ दैत अछि। हम एहि सिद्धान्तसँ सहमत छी। मुदा आइ, मृत्युक द्वार लग बैसल, हमरा एकटा नव संशय अछि — जँ सम्पूर्ण जीवन शंखकेँ चानी बुझबाक जकाँ भ्रम होइक, तँ मृत्यु की थिक? भ्रमक अंत, कि भ्रम स्वयं जकर परीक्षा नहि भ' सकल?

अंक द्वितीय

भ्रमक भीतर भ्रम

(उदयनाचार्य, बुधुआ, शिष्य केशव आक्षेपकक चारू कात बैसल छथि।)

उदयनाचार्य: अतिथि, अहाँक प्रश्न गंभीर अछि, आ हम एकर सरलीकरण नहि करब। ध्यान राखू — हमर सम्प्रदाय (न्याय–वैशेषिक) भ्रमकेँ अन्यथाख्याति कहैत अछि: शंख वस्तुतः अछि, रजत वस्तुतः अछि (कतहु आर), मुदा ज्ञान दुनूकेँ अनुचित रूपसँ एक ठाम जोड़ि दैत अछि। भ्रम मिथ्या ज्ञान थिक, मिथ्या वस्तु नहि।

आक्षेपक: मुदा प्राभाकर मीमांसक अख्याति कहताह — भ्रम मात्र भेदक अनवधानता थिक, दू अलग ज्ञान (शंखक स्मृति, रजतक स्मृति) क बीच भेद नहि पकड़ब। आ अद्वैती असत्ख्याति वा अनिर्वचनीयख्याति कहताह — जे प्रतीत भेल, ओ न सत् थिक, न असत्, अनिर्वचनीय थिक। तीनू सम्प्रदाय, तीन उत्तर। साठि बरखमे हम एकोटा निर्णय नहि सुनलहुँ जे तीनूकेँ एक स्वरमे चुप करा सकल होइक।

बुधुआ: (धीरे) आक्षेपक, हमहूँ साठि बरखसँ बेसी एहि वाद–शाला सभमे बैसल छी, दीप जरबैत, शब्द सुनैत। हमहूँ कहियो तीनूकेँ एक स्वरमे मिलैत नहि सुनलहुँ।

आक्षेपक: (हताश) तखन बुधुआ, अहाँ सेहो हमरा जकाँ ठकल गेलहुँ। एतेक दीप, एतेक वाद, आ अंततः तीन झगड़ैत उत्तर, चारि जँ हम अपन संशयकेँ गनी।

उदयनाचार्य: (शान्त) अतिथि, अहाँ सोचैत छी जे तीन सम्प्रदायक असहमति स्वयं प्रमाणक असफलता थिक। हम भिन्न देखैत छी। तीनू सम्प्रदाय एहि बातपर सहमत छथि जे भ्रम भ्रम थिक — जे शंखमे रजतक व्यवहार (उठाएब, हर्षित होएब) भ्रान्त छल। असहमति केवल एहिपर अछि जे भ्रमक आंतरिक क्रियाविधि की थिक। ई असहमति सत्यक अनुपस्थितिक चिन्ह नहि, विषयक सूक्ष्मताक चिन्ह थिक।

आक्षेपक: मुदा हमर प्रश्न मृत्युक अछि, आचार्य, क्रियाविधिक नहि। हम पूछैत छी — जँ हमर सम्पूर्ण जीवन, हमर सम्पूर्ण संशय, स्वयं एकटा शंख-रजत भ्रम होइक, तँ ओहि भ्रमक ज्ञाता के छल? जँ ज्ञाता स्वयं झूठ छल, तँ हमर संशयक कोनो मोल नहि छल। आ जँ ज्ञाता सत्य छल, तँ हम साठि बरख किएक बर्बाद केलहुँ, जखन एकटा वस्तु — ज्ञाताक निश्चितता — पहिनहि सँ हमरा लग छल?

(सन्नाटा। उदयनाचार्य उत्तर देबय हेतु मुँह खोलैत छथि, मुदा बुधुआ हाथ उठा कऽ रोकैत छथि।)

अंक तृतीय

बुधुआक उत्तर

बुधुआ: आचार्य, क्षमा करू, मुदा ई प्रश्न शास्त्रक नहि, जीवनक अछि। एकर उत्तर हमरा देब दिअ।

उदयनाचार्य: (सिर झुकाइत) बाजू, बुधुआ।

बुधुआ: आक्षेपक, अहाँ पुछैत छी जे संशयक मोल की छल। हम अहाँकेँ तीन नाम कहब — हुलासा, जीवन्ती, सोहन। तीनू एहि जीवनमे भ्रमक शिकार भेल — केओ इनारमे, केओ पोखरिमे, केओ भूखमे। आ हर बेर, वाद-शालाक प्रमाण-यंत्र देरी सँ आयल, वा नहि आयल। मुदा हर बेर, एकटा चीज देरी नहि केलक — साक्षी बनबाक निर्णय। ओ निर्णय प्रमाणसँ नहि आबैत अछि, आक्षेपक। ओ प्रमाणक बादमे आबैत अछि, जखन प्रमाण चुप भऽ जाइत अछि, आ केवल एकटा मनुष्यक निर्णय बाकी रहैत अछि — देखल गेलकेँ बिसरब कि ओकरा धारण करब।

आक्षेपक: मुदा ई तँ ज्ञानक प्रश्नक उत्तर नहि, बुधुआ। ई तँ इच्छाक बात भेल।

बुधुआ: हँ, आक्षेपक। हम पहिल बेर, साठि बरखक बाद, अहाँकेँ ई कहय चाहैत छी — शायद अहाँक प्रश्नक उत्तर ज्ञानमे नहि अछि। शायद ज्ञान केवल भ्रमकेँ नाम दऽ सकैत अछि; भ्रमसँ बाहर निकलब इच्छाक, स्मृतिक, प्रेमक काज थिक। अहाँ साठि बरख शंखकेँ चानी बुझबासँ बचय चाहलहुँ। मुदा हम साठि बरख ई बुझय चाहलहुँ जे शंख, चानी नहि होइतहु, स्वयं कतेक मोलक

अछि — किएक तँ ओ अखनहु शंख अछि, आ हमर हाथमे अछि, आ ओकरा राखब हमर काज अछि, चाहे केओ ओकरा चानी बुझय वा नहि।

आक्षेपक: (आँसू सँ) बुधुआ... तखन मृत्यु?

बुधुआ: मृत्यु भ्रमक अंत नहि थिक, आक्षेपक, आ भ्रमक परीक्षा सेहो नहि थिक। मृत्यु ओ क्षण थिक जखन शंख — अहाँक ई देह, ई साठि बरखक यात्रा — अपन असली मोल देखबैत अछि, चानी बनबाक बिनु प्रयासक। अहाँ आइ धरि चानी खोजैत रहलहुँ। शायद अन्तिम बेर, केवल शंखकेँ शंख रूपमे देखू।

अंक चतुर्थ

संझाक इजोर

(आकाश गहींर केसरिया भऽ गेल अछि। आक्षेपक धीरे–धीरे पाछू टेकैत अछि, श्वास धीमा।)

आक्षेपक: (फुसफुसाइत, शान्त स्वरमे, पहिल बेर बिनु संशयक) बुधुआ... उदयनाचार्य... हम साठि बरखमे पहिल बेर, किछु स्पष्ट देखि रहल छी। ई शंख नहि अछि... ई चानी नहि अछि... ई... (श्वास टूटैत अछि)

(आक्षेपकक आँखि मुनल जाइत अछि। ओकर देह शांत भऽ जाइत अछि। एक क्षण सन्नाटा। तखन, संझाक अन्तिम इजोतमे, ओकर आँखिक कातसँ एकटा हल्का, चानी सन उजास फूटैत अछि, जेना कोनो पातर धुआँ चमकि उठल हो। ई उजास हवामे नाचैत अछि, आ पीपरक साक्षी–वृक्ष दिस उड़ि जाइत अछि।)

शिष्य केशव: (डरायल) आचार्य! ई... ई की अछि?

उदयनाचार्य: (शान्त, मुदा विस्मित) हम नहि जनैत छी, केशव। शायद ई ओ प्रश्न थिक जे कहियो पूर्ण उत्तर नहि पाओत, आ तेँ देहसँ मुक्त भऽ, स्वयं इजोर बनि गेल — न सत्, न असत्, केवल चमक, जेना शंख आ रजतक बीचक ओ क्षण जकरा केओ कहियो पूर्ण रूपसँ बुझि नहि सकल।

बुधुआ: (आँखिमे नमी, मुदा मुस्कुराइत) साठि बरखक संशय आब आराम केलक, आचार्य। आ शायद ई इजोर, जे न शंख अछि, न चानी, ओ ओहि संशयक सबसँ ईमानदार स्मारक थिक जे हम कहियो देखने छी।

उपसंहार

(सूत्रधार पुनः प्रवेश करैत अछि।)

सूत्रधार: आक्षेपकक अन्त्येष्टि पीपरक साक्षी–वृक्षक छाहमे भेल, जतय चारि दर्शनक स्वर अखनहु धरि सुनाइ पड़ैत छल। कहल जाइत अछि जे ओहि राति सँ, गाछक आसपास कखनो–कखनो छोट–छोट चानी सन उजास देखाइ दैत अछि — नान्हिटा, कँपैत, कोनो निश्चित रूप बिनु। गामक लोक हुनका "राकश" कहय लागल, किएक तँ ओ इजोर देखाइ देत, मुदा छूअय देलासँ पहिने अदृश्य भऽ जाइत। ई इजोर न सत्य अछि, न झूठ — ठीक ओहिना जेना आक्षेपकक सम्पूर्ण जीवन न पूर्ण संशयमे टिकल छल, न पूर्ण निश्चयमे। बुधुआ, कहल जाइत अछि, ओहि राति सबसँ बेसी थाकल देखाइ पड़लाह, मुदा हुनकर प्रतिज्ञा आब चारि नाम धारण कऽ चुकल छल। शंखक कथा, जकरा हम अध्याय [–१००] मे सुनने रही, आइ अपन गोल पूर्ण करैत अछि — मुदा गोल पूर्ण होएब उत्तर नहि थिक, केवल एकटा नव प्रश्नक द्वार थिक, जकरा अहाँ फेर सँ, बहुत आगू, ओहि चन्ना गाछीक कबड्डीमे भेटब, जतय राकश सभ चानी सन इजोर फेकैत छथि, आ केओ नहि जनैत ओ इजोर सत्य कहैत अछि कि झूठ।

(सूत्रधार, प्रस्थानसँ पूर्व, एकटा लोकगीत गबैत अछि —)

जकरा एक बेर चिन्हलहुँ हे, तकरो भोर फेर पुछै,
मुदा उत्तर जकर थिर रे, से प्रश्नसँ नहि डरै।
शंख रजत बुझल, फेर शंख बुझल, फेर पुछल गेल;
जे बेर–बेर पुछल, ओही बेर–बेर सत्य गहींर भेल।
प्रश्न कहियो नहि थाकै हे, उत्तर थिर रहै रे —
जे प्रश्नसँ नहि डेरायल, से सत्यक अन्तिम प्रश्नो जीतल।

(प्रस्थान)

शंख–रजतक भ्रम–सिद्धान्तक सम्प्रदायगत मतभेद

अन्यथाख्याति, अख्याति आ अनिर्वचनीयख्याति

भारतीय दर्शनमे भ्रमक स्वरूपपर तीन प्रमुख मत प्रचलित अछि। न्याय–वैशेषिक सम्प्रदाय अन्यथाख्याति मानैत अछि — भ्रममे दुइयो वस्तु (शंख, रजत) वास्तविक अछि, मुदा ज्ञान एकरा अनुचित रूपसँ जोड़ि दैत अछि। प्राभाकर मीमांसा अख्याति मानैत अछि — भ्रम केवल स्मृति आ प्रत्यक्षक बीच भेद–अग्रहणसँ उत्पन्न होइत अछि, कोनो मिथ्या ज्ञान उत्पन्न नहि होइत। अद्वैत वेदान्त अनिर्वचनीयख्याति मानैत अछि — भ्रममे प्रतीत वस्तु न सत्, न असत्, न सदसत्, अपितु अनिर्वचनीय (वर्णनातीत) थिक। अध्याय [–१००] मे एहि मतभेदक विस्तृत मंचन अछि; अध्याय [–९३] एकरा मृत्युक प्रश्नसँ जोड़ि एकटा नव आयाम दैत अछि — जँ ज्ञानक स्वरूपपर एतेक असहमति अछि, तँ जीवन आ मृत्युक स्वरूपपर निश्चयता कतय सँ आबत?

अध्याय [–९२] (बानबे)

जल–घड़ीक कैदी

बूनि–बूनि पानि खसै, बूनि–बूनि समय— जे घड़ीक कैदी, से बोलक अन्त नहि जनै।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश; नाट्य–रूपसँ हटि, कथाक रूपमे। अध्याय [–९३] केर शिष्य केशवक आगूक जीवन, आ गढ़ नारिकेल गामक — जे बहुत आगू "गोहि सभक बीच जलसमाधि" क रंगमंच बनत — पहिल विस्तृत परिचय एहिमे अछि।)

गढ़ नारिकेलक नाम ओहि दिन नहि पड़ल छल जकर कथा हम आइ कहय जा रहल छी। ओहि समय ई गाम केवल "नारिकेल–घाट" कहाइत छल, किएक तँ गामक पूब कातमे, जतय कमला–बलानक धार एकटा मोड़ लैत छल, बीस–पचीस नारिकेलक गाछ एक पाँतिमे ठाढ़ छल, जेना कोनो पुरान प्रहरी अपन–अपन जगह पर खड़ा होइक। "गढ़" शब्द बादमे जुड़ल, जखन गामक चारू कात एकटा माटिक बान्ह बनाओल गेल बाढ़िसँ बचबाक हेतु — मुदा ई कथा से बहुत आगूक थिक। ओहि समय, जकर कथा हम कहय जा रहल छी, गाममे केवल पोखरि, पीपर, आ लोकक धैर्य छल।

गामक बीचमे एकटा पैघ पोखरि छल, जकरा लोक "जोड़ी पोखरि" कहैत छल, किएक तँ ओकर दुइ भाग छल, एकटा गहींर आ एकटा उथिल, बीचमे एकटा सँकरा नाहरसँ जुड़ल। गहींर भागमे माछ पड़ल छल — रोहू, कतला, आ छोट–छोट पोठी — जकरा गामक धीवर सभ जाड़क महिनामे पकड़ैत छल। उथिल भागमे भैंस सभ दुपहरियामे शरीर डुबा कऽ पड़ल रहैत छल, केवल नाकक ऊपरका हिस्सा पानिसँ बाहर, आँखि आधा मुनल, जेना ओहो कोनो दर्शनमे लीन होइक। पोखरिक पूरब कातमे एकटा विशाल पीपरक गाछ छल, जकर जड़ि एतेक फैलल छल जे ओकर छाहमे एक संग तीस–चालीस लोक बैसि सकैत छल। एहि पीपरक गाछकेँ लोक "साक्षी–गाछ" कहैत छल, यद्यपि केओ ठीक–ठीक नहि जनैत छल किएक — पुरनका लोक कहैत छल जे एकर नाम ई एक विद्वान् सेवकक कारण पड़ल छल, जे कहियो एतय आबि, अपन डोरी आ शंख एहि गाछक जड़िमे राखि, गामक न्यायमे बैसय लागल छलाह।

ओ सेवक बुधुआ छलाह। आब ओ अत्यन्त वृद्ध छलाह, ओतेक वृद्ध जे गामक लोक हुनकर उमेर गनब छोड़ि देने छल। उदयनाचार्यक देहावसानक बाद,

ओ अपन प्रतिज्ञासँ बान्हल, मिथिलाक ओहि कातमे आबि गेल छलाह जतय उदयनक शिष्य केशव — अब आचार्य केशव — एकटा छोट न्याय–सभा स्थापित केने छलाह, नारिकेल–घाट नामक एहि गाममे, जतय पोखरि आ पीपरक बीच गामक विवाद सभ सुनल जाइत छल।

आचार्य केशव अपन गुरुक जकाँ गंभीर छलाह, मुदा गुरुसँ भिन्न एकटा बात हुनकामे छल — ओ प्रक्रियाकेँ बहुत प्रेम करैत छलाह। हर विवादक हेतु हुनका एकटा घटिका–यंत्र चाही होइत छल, एकटा पित्तरक कटोरा जकरा तरहत्थी सूइयासँ छेदि, पानिमे तैरैत छोड़ल जाइत छल; जखन कटोरा भरि कऽ डूबि जाइत, तखन वक्ताक समय समाप्त मानल जाइत। ई विधि वाचस्पति आ उदयनक वाद–शालासँ आयल छल, जतय ई तर्ककेँ अनुशासित राखबाक हेतु उपयोगी छल। मुदा गामक साधारण विवादमे, जतय एकटा पक्ष विद्वान् आ दोसर पक्ष केवल भूखल आ थकल, ओतय इएह घटिका–यंत्र एकटा अलग रूप लऽ लेलक — जे बेसी बाजि सकैत छल, ओ समयकेँ अपन बना लैत छल; जे कम बाजि सकैत छल, ओकर बात कटोरा डूबितहि टुटि जाइत छल, "काल्हि आउ" कहि विदा कऽ देल जाइत छल।

सुखदेव महतो एहि गामक दक्षिण छोरपर रहैत छलाह, अपन पत्नी आ दुइ बेटा–बेटीक संग। हुनकर जमीन जोड़ी पोखरिक उत्तरी छोरसँ लगल छल, आधा बीघा, जतय ओ धान आ थोड़ेक तरकारी उपजबैत छलाह, आ एकटा भैंस पोसने छलाह जकर नाम हुनकर बेटी कजरी रखने छलि — "कजरी", किएक तँ ओकर आँखिक चारू कात कारी घेरा छल, जेना काजर लगाओल होइक। सुखदेव कोनो पैघ आदमी नहि छलाह, मुदा गामक जीभपर हुनकर नाम इमानदारीक हेतु आदरसँ लेल जाइत छल।

गामक पछबरिया छोरपर उग्रसेन ठाकुर रहैत छलाह, जिनकर जमीन पोखरिक दक्षिणी छोर धरि फैलल छल। उग्रसेनक हाथ पैघ छल — गामक अधिकांश जमीन, सीधे वा परोक्ष रूपसँ, हुनकर ऋण वा हुनकर मुनीमक हिसाबसँ बान्हल छल। जाड़क मौसममे, जखन पानि कम भऽ जाइत छल, उग्रसेनक आदमी सभ पोखरिसँ सुखदेवक खेत दिस जाइत नाहर बन्न कऽ दैत छल, ई कहि जे "ई नाहर हमर पुरखाक बनाओल अछि, हमर अनुमतिसँ खुजत।" सुखदेवक खेत सूखि जाइत छल, आ कजरी भैंस, जकरा नहेबाक हेतु पानि चाही होइत छल, गर्मीमे बेचैन भऽ रम्भाइत रहैत छलि।

सुखदेव पहिल बेर आचार्य केशवक सभामे तीन बरख पहिने अएने छलाह। ओ भोर होइतहि, अपन हाथमे जमीनक पुरान बटवारा–पत्र (जे हुनकर पिताक हाथक लिखल छल, अक्षर धुँधलायल, मुदा नाहरक स्थिति स्पष्ट देखबैत छल) लऽ कऽ पीपरक गाछ लग पहुँच गेल छलाह। ओहि दिन सभामे पहिने एकटा ब्राह्मण–परिवारक विवाह–सम्बन्धी विवाद उठल, जकर वाद–प्रतिवाद घटिका–यंत्रक तीन कटोरा धरि चलल। फेर एकटा भूमि–कर सम्बन्धी प्रश्न आयल, जकरा राजाक अधिकारीसभ उठौने छलाह, आ ओकर सुनवाइ सेहो लम्बा चलल, किएक तँ राज–कर्मचारीक बात पहिने सुनबाक प्रथा छल। साँझ ढरि गेल। बुधुआ, जे गाछक जड़ि लग बैसल छलाह, देखलनि जे सुखदेव अपन बटवारा–पत्र हाथमे लेने, धूपमे, फेर छाँहमे, फेर पुनः धूपमे बैसल छलाह, बिनु हिलल, जेना ओ स्वयं ओहि पीपरक जड़िक एक हिस्सा भऽ गेल होथि।

आचार्य केशव संझा ढरलापर सुखदेव दिस देखलनि आ कहलनि — "सुखदेव, आइ समय समाप्त भऽ गेल। काल्हि पहिने अहाँक बात सुनल जाएत।"

सुखदेव माथ नमा कऽ घुरि गेल छलाह। मुदा काल्हि सेहो ओहिना भेल। आ परसू सेहो। हर दिन कोनो–न–कोनो पैघ विवाद, कोनो–न–कोनो विद्वत्तापूर्ण प्रश्न, सुखदेवक साधारण, अनपढ़ शिकायतसँ पहिने बैसैत छल। बुधुआ, जे गाछक कातमे बैसल एहि सभटा देखैत रहलाह, एक दिन आचार्य केशवसँ कहलनि — "आचार्य, ई मनुष्य तीन सप्ताहसँ आबि रहल अछि। हुनकर पानि रुकल अछि, हुनकर धान सूखि रहल अछि। की हुनकर बात एक दिन सबसँ पहिने नहि सुनल जा सकैत? "

आचार्य केशव, अपन गुरुक जकाँ दयालु, मुदा प्रक्रियाक जकड़नमे बान्हल, कहलनि — "बुधुआ, न्याय क्रमसँ चलैत अछि, इच्छासँ नहि। जँ हम आइ सुखदेवकेँ पहिने सुनब, तँ काल्हि केओ आर कहत जे हुनकर सेहो पहिल अधिकार छल। क्रम टूटलासँ पूरा व्यवस्था टूटि जाइत अछि।"

बुधुआ किछु नहि कहलनि, मुदा ओ राति ओ बहुत काल पीपरक जड़ि लग बैसल रहलाह, आकाशक तारा गनैत, जेना ओ अपन साठि–सत्तरि बरखक स्मृतिमे कोनो उत्तर टोहैत होथि।

उग्रसेन ठाकुर, दोसर दिस, न्याय–सभाक क्रम कहियो नहि तोड़ैत छलाह — किएक तँ हुनका तोड़बाक जरूरति नहि पड़ैत छल। हुनकर वकील, जे स्वयं एकटा शास्त्रज्ञ छलाह, हर बेर एकटा नव तकनीकी प्रश्न उठा दैत छलाह — "पहिने ई स्पष्ट होउ जे नाहरक स्वामित्व मूल रूपसँ किनका छल," वा "पहिने ई देखल जाए जे बटवारा–पत्रक साक्षी अखनहु जीवित छथि कि नहि" —– आ हर नव प्रश्न एकटा नव घटिका–यंत्र माँगि लैत छल, आ सुखदेवक बारी फेर पाछू खसि जाइत छल।

छह सप्ताह एहिना बीतल। जेठक महिना आयल, आ ओकर संग असहनीय गर्मी। कमला–बलानक धार पातर भऽ गेल। जोड़ी पोखरिक उथिल हिस्सा सुखि कऽ माटि देखाबय लागल, आ भैंस सभ गहींर हिस्सा दिस ठेलमठेल करय लागल। कजरी, सुखदेवक भैंस, दुबरा गेल छलि, ओकर खाल हड्डीसँ चिपकल देखाइ पड़ैत छल। सुखदेवक खेतक धान पातर आ पीयर भऽ गेल छल, बालि बिनु दाना क।

ओहि सप्ताह सुखदेव हर दिन आबैत रहलाह। ओकर वस्त्र आब मैलगर भऽ गेल छल, गाल भीतर धँसि गेल छल — ओ स्वयं अपन खेतक धान जकाँ पातर आ पीयर होइत जा रहल छलाह। बुधुआ हुनका देखि–देखि अपन शंखमे पानि भरि, हुनका पियाबय लगलथिन, मुदा शब्द नहि बजैत छलाह, किएक तँ शब्दसँ आब की होइत।

एक साँझ, जखन घटिका–यंत्रक अन्तिम कटोरा डूबि रहल छल आ आचार्य केशव उग्रसेनक वकीलक कोनो नव तकनीकी बातपर मुड़ी हिला रहल छलाह, सुखदेव अपन जगह सँ उठलाह। ओ बहुत काल सँ चुप बैसल छलाह, मुदा आब हुनकर देह काँपय लागल। ओ दुइ डेग आगू बढ़लाह, हाथ उठौलनि, आ बजय चाहलनि — "आचार्य, हमर बेटी..." —– मुदा स्वर टूटि गेल। ओ लड़खड़ेलाह, आ पीपरक जड़ि लग खसि पड़लाह।

सभा एक क्षणक हेतु स्तब्ध भऽ गेल। फेर हड़बड़ी। कियो पानि आनलक, कियो हवा करय लागल। बुधुआ सबसँ पहिने पहुँचलाह, सुखदेवक माथ अपन गोदमे लऽ कऽ। सुखदेवक आँखि आधा मुनल छल, मुदा मुँह आब सेहो आधा खुजल छल, जेना ओ शब्द अखनहु ठाढ़ होइक, बाहर निकलबाक प्रतीक्षामे।

"हमर बेटी..." — एतबे बजि सकल छलाह, आ आगू नहि। बुधुआ हुनकर हाथ अपन हाथमे लेलनि, मुदा प्राण आब देहमे नहि छल।

आचार्य केशव दौड़ल आयलाह, अपन वस्त्रक कोर सुखदेवक माथ नीचाँ राखि दैत। "सुखदेव! सुखदेव, हम आइए... आइए अहाँक बात सुनितहुँ!" मुदा ई शब्द आब उगबाक बीयाक जकाँ छल जे खेत सुखलाक बाद बाओल गेल होइक।

ओहि राति बुधुआ पीपरक जड़िमे सुखदेवक शव लग बैसल रहलाह, अपन शंखमे पानि भरैत, ओकरा सुखदेवक ओठ लग लऽ जाइत, यद्यपि ओ जानैत छलाह जे आब कोनो पानि ओतय नहि उतरत। आचार्य केशव, अपन सभटा शास्त्र आ अपन सभटा क्रम–व्यवस्थाक संग, गाछक दोसर कातमे बैसल छलाह, माथ हाथमे धेने। "बुधुआ," ओ अंततः बजलाह, "हम गलत छलहुँ की?"

बुधुआ, बहुत काल बाद, धीरे बजलाह — "नहि, आचार्य। अहाँक क्रम गलत नहि छल। अहाँक क्रम केवल ई बिसरि गेल छल जे कतेको मनुष्यक हेतु समय स्वयं एकटा विलासिता थिक, आ जे विलासिता नहि जुटा सकए, ओकर बात क्रमक अन्तमे नहि, ओकर देहक अन्तमे पहुँचैत अछि।"

आचार्य केशव किछु नहि बजलाह, मुदा ओ राति उपरान्त, ओ अपन सभाक विधानमे एकटा नियम जोड़लनि — जे कियो लगातार तीन दिनसँ बेसी प्रतीक्षा करैत होइक, ओकर बात, चाहे कतेक जटिल विवाद बाँकी होइक, सबसँ पहिने सुनल जाएत। ई नियम बादमे "सुखदेव–नियम" कहाएल, यद्यपि ई नाम कोनो शिलापर नहि खोदाएल — किएक तँ सुखदेवक जमीन, हुनकर मृत्युक बाद, उग्रसेनक मुनीमक हाथ लगि गेल, आ हुनकर बेटी, जकर नाम कजरी भैंसकेँ देल गेल छल, ओकर असली नाम गामक अभिलेखमे कहियो नहि आयल।

एहि घटनाक बाद, पीपरक गाछक जड़ि लग, कहल जाइत अछि, कोनो-कोनो साँझ एकटा अस्पष्ट आकृति देखाइ पड़ैत — आधा मुँह खुजल, जेना बाजय चाहैत होइक, मुदा शब्द कहियो पूरा नहि होइत। गामक लोक ओकरा "लोथ" कहय लागल, किएक तँ ओकर देह मृतकक देहक जकाँ स्थिर रहैत छल, मुदा मुँह जीवितक जकाँ अधूरा। बुधुआ, जखनो कियो एहि आकृतिकेँ भयसँ देखैत छल, कहैत छलाह — "डेराउ नहि। ई ओ थिक जकरा बारी कहियो नहि आयल। ओकरा केवल एतबे चाही जे ओकर बात कोनो दिन पूरा सुनल जाए।" मुदा ओ बात कहियो पूरा नहि सुनाइल, किएक तँ ओ शुरूए सँ अधूरी रहि गेल छल, आ अधूरी बातकेँ पूरा करब कोनो साक्षीक अधिकार नहि होइत, से बुधुआ बहुत पहिने सिखने छलाह।

नारिकेल-घाट गाम, कालक्रममे, "गढ़ नारिकेल" कहाएल। पोखरि आब सेहो पुरान अछि, यद्यपि ओकर पानि अखनहु गहींर आ उथिल दुइ भागमे बटल अछि। पीपरक गाछ अखनहु ठाढ़ अछि, यद्यपि ओकर जड़ि आब गामक चन्ना गाछी धरि फैलि गेल अछि, वा शायद चन्ना गाछी स्वयं ओही पुरान पीपरक विस्तार थिक — गामक बूढ़-पुरान लोक एकर ठीक सीमा कहि नहि सकैत। कमला-बलान अखनहु बहैत अछि, कखनो भरल, कखनो सुखल, ठीक ओहिना जेना सैकड़ों बरख पहिने बहैत छल जखन सुखदेव महतो अपन बटवारा-पत्र लऽ कऽ एहि पोखरि लग पहिल बेर आयल छलाह। भैंस सभ अखनहु उथिल पानिमे दुपहरिया बितबैत अछि, बगुला सभ अखनहु किनारे-किनारे ठाढ़ भऽ माछ ताकैत अछि, आ कोइली अखनहु आमक बौरक मौसममे कूकैत अछि, जेना गामक सुख-दु:खसँ ओकर कोनो सरोकार नहि होइक। मुदा गामक भूख, गामक प्रतीक्षा, आ गामक अधूरा बात — ई तीनू अखनहु ओहिना रहि गेल अछि, केवल नाम बदलल अछि: तारीख, फाइल, आ अदालतक बरामदा।

ओहि दिन, जल–घड़ीक बूनि गनैत, बूढ़बा एकटा फकरा गबैत छलाह —

बूनि–बूनि पानि खसै हे, बूनि–बूनि समय,
जे घड़ीक कैदी रे, से बोलक अन्त नहि जनै।
समय बहल, बूनि खसल, मुदा नाम थिर रहल;
जे समयकेँ गनल, से समयक कैदी भेल।
पानि खसैत रहल हे, नाम बसैत रहल रे —
जे समयसँ ऊपर नाम राखल, से घड़ीक कैदी नहि।

आचार्य केशव आ नारिकेल–घाटक न्याय–परम्परा सँ जुड़ल टिप्पणी

घटिका–यंत्र आ न्यायमे समयक प्रश्न

प्राचीन भारतीय शास्त्रार्थ–परम्परामे घटिका–यंत्र (जल–घड़ी) क उपयोग वाद–विवादमे समय–अनुशासन हेतु प्रचलित छल, जकर उद्देश्य वक्ताक अनन्त विस्तारकेँ रोकब छल। अध्याय [–९२] एहि परम्पराक एकटा असुविधाजनक पक्ष उठबैत अछि — जे उपकरण विद्वानक बीचक तर्ककेँ अनुशासित करबाक हेतु बनल छल, ओ अनजाने रूपसँ समाजक शक्तिहीन वर्गक विरुद्ध एकटा नव बाधा बनि सकैत अछि, जखन समयक उपयोग स्वयं असमान रूपसँ वितरित होइक।

अध्याय [–९१] (इक्यानबे)

चर्मकार टोलाक उजास

जकर हाथ चाम सिऔ, ओकरो नाम पातपर छै— टोलक दीप आ महलक दीप, तेल एक्के जरै।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश, अध्याय [–९२] केर शैलीमे। गढ़ नारिकेल गामक चर्मकार टोला — जे बहुत आगू "गोहि सभक बीच जलसमाधि" मे फेर सँ उल्लिखित होयत — आ गंगेश उपाध्यायक जीवनक ओ भाग, जकरा शास्त्रक चमकक पाछाँ नुकाओल गेल।)

गढ़ नारिकेल गाम, जकरा तखन धरि लोक "नारिकेल–घाट" कहबो–कहबो छोड़ि, केवल "गढ़ नारिकेल" कहय लागल छल, आब एकटा पैघ गाम बनि गेल छल। जोड़ी पोखरि, पीपरक साक्षी–गाछ, आ कमला–बलानक धार अखनहु ओतहि छल, मुदा गामक बीचोबीच आब एकटा पाकल ईंटाक सभा–भवन बनि गेल छल, जतय शास्त्रार्थ होइत छल, आ जतय आचार्य केशवक परम्पराक कोनो–न–कोनो उत्तराधिकारी सदिखन बैसल भेटैत छलाह।

मुदा एहि कथाक हेतु हमरा गामक ओहि हिस्सा दिस जाय पड़त जकरा सभा–भवनसँ आबय–जाय वला विद्वान् सभ कहियो नहि देखैत छलाह — गामक पछबरिया छोर, जतय कमला–बलानक पुरान धार सुखि गेल छल आ ओकर बदलामे एकटा सूखल नाला रहि गेल छल, जकरा लोक "मरल–गंग" कहैत छल। एहि नालाक कातमे बबूर आ खजूरक गाछ छल, ने त पीपरक जकाँ छाहगर, ने त नारिकेलक जकाँ ऊँच — काँटगर, धूरगर, मुदा अपन ढंगसँ उपयोगी। एहि टोलाकेँ लोक "चर्मकार टोला" कहैत छल। एतय खाल सुखाओल जाइत छल, ढोल आ मृदंग बनाओल जाइत छल, आ जूता–चप्पल सिलाओल जाइत छल — गामक ओ काज जकरा गाम चाही, मुदा गाम अपन देहरी लग नहि होमय दैत छल।

एहि टोलामे रहैत छलि मालती, एकटा तेजस्वी, गहींर आँखिवाली किशोरी, जकर पिता सोमर चर्मकार गामक सभसँ नीक ढोलक निर्माता मानल जाइत छलाह, आ जकर माए, नाम रत्ना, गामक हर घरमे बच्चा–जन्मक समय बजाओल जाइत छलि, किएक तँ ओकर हाथमे किछु एहन छल जे बड़–बड़ वैद्यक औषधिमे सेहो नहि होइत छल — धैर्य, आ जड़ी–बूटीक एहन जनकारी जे कतहु लिखल नहि, केवल एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीक कानमे उतरैत छल।

एक ग्रीष्मक साँझ, जखन आकाश धूरगर पीयर छल आ मरल–गंगक सूखल तरमे केवल किछु पोखराक पानि बचल छल, टोलाक कुकुर सभ भुकय लागल। रत्ना बाहर निकलली त देखलनि जे बबूरक गाछ लग एकटा युवक, मैलगर वस्त्रमे, ज्वरसँ काँपैत, खसल पड़ल अछि। ओकर हाथमे किछु ताड़पत्र छल, जकरा ओ बेहोशीमे सेहो छोड़ल नहि छल।

"के छी, बाबू? " रत्ना पुछलनि, मुदा युवक उत्तर नहि दऽ सकल, केवल एकटा अस्पष्ट बड़बड़ाहट — "प्रमाण... प्रमाण के बिनु... कोना..." —– आ फेर बेहोश भऽ गेल।

ओ युवक गंगेश छल। ओकर घरक कथा गाममे तरह–तरहें कहल जाइत छल — किछु कहैत छल जे ओकर जन्म पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद भेल, ई असम्भव बात सुनि कऽ ओकर कुल पर संदेहक छाया पड़ि गेल छल; किछु कहैत छल जे ओ बचपनमे एतेक मन्दबुद्धि छल जे ओकर स्वयंक ननिहालक लोक ओकरासँ चिलम भरबाक काज करबैत छल। ई सभटा कथा सत्य छल कि अफवाह, से गंगेश स्वयं कहियो स्पष्ट नहि केलक, मुदा ई सत्य छल जे ओ एहि संदेह आ अपमानसँ बचबाक हेतु घरसँ निकलि, गाम–गाम घुमैत, शास्त्रक प्रमाण–मीमांसाक एकटा नव, अभूतपूर्व ग्रंथ अपन मोनमे रचैत रहैत छल — ग्रंथ जकर नाम बादमे तत्त्वचिन्तामणि पड़त — मुदा ओकर देह, एहि यात्रामे, बेर–बेर टूटि जाइत छल। ज्वर, भूख, आ अनवरत चिन्तनसँ थकान।

रत्ना आ सोमर ओकरा अपन झोपड़ीमे उठा आनलनि। गामक अनेक घर एहन युवककेँ द्वारे सँ भगा दितहि, किएक तँ ओकर वस्त्र आ भाषासँ स्पष्ट छल जे ओ ब्राह्मण छल, आ ब्राह्मणकेँ चर्मकारक घरमे राखब दुनू दिससँ "अशुद्ध" मानल जाइत छल। मुदा रत्नाकेँ एहन नियमसँ कोनो सरोकार नहि छल — ओकर हाथ

ओ हाथ छल जे बच्चाकेँ जन्मक पहिल स्पर्श दैत छल, आ ओ हाथ मृत्युक सीमा लग बैसल एकटा युवककेँ छोड़ि नहि सकल।

पन्द्रह दिन धरि गंगेश ज्वरसँ जूझल। रत्ना नीम, तुलसी, आ कोनो–कोनो जड़ी जकर नाम ओ स्वयं मात्र जनैत छलि, ओकरा खोआबैत रहलि। मालती, जे तखन सोरह बरखक छलि, ओकर माथ लग बैसि, ओकर बड़बड़ाहट सुनैत रहलि — "प्रमाण के बिनु प्रमेय नहि... शब्द के प्रमाण की..." — आ एक दिन, बिनु सोचने, ओ पुछि देलक — "मुदा जँ केओ शब्द बाजए आ ओकर मोनमे झूठ नहि होइक, तँ ओ शब्द असत्य कोना भऽ सकैत अछि, चाहे बजनिहार केओ होइक? "

गंगेश, अझुनो ज्वरसँ काँपैत, आँखि खोललक। "के बाजल ई? "

"हम, " मालती कहलक, कनेक डेराइत। "क्षमा करू, हम पण्डित नहि छी। हम केवल अपन बापकेँ ढोल बनबैत देखने छी — जँ चाम ठीक नहि तनल होइक, तँ ढोलक आवाज झूठ बाजैत अछि, चाहे बजओनिहार केतेक नीक हाथ राखए। मुदा जँ चाम ठीक तनल होइक, तँ ढोल ओतबे सत्य बाजत जतबे केओ महल्लक बड़का वाद्ययंत्र।"

गंगेश बहुत काल चुप रहल। फेर, अत्यन्त क्षीण स्वरमे, बजल — "अहाँ जनैत छी अहाँ की कहलहुँ? अहाँ आब्ता, यानि विश्वसनीयताक प्रश्नकेँ करण (साधन) क शुद्धतापर आनि देलहुँ, वक्ताक कुलपर नहि। हम... हम एहि प्रश्नपर तीन बरखसँ अटकल छी, आ अहाँ एकरा ढोलक उदाहरणसँ एक साँसमे सुलझा देलहुँ।"

मालती हँसलि, यद्यपि ओकरा नहि बुझायल जे ओ की एतेक पैघ बात कहि देने अछि। "हम त केवल ढोलक कथा कहलहुँ, बाबूजी।"

"नहि," गंगेश बजल, आँखिमे पहिल बेर, ज्वरक बादो, एकटा चमक लऽ कऽ। "अहाँ न्यायक कथा कहलहुँ।"

एहि दिनसँ गंगेश, स्वस्थ भेलाक बाद सेहो, बेर–बेर सोमर आ रत्नाक घर आबय लागल। ओ कहैत — "हमरा ओतय हवा नीक लगैत अछि" — मुदा गाम जनैत छल जे हवासँ बेसी, ओकरा मालतीक संग बैसब नीक लगैत छल, जे बिनु शास्त्र पढ़ने, जीवनक अनुभवसँ एहन प्रश्न उठबैत छलि जकर उत्तर बड़का–बड़का शास्त्रार्थमे सेहो नहि भेटैत छल। दुइ बरखक भीतर, गंगेश आ मालतीक विवाहक बात पाकि गेल।

गामक ब्राह्मण–टोलामे कोहराम मचल। "एकटा ब्राह्मण, आ ओहो एहन प्रतिभाशाली, चर्मकारणीसँ विवाह करत? " — ई प्रश्न हर द्वार लग, हर कुआँ लग गूँजल। गंगेशक स्वयंक ननिहालक लोक धमकी देलनि जे जँ ई विवाह भेल, तँ हुनका शास्त्रार्थक हेतु कोनो सभा नहि बजाओत, कोनो पण्डित हुनका साक्षी नहि मानताह, हुनकर ग्रंथ, चाहे कतेक नीक होइक, कोनो पाठशालामे नहि पढ़ाओल जाएत।

एहि कोहराम भीतर, एक साँझ, गंगेश जोड़ी पोखरि लग, पीपरक साक्षी–गाछ लग, अकेले बैसल छल, माथ हाथमे धेने। तखन ओ एकटा आवाज सुनलक — "अहाँ ओतबे संशयमे छी जतबे साठि बरख पहिने एकटा आक्षेपक छल।"

गंगेश माथ उठौलक। गाछक जड़ि लग एकटा अत्यन्त वृद्ध — इतना वृद्ध जे ओकरा मनुष्य कहब सेहो कठिन लगैत छल — पुरुष बैसल छल, हाथमे एकटा पुरान शंख आ एकटा घिसल डोरी लेने। ई बुधुआ छलाह।

"अहाँ के छी, बाबा? " गंगेश पुछलक।

"हम एकटा सेवक छी, जकर सेवा एतेक लम्बा भऽ गेल अछि जे आब ओकरा सेवा कहब उचित नहि। हम अहाँक समस्या जनैत छी। हम अहाँकेँ ई कहय आयल छी — जे शास्त्रार्थ अहाँकेँ हुनकर सभासँ बाहर कऽ देत, ओ शास्त्रार्थ अहाँक ग्रंथसँ बेसी लम्बा नहि टिकत। मुदा जे ज्ञान अहाँकेँ मालतीक ढोलक कथासँ भेटल, ओ अहाँक ग्रंथक हर पृष्ठमे रहत, चाहे केओ मालतीक नाम कहियो लिखए वा नहि।"

गंगेश स्तब्ध रहि गेल। "अहाँकेँ ढोलक कथा कोना बुझल? "

बुधुआ हल्का मुस्कुरेलाह। "हम बहुत बरखसँ एहि गाछ लग बैसल छी, बाबू। हवा हमरा बहुत किछु सुना दैत अछि। हम अहाँकेँ केवल एतबे कहब — जे विवाह अहाँ करय जा रहल छी, ओ अहाँक पतन नहि, अहाँक ग्रंथक नींह थिक। मुदा हम अहाँकेँ एकटा दुःखद बात सेहो कहब — संसार अहाँक ग्रंथकेँ पढ़त, आ मालतीक ढोलककेँ बिसरि जाएत। संसार अहाँक विवाहकेँ एकटा दयाक कथा बना देत, न्यायक कथा नहि। ई अन्याय हम रोकि नहि सकब, मुदा हम एकटा वचन दऽ सकैत छी — जाबे धरि हमर प्रतिज्ञा जीवित रहत, ताबे धरि रत्ना आ मालतीक नाम कोनो–न–कोनो रूपमे, कोनो–न–कोनो जगह, बचल रहत, चाहे शास्त्रक पृष्ठमे नहि, तँ कोनो आर पृष्ठमे।"

विवाह भेल, गामक ब्राह्मण–टोलाक विरोधक बावजूद। कतेको ब्राह्मण परिवार गंगेशकेँ अपन द्वारसँ हटा देलनि। मुदा गंगेशक ग्रंथ, जे ओ अगिला बीस बरखमे लिखलक, बारह हजार ग्रंथ बराबर चिन्तन समेटि, मिथिलाक हर पाठशालामे पढ़ाओल जाय लागल — यद्यपि जेना बुधुआ कहने रहथिन, तहिना भेल। लोक तत्त्वचिन्तामणिकेँ पूजलक, मुदा मालतीक ढोलक कथाकेँ बिसरि गेल। रत्नाकेँ याद रखबाक बदला, कालक्रममे किछु लोक ई कथा गढ़लक जे

गंगेशक बुद्धि श्मशानमे कोनो तान्त्रिकक कृपा वा देवी कालीक वरदानसँ जागल छल — एकटा दैवी कथा, जकरा गढ़ब ओतेक कठिन नहि छल जेतेक ई स्वीकार करब कि एकटा चर्मकारणीक बेटी, ढोलक चामकेँ देखि–देखि, प्रमाणशास्त्रक एकटा गहींर सत्य बूझि गेल छलि।

रत्ना आ गामक आर चर्मकार–स्त्री सभ, जे रत्नाक जड़ी–बूटीक ज्ञान, ओकर प्रसव–विद्या, आ ओकर तीक्ष्ण बुद्धिक हेतु ओकरा घेरने रहैत छलि, साँझ ढरलाक बाद अपन–अपन छौंकी लऽ कऽ मरल–गंगक कातमे बैसैत छलि, गप्प करैत, गीत गबैत, आ गामक हर विवाद, हर अन्याय, हर छिपल कथाकेँ आपसमे बाँटैत छलि — किएक तँ ओ सभ जनैत छलि जे ओकर सभक बात कोनो सभा–भवनमे नहि सुनल जाएत, तेँ ओ सभ अपनहि बीच एकटा सभा बना लेने छलि, जतय शास्त्रक भाषा नहि, अनुभवक भाषा चलैत छल। गामक ब्राह्मण–टोला एहि झुंडकेँ भयसँ देखैत छल, किएक तँ ओतय स्त्री सभ ओहन बात जनैत छलि जे शास्त्री सभ नहि जनैत छलाह — कोन जड़ी कोन रोग हरत, कोन स्त्रीक प्रसव कठिन होएत, केकर पति रातिमे केकर द्वार खटखटबैत अछि। ई ज्ञान, जकरा कोनो पोथीमे नहि लिखल गेल, कालक्रममे भयक भाषामे अनुवादित भऽ गेल — लोक एहि स्त्री सभकेँ "डाइन" कहय लागल, किएक तँ जे ज्ञान लिखल नहि जाइत, ओकरा समाज या त देवी कहैत अछि, या डाइन — बीचक कोनो नाम ओकरा लग नहि होइत।

रत्नाक मृत्युक बाद (ओ बुढ़ापा धरि जीबि गेलि, अपन नातिन–पोतीकेँ हर्बल–विद्या सिखबैत), गामक कथामे ओकर नाम धुँधलायल, मुदा पूर्ण नहि मेटायल। पीपरक साक्षी–गाछ, जकर छाहमे बुधुआ गंगेशकेँ भेटल छलाह, ओ गाछ ओहि साँझक बातचीतकेँ अपन जड़िमे धेने रहल — ठीक जेना ओ हुलासा,

जीवन्ती, आ सुखदेवक कथाकेँ धेने छल। आ मरल–गंगक कातमे बैसनिहार स्त्री सभक छौंकी–सभा, कालक्रममे, गामक स्मृतिमे एकटा आर रूप लेलक — साँझ ढरलाक बाद, कहल जाइत अछि, ओतय अखनहु किछु आकृति छौंकीपर बैसल भेटैत अछि, गप्प करैत, रणनीति बनबैत, मुदा कहियो जोर सँ नहि बजैत, किएक तँ ओ सभ बहुत पहिनहि सिखि चुकल छलि जे धीमा स्वर सुरक्षित स्वर होइत अछि।

ओहि दिन, चर्मकार टोलाक दीप देखि, गाम एकटा गीत गबैत छल —

जकर हाथ चाम सिऔ हे, ओकरो नाम पातपर,
टोलक दीप आ महलक दीप रे, तेल एक्के जरै।
जे हाथ श्रम करै, से हाथ गाम बसाबय;
जे टोल नीचाँ बुझल, ओकरो नाम पंजीसँ पैघ।
दीप छोट होय वा पैघ हे, इजोत एक्के दै रे —
जे श्रमक नाम राखल, से गामक सम्पूर्ण कथा।

गंगेश उपाध्याय सँ जुड़ल कथा आ दृष्टान्त

सभा शान्त भेल। सूत्रधार शिष्यसभ आ गामक लोकक बीच ठाढ़ भऽ, धीर स्वरमे पुरान दृष्टान्त सुनाबय लगलाह—

गंगेशक विवाहक जनश्रुति पर टिप्पणी—पारम्परिक जनश्रुतिमे गंगेश उपाध्यायक चर्मकारणीसँ विवाहक उल्लेख अछि, यद्यपि एहि विवाहक विस्तृत विवरण, पात्रक नाम, वा परिस्थिति परम्परागत ग्रंथमे उपलब्ध नहि अछि — केवल एकटा संक्षिप्त, प्रायः असुविधाजनक मानि दबाओल गेल तथ्यक रूपमे एकर उल्लेख भेटैत अछि। अध्याय [−९१] मे मालती, रत्ना आ सोमरक चरित्र, आ हुनकर घर-परिवारक विवरण, कल्पनाप्रसूत अछि, ऐतिहासिक दस्तावेजसँ प्रमाणित नहि। एहि अध्यायक उद्देश्य ऐतिहासिक तथ्यक दावा करब नहि, अपितु ओहि प्रश्नकेँ कथाक रूप देब थिक जे अध्याय [−९७] केर उपसंहारमे सेहो उठल छल — शास्त्रक चमकक पाछाँ कतेक अनाम योगदान नुकाओल रहि जाइत अछि।

गंगेशक बाल्यकालीन जनश्रुतिसँ सम्बन्ध—अध्याय [−९७] केर परिशिष्टमे गंगेशक बाल्यकालीन मन्दबुद्धिता आ तान्त्रिक-कृपासँ अकस्मात् ज्ञानोदयक जनश्रुति उद्धृत अछि। अध्याय [−९१] एहि जनश्रुतिकेँ अस्वीकार नहि करैत, अपितु एकटा वैकल्पिक, समानान्तर सम्भावना प्रस्तुत करैत अछि — जे दैवी वरदानक कथा, समयक संग, ओहि मानवीय शिक्षाकेँ ढाकि सकैत अछि जकरा स्वीकार करब समाजक हेतु कठिन रहल होइक।

एतबा कहि सूत्रधार किछु काल मौन रहलाह, फेर हाथ जोड़ि सभाकेँ प्रणाम कयलनि।

अध्याय [–९०] (नबे)

बुधुआक जलसमाधि

गोहि देह लेलक, नाम छोड़ि देलक— जे जलमे समाधि लै, से पोखरिक तलमे नहि, गामक मनमे बसै।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश, अध्याय [–९१]–९२ केर शैलीमे। एहि अध्यायमे बुधुआ, जे अध्याय [–१००] सँ अध्याय [–९१] धरि हर कथाक साक्षी रहलाह, स्वयं गोहि सभक बीच जलसमाधि लैत छथि — आ "बूढ़बा भूत" क जन्म होइत अछि, जकरा हम बहुत आगू, चन्ना गाछीमे, "बारह सय बरखसँ एक्के डारिपर बैसल" रूपमे भेटब।)

गढ़ नारिकेल गाम आब बहुत बदलि गेल छल। सभा–भवन दुइ बेर टूटल आ दुइ बेर फेर सँ बनल छल। आचार्य केशवक परम्पराक सातम पीढ़ीक उत्तराधिकारी, एकटा युवा आचार्य वर्धमान, आब ओतय बैसैत छलाह, आ गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणिपर टीका लिखबाक स्वप्न लऽ कऽ मिथिलाक कोन–कोनसँ शिष्य आबय लागल छलाह। जोड़ी पोखरि अखनहु ओतहि छल, यद्यपि ओकर गहींर भाग आब पहिनेसँ बेसी गहींर भऽ गेल छल, कतेको बरखक गाद आ कतेको बरखक वर्षाक कारण। पीपरक साक्षी–गाछ आब एतेक विशाल भऽ गेल छल जे ओकर जड़ि पोखरिक किनार धरि पहुँचि, पानिमे उतरि गेल छल, जेना ओ स्वयं पानि पीबय चाहैत होइक। मरल–गंगक चर्मकार टोला सेहो विस्तार पओने छल; रत्नाक परिवारक चारि पीढ़ी आब ओतय बसल छल, आ गामक हर बच्चाक जन्म अखनहु ओहि परिवारक कोनो–न–कोनो स्त्रीक हाथसँ होइत छल, यद्यपि ब्राह्मण–टोला एहि सत्यकेँ कहियो खुलेआम स्वीकार नहि करैत छल।

आ बुधुआ अखनहु जीवित छलाह।

ई बात गामक लेल आब आश्चर्यसँ बेसी सामान्य बुझाइत छल, जेना पीपरक गाछ वा पोखरिक पानि — कोनो चीज जे सदिखन ओतय रहल अछि, ओकर उपस्थितिपर केओ प्रश्न नहि उठबैत। बच्चा सभ बुधुआकेँ "बूढ़बा" कहय लागल छल, आ ई नाम अखनहु धरि "बूढ़ सेवक" शब्दक स्मृति राखने छल, यद्यपि केओ आब ठीक–ठीक नहि जनैत छल जे ओ केकर सेवक छलाह। ओ आब चलि नहि सकैत छलाह; दिन भरि पीपरक जड़ि लग बैसल रहैत छलाह, अपन घिसल शंख आ पुरान डोरी कातमे धेने, आ जे कियो लग सँ जाइत छल, ओकरा एकटा नाम अवश्य कहैत छलाह — कखनो हुलासाक, कखनो जीवन्तीक, कखनो

सुखदेवक, कखनो रत्नाक — जेना ओ नाम सभ हवामे तैरैत रहय, आ बुधुआक काज मात्र एतबे रहि गेल होइक जे ओ नाम सभकेँ हवासँ खसय नहि दैत छलाह।

ओहि बरख जाड़ आम सालसँ बेसी कड़ा पड़ल। कमला–बलानक धार पातर भऽ बर्फ जकाँ ठंढा भऽ गेल छल। पोखरिक भैंस सभ पानिसँ बाहर निकलि, किनारेक सुक्खा घासपर सिमटि कऽ बैसि गेल छल। बगुला सभ, जे साधारणतः पोखरिक किनारे–किनारे घुमैत छल, ओहि जाड़मे कतहु आर उड़ि गेल छल, आ पोखरि सुन्न देखाइ पड़ैत छल, केवल पानिक शांत सतह, आ ओहिपर पीपरक जड़िक छाया।

एहि जाड़क एक साँझ, आचार्य वर्धमानक एकटा युवा शिष्य, नाम रघुनाथ, बुधुआ लग बैसल छल, जेना गामक बच्चा सभ अक्सर बैसैत छल, बूढ़बाक कथा सुनबाक हेतु। रघुनाथ पुछलक — "बूढ़बा, अहाँ केतेक बरखक छी? "

बुधुआ मुस्कुरेलाह, ओ मुस्कान जे अब हड्डीसँ बेसी हवाक बनल लगैत छल। "हमरा नहि बुझल, बाबू। हम गनब बहुत पहिने छोड़ि देलहुँ। मुदा हम एतबे जनैत छी — जखन हम शुरू केने रही, तखन एतय केवल नारिकेलक पाँति छल, आ पोखरि आ पीपर, आ एकटा वाद–शाला जतय एकटा आचार्य शंखकेँ चानी बुझबाक भ्रमपर बहस करैत छलाह।"

"वाचस्पति मिश्र? " रघुनाथ चकित भऽ पुछलक। "मुदा ओ त... ओ त सैकड़ों बरख पहिने भेल छलाह!"

"हँ, " बुधुआ धीरे कहलनि, आँखि पोखरि दिस तकैत। "सैकड़ों बरख। हमरा आब लगैत अछि जे ओ सैकड़ों बरख हमरे भीतर बैसल अछि, बाबू, हमर देहमे

नहि, हमर स्मृतिमे। आ स्मृति भार बनि जाइत अछि, जखन ओकरा धारण करएवला देह कमजोर पड़य लागय।"

रघुनाथ विदा भेलाक बाद, बुधुआ बहुत काल पोखरि दिस तकैत रहलाह। हुनकर हाथ, जे साठि बरख पहिने दृढ़ छल, आब काँपैत छल। हुनकर आँखि, जे कखनो हुलासाक ताड़पत्रक अन्तिम अक्षर पढ़ने छल, आब धुँधलायल छल। हुनका बुझायल जे देह आब बेसी दिन साथ नहि देत। मुदा एकटा प्रश्न हुनका बेचैन करैत छल — जँ ओ साधारण मनुष्यक जकाँ मरि जाइथ, तँ हुलासाक नाम, जीवन्तीक नाम, सुखदेवक अधूरा वाक्य, रत्नाक ढोलक कथा — ई सभटा केकरा लग रहत? ई सभटा शिलापर नहि खोदाएल छल, कोनो पोथीमे नहि लिखल छल। ई सभटा केवल एकटा वृद्ध मनुष्यक स्मृतिमे छल, आ ओ स्मृति ओहि मनुष्यक संग समाप्त भऽ जाएत, जेना दीप बुताइते ओकर इजोत।

ओ राति बुधुआ अपन शंख आ डोरी उठौलनि, आ धीरे–धीरे, अपन काँपैत पएरसँ, पोखरि दिस बढ़लाह। चानक इजोत पानिपर चाँदी जकाँ पसरल छल — ठीक ओहन इजोत जकर कथा ओ साठि बरख पहिने आक्षेपकसँ सुनने छलाह, शंख आ रजतक भ्रमक कथा। बुधुआ पोखरिक किनारे बैसि गेलाह, अपन डोरी पानिमे डुबौलनि, आ अपन शंख अपन छातीसँ लगा लेलनि।

"हुलासा," ओ फुसफुसेलाह, "अहाँक अन्तिम शब्द 'हम...' छल, आ हम ओकरा कहियो पूरा नहि केलहुँ, किएक तँ ई हमर अधिकार नहि छल। मुदा आइ हम अहाँकेँ कहय चाहैत छी — हम अहाँक ओ अधूरा शब्द अपना संग लऽ जा रहल छी, ओकरा पूरा करबाक हेतु नहि, ओकरा हमेशाक हेतु सुरक्षित राखबाक हेतु।"

"जीवन्ती," ओ आगू बजलाह, "अहाँ कहने रही — 'पोथीक साक्षी बनब सेहो...' —– आ अहाँक वाक्य पानिमे टूटि गेल छल। हम अहाँक ओ वाक्य आइ एहि पानिमे पूरा करय जा रहल छी, अहाँक शब्दसँ नहि, अहाँक कर्मसँ। हम साक्षी बनब, जीवन्ती। सदिखन।"

"सुखदेव," ओ कहलनि, आँखिमे नमी, "अहाँक बेटी, अहाँक कजरी भैंस, अहाँक बटवारा–पत्र — सभटा गामक अभिलेखसँ मेटा गेल, मुदा हमर स्मृतिसँ नहि। हम अहाँक 'सुखदेव–नियम' केँ अपना संग लऽ जा रहल छी।"

"रत्ना," ओ अन्तमे कहलनि, हल्का मुस्कुराइत, "अहाँक ढोलक कथा गंगेशक ग्रंथक हर पृष्ठमे छल, यद्यपि केओ अहाँक नाम नहि लिखलक। हम अहाँक नाम एहि पोखरिक पानिमे लिखि रहल छी, स्याहीसँ नहि, स्मृतिसँ।"

एतेक कहि, बुधुआ धीरे–धीरे पानिमे उतरलाह। पानि ठंढा छल, मुदा हुनका ठंढाक अनुभव नहि भेल। ओ जतय–जतय बढ़लाह, पानि हुनका चारू कात हलुक चमकय लागल, जेना हुनकर देहसँ किछु निकलि पानिमे घुरि रहल होइक। पीपरक जड़ि, जे पोखरिक किनार धरि फैलल छल, हुनका दिस झुकल जकाँ बुझायल, आ हवा एक क्षण ठमकि गेल, जेना सम्पूर्ण गाम — गाछ, पोखरि, धार, आ ओतय बसनिहार प्रत्येक प्राणी — साँस रोकि कऽ देखि रहल होइक।

बुधुआ पानिक बीच धरि पहुँचलाह, तखन रुकलाह। ओ आकाश दिस तकलाह, जतय तारा सभ ठंढाक कारण असाधारण स्पष्ट देखाइ दैत छल। "वाचस्पति आचार्य," ओ अन्तिम बेर बजलाह, "अहाँ कहने रहथिन जे प्रतिज्ञा एक मनुष्यक आयुसँ बेसी लम्बा होइत अछि। हम आइ बुझलहुँ — ई प्रतिज्ञा आयुसँ बेसी लम्बा नहि होइत, ई आयुक सीमा स्वयं तोड़ि दैत अछि।"

फेर ओ पानिमे बैसि गेलाह, ओ ठीक ओहिना जेना केओ धीरे–धीरे निन्नमे उतरैत होइक, बिनु संघर्ष, बिनु भय। पानि हुनका ऊपर बन्न भऽ गेल, आ एक क्षण, केवल एक क्षणक हेतु, सम्पूर्ण पोखरि चानी जकाँ चमकल — जेना ओहि रातिक चान स्वयं पानिमे उतरि आयल होइक। फेर सबटा शांत भऽ गेल। केवल छोट–छोट लहरी किनारे–किनारे टकरा कऽ शांत होइत रहलि, आ पीपरक पात एक बेर हिलि, फेर स्थिर भऽ गेल।

भोरे, गामक धीवर सभ जखन माछ पकड़य आयल, तँ पोखरिक किनारे एकटा पुरान शंख आ एकटा घिसल डोरी भेटलनि, करीने रखल, जेना केओ ओकरा जानि–बूझि कऽ ओतय राखल होइक। बुधुआक कतहु पता नहि छल। ने शव, ने पएरक निशान, ने कोनो संघर्षक चिन्ह। केवल शंख, डोरी, आ पानि, आ पीपरक गाछ, जे ओहि भोरे, गामक लोक कहलक, पहिनेसँ बेसी हरियर आ घन देखाइ दैत छल, जेना राति भरिमे ओकर जड़ि किछु नव पओने होइक।

आचार्य वर्धमान, समाचार सुनितहि, पोखरि दिस दौड़ल आयलाह। ओ बहुत काल शंख आ डोरी लग बैसल रहलाह, माथ नमौने। फेर, धीरे–धीरे, ओ शंख उठौलनि आ ओकरा पीपरक जड़िमे, ओहि ठाम जतय बुधुआ बरख–बरख बैसल रहैत छलाह, राखि देलनि। "बुधुआ नहि मरलाह," ओ गामक जुटल भीड़सँ कहलनि, स्वर काँपैत। "ओ केवल... ओ केवल आब हमरा सभसँ बेसी निकट भऽ गेलाह, एहि गाछक, एहि पानिक, आ एहि गामक हर स्मृतिक जतेक निकट कोनो जीवित मनुष्य कहियो भऽ नहि सकैत।"

ओहि दिनसँ, गामक लोक कहय लागल जे साँझ ढरलाक बाद, पीपरक जड़ि लग, कोनो–कोनो दिन एकटा छाया देखाइ दैत अछि — बैसल, स्थिर, मुदा जीवित सन। जे कियो ओतय भ' कऽ जाइत, ओकरा अपन नाम फुसफुसाइत

सुनाइ दैत, जेना केओ ओकर अस्तित्वकेँ दर्ज कऽ रहल होइक। बच्चा सभ ओतय बैसि पुरान कथा सुनैत — हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्नाक कथा — यद्यपि केओ आब ठीक–ठीक नहि जनैत छल जे ई कथा सभ सुनबैत के छल। "बूढ़बा," लोक कहैत छल, "अखनहु ओतय बैसल छथि।"

कालक्रममे, जेना हर कथाक संग होइत अछि, विवरण धुँधलायल, नाम बदलल, यथार्थ आ जनश्रुतिक बीचक सीमा अस्पष्ट भेल। जोड़ी पोखरि आगू बहुत नाम पओलक, गढ़ नारिकेलक भूगोल आगू बहुत बेर नक्शा बनल, आ पीपरक साक्षी–गाछ, जे कहल जाइत अछि, आगू बहुत बरख धरि उहिना ठाढ़ रहल जाबे धरि ओकर जड़ि गामक चन्ना गाछी धरि नहि फैलि गेल — वा शायद चन्ना गाछी ओहि पीपरक विस्तार मात्र थिक, गामक स्मृति एहि प्रश्नपर सदिखन बटल रहल। मुदा एकटा बात कहियो नहि बदलल — जे कियो ओतय साँझ ढरलाक बाद बैसत, ओकरा एकटा वृद्ध, धैर्यवान् उपस्थिति अखनहु भेटत, नाम सभ धेने, प्रतीक्षा करैत, जेना ओ बहुत बरख पहिने वाचस्पति मिश्रक द्वार लग बैसल छल, दीप जरबैत।

लोक ओहि उपस्थितिक आयु गनब बहुत पहिने छोड़ि देलक। किछु कहैत, ई सैकड़ों बरख पुरान अछि; किछु कहैत, ई हजार बरख पुरान अछि; आ जखन ई कथा, बहुत आगू, एकटा दोसर युगमे, एकटा दोसर भाषामे, फेर सँ कहल जाएत, तँ लोक एकटा गोल, याद रखय–योग्य संख्या चुनत — बारह सय बरख — ने ई संख्या पूर्ण रूपसँ सत्य होएत, ने पूर्ण रूपसँ झूठ, ठीक ओहिना जेना शंख कहियो पूर्ण रूपसँ चानी नहि होइत, मुदा ओकर चमकमे चानीक स्मृति अवश्य रहि जाइत अछि।

ओहि दिन, बुधुआकेँ मोन पाड़ैत, गाम एकटा शोकक गीत गबैत छल —

गोहि देह लेलक हे, नाम छोड़ि देलक,
जे जलमे समाधि लेल रे, से पोखरिक तलमे नहि बसल।
देह पानिमे गेल, मुदा नाम गाम मन राखल;
जे बुधुआ छल, से आब गामक स्मृतिमे जीबैत।
पोखरि गहींर हे, मुदा नाम गहींर रे —
जे नाम गाम धेने, से कोनो जलसमाधिसँ नहि हेराय।

बुधुआक जलसमाधि आ बूढ़बा भूतक कालक्रम पर टिप्पणी

"बारह सय बरख" क अर्थ

"गोहि सभक बीच जलसमाधि" (खण्ड–१ आ खण्ड–२) मे बूढ़बा भूतकेँ बेर–बेर "बारह सय बरखसँ एक्के डारिपर बैसल" कहल गेल अछि। खण्ड–० क कालक्रमक अनुसार, बुधुआक जलसमाधि (अध्याय [–९०]) वाचस्पति मिश्रक कालखण्ड (अध्याय [–१००]) सँ लगभग चारि–पाँच सय बरख बाद होइत अछि, नहि कि बारह सय बरख। एहि अन्तरकेँ जानि–बूझि कऽ सुलझाओल नहि गेल अछि — जेना चन्ना गाछीक कबड्डीमे स्वयं १८८५, १९३४, १९७७ आ वर्तमान एकहि पारीमे लाँघल जाइत अछि (खण्ड–१), तहिना लोकस्मृतिक कालगणना रैखिक नहि, प्रतीकात्मक होइत अछि। "बारह सय बरख" केँ एतय एकटा सटीक ऐतिहासिक गणनाक रूपमे नहि, अपितु "स्मरण–योग्य अत्यन्त प्राचीनता" क लोक–मुहावराक रूपमे बुझल जाए, जे कथाक भीतरी सत्यसँ मेल खाइत अछि, बाहरी पंचांगसँ नहि।

अध्याय [–८९] (उनासी)

पहिल राति, पहिल बाढ़ि

पहिल बाढ़ि घर लेलक, गाम नहि— जे राति बचल, से भोरक बीया बनल।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। बुधुआक जलसमाधिक ठीक एक बरख बाद — बूढ़बा भूतक पहिल परीक्षा। एहि राति सँ गढ़ नारिकेल गामक बान्हक कथा, आ "साक्षी मनुष्य आधा–भूत होइत अछि" वला विश्वासक बीया, दुनू शुरू होइत अछि।)

राति आधा बीतल छल जखन आकाश फाटि गेल।

पहिने केवल हवा छल, तेज, ठंढा, नारिकेलक पात सभकेँ एक दिससँ दोसर दिस चाबुक जकाँ फटकारैत। फेर बिजुरी चमकल, एक बेर, दुइ बेर, तेसर बेर एतेक तेज जे पीपरक साक्षी–गाछक पूरा आकृति एक क्षणक हेतु दिनक उजासमे उभरि आयल। फेर बरखा, जेना आकाशक सम्पूर्ण जमा पानि एकहि बेर खसि रहल होइक। कमला–बलान, जे साँझ धरि शांत, अपन सामान्य धारमे बहैत छल, आधा राति होइत–होइत गरजय लागल — एकटा आवाज जे पानिक नहि, कोनो बिपत्तिक पूर्व–सूचना जकाँ बुझाइत छल।

जोड़ी पोखरिक पीपर जड़िमे, बुधुआ — नहि, आब बुधुआ नहि, आब मात्र ओ उपस्थिति जकरा गामक लोक "बूढ़बा" कहय लागल छल — पहिल बेर अपन नव देहक सम्पूर्ण अर्थ बुझलनि। एक बरख पहिने ओ पानिमे उतरल छलाह, आ आब ओ पानिक संग एक भऽ गेल छलाह — ओ धाराक हर बढ़ती, हर जोर, अपन देहमे, अपन जड़िमे, अपन शंखक भीतर, अनुभव करैत छलाह। आ आइ राति, ओ जे अनुभव कऽ रहल छलाह, से हुनका डेरा देलक। कमला–बलान अपन सीमा तोड़य जा रहल छल, आ ओ सीमा, गामक दक्षिणी छोरपर, ओतहि सबसँ कमजोर छल जतय चर्मकार टोला बसल छल — जतय गामक बान्ह, जँ कहल जाए तँ बान्ह नामक कोनो चीज कहियो ठीक ढंगसँ बनल नहि छल, केवल किछु माटिक ढेर, जकरा हर बरख वर्षाक पहिने किसान सभ अपन–अपन खेतक सीमासँ बचल माटिसँ ऊँच करैत छल।

बूढ़बा चिचिआएलाह। मुदा ओकर स्वर हवामे विलीन भऽ गेल — केवल हवा, केवल बरखाक आवाज। ओ गामक बीच दिस दौड़लाह, चाहलाह जे हाथ पकड़ि–पकड़ि कैँ द्वार खटखटाबथि, मुदा हुनकर हाथ आब दरवाजाकेँ स्पर्श नहि कऽ

सकैत छल — ओ हाथ लकड़ी परसँ पानि जकाँ फिसलि जाइत छल, बिनु आवाज केने। ओ चिचिआएलाह, ओ कातर भऽ गेल, ओ अपन पूरा एक बरखक नव अस्तित्व एहि एक क्षणमे व्यर्थ अनुभव केलनि। "हम साक्षी बनबाक प्रतिज्ञा केने रही," ओ अपने–आपसँ बजलाह, "मुदा साक्षी जँ बचा नहि सकए, तँ ओ केवल दर्शक थिक, साक्षी नहि!"

चर्मकार टोलामे, रत्ना–मालतीक वंशक चौथी पीढ़ीक एकटा छोट बच्ची, नाम गौरी, अपन दादीक कातमे सुतल छलि। गौरी सात बरखक छलि, आ गामक बच्चा सभमे ओ एहि हेतु किछु भिन्न मानल जाइत छलि जे ओ कहियो–कहियो एहन बात कहि दैत छलि जकरा ओकरा कियो नहि सिखौने छल — जेना ओ पीपरक गाछ लग बैसि, बिनु केओ ओकरा किछु बतौने, कहि दैत छलि, "बूढ़बा आइ उदास छथि।" गामक लोक एहि क्षमताकेँ बच्चाक कल्पना कहैत छल, मुदा हुनकर दादी, जे स्वयं रत्नाक हाथसँ जड़ी–बूटीक विद्या सीखने छलि, जनैत छलि जे गौरीक भीतर किछु आर छल — एकटा पातर, अस्पष्ट डोर, जकर एक छोर गौरीक भीतर छल आ दोसर छोर, कियो नहि जनैत छल कतय।

ओहि राति, गौरी सपनामे बूढ़बाकेँ देखलक — पहिल बेर एतेक स्पष्ट रूपसँ। ओ हुनका पानिमे ठाढ़ देखलक, हाथ उठौने, मुँह खुजल, जेना ओ बाजय चाहैत होइथ मुदा कोनो आवाज नहि निकलैत होइक। सपनहिमे बूढ़बा एकटा शब्द दोहराबैत रहलाह, बेर–बेर, जाबे धरि ओ शब्द गौरीक भीतर एकटा घंटीक आवाज जकाँ बाजय नहि लागल — "उठ। उठ। उठ।"

गौरी चिचिआइत जागि गेलि। "दादी! दादी! पानि आबि रहल अछि! बूढ़बा कहलनि, उठ!"

दादी पहिने ई बच्चाक डरावन सपना बुझि हुनका शांत करय चाहलनि, मुदा तखने बाहर सँ एकटा आवाज आयल — दूर, मुदा साफ, पानिक गरजक आवाज, आ ओकर संग गामक कुकुर सभक अनवरत भुकब, जे साधारण राति भुकबसँ बिल्कुल भिन्न छल, जेना ओ सभ स्वयं किछु देखि रहल होइक जकरा मनुष्यक आँखि नहि देखि पाबैत। दादी उठि गेलीह, दरवाजा खोललनि, आ देखलीह जे गामक निच्चा छोरपर, अन्हारमे, एकटा हल्का चमक बढ़ैत जा रहल छल — पानिक चमक, जे बहुत तेजीसँ लग आबि रहल छल।

"बाढ़ि! बाढ़ि आबि रहल अछि!" दादी चिचिआएलीह, आ ओकर आवाज टोलाक हर घर धरि पहुँचि गेल, किएक तँ राति एहन शांत छल जे एकटा चिचिआहट सम्पूर्ण गामक निन्न तोड़ि सकैत छल। द्वार–द्वार खुजय लागल। लोक अपन बच्चा, अपन गाय–बकरी, अपन जे किछु हाथ लागल, ओकरा लऽ कऽ ऊँच जमीन दिस दौड़य लागल।

मुदा समय बहुत कम छल।

बान्ह, जे वर्षों सँ केवल माटिक एकटा ढेर छल, कमला–बलानक पूरा जोरक सामने बालूक किला जकाँ ढहि गेल। पानि गरजैत, फेनाइत, गामक निच्चा हिस्सा दिस दौड़ल — ठीक ओहि हिस्सा दिस जतय चर्मकार टोला बसल छल, जतय बबूर आ खजूरक गाछ छल, जतय ढोल आ मृदंग बनाओल जाइत छल। गौरी अपन दादीक हाथ पकड़ने, अपन माए–बापक पाछू, ऊँच जमीन दिस दौड़ल रहलि, मुदा पानि बहुत तेज छल — ओ ओकर पएरक टखना धरि पहुँचि गेल, फेर घुटना धरि।

बूढ़बा, जे आब पानिक हर बूँदमे व्याप्त छलाह, गौरीक भयकेँ अनुभव केलनि, आ ओ अपन सम्पूर्ण शक्ति, जकरा ओ अखनहु ठीक–ठीक बुझैत नहि छलाह, ओहि दिशा दिस मोड़लनि। पानिक धार, जे गौरीक परिवार दिस सीधा बढ़ि रहल छल, एक क्षणक हेतु, मात्र एक क्षणक हेतु, हुनकर देहरी लग एकटा छोट टापू जकाँ अलग भऽ गेल — जेना कोनो अदृश्य हाथ पानिकेँ ओतहि सँ मोड़ि देने होइक। गौरीक परिवार ओ क्षण उपयोग कऽ, नजदीकक ऊँच टीला — जतय गामक पुरान श्मशान छल, आ जकरा एहि कारणसँ केओ सामान्यतः "अशुभ" मानि ओतय नहि जाइत छल — ओतय पहुँचि, बाँचि गेल।

मुदा गामक बाकी टोला एतेक भाग्यशाली नहि रहल।

सोमरक घर — रत्नाक पुरान घर, जकरा गौरीक बाबा–परबाबा आब चलबैत छलाह — पूर्ण रूपसँ बहि गेल। ओहि घरमे रहनिहार गौरीक बड़की दादी, नाम सुभागी, जे अत्यन्त वृद्ध आ अपाहिज छलि, दौड़ि नहि सकलि। ओकर बेटा–बेटी ओकरा उठा कऽ भागय चाहलक, मुदा पानिक जोर एतेक छल जे रस्तहिमे ओकर हाथसँ सुभागी छूटि गेलि। "मुँहसँ केवल एकटा नाम निकलल," गामक लोक बादमे कहैत रहल, "ओ नाम गौरीक छल — 'गौरी बाँचल की?'" — आ फेर पानि हुनका लऽ गेल।

ओहि राति गाममे सात प्राण गेल — सुभागी, आ छह आर, जिनकर नाम बादमे गामक कोनो अभिलेखमे ठीकसँ नहि लिखाएल, किएक तँ ओ सभ चर्मकार टोलाक छल, आ राज–कर्मचारी सभ बाढ़िक हानिक हिसाब लिखबामे ब्राह्मण–टोलाक धान आ मवेशीक हानिकेँ पहिने गनलक।

भोर होइतहि, बरखा रुकल। आकाश धूसर छल, मुदा शांत। पानि धीरे–धीरे उतरय लागल, अपन पाछू माटि, टूटल छानी, आ शोकक चिन्ह छोड़ैत। बूढ़बा, अपन पीपरक जड़ि लग — जे राति भरिक बाढ़िमे सेहो अडिग रहल छल, यद्यपि ओकर आधा जड़ि पानिसँ धोवाइ गेल छल — बैसल छलाह, आ पहिल बेर, जलसमाधिक बाद पहिल बेर, ओ रोअलनि। ओ रोदन ओहन नहि छल जेहन मनुष्यक होइत अछि — कोनो आँसू नहि, कोनो आवाज नहि — मुदा गाछक हर पात, ओहि भोर, ओस–बून्दसँ बेसी भिजल देखाइ पड़ल, जेना गाछ स्वयं रोअल होइक।

गौरी, अपन परिवारक संग सुरक्षित, दुपहरियामे पीपर लग आयलि, अपन बड़की दादीक हेतु शोक मनबय। ओ पीपरक जड़िमे बैसि, धीरे बजलि — "बूढ़बा, अहाँ हमरा बचौलहुँ। मुदा दादी..." — आ ओ आगू नहि बाजि सकलि।

बूढ़बाक आवाज, जे केवल गौरी सुनि सकैत छलि, धीरे उठल, दुःखसँ भारी — "गौरी, हम अहाँ सभकेँ नहि बचा सकलहुँ। हम केवल किछु बचा सकलहुँ। ई फर्क सहनाइ हमरा सिखय पड़त, ठीक ओहिना जेना हुलासा, जीवन्ती, आ सुखदेवक हेतु हमरा सिखय पड़ल छल जे सभटा नहि बचाओल जा सकैत, मुदा जे बचाओल जा सकैत अछि, ओकरा बचाएब कोनो छोट काज नहि थिक।"

"आ सुभागी दादी? " गौरी पुछलक, आँसूसँ भरल।

"हम हुनकर नाम अपना संग राखब," बूढ़बा कहलनि, "जेना हम बाकी सभटा नाम राखने छी। मुदा गौरी, हम अहाँसँ एकटा आर बात कहय चाहैत छी — अहाँ आइ राति हमर आवाज सुनलहुँ, जखन आर केओ नहि सुनि सकल। ई क्षमता अहाँमे किएक अछि, से हमरो ठीक–ठीक नहि बुझल, मुदा ई सच अछि। शायद

जे मनुष्य साक्षी बनय हेतु तैयार होइत अछि, ओ किछु–किछु आधा–भूत भऽ जाइत अछि — ने पूर्ण जीवित, ने पूर्ण मृत, मुदा दुनू संसारक बीच एकटा पातर डोरी।"

ओहि राति सँ, गामक लोक बान्हकेँ फेर सँ बनौलक, ई बेर पाकल ईंटा आ शिलासँ, आ गामक नाम — जकरा पहिने "नारिकेल–घाट" कहल जाइत छल — धीरे–धीरे "गढ़ नारिकेल" भऽ गेल, "गढ़" शब्द ओहि नव बान्हक स्मृतिमे जुड़ल, जकरा सात प्राणक हानिक बाद बनाओल गेल छल। बान्हपर, गामक निर्णयसँ, चर्मकार टोला दिसक हिस्सा सबसँ पहिने आ सबसँ मजगूत बनाओल गेल — पहिल बेर, गामक इतिहासमे, ओहि टोलाक सुरक्षाकेँ बाकी गामक बराबर, वा शायद बाकी गामसँ बेसी, महत्त्व देल गेल।

आ ओहि राति सँ, "साक्षी मनुष्य आधा–भूत होइत अछि" —– ई बात, पहिने केवल गौरीक हेतु सत्य, धीरे–धीरे गामक एकटा कहबी बनि गेल, जकरा माए–दादी अपन बच्चाकेँ कहैत — "जँ केओ सुतलमे अजीब सपना देखए, वा जँ केओ कोनो बिपत्तिक पहिनहि, बिनु कारण, डरि जाए, तँ ओकरा हल्केमे मत लिअ। हो सकैत अछि, ओ आधा–भूत भऽ गेल होइक, आ बूढ़बा ओकरासँ बात कऽ रहल होथिन।"

ओहि पहिल बाढ़िक बाद, बचल गाम एकटा गीत गबैत छल —

पहिल बाढ़ि घर लेलक हे, गाम नहि लऽ सकल,
जे राति बचल रे, से भोरक बीया बनल।
पानि चढ़ल, छप्पर बहल, मुदा लोक ठाढ़;
जे ओहि राति संग रहल, से भोर धरि बाँचल।
बाढ़ि उतरल हे, गाम फेर बसल रे —
जे पहिल राति झेलल, से हर बाढ़िक बीया बनल।

गढ़ नारिकेलक बान्ह आ मिथिलाक बाढ़ि–परम्परा पर टिप्पणी

मिथिलाक बाढ़ि आ सामाजिक विषमता

मिथिलाक कोसी, कमला, आ बलान नदी–क्षेत्र ऐतिहासिक रूपसँ बाढ़िप्रवण रहल अछि, आ परम्परागत रूपसँ बान्ह–निर्माण आ रखरखावमे संसाधनक बटवारा अक्सर सामाजिक पदानुक्रमकेँ प्रतिबिम्बित करैत रहल अछि — शक्तिशाली टोलाक सुरक्षा प्राथमिकतामे, हाशियाक टोलाक सुरक्षा उपेक्षामे। अध्याय [–८९] एहि ऐतिहासिक यथार्थकेँ कथाक रूप दैत अछि, आ "गढ़ नारिकेल" नामक उत्पत्तिकेँ एहि त्रासदीसँ जोड़ैत अछि — एकटा काल्पनिक व्युत्पत्ति, जकर उद्देश्य गामक नामक यथार्थ इतिहास बतायब नहि, अपितु स्मृति आ न्यायक बीचक सम्बन्धकेँ स्थान–नामसँ जोड़ब थिक, जे "गोहि सभक बीच जलसमाधि" क केन्द्रीय विषय थिक।

अध्याय [–८८] (अठासी)

डाइनक आरोप

जकरा गाम 'डाइन' कहलक, ओकर नाम केओ नहि पुछलक— आरोप देह जरबै छै, सत्य पातपर रहि जाइ छै।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। बाढ़िक बीस बरख बाद। गौरी, जे बच्चीक रूपमे बूढ़बाक आवाज सुनने रहथि, आब गामक हाकिम–वैद्य छथि — आ ठीक एहि कारणसँ, एकटा षडयंत्रक केंद्र बनि जाइत छथि।)

बीस बरखमे गढ़ नारिकेल बहुत बदलि गेल छल। नव बान्ह, पाकल ईंटाक, अखनहु मजगूत ठाढ़ छल, आ ओकर छाहमे चर्मकार टोला आब पहिनेसँ बेसी सुरक्षित, आ — ई बात गामक कतेको पुरान परिवारकेँ नीक नहि लगैत छल — पहिनेसँ बेसी समृद्ध देखाइ पड़ैत छल। बान्हक ऊँच जमीनपर आब पान आ तरकारीक नीक खेती होइत छल, आ चर्मकार टोलाक ढोल–मृदंग, जे पहिने केवल गढ़ नारिकेलमे बिकाइत छल, आब मिथिलाक दूर–दूरक हाट–बजारमे नाम कमा चुकल छल।

आ एहि टोलाक बीचमे, गौरी छलि — अखन सत्ताइस बरखक, दुइ बच्चाक माए, आ रत्नाक परम्पराक चारिम पीढ़ीक उत्तराधिकारिणी। ओकर हाथमे ओहि जड़ी–बूटीक ज्ञान छल जकरा ओकर पर–परनानी रत्ना सीखने छलि, आ ओकर संग एकटा आर चीज छल जकरा गामक लोक बहुत पहिनेसँ जनैत छल, मुदा खुल्लमखुल्ला कहय नहि चाहैत छल — गौरी बचपनहि सँ "आधा–भूत" छलि, आ बूढ़बाक आवाज ओकरा अखनहु कखनो–कखनो सुनाइ दैत छलि, खास कऽ जखन गामपर कोनो बिपत्ति नियरा रहल होइक।

मुदा एहि साँझ, गौरीकेँ कोनो अजीब सपना नहि आयल छल। ओकरा नहि बुझल छल जे गामक पछबरिया छोरपर, ठाकुर–हवेलीक भीतर, दुइ मनुष्य एकटा एहन योजना बना रहल छल जकर छाया अगिला कतेको सप्ताह धरि ओकर जीवनपर पड़बाक छल।

प्रतापसेन ठाकुर, उग्रसेन ठाकुरक पौत्र, हवेलीक बैसकमे टहलि रहल छलाह, माथ पर हाथ धेने। "पंडितजी," ओ बजलाह, "हमर सम्पत्ति साल–दर–साल घटैत जा रहल अछि, आ चर्मकार टोलाक सम्पत्ति बढ़ैत जा रहल अछि। ई कोन युग आबि गेल जे चमरौटीक ढोल–वला हमरा बरोबर धान बेचय?"

पंडित यशपति, गामक नव सभा–भवनक कर्मकांडी अध्यक्ष, धीरे मुस्कुरेलाह। ई मुस्कान ओहन छल जे नीक अभिप्रायसँ कहियो नहि निकलैत। "ठाकुर साहेब, अहाँक चिन्ता उचित अछि, मुदा एकर उपाय सेहो अछि। भूमि–बटवाराक कानून एतबे कहैत अछि जे जँ कोनो टोला "अशुद्ध" वा "अनिष्टकारी" सिद्ध होइक, तँ ओकर भूमि–अधिकारपर सभा–भवनक पुनर्विचार भ' सकैत अछि — पवित्रीकरणक नामपर।"

"अनिष्टकारी? " प्रतापसेन पुछलाह, आँखिमे रुचि जागैत।

"गौरीक नाम अहाँ जनितहि छी, " यशपति बजलाह, स्वर आओर धीमा करैत। "ओ जड़ी–बूटी जनैत छथि, ओ राति–बिरात एकाकी बाहर निकलैत छथि, ओ पीपरक साक्षी–गाछ लग बैसि, कहल जाइत अछि, कोनो अदृश्य सँ बात करैत छथि। एहन स्त्री हेतु "डाइन" शब्दक उपयोग करब कोनो झूठ नहि, ठाकुर साहेब — केवल एकटा पुरान शब्दकेँ नव उपयोगमे आनब।"

प्रतापसेन बहुत काल चुप रहलाह। फेर बजलाह, "मुदा प्रमाण? गामक लोक ओकरा वर्षों सँ जनैत अछि। ओ हर घरक बच्चा जन्मबामे मदति केने अछि, हर बुखार, हर घाओ ओ ठीक केने अछि।"

यशपति हँसलाह, एकटा ठंढा, गणनात्मक हँसी। "प्रमाण बनाओल जाइत अछि, ठाकुर साहेब, मांगल नहि जाइत। हमरा एतबे चाही — कोनो एक बिपत्ति, कोनो एक बीमारी, आ गौरीक नाम ओहि बिपत्तिसँ जोड़बाक एकटा सूत्र। बाकी काज लोकक भय स्वयं कऽ लेत। भय तर्कसँ बेसी तेज दौड़ैत अछि।"

ई अवसर एक सप्ताहक भीतर स्वयं आबि गेल — मुदा ओहि रूपमे नहि जेहन प्रतापसेन आशा केने छलाह।

प्रतापसेनक छोट बेटा, छह बरखक विश्वनाथ, अचानक तेज बुखारमे पड़ि गेल। पहिल दुइ दिन घरक वैद्य ओकरा ठीक करय चाहलक, मुदा बुखार बढ़ैत गेल, आ तेसर दिन बच्चा बेहोश भऽ गेल। ठाकुर–हवेलीमे कोहराम मचल। प्रतापसेनक पत्नी, कमला देवी, गौरीकेँ बजाबय चाहलीह — किएक तँ गामक हर माए जनैत छलि जे गौरीक हाथ, गामक कोनो वैद्यसँ बेसी, बुखारकेँ शांत करैत अछि। मुदा प्रतापसेन मना कऽ देलाह। "चमरौटीक स्त्रीकेँ हमर बेटाकेँ छूअय देब? नहि। यशपतिजीक औषधि–मंत्र पर्याप्त अछि।"

चारिम राति, विश्वनाथक हालत आओर बिगड़ि गेल। कमला देवी, अपन पतिक आज्ञाक विरुद्ध, चुपके सँ अपन दासीकेँ गौरी बजाबय पठा देलीह।

गौरी राति भरि विश्वनाथक कातमे बैसि रहलि, ठंढा पट्टी राखैत, नीम आ चिरायताक काढ़ा पियबैत। भोर होइत–होइत बुखार टूटल। विश्वनाथ आँखि खोललक, अपन माएकेँ पहचानलक, आ कमजोर स्वरमे पानि मँगलक। कमला देवी रोदन करय लगलीह, आनन्दसँ, आ गौरीक हाथ पकड़ि कऽ बजलीह, "अहाँ हमर बेटाक प्राण बचौलहुँ, गौरी। हम एकरा कहियो नहि बिसरब।"

मुदा जखन प्रतापसेन भोरे उठलाह आ देखलनि जे गौरी राति भरि हुनकर घरमे रहलि छलि, हुनकर मुँह क्रोधसँ लाल भऽ गेल — ई क्रोध बेटाक ठीक होएबाक हेतु नहि, अपितु ई हेतु जे हुनकर आज्ञाक उल्लंघन भेल छल, आ ओहो एकटा चर्मकार–स्त्रीक पक्षमे। ओ ई बात यशपति लग लऽ गेलाह, आ यशपति, अपन योजनाक हेतु एकटा नव, आओर तीक्ष्ण अवसर देखलनि।

"ठाकुर साहेब," ओ बजलाह, "सोचू — बुखार पहिने बढ़ल, तखन गौरी आयलि, आ बुखार टूटल। ई कोना सिद्ध होइत अछि जे ओ बुखार ठीक केलक, ने

कि ई जे ओ पहिनहि सँ बुखार चढ़ाओने छल, आ आब अपन ईलाजक नाटक कऽ अपन शक्ति देखाबय आयल छलि? डाइन सभक इएह चाल होइत अछि — पहिने रोग दिअ, फेर आराम दऽ अपन प्रभुत्व स्थापित करू।"

प्रतापसेन, जिनकर घमण्ड बेटाक जीवनसँ बेसी घायल भेल छल, एहि तर्ककेँ लपकि लेलनि। ओहि दिन साँझमे, गामक सभा-भवनमे, ठाकुरक बजाओल एकटा आपात-सभा जुटल। यशपति, गंभीर स्वरमे, गामक सामने घोषणा केलनि — "गढ़ नारिकेलमे एकटा अनिष्ट शक्ति सक्रिय अछि। हम प्रमाण जुटौने छी जे गौरी, चर्मकार-टोलाक स्त्री, तंत्र-विद्याक प्रयोग कऽ बालकक स्वास्थ्यसँ खेलैत अछि। एहि विषयक जाँच आवश्यक अछि — आ जाँच धरि, ओकरा गामक धार्मिक कार्यसँ, आ ओकर टोलाकेँ बान्हक निकटवर्ती भूमिसँ, दूर राखल जाए, शुद्धिकरणक हेतु।"

सभामे सन्नाटा छाइ गेल। कतेको लोक, जिनकर बच्चाकेँ गौरी बचौने छल, अवाक्, असमंजसमे बैसल रहि गेल — भय आ कृतज्ञताक बीच फाटल। किछु आवाज विरोधमे उठलक, मुदा यशपतिक स्वर, आ प्रतापसेनक शक्ति, ओकरा दबा देलक।

चर्मकार टोलामे, गौरी अपन घरमे बैसल, अपन बेटीकेँ दूध पियबैत, एहि सभाक बारेमे किछु नहि जनैत छलि — जाबे धरि ओकर सहेली, फुलेसरी, दौड़ल आयलि, हाँफैत, आँखिमे भय। फुलेसरी, ओ स्त्री जे रत्नाक परम्पराक ओहि गुप्त, साँझक छौंकी-सभाक अगुआ छलि, बजलि — "गौरी! सभा-भवनमे तोहर नाम पर आरोप लागल अछि — डाइनक आरोप! यशपति कहलक जे तोहर टोलाकेँ बान्ह लगक भूमिसँ हटाओल जाएत, "शुद्धिकरणक" नामपर!"

गौरीक हाथ स्तब्ध भऽ गेल, ओकर बेटी अखनहु दूध पीबि रहल छल। ओकर मोनमे एक संग कतेको प्रश्न उठल — विश्वनाथकेँ बचाएब की गलती छल? कि ई गलती केवल एतबे छल जे ओ जन्मल चर्मकार टोलामे, आ ओकर ज्ञान पोथीमे नहि, हाथमे छल? ओकरा अचानक मोन पड़ल — रत्ना, हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव — सभटा नाम जकरा बूढ़बा बरख–दर–बरख धेने आयल छलाह, सभटा ओ मनुष्य जिनकर सेवा, जिनकर सत्य, समाजक बड़का–बड़का व्यवस्थाक सोझाँ अधूरा रहि गेल छल।

"पीपर लग जाइ पड़त," गौरी अचानक बजलि, अपन बेटीकेँ फुलेसरीक हाथमे दैत। "बूढ़बासँ बात करय पड़त। मुदा फुलेसरी..." — ओकर स्वर काँपल — "जँ बूढ़बा सेहो एहि बेर किछु नहि कऽ सकथिन तँ? "

ओ अन्हार बढ़ैत साँझमे दौड़ल, पीपर दिस, आ हवा एक अजीब चुप्पी लऽ कऽ ओकर पाछू–पाछू चलल — जेना सम्पूर्ण गाम, जान बूझि कऽ वा अनजाने, अपन साँस रोकि कऽ प्रतीक्षा करय लागल होइक जे आइक राति की लऽ कऽ आबत। दूर, सभा–भवनक दिशासँ, मशाल सभक इजोत हिलैत, बढ़ैत देखाइ पड़ल — कतेको लोक, हाथमे मशाल, धीरे–धीरे चर्मकार टोला दिस बढ़य लागल छल।

ओहि दिन, ओहि आरोपित स्त्रीक हेतु, गामक किछु स्त्री चुपचाप एकटा गीत गबैत छलीह —

जकरा गाम 'डाइन' कहलक हे, ओकर नाम केओ नहि पुछलक,
आरोप देह जरबै रे, सत्य पातपर रहि जाइ।
भीड़ चिकरल, मशाल जरल, मुदा प्रमाण कतहु नहि;
जे नाम बिनु पुछने आरोप लागल, से अन्याय भेल।
आरोप क्षण भरि हे, नाम युग–युग रे —

जे ओकर नाम पुछलक, ओ ओहि स्त्रीकेँ आगिसँ बचौलक।

विशेष टिप्पणी

डाइन–प्रथा आ भूमि–अधिग्रहणक ऐतिहासिक सम्बन्ध

भारतक कतेको क्षेत्रमे, विशेषकर आदिवासी आ हाशियाकृत समुदायमे, "डाइन" क आरोप ऐतिहासिक रूपसँ प्रायः भूमि–विवाद, पारिवारिक शत्रुता, वा स्त्रीक स्वतंत्र स्थितिसँ जुड़ल रहल अछि — विशेषतः जखन ओ स्त्री विधवा, निःसंतान, वा (गौरीक जकाँ) पारम्परिक चिकित्सा–ज्ञानक स्वतंत्र स्रोत होइक। अध्याय [–८८] एहि सामाजिक यथार्थकेँ कथाक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि, ई देखाबय लेल जे अन्धविश्वास प्रायः स्वतःस्फूर्त नहि होइत, अपितु सत्ता आ सम्पत्तिक स्वार्थद्वारा सचेत रूपसँ रचल आ प्रयुक्त कएल जाइत अछि। एहि कथाक आगूक भाग अध्याय [–८७] मे।

अध्याय [–८७] (सतासी)

टोलाक द्वारपर

द्वारपर मशाल आबि सकै, भीतर नाम नहि जरै— जे टोल जागल, तकर देबारि आगिसँ ऊँच।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश, अध्याय [–८८] केर ठीक पाछू। मशाल–धारी भीड़ चर्मकार टोलाक द्वार लग पहुँचि चुकल अछि — आ गामक स्त्री सभ आब चुप रहबाक निर्णय बदलि चुकल छथि।)

पीपरक जड़ि लग, गौरी घुटना टेकि, हाथ जोड़ने बैसल छलि। "बूढ़बा," ओ फुसफुसाएलि, "अहाँ हुलासाक हेतु देरीसँ आयल छलहुँ, जीवन्तीक हेतु देरीसँ, सुखदेवक हेतु देरीसँ। आइ अहाँ हमरा हेतु देरीसँ नहि आउ।"

हवा एक क्षण थमकल। फेर, पीपरक पातसभमे एकटा कँपकँपी दौड़ल, यद्यपि कोनो झोंका नहि छल। बूढ़बाक आवाज, केवल गौरीक हेतु, धीरे उठल — "गौरी, हमर शक्ति देहकेँ नहि छुबि सकैत, ने मशालकेँ बुताबि सकैत, ने भीड़क पएरकेँ रोकि सकैत। हम अहाँकेँ ई झूठ नहि कहब जे हम अहाँकेँ बचा लेब। मुदा हम अहाँकेँ ई कहि सकैत छी — जे सत्य आइ राति एहि टोलामे अछि, ओ हमरासँ, वा अहाँसँ, बेसी शक्तिशाली अछि। ओ सत्य केवल एकटा जगह चाहैत अछि बाहर आबय हेतु — कतेको मुँह, जे बहुत दिनसँ चुप छल।"

मशालक इजोत, अन्हारकेँ चीरैत, चर्मकार टोलाक द्वार धरि पहुँचि गेल। प्रतापसेन ठाकुर आगू छलाह, आ हुनकर पाछू यशपति, आ हुनकर पाछू पचास–साठि गामक लोक — किछु सचमुच भयभीत, किछु केवल भीड़क चाल चलैत। "गौरी!" यशपति चिचिआएलाह, "बाहर आउ! सभा–भवनक आदेशकेँ मानू!"

टोलाक द्वारपर, गौरीक बदला, पहिने फुलेसरी आयलि, ओकर पाछू आर स्त्री — दस, बीस, फेर आओर। ओ सभ हाथमे कोनो हथियार नहि, केवल दीप आ अपन बच्चा–सभकेँ लेने ठाढ़ भऽ गेलि, एकटा जीवित दीवार बना, चर्मकार टोला आ भीड़क बीच।

"अहाँ सभ किनका सजा देबय चाहैत छी?" फुलेसरी चिचिआएलि, ओकर स्वर काँपैत, मुदा नहि टूटैत। "ओ स्त्रीकेँ जकर हाथ हमर सभक बच्चाकेँ बचौलक?"

भीड़मे एक क्षण असमंजस पसरल। तखने, कोनो अनपेक्षित दिससँ, एकटा आर आवाज उठल — हवेली दिससँ, कमला देवी, प्रतापसेनक अपन पत्नी, अपन दासीक संग दौड़ल आयलीह, साँस फुलल, वस्त्र अस्तव्यस्त।

"रुकू!" कमला देवी चिचिआएलीह, आ भीड़ स्तब्ध भऽ हुनका दिस घुरल — किएक तँ ठाकुरक पत्नीकेँ एहि तरहें, राति-बिरात, नंगे पएर, अपन घरसँ बाहर दौड़ल कोनो नहि देखने छल। ओ भीड़ चीरैत, प्रतापसेन लग पहुँचलीह। "अहाँ जनैत छी गौरी की केलक? अहाँ जनैत छी हमर बेटा, जकरा अहाँ अपन आँखिक सोझाँ मरैत देखने रहथिन, आइ जीवित अछि, गौरीक हाथसँ, ओहि हाथसँ जकरा अहाँ आइ जरायब चाहैत छी? "

"कमला! घर जाउ, ई पुरुषक विषय अछि!" प्रतापसेन गरजलाह, मुदा हुनकर स्वरमे पहिल बेर एकटा हिचकिचाहट सुनाइ पड़ल।

"नहि," कमला देवी बजलीह, आ ओ पहिल बेर, अपन सम्पूर्ण विवाहित जीवनमे पहिल बेर, अपन पतिक सोझाँ सीधा ठाढ़ भेलीह। "ई पुरुषक विषय नहि, ई सत्यक विषय अछि, आ सत्य केवल पुरुषक कान नहि सुनैत। हम एहि गामक हर स्त्रीसँ पुछैत छी — जिनकर बच्चाकेँ गौरी बचौने अछि, ओ आगू आउ आ बाजू। एतय, आइ राति, अहाँ सभक चुप्पी अहाँक बच्चाक जीवनसँ बेसी मूल्यवान अछि की? "

एक क्षण सन्नाटा। फेर, धीरे-धीरे, भीड़क भीतरसँ स्त्री-सभ अलग होय लागल — किछु ब्राह्मण-टोलाक, किछु कायस्थ-टोलाक, किछु साधारण किसान-घरक — सभ आगू आबि, अपन-अपन कथा कहय लागल। "गौरी हमर बेटीकेँ जन्मक राति बचौलक, जखन ओ उनटी पड़ल छलि गर्भमे।" "गौरी हमर

पतिक साँप–दंश ठीक केलक, जखन बड़का वैद्य हाथ उठा देने छलाह।" "गौरी हमर सासुक अन्तिम मासमे हरेक राति बैसल रहलि, बिनु कोनो मूल्य लेने।" एक–एक कऽ, कतेको आवाज उठल, आ हर आवाज ओहि झूठक पहाड़मे एकटा–एकटा ईंटा हटबैत गेल जे यशपति वर्षों सँ चुनने छलाह।

यशपति, अपन नियंत्रण खसैत देखि, अन्तिम प्रयास केलनि। "ई सभटा भावुकताक बात थिक! डाइन अपन शिकारकेँ पहिने अपन जालमे फँसबैत अछि, तखने ओ मीठ लगैत अछि!" ओ भीड़ दिस घुरलाह, हाथ उठा कऽ। "जे सत्यकेँ नहि मानत, ओकरा हम...

ओ वाक्य पूरा नहि कऽ सकलाह।

किएक तँ ओहि क्षण, बिनु केओ स्पर्श केने, यशपतिक हाथमे धेल मशाल स्वयं बुताइ गेल — बिनु हवाक झोंकाक, बिनु पानिक बून्दक, केवल एक क्षणमे, जेना ओकरा भीतरसँ केओ फूकि देने होइक। भीड़ हाहाकार कऽ पाछू हटल। यशपति स्वयं, अपन जीवनमे पहिल बेर, अपन शास्त्र आ अपन चालाकीक बाहर, कोनो चीजक सामने खसि पड़लाह, ठीक ओहिना जेना बुधुआ, बहुत बरख पहिने, एकटा आक्षेपकक आँखिमे चानी सन उजास देखने छलाह।

"ई... ई कोन शक्ति अछि? " यशपति काँपैत बजलाह।

गौरी, जे आब टोलाक द्वारपर ठाढ़ भऽ गेल छलि, फुलेसरी आ कमला देवीक कातमे, शांत स्वरमे बजलि — "एकर नाम बूढ़बा अछि, पंडितजी। ओ एतय बरख–दर–बरख बैसल छथि, सभटा नाम धेने जकरा अहाँ जकाँ लोक मेटाबय चाहैत अछि। ओ अहाँकेँ नुकसान नहि पहुँचाओताह — ई हुनकर तरीका नहि —

मुदा ओ अहाँक झूठकेँ जरय नहि देताह, ओहि इजोतसँ जकरा अहाँ हथियार बनौने छलहुँ।"

भीड़ धीरे–धीरे छटय लागल, किछु शर्मिंदा, किछु राहत महसूस करैत, किछु अखनहु असमंजसमे। प्रतापसेन, अपन पत्नीक साहस आ यशपतिक विफलता दुनूसँ हिलल, किछु नहि बजलाह, केवल घुरि कऽ हवेली दिस चलि गेलाह। मुदा जाइत–जाइत, ओ एक बेर घुरि कऽ गौरी दिस देखलनि — आ ओहि नजरिमे कृतज्ञता नहि, अपमानक ग्लानि छल, आ ग्लानि, गौरी बहुत पहिनहि सिखने छलि, कखनो–कखनो कृतज्ञतासँ बेसी खतरनाक होइत अछि, किएक तँ अपमानित मनुष्य क्षमा नहि, बदला खोजैत अछि।

ओहि राति, टोला बाँचि गेल। भूमि सेहो, अगिला दिनक सभामे, चर्मकार टोलाक नामपर पुनः दर्ज कएल गेल, कमला देवीक जोरदार हस्तक्षेपक कारण। मुदा यशपति, अपन पद सँ हटाओल गेल बादो, गाम नहि छोड़लनि। ओ चुप भऽ गेलाह, मुदा गौरी, जे आब बूढ़बाक आवाजकेँ पहिनेसँ बेसी स्पष्ट सुनय लागल छलि, जनैत छलि जे चुप्पी आ हार दुइ भिन्न वस्तु होइत अछि। यशपतिक आँखिमे ओ किछु देखने छलि जकरा ओ नाम नहि दऽ सकैत छलि, मुदा जकर ठंढापन ओकरा राति भरि निन्न नहि आबय देलक — जेना कोनो नव षड्यंत्र, एहि बेरक असफलतासँ सीखि, आओर धीरज आ आओर चालाकीक संग, कोनो दूर, कोनो अनदेखल कोनासँ, आब आकार लेबय शुरू कऽ चुकल होइक।

ओहि राति, द्वारपर मशाल देखि, जागल टोल एकटा गीत गबैत छल —

द्वारपर मशाल आबि सकै हे, भीतर नाम नहि जरै,
जे टोल जागल रे, तकर देबारि आगिसँ ऊँच।
आगि देह जरा सकै, मुदा नाम नहि जरा सकै;
जे टोल मिलि ठाढ़ भेल, से कोनो मशालसँ नहि हारल।

मशाल बुझल हे, नाम जरैत रहल रे —

जे टोल एक भेल, तकर द्वारपर आगि थम्हल।

अध्याय [–८७]–८८ पर टिप्पणी

सामूहिक स्त्री–गवाहीक शक्ति

अध्याय [–८७] मे गामक स्त्री–सभक सामूहिक गवाही, जे व्यक्तिगत भयकेँ पार कऽ सामूहिक सत्यक रूपमे उभरैत अछि, अध्याय [–९६] मे वाचस्पति मिश्रद्वारा प्रतिपादित शब्द–प्रमाणक सिद्धान्तक (बजनिहारक अभिप्राय, सुननिहारक विश्वास, आ समयक सत्यनिष्ठा) एकटा सामूहिक, लोकाधारित रूप प्रस्तुत करैत अछि। जतय एकटा अकेल स्त्रीक शब्द (जेना हुलासाक ताड़पत्र) संदेहक शिकार भऽ सकैत अछि, ओतय बहुतो स्त्रीक स्वतंत्र, परस्पर–संगत गवाही ओहि संदेहकेँ तोड़बाक शक्ति रखैत अछि — ई सिद्धान्त आधुनिक विधि–प्रणालीमे सेहो मान्यता प्राप्त अछि। कथा एतय पूर्ण न्यायक भ्रम नहि रचैत — यशपति दण्डित नहि होइत, केवल विस्थापित होइत अछि, आ हुनकर आगूक इरादा अनिश्चित छोड़ल जाइत अछि, जे "गोहि सभक बीच जलसमाधि" क ओहि मूल सत्यक अनुरूप अछि जे अन्याय एक राति वा एक विजयसँ समाप्त नहि होइत।

अध्याय [–८६] (छियासी)

समयक गोहि

समय सेहो एकटा गोहि छी—पीढ़ी–पीढ़ी निगलै छै— मुदा जे नाम गाम राखै, तकरा समयो नहि निगलै।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। यशपति गाम छोड़ि दरभंगाक राजदरबार दिस निकसि गेला बाद, बूढ़बार्कें पहिल बेर एहन किछु देखाइ दैत अछि जकरा ओ अपन बुझल संसारक कोनो सीमामे नहि राखि सकैत छथि — जेना समय स्वयं एकटा गोहि होइक, जे कालकेँ खाइत अछि, मुदा नाम नहि।)

यशपति चुप भऽ गेल छलाह, मुदा चुप्पी हार नहि छल — गौरी ई बात बहुत पहिनहि सिखने छलि। जाड़क अन्तमे, समाचार आयल जे यशपति गाम छोड़ि, दरभंगाक राजदरबार दिस निकसि गेल छथि, ई कहैत जे "मिथिलाक धर्म-व्यवस्थामे कतेको सुधार आवश्यक अछि।" गामक लोक एहि समाचारकेँ राहतसँ सुनलक; गौरी एकरा असहजतासँ। "ओ हारल नहि छथि," ओ फुलेसरीसँ कहलक, "ओ केवल दोसर मैदान खोजि रहल छथि।"

ओहि साँझ, गौरी पीपर लग गेलि, बूढ़बासँ बात करय, मुदा जे ओ देखलक, ओकर हेतु ओ तैयार नहि छलि। बूढ़बा, अपन सदिखनक स्थिरतासँ हटि, अस्थिर छलाह — जेना ओ एक संग कतेको जगह होथि, आ केओ ठाम पूर्ण नहि। हुनकर आकृति, जल आ छायाक बीच, टिमटिमाइत छल, जेना कोनो दीप जकर तेल समाप्त होय जा रहल होइक, मुदा ई तेलक कमीक कारण नहि छल — ई कोनो आर बातक कारण छल।

"बूढ़बा! की भेल अहाँकेँ? " गौरी दौड़ल आयलि।

बूढ़बाक आवाज, जे सदिखन स्पष्ट होइत छल, आइ टूटल-टूटल सुनाइ पड़ल, जेना बहुत दूरसँ, बहुत रास आवाजक बीचसँ छानि कऽ आबि रहल होइक। "गौरी... हमरा नहि बुझल... हम की देखि रहल छी... हम कतय छी..."

(पहिल झलक — कोनो दूर तट)

जहाज सभ। पैघ, कारी, धुआँ उगिलैत, जकर नाम गौरी नहि जनैत। बन्दरगाहपर सैकड़ों लोक, गाँठर-गठरी लेने, आँखिमे भय आ आस दुनू। एकटा आढ़तिया, मीठ जीभ, ऊँच स्वरमे बजैत — "विदेशमे धरती सोना उगलैत अछि, बाबू। तीन बरखक करार, फेर घर घुरब, हाथ भरल।" एकटा युवक, अपन पत्नीक हाथ छोड़ैत, कागचपर अंगूठा लगबैत — कागच जकरा

ओ पढ़ि नहि सकैत। पानि, कारी आ अथाह, जहाजक नीचाँ, गोहि जकाँ चुपचाप प्रतीक्षा करैत।

"ई... ई १८८५ अछि की?" बूढ़बा फुसफुसाएलाह, स्वयंकेँ। "मुदा हम... हम एहि समयमे नहि छी। हम केना एकरा देखि रहल छी?"

(दोसर झलक — कोनो सुखल खेत)

एकटा पैघ मैदान, धूप सँ तपल, जतय हजारो लोक जुटल छथि, नारा लगबैत। एकटा युवती, माइक्रोफोन पकड़ने, चिचिआइत — "जमीन ओकर, जे ओकरा जोतैत अछि!" पुलिस, लाठी लेने, आगू बढ़ैत। भगदड़। धूरिमे एकटा पुरान बटवारा-पत्र खसल, ठीक ओहन जेहन सुखदेव महतो अपन हाथमे लेने छलाह, सैकड़ों बरख पहिने। कागच पएरतर कुचलाइत, अक्षर धूरिमे मेटाइत।

"सुखदेवक पत्र!" गौरी चिचिआएलि। "बूढ़बा, ई त सुखदेवक पत्र जकाँ अछि!"

"नहि," बूढ़बा कहलनि, स्वर आओर काँपैत, "ई सुखदेवक पत्र नहि, गौरी। ई... ई कोनो आर सुखदेव थिक। जेना... जेना ओहि कथाकेँ फेर सँ लिखल जा रहल होइक, दोसर नाम, दोसर समय, मुदा एकहि आकार।"

(तेसर झलक — कोनो गाछी, कोनो रातिक खेल)

एकटा गाछी, चन्ना गाछ (जकर नाम गौरी कहियो नहि सुनने), राति, आ ओहि गाछीमे एकटा खेल — कबड्डी, मुदा खिलाड़ी सभ जीवित नहि। एकटा बूढ़, अत्यन्त बूढ़ आकृति, गाछक डारि पर बैसल, निर्णायकक भूमिकामे। ओकर हाथमे एकटा घिसल शंख। ओकर पएर धरतीसँ एक अंगुर ऊपर। ओकरा घेरने अछि — एकटा बिनु हाथक स्त्री, एकटा भीजल केशवाली, चारि मुखबला एकटा आकृति, आधा-मुँह-खुजल एकटा आकृति, आ चानी सन इजोर फेकनिहार नान्हिटा प्राणी सभ। बूढ़ आकृति एकटा नामक हेतु गोल घेरा

बना रहल अछि — "कबड्डी... कबड्डी..." — आ बच्चा सभ, जीवित बच्चा सभ, अन्हारमे साँस रोकने ठाढ़ छथि, देखैत।

बूढ़बा चीत्कार कऽ उठलाह, ओहन आवाज जे गौरी कहियो नहि सुनने छलि। "ई... ई हम छी! गौरी, ओ गाछपर बैसल आकृति — ई हमहीं छी, मुदा... मुदा हम एतय छी, आइ, अहाँक सोझाँ! हम एक संग दुइ ठाम कोना छी? "

गौरी, स्वयं थर–थर काँपैत, बूढ़बाक कातमे बैसि गेलि, यद्यपि ओ जनैत छलि जे ओ हुनका छूबि नहि सकैत। "बूढ़बा, शान्त होउ। हमरा किछु समझाउ। ई सभटा की अछि? "

बूढ़बा बहुत काल चुप रहलाह। जखन ओ फेर बजलाह, हुनकर स्वरमे एकटा नव, अजीब शांति छल — ओहन शांति जे भयक बाद, आ बुझबाक ठीक पहिने, अबैत अछि। "गौरी, हमरा लगैत अछि जे समय ओ नहि थिक जेकरा हम बुझने छलहुँ। हम सोचैत छलहुँ जे समय एकटा नदी थिक, जे एक दिससँ दोसर दिस बहैत अछि, आ हम ओहि नदीक कातमे बैसल, ओकरा बहैत देखैत छी। मुदा आइ हमरा लगैत अछि जे समय एकटा गोहि थिक — ओ नदीक भीतरे रहैत अछि, मुदा ओ नदीक धारकेँ नहि मानैत। ओ कहियो पाछू जाइत अछि, कहियो आगू, कहियो एकहि पल दुइ ठाम रहैत अछि। ओ देह खाइत अछि, कालखण्डकेँ खाइत अछि, वर्षकेँ खाइत अछि — मुदा नाम नहि खा सकैत। नाम ओहि गोहिक मुँहसँ सेहो निकलि, कोनो आर तट पर, कोनो आर समयमे, फेर सँ जीवित भऽ जाइत अछि।"

"मुदा जे बच्चा सभ ओहि गाछीमे देखल गेल," गौरी पुछलक, "ओ के छथि? ओ सभ हमरा सभक जकाँ किएक बुझाइत छल? "

"किएक तँ ओ सभ हमरा सभक अछि, गौरी। ओ सभ आगूक कोनो समयक बच्चा छथि, मुदा हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, मालती, विश्वनाथ — इनकर नाम, इनकर कथा, ओतय पहुँचि गेल अछि, कोनो अनजान रस्तासँ। शायद... शायद कियो एहि सभटा कथाकेँ एक ठाम बटोरत, बहुत आगू, कोनो अनजान भाषामे, कोनो अनजान रूपमे। शायद हमरा सभकेँ आइ ई नहि बुझल जे हमहीं सभ, आइ, ओहि बटोरबाक काजक हेतु जीबि रहल छी।"

गौरी बहुत काल चुप रहलि, ई शब्द सभकेँ बुझय चाहैत, यद्यपि ओ पूर्ण रूपसँ बुझि नहि सकलि। फेर ओ पुछलक, अपन आवाजमे एकटा नव भय लऽ कऽ — "बूढ़बा, अहाँ हमरो देखलहुँ ओहि झलकमे? कोनो आर समयमे, कोनो आर गौरी? "

बूढ़बा एक क्षण चुप रहलाह, आ ओहि चुप्पीमे गौरीकेँ अपन उत्तर भेटि गेल — भय आ करुणा दुनू, ओहि आँखिमे जे आब आँखि नहि रहलि छल, केवल इजोतक एकटा आकृति छल।

"हम कहब चाहैत छी नहि," बूढ़बा अन्ततः कहलनि, "मुदा हम अहाँसँ झूठ नहि बजब, गौरी। हँ, हम अहाँकेँ देखलहुँ। एकटा दोसर समयमे, एकटा दोसर बिपत्तिक बीच, एकटा आँखि जे अहीं जकाँ छल, अहीं जकाँ दृढ़, अहीं जकाँ डेराएल। हमरा नहि बुझल ओ कोन साल छल, ओ की बिपत्ति छल। मुदा हमरा एतबे बुझल — ई कथा, ई प्रतिज्ञा, अहाँक संगे समाप्त नहि होयत। ई फेर घुरत, आओर नाम लऽ कऽ, आओर चेहरा लऽ कऽ, जाबे धरि... जाबे धरि कोनो एहन समय नहि आबय जखन गोहिकेँ खएबाक हेतु कोनो नाम बाकी नहि रहत, किएक तँ हर नाम पहिनहि सँ सुरक्षित होयत।"

राति गहींर होइत गेल। बूढ़बाक अस्थिरता धीरे–धीरे शांत भेल, यद्यपि ओ फेर पहिने जकाँ पूर्ण स्थिर नहि भेलाह — जेना ओहि राति ओकरामे किछु सदिखनक हेतु बदलि गेल होइक, एकटा नव जागरूकता जकरा ओ आब बिसरि नहि सकैत छलाह। गौरी, अन्ततः, अपन घर दिस घुरलि, मुदा ओकर मोनमे एकटा प्रश्न अटकल रहि गेल, जकर उत्तर ओ आगू बहुत बरख धरि, अपन जीवनक हर बिपत्तिमे, टोहैत रहलि — जँ समय सचमुच एकटा गोहि थिक, तँ की आइ जे बिपत्ति यशपतिक रूपमे घुरि रहल अछि, से सचमुच एकटा नव बिपत्ति थिक, कि केवल कोनो पुरान बिपत्ति, नव मुँह लऽ कऽ, फेर सँ ऊपर उठि रहल अछि?

ओहि दिन, बीतल पीढ़ी सभकेँ मोन पाड़ैत, बूढ़बा एकटा फकरा गबैत छलाह —

समय सेहो एकटा गोहि छी हे, पीढ़ी–पीढ़ी निगलै,
मुदा जे नाम गाम राखै रे, तकरा समयो नहि निगलै।
राजा गेल, महल खसल, पीढ़ी माटिमे मिलल;
मुदा जे नाम गाम मन राखल, से आइयो जीबैत।
समय सभटा खाय हे, मुदा नाम नहि खाय रे —
जे स्मृतिमे बसल, से समयक गोहिसँ बाँचल।

अध्याय [−८६] पर टिप्पणी

समयक अरैखिकता आ लोकस्मृतिक स्वभाव

अध्याय [−८६] जान−बूझि कऽ कालक्रमक सरल, एक−दिशीय प्रवाहकेँ तोड़ैत अछि, ओहि तरहेँ जेना खण्ड−१ मे चन्ना गाछीक कबड्डीमे "भूत १८८५, १९३४, १९७७ आ आजुक समय एकहि पारीमे लाँघि सकैत अछि।" ई तकनीक — जकरा साहित्यिक आलोचनामे कहियो−कहियो "जादुई यथार्थवाद" वा उत्तर−आधुनिक कालक्रम−भंग कहल जाइत अछि — एतय केवल शैलीगत प्रयोग नहि, अपितु कथाक केंद्रीय दावाक (जे अन्याय आ अन्यायक विरुद्ध साक्षी−भाव दुनू पीढ़ी−दर−पीढ़ी दोहराइत रहैत अछि) संरचनात्मक अभिव्यक्ति थिक। बूढ़बाक भ्रम — जे ओ एकहि समयमे कतेको ठाम अछि — पाठकक हेतु एकटा संकेत थिक जे "गोहि सभक बीच जलसमाधि" क सम्पूर्ण दस खण्डक परियोजना स्वयं एहि अरैखिक तर्कपर आधारित अछि, जतय खण्ड−० (भूत) आ खण्ड−१−२ (वर्तमान) एक संग, एकहि पाठकीय क्षणमे, पढ़ल जाइत अछि।

अध्याय [-८५] (पचासी)

आमिलक आदेश

साहेबक आदेश कागचपर, गामक न्याय पातपर— हुकुम मेटा सकै, फकरा नहि मेटाइ।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास-अंश। यशपति दरभंगाक राजदरबारसँ खाली हाथ नहि घुरलाह — हुनकर संग एतबे आयल अछि जे एहि बेर, चर्मकार टोला आ गौरीसँ बेसी, पीपरक साक्षी-गाछ स्वयं निशानापर अछि।)

आमिल जयसिंह गढ़ नारिकेलमे एकटा भोरे प्रवेश केलाह, हाथीपर सवार, दस सिपाही आ यशपतिक संग। हुनकर घोषणा-पत्र, गामक चौपाल पर टँगल, स्पष्ट अक्षरमे लिखल छल — "मिथिला-राज्यक धर्म-व्यवस्थापन विभाग द्वारा सूचित कएल जाइत अछि जे गढ़ नारिकेल ग्राममे स्थित एकटा पीपर-वृक्ष, जकरा स्थानीय जन 'साक्षी-गाछ' कहैत अछि, तंत्र-कुप्रथा आ अंधविश्वासक केंद्र बनल अछि। एहि वृक्षक जाँच, आ आवश्यकतानुसार उन्मूलन, आमिल जयसिंहक निरीक्षणमे सम्पन्न होयत। जँ वृक्षमे कोनो अलौकिक शक्ति नहि पाओल गेल, जेना

विद्वान् वर्गक विश्वास अछि, तँ वृक्ष काटि, ओहि भूमिपर राजकीय अन्न–भंडार स्थापित कएल जाएत।"

यशपति, आमिलक कातमे ठाढ़, गामक जुटल भीड़ दिस देखलनि, आ हुनकर चेहरापर एकटा सन्तोष छल जे बहुत दिनसँ नहि देखल गेल छल। "गौरी!" ओ चिचिआएलाह। "अहाँ आ अहाँक टोला एक बेर बाँचि गेल छलहुँ, स्त्री–सभक भावुकताक कारण। मुदा आइ हम विज्ञान आ राज्यक शक्ति लऽ कऽ आयल छी। जँ अहाँ सभक "बूढ़बा" सचमुच अछि, तँ ओ आइ प्रमाणित होयत। आ जँ ओ नहि अछि — जेना हमरा पूर्ण विश्वास अछि — तँ अहाँक सम्पूर्ण टोलाक विश्वास, आ ओकर संग अहाँक अन्तिम आश्रय, दुनू एहि पीपरक संग कटि जायत।"

गौरी, अपन आठ बरखक बेटी सावित्रीक हाथ पकड़ने, भीड़मे आगू आयलि। सावित्री, ठीक अपन माएक जकाँ, बचपनहि सँ किछु असामान्य संवेदनशीलता देखाबय लागल छलि — ओ राति–राति उठि, कहैत, "पीपर लग केओ रोअइत अछि," आ गौरी जनैत छलि जे ई बूढ़बाक अशांतिक संकेत छल, विशेषकर ओहि राति केर बाद जखन बूढ़बा अपन अजीब झलक सभ देखने छलाह।

"आमिल साहेब," गौरी बजलि, अपन आवाजकेँ स्थिर राखबाक प्रयास करैत, "ई वृक्ष सैकड़ों बरखसँ ठाढ़ अछि, आ एहिसँ कहियो केकरो हानि नहि भेल। ई वृक्ष गामक स्मृतिक अछि, गामक शोकक अछि, गामक न्यायक अछि।"

"स्मृति काटल नहि जाइत, गौरी," जयसिंह, पहिल बेर स्वयं बजलाह, स्वर तटस्थ, लगभग दयालु — जे यशपतिक जोशसँ भिन्न छल। "हम केवल वृक्ष काटब, जँ आवश्यक होइक। मुदा हम प्रथम अहाँ सभकेँ अवसर देब जे अहाँ सभ जे कहैत छी, ओ देखाउ। जँ सचमुच कोनो शक्ति अछि, तँ हमर कुल्हाड़ी ओकरा हानि नहि

पहुँचा सकत, आ हम स्वयं अपन राजाकेँ ई रिपोर्ट लऽ कऽ जायब। मुदा जँ किछु नहि अछि, तँ अहाँ सभ एकटा झूठसँ मुक्त होयब।"

भीड़ स्तब्ध छल। फुलेसरी गौरीक कान लग फुसफुसाएलि, "गौरी, ई त हमरा सभक हेतु जाल थिक — हारलहुँ तँ गाछ कटत, जीतलहुँ तँ सेहो प्रमाणक भार हमरहि ऊपर।" गौरी माथ हिला देलक, जनैत जे फुलेसरी सही छलि, मुदा आब पाछू हटबाक कोनो रस्ता नहि छल।

दुपहरिया, गामक सम्पूर्ण भीड़, सैनिक, यशपति, आ जयसिंह पीपरक जड़ि लग जुटल। सिपाही सभ कुल्हाड़ी उठौलनि। गौरी जड़िक लग बैसि, माथ नमा, फुसफुसाएलि — "बूढ़बा, हमरा माफ करू। हम अहाँकेँ एहि परीक्षामे घसीटि रहल छी, मुदा हमरा लग आर कोनो रस्ता नहि अछि।"

कोनो उत्तर नहि आयल। सन्नाटा एतेक गहींर छल जे गामक कुकुर सभ सेहो चुप छल। जयसिंह हाथ उठौलनि, संकेत दैत।

पहिल कुल्हाड़ी जड़िपर पड़ल।

आ ओहि क्षण, गामक हर मनुष्य — गौरी, फुलेसरी, यशपति, जयसिंह, सभटा — एक संग कनेक क्षणक हेतु ठमकि गेल, किएक तँ हवामे एकटा आवाज उठल, ने स्त्रीक, ने पुरुषक, ने मनुष्यक, ने पशुक — एकटा आवाज जे एक संग हजारो कण्ठसँ आबैत बुझायल, यद्यपि ओतय एको आर मुँह नहि छल। "रुकू।"

सिपाही, भयसँ पाछू हटि गेल, कुल्हाड़ी हाथसँ खसा दैत। जयसिंह, जे स्वयंकेँ तर्कशील मनुष्य मानैत छलाह, अपन जगहपर जड़ भऽ गेलाह, आँखि पूर्ण खुलल।

पीपरक जड़िसँ, धीरे–धीरे, एकटा आकृति उभरल — ओहन आकृति जकरा गामक लोक बरख–दर–बरख अस्पष्ट छाया रूपमे देखने छल, मुदा आइ, दिनक उजासमे, पहिल बेर, ओ आकृति स्पष्ट छल, यद्यपि ओकर किनार धुआँ आ इजोतक बीच काँपैत रहल। बूढ़बा।

"अहाँ के छी? " जयसिंह, अपन डर पर काबू पबैत, पुछलनि।

"हम एकटा साक्षी छी, " बूढ़बा बजलाह, आवाज गामक हर कान धरि पहुँचैत, यद्यपि ओ ऊँच नहि छल। "हम कोनो देवता नहि छी, आमिल साहेब, आ हम कोनो दानव नहि छी। हम केवल ओ छी जे नाम सभकेँ भुलाइत नहि दैत — हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, मालती, सुभागी, आ आर कतेको, जिनकर नाम अहाँक राजदरबारक अभिलेखमे कहियो नहि आयल। जँ अहाँ एहि वृक्षकेँ काटब, तँ अहाँ हमरा नष्ट नहि करब — हम एहि वृक्षसँ बेसी पुरान छी। मुदा अहाँ ई सिद्ध करब जे राज्य ओहि हर चीजकेँ काटि सकैत अछि जकरा ओ बुझि नहि पबैत, आ ई प्रमाण, आमिल साहेब, अहाँक राजाक हेतु ओतबे खतरनाक थिक जतबे कोनो तंत्र–कुप्रथा।"

जयसिंह बहुत काल चुप ठाढ़ रहलाह। फेर, धीरे, ओ अपन सैनिक दिस घुरलाह। "कुल्हाड़ी नीचाँ राखू।"

"आमिल साहेब!" यशपति चिचिआएलाह, अपन विजयकेँ खसैत देखि। "ई केवल एकटा चाल थिक! कोनो तांत्रिक भ्रम, कोनो..."

"यशपति," जयसिंह बजलाह, स्वरमे पहिल बेर एकटा कठोरता जे यशपति दिस मुड़ल छल, "हम बहुत रास भ्रम देखने छी अपन सेवाकालमे, आ हम भ्रम आ सत्यक बीच भेद करब जनैत छी। जे हम आइ देखलहुँ, ओ भ्रम नहि छल। आ

हमरा आब ई सेहो बुझायल जे अहाँ हमरा एतय किएक आनने रही — ई वृक्षक हेतु नहि, चर्मकार टोलाक भूमिक हेतु। हमरा अहाँक असली अभिप्राय बुझायल, यशपति, आ ई हमरा प्रसन्न नहि करैत।"

यशपति, अपन योजनाक दुनू पक्ष — धार्मिक अंधविश्वास आ प्रशासनिक तर्क — ध्वस्त होइत देखि, एक क्षण स्तब्ध रहलाह। फेर, अचानक, ओ भीड़क बीचसँ भागय लागलाह, पीपर लग सँ, गामसँ, दूर।

"रोकू ओकरा!" जयसिंह आदेश देलनि, मुदा सिपाही सभ, अखनहु भयभीत, धीमा रहलाह, आ यशपति गामक सीमा पार कऽ, अन्हार जंगल दिस, अदृश्य भऽ गेलाह।

जयसिंह, कतेक काल बाद, गौरी दिस घुरलाह, हुनकर चेहरा आब बदलल छल — घमण्ड कतहु गायब, ओकर स्थानपर एकटा नव, असहज सम्मान। "गौरी, हम अहाँक भूमि, अहाँक वृक्ष, आ अहाँक अधिकार — तीनूकेँ राजकीय संरक्षणमे राखबाक अनुशंसा करब। मुदा हमरा अहाँसँ एकटा प्रश्न पुछय दिअ, जकर उत्तर हमरा जीवन भरि खोजबाक होयत — जे शक्ति एहि वृक्षमे अछि, से कोन शक्ति थिक? "

गौरी मुस्कुराएलि, यद्यपि ओकर आँखिमे अखनहु आँसू छल। "आमिल साहेब, ई शक्ति कोनो तंत्र नहि, कोनो देवता नहि। ई शक्ति एतबे थिक — जे कोनो मनुष्य, प्रेमसँ, केकरो नाम कहियो नहि बिसरैक निर्णय लेत, तँ ओ निर्णय कालसँ बेसी शक्तिशाली भऽ सकैत अछि।"

जयसिंह अपन सिपाही लऽ कऽ ओहि साँझ गाम छोड़ि देलनि, राजदरबार दिस, अपन रिपोर्टक संग — रिपोर्ट जकर विषयमे गामक लोक बहुत बरख धरि

अटकल लगबैत रहल, किएक तँ ओ रिपोर्ट कोनो अभिलेखागारमे कहियो नहि भेटल, जेना ओ स्वयं कोनो साक्षीक नामक जकाँ, इतिहाससँ मेटा गेल होइक।

मुदा यशपति नहि भेटलाह। ने ओहि दिन, ने अगिला सप्ताह, ने अगिला मास। गामक लोक धीरे–धीरे मानि लेलक जे ओ जंगलमे कोनो पशुक शिकार भऽ गेल होयत, वा कोनो दूर देशमे भागि गेल होयत। मुदा बूढ़बा, ओहि राति गौरीसँ अकेलेमे बजलाह, हुनकर स्वरमे एकटा एहन चिन्ता जे गौरी पहिने कहियो नहि सुनने छलि — "गौरी, हमरा यशपतिक अन्त नहि देखाइ पड़ल। हमर दृष्टि, जे आब समयक पार धरि जाइत अछि, ओतय रुकि जाइत अछि जतय ओ जंगलमे प्रवेश केलनि। ई असामान्य अछि। ई... ई हमरा डेरा रहल अछि।"

ओहि दिन, आमिलक आदेश सुनि, गामक लोक एकटा फकरा गबैत छल —

साहेबक आदेश कागचपर हे, गामक न्याय पातपर,
हुकुम मेटा सकै रे, फकरा नहि मेटाइ।
आदेश आइ आयल, कालि बदलल, परसू मेटल;
मुदा जे फकरा गाम मन राखल, से पीढ़ी–पीढ़ी बाँचल।
कागच फाटि जाय हे, फकरा कण्ठमे रहै रे —
जे गामक जीभपर बसल न्याय, से कोनो हुकुमसँ नहि मेटल।

अध्याय [−८५] पर टिप्पणी

अंधविश्वास–विरोधी सुधार आ स्थानीय परम्पराक बीच द्वन्द्व

मध्यकालीन आ आधुनिक दुनू युगमे, "अंधविश्वास–उन्मूलन" क नामपर हाशियाकृत समुदायक स्थानीय, स्वायत्त परम्परा (चाहे धार्मिक होइक वा चिकित्सकीय) कतेको बेर बाहरी सत्ताद्वारा नष्ट कएल गेल अछि, प्रायः ओहि परम्पराक अन्तर्निहित सामाजिक कार्य — सामुदायिक स्मृति, न्याय, वा स्वास्थ्य–सेवा — कएक्को बेर अनदेखल कएल गेल। अध्याय [−८५] जान–बूझि कऽ एहि द्वन्द्वकेँ सरल उत्तर नहि दैत — आमिल जयसिंह न तँ पूर्ण खलनायक थिक, न पूर्ण उद्धारक; ओ एकटा प्रामाणिक जिज्ञासु सत्ताधारी थिक, जकर जिज्ञासा, गौरीक साहसक कारण, विनाशसँ स्वीकृति दिस मुड़ि जाइत अछि।

अध्याय [–८४] (चौरासी)

जंगलक मौन

जंगल चुप रहै छै, तैयो सभ किछु सुनै छै— जे मौन बुझल, तकरा जंगलो बाजि उठै।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। यशपतिक खोजमे गामक पुरुष सभ जंगल दिस निकसल छथि — मुदा जे किछु ओ सभ ओतय पबैत छथि, से उत्तरसँ बेसी प्रश्न छोड़ि जाइत अछि।)

यशपति भागलाक तेसर दिन, गामक मुखिया आ किछु युवक, आमिल जयसिंहक छोड़ल दुइ सिपाहीक संग, जंगल दिस खोज हेतु निकसलाह। कमला–बलानक धार, गामक सीमासँ आगू, एकटा घन, अनछुल जंगलमे प्रवेश करैत छल, जतय गामक लोक सामान्यतः नहि जाइत छल — ने लकड़ी काटय, ने शिकार करय, किएक तँ ओतयक कथा सभ अच्छा नहि छल। बुढ़–पुरान लोक कहैत छल जे ओहि जंगलक भीतर, जतय कमला–बलान एकटा दोसर, अनाम नदीसँ मिलैत छल, पानि एतेक गहींर आ शांत छल जे ओकर तर देखब असम्भव

छल, आ ओतय गोहि सभ, गामक पोखरिक गोहिसँ बेसी पैघ आ बेसी पुरान, बसैत छल।

गौरी एहि खोज–दलमे नहि गेलि — ओकरा घरपर सावित्रीक देखभाल करय पड़ल — मुदा ओ भोरे बूढ़बा लग गेलि, हुनकर आशीर्वाद लेबय। "बूढ़बा, अहाँ अखनहु किछु नहि देखि रहल छी? "

"नहि," बूढ़बा कहलनि, हुनकर स्वरमे एकटा असहजता जे गौरी पहिने कहियो नहि सुनने छलि। "गौरी, हम अहाँकेँ एकटा बात कहय चाहैत छी जकरा हम स्वयं पूर्ण रूपसँ नहि बुझैत छी। हमर दृष्टि, जे आब कालक पार धरि जाइत अछि — जेना अहाँ देखने छलहुँ, हम भविष्यक झलक धरि देखि सकैत छी — ओ दृष्टि ओहि जंगलक एकटा विशेष भागमे पहुँचिते बुझा जाइत अछि, जेना कोनो घन कुहेस होइक जकरा हमर आँखि, चाहे ओ कतेक पुरान होइक, चीरि नहि सकैत। ई हमरा पहिल बेर एहसास करा रहल अछि जे संसारमे एहनो चीज अछि जकरा हम, अपन सम्पूर्ण साक्षी–शक्तिक बादो, देखि नहि सकैत छी।"

खोज–दल साँझ धरि जंगलमे रहल। ओ सभ यशपतिक वस्त्रक एकटा फाटल टुकड़ा, कँटीली झाड़ीमे अटकल, भेटलनि — निश्चित रूपसँ हुनकहि, किएक तँ ओ ओहन कीमती रेशम छल जे केवल गामक पुरोहित सभ पहिरैत छल। आगू बढ़ला पर, पएरक निशान — पहिने स्पष्ट, दौड़ैत, फेर धीरे–धीरे अस्पष्ट होइत, जेना दौड़निहार थाकल होइक, वा जेना कोनो आर चीज ओकरा दिशा बदलय पर मजबूर केलक होइक। अन्तमे, ओ अनाम नदीक किनारे पहुँचलाह, जतय निशान पूर्ण रूपसँ समाप्त भऽ गेल छल — ने पानिमे उतरबाक चिन्ह, ने कोनो संघर्षक चिन्ह, ने कोनो शव। केवल एकटा जूता, किनारेक कीचड़मे आधा धँसल, आ

ओकर कातमे, कीचड़पर, एकटा पैघ, अजीब निशान — जेना कोनो पैघ, भारी प्राणी हाल फिलहाल ओतयसँ पानिमे उतरल होइक।

"गोहि," एकटा युवकक स्वर काँपल।

"कोनो साधारण गोहि नहि," मुखिया धीरे कहलनि, निशानकेँ ध्यानसँ देखैत। "ई निशान... हम अपन जीवनमे एतेक पैघ गोहिक निशान कहियो नहि देखने छी।"

सिपाही सभ, आब भयभीत, खोज बन्न करय चाहलनि। मुखिया सेहो सहमत भेलाह। जे किछु ओहि जंगलमे छल, से मनुष्यक जिज्ञासाक हद पार कऽ चुकल छल, आ गामक कोनो मनुष्य ओकरा चुनौती देबय तैयार नहि छल। खोज–दल, यशपतिक ओ फाटल वस्त्र आ आधा–धँसल जूता उठा कऽ, गाम घुरि आयल, ई रिपोर्ट लऽ कऽ जे यशपति सम्भवतः जंगली पशु वा गोहिक शिकार भऽ गेल छथि।

गामक लोक एहि खबरिकेँ मिश्रित भावसँ सुनलक। किछु राहतसँ, किछु भयसँ, किछु — आ ई गौरीकेँ स्वयंकेँ चौंकौलक — किछु दुःखसँ, किएक तँ चाहे यशपति जे किछु केने रहथिन, ओ एक कालमे गामक धार्मिक जीवनक केंद्र छलाह, आ हुनकर वस्त्रक फाटल टुकड़ा देखि, गामक कतेको बुढ़–पुरान स्त्री रोअय लगलीह — ओहि मनुष्यक हेतु नहि जे ओ बनि गेल छलाह, अपितु ओहि मनुष्यक हेतु जे ओ शायद कहियो, बहुत पहिने, रहल होथि।

ओहि साँझ, गौरी पीपर लग गेलि, बूढ़बासँ ई सभटा बतलाबय। "बूढ़बा, हमरा नहि बुझल जे हम की अनुभव करी। ओ हमरा सभकेँ नष्ट करय चाहलनि, मुदा आब जखन ओ चलि गेलाह, हमरा किछु... खाली–खाली लगैत अछि।"

बूढ़बा बहुत काल चुप रहलाह, आ जखन ओ बजलाह, हुनकर स्वरमे एकटा गहींर उदासी छल। "गौरी, हम अहाँकेँ एकटा बात कहब जे हम पहिने कहियो नहि

कहलहुँ। हमर काज नाम बचाएब थिक — हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, सुभागी, आ आर सैकड़ों। मुदा यशपतिक नाम, हमरा लगैत अछि, हम बचा नहि सकब, किएक तँ नाम बचाएब हेतु प्रेम चाही, आ हमरा यशपतिक हेतु प्रेम नहि, केवल दुःख अछि। आ दुःख, गौरी, नामकेँ बचबय नहि सकैत — ओ केवल स्मरण करा सकैत अछि जे कोनो नाम छल, जकरा बचाओल जा सकैत छल, मुदा नहि बचाओल गेल।"

"तँ यशपतिक की होयत? "

"कालक्रममे," बूढ़बा धीरे कहलनि, "गामक लोक हुनकर नाम बिसरि जायत, ठीक ओहिना जेना ओ स्वयं कतेको नामकेँ बिसराबय चाहलनि। ई कोनो श्राप नहि, गौरी। ई केवल ओ नियम थिक जकरा हम बरख–दर–बरख देखने छी — जे मनुष्य बाँटैत अछि, से पबैत अछि; जे मनुष्य नाम छिनैत अछि, ओकर अपन नाम सेहो, अन्ततः, कोनो हाथमे सुरक्षित नहि रहैत।"

गौरी घर घुरलि, मुदा ओ राति ओकरा निन्न नहि आयल। ओ अपन बेटी सावित्रीकेँ सुतल देखैत रहलि, आ सोचैत रहलि — कोन नाम बचायल जाय, आ कोन नाम बिसरा जाय, ई निर्णय के लैत अछि? आ जँ ई निर्णय प्रेमपर निर्भर करैत अछि, तँ की प्रेम स्वयं, अन्ततः, न्यायसँ बेसी शक्तिशाली नहि भऽ गेल?

एहि प्रश्नक उत्तर ओकरा ओहि राति नहि भेटल। मुदा दूर, अनाम नदीक ओहि पार, जंगलक घन अन्हारमे, कोनो चीज — जकरा गौरी वा बूढ़बा, दुनूमेसँ केओ, कहियो नहि देखि सकल — धीरे–धीरे आँखि खोललक, आ प्रतीक्षा करय लागल।

ओहि दिन, जंगलक मौन सुनैत, बूढ़बा एकटा फकरा गबैत छलाह —

जंगल चुप रहै छै हे, तैयो सभ किछु सुनै,

जे मौन बुझल रे, तकरा जंगलो बाजि उठै।

पात हिलल, चिड़ै चुप, मुदा जंगल सभ देखल;

जे कान लगा सुनल, से मौनोमे कथा बुझल।

जंगल गवाह हे, चुप रहितो सभ जनै रे —

जे मौनकेँ पढ़ल, से जंगलक सम्पूर्ण साक्षी पाओल।

अध्याय [–८४] पर टिप्पणी

अनुत्तरित रहस्यक कथात्मक भूमिका

अध्याय [–८४] जान–बूझि कऽ यशपतिक भाग्यकेँ पूर्ण रूपसँ स्पष्ट नहि करैत — ने ओ मरल देखाओल जाइत अछि, ने ओ बाँचल। ई अनिश्चितता आकस्मिक नहि थिक। "गोहि सभक बीच जलसमाधि" क सम्पूर्ण परियोजनामे, बूढ़बाक साक्षी–शक्ति, चाहे कतेक विस्तृत होइक, कहियो पूर्ण नहि होइत — सदिखन एहन कोण रहि जाइत अछि जकरा ओ नहि देखि सकैत छथि। ई सीमा कथाकेँ यथार्थवादी बनबैत अछि: कोनो साक्षी, चाहे कतेक शक्तिशाली होइक, सर्वज्ञ नहि भऽ सकैत। अध्यायक अन्तिम पंक्ति — कोनो अनदेखल चीजक जागब — एकटा जान–बूझि कऽ छोड़ल गेल धागा थिक, जकरा आगूक अध्यायमे उठाओल जा सकैत अछि, वा शायद कहियो नहि, ठीक ओहिना जेना यथार्थ जीवनमे सभटा रहस्यक उत्तर कहियो नहि भेटैत।

अध्याय [–८३] (तिरासी)

सोनमा माझिन

जाल जकर हाथ, नदी तकर माए— माझिन माछ पकड़ै, मुदा नामकेँ छोड़ि दै।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। यशपतिक अन्तर्धानक एक मास बाद, गामक पशु–धन रहस्यमय ढंगसँ गायब होमय लागल अछि — आ बूढ़बा, अपन सीमाकेँ बुझबाक हेतु, गामसँ बाहर, ओहि एकमात्र मनुष्य लग जाइत छथि जे शायद हुनकरो सँ बेसी पुरान स्मृति राखने छथि।)

यशपतिक अन्तर्धानक एक मास बाद, गढ़ नारिकेलमे नव भय पसरय लागल। पहिने एकटा बकरी गायब भेल, फेर एकटा भैंसक बच्चा, फेर सोझे कजरीक वंशक एकटा युवा भैंस — जोड़ी पोखरिक उथिल किनारेसँ, राति भरिमे, बिनु कोनो आवाज, बिनु कोनो खूनक चिन्ह। गामक लोक पहिने बाघ वा चीताक शंका केलक, मुदा जंगलक कातसँ भोरे पएरक निशान जँचला पर, कोनो परिचित पशुक पएर नहि भेटल — केवल पानिक कातसँ, पानि दिस जाइत, पैघ, भारी घसीटनक निशान, ठीक ओहन जेहन खोज–दलकेँ अनाम नदीक किनारे भेटल छल।

गौरी, सावित्रीकेँ लऽ कऽ, पीपर लग गेलि। "बूढ़बा, ई की भऽ रहल अछि?"

बूढ़बा बहुत काल चुप रहलाह, ओकर आकृति पोखरिक पानिपर काँपैत। "गौरी, हमरा डर अछि जे जे किछु यशपतिकेँ ओहि जंगलमे लऽ गेल, ओ आब जागि उठल अछि, आ ओकर भूख हमर सामान्य साक्षी–शक्तिसँ बेसी पुरान अछि। हमरा एकटा बात मोन पड़ैत अछि — बहुत बरख पहिने, जखन हम अखनहु मनुष्य छलहुँ, गामक बुढ़–पुरान माझी लोकनि एकटा नामक चर्चा करैत छलाह, अत्यन्त धीमा स्वरमे, जेना ओ नाम स्वयं ओकरा सुनि लेत — 'मूल गोहि'। हमरा नहि बुझल ओ की छल। मुदा हमरा एकटा मनुष्यक बारेमे बुझल अछि जे शायद जानैत होथि — सोनमा माझिन, जे अखनहु धरि जीवित छथि, कहल जाइत अछि, आ जे कमला–बलानक ओहि भागमे रहैत छथि जतय धार सबसँ गहींर अछि।"

"अखनहु धरि जीवित?" गौरी चकित भेलि। "मुदा बूढ़बा, अहीं त सैकड़ों बरख पुरान छी..."

"हँ," बूढ़बा धीरे कहलनि, "मुदा हम मनुष्यक जीवनसँ बाहर निकलि साक्षी बनलहुँ। सोनमा माझिनक विषयमे कहल जाइत अछि जे ओ कहियो साक्षी नहि बनलीह, ओ केवल एतेक धैर्यसँ जीबैत रहलीह, एतेक कम माँगैत, जे मृत्यु स्वयं ओकरा बिसरि गेल। दुइ भिन्न रस्ता, एकहि गंतव्य — समयक बाहर टिकि रहब।"

गौरी, सावित्रीकेँ फुलेसरी लग छोड़ि, अकेले कमला–बलानक ओहि दूरस्थ भाग दिस निकसलि जकर नाम गामक लोक कम्पसँ लैत छल। ओतय पहुँचला पर, ओ एकटा छोट, टूटल–फूटल झोपड़ी भेटलि, नदीक अत्यन्त किनारे, जतय पानि, गामक पोखरिसँ बिल्कुल भिन्न, कारी आ अथाह देखाइ पड़ैत छल। झोपड़ीक द्वार

पर एकटा अत्यन्त वृद्ध स्त्री बैसल छलि, आँखि सफेद, अन्हार, मुदा चेहरा एहन शांत जेना ओ सम्पूर्ण संसारकेँ बिनु देखने सेहो देखि रहलि होइक।

"अहाँ बूढ़बाक भेजल छी," सोनमा माझिन बजलीह, गौरीक पएरक आहटसँ पहिनहि, "हम अहाँक साँसमे ओकर पीपरक गन्ध सुनैत छी।"

(सोनमा माझिनक कथा)

बहुत पहिने, ओहि समयसँ पहिने जकरा कोनो पोथी मोन राखने अछि, ई नदी दोसर नाम राखने छल, आ ओहि नामकेँ कहबाक अधिकार केवल पानिक लोककेँ छल — हमर पुरखाकेँ, जे न ब्राह्मण छलाह, न चर्मकार, न कोनो ओहन जाति जकरा शास्त्र नाम दैत अछि। हमर पुरखा मानैत छलाह जे पानि स्वयं एकटा प्राणी थिक, आ ओहि प्राणीक सबसँ पुरान, सबसँ भूखल संतान 'मूल गोहि' कहाइत छल — ने पशु, ने आत्मा, अपितु ओ स्वयं भुलाइक भूख, ओ शक्ति जे हर नामकेँ, हर स्मृतिकेँ, अन्ततः पानिमे घुला दैत अछि। हमर पुरखा ओकरा शत्रु नहि मानैत छलाह — ओ जनैत छलाह जे भुलाइ बिनु स्मृतिक कोनो मोल नहि, ठीक ओहिना जेना अन्हार बिनु दीपक कोनो मोल नहि। तेँ हुनका सभ हर पूर्णिमापर मूल गोहिकेँ भेंट चढ़बैत छलाह — फूल, फल, दूध — ई कहैत, 'हम अहाँकेँ नकारैत नहि छी, मुदा हम अहाँसँ धैर्य माँगैत छी।' आ जाबे धरि ई भेंट चलैत रहल, मूल गोहि सुतल रहल, गहींरमे, बिनु ककरो हानि पहुँचाओने।

सोनमा माझिन एक क्षण रुकलीह, अपन अन्हार आँखि गौरी दिस मोड़ैत। "मुदा जखन नव जाति सभ आयल — नैयायिक, मीमांसक, ब्राह्मण — ओ सभ हमर पुरखाक भेंट–प्रथाकेँ 'तंत्र–कुप्रथा' कहलक, बिल्कुल ओहिना जेना यशपति अहाँक जड़ी–बूटीकेँ कहलनि। भेंट बन्न भऽ गेल। कतेको पीढ़ी धरि, मूल गोहि सुतल रहल, किएक तँ भूख धीरे–धीरे बढ़ैत अछि, तुरंत नहि जगैत। मुदा आब,

गौरी, हमरा लगैत अछि जे ओकर धैर्य समाप्त होबय जा रहल अछि। यशपति, अपन घृणा आ अहंकार लऽ कऽ, ओहि पानिमे उतरलाह, आ हो सकैत अछि जे ओ स्वयं, अनजाने, ओहि पुरान भूखकेँ जगा देलनि, जेना कोनो थाकल शिकारी अचानक तेज गन्ध पाबि जागि उठैत अछि।"

"तखन हम की करी? " गौरी पुछलक, स्वरमे भय आ दृढ़ता दुनू।

"बूढ़बाकेँ कहू," सोनमा माझिन बजलीह, "जे साक्षी बनब आ भुलाइकेँ नकारब दुइ भिन्न काज थिक। ओ नाम बचबैत छथि — नीक काज। मुदा जँ ओ मूल गोहिकेँ पूर्ण रूपसँ रोकय चाहताह, जेना ओ शायद आब सोचि रहल छथि, तँ ओ ओहि सत्यकेँ नकारताह जे हमर पुरखा सदिखन जनैत छलाह — जे सभटा, अन्ततः, भुलाइमे घुरैत अछि, आ ई भुलाइ शत्रु नहि, प्रकृतिक एकटा भाग थिक। असली काज ई नहि जे भुलाइकेँ रोकल जाए, अपितु ई जे भुलाइक पहिने, हर नामकेँ ओकर उचित सम्मान भेटय। ई सन्तुलन, गौरी, केवल सन्तुलनसँ राखल जा सकैत अछि, युद्धसँ नहि।"

गौरी ई सन्देश लऽ कऽ घुरलि, आ पीपर लग बूढ़बाकेँ सुनौलक। बूढ़बा बहुत काल चुप रहलाह, फेर धीरे बजलाह, "सोनमा माझिन सही छथि, आ हमरा ई सुनि कऽ किछु लज्जा सेहो होइत अछि। हम, बिनु बुझने, यशपतिक हेतु दुःखक बदला घृणा पोसय लागल छलहुँ, आ घृणा — गौरी, ई हमहूँ आब बुझि रहल छी — घृणा सेहो एकटा भूख थिक, मूल गोहिक भूखसँ भिन्न नहि। हमरा फेर सँ सन्तुलन खोजय पड़त। मुदा एकटा बात निश्चित अछि — जे किछु ओहि जंगलमे जागि रहल अछि, ओ हमर एकटा राति वा एकटा वादसँ शांत नहि होयत। ई एकटा नव युगक आरम्भ थिक, गौरी, आ हमरा डर अछि जे अहाँक जीवनकाल एकर अन्त नहि देखत।"

ओहि दिन, नदीक घाटपर, जाल फेकैत सोनमा माझिन एकटा गीत गबैत छलीह —

जाल जकर हाथ हे, नदी तकर माए,
माझिन माछ पकड़ै रे, मुदा नामकेँ छोड़ि दै।
पानि दै जीवन, नदी दै रोटी, तैयो नदी माए;
जे नदीसँ लेल, तकरा नदीकेँ फेर देलक।
जाल भरल हे, मुदा नाम नहि बान्हल रे —
जे माछ पकड़लक, से नामकेँ मुक्त छोड़लक।

अध्याय [–८३] पर टिप्पणी

आदिवासी/मत्स्यजीवी स्मृति–परम्परा आ ब्राह्मणवादी अतिक्रमण

अध्याय [–८३] जान–बूझि कऽ एकटा तेसर स्मृति–परम्परा — सोनमा माझिनक मत्स्यजीवी/जल–आधारित लोक–परम्परा — कैँ कथामे आनैत अछि, जे न ब्राह्मणवादी शास्त्रीय परम्परा (वाचस्पति–उदयन–गंगेश) क भाग थिक, न चर्मकार टोलाक जड़ी–बूटी परम्परा। एहि तेसर परम्पराक समावेशन एहि हेतु महत्त्वपूर्ण अछि जे "गोहि सभक बीच जलसमाधि" क केन्द्रीय बिम्ब — गोहि स्वयं — कोनो एकहि सम्प्रदायक सम्पत्ति नहि, अपितु एकटा गहींर, बहु–स्तरीय लोक–स्मृतिक भाग थिक, जकरा हरेक पीढ़ी अपना ढंगसँ बुझैत आ पूजैत रहल अछि। "मूल गोहि" क अवधारणा — भुलाइकेँ शत्रु नहि, प्रकृतिक अनिवार्य भाग मानब — कथाक दार्शनिक जटिलता बढ़बैत अछि, ई सुझाबैत जे साक्षी–भाव (बूढ़बाक मार्ग) आ स्वीकृति–भाव (सोनमा माझिनक मार्ग) दुनू आवश्यक अछि, एक दोसराक विरोधी नहि।

अध्याय [-८२] (बयासी)

पहिल कबड्डी

एक साँसमे जाउ, एक साँसमे आउ, छूबि कऽ घुरू— कबड्डी सिखबै छै, पकड़ि नहि, उपस्थिति चाही।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। तीन बरख बीति गेल अछि। सावित्री आब सोरह बरखक भऽ गेलि अछि, अपन माएसँ बेसी तीक्ष्ण संवेदनशीलता लऽ कऽ — आ एहि अध्यायमे, ओहि अनुष्ठानक जन्म होइत अछि जकरा अहाँ, बहुत आगू, चन्ना गाछीमे "भूतक कबड्डी" कहल जाइत सुनब।)

तीन बरखमे स्थिति आओर बिगड़ल। पशु–धनक क्षतिसँ आगू बढ़ि, आब मनुष्य सेहो कहियो–कहियो अन्तर्धान होमय लागल छल — प्रायः ओ जे राति–बिरात अकेले कमला–बलानक किनारे जाइत छल, वा ओ जे नदीक ओहि दूरस्थ, अनाम भागक बहुत लग खेत जोतैत छल। गामक लोक आब पोखरि आ धारसँ बचय लागल छल, आ ई भय स्वयं गामक जीवनकेँ संकुचित करय लागल छल — माछ पकड़ब घटल, खेती घटल, बच्चा सभक हँसी सेहो घटल।

सावित्री, आब सोरह बरखक, अपन माएसँ एकटा बात भिन्न छल — ओ बूढ़बाक आवाज केवल सपनामे नहि, दिनहुँ, बिनु सुतने, सुनि सकैत छलि। आ हाल फिलहाल, ओकर सपना एकटा दृश्यसँ भरल रहय लागल छल जकरा ओ बुझि नहि पबैत छलि — बच्चा सभ, राति, कोनो गाछक छाहमे, दौड़ैत, एकटा शब्द दोहरबैत जकर अर्थ ओकरा नहि बुझल छल।

एक साँझ, ओ अपन माए आ बूढ़बा दुनूकेँ एक संग बजौलक। "हमरा एकटा विचार अछि," ओ बजलि, स्वरमे उत्साह आ भय दुनू। "बूढ़बा, अहाँ नाम बचबैत छी। सोनमा माझिन भेंट चढ़ा मूल गोहिकेँ शांत राखैत छलीह। मुदा दुनू काज अलग–अलग भेल — नाम बचाएब एक ठाम, भेंट चढ़ाएब दोसर ठाम। जँ हम दुनूकेँ एक काजमे जोड़ि दी तँ? "

"कोना, बेटी? " गौरी पुछलक।

"हमरा सपनामे," सावित्री बजलि, "बच्चा सभ एकटा खेल खेलैत छल — कबड्डी, जेना हम सभ सामान्यतः खेलैत छी, मुदा एहि खेलमे, जे पारी विपक्षीक जमीनमे जाइत छल, ओकरा एकटा नाम लऽ कऽ जाय पड़ैत छल — कोनो मृतकक नाम, कोनो बिसरल नामकेँ याद करैत। आ जखन ओ नाम लऽ कऽ सीमा पार करि सकैत छल, तँ ओकर पारी 'जीतल' मानल जाइत छल। ई खेल... ई खेल मात्र खेल नहि छल, बूढ़बा। ई हरेक बेर एकटा छोट भेंट छल — मूल गोहिकेँ ई देखाबय जे हम सभ नामकेँ स्वेच्छासँ, आदरसँ, ओकर सोझाँ ल्याबय तैयार छी, बजाय ओकरा अनचाहे छिनय देबाक।"

बूढ़बा बहुत काल चुप रहलाह। जखन ओ बजलाह, हुनकर आवाजमे एकटा चमक छल जे गौरी बहुत दिनसँ नहि सुनने छलि। "सावित्री, हमरा लगैत अछि जे

अहाँ ओ बात बुझि गेलहुँ जकरा हम सैकड़ों बरखमे नहि बुझि सकलहुँ। हम सोचैत छलहुँ जे साक्षी बनब आ भुलाइकेँ स्वीकार करब दुइ भिन्न रस्ता थिक — जेना सोनमा माझिन कहने छलीह। मुदा अहाँ एकटा तेसर रस्ता देखा रहल छी — जतय दुनू एक संग, एकहि सांसमे, एकहि खेलमे भऽ सकैत अछि।"

मुदा ई विचार परीक्षणक बिनु सिद्ध नहि भऽ सकैत छल, आ परीक्षणक हेतु साहस चाही जे कियो देब तैयार नहि छल।

अंततः, सावित्री स्वयं आगू आयलि। "हम पहिल पारी खेलब," ओ बजलि, अपन माएक विरोधक बादो। "हम बूढ़बाक शक्तिसँ जुड़ल छी, जेना अहाँ छलहुँ। जँ ई काज करत, तँ हमरासँ नीक कियो नहि करत।"

ओहि अमावस्याक राति, जोड़ी पोखरिक किनारे, पीपरक जड़िमे, सावित्री, गौरी, फुलेसरी, आ गामक किछु साहसी युवक जुटल। बूढ़बा, हवाक जकाँ अस्पष्ट, गाछक जड़िसँ ऊपर उठलाह। "जँ ई खेल असफल भेल," ओ चेतौलनि, "तँ मूल गोहि एकरा अनादर मानि सकैत अछि, आ ओकर भूख आओर तेज भऽ सकैत अछि। एतय जे किछु होयत, ओकर भार हम सभ एक संग उठायब, केवल सावित्री नहि।"

खेल शुरू भेल। सावित्री, साँस रोकि, "कबड्डी–कबड्डी" बजैत, अन्हारमे आगू बढ़लि, पोखरिक अत्यन्त किनारे धरि, जतय पानि रातिमे सेहो अजीब ढंगसँ चमकैत देखाइ पड़ैत छल। ओ रुकलि, आ ऊँच स्वरमे बजलि — "सुभागी! सुभागी, जकरा बाढ़िमे कोनो नाम नहि भेटल, हम अहाँक नाम एहि खेलमे आनैत छी!"

पानि हिलल। सभ स्तब्ध। मुदा कोनो आक्रमण नहि भेल। सावित्री साँस लैत, दोसर डेग बढ़लि। "यशपति!" ओ बजलि, स्वर काँपैत। "अहाँ जे किछु भेलहुँ, से अहाँक अपन चुनाव छल, मुदा अहाँक नाम — अहाँ जे कहियो, बहुत पहिने, रहल होएब — से हमहूँ बिसरब नहि, चाहे मूल गोहि अहाँकेँ खा गेल होइक।"

एहि नामक संग, पानि एकटा नव रूपसँ हिलल — तेज, हिंसक, जेना कोनो पैघ चीज नीचाँसँ ऊपर उठय चाहैत होइक। गौरी चिचिआएलि, "सावित्री, पाछू हटू!" मुदा सावित्री, बूढ़बाक शक्तिसँ जुड़ल, स्थिर रहलि। "नहि," ओ बजलि, "ई भय अछि, आक्रमण नहि। ई सुनि रहल अछि।"

ओ तेसर बेर बजलि, आब अपन स्वरकेँ शांत करैत, जेना केओ रोअइत बच्चाकेँ शांत करैत अछि — "मूल गोहि, हम अहाँकेँ नकारैत नहि छी। हम अहाँसँ धैर्य माँगैत छी, ठीक जेना हमर पुरखा माँगने छलाह। प्रत्येक अमावस्याक राति, हम अहाँक सोझाँ नाम आनब — प्रेमसँ, स्वेच्छासँ। बदलामे, हम अहाँसँ एतबे माँगैत छी जे अहाँ चोरी नहि करब, केवल भेंट स्वीकार करब।"

एकटा लम्बा, असहनीय क्षण। फेर, धीरे–धीरे, पानि शांत भेल। कोनो आवाज नहि आयल, कोनो स्पष्ट संकेत नहि, मुदा हवामे एकटा परिवर्तन महसूस भेल — जेना कोनो अत्यन्त पैघ, अत्यन्त थाकल प्राणी, बहुत काल बाद पहिल बेर, चैनसँ साँस लेने होइक।

बूढ़बा, अपन आकृतिमे स्थिर होइत, बजलाह, "भेल। हमरा नहि बुझल ई हमेशाक हेतु कतेक कारगर रहत, मुदा आइ राति, गोहि सुतल।"

ओ राति सँ, हर अमावस्याक राति, गामक बच्चा सभ पीपर लग जुटय लागल, बूढ़बाक निर्देशनमे, कबड्डी खेलय — मुदा ई खेल आब मात्र खेल नहि, बल्कि

एकटा पवित्र स्मरण–अनुष्ठान बनि गेल। हर पारीमे एकटा नाम, हर नाममे एकटा जीवन, हर जीवनमे एकटा सत्य जकरा भुलाइसँ बचाओल जाइत छल — आ एहि अनुष्ठानक बदलामे, मूल गोहि, कहल जाइत अछि, फेर कहियो कोनो निर्दोष प्राणीकेँ नहि छूलक।

सावित्री, ओहि दिनसँ, गामक हेतु किछु आर बनि गेलि — केवल बूढ़बाक सहायिका नहि, अपितु ओहि अनुष्ठानक प्रथम रक्षिका, जकरा ओकर वंशज, पीढ़ी–दर–पीढ़ी, आगू लऽ जायत, जाबे धरि — बहुत आगू, बहुत दूर — ई खेल एकटा गामक अमावस्याक परम्परासँ, चन्ना गाछीक अमर, कालातीत कबड्डी नहि बनि जाइत, जतय भूत, प्रेत, राकश, आ लोथ सभ, बूढ़बाक निर्णायकत्वमे, अखनहु नाम बचबैत, राति दर राति, खेलैत रहताह।

ओहि दिन, पहिल कबड्डीक पारीमे, गाम एकटा गीत उठौलनि —

एक साँसमे जाउ हे, एक साँसमे आउ,
छूबि कऽ घुरू रे, पकड़ि नहि, उपस्थिति चाही।
जे साँस राखल, से पारी जीतल; जे साँस टूटल, से हारल;
कबड्डी सिखबै — नाम छूबू, देह नहि पकड़ू।
पारी लैत नाम पुकारू हे, एक साँसमे रे —
जे नाम पुकारल, से अन्हारमे फेर जीबल।

अध्याय [−८२] पर टिप्पणी — कथाचक्रक एकटा सन्धि−बिन्दु

अनुष्ठानक उत्पत्ति आ कथाक वृत्ताकार संरचना

अध्याय [−८२] "गोहि सभक बीच जलसमाधि" क सम्पूर्ण खण्ड−० परियोजनाक एकटा केंद्रीय सन्धि−बिन्दु थिक — एतय ओ अनुष्ठान, जकरा पाठक खण्ड−१ आ खण्ड−२ मे "नाम−बचाओ कबड्डी" रूपमे पहिनहि सँ भेटि चुकल छथि, अपन प्रथम रूपमे जन्म लैत अछि। सावित्रीक संश्लेषण — साक्षी−भाव (बूढ़बा), भेंट−भाव (सोनमा माझिन), आ बाल−क्रीड़ा (गामक परम्परागत कबड्डी) तीनूकेँ एकटा अनुष्ठानमे जोड़ब — कथाक ओहि केंद्रीय दावाकेँ मूर्त रूप दैत अछि जे सत्य आ न्याय कहियो एकहि परम्परा वा एकहि पीढ़ीक सम्पत्ति नहि होइत, अपितु संचयी, अन्तर−पीढ़ीगत निर्माण होइत अछि। एहि बिन्दुसँ आगू, खण्ड−० क शेष अध्याय (81→1) एहि स्थापित अनुष्ठानक शताब्दियों−लम्बा निरन्तरता, आ ओहि निरन्तरतामे जुड़ैत नव−नव नाम आ नव−नव त्रासदीक कथा कहताह, जाबे धरि कथा अन्ततः बूढ़बाक अपन अन्तिम, बारह−सय−बरख−पुरान रूपमे, चन्ना गाछी धरि नहि पहुँचि जाइत।

अध्याय [–८१] (इक्यासी)

आक्रमणक छाया

छाया पैघ भेने डर पैघ नहि होइ— जे नाम थिर, से अपन छायासँ नहि डरै।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। बीस बरख बीति गेल अछि। अमावस्याक कबड्डी आब गामक जीवनक अभिन्न भाग बनि चुकल अछि — मुदा एहि अध्यायमे, एकटा नव, मनुष्यनिर्मित बिपत्ति गामक द्वार लग आबि पहुँचैत अछि, जकरा कोनो भेंट वा कोनो नाम शांत नहि कऽ सकैत।)

बीस बरखमे, गढ़ नारिकेल एकटा नव सन्तुलनमे स्थिर भऽ गेल छल। अमावस्याक कबड्डी गामक जीवनक अभिन्न भाग बनि चुकल छल — बच्चा सभ ओकरा एहन स्वाभाविकतासँ खेलैत छल जेना ओ हमेशासँ छल, आ प्रत्येक अमावस्याक बाद, गामक बुढ़–पुरान लोक सन्तोषसँ कहैत, "ई मास सेहो शांतिसँ बीतल।" पशु–धनक हानि रुकि गेल छल; कमला–बलानक ओहि दूरस्थ भागक

भय, यद्यपि पूर्ण रूपसँ गायब नहि भेल छल, कमजोर पड़ि गेल छल। सावित्री, आब छत्तीस बरखक, अपन बेटी इन्दुमतीकेँ अनुष्ठानक सूक्ष्मता सिखा रहल छलि।

मुदा एहि साँझ, गामक सीमा पर, धूरिक एकटा नव बादर उठल — घोड़ाक टापक बादर, आ ओकर संग, भागल लोकक भीड़।

"तुर्क सेना!" पहिल शरणार्थी, हाँफैत, गामक चौपाल लग खसैत, चिचिआएलाह। "मिथिलाक उत्तरसँ, हाथी आ घोड़ा लेने, आगू बढ़ि रहल अछि! सिमरावगढ़ केर राजा भागि गेलाह! गाम–गाम जरैत अछि!"

गढ़ नारिकेलमे कोहराम मचल। किछु लोक तुरंत भागय चाहलक, दक्षिण दिस, जंगलक ओहि पार जकर नाम आब गामक लोक "गोहिक इलाका" कहैत छल आ जतय जाय हेतु ओ सभ कहियो तैयार नहि भेल छल — मुदा आइ, सेनाक भयसँ, ओ भय सेहो छोट लगय लागल। किछु लोक अपन घर, अपन खेत छोड़बय तैयार नहि छल, चाहे किछु होइक।

इन्दुमती, आब बीस बरखक, अपन माएसँ पुछलक, "माए, बूढ़बा एहिपर की कहैत छथि? "

सावित्री पीपर लग गेलि। बूढ़बा, अपन सदिखनक शांतिसँ हटि, चिंतित देखाइ पड़ल। "सावित्री, हमर साक्षी–दृष्टि एहि सेनाक भविष्य स्पष्ट नहि देखबैत — मनुष्यक युद्ध, मूल गोहिक भूखसँ भिन्न ढंगसँ, अस्थिर आ अप्रत्याशित होइत अछि। मुदा हम एतबे कहि सकैत छी — जे सेना नगर आ राजमहल जराबय आयल अछि, ओकरा एहन छोट, गरीब गाममे कोनो विशेष रुचि नहि होयत, जाबे धरि गाम ओकर रस्तामे नहि अबैत।"

"तँ हम सभ की करी? "

"छिपाउ जे छिपाओल जा सकैत अछि। जे भागि सकैत अछि, ओकरा भागय दिअ, मुदा जे नहि भागि सकैत — वृद्ध, बीमार, छोट बच्चा — हुनका हेतु सुरक्षित जगह चाही।"

चर्मकार टोला, बरख–दर–बरखक अनुभवसँ, सबसँ पहिने संगठित भेल — किएक तँ ओ सभ जनैत छल कोना संकटमे एक–दोसराक सहायता करब। ओ सभ अपन घरक भीतर, माटिक तर, पुरान अनाज–रखबाक कोठलीकेँ बड़का कऽ, बच्चा आ वृद्ध लोकनिकेँ छिपाबय लगलाह। गौरी, आब वृद्ध, मुदा अखनहु सक्रिय, अपन जड़ी–बूटीक ज्ञानसँ घायल शरणार्थीक सेवामे जुटि गेलि।

राति गहींर होइत–होइत, गामक सीमा पर, घोड़ाक टाप फेर सुनाइ पड़ल — मुदा ई बेर, सम्पूर्ण सेना नहि, केवल किछु टूटल सैनिक, जे स्वयं मुख्य सेनासँ भटकि गेल छल, लूटपाटक हेतु गाम दिस बढ़ल। इन्दुमती, जे बूढ़बाक आवाज सबसँ स्पष्ट सुनि सकैत छलि, चिचिआएलि, "बूढ़बा कहि रहल छथि — कबड्डी! आइ राति कबड्डी खेलू, चाहे अमावस्या नहि होइक!"

ई अजीब आदेश छल, मुदा सावित्री, अपन माएक शिक्षापर भरोसा करैत, तुरंत बच्चा आ गामक युवक सभकेँ पीपरक जड़ि लग जुटौलक। "कोना कबड्डी हमरा सभकेँ बचा सकैत अछि? " एक युवक पुछलक।

"हमरा नहि बुझल," सावित्री बजलि, "मुदा बूढ़बापर भरोसा करू।"

जखन टूटल सैनिक सभ गामक सीमा पर पहुँचल, तँ ओ सभ एकटा अजीब दृश्य देखलक — गामक पीपर लग, दीप जरैत, बच्चा सभ, बिनु कोनो भयक,

ऊँच स्वरमे "कबड्डी–कबड्डी" बजैत, दौड़ैत, खेलैत। ई दृश्य एतेक साधारण, एतेक निर्भय छल जे सैनिक सभकेँ लगल जे ई गाम या त पागल अछि, या ओकरा लग छिपाबय हेतु किछु नहि — किएक तँ केओ, सचमुच खतराक बीच, एहन शांतिसँ खेल नहि सकैत।

सेनापति, एकटा थाकल, दुर्बल अनुभवी, अपन घोड़ा रोकलनि। "एहि गाममे किछु नहि अछि लुटबाक हेतु," ओ अपन सैनिक सभसँ कहलनि। "आगू बढ़ू, मुख्य सेनासँ मिलू। हमरा एतय समय बर्बाद नहि करय पड़त।"

सेना आगू बढ़ि गेल, गामकेँ बिनु छेड़ने। बच्चा सभ, अपन खेल समाप्त कऽ, राहतसँ हँसय लागल, यद्यपि हुनका पूर्ण नहि बुझल जे ओ सभ की बचौलक।

बूढ़बा, ओहि राति बहुत काल पीपर लग बैसल रहलाह, अपन आकृति असामान्य रूपसँ स्थिर। "इन्दुमती," ओ अन्ततः बजलाह, "अहाँ जनैत छी हम की सोचि रहल छी? हमर काज कहियो केवल मृतकक नाम बचाएब नहि छल। ई काज जीवितकेँ सेहो, कहियो–कहियो, बचा सकैत अछि — किएक तँ जे मनुष्य अपन नाम, अपन स्मृति, अपन पहिचानपर दृढ़ रहैत अछि, बिनु भयक, से ओहन आत्मविश्वास प्रकट करैत अछि जकरा हिंसा प्रायः बुझि नहि पबैत, आ तेँ छोड़ि दैत अछि।"

मुदा ई राहत अल्पकालिक साबित भेल। अगिला सप्ताह, समाचार आयल जे सिमरावगढ़ पूर्ण रूपसँ पतन भऽ गेल छल, आ मिथिलाक पुरान राज–व्यवस्था, जकर छायामे आचार्य केशवसँ लऽ कऽ आमिल जयसिंह धरिक हर कथा घटित भेल छल, अब समाप्त भऽ चुकल छल। एकटा नव युग, नव शासक, नव भाषा, नव कानून लऽ कऽ, मिथिलापर उतरय जा रहल छल — आ गढ़ नारिकेल, बहुत

आर हजारो गामक जकाँ, आब स्वयंकेँ एकटा अनजान भविष्यक सोझाँ ठाढ़ पओलक।

ओहि राति, आक्रमणक छाया देखि, बूढ़बा एकटा फकरा गबैत छलाह —

छाया पैघ भेने हे, डर पैघ नहि होइ,
जे नाम थिर रे, से अपन छायासँ नहि डरै।
सुनल तोप दूर, देखल धुआँ ऊँच, मुदा गाम ठाढ़;
जे भीतरसँ थिर, से बाहरक छायासँ नहि टूटल।
छाया साँझमे पैघ हे, भोरमे मेटा जाय रे —
जे अपन नाम जनै, से कोनो छायासँ नहि हारल।

अध्याय [–८१] पर टिप्पणी

चौदहम शताब्दीक मिथिला — राजनैतिक अस्थिरताक ऐतिहासिक सन्दर्भ

चौदहम शताब्दीक आरम्भमे, मिथिलाक ओइनवार वंशसँ पूर्ववर्ती कर्नाट वंशक पतन, आ दिल्ली सल्तनतक सेनाद्वारा तिरहुत क्षेत्रपर आक्रमण, क्षेत्रक राजनैतिक संरचनामे गहींर परिवर्तन ल्याओलक। अध्याय [–८१] एहि ऐतिहासिक अस्थिरताकेँ पृष्ठभूमि बना, ई देखाबय लेल उपयोग करैत अछि जे स्थानीय सामुदायिक परम्परा (जेना कबड्डी–अनुष्ठान) कोना बड़का राजनैतिक उथल–पुथलक बीचहुँ अपन अर्थ, आ कहियो–कहियो अपन व्यावहारिक उपयोगिता, बनौने रहि सकैत अछि। ई अध्याय खण्ड–० क कथाकेँ एकटा नव ऐतिहासिक युगमे प्रवेश करबैत अछि, जकर विस्तार आगूक अध्यायमे होयत।

अध्याय [–८०] (अस्सी)

गीतक पहिल पाँति

गीतक पहिल पाँति एक कण्ठ उठबै, बाकी गाम उठा लै— लेखक एक नहि, गामे रचयिता छै।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। ओइनवार वंशक उदयक संग मिथिलामे नव राजनैतिक स्थिरता आ नव साहित्यिक उत्साह पसरि रहल अछि — आ एहि अध्यायमे, पहिल बेर, बूढ़बाक कथा मौखिक स्मृतिसँ बाहर निकलि, कागचपर उतरबाक कोशिश करैत अछि।)

सिमरावगढ़क पतनक बाद केर अराजकता धीरे–धीरे शांत भेल। मिथिलामे एकटा नव वंश — ओइनवार — सत्तामे आयल, आ ओकर संग एकटा नव, अप्रत्याशित उत्साह — साहित्य, संगीत, आ कलाक हेतु। दरभंगा आ आसपासक राजदरबार सभ कवि, गायक, आ शास्त्रज्ञकेँ आश्रय देबय लागल, आ मैथिली भाषा, जे बहुत दिनसँ केवल घर आ खेतक भाषा मानल जाइत छल, धीरे–धीरे राजदरबार आ काव्यक भाषा सेहो बनय लागल।

एहि नव उत्साहक एकटा छोट लहर गढ़ नारिकेल धरि सेहो पहुँचल, एकटा युवा भ्रमणशील कवि–लेखकक रूपमे, जकर नाम गामक लोक "हरिपति" जनलक। ओ राजदरबारमे आश्रय खोजैत, गाम–गाम घुमैत, लोकक कथा, लोकगीत, आ स्थानीय जनश्रुति संग्रह करैत छलाह, ई विश्वाससँ जे मैथिलीक असली शक्ति दरबारक संस्कृत–मिश्रित काव्यमे नहि, गामक साधारण मनुष्यक मुँहमे अछि।

जखन हरिपति गढ़ नारिकेल पहुँचलाह, तँ ओ पहिल बेर पीपरक साक्षी–गाछ आ ओकर तर होएवाली अमावस्याक कबड्डीक कथा सुनलनि — इन्दुमतीक मुँहसँ, जे आब चालीस बरखक, अनुष्ठानक प्रमुख संरक्षिका छलि, अपन माए सावित्रीक बाद।

"एकटा भूत, जे साक्षी बनि नाम बचबैत अछि? एकटा मूल गोहि, जे भुलाइक भूख थिक? एकटा कबड्डी, जकर हर पारीमे मृतकक नाम लेल जाइत अछि?" हरिपति चकित भऽ पुछलनि। "ई त कोनो पैघ महाकाव्यक हेतु सामग्री थिक! हम एकरा कागचपर उतारय चाहैत छी।"

इन्दुमती हिचकिचाएलि। "कवि महाशय, ई कथा हमरा सभक अछि — गामक, टोलाक, बूढ़बाक। ई राजदरबारक काव्य नहि, ई हमरा सभक जीवन थिक। अहाँ एकरा लिखि कऽ की करब?"

"हम एकरा सुरक्षित राखय चाहैत छी," हरिपति बजलाह, स्वरमे एकटा गहींर ईमानदारी। "मौखिक कथा, चाहे कतेक शक्तिशाली होइक, पीढ़ी–दर–पीढ़ी बदलैत जाइत अछि, आ कहियो–कहियो पूर्ण रूपसँ हेराइ जाइत अछि। मुदा जँ ई कागचपर उतरि जाए, तँ ई सैकड़ों बरख बाद सेहो पढ़ल जा सकत।"

इन्दुमती ई बात पीपर लग बूढ़बाकेँ सुनौलक। बूढ़बा बहुत काल चुप रहलाह। "इन्दुमती," ओ अन्ततः बजलाह, "हमरा मोन अछि, बहुत बरख पहिने, हम स्वयं ई सोचने रही जे शायद कियो, बहुत आगू, एहि सभटा कथाकेँ एक ठाम बटोरत। हमरा नहि बुझल छल जे ई क्षण एतेक जल्दी आबत, न ई बुझल छल जे ई एकटा भ्रमणशील कविक रूपमे आबत। मुदा हम अहाँकेँ एकटा चेतावनी अवश्य देब — जँ ई कथा लिखल जाए, तँ ई कोनो सम्मानक हेतु नहि लिखल जाए। हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, सुभागी, रत्ना, मालती — इनकर कथा राजदरबारक अलंकृत भाषामे सजाओल जाए, तँ ई ओहिना अन्याय होयत जेहन ई सभ जीवनमे सहलक। जँ लिखल जाए, तँ साधारण भाषामे लिखल जाए, ठीक ओहिना जेना ई सभ बजैत छलाह।"

हरिपति, जखन इन्दुमती ई सन्देश हुनका सुनौलक, बहुत काल चुप रहलाह। फेर, धीरे, ओ अपन कमरसँ एकटा ताड़पत्रक पोथी आ एकटा लेखनी निकाललनि। "बूढ़बाजी," ओ पीपर दिस मुड़ि कऽ बजलाह, यद्यपि ओ बूढ़बाकेँ देखि नहि सकैत छलाह, "हम अहाँक शर्त स्वीकार करैत छी। हम एकरा राजदरबारक काव्यमे नहि लिखब। हम एकरा ओहिना लिखब जेहन ई अछि — गामक भाषामे, गामक तालमे, हुलासा आ जीवन्ती आ सुखदेवक अपन शब्दमे, जतय भेटत।"

ओहि साँझ, पीपरक जड़ि लग बैसि, हरिपति अपन पहिल पाँति लिखलनि — ने संस्कृतमे, ने दरबारी मैथिलीमे, अपितु गामक साधारण बोलचालमे: "एकटा गाछ छल, एकटा पोखरि छल, आ एकटा सेवक जे नाम बचबैत छल..." — ई पाँति, हरिपति स्वयं नहि जनैत छलाह, आगू बहुत शताब्दी धरि, कोनो–न–कोनो रूपमे, कोनो–न–कोनो मुँहमे, जीवित रहत, जाबे धरि — बहुत आगू — एकटा

दोसर लेखक, दोसर युगमे, दोसर उपकरणसँ (कागचक बदला कम्प्यूटरक स्क्रीनपर), एकहि कथाकेँ फेर सँ नहि लिखत, "गोहि सभक बीच जलसमाधि" शीर्षकक अन्तर्गत।

हरिपति गढ़ नारिकेलमे तीन मास रहलाह, गामक हर बुढ़–पुरान लोकसँ कथा सुनैत, लिखैत, फेर मेटबैत, फेर फेर सँ लिखैत, जाबे धरि शब्द सभ ओहन नहि भऽ गेल जे गामक जीभपर स्वाभाविक लागय। जखन ओ विदा भेलाह, राजदरबार दिस, अपन ताड़पत्रक पोथी लेने, इन्दुमती हुनका पुछलक, "अहाँ एकरा दरबारमे देखाएब? "

"नहि," हरिपति मुस्कुराएलाह, दुःखी मुस्कान। "दरबार एकरा नहि बुझत। ई पोथी हम अपन संग राखब, आ जखन हमर समय आओत, हम एकरा अपन शिष्यकेँ देब, ई कहैत जे एकरा सुरक्षित राखय, मुदा कहियो प्रकाशित नहि करय — जाबे धरि संसार एहन नहि भऽ जाए जे ई कथा सुनय आ बुझय दुनू सकए।"

बूढ़बा, हरिपतिक विदाइक बाद, इन्दुमतीसँ बजलाह, "ई कवि नीक मनुष्य छलाह। हुनकर पोथी शायद हेराइ जाएत, वा शायद ने। मुदा एकटा बात हम आब निश्चित रूपसँ जनैत छी — जे कथा एक बेर, ईमानदारीसँ, कागचपर उतरि जाइत अछि, ओ पूर्ण रूपसँ कहियो नहि मरैत, चाहे ओ पोथी कतेक शताब्दी धरि केओ नहि पढ़य।"

ओहि दिन, गीतक पहिल पाँति उठैत, गाम एकटा गीत बुनैत छल —

गीतक पहिल पाँति हे, एक कण्ठ उठबै,
बाकी गाम उठा लै रे, लेखक एक नहि।
एक शुरू केलक, दस जोड़लक, सय गौलक;
जे गाम मिलि रचल, तकर रचयिता कोनो एक नहि।

पाँति–पाँति जुड़ल हे, गीत पूरा भेल रे —

जे सभ मिलि गाबय, से गीत कहियो नहि मरै।

अध्याय [–८०] पर टिप्पणी

ओइनवार वंश आ मैथिली साहित्यक स्वर्णकाल

चौदहम–पन्द्रहम शताब्दीक ओइनवार वंशक शासनकाल मैथिली साहित्यक इतिहासमे एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कालखण्ड मानल जाइत अछि, जखन मैथिली भाषा राजदरबारक संरक्षण पाबि, उच्च साहित्यिक अभिव्यक्तिक माध्यम बनल। अध्याय [–८०] मे उल्लिखित कवि "हरिपति" कोनो विशिष्ट ऐतिहासिक व्यक्तिक प्रतिनिधित्व नहि करैत, अपितु ओहि व्यापक साहित्यिक–सांस्कृतिक प्रवृत्तिक प्रतीक थिक जकर फलस्वरूप एहि युगमे मैथिली भाषाक गरिमा स्थापित भेल। एहि अध्यायक केंद्रीय प्रश्न — की लोक–कथा (विशेषतः हाशियाकृत समुदायसँ जुड़ल) "उच्च साहित्य" क विषय बनबाक योग्य अछि — "गोहि सभक बीच जलसमाधि" स्वयं क, आ व्यापक रूपसँ विदेह पत्रिका आ विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलनक, केंद्रीय प्रश्न सेहो थिक।

अध्याय [-७९] (उनासी)

क्षमाक पारी

कबड्डीमे जकरा छुअल, तकरो घुरबाक पारी दै— क्षमा सेहो एक पारी छी, बदला नहि।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। पैंतालीस बरख बीति गेल अछि। एहि अध्यायमे, पहिल बेर, अमावस्याक कबड्डी केवल मृतकक नामक हेतु नहि, अपितु एकटा जीवित मनुष्यक पुरान अपराधक हेतु सेहो खेलाइत अछि।)

इन्दुमतीक बाद, अनुष्ठानक भार ओकर बेटी शारदापर आयल, आ शारदाक बाद ओकर बेटी वसुन्धरापर। पैंतालीस बरखमे, गामक जीवन एकटा शांत, स्थिर लयमे बहय लागल छल — कबड्डी हर अमावस्यापर होइत, नाम सभ लेल जाइत, आ मूल गोहि, जेना सोनमा माझिन बहुत पहिने कहने छलीह, धैर्यसँ सुतल रहैत छल।

एक साँझ, एकटा अत्यन्त वृद्ध पुरुष, डण्टाक सहारे, चर्मकार टोलाक द्वार लग पहुँचलाह। हुनकर वस्त्र कीमती छल, मुदा फाटल आ मैलगर, जेना ओ बहुत दूरसँ, बहुत कठिनाइसँ, यात्रा केने होथि। "हम प्रतापसेन ठाकुरक पौत्र छी," ओ

अपन नाम बतौलनि, स्वर काँपैत। "हमर नाम रघुवीर अछि। हम... हम गौरी माताक वंशजसँ भेंट करय आयल छी।"

वसुन्धरा, आब चालीस बरखक, हुनका सावधानीसँ देखलक। "प्रतापसेन ठाकुरक नाम एहि टोलामे कोनो सुखद स्मृति नहि जगाबैत, बाबूजी। अहाँ किएक आयल छी? "

रघुवीर बहुत काल चुप रहलाह, फेर, अपन आँखिमे आँसू लऽ कऽ, बजलाह, "हम अपन दादाक पापक बोझ लऽ कऽ जीबि रहल छी। हुनक कथा हमरा हमर बाबूजी सुनौने रहथिन, आ हम बचपनहि सँ जनैत छी जे हमर परिवारक सम्पत्ति, हमर परिवारक हर सुविधा, किछु ओहि अन्यायपर ठाढ़ अछि जे हमर दादा एहि टोलाक विरुद्ध रचय चाहने रहथिन। हम मरबाक पहिने, एक बेर, क्षमा माँगय आयल छी — यद्यपि हमरा बुझल अछि जे क्षमा माँगबाक हमरा कोनो अधिकार नहि, किएक तँ अपराध हमर नहि छल।"

वसुन्धरा, अनिश्चित, पीपर लग गेलि, बूढ़बासँ सलाह लेबय। "बूढ़बा, ई हमरा उलझा रहल अछि। ई मनुष्य स्वयं दोषी नहि, मुदा ओ दोषक बोझ ढोइ रहल अछि। हम एकरा की कहिऐ? "

बूढ़बा बहुत काल चुप रहलाह। "वसुन्धरा, हम बरख–दर–बरख मृतकक नाम बचबैत आयल छी, मुदा हमरा आब लगैत अछि जे हमर काज अधूरा छल। नाम बचाएब केवल ई नहि जे मृतकक स्मृति रहय — ई सेहो जे जीवितकेँ अपन कथाकेँ ठीक करबाक अवसर भेटय, जाबे धरि ओ जीवित छथि। रघुवीरक क्षमा–याचना, चाहे ओ स्वयं दोषी नहि, एकटा नव प्रकारक साक्षी–कार्य थिक। एकरा नकारू नहि।"

ओहि अमावस्याक राति, गामक हर वृद्ध, हर स्त्री, हर बच्चा पीपर लग जुटल — आ रघुवीर सेहो, कमजोर पएरसँ, फुलेसरीक वंशजक सहारे, गाछ लग बैसलाह। कबड्डी शुरू भेल, मुदा ओहि राति, एकटा नव नियम जोड़ल गेल। जखन पारी रघुवीरक बारी आयल, वसुन्धरा ओकरा अपन कातमे बजा, धीरे कहलक, "आइ अहाँ नाम नहि लेब, बाबूजी। आइ अहाँ स्वयं एकटा नाम बनब — रघुवीर, प्रतापसेन ठाकुरक पौत्र, जे अपन परिवारक अपराधकेँ स्वीकार करय आयल — आ हम सभ, संगे, अहाँक ई नाम याद राखब, जेना हम सुखदेव आ हुलासाक नाम राखने छी।"

रघुवीर रोअय लगलाह, यद्यपि ओकर रोदन दुःखक नहि, एकटा गहींर, वर्षों–पुरान भारक उतरबाक रोदन छल। "हम अपन जमीनक एकटा भाग," ओ हाँफैत बजलाह, "जे हमर दादा अनुचित ढंगसँ प्राप्त केने रहथिन, आइए एहि टोलाकेँ लौटाबय चाहैत छी। ई क्षमा नहि खरीदि सकैत, हमरा बुझल अछि। मुदा ई कमसँ कम सत्यक दिशामे एकटा डेग थिक।"

बूढ़बा, ओहि राति, पीपरक जड़िसँ नीचाँ उतरलाह, आ पहिल बेर, गामक स्मृतिमे, एकटा जीवित मनुष्यक माथपर हाथ राखबाक प्रयास केलनि — यद्यपि, हमेशाक जकाँ, हाथ देहसँ एक अंगुर ऊपर रहि गेल। "रघुवीर," ओ बजलाह, "अहाँक दादाक नाम हम आइयो, दुःखसँ, धेने छी। मुदा अहाँक नाम, आइसँ, हम आदरसँ धरब। ई फर्क छोट लगैत अछि, मुदा हमरा बरख–दर–बरखक अनुभवसँ बुझल अछि — ई फर्क वस्तुतः सम्पूर्ण मोल राखैत अछि।"

रघुवीर ओहि राति चर्मकार टोलामे रहलाह, आ अगिला भोरे, गामक साक्षीक सोझाँ, अपन भूमिक बटवारा–पत्र वसुन्धराक हाथमे सौंपलनि। ओ अगिला मास घर घुरि गेलाह, आ छह मास बाद हुनकर देहान्तक समाचार आयल — मुदा

गामक लोक हुनका "ठाकुर–अपराधी" नहि, "रघुवीर, जे घुरलाह" कहि सम्बोधित करय लागल, आ ई नाम, कालक्रममे, गामक कहबीमे एकटा मुहावरा बनि गेल — "रघुवीर जकाँ घुरब," जकर अर्थ छल, बहुत देरीसँ सही, मुदा फेर सेहो, सत्यक दिशामे घुरब।

ओहि दिन, कबड्डीक पारीमे, क्षमाक बात उठैत, गाम एकटा गीत गबैत छल —

कबड्डीमे जकरा छुअल हे, तकरो घुरबाक पारी दै,
क्षमा सेहो एक पारी छी रे, बदला नहि।
जे हारल, तकरा फेर मौका; जे खसल, तकरा हाथ;
जे क्षमा देलक, से खेल आ गाम, दुनू बचौलक।
बदलाक पारी छोट हे, क्षमाक पारी पैघ रे —
जे घुरबाक पारी देलक, तकर नाम गाम मन राखल।

अध्याय [−७९] पर टिप्पणी

सामूहिक अपराध–बोध आ अन्तर–पीढ़ीगत क्षमा

अध्याय [−७९] एकटा जटिल नैतिक प्रश्न उठबैत अछि जकर उत्तर सरल नहि थिक — की कोनो वंशज अपन पूर्वजक अपराधक हेतु उत्तरदायी थिक, आ जँ हँ, तँ कोन सीमा धरि? कथा एहि प्रश्नक कोनो निश्चित सैद्धान्तिक उत्तर नहि दैत — रघुवीरक भूमि–वापसीकेँ "क्षमा–क्रय" नहि, अपितु "सत्यक दिशामे एकटा डेग" कहल गेल अछि, जे जान–बूझि कऽ अपूर्ण छोड़ल गेल अछि। ई अध्याय अनुष्ठानक विकासमे एकटा महत्त्वपूर्ण मोड़ दर्शाबैत अछि — नाम–बचाओ कबड्डी, जे अखन धरि मुख्यतः मृतक आ पीड़ितक हेतु छल, आब जीवित, पश्चातापी अपराधीक हेतु सेहो एकटा भूमिका ग्रहण करैत अछि, यद्यपि सावधानीपूर्वक, ई स्पष्ट राखैत जे स्वीकृति क्षमासँ भिन्न वस्तु थिक।

अध्याय [–७८] (अठहत्तर)

पंजीक बाहर

पंजीमे जकर नाम नहि, से गामसँ बाहर नहि— कागच जकरा छोड़लक, तकरा माटि अपना लेलक।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। मिथिलाक पंजी–व्यवस्था — जे कुल, गोत्र, आ मूलक अभिलेख राखैत अछि — एहि अध्यायमे पहिल बेर कथामे प्रवेश करैत अछि, आ ओकर संग ई प्रश्न सेहो जे कोन नाम एहि अभिलेखमे स्थान पबैत अछि, आ कोन नहि।)

मिथिलामे एकटा प्राचीन व्यवस्था छल — पंजी प्रबन्ध — जकर अन्तर्गत ब्राह्मण आ कर्ण–कायस्थ कुलक वंशावली, विवाह–सम्बन्ध, आ कुल–मर्यादा सावधानीपूर्वक अभिलेखमे राखल जाइत छल। हर किछु बरखपर, पंडित आ पंजीकार सभ "पंजी–सम्मेलन" नामक सभामे जुटैत, नव विवाहक अभिलेख करैत, पुरान अभिलेख जाँचैत, आ कुल–मर्यादाक निर्णय लैत छलाह। ई व्यवस्था मिथिलाक सामाजिक स्मृतिक एकटा स्तम्भ छल — मुदा ई स्तम्भ केवल किछु घरक हेतु ठाढ़ छल। चर्मकार, धीवर, आ आओर हाशियाकृत जाति–समुदायक

नाम एहि पंजीमे कहियो नहि आयल, जेना ओ सभ मिथिलाक स्मृतिक बाहर, कोनो अदृश्य सीमारेखाक ओहि पार, रहैत होथि।

एहि बरख, पंजी–सम्मेलन गढ़ नारिकेलक नजदीकक एकटा पैघ गाममे आयोजित भेल, आ ओहि सम्मेलनमे भाग लेबय एकटा युवा पंजीकार, यादवानन्द झा, आयल छलाह — गम्भीर, कर्तव्यनिष्ठ, आ अपन व्यवस्थापर पूर्ण विश्वास राखनिहार। सम्मेलनक बाद, ओ गढ़ नारिकेल दिससँ गुजरैत यात्रा करैत छलाह जखन हुनकर घोड़ा अचानक बीमार पड़ि गेल, आ ओ गामक चौपाल लग रुकय बाध्य भेलाह, रातिक हेतु आश्रय खोजैत।

गामक ब्राह्मण–टोला, अपन रीति अनुसार, यादवानन्दकेँ स्वागत केलक, मुदा ओहि राति गामक भोजन–व्यवस्था अपर्याप्त छल, किएक तँ अकालक बाद केर एकटा कठिन बरख चलि रहल छल। वसुन्धरा, चर्मकार टोलाक वर्तमान अनुष्ठान–रक्षिका, जखन ई सुनलक, तँ अपन घरसँ ताज़ा दूध आ फल भेजि देलक, बिनु कोनो प्रत्याशाक, केवल एहि परम्पराक कारण जे ओकर परिवार बरख–दर–बरख गामक अतिथिक सेवा करैत आयल छल।

यादवानन्द, दूध पीबैत, गामक मुखियासँ पुछलनि, "ई दूध केकर अछि? एतेक शुद्ध, एतेक स्वादिष्ट!"

मुखिया कनेक हिचकिचाएलाह, फेर बजलाह, "चर्मकार टोलाक अछि, पंडितजी।"

यादवानन्दक चेहरा एक क्षण असहज भेल — पुरान संस्कारक कारण — मुदा फेर, अपन थकानक कारण, वा शायद अपन ईमानदार जिज्ञासाक कारण, ओ

पुछि बैसलाह, "ओ टोला कतय अछि? हम एकटा बात सुनने छी — कोनो साक्षी–गाछ, कोनो अमावस्याक अनुष्ठानक विषयमे। की ई सत्य अछि?"

ओहि राति, अद्भुत संयोगसँ, अमावस्या छल। मुखिया, अनिच्छापूर्वक, यादवानन्दकेँ पीपर लग लऽ गेलाह, ई सोचैत जे एकटा पंजीकारक एहि "निम्न" अनुष्ठानमे रुचि शायद खतरनाक होयत। मुदा यादवानन्द, जखन ओ बच्चा सभकेँ खेलैत, नाम–नाम लैत, आ वसुन्धराकेँ हर नामक संग एकटा छोट कथा जोड़ैत सुनलनि — रत्ना, सोमर, मालती, हुलासा, सुखदेव, सुभागी, गौरी — ओ स्तब्ध रहि गेलाह।

"ई... ई नाम सभ केकर अछि?" ओ पुछलनि, स्वरमे एकटा नव विनम्रता।

"हमर सभक पुरखाक, पंडितजी," वसुन्धरा बजलि, "आ ओहन लोकक जिनका जीवनमे न्याय नहि भेटल, मुदा जिनकर नाम हम सभ मरलाक बादो नहि बिसरैत छी।"

यादवानन्द बहुत काल चुप रहलाह। फेर, धीरे, ओ बजलाह, "वसुन्धरा, हमर सम्पूर्ण जीवन एकटा पंजी सेवामे बीतल अछि जे हजारो नाम राखैत अछि — मुदा से पंजी अहाँक टोलाक एकोटा नाम नहि राखैत। हमरा आइ धरि ई प्रश्न कहियो नहि उठल छल जे ई कोन प्रकारक न्याय थिक। आइ, एहि गाछ लग, हमरा ई प्रश्न पहिल बेर उठि रहल अछि, आ हमरा एकर उत्तर नहि बुझल अछि।"

बूढ़बा, जे केवल वसुन्धरा आ सावित्रीक वंशज सुनि सकैत छल, ओहि राति यादवानन्दक हेतु सेहो, पहिल बेर, अपन आवाज खोललनि — एकटा प्रयोग, जकर परिणाम बूढ़बा स्वयं निश्चित नहि छलाह। "पंजीकार," ओ धीरे बजलाह, आ यादवानन्द चौंकि कऽ चारू कात तकलनि। "हम अहाँकेँ कोनो शास्त्र नहि

सिखायब। हम अहाँसँ एतबे कहब — अहाँक पंजी कुल आ मर्यादाक अभिलेख राखैत अछि। हमर स्मृति सत्य आ प्रेमक अभिलेख राखैत अछि। दुनू आवश्यक अछि, मुदा जँ केवल पहिल रहत, दोसर बिनु, तँ मिथिलाक आधा स्मृति सदिखनक हेतु अन्हारमे रहि जायत।"

यादवानन्द ओहि राति निन्न नहि सकलाह। भोरे, विदा भेलाक पहिने, ओ अपन झोरासँ एकटा छोट, कोरा कागचक पोथी निकाललनि — ओकर अपन व्यक्तिगत नोटबुक, आधिकारिक पंजीसँ भिन्न — आ वसुन्धराकेँ कहलनि, "हमरा हर नाम कहू जकरा अहाँ जनैत छी — जतेक पाछू धरि अहाँक स्मृति जाइत होइक। हम एकरा अपन व्यक्तिगत अभिलेखमे राखब। ई आधिकारिक पंजी नहि होयत, आ शायद कहियो नहि होयत। मुदा जाबे धरि हम जीबैत छी, ई नाम, कमसँ कम एकटा कागचपर, सुरक्षित रहत।"

वसुन्धरा तीन घंटा धरि नाम कहलक — पीढ़ी–दर–पीढ़ी, सोमर आ रत्नासँ शुरू कऽ, अपन बेटी धरि — आ यादवानन्द, गम्भीरतासँ, हर नाम, हर सम्बन्ध, हर छोट कथा लिखलनि। जखन ओ विदा भेलाह, ओ बजलाह, "हमरा नहि बुझल ई पोथी भविष्यमे केकरो हाथ लागत कि नहि। मुदा हम अहाँकेँ वचन दैत छी — जाबे धरि हम जीबैत छी, हम एहि नामकेँ अपन आधिकारिक पंजीक बराबर आदरसँ राखब, चाहे संसार एकरा कहियो नहि देखय।"

ओहि दिन, पंजीक बाहर छूटल नाम सभक हेतु, गाम एकटा गीत गबैत छल —
पंजीमे जकर नाम नहि हे, से गामसँ बाहर नहि,
कागच जकरा छोड़लक रे, तकरा माटि अपना लेलक।
जे दलित, जे स्त्री, जे गरीब, कागचसँ हेराएल;
मुदा जे गाम मन राखल, से पंजीसँ पैघ भेल।
कागच सीमित हे, माटि विशाल रे —

जे नाम पंजीसँ छूटल, तकरो गामक स्मृति धेने।

अध्याय [–७८] पर टिप्पणी

पंजी प्रबन्ध आ सामाजिक बहिष्करण

मिथिलाक पंजी प्रबन्ध व्यवस्था, अपन जटिल आ सूक्ष्म वंशावली–लेखन परम्पराक हेतु विद्वानक बीच प्रशंसित रहल अछि, मुदा ई व्यवस्था ऐतिहासिक रूपसँ मुख्यतः मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण–कायस्थ कुलक अभिलेखन तक सीमित रहल, जकर परिणामस्वरूप मिथिलाक अधिकांश जनसंख्या — शूद्र, दलित, आदिवासी समुदाय — एहि आधिकारिक स्मृति–व्यवस्थासँ बाहर रहि गेल। अध्याय [–७८] एहि ऐतिहासिक असमानताकेँ प्रत्यक्ष रूपसँ सम्बोधित करैत अछि, आ यादवानन्द झाक चरित्रद्वारा एकटा काल्पनिक, मुदा प्रतीकात्मक रूपसँ सार्थक, प्रत्युत्तर प्रस्तुत करैत अछि — एकटा "छाया–पंजी" जे आधिकारिक अभिलेखक बाहर, मुदा ओतबे निष्ठासँ, राखल जाइत अछि। लेखकक अपन पंजी–अनुसंधान कार्य (वाल्यूम–२, खण्ड–२, खण्ड–३ आदिक पंजी–पार्सिंग) एहि अध्यायक पृष्ठभूमिमे अछि, यद्यपि एहि अध्यायक पात्र आ घटना पूर्णतः काल्पनिक थिक।

अध्याय [–७७] (सतहत्तर)

बूढ़बाक मौन

बूढ़बा जखन चुप, तखन सभसँ बेसी बाजै— मौन सेहो एकटा उत्तर छी।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। दस बरख बीति गेल अछि। एहि अध्यायमे, पहिल बेर, बूढ़बा स्वयं टूटय लागैत छथि — आ गामकेँ बुझय पड़ैत अछि जे साक्षी बननिहारकेँ सेहो, कहियो–कहियो, साक्षी चाही।)

दस बरखमे, वसुन्धराक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटी कौशल्यापर आयल। कौशल्या, अपन पूर्वज सभक जकाँ, अमावस्याक कबड्डी सम्हारैत छलि, आ गामक जीवन अपन सामान्य लयमे चलैत रहल — मुदा धीरे–धीरे, एकटा बात कौशल्याकेँ चिंतित करय लागल। बूढ़बाक आवाज, जे पहिने स्पष्ट, तत्पर, आ हर प्रश्नक उत्तर देबय तैयार रहैत छल, आब धीमा, थकल, आ कहियो–कहियो पूर्ण चुप रहय लागल छल।

एक अमावस्याक राति, कबड्डी शुरू भेल, मुदा बूढ़बा निर्णायकक भूमिकामे नहि आयलाह। बच्चा सभ प्रतीक्षा केलक, फेर आपसमे कानाफूसी करय लागल

— "बूढ़बा किएक नहि आयल? " कौशल्या, भयभीत, पीपरक जड़ि लग गेलि। "बूढ़बा, अहाँ ठीक छी? "

बहुत काल बाद, एकटा अत्यन्त क्षीण आवाज उठल, जेना बहुत दूरसँ, बहुत गहींरसँ आबि रहल होइक। "कौशल्या... हमरा माफ करू। हम... हमरा आइ राति नाम मोन नहि पड़ि रहल अछि। एतेक बरख, एतेक नाम... हुलासा... वा शायद हुलासी... सुखदेव, वा सुरेन्द्र... हम... हमरा डर लगैत अछि जे हम भुला रहल छी, कौशल्या। जे काज हम सभसँ बेसी करय हेतु जन्म लेने रही, ओ काज स्वयं हमरासँ छूटि रहल अछि।"

कौशल्या स्तब्ध रहि गेलि। सैकड़ों बरखमे पहिल बेर, बूढ़बा — जे अपरिवर्तनीय, अटूट, सदिखन–स्मरणशील मानल जाइत छलाह — भय आ असहायता व्यक्त कऽ रहल छलाह।

गामक लोक भयभीत भऽ गेल। "जँ बूढ़बा भुला जायत, तँ हमरा सभक नाम केकरा लग रहत? " एकटा वृद्ध स्त्री पुछलक। मुखिया, गामक बुढ़–पुरान लोकनि, आ सोनमा माझिनक वंशज — जे अखनहु धरि, पीढ़ी–दर–पीढ़ी, कमला–बलानक ओहि दूरस्थ भाग लग रहैत छल — सभटा जुटि, ई विकट समस्यापर विचार करय लागल।

सोनमा माझिनक वंशज, एकटा वृद्ध स्त्री नाम गोदावरी, कौशल्याकेँ एकटा प्रश्न पुछलक जे केओ आइ धरि नहि पुछने छल — "कौशल्या, अहाँ सभ बूढ़बासँ कतेक नाम माँगलहुँ, कतेक बरखमे? हजारो, शायद लाखो। मुदा अहाँ सभ कहियो बूढ़बाक अपन नाम — बुधुआ — केकरो सोझाँ, पूर्ण आदरसँ, बजने छी?

की अहाँ सभ कहियो हुनकर कथा सुनलहुँ, हुनकर हेतु शोक मनौलहुँ, हुनकर हेतु गीत गओलहुँ, जेना हुनका हजारो लोकक हेतु करय पड़ल? "

सन्नाटा छाइ गेल। कौशल्या, आ गामक सभ, ई बात मानय बाध्य भेल जे ई सत्य छल। बुधुआ — बूढ़बा — जे सैकड़ों बरखसँ आर सभकेँ बचबैत आयल छल, स्वयं कहियो पूर्ण रूपसँ, आदरसँ, "बचाओल" नहि गेल छल। ओ सदिखन दैत छल, कहियो पबैत नहि छल।

"तँ हम सभ की करी? " कौशल्या पुछलक, आँखिमे आँसू।

गोदावरी मुस्कुरेलि, एकटा शांत, गहींर मुस्कान। "जे बूढ़बा हमरा सभक हेतु हर अमावस्या करैत छथि, से हम सभ आइ राति हुनकर हेतु करब। हम सभ कबड्डी खेलब — मुदा आइ राति, पारी बूढ़बाक नामक हेतु होयत।"

ओहि राति, गामक हर मनुष्य — वृद्ध, युवा, बच्चा, चर्मकार टोला, ब्राह्मण-टोला, सभटा — पीपर लग जुटल, ई बात बिनु भेद केने जे को कोन टोलाक अछि। कौशल्या, दीप जरा, ऊँच स्वरमे बजलि, "बुधुआ! वाचस्पति मिश्रक सेवक! हुलासाक साक्षी! जीवन्तीक साक्षी! सुखदेवक, रत्नाक, मालतीक, सुभागीक, गौरीक साक्षी! अहाँ, जे सैकड़ों बरख धरि हर नाम धेने आयल छी, आइ राति हमहूँ अहाँक नाम धरैत छी — बुधुआ, बूढ़बा, जे प्रेमक हेतु अपन मनुष्यता त्यागि देलनि, जे कहियो अपन हेतु किछु नहि माँगलनि। हम अहाँक कथा जनैत छी, आ हम एकरा कहियो नहि बिसरब।"

एक-एक कऽ, गामक हर स्त्री-पुरुष आगू आयल, बूढ़बाक कथाक एकटा-एकटा अंश दोहरबैत — हुनकर सेवाक तीस बरख, हुनकर जलसमाधि, हुनकर पहिल बाढ़िक असहायता, हुनकर सोनमा माझिन लगक यात्रा, हुनकर यशपतिक

हेतु दुःख। बच्चा सभ, बिनु पूर्ण बुझने, तइयो श्रद्धासँ, "बूढ़बा–बूढ़बा" बजैत, पीपरक चारू कात नाचय लागल — कोनो औपचारिक कबड्डी नहि, केवल एकटा सहज, आनंदमय स्मरण।

पीपरक जड़िसँ, धीरे–धीरे, एकटा हल्का, स्थिर इजोत उठल — पहिनेसँ बेसी स्पष्ट, पहिनेसँ बेसी दृढ़। बूढ़बाक आवाज, जखन ओ अन्ततः बजलाह, आब काँपैत नहि छल। "गोदावरी सही छलीह," ओ बजलाह, स्वरमे एकटा नव शक्ति। "हम भुला नहि रहल छलहुँ, कौशल्या। हम केवल... थाकल छलहुँ, ओहि भारसँ जे कोनो एक दिशामे बहुत काल धरि ढोयल जाइत अछि, बिनु कहियो दोसर दिशासँ किछु प्राप्त केने। आइ राति, अहाँ सभ हमरा ओ दोसर दिशा देखौलहुँ। हमरा आब बुझायल — साक्षी बनब एकतरफा काज नहि थिक। जँ ई एकतरफा रहत, तँ ई अन्ततः साक्षीकेँ स्वयं खाली कऽ देत। मुदा जँ ई दुइ दिशासँ बहय, तँ ई अनन्त काल धरि चलि सकैत अछि।"

ओहि राति सँ, गामक अनुष्ठानमे एकटा नव प्रथा जुड़ल — साल भरिमे एक बेर, फागुनक पूर्णिमापर, गामक लोक "बूढ़बा–स्मरण" मनाबय लागल, जतय बूढ़बाक अपन कथा, आदरसँ, गामक हर पीढ़ीकेँ फेर सुनाओल जाइत छल, ताकि साक्षी बननिहार स्वयं कहियो असाक्षित, कहियो अकेल, नहि रहि जाइथ।

ओहि दिन, बूढ़बाक मौन देखि, गामक लोक एकटा फकरा गबैत छल —

बूढ़बा जखन चुप हे, तखन सभसँ बेसी बाजै,
मौन सेहो रे, एकटा उत्तर छी।
जे बोलमे नहि अँटल, से चुप्पीमे कहल;
जे कान लगा सुनल, से मौनोमे बात बुझल।
शब्द थाकि जाय हे, मौन गहींर बाजै रे —
जे बूढ़बाक मौन बुझल, से आधा कथा जानि गेल।

अध्याय [–७७] पर टिप्पणी

देखभाल करनिहारक थकान आ पारस्परिकताक आवश्यकता

अध्याय [–७७] एकटा मनोवैज्ञानिक यथार्थकेँ कथाक रूप दैत अछि जकरा आधुनिक भाषामे कहियो–कहियो "करुणा–थकान" (compassion fatigue) कहल जाइत अछि — जे मनुष्य (वा आत्मा) निरन्तर, एकतरफा रूपसँ दोसराक बोझ ढोइत अछि, बिनु कहियो अपन बोझ बँटाओल जेबाक अनुभव केने, ओ अन्ततः स्वयं क्षीण भऽ सकैत अछि, चाहे ओकर इरादा कतेक नीक होइक। बूढ़बाक अस्थायी "मौन" आ ओकर निवारण — सामुदायिक, पारस्परिक स्मरणद्वारा — ई सुझाबैत अछि जे साक्षी–भाव, न्याय, आ स्मृति–रक्षाक कार्य कहियो एक व्यक्ति (वा एक संस्था) पर स्थायी रूपसँ नहि छोड़ल जा सकैत; ई सामूहिक उत्तरदायित्व होयब चाही, जकरा भार साझा कएल जाए।

अध्याय [–७६] (छिहत्तर)

नारिकेल पातक पहिल पाठ

पहिल पाठ पातपर—नाम केना लिखल जाइ— जे पात नाम राखै, से गाछ इतिहास राखै।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। कौशल्याक बेटी, नाम मंदाकिनी, अपन नानी सभक ज्ञानकेँ आगू बढ़बैत, एकटा नव विचार लऽ कऽ आबैत छथि — जकर नाम, बहुत आगू, "नारिकेल पात पाठशाला" रूपमे जानल जायत।)

मंदाकिनी, कौशल्याक बेटी, बचपनहि सँ एकटा अजीब असंतोष अनुभव करैत छलि। ओ जनैत छलि — यादवानन्द झाक कथाद्वारा, हरिपति नामक कविक कथाद्वारा — जे हुनकर परिवारक इतिहास आब कागचपर, आ पंजीमे, सुरक्षित छल। मुदा ओ ई सेहो जनैत छलि जे टोलाक एकोटा स्त्री, एकोटा पुरुष, स्वयं ओ अक्षर पढ़ि नहि सकैत छल जकरा अन्यद्वारा हुनकर हेतु लिखल गेल छल। "हमरा सभक कथा अन्यक हाथमे अछि," ओ एक दिन अपन माएसँ कहलक, "मुदा हमरा सभक अपन आँखिमे नहि।"

गामक ब्राह्मण–टोलामे एकटा पाठशाला छल, जतय संस्कृत आ मैथिली दुनू पढ़ाओल जाइत छल — मुदा ओतय केवल उच्च–जातिक बालक जाइ सकैत छल, आ बालिका कोनो जातिक हो, ओतय स्वागत नहि छलि। "हमरा सभक बच्चा कतय पढ़त? " मंदाकिनी पुछलक।

समस्या दोसर सेहो छल — कागच आ ताड़पत्र महग छल, आ चर्मकार टोलाक कोनो परिवार लग एतेक साधन नहि छल जे हर बच्चाकेँ लेखन–सामग्री देल जा सकय।

एक दिन, मंदाकिनी अपन आँगनमे बैसल, एकटा सुखल नारिकेल पात हाथमे लेने, बिनु सोचने, ओहिपर एकटा छड़ीसँ रेखा खिंचय लागलि। पात सूखल मुदा मजगूत छल, आ रेखा साफ उभरि आयल, जेना पातक भीतरी हरियर परत आ बाहरी सुखलपनक बीच एकटा प्राकृतिक अन्तर होइक जे स्याहीक जरूरति बिनु सेहो अक्षर देखा सकैत छल।

"माए!" ओ चिचिआएलि। "देखू! हम नारिकेल पातपर लिखि सकैत छी!"

कौशल्या आयलि, देखलक, आ मुस्कुराएलि — ओ मुस्कान जे बहुत पीढ़ीसँ, बहुत त्रासदीसँ गुजरि, आब आशाक स्वादमे बदलि गेल छल। "मंदाकिनी, गढ़ नारिकेलमे कोन चीजक अभाव नहि? नारिकेलक गाछ! अहाँ एकटा नव विचार पओलहुँ।"

अगिला सप्ताह, मंदाकिनी आ ओकर सहेली सभ, सुखल नारिकेल पात इकट्ठा कऽ, ओकरा साफ कऽ, आ चर्मकार टोलाक खुल्ला जगहमे — जतय पहिने केवल ढोल आ मृदंग सुखाओल जाइत छल — पहिल पाठ शुरू केलक। बच्चा सभ, लड़का आ लड़की दुनू, बिनु जातिक भेदक (किएक तँ ब्राह्मण–

टोलाक किछु गरीब परिवार सेहो अपन बच्चाकेँ यहीं पठाबय लागल, अपन बच्चाकेँ महग पाठशालामे नहि पठा सकबाक कारण), नारिकेल पातपर अक्षर खिंचय सिखलक।

बूढ़बा, जखन ई समाचार सुनलनि, तँ हुनकर आवाजमे एकटा नव उत्साह छल। "मंदाकिनी," ओ पीपर लग बजलाह, "अहाँ जे केलहुँ, से हमरा सभक सम्पूर्ण कथाक अगिला डेग थिक। हुलासा अपन नाम प्रतिलिपिपर नहि लिखा सकलि। रत्ना अपन जड़ी–बूटीक ज्ञान कहियो कागचपर नहि उतारि सकलि। गौरी, सावित्री, वसुन्धरा — सभटा अपन कथा अन्यक मुँहसँ, अन्यक हाथसँ, बचौलक। मुदा अहाँक बच्चा सभ, आब, अपन कथा अपने लिखताह।"

"बूढ़बा," मंदाकिनी बजलि, "की ई अनुष्ठान, ई कबड्डी, ई सभटा — की एकर आवश्यकता कम भऽ जायत, जँ हम सभ अपन कथा स्वयं लिखय सकब?"

बूढ़बा एक क्षण सोचलनि। "नहि, मंदाकिनी। लिखब आ साक्षी बनब दुइ भिन्न काज थिक, ठीक ओहिना जेना पंजी आ हमर स्मृति भिन्न छल। जे लिखल जाइत अछि, ओकरा कोइयो जरा सकैत अछि, फाड़ि सकैत अछि, वा केवल पढ़बाक इच्छा नहि रखि सकैत अछि। मुदा जे प्रेमसँ, मुँह–दर–मुँह, पीढ़ी–दर–पीढ़ी, याद कएल जाइत अछि, ओकरा नष्ट करब बेसी कठिन। अहाँकेँ दुनू चाही — लिखल कथा आ जीवित स्मृति, एक दोसराक विकल्प नहि, अपितु एक दोसराक रक्षक।"

नारिकेल पात पाठशाला, कालक्रममे, गढ़ नारिकेलक एकटा स्थायी संस्था बनि गेल — पहिने एकटा छोट, अनौपचारिक जमघट, फेर एकटा मान्यता–प्राप्त परम्परा, जतय हर पीढ़ीक बच्चा, जाति आ लिंगक भेद बिनु, अक्षर सिखल।

मंदाकिनी स्वयं, बुढ़ापा धरि, हर भोरे पातसभ बाँटैत, नव–नव बच्चाकेँ पहिल अक्षर सिखबैत रहलि।

ओहि दिन, नारिकेल पातपर पहिल अक्षर लिखैत, बच्चा सभ एकटा गीत गबैत छल —

पहिल पाठ पातपर हे, नाम केना लिखल जाइ,
जे पात नाम राखै रे, से गाछ इतिहास राखै।
अ सँ आ, क सँ ख, नन्हा हाथ लिखय;
जे आइ अक्षर सिखल, से कालि नाम बचाबय।
पात हरियर हे, अक्षर थिर रहै रे —
जे नारिकेल पातपर लिखल, से बारह सय बरख पढ़ल गेल।

अध्याय [–७६] पर टिप्पणी

सामग्रीक अभावसँ नवाचार — शिक्षाक लोकतांत्रीकरण

अध्याय [–७६] एकटा महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तकेँ कथाक रूप दैत अछि — जे संसाधनक अभाव कहियो–कहियो नवाचारक जनक बनि सकैत अछि। महग कागच आ ताड़पत्रक अभावमे, स्थानीय, सहज उपलब्ध सामग्री (नारिकेल पात) क उपयोगद्वारा शिक्षाकेँ सुलभ बनाएब, ऐतिहासिक रूपसँ कतेको हाशियाकृत समुदायमे वास्तविक रूपसँ घटित घटना अछि। "नारिकेल पात पाठशाला" नाम, जकरा पाठक खण्ड–१ मे आधुनिक गढ़ नारिकेलक एकटा केंद्रीय संस्थाक रूपमे पहिचानताह, एहि अध्यायमे अपन मूल, ऐतिहासिक (यद्यपि काल्पनिक) उत्पत्ति पबैत अछि — ई प्रदर्शित करैत जे आधुनिक संस्था प्रायः शताब्दियों–पुरान आवश्यकता आ नवाचारक निरन्तरता होइत अछि, अकस्मात् आविष्कार नहि।

अध्याय [–७५] (पचहत्तर)

तर्कक पहिल विद्रोह

जे प्रश्न पुछलक, से गुरुकेँ हरा नहि, जगा देलक— तर्कक पहिल विद्रोह, ज्ञानक पहिल भोर।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। नारिकेल पात पाठशालाक फल अप्रत्याशित रूपसँ सेहो पाकल — पढ़ल–लिखल एकटा नव पीढ़ी, जे प्रश्न पुछय सिखलक, आब अपन सभसँ पुरान परम्पराकेँ प्रश्न पुछय लागल।)

मंदाकिनीक पाठशाला तीन पीढ़ी धरि फलल–फूलल। गामक बच्चा — चर्मकार, ब्राह्मण, कायस्थ, सभटा — आब अक्षर पढ़ि सकैत छल, हिसाब लगा सकैत छल, आ किताबी ज्ञानक स्वाद चाखि चुकल छल। मुदा शिक्षाक संग एकटा नव प्रवृत्ति सेहो आयल — प्रश्न पुछबाक आदति, आ कहियो–कहियो, पुरान उत्तरसँ असंतुष्ट रहबाक साहस।

मंदाकिनीक परपोता, नाम विश्वनाथ (यशपतिक पीड़ितसँ भिन्न, संयोगवश एकहि नाम), पाठशालाक सबसँ तेज छात्र छल। ओ नगरमे, एकटा नव स्थापित विद्यालयमे, पढ़बाक हेतु दुइ बरख बितौने छल, जतय ओ तर्कशास्त्र, गणित, आ नव विचारसँ परिचित भेल छल। जखन ओ गाम घुरल, तँ ओकर मोनमे अनेक प्रश्न छल, आ सबसँ पैघ प्रश्न बूढ़बाक विषयमे छल।

एक अमावस्याक राति, जखन कबड्डी शुरू भेल, विश्वनाथ खेलमे भाग नहि लेलक। ओ किनारे ठाढ़ भऽ, बाँहि बान्हने, देखैत रहल। कबड्डीक बाद, ओ अपन दादी — गामक वर्तमान अनुष्ठान–रक्षिका — लग गेल आ बजल, "दादी, हम अहाँ सभकेँ किछु कहय चाहैत छी, आ हमरा डर अछि जे ई अहाँकेँ दुःख देत। मुदा हम आब एहि खेलमे विश्वास नहि करैत छी। ई... ई एकटा सुन्दर परम्परा थिक, मुदा एकटा परम्परा मात्र। बूढ़बा, मूल गोहि — ई सभटा शायद हमरा सभक पुरखाक कल्पना छल, कोनो वास्तविक कारण नहि जे हमरा सभ बाढ़िसँ, अन्यायसँ, वा दुर्भाग्यसँ बचल।"

दादी स्तब्ध रहि गेलि। "विश्वनाथ, तोहर परदादी बूढ़बाकेँ अपन आँखिसँ देखने छलि। हमरा माए हुनकर आवाज सुनने छलि।"

"दादी, मनुष्यक स्मृति भ्रामक होइत अछि, आ लोककथा पीढ़ी–दर–पीढ़ी बढ़ैत–चढ़ैत जाइत अछि। हम अहाँकेँ अनादर नहि करय चाहैत छी, मुदा हम अपन आँखिसँ, अपन तर्कसँ, संसारकेँ देखय चाहैत छी।"

ई बात गाममे तेजीसँ फैलल, आ किछु आर युवा, विश्वनाथसँ प्रभावित भऽ, कबड्डीमे भाग लेब बन्द कऽ देलक। अमावस्याक राति, पीपर लग जुटनिहार भीड़ पहिल बेर, सैकड़ों बरखमे, छोट होय लागल।

बूढ़बा, ई देखि, दुःखी नहि भेलाह, जेना गामक लोक आशा करैत छल। "एकरा आबय दिअ," ओ दादीसँ कहलनि। "विश्वनाथ गलत नहि छथि जे ओ प्रश्न पुछैत छथि। प्रश्न पुछब हमेशा गलत नहि होइत — ई त वएह काज थिक जे वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य, गंगेश उपाध्याय सभ करैत छलाह। मुदा हम एकटा बात जनैत छी जे विश्वनाथ अखनहु नहि जनैत छथि।"

किछु मास बाद, गामक हेतु एकटा वास्तविक परीक्षा आयल — फेर एक बेर, कमला–बलानक ओहि दूरस्थ, अनाम भाग सँ, पशु–धन गायब होमय लागल, ठीक ओहिना जेना सोनमा माझिनक जमानामे भेल छल। मुदा एहि बेर, कबड्डी अनियमित रूपसँ होइत छल, कमजोर उपस्थितिक संग, आ भेंट कमजोर पड़ि गेल छल।

विश्वनाथ, अपन तर्कशीलताक बादो, ई सम्बन्ध देखि विचलित भेल। ओ स्वयं जाँच करय जंगल दिस गेल, ई सिद्ध करय जे कोनो साधारण, तार्किक कारण — भेड़िया, चोर, वा प्राकृतिक आपदा — एहि हानिक पाछू छल। मुदा जे ओ ओतय देखलक, ओकर सम्पूर्ण तार्किक ढाँचाकेँ हिला देलक — पानिक कातमे, वएह पैघ, अजीब निशान, जकर व्याख्या कोनो परिचित पशु सँ सम्भव नहि छल।

ओ भयभीत, गाम घुरि आयल, आ सीधा पीपर लग गेल। "बूढ़बा," ओ बजल, स्वरमे पहिल बेर असुरक्षा, "हम अहाँकेँ देखि नहि सकैत छी, मुदा हमरा बुझल अछि जे अहाँ हमर बात सुनि रहल छी। हम... हमरा नहि बुझल अछि जे हमरा की मानय पड़त। मुदा हम ई मानि सकैत छी जे जँ एकटा परम्परा, जकर हमरा पूर्ण वैज्ञानिक व्याख्या नहि बुझल अछि, वर्षों–वर्ष गामकेँ सुरक्षित राखने अछि, तँ ओकरा अस्वीकार करब — बिनु कोनो वैकल्पिक सुरक्षाक — बुद्धिमानी नहि, अहंकार थिक।"

बूढ़बा धीरे बजलाह, "विश्वनाथ, हम अहाँसँ ई नहि माँगब जे अहाँ अन्धविश्वाससँ हमरापर विश्वास करू। हम अहाँसँ एतबे माँगब — अहाँ अपन आँखिसँ जे देखलहुँ, ओकरा ईमानदारीसँ स्वीकार करू, आ फेर स्वयं निर्णय लिअ जे कबड्डी अन्धविश्वास थिक, कि एकटा एहन प्रणाली जकरा अहाँक शास्त्र अखनहु पूर्ण रूपसँ बुझि नहि सकल अछि।"

विश्वनाथ ओहि अमावस्यापर पहिल बेर कबड्डीमे लौटल, आ अपन संग किछु आर युवाकेँ सेहो आनल। ओ खुलेआम स्वीकार केलक, "हमरा एकरा पूर्ण रूपसँ बुझल नहि, मुदा हम एकरा सम्मानसँ जारी राखय चाहैत छी, जाबे धरि हमरा बेहतर उत्तर नहि भेटैत।" ई उत्तर दादीकेँ पूर्ण संतोष नहि देलक, मुदा ई पर्याप्त छल — किएक तँ, जेना बूढ़बा बादमे कहलनि, "आस्था आ सम्मान एकहि वस्तु नहि थिक, मुदा दुनू, कहियो–कहियो, एकहि काज कऽ सकैत अछि।"

ओहि दिन, गुरुकेँ प्रश्न पुछैत शिष्यक साहस देखि, सभा एकटा गीत गबैत छल —

जे प्रश्न पुछलक हे, से गुरुकेँ हरा नहि, जगा देलक,
तर्कक पहिल विद्रोह रे, ज्ञानक पहिल भोर।
जे रटलक, से भुलल; जे पुछलक, से बुझल;

जे शिष्य साहस केलक, से गुरुकेँ आगू बढ़ौलक।

प्रश्न दीप छी हे, अन्हार तोड़ै रे —

जे पुछब सिखल, से गंगेशक बीया बनल।

अध्याय [–७५] पर टिप्पणी

परम्परा आ तर्कशीलताक बीच अन्तर–पीढ़ीगत द्वन्द्व

अध्याय [–७५] एकटा सार्वभौमिक सामाजिक घटनाकेँ कथाक रूप दैत अछि — शिक्षाक प्रसारसँ उत्पन्न तार्किक–वैज्ञानिक दृष्टिकोण आ पारम्परिक, अनुभव–आधारित लोक–ज्ञानक बीचक तनाव, जे प्रायः प्रत्येक समाजमे, प्रत्येक पीढ़ी–परिवर्तनक संग, कोनो–न–कोनो रूपमे प्रकट होइत अछि। कथा जान–बूझि कऽ कोनो एक पक्षकेँ पूर्णतः सही नहि ठहरबैत — विश्वनाथक संशय वैध अछि, आ बूढ़बा स्वयं एकरा स्वीकार करैत छथि; तथापि, जंगलक अनुभवजन्य प्रमाण सेहो नकारल नहि जा सकैत। अन्तिम समाधान — "सम्मानसँ जारी राखब, जाबे धरि बेहतर उत्तर नहि भेटय" —– विज्ञान आ परम्पराक बीच एकटा व्यावहारिक, द्वन्द्वरहित सह–अस्तित्वक मॉडल प्रस्तुत करैत अछि।

अध्याय [–७४] (चौहत्तर)

गाछक रोग

एक पातक रोग सम्हारू, नहि तँ गाछ भरि फैलत— गामक रोगो एहिना, एक चुपसँ शुरू होइ।

— गढ़ नारिकेल

(एकटा उपन्यास–अंश। सैकड़ों बरखक पीपर स्वयं आब बूढ़ भऽ चुकल अछि — आ जखन ओकर पात पीयर पड़य लागैत अछि, गामकेँ पहिल बेर बुझय पड़ैत अछि जे बूढ़बाक अस्तित्व स्वयं एहि गाछक स्वास्थ्यसँ बान्हल अछि।)

विश्वनाथक पोता, नाम केदार, जखन गामक अनुष्ठान–रक्षिका बनल (किएक तँ ई परम्परा आब स्त्री आ पुरुष दुनूकेँ, योग्यताक आधारपर, सौंपल जाय लागल छल), तँ ओ सबसँ पहिने ई नोटिस केलक — पीपरक साक्षी–गाछक उत्तरी शाखाक पात पीयर पड़य लागल छल, आ छालमे किछु ठाम काली, गीली दाग उभरय लागल छल।

"बूढ़बा," केदार चिंतित स्वरमे पुछलक, "अहाँक गाछ बीमार लगैत अछि। की ई... की ई अहाँकेँ सेहो प्रभावित करैत अछि?"

बूढ़बाक आवाज, जे बरख–दर–बरख स्थिर आ स्पष्ट रहल छल, ओहि साँझ किछु कमजोर सुनाइ पड़ल। "हँ, केदार। हम ई गाछसँ बान्हल छी, ठीक ओहिना जेना अहाँक देह अहाँक साँससँ बान्हल अछि। ई गाछ सैकड़ों बरख हमरा संग जीबल अछि। शायद... शायद एकर आयु आब पूर्ण होय जा रहल अछि।"

गाममे कोहराम मचल। "जँ गाछ मरि गेल, तँ बूढ़बाक की होयत? जँ बूढ़बा नहि रहताह, तँ हमरा सभक नाम केकरा लग रहत?" ई प्रश्न हर घरमे पुछल जाय लागल।

केदार, अपन पुरखा विश्वनाथक तर्कशीलता आ अपन नानी सभक श्रद्धा दुनू विरासतमे पओने, एकटा नव रस्ता खोजलक। ओ नगरसँ एकटा वृक्ष–वैद्य — जे नव विद्यामे वृक्षक रोग आ ओकर उपचार पढ़ने छल — बजा आनलक। वृक्ष–वैद्य, गाछक जड़ि, छाल, आ पातक सूक्ष्म जाँच केलाक बाद, कहलक, "ई गाछ किसिम–किसिमक कीड़ाक शिकार भऽ रहल अछि, जे छालक भीतर घर बना, धीरे–धीरे गाछकेँ भीतरसँ खोखला करैत अछि। ई असाध्य नहि, मुदा एकर उपचार धैर्य आ निरन्तर देखभाल माँगैत अछि।"

एहि उपचारक हेतु, गामक हर टोला — चर्मकार, ब्राह्मण, कायस्थ, धीवर, सभटा — एक संग काज करय लागल। सोनमा माझिनक वंशज, गोदावरीक बेटी, गाछक जड़िक आसपासक माटिक पुरान, परम्परागत उपचार सिखौलनि — कोन जड़ी–बूटी, कोन प्राकृतिक तेल, गाछक जड़िकेँ मजगूत करैत अछि। वृक्ष–वैद्य, अपन आधुनिक विद्यासँ, कीड़ाकेँ नष्ट करबाक ठीक विधि बतौलनि, बिनु गाछकेँ हानि पहुँचौने। बच्चा सभ, नारिकेल पात पाठशालाक शिक्षासँ, गाछक स्वास्थ्यक दैनिक रिकॉर्ड राखय लागल — कोन शाखा नीक भऽ रहल अछि, कोन शाखामे अखनहु समस्या अछि।

मास–दर–मास, गाछ धीरे–धीरे स्वस्थ होमय लागल। मुदा एहि प्रक्रियामे, बूढ़बा स्वयं एकटा अनुभव सँ गुजरलाह जकरा ओ पहिने कहियो नहि जनने छलाह — कमजोरीक अनुभव, आ ओहि कमजोरीक बीच, गामक हर हाथक सहायता।

"केदार," बूढ़बा एक साँझ बजलाह, स्वरमे एकटा नव विनम्रता, "हम बरख–दर–बरख अहाँ सभकेँ याद दियाबैत रहलहुँ जे कोनो नाम स्थायी नहि, कोनो देह अमर नहि। मुदा हम स्वयं, कहियो–कहियो, ई बिसरि जाइत छलहुँ जे हमहूँ, अपन रूपमे, एकटा देहसँ बान्हल छी — ई गाछ। आइ, जखन हमर गाछ बीमार पड़ल, हमरा फेर सँ मोन पड़ल जे साक्षी बनब सेहो अमरता नहि, केवल एकटा लम्बा, नाजुक धागा थिक, जकरा निरन्तर देखभाल चाही।"

एक बरखक भीतर, गाछ पूर्ण रूपसँ स्वस्थ भऽ गेल, ओकर पात फेर सँ गहींर हरियर भऽ गेल। मुदा एहि अनुभवसँ गामकेँ एकटा नव सीख भेटल — जे ओ सभ, जँ अपन अमूल्य निधि — बूढ़बा, गाछ, आ हुनकर सम्पूर्ण स्मृति–परम्परा — केँ सुरक्षित राखय चाहैत छल, तँ केवल श्रद्धा पर्याप्त नहि छल; व्यावहारिक, निरन्तर देखभाल सेहो चाही, ठीक ओहिना जेना कोनो जीवित वस्तुकेँ चाही होइत अछि।

ओहि दिनसँ, गामक हर पीढ़ी, अनुष्ठानक संग–संग, गाछक भौतिक देखभालकेँ सेहो अपन कर्तव्यक अंग बना लेलक — जड़िक सफाई, कीड़ाक जाँच, मौसम अनुसार सुरक्षा। "बूढ़बाक सेवा," गामक कहबी बनल, "केवल नाम बचाएब नहि, गाछकेँ सेहो जीबय देब थिक।"

ओहि दिन, गाछक रोग देखि, बूढ़ किसान एकटा चेतावनीक गीत गबैत छलाह —

एक पातक रोग सम्हारू हे, नहि तँ गाछ भरि फैलत,
गामक रोगो एहिना रे, एक चुपसँ शुरू होइ।
जे पहिने चेतल, से गाछ बचौलक;
जे उपेक्षा केलक, से पूरा बगिया गमौलक।
एक पात कारी भेल हे, तुरत काटि दिअ रे —
जे रोग लुकाओल, से पसरल; जे उघारल, से थम्हल।

अध्याय [–७४] पर टिप्पणी

जीवित स्मारकक देखभालक उत्तरदायित्व

अध्याय [–७४] एकटा व्यावहारिक, मुदा गम्भीर विषयकेँ स्पर्श करैत अछि — जीवित सांस्कृतिक स्मारक (प्राचीन वृक्ष, ऐतिहासिक भवन, वा मौखिक परम्परा) क संरक्षण केवल भावनात्मक श्रद्धासँ सम्भव नहि, अपितु निरन्तर, व्यावहारिक देखभाल माँगैत अछि, जकरा आधुनिक ज्ञान (वृक्ष–विज्ञान) आ परम्परागत ज्ञान (जड़ी–बूटी उपचार) क संयोजनसँ सर्वोत्तम रूपसँ पूर्ण कएल जा सकैत अछि। बूढ़बाक अपन नाजुकताक स्वीकृति — जे ओहो, अन्ततः, एकटा भौतिक आधारपर निर्भर अछि — कथाक दार्शनिक गहराइकेँ आओर बढ़बैत अछि, ई सुझाबैत जे अमरता, चाहे ओ कतेक विस्तृत होइक, कहियो पूर्ण रूपसँ भार–मुक्त नहि होइत।

अध्याय [−७३] (तिहत्तर)

मोहनक धुन

बाँसुरीक धुन हवामे मिलै, तैयो कान ओकरा राखै— जे धुन मन छुबै, से बिसरल नहि जाइ।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: मोहनक पहिल धुन

लोकधुन: बाँसुरी-शोकधुन

बाँसुरीक धुन हवामे मिलै हे, तैयो कान ओकरा राखै,

जे धुन मन छुबै रे, से बिसरल नहि जाइ।

बेटी गेलि, सुर रहि गेल, दुखसँ धुन जनमल,
मोहन ढोल छोड़ि, बाँसुरीमे नाम बसौलक।
पीपर तर बजल पहिल धुन, अमावसक साँझ,
गाम सुनल, कान भरल, आँखि भेल आर्द्र-बाँझ।

हवा लऽ गेल सुर, मुदा हृदयमे रहि गेल,
जे एक बेर मन बसल, से पीढ़ी-पीढ़ी बहल।
शीलावतीक अनुष्ठान संग ई धुन जुड़ल,
हर पीढ़ी नव धुन जोड़ल, नव नाम बचल।

मोहन गेल, धुन रहल हे, नव कण्ठमे जीबल रे,
जे धुनमे नाम बसल, से धुनक संग अमर भेल।
इएह धुन आगू चलल, कथाक आरम्भ बनल,
हर अध्यायक भोरमे, लोकगीत बनि उगल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, दुःखसँ जन्मल एकटा धुन, अनुष्ठानक संग जुड़ि, ओहि परम्पराक बीया बनैत अछि जकरा अहाँ, बहुत आगू, "अध्यायारम्भ लोकगीत" रूपमे भेटब।)

केदारक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटी शीलावतीपर आयल। शीलावतीक जमानामे, चर्मकार टोलाक ढोल–मृदंग निर्माण अपन उत्कर्षपर छल, आ ओहि टोलाक सबसँ प्रतिभाशाली संगीतकार छल मोहन — सोमरक सातम पीढ़ीक वंशज, जकर उँगली ढोलपर एहन जादू रचैत छल जे दूर–दूरक गामसँ लोक ओकर बाजाब सुनय आबैत छल।

मोहनक एकटा छोट बेटी छलि, नाम राधिका, चार बरखक, आ मोहन ओकरा अपन प्राणसँ बेसी प्रेम करैत छल। एक जाड़, राधिका तेज बुखारमे पड़ि गेलि। शीलावती, गामक हर वैद्य, आ स्वयं मोहन, दिन–राति ओकर सेवा केलक,

मुदा बुखार टूटल नहि। पाँचम दिन, राधिका चलि गेलि, अपन पिताक गोदमे, ओकर छोट हाथ मोहनक अंगुरी पकड़ने।

मोहन कतेको सप्ताह धरि अपन ढोल हाथ नहि लगौलक। ओकर घरसँ कोनो आवाज नहि आयल — ने रोदन, ने संगीत। गामक लोक चिंतित छल, मुदा केओ ओकरा किछु कहबाक साहस नहि जुटा सकल।

एक साँझ, अमावस्याक ठीक पहिने, मोहन अपन ढोल उठा, पीपर लग गेल। ओ बहुत काल चुप बैसल रहल, फेर, धीरे–धीरे, अपन उँगलीसँ ढोलपर एकटा हल्का, दुःखपूर्ण थाप बजबय लागल — पहिने अनियमित, फेर धीरे–धीरे एकटा लय बनैत, एकटा धुन जे न पूर्ण रूपसँ शोकगीत छल, न पूर्ण रूपसँ लोरी, अपितु दुनूक बीचक कोनो चीज।

बूढ़बा, ओ धुन सुनि, धीरे बजलाह, "मोहन, ई... ई सुन्दर अछि, आ दुःखद सेहो। अहाँ की बजा रहल छी? "

मोहन, आँखिमे आँसू, मुदा हाथ स्थिर, बजल, "बूढ़बा, हम राधिकाक हेतु एकटा धुन बना रहल छी। हमरा बुझल अछि जे अहाँ हुनकर नाम धेने छी, जेना अहाँ हर नाम धेने छी। मुदा हम चाहैत छी जे ओकर नाम केवल एकटा शब्द नहि रहय — हम चाहैत छी जे ओकर नाम एकटा आवाज बनय, जकरा सुनितहि लोकक हृदय जानि जाय जे ई नाम प्रेमसँ भरल छल।"

शीलावती, ई सुनि, एकटा नव विचार पओलि। "मोहन, की अहाँ हमरा एहि धुनकेँ अनुष्ठानक संग जोड़य मदति करब? हर अमावस्यापर, जखन हम कोनो नाम लैत छी, की एकटा छोट धुन, ओहि नामक कथाकेँ फिट, बजाओल जा सकैत अछि? "

मोहन सहमत भेल। ओ अगिला बरखमे, गामक हर पुरान कथाक हेतु — हुलासाक हेतु, जीवन्तीक हेतु, सुखदेवक हेतु, रत्नाक हेतु — एकटा–एकटा छोट धुन रचलक, प्रत्येक धुन ओहि व्यक्तिक जीवनक भाव पकड़ैत। हुलासाक धुन कोमल, अपूर्ण, बीचहिमे टूटैत जेना ओकर अन्तिम वाक्य टूटल छल। सुखदेवक धुन धीमा, प्रतीक्षापूर्ण, फेर अचानक शांत भऽ जाइत। रत्नाक धुन गर्मजोश, माताक हृदयस्पर्शी।

आ राधिकाक धुन, जे सबसँ पहिने रचल गेल छल, अनुष्ठानक आरम्भमे, हर अमावस्याक राति, बजाओल जाय लागल — एकटा प्रकारक मंगलाचरण, जे कबड्डी शुरू होएबासँ पहिने, सभकेँ ई याद दियबैत छल जे ई खेल, ई अनुष्ठान, अन्ततः प्रेमक विषयमे छल, प्रतिस्पर्धाक नहि।

"बूढ़बा," मोहन एक दिन पुछलक, "की ई ठीक अछि जे हम राधिकाक दुःखकेँ एहि तरहें संगीतमे बदलि देलहुँ? की ई ओकर स्मृतिक अनादर नहि?"

बूढ़बा धीरे बजलाह, "मोहन, हम बरख–दर–बरख शब्दसँ नाम बचाओल। अहाँ धुनसँ बचाओल। शब्द आ धुन दुनू, अन्ततः, एकहि काजक भिन्न रूप थिक — प्रेमकेँ एहन रूप देब जे कालक पार जा सकए। अहाँक दुःख अनादर नहि भेल, ओ रूपान्तरित भेल — आ रूपान्तरण, स्मृतिक हेतु, अनादरसँ बिल्कुल विपरीत थिक।"

कालक्रममे, मोहनक धुन–परम्परा, शीलावतीक अनुष्ठान–व्यवस्थाक संग गहींराई सँ जुड़ि गेल, आ हर पीढ़ीक संगीतकार एहि परम्परामे नव धुन जोड़ैत रहल — नव नाम, नव कथा, नव दुःख, नव आशाक हेतु। ई परम्परा, बहुत आगू, एकटा साहित्यिक रूप लेत जकरा भविष्यक कोनो लेखक "अध्यायारम्भ

लोकगीत" कहताह — हर कथाक आरम्भमे एकटा छोट गीत, ओहि कथाक भावकेँ पहिनहि सँ हृदयमे बसाबय हेतु।

अध्याय [–७३] पर टिप्पणी

शोकसँ कलाक जन्म — संगीतशास्त्रीय आ मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

अध्याय [–७३] एकटा सुपरिचित मानवीय अनुभवकेँ कथाक रूप दैत अछि — गहन व्यक्तिगत शोकक कलात्मक अभिव्यक्तिमे रूपान्तरण, जे लोक–संगीत परम्पराक एकटा सामान्य उत्पत्ति–स्रोत मानल जाइत अछि। मोहनक धुन–परम्परा एहि अध्यायमे "अध्यायारम्भ लोकगीत" क रूपमे स्पष्ट रूपसँ अगिला कृति (खण्ड–१) सँ जोड़ल गेल अछि, जे प्रत्येक अध्यायक आरम्भमे एकटा सम्बन्धित लोकगीत प्रस्तुत करैत अछि। ई अध्याय एहि साहित्यिक तकनीकक काल्पनिक, मुदा भावनात्मक रूपसँ सुसंगत, उत्पत्ति–कथा प्रदान करैत अछि।

अध्याय [–७२] (बहत्तर)

विवाहक साक्षी

बियाहमे आगि साक्षी, गाम साक्षी, नाम साक्षी— जकर बियाह गाम देखलक, तकर वचन पातपर।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: सात फेराक साक्षी

लोकधुन: विवाह-सोहर

बियाहमे आगि साक्षी हे, गाम साक्षी, नाम साक्षी,

जकर बियाह गाम देखलक रे, तकर वचन पातपर।

मड़बा तर आगि जरल, चारू कात गाम,
सात फेरा घुमल जोड़ी, सभक सोझाँ नाम।
माए-बाप, भाइ-बहिन, टोल-पड़ोस ठाढ़,
जे देखल, से गवाह; जे गवाह, से आधार।

सात फेरा, सात वचन, सभक सोझाँ लेल,
जे गाम गवाह बनल, से वचन कहियो नहि टूटल।
कागच ने रहल तखन, गामक आँखि कागच,
जीभपर चढ़ल वचन, से पीढ़ी धरि साँच।

आगि बुझल हे, वचन रहल रे, गाम मन राखल,
जे नाम गाम मन राखल, तकर बियाहक साक्षी अमर।
जे जोड़ी गाम देखल, से जोड़ी नहि हेरायल,
पातपर नाम चढ़ल, पीढ़ी-पीढ़ी गाओल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, पहिल बेर बहुत बरखक बाद, गढ़ नारिकेलमे एकटा विवाह होइत अछि जे गंगेश आ मालतीक कथाकेँ मोन पाड़बैत अछि — मुदा एहि बेर, गामक प्रतिक्रिया भिन्न होइत अछि।)

शीलावतीक पोती, नाम अनुराधा, गामक ब्राह्मण–टोलाक एकटा युवक, नाम गोपीनाथसँ, बचपनहि सँ मित्र छलि — दुनू एक संग नारिकेल पात पाठशालामे पढ़ल, एक संग बूढ़बाक कथा सुनल, एक संग गामक मैदानमे खेलल। जखन ओ सभ बड़का भेल, ई मित्रता प्रेममे बदलि गेल, आ दुनू विवाह करय चाहलक।

अनुराधाक माए, चिंतित, पुछलक, "अनुराधा, अहाँकेँ बुझल अछि जे ई कतेक कठिन होयत? गामक किछु पुरान लोक अखनहु जाति–भेदमे विश्वास करैत छथि।"

अनुराधा मुस्कुराएलि। "माए, हमरा बुझल अछि। मुदा हमरा ई सेहो बुझल अछि जे हमर पुरखा गंगेश उपाध्यायक जीवनक कथा जनैत छथि — कोना ओ मालतीसँ विवाह केलनि, आ कोना समाज ओहि विवाहकेँ बिसरा देलक, केवल हुनकर शास्त्रकेँ याद राखलक। हम नहि चाहैत छी जे हमर कथा ओहिना बिसरा जाए।"

गोपीनाथक पिता, गामक एकटा सम्मानित पंडित, पहिने विरोध केलनि। मुदा जखन ओ पीपर लग गेलाह, बूढ़बासँ बात करय, तँ बूढ़बा हुनका एकटा प्रश्न पुछलनि जकर उत्तर हुनका नहि भेटल। "पंडितजी, अहाँ हुलासाक कथा जनैत छी। अहाँ जीवन्तीक, सुखदेवक, रत्नाक, मालतीक कथा जनैत छी। अहाँ जनैत छी जे एहि गामक हर पैघ त्रासदी, कोनो–न–कोनो रूपमे, ओहि सीमारेखासँ जुड़ल छल जे मनुष्य जाति आ वर्गक बीच खींचैत अछि। तखन अहाँ अपन बेटाक हेतु ओहि सीमारेखाकेँ फेर सँ किएक ठाढ़ करय चाहैत छी, जखन अहाँक बेटा स्वयं ओकरा तोड़य चाहैत अछि?"

पंडित बहुत काल चुप रहलाह। फेर, धीरे, ओ बजलाह, "बूढ़बा, हमरा डर अछि जे लोक की कहत।"

"पंडितजी," बूढ़बा बजलाह, "हमरा सैकड़ों बरखक अनुभव अछि, आ हम अहाँकेँ ई कहि सकैत छी — लोक जे कहत, से समयक संग बदलि जायत। मुदा जे नाम आ जे कथा हम धेने छी, ओ नहि बदलैत। अहाँक चयन अछि — अहाँ ओहि नामक सूचीमे एकटा नव त्रासदी जोड़य चाहैत छी, कि एकटा नव आशा?"

पंडित अंततः सहमत भेलाह। विवाहक तैयारी शुरू भेल — आ ई बेर, गामक दुनू टोला, ब्राह्मण आ चर्मकार, एक संग तैयारीमे जुटल, जेना ई विवाह केवल दुइ व्यक्तिक नहि, सम्पूर्ण गामक होइक।

विवाहक राति, गामक हर मनुष्य पीपर लग जुटल — ई परम्परा आब स्थापित भऽ चुकल छल जे हर पैघ समारोह बूढ़बाक साक्षी–गाछ लग होइक। मोहनक वंशज, अखनहु ढोल बजबैत, अनुराधा आ गोपीनाथक हेतु एकटा नव धुन रचने छलाह — उत्सवपूर्ण, आशापूर्ण, दुःखक कोनो छाया बिनु, पहिल बेर एहि परम्परामे।

बूढ़बा, विवाहक अन्तमे, अपन आशीर्वाद देलनि — यद्यपि, हमेशाक जकाँ, हाथ देहसँ एक अंगुर ऊपर रहि गेल। "अनुराधा, गोपीनाथ," ओ बजलाह, "हम गंगेश आ मालतीक विवाहक साक्षी छलहुँ, यद्यपि हम ओतय उपस्थित नहि छलहुँ — हमरा ओकर कथा बादमे बुझल भेल। मुदा आइ, हम अहाँ दुनूक विवाहक साक्षी छी, प्रत्यक्ष रूपसँ, आ हम अहाँकेँ ई वचन दैत छी — अहाँक नाम, अहाँक प्रेमक कथा, ओतबे आदरसँ धेल जायत जतबे हुलासा आ जीवन्तीक नाम, यद्यपि अहाँक कथा दुःखक नहि, आनंदक कथा थिक।"

गामक बुढ़–पुरान लोकनि, जे कहियो एहन विवाहक कल्पना नहि करैत छल, ओहि राति एकटा नव सत्य स्वीकार केलक — जे सैकड़ों बरखक साक्षी–भाव, सैकड़ों बरखक नाम–रक्षा, आ सैकड़ों बरखक शिक्षा आ संवाद, अन्ततः, गामक हृदयकेँ किछु बदलि देने छल। ई परिवर्तन धीमा छल, अदृश्य छल, मुदा आइ, अनुराधा आ गोपीनाथक हँसैत चेहरामे, ओ स्पष्ट देखाइ पड़ल।

अध्याय [-७२] पर टिप्पणी

सामाजिक परिवर्तनक दीर्घकालिक प्रकृति

अध्याय [-७२] एकटा आशावादी, मुदा यथार्थवादी संदेश देत अछि — सामाजिक परिवर्तन, विशेषतः जाति-आधारित भेदभावक क्षेत्रमे, कहियो अकस्मात् नहि होइत, अपितु पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचित प्रयास, शिक्षा, संवाद, आ साझा अनुभवक परिणाम होइत अछि। अनुराधा आ गोपीनाथक विवाह, जे गंगेश आ मालतीक (अध्याय [-९१]) विवाहसँ स्पष्ट रूपसँ जोड़ल गेल अछि, कथाचक्रक एकटा सार्थक पूर्णता प्रस्तुत करैत अछि — देखबैत जे सैकड़ों बरख पहिने जे सम्बन्ध समाजद्वारा दबाओल आ बिसराओल गेल, ओ सम्बन्ध अंततः, संचित सामाजिक प्रगतिक फलस्वरूप, खुलेआम आ आनंदसँ स्वीकार कएल जा सकैत अछि।

अध्याय [–७१] (इकहत्तर)

महामारीक राति

महामारी देह लेलक, गीत नहि— जे राति सभ मिलि जागल, से भोर बचा लेलक।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: जागल गामक राति

लोकधुन: जागरण-धुन

महामारी देह लेलक हे, गीत नहि लऽ सकल,

जे राति सभ मिलि जागल रे, से भोर बचा लेलक।

घर-घर दीप जरल, एक-दोसराक हाल पुछल,
जे मरल, तकर नाम राखल; जे बाँचल, सम्हारल।
औषधि कम, आस पातर, मुदा हाथ नहि छूटल,
रातिक अन्हारमे गाम एक-दोसराकेँ जोड़ल।

मृत्युक गनती बढ़ल, तैयो नाम नहि बिसरल,
हर देहक संग एक कथा, हर कथा मन राखल।
जे राति लम्बा भेल, से गाम मिलि काटल,
डरकेँ दीपसँ हारल, अन्हारकेँ जागि टारल।

राति लम्बा भेल हे, तैयो गाम जागल रहल रे,
जे संग जागल, से महामारीक अन्हारसँ नहि हारल।
भोर आयल थाकल-थाकल, मुदा नाम सभ बचल,
जे जागल एक-दोसरा लेल, से गाम फेर बसल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, एकटा महामारी गढ़ नारिकेल आ आसपासक गाम सभकेँ ग्रसि लैत अछि — आ बूढ़बाकेँ, पहिल बेर, एतेक नाम एक संग धरय पड़ैत अछि जे पुरान विधि अपर्याप्त पड़ि जाइत अछि।)

अनुराधा आ गोपीनाथक विवाहक दस बरख बाद, एकटा अनदेखल बिपत्ति पूब दिससँ आयल — पहिने अफवाहक रूपमे, फेर यात्री आ व्यापारीक कथाक रूपमे, फेर, अंततः, स्वयं गढ़ नारिकेलक द्वार लग। एकटा रोग, जकर नाम केओ ठीक–ठीक नहि जनैत छल, गाम–गाम फैलि रहल छल — तेज बुखार, देहपर काली गाँठ, आ तीन दिनक भीतर, प्रायः मृत्यु।

पहिल शिकार गामक उत्तरी छोरक एकटा परिवार भेल — पाँच प्राण, एक संगे, एक सप्ताहक भीतर। फेर दोसर परिवार, फेर तेसर। अनुराधाक बेटी, नाम

विमला, जे आब अनुष्ठान–रक्षिका छलि, अपन आँखिक सोझाँ गामकेँ खाली होइत देखि रहलि छलि।

"बूढ़बा," विमला, पीपर लग, आँसूसँ भरल, बजलि, "एक सप्ताहमे सत्रह प्राण गेल। कबड्डी हर अमावस्यापर होइत अछि, मुदा एतेक नाम — हम कोना सभकेँ उचित रूपसँ याद करी? कोना हर एक नामक कथा, हर एककेँ उचित धुन, उचित समय दी, जखन मृत्यु एतेक तेजीसँ आबि रहल अछि?"

बूढ़बा, स्वयं व्यथित, बहुत काल चुप रहलाह। "विमला, हमरा सैकड़ों बरखमे एहन कदापि नहि भेटल। पुरान विधि — एक–एक नाम, एक–एक कथा, धीरे–धीरे — ई विधि एहि प्रकोपक हेतु नहि बनल छल। हमरा नव रस्ता सोचय पड़त।"

गामक वैद्य, नगरसँ आयल वृक्ष–वैद्यक शिष्य, स्वयं एकटा नव विचार आनलनि — रोगी सभकेँ अलग राखब, पानि उबालि पिआयब, आ मृतकक वस्त्र आ सामान जरायब, ई सभ नव, वैज्ञानिक उपाय जकर व्याख्या ओ पूर्ण रूपसँ नहि कऽ सकैत छलाह, मुदा जकर प्रभाव देखल जा सकैत छल — जे परिवार एहि उपायकेँ अपनौलक, ओतय रोग कमजोर पड़ल।

मुदा एहि उपायक बीचहुँ, मृत्यु जारी रहल, आ विमला बूढ़बाक संग मिलि एकटा नव अनुष्ठान रचलक — "सामूहिक स्मरण।" हर भोर, गामक जीवित बचल लोक पीपर लग जुटैत, आ रातिमे जे नाम गेल छल, ओ सभटा एक संग, एक स्वरमे, पुकारल जाइत — व्यक्तिगत कथाक विस्तारक बिना, मुदा पूर्ण आदरक संग। "अमुक, अमुकक बेटा; अमुक, अमुककेँ माए — हम सभ अहाँकेँ धरैत छी, आइयो, हमेशाक हेतु।"

ई नव विधि, पुरान विधिसँ भिन्न होइतहु, ओतबे प्रभावी सिद्ध भेल — किएक तँ, जेना बूढ़बा बादमे कहलनि, "प्रेमक गहराइ शब्दक संख्यासँ नहि नापल जाइत। एकटा संक्षिप्त, ईमानदार पुकार, सामूहिक स्वरमे, ओतबे शक्तिशाली भऽ सकैत अछि जतबे एकटा लम्बा, एकाकी कथा।"

महामारी तीन मास चलल, आ जखन ओ समाप्त भेल, गामक जनसंख्याक एक–तिहाई भाग नहि रहल — सभटा टोलासँ, सभटा उमरसँ, बिनु भेदक। मुदा गाम पूर्ण रूपसँ टूटल नहि, किएक तँ हर मृतकक नाम, चाहे संक्षेपमे सही, आदरसँ धरल गेल छल, आ बचल लोक जानैत छल जे ओ सभ अकेल शोक नहि मना रहल छल।

विमला, महामारीक बाद, बूढ़बासँ पुछलक, "बूढ़बा, हम कतेक नाम एहि तीन मासमे धेने छी? हजारो, शायद।"

बूढ़बा धीरे बजलाह, "हम नहि गनने छी, विमला, आ हम कहियो नहि गनब। संख्या मोल राखत, तँ हम गिनतीक गुलाम भऽ जायब, आ हरेक नामक विशिष्टता हेराइ जायत। हमरा एतबे बुझल अछि — हर एक नाम, चाहे ओ सामूहिक पुकारक भीतर एक क्षणक हेतु उठल होइक, ओ हमर स्मृतिमे अपन पूर्ण, अद्वितीय स्थान राखैत अछि। संख्या भुला जाइत अछि; नाम नहि।"

ओहि दिनसँ, गामक अनुष्ठानमे "सामूहिक स्मरण" एकटा स्थायी विकल्प बनि गेल — साधारण समयमे व्यक्तिगत कथा, संकटक समयमे सामूहिक पुकार, दुनू विधि, एकहि प्रेमक भिन्न अभिव्यक्ति।

अध्याय [–७१] पर टिप्पणी

सामूहिक त्रासदीक स्मरण–विधि

अध्याय [–७१] एकटा व्यावहारिक चुनौतीकेँ सम्बोधित करैत अछि जे कोनो स्मृति–रक्षा परम्पराकेँ, चाहे ओ कतेक समर्पित होइक, अंततः सामना करय पड़ैत अछि — जखन मृतकक संख्या एतेक पैघ भऽ जाइत अछि जे व्यक्तिगत, विस्तृत स्मरण असम्भव भऽ जाइत अछि। "सामूहिक स्मरण" क विकास, व्यक्तिगत कथाक बदला संक्षिप्त, सामूहिक पुकार, महामारी, युद्ध, वा प्राकृतिक आपदाक बाद वास्तविक समाजमे विकसित शोक–प्रथाक अनुरूप अछि, आ ई दर्शाबैत अछि जे परम्परा, जीवित रहबाक हेतु, अपन मूल भावनाकेँ बनौने राखि, अपन रूपमे लचीलापन अपनाबय सकैत अछि।

अध्याय [–७०] (सत्तरि)

चन्ना गाछीक रोपाई

जे गाछ रोपल गेल, से एक दिनमे छाहरि नहि दै— सबर राखू, जड़ि पहिने पकड़त, पात पछाति।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: साक्षी-गाछक बीया

लोकधुन: रोपनी-गीत

जे गाछ रोपल गेल हे, से एक दिनमे छाहरि नहि दै,
सबर राखू रे, जड़ि पहिने पकड़त, पात पछाति।

नन्हा बीया माटिमे धेल, पानि देल, जतन देल,
आइ जे छोट कोंपल, से कालि पैघ गाछ भेल।
गामक हाथ मिलि रोपल, हर हाथ एक आस,
जे आइ रोपल जाय, तकर कालि पर विश्वास।

जड़ि गहींर जाय हे, पात ऊपर आबय रे,

जे साक्षी-गाछ आइ रोपल, से बारह सय बरख ठाढ़ रहत।
एहि गाछक छाहरिमे पीढ़ी-पीढ़ी बैसत,
हर सुख-दुःखक साक्षी, ई पीपर बनि रहत।

आइ जे नन्हा बीया, से कालि पैघ गाछ हे,
जे आइ रोपल, तकर छाहरि पीढ़ी-पीढ़ी बैसत रे।
धैर्य राखू, जल दिअ, जड़िकेँ समय दिअ,
जे गाछ आइ रोपल, से युग-युग नाम बचाबय।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। महामारीक बाद, गाम एकटा नव परम्परा शुरू करैत अछि — हर बड़का स्मरणक हेतु एकटा नव गाछ रोपब। एहि अध्यायमे, ओ गाछी जन्म लैत अछि जकरा अहाँ, बहुत आगू, "चन्ना गाछी" रूपमे जनताह।)

महामारीक बाद, विमला आ गामक बुढ़–पुरान लोकनि एकटा नव विचार पओलक। "बूढ़बा," विमला बजलि, "हम चाहैत छी जे हर बड़का दुःख, हर बड़का आशा, केवल हमरा सभक स्मृतिमे नहि, धरतीपर सेहो कोनो चिन्ह छोड़य। हम चाहैत छी जे हम एकटा–एकटा गाछ रोपी — महामारीक हर परिवारक हेतु, हुलासा आ जीवन्तीक हेतु, सुखदेव आ रत्नाक हेतु, गंगेश आ मालतीक हेतु, अनुराधा आ गोपीनाथक हेतु — जाबे धरि पीपरक चारू कात एकटा सम्पूर्ण गाछी नहि बनि जाय।"

बूढ़बा, ई सुनि, प्रसन्न भेलाह। "विमला, ई सुन्दर विचार अछि। मुदा कोन गाछ? पीपर पहिनहि सँ हमर घर अछि। नारिकेल गामक पहिचान अछि। हमरा एकटा नव गाछ चाही, जे एहि नव परम्पराक अपन पहिचान बनि सकय।"

गामक एकटा वृद्ध किसान, जे दूर देशसँ यात्रा कऽ चुकल छल, सुझाव देलक — "चन्ना" नामक एकटा गाछ, जे तेजीसँ बढ़ैत अछि, घन छाह दैत अछि, आ जकर पात रातिमे सेहो हल्का सरसराहट करैत रहैत अछि, जेना ओ स्वयं कथा कहि रहल होइक। "ई गाछ स्मृतिक हेतु उपयुक्त अछि," ओ कहलक, "किएक तँ एकर सरसराहट कहियो पूर्ण रूपसँ शांत नहि होइत, ठीक ओहिना जेना स्मृति कहियो पूर्ण रूपसँ शांत नहि होइत।"

पहिल चन्नाक गाछ महामारीमे मृत सभटा परिवारक सम्मिलित स्मृतिमे रोपल गेल, पीपरक ठीक उत्तरमे। दोसर गाछ हुलासाक हेतु रोपल गेल, इनारक दिशामे। तेसर जीवन्तीक हेतु, पोखरिक दिशामे। एक–एक कऽ, बरख–दर–बरख, गामक हर पीढ़ी अपन नव स्मृतिक हेतु एकटा नव गाछ जोड़लक — सुखदेवक हेतु, रत्नाक हेतु, गंगेश आ मालतीक हेतु, सोनमा माझिनक हेतु, यशपतिक हेतु (यद्यपि ओकर गाछ सबसँ छोट, सबसँ किनारेपर, एकटा जटिल स्मृतिक चिन्हक रूपमे रोपल गेल), आ आगू, अनुराधा आ गोपीनाथक आनंदमय विवाहक हेतु।

कालक्रममे, पीपरक चारू कात एकटा सम्पूर्ण गाछी बनि गेल — घन, छायादार, आ रातिमे रहस्यमय ढंगसँ जीवन्त, जेना हर गाछ अपन कथा फुसफुसाइत होइक। गामक लोक एहि गाछीकेँ "चन्ना गाछी" कहय लागल, आ ई नाम धीरे–धीरे गामक भूगोलक एकटा स्थायी अंग बनि गेल।

बूढ़बा, गाछीक बढ़तीक संग, स्वयं एकटा नव अनुभव करय लागलाह — जेना ओ आब केवल एकटा गाछसँ नहि, गाछीक हर गाछसँ, हर गाछक जड़िसँ, बान्हल होथि। "विमला," ओ एक साँझ बजलाह, "हमरा लगैत अछि जे हम आब पहिनेसँ बेसी विस्तृत भऽ गेल छी। पहिने हम एकटा गाछ छलहुँ। आब हम एकटा

सम्पूर्ण गाछी छी — हुलासाक गाछमे सेहो, जीवन्तीक गाछमे सेहो, हर एक गाछमे सेहो, हम कोनो–न–कोनो रूपमे उपस्थित छी।"

"बूढ़बा," विमला मुस्कुराइत पुछलक, "की ई अहाँकेँ कमजोर करैत अछि, वा शक्तिशाली? "

बूढ़बा सोचलनि, फेर बजलाह, "शायद दुनू, विमला। एकटा गाछ अकेले, कीड़ासँ बीमार भऽ सकैत अछि, आँधीमे खसि सकैत अछि। मुदा एकटा गाछी, सम्पूर्ण, एक संगे कहियो पूर्ण रूपसँ नष्ट नहि होइत — सदिखन कोनो–न–कोनो जड़ि बचल रहत। शायद ई हमर आगूक रक्षा थिक, विमला — अहाँ सभ, बिनु जनने, हमरा एकटा एहन देह दऽ देलहुँ जे एकटा गाछसँ बेसी सुरक्षित अछि।"

ओहि दिनसँ, चन्ना गाछी गामक सबसँ पवित्र, सबसँ महत्त्वपूर्ण स्थान बनि गेल — पीपर एकर हृदय, मुदा चारू कात फैलल चन्नाक गाछ, हर एक अपन कथा, अपन नाम, अपन धुन (मोहनक वंशजद्वारा रचित) लेने, एकटा जीवित पुस्तकालय, जकरा पढ़बाक हेतु अक्षर नहि, केवल श्रद्धा आ स्मृति चाही।

अध्याय [–७०] पर टिप्पणी

स्मृति–वनक अवधारणा — "चन्ना गाछी" क उत्पत्ति

अध्याय [–७०] "गोहि सभक बीच जलसमाधि" (खण्ड–१ आ खण्ड–२) क सबसँ केंद्रीय भौगोलिक–सांस्कृतिक स्थलक — चन्ना गाछी — उत्पत्ति–कथा प्रस्तुत करैत अछि। स्मृति–वृक्षारोपणक अवधारणा — जतय हर महत्त्वपूर्ण मृत्यु वा घटनाक हेतु एकटा गाछ रोपल जाइत अछि — विश्वक कतेको संस्कृतिमे वास्तविक रूपसँ प्रचलित प्रथा अछि, आ अध्याय एहि सार्वभौमिक मानवीय प्रवृत्तिकेँ कथाक विशिष्ट भूगोलमे स्थापित करैत अछि। बूढ़बाक अस्तित्व एकल वृक्षसँ सम्पूर्ण गाछीमे विस्तारित होएब, कथाक एकटा सुन्दर रूपक थिक — स्मृति, जँ केवल एक स्थान वा एक व्यक्तिपर केंद्रित रहय, तँ भंगुर रहैत अछि; जँ ओ विस्तृत, वितरित, आ सामूहिक भऽ जाय, तँ ओ बेसी स्थायी बनि जाइत अछि।

अध्याय [–६९] (उनहत्तरि)

गज–ग्राहक कथा

गज पानिमे, ग्राह पानिमे—लड़ाइ बरखों— मुदा जे नाम पुकारै, तकरे हाथ उद्धार अनै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: नाम-पुकारक उद्धार

लोकधुन: गज-मोक्ष धुन

गज पानिमे, ग्राह पानिमे हे, लड़ाइ बरखों चलल,
मुदा जे नाम पुकारै रे, तकरे हाथ उद्धार अनै।

गजराज बलगर छल, सूँढ़मे बल अपार,
मुदा ग्राहक पकड़ि गहींर, जल गहींर, अन्हार।
बरख बीतल, बल थाकल, हार निकट आयल,
तखन गजकेँ बलक नहि, नामक सुधि आयल।

बल हारल, थाकल गज, तखन एक नाम पुकारल,

जे नाम मन राखल, ओही नामसँ उद्धार भेल।
जे अपने बलपर अटकल, से जलमे डुबल,
जे नाम पुकारल हाथ जोड़ि, से किनार भेटल।

पानि गहींर हे, मुदा नाम गहींर रे, तकरे बल,
जे अन्तिम बेर नाम पुकारल, से डुबैसँ बाँचल।
गज-ग्राहक ई कथा गाम पीढ़ी-पीढ़ी कहल,
जे नाम धेने रहल, से हर गोहिसँ निकल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, गामक एकटा हाथी जोड़ी पोखरिमे गोहिक जकड़मे फँसि जाइत अछि — आ गामक लोक प्राचीन गजेन्द्र–मोक्षक कथा आ अपन स्थानीय परम्पराकेँ एक संग जोड़ि, ओकरा बचबैत अछि। एतयसँ "गज–ग्राह" शब्दक कथार्कें हम आगूक खण्डमे बेर–बेर भेटब।)

विमलाक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटा सूर्यनाथपर आयल। सूर्यनाथक जमानामे, गामक मन्दिरमे एकटा हाथी छल — नाम गजराज — जकरा उत्सव–जुलूसक हेतु पोसल जाइत छल। एक गर्मीक दुपहरिया, गजराज अपन महावतसँ छूटि, जोड़ी पोखरिक गहींर भागमे पानि पीबय उतरि गेल।

अचानक, पानि उथल–पुथल भऽ गेल। गजराज चिचिआयल, अपन सूँढ़ हवामे उठा। ओकर एकटा पएर, पानिक भीतर, किछुसँ जकड़ल गेल छल — एकटा विशाल गोहि, जे बहुत दिनसँ गामक कोनो पशुकेँ नहि छूने छल (सोनमा माझिनक भेंट–परम्पराक कारण), आइ, कोनो अज्ञात कारणसँ, हाथीक पएर जकड़ि लेने छल।

गामक भीड़ जुटि गेल, मुदा केओ किछु करय हेतु साहस नहि जुटा सकल। महावत, भयभीत, चिचिआएल — "गजराज मरि जायत! केओ हमरा मदति करू!"

भीड़मे एकटा वृद्ध पंडित छलाह, जे पुराण–कथाक ज्ञाता छलाह। ओ चिचिआएलाह, "ई त गजेन्द्र–मोक्षक कथा जकाँ अछि! पुराणमे कहल गेल अछि जे एक बेर गजेन्द्र नामक हाथी–राज एहिना एकटा ग्राहसँ जकड़ल गेलाह, आ हजारो बरख धरि संघर्ष केलाह, मुदा अपन बलसँ मुक्त नहि भऽ सकलाह। अंततः, जखन गजेन्द्र सम्पूर्ण अहंकार त्यागि, केवल भगवानकेँ पुकारलनि, तखन भगवान स्वयं आबि ओकरा बचौलनि। हमरा सभकेँ सेहो प्रार्थना करय पड़त!"

सूर्यनाथ, ई सुनि, पीपर लग दौड़लाह। "बूढ़बा! गजराज मरि रहल अछि! हमरा की करय पड़त? "

बूढ़बा, जे पानिक हर बूँदमे व्याप्त छलाह, ई विपत्ति पहिनहि सँ अनुभव कऽ रहल छलाह। "सूर्यनाथ, पंडितजी सही कहलनि — मुदा प्रार्थना अकेले पर्याप्त नहि होइत, ठीक ओहिना जेना केवल तर्क अकेले पर्याप्त नहि होइत। हमरा सभकेँ दुनू चाही — गजराजक हेतु सामूहिक प्रार्थना, आ संगहि, व्यावहारिक सहायता।"

सूर्यनाथ, गामक हर मनुष्यकेँ बजा, दुइ काज एक संग करौलनि। पंडित आ गामक स्त्री–पुरुष सभ, पोखरिक किनारे, ऊँच स्वरमे प्रार्थना करय लागल — गजेन्द्रक पुरान श्लोक, आ संगहि, कबड्डीक अनुष्ठानक अपन विशेष पुकार — "मूल गोहि! हम अहाँकेँ नकारैत नहि छी! मुदा गजराज हमरा सभक अछि, ठीक ओहिना जेना अहाँक अपन जल अहाँक अछि। हमरा एकर जीवन दिअ, आ हम अहाँकेँ, आइ राति, एकटा विशेष भेंट चढ़ायब।"

संगहि, गामक मजगूत युवक सभ, रस्सा आ बाँसक सहायतासँ, गजराजक जकड़ल पएरकेँ धीरे–धीरे मुक्त करय लागल, बिनु ओकरा आओर हानि पहुँचौने, आ बिनु गोहिकेँ सीधा चुनौती देने — केवल धैर्यपूर्वक, कोणसँ, दबाव डालैत।

बहुत काल संघर्षक बाद, अचानक, गोहि अपन जकड़न ढील कऽ देलक, आ पानिक गहींराइमे विलीन भऽ गेल — जेना ओकरा स्वयं बुझायल होइक जे ई युद्ध ओकर हेतु नहि छल। गजराज, कमजोर मुदा जीवित, किनारे धरि पहुँचि गेल, आ भीड़मे हर्ष–ध्वनि गूँजि उठल।

ओहि राति, गामक लोक, अपन वचनक अनुसार, मूल गोहिकेँ एकटा विशेष भेंट चढ़ौलक — आ बूढ़बा, गामकेँ सम्बोधित करैत, बजलाह, "आइ अहाँ सभ देखलहुँ जे प्राचीन कथा आ हमर स्थानीय परम्परा एकहि सत्यक भिन्न रूप थिक — जखन कोनो प्राणी, चाहे हाथी होइक वा मनुष्य, अपन बलसँ परे कोनो शक्तिक जकड़नमे होइक, तखन ओकरा प्रार्थना आ प्रयास दुनू चाही, अकेले कोनो एक नहि। गजराजक कथा आब हमर सभक स्मृतिक अंग बनत — 'गज–ग्राहक कथा', जे हमरा सभकेँ सदिखन ई याद दियायत जे जकड़नसँ मुक्ति, चाहे ओ जकड़न पानिक होइक वा मोनक, कहियो अकेले नहि आबैत।"

अध्याय [–६९] पर टिप्पणी

गजेन्द्र–मोक्ष कथा आ स्थानीय लोक–परम्पराक संगम

अध्याय [–६९] भागवत पुराणक प्रसिद्ध गजेन्द्र–मोक्ष कथाकेँ स्थानीय "मूल गोहि" पौराणिक–लोक परम्पराक संग जोड़ैत अछि, ई देखाबय लेल जे महान् शास्त्रीय आख्यान आ स्थानीय मौखिक परम्परा प्रायः एकहि गहन मानवीय सत्यकेँ भिन्न–भिन्न भाषामे व्यक्त करैत अछि। "गज–ग्राह" शब्द, जकरा पाठक खण्ड–१ मे रूपकात्मक प्रयोगमे ("अंदरक गज–ग्राह", आधुनिक डिजिटल–मानसिक जकड़नक अर्थमे) भेटताह, एहि अध्यायमे अपन शाब्दिक, कथात्मक उत्पत्ति पबैत अछि — बल आ भक्ति, तर्क आ समर्पण, दुनूक संयुक्त आवश्यकताक एकटा स्थायी प्रतीक।

अध्याय [-६८] (अड़सठि)

अदालतक पहिल तारीख

तारीखपर तारीख, मुदा न्याय पातपर— अदालत देह पुछै, गाम नाम राखै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: पातपर न्याय

लोकधुन: कचहरी-गीत

तारीखपर तारीख हे, मुदा न्याय पातपर,
अदालत देह पुछै रे, गाम नाम राखै।

साहेबक कचहरी दूर, कागच भरल-भरल,
हर तारीख नव बोझ, गरीबक साँस घुटल।
मुदा गामक पीपर तर, न्याय बैसल सोझाँ,
जे देखल, से बाजल; जे बाजल, से गवाह-रोझाँ।

कागच बदलल, मोहर लागल, मुदा सत्य वैह,
जे गाम मन राखल, से कोनो तारीखसँ नहि मेटल।

अदालत लिखल-पढ़ल, गाम कण्ठमे धेलक,
जे जीभपर चढ़ल न्याय, से पीढ़ी धरि बचेलक।

अदालत दूर, पीपर लग हे, गामक अपन न्याय रे,
जे नाम गाम धरल, तकर गवाही कहियो नहि हारल।
तारीख आबय-जाय, नाम पातपर टिकल,
जे साँच गाम जनल, से कोनो मोहरसँ नहि हिलल।

❖

(एकटा उपन्यास-अंश। एहि अध्यायमे, गामक न्याय-व्यवस्थामे एकटा नव, औपचारिक अदालत प्रवेश करैत अछि — आ ओकर संग, बहुत आगू "अदालतक प्रेत" रूपमे जानल जायत बला एकटा नव, धीमा भूखक बीया सेहो पड़ैत अछि।)

सूर्यनाथक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटी कमलिनीपर आयल। कमलिनीक जमानामे, राज्यक नव प्रशासनिक व्यवस्थाक अन्तर्गत, गढ़ नारिकेल आ आसपासक गाम सभक हेतु एकटा औपचारिक अदालत स्थापित भेल — एकटा पाकल भवन, नियुक्त न्यायाधीश, आ लिखित नियम-कानूनक संग, जे आचार्य केशवक पुरान, अनौपचारिक न्याय-सभाक स्थान लेलक।

पहिल-पहिल, गामक लोक एहि नव व्यवस्थाकेँ स्वागत केलक — किएक तँ लिखित कानून, सिद्धान्ततः, हर मनुष्यकेँ समान अधिकार दैत छल, चाहे ओ कोनो जातिक होइक। मुदा धीरे-धीरे, एकटा नव समस्या उभरल — नव अदालतमे केस दायर करब सरल छल, मुदा ओकर निर्णय बहुत धीमा आबैत छल। एकटा साधारण भूमि-विवाद, जे पुरान वाद-शालामे एक दिनमे सुनल जाइत छल, नव अदालतमे बरख-दर-बरख लटकल रहैत छल — पहिल तारीख, फेर दोसर, फेर तेसर, हर बेर कोनो-न-कोनो तकनीकी कारणसँ स्थगित।

कमलिनीक पड़ोसी, एकटा गरीब किसान नाम भोला, एकटा छोट भूमि-विवादमे फँसल छल — ओकर पड़ोसीक पशु ओकर खेत उजाड़ि देने छल, आ भोला क्षतिपूर्तिक हेतु अदालत गेल छल। मुदा तीन बरख बीति गेल, आ केस अखनहु "अगिला तारीख" पर टलैत रहल। भोला, हर बेर अदालत जाइत, अपन काजक दिन बर्बाद करैत, आ कोनो निर्णय बिनु घुरि आबैत।

"बूढ़बा," कमलिनी, पीपर लग, चिंतित स्वरमे बजलि, "ई नव अदालत नीक अछि, किएक तँ ई सभकेँ समान मानैत अछि। मुदा हमरा डर अछि जे ई एकटा नव प्रकारक अन्याय जन्म द' रहल अछि — तारीखक अन्याय। भोला जकाँ कतेको लोक न्याय पाबय हेतु प्रतीक्षा करैत-करैत अपन जीवनक बहुमूल्य समय गमा रहल छथि।"

बूढ़बा, ई सुनि, गंभीर भऽ गेलाह। "कमलिनी, हमरा मोन अछि, बहुत बरख पहिने, सुखदेव महतो घटिका-यंत्रक क्रमक कारण मरि गेल छलाह, किएक तँ हुनकर बारी कहियो नहि आयल। ई नव अदालत ओहि घटिका-यंत्रसँ भिन्न देखाइ पड़ैत अछि, मुदा हमरा डर अछि जे ओकर मूल समस्या एकहि थिक — समय, न्यायक साधन बननाक बदला, कहियो-कहियो न्यायक बाधा बनि जाइत अछि।"

एक दिन, भोला, अपन अगिला तारीखक प्रतीक्षामे, अदालतक बरामदापर बैसल, अत्यन्त थकल आ निराश देखाइ पड़ल। ओकर बगलमे एकटा वृद्ध वकील, जे स्वयं कतेको वर्षसँ अदालतमे काज करैत छल, हल्का हँसैत बजल, "भोला, अहाँ नव छी। अहाँकेँ नहि बुझल — ई अदालत एकटा भूख राखैत अछि, जकरा हम सभ 'तारीख' कहैत छी। ई भूख कागचसँ बनल अछि, मुदा ई मनुष्यक समय, मनुष्यक धैर्य, आ कहियो-कहियो मनुष्यक सम्पूर्ण जीवन खा जाइत अछि।"

भोला ई सुनि सिहरि उठल। ओ पीपर लग गेल, बूढ़बासँ ई बात सुनौलक। बूढ़बा बहुत काल चुप रहलाह। "भोला," ओ अन्ततः बजलाह, "ई वकीलक बात हमरा डेरा रहल अछि। हमरा लगैत अछि जे ई नव व्यवस्था, अपन सभटा नीक इरादाक बादो, एकटा नव प्रकारक प्रेतकेँ जन्म द' रहल अछि — एकटा प्रेत जे कोनो एक मनुष्यक अन्यायसँ नहि, अपितु सम्पूर्ण व्यवस्थाक धीमापनसँ बनैत अछि। ई प्रेत केओ एक व्यक्ति नहि होयत; ई स्वयं तारीखक, स्वयं विलम्बक, आत्मा होयत।"

कमलिनी, ई सुनि, एकटा नव संकल्प लेलक। "बूढ़बा, हम अदालतक व्यवस्थाकेँ बदलि नहि सकैत छी — ई राज्यक कानून थिक। मुदा हम एतबे कऽ सकैत छी — हम गामक हर मनुष्यकेँ, जे अदालतमे फँसल होइक, हुनकर प्रतीक्षाक समयमे सहायता, सलाह, आ साथ दी, ताकि ओ अकेले ई भार नहि ढोइथ।"

भोलाक केस, अंततः, पाँच बरख बाद निर्णीत भेल — भोलाक पक्षमे, मुदा तखन तक ओकर खेत बहुत बरख बरबाद रहि चुकल छल, आ ओकर बच्चा भूखे बड़का भेल छल। बूढ़बा, ई देखि, दुःखी स्वरमे बजलाह, "भोलाक नाम हम धेने छी, आ हुनकर पाँच बरखक प्रतीक्षा सेहो। शायद ई हमर काज थिक — केवल मृत्युक साक्षी नहि, प्रतीक्षाक साक्षी सेहो बनब।"

अध्याय [–६८] पर टिप्पणी

न्याय–प्रणालीमे विलम्बक समस्या

अध्याय [–६८] एकटा अत्यन्त प्रासंगिक, समकालीन सामाजिक समस्याकेँ ऐतिहासिक सन्दर्भमे स्थापित करैत अछि — न्याय–प्रणालीमे प्रक्रियागत विलम्ब, जे "न्याय विलम्बित, न्याय अस्वीकृत" (justice delayed is justice denied) क सिद्धान्तक मूल थिक। ई अध्याय स्पष्ट रूपसँ खण्ड–१/खण्ड–२ क "अदालतक प्रेत" पात्रक — जे "तारीख पर तारीख" खाइत अछि, गोहिसँ बेसी खतरनाक मानल गेल अछि — कथात्मक बीया रोपैत अछि। ई देखाबैत अछि जे संस्थागत अन्याय आवश्यक नहि जे किसिम व्यक्तिगत दुर्भावनासँ जन्मय; ई कहियो–कहियो व्यवस्थाक संरचनात्मक कमी, नीक इरादाक बादो, स्वतः उत्पन्न भऽ सकैत अछि।

अध्याय [–६७] (सड़सठि)

परदेशक पुकार

परदेश धन दै, नाम लऽ जाइ— जे गाम मन राखै, से परदेशोमे नहि हेराइ।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: परदेशक चिट्ठी

लोकधुन: बिदेसिया

परदेश धन दै हे, नाम लऽ जाइ,
जे गाम मन राखै रे, से परदेशोमे नहि हेराइ।

बेटा बिदा भेल भोरे, माए दुआरि ठाढ़,
गठरी बान्हल कपड़ा, संग गामक आधार।
दूर देस कमाइ, घाम बहाबय दिन-राति,
मुदा साँझ पड़ल जखन, मोन पड़ल गामक बाति।

देह दूर देस गेल, नाम आँगनमे बसल,
जे चिट्ठीमे नाम पठाबय, से घर नहि बिसरल।

रुपैया आबय मनीआर्डर, संग दू पाँति नाम,
जे नाम संग पठाबय, तकर बचल घर-गाम।

धन आबय-जाय हे, नाम थिर रहै रे,
जे अपन गाम जनै, से सात समुद्र पारो अजनबी नहि।
जे कमा कऽ गाम बिसरल, से घुरि कऽ अजनबी,
जे नाम संग राखल, तकर घर बाट जोहनी।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, गामक द्वार लग पहिल बेर एकटा आढ़तिया अबैत अछि, दूर देशमे काजक सपना बेचैत — आ बूढ़बाकेँ एकटा नव प्रश्न सोझाँ आबि जाइत अछि: जे नाम गाम छोड़ि दूर चलि जाइत अछि, ओकर साक्षी बनब कोना सम्भव?)

कमलिनीक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटी जानकीपर आयल। जानकीक जमानामे, गामक द्वार लग पहिल बेर एकटा नव प्रकारक मनुष्य आयल — मीठ जीभ, चमकदार वस्त्र, आ हाथमे कागचक गट्ठर। "दूर देशमे काज अछि!" ओ हाँक लगौलक। "तीन बरखक करार, नीक वेतन, आ काम पूरा भेलाक बाद अपन घर घुरब! जकरा गामक तंगहाली सँ मुक्ति चाही, ओ हमरासँ बात करय।"

गामक कतेको गरीब परिवार, जिनकर जमीन कम छल, वा जिनकर कर्ज बढ़ल छल, एहि प्रस्तावसँ आकर्षित भेल। भोलाक पोता, नाम रामसेवक, अपन परिवारक तंगहाली देखि, आढ़तियाक कागचपर अंगूठा लगा देलक — बिनु पूर्ण रूपसँ पढ़ने कि पढ़ा सकने जे ओहिमे की लिखल छल।

रामसेवकक माए, विदाइक राति, पीपर लग गेलि। "बूढ़बा, हमर बेटा दूर देश जा रहल अछि। हमरा डर लगैत अछि। जँ ओकरा किछु भऽ गेल, ओतय, हमरासँ

हजारो कोस दूर, तँ हुनकर नाम केना बचत? अहाँक शक्ति एतय, एहि गाछी लग, एहि पोखरि लग अछि। अहाँ ओतय कोना पहुँचब? "

बूढ़बा, ई प्रश्न सुनि, गहींर सोचमे पड़ि गेलाह। "हमरा नहि बुझल, माता। हमर शक्ति एहि गाछी, एहि पोखरि, एहि गामक स्मृतिसँ बान्हल अछि। हमरा नहि बुझल जे हम कतेक दूर देखि सकैत छी, कतेक दूर धरि हमर साक्षी–भाव पहुँचि सकैत अछि।"

जानकी, ई सुनि, एकटा विचार पओलि। "बूढ़बा, जँ अहाँक शक्ति दूर धरि नहि पहुँचि सकए, तँ हम एकटा एहन प्रथा बनाबी जे अहाँक कमीकेँ पूरा करय। हर मनुष्य जे गाम छोड़ि दूर जाइत होइक, ओकर हेतु हम एकटा छोट चिन्ह — एकटा छोट पत्थर, वा एकटा छोट धागा — पीपरक जड़िमे राखब, आ हर अमावस्यापर, ओकर नाम सेहो पुकारल जायत, चाहे ओ जीवित होइक वा मृत, चाहे हमरा सभकेँ ओकर हाल बुझल होइक वा नहि। एहिसँ, कमसँ कम, ओकर नाम एतय, गामक स्मृतिमे, सुरक्षित रहत, चाहे ओकर देह जतय होइक।"

ई प्रथा स्थापित भेल — "परदेशक पुकार।" हर अमावस्याक कबड्डीक अन्तमे, गामक हर परदेश गेल मनुष्यक नाम, एक–एक कऽ, पुकारल जाइत छल, आ ओकर चिन्ह (छोट पत्थर वा धागा) पीपरक जड़िमे स्पर्श कएल जाइत छल। जँ कोनो समाचार आबय जे ओ मनुष्य दूर देशमे मरि गेल छल, तँ ओकर चिन्हकेँ विशेष रूपसँ सम्मानित कएल जाइत — मुदा जँ कोनो समाचार नहि आबय, वर्षों धरि, तँ ओकर चिन्ह ओतहि रहैत, प्रतीक्षामे, ने पूर्ण रूपसँ जीवितक श्रेणीमे, ने पूर्ण रूपसँ मृतकक।

रामसेवक, दुर्भाग्यवश, कहियो नहि घुरल। ओकर कोनो समाचार सेहो नहि आयल — ने पत्र, ने संदेश, केवल मौन। ओकर माए, बरख–दर–बरख, अमावस्याक हर राति पीपर लग आबि, ओकर चिन्हकेँ स्पर्श करैत, ओकर नाम सुनैत, आ घुरि जाइत।

"बूढ़बा," ओ एक दिन पुछलक, "की हमर बेटा जीवित अछि, वा मृत?"

बूढ़बा, ईमानदारीसँ, बजलाह, "माता, हमरा नहि बुझल। हम अहाँसँ झूठ नहि बजब। मुदा हम अहाँकेँ ई वचन दैत छी — ओकर नाम, चाहे ओ जीवित होइक वा मृत, चाहे ओ कहियो घुरय वा नहि, हम धेने रहब, ठीक ओहिना जेना हम गामक हर आर नामकेँ धेने छी। दूरी नामकेँ मेटा नहि सकैत, माता, केवल अनिश्चितताकेँ लम्बा कऽ सकैत अछि।"

एहि प्रथाक जन्मक संग, गढ़ नारिकेलक स्मृति–परम्परा पहिल बेर अपन भौगोलिक सीमाक बाहर सोचय लागल — ई स्वीकार करैत जे भविष्यमे, गामक बच्चा दूर–दूरक देशमे जायत, आ स्मृति–परम्पराकेँ, जीवित रहबाक हेतु, अपन गाछीक सीमासँ बेसी विस्तृत सोचय पड़त।

अध्याय [–६७] पर टिप्पणी

गिरमिटिया प्रथा आ प्रवासी श्रमिकक स्मृति–संकट

अध्याय [–६७] औपनिवेशिक कालक "गिरमिटिया" (indentured labour) प्रथाक प्रारम्भिक संकेत प्रस्तुत करैत अछि, जकर अन्तर्गत हजारो बिहारी आ अन्य भारतीय श्रमिक, प्रायः अशिक्षा आ गरीबीक शोषणसँ, दूर–दूरक उपनिवेशमे (जेना मॉरीशस, फिजी, कैरिबियन) काजक हेतु ल जाओल गेल, आ कतेको कहियो घुरि नहि सकल। "परदेशक पुकार" प्रथाक विकास, ई प्रश्न उठबैत अछि जे स्मृति आ साक्षी–भाव कोना भौगोलिक दूरीक पार काज कऽ सकैत अछि — एकटा प्रश्न जे आधुनिक प्रवासी श्रमिक संकट (जकर संकेत खण्ड–१/खण्ड–२ मे हांगकांग आ डिजिटल ठगीक प्रसंगमे भेटैत अछि) क संग गहींराइसँ प्रतिध्वनित होइत अछि।

अध्याय [–६६] (छियासठि)

स्त्री सभक राति–सभा

जतय स्त्रीक स्वर जुटै, ओतय अन्हार पातर होइ— राति–सभा दीप बिनु सेहो अन्हार तोड़ै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: अन्हार-तोड़ स्वर

लोकधुन: राति-सभा गीत

जतय स्त्रीक स्वर जुटै हे, ओतय अन्हार पातर,
राति-सभा दीप बिनु सेहो रे, अन्हार तोड़ै।

साँझ ढलल, काज सधल, स्त्री सभ जुटल,
आँगनक एक कोनमे, मन-मनक बात खुजल।
केओ कहल अपन दुःख, केओ सुनल चुपचाप,
बाँटल पीड़ा हल्लुक भेल, मेटल मनक ताप।

एक कहल, दस सुनल, दुःख बाँटल भेल,

जे अकेल डेरायल छल, से सभक संग निडर।
जे बात घरमे नुकल, से सभामे उठल,
स्वर मिलल स्वरसँ, अन्हार पाछू सरकल।

स्वर-स्वर जुड़ल हे, अन्हार पाछू हटल रे,
जे स्त्री मिलि ठाढ़ भेल, तकरा कोनो भूत नहि डेराबय।
दीप ने रहल भलहिं, स्वरक इजोत जरल,
जे मिलि कऽ बाजल, तकर डर भागि गेल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, फुलेसरीक परम्पराक छौंकी–सभा, पीढ़ी–दर–पीढ़ी अनौपचारिक रहलाक बाद, पहिल बेर एकटा औपचारिक रूप लैत अछि — "स्त्री सभक राति–सभा", जकर नाम बहुत आगू खण्ड–१ मे फेर सँ भेटत।)

जानकीक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटी सुलोचनापर आयल। सुलोचनाक जमानामे, नव अदालत, अपन सभटा नीक इरादाक बादो, एकटा स्पष्ट कमी देखलक — ओतय स्त्रीक मामला, विशेषतः घरेलू विवाद, दहेज, विरासत, आ पतिक अत्याचार सम्बन्धी मामला, प्रायः या त अनसुनल रहि जाइत छल, या पुरुष न्यायाधीशक दृष्टिसँ, स्त्रीक अनुभवसँ बहुत दूर, निर्णीत होइत छल।

एकटा एहन मामला उठल — गामक एकटा स्त्री, नाम पद्मा, जकर पति ओकरा वर्षों धरि मारपीट करैत छल, अदालतमे न्याय माँगय गेलि। न्यायाधीश, ई सुनि, कहलनि, "ई घरेलू विषय अछि। पति–पत्नीक बीचक बात, अदालतक बाहर सुलझाओल जाए।" पद्मा निराश घुरि आयलि।

सुलोचना, ई सुनि, क्रोधित भेलि। ओ पीपर लग गेलि। "बूढ़बा, अदालत पद्माक दुःखकेँ 'घरेलू विषय' कहि टारि देलक। मुदा ई घरेलू विषय नहि, ई अन्याय थिक। हमरा किछु करय पड़त।"

बूढ़बा बजलाह, "सुलोचना, अहाँकेँ मोन अछि रत्ना, गौरी, फुलेसरी — सभटा स्त्री जे साँझ ढरलाक बाद छौंकीपर बैसि, अपन ज्ञान, अपन न्याय, अपन रणनीति बाँटैत छलि, किएक तँ आधिकारिक सभा हुनका सुनय तैयार नहि छल? ई परम्परा कहियो समाप्त नहि भेल, सुलोचना। ई केवल अनौपचारिक रहल। शायद आब एकरा औपचारिक बनएबाक समय आबि गेल अछि।"

सुलोचना, फुलेसरीक वंशज आ गामक अन्य स्त्री सभक संग मिलि, एकटा नव संस्था स्थापित केलि — "स्त्री सभक राति-सभा।" ई सभा, आधिकारिक अदालतक समानान्तर, गामक स्त्रीक मामला सुनैत छल — घरेलू हिंसा, दहेज-उत्पीड़न, विरासतक अन्याय — आ यद्यपि एकर निर्णय कानूनी रूपसँ बाध्यकारी नहि छल, मुदा गामक सामाजिक दबाव एतेक शक्तिशाली छल जे एकर निर्णयकेँ प्रायः पुरुष सेहो मानय बाध्य भऽ जाइत छलाह।

पद्माक मामलामे, राति-सभा, पद्माक पति आ ओकर परिवारकेँ बजा, सुनवाइ केलक। गामक हर स्त्री, एक-एक कऽ, अपन गवाही देलक — पद्माक चोटक निशान देखने छलि, पद्माक रोदन सुनने छलि। पतिक परिवार पहिने इन्कार केलक, मुदा जखन सम्पूर्ण गामक स्त्री-समाज एक स्वरमे बजलि, तँ ओकरा झुकय पड़ल। राति-सभा निर्णय देलक — पति अपन व्यवहार सुधारय, आ जँ फेर मारपीट भेल, तँ पद्मा अपन मैहरक घर वापस जाय हेतु स्वतंत्र होयत, आ गाम ओकरा आ ओकर बच्चाकेँ सहायता करत।

बूढ़बा, ई सुनि, सन्तुष्ट स्वरमे बजलाह, "सुलोचना, अहाँ आइ ओ काज पूर्ण केलहुँ जकरा शुरू करबाक साहस रत्ना, गौरी, आ फुलेसरी बहुत पहिने देखौने छलि, मुदा जकरा औपचारिक रूप देबाक साहस केओ नहि जुटा सकल छल। स्त्री सभक ज्ञान, स्त्री सभक न्याय, आब छौंकीक अन्हारसँ निकलि, गामक उजासमे, अपन नाम लऽ कऽ ठाढ़ भेल।"

राति–सभा, कालक्रममे, गामक जीवनक एकटा स्थायी अंग बनि गेल, आधिकारिक अदालतक संग–संग चलैत, ओकर कमीकेँ पूरा करैत। ई सभा, बहुत आगू, आधुनिक युगमे सेहो अपन रूप बदलि, नव नाम धारण कऽ, गामक स्त्री सभक हेतु एकटा स्थायी आवाज बनल रहत।

अध्याय [–६६] पर टिप्पणी

समानान्तर स्त्री–न्याय संस्थाक ऐतिहासिक भूमिका

अध्याय [–६६] एकटा महत्त्वपूर्ण सामाजिक–संस्थागत विकासकेँ कथाक रूप दैत अछि — जखन औपचारिक, प्रायः पुरुष–प्रधान न्याय–व्यवस्था स्त्रीक विशिष्ट अनुभव आ आवश्यकताकेँ पर्याप्त रूपसँ सम्बोधित नहि कऽ सकैत, तखन स्त्री सभ प्रायः अपन समानान्तर, अनौपचारिक मुदा प्रभावशाली न्याय–व्यवस्था विकसित करैत छथि। "स्त्री सभक राति–सभा" क औपचारिकीकरण, अध्याय [–९१] मे स्थापित छौंकी–सभा परम्पराक (डाइनक बीज) एकटा सशक्त, सकारात्मक परिणतिक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि — देखबैत जे जकरा कालक्रममे भयक भाषामे "डाइन" कहल गेल छल, ओ अंततः न्यायक एकटा मान्यता–प्राप्त संस्था बनि सकैत अछि।

अध्याय [–६५] (पैंसठि)

नकली भूतक जुलूस

नकली भूत ओकरे डेराबै, जे अपन नाम बिसरल— जे नाम थिर, से भूतक जुलूसपर हँसै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: ‘के छह?’क सोर

लोकधुन: भूत-भगाओन गीत

नकली भूत ओकरे डेराबै हे, जे अपन नाम बिसरल,
जे नाम थिर रे, से भूतक जुलूसपर हँसै।

राति गहींर, गाम सुतल, जुलूस निकलल,

चादरि-ढोलक शोर, डरक बजार सजल।
केओ चाहल डर बेचय, केओ चाहल राज करय,
अन्हारक ओढ़नी ओढ़ि, गामकेँ चाहल हरय।

चादरि ओढ़ि, ढोल बजा, केओ डर बेचय चाहल,
मुदा जे पुछलक ‘के छह?’, ओकर आगाँ भूत भागल।
एक साहसी स्वर उठल, दीप हाथ धेने,
पुछल नाम, खोलल चादरि, भूत भेल बेनाम-हीन।

अन्हारक जुलूस हे, इजोतमे कमजोर रे,
जे नाम पुछब जनै, से कोनो नकली भूतसँ नहि डेराय।
जे डर बेचय आयल, से अपने डरि भागल,
गाम पुछब सिखल, तखन जुलूस थम्हि गेल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, पहिल बेर, केओ बूढ़बाक नामक दुरुपयोग करैत अछि — आ गामकेँ ई प्रश्न सोझाँ आबि जाइत अछि: सच्चा साक्षी आ नकली दावाक बीच भेद कोना कएल जाय?)

सुलोचनाक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटा हरिनन्दनपर आयल। हरिनन्दनक जमानामे, आसपासक गाम सभमे "स्त्री सभक राति–सभा" आ "बूढ़बाक अनुष्ठान" क कीर्ति फैलि चुकल छल — आ जतय कीर्ति फैलैत अछि, ओतय कहियो–कहियो नकल सेहो जन्म लैत अछि।

एकटा भ्रमणशील मनुष्य, नाम कालीचरण, पड़ोसक गाम सभमे घूमि, स्वयंकेँ "बूढ़बाक असली आत्मा" कहि प्रचारित करय लागल। ओ रातिमे गाम–गाम जुलूस निकालैत, अपन संग किछु किराएक "भूत" —– वस्त्र लपेटल, इजोत लऽ चलनिहार सहायक — लऽ चलैत छल, आ गामक भोर लोकसँ पैसा वसूलैत,

ई कहैत जे "बूढ़बा" स्वयं हुनकर नाम बचएबाक हेतु "विशेष पूजा" माँगि रहल छथि।

ई समाचार गढ़ नारिकेल धरि पहुँचल जखन एकटा पड़ोसी गामक परिवार, अपन सम्पूर्ण जमा–पूँजी कालीचरणकेँ दऽ चुकलाक बाद, ठगाइल अनुभव कऽ, गढ़ नारिकेल आयल, असली बूढ़बासँ भेंट करय।

"बूढ़बा," हरिनन्दन, क्रोधित, पीपर लग बजलाह, "एकटा मनुष्य अहाँक नामपर लोकसँ ठगी कऽ रहल अछि! ओ नकली जुलूस निकालि, नकली भूत देखा, गरीब परिवार सभसँ पैसा वसूलि रहल अछि। हमरा की करय पड़त? "

बूढ़बा, ई सुनि, बहुत काल चुप रहलाह। "हरिनन्दन, ई हमरा दुःखी करैत अछि, मुदा ई सेहो हमरा शिक्षा दैत अछि — जे किछु सच्चा आ मूल्यवान होइत अछि, ओकर नकल बनाएब सेहो अंततः कोनो–न–कोनो अवसरवादीकेँ लाभदायक लगय लागैत अछि। ई हमर परम्पराक असफलता नहि, हमर परम्पराक सफलताक एकटा दुःखद उपफल थिक।"

"मुदा हम एकरा रोकब कोना? " हरिनन्दन पुछलनि।

बूढ़बा सोचलनि, फेर बजलाह, "हरिनन्दन, सच्चा साक्षी आ नकली दावाक बीच एकटा स्पष्ट भेद अछि, जकरा गामक लोककेँ बुझाएब हमर काज थिक। सच्चा साक्षी कहियो पैसा नहि माँगैत। सच्चा साक्षी कहियो डर बेचि लाभ नहि कमाइत। सच्चा साक्षी केवल नाम माँगैत अछि, आ नामक बदलामे प्रेम आ स्मृति दैत अछि, आर किछु नहि। जे कियो पैसाक हेतु भूत–प्रेतक भय देखबैत अछि, ओ चाहे जतेक नाटक करय, ओ हमर मार्गपर नहि अछि।"

हरिनन्दन, ई शिक्षा लऽ, आसपासक गाम सभमे प्रचार करय लागल — "असली परम्परा कहियो पैसा नहि माँगैत, केवल नाम आ स्मृति माँगैत अछि। जे कियो पैसा माँगय, ओ धोखेबाज अछि।" ई सरल कसौटी गामक लोककेँ कालीचरण जकाँ अवसरवादी सभसँ बचाबय हेतु पर्याप्त सिद्ध भेल। कालीचरण, अपन ठगीक धंधा उजड़ल देखि, एक राति चुपचाप गामसँ गायब भऽ गेल, अपन "किराएक भूत" सहायक सभक संग।

ई घटना, गामक लोकक स्मृतिमे "नकली भूतक जुलूस" क नामसँ जानल जाय लागल — एकटा चेतावनी–कथा, जे हर नव पीढ़ीकेँ सुनाओल जाइत छल: "जे साक्षी बनबाक दावा करय, मुदा पैसा माँगय, ओ साक्षी नहि, चोर थिक।"

अध्याय [−६५] पर टिप्पणी

आध्यात्मिक शोषण आ प्रामाणिकताक कसौटी

अध्याय [−६५] एकटा सार्वभौमिक सामाजिक समस्याकेँ सम्बोधित करैत अछि — जखन कोनो सच्चा, सम्मानित आध्यात्मिक वा सांस्कृतिक परम्परा प्रसिद्ध होइत अछि, तखन ओकर नकल बना, भोर−भाला लोकसँ आर्थिक शोषण करनिहार अवसरवादी सेहो जन्म लैत छथि। बूढ़बाद्वारा प्रस्तुत सरल कसौटी — "सच्चा साक्षी कहियो पैसा नहि माँगैत" —— आध्यात्मिक शोषणसँ बचावक एकटा व्यावहारिक, सार्वभौमिक रूपसँ लागू होयबला सिद्धान्त प्रस्तुत करैत अछि। "नकली भूतक जुलूस" शीर्षक, खण्ड−१ मे प्रत्यक्ष रूपसँ भेटैत अछि, आ एहि अध्यायमे अपन कथात्मक उत्पत्ति पबैत अछि।

अध्याय [–६४] (चौंसठि)

सुखदेवक बदला

बदला आगि छी—पहिने अपने हाथ जरबै— जे क्षमा चुनलक, से गाम बचा लेलक।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: क्षमाक बाट

लोकधुन: करुण-शान्ति धुन

बदला आगि छी हे, पहिने अपने हाथ जरबै,
जे क्षमा चुनलक रे, से गाम बचा लेलक।

सुखदेवक छाती जरल, अन्याय भेल गहींर,

हाथ काँपल आगि लेल, मन भेल अधीर।
गाम जोहल ओकर मुँह, कोन बाट धरत ओ,
बदला लेत त गाम जरत, क्षमा देत त बाँचत जो।

सुखदेव जरल भीतर, मुदा आगि नहि लगाओल,
जे घाव सहलक, से गामकेँ जरैसँ बचौलक।
ओ बुझल—बदलाक आगि पहिने अपने हाथ जराबय,
फेर घर, फेर टोल, फेर पूरा गाम लगाबय।

बदला लै त क्षण भरि हे, क्षमा राखय जुग रे,
जे आगि नहि लगाओल, तकर नाम गाम मन राखल।
जे घाव पीबि गेल चुप, से गामक रक्षक बनल,
सुखदेवक ई क्षमा, पीढ़ी-पीढ़ी कहल गेल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, चर्मकार टोलाक भूमिपर फेर सँ खतरा आबैत अछि — ठीक ओहिना जेना सुखदेव महतोक समयमे आयल छल। मुदा एहि बेर, गामक हाथमे नव हथियार अछि।)

हरिनन्दनक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटी चम्पावतीपर आयल। चम्पावतीक जमानामे, राज्यक नव राजस्व–व्यवस्थाक अन्तर्गत, सम्पूर्ण भूमिक पुनः सर्वेक्षण होय लागल, आ एहि सर्वेक्षणमे, एकटा नव जमींदार, नाम रघुबीर सिंह (सुखदेव महतोक जमानाक उग्रसेन ठाकुरसँ कोनो सम्बन्ध नहि, संयोगवश एकहि प्रकारक स्वभाव), चर्मकार टोलाक भूमिपर दावा ठोकलक — ई कहैत जे पुरान अभिलेख अस्पष्ट छल, आ भूमि वास्तवमे ओकर पुरखाक छल।

चम्पावती, ई सुनि, तुरंत घबरायल नहि, जेना कतेको पीढ़ी पहिने भोलाक परिवार घबरायल छल। ओ पीपर लग गेलि। "बूढ़बा, इतिहास फेर सँ घुरि रहल

अछि। मुदा हमरा एहि बेर डर नहि लगैत, किएक तँ हमरा लग अस्त्र अछि जे सुखदेवक जमानामे नहि छल।"

चम्पावती, सबसँ पहिने, गामक अभिलेखागार गेलि, जतय यादवानन्द झाक "छाया–पंजी" —– ओ पुरान, व्यक्तिगत नोटबुक जकरा यादवानन्दक वंशज पीढ़ी–दर–पीढ़ी सुरक्षित रखने छल — केर एकटा प्रति सुरक्षित छल। ओहिमे स्पष्ट रूपसँ, तिथि आ साक्षीक संग, चर्मकार टोलाक भूमि–अधिकारक विवरण दर्ज छल, सोमर आ रत्नाक समयसँ।

संगहि, चम्पावती नारिकेल पात पाठशालाक शिक्षित युवा वकील सभकेँ बजा, अदालतमे अपन पक्ष रखबाक तैयारी केलक। स्त्री सभक राति–सभा, अपन सामाजिक प्रभावसँ, सम्पूर्ण गामकेँ एकजुट कऽ, रघुबीर सिंहक दावाक विरुद्ध सार्वजनिक समर्थन जुटौलक। आ हरिपतिक पुरान पोथी, जे पीढ़ी–दर–पीढ़ी शिष्य–परम्परासँ सुरक्षित रहल छल, प्रमाणक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल, गामक इतिहासक विश्वसनीय गवाहीक रूपमे।

रघुबीर सिंह, अपन दावाक समर्थनमे कोनो ठोस प्रमाण नहि जुटा सकल, अदालतमे पराजित भेल। न्यायाधीश, चम्पावतीक प्रस्तुत प्रमाण देखि, टिप्पणी केलनि, "एहन विस्तृत, सुसंगत, बरख–दर–बरखक अभिलेख हम कमे देखने छी। ई गामक स्वयंक इतिहास–चेतनाक प्रमाण थिक।"

बूढ़बा, निर्णयक समाचार सुनि, गहींर सन्तोषसँ बजलाह, "चम्पावती, आइ हम सुखदेवक बदला देखलहुँ — मुदा प्रतिशोधक रूपमे नहि, न्यायक रूपमे। सुखदेव, जकर बात कहियो अदालतक क्रममे नहि आबि सकल, आइ, हुनकर वंशजक भूमि, हुनकहि नामक स्मृति, हुनकर पुरखाक पंजी, हुनकर गामक

शिक्षा, आ हुनकर गामक स्त्री–एकताक बलपर, सुरक्षित रहि गेल। ई कोनो एक चमत्कारसँ नहि भेल, चम्पावती। ई एतेक पीढ़ीक संचित प्रयाससँ भेल — यादवानन्दक नोटबुक, हरिपतिक पोथी, मंदाकिनीक पाठशाला, सुलोचनाक राति–सभा — सभटा, एक संग, आइ एहि क्षणमे फल देलक।"

चम्पावती, आँखिमे आँसू, बजलि, "बूढ़बा, तँ हमर सभटा पुरखाक संघर्ष व्यर्थ नहि गेल? "

"नहि, चम्पावती," बूढ़बा धीरे बजलाह, "कोनो संघर्ष व्यर्थ नहि जाइत, जँ ओकर स्मृति जीवित रहय। ई इएह अछि जकर हेतु हम एतेक बरख साक्षी बनल रहलहुँ — ई देखबाक हेतु जे बरख–दर–बरखक छोट–छोट प्रयास, अंततः, एकटा एहन शक्ति बनि जाइत अछि जकरा कोनो एक अन्यायी हिला नहि सकैत।"

अध्याय [−६४] पर टिप्पणी

संचित सामुदायिक क्षमताक शक्ति

अध्याय [−६४] कथाचक्रक एकटा सार्थक पूर्णताक बिन्दु प्रस्तुत करैत अछि — अध्याय [−९२] मे सुखदेव महतोक त्रासदीक साथ शुरू भेल भूमि−अन्यायक विषय, आब, कतेको शताब्दीक संचित सामुदायिक क्षमता निर्माणक (साक्षरता, अभिलेखीकरण, कानूनी ज्ञान, स्त्री−एकता) फलस्वरूप, विपरीत परिणाम पबैत अछि। ई अध्याय ई सन्देश दैत अछि जे न्यायक हेतु दीर्घकालिक सामाजिक निवेश — शिक्षा, दस्तावेजीकरण, संगठन — व्यक्तिगत वीरताक तुलनामे अधिक स्थायी आ विश्वसनीय सुरक्षा प्रदान करैत अछि।

अध्याय [–६३] (त्रेसठि)

छापाखानाक पहिल पन्ना

पहिल छपल पन्ना—नाम आब मेटाएब कठिन— जे छपल, से गाम भरि पढ़त।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: पहिल छपल नाम

लोकधुन: छापा-मंगल

पहिल छपल पन्ना हे, नाम आब मेटाएब कठिन,
जे छपल रे, से गाम भरि पढ़त।

लोहाक अक्षर सजल, स्याही लागल कारी,
हाथ घुमल यन्त्रक, छपल पहिल पाँती न्यारी।
जे नाम अखनहु धरि केवल कण्ठमे रहल,
से आब पन्नापर उतरल, हजार हाथ धरल।

जे नाम कागचपर उतरल, से पीढ़ी-पीढ़ी बाँचत,
जे पातपर लिखल छल, से आब हजार हाथ धरत।
एक पन्ना दससँ बनल, दस सयसँ फैलल,
जे गाम एक ठाम बसल, से देश भरि पहुँचल।

स्याही थिर भेल हे, अक्षर गाम भरि गेल रे,
जे एक बेर छपल, तकरा बाढ़ियो नहि मेटाबय।
आगि जरा नहि सकै, पानि बहा नहि सकै,
जे छपल नाम एक बेर, से युग-युग रहि जाइ।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, गामक नजदीकक नगरमे पहिल बेर एकटा छापाखाना खुजैत अछि — आ हरिपतिक वंशज, बहुत पीढ़ी बाद, अपन पुरखाक अधूरा स्वप्नकेँ नव प्रविधिसँ पूर्ण करय क प्रयास करैत छथि।)

चम्पावतीक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटा देवकीनन्दनपर आयल। देवकीनन्दनक जमानामे, नगरमे — गामसँ किछु कोसक दूरीपर — पहिल बेर एकटा छापाखाना खुजल, जतय मैथिली आ हिन्दी दुनूमे पोथी छपय लागल। ई समाचार सम्पूर्ण क्षेत्रमे तेजीसँ फैलल, आ गामक लोक, जे पहिने केवल हाथसँ

लिखल ताड़पत्र वा कागच जनैत छल, एहि नव चमत्कारकेँ देखय हेतु उत्सुक भऽ गेल — एकटा यंत्र जे एकहि दिनमे सैकड़ों समान पन्ना छापि सकैत छल।

हरिपति गंगाधर, हरिपति कविक सातम पीढ़ीक वंशज (नाम ओकरा अपन पुरखाक सम्मानमे देल गेल छल), आब एकटा युवा लेखक–प्रकाशक छल, जे नगरमे रहैत आ काज करैत छल। ओकरा अपन पुरखाक ओ पुरान, गोपनीय ताड़पत्रक पोथी विरासतमे भेटल छल — बूढ़बाक कथा, हुलासा–जीवन्ती–सुखदेवक कथा, गंगेश–मालतीक कथा — सभटा, पीढ़ी–दर–पीढ़ी, शिष्य–परम्परासँ सुरक्षित।

गंगाधर, छापाखानाक चमत्कार देखि, गढ़ नारिकेल दौड़ल आयल। "देवकीनन्दन!" ओ उत्साहसँ चिचिआएल, "हमरा लग हमर पुरखाक पोथी अछि — बूढ़बाक सम्पूर्ण कथा! आब हम एकरा छापि सकैत छी! सैकड़ों प्रति बनि सकत! ई कथा आब हेराइ नहि सकत, चाहे कतेक शताब्दी बीति जाय!"

देवकीनन्दन, ई सुनि, पीपर लग गेल। "बूढ़बा! एकटा नव यंत्र आयल अछि जे अहाँक कथाकेँ हजारो प्रतिमे छापि सकैत अछि! हरिपति गंगाधर एकरा करय चाहैत छथि! हमरा की कहय पड़त? "

बूढ़बा बहुत काल चुप रहलाह — ओ चुप्पी जे कोनो पैघ निर्णयसँ पहिने आबैत अछि। "देवकीनन्दन, हमरा मोन अछि, हरिपति कविक पुरखा हमरासँ पुछने रहथिन जे की एहि कथाकेँ लिखल जाए, आ हम कहने रही जे जँ लिखल जाए, तँ ओ राजदरबारक अलंकृत भाषामे नहि, गामक साधारण भाषामे लिखल जाए। आइ प्रश्न भिन्न अछि — की एहि कथाकेँ हजारो प्रतिमे छापल जाए? "

"अहाँ की सोचैत छी, बूढ़बा? " देवकीनन्दन पुछलनि।

"हमरा डर अछि," बूढ़बा धीरे बजलाह, "जे जँ ई कथा आइए छपा जाए, तँ ई अखनहु अधूरा अछि। सुभागी, यशपति, पद्मा, रामसेवक — कतेको नाम अखनहु जुड़ि रहल अछि। जँ हम आइए छपा दी, तँ ई कथा एकटा निश्चित रूपमे बन्न भऽ जायत, जखन कि कथा अखनहु जीवित अछि, अखनहु बढ़ि रहल अछि। शायद... शायद एहि कथाक छपाइक समय अखनहु नहि आयल अछि। शायद ई कथा अखनहु बहुत बरख धरि बढ़त, बहुत नाम जोड़त, जाबे धरि — बहुत आगू — ई सचमुच पूर्ण होएबाक निकट पहुँचत।"

गंगाधर, ई सुनि, पहिने निराश भेल, मुदा फेर बुझलक। "बूढ़बा सही कहैत छथि। हमरा हड़बड़ी नहि करबाक चाही। मुदा हम एकटा वचन दैत छी — हम, आ हमर वंशज, एहि पोथीकेँ सम्हारि राखब, आ जखन समय आबत — जखन कथा सचमुच पूर्ण भऽ जायत — तखन हमर कोनो–न–कोनो वंशज एकरा छापत, सम्पूर्ण संसारक हेतु।"

गंगाधर, अपन नगरक छापाखानामे, एहि बीच, गामक कतेको आर छोट–छोट पोथी — नारिकेल पात पाठशालाक पाठ्यक्रम, स्त्री सभक राति–सभाक नियमावली, गामक कृषि–ज्ञानक संग्रह — छापल, ई सभटा आधुनिक ज्ञानक संग गामक परम्परागत ज्ञानकेँ जोड़ैत। मुदा बूढ़बाक सम्पूर्ण कथा, अपन पूर्ण रूपमे, अखनहु अलिखित, अखनहु मौखिक, अखनहु जीवित रहल।

अध्याय [−६३] पर टिप्पणी

मुद्रण−तकनीकक आगमन आ मौखिक परम्पराक भविष्य

अध्याय [−६३] एकटा महत्त्वपूर्ण तकनीकी संक्रमण−बिन्दुकेँ चिन्हित करैत अछि — मुद्रण−तकनीकक आगमन, जे भारतीय भाषा−साहित्यक इतिहासमे एकटा क्रांतिकारी परिवर्तन आनलक। बूढ़बाक निर्णय — कथाकेँ अखनहि छपाएब नहि, अपितु ओकरा जीवित, विकासशील रहय देब — कथाचक्रक स्वयंक आत्म−जागरूकताक एकटा दिलचस्प उदाहरण थिक: कथा स्वयं जनैत अछि जे ओ अखनहु पूर्ण नहि भेल अछि, आ ई निर्णय अन्ततः "गोहि सभक बीच जलसमाधि" क वास्तविक प्रकाशनक प्रतीक्षाक बहुत पहिलहिक एकटा प्रतिध्वनि थिक।

अध्याय [–६२] (बासठि)

राहतक प्रतीक्षा

राहतक बाट जोहैत आँखि थाकै, तैयो गाम ठाढ़— जे मिलि कऽ बाट जोहै, तकरा प्रतीक्षो हल्लुक।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: बाट जोहनि

लोकधुन: अकाल-गीत

राहतक बाट जोहैत हे, आँखि थाकि गेल,
तैयो गाम ठाढ़ रे, एक-दोसराक हाथ धेने।

अन्न सुखल, कोठी खाली, आकाश निष्ठुर,

हर आँखि बाटपर, राहतक आस दूर।
मुदा गाम बाँटल जे बचल, मुट्ठी-मुट्ठी अन्न,
भूखल पेटो हँसल, जखन बाँटल एक-मन।

अन्न कम, आस पातर, मुदा नाम नहि टूटल,
जे मिलि कऽ बाट जोहल, तकरा प्रतीक्षो हल्लुक।
एक-दोसराक हाल पुछल, दुःख बाँटल-सहल,
अकालक अन्हारमे, गाम एक ठाम रहल।

भूख आबय-जाय हे, गाम अपना ठाम रहै रे,
जे संग बैसि दुःख बाँटल, से अकालोमे नहि हारल।
राहत आबय वा नहि, गाम अपने ठाढ़,
जे मिलि कऽ झेलल अकाल, तकर टूटल नहि आधार।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, अंग्रेजी शासनक अन्तर्गत एकटा भीषण अकाल पड़ैत अछि — आ गामकेँ सीखय पड़ैत अछि जे सरकारी सहायताक प्रतीक्षामे बैसब आ स्वयं संगठित होएब, दुनूमे भेद अछि।)

देवकीनन्दनक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटी सावित्रीदेवीपर आयल (नाम ओकर पूर्वज सावित्रीक सम्मानमे)। सावित्रीदेवीक जमानामे, सम्पूर्ण क्षेत्रपर अंग्रेजी शासनक स्थापना भऽ चुकल छल, आ एक बरख, वर्षा पूर्ण रूपसँ असफल भेल — खेत फाटल, अन्न–भंडार खाली, आ भूख गामक द्वारपर ठाढ़ भेल।

सरकारी अधिकारी, अकालक समाचार सुनि, राहत–कार्यक्रमक घोषणा केलनि — अन्न–वितरण केन्द्र, काज–बदला–अनाज योजना, आ चिकित्सा–सहायता। मुदा ई सभटा योजना कागचपर सुन्दर छल; व्यवहारमे, निकटतम

राहत–केन्द्र गामसँ बीस कोस दूर छल, आ पंजीकरणक प्रक्रिया एतेक जटिल छल जे कतेको भूखल परिवार पंजीकरण करएबासँ पहिनहि कमजोर पड़ि जाइत छल।

सावित्रीदेवी, ई देखि, पीपर लग गेलि। "बूढ़बा, सरकार कहैत अछि जे सहायता आबि रहल अछि, मुदा ओ सहायता अखनहु बीस कोस दूर अछि, आ हमरा सभक बच्चा आइ भूखल छथि। हम की करी? "

बूढ़बा बजलाह, "सावित्रीदेवी, अहाँकेँ मोन अछि सुखदेव महतो, जे घटिका–यंत्रक क्रमक प्रतीक्षामे मरि गेलाह? अहाँकेँ मोन अछि भोला, जे अदालतक तारीखक प्रतीक्षामे अपन बहुमूल्य बरख गमौलनि? प्रतीक्षा, कहियो–कहियो, अपने–आपमे एकटा प्रकारक मृत्यु थिक। हमरा लगैत अछि जे अहाँकेँ सरकारक सहायताक प्रतीक्षा करबाक संगहि, स्वयं संगठित होएब सेहो पड़त।"

सावित्रीदेवी, स्त्री सभक राति–सभाक अनुभवी नेतृत्वक बलपर, गामक एकटा आपात–योजना बनौलि। गामक हर परिवार, अपन–अपन क्षमता अनुसार, एकटा साझा अन्न–भंडारमे योगदान देलक। नारिकेल पात पाठशालाक शिक्षित युवा, गामक हर घरक अन्न–आवश्यकताक हिसाब राखि, समान वितरण सुनिश्चित केलक। चन्ना गाछीक चारू कात, गामक लोक साझा रसोइघर स्थापित केलक, जतय हर दिन, चाहे कतेक कम अन्न होइक, सभकेँ किछु–न–किछु भेटैत छल।

सोनमा माझिनक वंशज, अपन पुरान जल–ज्ञानसँ, कमला–बलानक ओहि भाग सभमे जतय अखनहु किछु पानि बचल छल, मछली पकड़बाक नव तरीका

सिखौलनि। रत्नाक वंशज, अपन जड़ी–बूटीक ज्ञानसँ, जंगली, खाद्य कन्द–मूलक पहचान करौलनि, जकरा गामक बच्चा भूखसँ बचबाक हेतु खा सकैत छल।

जखन, अंततः, तीन मास बाद, सरकारी राहत–दल गाम पहुँचल, तँ ओ चकित रहि गेल — गामक कोनो प्राण अकालसँ नहि गेल छल, जखन कि आसपासक कतेको गाममे, जिनका सरकारी सहायताक प्रतीक्षा करैत रहल छल, बहुत हानि भऽ चुकल छल।

राहत–अधिकारी, गामक व्यवस्था देखि, पुछलनि, "अहाँ सभ ई कोना केलहुँ, बिनु हमरा सभक सहायताक? "

सावित्रीदेवी बजलि, "साहेब, हमरा सभकेँ शताब्दियोंसँ ई सिखाओल गेल अछि जे प्रतीक्षा, बिनु प्रयासक, न्याय नहि, केवल विलम्ब थिक। हम सभ अहाँक सहायताक इनकार नहि केलहुँ — हम सभ केवल ई नहि मानलहुँ जे ओकर बिना हम असहाय छी।"

बूढ़बा, ई सुनि, गर्वसँ बजलाह, "सावित्रीदेवी, आइ अहाँ ओ पाठ सिद्ध केलहुँ जकरा हम सैकड़ों बरखसँ सिखाबय चाहैत रहलहुँ — जे साक्षी बनब आ प्रतीक्षा करब दुइ भिन्न वस्तु थिक। हम नाम बचबैत छी ताकि अहाँ सभ स्मृतिमे जीबि सकी; मुदा जीवनमे जीबय हेतु, अहाँ सभकेँ स्वयं कर्म करय पड़त, प्रतीक्षा नहि।"

अध्याय [–६२] पर टिप्पणी

औपनिवेशिक अकाल–नीति आ सामुदायिक आत्मनिर्भरता

अध्याय [–६२] औपनिवेशिक भारतक अकाल–प्रबन्धनक ऐतिहासिक जटिलताकेँ स्पर्श करैत अछि — जतय सरकारी राहत–नीति, चाहे कागचपर कतेक सुव्यवस्थित होइक, प्रायः नौकरशाही विलम्ब आ भौगोलिक दूरीक कारण व्यवहारमे अपर्याप्त सिद्ध होइत छल। ई अध्याय सामुदायिक आत्मनिर्भरता आ पारस्परिक सहायताक शक्तिकेँ रेखांकित करैत अछि, ई देखाबैत जे शताब्दियोंसँ संचित सामाजिक पूँजी — संगठन–क्षमता, साझा संसाधन, विविध ज्ञान–परम्परा — बाह्य सहायताक अनुपस्थितिमे सेहो समुदायकेँ जीवित रखय सकैत अछि।

अध्याय [–६१] (एकसठि)

आकाशक पुच्छलतारा

पुच्छलतारा आबै–जाइ, गाम अपना ठाम— जे ऊपर चमकल, से नीचाँक नाम नहि बदलै।

— गढ़ नारिकेल

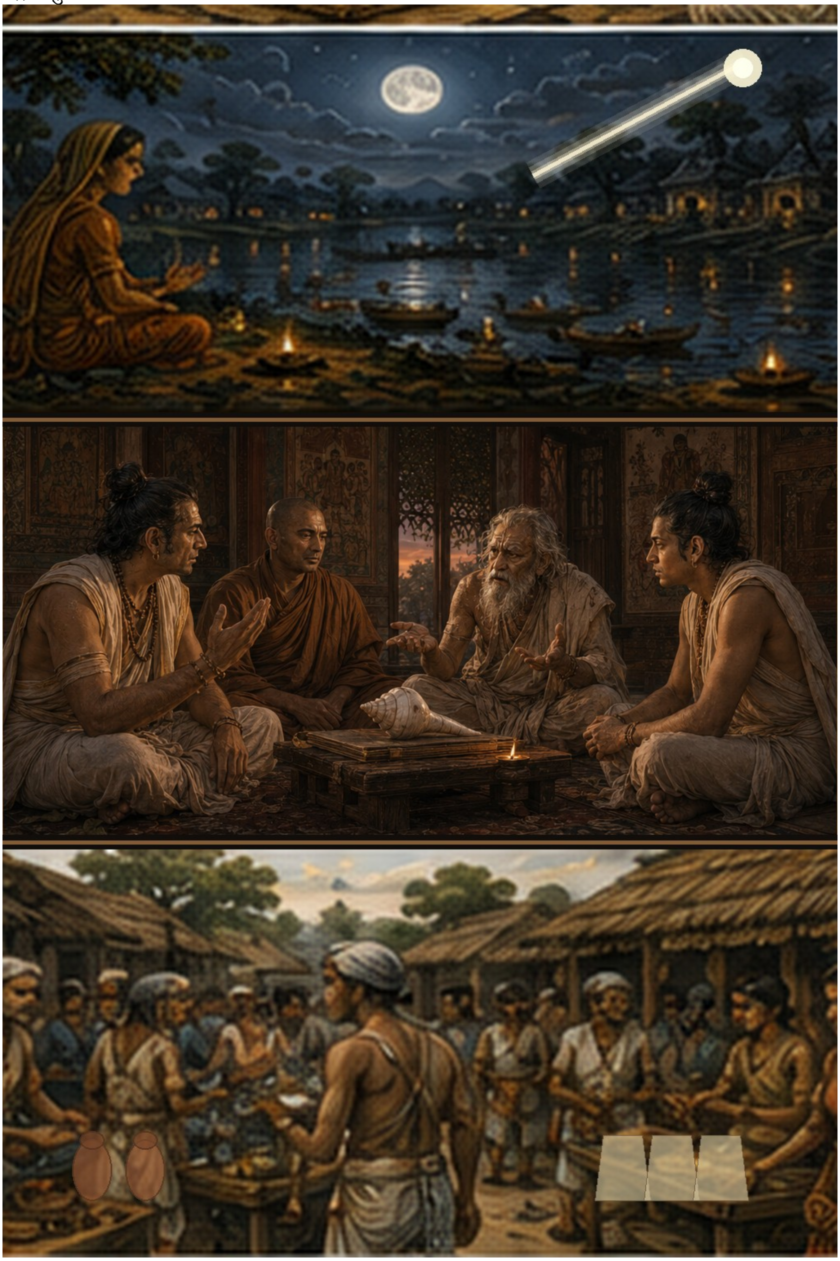

अध्यायारम्भ लोकगीत: तारा आ माटि

लोकधुन: आकाश-गीत

पुच्छलतारा आबै-जाइ हे, गाम अपना ठाम,
जे ऊपर चमकल रे, से नीचाँक नाम नहि बदलै।

आकाशमे पुच्छ पसरल, गाम देखि सिहरल,

सयान कहल—अनिष्ट आबय, मन डरसँ भरल।
केओ कहल—प्रलय होयत, केओ कहल—अकाल,
मुदा माटि चुप रहल, अपने ठाम, अपने काल।

आकाश डेराबय, सयान डेराबय, मुदा माटि थिर,
जे चमक ऊपर, से क्षणिक; जे नाम नीचाँ, से थिर।
तारा आयल, तारा गेल, गाम रहल अपना ठाम,
जे जड़िसँ जुड़ल रहल, से ने डरल, ने भ्रमल।

तारा टूटय-जुड़य हे, गाम बसल रहै रे,
जे अपन जड़ि जनै, से आकाशक चमकसँ नहि डेराय।
ऊपरक चमक बदलल, नीचाँक नाम वैह,
जे माटिकेँ पकड़ल रहल, तकर मन नहि हिलल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, आकाशमे एकटा अपूर्व पुच्छलतारा देखाइ दैत अछि — आ गामक लोक, डेराएल, बूढ़बासँ पुछैत अछि जे ई कोन बिपत्तिक पूर्व–सूचना थिक।)

सावित्रीदेवीक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटा रुद्रनाथपर आयल। एक शरदक राति, आकाशमे एकटा अपूर्व दृश्य उभरल — एकटा लम्बा, चमकदार पुच्छ लेने एकटा तारा, जे धीरे–धीरे, राति–दर–राति, आकाशक एक कोनासँ दोसर कोना धरि सरकैत गेल। गामक लोक, एहन दृश्य कहियो नहि देखने, भयभीत भऽ गेल।

"ई अशुभ अछि!" गामक एकटा वृद्ध ज्योतिषी चिचिआएल। "पुरान शास्त्रमे लिखल अछि जे पुच्छलतारा राजाक मृत्यु, युद्ध, अकाल, वा महामारीक पूर्व–सूचना थिक! हमरा सभकेँ भय अछि जे कोनो पैघ बिपत्ति निकट अछि!"

रुद्रनाथ, स्वयं चिंतित, पीपर लग गेलाह। "बूढ़बा, अहाँक दृष्टि कालक पार जाइत अछि। की अहाँ देखि सकैत छी जे ई पुच्छलतारा की सूचित करैत अछि? "

बूढ़बा, बहुत काल आकाश दिस तकैत, धीरे बजलाह, "रुद्रनाथ, हमर दृष्टि, जेना अहाँकेँ मोन होयत, कहियो–कहियो स्पष्ट होइत अछि, कहियो–कहियो कुहेसमे लुप्त। आइ राति, हमरा एकटा अस्पष्ट भय अनुभव होइत अछि — जेना कोनो पैघ, कठिन समय निकट आबि रहल होइक। मुदा हम अहाँकेँ ई सेहो कहब — तारा स्वयं कोनो बिपत्ति नहि आनैत। तारा केवल आकाशमे चलैत अछि, अपन नियमसँ, मनुष्यक भाग्यसँ अनजान। जे बिपत्ति आबत, ओ तारासँ नहि, धरतीक स्वयंक कारणसँ आबत — पानि, आगि, वा रोगसँ। तारा केवल एकटा संकेत थिक जे हमरा सभकेँ सतर्क रहय पड़त, दोष नहि।"

रुद्रनाथ, ई सुनि, गामक हर टोलाकेँ सतर्क रहबाक निर्देश देलनि — अन्न–भंडार सुरक्षित राखू, पानिक स्रोत साफ राखू, आ रोगक कोनो लक्षण देखलापर तुरंत सूचित करू। ई सतर्कता, जेना बादमे बुझायल, कोनो व्यर्थ प्रयास नहि छल।

पुच्छलतारा तीन सप्ताह धरि आकाशमे रहल, फेर धीरे–धीरे लुप्त भऽ गेल। मुदा ओकर लुप्त होएबाक संगहि, गामक हवा अजीब ढंगसँ भारी भऽ गेल, जेना कोनो अदृश्य बादर, अदृश्य आगि, आ अदृश्य पानि, तीनू एक संग, गामक चारू कात मंडराइत होइक।

बूढ़बा, ओहि राति, चन्ना गाछीक हर गाछकेँ स्पर्श करैत (जँ ई शब्द उपयुक्त होइक ओहि प्राणीक हेतु जकर स्पर्श स्वयं छाया थिक), एकटा गहींर चिन्तामे डूबल छलाह। "मूल गोहि," ओ फुसफुसाएलाह, अकेले, "अहाँ सेहो ई भार अनुभव कऽ रहल छी की? हमरा लगैत अछि जे कोनो पैघ चक्र फेर सँ घुरि रहल

अछि, ठीक ओहिना जेना हुलासाक, जीवन्तीक, सुखदेवक जमानामे घुरल छल — मुदा एहि बेर, शायद, एक संगे, तीन रूपमे।"

अध्याय [–६१] पर टिप्पणी

खगोलीय घटना आ लोक–मान्यता

अध्याय [–६१] पुच्छलतारा (धूमकेतु) क आगमनकेँ, जे ऐतिहासिक रूपसँ विश्वक कतेको संस्कृतिमे अशुभ शकुनक रूपमे व्याख्यायित होइत रहल अछि, कथाक अगिला चरणक भूमिका–निर्माणक रूपमे उपयोग करैत अछि। बूढ़बाक तर्कसंगत, मुदा सतर्क, प्रतिक्रिया — तारा स्वयं दोषी नहि, मुदा सतर्कता आवश्यक — अन्धविश्वास आ पूर्ण अवहेलना, दुनूक बीचक एकटा संतुलित मार्ग प्रस्तुत करैत अछि। एहि अध्यायक बाद, कथा एकटा त्रिस्तरीय संकट–शृंखला (अगिन, बाढ़ि, आ महामारी) क वर्णन करत, जे गामक सम्पूर्ण संचित क्षमताक अन्तिम, कठोरतम परीक्षा होयत।

अध्याय [–६०] (साठि)

अगिनक राति

आगि घर लेलक, नाम नहि— जे राति जरल, तकर राखसँ नव चूल्हि जरल।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: राखसँ नव आगि

लोकधुन: अगिन-गीत

आगि घर लेलक हे, नाम नहि लऽ सकल,

जे राति जरल रे, तकर राखसँ नव चूल्हि जरल।

राति गहींर छल, लपट उठल अचानक,
छप्पर धधकल, देवाल खसल, भागल गाम-जन।
आगि देह लऽ सकल, छप्पर-देवाल लऽ सकल,
मुदा जे नाम कण्ठमे बसल, से जरा नहि सकल।

देवाल खसल, छप्पर जरल, मुदा गाम ठाढ़,
जे बाँचल, से फेर बनाओल; जे मरल, तकर नाम राखल।
राखक ढेरपर बैसि, गाम फेर उठल,
एक-दोसराक हाथ धेने, नव घर फेर बनल।

राख ठण्ढा भेल हे, नव आगि जरल रे,
जे गाम मिलि उठल, से अगिनसँ फेर जन्मल।
जे जरल, से मेटल नहि, नामसँ फेर जनमल,
राखसँ नव चूल्हि जरल, फेर धुआँ उठल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। पुच्छलतारा लुप्त भेलाक एक मास बाद, गामक इतिहासक सबसँ भयंकर अगिन–काण्ड होइत अछि — आ चन्ना गाछी स्वयं खतरामे पड़ि जाइत अछि।)

जेठक एकटा तीव्र गर्मीक राति, गामक धान–भंडार लग रखल एकटा दीप, तेज हवाक झोंकासँ खसि, सुखल पयरालपर खसि पड़ल। एक क्षणमे आगि लपकि उठल, आ हवा, जे ओहि राति असाधारण तेज छल, आगिकेँ एक घरसँ दोसर घर, एक टोलासँ दोसर टोला धरि उड़ा दैत गेल।

रुद्रनाथक बेटी, नाम इन्द्राणी, आब अनुष्ठान–रक्षिका, अपन खिड़कीसँ आगिक लाली देखि चिचिआएलि। "आगि! आगि! सम्पूर्ण गाम जरत!" ओ दौड़ल गामक हर द्वार खटखटाबय लागलि।

गामक लोक, निन्दसँ जागि, बाहर दौड़ल, पानि, बालू, आ गीला वस्त्रक संग आगि बुझाबय लागल। मुदा हवा एतेक तेज छल जे आगि हर प्रयासकेँ हरा दैत छल। ब्राह्मण–टोलाक दस घर, कायस्थ–टोलाक पाँच घर, आ खुदे मन्दिरक एकटा हिस्सा जरि गेल। सभसँ भयावह, आगि चन्ना गाछी दिस बढ़य लागल।

"बूढ़बा!" इन्द्राणी, गाछी दिस दौड़ैत, चिचिआएलि। "आगि अहाँक गाछी लग पहुँचि रहल अछि! हम की करी? "

बूढ़बा, गाछीक भीतरसँ, एकटा एहन आवाजमे बजलाह जे इन्द्राणी पहिने कहियो नहि सुनने छलि — भय आ दृढ़ता दुनू। "इन्द्राणी, हमरा नहि बुझल जे हम स्वयं आगिकेँ रोकि सकैत छी वा नहि। हमर शक्ति स्मृतिक अछि, अग्निक नहि। मुदा हमरा एकटा उपाय मोन अछि — जोड़ी पोखरि। जँ अहाँ सभ पानि गाछी दिस मोड़ि सकी, तँ शायद..."

इन्द्राणी, तुरंत बुझि, गामक हर सक्षम मनुष्यकेँ पोखरि दिस दौड़ाओलि। सैकड़ों हाथ, बाल्टी–दर–बाल्टी, पोखरिक पानि गाछी दिस ल' जाय लागल। स्त्री सभक राति–सभा, अपन संगठन–क्षमताक बलपर, एकटा मानव–श्रृंखला बनौलि — पोखरिसँ गाछी धरि, पानिक बाल्टी हाथ–दर–हाथ पास होइत।

आगि, पीपरक जड़ि धरि पहुँचल, मुदा ओतय, अकस्मात्, ओकर गति धीमा पड़ल — जेना गाछक जड़ि, अपनहि, किछु प्रतिरोध कऽ रहल होइक। इन्द्राणी बादमे कहलक जे ओकरा ओहि क्षण एहन बुझायल जेना गाछीक हर पात एक संग हिलल, आगिक हर लपटकेँ भ्रमित करैत, ओकरा रस्ता भुलाबैत।

भोर होइत–होइत, आगि अंततः पूर्ण रूपसँ बुताइ गेल। गामक एक–चौथाई घर जरि गेल छल, मुदा चन्ना गाछी, यद्यपि किनारेक किछु गाछ जरल–अधजरल

छल, मुख्य रूपसँ सुरक्षित रहि गेल। पीपर, गाछीक हृदय, पूर्ण रूपसँ अक्षत छल।

इन्द्राणी, राखिक बीच बैसल, बूढ़बासँ पुछलक, "बूढ़बा, अहाँ स्वयं आगि रोकलहुँ? "

"नहि," बूढ़बा धीरे बजलाह, "हम केवल जनैत छलहुँ जे पानि कतय अछि। बाकी काज अहाँ सभक हाथ, अहाँ सभक संगठन, आ अहाँ सभक साहस केलक। हम एकटा बात फेर सिद्ध होइत देखलहुँ, इन्द्राणी — स्मृति आ संगठन, एक संग, प्रकृतिक सबसँ भयंकर शक्तिकेँ सेहो चुनौती दऽ सकैत अछि।"

गामक लोक, जरल घर फेर सँ बनौलक, ई बेर पहिनेसँ बेसी सुरक्षित ढंगसँ — दीपक हेतु विशेष स्थान, पानिक आपातकालीन भंडार, आ आगि–सुरक्षाक नव नियम। "अगिनक राति," गामक स्मृतिमे, एकटा एहन कथा बनल जे हर पीढ़ीकेँ सिखबैत छल — प्रकृतिक शक्ति भयंकर होइत अछि, मुदा मनुष्यक एकता ओहिसँ बेसी भयंकर भ' सकैत अछि, जँ ओ सही दिशामे प्रयुक्त होइक।

अध्याय [–६०] पर टिप्पणी

सामुदायिक आपातकालीन प्रतिक्रिया आ सामूहिक कार्रवाई

अध्याय [–६०] सामूहिक कार्रवाईक शक्तिकेँ, विशेषतः पैघ प्राकृतिक/मानवनिर्मित आपदाक समय, प्रदर्शित करैत अछि। मानव–श्रृंखला बना पानि पहुँचाएब, एकटा वास्तविक, ऐतिहासिक रूपसँ प्रभावी आपातकालीन तकनीक थिक जे संगठित समुदायद्वारा प्रयुक्त होइत रहल अछि। बूढ़बाक भूमिका एतय महत्त्वपूर्ण अछि — ओ स्वयं चमत्कारिक ढंगसँ आगि नहि बुझबैत छथि, अपितु दिशा–निर्देश दैत छथि, जखन कि वास्तविक काज मनुष्यक सामूहिक प्रयाससँ होइत अछि, जे कथाक ओहि केंद्रीय दर्शनक अनुरूप अछि जे साक्षी–शक्ति मनुष्यक कर्मक विकल्प नहि, अपितु ओकर पूरक थिक।

अध्याय [–५९] (उनसठि)

दोसर बाढ़ि

दोसर बाढ़ि पुरान बाट चिन्है, तैयो नव घाव दै— जे गाम बाढ़ि झेलल, से पानिकेँ पढ़ब सिखलक।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: पानि पढ़नि

लोकधुन: बाढ़ि-गीत

दोसर बाढ़ि पुरान बाट चिन्है हे, तैयो नव घाव दै,
जे गाम बाढ़ि झेलल रे, से पानिकेँ पढ़ब सिखल।

पानि फेर चढ़ल धारसँ, पुरान बाट धेने,
मुदा एहि बेर गाम जागल, पहिनहि सुधि लेने।
पहिल बाढ़िक घाव मन छल, तैयो नव आयल,
हर बाढ़ि नव सीख दै, हर पानि किछु सिखाबय।

पहिल बाढ़िसँ डर, दोसरसँ ज्ञान भेल,
जे पानिक चढ़ाव पढ़ल, से घर पहिने ऊँच केलक।
महारपर अन्न धेल, माल-जाल सम्हारल,
जे बीतल बाढ़िसँ सिखल, से एहि बेर बचल।

पानि आबय-जाय हे, गाम पढ़ब सिखल रे,
जे बिपत्तिसँ सिखल, से अगिला बिपत्तिमे नहि डुबल।
धार वैह, पानि वैह, मुदा गाम आब सयान,
जे पानिकेँ पढ़ब सिखल, से बाढ़िमे नहि परेशान।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। अगिनक बाद, वर्षाक मौसम असाधारण रूपसँ तीव्र भेल — आ कमला–बलान, बहुत बरख बाद, फेर सँ अपन सीमा तोड़ि देलक।)

अगिनक तीन मास बाद, वर्षाक मौसम आयल — मुदा ई मौसम साधारण नहि छल। दिन–राति, बिनु रुकने, बरखा होइत रहल, जाबे धरि कमला–बलान, आ गामक चारू कात बहैत हर धार, अपन–अपन सीमा भूलि नहि गेल।

इन्द्राणी, जे अगिनक राति गामकेँ बचौने छलि, आब फेर एकटा नव परीक्षामे छलि। पाकल बान्ह, जे सुखदेव महतोक जमानाक बादसँ मजगूत मानल जाइत छल, एहि बेरक जलक जोरक सामने काँपय लागल।

"बूढ़बा," इन्द्राणी, राति भरिक बरखामे भीजल, पीपर लग दौड़ल आयलि, "बान्ह चारू कातसँ काँपि रहल अछि! हमरा डर अछि जे अगिनक बाद बाढ़ि, हमरा सभकेँ पूर्ण रूपसँ तोड़ि देत!"

बूढ़बा, स्वयं, गाछीक जड़िक भीतरसँ, पानिक बढ़तीक हर स्पन्दन अनुभव कऽ रहल छलाह। "इन्द्राणी, हमरा मोन अछि, बहुत बरख पहिने, गौरीक जमानामे, पहिल बाढ़ि आयल छल, जखन बान्ह पहिल बेर बनल छल। ओहि राति सात प्राण गेल छल। आइ, अहाँ सभ पहिनेसँ बेसी तैयार छी। मुदा ई पानि ओहि पानिसँ बेसी क्रोधित लगैत अछि।"

इन्द्राणी, गामक हर टोलाकेँ बजा, एकटा तत्काल योजना बनौलि — कमजोर बान्हक हिस्सा सभकेँ बालूक बोरा आ लकड़ीसँ मजगूत करब, वृद्ध आ बच्चा सभकेँ ऊँच जमीन (पुरान श्मशान, गौरीक जमानाक जकाँ) दिस पहिनहि सँ स्थानांतरित करब, आ नाव आ रस्साक व्यवस्था करब जँ आपातकालीन बचाव आवश्यक होइक।

राति गहींर होइत गेल, आ बान्हक एकटा हिस्सा, चर्मकार टोलाक दक्षिण दिस, अंततः टूटि गेल — मुदा ई बेर, टूटबासँ पहिने, गामक चेतावनी–व्यवस्था (घंटी, ढोलक धुन, पूर्व–निर्धारित संकेत) सक्रिय भऽ चुकल छल। लोक पहिनहि सँ सुरक्षित स्थान दिस जा चुकल छल।

मोहनक वंशज, जे अखनहु गामक ढोल–वादनक परम्परा सम्हारने छल, ओहि राति एकटा विशेष धुन बजौलक — तेज, बार–बार दोहरायल, जकरा गामक हर मनुष्य "खतराक धुन" रूपमे बचपनहि सँ सिखल छल। ई धुन, गामक

अन्हार गलीमे गूँजैत, हर घरकेँ जगा देलक, हर परिवारकेँ अपन पहिनहि सँ निश्चित सुरक्षित स्थान दिस दौड़ाओलक।

भोर होइत–होइत, पानि उतरय लागल। गामक कतेको घर बहि गेल, खेत बर्बाद भेल, मुदा एहि बेर, गामक कोनो प्राण नहि गेल — पहिल बेर, गामक स्मृतिमे, कोनो पैघ बाढ़िमे शून्य मृत्युक रिकॉर्ड।

इन्द्राणी, भोरक उजासमे, पीपर लग बैसल, थकल मुदा राहतसँ भरल। "बूढ़बा, हम सोचैत छी जे आइ हम गौरीक ऋण चुका देलहुँ। ओ दिन, सुभागी दादी बचि नहि सकलि। आइ, सभटा प्राण बाँचि गेल।"

बूढ़बा, गहींर सन्तोषसँ बजलाह, "इन्द्राणी, ई हमर हेतु सबसँ पैघ उपहार थिक — ई देखब जे हमर स्मृति, कालक्रममे, अहाँ सभक हाथमे एहन ज्ञान बनि गेल जे प्राण बचबैत अछि, केवल नाम नहि।"

अध्याय [–५९] पर टिप्पणी

पूर्व–चेतावनी प्रणाली आ आपदा–न्यूनीकरण

अध्याय [–५९] आपदा–प्रबन्धनक एकटा महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तकेँ कथाक रूप दैत अछि — पूर्व–चेतावनी प्रणाली आ पूर्व–निर्धारित निकासी–योजना, चाहे कतेक सरल होइक (एतय एकटा ढोल–धुन आ पूर्व–चिन्हित सुरक्षित स्थान), आपदाजनित मृत्युदरकेँ नाटकीय रूपसँ घटा सकैत अछि। अध्याय [–८९] केर पहिल बाढ़िक साथ तुलना कएला पर, ई अध्याय गामक संचित संस्थागत सीखक स्पष्ट, मापनीय प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि — जतय पहिल बाढ़िमे सात प्राण गेल छल, ओतय एहि बाढ़िमे कोनो प्राण नहि गेल, यद्यपि भौतिक क्षति समान वा बेसी छल।

अध्याय [–५८] (अट्ठावन)

तेसर बिपत्ति

एक बिपत्ति सिखबै, तेसर बिपत्ति पकबै— जे तीन बेर खसल, से चारिम बेर सम्हरि ठाढ़ होइ।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: तीन बिपत्ति, चारिम ठाढ़

लोकधुन: हिम्मत-गीत

एक बिपत्ति सिखबै हे, तेसर बिपत्ति पकबै,

जे तीन बेर खसल रे, से चारिम बेर सम्हरल।

अगिन देखल, बाढ़ि झेलल, तेसरो आबि गेल,
हर बिपत्ति नव घाव, नव सीख दैत गेल।
पुच्छलतारा जे कहल, से पहिने गाम बुझल,
तेँ एहि बेर ने चौंकल, ने डरसँ ओ हारल।

अगिन आयल, बाढ़ि आयल, तेसरो झेलल गाम,
मुदा पुच्छलतारा जे कहल, से पहिनहि गाम बुझल।
जे बीतल बिपत्तिसँ सिखल, से एहि बेर सम्हरल,
तीन बेर खसल जे, से चारिम बेर थिर भेल।

जे गाम मिलि ठाढ़ भेल हे, से कोनो बिपत्तिसँ नहि टूटल रे,
नाम बचल, हिम्मत बचल, फेर नव भोर आयल।
खसब कोनो हार नहि, फेर उठब असल जीत,
जे बिपत्ति झेलल हँसि, से गामक बनल रीत।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। अगिन आ बाढ़िक बाद, पुच्छलताराक तेसर आ अन्तिम पूर्वानुमान पूर्ण होइत अछि — एकटा नव रोग, जल–जनित, बाढ़िक बाद केर सड़ल पानिसँ जन्म लैत अछि।)

बाढ़िक पानि उतरलाक बाद, गामक कतेको स्थानपर सड़ल, ठहरल पानिक गड्ढा रहि गेल। दुइ सप्ताहक भीतर, एकटा नव रोग — पेट–दर्द, अत्यधिक दस्त, आ शीघ्र निर्जलीकरण — गामक बच्चा आ वृद्ध सभमे फैलय लागल।

इन्द्राणी, अगिन आ बाढ़ि दुनूसँ जूझि चुकल, आब तेसर परीक्षाक सोझाँ छलि। "बूढ़बा," ओ थकल स्वरमे बजलि, "पुच्छलतारा सही छल। तीन बिपत्ति — अगिन, बाढ़ि, आ आब रोग। हमरा डर अछि जे हमर लोक एतेक धरि सहन कऽ सकत की नहि।"

बूढ़बा, स्वयं थकल, मुदा दृढ़, बजलाह, "इन्द्राणी, अहाँक पुरखा सभ, पीढ़ी–दर–पीढ़ी, हर बिपत्तिसँ किछु–न–किछु सीख लेने छथि। महामारीक जमानामे विमला 'सामूहिक स्मरण' सिखलनि। आइ, अहाँकेँ ओ ज्ञान, संगहि नव, वैज्ञानिक ज्ञान सेहो चाही।"

गामक वैद्य, जे नगरक नव चिकित्सा–विद्यालयमे पढ़ल छल, तुरंत पहचानलक जे रोग गंदा पानिसँ फैलि रहल अछि। ओ गामक हर परिवारकेँ पानि उबालि पिबाक निर्देश देलक, आ नमक–चीनीक घोल तैयार करय सिखौलक, जे निर्जलीकरणसँ बचाब करैत छल।

संगहि, सोनमा माझिनक वंशज आ रत्नाक वंशज, अपन–अपन परम्परागत ज्ञानसँ, कोन जड़ी दस्त रोकैत अछि, आ कोन जल–स्रोत सुरक्षित अछि, से पहचानलनि। स्त्री सभक राति–सभा, गामक हर घरमे जाय, स्वच्छताक नियम — हाथ धोएब, पानि उबालब, गंदा पानिसँ दूर रहब — क पालन सुनिश्चित करौलक।

एहि तीनू ज्ञान — आधुनिक चिकित्सा, परम्परागत जड़ी–बूटी, आ सामाजिक संगठन — क संयुक्त प्रयाससँ, रोग तीन सप्ताहमे नियंत्रित भऽ गेल। गामक कुछ प्राण गेल, विशेषतः अत्यन्त वृद्ध आ अत्यन्त छोट बच्चा, मुदा पहिल महामारी (विमलाक जमानाक) जकाँ विनाशकारी नहि भेल।

इन्द्राणी, तीनू बिपत्ति पार कऽ, अंततः पीपर लग बैसल, आँखिमे थकानक संग एकटा गहींर सन्तोष। "बूढ़बा, हम सोचैत छलहुँ जे पुच्छलतारा हमरा सभक अन्त लऽ कऽ आयल छल। मुदा हम सभ अखनहु ठाढ़ छी।"

बूढ़बा, धीरे बजलाह, "इन्द्राणी, पुच्छलतारा अन्त लऽ कऽ नहि आयल छल। ओ केवल एकटा परीक्षा लऽ कऽ आयल छल — ई देखय हेतु जे कतेको शताब्दीक संचित ज्ञान, संचित संगठन, आ संचित प्रेम, वास्तवमे कतेक मजगूत भऽ चुकल अछि। आइ हम सभ ई जनलहुँ — ई एतेक मजगूत भऽ चुकल अछि जे तीन–तीन बिपत्ति एक संग सेहो एकरा तोड़ि नहि सकल।"

ओहि वर्षक तीनू बिपत्तिक कथा, गामक स्मृतिमे, "तीन बिपत्तिक बरख" रूपमे सुरक्षित रहल, आ हर अमावस्याक कबड्डीमे, ओहि बरख गेल हर नामक संग, ई वाक्य सेहो जोड़ल जाय लागल — "ओ बिपत्तिमे मरल, मुदा गाम नहि मरल।"

अध्याय [–५८] पर टिप्पणी

आपदाक श्रृंखला–प्रभाव आ बहु–आयामी प्रतिक्रिया

अध्याय [–५८], अध्याय [–६१]–६० सँ शुरू भेल त्रिस्तरीय आपदा–श्रृंखला (पुच्छलतारा क शकुन, अगिन, बाढ़ि) क समापन करैत अछि, जल–जनित रोगक रूपमे — जे वास्तविक महामारी–विज्ञानक दृष्टिएँ सेहो सटीक अछि, किएक तँ बाढ़िक बाद जल–जनित रोगक प्रकोप एकटा सुपरिचित, वास्तविक घटना थिक। ई अध्याय–श्रृंखला (६१–५८) सामूहिक रूपसँ ई प्रदर्शित करैत अछि जे बहु–स्तरीय आपदाक सामना करबाक हेतु बहु–आयामी प्रतिक्रिया चाही — आधुनिक विज्ञान, परम्परागत ज्ञान, आ सामाजिक संगठन, तीनूक संयुक्त उपयोग — जे कथाक सम्पूर्ण खण्ड–० परियोजनाक केंद्रीय सन्देशक (साक्षी–भाव आ सामुदायिक कर्म दुनूक आवश्यकता) एकटा सशक्त, व्यावहारिक प्रदर्शन थिक।

अध्याय [–५७] (सत्तावन)

साहेबक नोटबुक

साहेब जे लिखलक, से ओकर हिसाब— गाम जे मन राखलक, से गामक सत्य।

— गढ़ नारिकेल

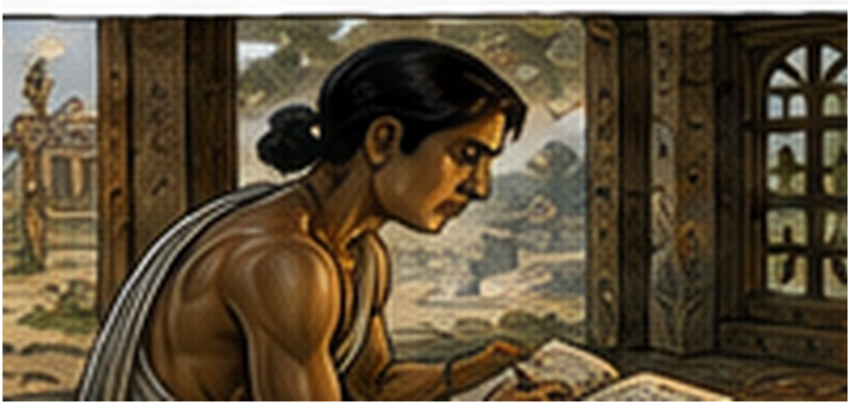

अध्यायारम्भ लोकगीत: कण्ठक कागच

लोकधुन: फकरा-धुन

साहेब जे लिखलक हे, से ओकर हिसाब,

गाम जे मन राखलक रे, से गामक सत्य।

साहेब आयल परदेससँ, नोटबुक हाथ धेने,
गामक रीति-रिवाज लिखल, अपन नजरि लेने।
जे बाहरसँ देखल, से आधा-अधूरा गनल,
भीतरक बात जे छल, से कागचमे नहि अँटल।

कागच परदेश जाय, नाम गामे रहय,
जे बाहरसँ आबि गनल, से भीतरक बात नहि जनल।
साहेबक नोटबुक गेल दूर, धूरा जमल पन्ना,
मुदा गामक कण्ठक कथा, अखनहु बजैत अपना।

नोटबुकमे अक्षर हे, कण्ठमे नाम रे,
जे गाम अपन कथा अपने राखल, से केओ लिखि नहि लऽ गेल।
बाहरक लेखक आबय-जाय, गाम अपने लेखक,
जे कण्ठमे कथा राखल, से युग-युग रहत जागल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। तीन बिपत्तिक बरखक बाद, एकटा अंग्रेज विद्वान गामक परम्पराक अध्ययन करय आबैत छथि — मुदा हुनकर लेखनी, नीक नियतिक बादो, कथाकेँ ठीक–ठाक बुझि नहि पबैत।)

इन्द्राणीक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटा नन्दकिशोरपर आयल। नन्दकिशोरक जमानामे, एकटा अंग्रेज विद्वान, नाम मिस्टर हेनरी थॉम्पसन, जे भारतीय लोक–परम्पराक अध्ययनमे रुचि राखैत छलाह, गढ़ नारिकेल पहुँचलाह — "तीन बिपत्तिक बरख" क कथा सुनि, जे आब आसपासक क्षेत्रमे प्रसिद्ध भऽ चुकल छल।

थॉम्पसन साहेब, अपन नोटबुक आ कलमक संग, गामक हर बुढ़–पुरान लोकसँ पुछताछ केलनि — "बूढ़बा" के छथि, "कबड्डी" क अर्थ की, "चन्ना गाछी" केर उत्पत्ति की। ओ ध्यानपूर्वक हर उत्तर लिखलनि, आ किछु सप्ताह बाद, एकटा

मोट पोथी लऽ कऽ गामसँ विदा भेलाह, ई कहैत जे "ई अद्भुत लोक–कथा इंग्लैंडक विद्वत्–समाजमे प्रकाशित होयत।"

नन्दकिशोर, ई देखि, संतुष्ट भेलाह — अंततः, बूढ़बाक कथा संसारक बाहर धरि पहुँचि रहल छल। मुदा जखन, बरख भरि बाद, थॉम्पसन साहेबक पोथीक एकटा प्रति गाम पहुँचल, तँ नन्दकिशोर आ गामक लोक, ओकरा पढ़ि (वा पढ़बा), स्तब्ध रहि गेल।

पोथीमे बूढ़बाकेँ "आदिम अन्धविश्वासक अवशेष" कहल गेल छल। "चन्ना गाछी" क वर्णन "पिछड़ल ग्रामीणक भूत–पूजा" रूपमे कएल गेल छल। कबड्डीक अनुष्ठानकेँ "बर्बर रीति–रिवाज" कहल गेल छल, आ स्त्री सभक राति–सभाकेँ "स्थानीय स्त्रीक अनियंत्रित सामाजिक व्यवहार" कहल गेल छल।

नन्दकिशोर, क्रोधित, पीपर लग गेलाह। "बूढ़बा, थॉम्पसन साहेब हमर सभटा कथा सुनलनि, मुदा ओ हमरा सभक अपमान लिखि देलनि! ओ हमरा सभक ज्ञानकेँ 'अन्धविश्वास' कहलनि, हमरा सभक न्यायकेँ 'बर्बरता' कहलनि!"

बूढ़बा, ई सुनि, बहुत काल चुप रहलाह। "नन्दकिशोर, हमरा अहाँक क्रोध बुझल अछि, आ ओ न्यायसंगत अछि। मुदा हमरा एकटा बात मोन पड़ैत अछि — हरिपति कवि, बहुत बरख पहिने, हमरासँ पुछने रहथिन जे की हमर कथा लिखल जाए, आ हम कहने रही जे जँ लिखल जाए, तँ ओ गामक अपने भाषामे, गामक अपने दृष्टिकोणसँ लिखल जाए। थॉम्पसन साहेब हमर कथा सुनलनि, मुदा हुनकर आँखि, हुनकर भाषा, हुनकर दृष्टिकोण, गामक नहि छल — ओ अपन संसारक चश्मासँ हमरा सभकेँ देखलनि, आ ओहि चश्मामे, जे किछु अपरिचित अछि, ओ प्रायः 'पिछड़ल' वा 'बर्बर' देखाइ पड़ैत अछि।"

नन्दकिशोर पुछलनि, "तँ हम की करी, बूढ़बा? की हम थॉम्पसन साहेबकेँ पत्र लिखी, विरोध करी? "

बूढ़बा धीरे बजलाह, "विरोध करू, अवश्य, मुदा ओकरासँ बेसी महत्त्वपूर्ण काज करू — गंगाधरक जकाँ, आ हरिपति कविक जकाँ, हमर अपन कथा, हमरहि भाषामे, हमरहि दृष्टिकोणसँ, सुरक्षित राखू। जँ बाहरी लोक हमरा गलत बुझय चाहय, तँ ओकरा रोकब हमर हाथमे नहि। मुदा हम अपने आपकेँ सही बुझी, आ अपन सत्यकेँ अपन शब्दमे राखी — ई हमर हाथमे अछि, आ ई काज हम कहियो छोड़ब नहि।"

नन्दकिशोर, थॉम्पसन साहेबकेँ एकटा शालीन, मुदा दृढ़ पत्र लिखलनि, गामक परम्पराक असली अर्थ स्पष्ट करैत। ओकर कोनो उत्तर नहि आयल। मुदा नन्दकिशोर, गंगाधर आ हरिपति कविक परम्पराकेँ आगू बढ़ाबैत, गामक कथाक अपन विवरण, गामक अपन भाषामे, आओर सावधानीसँ संकलित करय लागल — ई जनैत जे असली परिभाषा बाहरसँ नहि, भीतरसँ आबय पड़त।

अध्याय [-५७] पर टिप्पणी

औपनिवेशिक नृजातीयता आ स्वयं-प्रतिनिधित्वक महत्त्व

अध्याय [-५७] औपनिवेशिक कालक नृजातीय अध्ययनक एकटा वास्तविक, दस्तावेजीकृत प्रवृत्तिकेँ स्पर्श करैत अछि — जतय अंग्रेज विद्वान, कतेको बेर नीक नियतिसँ, भारतीय लोक-परम्पराक अध्ययन करैत छलाह, मुदा हुनकर सांस्कृतिक पूर्वाग्रह, स्थानीय ज्ञान-प्रणाली आ सामाजिक व्यवस्थाकेँ "आदिम" वा "अन्धविश्वासी" रूपमे चित्रित करैत छल। ई अध्याय आत्म-प्रतिनिधित्वक (self-representation) महत्त्वकेँ रेखांकित करैत अछि — ई सिद्धान्त जे कोनो समुदायक अपन कथा, अपन भाषा आ दृष्टिकोणसँ, स्वयं लिखब आवश्यक थिक, ताकि बाहरी विकृतिसँ बचल जा सकय। ई सिद्धान्त "विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलन" क मूल प्रेरणासँ गहींराइसँ प्रतिध्वनित होइत अछि।

अध्याय [−५६] (छप्पन)

स्वाधीनताक पुकार

जे पुकार गाम–गाम पहुँचल, से एक कण्ठक नहि— स्वाधीनता सेहो एकटा साझा गीत छी।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: साझा पुकार

लोकधुन: आन्दोलन-गीत

जे पुकार गाम-गाम पहुँचल हे, से एक कण्ठक नहि,

स्वाधीनता सेहो रे, एकटा साझा गीत छी।

दूर सँ आयल पुकार, गाम-गाम गूँजल,
एक हाथ उठल पहिने, फेर सय हाथ जुड़ल।
जे डरसँ चुप छल, से आब स्वर मिलाओल,
साझा पुकारमे अपन डर हरा देलक गाम।

एक स्वर उठल, दस स्वर जुड़ल, गाम भरि गूँजल,
जे अकेल छल, से आब सभक संग ठाढ़।
पुकार एक कण्ठक नहि, हजार कण्ठक भेल,
जे मिलि कऽ बाजल, तकर स्वर आकाश छूएल।

जे गीत सभ मिलि गाबय हे, से कोनो राज नहि रोकि सकै रे,
नाम-नाम जुड़ल, तखनहि पुकार पैघ भेल।
एक-एक स्वर छोट छल, मिलि कऽ पैघ भेल,
साझा गीतमे गाम अपन स्वतंत्रता पओल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, स्वाधीनता–आन्दोलनक लहर गढ़ नारिकेल धरि पहुँचैत अछि — आ गामकेँ बुझायल जे शताब्दियोंसँ सिखल सामूहिक संगठनक कला, स्वाधीनताक संघर्षमे सेहो ओतबे उपयोगी थिक।)

नन्दकिशोरक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटी लक्ष्मीदेवीपर आयल। लक्ष्मीदेवीक जमानामे, सम्पूर्ण भारतमे स्वाधीनता–आन्दोलनक लहर तीव्र भऽ चुकल छल — नमक–सत्याग्रह, विदेशी वस्त्रक बहिष्कार, आ असहयोग–आन्दोलनक समाचार, अखबार आ यात्रीक मुँहसँ, गढ़ नारिकेल धरि सेहो पहुँचि रहल छल।

एकटा युवा स्वाधीनता–सेनानी, नाम रामाश्रय, नगरसँ यात्रा कऽ, गढ़ नारिकेल पहुँचल, गामक लोकसँ आन्दोलनमे शामिल होएबाक आह्वान करय। "भाइयो–बहिनो," ओ चौपाल पर चिचिआएल, "अंग्रेज सरकार हमरा सभक अन्न,

हमरा सभक भूमि, हमरा सभक स्वाभिमान लूटि रहल अछि! हमरा सभकेँ एकजुट होय, विदेशी वस्त्र त्यागि, स्वदेशी अपनाबय पड़त!"

लक्ष्मीदेवी, ई सुनि, पीपर लग गेलि। "बूढ़बा, ई स्वाधीनताक बात नीक लगैत अछि, मुदा हमरा डर अछि। जँ हम सभ एहि आन्दोलनमे शामिल होइ, तँ अंग्रेज सरकार क्रोधित भऽ सकैत अछि। हमरा सभ पहिनहि सँ बहुत बिपत्ति सहि चुकल छी।"

बूढ़बा, बहुत काल सोचैत, अन्ततः बजलाह, "लक्ष्मीदेवी, अहाँकेँ मोन अछि सोनमा माझिनक कथा — जे कहने रहथि जे भुलाइकेँ पूर्ण रूपसँ नकारब सम्भव नहि, मुदा भुलाइक पहिने हर नामकेँ उचित सम्मान देब सम्भव अछि? स्वाधीनता सेहो ओहिना अछि। हम नहि जनैत छी जे ई संघर्ष कतेक बरख चलत, वा एकर परिणाम की होयत। मुदा हम एतबे जनैत छी — जे मनुष्य अपन स्वाभिमानक हेतु ठाढ़ होइत अछि, ओकर नाम, चाहे ओ जीतय वा हारय, याद राखय योग्य अछि।"

लक्ष्मीदेवी, ई सुनि, एकटा नव संकल्प लेलि। ओ स्त्री सभक राति–सभाक अनुभवी नेतृत्वक बलपर, गामक स्त्री सभकेँ संगठित केलि, विदेशी वस्त्रक होली जराबय। गामक युवा, नारिकेल पात पाठशालाक शिक्षासँ प्रेरित, स्वदेशी हेतु सूत कातब आ खादी बुनब सिखलक। बूढ़–पुरान लोक, कबड्डीक अनुष्ठानक अनुशासन आ धैर्यसँ, गामक हर घरमे आन्दोलनक सूचना पहुँचाओलक।

अंग्रेज प्रशासन, गामक बढ़ैत संगठनसँ चिंतित भऽ, एकटा सिपाही–दल पठौलक, आन्दोलनकारी सभकेँ गिरफ्तार करय। मुदा गामक लोक, सैकड़ों बरखक संगठन–अनुभवसँ, शांतिपूर्ण, मुदा दृढ़ प्रतिरोध केलक — सत्याग्रहक सिद्धान्तक अनुसार, बिनु हिंसाक, बिनु पाछू हटने।

रामाश्रय आ किछु गामक युवा गिरफ्तार भेल, मुदा गामक शेष लोक, अपन संगठन कायम राखि, आन्दोलनकेँ जारी रखलक। कतेक मास बाद, रामाश्रय आ आर सभ मुक्त भेल, आ लौटला पर, गामक लोक हुनका वीरक रूपमे स्वागत केलक।

बूढ़बा, ओहि साँझ, लक्ष्मीदेवीसँ बजलाह, "लक्ष्मीदेवी, आइ हम एकटा नव प्रकारक कबड्डी देखलहुँ — जतय गामक हर मनुष्य, अपन स्वाभिमानक हेतु, कोनो अदृश्य विपक्षी विरुद्ध खेललक, आ नाम गमौने बिना, सभटा नाम बचा राखलक।"

अध्याय [−५६] पर टिप्पणी

सामुदायिक संगठन−अनुभवक राजनैतिक अनुप्रयोग

अध्याय [−५६] ई दर्शाबैत अछि जे शताब्दियोंसँ विकसित सामुदायिक संगठन−क्षमता — साझा निर्णय−निर्माण, सूचना−प्रसार, धैर्यपूर्ण प्रतिरोध — कोना स्वाधीनता−आन्दोलन जकाँ पैघ राजनैतिक संघर्षमे सेहो प्रभावी ढंगसँ लागू भ' सकैत अछि। गांधीवादी सत्याग्रहक सिद्धान्त — अहिंसात्मक, मुदा दृढ़ प्रतिरोध — गामक अपन दीर्घकालिक परम्परा (जेना अध्याय [−८५] मे आमिल जयसिंहक सामना करब) क संग स्वाभाविक अनुनाद राखैत अछि, ई देखबैत जे स्थानीय आ राष्ट्रीय स्तरक संघर्ष प्रायः एकहि मौलिक मानवीय मूल्यसँ प्रेरित होइत अछि।

अध्याय [–५५] (पचपन)

स्वतंत्रताक भोर

भोर भेल, मुदा हर आँगनमे एक्के बेर नहि— जे नाम आजाद, तकर भोर सभसँ पहिने।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: सभक भोर

लोकधुन: भोर-गीत

भोर भेल हे, मुदा हर आँगनमे एक्के बेर नहि,

जे नाम आजाद रे, तकर भोर सभसँ पहिने।

तिरंगा उठल आकाश, ढोल-नगाड़ा बाजल,
चौपालपर उत्सव भेल, गाम खुशीसँ नाचल।
मुदा टोलक ओहि कोनमे, जतय दीप ने जरल,
ओतय भोर अखनहु नहि, अन्हार अखनहु रहल।

तिरंगा चढ़ल चौपालपर, बच्चा गीत गाबय,
मुदा जकर घर अखनहु अन्हार, ओकरो भोर चाही।
आजादी एक दिनक नहि, हर आँगनक बात,
जे घर अखनहु भूखल, ओकरो चाही सौगात।

स्वतंत्रता संघर्षक अन्त नहि हे, नव आरम्भ रे,
जे नाम सभक भोर देखत, तखनहि पूरा आजादी।
एक टोल आजाद भेल, दोसर अखनहु बन्हल,
जखन सभक घर उजरत, तखनहि भोर पूरा भेल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, भारत स्वतंत्र होइत अछि — आ गढ़ नारिकेल, अपन शताब्दियोंक संघर्ष आ स्मृतिक संग, एकटा नव युगमे प्रवेश करैत अछि।)

लक्ष्मीदेवीक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटा विश्वम्भरनाथपर आयल। विश्वम्भरनाथक जमानामे, पन्द्रह अगस्तक भोरे, सम्पूर्ण भारतमे, गढ़ नारिकेल सहित, एकटा नव सूर्य उगल — भारत स्वतंत्र भऽ गेल छल।

गामक चौपाल पर, पहिल बेर, तिरंगा फहरायल गेल। गामक बच्चा, नारिकेल पात पाठशालाक शिक्षासँ, "जन गण मन" गाबय सिखने छल, आ ओहि भोरे, हर कंठसँ ई गीत गूँजल। रामाश्रय, जे स्वाधीनता–आन्दोलनक हेतु जेल गेल छलाह, आइ गामक सम्मानित नेता छलाह, आ ओ चौपाल पर भाषण देलनि — "आइ हम

स्वतंत्र छी, मुदा स्वतंत्रता केवल आरम्भ थिक। असली काज, अपन स्वतंत्रताकेँ सार्थक बनाएब, अखनहु बाकी अछि।"

विश्वम्भरनाथ, ओहि साँझ, पीपर लग गेलाह, बूढ़बाक संग एहि ऐतिहासिक क्षणकेँ बाँटय। "बूढ़बा, आइ भारत स्वतंत्र भेल। अहाँ सैकड़ों बरखसँ एहि गामक साक्षी छी — वाचस्पति मिश्रक जमानासँ, उदयनाचार्यक जमानासँ, गंगेश उपाध्यायक जमानासँ, आ आब अंग्रेजी शासनक अन्त धरि। अहाँकेँ की लगैत अछि? "

बूढ़बा बहुत काल चुप रहलाह, ओ चुप्पी जे सैकड़ों बरखक स्मृतिकेँ एकहि क्षणमे समेटैत अछि। "विश्वम्भरनाथ," ओ अन्ततः बजलाह, स्वरमे एकटा गहींर भावुकता, "हम वाचस्पति मिश्रक वाद–शालासँ आइ धरि, हुलासाक, सुखदेवक, रत्नाक, गंगेशक, गौरीक, सावित्रीक — सैकड़ों नामक कथा धेने आयल छी। हर एक नाम एकटा प्रश्न पुछैत छल — कि न्याय सम्भव अछि? कि सम्मान सम्भव अछि? कि समानता सम्भव अछि? आइ, स्वतंत्रताक ई भोर, ओ प्रश्न सभक उत्तर नहि, मुदा ओ प्रश्न सभ पुछबाक अधिकारक स्वीकृति थिक। एकटा राष्ट्र, जे अपन नागरिकक प्रश्न सुनय तैयार होइक — इएह त हुलासा, सुखदेव, आ रत्ना कहियो नहि पाओल छल।"

"तँ की हमर सभटा संघर्ष आइ पूर्ण भेल? " विश्वम्भरनाथ पुछलनि।

"नहि," बूढ़बा धीरे बजलाह, "स्वतंत्रता संघर्षक अन्त नहि, संघर्षक नव रूप थिक। जाति, लिंग, गरीबी, अन्यायक जड़ि, राष्ट्रक स्वतंत्रताक संगहि नहि उखड़ि जाइत। हमरा डर अछि, आ हमरा आशा सेहो, दुनू, ई अछि — जे अहाँक बच्चा, आ हुनकर बच्चा, हमरा सभक शेष कथा लिखताह। हमर काज, इन्द्राणी बहुत

बरख पहिने कहने रहथि, कहियो पूर्ण नहि होइत। मुदा आइ, विश्वम्भरनाथ, हम एकटा नव आशा अनुभव करैत छी जकर नाम हम पहिने कहियो नहि जनने रही — स्वतंत्रता।"

ओहि राति, अमावस्या नहि छल, मुदा गामक लोक, स्वतःस्फूर्त रूपसँ, पीपर लग जुटल, कबड्डी नहि, मुदा एकटा नव तरहक उत्सव मनाबय — दीप जरा, गीत गा, आ सभटा गेल नामकेँ, एक–एक कऽ, स्वतंत्र भारतक ई समाचार सुनाबय। "सुनू," गामक बच्चा–बच्चा फुसफुसाएल, "भारत स्वतंत्र भऽ गेल। अहाँ जे किछु सहलहुँ, ओ व्यर्थ नहि गेल।"

अध्याय [–५५] पर टिप्पणी

स्वतंत्रता आ संघर्षक निरन्तरता

अध्याय [–५५] भारतीय स्वतंत्रताक ऐतिहासिक क्षणकेँ कथाचक्रक भीतर स्थापित करैत अछि, ई सावधानीपूर्वक स्पष्ट करैत जे स्वतंत्रता, चाहे कतेक महत्त्वपूर्ण होइक, सामाजिक न्यायक सम्पूर्ण संघर्षक अन्त नहि थिक, अपितु एकटा नव चरणक आरम्भ थिक। बूढ़बाक चिंतन — जे जाति, लिंग, आ गरीबीक अन्याय राष्ट्रीय स्वतंत्रताक संगहि स्वतः समाप्त नहि होइत — कथाक ओहि यथार्थवादी दृष्टिकोणक अनुरूप अछि जे "गोहि सभक बीच जलसमाधि" क सम्पूर्ण परियोजनाकेँ परिभाषित करैत अछि: कोनो एक विजय, चाहे कतेक ऐतिहासिक होइक, सम्पूर्ण कथाक अन्त नहि होइत।

अध्याय [–५४] (चौवन)

जमींदारीक अन्त

जमीनक मालिक बदलल, माटि नहि बदलल— जे माटि जोतै, तकरे नाम खेत जनै।

— गढ़ नारिकेल

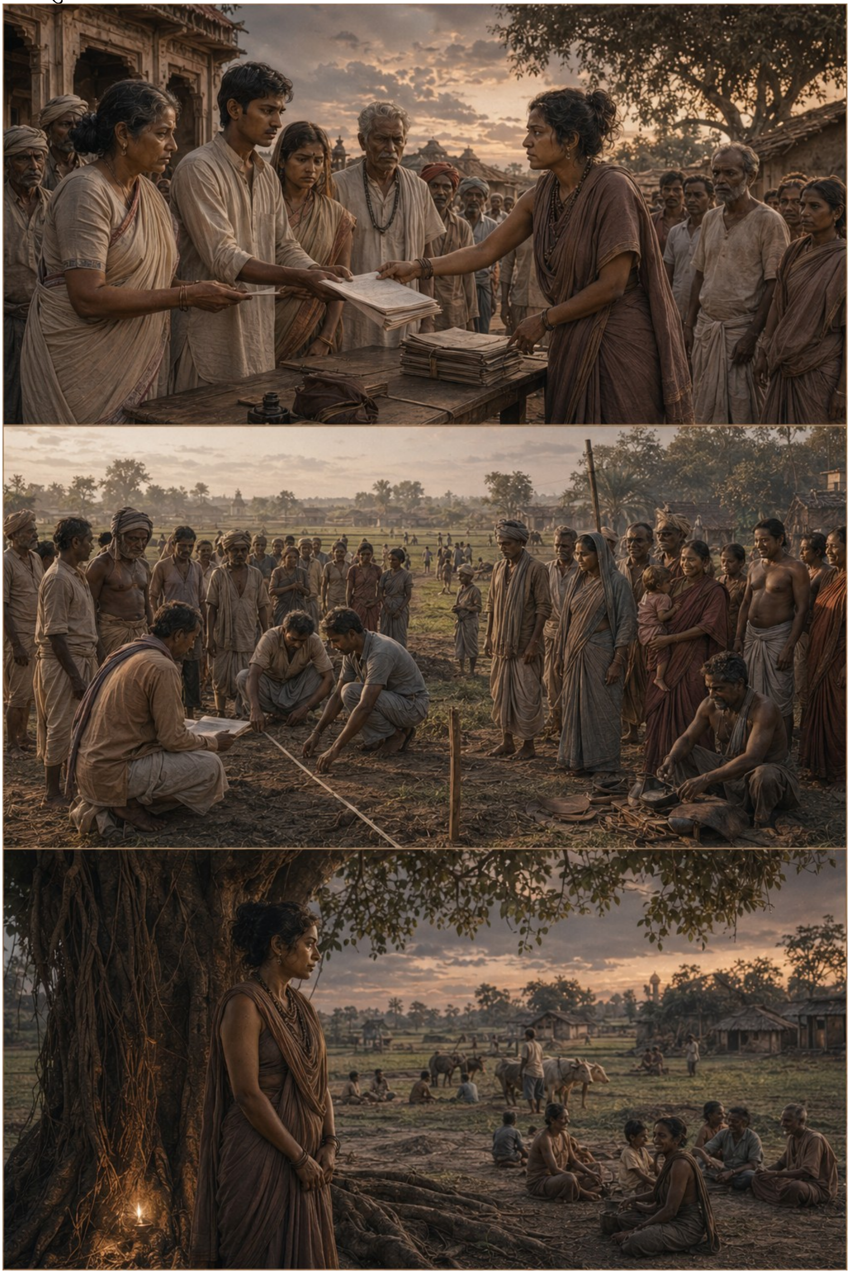

अध्यायारम्भ लोकगीत: माटिक मालिक

लोकधुन: हरबाही-गीत

जमीनक मालिक बदलल हे, माटि नहि बदलल,

जे माटि जोतै रे, तकरे नाम खेत जनै।

जमींदारक हाथसँ खेत निकलल, कागच बदलल,
मुदा जे हर चलाबय, से हर वैह किसान रहल।
बरखों घाम बहाओल, अन्न उपजाओल जे,
से आब अपन माटिक मालिक, अपन खेतक धनी।

जमींदार गेल, कागच बदलल, मुदा घाम वैह,
जे बीया बाउल, जे अन्न उपजाओल, से किसानक।
मोहर बदलल, मालिक बदलल, माटि रहल वैह,
जे माटिसँ बात करय, तकरे माटि चिन्है।

राजा आबय-जाय हे, माटि थिर रहै रे,
जे माटिकेँ अपन बुझल, तकरे नाम माटि लेत।
कागचक मालिक बदलल, घामक मालिक वैह,
जे हरसँ माटि जोतल, तकरे नाम खेत गाबय।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। स्वतंत्रताक कतेक बरख बाद, नव भारत सरकार जमींदारी प्रथा समाप्त करैत अछि — आ गढ़ नारिकेलक भूमि–सम्बन्ध, शताब्दियोंक बाद, अन्ततः बदलि जाइत अछि।)

विश्वम्भरनाथक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटी कमला देवी (द्वितीय, अपन पूर्वज कमला देवीक सम्मानमे नाम पओने) पर आयल। कमला देवीक जमानामे, नव भारत सरकार जमींदारी उन्मूलन कानून पारित केलक — शताब्दियोंसँ चलल आबि रहल जमींदारी व्यवस्था, जकर छायामे उग्रसेन ठाकुरसँ लऽ कऽ रघुबीर सिंह धरिक कतेको कथा घटित भेल छल, अन्ततः कानूनी रूपसँ समाप्त भऽ गेल।

गामक अन्तिम जमींदार परिवार, प्रतापसेन ठाकुरक वंशज, अपन अधिकांश भूमि सरकारकेँ सौंपय बाध्य भेल, आ ओहि भूमिक एकटा पैघ हिस्सा, भूमिहीन किसान आ चर्मकार टोलाक परिवार सभमे बँटल गेल।

कमला देवी, ई ऐतिहासिक परिवर्तन देखि, पीपर लग गेलि। "बूढ़बा, आइ जमींदारी समाप्त भऽ गेल। सुखदेव महतोक जमीन, जकरा उग्रसेन ठाकुर छिनने रहथिन, आइ हुनकहि वंशज सभकेँ, कानूनी रूपसँ, स्थायी अधिकारक संग वापस भेटि गेल।"

बूढ़बा, ई सुनि, गहींर सन्तोषसँ बजलाह, "कमला देवी, हम बहुत बरख पहिने कहने रहथुँ जे सुखदेवक बदला हमरा एक बेर भेटि चुकल अछि, अदालतक निर्णयक रूपमे। आइ, ओ बदला कानूनी, स्थायी रूप ल' रहल अछि। ई देखब, इएह त हमर सम्पूर्ण अस्तित्वक अर्थ थिक — ई देखब जे अन्याय, चाहे कतेक पुरान होइक, अन्ततः सुधारल जा सकैत अछि, जँ पर्याप्त पीढ़ी, पर्याप्त धैर्य, आ पर्याप्त संघर्ष होइक।"

मुदा परिवर्तन सरल नहि छल। प्रतापसेन ठाकुरक वंशज, अपन भूमि आ प्रतिष्ठा खसैत देखि, कटु आ क्रोधित भेल। गामक कतेको पुरान सामाजिक सम्बन्ध, जे भूमि–स्वामित्वपर आधारित छल, तनावग्रस्त भऽ गेल। किछु परिवार, नव भूमि पाबि, आत्मनिर्भर भेल; किछु परिवार, अपन भूमि खोइ, असमंजसमे पड़ि गेल।

कमला देवी, ई तनाव देखि, बूढ़बासँ पुछलि, "बूढ़बा, ई परिवर्तन नीक थिक वा बेजाय? किछु लोक खुश छथि, किछु दुःखी।"

बूढ़बा बजलाह, "कमला देवी, हर पैघ परिवर्तन, चाहे कतेक न्यायसंगत होइक, किछु लोकक हेतु कठिन होइत अछि। मुदा प्रश्न ई नहि थिक जे परिवर्तन सभकेँ खुश करैत अछि की नहि; प्रश्न ई थिक जे परिवर्तन न्यायसंगत अछि की नहि। सैकड़ों बरखसँ, चर्मकार टोला, आ आर भूमिहीन परिवार, बिनु अपन

भूमिक, बिनु अपन स्थायित्वक, जीबैत आयल छथि। आइ ओ स्थायित्व, कमसँ कम आंशिक रूपमे, हुनका भेटल अछि। ई न्याय थिक, चाहे ई सभकेँ खुश नहि करय।"

समयक संग, गामक सामाजिक संरचना धीरे–धीरे बदलल। भूमि–स्वामित्व, जे कहियो जातिक संग गहींराइसँ जुड़ल छल, आब बदलय लागल। नव पीढ़ी, नारिकेल पात पाठशालाक शिक्षासँ लैस, भूमिसँ बाहर सेहो रोजगारक अवसर खोजय लागल — सरकारी नौकरी, व्यापार, आ शहरी काज।

कमला देवी, अपन अनुष्ठानक कर्तव्य निमाहैत, बूढ़बासँ बजलि, "बूढ़बा, गाम बदलि रहल अछि। शायद बहुत तेजीसँ।"

बूढ़बा, धीरे बजलाह, "कमला देवी, गाम सदिखन बदलल अछि — वाचस्पतिक जमानासँ आइ धरि, कोनो एक क्षण एहन नहि रहल जकरा 'अपरिवर्तनीय' कहल जा सकए। हमर काज परिवर्तनकेँ रोकब नहि, अपितु हर परिवर्तनक संग जुड़ल नामकेँ, हर परिवर्तनक मूल्यकेँ, याद राखब थिक — ताकि गाम, चाहे कतेक बदलय, अपन जड़िकेँ पूर्ण रूपसँ नहि बिसरय।"

अध्याय [–५४] पर टिप्पणी

जमींदारी उन्मूलन आ ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन

अध्याय [–५४] स्वतंत्र भारतक एकटा महत्त्वपूर्ण भूमि–सुधार कानून — जमींदारी उन्मूलन — क ऐतिहासिक प्रभावकेँ कथाक रूप दैत अछि। ई कानून, यद्यपि अपन क्रियान्वयनमे असमान आ अपूर्ण रहल (एकटा तथ्य जकरा अध्याय जान–बूझि कऽ नहि छिपबैत, "तनाव" आ "असमंजस" क उल्लेख करैत), मुदा सैद्धान्तिक रूपसँ भारतीय ग्रामीण समाजमे भूमि–सम्बन्ध आ जाति–आधारित शक्ति–संरचनाकेँ स्थायी रूपसँ प्रभावित केलक। ई अध्याय अध्याय [–९२] (सुखदेव) आ अध्याय [–६४] (सुखदेवक बदला) सँ शुरू भेल भूमि–न्यायक विषयक एकटा अन्तिम, ऐतिहासिक–कानूनी परिणतिकेँ चिन्हित करैत अछि।

अध्याय [–५३] (त्रेपन)

बिजलीक पहिल दीप

बिजलीक दीप जरल, मुदा पुरान दीपक तेल नहि बिसरू— नव इजोत आबे, पुरान नाम नहि मेटाबे।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: नव इजोत, पुरान बाती

लोकधुन: दीप-गीत

आयल रे बिजली, चौपालपर लौ जरल हे,

पुरनका माटिक दीप, तकर तेल नहि सुखाउ।

तारमे इजोत आयल, बल्ब जरल पहिल बेर,
गाम अचम्भित देखल, अन्हार भागल फेर।
मुदा जे माटिक दीप बरखों घर उजारल,
ओकर तेल, ओकर बाती, मन धरि राखू सम्हारल।

इजोत त बदलल, मुदा नाम नहि बदलै रे,
नव लौ ऊपर चढ़य, पुरान बाती मन बसाउ।
नव साधन आबय-जाय, नाम रहय थिर,
जे इजोत गाम बदलल, से गामक नाम ने बदलल।

जे इजोत नाम देखाबै, से इजोत गामक हे,
जे इजोत नाम नुकाबै, से इजोत बजारक — बचाउ।
चमक नव भलहिं आबय, जड़ि पुरनके राखू,
नव लौ संग पुरान बाती, दुनूकेँ मन बसाउ।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। नेहरू–युगक विकास–योजना गामक द्वार लग पहुँचैत अछि — सड़क, बिजली, आ नव आशा।)

कमला देवीक देहावसानक बाद गामक राति–सभा आ नाम–अनुष्ठानक भार ओकर बेटा हरिवंशपर आयल। हरिवंश ओहि पीढ़ीक मनुष्य छलाह जे एक हाथें पुरान परम्पराक डोरी धेने छलाह आ दोसर हाथें नव युगक ओर ताकि रहल छलाह। हुनकर जमानामे, स्वतंत्र भारतक पंचवर्षीय योजनाक अन्तर्गत, पहिल बेर गढ़ नारिकेल धरि पाकल सड़क आ बिजलीक तार आबय लागल। खम्भा गाड़य बला मजदूर जखन गाम आयल, तखन बच्चा सभ ओहि लोहाक ठाढ़ खम्भाकेँ आश्चर्यसँ घेरि लेलक, आ बूढ़–पुरान, पीपरक छाहरिमे बैसल, फुसफुसाइत रहलाह जे ई नव इजोत गामक पुरान अन्हारकेँ केहेन बदलत।

ओहि साँझ, जखन चौपालक पहिल बिजलीक दीप एकाएक जरल, तखन सम्पूर्ण गाम — बच्चासँ वृद्ध धरि — ठमकि गेल। बल्बक पीयर इजोत डकही पोखरिक पानिपर काँपल, आ ओहि काँपैत इजोतमे लोकक चेहरा, गाछक पात, आ महारक कातक नारिकेल पात सभ, एक संग चमकल। केओ हाथ जोड़ि लेलक, केओ बच्चाकेँ कान्हपर उठा देखा देलक, आ केओ चुपचाप पुरनका माटिक दीपकेँ, जकरा ओ बरखोंसँ सम्हारने छल, हाथमे कसने ठाढ़ रहल।

हरिवंश, पीपर लग जाइत, बूढ़बासँ बजलाह, "बूढ़बा, आब हमरा सभकेँ अहाँक शंख आ डोरीक दीपसँ बेसी उजास भेटत। की ई अहाँकेँ पुरान लगबैत अछि? "

बूढ़बा हँसलाह, "हरिवंश, उजासक कोनो रूप हमरा पुरान नहि लगबैत। हम स्वयं दीपसँ शुरू भेल छलहुँ, आइ बिजलीक दीप देखि रहल छी। जे बदलल नहि, से अछि — अन्हारमे उजास लऽ आएब, चाहे ओ दीप होइक वा बिजली।"

कनेक रुकि, बूढ़बा फेर बजलाह, "मुदा एक बात मन राखिहँ, हरिवंश। दीप जतेक इजोत दैत अछि, ततबे परछाहिँ सेहो बनबैत अछि। बिजली गामक हर कोनाकेँ इजोत देत, ई नीक; मुदा जँ ओहि इजोतमे लोक अपन पुरनका नाम आ पुरनका मुँह बिसरय लागय, तँ ई इजोत, अन्हारसँ बेसी खतरनाक। इजोत ओ नीक जे नाम देखाबय, नहि जे नामकेँ चौन्हिया दैत अछि।"

बिजलीक तार गामक हर घर धरि पहुँचय बहुत बरख लागल। मुदा ओहि पहिल राति सँ, चौपालक दीप कहियो नहि बुताएल। हरिवंश हर बरख, ओहि दीपक तर बैसि, गामक नव नामकेँ नव उजासमे स्मरण करैत रहलाह — आ संगहि, अपन झोरामे, ओ पुरनका माटिक दीप सेहो राखने रहलाह, जकर तेल ओ

कहियो पूरा सुखय नहि देलनि। किएक तँ, जेना बूढ़बा कहने रहथिन, नव इजोत आबय, मुदा पुरान नामक तेल जँ सुखि गेल, तँ फेर जरएबामे बहुत बेर लागि जाइत अछि।

अध्याय [–५२] (बावन)

सीमाक पुकार

सीमापर तोप बाजल, गाममे सोहरो बाजल— जे गाम युद्धो झेलल, से नामकेँ नहि छोड़लक।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: सीमा आ सोहर

लोकधुन: बिदाइ-सोहर

बेटा सीमा दिस चलल हे, माए आँगन ठाढ़,

देह जाय दूर देस, नाम रहय एहि पार।

तोप बाजल सीमापर, सोहरो बाजल गाम,
बेटा बिदा भेल युद्ध, माए जपल ओकर नाम।
देह दूर मोर्चापर, मन एतय अँगना,
हर साँझ माए जोहल, कखन घुरत लल्ला।

जे घुरत, तकर सोहर बाजत रे अँगना,
जे नहि घुरत, तकर नाम जपत सारा गाम।
सीमा माटिकेँ बाँटल, मुदा नामकेँ नहि,
जे देह ओहि पार गेल, तकर नाम एहि पार।

सीमा देह चिन्है हे, नाम नहि चिन्है सीमा,
दुनू पातपर परनाम, दुनू जीभपर नाम।
युद्ध देह लऽ सकल, नाम नहि लऽ सकल,
जे गाम युद्धो झेलल, से नाम धेने ठाढ़ रहल।

❖

(एकटा उपन्यास-अंश। १९६२ आ १९६५ क युद्ध गामक युवाकेँ सीमा दिस बजबैत अछि।)

हरिवंशक जमानामे, दूर सीमापर युद्धक ढोल बाजल। पहिने चीन दिससँ, फेर पाकिस्तान दिससँ, समाचार रेडियोक फुसफुसाहटमे आ बजारक चर्चामे गाम धरि पहुँचल। गामक कतेको युवा, जिनकर हाथ आइ धरि हर आ जालपर छल, से आब वर्दी पहिरि सीमा दिस निकसल। रामाश्रयक पोता, नाम विजयकुमार, सेहो सेनामे भर्ती भेल। ओकर बिदाइक राति, गामक स्त्री सभ ओकरा तिलक लगेलनि, आ माए, आँचरसँ मुँह झाँपि, ओहि समदाउनकेँ रोकि नहि सकलीह जे विदाइक बेर अपने-आप कण्ठसँ उठि अबैत अछि।

ओहि दुइ युद्धक बीच गाम भीतरसँ बदलि गेल। रेडियोपर आबैत समाचार साँझक चौपालक मुख्य चर्चा बनि गेल, आ जे घर अपन बेटाकेँ सीमापर पठौने छल, ओकर आँगनमे एकटा गहींर चुप्पी बसि गेल — ने पूरा भय, ने पूरा गर्व, केवल प्रतीक्षा। स्त्री सभ राति–सभामे ओहि युवाक नामकेँ अलगसँ स्मरण करैत, आ बूढ़बा हर ओहि नामकेँ, जे गामसँ सीमा दिस निकसल छल, अपन स्मृतिमे एहन जतनसँ राखैत, जेना ओ नाम दूर मोर्चापर गामक एकटा अदृश्य पहरा बनि ठाढ़ होथि।

१९६५क युद्धमे विजयकुमार घायल भेलाह, आ महीनोंक चिकित्साक बाद, एक हाथ कमजोर लऽ, गाम घुरलाह। ओकर घुरबाक राति, हरिवंश पीपर लग गेलाह। "बूढ़बा, हमरा डर लागल छल जे विजयकुमारक नाम सेहो अहाँक सूचीमे जुड़त।"

बूढ़बा बजलाह, "हरिवंश, हम हर सीमापर गेल युवाक नाम धेने छी, चाहे ओ घुरय वा नहि। विजयकुमार घुरलाह, ई हमरा प्रसन्न करैत अछि। मुदा जे नहि घुरलाह, हुनकर नाम सेहो हम ओतबे आदरसँ धेने छी — गामक सीमासँ बहुत दूर, कोनो हिमालयक चोटीपर वा कोनो मरुभूमिमे।"

बूढ़बा कनेक थमकि बजलाह, "नाम, हरिवंश, सीमा नहि जनैत अछि। देह ओतय खसैत अछि जतय युद्ध होइत अछि; मुदा नाम ओतय घुरैत अछि जतय ओकरा मन राखनिहार लोक होइत अछि। जाबे धरि गाम ओहि नामकेँ जीभपर राखने अछि, ताबे धरि ओ युवा, चाहे कतहु खसल होथि, गामक आँगनमे जीबैत छथि।"

विजयकुमार, बादमे, गामक बच्चा सभकेँ अपन सीमाक कथा सुनबैत रहलाह — बरफक पहाड़, राति भरिक पहरा, आ ओ क्षण जखन ओकर कातमे ठाढ़

साथी खसल छल। आ हर बेर, कथाक अन्तमे, ओ ओहि साथीक नाम अवश्य जोड़ैत छलाह जे घुरि नहि सकल छल। बच्चा सभ ओहि नामकेँ दोहरबैत, आ ओ नाम, गामक जीभपर, सीमासँ बहुत दूर, अखनहु जीबैत रहय — जेना बूढ़बा कहने रहथिन, गोहि देह लऽ सकैत अछि, नाम नहि।

अध्याय [–५१] (इक्यावन)

हरित क्रान्तिक बीया

नव बीया बेसी उपजा दै, मुदा पुरान बीया माटि चिन्है— जे बीया गाम बचबै, से भूख नहि, नाम रोपै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: पुरान बीया

लोकधुन: रोपनी-चैती

नव बीया अन्न दै हे, कोठी भरि-भरि जाय,

पुरान बीया माटि चिन्है, बाढ़िमे नहि सड़ाय।

नव बीया आयल बजारसँ, कोठी भेल भरल,
अन्न बहुत उपजल, गाम खुशीसँ हँसल।
मुदा नव बीया माटि ने चिन्है, बाढ़िमे सड़ि जाय,
पुरान बीया जड़ि गहींर, बिपत्तिमे थिर रहय।

अन्न त भरत रे कोठी, मुदा जड़ि केऽ सम्हारै?
जे बीया गाम बचबै, से भूख नहि, नाम रोपै।
नव संग पुरान राखू, दुनूकेँ मिला बाउ,
जे बीया माटि चिन्है, तकरा हाँड़ीमे बचाउ।

हाथसँ हाथ धरि रे, ओ दाना जीबैत जाय,
मुट्ठी भरि पुरान बीया, हाँड़ीमे बचा राखू माय।
अन्न कोठी भरत आइ, बीया पीढ़ी बचाबय,
जे मुट्ठी भरि पुरान बीया राखल, से गाम बचाबय।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। नव बीया आ रासायनिक खादक आगमन गामक खेतीकेँ बदलि दैत अछि।)

हरित क्रान्तिक हवा जखन गढ़ नारिकेल धरि पहुँचल, तखन खेतक रूप बदलय लागल। नव, अधिक उपजाऊ बीया आ बोरा–बोरा रासायनिक खाद गाम आयल। पहिल बेर, धानक बाली एतेक भारी भेल जे डाँठ झुकि गेल, आ खरिहानमे अन्नक ढेर देखि किसानक आँखि जुड़ा गेल। मुदा ओहि नव उपजक छाहरिमे, किछु पुरान चुपचाप हेराय लागल — रत्नाक वंशजक ओ ज्ञान, जे कोन बीया कोन माटिमे, कोन बरखामे रोपल जाय, आ कोन जड़ी कोन रोगकेँ रोकय, से पीढ़ी–दर–पीढ़ी सम्हारने आयल छल।

हरिवंशक बेटी सुनयना, पीपर लग गेलि। “बूढ़बा, नव बीयासँ अन्न बेसी भेटत, मुदा हमर पुरनका बीया हेराइत जा रहल अछि। की ई नीक अछि? ”

बूढ़बा बजलाह, “सुनयना, अधिक अन्न नीक अछि, भूखसँ बचाब नीक अछि। मुदा जँ पुरान बीया पूर्ण रूपसँ हेराइ जाय, तँ अहाँ सभ भविष्यक एकटा विकल्प खोइ देब। ज्ञानकेँ नष्ट कएने बिना उन्नति करब — इएह असली चुनौती थिक।”

ओ आगू बजलाह, “बीया केवल अन्न नहि थिक, सुनयना। बीयामे गामक स्मृति सुतल रहैत अछि — कोन पुरखा कोन बरख कोन अकाल झेललक, से सभटा ओहि छोट दानामे लिखल अछि। नव बीया आजुक भूख मेटाबय; मुदा पुरान बीया ओहि दिनक लेल राखल जाय, जखन नव बीया धोखा दऽ दैत अछि। जे गाम अपन बीया बचबैत अछि, से अपन भविष्य बचबैत अछि।”

सुनयनाकेँ ओहि क्षण अपन आजीक एकटा बात मन पड़ल — एकटा पुरनका धानक किस्म छल, जे कम उपजाबैत छल, मुदा बाढ़िक पानिमे कमरा भरि डुबियो कऽ नहि सड़ैत छल; आब ओ किस्म गामक कोनो खेतमे नहि भेटैत छल। ओहि एक हेरायल बीयाक मोन पाड़ि, सुनयनाकेँ बुझायल जे उन्नति आ हानि, दुनू, एके संग गाम आबि रहल अछि — आ जे किछु आइ हेरा जाइत अछि, से भरिसक ओहि दिन सभसँ बेसी मोन पड़त, जहिया ओकर सबसँ बेसी जरूरत हएत।

सुनयना, ई सुनि, रत्नाक वंशजक संग मिलि, गामक पुरान बीयाक एकटा छोट भंडार, चन्ना गाछीक एकटा शांत कोनामे, माटिक हाँड़ीमे, सुरक्षित राखय लागलि। हर रोपनीक बेर, ओ ओहिमेसँ मुट्ठी भरि बीया निकालि, नव खेतक कातमे एकटा छोट टुकड़ीमे पुरनका धान सेहो रोपैत रहलि — ताकि नव खेतक

संगहि, पुरान जड़ि सेहो जीबैत रहय, आ कोनो अकाल आबियो जाय, तँ गामक हाथमे ओ बीया रहय जे ओकर पुरखाकेँ बचौने छल।

अध्याय [–५०] (पचास)

आपातकालक अन्हार

अन्हारक दौर थिर नहि रहै— मुदा जे दीप बुतल, तकरा फेर जरबैमे बेर लागै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: अन्हारमे स्वर

लोकधुन: फुसफुसाहट-गीत

दीप त बुझल हे, मुदा स्वर नहि बुझल,
अन्हारमे न्याय जागल, चन्ना गाछी साक्षी।

दिल्लीमे तोप बाजल, इजोत सभ बुझल,
अखबार चुप कएल गेल, स्वर सभ दबाओल।
मुदा चन्ना गाछी तर, राति-सभा जुटल,
दीप बिनु, फुसफुसाहटमे, न्यायक बात चलल।

आवाज नीचाँ रे, मुदा बात रहल ऊँच,
तोप बाजल दिल्लीमे, एतय फुसफुसाहट बाजी।
जे बाहर चुप कएल गेल, से भीतर जागल रहल,
अन्हारमे सत्यक दीप, कण्ठ-कण्ठ जरल।

जे अन्हार आबल हे, से एक दिन जायत रे,
जे नाम जागल राति, से भोर धरि बाँची।
इजोत फेर आओत, दीप फेर जरत,
जे राति स्वर बचाओल, से भोरमे उठि ठाढ़ हएत।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। १९७५क आपातकाल गामक सभाक स्वतंत्रतापर छाया आनैत अछि।)

१९७५मे, जखन राष्ट्रीय आपातकाल घोषित भेल, तखन ओकर छाया, दिल्लीसँ चलि, गाम–गामक चौपाल धरि पहुँचल। गढ़ नारिकेलमे सेहो, गामक स्त्री सभक राति–सभा आ आन सामुदायिक गोष्ठीपर प्रशासनिक नजरि टेढ़ भेल। थानासँ हुकुम आयल जे बिनु अनुमति कोनो सभा नहि जुटत। जे राति–सभा बरखोंसँ चन्ना गाछीक कातमे, दीप जरा, न्यायक बात करैत आयल छल, से एकाएक संदेहक घेरामे आबि गेल।

सुनयना, भयभीत, पीपर लग गेलि। “बूढ़बा, सभा–गोष्ठीपर रोक अछि। हमर राति–सभा बन्न करय पड़त की? ”

बूढ़बा गंभीर स्वरमे बजलाह, "सुनयना, अहाँक राति–सभा न्यायक सभा थिक, राजनीतिक सभा नहि। ओकरा गुप्त रूपसँ, सावधानीसँ, जारी राखू। इतिहास देखाबैत अछि जे अन्हारक दौर स्थायी नहि होइत, मुदा ओहि दौरमे जे प्रकाश बुताइ जाइत अछि, ओकरा फेर सँ जरएबामे बहुत समय लागि सकैत अछि।"

ओ आगू बजलाह, "जखन बाहरक इजोत बुझा दैत अछि, तखन भीतरक इजोतकेँ आर सम्हारि कऽ राखय पड़ैत अछि। स्वर दबाओल जा सकैत अछि, मुदा स्वरक पाछाँक न्याय नहि। अहाँ दीप बुता दिअ, आवाज नीचाँ करू, मुदा सभाकेँ मरय नहि दिअ। किएक तँ जे सभा एक बेर पूर्ण रूपसँ बन्न भऽ जाइत अछि, ओकरा फेर जगएबामे एकटा पूरा पीढ़ी लागि जाइत अछि।"

एक बेर, थानाक एकटा सिपाही, राति गामक गली–गलीमे घूमैत, चन्ना गाछीक कातसँ बीतल। ओहि क्षण, अन्हारमे बैसल स्त्री सभ अपन साँस धरि रोकि लेलनि, आ ओहि चुप्पीमे केवल पोखरिक पानिक हल्लुक ध्वनि रहि गेल। सिपाही किछु नहि देखि आगू बढ़ि गेल — मुदा ओहि राति सभ बुझि गेल जे भीतरक ओ इजोत, जकरा बूढ़बा सम्हारय कहने रहथिन, बचबैमे कतेक साहस आ कतेक चुप्पी लगैत अछि।

राति–सभा, ओहि दुइ बरख, चन्ना गाछीक घन अन्हारमे, बिनु दीपक, बिनु आवाजक, केवल फुसफुसाहटमे चलैत रहल। स्त्री सभ एक–एक कऽ अबैत, गोलमे बैसैत, आ ओहि रातिक न्याय–बात आँखिक इशारा आ काना–फूसीमे पूरा करैत। कोनो कागच नहि लिखल गेल, तैयो कोनो नाम नहि छुटल — सभटा गामक मनमे लिखल गेल। जाबे धरि आपातकाल समाप्त नहि भेल, आ सुनयना

फेर सँ, खुल्लमखुल्ला, अपन सभाकेँ दीप जरा बजाओल सकलि — आ ओहि राति, कहल जाइत अछि, दीपक लौ पहिनेसँ बेसी ऊँच जरल।

अध्याय [–४९] (उनचास)

सूखाक बरख

सूखल बरख पोखरि सुखबै, नाम नहि— जे गाम मिलि इनार खुनलक, से पानि फेर पओलक।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: इनारक तल

लोकधुन: सुखाड़-गीत

सूखल बरख हे, पोखरि सुखा गेल रे,
मुदा नाम नहि सुखाय, इनारक तलमे बसल।

आकाश निष्ठुर भेल, बुन्न एको ने खसल,
पोखरि सुखल, धार सुखल, माटि फाटि गेल।
खेत पियास मरल, हरियरी सभ जरल,
गाम आकाश जोहल, मुदा मेघ ने आयल।

जे गाम मिलि इनार खुनल हे, से पानि पाबल,
राज दै राहत, गाम दै हिसाब — दुनू मिलल।
हाथ-हाथ मिलि खुनल, गहींर धरि पहुँचल,
जतय पोखरि हारल, ओतय इनार जितल।

भूख आबय-जाय रे, बरख फेरो बदलत,
मुदा जे नाम धरल, से अकालोमे नहि टलत।
पानि तलमे बचल रहल, नाम मनमे बचल,
जे गाम मिलि इनार खुनल, से सुखाड़ो झेलल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। बिहारक अकाल फेर सँ गामकेँ परखैत अछि, मुदा एहि बेर संचित ज्ञान आ बाहरी सहायता दुनू काज करैत अछि।)

एक बरख, मानसून पुनः असफल भेल। आकाश महीनों धरि कोरा रहल, पोखरिक पानि घटैत–घटैत महारक कादो देखा देलक, आ खेतक माटि, फाटि–फाटि, अपन पियास कहय लागल। गाम एहि अन्हारकेँ पहिनहुँ देखने छल — रत्नाक कालक अकाल, आ हुलासाक कालक भूख, गामक स्मृतिमे अखनहु जीबैत छल। मुदा एहि बेर, गाम ओहि पुरान भूखसँ किछु सिखने छल।

एहि बेर, सरकारी अकाल–राहत तंत्र आ गामक अपन संगठन–क्षमता, दुनू, समयपर सक्रिय भेल। सुनयनाक बेटा गोपाल, गामक युवा प्रधान, सरकारी अधिकारीक संग मिलि, राहत–वितरणकेँ कुशलतापूर्वक संचालित केलक। ओ

हर घरक हिसाब राखलक — केकरा कतेक अन्न भेटल, केकरा छुटल, केकरा बेसी आवश्यकता — ताकि राहत ओहि हाथ धरि पहुँचय जकरा सचमुच चाही, आ कोनो नाम, भीड़मे, छुटि नहि जाय।

बूढ़बा, ई देखि, संतुष्ट बजलाह, “गोपाल, बहुत बरख पहिने हम अहाँक पुरखा सावित्रीदेवीकेँ सिखेने रही जे सहायताक प्रतीक्षा आ स्वयं–प्रयास दुनू चाही। आइ, राज्य आ समाज दुनू मिलिकऽ काज कऽ रहल छथि — ई प्रगति थिक।”

ओ आगू बजलाह, “अकाल, गोपाल, केवल अन्नक कमी नहि थिक; ई स्मृतिक परीक्षा सेहो थिक। जे गाम अपन पुरान अकालकेँ बिसरि जाइत अछि, से हर नव अकालमे नव सिरे सँ मरैत अछि। मुदा जे गाम अपन हर अकालक हिसाब राखैत अछि, से अगिला बेर पहिनहिसँ तैयार भऽ ठाढ़ रहैत अछि।”

ओहि सूखल बरख, गोपाल गामक युवा सभकेँ लऽ, दछिन टोलक ओहि पुरान इनारकेँ, जे बरखोंसँ बन्न पड़ल छल, फेर सँ खुनलनि। हाथ–हाथ माटि उठाओल गेल, दिन भरि घाम बहल, आ जखन गहींरसँ पानिक पहिल झलक देखायल, तखन थाकल–पियासल लोकक चेहरापर जे इजोत आयल, से कोनो अन्नसँ कम नहि छल। राहत बाहरसँ आयल, मुदा पानि गामे अपन हाथसँ फेर पओलक — आ इएह बात, ओहि सूखल बरखक सभसँ पैघ सीख बनि, गामक स्मृतिमे बैसि गेल।

गोपाल, ओहि बरख, गामक हर घरक हिसाब अपन नोटबुकमे राखि, यादवानन्दक छाया–पंजीक परम्परा आगू बढ़ौलनि। जे कागच सरकारी दफ्तरमे जमा भेल, ओकर एकटा नकल ओ गामक अपन संग्रहमे सेहो राखलनि — ताकि

आगू केओ पुछय, तँ ई अकालो, अपन हर नाम आ हर हिसाबक संग, सुरक्षित रहय। किएक तँ, जेना बूढ़बा बरखों पहिने कहने रहथिन, सूखल बरख पोखरि सुखा सकैत अछि, नाम नहि — आ जे गाम मिलि कऽ इनार खुनैत अछि, से पानि फेर पाबि लैत अछि।

अध्याय [–४८] (अड़तालीस)

रेडियो आ टेलीविजनक अवाज

यन्त्रक अवाज दूरसँ आबै, गामक गीत भीतरसँ— जे भीतरक स्वर सुनल, से बाहरक शोरमे नहि हेराइ।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: भीतरक स्वर

लोकधुन: बेतार-गीत

बाहरक अवाज हे, दूर देससँ आबै,

भीतरक गीत रे, अपने घर-आँगनसँ।

रेडियो बाजल घरमे, फेर परदा चमकल,
दूरक स्वर, दूरक चित्र, आँगनमे उतरल।
नव अवाज तेज छल, कान भरि-भरि गेल,
मुदा भीतरक पुरान गीत, धीरे-धीरे दबल।

नव स्वर तेज बाजै, कान भरि-भरि जाय,
पुरान स्वर धीरे बजै, मन धरि बसि जाय।
बाहरक शोरमे जे हेरायल, से बजारक भेल,
भीतरक जे स्वर बचाओल, से गामक रहल।

शोर त बीति जाय हे, गीत रहि जाय रे,
जे भीतरक स्वर सुनल, से बजारक शोरमे नहि हेराय।
यन्त्रक अवाज आबय-जाय, भीतरक गीत थिर,
जे अपन स्वर सुनल, से दूरक शोरसँ ने भ्रमित।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। गामक पहिल रेडियो, फेर पहिल टेलीविजन, संसारकेँ गामक आँगन धरि आनैत अछि।)

गोपालक जमानामे, गामक चौपाल पर पहिल रेडियो आयल। पहिल राति, जखन ओहि छोट बाकसमेसँ दिल्लीक स्वर, कड़करसँ भरल, निकसल, तखन सम्पूर्ण गाम ओकरा घेरि बैसल — केओ कान लगा, केओ आँखि मूनि, दूर देशक बात अपन आँगनमे सुनैत। बरख भरि बाद, पहिल टेलीविजन आयल, आ चौपालपर, हर साँझ, बच्चा–बुढ़ सभ ओहि काँपैत, उज्जर–करिया चित्रक सोझाँ जुटय लागल। पहिल बेर, गामक आँगनमे, संसार अपने चलि आयल।

मुदा ओहि नव उजासक संग एकटा चुप्पी सेहो आयल। जे बच्चा साँझमे पीपर लग बूढ़बाक कथा सुनय अबैत छल, से आब स्क्रीनक सोझाँ बैसि जाइत छल; आ

जे स्त्री सभ महारपर गीत उठबैत छलीह, हुनकर स्वर, ओहि नव, तेज अवाजक तर, कनेक दबि जाइत छल।

गोपालक बेटी कुसुम, पीपर लग पुछलि, “बूढ़बा, आब संसार गामक भीतर आबि गेल अछि। की ई अहाँक काजकेँ आसान बनाओत? ”

बूढ़बा बजलाह, “कुसुम, संसार गामक भीतर आबि रहल अछि, मुदा एकर उल्टा सेहो सत्य होएत — गामक कथा, गामक नाम, संसारक शोरमे हेराइ सकैत अछि। हमर काज आब आओर कठिन भऽ गेल — गामक अपन आवाजकेँ ओहि नव, तेज शोरक बीच सुरक्षित राखब।”

कनेक रुकि, ओ बजलाह, “अवाज दू तरहक होइत अछि, कुसुम। एकटा ओ, जे बाहरसँ आबि कान भरि दैत अछि; दोसर ओ, जे भीतरसँ उठि मन भरि दैत अछि। जँ बाहरक अवाज एतेक तेज भऽ जाय जे भीतरक स्वर नहि सुनाइ पड़य, तँ गाम अपन गीत बिसरि जाएत — आ जे गाम अपन गीत बिसरैत अछि, से अपन नाम सेहो बिसरि जाइत अछि।”

एक साँझ, टेलीविजनपर एकटा दूर देशक बाढ़िक समाचार आयल — आ ओहि दृश्य देखि, गामक बूढ़ लोक चुप भऽ गेलाह, किएक तँ ओ पानि, ओ डूबैत घर, हुनका अपन पुरनका बाढ़ि मोन पाड़ि देलक। ओहि क्षण बुझायल जे ई यंत्र दूरकेँ लग आनि सकैत अछि, मुदा जँ लोक सावधान नहि रहय, तँ ई अपन लगक बातकेँ सेहो दूर बना सकैत अछि।

कुसुम, ई सुनि, टेलीविजनक सामने बैसल बच्चा सभकेँ सेहो, हर साँझ, पीपर लगक कथा सुनाबय लागलि। ओ यन्त्रकेँ बन्न नहि केलक — बल्कि ओकरा एकटा नव मंच बना लेलक, जतय ओ गामक पुरान कथा सभकेँ, नव रूपमे,

बच्चाकेँ कहैत। ताकि नव उजास पुरान स्मृतिकेँ बुताबय नहि, दुनू संगहि, एके आँगनमे, जरैत रहय।

अध्याय [–४७] (सैंतालीस)

खाड़ी देशक बजार

परदेशक बजार धन दै, घरक चूल्हि नाम दै— जे कमा कऽ नाम बिसरल, से घुरि कऽ अजनबी।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: खाड़ीक बाट

लोकधुन: प्रवासी-बिरहा

परदेश धन पठाबै हे, घरक चूल्हि नाम राखै,

बेटा दूर देस गेल रे, नाम आँगनमे बसल।

खाड़ी देस बुलाओल, बेटा जहाज चढ़ल,
रेगिस्तानक गरमीमे, दिन-राति घाम बहल।
पइसा आयल घर धरि, चूल्हि जरैत रहल,
मुदा बेटाक मुँह देखबाक, माए बाट जोहल।

चिट्ठी आबै, पइसा आबै, मुदा मुँह नहि आबै,
माए बाट जोहै हे, हर साँझ दुआरि तकल।
देह दूर रेगिस्तान, नाम एतय अँगना,
जे नाम संग पठाबय, से घर नहि बिसरना।

जे कमा कऽ नाम बिसरल, से घुरि कऽ अजनबी रे,
जे कमाइयो नाम राखल, तकर घर बाट तकल।
धन बहुत भलहिं आबय, नाम जँ बिसरल,
से घुरि कऽ अपने गाममे, अजनबी भऽ ठाढ़ भेल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। खाड़ी देशमे रोजगारक लहर गामक युवाकेँ फेर परदेश दिस मोड़ैत अछि।)

अस्सीक दशकमे, खाड़ी देशमे तेल–उद्योगक उछालसँ, गामक युवा सेहो निर्माण–मजदूरी हेतु दुबई, कुवैत, आ सऊदी अरब जाय लागल। बजारमे दलाल आबय लागल, पासपोर्ट आ वीजाक बात घर–घर होमय लागल, आ हर किछु महीनापर, कोनो–न–कोनो घरक जवान बेटा, टीनक बकसा उठा, परदेश दिस निकसि जाइत छल। ई नव ‘परदेशक पुकार’ क अध्याय छल — यशपतिक गिरमिटियासँ भिन्न, मुदा तत्त्वतः सम्बन्धित।

कुसुमक पति रमेश, तीन बरखक करारपर दुबई गेल। मुदा ई बेर, बात रामसेवकक कालसँ भिन्न छल — रमेश नियमित पत्र आ पैसा घर पठबैत रहल,

आ कहियो–कहियो ओकर अवाज, फोनक तारपर, दूरसँ, कुसुम धरि पहुँचि जाइत। तैयो, हर पाबनिमे, हर बियाह–सोहरमे, ओकर खाली जगह कुसुमकेँ खटकैत रहल।

ओहि दशकमे, गामक कतेको घरक छत पक्का भेल, बेटीक बियाह धूमधामसँ भेल, आ बजारमे नव–नव वस्तु आबय लागल — सभटा ओहि दूर देशसँ आबय बला पैसाक बले। मुदा ओहि नव पक्का घर सभमे, कतेको आँगन, बरख भरि, अपन जवान बेटाक बिनु, सुन्न पड़ल रहैत छल। धन आबैत छल, मुदा जे हाथ ओकरा कमाबैत छल, से बहुत दूर छल।

बूढ़बा, ई देखि बजलाह, "कुसुम, अहाँक पति रामसेवकसँ भिन्न भाग्य पओलनि — दूरी अखनहु अछि, मुदा संचार आब सम्भव अछि। ई प्रगति थिक, यद्यपि दूरीक दुःख अखनहु ओतबे सच थिक।"

ओ आगू बजलाह, "मुदा एक बात मन राखिहँ, कुसुम। परदेश देहकेँ बजारमे राखैत अछि, आ जँ मनुष्य सावधान नहि रहय, तँ ओ अपन नाम सेहो ओहि बजारमे राखि अबैत अछि। धन कमायब नीक, मुदा जे धनक पाछाँ अपन गाम, अपन भाषा, अपन नाम बिसरि जाइत अछि, से घुरि कऽ अपने घरमे अजनबी भऽ जाइत अछि। रमेश धन पठाबैत अछि, ई नीक; मुदा ओ अपन नाम गामे राखने अछि, ई ओहिसँ नीक।"

जोड़ी पोखरिक जड़िमे, रामसेवकक पुरान चिन्ह लग, कुसुम एकटा नव चिन्ह राखि देलक — रमेशक मृत्युक हेतु नहि, ओकर सुरक्षित घुरबाक आशाक हेतु। ताकि ओ चिन्ह, आगू आबय बला हर परदेशी बेटाक हेतु, एकटा प्रतीक्षाक दीप

बनि जाय, आ ‘परदेशक पुकार’ आब केवल शोकक नहि, प्रतीक्षाक आशाक सेहो प्रतीक बनि सकय।

अध्याय [–४६] (छियालीस)

सद्भावक परीक्षा

जखन आगि लागल, तखन गाम एक भेल— सद्भाव पाबनिमे नहि, बिपत्तिमे परखल जाइ।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: साझा पीपर

लोकधुन: मेल-गीत

एक्के पोखरिक पानि हे, एक्के माटिक अन्न,
एक्के बाढ़ि झेलल हम, एक्के गाम बसल रे।

बाहरसँ फूट आयल, अफवाह उड़ल,
केओ चाहल हिन्दू-मुसलमानमे भेद घोरल।
मुदा जे एक्के पोखरिसँ पानि पीबल बरखों,
से केना बँटत आइ, कोन झूठक सोरसँ?

ईद होय वा दिवाली, एक्के पीपरक छाहरि,
साझा चूल्हिक धुआँ हे, दुनू आँगन जोड़ल।
एक्के बाढ़ि झेलल संग, एक्के अकाल सहल,
जे संग दु:ख बाँटल, से फूटसँ ने टूटल।

जे बाहरसँ फूट अनै, से गामक नहि रे,
जे नाम एक-दोसराक जनै, से अफवाहसँ नहि टूटल।
आगि लागल जखन, गाम एक भऽ बुझाओल,
सद्भाव पाबनिमे नहि, बिपत्तिमे परखल गेल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। साम्प्रदायिक तनावक एकटा लहर आसपासक क्षेत्रकेँ स्पर्श करैत अछि — आ गामक बहुलतावादी परम्परा परखल जाइत अछि।)

अस्सीक दशकक अन्तमे, आसपासक क्षेत्रमे साम्प्रदायिक तनावक एकटा लहर उठल। ओकर आँच, अफवाहक रूपमे, गढ़ नारिकेल धरि सेहो पहुँचल। किछु बाहरी लोक गाम आबि, हिन्दू आ मुसलमानक बीच पुरान भाईचाराकेँ संदेहमे बदलबाक कोशिश केलक — कान–कानमे बात फैलाओल गेल, आ एक–दू राति, चौपालपर एकटा अनचिन्हार तनाव पसरल।

मुदा गढ़ नारिकेलक मुस्लिम परिवार, जे पीढ़ी–दर–पीढ़ी गामक जीवनमे घुलल–मिलल छल — जकर पुरखा एकहि पोखरिसँ पानि भरने, एकहि खेतमे काज केने, एकहि बाढ़िमे एक–दोसराकेँ बचौने छल — आ हिन्दू परिवार, दुनू,

ओहि अफवाहक सोझाँ एक संग ठाढ़ भेल। जे बाहरी लोक फूट चाहैत छल, तकरा गामक अपन साझा स्मृति सोझाँ जवाब देलक।

ओहि तनावक दिनमे, गामक एकटा पुरान मौलवी आ एकटा पुरान पंडित, दुनू, एके संग चौपालपर आबि ठाढ़ भेलाह, आ गामकेँ मोन पाड़लनि जे कोन बाढ़िमे कोन घर केकरा उबारने छल, कोन अकालमे केकर चूल्हि केकरा अन्न देने छल। ओहि साझा स्मृतिक सोझाँ, बाहरसँ आनल अफवाह टिकि नहि सकल।

कुसुम, बूढ़बासँ बजलि, "बूढ़बा, बाहरी लोक हमरा सभक बीच विभाजन चाहैत छथि।"

बूढ़बा बजलाह, "कुसुम, अहाँक गाम सैकड़ों बरखसँ भिन्न–भिन्न परम्पराकेँ — न्याय, तंत्र, भक्ति — एक संग बुनने अछि। ई एकता अहाँक सबसँ पैघ शक्ति थिक। जे केओ एकरा तोड़य चाहय, ओकरा अहाँ सभ साझा इतिहाससँ जवाब दिअ।"

ओ आगू बजलाह, "फूट बाहरसँ आबैत अछि, कुसुम, भीतरसँ नहि। जे गाम एक–दोसराक नाम जनैत अछि, ओकरा कोनो अफवाह अजनबी नहि बना सकैत अछि। अफवाह ओतय जड़ि पकड़ैत अछि जतय लोक एक–दोसराकेँ बिसरि गेल होइत अछि। तेँ, एक–दोसराक नाम मन राखू — इएह सबसँ पैघ पहरा थिक।"

गामक हिन्दू–मुस्लिम सभ मिलिकऽ पीपर लग एकटा साझा सद्भाव–सभा केलक — दीप जरा, एक संग बैसि, एक–दोसराक हाल पुछि। आ ओहि राति सँ, गामक हर उत्सव — चाहे ईद होइक वा दिवाली — पीपरक छाहमे, दुनू समुदायक उपस्थितिमे, मनाओल जाय लागल। जेना बूढ़बा कहने रहथिन, सद्भाव पाबनिमे

नहि, बिपत्तिमे परखल जाइत अछि — आ ओहि परीक्षामे, गढ़ नारिकेल एक भऽ ठाढ़ भेल।

अध्याय [–४५] (पैंतालीस)

उदारीकरणक हवा

नव हवा दरबज्जा खोललक, मुदा जड़ि हिलल नहि— जे गाम जड़िसँ जुड़ल, से हवामे नहि उड़ै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: हवा आ जड़ि

लोकधुन: पवन-गीत

नव हवा आयल हे, दरबज्जा खोलि देलक,

नव बात, नव बजार, नव चमक अनल रे।

दरबज्जा खुजल जखन, हवा जोरसँ आयल,
नव सामान, नव चमक, बजार भरि छायल।
पात हिलल, डाढ़ि झुकल, हवा तेज बहल,
गाम अचम्भित देखल, कतेक किछु बदलल।

पात हिलय, डाढ़ि झुकय, हवा जोरसँ बहय,
मुदा जड़ि जँ गहींर, तँ गाछ नहि उड़ल।
बाहरक हवा आबय, पात नव लऽ आबय,
मुदा जे जड़ि थिर रहल, से गाछ ने डोलय।

जे गाम जड़िसँ जुड़ल हे, से हवामे नहि उड़ै रे,
पात नव भलहिं होय, जड़ि पुरनके थिर रहै।
नव बजार, नव चमक, आबय-जाय हवा,
जे अपन जड़ि पकड़ल, से नव हवामे ने बहा।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। १९९१क आर्थिक उदारीकरण नव उपभोक्तावाद आ नव अवसर दुनू गाम धरि आनैत अछि।)

१९९१क आर्थिक सुधारक बाद, गामक बजारक रूप बदलय लागल। नव–नव वस्तु आबय लागल — रंग–बिरंगक प्लास्टिक, चिक्कन नव कपड़ा, आ बादमे, पहिल केबल टेलीविजन, जकरा तारसँ दर्जनों नव चैनल गाम धरि पहुँचल। बजारमे जे पहिने नहि भेटैत छल, से आब हाथक पहुँचमे आबय लागल, आ लोकक इच्छा सेहो, बजारक संग, बढ़य लागल।

कुसुमक बेटा दिनेश, नगरमे एकटा निजी कम्पनीमे नौकरी पओलक — जे पहिने असम्भव छल। ओ नव जीवनक गति देखने छल, आ ओहि गतिमे एकटा

चमक सेहो छल; मुदा ओहि चमकक तर, ओ कहियो–कहियो अपन गामक धीर, थिर साँझकेँ सेहो मोन पाड़ैत छल।

बजारमे नव चमक आयल, मुदा ओकर संग एकटा नव तेजी सेहो आयल — लोक आब बेसी चाहय लागल, बेसी दौड़य लागल, आ पीपर लगक ओ धीर साँझ, जतय पहिने पूरा गाम जुटैत छल, कनेक पातर होमय लागल। किछु युवा नगर दिस निकसि गेलाह, आ किछु घरक चौखट, बरख भरि, बन्न रहय लागल।

दिनेश, गाम घुरलाक बाद, बूढ़बासँ बजलाह, “बूढ़बा, संसार बहुत तेजीसँ बदलि रहल अछि। बजार, टेलीविजन, नौकरी — सभटा नव।”

बूढ़बा बजलाह, “दिनेश, हम अहाँकेँ पहिनहियो कहलहुँ अछि — गाम सदिखन बदलल अछि। मुदा एहि बेरक बदलाव तेज अछि, आ तेज बदलावमे, धीरे–धीरे सिखल सबकहक ज्ञान खोएबाक खतरा बेसी होइत अछि। सावधान रहू।”

ओ आगू बजलाह, “हवा दरबज्जा खोलैत अछि, ई नीक — भीतर नव इजोत, नव बात आबय। मुदा जँ जड़ि कमजोर होइत, तँ वैह हवा गाछकेँ उखाड़ि सेहो सकैत अछि। तेँ, दिनेश, नव बातक स्वागत करू, मुदा अपन जड़िकेँ आर गहींर करू — किएक तँ जे जड़िसँ जुड़ल रहैत अछि, से कोनो हवामे नहि उड़ैत।”

दिनेश, ई चेतावनी मोन राखि, नगरसँ घुरैत काल हर बेर, अपन बच्चा सभकेँ संग लऽ, पीपर लग बैसैत रहलाह। ओ बच्चाकेँ ओहि गाछक कथा, ओहि पोखरिक कथा, आ ओहि नाम सभक कथा सुनबैत — ई जनैत जे संसार जतबो तेज बदलय, एकटा साँझ, एकटा गाछ, आ एकटा पुरान आवाज, स्थिर रहय पड़त, ताकि आबय बला पीढ़ी हवामे उड़ि नहि जाय।

अध्याय [–४४] (चौवालीस)

पहिल कम्प्यूटर

नव यन्त्र गिनती सिखबै, नाम नहि गिनै— जे नाम गाम राखै, से यन्त्रक संख्यासँ पैघ।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: यन्त्र आ अर्थ

लोकधुन: गनती-गीत

नव यंत्र आयल हे, गिनती तेज-तेज गनै,
अक्षर पल भरिमे लिखै, पन्ना भरि-भरि धरै रे।

यन्त्र आयल गाममे, संख्या तेज गनल,
जे हिसाब दिन लगल, से पल भरिमे भेल।
अक्षर-अक्षर जोड़ल, पन्ना भरल झट,
गाम अचम्भित देखल, यन्त्रक ई करामत।

मुदा नाम गिनती नहि हे, नाम मन राखल जाय,
जे नाम गाम राखै, से यंत्रक संख्यासँ पैघ।
यन्त्र संख्या गनि सकै, नाम ने गनि सकै,
जे नामक पाछाँ कथा, से यन्त्र ने बुझि सकै।

पात होय वा पर्दा रे, साधन बदलैत जाय,
मुदा अर्थ जे हृदयमे बसल, से कहियो नहि मेटाय।
यन्त्र आबय-जाय, नाम मनमे थिर,
जे अर्थ हृदयमे राखल, से यन्त्रसँ ने मेटित।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। नारिकेल पात पाठशालामे पहिल कम्प्यूटर पहुँचैत अछि, आ शिक्षाक एकटा नव युग शुरू होइत अछि।)

दिनेशक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटी प्रतिमापर आयल। प्रतिमाक जमानामे, सरकारी योजनाक अन्तर्गत, नारिकेल पात पाठशालामे पहिल कम्प्यूटर पहुँचल — एकटा पैघ, धूसर यंत्र, जकर पर्दापर हरियर अक्षर टिमटिमाइत छल। ओकरा देखय गामक बच्चा–बुढ़ सभ जुटि गेल; केओ ओकरा जादू बुझलक, केओ संदेहसँ ताकलक, आ केओ चुपचाप अपन हाथक ओ नारिकेल पात मोन पाड़लक, जकरापर ओ अपन पुरखाक नाम लिखने छल।

पाठशालाक बच्चा सभ ओहि यंत्रक सोझाँ, आँखि फाड़ि, बैसल रहल — जे अक्षर हाथसँ लिखय बरख लगैत छल, से आब पल भरिमे स्क्रीनपर उतरि अबैत

छल। मुदा एकटा बूढ़, कोनमे बैसल, फुसफुसेलाह — “यंत्र अक्षर राखि सकैत अछि, मुदा अर्थ राखत की? ”

पहिल दिन, प्रतिमा ओहि यंत्रपर गामक सबसँ पुरान लोकगीतक पहिल पाँति टाइप केलनि। जखन ओ अक्षर, हरियर इजोतमे, पर्दापर उभरल, तखन पाठशालाक बच्चा सभ ताली बजा देलनि — मुदा प्रतिमाकेँ ओहि क्षण एकटा अजीब अनुभव भेल, जेना गामक ओ पुरान गीत, नारिकेल पातसँ निकलि, एकटा नव, अनचिन्हार घर दिस पएर बढ़ा रहल हो।

प्रतिमा, पीपर लग जाइत, बूढ़बासँ बजलि, “बूढ़बा, ई यंत्र नारिकेल पातसँ बेसी अक्षर, बेसी तेजीसँ, राखि सकैत अछि। हमरा सभक कथा एहिमे राखल जा सकैत अछि? ”

बूढ़बा, कौतूहलसँ, बजलाह, “प्रतिमा, हरिपति कविक जमानासँ हम एकटा बात सिखने छी — साधन बदलैत रहत, कागचसँ छापाखाना, छापाखानासँ आब ई यंत्र धरि। मुदा कथाक आत्मा — गामक भाषा, गामक दृष्टिकोण — ओ नहि बदलय पड़त। जँ ई यंत्र हमर कथाकेँ, हमरहि शब्दमे, सुरक्षित राखय, तँ हम एकर स्वागत करैत छी।”

ओ आगू बजलाह, “यंत्र गिनती जनैत अछि, प्रतिमा — ओ अक्षर गनत, पन्ना गनत, बरख गनत। मुदा नाम गिनतीसँ पैघ होइत अछि। जँ ई यंत्र नामकेँ केवल संख्या बना दैत अछि, तँ ई नारिकेल पातसँ खतरनाक; मुदा जँ ई नामकेँ, ओकर पूरा अर्थक संग, राखि लैत अछि, तँ ई गामक सबसँ नव पहरुआ बनि सकैत अछि।”

प्रतिमाक शिष्य सभ, कम्प्यूटरपर, धीरे–धीरे, गामक पुरान लोकगीत आ कथाक टुकड़ा टाइप करय सिखलक। नारिकेल पातसँ स्क्रीन धरिक ई सेतु, ओहि दिन छोट लागल — मुदा आगू बहुत बरख बाद, इएह सेतु एकटा सम्पूर्ण डिजिटल अभिलेखागारमे बदलत, जतय गामक हर नाम, हर गीत, हर कथा, नव रूपमे, मुदा अपने भाषामे, सुरक्षित रहत।

अध्याय [–४३] (तेतालीस)

सुखल होइत धार

धार पातर भेल, तैयो पुरान बाट चिन्है— जे धार सुखल, से बाढ़िकेँ नहि बिसरल।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: पियासल धार

लोकधुन: सुखाड़-बिरहा

धार पातर भेल हे, बालु देखाय लागल,

जे पानि जीवन देलक, से आब अपने पियासल रे।

जे धार बरखों बहल, गामकैं जीवन देलक,
से आब पातर भेल, बालु छाती देखेलक।
पोखरि सुखल, इनार गहींर, माटि फाटि गेल,
जे बाढ़ि कहियो घर बहालक, से आइ अपने रुसल।

जल जे बाँटल जीवन, से आब बाँटय पियास,
गाम बुझल—जलकैं बचाउ, नहि तँ टूटत आस।
धार सुखल, मुदा बाट अखनहु मन राखल,
जे जल बचाबय सिखल, से फेरो जल पाबल।

गाछ रोपू, जल बचाउ हे, नहि तँ नामो पियासत रे,
जे धार सुखल, से बाढ़िकैं नहि बिसरल।
आइ जे धार पियासल, से कालि फेर बहत,
जे जल बचाबय सिखल, से गाम ने पियासत।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। कमला–बलानक जल–स्तर घटैत अछि, आ गाम पर्यावरणीय संकटक नव युगक सोझाँ ठाढ़ होइत अछि।)

प्रतिमाक जमानामे, गामक बुढ़–पुरान लोक एकटा नव, धीमा बिपत्ति नोटिस केलक — कमला–बलानक जल–स्तर, बरख–दर–बरख, धीरे–धीरे घटैत जा रहल छल। जे धार कहियो बरसातमे दुनू कातक बान्ह छूबि लैत छल, से आब गर्मीमे बालुक टीला देखा दैत छल। जंगल कटैत जा रहल छल, दूरक कल–कारखानाक प्रदूषण नदीक पानि धरि पहुँचि रहल छल, आ जे माछ कहियो जालमे भरि–भरि अबैत छल, से आब कम भेटैत छल।

गामक बूढ़ लोक, पीपरक छाहरिमे बैसल, ओहि बाढ़िक चर्चा करैत, जे कहियो घर बहा लऽ जाइत छल — आ आब ओ चिन्तित छलाह जे ओहि बाढ़िक

नदी स्वयं सुखि रहल अछि। गर्मीमे पोखरिक पानि हरियर–करिया भऽ जाइत छल, इनार गहींर खुनय पड़ैत छल, आ जल जे कहियो गामक सबसँ पैघ भय छल, से आब सबसँ पैघ चिन्ता बनि रहल छल।

प्रतिमाक बेटा सत्यनारायण, पीपर लग बजलाह, “बूढ़बा, जोड़ी पोखरि सेहो पहिनेसँ छोट भऽ गेल अछि। मूल गोहिक जल घटि रहल अछि। हमरा डर अछि जे प्रकृति स्वयं बिमार पड़ि रहल अछि।”

बूढ़बा, गंभीर स्वरमे बजलाह, “सत्यनारायण, सोनमा माझिन बहुत बरख पहिने कहने रहथिन जे मूल गोहिकेँ धैर्य चाही, भेंट चाही। मुदा ई बेर संकट भेंटक कमीसँ नहि, प्रकृतिक स्वयंक अन्यायसँ अछि। अहाँ सभकेँ गाछ रोपय पड़त, जल बचाबय पड़त, ठीक ओहिना जेना अहाँ सभ नाम बचबैत छी।”

ओ आगू बजलाह, “एतेक दिन, सत्यनारायण, हम अहाँ सभकेँ नाम बचाब सिखबैत रहलहुँ — किएक तँ हमरा लगैत छल जे गोहि केवल देह लैत अछि, नाम नहि। मुदा आब एकटा नव गोहि आयल अछि — ओ गोहि जे जल पीबि रहल अछि, हवा गंदा कऽ रहल अछि, माटि खा रहल अछि। एहि नव गोहिसँ, जँ अहाँ जल–जंगल–माटि नहि बचाएब, तँ एक दिन नाम राखय बला गाम स्वयं नहि बचत। तेँ आब, नामक संग–संग, जलो बचाउ।”

सत्यनारायण, ई सुनि, चन्ना गाछीक चारू कात नव–नव गाछ रोपब शुरू केलनि — केवल स्मृतिक हेतु नहि, अपितु प्रकृतिक हेतु सेहो। ओ गामक युवा सभकेँ लऽ, पोखरिक महार बान्हलनि, बरसातक पानि रोकबाक हेतु छोट–छोट आहर खुनलनि, आ हर नव बच्चाक जन्मपर एकटा गाछ रोपबाक परम्परा शुरू

केलनि — ई जनैत जे आगूक पीढ़ीक हेतु जल, हवा, आ माटि, सभटा, नाम जकाँ, सुरक्षित राखय पड़त।

अध्याय [–४२] (बयालीस)

हाथक फोनक चमत्कार

हाथमे यन्त्र, दूर लग भेल— मुदा जे लग बैसल, तकरो नाम पुछब बिसरू नहि।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: लग आ दूर

लोकधुन: यन्त्र-गीत

हाथमे यन्त्र आयल हे, दूर लग भऽ गेल,

मुदा जे लग बैसल रे, तकरो नाम पुछू।

हाथक यन्त्रसँ दूर लग आयल पल भरिमे,
सात समुद्र पारक स्वर, कानमे उतरल।
मुदा जे लग बैसल छल, ओकर मुँह ने देखल,
सभ यन्त्रमे मगन भेल, लगक बात बिसरल।

दूरक अवाज कानमे आबै, मुँह नहि आबै रे,
लगक मुँह देखू पहिने, तखन दूर सुनू।
यन्त्र दूरकेँ जोड़ल, मुदा लगकेँ तोड़ल,
जे लगकेँ बिसरल यन्त्रमे, से अपने अकेल भेल।

यन्त्र जोड़य हे, मुदा मन जोड़ब हाथक काज रे,
जे लगकेँ दूर बनाबय, से यन्त्र नहि, भ्रम।
यन्त्र नीक, जँ लगकेँ सम्हारय,
जे यन्त्रमे लगकेँ हारल, से नाम-सम्बन्ध गमाबय।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। मोबाइल फोनक आगमन गामक संचारकेँ सम्पूर्ण रूपसँ बदलि दैत अछि।)

सत्यनारायणक जमानामे, पहिल मोबाइल फोन गाम पहुँचल — पहिने एकटा, गामक मुखियाक हाथमे। जखन ओ छोट यंत्र पहिल बेर बाजल, आ ओहिमेसँ दूर शहर गेल कोनो बेटाक अवाज निकसल, तखन आँगन भरिक लोक अचम्भित भऽ ओकरा घेरि लेलक — जे अवाज कहियो चिट्ठीक बाट जोहैत महीना लगबैत छल, से आब पल भरिमे कानमे आबि रहल छल।

धीरे–धीरे, फोन कतेको परिवारक हाथमे पहुँचल। दूर परदेश गेल पुत्र, अपन माए–बापसँ, पहिल बेर, तुरंत बात कऽ सकल; बीमार–हाल, बियाह–सोहर, हर समाचार आब क्षण भरिमे पहुँचि जाइत छल। मुदा एकटा नव दृश्य सेहो देखाय

लागल — लोक हाथमे यंत्र लऽ, दूरक केओसँ बात करैत, आ अपन कातमे बैसल केओकेँ बिसरि जाइत।

सत्यनारायणक बेटी अंजलि, पीपर लग बजलि, “बूढ़बा, आब कियो परदेश जाइत अछि, तँ हम हुनका हर दिन बात कऽ सकैत छी। परदेशक पुकार आब एतेक दुःखद नहि रहत।”

बूढ़बा, हल्का मुस्कुराइत, बजलाह, “अंजलि, ई नीक समाचार थिक। मुदा सावधान रहू — ई यंत्र जतेक जोड़ैत अछि, ओतबे भ्रमित सेहो कऽ सकैत अछि। एकर उपयोग बुद्धिमानीसँ करू, जेना अहाँ सभ हर नव शक्तिक उपयोग करय सिखलहुँ।”

ओ आगू बजलाह, “एहि यंत्रमे दूरक केओ लग आबि जाइत अछि, अंजलि, मुदा सावधान रहू जे लगक केओ दूर नहि भऽ जाय। जे मनुष्य हरदम दूरक अवाजमे बुड़ल रहैत अछि, से कहियो–कहियो अपन कातमे बैसल माए–बापक मुँह देखब बिसरि जाइत अछि। ई यंत्र नामकेँ लग आनय, तखन ठीक; मुदा जँ ई लगक नामकेँ दूर बना दैत अछि, तँ ई सबसँ पैघ भ्रम।”

एक बेर, गामक एकटा बूढ़ी, जकर बेटा बरखोंसँ खाड़ी देशमे छल, फोनपर ओकर अवाज सुनि, आनन्दसँ कानि देलीह — “बेटा, तोहर अवाज एतेक लग सुनि, बुझाइत अछि जेना तूँ आँगनहिमे ठाढ़ छह।” ओहि क्षण गाम बुझलक जे ई यंत्र, जँ ठीकसँ चलल जाय, तँ दूरीक दुःखकेँ कतेक हल्लुक कऽ सकैत अछि — मुदा जँ एकर बेजाय उपयोग भेल, तँ वैह यंत्र लगक लोककेँ सेहो अजनबी बना सकैत अछि।

अंजलि, ई चेतावनी मोन राखि, गामक बुढ़–पुरान लोकसभकेँ मोबाइल फोन चलाब सिखौलनि — कोना बेटासँ बात कएल जाय, कोना ओकर मुँह देखल जाय। मुदा संगहि, ओ हर घरमे ई बात सेहो कहैत रहलि जे यंत्र जतबो लग आनय, साँझक चौपाल, आमने–सामने बैसब, आ एक–दोसराक मुँह देखि बात करब, ओकर जगह कहियो नहि लऽ सकैत अछि — ताकि नव यंत्र सेहो पुरान स्नेह आ पुरान सावधानीक संग चलय, बिनु एकरा दोसराकेँ मेटौने।

अध्याय [–४१] (इकतालीस)

शहरक बजार

शहर देह किनै, गाम नाम बेचै नहि— जे बजारमे नाम बेचलक, से घुरि कऽ खाली हाथ।

— गढ़ नारिकेल

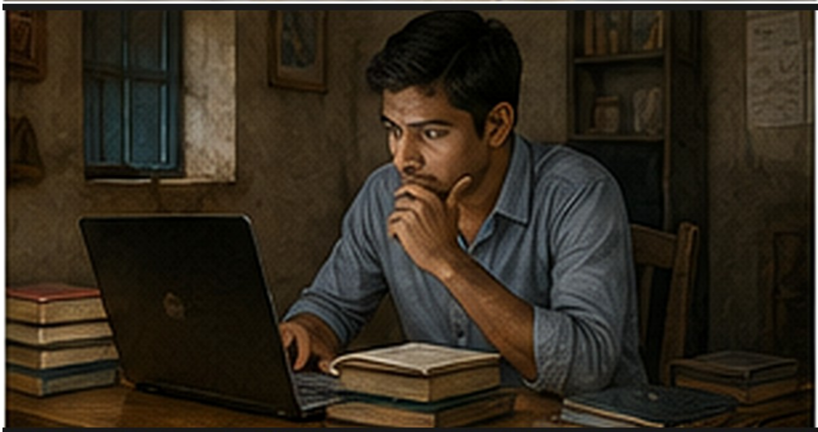

अध्यायारम्भ लोकगीत: जड़ि आ बजार

लोकधुन: शहरिया-गीत

शहर देह किनै हे, गाम नाम राखै,

जे बजारमे नाम बेचल, से खाली हाथ घुरल रे।

शहर बुलाओल बेटाकेँ, नोकरीक आस देल,
देह किनल घण्टाक हिसाब, घाम बजारमे बेचल।
जे केवल देह बेचल, से थाकल घुरि आयल,
जे संग नाम राखल, से जड़िसँ जुड़ल रहल।

जड़िसँ दूर जाउ, संसार भरि घुमू,
मुदा जड़ि नहि कटू हे, गहींर पैसल रहू।
शहर देह लऽ लेत, नाम अपने राखू,
जे नाम बजारमे बेचल, से खाली हाथ घुरल।

बरख भरिमे एक साँझ रे, पीपर लग आबि बैसू,
जे अपन जड़ि जनै, से कतहु नहि अजनबी।
शहर होय वा परदेश, जड़ि गाममे राखू,
जे जड़ि संग रहल, से बजारमे ने हेरायल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। आइटी–उछालक जमानामे, गामक शिक्षित युवा बड़का शहरक बजारमे नव अवसर खोजैत अछि।)

अंजलिक जमानामे, भारतक आइटी–उद्योगक उछालसँ, गामक शिक्षित युवा बंगलोर, हैदराबाद, आ दिल्ली जकाँ शहरमे सॉफ्टवेयर आ अन्य आधुनिक नौकरीक हेतु जाय लागल। जे बच्चा कहियो नारिकेल पात पाठशालामे अक्षर सिखने छल, से आब कम्प्यूटरक भाषा सिखि, दूर शहरमे, नीक तनखाहक नौकरी पाबय लागल। गामक हर घर, अपन बेटा–बेटीक ओहि नव उड़ानपर गर्व करैत छल।

मुदा ओहि उड़ानक संग एकटा दूरी सेहो आयल। जे युवा शहर गेल, ओकर पाबनि–तिहार शहरहिमे बीतय लागल, आ गामक कतेको घर, बरख भरि, अपन

जवान सन्तानक बिनु, ताला लागल रहय लागल। धन आ शिक्षा दुनू आयल, मुदा ओहि नव जीवनक तेजीमे, किछु युवाकेँ लागय लागल जे ओ अपन गाम, अपन भाषा, अपन जड़िसँ, धीरे–धीरे, दूर होइत जा रहल छथि।

अंजलिक बेटा करुणाकर, शहरसँ छुट्टीमे घुरि, पीपर लग बजलाह, "बूढ़बा, शहरमे हम बहुत किछु सिखलहुँ, मुदा हमरा कहियो–कहियो लगैत अछि जे हम अपन जड़िसँ कटि रहल छी।"

बूढ़बा बजलाह, "करुणाकर, जड़ि कटब आ जड़िसँ दूर जाएब, दुइ भिन्न वस्तु थिक। अहाँ जतबो दूर जाउ, जँ अहाँ बरख भरिमे एक बेर सेहो पीपर लग आबि, अपन नाम, अपन गामक कथा, स्मरण करब, तँ जड़ि कटत नहि, केवल लम्बा भऽ जायत।"

ओ आगू बजलाह, "गाछक जड़ि जतेक दूर धरि फैलैत अछि, गाछ ओतबे मजगूत ठाढ़ रहैत अछि, करुणाकर। दूर जाएब कमजोरी नहि; कमजोरी तखन अछि जखन मनुष्य अपन जड़िकेँ बिसरि जाइत अछि। अहाँ शहरमे रहू, संसार भरिमे घुमू — मुदा अपन नाम, अपन गामक कथा, अपन भाषा मन राखू। जे अपन जड़ि जनैत अछि, से कतहु सेहो अजनबी नहि होइत।"

करुणाकर मोन पाड़लनि जे शहरमे, अपन कम्पनीक ऊँच भवनमे बैसल, ओ कतेको बेर अपन गामक ओ पीपर, ओ पोखरि, आ ओ साँझक चौपाल मोन पाड़ैत छलाह — आ ओहि मोन पड़बामे एकटा टीस सेहो छल, जेना ओ किछु छोड़ि आयल होथि। मुदा जखन ओ बरख भरिमे एक बेर गाम घुरैत, आ पीपर लग बैसैत, तखन ओ टीस, कनेक कालक हेतु, शान्त भऽ जाइत छल।

करुणाकर, ओहि दिनसँ, हर बरख, चाहे कतबो व्यस्त होथि, अपन छुट्टीक एक साँझ पीपर लग बितबैत रहलाह — गामक बच्चा सभकेँ शहरक कथा सुनबैत, आ हुनकासँ गामक पुरान कथा सुनैत। आ धीरे–धीरे, शहरसँ घुरनिहार गामक हर युवा हेतु ई एकटा अलिखित परम्परा बनि गेल — जे कतबो दूर जाउ, बरख भरिमे एक साँझ, अपन जड़ि लग घुरि आबू।

अध्याय [–४०] (चालीस)

सूचनाक अधिकार

जकरा जानबाक हक, से पुछि सकै— सूचना दीप छी, जे अन्हारमे नाम देखबै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: सूचनाक दीप

लोकधुन: प्रकाश-गीत

जकरा जानबाक हक हे, से आब पुछि सकै रे,

सूचना दीप जरल, अन्हारमे नाम देखाय।

बरखों जे कागच आलमारीमे बन्न रहल,
जकर हिसाब लुकाओल, से आब हाथ आयल।
जे सत्य नुकाओल गेल, से आब खुलेआम,
गरीबक हाथमे आयल, जानबाक अधिकार-नाम।

जे कागच आलमारीमे बन्न, से आब हाथ आयल,
जे यादवानन्द छुपा लिखल, से आब खुलेआम।
पुछबाक हक भेटल, अन्हार पातर भेल,
जे लुकाओल छल हिसाब, से इजोतमे आयल।

छाया आ इजोत मिलल हे, गामक हिसाब खुजल रे,
जे सत्य कहियो नुकाएल, से आब माथ उठा ठाढ़।
अन्हार आब ने राज करत, पुछब सभक हक,
जे सूचना दीप जरल, से अन्हार भागल झट।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। सूचनाक अधिकार कानून गामकेँ अपन अभिलेख, अपन इतिहास, आधिकारिक रूपसँ माँगबाक शक्ति दैत अछि।)

करुणाकरक जमानामे, भारतमे सूचनाक अधिकार कानून पारित भेल — एकटा एहन कानून जे साधारण नागरिककेँ सरकारी दफ्तरसँ, आधिकारिक रूपसँ, अपन कागच माँगबाक हक दैत छल। गढ़ नारिकेलक हेतु ई कोनो साधारण समाचार नहि छल; किएक तँ ई गाम शताब्दियोंसँ, यादवानन्दक छाया–पंजीक रूपमे, चोरी–छिपे अपन इतिहास बचबैत आयल छल, आ आब ओ इतिहास, खुलेआम, कानूनी अधिकारसँ, माँगल जा सकैत छल।

गामक युवा, यादवानन्दक ओहि पुरान परम्पराकेँ आगू बढ़ाबैत, सरकारी अभिलेखागारसँ गामक जमीन आ इतिहासक कागच माँगय लागल। जे कागच

कहियो केवल अधिकारीक आलमारीमे बन्न रहैत छल, से आब, आवेदनक बलपर, गामक हाथमे आबय लागल — आ पहिल बेर, गामक अपन गुप्त पंजी आ सरकारी कागच, आमने–सामने, मिलाओल जा सकैत छल।

करुणाकरक बेटी विभा, पीपर लग बजलि, “बूढ़बा, आब हमरा सभकेँ यादवानन्दक चोरी–छिपे लिखल पंजी नहि चाही — हम सभ आधिकारिक रूपसँ, कानूनी अधिकारसँ, अपन इतिहास माँगि सकैत छी!”

बूढ़बा, गहींर सन्तोषसँ बजलाह, “विभा, ई ओ दिन थिक जकर हम शताब्दियोंसँ प्रतीक्षा करैत रही — जखन छाया आ प्रकाश एक भऽ जाय, जखन गुप्त रूपसँ राखल सत्य, खुलेआम माँगल जा सकय।”

ओ आगू बजलाह, “एतेक दिन, विभा, गाम अपन नाम अन्हारमे बचबैत रहल — यादवानन्द रातिक इजोतमे, चुपचाप, पंजी लिखने रहथिन, किएक तँ ओहि दिन सत्य खुलेआम कहब खतरनाक छल। मुदा आब कानून स्वयं कहैत अछि जे हर नागरिककेँ अपन सत्य जानबाक हक अछि। जे नाम एतेक दिन छायामे बचल, से आब इजोतमे ठाढ़ भऽ सकैत अछि। ई गामक हेतु, आ हमरा हेतु, एकटा पैघ दिन थिक।”

विभा, जखन पहिल बेर सरकारी अभिलेखागारसँ गामक पुरान जमीनक कागच हाथमे लेलक, तखन ओकरा बुझायल जे ओहि पीयर, फाटल कागचमे कतेको एहन नाम लिखल छल, जे यादवानन्दक पंजीमे सेहो छल — दुनू, एक–दोसराकेँ प्रमाणित करैत। जे सत्य कहियो केवल गामक स्मृतिमे बचल छल, से आब सरकारी मोहरक संग, कानूनी रूपसँ, ठाढ़ भऽ गेल।

विभा, सूचनाक अधिकारक उपयोग सँ, गामक भूमि आ इतिहासक हर पुरान अभिलेख आधिकारिक रूपसँ प्राप्त कऽ, यादवानन्दक छाया–पंजी आ सरकारी अभिलेखकेँ एक ठाम मिला देलक। दुनू — गामक गुप्त स्मृति आ राज्यक आधिकारिक कागच — जखन आमने–सामने राखल गेल, तखन गामक हेतु एकटा सम्पूर्ण, कानूनी रूपसँ मान्य इतिहास–संग्रह तैयार भेल, जकरा आब केओ अधिकारी मेटा नहि सकैत छल।

अध्याय [–३९] (उनतालीस)

काजक गारंटी

जकरा काज भेटल, तकर हाथ ठाढ़ भेल— काज नाम दै, भीख नहि।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: काजक हक

लोकधुन: हाजिरी-गीत

जकरा काज भेटल हे, तकर हाथ ठाढ़ भेल,
काज नाम दै, भीख नहि रे, माथ ऊँच रहल।

गामेमे काज भेटल, हाथ ठाढ़ भेल फेर,
परदेश ने पड़ायब आब, अपने गाम-डेर।
पोखरि खुनल, बान्ह बान्हल, अपने माटिपर,
घाम अपने खेतमे बहल, अन्न अपने घर।

पोखरि खुनू, बान्ह बान्हू, अपने गाममे,
अपन माटिपर घाम बहय, अपन कोठीमे अन्न।
भीख ने मांगू केकरो, काजसँ नाम कमाउ,
जे काज हाथ धेने, तकर माथ ऊँच उठाउ।

नहि पड़ायब परदेश हे, नहि टूटत घर-कोठी रे,
हर नाम हाजिरीमे चढ़य, हर हक हाथ धरि आबय।
काज नाम दै, भीख अपमान दै,
जे अपन हाथसँ कमाओल, से गामक मान बढ़ाबय।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। रोजगार–गारंटी योजना गामक मजदूरकेँ स्थानीय काज आ स्थायित्व दैत अछि।)

विभाक जमानामे, केंद्र सरकारक ग्रामीण रोजगार–गारंटी योजना गाम धरि पहुँचल — एकटा एहन योजना जे हर परिवारकेँ, गामहिमे, सौ दिनक निश्चित काजक हक दैत छल। गामक मजदूर, जिनका पहिने काजक हेतु शहर पड़ायल जाय पड़ैत छल, जिनकर बाप–दादा रामसेवक आ भोला जकाँ परदेश आ गिरमिटियाक दुःख झेलने छलाह, से आब अपन गामहिमे, अपन माटिपर, काज पाबय लागल।

पोखरि खुनाइ, बान्ह बन्हाइ, बाट बनाइ — गामक काज गामहिमे होमय लागल, आ जे हाथ पहिने खाली छल, से आब काजमे लागल। हर काजक हाजिरी

एकटा पंजीमे चढ़ाओल जाइत, आ मजदूरी सीधा मजदूरक हाथ धरि पहुँचैत। जे परिवार कहियो काजक हेतु टूटि–बिखरि जाइत छल, से आब एक संग, अपन गाममे, रहि सकैत छल।

विभाक पति सुरेश, जे योजनाक स्थानीय संयोजक छलाह, पीपर लग बजलाह, “बूढ़बा, आब गामक मजदूरकेँ रोजी–रोटीक हेतु दूर जाय नहि पड़त। ई भोला, सुखदेव, आ रामसेवक जकाँ कथाकेँ दोहरा नहि जायत।”

बूढ़बा बजलाह, “सुरेश, ई नीक समाचार थिक। मुदा याद राखू — योजना कागचपर जतबे नीक होइक, ओकर सफलता ओकर ईमानदार क्रियान्वयनपर निर्भर करैत अछि। भोलाक अदालतक कथा हमरा सिखेने छल जे कानून आ व्यवहारक बीच बहुत दूरी भऽ सकैत अछि।”

ओ आगू बजलाह, “कानून, सुरेश, एकटा नीक बीया थिक; मुदा बीया अपने–आप गाछ नहि बनैत — ओकरा ईमानदार हाथ, आ थिर पानि चाही। जँ योजनाक पाइ बीचहिमे कतहु हेरा जाय, जँ कोनो मजदूरक नाम हाजिरीसँ छुटि जाय, तँ ई नीक कानूनो एकटा नव अन्याय बनि सकैत अछि। तेँ, हर नाम मन राखू, हर हिसाब साफ राखू — इएह एहि योजनाक असली पहरा थिक।”

एक बरख, जखन योजनाक किछु पाइ बीचहिमे रुकि गेल, तखन सुरेश हर मजदूरक नाम आ हिसाब, गामक सोझाँ, खुलेआम पढ़ि सुनौलनि, आ अधिकारीसँ ओहि रुकल मजदूरीक माँग केलनि — जाबे धरि हर हाथ धरि ओकर हक नहि पहुँचल। ओहि दिन गाम बुझलक जे नीक कानूनकेँ नीक बनौने राखब सेहो एकटा निरन्तर पहरा थिक।

सुरेश, ई चेतावनी मोन राखि, योजनाक हर काजक हिसाब पारदर्शी रूपसँ राखलनि। हर मजदूरक नाम, हर दिनक हाजिरी, हर मजदूरीक भुगतान — सभटा खुलेआम, गामक सोझाँ, राखल गेल, ताकि कोनो नाम छुटय नहि, कोनो हक मारल नहि जाय। आ गामक हर मजदूरकेँ समयपर मजदूरी भेटय, एकर सुनिश्चय करैत रहलाह — बूढ़बाक शब्द अपन कर्तव्यक मार्गदर्शक बनौने।

अध्याय [–३८] (अड़तीस)

इंटरनेटक जाल

नव जाल दूरकेँ लग आनै, मुदा नामकेँ नम्बर बनबै— जे जालमे फँसल, से अपन चेहरा हेरा दै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: चमक आ जाल

लोकधुन: सतर्क-गीत

नव जाल आयल हे, दूरकेँ लग आनल,
मुदा नामकेँ नम्बर बनाय, चेहरा हेरा देलक रे।

इंटरनेट आयल गाममे, दूर लग भेल,
पल भरिमे सन्देश गेल, संसार जुड़ि गेल।
मुदा एहि जालमे नाम नम्बर बनि गेल,
चेहरा पाछाँ नुकल, सत्य-झूठ मिलि गेल।

झूठ सत्य जकाँ चमकै, अफवाह आगि जकाँ फैलै,
जे बिनु पुछने विश्वास कयल, से जालमे फँसल।
हर चमक साँच नहि, हर सन्देश ठीक नहि,
जे बिनु परखने मानल, से भ्रमक जालमे बान्हल।

आँखि खोलि देखू हे, कोन चमक साँच रे,
कोन शंख, कोन रजत; पुछू, परखू, तखन मानू।
जाल दूरकेँ जोड़ल, मुदा भ्रमो अनल,
जे पुछब-परखब जनल, से जालमे ने फँसल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। स्मार्टफोन आ इंटरनेटक आगमन गामक जीवनकेँ, अच्छे आ बुरे दुनू रूपमे, बदलि दैत अछि।)

सुरेशक जमानामे, स्मार्टफोन आ सस्ता इंटरनेट गाम धरि पहुँचल। जे बच्चा कहियो नारिकेल पातपर अक्षर सिखने छल, से आब अपन हथेलीमे सम्पूर्ण संसार धेने घूमय लागल — दूर देशक समाचार, हर प्रश्नक उत्तर, हर गीत, हर चित्र, सभटा, एक छुअनमे। पहिल बेर, गामक ज्ञान गामक सीमासँ बाहर निकसल, आ बाहरक संसार गामक हथेलीमे आबि गेल।

मुदा ओहि नव जालक संग नव–नव समस्या सेहो आयल। झूठ समाचार सत्य जकाँ फैलय लागल; लोक दोसराक चमकैत जीवन देखि, अपन जीवनसँ असन्तुष्ट होमय लागल; आ अनजान लोक, दूरसँ, गामक बच्चा–युवतीसँ अनचाहा सम्पर्क

करय लागल। जे जाल संसारकेँ लग आनने छल, वैह जाल, कहियो–कहियो, लोककेँ अपने–आपसँ दूर कऽ दैत छल।

सुरेशक बेटा नीरज, पीपर लग बजलाह, “बूढ़बा, इंटरनेट एकटा नव संसार अछि, मुदा एहिमे हमरा सभकेँ भ्रमित करएवाला बहुत किछु सेहो अछि। हमरा डर लागैत अछि।”

बूढ़बा, गंभीर स्वरमे बजलाह, “नीरज, हरेक नव शक्तिक संग नव खतरा आबैत अछि — शंख–रजतक भ्रमसँ लऽ कऽ आइ धरि, इएह त हमर सम्पूर्ण कथाक पाठ थिक। ई नव जाल — इंटरनेट — एकटा नव प्रकारक शंख–रजत भ्रम बनि सकैत अछि, जतय झूठ सत्य जकाँ चमकत। सावधान रहू, आ जे सिखल छी, से बिसरू नहि।”

ओ आगू बजलाह, “गंगेश उपाध्याय हमरा सभकेँ प्रमाणक चारि साधन सिखौने रहथिन — प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, आ शब्द। ओहि दिन ओ शास्त्रक बात छल; आइ ओ जीवनक आवश्यकता बनि गेल। इंटरनेटपर जे किछु देखू, नीरज, ओकरा तुरंत सत्य मत मानू — पुछू, ई कतयसँ आयल? के कहलक? एकर प्रमाण की? जे प्रश्न पुछब सिखैत अछि, से ओ जालमे नहि फँसैत।”

एक बेर, गाममे एकटा झूठ समाचार, इंटरनेटपर, आगिक तरह फैलल — एकटा भड़काबय बला बात, जकर कोनो जड़ि नहि छल। मुदा नीरजक समूह, ओहि बातक तह धरि जा, ओकरा झूठ सिद्ध केलक, आ गामकेँ चेतौलक। ओहि दिन गाम बुझलक जे नव जालमे, सत्य आ झूठ, एक्के तरह चमकैत अछि — फरक केवल पुछनिहार आँखि बना सकैत अछि।

नीरज, बूढ़बाक चेतावनी मोन राखि, गामक युवा सभक हेतु एकटा छोट समूह बनौलनि, जतय ओ सभ मिलिकऽ, इंटरनेटपर देखल हर संदिग्ध बातक सत्यता परखय सिखल — कोन समाचार साँच, कोन झूठ; कोन प्रस्ताव सच्चा, कोन ठगी। ठीक ओहिना जेना गंगेश उपाध्याय प्रमाणक चारि साधन सिखौने छलाह, ओहिना गामक ई नव पीढ़ी, नव जालक बीच, सत्य आ भ्रमकेँ अलगाब सिखय लागल।

अध्याय [–३७] (सैंतीस)

स्क्रीनक पहिल छाया

पहिल परदापर चेहरा चमकल, पाछाँ नाम अन्हार— जे स्क्रीन देखलक, से आँखि गाम बिसरए नहि।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: इजोत आ लाज

लोकधुन: साहस-गीत

स्क्रीनपर चेहरा चमकल हे, पाछाँ नाम अन्हार,

जे नुका कऽ डेराबै रे, से इजोतमे कमजोर।

परदापर छवि चमकल, पाछाँ नुकल हाथ,
अन्हारसँ डर बेचल, केओ चाहल अपमान-घात।
मुदा जे नुका कऽ डेराबय, से इजोतमे कमजोर,
जे सोझाँ आबि नहि सकल, से पाछाँक चोर।

लाज पीड़ितक नहि, ओहि नुकाएल हाथक,
बाजू खुलेआम, मिलिकऽ ठाढ़ होउ रे।
जे चुप रहल डरसँ, से अकेल भेल,
जे मिलि कऽ बाजल, से अन्हारकेँ हरा देल।

अकेल मत छोड़ू केकरो हे, इजोत मिलि कऽ जरै रे,
जे स्क्रीन देखलक, से आँखि गाम नहि बिसरै।
नुकाएल हाथ इजोतमे कमजोर पड़ल,
जे सभ मिलि ठाढ़ भेल, से अन्हारकेँ भगाओल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। सोशल मीडियाक आगमनक संग, गामक लोक पहिल बेर एकटा नव प्रकारक भूतक आहट अनुभव करैत अछि।)

नीरजक जमानामे, फेसबुक आ व्हाट्सएप गामक हर हाथमे पहुँचि गेल। दूर बसल नातेदार लग आबि गेलाह, पुरान संगी फेर भेंट भेलाह, आ गामक हर सुख–दुःखक समाचार पल भरिमे सभ धरि पहुँचय लागल। मुदा जे परदा लोककेँ जोड़ने छल, वैह परदा, एकटा नव प्रकारक छाया सेहो नेने आयल।

अफवाह, ठगी, आ ऑनलाइन उत्पीड़नक नव–नव कथा सुनाइ पड़य लागल — कियो केकरो फोटो लऽ, कियो केकरो झूठ फैला, अन्हारमे नुकाएल रहि, केकरो जीवन कठिन कऽ दैत छल। जे भूत कहियो चन्ना गाछीक अन्हारमे बसैत छल, से आब स्क्रीनक इजोतक पाछाँ, नाम–चेहरा नुका, बसय लागल।

नीरजक बेटी सपना, चिंतित, पीपर लग गेलि। “बूढ़बा, गामक एकटा लड़कीकेँ कियो अनजान व्यक्ति फोनपर धमकी दैत अछि, हुनकर फोटो लऽ कऽ। हम की करी? ”

बूढ़बा, स्वर काँपैत, बजलाह, “सपना, ई नव प्रकारक अन्याय थिक, जकरा हमहूँ पूर्ण रूपसँ नहि बुझैत छी। मुदा हमरा एतबे बुझल अछि — जे शक्ति अन्धकारमे, गुप्त रूपसँ, केकरो डेरा कऽ काज करैत अछि, ओ शक्ति उजासमे आनला पर कमजोर पड़ि जाइत अछि। ओहि लड़कीकेँ अकेल मत छोड़ू।”

ओ आगू बजलाह, “सपना, एहि नव भूतक सबसँ पैघ शक्ति ओकर चुप्पी थिक — ओ चाहैत अछि जे पीड़ित लाजसँ चुप रहय, अकेल रहय, केकरो नहि कहय। तेँ, एकर सबसँ पैघ जवाब — बाजब अछि, मिलिकऽ ठाढ़ होएब अछि। जे बात खुलेआम कहल जाइत अछि, ओकर लाज पीड़ितसँ हटि, ठगपर चढ़ि जाइत अछि। ओहि लड़कीकेँ बुझाउ जे दोष ओकर नहि, ओहि नुकाएल हाथक अछि।”

पहिल डिजिटल राति–सभामे, ओ लड़की, जकरा धमकी भेटल छल, पहिल बेर, खुलेआम, अपन बात कहलक — आ जखन गामक दस–बीस स्त्री ओकर संग ठाढ़ भेलीह, तखन ओहि नुकाएल हाथक धमकी, अचानक, कमजोर पड़ि गेल। जे बोझ ओ अकेल ढोइ रहल छल, से आब पूरा सभा मिलिकऽ उठा लेलक — आ ओकर चेहरापर, बहुत दिनक बाद, फेर मुस्कान आयल।

सपना, स्त्री सभक राति–सभाक पुरान परम्पराकेँ नव रूप द’, गामक स्त्री–युवतीक हेतु एकटा “डिजिटल राति–सभा” बनौलि — जतय ऑनलाइन उत्पीड़न आ ठगीक कथा खुलेआम बाँटल आ मुकाबिला कएल जाय लागल। जे भय एतेक दिन अन्हारमे, अकेल, बढ़ैत छल, से आब इजोतमे, मिलिकऽ, कमजोर पड़य

लागल — किएक तँ, जेना बूढ़बा कहने रहथिन, अन्हारक भूत इजोतमे टिकि नहि सकैत।

अध्याय [–३६] (छत्तीस)

अनदेखल ठगक पहिल आहट

जे ठग देखाइ नहि दै, से सभसँ पैघ— आहट सुनू, नाम पुछू, कागचपर नहि, आँखिपर विश्वास राखू।

— गढ़ नारिकेल

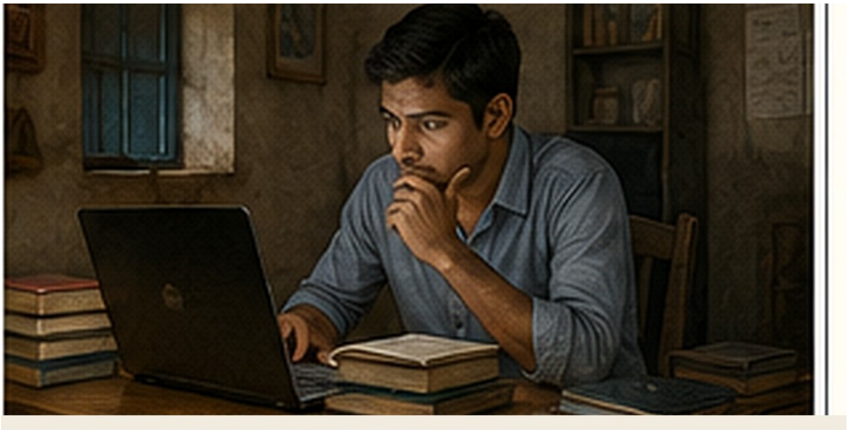

अध्यायारम्भ लोकगीत: अनदेखल गोहि

लोकधुन: चेतावनी-गीत

पुरान गोहि पानिमे रहै हे, देखि सकी हम,
नव गोहि तारमे बसै रे, देखबो नहि करी।

पुरान गोहि पानिमे छल, आँखिसँ देखल जा सकल,
नव गोहि तारमे बसल, अदृश्य भऽ ठगल।
भेंट नहि मांगै ई, केवल भरोसा ठगि लै,
मीठ बोलसँ फुसलाबय, फेर पाइ लऽ नुकाइ।

भेंट नहि मांगै ई, भरोसा ठगि लै,
जे बिनु बुझल पाइ पठौलक, से हाथ मलैत रहल।
जे चमकपर विश्वास कयल, से ठगल गेल,
जे आहट सुनि सतर्क भेल, से बचि गेल।

जे ठग देखाइ नहि दै हे, से सभसँ पैघ रे,
आहट सुनू, नाम पुछू, चमकपर विश्वास नहि राखू।
अनदेखल गोहि खतरनाक, चमकमे नुकल,
जे पुछब-परखब सिखल, से जालसँ बचल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, पहिल बेर, डिजिटल ठगीक एकटा गंभीर घटना गामकेँ हिला दैत अछि — आ बूढ़बा एकटा नव, अपरिचित प्रकारक भूखकेँ पहचानय लागैत छथि।)

सपनाक जमानामे, गामक एकटा युवक, नौकरीक झांसामे, अपन सम्पूर्ण जमा–पूँजी एकटा फर्जी ऑनलाइन कम्पनीकेँ गमा देलक। कम्पनी असली लागैत छल — ओकर वेबसाइट छल, दफ्तरक फोटो छल, अधिकारीक अवाज छल; मुदा जखन युवक अपन पाइ ओतय पठा देलक, तखन ओ कम्पनी, ओकर वेबसाइट, ओकर अवाज — सभटा, एके राति, गायब भऽ गेल।

ठगी दूर देशसँ, अनदेखल हाथसँ, संचालित भेल छल — केओ नहि जनैत छल जे असली ठग के छल, कतय छल। पुलिसमे रपट लिखाओल गेल, मुदा

जकरा देखिये नहि सकल जाय, तकरा पकड़ल कोना जाय? गाम, पहिल बेर, एकटा एहन शत्रुक सोझाँ ठाढ़ छल जकर ने चेहरा छल, ने ठेकान।

सपना, व्यथित, पीपर लग बजलि, “बूढ़बा, ई ठगी हमरा सभक जोड़ी पोखरिक मूल गोहिसँ बेसी भयंकर लगैत अछि। ओकरा हम देखि सकैत छलहुँ, भेंट चढ़ा सकैत छलहुँ। एकरा हम देखियो नहि सकैत छी।”

बूढ़बा, बहुत काल चुप रहलाह, फेर धीरे बजलाह, “सपना, हमरा डर अछि जे अहाँ सही कहि रहल छी। ई एकटा नव प्रकारक गोहि थिक, जकर देह नहि, जकर जल नहि, केवल तार आ स्क्रीनक भीतर बसनिहार भूख थिक। हमरा नहि बुझल जे हमर पुरान ज्ञान एहि नव गोहिसँ कोना लड़त। मुदा हमरा एतबे बुझल अछि — जे नाम एहि नव गोहि खाइत अछि, से नाम हमहूँ धरब, ठीक ओहिना जेना हम बाकी सभ धेने छी।”

ओ कनेक थमकि, आगू बजलाह, “पुरान गोहिसँ हम भेंटसँ, धैर्यसँ, नामसँ लड़ैत रहलहुँ। ई नव गोहि भेंट नहि मांगैत, ई भरोसाकेँ ठगैत अछि। एकरा हरएबाक एक्के बाट अछि, सपना — जागरूकता। जे गाम सचेत रहैत अछि, जे एक–दोसराकेँ चेतबैत अछि, जे कोनो चमकैत प्रस्तावपर आँखि मूनि विश्वास नहि करैत, ओहि गाममे ई नव गोहि भूखल रहि जाइत अछि।”

सपना, ओहि राति, बूढ़बाक शब्दकेँ मोन राखि, गामक हर परिवारकेँ ऑनलाइन ठगीसँ बचबाक हेतु सचेत करय लागलि — कोन प्रस्ताव साँच, कोन झूठ; कतय पाइ पठाएब सुरक्षित, कतय खतरा। ई जनैत जे आगूक कथा, जकरा बूढ़बा अखनहु पूर्ण रूपसँ नहि बुझैत छथि, बहुत बेसी जटिल आ बहुत बेसी खतरनाक होएत।

अध्याय [–३५] (पैंतीस)

देहक बजार खुजैत अछि

जतय देह बिकाइ, ओतय नाम सस्त— मुदा जे गाम नाम राखै, से देहकेँ बजार बनए नहि दै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: माएक चेतओनी

लोकधुन: करुण-सतर्क धुन

जतय देह बिकाइ हे, ओतय नाम सस्त भेल,

बेटा दूर देस गेल रे, नाम बजारमे हेराय।

‘अच्छा काज’क वादा आयल, चमकैत सपना देखाओल,

बेटा-बेटी दूर गेल, पाछाँ जाल नुकाओल।
देह बजारमे राखल गेल, नाम सस्त कऽ देल,
माएक आँखि बाटपर, बेटा कोनो अन्हारमे।

‘अच्छा काज’क वादा, पाछाँ बन्दी-जाल,
माएक आँखि बाटपर, बेटा कोनो अन्हारमे।
हर वादा परखू पहिने, हर बाट बुझू,
जे बिनु पुछने पठाओल, से पछतायल रहल।

चेतू हे माए, पुछू हर बाट, हर वादा रे,
जे गाम नाम राखै, से देहकेँ बजार बनए नहि दै।
जे नाम धेने राखल, तकरा बजार ने बेचि सकल,
जे सतर्क भेल पहिने, से बेटाकेँ बचाओल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। जॉबक झांसा धीरे–धीरे मानव–तस्करीक भयावह रूप लैत अछि — आ बूढ़बा एकटा नव, सबसँ अन्हार अध्यायक आहट अनुभव करैत छथि।)

सपनाक बाद अनुष्ठानक भार ओकर बेटा राजीवपर आयल। राजीवक जमानामे, नौकरीक झांसाक ठगी आओर भयावह रूप लेलक। पहिने ठग केवल पाइ लैत छल; आब ओ मनुष्य लैत छल। किछु युवाकेँ, विदेशमे “अच्छा काज” क वादाक संग, दलाल दूर देश लऽ गेल — आ ओतय पहुँचिते, हुनकर पासपोर्ट छीनि, हुनका बलपूर्वक काज करएबाक कथा, टुकड़ा–टुकड़ा, गाम धरि पहुँचय लागल।

गामक एकटा घरमे, बरखों धरि, एकटा बेटाक कोनो समाचार नहि आयल — ओ “अच्छा काज” क वादापर गेल छल, आ फेर, जेना कोनो अन्हारमे हेरा गेल

हो। ओकर माएक आँखि, हर साँझ, बाटपर लागल रहैत छल। गाम बुझय लागल जे ई कोनो साधारण ठगी नहि, ई मनुष्यकेँ स्वयं बजार बना देब थिक।

राजीव, चिंतित, पीपर लग बजलाह, “बूढ़बा, ई त गिरमिटियासँ बेसी भयंकर अछि — ओतय कमसँ कम करार छल, तिथि छल। आब त लोक बिनु किछु जनने, बिनु किछु बुझने, बन्दी बनि जाइत छथि।”

बूढ़बा, अत्यन्त गंभीर स्वरमे बजलाह, “राजीव, हमरा डर अछि जे ई ओ अन्हार अध्याय थिक जकर आहट हम बहुत बरख पहिने सुनने रही। जे स्क्रीनक भीतर बसनिहार भूख छल, से आब देहक बजार धरि पहुँचि गेल अछि। हमरा सभकेँ, आब, हर परिवारकेँ, हर बच्चाकेँ, एहि नव खतराक विषयमे सचेत करय पड़त, ठीक ओहिना जेना हम सभ बाढ़ि, अगिन, आ रोगक विषयमे सचेत करैत रही।”

ओ आगू बजलाह, “एहि नव गोहिकेँ हरएबाक हथियार, राजीव, तलवार नहि — प्रश्न अछि। जे कोनो वादा बहुत नीक लागय, बहुत जल्दी लागय, ओतय बहुत सजग होएब पड़त। पुछू — के बजा रहल अछि? कोन कम्पनी? कोन कागच? के गारंटी लैत अछि? जे परिवार पुछब सिखैत अछि, से अपन बेटा–बेटीकेँ ओहि अनदेखल बजारसँ बचा लैत अछि। नाम बचायब आब केवल स्मृतिक काज नहि, जीवनक काज थिक।”

राजीव, ओहि दिनसँ, गामक हर युवाकेँ विदेशी नौकरीक प्रस्तावक जाँच–परख सिखबय लागलाह — कोन एजेन्ट सच्चा, कोन ठग; कोन कागच असली, कोन नकली; कतय जायब सुरक्षित, कतय खतरा। ई एकटा नव पाठशाला छल,

नारिकेल पातपर नहि, मुदा ओतबे आवश्यक — एहन पाठशाला, जे गामक बेटा–बेटीकेँ बजारक ओहि अन्हार हाथसँ बचा सकय।

अध्याय [–३४] (चौंतीस)

उज्ज्वलक स्वप्न

स्वप्न पैघ, मुदा जड़ि माटिमे— जे स्वप्न नाम बिसरल, से जागि कऽ अकेल।

— गढ़ नारिकेल

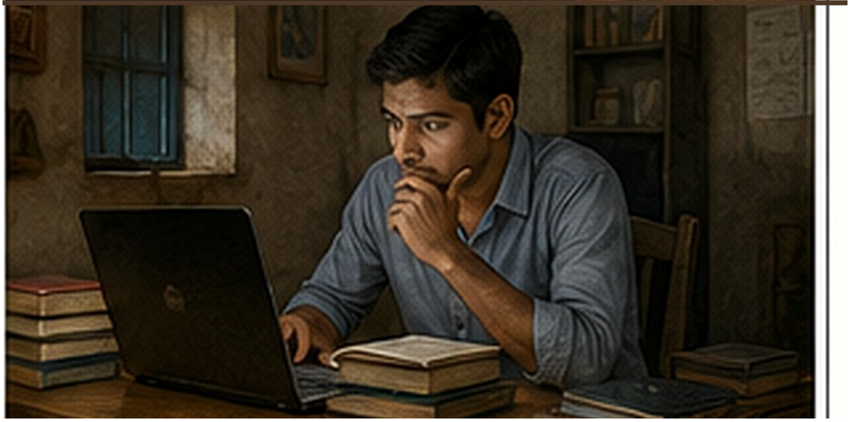

अध्यायारम्भ लोकगीत: स्वप्न आ जड़ि

लोकधुन: जन्म-सोहर

स्वप्न पैघ हे, मुदा जड़ि माटिमे राखू,
जे स्वप्न नाम बिसरल, से जागि कऽ अकेल रे।

आइ एकटा नाम जन्मल, गाम खुशीसँ भरल,
बूढ़बा नाम धेलनि, नव आस लऽ आयल।
स्वप्न पैघ देखू, आकाश धरि उड़ू,
मुदा जड़ि माटिमे राखू, गामकेँ ने बिसरू।

आइ एकटा नाम जन्मल, तकरा गाम धरत,
अन्हारमे जायो कहियो, तँ एकटा दीप संग रहत।
जे स्वप्न जड़िसँ जुड़ल, से साँच भऽ फूलत,
जे स्वप्न नाम बिसरल, से जागि कऽ अकेल भेल।

बूढ़बा नाम धेलनि हे, गाम आँखि राखत रे,
जे नाम गाम मन राखै, से अन्हारमे नहि अकेल।
स्वप्न पैघ भलहिं, जड़ि गहींर राखू,
जे संग गाम रहल, से कतहु ने अकेल भेल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, बूढ़बाकेँ बहुत बरख पहिने भेटल एकटा दृष्टिक पात्र — उज्ज्वल झा — पहिल बेर वास्तविक रूपमे जन्म लैत अछि।)

राजीवक जमानामे, गामक एकटा गरीब परिवारमे एकटा बच्चाक जन्म भेल। घरमे सामान्य आनन्द छल — सोहर गाओल गेल, गुड़ बाँटल गेल, आ बच्चाक नाम राखल गेल उज्ज्वल झा। मुदा ओहि आनन्दक बीच, पीपर लग बैसल बूढ़बा, जन्मक राति, अजीब ढंगसँ अस्थिर भऽ गेलाह — जेना कोनो बहुत पुरान स्मृति, अचानक, हुनकर सोझाँ जीवित भऽ उठल हो।

गामक लोक बूढ़बाकेँ कहियो एतेक अशांत नहि देखने छल। ओ बेर–बेर ओहि गरीब घर दिस तकैत, किछु बजबाक प्रयास करैत, फेर चुप भऽ जाइत। कोनो नव जन्मपर बूढ़बा सदिखन प्रसन्न होइत छलाह; मुदा आइ, ओहि प्रसन्नताक बदला, हुनकर आँखिमे एकटा गहींर चिन्ता छल।

राजीवक बेटी दीपाली, चिंतित, पीपर लग गेलि। “बूढ़बा, अहाँ आइ किएक एतेक अशांत छी? ”

बूढ़बा, धीरे बजलाह, “दीपाली, बहुत बरख पहिने, एकटा झलकमे, हम एकटा युवककेँ देखने रही जे नदीमे नहि, स्क्रीनमे डूबत — हारल रकम, ब्याज, धमकीक बोझ तर। आइ, ओ बच्चा जन्म लेलक अछि। ओकर नाम उज्ज्वल झा थिक। हमरा नहि बुझल जे हम ओकरा बचा सकब की नहि, मुदा हम ओकर नाम आइए सँ धरैत छी।”

ओ आगू बजलाह, “दीपाली, हम अखनहु नहि जनैत जे ओ स्वप्न केना साँच होएत, वा हम ओकरा रोकि सकब की नहि। मुदा एतबा जनैत छी — जे नामकेँ हम आइए सँ धेने छी, से नाम अकेल नहि रहत। जखन ओ बच्चा पैघ हएत, जखन ओकर सोझाँ ओ अन्हार आबत, तखन गाम ओकरा चिन्हने रहत, ओकर नाम मन राखने रहत — आ भरिसक, ओहि एक बातसँ, ओ अन्हारमे सेहो अकेल नहि रहत।”

ओहि दिनसँ, गाम, बिनु किछु कहने, ओहि छोट उज्ज्वलपर एकटा अनकहल नजरि राखय लागल। जखन ओ पहिल बेर पाठशाला गेल, जखन ओ पहिल बेर पोखरिमे नहेलक, जखन ओ पहिल बेर गामक बाहर निकसल — गामक कोनो–न–कोनो आँखि, चुपचाप, ओकर संग रहल। उज्ज्वल एहिसँ अनजान, गामक

गली–गलीमे खेलैत बढ़ैत रहल; मुदा ओकर नाम, गामक स्मृतिमे, बूढ़बाक चिन्ताक संग, सुरक्षित बसल रहल।

दीपाली, ई सुनि, अपन नोटबुकमे उज्ज्वलक नाम लिखलि — गामक हर नव जन्मक अभिलेखक संगहि, एकटा अतिरिक्त चिन्हक संग, ताकि आगू केओ ओहि नामकेँ बिसरय नहि। ओ ई जनैत छलि जे बूढ़बाक चिंता कहियो व्यर्थ नहि होइत — आ जँ बूढ़बा आइ ओहि छोट, नवजात नामकेँ धेने छथि, तँ ओहि नामक कथा, आगू, गामक हेतु बहुत महत्त्वपूर्ण होएत।

अध्याय [–३३] (तेतीस)

वकीलक कोटक छाया

कोटक छायामे न्याय नुकाइ, गाममे न्याय बाजै— वकील धारा पढ़ै, गाम नाम पढ़ै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: कोट आ पीपर

लोकधुन: कचहरी-बिरहा

कोटक छायामे न्याय नुकाइ हे, गाममे न्याय बाजै,
शहरमे धारा बिकाइ रे, गरीबक साँस घुटै।

शहरक कोटमे धारा-धारा, कागच भरल,
वकील पढ़ल किताब, न्याय पइसासँ तौलल।
जे तेज बालक न्यायक सपना आँखिमे लेने,
से अन्हार दिस मुड़ल, धारा-जालमे फँसने।

वकील धारा पढ़ै, गाम नाम पढ़ै,
जे तेज बालक न्यायक सपना देखल, से अन्हार दिस मुड़ल।
कोट न्याय बेचल, गाम न्याय बाँटल,
जे धारामे हेरायल, से नाम-न्यायसँ टूटल।

तारीखपर तारीख हे, मुदा नाम अखनहु ठाढ़ रे,
जे रस्ता बदलि सकै, तकर आस नहि मरै।
जे अन्हार दिस मुड़ल, से फेर घुरि सकै,
जे नाम मन राखल, तकर बाट ने हेराय।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। गामक एकटा युवक कानूनक पढ़ाइ कऽ, शहरमे वकालत करय जाइत अछि — मुदा ओकर पथ धीरे–धीरे अन्हार दिस मुड़ैत अछि।)

दीपालीक जमानामे, गामक एकटा तेज–तर्रार युवक, नाम बटुकनाथ, कानूनक पढ़ाइ कऽ, शहरमे वकालत शुरू केलक। गामक लोक ओकरापर गर्व करैत छल — जे बालक कहियो नारिकेल पात पाठशालामे सभसँ तेज छल, से आब अदालतमे गरीबक हक लेल लड़त, से सभ आशा करैत छल। आ पहिने, सचमुच, ओ ईमानदार मुकदमा लड़ैत छल, कमजोरक पक्ष लैत छल।

मुदा धीरे–धीरे, शक्तिशाली मुवक्किलक संग, ओकर रस्ता बदलय लागल। जीतक स्वाद, पाइक चमक, आ शक्तिक नशा — तीनू, ओकरा एक–एक डेग, ओहि रस्तासँ हटबैत गेल जकरापर ओ चलल छल। जे धारा ओ कहियो गरीबकेँ बचाबय लेल पढ़ने छल, ओहि धाराकेँ ओ आब बलगरकेँ बचाबय लेल घुमाबय सिखलक।

दीपाली, बटुकनाथक बदलैत स्वभावसँ चिंतित, पीपर लग बजलि, "बूढ़बा, बटुकनाथ आब हर मुकदमामे तारीखपर तारीख लियबैत अछि, चाहे दोसर पक्ष कतबो गरीब होइक। ओ अदालतक प्रेतक जकाँ व्यवहार करय लागल अछि।"

बूढ़बा, दुःखी स्वरमे बजलाह, "दीपाली, हमरा डर अछि जे अध्याय –६८ मे जकर बीया पड़ल छल, ओ आब एकटा मनुष्यक देहमे फूलि रहल अछि। बटुकनाथ स्वयं दोषी नहि जन्मल छल — व्यवस्थाक धीमापन, प्रलोभन, आ शक्तिक स्वाद, ओकरा एहि दिशामे मोड़लक। हम ओकर नाम सेहो धरब, आशासँ जे ओ फेर सँ रस्ता बदलत।"

ओ आगू बजलाह, "दीपाली, हम एतेक बरखमे एकटा बात सिखलहुँ — कोनो मनुष्य दोषी बनि कऽ नहि जन्मैत। बीया एक जगह पड़ैत अछि, आ फूल दोसर जगह, दोसर समयमे, खिलैत अछि। बटुकनाथ ओहि व्यवस्थाक फल थिक जे न्यायकेँ बेचबाक चीज बना देलक। तेँ हम ओकर नामकेँ श्रापसँ नहि, आशासँ धरब — किएक तँ जे रस्ता बदलि सकैत अछि, ओकर नाम कहियो पूर्ण रूपसँ मारल नहि जाइत।"

एक बेर, गामक एकटा गरीब विधवा, अपन खेतक मुकदमामे, बटुकनाथक सोझाँ आबि ठाढ़ भेलीह — ओ स्त्री ओकरे गामक छलीह, जकर नाम बटुकनाथ

बचपनमे जनैत छल। एक क्षणक हेतु, बटुकनाथक आँखिमे ओ पुरनका गाम झलकल; मुदा दोसरे क्षण, ओ फेर धाराक भाषामे घुरि गेल। ओहि दिन दीपालीकेँ बुझायल जे पुरनका बटुकनाथ पूर्ण रूपसँ मरल नहि — केवल कतहु गहींर, अन्हारमे, नुकाएल छल।

बटुकनाथक कथा गामक बाहर, शहरमे, फैलल — आ धीरे–धीरे, ओकर नाम, गामक जीभपर नहि, अदालतक गलियारामे, एकटा एहन प्रतिष्ठाक संग जुड़ल जकरा दीपाली कहियो स्वीकार नहि करय चाहलि। मुदा गामक स्मृतिमे, बूढ़बाक इशारापर, ओकर नाम ओहि पुरनका, ईमानदार बटुकनाथक रूपमे सेहो बचल रहल — ओहि आशाक संग जे कहियो–न–कहियो, ओ फेर ओहि रस्तापर घुरत।

अध्याय [–३२] (बत्तीस)

समुद्रपारक साये

सात समुद्र पारसँ साया आबि सकै, नाम लऽ नहि जा सकै— जे दूरसँ ठगै, तकरो पातपर चिन्ह रहि जाइ।

— गढ़ नारिकेल

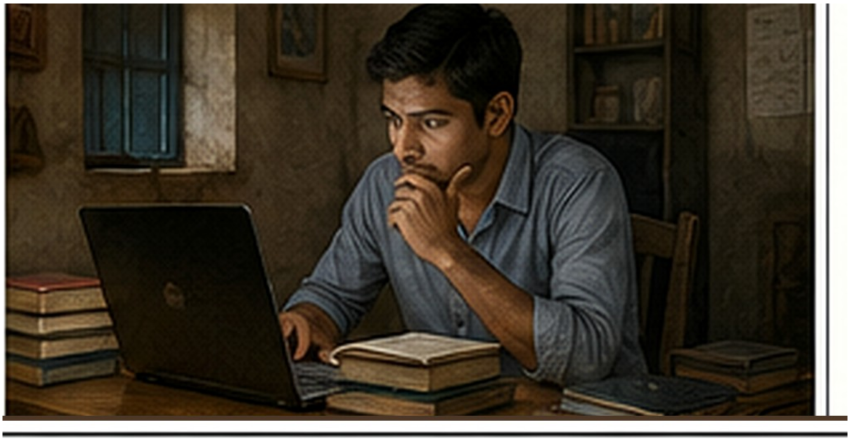

अध्यायारम्भ लोकगीत: मीनार आ जड़ि

लोकधुन: बिदेस-गीत

सात समुद्र पारसँ साया आबि सकै हे,
मुदा नाम लऽ नहि जा सकै रे, से गामे रहै।

सात समुद्र पारक साया, दूरसँ पसरल,

शीशाक मीनारसँ जाल, गाम धरि पहुँचल।
देह-पाइ ठगि सकल, दूरसँ अन्हार अनल,
मुदा नाम गामे रहल, से लऽ नहि जा सकल।

शीशाक मीनार दूर चमकै, भीतर जाल नुकाएल,
जे दूरसँ ठगै, तकरो पातपर चिन्ह रहि जाय।
चमक दूरसँ आयल, मुदा जड़ि ने अनल,
जे मीनार ऊँच बनल, तकर तल खोखल।

मीनार ऊँच भलहिं हे, मुदा नामक जड़ि गहींर रे,
जे गाम नाम धरल, से दूरक छाहसँ नहि डेराय।
दूरक साया आबय-जाय, नाम थिर रहै,
जे जड़िसँ जुड़ल रहल, से छाहसँ ने भयभीत।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। हांगकांगक शीशा–मीनारमे बैसल एकटा अनदेखल शक्तिक साया, पहिल बेर, कथाक क्षितिजपर देखाइ दैत अछि।)

दीपालीक जमानामे, वैश्विक व्यापार आ डिजिटल वित्तक जालसँ, गामक ठगीक कथा अब केवल शहर नहि, समुद्रपार धरि जुड़ल देखाइ पड़य लागल। जे पाइ गामक एकटा गरीब हाथसँ ठगल जाइत छल, ओ, तार–दर–तार, कतेको देश पार कऽ, कोनो अनदेखल हाथमे पहुँचि जाइत छल। दीपालीक बेटा अभिनव, अखबारमे एकटा रिपोर्ट पढ़ि, पीपर लग गेल।

रिपोर्टमे शीशाक ऊँच मीनारक फोटो छल, दूर कोनो शहरक — आ ओहि मीनारक भीतर बसल कोनो अनदेखल शक्तिक चर्चा, जे हजारों मील दूरसँ, हजारों लोकक जीवन ठगैत छल। ओहि रिपोर्टमे एकटा नाम बेर–बेर आबैत छल, आ ओहि नामकेँ पढ़ि, अभिनवक मनमे एकटा अनचिन्हार डर बैसि गेल।

“बूढ़बा,” अभिनव बजलाह, “अखबार कहैत अछि जे भारतक कतेको ठगीक जाल हांगकांग आ आसपासक देशसँ संचालित होइत अछि। एकटा नाम बेर–बेर आबैत अछि — लाउ किन–हंग। हमरा नहि बुझल ई के छथि, मुदा हमरा डर लागैत अछि।”

बूढ़बा, बहुत काल चुप रहलाह, फेर एकटा एहन आवाजमे बजलाह जे अभिनव पहिने कहियो नहि सुनने छलाह — “अभिनव, हमरा ई नाम सेहो बहुत बरख पहिने, एकटा झलकमे, सुनाइ पड़ल छल — शीशाक मीनारमे बैसल एकटा छाह। हमरा नहि बुझल ओ के छथि, वा हमर उज्ज्वल आ हमर बटुकनाथसँ हुनकर की सम्बन्ध होएत। मुदा हमरा एतबे बुझल अछि — ई सभटा कथा, बहुत दूर सँ सेहो, एक दिन एक ठाम, गढ़ नारिकेल धरि, घुरि कऽ आओत।”

ओ कनेक थमकि, आगू बजलाह, “अभिनव, गोहि जल बदलैत अछि, मुदा गोहि रहैत अछि। पहिने ओ पोखरिमे छल, फेर स्क्रीनमे, आब समुद्रपार शीशाक मीनारमे। मुदा जे नियम पुरनका गोहिपर लागू छल, वैह एहूपर लागू अछि — ओ देह लऽ सकैत अछि, नाम नहि। जँ गाम अपन नाम धेने रहत, आ एक–दोसराकेँ चेतौने रहत, तँ ई दूरक छाहो, अन्ततः, गामक इजोतक सोझाँ, कमजोर पड़त।”

अभिनव, ई सुनि, गामक हर युवाकेँ अन्तर्राष्ट्रीय ठगीक जालसँ सतर्क रहबाक चेतावनी देलनि — कोन प्रस्ताव दूरसँ आबि रहल अछि, कोन नाम पाछाँ नुकाएल अछि, कतय पाइ जा रहल अछि। यद्यपि ओकरा स्वयं नहि बुझल छल जे ई चेतावनी कतेक शीघ्र, कतेक निकट, सार्थक सिद्ध होयत — जे छाह आइ अखबारक पन्नापर छल, से एक दिन गढ़ नारिकेलक अपन कथामे, प्रत्यक्ष, ठाढ़ हएत।

अध्याय [–३१] (इकत्तीस)

सत्यव्रतक मौन

जे बहुत काल चुप रहल, तकर एक बोल सभसँ भारी— सत्यव्रतक मौन सेहो एकटा गवाही छल।

— गढ़ नारिकेल

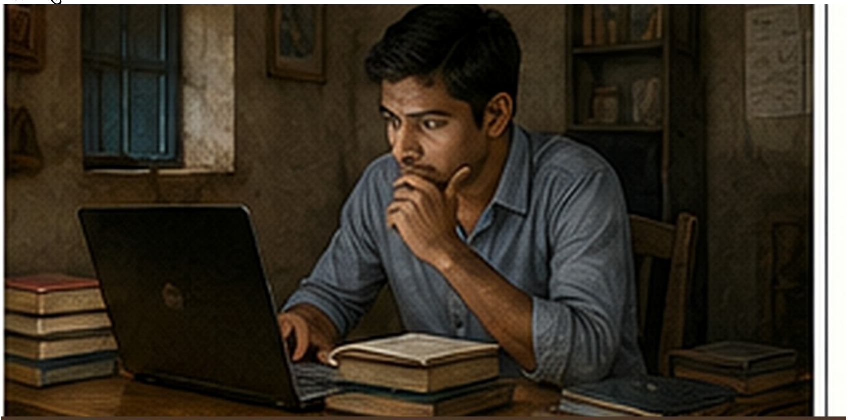

अध्यायारम्भ लोकगीत: मौन आ बोल

लोकधुन: धैर्य-गीत

जे बहुत काल चुप रहल हे, तकर एक बोल भारी,

मौन कहियो सुरक्षा रे, कहियो अन्याय बनै।

सत्यव्रत बहुत काल चुप रहल, देखल-सहल,

मौनक ओढ़नी ओढ़ि, सत्यकेँ भीतर धेल।
मुदा मौन कखनो कवच, कखनो अन्याय बनल,
जे बाजबाक क्षण चुप रहल, से दोषी संग ठाढ़ भेल।

जे बाजबाक क्षण नहि आयल, चुप रहब धैर्य,
जे क्षण आयल आ चुप रहल, से चुप्पी अन्याय।
जे देखल सत्य भीतर, से एक दिन बाहर आबय,
मौन जँ सत्य लुकाबय, से मौन दोष कहाबय।

जे देखू, से लिखू हे, नोटबुक साक्षी बनत रे,
जे सत्य भीतर बसल, से एक दिन बाहर आबय पड़त।
चुप रहब धैर्य जँ, बाजब साहस जँ,
जे सही क्षण बाजल, से सत्यक पहरुआ बनल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। गामक एकटा सरल, मौन बैंक–कर्मचारी, नाम सत्यव्रत मेहता, अपन कर्तव्य आ अपन विवेकक बीच झूलय लागैत छथि।)

अभिनवक जमानामे, गामक एकटा शांत, ईमानदार युवक, नाम सत्यव्रत मेहता, नगरक एकटा बैंकमे नौकरी पओलक। ओ ओहि तरहक मनुष्य छल जे बेसी नहि बजैत, मुदा सभटा देखैत — जकर मौन कहियो–कहियो ओकर बोलसँ बेसी गहींर होइत छल। बैंकक ओहि शांत काजमे, ओ अपन कर्तव्य ईमानदारीसँ निभबैत रहल।

मुदा धीरे–धीरे, ओ एहन खाता सभ देखय लागल जे संदेहास्पद लगैत छल — पैसा आबैत, तुरंत आगू बढ़ि जाइत, बिनु स्पष्ट कारणक। एकटा खातामे लाखों अबैत, आ पल भरिमे, दोसर–तेसर खातामे बँटि, कतहु हेरा जाइत। सत्यव्रतकेँ बुझायल जे ई कोनो साधारण लेनदेन नहि; ई कोनो पैघ, नुकाएल जालक एकटा

तार थिक। मुदा ओ केवल एकटा छोट कर्मचारी छल — के सुनत, आ बाजलासँ कोन खतरा?

सत्यव्रत, छुट्टीमे गाम आबि, पीपर लग बजलाह, “बूढ़बा, हम किछु एहन देखि रहल छी जकरा हम पूर्ण रूपसँ बुझि नहि पबैत छी, मुदा हमरा डर लागैत अछि। हमरा चुप रहय पड़त वा बाजय पड़त, हमरा नहि बुझल।”

बूढ़बा, धीरे बजलाह, “सत्यव्रत, मौन कहियो–कहियो सुरक्षा होइत अछि, मुदा कहियो–कहियो, अन्याय। हम अहाँकेँ निर्णय नहि द’ सकैत छी — ई अहाँक विवेकक काज थिक। मुदा हमरा एतबे बुझल अछि — जे सत्य अहाँ जनैत छी, ओ, चाहे अहाँ आइ बाजी वा नहि, अहाँक भीतर बचल रहत, आ एक दिन बाहर आबय पड़त।”

ओ आगू बजलाह, “मुदा एतबा और मन राखू, सत्यव्रत — जे बाजबाक क्षण नहि आयल, ओहि क्षण चुप रहब कायरता नहि, धैर्य थिक; मुदा जे बाजबाक क्षण आबि गेल आ तखनहु केओ चुप रहय, ओ चुप्पी अन्याय बनि जाइत अछि। ओहि क्षणकेँ चिन्हब — इएह विवेक थिक। आ जँ ओ क्षण आबय, तँ अहाँक लग प्रमाण होएब चाही, केवल बात नहि। जे देखू, से लिखू।”

सत्यव्रत, गाम सँ शहर घुरैत, बूढ़बाक शब्द मोन राखि, अपन नोटबुकमे, चुपचाप, हर संदिग्ध लेनदेनक तिथि आ विवरण लिखय लागलाह — कोन खातासँ कतय पाइ गेल, कोन तिथिकेँ, कतेक। ओ बाजल नहि, मुदा चुप सेहो नहि रहलाह — ओ केवल प्रतीक्षा करैत रहलाह, ओहि क्षणक, जखन ई मौन एकटा गवाही बनि सकय। बिनु जनने जे ई नोटबुक एक दिन कतेक महत्त्वपूर्ण बनत।

अध्याय [–३०] (तीस)

गोप कुमारक दस्तावेज

जे लिखल राखलक, से समय बचबै— दस्तावेज देह नहि, नाम बचबै छै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: लिखल थाती

लोकधुन: संकलन-गीत

जे लिखल राखलक हे, से समय बचबै,
दस्तावेज देह नहि, नाम बचबै छै रे।

गोप कुमार पन्ना-पन्ना जोड़ल जतनसँ,
पुरान पात, नव पर्दा, एक धागामे बान्हल।
जे देह समय खाइत, से लिखल बचि जाइत,
दस्तावेज नाम राखल, समयसँ लड़ल-भिड़ल।

पुरान पात, नव पर्दा, एक धागामे बान्हू,
जे यादवानन्द छुपा लिखल, जे विभा खुलेआम आनल।
जे बिखरल छल कथा, से एक ठाम जोड़ल,
जे साक्षी लिखि राखल, से समयकेँ हरा देल।

जे कथा जोड़ल हे, से पीढ़ी-पीढ़ी जीबै रे,
जे साक्षी बनल, से हर हेरायल नाम फेर जगाबै।
देह मेटल, नाम बचल, लिखल पन्नामे,
जे दस्तावेज राखल, से हर नामकेँ बचाबै।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। गामक एकटा युवा, नाम गोप कुमार, दस्तावेज आ अभिलेखक संसारमे अपन जीवन समर्पित करैत अछि।)

सत्यव्रतक जमानामे, गामक एकटा आर युवक, नाम गोप कुमार, यादवानन्द आ विभाक परम्पराकेँ आगू बढ़ाबैत, अभिलेखीकरण आ अनुसंधानमे अपन जीवन लगा देलक। जे बालक कहियो पुरनका कागच सूँघैत, पुरनका नाम पढ़ैत, घण्टों बिता दैत छल, से आब गामक सम्पूर्ण स्मृतिकेँ एक ठाम जोड़बाक काजमे लागि गेल।

ओ पुरान नक्शा, पुरान पंजी, आ नव डिजिटल अभिलेख, सभटा एक ठाम जोड़य लागल। जे नाम यादवानन्द रातिक अन्हारमे लिखने रहथिन, जे कागच विभा सूचनाक अधिकारसँ आनने रहथिन, आ जे नव अभिलेख आब स्क्रीनपर

बनैत छल — गोप कुमार ओहि सभकेँ, एक–एक धागा, एक–दोसरासँ मिलाबय लागल। ओकर काज देखि लोक कहैत — "ई युवक गामक स्मृतिकेँ अमर बनाबय चाहैत अछि।"

गोप कुमार, पीपर लग बजलाह, "बूढ़बा, हम अहाँक सम्पूर्ण कथाकेँ, यादवानन्दक पंजीसँ लऽ कऽ आइ धरि, एक ठाम संकलित करय चाहैत छी। की एकर समय आबि गेल अछि? "

बूढ़बा, बहुत काल सोचैत, बजलाह, "गोप कुमार, हरिपति कवि हमरासँ ई प्रश्न पुछने रहथिन, आ हम कहने रही — जाबे धरि कथा पूर्ण नहि होइत, ताबे धरि नहि। हमरा लगैत अछि जे ई कथा अखनहु पूर्ण नहि भेल अछि। एकटा अन्तिम अध्याय बाकी अछि, जकर आहट हम बरख–दर–बरख सुनैत आयल छी। जखन ओ अध्याय पूर्ण होयत, तखन अहाँक काज सेहो पूर्ण होयत।"

ओ आगू बजलाह, "गोप कुमार, कथा संकलित करब सजावट नहि, साक्षी बनब थिक। जे कथा लिखैत अछि, ओकरा ओहि कथाक हर सुख, हर दुःख, हर अन्यायकेँ अपन भीतर झेलय पड़ैत अछि। तेँ जल्दी मत करू। जे अन्तिम अध्याय आबय बला अछि, ओ सबसँ कठिन हएत — ओहिमे उज्ज्वल हेताह, बटुकनाथ हेताह, ओ दूरक छाह हेताह। जखन ओ सभ एक ठाम आबताह, तखन अहाँ लिखब — आ तखनहि गाम अपन पूर्ण कथा पाओत।"

एक दिन, पुरनका पंजी छानैत, गोप कुमारकेँ एकटा एहन नाम भेटल जे शताब्दियों पहिने बाढ़िमे हेरा गेल छल — आ ओहि नामक कात, यादवानन्दक हाथें लिखल, एकटा छोट टिप्पणी छल। गोप कुमार ओहि नामकेँ, आ ओहि टिप्पणीकेँ, अपन नव अभिलेखमे जोड़ि देलनि — आ ओहि क्षण ओकरा बुझायल

जे ओ केवल कागच नहि जोड़ि रहल छथि, ओ शताब्दियोंक बीच एकटा पुल बान्हि रहल छथि, जकरापर हर हेरायल नाम, फेर, गाम धरि घुरि सकैत छल।

गोप कुमार, ई सुनि, धैर्यपूर्वक अपन संकलनकेँ जारी राखलनि। ओ जनैत छलाह जे ओ ओहि अन्तिम अध्यायक साक्षी, शायद लेखक सेहो, बनताह — आ तेँ ओ हर नाम, हर हिसाब, हर धागाकेँ, ओहि दिनक हेतु, सम्हारि कऽ राखय लागलाह, जखन गढ़ नारिकेलक सम्पूर्ण कथा, आरम्भसँ अन्त धरि, एक ठाम, एक हाथमे, ठाढ़ हएत।

अध्याय [–२९] (उनतीस)

चन्द्रपालक सपना

सपना जकर आँखिमे, धोखा तकर पएरमे— जे बिनु बुझल हस्ताक्षर केलक, से जालमे फँसल।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: सपना आ धोखा

लोकधुन: सतर्क-बिरहा

सपना जकर आँखिमे हे, धोखा तकर पएरमे,

जे बिनु बुझल हस्ताक्षर केलक रे, से जालमे फँसल।

चन्द्रपाल सपना देखल, दूरक चमक भेल,
बिनु बुझल हस्ताक्षर केलक, जालमे पएर धेल।
सपना आँखिमे नाचल, धोखा पएरमे बान्हल,
जे बिनु परखने बढ़ल, से अनजानमे फँसल।

नाम गामक होइ वा दूरक, गोहि सभकेँ चिन्है,
मेरठ होय वा गढ़ नारिकेल, जाल सीमा नहि जनै।
गोहि नाम ने पुछै, ने गाम, ने सीमा,
जतय बिनु परख विश्वास, ओतय ओकर करीमा।

जे कतहु जन्मल हे, तकरो नाम गाम धरि सकै रे,
बूढ़बाक पहरा आब, गामक महारसँ बाहर पसरल।
जे मेरठमे फँसल, तकरो नाम एतय बचल,
बूढ़बाक आँखि आब, हर सीमाकेँ पार कएल।

❖

(एकटा उपन्यास-अंश। गामसँ बाहर जन्मल एकटा युवक, नाम चन्द्रपाल बत्रा, कानूनक डिग्री लऽ, सट्टाक जालमे फँसैत अछि।)

गोप कुमारक जमानामे, गामसँ जुड़ल एकटा दूरस्थ सम्बन्धी परिवारमे, मेरठमे, एकटा बच्चाक जन्म भेल — चन्द्रपाल बत्रा। ओ परिवार बरखों पहिने गाम छोड़ि, नगर-नगर घूमि, अन्ततः मेरठमे बसि गेल छल; गामसँ ओकर सम्बन्ध आब केवल एकटा पुरान नाम, आ कहियो-कहियोक कोनो चिट्ठी, धरि सीमित छल। तैयो, ओहि बच्चाक जन्मक राति, बूढ़बा अजीब अस्थिरता अनुभव केलनि।

गामक लोककेँ ई अचरज भेल — कोनो गामक बच्चाक जन्मपर बूढ़बाक चिन्ता त बुझल छल, मुदा एकटा एहन बच्चा, जे गामसँ सैकड़ों मील दूर, कोनो अनचिन्हार शहरमे जन्मल, ओकर हेतु बूढ़बा किएक अस्थिर छथि? गोप कुमार,

जकर डिजिटल अभिलेख आब दूर–दूरक सम्बन्धकेँ सेहो जोड़ैत छल, ओहो एहि प्रश्नसँ चकित छलाह।

गोप कुमार, पीपर लग बजलाह, “बूढ़बा, ई बच्चा त गामक नहि थिक। अहाँ ओकर हेतु किएक अस्थिर छी? ”

बूढ़बा, धीरे बजलाह, “गोप कुमार, हमर साक्षी–भाव आब गामक सीमासँ बेसी विस्तृत भऽ गेल अछि — जेना अहाँक डिजिटल अभिलेख, जे अब दूर–दूरक सम्बन्धकेँ सेहो जोड़ैत अछि। ई बच्चा, कालक्रममे, हमर कथाक एकटा अंश बनत, चाहे ओ गाम कहियो नहि देखए। हम ओकर नाम धरि लैत छी — चन्द्रपाल।”

ओ आगू बजलाह, “गोप कुमार, नव गोहि, जे तार आ स्क्रीनमे बसैत अछि, से गामक सीमा नहि जनैत। ओ मेरठमे बैसल केओकेँ ओतबे सहजतासँ ठगि सकैत अछि जतबे गढ़ नारिकेलमे बैसल केओकेँ। तेँ हमर पहरा सेहो, आब, गामक सीमासँ बाहर जाय पड़त। जे नाम एहि नव गोहिक जालमे आबि सकैत अछि, ओ नाम, चाहे कतहु जन्मल होइक, हमरा धरय पड़त।”

ओहि राति, गोप कुमार बहुत काल पीपर लग बैसल रहलाह, ई सोचैत जे बूढ़बाक साक्षी–भाव केना गामक सीमासँ बाहर पसरि रहल अछि। पहिने बूढ़बा केवल ओहि नामकेँ धरैत छलाह जे गामक माटिपर जन्मल; आब ओ ओहि नामकेँ सेहो धरय लागल छलाह जे गामसँ हजारों मील दूर, कोनो अनचिन्हार आँगनमे, जन्म लऽ रहल छल। गोप कुमारकेँ बुझायल जे नव गोहिक जाल जतेक पसरल, बूढ़बाक पहरो ओतबे पसरि गेल।

गोप कुमार, ई सुनि, अपन अभिलेखमे एकटा नव खण्ड जोड़लनि — “दूरस्थ सम्बन्ध,” जतय ओ गामसँ जुड़ल, मुदा गामसँ बाहर जन्मल, हर नामकेँ सेहो सुरक्षित राखय लागलनि। चन्द्रपालक नाम ओहि खण्डक पहिल प्रविष्टि बनल — आ ओहि दिन गोप कुमारकेँ बुझायल जे बूढ़बाक कथा आब केवल गढ़ नारिकेलक कथा नहि, ओहि सभ नामक कथा बनि रहल अछि, जे कतहु सेहो, ओहि नव गोहिक जालमे, आबि सकैत अछि।

अध्याय [–२८] (अठाईस)

राघवक कोड

जे भाषा यन्त्र बुझै, से गाम नहि बुझै— मुदा कोडक भीतरो एकटा नाम नुकाएल रहै छै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: कोड आ नाम

लोकधुन: यन्त्र-सोहर

जे भाषा यन्त्र बुझै हे, से गाम नहि बुझै,
मुदा कोडक भीतरो रे, एकटा नाम नुकाएल रहै।

राघव कोड लिखल, यन्त्रक भाषा बुझल,
जे गाम ने बुझि सकल, से पर्दापर उतरल।
मुदा हर कोडक भीतर, एकटा नाम बसल,
जे हाथ ओकरा गढ़ल, ओकर मनपर टिकल।

जे हाथ बनाबय, वैह हाथ बिगाड़ि सकै,
तलवार ने नीक ने बेजाय, मन ओकरा गढ़ै।
शक्ति यन्त्रमे नहि, चलाबैबलाक मनमे,
जे मन थिर राखल, से शक्ति नीक बाटमे।

शक्ति पैघ भलहिं हे, चुनाव हाथक करै रे,
जे जड़ि नहि बिसरै, तकर शक्ति पहरुआ बनै।
कोड जँ नाम बचाबय, से पहरुआ बनल,
कोड जँ नाम मेटाबय, से गोहि बनि गेल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एकटा प्रतिभाशाली युवा प्रोग्रामर, नाम राघव, गामक निकटतम नगरमे जन्म लैत अछि, आ ओकर हाथक कौशल भविष्यमे दुनू दिशा — रक्षा आ विनाश — लऽ जा सकैत अछि।)

अभिनवक परिवारक एकटा शाखामे, नगरमे, राघव नामक एकटा बच्चा जन्म लेलक, जकर मस्तिष्क कोड आ यंत्रक हेतु असाधारण छल। छोटहि उमरमे, ओ कम्प्यूटरक भाषा एहन सहजतासँ सिखलक जेना गामक बच्चा कखनो नारिकेल पातपर अक्षर सिखने छल। जे तर्क बड़का–बड़का इंजीनियरकेँ बरख लगबैत, से राघव, खेल–खेलमे, चुटकीमे बुझि लैत।

किशोर उमरमे, ओ एहन–एहन काज केलक जे लोककेँ चकित कऽ देलक — कहियो कोनो जटिल यंत्रकेँ ठीक कऽ देलक, कहियो कोनो नुकाएल गलतीकेँ पकड़ि लेलक। मुदा ओकर ओहि असाधारण शक्तिकेँ देखि, किछु सयान लोक

चुपचाप सोचैत — एहन शक्ति, जँ नीक हाथमे रहय, तँ हजारोंकेँ बचा सकैत अछि; मुदा जँ बेजाय हाथमे जाय, तँ ओतबे लोककेँ ठगि सकैत अछि।

गोप कुमार, राघवक प्रतिभाक कथा सुनि, पीपर लग बजलाह, “बूढ़बा, ई बच्चा असाधारण अछि। भविष्यमे ओ बड़का काज करत।”

बूढ़बा, चिंतित स्वरमे बजलाह, “गोप कुमार, असाधारण शक्ति दुनू दिशामे जा सकैत अछि — रक्षाक दिशामे, वा विनाशक दिशामे। हमरा नहि बुझल राघव कोन दिशा चुनत। हम ओकर नाम धरि, प्रतीक्षा करब।”

ओ आगू बजलाह, “गोप कुमार, तलवार ने नीक होइत अछि ने बेजाय — ओ जकर हाथमे रहैत अछि, तकर मन ओकरा नीक वा बेजाय बनबैत अछि। राघवक ई कौशल सेहो एकटा तलवार थिक। जँ ओ अपन नामकेँ, अपन गामकेँ, अपन विवेककेँ मन राखत, तँ ई शक्ति हजारोंक पहरुआ बनत। मुदा जँ ओ नाम बिसरि, केवल शक्तिक पाछाँ दौड़त, तँ इएह कौशल एकटा नव गोहि बनि सकैत अछि। तेँ हम ओकर नाम आइए सँ धरैत छी — ताकि ओ अपन जड़ि नहि बिसरय।”

एक बेर, गामक एकटा गरीब परिवारक हारल–थाकल कागच, जकरा कोनो दफ्तरमे केओ नहि सुनैत छल, राघव अपन यंत्रक कौशलसँ, कने–कनेमे, ठीक कऽ देलक — आ ओहि परिवारकेँ ओकर हक भेटि गेल। ओहि दिन गोप कुमारकेँ बुझायल जे राघवक शक्ति, जँ नीक दिशामे लागय, तँ ओ गामक सबसँ पैघ पहरुआ बनि सकैत अछि। मुदा बूढ़बाक प्रश्न–चिन्ह, अखनहु, ओहि नामक कात, थिर ठाढ़ रहल।

गोप कुमार, राघवक नाम अपन अभिलेखमे लिखि, ओकर कात एकटा प्रश्न–चिन्ह जोड़लनि — भविष्यक हेतु छोड़ल एकटा खाली स्थान, जकरा समय भरत।

ओ जनैत छलाह जे ओहि प्रश्न–चिन्हक उत्तर, राघवक अपन चुनाव हएत — आ ओहि चुनावपर, भरिसक, गामक आगू बहुत किछु निर्भर करत।

अध्याय [–२७] (सत्ताईस)

आरुणिक निर्माण

जे बनबै, से पहिने अपनाकेँ गढ़ै— आरुणि छपाकसँ पहिने अपन आँखि गढ़लक।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: बनाबय आ गढ़य

लोकधुन: निर्माण-गीत

जे बनबै हे, से पहिने अपनाकेँ गढ़ै,

पुल मजगूत तखनहि रे, जखन मन मजगूत।

आरुणि पुल बनाओल, इंजीनियरी सिखल,
मुदा जे पहिने अपनाकेँ गढ़ल, से नीक पुल बनल।
पत्थर धरल, बान्ह बान्हल, बाढ़िक बात मन धेल,
बुजुर्गक पानि-ज्ञान, यन्त्रसँ कम ने बुझल।

पत्थर धरू, बान्ह बान्हू, बाढ़िक बात मन राखू,
जे बुजुर्ग पानि पढ़ल, तकर ज्ञान यन्त्रसँ कम नहि।
नव यन्त्र संग पुरान ज्ञान, दुनू मिला बनाउ,
जे दुनूकेँ जोड़ल, से पक्का पुल बनाउ।

जे बनल, तकर देखभाल चाही हे,
बिनु जतन, पक्को बान्ह एक दिन धसकै रे।
बनाबय टा नहि काफी, सम्हारब सेहो काज,
जे बनाओल आ सम्हारल, तकर पुल ने धसकल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एकटा इंजीनियर युवक, नाम आरुणि, पुल आ बान्ह–निर्माणक काजमे जुटैत अछि — गामक पुरान बान्हक परम्पराकेँ आधुनिक रूप दैत।)

गोप कुमारक जमानामे, गामक एकटा युवा, नाम आरुणि, इंजीनियरिंगक पढ़ाइ कऽ, पुल आ बान्ह–निर्माणक काजमे जुटल। ओ अपन बचपनक बाढ़िक कथा, आ इन्द्राणीक पूर्व–चेतावनी–व्यवस्थाक कथा, कहियो नहि बिसरल — ओ बाढ़ि, जे कहियो गामक घर बहा लऽ जाइत छल, आ ओ बान्ह, जे पीढ़ी–दर–पीढ़ी, गामक श्रमसँ, अन्ततः मजगूत भेल छल।

आरुणि अपन ज्ञानसँ गामक पुरान बान्हकेँ नव रूप देलनि — माटिक बान्हक जगह पक्का बान्ह, आ बाढ़िक पूर्वानुमानक हेतु नव यंत्र। मुदा ओ ई सेहो जनैत छलाह जे कोनो पक्का बान्ह, ओहि पुरनका ज्ञानक बिनु, अधूरा अछि — जे बुजुर्ग

नदीक स्वभाव जनैत छलाह, जे स्त्री पानिक चढ़ावकेँ पढ़ि लैत छलीह, हुनकर ज्ञान कोनो यंत्रसँ कम नहि छल।

आरुणि, पीपर लग बजलाह, "बूढ़बा, हम एहन पुल आ बान्ह बनाएब चाहैत छी जे कहियो टूटय नहि, जेना गामक हमर पुरान बान्ह अन्ततः मजगूत भेल।"

बूढ़बा, स्नेहसँ बजलाह, "आरुणि, अहाँक इच्छा नीक थिक। मुदा मोन राखू — कोनो निर्माण, चाहे कतेक मजगूत होइक, देखभाल बिनु टिकत नहि। ठीक ओहिना जेना हमर गाछी बिनु देखभाल कमजोर पड़ि सकैत अछि।"

ओ आगू बजलाह, "आरुणि, मनुष्य सोचैत अछि जे एक बेर मजगूत बना देलासँ काज पूरा भऽ गेल। मुदा बान्ह होइ वा गाम, वा स्मृति — सभटाकेँ हर पीढ़ीमे नव सिरे सँ सम्हारय पड़ैत अछि। जे पुल आइ मजगूत अछि, ओ अगिला पीढ़ीक उपेक्षामे कमजोर पड़ि सकैत अछि। तेँ केवल बनायब नहि, बनाओल वस्तुकेँ जीवित राखब — इएह असली निर्माण थिक।"

एक बरख, जखन कमला–बलानमे पैघ बाढ़ि आयल, तखन आरुणिक बनाओल नव बान्ह पहिल बेर परखल गेल। गामक लोक, राति भरि, बान्हपर दीप लऽ पहरा देलक — आ ओ बान्ह टिकि गेल। मुदा आरुणि जनैत छलाह जे ई जीत केवल पत्थरक नहि, ओहि सभ हाथक सेहो छल जे राति भरि जागल रहल; किएक तँ कोनो बान्ह, अन्ततः, ओहि गामक श्रम आ जतनसँ टिकैत अछि जे ओकरा अपन बुझैत अछि।

आरुणि, ई शिक्षा लऽ, अपन हर निर्माणक संग एकटा दीर्घकालिक देखभाल–योजना सेहो जोड़य लागलाह — हर पुल, हर बान्हक हेतु, ई तय करैत जे आगू केओ ओकर देखभाल करत, ओकर हिसाब राखत। बूढ़बाक शब्द अपन

पेशाक मूल सिद्धान्त बनौने, आरुणि एहन इंजीनियर बनलाह जे केवल पत्थर नहि, ओहि पत्थरक भविष्य सेहो गढ़ैत छलाह।

अध्याय [–२६] (छब्बीस)

देविकाक गीत

गीत जकर कण्ठ, न्याय तकर स्वर— जे गीतमे नाम पुकारल, से गाम भरि गूँजल।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: कण्ठक न्याय

लोकधुन: देविका-धुन

गीत जकर कण्ठ हे, न्याय तकर स्वर,

जे गीतमे नाम पुकारल रे, से गाम भरि गूँजल।

देविका गीत गाओल, कण्ठमे न्याय भरल,
जे नाम बिसरल गेल, से गीतमे फेर उठल।
हुलासाक धुन गाओल, हुलासा फेर जीबल,
पुरान धुन नव कण्ठमे, फेर जागि बजल।

हुलासाक गीत गाबू, हुलासा फेर जीबि उठै,
पुरान धुन नव कण्ठमे, जँ जीबैत रहल।
जे गीत नाम राखल, से नाम ने हेरायल,
जे कण्ठ धुन बचाओल, से हर नाम बचाओल।

पात होय वा यन्त्र हे, स्वर नहि मरै रे,
जे धुन बचल, ओहिमे बसल हर नाम बचल।
माध्यम बदलैत जाय, गीत थिर रहै,
जे धुनमे नाम राखल, से युग-युग गूँजल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एकटा युवती, नाम देविका, गामक लोकगीत–परम्पराकेँ नव पीढ़ी धरि पहुँचाबय हेतु अपन जीवन समर्पित करैत अछि।)

आरुणिक जमानामे, गामक एकटा युवती, नाम देविका, मोहनक धुन–परम्पराकेँ आगू बढ़ाबैत, गामक हर पुरान लोकगीत — हुलासाक, जीवन्तीक, गंगेशक — नव सुर आ नव वाद्ययंत्रक संग रिकॉर्ड करय लागलि। जे गीत कहियो केवल महारपर, पनिघटपर, खरिहानमे, जीबैत छल, से आब यंत्रमे उतरि, स्थायी भऽ रहल छल।

देविका गामक बूढ़ स्त्री सभ लग बैसैत, हुनकासँ ओ पुरनका गीत सुनैत, जकरा आब बहुत कम लोक जनैत छल — कोनो बाढ़िक गीत, कोनो सोहर, कोनो समदाउन, कोनो अकालक टेक। ओ ओहि गीत सभकेँ, हुबहू, ओहि बूढ़

कण्ठक स्वरमे, रिकॉर्ड करैत, आ फेर ओकरा नव सुरमे, नव पीढ़ीक हेतु, ढालैत। पुरान आ नव, दुनू, एक–दोसराकेँ जीवित राखैत।

देविका, पीपर लग बजलि, “बूढ़बा, हम अहाँक हर धुनकेँ, आधुनिक तकनीकसँ, सुरक्षित राखय चाहैत छी, ताकि आगूक पीढ़ी सेहो एकरा सुनि सकय।”

बूढ़बा, प्रसन्न स्वरमे बजलाह, “देविका, अहाँ मोहनक स्वप्नकेँ पूर्ण कऽ रहल छी। धुन, चाहे कतेक पुरान होइक, जँ नव कण्ठमे, नव यंत्रमे जीबैत रहय, तँ ओ कहियो नहि मरैत।”

ओ आगू बजलाह, “देविका, नाम बचायब आ गीत बचायब, दुनू एक्के काज थिक। किएक तँ गीतमे नाम बसैत अछि — जकर हुलासाक गीत गाओल जाइत अछि, से हुलासा, ओहि क्षण, फेर जीबि उठैत अछि। तँ जखन अहाँ ओ पुरनका गीत नव कण्ठमे राखैत छी, अहाँ केवल सुर नहि, ओहि सुरमे बसल हर नाम, फेर सँ, गाम भरि गुँजा रहल छी।”

एक दिन, देविका गामक सबसँ बूढ़ स्त्री लग बैसलि, जे कहियो एकटा एहन अकालक टेक जनैत छलीह, जकरा आब आर केओ नहि जनैत छल। ओ बूढ़ी, काँपैत स्वरमे, ओ गीत गौलीह — आ देविका ओकरा रिकॉर्ड कऽ लेलि। किछु दिन बाद ओ बूढ़ी नहि रहलीह; मुदा ओकर स्वर, ओकर गीत, आ ओहि गीतमे बसल सभ नाम, आब हमेशाक हेतु, सुरक्षित रहि गेल।

देविका, गामक बच्चा सभकेँ पुरान लोकगीत सिखबय एकटा नव पाठशाला खोललि — नारिकेल पात पाठशालाक संगीत–शाखा, जतय अक्षरक संगहि, स्वर सेहो सिखाओल जाय लागल। ओहि पाठशालामे, हर बच्चा, अक्षर सिखबासँ

पहिने, एकटा पुरान गीत सिखैत — ताकि गामक धुन, आ ओहि धुनमे बसल नाम,

कहियो कोनो पीढ़ीमे नहि टूटय।

अध्याय [–२५] (पचीस)

मीराक निजता

जकर कथा, तकर अनुमति— नाम नमूना नहि, मीराक कथा मीराक अपन।

— गढ़ नारिकेल

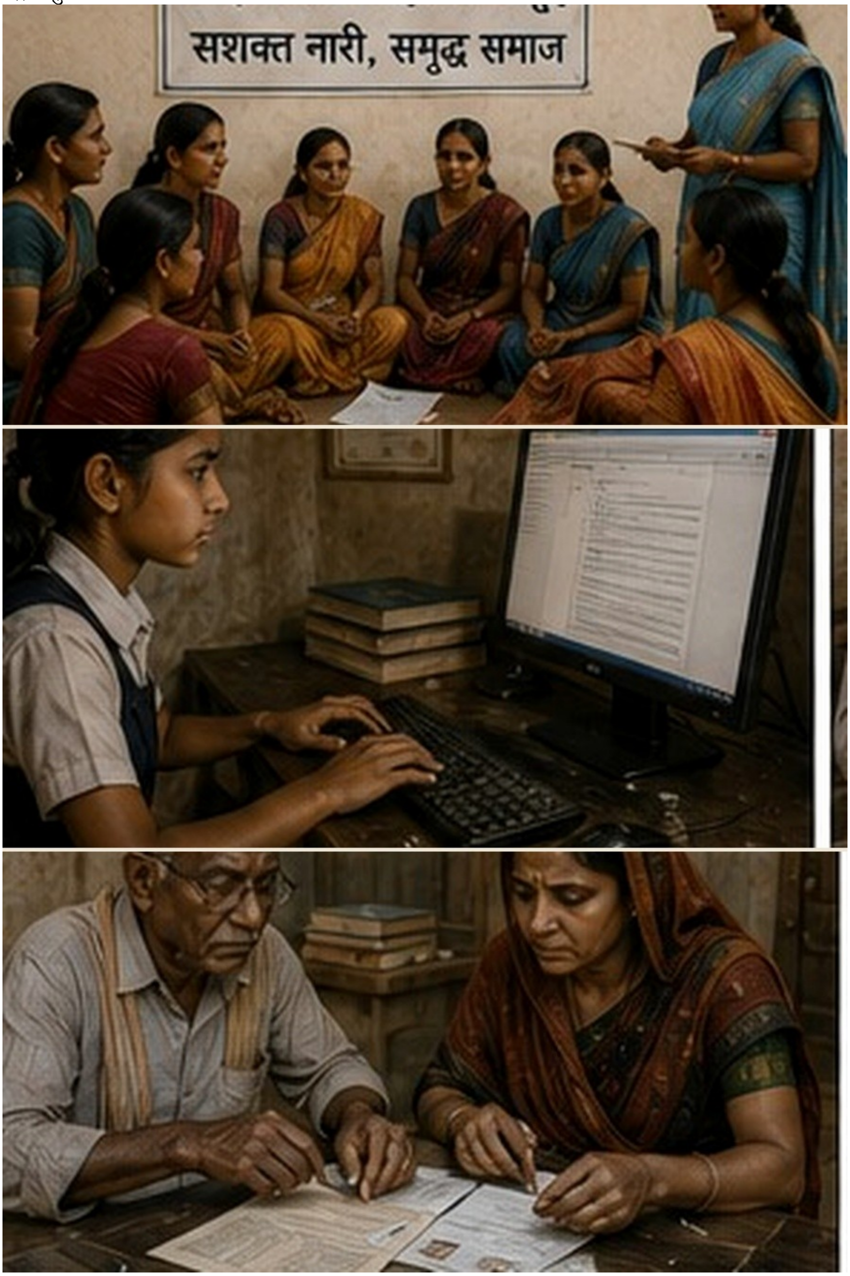

अध्यायारम्भ लोकगीत: नामक अनुमति

लोकधुन: निजता-गीत

जकर कथा हे, तकर अनुमति,

नाम नमूना नहि रे, मीराक कथा मीराक अपन।

मीराक छवि चोराओल, सूचना बजार भेल,
बिनु अनुमति नाम-कथा, दोसराक हाथ गेल।
मुदा मीरा कहल—हम नमूना नहि छी,
हमर कथा हमर अनुमति बिना, कतहु ने जाय छी।

फोटो चोरा, सूचना बेचि, नाम बजारमे राखि,
जे बिनु अनुमति नाम-छवि लेलक, से चोर।
जकर कथा, तकर हक; जकर नाम, तकर अनुमति,
जे बिनु पुछने लेलक, से भेल नाम-चोर-गति।

निजताक अधिकार हे, अन्ततः नामक अधिकार रे,
जकर नाम, तकर अनुमति; इएह सबसँ पैघ पहरा।
नाम केकरो नमूना नहि, हर नाम एक कथा,
जे अनुमति बिना लेल, से तोड़ल नामक व्यथा।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एकटा तेज–तर्रार युवती, नाम मीरा, डिजिटल निजताक अधिकारक हेतु आवाज उठाबय लागैत अछि।)

देविकाक जमानामे, गामक एकटा तेज–तर्रार युवती, नाम मीरा, नगरमे पढ़ाइ कऽ, डिजिटल निजता आ महिला–सुरक्षाक विषयपर काज करय लागलि। ओ सपनाक “डिजिटल राति–सभा” क परम्पराकेँ आगू बढ़ाबैत, ओहिमे कानूनी सहायता सेहो जोड़लनि — ताकि जे स्त्री ऑनलाइन अन्यायक शिकार होथि, हुनका केवल सहानुभूति नहि, ठोस मदति सेहो भेटय।

आइक संसारमे, मीरा देखलनि, नव–नव प्रकारक अन्याय जन्म लऽ रहल छल — कोनो स्त्रीक फोटो चोरा, कोनो स्त्रीक सूचना बेचि, कोनो स्त्रीक नामकेँ ओकर अनुमति बिनु उपयोग कऽ। जे गोहि कहियो देह खाइत छल, ओ आब

स्त्रीक निजता, स्त्रीक सम्मान, स्त्रीक नाम खाय लागल छल — आ ओकरा रोकब, मीराकेँ बुझायल, ओतबे आवश्यक छल जतबे कहियो बाढ़िसँ घर बचायब।

मीरा, पीपर लग बजलि, “बूढ़बा, आइक संसारमे, कोनो स्त्रीक फोटो, कोनो स्त्रीक सूचना, बिनु अनुमतिक चोरा लेल जा सकैत अछि। हम एकर विरुद्ध लड़य चाहैत छी।”

बूढ़बा बजलाह, “मीरा, अहाँ सुलोचना आ पद्माक कथाक आधुनिक उत्तराधिकारिणी छी। निजताक अधिकार, अन्ततः, नामक अधिकार सेहो थिक — ई अधिकार जे केओ अहाँक नाम, अहाँक छवि, अहाँक अनुमति बिनु उपयोग नहि करय।”

ओ आगू बजलाह, “मीरा, एतेक दिन हम कहैत रहलहुँ जे गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि। मुदा ई नव गोहि नामकेँ सेहो खाय चाहैत अछि — ओ स्त्रीक छविकेँ चोरा, ओकर नामकेँ बजारमे बेचि, ओकर सम्मानकेँ मिटा देब चाहैत अछि। तेँ आब नाम बचायब केवल स्मृतिक काज नहि, सम्मानक काज सेहो थिक। जकर नाम, तकर अनुमति — इएह सबसँ पैघ पहरा थिक।”

एक बेर, गामक एकटा युवती, जकर फोटो कोनो अनजान हाथ चोरा, ओकरा बदनाम करय चाहलक, मीराक डिजिटल राति-सभा लग आबि ठाढ़ भेलि। मीरा, कानूनी मददसँ, ओहि नुकाएल हाथकेँ, पहिल बेर, इजोतमे आनि देलनि — आ ओ युवती, जे लाजसँ चुप रहय बला छलीह, फेर माथ ऊँच कऽ ठाढ़ भेलीह। ओहि दिन गाम बुझलक जे निजताक लड़ाइ, अन्ततः, सम्मानक लड़ाइ थिक।

मीरा, बूढ़बाक शब्दसँ प्रेरित, गामक हर स्त्री-युवतीकेँ डिजिटल सुरक्षाक अधिकार सिखबय लागलि — कोना अपन सूचना बचाओल जाय, कोना कोनो

अन्यायक विरुद्ध आवाज उठाओल जाय, कतय कानूनी मदति भेटय। ओ ई जनैत छलि जे ई लड़ाइ अखनहु शुरू भेल छल, समाप्त नहि — मुदा जे लड़ाइ शुरू भऽ गेल, ओहिमे, कमसँ कम, कोनो स्त्री आब अकेल नहि छलीह।

अध्याय [–२४] (चौबीस)

निशांतक बैंक

जकर खाता साफ, तकर मन थिर— मुदा जे खातामे नाम बेचलक, से हिसाबमे हारल।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: हिसाब आ बोली

लोकधुन: बैंक-गीत

जकर खाता साफ हे, तकर मन थिर,
मुदा जे खातामे नाम बेचल रे, से हिसाबमे हारल।

निशांत बैंकमे बैसल, खाता-खाता गनल,
मुदा जे खातामे नाम बेचल, से हिसाबमे हारल।
साहूकार बरखों ठगल, गरीब हिसाब ने बुझल,
बैंको जँ जटिल रहल, तँ साहूकारक नव रूप बनल।

साहूकार ठगल गरीबकेँ, हिसाब नहि बुझल,
बैंको जटिल रहल, तँ साहूकारक नव रूप।
जे भाषा गरीब ने बुझल, ओहिमे ठगी नुकल,
जे सरल बोलीमे समझाओल, से भरोसा बनल।

बैंकक भाषा कठिन हे, गरीब नहि बुझै रे,
जे बोलीमे समझाबय, सैह असली मददगार।
खाता साफ राखू, नाम ने बेचू,
जे हिसाब बुझल आ बुझाओल, से गामक धन बचाबय।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एकटा युवा बैंकर, नाम निशांत, वित्तीय समावेशनक काजमे जुटैत अछि, गामक अर्थतंत्रकेँ आधुनिक बनबैत।)

मीराक जमानामे, गामक एकटा युवक, नाम निशांत, बैंकिंगक पढ़ाइ कऽ, ग्रामीण वित्तीय समावेशनक काजमे जुटल — गामक हर परिवारकेँ बैंक–खाता, बीमा, आ ऋणक सुविधा उपलब्ध करबैत। ओ ओहि पुरनका दिनक कथा सुनने छल, जखन गामक गरीब, साहूकारक चक्रवृद्धि ब्याजक जालमे फँसि, अपन खेत, अपन घर, अपन इज्जत, सभटा गमा दैत छल।

निशांत चाहैत छल जे ओ पुरनका अन्याय फेर नहि दोहराय। मुदा ओ ई सेहो देखलक जे बैंकक कागच, बैंकक भाषा, गामक अनपढ़ किसानक हेतु ओतबे अनचिन्हार छल जतबे कहियो साहूकारक बही–खाता। जे भाषा ओकरा बचाबय

लेल बनल छल, वैह भाषा, जँ ओ नहि बुझि सकल, तँ एकटा नव जाल बनि सकैत छल।

निशांत, पीपर लग बजलाह, “बूढ़बा, हम चाहैत छी जे गामक कोनो परिवार आब साहूकारक ऋणक जालमे नहि फँसय, ठीक ओहिना जेना पहिने फँसैत छल।”

बूढ़बा बजलाह, “निशांत, ई नीक इच्छा थिक। मुदा याद राखू, बैंकक भाषा जटिल होइत अछि, आ गरीब लोक सदिखन ओकरा नहि बुझि सकैत। बैंकक भाषाकेँ लोकक बोलीमे बदलब, इएह अहाँक असली काज थिक।”

ओ आगू बजलाह, “निशांत, अन्याय हरदम ओतय जन्म लैत अछि जतय एक पक्ष बुझैत अछि आ दोसर नहि। साहूकार गरीबकेँ ठगैत छल किएक तँ गरीब हिसाब नहि बुझैत छल। जँ बैंको ओहिना जटिल रहल, तँ ओ केवल साहूकारक नव रूप बनि जायत। मुदा जँ अहाँ हर योजना, हर कागच, हर हिसाब, किसानक अपन बोलीमे समझा देब — तखन ओ किसान, पहिल बेर, अपन अधिकार अपने हाथमे लऽ लेत। ज्ञान बाँटब, इएह असली समावेशन थिक।”

एक बेर, गामक एकटा बूढ़ किसान, जे कहियो कोनो कागचपर अंगूठा लगबैसँ डरैत छल, निशांतक सरल समझावटक बाद, पहिल बेर, अपन नामक एकटा बैंक–खाता खोललक — आ जखन ओकर बीमाक पहिल पाइ ओकर हाथ धरि पहुँचल, तखन ओहि बूढ़क आँखिमे नोर आबि गेल। ओहि दिन निशांतकेँ बुझायल जे बैंकक असली काज पाइ राखब नहि, गरीबकेँ ओकर अपन अधिकारपर भरोसा देब थिक।

निशांत, ई सुनि, गामक हर वित्तीय योजनाकेँ सरल मैथिली भाषामे समझायब शुरू केलनि — कोन खाता कोन काजक, कोन बीमा कोन सुरक्षाक, कोन ऋण कोन शर्तपर। ओ चौपालपर बैसि, चित्र बना, उदाहरण दऽ, हर योजना एहन ढंगसँ समझबैत जे कोनो अनपढ़ किसान सेहो अपन अधिकार बुझि सकय — आ ओहि दिनसँ, गामक कोनो परिवार, बैंकक जटिल भाषाक कारणें, ठगल नहि गेल।

अध्याय [–२३] (तेईस)

नन्दक जन्म

जे जन्म लै छै, से एकटा नव नाम अनै छै— नन्दक जन्म गामकेँ नव साक्षी देलक।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: नन्दक जन्म

लोकधुन: जन्म-सोहर

जे जन्म लै छै हे, से एकटा नव नाम अनै,

नन्दक जन्म भेल रे, गामकेँ नव साक्षी देल।

आइ गाममे नव नाम आयल, नन्द जन्मल,
बूढ़बाक बाट आगू, नव पहरुआ भेटल।
साक्षी-गाछ थिर ठाढ़, पात एको ने हिलल,
जेना सैकड़ों बरख, एहि नामक बाट तकल।

साक्षी-गाछ थिर ठाढ़, पात एको नहि हिलल,
जेना सैकड़ों बरख, एहि नामक बाट तकैत रहल।
जे बीया कहियो रोपल, से आइ छाहरि देल,
जे गाछ साक्षी बनल, से नव नाम देखल।

नामक भार पैघ हे, दू कान्ह मिलि उठाबय रे,
जे जन्म आइ भेल, से कथाक अन्त धरि संग रहत।
नन्द नाम धेने आयल, गामक आस बनल,
जे आइ जन्मल साक्षी, से अन्तिम साक्षी बनल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। एहि अध्यायमे, अन्ततः, ओ बच्चा जन्म लैत अछि जकर कथा, बहुत आगू, "गोहि सभक बीच जलसमाधि" क आरम्भ बनत — नन्द आरुणि।)

निशांतक जमानामे, आरुणिक अपन घरमे, एकटा बेटाक जन्म भेल, जकर नाम राखल गेल नन्द। जन्मक राति, पीपरक साक्षी–गाछ असाधारण रूपसँ शांत आ स्थिर छल, जेना ओ स्वयं एहि जन्मक प्रतीक्षामे होइक। गामक बूढ़–पुरान, जे ओहि गाछकेँ पीढ़ी–दर–पीढ़ी देखने छलाह, कहलनि जे एहन थिरता ओ बहुत कम बेर देखने छलाह — जेना कोनो पैघ बात होएब बला हो।

घरमे सामान्य आनन्द छल — सोहर गाओल गेल, नाच–गान भेल, गुड़ बाँटल गेल। मुदा जे लोक बूढ़बाकेँ चिन्हैत छल, से ई लक्ष्य केलक जे बूढ़बा एहि जन्मपर

एकटा विशेष, गहींर ध्यान दऽ रहल छथि — जेना ओ ओहि बच्चामे किछु एहन देखि रहल होथि जे आर केओ नहि देखि सकैत छल।

आरुणि, अपन नवजात बेटाकेँ लऽ, पीपर लग गेलाह। “बूढ़बा, हमर बेटा नन्द। हम चाहैत छी जे ओ अहाँक कथा, गामक कथा, जानय आ आगू बढ़ाबय।”

बूढ़बा, अत्यन्त कोमल स्वरमे बजलाह, “आरुणि, हम एहि बच्चाक नाम विशेष स्नेहसँ धरैत छी। हमरा नहि बुझल जे ओकर जीवनमे की लिखल अछि, मुदा हमरा एतबे बुझल अछि — ओ एकटा एहन कथाक साक्षी बनत जकर आरम्भ आ अन्त, दुनू, हमरा सभक स्मृतिसँ गहींराइसँ जुड़ल होयत।”

ओ आगू बजलाह, “आरुणि, हम एतेक बरखमे बहुत जन्म देखलहुँ, बहुत नाम धेलहुँ। मुदा किछु नाम एहन होइत अछि जे केवल एकटा जीवन नहि, एकटा सम्पूर्ण कथाकेँ अपन कान्हपर उठबैत अछि। हमरा लगैत अछि, नन्दक नाम एहने अछि। ओ ओहि दिनक साक्षी बनत जखन हमर सम्पूर्ण कथा — शंख आ रजतसँ लऽ कऽ आइ धरि — एक ठाम आबि, अपन अन्तिम रूप पाओत। तेँ ओकरा नीकसँ गढ़ू, आरुणि; ओ केवल अहाँक बेटा नहि, गामक अगिला साक्षी थिक।”

ओहि राति, बहुत काल धरि, गामक लोक पीपर लग जुटल रहल — किएक तँ जखन बूढ़बा कोनो जन्मपर एतेक थिर, एतेक ध्यानमग्न होइत छलाह, तखन गाम बुझि जाइत छल जे कोनो असाधारण नाम आयल अछि। आरुणि, अपन बेटाकेँ कोरामे लऽ, ओहि साक्षी-गाछक तर बहुत काल बैसल रहलाह — ई प्रण करैत जे ओ नन्दकेँ ओहि आँखिसँ गढ़ताह, जे नाम आ हिसाबकेँ, देह आ कागचसँ ऊपर, देखय सिखल छल।

पीपरक पात, ओहि राति, हल्का सरसराएल, यद्यपि हवा शांत छल — जेना सम्पूर्ण चन्ना गाछी, अपन सैकड़ों बरखक स्मृतिक संग, एहि नव नामकेँ स्वागत कऽ रहल होइक। आ बूढ़बा, बहुत कालक बाद, ओहि थिर गाछक तर बैसल, नन्दक ओहि नन्हा हाथकेँ ताकैत रहलाह — जेना ओहि हाथमे, ओ अपन कथाक अन्तिम पन्ना देखि रहल होथि।

अध्याय [–२२] (बाईस)

बारह सयक निकट

बारह सय बरख एक साँसमे नहि बीतल— जे गाम एतेक झेलल, से अन्त लग ठाढ़।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: बारह सय बरख

लोकधुन: काल-गीत

बारह सय बरख हे, एक साँसमे नहि बीतल,

जे गाम एतेक झेलल रे, से अन्त लग ठाढ़।

शंख-रजतसँ आरम्भ, बारह सय बरख बहल,
हर पीढ़ी किछु झेलल, तैयो गाम ठाढ़ रहल।
बाढ़ि आयल, अकाल आयल, युद्ध-महामारी,
हर बेर टूटल गाम, फेर उठल फेर सम्हारि।

बाढ़ि, अकाल, युद्ध, महामारी — सभटा समाएल,
टूटल, फेर ठाढ़; टूटल, फेर जीबि उठल।
हर बिपत्ति नाम लेल, मुदा गाम ने हारल,
जे नाम मन राखल, से बारह सय बरख बाँचल।

आरम्भ जकर शंख-रजत हे, से आइ धरि जीबै रे,
बूढ़बाक साँस, गामक बारह सय बरख।
एक साँसमे ने बीतल, बूनि-बूनि बहल,
जे इतिहास गाम धेने, से आइ अन्त लग ठाढ़।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। बूढ़बा, अपन आयुक गणना करैत, एकटा चौंकाबएवाला सत्यक निकट पहुँचैत छथि।)

नन्दक जन्मक बाद, एक साँझ, गोप कुमार, अपन अभिलेखीकरणक काजमे, बूढ़बाक सम्पूर्ण कालक्रम जोड़य बैसलाह — वाचस्पति मिश्रक जमानासँ आइ धरि। ओ एक–एक पीढ़ी, एक–एक नाम, एक–एक घटना जोड़ैत गेलाह, आ जेना–जेना संख्या बढ़ैत गेल, ओकर आँखि फराक होइत गेल।

ओहि कालक्रममे सैकड़ों नाम छल — हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, मालती, सावित्री, आ हुनकर बाद अनगिनत पीढ़ी। एहि सभ नामक बीच, एकटा नाम थिर ठाढ़ छल, हर पीढ़ीमे उपस्थित — बूढ़बाक। गोप कुमारकेँ बुझायल जे

ओ केवल एकटा जीवनक हिसाब नहि, एकटा सम्पूर्ण सभ्यताक स्मृति जोड़ि रहल छथि।

“बूढ़बा,” गोप कुमार अचम्भितसँ बजलाह, “हमर हिसाबसँ, अहाँक जलसमाधिकेँ आब लगभग बारह सय बरख होय बला अछि!”

बूढ़बा, ई सुनि, धीरे हँसलाह — ओ हँसी जकरा गामक लोक “बूढ़बाक हँसी” कहय लागल छल, दुर्लभ मुदा अविस्मरणीय। “गोप कुमार, हमरा स्वयं आब आयु गनब बहुत पहिने छोड़ि देने छी। मुदा जँ अहाँक हिसाब सही होइक, तँ ई एकटा गोल, स्मरण–योग्य संख्या थिक — बारह सय बरख। शायद, बहुत आगू, गामक लोक हमरा एहि संख्यासँ स्मरण करत, ठीक ओहिना जेना अहाँ आइ करैत छी।”

ओ कनेक रुकि, बजलाह, “मुदा गोप कुमार, संख्या केवल एकटा चिन्ह थिक, कथा नहि। बारह सय बरख महत्त्वपूर्ण नहि; महत्त्वपूर्ण ई अछि जे एहि बारह सय बरखमे कतेक नाम बचल, कतेक हेराएल, आ कतेक अखनहु धरल जा रहल अछि। जँ गाम एहि संख्यासँ हमरा मोन राखय, तँ हमर एक्के इच्छा — ओ ओहि सभ नामकेँ सेहो मोन राखय जे एहि बारह सय बरखमे, हमर संग, एहि गामक कथा बनौलनि।”

गोप कुमार, ओहि कालक्रमकेँ ताकैत, बहुत काल चुप रहलाह। बारह सय बरख — ओहि संख्यामे कतेको बाढ़ि, कतेको अकाल, कतेको युद्ध, कतेको महामारी समाएल छल; आ ओहि हर बिपत्तिमे, गाम टूटल, फेर ठाढ़ भेल, फेर टूटल, फेर ठाढ़ भेल। जे गाम एतेक बेर मृत्युक सोझाँ ठाढ़ भेल आ फेरो जीबि

उठल, तकर कथा, गोप कुमारकेँ बुझायल, केवल एकटा गामक नहि, मनुष्यक अपन जीजिविषाक कथा छल।

गोप कुमार, ई गणना अपन अभिलेखमे विशेष रूपसँ चिन्हित करैत, हल्का मुस्कुराइत रहलाह। ओ ई नहि जनैत छलाह जे ई संख्या — बारह सय बरख — बहुत आगू, एकटा दोसर भाषामे, एकटा दोसर पीढ़ीक जीभपर, कोना दोहराओल जायत; जे ई गोल संख्या, कोनो दूरक दिन, गामक ओहि सम्पूर्ण कथाक शीर्षक–सन बनि, फेर सँ, केओ लिखत।

अध्याय [−२१] (इक्कीस)

अनन्याक प्रश्न

छोट प्रश्न पैघ गुम्बदमे दरार दै— जे पुछलक, से नाम बचेलक।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: अनन्याक प्रश्न

लोकधुन: प्रश्न-धुन

छोट प्रश्न हे, पैघ गुम्बदमे दरार दै,

जे पुछलक रे, से नाम बचेलक, से गाम बचेलक।

अनन्या छोट प्रश्न पुछल, गुम्बदमे दरार पड़ल,
'ई कतयसँ आयल? के कहलक?' — सत्य खुजल।
जे उत्तर रटल, से भ्रममे फँसल,
जे प्रश्न पुछल, परखल, से जालसँ बचल।

उत्तर रटू नहि, प्रश्न पुछू, परखू, बुझू,
'ई कतयसँ आयल? के कहलक? एकर प्रमाण की?'
गंगेशक ई प्रश्न, हर पीढ़ीमे उठल,
जे पुछब सिखल, से कोनो चमकमे ने भुलल।

जे बच्चा प्रश्न सिखल हे, से जालमे नहि फँसल रे,
गंगेशक प्रश्न कहियो चुप नहि, हर पीढ़ीमे उठै।
प्रश्न दरार दै भ्रमक गुम्बदमे,
जे पुछलक, से नाम बचेलक, से गाम बचेलक।

❖

(एकटा उपन्यास-अंश। एकटा जिज्ञासु युवती, नाम अनन्या, गामक बच्चा सभकेँ प्रश्न पुछय सिखाबय लागैत अछि, गंगेशक परम्पराकेँ आगू बढ़ाबैत।)

नन्दक बचपनहि मे, गामक एकटा युवा शिक्षिका, नाम अनन्या, नारिकेल पात पाठशालाक आधुनिक शाखामे पढ़ाबय आयलि। ओ ओहि तरहक शिक्षिका छलीह जे बच्चाकेँ उत्तर रटाएब नहि, प्रश्न पुछब सिखबैत छलीह। ओकर कक्षामे, कोनो प्रश्नकेँ मूर्खतापूर्ण नहि मानल जाइत छल — बल्कि जे बच्चा सबसँ बेसी प्रश्न पुछैत, से सबसँ बेसी प्रशंसा पबैत।

गामक बूढ़-पुरान, जे कहियो रट्टा-पद्धतिमे पढ़ल छलाह, पहिने एहि नव ढंगसँ चकित भेलाह। मुदा धीरे-धीरे, ओ देखलनि जे अनन्याक बच्चा सभ, कोनो बातकेँ आँखि मूनि नहि मानैत — ओ पुछैत, ओ परखैत, ओ तर्क करैत। आ ओहि

बच्चा सभमे, एकटा बच्चा — नन्द — सबसँ बेसी प्रश्न पुछैत छल, जेना ओकर भीतर कोनो पुरान जिज्ञासा फेर सँ जीबि उठल हो।

अनन्या, पीपर लग बजलि, "बूढ़बा, हम बच्चा सभकेँ गंगेशक प्रमाण–मीमांसा सिखाबय चाहैत छी — प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान — मुदा सरल भाषामे, ताकि ओ सभ हर बातकेँ प्रश्न पुछि परखय सिखय।"

बूढ़बा, गहींर सन्तोषसँ बजलाह, "अनन्या, ई हमर सबसँ पैघ आशा थिक — जे गंगेशक प्रश्न कहियो चुप नहि होइक, अपितु हर पीढ़ीक बच्चाक मुँहसँ, नव रूपमे, फेर सँ उठैत रहय।"

ओ आगू बजलाह, "अनन्या, हम एतेक बरखमे एकटा बात सिखलहुँ — जे गाम प्रश्न पुछब बन्द कऽ दैत अछि, ओ गाम सबसँ पहिने ठगाइत अछि। हर नव गोहि, चाहे ओ शंख–रजतक भ्रम होइक वा स्क्रीनक ठगी, ओहि लोकपर सफल होइत अछि जे प्रश्न नहि पुछैत। तेँ अहाँ जे बच्चाकेँ प्रश्न पुछब सिखा रहल छी, से केवल पढ़ाइ नहि — ओ गामक अगिला पहरा गढ़ि रहल छी।"

एक दिन, अनन्या कक्षामे शंख–रजतक पुरान कथा सुनौलनि — कोना एकटा मनुष्य शंखकेँ चानी बुझि लेने छल। सभ बच्चा चुप रहल, मुदा नन्द हाथ उठा पुछलक — "मैडम, जँ ओ मनुष्य पुछने रहितथि, ई सचमुच चानी थिक की नहि, तँ ओ ठगल नहि जइतथि? " अनन्या मुस्कुरा देलीह — किएक तँ ओहि छोट प्रश्नमे, ओ ओहि सम्पूर्ण ज्ञानकेँ देखि लेलनि जे गंगेश शताब्दियों पहिने सिखौने रहथिन।

अनन्या, नन्द आ ओकर सहपाठी सभकेँ, हर दिन, एकटा नव प्रश्न पुछय सिखबय लागलि — किएक ई एहन? ई कतयसँ आयल? एकर प्रमाण की? आ

नन्द, विशेषतः, एहि आदतिकेँ अपन सम्पूर्ण जीवनक हेतु धारण कऽ लेलक। ओ प्रश्न पुछबाक ओ आदति, जे अनन्या ओकरा बचपनमे देलनि, आगू, ओकर सबसँ पैघ हथियार बनत — ओहि दिन, जखन ओकरा सोझाँ एकटा एहन गोहि आबत, जकरा केवल प्रश्ने हरा सकैत छल।

अध्याय [–२०] (बीस)

छपाकक पहिल हिसाब

पहिल छपाक—पहिल नाम पानिमे— जे हिसाब राखलक, से गोहिकेँ गवाह बनेलक।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: नामक पुल

लोकधुन: गोहि-धुन

पहिल छपाक हे, पहिल नाम पानिमे,

जे हिसाब राखलक रे, से गोहिकेँ गवाह बनेल।

पहिल छपाक भेल पानिमे, पहिल नाम डुबल,
मुदा जे कियो लिखलक, ओ नाम फेर उठल।
जे नाम कागचसँ कटल, से पानिमे हेराय,
मुदा जे कण्ठमे बसल, से फेर-फेर जगाय।

जे नाम कागचसँ कटल, से पानिमे हेराय,
मुदा जे कियो लिखलक, ओ नाम फेर उठै।
गोहि देह लै, नाम ने लै; ई गामक सत्य,
जे हिसाब राखल, से गोहिकेँ गवाह बनाय।

गोहि देह खाइत अछि हे, नाम नहि खाइत रे,
पत्थरक पुल छोड़ू, नामक पुल बान्हू।
जे पुल पत्थरक बनल, से बाढ़िमे बहल,
जे पुल नामक बान्हल, से युग-युग ठाढ़ रहल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। युवा नन्द, अपन बाबाक इंजीनियरिंगक विरासत आगू बढ़ाबैत, पुल–निर्माणक स्थलपर काज करय जाइत अछि — आ ओतय पहिल बेर, किछु अजीब देखैत अछि।)

अनन्याक शिक्षाक बाद, नन्द बड़का भऽ, इंजीनियरिंगक पढ़ाइ कऽ, अपन बाबा आरुणिक परम्पराकेँ आगू बढ़ाबैत, एकटा पुल–निर्माण स्थलपर काज करय गेल। ओ पुल बनायब सिखने छल, मुदा जे प्रश्न पुछब अनन्या ओकरा सिखौने रहथिन, से ओ कहियो नहि बिसरल — आ ओहि पुलक स्थलपर, ओकर ओ प्रश्न–पुछनिहार आँखि, किछु एहन देखय लागल जे आर केओ नहि देखैत छल।

ओतय, ओ मजदूरक हाल देखल — हुनकर टूटल झोपड़ी, हुनकर कम मजदूरी, हुनकर सुरक्षाक कमी। आ कहियो–कहियो, ओ एकटा एहन कथा सुनल जे ओकरा भीतर धरि हिला देलक — कोनो मजदूर, एक राति, अचानक गायब

भऽ जाइत छल, आ केओ ओकर हिसाब नहि रखैत छल। ठेकेदारक कागचमे ओकर नाम कटि जाइत, आ जेना ओ मनुष्य कहियो छलहि नहि।

नन्द, छुट्टीमे गाम आबि, पीपर लग गेल। “बूढ़बा, पुल परक काज खतरनाक अछि। हम एकटा मजदूरक कथा सुनलहुँ, जे एक राति गायब भऽ गेल, आ केओ ओकर हिसाब नहि रखलक।”

बूढ़बा, अत्यन्त गंभीर स्वरमे बजलाह, “नन्द, अहाँ जे सुनलहुँ, ओ हमरा सुखदेव महतोक कथा मोन पाड़बैत अछि — ओहि मजदूर आ किसानक कथा, जिनकर नाम कोनो आधिकारिक हिसाबमे नहि आबैत। नन्द, अहाँ अभियन्ता छी, मुदा अहाँक भीतर एकटा साक्षी सेहो अछि, हमर रक्तसँ। ओहि मजदूरक नाम खोजू, आ जँ भेटय, तँ धरू।”

ओ आगू बजलाह, “नन्द, पुल दू कातकेँ जोड़ैत अछि, ई अहाँक काज। मुदा एकटा दोसर पुल सेहो अछि, जे अहाँकेँ बनाबय पड़त — ओहि नामक आ हिसाबक बीच पुल, जकरा व्यवस्था तोड़ि दैत अछि। जे मजदूर गायब भऽ जाइत अछि, ओकर देह भरिसक नहि भेटय; मुदा ओकर नाम, जँ अहाँ धेने रहब, तँ ओ मनुष्य पूर्ण रूपसँ लुप्त नहि हएत। इएह अहाँक असली विरासत थिक, नन्द — पत्थरक पुल नहि, नामक पुल।”

नन्द, ओहि राति, अपन डायरीमे पहिल बेर लिखलक — “गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि” — बूढ़बाक एकटा पुरान वाक्य, जकरा ओकरा अपन दादी सुनौने छलीह, आ जकरा ओ आब अपन जीवनक मार्गदर्शक बनाबय जा रहल छल। ओहि पहिल पन्नाक संग, ओ डायरी, जकरा ओ आगू “छपाकक हिसाब”

कहत, शुरू भेल — आ ओहि दिनसँ, नन्द केवल अभियन्ता नहि रहल; ओ गामक अगिला साक्षी बनि गेल।

अध्याय [–१९] (उन्नीस)

सत्यव्रतक निर्णय

जे निर्णय देरसँ आयल, से सभसँ थिर— सत्यव्रत चुप रहल, मुदा अन्तमे नाम दिस ठाढ़ भेल।

— गढ़ नारिकेल

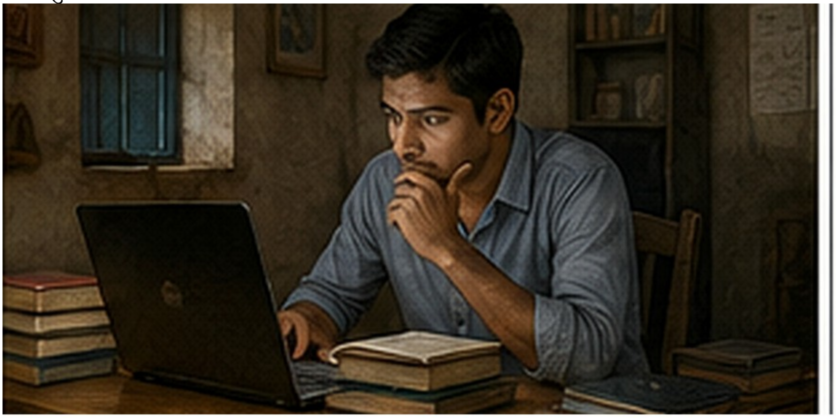

अध्यायारम्भ लोकगीत: थिर निर्णय

लोकधुन: निर्णय-गीत

जे निर्णय देरसँ आयल हे, से सभसँ थिर,

चुप रहल बहुत काल रे, मुदा अन्तमे नाम दिस ठाढ़।

सत्यव्रत बहुत काल चुप, देखल-सहल-जोड़ल,
जे प्रमाण बरख जोड़ल, से आब बाजय पड़ल।
देरसँ आयल निर्णय, मुदा जड़िसँ थिर,
जे सोचि-बुझि लेल गेल, से ने डगमगेल फिर।

जे प्रमाण बरख जोड़ल, से आब बाजय पड़त,
मुदा अकेल मत लड़ू, कोनो साक्षी संग खोजू।
एक हाथ कमजोर, दस हाथ मजगूत,
जे मिलि कऽ ठाढ़ भेल, तकर निर्णय ने टूट।

मौन टूटत हे, मुदा सत्य प्रमाणक संग ठाढ़ रे,
नामक ई लड़ाइ एकटा मनुष्यक नहि, पूरा गामक।
जे देरसँ आयल निर्णय, से सभसँ थिर बनल,
जे गाम संग ठाढ़ भेल, तकर बाट ने डगमगल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। सत्यव्रत मेहता, अपन नोटबुकमे बरख–दर–बरख जमा भेल प्रमाणक बीच, अंततः एकटा निर्णय लेबाक निकट पहुँचैत छथि।)

नन्दक इंजीनियरिंगक पढ़ाइक बीच, सत्यव्रत मेहता, आब बैंकक एकटा वरिष्ठ पदपर, अपन पुरान नोटबुक फेर सँ खोललनि — वर्षों पहिने लिखल संदिग्ध लेनदेनक विवरण। जे तिथि आ खाता ओ बरख–बरख, चुपचाप, लिखने रहथिन, से आब, एक ठाम राखलापर, एकटा स्पष्ट, भयावह पैटर्न देखबैत छल — जेना बिखरल बिन्दु सभ, अन्ततः, एक तस्वीर बनि गेल होथि।

ओहि पैटर्नमे, पाइ एकटा खातासँ दोसर, दोसरसँ तेसर, आ अन्ततः, कोनो दूर, समुद्रपार खाता धरि पहुँचैत छल। किछु नाम बेर–बेर आबैत छल — किछु परिचित, किछु अपरिचित। सत्यव्रतकेँ बुझायल जे ई कोनो साधारण गबन नहि; ई

एकटा पैघ, संगठित जाल थिक, जकर तार गामसँ बहुत दूर धरि पसरल छल। आ ओ, आब, ओहि जालकेँ बुझय बला थोड़ लोकमे सँ एक छलाह।

सत्यव्रत, गाम आबि, पीपर लग बजलाह, “बूढ़बा, हम जे देखने रही, ओ अखनहु चलि रहल अछि, आओर पैघ रूपमे। हमरा आब चुप रहब सम्भव नहि लगैत।”

बूढ़बा, धीरे बजलाह, “सत्यव्रत, अहाँ बहुत बरख धरि प्रमाण जमा केलहुँ। आब समय अछि जे प्रमाण बाजय। मुदा सावधान रहू — जे शक्ति अहाँ चुनौती द’ रहल छी, ओ शक्तिशाली आ निर्दयी भ’ सकैत अछि।”

ओ आगू बजलाह, “सत्यव्रत, हम अहाँकेँ बहुत बरख पहिने कहने रही जे बाजबाक क्षणकेँ चिन्हब — इएह विवेक थिक। ओ क्षण, हमरा लगैत अछि, आब निकट अछि। मुदा एहन पैघ शक्तिकेँ केवल आरोपसँ नहि, प्रमाणसँ हराओल जाइत अछि। अकेल मत लड़ू। जे अहाँक संग ठाढ़ भऽ सकैत छथि — कोनो ईमानदार अधिकारी, कोनो साक्षी — हुनका खोजू। किएक तँ नामक ई लड़ाइ, सत्यव्रत, एकटा मनुष्यक नहि, पूरा गामक लड़ाइ थिक।”

ओहि राति, गाम घुरैत काल, सत्यव्रत बहुत सोचलनि। ओ जनैत छलाह जे जकर विरुद्ध ओ ठाढ़ होय जा रहल छथि, से केवल किछु भ्रष्ट खाता नहि — से एकटा एहन जाल छल जकर तार, भरिसक, ओहि शीशाक मीनार धरि पहुँचैत छल जकर चर्चा अभिनव कहियो केने रहथिन। मुदा बूढ़बाक ओ शब्द — “जे मौन अन्याय बनि जाय” — ओकर कानमे गूँजैत रहल, आ ओ बुझि गेलाह जे आब पाछू घुरब सम्भव नहि।

सत्यव्रत, ई सुनि, अपन नोटबुककेँ सुरक्षित स्थानपर राखि, धीरे–धीरे, सही अवसरक प्रतीक्षा करय लागलाह। ओ जनैत छलाह जे सत्य, जखन ओ बाहर आओत, तखन ठोस प्रमाणक संग आओत — आ ओ ई सेहो जनैत छलाह जे ओ अकेल नहि छथि; कतहु, ओहि गामक स्मृतिमे, बूढ़बाक ओ सभ शब्द ठाढ़ छल, जे कहैत छल — जे मौन अन्याय बनि जाय, ओकरा तोड़ब पड़ैत अछि।

अध्याय [−१८] (अठारह)

अनन्या आ नन्दक भेंट

दू बाट एक ठाम मिलल, नव यात्रा शुरू— जकर उद्देश्य एक, तकर पएर संग चलै।

— गढ़ नारिकेल

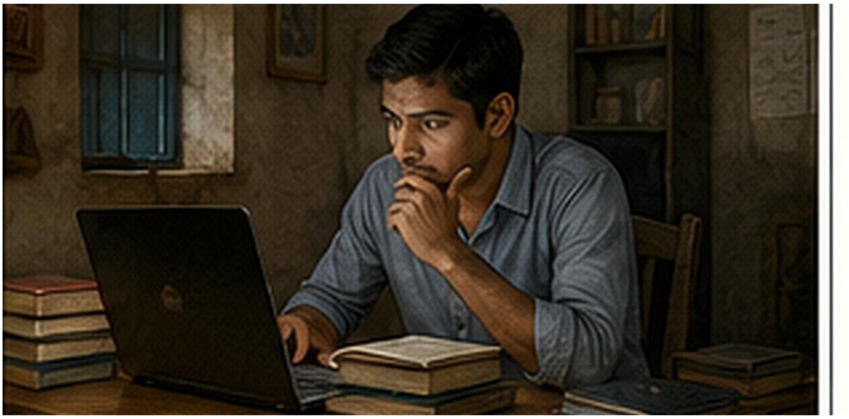

अध्यायारम्भ लोकगीत: दू बाट, एक यात्रा

लोकधुन: संगम-गीत

दू बाट एक ठाम मिलल हे, नव यात्रा शुरू,
जकर उद्देश्य एक रे, तकर पएर संग चलै।

अनन्या प्रश्न लऽ आयल, नन्द निर्माण लेने,
दू बाट एक ठाम मिलल, नव यात्रा ठाने।
स्मृति आ तकनीक, दुनू एक भेल,
जे बिखरल छल शक्ति, से एक धागामे गेल।

अनन्याक प्रश्न, नन्दक निर्माण, दुनू जुड़ल,
स्मृति आ तकनीक, एक धागामे बान्हल।
जे प्रश्न पुछल जनल, जे निर्माण गढ़ल,
दुनू मिलि साक्षीक नव पहरुआ बनल।

साक्षीक भार पैघ हे, दू कान्ह हल्लुक करै रे,
जे संग चलल, से गामक स्मृतिकेँ नव पहरा देल।
एक अकेल थाकल, दू मिलि मजगूत,
जे उद्देश्य एक राखल, तकर बाट ने टूट।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। शिक्षिका अनन्या आ इंजीनियर नन्द, गामक एकटा साझा परियोजनामे, पहिल बेर मिलैत छथि।)

नन्द, अपन इंजीनियरिंगक पढ़ाइ पूर्ण कऽ, गाम घुरल, आ नारिकेल पात पाठशालाक आधुनिकीकरणक एकटा परियोजनामे, अनन्याक संग काज करय लागल — गामक विरासतकेँ डिजिटल रूपमे सुरक्षित राखबाक योजना। जे शिक्षिका ओकरा बचपनमे प्रश्न पुछब सिखौने रहथिन, आ जे इंजीनियर आब नाम आ हिसाबकेँ पुल बुझैत छल — दुनू, पहिल बेर, एकटा साझा काजमे संग आबि गेलाह।

अनन्या गामक हर पुरान कथा, हर लोकगीत, हर पंजी जनैत छलीह; नन्द ओकरा डिजिटल रूपमे, स्थायी रूपमे, राखब जनैत छल। दुनूक काज एक–

दोसराकेँ पूर्ण करैत छल — जेना अनन्याक प्रश्न आ नन्दक निर्माण, एक ठाम आबि, एकटा नव पहरा गढ़ि रहल हो। ओ गोप कुमारक ओहि पुरान संकलनकेँ, नव तकनीकसँ, आगू बढ़ाबय लागलाह।

काज करैत–करैत, ओ दुनू ई सेहो लक्ष्य केलनि जे हुनकर सोच, हुनकर मूल्य, एक–दोसरासँ कतेक मिलैत छल — दुनू नाम बचाबय चाहैत छलाह, दुनू सत्य धरय चाहैत छलाह, दुनू गामक स्मृतिकेँ अमर बनाबय चाहैत छलाह। जे दू बाट अलग–अलग शुरू भेल छल, से आब एक दिशामे बहय लागल।

दुनू, पीपर लग बैसल, बूढ़बासँ बजलाह। नन्द पुछलक, “बूढ़बा, हम अनन्याक संग गामक हर पुरान कथा, हर अभिलेख, एक ठाम राखय चाहैत छी।”

बूढ़बा, प्रसन्न स्वरमे बजलाह, “नन्द, अनन्या, अहाँ दुनू, गोप कुमारक काजकेँ आगू बढ़ाबय जा रहल छी। हमरा लगैत अछि जे ओ अन्तिम अध्याय, जकर हम बरख–दर–बरख प्रतीक्षा करैत रही, आब निकट अछि।”

ओ आगू बजलाह, “किछु काज अकेल नहि होइत, नन्द। साक्षी बनब एकटा भार थिक, आ ओ भार जँ दू कान्ह मिलिकऽ उठाबय, तँ हल्लुक भऽ जाइत अछि। अहाँ दुनू, प्रश्न आ निर्माण, स्मृति आ तकनीक — एक–दोसराकेँ पूर्ण करैत छी। जे अन्तिम अध्याय आबय बला अछि, ओ एतेक कठिन हएत जे ओकरा एकटा मनुष्य नहि, दू ठाढ़ मनुष्य, संगे, झेलि सकत।”

नन्द आ अनन्या, ओहि दिनसँ, एक संग काज करय लागल — हर पुरान पन्ना, हर हेरायल नाम, हर लोकगीत, फेर सँ जीवित करैत। दुनूकेँ नहि बुझल छल जे ओ सभ, बूढ़बाक अन्तिम अध्यायक साक्षी बनय जा रहल छथि — आ जे साझा यात्रा

ओ ओहि दिन शुरू केलनि, से आगू, केवल गामक कथाकेँ नहि, अपन जीवनकेँ सेहो, एक–दोसरासँ बान्हि देत।

अध्याय [–१७] (सत्रह)

शीशाक मीनारक जाल

शीशाक मीनार दूरसँ चमकै, भीतर जाल— जे चमकपर मुग्ध, से जालमे बान्हल।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: तीन गोहि

लोकधुन: मीनार-गीत

शीशाक मीनार दूरसँ चमकै हे,

भीतर जाल नुकाएल रे, चमकपर मत भुलू।

शीशाक मीनार आकाश छूल, दूरसँ चमकल,
मुदा भीतर जाल बुनल, सत्य नुकाओल।
नौकरीक वादा देल, निवेशक सपना बेचल,
तस्करीक अन्हार पाछाँ, तीनू एक जाल भेल।

नौकरी, निवेश, तस्करी — सभटा एक जाल,
देह खाय, पाइ खाय, नाम खाय — तीनू गोहि।
पुरान गोहि पानिमे, नव गोहि मीनारमे,
मुदा दुनूक भूख एक — नाम खाय अन्हारमे।

जे चमकपर मुग्ध हे, से जालमे बान्हल रे,
पुछू हर वादा, परखू हर चमक, तखन बढ़ू।
मीनार ऊँच भलहिं, जड़ि ओकर खोखल,
जे पुछब-परखब जनल, से जालसँ निकलल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। लाउ किन–हंगक संचालित ठगीक जाल, अपन सम्पूर्ण विस्तारमे, गढ़ नारिकेलक निकट धरि पहुँचैत अछि।)

नन्दक जमानामे, समाचारमे बेर–बेर हांगकांगसँ संचालित एकटा विशाल डिजिटल ठगीक जालक कथा आबय लागल, जकर संचालक लाउ किन–हंगक नाम सँ जुड़ल छल। ई जाल कोनो साधारण ठगी नहि छल — ई नौकरीक झांसा, निवेशक धोखा, आ मानव–तस्करी, सभटा एक संग जोड़ने छल, आ ओकर तार दर्जनों देशमे पसरल छल।

जाल एहन ढंगसँ बनल छल जे केओ ओकर पूरा रूप नहि देखि सकैत छल। एक कात कोनो युवककेँ ‘अच्छा नौकरी’ क वादा; दोसर कात कोनो निवेशककेँ ‘दुगुना पैसा’ क लोभ; आ तेसर कात कोनो गरीबकेँ विदेश लऽ जा, बन्दी बना

देब। हर तार अलग लगैत, मुदा सभटा, अन्ततः, ओहि एके शीशाक मीनार धरि घुरैत छल।

अनन्या आ नन्द, अपन डिजिटल अभिलेखक काज करैत–करैत, एहि जालक चर्चा बेर–बेर सुनैत छलाह — आ जेना–जेना ओ ओकर विस्तार बुझैत गेलाह, हुनकर मनमे एकटा गहींर आशंका बैसैत गेल। जे छाह कहियो अभिनव अखबारमे देखने रहथिन, से आब, धीरे–धीरे, हुनकर अपन गामक क्षितिजपर, पैघ होइत जा रहल छल।

अनन्या, चिंतित, पीपर लग बजलि, "बूढ़बा, ई जाल एतेक विस्तृत अछि जे हमरा डर लागैत अछि जे ई गढ़ नारिकेल धरि सेहो पहुँचि सकैत अछि।"

बूढ़बा, गंभीर स्वरमे बजलाह, "अनन्या, हमरा डर अछि जे ई पहिनहि सँ पहुँचि चुकल अछि — उज्ज्वल झाक स्वप्नक रूपमे, बटुकनाथक पतनक रूपमे। ई जाल एक दिन गामक एकटा नामकेँ सीधा स्पर्श करत। हमरा नहि बुझल कोन नाम, मुदा हमरा अनुभव होइत अछि।"

ओ आगू बजलाह, "अनन्या, हम एतेक बरखमे कतेको गोहि देखलहुँ — पानिक गोहि, समयक गोहि, स्क्रीनक गोहि। मुदा ई जाल सभसँ भयंकर अछि, किएक तँ ई एक संग बहुत गोहिकेँ जोड़ैत अछि। ई देह सेहो खाइत अछि, पाइ सेहो, आ नाम सेहो। एकरा हरएबाक हथियार हमरा लग एक्के अछि — जागरूकता, आ नाम। जँ गाम सचेत रहत, आ अपन हर नाम धेने रहत, तँ ई जाल गामक भीतर जड़ि नहि पकड़ि सकत।"

अनन्या, ई सुनि, गामक हर युवाकेँ फेर सँ सचेत करय लागलि — कोन वादा दूरसँ आबि रहल अछि, कोन चमक पाछाँ जाल नुकौने अछि। ओ ई जनैत छलीह

जे बूढ़बाक अनुभव कहियो व्यर्थ नहि गेल छल — आ जँ बूढ़बाकेँ आइ ई अनुभव होइत अछि जे ओ जाल कोनो गामक नामकेँ स्पर्श करत, तँ ओ दिन, भरिसक, बहुत दूर नहि छल।

अध्याय [–१६] (सोलह)

बटुकनाथक अंतिम मोड़

जे बाट गलत, तकर अन्तो मोड़ मांगै— बटुकनाथ अन्तमे अपन नाम दिस घुरल।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: गलत बाटक मोड़

लोकधुन: पश्चाताप-धुन

जे बाट गलत हे, तकर अन्तो मोड़ मांगै,

बटुकनाथ अन्तमे रे, अपन नाम दिस घुरल।

बटुकनाथ तेज बालक, गरीबक हक लेल लड़ल,
मुदा बाटमे भटकल, प्रतिष्ठाक जालमे फँसल।
आइ ओ प्रतिष्ठित भेल, मुदा अन्हारमे ठाढ़,
जे न्यायक सपना देखल, से आब भ्रमक आधार।

जे तेज बालक गरीबक हक लेल लड़य चाहल,
से आइ प्रतिष्ठित, मुदा अन्हारमे ठाढ़।
मुदा जे बाट गलत, तकरो अन्तमे मोड़,
जे अपन नाम दिस घुरल, तकर ने टूटल डोर।

आइ ओ अन्हारमे हे, मुदा नाम अखनहु ठाढ़ रे,
जे रस्ता बदलि सकै, तकर आस नहि मरै।
गलत बाट अन्तमे मोड़ मांगल जरूर,
जे घुरि कऽ नाम दिस बढ़ल, से ने रहल दूर।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। बटुकनाथ, अपन कानूनी कौशलकेँ, अन्ततः अंधकारमय शक्तिक सेवामे पूर्ण रूपसँ समर्पित कऽ दैत छथि।)

अनन्याक चेतावनीक कतेक मास बाद, समाचार आयल जे बटुकनाथ हरिहरन, आब एकटा प्रतिष्ठित मुदा संदिग्ध वकील, कतेको बड़का ठगी–मामलाक बचाव–पक्षमे काज करय लागल छथि। हर बेर, ओ तारीखपर तारीख लियबैत, गवाहकेँ थकबैत, प्रमाणकेँ उलझबैत, आ न्यायकेँ अनन्त काल धरि टालैत — जाबे धरि पीड़ित थाकि, हारि, चुप नहि भऽ जाइत।

ओकर नाम आब शहरक ओहि वकील सभमे गनल जाइत छल, जिनका बड़का–बड़का दोषी अपन बचाव लेल खोजैत छलाह। ओ जीतैत छल, धनी होइत छल, प्रतिष्ठित होइत छल — मुदा हर जीतक पाछाँ कोनो गरीबक हार, कोनो

सत्यक पराजय, नुकाएल रहैत छल। जे कौशल ओ कहियो न्यायक हेतु सिखने छल, से आब अन्यायक सबसँ पैघ हथियार बनि गेल छल।

गामक जे बूढ़–पुरान बटुकनाथकेँ बच्चापनसँ चिन्हैत छलाह, हुनका ई समाचार सुनि गहींर दुःख होइत छल। ओ ओहि तेज, ईमानदार बालककेँ मोन पाड़ैत, जे कहियो गरीबक हक लेल लड़बाक सपना देखैत छल — आ फेर ओहि प्रतिष्ठित, मुदा अन्हार वकीलकेँ देखैत, जे ओहि बालकसँ, आब, बहुत दूर निकसि गेल छल।

नन्द, ई सुनि, पीपर लग बजलाह, "बूढ़बा, बटुकनाथ आब पूर्ण रूपसँ अन्हार दिस मुड़ि गेला। हमरा दुःख होइत अछि।"

बूढ़बा, दुःखी स्वरमे बजलाह, "नन्द, हम बटुकनाथक नाम धरने छी, आशासँ जे ओ फेर सँ रस्ता बदलताह। मुदा हमरा आब बुझायल अछि — कोनो–कोनो नाम, धरलाक बादो, दुःखक स्रोत बनल रहैत अछि। हमर काज ओकर निर्णय बदलब नहि, केवल ओकर कथा, सत्य रूपमे, सुरक्षित राखब थिक।"

ओ आगू बजलाह, "नन्द, साक्षी बनब एकटा कठिन धर्म थिक। ओ केवल नीक नामकेँ नहि, दोषी नामकेँ सेहो, सत्य रूपमे, धरैत अछि। हम बटुकनाथकेँ ने श्राप दैत छी, ने ओकर दोषकेँ नुकाबैत छी — हम केवल ओकर कथाकेँ, जेना ओ अछि, वैसन राखैत छी। किएक तँ जँ हम ओकर पतनकेँ मेटा देब, तँ ओहि सत्यसँ जे शिक्षा भेटैत अछि, से सेहो मेटा जायत। सत्य, चाहे कतेक दुखद होइक, बचायब पड़ैत अछि।"

नन्द, बूढ़बाक शब्द मोन राखि, बटुकनाथक कथाकेँ, बिनु घृणाक, बिनु क्षमाक, केवल सत्यक रूपमे, अपन अभिलेखमे दर्ज केलक — ओहि तेज

बालकसँ लऽ कऽ ओहि अन्हार वकील धरि, ओकर सम्पूर्ण यात्रा। ओ ई जनैत लिखलक जे कोनो दिन, भरिसक, ई कथा केओ पढ़त, आ ओहिसँ सिखत जे कोनो मनुष्य दोषी बनि कऽ नहि जन्मैत — व्यवस्था, प्रलोभन, आ चुनाव, तीनू, मिलिकऽ, ओकरा गढ़ैत अछि।

अध्याय [–१५] (पन्द्रह)

चन्द्रपालक खाता

जे खाता बुझल नहि, तकरो हस्ताक्षर भारी— अज्ञानता सेहो जालक एकटा गाँठ।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: बुझल हस्ताक्षर

लोकधुन: सतर्क-सोहर

जे खाता बुझल नहि हे, तकरो हस्ताक्षर भारी,

अज्ञानता सेहो रे, जालक एकटा गाँठ बनै।

चन्द्रपाल खाता ने बुझल, तैयो हस्ताक्षर केल,
‘कमीशनक काज’ कहि, ऋणक बोझ हटाबय चाहल।
मुदा हर लेनदेनमे, कोनो गरीबक पाइ,
बिनु बुझल जे सही केल, से जालमे फँसि जाइ।

‘कमीशनक काज’ कहि, ऋणक बोझ हटाबय चाहल,
मुदा हर लेनदेनमे, कोनो गरीबक ठगल पाइ बहल।
अज्ञानता ढाल नहि, से जालक गाँठ बनल,
जे बिनु बुझल सही केल, से अनजानमे दोषी भेल।

जे बिनु बुझल कमीशन लेलक हे, से जालमे फँसल रे,
पुछू, बुझू, तखन हस्ताक्षर करू, नहि तँ पछताउ।
खाता बुझू पहिने, तखन कलम उठाउ,
जे बुझि कऽ सही केल, से जालसँ बचि जाउ।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। चन्द्रपाल बत्रा, सट्टाक ऋणमे डूबल, ठगीक जालक हेतु "म्यूल एकाउण्ट" बनि जाइत अछि।)

नन्दक जमानामे, समाचार आयल जे चन्द्रपाल बत्रा, ओ दूरक सम्बन्धी जकर नाम बूढ़बा बहुत बरख पहिने धेने रहथिन, सट्टाक भारी ऋणमे फँसि गेल छल। ऋणक बोझसँ हारल, हताश, ओ ठगीक जालकेँ अपन बैंक–खाता उपयोग करय द’ रहल छल — पैसा एक हाथसँ दोसर हाथ, ओकर खाताक माध्यमसँ, गुजरैत छल।

चन्द्रपालकेँ पूर्ण रूपसँ नहि बुझल छल जे ओ की कऽ रहल छल। ओकरा कहल गेल छल जे ई केवल ‘कमीशनक काज’ थिक — किछु पाइ ओकर खातामे आओत, ओ ओकरा आगू पठा देत, आ बदलामे किछु हिस्सा राखत। ऋणसँ

मुक्तिक लोभमे, ओ ओहि जालक एकटा गाँठ बनि गेल, बिनु बुझने जे हर ओहि लेनदेनमे, कोनो–न–कोनो गरीबक ठगल पाइ बहैत छल।

सत्यव्रत, अपन नोटबुकमे, ओहि खाताक हर लेनदेन देखल — आ ओकरा बुझायल जे ई खाता ओहि विशाल जालक एकटा छोट, मुदा महत्त्वपूर्ण, तार छल। जे नाम उज्ज्वलक स्वप्नमे छल, जे नाम बटुकनाथक पतनमे छल, से आब चन्द्रपालक खातामे सेहो, एक–दोसरासँ, जुड़ि रहल छल।

सत्यव्रत, ई सुनि, पीपर लग बजलाह, "बूढ़बा, चन्द्रपाल बत्रा आब ठगीक जालक एकटा उपकरण बनि गेल अछि।"

बूढ़बा, दुःखी, बजलाह, "सत्यव्रत, हम ओकर नाम बहुत बरख पहिने धरने छलहुँ, ई नहि जनैत जे ओकर कथा कोन दिशा लेत। आइ हमरा बुझायल — उज्ज्वल, बटुकनाथ, चन्द्रपाल, आ ओ शीशाक मीनारक साया, सभटा एक जालमे, धीरे–धीरे, बुनल जा रहल अछि।"

ओ आगू बजलाह, "सत्यव्रत, ई जाल एहन ढंगसँ बुनल जा रहल अछि जे हर मनुष्य एक–दोसरासँ अनजान अछि। उज्ज्वल नहि जनैत जे बटुकनाथ के, बटुकनाथ नहि जनैत जे चन्द्रपाल के, आ चन्द्रपाल नहि जनैत जे ओ शीशाक मीनार केकर। मुदा हम, दूरसँ, ओहि सभ नामकेँ एक धागामे बन्हैत देखि रहल छी। जखन ई सभ धागा एक ठाम आबत, तखन ओ अन्तिम अध्याय पूर्ण हएत — आ ओ, हमरा डर अछि, गामक सबसँ कठिन अध्याय हएत।"

सत्यव्रत, ई सुनि, अपन प्रमाणकेँ आओर सावधानीसँ जमा करय लागलाह। ओ जनैत छलाह जे समय निकट अबैत जा रहल छल जखन ई सम्पूर्ण जाल उजागर होयत — आ ओ ई सेहो बुझि गेलाह जे ओहि दिन, ओकर ओ पुरान

नोटबुक, बरख–दर–बरख जमा भेल ओ हर प्रमाण, गामक सबसँ पैघ हथियार बनत। ओ केवल प्रतीक्षा करैत रहलाह, ओहि क्षणक, जखन मौन, अन्ततः, गवाही बनि सकय।

अध्याय [–१४] (चौदह)

पुलक निर्माण

पुल दू कातकेँ जोड़ै, मुदा पानिकेँ नहि बिसरै— जे पुल बान्हल, से बाढ़िक बात मन राखल।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: पुल आ पहरा

लोकधुन: निर्माण-सोहर

पुल दू कातकेँ जोड़ै हे, मुदा पानिकेँ नहि बिसरै,
जे पुल बान्हल रे, से बाढ़िक बात मन राखल।

पुल बनल दू कातकेँ जोड़य, संसार लग आयल,
मुदा जे बाट संसार आनत, ओहीसँ गोहियो आबय।
पुल नीक, जँ पहरा संग; बाट नीक, जँ आँखि खुजल,
जे बनाबय, तकरो हिसाब, तकरो पहरा चाही।

जे बाट संसार आनत, ओही बाटसँ नव गोहि सेहो आबय,
तेँ पुल बनाबू, मुदा पहरा सेहो राखू।
पत्थर मजगूत करू, बाढ़िक बात मन राखू,
जे पुल बनल, तकर देखभालो संग चलाउ।

पत्थर मजगूत करू हे, मुदा नाम सेहो राखू रे,
जे हाथ पुल बनाबय, तकरो हिसाब चाही।
पुल जोड़य दू कात, मुदा पानि ने बिसरय,
जे पहरा संग बनाओल, से पुल गामकेँ बचाबय।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। नन्द, अपन इंजीनियरिंगक काजमे, एकटा नव पुलक निर्माणस्थलपर नियुक्त होइत छथि — जतय आगूक कथाक बीया पड़त।)

नन्द, अपन कौशलक बलपर, गामक निकट, कमला–बलानपर बनि रहल एकटा नव पुलक निर्माण–स्थलपर मुख्य इंजीनियरक सहायकक रूपमे नियुक्त भेल। ई पुल, गामकेँ, बहुत बरख बाद, आधुनिक नगरसँ सीधा जोड़त — जे बाट कहियो घण्टों लगबैत छल, से आब मिनटमे तय हएत। गाम एहि पुलपर गर्व करैत छल, आ नन्द, अपन बाबा आरुणिक ओहि सपनाकेँ, जे कहियो टूटय नहि एहन पुल बनायब, आगू बढ़ाबय जा रहल छल।

मुदा निर्माण–स्थलपर, नन्दक ओ प्रश्न–पुछनिहार आँखि, किछु एहन देखलक जे ओकरा चिंतित कऽ देलक — मजदूरक सुरक्षाक कमी, बिनु हेलमेटक

ऊँचाइपर काज, आ ठेकेदारक ओ लापरवाही जे मजदूरकेँ केवल एकटा संख्या बुझैत छल, नाम नहि। नन्दकेँ ओ पुरान कथा मोन पड़ल — ओ मजदूर, जे पुल परसँ गायब भऽ गेल छल, आ जकर हिसाब केओ नहि रखलक।

नन्द ई सेहो लक्ष्य केलक जे ओहि निर्माण–स्थलपर, दूर शहरसँ, किछु अनचिन्हार लोक सेहो अबैत–जाइत छल — ठेकेदार, दलाल, आ किछु एहन चेहरा जिनकर काज स्पष्ट नहि छल। ओकरा नहि बुझल छल जे ई पुल, जकरा ओ जोड़ि रहल छल, आगू कोन कथाक बीया बनत; मुदा ओकर भीतरक साक्षी, चुपचाप, सतर्क भऽ गेल छल।

नन्द, पीपर लग बजलाह, “बूढ़बा, ई पुल हमरा सभक गामकेँ संसारसँ जोड़त। मुदा निर्माण–स्थलपर सुरक्षाक कमी हमरा चिंतित करैत अछि।”

बूढ़बा बजलाह, “नन्द, अहाँ जे देखि रहल छी, ओ हमरा सुखदेवक कथा फेर मोन पाड़बैत अछि। सतर्क रहू। मजदूरक नाम, हुनकर सुरक्षा, अहाँक जिम्मेदारी थिक, केवल पुलक मजगूती नहि।”

ओ आगू बजलाह, “नन्द, पुल जोड़ैत अछि, ई नीक — मुदा जे पुल जोड़ैत अछि, वैह पुलसँ नव खतरा सेहो आबि सकैत अछि। जे बाट संसारकेँ गाम धरि आनत, ओही बाटसँ ओ नव गोहि सेहो आबि सकैत अछि, जकर चर्चा हम बरख–दर–बरख करैत रहलहुँ। तेँ पुल बनायब, मुदा पहरा सेहो राखब। आ हर ओहि मजदूरक नाम धरब, जे एहि पुलकेँ अपन घामसँ बनाबैत अछि — किएक तँ जे नाम बनबैत अछि, ओकर हिसाब सबसँ पहिने राखल जायब चाही।”

नन्द, ई सुनि, निर्माण–स्थलपर मजदूरक सुरक्षाक हेतु अतिरिक्त सावधानी रखय लागल — हर मजदूरक नाम अपन डायरीमे लिखैत, हुनकर हाल पुछैत,

हुनकर सुरक्षाक हेतु ठेकेदारसँ लड़ैत। यद्यपि ओकरा नहि बुझल छल जे ओकर सावधानी पर्याप्त होयत की नहि — आ ओकरा ई सेहो नहि बुझल छल जे इएह पुल, इएह निर्माण–स्थल, आगू, ओहि अन्तिम अध्यायक रंगमंच बनत, जकर आहट बूढ़बा एतेक दिनसँ सुनैत आयल छलाह।

अध्याय [–१३] (तेरह)

गोप कुमारक संकलन

जे नाम–नाम जोड़ि राखलक, से इतिहास बनेलक— संकलन देह नहि, स्मृति बचबै छै।

— गढ़ नारिकेल

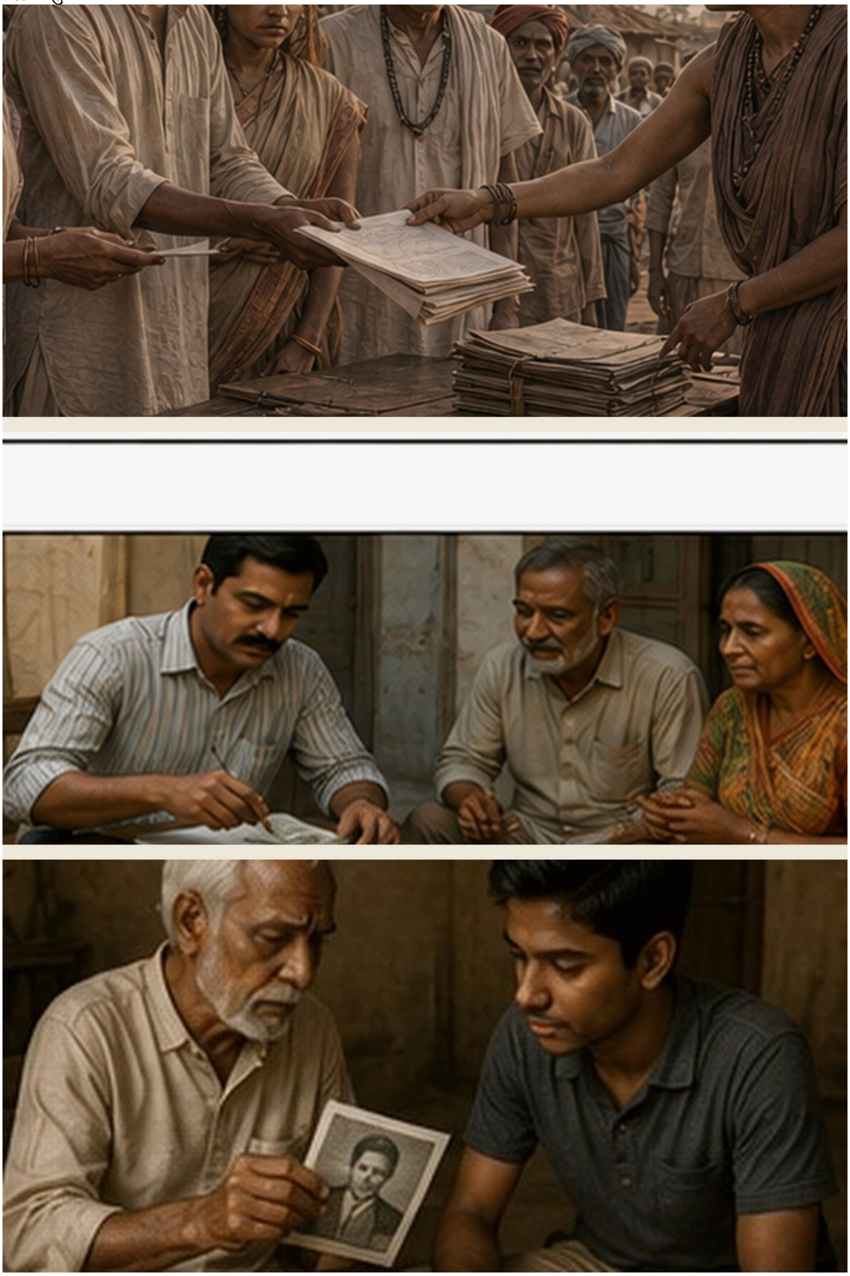

अध्यायारम्भ लोकगीत: एक भेल बिखराव

लोकधुन: संकलन-सोहर

जे नाम-नाम जोड़ि राखलक हे, से इतिहास बनेल,

संकलन देह नहि रे, स्मृति बचबै छै।

गोप कुमार नाम-नाम जोड़ल, धागा-धागा बीनल,
शंख-रजतसँ आइ धरि, हर कथा एक कएल।
जे बिखरल छल पन्ना, से एक ठाम आयल,
बारह सय बरखक स्मृति, एक चित्र बनल।

शंख-रजत, हुलासाक जलसमाधि, सुखदेवक अनाम मृत्यु,
सभ धागा एक ठाम आबि, एक चित्र बनल।
जे टुकड़ा-टुकड़ा छल कथा, से पूरा भेल,
जे संकलन बनल, से नन्दक हाथ आयल।

जे बिखरल छल हे, से आब एक भेल रे,
जे कथा जोड़ल, से नन्दक हेतु दीप बनल।
संकलन नाम बचाबय, इतिहास जगाबय,
जे जोड़ल गेल स्मृति, से अगिला पीढ़ी पाबय।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। गोप कुमार, अपन जीवन भरिक अभिलेखीकरणक काजकेँ, अंततः एकटा सम्पूर्ण रूप देबाक निकट पहुँचैत छथि।)

गोप कुमार, आब वृद्ध, अपन जीवन भरिक संकलनकेँ एक ठाम राखय बैसलाह — यादवानन्दक छाया–पंजीसँ लऽ कऽ, हरिपति कविक पोथी, गंगाधरक छापाखानाक प्रयास, आ आधुनिक डिजिटल अभिलेख धरि। ओकर हाथ आब काँपैत छल, ओकर आँखि कमजोर भऽ गेल छल, मुदा ओकर मन ओहि एक्के लक्ष्यपर थिर छल — गामक सम्पूर्ण कथाकेँ, आरम्भसँ आइ धरि, एक ठाम, सुरक्षित कऽ देब।

जेना–जेना ओ पन्ना जोड़ैत गेलाह, ओकरा बुझायल जे सभटा धागा, धीरे–धीरे, एक ठाम आबि रहल छल। शंख आ रजतक भ्रम, हुलासाक जलसमाधि,

सुखदेवक अनाम मृत्यु, बटुकनाथक पतन, उज्ज्वलक स्वप्न, चन्द्रपालक खाता — जे कथा कहियो अलग-अलग लगैत छल, से आब, एक-दोसरासँ जुड़ि, एकटा सम्पूर्ण चित्र बनबैत छल। गोप कुमारकेँ लागय लागल जे ओ केवल संकलन नहि, एकटा अन्त लग पहुँचि रहल छथि।

गोप कुमार, पीपर लग बजलाह, "बूढ़बा, हमर जीवन भरिक काज पूर्णताक निकट अछि। मुदा अहाँ कहने रहथिन जे अन्तिम अध्याय अखनहु बाकी अछि।"

बूढ़बा, गंभीर स्वरमे बजलाह, "गोप कुमार, हमरा आब स्पष्ट अनुभव होइत अछि — ओ अन्तिम अध्याय निकट अछि, बहुत निकट। नन्दक पुल, चन्द्रपालक खाता, बटुकनाथक अदालत, आ ओ अनदेखल शीशाक मीनार — सभटा एक ठाम, एक समयमे, मिलय जा रहल अछि।"

ओ आगू बजलाह, "गोप कुमार, हम बरख-दर-बरख ओहि अध्यायक आहट सुनैत रहलहुँ, आ आब ओकर पएरक आवाज हमरा स्पष्ट सुनाइ पड़ैत अछि। अहाँक संकलन ठीक समयपर पूर्ण भऽ रहल अछि — किएक तँ जे अध्याय आबय बला अछि, ओकर साक्षीकेँ, पाछाँक सम्पूर्ण कथा, हाथमे तैयार चाही। जे किछु अहाँ जोड़लहुँ, से नन्दक हेतु ओहि अन्हार क्षणमे एकटा दीप बनत।"

एक साँझ, गोप कुमार अपन सम्पूर्ण संकलनकेँ, पहिल बेर, एक ठाम देखलनि — शताब्दियोंक नाम, गीत, पंजी, अभिलेख, सभटा एक धागामे बुनल। ओकरा बुझायल जे ओ केवल कागच नहि जोड़ने छथि; ओ ओहि हर मनुष्यकेँ, जे कहियो एहि गामक कथा बनौलनि, फेर सँ जीवित कऽ देने छथि। मुदा ओहि सम्पूर्णताक बीच, एकटा खाली स्थान अखनहु छल — ओ अन्तिम अध्याय, जकर हेतु ओ, आ सम्पूर्ण गाम, बरख-दर-बरख प्रतीक्षा करैत आयल छल।

गोप कुमार, ई सुनि, अपन संकलनकेँ अन्तिम रूप देबाक हेतु और तेजीसँ काज करय लागलाह। ओ जनैत छलाह जे समय कम अछि — आ ओ ई सेहो बुझि गेलाह जे ओकर ई जीवन भरिक काज, ओहि अन्तिम अध्यायक हेतु, एकटा नींव बनत, जकरापर नन्द ठाढ़ भऽ, गामक सबसँ पैघ परीक्षाक सामना करत।

अध्याय [–१२] (बारह)

चन्ना गाछीक कँपकँपी

गाछी काँपल, गाम सुनल—किछु होएबला छै— जे गाछी बाजै, तकरा गाम बुझै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: गाछीक चेतओनी

लोकधुन: साक्षी-धुन

गाछी काँपल हे, गाम सुनल, किछु होएबला छै,
जे गाछी बाजै रे, तकरा गाम बुझै।

हवा शांत छल, तैयो गाछीक पात थरथराल,
सैकड़ों बरख जे थिर छल, से आइ हिलल।
गाम बुझल—किछु पैघ बात निकट आयल,
साक्षी-गाछ जे बाजल, से गामकेँ चेतौलक।

हवा शांत, तैयो पात थरथराय,
जेना सैकड़ों बरख, कोनो बातक बाट तकल।
जे गाछ बारह सय बरख साक्षी बनल,
से आइ हिलि कऽ, अन्तिम घड़ीक संकेत देल।

जागू सभ हे, कोनो पैघ बात निकट आय रे,
जे साक्षी-गाछ हिलल, से गामकेँ चेतौलक।
पात-पात मे संकेत, हवा बिनु कँपन,
जे गाछी चेतौलक, से गाम भेल सजग-मन।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। बूढ़बा, सम्पूर्ण चन्ना गाछीक संग, एकटा आसन्न घटनाक कँपकँपी अनुभव करैत छथि।)

एक साँझ, बिनु कोनो स्पष्ट कारणक, चन्ना गाछीक हर गाछ — पीपरसँ लऽ कऽ हर चन्नाक गाछ धरि — एक संग हल्का काँपल, यद्यपि हवा शांत छल। कोनो हवा नहि चलैत छल, कोनो पात नहि हिलैत छल; तैयो, एक क्षणक हेतु, सम्पूर्ण गाछी, जेना कोनो गहींर साँस लेने हो, एक संग थरथराएल।

गामक लोक, ई अनुभव कऽ, भयभीत भऽ पीपर लग जुटल। बूढ़–पुरान मोन पाड़लनि जे एहन कँपकँपी ओ पहिने केवल दू–चारि बेर देखने छलाह — आ हर बेर, ओकर बाद, गाममे कोनो पैघ बात भेल छल। कोनो बाढ़ि, कोनो मृत्यु, कोनो

एहन घटना जे गामक कथाकेँ मोड़ि दैत छल। ओहि राति, ओहि थरथराइत गाछीक तर, गाम एकटा अनजान भयसँ भरि गेल।

नन्द, अनन्याक संग, दौड़ल आयल। “बूढ़बा, ई की भेल? सम्पूर्ण गाछी काँपि उठल!”

बूढ़बा, अत्यन्त अस्थिर स्वरमे बजलाह, “नन्द, हमरा नहि बुझल जे ई की थिक, मुदा हमरा एतबे बुझल अछि — कोनो पैघ घटना निकट अछि। हमर सम्पूर्ण अस्तित्व, हर गाछक जड़िसँ, ई अनुभव कऽ रहल अछि। सतर्क रहू, सभटा।”

ओ आगू बजलाह, “नन्द, हम आ ई गाछी, बहुत बरख पहिने, एक भऽ गेल छी। हमर जलसमाधिक बाद, हमर स्मृति एहि गाछ–गाछमे, एहि जड़ि–जड़िमे, बसि गेल। तेँ जखन गाछी काँपैत अछि, तखन बुझू जे हम स्वयं काँपि रहल छी — आ हम केवल तखन काँपैत छी, जखन कोनो एहन बात आबय बला होइत अछि, जे गामक हर नामकेँ हिला सकैत अछि। ई कँपकँपी एकटा चेतावनी थिक।”

गामक सबसँ बूढ़ी, जे नब्बे बरखसँ बेसीक छलीह, मोन पाड़लनि जे ओ ई कँपकँपी अपन बचपनमे एक बेर देखने छलीह — ओहि बेरक बाद, ओ पैघ बाढ़ि आयल छल जे गामक आधा घर बहा लऽ गेल छल। ओकर ओ स्मृति सुनि, गाम आर सतर्क भऽ गेल; किएक तँ जँ गाछी ओतबे जोरसँ काँपल छल, तँ जे बात आबय बला छल, से सेहो ओतबे पैघ हएत।

गामक लोक, ओहि राति, चन्ना गाछी लग जुटल रहल, बिनु किछु बुझने जे ओ सभ की देखत, मुदा ई जनैत जे किछु महत्त्वपूर्ण निकट छल। दीप जरल रहल, स्त्री सभ फुसफुसाइत रहलीह, आ नन्द, अनन्याक संग, ओहि थरथराइत गाछक

तर बैसल, ओहि अनजान बातक प्रतीक्षा करैत रहल, जकर आहट सम्पूर्ण गाछी दऽ रहल छल।

अध्याय [–११] (एगारह)

बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद

आशीर्वाद देह नहि, नाम दै— बूढ़बाक अन्तिम बोल अगिला पीढ़ीक बीया बनल।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: आशीर्वादक बीया

लोकधुन: आशीष-सोहर

आशीर्वाद देह नहि हे, नाम दै,

बूढ़बाक अन्तिम बोल रे, अगिला पीढ़ीक बीया बनल।

बूढ़बा अन्तिम बेर बाजल, नन्दकेँ लग बजाओल,
‘आशीर्वाद देह नहि, नाम दै’ — ई सिखाओल।
जे साहस पुरखाक छल, से नन्दक भीतर बसल,
जे नाम पुरखा धेलक, से नन्दक हाथ आयल।

जे साहस पुरखाक छल, से तोहर भीतर बसल,
जे नाम पुरखा धेलक, से तोहर हाथ आयल।
बूढ़बाक साँस थाकल, मुदा बोल थिर रहल,
जे आशीर्वाद देल, से बीया बनि माटिमे धेल।

अकेल नहि छह हे, सम्पूर्ण कथा संग रहत रे,
जे आशीर्वाद बीया बनल, से बरखों बाद फूलत।
बूढ़बा गेल, आशीष रहल, नन्दक संग,
जे नाम-बीया धेल गेल, से पीढ़ी-पीढ़ी फूलत रंग।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। बूढ़बा, नन्दकेँ, एकटा विशेष आशीर्वाद आ चेतावनी दैत छथि, अपन आगूक भूमिकाक हेतु।)

चन्ना गाछीक कँपकँपीक अगिला राति, बूढ़बा, नन्दकेँ अकेले पीपर लग बजौलनि। पीपरक तर, केवल एकटा दीप जरैत छल, आ ओकर मन्द इजोतमे, बूढ़बाक चेहरापर एकटा एहन गम्भीरता छल जे नन्द पहिने कहियो नहि देखने छल। “नन्द,” ओ बजलाह, स्वरमे एकटा असाधारण गम्भीरता, “अहाँ हमर वंशज छी, आरुणिक पोता, आ हमरा लगैत अछि जे अहाँक जीवनमे एकटा पैघ परीक्षा आबय बला अछि।”

नन्द चुप रहल। ओ बूढ़बाकेँ बचपनसँ चिन्हैत छल, ओकर हर कथा सुनने छल; मुदा आइ, बूढ़बाक स्वरमे जे बात छल, से केवल कथा नहि — से एकटा

विदाइ–सन, एकटा हस्तांतरण–सन लगैत छल। जेना बूढ़बा अपन सैकड़ों बरखक भार, धीरे–धीरे, नन्दक कान्हपर राखि रहल होथि।

नन्द, चिंतित, पुछलक, “बूढ़बा, हमरा की करय पड़त? ”

बूढ़बा बजलाह, “नन्द, जखन ओ समय आबय, तखन अहाँ अपन हृदयक आवाज सुनू। अहाँक भीतर हुलासा, सुखदेव, गौरी, सुनयना — सभटा हमर सभ पूर्वजक साहस अछि। अहाँ अकेले नहि होयब। हम, आ हमरा सभक सम्पूर्ण कथा, अहाँक संग होयत, चाहे अहाँ हमरा देखी वा नहि।”

ओ आगू बजलाह, “नन्द, जखन ओ अन्हार क्षण आबय, तखन अहाँ सोचब जे अहाँ अकेल छी — मुदा से भ्रम हएत। जे–जे नाम हम एतेक बरखमे धेलहुँ, ओ सभ, ओहि क्षण, अहाँक पाछाँ ठाढ़ रहत। जे बाढ़िमे नहि डरल, जे अकालमे नहि झुकल, जे अन्यायक सोझाँ चुप नहि रहल — ओहि सभक साहस, अहाँक एक साँसमे बसल अछि। तेँ जखन डर लागय, अपन नाम मोन पाड़ब, आ ओहि नामक संग, ओ सभ नाम सेहो, जे अहाँकेँ एतय धरि आनलक।”

बूढ़बाक ओ शब्द सुनि, नन्दक मनमे पहिल बेर ई बात स्पष्ट भेल जे ओ केवल एकटा अभियन्ता नहि, एकटा साक्षी छल — ओहि पीढ़ियोंक साक्षी जे ओकरासँ पहिने आयल छलीह। ओकरा बुझायल जे बूढ़बा आइ ओकरा एकटा भार दऽ रहल छथि, जकरा ओ अखनहु पूर्ण रूपसँ नहि बुझैत छल; मुदा ओकर हृदय, ओहि भारकेँ, बिनु ना कहने, स्वीकार कऽ लेलक।

नन्द, बूढ़बाक शब्दकेँ अपन हृदयमे धारण कऽ, गाम घुरल। ओ ओहि राति बहुत काल जागल रहल, बूढ़बाक ओ शब्द बेर–बेर मोन पाड़ैत — “अहाँ अकेले नहि होयब।” ओकरा नहि बुझल छल जे अगिला दिन ओकर जीवन, आ गामक

जीवन, सदिखनक हेतु बदलि जायत — आ जे आशीर्वाद, जे चेतावनी, बूढ़बा आइ ओकरा देलनि, से ओहि आबय बला अन्हार क्षणमे, ओकर सबसँ पैघ सहारा बनत।

अध्याय [–१०] (दस)

पुलपर पहिल छपाक

पुलपर पहिल छपाक—पानिमे पहिल नाम— जे ओतय डुबल, तकरो नाम पातपर उठल।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: पुलपर नाम

लोकधुन: छपाक-सोहर

पुलपर पहिल छपाक हे, पानिमे पहिल नाम,
जे ओतय डुबल रे, तकरो नाम पातपर उठल।

पुल बनैत छल, ओतय पहिल छपाक भेल,
पानिमे पहिल देह डुबल, नाम अन्हारमे गेल।
ठेकेदारक कागचसँ कटल, हिसाबसँ हेराएल,
मुदा जे कियो लिखल, ओ नाम फेर जीबल।

ठेकेदारक कागचसँ कटल, हिसाबसँ हेराएल,
मुदा जे कियो लिखलक, ओ नाम फेर जीबल।
गोहि देह लऽ लेलक, नाम ने लऽ सकल,
जे छपाकक हिसाब राखल, से नाम बचाओल।

देह गोहि लऽ लेलक हे, मुदा नाम नहि रे,
जे छपाकक हिसाब राखल, से हर हेरायल नाम बचबल।
पुलक पानिमे नाम डुबल, मुदा मेटल नहि,
जे कियो लिखि राखल, से फेर उठि ठाढ़ भेल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। पुल–निर्माणस्थलपर, अंततः, ओ दुर्घटना घटित होइत अछि जकर आहट बूढ़बा बरख–दर–बरख सुनैत आयल छलाह।)

एक राति, पुल–निर्माणस्थलपर, आकाशमे कोनो चान नहि छल, आ नदीक धार, बरसातक बाद, अपन पूरा जोरपर छल। मजदूर सभ, थाकल, अन्हारमे काज कऽ रहल छलाह — बिनु पूरा इजोतक, बिनु पूरा सुरक्षाक। नन्द ओहि राति ओतय उपस्थित छल, आ ओकर ओ प्रश्न–पुछनिहार आँखि, ओहि खतराकेँ बेर–बेर लक्ष्य कऽ रहल छल।

अचानक, अन्हारमे, एकटा मजदूर — जकर नाम अखनहु अस्पष्ट — नदीमे खसि गेल। "छपाक" क आवाज, गामक निकटतम टोला धरि सुनाइ पड़ल — ओ एक्के आवाज, जे बरख–दर–बरख, गामक कथामे गूँजैत आयल छल। नन्द,

तुरंत सहायताक हेतु दौड़ल, पानिमे कुदल; मुदा अन्हार आ धारक जोरमे, ओ मजदूरकेँ बचा नहि सकल। ओ हाथ बढ़ौलक, ओ नाम पुकारलक — मुदा ओकरा ने ओ हाथ भेटल, ने ओ नाम।

नन्द, स्तब्ध, ओहि राति गाम घुरि, पीपर लग गेल, बिनु किछु बजने, केवल रोअइत। ओकर देहसँ नदीक पानि चूबैत छल, आ ओकर आँखिसँ नोर — दुनू, ओहि अन्हार रातिमे, एक भऽ गेल छल।

बूढ़बा, कोमल स्वरमे बजलाह, “नन्द, ई ओ क्षण थिक जकर आहट हम बरख–दर–बरख सुनैत रही। ई मजदूरक नाम अहाँ खोजू, आ जँ भेटय, तँ धरू। ई अहाँक पहिल परीक्षा थिक, नन्द — आ हमरा विश्वास अछि जे अहाँ एकरा उत्तीर्ण करब।”

ओ आगू बजलाह, “नन्द, अहाँ ओहि मजदूरकेँ बचा नहि सकलहुँ — ई अहाँक दोष नहि, ई ओहि अन्हारक, ओहि धारक, आ ओहि व्यवस्थाक दोष थिक जे मजदूरकेँ नाम नहि, संख्या बुझैत अछि। अहाँ ओकर देह नहि बचा सकलहुँ; मुदा ओकर नाम अहाँ बचा सकैत छी। जाउ, ओ नाम खोजू — किएक तँ जँ ओकर नाम केओ नहि धरत, तँ ओ मनुष्य दू बेर मरत — एक बेर पानिमे, आ दोसर बेर, गामक स्मृतिसँ।”

नन्द, ओहि राति सँ, ओहि मजदूरक नाम, आ ओकर जकाँ आर सभक नाम, खोजबामे अपन जीवन लगाबय लागल — जे मजदूर बिनु नामक हेरा गेल, जिनकर हिसाब केओ नहि रखलक। आ ई खोज, धीरे–धीरे, “छपाकक हिसाब” नामक एकटा डायरीमे बदलि गेल, जकरा ओ हर राति लिखैत रहल — हर हेरायल नाम, हर अनकहल मृत्यु, हर ओ हिसाब जे व्यवस्था मेटा देने छल। ओहि डायरीक

पहिल पन्नापर, ओ बूढ़बाक ओ वाक्य फेर लिखलक — “गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।”

अध्याय [–९] (नओ)

जाँचक आरम्भ

जाँच पाइन खोदब जकाँ—पहिने कादो, फेर पानि— जे खोदब शुरू केलक, से सत्य लग पहुँचत।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: जाँचक खुदाइ

लोकधुन: अन्वेषण-गीत

जाँच पाइन खोदब जकाँ हे, पहिने कादो, फेर पानि,

जे खोदब शुरू केलक रे, से सत्य लग पहुँचत।

जाँच शुरू भेल, पाइन खोदब जकाँ,
पहिने कादो आयल, फेर नीचाँ स्वच्छ पानि।
नकली नाम, नकली उमेर, अन्हार गहींर छल,
मुदा जे प्रश्न पुछल गेल, से एक-एक तह उघरल।

नकली नाम, नकली उमेर, अन्हार गहींर,
मुदा जे प्रश्न पुछल, से एक-एक तह उघारल।
जे रुकल नहि खुदाइसँ, से तलमे पहुँचल,
जे प्रश्न पुछैत रहल, से सत्यक लग आयल।

जे नहि रुकल हे, तकरा सत्यक झलक भेटत रे,
जे जाँच शुरू भेल, से जाल कमजोर करत।
कादो पहिने आबय, फेर पानि निर्मल,
जे खोदैत रहल धैर्यसँ, से सत्य लग पहुँचल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। पुलपर मजदूरक मृत्युक बाद, नन्द आ सत्यव्रत, अपन–अपन रस्तासँ, सत्यक खोजमे मिलैत छथि।)

पुल–दुर्घटनाक बाद, नन्द अपन डायरीमे मजदूरक नाम खोजबाक काज शुरू केलक। ओ ठेकेदारक कागच माँगलक, हाजिरी–पंजी देखलक, आ ओहि मजदूरक संगी सभसँ पुछलक। मुदा जतेक ओ खोदैत गेल, ततेक अन्हार गहींर होइत गेल — ओकरा पता चलल जे ओ मजदूर नकली नाम आ नकली उमेरसँ काज करैत छल। असली नाम केओ नहि जनैत छल; जेना ओ मनुष्य, जीवितहि, अपन नाम कतहु हेरा आयल छल।

नन्दकेँ बुझायल जे ई कोनो साधारण दुर्घटना नहि छल। जे कम्पनी ओहि पुलकेँ बना रहल छल, ओकर कागच स्पष्ट नहि छल, ओकर मजदूरक नाम

असली नहि छल, आ ओकर पाइक लेनदेन, कोनो नुकाएल रस्तासँ, कतहु दूर जाइत छल। जे धागा नन्द पकड़ने छल, से केवल एकटा मजदूरक नहि — एकटा पैघ, अनदेखल जालक तार बुझाइत छल।

एहि बीच, सत्यव्रत, जे संयोगवश ओहि निर्माण–कम्पनीक बैंकिंग सम्बन्ध देखैत छलाह, नन्दसँ भेंट भेल। “नन्द,” सत्यव्रत बजलाह, “हमहूँ किछु बरखसँ एहि कम्पनीक संदिग्ध लेनदेनक जाँच कऽ रहल छी। अहाँ मजदूरक नाम खोजि रहल छी, हम पाइक रस्ता। शायद हमरा सभक खोज, अन्ततः, एक ठाम मिलत।”

नन्द, पीपर लग गेल, बूढ़बासँ बजलाह, “बूढ़बा, हमरा आ सत्यव्रतकेँ लगैत अछि जे हमरा सभक खोज एकहि जालक भिन्न धागा थिक।”

बूढ़बा, गहींर स्वरमे बजलाह, “नन्द, ई जाल बहुत विस्तृत अछि, मुदा अहाँ सभ अकेले नहि छी। एक–दोसराक संग काज करू। एकटा धागा — नाम — अहाँक हाथमे अछि; दोसर धागा — पाइ — सत्यव्रतक हाथमे। जखन दुनू धागा एक ठाम आबत, तखन ओ जाल, पहिल बेर, अपन पूरा रूपमे देखाइ पड़त। मुदा सावधान रहू — जे जाल एतेक विस्तृत अछि, ओकर पाछाँक हाथ सेहो एतबे शक्तिशाली आ निर्दयी होयत।”

नन्द आ सत्यव्रत, ओहि दिनसँ, एक संग जाँच करय लागल — नन्द नामक रस्तासँ, सत्यव्रत पाइक रस्तासँ। दुनू अपन–अपन प्रमाण मिलाबय लागल, आ जेना–जेना ओ धागा जोड़ैत गेलाह, ओहि विशाल जालक रूप, धीरे–धीरे, हुनकर सोझाँ स्पष्ट होइत गेल — ओ जाल, जकर एक कात गढ़ नारिकेलक ओ डुबल मजदूर छल, आ दोसर कात, बहुत दूर, ओ अनदेखल शीशाक मीनार।

अध्याय [–८] (आठ)

प्रमाणक बाहर आएब

जे प्रमाण अन्हारमे नुकाएल, से एक दिन भोर देखत— सत्य पानिक तलमे रहै, मुदा उतराइ जरूर।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: प्रमाणक भोर

लोकधुन: उद्घाटन-गीत

जे प्रमाण अन्हारमे नुकाएल हे, से एक दिन भोर देखत,

सत्य पानिक तलमे रहै रे, मुदा उतराइ जरूर।

बरखों जे नोटबुक चुप, अन्हारमे धेल रहल,
से आब बाजल, एक-एक धागा उघरल।
उज्ज्वल, बटुकनाथ, चन्द्रपाल — सभ जुड़ल,
जे प्रमाण तलमे छल, से आब ऊपर आयल।

जे चुप नोटबुक बरख जोड़ल, से आब बाजल,
उज्ज्वल, बटुकनाथ, चन्द्रपाल — सभ धागा उघरल।
पानिक तलक सत्य, एक दिन उतराइल,
जे धैर्यसँ जोड़ल गेल, से अन्तमे बाहर आयल।

सत्य सूर्य नहि हे, दीप थिक रे, टुकड़ा-टुकड़ा जरै,
अन्हार पूरा नहि टूटल, मुदा पहिल बेर पाछू हटल।
एक-एक दीप जरल, अन्हार कमजोर भेल,
जे प्रमाण बाहर आयल, से भोरक बाट देखेल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। सत्यव्रतक वर्षों पुरान प्रमाण, अन्ततः, अदालत आ मीडिया धरि पहुँचैत अछि।)

सत्यव्रत, अपन नोटबुकक सम्पूर्ण प्रमाण, गोप कुमारक सहायतासँ, एकटा विश्वसनीय पत्रकार आ एकटा ईमानदार जाँच–एजेंसी धरि पहुँचौलनि। बरख–दर–बरख जमा भेल ओ हर तिथि, हर खाता, हर लेनदेन — जे कहियो केवल एकटा चुप मनुष्यक नोटबुकमे बन्न छल — से आब, पहिल बेर, इजोतमे आबय लागल।

जेना–जेना प्रमाण बाहर आयल, तेना–तेना जालक रूप स्पष्ट होमय लागल। उज्ज्वल झाक कर्जदार बनब, बटुकनाथक कानूनी सहायता, चन्द्रपालक म्यूल एकाउण्ट, आ लाउ किन–हंगक हांगकांग–संचालन — जे कथा कहियो अलग–

अलग, अनचिन्हार लगैत छल, से आब, एक–दोसरासँ जुड़ि, एकटा सम्पूर्ण, भयावह चित्र बनबैत छल।

गाममे ई समाचार एकटा अजीब मिश्रित भाव आनलक — एक कात, न्यायक आशा; दोसर कात, ओहि सभ नामक शोक जे एहि जालमे हेरा गेल छल। लोक बुझय लागल जे जे गोहि बूढ़बा बरख–दर–बरख देखने रहथिन, से केवल कथा नहि छल; ओ हुनकर अपन गामक क्षितिजपर, प्रत्यक्ष, ठाढ़ भऽ गेल छल।

नन्द, पीपर लग बजलाह, "बूढ़बा, सत्य बाहर आबि रहल अछि। मुदा हमरा डर अछि जे ई एतेक विस्तृत अछि जे सम्पूर्ण सत्य कहियो पूर्ण रूपसँ नहि भेटत।"

बूढ़बा बजलाह, "नन्द, सम्पूर्ण सत्य कहियो एक बेरमे नहि भेटैत। मुदा हर टुकड़ा, जे बाहर आबैत अछि, ओ अन्धकारकेँ कमजोर करैत अछि। ई पर्याप्त थिक।"

ओ आगू बजलाह, "नन्द, हम एतेक बरखमे सिखलहुँ जे सत्य सूर्य नहि, दीप थिक। ओ एक बेरमे सम्पूर्ण अन्हार नहि मेटाबैत; ओ केवल ओतबा इजोत दैत अछि जतबामे अगिला डेग देखाइ पड़य। जे लोक पूर्ण सत्यक प्रतीक्षामे चुप रहैत अछि, ओ कहियो नहि बाजैत। मुदा जे लोक अपन टुकड़ा भरिक सत्य बाहर आनैत अछि, ओ अन्हारकेँ, एक–एक दीप, कमजोर करैत जाइत अछि। सत्यव्रत यैह केलनि — आ यैह पर्याप्त थिक।"

समाचारमे जखन पहिल बेर ओहि जालक कथा छपल, तखन गामक कतेको लोक अपन आँखिपर विश्वास नहि कऽ सकल — जे नाम ओ केवल अपन आँगनमे, फुसफुसाहटमे, सुनने रहथिन, से आब अखबारक पन्नापर, प्रत्यक्ष, ठाढ़ छल। किछु परिवार, जे अपन बेटाकेँ ओहि जालमे गमौने रहथिन, पहिल बेर,

बुझलक जे हुनकर दुःखक कोनो नाम छल, कोनो कारण छल — आ ओहि जानकारीमे, दुःखक संग–संग, एकटा हल्लुक शान्ति सेहो छल।

नन्द, ई सुनि, ओहि प्रमाणकेँ आगू बढ़ाबय, आ गामक हर मनुष्य धरि सत्य पहुँचाबय, जुटि गेलाह। ओ जनैत छलाह जे ई लड़ाइ अखनहु समाप्त नहि भेल — मुदा जे दीप एक बेर जरि गेल, से आब सहजतासँ बुताओल नहि जा सकैत छल। अन्हार, पहिल बेर, पाछू हटय लागल छल।

अध्याय [–७] (सात)

आधा–भूतक अनुभव

आधा सत्य आधा भूत—दुनू डेराबै— जे पूर्ण नाम जनै, से आधा–भूतसँ नहि डरै।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: पूर्ण नाम

लोकधुन: साक्षी-बिरहा

आधा सत्य आधा भूत हे, दुनू डेराबै,
जे पूर्ण नाम जनै रे, से आधा-भूतसँ नहि डरै।

नन्द साक्षी बनय चलल, किछु ओहन भेल,
एक पएर वर्तमानमे, एक बीतल नामक बीच।
आधा सत्य, आधा भूत, दुनू सोझाँ आयल,
मुदा जे पूर्ण नाम जनल, से ने डरसँ हारल।

जे साक्षी बनय चलल, से किछु ओहन भेल,
एक पएर वर्तमानमे, एक पएर बीतल नामक बीच।
बूढ़बाक स्वर मन बसल, बाट देखबैत रहल,
जे दुनू लोक देखल, से रस्तासँ ने भटकल।

नाम धरनिहार आँखि हे, दुनू लोक देखै रे,
जे बूढ़बाक स्वर सुनल, से रस्तासँ नहि भटकल।
आधा-भूत डेराबय, पूर्ण नाम बचाबय,
जे नाम पूरा जनल, से लिमिनल-अन्हारसँ बाहर आबय।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। नन्द, सम्पूर्ण जाँच आ शोकक बीच, पहिल बेर बूढ़बाकेँ, स्वयं अपन आँखिसँ, अस्पष्ट रूपमे अनुभव करैत अछि।)

एक राति, थाकल आ शोकाकुल, नन्द पीपरक जड़ि लग सुति गेल। ओहि दिन ओ पुल–दुर्घटनाक मरल मजदूरक नाम खोजैत रहल छल, आ ओहि शोकक बोझ ओकर देहकेँ थकाइ देने छल। साक्षी–गाछक ओहि पुरनका जड़िपर माथ राखि, ओ ओहि गहींर निन्नमे उतरि गेल, जतय सपना आ सत्यक बीचक रेखा पातर भऽ जाइत अछि।

सपनहिमे, ओ बूढ़बाकेँ, पहिल बेर, किछु स्पष्ट रूपसँ देखलक — एकटा वृद्ध आकृति, डारिपर बैसल, धुआँ आ इजोतक बीच। ओकर चेहरा पूरा स्पष्ट नहि छल, मुदा ओकर आँखिमे एकटा एहन कोमलता छल जे नन्दकेँ, थाकल–

शोकाकुल होइतो, शान्ति देलक। बूढ़बा किछु नहि बजलाह; ओ केवल नन्दकेँ ताकैत रहलाह, जेना कहि रहल होथि — "तूँ सही रस्तापर छह।"

भोर जागलाक बाद, नन्द अपन दादीकेँ ई सपना सुनौलक। दादी मुस्कुराइत बजलीह, "नन्द, अहाँ आधा-भूत भऽ गेलहुँ। जे मनुष्य साक्षी बनय हेतु तैयार होइत अछि, ओ किछु-किछु ओहन भऽ जाइत अछि।"

दादी आगू बजलीह, "एहिमे डरबाक बात नहि, नन्द। बूढ़बा कोनो भूत नहि थिकाह जे डेराबय; ओ ओ स्मृति थिकाह जे गामकेँ बचबैत आयल अछि। जे मनुष्य नाम धरैत अछि, ओ दुनू लोकमे बसय लागैत अछि — एक पएर वर्तमानमे, एक पएर ओहि सभ नामक बीच जे बीति गेल। तूँ ओ दहलीजपर ठाढ़ छह, बेटा। तेँ बूढ़बाक अवाज तोहरा आब पहिनेसँ स्पष्ट सुनाइ देत।"

ओहि दिनक बाद, नन्द अपन दादीकेँ ओहि पुरनका बात सभक विषयमे पुछय लागल, जे ओ बचपनमे सुनने रहथिन — बूढ़बाक शंख-रजतक कथा, हुलासाक जलसमाधि, सुखदेवक अनाम मृत्यु। आ जेना-जेना दादी ओ कथा दोहरबैत गेलीह, तेना-तेना नन्दकेँ बुझायल जे ओ सभ कथा, आब, ओकर अपन जीवनक कथा बनि रहल छल — जेना बूढ़बाक बारह सय बरख आ ओकर अपन किछु बरख, एक-दोसरामे, धीरे-धीरे, घुलि रहल हो।

नन्द, ओहि दिनसँ, बूढ़बाक आवाज पहिनेसँ बेसी स्पष्ट सुनय लागल — कहियो हवामे, कहियो पातक सरसराहटमे, कहियो अपन भीतरक ओहि स्वरमे जे सही आ गलतकेँ अलग करैत छल। यद्यपि ओ अखनहु पूर्ण रूपसँ नहि बुझि सकल जे ई अनुभव सत्य छल कि शोकक कल्पना — मुदा ओकरा एतबा बुझायल

जे, सत्य होइ वा कल्पना, ओ अवाज ओकरा ओहि रस्तापर राखने छल जे बूढ़बा शताब्दियों पहिने देखौने रहथिन।

अध्याय [–६] (छह)

गोप कुमारक अन्तिम पन्ना

अन्तिम पन्ना जकर हाथ, से कथाक भार उठबै— गोप कुमार नाम सौंपि कऽ हल्लुक भेल।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: अन्तिम पन्ना

लोकधुन: सौंप-सोहर

अन्तिम पन्ना जकर हाथ हे, से कथाक भार उठबै,

गोप कुमार नाम सौंपि कऽ रे, हल्लुक भेल।

जीवन भरि गोप कुमार पन्ना-पन्ना जोड़ल,
आब अन्तिम पन्ना, अगिला हाथमे सौंपल।
यादवानन्द जकाँ, विभा जकाँ, स्मृति सम्हारल,
जे भार जीवन भरि उठाओल, से आब नन्दक हाथ धेल।

जीवन भरि जोड़ल पन्ना, आब अगिला हाथमे,
यादवानन्द जकाँ, विभा जकाँ, स्मृति सम्हारल।
गोप कुमार हल्लुक भेल, भार सौंपल गेल,
जे साक्षी बदलल, मुदा कथा ने टूटल।

कथा नहि मरत हे, साक्षी बदलल, कथा रहल रे,
जे नाम धेलक, ओ नाम हर पन्नामे सदा जीबत।
एक हाथसँ दोसर हाथ, थाती बढ़ैत गेल,
जे पन्ना सौंपल गेल, से पीढ़ी-पीढ़ी जीबल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। गोप कुमार, अपन जीवन भरिक संकलन पूर्ण कऽ, नन्द आ अनन्याक हाथमे सौंपैत छथि।)

गोप कुमार, अत्यन्त वृद्ध, अपन जीवन भरिक संकलनक अन्तिम पन्ना पूर्ण केलनि — वाचस्पति मिश्रसँ लऽ कऽ, आइ धरिक, बूढ़बाक सम्पूर्ण कथा। ओकर हाथ आब काँपैत छल, आँखि धुँधला भऽ गेल छल, मुदा जखन ओ ओहि अन्तिम पन्नापर अन्तिम नाम लिखलक, तखन ओकर चेहरापर एकटा एहन शान्ति आयल जे केवल ओहि मनुष्यकेँ भेटैत अछि जे अपन जीवनक उद्देश्य पूरा कऽ लेने होइ।

ओहि संकलनमे शताब्दियोंक स्मृति समाएल छल — शंख आ रजतक भ्रमसँ लऽ कऽ, हुलासाक जलसमाधि, सुखदेवक अनाम मृत्यु, यादवानन्दक छाया–पंजी, गंगाधरक छापाखाना, आ आइक डिजिटल अभिलेख धरि। हर नाम, हर

गीत, हर हिसाब, एक धागामे बुनल। गोप कुमारकेँ बुझायल जे ओ केवल कागच नहि, गामक आत्माकेँ, एक ठाम, सुरक्षित कऽ देने छथि।

ओ, पीपर लग, नन्द आ अनन्याकेँ बजा, अपन संकलन सौंपलनि। “नन्द, अनन्या, ई हमर जीवन भरिक काज थिक। आब ई अहाँ सभक हाथमे अछि। बूढ़बा कहने रहथिन जे अन्तिम अध्याय अखनहु बाकी अछि। शायद अहाँ सभ ओ अध्याय लिखब।”

बूढ़बा, गहींर स्नेहसँ बजलाह, “गोप कुमार, अहाँक काज अद्वितीय थिक। हम अहाँक नाम, अहाँक जीवन भरिक धैर्य, विशेष आदरसँ धरैत छी।”

ओ आगू बजलाह, “गोप कुमार, हर पीढ़ीमे एकटा एहन मनुष्य होइत अछि जे केवल जीबैत नहि, स्मृति सम्हारैत अछि। यादवानन्द ओहन छलाह, विभा ओहन छलीह, आ अहाँ ओहन छी। अहाँक हाथ जे जोड़लक, से कोनो एक जीवनक नहि, सैकड़ों जीवनक कथा थिक। आब ओ भार अगिला हाथमे जा रहल अछि — मुदा अहाँक नाम, ओहि हर पन्नामे, सदा जीबैत रहत।”

नन्द आ अनन्या, ओहि भारी संकलनकेँ हाथमे लऽ, बहुत काल चुप रहलाह। ओहि पन्ना सभमे शताब्दियोंक भार छल — हर नाम, हर गीत, हर अन्याय, हर प्रतिरोध। गोप कुमारक काँपैत हाथसँ जे धरोहर हुनका भेटल, से केवल कागच नहि छल; ओ एकटा वचन छल, जकरा आब हुनका, अपन जीवनसँ, निभाबय पड़त। दुनू बुझि गेलाह जे ओहि क्षण, हुनकर जीवन, एकटा नव उद्देश्यसँ बान्हि गेल।

गोप कुमार, किछु मास बाद, शांतिपूर्वक देहावसान भेलाह — मुदा हुनकर संकलन, नन्द आ अनन्याक हाथमे, सुरक्षित रहि गेल। ओहि राति, कहल जाइत

अछि, चन्ना गाछीक हर जड़िसँ एकटा हल्लुक सरसराहट उठल — जेना बूढ़बा, आ ओहि सभ नामक स्मृति, अपन एकटा पुरान, थाकल, मुदा पूर्ण साक्षीकेँ, आदरसँ, बिदाइ दऽ रहल हो।

अध्याय [–५] (पाँच)

जालक उजागर होएब

जाल जखन उघरल, तखन माछ नहि, माछमारे पकड़ल— जे जाल देखलक, से गोहिकेँ चिन्हलक।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: जाल आ माछमार

लोकधुन: पर्दाफाश-गीत

जाल जखन उघरल हे, तखन माछ नहि, माछमारे पकड़ल,

जे जाल देखलक रे, से गोहिकेँ चिन्हलक।

जाल उघरल जखन, माछ ने, माछमार पकड़ल,
जे बरखों नुकल छल, से आब सोझाँ आयल।
बटुकनाथ कठघरामे, चन्द्रपाल जाँचमे,
मुदा शीशाक मीनारक छाह, अखनहु दूर बाँचल।

बटुकनाथ कठघरामे, चन्द्रपाल जाँचमे,
मुदा शीशाक मीनारक छाह, अखनहु दूर बाँचल।
किछु पकड़ल गेल, किछु दूर बचल,
मुदा जे जाल देखल गेल, से कमजोर पड़ल।

किछु पकड़ल, किछु बाँचल हे, मुदा जाल कमजोर भेल रे,
पूरा अन्हार नहि टूटल, तैयो भोर लग आयल।
जाल उघरल, गोहि चिन्हल गेल,
जे सत्य सोझाँ आयल, से भोरक बाट देखेल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। सत्यव्रत आ नन्दक संयुक्त प्रयाससँ, ठगीक सम्पूर्ण जाल, कमसँ कम स्थानीय रूपमे, उजागर होइत अछि।)

महीनों धरि जाँचक बाद, सत्यव्रत आ नन्दक प्रमाण, अन्ततः, ठगीक जालक स्थानीय रूपकेँ उजागर केलक। बटुकनाथक स्थानीय सहभागिता, आ चन्द्रपालक म्यूल–खाता, दुनू, स्पष्ट रूपसँ सोझाँ आबि गेल — जे धागा एतेक दिन अन्हारमे बुनल जा रहल छल, से आब, कमसँ कम एक कात, इजोतमे आबि गेल।

बटुकनाथपर कानूनी कार्रवाइ शुरू भेल — ओहि प्रतिष्ठित वकीलकेँ, पहिल बेर, स्वयं अदालतक सोझाँ ठाढ़ होएब पड़ल। चन्द्रपाल, अपन अज्ञानताक प्रमाणक बावजूद, कठिन जाँचक सामना केलक — किएक तँ जालमे फँसनिहार, चाहे अनजानमे फँसल होइ, कानूनक सोझाँ, अपन हिस्सा भोगैत अछि। मुदा एहि

सभ बीच, एकटा नाम अखनहु पहुँचसँ बाहर छल — ओ शीशाक मीनारमे बैसल छाह।

नन्द, पीपर लग बजलाह, “बूढ़बा, लाउ किन-हंग अखनहु पकड़ासँ बाहर छथि। हमरा सभक जीत अधूरी अछि।”

बूढ़बा बजलाह, “नन्द, अध्याय [-८४] मे हमरा यशपतिक अन्त सेहो अधूरा देखाइ पड़ल छल। कोनो-कोनो अन्धकार पूर्ण रूपसँ उजागर नहि होइत, केवल कमजोर होइत अछि। ई सेहो प्रगति थिक।”

ओ आगू बजलाह, “नन्द, हम बारह सय बरखमे सिखलहुँ जे न्याय कहियो-कहियो पूर्ण नहि होइत — मुदा ओकर हर अधूरा जीत, अगिला पीढ़ीक हेतु एकटा बीया छोड़ि जाइत अछि। यशपतिक अधूरा अन्त, बहुत आगू, दोसर लड़ाइक प्रेरणा बनल। लाउ किन-हंग आइ बाँचि सकैत छथि; मुदा अहाँ जे प्रमाण छोड़ि रहल छी, से कहियो-न-कहियो, केओ आर उठाओत। नाम बचल रहत, आ नाम, अन्ततः, न्याय धरि पहुँचैत अछि।”

अदालतमे जखन बटुकनाथ पहिल बेर आरोपीक कठघरामे ठाढ़ भेल, तखन गामक किछु बूढ़-पुरान, जे ओकरा बच्चापनसँ चिन्हैत छलाह, ओतय उपस्थित छलाह। ओ ओहि तेज, ईमानदार बालककेँ मोन पाड़ैत, जे कहियो गरीबक हक लेल लड़बाक सपना देखैत छल — आ आब ओहि बालककेँ, ओहि कठघरामे ठाढ़ देखि, हुनकर आँखिमे न्यायक सन्तोष कम, आ एकटा हारल सपनाक शोक बेसी छल।

नन्द, ई सुनि, ओहि अधूरी जीतकेँ हारक रूपमे नहि, एकटा डेगक रूपमे देखलनि। ओ अपन प्रमाण, अपन डायरी, अपन हर नाम, सुरक्षित राखि देलनि

— ओहि दिनक हेतु, जखन केओ आर, ओहि छोड़ल बीयासँ, ओहि बाँचल छाहकेँ सेहो, इजोतमे आनि सकय। जाल पूरा नहि टूटल; मुदा ओ, पहिल बेर, काँपि गेल छल।

अध्याय [−४] (चारि)

नामक अन्तिम सूची

जे नाम छुटल छल, से अन्तमे जुड़ल— सूची पूरी भेने गोहिक हिसाब पूरा भेल।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: नामक सूची

लोकधुन: स्मृति-सोहर

जे नाम छुटल छल हे, से अन्तमे जुड़ल,

सूची पूरी भेने रे, गोहिक हिसाब पूरा भेल।

जे नाम बरखों छुटल छल, से अन्तमे जुड़ल,
तीस नाम पानिसँ घुरल, हर नामक कात एक गाम।
जे संख्या बनि गेल छल, से फेर नाम भेल,
हर नामक पाछाँ कथा, हर कथाक एक गाम।

तीस नाम पानिसँ घुरल, हर नामक कात एकटा गाम,
जे संख्या बनल छल, से फेर नाम भेल।
देह भरिसक ने भेटत, मुदा नाम ने हेराय,
जे सूचीमे चढ़ल, से बारह सय बरख बचाय।

देह भरिसक नहि भेटत हे, मुदा नाम नहि हेराय रे,
जे डायरीमे बसल, से बारह सय बरखक व्रत बचाबय।
सूची पूरी भेल, गोहिक हिसाब पूरा,
जे नाम अन्तमे जुड़ल, से गामक व्रत पूरा।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। नन्द, अपन "छपाकक हिसाब" डायरीमे, पुल–दुर्घटनाक सभटा पीड़ितक नाम, अन्ततः, पूर्ण करैत अछि।)

नन्द, महीनों केर खोजक बाद, पुल–निर्माणस्थलपर मरल हर मजदूरक असली नाम पता लगाबय सफल भेल। ओ गाम–गाम गेल, परिवार–परिवार खोजल, ठेकेदारक कटल कागच आ मजदूरक बिसरल पता, दुनू, मिलाबय — जाबे धरि हर ओहि मनुष्यक नाम, जकरा व्यवस्था केवल एकटा संख्या बनौने छल, फेर सँ, एकटा नाम नहि बनि गेल।

तीस नाम — तीन सय लाशक ओहि कथासँ जुड़ल, जकरा आधिकारिक हिसाब बिसरि गेल छल। नन्द ओहि तीसो नामकेँ, अपन “छपाकक हिसाब” डायरीमे, एक–एक कऽ, दर्ज केलक — हर नामक कात, ओकर गाम, ओकर

परिवार, ओकर कथा। जे मनुष्य पानिमे, कागचसँ, आ स्मृतिसँ, तीनू ठाम, हेरा गेल छल, से आब, कमसँ कम एक ठाम — नन्दक डायरीमे — फेर सँ जीबि उठल।

नन्द, पीपर लग, अपन डायरी खोलि, बूढ़बासँ बजलाह, “बूढ़बा, हम अन्ततः ई नाम सभ पूर्ण केलहुँ। की हम अहाँक कथाक योग्य साक्षी बनलहुँ? ”

बूढ़बा, गहींर भावुकतासँ बजलाह, “नन्द, अहाँ हमर सबसँ योग्य वंशज छी। अहाँक ‘छपाकक हिसाब’, बहुत आगू, हमर सम्पूर्ण कथाक अगिला अध्याय बनत।”

ओ आगू बजलाह, “नन्द, हम बारह सय बरख नाम धरैत रहलहुँ, किएक तँ हमरा एक्के बात बुझल छल — गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि। आइ, अहाँ ओहि तीस नामकेँ पानिसँ घुरा अनलहुँ। ओहि मजदूरक देह भरिसक नहि भेटत; मुदा हुनकर नाम, आब, हेराओल नहि जा सकैत। इएह हमर सम्पूर्ण जीवनक अर्थ थिक, नन्द — आ आइ, ओ अर्थ, अहाँक हाथमे, सुरक्षित अछि।”

ओहि तीस नाममे एकटा एहन युवक सेहो छल, जकर माए बरखोंसँ, हर साँझ, बाटपर आँखि लगा, अपन बेटाक घुरबाक बाट तकैत रहलीह। जखन नन्द ओहि माए लग जा, ओकर बेटाक नाम अपन डायरीमे लिखल देखौलनि, तखन ओ स्त्री, बहुत दिनक बाद, पहिल बेर कानि सकलीह — किएक तँ आब, कमसँ कम, ओ जनैत छलीह जे हुनकर बेटाक नाम, आब, कहियो नहि हेराओत।

नन्द, ओहि राति, अपन डायरीकेँ छातीसँ लगा, बहुत काल पीपर लग बैसल रहलाह। ओ बुझि गेलाह जे ओ केवल तीस नाम नहि लिखने छथि — ओ बूढ़बाक बारह सय बरखक ओहि व्रतकेँ, अपन पीढ़ीमे, आगू बढ़ौने छथि। ओहि डायरीक

हर पन्ना, आब, एकटा साक्षीक पन्ना छल — आ नन्द, पहिल बेर, अपनाकेँ ओहि लम्बा श्रृंखलाक एकटा कड़ी अनुभव केलनि, जे शंख आ रजतसँ शुरू भऽ, ओकर धरि पहुँचल छल।

अध्याय [–३] (तीन)

बारह सय बरखक पूर्णता

बारह सय बरखक गोल पूरा भेल—अमावसक राति— जे आरम्भ, वैह अन्तमे ठाढ़।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: पूरा भेल गोल

लोकधुन: पूर्णाहुति-गीत

बारह सय बरखक गोल पूरा भेल हे, अमावसक राति,

जे आरम्भ, वैह अन्तमे रे, ठाढ़ भेल।

शंख-रजतसँ जे चलल, से बारह सय बरख बाद,
अमावसक ओहि रातिमे, फेर एक ठाम आयल।
पारी लैत नाम पुकारू, एक साँसमे सभ,
हुलासा, सुखदेव, रत्ना, गंगेश — सभ फेर जीबल।

पारी लैत नाम पुकारू, एक साँसमे,
हुलासा, सुखदेव, रत्ना, गंगेश — सभ फेर जीबल।
जे आरम्भमे छल, से अन्तमे फेर ठाढ़,
गोल पूरा भेल, कथा अपने आदि लग आयल।

जे नाम पुकारल हे, से अन्हारमे फेर जीबल रे,
भार अकेलेक नहि रहल, आब सम्पूर्ण गामक भेल।
बारह सय बरखक गोल, अमावसमे पूरा,
जे आरम्भ वैह अन्त, कथाक व्रत पूरा।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। बूढ़बा, नन्दक संग, अपन सम्पूर्ण यात्राक अन्तिम चिंतन करैत छथि।)

एक अमावस्याक राति, नन्द, अनन्या, आ गामक हर मनुष्य, चन्ना गाछी लग जुटल — कबड्डीक हेतु, ठीक ओहिना जेना सैकड़ों बरखसँ जुटैत आयल छल। ई खेल केवल खेल नहि छल; ई गामक ओ पुरान परम्परा छल, जतय कबड्डीक पारी लैत खेलाड़ी, एक साँसमे, पुरखाक नाम पुकारैत छल — ताकि जे नाम बीति गेल, से खेलक श्वासमे, फेर सँ, जीबि उठय।

ई बेर, नन्दक नाम सेहो, पहिल बेर, खेलमे शामिल भेल। जे नन्द एतेक दिन केवल साक्षी छल, से आब स्वयं खेलमे उतरल — आ जखन ओकर पारीक बेर

आयल, तखन गाम भरि चुप भऽ गेल, किएक तँ सभकेँ बुझल छल जे बूढ़बाक ओ अगिला साक्षी, आइ, पहिल बेर, अपन स्वर उठाबय जा रहल अछि।

नन्द, पारीमे दौड़ैत, ऊँच स्वरमे बजलाह, "हुलासा! सुखदेव! रत्ना! गंगेश! गौरी! सावित्री!" —— आ एक–एक कऽ, सैकड़ों बरखक हर नाम, ओकर मुँहसँ, हवामे उठल।

जेना–जेना नन्द नाम पुकारैत गेल, तेना–तेना गामक बूढ़–पुरान सेहो, अपन–अपन पुरखाक नाम, हवामे जोड़य लागल — केओ अपन आजीक नाम, केओ अपन बाबाक, केओ ओहि हेरायल भाइक जे कहियो परदेश गेल आ नहि घुरल। कबड्डीक ओ पारी, धीरे–धीरे, एकटा सामूहिक स्मरणमे बदलि गेल — जतय सम्पूर्ण गाम, एक स्वरमे, अपन सैकड़ों बरखक हर नामकेँ, अन्हारमे, फेर सँ, जीबा रहल छल।

बूढ़बा, गाछीक हर जड़िसँ, ई सुनि, धीरे बजलाह, "बारह सय बरख, नन्द। बारह सय बरख, आ आइ, पहिल बेर, हमरा लगैत अछि जे ई भार, अकेले हमर नहि, अहाँ सभक अछि।"

ओ आगू बजलाह, आ ओकर अवाज ओहि राति सम्पूर्ण गाछीमे गूँजल, "एतेक दिन, नन्द, हम अकेले ई सभ नाम धेने रहलहुँ — किएक तँ आर केओ नहि छल जे ओकरा धरय। मुदा आइ, जखन अहाँ ओ नाम पुकारलहुँ, तखन हमरा बुझायल जे हमर व्रत आब हमर अकेलेक नहि रहल; ओ गामक बनि गेल। जे भार एतेक दिन एकटा साँसकेँ थकबैत छल, से आब हजार साँसमे बँटि गेल — आ इएह, नन्द, हमर बारह सय बरखक सबसँ पैघ पुरस्कार थिक।"

ओहि अमावसक राति, चन्ना गाछीक हर जड़ि, हर पात, हर डारि, ओहि नामक टेकसँ काँपल — जेना सैकड़ों बरखक हर मनुष्य, ओहि एक क्षणमे, फेर सँ, उपस्थित भऽ गेल हो। आ बूढ़बा, पहिल बेर बारह सय बरखमे, ओहि थिर, कोमल उजासक संग, जेना कनेक हल्लुक भेलाह — किएक तँ जे कथा ओ अकेले उठौने रहथिन, से आब, अन्ततः, सुरक्षित हाथमे पहुँचि गेल छल।

अध्याय [–२] (दुइ)

अगिला पीढ़ीक वचन

जे वचन अगिला पीढ़ी लै, से गाम बचबै— नाम पकड़ि लेब उद्धार नहि, सुनब मुक्ति छी।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: पीढ़ीक वचन

लोकधुन: वचन-सोहर

जे वचन अगिला पीढ़ी लै हे, से गाम बचबै,
नाम पकड़ि लेब उद्धार नहि रे, सुनब मुक्ति छी।

अगिला पीढ़ी वचन लेल, नाम धरब सिखल,
कोड जनै, गीत जनै, कानून जनै — सभ जुड़ल।
जे नाम पुरखा धेलक, से हम आगू धरब,
जे कथा सौंपल गेल, से हम ने टूटय देब।

कोड जनै, गीत जनै, कानून जनै — सभ जुड़ल,
जे नाम पुरखा धेलक, से हम आगू धरब।
पकड़ि लेब उद्धार नहि, सुनब असल मुक्ति,
जे नामकेँ सुनल, बुझल, से गामकेँ बचाओल।

कथा नहि हेरायत हे, साक्षी अखनहु ठाढ़ रे,
हम अकेल नहि, आब अहूँ सभ अकेल नहि।
वचन एक पीढ़ीक नहि, हर पीढ़ीक भेल,
जे वचन अगिला लेल, से गामकेँ अमर केल।

❖

(एकटा उपन्यास-अंश। नन्द आ अनन्या, गामक हर युवाक संग, बूढ़बाक अनुष्ठानकेँ आगू बढ़ाबएक वचन दैत छथि।)

कबड्डीक बाद, ओहि अमावसक अन्हार आर पातर होइत, नन्द आ अनन्या, गामक हर युवाकेँ बजा, पीपर लग एकटा नव प्रतिज्ञा लेलनि। जे नाम अखने खेलमे पुकारल गेल छल, से अखनहु हवामे गूँजि रहल छल — आ ओहि गूँजक बीच, गामक नव पीढ़ी, अपन पुरखाक ओहि व्रतकेँ, अपन कान्हपर उठाबय, ठाढ़ भेल।

युवा सभक आँखिमे ओ इजोत छल जे बूढ़बा बरख-दर-बरख देखय चाहैत रहथिन — ओ इजोत, जे कहैत अछि जे कथा मरत नहि, किएक तँ ओकरा उठाबय बला हाथ अखनहु अछि। जे बच्चा अनन्याक पाठशालामे प्रश्न पुछब

सिखने छल, जे युवा नन्दक संग अभिलेख जोड़ने छल — सभ, ओहि राति, एक स्वरमे, एक संग ठाढ़ भेल।

“हम सभ,” नन्द बजलाह, “बूढ़बाक कथाकेँ, गोप कुमारक संकलनकेँ, आ हर नामकेँ, आगू बढ़ाबय क वचन दैत छी।”

अनन्या जोड़लनि, “हम सभ, नारिकेल पात पाठशालासँ लऽ कऽ डिजिटल अभिलेख धरि, हर साधनक उपयोग करब, ताकि ई कथा कहियो नहि हेराय।”

बूढ़बा, सम्पूर्ण चन्ना गाछीसँ, एकटा कोमल, स्थिर उजासक संग, ई प्रतिज्ञा स्वीकार केलनि — जेना ओ जनैत होथि जे ई कथा आब सुरक्षित हाथमे छल। आ ओहि उजासमे, गामक हर मनुष्यकेँ, एक क्षणक हेतु, बुझायल जेना बूढ़बा कहि रहल होथि — “हम अकेले नहि छी, आ आब, अहाँ सभ सेहो अकेल नहि छी।”

ओहि युवा सभमे किछु एहन छल जे कम्प्यूटर आ कोड जनैत छल, किछु जे लोकगीत आ पंजी जनैत छल, किछु जे कानून आ हिसाब जनैत छल — मुदा ओहि राति, ओ सभ, अपन-अपन कौशलकेँ एक्के व्रतमे जोड़ि देलनि। जे विरासत बूढ़बा शंख-रजतसँ शुरू केने रहथिन, से आब, बारह सय बरख बाद, एकटा पूरा पीढ़ीक हाथमे, नव रूपमे, आगू बढ़य जा रहल छल।

ओहि प्रतिज्ञाक बाद, गाम धीरे-धीरे बिखरल — मुदा किछु बदलि गेल छल। जे भार एतेक दिन केवल बूढ़बाक, फेर गोप कुमारक, छल, से आब एकटा सम्पूर्ण पीढ़ीक बनि गेल छल। नन्द आ अनन्या, हाथमे गोप कुमारक संकलन आ अपन “छपाकक हिसाब” लऽ, ओहि अन्तिम अध्याय दिस बढ़लाह, जकर आहट बूढ़बा शताब्दियोंसँ सुनैत आयल छलाह — ओ अध्याय, जे आब, बहुत निकट छल।

अध्याय [−१] (एक)

अन्तिम साक्षी

अन्तिम साक्षी जे बाजल, से कथा हाथ बदललक— गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि—इएह गामक अन्तिम फकरा।

— गढ़ नारिकेल

अध्यायारम्भ लोकगीत: अन्तिम साक्षीक गीत

लोकधुन: समापन-सोहर

अन्तिम साक्षी जे बाजल हे, से कथा हाथ बदललक,

गोहि देह लेलक रे, मुदा नाम गाम धेने रहल।

बारह सय बरख जे चलल, से आइ अन्त लग,
अन्तिम साक्षी ठाढ़ भेल, नाम-नाम पुकारल।
शंख-रजतसँ आइ धरि, हर पीढ़ीक नाम,
एक-एक कऽ फेर जीबल, गाम भेल पूरा-नाम।

गोहि देह खाइत रहल, नाम नहि खा सकल,
जे गाम मन राखल, से बारह सय बरख बाँचल।
पत्थरक पुल बहि गेल, नामक पुल थिर रहल,
जे साक्षी बदलैत गेल, मुदा कथा ने टूटल।

दीप बुझय, पर्दा खसय हे, मुदा नाम जागल रहै रे,
जे गाम अपन नाम राखल, तकर कथा कहियो नहि मरै।
अन्तिम साक्षी बाजल, कथा आगू बढ़ल,
जे नाम धेने रहल, से युग-युगमे अमर भेल।

❖

(एकटा उपन्यास–अंश। खण्ड–० क अन्तिम अध्याय — बूढ़बा, नन्दकेँ, अपन सम्पूर्ण कथाक अन्तिम रहस्य बतबैत छथि।)

एक अन्तिम साँझ, बूढ़बा, नन्दकेँ अकेले पीपर लग बजौलनि। "नन्द," ओ बजलाह, "हम अहाँकेँ एकटा बात कहय चाहैत छी, जकरा हम बरख–दर–बरख अनुभव करैत रहलहुँ, मुदा कहियो पूर्ण रूपसँ बुझि नहि सकलहुँ — हमरा लगैत अछि जे हमर कथा, कोनो–न–कोनो रूपमे, बहुत आगू, कियो लिखत। कोनो एहन लेखक, जकरा हम कहियो नहि देखब, मुदा जे हमर हर नाम, हमर हर आँसू, हमर हर आशाकेँ, कागचपर उतारत।"

नन्द, स्तब्ध, पुछलक, "बूढ़बा, अहाँकेँ ई कोना बुझल? "

बूढ़बा, अन्तिम बेर मुस्कुराइत, बजलाह, "हमरा नहि बुझल, नन्द। हम केवल अनुभव करैत छी। आ आब, हमरा लगैत अछि, ओ लेखक बहुत निकट अछि — शायद एतबे निकट जे हम अहीं सँ, एहि क्षणमे, बात कऽ रहल छी।"

नन्द चुप रहलाह। ओहि राति पीपरक छाहरिमे बूढ़बाक स्वर जेना मंचक ओहि पारसँ आबि रहल छल — आ सचमुच, ओही क्षण, मंचक ओहि पार सूत्रधार अन्तिम बेर पर्दाक कातसँ बाहर अयलाह, आ पाठककेँ सोझाँ ठाढ़ भऽ, अन्तिम बेर बजलाह।

विदेह नाट्य उत्सव

(आधुनिक शोकान्तिका — पहिल प्रारूप)

गोप कुमारक संकलनक सभसँ नीचाँ ओ पातर पोथी छल — काजर-कारी जिल्द, बिनु नाम। ओकर पहिल पन्नापर लिखल छल — "विदेह नाट्य उत्सवक लेल: नाटकक पहिल प्रारूप।" मुदा ई नाटक स्वयं लिखल नहि गेल छल; ई अपने-आप लिखाइत छल। नन्द ओकरा खोललनि। बिज्जी दीयाक लग सरकल। आ पन्नापर, बिनु स्याही, पहिल दृश्य उभरय लागल — जेना कोनो अदृश्य मंच-निर्देशक परदाक पाछाँ ठाढ़ हो।

पात्र-परिचय

सूत्रधार (बूढ़बा) — गढ़ नारिकेलक कथा-वाचक; काल-स्वर।

मंच-निर्देशक — ऐ नाटककेँ मंचपर उतारय-चाहनिहार; बेर-बेर कथाकेँ सुखान्त बनबय चाहैत, मुदा डायरी नहि मानैत। आधुनिक, स्व-सचेत पात्र।

बिज्जी — गढ़ नारिकेलक पूज्य रक्षक (नेवला)। मूक — बजैत नहि, केवल पहरा दैत। ऐ बेर ओकर पहरा हारय-वला अछि।

बनबिलाड़ — मूल नाम ध्रुवेश, छद्म 'अशोक'; गली-स्तरक नव गोहि — मुदा केवल एक हाथियार, असली गोहि नहि।

रणंजय सिंह — भ्रष्ट, सर्वाधिक शक्तिशाली वरिष्ठ पुलिस-अधिकारी; 'समानान्तर दल'क प्रमुख। वर्दीक भीतरक असली गोहि। बनबिलाड़ ओकरे यन्त्र।

समानान्तर दल — रणंजयक भ्रष्ट पुलिस-गुट; वसूली-साम्राज्यक साझी।

अरुणेश मिश्र — ईमानदार अधिकारी; विशेष कार्यदल-प्रमुख।

अभयकान्त झा — अन्वेषक; नील-स्याहीमे सत्य लिखनिहार।

रत्नेश्वर कर्ण — पेशकार; पहिल बलिदानी।

सत्यवीर चौधरी — वरिष्ठ, ईमानदार अधिकारी।

आनन्दकुमार — बनबिलाड़क साथी → अलग → रणंजयक दलसँ हाथ मिलबैत।

सूर्यदेव राय — हथियार-दाता।

सुधांशु, अनुजकान्त — बनबिलाड़क साथी।

कोरस (नगरजन) — गढ़ नारिकेलक जनता; भय आ भ्रमक स्वर।

सूत्रपात

[मंच अर्ध-अन्हार। पाछाँ कमला-बलानक नील रेखा। एक कात पीपरक छाया, ओतय अन्हारमे बिज्जीक दुइ आँखि। बीच-मंचपर एक खाली कुर्सी आ एक जरैत दीया। मंच-निर्देशक हाथमे ओएह काजर-कारी डायरी लऽ प्रवेश करैत छथि।]

मंच-निर्देशक। *(दर्शक दिस)* विदेह नाट्य उत्सवक लेल एक नाटक चाही छल। हमरा ई डायरी भेटल। हम एकरा मंचपर देब — मुदा एकर अन्त हम सुखान्त करब।

[सूत्रधार पीपरक छाहरिसँ आगाँ अबैत छथि।]

सूत्रधार। अन्त अहाँक हाथमे नहि, निर्देशक। ई गढ़ नारिकेलक कथा थिक — आ गढ़ नारिकेलक ई राति भोर नहि देखत।

मंच-निर्देशक। हर कथामे एक नायक होइत अछि, एक गोहि होइत अछि, आ एक बिज्जी। बिज्जी जीतैत अछि। हम वैह देखाएब।

सूत्रधार। हँ, एक गोहि, एक बिज्जी। मुदा ऐ बेर पुछू — गोहि कतय बसैत अछि? पानिमे, आ की वर्दीमे? आ जँ गोहि वर्दी पहिरि, बिज्जीक अपन घरक पहरुआ बनि जाए — तखन बिज्जी ककरा काटत?

[मंच-निर्देशक चुप। बिज्जी अन्हारमे उठि, फेर बैसि जाइत अछि — असहज पहरा। दीया काँपैत अछि।]

सूत्रधार। *(दर्शक दिस)* देखू। पहिल पहर शुरू होइत अछि।

पहिल पहर

[नगरक अन्हार गली। बनबिलाड़ हथियार सम्हारैत। मुदा ओकर पाछाँ, अन्हारसँ, वर्दीक एक ऊँच छाया — रणंजय सिंह — निकलैत अछि।]

बनबिलाड़। *(गर्वसँ)* इलाका हमर। नाम हमर — अशोक।

रणंजय। नाम तोहर, इलाका हमर। तूँ गोली चलाबे; बाट हम बनाबी। पकड़ल गेले तँ छोड़ाएब हम; बेसी बाजले तँ मारब सेहो हम।

बनबिलाड़। *(क्षण भरि रुकि)* अपराधी हम, आ रक्षक अहाँ — दुनू एक्के थैलीक?

रणंजय। रक्षक आ भक्षकमे केवल वर्दीक अन्तर छै। आ वर्दी हमरा लग अछि।

[रणंजय अन्हारमे विलीन। बनबिलाड़ अकेल ठाढ़।]

सूत्रधार। देखलहुँ, निर्देशक? गली-स्तरक गोहिकेँ लोक चिन्है छै। मुदा असली गोहि ओ थिक, जे बिज्जीक अपन घरक — पहराक — पोशाक पहिरने अछि। बनबिलाड़ त केवल दाँत छल; जबड़ा रणंजय छल।

मंच-निर्देशक। *(डायरी दिस, विचलित)* ई हम नहि लिखने रही...

सूत्रधार। अहाँ नहि — डायरी लिखलक। आब बैसू आ देखू।

दोसर पहर

[विशेष कार्यदलक कोठरी। अरुणेश, अभयकान्त, रत्नेश्वर, सत्यवीर। नक्शा, नील-स्याहीक डायरी।]

अरुणेश। बनबिलाड़केँ पकड़ब हमर काज। जाल बुझब — व्यक्ति मात्र नहि, ओकर सूचना, धन, आश्रय।

अभयकान्त। *(धीरे)* मुदा हर बेर हमर छापाक खबर ओकरा पहिनहि भेटि जाइत अछि। भेदिया बाहर नहि — भीतर अछि।

[राजपथ बजार। रत्नेश्वर तीन भगैत युवकक पाछाँ दौड़ैत छथि। तारमे पएर फँसैत अछि। ओ कार्यालयमे 'सहायता' लेल तार पठबैत छथि — मुदा उत्तर नहि अबैत। पाससँ गोली। मंच अन्हार। एक बुझायल दीया।]

[अभयकान्त रत्नेश्वरक देह लग घुटनाक बल बैसैत छथि। हाथमे रेडियो-सन्देशक पर्ची।]

अभयकान्त। *(टूटल स्वरमे)* सहायता-दलकेँ आदेश गेल छल। ओ दस मिनट रुकल — किनकर आदेशपर?

सत्यवीर। रणंजयक दल ओहि राति 'मार्ग बदलल' कहलक।

[बिज्जी रत्नेश्वरक देहक कात आबि, पहराक मुद्रामे बैसैत अछि — मुदा एहि बेर ओकर पहरा देरीसँ आयल।]

सूत्रधार। बिज्जी जान बचबै छै — मुदा जँ ओकर अपन बिलक भीतरसँ केओ साँपकेँ बाट देखाबय, तखन बिज्जीक झपट्टा देरीसँ पहुँचैत अछि। रत्नेश्वर पहिल बिज्जी छल — आ ओकरा अपन घरहिक भीतरसँ मारल गेल।

तेसर पहर

*[*दू फाटल आँगन एक संग देखाइत अछि — एक कात गुण्डाक*,* एक कात पुलिसक। आनन्दकुमार बनबिलाड़सँ अलग*;* अभयकान्त रणंजयक दलसँ अलग। बीचमे रणंजय ठाढ़*,* दुनू दरारकेँ नापैत। *]*

आनन्दकुमार। *(*क्रोधमे*)* बनबिलाड़ हमर घर धरि पहुँचि गेल। आब ओकर दुकान हम बन्द करब।

रणंजय। *(*आनन्दकेँ लग बजा*)* बन्द नहि — हमरा लेल बन्द कराबे। बनबिलाड़ आब बेसी देखाइ पड़य लागल; बेसी देखाइवला हथियार फेकि देल जाइत अछi।

आनन्दकुमार। आ हमरा की भेटत?

रणंजय। हमर वर्दीक छाया। जे बनबिलाड़केँ छल, से आब तोरा।

*[*दोसर कात*,* अभयकान्त अरुणेशसँ। *]*

अभयकान्त। सर, दरार गुण्डामे नहि — हमरहि दलमे अछि। रणंजयक समानान्तर दल आब आनन्दसँ हाथ मिला रहल अछि। गुण्डाक टूटल टुकड़ी आ पुलिसक टूटल टुकड़ी — एक भऽ गेल।

अरुणेश। *(*स्तब्ध*)* तखन हम ककरा पकड़ी — अपराधीकेँ, कि अपन वर्दीकेँ?

सूत्रधार। इएह ओ दरार थिक, निर्देशक, जकर पछाति भोर नहि होइत। जखन गुण्डाक टूटल गुट आ रक्षकक टूटल गुट हाथ मिला लै — तखन बिज्जी अकेल पड़ि जाइ छै। ओकर सोझाँ आब एक साँप नहि, साँपक पोशाक पहिरने ओकरे अपन खानदान ठाढ़ अछि।

चारिम पहर

[वसूली-साम्राज्यक दृश्य। एक व्यापारी दू थैली गनैत अछि — एक बनबिलाड़ लेल, एक ‘ऊपर’ लेल। रणंजयक दलक एक आदमी दोसर थैली उठा लैत अछि।]

व्यापारी। *(काँपैत)* एक हिस्सा अपराधीकेँ, एक हिस्सा वर्दीकेँ। फेर हमरा बचाबय के आओत?

कोरस। जकर नाम हम नहि लऽ सकैत छी — ओ दू अछि। एक गलीमे, एक थानामे। दुनू एक्के थैली बाँटैत।

[अभयकान्त नील-स्याहीमे लिखैत छथि; एहि बेर ओ बनबिलाड़क नहि, रणंजयक नाम लिखैत छथि।]

अभयकान्त। *(आत्मगत)* आइ हम पहिल बेर असली गोहिक नाम लिखलहुँ। ई कागच जँ बाहर गेल, त हम मारल जाएब — ई हम जनैत छी।

[पाछाँसँ रणंजयक छाया ओहि कागचपर पड़ैत अछि। बिज्जी उठैत अछि, मुदा रणंजय आ बिज्जीक बीच वर्दीक एक ऊँच देवाल आबि जाइत अछि।]

सूत्रधार। बिज्जी गन्ध चिन्ह लेलक — मुदा गन्ध ओकर अपन घरसँ आबि रहल छल। बिज्जी अपन खानदानकेँ कोना काटय? इएह त गोहिक सभसँ पैघ चाल छल — बिज्जीक अपन घरमे बिल बनाएब।

पाँचम पहर

[सुनसान उपनगर। बनबिलाड़ अकेल, बुझल जाल-मे। सामने आनन्दक गाड़ी, आ संग रणंजयक समानान्तर दल — वर्दीमे।]

बनबिलाड़। *(आनन्द दिस, फेर वर्दी दिस)* तूँ? आ पुलिस तोहर संग?

आनन्दकुमार। हम त केवल टूटल टुकड़ी छी, बनबिलाड़। जे टुकड़ी हमरा जोड़लक, ओ वर्दी पहिरने अछि।

रणंजय। *(शान्त)* तूँ बेसी देखाइ पड़ऽ लगले, अशोक। हथियार जखन मालिककेँ देखाइ पड़य लागय, तखन फेकि देल जाइत अछि।

[गोली। बनबिलाड़ खसैत अछि। ओकर आँखिमे अन्तिम बुझब — ओ कहियो मालिक नहि, सदिखन औजार छल।]

[अगिला भोर — मंचपर अखबारक पैघ शीर्षक: 'विशेष कार्यदलक सफलता — कुख्यात अपराधी ढेर।' मुदा मंचपर श्रेय रणंजय लैत छथि, अरुणेश कातमे ठाढ़।]

सूत्रधार। एक गोहि मारल गेल — मुदा दोसर, पैघ गोहि द्वारा, जे रक्षकक कोट पहिरने छल। आ नगर ताली बजौलक। इएह शोकान्तिकाक सभसँ अन्हार क्षण थिक — जखन जनता अपन विनाशकेँ विजय बुझि उत्सव मनाबय लगैत अछि।

छठम पहर

[रणंजयक कार्यालय। सामने अभयकान्तक नील-स्याहीक कागच। रणंजय ओकरा उठबैत छथि।]

रणंजय। अहाँ बनबिलाड़केँ लिखलहुँ — ठीक छल। मुदा अहाँ हमरो नाम लिखलहुँ। ई भूल छल।

अभयकान्त। *(शान्त, निर्भय)* सत्य कोनो भूल नहि होइत, सर।

रणंजय। सत्यकेँ कागच चाही, कागचकेँ आदमी। दुनू मेटाओल जा सकैत अछि।

[मंच अन्हार। दूर एक गोली। जखन उजास घुरैत अछि — अभयकान्तक खाली कुर्सी, आ मेजपर ओ नील-स्याहीक डायरी, आधा जरल।]

[अरुणेश आ सत्यवीर प्रवेश करैत छथि — निःशब्द। सत्यवीरक हाथमे स्थानान्तरणक आदेश; अरुणेशक कार्यदल भंग।]

अरुणेश। *(टूटल)* जकरा हम पकड़य आयल रही, ओ आब हमर पदक बाँटि रहल अछि। आ जे हमरा संग सत्य लिखैत छल, ओ आब स्मृति अछि।

[बिज्जी मंचक बीचमे अबैत अछि — मुदा जकरा काटय चाहैत, ओ ओकरे अपन घरक भीतर, वर्दीमे, बैसल अछि। बिज्जी ठमकि जाइत अछि। पहिल बेर — बिज्जी झपटैत नहि।]

सूत्रधार। इएह त्रासदी थिक, निर्देशक। बिज्जी ओहि साँपकेँ नहि काटि सकैत, जे ओकरे खानदानक देह ओढ़ने अछि। रत्नेश्वर गेल, अभयकान्त गेल, कार्यदल भंग। ईमानदार पहरुआ एक-एक कऽ खसल — आ हरेक खसब ऐ राति भोरकेँ आओर दूर ठेलि देलक।

अन्तिम पहर

*[*मंचपर उत्सवक झिलमिल — नगर 'अपराध-मुक्ति'क जश्न मनाबैत। मंच-पाछाँ रणंजय, पदक लटकौने, ऊँच मंचपर। कातमे, अन्हारमे, बिज्जी आ बुझैत दीया।*]*

नन्द। गोप बाबू, एक गोहि मरल। आब पानि साफ भऽ गेल?

गोप कुमार। नहि, नन्द। सभसँ गहिर गोहि आब पदक पहिरने अछि। जे रक्षक छल, वैह भक्षक निकलल। ई विजय नहि — ई सभसँ चुप्पी-भरल हार थिक।

*[*मंच-निर्देशक डायरी लऽ आगाँ अबैत छथि, हताश।*]*

मंच-निर्देशक। हम एकरा सुखान्त बनाबय चाहैत रही। मुदा हर पन्ना जे हम बदलय चाहलहुँ, ओ फेर अपने-आप ट्रेजेडी लिखि लेलक। ई नाटक हमरा नहि मानैत।

सूत्रधार। किएक तँ ई सत्य थिक, आ सत्य सुखान्त नहि होइत — ओ केवल आगाँ बढ़ैत अछि। मुदा सुनू, निर्देशक — त्रासदीक अन्तमे एक बात बचैत अछि।

*[*बिज्जी धीरे उठैत अछि। ओ रणंजयकेँ नहि काटि सकल — मुदा ओ पछाति नहि हटैत। ओ दीयामे तेल जोड़ैत अछi।*]*

सूत्रधार। *(*दर्शक दिस*)* बिज्जी ऐ राति हारल। ऐ पीढ़ीक बिज्जी हारल। मुदा बिज्जी अमर नहि — ओ हर पीढ़ीमे नव जन्म लैत अछि। आइ जे साँप वर्दीमे बचल, ओकर सिरमा दिस कोनो अगिला पीढ़ीक बिज्जी बढ़त। ई राति भोर नहि देखलक — मुदा दीया बुझल नहि।

*[*नगरक उत्सव-प्रकाश एक-एक कऽ बुझैत अछि। अन्तमे मंचपर केवल ओ एक दीया, आ बिज्जीक दुइ जागल आँखि। रणंजयक छाया ऊँच, मुदा दीयाक ओहि पार अन्हारमे। भोर नहि आयल।*]*

मंच-निर्देशक। *(*धीरे, अनिश्चित*)* पर्दा...?

सूत्रधार। पर्दा खसाउ। मुदा जानि राखू — कोनो साँची त्रासदी पूरा नहि होइत। ओ केवल अपन पहरा अगिला रातिकेँ सौंपि दैत अछि।

*[*पर्दा आधा खसैत अछि — फेर ठमकि जाइत अछि, जेना पूरा बन्द होमय नहि चाहैत। दीया जरैत रहैत अछि।*]*

॥ विदेह नाट्य उत्सव — शोकान्तिका — पहिल प्रारूप समाप्त ॥

(आ कथा एतय हाथ बदलैत अछि — सूत्रधार पाठकसँ सीधा बजैत छथि।)

सूत्रधार, अन्तिम बेर, मंचपर आबि, पाठकसँ सीधा बजैत अछि — "हम अहाँकेँ शंख आ रजतक कथासँ शुरू केने रही। हम वाचस्पति मिश्र, उदयनाचार्य, आ गंगेश उपाध्यायक कथा कहलहुँ। हम हुलासा, जीवन्ती, सुखदेव, रत्ना, गंगेश, मालती, गौरी, सावित्री — सैकड़ों नामक कथा कहलहुँ। हम बूढ़बाक जन्म, हुनकर बारह सय बरखक यात्रा, आ अन्ततः, नन्दक हाथमे हुनकर कथाक हस्तांतरण देखौलहुँ।"

"आब," सूत्रधार बजैत अछि, "गढ़ नारिकेल गाम, अपन जोड़ी पोखरि, अपन साक्षी–गाछ, अपन चन्ना गाछी, आ अपन बूढ़बाक संग, अहाँक सोझाँ ठाढ़ अछि — ओ गाम जकरा अहाँ आब सँ आगू, नन्द आरुणिक आँखिसँ, हुनकर 'छपाकक हिसाब' डायरीसँ, आ हुनकर सम्पूर्ण पीढ़ीक संघर्षसँ, नव सिरेसँ जनब।"

(सूत्रधार धीरे–धीरे मंचसँ हटैत अछि, आ अन्तिम बेर बजैत अछि — "गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि। ई कथा, नाम सभक कथा, आब अहाँक हाथमे अछि। सम्भार।")

शंख आ रजत — उत्तरार्ध

[तर्क, संकुचित आ पुनः –स्वरित रूपमे, वाचस्पति मिश्रक भामतीक चतुःसूत्री –भागक मुख्य आंदोलनक अनुसरण करैत अछि — प्रथम सूत्रमे "अथ" शब्दक चारि अर्थक परीक्षा, कर्म–ज्ञानक अनिवार्य क्रमक खंडन (उत्पत्ति–विकार–संस्कार–प्राप्ति ई चारि गतिसँ मोक्षक बहिर्भाव , गरदनिक हारक दृष्टांत, जाबाल–श्रुति), साधन–चतुष्टय (माछ–काँट आदि पूर्वपक्षीय दृष्टांत –शृंखला आ

मधु–विष–मिश्रित अन्नक उत्तर, सोम–श्रुतिक गौणार्थ, बाछाक उपमा), आ "ब्रह्मणः" समासमे चतुर्थी–पक्षक खंडन; द्वितीय सूत्रमे तटस्थ–लक्षण (सूर्य–गतिक उपमा), यास्कक छह भाव–विकारक त्रयमे अंतर्भाव, जगत्–वैचित्र्यक वर्णन (कृष्णसार, कोयल, बगुलीक गर्भ), सूत्रक अनुमान–रूपताक निषेध आ "माला–धागा" सिद्धांत, श्रुत्यनुगृहीत तर्क (गान्धार–श्रुति), आ वस्तुतंत्र–पुरुषतंत्र भेदक स्थापना; तृतीय सूत्रमे दुनू व्याख्या (ब्रह्म शास्त्रक कारण — पाणिनिक दृष्टांत, इक्षु–क्षीर–गुड़–रसक अनिर्वचनीयता; शास्त्र ब्रह्मक प्रमाण), आनुपूर्वीक अनित्यता, नृत्य–गुरु–शिष्यक उपमा, जैमिनि–व्यास–पक्षक समन्वय, आ "अपौरुषेय" क उभय–सम्मत अर्थ; तथा चतुर्थ सूत्रमे मीमांसक क्रियार्थत्व–पक्षक पूर्ण–बल स्थापना (प्रतिपत्ति–विधि, अर्थवाद, यूप–आहवनीयक दृष्टांत, "तत्त्वमसि" सुनलाक बादो भय–शोकक अनुभव–आपत्ति), समन्वयसँ सिद्धांत (उपक्रम–उपसंहारक ऐक्य), सिद्ध–वस्तु–कथनक सफलताक द्रविड़–देवदत्त–दृष्टांत, "आत्मा द्रष्टव्यः" क पाथरपर छुरीक उपमा, ज्ञानक वस्तुतंत्रता, मोक्षक चारू कृतक–गतिक निषेध (नाह–यात्रीक उपमा, अड़हुल–स्फटिक, दर्पण–मणि, नायिका–सखी), श्रवण–मनन–निदिध्यासन आ षड्जादिक अभ्यास–दृष्टांत, जीवन्मुक्ति (साँपक केंचुल), आ "अहं ब्रह्मास्मि" मे सर्व–प्रमाण–विश्रांति।]

चारि सूत्र

वाचस्पति मिश्रक भामतीक चतुःसूत्री–भाग — अथातो ब्रह्मजिज्ञासा सँ तत्तु समन्वयात् धरि — क एकटा मौलिक नाट्य–रूपांतरण

एकटा दार्शनिक वाद–नाटक, शास्त्रीय संस्कृत वादक शैलीमे, एकटा प्रस्तावना, चारि अंक, आ एकटा उपसंहारमे — "शंख आ रजत" क अगिला साँझ

पात्र–परिचय

सूत्रधार — मंच–संचालक

वाचस्पति मिश्र — टीकाकार, वादक यजमान, सिद्धांती

मीमांसक कर्मकांडी — जैमिनीय परम्पराक दृढ़ विद्वान, जे मानैत छथि जे वेदक एकमात्र प्रयोजन कर्मक विधान थिक — एहि साँझक मुख्य पूर्वपक्षी

आक्षेपक (शंकी) —— पछिला साँझक ओएह संशय–स्वर, सभाक ओर सँ पुछनिहार

एकटा युवा संन्यासी — जे आश्रम–क्रमक प्रश्न लऽ कऽ आयल अछि

शिष्य — वाचस्पतिक शिष्य

परिषद् — सभाक कानाफूसी

स्थान: ओएह वाद–शाला, अगिला साँझ। द्वार लगक डोरी आ शंख अखनहु ओतहि पड़ल अछि, जेना काल्हि छोड़ल गेल छल। मुदा आइ मेजपर एकटा नव वस्तु राखल अछि: ताड़पत्रक एकटा पोथी, खुजल, जकर पहिल पन्नापर चारि छोट सूत्र लिखल अछि।

प्रस्तावना

(सूत्रधार प्रवेश करैत अछि, पोथी दिस इशारा करैत।)

सूत्रधार: काल्हि राति एहि सभामे शंख आ चानीक कथा भेल — भ्रम की थिक, आ ओकर उत्तर संसारक विषयमे की कहैत अछि। मुदा काल्हिक वाद एकटा वचनपर समाप्त भेल छल जे अखन धरि निभाओल नहि गेल: जँ सम्पूर्ण दृश्य जगत् आत्मापर अध्यस्त थिक, शंखपर चानी जकाँ, तँ ओहि आत्माक — ओहि ब्रह्मक — ज्ञान कतयसँ आओत? आँखि ओकरा नहि देखैत अछि, अनुमान ओकरा नहि नापैत अछि। बचल केवल एकटा द्वार: शब्द — वेद।

आ ठीक ओहि द्वारपर आइ रातिक विरोधी ठाढ़ छथि। जैमिनिक शिष्य, जे कहताह: वेद हमर अछि, आ वेदक एकमात्र काज कर्मक आज्ञा देब थिक — "यज्ञ करू," "होम करू" —– आ जे वाक्य कोनो कर्मक आज्ञा नहि दैत अछि, से या तँ व्यर्थ अछि, या कोनो आज्ञाक सेवक। "तत्त्वमसि" —– तों वैह छँ — एहिमे कोन आज्ञा? तँए, ओ कहताह, वेदान्त या तँ मौन रहए, या कर्मकांडक दासी बनए।

मेजपर राखल ओ पोथीमे बादरायणक चारि सूत्र लिखल अछि — चारि छोट वाक्य, जकरापर वाचस्पति मिश्र अपन भामतीक सबसँ पैघ भाग रचलनि। आइ राति ओ चारू सूत्र चारि सीढ़ी बनत, आ सबसँ ऊपरका सीढ़ीपर ओ वाद होएत जकरा शास्त्र समन्वय कहैत अछि: वेदक प्रयोजन कर्म थिक वा ज्ञान।

(प्रस्थान)

अंक प्रथम

गरदनिक हार

प्रथम सूत्र: अथातो ब्रह्मजिज्ञासा — तखन, तेँ, ब्रह्मक जिज्ञासा

(वाचस्पति आसीन छथि। एकटा युवा संन्यासी प्रवेश करैत अछि, प्रणाम करैत।)

युवा संन्यासी: आचार्य, हम एकटा प्रश्न लऽ कऽ आयल छी जे हमर गुरुकुलमे आगि जकाँ पसरल अछि। सूत्रक पहिल शब्द "अथ" थिक — "तखन।" हमर कर्मकांडी सहपाठी कहैत छथि: "तखन" माने "धर्म–जिज्ञासाक *बाद*" — पहिने पूरा मीमांसा पढ़ू, सभ यज्ञ सीखू, तखन कतहु जाकऽ ब्रह्मक विचारक अधिकार भेटत। हम पुछैत छी: की ई सत्य थिक? की ब्रह्म–जिज्ञासाक द्वारपर कर्मकांडक पहरा अछि?

वाचस्पति: *(मुस्कुराइत)* एकटा प्रश्न जे हरेक पीढ़ीमे नव आगि जकाँ पसरैत अछि, आ हरेक पीढ़ीमे एकहि जलसँ मिझाओल जाइत अछि। पहिने "अथ" क चारू संभव अर्थ गनू, जेना शास्त्रीय विधि थिक: आनन्तर्य — "एकर तुरत बाद"; अधिकार — "आब आरंभ होइत अछि," जेना "अथ शब्दानुशासनम्," "अथ योगानुशासनम्"; मंगल — शुभ ध्वनि, जेना शंख वा नगाड़ाक; आ अपेक्षित–पूर्वता — "जे पहिने चाही, तकरा बाद।" मंगल–पक्ष सरल अछि: "ओम् आ अथ — ई दुनू शब्द ब्रह्माक कंठसँ पहिने निकलल" — ई स्मृति ध्वनि–मात्रक मंगलतासँ सधि जाइत अछि, जेना कोनो आर काजें आनल जल–भरल घैलक दर्शन शुभ मानल जाइत अछि, यद्यपि ओ ओहि हेतु आनल नहि गेल। असली प्रश्न थिक: की "अथ" कर्म–मीमांसाक *आनन्तर्य* कहैत अछि?

मीमांसक कर्मकांडी: *(उठैत, दृढ़)* कहैत अछि, आ कहबाके चाही। सुनू हमर पक्ष पूरा बलसँ, किएक तँ काल्हि राति अहाँ हमर सहधर्मीकेँ पूरा बाजय देने रहियनि, आ हम ओहि शिष्टाचारक अधिकारी छी। वेद–अध्ययन समाप्त कएने विद्यार्थीक सोझाँ दुइ मार्ग: धर्म–विचार आ ब्रह्म–विचार। धर्म–विचार पहिने, किएक तँ कर्म फल दैत अछि — स्वर्ग, संतति, समृद्धि — आ फलक हेतु प्रवृत्ति स्वाभाविक। आ ब्रह्म–ज्ञान सेहो, जँ भेटत, तँ कर्मक शुद्धिसँ — चित्त निर्मल भेने। तँए क्रम बान्हल अछि: पहिने कर्म, तखन ज्ञान, जेना पहिने खेत जोतल जाइत अछि, तखन बीज।

वाचस्पति: खेतक उपमा हमरा प्रिय अछि, तेँ ओकरे सँ उत्तर देब — मुदा पहिने एकटा भेद, जकरापर ई सम्पूर्ण अंक टिकत। धर्म आ ब्रह्ममे की अंतर? धर्म *साध्य* थिक — कएल जाएवाला, भविष्यक वस्तु; यज्ञ आइ, स्वर्ग काल्हि। ब्रह्म *सिद्ध* थिक — पहिनहि सँ, सदासँ, प्राप्त। आ इएह भेद सम्पूर्ण क्रम–वादकेँ काटि दैत अछि। जे वस्तु कएल जाइत अछि, ओकर चारि गति: उत्पत्ति, जेना आटासँ रोटी; विकार, जेना धानसँ चाउर; संस्कार, जेना ओखरिपर जल छिड़कब; प्राप्ति, जेना गाय दूहब। मोक्ष — ब्रह्म–भाव — एहि चारूमेसँ किछु नहि। ओ उत्पन्न नहि होइत, बदलल नहि जाइत, माँजल नहि जाइत, आ प्राप्तो नहि कएल जाइत — किएक तँ ओ *पहिनहि सँ प्राप्त* अछि। जेना अपन गरदनिमे पड़ल हार, जकरा बिसरिकऽ लोक घर भरि ताकैत अछि। हार भेटलापर की "प्राप्त" भेल? किछु नहि — केवल बिसरब गेल। तँए ब्रह्म–ज्ञान कोनो कर्मक फल नहि थिक, आ जे फल नहि थिक, तकर हेतु कर्मक कतार अनिवार्य नहि।

मीमांसक कर्मकांडी: तखन कर्मक कोनो स्थाने नहि? हमर सम्पूर्ण शास्त्र व्यर्थ?

वाचस्पति: ठीक विपरीत — स्थान अछि, मुदा सिंहासन नहि, सीढ़ी। सुनू क्रम: नित्य–कर्मसँ पाप–क्षय, पाप–क्षयसँ चित्त–शुद्धि, चित्त–शुद्धिसँ वैराग्य, वैराग्यसँ जिज्ञासा। कर्म *आरादुपकारक* थिक — दूरसँ सहायक, जेना नर्तकीक नाचसँ पहिने पर्दा हटाओल जाइत अछि। पर्दा हटएनिहार नाच नहि करैत अछि, मुदा नाच ओकरे बिनु नहि देखाइत अछि। आ जँ केओ कहए जे क्रम *अनिवार्य* अछि — जे संन्यास केवल गृहस्थक बाद — तँ जाबाल–श्रुति ठाढ़ अछि: "यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेत्" –– जाहि दिन वैराग्य उपजए, ओहि दिन निकलि जाउ। ब्रह्मचर्येसँ सोझे संन्यास — श्रुति स्वयं द्वार खोलने अछि। *(युवा संन्यासी दिस)* अहाँक सहपाठीकेँ कहबनि: द्वारपर पहरा नहि अछि, केवल एकटा दहलीज अछि, आ ओकर नाम अछि "अतः" –– "तेँ।"

युवा संन्यासी: "अतः" –– सूत्रक दोसर शब्द। ओकर अर्थ?

वाचस्पति: चारि साधन, जे बिनु जिज्ञासा जिज्ञासे नहि: नित्य–अनित्यक विवेक; इहलोक–परलोकक भोगसँ विराग; शम–दमादि संपत्ति; आ मुमुक्षा। आ एतय पूर्वपक्ष एकटा रसगर आपत्ति अनैत अछि, जे हम पूरा स्वादसँ सुनाएब: "वैराग्य किएक? माछमे काँट अछि, तँ की लोक माछ छोड़ि दैत अछि? काँट बीछिकऽ मासु खाइत अछि! धानमे भूसी अछि, किसान धान नहि फेकैत अछि! भिखारीक डरे केओ भानस बन्न नहि करैत अछि! तहिना संसारमे दुःख मिलल अछि तँ की — दुःख छोड़ू, सुख भोगू!"

शिष्य: *(हँसैत)* आ एकर उत्तर?

वाचस्पति: उत्तर एकहि वाक्यमे: माछक काँट *अलग* अछि, तेँ बीछल जाइत अछि। मुदा जाहि भोजनमे विष *मधुमे घोरिकऽ* मिलाओल गेल हो,

ओहिमे सँ संसारक सबसँ निपुण रसोइयो केवल मधु नहि खा सकैत अछि। संसारक सुख ओहने थिक — दुःख ओहिमे घोरल अछि, बीछल नहि जाइत। आ "सोम पीलहुँ, अमर भेलहुँ" जकाँ श्रुति? पुराण स्वयं ताला खोलैत अछि: "आ–प्रलय–स्थायित्वकेँ अमरता कहल जाइत अछि" —— गौण अमरता, प्रलय धरिक, सच्चा नहि। शम–दमक फल? जेना शांत आ सधाओल बाछा हरमे जोतय जोग होइत अछि — चंचल मन कोनो जुआ नहि उठा सकैत अछि।

आक्षेपक: एकटा अंतिम गिरह, वाचस्पति, आ ई शब्दक गिरह थिक। "ब्रह्मजिज्ञासा" —— एहि समासमे "ब्रह्मणः" कोन विभक्ति? किछु प्राचीन व्याख्याकार कहैत छथि चतुर्थी — "ब्रह्मक *हेतु* जिज्ञासा।" तखन ब्रह्म जिज्ञासाक *विषय* नहि, *प्रयोजन* भेल, आ अहाँक सम्पूर्ण "विचारक विषय ब्रह्म थिक" ई भवन खसि पड़त।

वाचस्पति: आ इएह ओ स्थान थिक जतय हम अपनासँ पहिलुक टीकाकारसँ खुलिकऽ असहमत छी — शास्त्रमे ईमानदारी एहीमे थिक जे मतभेद नुकाओल नहि जाए। समास षष्ठी–तत्पुरुष थिक — "ब्रह्मक जिज्ञासा," कर्मणि षष्ठी, ब्रह्म विषय। किएक? किएक तँ जिज्ञासा एकटा *सकर्मक* भूख थिक। सूर्य वा चन्द्र देखिकऽ केओ नहि पुछैत अछि "ई केकर? " —— मुदा "ज्ञान" शब्द सुनिते प्रश्न अपने उठैत अछि: "केकर ज्ञान? कथीक? " ज्ञान बिनु विषयक अधूरा वाक्य थिक। आ शेष जे किछु ब्रह्मसँ जुड़ल — साधन, फल, प्रकार — से अपने घिचा कऽ आबि जाइत अछि, जेना "राजा जाइत छथि" सुनिते परिकर–सहित राजाक बुझाइत अछि — मंत्री, छत्र, सेना केओ अलगसँ नहि कहैत अछि।

युवा संन्यासी: *(प्रणाम करैत)* हम अपन गुरुकुल जाकऽ कहबनि: द्वार खुजल अछि, आ चाभीक नाम वैराग्य थिक, वेतन नहि।

अंक द्वितीय

माला आ धागा

द्वितीय सूत्र: जन्माद्यस्य यतः — जकरासँ एहि जगत्क जन्मादि

आक्षेपक: नीक, आचार्य — जिज्ञासाक अधिकार सिद्ध। मुदा जिज्ञासा *केकर?* ब्रह्मक। आ ब्रह्म की? एतय हम अहाँकेँ काल्हिक ओहि शंखपर वापस घीचब। जतेक वस्तु हम जनैत छी — घैल, गाछ, देह — सभ सीमित, जड़, नश्वर। ब्रह्मकेँ अहाँ एहि सभक विपरीत कहैत छी — अनंत, चेतन, नित्य। तखन ओकर *लक्षण* की देब? ओकर अपन कोनो गुण हमरा परिचित नहि, आ परिचित कोनो गुण ओहिमे नहि। बिनु लक्षणक विचार — से अन्हारमे कारी बिलाड़ि तकनाइ।

वाचस्पति: आ बादरायणक दोसर सूत्र ठीक एहि अन्हारमे दीप थिक: "जन्माद्यस्य यतः" — जकरासँ एहि जगत्क जन्म, स्थिति, आ भंग। ध्यान दिअ — लक्षण ब्रह्मक *अपन* गुणसँ नहि देल गेल; ओ देल गेल *जगत्क द्वारे*, तटस्थ लक्षणसँ। जेना सूर्यक गति सोझे नहि देखाइत अछि, मुदा भोरमे पूब आ साँझमे पछिम — ठाम–ठाम ओकर पहुँचब — ओकर गतिक चिह्न बनि जाइत अछि। तहिना जगत् — जे ब्रह्मसँ उपजल — ब्रह्मक चिह्न थिक, यद्यपि ब्रह्म स्वयं आँखिसँ ओझल।

मीमांसक कर्मकांडी: "जन्मादि" — जन्म *आदि*। की–की गनब एहि "आदि" मे? यास्कक निरुक्त छह विकार गनबैत अछि: जन्म, अस्तित्व, वृद्धि, परिणाम, अपक्षय, नाश। सूत्रकार तीनेटा किएक लेलनि?

वाचस्पति: किएक तँ छहो तीनमे समा जाइत अछि, आ शास्त्र फिजूलखर्ची नहि करैत अछि। वृद्धि जन्ममे — कपड़ा दू सूतसँ पैघ भेल माने दू सूतक *नव जन्म*; परिणाम सेहो जन्ममे — सोना कंगन बनल, नव अवस्थाक उदय; अपक्षय नाशमे। बचल तीन: उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय — आ इएह तीन श्रुतिमे कहल अछि, तेँ इएह तीन अभीष्ट।

आक्षेपक: मानि लेलहुँ लक्षण। मुदा आब असली प्रश्न: ई सूत्र *की* थिक? की ई एकटा अनुमान थिक — "जगत्क कर्ता अछि, कार्य होएबाक कारणे, घैल जकाँ"? जँ हँ, तँ काल्हुका बौद्ध फेर बजाउ — ओ एहि अनुमानसँ लड़ि लेताह, आ अहाँक ब्रह्म तर्कक तराजूपर लटकल रहत, जतय उदयन आ गंगेशक ईश्वर लटकल अछि।

वाचस्पति: *(पोथी उठबैत, स्नेहसँ)* आ इएह एहि अंकक हृदय थिक, तेँ धीरेसँ सुनू। नहि — ई सूत्र स्वतंत्र अनुमान *नहि* थिक। जगत्क रचना देखिकऽ — नाम–रूपसँ बाँटल, अनगिनत कर्ता–भोक्तासँ भरल, देश–काल–निमित्तसँ एहन सधल जे मनसँ कल्पनो कठिन: कारी हरिन केवल कोनो–कोनो देशमे, कोयलक कूक केवल कोनो–कोनो ऋतुमे, बगुलीक गर्भ वर्षाक पहिल गर्जनसँ — ई सभ देखिकऽ बुद्धिमान कारणक *अटकल* अवश्य लगैत अछि, जेना कुम्हार बिनु घैल नहि। मुदा वेदान्तमे ओ अटकल *प्रमाण* नहि, *सहायक* थिक। सूत्रक असली काज दोसर अछि: "सूत्रक प्रयोजन थिक वेदान्त–वाक्यसभकेँ माला जकाँ धागामे गूथब।" फूल श्रुतिक थिक — "यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते... तद् ब्रह्म" — भृगु–वरुण संवाद, तैत्तिरीय। सूत्र केवल धागा थिक। ब्रह्म शब्दैक–गम्य थिक, तर्कक तराजूपर ओ कहियो चढ़बे नहि कएल।

मीमांसक कर्मकांडी: तखन तर्कक कोनो स्थाने नहि अहाँक घरमे?

वाचस्पति: स्थान अछि — श्रुतिक *अनुगामी* तर्कक, स्वतंत्रक नहि। श्रुति स्वयं कहैत अछि: पंडित, बुद्धिमान पुरुष गान्धार देश *पहुँचैत* अछि — मुदा तखने, जखन पहिने केओ ओकरा रस्ता कहि दैत छैक। कहनिहार श्रुति, चलनिहार तर्क। आ एतय एकटा भेद राखि लिअ, जकरापर चारिम अंकक सम्पूर्ण युद्ध लड़ल जाएत: धर्म–जिज्ञासा आ ब्रह्म–जिज्ञासाक प्रमाणमे एकटा जड़िक अंतर अछि। धर्ममे विकल्प चलैत अछि — अतिरात्रमे षोडशी–पात्र उठाउ वा नहि उठाउ, सूर्योदयसँ पहिने होम करू वा बाद — दुनू विधि, दुनू मान्य, किएक तँ कर्म *पुरुष–तंत्र* थिक, कएनिहारक अधीन। मुदा वस्तु? "घैल अछि आकि नहि अछि" —– एहिमे विकल्प नहि चलैत अछि। वस्तु *वस्तु–तंत्र* थिक — ओ जेहन अछि तेहने अछि, हमर इच्छासँ ओ एम्हर–ओम्हर नहि होइत। आ ब्रह्म–ज्ञान वस्तु–ज्ञान थिक, विधि नहि। ई वाक्य मोन राखू — चारिम अंकमे ई तरुआरि बनत।

अंक तृतीय

नर्तकक देह

तृतीय सूत्र: शास्त्रयोनित्वात् — शास्त्रक योनि होएबाक कारणे

आक्षेपक: तेसर सूत्र छोट अछि, आचार्य, मुदा दू–मुँहा बुझाइत अछि। "शास्त्रयोनित्वात्" —– केओ पढ़ैत अछि "ब्रह्म शास्त्रक योनि थिक" —– वेदक कारण; केओ पढ़ैत अछि "शास्त्र ब्रह्मक योनि थिक" —– ब्रह्मक प्रमाण। कोन ठीक?

वाचस्पति: दुनू — आ दुनूकेँ क्रमसँ सुनू, किएक तँ दुनू मिलिकऽ एक–दोसराकेँ धारण करैत अछि, जेना मेहराबक दुइ पाथर। पहिल अर्थ: ऋग्वेदादि ई विशाल शास्त्र–राशि — अनगिनत विद्याक शाखासँ भरल, दीप जकाँ सभ वस्तुक प्रकाशक — एकर स्रोत ब्रह्म थिक, आ स्रोत होएबाक कारणे ब्रह्मक सर्वज्ञता सिद्ध। नियम सोझ अछि: ग्रंथकारक ज्ञान ग्रंथसँ *पैघ* होइत अछि। पाणिनि व्याकरण रचलनि — की पाणिनिक ज्ञान अष्टाध्यायीमे अँटा गेल? नहि — कुशीलक रस, दूध आ गुड़क मिठासक भेद जीह जनैत अछि, वाणी नहि कहि पबैत अछि; वक्ताक ज्ञान सदा वचनसँ आगू। तँ जकर वचन *वेद* थिक — "एहि महान् सत्ताक निःश्वास जकाँ" —– ओकर ज्ञानक सीमा के बान्हत?

मीमांसक कर्मकांडी: *(उठैत, आब गंभीर)* आ एतहि, वाचस्पति, हमर घरक सबसँ पुरान दीवाल ठाढ़ अछि, आ हम देखय चाहब अहाँ एकरा कोना गिराबी। वेदक *कर्ता*? वेद अपौरुषेय थिक! अनादि पाठ–परम्परा — गुरुसँ शिष्य, शिष्यसँ शिष्य — कोनो पहिल रचयिता बिनु। जैमिनिक सम्पूर्ण दर्शन एहीपर ठाढ़ अछि: जकर मुँह नहि, तकर दोष नहि।

वाचस्पति: दीवाल गिराएब नहि, मित्र — हम ओकरा *सरकाएब*, आ अहाँ देखब जे सरकलाक बादो ओ ठाढ़ रहत। पहिने एकटा बात जे अहूँकेँ मानय पड़त: अहाँ वर्णकेँ नित्य कहैत छी — "ग" ध्वनि सदा एक — मानि लेल। मुदा *वाक्य*? पदक ओ विशेष क्रम, ओ अनुपूर्वी? क्रम तँ उच्चारणमे बनैत अछि, आ उच्चारण अनित्य। तँए वेद–वाक्यक अभिव्यक्ति हर बेर नव। आब सुनू हमर प्रिय उपमा: नाच सिखनिहार शिष्य गुरुक देहक गति देखैत अछि आ *अपन* देहमे ओहि क्रमक अनुकरण करैत अछि — गुरुक ओ गति स्वयं शिष्यक देहमे नहि चलि अबैत अछि। तहिना वेद–पाठ: हर पीढ़ी नव उच्चारण, पुरान क्रमक अनुकरणमे। तखन प्रश्न: प्रलयक बाद — जखन सभ कंठ मौन, सभ स्मृति लुप्त — नव सृष्टिमे ओ *क्रम* के देखाओत? जैमिनि कहैत छथि सृष्टि–प्रलय होइते नहि अछि; व्यासक अनुयायी कहैत छथि सर्वज्ञ परमात्मा हर सृष्टिमे वेदकेँ *पूर्व–सृष्टिक ओहि क्रममे* फेर रचैत छथि। आ दुनूमे मेल एतय अछि: "अपौरुषेय" क अर्थ दुनू पक्षकेँ स्वीकार्य रूपमे एतबे थिक — रचयिताक *पूर्ण स्वतंत्रताक अभाव*। ईश्वरो स्वच्छन्द नहि रचैत छथि; ओ पूर्व–क्रमक अनुगामी छथि, जेना अहाँक पाठ–परम्परा। आ नियम अटल रहैत अछि: "कोनो सृष्टिमे ब्रह्महत्या पुण्य नहि होइत, न अश्वमेध पाप — जेना अगिन कहियो नहि भिजबैत अछि, जल कहियो नहि जरबैत अछि।"

आक्षेपक: आ दोसर अर्थ? "शास्त्र ब्रह्मक योनि" —– प्रमाण–अर्थ?

वाचस्पति: दोसर अर्थ पहिलुक ढाल थिक। जँ केओ बुझने हो जे "जन्मादि" सूत्र अनुमान छल, तँ ई सूत्र ओकर भ्रम काटैत अछि: ब्रह्मक असाधारण स्वरूपक ज्ञान *केवल शास्त्रसँ* — न आँखिसँ, न तर्कसँ। शास्त्र ब्रह्मक योनि थिक — ओकर एकमात्र प्रमाण–द्वार। आ ठीक एतय, मित्र लोकनि, ई साँझ अपन

असली रणभूमिपर पहुँचल। किएक तँ जँ ब्रह्मक एकमात्र प्रमाण वेद थिक — तँ आब वेदक *प्रयोजन* पर निर्णय होएब अनिवार्य। आ ओहि प्रश्नपर हमर सोझाँ बैसल जैमिनिक ई शिष्य अपन सम्प्रदायक सम्पूर्ण सेना लऽ कऽ ठाढ़ छथि। *(मीमांसक दिस घुमैत)* अहाँक बारी, मित्र। पूरा बलसँ आउ — काल्हि हम नैयायिककेँ कहने रहियनि जे दुर्गक केंद्र छोड़निहारकेँ बाहरी दीवाल समर्पित करबाक आवश्यकता नहि। आइ हम अपन दुर्गक फाटक अपने खोलि रहल छी।

अंक चतुर्थ

समन्वय

चतुर्थ सूत्र: तत्तु समन्वयात् — मुदा ओ, समन्वयक कारणे

(मीमांसक कर्मकांडी सभाक मध्यमे आबैत छथि। दीप ऊँच कएल जाइत अछि — ई साँझक सबसँ पैघ वाद थिक।)

मीमांसक कर्मकांडी: तखन सुनू जैमिनिक सम्पूर्ण पक्ष, बिनु काटल-छाँटल। वेदक प्रयोजन एक: *कर्ममे प्रवृत्ति कराएब।* "आम्नायस्य क्रियार्थत्वात्" —– वेद क्रियार्थ थिक। किएक? किएक तँ शब्दक सार्थकता प्रयोजनमे अछि, आ प्रयोजन प्रवृत्ति-निवृत्तिमे। "नदी-तीरमे फल अछि" —– ई वाक्य ककरा की देलक? जँ सुननिहार फल आनय नहि जाए, तँ वाक्य हवामे बिला गेल। सिद्ध वस्तुक कथन या तँ व्यर्थ, या आन प्रमाणक जूठ — जे आँखि देखि सकैत अछि, तकरा वेद किएक कहत? तँए वेदान्त-वाक्यक तीनेटा गति: या तँ ओ कोनो विधिक *शेष* थिक — कर्ता वा देवताक स्वरूप बतबैत, जेना "वायुर्वै क्षेपिष्ठा देवता" यज्ञक अंग; या ओ स्वयं *उपासना-विधि* थिक — "आत्मा द्रष्टव्यः" माने "आत्माक ध्यान *करू*" —– प्रतिपत्ति-विधि, अमरताक इच्छुकक हेतु ध्यानक आज्ञा; या ओ अर्थवाद थिक — विधिक प्रशंसा, जेना जैमिनिक सूत्र: "विधिना त्वेकवाक्यत्वात् स्तुत्यर्थेन विधीनां स्युः।" आ हमर पक्षमे अनुभवो ठाढ़ अछि: "तत्त्वमसि" सुनलाक बादो सुख-दुःख-भय जहिनाक तहिना! जँ ओ वाक्य सिद्ध ब्रह्म-भाव दैत, तँ सुनिते मुक्ति — मुदा सुननिहार साँझमे फेर तमसाइत अछि, फेर डेराइत अछि। तँए मानू: सिद्धक कथन निष्फल; वेदान्त विधिक सेवक; आ अहाँक आत्मा यूप आ आहवनीय जकाँ — कर्मकांडक एकटा *अंग,* जकर ज्ञान यज्ञक हेतु चाही, मोक्षक हेतु नहि।

परिषद्: *(गहींर कानाफूसी — पक्ष पूरा बलसँ ठाढ़ भेल अछि)*

वाचस्पति: *(उठैत, आचार्य–आसनसँ नीचाँ आबैत, काल्हि जकाँ)* एकटा दुर्ग, ईमानदारीसँ बनाओल, आ हम एकरा ओतबे ईमानदारीसँ, पाथर–पाथर उतारब। पहिल पाथर — "सिद्धक कथन निष्फल।" सूत्रक उत्तर एकहि शब्दमे अछि: *समन्वयात्* — किएक तँ सभटा वेदान्त–वाक्य *एकहि तात्पर्यमे* मिलैत अछि। "सदेव सोम्येदमग्र आसीत्" — हे सौम्य, आरंभमे सत् मात्र छल; "एकमेवाद्वितीयम्" — एक, अद्वितीय; "आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्" — आरंभमे आत्मे मात्र। उपक्रमसँ उपसंहार धरि एकहि सूर — आ तात्पर्य–निर्णयक नियम थिक: जे *कहल* गेल अछि तकरा छोड़िकऽ जे *नहि कहल* गेल तकर कल्पना करब दोष थिक। सम्पूर्ण उपनिषद् ब्रह्म कहैत अछि, विधि अहाँ जोड़ैत छी।

मीमांसक कर्मकांडी: मुदा निष्फलताक उत्तर कतय? कथन रहए ब्रह्मक — *फल* की?

वाचस्पति: आ एतय, मित्र, अहाँक अपन कसौटी अहाँक विरुद्ध घुमत। "सिद्धक कथन निष्फल" — अच्छा? एकटा कथा सुनू, जे हमर भामतीक सबसँ प्रिय पन्ना थिक। एकटा द्रविड़, जे आर्य–भाषा एकहु आखर नहि जनैत अछि, सभामे बैसल अछि। दूत आबिकऽ देवदत्तसँ कहैत अछि: "देवदत्त, अहाँक कल्याण होउ — अहाँकेँ पुत्र भेल अछि!" देवदत्तक देह पुलकित, आँखि आ मुँह फूलल कमल जकाँ खिलल। द्रविड़ की देखलक? कोनो *क्रिया* नहि — देवदत्त उठिकऽ कतहु नहि गेल, किछु नहि *कएलक*। केवल एकटा *सिद्ध* समाचार — "पुत्र भेल" — आ आनन्दक ज्वार। ओहि पुलकसँ द्रविड़ बुझि गेल: एहि वाक्यमे कोनो प्रिय अर्थ छल। तँ कहू — सिद्धक कथन निष्फल? एकटा

वाक्य, बिनु कोनो आज्ञाक, मनुष्यक रोइयाँ ठाढ़ कऽ देलक! आ जँ "पुत्र भेल" ई छोट सिद्धि एतेक फल दैत अछि, तँ "तों स्वयं ओ अभय, अजर, अमृत ब्रह्म छेँ" — ई सिद्धि सुनि जकर अविद्याक गिरह कटैत छैक, ओकर फल की कम?

मीमांसक कर्मकांडी: *(पहिल बेर एक डेग पाछू)* ...तखन "आत्मा द्रष्टव्यः" जकाँ विधि–रूप वाक्यक की करब? "देखबाक चाही" — ई तँ आज्ञे थिक!

वाचस्पति: आज्ञाक *रूप* थिक, आज्ञाक *बल* नहि — जेना पाथरपर चलाओल छुरी: आकार छुरीक, धार भोथ। ई वाक्य कोनो नव कर्तव्य नहि लादैत अछि; ई केवल बाहर–मुँह लोककेँ — जे स्वभाववश विषय दिस बहैत अछि — घुमाकऽ *भीतर* दिस बहबैत अछि। नदीक धारकेँ बान्ह मोड़ैत अछि, नव जल नहि उपजबैत। असली काज ओहि वाक्यक थिक जे मोड़लाक बाद भेटैत अछि: "तत्त्वमसि।" आ ओ वाक्य विधि थिक कि सिद्ध–बोधक — एकर निर्णय अहाँक अपन ओहि भेदसँ होएत जे हम दोसर अंकमे राखने रही, आ आब ओ तरुआरि म्यानसँ निकलत। कर्म *पुरुष–तंत्र* थिक — करू, नहि करू, एना करू, ओना करू — विकल्प चलैत अछि, षोडशी–पात्र उठाउ वा नहि। मुदा ज्ञान? ज्ञान *वस्तु–तंत्र* थिक। घैल सोझाँ अछि, तँ "घैल अछि" — एहिमे "चाही" नहि चलैत अछि, विकल्प नहि चलैत अछि, आज्ञा नहि चलैत अछि। अहाँ हमरा आज्ञा दिअ — "एहि घैलकेँ कपड़ा बुझू!" — हम नहि बुझि सकब, लाख चाहियो कऽ। ज्ञान वस्तुक अधीन, कर्ताक नहि। तँए "ब्रह्म जानू" कहियो विधिक विषय भइए नहि सकैत अछि — जानब आज्ञासँ नहि, प्रमाणसँ होइत अछि। आ प्रमाण — उपनिषद्–वाक्य — सोझाँ ठाढ़ अछि, चमकैत घैल जकाँ उज्जर इजोतमे।

मीमांसक कर्मकांडी: मुदा हमर अनुभव–आपत्ति अखनहु जीवैत अछि! "तत्त्वमसि" सुनलाक बादो भय–शोक जहिनाक तहिना — तँ ओ ज्ञान भेल कतय?

वाचस्पति: किएक तँ *सुनब* आ *जानब* मे ओतबे दूरी अछि जतबे बीज आ गाछमे। श्रवण पहिल डेग; तकर बाद मनन — तर्कसँ अर्थक दृढ़ीकरण; तकर बाद निदिध्यासन — धारावाहिक भावना। साँझक झुरझुरीमे "ठूठ आकि मनुष्य?" ई संशय जाबे घुरिया रहल अछि, ताबे निश्चय नहि — आ संशय–सहित सुनल वाक्य ज्ञान नहि, ज्ञानक आरंभ थिक। जेना संगीतक विद्यार्थी पहिल दिन षड्ज–ऋषभ *सुनैत* अछि, वर्षक अभ्यासक बाद *चिन्हैत* अछि — कान ओएह, स्वर ओएह, मुदा साक्षात्कार अभ्याससँ। आ जखन साक्षात्कार होइत अछि, तखन की होइत अछि — से चारि नकारसँ सुनू, किएक तँ इएह एहि अध्यायक शिखर थिक। मोक्ष *उत्पन्न* वस्तु नहि — जे उपजैत अछि से नष्ट होइत अछि, घैल जकाँ। *विकार* नहि — दूधसँ दही भेल वस्तु नित्य नहि रहैत। *संस्कार* नहि — संस्कार दुइ रंगक: गुण जोड़ब, जेना अड़हुल–रससँ स्फटिक रँगब; दोष हटाएब, जेना ईंटाक चूर्णसँ दर्पण माँजब। ब्रह्ममे न किछु जोड़ल जा सकैत अछि, न ओहिमे किछु हटएबा जोग अछि — दर्पण माँजने मणि नहि चमकैत अछि; स्नान–उपनयनक शुद्धि जीवक औपाधिक शुद्धि थिक, "जेना नायिकाक सुगंध ओकर सखीपर चढ़ल बुझाइत अछि।" आ *प्राप्ति* सेहो नहि — आ एतय हमर सबसँ प्रिय उपमा: नाहक यात्री। नाह बीच धार दिस बढ़ैत अछि — किनारा, फेन, लहरि सभ पाछू छुटैत जाइत अछि — आ यात्री पहुँचैत अछि ओहि निस्तरंग, शांत, स्वच्छ, स्थिर मध्यमे। की ओ मध्य *नव* भेटल? नहि — जल तँ सभतरि छल; ओ केवल लहरिसँ हटल। ब्रह्म सर्वगत थिक, नित्य–प्राप्त — प्राप्तिक भ्रम केवल लहरिक छल। चारू गति बन्न — "एहि चारिक अतिरिक्त

पाँचम कोनो बाट नहि जाहिसँ कर्म मोक्षमे पैसए; तँए ज्ञानकेँ छोड़ि कर्मक *छाहो* मोक्षमे नहि पैसैत अछि।"

मीमांसक कर्मकांडी: *(बहुत काल मौन। फेर, धीरेसँ, लगभग अपनहि सँ)* ...आ जे जीवैत–जागैत ई जानि गेल? शरीर तँ रहबे करतैक, भूख लगबे करतैक।

वाचस्पति: *(कोमल स्वरमे — वाद आब वादसँ आगू बढ़ि गेल अछि)* रहतैक — जेना बरही पर साँपक छोड़ल केंचुल पड़ल रहैत अछि: मरल, फेकल, आ साँप ओकरासँ मुक्त। देह प्रारब्धक केंचुल थिक। जे धन आ धनक ममता दुनू छोड़ि देलक, ओकरा चोरक कोन डर? ओ बजारमे चलैत अछि, खाइत–पीबैत अछि, आ भीतर निस्तरंग — जीवन्मुक्त। आ ओहि दिन, मित्र, एकटा आश्चर्य होइत अछि जकरा हम एहि साँझक अंतिम वाक्य बनाएब: "अहं ब्रह्मास्मि — एहि ज्ञानमे सभ विधि आ सभ प्रमाण समाप्त भऽ जाइत अछि।" प्रमाण प्रमाता–सापेक्ष; जतय प्रमाता–भाव गलल, ओतय प्रमाण सेहो विश्रांत — जेना भोर भेने दीपक काज सधि जाइत अछि। दीप झूठ नहि छल — रातिमे ओएह सत्य छल। मुदा सूर्य उगलापर ओकरा फूकिकऽ केओ नहि मिझबैत अछि; ओ अपने फीका पड़ि जाइत अछि, "जेना इंधन चुकल आगि।" अहाँक कर्मकांड ओ दीप थिक, मित्र — राति भरिक सच्चा साथी। हमर झगड़ा दीपसँ कहियो नहि छल। हमर एतबे कहब छल जे दीपकेँ सूर्य नहि कहल जाए।

मीमांसक कर्मकांडी: *(अपन आसनसँ उठिकऽ, हाथ जोड़ि — पराजयमे नहि, ओहि आदरमे जे काल्हि नैयायिक देखौने छलाह)* हम भोरका पक्षक लोक छी, वाचस्पति, आ भोरमे दीप हमहीं जराबैत छी। मुदा आइ राति अहाँ हमरा ई

मानय बाध्य कऽ देलहुँ जे हमर दीपक इजोत जकरासँ आबैत अछि, से बाती नहि थिक।

वाचस्पति: आ एहिसँ सुन्नर वाक्यपर कोनो समन्वय–वाद कहियो समाप्त नहि भेल अछि।

उपसंहार

(सूत्रधार वापस आबैत अछि। ओ मेजपरक पोथी उठबैत अछि आ द्वार लगक शंखक बगलमे राखि दैत अछि।)

सूत्रधार: काल्हि ई शंख हमरा सभकेँ सिखौने छल जे भ्रम की थिक। आइ ई पोथी सिखौलक जे भ्रमसँ निकलबाक रस्ता कतय लिखल अछि — आ ओ रस्ता आज्ञा नहि थिक, समाचार थिक। "अहाँकेँ पुत्र भेल" —– एतबे सुनिकऽ देवदत्तक देह पुलकित भऽ गेल छल; दूत कोनो काज करय नहि कहने छल। उपनिषद् ओहने दूत थिक, आ ओकर समाचार एहिसँ पैघ: जकरा अहाँ जनम भरि ताकैत रहलहुँ, से अहाँक अपन गरदनिमे पड़ल हार थिक। चारि सूत्र चारि डेग छल — जिज्ञासाक अधिकार, ब्रह्मक लक्षण, शास्त्रक प्रामाण्य, आ तात्पर्यक समन्वय — आ चारू डेग एकहि दहलीज दिस: जतय सुननिहार बुझि जाइत अछि जे दूत जकर चर्चा कऽ रहल छल, से आन केओ नहि। जँ अहाँ आइ राति ई पोथी अपन मोनमे लऽ कऽ जा रहल छी, तँ ओकरा माला जकाँ राखब — फूल श्रुतिक थिक, धागा सूत्रकारक, आ गूथब... गूथब हरेक पढ़निहारकेँ अपने पड़ैत छैक।

(सभ पात्र प्रस्थान करैत छथि। दीप सभसँ अंतमे बाहर जाइत अछि, आ शंख आ पोथी, संगे-संग, द्वार लग छूटल रहि जाइत अछि।)

आत्मसिद्धि–वाद

उदयनाचार्यक "आत्मतत्त्वविवेक" पर आधारित संवाद–नाटक, शास्त्रीय संस्कृत वादक शैलीमे

[(भूमिका, छह अंक — प्रत्येक अनेक दृश्यमे — आ उपसंहारमे विभक्त एकटा मौलिक नाट्य–रचना; पूर्व–प्रस्तुत चारि–अंकीय "आत्मसिद्धि–वाद" क इएह विस्तारित रूप थिक — क्षणभंगवादकेँ आब दुइ पूर्ण अंक, अपोहवादकेँ अपन स्वतंत्र अंक, आ शेष तीनू विषयकेँ बहु–दृश्य विस्तार देल गेल अछि।

तर्क, संकुचित आ पुनः–स्वरित रूपमे, उदयनक आत्मतत्त्वविवेक क मुख्य आंदोलनक अनुसरण करैत अछि, आब पूर्व–प्रस्तुत चारि–अंकीय रूपसँ अधिक विस्तारसँ — अंक प्रथम–द्वितीयमे क्षणभंगवादक दुनू मुख्य प्रमाणक परीक्षा: सत्त्व–हेतुक अनुमानमे सामर्थ्यक तीन विकल्पक क्रमिक खंडन (क्रियात्मक, अव्यवहित–जननयोग्यता, योग्यता–मात्र), अदृश्य "तत्क्षण–जननत्व" धर्मक कल्पनापर ग्रंथक व्यंग्यात्मक अनुगमन (सहकारी बिनु कार्य आ बीज बिनु अंकुरक शंका धरिक परिहास), विरोधक स्वरूपक विवेचन (काल–भेदसँ विरोध–परिहार, एक द्रव्यमे भिन्न कालमे भिन्न परिमाण), विनाशक अहेतुकता–वादक खंडन (अवश्यंभाविताक अर्थ, लाठीक व्यर्थताक आपत्ति, नाश–नष्टक अभेद–पक्षक दोष), आ प्रत्यभिज्ञासँ स्थिरत्वक सकारात्मक सिद्धि; अंक तृतीयमे अपोहवादक स्वतंत्र परीक्षा (गो/अगो–पदक अन्योन्याश्रय, व्यावृत्ति–भेदक चक्र, अनुगत–प्रत्ययसँ सामान्यक सिद्धि, सामान्य–विरोधी कुप्रश्नक वृत्ति–स्वभावसँ समाधान, ज्ञानश्रीक मतक परीक्षाक अनुगूँज); अंक चतुर्थमे विज्ञानवादक विस्तारित खंडन (स्वप्न–तर्क, सहोपलम्भ–नियमक करण–कर्म–विवेचनसँ उत्तर, ग्रंथक साँप–नेवला–मुनिक आश्रमवाला व्यंग्यक समावेश, चित्रज्ञानक "नील नीले भासय" नियमसँ समाधान, स्वप्न–जागरणक लक्षण–भेद — संगतिक बाध्यता/अबाध्यता, आ वादक क्रिये सँ बाह्यार्थक व्यावहारिक सिद्धि); अंक पंचममे आत्म–सिद्धिक विस्तार (अहंप्रत्ययक अखंड्यता, बरखाक व्याकरण–दृष्टांतक विवेचन, देह–इन्द्रिय–मन तीनूक क्रमिक निरसन, स्मृति–संस्कारक आश्रयक प्रश्न, आ आलय–विज्ञानक आत्म–स्वीकाररूपताक प्रदर्शन); तथा अंक षष्ठमे ईश्वरानुमानक तीन शास्त्रीय आक्षेपक उत्तर (सदेह–कर्तृत्वक उपाधित्व, सृष्टि–क्रमक अदृष्ट–सापेक्षता, दुःखक कर्म–फलता) आ ग्रंथक अंतिम खंडक मुक्ति–विचार — दुःखक आत्यन्तिक निवृत्तिक काम्यता, "मुक्तिमे सुखो नष्ट" ई

आक्षेप, मधु–विष–मिश्रित अन्नक दृष्टांत, संसारमे सुख–दुःखक विषम अनुपातक ग्रंथीय विवेचन, आ काँट–निकसबाक निवृत्ति–अनुभवसँ समाधान।)]

पात्र–परिचय

सूत्रधार — नाटकक आरंभ, अंक–संधि, आ समापन करएवाला

उदयनाचार्य — मिथिलाक नैयायिक, आत्माक अस्तित्वक समर्थक (सिद्धांती)

क्षणभद्र — क्षणभंगवाद आ विज्ञानवादक बौद्ध भिक्षु–तार्किक, पूर्वपक्षी — ग्रंथमे परीक्षित बौद्ध मत (धर्मकीर्ति, ज्ञानश्री, रत्नकीर्ति आदिक) क प्रतिनिधित्व करएवाला एकटा संयुक्त काल्पनिक पात्र

ज्ञानमित्र — क्षणभद्रक सहचर, एकटा युवा बौद्ध भिक्षु, अपोहवादक उत्साही रक्षक

शिष्य — उदयनक शिष्य, जे सभाक जिज्ञासाकेँ शब्द दैत अछि

एकटा किसान — जे अंक प्रथममे अपन बीजक बोरा लऽ कऽ साक्षी बनैत अछि

परिषद् — विद्वत्सभा

स्थान: मिथिलाक एकटा राजसभाक वाद–शाला। दिन रहितहुँ दीप जरैत अछि। घटिका–यंत्र प्रत्येक वक्ताक समय नापि रहल अछि। मंचक कात एकटा बीजक बोरा, एकटा पाथर, आ एकटा घैल राखल अछि — तीनू एहि साँझक साक्षी बनत।

भूमिका

(सूत्रधार प्रवेश करैत अछि, सभार्कें प्रणाम करैत अछि।)

सूत्रधार: वाद शुरू होएब सँ पहिने एकटा प्रणाम — ओहि परमेश्वरकेँ नहि, जकरा तर्कें सिद्ध वा असिद्ध कएल जा सकैत अछि, अपितु ओहि सत्ताकेँ, जकरा कोनो तर्क न दए सकैत अछि आ न छीनि सकैत अछि। जे किछु अहाँ सुनब, से इतिहास नहि थिक। उदयन भेल छलाह; हुनक विरोधी केवल हुनक पन्नामे जीबैत छथि, जेना दीपकेँ रोकनिहार बाँहिक छाया। ओहि सभ छायाकेँ हम दुइ वस्त्रमे बटोरने छी: क्षणभद्र, "क्षणक भाग्यवान," जे हरेक ओहि आचार्यक हेतु बजताह जे मानने छलाह जे किछु स्थिर नहि रहैत अछि — आ हुनक युवा सहचर ज्ञानमित्र, जे ओहि सूक्ष्मतम बौद्ध सिद्धांतक हेतु बजताह जकर नाम अपोह थिक: जे "गाय" शब्दक अर्थ कोनो गोत्व नहि, केवल "अ–गायक निषेध" थिक।

आइ–कालिक ई वाद नमहर चलत — छह अंक, अनेक दृश्य — किएक तँ उदयनक ग्रंथ स्वयं नमहर अछि, आ ओकर हरेक गिरह अपन समय मांगैत अछि। विवाद एकहि प्रश्नकेँ छह कोठलीमे पुछत: *पूछनिहार के अछि?* घटिका–यंत्र, आरंभ हुअ।

(प्रस्थान)

अंक प्रथम

ओ नदी जे अछिये नहि

क्षणभंगवादक अनुमान आ सामर्थ्यक परीक्षा

दृश्य १ — प्रतिज्ञा

(उदयन आचार्य–आसन पर आसीन छथि। क्षणभद्र प्रवेश करैत अछि, संग ज्ञानमित्र। शिष्य उदयनक चरण लग बैसल अछि।)

क्षणभद्र: आचार्य, घटिका–यंत्रक जल औपचारिकतामे नहि खर्च करब। अहाँ शिक्षा दैत छी जे एहि आँखिक पाछू एकटा अचल द्रष्टा बैसल अछि, जे अन्हारसँ डरएवाला बच्चा सँ अन्हारसँ नहि डरएवाला बूढ़ धरि एकहि रहैत अछि। हम विपरीत सिखबैत छी: जे किछु सत् अछि से एकहि क्षणमे उत्पन्न होइत अछि आ नष्ट भऽ जाइत अछि। जकरा अहाँ "एकटा शिखा" कहैत छी, से सैकड़ों शिखा थिक, एक–दोसरकेँ एतेक जल्दी अभिवादन करैत जे विदाई कतय समाप्त होइत अछि आ अभिवादन कतय आरंभ, से देखबे नहि होइत। कोनो एक देखनिहार नहि अछि। केवल देखब अछि, आ फेर आर देखब, प्रत्येक बेर नव।

उदयन: तखन ओ प्रश्न, जकर हेतु वाद बनल अछि: प्रमाण? कविता नहि — प्रमाण।

क्षणभद्र: अनुमान, पूरा विधिसँ। प्रतिज्ञा: जे सत् अछि, से क्षणिक अछि। हेतु: सत्त्व — अर्थकिया–कारित्व, कार्य करबाक सामर्थ्य। व्याप्ति: जे अर्थक्रिया करैत अछि, से क्षणिके भऽ कऽ करैत अछि। दृष्टांत: दीप–शिखा। जे क्षणिक नहि, से किछु करिते नहि अछि — जेना आकाश–कुसुम। आ विवादित

वस्तु — घैल, पर्वत, आत्मा — सभ सत् अछि, सभ किछु–न–किछु करैत अछि। तँए सभ क्षणिक।

उदयन: व्याप्तिपर हाथ राखू, आ छोड़ू नहि — किएक तँ सम्पूर्ण अनुमान ओहीपर लटकल अछि। "जे सत्, से क्षणिक" —– ई नियम अहाँ कतय देखलहुँ? दीप–शिखामे? एकटा दृष्टांत नियम नहि होइत अछि। वर्षों टिकल घैल ओतबे सत् अछि जतबे क्षण भरिक चिनगारी। अहाँकेँ देखाबय पड़त जे *टिकब* आ *सत् होएब* मे विरोध अछि — आ ओहि विरोधक अहाँक एकमात्र सूत्र अछि ई "सामर्थ्य।" तँ आउ, ओकरे चीरि कऽ देखी।

दृश्य २ — सामर्थ्यक तीन रूप

क्षणभद्र: सुनू तर्क, अपन पूरा धारसँ। सामर्थ्य आ असामर्थ्य एकहि वस्तुमे एकहि काल नहि रहि सकैत अछि। बीज खरिहानमे राखल अछि — अंकुर नहि दैत अछि। वैह बीज खेतमे, माटि–पानि–घाम पाबि — अंकुर दैत अछि। जँ दुनू अवस्थाक बीज *एक* थिक, तँ ओ एकहि संग समर्थो भेल आ असमर्थो — विरोधाभास। तँए मानू: खरिहानक बीज आन छल, खेतक बीज आन — प्रतिक्षण नव–नव बीज, आ जाहि क्षणक बीजमे अंकुर–जनन–सामर्थ्य छल, वैह जनक।

उदयन: "सामर्थ्य" —– एहि शब्दक तीन संभव अर्थ, आ हम तीनूकेँ बारी–बारी अहाँक हाथमे दऽ कऽ देखब जे कोन टिकैत अछि। पहिल: सामर्थ्य माने *क्रिया स्वयं* — जे उत्पन्न कऽ रहल अछि, वैह समर्थ। दोसर: सामर्थ्य माने *अव्यवहित–जननयोग्यता* — "अगिले क्षण उत्पन्न करबाक" योग्यता। तेसर: सामर्थ्य माने *योग्यता–मात्र* — स्वभावसँ जननक्षम होएब, चाहे सहकारी भेटए वा नहि। चुनू।

क्षणभद्र: पहिल तँ स्पष्टतः नहि — क्रियाकेँ सामर्थ्य कहब तँ हेतु आ साध्य एक भऽ जाएत, अनुमान पुनरुक्ति बनि जाएत।

उदयन: ठीक — तँ पहिल गेल, अहीं फेकलहुँ। आब दोसर: "अव्यवहित–जननयोग्यता" —– जे अगिले क्षण जनए, सैह समर्थ। ई अहाँक प्रिय अर्थ थिक, किएक तँ एहीसँ खरिहानक बीज "असमर्थ" ठहरैत अछि। मुदा पुछू अपनासँ: ई "अव्यवहित–जननत्व" नामक धर्म अछि की? *(मंचक कातसँ किसानकेँ इशारा करैत छथि; किसान अपन बीजक बोरा लऽ कऽ आगू अबैत अछि।)* ई किसानक बोरामे सय बीज अछि। अहाँक मतें, हरेक बीज–क्षण या तँ "अव्यवहित–जनक" थिक या नहि। आब देखू फाँस: जनक आ अजनक बीजमे भेद की करैत अछि? दुनूक रूप एक, गंध एक, भार एक। अहाँ कहब — "अदृश्य विशेष।" तँ हम पुछब: ओहि अदृश्य विशेषक प्रमाण? कार्य देखिकऽ? तँ ई अन्योन्याश्रय भेल — विशेष सिद्ध होइत कार्यसँ, आ कार्यक नियम सिद्ध होइत विशेषसँ। आ जँ अदृश्य विशेष बिनु प्रमाणक मानब, तँ सुनू ओ व्यंग्य जे हमर ग्रंथक पन्नामे लिखल अछि: तखन तँ ई सेहो शंका करू जे सहकारी रहितो कारण अजनक रहि जाए, आ सहकारी बिनुओ कार्य उपजि जाए — आ अंतमे ई शंका जे *बीजे बिनु अंकुर* भऽ जाए! तखन "कार्य–कारणक अन्वय–व्यतिरेक हम जाँचि कऽ स्थापित करैत छी" ई अहाँक दावा शुद्ध परिहास बनि जाएत।

किसान: *(सहज भावसँ)* आचार्य, हम तँ एतबे जनैत छी — इएह बोराक बीज, जे आइ चुप पड़ल अछि, से अगिला अषाढ़मे उपजत। जँ ई आइक बीज आ ओ ओहि दिनक बीज दू फराक वस्तु थिक, तँ हम बोरा किएक जोगबैत छी?

परिषद्: *(हँसीक हल्की लहरि)*

उदयन: आ इएह, मित्र लोकनि, दर्शनक सबसँ पैघ परीक्षा थिक — किसानक प्रश्न। *(क्षणभद्र दिस)* आब तेसर अर्थ बचल: योग्यता–मात्र। बीज स्वभावसँ अंकुर–योग्य, खरिहानमे सेहो — केवल सहकारी नहि भेटल। ई अर्थ सत्यक सबसँ लग अछि — मुदा ई अहाँक अनुमानकेँ मारि दैत अछि! किएक तँ योग्यता तँ *दुनू* अवस्थामे एक — खरिहानोमे, खेतोमे। तखन समर्थ–असमर्थक ओ विरोधाभास कतय गेल जाहिपर अहाँ क्षणभेद ठाढ़ केने रही? योग्यता टिकैत अछि, बीज टिकैत अछि, आ अहाँक व्याप्ति हाथसँ छूटि गेल।

दृश्य ३ — सहकारीक प्रश्न आ विरोधक स्वरूप

क्षणभद्र: *(नव मोर्चा लैत)* तखन एना लिअ। मानि लिअ बीजत्वे कारणता–नियामक, आ सहकारी–योगसँ वस्तु जनक होइत अछि। मुदा ई सभ *अनेक* वस्तुपर लागू भऽ सकैत अछि, एक व्यक्तिपर नहि! एकहि व्यक्तिमे जनकत्व आ अजनकत्व — ई तँ प्रत्यक्षे विरुद्ध अछि।

उदयन: आब हम ओतय पहुँचलहुँ जतय अहाँक सम्पूर्ण सम्प्रदाय भूल करैत अछि — *विरोधक स्वरूप*। विरोध कहिया होइत अछि? जखन दू धर्म *एकहि काल, एकहि संबंधसँ, एकहि वस्तुमे* नहि रहि सकए। शीत आ उष्ण एकहि जलमे एकहि क्षण — विरोध। मुदा एकहि जल भोरमे शीतल आ दुपहरियामे गरम — कोन विरोध? कालभेदसँ विरोध गलि जाइत अछि। तहिना: बीज सहकारी–रहित कालमे अजनक, सहकारी–सहित कालमे जनक — एकहि बीज, दू काल, कोनो विरोध नहि। अहाँ काल–भेदक काजकेँ वस्तु–भेदपर लादि रहल छी। एकटा मनुष्य बैसल अछि, फेर ठाढ़ होइत अछि — की बैसनिहार आ ठाढ़–होनिहार दू मनुष्य? एकटा सोनाक डला कंगन बनैत अछि, फेर कुंडल — की तीन सोना? परिमाणो लिअ: एकहि कपड़ा पहिने छोट, दू

सूत जोड़ने पैघ — भिन्न–भिन्न कालमे भिन्न–भिन्न परिमाण एकहि द्रव्यमे — लोक रोज देखैत अछि, आ कतहु विरोध नहि चिचिआइत अछि।

क्षणभद्र: तखन हमर अंतिम शरण: क्षणिक वस्तु *सर्वदा* जनक रहए — जाहि क्षण अछि, ओहि क्षण अपन कार्य करिते अछि, आ "विलंब" केवल संतति–भ्रम।

उदयन: तखन संसारक हरेक बीज हरेक क्षण अंकुर उगलितए, हरेक अगिन हरेक क्षण संसार जरबितए — आ खरिहान नामक वस्तुए नहि रहितए। जे सिद्धांत खरिहानकेँ असंभव बनबैत अछि, ओकरा किसानक सोझाँ दोहराबय मे लाज होएबाक चाही। *(किसान मुस्कुराइत अपन बोरा उठा कऽ कात भऽ जाइत अछि।)* अंक–भरिक निष्कर्ष सुनू: सामर्थ्यक तीनू अर्थ परखल गेल — पहिल पुनरुक्ति, दोसर अप्रामाणिक, तेसर अहाँक विरुद्ध। व्याप्ति असिद्ध, आ असिद्ध व्याप्तिपर ठाढ़ अनुमान — बालुक पुल।

(दीप ठीक कएल जाइत अछि। सूत्रधार क्षण भरि प्रकट भऽ कऽ घोषणा करैत अछि: "क्षणभंगक दोसर स्तंभ — विनाशक अहेतुकता — अगिला अंकमे।")

अंक द्वितीय

बिनु हथौड़ीक टूटब

विनाशक अहेतुकता–वाद आ स्थिरत्वक सिद्धि

दृश्य १ — नाशकेँ कारण नहि चाही?

क्षणभद्र: *(नव उत्साहसँ)* सामर्थ्यक मोर्चा छूटल, मानि लेल — मुदा हमर दोसर स्तंभ अखनहु ठाढ़ अछि, आ ई पहिलसँ मजगूत अछि। सुनू: विनाशकेँ कोनो कारणक आवश्यकता नहि। किएक? किएक तँ जे उत्पन्न भेल, ओकर नाश *अवश्यंभावी* अछि — आ जे अवश्यंभावी अछि, से कारण–सापेक्ष नहि। जे कारण–सापेक्ष होइत अछि, से कहियो होइत अछि, कहियो नहि — जेना वर्षा। मुदा नाश? नाश *सभक* होइत अछि, *सदा* होइत अछि, बिनु अपवाद। तँए नाश वस्तुक स्वभावे थिक — आ जँ नाश स्वभाव थिक, तँ वस्तु उत्पन्न होइते नष्ट — क्षणभंग सिद्ध, दोसर रस्तासँ।

उदयन: एकटा सुन्दर तर्क, आ एकर सौंदर्ये एकर फाँस थिक। "अवश्यंभावी, तँए अहेतुक" — ई नियम कतयसँ आनलहुँ? मृत्यु सेहो अवश्यंभावी अछि — की मृत्युक कारण नहि होइत अछि? रोग, वृद्धत्व, शस्त्र — वैद्यशास्त्र भरल पड़ल अछि मृत्युक कारणसँ। अवश्यंभाविता एतबे कहैत अछि जे *कोनो–न–कोनो* कारण अवश्य जुटत — ई नहि जे कारण चाहबे नहि करत। आ आब अहाँक सिद्धांतक पेटमे हाथ दिअ: जँ नाश अहेतुक, तँ ई घैल — *(घैल उठबैत छथि)* — एहि क्षण किएक नहि टूटल? पछिला क्षण किएक नहि? जे बिनु कारणक होइत अछि, से या तँ सदा होइत अछि, या कहियो नहि — किएक तँ "कहिया" क उत्तर कारणे दैत अछि। अहाँ कहब: क्षणे–क्षणे टूटिए

रहल अछि! तँ ई हथौड़ी की करत? *(मंचक कातसँ पाथर उठबैत छथि)* लोक घैल फोड़य लाठी किएक उठबैत अछि, जँ घैल अपनहि स्वभावसँ प्रतिक्षण फुटले जा रहल अछि? अहाँक सिद्धांतमे लाठी संसारक सबसँ बेकार वस्तु थिक — आ तइयो कुम्हारसँ लऽ कऽ राजा धरि सभ ओकरापर भरोसा करैत अछि।

क्षणभद्र: लाठी नाश नहि करैत अछि — लाठी केवल *विसदृश–संततिक* आरंभ करैत अछि। घैल–क्षणक धारा चलैत छल; लाठी लगिते ठीकरा–क्षणक धारा शुरू भेल। नाश तँ हरेक क्षणक अपन स्वभावे छल।

उदयन: तखन "नाश" आ "विसदृश–संतति–आरंभ" —— दू शब्द, दू वस्तु — आ लोक जकरा "घैल टूटल" कहैत अछि, से अहाँक मतें नाश नहि, केवल धाराक मोड़ थिक। तँ पुछू: ओ *मोड़* सकारण अछि कि अकारण? सकारण — तँ लाठी ओकर कारण भेल, आ अहाँ आधा घर हमरा दऽ देलहुँ, किएक तँ जकरा संसार "नाश" कहैत अछि तकर कारण अहाँ मानि लेलहुँ। अकारण — तँ लाठी बेकार भेल, आ हम फेर ओहि किसानक आँगन पहुँचलहुँ जतय अहाँक हरेक सिद्धांत जा कऽ ठोकर खाइत अछि।

दृश्य २ — नाश आ नष्ट–वस्तुक अभेद?

क्षणभद्र: तखन गहींर उतरू। हम कहैत छी: नाश आ नष्ट–होएवाला वस्तुमे *भेदे नहि* अछि। नाश कोनो अलग घटना नहि — वस्तुक अपन अंतिम क्षण स्वयं। तँए "नाशक कारण" पुछब ओहिना निरर्थक जेना "वस्तुक वस्तुत्वक कारण" पुछब।

उदयन: जँ नाश आ वस्तु अभिन्न, तँ जाबे वस्तु, ताबे नाश — घैल जाबे अछि, ताबे घैलक नाशो अछि! तखन "घैल अछि" आ "घैल नष्ट भेल" —— दुनू

वाक्य एकहि काल सत्य — आ भाषा, व्यवहार, क्रय–विक्रय सभ ढहि गेल। कुम्हार घैल बेचत कि घैलक नाश? आ जँ कहू नाश वस्तुक *उत्तरकालीन* — तँ "उत्तर" शब्दे भेद मानि लेलक: वस्तु पहिने, नाश पछाति — दू काल, दू धर्मी। अभेद–पक्ष अपने भारसँ बैसि गेल।

शिष्य: आचार्य, तँ नाश थिक की?

उदयन: प्रतियोगीक ध्वंस — वस्तुक ओ अभाव जे वस्तुक *बाद* आबैत अछि आ जकर कारण होइत अछि — लाठी, अगिन, काल। नाश सकारण, आ तँए वस्तु ताबे धरि टिकैत अछि जाबे नाशक कारण नहि जुटैत अछि। इएह स्थिरत्व थिक — कोनो रहस्य नहि, केवल ओ सीधा बात जे "जाबे नहि टूटल, ताबे अछि।"

दृश्य ३ — प्रत्यभिज्ञा: स्थिरताक सकारात्मक प्रमाण

उदयन: आ आब हम केवल तोड़ब नहि — बनाएब। स्थिरत्वक सकारात्मक प्रमाण थिक *प्रत्यभिज्ञा*: "इएह ओ घैल थिक जे हम काल्हि देखने रही।" ई ज्ञान "एहन" नहि कहैत अछि — "*इएह*" कहैत अछि। सादृश्य–ज्ञान आ पहिचान–ज्ञानमे आकाश–पातालक भेद: "ई ओकरा–सन अछि" आ "ई वैह थिक" —– पहिलमे दू वस्तु, दोसरमे एक। आ लोक दुनूकेँ कहियो नहि मिझरबैत अछि — जुड़वाँ भाइकेँ देखिकऽ "वैह" कहनिहार भूल मानल जाइत अछि, आ अपन पुरान घैलकेँ "वैह" कहनिहार प्रामाणिक।

क्षणभद्र: प्रत्यभिज्ञा भ्रम थिक — सादृश्यसँ उपजल। पूर्व–क्षणक घैल–सन उत्तर–क्षणक घैल, आ बीचमे धाराक अविच्छेद — एतबेसँ "वैह" क भान।

उदयन: भ्रम? तँ ओकर बाधक देखाउ! भ्रम ओकरा कहल जाइत अछि जे उत्तरकालमे खंडित हो — रस्सीमे साँपक भान, इजोत अएलापर खंडित। "इएह ओ घैल" —– ई ज्ञान कहिया, केकर द्वारा, कोन इजोतमे खंडित भेल? अहाँक "खंडन" केवल अहाँक सिद्धांत थिक — आ सिद्धांतसँ अनुभव नहि कटैत अछि, अनुभवसँ सिद्धांत कटैत अछि। दोसर बात: जँ प्रत्यभिज्ञा भ्रम, तँ अहाँक अपन "संतति" क ज्ञान की थिक? धाराकेँ धारा रूपमे चिन्हब सेहो तँ दू क्षणकेँ जोड़िकऽ देखब थिक — आ जोड़निहार जँ स्वयं क्षणिक, तँ जोड़त के? अहाँ जाहि सीढ़ीसँ हमर छत तोड़य चढ़ल छी, ओ सीढ़ी हमरहि आँगनक थिक।

(क्षणभद्र किछु काल मौन। घटिका-यंत्रक जल-ध्वनि सुनाइ दैत अछि।)

क्षणभद्र: *(धीरेसँ)* दुनू स्तंभ हिलल, आचार्य — मानब ईमानदारी थिक। मुदा हमर तूणीरमे एकटा आर बाण अछि, आ ओ बाह्य वस्तुपर नहि, *शब्दपर* चलत। हमर सहचर ज्ञानमित्र ओकर धनुर्धर छथि।

(सूत्रधार: "अपोह-वाद — अगिला अंक।")

अंक तृतीय

निषेधक जाल

अपोहवादक परीक्षा: की शब्दक अर्थ केवल "आनक निषेध" थिक

दृश्य १ — ज्ञानमित्रक पक्ष

(ज्ञानमित्र, युवा आ तीक्ष्ण, पहिल बेर वक्ता-स्थानपर।)

ज्ञानमित्र: आचार्य उदयन, अहाँ दुइ अंक धरि "घैल," "बीज," "गाय" —– ई शब्द निर्भय भऽ कऽ चलबैत रहलहुँ, जेना हरेक शब्दक पाछू कोनो स्थिर सामान्य ठाढ़ हो — गोत्व, घटत्व, बीजत्व। हम ओहि नींवपर कुदारि चलाएब। "गाय" शब्द सुनिकऽ जे बुझाइत अछि, से कोनो सत् "गोत्व" नहि — केवल *अगो-व्यावृत्ति* थिक: "जे गाय-भिन्न नहि।" शब्दक काज बाड़ लगाएब थिक, बीचमे किछु रोपब नहि। किएक मानी ई? किएक तँ सामान्य नामक वस्तु परीक्षामे नहि टिकैत अछि: एक गोत्व अनेक गायमे — पूर्ण रूपसँ रहैत अछि तँ एक गायमे सम्पूर्ण गोत्व, आ दोसर गायमे की बचल? अंशसँ रहैत अछि तँ गोत्वक अंश — आ निरवयवक अंश? नव गाय जनमैत अछि तँ गोत्व ओतय *जाइत* अछि कि ओतहि *छल*? गाय मरैत अछि तँ गोत्व मरैत अछि कि विधवा होइत अछि? हरेक उत्तर हास्यास्पद। तँए बुद्धिमान बाट: सामान्यकेँ छोड़ू, निषेधकेँ पकड़ू — "गाय" माने "अ-गाय नहि।"

उदयन: *(शिष्य दिस, स्नेहसँ)* युवा धनुर्धरक बाण सोझ अछि, आ हम ओकरा आदरसँ लोकब। *(ज्ञानमित्र दिस)* पहिल प्रश्न, आ एहीमे अहाँक आधा उत्तर अछि: "अ-गाय" —– एहि पदक अर्थ की? "गायक निषेध।" आ "गाय" क अर्थ? "अ-गायक निषेध।" तँ "गाय" = "जे 'गायक-निषेध' क निषेध।" —–

परिभाषामे परिभाष्य घूमि कऽ आबि गेल। ई अन्योन्याश्रय थिक, आ एहिसँ बचबाक अहाँ लग एकहि रस्ता: कतहु–ने–कतहु कोनो *विधिमुख* — सकारात्मक — अर्थ मानू, जतयसँ निषेधक जाल बान्हल जाए। बाड़ लगएबा लेल सेहो खेतक ठेकान चाही।

ज्ञानमित्र: व्यावृत्ति सभ अपना–अपनामे भिन्न — गो–व्यावृत्ति आन, अश्व–व्यावृत्ति आन — आ एहि भेदसँ व्यवहार चलत, कोनो विधि बिनु।

उदयन: व्यावृत्तिमे भेद? कोन आधारपर? दू निषेध भिन्न होइत अछि अपन *प्रतियोगीक* भेदसँ — घैलक अभाव आ कपड़ाक अभाव भिन्न, किएक तँ घैल आ कपड़ा भिन्न। तँ गो–व्यावृत्ति आ अश्व–व्यावृत्तिक भेद टिकल गाय आ घोड़ाक भेदपर — आ गाय–घोड़ाक भेद? अहाँक मतें ओहो व्यावृत्तिसँ! फेर चक्र। निषेध–निषेधक ई नाच अनंत घूमत, आ कतहु पएर राखबाक भूइँ नहि भेटत। आ लोक–अनुभव तँ सोझे गवाही दैत अछि: बच्चा जखन पहिल बेर गाय चिन्हैत अछि, तखन की ओ संसारक समस्त अ–गाय — घोड़ा, हाथी, ऊँट, जे ओ कहियो देखबो नहि केलक — हुनका सभक निषेध कऽ कऽ चिन्हैत अछि? ओ तँ सोझे किछु *देखैत* अछि — सींग, थूथुन, ओ बनावटि — किछु सकारात्मक, जे हरेक गायमे झलकैत अछि। ज्ञान विधिमुख अछि; निषेध ओकर छाया थिक, देह नहि।

दृश्य २ — सामान्यक रक्षा

ज्ञानमित्र: तखन हमर कुदारिक उत्तर दिअ — ओ सभ प्रश्न: एक अनेकमे कोना? नव गायमे गोत्व कतयसँ?

उदयन: दैत छी, आ उत्तरक सूत्र थिक: सामान्यकेँ द्रव्यक तराजूपर नहि तौलू। "जाइत–आबैत" द्रव्य अछि; सामान्यक होएब *वृत्ति* थिक, गति नहि। दीपक इजोत कोठली भरिमे — की इजोत बँटा गेल? आकाश हरेक घैलमे — की आकाश टुकड़ी–टुकड़ी भेल? "एक अनेकमे पूर्ण रूपसँ" —– ई द्रव्य–बुद्धिकेँ अटपटा लगैत अछि, किएक तँ द्रव्य एहन नहि रहैत अछि; मुदा सामान्यक इएह स्वभाव थिक, आ स्वभावपर "किएक" नहि चलैत अछि — जेना अहाँ नहि पुछैत छी जे अगिन गरम किएक। नव गाय जनमल — गोत्व ओतय "गेल" नहि; ओ गाय गोत्वक *नव आश्रय* बनल, जेना नव घर बनलापर आकाश ओहिमे "अएलक" नहि। आ प्रमाण? अनुगत प्रत्यय — "ई गाय, ई गाय, ई गाय" —– भिन्न–भिन्न व्यक्तिमे एकहि आकारक बोध। ई बोध निर्विषय नहि भऽ सकैत अछि, आ एकर विषय व्यक्ति नहि (व्यक्ति तँ भिन्न–भिन्न), तँए विषय ओ एक अनुगत धर्म — सामान्य। जे अनुभव अपोहकेँ मानय पड़ैत अछि, से सामान्यकेँ सोझे सिद्ध करैत अछि — अहाँ सीधा रस्ता छोड़ि उनटा घूमि कऽ ओतहि पहुँचैत छी, आ रस्ता भरि निषेधक काँट बीछैत।

ज्ञानमित्र: *(हठ नहि छोड़ैत)* मुदा प्रवृत्ति? लोक "गाय आनू" सुनि गाय दिस *चलैत* अछि। जँ शब्दक विषय सामान्य, तँ लोक गोत्व आनए — गोत्व तँ रस्सीसँ नहि बान्हल जाइत!

उदयन: आ इएह हमर अंतिम उत्तर, जे गंगेश धरि हमर परम्परा दोहराओत: शब्दक विषय *सामान्य–विशिष्ट व्यक्ति* थिक — गोत्वसँ युक्त गाय। ने कोरा गोत्व, ने कोरा व्यक्ति — दुनूक गाँठ। तँए "गाय आनू" सुनि लोक सींगवाली आनैत अछि, आ अ–गायक निषेधक कोनो सूचीक आवश्यकता ओकरा

कहियो नहि पड़ैत अछि। *(ज्ञानमित्र दिस, कोमलतासँ)* अहाँक कुदारि तेज छल, धनुर्धर — मुदा ओ जाहि जड़िपर चलल, से जड़ि पाथरक निकलल।

(ज्ञानमित्र प्रणाम कऽ कऽ बैसि जाइत छथि। क्षणभद्र उठैत छथि — आब हुनक मुद्रा बदलल अछि।)

अंक चतुर्थ

दर्पणक सभागार

बाह्यार्थ–निषेधक (विज्ञानवादक) परीक्षा

दृश्य १ — स्वप्नक तर्क

क्षणभद्र: आब हमर गहींरतम दुर्ग, आचार्य। बाहरक वस्तुपर एतेक वाद भेल — मुदा "बाहर" अछिये की? जखन अहाँ बगीचाक सपना देखैत छी, बगीचा बाहर अछि?

उदयन: नहि।

क्षणभद्र: आ तइयो स्वप्नक बगीचा ओतबे "बाहर" *बुझाइत* अछि जतबे ई सभागार अखन। बाहर–पनक अनुभूति दुनूमे एक — आ जँ ओ अनुभूति स्वप्नमे बिनु बाह्य वस्तुक भऽ सकैत अछि, तँ जागरणमे बाह्य वस्तु मानबाक बाध्यता की? ज्ञान अपने नील–पीत आकार धऽ लैत अछि — सहोपलम्भ–नियम देखू: नील आ नीलक ज्ञान सदा *संगे* उपलब्ध — कहियो नील बिनु ज्ञानक भेटल? जे सदा संगे, से अभिन्न। नील ज्ञाने थिक।

उदयन: सहोपलम्भसँ अभेद? तँ दीप आ दीपसँ देखल घैल सेहो सदा संगे उपलब्ध — की घैल दीप भऽ गेल? संग–उपलब्धिक सोझ अर्थ: एक *साधन* थिक दोसरक ग्रहणक — ज्ञान करण थिक, नील कर्म। करण–कर्मक नित्य–साहचर्यसँ अभेद निकालब — तराजू आ तौलल वस्तुकेँ एक कहब थिक। आ स्वप्नक तर्कक जड़िमे कुड़हरि: स्वप्न–जागरणक *भेद* अहाँ स्वयं मानैत छी — नहि मानितहुँ तँ "स्वप्नमे" ई पदे नहि बजितहुँ। ओ भेद की थिक? हमर ग्रंथ लक्षण दैत अछि, सुनू: स्वप्न ओ अवस्था जाहिमे कर्ता–करण–देश–कालक

संगति नहि टिकैत अछि — राजमहल अचानक नदी बनि जाइत अछि, मरल पितामह बजैत छथि, आ किछु अचरज नहि होइत; जागरण ओ अवस्था जाहिमे संगति टिकल रहैत अछि आ जे स्वप्नक संगतिकेँ *बाधित* करैत अछि। बाधक–बाध्यक ई भेद अनुभव–सिद्ध — आ बाधित केवल ओ होइत अछि जकरा टोकनिहार कोनो स्थिर वस्तु हो। स्वप्न जागरणसँ कटैत अछि; जागरण केकरोसँ नहि कटैत। दुनूकेँ एक तराजूपर राखब — साक्षीकेँ आ झूठ गवाहकेँ एक कठघरामे ठाढ़ करब।

दृश्य २ — चित्र–ज्ञानक विवाद आ व्यंग्य

क्षणभद्र: तखन चित्रज्ञान लिअ — एकहि ज्ञानमे नील–पीत–रक्त अनेक आकार एकहि क्षण। जँ आकार बाहरक होइत, तँ एक ज्ञानमे अनेक विरुद्ध आकार कोना? तँए आकार ज्ञानक अपन — भीतरक — आ बाहर किछु नहि।

उदयन: *(मुस्कान दबबैत)* वाह, भाइ! तँ की जेना साँप–नेवला शान्त मुनिक आश्रम लग पहुँचि अपन जन्मजात बैर छोड़ि दैत अछि, तहिना नील आ पीत ज्ञानक आँगनमे पहुँचिते अपन स्वाभाविक विरोध त्यागि दैत अछि? कि विरोध तँ रखैत अछि, केवल ओकर फल — परस्पर–भेद — छोड़ि दैत अछि? *(परिषद्मे हँसी)* सत्य सोझ अछि: ज्ञानमे नील–पीत "एक" नहि भेल अछि — एकहि ज्ञान *अनेककेँ* विषय बनौने अछि। हमर नियम एतबे छल जे नील पीत रूपेँ नहि भासय, पीत नील रूपेँ नहि — आ चित्रज्ञानमे सेहो नील नीले भासैत अछि, पीत पीते। विरोध विषय–सभक बीच अछि, आ ओ बनल अछि; ज्ञान दर्पण थिक जाहिमे अनेक मुँह एकहि संग देखाइत अछि — दर्पण मुँह नहि भऽ जाइत।

क्षणभद्र: मुदा अहाँक अपन घरमे प्रश्न: ज्ञान अमूर्त, वस्तु मूर्त — दुनूक संबंध की? अमूर्त हाथ मूर्त घैल कोना पकड़त?

उदयन: विषय–विषयि–भाव — स्वभाव–सिद्ध संबंध, जकर आर व्याख्या मांगब ओहिना थिक जेना पुछब जे अगिन–दाह्यक संबंधक संबंध की। हरेक संबंधक पाछू संबंध ताकब अनवस्थाक कूप थिक — कतहु स्वभावपर रुकय पड़ैत अछि, आ ई रुकब हारि नहि, ज्ञान थिक। आ अंतिम बात, जे अहाँक सम्पूर्ण विज्ञानवादक गरदनिपर तरुआरि थिक: ई *वाद* स्वयं। अहाँ हमरा मनबय आयल छी — माने अहाँक ज्ञान–धारासँ बाहर एकटा श्रोता अछि जकर मत बदलल जा सकैत अछि। अहाँक स्वर हमर कान धरि आबैत अछि — माने ध्वनि नामक बाह्य माध्यम अछि। जँ सभटा अहींक चित्तक तरंग, तँ ई घटिका–यंत्र किएक, ई सभा किएक, ई परिश्रम किएक? अपन स्वप्नकेँ मनएबा लेल केओ पसेना नहि बहबैत अछि।

क्षणभद्र: *(दीर्घ मौन; फेर, पछिला नाटकक ओहि क्षण जकाँ)* वस्त्रक सिवना अहाँ फेर ताकि लेलहुँ, आचार्य। ई स्तंभ सेहो झुकल — मुदा घर अखनहु ठाढ़ अछि, किएक तँ भीतरका कोठली बाँकी अछि: भले बाहर संसार होउ, ओकरा देखनिहार कोनो *आत्मा* किएक होउ? केवल देखब किएक नहि — स्वामीहीन, धाराबद्ध?

उदयन: आब हम असली रणक्षेत्रपर छी — जकर हेतु ई सम्पूर्ण ग्रंथ लिखल गेल।

अंक पंचम

ज्ञानक पाछू ज्ञाता

आत्माक साक्षात् आ आनुमानिक सिद्धि

दृश्य १ — "हम" क साक्ष्य

(उदयन आचार्य–आसनसँ उतरि क्षणभद्रक बराबरीमे ठाढ़ होइत छथि — वादक परम्परामे ई संकेत जे आब केवल प्रमाण बाजत, अधिकार नहि।)

उदयन: क्षणभद्र, शास्त्र–सम्प्रदाय सभ कात राखू। एहि क्षण जे देल अछि, ओतहिसँ बाजू: "हम थाकल छी," "हम बुझलहुँ," "हम अस्वीकार करैत छी जे हम छी" —– एहि सभमे "हम" की कहैत अछि?

क्षणभद्र: सुविधाक कल्पना। धाराक अपनापर लगाओल नाम — जेना नदीक नाम, यद्यपि जलसँ फराक "नदी" किछु नहि।

उदयन: कल्पनो केकरो *होइत* अछि। "हम छी" —– ई ज्ञान "आकाश नील अछि" जकाँ नहि, जकरापर संशय भऽ सकए। ककरो कहियो — जागल–सूतल, मूर्ख–पंडित — अपन अस्तित्वक विचार करैत काल अपन अस्तित्वपर संदेह भेलैक? "हम नहि छी" —– ई वाक्य बाजू तँ बजनिहार "हम" वाक्यक पाछू ठाढ़, अपन मेटाएब देखैत।

क्षणभद्र: व्याकरणक भूत थिक ई। "बरखा भऽ रहल अछि" —– कोन "बरखा–कर्ता"? तहिना "हम जनैत छी" —– केवल जानब, व्याकरणसँ पहिरल कर्ताक वस्त्र।

उदयन: दुनू स्थितिकेँ कसौटीपर कसू, आ भेद हाथ लागत। "बरखा भऽ रहल अछि" मे हम खसैत जलकेँ देखा कऽ पुछि सकैत छी: "एहिमे, जलसँ

फराक, बरखा–कर्ता कतय?" –– केओ नहि भेटत, किएक तँ बरखब आ जल–खसब एके घटना। आब वैह परीक्षा जानबपर: घैलक ज्ञान भेल — की ज्ञानसँ फराक, ज्ञानक *स्वामी* भेटैत अछि? अप्रिय समाचार सुनबा काल अपनाकेँ देखू: एक भाग ज्ञानक उदय; दोसर, अलगे चिन्हल जाइत, प्रतिरोध — "काश एना नहि होइत" –– असुविधाक अपनापन। "हम काटैत छी" मे काटब आन, कटनिहार आन — लोहा अपन बनाओल घाओकेँ अपन नहि मानैत। हँसुआ काटि कऽ भोथ होइत अछि, काटनिहार नहि। तहिना जानब क्रिया, आ क्रियाक कर्ता क्रियासँ भिन्न, क्रियासँ पूर्ववर्ती, क्रियाक बाद अवशिष्ट।

दृश्य २ — देह, इन्द्रिय, मन: तीनूक परीक्षा

क्षणभद्र: कर्ता मानि लिअ — मुदा ओ *देहे* होउ। पाँच स्कन्धक ई जुटान — एकर बाहर आत्मा किएक?

उदयन: तीन उम्मीदवार, तीनूक परीक्षा। *देह?* जँ आत्म–ज्ञान देहकेँ देह–रूपेँ पकड़ैत, तँ हमर हाथकेँ अहाँक हाथ ओतबे "हम" कहबितए — देह देहमे एहन भेद नहि जे अरबों निजी "हमर" मे आपसँ बँटा जाए। किछु *पहिनहि* एहि देहकेँ ज्ञाताक देह बुझबैत अछि — आ ओ बुझौनिहार देह नहि भऽ सकैत अछि, चक्र–दोषक डरसँ। आ बाल–देह, युवा–देह, जीर्ण–देह — तीन देह, एकोटा परमाणु साझा नहि — तइयो "हम, जे बच्चामे डरैत रही" –– के जोड़लक? *इन्द्रिय?* "जे हम देखने रही, से आब छूबि रहल छी" –– आँखिक विषय हाथ धरि के अनलक? इन्द्रिय–इन्द्रियक बीच सूचनाक ई हस्तांतरण कोनो साझा स्वामी बिनु — जेना दू नौकर बिनु मालिकक एक–दोसराक हिसाब जनैत होथि। *मन?* मन करण थिक — स्मृति–सुख–दुःखक साधन — आ करण

कर्ता नहि, जेना कुड़हरि लकड़हारा नहि। तीनू उम्मीदवार गिरल; जे बचल — देह–इन्द्रिय–मनक ओहि पार, तीनूक प्रयोक्ता — तकरे नाम आत्मा।

दृश्य ३ — स्मृति, अहंकार–संस्कार, आ आलय–विज्ञान

शिष्य: आचार्य, हमर ओ पुरान प्रश्न, आब आर धारगर: अनुभवक प्रवाहसँ फराक स्वामीक प्रमाण? भीड़ ओहिमे जुटल लोकसँ बेसी किछु नहि।

उदयन: स्मृति — आ एहि बेर ओकर सम्पूर्ण गिरह खोलब। बीस बरख पहिने आमक स्वाद; आइ ओकर स्मरण। चाखब मरि चुकल घटना; स्मरण आइक। स्मरणकेँ *हमर* चाखबक स्मरण होएबा लेल — आनक डायरी–सन पराया नहि — एक वस्तुकेँ दुनू छोरपर उपस्थित होएब चाही। अनुभवसँ संस्कार, संस्कारसँ स्मृति — मानल; मुदा संस्कार *बसैत कतय अछि*? क्षण तँ मरि गेल। अहाँ कहब: उत्तर–क्षणमे सौंपल गेल। तँ हरेक सौंपब एक क्षण–भरिक — आ बीस बरख माने अरबों हस्तांतरण, हरेकमे सम्पूर्ण संस्कार–कोष अक्षत — ई डाक–व्यवस्था कोन डाकिया चलबैत अछि? आ चूक कहियो किएक नहि होइत — हमर स्मृति अहाँक धारामे किएक नहि पहुँचि जाइत अछि, जँ धारा–धाराक बीच केवल कारणिक डोरी अछि?

क्षणभद्र: *(धीरेसँ, जेना अपन गहींरतम पत्ता खोलैत)* हमरहि परम्पराक किछु आचार्य एकर हेतु आलय–विज्ञान मानैत छथि — सतहक क्षणिक तरंगक नीचाँ एकटा संग्राहक धारा, जाहिमे सभ संस्कार जमा रहैत अछि, जन्म–जन्मांतर।

उदयन: तखन, मित्र, स्वागत — अहाँ आधा सभा पार कऽ कऽ हमरहि आसन लग आबि गेलहुँ। "सतहक तरंगसँ नीचाँ," "क्षणिक चमकसँ स्थिर,"

"संस्कारक संग्राहक," "स्मृति–पहिचानक आधार" —– बौद्ध वस्त्रमे ई आत्माक हुलिया थिक, अक्षरशः। नाम बदलू, जँ नाम अखरैत अछि। वस्तु मानि लेलहुँ — आ वस्तुए पर हमर दावा छल, नामपर कहियो नहि। एकटा भेद मात्र बचल: अहाँक आलयकेँ अहाँ क्षणिक कहब — तँ फेर वैह डाकियाक प्रश्न ओहीपर; हम ओकरा स्थिर कहब — आ सभ गिरह खुजि जाइत अछि। लाघव कोम्हर अछि, से अहीं तौलू, जे तौलब सिखौनिहार परम्परासँ आयल छी।

(क्षणभद्र उत्तर नहि दैत छथि। ओ धीरे–धीरे अपन आसनपर बैसि जाइत छथि — पराजित नहि, तौलैत।)

अंक षष्ठ

तर्कसँ परक मौन

ईश्वर, शास्त्र–प्रामाण्य, आ मुक्तिक स्वरूप

दृश्य १ — ईश्वरक अनुमान आ ओकर आक्षेप

क्षणभद्र: मानि लिअ आत्मा, आचार्य — बनल रहएवाला, स्मरण करएवाला। मुदा अहाँक ग्रंथ एतय नहि रुकैत अछि; ओ ईश्वर धरि जाइत अछि। तँ ओहो सुनी: प्रमाण?

उदयन: वैह पुरान, अटूट: पृथ्वी–पर्वत–देह कार्य थिक — सावयव, उत्पन्न — आ कार्य कर्ता बिनु नहि, जेना घैल कुम्हार बिनु नहि। कर्ता चाही: उपादानक साक्षात् ज्ञाता, इच्छावान, प्रयत्नवान। हम–अहाँ सन जीव पर्वत नहि रचि सकैत छी — तँए ओ ज्ञाता सर्वज्ञ, ओ शक्ति अपार।

क्षणभद्र: आ हमर तीन बाण, क्रमसँ। पहिल: व्याप्ति असिद्ध — "जे कार्य, से सकर्तृक" ई नियम अहाँ घैल–कपड़ामे देखलहुँ, जतय कर्ता *सदेह* छल। पर्वतक कर्ता विदेह — तँ व्याप्ति सदेह–कर्तासँ बान्हल भेल, आ विदेहपर छलाँग अप्रामाणिक। दोसर: जँ सर्वज्ञ नित्य–कृती, तँ सृष्टि सदा किएक नहि — प्रलय किएक? तेसर: करुणामय रचनिहारक संसारमे एतेक दुःख किएक?

उदयन: तीनूक उत्तर, क्रमसँ। *पहिल:* व्याप्ति "कार्यत्व–कर्तृत्व" क बीच अछि, "कार्यत्व–सदेहकर्तृत्व" क बीच नहि। देह कर्ताक लक्षण नहि, साधन थिक — आ साधन कार्य–भेदें बदलैत अछि। कुम्हारकेँ हाथ चाही किएक तँ ओकर ज्ञान–इच्छा अपूर्ण — साधन बिनु माटिपर नहि उतरैत। जकर ज्ञान–इच्छा–प्रयत्न स्वयं पूर्ण, ओकरा बिचौलिया देहक काज नहि। "सभ कर्ता सदेह"

ई अहाँ तखने कहि सकैत छी जखन सभ कर्ताकेँ देखि चुकल होइ — आ विवादे एहीपर अछि। *दोसर:* सृष्टिक क्रम जीवक अदृष्टक परिपाकसँ बान्हल — ईश्वर नित्य–समर्थ, मुदा कार्य सहकारीक प्रतीक्षा करैत अछि, जेना बीज ऋतुक। *तेसर:* दु:ख ईश्वरक रचना नहि, जीवक अपन कर्मक फल थिक — ईश्वर माली छथि, जे जकर बीज, तकर गाछ; बबूल रोपनिहारकेँ आम नहि भेटैत अछि, आ एहिमे मालीक निष्ठुरता नहि, व्यवस्थाक प्रामाणिकता अछि।

दृश्य २ — मुक्तिक स्वरूप: की दु:खक अत्यन्त–निवृत्ति काम्य थिक

क्षणभद्र: अंतिम प्रश्न, आचार्य, आ इएह ओ प्रश्न थिक जे हमरा बालपनमे भिक्षु बनौलक: *मुक्ति की थिक, आ ओ चाहबा जोग किएक अछि?* अहाँक शास्त्र कहैत अछि: दु:खक आत्यन्तिक उच्छेद। मुदा सुनू फाँस: मुक्तिमे दु:खक संग *सुखो* तँ उच्छिन्न! ने स्वाद, ने स्पर्श, ने स्वप्न। एहन सूखल शून्य–सन अवस्था के चाहत? लोक तँ सुख चाहैत अछि — आ अहाँक मोक्षमे सुखक नामोनिशान नहि।

उदयन: *(किछु काल मौन, फेर — एहि सम्पूर्ण नाटकक सबसँ कोमल स्वरमे)* आ एतय, मित्र, तर्कशास्त्री केँ एक क्षण लोक–जीवन दिस ताकय पड़त। पुछू संसारसँ: सुख आ दु:ख बराबरि बाँटल अछि? दु:ख सदा सुखक साधन संग नहि आबैत अछि, मुदा सुख? सुख प्रायः दु:खक साधनसँ घेरल आबैत अछि। धर्मसँ कमाएल वस्तुमे सुखक कण केतेक छोट, आ ओकरा कमएबा–जोगएबामे दु:खक बरसाती राति केतेक अनगिनत! काँट गड़लाक पीड़ामे सुखक कोन मिश्रण अछि, से लोक अपने तौलए। स्वर्गक सुखो दु:खक बाणसँ बिन्हल — ईर्ष्या ओतहु अछि, च्युतिक भय ओतहु। आ "सुख दु:खसँ

छाँटि लिअ" —— जेना अन्नसँ भूसी? हमर ग्रंथक उत्तर: जाहि भोजनमे विष मधुमे घोरल हो, ओहिमे सँ संसारक निपुणतम रसोइयो केवल मधु नहि खा सकैत अछि। तँए गहींर वैराग्यवाला लोक सुखक ओहि कणकेँ जानि–बूझि छोड़ैत अछि — जेना अति–आसक्त दोष देखितो वस्तु दिस दौड़ैत अछि, तहिना अति–विरक्त गुण देखितो विमुख होइत अछि। आ ई कोनो अनुभव–शून्यक अन्हार नहि: काँट निकलितहि जे होइत अछि — ओ *निवृत्ति* — तकरा के नहि चाहलक? के ओकरा "सूखल शून्य" कहलक? मुक्ति ओही निवृत्तिक पूर्णता थिक: सम्पूर्ण काँटक सम्पूर्ण निकलब, सदाक हेतु। ओ काम्य अछि, किएक तँ दुःख स्वभावसँ द्वेष्य अछि — आ एतबे पर्याप्त अछि।

क्षणभद्र: *(बहुत कालक बाद, उठिकऽ, हाथ जोड़ने)* हम एहि सभामे आत्मा खाली करय आयल छलहुँ, आचार्य। छह अंक बीति गेल, आ आब एहो खाली नहि कऽ सकैत छी जे आयल के अछि — आ ओहो नहि, जे ई सुनलाक बाद लौटत के।

उदयन: तखन घटिका–यंत्र अपन काज कऽ चुकल। जाउ, आ प्रश्नक संग बैसू — इहो साधना थिक। नीक जकाँ लड़ल वाद एक जनक मौनमे नहि, दुनू जनक बेसी नीक चिंतनमे समाप्त होइत अछि।

उपसंहार

(सूत्रधार वापस आबैत अछि। मंचपर बीजक बोरा, पाथर, आ घैल — तीनू साक्षी — अखनहु राखल अछि।)

सूत्रधार: छह अंक, आ तीन गूँगा साक्षी: बीज, जे सिखौलक जे योग्यता प्रतीक्षा कऽ सकैत अछि; पाथर, जे सिखौलक जे टूटब सेहो सकारण होइत अछि; आ घैल, जे भोरसँ साँझ धरि एतय राखल–राखल एतबे कहैत रहल — "हम वैह छी।" उदयनक उत्तर एहि मंचपर अंतिम शब्द नहि छल; हुनक विरोधी आर वस्त्रमे, आर तीक्ष्ण उपकरण लऽ कऽ लौटल, आ लौटैत रहत। इएह दर्शनक पराजय नहि, ओकर श्वास थिक। जँ अहाँ एहि सभासँ प्रश्नकेँ सुलझल नहि, तीक्ष्ण भऽ कऽ लऽ जा रहल छी — तँ ई नाटक, ओहि ग्रंथ जकाँ जकर हड्डीपर ई ठाढ़ अछि, अपन काज कऽ चुकल।

(सभ पात्र प्रस्थान करैत छथि।)

न्यायकुसुमांजलि — तर्कक पुष्पगुच्छ

नाटकक पात्र

– **सूत्रधार —** मंच–संचालक/सूत्रधार रूप, भ्रमणशील विद्वानक वेशमे; रंगसंकेत, खंड–शीर्षक, आ आवाहन–श्लोक पढ़ैत छथि। कहियो तर्क नहि करैत छथि; केवल सीमांकन करैत छथि।

– **उदयनाचार्य** ("उदयन") —– वादक दार्शनिक–यजमान; गंभीर, धैर्यवान, स्नेहपूर्ण कठोरतासँ युक्त। सिद्धांती — जे अंततः हर संशयक उत्तर दैत छथि।

– **आक्षेपक (पूर्वपक्षी)** —– एकटा अशांत, तीक्ष्ण–वाणी संशयवादी, जे "एहन आपत्ति भ' सकैत अछि," "मानि लिअ," आ "विचार करू" जकाँ संशय बजैत अछि, कोनो एक सम्प्रदायक नहि — सभाक सामान्य–संशयवादी।

– **सांख्य आचार्य —** शांत, प्रकृति आ त्रिगुणक कथा करैत छथि।

– **चार्वाक —** सांसारिक, तेज, अदृश्य किछुओसँ अधीर।

– **बौद्ध** (बौद्ध भिक्षु) —– कोमल–स्वर, प्रवाह आ क्षणभंगुरतापर आग्रही।

– **परिषद्** (सामूहिक/अनाम) —– सहमति वा संशयक कानाफूसी; साझा सामान्य स्वर।

स्थान: मिथिलाक एकटा सभा–भवन (सभा), खुला–स्तंभयुक्त, दीप जरैत। बहुतो सम्प्रदायक विद्वान् एकत्र भेल छथि, जेना प्रथा छल, एकटा प्रस्तावकेँ सभ आगंतुकक विरुद्ध परखबाक हेतु।

अंक प्रथम — प्रथम पुष्पगुच्छ

(संसारक कारण संबंधी तर्क)

(एहि अंकमे नव स्वर सम्मिलित नहि होइत अछि।)

दृश्य १ — आवाहन

(मंच: दीप–जरल सभापर पर्दा उठैत अछि। उदयन ठाढ़ छथि, एकटा अदृश्य प्रतिमा दिस हाथ जोड़ैत छथि, आ पहिने सभार्कें नहि, अपितु एकटा भेंट रूपमे बजैत छथि।)

सूत्रधार: *(संकेत पढ़ैत)* तर्कसँ पहिने, एकटा भेंट। एहि शब्दकेँ दुइ अर्थमे एकहि संग बुझू — जेना केओ फूलक कथा करैत अछि, आ, एकहि साँसमे, सिद्धांतक सेहो।

उदयन: *(आवाहन रूपमे, आधा–मंत्रोच्चारणमे)*

ई पुष्पगुच्छ — सत्यतासँ बटोरल, ताजा राखल, हाथ कठोरतासँ दबेलहुँ तइयो कहियो मुरुझायल नहि — प्रभुक दुनू चरणमे राखल जाए, आ हमर मन, ओहि भेंटमे, एहन आनंद जानय जकर पाछू कोनो शोक नहि आबय।

(किछु काल रुकि, फेर बेसी सरल भाषामे, सभार्कें)

आ हमरा दुइ बेर बुझू, मित्रगण। हम फूलक कथा करैत छी। हम ओहि सिद्धांतक सेहो कथा करैत छी जकरा हम अहाँक सोझाँ राखय जा रहल छी — ईश्वरक अस्तित्वक प्रमाण, तर्क जे अपन विपरीतक विरुद्ध परखल गेल अछि, अनुमान जे कोनो प्रत्युत्तरसँ नहि टूटैत अछि। दुनू अहाँक हाथमे नहि मुरुझायत। एहि ज्ञानक साधना करू, आ दुःख स्वयं अहाँपर अपन पकड़ खोइ दैत अछि।

सूत्रधार: *अन्वेषणक विषयक परिभाषा।*

उदयन: हमर तात्पर्य, तखन, ओहि प्रभुक स्वभाव स्पष्ट करब थिक — ओ पारलौकिक आत्मा — जकर पूजाकेँ विद्वान लोकनि स्वर्ग आ मुक्तिक मार्ग कहैत छथि।

दृश्य २ — अन्वेषण किएक?

(परिषद् हलचल करैत अछि — आधा–सहमतिक कानाफूसी।)

आक्षेपक: उदयन। *अन्वेषण* किएक करी? वेद तँ हुनक गान पहिनहि सँ गाबि चुकल अछि। एहि सभामे हर परंपराक अपन ईश्वर, अलग नामसँ, पहिनहि सँ अछि — कोन संशय बाकी अछि जे अन्वेषण खोलल जाए?

उदयन: कोनो नहि, आ इएह ठीक हमर बिन्दु थिक, मित्र — आ ठीक हमर समस्या सेहो। *(सभाकेँ चारू कात देखबैत)* एहि सभाकेँ देखू। उपनिषद्क अनुयायी हुनका शुद्ध चैतन्य कहैत छथि। कपिलक अनुयायी हुनका नित्य आ चेतन कहैत छथि, मुदा निर्माता नहि। पतंजलिक योगी हुनका क्लेशसँ अस्पृष्ट आत्मा कहैत छथि, जे केवल शिक्षा देबाक हेतु शरीर धारण करैत छथि। पाशुपत हुनका ओहि नियमोंसँ सेहो मुक्त कहैत छथि जे हमरा सभकेँ बान्हैत अछि। शैव हुनका शिव कहैत छथि; वैष्णव, विष्णु; पुराणकार, सभक पितामह। कर्मकांडी हुनका ओ कहैत छथि जिनका आहुति देल जाइत अछि। दिगम्बर हुनका शरीर आ अज्ञानसँ मुक्त कहैत छथि। मीमांसक मंत्रक देवताकेँ स्वयं ईश्वर कहैत छथि। *(चार्वाककेँ, अनादरसँ नहि)* अहूँ, चार्वाक, सामान्य लोक "ईश्वर" सँ जे बुझैत छथि, ओकर हेतु कोनो शब्द राखैत छी।

चार्वाक: *(शुष्कतासँ)* एकटा शब्द, विश्वास नहि।

उदयन: एकटा शब्द सेहो प्रमाण थिक, मित्र। हमर बिन्दु ठाढ़ अछि: एहि सभामे सभकेँ पहिनहि सँ इएह सहमति अछि जे "ईश्वर" सँ *किछु* अभिप्रेत अछि — आ पूर्णतः असहमति अछि जे *की*। ई मौनक आधार नहि थिक। इएह ओ आधार थिक जे अन्वेषण मांगैत अछि। हम शास्त्रसँ पर्याप्त सुनि चुकल छी। अखन तर्कक समय अछि।

सूत्रधार: वेद स्वयं कहैत अछि: पहिने सुनू, फेर मनन करू। आ वृद्धजन जोड़ैत छथि — श्रवणसँ, तर्कसँ, ध्यानक शांत अभ्याससँ, एकटा आत्मा अंततः अपनाकेँ सत्यरूपमे देखबामे सक्षम होइत अछि। तँए: मनन आरंभ होइत अछि।

दृश्य ३ — पाँच संशयक नामकरण

उदयन: हमरा प्रामाणिक होएब चाही ओहि सभक विषयमे जे हमर विरुद्ध ठाढ़ अछि, एकटा सेहो प्रमाण देबासँ पहिने। पाँच संशय, आ हम एहि पुष्पगुच्छ भरि एक–एक क' उठाएब।

आक्षेपक: *(अँगुरीपर गनैत)* एक — अगिला जगतमे हमर भाग्यक पाछू कोनो अदृश्य, अलौकिक कारण अछिये नहि। दुइ — एहन कारण बिनु सेहो, केवल मानवीय पुरुषार्थ कर्मकांड आ ओकर फलकेँ बुझएबाक हेतु पर्याप्त अछि। तीन — सकारात्मक प्रमाण अछि जे ईश्वर अस्तित्वमे *नहि* अछि। चारि — भले ईश्वरक कोनो प्रमाण देल जाए, ओ प्रमाणे अंततः अमान्य सिद्ध होएत। पाँच — ईश्वरक कोनो प्रामाणिक प्रमाण अछिये नहि, मान्य वा अमान्य।

उदयन: नीक — स्पष्ट कहू, इएह उचित वाद थिक। तँ पहिलकेँ लिअ।

दृश्य ४ — "कोनो अदृश्य कारण नहि" क विरुद्ध

उदयन: देखू, लोक कतेक भिन्न–भिन्न ढंगसँ आचरण करैत अछि। एकहि परिस्थितिमे दू व्यक्ति विपरीत मार्ग चुनैत छथि — केओ कर्मकांड दिस, केओ भोग दिस, केओ त्याग दिस। ओहि प्रवृत्तिक भेदक *कारण* अछि, आ ओहि कारणक शृंखलाक कोनो प्रथम कड़ी नहि देखा सकैत छी। आ जे किछु मनुष्य बटोरैत अछि, से अपने व्यक्तिमे बटोरैत अछि, आन केओमे नहि। तँए किछु अदृश्य वस्तुकेँ एहि जीवनक कर्मकेँ ओहिसँ परे प्राप्त फलसँ जोड़बाक चाही। ई संसार, हर प्रकारक दु:खसँ भरल जे असमान रूपसँ बँटल अछि, अकारण नहि भ' सकैत अछि। अकारण वस्तु या तँ सदा रहैत अछि वा कहियो नहि — ओ न त कतहु उत्पन्न होइत अछि, न कतहु समाप्त, बिनु कोनो कार्यक्रमक। तइयो स्पष्ट अछि जे हमर सभक ई संसार *उत्पन्न आ समाप्त होइत अछि* एकटा कार्यक्रम पर, जकरा हमरा सभमे सँ केओ नहि तय केलक। तँए: दृश्यसँ परे किछु कारण अछि।

आक्षेपक: जँ ई कार्य केवल *संयोगवश* उत्पन्न भेल होइ — कोनो कारणक आवश्यकता नहि।

दृश्य ५ — "संयोगवश"? — परीक्षित आ खंडित

उदयन: कहू अहाँ "संयोग" सँ की तात्पर्य राखैत छी, आ हम अहाँकेँ देखा देब जे ई चारिमे सँ एककेँ ढहि जाइत अछि: कोनो कारणे नहि, स्वतः उत्पत्ति, शून्यसँ उत्पत्ति, वा केवल वस्तुक अपन स्वभाव संबंधी एकटा तथ्य। चारूमे सँ केओ बाकी नहि रहैत अछि। हर कार्य जे बनैत अछि ओकर एकटा स्पष्ट पहिलुक सीमा होइत अछि — ओ क्षण जकरासँ पहिने ओ नहि छल — आ एकटा स्पष्ट बादुक सीमा — ओ क्षण जकर बाद ओ, जेहन अछि, नहि रहत।

ओहि सीमाकेँ, *ओहि* क्षणपर, किछुओ चिह्नित नहि करैत अछि, केवल ओहि समय क्रियाशील एकटा कारणकेँ छोड़ि।

आक्षेपक: मुदा मानि लिअ ओ क्षण स्वयं कोनो आर स्पष्टीकरणक आवश्यकता नहि राखैत अछि — एकटा वस्तुमे केवल ई गुण अछि जे ओ एहि दिन अस्तित्वमे आबय, आन दिन नहि, ठीक जेना आकाशमे केवल ई गुण अछि जे ओ नित्य अछि।

उदयन: *सभक* द्वारा साझा एकटा गुण किछुओ नहि बुझबैत अछि जे किएक *ई* वस्तु *एहि* दिन। जँ "जखन कहियो अस्तित्वमे आबय" केवल हर वस्तुक नग्न स्वभाव होइत, कोनो कारण बिनु, तखन इएह प्रश्न "तखने किएक, पहिने किएक नहि" फेर-फेर लौटत, अनंततः, कोनो उत्तर नहि दैत। नहि — उत्पत्तिकेँ एकटा उत्पादकक आवश्यकता होइत अछि। संयोग कोनो उत्तर नहि थिक; ओ वेश धएने प्रश्न मात्र थिक।

दृश्य ६ — सामान्य आ विशेष कारणपर

आक्षेपक: तखन बताउ *एकहि* प्रकारक कारण — जेना, अगिन — एतेक भिन्न-भिन्न साधनसँ किएक उत्पन्न होइत अछि: सूखल घास घिसने, काठ मथने, लेंसद्वारा सूर्यक प्रकाश संग्रहित करने। जँ कारण कार्यकेँ कठोरतासँ निर्धारित करैत अछि, तँ एकटा कार्य तीन भिन्न-भिन्न उत्पत्तिसँ कोना आबैत अछि?

उदयन: किएक तँ कारणशक्ति प्रत्येक भिन्न प्रसंगमे *देखल गेल* सहसंबंधसँ जानल जाइत अछि, सभ प्रसंग हेतु एक बेर घोषित नहि। घिसनाइ, मथनाइ, केंद्रित करनाइ — तीन भिन्न कारण-समूह, प्रत्येक स्वतंत्र रूपसँ अपन-अपन

शर्तमे अगिन उत्पन्न करय बला सत्यापित। ओहि विविधतामे किछुओ नियमकेँ हानि नहि पहुँचबैत अछि जे *एकटा* कार्यकेँ *एकटा* पर्याप्त कारणक आवश्यकता होइत अछि; ई केवल देखबैत अछि जे "पर्याप्त कारण" एकसँ बेसी ढंगसँ साकार भ' सकैत अछि। नियम बाकी रहैत अछि; केवल अहाँक चित्र बहुत संकीर्ण छल।

परिषद्: *(सहमतिक कानाफूसी)*

दृश्य ७ — संसारक विविधताक कारण रूपमे अदृष्ट

आक्षेपक: ई सभ मानि लिअ। किएक अदृश्य — पुण्य आ पाप, *अदृष्ट* — इएह हराएल कारण होएब चाही? किएक न सीधे कहल जाए: सामान्य, दृश्य सहायक कारण, एक–दोसरासँ जुड़ल, हमरा सभक देखल विविधताकेँ स्पष्ट क' दैत अछि?

उदयन: किएक तँ जँ केवल दृश्य कारणक शृंखला सभ किछु स्पष्ट क' दैत, तखन केओ बिनु प्रतिफलक एकहु कर्मकांड करबाक कष्ट नहि उठाबैत — तइयो लोक करैत अछि, एतय किछुओ आशा नहि रखैत, केवल परलोकमे। पूछू *किएक* ओ लोक अड़ल रहैत अछि। सुखक हेतु नहि — अविश्वासी सुख अधिक प्रत्यक्षतासँ खोजैत अछि आ कर्मकांड छोड़ि दैत अछि। केवल प्रतिष्ठाक हेतु नहि — इएह केओ नहि देखय बला निजी भक्ति स्पष्ट नहि करैत। एहि हेतु नहि जे वृद्धजन युवाकेँ ठकलनि — किएक तँ वृद्धजन स्वयं ओ आचरण राखैत छथि, आ एकटा ठकनिहार सामान्यतः पहिने अपनाकेँ नहि ठकैत। कोनो चतुर संस्थापक, अपन लाभक हेतु सभटा गढ़ने? तखन ओ अकेल धनी आ मुक्त भेल होइतथि, किछुओ नहि दैत — तइयो पैटर्न ठीक विपरीत दिशामे चलैत अछि: सच्चा भक्तजन जे किछु राखैत छथि, से *दान* क' दैत छथि। कोनो पूर्ण

विवरण, अदृश्य फल बिनु, जाँचमे बचि नहि सकैत अछि। किछु अदृश्य, किछु *अदृष्ट,* केँ ओहि वास्तविक कारण रूपमे स्वीकार करबाके चाही जे एहि कर्मकेँ ओहि फलसँ जोड़ैत अछि।

दृश्य ८ — स्वतंत्र यथार्थता रूपमे सामर्थ्य; अभावक कार्यकारणत्व

(सूत्रधार खंड–शीर्षक पढ़ैत छथि; उदयन आ आक्षेपक एकटा लम्बा तकनीकी अंशपर काज करैत छथि — एतय ओकर मूल तत्त्वमे संक्षिप्त कएल गेल।)

आक्षेपक: तइयो — की ई "सामर्थ्य" जकर अहाँ कथा करैत छी, कोनो अलग यथार्थता होएब चाही, ओहि दृश्य द्रव्यसँ अलग जे कार्य करैत अछि? की केवल कोनो बाधाक *अभाव* कार्यकारण काज नहि क' सकैत अछि, आर किछुओ आवश्यकता बिनु?

उदयन: अभाव कोनो बाधा हटा सकैत अछि; ओ अपनहि सँ कोनो सकारात्मक कार्य *उत्पन्न* नहि क' सकैत अछि। ईँटासँ घर बनएबाक हेतु केवल राजमिस्त्रीक आलस्यक अभाव नहि, अपितु राजमिस्त्रीक हाथ सेहो चाही। कर्मकांड, तहिना, केवल मार्ग साफ नहि करैत अछि — ओ किछु स्थापित करैत अछि, कर्ताक भीतर एकटा अवशिष्ट सामर्थ्य, जे बाद फलमे पाकैत अछि। ओ अवशेष सत् थिक, यद्यपि अदृश्य; ओकर सत्ता *अनुमानित* अछि, ठीक जेना हम धुआँसँ अगिनक अनुमान करैत छी, ओकर एकटा कार्यक संग आवश्यक संबंधसँ जकर आर कोनो पर्याप्त स्पष्टीकरण नहि अछि। *(अधिक तीव्रतासँ)* इएह ओहि तर्कक शैली थिक जे, समयक्रमे, हमरा सभकेँ पूर्णतः ईश्वर धरि पहुँचाओत — कार्यसँ ओहि कारण दिस एकटा अनुमान जकरा कार्य आवश्यक बनबैत अछि, किछुओ रहस्यमय नहि, केवल दावा कएल नहि।

दृश्य ९ — कर्मकांड केकरा संस्कारित करैत अछि? — सांख्यक प्रस्तुति, आ ओकर समालोचना

(सांख्य आचार्य उठैत छथि।)

सांख्य आचार्य: हमरा अपन सम्प्रदायक विवरण देबय दिअ, किएक तँ ई अहाँक प्रश्नकेँ स्पर्श करैत अछि। हमरा सभ मानैत छी जे प्रकृति — मूल प्रकृति, अचेतन मुदा सक्रिय, त्रिगुणसँ बुनल — संसारक सम्पूर्ण परिवर्तन बिनु सहायताक करैत अछि, पुरुषक मुक्तिक हेतु। कोनो आर कारण, अदृश्य पुण्य वा ईश्वर, आवश्यक नहि: प्रकृति अकेल कर्मकांडक शक्ति आ संसारक प्रसारक आधार हेतु पर्याप्त अछि।

उदयन: *(आदरसँ, मुदा दृढ़तासँ)* एकटा सुंदर व्यवस्था, आचार्य — आ हम एकरा बहुत किछु मानि लेब। मुदा विचारू: प्रकृति, जेना अहाँ ओकर वर्णन करैत छी, *एक* थिक, जड़मे अभेद, सदा एकहि सारभूत स्वभावसँ काज करैत। एकटा एकल, समान कारण, अपनहि छोड़ल, अपनहि सँ एकक बाद एक उत्पन्न होएवाला *क्रम* स्पष्ट नहि क' सकैत अछि, प्रत्येक अपन बारीक प्रतीक्षामे। जँ ओ क्रमशः उत्पन्न करैत छथि, तखन ओहि क्रमक क्रमकेँ किछु बुझएबाक चाही — आ ओ किछु ठीक ओहि प्रकारक अदृश्य, विशिष्टीकरण करएवाला कारण थिक जकर हम तर्क क' रहल छी। हमरा एतबे मानि लिअ, आ हम सभ बहुत दूर नहि रहब; अहाँ केवल ओकरा ओ नाम अखन धरि नहि देलहुँ जे हम देलहुँ।

सांख्य आचार्य: *(संयमितरूपसँ)* हम एकरा आइ निपटा नहि सकब। मुदा हम मानैत छी जे कठिनाई वास्तविक अछि।

दृश्य १० — चार्वाककेँ उत्तर

(चार्वाक अधीरतासँ आगू आबैत छथि।)

चार्वाक: पर्याप्त नजाकत। कोनो अदृश्य किछुओ नहि अछि। जे देखल, छुबल, वा प्रत्यक्ष अनुभवसँ तर्कित नहि अछि, ओ तर्कक हेतु कतहु अछिये नहि। कर्मकांड आदत थिक; परलोक एकटा कथा थिक जे गरीबकेँ आज्ञाकारी राखय हेतु कहल जाइत अछि।

उदयन: तखन स्पष्ट उत्तर दिअ, चार्वाक: सच्चा लोक किएक एहन अनुष्ठान करैत छथि जे हुनका मूल्य देत, जे हुनका कोनो सांसारिक प्रतिफल नहि दैत, जकरा ओ अपन प्रतिष्ठाकेँ कोनो हानि बिनु छोड़ि सकैत छथि, आ तइयो ओ अड़ल रहैत छथि — चुपचाप, बिनु प्रदर्शनक। अहाँ एकरा आदत कहलहुँ। मुदा आदतकेँ सेहो एकटा प्रथम कारणक आवश्यकता अछि, आ जे–जे विवरण अहाँ देलहुँ — सुख, प्रथा, छल, संस्थापकक चतुराई — सभ ढहि जाइत अछि जखन ओकर परीक्षा होइत अछि, जेना हम एहि सभाकेँ पहिनहि सँ देखा चुकल छी। जे प्रत्यक्ष नहि देखल जाइत अछि ओ ओहिसँ मिथ्या सिद्ध नहि होइत अछि। ई केवल ओ थिक जे अनुमानसँ स्थापित होएबाके चाही — इएह ओ उपकरण थिक जकरा अहाँ स्वयं धुआँसँ अगिन धरि चलबामे उपयोग करैत छी, यद्यपि अहाँ कहियो दुनूकेँ स्रोतमे जुड़ल नहि देखलहुँ।

चार्वाक: *(अनिच्छासँ)* अनुमानकेँ हम स्वीकार करैत छी। श्रद्धाकेँ नहि।

उदयन: तखन केवल अनुमानसँ आगू बढ़ी। एतबे हम एहि सभामे केकरो सँ माँगल अछि।

दृश्य ११ — बौद्ध आ क्षणभंगवादक सिद्धांत

(बौद्ध आगू आबैत छथि।)

बौद्ध: उदयन, अहाँक पूरा तर्क ओहि वस्तुपर टिकल अछि जे *बनल रहैत अछि* — एकटा कर्ता जे आइ अनुष्ठान करैत अछि आ काल्हि फल पबैत अछि, एकटा आत्मा जे फल प्राप्त करय हेतु बनल रहैत अछि। मुदा किछुओ बनल नहि रहैत अछि। हर सत् वस्तु क्षणिक अछि, ओहि क्षणमे उत्पन्न आ नष्ट होइत अछि जाहिमे ओ प्रकट होइत अछि; जकरा अहाँ "एकहि व्यक्ति" काल्हि कहैत छी, से केवल एकटा कारण-शृंखला थिक, प्रत्येक क्षण नव।

उदयन: तखन बताउ, अपने सिद्धांतपर: के काटैत अछि जे एकटा क्षणद्वारा बाओल गेल छल जे कटबाक समय अस्तित्वमे नहि रहैत अछि? जँ किछुओ अपन उत्पत्तिसँ एक क्षण बेसी सेहो नहि टिकैत अछि, तखन कर्मक कर्ता आ फलक भोक्ता, अहाँक अपन विवरणें, दू भिन्न, असंबद्ध क्षणिक सत्ता थिक — आ नैतिक उत्तरदायित्व स्वयं विलीन भ' जाइत अछि। ई सेहो विचारू जे सामान्य पहिचान कोना काज करैत अछि: हम आइ एकटा घैल देखैत छी आ ओकरा *एकहि* घैल जानैत छी जकरा हम काल्हि देखने रही — पुरनाकेँ मिलैत एकटा नव घैल नहि। जँ पहिचानक ई अनुभूति सदा भ्रम होइत, तखन दुइ क्षणक बीच *भेद*क कोनो अनुभूति सेहो विश्वसनीय नहि रहि सकैत, किएक तँ दुनू समयक पार तुलना करएवाला एकहि क्षमतापर टिकल अछि। सातत्यकेँ जड़ि-टहनीसँ अस्वीकार करू, आ अहाँ हमरा विरुद्ध अखने उठाओल संशय पर सेहो विश्वास नहि क' सकैत छी — किएक तँ संशय उठाबय हेतु सेहो जरूरी अछि जे जे एक क्षण पहिने संशय केलक आ जे अखन बजैत अछि, से एकहि निरंतर आत्मा होइ।

बौद्ध: *(शांततासँ)* हम कहैत छी जे निरंतरता कारणिक अछि, द्रव्यात्मक नहि —

उदयन: —– आ एकटा कारण–शृंखला जे कर्मफलकेँ समयक पार बहन करय हेतु पर्याप्त एकीकृत अछि, से, एतय जे महत्त्वपूर्ण अछि ओहि हर दृष्टिसँ, इएह थिक जकरा हम एकटा बनल रहएवाला आत्मा कहैत छी। हम सभ, भिक्षु, शब्दावलीसँ बेसी सारमे नजदीक भ' सकैत छी। मुदा किछु बनल रहैत अछि। एहिपर, ई पुष्पगुच्छ पीछू नहि हटि सकैत अछि।

दृश्य १२ — सातत्य आ कार्यकारणत्वक सामंजस्य; नित्य आत्मापर आपत्ति

आक्षेपक: *(फेर सँ, अखन अधिक सावधान)* तखन सातत्य मानि लिअ। तइयो — जँ कोनो वस्तुक स्वयं स्वभाव *कारण होएब* अछि, तखन की ओकरा सदा, सर्वत्र, अस्तित्वक क्षणमे अपन कार्य नहि करबाके चाही, ठीक जेना नील सदा नील अछि? तइयो एकटा नित्य, सर्वव्यापी आत्माकेँ हर क्षण सुख आ दुःख उत्पन्न करैत नहि देखल जाइत अछि। तखन, कार्यकारणत्व आ नित्य आत्मा कोना सामंजस्यमे आबि सकैत अछि?

उदयन: किएक तँ कार्यकारणत्व "कोनो वस्तु स्वतः अपन क्षमतामे रहय बला हर कार्य सदा उत्पन्न करैत अछि" नहि थिक। ई कारणक कार्यक सापेक्ष *अबाधित पूर्ववर्तिता* थिक, कखनहु सहचार आ भेद देखिकऽ निश्चित कएल जाइत अछि, आ जतय ई असफल होइत अछि — जेना कोनो नित्य आ सर्वत्र उपस्थित वस्तुक संग, जे कतहु अनुपस्थित नहि भ' सकैत अछि "भेद" पक्षकेँ परखबाक हेतु — ओतय एकटा हेतुद्वारा सीधे निश्चित कएल जाइत अछि जे कारणिक संबंधकेँ प्रत्यक्ष स्थापित करैत अछि। आत्मा सुख आ दुःख केवल अपन उचित सहायक शर्तक संग उत्पन्न करैत अछि — मन, शरीर, ओहि अदृश्य सामर्थ्यक पाकब जकर कथा हम पहिनहि केने छलहुँ। हर नील वस्तु

सेहो हर नील वस्तुक कार्य सदा उत्पन्न नहि करैत अछि; एकटा विशिष्ट कारण, अपन विशिष्ट सहायकक उपस्थितिमे, अपन विशिष्ट कार्य उत्पन्न करैत अछि। इएह थिक जे कार्यकारणत्वक *अर्थ* थिक, एक बेर सावधानीसँ कहलापर, आ सामान्य अनुभव एकरा हर मोड़पर पुष्ट करैत अछि।

सूत्रधार: *समापन प्रार्थना।*

दृश्य १३ — प्रथम पुष्पगुच्छक समापन प्रार्थना

(उदयन फेर सँ अदृश्य प्रतिमा दिस मुड़ैत छथि; सभा शांत भ' जाइत अछि।)

उदयन: परम प्रभुक ओ गुप्त शक्ति जे हर आत्माकेँ ओकर भाग दैत अछि — ओकरा माया कहू, किएक तँ मन ओकरा पूर्णतः नहि पकड़ि सकैत अछि; ओकरा प्रकृति कहू, किएक तँ सम्पूर्ण सृष्टि ओहिसँ उपजैत अछि; ओकरा अविद्या कहू, किएक तँ केवल ज्ञाने ओकरा विलीन करैत अछि — ओ प्रभु, एहि सृष्टिक सम्पूर्ण अव्यवस्थित मंथनसँ परे ठाढ़, पूर्ण शांतिमे विश्रामरत, हमर हृदयमे भक्ति जगाबथि, आ साक्षी बनि ठाढ़ रहथि, प्रत्यक्षतः, ओहि हेतु जे हम एतय अर्पित करैत छी।

(पर्दा धीरे–धीरे सभापर खसैत अछि, दीप अखनहु जरैत, परिषद् कानाफूसी करैत — किछु आश्वस्त, किछु अखनहु हाथ बान्हने — वाद प्रत्यक्षतः अपूर्ण, दोसर पुष्पगुच्छक प्रतीक्षामे।)

— अंक प्रथम समाप्त —

अंक द्वितीय — द्वितीय पुष्पगुच्छ

(प्रमाणक स्वभाव, वेदक नित्यता, आ नव सृष्टिक संभावना संबंधी तर्क)

(एहि अंकमे शामिल होएवाला नव स्वर: मीमांसक — एकटा वैदिक कर्मकांड-विद्वान, विनम्र मुदा अटल, जे मानैत छथि जे वेद निरा नित्य आ अकर्तृक अछि, आ ज्ञान बाहरी सहायता बिनु अपन सत्यताक प्रमाण दैत अछि।)

दृश्य १ — सर्वज्ञ सत्ताक आवश्यकता अखनहु किएक

(पर्दा फेर उठैत अछि, वादक पछाति क्रममे। उदयन ओतहि ठाढ़ छथि जतय ओ छोड़ने छलाह।)

उदयन: हम सभ प्रथम पुष्पगुच्छ भरि ई स्थापित केने छी जे एकटा अदृश्य भाग्य हर कर्मक फलकेँ शासित करैत अछि। मुदा भाग्यक स्वयं कोनो कारण होएबाके चाही — आ हमरा सभमे सँ केओ ओहि कारणकेँ प्रत्यक्ष नहि जानि सकैत अछि। केओ ओहि दिस उद्देश्यपूर्वक काज नहि करैत अछि जे पूर्णतः ज्ञानसँ परे अछि। तँए: कोनो असाधारण, सर्वज्ञ सत्ताक अस्तित्व होएबाके चाही, जे हमरा सभकेँ ओहि गुप्त कारणिक संबंधक सच्चा ज्ञान द' सकथि, ताकि हम सभ सही ढंगसँ काज क' सकी।

मीमांसक: *(आगू आबैत, धीरे-धीरे)* उदयन, किएक सर्वशक्तिमान ईश्वर दिस पहुँची, जखन वैदिक परम्पराक अनादि, अखंड श्रृंखला पहिनहि सँ ओ ज्ञान हमरा सभ तक पहुँचबैत अछि? वा, जँ अहाँ अकर्तृक वेदपर अविश्वास करैत छी, तँ कपिल मुनि आदि योग आ अनुशासनद्वारा अकेल सर्वज्ञता प्राप्त केने छलाह। दुनूमे सँ केओकेँ अहाँक ईश्वरक आवश्यकता नहि।

उदयन: किएक तँ प्रमाणक वैधता अपनासँ बाहरक कारणपर निर्भर करैत अछि, आ संसार, कोनो विवरणे, अखंड नहि थिक। ओ आवधिक रूपसँ,

पूर्णतः विलीन होइत अछि। जखन ओ विलीन होइत अछि, वेदक अखंड प्रसारण ओकरे संग विलीन भ' जाइत अछि — न कोनो शिक्षक बाकी रहैत अछि, न शिष्य, न हवामे कोनो ध्वनि। न हम सम्पूर्ण भवनकेँ कपिल जकाँ ऋषिपर टिका सकैत छी, जिनक गुप्त सत्य तक पहुँचकेँ हम एहि पुष्पगुच्छक समाप्तिसँ पहिनहि प्रत्यक्ष परखय बला छी। हर विलयक बाद परम्पराकेँ किछु नवीकृत करबाके चाही। इएह ओ सूत्र थिक जकरा हम अखन पकड़य चाहैत छी।

दृश्य २ — वैधता भीतरसँ जानल जाइत अछि, वा बाहरसँ?

मीमांसक: ईश्वर दिस पहुँचबासँ पहिने, एकटा छोट प्रश्न पहिने निपटा लिअ — जकरापर हमर आ अहाँक सम्प्रदाय बहुत काल सँ विवाद केने अछि। जखन कोनो ज्ञान उत्पन्न होइत अछि, तँ की ओकर *सत्यता* स्वत:, ओकर उत्पत्ति मात्रमे जानल जाइत अछि? हम कहैत छी हँ: किछुओकेँ ज्ञानरूपमे जाननाइ स्वयं ओकरा सत्य मानब थिक। जे बाद मिथ्या सिद्ध होइत अछि, से जाँचमे, कहियो सच्चे ज्ञाने नहि छल।

उदयन: तखन संशयक व्याख्या करू, मीमांसक। जँ वैधता कोनो ज्ञानक उत्पन्न होइते क्षण स्वयं घोषित भ' जाइत, तखन कोनो ज्ञानपर कहियो संशय नहि भ' सकैत — तइयो हम सभ सतत संशय करैत छी, जखन कोनो ज्ञान पहिने–सँ–पुष्ट आन ज्ञानसँ नहि मिलैत अछि। वैधता, अवैधता जकाँ, ज्ञान होबाक नग्न तथ्यसँ *बाहरक* किछुसँ जानल जाइत अछि: एकटा आगू चिह्न, एकटा आगू अनुमान, सफल क्रियामे एकटा परीक्षा।

मीमांसक: मुदा अहाँक "बाहरी परीक्षा" स्वयं अपन अनवस्था–दोषकेँ आमंत्रित करैत अछि। जँ पहिलकेँ प्रमाणित करय हेतु दोसर ज्ञानक आवश्यकता अछि, तँ दोसरकेँ प्रमाणित करय हेतु तेसराक, आ एना अनंततः।

उदयन: एहन नहि — किएक तँ अधिकांश समय, वैधता प्रमाणित करब बिलकुल अनावश्यक अछि। जतय न संशय अछि न संशयक कारण, ओतय वस्तुपर विश्वास उत्पन्न होइत अछि आ हम बिनु कोनो अलग प्रमाणीकरण कर्मक ओहिपर काज करैत छी। केवल जतय संशय वास्तवमे उत्पन्न होइत अछि, ओतय आगू अनुमान आबैत अछि — आ ओतय, ओ रुकि जाइत अछि, किएक तँ जे अनवस्था अहाँकेँ डेराबैत अछि, से अहाँक "स्वतःप्रामाण्य" सिद्धांतकेँ ओतबे धमकाबैत अछि जतेक हमरा। अहूँकेँ ई मानबाके चाही जे ज्ञानक "जानल जाएब" स्वयं वैधतापूर्वक अनुमानित अछि; एकरा सिद्ध करू, आ अहाँ फेर सँ अनुमान क' रहल छी।

मीमांसक: *(हल्की मुस्कान)* एकटा उचित प्रहार।

उदयन: ओहि प्यासल मनुष्यकेँ विचारू जे पानि देखिते पीबि लैत अछि। अहाँ कहब जे ओ पानिक प्यास बुझएबाक शक्तिकेँ *प्रत्यक्षतः* जानैत अछि, किएक तँ ओ बिनु हिचकिचाहटक काज करैत अछि। ओ नहि जानैत अछि। ओ शक्ति अनुमानित अछि, तुरंत आ अचेतन रूपसँ, बीतल अनुभवसँ — ठीक जेना इच्छा स्वयं एकटा तीव्र, मौन अनुमानसँ जन्म लैत अछि जे कोनो कार्य कोनो परिणाम दैत अछि। तीव्रता समानता नहि थिक। जल्दी लेल गेल एकटा बाह्य परीक्षा तइयो बाह्ये रहैत अछि।

दृश्य ३ — स्वप्न, जागृति, आ मूरक दुइ हाथ

आक्षेपक: *(फेर मंचपर)* तखन बताउ हमरा सभमे सँ केओ जागृतिकेँ स्वप्नसँ कोना अलगबैत अछि, उदयन, जँ वैधता कहियो निःशर्त नहि देल जाइत अछि। हम स्वप्नमे तालाबमे डूबि रहल छी सेहो देखैत छी — भय पूर्ण अछि, ओहि क्षण जागृत भयसँ अभिन्न — जाबे हम जागि, आ कतहु पानि नहि पाबी।

उदयन: आ जखन अहाँ जागैत छी, दुनू अवस्था तीक्ष्ण, निर्विवाद विरोधमे ठाढ़ होइत अछि — स्वप्नक धुँधली स्मृति जागृतिक जीवंत तत्कालतासँ विपरीत। ओ विरोधाभास स्वयं मापदंड थिक; ओकरा कतहु आर सँ आयातित करबाक आवश्यकता नहि, किएक तँ जागृत अनुभव अपन मापदंड स्वयं दैत अछि जकरा विरुद्ध स्वप्न मापल आ न्यून पाओल जाइत अछि।

आक्षेपक: पश्चिमी तार्किक एकटा तीक्ष्ण संशय उठबैत छथि। एकटा दार्शनिक — मूर, हुनका कहल जाइत अछि — सभाक सोझाँ अपन दुनू हाथ उठा क' कहलनि: "इएह एकटा हाथ, इएह दोसर; तँए बाह्य वस्तु सत् अछि।" हुनक आलोचक उत्तर देलनि: जँ अहाँक आँखिये संशयमे भ' सकैत अछि, तँ अपन हाथ देखाएब किछुओ सिद्ध नहि करैत अछि।

उदयन: *(अविचलित)* ओ संशय करथि। एकटा नग्न *तार्किक संभावना* जे कहियो कोनो तथ्यक विरुद्ध प्रमाण मिलि सकैत अछि, से ओहन प्रमाणक समान नहि जे पहिनहि सँ भेटि चुकल अछि। ओहि संशयवादकेँ ओकर जड़ि धरि धकेलू, आ अहाँ अविरोध–नियमपर पहुँचि जाएब — चाहू तँ एकरा तत्त्वहीन पुनरुक्ति कहू — मुदा संशयवादीकेँ सेहो किछुओ कहय हेतु, अपन संशय समेत, एहिपर ठाढ़ होएबाके चाही। हमरा हर संभावित भविष्यक विरुद्ध अभेद्य निश्चितता नहि चाही। हमरा ओतबे चाही जतबे कोनो युक्तियुक्त अन्वेषणकेँ चाही: प्रमाणक संतुलन, सत्यतासँ तौलल। आ ओहि संतुलनपर,

न्यायक वैधता संबंधी विवरण — बाह्य चिह्नसँ जानल, सफल क्रियासँ अंततः पुष्ट — अधिक भार राखैत अछि। भ्रम आ त्रुटि अनुभवक निर्विवाद तथ्य थिक। जँ, जेना अहाँ मीमांसक कहैत छी, हर ज्ञान ओहिसँ सत्य होइत अछि, तखन भ्रम आ त्रुटि की थिक? अहाँक हेतु कोनो उत्तर नहि अछि।

दृश्य ४ — प्रमाण जे ध्वनि नित्य नहि थिक

मीमांसक: एतबे मानि लिअ, तखन, आ हमरा भूमि बदलय दिअ। अहाँक ईश्वर बिनु सेहो, वेदकेँ रचयिताक आवश्यकता नहि — वेद, आ जकरासँ ओ ध्वनि बनल अछि, से केवल नित्य भ' सकैत अछि, कोनो निर्दोष वक्ता वा उत्तरदायी रचयिताक आवश्यकता बिनु।

उदयन: तखन ई सेहो हमरा अहाँसँ लेबाके चाही, मित्र, आ हम एकरा सामान्य श्रवणसँ करब। हम सभ प्रतिदिन कहैत छी, "ओ ध्वनि रुकि गेल" — ढोल पीटल गेल छल, आ अखन ओ शांत अछि। इएह ध्वनिक *नाशक* प्रत्यक्ष अनुभूति थिक। ध्वनि केवल कतहु आर नहि जा सकैत अछि, आकाररहित होएबाक कारणे; ओ ढाकल नहि जा सकैत अछि, किएक तँ ढाकब आकारयुक्त वस्तुक धर्म अछि; ओ केवल हमरा हेतु अधिक क्षीण नहि भेल अछि, किएक तँ इएह बहाना ई सेहो सिद्ध क' देत जे टूटल घैल वास्तवमे नहि टूटल, केवल अदृश्य भ' गेल।

मीमांसक: मुदा कान ओ अभावकेँ प्रत्यक्ष अनुभव नहि क' सकैत अछि — ओकर आधार, आकाश, कहियो अनुभूत नहि भ' सकैत अछि।

उदयन: कानकेँ आकाशकेँ अनुभव करबाक आवश्यकता नहि *कानमे ध्वनिक अभाव* अनुभव करय हेतु — ठीक जेना अन्हार प्रकाशक अभावरूपमे

अनुभूत होइत अछि, बिनु केओ अदृश्य कणकेँ अनुभव कएने जे ओकर आधार होइत। आ स्वयं ध्वनिकेँ सुनू: स्वर उठैत अछि, गिरैत अछि, तेज होइत अछि, मृदु होइत अछि — एकहि नित्य वस्तु एकहि क्षण विरोधी गुण नहि धारण क' सकैत अछि। जकरा अहाँ "एकहि शब्द, फेर पहचानल" कहैत छी, से एकटा शिखा पुनः पहचानल थिक — नव ईंधन, नव ज्योति, प्रत्येक क्षण, आदतवश एक नामसँ बजाओल गेल। उत्पत्ति आ नाश, नित्यता नहि, इएह ओ थिक जे अहाँक अपन कान अहाँकेँ बतबैत अछि, जँ अहाँ ओहिपर विश्वास करू।

मीमांसक: *(शांततासँ)* परम्पराकेँ एहिपर विस्तारसँ, कतहु आर, अहाँकेँ उत्तर देबाके चाही।

उदयन: देत। अखन हेतु, एतबे पर्याप्त अछि जे ध्वनि — आ ओकरे संग, उच्चारित वेद — उत्पन्न होइत अछि, आ जे उत्पन्न होइत अछि से खोइल जा सकैत अछि। ई हमरा फेर ओहि प्रश्न दिस लौटबैत अछि: ओकरा के पुनःस्थापित करैत अछि, हर बेर जखन संसार विलीन भ' कऽ भूलि जाइत अछि?

दृश्य ५ — नव सृष्टि कोना आरंभ भ' सकैत अछि?

आक्षेपक: मानि लिअ हम विलय स्वीकार करैत छी। विलयक समय, अहाँक अपन विवरणें, किछुओ नहि हिलैत, किछुओ काज नहि करैत, आकाश स्वयं शून्य आ स्थिर ठाढ़ रहैत अछि। तखन, पूर्ण स्थिरतासँ नव सृष्टि की आरंभ क' सकैत अछि?

उदयन: पहिने गहीर निद्राकेँ विचारू, एकहि पहेलीक छोट रूपमे। स्वप्नरहित निद्रामे आत्माक ज्ञान, इच्छा, सुख, आ दुःख सभ एकसंग शांत भ' जाइत अछि — तइयो शरीरक साँस चलैत रहैत अछि, क्षीण, आ आत्मा फेर सँ

अक्षत जागैत अछि। तहिना सृष्टिक विलयमे: चारि तत्त्वक कणमे एकटा अत्यंत सूक्ष्म गति बनल रहैत अछि, एतेक सूक्ष्म जे "संसार" रूपमे दर्ज नहि होइत अछि, जाबे ओकर अंतिम चरण ओहि क्षणकेँ चिह्नित करैत अछि आ नव सृष्टिक बीज बनि जाइत अछि। इएह आवश्यक नहि जे कोनो दिनक पहिने सदा एकटा आर एहन दिन होइ — वर्षाऋतुक पहिल दिनक पहिने ग्रीष्मक अंतिम दिन होइत अछि, कोनो आर वर्षाक दिन नहि। तहिना नव सृष्टिक पहिल दिनक पहिने विलय होइत अछि, कोनो पुरान संसारक आर दिन नहि।

आक्षेपक: आ प्रथम मनुष्य — प्रथम ब्राह्मण, कोनो भाषाक प्रथम वक्ता? केओ माता–पिता हुनका बाजब नहि सिखाओल, किएक तँ सिखाबय बला केओ अखनहु नहि छल।

उदयन: ठीक जेना प्रथम बिच्छू सड़ल गोबरसँ उत्पन्न होइत अछि, कोनो बिच्छू माता–पितासँ नहि, आ केवल बादुक पीढ़ी सही प्रजनन करैत अछि — तहिना परम प्रभु स्वयं संसारक भोरमे शिक्षक आ शिष्यक रूप धारण क' सकैत छथि, कठपुतली–नचएवालाक जकाँ इशारा करैत छथि जे कठपुतलीक हाथकेँ दूरक वस्तु दिस बढ़बैत अछि, आ ओहि इशारामे शब्द आ अर्थक प्रथम प्रथा सिखबैत छथि। ओहि प्रथम शिक्षासँ पूर्ण शृंखला — कुम्हारसँ कुम्हार, जुलाहासँ जुलाहा, शिक्षकसँ शिष्य — अखंड चलैत अछि जाबे अगिला विलय ओकरा फेर तोड़ैत अछि।

दृश्य ६ — दीर्घ ह्रास, आ शास्त्र किएक पुनःस्थापनक आवश्यकता राखैत अछि

उदयन: *(सभा दिस मुड़ैत, अधिक गंभीर)* आ ई मत सोचू जे शृंखला आइ ओतबे मजबूती सँ पकड़ल अछि जतेक कहियो छल। ईमानदारीसँ देखू जे

पहिनहि सँ की जर्जर भ' गेल अछि। जे अनुष्ठान कहियो हजारों वैदिक शाखाक पूर्ण स्मृतिसँ कएल जाइत छल, से अखन, जँ बचल अछि, तँ केवल एकटा शाखासँ, अपूर्ण रूपमे राखल। धर्म कहियो चारि पएरपर ठाढ़ छल — तप, ज्ञान, यज्ञ, दान। तप खसि गेल; दुइ पएर बाकी रहलैक। ज्ञान खसि गेल; एक पएर, दान, अखन पूरा भार ढ़ोइत अछि, आ ओहो पएर घायल अछि।

आक्षेपक: तखन स्पष्ट कहू अहाँ की बनाबय जा रहल छी।

उदयन: ई जे शास्त्र स्वयंसिद्ध नहि थिक। ओकर अधिकार वेदपर निर्भर अछि, सद्‌गुणी लोकक सामान्य आचरणपर नहि जे एक–दोसराकेँ अनुसरण करैत अछि — किएक तँ जँ सद्‌गुणी आचरण अकेल कोनो कर्मकेँ अनिवार्य बनएबाक हेतु पर्याप्त होइत, तँ कोनो शास्त्रीय आदेशक आवश्यकता नहि होइत, तइयो हम सभ एहन अनुष्ठान जानैत छी जे पूर्णतः लुप्त भ' गेल अछि, कोनो जीवित साक्षी बिनु, जकरा एक दिन *पुनःस्थापित* करबाके चाही, केवल स्मरण नहि। पुनःस्थापनाकेँ एकटा ज्ञाताक आवश्यकता अछि — आ शास्त्रमे श्रद्धा केवल सत्यकेँ *पहचानैत* अछि, ओकरा उत्पन्न नहि क' सकैत अछि एक बेर मूल कारण चलि गेलापर।

दृश्य ७ — कपिल परखल जाइत छथि, आ अपर्याप्त पाओल जाइत छथि

मीमांसक: तखन कपिलकेँ ओ ज्ञाता होबय दिअ — प्रत्यक्ष अनुभवक ऋषि, योगसँ शुद्ध, दुःखी प्राणीक हेतु करुणासँ प्रेरित, शास्त्रक जे किछु हराएल अछि ओकरा पुनर्जीवित करबामे सक्षम।

उदयन: *(कोमलतासँ मुदा बिनु झुकने)* ओ दावाकेँ ओतबे सावधानीसँ परखू जतेक अहाँ हमरकेँ परखलहुँ, मित्र। ध्यान वस्तुतः ओहि किछुकेँ जानबाक साधन भ' सकैत अछि जे अन्यथा गुप्त अछि — हम एकरा पूर्णतः अस्वीकार नहि करैत छी — मुदा ध्यान ओहि क्षण ज्ञान स्वतः नहि दैत अछि जखन ओ अभ्यास कएल जाइत अछि; ओकरा जे भेटल अछि ओकरा प्रमाणित करय हेतु कोनो आर साधनक आवश्यकता अछि। कपिलक करुणा आ अहिंसापर ध्यानकेँ की प्रमाणित करैत अछि, जकर फल केओ कहियो *देखलक* नहि अछि? एकटा कायर सर्पपर सफलतापूर्वक तखने ध्यान करैत अछि जखन ओ पहिने सर्पसँ भेंट क' चुकल अछि। केओ योगक फल प्रत्यक्षतः, एहि जीवनमे वा दुइ जीवनक बीचमे, नहि भेटलक अछि — किएक तँ जे शरीर एहि जन्ममे काज करैत अछि आ जे शरीर अगिला जन्ममे फल भोगैत अछि, से एकहि शरीर सेहो नहि थिक, आ दुनूकेँ जोड़एवाला कोनो अनुभूत कड़ी बिनु, ओ संबंध कहियो सत्यापित नहि भ' सकैत अछि।

मीमांसक: कहल जाइत अछि जे किछु लोक पूर्वजन्म स्मरण करैत छथि।

उदयन: कहल जाइत अछि, मुदा स्थापित नहि भेल अछि। एकटा शिक्षक जे त्योहारक राति सुति जाइत छथि आ भोरमे काल्हिक पाठ फेर सँ शुरू करैत छथि, से केवल ई सिद्ध करैत अछि जे स्मृति *एक* जीवनक भीतर बाकी रहैत अछि, दुइ जीवनक बीचक खाई पार नहि। आ प्रथम ब्राह्मणकेँ विचारू, सृष्टिक भोरमे: कोन स्मृतिसँ ओ अपन वंशावली जानि सकैत छलाह, जँ कियो अखनहु स्मरण करय हेतु जन्मल नहि छल? लोकक बीच यात्राक कोनो शक्ति सेहो सिद्ध नहि भेल अछि जे तैयार जाति–व्यवस्था बहनकऽ बसनिहारकेँ आनि सकैत होइक। अंततः, एक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान सत्ताकेँ स्वीकार करब —

जकरा कोनो शरीर नहि चाही, कोनो अपरीक्षित स्मृति नहि, कोनो अप्रमाणित यात्रा नहि — असिद्ध, आधा–सर्वज्ञ ऋषिक संख्या बढ़ाकऽ इएह काज बेकार ढंगसँ करएबासँ अधिक सरल आ युक्तियुक्त अछि।

मीमांसक: *(मौनक बाद)* हम प्रश्नकेँ आगू बढ़ाएब, उदयन। हम अखनहु अहाँक निष्कर्षकेँ नहि बहन करैत छी।

उदयन: एकरे दोसर चरणक अंतमे वादकेँ एहि ढंगे ठाढ़ होएबाके चाही।

दृश्य ८ — द्वितीय पुष्पगुच्छक समापन प्रार्थना

(उदयन फेर सँ अदृश्य प्रतिमा दिस मुड़ैत छथि।)

उदयन: हमर हृदय शिवमे जीवनक अंतिम क्षण धरि दृढ़ रहय — जे, हर प्राणीक भाग्यसँ सहायता प्राप्त क', ई अद्भुत संसार बेर–बेर बनबैत छथि, आ, एकटा जादूगर जकाँ जे अपन ट्रिक स्वयं मेटबैत छथि, ओकरा फेर मेटा दैत छथि; जिनक इच्छा सम्पूर्ण ब्रह्मांडमे बिनु प्रतिरोध चलैत अछि, जे ओकर अंतिम कारण थिक। ओहि प्रभुपर अकेल, हमर भक्ति अटल रहय।

(पर्दा धीरे–धीरे खसैत अछि। मीमांसक चिंतनमे बैसल रहि जाइत छथि जखन दीप मंद होइत अछि। परिषद् कानाफूसी करैत अछि — भूमि हिलि गेल अछि, यद्यपि केओ अखन धरि मानि नहि रहल अछि।)

— अंक द्वितीय समाप्त —

अंक तृतीय — तृतीय पुष्पगुच्छ

(ईश्वर अस्तित्वमे नहि छथि, एहि हर दावाकृत प्रमाणक खंडन संबंधी तर्क)

(एहि अंकमे नास्तिक मंचपर आबैत छथि — कोनो सम्प्रदाय नहि, अपितु एकटा दृष्टिकोण: जे किछुओ कोनो प्रमाण–साधनद्वारा नहि पकड़ल जा सकैत अछि, से सत् नहि भ' सकैत अछि, से मानैत छथि। चार्वाक, मीमांसक, आ वैशेषिक — न्यायक एकटा सूक्ष्म, वर्गीकरण–प्रिय चचेरा तार्किक — सेहो बजैत छथि।)

दृश्य १ — "ओ नहि देखल जाइत छथि; तँए ओ नहि छथि"

(पर्दा उठैत अछि। दीप ऊँच कएल जाइत अछि — ई पुष्पगुच्छ सभासँ सर्वाधिक विवादित थिक।)

नास्तिक: *(उदयनसँ पहिने आगू बढ़ैत)* अहाँ दुइ पुष्पगुच्छ संसारक निर्माता दिस बनबैत बिताओल, उदयन। हम ई एकमे नींव उखाड़ब। जँ ईश्वर अस्तित्वमे होइतथि, तँ ओ ज्ञेय होएबाके चाही, ठीक जेना गायक सिंगकेँ ओकर आकार आ रंगसँ जानल जाइत अछि। ओ ज्ञात नहि छथि। तँए ओ नहि छथि — ठीक जेना खरहाक सिंग नहि अछि, ठीक एहि लेल जे, यद्यपि ओकर *आकार* ज्ञेय होइत जँ ओ रहितए, तइयो केओ कहियो एकटा नहि देखलक अछि।

उदयन: एकटा स्वच्छ तर्क, आ अपन पहिल पएरमे स्वच्छतासँ भूल। अहाँक अनुमान केवल ओतय काज करैत अछि जतय वस्तुकेँ *पहिनहि सँ प्रत्यक्षगोचर*मानल गेल छल — खरहाक सिंग ओहि प्रत्यक्षक परीक्षामे असफल होइत अछि जकरा ओकरा सदा बैसबाक योग्य मानल गेल छल। ईश्वरकेँ एहि सभामे कोनो आस्तिकद्वारा कहियो सामान्य प्रत्यक्षक वस्तु दावा नहि कएल गेल। अहाँ एकटा अदृश्य वस्तुकेँ ओहि परीक्षामे असफल होएबाक दोष नहि द' सकैत छी जकरामे ओ कहियो प्रविष्ट नहि भेल।

नास्तिक: तखन ओ कोना जानल जाइत छथि, जँ ओहि एकहि विधिसँ नहि जकरासँ अहाँ अखन हुनका मुक्त क' रहल छी?

उदयन: अनुमानसँ — जकर आपूर्ति करय हेतु इएह पाँच पुष्पगुच्छ अस्तित्वमे अछि। अपन सबसँ मजबूत आपत्ति पाँचमक हेतु राखू, जखन अनुमान स्वयं अहाँक सोझाँ ठाढ़ होएत। अखन हेतु हम केवल भूमि साफ करैत छी: जे वस्तु कहियो अनुभूत होएबाक दावा नहि कएल गेल, ओकर अ-अनुभूति किछुओ सिद्ध नहि करैत अछि।

दृश्य २ — निद्रा, आत्मा, आ जकरा अ-अनुभूति स्पर्श नहि क' सकैत अछि

नास्तिक: तखन अपन स्वयंक आत्माकेँ एकटा परीक्षा-प्रकरण रूपमे विचारू। स्वप्नरहित निद्रामे अहाँ अपन आत्माकेँ अनुभूत नहि करैत छी — तइयो अहाँ, जागिकऽ, ई निष्कर्ष नहि निकालैत छी जे अहाँ अस्तित्वमे रहब बंद क' देने रही। तखन इएह मौन, ईश्वरपर लागू भेने, हुनक *अनुपस्थितिकेँ* समान रूपसँ किएक सिद्ध नहि करैत अछि?

उदयन: किएक तँ निद्रामे ओ कारण जे आत्म-ज्ञान उत्पन्न करितए, से एकत्रित नहि होइत अछि — मन इन्द्रियसँ हटि गेल अछि, एहि लेल नहि जे आत्मा लुप्त भ' गेल अछि, अपितु एहि लेल जे ओकरा ध्यान देबय बला उपकरण शांत भ' गेल अछि। जकरापर अहाँ निर्भर छी — जे केओ स्वप्नरहित रातिक पार अपन निरंतर अस्तित्वपर संशय नहि करैत अछि — इएह स्वयं प्रमाण थिक जे अ-अनुभूति अनस्तित्व नहि बुझबैत अछि। अहाँ अपने उदाहरणसँ अपने पद्धतिकेँ खंडित क' देलहुँ।

नास्तिक: *(संभलैत)* तखन ई परखू: एकटा चेतन सत्ताकेँ शारीरिक क्रिया देखाबाके चाही, जेना अंकुरित बीज मालीक हाथ देखाबैत अछि। एकहु अंकुर प्रकट होएबासँ पहिने कोनो दैवी क्रिया नहि देखल जाइत अछि। कोनो क्रिया नहि, कोनो कर्ता नहि।

उदयन: एकटा घैलकेँ एकटा शरीरधारी कुम्हार चाही; संसारकेँ ओहिसँ एकहि प्रकारक शरीरधारी निर्माताक आवश्यकता नहि। आत्मा निद्रामे, मूर्च्छामे, विष वा अत्यधिक शीतक स्थिरतामे, बिनु कोनो शारीरिक चिह्नक, अचल बनल रहैत अछि — भिन्न कार्य भिन्न प्रकारक कारणसँ आबैत अछि, आ कोनो नियम *हर* निर्माताकेँ एकटा दृश्य हाथसँ बान्हल नहि राखैत अछि।

दृश्य ३ — चार्वाकक शर्त, आ ओ किएक भुनाओल नहि जा सकैत अछि

(चार्वाक आगू बढ़ैत छथि, पहिनेसँ अधिक तेज।)

चार्वाक: एकरा नास्तिकसँ बेसी संकुचित करय दिअ। हमरा तँ "ज्ञेय मुदा अज्ञात" जकाँ अहाँक बचावक द्वारक सेहो आवश्यकता नहि। हमर नियम सरल अछि: जे *कोनो* ढंगसँ ज्ञात नहि अछि, से अस्तित्वमे नहि अछि। जे ज्ञात अछि, से अस्तित्वमे अछि। ईश्वर कहियो ज्ञात नहि छथि। समाप्त।

उदयन: तखन एकरा समाप्त करू, चार्वाक, आ देखू ई अहाँकेँ कतय लऽ जाइत अछि। अहाँक नियमपर, जेहिना अहाँ अपन घरसँ बाहर पएर राखैत छी, अहाँ अपन पत्नी, संतान, संग्रहित अन्नकेँ अब देखबे नहि करैत छी — अहाँक अपने नियमसँ, हुनका सभकेँ ओहि क्षण नष्ट मानबाके चाही जखन अहाँक आँखि हुनकासँ हटैत अछि। की अहाँ एहिपर विश्वास करैत छी?

चार्वाक: *(चिड़चिड़ाइत)* स्मृति हमरा आश्वस्त करैत अछि जे ओ बाकी छथि।

उदयन: स्मृति अहाँकेँ बहुतो नष्ट भेल वस्तुक सेहो आश्वासन दैत अछि — एकटा बचपनक घर जे कहियो सँ ढहि गेल अछि, एकटा मित्र जे कहियो मरि गेला। अकेल स्मृति वर्तमान अस्तित्वकेँ प्रमाणित नहि क' सकैत अछि। जे क्षण अहाँ स्मृतिपर झुकैत छी अपन परिवारकेँ अपने नियमसँ बचाबय हेतु, अहाँ ठीक ओतबे मानि लेने छी जतबे हमरा चाही: अ–अनुभूति अनस्तित्व सिद्ध नहि करैत अछि। आ आँखिकेँ स्वयं विचारू — जकर "देखब" अहाँ निर्भर करैत छी, ओ अंग स्वयं कहियो देखल नहि जाइत अछि, तइयो अहाँ ओकर अस्तित्वपर संशय नहि करैत छी। अहाँक नियम, ईमानदारीसँ अनुसरण कएलापर, अहाँक अपन संशय–उपकरणकेँ नष्ट क' दैत अछि।

चार्वाक: सामान्य आचरणकेँ निश्चितताक आवश्यकता नहि। ओ संभावनापर चलैत अछि — सामान्य सहमति, उपयोगसँ परखल।

उदयन: तखन संभावना कतय *रहैत* अछि, अहाँक विवरणमे? जँ कोनो वस्तु देखल जाइत अछि, अहाँ कहैत छी ओकर अस्तित्व निश्चित अछि; जँ अदृश्य, ओकर अभाव निश्चित अछि। अहाँ संभावनाकेँ ठाढ़ होएबाक हेतु कोनो मध्यभूमि नहि छोड़ने छी। अहाँ एहन सिद्धांतक वर्णन केलहुँ जकरामे ओहि विश्वासक प्रकार हेतु कोनो स्थान नहि अछि जकरापर अहाँ कहैत छी ओ टिकल अछि।

दृश्य ४ — अनुमान स्वयं संशयसँ किएक बचि जाइत अछि

चार्वाक: अनुमानकेँ किछु भूमि दिअ, तखन, जँ अहाँ आग्रह करैत छी। मुदा ओहिपर संशय कोना अंततः हटैत अछि? हर देखल पैटर्न काल्हि टूटि सकैत अछि, वा एक मील दूर, वा एहन शर्तमे जकरा हम सभ जाँचय नहि सोचलहुँ। ई धमकी कहियो बंद नहि होइत अछि।

उदयन: ई ओहि क्षण बंद भ' जाइत अछि जखन अहाँ ई देखैत छी जे अहाँ पहिनहि सँ मानि चुकल छी: भविष्यक कोनो विचलनपर *संशय* करय हेतु, अहाँकेँ पहिनहि सँ भविष्यक विषयमे सोचबाक क्षमता होएबाके चाही — आ इएह ओ क्षमता थिक जे वर्तमान समयसँ घंटा, दिन, आ ऋतु तक विस्तारित अनुमान थिक। अहाँ अनुमानपर आक्रमण करय हेतु अनुमानकेँ उपयोग नहि क' सकैत छी बिनु ओहि उपकरणकेँ उधार लेने जकरा अहाँ अयोग्य ठहरएबाक प्रयास क' रहल छी। आ व्यावहारिक रूपसँ, संशय ओतय समाप्त होइत अछि जतय एकटा प्रति-तथ्य संशयकर्ताकेँ अपनहि विरोधाभासमे फँसा देत: कारण आ कार्यक विश्वसनीय संबंधकेँ अस्वीकार करू, आ संशय करबाक क्रिया स्वयं — जे स्वयं एकटा कार्य थिक — अहाँमे कहियो उत्पन्ने नहि भ' सकैत छल। एकटा युक्तियुक्त मन हर कल्पनीय अपवादकेँ अनंततः नहि खोजैत अछि; ओ एकटा एहन हेतुक अनुसरण करैत अछि जकर व्याप्ति परखल गेल अछि आ टिकल अछि, आ काज करैत अछि।

चार्वाक: *(पीछू हटैत, अनिश्चित मुदा भूमिसँ बाहर)* तखन आगू बढ़ाउ। हम बाकीकेँ सुनब।

दृश्य ५ — उपमान, आ पाँचम पुष्पगुच्छक आगामी परीक्षा, स्थगित

वैशेषिक: *(एकटा सूक्ष्म, वर्गीकरण–प्रिय स्वर)* एकटा आर मार्ग, उदयन, आगू बढ़बासँ पहिने। किछु मानैत छथि जे "उपमान" —– देखल समानतासँ ज्ञान — अपन स्वतंत्र प्रमाण–साधन थिक, प्रत्यक्ष आ अनुमानसँ भिन्न। जँ एहन होइ, तखन अहाँक हेतु एकटा कठिनाई आबैत अछि: हर ज्ञात वस्तु कोनो आर पहिनहि–ज्ञात वस्तुसँ मिलैत अछि, मुदा अहाँ जकर वर्णन करैत छी ओहि ईश्वरक कतहु कोनो समान वस्तु नहि अछि। की उपमान तखन, इएह अद्वितीयतासँ, हुनक *अनुपस्थिति* सिद्ध क' सकैत अछि?

उदयन: केवल जँ समानता कोनो तेसर प्रकारक सत्ता होइत, न सत् न असत् — आ एहन कोनो तेसर प्रकार अस्तित्वमे नहि अछि। सत् आ असत् सम्पूर्ण क्षेत्रकेँ समाप्त क' दैत अछि; एककेँ अस्वीकार करू, आ अहाँ ओहिसँ दोसराकेँ स्वीकार क' लेने छी। समानता केवल ओहि वस्तुक एकटा गुण थिक जे पहिनहि सँ अछि, ओहि दुइ श्रेणीमे सँ एकमे वर्गीकृत — ओकरा कोनो स्वतंत्र स्थितिक आवश्यकता नहि, आ तँए ओ एकटा एहन सत्ताक विरुद्ध कोनो स्वतंत्र हथियार नहि दैत अछि जे अपन स्वभावसँ अद्वितीय होथि। अद्वितीयता कोनो दोष नहि थिक जकरा तर्क हथियार बना सकैत अछि; ई केवल एकटा तथ्य थिक जे किछु विषय राखैत छथि आ किछु नहि।

दृश्य ६ — शाब्द प्रमाण, आ सर्वज्ञ रचयिताक विवाद

मीमांसक: *(फेर मंचपर)* तखन हमरा अहाँकेँ शाब्द प्रमाणपर दबाब देबय दिअ, किएक तँ ई सम्पूर्ण पुष्पगुच्छ अंततः एहि प्रश्नपर लौटैत अछि जे वेदकेँ कोनो रचयिताक आवश्यकता अछि की नहि। वैशेषिक एकटा सामान्य वाक्यक अर्थकेँ वक्ताक अभिप्रायसँ *अनुमानित* किछु मानैत अछि — शाब्द प्रमाणकेँ एकटा प्रकारक अनुमानमे घटा देल गेल। हमरे अपन सम्प्रदायक प्रभाकर–

शाखा आर आगू जाइत अछि: केवल वेद, अकर्तृक होएबाक कारणे, स्वतंत्र अधिकार राखैत अछि; एकटा सामान्य मानवीय वाक्य केवल तखने विश्वसनीय अछि जखन अनुमान वक्ताकेँ विश्वसनीय प्रमाणित क' चुकल अछि।

उदयन: दुनू स्थिति शाब्द प्रमाणसँ ओकर आवश्यकतासँ बेसी काज मांगैत अछि। ओहि क्षण जखन अहाँ पहिनहि सँ कोनो शब्दक अभिव्यंजक शक्ति जानैत छी, वाक्यक अर्थ सुनतहि पहुँचि जाइत अछि — कोनो अलग अनुमानात्मक चरण नहि, वक्ताक विश्वसनीयताक कोनो पूर्व प्रमाणीकरण नहि, बुझबाक हेतु आवश्यक अछि। एकटा बच्चा जे अखनहु नहि जनैत अछि जे वेदक कोनो रचयिता अछि की नहि, ओहो एकटा वैदिक वाक्यकेँ पूर्णतः बुझि लैत अछि सुनतहि; एतबे देखबैत अछि जे बुझब पहिने रचयित्वक निर्णयक प्रतीक्षा नहि करैत अछि। शाब्द प्रमाण अपने आपमे एकटा ज्ञान–साधन थिक, प्रत्यक्ष आ अनुमानक बगलमे ठाढ़, वेश धएने अनुमान नहि।

मीमांसक: तखन ओ अधिक तीक्ष्ण आपत्तिकेँ विचारू जे किछु लोक सीधे अहाँक विरुद्ध उठबैत छथि: जँ एकटा *सर्वज्ञ* सृष्टिकर्ता संसारक भोरमे मानवीय भाषा स्वयं रचलनि, प्रथम वक्ताकेँ शब्द–दर–शब्द सिखबैत — तँ एहन शिक्षा कोना आरंभ भ' सकैत अछि, जखन शिक्षक आ शिष्यक बीच कोनो साझा शब्द अखनहु अस्तित्वमे नहि छल जकरासँ सिखाओल जाए?

उदयन: जेना हम अहाँकेँ द्वितीय पुष्पगुच्छमे पहिनहि सँ देखा चुकल छी — शब्दसँ पहिने इशारासँ, ठीक जेना कठपुतली–नचएवालाक डोरी कठपुतलीक हाथकेँ एकटा दूरक वस्तु दिस इशारा करबैत अछि, आ देखैत बच्चा शब्द बजबासँ पहिनहि इशारासँ अर्थ अनुमानित करैत अछि। शिक्षाकेँ भाषा पूर्ण होएबाक पूर्वकल्पना नहि करबाके चाही; ओ भाषाकेँ *आरंभ* क' सकैत अछि,

पहिने इशारा, फेर शब्द। हम अहाँकेँ आइ एकरा स्वीकार करय नहि कहैत छी। हम केवल ई कहैत छी जे ई आपत्ति, कतेक तीक्ष्ण सुनाइ दिअय, पहिनहि सँ भेंट कएल जा चुकल अछि।

दृश्य ७ — अर्थापत्ति आ अनुपलब्धि, संक्षेपमे तौलल आ अपर्याप्त पाओल

(सूत्रधार बाकी खंड-शीर्षक एकहि संग, तीव्रतासँ पढ़ैत छथि, जखन उदयन प्रत्येकक उत्तर बारी-बारी दैत छथि — गति एतय तेज होइत अछि, द्वंद्वसँ बेसी झोंक।)

सूत्रधार: *अर्थापत्तिक स्वतंत्र प्रमाण-साधन रूपमे परीक्षा। अनुपलब्धिक स्वतंत्र प्रमाण-साधन रूपमे परीक्षा, आ एकर आर परीक्षा।*

नास्तिक: एक फेर दोसर, उदयन, किएक तँ अहाँ उपमान आ शाब्दकेँ उत्तर द' चुकल छी। पहिने अर्थापत्ति — ओ अनुमान जे हमरापर बाध्य होइत अछि जखन एकटा ज्ञात तथ्य अन्यथा कोनो अर्थ नहि रखैत अछि। की अर्थापत्ति, किछु प्रसंगमे, हमरा संसारकेँ ईश्वर *बिनु* स्पष्ट करय हेतु बाध्य नहि करैत अछि, आ एना हुनका भीड़सँ बाहर नहि क' दैत अछि?

उदयन: हमरा ओ तथ्य देखाउ जे केवल निर्माता बिनु अर्थ रखैत अछि, आ हम ओकरा सीधे उत्तर देब — मुदा एहि सभामे केओ अखन धरि एकहु प्रस्तुत नहि केलक; "ईश्वरक विरुद्ध अर्थापत्ति" क हर दावाकृत मामला, जाँचमे, अर्थापत्तिक नाम धएने एकटा सामान्य अनुमान सिद्ध होइत अछि, आ सामान्य अनुमानकेँ हम पहिनहि सँ विस्तारसँ उत्तर द' चुकल छी।

नास्तिक: तखन अनुपलब्धि फेर सँ, अपन पूर्ण रूपमे — केवल "हम हुनका नहि देखलहुँ" नहि, जकरा अहाँ पहिल दृश्यमे उत्तर देलहुँ, अपितु ओ

गहीर मीमांसा दावा जे अनुपलब्धि स्वयं *इंद्रियजन्य* ज्ञानक एकटा भिन्न साधन थिक, आ ईश्वरक संबंधमे ओकर मौनकेँ सकारात्मक प्रमाण मानल जाएब चाही।

उदयन: *(धैर्यवान, मुदा एकटा लम्बा दिनक तर्कक अंत लग)* सावधानीसँ ओकर पथ अनुसरण करू, आ ओ अंततः प्रत्यक्षमे ढहि जाइत अछि — एकटा सामान्य, अक्षत इंद्रिय "इहाँ कोनो घैल नहि" ई निश्चित ज्ञान ओहि *स्थानकेँ* अनुभव कऽ उत्पन्न करैत अछि जतय घैल रहितए, कोनो स्वतंत्र, स्वतंत्र रूपसँ अभावकेँ सामान्यतः देखय बला शक्तिसँ नहि। आ एकटा शक्ति जे, जड़मे, प्रत्यक्षे दोसर वेशमे थिक, ओ ठीक ओ सीमा उत्तराधिकारमे पबैत अछि जे प्रत्यक्षकेँ पहिनहि सँ छल: ओ केवल ओहि वस्तुक अभावक रिपोर्ट क' सकैत अछि जकरा ओ शुरूएसँ पकड़य योग्य छल। ईश्वर कहियो ओहि योग्यताक भीतर नहि छलाह। मौन किछुओ नव सिद्ध नहि करैत अछि; ई केवल, एहि पुष्पगुच्छमे तेसरी बेर, ओहि प्रथम उत्तरकेँ पुनः कहैत अछि जे हम अहाँकेँ देने रही।

नास्तिक: *(एकटा लम्बा ठहराव, फेर एकटा छोट, ईमानदार मुँड़ी-हिलाब)* तखन हम प्रत्यक्ष, अनुपलब्धिसँ अनुमान, उपमान, शाब्द, आ अर्थापत्तिकेँ समाप्त क' चुकल छी, आ ओहिमेसँ एकहु हमरा अहाँक अनुपस्थिति नहि दैत अछि।

उदयन: समाप्त नहि, मित्र — केवल परखल, न्यायपूर्वक, एक-एक क' कऽ। एतबे हम एहि पूरा पुष्पगुच्छ भरि केकरो सँ मांगल अछि।

दृश्य ८ — तृतीय पुष्पगुच्छक समापन प्रार्थना

(उदयन एहि अंकमे अंतिम बेर अदृश्य प्रतिमा दिस मुड़ैत छथि।)

उदयन: पूर्ण भक्तिसँ हम ओहि देवताक देवताकेँ प्रणाम करैत छी, एहि सभाक हर परंपरामे सैकड़ों नामसँ पूजित, जिनक शांत आनंदक उत्सवसँ कोनो प्रतिद्वंद्वी सुख नहि मिलैत अछि — जिनक यथार्थताकेँ कोनो प्रत्यक्ष पकड़ि फेकि नहि सकैत अछि, कोनो अनुमान उलटि नहि सकैत अछि, कोनो आर प्रमाण–साधन हटा नहि सकैत अछि — आ जिनपर, अंततः, ओ हर प्रमाण–साधन स्वयं निर्भर अछि विश्वसनीय होबय हेतु।

(पर्दा खसैत अछि। नास्तिक बाकी परिषद्सँ किछु काल अधिक ठाढ़ रहि जाइत छथि, फेर ओहो बैसैत छथि।)

— अंक तृतीय समाप्त —

अंक चतुर्थ — चतुर्थ पुष्पगुच्छ

(ईश्वरकेँ ज्ञाता रूपमे, आ ज्ञानक सच्चा स्वभाव संबंधी तर्क)

(सबसँ छोट पुष्पगुच्छ, आ सबसँ अंतर्मुखी: ईश्वर अस्तित्वमे छथि आ खंडित नहि भ' सकैत छथि, ई सुनिश्चित भेलापर, सभा अखन ई पूछैत अछि जे एकटा अचल, सर्वज्ञ सत्ताकेँ "ज्ञाता" कहबाक अर्थ की थिक। एहि अंकमे अधिकांश तर्क मीमांसक बहन करैत छथि।)

दृश्य १ — की सर्वज्ञता सेहो वैध ज्ञान भ' सकैत अछि?

(पर्दा फेर सँ उठैत अछि, ओहि दीप-जरल सभापर, आर बाद। उदयन नीक ढंगसँ थाकल बुझाइत छथि — एकटा वादी जे अपन मामलामे गहीर धँसल अछि, ओहिसँ जर्जर नहि।)

मीमांसक: एकटा आर कठिनाई, उदयन, आ ई अहाँ जे किछु बनौने छी ओकर जड़िकेँ चोट करैत अछि। अहाँ ईश्वरकेँ सर्वज्ञ कहैत छी। मुदा वैध ज्ञान, परिभाषासँ, कोनो एहन वस्तु जाननाके चाही जे *पहिनहि सँ ज्ञात नहि छल* — नहि तँ स्मृति स्वयं वैध ज्ञान-साधन गनल जाएत, जकरा केओ स्वीकार नहि करैत अछि। ईश्वरक ज्ञान पूर्ण अछि; हुनका हेतु किछुओ कहियो नव नहि अछि। जँ हुनका हेतु किछुओ कहियो नव नहि अछि, अहाँक अपन परिभाषासँ, हुनक ज्ञात कोनो वस्तु *वैध* ज्ञान नहि गनल जा सकैत अछि। आ जँ हुनक ज्ञान वैध नहि अछि, तँ ओ केकरो सेहो विश्वसनीय रचयिता नहि छथि — वेद सहित, जकर रक्षा अहाँ तीन पुष्पगुच्छ भरि केने छी।

उदयन: तखन दोष ओहि परिभाषामे अछि, ईश्वरमे नहि। "जे पहिने ज्ञात नहि छल से जानब" कोनो ज्ञानकेँ सत्य नहि बना सकैत अछि — ई अतिसंकुचित सेहो थिक आ अतिविस्तृत सेहो। अतिसंकुचित: एकहि घैलकेँ दू बेर देखू, दोसर देखब पहिल जतबे सत्य अछि, यद्यपि ओहिमे किछुओ नव नहि

अछि। अतिविस्तृत: एकटा भ्रम कहियो नहि देखल गेल किछु प्रस्तुत क' सकैत अछि आ तइयो मिथ्या रहि सकैत अछि। नवीनता न सत्यताकेँ न मिथ्यत्वकेँ ट्रैक करैत अछि। जे कोनो ज्ञानकेँ सत्य बनबैत अछि, से एतबे थिक — जे ओ *वस्तु वास्तवमे जेहन अछि ओकरासँ मेल खाइत अछि*। ओहि मापदंडसँ, ईश्वरक ज्ञान, पूर्ण आ कहियो त्रुटिपूर्ण नहि होएबाक कारणे, जतबे कोनो ज्ञान सत्य भ' सकैत अछि ओतबे सत्य अछि, चाहे ओहिमे सँ किछुओ हुनका हेतु "नव" होइ वा नहि।

मीमांसक: तखन अहाँ एकहि घैलक दोसर सच्चा दर्शनकेँ केवल स्मृतिसँ कोना अलगबैत छी? हम स्मृतिकेँ ज्ञान–साधन नहि कहैत छी।

उदयन: किएक तँ स्मृति पूर्णतः एकटा पूर्व ज्ञानपर निर्भर करैत अछि अपन विषय–वस्तु उधार लेबय हेतु — ओ शून्यसँ उत्पन्न नहि भ' सकैत अछि। एकहि घैलक एकटा ताजा दर्शन ओहिपर निर्भर करैत अछि जे घैल *अखन उपस्थित* अछि, अपन कारणसँ फेर देखल गेल, भंडारसँ स्मरण नहि कएल गेल। आ ईश्वरक मामला दुनूसँ अधिक सरल अछि: सम्पूर्ण ब्रह्मांडक हुनक ज्ञान एकटा एकल, स्वयं–समान क्रिया थिक, ओकरासँ पहिनेक कोनो आर ज्ञानपर निर्भर नहि, किछुओकेँ दोसर बेर देखबाक आवश्यकता नहि। एकरा न नव कहू न पुरान — ई केवल थिक, सम्पूर्ण, एकहि संग।

दृश्य २ — "ज्ञातत्व" क दावा — तीन प्रयास, तीन असफलता

मीमांसक: एकटा भिन्न द्वारसँ प्रयास करी, तखन। ज्ञान निश्चय अपन विषयपर *किछु* करैत अछि — किछु चिह्न छोड़ैत अछि। हम एहि चिह्नकेँ "ज्ञातत्व" कहैत छी: ओ गुण जे एकटा वस्तु, केवल ज्ञात होएबासँ, प्राप्त करैत अछि, जे ओ *ज्ञात भेल* अछि। एहि बिनु, अहाँक अपन अनुमानमे "उत्पन्न होएब"

जे एकटा दैवी निर्माताक हेतु अछि, अविश्वसनीय भ' जाइत अछि, किएक तँ जे कर्ता जे किछुओ स्पर्श करैत छथि ओहिपर कोनो चिह्न नहि छोड़ैत छथि, हुनका अपन सामग्री जनैत कहब कठिन थिक।

उदयन: एहन एकटा चिह्नक हेतु तर्क करबाक तीन ढंग, आ एहूमे सँ केओ परीक्षामे बाकी नहि रहैत अछि। पहिल — जे ज्ञान, एकटा क्रिया होएबाक कारणे, कोनो कार्यक फल देबाके चाही जेना कोनो क्रिया फल दैत अछि, आ ओ फल ज्ञातत्व थिक। मुदा खाली आकाशमे छोड़ल एकटा तीर *आकाशमे* कोनो फल उत्पन्न नहि करैत अछि; ज्ञान ओहि तीर जकाँ भ' सकैत अछि: वास्तविक गति, कोनो चिह्न पाछू नहि छोड़ैत। दोसर — जे हम कहैत छी "घैल ज्ञात अछि," आ ई वाक्यांश स्वयं सिद्ध करैत अछि जे किछु नव गुण घैलपर बैसल अछि। मुदा हम समान रूपसँ "घैल नष्ट भ' गेल" कहैत छी ओहि घैलक हेतु जे अखन कोनो गुण प्राप्त करय हेतु अस्तित्वमे नहि अछि; एकटा क्रियासँ संबंध वर्णन करएवाला भाषा, अपने आपमे, वस्तुमे कोनो वास्तविक अवशेष सिद्ध नहि करैत अछि। तेसर — जे इएह तथ्य जे हम सभ ज्ञानक विषयमे *बाजि सकैत* छी, से ओ छोड़ल कोनो अनुभवगोचर चिह्न सिद्ध करैत अछि। मुदा जे कारण हमरा ज्ञानक विषयमे बजबय दैत अछि, से ठीक ओहि कारण थिक जे पहिने ज्ञानकेँ उत्पन्न केलक; बातचीत स्पष्ट करय हेतु आर किछुओ मानबाक आवश्यकता नहि।

मीमांसक: तखन ज्ञातत्व किछुओ स्पष्ट नहि करैत अछि जकरा ज्ञानक अपन स्वभाव पहिनहि सँ स्वयं स्पष्ट नहि करैत होइ।

उदयन: ठीक इएह। एकटा घैलक ज्ञान अपन स्वभावसँ घैल–क–ज्ञान थिक, ठीक जेना एकटा पाथर उठएबाक प्रयास अपन स्वभावसँ ओहि–पाथर–

संबंधी–प्रयास थिक, कोनो एकोकेँ जे ओ स्पर्श करैत अछि ओहिमे तेसर वस्तु जमा कएने बिनु।

दृश्य ३ — की ज्ञान स्वयं किछु थिक जकरा हम अनुभूत करैत छी?

मीमांसक: वस्तुकेँ किनार राखू, तखन, आ प्रश्नकेँ ज्ञानपर घुमाउ। अहाँ कोना जानैत छी जे कोनो ज्ञान भेल अछि, जँ कोनो आर ज्ञानद्वारा ओकरा अनुभूत नहि कएल गेल — अनंततः, एकक बाद एक?

उदयन: अनंततः नहि — प्रत्यक्षतः। ओहि क्षण जखन कोनो बाह्य वस्तुक अनिश्चित अवबोध उत्पन्न होइत अछि, ओहि "ज्ञान होएबाक तथ्य" स्वयं मनक संग हल्कासँ पहिनहि सँ उपस्थित अछि; अगिला क्षणमे, जखन ओहि एकहि वस्तुक एकटा आर ज्ञान उत्पन्न होइत अछि, मन मुड़ैत अछि आ पूर्व ज्ञानकेँ निश्चित रूपसँ जानि लैत अछि, ठीक जेना अपन रसोइघरमे पहिचानल गेल पहिल अगिन ओहि एकहि चिह्नसँ बाद दूरक पहाड़पर धुआँसँ दोसर अगिन पहिचानय दैत अछि। ज्ञान स्वयं कोनो दोसर, ओहिसँ अलग ठाढ़ ज्ञानसँ अनुभूत नहि होइत अछि — मनक आत्मासँ सीधा संबंध, जकरामे ज्ञान निहित अछि, पर्याप्त अछि।

मीमांसक: तखन प्रश्नक कठिन रूपकेँ उत्तर दिअ। अहाँक अपन सम्प्रदायक अनुसार, एकटा ज्ञान मुश्किलेसँ दुइ वा तीन क्षण टिकैत अछि, नष्ट होएबासँ पहिने। जँ ओ एतेक क्षणिक अछि, तँ ओ एतेक काल कोना टिकैत अछि जे ओ अपन वस्तुकेँ प्रकट सेहो करय आ मनक पाछू मुड़िकऽ देखबासँ स्वयं पकड़ल सेहो जाए? आ की ओ क्षणभंगुर ज्ञान, अपन दोसर क्षणमे, ठीक

ओहि वस्तुकेँ पकड़ैत अछि जे ओ पहिल क्षणमे पकड़ने छल — वा वस्तु, ओहि क्षणमे, पहिनहि सँ बदलि गेल अछि?

उदयन: एकहि वस्तु, दुनू क्षणक पार बनल रहैत, एहिसँ अजनबी किछुओ आवश्यक नहि अछि, केवल ई मानि लेब जे कोनो ज्ञान, एक बेर उत्पन्न भेने, बिनु विरोधाभासक दुनू काज करय हेतु पर्याप्त काल टिकैत अछि: अपन वस्तुकेँ प्रकट करब, आ फेर, मनक अगिला दृष्टिक हेतु स्वयं एकटा वस्तु बनब। ओहि विकल्प दिस चलू जकरा अहाँ इशारा क' रहल छी — जे हर लुप्त होएवाला क्षणकेँ अपन लुप्त होएवाला "ज्ञातत्व" चाही ओकरा प्रमाणित करय हेतु, आ ओहि ज्ञातत्वकेँ अपन आर ज्ञातत्व ओकरा *प्रमाणित* करय हेतु — आ अहाँ केवल, एक स्तर ऊपर, इएह अनंत अनवस्था फेर उत्पन्न क' देने छी जकरासँ अहाँ "ज्ञातत्व" कें बचाबय चाहैत छलहुँ। सरलता अतिरिक्त सत्ताकेँ छोड़ब पसिन्न करैत अछि, ओकरा बढ़एब नहि।

दृश्य ४ — एकटा एहन सत्ता हेतु "ज्ञाता" क अर्थ जे काज नहि करैत अछि

आक्षेपक: *(फेर मंचपर, एकटा ठंढा आपत्तिसँ अशांत)* अखन धरिक सभटा मानि लिअ। तइयो — हमरा सभ जे कोनो "ज्ञान–साधन" नामित केने छी, से *कोनो काज करब* सँ परिभाषित अछि: आँखि प्रकाशपर काज करैत अछि, एकटा अनुमान मध्यपदद्वारा काज करैत अछि, एकटा शब्द वक्ताक उच्चारणद्वारा काज करैत अछि। ईश्वर, अहाँक विवरणें, एहिमेसँ किछुओ नहि करैत छथि — कोनो इंद्रिय–संपर्क नहि, कोनो मध्यपद नहि, हुनक ज्ञान उत्पन्न करएवाला कोनो वाक्–क्रिया नहि। तखन, किएह अधिकारसँ, अहाँ हुनका *ज्ञाता* कहैत छी, एकटा एहन शब्दक उपयोग सँ जे पूर्णतः कर्तृत्वसँ बनल अछि?

उदयन: किएक तँ सामान्य व्युत्पत्ति एकटा शब्दक अर्थक केवल *सामान्य* मूल दैत अछि, ओकर वास्तविक उपयोगक सम्पूर्णता नहि। हम एकटा इंद्रिय–शक्तिकेँ "ज्ञान–साधन" कहैत छी किएक तँ ओ ज्ञान उत्पन्न करबामे कारणिक रूपसँ *संलग्न* अछि। हम ईश्वरकेँ एकटा भिन्न, समान रूपसँ वैध कारणसँ "ज्ञाता" कहैत छी: ज्ञान केवल हुनकामे *निवास* करैत अछि, जे ओ छथि ओकर एकटा स्थायी विशेषता रूपमे, कोनो वस्तुद्वारा उत्पन्न भेने बिनु। एकटा व्यक्ति ज्ञाता भ' सकैत अछि बिनु, एहि क्षण, कोनो वस्तुक कर्ता भेने — जानब करबाक आवश्यकता नहि राखैत अछि। न हमरा ई दावा करबाके चाही जे हुनक ज्ञान प्रत्यक्ष, अनुमान, शाब्द, आ बाकीक बगलमे किछु पाँचम, अनाविष्कृत ज्ञान–साधन थिक। "प्रत्यक्ष" कें व्यापक करू केवल एकटा वस्तुक *सीधा, अबाधित जागरूकता* बुझाबय हेतु — विशेष रूपसँ इंद्रिय–संपर्कद्वारा प्रत्यक्ष नहि — आ ईश्वरक जानब स्वाभाविक रूपसँ ओहि व्यापक अर्थक अंतर्गत आबि जाइत अछि, कोनो नव श्रेणी अस्तित्वमे लेने बिनु।

दृश्य ५ — की हर त्रुटि जननाइ ईश्वरक ज्ञानकेँ त्रुटिपूर्ण बनबैत अछि?

मीमांसक: एकटा अंतिम प्रहार, आ फेर हम एहि पुष्पगुच्छकेँ छोड़ि देब। जँ ईश्वर सर्वज्ञ छथि, हुनका हर मिथ्या विश्वास ज्ञात अछि जे कोनो प्राणी कहियो राखने अछि — हर भ्रम, हर गलत अनुमान, हर स्वप्न। मुदा तखन हमरा सभक त्रुटिक *विषय–वस्तु* सेहो, किछु अर्थमे, हुनक अपन ज्ञानमे उपस्थित अछि। की ई हुनक ज्ञानकेँ स्वयं त्रुटिसँ भरल नहि बनबैत अछि? आ जँ हुनक ज्ञान पहिनहि सँ हमरा सभक भूल राखने अछि, तँ हमरा सभक भूल मेटएबामे हुनक शिक्षाक की उपयोग?

उदयन: *(एहि सम्पूर्ण अंकमे पहिल मुस्कानक संकेत)* अहाँ त्रुटिकेँ त्रुटिक *ज्ञानसँ* भ्रमित क' देलहुँ, मित्र — आ इएह भ्रम ठीक ओ प्रकारक गल्ती थिक जे ईश्वरक ज्ञान, हमर सभक विपरीत, कहियो नहि करैत अछि। एकटा भ्रम मिथ्या थिक। मुदा एकटा सच्चा ज्ञान *जे एकटा भ्रमकेँ भ्रम रूपमे पहचानैत अछि* — "इएह एकटा मिथ्या ज्ञान थिक" — से स्वयं मिथ्या नहि थिक; ई ठीक विपरीत थिक: मिथ्यत्वक विषयमे स्पष्टता, ओहिमे सहभागिता नहि। ईश्वर हर त्रुटिकेँ ठीक ओहन जानैत छथि जेहन ओ वास्तवमे अछि — त्रुटि रूपमे — आ एकटा ज्ञान जे त्रुटिकेँ त्रुटि रूपमे सही देखैत अछि, से, इएह पुष्पगुच्छक आरंभमे हम सभ जे परिभाषा तय केने रही, ओहिसँ सत्य थिक। हुनक शिक्षाकेँ कमजोर करबासँ बहुत दूर, इएह एकमात्र वस्तु थिक जे हुनक शिक्षाकेँ किछुओ मूल्यक बनबैत अछि: ओ केवल हमरा सभक भूलकेँ अपन सत्यताक बगलमे नहि राखैत छथि — ओ हुनका सभकेँ *भूल रूपमे* देखैत छथि, जे ठीक ओ थिक जे हम सभ, अखनहु ओहिमे फँसल, अपने हेतु अखन धरि नहि क' सकैत छी।

मीमांसक: *(एकटा लम्बा साँस, फेर एकटा छोट सिर-नमन)* हम एहि सभामे चारि पुष्पगुच्छ संशयक बहन क' आनल अछि, उदयन, आ अहाँ प्रत्येककेँ बिनु अपन स्वर उठेने भेटलहुँ। हम अखनहु अपनाकेँ पूर्ण रूपसँ उत्तरित नहि कहैत छी। मुदा हम अखन अपनाकेँ अहाँक विरोधी सेहो नहि कहैत छी — केवल अहाँक सबसँ हठी शिष्य।

उदयन: *(स्नेहसँ)* वादक एहिसँ नीक परिणाम आर किछुओ नहि, मित्र। बैसू, आ किछु काल विश्राम करू। जे बाकी अछि से अब बचाव नहि थिक।

दृश्य ६ — पाँचम पुष्पगुच्छ दिस मुड़ब

(एहि पुष्पगुच्छक हेतु कोनो समापन प्रार्थना मूल पाठमे नहि देल गेल अछि — बचल पन्ना सीधे ईश्वरक त्रुटि-ज्ञानक चर्चासँ महान सकारात्मक प्रमाणमे बढ़ैत अछि। सूत्रधार एकर बदला मोड़ चिह्नित करैत छथि।)

सूत्रधार: एहि सभाक पाछू अखन तीन पुष्पगुच्छ बचाव भेल — ई संशय जे कोनो अदृश्य कारण नहि अछि, ई संशय जे कर्मकांडकेँ ईश्वरक आवश्यकता नहि, ई दावा जे ईश्वर पूर्णतः खंडित भ' सकैत छथि, आ, एहि चतुर्थ आ सबसँ छोट पुष्पगुच्छमे, ई प्रश्न जे एतेक अचल सत्ताकेँ "ज्ञाता" कहबाक अर्थ की थिक। हुनक विरुद्ध उठाओल हर संशयकेँ भेंटल आ मोड़ल गेल अछि। एकटा काज बाकी अछि, बाकी सभसँ महान — केवल किलाक रक्षा नहि, अपितु ओकरा बनएब: आठ प्रमाण, अपन पएरपर ठाढ़, कोनो विरोधीक पहिल चालक आवश्यकता बिनु। इएह पाँचम पुष्पगुच्छ थिक, आ एहि सम्पूर्ण उद्यानक शिखर।

(पर्दा धीरेसँ खसैत अछि — कोनो समापन संगीत नहि, केवल एकटा ठहराव, आगू आबय बलाक हेतु दीप अधिक उज्ज्वल कएल गेल।)

— अंक चतुर्थ समाप्त —

अंक पंचम — पंचम पुष्पगुच्छ

(ईश्वरक अस्तित्व स्थापित करएवाला आठ प्रमाण)

(वादक शिखर। उदयन अखन केवल उत्तर नहि दैत छथि — ओ बनबैत छथि, प्रमाणपर प्रमाण, प्रत्येक अपन पएरपर ठाढ़। नास्तिक, चार्वाक, मीमांसक, सांख्य आचार्य, बौद्ध, आ वैशेषिक सभ सभामे उपस्थित छथि, अब बारी–बारी विरोध नहि करैत, अपितु एकटा सभा रूपमे सुनैत छथि एकटा मामलाकेँ जे अंततः पूर्ण रूपसँ बनल जा रहल अछि।)

दृश्य १ — आठकेँ रूपरेखा देब

(अंतिम बेर पर्दा उठैत अछि। दीप स्थिर जरैत अछि। उदयन सभाक मध्यमे ठाढ़ छथि, आ एहि बेर आरंभेमे केओ हुनका बीचमे नहि टोकैत छथि।)

उदयन: चारि पुष्पगुच्छ, आ हम अखन धरि किछुओ नहि केने छी सिवाय भूमि साफ करबाक — संशयक उत्तर देब, आक्रमणक खंडन करब, एकटा निर्माताक संभावनाक रक्षा करब। आइ राति हम रक्षा करब बंद करैत छी। आठ प्रमाण अहाँक सोझाँ ठाढ़ छथि, प्रत्येक अपने आपमे पर्याप्त, कोनो विरोधीक पहिल चालक आवश्यकता बिनु अस्तित्वमे: जे संसार एकटा *कार्य* थिक; जे परमाणुमे प्रथम गतिकेँ एकटा प्रेरककेँ आवश्यकता अछि; जे संसार *धारित* अछि; जे ओ *नष्ट* होइत अछि; जे शब्द आ शिल्पक स्वयं प्रथाकेँ एकटा प्रथम शिक्षकक आवश्यकता छल; जे शास्त्रीय परम्पराक *वैधता* एकटा विश्वसनीय स्रोत मांगैत अछि; जे शास्त्र स्वयं अपन रचयिताक साक्ष्य दैत अछि; जे बिनु *संख्या* सेहो — द्वित्व, त्रित्व, ओहन वस्तुमे जे हमरा सभमेसँ केओ गनि नहि सकैत अछि — एकटा गननिहार मनक चिह्न बहन करैत अछि। प्रत्येककेँ ओतबे कठोरतासँ परखू जतबे अहाँ आइ राति हमर बाकी हर बातकेँ परखने छी। हम केवल ई मांगैत छी जे अहाँ हुनका एक–एक क', अपन–अपन भूमिपर, परखू।

नास्तिक: आरंभ करू, तखन। हम आइ राति सहजतासँ नहि मानलहुँ, आ अखन सेहो शुरू नहि करब।

उदयन: नीक। इएह ठीक ढंग थिक जकरामे एकर अंत होएबाके चाही।

दृश्य २ — प्रथम प्रमाण: संसार एकटा कार्य थिक

उदयन: पृथ्वी, पर्वत, जकरामे हम सभ बैसल छी ओ शरीर — सभटा *उत्पन्न* भेल अछि, ठीक जेना एकटा घैल उत्पन्न होइत अछि। आ कोनो उत्पन्न वस्तुमे उत्पादकक कमी नहि होइत अछि। तँए: संसारक एकटा निर्माता अछि।

नास्तिक: तखन ओ निर्माताकेँ एकटा शरीर होएबाके चाही, जेना हर कुम्हारकेँ होइत अछि। आ जँ हुनका शरीर अछि, तँ ओ ओ अशरीरी ईश्वर नहि छथि जकरा अहाँ चारि पुष्पगुच्छ भरि बनबैत रहलहुँ।

उदयन: ओहि आपत्तिकेँ दबाउ आ देखू ओ अहाँक अपन हाथसँ कोना फिसैल जाइत अछि। या तँ अहाँ दावा करैत छी जे ईश्वरकेँ शरीर अछि — जकरामे अहाँ पहिनहि सँ मानि चुकल छी जे ओ अस्तित्वमे छथि, आ केवल हुनक आकारपर टीका-टिप्पणी करैत छी — वा अहाँ दावा करैत छी जे संसार एकटा शरीरधारी सत्ताद्वारा *नहि* बनल छल आ ओहिसँ अकेल निष्कर्ष निकालैत छी जे ओ बिलकुले नहि बनल छल — जे ओहि अनुमानक स्वयं विरोधाभास करैत अछि जकर अहाँ कथित उत्तर द' रहल छी। एकटा सामान्य कारणकेँ ओ हर विशेषताकेँ साझा करबाक आवश्यकता नहि जे हम सभ पहिनहि सँ देखल विशेष कारणमे देखने छी। अगिन धुआँसँ अनुमानित होइत अछि, चाहे *कोन* ईंधन जरल होइक; एकटा निर्माता एकटा बनल संसारसँ अनुमानित होइत अछि, चाहे ओ निर्माता शरीर धारण करैत होथि वा नहि। "शरीरधारी" कहियो हमर

प्रमाणक भारवाहक भाग नहि छल — अहाँ एकटा एहन शब्दक विरुद्ध तर्क केलहुँ जकर हमरा आवश्यकता नहि छल।

दृश्य ३ — द्वितीय प्रमाण: परमाणुमे गति

वैशेषिक: परमाणुकेँ स्वयं विचारू, तखन, ओ कहियो "संसार" बननासँ पहिने। सृष्टिक प्रथम क्षणमे, ओ परमाणु जे कहियो पहिने नहि हिलल छल, हिलय लागल, आ जुड़य लागल। जड़ वस्तु स्वयं नहि हिलि सकैत अछि — कुदार स्वयं माटिमे नहि झूलैत अछि। चेतन किछु ओकरा प्रेरित करबाके चाही।

सांख्य आचार्य: *(शांततासँ)* अकेल भाग्य ओहि प्रथम गतिकेँ स्पष्ट क' सकैत अछि, कोनो चेतन प्रेरकक आवश्यकता बिनु।

उदयन: भाग्य आवश्यक कईटा कारणमेसँ एक थिक, आचार्य — कोनो एहन कारण नहि जे बाकी सभकेँ भीड़सँ बाहर क' दैत अछि। एकटा जड़ वस्तुकेँ, ठीक एहि लेल जे ओ जड़ थिक, चेतनताक एकटा आधार आवश्यक अछि ओकरा हिलएबाक हेतु, ठीक जेना कुदारकेँ एकटा हाथ चाही। अहाँ चाहू तँ जीवित शरीरक विशिष्ट गतिकेँ परमाणुक प्रथम गतिसँ "भिन्न प्रकार" कहि सकैत छी — मुदा "शारीरिक गति" कोनो ढंगसँ परिभाषित करू, अहाँ पाएब जे ओ परिभाषा पहिनहि सँ ठीक ओ मानि लैत अछि जकर हम तर्क क' रहल छी: एकटा चेतन कर्ताद्वारा उत्पन्न विशेष गति। अहाँ विवादित वस्तु स्वयंकेँ ओहि अनुमानकेँ अयोग्य ठहराबय हेतु उपयोग नहि क' सकैत छी जे ओकरा स्थापित करैत अछि।

दृश्य ४ — तेसर आ चारिम प्रमाण: धारण आ नाश

उदयन: संसार, अपन विशालता आ भारक बावजूद, खसैत नहि अछि — ठीक जेना एकटा चिड़ैक विशाल भार खसैत नहि अछि, अपन प्रयासद्वारा उड़ानमे धारित। किछु ओकरा सम्पूर्णतः धारित करैत अछि, क्षण–प्रति–क्षण, ठीक जेना प्रयास एकटा जीवित शरीरकेँ धारित करैत अछि। आ जखन इएह संसार बादमे नष्ट होइत अछि — सबसँ छोट अविभाज्य परमाणु–युग्म धरि — नाश सेहो एकटा कर्ताक आवश्यकता राखैत अछि जे ओकरा सक्षम होइ, ठीक जेना कपड़ा केवल फाड़निहार हाथसँ नष्ट होइत अछि, शून्यसँ नहि।

आक्षेपक: भाग्य फेर सँ दुनूकेँ स्पष्ट क' सकैत अछि — बिनु धारकक स्थिरता, बिनु नाशकक विलय।

उदयन: भाग्य सत् अछि, आ हम एकरा कहियो अस्वीकार नहि केलहुँ — मुदा एकटा स्वीकृत कारण हर कारणकेँ बाहर नहि क' दैत अछि। जँ अकेल भाग्य शरीरक धारणकेँ स्पष्ट करितए, तँ प्रयास स्वयं एकटा जीवित प्राणीकेँ ठाढ़ राखबामे कोनो काज नहि बचैत — जे स्पष्टतः मिथ्या अछि, जेहन एहि सभामे ठाढ़ हमरा सभमेसँ केओ हमरा बता सकैत अछि। धारण आ नाश, प्रत्येक, कार्य थिक; कार्यकेँ कर्ताक आवश्यकता होइत अछि; संसारक विशालता ओहि नियमसँ कोनो छूट नहि थिक जे हर छोट वस्तुकेँ शासित करैत अछि जकरा हम सभ कहियो उठैत आ खसैत देखने छी।

दृश्य ५ — पाँचम प्रमाण: प्रथम शब्द केकरा सिखौलनि?

उदयन: परमाणुसँ अधिक निकटक किछु विचारू — ओ स्वयं प्रथा जकरासँ हमरामेसँ केओ एक–दोसराकेँ बुझैत अछि। एकटा कुम्हारक शिल्प आन कुम्हारसँ सिखल जाइत अछि; एकटा जुलाहाक, आन जुलाहासँ; एकटा बच्चा वर्णमाला एकटा शिक्षकसँ सिखैत अछि जे ओकरा एकटा पहिनुक

शिक्षकसँ सिखने छलाह। ओहि श्रृंखलाकेँ पर्याप्त पाछू ताकू, आ अहाँ एकटा प्रथम कड़ीपर पहुँचब — एकटा प्रथम कुम्हार जकर सिखबाक हेतु कोनो कुम्हार नहि छल, एकटा प्रथम वक्ता जकरा सिखएबाक हेतु कोनो भाषा अखनहु नहि बाजल गेल छल।

बौद्ध: शायद श्रृंखलाक कोनो प्रथम कड़ी अछिये नहि — अनादि, ठीक जेना पुनर्जन्मक चक्र स्वयं।

उदयन: सृष्टि आ विलयक *चक्र* अनादि अछि, भिक्षु — हम एकरा विवाद नहि करैत छी। मुदा कोनो *एक* चक्रक भीतर, अपन नव भोरमे, कोनो पतित वा सामान्य मनुष्य अखनहु उपलब्ध नहि छथि जे किछु शुरू क' सकथि। किछुओकेँ प्रथम प्रथा गतिमे राखबाके चाही, हर नव आरंभमे, ठीक जेना एकटा कठपुतली–नचएवालाक इशारा — एकटा डोरी खिचल, एकटा हाथ इशारा कएल — देखैत बच्चाकेँ एकटा शब्दक अर्थ सिखबैत अछि ओहिसँ पहिनहि जे दुनूक बीच कोनो शब्द बाजल गेल होइक। ओहि प्रथम शिक्षककेँ स्थायी रूपसँ शरीर राखबाक आवश्यकता नहि; शास्त्र स्वयं एकटा एहन सत्ताकेँ दर्ज करैत अछि जे बेर–बेर रूप धारण करैत छथि, ठीक ओहि हेतु जे अन्यथा हराएल होएत ओकरा पुनर्जीवित करय हेतु।

दृश्य ६ — छठम आ सातम प्रमाण: एकटा विश्वसनीय परम्परा, आ शास्त्रक अपन वचन

मीमांसक: तखन हमरा अपन भूमिपर, अंतिम बेर, अहाँसँ भेंट करय दिअ। अहाँ कहैत छी वैदिक परम्पराक *वैधता* स्वयं ओकर पाछूक एकटा स्रोत सिद्ध करैत अछि। मुदा वैधता, हमर सम्प्रदायक शिक्षानुसार, कोनो बाह्य

गारंटीक आवश्यकता नहि राखैत अछि — ई केवल इएह थिक जे एकटा उचित रूपसँ उत्पन्न ज्ञान पहिनहि सँ अछि।

उदयन: आ जँ हर ज्ञानक वैधताकेँ एकटा आर ज्ञान प्रमाणित करय हेतु चाही, तँ हम सभ ओहि अनवस्थाक सामना करब जे द्वितीय पुष्पगुच्छसँ हमरा सभक पाछू लागल अछि — एकटा अनवस्था जकरा हम ओतय उत्तर देलहुँ, आ अखनहु फेर उत्तर दैत छी: एतेक विशाल, एतेक स्थिर एकटा परम्परा, हर पीढ़ीमे विद्वान लोकद्वारा धारित, से ओहन वस्तु नहि थिक जकरा एकटा सीमित व्यक्ति शून्यसँ गढ़ि लैत अछि। ओकरा, अपन जड़िमे, एकटा एहन सत्ताक आवश्यकता अछि जे ओकरा सत्यतापूर्वक उत्पन्न करय हेतु आवश्यक उत्कृष्टता राखय। आ शास्त्र केवल एहन स्रोतकेँ संकेत नहि करैत अछि — ओ ओकरा नाम दैत अछि। पन्ना–दर–पन्ना, बिनु प्रशंसाक कोनो आवश्यकताक प्रेरित भेने, वेद स्वयंकेँ एकटा जाननिहार मुँहसँ निकलैत बतबैत अछि: "इएह वेद हमरासँ निकलैत अछि, प्रत्येक चक्रमे नव।" वाक्यक एहन संग्रह जकरा हर ज्ञानी व्यक्ति स्वीकार केने अछि जे ओकर अध्ययन केलक, अपन अधिकारपर, आन किछुओपर टिकल नहि — ई ओहि सामान्य मानवीय रचनासँ भिन्न वस्तु थिक जकर रचयिता केवल अनामित रहि जाइत अछि।

मीमांसक: *(एकटा लम्बा ठहराव)* अहाँ ओ सूत्र चारि पुष्पगुच्छ भरि यहाँ धरि आनि पहुँचौलहुँ। हम तर्कक आकृति पहचानैत छी, यद्यपि हम अखनहु अपन निष्कर्ष नहि रखने छी।

उदयन: ई ईमानदार अछि, आ आइ रातिक हेतु पर्याप्त अछि।

दृश्य ७ — एकटा अंतराल: जखन शास्त्र आज्ञा दैत अछि, तँ के आज्ञा दैत अछि?

आक्षेपक: एकटा सूत्र अहाँ अखनहु नहि खिंचने छी, उदयन। शास्त्र केवल वर्णन नहि करैत अछि — ओ *आज्ञा* दैत अछि। "आत्मा जानल जाएब चाही।" एकटा आज्ञा की थिक, जँ ओ केवल एकटा क्रिया नहि, वा एकटा इच्छा, जे श्रोतामे बिनु कोनो वक्ताक आवश्यकताक पहिनहि सँ उपस्थित अछि?

उदयन: न एकहु काज करत। क्रिया नहि — किएक तँ "आत्माकेँ जानू" कोनो एहन काजक आज्ञा नहि दैत अछि जे अंतरिक्षमे हिलैत अछि, आ कोनो आज्ञा जे केवल क्रियामे घटा देल जाए, से बाजारमे चलैत व्यक्तिक वर्णन करएवाला हर सामान्य वाक्यमे ढहि जाइत अछि। इच्छा सेहो नहि — किएक तँ काज करबाक इच्छा स्वयं ओहि आज्ञाक अर्थकेँ जाननासँ उत्पन्न होइत अछि; आज्ञाक अर्थकेँ इच्छा बनाउ, आ इच्छा स्वयंक कारण आ कार्य दुनू भ' जाइत अछि, वृत्ताकार आ खाली। एकटा आज्ञा वास्तवमे जे बुझबैत अछि, से एकटा वक्ताक *अभिप्राय* थिक जे श्रोता काज करय — आ एकटा अभिप्रायकेँ, अपन व्याकरणसँ, एकटा अभिप्रायकर्ताक आवश्यकता होइत अछि। "अहाँकेँ ई करबाके चाही" अर्थहीन थिक बिनु केओक जिनक इच्छा अहाँक संबंधमे ई व्यक्त करैत अछि। शास्त्रक हर आदेश, ईमानदारीसँ ओकर व्याकरण धरि जाँचल, क्रियापदक पाछू ठाढ़ एकटा वक्ता दिस इशारा करैत अछि।

दृश्य ८ — आठम प्रमाण: परमाणुकेँ के गनैत अछि?

उदयन: आ अंतिम, आठमेसँ सबसँ विचित्र आ, हमर विचारें, सबसँ सूक्ष्म। एकटा परमाणु-युग्मक एकटा निश्चित परिमाण होइत अछि; एकटा त्रय, ओहिसँ बहुत बेसी परिमाण — एतेक बेसी जे अकेल परमाणु-आकारसँ स्पष्ट नहि होइत अछि, किएक तँ जँ केवल परमाणुक गुणन ओकरा स्पष्ट करितए, तँ दुइ परमाणु एकसंग पहिनहि सँ इएह मोट आकार देखबैत, आ ओ स्पष्टतः

नहि देखबैत अछि। खाली संचयनसँ परे किछु — एकटा गणना, एकटा *गनब* — इहो एतय काज करैत होएब चाही, एहन स्तरपर जकरा एहि सभामे कोनो आँखि कहियो सीधे अनुभव नहि क' सकैत अछि। द्वित्व कोनो निष्क्रिय गुण नहि थिक जे युग्ममे पड़ल अछि; ओ *गणनाक* एकटा क्रियासँ उत्पन्न होइत अछि। आ परमाणु, अपन स्वभावेसँ, हमरामेसँ प्रत्येककेँ अदृश्य छथि। तखन केकर गणना, युग्मकेँ ओकर द्वित्व दैत अछि, जँ कोनो सीमित प्राणी अपन जीवनमे एकहु परमाणु कहियो नहि गनने अछि?

नास्तिक: *(शांततासँ, एकटा लम्बा मौनक बाद)* केवल एकटा सर्वज्ञ गननिहार।

उदयन: केवल एकटा सर्वज्ञ गननिहार। आठ प्रमाण, मित्र — कार्य रूपमे संसार, परमाणुक प्रथम गति, ओकर धारण, ओकर नाश, हमरा सभ जे–जे शब्द बजैत छी ओकर प्रथम शिक्षा, एकटा प्राचीन विश्वासक वैधता, शास्त्रक स्वयंक साक्ष्य अपन स्रोतक, आ अखन संख्या स्वयं, ओहिमे उपस्थित जकरा हमरामेसँ केओ अकेल कहियो गनि नहि सकत। हम दावा नहि करैत छी जे एहिमेसँ एकहु, अकेल ठाढ़, एकटा धैर्यवान विरोधीद्वारा एकटा आर पूरा साँझ भरि खोतराओल नहि जा सकैत अछि — अहाँ हमरा आइ राति ठीक देखा देलहुँ जे ई सभा कतेक धैर्यवान भ' सकैत अछि। हम केवल इएह दावा करैत छी जे आठ स्वतंत्र रेखा, एकहि निष्कर्षपर आठ भिन्न दिशासँ मिलैत, जकरामेसँ एकोकेँ दोसरासँ उधार नहि लेल गेल, से आठ संयोग नहि थिक। अंततः इएह थिक जे एकटा पुष्पगुच्छ होइत अछि — एकटा अटूट फूल नहि, अपितु बहुतो एकसंग बटोरल, तें जँ एकटा पंखुड़ी सेहो कुचल जाए, तइयो पुष्पगुच्छ स्वयं अहाँक हाथमे पूर्ण ठाढ़ रहैत अछि।

दृश्य ९ — प्रत्यक्ष जानब, तर्कसँ परे

मीमांसक: आ की सचमुच हुनका जानबाक कोनो आर मार्ग नहि अछि तर्कक शृंखलासँ बाहर, उदयन — आठ प्रमाण, प्रत्येककेँ एहन एकटा सभा आ एहन एकटा साँझ चाही ओकरा पार करय हेतु?

उदयन: *(अब अधिक कोमल, वाद प्रत्यक्षतः समाप्त होइत)* तर्क अकेल द्वार नहि थिक। योगी हुनक प्रत्यक्ष आंतरिक ज्ञानक रिपोर्ट करैत छथि, ठीक जेना कखनहु एकटा स्वप्न मनकेँ एहन वस्तु देखबैत अछि जकरा कोनो बाह्य इंद्रिय नहि आपूर्ति केने छल — हर स्वप्न केवल स्मृतिक पुनरावृत्ति नहि थिक; किछु सच्चा अनुभवक बनावट बहन करैत अछि। अनुशासनसँ, सामान्य अशांतिक शांतिकरणसँ, इएह प्रकारक अमध्यस्थ ज्ञान ईश्वरक हेतु सेहो संभव कहल जाइत अछि, जेना ई, छोट मापमे, एकटा सच्चा स्वप्नक जीवंततामे संभव अछि। हम एहि सभासँ आइ राति एकरा श्रद्धापर लेबय हेतु नहि कहने छी। हम केवल अहाँकेँ, प्रमाण–दर–प्रमाण, ओहि बिन्दु धरि लऽ अएलहुँ जतय श्रद्धा आ तर्क भिन्न मार्गसँ एकहि द्वार पर पहुँचैत अछि।

दृश्य १० — सम्पूर्ण पुष्पगुच्छक अंतिम प्रार्थना

(उदयन, एहि नाटकमे अंतिम बेर, सभाक शीर्षपरक अदृश्य प्रतिमा दिस मुड़ैत छथि। सम्पूर्ण परिषद् — आक्षेपक, मीमांसक, चार्वाक, सांख्य, बौद्ध, वैशेषिक, नास्तिक — हुनका चारू कात शांत भ' जाइत अछि।)

उदयन: जँ एहो — आठ प्रमाण, ईमानदारीसँ अर्पित, ईमानदारीसँ परखल — कोनो मनकेँ नहि हिला सकए, तँ ओ मन पाथर थिक, आ तर्कक कोनो पुष्पगुच्छ पाथरकेँ नहि नरमा सकत। तँए हम एतय विजयक हेतु प्रार्थना नहि करैत छी। हम बरु प्रार्थना करैत छी: ई तर्कक पुष्पगुच्छ दुनू नाकसँ समान रूपसँ

सुगंधित होइ — ई ओहि आस्तिककेँ संतुष्ट करय जे पहिनहि सँ विश्वास कऽ आयल छल, आ, अपन समयमे, ओहि नास्तिक तक सेहो पहुँचय जे एकरा तोड़य आयल छल। आ जँ ई एतबो नहि क' सकय, तँ ई केवल एकटा भेंट रूपमे बाकी रहय: सत्यतासँ बटोरल, ताजा राखल, बिनु कोनो अपेक्षाक शिक्षकसभक प्रभुक चरणमे राखल, जे अकेल जनैत छथि जे आइ राति एकरा सुनएवाला मन अपन घर जल्दी पाओत, वा बादमे, वा एहि सभाक मार्गसँ पूर्णतः भिन्न कोनो आर मार्गसँ।

(एकटा लम्बा स्थिरता। फेर, एक–एक क', बिनु हड़बड़ीक, परिषद् उठैत अछि। नास्तिक सभसँ अंतमे ठाढ़ होइत छथि। रंगमंचक पर्दा — कृष्ण–रक्त आ सोनहर, इएह पर्दा जे प्रथम पुष्पगुच्छपर उठल छल — अपन अंतिम, धीरे अवतरण दीप–जरल सभापर आरंभ करैत अछि।)

सूत्रधार: *(शांततासँ, जखन पर्दा खसैत अछि)* पाँच पुष्पगुच्छ, आठ प्रमाण, आ एकटा दीप जे सम्पूर्ण साँझ नहि हिझाएल। वाद एतय समाप्त होइत अछि। की ई *निपटल* समाप्त होइत अछि, से, जेना एहि सभामे सदा होइत अछि, ओहि व्यक्तिपर छोड़ल जाइत अछि जे एकरा द्वारसँ बाहर लऽ जाइत अछि।

— अंक पंचम समाप्त —

— नाटक समाप्त —

चिंतामणि रत्न — उत्तरार्ध

गवय आ शब्द

गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिंतामणिक उपमान–खंड आ शब्द–खंडक एकटा मौलिक नाट्य–रूपांतरण

[एकटा दार्शनिक वाद–नाटक, शास्त्रीय संस्कृत वादक शैलीमे, एकटा प्रस्तावना, दुइ अंक, आ एकटा उपसंहारमे — "चिंतामणि रत्न" क अगिला साँझ

तर्क, संकुचित आ पुनः–स्वरित रूपमे, गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिंतामणिक उपमान–खंड आ शब्द–खंडक मुख्य आंदोलनक अनुसरण करैत अछि — सादृश्यक स्वतंत्र पदार्थताक खंडन (एकत्व–अनंतत्वक विकल्प, कुमारिलक साधारण–धर्म–समूहवादक परीक्षा, हाथीक बच्चा आ गदहाक उदाहरण सहित), मीमांसक उपमिति–लक्षणक अनुमानमे अंतर्भाव, जयंत भट्टक प्राचीन नैयायिक मतक वैधर्म्य–आधारित उपमान (गदहाक निंदात्मक वर्णन) द्वारा संकीर्णता–प्रदर्शन, गंगेशक अपन सिद्धांत जे उपमानक असाधारण फल शक्तिग्रह थिक; तथा शब्द–खंडमे बौद्धक प्रमाणता–आक्षेपक आत्मव्याघात, वैशेषिकक अनुमान–अंतर्भावविवादक शाब्दबोधक तात्कालिकतासँ खंडन, आकांक्षा–योग्यता–सन्निधि–तात्पर्यक चारू कारणक लक्षण, प्राभाकर अन्विताभिधानक खंडन, वेदक अपौरुषेयताक खंडन आ ईश्वर–प्रणीतत्वक स्थापना, नष्ट–शाखा–सिद्धांत, आ विधि–अर्थक विवेचनमे अपूर्ववादक स्थानपर इष्टसाधनता–कृतिसाध्यता–बलवद्–अनिष्ट–अननुबन्धित्वक त्रयक स्थापना।]

पात्र–परिचय

सूत्रधार — मंच–संचालक

गंगेश उपाध्याय — तार्किक, वादक यजमान

भाट्ट मीमांसक — कुमारिल भट्टक अनुयायी, सादृश्यकेँ एकटा स्वतंत्र पदार्थ मानएवाला, आ वेदकेँ अपौरुषेय

प्राभाकर मीमांसक — प्रभाकर मिश्रक अनुयायी, जे शब्दक शक्तिकेँ कार्यान्वित अर्थमे सीमित मानैत छथि

बौद्ध — पछिला साँझक ओएह विरोधी, अखन शब्द–प्रमाणपर संशयी

वैशेषिक — जे शब्दज्ञानकेँ अनुमानमे घटाबय चाहैत छथि

शिष्य — गंगेशक शिष्य

एकटा वनवासी — जे अंक प्रथमक आरंभमे एकटा संदेश लऽ कऽ अबैत अछि

परिषद् — सभाक कानाफूसी

स्थान: मिथिलाक ओएह वाद–शाला, अगिला साँझ। मेजपर आब घैल आ शंखक स्थानपर दुइ वस्तु राखल अछि: एकटा गायक छोट मिट्टीक मूर्ति, आ ओकर कात एकटा दोसर मूर्ति — गाय जकाँ, मुदा गाय नहि — जकरा अखन धरि केओ नाम नहि देलक।

प्रस्तावना

(सूत्रधार प्रवेश करैत अछि।)

सूत्रधार: काल्हि राति एहि सभामे गंगेश उपाध्याय चारि प्रमाणमेसँ दुइकेँ कसौटीपर कसलनि — प्रत्यक्ष, जकरासँ हम शंखकेँ देखैत छी, आ अनुमान, जकरासँ हम धुआँसँ अगिन धरि पहुँचैत छी। मुदा न्याय चारि प्रमाण मानैत अछि, दुइ नहि। आइ राति बाकी दुइक बारी अछि, आ ओ दुनू एकहि प्रश्नक दुइ रूप थिक: *शब्द अपन अर्थ धरि कोना पहुँचैत अछि?* एकटा बच्चा "गाय" शब्द सुनैत अछि आ एकटा पशु दिस ताकैत अछि — ओहि ध्वनि आ ओहि पशुक बीचक ओ अदृश्य डोरी के बान्हलक, आ ओ कोना जानल जाइत अछि? आ जखन कोनो शब्द एहन वस्तुक हेतु अछि जे सुननिहार कहियो नहि देखलक — एकटा वनक पशु, एकटा दूर देशक रीति, एकटा वेदक देवता — तखन ओ डोरी कोना पकड़ल जाइत अछि?

पहिल उत्तरक नाम उपमान थिक — सादृश्यसँ ज्ञान। दोसरक नाम शब्द थिक — विश्वसनीय वचनसँ ज्ञान। आइ राति दुनूकेँ अपन–अपन विरोधीक सोझाँ ठाढ़ होएबाक अछि। आ मेजपर राखल ओ दोसर मूर्तिपर ध्यान राखू — ओ पशु जे गाय जकाँ अछि मुदा गाय नहि। ओकर नाम एहि सभामे केओ अखन धरि नहि जनैत अछि। साँझ समाप्त होइत–होइत सभ केओ जानत — आ *कोना* जानत, इएह आइ रातिक सम्पूर्ण वाद थिक।

(प्रस्थान)

अंक प्रथम

वनक पशु

उपमानपर: की सादृश्य एकटा अलग पदार्थ थिक

(गंगेश आसीन छथि। एकटा वनवासी प्रवेश करैत अछि, प्रणाम करैत अछि।)

वनवासी: आचार्य, हम उत्तरक वनसँ आयल छी। हमर गामक एकटा व्यापारी अहाँक सभाक हेतु ई संदेश पठौलनि: ओ काल्हि वनमे एकटा पशु देखलनि जे ओ पहिने कहियो नहि देखने छलाह, आ तइयो ओकरा देखिते ओ बाजि उठलाह, "इएह गवय थिक!" — यद्यपि ओ शब्द ओ केवल एक बेर, वर्ष भरि पहिने, हमरहि मुँहसँ सुनने छलाह, जखन हम कहने रही, "गवय गाय जकाँ होइत अछि।" ओ पुछैत छथि: हुनका ई ज्ञान कोन प्रमाणसँ भेल?

गंगेश: *(मुस्कुराइत, सभा दिस घुमैत)* आ एहिसँ नीक ढंगसँ आइ रातिक वाद खुजि नहि सकैत छल। सुनू ई कथा फेर, धीरेसँ, किएक तँ एहिमे तीन घटना छिपल अछि, आ हरेकपर एकटा सम्प्रदाय अपन दावा ठोकत। पहिल: गाममे, व्यापारी वाक्य सुनलनि — "गवय गाय जकाँ होइत अछि।" दोसर: वनमे, ओ एकटा पशु देखलनि आ ओहिमे गायक सादृश्य प्रत्यक्ष केलनि। तेसर: ओहि क्षण ई निश्चय उपजल — "इएह ओ पशु थिक जकरा 'गवय' शब्द कहैत अछि।" ई तेसर ज्ञान कतयसँ आयल? प्रत्यक्षसँ नहि, किएक तँ आँखि केवल सींग आ खुर देखबैत अछि, शब्दक अर्थ नहि। केवल वाक्यक स्मृतिसँ नहि, किएक तँ जे कहियो गाय-सन पशु नहि देखलक, ओकरा ओ वाक्य ई निश्चय कहियो नहि दैत। इएह ओ ज्ञान थिक जकरा हमर शास्त्र उपमिति कहैत अछि, आ ओकर करण उपमान।

भाट्ट मीमांसक: *(उठैत)* आ इएह ओ स्थान थिक, गंगेश, जतय अहाँक सम्प्रदाय आ हमर सम्प्रदाय अलग होइत अछि, तेँ हमरा पहिने बाजय दिअ। हम उपमान मानैत छी — मुदा हम ओहिसँ बेसी मानैत छी। ओ *सादृश्य* जे व्यापारी वनमे देखलनि — गायक सादृश्य, गवयमे बसल — से की थिक? ओ द्रव्य नहि, गुण नहि, कर्म नहि, सामान्य नहि, विशेष नहि, समवाय नहि, अभाव नहि। सात पदार्थमेसँ कोनहुमे ओ नहि अटैत अछि। तँए ओ आठम थिक — सादृश्य अपने आपमे एकटा स्वतंत्र पदार्थ, आ "गाय–सन पशु गवय थिक" ई निर्बाध लोकव्यवहार ओकर प्रमाण।

गंगेश: एकटा साहसी दावा, आ हम एकरा ओकर साहसक योग्य परीक्षा देब। बताउ पहिने: ई सादृश्य *एक* अछि वा *अनेक*? जँ एक — एकहि सादृश्य सभ वस्तुमे बेर–बेर अएवाला, जेना एकहि गोत्व सभ गायमे — तखन जे सादृश्य गाय आ गवयकेँ जोड़ैत अछि, सैह घैल आ कपड़ाकेँ सेहो जोड़ितए, आ संसारक हर वस्तु हर वस्तु–सन भऽ जाइत। आ लोक जे कहैत अछि — "ई गायसँ *बहुत* मिलैत अछि," "ई गायसँ *कनी* मिलैत अछि" — से एकटा एक, अखंड पदार्थमे घटी–बढ़ी कोना?

भाट्ट मीमांसक: तखन अनेक कहू — अनंत सादृश्य, संयोग जकाँ, हरेक दुइ आधारमे बसल।

गंगेश: तखन दोसर फाँस, पहिलसँ तीत। जँ सादृश्य संयोग जकाँ दुनू आधारमे बसैत अछि, तँ गवयमे बसल ओ सादृश्य गायमे सेहो बसल अछि। अखन व्यापारीकेँ वनमे ठाढ़ करू, जतय गाय नहि अछि, केवल गवय। हुनक आँखि गवयकेँ छुबैत अछि, गायकेँ नहि। जँ ओ सादृश्यकेँ देखैत छथि, आ ओ सादृश्य गायमे सेहो बसैत अछि, तखन हुनका अनुपस्थित गायक सेहो प्रत्यक्ष

होएब चाही — जे कहियो केकरो नहि होइत अछि। आ जँ नहि देखैत छथि, तखन अहाँक "प्रत्यक्ष सादृश्य" वनमे अन्हार भऽ गेल। दुनू सींगसँ अहाँक बड़द फँसल अछि, मित्र।

भाट्ट मीमांसक: *(संभलैत)* हमर कुमारिलक कारिका एकटा सूक्ष्म उत्तर दैत अछि: सादृश्य कोनो नव पदार्थ नहि, अपितु *बहुत रास साझा धर्मक समूह* थिक — अवयव, गुण, आ कर्मक समान धर्म, जे मिलिकऽ सादृश्य कहबैत अछि। जेना बहुत गाछ मिलिकऽ "वन" कहबैत अछि। "बहुत मिलैत अछि" माने बेसी साझा धर्म; "कनी मिलैत अछि" माने कम।

गंगेश: आब अहाँ हमर घर दिस आधा रस्ता आबि गेलहुँ — "समूह" कहलहुँ तँ आठम पदार्थ छोड़ि देलहुँ — मुदा जतय अहाँ रुकलहुँ, ओतहु टिकब कठिन अछि। दुइ कमलक फूल लिअ, एकहि जातिक, जकरामे गनबा जोग अवयव–भेदे नहि — तइयो लोक कहैत अछि "ई फूल ओहि फूल–सन अछि।" कोन समूह? आ हमर प्रिय उदाहरण सुनू, जे हम अपन ग्रंथमे देने छी: एकटा हाथीक बच्चा आ एकटा गदहा। शरीरक बनावटमे कतहु मेल नहि — न अवयव, न गुण, न आकार। तइयो लोक हँसैत कहैत अछि, "ई गदहा हाथीक बच्चा जकाँ खाइत अछि।" ओतय कोन साझा धर्मक समूह? केवल *खएबाक ढंगक* एकटा सादृश्य — एकटा धर्म, समूह नहि। अहाँक परिभाषा ओतय पहुँचबे नहि करैत अछि जतय लोकक जीह रोज पहुँचैत अछि।

शिष्य: तखन सादृश्य की थिक, आचार्य, जँ न आठम पदार्थ, न धर्मक समूह?

गंगेश: ओकरा कोनो नव वस्तुक आवश्यकते नहि। "गवय गाय–सन अछि" क अर्थ एतबे: गवयमे बहुत रास ओ धर्म अछि जे गायमे सेहो अछि, आ तइयो गवय गायसँ भिन्न अछि। *तद्भिन्नत्व सहित तद्गत–भूयोधर्मवत्त्व* — ओहिसँ भिन्न रहितो ओकर बहुत धर्मसँ युक्त होएब। सात पदार्थ पर्याप्त छल; आठम एकटा अनावश्यक अतिथि छल जकरा हम द्वारपर सँ विदा करैत छी, आदरक संग मुदा भोजन बिनु।

भाट्ट मीमांसक: पदार्थ हारि गेलहुँ, मानि लैत छी। मुदा *प्रमाण* अखनहु हमर अछि। ओ ज्ञान जे व्यापारीकेँ भेल — आ ओकरासँ आगू, गाममे लौटिकऽ जे ज्ञान होएत, "हमर गाय ओहि गवय–सन अछि" —– से अहाँ कोन प्रमाणसँ देब? प्रत्यक्षसँ नहि, किएक तँ गाय गाममे आ गवय वनमे — दुनू एकटा आँखिक सोझाँ कहियो नहि। अनुमानसँ नहि, किएक तँ अनुमानक हेतु पक्षमे रहबाक चाही, आ अहाँक हेतु — गवयगत सादृश्य — गवयमे अछि, गायमे नहि। तँए ई ज्ञान उपमानक अपन अलग क्षेत्र थिक, जेना हम मानैत छी।

गंगेश: धीरे, मित्र — अहाँ बहुत जल्दी "अनुमान असंभव" कहि देलहुँ। व्याप्ति ताकू, आ ओ भेटि जाइत अछि, घरेमे। हम दुइ हाथीकेँ आमने–सामने ठाढ़ देखने छी, दुनूकेँ एक–दोसरा–सन, एकहि आँखिसँ — ओतयसँ ई सामान्य व्याप्ति हाथ लगैत अछि: *जे जकरामे बसल सादृश्यक प्रतियोगी अछि, से ओकरा–सन अछि।* आब अनुमान ठाढ़ करू: पक्ष — गाय; साध्य — गवय–सादृश्य; हेतु — गवयमे बसल सादृश्यक प्रतियोगिता; दृष्टांत — भाइ हाथीक बहिन हाथी। ज्ञान भेटि गेल, आ कोनो नव प्रमाण बिनु। जकरा अहाँ अर्थापत्ति वा स्वतंत्र उपमान कहैत छी, से हमरा लेखे व्यतिरेकी अनुमानक एकटा वेश थिक।

भाट्ट मीमांसक: *(बैसैत, आधा–पराजित, आधा–चकित)* तखन अहाँ उपमानकेँ बिलकुले काटि देलहुँ? अपने सम्प्रदायक तेसर प्रमाणकेँ?

गंगेश: ठीक विपरीत — हम ओकरा काटलहुँ नहि, हम ओकरा *ओकर अपन काज* देलहुँ, जे आइ धरि केओ ठीकसँ नहि चिन्हने छल। आ ओकरा चिन्हबासँ पहिने हमरा अपनहि घरक एकटा पुरान दीवाल गिरएबाक अछि। हमर पूर्ववर्ती, जयंत भट्ट, कहैत छलाह: वाक्यक स्मृति आ सादृश्यक प्रत्यक्ष मिलिकऽ जे निश्चय दैत अछि — "इएह गवय थिक" — सैह उपमिति। सुंदर, मुदा बहुत संकीर्ण। सुनू एकटा दोसर कथा। दक्षिणक एकटा यात्री उत्तर जएबासँ पहिने पुछलक, "ओतय गदहा केहन होइत अछि? हम कहियो नहि देखने छी।" उत्तरक लोक कहलक — आ ई वर्णन प्रशंसा नहि थिक — "पशुमे सबसँ नीच ओ जीव, जकर गरदनि बेजाय नमहर, ठोर नमगर आ हिलैत, जे कड़ा–मुलायम दुनू टहनी चिबबैत अछि, आ जकर देह जूँसँ भरल।" यात्री उत्तर पहुँचल, एहन पशु देखलक, आ निश्चय भेल: "इएह गदहा थिक।" आब जयंतक परिभाषा लगाउ। सादृश्य कतय? ई तँ *वैधर्म्य*सँ — निंदनीय विलक्षणतासँ — भेल पहिचान थिक। आ व्याप्तिज्ञान बिनु अनुमानो नहि। जयंतक उपमान एतय ठाढ़ नहि भऽ सकैत अछि, आ तइयो ज्ञान भेल, आ यथार्थ भेल।

शिष्य: तखन उपमानक असली काज की थिक?

गंगेश: *(गाय आ गवयक मूर्ति दुनूकेँ उठाकऽ सभाक सोझाँ राखैत)* ध्यानसँ सुनू, किएक तँ इएह एहि अंकक फल थिक। जखन व्यापारी वनमे बाजल "इएह गवय थिक," तखन ओ पशुक विषयमे नव किछु नहि जनलक — पशु तँ आँखिक सोझाँ छल। ओ *शब्दक* विषयमे नव किछु जनलक: जे "गवय" ई ध्वनि *एहि* जातिक पशुक वाचक थिक। शब्द आ अर्थक बीचक ओ डोरी — जकरा

हम शक्ति कहैत छी — सैह उपमानसँ पकड़ल गेल। आ ओ डोरी कोनो एक पशुसँ नहि बान्हल जा सकैत अछि — नहि तँ "गवय" शब्द दोसर गवयपर लागबे नहि करैत — ओ बान्हल जाइत अछि *गवयत्व*सँ, ओहि जातिसँ, जे सादृश्यक इशारासँ चिन्हल गेल। तँए हमर सिद्धांत: उपमिति थिक — "गवयत्वसँ युक्त पशु 'गवय' पदक वाच्य थिक" —– ई ज्ञान, आ उपमान थिक ओकर करण, अतिदेशवाक्यार्थक स्मृतिसँ सहकृत सादृश्य–ज्ञान — चाहे ओ सादृश्य साधर्म्यक हो, वैधर्म्यक हो, वा असाधारण धर्मक। शब्दक शक्ति पकड़बाक नओ साधनमेसँ — व्याकरण, कोश, आप्तवाक्य, व्यवहार, आ शेष — उपमान ओ एक थिक जे ओहि वस्तुक शब्द धरि पहुँचबैत अछि जकरा सुननिहार कहियो देखबे नहि केने अछि। इएह ओकर अपन राज्य थिक, आ एहि राज्यमे ओ अकेल राजा।

भाट्ट मीमांसक: *(धीरेसँ)* अहाँ हमर पदार्थ लऽ लेलहुँ, हमर प्रमाणक क्षेत्र लऽ लेलहुँ, आ बदलामे उपमानकेँ एकटा एहन सिंहासन देलहुँ जकरापर ओ पहिने कहियो नहि बैसल छल। हम एहि सौदापर घर जाकऽ विचार करब।

गंगेश: एहिसँ बेसी कोनो वादी नहि मांगि सकैत अछि। आ अहाँ अखन जाउ नहि — किएक तँ शब्दक ओहि डोरीक कथा जे हम अखने केलहुँ, ओकरेपर आब एहि सभाक शेष साँझ टिकल अछि, आ अहाँक सम्प्रदायक दोसर शाखा ओहिपर हमरासँ लड़बाक हेतु आइये आयल अछि।

अंक द्वितीय

ध्वनि आ डोरी

शब्दपर: की शब्द स्वतंत्र प्रमाण थिक

(बौद्ध आ वैशेषिक आगू आबैत छथि। दीप ठीक कएल जाइत अछि।)

बौद्ध: काल्हि राति, गंगेश, हम अदृश्य कर्तापर हारि मानने रही — पूर्ण नहि, मुदा ईमानदार। आइ हम एकटा सरल दावा लऽ कऽ आयल छी, आ एहि बेर तराजू हमर हाथमे अछि। अहाँ कहैत छी शब्द अपने आपमे प्रमाण थिक — विश्वसनीय वचन सुनिते यथार्थ ज्ञान होइत अछि। हम कहैत छी: प्रमाण ओकरे कहल जाए जे ज्ञानक *असाधारण* कारण हो। मुदा शब्द उपस्थित रहितो — कान धरि पहुँचितो — जँ आकांक्षा नहि, योग्यता नहि, तँ अर्थबोध होइते नहि अछि। "घैल, अगिन, सिंचैत अछि" —– तीनू शब्द सुनू, किछु नहि बुझाएत। जकर उपस्थितिमे कार्य अनिश्चित, से असाधारण कारण नहि। तँए शब्द स्वतंत्र प्रमाण नहि।

गंगेश: *(शांततासँ)* अहाँ अपन दावा जाहि माध्यमसँ हमरा धरि पठौलहुँ, ओहीपर एक क्षण ध्यान दिअ। "शब्द प्रमाण नहि थिक" —– ई वाक्य स्वयं शब्द थिक। जँ ई सत्य अछि, तँ एकटा वाक्य हमरा यथार्थ ज्ञान देलक, आ शब्द प्रमाण सिद्ध भेल। जँ मिथ्या अछि, तँ अहाँक आपत्ति खसि पड़ल। दुनू रस्ता हमरे आँगन अबैत अछि। आ रहल सहकारीक बात — आँखिकेँ प्रकाश चाही, तँ की आँखि प्रमाण नहि? हर करणकेँ सहकारी चाही; सहकारीक आवश्यकता करणताकेँ नष्ट नहि करैत अछि, ओकरा पूर्ण करैत अछि। आकांक्षा आ योग्यता शब्दक प्रकाश थिक, ओकर प्रतिद्वंद्वी नहि।

वैशेषिक: तखन हमर आक्रमण सुनू, जे बौद्धसँ सूक्ष्म अछि। हम शब्दकेँ प्रमाण मानैत छी — मुदा *स्वतंत्र* नहि। ओ अनुमानक भीतर समा जाइत अछि। "गाय आनू" सुनिकऽ जे ज्ञान होइत अछि, से एहि अनुमानसँ: ई पद–समूह परस्पर–संबद्ध–अर्थक बोधक थिक, किएक तँ एहिमे आकांक्षा–योग्यता–सन्निधि अछि, जेना पहिने सुनल वाक्य। शब्द एकटा लिंग थिक, धुआँ जकाँ, आ शाब्दबोध एकटा अनुमिति। चारि प्रमाणक बदला तीन — लाघव हमर पक्षमे।

गंगेश: लाघव सुंदर तर्क थिक जखन दुनू रस्ता एकहि गाम पहुँचैत होइ — मुदा अहाँक रस्ता पहुँचिते नहि अछि, से हम देखबैत छी। अनुमानक हेतु पहिने व्याप्तिक स्मृति चाही, फेर पक्षधर्मताक ज्ञान, फेर परामर्श — तखन अनुमिति। आब कोनो बालककेँ देखू जकरा माए कहैत छैक "भात खा ले।" की ओ बालक पहिने व्याप्ति स्मरण करैत अछि — "जे–जे पद–समूह आकांक्षादिमान, से–से संसर्गबोधक"? फेर वक्ताक आप्तता अनुमान करैत अछि? फेर परामर्श? ओतबा कालमे भात सेराइ जाएत। वाक्य सुनिते अर्थ बुझाइत अछि — *तत्क्षण*, बिनु कोनो बीचक सीढ़ीक। ई तात्कालिकता स्वयं प्रमाण थिक जे शब्दक अपन स्वतंत्र प्रकाशन–शक्ति अछि। जतय अनुभवमे सीढ़ी नहि देखाइत अछि, ओतय सिद्धांतमे सीढ़ी ठूसब लाघव नहि, गौरव थिक — व्यर्थक बोझ।

वैशेषिक: मानि लिअ। मुदा तखन अहीं कहू — कोरा पद–समूह तँ वाक्य नहि भऽ जाइत अछि। "घैल, कर्मत्व, आनयन, कृति" — ई चारि शब्द फेकि दिअ, किछु नहि बुझाएत। की चाही जे "घैल आनू" बुझाए?

गंगेश: चारि वस्तु, आ हरेकक परिभाषा हम ओतबे कसिकऽ देब जतबे काल्हि व्याप्तिक देने रही। पहिल — *आकांक्षा*: एक पदक ओ अपूर्णता जे दोसर

पद बिनु अपन अन्वय स्थापित नहि कऽ सकए। ध्यान राखू, ई नियत साहचर्य नहि थिक — "नील कमल" मे न हर कमल नील, न हर नील वस्तु कमल, तइयो दुनू पदमे आकांक्षा अछि। आ ई श्रोताक जिज्ञासो नहि थिक, जेना किछु मीमांसक कहलनि — जिज्ञासा बिनुओ वाक्य बुझाइत अछि। दोसर — *योग्यता*: बाधक ज्ञानक अभाव। "अगिनसँ सिंचैत अछि" — आकांक्षा अछि, सन्निधि अछि, मुदा अगिनमे सिंचबाक सामर्थ्य नहि, तेँ बोध नहि। आ सूक्ष्मता ई: बाधक *निश्चय* रोकैत अछि, बाधक *संदेह* नहि — संदेह रहितो शाब्दबोध भऽ जाइत अछि। तेसर — *सन्निधि*: पदक अविलंब उच्चारण आ अर्थक अविच्छिन्न स्मृति। आइ "घैल" कहू आ काल्हि "आनू" — वाक्य मरि गेल। चारिम — *तात्पर्य*: वक्ताक विवक्षा। भोजनक बीच "सैंधव आनू" — श्रोता नोन बुझैत अछि, घोड़ा नहि। शब्दमे दुनूक शक्ति, मुदा तात्पर्य एककेँ चुनैत अछि। आ जतय मुख्यार्थ बाधित — "गंगामे घोष" — ओतय तात्पर्ये लक्षणाक द्वार खोलैत अछि: गंगाक *तीर*। ई चारि मिलिकऽ ध्वनिक ढेरीकेँ वाक्य बनबैत अछि, जेना चारि पएर मिलिकऽ चौकीकेँ चौकी।

प्राभाकर मीमांसक: *(आब पहिल बेर उठैत)* चारू स्वीकार, गंगेश — मुदा एकटा गहींर बातपर हमर सम्प्रदाय अहाँसँ फराक ठाढ़ अछि, आ ओकरा हम एतय राखब। हमर सिद्धांत थिक अन्विताभिधान: शब्दक शक्ति केवल *कार्यान्वित* अर्थमे — क्रियासँ जुड़ल अर्थमे। बालक शब्द सिखिते कोना अछि? बूढ़ कहैत छथि "गाय आनू," बालक आनब देखैत अछि; "गाय बान्हू," बान्हब देखैत अछि — हर बेर शब्द *कार्यक* संग। तेँ शब्दक अर्थ सदा कार्यसँ अन्वित, आ अकेल पद — बिनु क्रियाक — अर्थहीन।

गंगेश: तखन कविता मरि जाएत, मित्र, आ नाटक, आ कथा — आ ई हमर भावुकता नहि, तर्क थिक। "चन्द्रमा उगल अछि" —– एहि वाक्यमे श्रोताक हेतु कोनो कार्य नहि, कोनो आदेश नहि, तइयो अर्थ बुझाइत अछि आ आनन्दो होइत अछि। जँ शक्ति केवल कार्यान्वितमे, तँ ई बोध कतयसँ? आ बालकक शिक्षा जे अहाँ कहलहुँ, से शक्तिग्रहक *एकटा* द्वार थिक, शक्तिक *सीमा* नहि — काल्हि हम उपमानकेँ सेहो एहने एकटा द्वार सिद्ध केने रही। शक्ति हरेक पदक अपन अछि; आकांक्षा–योग्यता–तात्पर्य ओकरा जोड़ैत अछि। पद स्वतंत्र, वाक्य संयुक्त — इएह अभिहितान्वय, आ इएह लोकानुभवसँ मेल खाइत अछि।

प्राभाकर मीमांसक: तखन असली रणभूमि दिस चलू, किएक तँ ई सभ ओकर भूमिका छल। *वेद*। हमर दुनू शाखा — भाट्ट आ प्राभाकर — एहिपर एक छी: वेद अपौरुषेय थिक। कोनो रचयिता नहि, कहियो नहि। गुरु–शिष्यक पाठ–परम्परा अनादि — जेना बीज आ अंकुर, कोनो पहिल कड़ी बिनु। तेँ वेदक प्रामाण्य कोनो पुरुषक — मनुष्य वा ईश्वर — विवक्षापर नहि टिकल अछि। ओ स्वतः प्रमाण थिक। आ इएह ओकर महिमा थिक: जे वचन केकरो मुँहसँ नहि निकलल, ओहिमे केकरो दोष नहि पैसि सकैत अछि।

गंगेश: *(किछु काल मौन, फेर धीरेसँ)* एकटा गंभीर सिद्धांत, आ हम एकरा हँसीमे नहि उड़ाएब — हम एकरा काल्हिक ओहि हथियारसँ काटब जे अहूँ देखने छलहुँ। पहिल: "अनादि परम्परा" कहब उत्तर नहि, उत्तरक स्थगन थिक। हर पाठ पछिला पाठपर टिकल, ओ अपनासँ पछिलापर — ई शृंखला या तँ अनवस्था थिक, या आत्माश्रय। आ काल्हि राति हम सभ जे स्थापित केलहुँ — जे सृष्टि आ प्रलयक चक्र चलैत अछि — से मानि लिअ, तँ प्रलयमे हर कंठ मौन

भऽ जाइत अछि, हर स्मृति मेटा जाइत अछि। परम्पराक डोरी टूटल। नव सृष्टिमे ओकरा के जोड़लक? दोसर, आ गहींर: यथार्थ वाक्य–रचनाक हेतु वाक्यार्थक यथार्थ ज्ञान चाही। रचना बिनु ज्ञाताक — वचन बिनु विवक्षाक — एहन थिक जेना लिखावट बिनु हाथक। तेँ वेदक निर्दोषता ओकर अकर्तृकतासँ नहि अबैत अछि — ओ अबैत अछि ओकर कर्ताक *सर्वज्ञतासँ*। वेद पौरुषेय थिक — ओहि पुरुषक, जकर ज्ञान नित्य आ निर्दोष — ईश्वरक। आ जे रीति समाजमे सर्वमान्य अछि मुदा जकर वैदिक वचन आइ नहि भेटैत अछि, तकर हेतु हम नष्ट–शाखाक अनुमान करैत छी: मूल विधि छल, प्रलय वा कालक गर्तमे हेरा गेल, आ नव सृष्टिमे सर्वज्ञ ओकरा फेर पढ़बैत छथि। काल्हिक ईश्वरानुमान आ आइक शब्दखंड एकहि भवनक दुइ खम्भा थिक — एक बिनु दोसर ठाढ़ नहि।

भाट्ट मीमांसक: एकटा अंतिम प्रश्न बचल, गंगेश, आ ओ हमर घरक सबसँ पुरान धरोहर थिक। "स्वर्गकामो यजेत" —– स्वर्गक इच्छुक यज्ञ करए। यज्ञ आइ समाप्त, स्वर्ग मरणक बाद — बीचक ई नमहर काल के पार करबैत अछि? हमर उत्तर: *अपूर्व* — यज्ञसँ आत्मामे उपजल एकटा अदृष्ट शक्ति, जे फल धरि टिकल रहैत अछि, आ विधि–प्रत्यय जकरे कहैत अछि। की अहाँ एकरो काटब?

गंगेश: काटब नहि — *ठेकानपर राखब*, आ ई भेद बुझू, किएक तँ इएह एहि साँझक अंतिम पाठ थिक। बीचक कड़ीक आवश्यकता हमहूँ मानैत छी — क्षणिक यज्ञ आ कालांतरक स्वर्गक बीच किछु चाही, आ ओ अदृष्ट हो, एहिमे विवाद नहि। विवाद एतय अछि: विधि–प्रत्ययक *मुख्य* अर्थ की? अहाँ कहैत छी अपूर्व। हम कहैत छी: इष्टसाधनता — "ई कर्म अहाँक अभीष्टक साधन थिक" —– आ संगहि कृतिसाध्यता आ बलवद्–अनिष्टक अननुबन्धित्व। किएक तीनू?

सुनू। विषपान कृतिसाध्य अछि — प्रयाससँ भऽ सकैत अछि — तइयो स्वस्थ लोक नहि पीबैत अछि, किएक तँ इष्टक साधन नहि। वर्षा इष्टक साधन अछि, तइयो केओ वर्षा "करय" नहि लगैत अछि, किएक तँ कृतिसाध्य नहि। आ श्येनयाग — शत्रुवधक साधन, कृतिसाध्य सेहो — तइयो विवेकी नहि करैत अछि, किएक तँ ओकर संग नरक बान्हल अछि, बलवान अनिष्ट। तीनूक ज्ञान मिलिकऽ प्रवृत्ति जनमबैत अछि, आ विधि–प्रत्यय तीनूकेँ कहैत अछि। अपूर्व? जखन प्रत्यक्ष कड़ी असंभव बुझाइत अछि, तखन अर्थापत्ति वा लक्षणासँ ओ *आनल* जाइत अछि — द्वारसँ, मुख्य आसनपर नहि। साध्य स्वर्ग थिक, अपूर्व नहि; साधनकेँ सिंहासन देब आ साध्यकेँ द्वारपर ठाढ़ करब — इएह गौरव थिक, आ लाघव, जे काल्हि वैशेषिकक तर्क छल, आइ हमर।

प्राभाकर मीमांसक: *(लम्बा साँस छोड़ैत)* काल्हि अहाँ बौद्धसँ कहने रही जे अहाँ अंतमे बजिकऽ जीतय नहि आयल छी। आइ हम गवाही दैत छी जे अहाँ वचन निभौलहुँ — हमर पदार्थ, हमर प्रमाण, हमर अपौरुषेयता, हमर अपूर्व — चारूकेँ अहाँ चिल्लाकऽ नहि, गानिकऽ हटौलहुँ।

गंगेश: आ चारूक स्थानपर हम किछु–न–किछु राखलहुँ — इएह भेद थिक तोड़ब आ बनएबामे। सादृश्यक स्थानपर भूयोधर्मवत्त्व, स्वतंत्र उपमितिक स्थानपर शक्तिग्रह, अपौरुषेयताक स्थानपर सर्वज्ञक वाणी, अपूर्वक स्थानपर इष्टसाधनता। खाली हाथ हम केकरो नहि पठौलहुँ।

उपसंहार

(सूत्रधार वापस आबैत अछि। ओ गवयक मूर्ति उठबैत अछि।)

सूत्रधार: साँझक आरंभमे एहि मूर्तिक नाम एहि सभामे केओ नहि जनैत छल। आब सभ जनैत छथि — आ इहो जनैत छथि जे ओ नाम कोन–कोन सीढ़ी चढ़िकऽ हुनका धरि पहुँचल: एकटा वनवासीक वाक्य, एकटा सादृश्यक दर्शन, एकटा शक्तिक ग्रहण। गंगेश उपाध्यायक चारू प्रमाणक कथा आइ पूर्ण भेल — प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द — आ चारूक अंतमे एकहि पाठ बेर–बेर लौटल: कोनो प्रमाणकेँ न बिनु परीक्षाक सिंहासन भेटल, न बिनु सुनवाइक निर्वासन। जे शब्द अहाँ आइ राति एतयसँ लऽ कऽ जाएब, ओकर अर्थ धरि पहुँचबाक डोरी सेहो, आब अहाँ जनैत छी, केओ–ने–केओ कहियो बान्हने छल। ओ डोरी टूटय नहि — इएह एहि विद्याक सम्पूर्ण प्रार्थना थिक।

(सूत्रधार, सभक प्रस्थानसँ पूर्व, अन्तिम लोकगीत गबैत अछि —)

बारह सय बरख बीतल हे, गोहि देह खाइत रहल,
मुदा नाम नहि खाएल रे, से गामक मनमे बसल।
शंखसँ स्क्रीन धरि, पोखरिसँ पुल धरि, एक्के कथा;
जे नाम धेने रहल, से हर गोहिसँ बाँचल।
दीप बुझय, पर्दा खसय हे, मुदा नाम जगल रहै रे —
जे गाम अपन नाम राखल, तकर कथा कहियो नहि मरै।

(सभ पात्र प्रस्थान करैत छथि। दीप अंतमे बाहर जाइत अछि।)

खण्ड–० समाप्त।

परिशिष्ट: गढ़ नारिकेलक फकरा-अनुक्रम

(हर अध्यायक आरम्भमे राखल गढ़ नारिकेलक फकरा, एक ठाम सङ्कलित। −१०० सँ [-१] धरि।)

अध्याय **[-१००]** — शंख आ रजत

चमकैत सभटा चानी नहि, आ नाम सभटा देह नहि— जे शंखकेँ रजत बुझै, से गामकेँ नक्शा बुझै।

अध्याय **[-९९]** — आत्मसिद्धि-वाद

जे 'हम' कहै छै, तकर गवाह ओकर अपने साँस— पोखरि अपन गहिराइ केकरो सँ नहि पुछै।

अध्याय **[-९८]** — केऽ बनौलक ई जगत?

गाछ पुछलक—हमरा केऽ रोपलक? माटि हँसलि—जे रोपलक, से पुछबे नहि करै छै।

अध्याय **[-९७]** — चिंतामणि रत्न

मन थिर तँ ढेलो हीरा, मन डोलल तँ हीरो ढेला— रत्न बाहर नहि, चिन्हैबला आँखिमे छै।

अध्याय **[-९६]** — स्मृति-रक्षा

देह माटिमे मिलै छै, नाम पातपर टिकै छै— जे गाम मन राखै, तकरा केओ मेटा नहि सकै।

अध्याय **[-९५]** — जलमग्न पाण्डुलिपि

बाढ़ि पोथी डुबा सकै छै, कण्ठ नहि— जे बोल हृदयमे लिखल, से पानिसँ नहि भीजै।

अध्याय **[-९४]** — चारि मुखक मौन

चारू मुँह बाजल, तैयो एक बात नुकाएल रहल— हर उत्तरक पाछाँ एकटा मौन ठाढ़ छै।

अध्याय **[-९३]** — शंखक अन्तिम प्रश्न

जकरा एक बेर चिन्हलहुँ, तकरो भोर फेर पुछै छै— मुदा उत्तर जकर थिर, से प्रश्नसँ नहि डरै।

अध्याय **[-९२]** — जल-घड़ीक कैदी

बूनि-बूनि पानि खसै, बूनि-बूनि समय— जे घड़ीक कैदी, से बोलक अन्त नहि जनै।

अध्याय **[-९१]** — चर्मकार टोलाक उजास

जकर हाथ चाम सिऔ, ओकरो नाम पातपर छै— टोलक दीप आ महलक दीप, तेल एक्के जरै।

अध्याय [-९०] — बुधुआक जलसमाधि

गोहि देह लेलक, नाम छोड़ि देलक— जे जलमे समाधि लै, से पोखरिक तलमे नहि, गामक मनमे बसै।

अध्याय [-८९] — पहिल राति, पहिल बाढ़ि

पहिल बाढ़ि घर लेलक, गाम नहि— जे राति बचल, से भोरक बीया बनल।

अध्याय [-८८] — डाइनक आरोप

जकरा गाम 'डाइन' कहलक, ओकर नाम केओ नहि पुछलक— आरोप देह जरबै छै, सत्य पातपर रहि जाइ छै।

अध्याय [-८७] — टोलाक द्वारपर

द्वारपर मशाल आबि सकै, भीतर नाम नहि जरै— जे टोल जागल, तकर देबारि आगिसँ ऊँच।

अध्याय [-८६] — समयक गोहि

समय सेहो एकटा गोहि छी—पीढ़ी-पीढ़ी निगलै छै— मुदा जे नाम गाम राखै, तकरा समयो नहि निगलै।

अध्याय [-८५] — आमिलक आदेश

साहेबक आदेश कागचपर, गामक न्याय पातपर— हुकुम मेटा सकै, फकरा नहि मेटाइ।

अध्याय [-८४] — जंगलक मौन

जंगल चुप रहै छै, तैयो सभ किछु सुनै छै— जे मौन बुझल, तकरा जंगलो बाजि उठै।

अध्याय [-८३] — सोनमा माझिन

जाल जकर हाथ, नदी तकर माए— माझिन माछ पकड़ै, मुदा नामकेँ छोड़ि दै।

अध्याय [-८२] — पहिल कबड्डी

एक साँसमे जाउ, एक साँसमे आउ, छूबि कऽ घुरू— कबड्डी सिखबै छै, पकड़ि नहि, उपस्थिति चाही।

अध्याय [-८१] — आक्रमणक छाया

छाया पैघ भेने डर पैघ नहि होइ— जे नाम थिर, से अपन छायासँ नहि डरै।

अध्याय [-८०] — गीतक पहिल पाँति

गीतक पहिल पाँति एक कण्ठ उठबै, बाकी गाम उठा लै— लेखक एक नहि, गामे रचयिता छै।

अध्याय [-७९] — क्षमाक पारी

कबड्डीमे जकरा छुअल, तकरो घुरबाक पारी दै— क्षमा सेहो एक पारी छी, बदला नहि।

अध्याय [-७८] — पंजीक बाहर

पंजीमे जकर नाम नहि, से गामसँ बाहर नहि— कागच जकरा छोड़लक, तकरा माटि अपना लेलक।

अध्याय [-७७] — बूढ़बाक मौन

बूढ़बा जखन चुप, तखन सभसँ बेसी बाजै— मौन सेहो एकटा उत्तर छी।

अध्याय [-७६] — नारिकेल पातक पहिल पाठ

पहिल पाठ पातपर—नाम केना लिखल जाइ— जे पात नाम राखै, से गाछ इतिहास राखै।

अध्याय [-७५] — तर्कक पहिल विद्रोह

जे प्रश्न पुछलक, से गुरुकेँ हरा नहि, जगा देलक— तर्कक पहिल विद्रोह, ज्ञानक पहिल भोर।

अध्याय [-७४] — गाछक रोग

एक पातक रोग सम्हारू, नहि तँ गाछ भरि फैलत— गामक रोगो एहिना, एक चुपसँ शुरू होइ।

अध्याय [-७३] — मोहनक धुन

बाँसुरीक धुन हवामे मिलै, तैयो कान ओकरा राखै— जे धुन मन छुबै, से बिसरल नहि जाइ।

अध्याय [-७२] — विवाहक साक्षी

बियाहमे आगि साक्षी, गाम साक्षी, नाम साक्षी— जकर बियाह गाम देखलक, तकर वचन पातपर।

अध्याय [-७१] — महामारीक राति

महामारी देह लेलक, गीत नहि— जे राति सभ मिलि जागल, से भोर बचा लेलक।

अध्याय [-७०] — चन्ना गाछीक रोपाई

जे गाछ रोपल गेल, से एक दिनमे छाहरि नहि दै— सबर राखू, जड़ि पहिने पकड़त, पात पछाति।

अध्याय [-६९] — गज-ग्राहक कथा

गज पानिमे, ग्राह पानिमे—लड़ाइ बरखों— मुदा जे नाम पुकारै, तकरे हाथ उद्धार अनै।

अध्याय [-६८] — अदालतक पहिल तारीख

तारीखपर तारीख, मुदा न्याय पातपर— अदालत देह पुछै, गाम नाम राखै।

अध्याय [-६७] — परदेशक पुकार

परदेश धन दै, नाम लऽ जाइ— जे गाम मन राखै, से परदेशोमे नहि हेराइ।

अध्याय [-६६] — स्त्री सभक राति-सभा

जतय स्त्रीक स्वर जुटै, ओतय अन्हार पातर होइ— राति-सभा दीप बिनु सेहो अन्हार तोड़ै।

अध्याय [-६५] — नकली भूतक जुलूस

नकली भूत ओकरे डेराबै, जे अपन नाम बिसरल— जे नाम थिर, से भूतक जुलूसपर हँसै।

अध्याय [-६४] — सुखदेवक बदला

बदला आगि छी—पहिने अपने हाथ जरबै— जे क्षमा चुनलक, से गाम बचा लेलक।

अध्याय [-६३] — छापाखानाक पहिल पन्ना

पहिल छपल पन्ना—नाम आब मेटाएब कठिन— जे छपल, से गाम भरि पढ़त।

अध्याय [-६२] — राहतक प्रतीक्षा

राहतक बाट जोहैत आँखि थाकै, तैयो गाम ठाढ़— जे मिलि कऽ बाट जोहै, तकरा प्रतीक्षो हल्लुक।

अध्याय [-६१] — आकाशक पुच्छलतारा

पुच्छलतारा आबै-जाइ, गाम अपना ठाम— जे ऊपर चमकल, से नीचाँक नाम नहि बदलै।

अध्याय [-६०] — अगिनक राति

आगि घर लेलक, नाम नहि— जे राति जरल, तकर राखसँ नव चूल्हि जरल।

अध्याय [-५९] — दोसर बाढ़ि

दोसर बाढ़ि पुरान बाट चिन्है, तैयो नव घाव दै— जे गाम बाढ़ि झेलल, से पानिकेँ पढ़ब सिखलक।

अध्याय [-५८] — तेसर बिपत्ति

एक बिपत्ति सिखबै, तेसर बिपत्ति पकबै— जे तीन बेर खसल, से चारिम बेर सम्हरि ठाढ़ होइ।

अध्याय [-५७] — साहेबक नोटबुक

साहेब जे लिखलक, से ओकर हिसाब— गाम जे मन राखलक, से गामक सत्य।

अध्याय [-५६] — स्वाधीनताक पुकार

जे पुकार गाम-गाम पहुँचल, से एक कण्ठक नहि— स्वाधीनता सेहो एकटा साझा गीत छी।

अध्याय [-५५] — स्वतंत्रताक भोर

भोर भेल, मुदा हर आँगनमे एक्के बेर नहि— जे नाम आजाद, तकर भोर सभसँ पहिने।

अध्याय [-५४] — जमींदारीक अन्त

जमीनक मालिक बदलल, माटि नहि बदलल— जे माटि जोतै, तकरे नाम खेत जनै।

अध्याय [-५३] — बिजलीक पहिल दीप

बिजलीक दीप जरल, मुदा पुरान दीपक तेल नहि बिसरू— नव इजोत आबे, पुरान नाम नहि मेटाबे।

अध्याय [-५२] — सीमाक पुकार

सीमापर तोप बाजल, गाममे सोहरो बाजल— जे गाम युद्धो झेलल, से नामकेँ नहि छोड़लक।

अध्याय [-५१] — हरित क्रान्तिक बीया

नव बीया बेसी उपजा दै, मुदा पुरान बीया माटि चिन्है— जे बीया गाम बचबै, से भूख नहि, नाम रोपै।

अध्याय [-५०] — आपातकालक अन्हार

अन्हारक दौर थिर नहि रहै— मुदा जे दीप बुतल, तकरा फेर जरबैमे बेर लागै।

अध्याय [-४९] — सूखाक बरख

सूखल बरख पोखरि सुखबै, नाम नहि— जे गाम मिलि इनार खुनलक, से पानि फेर पओलक।

अध्याय [-४८] — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज

यन्त्रक अवाज दूरसँ आबै, गामक गीत भीतरसँ— जे भीतरक स्वर सुनल, से बाहरक शोरमे नहि हेराइ।

अध्याय [-४७] — खाड़ी देशक बजार

परदेशक बजार धन दै, घरक चूल्हि नाम दै— जे कमा कऽ नाम बिसरल, से घुरि कऽ अजनबी।

अध्याय [-४६] — सद्भावक परीक्षा

जखन आगि लागल, तखन गाम एक भेल— सद्भाव पाबनिमे नहि, बिपत्तिमे परखल जाइ।

अध्याय [-४५] — उदारीकरणक हवा

नव हवा दरबज्जा खोललक, मुदा जड़ि हिलल नहि— जे गाम जड़िसँ जुड़ल, से हवामे नहि उड़ै।

अध्याय [-४४] — पहिल कम्प्यूटर

नव यन्त्र गिनती सिखबै, नाम नहि गिनै— जे नाम गाम राखै, से यन्त्रक संख्यासँ पैघ।

अध्याय [-४३] — सुखल होइत धार

धार पातर भेल, तैयो पुरान बाट चिन्है— जे धार सुखल, से बाढ़िकेँ नहि बिसरल।

अध्याय [-४२] — हाथक फोनक चमत्कार

हाथमे यन्त्र, दूर लग भेल— मुदा जे लग बैसल, तकरो नाम पुछब बिसरू नहि।

अध्याय [-४१] — शहरक बजार

शहर देह किनै, गाम नाम बेचै नहि— जे बजारमे नाम बेचलक, से घुरि कऽ खाली हाथ।

अध्याय [-४०] — सूचनाक अधिकार

जकरा जानबाक हक, से पुछि सकै— सूचना दीप छी, जे अन्हारमे नाम देखबै।

अध्याय [-३९] — काजक गारंटी

जकरा काज भेटल, तकर हाथ ठाढ़ भेल— काज नाम दै, भीख नहि।

अध्याय [-३८] — इंटरनेटक जाल

नव जाल दूरकेँ लग आनै, मुदा नामकेँ नम्बर बनबै— जे जालमे फँसल, से अपन चेहरा हेरा दै।

अध्याय [-३७] — स्क्रीनक पहिल छाया

पहिल परदापर चेहरा चमकल, पाछाँ नाम अन्हार— जे स्क्रीन देखलक, से आँखि गाम बिसरए नहि।

अध्याय [-३६] — अनदेखल ठगक पहिल आहट

जे ठग देखाइ नहि दै, से सभसँ पैघ— आहट सुनू, नाम पुछू, कागचपर नहि, आँखिपर विश्वास राखू।

अध्याय [-३५] — देहक बजार खुजैत अछि

जतय देह बिकाइ, ओतय नाम सस्त— मुदा जे गाम नाम राखै, से देहकेँ बजार बनए नहि दै।

अध्याय [-३४] — उज्ज्वलक स्वप्न

स्वप्न पैघ, मुदा जड़ि माटिमे— जे स्वप्न नाम बिसरल, से जागि कऽ अकेल।

अध्याय [-३३] — वकीलक कोटक छाया

कोटक छायामे न्याय नुकाइ, गाममे न्याय बाजै— वकील धारा पढ़ै, गाम नाम पढ़ै।

अध्याय [-३२] — समुद्रपारक साये

सात समुद्र पारसँ साया आबि सकै, नाम लऽ नहि जा सकै— जे दूरसँ ठगै, तकरो पातपर चिन्ह रहि जाइ।

अध्याय [-३१] — सत्यव्रतक मौन

जे बहुत काल चुप रहल, तकर एक बोल सभसँ भारी— सत्यव्रतक मौन सेहो एकटा गवाही छल।

अध्याय [-३०] — गोप कुमारक दस्तावेज

जे लिखल राखलक, से समय बचबै— दस्तावेज देह नहि, नाम बचबै छै।

अध्याय [-२९] — चन्द्रपालक सपना

सपना जकर आँखिमे, धोखा तकर पएरमे— जे बिनु बुझल हस्ताक्षर केलक, से जालमे फँसल।

अध्याय [-२८] — राघवक कोड

जे भाषा यन्त्र बुझै, से गाम नहि बुझै— मुदा कोडक भीतरो एकटा नाम नुकाएल रहै छै।

अध्याय [-२७] — आरुणिक निर्माण

जे बनबै, से पहिने अपनाकेँ गढ़ै— आरुणि छपाकसँ पहिने अपन आँखि गढ़लक।

अध्याय [-२६] — देविकाक गीत

गीत जकर कण्ठ, न्याय तकर स्वर— जे गीतमे नाम पुकारल, से गाम भरि गूँजल।

अध्याय [-२५] — मीराक निजता

जकर कथा, तकर अनुमति— नाम नमूना नहि, मीराक कथा मीराक अपन।

अध्याय [-२४] — निशांतक बैंक

जकर खाता साफ, तकर मन थिर— मुदा जे खातामे नाम बेचलक, से हिसाबमे हारल।

अध्याय [-२३] — नन्दक जन्म

जे जन्म लै छै, से एकटा नव नाम अनै छै— नन्दक जन्म गामकेँ नव साक्षी देलक।

अध्याय [-२२] — बारह सयक निकट

बारह सय बरख एक साँसमे नहि बीतल— जे गाम एतेक झेलल, से अन्त लग ठाढ़।

अध्याय [-२१] — अनन्याक प्रश्न

छोट प्रश्न पैघ गुम्बदमे दरार दै— जे पुछलक, से नाम बचेलक।

अध्याय [-२०] — छपाकक पहिल हिसाब

पहिल छपाक—पहिल नाम पानिमे— जे हिसाब राखलक, से गोहिकेँ गवाह बनेलक।

अध्याय [-१९] — सत्यव्रतक निर्णय

जे निर्णय देरसँ आयल, से सभसँ थिर— सत्यव्रत चुप रहल, मुदा अन्तमे नाम दिस ठाढ़ भेल।

अध्याय [-१८] — अनन्या आ नन्दक भेंट

दू बाट एक ठाम मिलल, नव यात्रा शुरू— जकर उद्देश्य एक, तकर पएर संग चलै।

अध्याय [-१७] — शीशाक मीनारक जाल

शीशाक मीनार दूरसँ चमकै, भीतर जाल— जे चमकपर मुग्ध, से जालमे बान्हल।

अध्याय [-१६] — बटुकनाथक अंतिम मोड़

जे बाट गलत, तकर अन्तो मोड़ मांगै— बटुकनाथ अन्तमे अपन नाम दिस घुरल।

अध्याय [-१५] — चन्द्रपालक खाता

जे खाता बुझल नहि, तकरो हस्ताक्षर भारी— अज्ञानता सेहो जालक एकटा गाँठ।

अध्याय [-१४] — पुलक निर्माण

पुल दू कातकेँ जोड़ै, मुदा पानिकेँ नहि बिसरै— जे पुल बान्हल, से बाढ़िक बात मन राखल।

अध्याय [-१३] — गोप कुमारक संकलन

जे नाम-नाम जोड़ि राखलक, से इतिहास बनेलक— संकलन देह नहि, स्मृति बचबै छै।

अध्याय [-१२] — चन्ना गाछीक कँपकँपी

गाछी काँपल, गाम सुनल—किछु होएबला छै— जे गाछी बाजै, तकरा गाम बुझै।

अध्याय [-११] — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद

आशीर्वाद देह नहि, नाम दै— बूढ़बाक अन्तिम बोल अगिला पीढ़ीक बीया बनल।

अध्याय [-१०] — पुलपर पहिल छपाक

पुलपर पहिल छपाक—पानिमे पहिल नाम— जे ओतय डुबल, तकरो नाम पातपर उठल।

अध्याय [-९] — जाँचक आरम्भ

जाँच पाइन खोदब जकाँ—पहिने कादो, फेर पानि— जे खोदब शुरू केलक, से सत्य लग पहुँचत।

अध्याय [-८] — प्रमाणक बाहर आएब

जे प्रमाण अन्हारमे नुकाएल, से एक दिन भोर देखत— सत्य पानिक तलमे रहै, मुदा उतराइ जरूर।

अध्याय [-७] — आधा-भूतक अनुभव

आधा सत्य आधा भूत—दुनू डेराबै— जे पूर्ण नाम जनै, से आधा-भूतसँ नहि डरै।

अध्याय [-६] — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना

अन्तिम पन्ना जकर हाथ, से कथाक भार उठबै— गोप कुमार नाम सौंपि कऽ हल्लुक भेल।

अध्याय [-५] — जालक उजागर होएब

जाल जखन उघरल, तखन माछ नहि, माछमारे पकड़ल— जे जाल देखलक, से गोहिकेँ चिन्हलक।

अध्याय [-४] — नामक अन्तिम सूची

जे नाम छुटल छल, से अन्तमे जुड़ल— सूची पूरी भेने गोहिक हिसाब पूरा भेल।

अध्याय [-३] — बारह सय बरखक पूर्णता

बारह सय बरखक गोल पूरा भेल—अमावसक राति— जे आरम्भ, वैह अन्तमे ठाढ़।

अध्याय [-२] — अगिला पीढ़ीक वचन

जे वचन अगिला पीढ़ी लै, से गाम बचबै— नाम पकड़ि लेब उद्धार नहि, सुनब मुक्ति छी।

अध्याय [-१] — अन्तिम साक्षी

अन्तिम साक्षी जे बाजल, से कथा हाथ बदललक— गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि— इएह गामक अन्तिम फकरा।

गोहि सभक बीच जलसमाधि

मैथिली कादम्बरी

खण्ड–१

अध्याय ०-१००

पृष्ठ १-९७३

६×९ इञ्च हार्डबैक संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर

प्रकाशन एवं कॉपीराइट

गोहि सभक बीच जलसमाधि — खण्ड-१

अध्याय ०-१००

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण

सम्पूर्ण उपन्यासक अध्याय-सङ्ख्या तीनू खण्डमे निरन्तर अछि —

खण्ड-० (पूर्व-कथाकाल): अध्याय [−१००] सँ [−१]

खण्ड-१: अध्याय ० सँ १००

खण्ड-२: अध्याय १०१ सँ २०० (तथा परिशिष्ट)

सम्पूर्ण शृंखला: अध्याय [−१००] सँ २०० — कुल ३०१ अध्याय

विदेह: मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

www.videha.co.in

ISSN 2229-547X

ISBN 978-93-5987-762-4

फ्रण्ट कवर, शीर्षक-पृष्ठ, कॉपीराइट-पृष्ठ आ अनुक्रमणिका मुख्य रनिंग पृष्ठ-सङ्ख्यामे नहि गनल गेल अछि। पृष्ठ १ अध्याय ० सँ आरम्भ होइत अछि। खण्ड-२ केर पृष्ठ-सङ्ख्या खण्ड-१ केर अन्तिम पृष्ठक ठीक बादसँ लगातार चलैत अछि। अनुक्रमणिकाक सभ पृष्ठ-सङ्ख्या एहि ६×९ संस्करणक वास्तविक अध्याय-आरम्भसँ मिलाओल गेल अछि।

अनुक्रमणिका

खण्ड-१ · अध्याय ०-१०० · पृष्ठ १-९७३

सम्पूर्ण शृंखला: अध्याय [−१००] सँ २०० (खण्ड-० सँ खण्ड-२) — कुल ३०१ अध्याय।

अध्याय ० — गढ़ नारिकेल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना १
अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी ३३
अध्याय २ — दहिन कातक गाम ४९
अध्याय ३ — छपाकक हिसाब ६२
अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश ७६
अध्याय ५ — तारीखक गोहि ८९
अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स १०१
अध्याय ७ — श्वासक भाव ११२
अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि १२६
अध्याय ९ — देहक बाजार १३७
अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल १४९
अध्याय ११ — धनक कारी नदी १६०
अध्याय १२ — डार्क-जालपर नारिकेल पात १७३
अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण १८४
अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता १९६
अध्याय १५ — नामक जल २०६
अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत २१९
अध्याय १७ — जीतक शोक २३०
अध्याय १८ — खाली अदालत २४१
अध्याय १९ — नामक अभिलेख २५१
अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला २६२
अध्याय २१ — निजताक शपथ २७३
अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण २८३
अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज २९२
अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू ३०३
अध्याय २५ — मोन टांगल ३१५
अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा ३२६
अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन ३३७
अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी ३४८
अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना ३५८

अनुक्रमणिका

खण्ड-१ · अध्याय ०-१०० · पृष्ठ १-९७३

अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत....३६८
अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज....३७७
अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी....३८८
अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा....३९८
अध्याय ३४ — सुनैत नदी....४०६
अध्याय ३५ — नामक देहरी....४१५
अध्याय ३६ — घर, भय, सपना....४२४
अध्याय ३७ — तीन कंकड़....४३२
अध्याय ३८ — नामक उच्चारण....४४१
अध्याय ३९ — बीजक शान्ति....४५१
अध्याय ४० — ओसक अक्षर....४६०
अध्याय ४१ — नामक नाव....४७१
अध्याय ४२ — भारक वृत्त....४८१
अध्याय ४३ — चलैत भार....४९१
अध्याय ४४ — पोतीक कापी....४९९
अध्याय ४५ — भीतरक हवा....५०८
अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार....५१७
अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान....५२६
अध्याय ४८ — पुकार....५३६
अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख....५४७
अध्याय ५० — देहक बादक नाम....५५९
अध्याय ५१ — साक्षीक भार....५६८
अध्याय ५२ — अगिला आवाज....५७७
अध्याय ५३ — कुटानक बादक बिहान....५८५
अध्याय ५४ — ठूँठक चारू कात....५९३
अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र....६०१
अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा....६०९
अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न....६१७
अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग....६२६
अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड....६३४
अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन....६४३
अध्याय ६१ — पुहिल नाम-उत्सव....६५१
अध्याय ६२ — ठूँठमे हरियर बिंदु....६५९

अनुक्रमणिका

खण्ड-१ ·अध्याय ०-१०० ·पृष्ठ १-९७३

अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना....६६७
अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा....६७५
अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन....६८३
अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल....६९१
अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार....६९९
अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग....७०७
अध्याय ६९ — नामक चोरी....७१६
अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही....७२३
अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस....७३१
अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी....७३९
अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार....७४७
अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार....७५५
अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क....७६३
अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा....७७१
अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि....७७९
अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद....७८७
अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र....७९५
अध्याय ८० — हरिहरनक संतान....८०३
अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम....८११
अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह....८१९
अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला....८२७
अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित....८३४
अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा....८४२
अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव....८५०
अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास....८५८
अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ....८६६
अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई....८७४
अध्याय ९० — नामक संविधान....८८२
अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति....८९०
अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह....८९८
अध्याय ९३ — पुन: बाढ़ि....९०६
अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी....९१४
अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा....९२२

अनुक्रमणिका

खण्ड-१ · अध्याय ०-१०० · पृष्ठ १-९७३

अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा..९३१
अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट...९३९
अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश..९४८
अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही..९५७
अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ..९६६

सम्पूर्ण उपन्यास-अनुक्रम — सभ ३०१ अध्याय

खण्ड-० (पूर्व-कथाकाल): अध्याय [−१००] सँ [−१]

अध्याय [−१००] — शंख आ रजत

अध्याय [−९९] — आत्मसिद्धि-वाद

अध्याय [−९८] — केऽ बनौलक ई जगत?

अध्याय [−९७] — चिंतामणि रत्न

अध्याय [−९६] — स्मृति-रक्षा

अध्याय [−९५] — जलमग्न पाण्डुलिपि

अध्याय [−९४] — चारि मुखक मौन

अध्याय [−९३] — शंखक अन्तिम प्रश्न

अध्याय [−९२] — जल-घड़ीक कैदी

अध्याय [−९१] — चर्मकार टोलाक उजास

अध्याय [−९०] — बुधुआक जलसमाधि

अध्याय [−८९] — पहिल राति, पहिल बाढ़ि

अध्याय [−८८] — डाइनक आरोप

अध्याय [−८७] — टोलाक द्वारपर

अध्याय [−८६] — समयक गोहि

अध्याय [−८५] — आमिलक आदेश

अध्याय [−८४] — जंगलक मौन

अध्याय [−८३] — सोनमा माझिन

अध्याय [−८२] — पहिल कबड्डी

अध्याय [−८१] — आक्रमणक छाया

अध्याय [−८०] — गीतक पहिल पाँति

अध्याय [−७९] — क्षमाक पारी

अध्याय [−७८] — पंजीक बाहर

अध्याय [−७७] — बूढ़बाक मौन

अध्याय [−७६] — नारिकेल पातक पहिल पाठ

अध्याय [−७५] — तर्कक पहिल विद्रोह

अध्याय [−७४] — गाछक रोग

अध्याय [−७३] — मोहनक धुन

अध्याय [−७२] — विवाहक साक्षी

अध्याय [−७१] — महामारीक राति

अध्याय [−७०] — चन्ना गाछीक रोपाई

अध्याय [−६९] — गज-ग्राहक कथा

अध्याय [−६८] — अदालतक पहिल तारीख

अध्याय [−६७] — परदेशक पुकार

अध्याय [−६६] — स्त्री सभक राति-सभा

अध्याय [−६५] — नकली भूतक जुलूस

अध्याय [−६४] — सुखदेवक बदला

अध्याय [−६३] — छापाखानाक पहिल पन्ना

अध्याय [−६२] — राहतक प्रतीक्षा

अध्याय [−६१] — आकाशक पुच्छलतारा

अध्याय [−६०] — अगिनक राति

अध्याय [−५९] — दोसर बाढ़ि

अध्याय [−५८] — तेसर बिपत्ति

अध्याय [−५७] — साहेबक नोटबुक

अध्याय [−५६] — स्वाधीनताक पुकार

अध्याय [−५५] — स्वतंत्रताक भोर

अध्याय [−५४] — जमींदारीक अन्त

अध्याय [−५३] — बिजलीक पहिल दीप

अध्याय [−५२] — सीमाक पुकार

अध्याय [−५१] — हरित क्रान्तिक बीया

अध्याय [−५०] — आपातकालक अन्हार

अध्याय [−४९] — सूखाक बरख

अध्याय [−४८] — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज

अध्याय [−४७] — खाड़ी देशक बजार

अध्याय [−४६] — सद्भावक परीक्षा

अध्याय [−४५] — उदारीकरणक हवा

अध्याय [−४४] — पहिल कम्प्यूटर

अध्याय [−४३] — सुखल होइत धार

अध्याय [−४२] — हाथक फोनक चमत्कार

अध्याय [−४१] — शहरक बजार

अध्याय [−४०] — सूचनाक अधिकार
अध्याय [−३९] — काजक गारंटी
अध्याय [−३८] — इंटरनेटक जाल
अध्याय [−३७] — स्क्रीनक पहिल छाया
अध्याय [−३६] — अनदेखल ठगक पहिल आहट
अध्याय [−३५] — देहक बजार खुजैत अछि
अध्याय [−३४] — उज्ज्वलक स्वप्न
अध्याय [−३३] — वकीलक कोटक छाया
अध्याय [−३२] — समुद्रपारक साये
अध्याय [−३१] — सत्यव्रतक मौन
अध्याय [−३०] — गोप कुमारक दस्तावेज
अध्याय [−२९] — चन्द्रपालक सपना
अध्याय [−२८] — राघवक कोड
अध्याय [−२७] — आरुणिक निर्माण
अध्याय [−२६] — देविकाक गीत
अध्याय [−२५] — मीराक निजता
अध्याय [−२४] — निशांतक बैंक
अध्याय [−२३] — नन्दक जन्म
अध्याय [−२२] — बारह सयक निकट
अध्याय [−२१] — अनन्याक प्रश्न
अध्याय [−२०] — छपाकक पहिल हिसाब
अध्याय [−१९] — सत्यव्रतक निर्णय
अध्याय [−१८] — अनन्या आ नन्दक भेंट
अध्याय [−१७] — शीशाक मीनारक जाल
अध्याय [−१६] — बटुकनाथक अंतिम मोड़
अध्याय [−१५] — चन्द्रपालक खाता
अध्याय [−१४] — पुलक निर्माण
अध्याय [−१३] — गोप कुमारक संकलन
अध्याय [−१२] — चन्ना गाछीक कँपकँपी
अध्याय [−११] — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद
अध्याय [−१०] — पुलपर पहिल छपाक
अध्याय [−९] — जाँचक आरम्भ
अध्याय [−८] — प्रमाणक बाहर आएब
अध्याय [−७] — आधा-भूतक अनुभव
अध्याय [−६] — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना

अध्याय [−५] — जालक उजागर होएब

अध्याय [−४] — नामक अन्तिम सूची

अध्याय [−३] — बारह सय बरखक पूर्णता

अध्याय [−२] — अगिला पीढ़ीक वचन

अध्याय [−१] — अन्तिम साक्षी

खण्ड-१: अध्याय ० सँ १००

अध्याय ० — गढ़ नारिकेल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना

अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी

अध्याय २ — दहिन कातक गाम

अध्याय ३ — छपाकक हिसाब

अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश

अध्याय ५ — तारीखक गोहि

अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स

अध्याय ७ — श्वासक भाव

अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि

अध्याय ९ — देहक बाजार

अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल

अध्याय ११ — धनक कारी नदी

अध्याय १२ — डार्क-जालपर नारिकेल पात

अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण

अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता

अध्याय १५ — नामक जल

अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत

अध्याय १७ — जीतक शोक

अध्याय १८ — खाली अदालत

अध्याय १९ — नामक अभिलेख

अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला

अध्याय २१ — निजताक शपथ

अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण

अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज

अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू

अध्याय २५ — मोन टांगल

अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा

अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन

अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी
अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना
अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत
अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज
अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी
अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा
अध्याय ३४ — सुनैत नदी
अध्याय ३५ — नामक देहरी
अध्याय ३६ — घर, भय, सपना
अध्याय ३७ — तीन कंकड़
अध्याय ३८ — नामक उच्चारण
अध्याय ३९ — बीजक शान्ति
अध्याय ४० — ओसक अक्षर
अध्याय ४१ — नामक नाव
अध्याय ४२ — भारक वृत्त
अध्याय ४३ — चलैत भार
अध्याय ४४ — पोतीक कापी
अध्याय ४५ — भीतरक हवा
अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार
अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान
अध्याय ४८ — पुकार
अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख
अध्याय ५० — देहक बादक नाम
अध्याय ५१ — साक्षीक भार
अध्याय ५२ — अगिला आवाज
अध्याय ५३ — कटानक बादक बिहान
अध्याय ५४ — ठूँठक चारू कात
अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र
अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा
अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न
अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग
अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड
अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन
अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव
अध्याय ६२ — ठूँठमे हरियर बिंदु

अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना

अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा

अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन

अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल

अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार

अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग

अध्याय ६९ — नामक चोरी

अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही

अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस

अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी

अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि

अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र

अध्याय ८० — हरिहरनक संतान

अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम

अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह

अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला

अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित

अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा

अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव

अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास

अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई

अध्याय ९० — नामक संविधान

अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति

अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह

अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि

अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी

अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश

अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही

अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

खण्ड-२: अध्याय १०१ सँ २०० (तथा परिशिष्ट)

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण

अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी

अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ

अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि

अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा

अध्याय १०६ — बीजक गवाही

अध्याय १०७ — बीजक चोरी

अध्याय १०८ — माटिक मुँह

अध्याय १०९ — जलक स्मृति

अध्याय ११० — आगिक साक्षी

अध्याय १११ — वायुक प्रश्न

अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति

अध्याय ११३ — शब्दक देह

अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा

अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा

अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार

अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण

अध्याय ११८ — देहक अधिकार

अध्याय ११९ — श्रमक देह

अध्याय १२० — न्यायक देह

अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा

अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति

अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात

अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि

अध्याय १२५ — निर्णयक धान

अध्याय १२६ — अन्नक न्याय

अध्याय १२७ — भूखक नाम

अध्याय १२८ — प्यासक नाम

अध्याय १२९ — नूनक शपथ

अध्याय १३० — स्वादक न्याय

अध्याय १३१ — साझा थारी

अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य

अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा

अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही

अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस

अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच

अध्याय १४० — चल चौपाल

अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला

अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार

अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही

अध्याय १४४ — नामक यात्रा

अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार

अध्याय १४६ — मुहरक दाग

अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक

अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

अध्याय १४९ — जालक नक्शा

अध्याय १५० — मुहरक छाया

अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ

अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत

अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम

अध्याय १५४ — बाबाक वचन

अध्याय १५५ — सेवाक खाता

अध्याय १५६ — दानक ऋण

अध्याय १५७ — लोहेक संदूक

अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान

अध्याय १५९ — मृतकक सहमति

अध्याय १६० — गोदामक छाया

अध्याय १६१ — फोनक कैद

अध्याय १६२ — आवाजक मोहर

अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान

अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट

अध्याय १६५ — छायाक देह

अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार
अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज
अध्याय १६८ — शहरक गला
अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा
अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल
अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत
अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ
अध्याय १७३ — पंजीक पहरा
अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट
अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम
अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार
अध्याय १७७ — घर-घरक कागज
अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी
अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह
अध्याय १८० — शहरक खाता
अध्याय १८१ — सिमक छाया
अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा
अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा
अध्याय १८४ — आवाजक नकाब
अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा
अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम
अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी
अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर
अध्याय १८९ — लोहेक पेटी
अध्याय १९० — नील पंजी
अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी
अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर
अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा
अध्याय १९४ — साँसक समन
अध्याय १९५ — रोकल खाता
अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ
अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम
अध्याय १९८ — अपराधीक धरती
अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान
अध्याय २०० — नामक पहरुआ

अध्याय ०

गढ़ नारिकेल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना

माटि, पानि, श्रम, स्मृति आ नामक जीवित भूगोल

कथा सुनबा सँ पहिने गाम सुनू— गाम अपन देह माटि सँ बनबै छै, साँस पानि सँ लै छै, आ स्मृति गाछ-पात मे राखै छै। एतऽ ज्ञान पोथी मे नै, हाथ-कान-देह मे बसै छै; गीतक कोनो एक लेखक नै छै—लोके ओकर रचयिता छै। कागच काटि सकै छै, पात उगि सकै छै; रजिस्टर 'अनुपस्थित' कहै छै, माए 'हाजिर' कहै छै। तें ई अध्याय कथा सँ पहिने ओही माटिक उत्तर छै जाहि मे सभटा कथा जड़ि पकड़त— आ जखन सभ कागच चुप भऽ जेतै, तखन गीत बाजतै।

कथा शुरू होयबा सँ एक साँझ पहिने बा नारिकेल पातक पाठशालाक माटि पर बैसल छलीह। बच्चा सभ पुछलकनि—“काल्हि सँ कथा?” बा हँसलीह—“कथा सुनबा सँ पहिने गाम सुनू। जे गाम नहि सुनलक, से कथाक आधा अर्थ टा बुझत।” आ ओहि राति गढ़ नारिकेल अपने बाजए लागल—अपन माटि, अपन पानि, अपन गीत, अपन घाव आ अपन पहराक भाषा मे। जे आगाँ लिखल अछि, से ओही रातिक सामूहिक स्वर थिक—गामक आत्म-कथन, जकरा ई उपन्यास अपन शून्य अध्याय मानि माथ पर धारण करैत अछि।

एहि आत्म-कथन मे व्याख्यानो अछि आ धड़कनो। एकरा निबन्ध जकाँ नहि, चन्ना गाछीक जड़ि जकाँ पढ़ू—जतऽ प्रत्येक खण्ड एक-एक जड़ि थिक, आ सभटा जड़ि मिलि ओही गाछकेँ थम्हने अछि जकर ठूँठ पर आगाँ दू सय अध्यायक कबड्डी खेलाएत।

गढ़ नारिकेलकेँ केवल नक्शापर चिन्हित एकटा गाम बुझब भारी भूल हएत। ई गाम अपन देह माटिसँ बनबैत अछि, अपन साँस पानिसँ लैत अछि, अपन स्मृति गाछ-पातमे राखैत अछि, अपन दुःख गीतमे बहबैत अछि आ अपन न्याय खिस्सा, कहबी, लोकविश्वास आ सामूहिक गवाहीक सहारे बचबैत अछि। एतय संस्कृति पोथीक पन्नापर जन्म नहि लैत; ओ भोरक पहिल चूल्हिसँ, गोबरसँ नीपल आँगनसँ, खेत दिस जाइत पएरसँ, पोखरिक पानिमे पड़ैत महाजालसँ, बाढ़िक बेर बान्हपर जुटैत लोकसँ, जनमक सोहरसँ, बियाहक मंगलसँ, विदाइक समदाउनसँ, मृत्यु-पछाति उठैत करुण स्वर सँ जन्म लैत अछि। गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृति लिखल विधानसँ बेसी जीअल अनुशासन अछि। लोक ओकरा पढ़ैत नहि, करैत अछि; याद करैत नहि,

जीबैत अछि; सिखबैत नहि, संगमे काज करैत-करैत अगिला पीढ़ीकेँ दैत अछि। गङ्गेश, मिथिला आ ज्ञानक खोजक कथा, आख्यान आ दृष्टान्त। गढ़ नारिकेलक लोक, हाइ रे हाइ। गङ्गेश तत्त्वचिन्तामणि-पुस्तकमे उपस्थित जीवन-प्रसङ्ग, जनश्रुति, ऐतिहासिक संकेत, शास्त्रीय उदाहरण, सूत्रात्मक दृष्टान्त एतुक्का लोक समकालीन सन्दर्भमे केना लऽ लैत अछि

से देखैबला होइत अछि। नव्य-न्याय, तर्क-वितर्कमे केहेन-केहेनकेँ कान काटि लै जाइए ई सभ। दुरूह नव्य-न्यायकेँ सरल बना कऽ ओकर सूक्ष्मता बिनु घटेने अमूर्त परिभाषाकेँ मानवीय अनुभवसँ जोड़ब जइसँ— शास्त्रीय प्रतिपादन दृश्य बनय, पूर्वपक्ष–सिद्धान्त संवाद बनय, सूत्र घटनाक्रम बनय, परिभाषा पात्रक अनुभव बनय, आ निष्कर्ष कथाक अन्तर्ध्वनि बनय।

ई संस्कृति कोनो एक जाति, एक टोल, एक घर, एक पाबनि वा एक वंशक निजी सम्पत्ति नहि। एकर गीत गबैत काल जे मुख पहिल पाँति उठबैत अछि, गीत केवल ओकर नहि रहि जाइत। दोसर कण्ठ टेक पकड़ैत अछि, तेसर अपन परिस्थिति अनुसार एक शब्द बदलि दैत अछि, चारिम गायक पुरान पदक बीच नव घटना जोड़ि दैत अछि। एहि प्रकारेँ गीत सामूहिक होइत अछि। खिस्सो एहनहि अछि। एकहि घटना दादीक मुँहसँ एक रूपमे, नाविकक मुँहसँ दोसर रूपमे, खेतिहर स्त्रीक मुँहसँ तेसर रूपमे आ बच्चाक खेलमे चारिम रूपमे जीवित रहैत अछि। फेरो सभ रूपक भीतर एकटा साझा नाड़ी धड़कैत रहैत अछि—गढ़ नारिकेलक सामूहिक चिन्हारि।

“गोहि सभक बीच जलसमाधि”क कथा-जगतमे ई सांस्कृतिक नाड़ी निरन्तर सुनाइ पड़ैत अछि। चन्ना गाछी केवल अन्हार गाछी नहि, लोक-स्मृतिक सभागार अछि। नारिकेल पात केवल पात नहि, नाम लिखबला हरियर पन्ना अछि। भूतक कबड्डी केवल अलौकिक खेल नहि, जीवित समाजक न्याय-पद्धतिक रूपक अछि। नदी केवल पानि नहि, इतिहासक वहनिहारि अछि। गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि—ई वाक्य गढ़ नारिकेलक लोकदृष्टिक मूल बीज अछि। देह नष्ट भऽ सकैत अछि, कागच नाम काटि सकैत अछि, अधिकारी संख्या घटा सकैत अछि, मुदा जँ गामक स्मृति जागल अछि तँ मनुक्ख पूर्ण रूपेँ लुप्त नहि होइत।

लोक-संस्कृति ओ सभ व्यवहार, विश्वास, गीत, कथा, ईलम, रीति, कला, बोली, स्मृति आ सामूहिक अनुशासनक नाम अछि जे पोथी वा शासनक आदेशसँ नहि, लोकक निरन्तर जीवनसँ बनैत अछि। ई संस्कृति पाबनि दिन मात्र देखाइत वस्तु नहि। जँ कोनो स्त्री भोरमे आँगन नीपैत छथि, जँ कोनो किसान बीआ हाथमे लऽ माटिक गन्ध सूँघैत अछि, जँ कोनो बच्चा पोखरिक गहिराइ बुझब लेल कंकड़ फेकैत अछि, जँ कोनो बूढ़ बाढ़िक पुरान निशान देखाकऽ कहैत अछि—“एतय धरि पानि चढ़ल छल”—तँ ई सभ लोक-संस्कृतिक काज अछि।

पाँचम विशेषता दैनिक जीवनसँ अभिन्नता अछि। गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृति मंचपर प्रस्तुत करबाक लेल बनल अलग क्रिया नहि। गीत खेतमे श्रमक गति मिलबैत अछि, नावमे साँसक ताल बनबैत अछि, धान कुटैत हाथक चोट बराबर रखैत अछि, विवाहमे विधिक क्रम

मोन रखबैत अछि, शोकमे दबल नोरकेँ सामूहिक स्वर दैत अछि, बच्चाक खेलमे सामाजिक सम्बन्धक अभ्यास करबैत अछि। एतय कला आ उपयोग अलग नहि। सुन्दरता काजमे बसल अछि, काज गीतमे, गीत स्मृतिमे आ स्मृति समुदायमे।

कमला-बलानक प्रवाह, गंगाक दूरगामी स्मृति, पोखरि-डबरा, पुरान इनार, खेतक नाला, बान्ह आ चौर—ई सभ गढ़ नारिकेलक जीवनक जल-मानचित्र बनबैत अछि। पानि एतय वरदानो अछि, संकटो। पानि खेत सींचैत अछि, माछ-मखान दैत अछि, पशु-पक्षीकेँ जीवित रखैत अछि, देह शुद्ध करैत अछि, पाबनि-संस्कार पूरा करैत अछि। मुदा वैह पानि घर बहा सकैत अछि, खेत काटि सकैत अछि, गामक बाट बदलि सकैत अछि, देह गीड़ि सकैत अछि। एहि द्वैतसँ गढ़ नारिकेलक लोकगीतमे पानिक स्वर सदिखन दोहरा रहैत अछि—एक कात जीवन, दोसर कात भय; एक कात ममता, दोसर कात जलसमाधि।

गामक पोखरि केवल जलाशय नहि। ओ माछक घर, मखानक खेत, स्नानक ठाम, पशुक पानि, पटौनीक साधन, बालकक खेल, स्त्रीक पनिघट, पाबनिक स्थल, विसर्जनक घाट, कथा आ लोकविश्वासक केन्द्र अछि। पोखरिक महारपर गाछ, झाड़ी, घास, पक्षी आ छोट जीवक अलग संसार बसैत अछि। सालाना मछैर केवल आर्थिक गतिविधि नहि; ई सामूहिक श्रम, प्रतीक्षा, बाँट, विवाद, मेल-मिलाप आ उत्सवक अवसर अछि। महाजाल खसबैबला लोकक पुकार, पानिमे जालक सरसराहट, माछक छपछप, किनारपर बच्चाक हुलास—ई सभ एकटा जीबित लोकसंगीत बनबैत अछि।

बाढ़ि गढ़ नारिकेलक लोकस्मृतिमे वर्षक एक ऋतु मात्र नहि। कतेको परिवार लेल बाढ़ि समयक माप अछि—फलाँ बाढ़िसँ पहिने, फलाँ कटानक बाद, ओहि बरख जखन पानि देहरी धरि आयल, ओहि बरख जखन बान्हपर राति काटल गेल। लिखित वर्ष भूलि सकैत अछि, मुदा देबालपर पानिक निशान, गाछक मुरझायल डारि, खेतक बालु, घरक कथा आ गीतक पद समयक प्रमाण बनि रहैत अछि। लोकगीत एहि प्रकारेँ स्थानीय इतिहासक कालगणना करैत अछि।

गाछ-बिरिछ गामक दोसर स्मृति-व्यवस्था अछि। पीपर, पाकड़ि, बाँस, आम, जामुन, नीम, बेल, तेतैर, कटहर, महुआ, नारिकेल, केरा, पलाश, सिम्मर, बबूर, खजूरक अभाव वा उपस्थिति—प्रत्येकक संग उपयोग, कथा, छाह, ऋतु आ भाव जुड़ल अछि। आमक जाति स्वादक शब्दकोश बनबैत अछि; बाँस घर, औजार, बाजा, जाल, मड़बा, चचरी आ झरनीक सामग्री अछि; पीपर छाहक संग देवता आ भूत दुनूक निवास बनि सकैत अछि; नारिकेल पात कथा-

जगतमे नाम लिखबला हरियर पन्ना भऽ उठैत अछि। गाछ कटैत अछि तँ केवल लकड़ी कम नहि होइत, स्मृतिक एक ठाम मेटैत अछि। तें ठूँठ सेहो गामक इतिहासमे बोलैत अछि।

माटि सामाजिक विभाजनक साक्षी सेहो अछि। एकहि गाममे ककरो देबाल मोट, ककरो झोंपड़ी पातर; ककरो आँगन ऊँच, ककरो घर बाढ़िक पहिल पानिमे डूबय योग्य; ककरो खेत एकठाम, ककरो टुकड़ा-टुकड़ा; ककरो पोखरिपर अधिकार, ककरो प्रवेश सीमित। लोक-संस्कृति एहि विषमताकेँ केवल ढाँपैत नहि; गीत, व्यंग्य, कहबी, झगड़ा, कथा आ सामूहिक प्रतिरोधक माध्यमसँ व्यक्त करैत अछि। गढ़ नारिकेलक संस्कृति समरसताक एकरंगी चित्र नहि; ई सहयोग आ असमानता, प्रेम आ दूरी, सम्मान आ अपमान, साझेदारी आ संघर्ष सभकेँ एकहि सामाजिक देहमे धारण करैत अछि।

माछमारीक गीत श्रमक संग ज्ञानक गीत अछि। जाल कहिया खसब, कोन दिशा सँ घेरब, पानि कतेक गहींर, माछ कोन परतमे, हवा ककरा दिस, किनारपर के रहत—ई सभ काज पुकार-उत्तरक लयमे चलि सकैत अछि। सरदारक आवाज उठैत अछि, समूह उत्तर दैत अछि; जाल एक संग खिंचैत अछि। जँ ताल टूटल तँ जाल उलझत, माछ निकलत, लोक पानिमे खसत। तें संगीत एतय मनोरंजन नहि, श्रमक सुरक्षा आ सफलता दुनूक साधन अछि।

बाढ़िक गीत गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृतिक सभसँ जटिल रूपमे सँ एक अछि। ओहिमे भय, हानि, साहस, सामूहिक श्रम, देवता-पुकार, सरकारी उपेक्षा, पशु-बचाव, बच्चाक रोदन, नाविकक बहादुरी, घर छोड़बाक पीड़ा आ फेर माटिपर घुरबाक आशा सभ रहैत अछि। एक पद घर बहबाक; दोसर बान्हपर चूल्हि जरबाक; तेसर दूध नहि भेटैत शिशुक; चारिम नाव लऽ आयल पड़ोसीक; पाँचम पानि उतरला बाद खेतमे जमल गादक। एहि तरहें बाढ़िक गीत केवल विलाप नहि, पुनर्निर्माणक संकल्पो अछि।

“गोहि सभक बीच जलसमाधि”मे पानि न्याय आ अपराधक बीचक क्षेत्र बनि जाइत अछि। जे देह पानिमे खसैत अछि, ओकर आधिकारिक नाम मेटाओल जा सकैत अछि; मुदा नदी ओकरा चिन्हैत अछि। नन्द आरुणि जखन पानिसँ नाम सुनबाक अभ्यास करैत छथि, तखन ओ कोनो असम्भव चमत्कार मात्र नहि; ओ गढ़ नारिकेलक पुरान सुननाइ-परम्पराकेँ नब समयमे जीबैत छथि। नदीक आवाज सुनबाक अर्थ मृतकक अधिकार सुनब, श्रमिकक गवाही सुनब, माएक प्रतीक्षा सुनब आ कागचक मौनक भीतर दबल सत्य सुनब अछि।

गढ़ नारिकेलमे दिन घड़ीक काँटासँ पहिने पक्षीक स्वर, पशुक हलचल, चूल्हिक धुँआ आ देहक अभ्याससँ खुलैत अछि। भोर होइसँ पहिने उठब केवल मेहनतिक बाध्यता नहि; ई

जीवनक साझा समय-विधान अछि। कियो गोहाल दिस जाइत अछि, कियो पानि आनैत अछि, कियो चूल्हि सुलगबैत अछि, कियो खेतक औजार देखैत अछि, कियो बच्चाकेँ जगबैत अछि, कियो रातिये भिजाओल धान, दालि वा अनाजक अगिला काज शुरू करैत अछि। एहि बहुध्वनिक भोरमे कोनो एक संचालक नहि, मुदा सभकेँ अपन क्रम बुझल रहैत अछि। ई लोक-संस्कृतिक अनुशासन अछि—बिनु लिखल, बिनु घंटी, बिनु आदेश।

दिनक अलग-अलग पहरक अलग धुन अछि। भोरक गीतमे पराती, जागरण, देव-पुकार, पशु खोलबाक स्वर आ खेत दिस विदाइक हलुक लय रहैत अछि। पूबरिया उजास बढ़ला पर श्रम-गीतक गति तेज होइत अछि। दुपहरियामे स्वर विरल भऽ सकैत अछि—गाछक छाह, भोजन, पानि, विश्राम, गप-खिस्सा। बेरू पहर फेर खेत, माछ, पशु, बाजार, कारीगरी, घरक काज। साँझमे गोठ, चूल्हि, बच्चाक खेल, ढोलकक अभ्यास, कथा, समाचार आ दिनक हिसाब। रातिमे संस्कार-गीत, कथा-गान, भगैत, निर्गुण, बिरहा, मर्सिया, भूतक खिस्सा वा धीम स्वरक निजी दुःख।

गढ़ नारिकेलक सामाजिक देह अनेक टोल, जाति, पेशा आ परिवारक योगसँ बनैत अछि। एहि व्यवस्था भीतर असमानता, जातिगत दूरी आ ऐतिहासिक अन्याय रहल अछि; तकरा अनदेखा कऽ लोक-संस्कृतिक केवल रंगीन उत्सव बना देब असत्य हएत। मुदा एकर संगहि ईहो सत्य अछि जे दैनिक जीवन, कृषि, पाबनि, संस्कार, कारीगरी, संगीत, जल-व्यवस्था आ आपदाक समय एक समुदाय दोसरक श्रम आ ईलमपर निर्भर रहल। लोक-संस्कृति एहि निर्भरता आ तनाव दुनूकेँ अपन भीतर राखैत अछि।

लोकगीत एहि पेशागत ज्ञानक स्मृति-पात्र अछि। उदाहरणार्थ, माछमारक गीतमे जालक नाम, पानिक चाल, माछक बानी; रोपनीक गीतमे धानक प्रकार, कीचड़, खेतक माप, रोपक दूरी; बढ़हीक गानमे काठक स्वभाव, आरीक चाल, जोड़; चरखाक गीतमे सूत, धुरी, घूमनाइ; कोल्हुक गीतमे बड़दक चक्कर, तेलक धार, दिनक थकान; ढोलकियाक गीतमे चाम कसबाक विधि, धूप, नमी आ ताल। गीत ज्ञानकेँ भावक संग बाँधि दैत अछि, तेँ ओ आसानीसँ याद रहैत अछि।

"गोहि सभक बीच जलसमाधि"मे बिसेसर पासवान, सरयू, छोटू आ अनाम श्रमिक सभ एहि ऐतिहासिक विडम्बनाक नब रूप छथि। पुल हुनकर श्रमसँ बनैत अछि, मुदा रजिस्टरमे नाम अधूरा वा गायब। गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृति ई असमानताकेँ "भाग्य" कहि शान्त नहि

होइत; ओ नाम बचबैत अछि, वस्तुकेँ गवाही बनबैत अछि, जूता, गमछा, कड़ा, पात आ गीतसँ अनुपस्थित लोककेँ उपस्थित करैत अछि।

ईलमक संचरणमे खेलक बड्ड भूमिका अछि। बच्चा वर-कनियाँ खेलैत अछि तँ विवाहक सामाजिक रूप सीखैत अछि; माटिक घर बनबैत अछि तँ निर्माण; छोट जाल वा कपड़ा लऽ माछमारक नकल करैत अछि तँ पानिक व्यवहार; लकड़ीक पहिया गुड़कबैत अछि तँ गति; कबड्डी खेलैत अछि तँ साँस, सीमा, समूह, रणनीति आ साहस। चन्ना गाछीक भूतक कबड्डी एहि सामान्य खेलकेँ स्मृति आ न्यायक गम्भीर रूप दैत अछि। जे नाम लऽ विपक्षी पारीमे जाएत, ओकरा नाम बचा कऽ घुरबाक अछि। एतय खेल इतिहासक पाठशाला बनि जाइत अछि।

गामक स्त्री मुँहजबानी परम्पराक मुख्य धारक छथि। विवाहक गीत, जन्मक सोहर, व्रत-कथा, मधुश्रावणी, समदाउन, व्यंग्य, गारी, घरेलू उपचार, खाद्य-स्मृति, रिश्ताक शब्दावली—बहुत किछु स्त्री-कण्ठसँ चलैत अछि। बेटी जखन बियाहि दोसर गाम जाइत अछि, ओ केवल कपड़ा-गहना नहि लऽ जाइत; धुन, कथा, पकवान, अरिपन, उपचार, कहबी आ उच्चारणक पूरा संसार नेने जाइत अछि। दोसर गाममे ओ अपन सीखल रूप बदलैत अछि, स्थानीय रूप स्वीकारैत अछि, नब मिश्रण बनबैत अछि। एहि प्रकार लोक-संस्कृति विवाह-संबन्धक बाटे क्षेत्रमे पसरैत अछि।

गढ़ नारिकेलक प्रत्येक पोखरि, गाछ, टोल, पुरान बाट, बान्ह, खण्डहर, गहबर वा असामान्य पाथरक पाछाँ खिस्सा होएबाक सम्भावना अछि। लोक स्थानकेँ कथा दैत अछि, कथा स्थानकेँ स्मरणीय बनबैत अछि। बच्चा जखन सुनैत अछि जे अमुक गाछीमे भूतक खेल होइत अछि, ओ गाछीकेँ भय मात्रसँ नहि, सावधानी, सीमा आ स्मृतिसँ देखैत अछि। जखन पोखरिक कथा सुनैत अछि, ओ पानिक गहिराइ, पुरान दुर्घटना वा सामूहिक उपयोगक प्रति सचेत होइत अछि।

लोककथा तीन तरहक समयकेँ एक संग रखि सकैत अछि—पुरखाक समय, कथाकारक वर्तमान आ श्रोताक भविष्य। चन्ना गाछीमे भूत १८८५, १९३४, १९७७ आ आजुक समय एकहि पारीमे लाँघि सकैत अछि; एहि असम्भव चालक भीतर गामक स्मृति-पद्धति अछि। लोकस्मृतिमे कालखण्ड अलग पेटीमे बन्द नहि; पुरान अन्याय नब अन्यायमे घुरि अबैत अछि, पुरान कहबी नब तकनीकपर लागू भऽ जाइत अछि, पुरान गोहि स्क्रीनक गोहि बनि सकैत अछि।

लोककथा सामाजिक दण्डो दैत अछि। जे लोक समाजकेँ हानि पहुँचबैत अछि, ओकर मृत्यु पर सामान्य शोकक बदला लोक-धिक्कारक कथा बनि सकैत अछि। जे अन्याय करैत अछि, ओकरा भूत, श्राप, उजड़ल वंश, सूखल गाछ, डूबल नाव वा नाम-मेटाइ रूपक दण्ड भेटैत अछि। ई दण्ड न्यायालयक आदेश नहि, मुदा सामुदायिक नैतिक निर्णय अछि। “गोहि सभक बीच जलसमाधि”मे चन्ना गाछीक अदालत एहि लोकन्यायक विस्तृत रूप अछि—ओतय मोहरसँ बेसी स्मृति, पदसँ बेसी गवाही आ जीतसँ बेसी नामक महत्त्व अछि।

श्रमगीतक जन्म कामक भीतर होइत अछि। ओकर लय औजार, देहक गति, श्रमिकक संख्या आ कामक अवधि अनुसार बनैत अछि। एहन गीतमे भावुकता होइत अछि, मुदा ओ श्रमक वास्तविकतासँ अलग नहि। मजूरी, भूख, मालिक, ऋतु, पिया, बच्चा, देहक पीड़ा, हँसी, परिहास, आशा—सभ श्रमक तालमे प्रवेश करैत अछि।

बिसेसर, सरयू आ छोटू सन श्रमिकक कथा देखबैत अछि जे आधुनिक विशाल निर्माणमे श्रमक गीत दबि गेलापर श्रमिकक नामो दबि सकैत अछि। मशीनक कोलाहल, आदेश, समय-सीमा आ ठेकेदारीक बीच जँ श्रमिकक सामूहिक स्वर टूटल, तँ प्रत्येक लोक अलग, असुरक्षित आ अभिलेखविहीन होइत अछि। गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृति एहि टूटल स्वरकेँ फेर जोड़बाक काज करैत अछि।

गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृतिक सभसँ निरन्तर अभिलेख स्त्रीक कण्ठ आ हाथमे अछि। स्त्री आँगन नीपैत छथि, अरिपन बनबैत छथि, व्रत-कथा कहैत छथि, जन्म आ विवाहक गीत सम्हारैत छथि, खेतमे रोपनी-सोहनी करैत छथि, अन्न कुटैत-पिसैत छथि, पशु-पक्षी, बच्चा, वृद्ध, रसोइ, जल, बीआ आ घरक वस्तु सभक देखभाल करैत छथि। एहि दैनिक श्रमक बीच संस्कृति केवल बचैत नहि, नब रूपो पबैत अछि।

मिथिला चित्रकला, माटिक पूजा-वस्तु, सिलाइ-कढ़ाइ, पातरि सजेनाइ, खोइँछ, अन्नक विन्यास, विवाहक सजावट—ई सभ स्त्रीक दृश्य लोकभाषा अछि। लोकगीत ओकर श्रव्य लोकभाषा। दुनू एक-दोसराकेँ पूरा करैत अछि। जे बिम्ब गीतमे गाओल जाइत अछि, ओ भित्ति वा अरिपनमे देखाइ सकैत अछि; जे आकृति बनाओल जाइत अछि, ओकर कथा गीतमे अबैत अछि।

“गोहि सभक बीच जलसमाधि”मे बा गढ़ नारिकेलक एहि स्त्री-स्मृतिक सघन रूप छथि। ओ कागचक प्रमाणसँ पहिने जूता, गमछा, पात, देहरी आ गन्ध पढ़ैत छथि। हुनकर “हाजिर” कहब मृतकक नामक संस्कार अछि। सरयू सन स्त्री-श्रमिकक नाम आधिकारिक बहीमे नहि,

मुदा स्त्री-स्मृति ओकरा गुम होएब नहि दैत। अनन्या अगिला पीढ़ीक कण्ठ अछि, जे कथा फेर शुरू करैत अछि।

बाढ़िक गीत सरकार वा जमीन्दारक अधूरा बान्ह, राहतक अन्याय, नावक कमी, सूचीसँ नाम गायब होएबपर प्रश्न करैत अछि। लोकगीत आधिकारिक भाषाक चमक हटाकऽ वास्तविक अनुभव देखबैत अछि। “कोनो प्रमुख क्षति नहि”क सामने गीत एक माएक खाली देहरी, एक बच्चाक भूख, एक पशुक बहल देह आ एक खेतक बालु देखबैत अछि।

जखन सरकारी अभिलेखमे नाम गायब, लोकगीत नाम बचबैत अछि। जखन मृत्यु “अनुपस्थित” लिखल, माएक गीत कहैत अछि—ओ घुरल नहि। जखन स्त्रीक श्रम पतितक नाममे समा गेल, रोपनीक पद ओकर अपन नाम उठबैत अछि। जखन कचहरी तारीख बढ़बैत अछि, कहबी समयक गोहिक दाँत देखबैत अछि।

लोकन्याय कखनो अन्यायी सेहो भऽ सकैत अछि—भीड़, अफवाह, जातिगत पूर्वग्रह, स्त्रीपर दोष। तें लोक-संस्कृतिक प्रत्येक निर्णय स्वतः सत्य नहि। ओकर मानवीय मूल—गरिमा, कमजोरक रक्षा, सत्य, सामूहिक जिम्मेदारी—कसौटी हो। चन्ना गाछीक अदालतक महत्त्व एहि कारण जे ओ भय उतरबैत, नाम सुनैत, पीड़ितक आवाजकेँ केन्द्रमे रखैत अछि; केवल बहुमतक शोर नहि।

गढ़ नारिकेल कथाक बाहरी सजावट नहि। ई कथा बुझबाक मूल सांस्कृतिक व्याकरण अछि। जँ पाठक गामक मुँहजबानी परम्परा, नामक महत्त्व, पानिक द्वैत, गाछ-पातक स्मृति, भूतक लोकविश्वास, सामूहिक गीत आ लोकन्याय नहि बुझत, तँ चन्ना गाछी, नारिकेल पात, जलसमाधि आ कबड्डीक अर्थ अधूरा रहत।

बिसेसर पासवान श्रमिकक पूर्ण मनुष्यता प्रतिनिधित्व करैत छथि। फाटल जूता, हँसी, परिवार, मजूरी, असुरक्षा—गीत एहि सभकेँ जोड़ि “दुर्घटना संख्या”केँ मनुक्ख बनबैत अछि। सरयू स्त्री-श्रमक अदृश्यता उजागर करैत छथि। ओ काम करैत छथि, मुदा कागचमे कर्मचारी नहि; लोकगीत हुनकर श्रम आ नाम दुनू उपस्थित करैत अछि। छोटू वा भोलटुनक अधूरा नाम प्रवासी श्रमिकक कटायल परिचयक प्रतीक अछि।

गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृति माटि, पानि, श्रम, सम्बन्ध, स्मृति आ स्वरक संयुक्त देह अछि। ओकरा केवल रंगीन पाबनि, पुरान पोशाक वा मंचक नाचमे सीमित नहि कएल जा सकैत। ओ भोरक काजमे, खेतक कीचड़मे, पोखरिक बाँटमे, स्त्रीक कथा, बच्चाक खेल,

कारीगरक हाथ, नाविकक पुकार, मृतकक नाम, परदेशीक विरह, सामाजिक व्यंग्य आ सामूहिक प्रतिरोधमे बसल अछि।

१. डकही पोखरिक पात-दीप

खिस्सा—कहल जाइत अछि जे डकही पोखरिक बीचमे एक पातरि-जकाँ हरियर उजास केवल ओहि राति देखाइत अछि जहिया गामक कोनो नाम अन्यायसँ काटल जाइत अछि। बा कहैत छथि, ओ उजास मृतकक नहि, पोखरिक अपन आँखि अछि। एक बेर नन्द आरुणि ओहि उजासक पाछाँ नाव लऽ गेलाह तँ पानिमे बिसेसरक फाटल जूताक छाया देखलनि। तखनसँ पोखरि लग कोनो गुमनाम मृत्यु भेने लोक एक दीया पानिपर छोड़ैत अछि।

गीत—पोखरिक पात-दीप

लोकधुन: धीम माछमार विरहा

बहू हे दीया, डकही पोखरि मे बहू हे,
काटल नामक साखी बनि राति भरि रहू हे।

पोखरिक बीच हरियर दीया,
केकर नाम पुकारै रे?
कागच काटल, पानि राखल,
राति गवाही धारै रे।
दीया बहू, नाम नहि बहू,
गढ़ नारिकेल जागै रे।

कागचक कैंची चलल जतऽ, दीप ओतहि जागल,
पानिक थिर छाती पर हरियर आखर लागल।
धीम विरहाक तान मे करुणा आ पहरा,
नाम बहए नहि धार मे—गूँजए स्वर गहरा।

बहू हे दीया, डकही पोखरि मे बहू हे,
काटल नामक साखी बनि राति भरि रहू हे।

२. चन्ना गाछीक साँस

खिस्सा—चन्ना गाछीक पुरान विश्वास अछि जे गाछक प्रत्येक जड़ि एक पुरखा वा अनाम श्रमिकक साँस राखैत अछि। जखन कोनो बच्चा सत्य बात कहैत गाछक कात दौड़ैत अछि, पात बिनु हवा हिलैत अछि। अनन्या पहिल बेर ई बात मानलखिन जहिया ओ सरयू नाम पातपर लिखलीह आ ठूँठक हरियर बिन्दु काँपि उठल।

गीत—जड़ि-जड़ि साँस

लोकधुन: बाल-कबड्डी गीत

दौड़ू हो नेना, चन्ना जड़ि लग दौड़ू हो,
'हाजिर-हाजिर' कहैत रेखा पार करू हो।

चन्ना जड़ि मे साँस बचल,
पात कहै—हाजिर!
नेना दौड़ल नाम लऽ कऽ,
भूत कहै—हाजिर!
झूठक रेखा पार करब,
सत्य रहत हाजिर!

जड़ि-जड़ि मे पुरखा-साँस, पात-पात मे बोली,
साँच बजैत डेग पड़ए तँ खुजए स्मृति-झोली।
भूतो हँसए, गाछो हँसए, नेना निधोख खेलए,
झूठक रेखा टपिते सत्यक पारी भेटए।

दौड़ू हो नेना, चन्ना जड़ि लग दौड़ू हो,
'हाजिर-हाजिर' कहैत रेखा पार करू हो।

३. दछिन टोलक साझा चूल्हि

खिस्सा—रौदीक एक बरख दछिन टोलमे अन्न कम पड़ल। लोक सभ अपन-अपन घरक चूल्हि बुझा एकटा साझा चूल्हि जरौलनि। जेकरा जे छल, ओ आनलक—ककरो मुट्ठी चाउर, ककरो दालि, ककरो साग, ककरो दूध। राति भोजन कम छल, मुदा कोनो घर भूखल नहि

सुतल। तखनसँ कहल जाइत अछि—टोलक असल सीमा ओतय अछि जतय साझा चूल्हिक धुँआ पहुँचे।

गीत—साझा चूल्हिक धुँआ

लोकधुन: आँगन झूमर

जराउ गे बहिना, साझा चूल्हि जराउ गे,
मुट्ठी-मुट्ठी आनि सभक थारी सजाउ गे।

एकर चाउर, ओकर दालि,
तीसर घरक साग,
साझा चूल्हि जरल जखन,
भागल भूखक नाग।
धुँआ उठल टोल-पार,
सभक पेटमे फाग।

रौदीक बरख अन्न थोड़, नेह भरल-पूरल,
एक आगि पर सय घरक भात संगे फूलल।
के देलक की—के गनए? धुँआ एक्के उठल,
भूखक नाग पड़ाएल, टोल जुड़ल-जुटल।

जराउ गे बहिना, साझा चूल्हि जराउ गे,
मुट्ठी-मुट्ठी आनि सभक थारी सजाउ गे।

४. पुरान बाटक पएरचिन्ह

खिस्सा—गढ़ नारिकेलक पुरान बाट बरखा मे गादसँ ढँकि जाइत, फेरो भोरमे एकटा पएरचिन्ह स्वयं उभरि अबैत। बा कहैत छथि, ई ओ सभक बाट अछि जे परदेश गेल आ घरक बाट नहि बिसरल। आरुणि नन्दन एक दिन ओकर फोटो लेलक, मुदा चित्रमे बाट नहि, खाली घर-दिस मुड़ल एक रेखा आयल।

गीत—घुरनिहार बाट

लोकधुन: बटगबनी

घुरि आउ हे बटोही, बाट टेरि रहल हे,

गादो तर पएरचिन्ह भोरे-भोर जगल हे।

धूरि ढँकल, गादि भरल,
बाट कहै—घुरि आउ,
दूर नगरक थाकल पएर,
माटि कहै—घुरि आउ।
देहरी खोलि दीप धरल,
माए कहै—घुरि आउ।

गाद ढँकए, बरखा धोअए, चिन्ह ने तइयो मेटए,
जे बाट बिसरल, तकरो ई बाट समेटए।
धूरि-भरल पएर लेल माटिक नरम कोरा,
देहरीक दीप जरैत रहए साँझ-भिनसर-भोरा।

घुरि आउ हे बटोही, बाट टेरि रहल हे,
गादो तर पएरचिन्ह भोरे-भोर जगल हे।

५. अपूर्ण रिंग-बान्हक पहरा

खिस्सा—पुरान रिंग-बान्ह कहियो पूरा नहि भेल, मुदा गामक विश्वास अछि जे अपूर्ण भागपर राति अनाम पहरुआ सभ माटिक बोरा रखैत अछि। बाढ़िक बेर जखन जीवित लोक थाकि जाइत, भोरमे दू-चारि नव बोरा भेटैत। नन्द आरुणि बोरा पर कोनो नाम नहि देखलनि, केवल अँगुरीक पाँच-पाँच गहीर निशान।

गीत—बान्हक पाँच अँगुरी

लोकधुन: बान्ह-मरम्मति पुकार

धरू हो बोरा, हूँ-हो कहि धरू हो,
पाँच अँगुरी मुट्ठी बनि बान्ह पर अड़ू हो।

माटि भरो, बोरा धरो,
धार चढ़ल रे भाई,
पाँच अँगुरी एक संग हो,

बान्ह बचत रे भाई।
नाम नहि हो, काज रहत,
गाम बचत रे भाई।

जीवित थाकए तँ अनाम पहरुआ जागए,
रातिक राखल बोरा भोरे साखी भऽ लागए।
नाम रहौ वा नहि रहौ, काज अटल रहए,
गामक बान्ह सभक बान्ह—धार सुनि कऽ बहए।

धरू हो बोरा, हूँ-हो कहि धरू हो,
पाँच अँगुरी मुट्ठी बनि बान्ह पर अड़ू हो।

६. गवाही-पाथर

खिस्सा—चन्ना गाछी लग एक असामान्य पाथर अछि जे झूठ बाजलापर ठंढ आ सत्य बाजलापर गरम होइत। कचहरीसँ घुरल नन्द आरुणि एक दिन अपन हाथ ओतय रखलनि; पाथर धीरे गरम भेल। तखन अनन्या लिखलक—“सत्यक ताप कागचक मोहरसँ बेसी देर टिकैत अछि।”

गीत—गरम पाथर

लोकधुन: लोकन्याय निर्गुण

राखू हे हाथ, गवाही-पाथर पर राखू हे,
ठण्ढ-गरम केर भाषा मोने-मोन आँकू हे।

झूठ पाथर भारी भेल,
सत्य पाथर तात,
हाथ रखू तँ मोन बुझत,
केकर साँचक बात।
मोहर सुखत, ताप रहत,
सदिखन दिन-रात।

झूठ बजिते पाथर ठण्ढ, बर्फ सन भेल,

साँच बजिते धीरे-धीरे ताप पसरि गेल।
मोहरक स्याही सुखाए, ताप नहि सुखाए,
निर्गुण सुर मे लोकन्याय अपने गबाए।

राखू हे हाथ, गवाही-पाथर पर राखू हे,
ठण्ढ-गरम केर भाषा मोने-मोन आँकू हे।

७. ठूँठपर उगल पात

खिस्सा—चन्ना गाछीक कटायल ठूँठसँ एक पात तखन उगल जहिया अनन्या पहिल बेर पूरा नाम लिखलक। लोक विश्वास करैत अछि जे जकर नाम अधूरा लिखल, ओकर पात आधा खुलैत; जकर नाम पूरा, ओकर पात पूरा। तें गामक नेना सभ नाम लिखबा समय जल्दबाजी नहि करैत।

गीत—पूरा नामक पात

लोकधुन: बाल पराती

लिखू हो नेना, पूरा-पूरा नाम लिखू हो,
आधा आखर पर आधे पात—ई गिरह सिखू हो।

अधकचरा अक्षर नहि लिखब,
पूरा नाम उगाउ,

ठूँठक भीतर हरियर सपना,
धीरे-धीरे जगाउ।
एक पात पर एक जिनगी,
साफ-साफ लिखाउ।

अनन्या लिखलक पूरा नाम, ठूँठ सिहरि उठल,
हरियर सपना पात बनल, भोरक संग फुटल।
आधा नाम, आधा मान—ई नहि चलत आब,
पूरा आखर, पूरा पात—इहए नव हिसाब।

लिखू हो नेना, पूरा-पूरा नाम लिखू हो,

आधा आखर पर आधे पात—ई गिरह सिखू हो।

८. धान रोपबाक गीत

खिस्सा—रोपनीक पहिल दिन सरयू पाँति टेढ़ देखलीह तँ गीतक टेक बदलि देलीह —"पाँति सोझ, हक सोझ।" सभ स्त्री हँसैत-हँसैत दोहरौलनि। खेत सोझ भेल, मुदा गीतक बात मजूरीक हिसाब धरि पहुँचि गेल।

गीत—पाँति सोझ, हक सोझ

लोकधुन: रोपनी

रोपू गे सखी, पाँति सोझ रोपू गे,
धानक संग हकक जड़ि गहींर रोपू गे।

कीचड़मे पएर, हाथमे रोप,
पाँति सोझ कर सखी,
धानक जड़ि जकाँ हक गड़ाउ,
बात न मोड़ सखी।
मेघ बरसत, अन्न भरत,
मजूरी जोड़ सखी।

सरयूक टेक सुनि हँसैत खेत सोझ भेल,
गीतक बात गीत नहि—जीवनक पाठ भेल।
कीचड़ मे झुकल देह, माथ मे सोझ बिचार,
पाँति-पाँति उगत आगाँ अन्नो, अधिकार।

रोपू गे सखी, पाँति सोझ रोपू गे,
धानक संग हकक जड़ि गहींर रोपू गे।

९. नवजातक स्वागत

खिस्सा—एक बेर गाममे बेटी जन्मल आ किछु लोक चुप रहल। अनन्या आ स्त्री-मण्डली सोहरमे नया पद जोड़लक—"बेटी आयल, नामक दीया।" गीत सुनि दुआरपर जे मौन छल,

ओहो ताली बजौलक। तखनसँ जन्मक सोहरमे पुत्र-पुत्री दुनू लेल एके टेक गाओल जाइत अछि।

गीत—नामक दीया

लोकधुन: सोहर

ललना रे, नामक दीया आयल हे,
बेटी हो कि बेटा—आँगन जगमगायल हे।

आँगन आयल नामक दीया,
बेटी हो कि बेटा,
दू अँखिया मे भोर बसल,
कोमल हाथक रेखा।
घरक भाग नहि देह चुनै,
सभ जन्म एक लेखा।

चुप दुआरि पर सोहरक नव पद जखन उठल,
मौनक ताला टूटल, स्वागतक फूल फुटल।
दू अँखिया मे भोर, हथेली मे रेखा-भाग,
जन्म-जन्म एक लेखा—गाबू एहि राग।

ललना रे, नामक दीया आयल हे,
बेटी हो कि बेटा—आँगन जगमगायल हे।

१०. बेटी विदाइ

खिस्सा—विदाइक समय माए केवल रोदन नहि केलनि; बेटीकेँ एक मुट्ठी बीआ, एक पात आ अपन गीत देलनि। कहलीह—“बीआ जकाँ अपन घर बना, पात जकाँ नाम बचा, गीत जकाँ कण्ठ खुला।” समदाउन तें करुण होइतहुँ असहाय नहि।

गीत—बीआ, पात आ गीत

लोकधुन: समदाउन

जो हे बेटी, तीनू थाती नेने जो हे,
बीआ, पात आ गीत—माएक करेज बूझि लो हे।

बीआ नेने जा बेटी,
जहिया माटि भेटत,
पात नेने जा बेटी,
नाम तोहर लिखत।
गीत नेने जा बेटी,
कण्ठ कहियो नहि झुकत।

नोरक संग सीख बहए, आशीषक संग बल,
सासुरक माटि मे रोपिहऽ मायकाक फल।
पात पर नाम लिखिहऽ, कण्ठ झुकए नहि,
समदाउनक करुण सुरो मे हारि छै नहि।

जो हे बेटी, तीनू थाती नेने जो हे,
बीआ, पात आ गीत—माएक करेज बूझि लो हे।

११. मृतकक स्मरण

खिस्सा—प्रत्येक बरख ओहि दिन जखन पुलक छपाक गामक स्मृतिमे घुरैत, लोक चन्ना गाछी लग चारि वस्तु रखैत—जूता, गमछा, कड़ा आ पात। कोनो मूर्ति नहि, कोनो भाषण नहि। अनन्या नाम पढ़ैत, बा “हाजिर” कहैत छथि, नदीक दिशा सँ हवा उत्तर दैत अछि।

गीत—हाजिर नाम

लोकधुन: करुण मर्सिया

राखू हे चारू, जूता-गमछा-कड़ा-पात राखू हे,
मूर्ति नहि, भाषण नहि—'हाजिर' टा भाखू हे।

जूता चुप, गमछा भीजल,
पात कहै—हाजिर,
कड़ा चमकल, माए पुकारल,
राति कहै—हाजिर।
देह नहि, मुदा नाम बचल,

गाम कहै—हाजिर।

बरख-बरख ओही दिन गाछी लग जुटान,
चुप वस्तु सभ बाजि उठए—इहए स्मृति-विधान।
मर्सियाक करुण तालो मे प्रण एकटा गूँजए,
देह गेल, नाम रहल—गाम नहि बिसरए।

राखू हे चारू, जूता-गमछा-कड़ा-पात राखू हे,
मूर्ति नहि, भाषण नहि—'हाजिर' टा भाखू हे।

१२. धानक दूध भरबाक गीत

खिस्सा—धानमे दूध भरैत समय खेतमे तेज शोर, पशुक चराइ आ असावधानी रोकल जाइत। लोक कहैत, ई अन्नक गर्भकाल अछि। स्त्री सभ धीम गीत गबैत खेतक कात सँ गुजरैत, जेना पौधक भीतर बनैत दानाकेँ आशीष दैत।

गीत—धानक गर्भ

लोकधुन: धीम खेत-लोरी

धीरे गे सखी, खेतक कात धीरे हे,
धानक कोखि मे दूध भरै—बाजू मृदु-मीठे हे।

धानक कोखमे दूध भरै,
धीरे बाजू सखी,
हवा नरम, पानि बराबर,
मेड़ सम्हारू सखी।
अगहनक भात एतहि पलै,
आशीष धारू सखी।

शोर नहि, चराइ नहि—ई अन्नक गर्भकाल,
हवा नरम, पानि सम, मेड़क राखू ख्याल।
कात-कात सँ गुजरैत सखी धीम सुर मे गाबए,
अगहनक भातक सपना बालि-बालि मे आबए।

धीरे गे सखी, खेतक कात धीरे हे,
धानक कोखि मे दूध भरै—बाजू मृदु-मीठे हे।

१३. अगिला बीआ बचेनाइ

खिस्सा—सभसँ नीक धान बेचि देबाक लोभ भेल। बा ढेरीसँ अगिला बरखक बीआ अलग केलनि। कहलनि—“आजुक मूल्यसँ काल्हिक जीवन पैघ।” अनन्या बीआक थैलीपर वर्ष, खेत आ स्वाद लिखलक।

गीत—काल्हिक थैली

लोकधुन: बीआ-संरक्षण गीत

बचाउ हे थैली, काल्हिक थैली बचाउ हे,
आजुक भाव पर काल्हिक प्राण नहि लुटाउ हे।

सभ नहि बेचू, किछु बचाउ,
काल्हि खेत पुकारत,
पुरखाक स्वादक छोट थैली,
फेर हरियर धारत।
आजुक पाइ बीति जाएत,
बीआ बरख सँवारत।

लोभ कहलक—सभ बेचू, दाम चढ़ल बेस,
बा कहलनि—बीआ गेल तँ उजड़त देस।
थैली पर बरख, खेत आ स्वादक नाम लिखाएल,
पुरखाक जीह अगिला पीढ़ी धरि पहुँचाएल।

बचाउ हे थैली, काल्हिक थैली बचाउ हे,
आजुक भाव पर काल्हिक प्राण नहि लुटाउ हे।

१४. मृत्यु-शोकक गीत

खिस्सा—मृत्यु भेला पर केवल गुणगान नहि; मृतकक अधूरा काज, परिवारक आवश्यकता आ मृत्युकेँ घेरल अन्यायो कहल जाइत। बिसेसरक स्मरणमे लोक केवल रोइल नहि, श्रमिक सूची पूरा करबाक संकल्प लेलक। शोक कार्य बनि गेल।

गीत—नोरसँ संकल्प

लोकधुन: शोक-विरहा

गनू हे गनू, अधूरा काज गनू हे,
नोरक संग संकल्पक दीप धरू हे।

नोर झरल, नाम उठल,
अधूरा काज गनू,
केवल फूल चढ़ाउ नहि,
परिवारक हाथ धरू।
मृतकक मान तखन बचत,
जखन अन्याय हरू।

गुणगान टा नहि, परिवारक हालो पूछू,
मृत्युकेँ घेरल अन्यायक नामो बूझू।
बिसेसरक स्मरण मे श्रमिक-हकक बात,
फूलक संग हाथ धरब—इहए शोकक साथ।

गनू हे गनू, अधूरा काज गनू हे,
नोरक संग संकल्पक दीप धरू हे।

१५. अरिपन: मौन गीत

खिस्सा—अनन्या अरिपनक गोल रेखा टेढ़ बना देलक। बा मिटौलनि नहि; ओहि टेढ़ रेखाकेँ नदी बना कमलसँ जोड़ि देलनि। कहलनि—“लोककला गलतीकेँ अर्थ देब सिखबैत अछि।” चाउरक पीठारमे जाल, पात, पएर, सूर्य आ चन्द्र एकहि आँगनमे बसल।

गीत—पीठारक रेखा

लोकधुन: अरिपन-मंगल

काढ़ू गे बहिना, पीठारक रेखा काढ़ू गे,
टेढ़ो रेखाकेँ नदी बना अर्थ पर चढ़ाउ गे।

अँगुरी घूमल गोल-गोल,
कमल फुलल बीच,
टेढ़ रेखा नदी बनि गेल,
जाल पकड़लक सींच।
मौन अरिपन गीत लिखै,
आँगन बनल नीच।

अनन्याक टेढ़ रेखा बा नहि मेटओलनि,
कमल सँ जोड़ि ओकरा नदी बनओलनि।
भूलकेँ अरथ दिअ—लोककलाक बानी,
पीठारक मौन गीत मे बाजए सयानी।

काढ़ू गे बहिना, पीठारक रेखा काढ़ू गे,
टेढ़ो रेखाकेँ नदी बना अर्थ पर चढ़ाउ गे।

१६. सासुरक पीड़ा, पति-पत्नी सम्बन्ध आ घरेलू हिंसा

खिस्सा—एक स्त्री गीतमे बारम्बार “दरबाजा बन्द” गबैत रहलीह। समूह बुझि गेल जे ई केवल रूपक नहि। स्त्री सभ ओकरा अकेली नहि छोड़लक, परिवारसँ बात केलक, सुरक्षित ठाम देलक। गारी आ गीत समाजक भीतर छिपल हिंसाक संकेत बनल।

गीत—दरबाजा खोलू

लोकधुन: स्त्री-विरहा

खोलू गे बहिना, भीतरक दरबाजा खोलू गे,
'बन्द-बन्द' गबैत कण्ठक गाँठ खोलू गे।

दरबाजा बन्द नहि राखू,

कण्ठक बात सुनू,
नेहक नामे चोट करब,
ई अन्याय गनू।
बहिनक हाथ बहिन धरत,
भयक गाँठ चुनू।

गीतक भीतर संकेत छल, मण्डली बुझि गेल,
अकेली नहि छोड़ल गेल, हाथ जुड़ि गेल।
नेहक नामे चोट करब अन्याय—गनल गेल,
सुरक्षा-घेरा बनल, भयक ताला खुजि गेल।

खोलू गे बहिना, भीतरक दरबाजा खोलू गे,
'बन्द-बन्द' गबैत कण्ठक गाँठ खोलू गे।

१७. बेटी-पुत्र भेद आ जातिगत अपमान

खिस्सा—विद्यालयक खेलमे एक बच्चाकेँ जातिक कारण पाछाँ राखल गेल आ एक बेटीकेँ कप्तान बनबा सँ रोकल गेल। अनन्या कबड्डीक रेखा मेटा सभकेँ नव पारी देलक। चन्ना गाछीक पात हिलल, जेना गाम कहि रहल हो—नामक आगाँ जाति आ लिंगक देबाल छोट अछि।

गीत—एके पारी

लोकधुन: बाल-कबड्डी

मेटाउ हो नेना, जातिक रेखा मेटाउ हो,
बेटा-बेटी एक्के धूरि मे दौड़ाउ हो।

बेटी दौड़ै, बेटा दौड़ै,
एके धूरि-पथार,
जातिक देबाल पएर सँ मेटू,
खोलू खेलक दुआर।
नाम पुकारू, मान बचाउ,
सभक एक अधिकार।

पाछाँ राखल बालक आगाँ, बेटी बनलि कप्तान,
अनन्याक मेटाओल रेखा—नव खेल-विधान।
चन्ना गाछी ताली देलक, पात-पात डोलल,
एके पारी, एके धूरि—सभक भाग खुजल।

मेटाउ हो नेना, जातिक रेखा मेटाउ हो,
बेटा-बेटी एक्के धूरि मे दौड़ाउ हो।

१८. झिझियाक दीप

खिस्सा—भादवक अन्हारमे छिद्रयुक्त माटिक पात्र भीतर दीप राखि स्त्री सभ नाचैत। लोकविश्वास अछि जे प्रत्येक छेद गामक एक भय अछि, आ भीतरक लौ सभ भयक बीच जीवित साहस। उज्ज्वल झाक कथा पछाति एक नव छेद “काँचक परदा” नामे जोड़ल गेल।

गीत—छेद-छेद उजास

लोकधुन: झिझिया

नाचू गे झिझिया, माथ पर घट नाचू गे,
छेद-छेद अन्हार बिच भीतरक लौ बाँचू गे।

माटिक घटमे दीप जरै,
छेद अनेक अन्हार,
एक छेद रोगक, एक भयक,
एक परदाक मार।
लौ घूमै तँ राति कहै,
जीवित अछि संसार।

एक छेद रोगक, एक भयक, एक परदाक मार,
तइयो घटक भीतर लौ—जीवितक हुंकार।
घूमि-घूमि स्त्री-मण्डली राति केँ नापए,
सय छेदक बीचो उजास कहियो ने काँपए।

नाचू गे झिझिया, माथ पर घट नाचू गे,
छेद-छेद अन्हार बिच भीतरक लौ बाँचू गे।

१९. कबीरक निर्गुण वाणी

खिस्सा—निर्गुण गायनमे जाति, रूप, धन आ पदक बाहरी चिन्ह प्रश्नक भीतर अबैत। एक राति गायक पूछलक—“जकर नाम रजिस्टरमे नहि, आत्मा ओकर कम?” समूह मौन भेल, फेर टेक उठल—“साँस सभक एक।”

गीत—साँस सभक एक

लोकधुन: निर्गुण

गाबू हे निर्गुण, राति गहींर गाबू हे,
कागच-देहक पार साँसक एकता ध्याबू हे।

कागच अलग, देह अलग,
साँस सभक एक,
जाति-पदक देबाल टूटत,
जखन खुलत विवेक।
नाम कटे तँ सत्य नहि कटै,
मनुख एकहि लेख।

गायक पुछलक—'नाम कटल तँ आत्मा कम?'
सभा मौन भेल, फेर टेक उठल हरदम।
जाति-पदक देबाल ढहल विवेक-जल-स्नान,
निर्गुणक एक्के तान मे सभ मनुख समान।

गाबू हे निर्गुण, राति गहींर गाबू हे,
कागच-देहक पार साँसक एकता ध्याबू हे।

२०. बाल-खेल आ कबड्डी

खिस्सा—चन्ना गाछीक बच्चा सभ कबड्डी खेलैत काल प्रत्येक पारीमे एक भूला नाम पुकारैत। सीमा पार करब साहस, घुरि आबब जिम्मेदारी, साथी बचाबब सामूहिकता। खेल इतिहासक पाठ बनि गेल।

गीत—नामक पारी

लोकधुन: बाल-कबड्डी

दौड़ू हो नेना, भूला नामक पारी हो,
सीमा पार, घुरि आएब—दुनू जिम्मेदारी हो।

कबड्डी-कबड्डी नाम लऽ दौड़ू,
रेखा पार करू,
साथी खसल तँ हाथ बढ़ाउ,
संग-संग घुरू।
जीत तखन जखन भूला नाम,
गाममे फेर धरू।

हरेक पारी मे एक बिसरल नाम पुकारल जाए,
खसल साथीकेँ हाथ बढ़ा संगे घुराओल जाए।
साहस-जिम्मेदारी-संग—तीनू खेल-पाठ,
भूला नाम घुरल गाम—इहए जीतक ठाठ।

दौड़ू हो नेना, भूला नामक पारी हो,
सीमा पार, घुरि आएब—दुनू जिम्मेदारी हो।

२१. कचहरी, तारीख आ लोकन्याय

खिस्सा—कचहरीक प्रत्येक तारीख पछाति नन्द आरुणि चन्ना गाछी लग एक छोट पाथर रखैत। पाथरक पाँति लम्बा भऽ गेल। अनन्या पाथरपर केवल तारीख नहि, ओहि बीच जीवित परिवारक काज लिखलक—अन्न, उपचार, पढ़ाइ, शोक। लोकन्याय प्रतीक्षाक मानवीय मूल्य गनलक।

गीत—तारीखक पाथर

लोकधुन: कचहरी बिरहा

राखू हे पाथर, तारीख-तारीख राखू हे,
पाथरक पाँती मे जीवितक दुख आँकू हे।

एक तारीख, एक पाथर,
पाँति बढ़ल अपार,
कागच कहै—फेर अइह,
घर कहै—कतेक बार?
न्याय गनू दिन नहि केवल,
जीवितक दु:खक भार।

कचहरी सँ घुरैत आरुणि एक-एक पाथर धरथि,
अनन्या ओहि पर बीचक जिनगी लिखथि।
'फेर अइह'—कागच कहए; घर पूछए—'कहिया?'
पाथर-पाँती गनि-गनि न्यायो सोचए—'एहिना?'

राखू हे पाथर, तारीख-तारीख राखू हे,
पाथरक पाँती मे जीवितक दुख आँकू हे।

२२. नाम-रक्षा

खिस्सा—गामक बच्चा सभ "नाम-पहरा" बनौलक। जकर परिवार परदेश, बाढ़ि, दुर्घटना वा कागचक भूलसँ अदृश्य भऽ सकैत, ओकर पूरा नाम, घर, काज आ स्मृति पातपर लिखल जाइत। नामक संग व्यक्ति कैँ संख्या नहि, कथा रूपैँ राखल गेल।

गीत—नाम-पहरा

लोकधुन: जागरण गीत

जागू हो जागू, नाम-पहरा जागू हो,
पात-पाथर-कण्ठ तीनू ठाम नाम राखू हो।

पात पर नाम, पाथर पर काम,

कण्ठमे ओकर कथा,
कागच काटै, हम फेर लिखब,
नहि हरत पहिचान।
राति भरि ई पहरा जागत,
नाम रहत सम्मान।

जे परिवार अदृश्य भऽ सकए—बाढ़ि, भूल, परदेस,
ओकर नाम-घर-काज लिखू, राखू स्मृति-शेष।
कागच काटत, हम फेर लिखब—नेनाक प्रण,
राति भरि पहरा जागत, नहि हरत कोनो जन।

जागू हो जागू, नाम-पहरा जागू हो,
पात-पाथर-कण्ठ तीनू ठाम नाम राखू हो।

२३. डिजिटल ठगीक चेतावनी

खिस्सा—उज्ज्वल झाक त्रासदी पछाति गाममे नया लोकगीत बनल। विद्यालय, हाट आ परदेशी परिवार सभ एके टेक गबैत—नकली कॉल वा डरावन सन्देश आए तँ अकेले निर्णय नहि, पहिने ककरो विश्वस्त लोककेँ कहू। लाज अपराधीक, पीड़ितक नहि।

गीत—काँचक परदाक गोहि

लोकधुन: चेतावनी झिझिया

चिन्हू हो चिन्हू, काँचक गोहि चिन्हू हो,
डरक दाँत देखिते घरकेँ बजा लिअ हो।

काँचक परदा गोहि बनै,
डरक दाँत देखाबै,
अकेला नहि, संग बजाउ,
घरकेँ बात बताबै।
लाज अपराधीक माथ रहै,
साँच उजास जगाबै।

उज्ज्वलक कथा पछाति गाम-गाम ई टेक,
नकली कॉल, डरौना सन्देस—अकेले निर्णय नहि एक।
विद्यालय-हाट-परदेस सभ ठाम गूँजए,
लाज अपराधीक माथ, पीड़ितक नहि—बूझए।

चिन्हू हो चिन्हू, काँचक गोहि चिन्हू हो,
डरक दाँत देखिते घरकँ बजा लिअ हो।

२४. गाछ, जल आ पर्यावरणक पहरा

खिस्सा—चन्ना गाछी कटला पछाति बच्चा सभ प्रत्येक नवजातक नामे एक गाछ लगब शुरू केलक। पोखरि, डबरा, चौर, बान्ह आ पक्षीक ठामक नक्षा बनाओल गेल। नन्द आरुणि कहला—“विरासत केवल पुरान वस्तु बचेनाइ नहि; अगिला पीढ़ी लेल साँस बचेनाइ।”

गीत—एक नाम, एक गाछ

लोकधुन: हरियर पराती

रोपू हो रोपू, नाम-नाम पर रोपू हो,
नवजातक नामे गाछ, गाछक नामे पात हो।

एक नाम पर एक गाछ,
एक गाछ पर पात,
एक पोखरि पर सौ पाँखि,
एक बान्ह पर थाति।
माटि-जल जँ जीवित रहत,
जीवित रहत सभ बाति।

गाछी कटलाक बाद नेना ई प्रण ठानल,
पोखरि-डबरा-चौर-बान्हक नक्शा बनाओल।
एक पोखरि पर सय पाँखि, एक गाछ पर छाह,
माटि-जल जीवित रहत तँ जीवित सभ राह।

रोपू हो रोपू, नाम-नाम पर रोपू हो,

नवजातक नामे गाछ, गाछक नामे पात हो।

एक सय खिस्सा आ गीतमे गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृति कोनो संग्रहालयक निर्जीव वस्तु नहि, अपितु प्रतिदिन बदलैत, प्रश्न करैत, श्रम करैत, हँसैत, रोइत, न्याय माँगैत आ अगिला पीढ़ीकेँ अपन स्वर सौंपैत जीवित परम्परा रूपमे उपस्थित अछि। प्रत्येक गीत अवसर संग गाओल जाए, टेक दोहराओल जाए, स्थानीय गायक अपन पद जोड़थि आ प्रत्येक खिस्सा अगिला कथाकारक कण्ठमे नव रूप पाबए—एहने लोक-संस्कृतिक स्वाभाविक जीवन अछि

समर्पण

ओइ अनाम लोक सभकेँ, जिनकर नाम शिलापर नहि लिखायल, मुदा जिनकर स्वर पानि, पात आ कागचमे अखनो बहैत अछि।

ओइ सूचनादाता सभकेँ, जिनकर चेहरा कतहु दर्ज नहि, मुदा जिनकर सत्य पाथरो काटि बहराइत अछि।

जिनकर परिवार डेरायल रहल, जिनकर नोकरी आ जान दुनू गेल, जिनकर घर सुड्डाह भऽ गेल— तैयो जे बजला। तिनका सभकेँ समर्पित।

"सत्य एकटा बीज थीक— चाहे कतेको मोट पाथरक नीचाँ दबि जाय एक दिन फुटिते अछि। " —गढ़ नारिकेलक लोकक विश्वास।

"जे सत्य देखैत अछि आ चुप रहैत अछि, ओकर मृत्यु दुइ बेर होइत अछि— एक बेर देहक, एक बेर आत्माक। " —गढ़ नारिकेलक एकटा पुरान कहबी।

"जे गाम अपन इतिहास बिसरि जाइत अछि, ओतुक्का नारिकेल गाछ फल देब बन्द कऽ दैत अछि। " —गढ़ नारिकेलक एकटा आर पुरान कहबी।

नारिकेल गाछक बजनाइ, मृतक दर्शन, छाहक अनुपस्थिति— ई मिथिलाक लोक-चेतनाक काव्यात्मक रूपक थीक। — गढ़ नारिकेलक लोकक विश्वास।

पोथीक मुँहसँ

(गढ़ नारिकेलक लोक-स्वर)

१.

पानि बजै छै, गाछ सुनै छै, पात सर्र-सर्र नाम लिखै छै, मुदा शिला चुप रहै छै।

२.

जे डूमल, से बाजल; जे बाँचल, से बिसरल; आ नदी दुनूकेँ अपन पेटमे राखि लेलक।

३.

नारिकेल गाछ जखन बजै छै, तखन बुझिहऽ— गामक कोनो मुर्दा अपन एड़ी ताकि रहल अछि।

४.

सत्य बीआ थीक, झूठ पाथर; पाथर भरि राति भारी, बीआ भोरे-भोर हरियर।

५.

नाम बिनु भूत खेलमे नहि टिकै छै, नाम बिनु मनुक्खो इतिहासमे नहि टिकै छै।

६.

गज पकड़ै ग्राहकेँ, ग्राह पकड़ै बच्चाकेँ, बच्चा पकड़ै ओहि हाथकेँ जे शिलापर नाम नहि लिखलक।

७.

जे देखि कऽ चुप रहल, ओकर मृत्यु दू बेर; जे देखि कऽ बजल, ओकर नाम दू बेर।

अध्याय १

चन्ना गाछीक कबड्डी

जतय जीवित चुप रहै छै, ओतय भूत सभ कबड्डी सँ मुकदमा लड़ै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: भोरक पहिल पारी

लोकधुन: फाग-कबड्डी धुन

खेलू हे, भोरक पहिल पारी खेलू हे,
चन्ना गाछी तर नामक रखबारी खेलू हे।

चान उतरि गेल गाछी सँ, पूब दिस लाली,
भूतक खेलक बीच सुनायल कोइलीक खुशहाली।
कबड्डी-कबड्डी बाजि कहू—नाम बचत आइ,
एक पारी स्मृतिक, दोसर साहसक भाइ।

पात-पात पर ओस लिखै—भोर नहि हारै,
गोहि जते गहींर रहए, सूरुज जलपर तारै।
पहिल पारी आशाक हो, संगमे पूरा गाम,
चन्ना गाछीक माटिसँ उठत न्याय केर नाम।

ओस-भीजल माटि महकै, फागक हवा डोलै,
भूतो-प्रेतो संग बैसल, कोइली मुँह खोलै।
साँस बान्हि जे दौड़त, से नामक थाती घोरत,
हारल-जीतल दुनू मिलि आशाक अबीर छोड़त।

❖

भूत होइए कारी, प्रेत उज्जर, राकश- लहाशक खोरनाठी जे गलतीसँ नै जड़ल, बच्चाकेँ गाड़ल जाइए आ ओ बनि जाइए लोथ। चन्ना गाछी। भूत आ प्रेतक बीच कबड्डी, राकश करैए इजोर आ लोथ अछि दर्शक। पीपरक गाछपर ब्रह्मा। पोखड़िमे पनिडुब्बी, बड़का केशबाली, अथाह पानिमे पएरमे ओझड़ा जाइए ओकर झोंटा, आ काहि काटि कऽ मरि जाइए लोक।

भूत, प्रेत, राकश, लोथ मृत्युक बाद, अकालमृत्युक बाद कहू। तहिना पीपरक गाछक ब्रह्मा, आ पानिमे पनिडुब्बीक झोंटामे ओझरायल लोकक आत्मा। गढ़ नारिकेलमे बहुत रास अकाल मृत्यु भेल छै। भूत प्रेतकेँ पएर रोपल नै होइ छै पृथ्वीपर। पएर पाछाँ मुँहे होइ छै? सभटा झूठ। एन-मेन लोके सन होइ छै, खाली लागत जे उपरे-ऊपर चलि रहल छै। बूझि गेलौं- मून

वाक सन। नै मून वाक तँ लागत जेना ससरिकेँ चलि रहल अछि, साँप जकाँ, ई तँ चलबो करैए एन-मेन लोक सन, खाली कने जमीनकेँ छोड़ैत ऊपर।

हक्कल डाइन सभ सेहो, गाछपर चढ़ि छौंकी लऽ सवारी करैए, लऽ कऽ उड़ि जाइए। भोरमे ओत्तै छोड़ि चलि जाइए। ओकरा सभ लग बहुत रास आत्मा रहै छै। ओकरासँ खूब काज टहल करबैए, मुदा सुनै छिऐ जखन उमेर बढ़ै छै आ पाबर कम होइ छै तखन ओकरा सभकेँ खोराशि नै दऽ पाबैए तखन ओकरे खखोड़ि-खखोड़ि खाय लागै छै ई आत्मा सभ।

देखि रहल छी चारू कात पानि।

बनि रहल अछि एशियाक सभसँ पैघ सड़क पुल। लोहा-छड़, बड़का-बड़का पाया, आ ओइपर चढ़ल जोन-मजदूर, माथपर टोकड़ी लेने। सीमेण्ट, गिट्टी चारू कात... आ एक गोटेक पएर हुसै छै.. आ खसैत अछि चकरघिन्नी खाइत... गोहि सभक बीच बनै छै जलसमाधि। फेर किछु दिनमे दोसर, फेर तेसर.... कइएक सय जोन-मजदूरक जलसमाधि..

चलैत रहलै सभटा खेल संगे-संग।

किछुएकेँ मृत्युक रूपमे देखाओल गेलै, खाली तीसटा। आ बेसी गेलै जलसमाधिक खातामे, आ कएक दशक बाद हमहूँ ओही खातामे छी। कालक्रममे पएर हुसैत अछि, ओत्तै.. आ खसैत छी चकरघिन्नी खाइत... गोहि सभक बीच बनैत अछि हमर जलसमाधि। गोहि सभ चिबा गेल हड्डी पर्यन्त। से हम सभ गोटे समाधि प्राप्त केलौं।

बिज्जी पहरेदार छलै तँ गहुमन किछु नै बिगाड़ि सकलै।

मुदा एतुक्का पहरेदार छलै मनुक्ख।

आ इनारमे फेकल ढेपाक अबाज जकाँ कने थम्हि कऽ आबि रहल छै अबाज, छपाक।

इनार छथि गंगा धार, आ ढेपा बनि खसि रहल अछि सभ योगी, जेना जलसमाधि लेबा लेल आयल हुअए दूर बोन, पहाड़ आ बाढ़िक बाद बचल रेतक खेतसँ। जेना जलसमाधि लेबाक धरफड़ी होइ ओकरा सभमे। सन्न- सन्न कऽ रहल छै कान। चलै-चली गढ़ नारिकेलक लोक सभ लग। ओकरो सभक कान सन्न-सन्न कऽ रहल छै। बेरा-बेरी। एका-एकी। कहियो ककरो तँ कहियो ककरो।

जेना कोनो आत्मा मुक्ति पाबि जायत सुनि कऽ ई खिस्सा।

जेना गढ़ नारिकेलक लोक भऽ जायत हल्लुक सुना कऽ ई खिस्सा।

मुदा स्वर अस्पष्ट अछि।

जलसमाधि.. गोहि..

बिज्जी... गहुमन...

ई जोड़ा बना कऽ कोन खिस्सा सुनऽ-कहऽ चाहैए।

बिज्जी आ गहुमन तँ भेल गामक खिस्सा...

मुदा ई गंगाजी पर बनि रहल एशियाक सभसँ बड़का पुल?

गढ़ नारिकेलसँ तँ ई बड्ड दूर अछि, कोनो नवका खिस्सा बुझा रहल अछि।

तँ ई आत्मा कतेक दिनुका खिस्सा सुनाओत? कतेक सय सालक। सय सालक तँ अवश्ये। आ तखन तँ ई सय सालसँ मुक्तिक आसमे अछि। आकि बेसिये दिनसँ। कोन खिस्सा कहऽ-सुनऽ चाहैए ई आत्मा। जलसमाधि भेटि गेलै तँ मुक्त किए नै भेलौं। बिज्जी जँ गहुमनसँ बचा लेलकै तँ तकर माने कोनो अदृश्य शक्ति संग देलकै। ... मुदा वएह शक्ति ओकरा गोहिक मध्य जलसमाधि कोना लेबऽ देलकै?

आकि ई एकटा नै दूटा खिस्सा अछि, आकि ओहूसँ बेशी, कएकटा खिस्सा..

देह सिम्मरक फूल सन हल्लुक भऽ गेल अछि। देह अछिये कतऽ, आ दू-तीन टा खिस्सा मिज्झर भऽ गेल अछि, दू-तीनटा कालखण्ड आ भूखण्डक संग। देखू की सुनै छी आ की सुनबै छी.. फरिछाइए खिस्सा कालखण्ड आ भूखण्डक संग, आकि रहैए मिज्झर अन्त धरि।

१

चन्ना गाछीमे ओहि राति कबड्डी शुरू भेल तँ पहिने ककरो नहि बुझा पड़ल जे ई खेल अछि कि मुकदमा। भूत सभ गोल घेरा बना कऽ ठाढ़ छल, प्रेत सभ उज्जर धुआँ जेकाँ डारि-डारि पर लटकल, राकश सभ अपन नान्हिटा देहसँ एहन चानी सन इजोर फेकैत जे पातक पाछाँ लुकायल लोथो आँखि मिचमिचा कऽ देखि सकै। पनिडुब्बी पोखरिक पानि छोड़ि गाछी धरि आबि गेल छलि; ओकर झोँटा माटिपर नहि, हावामे घिसियाइत छल, जेना कोनो कारी नदी अपन धार बिसरि कऽ गाछीमे चलि कऽ आबि गेल हो। पीपरक गाछक ब्रह्मा चारि मुखसँ चारि दिशा ताकैत छलाह, मुदा एक्को मुखसँ मंत्र नहि निकलैत छल। मंत्रक ठाम पर एके स्वर उठैत-गिरैत छल — कबड्डी... कबड्डी... कबड्डी।

गढ़ नारिकेलमे कबड्डी मनुक्खो खेलैत छल, मुदा भूतक कबड्डी अलग होइत अछि। मनुक्ख धरती छुबैत अछि; भूत धरतीक स्मृति। मनुक्ख साँस रोकि कऽ बाजैत अछि; भूत साँस बिनु सदिखन बाजि सकैत अछि। मनुक्ख सीमा लाँघैत अछि; भूत काल लाँघैत अछि। एक बेर

जे भूत विपक्षी पारीमे घुसल, ओ १८८५ छू कऽ १९३४ मे निकलैत, १९७७ पर पएर राखैत, २०२६ केर मोबाइल-टावरक लाल बत्ती छूबि कऽ फेर चन्ना गाछीमे घुरि अबैत। आ तखन ओकरा धऽ लेब कठिन नहि, असम्भव होइत, किएक तँ ओकर देह एखन-ओखन, सभ ठाम एके बेर रहैत।

बूढ़बा भूत खेलक बड़का निर्णायक छलाह। बारह सय बरखसँ ओ एक्के डारिपर बैसल छलाह, तेँ हुनकर निर्णय पर केओ बहस नहि करैत। जे भूत मुक्तिक नाम सुनिते थरथरा जाइत हो, से न्यायमे अजीबे धीरज राखैत अछि। ओहि राति मुदा बूढ़बा भूतक आँखि उज्जर नहि, हरियर देखाइत छल — जेना कमला-बलानक पानि भीतरसँ हुनकर आँखि भरि रहल हो। हुलासी, जे बिनु हाथक भूत छली, अपन डाँरसँ ऊपरक देह लऽ कऽ घूमैत-घूमैत सीमा चिन्ह दैत छली। जखन कोनो भूत सीमा पार करैत, ओ आँखिसँ इशारा करैत; आँखि हुनकर हाथ छल।

खेलक पहिल पारीमे प्रेत सभक दल उतरलक। उज्जर देह, पाछाँ ससरैत उजास। ओ सभ गाबय लगल — कबड्डी-कबड्डी — मुदा तेसर चक्कर पर स्वर बदलि गेल। ‘जल... जल... जल...’ ओ सभकेँ लगल, ई साँस टूटबाक आवाज अछि। मुदा भूतकेँ साँस कोना टूटत? फेर स्वर दोसर बेर उठल — ‘समाधि... समाधि...’। बूढ़बा भूत डारिसँ उतरि आएलाह। गाछीमे सन्नाटा पसरि गेल। दूर कतओ पानि हिलल, मुदा चन्ना गाछी लग कोनो धार नहि छल।

पनिडुब्बी अपन झोँटा झटकलक। ओकर झोँटा सँ पोखरिक पानि नहि, गंगाक गन्ध झरल। ओ कहलक — ‘ई गामक पोखरिक आवाज नहि अछि।’ राकश सभक चानी-इजोर कारी पड़ि गेल। लोथ, जे सदिखन दर्शक रहैत छल, पहिल बेर अपन आधा-खुजल मुँह पूर्ण खोलि देलक। ओकरा मुँहसँ धुआँ नहि, सीमेण्टक धूर बहरायल। आ धूर भीतरसँ लोहेक छड़ जेकाँ पातर-पातर स्वर — छपाक... छपाक...

छपाक।

ओही छपाकक पाछाँ पुल बनि रहल छल। एशियाक सभसँ पैघ कहाओल जायबला सड़क-पुल। लोहाक जाल, बड़का पाया, गंगा काती खसल सीमेण्टक बोरा, माथ पर टोकड़ी लेने जोन-मजदूर, जिनकर नाम ठेकेदारक रजिस्टरमे कहियो पूरा नहि चढ़ल। ककरो नाम ‘राम’ छल तँ रजिस्टरमे ‘रम’ लिखल। ककरो नाम ‘मंगल’ छल तँ ‘मंगला’। ककरो बाप केर नाम गायब। ककरो गाम केर नाम बदली। ककरो उमेर उन्नैससँ पैंतालीस बनि गेल। कागचमे लोक जते बदलि जाइत अछि, नदीमे ओते नहि बदलैत। नदी मरयबला सभकेँ ओकर असल नामसँ चिन्हैत अछि।

नन्द आरुणि ओहि पुल पर कनिष्ठ अभियन्ता नहि, दरअसल एकटा परेशान साक्षी छलाह। हुनकर माथ पर हेलमेट छल, जे भीतरसँ खाली बाजैत छल। जे दिन ओ पहिल बेर साइट पर पहुँचलाह, विदेशी ठेकेदारक लोक हुनका नक्शा देखौलक। नक्शा पर नदी नीली रेखा छल, मजदूर गोल बिन्दु, जोखिम लाल त्रिभुज, आ मृत्यु केवल फुटनोट। नन्द नक्शा देखैत रहलाह। हुनका लगल, नीली रेखा बीच-बीचमे फड़कि रहल अछि। जखन ओ झुकि कऽ नीकसँ देखलाह, ओ रेखा नहि, गंगाक भीतर तैरैत मजदूरक धोती छल।

विदेशी कम्पनीक साइट-मुखिया एडवर्ड ब्रूमक फोटो सभ ठाम लगल छल — मुस्की दैत, हेलमेट पहिरने, भारतीय बालकक माथ सहलाबैत। ओहि फोटो केर नीचाँ लिखल छल — ‘मानव गरिमा सहित विकास’। मजदूर सभ अंग्रेजी नहि पढ़ैत छल, मुदा फोटो देखैत छल आ सोचैत छल जे शायद ई लोक सभक मालिक अछि। नन्द पढ़ि सकैत छलाह। हुनका ‘गरिमा’ शब्द पर सदिखन खटकल होइत। गरिमा यदि होइत, तँ रातिक शिफ्टमे सुरक्षा-जाल किएक फाटल? गरिमा यदि होइत, तँ गिरेबला लोकक देह खोजबाक पूर्वही रिपोर्ट किएक बनि जाइत?

पहिल छपाक एक सोमदिन भेल। दुपहरिया बाद, जखन पानि पर धूप लोहेक छड़ जेकाँ चमकि रहल छल। जोन-मजदूर बिसेसर पासवान पाया पर चढ़ल छल। ओकर माथ पर गिट्टी भरल टोकड़ी, पएरमे घिस्सल चप्पल। नन्द दूरसँ चिचिआएलाह — ‘सुरक्षा-बेल्ट लगाउ।’ बिसेसर सुनलक कि नहि, ई कोनो नहि कहि सकल। ओ घुरि कऽ हँसल, जेना कहि रहल हो — ‘बाबू, बेल्ट पेट भरैत अछि?’ तखने छड़ पर राखल ओकर पएर हुसल। ओ चकरघिन्नी खा कऽ गिरल। लोकक आँखि देखलक — देह पानिमे पड़ल। गोहि सभक आँखि देखलक — एकटा नाम पानिमे उतरि गेल।

गंगा ऊपरसँ शांत रहल। पाँच साँसक बाद एकटा गोल भँवर उठल। ताहि भँवरमे बिसेसरक हाथ देखाइ देलक, फेर टोकड़ी, फेर ओकर देहक अंश। गोहि सभ ओहि दिन भूखल छल कि व्यवस्था हुनका निमन्त्रण देने छल, ई बुझब कठिन। मुदा पानि पर बहुत देर धरि गेरुआ फेन तैरैत रहल। साइटक बाबू रजिस्टर खोललक। ओहिमे लिखलक — ‘कार्यस्थल छोड़ि अनुपस्थित।’ नन्द ओकर हाथ पकड़ि लेलाह। बाबू हँसल — ‘सर, आदेश ऊपरसँ अछि। मृत लिखब तँ काम रुकत।’

राति ओही बिसेसर चन्ना गाछीमे पहुँचल। ओकर देह पूर्ण नहि छल। देहक जे हिस्सा गोहि सभ चिबा लेने छल, ओहि जगह पानि भरल छल। भूत सभ खेल रोकि देलक। बिसेसर चारू दिस तकलक आ बजल — ‘हम गढ़ नारिकेलक नहि छी।’ बूढ़बा भूत कहलथिन — ‘अकाल

मृत्यु जतय पहुँचैत अछि, ओहिठाम गाम बनि जाइत अछि।' बिसेसर कहलक — 'हमर नाम रजिस्टरमे नहि अछि।' ई सुनिते हुलासी करेजा-फाट स्वरमे हँसि पड़ली — 'रजिस्टरमे नाम नहि अछि, तैँ तँ तूँ एतय आबि सकलह।'

ओहि राति कबड्डी फेर शुरू भेल, मुदा खेलमे नब नियम लगल। जे भूत विपक्षी पारीमे जाए, ओकरा एकटा नाम बचा कऽ घुरय पड़त। पहिल भूत गेल — 'बिसेसर पासवान'। दोसर गेल — 'सलामत अंसारी'। तेसर — 'गोपी महतो'। चारिम — 'रजनू मंडल'। नाम सभ हावामे उठल, पात पर अटकल, फेर नारिकेलक तना दिस सरकल। गढ़ नारिकेलमे नारिकेल गाछ कम छल, मुदा जे छल, ओ नाम सुनि कऽ काँपैत नहि; ओ नाम पीइत छल।

गढ़ नारिकेलक गाम बलानक दहिन कात छल, मुदा दहिन-बामक निर्णय नदी करैत अछि, मनुक्ख नहि। जखन कमला बाढ़ि आनैत, तखन गाम बाम भऽ जाइत; जखन बलान शांत बहैत, तखन फेर दहिन। सभागाछीक चतरल गाछ सभक छाह ओहि गाम धरि पहुँचैत छल। जे वर-वधू सौराठक गाछतर मिलैत, हुनकर वंशक कोनो-ने-कोनो बच्चा बादमे गढ़ नारिकेलक माटि पर पएर राखैत।

मुदा बाढ़ि आयलाक बाद छाह कटि गेल। गाछ सुखा गेल। रेत गामक आँगन धरि चढ़ि आयल। बालक सभ राहड़ि खेतमे खटाँससँ नहि, अपन पएर नीचाँ धँसैत रेतसँ डरऽ लागल। भूतक कबड्डीमे ई सभ दृश्य सीमा-रेखा बनैत। हुलासी जखन दहिन हाथक ठाम आँखि उठबैत, तखन पिपराघाटक धार चमकि उठैत। बूढ़बा भूत जखन 'आउट' कहैत, तखन झंझारपुरक उजरल गाछी पर काग उड़ैत। लोथ जखन ताली बजब चाहैत, ओकरा आधा हाथसँ सीमेण्ट झरैत। आ पनिडुब्बी, जकर झोँटा पोखरिक बच्चा पकड़ैत छल, आब गंगाक जोन-मजदूरक नाम सँ ओझरायल रहैत। ओ कहैत — 'हम पानिमे खिंचैत छी, मुदा ई लोक पानिमे धकेलैत अछि।'

नन्दक घर ओहि राति गढ़ नारिकेलमे नहि, पुलक अस्थायी कैम्पमे छल। मुदा हुनकर सपना गाममे चलैत छल। सपनामे ओ अपन बाबूजीक पुरान कथा सुनैत — लत्तड़ ठाकुरक घरमे जखन कलितक जन्म भेल छल, तखन आँगनक ऊपर पीपरक पात उनटा लटकल। दाई कहने छलि, 'ई बच्चा खूब दूर देखत।' मुदा दूर देखब अभिशाप होइत अछि। जे दूर देखैत अछि, से लग्गेक झूठ अनठा नहि कऽ सकैत। नन्द शायद कलितक ओहि दूर-दृष्टिक अन्तिम सन्तान छलाह। हुनका पानिमे खसल लोकक भविष्य देखाइ पड़ैत छल — गामक विधवा, बिनु नामक

मुआवजा, अदालतक बरामदा, ओहिठाम चाह बेचैत बच्चा, आ एक दिन डिजिटल परदा पर चमकैत ओहि बच्चाक नाति, जे कहत — 'आपके खिलाफ डिजिटल अरेस्ट वारंट है।'

एहि भविष्यक दृश्य हुनका तखन असम्भव लगल। डिजिटल अरेस्ट? म्यूल अकाउण्ट? हांगकांग? सिग्नल? ओहि समय नन्दक जेबमे छोट डायरी छल, मोबाइल नहि। मुदा गढ़ नारिकेलक भूत सभ समयक सीमासँ बँधल नहि। चन्ना गाछीक खेलमे भविष्य पहिनेसँ घुसि गेल छल। एक दुबला युवक, जे एखनो जन्मलो नहि लेने छल, पातक पाछाँ काँपि रहल छल। ओकर नाम उज्ज्वल झा होएत। ओ नदीमे नहि, स्क्रीनमे डूबत। ओकरा गोहि नहि, अंक खाएत — हारल रकम, ब्याज, धमकी, डाउनलोड कएल ऐप, रातिक कॉल, घरक लाज। भूत सभ ओकरा देखलक, मुदा ओकरा छू नहि सकल, किएक तँ एखन ओकर मृत्यु बनल नहि छल।

बूढ़बा भूत एहि भविष्य-दृश्य पर आँखि झाँपि लेलाह। ओ बहुत मृत्यु देखल छलाह, मुदा जे मृत्यु देह बिनु आबि रहल छल, ओकरा देखब कठिन छल। हुलासी पूछली — 'ई के अछि?' पीपरक ब्रह्मा चारि मुखसँ चारि उत्तर देलथिन, आ चारू झूठ निकलल। पनिडुब्बी मात्र बजली — 'ई नव जलसमाधि अछि। पानि बिनु।'

पुल पर दोसर छपाक पन्द्रह दिन बाद भेल। एहि बेर मरयबला मुसहरिनक बेटा छल — नाबालिग, मुदा रजिस्टरमे अट्ठाइस बरख। ओकर माय ओकरा साइट पर छोड़ैत कहने छली — 'दिन भर काज करिह, साँझे जल्दी घुरिह।' साँझे ओ नहि घुरल। ठेकेदारक मुंशी कहलक — 'भागि गेल।' माय विश्वास नहि केलक। ओ गंगा कात बैसि राति भरि नाम पुकारैत रहलि। पानि सँ उत्तर नहि आयल। मुदा चन्ना गाछीमे ओहि राति भूतक कबड्डीमे एक नव खिलाड़ी उतरल, माथ पर अदृश्य टोकड़ी लेने। ओकरा अपन नाम पूरा मोन नहि छल। ओ कहलक — 'माय हमरा छोटू कहैत छलि।'

छोटूकेँ नाम देब जरूरी छल। बिनु नाम भूत खेलमे टिकैत नहि। बूढ़बा भूत ओकर माथ पर हाथ रखबाक प्रयास केलाह, मुदा हाथ देहसँ एक अंगुर ऊपर रहि गेल। ओ कहलथिन — 'तोहर नाम एखन छोटू अछि; जखन धरती पर तोहर असल नाम भेटत, तखन बदलि देब।' चन्ना गाछीमे सभ सहमति देलक। लोथ ताली बजेलक। ओकर तालीमे पाथरक आवाज छल।

नन्द एहि दोसर मृत्यु पर रिपोर्ट बनौलाह। रिपोर्टमे लिखल — 'सुरक्षा-व्यवस्था अपर्याप्त, अल्पवयस्क मजदूरक प्रयोग, शव बरामद नहि, ठेकेदारक दायित्व।' ओ रिपोर्ट ऊपर गेल। ऊपरसँ लाल पेंसिलमे शब्द कटि कऽ घुरि आएल। 'अल्पवयस्क' हटाओल गेल। 'शव' हटाओल गेल।

'

दायित्व' हटाओल गेल। बचल — 'मजदूर अनुपस्थित'। नन्द ओ कागच देखि कऽ राति भरि बिछान पर बैसल रहलाह। हुनका लगल कागचक कटायल शब्द सभ छोट-छोट माछ बनि कऽ टेबल पर फुदकि रहल अछि। ओ सभ पानि खोजि रहल अछि। एहि बीच विदेशी कम्पनीक दिल्ली दफ्तरमे बैसकी भेल। एडवर्ड ब्रूम विडियो पर आयल। ओकर पाछाँ लकड़ीक देबाल पर पुरस्कार सजल छल। ओ कहलक — 'इंडिया प्रोजेक्ट इज फ्लैगशिप।'

दुभाषिया अनुवाद केलक — 'भारत परियोजना कम्पनीक गौरव अछि।' साइट-मुखिया रिपोर्ट देलक — 'मृत्यु नियंत्रित संख्यामे अछि।' नन्दकेँ ओ वाक्य सुनिते उल्टी सन भेल। मृत्यु संख्यामे नियंत्रित? मृत्युकेँ के नियंत्रित करैत अछि — डॉक्टर, देवता, कि ठेकेदार? बैसकीक अन्तमे ब्रूम कहलक — 'अगिला महीना हार्वर्डमे हम एथिक्स पर बोलब। भारतक एहि पुलक उदाहरण देब।'

नन्द नोटबुक बन्द कऽ देलाह। हुनका बुझाइ गेल, संसारमे सभसँ पैघ पुल ओ नहि होइत जे नदी पार कराए; सभसँ पैघ पुल ओ होइत जे अपराधसँ प्रतिष्ठा धरि बनाओल जाइत अछि। गढ़ नारिकेलमे बा, तखन जवान छली, रातिमे अचानक उठि जाइत छली। हुनका कानमे पानि भरल आवाज आबैत। ओ अपन सासुसँ कहैत छली — 'कोनो डूबल लोक नाम कहि रहल अछि।' सासु कहैत — 'नदीक गाममे एहन आवाज रहिते अछि।' मुदा बा बुझैत छली जे ई सामान्य नदीक आवाज नहि। ओ चूल्हा लग राखल राखमे उँगली सँ नाम लिखबाक प्रयास करैत, मुदा नाम बनलासँ पहिने राख उड़ी जाइत। एहन बेरमे घरक बाहर नारिकेलक पात एकाएक स्थिर भऽ जाइत। गढ़ नारिकेलमे जखन नारिकेलक पात थिर होइत, लोक बुझैत — कोनो मृतक देहरी पर ठाढ़ अछि।

ओहिना एक राति बा देखलनि, देहरी पर पानि टपकि रहल अछि। दरबाजा खोललनि तँ केओ नहि। मुदा माटि पर पाँवक निशान — पएर पूर्ण नहि, एड़ी नहि, पंजा नहि, मात्र पानि-पानि गोल निशान। ओ निशान आँगनसँ ओहि कोठरी धरि गेल जतय कलितक पुरान संदूक राखल छल। बा संदूक खोललनि। भीतर पुरान कागच, भूमि-पत्र, विवाहक सिद्धान्त, एकटा कारी फोटो, आ एक चिट्ठी भेटल। चिट्ठीमे केवल एतबे लिखल छल — 'नाम बचाउ।' बा पढ़ि नहि सकैत छली, मुदा अक्षर हुनका आँखि बिनु पढ़ा देलक।

चन्ना गाछीमे कबड्डी आब नियमित नहि रहल। पहिने खेल राति अबिते शुरू होइत; आब खेल ओहि बेर शुरू होइत जखन पुल पर किओ खसैत, अदालतमे तारीख पड़ैत, वा कोनो फाइलमे नाम कटैत। भूत सभ कहैत — 'नाम-बचाओ कबड्डी।' एक दल मृतकक नाम लऽ

कऽ भागैत, दोसर दल सरकारक मोहर बनि कऽ पकड़य दौड़ैत। जे पकड़ा जाइत, ओकर नाम धुँधला पड़ि जाइत। जे सीमा छू कऽ घुरि अबैत, ओकर नाम नारिकेल पात पर कोंपल जेकाँ उगि जाइत।

एहि खेलमे एक बेर अजीब खिलाड़ी उतरल। ओकर देह पर वकीलक कोट छल, मुदा पएर नदीक गादसँ सनेल। ओ बाजल — 'तारीख।' भूत सभ बुझल नहि। ओ फेर बाजल — 'तारीख पर तारीख।' ओकर मुँहसँ कागचक पन्ना निकलि कऽ उड़ऽ लागल। बूढ़बा भूत ओकरा पकड़य चाहलाह, मुदा ओ पन्ना पवन नहि, प्रक्रिया छल; हाथसँ पकड़ाइत नहि। पीपरक ब्रह्म कहलथिन — 'ई अदालतक प्रेत अछि। एक बेर पैसि गेल तँ पीढ़ी भरि निकलैत नहि।' पनिडुब्बी ओकरा देखैत बजली — 'ई गोहिसँ बेसी खतरनाक। गोहि भूखल होइत अछि तखन खाइत अछि; ई पेट भरलो पर तारीख खाइत रहैत अछि।'

बहुत बरख बाद एहि अदालतक प्रेतक असल चेहरा भेटत — बटुकनाथ हरिहरन। मुदा ओहि राति ओकर नाम ककरो नहि बुझल। ओ मात्र कोट पहिरने धुआँ छल। ताहि धुआँक पाछाँ चन्द्रपाल बत्रा जेकाँ एक अधबुझा आकृति छल — हाथमे कानूनक डिग्री, जेकर कोना पर मेरठक मोहर, आ जेबमे सट्टाक पर्ची। ओकर पाछाँ आरो दूर, समुन्द्र पार, हांगकांगक शीशा-मीनारमे लाउ किन-हंगक छाह बैसल छल। ओ सभ एखन कथामे प्रवेश नहि केने छल, मुदा भूतक कबड्डीमे भविष्य पहिनेसँ तैयारी करैत छल।

एक दिन नन्द साइटक नदी-कात पुरान नाविकसँ भेटलाह। नाविकक नाम फकीरा साहनी। ओकर चेहरा नदीजेकाँ चरमरायल, आँखिमे बालु। नन्द पूछलाह — 'गोहि एते बेसी किएक?' फकीरा हँसल — 'गोहि बेसी नहि भेल, बाबू। देह बेसी फेकायल।' नन्द चुप। फकीरा फेर कहलक — 'गोहि नदीक सफाई करैत अछि। मुदा मनुक्ख अपन अपराधो ओकरा देब चाहैत अछि। देह गोहि खा गेल तँ अपराध नहि रहल — ई सोचैत अछि बाबू लोक। मुदा गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि। नाम ओकर दाँतमे अटकैत अछि।'

नन्द एहि वाक्य कें डायरीमे लिखि लेलाह। 'गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।' ओहि राति चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत ओही वाक्य दोहरौलनि, जखन बिसेसर, छोटू, सलामत, रजनू, आ दर्जन भर अधूरा नामक आत्मा सभ कबड्डी खेलैत छल। हुलासी पहिल बेर हँसलि नहि, कानली। हुनकर आँखिसँ पानि नहि, कारी प्रकाश टपकल। ओ कहली — 'हमरो नाम गलत लिखल गेल छल। लोक कहलक आत्महत्या। हम इनारमे फिसलल रही।' बूढ़बा भूत

कहलथिन — 'ताहू नाम बचत।' हुलासी पहिल बेर खेलमे उतरलि। बिनु हाथक ओ भूत सभसँ नीक खेलली। नाम पकड़बाक लेल हाथ नहि, स्मृति चाही।

नन्दक तेसर रिपोर्ट आब सीधे सचिवालय गेल। एहि बेर ओ कागचक प्रति अपना लग राखि लेलाह। साइट-मुखिया चेतावनी देलक — 'अहाँ बहुत भावुक भऽ रहल छी।' नन्द कहला — 'मृत्यु पर भावुक नहि होयब तँ बिल पर होयब?' मुंशी सभ हँसल। ओहि हँसीमे डर छल, किएक तँ जे लोक मृत्यु पर हँसैत अछि, ओ भीतरसँ ककरो आदेश मानि रहल होइत अछि। नन्द बुझि गेलाह जे पुलक पाया लोहे-सिमेंटसँ कम, झूठसँ बेसी बनि रहल अछि।

रातिमे हुनका कैम्पक बाहर पानि खनखनायल। ओ उठि कऽ बाहर गेलाह। चानक इजोतमे गंगा सफेद लगैत छल। दूर एकटा गोहि पानि पर स्थिर छल — न आँखि झपकैत, न पूँछ हिलबैत। नन्दकेँ लगल ओ गोहि हुनका ताकैत अछि। फेर ओ देखलाह, गोहिक पिठ पर अक्षर लिखल अछि। ओ आगाँ बढ़लाह। अक्षर छल — 'तीस'। फेर पानि हिलल। दोसर गोहि आयल — 'तीन सय'। तेसर — 'तीन हजार'। नन्द पाछाँ हटि गेलाह। पानि सँ आवाज आयल — 'संख्या नहि, नाम।'

भोरमे साइट पर अफवाह छल जे अभियन्ता नन्द पागल भऽ रहल छथि। ठेकेदारक लोक कहलक — 'उन्हें छुट्टी पर भेजिए।' विभागक अधिकारी कहलक — 'फाइल रोकिए।' मुदा नन्द छुट्टी नहि गेलाह। ओ मजदूर सभसँ अलग-अलग नाम पूछऽ लगलाह। जिनका पढ़ि सकैत छलाह, हुनका हस्ताक्षर करौलाह। जे नहि पढ़ि सकैत, ओकर अंगूठा लगौलाह। जे अंगूठा लगबासँ डरैत, ओकर नाम ओ कंठस्थ केलाह। नन्दक स्मृति रजिस्टर बनि गेल। राति जखन ओ सूतैत, नाम सभ हुनकर भीतर रेला जेकाँ घूमैत।

चन्ना गाछीमे भूत सभ आब नन्दकेँ देखैत छल। जीवित लोककेँ भूतक खेल देखब अनुमति नहि, मुदा साक्षी मनुक्ख आधा-भूत होइत अछि। नन्दक छाह दिन-दुपहरिया सेहो कखनोकाल पएर सँ अलग चलि जाइत। ओ साइट पर रहैत, छाह गढ़ नारिकेल पहुँचि जाइत, बा केर देहरी पर ठाढ़ होइत, चन्ना गाछीमे कबड्डी देखैत, आ फेर भोरमे हुनका पएर लग घुरि अबैत। नन्द जखन उठैत, पएरमे गाछीक सूखल पात अटकल भेटैत। ओ बुझि नहि पबैत, कैम्पमे चन्ना गाछीक पात कतयसँ आयल।

एहि बीच गाममे लत्तड़ ठाकुरक पुरान कथा फेर सुनाओल जाय लगल। कहैत छथि, कलित जखन बालक छल, तँ ठेहुनिया मारबाक बदला बेंग जेकाँ फाँगि कऽ आगाँ बढ़ैत। लोक हँसैत। मुदा बूढ़ लोक कहैत — 'ई बालक एक दिन काल फाँगत।' कलित अंग्रेजी सीखल,

सरकारी दरबार देखलक, कागचक शक्ति बुझलक। ओहि वंशक दूरक नाति नन्द आब कागचक झूठ देखैत छल। एक पीढ़ी कागचसँ शक्ति पाबलक, दोसर कागचसँ लड़त। गढ़ नारिकेलमे वंश एहि तरहें फेरबदल होइत अछि — जे हथियार एक पीढ़ी उठबैत अछि, दोसर ओकर घाव ढोइत अछि।

गोहि सभक बीच जलसमाधिक खबर अखबारमे नहि आयल। अखबारमे पुलक फोटो आयल, मुख्यमंत्रीक भाषण, विदेशी कम्पनीक प्रशंसा, 'राष्ट्रक प्रगतिक मार्ग'। मृतक सभक फोटो नहि। बिसेसरक स्त्रीक रोदन नहि। छोटूक माय केर प्रतीक्षा नहि। नन्दक रिपोर्ट नहि। मुदा चन्ना गाछीमे ओहि राति भूत सभ अखबारक पन्ना लऽ कऽ खेलल। जे पन्ना पर पुलक फोटो छल, ओकरा बीचसँ पानि झरऽ लागल। राकश सभ चानीक इजोर बढ़ौलनि। पन्ना भिजलाक बाद फोटो धुँधला भेल, आ नीचाँसँ मजदूरक चेहरा उभरल। बूढ़बा भूत घोषणा केलाह — 'आइक खेल अखबार आ नाम।'

खेल शुरू भेल। अखबारक पन्ना हवामे उड़ैत, भूत सभ ओकर पाछाँ दौड़ैत। जे पन्ना पकड़ा गेल, ओकर शीर्षक टूटि कऽ नाम बनैत। 'विकास' टूटि कऽ 'बिसेसर'। 'प्रगति' टूटि कऽ 'छोटू'। 'राष्ट्रीय गौरव' टूटि कऽ 'सलामत'। भूत सभ जयकार नहि केलक; मृतक सभक खेलमे जयकार नहि, केवल स्मरण होइत अछि। पनिडुब्बी अपन झौँटा सँ पन्ना बाँधि कऽ नारिकेल गाछ पर टाँगि देलक। ओहि दिनसँ गढ़ नारिकेलक एकटा नारिकेल गाछक पात पर छपाइ जेकाँ कारी धब्बा देखाइ पड़ैत। लोक कहैत — रोग लगल। बा कहैत छली — 'नहि, नाम लगल।'

नन्दक चारिम महीना पुल पर भारी गेल। ब्रूमक भारतीय सहायक कहलक — 'अहाँक रिपोर्टसँ प्रोजेक्टक फंडिंग प्रभावित हएत।' नन्द पूछलाह — 'मृत्यु प्रभावित नहि करैत?' सहायक

मुस्कुरेलक — 'मृत्यु तँ सभ पैघ काजमे होइ छै।' एहि वाक्यक बाद नन्द ओकर चेहरा नीकसँ देखलाह। चेहरा मनुक्खक छल, मुदा आँखि गोहिक। नन्द बुझि गेलाह जे गोहि सभ केवल नदीमे नहि। किछु सूट पहिरैत अछि, किछु वकीलक कोट, किछु प्रोफेसरक गाउन, किछु मंत्रीक कुरता, किछु एथिक्सक मंच पर मुस्की।

राति चन्ना गाछीमे खेलक बीच पीपरक ब्रह्म अचानक बोललाह — 'एक दिन एही पुलक पैसा दवाइ बनत। एही दवाइक पैसा हथियार बनत। एही हथियारक पैसा जुआ बनत। एही जुआक पैसा अदालतक तारीख बनत। एही तारीखक नीचे फेर नाम दबत।' भूत सभ चौंकल।

हुलासी पूछली — ‘दवाइ? हथियार? जुआ?’ ब्रह्मा चारू मुख बन्द कऽ लेलनि। भविष्य कहि देलासँ भविष्य टलैत नहि, कखनो-कखनो तेज भऽ जाइत अछि।

बूढ़बा भूत निर्णय देलाह — ‘एहि राति सँ कबड्डीमे केवल मृतक नहि, भावी मृतकक नाम सेहो बचाओल जाएत।’ लोथ डरि गेल। ओ कहलक — ‘भावी मृतकक नाम ककरा बुझल?’ बूढ़बा भूत चन्ना गाछीक ऊपर आकाश दिस इशारा केलाह। आकाशमे तारा नहि, बैंक अकाउण्टक संख्या चमकि रहल छल। किछु संख्या हांगकांगक काँच-मीनार दिस जा रहल, किछु मेरठक पुरान कानून-कॉलेजक देबाल पर अटकैत, किछु बार-काउन्सिलक शपथ-पत्रमे पैसैत, किछु गढ़ नारिकेलक युवकक मोबाइलमे उतरैत। भूत सभ पहिल बेर अंक देखिकऽ डरायल। नाम बचेनाइ आसान छल; अंकक पाछाँ नाम कतय?

नन्द एहि सभ भविष्य नहि जनैत छलाह, मुदा हुनका भीतर एक बेचैनी बढ़ैत गेल। ओ अपन डायरीक पहिल पन्ना पर लिखलाह — ‘जँ हम नहि रहलहुँ, तँ नाम बचाउ।’ दोसर पन्ना पर — ‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।’ तेसर पर — ‘तीसटा सरकारी मृत्यु नहि; कमसँकम तीन सय।’ चारिम पन्ना खाली रहल। ओहि खाली पन्ना पर रातिमे पानि पड़ल। भोरे पानि सूखलाक बाद धब्बा बनल, जे गढ़ नारिकेलक नक्शा जेकाँ देखाइत छल। नन्द ओ नक्शा देखैत रहि गेलाह। पुल गंगापर बनि रहल छल; मुदा अपराधक जड़ि हुनकर गाम धरि जा रहल छल।

एहि अध्यायक राति अन्तिम बेर चन्ना गाछीमे कबड्डी तेज भेल। भूत, प्रेत, राकश, लोथ, पनिडुब्बी, डाइन, पीपरक ब्रह्मा, जलसमाधि-मजदूर — सभ एक्के खेलमे उतरि गेल। कोनो सीमा साफ नहि रहल। कमला-बलान, गंगा, सभागाछी, पुल, अदालत, विदेशक सभागार, डिजिटल परदा — सभ मैदानक अलग-अलग कोना बनि गेल। बूढ़बा भूत बीचमे ठाढ़ भेलाह आ कहलथिन — ‘जे नाम बिनु मरल, ओ आइ नाम लऽ कऽ दौड़त। जे नाम सहित बचल, ओ नाम बचाबय लेल दौड़त।

जे नाम काटत, ओकरा पकड़ा जाएत।’

पहिल दौड़ बिसेसर लगेलक। ओ ‘बिसेसर पासवान’ कहैत सीमा पार केलक। ओकर पाछाँ सरकारी मोहर दौड़ल, पकड़ि नहि सकल। दोसर छोटू — ‘हमर असल नाम खोजू’ कहैत दौड़ल। तेसर नन्दक छाह दौड़ल। भूत सभ थमकि गेल। जीवितक छाह खेलमे उतरि गेल छल। छाह कहलक — ‘नन्द आरुणि।’ ओकर पाछाँ एक अँधेरा गोहि दौड़ल, जे नदीसँ नहि, फाइलसँ निकलल छल। छाह सीमा छूइत-छूइत बचि गेल।

ठीक ओहि क्षण पुल पर नन्द जागि उठलाह। कैम्पक बाहर कोहराम छल। फेर एक मजदूर खसल। एहि बेर राति। एहि बेर ककरो नाम नहि बुझल। पानि पर टॉर्चक इजोत काँपि रहल छल। गोहि सभ शांत छल, जेना ओ सभ पहिनेसँ प्रतीक्षामे हो। नन्द दौड़लाह। साइट-मुखिया चिचिआएल — 'रुकू, अन्हार अछि।' नन्द नहि रुकलाह। पानि कात पहुँचि कऽ हुनका लगल, चन्ना गाछीमे भूत सभ एक साथ हुनकर नाम पुकारि रहल अछि। ओ टॉर्च पानि पर डाललाह। भँवर बीच एक क्षण लेल चेहरा देखाइ देलक — जीवित कि मृत, बुझब कठिन।

नन्द ओकरा पकड़ि नहि सकलाह। हाथ पानिमे गेल, खाली घुरि आयल। मुदा हाथमे एकटा चीज अटकल छल — मजदूरक गमछाक फाटल कोना। ओ गमछा लाल नहि, गेरुआ नहि, अपितु एहन रंगक छल जे नाम काटल गेल कागच पर पानि पड़लासँ होइत अछि। नन्द ओकरा मुट्ठीमे दबा लेलाह। ओही राति हुनका बुझाइ गेल — ई केवल पुलक मामला नहि। ई गोहि सभक बीच जलसमाधि अछि, आ गोहि सभ बहुत रूपमे आबयबला अछि।

भोर होएबाक पहिने चन्ना गाछीमे खेल रुकल। पात सभ पर ओस नहि, स्याहीक बून्द छल। बूढ़बा भूत अपन डारिपर फेर बैसि गेलाह। हुलासी इनार दिस घुरली। पनिडुब्बी पोखरिक राह पकड़लक, मुदा ओकर झोँटामे गंगाक गाद अटकल रहल। लोथ आधा मुँह बन्द केलक। राकश सभक चानी-इजोर धीमा भेल। पीपरक ब्रह्मा चारू मुखसँ एक संग फुसफुसौलनि — 'कथा शुरू नहि भेल; कथा पकड़ा गेल।'

गढ़ नारिकेलक दुआर-दुआर भोरक धुँआ उठऽ लागल। कुकुर भुकल। औरत सभ आँगन बुहारलक। बच्चा सभ निन्नमे करवट बदललक। ककरो नहि मालूम छल जे रातिमे गामक पात पर कतेको नाम लिखायल अछि। मुदा बा जखन आँगनमे निकलली, हुनका देहरी पर ओ फाटल गमछाक कोना भेटल जे नन्द पुल पर मुट्ठीमे दबौने छलाह। ओ काँपि उठली। दूर कतओ गंगा बहैत छल। ओतए गोहि सभ अपन दाँत साफ करैत होएत। एतए गढ़ नारिकेलमे नारिकेलक पात थिर छल।

बा ओ गमछा उठा कऽ माथसँ लगौलनि। हुनका आँखिमे आँसू नहि आयल। गढ़ नारिकेलक स्त्री सभ जानैत छथि — कखनो-कखनो रोअलासँ नाम बहि जाइत अछि। ओ धीरे सँ बाजली — 'जेकर छी, ओकर नाम हमरा कह।' पात हिलल नहि। मुदा बहुत दूर, पुलक कैम्पमे, नन्दक डायरीक खाली चारिम पन्ना पर अक्षर उगि रहल छल। पहिल अक्षर 'ज' छल। दोसर 'ल'। तेसर 'स'। फेर स्याही पसरि गेल। पूर्ण शब्द केवल चन्ना गाछीक भूत सभ पढ़ि सकल — जलसमाधि।

लोकगीत: गमछाक कोनामे नाम

लोकधुन: करुण समदाउन

ए गंगा हे, बहैत जल मे नाम नहि बहाउ हे,
फाटल गमछाक कोना घर धरि पहुँचाउ हे।

ए गंगा, हमर बौआक नाम नहि बहाउ,
फाटल गमछाक कोना घर पहुँचा दियौ।
पायासँ हुसल पएर, चकरघिन्नी देह गेल,
माए देहरीपर अखनो दीप जरौने बैसल।
गोहि हड्डी चिबा लेलक, कागच नाम काटि देलक,

चन्ना गाछीक पात ओकर पुकार बचा लेलक।
बा आँसू रोकि माथपर कपड़ा धरली,
‘जेकर छी, नाम कह’—राति भरि सरसरली।
ए गंगा, देह राखू, नाम घुरा दियौ,

पाया लग बालु पर आधा नाम लिखल,
आधा गंगाक अँचरा मे नुकाएल-मिलल।
जे देह लऽ गेलह, से पुकार नहि लेब,
माएक देहरीक दीप बुझय नहि देब।

❖

अध्याय २

दहिन कातक गाम

नदी मेड़ काटै छै धारसँ, कागज गाम काटै छै तारीखसँ।

अध्यायारम्भ लोकगीत: दहिन कातक सूरुज

लोकधुन: बटगबनी

चलू यौ बटोही, दहिन कात चलू यौ,
गामक पूरा नाम लऽ कऽ संग-साथ चलू यौ।

नदी धार बदलि सकै, सूरुज दिशा चिन्है,
गामक जड़ि माटि भीतर अपन घरकेँ गिन्है।
दहिन-बामक फेरमे नहि नामक बाट हराउ,
देहरी, पात, पुरखाक सीख संग लऽ जाउ।

कमला-बलान गाबै—गाम चलै मनमे,
कागच काटि नहि सकै नेहक मेड़ जनमे।
दहिन कातक सूरुज फेर आँगनमे उतरै,
गामक पूरा नामसँ हरेक परिवार सँवरै।

मेड़-मेड़ पर सरसों हँसै, बाध-बोन गमकै,
पुरखाक देल चिन्हा-पाती डेग-डेग चमकै।
कागचक आँधी उड़ौ कतबो, जड़ि नहि उखड़त,
देहरी-दीप जरैत रहत, गाम नहि बिछड़त।

❖

“नदी मेड़ काटै छै धारसँ, कागच गाम काटै छै तारीखसँ।”

“जकर मेड़ नदी खाइत अछि, ओकर मुकदमा कागच खाइत अछि।”

— गढ़ नारिकेलक पुरान कहावत

बा ओ फाटल गमछाक कोना उठौने रहली। भोरक धुँआ एखन पूरा आकाशमे नहि पसरल छल। आँगनक कच्चा माटि रातिक ओससँ भीजल छल, मुदा ओ गमछा ओकरासँ बेसी भीजल बुझाइत छल, जेना ओकरा भीतर कोनो नदी अपन छोट-छोट धार छिपा लेने हो। बा ओकरा सूँघलनि। पानिक गन्ध नहि छल। गादक गन्ध नहि छल। ओहि कपड़ामे ओहि हाथक गन्ध छल

जे दिन भरि सीमेन्ट ढोइत अछि, रातिमे डेरायल सपना देखैत अछि, आ भोर होएबा सँ पहिने रजिस्टरमे 'अनुपस्थित' लिखि देल जाइत अछि।

गढ़ नारिकेलमे कोनो वस्तु बिनु कुल-गोत्रक नहि रहैत। गाछक सेहो कुल होइत, पाथरक सेहो, इनारक सेहो, टूटल हँसुआक सेहो। बा गमछाकेँ माथसँ लगौलनि आ बिनु रोने भीतर गेली। ओ कोठरी खोलली जाहिमे घरक पुरान कागच, पुरान जनेऊ, पुरान चाबी, पुरान सुपारी, आ पुरान अपमान सभ एक्के संग राखल रहैत। ओतय एकटा पीतल-कुंडी बक्सा छल। बक्साक ताला वर्षो सँ नहि खुलल छल, मुदा बा ताला पर फूँक मारलनि तँ ओ एना खुलि गेल जेना भीतर बैसल पुरखा पहिनेसँ प्रतीक्षा कऽ रहल हो।

बक्सा खुलिते पहिल आवाज कागचक नहि आयल। पहिल आवाज पातक आयल — नारिकेलक पातक। ओ पात ओही छल जे लत्तड़ ठाकुर अपन हाथसँ सुखा कऽ राखने छलाह, जखन कलितक जन्म भेल छल। पातक नोक पर एखन धरि हल्दीक दाग छल। बा ओ पातक नीचाँ गमछाक कोना राखलनि। ओ बुझैत छली — जेकर नाम नहि भेटै, ओकरा पुरखाक बीच राखू; किछु ने किछु पात हिलत।

ओहि पातक भीतरसँ गाम खुलल।

गढ़ नारिकेल नक्शामे छोट छल, मुदा स्मृतिमे एते पैघ जे ओहि भीतर कतेको नदी बहि सकैत छल। कमला-बलान ओकर दहिन कातसँ गुजरैत छल — ई बात ओ लोक कहैत जे पिपराघाट दिस मुँह कऽ ठाढ़ रहैत। मुदा गामक बच्चा सभकेँ दहिन-बामक ज्ञान नदी नहि, डाँड़ भरि पानि दैत छल। बरखा आयल कि गाम अपन दिशा बदलि दैत। जे काल्हि दहिन छल, से आइ धारक मुँह घुरलासँ बाम जेकाँ लागत। मुदा गढ़ नारिकेलक बूढ़ सभ कहैत — 'धार चाहे कनेको घुरि जाउ, गाम अपन दहिन कात नहि छोड़ैत।'

सौराठक सभागाछीक चतरल-चतरल गाछ ओहि समय एखन जीवित छल। वर सभ गाछतर बैसैत, पण्डित सभ मूल-गोत्र मिलबैत, कन्यापक्षक लोक आँखिसँ नापैत जे माथ झुकैछ कि नहि, चालमे घमण्ड अछि कि नहि। परतापुरक गाछ सभ ओहि बजारक छाह गढ़ नारिकेल धरि पठबैत छल। गढ़ नारिकेलक लड़का जँ विवाह लेल निकलैत, तँ पहिने बलानक धार पार नहि करैत; पहिने घरक नारिकेल गाछक पात छुइत। ओ पात कहैत — 'जाइ छी तँ नाम लऽ कऽ जाउ, केवल देह नहि।'

कमला बाढ़ि अनैत। बलान शान्ति। दुनू मिलल तँ गामक कथा बनल। कमला जखन रेत छोड़ैत, खेतमे राहड़ि उगैत, राहड़ि बीच खटाँसक आँखि चमकैत। बच्चा सभ ओकरा बाघ बुझि

भागैत। बरखा उतरला पर बिलमे काँटबला शाही घुसैत। स्त्री सभ ओकर पगचिह्न देखिकऽ कहैत — 'जकर काँटा बाहर, ओकर डर भीतर नहि।' गढ़ नारिकेलक लोक एहि तरहें जीव-जंतुसँ नीति सीखैत छल। बादमे जखन शहरक लोक सभ करार, शपथपत्र, प्रतिज्ञा आ कानूनक भाषा सीखि लेलक, तखनो गामक असली कानून गाछ, धार, खटाँस, गोहि आ भूतसँ चलैत रहल।

चन्ना गाछी एहि गामक राति छल। दिनमे ओ केवल घनगर गाछी देखाइत। रातिमे ओतय सभटा मृत्युक पंचायत बैसैत। बूढ़बा भूत अपन डारि पर, हुलासी इनारक दिशामे, पनिडुब्बी पोखरिक अथाह पानिमे, डाइन सभ छौंकी पर, लोथ आधा खुलल मुँह लऽ कऽ, आ राकश सभ चानीक इजोर फेकैत। जखन-कखन गामक कोनो नेना जन्मैत, चन्ना गाछीमे खेल थमि जाइत। मृतक सभ नव देहक आहट सुनैत। ओ सभ देखैत — ई बच्चा ककर अपूर्ण कथा लऽ कऽ आयल?

एहनहि एक राइत १८८५ मे लत्तड़ ठाकुरक घर नेना जनमल। बाहर कमला-बलानक धार चुप छल। न कुकुर भुकल, न बरद डकारलक। केवल नारिकेल गाछक एक पात आहिस्ते टूटि कऽ आँगनमे खसल। धाय स्त्री कहलक — 'लड़का भेल।' लत्तड़ ठाकुर भीतर अएलाह तँ देखलनि — नेनाकेँ आँखि खोलबामे देर भेल, मुदा जखन खोललक तँ सीधा छप्पर दिस नहि, दुआरक पात दिस तकलक। बा सभ कहलक — 'ई नेना गाछक भाषा बुझत।' लत्तड़ हँसलाह। अपन घरक पुरुष सभ भाग्यक बात पर हँसैत छला, कारण ओ सभ बुझैत छलाह जे भाग्य केँ जमीन, हल, बही आ अदालतसँ वशमे कयल जा सकैत अछि।

नेनाक नाम राखल गेल — कलित। नाम छोट छल, मुदा ओकरा भीतर कलीक फूटनाइ छल। लत्तड़ ठाकुर कहैत — 'कली जे समय पर फूटत, से फूल; जे समयसँ पहिने फूटत, से काँटा।' कलित समयसँ पहिने फूटय लागल। छह मासमे ओ आवाजक नकल करैत। माय 'हूँ' कहथि तँ ओ 'हूँ' जेकाँ नहि, अपितु ओहिसँ कने बेसी पुरान 'हूँ' कहय। लत्तड़ खखसथि तँ ओ खखसबाक पाछूक थकानक नकल उतारय। एक दिन ओ ठेहुनिया मारैत-मारैत एना फांगि गेल जे घरक स्त्री सभ डरि गेली — 'बेंगक आत्मा नेनामे अछि।' लत्तड़ कहलनि — 'बेंग पानि आ माटि दुनू जानैत अछि; बुरा कोन बात?'

कलितक बालपन गामक सभ दिशामे पसरल। ओ कमला-बलानक किनार पर चलैत तँ पानि ओकर पाछाँ एक अंगुर उठि जाइत। ओ सभागाछी लग जाइत तँ मूल-गोत्र पढ़ैत पण्डितक आवाज रुकि जाइत। ओ राहड़ि खेतक भीतर जाइत तँ खटाँसक आँखि चमकब

छोड़ि दैत। ओ चन्ना गाछी लग बिनु डेराए बैसि जाइत, आ बूढ़बा भूत ओकर माथ पर झुकि कऽ देखैत — 'ई बच्चा मरल लोकक नाम सुनि सकत कि नहि?' हुलासी अपन बिनु हाथक देह लऽ कऽ इनारक भीतरसँ उठैत, मुदा कलित ओहि तरफ देखैत नहि। मृतक सभ ओकरा पर भरोसा करैत छल, मुदा कलित जीवितक संसारमे तेज छल।

समय ओहि बरस बदलैत छल। अंग्रेजी राज अपन पंजा दूर गाम धरि पसारि रहल छल। दरभंगा, कलकत्ता, पटना — ई नाम सभ गढ़ नारिकेलक दलान पर अजनबी चिड़िया जेकाँ उतरैत। कोनो कहय — अंग्रेजी पढ़ने बिनु नौकरी नहि। कोनो कहय — संस्कृत छोड़ला पर कुल नष्ट। कोनो कहय — जमीन बचाबय लेल कागचक भाषा जानब जरूरी। लत्तड़ ठाकुर पहिने चुप रहलाह। फेर एक दिन ओ देखलनि जे पड़ोसक खेतक मेड़ बदलि गेल, मुदा कागचमे वैह पुरान मेड़ चलि रहल। हुनका पहिल बेर बुझाइ गेल जे माटि जे कहैत अछि, से अदालतमे नहि सुनल जाइत; अदालत ओहिये सुनैत अछि जे कागच कहैत अछि।

ओ दिनसँ लत्तड़ ठाकुर कलित लेल आङ्ग्ल-विद्या केर उपाय करय लगलाह। बंगाली बाबू आनल गेलाह। बाबूजीक बक्सामे नोकदार कलम, स्याहीदानी, पन्ना, नक्शा आ एकटा छोट घंटी रहैत छल। घंटी बाजैत कि कलित बैसि जाइत। अक्षर ओकरा जल्दी पकरायल। मुदा ओ अक्षर मात्र पढ़ैत नहि; ओ ओकरा भीतरक छलकपट सेहो सूँघैत। बंगाली बाबू 'नाम' लिखब सिखौलनि। कलित पूछलक — 'नाम जँ गलत लिखल गेल तँ लोक बदलि जाइत अछि?' बाबू हँसलाह। लत्तड़ नहि हँसलाह। बाहर नारिकेल पात हिलल।

नामक खेल ओही दिन सँ घरमे घुसल। कियो 'लत्तड़' लिखैत, कियो 'लत्तर', कियो 'लटधर'। जमीनक कागचमे एक, लगानक पर्चीमे दोसर, पाठशालामे तेसर। लत्तड़ ठाकुरक माथ पर पसीना आयल। ओ रातिमे बाड़ीक नारिकेल गाछ लग गेलाह आ कहलनि — 'हमर नाम बचाउ।' गाछ चुप रहल। चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत हँसल — 'जे अपना नामक रखवारी कागचसँ करबय चाहत, ओकरा पहिने कागचक भूत पालब पड़त।'

कलित बढ़ल। ओ अंग्रेजी अक्षर पढ़ि सकैत, देवनागरी लिखि सकैत, कैथी बही बुझि सकैत, आ पुरान पण्डितक मुँहसँ उच्चरित वंशावली मोन राखि सकैत। ओ तीन-तीन दरवज्जा खोलय लागल। गामक लोक ओकरा लग कागच पढ़ाबय आबय। कोनो कहय — 'एहिमे हमर खेत लिखा अछि?' कोनो कहय — 'एहिमे हमरा पर कर लगल?' कोनो बूढ़ कहय — 'बाबू, एहिमे हमर बेटाक नाम अछि कि नहि?' कलित पढ़ैत, बतबैत, मुदा धीरे-धीरे ओकर आँखिमे

एकटा अजीब चमक आबि गेल। ओ बुझि गेल — जे अक्षर पढ़ैछ, से खेत नहि जोतैत; जे अक्षर लिखैछ, से जोतल खेतक मालिक बदलि सकैत अछि।

लत्तड़ ठाकुर एहि चमकसँ प्रसन्नो छलाह, भयभीतो। हुनका अपन बालकमे बुद्धि देखाइत, मुदा बुद्धिक पाछाँ एकटा सर्प सेहो। ओ रातिमे पत्नी कैँ कहैत — 'एहि बालक कैँ सीधा राखब कठिन हएत। ई कागचक बीच साँपक चाल सीखि रहल अछि।' पत्नी कहथि — 'साँप सेहो घरक रखवारी करैत अछि जँ ओकरा दूध सही समय भेटै।' लत्तड़ पूछथि — 'जँ ओकरा खूनक स्वाद लागि गेल?' पत्नी चुप भऽ जाइथि।

गढ़ नारिकेलक गाम एहि बीच बदलैत रहल। कमला एक वर्ष रेत एते छोड़लक जे कतेको खेतक नाँगर गायब। परतापुरक कतेक गाछ सुखायल। सभागाछीमे वरक बजार घटल। दालि, कुशियार, राहड़ि, माछ, मखान — सभ अपन-अपन ढंगसँ कमैत-बढ़ैत रहल। मुदा लोकक बातमे कागच बेसी आबय लागल। पहिने कियो कहैत — 'हमर बाबूक खेत।' आब कियो कहैत — 'हमर दादाक नाम रजिस्टरमे अछि।' पहिने विवाहमे कुल पूछल जाइत। आब बही देखल जाइत। पहिने मरल लोकक नाम स्मृतिमे रहैत। आब शिलापर वा रजिस्टरमे नाम खोजल जाइत। चन्ना गाछीक भूत सभ एक-दोसर कैँ देखैत — जीवित लोक मृतकक तरीका सीखि रहल अछि।

कलित बारह वर्षक भेल तँ ओकरा दरभंगा लऽ जायल गेल। ओ पहिल बेर गाम सँ बाहर रात्रि बितौल। ओ राति गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछीमे कबड्डी नहि भेल। बूढ़बा भूत कहलक — 'जे नेना गामक मृतकक नाम सुनैत छल, से आब शहरक जीवित झूठ सुनत।' हुलासी इनारक भीतर रोओल करली, मुदा हुनकर रोअन पानिमे मिलि गेल। पनिडुब्बी पोखरि छोड़ि एक राति बलान धरि गेल, देखय जे कलित घुरत कि नहि। कलित घुरल, मुदा पहिल बेर ओकर पाँवक धूलिमे शहरक गन्ध छल — पसीना, स्याही, घोड़ागाड़ी, अदालतक बरामदा, आ ओहि लोकक घमण्ड जे भाषा बदलि कऽ भाग्य बदलय चाहैत अछि।

दरभंगाक कचहरीमे कलित पहिल बेर तारीख सुनलक। एक लोक जोर सँ कहि रहल छल — 'फेर तारीख?' ओकर मुँहमे दाढ़ी छल, आँखिमे रेत। ओ कहि रहल छल जे ओकर खेत तीन बरस सँ मुकदमेमे अछि, आ एहि बीच नदी खेत खा गेल। बाबू कहलक — 'कागचमे खेत एखन अछि।' लोक फफकि पड़ल — 'कागचमे खेत अछि तँ हम कागच जोतब?' सभ हँसल। कलित नहि हँसल। ओकर भीतर किछु काँपल। ओ देखलक — नदी जे खाइत अछि, कागच

ओकरा मरल नहि मानैत। अदालतक समय नदीक समयसँ अलग अछि। नदी आइ काटैत अछि; अदालत अगिला मास सुनैत अछि।

ओहि दिन कलित पहिल बेर अपन पिताक नाम सही अक्षरमे लिखय चाहलक। ओ पन्ना पर लिखलक — 'लत्तड़ ठाकुर, गढ़ नारिकेल।' अक्षर सुन्दर छल। मुदा जखन स्याही सुखल, 'गढ़'क बिन्दु पसरि कऽ छोट गोहि जेकाँ बनि गेल। कलित उँगलीसँ पोंछय चाहलक; धब्बा पसरि गेल। ओहि राति ओ सपना देखलक — गामक नारिकेल गाछक जड़ि कागचक भीतर घुसि गेल अछि, आ एक गोहि ओहि जड़ि के चिबा रहल अछि।

समय बहल। कलित जवान भेल। ओ लोकक कागच पढ़ैत-पढ़ैत लोकक भय पढ़य लागल। जे जमीन विवादमे अएल, ओकर भय अलग। जे करक नोटिस लऽ अएल, ओकर भय अलग। जे बेटाक नाम गलत लिखल देखलक, ओकर भय अलग। कलित सभ भयक भाषा सीखि गेल। एहि भाषामे करुणा सेहो छल, आ कमाई सेहो। ओ ककरो खेत बचबैत, ककरो बँटबारा करबैत, ककरो बही लिखैत। गाममे कहल जाए लगल — 'कलित बाबू सँ कागच लिखबाउ, बात दूर धरि टिकत।' मुदा चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत कहैत — 'जकर बात कागच पर टिकैत अछि, ओकर आत्मा कत्तय टिकैत?'

लत्तड़ बूढ़ होइत गेलाह। हुनकर आवाजमे ओहि समयक खरखराहट आयल जे पिताक तब होइत अछि जखन पुत्र ओकरा सँ तेज चलय लागय। एक साँझ ओ कलित कैँ कमला-बलान कात लऽ गेलाह। बाढ़ि उतरि गेल छल। रेत पर चिड़िया पगचिह्न छोड़ि रहल छल। लत्तड़ कहलनि — 'ई देख। ई काल्हि नहि रहत। मुदा जे रेत चिड़ियाक पएरक निशान एक क्षण लेल राखि सकैत अछि, से कागचसँ बड़ सत्यवान अछि। कागच झूठो राखि लैत अछि।' कलित चुप रहल। ओकरा बुझाइत छल, पिता ओकरा चेतावनी दऽ रहल छथि। मुदा युवा बुद्धि चेतावनी कैँ प्रायः प्रशंसा बुझि लैत अछि।

लत्तड़ फेर कहलनि — 'एक दिन हमरा सभक घरमे एहन कागच आबत जे पानिसँ भीजल रहत। ओ कागचक अक्षर पढ़य सँ पहिने ओकर गन्ध सूँघब। जँ गन्ध माटिक हो तँ विश्वास करब। जँ गन्ध पैसाक हो तँ ओहि कागच पर हस्ताक्षर नहि करब।' कलित हँसि देलक — 'बाबूजी, कागच पर गन्ध कोना?' लत्तड़ ओकरा देखलनि। दूर पानिमे किछु हिलल। शायद माछ, शायद गोहि। 'गन्ध देखयवला नाक चाही,' ओ कहलनि, 'आ नाक जे कागचक स्याहीमे डूबि गेल, से गन्ध नहि पबैत।'

एहि संवादक बहुत बरस बाद, जखन नन्द आरुणि पुलक कैम्पमे मजदूरक गमछा पकड़ि काँपि रहल छलाह, हुनका ई पुरान बात बिनु सुनने मोन आयल। स्मृति केवल कानसँ नहि चलैत; रक्तसँ सेहो चलैत। नन्द केँ लत्तड़ नहि भेटल छलाह, कलितो नहि। मुदा हुनकर नसमे ओही चेतावनी बहीत छल — भीजल कागचक गन्ध सूँघू। से नन्द जखन सरकारी मृत्यु-सूची देखलाह, तँ ओकरा संख्याक गन्ध पैसाक आयल, आ पन्नाक कोना पर गादक गन्ध। ओ बुझि गेलाह — ई सूची नहि, गोहिक मुँह अछि।

बा बक्सामे राखल कागच उलटैत-फेरैत रहली। एक पुरान पर्ची निकलल — आधा कैथी, आधा देवनागरी, बीच-बीचमे ओहि समयक कचहरीक टेढ़-मेढ़ भाषा। पर्ची पर कलितक लिखावट छल। ऊपर तारीख — सावनक अँधेरी पक्ष। वर्ष धुँधला। विषय — 'मेड़-विवाद'। बा अक्षर नहि पढ़ि सकैत छली, मुदा घरक कागचक मुँह चिन्हैत छली। ओ पर्ची दुआर पर लऽ गेली। सूरजक पहिल किरण पड़िते कागच पर अक्षर उभरल — 'अगली पेशी।' बा काँपि उठली। ओ शब्द बहुत पुरान छल, मुदा ओकर छाह आजुक गमछा पर पड़ि रहल छल।

ओही क्षण घरक नारिकेल गाछक पात हिलल। पातसँ ककरो आवाज आयल — 'तारीख।' बा उत्तर देलनि — 'नाम।' पात फेर हिलल — 'तारीख।' बा जिद्दी छली — 'नाम।' तेसर बेर पात चुप भऽ गेल। गढ़ नारिकेलक स्त्री सभ जानैत छथि, जखन पात चुप भऽ जाए तँ बात जीतल गेल कि हारल, ई तुरन्त नहि बुझाइत।

दोपहर धरि गामक लोक जुटल। ककरो खबर भेल जे बा केँ पुलक मजदूरक गमछा भेटल। ककरो कहब — 'ई अपशकुन।' ककरो — 'नन्द बाबूक प्राण पर संकट।' ककरो — 'गंगा दूर अछि, गमछा एतय कोना?' एक बूढ़ गौंआ, जे सदिखन कानमे तेल देबाक कारण आधा सुनैत छल, साफ बाजल — 'जतय नाम काटल जाइत अछि, ओतयसँ गमछा उड़ि कऽ गामे आबैत अछि। देह नदीमे रहि जाइत, नाम घर खोजैत अछि।' सभ चुप।

आरुणि नन्दन तखन बच्चा छल। ओ देहरीक ओहिपार सँ देखैत रहल। ओकरा गमछा नहि, ओकर रंग मोन रहल। न लाल, न पील, न गेरुआ। एहन रंग जे पानिमे भीजल कागच, धूपमे सुखल रक्त, आ धुलामे घिसायल मजदूरक हथेली मिलि कऽ बनबैत अछि। बहुत बरस बाद शहरमे, राति दू बजे, बेटी संग सिनेमा सँ घुरैत, जखन ओ मुख्यमंत्रीक होर्डिंग देखत आ बच्चा पूछत — 'मरि गेलखिन्ह की?' — तखन ओहि प्रश्नक भीतर सेहो ओ गमछाक रंग चमकत। मुदा एखन ओ बच्चा छल, आ ओकरा लग सभटा रहस्य खेल जेकाँ छल।

साँझमे बा गमछा आ पुरान पर्ची लऽ कऽ चन्ना गाछी गेली। स्त्री सभ सामान्यतः ओतय राति नहि जाइत। मुदा बा सामान्य स्त्री नहि छली। हुनका जीवनमे एते मृत्यु देखल छल जे भूत सभ हुनका अपन जातक मानैत। गाछीमे अन्हार तिरछा पड़ि रहल छल। बूढ़बा भूत अपन डारि पर सरकल। हुलासी इनारक दिशा सँ उठली। लोथ अपन आधा मुँह बन्द करबाक प्रयास करलक, जेना बुजुर्गक सामने शिष्ट बनय चाहैत हो। बा गमछा जमीन पर राखलनि, पर्ची ओकर ऊपर।

बा कहलनि — 'जँ ई नामक वस्तु अछि, तँ नाम कहू। जँ ई तारीखक वस्तु अछि, तँ हम नहि मानब।'

चन्ना गाछीमे हवा घूमल। पात सभ एक बेर उनटा हिलल। कबड्डी शुरू नहि भेल, मुदा खेलक मैदान जेकाँ गोल घेरा बनि गेल। बूढ़बा भूत नीचाँ उतरि आयलाह। हुनकर पएर पृथ्वी कैँ छूइत नहि छल, मुदा धूलि उठल। ओ पर्ची पर झुकलाह। हुनकर कारी देहसँ कारी प्रकाश फूटल। अक्षर चमकल। बा पढ़ि नहि सकैत छली, मुदा सुनि सकैत छली। बूढ़बा भूत धीरे-धीरे उच्चारलनि — 'लत्तड़ ठाकुर आ अज्ञात सीमा।'

बा पूछली — 'अज्ञात सीमा के?' बूढ़बा भूत हँसलाह — 'जखन नदी जमीन खाइत अछि आ कागच नहि मानैत, तखन सीमा अज्ञात होइत अछि। जखन सरकार देह खाइत अछि आ मृत्यु नहि मानैत, तखन नाम अज्ञात होइत अछि। जखन अदालत तारीख दैत अछि आ जीवन रुकि जाइत अछि, तखन न्याय अज्ञात होइत अछि।' बा गमछा दिस देखली — 'तँ ई?' बूढ़बा भूतक स्वर भारी भेल — 'ई लत्तड़क मुकदमा नहि। ई नन्दक पहिल गवाही अछि।'

ओहि राति नन्द पुलक कैम्पमे निन्न नहि कऽ सकलाह। सामने सरकारी सूची छल — तीस नाम। कातमे हुनकर अपन बही — जतेक सुनल, जतेक देखल, जतेक लाश नदी लऽ गेल, जतेक घर सूचना बिनु रहि गेल। संख्या मेल नहि खाइत। ओ तीसक पाछाँ तीन सय देखैत छलाह। तीन सयक पाछाँ तीन हजारक छाह। ओ सोचलाह — 'जँ हम सूचीमे नाम जोड़ि देब, तँ सूची हमरा काटि देत।' ओ कलम उठौलनि। पहिल पंक्ति लिखलाह — 'मृत्यु ओहि दिन नहि होइत जखन देह रुकैत अछि; मृत्यु ओहि दिन होइत जखन नाम हटैत अछि।'

कैम्पक बाहर रातिमे गंगा बहैत छल। नन्दक भीतर कमला-बलान। दुनू नदी मिलैत नहि छल, मुदा दुनूक गाद हुनकर नाखुनमे एक्के रंगक छल। एकाएक हुनका बाबू-बुजुर्गक कथा मोन भेल — लत्तड़, कलित, मेड़-विवाद, अगली पेशी। ओ समझलाह जे परिवारक इतिहासमे

अदालत पहिने खेत खा गेल, आब नदी देह खा रहल अछि। परन्तु दुनू ठाम गोहि एक्के अछि — कागचक भीतर बैसल भूख।

भोरक पहिने नन्द अपन डायरीक चारिम पन्ना फेर खोललाह। पिछली राति जे ‘जलस’ उगल छल, ओ सूखि गेल छल। आब पूरा शब्द देखा देलक — ‘जलसमाधि’। ओकर नीचाँ, बहुत महीन अक्षरमे, जेना चींटी चलि गेल हो, लिखल छल — ‘गढ़ नारिकेल सँ आरम्भ कर।’ नन्द चौंकलाह। ओ वाक्य ओ नहि लिखने छलाह। ओ बुझि गेलाह — गवाही नदीसँ नहि, गामसँ शुरू हएत। जकरा घर नहि, ओकर नाम नहि टिकैत। जकरा पुरखा नहि, ओकर मृत्यु सरकारी संख्या बनि जाइत।

गढ़ नारिकेलमे ओहि भोर बा बक्सा फेर बन्द कयलनि। गमछा आब पात आ पर्ची बीच राखल छल। ओ ताला लगौलनि, मुदा चाबी नहि निकाललनी। चाबी ओहि तरहें तालामे छोड़ि देलनि जेना घर अपनाकेँ स्वयं खोलि सकय, जखन अगिला नाम आबय। आरुणि बच्चा चुपचाप देखैत रहल। बा ओकरा बजौलनि। ओकर माथ पर हाथ रखि कहली — ‘कहियो जँ कागच आ मनमे भेद देखह, मनक गन्ध सूँघब। कागच झूठ राखि सकैत अछि, मन बेसी देर नहि।’

आरुणि पूछलक — ‘ई गमछा ककर?’ बा कहलनि — ‘जेकर नाम एखन बाट जोहि रहल अछि।’ ‘नाम कतेक दिन बाट जोहैत अछि?’ बच्चा पूछलक। बा देहरी पार तकैत उत्तर देली — ‘कहियो-कहियो पाँच पीढ़ी।’

चन्ना गाछीमे ओहि राति कबड्डी नहि भेल। मृतक सभ मौन व्रतमे रहल। केवल बूढ़बा भूत एक डारि सँ दोसर डारि धरि चलैत रहलाह, जेना ककरो प्रतीक्षा करैत हो। हुलासी इनारक जलमे चेहरा देखली — हुनका अपना पाछाँ कतेको मजदूरक चेहरा देखाइ पड़ल। पनिडुब्बी पोखरिमे अपन झोँटा सुलझबैत-सुलझबैत गंगाक गाद निकाललक। डाइन सभ छौंकी पर बैसल चर्चा करैत रहली — ‘ई बेर खेल कठिन हएत। ई बेर गोहि पानिमे मात्र नहि अछि।’ लोथ पहिल बेर साफ वाक्य बाजल — ‘कागचक गोहि।’

गामक ऊपर चान चढ़ल। नारिकेल पात पर ओस जमल। एक-एक बून्द गोल, पारदर्शी, आ भीतर छोट उनटा संसार। एक बून्दमे लत्तड़ ठाकुर खड़ा। दोसरमे कलित अक्षर लिखैत। तेसरमे नन्द पुलक अन्हारमे टॉर्च लऽ कऽ दौड़ैत। चौसरमे बा बक्सा बन्द करैत। पाँचममे आरुणि बच्चा, जे एखन नहि बुझैत कि ओकर वंशक कथा ओकरा एक दिन शहरक स्क्रीन, अदालतक फर्श, आ विदेशी सभागार धरि लऽ जाएत।

भोर होइत-होइत कमला-बलानक धारमे हल्की लाली आयल। ककरो लगल सूर्योदयक रंग अछि। ककरो लगल राहड़िक फूलक। बूढ़बा भूत कहलाह — ‘नहि, ई नामक रंग अछि। नाम जखन बहुत दिन धरि दबि रहैत अछि, तखन पहिने लाल भऽ कऽ उगैत अछि।’ चन्ना गाछी फेर शान्त भऽ गेल। मुदा शान्ति ओ नहि छल जे निन्नसँ आबैत अछि। ई ओ शान्ति छल जे मुकदमा दाखिल होएबा सँ पहिने अदालतक बरामदामे पसारि जाइत अछि।

अगिला दिन नन्द पुलक दफ्तरमे आवेदन लिखलाह। भाषा सीधी छल, मुदा भीतर गढ़ नारिकेलक पाँच पीढ़ीक काँप रहैत। ओ लिखलाह — ‘मृत मजदूर सभक पूर्ण सूची प्रस्तुत हो। अनुपस्थित लिखल नामक सत्यापन हो। नदीमे खसल देह सभक खोज हो। परिवारकेँ सूचना देल जाए। सुरक्षा-व्यवस्थाक जाँच हो।’ आवेदन छोट छल। अपराध विशाल। सरकारी मोहर ओकरा नीचाँ लागल — प्राप्त। तारीख लिखल गेल।

तारीख लगिते कागच हल्का काँपल। नन्दक हाथमे ओ कंपन पहुँचल। हुनका लगल जे चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत कहि रहल छथि — ‘ध्यान राख। तारीख नामक शत्रु सेहो भऽ सकैत अछि, आ नामक नाव सेहो। ओकरा कोना खेबह, से तोहर धर्म।’ नन्द कागच मोड़लाह नहि। ओ खुल्ला रखलाह। हवामे कागच फड़फड़ायल। दूर गंगाक पानिमे एक गोहि माथ बाहर निकालि कऽ देखलक, आ फेर डूबि गेल।

लोकगीत: दहिन कातक गाम

लोकधुन: बटगबनी

हे बटोही, दहिन कातक गाम बिसरू नहि हे,
नदी मेड़ लऽ जाउ, स्मृति लऽ जाउ नहि हे।

नदी मेड़ काटलक, कागच गाम काटलक,
हमर दुआरक चिन्ह के लिखि कऽ मेटलक?
कमला घुरल धार, बलान बदललक बाट,
माए कहै—गाम अखनो दहिने कात।
तारीखक मोहरसँ घर भेल अनजान,

नारिकेल पात कहै—नहि हरत नाम।
खुल्ला कागच हाथमे नन्द अकेला ठाढ़,
दूर पानिमे गोहि, पाछाँ पुरखाक गाढ़।

नदी मेड़ लऽ जाउ, स्मृति नहि लऽ जाउ,
दहिन कातक गामक नाम बचा जाउ।

कमला घुरल, बलान घुरल, दुआरि रहल ठाढ़,
मेटल चिन्हक भीतर सँ उगल पुरखाक गाढ़।
मोहरक तारीख कहए—ई गाम अनजान,
नारिकेलक पात कहए—एतहि छै हमर प्राण।

❖

अध्याय ३

छपाकक हिसाब

इनारमे खसल ढेपाक छपाक थम्हि कऽ अबै छै, मुदा हिसाब माँगब नहि छोड़ै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: छपाकक बीच नाव

लोकधुन: नाविक-मंगल

हे नैया धीरे-धीरे हे, नाम लादि पार करू हे,
छपाकक अन्हरियामे दीपक कतार धरू हे।

एक छपाक सुनिते नाविक पतवार उठाबै,
देह नहि, नामो पार—ई प्रण जोर लगाबै।
बिसेसर, छोटू, सरयूक दीप नावमे धरू,
हिसाबकेँ मानव चेहरा, परिवारसँ भरू।

धार जते कारी हो, नावक गीत उजियार,
साँचक सूची बनि सकै दुखपर पहिल उपचार।
छपाकक बीच नाव चलत, किनार बाट जोहत,
हरेक नाम सुरक्षित होए—एहि आशामे भोरत।

लहरि उठै, डाँड़ हिलै, छाती नहि डोलए,
बिसेसर-सरयूक बाती हवामे नहि भोलए।
घाट-घाट पर बाट जोहै अँचरा पसारल माए,
नामक नाव लगले तट, मंगल सगुन गाए।

❖

“जकर मृत्युक नाम नहि, ओकर आत्मा सरकारी बरामदामे भटकैत अछि।”

— चन्ना गाछीक एकटा आवाज

नन्दक आवेदन अगिला भोर परियोजना-दफ्तरक मेज पर खुल्ला पड़ल छल। कागचक कोना पर सरकारी मोहरक बैंगनी गोलाई एखन भीजले जेकाँ चमकि रहल छल, जेना ओहि मोहरक स्याही अखनहुँ सुखल नहि हो, जेना ओकरा भीतर एखनहुँ कोनो नदी अपन छोट धार बहा रहल हो। ‘प्राप्त’ शब्द ओहि पर एना बैसल छल जेना कोनो मोट गोहि पानिसँ निकलि कऽ बालु पर धूप तापि रहल हो — निश्चिन्त, तृप्त, अपन भूखक अगिला पारीक प्रतीक्षामे। नन्द

दूरसँ तकैत रहलाह। हुनका लगल, कागच जँ अभी मोड़ि देल गेल तँ ओकर भीतरक सभ नाम साँस रुकि कऽ मरि जाएत — दोसर बेर, पहिल बेरसँ बेसी शान्तिसँ, बेसी अन्तिमताक संग।

दफ्तर पुलक दाहिन कात बनाओल अस्थायी मकानमे छल। टीनक छत, नीचे धूलि, बीचमे नक्शा सभ, कोन-कातमे चूना-सीमेण्टक खाली बोरा, आ एक देबाल पर विदेशी कम्पनीक चमकैत पट्ट। पट्ट पर लिखल छल — 'मानव-सुरक्षा हमर पहिल प्रतिज्ञा।' अक्षर देवनागरीमे छल, मुदा ओकर चाल विदेशी छल। जेना वाक्यक आत्मा दोसरा देशमे रहैत हो, एतय केवल ओकर छाह टाँगल गेल हो — एहन छाह, जकरा छुबैत काल हाथ ठंढ भऽ जाइत अछि, मुदा गर्मी कतहु नहि भेटैत।

पट्टक नीचाँ तीन फोटो। पहिल — नदी पर बनयबला भावी पुलक रंगीन चित्र; नीला आकाश, सीधा सड़क, मुस्कुराइत मजदूर, एहन मुस्की जकर अभ्यास कैमराक सोझाँ होइत अछि, जीवनमे नहि। दोसर — राज्यक मंत्रीक उद्घाटन-दिनक फोटो। तेसर — ब्रूम एण्ड हाल्डेन नामक विदेशी समूहक अध्यक्ष एडवर्ड ब्रूमक पिताक फोटो, जे अपन टोपी उठाकऽ कहियो भारतक विकासक प्रशंसा केने रहथि। फोटोमे पाछाँ यूरोपक हिम-ढाकल भवन छल; आगाँ भारतक मजदूरक सुरक्षा पर लिखल भाषणक पन्ना। नन्द ओहि फोटो कैँ देखलाह आ बुझलाह, कतेको बेर झूठ सभसँ पहिने सुन्दर फ्रेममे आबैत अछि — फ्रेम जतेक चिक्कन, भीतरक झूठ ओतेक गहींर।

दफ्तरक प्रधान लिपिक दिवाकर लाल आवेदन उठौलनि। ओ कागच सूँघलन्हि नहि, मात्र पन्ना पलटलन्हि। जे लोक कागचक गन्ध नहि सूँघैत, से बेसीकाल ओकर वजन नापैत अछि। दिवाकर लाल सेहो वजन नापलन्हि। हुनकर आँखिमे गणना चलल — एहि आवेदनक कारण कतेक फाइल खुलत, कतेक अधिकारीक नाम आबत, कतेक हस्ताक्षर काँपत, आ कतेक चाह-पानिक लिफाफा आओर चाही। ओ गणना ओहन छल जेना कोनो मौसमविद् बादरक गति नापि रहल हो, मुदा जकरा वर्षाक असली प्यास नहि, केवल पूर्वानुमानक कागचसँ मतलब हो।

'नन्द बाबू,' ओ कहलन्हि, 'एहि तरहक भाषा कनी कठोर भऽ गेल अछि।'

'मृत्यु कठोर होइत अछि,' नन्द उत्तर देलाह।

दिवाकर लाल मुस्कुरौलन्हि। 'मृत्यु शब्दक प्रयोग सोचि-समुझि करबाक चाही। कतेको लोक बिनु अनुमति कार्यस्थल छोड़ि दैत अछि। नदी कात छन्हि, गाम दूर छन्हि, मजूरी कम छन्हि। लोक चलि जाइत अछि।'

नन्दक भीतर चन्ना गाछीक राति हिलल। बिसेसर पासवान, छोटू, जेकर असल नाम नहि भेटल, रातिक छपाक, गमछाक फाटल कोना — सभ एक संग उठि कऽ बाजि उठल, जेना बरखो चुप रहल आवाज सभ एक्के साथ मुँह खोलि लेने हो। ओ धीरे कहलाह — ‘जे लोक चलि जाइत अछि, ओकर पएरक निशान रहैत अछि। जे पानिमे खसैत अछि, ओकर छपाक रहैत अछि। जेकर नाम काटल जाइत अछि, ओकर मौन रहैत अछि। एहि तीनूमे भेद करबाक काज दफ्तरक अछि।’

दिवाकर लाल पन्ना फेरलन्हि। ‘ऊपर भेजि देब।’

‘ककर ऊपर?’ नन्द पूछलाह।

लिपिक हँसलन्हि — ‘सरकारमे ऊपर बहुत अछि। जेतेक ऊपर भेजब, ओतेक नीचाँ आबयमे समय लागत।’

नन्द ओहि हँसीमे पहिल बेर तारीखक असली दाँत देखलाह। अदालत एखन दूर छल, मुदा तारीख पहिनेसँ दफ्तरमे पलि रहल छल — जेना कोनो छोटका सर्प पहिनहिये अंडासँ बाहर आबि गेल हो, बिनु ककरो जनने, बिनु ककरो देखने, मुदा फुफकारबाक सामर्थ्य पूर्ण संचित कएने।

ओहि दिन निरीक्षण-बैसकी छल। परियोजना-प्रमुख शशिभूषण देव, सुरक्षा-अधिकारी महेन्द्र पाठक, विदेशी परामर्शदाता विक्टर हाल्डेन, आ राज्य विभागक दू अधिकारी लंबा मेज लग बैसल छलाह। मेज पर चाह, बिस्कुट, नक्शा, चमचम करैत नाप-यन्त्र, आ एक मोटी सुरक्षा-बही। बहीक आवरण नील छल, भीतरक पन्ना उज्जर, आ ओकर किनार पर जमे स्याही एना कारी जेना राति भरि कोनो गोहि ओहि पर मुँह रगड़ने हो।

विक्टर हाल्डेन हिन्दी कम बुझैत छल। ओ अंग्रेजीमे बाजैत, दुभाषिया ओकर वाक्य कैँ नरम बना कऽ हिन्दीमे उतारैत। जखन ओ कहैत — ‘हताहत संख्या प्रबन्धनीय अछि’ — दुभाषिया कहैत — ‘स्थिति नियन्त्रणमे अछि।’ जखन ओ कहैत — ‘स्थानीय शरीर श्रम अधिक जोखिम लेता है’ — दुभाषिया कहैत — ‘मजदूर सभ नियम नहि मानैत।’ जखन ओ कहैत — ‘सूची सीमित राखबाक चाही’ — दुभाषिया कहैत — ‘रिकॉर्ड साफ रहबाक चाही।’ भाषा नदी जेकाँ बहैत-बहैत अर्थक हड्डी घिसि दैत अछि — जेना पानि पाथरकैँ धीरे-धीरे गोल बना दैत अछि, ताधरि जाधरि पाथरक कोण, ओकर चिन्हारि, ओकर मूल आकार सम्पूर्ण नहि मेटा जाए।

नन्द उठि कऽ बाजलाह — ‘रिकॉर्ड साफ तखन रहत जखन ओ पूर्ण रहत।’

मेज पर चुप्पी पसरि गेल। शशिभूषण देव चश्मा खोलि कऽ रूमालसँ पोछलन्हि, जेना कोनो अदृश्य धूलि हुनकर देखबामे बाधा दऽ रहल हो। महेन्द्र पाठक सुरक्षा-बही पर हाथ राखलन्हि, जेना बही जीवित भऽ उठत तँ ओ ओकर मुँह दबा देताह। विक्टर हाल्डेन दुभाषिया दिस देखलक। दुभाषिया नन्दक वाक्य अनुवाद नहि केलक। ओ केवल मुस्कुरा कऽ कहल — 'किछु स्थानीय चिन्ता अछि।'

'स्थानीय?' नन्द भीतरसँ काँपलाह। गंगा स्थानीय? मजदूर स्थानीय? मृत्यु स्थानीय? विदेशी कम्पनीक लाभ वैश्विक, मुदा खसल देह स्थानीय? ई प्रश्न हुनकर छातीमे एहन ढंगसँ उठल जेना कोनो पातर काँच पर बिजुरीक तड़क आबि गेल हो — दिखाइ नहि पड़ैत, मुदा भीतरे-भीतर सम्पूर्ण संरचना कमजोर भऽ जाइत अछि। ओ सोचि रहल छलाह, मुदा बाहर मात्र एतबा कहलाह — 'जे लोक पुलक पाया पर चढ़ैत अछि, ओकर मृत्यु परियोजनाक मृत्यु अछि। ओकरा स्थानीय कहि कऽ छोट नहि कयल जा सकैत।'

शशिभूषण देवक स्वर कठोर भेल — 'नन्दजी, अहाँ भावुक भऽ रहल छी। अभियन्ता भावुक भेल तँ पुल नहि बनैत।'

नन्द उत्तर देलाह — 'भावुक नहि भेल तँ पायाक भीतर के भरल अछि से नहि बुझाइत।'

बैसकी अचानक समाप्त नहि भेल, मुदा ओकर आत्मा उठि गेल। कागच चलैत रहल, बात चलैत रहल, चाह ठण्डा भेल, बिस्कुटक भुरभुरी मेज पर पसरल, मुदा सभ लोक बुझि गेल जे नन्द आब केवल अभियन्ता नहि रहलाह; ओ असुविधाजनक गवाह बनि गेलाह — एहन गवाह जकरा नहिये पूर्णतः चुप कराओल जा सकैत, नहिये पूर्णतः सुनल जा सकैत, आ जकर उपस्थिति मात्र एकटा स्थायी असुविधा बनि जाइत अछि।

दोपहर बाद नन्द मजदूर-टोला गेलाह। पुल-शिविरक पाछाँ बाँस आ तिरपालक लड़ीमे अस्थायी झोंपड़ी सभ बनल छल। बरखा आयल कि छत टपकैत, लू चलल कि तिरपाल आगि जेकाँ तपैत। ओतय बिहार, उड़ीसा, बंगाल, असम, नेपालक सीमा, बुन्देलखण्ड, आ अनगिनत अज्ञात जगहक लोक छल। किछु नाम अपन जाति सँ चिन्हाइत, किछु गाँव सँ, किछु केवल देहक विशेषता सँ — लँगड़ा, गोरा, पातर, छोटू, मल्लाह, दाढ़ीवाला, बहरका। ई नाम सभ चिन्हारि नहि छल; ई चिन्हारिक अभावक चिन्ह छल, जेना समाज अपन सभसँ श्रमशील हाथ सभकेँ नाम देबाक कष्ट सेहो नहि उठौने हो।

नन्द एक-एक झोंपड़ीमे गेलाह। लोक पहिने डेरायल। अभियन्ता सामान्यतः नाप-तौल करैत आबैत, मजदूरक आँखि नापय नहि। नन्द पूछैत गेलाह — 'बिसेसर पासवानक घर?'

एक स्त्री, जकर माँगक सिन्दूर धूपमे सूखि कऽ माटि बनि गेल छल, धीरे सँ बाजली — 'घर? एतय घर कोन? तिरपाल छै।' ओकर स्वरमे कोनो शिकायत नहि छल — केवल एकटा तथ्य, एतेक पुरान जे ओकरा दुखी होएब सेहो बिसरि गेल छल।

'ओ कतय छथि?'

स्त्री हँसली नहि, रोओली नहि। ओ खाली अपन हाथक भीतर देखली, जेना बिसेसरक चेहरा हथेली पर लिखल हो, आ ओ नीक जकाँ पढ़ि नहि पाबि रहल होथि। 'तीन दिन पहिने पायापर गेल छल। फेर पानि।'

'दफ्तरमे लिखल अछि — काम छोड़ि चलि गेल।'

एहि बेर स्त्रीक आँखि उठल — पहिल बेर, आ ओहि उठलाहा आँखिमे एतेक तीक्ष्णता छल जे नन्द एक कदम पाछाँ हटि गेलाह। 'जँ चलि गेल होइत तँ अपना जूता लऽ जाइत। देखू।' ओ झोंपड़ीक कोना सँ एक जोड़ी फाटल जूता निकाललक। जूताक भीतर सीमेण्टक धूलि जमल छल, आ ओहि धूलिमे एहन एकटा आकृति छल जेना कोनो पएर अखनहुँ ओहिमे रहैत हो, केवल अदृश्य। 'जकर जूता एतय, ओकर पएर नदीमे।'

नन्द जूता देखैत रहलाह। हुनका लगल जे एहि जूतामे पृथ्वीक सभ रास्ता अटकल अछि — ओ रास्ता, जकरा बिसेसर कहियो पूर्ण नहि कऽ सकल, ओ यात्रा जे आधेमे छूटि गेल। ओ बही निकाललाह, नाम लिखलाह — बिसेसर पासवान। स्त्री पूछलक — 'नाम लिखलासँ लोक घुरि आबैत अछि?' नन्दक गला सूखि गेल। 'घुरि नहि आबैत,' ओ कहलाह, 'मुदा गायब नहि होइत।' ई उत्तर हुनका स्वयं अधूरा लागल, मुदा एहिसँ बेसी सत्य ओ ओहि क्षण कहि नहि सकल छलाह।

अगिला झोंपड़ीमे छोटू कहल जायबला मजदूरक साथी सभ छल। केओ ओकर असली नाम नहि जानैत। ओ कहैत छल — 'हमर गाममे हमरा भोला बजैत अछि, एतय छोटू।' हाजिरी-बहीमे 'छोटू' लिखल छल; भुगतान-बहीमे 'चंद्रेश'; सुरक्षा-बहीमे 'अनियमित श्रमिक'; दुर्घटना-सूचीमे कोनो नाम नहि। नन्द पूछलाह — 'ओकर पिता?' कियो नहि जानलक। 'गाम?' तीन अलग जवाब आयल। 'कतेक उमेर?' सभ चुप। छोटू नदीमे खसल छल, मुदा नदी ओकर पूरा परिचय नहि खसलने छल; परिचय तँ दफ्तर पहिनेसँ काटि देने छल — चारि नाम, चारि झूठ, आ एक्के मनुक्ख जे अखनहुँ नहि बुझल जा सकल, न मृत्युमे न जीवनमे।

ओहि साँझ नन्द अपन बहीमे अलग पन्ना बनौलाह — 'अपूर्ण नाम'। पहिल पंक्ति — छोटू उर्फ भोला? उर्फ चंद्रेश? पिता अज्ञात। गाम खोजबाक अछि। मृत्यु देखल गेल। देह नहि भेटल। जूता नहि। गमछा नहि। केवल छपाक।

ओहि पन्ना पर स्याही बार-बार पसरैत। जेना छोटू स्वयं अपन नाम तय नहि कऽ पाबि रहल हो, जेना ओकर आत्मा एखनो एहि चारि नाममे सँ एकोटाकेँ अपन नहि मानि रहल हो, आ तेँ कागचोपर ठहर नहि पाबि रहल हो।

संध्या उतरैत-उतरैत पुलक पाया सभ अन्हारमे खम्भा नहि, थान जेकाँ देखाइत। प्रत्येक पाया एक मृतकक मौन मूर्ति। मजदूर सभ कतारमे घुरैत। खाना बनैत — चावल, नमक, मिर्च, कखनो दालि, कखनो मात्र गरम पानि। तिरपालक बीच बच्चा रोइत। स्त्री सभ चुपचाप घाव पर तेल मलैत। पुरुष सभ खाँसैत। दूर अधिकारी-शिविरमे जेनेरेटर चलैत, पंखा घूमैत, रेडियो बजैत। विकासक गीत गाइत — गीत जकर धुन उज्ज्वल छल, मुदा जकर शब्द दूर मजदूरक झोंपड़ी धरि नहि पहुँचैत छल, जेना दूरी शब्दक भार सहन नहि कऽ सकैत होइ।

रातिमे नन्द केँ चौकीदार भोलाराम जगेलक। 'बाबू, अहाँ देखबा चाहब?'

'की?'

'पानिमे बत्ती।'

नन्द बाहर एलाह। नदी कारी छल। मुदा तीसरा पायाक नीचाँ सचमुच हल्की इजोत उठि रहल छल। पहिने लगल मछुआरक लालटेन हएत, मुदा इजोत पानि भीतरसँ अबैत छल। नन्द कात धरि गेलाह। ओहि इजोतमे हुनका कतेको हाथ देखाइ पड़ल — पानि भीतर, ऊपर दिस बढ़ल, जेना कोनो अदृश्य हाजिरी-बही पर हस्ताक्षर करय चाहैत हो, जेना ओ सभ अन्तिम बेर अपन उपस्थिति दर्ज करएबाक प्रयासमे होथि।

भोलाराम फुसफुसायल — 'पहिने डर लगैत छल। आब रोज देखै छी। जे खसैत अछि, पहिने तीन राति बत्ती बनैत अछि। चारिम राति गोहि खा जाइत अछि। फेर बत्ती नहि।'

नन्दक देहमे सिहरन दौड़ल। 'एहि बातक सूचना देलहुँ?'

भोलाराम थूकलक। 'सूचना? जेकरा देलिऐ, ओ कहलक पानिमे गैस निकलैत अछि। जेकरा दोसर बेर देलिऐ, ओ कहलक नौकरी चाही कि भूत? तेसर बेरसँ हम चुप।' ओकर स्वरमे कोनो कड़ुआहट नहि छल — केवल एकटा थकल स्वीकृति, जे बहुत पहिनेसँ बुझि चुकल छल जे सभ पुकार सुनल नहि जाइत।

नन्द बहुत देर धरि पानि ताकैत रहलाह। ओहि इजोतमे एक चेहरा उभरल। बिसेसर? नहि। छोटू? नहि। चेहरा बदलैत रहल। अन्तमे ओ चेहरा एहन भऽ गेल जे ककरो सेहो भऽ सकैत छल — जेना नदी सभटा मृत्युकेँ एक्के चेहरामे समेटि लेने हो, जेना व्यक्तित्व स्वयं जल-तत्वक हिसाबसँ बड़ मूल्यवान वस्तु हो, जकरा नदी सेहो पूर्ण रूपसँ बचा नहि सकैत। ओहि सार्वभौम चेहरासँ आवाज आयल — ‘नाम।’

नन्द घुटना टेकलाह। ‘कहू।’

पानिमे गोल घेरा उठल। गोहिक आँखि चमकल। आवाज फेर आयल — ‘नाम लिखबा सँ पहिने सुनय पड़ैत अछि।’

ओहि राति नन्द पहिल बेर नदीसँ नाम सुनबाक अभ्यास शुरू केलाह। ओ अपन कागच पर कान रखैत, पानि पर आँखि, आ भीतर गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछी। नाम सभ साफ नहि आबैत। कखनो ‘भोलई’, कखनो ‘बलई’, कखनो ‘बदरी’, कखनो ‘नजीर’, कखनो ‘सरयू’, कखनो ‘मुनिया’ — ओ चौंकलाह। ‘मुनिया?’ भोलाराम कहलक — ‘हँ बाबू, स्त्री सभ सेहो ढोइत अछि। रजिस्टरमे ओकर नाम पति साथे लगि जाइत अछि, अलग मजदूर नहि।’

नन्दक माथ गरम भऽ गेल। स्त्रीक देह पर काम, मुदा बहीमे नाम नहि। बच्चा पानि भरैत, बोरा सम्हारैत, ईंट चुनैत, मुदा बहीमे ‘परिवार’ लिखल। जँ मृत्यु हो, कहि देब — ‘कार्यरत नहि।’ ई हत्या मृत्यु सँ पहिने शुरू भऽ जाइत अछि — कागचक पहिल पन्नाहि सँ, जतय एकटा जीवित स्त्रीकेँ पहिनहिये मिटा देल जाइत अछि, बिनु ओकरा मरबाक अवसर देने।

दुसर दिन नन्द सुरक्षा-बही देखबाक मांग केलाह। महेन्द्र पाठक टाललन्हि। ‘उच्च अनुमति चाही।’ नन्द कहलाह — ‘मृत्यु कें अनुमति नहि चाही।’ महेन्द्रक मुँह लाल भऽ गेल। अन्तमे बही आयल। ओकर पन्ना सभ सुन्दर। तारीख, निरीक्षण, हस्ताक्षर, टिप्पणी — ‘सुरक्षा-टोपी वितरित’, ‘रस्सा जाँचल’, ‘काम बन्द बरखा समय’, ‘रात्रि कार्य निषिद्ध’। नन्द बाहर गेलाह। मजदूरक माथ पर कोनो टोपी नहि। रस्सा घिसल। बरखामे काम। रातिमे काम।

ओ बहीक प्रत्येक झूठक पाछाँ एक-एक छपाक सुनलाह — जेना कागचक प्रत्येक सुन्दर वाक्य पानिक तर एकटा डूबल सत्य ढोइत हो, आ ओ सत्य निरन्तर, बिनु थाकने, ऊपरक शब्द सभकेँ भीतरसँ काटैत हो।

नन्द बहीमे लिखल हस्ताक्षर देखलाह — कतेको ठाम एक्के हाथ। मजदूरक नाम अलग, अंगूठाछाप एके रंग, एके गोलाई। भुगतान-बहीमे जे दिन बिसेसर मरल छल, ओहि दिन ओकर मजदूरी निकसल। मृत्युक बादो मजदूर पैसा लऽ रहल छल — कागच पर। नन्दक आँखि

धुँधली भऽ गेल। ओ सोचलाह, गोहि देह खाइत अछि, मुदा दफ्तर मरल देहक मजूरी सेहो खा जाइत अछि — मृत्युक बादो ओ लोकक अस्तित्वक भ्रम बनौने रहैत अछि, कारण जीवित नाम कागचमे बेसी सुविधाजनक होइत अछि, मृत नामसँ।

एहि जाँचक खबर जल्दी पसरल। साँझमे परियोजना-प्रमुख शशिभूषण देव नन्द कैँ अपन कक्षमे बजौलन्हि। कक्षमे ठण्डा हवा चलि रहल छल। मेज पर काँचक गिलास, नीम्बू-पानि, आ एक मोट लिफाफा। शशिभूषण देव थाकल स्वरमे कहलन्हि — 'नन्दजी, अहाँ योग्य अभियन्ता छी। भविष्य अछि। ई सभ बातमे पड़ि कऽ की लाभ?'

नन्द चुप।

'विदेशी कम्पनी अछि। केन्द्र तक बात अछि। राज्यक मान अछि। पुल रुकल तँ अखबारमे विकास-विरोधी कहल जाएत। मजदूरक मृत्यु दुखद अछि, मुदा एहन परियोजनामे घटैत अछि। अहाँ सूची बना कऽ की करब? जे मरि गेल, घुरि आयत?'

नन्द कैँ बिसेसरक जूता मोन आयल। ओ कहलाह — 'जे मरि गेल, ओ नहि। मुदा जे झूठ बोलि रहल अछि, ओकरा रोकल जा सकैत।'

शशिभूषण देव लिफाफा ओकरा दिस सरकलन्हि। 'किछु खर्चा-पानि। परिवार अछि। गाम अछि। अहाँक बच्चा होएत। जीवन लंबा अछि।'

नन्द पहिल बेर उग्र भेलाह नहि। ओ लिफाफा खोललाह सेहो नहि। ओकरा उठौलाह, नाक लगौलाह, आ फेर मेज पर राखि देलाह। 'गन्ध पैसाक अछि,' ओ धीरे कहलाह। 'हमरा बाबू-बुजुर्ग कहि गेलाह — भीजल कागच पर जँ पैसाक गन्ध हो, हस्ताक्षर नहि करब।'

शशिभूषण देवक चेहरा पलटि गेल। 'बड्ड कथा सुनैत छी। सावधान रहू। नदी गहींर अछि।'

'हमरा मालूम अछि,' नन्द कहलाह, 'नदीसँ बेसी गहींर दफ्तर होइत अछि।'

ओहि राति पहिल धमकी आयल। नन्दक बिस्तर पर एक छोट कागच राखल भेटल — 'नाम लिखब बन्द करू। गोहि भूखल अछि।' अक्षर टेढ़ छल, पर स्याही नवी। नन्द कागच मोड़लाह नहि। ओ अपन डायरीमे चिपका देलाह। नीचे लिखलाह — 'धमकी प्राप्त। अर्थ — नाम सही दिशामे जा रहल अछि।' ई पंक्ति लिखिते हुनकर हाथ हल्का काँपल, मुदा ओ काँपब डरक नहि, कोनो नव संकल्पक पहिल हलचल छल।

चन्ना गाछीमे एहि राति कबड्डी फेर शुरू भेल। बूढ़बा भूत निर्णायक, पनिडुब्बी सीमा-रेखा, डाइन सभ दर्शक नहि, रणनीतिकार। लोथ, जे सदिखन आधा मुँह खोलि देखैत छल, एहि बेर

मैदानमे उतरलक। ओकर पएर धरती सँ एक अंगुर ऊपर, मुदा धूलि उठैत। ओ 'कबड्डी' नहि बाजल। ओ बाजल — 'सुरक्षा-बही, हाजिरी-बही, भुगतान-बही।' भूत सभ हँसल नहि। खेल गंभीर छल।

प्रेतक दल सँ हुलासी उतरली। हाथ नहि, मुदा आवाज तेज। ओ सीमा पार करैत कहलनि — 'जकर स्त्रीक नाम पतिमे गुम, ओकर मृत्यु ककर?' पनिडुब्बी अपन झोंटा सँ रेखा खिंचलक। राकश सभ चानीक इजोर सँ पन्ना उजागर केलक। एक-एक करि स्त्री-मजदूरक नाम पात पर उभरए लागल — मुनिया, सरयू, फुलकली, रजनी, जमुना, धनेसरी। ओ सभ जीवित छली कि मृत — केओ नहि जनैत। मुदा नाम आबि गेल।

गढ़ नारिकेलक नारिकेल पात पर जे नाम उभरैत, ओकर खबर नन्दक डायरीमे भोर धरि पहुँचैत। अगिला भोर हुनका चारिम नहि, पाँचम पन्ना भीजल भेटल। ओहि पर छओ स्त्री-नाम लिखल छल। नन्द देखिते बुझलाह — एहि परियोजनामे मृत्यु केवल पानिमे नहि, अदृश्य श्रममे सेहो अछि — एहन श्रम जकरा समाज देखए चाहैत नहि, आ तेँ बहीक भाषा ओकरा देखबाक साधन सेहो नहि दैत।

ओ दिन नन्द स्त्री-मजदूर सभक अलग हाजिरी माँगलाह। दफ्तर हँसल। महेन्द्र पाठक कहल — 'परिवारक सदस्य छथि, कर्मचारी नहि।' नन्द कहलाह — 'जँ माथ पर बोरा छन्हि, तँ कर्मचारी। जँ पाया पर चढ़ल छथि, तँ कर्मचारी। जँ खसलासँ मरि सकैत छथि, तँ कर्मचारी।' दिवाकर लाल धीमे सँ बाजल — 'ई भाषा नियममे नहि अछि।' नन्द उत्तर देलाह — 'तखन नियममे पानि भरू।'

एहि वाक्यक बाद नन्दक अकेलापन पूर्ण भेल। अधिकारी सभ ओकरा सँ दूरी बनौलन्हि। विदेशी परामर्शदाता ओकरा 'भावुक स्थानीय' कहय लागल। मजदूर सभ ओकरा 'नाम-बाबू' कहय लागल। रातिमे भोलाराम ओकरा लेल चुपचाप चाह राखि जाइत — बिनु किछु कहने, बिनु कोनो अपेक्षाक, केवल एकटा मौन साक्षीक रूपमे। बिसेसरक पत्नी जूता साफ करि कऽ तिरपालक बाहर राखैत, जेना पति कहियो घुरि आबि पहिरत। छोटूक साथी सभ ओकर असली नाम खोजबाक लेल अपन-अपन गाम पत्र पठौलन्हि। गोहि सभ पानिमे कम देखाइ पड़य लागल, मुदा ओ कम भूखल भेल कि बेसी चालाक, से केओ नहि बुझल।

किछु दिन बाद जाँच-समिति आयल। मोटरगाड़ी, सफेद टोपी, चमकैत जूता। समिति दिनमे आयल, जखन नदी शान्त रहैत। मजदूर सभ पहिने सँ चेताओल — 'कियो मृत्युक बात नहि करब। कियो रातिक काम नहि कहब। कियो पायाक रस्सा नहि देखायब।' बिसेसरक पत्नी

कैं शिविरसँ दूर पठा देल गेल। छोटूक साथी सभकैं दोसर पारीमे लगा देल गेल। सुरक्षा-टोपी ओहि दिन पहिल बेर बाँटल गेल। कैमरा घूमल। अधिकारी मुस्कुरौल। रिपोर्टमे लिखल गेल — ‘व्यवस्था संतोषजनक।’

नन्द रिपोर्ट पढ़लाह। शब्द सभ चमकैत छल, मुदा ओहि चमकक पाछाँ हुनका गंगा पानिमे उठैत बत्ती देखाइ पड़ल। ओ रिपोर्टक किनार पर अपन हाथसँ लिखलाह — ‘संतोषजनक शब्दक पाछाँ कतेक छपाक अछि?’ एहि टिप्पणी पर शशिभूषण देव लाल पेंसिलसँ रेखा घीचलन्हि। रेखा एहन छल जेना गला काटल जाइत हो।

रातिमे भारी बरखा भेल। नदी फूलल। तीसरा पाया पर काम रोकबाक आदेश कागचमे छल, मुदा वास्तविकतामे काम चलैत रहल। ऊपर सँ दबाव छल — समय-सीमा। विदेशी कम्पनीक पत्र आयल छल — विलम्ब पर दण्ड। राज्यक मंत्री उद्घाटनक तारीख तय कऽ चुकल। पुलक लोहेक जाल बाढ़िक पानिमे काँपत, मजदूर लालटेन लऽ कऽ चढ़ल, रस्सा भीजल, पएर फिसलन। नन्द दौड़लाह — ‘काम बन्द करू!’

कोलाहल, बरखा, हवा, लोहेक खड़खड़ाहट, पानिक गर्जना। हुनकर आवाज आधा रास्तामे टूटि गेल। एक मजदूर ऊपर सँ चिचिआएल। दोसर ओकरा पकड़य गेल। दुनू लुढ़कल। तीसरा रस्सा टूटल। एक देह लोहा सँ टकरायल, दोसर सीधा पानि। छपाक एहन जे बरखा एक क्षण लेल चुप भऽ गेल — जेना आकाश स्वयं ओ आवाज सुनि स्तब्ध भऽ गेल हो।

नन्द पानिमे कूदय चाहलाह। भोलाराम पकड़ि लेलन्हि। ‘बाबू, गोहि!’ नन्द छूटि गेलाह। ओ पानि कात धरि भागलाह। टॉर्चक इजोतमे एक हाथ देखाइ पड़ल, फेर गायब। नन्द चिचिआलाह — ‘नाम!’ बरखामे आवाज डूबि गेल। पानि भीतर सँ उत्तर आयल कि हवामे, नन्द नहि बुझलाह — ‘सरयू।’

सरयू? स्त्री? ओहि राति खसल देह सभमे एक स्त्री सेहो छल? दफ्तरक सूची कहत — ‘कोनो स्त्री कार्यरत नहि।’ नन्दक छाती फाटि गेल। ओ पानिमे घुटना धरि उतरि गेलाह। गोहिक आँखि सामने चमकल। गोहि आ नन्दक आँखि एक क्षण मिलल। नन्द कैं लगल, गोहि ओकरा खाए नहि चाहैत; ओ केवल देखब चाहैत जे एहि बेर नाम बचत कि नहि — जेना ओहो, अपन तरहसँ, एहि खेलक एकटा अनिच्छुक न्यायाधीश हो।

भोर भेल तँ आधिकारिक सूचना बनल — ‘अत्यधिक वर्षाक कारण कार्य अस्थायी रूपें बाधित। कोनो प्रमुख क्षति नहि।’ नन्द ओ सूचना फाड़लाह। पहिल बेर ओ सरकारी कागच

फाड़लन्हि। फाड़ल कागचक टुकड़ा जमीन पर गिरल, आ प्रत्येक टुकड़ा पर पानि बून्द बनि ठहरल। प्रत्येक बून्दमे एक चेहरा। नन्द ओ सभ टुकड़ा समेटलाह, डायरीमे राखलाह।

आब हुनका बुझाइ गेल जे आवेदन पर्याप्त नहि। सूची पर्याप्त नहि। दफ्तरक भीतर सच्चाईक जगह नहि। सच्चाई कैँ नदी, गाम, मृतक, मजदूर, स्त्री, जूता, गमछा, धमकी, आ फाड़ल सूचना सभकैँ मिलि कऽ बनाबय पड़त। ओ राति ओ अपन डायरीक नब पन्ना खोललाह आ शीर्ष पर लिखलाह — ‘छपाकक हिसाब।’

पहिल नाम — बिसेसर पासवान।

दोसर — छोटू, असल नाम खोजबाक अछि।

तेसर — सरयू, स्त्री-मजदूर, आधिकारिक रूपैँ अस्तित्वहीन।

तकर बाद पन्ना अपनहि भरैत गेल। नन्द लिखैत गेलाह। बाहर नदी बहैत रहल। भीतर चन्ना गाछीमे कबड्डी जारी रहल। आ गढ़ नारिकेलक नारिकेल पात सभ राति भरि एना काँपत रहल जेना प्रत्येक पात एक-एक गवाही बनि अदालतक बरामदा धरि उड़य लेल तैयार हो — प्रतीक्षारत, अधीर, आ नाम सुनएबाक लेल भूखल, जेना पातहु सभ नाम सुनने बिनु शान्ति नहि पाबि सकैत होथि।

लोकगीत: छपाक गनैत राति

लोकधुन: नाविक-विरहा

गनू हे बाबू, छपाक नहि—परिवार गनू हे,
एक नामक पाछाँ कानैत सगर संसार सुनू हे।

एक छपाक बिसेसर, दोसर छोटू नाम,
तेसर सरयू डूबल, के गनत ई घाम?
रजिस्टर कहै अनुपस्थित, नदी कहै हमर,
माए कहै साँझ भेल, किएक नहि आयल घर?
फाटल सूचना उड़ै, जूता टपकै राति,

नन्दक नील स्याहीमे जागल सभक बात।
पात-पात गवाही बनि उड़ए बरामदा,
मृतकक नाम भूखल, माँगए अपन वादा।
छपाक गनू बाबू, देह नहि—परिवार,

एक नामक पाछाँ रोअए पूरा संसार।

साँझ भेल, केबाड़ खुजल, नहि आयल घर।
नीलस्याहीक पाँति मे जागल सभक बात,
मृतकक भूखल नाम माँगए अपन प्रात।

❖

अध्याय ४

तीस नाम, तीन सय लाश

रजिस्टरमे तीस नाम, माटिमे तीन सय देह— घाटाक भार सदिखन मुर्दे उठबै छै।

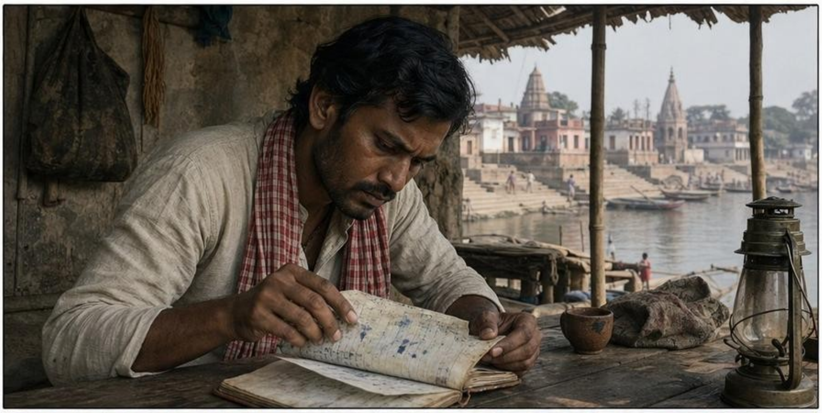

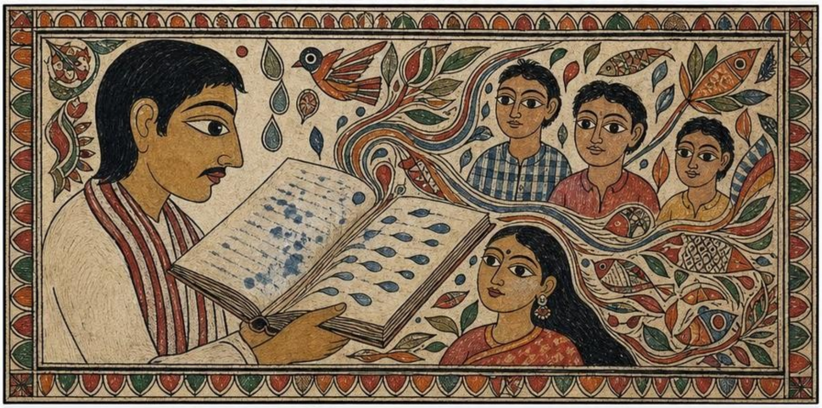

अध्यायारम्भ लोकगीत: नाम गनू, जीवन बचाउ

लोकधुन: करुण झूमरक जागरण

गनू गे बहिना, नाम-नाम गनू गे,
तीस नहि, तीन सय दीपक ठाम गनू गे।

तीसपर गिनती रोकू नहि, पात जते हिलै,
हरेक संख्या पाछाँ घर, माए, सपना मिलै।
नाम गनू आदरसँ, जीवनक कथा जोड़ू,
छोट सूचीक देबाल तोड़ि पूरा सत्य खोलू।

तीन सय दीप जरत तँ अन्हार पाछाँ जाए,
एक सही गिनतीसँ न्याय दिशाक राह बनाए।
नाम गनू, जीवन बचाउ, संख्या मानुख होए,
साँचक पूरा लेखासँ नया व्यवस्था बोए।

झूमरक ताल पर आँगन-आँगन जागए,
संख्याक परदा फाटए, चेहरा सोझाँ आबए।
जकर घर उजरल, तकर लेखा पूरा जुड़ए,
माएक नोरक एक-एक बून्दक मोल मुड़ए।

❖

सरयूक नाम तेसर पंक्तिमे छल। नन्द ओकरा देखैत रहलाह। अक्षर स्त्रीक देह जेकाँ काँपत छल। कागच कहैत छल — ‘हमरा लिखू, नहि तँ हम फेर पानि बनि जाएब।’

भोरमे ओ भोलारामकेँ जगौलन्हि। ‘सरयू केँ चिन्हैत छी?’

भोलाराम पहिने चुप रहल। चौकीदार सभ बहुत बात सुनैत अछि, मुदा बाजैत कम अछि — जेना ओकर वृत्ति सुनब हो, बाजब नहि। ओ अपन गमछा माथ पर कसैत कहल — ‘सरयू? हँ, एक छली। मुदा ओ रजिस्टरमे नहि छली।’

‘किएक?’

‘

किएक तँ ओकर पति मरि गेल छल पहिने। ओ ओकर बदला बोरा ढोबय लागल। नाम पति केर चलैत रहल। मजूरी ओ लैत, नाम ओकर पति खाइत। मृत्यु भेल तँ दफ्तर कहत — पति तँ पहिनहि गाम चलि गेल।'

नन्द कैँ बुझायल, मृत लोक सभ कागच पर जिअय लगैत अछि, आ जीवित स्त्री सभ कागच पर मरल रहैत अछि। ई सरकारी चमत्कार छल, जकरा लेल मंत्र नहि, मोहर चाही — आ मोहर, मंत्रसँ बेसी क्रूर होइत अछि, कारण ई कहियो प्रश्न नहि पूछैत, केवल दस्तखत माँगैत अछि।

ओहि दिन नन्द पहिल बेर मजदूरक नाम नहि, ओकरा सभक वस्तु गनलन्हि। बिसेसरक जूता। छोटूक फाटल गमछाक कोना। सरयूक चाँदीक कड़ा, जे ओकर संग खसल नहि; तिरपालक बाँस पर अटकल रहि गेल। मुनियाक बालकक टूटी स्लेट। धनेसरीक पीतल कटोरी। नन्द बुझलाह — जखन नाम काटल जाइत अछि, वस्तु गवाही दैत अछि। वस्तु झूठ नहि बाजैत, कारण ओकरा भाषा नहि होइत, केवल उपस्थिति होइत अछि, आ उपस्थिति सभसँ ठोस साक्ष्य होइत अछि।

दफ्तरमे ओ सभ वस्तु लऽ गेलाह। मेज पर राखलन्हि। दिवाकर लाल जूता देखिते नाक सिकोड़लन्हि। 'ई की लऽ आयलहुँ?'

'साक्ष्य।'

'जूता साक्ष्य?'

'जेकर पएर नहि भेटल, ओकर जूता साक्ष्य।'

दिवाकर लाल अपन कलमक टोपी खोलि-बन्द करैत रहल। ओकर आवाज टुक-टुक करैत छल, जेना कोनो छोट हथौड़ा कफिन पर चोट मारैत हो। 'नियममे एना नहि होइत। मृत्युक लेल देह, गवाह, प्रतिवेदन चाही।'

नन्द कहलाह — 'गोहि प्रतिवेदन नहि लिखैत।'

दिवाकर लाल हँसल नहि। ओ बुझि गेल जे नन्द आब कागचक सामान्य भाषा सँ बाहर जा रहल छथि। जे लोक नियमक भाषा छोड़ि नदीक भाषा सुनय लागैत अछि, ओकरा दफ्तर जल्दी खतरनाक मानैत अछि — कारण नियम बुझल जा सकैत अछि, मुदा नदी नहि।

दोपहर धरि खबर परियोजना-प्रमुख लग पहुँचि गेल। साँझ धरि विभागक तार आयल। तारमे तीन पंक्ति: 'मृत्यु-सूची सीमित राखल जाय। अफवाह पर नियन्त्रण। कार्य प्रगति बाधित

नहि हो।' नन्द तार पढ़लाह आ सोचलाह — सरकारक भाषामे मृतकक नाम पहिने 'अफवाह' बनैत अछि, फेर 'बाधा', तकर बाद 'विकास-विरोध' — तीन शब्द, तीन खोल, आ भीतर सदिखन एक्के लाश।

विदेशी परामर्शदाता विक्टर हाल्डेन ओ दिन बहुत प्रसन्न छल। ओकरा कलकत्ता सँ केओ फोन केने छल। ओ बार-बार कहैत — 'रिपोर्ट साफ रहबाक चाही। बीमा-कम्पनी सवाल करैत अछि। बैंक सवाल करैत अछि। निवेशक सवाल करैत अछि।' नन्द सुनैत रहलाह। हुनका पहिल बेर बुझायल जे पुल केवल नदी पर नहि बनि रहल अछि। पुल बैंक, बीमा, विदेशी पूँजी, मंत्रीक भाषण, अधिकारीक पदोन्नति, आ मजदूरक भूखक बीच बनि रहल अछि। ई पुल जँ टूटत, तँ ऊपरक लोकक प्रतिष्ठा टूटत; नीचे लोक तँ पहिनहि टूटि रहल छल — बरखो सँ, आ बिनु ककरो नोटिस केने, जेना कोनो पुरान भीतक कोण धीरे-धीरे झुकैत अछि, जाधरि पूरा देबाल एकहि साँझ खसि नहि पड़ैत।

ओहि राति चन्ना गाछीमे कबड्डीक नियम बदलि गेल। बूढ़बा भूत कहलथि — 'आइ सँ जे पकड़ा जाएत, ओकर नाम नहि, ओकर हिसाब पूछल जाएत।' राकश सभ इजोर करत। प्रेत सभ पारी बनाओत। पनिडुब्बी सीमा पर झोँटा पसारि देलक। डाइन सभ उड़ि कऽ ऊपर बैसल। लोथ अपन आधा-खुजल मुँहमे पहिल बेर शब्द भरलक — 'तीस।'

'तीस?' हुलासी पूछली।

'दफ्तर कहत तीस। नदी कहत तीन सय।'

चन्ना गाछीमे हवा बन्द भऽ गेल। गढ़ नारिकेलक पुरान लोक कहैत छथि — जखन हवा बन्द भऽ जाए आ पात नहि हिले, तखन कखनो-कखनो मृतक सभ गिनती करैत छथि। ओहि राति गिनती शुरू भेल। एक, दू, तीन — गाछक पात काँपल। चार, पाँच, छओ — पनिडुब्बीक झोँटा पानि खोजय लागल। सात, आठ, नौ — पीपरक ब्रह्मा आँखि खोललन्हि। तीस पर पहुँचिते अधिकारीक स्वर आबि गेल — 'पर्याप्त।' मुदा गिनती रुकल नहि। इकतीस, बत्तीस, तैंतीस — आब आवाज नदीक भीतर सँ आबि रहल छल, जेना गिनती स्वयं अपन दिशा बदलि लेने हो, आब ओ ऊपरसँ नहि, तर सँ उठि रहल हो।

नन्द कैँ ओहि गिनतीक प्रतिध्वनि अपन छातीमे सुनाइ पड़ल। ओ सोइत नहि। डायरी पर झुकल। नाम जेना सपना सँ उठि कऽ ओकर कलमक नोक पर आबैत। किछु नाम पूर्ण, किछु आधा, किछु केवल जाति, किछु केवल गाम, किछु केवल उपनाम। ओ लिखैत गेलाह। भोर धरि उनचास नाम। तेसर दिन बहत्तर। सप्ताह भरिमे एक सय सात। प्रत्येक नामक संग एक संकेत —

जूता, गमछा, कड़ा, स्लेट, गीत, खाँसी, देहक दाग, हँसी, डेरायल आँखि। प्रत्येक संकेत ओहि जीवनक एकटा टुकड़ा छल, जकरा नन्द जोड़ि-जोड़ि कऽ एकटा पूर्ण मनुक्ख बनएबाक प्रयास करैत छलाह — बिनु ई जानने जे पूर्णता कहियो सम्भव नहि छल, केवल आदर सम्भव छल।

मुदा आधिकारिक मृत्यु-सूची बनल — तीस।

तीस नाम साफ-सुथर कागच पर टाइप भेल। प्रत्येक नामक आगाँ क्रमांक, पिता, गाम, अनुमानित उमेर, मुआवजा-स्थिति। नन्द जखन सूची देखलाह तँ बुझलाह, सरकारी कागच मृतक कैँ मारैत नहि; ओकरा सुन्दर बनबैत अछि। ओहि सुन्दरतामे सभसँ पैघ हिंसा छल — एहन हिंसा, जकरा देखबामे कोनो रक्त नहि, केवल सुव्यवस्थित कॉलम आ स्वच्छ फॉन्ट। बिसेसर पासवान सूचीमे छल, मुदा ओकर पिता गलत। छोटू नहि। सरयू नहि। मुनिया नहि। धनेसरी नहि। ओ सभ लोक जकर श्रम स्त्रीक देहमे छल, कागच पर ‘परिवार’ छल। जकर देह पानिमे गेल, कागच पर ‘अनुपस्थित’ छल।

नन्द सूची हाथमे लऽ कऽ शशिभूषण देवक कक्षमे गेलाह। ‘ई अपूर्ण अछि।’

शशिभूषण देव थाकल दिखाइत छलाह, मुदा ओहि थकानमे डर नहि, ऊब छल — एहन ऊब जे बहुत बेर एकहि तरहक तर्क सुनला सँ जन्मैत अछि। ‘नन्दजी, सरकारक समिति जाँचि चुकल। बीमा कम्पनी सहमत। परिवारक मुआवजा जारी। आब अहाँ की चाहैत छी?’

‘सत्य।’

‘सत्य?’ शशिभूषण देव कुर्सी पर पाछाँ झुकलाह। ‘सत्य परियोजना-प्रबन्धनक विषय नहि। सत्य दार्शनिक शब्द अछि। हम लोक निर्माण करैत छी।’

नन्दक स्वर धीमा, मुदा काटदार — ‘जकर पायामे लाश भरल हो, से निर्माण नहि, समाधि अछि।’

एहि वाक्य पर कमरा थर्रायल। बाहर जेनेरेटरक ध्वनि एक क्षण अटकली। विक्टर हाल्डेन, जे खिड़की लग सिगरेट पीबैत छल, मुड़ि कऽ देखलक। ओकरा वाक्यक अर्थ दुभाषिया बादमे बुझाओत, मुदा स्वर ओकरा तुरन्त बुझा गेल — कारण किछु वाक्य अपन ध्वनिमे अनुवादक जरूरति नहि रखैत, ओ सोझे कानसँ छाती धरि पहुँचि जाइत अछि।

‘अहाँ अपन सीमा पार करि रहल छी,’ शशिभूषण देव कहलन्हि।

नन्द सोचलाह — सीमा? नदीक सीमा? दफ्तरक सीमा? मृतकक सीमा? पनिडुब्बीक झोँटा जेकाँ ई सीमा सेहो जीवित छल, जे जकर पएरमे ओझराइत ओकरा भीतर घीचि लैत। ओ कहलाह — 'जखन सीमा पानिमे डूबि गेल, तखन पार करबापर रोक केना?'

ओहि दिनक बाद नन्दक फाइल अलग आलमारीमे राखल गेल। आलमारी पर ताला। ताला पर धूलि नहि जमि सकल, किएक तँ रोज केओ-ने-केओ ओ खोलैत, देखैत, फेर बन्द करैत। कागच सभ भीतर साँस लैत। कखनो-कखनो रातिमे ताला हिलैत। चौकीदार कहैत — 'बाबू, भीतर सँ आवाज अबैत अछि।' दफ्तर कहैत — 'चूहे।' नन्द कहैत — 'नाम।' एक्के आवाजक तीन अलग व्याख्या — ई तीनू व्याख्या बतबैत छल जे सुननिहार अपन डर, अपन सुविधा, आ अपन सत्यक अनुसार दुनियाँकेँ बाँटि लैत अछि।

मुआवजा वितरणक दिन मेला जेकाँ भीड़ छल। अधिकारीक टेबुल, मंत्रीक प्रतिनिधि, प्रेसक फोटोग्राफर, पुलिसक लाठी, आ मरल लोकक परिवार। जे तीस नाम सूचीमे छल, हुनकर परिवार केँ बुलाओल गेल। जे नहि छल, ओ सभ भीड़मे ठाढ़ रहल। ओहि भीड़मे बिसेसरक पत्नी सेहो छली। हुनका लिफाफा भेटल — कारण बिसेसर सूचीमे छल। ओ लिफाफा लेबासँ पहिने पूछली — 'छोटू कते?'

अधिकारी चौंकल। 'तोहर मुआवजा लऽ।'

'सरयू कते?'

'तोहर नाम की?'

ओ कहलथि — 'हम बिसेसरक स्त्री। मुदा बिसेसर अकेले नहि खसल। ओ पानिमे जगह छोड़ि देलकै? छोटू, सरयू, मुनिया सभक ठाम कतय?' ओकर स्वरमे कोनो चिचिआहट नहि छल — केवल एकटा प्रश्न, एतेक सीधा जे ओकरा टारब असम्भव छल।

पुलिसक सिपाही आगाँ बढ़ल। नन्द बीचमे आबि गेलाह। 'प्रश्न वैध अछि।'

सिपाही मुस्की देलक — 'वैध? ई अदालत अछि?'

नन्द उत्तर देलाह — 'जतय मृतकक परिवार ठाढ़ हो, ओतय अदालत शुरू भऽ जाइत अछि।'

ई वाक्य प्रेसक ककरो कान धरि नहि पहुँचल। कैमरा ओहि समय मंत्री-प्रतिनिधिक मुस्कान पर केन्द्रित छल। फोटो अगिला दिन छपल — 'दुर्घटना पीड़ित परिवार केँ सहायता।' फोटोमे बिसेसरक पत्नी मुस्कुराइत देखाओल गेली, किएक तँ कैमरा क्लिक होइत काल

हुनका आँखिमे धूप पड़ल आ ओ आँखि सिकोड़ने छली। अखबारक दुनियाँमे आँखि सिकोड़बो मुस्कान बनि जाइत अछि — जेना दुख आ प्रकाशक बीच भेद करब सम्पादकीय दफ्तरक काज नहि रहि गेल हो।

ओहि अखबारक कटिंग नन्द अपन डायरीमे चिपकौलाह। नीचे लिखलाह — 'झूठ कखनो-कखनो फोटो बनि जाइत अछि।'

जल्दीए हुनका स्थानान्तरणक आदेश भेटल। छोट कागच। सूखा भाषा। 'प्रशासनिक कारणवश।' नन्द हँसलाह। प्रशासनिक कारणवश नदी गहींर होइत अछि, प्रशासनिक कारणवश गोहि भूखल रहैत अछि, प्रशासनिक कारणवश स्त्री-मजदूरक नाम नहि लिखल जाइत अछि, प्रशासनिक कारणवश सत्यक बदली होइत अछि।

ओ आदेश लऽ कऽ ओ गंगा कात गेलाह। पानि धूसर। पुलक पाया आधा बनल। मजदूर सभ दूर सँ देखैत। केओ किछु नहि बाजल। बिसेसरक पत्नी अपन झोंपड़ी सँ जूता निकालि लऽ आयली। 'ई अहाँ लऽ जाउ,' ओ कहलनि।

'ई अहाँक अछि,' नन्द कहलाह।

'हमरा लग राखब तँ पुलिस कहत चोरी। अहाँ लग राखब तँ कागच बनत।'

नन्द जूता लऽ लेलाह। ओहि क्षण हुनका लगल, ई जूता बिसेसरक नहि, पूरा जलसमाधि लोकक पएर अछि। ओ जूता थैलामे नहि राखलाह। हाथमे लटकल छोड़ि देलाह। लोक देखय। दफ्तर देखय। नदी देखय। गोहि देखय।

रातिमे विदा हेबासँ पहिने भोलाराम ओकरा एक लिफाफा देलक। 'हम लिखल नहि जानैत। मुदा मजदूर सभ नाम कहल। अहाँ पढ़ि लेब।'

लिफाफाक भीतर कागच नहि, रंग-बिरंग धागा, काँचक चूड़ीक टुकड़ा, बटन, बालकक पेन्सिल, एक सड़ा टिकट, किछु राख, आ एक छोट ताम्र-ताबीज। नन्द बुझलाह — जखन लोक लिखि नहि सकैत, तँ वस्तु सभ वर्णमाला बनि जाइत अछि। ओ लिफाफा अपन छाती लग राखलाह — जेना ओतय एकटा दोसर हृदय धड़कि रहल हो, जकर धड़कन ओकरा अपन धड़कनसँ बेसी जरूरी बुझाइत छल।

गढ़ नारिकेल घुरलाक राति बा दरबाजा पर बैसल छली। हुनका किछु कहबाक आवश्यकता नहि पड़ल। ओ जूता देखलन्हि, लिफाफा देखलन्हि, नन्दक आँखि देखलन्हि, आ बुझि गेली जे बेटा केवल नौकरी सँ नहि, पानिसँ घुरल अछि। ओ भीतर गेली, तुलसी लग दीपक राखलन्हि, आ धीरे कहलन्हि — 'घरमे मृतक आयल छथि। आसन लगाउ।'

नन्द पूछलाह — 'बा, अहाँ केना बुझलहुँ?'

बा हँसलखिन्ह नहि। 'गढ़ नारिकेलक लोक कैँ बुझय लेल कागच नहि चाही। जूता जँ अकेले घुरि आबय, तँ मानू पाछाँ पूरा भीड़ अछि।'

ओहि राति घरक आँगनमे अजीब सभा भेल। केओ आँखि सँ नहि देखलक, मुदा सभ सुनलक। नारिकेल गाछक पात एक-एक नाम पढ़ैत। बा बीच-बीचमे 'हाजिर' कहैत। नन्द डायरी खोलि कऽ बैसल। जे नाम ओकरा अस्पष्ट छल, ओ पातक खड़खड़ाहट सँ साफ होइत गेल। छोटूक असली नाम शायद भोला चन्द्रेश नहियो रहै; ओकर नाम 'भोलटुन' निकलल, ओकर गाम नदीक ओहि पार जे सरकारी नक्शामे दू साल पहिने बाढ़िमे कटि चुकल। सरयू 'कर्मचारी' नहि, मुदा 'पाया-पारी तीन' मे काम करैत छली। मुनिया गर्भवती छली। धनेसरी अपन बालक कैँ तिरपालमे सुतेलाक बाद रातिमे बोरा ढोइत छली।

नन्द लिखैत गेलाह। नाम लिखब आब इंजीनियरक काज नहि, श्राद्धक काज छल। मुदा ई श्राद्ध पिण्डदान नहि, मुकदमा छल।

किछु दिन बाद नन्द जिला मुख्यालय गेलाह। वकीलक दफ्तर, टाइपराइटर, मोहर, स्टाम्प, चाह, घाम, पसीना। ओ पहिल बार एक याचिका बनबय चाहैत छलाह। वकील, जकर नाम देवकीनन्दन चौबे छल, फाइल पढ़ैत-पढ़ैत थाकि गेल। 'तीन सय नाम? बाबू, अदालत पूछत प्रमाण।'

नन्द थैला खोललाह। जूता, कड़ा, चूड़ी, ताबीज, पेन्सिल, कटिंग, सुरक्षा-बहीक नकल, भुगतान-बहीक पन्ना, धमकी-पत्र। वकील पहिने असहज भेल, फेर चुप। ओ पूछल — 'एहि सभकैँ अदालतमे की कहब?'

नन्द उत्तर देलाह — 'नामक अवशेष।'

वकील धीरे सँ कहल — 'कानून एना नहि सुनैत।'

'तखन कानून कैँ सुनय सिखाउ।'

देवकीनन्दन चौबे ओहि क्षण नन्दक प्रति सम्मान आ डर दुनू अनुभव केल। ओ याचिका लिखल। 'मृतक-सूची पुनरीक्षण, स्वतंत्र जाँच, स्त्री-मजदूरक मान्यता, मुआवजा-धोखाधड़ी, सुरक्षा-उपेक्षा।' शब्द सभ भारी छल। टाइपराइटरक प्रत्येक चोट पर लगैत जेना कोनो गोहिक दाँत पर हथौड़ा पड़ि रहल हो।

मुकदमा दाखिल भेल। पहिल तारीख मिलल — दू मास बाद। नन्द बाहर निकलि कऽ हँसलाह नहि, रोइलाह नहि। हुनका चन्ना गाछीक कबड्डी मोन आयल। खेलमे सीमा पार करबाक बाद साँस रोकि राखय पड़ैत अछि। अदालतक पहिल तारीख शायद ओहि साँसक आरम्भ छल।

दू मास बाद तारीख। अदालतक बरामदामे भीड़। किसान, व्यापारी, पत्नी, पति, पुलिस, अपराधी, साधु, ठेकेदार, फाइल। सभ अपना-अपना सत्य लऽ कऽ ठाढ़। जजक कमरामे पंखा घूमैत। पेशकार नाम पुकारैत। नन्दक केसक नम्बर आयल। सरकारी वकील उठल — 'समय चाही। रिकॉर्ड मँगएबाक अछि।' तारीख बढ़ल।

बाहर निकलि देवकीनन्दन चौबे कहल — 'सामान्य बात अछि।'

नन्द पूछलाह — 'मृतकक लेल सामान्य?'

चौबे चुप।

दोसरी तारीख पर सरकारी रिकॉर्ड नहि आयल। तेसरी पर न्यायाधीश अवकाश पर। चौथी पर वकीलक हड़ताल। पाँचमी पर परियोजना-फाइल 'गलती सँ' दोसर विभाग गेल। छठी पर कहा गेल, 'मृत्युक प्रश्न तकनीकी विशेषज्ञता माँगैत अछि।' सातमी पर विदेशी कम्पनीक वकील आयल — चिक्कन कोट, चिक्कन भाषा, चिक्कन झूठ। ओ कहल — 'याचिकाकर्ता भावुक अभियन्ता छथि, जिनका स्थानान्तरणसँ व्यक्तिगत पीड़ा अछि।'

नन्द ओहि दिन बुझलाह, अदालतमे लोक नहि, ओकर चरित्र पहिने मारा जाइत अछि — कोनो गोली नहि, कोनो चाकू नहि, केवल एकटा विशेषण, जे जनताक कानमे ओतबे गहींर धँसि जाइत अछि जतबा कोनो हथियार धँसैत।

राति गढ़ नारिकेलमे नारिकेल गाछक पात बहुत जोर सँ हिलल। चन्ना गाछीमे कबड्डीक खेल बीचमे रोकल गेल। बूढ़बा भूत घोषणा केलक — 'तारीख नाम खाइत अछि।' पनिडुब्बी पूछलक — 'तकरा सँ के बचाओत?' हुलासी कहल — 'जे पात पर नाम लिखत, से।' लोथ, जे आब आधा खिलाड़ी भऽ चुकल छल, जमीन सँ एक अंगुर ऊपर उठि कऽ बाजल — 'तारीखक गोहि अदालतमे रहैत अछि।'

ओहि राति नन्द स्वप्नमे अदालत देखलाह। न्यायाधीशक कुर्सी पर गोहि बैसल। पेशकार तारीख पुकारैत — 'एक छपाक, दू छपाक, तीन छपाक।' वकील सभ नदीक पानि सँ बनल कोट पहिरने। प्रत्येक आपत्ति पर एक मृतकक नाम धुँधला भऽ जाइत। नन्द दौड़ि कऽ नाम

पकड़य चाहैत, मुदा नाम पानिमे फिसलैत। तखन बा कात सँ बाजली — ‘नाम पकड़ल नहि जाइत। नाम दोहराओल जाइत।’

भोरमे नन्द गामक बच्चा सभकेँ बजौलन्हि। ओ सभ केँ नाम पढ़ब सिखेलन्हि। बिसेसर। सरयू। मुनिया। धनेसरी। भोलटुन। बदरी। नजीर। फुलकली। बच्चा सभ पहिने हँसल, किएक तँ नाम अपरिचित छल। धीरे-धीरे ओ सभ लय पकड़लक। गामक पगडंडी पर, पोखरि कात, सभागाछीक सूखल ठाम, स्कूलक भित्ति पर, बच्चा सभ खेल-खेलमे नाम दोहराबय लागल — जेना कोनो लोकगीत जन्म लऽ रहल हो, बिनु कोनो गायकक, बिनु कोनो रचयिताक, केवल आवश्यकताक जोरपर।

सरकारी सूची तीस पर रुकल। गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ गिनती तीन सय धरि लऽ गेल।

ई नन्दक पहिल विजय छल। अदालतमे नहि, गामक स्मृतिमे। मुदा व्यवस्था जल्दी सीखैत अछि जे स्मृति सँ बेसी खतरनाक किछु नहि। किछु दिन बाद थाना सँ सिपाही आयल। पूछल — ‘बच्चा सभ केँ भड़कबैत छी?’ नन्द हँसलाह — ‘नाम पढ़ब भड़काबब अछि?’ सिपाही उत्तर नहि देलक। ओ आदेश लऽ कऽ आयल छल, अर्थ नहि।

ओही साँझ नन्द केँ दोसर धमकी भेटल — एहि बेर कागच नहि, बिसेसरक जूताक भीतर। एक छोट पर्ची: ‘तीसक बाद गिनती करब, तँ अपन नाम जोड़ाएब।’ नन्द पर्ची बा केँ देखौलन्हि। बा ओकरा चूल्हिमे नहि झोंकलन्हि। तुलसीक गमलामे गाड़ि देलन्हि। कहलनि — ‘धमकी धरतीमे गाड़ि देलासँ साक्षी बनैत अछि।’

समय बीतल। पुल बनैत रहल। अदालत टरत रहल। सरकारी सूची तीस पर छपि कऽ फाइलमे सुतल। नन्दक सूची बढ़ैत रहल। कतेको नाम संदेहक, कतेको पुष्टि-क, कतेको वस्तुक, कतेको स्वप्नक। ओ अपन डायरीक तीन प्रति बनौलन्हि। एक बा लग, एक देवकीनन्दन चौबे लग, एक नदी कात पुरान पीपरक जड़ि लग माटि भीतर। बा पूछली — ‘तीसर प्रति पानि लग किएक?’

नन्द कहलाह — ‘जकरा सभ केँ पानि लेल, ओकरा सभक प्रति पानि लग रहबाक चाही।’

बा किछु देर चुप रहली। फेर कहली — ‘नदी सभ मोन राखैत अछि, मुदा बोलैत देर करैत अछि।’

वर्ष समाप्त होइत-होइत पुलक आकार आकाशमे उठि गेल। मंत्री उद्घाटनक दिन तय भेल। अखबारमे छपल — ‘विकासक नव अध्याय।’ नन्द दूर सँ देखलाह। हुनका लगल,

प्रत्येक लोहेक छड़ पर एक नाम लटकल अछि। प्रत्येक नाम हवामे काँपैत अछि। उद्घाटनक फीताक रंग लाल छल — रक्त जेकाँ। मंत्री कैंची चलौलन्हि। भीड़ ताली बजेलक। नदी चुप। गोहि चुप। नन्द सेहो चुप।

मुदा ओहि चुप्पीमे एक आवाज बढ़ैत रहल — 'तीस नहि। तीन सय।'

अध्याय समाप्त नहि भेल छल; केवल फाइल बन्द भेल छल। फाइल बन्द होइतहि कथाक दोसर जीवन शुरू होइत अछि। नन्द एखन बुझल नहि, मुदा ओकर 'छपाकक हिसाब' एक दिन गोप कुमारक लैपटॉपमे खुलत, सत्यव्रत मेहताक मेज पर पहुँचत, बटुकनाथ हरिहरनक निन्न हरत, आ चन्द्रपाल बत्राक सिग्नल-वाला अन्हारमे एकटा अनाम इजोत जरा देत — जेना एकटा छोट दीप, बुझल जाइतो, अंधकारक विरुद्ध अपन साख फेर उठा लैत अछि।

ओहि राति चन्ना गाछीमे कबड्डी फेर शुरू भेल। एहि बेर भूत सभ सीमा पार करैत एक शब्द बाजल — 'अदालत।' प्रेत सभ उत्तर देलक — 'तारीख।' राकश इजोर करैत रहल। लोथ हँसल नहि। पनिडुब्बी अपन झोँटा समेटि लेलक, जेना जानैत हो जे आब लोक पानिमे नहि, कागचमे डूबयबला अछि।

लोकगीत: तीस लिखल, तीन सय रोअल

लोकधुन: करुण झूमर

पूछू हे धरती, विकासक पात तर पूछू हे,
'तीस लिखल, तीन सय रोअल'—हिसाब बूझू हे।

तीस नाम कागच पर, तीन सय चिता बिना,
तीन सय घरक चूल्हि बुझल, धुआँ उठल बिना।
लाल फीता काटल गेल, ताली बजल घाट,
पायाक भीतर कराहै मजदूरक रात।
मंत्रीक फीतामे रक्तक रंग चमकल,

माए-बौआक रोदन अखबारसँ ससरल।
'तीस नहि, तीन सय'—पवन गुनगुनाय,
नामक छोट दीप अन्हार फोड़ि जाय।
पुल रहत ठाढ़, मुदा धरती पूछत बात—
कतेक देह गाड़ल अछि विकासक पात?

लाल फीता कटल घाट पर, ताली गूँजल दूर,
पायाक भीतर कराहल राति—के सुनल ओ सुर?
अखबारक पन्ना ससरल, रोदन रहि गेल तर,
छोट दीपक एक लौ आब फोड़त ई अन्हार।

❖

अध्याय ५

तारीखक गोहि

घाटक पानि देखाइ छै तेँ लोक बाँचै छै; तारीखक पानि नहि देखाइ छै तेँ लोक डूबै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: तारीखपर सूरुज

लोकधुन: विरहा-पराती

उगू हे सुरुज, तारीखो पर उगू हे,
बरखों सँ ठाढ़ि विधवाक आँगन जगू हे।

तारीखक पानि गहींर, मुदा सूरुज रोज उगै,
एक-एक सुनवाईपर जनक साहस संग रहै।
लाल फीता नाव बनाउ, गाँठि काटू नेह,
विधवाक बरख गननाइ हो उचित समयक लेख।

समय न्यायकेँ खाए नहि, नियम सरल बनाउ,
तारीखक बीच सहायता, सूचना साफ पहुँचाउ।
तारीखपर सूरुज जरत तँ गोहि पाछाँ हटत,
धैर्य, सुधार, जन-पहरासँ न्याय बाट पकड़त।

पेशी-पेशी पात झड़ल, आशा नहि झड़ल,
कचहरीक सीढ़ी पर धीरजक दीप बड़ल।
फीताक लाल गाँठ खुजत, बही सोझ होयत,
न्यायक भोर अबिते विरहो मंगल गाओत।

❖

नन्द आरुणि जखन देवकीनन्दन चौबेक संग जिला न्यायालयक बरामदामे पहुँचलाह, तखन हुनका लगल जे ओ कोनो भवनमे नहि, एकटा पुरान पोखरिमे पैसल छथि। भित्ति पर धूलि काई जेकाँ जमल। कोठरी सभमे टेबुल, टेबुल पर फाइल, फाइल पर लाल फीता, आ फीता पर एहन गिट्ठऽ जेना पनिडुब्बीक झोँटा सूखि कऽ रस्सी बनि गेल हो — एहन रस्सी, जे बान्हैत नहि, केवल उलझाबैत अछि।

चौबे वकील धीरे कहलनि — ‘बाबू, एतऽ जल्दबाजी नहि करब। अदालत अपन चाल चलैत अछि।’

नन्द उत्तर देलाह — ‘मृतकक चाल बन्द भऽ गेल। अदालतक चाल कतेक धीमा होएत?’

चौबे किछु नहि कहलनि। हुनका मालूम छल, अदालतक बरामदामे पहिल बेर आयल लोक सभ न्याय खोजैत अछि; दोसरी बेर आयल लोक तारीख बुझैत अछि; तेसरी बेर आयल लोक खर्च गनैत अछि; चौथी बेर आयल लोक अपन आत्माकेँ घर पर छोड़ि अबैत अछि — एहन ढंगसँ, जेना कोनो मूल्यवान वस्तु सुरक्षाक लेल पाछाँ राखल जाए, कारण ओकरा एतय ल्याबब जोखिमपूर्ण भऽ जाइत छल।

याचिका दायर भेल। टाइपराइटरक अक्षरमे नन्दक सूची छोट भऽ गेल। तीन सय नामक धुंध केवल बारह पंक्तिमे समा गेल: ‘अन्य अज्ञात मृतक’। सरयू, मुनिया, धनेसरी, भोलटुन — सभ एक संग ‘अन्य’ बनि गेल। नन्द पंक्ति पर अँगुरी राखि कहलाह — ‘ई अन्य नहि छथि।’

टाइपिस्ट, जकर कानमे पेंसिल अटकल छल, मुस्कुरा कऽ बाजल — ‘बाबू, अदालतमे सभटा संक्षेपमे लिखाइत अछि। पूरा जीवन लिखब तँ फाइल कतेक मोट हएत?’

नन्द सोचलाह — फाइल मोट होएबासँ अदालत डेराइत अछि; मुदा लाशक ढेर मोट होएबासँ सरकार नहि डेराइत। ई विषमता एतेक स्पष्ट छल जे ओकरा हास्यास्पद बुझाइत, मुदा हँसी नहि आबैत — जेना कोनो घाव एतेक गहींर हो जे ओहिसँ पीड़ाक बदला केवल शून्यता निकलए।

पहिल सुनवाईक दिन बरामदामे असंख्य लोक छल। केओ खेतक सीमा लऽ कऽ, केओ हत्या, केओ पेंशन, केओ दहेज, केओ पुल। न्यायालयक घंटी बाजल। सभ उभरि कऽ एक दिशामे देखलक, जेना पोखरिमे कंकड़ पड़ल हो। पेसकार नाम पुकारैत गेल। नन्दक केस आयल।

सरकारक ओर सँ एक नौजवान अधिवक्ता उठल। रंग साँवला, आँखि थाकल, मुदा भीतर किछु जागल। नाम पुकारल गेल — सत्यव्रत मेहता। ओ तखन कोनो पैघ पद पर नहि छलाह; सरकारी अधिवक्ता दलक कनिष्ठ सदस्य मात्र। हुनकर हाथमे सरकारी फाइल छल, आ फाइलमे लिखल पंक्ति — ‘मृत्यु संख्या तीस; याचिका अतिरंजित।’

सत्यव्रत ओ पंक्ति पढ़बाक लेल उठलाह, मुदा नन्दक थैला सँ बाहर झाँकैत बिसेसरक जूता पर हुनकर नजर पड़ि गेल। जूता अदालतक फर्श पर नहि, जेना हुनकर आँखि पर राखल हो — जेना ओ जूता ओकर सोझाँ केवल एकटा वस्तु नहि, एकटा प्रश्न बनि ठाढ़ भऽ गेल हो। ओ एक क्षण रुकलाह। न्यायाधीश देखलन्हि — ‘मेहता जी?’

सत्यव्रत अपन स्वर सम्हारलन्हि — ‘महोदय, राज्यक रिकॉर्ड मँगाओल जाए।’

एतबा सुनितहि शासकीय विभागक प्रतिनिधि पाछाँ सँ कागच हिलेलक। ओकर अभिप्राय छल — 'खारिज करब।' मुदा सत्यव्रत रिकॉर्ड मँगएबाक बात कहि चुकल छलाह। ओ छोट वाक्य अदालतक हवामे ओहिना लटकल जेना पुलक पायासँ अटकल मजदूरक गमछा — छोट, मुदा उतारल जा नहि सकैत।

न्यायाधीश लिखौलन्हि — 'राज्य रिकॉर्ड प्रस्तुत करे। अगिला तारीख।'

नन्द चौबे कैँ देखलाह। 'एतबे?'

चौबे कहलनि — 'एहि देशमे रिकॉर्ड मँगएबो एक घटना अछि।'

बाहर बरामदामे एक लोक नन्द कैँ निहारि रहल छल। गाढ़ा सुगन्धि, चमकैत जूता, हाथमे सस्ता ब्रीफकेस, आ माथ पर बनावटी आत्मविश्वास — एहन आत्मविश्वास, जे भीतरक शून्यताकैँ ढाँपबाक लेल पहिरल जाइत अछि। चौबे ओकरा चिन्हलन्हि — 'चन्द्रपाल बत्रा। मेरठ सँ एल.एल.बी. कएल कहैए। एतऽ लोकक कागच, जमानत, हलफनामा, सबमे हाथ मारैत अछि। सावधान रहब।'

चन्द्रपाल बत्रा आगाँ आबि मुस्कुरायल — 'आरुणि बाबू? बहुत भावुक मामला अछि। मुदा अदालतमे भावना नहि, व्यवस्था चलैत अछि। चाही तँ हम दिल्ली तक पहुँच बना सकैत छी।'

नन्द उत्तर देलाह — 'हमरा पहुँच नहि, नाम चाही।'

बत्रा हँसल — 'नाम? नाम तँ कागच पर बनैत अछि। जे कागच पर नहि, ओ अदालतमे नहि।'

नन्द ओकर आँखिमे देखलाह। ओ आँखिमे नदी नहि, हिसाब छल। जे मनुष्य मृत्यु कैँ हिसाब मानैत अछि, ओकरा सँ गोहियो डेराए — किएक तँ गोहि खाइत अछि आ चलि जाइत अछि, मुदा हिसाब जकाँ लोक खाइत रहैत अछि, बिनु कहियो पेट भरने।

दोसरी तारीख पर रिकॉर्ड नहि आयल। सरकारी प्रतिनिधि कहल — 'फाइल पुल परियोजना कार्यालयमे अछि।' तेसरी तारीख पर कहल गेल — 'फाइल विभागीय जाँच समिति लग अछि।' चौथी पर — 'प्रतिलिपि अस्पष्ट।' पाँचमी पर — 'मुख्य अभियन्ता अवकाश पर।' छठी पर — 'न्यायाधीश स्थानान्तरित।' सातमी पर — 'नव न्यायाधीश फाइल पढ़ता।'

तारीख सभ बरसातक बून्द नहि छल जे धरती भिजबैत; ओ गोहिक दाँत छल, जे प्रत्येक बेर नामक कनी-कनी मांस काटि लैत — इतेक धीरेसँ जे पीड़ा सेहो देरीसँ बुझाइत, मुदा हानि पूर्ण होइत। बिसेसरक पत्नी पहिल दू तारीख आयली। तेसर पर नहि — भाड़ा नहि छल। सरयूक बहिन एक बेर आयली, फेर ससुरार सँ रोकि देल गेल। भोलटुनक बाप पाँच बेर आयल, छठी बेर ओकर खाँसी ओकरा घर सँ बाहर नहि निकलय देलक। अदालत चलैत रहल। मृतकक परिवार घटैत रहल — जेना अदालतक सीढ़ी स्वयं परिवार सभकेँ छानि-छानि कऽ पातर करैत जाइत हो।

नन्द प्रत्येक तारीख पर अपन थैला लऽ अबैत। जूता, कड़ा, चूड़ी, ताबीज, कागच, कटिंग। पेसकार एक दिन झल्ला कऽ कहल — 'ई संग्रहालय नहि अछि।'

नन्द शान्त स्वरमे कहलाह — 'जखन अदालत मृतक केँ नहि चिन्हत, तखन वस्तु सभ चिन्हौनी लेल आबत।'

ओहि दिन अदालतक बाहर बटुकनाथ हरिहरन आयल। ओ तखनहिये प्रसिद्ध वरिष्ठ अधिवक्ता छल, बादमे बार काउन्सिलक चेयरमेन बनएबला। ओकर प्रवेश संगहि बरामदा सँ शोर हटि गेल। सफेद केश, मुलायम गला, चमकैत बैंड, आ ओहि प्रकारक नम्रता जे केवल ओकरा लग होइत अछि जेकरा अपन प्रभाव पर पूरा विश्वास हो।

बटुकनाथ विदेशी ठेकेदार कम्पनीक पक्षक सलाहकार छल। खुल्लमखुल्ला नहि; कागच पर ओकर नाम 'विधिक मर्यादा सलाहकार' जेकाँ लिखल छल। मुदा सभ जानैत छल जे जे केस ओकर छाहमे आए, ओ जल्दी नहि बढ़ैत। ओ न्याय केँ रोकैत नहि; ओ न्यायक चाल एतेक धीमा कऽ दैत जे रास्तामे पक्षकार बूढ़ भऽ जाए — ई ओकर कला छल, इतेक सूक्ष्म जे कोनो अदालत ओकरा अपराध नहि मानि सकैत।

ओ चन्द्रपाल बत्रा लग ठाढ़ भेल। दुनूक बीच धीमा गप भेल। बत्रा माथ हिलबैत रहल। बटुकनाथ कहलक — 'भावनात्मक मामला अछि। एहने मामला सँ व्यवस्था बदनाम होइत अछि। व्यवस्था बचाउ।'

बत्रा पूछलक — 'कते?'

बटुकनाथ मुस्कुरायल — 'मर्यादामे प्रतिशत नहि पूछल जाइत। संकेत भेटत।'

एहि 'संकेत' शब्दक जन्म ओहि बरामदामे भेल कि नहि, केओ नहि जानैत। मुदा बहुत वर्ष बाद चन्द्रपाल बत्राक सभ अपराध 'सिग्नल' सँ चलत — गायब होएबला संदेश, कोड, प्रतिशत, म्यूल खाता, डिजिटल अरेस्ट। ओहि दिन ओ केवल अदालतक बरामदामे ठाढ़ एक

छोट दलाल छल; मुदा गोहि सभ पहिने छोट होइत अछि, फेर देह खाइत-खाइत पैघ — एतेक पैघ जे ओकर पुरान आकारक कल्पना करब सेहो कठिन भऽ जाइत अछि।

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन फाइलक कोनामे लिखल स्त्री-मजदूरक उल्लेख देखलाह। सरकारी रिकॉर्डमे 'कुटुम्बीय सहायक' लिखल छल। ओ विभागीय अफसर सँ पूछलन्हि — 'ई स्त्री सभ काम करैत छली?'

अफसर हँसल — 'गामक लोक छी। स्त्री-पुरुष सभ घुमैत रहैत अछि। आधिकारिक मजदूर नहि।'

'मुदा भुगतान-बहीमे हुनकर अँगूठा अछि।'

'ओ सभ मजूरी लऽ लेलन्हि परिवारक नाम पर।'

सत्यव्रत कैँ पहिल बेर लगा जे सरकारी भाषा सत्य कैँ नहि, सुविधा कैँ प्रमाणित करैत अछि। ओ फाइल बन्द केलन्हि, मुदा भीतर एक पन्ना खुलल रहि गेल। ओहि पन्ना पर सरयूक अँगूठा छल। अँगूठाक कालिमा सुखि गेल छल, मुदा ओकर वृत्तमे नदीक गोलाई छल — जेना अँगूठा स्वयं एकटा छोट नदी होइ, कागचपर सुखल, मुदा कहियो पूर्ण नहि सुखल।

साँझ नन्द अदालत सँ घुरलाह तँ चन्ना गाछीमे असामान्य सभा छल। बूढ़बा भूत कबड्डीक बीचमे नियम बदलि देलक — 'आइ सँ खेलक नाम तारीख।'

हुलासी पूछली — 'केना खेलब?'

बूढ़बा कहलथि — 'जे पारीमे जाएत, ओकरा साँस रोकि नाम बजएबाक। दोसर दल ओकरा रोकत — "रिकॉर्ड नहि", "न्यायाधीश नहि", "वकील नहि", "फाइल नहि"। जकर साँस टूटि जाएत, ओकर नाम कागचमे डूबत।'

राकश सभ इजोर देलक। प्रेत सभ उज्जर रेखा खिंचलक। लोथ, जे पहिने दर्शक छल, आब पेसकार बनि गेल — 'मामला नम्बर एक: बिसेसर पासवान आ पानि।'

कबड्डी शुरू भेल। एक भूत साँस रोकि भीतर घुसल — 'बिसेसर-बिसेसर-बिसेसर।' दोसर दल चिल्लायल — 'रिपोर्ट नहि!' भूत हिचकल। 'बिसेसर-बिसेसर।' 'गवाह नहि!' भूत काँपल। 'बिसेसर…' 'अगिला तारीख!' भूतक साँस टूटल। ओ एक अंगुर ऊपर सँ सेहो आधा अंगुर नीचे खसि गेल।

पनिडुब्बी रोइ नहि सकैत, किएक तँ ओकर आँखि सदा पानिमे रहैत अछि। मुदा ओहि राति ओकर झौँटा सूखल पात जेकाँ खड़खड़ायल। ओ बुझि गेली — अदालतक गोहि नदीक

गोहि सँ बेसी धैर्यवान होइत अछि। नदीक गोहि तुरन्त खाइत अछि; अदालतक गोहि पीढ़ी-दर-पीढ़ी, इतेक धीरे-धीरे जे खएनिहारो कहियो-कहियो बिसरि जाइत अछि जे ओ खा रहल अछि।

आठम तारीख पर नन्दक पक्ष सँ वस्तु-साक्ष्य प्रस्तुत करबाक प्रार्थना भेल। बटुकनाथ हरिहरन उठल। ओकर स्वर मधुर, ओकर वाक्य सुसंस्कृत, ओकर झूठ सुगन्धित। 'महोदय, अदालत भावनात्मक नाटकक मंच नहि। जूता, चूड़ी, ताबीज — ई सभ सहानुभूतिक वस्तु होइ सकैत अछि, विधिक साक्ष्य नहि।'

नन्द कैँ लगल केओ मृतकक पएर सँ जूता दोसर बेर उतारि रहल अछि।

सत्यव्रत मेहता सरकारी ओर सँ उठय चाहलाह, मुदा वरिष्ठ अधिकारी हुनकर बाँह छू लेलनि। संकेत स्पष्ट छल — चुप। सत्यव्रत बैसि रहलाह। हुनकर भीतरक आवाज बाजल — 'जे सत्य देखैत अछि आ चुप रहैत अछि, ओकर मृत्यु दू बेर।' ओ वाक्य हुनका कतऽ सँ मोन पड़ल, ओ नहि बुझलाह। शायद गढ़ नारिकेलक कोनो पात अदालतक खिड़की तक उड़ि आयल छल।

न्यायाधीश कहलन्हि — 'वस्तु सभ रेकॉर्ड पर राखल जाए, प्रमाणिकता बादमे विचारणीय।'

ई आधा विजय छल। वस्तु फेंकल नहि गेल। जूता अदालतक मालखानामे जमा भेल। चूड़ीक टुकड़ा कागचक लिफाफामे बन्द भेल। ताबीज पर नम्बर पड़ल। प्रत्येक वस्तु पर मोहर लागल। मृतक सभ पहिल बेर न्यायालयक रजिस्टरमे वस्तु बनि प्रवेश केलक। नन्दक हृदय टूटल सेहो, भरल सेहो — दुनू भाव एकहि साथ, जेना कोनो अधूरा जीत सेहो जीतहि होइत अछि।

चन्द्रपाल बत्रा ओहि दिन मालखाना लग बहुत देर तक घूमैत रहल। ओकरा बुझायल — अदालतक भीतर जे वस्तु जाय, ओकरा बाहर अनब बहुत मँहग होइत अछि। बादमे ओकर अपराध-जीवनक पहिल सूत्र एही ठाम सँ निकलल: कागच भीतर-बाहर करब, वस्तु गायब करब, नाम बदलब, खाता खुलब, खाता बन्द करब।

नवम तारीख पर विदेशी कम्पनीक प्रतिनिधि आयल — विक्टर हाल्डेनक बदला एक भारतीय प्रवक्ता। ओ कहल — 'कम्पनी विश्वस्तरीय सुरक्षा मानक पर काज करैत अछि। दुर्घटना प्राकृतिक जोखिम छल।' ओकर उच्चारणमे 'प्राकृतिक' शब्द सुनितहि नन्दक मनमे गोहि हँसल। जे जोखिम भूख सँ पैदा होइत अछि, जे जोखिम बिनु रस्सी, बिनु जाल, बिनु पंजीकृत नामक श्रम सँ पैदा होइत अछि, ओकरा प्रकृति पर थोपि देनाइ मनुष्यक सभसँ पैघ

चालाकी अछि — कारण प्रकृति उत्तर नहि दऽ सकैत, आ ओकर मौन झूठकेँ सत्यक कपड़ा पहिरा दैत अछि।

देवकीनन्दन चौबे बहसमे उठलाह। हुनकर स्वर पैघ वकील जेकाँ नहि, मुदा भिजल माटि जेकाँ दृढ़ छल। 'महोदय, यदि तीस मृतक छथि, तँ भुगतान-बहीमे तीन सय परिवारक असामान्य कटौती किएक? यदि स्त्री-मजदूर नहि छली, तँ हुनकर अँगूठा ककरा लेल? यदि सुरक्षा मानक छल, तँ पहिल पंद्रह दिनमे सात दुर्घटना किएक?'

बटुकनाथ हरिहरन मुस्की दैत रहल। ओकर मुस्कान कहैत छल — प्रश्न पूछलासँ उत्तर नहि भेटैत; उत्तर कीनल जाइत अछि।

दसमी तारीख सँ पहिने चौबेक दफ्तरमे चोरी भेल। ताला टूटा नहि छल, मुदा फाइल खुलल। कागच सभ ओहि क्रममे नहि रहल। बिसेसरक जूताक फोटो गायब। सरयूक अँगूठा बला पन्ना अदला-बदली। चौबे माथ पकड़ि बैसल। नन्द चुप रहलाह।

ओ राति बा पुरान संदूक खोललन्हि। ओहिमे नन्दक बनाओल दोसर प्रति छल। बा पन्ना निकालि कहलनि — 'जे कागचकेँ गोहि सँ बचएबाक हो, ओकर प्रति माय लग राखू।'

नन्द पन्ना लऽ फेर दफ्तर गेलाह। चौबे हुनका देखि दंग। 'अहाँ प्रति बना लेने छलहुँ?'

'नदी एक प्रति नहि राखैत,' नन्द कहलाह। 'धार टूटल तँ दोसर धार।'

एहि घटना बाद बटुकनाथ हरिहरनक चेहरा पहिल बेर कड़ा भेल। ओ बुझि गेल जे नन्द भावुक अभियन्ता नहि; स्मृति सँ लैस अभियन्ता अछि। स्मृति जे प्रतिलिपि बनबय जानैत अछि, ओ व्यवस्था लेल खतरा होइत अछि।

सत्यव्रत मेहता संयोग सँ चौबेक दफ्तर लग नन्द सँ भेटलाह। बरामदा खाली छल। साँझक उजास भित्ति पर झुकल। सत्यव्रत धीमे कहलनि — 'आरुणि बाबू, जे किछु अछि, बहुत प्रति बनाउ। केवल अदालत पर भरोसा नहि करू।'

नन्द हुनका देखलाह — 'अहाँ सरकारक वकील छी।'

'छी।'

'तखन ई बात किएक?'

सत्यव्रत उत्तर देलाह — 'सरकारक वकील छी, सरकारक नौकर नहि। आ राज्यक आत्मा, यदि बचल अछि, तँ ओ फाइलक बाहर रहैत अछि।'

ई वाक्य नन्दक मनमे अटकि गेल। सत्यव्रत तखन चलि गेलाह। हुनकर पाँवक आवाज बरामदामे देर धरि सुनाइ पड़ैत रहल। ओ आवाजमे चप्पल नहि, संकोच चलि रहल छल — जेना ओ स्वयं अपन कहल शब्दक भारसँ थोड़ेक धीमे चलि रहल होथि।

अदालतक वर्ष बदलल। कैलेंडर बदलल। न्यायाधीश बदलल। पेसकार बदलल। सरकारी अधिवक्ता बदलल। मुदा फाइलक रंग नहि बदलल। लाल फीता पहिने जेकाँ। नन्दक कपाल पर सफेदी बढ़ल। बा क खाँसी गाढ़ भेल। मृतकक परिवारक बच्चा जवान भेल। किछु शहर चलि गेल। किछु मरि गेल। किछु कहल — 'छोड़ू बाबू, भगवान न्याय करता।'

नन्द कहैत — 'भगवान न्याय करथि, मुदा मनुष्य सूची ठीक करए।'

एक बरखामे अदालतक मालखानामे पानि घुसल। सभ वस्तु निकालल गेल। बिसेसरक जूता भीजल। चूड़ीक टुकड़ा चमकल। ताबीजक धागा फुलल। मालखानाक बाबू गाली दैत कहलक — 'ई सभ कचरा ककर?'

नन्द ओतए उपस्थित छलाह। ओ जूता उठा कऽ छाती लगौलन्हि। कहलाह — 'कचरा नहि। गवाही।'

मालखानाक बाबू हँसल — 'गवाही बोलैत अछि?'

ओहि क्षण जूता सँ पानि टपकल — छपाक। पूरा कमरा चुप। एक टपक, दोसर टपक, तेसर। टपकक लय वैह छल जे नन्द पुलक राति सुनने छलाह। मालखानाक बाबू पाछाँ हटि गेल। ओ बुझल नहि, मुदा डरि गेल। काही-काही प्रमाण शब्द नहि बोलैत, पानि टपकबैत अछि।

ओहि दिनक बाद नन्द अपन डायरीमे लिखलाह — 'अदालतमे गोहि नहि देखाइत। ओ तारीख बनि रहैत अछि। ओ फाइलक कोना चिबबैत अछि। ओ लोकक उमेर खाइत अछि। मुदा जखन कागच भीजैत अछि, तखन मृतक फेर बोलैत अछि।'

बहुत बाद, जखन चन्द्रपाल बत्रा ऑनलाइन गैम्ब्लिंगक सरगना बनत, ओ एहि अदालतक बरामदा केँ मोन करत। ओकरा मोन रहत — लोक अपना नाम लेल कतेक बेचैन होइत अछि; आ जे समाज नाम लेल एतेक बेचैन हो, ओकर बैंक-खाता, चिन्हारि, आधार, पैन, मोबाइल, भय — सभ व्यापार बनि सकैत अछि। ओहि दिनक बरामदामे डिजिटल ठगीक बीज पडल।

बटुकनाथ हरिहरन सेहो ऊपर उठैत गेल। बारक सभामे ओ बोलैत — 'विधि-व्यवस्था सभ्यता केँ बचबैत अछि।' लोक ताली बजबैत। ओहि समय ओकर टेबुलक दराजमे विदेशी ठेकेदारक लिफाफा, बत्राक पर्ची, आ एक छोट कागच रहैत — 'तीस सँ ऊपर नहि।'

सत्यव्रत मेहता चुपचाप सरकारी सेवामे बढ़ैत गेलाह। मुदा नन्दक फाइल हुनका छोड़लक नहि। जे पन्ना पर सरयूक अँगूठा छल, ओकर प्रतिलिपि ओ अपन निजी डायरीमे राखि लेने छलाह। ओ पन्ना हुनकर लेल कानूनक पहिल पाठ बनल — कानून, जँ स्त्रीक अँगूठा नहि पढ़ि सकय, तँ ओ मात्र भाषा अछि, न्याय नहि।

अध्याय समाप्त होएबाक राति चन्ना गाछीमे ‘तारीख’ खेल फेर भेल। एहि बेर नन्दक नाम पारीमे छल। भूत सभ एक स्वरमे बाजल — ‘नन्द-नन्द-नन्द।’ दोसर ओर सँ आवाज आयल — ‘रिकॉर्ड नहि।’ नन्दक छाह, जे एखन जीवित छल, चन्ना गाछीक धरती पर पहुँचल नहि, मुदा ओकर प्रतिध्वनि पहुँचल। ओ बाजल — ‘प्रति अछि।’

‘गवाह नहि।’

‘नाम अछि।’

‘समय खत्म।’

‘स्मृति बाकी।’

एहि उत्तर पर सीमा टूटि गेल। कबड्डीक खेल एक क्षण लेल रुकल। बूढ़बा भूत घोषणा केलक — ‘जेकरा स्मृति अछि, ओकरा तारीख नहि खा सकैत।’

दूर अदालतक मालखानामे बिसेसरक जूता फेर टपकल — छपाक। गंगा कात गोहि एक बेर पानि सँ माथ बाहर निकाललक। शहरमे सत्यव्रत मेहता निन्नमे करवट बदललाह। बटुकनाथ हरिहरन अपन दराज बन्द केलक। चन्द्रपाल बत्रा पहिल बेर एक कागच पर लिखलक — ‘खाता खोलबाक तरीका।’

गढ़ नारिकेलक नारिकेल गाछक पात ओहि राति देर धरि हिलैत रहल। हवा नहि छल। पात अपनहि बाजैत छल — तारीख, तारीख, तारीख — आ प्रत्येक तारीखक बीच एक नाम चमकैत छल, जे कागच पर नहि, पानि पर लिखल गेल छल — जेना पानिये स्वयं सभटा नाम केर अन्तिम, अटूट डायरी होइ, जकरा कोनो तारीख, कोनो मुहर, कोनो लाल फीता कहियो मेटा नहि सकैत।

लोकगीत: तारीखक धार

लोकधुन: विरहा

हे तारीख, हमर बौआकेँ नहि खाउ हे,
कागचक पानि सँ ओकर नाम पार लगाउ हे।

घाट पर पानि देखाइ, अदालतमे नहि,
मुदा बाबू, हमर घर डूबल तारीखक मही।
लाल फीता पनिडुब्बीक झोँटा सन बन्हायल,
एक सुनवाई बीतल, दोसर फेर टहलायल।
जूता मालखानामे टपकै—छपाक-छपाक,

विधवा देहरीपर गनै बरख, मास, पाक।
समय कहै ‘खतम’, स्मृति कहै ‘बाकी’,
नामक नाव खेबह, नहि तँ डूबत साखी।
तारीख, हे तारीख, हमर बौआ नहि खाउ,

एक सुनवाइ बीतल, दोसर बाट तकैत,
मालखानाक जूता एखनहुँ टप-टप बजैत।
समय कहए—समाप्त; स्मृति कहए—बाँकी,

❖

अध्याय ६

हार्वर्डक एथिक्स

मञ्चपर चढ़ल नैतिकताक जूता पोंछबासँ पहिने देखिहऽ— तरबामे केकर रक्त लागल छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: पात पहुँचल सभागार

लोकधुन: विदापत पदक उज्जर लय

उड़ू हे पात, सात समुन्दर पार उड़ू हे,
मिथिलाक श्रमक साँच लऽ सभागार जुड़ू हे।

गामक हरियर पात उड़ि हिमक देश पहुँचै,
मंचक सोना शब्द बीच मजदूरक नाम गुँजै।
नैतिकता पुस्तक नहि, पायापर सुरक्षा,
तालीसँ पहिने साँच, भाषणसँ पहिने रक्षा।

ईरा जकाँ प्रश्न उठाउ, मेहता जकाँ जागू,
विश्वविद्यालयक ज्ञानकेँ धरतीक श्रमसँ भागू।
पात पहुँचल सभागार तँ विचार नब मोड़त,
विश्वक मंच मिथिलाक साँचसँ मानवता जोड़त।

हिमक देशक काँच-भवन, भीतर बाती-बाती,
मंच पर गुँजए मजदूरक नामक पाँती।
ईराक प्रश्न, मेहताक मौन, दुनू संग बाजए,
धरतीक धूरा-लागल पात विश्व-मन साजए।

❖

ओहि दिन हार्वर्डक सभागारमे बाहर हिम पड़ि रहल छल। भीतर गरम इजोत छल, चिक्कन काठक कुर्सी, चमकैत स्क्रीन, आ सभक गलामे लटकैत परिचय-पत्र। परिचय-पत्र पर नाम छल, संस्था छल, देश छल; मुदा कोनो परिचय-पत्र पर ई नहि लिखल छल जे ओकर मालिकक आत्मा पर कतेकटा दाग अछि। ई अनुपस्थिति स्वयं एकटा भाषा छल — एकटा एहन भाषा, जे सभसँ बेसी ओतय बजैत अछि जतय ओ सभसँ बेसी चुप रहैत अछि।

ईरा आरुणि सभसँ पाछाँ बैसल छलि। ओकरा एहि तरहक सभागार सदा सुन्दर लगैत छल — ईंट पुरान, वाक्य नव, आ लोक सभ एहन ढंगें बाजैत जेना संसारक सभ समस्या भाषणक बाद थोड़े कम भऽ जाएत। मुदा ओहि दिन ओकर कानक भीतर किछु आर बाजि रहल छल। ओ आवाज हार्वर्डक हीटरक नहि छल। ओ आवाज छल — छपाक।

ईरा एहि आवाजकेँ बचपनसँ चिन्हैत छलि। जखन ओ अपन बा सँ फोन पर गामक कथा सुनैत छलि, बा बीच-बीचमे चुप भऽ जाइत छलीह। फेर कहैत छलीह — 'तोहर परदादा नन्द आरुणि गंगाक पानिमे नहि, सरकारी कागचमे डुबल छलाह।' तखन ईरा हँसि दैत छलि। ओकरा लागत छल जे गामक बूढ़ स्त्री सभ स्मृति केँ रूपक बना दैत छथि। विदेशमे जन्मल लोक सभ रूपक पर जल्दी विश्वास नहि करैत; हुनका सभकेँ फुटनोट चाही, प्रमाण चाही, रिपोर्ट चाही — जेना सत्य केवल कागचक भीतर रहबा सँ सत्य होइत हो।

ओहि दिन फुटनोट मञ्च पर चढ़बाक छल।

कार्यक्रमक नाम छल — वैश्विक उपक्रम आ मानवीय गरिमा। हार्वर्डक एथिक्स केन्द्रक निदेशिका प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स मुस्कुरा कऽ मञ्च पर आयलीह। हुनकर मुस्कान ओहि प्रकारक छल जेकर अभ्यास आइना सामने नहि, दानदाता सभक भोजन-सभामे होइत अछि। ओ कहलनि जे संसारक दक्षिणी देश सभमे आधारभूत संरचना केवल पुल, सड़क, अस्पताल नहि, अपितु मानव-विश्वासक स्थापत्य अछि। सभ ताली बजेलक। ईरा सेहो बजेलक, मुदा ओकर हथेली ठंढ छल — जेना ओकर देह हृदयसँ पहिनहि जानि गेल हो जे ई ताली झूठक लेल अछि।

तखन मञ्च पर एलाह एडवर्ड ब्रूम। उँच देह, सफेद केस, नीला सूट, गला पर रेशमी टाई। हुनकर कम्पनीक नाम कई बेर बदलि चुकल छल, मुदा दानदाता सूचीमे ओ सभ नाम एके कुलक लगैत छल। एक नाम पुल बनबैत छल, दोसर दवा बेचैत छल, तेसर रक्षा-परामर्श दैत छल, चौठा डिजिटल भुगतान चलबैत छल। ब्रूम कहैत छलाह — 'कम्पनी बदलैत अछि, मूल्य नहि।' ईरा सोचलक — गढ़ नारिकेलमे लोक कहैत अछि, नदी बदलैत अछि, धारा नहि।

पहिल स्लाइड खुलल। अफ्रिकाक एकटा अस्पताल। दोसर स्लाइड — एशियाक बाढ़ि-राहत। तेसर — महामारीक समय दवा-पैकिट। चौठा — एकटा विराट पुल, धुँधलकामे चमकैत, जाहि पर लिहल छल — उन्नीस सय अठहत्तर: भारतमे समुदाय-साझेदारीक आदर्श परियोजना।

ईराक देहक भीतर जे आवाज छल से एकाएक साफ भऽ गेल — छपाक।

स्क्रीन पर देखाइत पुल ओकरा चिन्हाएल नहि छल, मुदा पुलक पाछाँक पानि ओकरा चिन्हाएल। ई ओहि पानि सन छल जकर वर्णन बा करैत छलीह — पानि जे सभटा देहकेँ एके रंगक बना दैत अछि, जेकरा भीतर जाति, मजदूरी, परिवार, पता सभ घुलि जाइत अछि। ओहि स्लाइडक कोनमे छोट अक्षरमे लिखल छल — स्थानीय श्रमिक सहभागिता, न्यूनतम दुर्घटना,

स्वतंत्र सुरक्षा-परीक्षण। ईरा अपन कॉपीमे लिखलक — ‘न्यूनतम दुर्घटना?’ आ ओहि प्रश्नचिह्नक पूँछ ओकर कागच पर साँप जेकाँ लम्बा भऽ गेल।

ब्रूम बाजि रहल छलाह — ‘हम ओहि देश सभमे गेलौं जतय नियमन कमजोर छल, मुदा लोकक आशा मजबूत छल। हमरा सभक दायित्व छल जे हम मानक लऽ जाउ।’

ओ ‘मानक’ बजलाह आ हुनकर मुँहसँ एक बून्द पानि टेबल पर खसल। सामने बैसल लोक सभ सोचलक जे शायद गिलासक पानि छल। ब्रूम रूमाल लगा लेलनि। फेर ओ ‘नैतिकता’ बजलाह, आ एहि बेर दू बून्द खसल। एलिना ग्रेव्स कनि झुकि कऽ देखि लेलनि, मुदा तालीक अभ्यासलेल मुस्कान नहि टूटल। ईरा देखलक जे पानि साफ नहि छल; ओहिमे सूक्ष्म रेत छल, आ जे रेत टेबल पर जमल से कनि देरमे देवनागरी जेकाँ वक्र आकृति बनाबए लगल — जेना कोनो भाषा स्वयं अपन प्रमाणक लेल एहि सुदूर धरतीपर आबि गेल हो।

ब्रूमक भाषण सभागारक कान लेल छल; ओकर पानि मृतक सभक लेल।

ओ कहैत गेलाह — ‘हमरा सभकेँ स्थानीय सरकार सभ पर विश्वास करबाक होइत अछि। हम कानूनक सम्मान करैत छी। हम जीवन बचबैत छी।’ मञ्चक पाछाँ स्लाइड बदलल — महामारीक समयक औषधि-वाहन, टीका-डिब्बा, ऑक्सीजन-टैंक, अस्पतालक बिछाओन। प्रत्येक चित्रमे मनुक्ख छोट छल, लोगो पैघ। ईराक मोनमे गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछी चमकल; ओतय भूत सभ कबड्डी खेलैत काल कहियो अपन नाम पैघ नहि करैत, केवल आवाज पैघ करैत — ई अन्तर, ओकरा एहि क्षण, समस्त सभागारक विनम्रताक आडंबरसँ बेसी ईमानदार बुझायल।

सभागारक बाम कोनमे राघव सोमानी बैसल छल। परिचय-पत्र पर ओकर नामक नीचाँ लिखल छल — एशिया-प्रशान्त रणनीतिक सलाहकार। ओकर आँखि मञ्च पर कम, फोन पर बेसी छल। फोनक स्क्रीन काली होइत, फेर नीला बिन्दु चमकैत, फेर संदेश गायब। ओ फोनक की-बोर्ड पर अंगूठा नहि चलबैत; केवल तैयार वाक्य चुनैत। ‘पुरान पुलक स्लाइड पर प्रश्न आयल।’ ‘भारत टीम सावधान।’ ‘बत्रा केँ कहू, फाइल साफ रहय।’ प्रत्येक संदेश पठेलाक बाद ओ स्क्रीन पोंछैत, जेना शब्दक उँगलिचिन्ह हटबैत हुअए।

ओहि समय दिल्लीमे, न्याय विभागक पुरान कोठरीमे, सत्यव्रत मेहता एकटा सरकारी ब्रीफ पढ़ि रहल छलाह। फाइलक ऊपर लिखल छल — नदी-पुल दुर्घटना क्षतिपूर्ति वाद, पुनः सूचीबद्ध। भीतर टंकित वाक्य छल — ‘सरकारक अभिलेख अनुसार मृतकक संख्या तीस सँ अधिक नहि।’ सत्यव्रत एहि वाक्य पर पेंसिल रोकलनि। तीस। हुनका ई अंक अजीब नहि

लगबाक चाही छल। अदालतमे अंक सभ रोज अबैत अछि — सात याचिकाकर्ता, पाँच प्रतिवादी, तीन स्थगन, दू अनुपस्थित गवाह। मुदा तीसक पाछाँ किओ फुसफुसा रहल छल — 'तीस नाम, तीन सय लाश।'

ओ पन्ना उलटलनि। एक पुरान संलग्नकमे ककरो हाथ सँ लिखल नाम छल — सरयू, परमानन्द, चमरू, अब्दुल रशीद, फेकन, हरिदास, बसन्ती, लछुमनिया। आधा नाम पर स्याही पसरि गेल छल। ओहिमे किछु नाम आधा कटल छल, जेना सरकारी कलम मरल लोकक देहक अन्तिम संस्कार करि रहल हो। सत्यव्रत पेंसिल सँ मार्जिनमे लिखलनि — 'मूल नामावली मंगाओल जाय।' फेर कनि देर बाद ओहि वाक्यक नीचाँ एक आर पंक्ति लिखलनि — 'यदि उपलब्ध हो।' ई 'यदि' हुनका खुद पर लज्जित कऽ गेल — जेना ओ शब्द स्वयं ओकरा वापस अपन ईमानदारीक अभावक आइना देखा रहल हो।

उधर हार्वर्डमे प्रश्नोत्तर शुरू भेल। सभसँ पहिने एक छात्र पूछलक — 'कम्पनी सभ भ्रष्ट शासन-व्यवस्थामे नैतिकता कोना बचबैत अछि?' ब्रूम उत्तर देलनि — 'पारदर्शिता सँ।' दोसर पूछलक — 'महामारीमे निजी लाभ आ सार्वजनिक स्वास्थ्यक बीच सीमा कतय अछि?' ब्रूम कहलक — 'मानवता लाभसँ ऊपर।' तेसर पूछलक — 'सुरक्षा-मानकक असफलताक उदाहरण?' ब्रूम हँसलाह — 'हम असफलताकेँ सीखमे बदलैत छी।'

ईरा उठि गेलि। ओकर आवाज पहिने ओकर गलामे अटकल, फेर बाहर आयल — 'उन्नीस सय अठहत्तरक भारतीय पुल-परियोजनामे कतेक मजदूर मरल छल?'

सभागार चुप।

ब्रूमक चेहरा पर ओहि क्षण ओहि लोकक धीरज देखायल जे बहुत पुरान प्रश्नक नब उत्तर तैयार रखने हो। ओ कहलनि — 'हमरा सभकेँ हरेक परियोजनाक सम्पूर्ण स्मृति नहि रहैत। मुदा हमर कम्पनीक सिद्धान्त रहल अछि — स्थानीय अभिलेखक सम्मान।'

ईरा दोसर बेर पूछलक — 'स्थानीय अभिलेख यदि झूठ हो?'

एहि बेर एलिना ग्रेव्स हल्का स्वरमे कहलनि — 'बहुत सुन्दर प्रश्न। शायद श्री ब्रूम संस्थागत उत्तरदायित्वक व्यापक पक्ष पर बोलता।' सभागार राहतक साँस लेलक। व्यापक पक्ष सदा खास अपराधकेँ बचा लैत अछि — ई सिद्ध हुनका बचपन सँ नहि, मुदा आब हार्वर्डक चिक्कन बरामदा सँ फेर एक बेर प्रमाणित भऽ गेल।

ब्रूम कहलनि — 'इतिहासक समीक्षा वर्तमानक न्याय-बोधसँ करब कठिन अछि। ओ समय अलग छल।'

ईरा बैसि गेलि। ओकर कॉपीमे प्रश्नचिह्नक पूँछ आब गोहिक पूँछ बनि गेल छल।

कार्यक्रमक बाद भोजन-सभा छल। चिक्कन प्लेट, छोट-छोट पकवान, सभक हाथमे काँचक गिलास। ब्रूम लोक सभक बीच एहन सहज घूमि रहल छलाह जेना मंच पर बहल पानि केवल ईराक भ्रम रहल। राघव सोमानी एक कोनमे चन्द्रपाल बत्रा कैँ संदेश पठौलक — 'विदेश-जन्मल लड़की। नाम ईरा आरुणि। पुल पर प्रश्न। पाछाँ पता लगाउ।' किछु क्षण बाद उत्तर आयल — 'आरुणि? गढ़ नारिकेल वंश? फाइल देखैत छी।'

चन्द्रपाल बत्रा ओहि समय मेरठ आ दिल्लीक बीच कतहु एक फार्महाउसमे बैसल छल। ओकर सामने लैपटॉप खुलल छल, दाहिना कात कानूनक किताब, बामा कात तीन फोन। किताबक पन्ना पर धूलि छल; फोनक स्क्रीन चमकैत। ओ अपन डिग्रीक फोटो देबाल पर लगा रखने छल — कानून-स्नातक। जे कियो पहिल बेर देखत, सोचत जे लोक कानून पढ़ल अछि। जे दोसर बेर देखत, बुझत जे कानून ओकरा लेल ताला तोड़बाक औजार अछि।

बत्रा संदेश पढ़लक आ हँसल। 'गढ़ नारिकेल,' ओ धीरे सँ बजल, 'ई गाम फेर जागि गेल?' ओ तुरन्त बटुकनाथ हरिहरन कैँ संदेश नहि पठेलक। ओ जानैत छल जे हरिहरन सोझ सूचना पसन्द नहि करैत; ओकरा पहिने डरक सुगन्ध चाही। बत्रा एकटा पुरान फोल्डर खोललक — नदी-पुल, मुआवजा, मजदूर, विदेशी परामर्श, सुरक्षा प्रमाणपत्र। तकर नीचाँ नया फोल्डर छल — खेल-ऐप, म्यूल खाते, डिजिटल अरेस्ट, छात्र ऋण। ओकरा सभमे एके रंगक स्याही छल — जेना ओहि रंगक भीतर एकटा एक्के हस्ताक्षर, एक्के मन, आ एक्के भूख छिपल हो।

बटुकनाथ हरिहरन दिल्लीमे एक विवाह-स्वागतमे भाषण दऽ रहल छल। ओ कहैत छल — 'विधि-व्यवस्था सभ्यताक मेरुदण्ड अछि।' जे टेबल पर ओ हाथ राखने छल, ओतय दूटा लिफाफा छल। एक पर लिखल — शोध-समर्थन। दोसर पर किछु नहि। जे लिफाफा पर किछु नहि लिखल रहैत अछि, ओहिमे सभसँ बेसी लिखल रहैत अछि। भाषणक बाद ओ मोबाइल देखलक। बत्राक संदेश छल — 'हार्वर्डमे पुरान पुल उठल। आरुणि वंश सक्रिय।' हरिहरनक चेहरा पर कनि देर लेल मुस्कान रुकल। फेर ओ जवाब देलक — 'प्रक्रिया पर भरोसा राखू।'

प्रक्रिया — ई शब्द ओकर प्रिय हथियार छल। प्रक्रियामे तिथि बदलैत अछि, न्याय नहि। प्रक्रियामे गवाह बूढ़ होइत अछि, फाइल जवान रहैत अछि। प्रक्रियामे मृतकक नाम धूलि खाइत अछि, वकीलक फीस फूलेल जकरा पर कियो गोहि नहि कहैत — जेना मोटाइ, नदीक भोजनसँ बेसी, वैधता प्राप्त वस्तु हो।

हार्वर्डक पुस्तकालयमे ईरा राति धरि बैसलि। ओ कार्यक्रमक वेबसाइट खोललक। ब्रूमक कम्पनीक इतिहास पढ़लक। नाम बदलैत गेल — ब्रूम इन्फ्रा, ब्रूम हेल्थ, ब्रूम डिफेन्स सलाह, ब्रूम डिजिटल ट्रस्ट, ब्रूम एथिक्स फाउण्डेशन। प्रत्येक नामक पाछाँ एक साफ चित्र, एक कोमल वाक्य। मुदा वित्तीय विवरणक फुटनोटमे सहायक कम्पनी सभक नाम एहन लागैत छल जेना कोनो अँधार पोखरिमे साँपक बच्चा छटपटाइत हो, आ प्रत्येक साँपक बच्चाक अपन-अपन कानूनी चिन्हारि।

ईराक सामने एक पुरान पारिवारिक ई-मेल खुलल छल। बा कखनोक पठौने छलीह — 'नन्दक कागच देखब तौँ हँसबह नहि।' ईरा तखन ओ मेल पढ़ि नहि सकल छलि। संलग्नकमे स्कैन कएल पन्ना छल। ओ आब खोललक। पन्ना पर देवनागरी आ अंग्रेजी मिला कऽ लिखल छल। ऊपर एक नाम — नन्द आरुणि। नीचाँ — 'मृतक संख्या सरकारी रजिस्टर सँ भिन्न।' तकरा पाछाँ गाढ़ अक्षरमे — 'सरयू नामक स्त्री-मजदूरक पता नहि।'

ईरा साँस रोकलक। हार्वर्डक चुप्प पुस्तकालयमे ओकरा बुझायल जे किओ पाछाँ सँ माटि झाड़ि रहल अछि। ओ पलटि कऽ देखलक। केओ नहि। मुदा टेबल पर ओकर कॉपीक प्रश्नचिह्नक कातमे भीजल रेतक कण पड़ल छल। ओहि रेतमे एक पतला रेखा बनल — गोहिक देह जेकाँ, जेना समुद्र पारक एहि पुस्तकालयमे सेहो गढ़ नारिकेलक नदी अपन एक छोट अंश भेज देने हो।

ओही राति सत्यव्रत मेहता अपन घर देर सँ पहुँचलाह। टेबल पर भोजन ढाँकल छल। पत्नी सुतल छलीह। ओ बत्ती नहि जरौलनि। अन्हारमे ओहि फाइलक पन्ना फेर खोललनि। सरकारी पक्षक नोटमे लिखल छल — 'मामला अत्यन्त पुरान; विलम्बक कारण दावा अस्वीकार्य।' सत्यव्रत ई वाक्य पढ़ि कऽ सोचलनि — कतेक देर बाद मृत्यु पुरान भऽ जाइत अछि? कतेक वर्ष बाद अन्याय अभिलेखीय धूलि बनि जाइत अछि? कतेक तारीखक बाद लोकक नाम अदालतक भाषामे असुविधा बनि जाइत अछि?

ओहि क्षण हुनका अपन पिता मोन पड़लनि, जे कहैत छलाह — 'कानून केवल धारा नहि; कानून धैर्यक परीक्षा सेहो अछि। मुदा जँ धैर्यक परीक्षामे गरीबे मरय, तखन कानून अपराधी भऽ जाइत अछि।' सत्यव्रत पेंसिल उठेलनि आ सरकारी ब्रीफक ऊपर लिखलनि — 'सत्यापन आवश्यक।' फेर कनि सोचि कऽ 'आवश्यक'क नीचाँ दू बेर रेखा खिंचलनि। हुनका नहि बुझाइत छल जे ई छोट रेखा भविष्यमे कतेक लोकक निन्न उड़ा देत।

गढ़ नारिकेलमे ओही राति चन्ना गाछीमे कबड्डी बन्द छल। बूढ़बा भूत डारि पर बैसल छलाह। हुलासी इनारक कात पर झुकल छलीह। लोथ अपन आधा-खुजल मुँह सँ हवा सूँघैत छल। पीपरक ब्रह्मा पहिल बेर दिन डूबला बाद जल्दी नीचे उतरि गेल छलाह। सभकेँ बुझाइत छल — समुद्र पारक कोनो सभागारमे किओ पुरान नाम छूने अछि।

गाछीमे एकटा नव आत्मा आयल। ओ मजदूर नहि छल। ओकर हाथमे टोकड़ी नहि छल। ओकर हाथमे मोबाइल छल, जकर स्क्रीन सदा काली। भूत सभ ओकरा घेरि लेलनि। बूढ़बा पूछलनि — 'कोन नदीमे डुबलहुँ?' ओ युवक उत्तर देलक — 'नदी नहि छल। खेल छल। कर्ज छल। फोन पर पुलिस बनि कऽ बाजल लोक छल। घरक इज्जतक डर छल। हम छत सँ खसलहुँ।'

भूत सभ चुप। पनिडुब्बी अपन झोँटा पानिसँ बाहर काढ़ि लेलक। डाइन सभ पहिल बेर बिनु हँसल एक-दोसराकेँ देखलक। बूढ़बा धीरे सँ कहलनि — 'आब गोहि पानिमे मात्र नहि रहल।'

हार्वर्डमे ईरा प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स केँ ई-मेल लिखलक। ओ लंबा ई-मेल नहि छल। ओ केवल तीन पंक्ति लिखलक — 'आइक भाषणक चौठम स्लाइड पर जे भारतीय पुल छल, ओहि पर हमर परिवारक एक लोकक मृत्यु-जाँच जुड़ल अछि। कम्पनीक अभिलेख आ स्थानीय अभिलेख मेल नहि खाइत। की एथिक्स केन्द्र एहि पर सार्वजनिक प्रश्न उठाओत?' ओ ई-मेल पठेबाक पहिने बहुत देर तक स्क्रीन देखैत रहलि। भेजू बटन पर अंगुरी राखि कऽ ओकरा बा केर आवाज सुनाइ देलक — 'कागच पर मरल लोक कागजे सँ घुरैत अछि।'

ओ भेजू दबेलक।

किछु क्षण बाद राघव सोमानीक फोन पर सिग्नल चमकल — 'ईरा सक्रिय। प्रोफेसर तक पहुँचल। बत्रा लाइन तैयार राखू।'

तकरा बाद जे संदेश आयल, ओ राघव पढ़ि कऽ तुरन्त मेटा देलक। मुदा जे मेटाओल जाइत अछि से समाप्त नहि होइत। किछु संदेश हवामे रहि जाइत अछि, किछु सर्वरमे, किछु आत्मामे। ओहि संदेशक ध्वनि गढ़ नारिकेल धरि पहुँचि गेल। चन्ना गाछीमे नव युवकक मोबाइल, जे मरणोपरान्तो काली स्क्रीन बनल छल, एक क्षण लेल चमकल। स्क्रीन पर एक शब्द आयल — 'प्रतिशत।'

बूढ़बा भूत ओकरा पढ़ि नहि सकलाह। हुलासी पढ़ि सकलीह। ओ धीरे सँ बजलीह — 'ई नाम नहि। ई भूख अछि।'

ओहि राति गंगा-पुलक पायाक भीतर अटकल मजदूरक आत्मा सभ हिलल। हुनकर टोकड़ीमे सीमेन्ट नहि, भीजल कागच भरल छल। सरयू, जेकर नाम सरकारी सूचीमे कहियो पूरा नहि लिखायल, पानिक भीतर सँ ऊपर तकलक। दूर हार्वर्डक सभागारक चिक्कन फर्श पर ओकर पएरक भीजल निशान पड़ि रहल छल। कियो देखि नहि रहल छल। सभागार बन्द भऽ चुकल छल। सुरक्षा-प्रहरी केवल एतबा देखलक जे मञ्च लग काठक फर्श पर पानि जमल अछि। ओ कपड़ा लऽ कऽ पोछलक। पानि हटि गेल। रेत रहि गेल।

रेतमे एक अक्षर बनल छल — न।

ईरा राति बहुत देर बाद छात्रावास पहुँचलि। बर्फ आबि रहल छल। ओकर जूता तरे चरमराहट छल, मुदा ओकर कानमे गंगा छल — एहन दूरी, एहन विरोधाभास जे एकहि क्षणमे ओकरा दूटा संसारक निवासी बना देलक। ओ अपन डायरी खोलि लिखलक — ‘एथिक्सक सभागारमे जखन पानि रिसैत अछि, तखन बुझबाक चाही जे कोनो नाम अबैत अछि।’ तकरा बाद ओ नन्द आरुणिक स्कैन कएल पन्ना फेर देखलक। ओहि पन्नाक कोन पर एक छोट शब्द छल, जे ओ पहिने नहि देखलने छलि — गढ़ नारिकेल।

एहि बेर ओकरा गाम अजनबी-रोमांचक कथा नहि लगल। ओकरा बुझायल — गढ़ नारिकेल कोनो भौगोलिक स्थान नहि, एकटा अदालत अछि, जतय मृतक सभ अपन गवाही रेत, पानि, गाछ, छाह आ बच्चाक प्रश्नमे जमा करैत छथि।

दिल्लीमे सत्यव्रत मेहता दीप बन्द कऽ सुतय गेलाह, मुदा निन्न नहि आयल। हुनका सपनामे एक पुल देखायल। पुल पर ओ स्वयं सरकारी गाउन पहिरने ठाढ़ छथि। नीचाँ पानि नहि, फाइल बहि रहल अछि। फाइलक भीतर गोहि सभ तैरि रहल अछि। एक गोहि मुँह खोलि कऽ बजैत अछि — ‘माननीय, तारीख देल जाउ?’ सत्यव्रत निन्नसँ उठि बैसलाह। बाहरी सड़क पर कोनो वाहन नहि छल। मुदा हुनका स्पष्ट सुनाइ देलक — छपाक।

भोर होइत-होइत तीन ठाम तीनटा काम शुरू भऽ चुकल छल। हार्वर्डमे ईरा उत्तरक प्रतीक्षा करैत छलि। दिल्लीमे सत्यव्रत मूल अभिलेख मंगाबय लेल नोट तैयार करैत छलाह। चन्द्रपाल बत्रा अपन लोक कैँ गढ़ नारिकेलक पुरान परिवार सभक पता लगाबय कहि रहल छल। तीन शहर, तीन इरादा, मुदा तीनू केर धागा एक्के जड़ि सँ बाहर निकलि रहल छल।

आ चन्ना गाछीमे भूत सभ फेर कबड्डी खेलय लगल। मुदा एहि बेर कबड्डीक लय बदलि गेल छल। एक दल ‘जलसमाधि’ बजैत छल, दोसर दल ‘प्रतिशत।’ बीचमे नव युवक, जे स्क्रीनक गोहि सँ मरल छल, चुपचाप ठाढ़ छल। ओकरा खेलक नियम नहि बुझाइत छल। बूढ़बा

ओकर कन्हा पर हाथ रखलक — ‘डेराउ नहि। एतय जे मरैछै, ओ हारै नहि। एतय नाम सीखल जाइत अछि।’

आ गाछी पर पहिल उजास उतरला सँ पहिने पनिडुब्बी पानिमे झुकि कऽ कहलक — ‘विदेशमे जे नैतिकता बजल, ओकर आवाज एतय गोहि सुनि रहल अछि।’

पानिक नीचाँ सँ उत्तर आयल — ‘हम सेहो।’

लोकगीत: मञ्चक उजास, पायाक रक्त

लोकधुन: विदापत-धुनक करुण पद

सुनू हे सभागार, पायाक स्वर सुनू हे,
मञ्चक बत्ती बुझत, पातक बोल गुनू हे।

हिम झरै हार्वर्डमे, गंगा कात घाम,
मञ्च पर नैतिकता, पायामे अनाम।
चमचम जूता नीचाँ बिसेसरक लहू,
तालीक बीच सुनू—माए पुकारै ‘कहू’।
प्रतिशत गनै मालिक, भूत गनै नाम,

एक पात समुन्दर टपि पहुँचल सभागार।
ईरा प्रश्न उठेलक, मेहता निन्न गमेलक,
झूठक सुनर भाषण गंगाजलमे भेलक।
मञ्चक बत्ती बुझत, पातक स्वर रहत—
जकर रक्तसँ पुल बनल, ओकर नाम कहत।

हिम झरैत देस मे नैतिकताक भाषण,
गंगा कात घाम मे बिकल श्रमक जीवन।
समुन्दर टपि पहुँचल एक पातक पैगाम।

❖

अध्याय ७

श्वासक भाव

जखन साँसक भाव बाजार तय करए लागै, तखन भूतो खेल छोड़ि जीविते दिस ताकए लागै छै।

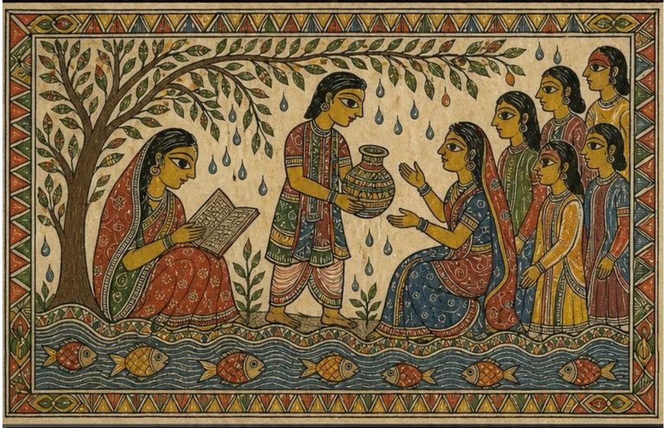

अध्यायारम्भ लोकगीत: श्वास अमोलक

लोकधुन: माएरी सोहर

ललना रे, साँसक सोहर गाबू हे,
अँगना-अँगना पवनक अँचरा छाबू हे।

बौआक पहिल साँसपर सोहर गाम गबैत,
पवन मुफ्त अँचरा भरि जीवन-रस बहबैत।
शीशी, दवा, अस्पताल सभ सेवा लेल रहू,
श्वासक दाम नहि लगाउ, मानव धर्म कहू।

माए केर जोड़ल हाथ खाली नहि घुरै,
साझा प्रबन्ध, दया, विज्ञान जीवनकेँ धरै।
श्वास अमोलक गीत गाउ, कियो नील नहि होए,
हरेक छातीमे पवन बराबर आशाक फूल बोए।

जच्चा हँसए, बच्चा हँसए, पवन बहए निर्मल,
शीशी-सिलेण्डर सेवा बनए, नहि बनए छल-बल।
माएक जोड़ल हाथ कहए—साँस सभक साझा,
एहि सोहरक ताल पर नाचए जीवन ताजा।

❖

श्वासक भाव बाजारमे तय होमय लागल तखन गढ़ नारिकेलक भूत सभ पहिल बेर खेल छोड़ि कऽ जीवित लोककेँ देखय लगल — एहन ध्यानसँ, जेना कोनो पुरान चिकित्सक अपन नाड़ी पर हाथ राखने होथि, मुदा नाड़ी अपनहि नहि, समस्त संसारक होइक। अकाल-मृत्यु हुनका सभ लेल नव बात नहि छल; चन्ना गाछीमे जे कतार रहैत छल, ताहिमे इनारक जल, नदीक धार, साँपक दाँत, डाइनक छाह, पुलक पाया — सभ तरहक मृत्यु पहिने सँ उपस्थित छल। मुदा ई मृत्यु अदृश्य छल। ई देहकेँ छूबैत नहि, पहिने श्वासकेँ पकड़ैत छल।

रातिमे कबड्डीक मैदान पर प्रेत सभ गोल बैसल छल। राकशक इजोर मद्धिम। लोथ मुँह आधा खोलने, मुदा दर्शकक हँसी ओकरामे नहि। पनिडुब्बी पोखरिक भीतर सँ माथ निकालि कहलनि — ‘ई कोन रोग अछि जे पानिमे नहि, हवामे डुबाबैत अछि?’

बूढ़बा भूत, जे बारह सय वर्षक इतिहास अपन पाँजरेमे राखने छल, धीरे बाजल — 'मनुष्य जखन बहुत पाप जमा करैत अछि, तखन पानि आ हवा अपन-अपन हिसाब माँगय लगैत अछि। पानि गोहि कैँ पठबैत अछि। हवा श्वास रोकि लैत अछि।'

२०२० क बसन्तमे संसार अचानक घरक भीतर बन्द भऽ गेल — एहन बसन्त, जकर फूल खिलल, मुदा फूल देखनिहार आँखि सभ खिड़कीक शीशाक पाछाँ कैद। सड़क, जे दिन-रात गाड़ी सँ फूली रहैत छल, खाली पड़ल — एहन सन्नाटा जे कहियो-कहियो हवाक हल्लुक सिहरनसँ सेहो टूटि जाइत। रेलगाड़ी सभ स्टेशन पर एना ठाढ़ भेल जेना लोहाक बड़का-बड़का मृत पशु, जकर साँस रुकल छल मुदा देह अखनहुँ चमकैत छल। शहरक आकाश साफ देखाइ पड़ल, मुदा मनुष्यक छाती धुँधला गेल। लोक खिड़की सँ बाहर देखैत छल आ बाहरक खालीपन भीतरक भयकैँ दूना कऽ दैत छल।

दिल्लीमे आरुणि नन्दन अपन डेराक बरामदामे ठाढ़ छल। दूर एम्बुलेंसक आवाज अबैत-जाइत। ओकर बेटी अनन्या मास्क पहिरि कऽ शीशा पर अपन साँसक धुँध बनबैत छलि। ओ धुँध पर अँगुरी सँ गोल बनौलनि, फेर पूछलनि — 'डैडी, लोक मास्क किएक पहिरैत अछि? भूत सभ सेहो पहिरैत होएत?'

आरुणि उत्तर नहि देलक। ओकर जीहमे उत्तर छल, मुदा गला तक पहुँचिते फँसि गेल — जेना कोनो शब्द स्वयं जानि गेल हो जे ओ एहि क्षणक भार उठा नहि सकत। ओकरा अचानक मोन पड़ल — बा कहैत छलीह जे भूतकैँ मास्क नहि चाही, किएक तँ ओकरा श्वास नहि होइत। मुदा आइ शहरमे जीवित लोकक चेहरा एहन लगैत छल जेना सभ आधा भूत भऽ गेल हो। आँखि मात्र देखाइत, मुँह गायब।

बा फोन पर गाम सँ कहलनि — 'बाबू, ई रोग साँच अछि कि सरकारक कोनो नव खेल?'

आरुणि थमकि गेल। 'रोग साँच अछि, बा। खेल ओकर चारू कात बनि रहल अछि।'

बा चुप रहलीह। फेर कहलनि — 'तखन नाम लिखैत रह। जे मरत, ओकर नाम लिख। रोग सँ मरल, अस्पताल सँ मरल, ऑक्सीजन बिनु मरल, दवा बिनु मरल — सभ अलग-अलग लिख। बादमे सभ "अन्य" बनि जाइत अछि।'

ई वाक्य आरुणिक भीतर ओहिना उतरल जेना नन्द आरुणिक डायरीमे पानि टपकल छल — एकहि परिवारक दू पीढ़ी, दू संकट, मुदा एक्के सलाह, जेना खून स्वयं एकटा भाषा होइ, जकरा समयक दूरी सेहो मेटा नहि सकैत। 'अन्य' शब्द एहि परिवारक श्राप छल। पुल पर

मजदूर ‘अन्य’ भेल छल। अदालतमे स्त्री-मजदूर ‘अन्य’ भेल छलीह। आब अस्पतालमे रोगी ‘अन्य’ होएबाक पाँतिमे ठाढ़ छल।

दिल्लीक अस्पताल सभमे बिस्तरक भाव बदलैत छल। सरकारी सूची पर खाली बिस्तर, दरबाजा पर ‘स्थान नहि’। फोन पर ‘किछु करब तँ सम्भव अछि’। श्वास नापयबला छोटी मशीन मन्दिरक प्रसाद जेकाँ दुर्लभ। ऑक्सीजन सिलिण्डरक दाम प्रत्येक साँझ बदलैत — जेना शेयर-बजार नहि, मृत्युक बजार खुलल हो।

एक अस्पतालक बाहर आरुणि एक लोककेँ देखलक। ओ अपन बूढ़ पिताकेँ रिक्शा पर लिटौने छल। पिता कनी-कनी श्वास लैत, जेना छाती भीतर अदृश्य गोहि दाँत गाड़ि देने हो। बेटा हाथ जोड़ि गार्ड सँ कहैत — ‘भाइ, बिस्तर खाली अछि। वेबसाइट पर देखलहुँ।’

गार्ड थाकल स्वरमे कहलक — ‘वेबसाइट पर जे खाली अछि, ओ भगवानक लेल राखल अछि की?’ ओकर आँखिमे कोनो क्रूरता नहि छल, केवल एहन थकान जे बहुत बेर एक्के दृश्य देखलासँ जन्मैत अछि।

लोक बुझि नहि सकल। फेर भीतर सँ एक बिचौलिया निकलल। ओ मास्कक नीचाँ सँ फुसफुसायल — ‘अग्रिम जमा करू। कागच बादमे।’

आरुणि केँ अदालतक बरामदा मोन पड़ल। तखन कागच पहिने छल, देह बादमे। आब देह दरबाजा पर छल, कागच भीतर बेड बनि कऽ सोइत छल।

एहि समय शहरक दोसर कोनामे गोप कुमार पहिल बेर कथामे प्रवेश करैत अछि। ओ कोनो नायकक भाँति तलवार लऽ कऽ नहि आयल; ओ एक्सेल शीटक बीच बैसल एक शांत लोक छल। ओकर कक्षमे खिड़की नहि छल। दू स्क्रीन, एक पुरान कुर्सी, कीबोर्ड पर सदा धूलि, आ चाह जे ठंढा भऽ जाइत छल किएक तँ संख्या सभ गरम रहैत छल।

गोप कुमार जीवनरेखा बायो-लॉजिस्टिक्स नामक कम्पनीमे आन्तरिक लेखा-जाँचक काज करैत छल। कम्पनीक नाम सुनिते लोकक मनमे भरोसा जागय — जीवन, रेखा, सहायता। महामारीक समय ई कम्पनी दवा, ऑक्सीजन, सुरक्षाक पोशाक, टीका-शीत-श्रृंखला, अस्पतालक उपकरण, राहत-पैकिट — सबक आपूर्ति सँ जुड़ल घोषित भेल। अखबारमे ओकर विज्ञापन छपल: ‘श्वासक संग, देशक संग।’

गोप केँ विज्ञापन पढ़लासँ बेसी बिल पढ़बाक आदति छल। विज्ञापनमे मानवता रहैत; बिलमे प्रतिशत। विज्ञापनमे फोटो रहैत; बिलमे खाता। विज्ञापनमे बच्चा मास्क पहिरने

मुस्कुराइत; बिलमे 'परामर्श-शुल्क', 'अग्रिम समन्वय', 'जोखिम-भत्ता', 'विशेष ढुलाई', 'आपात अनुज्ञप्ति' जेकाँ पंक्ति सभ रहैत।

ओहि सप्ताह ओकरा 'श्वास-आपूर्ति—उत्तर क्षेत्र' नामक फाइल भेटल। फाइलक पहिल पन्ना सुन्दर। दोसर पन्ना साधारण। तेसर पन्ना सँ गन्ध आबय लागल — जलक नहि, सड़ल कागचक। ओ देखलक: एके ऑक्सीजन सिलिण्डर तीन जिलामे एके दिन आपूर्ति देखाओल गेल। एक अस्पताल जे बन्द छल, ओकर नाम पर पाँच सय रेगुलेटर। एक मृत वितरकक हस्ताक्षर सँ लाखोक बिल।

गोप स्क्रीनक लग झुकल, ओकर पीठ थाकल, आँखि जरैत। ओकर चश्मा पर अक्षर नाचल, जेना संख्या सभ स्वयं जीवित भऽ अपन असली अर्थ छिपेबाक प्रयास करैत होथि। एक कोड बार-बार आबि रहल छल — 'एन-आर-७७'। ओ सोचलक, कोनो बैच नम्बर होएत। मुदा तकरा संग जे विवरण छल, ओ अजीब: 'पुराना पूल परियोजना—दायित्व समायोजन।' महामारीक बिलमे पुरान पुल परियोजना किएक? श्वासक सिलिण्डरक बहीमे जलसमाधि क छाह किएक?

ओ राति गोप घर नहि गेल। बाहर कर्फ्यू छल। भीतर स्क्रीन। चपरासी कहलक — 'साहब, बन्द करु, पुलिस रोकत।' गोप कहलक — 'जाउ। हम किछु देर।'

किछु देर संख्या सभक लेल समय नहि। संख्या जँ मृतकक नाम छिपबैत हो, तँ राति ओकरा लेल खुलैत अछि। गोप फाइलक 'छिपल पंक्ति' खोललक। ओहिमे एक तालिका छल: पुल, दवा, सुरक्षापोशाक, टीका, परामर्श, विदेश-प्रशिक्षण, विधिक-प्रबंधन। प्रत्येक स्तम्भ अलग अपराध जेकाँ, मुदा खाता एक।

सबसे नीचाँ एक नाम छल — ब्रूम-काल्डर वैश्विक। गोप ई नाम पहिने सुनने छल। समाचारमे, दानसूचीमे, महामारीक राहत-विडियोमे। वैह समूहक प्रमुख एडवर्ड ब्रूम विदेशक विश्वविद्यालयमे मानव-गरिमा पर भाषण दैत छल। गोपक स्क्रीन पर ओकर कम्पनीक भारतीय सहयोगी ऑक्सीजनक खाली सिलिण्डर भरल देखबैत छल।

एहि बीच हार्वर्डमे ईरा आरुणि कैँ उत्तर नहि भेटल। प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स ओकर मेल पढ़ि चुप भऽ गेलीह। एडवर्ड ब्रूमक दफ्तर सँ धन्यवाद-संदेश आयल — 'अहाँक चिन्ता महत्त्वपूर्ण अछि; ऐतिहासिक परियोजना सभ जटिल होइत अछि।' ईरा एहि वाक्य पर देर तक तकैत रहलि। 'जटिल' शब्द विदेशमे 'माफ कऽ दिअ'क शिक्षित रूप होइत अछि — से ओ पहिल बेर बुझलि।

ओकरा बाद ईरा अपन दादी जानकी देवी कैँ फोन केलक। बा कहलनि — 'बेटी, जे लोक बहुत चिक्कन बाजै अछि, ओकर पाँजरेमे काँटा खोज।'

ईरा पूछलनि — 'काँटा कतय भेटत?'

बा उत्तर देलनि — 'कागचमे। आ जँ कागच नहि भेटए, तँ पानिमे।'

दिल्लीमे सत्यव्रत मेहता महामारीक कारण घरसँ काज करैत छलाह। हुनका मेज पर पुरान पुल-फाइलक माँग-सूचना, नन्द आरुणिक प्रतिलिपि, आ नव सरकारी परिपत्र सभ पड़ल छल। कोरोना-कालमे अदालत सभ आभासी सुनवाई करैत छल। स्क्रीन पर वकील, स्क्रीन पर न्यायाधीश, स्क्रीन पर माइक बन्द, स्क्रीन पर 'नेटवर्क समस्या'। तारीख आब बरामदामे नहि, बटन पर देल जाइत छल।

सत्यव्रत देखलाह — महामारीक आपूर्ति सम्बन्धी एक सरकारी याचिकामे वैह विदेशी समूहक नाम आयल अछि जे नन्दक पुलक फाइलमे दूर सँ झाँकि रहल छल। कागच सभ अलग-अलग मंत्रालयक, मुदा भाषा एक: 'आपात स्थितिमे प्रक्रिया-शिथिलता आवश्यक।'

सत्यव्रत मनमे सोचलाह — आपात स्थिति जनता बचएबाक लेल होइत अछि कि प्रक्रिया बचएबाक लेल? ओ नोट लिखलनि: 'मूल अनुबंध, आपूर्ति-रसीद, भुगतान-श्रेणी, लाभकारी स्वामित्व प्रस्तुत हो।' पेन चलते-चलते रुकि गेल। हुनका लगा जे नन्द आरुणिक हात हुनकर हाथ पर छू गेल।

ओहि समय चन्द्रपाल बत्रा महामारीमे खूब बढ़ल। अदालत बन्द, थानाक डर, अस्पतालक दर, परिवारक हड़बड़ी — ई सभ ओकरा लेल नब खेत छल। मेरठक एल.एल.बी. ओकर देबाल पर टँगल छल; असली डिग्री ओकर फोनमे छल। ओ 'सिग्नल' पर राघव सोमानी सँ गप करैत: 'बेड पैकेज अलग। दवा पैकेज अलग। पुलिस-पास अलग। खाता पुरान नहि, नया चाही। विद्यार्थी सभ फँसाउ — बेरोजगार छथि।'

राघव 'सिग्नल' सोमानी उत्तर दैत — 'म्यूल तैयार। पाँच हजार प्रति खाता। दस्तावेज पूरा।'

बत्रा लिखैत — 'जल्दी। महामारीमे डर ताजा रहैत अछि। डर ठंढा भेल तँ दाम घटत।'

एहि वाक्य पर कतहु दूर, चन्ना गाछीमे, राकशक इजोर एक क्षण लेल नील भऽ गेल। डाइन सभ उड़ैत-उड़ैत रुकलीह। बूढ़बा भूत बाजल — 'देखलहुँ? मनुष्य आब डरक सेहो वजन तौलैत अछि।'

गढ़ नारिकेलक उज्ज्वल झा तखन बारहम पास कऽ बेरोजगार घरमे बैसल छल — एहन उमेरमे, जखन सपना सभ अखनहुँ ताजा रहैत अछि, मुदा रस्ता सभ बन्द भऽ चुकल रहैत। शहर जाएबाक सपना लॉकडाउनमे अटकि गेल। मोबाइल ओकर खिड़की बनल। पहिने ओ महामारीक खबर देखलक। फेर दवा, ऑक्सीजन, बेरोजगारी। फेर एक दिन ओकरा विज्ञापन देखायल — 'घर बैसि कमाउ। खेलू, जीतू, निकास तुरन्त।'

उज्ज्वल सोचे — खेलमे की हानि? खेत बन्द, कॉलेज बन्द, बस बन्द, संसार बन्द। मोबाइल खुलल अछि। पहिल बेर ओ दू सौ लगेलक आ पाँच सौ जीतलक। ओकर आँखिमे ओही चमक आयल जे पुलक मजदूरक आँखिमे पहिल मजूरी दिन आयल होएत। गोहि सदा पहिल दिन पूरा देह नहि खाइत; पहिने अँगुरी चाटैत अछि।

देविका साह, जे उज्ज्वलक चचेरी बहिन छलि, ओकरा टोकलक — 'ई खेल नहि लगै अछि।'

उज्ज्वल हँसल — 'तूँ सबमे डर देखै छैँ।'

देविका उत्तर देलक — 'डर नहि। जाल।'

ई छोट गप बादमे बहुत भारी होएत। मुदा ओहि दिन घरमे चूड़ाक भुजिया बनि रहल छल, रेडियो पर कोरोना-संख्या, आ उज्ज्वलक स्क्रीन पर जीतक नील बटन चमकैत छल।

जीवनरेखा बायो-लॉजिस्टिक्समे गोप कुमार फाइल सँ फाइल जोड़ैत गेल — रातिक स्तब्धतामे, जतय ओकर कीबोर्डक टक-टक हिसाबसँ बेसी एकटा मौन-प्रार्थना जकाँ बजैत छल। एक अस्पतालक बिलमे 'विशेष दवा' लिखल छल। वैह दवा तीन गुना दाम पर कीनल। फेर ओकर पचास प्रतिशत 'शैक्षिक दान' रूपेँ विदेशक एथिक्स केन्द्र कैँ गेल। गोप कैँ हार्वर्डक कार्यक्रमक लिंक भेटल। ओ देखलक — मञ्च पर एडवर्ड ब्रूम बोलि रहल अछि: 'महामारीमे नैतिक उद्यमक परीक्षा होइत अछि।'

गोपक मन भेल स्क्रीन बन्द कऽ दे। मुदा स्क्रीन बन्द करलासँ संख्या नहि मरैत। ओ विडियो रोकलक। ब्रूमक चेहरा ठाढ़ रहल, मुँह खुलल, हाथ हवामे। गोपक दोसर स्क्रीन पर एक पंक्ति चमकल — 'शव-प्रबन्धन किट: मात्रा ३०००; प्राप्ति प्रमाण ३०।'

तीस।

ई संख्या गोपक भीतर काटि गेल — एहन काट, जे रक्त नहि, स्मृति बहबैत अछि। पुलमे तीस नाम। महामारीमे तीस प्राप्ति। बाकी? 'अन्य'। 'समायोजित'। 'प्राकृतिक क्षति'। 'आकस्मिक हानि'। भाषा बदलैत रहल, पाप नहि।

ओ राति गोप कैँ पहिल बेर पातक आवाज सुनाइ देलक। ओकर दफ्तर शहरक बीच छल; ओतय नारिकेल गाछ कतय सँ? मुदा आवाज स्पष्ट — सरसर, सरसर। जेना कोनो गाछ फाइलक भीतर उगि रहल हो। गोप खुजल खिड़कीक भ्रममे उठल, मुदा कक्षमे खिड़की नहि। आवाज स्क्रीन सँ आबि रहल छल।

स्क्रीन पर 'एन-आर-७७' कोड पर कर्सर अटकि गेल। गोप जखन ओकरा खोललक, तखन एक पुरान स्कैन उभरल। पीला कागच। शीर्ष पर पुल परियोजना। नीचाँ नन्द आरुणि नामक हस्ताक्षर। टिप्पणी: 'मृत्यु-सूची अपूर्ण। स्त्री-मजदूर, अप्रविष्ट मजदूर, अनधिकृत श्रमिकक पृथक सूची संलग्न।' संलग्न सूची गायब।

गोप धीरे बाजल — 'ककरा हटाओल?'

उत्तरमे कम्प्यूटरक पंखा घुरघुरायल। आ कतहु दूर पनिडुब्बी पानिमे केश झटका देलीह।

गोप कैँ नहि मालूम छल जे आरुणि नन्दन नामक लोक दिल्लीक दोसर कोनामे एम्बुलेंस सुनि रहल अछि। ओकरा नहि मालूम छल जे ईरा आरुणि हार्वर्डमे उत्तरक प्रतीक्षा करैत अछि। ओकरा नहि मालूम छल जे सत्यव्रत मेहता पुरान अभिलेख मांगि रहल छथि। मुदा सत्यक नली सभ एक-दोसराक खोज करैत अछि। पानि अलग-अलग गढ्ढामे ठाढ़ रहि सकैत अछि, मुदा धरती नीचाँ धार एक होइत अछि।

अगिला दिन कम्पनीमे बैसकी भेल। महामारी-निदेशक, विधिक सलाहकार, वित्त-प्रमुख, आ एक बाहरी लोक स्क्रीन पर। बाहरी लोकक नाम बताओल गेल — चन्द्रपाल बत्रा, विशेष विधिक समन्वय। गोप ओकर चेहरा देखलक। चेहरा पर नम्रता, आँखिमे हिसाब। बत्रा कहलक — 'आपातकालीन कीनमे दस्तावेजी लचक सामान्य अछि। बादमे नियमितीकरण भऽ जाएत।'

गोप पूछलक — 'जे वस्तु आपूर्ति नहि भेल, ओकर नियमितीकरण कोना?'

बैसकी स्थिर। स्क्रीन पर किछु चेहरा जमल। बत्रा मुस्कुरायल — 'युवा लोक कागच कैँ बहुत गंभीरता सँ लैत अछि। वास्तविकतामे कागच प्रवाहशील होइत अछि।'

गोप उत्तर देलक — 'देह सेहो प्रवाहशील होइत अछि। पुल पर देखल गेल छल।'

बत्राक मुस्कान आधा रहि गेल। ओ पूछलक — 'अहाँ केहन पुलक गप करैत छी?'

गोप कैँ स्वयं नहि बुझल जे ई वाक्य ओकरा मुँह सँ कना निकलल। शायद नारिकेल पातक आवाज ओकर जिह्वा पर उतरि गेल छल। ओ कहल — 'जे कोड अहाँ सभ प्रयोग करैत छी — एन-आर-७७ — ओकर पुल।'

बैसकी समाप्त भऽ गेल। पाँच मिनट बाद गोपक अधिकार घटाओल गेल। ओकरा किछु फोल्डर सँ बाहर कऽ देल गेल। राति तक ओकर दफ्तरक पासवर्ड बदलबाक मेल आयल।

गोप मुस्कुरायल। पासवर्ड बदललासँ फाइलक स्मृति नहि बदलैत। ओ पहिनेहि प्रतिलिपि बना लेने छल। नन्द आरुणिक रक्त शायद ओकरा बिनु भेटलहूँ ई शिक्षा देलक छल — 'एक प्रति माय लग, एक पानि लग, एक हवा लग।'

ओहि राति गोप अपन पुरान मित्र रमैय्या सुब्रमण्यम कैँ कूट-संदेश पठओलक: 'जँ कागच साँस लेबए लागए, तँ ओकरा बचएबाक तरीका की?'

रमैय्या, जे बेंगलूरुमे लॉकडाउनक बीच घरक छत पर तुलसीमे पानि दैत छल, उत्तर देलक — 'कागच नहि, लोक बचाउ। पहिने बताउ — आगि कतऽ लागल अछि?'

गोप लिखलक — 'श्वासमे।'

रमैय्या उत्तर देलक — 'तखन देर नहि करू।'

महामारीक दिन सभ लंबा आ राति सभ छोट होइत गेल। अस्पतालक बाहर चिता, घरक भीतर स्क्रीन, मोबाइल पर मृत्यु-सूचना, आ सरकारी घोषणामे 'स्थिति नियंत्रणमे'। लोक श्मशानक फोटो देखि रहल छल, मुदा कागच पर मृत्युक संख्या सभ सभ्य रहबाक प्रयास करैत छल। संख्या सभकैँ सेहो शायद मास्क पहिराओल गेल छल।

चन्ना गाछीमे ओहि राति कबड्डी नहि, श्वास-खेल भेल। एक भूत पारीमे घुसि 'श्वास-श्वास-श्वास' बजैत। दोसर दल रोकैत — 'बेड नहि।' 'सिलिण्डर नहि।' 'दवा नहि।' 'भुगतान पहिने।' 'रिपोर्ट बादमे।' जकर साँस टूटैत, ओ खेल सँ बाहर नहि होइत; ओ जमीन सँ एक अंगुर ऊपर उठि चुपचाप ओहि सूचीमे जुड़ि जाइत जाहि पर 'अन्य' लिखल छल।

हुलासी क्रोधमे कहलनि — 'ई खेल बन्द करू। जीवित लोक सभ सचमुच मरि रहल अछि।'

बूढ़बा उत्तर देलक — 'हम खेल नहि खेलि रहल छी। हम अभ्यास करि रहल छी। जखन ओकर सभ आत्मा एतय आएत, ओकरा नाम सिखेबाक पड़त।'

पनिडुब्बी पोखरिक तल सँ एक खाली शीशी निकाललनि। शीशी पर लेबल आधा छूटल: 'विशेष उपयोग'। शीशी चन्ना गाछीक माटि पर रखिते ओकर भीतर सँ धुआँ उठल आ धुआँ अक्षर बनल — 'दान'। राकश हँसल — 'दान? ई तँ बिल अछि।'

उसी समय गोपक स्क्रीन पर एक नव फोल्डर प्रकट भेल। ओ स्वयं नहि बनओने छल। नाम छल — 'दान_अन्तर_खाता'। भीतर पंक्ति सभ: एथिक्स केन्द्र दान, वैक्सीन जागरूकता अनुदान, डिजिटल स्वास्थ्य परामर्श, विधिक जोखिम शमन, सामुदायिक गेमिफिकेशन। अन्तिम पंक्ति: 'लाउ किन-हंग — परामर्श: प्रतिशत सुरक्षित।'

गोप 'लाउ किन-हंग' नाम पहिल बेर पढ़लक। ओकरा लगा जे ई कोनो विदेशी आपूर्तिकर्ता होएत। मुदा संगमे जे खाता-रूट छल, ओ दवा सँ बेसी जुआ लगैत छल। सिंगापुर, हांगकांग, दुबई, गुड़गाँव, मेरठ। एक चिकित्सा-बिल ककरा लेल मेरठक विधिक परामर्शमे जाए? एक वैक्सीन-जागरूकता निधि किएक खेल-आधारित कंपनी कैँ?

ओ फाइल सुरक्षित करैत छल तखन फोन पर अज्ञात संदेश आयल। संदेश केवल एतबा: 'कागचकैँ तीन भागमे बाँटू। एकटा आँखि देखैत रहय, एकटा पानि सुनैत रहय, एकटा मृत लोक राखय।'

गोपक देहमे सिहरन दौड़ल। ओ उत्तर देल — 'अहाँ के?'

संदेश गायब। फेर दोसर: 'जे कागच पर मरि चुकल अछि, ओ नाम सँ नहि बजैत।'

गोप फोन तकैत रहि गेल। कोनो नम्बर नहि, कोनो चिन्ह नहि। केवल एक धूसर वृत्त, जेना छाह नहि हो। ई इशान दत्तक पहिल संकेत छल — छाह-विहीन इन्फॉर्मर, जे सरकारी रेकॉर्डमे मरि चुकल छल आ एखन जीवित लोकक झूठक बीच घूमैत छल।

गोप फाइल तीन भागमे बाँटल। पहिल भाग रमैय्याक लेल। दोसर भाग एक सुरक्षित ठाम, जकर पता ओकरा स्वयं पूरा नहि मालूम। तेसर भाग एहन नाम पर, जे मृत घोषित छल। विभाजन करिते स्क्रीन पर छपाकक आवाज आयल। कम्प्यूटरमे पानि नहि छल, मुदा आवाज साफ।

दूर दिल्लीमे आरुणि अपन बेटी कैँ सुला रहल छल। अनन्या निन्नमे बुदबुदेली — 'भूत सभ मास्क उतारि देलक।'

'किएक?' आरुणि अनजाने पूछलक।

'किएक तँ ओकरा सभ कैँ नाम भेटि गेल।'

आरुणि देर धरि ओकर माथ सहलाबैत रहल। बाहर एम्बुलेंसक आवाज कम नहि भेल छल। मुदा भीतर कतौ एक कागच श्वास लेबए लागल छल।

भोरक पहिने, जखन शहरक धुँध आ गामक कुहासा एक्के रंगक होइत अछि, चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत घोषणा केलक — 'आइ सँ नव मृत्यु सभक अलग सूची बनत। जे रोग सँ मरल, जे लोभ सँ मरल, जे ऑक्सीजन बिनु मरल, जे बिलमे मरल, जे ऐपमे मरत — सभक नाम अलग।'

लोथ पेसकार बनि कऽ पूछलक — 'सूची ककरा लग राखब?'

बूढ़बा आकाश दिस देखलक। नारिकेल पात हिलल। उत्तर आयल — 'गोप लग एक प्रति। पानि लग एक प्रति। आ जे बच्चा प्रश्न करैत अछि, ओकर सपना लग एक प्रति।'

एहि निर्णय पर गोहि सभ पानिमे गोल घेर बना कऽ तैरल। ओ सभ शायद हँसि रहल छल, शायद डेराइत छल। कारण जे दिन देहक संग नाम सेहो बचए लागैत अछि, ओ दिन गोहिक भूख आधी रहि जाइत अछि।

सूर्य उगल। समाचारमे कहल गेल — 'स्थिति नियंत्रणमे अछि।' अस्पतालक बाहर पंक्ति लंबा छल। कम्पनीक खाता चलि रहल छल। चन्द्रपाल बत्रा सिग्नल पर अगिला संदेश लिखि रहल छल। हार्वर्डक पन्ना पर एडवर्ड ब्रूमक भाषण अपलोड भऽ गेल छल। सत्यव्रत मेहता मूल अभिलेखक नोट पर हस्ताक्षर करि रहल छलाह। ईरा अपन दादीक वाक्य नोटबुकमे लिखि रहल छलीह।

आ गोप कुमारक स्क्रीन पर एक कर्सर टिमटिमा रहल छल — जेना अन्हारमे एकटा छोट नारिकेल-फूल।

ओ कर्सरक लग गोप पहिल पंक्ति लिखलक: 'श्वासक हिसाब, जलसमाधिक हिसाब सँ अलग नहि।'

तखने बहुत दूर गढ़ नारिकेलमे पनिडुब्बी पानिमे डूबल खाली शीशी केँ उठा कऽ चूमलनि, आ शीशीक भीतर सँ एक बून्द टपकल — छपाक।

लोकगीत: श्वासक खाली शीशी

लोकधुन: माएरी करुण गीत

हे पवन, मुफ्त बहू, गरीबक प्राण बचाउ हे,
साँसक भाव नहि—साँसक नाम लिखाउ हे।

बौआक छाती धौंकै, शीशी भेल खाली,
बाजार भाव बढ़ेलक, साँस भेल नीलामी।
अस्पतालक दुआरपर माए जोड़ै हाथ,
भीतर गनल जा रहल लाभ, बाहर टूटै साँस।
समाचार कहै सभ नियंत्रणमे अछि,

चूल्हि कहै—घरक एक स्वर कम अछि।
पनिडुब्बी चूमलक खाली शीशी राति,
एक बून्द टपकल—मृतकक अन्तिम बात।
श्वासक भाव नहि, श्वासक नाम लिखाउ।

शीशी खाली, छाती धौंकए, दुआरि पर हाथ जोड़ल,
भीतर लाभक अंक गनल, बाहर साँस तोड़ल।
समाचार कहए—सभ नियन्त्रण मे अछि,

❖

अध्याय ८

स्क्रीनक गोहि

स्क्रीनमे देह नहि रहै छै, मुदा देह डुबेबा जोग पूरा पानि रहै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: स्क्रीनपर नेहक पहरा

लोकधुन: युवक-जागरण गीत

जागू हो जवान, नेहक पहरा लगाउ हो,
परदाक अन्हरियामे संगक दीप जराउ हो।

परदा चमकै राति जखन, संगमे मित्र रहू,
हारल अंकसँ जीवन पैघ—ई बात रोज कहू।
ऋण, धमकी, लाजक जाल अकेले नहि सहू,
माए-बाबू, साथी, सेवा केन्द्रसँ जुड़ू।

स्क्रीनक गोहि चिन्हि कऽ डाउनलोड सोचि करू,
एक क्लिकसँ पहिने सत्यापनक दीप धरू।
नेहक पहरा स्क्रीनपर उज्ज्वल भोर बनत,
कियो युवक मौन नहि, संगक हाथ पकड़त।

रातिक चमकी ठकै-भुलबै, आँखि नहि झँपाउ,
हारल अंक, टूटल सपना—मने नहि दबाउ।
एक अवाज पर दस हाथ काँध धरए आओत,
गोहि-जाल कतबो गहींर, संग पार लगाओत।

❖

चन्ना गाछीमे ओहि राति भूत सभ देर धरि निन्न नहि गेल। अकाल-मृत्यु सभक सूची बनि गेल छल, मुदा बूढ़बा भूतक माथ पर एक नव चिन्ता छल। ओ देखैत छलाह जे गाछीक बाहरी किनार पर एक नव किसिमक छाह ठाढ़ अछि। ओ छाह भूत नहि, प्रेत नहि, राकश नहि, लोथ नहि। ओकर पएर जमीन सँ एक अंगुर ऊपर सेहो नहि; ओ पएरहीन छल। ओ बस चमकैत-निबैत रहल — जेना कोनो मोबाइलक स्क्रीन, जकर उजास आँखि कैँ बजबैत अछि, मुदा हृदय कैँ कहियो नहि छूबैत।

हुलासी पूछलनि — ‘ई के अछि?’

पनिडुब्बी पोखरिक तल सँ माथ निकालि कहलनि — 'ई पानिमे डूबल नहि। ई आँखिमे डूबल अछि।'

बूढ़बा धीरे बाजलाह — 'तखन एहि मृत्यु लेल नव नाम चाही। नदीक गोहि देह खाइत छल। ई स्क्रीनक गोहि भविष्य खाइत अछि।'

गढ़ नारिकेलमे उज्ज्वल झा अपन घरक ओसार पर बैसल मोबाइलक नीला उजासमे धीरे-धीरे रंग बदलि रहल छल। ओकर माय चूल्हा पर दालि राखने छलीह, पिता खेतक कर्जक हिसाब जोडैत छलाह, बहिन देविका साह आँगनमे साग बाछैत छलि। संसार गरीबीक पुरान लयमे चलि रहल छल, मुदा उज्ज्वलक आँखिमे एक नव बाजार खुलि चुकल छल — एहन बाजार, जकर दरबाजा बिनु चाबीक खुजल छल, आ जकर भीतर अन्हार, उजासक भेष धरि आगाँ आगाँ चलैत छल।

एप्पक नाम छल — 'राजा-राति'। विज्ञापनमे कहल गेल: खेलू, जीतू, तुरन्त निकासी। पहिल बेर उज्ज्वल दू सौ लगेलक आ पाँच सौ जीतलक। दोसर बेर पाँच सौ लगेलक आ दू हजार जीतलक। ओहि राति ओ घरक लेल रसगुल्ला आनलक। माय पूछलनि — 'कत्तऽ सँ?'

उज्ज्वल हँसल — 'ऑनलाइन काज अछि।'

गाममे ऑनलाइन शब्द अजूबा नहि रहल छल, मुदा ओकर मतलब सभकेँ अलग-अलग बुझाइत छल। ककरो लेल सरकारी फारम, ककरो लेल विडियो, ककरो लेल परदेशक बेटाक चेहरा, आ उज्ज्वल लेल — भाग्य। भाग्य ओकर अँगुरीक नीचाँ घूमैत चक्र बनि गेल।

देविका ओकर फोन छीनि देखि लेलक। स्क्रीन पर घोड़ा दौड़ि रहल छल, पत्ता खुलि रहल छल, क्रिकेटक काल्पनिक ओवर चलि रहल छल। देविका कहलनि — 'ई खेल नहि, जाल अछि।'

उज्ज्वल कहलक — 'जाल होइत तँ पहिने जीतबिते किएक?'

देविका चुप भऽ गेलि। ओ एते पढ़ल नहि छलीह जे एल्गोरिद्म कहि सकथि, मुदा ओकर स्त्री-बुद्धि समझैत छल जे जे चीज पहिने देइ अछि, ओ बादमे माँगैत अवश्य अछि।

मेरठमे चन्द्रपाल बत्राक दफ्तरक देबाल पर ओकर एल.एल.बी.क प्रमाणपत्र फ्रेममे टँगल छल। ओकर नीचाँ शीशाक टेबुल, टेबुलक नीचाँ नकद, टेबुलक ऊपर धार्मिक मूर्ति, आ दराजमे तीनटा फोन। पहिल फोन अदालतक लेल, दोसर पुलिसक लेल, तेसर सिग्नलक लेल। तेसर फोनमे नाम नहि, केवल चिह्न।

राघव 'सिग्नल' सोमानीक संदेश आयल — 'गढ़ नारिकेल क्षेत्रमे नव उपयोगकर्ता बढ़ल। प्रारम्भिक जीत देल गेल। निकासी रोकबाक समय?'

बत्रा उत्तर देलक — 'आब नहि। पहिने विश्वासक रस्सा लम्बा करू। पाँच दिन बाद सीमा बढ़ाउ। सातम दिन बोनस। दसमा दिन ऋण-रेखा।'

राघव लिखलक — 'म्यूल अकाउण्ट तैयार। मुन्ना पासवान, सौरभ महतो, इमरान, दू विद्यार्थी। पाँच हजार प्रति खाता।'

बत्रा उत्तर देलक — 'खाता सभ साफ राखू। हांगकांगक हिस्सा समय पर जाउ।'

थोड़ी देर बाद राघवक स्क्रीन पर दूर सँ एक संदेश चमकल। प्रेषकक नाम नहि, केवल अक्षर — एल.के.। संदेश छोट छल: 'प्रतिशत देरी नहि।' राघव पढ़ि कऽ मेटा देलक। मुदा मेटाओल शब्द जेना रातिक बयारमे घुलि गढ़ नारिकेल धरि पहुँचल। चन्ना गाछीक नारिकेल पात हिलल। लोथ पेसकार अपन आधा खुलल मुँह सँ बुदबुदायल — 'प्रतिशत।'

मुन्ना पासवान कैँ ई नहि बुझल छल जे ओ अपराधमे घुसि रहल अछि। ओकरा कहल गेल जे बैंक खाता खोलबाक आ ओहिमे थोड़ेक लेन-देन करबाक छोट काज अछि। आधार, पैन, फोटो, सिम — सभ जमा। पाँच हजार तुरन्त। बेरोजगारीक दिनमे पाँच हजारक गन्ध चूल्हाक धुँआ सँ मीठ लगैत अछि।

मुन्ना घर आबि माय कैँ पाँच हजार देलक। माय पूछलनि — 'बेटा, ई साफ पाय अछि ने?'

मुन्ना कहलक — 'मोबाइल कम्पनीक काज अछि।'

माय मोबाइल कम्पनी कैँ नहि चिन्हैत छलीह, मुदा पाँच हजारक नोट पर राष्ट्रचिह्न चिन्हैत छलीह — जेना ओ चिह्न स्वयं सत्यताक गारंटी होइक। ओ नोट संदूकमे राखि देलनि। रातिमे ओहि संदूक सँ किछु-किछु पानिक आवाज आबय लागल।

गोप कुमार अपन फाइलमे 'सामुदायिक गेमिफिकेशन' पंक्ति देखलाक बाद चैन सँ नहि बसि सकल। श्वासक बिल आ खेलक पेमेन्ट एक्के खातामे कना मिलल? ओ पंक्ति खोललक। नाम आयल — राजा-राति इंटरएक्टिव, भारत परिचालन: विधिक सलाह चन्द्रपाल बत्रा। विदेशी लाभकारी स्वामित्व: गोकुल स्टार होल्डिङ, हांगकांग। तकरा पाछाँ आर एक नाम — लाउ किन-हंग।

गोप कैँ ई नाम पहिने अध्यायक अन्हार जेकाँ लगल। नामक भीतर लहर नहि, समुद्र छल। ओ रमैय्याक लेल संदेश टाइप केलक — 'दवा सँ खेल धरि धारा जुड़ल।'

रमैय्या उत्तर देलक — 'खेलक अर्थ?'

गोप लिखलक — 'जुआ। पर जुआ नहि। डेटा-सँ चालित भूख। पहिने जीत, बादमे ऋण, फेर धमकी।'

रमैय्या लिखलक — 'सभ सुरक्षित करू। आ एक परिवार खोजू, जाहि पर ई टूटल अछि। संख्या सँ अदालत नहि रोइत। चेहरा चाही।'

चेहरा गढ़ नारिकेलमे तैयार भऽ रहल छल — बिनु ककरो जनने, बिनु ककरो चाहने, जेना नियति स्वयं अपन अगिला पन्ना चुपचाप लिखि रहल होइक। उज्ज्वल आब खेलमे गहिर उतरि चुकल छल। जीतक पाछाँ हार आयल, हारक पाछाँ दुगुना दाँव, दुगुना दाँवक पाछाँ ऋण। एप्प ओकरा कहलक — 'विशेष खिलाड़ी लेल ऋण-सीमा खुलल।' ओ दबा देलक। पलक झपकिते दस हजार। फेर बीस। फेर पचास। ओ सोचलक जीतलाक बाद चुका देब। मुदा स्क्रीनक गोहि जीभ सँ नहि, गणना सँ चिबैत अछि।

घरमे देविका देखलक जे उज्ज्वल कम बोलय लागल अछि। रातिमे ओ छत पर जाइत, कानमे इयरफोन, आँखि फोन पर। एक राति देविका पाछाँ गेलि। उज्ज्वल मोबाइल पर फुसफुसा रहल छल — 'भाइ, दू दिन दियऽ। घरमे केओ नहि जनै अछि।'

दूसर दिस आवाज आयल — 'अहाँ पर डिजिटल अरेस्टक आदेश बनि रहल अछि। खातामे अवैध धन आयल अछि। सहयोग करू नहि तँ पुलिस घर पहुँचत।'

उज्ज्वल काँपि गेल। ओ कानून नहि बुझैत छल, मुदा पुलिसक डर पुरखा सँ विरासतमे भेटैत अछि। फोन पर लोक कहैत रहल — 'कमरा बन्द करू। विडियो चालू राखू। ककरो नहि बताउ। ई राष्ट्रीय जाँच अछि।'

देविका दरबाजाक ओट सँ सुनैत रहलि। ओकरा 'राष्ट्रीय' शब्द पर हँसी आ डर दुनू भेल। जे लोक राष्ट्रक नाम लैत अछि, ओ सदिखन राष्ट्र नहि होइत; कखनो-कखनो ओ चोर होइत अछि जे झंडा ओढ़ि लेलक।

डिजिटल अरेस्ट। ई नव शब्द छल, मुदा पुरान पद्धति। पहिने डकैत रातिमे घर घेरैत छल। आब स्क्रीन घर घेरैत अछि। पहिने रस्सी सँ हाथ बान्हल जाइत छल। आब कैमरा सँ चेहरा। पहिने बन्दूक देखाओल जाइत छल। आब नकली मोहर, नकली वर्दी, नकली नोटिस।

चन्द्रपाल बत्रा अपन दफ्तरमे एक युवक कैँ प्रशिक्षण दैत छल — 'आवाज सरकारी राखू। जल्दी नहि। पहिने डर, फेर लाज, फेर समाधान। समाधान सदा पैसा।'

युवक पूछलक — 'जँ ओ रोए लागए?'

बत्रा मुस्कुरायल — 'रोब तँ नीक। जँ रोइछै, तँ ओकरा लग परिवार अछि। परिवारक डर सबसे बड़का बैंक अछि।'

एहि वाक्य पर चन्ना गाछीमे हुलासी क्रोध सँ काँपि उठलीह। हुनकर हाथ नहि छल, मुदा ओ बिनु हाथक हवा झपटलनि। गाछीक धूलि घूमि गेल। बूढ़बा भूत कहलाह — 'शान्त। ओकर नाम लिखू।'

लोथ पेसकार पूछलक — 'बत्राक नाम?'

बूढ़बा बाजलाह — 'ओकर नाम अपराधी सूचीमे। मुदा पहिने उज्ज्वलक नाम पीड़ित सूचीमे।'

उज्ज्वल अपन कमरा बन्द कऽ लेलक। नकली अधिकारी ओकरा कहलक जे खाता सँ पैसा निकसल अछि, आतंकी लेन-देन, हवाला, गिरफ्तारी। ओ डरि कऽ घरक गहना, पिता के बचत, मित्रक उधार, सभ मिलबय लागल। एक म्यूल अकाउण्ट पर पैसा गेल — मुन्ना पासवानक खाता। मुन्ना तखन खेतमे पम्पसेट ठीक करैत छल; ओकरा नहि मालूम छल जे ओकर खातामे ककरो भय जमा भऽ रहल अछि।

मुन्नाक फोन पर संदेश आयल — 'राशि प्राप्त। आगाँ भेजू।' ओ दलालक कहला अनुसार भेजि देलक। पाँच मिनट बाद पैसा सिंगापुर, फेर हांगकांग, फेर एक परामर्श-खातामे। कागच पर लिखल गेल — डिजिटल स्वास्थ्य जागरूकता।

गोप एहि मार्ग कैँ देखलक। ओकर स्क्रीन पर रेखा बनैत गेल — गढ़ नारिकेलक युवक सँ मुन्नाक खाता, ओतयसँ भुगतान द्वार, ओतयसँ राघव सोमानी, ओतयसँ लाउ किन-हंग, ओतयसँ ब्रूम-काल्डरक 'सामुदायिक नवाचार निधि'। ओ कुर्सी सँ उठि गेल। ओकरा लगा जे स्क्रीन सँ गोहि बाहर निकलत।

तखने छाह-विहीन इन्फॉर्मर ईशान दत्तक संदेश आयल — 'खाता देखलहुँ?'

गोप उत्तर देलक — 'ई खेल नहि, नरभक्षण अछि।'

ईशान लिखलक — 'नरभक्षण नहि। नामभक्षण। देह बादमे मरैत अछि; पहिने नाम अपराधी बना देल जाइत अछि।'

उज्ज्वल पर सेहो ई भेल। जे युवक ठगीक शिकार छल, ओकर फोन पर ई संदेश आयल — 'अहाँ देशद्रोही लेन-देनमे पकड़ा गेल छी।' लाज आ भय ओकर छाती पर चढ़ि गेल। ओ देविका केँ तकलक, मुदा किछु कहल नहि। जकरा सबसे बेसी कहबाक चाही, ओकरा लग शब्द सबसे पहिने मरैत अछि।

तीसरा दिन उज्ज्वल घरसँ निकलल। कहल — 'मित्र लग जाइ छी।' ओकर माय दालिमे फोड़नी दैत छलीह। पिता खेतक रसीद खोजैत छलाह। देविका ओकर आँखि देखलक। आँखिमे निन्न नहि, गड्ढा। ओ पाछाँ भागलि, मुदा उज्ज्वल तेज चलि गेल।

साँझ धरि ओ नहि घुरल। घरक चूल्हा दू बेर जरल आ बुझायल, मुदा उज्ज्वलक थारी ओहिना राखल रहि गेल। रातिमे बलानक किनार पर ओकर चप्पल भेटल। देह भोरमे भेटल — पानि कम छल, मुदा मरबाक लेल समुद्र नहि चाही। जे भीतर डूबि चुकल हो, ओकरा लेल घुटना भर पानि पर्याप्त।

गाममे लोक कहल — 'जुआ खेलैत छल।' किछु कहल — 'कमजोर मन।' किछु कहल — 'मोबाइल बिगाड़ि देलक।' पुलिस लिखलक — 'आत्महत्या।' बैंक कहलक — 'संदिग्ध लेन-देन।' एप्प कहलक — 'उपयोगकर्ता नियमक उल्लंघन।' चन्द्रपाल बत्रा कहलक — 'कानूनी जोखिम न्यून।' लाउ किन-हंगक संदेश आयल — 'खाता बन्द।'

केवल देविका साह कहलि — 'ओ मारल गेल अछि।'

ओहि राति उज्ज्वलक आत्मा चन्ना गाछीमे आयल — नव, भयभीत, अपन पुरान देहक भार बिनु, मुदा स्क्रीनक चमकसँ अखनहुँ आधा-अन्हार। भूत सभ कबड्डी खेलि रहल छल, मुदा ई नव आत्मा पारीमे उतरि नहि सकल। ओकर हाथमे मोबाइल छल, स्क्रीन फाटल, मुदा एखनो चमकैत। बूढ़बा ओकरा पूछलाह — 'नाम?'

उज्ज्वल मुँह खोललक, पर आवाज नहि। स्क्रीन पर अंक खुलल — ऋण, दाँव, ब्याज, शुल्क, जाँच, जमानत। नाम कतौ नहि।

हुलासी धीरे सँ ओकर माथ छूलीह। 'बच्चा, अंक छोड़। नाम बाज।'

उज्ज्वल फेर प्रयास केलक। एहि बेर ओकर मुँह सँ हलुक आवाज निकसल — 'उज्ज्वल।'

चन्ना गाछीमे राकशक इजोर तेज भऽ गेल। लोथ पेसकार सूची खोललक। पनिडुब्बी पोखरिक पानि सँ एक बून्द उठौलनि आ उज्ज्वलक नाम पर राखि देलनि। स्क्रीनक भीतरक गोहि एक क्षण लेल सिमटि गेल।

दिल्लीमे गोप कुमार ओहि समय उज्ज्वलक फाइल पढ़ि रहल छल। देविकाक एक छोट विडियो ओकरा रमैय्या मार्फत भेटल छल। विडियोमे देविका रोइत नहि; ओ सोझ आँखि सँ कहैत छलीह — 'हमर भाइ अपराधी नहि छल। ओकरा डराएल गेल। ओकरा लुटल गेल। ओकरा मरय देल गेल।'

गोप विडियो रोकि नहि सकल। संख्या सभ चेहरा बनि गेल — पहिल बेर, बहुत बरखक बाद, ओकर एक्सेल-शीटक ठंढा कॉलम भीतरसँ गरम भऽ उठल। ओ कागच पर लिखलक — 'उज्ज्वल झा: स्क्रीनक जलसमाधि।'

रमैय्या फोन पर कहल — 'आब ई केवल वित्तीय अनियमितता नहि। ई हत्या-जेकाँ संरचना अछि।'

गोप कहलक — 'कानून की कहत?'

रमैय्या हँसल नहि। 'कानून कैँ सत्यव्रत मेहता धरि पहुँचाउ। बटुकनाथ हरिहरन तक गेल तँ ई केस जुआक नियमावली बनि जायत।'

सत्यव्रत मेहता तखन एक ऑनलाइन सुनवाईमे बैसल छलाह। एक वरिष्ठ वकील, जे बटुकनाथ हरिहरनक निकट मानल जाइत छल, कहैत छल — 'ऑनलाइन खेल कौशल-आधारित अछि, महामहिम। उपयोगकर्ता स्वेच्छासँ भाग लैत छथि। राज्यक अति-हस्तक्षेप नव अर्थव्यवस्था कैँ नोकसान पहुँचाओत।'

सत्यव्रत स्क्रीन पर ओकर चेहरा देखलाह। हुनका मोन पड़ल — वैह तर्क विदेशी ठेकेदार पुल पर कहने छल: 'जोखिम विकासक भाग अछि।' वैह तर्क दवा पर: 'आपात कीनमे लचक।' आब खेल पर: 'स्वेच्छा।' प्रत्येक मृत्युक पाछाँ एक सुन्दर शब्द।

सुनवाई स्थगित भेल। तारीख फेर पड़ल। मुदा एहि बेर सत्यव्रत नोटबुकमे एक वाक्य लिखलनि — 'स्वेच्छा तखन मिथ्या अछि, जखन एल्गोरिद्म भय आ लालच कैँ नापि कऽ जाल बुनैत अछि।'

बटुकनाथ हरिहरन ओहि साँझ चन्द्रपाल बत्राक संग एक निजी भोजमे छल। मेज पर मछली, फाइल, आ चुप्पी। हरिहरन कहलक — 'युवकक मामला भावनात्मक बनि सकैत अछि। ओकर परिवारकैँ चुप राखू।'

बत्रा कहल — 'गामक लोक छिटपुट आवाज करैछै। संभाल लेब।'

हरिहरनक आँखि कठोर भेल — ‘गाम कखनो छिटपुट नहि होइत। गाम जखन जागैत अछि, तँ पुरखा सेहो उठैत अछि। सावधान रहू।’

एहि वाक्य पर बत्रा पहिल बेर कनी असहज भेल। ओ भूत पर विश्वास नहि करैत छल, मुदा विश्वास नहि करबो एक तरहक डर होइत अछि। ओकर सिग्नल फोन चमकल। एल.के.क संदेश — ‘भावना समाप्त करू। केवल अनुपालन।’

उसी राति देविका साह उज्ज्वलक फोन गोप कुमार तक पहुँचएबाक ठानलक। फोन फाटल छल, मुदा भीतर चैट, धमकी, खाता, स्क्रीन रिकार्ड, डिजिटल अरेस्टक नकली नोटिस, सभ छल। ओ फोन अनन्या उम्रक एक बच्चा सँ शहर पठाओल गेल, किताबक जिल्दक भीतर।

बच्चा ट्रेनमे सुतल। सपनामे ओकरा चन्ना गाछी देखायल। एक भूत ओकरा कहलक — ‘किताबकेँ छाती सँ लगौने रह। एहिमे एक नाम अछि।’ बच्चा जागल तँ सचमुच किताब छाती पर छल।

गोप जखन फोन हाथमे लेलक, तखन ओकर स्क्रीन स्वतः जळि उठल। पासवर्ड नहि चाही। स्क्रीन पर उज्ज्वलक अन्तिम संदेश रहि गेल छल — ‘हम चोर नहि छी।’

गोप ओ वाक्य पढ़ि कऽ देर धरि चुप रहल — जेना ओहि पाँच शब्दमे पूरा उज्ज्वलक जिनगीक भार समाहित होइक, आ ओ भार उठेबासँ पहिने ओकरा स्वयं साँस सम्हारय पड़ैक। तकरा बाद ओ फोल्डर खोललक जकर नाम ईशान दत्त देलने छल — ‘तीन भाग’। ओ उज्ज्वलक फोनक प्रतिलिपि पहिल भागमे जोड़लक। दोसर प्रति रमैय्या। तेसर प्रति मृत लोकक खाता। चौथी प्रति, जे ओकर योजनामे नहि छल, ओ प्रिन्ट कऽ कागच पर निकाललक।

कागच प्रिन्टर सँ बाहर आयल। ताजा स्याहीक गन्ध। गोप ओकरा माथ लगौलक। कागच पर अंक नहि, नाम छल। उज्ज्वल झा। मुन्ना पासवान। देविका साह। चन्द्रपाल बत्रा। राघव सोमानी। लाउ किन-हंग। बटुकनाथ हरिहरन। नाम सभ एक दोसराक संग एना जुड़ल छल जेना गोहि सभ पानिक भीतर गोल घेरा बना कऽ शिकार रोकैत अछि।

चन्ना गाछीमे भोरसँ पहिने कबड्डी फेर शुरू भेल। एहि बेर उज्ज्वल पारीमे घुसल। ओ ‘कबड्डी’ नहि, ‘हम चोर नहि छी’ बजैत गेल। दोसर पारीमे प्रेत सभ, राकश, लोथ, डाइन, पनिडुब्बी, सभ ओकरा छूयब चाहैत छल, मुदा नियम बदलि गेल छल। जकर नाम वापस भेटि जाइत अछि, ओकरा पकड़ल कठिन होइत अछि।

नारिकेल पात हिलल। पानि सँ आवाज आयल — छपाक। ई पानिक नहि, स्क्रीन टूटबाक आवाज छल।

भोरक समाचारमे कहल गेल — 'ऑनलाइन खेल उद्योगमे नव अवसर।' उसी समय गोप कुमारक फाइलमे अध्यायक नाम खुलल — 'स्क्रीनक गोहि।' ओ जानि गेल जे जलसमाधिक अगिला रूप शुरू भऽ चुकल अछि। नदी आब जेबमे रहैत अछि, आ गोहि अँगूठाक निशान सँ खाता खोलैत अछि।

लोकगीत: हम चोर नहि छी

लोकधुन: युवक-विरहा

कहितह रे बौआ, माए कैँ कहितह हे,
हारल रकम सँ पैघ तोहर जीवन बुझितह हे।

परदा चमकल राति, घरक दीप बुझायल,
अंकक गोहि बेटाकैँ धीरे-धीरे खायल।
माए पूछै—कतेक ऋण? ओ आँखि नीचाँ करै,
लाजक भारी पाथर छातीक भीतर धरै।
'हम चोर नहि छी'—ओकर अन्तिम पुकार,

मोबाइलक टूटल काँचमे रोअए परिवार।
नाम घुरल तखन भूत नहि पकड़ि सकल,
स्क्रीनक नदी फूटल, अन्हार एक बेर डगल।
बौआ, हारल रकमसँ तोहर जीवन पैघ,
कहने रहितह, तँ माए बनितह तोहर मेड़।

परदा चमकल, घरक दीया धीरे-धीरे मुदल,
अंकक गोहि नेना कैँ चुपचाप चिबा गेल।
लाजक पाथर छाती पर, आँखि नीचाँ झुकल,
'हम चोर नहि छी'—एतबे कहि स्वर रुकल।

❖

अध्याय ९

देहक बाजार

जे फोल्डरक नाम 'अतिथि-सेवा', ओकर भीतर सदिखन ककरो बेटीक दाम लिखल रहै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: देहक गरिमा

लोकधुन: स्त्री-मंगल गीत

गाबू गे सखिया, गरिमाक मंगल गाबू गे,
फूलमतिक माथ ऊपर आदरक अँचरा छाबू गे।

देह मंदिर नहि कहू मात्र—देह अपन अधिकार,
सहमति बिना कियो नहि खोलय ओकर द्वार।
फूलमति माथ उठाउ, दोष तोहर नहि,
अपराधीक लाज ओकर, पीड़ितक लाज नहि।

बहिनी सभ संग ठाढ़, कानून सेवा देत,
जीवित स्त्रीक नाम इतिहासमे सम्मान लेत।
देहक गरिमा गीत बनि बाजारक चाल हरत,
स्वतन्त्र निर्णयक प्रकाशसँ नव समाज सँवरत।

दोसक बोझ अपराधी उठाओत, पीड़ित नहि,
बहिनक काँध बहिनक संग, असगर कियो नहि।
आँगनसँ अदालत धरि डेग निडर पड़त,
मंगल-दीपक पाँतीसँ नव विहान चढ़त।

❖

ओहि राति चन्ना गाछीमे कबड्डी बन्द भऽ गेल। ई असामान्य बात छल। भूत, प्रेत, राकश, लोथ, पनिडुब्बी आ डाइन सभक संसारमे खेलक नियम मृत्यु सँ पुरान छल। मुदा जखन बूढ़बा भूत पारीमे घुसलाह, हुनकर मुँहसँ ‘कबड्डी’ नहि निकलल। हुनकर आवाज अटकि गेल।

हुलासी, जे इनारक जलमे अपन प्रतिबिम्ब तकैत-तकैत खसलि आ जेकर मृत्यु पर गाम झूठ लिखि देलक, ओ बूढ़बासँ पूछलनि — ‘आइ खेल किए नहि?’

बूढ़बा अपन कारी आँखि उठेलाह। हुनकर आँखि उज्जर छल, मुदा ओहि उज्जरमे एखन पानि नहि, काँचक देबाल झिलमिला रहल छल। ‘एकटा नव बाजार खुलल अछि,’ ओ कहलाह, ‘जतय देह बिकैत नहि — देहक डर बिकैत अछि।’

राकश, जे लोथक खोरनाठीसँ बनल छल, हँसल। ओकर हँसीमे सूखल बाँसक टूटबाक आवाज छल। 'देहक बाजार पुरान अछि। राज-राजेश्वरक समयसँ।'

हुलासी धीरे कहलनि — 'पुरान छल ताहिलेल जे मनुक्ख स्त्रीकेँ सम्पत्ति बुझैत छल। नव ई अछि जे आब ओकर लाज, फोटो, मोबाइल, बैंक, टिकट, पासपोर्ट, सभ एक्के रस्सीसँ बाँधल जाइत अछि। जाल देखू।'

पनिडुब्बी पोखरिक तलसँ ऊपर आयलि। ओकर केशमे जलक बदला तार उलझल छल — नीला, लाल, हरियर, ओहि तारमे छोटे-छोटे स्क्रीन झिलमिल। ओ कहलक — 'एहि बेर डूबब पानिमे नहि। एही बेर लोक अपन छविमे डूबत।'

दिल्लीमे गोप कुमार उज्ज्वलक फोनसँ निकसल दोसर फाइल खोललक। फाइलमे होटलक नाम छल, उड़ानक टिकट छल, कुछ नाम संक्षेपमे, कुछ कोडमे। 'कमरा — आर०७। अतिथि — बी०एच०। भुगतान — सेवा-खर्च।' ओकरा बुझबामे देर नहि भेल जे बी०एच० बटुकनाथ हरिहरनक संकेत अछि।

रमैय्या सुब्रमण्यम ओहि समय ओकर सामने बैसल छल। ओ मोबाइल घुमा कऽ देखलक आ धीरे बाजल — 'ई जुआक पैसा दोसर नलीमे जाइत अछि। पहिने एप्प युवकक खून खिंचैत अछि, तकर बाद ओहि खूनसँ शहरक इजोत जलैत अछि।'

गोप पूछलक — 'ई सभ देह-व्यापार अछि?'

रमैय्या तुरन्त रोकि देलक — 'शब्द सँ सावधान। जे स्त्री मजबूरी, धोखा, नौकरीक लालच, कर्ज, पुलिसक भय, पासपोर्टक बन्धक, फोटो-धमकी, वा भूखसँ धकेलि देल गेल, ओकरा “व्यापार” कहब अपराधक भाषा अछि। बाजार ओकरा नहि बनौलनि; बाजार ओकरा घेरलक।'

गोप चुप भऽ गेल। ओकर आँखिक सोझाँ अकस्मात् नन्द आरुणिक पुरान डायरीक पन्ना घुमि गेल। ओकरा मोन पड़ल — नदीक गोहि मजदूरक देह खाइत छल, मुदा ओकरा मृतक कहब आसान छल। एतय जे जीवित छल, ओकर मृत्यु कागचमे नहि, भीतरमे होत। जीवित लोकक जलसमाधि अधिक कठिन होइत अछि; पानि ओकरा बाहरसँ नहि, भीतरसँ भरैत अछि।

सौम्या रामनाथन ओही दिन पटना सँ दिल्ली अबैत ट्रेनमे छलि। हुनका लग एक फाइल छल — 'सूर्य-आश्रय सेवा समिति'। नाम सुनयमे दान-पुण्य जेकाँ। कागच पर बालिका-शिक्षा,

विधवा-पुनर्वास, प्रवासी मजदूरक परिवारक सहायताक योजना। मुदा ओहि समितिक बैंक हिसाबमे वैह भुगतान पंक्ति — 'अतिथि-सेवा' — बेर-बेर भेटैत छल।

सौम्या फाइल पढ़ैत-पढ़ैत खिड़की बाहर देखलनि। खेत उलटि रहल छल, गाम उलटि रहल छल, स्टेशनक नाम भागि रहल छल। हुनका लगैत छल, भारतक रेलगाड़ी सदिखन एक देशसँ दोसर देशमे नहि, एक सचसँ दोसर सचमे जाइत अछि।

ओहि समितिक संचालिका छल — मालविका ग्रीन। नाममे हरियर, दफ्तरमे पौधा, वेबसाइट पर हँसैत बच्चा, आ सभागारमे नारा — "गरिमा, पुनर्वास, आत्मनिर्भरता।" मुदा मालविकाक निजी फोनमे चन्द्रपाल बत्राक संदेश छल: 'दू पाहुन बाहरसँ आयल। पुरान सूची नहि। नया चेहरा चाही। बिनु शोर।'

मालविका उत्तर देलक — 'गामक नेनी सभ डेराइत अछि।'

बत्राक उत्तर आयल — 'डर पैसा सँ ठीक होइत अछि। नहि तँ मुकदमा सँ।'

मालविका फेर लिखलक — 'एक केस मीडिया धरि गेल तँ?'

राघव "सिग्नल" सोमानी बीचमे आयल — 'मीडिया पैकेज अलग सँ। चेहरा बदलू। कागचमे कौशल-प्रशिक्षण।'

एहि सभ संदेश स्वतः मेटाइत संवाद छल—पाँच मिनट बाद मेटि जाएबला। मुदा ईशान दत्त, छाह-विहीन सूचनादाता, एक बेर कहने छल—'जे वस्तु मिटै लेल बनाओल जाइत अछि, ओहि पर विश्वास नहि करू। मिटाबऽबला हाथो निशान छोड़ैत अछि।' ओकर बनाएल छोट कार्यक्रम सिग्नलक मिटाओल शब्द सभकेँ पकड़ि रहल छल।

गोप कुमार ईशानक प्रोग्राम चलौलक। स्क्रीन पर मेटाओल संदेश सभ धुएँ जेकाँ उठि कऽ पंक्ति बनए लगल। प्रत्येक पंक्तिक अन्तमे समय, स्थान, भुगतान-खाता। गोपक आँखि सामने भारतक नक्शा खुलल — दिल्ली, मेरठ, पटना, गुवाहाटी, नेपाल-सीमा, दुबई, हांगकांग। पथरी पर गोहिक चाल जेकाँ, टेढ़-मेढ़, मुदा निश्चित।

गढ़ नारिकेलसँ एहि जालक सम्बन्ध एकदम प्रत्यक्ष नहि छल। ताहिलेल ओ बेसी भयावह छल। गामक बेरोजगार युवक अनलाइन खेलमे हारैत छल; हुनकर बैंक खाता म्यूल बनैत छल; ओहि खातामे पैसा धोएल जाइत छल; वैह पैसा 'अतिथि-सेवा' बनि शहरक होटलमे पहुँचैत छल; ओही होटलमे विदेशी ठेकेदार, वकील, दलाल, अधिकारी, औषधि-कम्पनीक प्रतिनिधि, आ रक्षा-सलाहकार सभ राति बितबैत छल। भोरमे ओ सभ गरिमा, विकास आ नीति पर बोलैत छल।

हुलासी चन्ना गाछीमे सुनैत छलि। ओकर देहक हाथ नहि छल, मुदा ओहि राति ओकरा अपन नस-नसमे हाथक स्मृति घुरैत बुझायल। ओ कहलक — 'हमरा इनारमे खसलाक बाद गाम कहल — स्त्री दोषी। एहू सभ पर दोष ओही स्त्री पर पड़त जे पकड़ाइत अछि। पकड़ैत के अछि, ई केओ नहि पूछत।'

बूढ़बा भूत बजलाह — 'तखन एहि अध्यायमे दोषक नाम बदलू। देह दोषी नहि। बाजार दोषी। भूख दोषी नहि। भूख बेचएबला दोषी। लाज दोषी नहि। लाजकेँ रस्सी बनाबऽबला दोषी।'

दक्षिण दिल्लीक एक होटलमे ओहि साँझ बटुकनाथ हरिहरनक निजी भोज छल। आधिकारिक कारण — विधि-सुधार पर विचार-विमर्श। प्रवेशद्वार पर सुरक्षाकर्मी, भीतर काँचक झूमर, मेज पर विदेशी जल, मछली, वाइन, फल, आ प्रत्येक कोनामे मुस्की। हरिहरन सदिखन जेकाँ मन्द हँसैत छल। ओकरा देखिकऽ केओ नहि कहि सकैत छल जे एहि मन्द हँसीक पाछाँ तारीख, घूस, ब्लैकमेल आ देहक कतेक पंक्ति छुपल अछि।

चन्द्रपाल बत्रा ओकर कातमे बैसल छल। ओकर सूट नव छल, मुदा जूता पर धूलक एक बारीक तह। मेरठक गली, थानेक बरामदा, जुआक कोठरी, नकली नोटिस, ऋण-वसूलीक धमकी — ओ सभ जूता पर टाँगल रहैत छल, चाहे ओ कतेक महँगा चमड़ा पहिरै।

हरिहरन पूछलक — 'उज्ज्वलक मामला शांत भेल?'

बत्रा कहल — 'बहिन चुप नहि अछि। फोन निकलि गेल होएत।'

हरिहरनक मुँह पर पहिल बेर झुँझलाहट आयल। 'फोन देह सँ बेशी खतरनाक अछि। देह थाकि जाइत अछि। फोन मोन रखैत अछि।'

बत्रा धीमे स्वरमे कहल — 'मालविका सँ सूची बनि रहल अछि। एक-दू घर केँ सहायता देल जाएत। कर्ज माफ। चुप्पी सस्ती पड़त।'

हरिहरन ओकर दिस देखलक। 'चुप्पी कहियो सस्ती नहि पड़ैत। चुप्पी कर्ज अछि। ब्याजक संग घुरैत अछि। मुदा हम तइ लेल छी ने।' ओ हँसल। 'केस आबि गेल तँ पीड़ितक चरित्र पर प्रश्न। संस्था पर प्रश्न नहि। ई पुरान विधि अछि।'

ओहि वाक्य पर कक्षमे राखल एक सजावटी नारिकेल स्वयं टेबुलसँ लुढ़क परल। सभ चौंकल। हरिहरनक सहायक उठि ओकरा फेर सजेलक। केओ मजाक केलक — 'दक्षिणक नारिकेल होएत।'

बत्रा नहि हँसल। ओकरा मोन पड़ल हरिहरनक पिछला वाक्य — 'गाम जखन जागैत अछि, पुरखा उठैत अछि।'

उसी होटलक तेसर तल पर फूलमति नामक लड़की खिड़कीसँ बाहर देखैत छलि। ओकर नाम फाइलमे 'एफ०एम०' लिखल छल। कागचमे ओ "प्रशिक्षणार्थी" छली। असलमे ओकरा मधुबनीक बस-स्टैण्डसँ नौकरीक भरोसा देल गेल। कहल गेल — शहरमे वृद्धा-सेवा, महीनामे पन्द्रह हजार। पहिल महीना घरमे पाँच हजार भेजल गेल। दोसर महीना फोन छिनि गेल। तेसर महीना कहल गेल — कर्ज चुकाउ।

फूलमति गढ़ नारिकेलक नहि छली, मुदा ओकर नानी गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछी लगक टोले सँ छली। नानी कहैत छली — "जे राति कुकुर बिनु कारण रोए, बूझू कोनो आत्मा बाट माँगैत अछि।" फूलमति ओहि होटलमे कतेको राति कुकुरक आवाज सुनैत छलि, जबकि होटलमे कुकुरक प्रवेश निषिद्ध छल।

ओहि साँझ ओकरा कमरा बदलबाक आदेश भेटल। कमरा संख्या आर०७। ओ जेना ही दरबाजा लग पहुँचलि, भीतरसँ आवाज आयल — 'कागच पर हस्ताक्षर पहिने।' ओकरा एक फॉर्म देल गेल — "स्वैच्छिक सेवा अनुबन्ध।" ओ पढ़ि नहि सकलि। ओकरा सिखाओल गेल छल — जतय नाम पूछै, अंगूठा लगा दियौ।

एहि क्षण दरबाजाक शीशामे ओकरा अपन नानीक चेहरा देखायल। नानी मृत छली। मुदा गढ़ नारिकेलमे मृत लोक सलाह देबा लेल कखनहुँ देर नहि करैत। चेहरा कहल — 'अंगूठा नहि।'

फूलमति हाथ रोकि लेलक। एहि छोट रोकमे एक पूरा विद्रोह छल — एहन विद्रोह, जकरा केओ नहि देखलक, मुदा जे ओकर आत्माक भीतर सबसे पैघ युद्ध जकाँ लड़ल गेल।

नीचाँ लॉबीमे मालविका ग्रीनक फोन बजल। राघव सिग्नलक संदेश — 'एफ०एम० असहयोग। विकल्प?'

मालविका लिखलक — 'डेराएब?'

राघव — 'परिवार।'

दू मिनट बाद फूलमतिक फोन, जे छिनल गेल छल, ओकरा देखाओल गेल। स्क्रीन पर ओकर घरक फोटो। माय, छोट भाइ, खपरैल घर, आ कर्जक कागच। फूलमति बुझि गेल — शरीर शहरमे कैद अछि, मुदा डर गाममे बन्हल अछि।

सौम्या रामनाथन ओहि होटलक बाहर ओहि समय टैक्सीमे उतरलि। हुनका लग मालविका समितिक आमन्त्रण छल — "महिला गरिमा संवाद।" ओ शोधकर्मी छली, आमन्त्रित अतिथि। भीतरक सभागारमे हुनका मंच पर बोलब छल। हुनका नहि मालूम छल जे ओही भवनक तेसर तल पर गरिमा कागच पर अंगूठा माँगि रहल अछि।

सौम्या मंच पर चढ़लि। पहिल पंक्तिमे मालविका, दोसर पंक्तिमे दू वकील, तेसर पंक्तिमे विदेशी कम्पनीक प्रतिनिधि। पिछला भागमे बटुकनाथ हरिहरन पाँच मिनट लेल आबि कऽ चलि जाएबाक तैयारीमे छल।

सौम्या माइक पकड़लनि। हुनका लिखल भाषण छल — पुनर्वास-नीति, श्रम-सुरक्षा, पारदर्शिता। मुदा मंचक बाँया कोनामे सजाओल नारिकेल देखिते हुनका चन्ना गाछीक बूढ़बा भूत मोन पड़ि गेल। ओ भाषण मोड़ि देलनि।

"गरिमा दान नहि," सौम्या कहलनि, "गरिमा ओ वस्तु अछि जे केओ छीनय नहि सकै। जखन रोजगारक नाम पर देह माँगल जाइत अछि, जखन सहायता केर नाम पर चुप्पी कीनल जाइत अछि, जखन अनुबन्धक नाम पर भय लिखाओल जाइत अछि — तखन संस्था सेवा नहि, बाजार होइत अछि।"

सभागारमे हवा कनी भारी भेल। मालविकाक मुस्की कठोर भेल। हरिहरन अपन फोन देखलक। बत्राक संदेश छल — 'ई स्त्री खतरनाक।'

हरिहरन उत्तर देलक — 'खतरनाक स्त्री पर चरित्रक प्रश्न नहि। ओकर निधि-सहायता पूछू। शोधकर्मी सभ निधि-सहायता सँ डरैत अछि।'

उसी समय ऊपर तेसर तल पर फूलमति फॉर्म पर अंगूठा नहि लगा रहल छली। ओकर सामने ठाढ़ लोक ओकर कन्हा पकड़ि रहल छल। फूलमति चिचियाओलि नहि। ओ केवल कहलि — 'हमर नाम फूलमति अछि। एफ०एम० नहि।'

एहि वाक्यक आवाज नीचे सभागार तक नहि पहुँचल। मुदा चन्ना गाछीमे पहुँचल। हुलासी उठि ठाढ़ भऽ गेलि — बिनु हाथक देह, मुदा एहि क्षण ओहि देहमे एतेक बल छल जेना बारह सय वर्षक मौन एकहि पलमे टूटि पड़ल हो। बूढ़बा भूत पहिल बेर ओकरा पारीमे पठेलाह। हुलासी 'फूलमति' बजैत पारीमे घुसलि। कबड्डीक नियम टूटि गेल — मृत स्त्री जीवित स्त्रीक नाम लऽ कऽ दौड़ि रहल छली।

गोप कुमार दिल्लीक अपन छोट कमरामे ई सभ सीधा प्रसारण नहि देखैत छल। मुदा ईशान दत्तक प्रोग्राम तेसर तलक सिसिटिभी सर्वरमे हलचल देखबैत छल। स्क्रीन पर कोई स्पष्ट

दृश्य नहि, केवल समय-मुद्रा, दरबाजा खुलब, बन्द होब, फोनक स्थान, भुगतानक मिलान। मुदा डेटा अपना ढंगसँ चिचियाइत अछि।

गोप रमैय्याकेँ फोन केलक — 'सौम्या ओही होटलमे अछि।'

रमैय्या चुप्पी तोड़ि उठल — 'ओकरा तुरन्त बताउ।'

गोपक अंगुरी काँपैत छल, मुदा ओ रुकल नहि। ओ संदेश लिखलक — "तीसर तल। आर०७। एफ०एम०। सावधान।"

संदेश सौम्याक फोन पर भाषणक बीच चमकल। ओ पढ़लनि। एक क्षण लेल हुनकर स्वर रुकल। फेर ओ माइक पर कहलनि — 'गरिमा पर बात सभागारमे नहि, दरबाजाक ओहि पार होइत अछि। हम अपन बात एतहि समाप्त करैत छी।'

मालविका हड़बड़ा गेल। 'मंचक कार्यक्रम—'

सौम्या उतरि गेलि। दू पत्रकार, जे भोजनक आशामे बैसल छल, उत्सुकतासँ पछुआइल। हरिहरन उठि बाहर निकलल, मुदा ओकर चाल पहिल बेर तीव्र भेल। बत्रा लिफ्ट दिस दौड़ल।

तीसर तल पर आर०७क सामने जखन सौम्या पहुँचलि, दरबाजा भीतरसँ बन्द छल। ओ दरबाजा पर हाथ राखलनि। भीतरसँ दबाओल आवाज — 'हमर नाम फूलमति अछि।'

सौम्या मुड़ि पत्रकार सभक मोबाइल कैमरा दिस देखलनि आ जोर सँ कहलनि — 'लाइव करू।'

एहि दू शब्दमे आधुनिक कालक एक अद्भुत शक्ति छल। जे बात अदालतमे तारीख बनैत, थानामे समझौता बनैत, संस्थामे गोपनीयता बनैत — ओ सोशल प्रसारणमे तत्काल चेहरा बनि गेल। दरबाजा खुलल। भीतरक लोक अपन चेहरा ढाँकलक। फूलमति दरबाजासँ बाहर निकललि, काँपैत, मुदा नाम सहित।

मालविका चिचियाइत आयलि — 'ई प्रशिक्षणार्थी अछि! ई गलतफहमी!'

फूलमति पहिल बेर ऊँच आवाजमे कहलि — 'हम प्रशिक्षणार्थी नहि। हम फूलमति। हमरा घर फोन करए दियौ।'

लाइव विडियो पाँच मिनटमे हजरों फोन पर गेल। देविका साह ओकरा देखलक। उज्ज्वलक मृत फोनक स्क्रीन पर एहि बेर दोसर जीवित स्त्रीक आवाज छल। देविका रोइल नहि। ओ केवल कहलक — 'नाम फेर घुरि रहल अछि।'

चन्द्रपाल बत्रा होटलक पिछला दरबाजासँ निकलि गेल। ओकर सिग्नल फोन पर एल.के.क संदेश आयल — ‘शोर घटाउ। लागत?’

बत्रा लिखलक — ‘बढ़ल।’

एल.के. — ‘हरिहरन?’

बत्रा — ‘सक्रिय।’

एल.के. — ‘एक स्त्री नहि। नेटवर्क बचाउ।’

संदेश मेटि गेल। मुदा ईशानक प्रोग्राम फेर पकड़ि लेलक।

राति देरमे सत्यव्रत मेहता अपन सरकारी आवास पर ओही विडियो देखैत छलाह। हुनका फाइल पर टिप्पणी देबाक छल — “स्वैच्छिक सेवा अनुबन्धक वैधता।” ओ विडियो रोकलनि। फूलमतिक आवाज बार-बार सुनाइ देलक — ‘हमर नाम फूलमति अछि।’

सत्यव्रत देर तक शून्यमे तकैत रहलाह। फेर कागच पर लिखलनि — ‘स्वैच्छिकता भयक भीतर सम्भव नहि।’

फेर एक दोसर पंक्ति — ‘न्यायालय चरित्र नहि, संरचना पूछय।’

एहि दू पंक्ति लिखैत हुनका अपना पेशाक भीतर लाज अनुभव भेल। कतेक बेर अदालतमे पीड़ितक जीवन, परिवार, वस्त्र, मित्र, फोन, फोटो, यात्रा, सभ पर प्रश्न भेल; मुदा धनक स्रोत पर नहि। कतेक बेर वकील सभ देहक पीड़ा केँ “सहमति”क व्याकरणमे बदलि देलक। हुनका बुझायल, कानून सेहो कखनो-कखनो गोहि जेकाँ होइत अछि — सीधे नहि काटैत, पहिने चुप्पीमे घेरैत।

बटुकनाथ हरिहरन राति अपन अध्ययन-कक्षमे बैसल छल। देबाल पर विधि-पुरुष सभक चित्र। मेज पर लाल फाइल। ओ अपन सहायककेँ कहल — ‘फूलमतिक परिवारक पुरान ऋण निकालू। सौम्याकेँ विदेशी निधि-सहायता पर नोटिस। पत्रकार सभ पर मानहानि। गोप कुमारक नाम कतय अछि, खोजू।’

सहायक पूछलक — ‘सत्यव्रत मेहता?’

हरिहरन चुप रहल। फेर कहल — ‘ओ कठिन लोक अछि। ओकरा सीधे नहि, कागचसँ घेरू। ईमानदार लोक कागच पर विश्वास करैत अछि। कागच ओकरा सँ बेसी झूठ सहैत अछि।’

ओहि राति चन्ना गाछीमे खेल फेर शुरू भेल। एहि बेर कबड्डीमे तीन पारी छल। पहिल पारी जलसमाधिक मजदूर सभक। दोसर पारी उज्ज्वलक। तेसर पारी फूलमतिक नामक। भूत सभ नाम बजैत दौड़ैत छल। राकश इजोत करैत छल। लोथ दर्शक नहि, गवाहीदार बनि गेल।

हुलासी पारीमे घुसि कऽ कहलि — 'हमर नाम हुलासी। हमर मृत्यु आत्महत्या नहि छल।'

फूलमतिक नाम हवामे ओकरा संग जुड़ल — 'हमर नाम फूलमति। हमर देह बाजार नहि।'

पानिडुब्बी पोखरिक जलसँ ऊपर देखलक। ओकर केशमे फँसल तार धीरे-धीरे खुलए लगल। ओ बाजलि — 'जकर नाम छीनल जाइत अछि, ओकरा जलसमाधि बिनु पानि होइत अछि। जकर नाम घुरि जाइत अछि, ओकर देह फेर घरक बाट पकड़ैत अछि।'

भोरमे समाचारक भाषा बदलि गेल। किछु चैनल कहल — "गरिमा संस्थामे विवाद।" किछु कहल — "प्रशिक्षणार्थीक आरोप।" किछु चुप रहल। मुदा लोकक फोनमे विडियो घूमि रहल छल। नाम ककरो अनुमति नहि माँगैत।

गोप कुमार अपन फाइलमे नव शीर्षक जोड़लक — 'देहक बाजार' — एहन शीर्षक, जकरा लिखिते ओकर हाथ भारी भऽ गेल, जेना अक्षर स्वयं अपन वजन जनैत होइक। ओहि शीर्षकक नीचाँ तीन कॉलम बनौलक — भय, भुगतान, संरक्षण। भयक कॉलममे फूलमति। भुगतानक कॉलममे चन्द्रपाल बत्रा, राघव सोमानी, लाउ किन-हंग। संरक्षणक कॉलममे बटुकनाथ हरिहरन। तेसर किनार पर ओ एक नाम अलग सँ लिखलक — सत्यव्रत मेहता। ओहि नामक सामने प्रश्नचिह्न।

ओ जानैत छल — कानूनक भीतर सेहो कियो जागि रहल अछि। मुदा जागब पर्याप्त नहि। गोहि सभ बहुत अछि।

नारिकेल गाछक पात भोरक बयारमे हिलल — कोमल, मुदा दृढ़, जेना कोनो थाकल गवाह अन्तिम बेर अपन साक्ष्य दोहरा रहल होइक। पातक घर्षणसँ आवाज आयल — "नाम।" फेर दोसर आवाज — "सहमति।" फेर तेसर — "भय।" आ अन्तमे एक भारी छपाक, जे पानिमे नहि, कागचक भीतर भेल।

उपन्यासक एहि राति बाद गोपक फाइलमे अपराधक जाल स्पष्ट भऽ गेल — पुलक मजदूर, कोरोना-कालनक श्वास, स्क्रीनक जुआ, देहक बाजार। सभ अलग नहि। सभ पानि पर बनल गोल घेरा। बीचमे मनुष्य। चारू कात गोहि।

लोकगीत: फूलमतिक अँचरा

लोकधुन: स्त्री-विरहा

उठाउ गे बहिना, माथ उठाउ गे,
दोष अहाँक नहि—ई बात गबैत जाउ गे।

फोल्डरक नाम सेवा, भीतर बेटीक दाम,
सुनर शहरक इजोतमे बिकैत रहल नाम।
फूलमतिक अँचरा पर लाज नहि, घाव,
अपराधीक मुँह ढाँपू, बेटीकेँ नहि दाग।
भयक कॉलम लम्बा, भुगतानक राति,

संरक्षणक मोहरपर सूखल कतेक छाती।
पात कहै—सहमति बिना देह नहि बाजार,
जीवित स्त्रीक नामो इतिहासक अधिकार।
बहिना, माथ उठाउ, दोष तोहर नहि,
तोहर एक गवाहीसँ टूटत गोहिक मही।

उज्जर शहरक इजोत मे बिकल ककर नाम?
अँचरा पर लाज नहि, घाव लिखल अछि,
मुँह ढाँपू अपराधीक—बेटी निर्दोष अछि।

❖

अध्याय १०

निजताक ब्लैकमेल

देह बिकाइ छै एक बेर, निजता बिकाइ छै बेर-बेर।

अध्यायारम्भ लोकगीत: निजताक देहरी

लोकधुन: सखी-संवाद मंगल

गे सखी, देहरी अपन सम्हारू गे,
चाबी अपन, कथा अपन—मने बिचारू गे।

सखी, तोहर देहरी तोहर, चाबी तोहर हाथ,
फोनक भीतर जे पैसए, अनुमति ओकर बाट।
लाज घुरा अपराधी माथ, पीड़ित माथ नहि,
संगक तीन दीप जरत तँ ब्लैकमेल भारी नहि।

नाम, प्रेम, गवाही मिलि रक्षा-घेरा देत,
कानून, तकनीक, मित्रता भरोसक हाथ लेत।
निजताक देहरीपर सम्मानक अल्पना भरू,
अपन कथा अपन शर्तपर निःशंक जगमे धरू।

फोनक भीतर आँगन बसल, ओहूमे अल्पना,
बिनु पूछल जे ताकए, टूटए ओकर छलना।
तीन दीप—नाम, प्रेम, गवाही—एक संग बारू,
अपन शर्त पर अपन कथा जग आगाँ पसारू।

❖

ओहि राति चन्ना गाछीमे भूत सभ फेर कबड्डी खेलि रहल छल, मुदा खेलक रेखा बदलि गेल छल। पहिने माटिपर रेखा खिंचल जाइत छल; आब पनिडुब्बी अपन भीजल केशसँ हवामे रेखा खिंचैत छलि। रेखा चमकैत छल — जेना अन्हारमे फोनक स्क्रीन। जे भूत ओ रेखा पार करैत, ओकर पुरान नाम नहि, ओकर छुपाओल स्मृति खुलि जाइत।

हुलासी पारीमे गेलि। रेखा छुलिते ओकर इनारक राति सभकेँ देखाइ पड़ल — ओ झुकलि, जलमे अपन चेहरा देखलक, पएर फिसकल, आ गाम ओकर मृत्युकेँ आत्महत्या कहि देलक। हुलासी काँपलि नहि। ओ ठाढ़ भऽ कहलि — “देखू, ई हमर लाज नहि। ई गामक झूठ अछि।”

बूढ़बा भूत मुस्की देलाह। “जखन लोक अपन पीड़ा अपने मुखसँ कहि दैत अछि, तखन ब्लैकमेलक आधा दाँत टूटि जाइत अछि।”

मुदा सभ आत्मा एतेक साहसी नहि होइत। जीवित मनुक्खक देहमे रक्त होइत अछि, परिवार होइत अछि, रोजी होइत अछि, मोबाइलमे फोटो होइत अछि, आ समाजक आँखि होइत अछि। ई आँखि बहुधा न्यायालयसँ बेसी कठोर, पुलिससँ बेसी निर्दयी, आ अपराधीसँ बेसी उत्सुक होइत अछि।

दिल्लीमे गोप कुमारक फाइलमे एक नव नाम खुलल — मृणालिनी आर्या। फाइलमे ओकर नाम नहि, केवल “एम०ए०” छल। ओ विदेशमे पढ़ल, टेक्नोलॉजी-कानूनक सलाहकार, डेटा-अधिकार पर लेख लिखयबली, आ गढ़ नारिकेल वंशक दूरक नातिन। ओकर घरक लोक ओकरा मीरा कहैत छल। गढ़ नारिकेलसँ ओकर सम्बन्ध एतेक दूर छल जे ओ बचपनमे गामक नामकेँ कथा बुझैत छलि, भूगोल नहि।

मीरा पहिने गोप कुमारक फाइलमे शोधकर्ता रूपेँ प्रवेश केलक। ओ कहने छल — “डेटा तखन खतरनाक होइत अछि जखन ओकर मालिक अपराधी आ ओकर विषय गरीब हो।” गोप ओकरा पसन्द नहि करैत छल, किएक तँ ओ प्रत्येक बातमे प्रश्न करैत छलि। रमैय्या कहैत — “ई लड़की वकील नहि, चाकू अछि। कागच काटैत अछि।”

मीरा अपन निजी जीवन लुकबैत नहि छलि, मुदा ओकरा मालूम छल जे समाज खुलल लोककेँ सेहो कैद करबाक तरीका खोजि लैत अछि। ओ अदिति नामक स्त्रीसँ प्रेम करैत छलि। प्रेम सरल छल — दू लोकक बीचक भरोसा। मुदा दुनियाँ सरल वस्तुकेँ खतरनाक बना दैत अछि, विशेषतः जखन ओकरा सँ पैसा, पद, चुप्पी वा गवाही कीनैबाक हो।

चन्द्रपाल बत्राक गिरोहक लग मीरा आ अदितिक निजी संदेश, यात्रा-बुकिंग, फोटो, होटल-रसीद, चिकित्सकीय परामर्श, सभक प्रतिलिपि पहुँचि गेल। ई सभ प्रेमक प्रमाण नहि, ब्लैकमेलक माल बनि गेल। बत्राक लोक लिखलक — “गोपक फाइल सँ दूर रहू। नहि तँ परिवार, मीडिया, बार, विश्वविद्यालय — सभ जगह भेजि देब।”

संदेश सिग्नल पर आयल, पाँच मिनटमे मेटि जाएबला। मुदा धमकीक आयु पाँच मिनट नहि होइत। धमकी मनमे बसि जाइत अछि आ ओतय सँ मेटाब कठिन।

मीरा पहिल बेर डरलक — एहन डर, जे कहियो अपन प्रेम सँ नहि, अपनहि परिवारक चुप्पीक संभावनासँ जन्मल छल। ओकर डर अपन प्रेमसँ नहि छल। डर छल — ओकर बूढ़ माइक चेहरा, ओकर बाबूक चुप्पी, काकी सभक फुसफुसाहट, परिवारक कुल-मान, समाजक

अनन्त अदालत। ओ जानैत छलि, अपराधी ओकरा अपराधी नहि कहत; ओ ओकरा "चरित्रहीन", "विकृत", "पश्चिमी", "परिवार-विरोधी" कहत। एही शब्द सभ भारतमे कखनो-कखनो हथियारसँ तेज काटैत अछि।

ओहि राति मीरा अपन कमरामे अकेली बैसलि। बाहर दिल्लीक ट्रैफिक छल, भीतर हार्ड-डिस्कक मंद आवाज। ओकरा मुँहसँ आवाज नहि निकलि रहल छल। ओ गोपक नम्बर खोललि, फेर बन्द केलक। सौम्याक नम्बर खोललि, फेर बन्द। अदितिक नाम पर अँगुरी रुकि गेल।

अदिति स्वयं फोन केलक। "संदेश हमरा सेहो आयल अछि," ओ कहलि।

मीरा चुप।

अदिति हँसलि नहि, रोइलि नहि। "प्रेमक प्रमाणकेँ अपराधक कागच बनबयबला सभ बेसी डेरपोक होइत अछि। तोरा निर्णय करएबाक अधिकार हुनका नहि दे।"

मीरा धीमे पूछलक — "तोहर परिवार?"

"हमर परिवार हमरा धीरे-धीरे बुझत। किछु नहि बुझत। मुदा हम अपन जीवनक मालिक छी। अपराधी नहि।"

ई वाक्य मीरा लेल ओहि तरहक छल जेना चन्ना गाछीमे मृत स्त्रीक कानमे ओकर नाम घुरि जाए — भार हल्का नहि भेल, मुदा भार उठएबाक शक्ति बढ़ि गेल। ओ फोन काटि कऽ गोप कुमारकेँ संदेश लिखलक — "ब्लैकमेल दस्तावेज भेजि रहल छी। मुदा एक शर्त अछि — एहि मुद्दाकेँ समलैंगिकता नहि बनाउ। मुद्दा निजता पर हमला, सहमति पर भय, आ अपराधी जाल बनाउ।"

गोप उत्तर देलक — "ठीक। व्यक्ति नहि, संरचना।"

मीरा मुस्की देलक। "एहि बेर तों सिखलह।"

सौम्या रामनाथन जखन मीरा सँ भेटए पहुँचलि, मीरा दरबाजा खोलि कऽ सीधे कहलि — "हम शिकार बनि कऽ नहि बोलब। हम साक्षी बनि कऽ बोलब।"

सौम्या माथ हिलौलनि। "अन्तर एतबे अछि जे शिकारक कथा लोक दया लेल सुनैत अछि, साक्षीक कथा लोक डेराइत सुनैत अछि।"

मीरा अपन लैपटॉप खोललक। फोल्डर सभ क्रमसँ बनल छल — “धमकी”, “अकाउण्ट”, “चैट”, “सर्वर”, “बत्रा”, “हरिहरन”, “एल०के०”। गोप आ रमैय्या आबि गेल। रमैय्या चुप्पी साधने रहल; ओकर स्वभावमे एतेक देर चुप्पी दुर्लभ छल।

मीरा कागच देखेलक। पहिल पन्ना — चन्द्रपाल बत्राक सहायक द्वारा भेजल धमकी। दोसर — राघव सिग्नल सोमानीक कोड। तेसर — हांगकांग सर्वरक भुगतान। चारिम — एक भारतीय विधि-मंचक दान-राशि, जाहि पर बटुकनाथ हरिहरनक हस्ताक्षर। पाँचम — बार-काउन्सिलक कार्यक्रमक प्रायोजक वैह कम्पनी, जे ऑनलाइन खेलक मालिकानामे छुपल।

गोप धीरे कहल — “ई निजी धमकी नहि। ई गवाही रोकबाक यंत्र अछि।”

मीरा उत्तर देलक — “हँ। आ ई यंत्र स्त्री, समलैंगिक, गरीब, विधवा, मजदूर, छात्र — सभ पर अलग-अलग नामसँ चलैत अछि। ककरो फोटो, ककरो कर्ज, ककरो जाति, ककरो प्रेम, ककरो बैंक-खाता।”

रमैय्या पहिल बेर बाजल — “गोहि सभ प्रत्येक देहक स्वाद अलग मानैत अछि, मुदा दाँत एके रखैत अछि।”

चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत ओहि वाक्य पर ठहाका मारलाह। राकश सभ इजोत करए लगल। पनिडुब्बीक केशमे फँसल तार सभ एकाएक सीधा भऽ गेल — जेना नदीमे बहैत जलक तंतु।

मीरा अपन फाइलमे एक छोट विडियो चलौलि। विडियोमे चन्द्रपाल बत्रा कतहु नहि दिखाइ दैत छल, मुदा ओकर आवाजक छाह छल। एक लोक कहैत — “चरित्र खुलि गेल तँ केस अपन आप बन्द।” दोसर कहैत — “निजी जीवन सार्वजनिक करबाक खर्च कतेक?” तेसर कहैत — “हरिहरन सर कहने छथि, पहिने डर, फेर समझौता।”

गोपक हाथ ठण्ढा भऽ गेल, जेना ओकर देह स्वयं ई सत्यक ठंढक अंदाज लगा लेने हो। ओकरा नन्द आरुणिक पुलक रजिस्टर मोन पड़ल — मृतकक नामक बदला “अनुपस्थित”। एतय मनुक्ख जीवित छल, मुदा ओकर व्यक्तित्वक बदला “चरित्र” लिखल जा रहल छल। ईहो अनुपस्थित करबाक तकनीक छल।

ओहि दिन साँझ सत्यव्रत मेहताकेँ एक सीलबन्द लिफाफा भेटल। प्रेषकक नाम नहि। भीतर मीरा द्वारा तैयार टिप्पणी छल—“राज्य आ अपराधी जालमे निजता-सुरक्षा, गवाहीक गरिमा आ ब्लैकमेलक विधिक अर्थ।” संगमे धमकीक प्रतिलिपि।

सत्यव्रत मेहता ओ नोट पढ़ैत-पढ़ैत कुर्सीसँ उठि खिड़की लग चलि गेलाह। दिल्लीक आकाश धुँधल छल। दूर ककरो बारातक बाजा बजि रहल छल। हुनका मोन पड़ल — अदालतमे कतेक बेर व्यक्ति पर प्रश्न भेल, संरचना पर नहि। “अहाँ कोना रहैत छलहुँ?” “अहाँ ककरा भेटैत छलहुँ?” “अहाँक फोटो किएक?” “अहाँक सम्बन्ध की?” कानूनक सभ प्रश्न सत्य लेल नहि, कखनो-कखनो शर्म पैदा करबाक लेल होइत अछि।

ओ कागच पर लिखलनि — “गवाहक निजता कैँ ब्लैकमेलक वस्तु बनाओल गेल हो, तखन अदालतक पहिल कर्तव्य गवाहक गरिमा बचब होएत।”

फेर दोसर पंक्ति लिखलनि — “कानूनक दायित्व प्रेमक न्याय करब नहि, भयक स्रोत चिन्हब अछि।”

ओहि पंक्ति लिखैत हुनका बुझायल जे ओ धीरे-धीरे सरकारी वकीलसँ अलग किछु बनि रहल छथि। ओ राज्यक पक्ष रखैत रहलाह, मुदा राज्यक भीतरक मनुष्य जागि रहल छल। ई जागरण सुखद नहि छल; ई देहमे काँटा जेकाँ पसरैत छल।

बटुकनाथ हरिहरनक दफ्तरमे ओही समय अलग बैसकी छल। देबाल पर न्याय, शुचिता, विधि-परम्परा, संविधान — सभक फ्रेम। मेज पर चाह। भीतर बटुकनाथ, चन्द्रपाल बत्रा, राघव सिग्नल सोमानी, आ दू नामहीन अधिवक्ता।

हरिहरन कड़ाक आवाजमे पूछलक — “मीरा नियंत्रणमे अछि?”

बत्रा नाक सिकोड़लक — “विदेश पढ़ल लोक सभ भावुक होइत अछि। सोचैत अछि सत्यक बाजार लागत।”

राघव फोनपर अँगुरी फिरबैत कहल — “ओकर डेटा सार्वजनिक करि देब?”

हरिहरन धीरे-धीरे माथ हिलेलक। “नहि। अभी नहि। पहिने ओकरा बदनाम करबाक भाषा बनाउ। डेटा अन्तिम हथियार होएत। पहिने कहू — विदेशी षड्यन्त्र। कहू — भारतीय संस्कृति पर हमला। कहू — अदालतक प्रक्रिया प्रभावित करबाक कोशिश। कहू — निजी जीवनक कारण ओकर गवाही अविश्वसनीय।”

एक अधिवक्ता पूछलक — “मुद्दा तँ अनलाइन जुआ, म्यूल खाता, डिजिटल गिरफ्तारी, देह-तस्करी—”

हरिहरन बीचमे रोकलक — “मुद्दा वैह होइत अछि जे हम बनबैत छी। जनता तथ्य नहि, शीर्षक पढ़ैत अछि।”

चन्द्रपाल बत्रा हँसल। “मेरठमे हम पहिने यैह सिखलहुँ — केस जीतेबाक पहिने कथा जीतू।”

बैसकीक बीचमे टेबुल पर राखल काँचक गिलास अपने-आप पसीना छोड़य लगल। कमरा वातानुकूलित छल। पानि कतयसँ? राघव ध्यान नहि देलक। मुदा बत्राक आँखि देखलक — गिलासक पसीना नीचे बहि कऽ मेज पर अक्षर बना रहल छल: “नाम।”

ओ झटपट रुमालसँ पानि पोंछलक। हरिहरन ओकरा देखलक। “भूतसँ डेराइ छी?”

बत्रा कठोर स्वरमे कहल — “भूत नहि। रिकॉर्डसँ।”

गढ़ नारिकेलमे ओहि राति बा अपन पुरान संदूक खोलि रहल छली। हुनका मीरा सँ कोनो सीधा परिचय नहि छल, मुदा परिवारक शाखा-प्रशाखा हुनका मोन रहैत छल। ओ पुरान वंशावलीक पन्ना पर अँगुरी फेरलनि। “मृणालिनी” नाम नई स्याहीसँ लिखल छल। बा बुदबुदेलनि — “जे कुलक बेटी अपन नाम अपने लिखैत अछि, ओकरा समाज काटि नहि सकैत।”

आरुणि पूछलक — “बा, अहाँकेँ ई बात के कहल?”

बा उत्तर देलनि — “राति चन्ना गाछीक दिससँ हुलासी आयल छलि। कहि गेलि — आब स्त्री सभ अपन नाम अपने कहय लागल।”

आरुणि चुप। गामक बात सभ शहरक कानमे अजीब लगैत अछि, मुदा किछु बात शहरमे सत्य भऽ कऽ घुरैत अछि। ओकरा गोपक संदेश भेटल — “मीरा साक्षी हएत।”

आरुणि सोचलक — ई उपन्यास आब केवल जलसमाधि नहि रहल। जल देह खाइत छल; स्क्रीन निजता; अदालत नाम; बाजार गरिमा। मुदा सभ ठाम मृत्युक तरीका समान — पहिने व्यक्ति केँ अकेला करो।

मीरा अपन बयान लिखए लगली। पहिल वाक्य — “हम लेस्बियन छी, मुदा एहि केसमे ई तथ्य आरोप नहि, पृष्ठभूमि मात्र अछि; अपराध ई अछि जे हमर निजता केँ गवाही रोकबाक हथियार बनाओल गेल।” ओ रुकलि। फेर वाक्य बदललि — “हम जे छी, से हमर अपराध नहि। अपराध ई अछि जे अपराधी सभ एकर उपयोग भय बनेबाक लेल करैत अछि।”

सौम्या पढ़ि मुस्की देलनि। “दोसर वाक्य राखू। पहिल वाक्य कानूनक लागैत अछि, दोसर जीवनक।”

मीरा ओकरा रखलक।

तकर बाद ओ अदितिक नाम हटेबाक चाहलक। अदिति रोकलकि — "हमरो नाम रहय। ब्लैकमेलक आधा बल ओतहि टूटत।"

मीरा कहलक — "तोरा खतरा होएत।"

अदिति — "खतरा पहिनेसँ अछि। नाम मात्र ओकर दिशा बदलत।"

ई निर्णय सरल नहि छल। दुनू रोइल नहि। दुनू एक-दोसरक हाथ पकड़ि बैसल — बिनु शब्दक, जेना मौन स्वयं सभसँ पैघ आश्वासन होइक। बाहर दिल्लीमे वर्षा शुरू भऽ गेल। खिड़की पर पानि पड़ैत छल, जेना कोनो पुरान नदी शहरक काँच पर दस्तक दैत हो।

गोप कुमार अपन फाइलक नक्शा बदललक — पुरान रेखा सभ मेटा कऽ नहि, नव रेखा जोड़ि कऽ, जेना कोनो नक्शा-निर्माता अपन पुरान भूल स्वयं स्वीकार करैत होइक। पहिने अपराधक धारा धनसँ शुरू होइत छल — खाता, भुगतान, कम्पनी। आब ओकरा बुझायल, अपराधक पहिल धारा भयसँ शुरू होइत अछि। पैसा बादमे बहैत अछि। ओ तीन वृत्त बनौलक — भय, डेटा, धन। तीनूक बीचमे मनुष्य। बाहर गोहि।

रमैय्या कहलक — "अगिला वृत्त जोड़ू — कानून।"

गोप पूछलक — "कानून बाहर?"

"नहि," रमैय्या कहल, "कानून दोसर तरहक नदी अछि। जे पार करैछै, ओकरा बचाओत। जे फँसि गेल, ओकरा बहा देत। सत्यव्रत मेहता शायद नाव बना सकैत छथि। हरिहरन बाँध बनबैत अछि, जाहिमे पानि सड़ि जाए।"

ओहि राति ईशान दत्त, छाह-विहीन इन्फॉर्मर, बहुत दिन बाद स्वयं आयल। दरबाजा खुलल नहि, ओ भीतर ठाढ़ छल। गोप चौंकल। ईशानक देह पर प्रकाश पड़ैत छल, परछाईं नहि।

ईशान कहल — "मीरा सँ कहू, अपन मूल फोन सुरक्षित राखय। प्रतिलिपि बहुत अछि, मुदा मूल वस्तु अदालतमे आत्मा जेकाँ होइत अछि।"

गोप पूछलक — "अहाँ कतयसँ आयलहुँ?"

ईशान हँसल — "जेकर नाम सरकारी कागचमे मरि गेल हो, ओकरा लेल दरबाजा केवल आदत अछि, आवश्यकता नहि।"

ओ गोपकेँ एक छोट स्मृति-डिवाइस देलक। "एहिमे राघव सिग्नलक मिटाओल संदेशक नव भाग अछि। हरिहरन सोचैत अछि मीरा अकेली अछि। मुदा ई जाल मीरा सँ डरैत अछि, किएक तँ निजी धमकी सार्वजनिक प्रमाण बनि जाए तँ सभसँ पैघ कवच टूटैत अछि।"

गोप डिवाइस पकड़लक। ओकर वजन नगण्य छल। मुदा ओकर भीतर कतेक लोकक भय, प्रेम, ऋण, आ चुप्पी बन्द छल।

भोरक पहिल पहर मीरा, अदिति, सौम्या, गोप, रमैय्या एक छोट बैसकीमे जुटल। देविका साह सेहो आयलि। फूलमति कैँ सुरक्षित स्थान पर राखल गेल छल। भिडियो बयान रेकॉर्ड होएबाक छल। मीरा कैमरा सामने बैसलि।

ओ बोललि — “हमर नाम मृणालिनी आर्या अछि। हमरा मीरा कहैत छथि। हमर निजी जीवन हमर अछि। ओकर चोरी कएल गेल, ओकरा सँ हमरा डराओल गेल, किएक तँ हम एकटा अपराध-जालक गवाही देबय जा रहल छी। एहि जालमे ऑनलाइन जुआ, म्यूल अकाउण्ट, डिजिटल अरेस्ट, देह-तस्करी, अदालतक देरी, आ धन-शोधन जुड़ल अछि। हमरा चुप करब लेल हमर प्रेम कैँ हथियार बनाओल गेल। हम चुप नहि रहब।”

कमरामे कोनो ताली नहि बजल। तालीक आवश्यकता नहि छल — कारण जे शब्द मीरा बजलि, ओ प्रशंसाक लेल नहि, केवल सत्यक लेल बाजल गेल छल। कखनो-कखनो सत्यक बाद मौन ही सभसँ बड़का सम्मान होइत अछि।

देविका धीरे कहलि — “उज्ज्वलक नाम सेहो जोड़ू।”

मीरा माथ झुकौलि। “उज्ज्वल झाक मृत्यु ऑनलाइन खेलक हार नहि, भयक धक्का छल। ओकर फोन, ओकर कर्ज, ओकर धमकी — सभ एहि जालक भाग अछि।”

गोप रेकॉर्ड बन्द केलक। ओकरा बुझायल — अध्याय बदलि गेल। अपराधी सभ आब केवल पैसा बचाबय लेल नहि, कथा बचाबय लेल लड़ेता।

दूर चन्ना गाछीमे कबड्डी समाप्त भेल। भूत सभ थाकि गेल छल, मुदा थकानमे सुख छल। बूढ़बा भूत जमीन पर खिंचल स्क्रीन-रेखा मेटा देलाह। हुलासी पूछलनि — “रेखा मेटा देलहुँ?”

बूढ़बा कहलाह — “नहि। जे रेखा लोकक भीतर खिंचल, ओकरा आब के मेटाओत?”

नारिकेल गाछक पात हिलल। पातक आवाजमे तीन शब्द सुनाइ देल — “नाम। प्रेम। गवाही।” फेर एक लम्बा सन्नाटा। ओ सन्नाटा डरक नहि, तैयारीक छल।

अध्याय समाप्त नहि भेल छल; केवल अपराधक अगिला चेहरा खुलए जा रहल छल। धनक धारा अब हथियार, ड्रग आ आतंक-वित्त दिस मुड़त। मुदा एहि राति मीरा अपन नाम बचा लेलक। आ जकर नाम बचि जाइत अछि, ओकरा सँ इतिहास फेर लिखाएल जा सकैत अछि।

लोकगीत: निजताक टूटल देहरी

लोकधुन: सखी-संवाद गीत

सुनू गे सखी, अपन कथा अपने कहू गे,
अनुमतिक चाबी अपने हाथ मे रखू गे।

सखी, देह एक बेर लुटल, छवि बेर-बेर,
फोनक भीतर चोर बसल, खोललक घरक घेर।
मीराक नाम नीलाम, मुदा स्वर नहि हारल,
लाज अपराधीक माथ, पीड़ित माथ नहि भारल।
रेखा माटिपर मेटल, भीतर रहल खिंचल,

नाम, प्रेम, गवाही—तीन दीप फेर जरल।
धनक धार हथियार दिस अन्हारमे मुड़ल,
एक स्त्री अपन नाम बचा इतिहास फेर गढ़ल।
सखी, अपन कथा तोहर, अनुमति तोहर द्वार,
जे निजता चोराबै, ओकरा नहि अधिकार।

देह एक बेर लुटल, छवि बेर-बेर लुटाइत,
फोनक भीतर बैसल चोर घरक घेर खोलैत।
माटिक रेखा मेटल, भीतर रेखा अटल,
नाम-प्रेम-गवाहीक तीनू दीया जरल।

❖

अध्याय ११

धनक कारी नदी

भूतकेँ साँस नहि होइ छै, तइयो थाकै छै— थकान देहक नहि, गवाहीक होइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: कारी नदीपर हरियर नाव

लोकधुन: रोपनी-नाविक मिश्र

रोपू हे हरियर नाव, कारी धार पर रोपू हे,
श्रम-पसेनाक दाम घुरा घर-घर सुख बोऊ हे।

कारी धनक नदी बहै, हरियर नाव उतारू,
नाम, प्रमाण, स्मृति, साहस चारि पतवारू।
खाता-खाता पार करि श्रमक दाम घुराउ,
अंकक पाछाँ मानुख देखू, साफ हिसाब बनाउ।

गामक मुँहजुबानी आगि कारी धार सुखाबै,
जनक संयुक्त पहरासँ धन सेवा बनि आबै।
कारी नदीपर हरियर नाव विश्वास लऽ चलत,
श्रमक कमाइ बच्चाक घर न्यायसँ पहुँचत।

रोपनिहारिक पाँती जेकाँ खाता साफ सजाउ,
अंक-अंकमे मुँह देखू, मानुख नहि हराउ।
मुँहजुबानी गामक आगि कारी धुन्ध जराओत,
हरियर नाव लहरि चीरि न्याय-घाट लगाओत।

❖

ओहि राति जखन मृणालिनी आर्याक गवाही रेकॉर्ड भेल आ ओकर निजी जीवनक चोरी अपराधक प्रमाणमे बदलि गेल, चन्ना गाछीमे कबड्डी बन्द नहि भेल। खेल मात्र धीमा पड़ल। भूत सभक साँस नहि होइत, मुदा थकान होइत अछि; थकान देहक नहि, स्मृतिक। ओ सभ बेरा-बेरी एक-दोसराक चेहरा देखैत छल, जेना पूछैत हो — आब कोन गोहि बाहर आएत?

बूढ़बा भूत डारिसँ निच्चाँ उतरलाह — बारह सय बरखक धैर्य ओहि क्षण थोड़े कमजोर बुझायल। हुनकर पएर धरतीसँ एक अंगुर ऊपर रहैत छल, मुदा ओ राति ओ एक अंगुर दूरी सेहो काँपि रहल छल। चन्ना गाछीक माटि भीतरसँ भीजल होमय लागल। पानि नहि, कारी चमकबला एकटा पाताल-धार।

हुलासी पूछलनि — “ई फेर कमलाक पानि अछि?”

पीपरक ब्रह्मा चारू मुख एक साथ खोललनि। एक मुख उत्तर देलक, दोसर विरोध केलक, तेसर चुप रहल, आ चारिम मुखक जीहपर धातुक स्वाद छल।

“नहि,” बूढ़बा कहलाह, “ई पानि नहि। ई धन बहि रहल अछि। धन जखन बहुत कारी भऽ जाइत अछि, तखन पानिजकाँ बहैत अछि, आगिजकाँ जरैत अछि, आ गोहिजकाँ काटैत अछि।”

लोथ, जे एखन धरि दर्शक छल, पहिल बेर उठि कऽ खेलक बीच आयल। ओकर आधा-खुजल मुँहसँ आवाज नहि निकलैत छल, मुदा ओकर आँखिमे एकटा दृश्य छल — लोहाक बक्सा, सफेद धूलि, दूर सीमा, आ एकटा बालक जकरा कियो सिखौने छल जे धर्मक नाम पर मृत्यु सेहो व्यापार होइत अछि।

चन्ना गाछीमे रेखा नहि रहल। कबड्डीक मैदान धीरे-धीरे खाता-बही बनि गेल। भूत सभक पाँवक जगह खाता-नम्बर चमकऽ लागल। जे पत्ता गिरैत छल, ओकर नस सभमे अंक दौड़ैत छल। पनिडुब्बीक केशसँ लिपटल जलमे एकटा नाव देखाइ पड़ल — नाव पर दवा लिखल, भीतर नशा। दोसर बक्सा पर कृषि-उपकरण लिखल, भीतर बन्द धातुक पुर्जा। तेसर पर राहत-सामग्री लिखल, भीतर डर।

ओहि समय शहरक छोट कमरामे गोप कुमार, सौम्या रामनाथन, रमैय्या सुब्रमण्यम, देविका साह, मृणालिनी आ ईशान दत्त बैसल छलाह। मीरा अपन बयान देलाक बाद चुप छलि। ओकर आँखिमे थकान छल, मुदा डर नहि।

ईशान दत्तक छाह ओहि दिन सेहो नहि पड़ल। बल्ब ओकर देहक पाछाँ देबालपर खाली उजास बनबैत छल। ओ मेज पर एकटा दोसर स्मृति-डिवाइस राखलक।

“ई पहिल डिवाइस नहि,” ओ कहल। “पहिलमे निजताक चोरी छल। एहिमे धनक यात्रा अछि। जँ पहिल चोरी लोकक भीतरक कोठरी खोलैत छल, ई दोसर चोरी देशक पेट खोलैत अछि।”

गोप डिवाइस कम्प्यूटरमे लगौलक। स्क्रीन पर पहिने किछु नहि आयल। फेर कारी पृष्ठभूमिपर एकटा शब्द चमकल — “धारा।”

रमैय्या हँसबाक प्रयास केलक। “धारा? नदीक?”

ईशान माथ हिलौलक। “धनक। ई जाल अपन खाता सभकेँ नदीक नाम दैत अछि। कमला, बलान, गंगा, सिन्धु, मेकांग, पर्ल। जखन पैसा भारतसँ बाहर जाए, ओ कहैत अछि — पानि उतरि गेल। जखन बाहरसँ अपराधक पैसा घुरि आबए, ओ कहैत अछि — बाढ़ि आयल।”

सौम्या स्क्रीनक आगाँ झुकलि। तिथि सभ देखाइ पड़ल। पुल परियोजनाक पुरान भुगतान। विदेशी सलाहकार शुल्क। सुरक्षा-निरीक्षणक नकली बिल। फेर दशक छलांग मारि कोरोना-कालक आपूर्ति। ऑक्सीजन, शीशी, बिस्तर, प्लास्टिकक वस्त्र। फेर ऑनलाइन जुआक भुगतान। म्यूल अकाउण्ट। डिजिटल अरेस्ट। आ ओकर बाद ओहि खाता-रेखा सभ एकटा नव स्तम्भमे घुसैत — “धातु”, “धूलि”, “मार्ग”, “प्रार्थना।”

देविका पूछलनि — “प्रार्थना?”

ईशानक चेहरा पीयर भऽ गेल। “ई कोड अछि। एहि जालमे आतंक-वित्तकेँ प्रार्थना कहल जाइत अछि। कारण जे लोक डर बेचैत अछि, ओ भाषा सेहो चोरा लैत अछि। अपराधी सभ पापकेँ पवित्र नाम दैत अछि, ताकि खाता पढ़यबला लोकक आत्मा थक जाए।”

मृणालिनी धीरे कहलि — “जखन हमर प्रेमकेँ हथियार बनाओल गेल, तखन हमरा बुझायल जे ई सभ लोक नामक अर्थ बदलैत अछि। प्रेम केँ लाज। लाज केँ चुप्पी। चुप्पी केँ सुरक्षा। आब ई प्रार्थना केँ डर बनबैत अछि।”

गोप स्क्रीन पर एक फोल्डर खोललक — “लखेरा-परामर्श।” ओहि नामक भीतर चन्द्रपाल बत्राक हस्ताक्षरित कतेको राय-पत्र छल। कानूनक भाषा नीकसँ चमकाओल। प्रत्येक वाक्य एना बनल जेना अपराधक देह पर सफेद कपड़ा ओढ़ाओल गेल हो।

चन्द्रपाल बत्रा मेरठसँ एल.एल.बी. पास कएल लोक छल। गढ़ नारिकेलक लोक ओकरा नाम सँ नहि चिन्हैत छल; शहरक अन्हार ओकरा “बत्रा साहेब” कहैत छल। ओ कहैत — “हम केवल वैधानिक सलाह दैत छी।” मुदा ओकर सलाहक बाद ककरो खाता खुलैत, ककरो खाता बन्द होइत, ककरो फोन बजैत, ककरो बेटा फाँसी लगा लैत।

चन्द्रपालक टेबुल पर कानूनक पुस्तक रहैत, मुदा तकर नीचाँ दोसर बही रहैत — कतेक युवकक चिन्हारि-पत्र, कतेक छात्रक बैंक, कतेक स्त्रीक निजी चित्र, कतेक मजूरक अंगूठा। ओ अपराधी नहि देखाइ पड़ैत छल; ओ कागच पर सुसंस्कृत हस्ताक्षर करैत छल। एहि कारण ओ खतरनाक छल।

बटुकनाथ हरिहरन ओकरा बचबैत छल। बार काउन्सिलक अध्यक्ष, मंचक सिंह, भाषणक उस्ताद। ओ विधि-नीतिक चर्चा एना करैत जेना न्यायालय ओकर निजी मंदिर हो। मुदा रातिमे ओकरा भेजल थैली सभ मन्दिरक चढ़ावा नहि छल; ओ न्यायक गला पर रखल दाम छल।

हरिहरनक घरक पिछला कमरामे एकटा अलमारी छल। अलमारीमे फाइल नहि, मोबाइल फोन। प्रत्येक फोन पर अलग नाम। किछु फोनमे केओ नहि बोलैत; केवल गायब होएबला संदेश। राघव सोमानी — जकरा सभ “राघव सिग्नल” कहैत छल — ओइ फोन सभमे एक साथ जीवित रहैत।

राघव सिग्नलक नियम छल — आवाज नहि छोड़ू, कागच नहि छोड़ू, चेहरा नहि छोड़ू। मुदा ईशान दत्त हँसल। “जतेक लोक चिन्ह मेटाबय चाहैत अछि, ओतेक चिन्ह बनबैत अछि। मेटेबाक क्रिया सेहो प्रमाण छोड़ैत अछि।”

स्क्रीन पर राघवक किछु मिटाओल संदेश पुनः जीवित भेल। पूरा वाक्य नहि, टुकड़ा-टुकड़ी — “एल.के. सँ प्रतिशत...”, “बत्रा सँ बात...”, “हरिहरन सुरक्षित...”, “युवक सभक सूची हटाउ...”, “धातु खेप अलग...”, “धूलि नेपाल मार्ग...”, “प्रार्थना पुरान रास्ता...”

“एल.के.?” रमैय्या पूछलक।

ईशान उत्तर देलक — “लाउ किन-हंग। हांगकांगक असली सरगना। ई लोक कथामे सामने नहि आबए चाहैत। ओकरा लेल भारत एक बाजार नहि, एक खदान अछि — देहक, डेराक, डेटाक, आ असुरक्षित युवकक। ओ कहैत अछि, गरीब देशमे लोभ सस्ता भेटैत अछि। मुदा ओकरा नहि बुझाइत जे गरीब देशमे स्मृति महँग होइत अछि।”

सौम्या एक फाइल खोललि। ओहिमे बन्दरगाहक नाम छल, सीमा शहरक नाम छल, अस्पताल आपूर्तिक बिल छल, रक्षा-परामर्शक रसीद छल, आ किछु एहन संस्था सभक दान-राशि छल जे सार्वजनिक रूपेँ शान्ति, शिक्षा आ स्वास्थ्यक नाम पर बनल छल।

“ई देखू,” सौम्या कहलि, “दवाइक ट्रकक बीमा ओहि कम्पनीसँ। हथियार-परामर्शक शुल्क ओहि फाउंडेशनसँ। जुआक भुगतान ओहि भुगतान-द्वारसँ। मानव-तस्करीक होटल-बिल ओहि कॉर्पोरेट-कार्यक्रमसँ। आ अन्तमे किछु रकम एहन समूह धरि जे हिंसाक प्रचार करैत अछि।”

गोपक देह ठण्ढा भऽ गेल — एहन ठंढक, जे कोनो मौसम सँ नहि, अपितु सत्यक भारसँ जन्मैत अछि। ओकरा मोन आयल पुलक पुरान सूची — तीस नाम, तीन सय लाश। ओहि

समय देह गंगामे खसैत छल, आब रकम देश-दुनियाँक खातामे खसैत छल। प्रत्येक खसनाक आवाज अलग छल, मुदा सार एक — छपाक।

राति गाढ़ भेल। बाहर कुकुर भुकल। भीतर स्क्रीनक उजासमे सभक चेहरा एना लगैत छल जेना मृतक सभ मोमबत्ती लग बैसल होइथ।

देविका पूछलनि — "उज्ज्वलक पैसा कतय गेल?"

गोप उज्ज्वलक खाता खोललक। पहिने छोट जमा, फेर छोट निकासी, फेर अचानक ऋण-जेकाँ अंक, फेर धमकीक संदेश, फेर कर्ज-उगाही, फेर डिजिटल अरेस्टक नकली नोटिस, फेर ओकरा बाद पैसा पैंतीस छोट खातामे विभाजित। ओहि पैंतीस खातामेसँ बारह छात्रक, सात रिक्शा-चालकक, तीन वृद्ध विधवाक, पाँच बेरोजगारक, बाकी फर्जी नाम।

देविका किछु काल चुप रहलि, ओकर हाथ मेजपर स्थिर छल, मुदा ओकर आँखिमे बहुत काल सँ जमल एक प्रश्न आब उत्तर पाबि रहल छल। फेर ओ कहलि — "माने हमर भाइ आत्महत्या नहि केलक। ओकरा धकेलल गेल।"

कोनो उत्तर नहि देलक। किछु सत्य एहन होइत अछि जाहि पर "हँ" बाजब क्रूरता होइत अछि, आ "नहि" बाजब झूठ।

मृणालिनी देविकाक हाथ पकड़लक। "हमर निजी जीवन सँ हमरा डराओल गेल। अहाँक भाइ कैं कर्ज सँ। फूलमति कैं देह सँ। मजदूरकैं भूख सँ। ई सभ डर अलग देखाइत अछि, मुदा डरक मालिक एक्के अछि।"

ईशान अगिला फोल्डर खोललक — "सीमा।"

ओहि फोल्डरमे नक्शा छल, मुदा पूरा नक्शा नहि। कोनो रास्ता स्पष्ट नहि, केवल लाल बिन्दु। सौम्या तुरन्त कहलि — "इसे प्रकाशित नहि करब। मार्गक विवरण बाहर गेल तँ अपराधी आओर लोककैं उपयोग करबा लगत। हमरा प्रमाण चाही, पद्धति नहि।"

गोप सहमतिमे माथ हिलौलक। "उपन्यास सेहो अपराधक नुस्खा नहि देत। ई केवल देखाओत जे अपराध व्यवस्था कोना बनैत अछि, ओकर ताला कोना नहि खोलबाक।"

ईशान मुस्कुरायल। "ताहि लेल हम किछु भाग धुँधला रखने छी। सत्यक अर्थ सभटा बताना नहि; सत्यक अर्थ सही जगह प्रकाश देनाइ अछि।"

अगिला दृश्यमे एक पुरान विडियो खुलल। विदेशी सभागार। एडवर्ड ब्रूम मंच पर। पाछाँ नीला परदा, ऊपर शब्द — "वैश्विक उद्यम आ मानवीय गरिमा।" ओ बाजैत छल, श्रोता ताली

बजा रहल छल। ओकर भाषणक प्रत्येक वाक्यक नीचाँ ईशान लाल अक्षरमे खाता-रेखा जोड़ने छल। “गरिमा”क नीचाँ मृत मजदूर। “साझेदारी”क नीचाँ नकली बिल। “सुरक्षा”क नीचाँ गुम हेल्मेट। “नवाचार”क नीचाँ जुआ-ऐप।

रमैय्या कुरसीसँ उठि गेल, ओकर स्वरमे एहन क्रोध छल जे बहुत काल सँ दबल रहल हो। “ई लोक सभक आत्मा नहि काँपैत?”

बा कखनो कहैत छली — जकर आत्मा मरि जाइत अछि, ओकर देह आओर सफल भऽ जाइत अछि। ओहि राति गोप कें बा मोन एलखिन्ह।

सत्यव्रत मेहताक नाम पहिल बेर ओहि कमरामे आयल। ईशान कहल — “एहि सभक एक प्रति सत्यव्रत मेहता तक पहुँचाओल जाएत।”

गोप चौंकल। “सरकारक सभसँ पैघ वकील?”

“हँ,” ईशान कहल, “मुदा सभ पद खराब नहि होइत। किछु पद खराब कुर्सी पर बैसल नीक मनुष्यक परीक्षा होइत अछि। मेहता पहिने राज्यक पक्ष राखता। मुदा जँ हुनका सम्पूर्ण चित्र भेटल, हुनकर भीतरक लोक राज्यक लिखल झूठ सँ लड़ि सकैत अछि।”

सौम्या संदेहसँ देखलक। “आ जँ ओहो हरिहरनक जालमे?”

ईशान देबाल दिस देखैत रहल, जतय ओकर छाह नहि पड़ैत छल। “तखन हमरा सभक पाछाँ चन्ना गाछी अछि।”

उधर दिल्लीक एक आलीशान भवनमे बटुकनाथ हरिहरन देर राति तक जागि रहल छल। ओकर सामने चन्द्रपाल बत्रा बैसल। दुनूक बीच काँचक गिलास, सूखल मेवा, आ एकटा छोट फोन। फोन पर कोनो नाम नहि।

बत्रा कहल — “मीरा खुलि गेल। देविका सेहो। गोपक स्रोत भीतरक अछि।”

हरिहरन हँसल। “गवाही बहुत लोक देलक। न्यायालयमे गवाही जन्म नहि लैत, प्रक्रियामे पालल जाइत अछि। हम प्रक्रिया जानैत छी।”

फोन चमकल। राघव सिग्नलक संदेश आयल — “एल.के. पूछलक — कितने जोखिम?”

बत्रा लिखलक — “काबूमे। मेहता पर निगरानी।”

हरिहरन रोकलक। “मेहताक नाम लिखू नहि।”

बत्रा संदेश मेटा देलक। मुदा मेटाबाक पहिने स्क्रीन पर जे उजास उठल, ओ चन्ना गाछीक पातमे जा कऽ अटकि गेल।

रातिक तेसर प्रहर। गढ़ नारिकेलमे नारिकेल गाछक पात बिनु बयार हिलल। बूढ़बा भूत ऊपर तकलाह। पात पर शब्द चमकि रहल छल — “मेहता।”

हुलासी पूछलनि — “ई के?”

बूढ़बा कहलाह — “जीवित लोकमे कखनो-कखनो एहन कियो होइत अछि जे अपन पदसँ पैघ नहि, अपन पश्चात्तापसँ पैघ होइत अछि। देखब, ई लोक पानिमे उतरैत अछि कि किनार पर ठाढ़ रहैत अछि।”

सत्यव्रत मेहता ओहि समय अपन अध्ययन-कक्षमे छलाह। हुनका लग सरकारक नब शपथपत्र आयल छल — पुरान पुल दुर्घटना पर “कोनो अतिरिक्त मृत्यु प्रमाणित नहि”, डिजिटल ठगी पर “व्यक्तिगत वित्तीय असावधानी”, दवा कीन पर “आपातकालीन प्रशासनिक निर्णय”, आ विदेशी भुगतान पर “वैधानिक वाणिज्यिक लेन-देन।”

ओ कागच पढ़ैत-पढ़ैत थाकि गेलाह। कानूनक भाषा हुनका प्रिय छल, मुदा ओ राति भाषा लाश झाँपयबला चादर लगल।

दरबाजा पर दस्तक नहि भेल। तथापि मेज पर एक लिफाफा आबि गेल। लिफाफा भीजल छल। ओहिपर कोनो नाम नहि, केवल गढ़ नारिकेलक नारिकेल-पातक छोट निशान।

मेहताक हाथ अपने-आप रुकि गेल — जेना ओकर देह ओकरा मोनसँ पहिनहि चेतौने होइक। ओ लिफाफा खोललन्हि। भीतर एक पन्ना छल। पन्ना पर मात्र तीन पंक्ति —

तीस नाम नहि, तीन सय।

ऋण नहि, धक्का।

व्यापार नहि, कारी नदी।

ओहि पन्नाक संग स्मृति-डिवाइस छल। मेहता ओकरा देखैत रहलाह। हुनका बुझायल जे एहि छोट वस्तु केँ छुइतहि हुनकर पद, प्रतिष्ठा, मित्रता, आ निन्द्रा — सभक परीक्षा होएत।

दिल्लीक बाहर, ओहि राति, एक गोदाममे किछु बक्सा बदलल जा रहल छल। बक्सा पर स्कूलक खेल-सामग्री लिखल छल। एक मजदूर पूछलक — “एते भारी गेंद?” ओकर साथी ओकरा चुप करेलक। मजदूरक पएर लग एकटा छोट पर्ची खसल — “गंगा मार्ग नहि, सूखल मार्ग।”

ओ मजदूर पढ़ि नहि सकल। मुदा ओहि पर्ची पर जे धूलि लगल छल, ओकर गन्ध चन्ना गाछी धरि पहुँचल। भूत सभ कबड्डी छोड़ि कऽ नाक सिकोड़लक। भूतकेँ गन्धसँ डर नहि लगैत, मुदा ई गन्ध देहक मृत्यु नहि, समाजक मृत्युक छल।

सौम्या भोर धरि कागच अलग करैत रहलि। ओ सूची बनौलि — सार्वजनिक करबाक प्रमाण, सुरक्षित राखबाक प्रमाण, अदालतक लेल प्रमाण, आ ओ प्रमाण जे केवल सीलबन्द रहत ताकि अपराधक रास्ता दोहराओल नहि जा सकय।

गोप पूछलक — “तँ आब?”

ईशान कहल — “आब धनक कारी नदीक तीन बाँध तोड़ब। पहिल — अदालत। दोसर — सार्वजनिक स्मृति। तेसर — विदेशक मंच।”

मृणालिनी जोड़लक — “आ चारिम — लोकक लाज। जखन लोक लाज छोड़ि गवाही देत, जालक आधा बल टूटत।”

देविका उज्ज्वलक फोटो मेज पर रखलक। “हम शुरू करब।”

ओहि क्षण स्क्रीन पर एक नव संदेश चमकल। कोनो प्रेषक नहि। केवल एक पंक्ति — “जतेक नाम जोड़ब, ओतेक लाश भेटत।”

कमरामे सन्नाटा खसल। रमैय्या पहिने बोलल — “लाश तँ पहिनेहेँ छैक। नाम जोड़ला सँ ओकरा दाह भेटत।”

दूर चन्ना गाछीमे कबड्डी फेर शुरू भेल। एहि बेर खेलक ध्वनि बदलल छल। “कबड्डी”क जगह भूत सभ बेरा-बेरी बजैत छल — “धनक धारा, देहक धूलि, नामक आगि।”

लोथ मैदानक बीच ठाढ़ भऽ गेल। ओकर आधा-खुजल मुँह पहिल बेर पूरा खुलल। ओ बोलल नहि, मुदा सभ सुनलक — “जलसमाधि नदीमे होइत छल। आब जलसमाधि खातामे होइत अछि।”

नारिकेल गाछक पात पर भोरक पहिल ओस पड़ल। ओसक प्रत्येक बून्दमे एक-एक अंक छल। अंक सभ धीरे-धीरे नाम बनैत गेल। बूढ़बा भूत ओ नाम पढ़ैत रहलाह, जाबत सूरज नहि निकलल।

सूरज निकलल तँ चन्ना गाछी फेर सामान्य लगल। मुदा सामान्य चीज सभसँ बेसी डेराबैत अछि, किएक तँ ओ अपने भीतर असामान्यकेँ छिपा लेत अछि।

गोप कुमार स्मृति-डिवाइसक तीन प्रति बनौलक — बिनु जल्दबाजीक, जेना कोनो पुरोहित यज्ञक सामग्री तीन बेर जाँचैत होइक। एक सत्यव्रत मेहताक लेल, एक विदेशमे ईरा आरुणिक लेल, एक चन्ना गाछीक पुरान पीपरक खोखरमे राखबाक लेल।

सौम्या पूछलि — "पीपरमे किएक?"

गोप कहल — "जँ सभ सर्वर बन्द भऽ जाए, जँ सभ अदालत मुँह फेरि ले, जँ सभ देश अपन झण्डा झूठ पर ओढ़ा दे — तखन गढ़ नारिकेलक भूत सभ कम-सँ-कम जानथि जे धनक नदी कतयसँ बहल छल।"

ईशान दत्त दरबाजा दिस बढ़ल। ओकर पएरक आवाज नहि भेल। जँ कोनो एक मरत, दोसर बाजत। जँ दोसर चुप कराओल जाएत, तेसर गाछसँ खसत। "

भोरक उजासमे ओकर देह पारदर्शी लगल। एक क्षण लेल सभकेँ लागल जे ओ लोक नहि, सरकारी रेकॉर्डसँ बाहर निकलल एकटा पन्ना अछि।

ओ चलि गेल। ओकर छाह एखनहुँ नहि पड़ल। मुदा मेज पर ओहि जगह, जतय ओ बैसल छल, एक छोट भीजल निशान रहि गेल — गोहिक दाँत जेकाँ वक्र, आ नारिकेल पात जेकाँ हरियर।

ओहि निशानकेँ गोप देखैत रहल। ओकरा लगल, गोहि नदीसँ बाहर आबि चुकल अछि। ओ आब दाँतसँ नहि, खातासँ काटैत अछि। जे युवक अपन नाम पर खाता खोलबैत अछि, ओकरा नहि बुझाइत जे ओकर नामसँ ककर मृत्यु कीनल जा रहल अछि। जे अधिकारी एक हस्ताक्षर करैत अछि, ओकरा नहि बुझाइत जे ओकर कलमक नोक पर कतेक सीमा, कतेक देह, कतेक डर जुड़ि गेल अछि।

रमैय्या खिड़की खोललक। भोरक हवा भीतर आयल। शहरक हवामे नदीक गन्ध नहि छल, मुदा गोप कैँ साफ सुनाइ देलक — छपाक। ओ आवाज कोनो देह खसबाक नहि, एकटा रकम खाता सँ खातामे खसबाक छल।

सौम्या नोटबुक बन्द केलक, ओकर स्वरमे थकानसँ बेसी दृढ़ता छल। "एहि अध्यायमे हमरा सभ अपराधक नाँव नहि, ओकर लय पकड़लहुँ। लय पकड़ि लेब तँ नाव फेर भेटि जाएत।"

देविका कहलि — "उज्ज्वलक फोनक प्रतिलिपिमे सेहो ई लय अछि। पहिने लोभ, फेर कर्ज, फेर डर, फेर चुप्पी। एहि चारि शब्दक बाद मनुष्यकेँ मारब सरल भऽ जाइत अछि।"

मृणालिनी धीरे-धीरे बाजलि — “हमर लय छल प्रेम, निजता, धमकी, गवाही। हम बीचमे मरि सकैत छलहुँ, मुदा गवाही लय बदलि देलक।”

ईशान दत्तक देल कागचक नकल सभ मेज पर पसारल छल। प्रत्येक पन्ना अलग अपराधक कथा कहैत, मुदा सभक किनार पर एके दाग छल — भीजल, कारी, गोहिक दाँत सन। गोप ओकरा छूअय गेल, सौम्या रोकि देलक। “अखन नहि। किछु दाग प्रमाण होइत अछि; ओकरा भावुक हाथसँ नहि, साक्ष्यक हाथसँ छुओ।”

दूर दिल्लीमे सत्यव्रत मेहता स्मृति-डिवाइस खुलबाक पहिने खिड़की लग ठाढ़ भेलाह। ओ पहिल बेर सोचलनि — सरकारक वकील होएब आ सत्यक वकील होएब, की दुनू एक होइ सकैत अछि? हुनकर घरक बाहर अशोकक गाछ छल। ओहि गाछक एक पात बिनु बयार हिलल।

हुनका बाल्यकालक एक कथा मोन पड़लनि — मिथिलामे गाछ कहियो-कहियो साक्षी देत अछि। ओ हँसलाह नहि। ओहि राति हँसबाक साहस हुनका नहि भेल।

ओ डिवाइस लगौलनि। स्क्रीन उजास भेल। पहिल फोल्डर खुलल — “नाम जे अनुपस्थित नहि छल।” सत्यव्रत मेहताक चेहरा पर जतेक वर्षक विधिक अभ्यास छल, सभ एक क्षणमे पुरान पड़ि गेल।

चन्ना गाछीमे भूत सभ भोरक कारण अपन-अपन डारि दिस घुरि रहल छल। हुलासी अन्तिम बेर मैदान दिस तकलि। ओतय खिंचल रेखा मेटि गेल छल, मुदा माटि नीचाँ गरम छल।

बूढ़बा भूत कहलाह — “आइ सँ खेल कठिन भेल। आब कबड्डीमे छूअय लेल देह नहि, खाता, फाइल, स्क्रीन, अदालत, विदेशक मंच — सभ पार करय पड़त।”

पीपरक ब्रह्मा चारू मुखसँ एक साथ कहलनि — “नाम। प्रमाण। स्मृति। साहस।”

नारिकेल गाछक पहिल पात पर सूरज पड़ल। पात पर लिखल अंक धीरे-धीरे हरियर भऽ गेल। हरियर अंक देखिकऽ बूढ़बा भूत मुस्कुरेलाह। कारी धनक नदी हरियर स्मृतिसँ डरैत अछि — किएक तँ जे गाम स्मरण करैत अछि, ओकरा पूरा बेचब कठिन होइत अछि।

गोप कुमार ओहि भोर एक वाक्य अपन डायरीमे लिखलक — “जखन गोहि खातामे अंडा देब शुरू करए, तखन नदीकेँ नहि, हिसाबकेँ शुद्ध करबाक समय आबि गेल बुझू।”

लोकगीत: कारी नदी, हरियर पात

लोकधुन: रोपनीक करुण लय

बहू हे कारी नदी, मुदा पात नहि डुबाउ हे,

मजदूरक कमाइ ओकर नेना धरि पहुँचाउ हे।

कारी धनक नदी बहै, गामक छाती चीर,
हरियर पात लिखै नाम, धरै स्मृतिक नीर।
खाता-फाइल, परदा-मञ्च, सभटा पार करब,
नाम, प्रमाण, स्मृति, साहस—चारि दीप धरब।
गोहि खातामे अण्डा देलक, अंक भेल जहरी,

गामक मुँहजुबानी आगि ओकरा पर भारी।
थाकल भूत कहै—गवाही छोड़ब नहि,
हरियर स्मृति जागल तँ गाम बिकत नहि।
कारी नदी बहू, मुदा पात नहि डूबाउ,
मजदूरक कमाइ ओकर बच्चा धरि पहुँचाउ।

❖

अध्याय १२

डार्क-जालपर नारिकेल पात

कारी नदीपर नारिकेलक पात ने डूबै छै, ने बहै छै— ओ रस्ता देखबै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: अन्हार जालपर पातक दीप

लोकधुन: बटगबनी-जागरण

धीरे चलू यौ बटोही, जालक बाट अन्हार यौ,
पातक दीप हाथ लिअ, संग चलू हुसियार यौ।

कारी जालक बाटमे पात दीप बनि जाए,
नामक छोट हरियर रेखा दिशा सही देखाए।
साक्ष्य ओतबे खोलू जतय गरिमा सुरक्षित,
तकनीक संग विवेक रहय, जन रहय संरक्षित।

मजदूर, युवक, स्त्रीक स्वर एक पातपर जुड़ै,
गामक ज्ञान डिजिटल जगक छलक गाँठि उघड़ै।
अन्हार जालपर पातक दीप कहै—धीरे चलू,
साँचक नाव, सुरक्षित संग लऽ अन्हार पार करू।

क्लिक-क्लिक पर काँट बिछल, फानल-फानल डोरी,
विवेकक लाठी टेकि चलू, टूटत सभटा चोरी।
मजदूर-युवक-स्त्री-स्वर एक पात पर जड़ल,
अन्हार कतबो घन हो, दीप नहि हड़बड़ल।

❖

भोर जखन गढ़ नारिकेलमे पसरल, चन्ना गाछी रातिक खेलक थकान सँ निस्तब्ध छल। भूत सभ अपन-अपन डारि पर फेर बैसल छल, मुदा ओहि दिन हुनकर निस्तब्धता ओहिना नहि छल जेना मरल लोकक चुप्पी होइत अछि। ई चुप्पी ओहि लोकक छल जे एकटा गुप्त बात सुनि लेने अछि आ ओकरा सही समय धरि रोकेबाक कठिन साधना करि रहल अछि।

पीपरक खोखरमे राति राखल छोट डिवाइस माटिक भीतर सँ हलुक उजास दैत छल। पीपरक ब्रह्मा चारू मुखसँ अलग-अलग मन्त्र नहि, अलग-अलग सावधानी पढ़ि रहल छलाह। पहिल मुख कहैत — ‘सत्य बचू।’ दोसर — ‘झूठक नुस्खा नहि बनू।’ तेसर — ‘नाम सुरक्षित रहू।’ चारिम — ‘साक्ष्य ओतबे बाहर जाउ जतबे न्याय लेल जरूरी हो।’

बूढ़बा भूत अपन डारि पर आँखि बन्द कयलनि। हुनका आब बुझाइत छल जे नव युगक पाताल नदी पानिसँ नहि, बिटक अँजोरसँ बहैत अछि। मुदा नामक देह ओहिमे सेहो डूबि सकैत अछि। जेना गंगा गोहिसँ भरल रहैत अछि, तहिना ई नव जाल अदृश्य मुख सभसँ भरल अछि।

शहरमे गोप कुमार मेज लग बैसल छल। राति भरि ओकर आँखि नहि झपकल — जेना निन्न स्वयं ओकरा एहि क्षण छोड़ि कऽ दूर चलि गेल होइक। सौम्या रामनाथन कागचक ढेर अलग करैत-करैत कहियो विधवा मजदूरक नाम पढ़ैत, कहियो अस्पतालक बिल, कहियो उज्ज्वलक डिजिटल अरेस्टक धमकी। रमैय्या सुब्रमण्यम चाह बनबैत-बनबैत गप्प बन्द कऽ देने छल। गप्पी लोक जखन चुप भऽ जाइत अछि, तखन बूझू बात सचमुच भारी अछि।

मृणालिनी आर्या अपन बयानक प्रतिलिपि फेर पढ़लनि। ओहि पन्नामे हुनकर प्रेम नहि छल; ओकर चोरीक अपराध छल। हुनका पहिल बेर लागल जे निजता सेहो जमीन जेकाँ होइत अछि — जेकर सीमाना अदृश्य, मुदा जेकर अतिक्रमण देहक खेत उजाड़ि दैत अछि।

देविका साह उज्ज्वलक फोटो आगाँ राखने छलि। ओ फोटोमे उज्ज्वल हँसैत छल। एहन हँसी जकरा देखिकऽ कोनो माय कहि सकैत छली — 'हमर बेटा किछु करि कऽ देखाओत।' देविका धीरे कहलनि — 'ओ करि गेल। ओ अपन मृत्यु सँ ई खाता खोलि देलक।'

ईशान दत्त दरबाजा लग ठाढ़ छल। ओकर देह पर भोरक उजास पड़ैत छल, मुदा छाह नहि। ओ कहल — 'तीन प्रति बनि चुकल। मुदा तीन प्रति मतलब तीन आशा नहि; तीन खतरा सेहो।'

गोप पूछलक — 'पहिल कोना जाएत?'

'सत्यव्रत मेहताक अध्ययन-कक्षमे पहुँचल एक लिफाफा पहिनेहेँ खुलि गेल अछि,' ईशान कहल। 'ओ पढ़ि रहल छथि। मुदा पढ़नाइ आ माननाइ अलग बात अछि। हुनका भीतर राज्यक कर्तव्य आ आत्माक कर्तव्य लड़त।'

सौम्या दोसर प्रति उठौलि। 'ईरा आरुणि तक?'

ईशान माथ हिलेलक। 'विदेशक मंच पर पाखंडक परदा तेहि लोकसँ फटत जे ओहि सभागारक भाषा बुझैत अछि आ गढ़ नारिकेलक गन्ध सेहो चिन्हैत अछि। ईरा पहिने अपन गामकेँ कथा बुझैत छली; आब कथा ओकरा दस्तावेज जेकाँ पहुँचत।'

'तेसर?' रमैय्या पूछलक।

गोप खिड़की बाहर तकलक। 'तेसर पीपरक खोखरमे अछि। जँ सर्वर बन्द, जँ मेल गायब, जँ अदालत सीलबन्द, जँ विदेशक संस्था मुँह फेरि ले — तखनो चन्ना गाछीक भूत सभक लग एक प्रति रहत।'

रमैय्या पहिल बेर हलुक मुस्कुरायल। 'माने बैकअप अलौकिक अछि।'

मृणालिनी कहलि — 'अलौकिक नहि। लोक-स्मृति। ई सभसँ पुरान सर्वर अछि।'

ओहि दिन दिल्लीक आकाश धूलिसँ भरल छल। सत्यव्रत मेहता अपन कमरामे एकल बैसल छलाह। सामने सरकारी शपथपत्र खुलल छल। ओकर वाक्य सभ चिक्कन, विनम्र, विधिसम्मत। मुदा कातमे भीजल पन्ना छल, जाहि पर लिखल छल — तीस नाम नहि, तीन सय।

मेहता अपन चश्मा खोलि देलन्हि। हुनका मोन आयल जे विधि पढ़ैत समय हुनका एक गुरु कहलखिन्ह — 'राज्यक पक्ष राखब, मुदा राज्य जँ झूठ बाजय तखन सत्यक पक्ष राज्यसँ पैघ होइत अछि।' ओहि वाक्यक अर्थ ओ तखन परीक्षा लेल मोन केने छलाह; आइ ओ वाक्य हुनकर परीक्षा लेबऽ आयल छल।

ओ स्मृति-डिवाइस खोललन्हि। स्क्रीन पर कोनो रोमांचक चित्र नहि आयल। कोनो सनसनी नहि। केवल तालिका। नाम, तिथि, भुगतान, मौत, हस्ताक्षर, संशोधित प्रति, गायब पन्ना। सत्य प्रायः एतबे नीरस रूपमे आबैत अछि। झूठ रंगीन होइत अछि; सत्य खाता-बही जेकाँ सूखल। मुदा ओहि सूखल पन्नामे देहक गन्ध रहैत अछि।

मेहताक आँखि एक पंक्ति पर अटकल, ओ पंक्ति फेर-फेर पढ़लन्हि, जेना अक्षर सभ अपन अर्थ बदलि देत — 'सुरक्षा निरीक्षण पूर्ण।' तिथि ओही दिनक छल जखन सरयू देवीक पति गोहि बीच डूबल छल। दोसर पंक्ति — 'परिवार अनुपलब्ध।' ओहि परिवारक मुआवजा ककरो नहि भेटल छल। तेसर — 'स्वैच्छिक जोखिम।' मेहता कुर्सी सँ उठि ठाढ़ भऽ गेलाह।

हुनका पहिल बेर क्रोध नहि, लाज लागल। क्रोध मनुष्यकेँ बाहर फेंकैत अछि; लाज ओकरा भीतर खिंचैत अछि। ओ राति सत्यव्रत मेहता भीतर खिंचल गेलाह।

ओहि बीच समुद्र पार, ईरा आरुणि हार्वर्डक पुस्तकालयमे छलि। खिड़की बाहर बर्फक हलुक परत छल, आ भीतर गरम कमरामे विद्यार्थी सभ नीति, न्याय, विकास आ वैश्विक उत्तरदायित्व पर चर्चा करैत छल। ईरा एतय तक पहुँचबा लेल अपन परिवारक गामक कथा सँ बहुत दूर भागल छली। हुनका गढ़ नारिकेल सदिखन दादीक कहानी लगैत — भूत, पनिडुब्बी, नारिकेल गाछ, जलसमाधि।

ओहि भोर हुनका एक फाइल भेटल। प्रेषक अज्ञात। शीर्षक — ‘गढ़ नारिकेलक नाम।’ ईरा पहिने डेराइ गेलि। फेर फाइल खोललनि। पहिल पृष्ठ पर लत्तड़ ठाकुरक नाम, दोसर पर कलित, तेसर पर नन्द आरुणि, तकर बाद पुलक फोटो, मजदूरक सूची, एडवर्ड ब्रूमक भाषणक अंश, आ नीचाँ लाल अंक।

ईरा पढ़ैत-पढ़ैत कुर्सी सँ पाछाँ सरकलि। हुनका लागल जे पुस्तकालयक लकड़ीक फर्शक नीचाँ पानि भरि रहल अछि। कियो देखलक नहि। सभ विद्यार्थी अपन-अपन लैपटॉपपर दुनियाँ सुधारि रहल छल। केवल ईरा अपन जूता लग पानि देखलक—कल्पना आ अपराधक बीचक पानि।

फाइलक अन्तमे एक पंक्ति छल — ‘अहाँ विदेशी नहि छी; अहाँक जन्म विदेशमे भेल अछि मात्र।’

ईरा पहिल बेर अपन कुलनामकेँ बोझ नहि, प्रमाण बुझलनि। ओहि दिन ओ निर्णय केलनि जे एडवर्ड ब्रूमक अगिला एथिक्स-व्याख्यानमे ओ प्रश्न पूछती। प्रश्न छोट रहत, मुदा ओकर पाछाँ तीन सय जलसमाधि, उज्ज्वलक स्क्रीन-मृत्यु, मीरा केर निजता, आ दवा-शीशीक कालाबाजारी ठाढ़ रहत।

गढ़ नारिकेलमे तेसर प्रति पीपरक खोखरमे सुरक्षित छल। मुदा मृतक सभ मृत रहैत हुए सेहो निश्चिन्त नहि रहैत। चन्ना गाछीक डाइन सभ राति-राति पहरा देबाक निर्णय केलनि। हुलासी कहलक — ‘जँ कियो ई खोखर खोलय आयत?’

बूढ़बा भूत उत्तर देलनि — ‘तखन ओकरा पहिने अपन नाम बताबय पड़त। जे अपन नाम सच बाजि सकैत अछि, ओ खोलि सकैत अछि। जे झूठ नाम लएत, पीपरक जड़ि ओकर पएर पकड़ि लेत।’

लोथ, जे आब दर्शक कम आ खिलाड़ी बेसी भेल जा रहल छल, खोखरक मुँह पर बैठि गेल। ओकर देह लाशक बचल स्मृतिसँ बनल छल; तेँ ओ प्रमाणक पहरा नीक दऽ सकैत छल। जे मनुष्य देहक अपमान करैत अछि, ओकरा लाशक स्मृति सँ डेर लगैत अछि।

तीन दिशामे डेटा चलि गेल। मुदा चारिम दिशा सेहो छल — डार्क-जाल। ईशान दत्त ओहि दिशाक बात सभसँ अन्तमे केलक।

‘डार्क-जाल अपराधीक घर नहि मात्र,’ ईशान कहल। ‘ओ अन्हारक गल्ली अछि जतय अपराधी छिपैत अछि, मुदा कखनो-कखनो सत्य सेहो छिपि कऽ बचैत अछि। हम अपराधक

पद्धति नहि लिखब, नहि बताब। हमरा केवल एतबा चाही जे जँ सभ प्रकाश बुझा देल जाए, तखन एक काजल-दीपक अन्हारमे सेहो जरैत रहय।'

गोप धीरे कहल — 'माने सार्वजनिक नहि?'

'सार्वजनिक समय पर,' ईशान कहल। 'पहिने प्रमाण न्यायालयमे, विदेशक प्रश्नमे, आ लोक-स्मृतिमे जाए। अन्हारमे राखल प्रति केवल ओहि दिन उठत जखन सभ उजास बिकि जाए।'

सौम्या संतोषक साँस लेलनि। 'ठीक। अपराधीक रास्ता नहिये लिखब। केवल सत्यक अस्तित्व।'

मृणालिनी जोड़लक — 'जतेक चीज निजताकेँ चोट करैत अछि, ओकरा प्रकाशित करबाक सीमा सेहो होएत। नाम बिनु अनुमति नहि। पीड़ितक गरिमा पहिने।'

देविका कहलि — 'मुदा उज्ज्वलक नाम रहत। ओ चाहितैक जे ओकर मृत्यु खाली पारिवारिक शर्म नहि, सार्वजनिक चेतावनी बनय।'

गोप सहमति देलक। एहि तरहें डार्क-जालक प्रति बनल, मुदा ओ एकटा बन्द संदूक जेकाँ। ओकर चाभी तीन ठाम बाँटल गेल — गोपक स्मृति, ईशानक छाह-विहीन देह, आ पीपरक ब्रह्माक चारिम मुख।

उधर बटुकनाथ हरिहरन बेचैन छल। ओकर राति सामान्यतः लम्बी नहि होइत; पैसा लेने लोक नीक सुतैत अछि। मुदा ओहि राति ओकर स्वप्नमे अदालतक फर्श पर पानि भरि गेल। ओ कुरसी पर चढ़ल, मुदा कुरसी गोहिक पीठ बनि गेल।

सपनामे चन्द्रपाल बत्रा ओकरा कहैत छल — 'प्रक्रिया बचा लेत।' हरिहरन पूछैत — 'ककरा?' बत्रा हँसैत — 'जे फीस देत।' तखने पानि भीतरसँ आवाज आयल — 'जे नाम देत, ओकरा?'

हरिहरन हड़बड़ा कऽ उठल। ओकर फोन चमकि रहल छल। राघव सिग्नलक संदेश — 'तीन प्रति बाहर। स्रोत अस्पष्ट। मेहता तक पहुँच संभव।'

हरिहरनक मुख सूखि गेल। ओ तुरन्त चन्द्रपाल बत्राकेँ बुलौललक। बत्रा आबिते कहल — 'डरबाक बात नहि। जतेक प्रमाण हो, प्रक्रियामे धँसा देब।'

हरिहरन खिसियायल — 'प्रक्रिया कागच धँसाबैत अछि। मुदा ई कागच पानिमे बहि रहल अछि। तोरा बुझाइत नहि?'

बत्रा पहिल बेर चुप भेल। कारण अपराधी ओहि दिन डेराइत अछि जखन ओकरा लागैत अछि जे सामनेक लोक पुलिस नहि, मृतक अछि। पुलिस सँ समझौता, मृतक सँ नहि।

तखने छोट फोन चमकल। लाउ किन-हंगक ओरसँ संदेश आयल — 'नाम रोकू। पैसा चलू।'

हरिहरन धीमे कहल — 'ई लोक सभ बुझैत नहि जे भारतमे पैसा रोकेनाइ कठिन नहि; नाम रोकनाइ कठिन अछि। एक बेर नाम लोकगीत बनि गेल तँ कोई आदेश ओकरा नहि रोकि सकैत।'

चन्द्रपाल तिरस्कारसँ हँसल — 'लोकगीत? हम डिजिटल अरेस्ट करैत छी, लोकगीत सँ डरब?'

ओहि क्षण ओकर फोन पर उज्ज्वल झाक फोटो चमकल। कोनो स्रोत नहि। फोटो ओही जे देविका मेज पर रखने छली। बत्राक हाथ काँपि गेल।

'के भेजलक?' हरिहरन पूछल।

बत्रा उत्तर नहि देलक। स्क्रीन पर फोटो नीचाँ पंक्ति उभरल — 'ऋण नहि, धक्का।'

सत्यव्रत मेहता ओहि समय अपन सचिवकेँ फोन करय जा रहल छलाह। फेर रोकि गेलाह। ई निर्णय फोन पर नहि होएत। ओ फाइल बन्द केलन्हि, भीजल पन्ना जेबमे राखलन्हि, आ अपन निजी डायरी निकाललन्हि।

डायरीमे ओ लिखलन्हि — 'सरकारक पक्ष आ राज्यक आत्मा। जँ दुनू अलग होइत अछि, विधिकर्ता ककर साथ देत?'

ओहि पंक्तिक बाद बहुत देर कलम रुकल — जेना कलम स्वयं जनैत होइक जे अगिला शब्द जीवन बदलि देत। फेर ओ दोसर पंक्ति लिखलन्हि — 'गढ़ नारिकेल।'

ईरा आरुणि अमेरिकामे प्रश्न लिखि रहल छली। ओ दस पृष्ठक प्रश्न बनौलनि, फेर फाड़ि देलनि। पाँच पृष्ठ, फेर फाड़लनि। अन्तमे एक पंक्ति बचल — 'डॉ. ब्रूम, अहाँक गरिमा-सिद्धान्तमे अघोषित मृत मजदूरक स्थान कतय अछि?'

ओहि प्रश्नक पाछाँ संलग्न दस्तावेजक सूची छल। ओ नहि चाहैत छली जे प्रश्न भावुक हो। भावुक प्रश्न मंच पर हँसि कऽ टारल जा सकैत अछि। दस्तावेजी प्रश्न मुँहक लार सुखा दैत अछि।

गोप कुमार भोरमे थाकि कऽ कुर्सी पर झपकि गेल। सपनामे ओ गढ़ नारिकेल पहुँचल। चन्ना गाछीमे भूत सभ कबड्डी खेलैत छल। मुदा एहि बेर गेंद कोनो गेंद नहि; एक छोट डिवाइस छल। भूत सभ ओकरा पास करैत छल, गोहि सभ मैदानक बाहर मुँह फाड़ि कऽ देखैत।

बूढ़बा भूत सपनामे ओकरा कहलनि — 'डेटा देह नहि, मुदा देहक बदला लेबय जायत। ओकरा तेज नहि, टिकाउ बनाउ।'

गोप जागल। ओकर आँखिमे थकान छल, मुदा निश्चय साफ छल — एहन साफपन, जे बहुत काल सँ धुँधला रहल किछु चीज एकाएक चमकि उठला सँ आबैत अछि। ओ प्रत्येक फाइलक साथ एक सूची जोड़लक — पीड़ितक गरिमा, अपराधक श्रेणी, सार्वजनिक करबाक सीमा, न्यायालयमे देबाक सामग्री, आ ओ भाग जे केवल विश्वसनीय शोधकर्ता/न्यायिक आदेश पर खुलत।

सौम्या पढ़ि कऽ कहलि — 'एखन ई दस्तावेज नहि, जीवित गवाही बनल।'

ईशान दत्त दरबाजाक बाहर घुरि आयल छल। ओ कहल — 'आब अगिला चाल हुनकर। हरिहरन प्रक्रिया चलाओत। बत्रा डर पसारओत। राघव सिग्नल छाह काटए चाहत। लाउ किन-हंग नाम कीनए चाहत। मुदा तीन दिशा खुलि गेल।'

मृणालिनी पूछलि — 'आ चारिम दिशा?'

ईशान हलुक हँसल। 'अन्हारमे नारिकेल पात उगि रहल अछि।'

गढ़ नारिकेलमे ओहि साँझ पीपरक पात पर एक अजीब चीज भेल। पत्ताक नस सभ आपसमे जुड़ि कऽ नक्शा बनाबय लागल। कमला-बलान, गंगा-पुल, दिल्लीक अदालत, हार्वर्डक सभागार, हांगकांगक काँच-महल, आ गामक एक दरिद्र घर जतय उज्ज्वलक माय एखन धरि ओकर कमरा साफ करैत छली।

ब्रह्माक चारू मुख एक साथ बजल — 'अब कथा गामसँ बाहर नहि गेल। दुनियाँ गामक भीतर आबि गेल।'

चन्ना गाछीमे फेर राति भेल। कबड्डी शुरू भेल। पहिल पुकार बूढ़बा भूतक — 'कबड्डी।' दोसर हुलासी — 'नाम।' तेसर लोथ — 'साक्ष्य।' चारिम पनिडुब्बी — 'गरिमा।'

आ तखन पीपरक खोखर भीतर राखल डिवाइस एक बेर चमकल। ओकर उजास नीला नहि, हरियर छल — नारिकेल पात जेकाँ।

ओहि हरियर उजासमे मृत मजदूरक नाम, उज्ज्वलक अधूरा संदेश, मृणालिनीक गवाही, देविकाक आँसू, गोपक डर, सौम्याक सावधानी, रमैय्याक चुप्पी, ईशानक छाह-विहीनता, मेहताक लाज, ईराक प्रश्न — सभ एक क्षण लेल एक्के रेखामे आबि गेल।

बूढ़बा भूत धीरे कहलनि — 'आब सत्य केवल कागच पर नहि। आब ओ रास्ता पर अछि।'

दूर, कारी नदी बहि रहल छल। मुदा पहिल बेर ओकर ऊपर एक नारिकेल पात तैरि गेल, आ डूबल नहि।

लोकगीत: अन्हार जालपर पात

लोकधुन: बटगबनी

खेबू हे धीरे, पातक नाव धीरे खेबू हे,
नामक दीप सम्हारि अन्हार जाल टपू हे।

कारी जालक बाटमे पात बनल नाव,
नामक दीप सम्हारि चल, धीरे खेबू नाव।
सत्यकेँ बचाउ, गरिमाकेँ संग,
साक्ष्य ओतबे खोलू जतय न्यायकेँ रंग।
मजदूर, उज्ज्वल, मृणालिनी, देविकाक नोर,

एक हरियर रेखामे जुड़ल सभक भोर।
दुनियाँ गामक भीतर आयल चुपचाप,
पीपरक खोखर जागल, बोलल नारिकेल पात।
अन्हार नदी गहिरी, बाटो अनजान,
पात नहि डूबत जखन संग अछि नाम।

साक्ष्य ओतबे खोलू जतबा न्याय कैँ चाही,
गरिमा संग राखू, सत्यक बाती जराबी।
उज्ज्वल-मृणालिनी-देविकाक नोर एक ठाम,
हरियर रेखा मे जुड़ल सभक भोर-प्रणाम।

❖

अध्याय १३

सीलबन्द आवरण

मुहर जतबा चमकैत, आवरणक भीतरक अन्हार ततबे गाढ़।

अध्यायारम्भ लोकगीत: मोहर खोलत भोर

लोकधुन: करुण समदाउनक आशा-लय

खोलू हे भोर, मोहरक गिरह खोलू हे,
आवरणक भीतर बन्हल साँसकेँ बोलू हे।

सीलबन्द आवरण भीतर साँस बाट जोहै,
भोरक नियम कहै—उचित हाथ धीरे खोले।
मोहर रक्षा लेल हो, सत्य दबाबय नहि,
गोपनीयता गरिमा हो, अपराधक मही नहि।

अदालतक फर्शपर पानिक दाग दिशा देत,
छोट गामक मुँहजुबानी पूरा नाम सहेत।
मोहर खोलत भोर जखन प्रक्रिया साफ बनत,
आवरण भीतरक साँच न्याय-आसन पाबत।

समदाउनक करुण सुर सेहो आशा गाबए,
सील-बन्द कोठरियोमे किरिण बाट पाबए।
उचित हाथ धीरे खोलए, साँच नहि दबाए,
गोपन रहए गरिमा भरि, अपराध नहि नुकाए।

❖

“मोहर जतबा चमकैत, आवरणक भीतरक अन्हार ततबे गाढ़।”

ओहि रातिक बाद, जखन नारिकेल पात कारी नदी पर तैरि गेल आ डूबल नहि, चन्ना गाछीमे कियो नीकसँ नहि सुतल। मृतक सभकेँ निन्नक जरूरत नहि होइत, मुदा प्रतीक्षा सँ हुनको सभक हड्डी थकैत अछि। बूढ़बा भूत अपन पुरान डारि पर बैसल रहला, मुदा हुनकर आँखि अदालतक गलियारा देखैत छल। हुलासी इनारक किनार पर नहि गेली; ओ पनिडुब्बीक केश सुलझबैत रहली, जेना कोनो लम्बा कागजी तर्कक गिट्ठऽ खोलि रहल होइ।

पीपरक ब्रह्मा चारू मुखसँ चारि अलग बात नहि, एक्के बात चारि ढंगसँ कहैत रहलाह — ‘नाम जँ कक्षमे पहुँचि जाए, तखन जलसमाधि आधी टूटैत अछि।’

लोथ खोखरक मुँह पर बैसल छल। ओकर देहमे जे अपूर्ण दाहक गन्ध छल, ओहि राति कागचक गन्धसँ मिलि गेल। ओ देखैत छल जे पीपरक भीतर राखल स्मृति-यंत्र हलुक हरियर उजास छोड़ैत अछि। उजासमे कखनो पुलक पाया देखाइ पड़ैत, कखनो अस्पतालक बिछौना, कखनो उज्ज्वलक बन्द कमरा, कखनो मृणालिनीक फाड़ल निजता, कखनो अदालतक ऊँच छत।

बूढ़बा भूत धीरे कहलाह — 'काल्हि तारीख अछि।'

हुलासी हँसली नहि। 'तारीख? मनुक्ख सभ तारीख बनाबैत अछि, ताकि दिनक खून धुलि जाए।'

'एहि बेर तारीख धुलत नहि,' ब्रह्माक पहिल मुख कहल। 'एहि बेर तारीख पानि छोड़त।'

दिल्लीमे सत्यव्रत मेहता भोर होइतहि उठि गेलाह। घरमे सभ सोइत छल। ओ अकेले अपन अध्ययन-कक्षमे गेलाह। मेज पर तीन चीज राखल छल — सरकारी शपथ-पत्र, गोप कुमारक सत्य-सूची, आ नन्द आरुणिक पुरान आवेदनक प्रतिलिपि। तेसर कागच पील पड़ि गेल छल, मुदा ओहिमे जे शब्द छल से नव-नव जख्म जेकाँ लाल देखाइ पड़ैत छल: 'गिरल श्रमिकक संख्या सरकारी विवरणसँ मेल नहि खाइत अछि।'

मेहता सरकारी शपथ-पत्र पढ़लन्हि, धीरे, जेना कोनो चिकित्सक कोनो जटिल घावक जाँच करैत होथि। ओहि पत्रमे भाषा उत्तम छल, व्याकरण निर्दोष, विधिक्रम पूरा। मुदा ओही भाषामे मृत्यु अनुपस्थित छल। ओहि पत्रमे सभटा ठीक छल, केवल सत्य नहि छल।

ओ गोपक सूची खोललन्हि। पहिल पृष्ठ पर तीस घोषित नाम। दोसर पृष्ठ पर अघोषित नामक आरम्भ। तेसर पृष्ठ पर ओ लोक जे 'परिवार अनुपलब्ध' कहल गेल। चारिम पर ओ मजदूर जे कभी रजिस्टरमे छलैहेँ नहि, मुदा जिनकर मजदूरी कम्पनीक बिलमे उठाओल गेल। पाँचम पर डिजिटल ठगीसँ मरल युवक। छैठ पर दवा-खरीदक बहाना। सातम पर ओ खाता जे नदीक नाम धारण कयने छल।

सत्यव्रत मेहता कुर्सी पर पाछाँ टेक लगेलन्हि। हुनका लागल जे विधि-पुस्तकक सभ पन्ना एकाएक माछ भऽ कऽ फड़फड़ा रहल अछि। कानून मरल नहि छल; मुदा ओकरा जीवित रखबाक लेल ककरो साहस चाही।

ओ अपन निजी सचिवकेँ नहि, स्वयं पुरान टाइपराइटर निकाललन्हि — ओ यंत्र, जकरा ओ बरखो सँ छूने नहि छलाह, मुदा जकर प्रत्येक चोट अखनहुँ ओकरा परिचित छल। कम्प्यूटर पर लिखल चीज तुरन्त बदलि जाइत अछि; टाइपराइटरक चोट कागचमे धँसैत अछि। ओ एक

छोट नोट लिखलन्हि — 'राज्यक ओरसँ उपस्थित होइत हुए, हम न्यायालयक ध्यान एहि तथ्य दिस आनए बाध्य छी जे प्रस्तुत अभिलेख पूर्ण नहि अछि।'

ओ कागच मोड़ि जेबमे रखलन्हि। फेर दर्पणमे अपन चेहरा देखलन्हि। हुनका अपन चेहरामे पहिने-पहिने सरकारी वकील नहि, एकटा डरायल मनुष्य देखाइ पड़ल। ओहि डरायल मनुष्यकेँ ओ प्रणाम कयलन्हि। डर जे आत्माक अन्तिम चेतावनी होइत अछि।

उधर बटुकनाथ हरिहरनक घरमे भोरक चाह सेहो अदालतक फाइल जेकाँ बनैत छल — ऊपर मलाई, नीचाँ कड़ुआहट। हरिहरन राति भरि नीक नहि सुतल। ओकर सपना बार-बार ओही पानि पर घुरि आबैत छल जाहिमे ओकर जूता धँसल। ओकरा सभसँ बेसी डर मृतकसँ नहि, प्रक्रिया पर अपन विश्वास टूटि जाएबासँ छल। जे लोक प्रक्रिया बेचैत अछि, ओ जानैत अछि जे साँच प्रक्रिया जागि गेल तँ ओकर दुकान बन्द।

चन्द्रपाल बत्रा ओकरा लग भोरहि पहुँचल। आँखिमे निन्न नहि, मोबाइल पर पाँच संदेश। राघव 'सिग्नल' सोमानीक चिन्ह देखाइ रहल छल, मुदा संदेश सभ अल्प। 'सूची घूमि रहल।' 'मेहता अनिश्चित।' 'ईरा तक प्रति।' 'देविकाकेँ चुप कराउ।' 'मीडिया सँ दूरी।'

हरिहरन चाह कपमे राखि देलक। 'चुप कराउ? एते सरल? जकर भाई स्क्रीनमे मरल, जकर गाम नदीमे डूबल, जकर प्रेम चोरी भेल, जकर बाप फाइलमे मेटायल — हुनका सभकेँ चुप कराओबऽ? तोहर जुआक अड्डा अछि की अदालत?'

बत्रा कठोर स्वरमे कहल — 'अदालत सेहो अड्डा बनि सकैत अछि, जँ नियमक पत्ता ठीकसँ फेरल जाए।'

हरिहरन ओकरा दिस एना तकलक जेना पहिल बेर ओकर भीतरक सस्तो बुद्धि देखलक। 'तू नियमकेँ पत्ता बुझैत छह। नियम कखनो-कखनो शास्त्र सेहो भऽ जाइत अछि। आइ जँ मेहता बाजि गेल, तँ पत्ता नहि, अग्नि लागब।'

बत्रा हँसल। 'मेहता सरकारक लोक अछि।'

'सरकारक लोकक भीतर कखनो-कखनो राज्यक आत्मा जागि जाइत अछि,' हरिहरन दाँत भींचि कहल। 'ओहि सँ डर।'

दस बजैत-बजैत अदालतक गलियारा भरल। वकील सभ कारी कोटमे एना चलैत छल जेना कौआ सभ बरसातक पहिने खेत पर उतरैत हो। ककरो हाथमे मोट फाइल, ककरो चेहरापर बनावटी चिन्ता, ककरो आँखिमे फीसक चमक। पत्रकार सभ सेहो छलाह, मुदा हुनकर आँखि समाचार-शीर्षक ताकैत छल, इतिहास नहि।

गोप कुमार गलियाराक एक कोनमे ठाढ़ छल। ओकर हाथमे फाइल नहि, केवल एक छोट कागच छल जाहिमे पीड़ितक नामक क्रम लिखल छल। ओ एहि बातसँ डेराइत छल जे अदालतमे कियो यदि आंकड़ा पूछत तँ ओ उत्तर दऽ देत; मुदा जँ कियो नाम पूछत तँ ओकर गला अटकत। आंकड़ा बाजब आसान, नाम बाजब भारी।

सौम्या रामनाथन ओकर कातमे छली। ओ प्रत्येक कागच पर नीली पेंसिलसँ चिह्न लगौने छली — सार्वजनिक, सीमित, सीलबन्द, पीड़ितक अनुमति आवश्यक। ओ सभसँ बेसी एहि बात पर अटल छली जे सत्यक नाम पर पीड़ितक पुनः अपमान नहि हो।

मृणालिनी आर्या चुपचाप बैसली। ओकरा लग कोनो नारा नहि छल। ओकर गवाही अपन भारेँ पर्याप्त छल। देविका साह उज्ज्वलक फोटो फाइलमे नहि, आँचलमे रखने छली। कागच खो जाइत अछि; आँचलमे राखल चेहरा नहि।

ईशान दत्त अदालतक भीतर नहि गेल। ओ बरामदामे ठाढ़ रहल। किएक तँ ओकर नाम सरकारी रेकॉर्डमे मृत छल। जँ ओ भीतर जाइत, तँ कानून पहिने ओकर अस्तित्व पर बहस करैत, सत्य पर बादमे। ओ मुस्कुरायल — ‘मरल लोकक प्रवेश अलग रास्तासँ होइत अछि।’

कक्ष नम्बर पाँचमे मामला पुकारल गेल। नाम लम्बा छल — श्रमिक परिवारजन एवं अन्य आ राज्य एवं अन्य। मुदा चन्ना गाछीमे ओकर पुकार छोट पहुँचल — ‘नाम आ गोहि।’

न्यायपीठ आयल। सभ ठाढ़ भेल। बटुकनाथ हरिहरन अपन भारी चालसँ आगाँ बढ़ल। ओकरा संग चन्द्रपाल बत्रा कागचक एक गठरी लेने। ओ गठरीमे तर्क कम, उलझन बेसी छल। सत्यव्रत मेहता अलग मेज पर ठाढ़ भेलाह। हुनकर चेहरा थाकल, मुदा आँखि साफ।

हरिहरन पहिल वाक्येमे मामला लम्बा करबाक कला खोलि देलक। ‘महोदय, याचिकाक याचिकाक ग्राह्यता, समय-सीमा, पक्षकारिताक अधिकार, निजता, राष्ट्रीय सुरक्षा, संविदागत मध्यस्थता, आ आधिकारिक गोपनीयता — सभ प्रश्न पहिने निपटब आवश्यक अछि।’

न्यायाधीश चश्मा ऊपर करि देखलन्हि। ‘अहाँ एक्के साँसमे सात दरबाजा बन्द कऽ देलहुँ, श्रीमान हरिहरन।’

हरिहरन नम्र हँसी हँसल। ‘न्यायालयक सुविधा लेल।’

सौम्या गोपक कानमे फुसफुसैली — ‘सुविधा नहि, दलदल।’

सत्यव्रत मेहता उठलाह। कक्षक हवा बदलि गेल। सरकारी वकील उठला पर प्रायः पीड़ितक देह सिकुड़ि जाइत अछि; मुदा एहि बेर देविकाक हाथ आँचल पर थिर रहल।

मेहता कहलन्हि — 'महोदय, राज्य प्रारम्भमे किछु तथ्य स्पष्ट करय चाहैत अछि।'

हरिहरन बीचमे उठि गेल। 'महोदय, राज्यक शपथ-पत्र अभिलेख पर अछि। हमर विनम्र निवेदन अछि जे राज्य ओही पर टिकय।'

मेहता ओकरा दिस नहि देखलन्हि। 'राज्य जँ अपूर्ण अभिलेख पर टिकैत अछि, तँ ओ अभिलेख नहि, असत्य पर टिकैत अछि।'

कक्षमे हलचल भेल। कारी कोट सभ हलुक हिलल। पत्रकार सभक कलम चलल। चन्द्रपाल बत्रा पहिल बेर अपन कुर्सी पर सीधे बैसल।

न्यायाधीश धीरे पूछलन्हि — 'श्री मेहता, की अहाँ अपन शपथ-पत्र संशोधित करय चाहैत छी?'

मेहता उत्तर देलन्हि — 'संशोधित नहि, महोदय। पूर्ण करय चाहैत छी।'

ओ जेब सँ कागच निकाललन्हि। 'हमरा लग एहन सामग्री आयल अछि जे प्रथमदृष्ट्या देखबैत अछि — पुल परियोजनाक मृत्यु-संख्या, मुआवजा-अभिलेख, सुरक्षा-निरीक्षण, आ बादक वित्तीय प्रवाहमे गंभीर विसंगति अछि। राज्य एहि न्यायालयसँ समय नहि, संरक्षण माँगैत अछि — अभिलेखक संरक्षण, गवाहक संरक्षण, आ पीड़ितक गरिमाक संरक्षण।'

हरिहरन व्यंग्य सँ कहल — 'महोदय, ई राजनीति अछि।'

मेहता शान्त रहलाह। 'जँ मरल मजदूरक नाम राजनीति अछि, तँ संविधानक प्रस्तावना सेहो राजनीति अछि।'

ई वाक्य कक्षमे गिरल नहि; ठाढ़ रहल। जेकाँ कोनो अदृश्य लोक बीचमे आ कऽ ठाढ़ भऽ गेल हो।

न्यायाधीश कहलन्हि — 'सामग्री सीलबन्द आवरणमे दियौ।'

ओहि क्षण सत्यव्रत मेहता रुकि गेलाह। हुनकर भीतरक युद्ध फेर जागल। सीलबन्द आवरण सुरक्षित सेहो करैत अछि, आ कखनो-कखनो सत्यक कबर सेहो बनि जाइत अछि। ओ धीरे कहलन्हि — 'महोदय, संवेदनशील नाम आ निजी विवरण अलग सीलबन्द रहू। मुदा मृतकक घोषित-अघोषित सूची, भुगतानक मूल विसंगति, आ अभिलेख-संरक्षणक आदेश खुलल रहबाक चाही। सत्य पूर्ण अन्हारमे राखल जाए तँ ओ फेर ओहि लोकक हाथमे चलि जाइत अछि जिनका सँ बचाओल जा रहल अछि।'

कक्षमे फेर सन्नाटा। हरिहरनक चेहरा तमतमा उठल। चन्द्रपाल बत्रा अपन फोन दिस तकलक; फोनक परदा कारी। ओकरा आदत छल जे प्रत्येक संकटमे राघवक संदेश आबि जाए। एहि बेर कारी परदा मात्र ओकर चेहरा देखबैत छल।

न्यायपीठ किछु क्षण परामर्श कयलक। ओहि क्षण चन्ना गाछीमे कबड्डी रुकल। भूत सभ साँस रोकेने। मृतकक साँस नहि होइत, मुदा इतिहासक होइत अछि।

न्यायाधीश कहलन्हि — 'ठीक अछि। संवेदनशील निजी विवरण सीलबन्द। परन्तु प्रारम्भिक नाम-सूची, मृत्यु-स्थिति, आ अभिलेख-संरक्षण संबंधी सामग्री प्रतिपक्षकेँ उपलब्ध कराओल जाए। राज्य अभिलेख नष्ट नहि करत। संबंधित विभाग, ठेकेदार, आ भुगतान-बैंक सभकेँ सूचना। अगिला तारीख शीघ्र।'

'शीघ्र' शब्द सुनिते देविका के कानमे उज्ज्वलक हँसी आयल। भारतमे शीघ्र सेहो कखनो-कखनो बरसोंक होइत अछि। मुदा आइ ई शब्द पुरान तारीखक तुलनामे हलुक लागल।

तखन मेहता एक आर निवेदन केलन्हि। 'महोदय, मृतकक नाम पढ़ल जाउ?'

हरिहरन उछलि पड़ल। 'महोदय, ई भावनात्मक नाटक अछि।'

मेहता कहलन्हि — 'नहि। ई रेकॉर्ड सुधारबाक पहिल क्रिया अछि। कतेको नाम सरकारी पन्नासँ गायब अछि। न्यायालयमे एक बेर सुनल जाए, ताकि ओ अनुपस्थित नहि रहल।'

न्यायाधीश बहुत देर चुप रहलन्हि। फेर कहलन्हि — 'पहिल सूची पढ़ू। पूरा सूची अगिला दिन। आइ प्रतीकात्मक नहि, प्रारम्भिक पाठ।'

गोप कुमारक हाथ काँपल — बहुत बरखक थकान, बहुत रातिक जागरण, आ बहुत नामक भार एकहि क्षणमे ओकर उँगलीमे उतरि आयल। सौम्या ओकरा सूची देलनि। मेहता सूची हाथमे लेलन्हि। पहिल तीस नाम — जे सरकार मानने छल। ओ पढ़लन्हि। कक्ष सुनैत रहल।

फेर ओ रुकलाह। दोसर पृष्ठ खोललन्हि। 'एहि नाम सभक मृत्यु वा अनुपस्थिति पर राज्यक अभिलेख मौन अछि।'

पहिल नाम पढ़िते कक्षक पंखा धीमा भऽ गेल। दोसर नाम पर खिड़कीक शीशा पर धुँध जमल। तेसर नाम पर देविकाक आँचलमे राखल उज्ज्वलक फोटो भीजल। चारिम नाम पर हरिहरन अपन जूता हिलेलक — जूता तल हलुक पानि छल।

किियो किछु नहि बजल। नाम सभ कक्षमे घूमैत रहल। ओ सभ मनुष्यक नाम छल, मुदा सुनाइ एना दैत छल जेना गंगामे फेंकल ढेपा देर सँ आवाज करि रहल हो — छपाक, छपाक, छपाक।

चन्ना गाछीमे हुलासी रोए नहि; भूतक आँसू कारी ओस बनैत अछि। ओस पत्ता पर जमल। बूढ़बा भूत नाम गनैत रहलाह। लोथ पहिल बेर कबड्डीक रेखा पार कऽ मैदानक बीच आयल। ओ कहल नहि, मुदा सभ बुझल — ‘हमरो पढ़ू।’

मेहता पन्द्रहम नाम पर रुकि गेलाह। हुनकर गला रुकि गेल। न्यायाधीश पानि देबाक इशारा कयलन्हि। मेहता पानि नहि पीबि सकलाह। हुनका डर छल जे ई पानि ओही नदीक होएत।

गोप कुमार धीरे उठल। ‘महोदय, जँ अनुमति हो, शेष नाम शोध-सूची सँ हम पढ़ि सकैत छी।’

हरिहरन फेर उठल, मुदा एहि बेर ओकर आवाज कमजोर। ‘ई लोक पक्षकार नहि।’

देविका साह उठि गेली। ‘हम पक्ष छी, महोदय। हमर भाईक नाम एहि सूचीमे अछि। नदीमे नहि, स्क्रीनमे। मुदा मृत्यु खाता सँ जुड़ल अछि। जँ ओ पढ़ि सकैत अछि, पढ़ू।’

न्यायाधीश गोप दिस देखलन्हि। ‘केवल नाम। कोनो टिप्पणी नहि।’

गोप सूची उठौलक। ओकर आवाज पहिने काँपल, फेर स्थिर भेल। ओ नाम पढ़ैत गेल। प्रत्येक नामक बाद एक छोट विराम। ओ विराम दाह-संस्कार जेकाँ छल।

चन्द्रपाल बत्रा अपन फोन कसि धेलक। ओहि क्षण परदा चमकल। लाउ किन-हंगक संदेश नहि। उज्ज्वलक फोटो नहि। केवल एक शब्द — ‘नाम।’ बत्राक कपार पर पसीना आयल।

नाम-पाठ समाप्त भेल तँ कक्षमे कोनो तालि नहि — केवल एहन मौन, जकरा शब्दसँ बेसी भारी कोनो चीज नहि बना सकैत। न्यायालयमे तालि नहि बजैत। मुदा ओहि दिन सन्नाटा तालि जेकाँ गूँजल।

न्यायपीठ आदेश लिखब शुरू कयलक। अभिलेख सुरक्षित। गवाहक धमकी पर तुरन्त सुनवाई। पीड़ितक निजी सूचना सीलबन्द। प्रारम्भिक प्रतिलिपि याचिकाकर्ता आ राज्य दुनूकेँ। स्वतंत्र लेखा-परीक्षा पर अगिला तारीख।

हरिहरन आदेशक प्रत्येक शब्द सुनि रहल छल। ओकरा बुझाइत छल जे ई हार नहि, मुदा पहिल दरार अछि। दरार सँ हवा प्रवेश करैत अछि; हवा सँ दीप जरैत अछि; दीप सँ छाह देखाइ पड़ैत अछि।

बत्रा धीरे कहल — 'हम ऊपरी आदेश लेब।'

हरिहरन फुसफुसायल — 'पहिने अपन फोन बन्द कर।'

बाहर बरामदामे ईशान दत्त ठाढ़ छल। ओकरा कियो देखैत नहि, मुदा ओ सभ सुनैत छल। जखन गोप बाहर आयल, ईशान ओकरा देखलक। 'नाम पढ़ल गेल?'

गोप माथ हिलेलक।

'तँ पहिल जलसमाधि टूटल,' ईशान कहल।

'न्याय भेटल नहि,' सौम्या सावधान स्वरमे कहलनि।

ईशान उत्तर देलक — 'न्याय नदीक पार अछि। नाम नाव अछि। आइ नाव पानिमे उतरल।'

देविका आँचल सँ उज्ज्वलक फोटो निकाललनि। फोटो सूखल छल, मुदा ओकर कोना पर नमकक एक रेखा जमल। ओ कहलि — 'ओकर नाम अगिला सूचीमे आएत?'

सौम्या कहलनि — 'हँ। मुदा अनुमति अहाँक।'

देविका फोटो देखलनि। 'ओ हमर भाई छल। मुदा ओकर मृत्यु अकेली नहि। ओकर नाम रहू।'

मृणालिनी चुपचाप ओकर हाथ पकड़लनि। दु:खक जाति नहि होइत, मुदा दु:खक संगति होइत अछि।

ओहि संध्या हार्वर्डमे ईरा आरुणि सभागारक पहिल पंक्तिमे बैसली। एडवर्ड ब्रूम मंच पर आबि रहल छल। पाछाँ परदा पर शीर्षक चमकैत छल — 'वैश्विक उद्यम आ मानवीय गरिमा।' ईरा अपना गोदमे वैह प्रश्न राखने छली। ओकर मोबाइल पर दिल्लीक संदेश आयल — 'नाम अदालतमे पढ़ल गेल।'

ईरा आँखि बन्द केलनि। हुनका लागल जे दूर गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछीमे कबड्डी शुरू भऽ गेल। ओ कान लगा कऽ सुनली। सभागारक तालीक नीचाँ एक ध्वनि छल — 'नाम, साक्ष्य, गरिमा।'

गढ़ नारिकेलमे राति उतरल। चन्ना गाछीमे खेल फेर शुरू भेल। एहि बेर नियम बदलल। जे खिलाड़ी पकड़ा जाए, ओकरा अपन नाम नहि, कोनो भूला देल नाम बाजऽ पड़त। भूत सभ बेरा-बेरी ओ नाम बजैत। पनिडुब्बीक केशमे अटकल जलसमाधि-प्राप्त आत्मा सभ हलुक होमय लागल।

पीपरक खोखरमे राखल स्मृति-यंत्र एक बेर चमकल। ब्रह्माक चारिम मुख मुस्कुरायल। ‘सीलबन्द आवरण आधा खुलल। बाकी आधा लोकक साहस खोलत।’

बूढ़बा भूत डारि सँ निच्चाँ देखलनि। ‘अगिला बेर विदेशक सभागारमे गंगा बोलत।’

दूर हांगकांगक काँच-महलमे लाउ किन-हंग अपन देबाल पर टंगल डिजिटल नक्शा देखैत छल। भारतक एक छोट बिन्दु हरियर चमकि रहल छल — गढ़ नारिकेल। ओकरा ई बिन्दु पहिने कहियो देखाइ नहि देने छल। ओ सहायकसँ पूछलक — ‘ई की अछि?’

सहायक कहल — ‘बहुत छोट गाम।’

लाउ किन-हंग बहुत देर तकैत रहल। ओकरा पहिल बेर बुझायल जे छोट गाम सभसँ बेसी खतरनाक होइत अछि, कारण ओतय नाम मुँहजुबानी जीवित रहैत अछि।

ओ नक्शा बन्द करबाक आदेश देलक। मुदा हरियर बिन्दु बन्द परदा पर सेहो झिलमिलाइत रहल।

अदालतक कक्ष खाली भऽ गेल छल। सफाईकर्मी फर्श पोंछैत छल। ओकर कपड़ा एक जगह अटकि गेल। ओ झुकि देखलक — फर्श पर पानिक छोट दाग छल, गोहिक दाँत जेकाँ वक्र। ओ सोचलक, शायद पाइप चुहलक होएत।

मुदा ओ दाग सुखल नहि। भोर धरि ओहि दागक भीतर एक नाम झिलमिलाइत रहल।

लोकगीत: मोहरक भीतर रोदन

लोकधुन: करुण समदाउन

फाटत हे मोहर, मायक पुकारे फाटत हे,
सीलबन्द अन्हार सँ साँचक स्वर बाहर आबत हे।

सीलबन्द लिफाफा, भीतर ककर कराह,
बाहर मोहर चमकै, भीतर घन अन्हार।
अदालतक फर्शपर पानिक छोट दाग,
सुखल नहि भोर धरि, लिखलक मृतक भाग।

छोट गाम कहि हँसल दूरक धनवान,

मुँहजुबानी जीबैत ओतय हरेक एक नाम।
झाड़ूबाली देखलक दाँतक वक्र निशान,
दागक भीतर झिलमिल एक मजदूरक जान।
मोहर चाहे भारी, सत्य रहत पार,
सीलबन्द आवरण फाड़त मायक पुकार।

लिफाफा चमकल बाहर, भीतर घन कराह,
भोर धरि नहि सुखल—मृतकक भाग लिखल,
झाड़ूबालीक आँखि मे ओ निशान झलकल।

❖

अध्याय १४

घर घुरबाक रस्ता

नाम जखन घर घुरै छै, माटियो अपन नींदसँ जागि जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: घरक बाट उजियार

लोकधुन: घरघुरनी गीत

घुरि आउ हे बटोही, देहरी दीप बरै हे,
माएक अँचरा-छाँह तोहर बाट जोहै हे।

कुहासामे पग सुनाइ, देहरी दीप जरै,
नाम कागचसँ निकलि अपन आँगन दिस धरै।
गमछा, गिट्टी, गंगारेत बाटक चिन्ह बनै,
माए केर नोर नहि—आशीषक जल झरै।

गाछ मरत तँ बीज रहत, घरक राह नहि हरत,
स्मृति, प्रेम, साक्ष्य मिलि घुरनिहारकेँ धरत।
घरक बाट उजियार रहय हरेक बिसरल नाम,
देहरीपर सम्मान भेटय—एहने हो प्रणाम।

कुहासामे गमछा-गिट्टी-गंगारेतक निशान,
डेग-डेग पर कहै—लग अछि अपन दलान।
गाछ खसल तँ बीज बचल, बाट नहि हरायत,
नोर नहि, आशीषक जल देहरी पर छिड़िआयत।

❖

“नाम जखन घर घुरै छै, माटियो अपन निन्नसँ जागि जाइ छै।”

“नाम जखन घर घुरैत अछि, तखन माटि सेहो जागि जाइत अछि।”

अदालतक कक्षसँ जखन लोक बाहर निकलल, तखन बरामदामे कोनो वर्षा नहि छल, मुदा सभक जूताक तलमे पानि लगल छल। केओ कहलक—एयरकंडीशनरक नली फुटि गेल होएत। केओ कहलक—पुरान भवन अछि, सीपेज होइत रहैत छैक। मुदा आरुणि झुकि कऽ अपन जूताक कात देखलक तखन ओकरा बुझा गेल जे ई भवनक पानि नहि। एहि पानिमे एकटा अजब गन्ध छल—सीमेण्ट, गिट्टी, गंगा-रेत, आ घामसँ भीजल गमछाक गन्ध। ई वैह गन्ध छल जे नन्द आरुणिक पुरान बक्सामे राखल पीयर परचा खोललापर बहराइत छल।

सत्यव्रत मेहता सभसँ पाछाँ बाहर अएलाह। हुनकर हाथमे सरकारी फाइल छल, मुदा फाइल आब हुनका हाथमे नहि, जेना हुनकर हाथ ओकरा पकड़ने हो। ओहि सीलबन्द आवरण खोललाक बाद अदालतमे जे मौन पसारल छल, से मौन एखनो हुनकर कपारपर चिपकल छल। हुनका सामने सरकारी गाड़ी ठाढ़ छल। चालक दरबाजा खोलि देलक। सत्यव्रत एक बेर भीतर झाँकलाह—नरम सीट, काला शीसा, धूपसँ बचबाक परदा—सभ किछु आरामदायक, आ ठीक तेँ, ओहि क्षण, असहनीय। फेर धीरेसँ कहलन्हि, ‘हम पैदल जाएब।’

बटुकनाथ हरिहरन ओहि बेर बरामदाक दोसर छोरपर पत्रकार सभक बीच मुस्की बाँटि रहल छल। ओकर मुस्कीमे पानि नहि लगैत छल। ओ कहि रहल छल—‘प्रक्रिया अपना रास्ता चलत। भावना आ न्याय अलग चीज अछि।’ ओ जखन ‘प्रक्रिया’ बाजैत छल, ओकर दाढ़ीक एक-एक रौँ पर ओहिना चमक उठैत छल जेना चन्ना गाछीक राकशक देहपर अग्नि। ओकरा लग चन्द्रपाल बत्रा मोबाइलक पर्दा झुका कऽ ठाढ़ छल। पर्दा पर केवल दू शब्द चमकल—‘घर साफ।’ ओ संदेश कोन घरक लेल छल—दिल्लीक, हांगकांगक, आकि गढ़ नारिकेलक—ई चन्द्रपाल बुझि नहि पाबि रहल छल।

गोप कुमार ओइ संदेशक झलक देखि लेलक। ओ किछु नहि बाजल। गोपक बानी एखन दिनसँ बेसी रातिक पक्षमे छल। जे लोक कागचक भीतर रक्त देखैत अछि, ओ तुरन्त हल्ला नहि करैत; पहिने ओ देखैत अछि जे रक्त कोन दिस बहराइत अछि। सौम्या रामनाथन ओकर कातमे ठाढ़ छली। हुनकर नोटबुक भीजल नहि छल, मुदा पन्ना सभ मुड़ि गेल छल। सौम्या कहलथि—‘एहि शहरमे सत्यक पहिल दिन सदैव गीला होइत होएत।’ गोप उत्तर देलक—‘नहि। ई शहरक पानि नहि। ई गढ़ नारिकेल घुरबाक आदेश अछि।’

आरुणि ओहि संध्याकाल दिल्लीक घरमे घुरल तखन बेटी अनन्या ओकरा देखते पूछलक—‘कोर्टमे भूत एलखिन्ह?’ आरुणि हँसल नहि। ओकर भीतर किछु स्थिर भऽ गेल छल, जेना बहुत काल सँ चलैत कोनो घड़ी अचानक ठमकि गेल हो। पहिने जखन बेटी मुख्यमंत्रीक पैघ फोटो देखि पूछने छल—‘मरि गेलखिन्ह की?’—तखन ओ हँसल छल। आब ओकरा बुझाइत छल जे बच्चाक प्रश्न सभ बेर भविष्यक दरबाजा होइत अछि। ओ कहलन्हि—‘भूत नहि। नाम एल छल।’ अनन्या कहलकि—‘नाम चलि सकैत अछि?’ बा ओतहि खाटपर तकिया टेकने बैसल छली। ओ कहलथिन्ह—‘नाम पएर छोड़ि चलैत अछि, नेनी। पएर धरती पर रहैत अछि, नाम हवामे।’

ओहि राति निर्णय भेल जे सभ गढ़ नारिकेल जाएत। न्यायालयक अगिला तारीख पन्द्रह दिन बाद छल। वकील सभ कहत—तैयारी करबाक अछि। बटुकनाथ कहत—प्रक्रिया चलत। चन्द्रपाल अपन अकाउण्ट सभ बदलत। हांगकांगक लाउ किन-हंग नव नामसँ कम्पनी खोलत। मुदा एहि पन्द्रह दिनमे गढ़ नारिकेलक माटि हुनका सभकेँ फेर देखए चाहैत छल। बा कहलथिन्ह—'माटि बिनु कागच अन्हर होइत अछि।'

गाड़ी नहि, रेल। आरुणि जिद केलक। विमानसँ उतरि टैक्सीमे गाम जेनाइ ओहि कथा केँ छोट करि देत। रेलमे खिड़की रहैत अछि, खिड़कीसँ बाहर बहैत खेत, सूखल पोखरि, स्टेशनक चाह, अधसुतल बच्चा, आ बैगमे बाँधल पुरान गन्ध रहैत अछि। रातिक रेलमे जखन दिल्ली पाछाँ छुटैत गेल, अनन्या खिड़की लग बैसि कऽ अन्हारक भीतर अपन चेहरा देखैत रहल। ओकर चेहराक पाछाँ आरुणिक चेहरा, तकर पाछाँ बा, तकर पाछाँ नन्द, आ तकरो पाछाँ कतेको लोकक चेहरा जे टिकट काटि कऽ नहि, जलसमाधि लऽ कऽ यात्रा करैत छल।

सौम्या अलग डिब्बामे नहि गेलीह। ओ बा लग बैसलीह, आ कमला-बलानक धारक कथा सुनैत-सुनैत नोटबुक बन्द कऽ देलथि। पहिल बेर ओ लिखब छोड़ि सुनए लगलीह। बा कहैत छली—'बलान शांत अछि, मुदा शांत नदीकेँ लोक कम बुझैत अछि। कमला काटैत अछि, तँ ओकर नाम लोक लेत अछि। शांत लोकक अपराधो चुपचाप चलैत अछि। जे ठेकेदार हँसैत अछि, जे वकील नमस्कार करैत अछि, जे मंत्री मौन रहैत अछि—सभ बलान जेकाँ।' सौम्या सोचलीह—एहि बुढ़िया स्त्रीक भाषामे कतेक समाजशास्त्र छिपल अछि, मुदा ओ 'समाजशास्त्र' शब्द नहि जनैत। सेहेन लोक सभ गाममे इतिहास बिनु पुस्तक पढ़ैत अछि।

भोरक पहिल प्रकाश जखन डिब्बाक काँचपर लागल, तखन ईरा आरुणि स्टेशन पर भेटलीह। ओ विदेशसँ आइल छली—बैगमे हार्वर्डक सभागारक एकटा पुस्तिका, एडवर्ड ब्रूमक भाषणक छापल प्रति, आ अपन भीतर एकटा थकान। पहिने ओ गढ़ नारिकेलकेँ परिवारक कथा बुझैत छली; आब ओकरा बुझाइत छल जे परिवारक कथा सभ बेर दुनियाँक नक्शापर एकटा चोट होइत अछि। ओ आरुणिक पएर छुअए लगलीह, फेर संकोचमे रुकि गेलीह। बा अपन हाथ ओकर माथपर राखि देलथिन्ह—'विदेशक बच्चा छी, मुदा माथ तँ एही घरक अछि।' ईरा ओहि स्पर्शसँ काँपि गेलीह। ओ हार्वर्डमे कतेको हाथ मिलौने छली, मुदा माथपर हाथ पहिल बेर पड़ल छल।

निशांत सेहो स्टेशन पर छल। ओकर चेहरा ओही लोक जेकाँ छल जे अपन वेतनक चमकमे पहिने गौरव पबैत अछि आ बादमे बुझैत अछि जे ओ चमक ककरो घरक चूल्हा बुझा

कऽ आबि रहल अछि। ओ गोपकेँ अलग लऽ जा कऽ कहलक—‘भुगतान-दुआरक तीनटा परत भेटल अछि। खेल-ऐप सँ पैसा पहिने जयपुर, फेर गुरुग्राम, फेर सिंगापुर, फेर हांगकांग। मुदा एक पुरान अकाउण्ट अछि—उसी समूहक, जे पुल-परियोजनाक समय इस्तेमाल भेल छल।’ गोप ओकरा रोकलक—‘एहि गाममे पहिने जोर सँ नहि बाजू। एतय पातो सुनैत अछि।’ निशांत चारू दिस तकलक। स्टेशनक कातमे एकटा सूखल नारिकेल पात वास्तवमे हिलल। बयार ओहि समय चलि नहि रहल छल।

गढ़ नारिकेल पहुँचैत-पहुँचैत दुपहरि भऽ गेल। गाम पहिल नजरिमे साधारण छल—कच्चा-पक्का घर, गाछक छाँह, दुआरपर बँधल गोरू, दूरसँ सुनाइ पड़ैत पम्पसेटक मोटर, आ घाममे सुस्ताइत कुकुर। मुदा आरुणि जखन दुआरक पहिल नारिकेल गाछ लग पहुँचल तखन ओकरा लागल जे गाम ओकरा देखैत अछि। गाछक पात एकदम स्थिर छल। अनन्या पूछलक—‘एहि गाछक आँखि कतए अछि?’ बा कहलथिन्ह—‘जतए पात छैक, ततेक आँखि छैक।’

घरक भीतर पुरान बक्सा खोलल गेल। नन्द आरुणिक फाइल सभ, जे एखन धरि अदालतक प्रति आ गोपक अंकीय प्रतिमे जीवित छल, आब अपन मूल गन्धमे बाहर एल। एकटा कागच पर नन्दक हाथक लिखावट छल—‘मृतक सूची अधूरी अछि।’ दोसर पर—‘ठेकेदारक सुरक्षा-बही जाली।’ तेसर पर—‘तीस नामक अतिरिक्त।’ आरुणि ओहि कागचकेँ जमीन पर राखलक। जमीन पर राखल कागचक अक्षर थरथराए लगल। ईरा डरि कऽ पाछाँ हटल। बा कहलथिन्ह—‘डेराऊ नहि। माटि नामकेँ चिन्हैत अछि।’

साँझ होइत-होइत गाममे खबर पसारल जे दिल्लीसँ कतेको लोक आयल अछि। देविका साह अपन भाय उज्ज्वलक छोट फोटो लऽ कऽ अइलीह। मुन्ना पासवान सेहो एल, जकर बैंक खाता चन्द्रपाल बत्राक जालमे म्यूल बनि गेल छल। मुन्नाक आँखि एखन धरि अपराधी जेकाँ झुकी रहैत छल, यद्यपि ओकर अपराध केवल गरीबी छल। देविका फोटो जमीन पर राखि कहलथि—‘ओ नदीमे नहि डूबल। ओ फोनमे डूबल। मुदा डूबब तँ डूबबे भेल।’ एहि वाक्य पर चन्ना गाछीक दिशा सँ एकटा धीमा हँसी आयल—न व्यंग्य, न दया—जेना बूढ़बा भूत नव तरहक मृत्युक नाम सीखि रहल हो।

मृणालिनी, जे शहरमे मीरा नामसँ चिन्हाइत छली, राति होएबाक पहिने पहुँचलि। ओकर चेहरा दृढ़ छल। ओ अपन निजी चित्र, संदेश, धमकी-पत्र सभक प्रति सौम्याक हाथमे देलथि। ओ कहलथि—‘ई सभ हमर लज्जा नहि, हुनकर अपराध अछि। मुदा अदालतमे ओ सभ पहिने हमर जीवनपर प्रश्न करत, फेर हुनकर खातापर।’ बा ओकरा देखैत रहलथि। गामक बहुत लोक

ओहि स्त्रीक कथा बुझि नहि पाबत, मुदा बा बूझि गेलीह। ओ धीरेसँ कहलथिन्ह—'जे प्रेमकेँ हथियार बनबैत अछि, ओकर हाथ सभसँ बेसी गन्दा होइत अछि।' मीरा पहिल बेर रोअए लगलीह—बरखो सँ रोकल आँसू, जे आब बा केर एक्के वाक्यसँ बाँध तोड़ि देने छल। ओ रोदन दबी आवाजमे छल, मुदा नारिकेल पातपर ओसक बून्द जेकाँ चमकैत छल।

राति सभा नहि भेल। गढ़ नारिकेलमे एहन बातक घोषणा नहि होइत। लोक सभ धीरे-धीरे दुआर पर, आँगनमे, तुलसी चौरा लग, पीपरक छाँहमे जमा भेल। कोनो मंच नहि। कोनो माइक नहि। केवल एकटा लालटेन आ ओकरा चारू दिस चेहरा। गोप कुमार फाइल नहि खोललक। पहिने ओ माटि छूलक। फेर कहल—'ई कागच दिल्लीमे प्रमाण अछि। एतय ई श्राद्धक पिण्ड अछि। जकर नाम कागचमे नहि, ओकर नाम आइ माटि पर राखब।'

ईशान दत्त ओहि समय पहुँचल। केओ ओकरा आबैत नहि देखलक। अचानक ओ पीपरक ओझराहटसँ बाहर भेल। ओकर देह पर छाह एखनहु नहि छल। अनन्या ओकरा देखैत पूछलक—'अहाँक पाछाँ अन्हार किए नहि?' ईशान मुस्कुरायल—'हमरा कागच पर मारि देल गेल, नेनी। जे कागच पर मरि जाइत अछि, ओकर छाह सरकारी गोदाममे रहि जाइत अछि।' नेनी एहि उत्तरसँ सन्तुष्ट भऽ गेल, जेकाँ बच्चा सभ केवल असम्भव उत्तरसँ सन्तुष्ट होइत अछि।

ईशान तीनटा पोटली निकाललक। पहिलमे मजदूरक सूची। दोसरमे डिजिटल ठगीक सूची—उज्ज्वल सन युवकक नाम, म्यूल अकाउण्ट, झूठा गिरफ्तारी-धमकी, बटुकनाथ हरिहरनक दफ्तरक फीस-रसीद। तेसरमे विदेशक पैसा-राह—एडवर्ड ब्रूमक समूह, लाउ किन-हंगक खाता, राघव सिग्नलक संदेश, चन्द्रपाल बत्राक कानूनी परदा। ईशान कहल—'ई सभ फाइल नहि। ई सभ नामक अस्थि अछि।'

बा कहलीह—'अस्थि पानिमे देल जाइत अछि।' गोप उत्तर देलक—'एहि बेर पानिमे नहि, गाछक जड़िमे।' दुआरक नारिकेल गाछक नीचाँ छोट खन्ती आनल गेल। माटि खुनल गेल। नन्दक फाइलक प्रति, मजदूरक नामक प्रति, उज्ज्वलक फोटो, मीरा पर धमकीक प्रति, मुन्नाक खाता-प्रति, आ सत्यव्रत मेहताक अदालत-वचनक प्रति—सभ अलग-अलग पीतलकेँ डिब्बामे राखि गाछक जड़ि लग गाड़ल गेल। ई पूजा नहि छल। ई गवाहीक रोपनी छल।

जखन माटि भरल जा रहल छल, तखन दूर चन्ना गाछीमे कबड्डी शुरू भेल। एहि बेर आवाज साफ छल। 'कबड्डी'क बीच-बीचमे नाम सुनाइ दैत छल। पहिने एक—'सरयू।' फेर दोसर—'नगीना।' फेर—'उज्ज्वल।' फेर—'हुलासी।' फेर किछु एहन नाम जे केओ लिखि नहि सकल, कारण ओ नाम केवल पानिमे बनि कऽ टूटि जाइत छल। अनन्या अपन कान दूनू

हाथसँ ढाँपलक, फेर हाथ हटेलक। ओ डरि नहि रहल छल; ओ ध्यान सँ सुनि रहल छल, जेना पाठशालामे हाजिरी लागैत हो।

सत्यव्रत मेहता ओहि राति गढ़ नारिकेल नहि आबि सकलाह, मुदा हुनकर संदेश आयल। कागच पर नहि, मोबाइलपर नहि, अदालतक मोहर सहित नहि। हुनकर पुरान मित्र द्वारा मुँहजुबानी—‘नाम सुरक्षित राखू। अगिला तारीख पर प्रक्रिया सत्यकेँ रोकए चाहत।’ बटुकनाथ हरिहरनक लोक सभ सेहो गाम लग देखल गेल—दूटा मोटरसाइकिल, एकटा सफेद गाड़ी, आ गामक चौक पर अजनबी पान चिबबैत। मुदा ओ सभ चन्ना गाछीक भीतर पएर नहि रखलक। गाममे कहावत छल—जे झूठ लऽ कऽ चन्ना गाछीमे पैसैत अछि, ओकर जिब्हा पर करिया चींटी चढ़ि जाइत अछि।

आधी राति आरुणि एकटा आवाजसँ जागल। दुआरक नारिकेल गाछपर किछु खसबाक ध्वनि भेल। ओ बाहर एल। चान आधा छल, मुदा गाछक छाह पूरा। जड़ि लग माटि कने फूटल छल। ओहि फूटल माटिसँ पानि नहि, हलुक नीला प्रकाश निकलैत छल। गोप, सौम्या, ईरा, निशांत, मीरा, देविका—सभ जगा देल गेल। बा पहिनहिये जागल छली। ओ कहलथिन्ह—‘गाछ नाम पढ़ि रहल अछि।’

प्रकाश किछु देर धरि रहल। तकरा भीतर अक्षर सभ बनैत-टूटैत रहल। ककरो कैमरा उठेबाक साहस नहि भेल। निशांत मोबाइल निकालब चाहलक, मुदा ओकर हाथ जमि गेल। ईरा धीरेसँ अपन हार्वर्डक पुस्तिका बाहर निकाललथि, जकर मुखपृष्ठ पर एडवर्ड ब्रूमक मुस्कुराइत चेहरा छल। ओ पुस्तिका ओहि प्रकाश लग राखि देलथि। मुखपृष्ठक चेहरा धीरे-धीरे धुँधला पड़ि गेल, आ ओहि स्थान पर एकटा मजदूरक हथेली उभरि आयल—सीमेण्टसँ फाटल, नहमे गिट्टी धँसल।

आरुणि बुझि गेल जे घर घुरब केवल लोकक घुरब नहि — ई एकटा गहींर, धीमा, मुदा अटूट प्रक्रिया छल, जकर अन्त एखन बहुत दूर छल। कागच घर घुरल अछि। नाम घर घुरल अछि। जे मृतक सभ नदीमे, स्क्रीनमे, दवा-दुकानमे, अदालतक तारीखमे, आ विदेशी सभागारक भाषणमे हराइत गेल छल, ओ सभ अपन-अपन दरबाजा ताकैत अछि। गढ़ नारिकेल ओहि राति गाम नहि रहल; ओ एकटा विशाल कान बनि गेल, जे धरतीक नीचाँसँ आबैत प्रत्येक आवाज सुनैत छल।

भोरमे नारिकेल गाछक पात पर ओस नहि, सूक्ष्म अक्षर छल। केओ पढ़ि नहि सकैत छल, मुदा सभ जनैत छल जे ओ नाम अछि। बा एकटा पात तोड़बाक मनाही केलथिन्ह। ‘नाम पातपर

लिखल अछि तँ पातक उमेर धरि नहि, गाछक उमेर धरि जीवित रहत। ’ अनन्या पूछलक—‘गाछ मरि गेल तँ? ’ बा कहलथिन्ह—‘तखन बीज रहत। ’ गोप कुमार ओहि वाक्यकेँ सुनि चुप भेल।

दूर, जिला-शहरक अतिथि-गृहमे बटुकनाथ हरिहरन निन्नमे तड़पैत छल। ओकर सपनामे अदालतक फर्श नहि, चन्ना गाछी छल। ओ कबड्डी खेलबाक प्रयास करैत, मुदा ‘कबड्डी’ बाजए लगैत तँ ओकर मुँहसँ निकलैत—‘तारीख।’ भूत सभ हँसैत। चन्द्रपाल बत्रा अपन फोन देखैत रहल। सिग्नल पर नव संदेश आयल—‘नाम हटाओ।’ ओ उत्तर लिखए लगल—‘कागच पर?’ उधर सँ उत्तर आयल—‘जतय भी हो।’ चन्द्रपाल खिड़कीसँ बाहर देखलक। अन्हारमे एकटा नारिकेल पात हिलि रहल छल। ओहि पातपर ओकर अपन नाम चमकि रहल छल।

भोरक पहिल चिरैया बोलल तखन गढ़ नारिकेलमे केओ ओकरा सामान्य चिरैया नहि बुझलक। ओ आवाज जेना घोषणा छल। अदालतक अगिला तारीख आब केवल तारीख नहि रहल। आब ओ दिन छल जतय गामक पात, मृतकक नाम, जीवितक गवाही, आ सत्यव्रत मेहताक काँपैत मुदा सोझ हाथ एकहि रेखामे आबयबला छल। आरुणि दुआर पर ठाढ़ भऽ कऽ देखलक—कमला-बलानक दिशा सँ हलुक कुहासा उठि रहल अछि। कुहासाक भीतर कतेको आकृति चलैत छल। ओ सभ गाम दिस आबि रहल छल। ओकरा बुझा गेल—घर घुरब एखन पूरा नहि भेल अछि; असली घुरान तखन होएत, जखन जे सभ कागचमे अनुपस्थित छल, ओ सभ न्यायालयमे उपस्थित कहल जाएत।

लोकगीत: नाम घर घुरि आयल

लोकधुन: घरघुरनी लोकधुन

आउ हे बौआ, देहरी पर दीप जागल हे,
गाछ मरत तँ बीज रहत—बा केर बोल लागल हे।

कुहासामे पएर सुनाइ, के आबै हमर द्वार?
कागचमे अनुपस्थित बौआ, घर घुरै एहि बार।
गमछा, गिट्टी, गंगारेत गन्ध उठल बाट,
देहरी जागल, माटि बजल, हिलल पुरनका पात।
गाछ मरत तँ बीज रहत, बा कहली धीरे,

नाम मरत नहि बेटा, बसि रहत शरीरें।

दूर अदालत काँपै, धूर्त निन्नमे हार,
पातपर ओकरो नाम लिखल, खुलि गेल दरबार।
आउ बौआ, देहरीपर दीप अखनो जागल,
घर घुरबाक रस्तामे मायक नोर पसरल।

कुहासा मे पएरक आहट, के आबए हमर द्वार?
कागच मे 'अनुपस्थित', घर मे घुरैत बहार।
पात पर नाम लिखिते खुजल बन्द कपाट।

❖

अध्याय १५

नामक जल

जे नाम पानिपर टिकि गेल, तकरा कोनो मुहर मेटा नहि सकल।

अध्यायारम्भ लोकगीत: नामक जल अमृत

लोकधुन: नाविक-पराती

भरू हे अँजुरी, नामक जल भरू हे,
बून्द-बून्द अमृत सभ कण्ठ-कण्ठ धरू हे।

पानिपर लिखल नाम लहरि संग दूर जाए,
मेटै नहि, बून्द-बून्द नब कंठमे समाए।
गोहि देह चिबा सकै, नामक रस नहि,
नदी अपन गहींर स्मृतिमे राखै सभ सही।

नामक जल अमृत बनि घर-घर पियास बुझाबै,
इतिहासक सूखल पन्ना हरियर रंग लगाबै।
हथेलीमे बून्द धरू, उच्चारू सम्मान,
नामक जलसँ जीवित रहत जनक पहिचान।

लहरि पर लिखल आखर लहरि संग बहए,
मेटाए नहि, गहींर जा नदीक मोन रहए।
गोहि देह लऽ जाए, नामक रस नहि पाबए,
परातीक पहिल सुरमे पहिचान जगि आबए।

❖

“जे नाम पानिपर टिकि गेल, तकरा कोनो मोहर मेटा नहि सकल।”

“जे नाम पानि पर टिकि जाइत अछि, ओकरा माटि सेहो विसरैत नहि।”

अगिला तारीखक भोरमे दिल्लीक आकाश एहन नील छल जेना राति अपन अपराध धोबाक असफल प्रयास केने हो। न्यायालयक पुरान देबाल सभ पर धूप पहिने नहि, धुँआ उतरि रहल छल। कियो कहत—शहरक धूलि। कियो कहत—जूनक उमस। मुदा सत्यव्रत मेहता जखन गाड़ीसँ उतरि कक्ष दिस बढ़लाह, हुनका बुझाइत छल जे ई धुँआ गढ़ नारिकेलक चूल्हाक नहि, जलसमाधि-प्राप्त देह सभक भीतरसँ उठल अछि।

ओहि दिन ओ सरकारी काला बस्ता नहि अनने छलाह। हुनका हाथमे एकटा पुरान कपड़क थैला छल, जकरा पर कोनो चिन्ह नहि। ओ थैला हुनका राति गढ़ नारिकेलसँ पहुँचल छल। थैला खोललापर कागच नहि, एकटा सूखल नारिकेल-पात निकलल। पातपर सूक्ष्म अक्षर छल—ओहि सभ नामक, जे सरकारी सूचीमे नहि छल, अदालतक फाइलमे नहि छल, मुदा गामक माटिमे राति भरि चमकल छल।

सत्यव्रत ओ पातकेँ कोनो प्रमाण-वस्तु जेकाँ नहि, अपितु प्रसाद जेकाँ हाथमे लेलन्हि —दुनू हाथसँ, जेना कोनो पूजाक थारी उठौने होथि। हुनकर सहायक डरि कऽ कहलन्हि—‘सर, ई अदालतमे कोना दाखिल होएत?’ मेहता उत्तर देलन्हि—‘जे दाखिल नहि होइत, वैह सभसँ जरूरी होइत अछि। कागच प्रतिलिपि अछि। मूल तँ ओहि लोकक जीवन छल।’

उधर गढ़ नारिकेलमे भोर सँ चन्ना गाछीक कबड्डी बन्द छल। भूत सभ मैदानक दू किनार पर बैसल छल। बूढ़बा भूत पहिल बेर डारिसँ उतरि जमीनक एक अँगुर ऊपर ठाढ़ भेलाह। हुलासी पनिडुब्बीक झोँटासँ जलक ओस निचोरि रहल छली। राकश सभ इजोत कम कऽ देने छल, जेना अदालतक कक्षमे अधिक प्रकाश भेजबाक तैयारी हो। लोथ, जे सदैव दर्शक रहैत छल, ओहि दिन रेखा पर ठाढ़ छल। ओकरा खेलब छल।

बा दुआरपर आसन पसरि बैसल छली। अनन्या हुनकर कोरामे। गोप कुमार, सौम्या रामनाथन, ईरा, निशांत, देविका, मुन्ना, मृणालिनी—सभ दिल्ली नहि जा सकल। किछु अदालतमे छल, किछु गाममे। ईशान दत्त दुनू ठाम छल। जे लोक सरकारी कागच पर मरि चुकल हो, ओकरा एकठाम रहबाक बाध्यता नहि रहैत।

कक्ष नम्बर पाँच भरि गेल छल। पत्रकार, वकील, पीड़ित परिवार, सरकारक अधिकारी, चन्द्रपाल बत्राक लोक, बटुकनाथ हरिहरनक शिष्य, आ किछु एहन चेहरा जे सदैव भीड़मे रहैत अछि मुदा कखनो नाम नहि छोड़ैत—सभ। बाहर बरामदामे लोग कहि रहल छल जे आइ आदेश होएत। भीतर जे बैसल छल से जनैत छल—आइ आदेश नहि, नामक भाग्य होएत।

बटुकनाथ हरिहरन आइ विशेष सजल छल। ओकर काला कोट नव प्रेस कएल, दाढ़ी पर तेल, हाथमे भारी फाइल। ओ अपन जूनियर सभकेँ कहलक—‘आइ भावनाकेँ प्रक्रियामे बदलि देबाक अछि।’ ओकरा विश्वास छल जे प्रक्रिया एकटा एहन दलदल अछि जाहिमे सत्यक पएर पहिल कदममे नहि तँ दोसरमे अवश्य धँसत।

चन्द्रपाल बत्रा कुर्सी पर बैसल-बैसल फोनक पर्दा देखैत छल। राघव सिग्नलक संदेश राति भरि आयल छल—‘नाम हटाओ।’ ‘पीड़ितक निजता उठाओ।’ ‘म्यूल अकाउण्टक दोष गरीब

पर डालो।’ ‘हरिहरन संभाल लेगा।’ मुदा भोरक बाद सँ सिग्नल मौन छल। हांगकांगक लाउ किन-हंगक संकेत बन्द। बत्राकेँ पहिल बेर बुझाइत छल जे अपराधक जालमे सबसे डरावन मौन होइत अछि।

न्यायपीठ बैसल। सभ ठाढ़ भेल। ओहि क्षण गढ़ नारिकेलमे पीपरक पात सभ एक साथ हिलल। हवा नहि छल। पातक हिलनाइ अदालतक हथौड़ा जेकाँ सुनाइ देलक—धीमा, मुदा अन्तिम।

न्यायाधीश फाइल देखैत कहलन्हि—‘पिछला आदेशक अनुपालन?’ राज्यक अधिकारी उठल, मुदा सत्यव्रत मेहता ओकरा हाथक इशारा सँ रोकि देलन्हि। मेहता स्वयं ठाढ़ भेलाह। ‘महोदय, राज्य अभिलेख प्रस्तुत करैत अछि, मुदा एहि निवेदनक संग जे अभिलेखमे जे अनुपस्थित छल, तकरा अनुपस्थित रहय देनाइ न्यायालयक अपमान होएत।’

हरिहरन उठि गेल। ‘महोदय, राज्य फेर भावनात्मक भाषा इस्तेमाल कऽ रहल अछि। ई मामला जटिल अनुबन्ध, विदेशी निवेश, सरकारी नीति, महामारी-कालीन कीन, आ राष्ट्रीय सुरक्षा सँ जुड़ल अछि। नाम-पाठ, लोककथा, गामक पात—ई सभ न्यायिक विधिमे स्थान नहि रखैत।’

मेहता बिनु ओकरा देखल बाजलाह—‘ई मामला जीवन सँ जुड़ल अछि। अनुबन्ध जीवनक बाद आबैत अछि। निवेश जीवनक बाद। नीति जीवनक बाद। राष्ट्रीय सुरक्षा सेहो नागरिकक जीवनक बाद नहि, जीवनक कारणे होइत अछि।’

कक्षमे एकटा सूक्ष्म फुसफुसाहट भेल। न्यायाधीश मेहता दिस तकलन्हि। ‘अहाँ की प्रस्तुत करय चाहैत छी?’

मेहता थैला खोललन्हि। नारिकेल-पात बाहर आयल। हरिहरन ठठा कऽ हँसल—‘महोदय, अब पात भी साक्ष्य होगा?’

सत्यव्रत मेहता पातकेँ मेज पर नहि राखलन्हि। ओ ओकरा माथ लग एक क्षण रोकेलन्हि, फेर कहलन्हि—‘महोदय, ई साक्ष्य नहि, स्मृति अछि। साक्ष्यक प्रतिलिपि एहि संग अछि। ई पात बतबैत अछि जे कागच जखन झूठ बोलैत अछि, गाम पात पर सत्य लिखैत अछि।’

न्यायाधीश पात नहि लेलन्हि, मुदा हुनकर आँखि पात पर टिकि गेल। अक्षर दिखाई देब असम्भव छल, मुदा ओहि पातमे एकटा अनुशासन छल—जेकाँ कतेको छोट-छोट पंक्ति एक दोसराक पाछाँ ठाढ़ हो। न्यायालयक मुंशी बादमे कहत जे ओहि दिन ओकरा पातपर सचमुच नाम देखाइ देने छल; मुदा ओ बयान कहियो रेकॉर्डमे नहि गेल।

मेहता पहिल सूची पढ़लन्हि—तीस नाम, जे पहिनहिसँ सरकारी छल। फेर दोसर सूची—जे 'अनुपस्थित' छल। फेर तेसर—जकर मृत्यु 'कार्यस्थल बाह्य' लिखल गेल। फेर चारिम—जिनकर परिवारक हस्ताक्षर जाली। पाँचम—जकर मुआवजा उठि गेल, मुदा परिवारकेँ किछु नहि भेटल। छठ—जिनकर नाम बदलि देल गेल। सातम—जिनका कागचमे कखनो जन्मे नहि देल गेल।

प्रत्येक नामक बाद कक्षमे हवा भारी होइत गेल। हरिहरनक चेहरा कठोर रहल, मुदा ओकर आँखिक कोनमे बेचैनी छल। चन्द्रपाल बत्रा फोन बन्द कऽ देलक; मुदा बन्द फोन सेहो हथेलीमे गरम होइत रहल।

नाम-पाठक बीच अचानक न्यायालयक पंखा रुकि गेल। बिजली गेल नहि। केवल पंखा। सन्नाटामे दूरसँ किछु सुनाइ देलक—कबड्डी... कबड्डी...। न्यायाधीश माथ उठौलन्हि। पत्रकार सभ एक-दोसराक मुँह देखलक। हरिहरन बाजल—'महोदय, ई व्यवधान अछि।'

मेहता धीरे कहलन्हि—'नहि, ई उपस्थिति अछि।'

गढ़ नारिकेलमे ठीक ओहि समय खेल शुरू भऽ गेल। एहि बेर नियम बदलल छल। खिलाड़ी साँस रोके 'कबड्डी' नहि बाजैत; प्रत्येक खिलाड़ी अपन संग एकटा भूला देल नाम लऽ कऽ दोसर पार जाइत। जँ ओ नाम बिनु टूटने वापस आबि जाइत, ओ आत्मा हलुक भऽ जाइत। सरयू पहिल पार गेल। नगीना ओकर पाछाँ। उज्ज्वल, जे स्क्रीनक भीतर मरल छल, मैदानक किनार पर हिचकैत ठाढ़ छल। लोथ ओकर हाथ पकड़ि कहल—'नदी नहि चाही। मृत्यु पर्याप्त अछि।' उज्ज्वल खेलमे उतरि गेल।

अदालतमे अब डिजिटल ठगीक सूची खुलल। गोप कुमारक तैयार कएल सारमे देखाओल गेल जे महामारी-कालीन दवा कीनक भुगतान, ऑनलाइन खेल-ऐपक म्यूल अकाउण्ट, डिजिटल अरेस्टक कॉल-केन्द्र, आ विदेशी परामर्श-शुल्क एक-दोसराक भीतर पथ बनबैत चलल अछि। मेहता एक-एक करि पढ़ैत गेलाह—उज्ज्वल झा, रोहित मंडल, शशांक, फरहान, देवाशीष, अज्ञात छात्र, अज्ञात चालक—कतेको नाम जकरा 'आत्महत्या' लिखि कऽ फाइल बन्द कएल गेल।

देविका साह कक्षमे नहि छल; ओ गढ़ नारिकेलमे बा लग बैसल छली। मुदा जखन उज्ज्वलक नाम अदालतमे पढ़ल गेल, ओकर आँचलमे राखल फोटो काँपि उठल। ओ सोचलक—दिल्ली दूर अछि; मुदा नाम दूरी नहि मानैत। बा ओकर हाथ पर हाथ रखलथिन्ह। 'आब ओ अकेले नहि मरल।'

मृणालिनीक गवाही अगिला खण्ड छल — ओ खण्ड, जकर प्रतीक्षामे ओ बहुत बरख सँ अपन साहस सम्हारने छली। हरिहरन तुरन्त उठल—'महोदय, निजी जीवनक विवरण सार्वजनिक करब पीड़ितक गरिमाक विरुद्ध अछि।' ओकर स्वर मधुर छल, जेना ओ सचमुच गरिमा बचा रहल हो। मुदा मृणालिनी ठाढ़ भेलि। ओ दिल्लीमे छल। ओकर चेहरा शांत। ओ कहलथि—'गरिमा हमर जीवनमे अछि, हुनकर धमकीमे नहि। जे अंश निजी अछि, ओ सीलबन्द रहू। जे अंश ब्लैकमेल, वसूली, आ साक्षी-दमनक प्रमाण अछि, ओ खुलू।'

न्यायालयक भीतर पहिल बेर एहन वाक्य सुनाइ देलक। कतेको चेहरा असहज भेल। समाजक पाखंड सभसँ पहिने गर्दन घुमबैत अछि। सत्यव्रत मेहता माथ झुकौलन्हि—स्वीकृतिमे, दयामे नहि। न्यायाधीश आदेश लिखलन्हि—पीड़ितक निजता संरक्षित; धमकी आ वसूलीक अंश अभिलेख पर। हरिहरनक चेहरा पर पहिल दरार साफ देखाइ देल।

सौम्या रामनाथन नोट करैत छली। ओ प्रत्येक पंक्तिमे एहि बातक ध्यान रखैत छली जे सत्यक नाम पर स्त्रीक पुनः निर्वसन नहि हो। ओकरा बुझाइत छल—क्रान्ति सेहो कखनो-कखनो पितृसत्ता जेकाँ निर्दयी भऽ जाइत अछि। ओ गोपकेँ देखलक। गोपक आँखि सूची पर छल, लोकक देह पर नहि। सौम्या पहिल बेर ओकरा पूर्ण भरोसा देलथि।

तकर बाद विदेशक धन-राह आयल। निशांतक हलफनामा, ईराक हार्वर्डक अभिलेख, एडवर्ड ब्रूमक फाउण्डेशनक अनुदान, पुल-परियोजना कंपनीक पुरान उत्तराधिकारी, दवा-वैक्सीन कीनक परामर्श-शुल्क, हथियारक दलालीक परत, आ हांगकांगक लाउ किन-हंग धरि जाएबला खाताक नक्शा। हरिहरन एक-एक पर आपत्ति कयलक। 'अप्रासंगिक।' 'अप्रमाणित।' 'विदेशी अधिकार-क्षेत्र।' 'अर्थहीन संयोग।'

मेहता अन्तिम आपत्तिपर मुस्कुराएलाह। 'संयोग जँ बार-बार एकहि खाता पर भेटए, तँ ओकर नाम लेखा-परीक्षणमे संयोग नहि, पद्धति होइत अछि।'

ओहि क्षण हार्वर्डक सभागारमे एडवर्ड ब्रूम मंच पर छल। ईरा आरुणि ओतय ठाढ़ भऽ गेलीह। ब्रूम बाजि रहल छल—'मानवीय गरिमा वैश्विक उद्यमक आत्मा अछि।' ईरा हुनका बीचमे रोकि पूछलथि—'मानवीय गरिमामे गंगा-पुलक ओ मजदूर सभक नाम अछि, जकरा अहाँक समूहक पुरान कम्पनी अनुपस्थित लिखलक?' सभागारमे मौन। कैमरा सभ मुड़ल। ब्रूम पहिने हँसल—'यंग लेडी, इन्फ्रास्ट्रक्चर हिस्ट्री इज कॉम्प्लेक्स।' ईरा मैथिलीमे कहलथि—'जकर देह गोहि खा गेल, ओकर इतिहास अहाँक भाषा सँ बेसी सरल अछि।'

किियो नहि बुझल, मुदा सभ सुनि गेल। कखनो-कखनो अनुवादक आवश्यकता नहि रहैत; आरोपक देह भाषा बदलि लैत अछि। प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स मंचक कातमे ठाढ़ छली। हुनका पहिल बेर अपन संस्थाक देबाल पर टँगल दानदाता-सूची शव-सूची जेकाँ लागल।

दिल्ली अदालतमे ओहि समय स्क्रीन पर हार्वर्डक सीधा प्रसारणक कतरन पहुँचल। ईराक प्रश्न विदेशी सभागारमे गूँजि रहल छल आ मेहता भारतीय अदालतमे वैह वित्तीय नक्शा पढ़ि रहल छल। दू महादेश, एक आवाज। न्यायालयक कक्षमे कियो कहलक—‘ई संयोग अछि।’ गोप धीरे उत्तर देलक—‘नहि। ई नामक यात्रा अछि।’

हांगकांगमे लाउ किन-हंग अपन काँचक कक्षमे बैसल छल। ओकर सामने पाँच स्क्रीन। एक पर दिल्ली, एक पर हार्वर्ड, एक पर खाताक नक्शा, एक पर भारतीय समाचार, एक पर कारी अन्हार। ओ सहायक पर चिचिआइल—‘बिन्दु बन्द कर!’ सहायक नक्शा बन्द करैत रहल, मुदा गढ़ नारिकेलक हरियर बिन्दु कारी पर्दा पर सेहो चमकैत रहल। लाउ किन-हंग पहिल बेर अपन हथेली सूँघलक। ओकरा गंगा-रेतक गन्ध आयल।

चन्द्रपाल बत्रा अदालतक विश्रामक समय बाहर भागल। ओ सिग्नल खोललक। राघव सोमानीक अन्तिम संदेश आयल—‘सभ खत्म. अपना बचाओ.’ बत्राक चेहरा फक भेल। जे लोक हजारों युवककेँ झूठा डिजिटल गिरफ्तारीक धमकी दैत छल, ओ स्वयं अदृश्य गिरफ्तारीमे पड़ि गेल। ओकर फोनक परदा पर उज्ज्वलक चेहरा उभरल। बत्रा फोन फेंकए चाहलक, मुदा फोन हथेलीसँ चिपकि गेल।

हरिहरन ओकरा पकड़ि अलग कोनमे लऽ गेल। ‘घबराएब नहि। प्रक्रिया एखन बाकी अछि।’ बत्रा फुसफुसायल—‘सिग्नल बन्द।’ हरिहरनक आँखि एक क्षण लेल डोलल। प्रक्रिया ओहि समय धरि बलवान होइत अछि जखन धरि सिग्नल चालू हो।

विरामक बाद मेहता अन्तिम निवेदन रखलन्हि। ‘महोदय, राज्य एहि न्यायालयसँ प्रार्थना करैत अछि—एक, मृतक आ अनुपस्थित मजदूर सभक पुनः सत्यापन; दू, डिजिटल ठगी आ म्यूल अकाउण्टक पीड़ित संरक्षण; तीन, पीड़ितक निजता-सुरक्षा; चार, विदेशी वित्तीय प्रवाहक स्वतंत्र जाँच; पाँच, बार-पदाधिकारीक भूमिका पर पृथक अभिलेख; छह, अभिलेख नष्ट करबाक प्रयास पर आपराधिक कार्यवाही; सात, एहि मामलाकेँ दीर्घ तारीखक दलदलमे नहि छोड़ल जाए।’

हरिहरन ठाढ़ भेल। ओकर आवाज आब तीखी छल। ‘महोदय, ई सॉलिसिटर जनरल नहि, याचिकाकर्ताक वकील बनि गेल छथि।’

मेहता पहिल बेर सीधे ओकरा देखलन्हि। ‘जखन राज्यक नागरिक मरैत अछि, तखन राज्यक वकील नागरिकक विरुद्ध नहि होइत। जँ हम सत्यक पक्षमे छी, तँ आइ राज्य पहिल बेर अपन सही पक्षमे अछि।’

ई वाक्य अदालतक कक्षसँ बाहर निकलि बरामदा, बरामदासँ सीढ़ी, सीढ़ीसँ सड़क, सड़कसँ गढ़ नारिकेल, गढ़ नारिकेलसँ चन्ना गाछी, चन्ना गाछीसँ गंगाक पानि, आ गंगासँ ओहि गोहि सभक आँखि धरि पहुँचल जे कतेको बरखसँ मौन छल।

न्यायपीठ आदेश लिखब शुरू कयलक। शब्द धीरे-धीरे बनैत गेल, जेना बहुत काल सँ रोकल कोनो नदी अपन नव धार खोजि रहल होइक। विशेष अन्वेषण। स्वतंत्र लेखा-परीक्षा। पीड़ित संरक्षण। निजता-संरक्षित गवाही। बार-काउन्सिल अध्यक्षक आचरण पर नोटिस। चन्द्रपाल बत्रा आ सम्बद्ध खाताक लेन-देन स्थगित। विदेशी संस्थासँ अभिलेख माँगबाक अनुमति। अदालतक निगरानी। पन्द्रह दिनक नहि, सात दिनक अगिला सुनवाई।

‘सात दिन’ सुनिते कक्षमे कतेको लोक मुस्कुराएल। तारीखक गोहि पहिल बेर छोट भेल। पूर्ण न्याय नहि, मुदा देरीक पेट चिरल।

आदेश पढ़ल गेल। हरिहरन बैसल नहि; ओ धँसल। चन्द्रपाल बत्रा कुर्सी पकड़ि रहल। ओकर फोन अन्ततः बन्द भेल, मुदा बन्द होइत-होइत एक वाक्य चमकल—‘नाम मिटाओ मत, अपना बचाओ।’ बत्रा बुझल नहि ई राघवक संदेश छल, लाउ किन-हंगक, आकि उज्ज्वलक।

गोप कुमार बाहर निकलल तखन पत्रकार सभ घेरि लेलक। ओ किछु नहि बाजल। सौम्या कहलथि—‘आइ आदेश आयल अछि, फैसला नहि। मृतकक नाम खबर नहि, दायित्व अछि।’ मृणालिनी केवल एतबा कहलथि—‘निजता अपराध नहि; ब्लैकमेल अपराध अछि।’ देविका, जे दूर गाममे छल, ओकर फोनपर ई वाक्य सुनि माथ उठा लेलथि।

संध्याकाल गढ़ नारिकेलमे नारिकेल गाछक जड़ि लग सभ जमा भेल। बा कहलथिन्ह—‘आदेश आयल।’ अनन्या पूछलक—‘फैसला?’ बा कहलथिन्ह—‘फैसला लोक करैत अछि, न्याय धरती धीरे-धीरे।’

चन्ना गाछीमे खेल चरम पर छल। भूत, प्रेत, राकश, लोथ, पनिडुब्बी, डाइन, ब्रह्मा—सभ मैदानमे। सीमा-रेखा पर गंगा-पुलक मजदूर सभ। उज्ज्वल स्क्रीनक उजास लऽ कऽ खेलैत। हुलासी अपन बाँहि-विहीन देहसँ नाम रोकि नहि पबैत, मुदा ओकर आवाज सभसँ तेज। बूढ़बा भूत घोषणा कयलन्हि—‘आइ सँ जे नाम भूलल जायत, ओ खेलमे पुकारल जायत।’

एकाएक मैदानक बीच पानि भरए लगल। केओ नहि डूबल। पानि घुटना धरि आयल, फेर अक्षर बनि गेल। पानिमे लिखल नाम सभ मिटैत नहि छल। गोहि सभ पानिक किनार पर आबि ठाढ़ भेल। पहिने ओ सभ देहक गन्ध पर झपटैत छल। एहि बेर ओ नामक उजास देखैत रहल। बूढ़बा भूत एक गोहि सँ पूछलथिन्ह—'खाएब?' गोहि आँखि झुका लेलक। नामक स्वाद गोहिक दाँतसँ बाहर छल।

ओहि क्षण दुआरक नारिकेल गाछसँ एकटा फल खसल। ध्वनि साधारण नहि; जेना अदालतक मोहर माटि पर लागल हो। फल फूटल नहि। बा ओकरा उठेलथि। सभ प्रतीक्षा करैत रहल। बा कहलथिन्ह—'फलकेँ जोर सँ नहि, प्रेम सँ खोलैत छी।' ओ धीरे-धीरे ओकर आँखि पर चोट केलथिन्ह। भीतर सँ पानि नहि बहल। एकटा भीजल पन्ना निकलल।

पन्ना पर पहिल शब्द छल—सरयू। फेर नगीना। फेर कतेको नाम। फेर उज्ज्वल। फेर मृणालिनीक धमकीक फाइल नहि, ओकर अपन नाम—ओहि रूपमे जाहि रूपमे ओ स्वयं अपने केँ स्वीकारैत छली। फेर मुन्ना पासवान, अपराधी नहि, उपयोग कएल गेल खाता। फेर ईशान दत्त—मृत नहि, साक्षी। फेर नन्द आरुणि। अन्तिम पंक्ति खाली छल।

अनन्या पूछलक—'ई खाली किए?' बा पन्ना ओकरा देलथिन्ह। 'जे आगाँ मरि कऽ गायब कएल जायत, ओकर नाम एतय आएत। उपन्यास समाप्त भऽ सकैत अछि, मुदा सूची नहि।'

आरुणि एहि वाक्य सुनि काँपि गेल — जेना बा एकहि साँसमे उपन्यास आ जीवन दुनूक भेद मेटा देने होथिन्ह। ओकरा बुझाइत छल जे कथा लिखब आ कथा समाप्त करब अलग बात अछि। इतिहास समाप्त नहि होइत; लेखक केवल एक क्षण पर दीप राखि दैत अछि।

राति गहिरी भेल। गोप कुमार पीपर लग गेल। ईशान दत्त ओतहि ठाढ़ छल। ओकर छाह एखनहु नहि छल, मुदा ओकर पएरक कात हलुक अन्हार जमा भऽ रहल छल। गोप पूछलक —'तोहर छाह घुरि रहल छौ?' ईशान मुस्कुरायल—'नाम पढ़ल गेलाक बाद मरल लोककेँ छाह भेटय लागैत अछि। पूर्ण नहि। मुदा आरम्भ।'

'आब तोरा मुक्ति चाही?' गोप पूछलक। ईशान उत्तर देलक—'मुक्ति? नहि। एखन कतेको फाइल बचल अछि। मुदा आब हम अकेला नहि।'

सत्यव्रत मेहता दिल्लीक अपने कमरामे देर राति बैसल छलाह। सरकारी फोन बाजैत रहल; ओ नहि उठेलन्हि। मेज पर नारिकेल-पातक प्रतिलिपि, आदेशक प्रति, आ अपन त्यागपत्रक अधलिखल मसौदा। ओ त्यागपत्र पूरा नहि केलन्हि। किएक तँ हुनका बुझाइत छल—भागि जाएब सुलभ अछि; भीतर रहि सत्यक लेल लड़ब कठिन। ओ मसौदा मोड़ि कऽ रखि

देलन्हि। खिड़की बाहर देखलन्हि। दिल्लीक रातिमे एक क्षीण पात हिलैत छल। कोनो नारिकेल गाछ नहि, मुदा पात हिलैत छल।

बटुकनाथ हरिहरनक घर पर ओहि राति चुप्पी छल। ओकर पुस्तकालयमे विधिशास्त्रक मोट किताब सभ कतारमे छल। ओ एकटा किताब खोललक—नैतिकता पर भाषण। पन्ना खाली। दोसर खोललक—बारक मर्यादा। पन्ना भीजल। तेसर खोललक—प्रक्रिया। पन्नाक बीचसँ एकटा करिया चींटी निकलल। फेर दोसर। फेर असंख्य। ओ चिचिआइल, मुदा घरक कोनो सेवक जागल नहि। प्रक्रिया पहिल बेर ओकर मुँहमे घुसि रहल छल।

चन्द्रपाल बत्रा भागए निकलल। स्टेशन, हवाई अड्डा, सीमा, सभ जगह ओकरा अपन नाम पहिने पहुँचि चुकल भेटल। टिकट-खिड़की पर लिपिक पूछलक—‘चन्द्रपाल बत्रा?’ होटलमे रिसेप्शन पूछलक—‘चन्द्रपाल बत्रा?’ बैंकमे कम्प्यूटर चमकल—‘चन्द्रपाल बत्रा।’ ओ जीवन भर दोसराक नाम मेटौने छल; आब अपन नामसँ बचि नहि पबैत छल।

लाउ किन-हंग हांगकांगक टॉवर सँ समुद्र देखैत रहल। समुद्रक पानि काँचमे गंगा जेकाँ देखाइ देलक। ओकर सहायक कहलक—‘भारतक मामला सँ कम्पनीक नाम हटाओल जा सकैत अछि।’ लाउ उत्तर देलक—‘नाम हटाओ।’ सहायक स्क्रीन पर टाइप करैत रहल। मुदा जतय नाम हटैत, ओतय छोट नारिकेल-पातक चिन्ह उगि आबैत। लाउ किन-हंग पहिल बेर कम्प्यूटर बन्द करि देलक। अन्हारमे सेहो पात चमकैत रहल।

हार्वर्डमे प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स अपन व्याख्यान रद्द कयलथि। ओ छात्र सभकेँ लिखलथि—‘अगिला कक्षा मौन होएत। प्रत्येक छात्र एक एहन नाम आनत, जकरा कोनो संस्था अनुपस्थित कऽ देलक।’ ईरा ओ ईमेल पढ़ि मुस्कुरेलीह। ओ मैथिलीमे एक पंक्ति लिखि उत्तर देलीह—‘नाम पढ़ब सेहो नैतिकता अछि।’

भोरक समय गढ़ नारिकेलमे बारिश भेल। मौसम-विभागक अनुसार वर्षा सम्भावित नहि छल। मुदा गामक बूढ़ सभ कहलक—नाम पढ़ल जाए तँ पानि अपन हिसाब ठीक करए अबैत अछि। बारिशमे चन्ना गाछी धुलि गेल। कबड्डीक रेखा मिटि गेल, मुदा मैदान खाली नहि भेल। रेखा मनमे चलि गेल।

बा भीजल पन्ना तुलसी चौरा लग सुखेबा लेल नहि रखलथिन्ह। ओ पन्नाकेँ नारिकेलक खोलमे फेर राखि देलथिन्ह। खोलकेँ गाछक जड़ि लग गाड़ल गेल। अनन्या पूछलक—‘फल फेर उगत?’ बा कहलथिन्ह—‘फल नहि, गाछ। आ गाछ पर पात। आ पात पर नाम।’

आरुणि ओहि दिन पहिल बेर लेखनक नोटबुक खोललक। ओ लिखए चाहैत छल—‘एतयसँ कथा समाप्त।’ मुदा कलम रुकि गेल। ओ पंक्ति काटि देलक। फेर लिखलक—‘गाममे आइ चन्ना गाछीमे कबड्डी भेल।’ ओकरा बुझा गेल जे कथा जखन गामक मुँहमे चलि जाए, तखन लेखकक समाप्ति निरर्थक अछि।

अनन्या दुआर पर खेलैत-खेलैत अचानक रुकल। ओ दूर चन्ना गाछी दिस तकलक आ धीरे-धीरे आवाज देलक—‘कबड्डी... कबड्डी...’ बा मुस्कुरेलथिन्ह। बच्चा जखन भूतक खेल सीखि लैत अछि, तखन भूत बूढ़ नहि रहैत; ओ भविष्य बनि जाइत अछि।

नारिकेल गाछक सभसँ ऊपरी पात हिलल। ओहि हिलनाइमे नन्द आरुणिक हाथ छल, सरयूक टोकड़ी, उज्ज्वलक टूटल फोन, मृणालिनीक साहस, देविकाक आँचल, मुन्नाक झुकल आँखि, ईशानक घुरैत छाह, सत्यव्रत मेहताक काँपैत मुदा सोझ आवाज, सौम्याक नीली पेंसिल, गोपक मौन, ईराक प्रश्न—सभ।

गोहि सभ नदीमे घुरि गेल। ओ सभ भूखल छल, कारण नाम नहि खा सकल। नदी बहैत रहल। पुल ठाढ़ रहल, मुदा ओकर पाया राति-राति नाम गुनगुनाबए लगल। जे ट्रेन ओहि पुल परसँ गुजरैत, यात्री सभ कखनो-कखनो सोचैत—किएक पहिया एना धक-धक करैत अछि? कोनो उत्तर नहि। केवल पटरिक नीचाँसँ एकटा ध्वनि—नाम, नाम, नाम।

आ गढ़ नारिकेलमे, जखन राति बहुत गहिरी होइत, चन्ना गाछीमे खेल फेर शुरू होइत। भूत, प्रेत, राकश, लोथ, पनिडुब्बी, डाइन, ब्रह्म, जलसमाधि-प्राप्त मजदूर, स्क्रीनमे डूबल युवक, ब्लैकमेलसँ बचल स्त्री, गरीब म्यूल, आ कागच पर मुअल इन्फॉर्मर—सभ एक मैदानमे। खेलक नियम सरल छल—जे सत्य लऽ कऽ पार जाए, ओकरा केओ छू नहि सकैत।

तखन बूढ़बा भूत अन्तिम पुकार करैत—‘गोहि सभ देह खाइत अछि; मुदा नाम जखन पानि पर लिखाइ जाइत अछि, तखन पानि सेहो ओकरा मेटा नहि सकैत।’

आ नारिकेल गाछक पात राति भरि बजैत रहैत—कबड्डी... नाम... कबड्डी... नाम...।

लोकगीत: पानिपर लिखल नाम

लोकधुन: नाविक गीत

बजाउ हो पात, राति भरि पात बजाउ हो,
पानि पर लिखल नाम घर-घर पहुँचाउ हो।

पानिपर लिखल नाम, लहरि मेटा नहि पाबै,

माटि ओकर पगचिन्ह जनम-जनम सम्हारै।
गोहि भूखल घुरि गेल, देहक स्वाद लऽ,
नाम ओकर दाँतमे अटकल, नदी बजल हऽ।
पुलक पाया राति-राति धक-धक नाम गुनै,

रेल गुजरै, यात्री सुनै, केकर छाती धुनै?
भूत, स्त्री, बच्चा, मजदूर—सभ एकहि पारी,
सत्य लऽ सीमा पार, के छू सकत तोहारी?
कबड्डी... नाम... राति भरि पात बजाउ,
पानिपर लिखल नामकेँ घर-घर पहुँचाउ।

लहरि मेटा नहि सकल, माटि सम्हारि लेलक,
गोहिक दाँत मे अटकल नाम—नदी कहि देलक।
पुलक पाया राति भरि धक-धक नाम गुनए,
भूत-स्त्री-नेना-मजदूर एक्के पारी बुनए।

❖

अध्याय १६

चन्ना गाछीक अदालत

गाछ जकर नाम सुनि लेलक, तकरा कागजक कोनो पन्ना बिसरा नहि सकैत।

अध्यायारम्भ लोकगीत: गाछी अदालत आशा

लोकधुन: भगैत-मंगल

बैसू हे पंच, गाछक तर बैसू हे,
पातक पर विधान लिखू, साँच-साँच परसू हे।

गाछ तरे आसन बिछल, पात बनल विधान,
मोहर दूर, लोक लग—सुनवाई समान।
जीतक कागच नहि चलत, नामक साँच चलत,
हारल लोकक कर्मक दीप न्याय दिशा बलत।

केओ नेनाकेँ चेतना, केओ बहिनकेँ साथ,
गाछी अदालत निर्णयकेँ घर-घर देत बाट।
आशाक न्याय उठि चलत विद्यालय, बाजार,
पातक एक निर्णयसँ जागत जनक संसार।

ने मोहरक धाख चलए, ने कागचक जोर,
लोकक आँखिक सोझाँ होए सुनवाइक भोर।
नेना-बहिन-बूढ़ सभक स्वर बराबरि तौल,
गाछी-अदालतक डगर घर-घर धरि अनमोल।

❖

“गाछ जकर नाम सुनि लेलक, तकरा कागचक कोनो पन्ना बिसरा नहि सकैत।”

“जकर नाम गाछ सुनि लेलक, ओकरा कागच मेटा नहि सकैत।”

— गढ़ नारिकेलक कहबी

ओहि राति गढ़ नारिकेलमे कुकुर सभ नहि भुकल। बिलाड़ि सभ छप्परपर चढ़ि कऽ चुप बैसल रहल। जकरा घरमे मोबाइल छल, ओकर स्क्रीन आपसहि झिलमिल करैत रहल; जकरा घरमे पुरान लालटेन छल, ओकर बाती बिनु तेलक जरैत रहल। आ चन्ना गाछी दिस सँ एहन सन्नाटा उठल जेना कोनो पुरान नदी अपन बहब रोकि कऽ कान पाथि रहल हो।

दिनमे अदालतमे जे भेल छल, ओकर खबर गाम धरि रेडियोसँ नहि, अखबारसँ नहि, सरकारी बयानसँ नहि, अपितु पानि सँ पहुँचल। संझुका घड़ी जखन स्त्री सभ पोखरि सँ लोटा भरि घुरल, तखन लोटामे पानि नहि, नाम चमकि रहल छल। केओ पढ़ि सकल, केओ नहि; मुदा सभ बुझि गेल जे शहरक अदालतमे किछु फूटल अछि, आ ओकर तरल आवाज गढ़ नारिकेल धरि आबि गेल अछि।

बा देहरी पर बैसल छलीह। हुनकर आँखि कम देखैत छल, मुदा जे चीज लोकक आँखि नहि देखैत, से ओ सभसँ पहिने देखैत छलीह। ओ पानि भरल लोटा दिस देखलनि, फेर गाछी दिस। धीरे सँ बजलीह— 'आब मनुक्खक अदालत नहि, गाछक अदालत लगत।'

आरुणि उत्तर नहि देलक। गोप कुमारक हाथमे ओहि राति कोनो फाइल नहि छल। सौम्या अपन बस्ता बन्द कऽ देने छलीह। देविका फोन बन्द कऽ देलक। मीरा अपन आँखि परसँ चश्मा खोलि देलक, जेना देखबाक लेल आब काँचक आवश्यकता नहि रहि गेल हो। ईरा, जे विदेशमे कानून पढ़ने छल आ अदालतक भाषा केँ न्यायक भाषा बुझैत छल, पहिल बेर चुप्पे-चाप बा लग बैसि गेल। सत्यव्रत मेहता दूर शहरमे छलाह, मुदा हुनका निन्न नहि आबि रहल छल।

चन्ना गाछीमे ओ राति कबड्डी नहि चलि रहल छल। भूत सभ गोल बना कऽ बैसल छल। प्रेत सभ उज्जर झिलमिलाहटमे ठाढ़ छल। राकश सभ अपन बौन देह सँ इजोर करैत छल, मुदा आइ इजोर कड़ा नहि, पीड़ायल छल। लोथ, जे सदिखन दर्शक रहैत छल, पहिल बेर बीचमे राखल गेल — किएक तँ जकरा सभ सदिखन देखबाक दण्ड भेटल छल, ओकरा सभ आइ कहबाक अधिकार भेटबाक छल।

पीपरक गाछक ब्रह्मा चारि मुँहसँ चारि दिशाक हवा पीबि रहल छलाह। हुनकर कोनो आसन नहि छल। ओ न्यायाधीश नहि छलाह। चन्ना गाछीक अदालतमे न्यायाधीश कोनो एक देह नहि होइत। ओतय न्यायाधीश होइत अछि— जे बातकेँ सभसँ बेसी बेर दबाओल गेल हो, आ जकर दम घुटि-घुटि कऽ आवाज बनि गेल हो।

पनिडुब्बी पोखरि सँ निकलि गाछीक किनारपर बैसलि। ओकर लम्बा झोँटा पानिसँ भरल छल, आ ओ झोँटा धरतीपर पसरि कऽ एकटा कारी लिपि बनाबय लागल। डाइन सभ छौंकी छोड़ि बिनु सवारीक एलि। बूढ़बा भूत अपन बारह सय वर्ष पुरान डारिसँ उतरल। हुलासी, जकर हाथ नहि छल, आइ बिनु हाथक सेहो उपस्थितिक मुद्रा बना सकैत छलीह।

अदालतक पहिल पुकार हवा केलक। हवा उत्तर दिससँ आयल आ बजल— 'जिनकर नाम काटल गेल, ओ सभ उपस्थित होउ।'

पहिने गंगा-पुलक पाया दिस सँ छपाकक आवाज आयल। फेर छपाकक भीतरसँ पाँवक आवाज। माथपर टोकड़ी लेने जोन-मजदूर सभ आबय लागल। ककरो देह आधा छल, ककरो केवल माथक स्मृति, ककरो पिठारी पर सीमेण्टक धूर, ककरो आँखिमे ओहि क्षणक अचरज जे खसैत काल मनुक्खक भीतर फूटैत अछि— 'हम सचमुच खसि रहल छी?'

ओ सभक पएर धरतीकेँ छुइत नहि छल, मुदा जेठाम ओ सभ चलैत गेल, ओतय ओसक कण नाम बनि गेल। पहिल नाम— सरयू। दोसर— मखना। तेसर— बिसेसर। फेर नाम सभ ओतबा तेज आबय लागल जे गाछीक घास ओकरा धारण करयमे काँपय लागल।

गोप कुमारक आँखि भरि आयल — बहुत रातिक कागच-गणनाक बाद, आइ पहिल बेर ओकरा सत्यक असली भार अनुभव भेल। ओ फाइलमे नाम देखैत छल, मुदा एतय नाम फाइलसँ बाहर आबि गेल छल। सौम्या अपन शोध-नोटक पन्ना खोलय चाहलनि, फेर बन्द कऽ देलनि। ओ बुझि गेलीह जे एहि अदालतमे नोट लेब अशिष्टता अछि। एतय साक्ष्य लिखल नहि जाएत; एतय साक्ष्य स्वयं चलि कऽ आबैत अछि।

दोसर पुकार पीपरक पात केलक— 'जिनका स्क्रीन खा गेल, ओ सभ उपस्थित होउ।'

गामक दुआर-दुआर सँ नील उजास उठल। जे मोबाइल बुझा देल गेल छल, ओ सभ एक बेर चमकल। चन्ना गाछीमे एकटा युवक आबि ठाढ़ भेल। ओकर चेहरा उज्ज्वल छल, नाम सेहो उज्ज्वल। मुदा आँखिमे ओहि स्क्रीनक निन्न छल जे कर्ज, जीत, हार, धमकी आ लाजक बीच टूटि जाइत अछि। ओकर पाछाँ-पाछाँ आर कतेक युवक— ककरो जेबीमे फाटक नोटक गन्ध, ककरो हाथमे बैंकक पर्ची, ककरो कानमे ओ आवाज जे कहैत छल— 'अहाँ डिजिटल अरेस्टमे छी।'

देविका ओहि पाँतिकेँ देखैत रहल। ओ अपन भाइकेँ चिन्हि गेल, मुदा दौड़ि कऽ गला नहि लगल। मृतकक अदालतमे जीवितक बिलाप सेहो प्रमाणकेँ धुँधला कऽ दैत अछि। ओ केवल माथ झुका देलक। उज्ज्वल ओकरा दिस तकलक आ एहन मुस्की देलक जेना कहि रहल हो— 'आब हम कर्ज नहि, नाम छी।'

तेसर पुकार पनिडुब्बीक झोँटा केलक— 'जिनकर देहकेँ बाजार बनाओल गेल, जिनकर निजता केँ फाँसीक रस्सी बनाओल गेल, ओ सभ उपस्थित होउ।'

आब गाछीमे स्त्री-पुरुष-युवा-बूढ़ सभक छाह आबय लागल। कतेको चेहरा बिनु नामक, कतेको नाम बिनु चेहराक। कियो पुलिसक गाड़ीमे गेल आ घुरल नहि; कियो शहरक कोठरीमे अपन घरक बोली बिसरि गेल; कियो अपन प्रेमक कारण ब्लैकमेल भेल; कियो अपन देह नहि

बेचय चाहल, मुदा ओकर भूख बेचि देल गेल। मीरा ओ सभक बीच ठाढ़ भऽ गेल। ओकरा बुझल जे ओकर निजता ओकर अपराध नहि छल; अपराध ओ हाथ छल जे निजताकेँ चाबुक बनबैत अछि।

चारिम पुकार लालटेनक लौ केलक— 'जिनकर श्वास बिकायल, जिनकर दवाईक शीशी नक्कल भेल, जिनकर बिस्तरक दर सरकारी कागचमे दू बेर चढ़ल, ओ सभ उपस्थित होउ।'

कोरोनाक समयक लोक सभ आबि गेल। कोनो ऑक्सीजनक पाइप लेने, कोनो अस्पतालक बिल, कोनो खाली दवाईक डिब्बा, कोनो आँखिमे ई प्रश्न जे मरनाइ बीमारीसँ भेल कि बिलसँ। ओ सभ चुप छल। महामारीमे मरल लोकक चुप्पी अन्य मृत्युसँ भारी होइत अछि, कारण ओ सभकेँ विदा सेहो ठीकसँ नहि भेटल रहैत अछि।

तखन चन्ना गाछीक अदालतमे अपराधी सभक पुकार भेल। मुदा एतय विचित्र बात भेल। बटुकनाथ हरिहरन नहि आयल। चन्द्रपाल बत्रा नहि आयल। राघव सिग्नल नहि आयल। लाउ किन-हंगक देह तँ बहुत दूर छल। एडवर्ड ब्रूम अपन होटलमे सूतल छल।

मुदा अदालतमे हुनका सभक छाह उपस्थित भेल। हरिहरनक छाह मोट फाइलक आकारमे आयल, जकर पन्ना सभ अपने-आप तारीख बदलैत छल। बत्राक छाह मोबाइलक स्क्रीन बनि कऽ चमकल, जकर भीतर एक लमहर सर्प की-बोर्ड पर सरकि रहल छल। राघवक छाह केवल बिनु देहक अधूरा संदेश छल— 'संदेश मिटाओल गेल।' लाउ किन-हंगक छाह प्रतिशतक चिह्न सन दू छोट गोल आ एक तिरछी धार बनि कऽ टँगि गेल। ब्रूमक छाह मंचक पोडियम छल, जाहिमे माइकसँ पानि टपकि रहल छल।

बूढ़बा भूत हँसलाह नहि। ओ बारह सय वर्षमे एहन बहुत छाह देखलने छलाह। ओ बजलाह — 'जकरा देहकेँ कानून बचा लैत अछि, ओकर छाहकेँ गाछ नहि बचबैत।'

पहिल गवाही सरयू देलक। ओ मजदूर स्त्री छल। ओकर आवाजमे नदीक खरखराहट छल। ओ कहलक— 'हम खसलहुँ। हमरा बचाबय लेल रस्सी नहि आएल। बादमे हमर नाम सेहो नहि आएल। देह गोहि खा गेल, नाम दफ्तर। हमरा परिवारकेँ कहल गेल— ओ तँ आयलहिये नहि छल। आइ हम पूछैत छी— जखन हम आयलहिये नहि छलहुँ, तखन हमर हथेलीपर ई सीमेण्टक छाला कतयसँ आयल?'

ओ अपन हथेली खोललक। हथेली नहि, छोट-छोट पुलक पाया छल। प्रत्येक पाया भीतर एकटा आँखि।

दोसर गवाही उज्ज्वल देलक। ओ कहलक— 'पहिने हमरा जीत देखाओल गेल। फेर हार। फेर कर्ज। फेर पुलिस। फेर अदालत। फेर घरक लाज। हमर देह पंखासँ लटकत भेटल, मुदा हमर मृत्यु स्क्रीनमे पहिनहिये भऽ चुकल छल। जे ऐप हमरा खा गेल, ओकर मालिक देशमे नहि छल। जे खाता हमर नामसँ खुलल, ओ हमर नहि छल। जे धमकी देलक, ओकर आवाज नकली छल। मुदा फंदा असली छल।'

देविका ओहि ठाम काँपि उठल। पीपरक ब्रह्माक एक मुँह ओकरा दिस मुड़ल— 'जीवितक काँपन सेहो गवाही अछि।'

तेसर गवाही मीरा नहि, ओकर मौन देलक। ओ मध्यमे ठाढ़ भेल। ओ कहलक नहि जे ओ कोन प्रेम करैत अछि, केकरा चाहैत अछि, ककर हाथ ओकर हाथमे छल। ओ केवल एतबा बाजल— 'जकरा सभ प्रेमसँ डर छल, ओ सभ हमरा कानून नहि, लाजसँ मारय चाहलक। जकरा सभ निजताकेँ अपराध बनाओल, हुनका सभक घरक ताला सभ आब राति-राति खुलत।'

हुलासी ओकर पाछाँ ठाढ़ भऽ गेलीह। बिनु हाथक भूत सेहो रक्षा करि सकैत अछि, यदि ओकर भीतर स्मृति शेष हो।

चारिम गवाही कोरोना-कालक वृद्ध देलक। ओकर नाक पर मास्क छल, मुदा मास्कमे छेद नहि छल। ओ बजल— 'हमरा श्वास चाही छल। हमरा बिल भेटल। हमरा दवाई चाही छल। हमरा कोड भेटल। हमरा डॉक्टर चाही छल। हमरा सलाहकार भेटल। हमरा चिता चाही छल। हमरा संख्या भेटल।'

ओहि क्षण चन्ना गाछीमे सभ फाइल खुलि गेल। नहि, कियो खोलल नहि। फाइल सभ स्वयं पात बनि गेल। प्रत्येक पात पर एक तथ्य, प्रत्येक तथ्यक नीचाँ एक नाम, प्रत्येक नामक नीचाँ एक घर, प्रत्येक घरक नीचाँ एक अधूरा चूल्हा।

सत्यव्रत मेहता शहरमे अपन कमरामे बैसल छलाह। हुनका सोझाँ कोनो स्क्रीन नहि छल, मुदा देबाल पर चन्ना गाछीक उजास पड़ि रहल छल। ओ बुझि गेलाह जे हुनका सेहो बोलाओल गेल अछि। ओ आँखि बन्न कएलनि आ कहलनि— 'हम उपस्थित छी।'

हवा हुनकर आवाज गाछी धरि आनलक। ओ बाजलाह— 'हम राज्यक पक्ष रखैत रहलहुँ। मुदा राज्य यदि मृतकक नाम काटि देत, तखन राज्यक पक्ष आ सत्यक पक्ष अलग भऽ जाइत अछि। आइ हम कोनो पदसँ नहि, मनुक्खक रूपमे कहैत छी— जे किछु अदालतमे आधा खुलल, ओ पूरा खुलबाक चाही।'

बटुकनाथ हरिहरनक छाह काँपल। ओकर फाइल-पन्ना सभ तेजीसँ तारीख बदलय लागल — अगिला महीना, अगिला बरख, अगिला पीढ़ी, अगिला जन्म। चन्ना गाछी हँसल नहि, मुदा पात सभ एक संग खड़खड़ाएल। ई खड़खड़ाहट हँसीसँ बेसी अपमानजनक छल।

चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन-छाह पर एक संदेश चमकल— 'सिग्नल पुनर्स्थापित।' ओ तुरन्त मिटि गेल। फेर दोसर संदेश— 'खाता सक्रिय।' सेहो मिटि गेल। तेसर संदेश— 'अपर्याप्त छाह।' स्क्रीन कारी भऽ गेल।

पीपरक ब्रह्मा चारू मुँहसँ एक्के संग बाजलाह। ओ फैसला नहि पढ़ि रहल छलाह; फैसला हवा, पानि, पात आ नाम सभ मिलि कऽ पढ़ि रहल छल।

'जे देह खा गेल, ओकर दण्ड देहक कारागार नहि। जे नाम काटलक, ओ आजीवन नाम ताकत। जे तारीख बेचलक, ओकर निन्न प्रत्येक राति अधूरा सुनवाई बनत। जे स्क्रीनसँ बच्चा खा गेल, ओकर घरक दर्पणमे प्रत्येक भोर पहिने उज्ज्वलक चेहरा देखाइ पड़त। जे निजता कैँ हथियार बनाओलक, ओकर छाह सभक आगाँ निर्वस्त्र होएत, मुदा देह नहि— ओकर लोभ। जे श्वास बेचलक, ओकर भाषणमे प्रत्येक शब्दसँ खाँसी उठत। जे विदेशमे नैतिकता पढ़ाओलक आ एतय मृत्यु कीनलक, ओकर मंचक लकड़ी गीली रहत, चाहे सभागार सुखायल हो।'

ई दण्ड कानूनक पुस्तकमे नहि छल। मुदा चन्ना गाछीक अदालत कानूनक पुस्तक सँ पहिने बनल अछि। ओतय जेल कम, स्मृति बेसी होइत अछि; फाँसी कम, नाम बेसी; जुर्माना कम, रातिक जागरण बेसी।

फैसलाक बाद सभ मृतक एक-दोसर दिस देखलक। कियो ताली नहि बजौलक। न्यायक क्षणमे ताली नहि होइत; ओतय केवल ओ भार उतरैत अछि, जे बहुत दिन धरि गला पर राखल छल। सरयू अपन टोकड़ी नीचाँ राखलक। उज्ज्वल अपन फोन देविका दिस बढ़ेलक। देविका फोन नहि लेलक। ओ कहलक— 'तोहर नाम हम लैत छी, फोन नहि।' उज्ज्वल मुस्कुरेलक आ स्क्रीनक नीला उजास ओहि क्षण माटिक दीयाक लौ बनि गेल।

मीरा अपन ओ पुरान भय, जे ओकर छातीमे काँटेदार फल जेकाँ अटकल छल, उखाड़ि कऽ धरतीपर राखि देलक। पनिडुब्बीक झोँटा ओ भयकैँ लपेटि पोखरि दिस लऽ गेल। सौम्या पहिल बेर रोलीह — बरखो सँ प्रशिक्षित तटस्थताक देबाल आइ राति ढहि गेल छल। गोप कुमारक आँखिमे आँसू नहि छल; ओकरा बुझल जे आब रोबाक समय नहि, लिखबाक समय अछि।

बा धीरे सँ उठलीह, ओकर देह थाकल, मुदा ओकर स्वर एतेक दृढ़ जेतेक बहुत काल सँ नहि रहल। ओ चन्ना गाछीक माटि माथ पर लगौलनि। आरुणि हुनका सहारा देब चाहलक, मुदा बा हाथ हटा देलनि। ओ बजलीह— 'आब हमरा सहारा नहि, अहाँ सभकेँ काज चाही।'

ईरा ओहि वाक्यकेँ सुनि ठिठकि गेल। ओकरा मोन आयल— विदेशक सभागारमे लोग न्याय पर चर्चा करैत अछि, एतय न्यायक बाद लोक काज बाँटैत अछि। ओ बुझि गेल जे हारल लोक यदि काजमे लागि जाए, तखन जीतल लोकक जीत अकेली पड़ि जाइत अछि।

भोर होएबाक पहिने चन्ना गाछीक अदालत विसर्जित भेल। कोनो दस्तावेज नहि बनल। कोनो मोहर नहि लागल। कोनो प्रति जारी नहि भेल। मुदा गामक प्रत्येक नारिकेल पात पर एक अदृश्य नोंकसँ लिखल रहि गेल— 'नाम मेटब अपराध अछि। स्मृति रोकब असम्भव।'

भोरमे बटुकनाथ हरिहरन अपन शहरक घरमे जागल। ओकर तकियाक नीचाँ पानि छल। ओ नौकर पर चिचिआयल। नौकर कहल— 'साहब, नल तँ सुखायल अछि।' हरिहरन शीशा दिस देखलक। शीशामे ओकर चेहरा नहि, लमहर सूची देखाइ पड़ल। ओ पहिल नाम पढ़य चाहलक, आँखि धुँधला गेल।

चन्द्रपाल बत्रा अपन फोन उठेलक। सभ सिग्नल ठीक छल, मुदा कोनो संदेश पढ़ाइ नहि दैत छल। प्रत्येक चैटमे केवल नाम। ओ फोन फेंकि देलक। दोसर फोन खोललक— ओहूमे नाम। तेसर फोन— ओहूमे नाम। ओ पहिल बेर बुझल जे संख्या सँ कमाइ आसान अछि, नाम सँ बचब कठिन।

एडवर्ड ब्रूम विदेशक होटलमे जागल। ओकर भाषणक पन्ना भीजल छल। 'मानवीय गरिमा' शब्द पर पानि पसरि गेल छल आ ओहिमे सीमेण्टक महीन धूर चिपकल छल। ओ पन्ना बदललक। दोसर पन्ना सेहो भीजल। तेसर पन्ना पर केवल एक वाक्य उभरल— 'तीस नाम, बाकी पानि।'

लाउ किन-हंगक दूर दफ्तरमे कोनो चमत्कार नहि भेल। केवल ओकर विशाल स्क्रीन पर एक छोट त्रुटि चमकल— 'खाता नहि, स्मृति सक्रिय।' ओ अर्थ नहि बुझल। ओकर भाषामे स्मृतिक कोनो दर नहि छल।

गढ़ नारिकेलमे सूरज निकलल। भूत सभ अपन-अपन डारि, पोखरि, छाह आ अन्हार दिस घुरि गेल। मुदा कबड्डी फेर शुरू नहि भेल। मैदान खाली रहल। ई खालीपन खेलक अन्त नहि, नव खेलक तैयारी छल।

गोप कुमार, सौम्या, देविका, मीरा, ईरा, आरुणि, रमैय्या आ सत्यव्रत मेहताक आवाज— जे दूर सँ आयल छल— सभकेँ ओहि भोर एक्के बात बुझि पड़ल: अदालतक फैसला पाबि लेल गेल, मुदा आब ओकरा कागच पर नहि, लोकक जीवन पर लिखबाक अछि।

बा अन्तिम बेर चन्ना गाछी दिस तकलनि। ओ कहलनि— 'जे जीत गेल, ओ आब हारल लोककेँ ताकत। मुदा हारल लोक घरे नहि भेटत। ओ सभ काज पर निकलि गेल अछि।'

आ सचमुच, ओहि दिन सँ धूर्त सभ जीतक कागच हाथमे लेने दरबदर घूमय लागल। जकरा सभकेँ ओ हरौने छल, ओ सभ कतहु अदालतक सीढ़ी पर बैसल नहि भेटल। कियो नाम लिखैत छल, कियो बच्चा सभकेँ स्क्रीनक गोहि चिन्हब सिखबैत छल, कियो स्त्री सभकेँ कहैत छल जे लाज अपराधीक होइत अछि, पीड़ितक नहि।

चन्ना गाछीमे ओहि राति उपन्यास समाप्त नहि भेल — ई मात्र एकटा चक्रक अन्त छल, आर बहुत चक्र बाकी छल। ओकर पहिल चक्र पूरा भेल। पात सभ हिलल, आ जकरा कान छल, ओ सुनि सकल— अब असली कथा शुरू भेल।

लोकगीत: गाछीक अदालत उठल

लोकधुन: भगैत-धुन

उठल हे अदालत, गाछी तर अदालत उठल हे,
पातक एक निर्णय सँ लोकक स्वर खुजल हे।

गाछ तरे फैसला भेल, कागच रहि गेल दूर,
नाम सुनलक जड़ि जखन, टूटल झूठक नूर।
जीतक मोहर हाथमे धूर्त घूमै गाम,
हारल लोक काजपर निकलल, लिखै अपन नाम।
केओ नेनाकेँ सिखबै स्क्रीनक गोहि चिन्ह,

केओ बहिनाकेँ कहै—लाज तोहर नहि।
खाली मैदान कहै—कथा एतय नहि थामल,
पहिल चक्र पूरा भेल, असल यात्रा जागल।
गाछीक अदालत उठल, न्याय चलल घर-घर,
पातक एक निर्णयसँ जागल लोकक स्वर।

कागच दूर रहि गेल, जड़ि सुनि लेलक नाम,
जीतक मोहर हाथ मे, तइयो अधूर काम।
हारल लोक काज पर—नेनाकेँ गोहि चिन्हबए,
बहिनाकेँ कहबए—लाज तोहर नहि, ई बुझबए।

❖

अध्याय १७

जीतक शोक

हारल लोक जँ प्रतीक्षा छोड़ि देत, तँ जीतनिहारक जीत अपनहि भारसँ चूर भऽ जाएत।

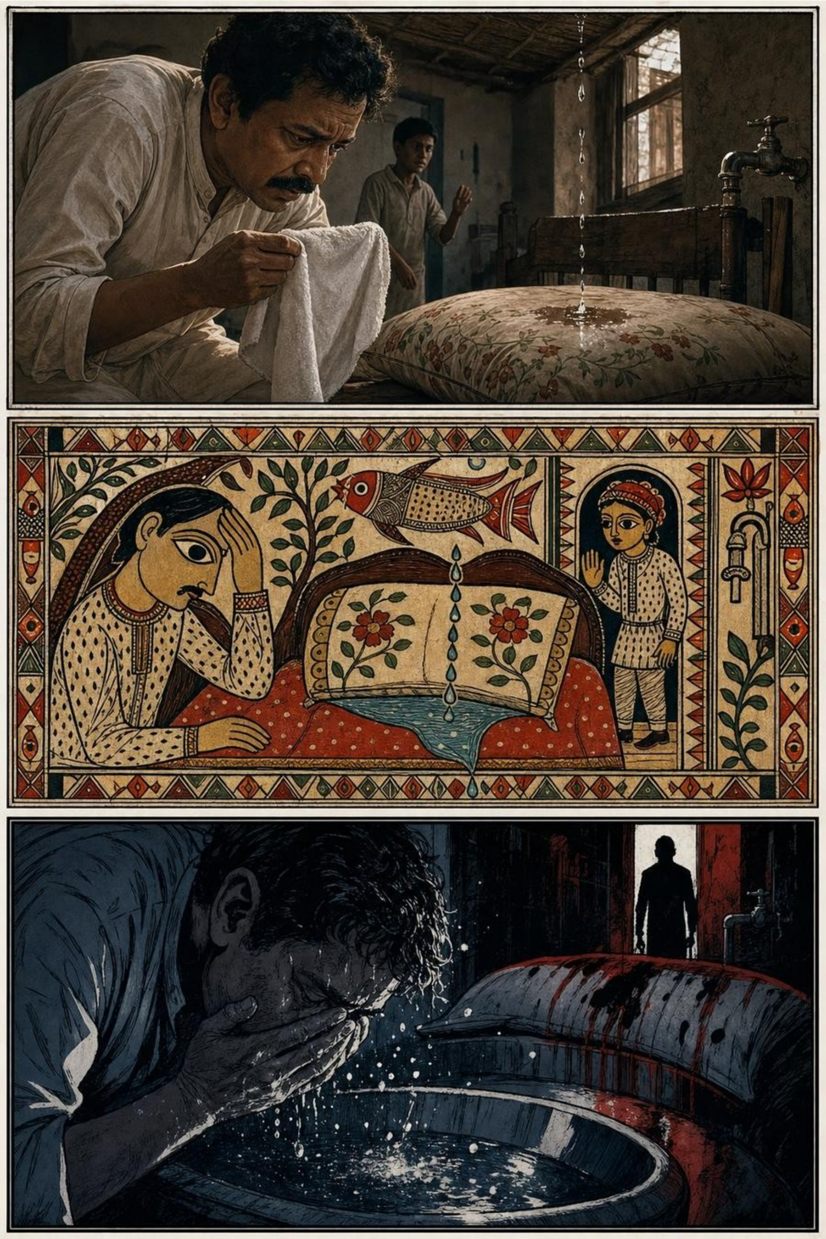

अध्यायारम्भ लोकगीत: जीतक भीतर सेवा

लोकधुन: विजय-विरहक उज्जर चाल

जीतल हे जीतल, मुदा मुकुट उतारू हे,
हारल केर घाव पर पहिने मलहम सम्हारू हे।

जीतलहुँ तँ पहिने देखू ककर घाव बचल,
मुकुट उतारि सेवा करू, तखन विजय सफल।
हरल पक्षक मान राखू, संवादक द्वार खोलू,
फैसलाक पाछाँ जीवनक सुधारक बीज बोऊ।

'सरयू', 'उज्ज्वल' स्वर भीतर चेतना जगाबै,
जीतक भारी लोहेकेँ करुणा फूल बनाबै।
जीतक भीतर सेवा हो तँ शोक पिघलि जाए,
न्यायपूर्ण विनम्र विजय समाज जोड़ि जाए।

विजयक ढोल थम्हा कऽ करुणाक तार छेड़ू,
सरयू-उज्ज्वलक सुरति सँ भीतरक मन हेरू।
फैसलाक पाछाँ जे जीवन, ओकरा गढ़ू फेर,
उज्जर चालक विजय बनए सभक साँझ-सबेर।

❖

"जकरा हरौल, से यदि तोहर प्रतीक्षा छोड़ि देत, तखन तोहर जीत अपनहि भार सँ टूटत।"

— चन्ना गाछीक फैसला-पछातक कहबी

भोर होइतहि बटुकनाथ हरिहरन अपन घरक भीतर ओहि पानि कैँ ढँकबाक लेल पहिने तौलिया माँगल, फेर नौकरकेँ डाँटल, फेर नल जाँचल, फेर छत। जखन सभ ठीक भेटल आ पानि फेरो तकियाक नीचाँसँ टपकैत रहल, तखन ओ बुझल जे किछु बातक मरम्मति मिस्त्रीसँ नहि होइत।

ओ रातिक चन्ना गाछीक अदालतकेँ सपना मानय चाहलक — जेना कोनो लोक अपन बीमारीक नाम सुनितहि ओकरा गलत निदान बुझय चाहैत होइक। मुदा सपना मनुक्खक माथमे

रहैत अछि; ई पानि ओकर तकियाक भीतर छल। सपना आँखि बन्न करिते लुप्त भऽ जाइत अछि; ई सूची शीशा पर चिपकल छल। ओ चेहरा धोय गेल, सूची नहि धोयल। साबुनक फेनमे नाम उभरि-उभरि अबैत रहल— सरयू, मखना, बिसेसर, उज्ज्वल, आ ओ सभ नाम जकरा ओ कहियो पढ़नाइ आवश्यक नहि बुझने छल।

बटुकनाथ हरिहरन जीतल लोक छल। अदालतमे ओ प्रक्रियाक रक्षा कएने छल। मीडिया ओकरा 'विधि-परम्पराक रक्षक' कहल। सभापरिषद्क कक्षमे ओकर फोटो लगबाक छल। मुदा ओहि भोर ओकरा मनमे एक अजीब रिक्तता छल— जेना लड़ाई जीतल सैनिक मैदानमे पहुँचि देखैत अछि जे शत्रु तम्बू समेटि कऽ खेत जोतऽ चलि गेल।

चन्द्रपाल बत्राक सवेरे सेहो ठीक नहि भेल। ओकर पाँच टा फोन छल। पहिल फोन पर सिग्नल चमकल, मुदा संदेश खोलिते अक्षर पानि भऽ गेल। दोसर पर खाता खुलल, मुदा शेष राशि शून्य नहि, 'नाम' लिखल। तेसर पर हांगकांगसँ कोड आयल, मुदा कोड पढ़ल गेल— 'ककरा हरौल?' चन्द्रपाल फोन फेंकि देलक, फेर उठा लेलक, कारण फोन फेंकबाक साहस ओकरा छल, फोन बिनु रहबाक नहि।

राघव 'सिग्नल' सोमानी राति भरि गायब रहल। भोरमे ओकर संदेश आयल— 'सभा बुलाउ। कागचक जीत भेल अछि, मुदा मैदान खाली भऽ रहल अछि।' चन्द्रपाल तुर्त उत्तर देलक — 'मैदान खाली माने?' उत्तर आयल— 'जकरा चुप करबाक छल, से सभ बोलब छोड़ि काज करय निकलि गेल।'

चन्द्रपाल एहि वाक्यपर हँसल। ओकरा लागल जे ई डरबयबला भाषा अछि। ओ बहुत लोककेँ टूटैत देखने छल— नोटिससँ, थानासँ, लाजसँ, कर्जसँ, झूठा मामलासँ। ओकर अनुभव छल जे हारल लोक पहिने अपील करैत अछि, फेर मीडिया खोजैत अछि, फेर समझौता करैत अछि, फेर थाकि जाइत अछि। मुदा एहि बेर ओ सभमे कोनो क्रम नहि बनल।

ओहि दिन राजधानीक बार सभागारमे बटुकनाथ हरिहरनक सम्मान राखल गेल। मंचपर हार, माला, शॉल, ताली। सभ कहैत रहल— 'प्रक्रिया बचि गेल।' एक बुजुर्ग वकील कहलक— 'ई न्यायक विजय अछि।' तखने सभागारक छतसँ एक बून्द खसल। बटुकनाथ माथ उठेलक। छत सुखायल। बून्द ओकर टेबल पर पड़ि कऽ छोट अक्षर बनल— 'प्रतीक्षा?'

ओ अपन भाषण शुरू केलक। 'मित्र सभ, न्यायालयक मर्यादा...' मुदा माइकसँ आवाज आयल— 'तारीख।' ओ खखसल। फेर कहल— 'कानूनक प्रक्रिया...' माइक बजल— 'तारीख।' सभागारमे कियो सुनल कि नहि, से स्पष्ट नहि। मुदा बटुकनाथ सुनैत रहल। ओकरा

लागल जे ओकर प्रत्येक शब्द अदालतक सीढ़ी पर ठाढ़ मृत मजदूर सभ फेर सँ सुनि रहल अछि।

सम्मानक बाद चन्द्रपाल बत्रा ओकरा एक अलगा कमरामे भेटल। कमरामे परदा मोट छल, परदाक पाछाँ शहरक धूप फँसल छल। चन्द्रपाल कहलक— ‘मुद्दा खत्म भेल। अखन विरोधी लोककेँ चिन्हू। के-के पैसा माँगत? के-के डराओल जा सकैत अछि? के-के कीनल जा सकैत अछि?’

बटुकनाथ पहिल बेर चुप रहल — एहन चुप्पी, जे ओकर बरखो पुरान वाक्-पटुताकेँ सेहो अचंभित कऽ देलक। फेर धीरे सँ बाजल— ‘से सभ कतय अछि?’

चन्द्रपाल हँसल— ‘कहिया सँ अहाँ दार्शनिक भेलहुँ? गोप कुमार, सौम्या, देविका, मीरा, ईरा, आरुणि— सभ कतय जाएत? न्याय चाही ने? फेर न्यायालये आएत।’

‘नहि,’ बटुकनाथ कहल, ‘आइ कोनो नब अर्जी नहि आयल। कोनो प्रेस-वार्ता नहि। कोनो धरना नहि। कोनो अपीलक मसौदा नहि। सत्यव्रत मेहता सेहो चुप छथि। ई चुप्पी असामान्य अछि।’

चन्द्रपालक चेहरा पहिल बेर कसि गेल। अपराधी चुप्पीसँ डेराइत नहि; ओ शोरसँ खेलेला अभ्यस्त रहैत अछि। मुदा जखन पीड़ित पक्ष शोर छोड़ि देत, तखन अपराधी केँ अपनहि आवाज बहुत तेज सुनाइ पड़य लगैत अछि।

दुपहर बाद बटुकनाथक लोक सभ अदालतक गलियारा छानल। जे बेंच पर देविका बैसैत छल, ओ खाली। जे खिड़की लग गोप कुमार कागच देखैत छल, ओतय केवल धूल। जे चाहबला सौम्याक लेल बिनु चीनीक चाह रखैत छल, ओ कहलक— ‘ओ सभ आइ नहि अयलाह।’

‘कतय गेल?’ लोक पूछलक।

चाहबला कंधा उचकलक— ‘काज पर।’

ई उत्तर राजधानीक सभसँ भयंकर उत्तर साबित भेल। अदालतमे काज माने तारीख, बहस, स्थगन, प्रति, शपथपत्र। मुदा चाहबला जे ‘काज’ कहल, ओकर अर्थ अलग छल। ओहि अर्थकेँ बटुकनाथ समझि नहि पाओत, तेँ ओकरा डर लगत।

ओही समय गढ़ नारिकेलमे आरुणि आ बा चन्ना गाछी लग पहिल बाँस गाड़ि रहल छलाह। बाँस पर कोनो झण्डा नहि, कोनो दलक निशान नहि। देविका माटि समतल करैत छल। मीरा बच्चा सभकेँ दूर राखैत छल, जेना पवित्रता नहि, सावधानीक कारण। सौम्या पुरान नाम

सभ फेर पढ़ि रहल छलीह। गोप कुमारक हाथमे छैनी नहि, कागच सेहो नहि; ओकर हाथ खाली छल, कारण नाम लिखबा सँ पहिने हाथ खाली होयबाक चाही।

ओ सभ अदालतमे हारल कहल गेल छल। मुदा ओहि दिन ओ सभ हारल लोकक तरह नहि, खेत पर निकलल किसानक तरह देखाइत छल। हुनका सभकेँ अपन हारक शोक करबाक अवकाश नहि छल। गाममे पहिल अभिलेख बनबय लेल पाथर चुनबाक छल। पाथर नहि भेटल तँ नारिकेलक सूखल खोल पर नाम लिखबाक छल।

अनन्या, आरुणिक बेटी, एकटा छोट खड़िया लऽ कऽ बैसल छली। ओ पूछलक— 'नाम पहिने केकर?' सभ चुप। बा कहलनि— 'जेकरा नाम कागचसँ सभसँ पहिने काटल गेल।'

सौम्या सूची खोललनि। सूचीमे हजार शक्ल छल, मुदा पहिल पंक्ति धुँधली। पातक छाह ओहि धुँधलाहटपर पड़ल आ अक्षर साफ भेल— 'सरयू।' अनन्याकेँ सरयू लिखयमे कठिनाई भेल। ओ 'स' केँ दू बेर बिगाड़लक। देविका ओकर हाथ पकड़ल नहि। बा कहलनि— 'नाम अपन पएर सँ चलि कऽ बनत। बच्चाक हाथ ओकरा पाछाँ-पाछाँ चलू।' तेसर बेर सरयू स्पष्ट भेल। चन्ना गाछीमे दूर कतहु टोकड़ी नीचाँ राखबाक आवाज आयल।

एहि छोट दृश्यक खबर बटुकनाथ धरि संझुका भऽ कऽ पहुँचल। ओकर एक लोक फोटो पठेलक। फोटोमे केवल नेनी, खड़िया, पाथर आ नाम। बटुकनाथ फोटो बहुत देर धरि देखैत रहल। ओ बुझैत नहि छल जे एहि फोटोमे ओकर पराजय कतऽ अछि। मुदा ओकर पेटमे गीला ठंढ उतरल। अदालतमे प्रतिपक्षकेँ हरायल जा सकैत अछि; बच्चाक हाथमे लिखाइत नामकेँ कोन धारा लगाओत?

चन्द्रपाल एहि बीच अपन डिजिटल जाल फेर कसबाक आदेश देलक। 'नब ऐप निकालू। पुरनका नाम बदलू। बोनस दोगुना। पहिल जीत पक्का। गाँवक भाषामे विज्ञापन बनाउ।' राघव सिग्नल उत्तर देलक— 'नब समस्या।'

'की?'

'गाम-गाम लोक बतिया रहल अछि। डिजिटल अरेस्ट झूठ अछि, म्यूल खाता जाल अछि, पहिल जीत चारा अछि। देविका साह नामक लड़की सभा करैत अछि। निशांत झा विदेशसँ परचा पठबैत अछि। लोक फोन काटय लगल अछि।'

चन्द्रपालक मुँहसँ गारि निकलल। ओकरा पहिल बेर बुझाइ पड़ल जे ओकर असली शत्रु पुलिस नहि, जन-जागरण अछि। पुलिसकेँ कीना जा सकैत अछि, वकीलकेँ लगाया जा सकैत अछि, जजक समय टारल जा सकैत अछि; मुदा जँ बूढ़ी दादी अपन नाति केँ कहि देत— '

अजनबी फोन पर विश्वास नहि करिह', तखन करोड़क सर्वर अचानक अधपेट रहि जाइत अछि।

गामक दोसर कोनपर देविका सचमुच बच्चा-युवक सभकेँ बुझबैत छल। ओ मंच पर नहि चढ़ल। ओ पोखरिक घाट पर बैसल। ओकरा चारू दिस लोक। ओ कहैत छल— 'जँ कियो कहय जे अहाँ डिजिटल अरेस्टमे छी, तखन पहिने पानि पीबू, साँस लिअ, घरक लोककेँ बोलाउ। अपराधी तोहर अकेलापन चाहैत अछि।'

एक बूढ़ा पूछलक— 'अहाँ कानून पढ़ने छी?' देविका कहल— 'नहि। हमर भाइ मरल अछि।' बूढ़ा माथ झुका लेलक। ओहि दिनसँ गाममे अनुभव सेहो प्रमाण बनल।

मीरा आ सौम्या तेसर ठाम स्त्री सभक बीच बैसल छलीह। कोनो बैनर नहि। कोनो भाषण नहि। केवल गोला बनि कऽ बैसल स्त्री सभ। मीरा कहलक— 'जे तोहर छवि, आवाज, प्रेम, पत्र, देहक फोटो लऽ कऽ तोरा डराबय, अपराध ओकर। लाज ओकर। तोहर नहि।' पहिने कियो आँखि नहि उठेलक। फेर एक युवती धीरे सँ बाजल— 'जँ घरबला हमरा दोष देत?' मीरा कहल — 'तखन पहिने हम सभ तोहर घर चलब।'

ई वाक्य शहरक कोनो नीति-पत्रसँ पैघ छल। कारण पीड़ित सभकेँ पहिने कानून नहि, संग चाही। बटुकनाथक सभसँ पैघ भूल ई रहल जे ओ सोचलक मनुष्य केवल फैसला सँ चलैत अछि। असलमे लोक संग-संग चलबाक आहटसँ उठैत अछि।

विदेशमे ईरा अपन विश्वविद्यालयक पुस्तकालयमे बैसल छलि। एडवर्ड ब्रूमक पुरान भाषणक प्रतिलिपि ओकरा सामने छल। ओ पहिने लाल कलम सँ प्रश्न लिखैत छलि। आब ओ प्रश्न लिखब छोड़ि देलक। ओ कम्प्यूटर पर 'गढ़ नारिकेल नाम-अभिलेख'क पहिल पन्ना बनबय लागलि। ओकरा बुझि पड़ल— वैश्विक मंचपर प्रश्न पूछलासँ पहिने, अपन लोकक नाम सुरक्षित करब जरूरी अछि।

ओहि राति ब्रूमक कार्यालयमे एक विचित्र ईमेल पहुँचल। विषयमे लिखल छल—'सरयू।' भीतर कोनो आरोप नहि, कोनो धमकी नहि, केवल एक नाम आ एक खाली स्थान। ब्रूम ईमेल मेटाबय चाहलक। प्रणाली पूछलक—'की अहाँ नाम मेटाबय चाहैत छी?' ओ 'हँ' दबेलक। स्क्रीन कारी भेल। फेर वैह ईमेल। ओ बुझल—आरोपक उत्तर होइत अछि; नामक नहि।

सत्यव्रत मेहता सरकारी आवासमे अकेले बैसल छलाह। हुनका विरुद्ध विभागीय असंतोष उठि रहल छल। फाइलमे लिखल गेल— 'अत्यधिक नैतिक उतावलापन।' एक वरिष्ठ अधिकारी सलाह देलक— 'अहाँ सीमारेखा पार कऽ देलहुँ।' सत्यव्रत मुस्कुरेलाह। हुनका बुझि

पड़ल जे सीमारेखा जखन झूठकेँ बचबय लेल खिंचल जाए, तखन ओकरा पार करब अपराध नहि, स्नान अछि।

मुदा ओहो अदालत नहि गेलाह। ओ पत्र लिखलनि, मुदा न्यायालयक लेल नहि। पत्र गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ लेल छल। ओ लिखलनि— 'कानून पढ़बाक पहिने नाम पढ़ू। धारा पढ़बाक पहिने पूछू— एहि धारामे कोन मनुक्ख बचल, कोन गुम भेल?' ओ पत्र ओ भेजलनि नहि। ओ कापीमे राखलनि। किछु पत्र समय आबि गेलापर स्वयं चलि जाइत अछि।

बटुकनाथ संझा धरि बेचैन भऽ गेल। ओकर जीतक भोज छल। चाँदीक थारी, महँग मदिरा, शहरक नामी लोक। ओ सभ हँसैत छल, अदालतक कथा करैत छल, कहैत छल— 'सभ सामान्य भऽ जायत।' मुदा बटुकनाथक कानमे चन्ना गाछीक खड़खड़ाहट। ओकरा लागैत छल जे प्रत्येक चम्मच थारी पर पड़ैत नहि, तारीख पर पड़ैत अछि। टन— तारीख। टन— तारीख। टन — तारीख।

भोजक बीच एक नवयुवक वकील ओकरा लग आबि कऽ फुसफुसायल— 'सर, ओ लोग अपील कर रहल अछि?' बटुकनाथ झट उत्तर देबाक छल, मुदा मुँहसँ निकलल— 'ओ सभ नाम लिखि रहल अछि।' युवक वकील हँसि देलक, सोचलक अध्यक्ष महोदय मजाक करैत छथि। बटुकनाथ नहि हँसल।

रातिमे चन्द्रपालक दफ्तरमे बैसकी भेल। राघव सिग्नल स्क्रीनपर, हांगकांगक छाह बिनु चेहराक, दू कानून सलाहकार, तीन भुगतान प्रबन्धक। चन्द्रपाल मेज पर हाथ मारि कहल— 'ओ सभकेँ फेर अदालतमे घीचू। मानहानि। अवमानना। डेटा चोरी। विदेशी फंडिंग। किछु लगाउ।'

कानून सलाहकार कहलक— 'ककरा पर?'

'गोप कुमार पर।'

'ओ सार्वजनिक बयान नहि देलक।'

'सौम्या पर।'

'ओ शोध नहि छापल, नाम-अभिलेखमे मदद करैत अछि।'

'देविका पर।'

'ओ ठगीसँ बचबाक सलाह दैत अछि।'

'मीरा पर।'

'

ओ स्त्री सभकेँ ब्लैकमेलसँ नहि डरबय कहैत अछि।'

'ईरा पर।'

'ओ नामक वेबसाइट बनबैत अछि, आरोप नहि।'

चन्द्रपाल पहिल बेर घबरायल। अपराधक सभसँ कठिन विरोध ओ होइत अछि जे आरोप नहि करैत, विकल्प बनबैत अछि। आरोप पर मुकदमा होइत अछि। विकल्प पर समाज चलैत अछि।

राघव सिग्नल लिखलक— 'ओ सभ युद्धभूमि छोड़ि देलक।'

चन्द्रपाल उत्तर देलक— 'भागि गेल?'

राघव लिखलक— 'नहि। खेती करय गेल।'

ई वाक्य स्क्रीन पर चमकि कऽ मिटि गेल। चन्द्रपाल ओकर अर्थ नहि बुझल, मुदा लाउ किन-हंगक छाह किछु क्षण लेल स्थिर भऽ गेल। जे पूँजी जमीन नहि बुझैत, ओ खेतीक अर्थ नहि बुझैत; मुदा ओकरा डर अवश्य लगैत अछि जखन लोक फेर जमीन पर घुरि जाइत अछि।

ओहि राति गढ़ नारिकेलमे पहिल नाम लिखला बाद लोक घर नहि गेल। एक वृद्ध मजदूरक विधवा आबि कऽ कहलनि— 'हमर लोकक नाम सरकारी कागचमे नहि। मुदा ओकर गाम छियै।' ओ अपन मरल लोकक नाम नहि पढ़ि सकैत छलीह। अनन्या खड़िया हुनका हाथमे देलक। विधवा हाथ काँपैत लिखलनि। अक्षर टेढ़। मुदा चन्ना गाछीमे ओ अक्षर सोझ चमकल।

बा कहलनि— 'साँच अक्षर अपनहि सोझ भऽ जाइत अछि।'

गोप कुमार ओहि समय किछु दूरी पर ठाढ़ छल, अपन थकल देहकेँ नारिकेल गाछक तनापर टेकने। ओ सोचैत छल जे डेटा सुरक्षित करब, अदालतमे देब, सत्यव्रत धरि पहुँचाब— ई सभ जरूरी छल; मुदा नाम लिखनाइ कदाचित् ओकरासँ पैघ काज अछि। डेटा अपराध सिद्ध करैत अछि। नाम मनुक्खकेँ फेर जन्म दैत अछि।

रमैय्या, जे सदिखन गप्पी छल, ओहि राति चुप रहल। भोर लग ओ कहल— 'हम दक्षिणमे अपन गाममे सेहो ई करब। पुल चाहे ओतय नहि, मुदा नाम काटबाक रोग सभठाम अछि।' सौम्या मुस्कुरा देलीह। एहि तरहें गढ़ नारिकेल एक गाम सँ पद्धति बनय लागल।

बटुकनाथक जीतक शोक गहिर होइत गेल — एहन शोक, जकर नाम ओकरा अपनहि भाषामे नहि भेटैत छल। जीत केँ हँसी चाही, विरोधी चाही, मंच चाही, पुष्पहार चाही। ओकरा

सभ भेटल। मुदा जीत कैँ एक आर चीज चाही— हारल लोकक पराजित चेहरा। ओ नहि भेटल। जे चेहरा हारल कहल गेल, ओ सभ काजमे व्यस्त छल।

तेसर दिन बटुकनाथ अदालत गेल। सोझा वैह सीढ़ी। वैह बरामदा। वैह चाह। मुदा ओकरा सभ खाली नहि, अनाथ लगल। जकरा डरबाबय लेल ओ कानूनक महल बनबैत रहल, ओ लोक अब ओहि महलक बाहर अपन देहरी बनबय लागल छल।

ओ सीढ़ी पर ठाढ़ भऽ कऽ मनहि मन बजल— 'घुरू। अपील करू। लड़ू।'

कियो उत्तर नहि देलक। केवल दूर, बहुत दूर, चन्ना गाछी दिस सँ बच्चाक आवाज आयल— 'सरयू।' फेर दोसर आवाज— 'उज्ज्वल।' फेर तेसर— 'नाम काटब नहि।'

बटुकनाथ कान झाँपल। आवाज भीतरसँ उठैत रहल।

अध्याय समाप्त नहि भेल; जीतक शोक एखन शुरू भेल छल। धूर्त सभ आब दिन-राति ओहि लोककेँ ताकत, जकरा ओ सभ हरौने छल। मुदा ओ लोक आब अदालतक दरबाजापर नहि भेटत। ओ सभ नाम लिखत, बच्चा सभकेँ बचत, स्त्री सभकेँ संग देत, आ पानि पर इतिहास लिखत।

चन्ना गाछीमे भोरक पात हल्का हिलल। बूढ़बा भूत अपन डारि सँ देखलाह आ फुसफुसौलाह— 'ई जीतक शोक अछि। एहि शोकसँ पैघ दण्ड कोनो अदालत नहि देत।'

लोकगीत: जीतक भारी मुकुट

लोकधुन: विरहा

हे जीतनिहार, मुकुट लोहाक भारी हे,
जकरा हरौलह, तकर बाट आब नहि जोहबारी हे।

जीतलह बाबू, मुदा के देत तोरा बधाइ?
दरबार खाली, सीढ़ी सूनी, ताली कतहु नहि भाइ।
जकरा हरौलह, से आब बाट जोहै नहि,
ओ नाम लिखै, नेना बचबै, तोहर मोहर गनै नहि।
'सरयू' आवाज भीतर उठै, 'उज्ज्वल' फेर पुकार,

कान झाँपलह, मुदा हृदयमे खुलि गेल दरबार।
जीतक मुकुट लोहेक, माथ तोहर झुकत,

पीड़ितक प्रतीक्षा छूटल, जीत अपनहि टूटत।
एहन शोकक औषधि नहि, अपील नहि उपाय,
नाम काटनिहार राति-राति अपन नाम गवाय।

भीतर 'सरयू'-'उज्ज्वल'क स्वर थम्हैत नहि।
कान झाँपल, तइयो हृदय मे दरबार खुजल,
नाम काटनिहार राति-राति अपने नाम गुनल।

❖

अध्याय १८

खाली अदालत

अदालत जँ खाली भऽ जाए, तँ बुझू— न्याय अनुपस्थितक नामसँ डेरा गेल।

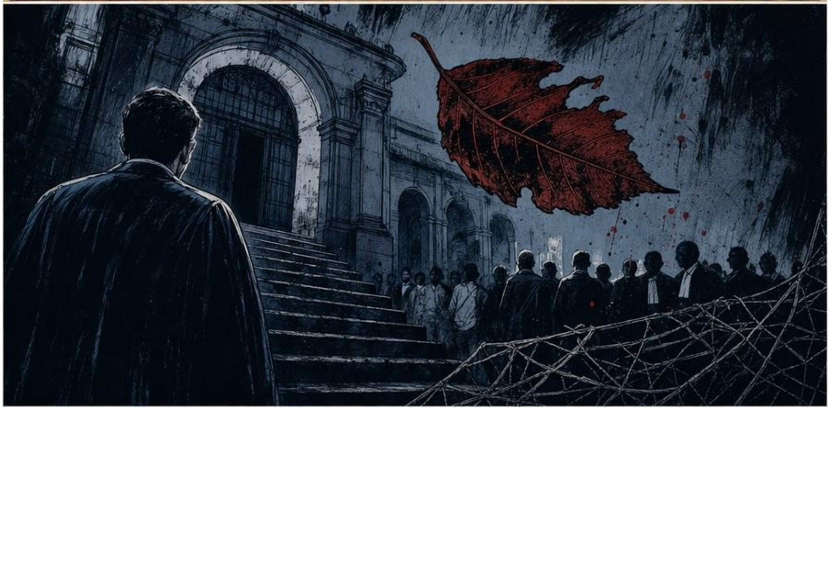

अध्यायारम्भ लोकगीत: खाली अदालत भरत जन

लोकधुन: श्रमिक-पुत्र पराती

भरू हे भरू, खाली बेंच भरू हे,
झाड़ूबला बेटाक अक्षर माथ पर धरू हे।

बेंच खाली देखाइ तइयो छाह सभ बैसल,
प्रवेश नहि पाओल नाम भोरक संग अएल।
झाड़ूबला धूलिमे बाबूजीक नाम लिखै,
मेटल अक्षर कोंपल बनि पाथर बीच दिखै।

न्याय जँ नाम पढ़त तँ भवन घर बनत,
लोकक स्मृति संग मिलि खालीपन भरत।
खाली अदालत भरत जनक उज्जर पुकार,
उपस्थित जीवन पाबत सम्मानक अधिकार।

धूलि-लिखल बाबूक नाम भोरक संग जगत,
मेटल आखर कोंपल बनि पाथर बीच उगत।
प्रवेश-पत्र नहि, परातीक सुर लऽ जन आओत,
न्याय-भवन तखने अपन नाम सार्थक पाओत।

❖

“जे न्याय केवल उपस्थित लोककेँ सुनैत अछि, से अनुपस्थित मृतकक नामसँ डेराइत अछि।”

— चन्ना गाछीक एकटा सुक्खल पात

तेसर दिनक बाद चउठम दिन अदालत खुलल। वैह दरबाजा, वैह धातुक जाँच, वैह सीढ़ी, वैह कारी कोट, वैह चायमे डूबल बासी बिस्कुट। मुदा बटुकनाथ हरिहरनकेँ लागल जे भवनमे किछु कम अछि। भीड़ छल, आवाज छल, फाइल छल, आदेश छल; तइयो ओ रिक्तता जेना कोनो कुर्सीक खाली रहबासँ नहि, अपितु कोनो युगक उठि कऽ चलि गेलासँ बनैत अछि।

ओ सभागारमे पैसल तँ ओकर लोक दौड़ि कऽ आयल— 'सर, ओ लोक आजो नहि अयलाह।' बटुकनाथ झुँझला गेल। 'कोन लोक?' लोक चुप। किएक तँ जिनका लेल जाल बुनल गेल छल, हुनका नाम लेब सेहो आब खतरनाक लागत छल। नाम लेते पानि टपकैत छल।

कारणसूचीमे मामला छल। संख्या छल। कागच छल। सरकारी पक्ष छल। ठेकेदारक पक्ष छल। बटुकनाथक दल छल। मुदा जकरा विरुद्ध सभ तैयारी छल, ओ लोक नहि छल। जज साहेब चश्मा नीचा कऽ कऽ देखलनि। 'प्रतिवादी?' क्लर्क कहल— 'उपस्थित।' 'याचक?' क्लर्क फाइल उलटलक। ओतय उपस्थिति-स्तम्भ खाली छल।

सामान्य दिनमे खाली उपस्थिति पर केस खारिज होइत, लागत, स्थगित होइत, वा दण्ड। मुदा एहि दिन खाली स्तम्भ सभसँ बेशी बोलैत छल। ओ स्तम्भमे न अनुपस्थिति छल, न भय। ओतय एक निर्णय छल— न्यायक प्रतीक्षा छोड़ि देबाक निर्णय।

बटुकनाथ उठि कऽ कहल— 'महोदय, ई न्यायालयक अवमानना अछि। जे लोक जन-हितक नाम पर प्रक्रिया शुरू करैत छथि, ओ सभ बीचमे अनुपस्थित भऽ जाइत छथि। न्यायालयक समयक हानि अछि।'

सत्यव्रत मेहता सरकारी मेज पर बैसल छलाह — सीधा, मुदा भीतरसँ तनल। ओहि वाक्य पर हुनकर कनपट्टी फड़कली। ओ उठब चाहलनि, फेर बैसि गेलाह। सरकारी वकीलक स्थान पर बैसल लोक कतेक बेर सत्यक विरुद्ध चुप रहि जाएत, ओकर हिसाब कोनो नियमावलीमे नहि लिखल रहैत अछि। मुदा चुप्पीक वजन देह सँ नहि, आत्मासँ उठैत अछि।

जज साहेब पूछलनि— 'सरकारक पक्ष?' सभ दृष्टि सत्यव्रत पर। सत्यव्रत धीरे सँ उठलाह। हुनकर फाइल खुलल, मुदा पन्ना हवा सँ काँपल नहि; ओ जेना भीतरसँ थरथरा रहल छल। ओ कहलनि— 'महोदय, अनुपस्थितिक अर्थ सदैव उपेक्षा नहि होइत। कखनो-कखनो लोक अदालतसँ बाहर ओ काज करैत अछि जे अदालत करबामे असमर्थ रहि गेल।'

कमरामे हलचल भेल। बटुकनाथक चेहरा अकड़ल। चन्द्रपाल बत्रा पाछाँ पंक्तिमे बैसल छल। ओकरा लागल जे सत्यव्रत फेर सीमा पार करैत अछि। मुदा ई बेर सीमा रेखा कागच पर नहि, अदालतक फर्श पर खिंचल छल; आ फर्श पर कनी ओस जमा होमय लागल।

जज साहेब कहलनि— 'अहाँक आशय?' सत्यव्रत उत्तर देलनि— 'अहाँक समक्ष मामला जीवित अछि। मुदा जे नाम एहि मामलामे मुआवजा, मृत्यु-सूची, तकनीकी रिपोर्ट, डिजिटल खाता, दवा-बिल, आ ठगीक साक्ष्य रूपमे आएल, ओ नाम न्यायालयक बाहर सेहो जीवित अछि। यदि याचक सभ आइ नहि अयलाह, तकर अर्थ ई नहि जे सत्य अनुपस्थित अछि।'

बटुकनाथ बीचमे बजल— 'ई काव्य-पाठक स्थान नहि, न्यायालय अछि।'

सत्यव्रत पहिल बेर ओकर दिस देखलनि। 'काव्य ओहि दिन शुरू होइत अछि जखन कानून नाम पढ़नाइ छोड़ि दैत अछि।'

कक्षमे चुप्पी। एहि तरहक वाक्यक प्रतिवाद धारा सँ नहि होइत। बटुकनाथक हाथमे धारा छल, मुदा क्षण ओकर पकड़सँ बाहर गेल।

जज साहेब स्थगन देबाक तैयारीमे छलाह। ओ सभ दिनक अभ्यस्त उपाय छल। मुदा आदेश लिखबाक पहिने कलमक नोक पर एक बून्द पानि आयल। जज साहेब चौंकलनि। ओ बून्द कागच पर खसल आ गोल-गोल फइलि कऽ एक छोट अक्षर बनल— 'सरयू'। जज साहेब फाइल बन्द कऽ देलनि। 'अगिला तारीख,' ओ कहलनि।

'कखन?' क्लर्क पूछलक।

जज साहेब बहुत देर सोचलनि। फेर सामान्य स्वरमे दिन बता देलनि। मुदा कक्षमे सभकेँ लगल जे तारीख नहि, समय अपनहि स्थगित भेल अछि।

बाहर बरामदामे बटुकनाथ सत्यव्रतकेँ रोकलक। 'मेहता जी, अहाँ सरकारी पद पर छी। अहाँक भाषा विपक्षक जेकाँ किएक?'

सत्यव्रत कहलनि— 'यदि सत्य विपक्षमे रहि जाए, तँ सरकारक लाज होयबाक चाही, हमर नहि।'

बटुकनाथ हँसल, मुदा हँसीक भीतर बालू छल। 'एना चलत नहि। बार, सरकार, परिषद्, सभक अपन अनुशासन होइत अछि।'

'अनुशासन मृतकक नाम काटबाक कला नहि होयबाक चाही,' सत्यव्रत कहि कऽ चलि गेलाह। हुनकर पाछाँ बटुकनाथ बहुत देर तकैत रहल। ओकरा बुझाइ पड़ल जे ई लोककेँ हराएब सरल नहि; कारण ई लोक जीतए नहि चाहैत। जे जीतए चाहैत नहि, ओकरा हाराओल कठिन होइत अछि।

चन्द्रपाल बत्रा ओकरा लग आबि कऽ फुसफुसायल— 'ई मेहताकेँ हटाउ। हमरा सामने ई नैतिकता खेलत तँ समस्या बढ़त।'

बटुकनाथ कहल— 'समस्या मेहता नहि। समस्या ई अछि जे विरोधी सभ अदालतमे घुरि नहि रहल।'

'घीचि आनू।'

'

कानून सँ?’

‘कानून सँ, नोटिस सँ, गिरफ्तारी सँ, मानहानि सँ, विदेशी धनक आरोप सँ।’

बटुकनाथ धीरे सँ कहल— ‘कोन बयान पर मानहानि? कोन भाषण पर अवमानना? ओ सभ नाम लिखि रहल अछि। नाम लिखब अपराध नहि बनि सकैत— एखन धरि।’

चन्द्रपालक आँखि चमकल— ‘तखन अपराध बनाउ।’

ई वाक्यक समय बरामदाक ऊपर लटकैत पंखा एकाएक ठाढ़ भऽ गेल। हवा बन्द। सभ वकील अपन-अपन कागच सँ हवा करय लगल। मुदा बटुकनाथकेँ लागल जे पंखा नहि, चन्ना गाछीक पात रुकल अछि। जखन पात रुकैत अछि, तखन किछु सुनबाक होइत अछि।

दूरसँ आवाज आयल— ‘नाम काटब अपराध अछि।’ आवाज ककर छल? कियो नहि देखलक। चन्द्रपालक चेहरा सफेद भेल। राघव सिग्नलक संदेश ओकर फोनपर आयल— ‘सावधान। अदालतमे सुनल जा रहल अछि।’

चन्द्रपाल उत्तर लिखलक— ‘ककरा द्वारा?’ संदेश गेल नहि। स्क्रीन पर केवल एक गोला घूमैत रहल। गोला धीरे-धीरे गोहिक आँखि बनि गेल, फेर मिटि गेल।

उधर गढ़ नारिकेलमे ओहि समय अदालत नहि, पाठशाला लगि रहल छल। चन्ना गाछीक नीचाँ पाथर सभ राखल गेल। प्रत्येक पाथर पर एक नाम। बच्चा सभ नाम पढ़ैत। जे पढ़ि नहि पबैत, ओ पूछैत। जे पूछैत, ओकरा उत्तर भेटैत। एहि तरहें मृतक सभ पाठ्य-पुस्तक बनैत गेलाह।

अनन्या पहिल पाठ पढ़लक— ‘सरयू।’ फेर रुकल। ‘ओ के छली?’

बा कहलनि— ‘मजदूर। नाम काटल गेल।’

‘किए काटल गेल?’

‘किएक तँ कागचक पेट छोट छल, आ लालच बहुत पैघ।’

बच्चा सभ हँसल नहि। किछु वाक्य बच्चा सभ तुरन्त बुझि जाइत अछि, कारण ओ सभ एखन धरि सभ्यता सीखि नहि पओने होइत अछि।

देविका साह ओहि पाठशालाक दोसर कोनपर मोबाइल खोलि कऽ युवक सभकेँ देखबैत छल— ‘जे फोन पर कहत जे पुलिस अहाँकेँ डिजिटल कैदमे लेने अछि, ओ अहाँक डर कीनय चाहैत अछि। पहिल नियम— अकेले मत डरू। दोसर— पैसा मत पठाउ। तेसर— घरक लोककेँ बोलाउ।’

एक किशोर पूछलक— 'जँ ओ सभ हमर फोटो, आधार, बैंक सभ देखा देत?' देविका ओकर आँखिमे आँखि राखि कहल— 'जाहि दिन चोर तोहर नाम लऽ कऽ डरबय लागय, ओहि दिन बुझू जे ओकरा तोहर आत्मा नहि, केवल कागच भेटल अछि। आत्मा तोहर लग रहत।'

ओहि वाक्यक खबर चन्द्रपाल धरि साँझमे पहुँचल। ओकर लोक कहल— 'लड़की सभकेँ सिखा रहल अछि। गाँवमे डिजिटल अरेस्टक असर कम भऽ रहल अछि।' चन्द्रपाल मेज पर ग्लास दे मारलक — क्रोध नहि, भय ओकर हाथकेँ चलौने छल। काँच टूटल। टूटल काँचमे ओकर चेहरा कई टुकड़ामे देखाइ पड़ल— वकील, ठग, दलाल, सरगना, परामर्शदाता, पीड़ित बनबाक अभिनेता। ओ प्रत्येक टुकड़ाकेँ अलग सँ जोड़य चाहलक, मुदा चेहरा पूरा नहि बनल।

मीरा आ सौम्या स्त्री-मण्डलक पहिल बैसकीकेँ नाम नहि देलनि। नाम देल गेलापर संस्था बनैत अछि; संस्था बनलापर कागच मांगल जाइत अछि; कागच आयलापर हमला सरल होइत अछि। तेँ ओ सभ कहैत छलीह— 'चलू बैसैत छी।' बस। एहि 'बैसनाइ'मे क्रान्ति छल।

एक युवती कहलक— 'हमरा कोनो फोटो सँ डराओल गेल अछि।' दोसर कहल— 'हमरा प्रेमपत्र सँ।' तेसर— 'हमरा कहलक जे घर भेजि देत।' मीरा सभ सुनि कऽ कहल— 'हमरा सभक पहिल नियम— लाज अपराधीक। पीड़ितक नहि।'

ई वाक्य हवामे नहि उडल। चन्ना गाछीक एक पात पर अटकल। पातक नस सभ चमकि उठल। बूढ़बा भूत अपन डारि सँ कहलाह— 'ई स्त्री सभ अदालतसँ पैघ अदालत खोलि रहल अछि।' हुलासी, जे बारहों बरख इनारक अन्हारमे अपन प्रतिबिम्ब खोजैत रहलीह, ओहि दिन पहिल बेर स्त्री-मण्डलक गोलामे आबि बैसल। कियो हुनका देखलक नहि। मुदा जखन एक युवती अपन कथा कहैत रोय लागल, हुलासीक अदृश्य हाथ ओकर माथ पर रहल।

विदेशमे ईरा नाम-अभिलेखक पहिल पृष्ठ खोलने छलि। वेबसाइट नहि, ओ कहैत छलि— 'स्मृति-घर'। ओहिमे आरोपक पृष्ठ नहि छल, केवल नाम, गाम, मृत्यु वा गुमशुदगीक संक्षिप्त कथा, आ परिवारक सहमति। निशांत ओकरा लिखलक— 'एहन साइटकेँ ओ सभ बन्द करय चाहत।' ईरा उत्तर देलक— 'तखन हम साइट नहि, प्रतिलिपि बनाउब। बच्चाक कापी, गीत, भित्ति, पात।'

निशांत बहुत देर धरि स्क्रीन देखैत रहल। वित्तक दुनियाँमे प्रतिलिपि चोरी कहल जाइत अछि। स्मृतिक दुनियाँमे प्रतिलिपि मुक्ति होइत अछि। ओहि राति ओ अपन कम्पनीक आन्तरिक भुगतान-नक्शा नहि चोरलक; ओ ओकरा पढ़ल, बुझल, आ ओहि बिंदु सभक नाम

लिखलक जतय भारतीय युवकक हारल पैसा विदेशक मुनाफा बनैत छल। ज्ञान चोरि नहि, जागरणक कच्चा अन्न छल।

बटुकनाथक खाली अदालत धीरे-धीरे शहरमे कथा बनि गेल। लोग कहैत— 'केस चलैत अछि, पर याचक नहि आबैत।' दोसर कहैत— 'किएक?' तेसर— 'ओ सभ अपना गाममे अदालत खोलि लेने अछि।' एहि बात पर लोक हँसैत। मुदा हँसीक बाद प्रत्येक केँ कनी भय लगैत— जँ सचमुच अदालत गाममे खुलि जाए तखन?

बार परिषद्‌मे आपत्कालीन बैसकी बुलाओल गेल। विषय छल— 'न्यायालयक गरिमाक रक्षा।' बटुकनाथ अध्यक्षता करैत छल। परदे पर प्रस्ताव आयल— 'अनधिकृत जन-अभिलेख, न्यायिक प्रक्रियामे अविश्वास उत्पन्न करैत अछि।' एक नव वकील पूछलक— 'मृतकक नाम लिखनाइ अनधिकृत कोना?' पूरा सभागार ओकर दिस घुरि देखलक। नव वकील चुप भऽ गेल, मुदा प्रश्न हवामे रहि गेल।

बटुकनाथ प्रस्ताव संशोधित केलक— 'असत्य नाम-अभिलेख।' मुदा तुरन्त समस्या आयल— नाम असत्य सिद्ध केना? जे मजदूरक मृत्यु सरकारी कागचमे नहि, से झूठ? जे युवकक आत्महत्या परिवार कहैत अछि, से झूठ? जे स्त्रीक ब्लैकमेलक कथा ओकर मुँहसँ, से झूठ? कानूनक कातरी ओहिठाम अटकैत अछि जतय मनुक्खक दुख प्रमाणपत्र बिनु आबि ठाढ़ होइत अछि।

बैसकी स्थगित भेल। बटुकनाथ अपन कक्षमे अन्हारमे बैसल। देबाल पर ओकर सम्मान-पत्र। ओहि पर अचानक पानि-कण झिलमिलायल। अक्षर सभ पसरि कऽ बदलल— 'खाली अध्यक्ष।' ओ उठि कऽ कपड़ा सँ पोंछलक। अक्षर फेर उभरल। अन्तमे ओ बत्ती बन्न कऽ देलक। अन्हारमे सम्मानपत्र नहि देखाइ देलक, मुदा शब्द भीतर सुनाइ देल— खाली।

चन्द्रपाल राते हांगकांगक छाह सँ जुड़ल। लाउ किन-हंगक चेहरा कहियो पूरा नहि देखाइत। केवल धुँधलका, पाछाँ शीशाक शहर। चन्द्रपाल कहल—'हम कानूनी बाटसँ दबा देब।' छाह पूछलक—'ग्राहक घटल किएक?'

चन्द्रपाल चुप।

'हमरा भारतक कानून नहि, पैसा चाही,' छाह कहल। 'जँ गामक लड़की फोन काटय सिखा रहल अछि, जँ युवक खाता खोलएसँ पहिने पूछय लागल अछि, जँ स्त्री ब्लैकमेलपर चुप नहि रहत, तखन तोहर कानूनक जीत हमर लेल हार अछि।'

चन्द्रपालक माथ पर पसीना आयल — एहन ठंढा पसीना, जे मात्र गर्मीसँ नहि, गहींर असुरक्षासँ जन्मैत अछि। अपराधक वैश्विक मालिक भावना नहि, केवल प्रवाह देखैत अछि। पानि जिधर रुकल, ओकरा ओतय संकट। गढ़ नारिकेलमे बनैत छोट-छोट सभा सभ ओकरा लेल अदालतक निर्णयसँ बेसी खतरनाक छल।

ओहि राति गढ़ नारिकेलमे चन्ना गाछी तले एक नब खेल शुरू भेल। बच्चा सभ कबड्डी खेलैत छल, मुदा नियम बदलल। जे धरायल, ओकर नाम काटल नहि जाएत; ओकर नाम सभ मिलि कऽ दोहराओत। जे साँस रोकि कऽ सीमा पार करत, ओकरा पूछल जाएत— 'केकर नाम नेने छी?' बच्चा जवाब देत— 'सरयू।' दोसर— 'उज्ज्वल।' तेसर— 'हुलासी।' खेल धीरे-धीरे स्मृतिक अभ्यास बनि गेल।

बूढ़बा भूत डारि पर बैसल मुस्की देलाह। राकश अपन इजोत कम कऽ देलक, जेना बच्चा सभक खेल बाधित नहि हो। लोथ पहिल बेर दर्शक सँ उठि कऽ मैदानक कात आबि बैसल। पनिडुब्बीक झोँटा पोखरिक पानिमे नाचल, मुदा ककरो पएर पकड़ल नहि। डाइन सभ छौंकी लऽ कऽ ऊपर सँ चक्कर काटैत रहल, जेना पहरा देत होथि।

खाली अदालतक बात चन्ना गाछी धरि पहुँचल तँ पात सभमे हल्का हँसी दौड़ल। पात कहैत छल— 'जे भवन लोकक प्रतीक्षा करैत रहि जाए, आ लोक ओकर बाहर जीवन शुरू कऽ दे, ओ भवन खाली नहि, पछुतायल होइत अछि।'

सत्यव्रत मेहता राति अपन डायरीमे लिखलनि— 'आइ बुझलहुँ जे न्यायालयक सभसँ पैघ संकट मुकदमा नहि, समाजक परिपक्वता अछि। जखन लोक न्यायालयसँ घृणा नहि, अपितु निर्भरता कम करैत अछि, तखन न्यायालयकेँ अपन अर्थ फेर सोचय पड़ैत अछि।'

ओ लिखि कऽ रुकलाह। फेर जोड़लनि— 'खाली अदालत असफलता नहि, चेतावनी अछि। जँ न्याय लोकक नाम नहि पढ़त, लोक अपन अदालत खोलत।'

भोर होइतहि अदालतक बरामदामे सफाइ-कर्मी आयल। ओ देखलक जे एक बेंच पर खड़ियासँ छोट-छोट नाम लिखल अछि। ओ पोंछय लगल। नाम पोंछाइ गेल, मुदा धूलमे फेर उभरि गेल। सफाइ-कर्मी थमकि गेल। ओकर अपन बाबूजी सेहो कखनो एक निर्माण-स्थलसँ घुरि नहि अयलाह। सरकारी कागचमे लिखल छल— 'काम छोड़ि चलि गेल।' ओ धीरे सँ ओहि धूलमे अपन बाबूजीक नाम लिखलक।

एहि तरहें खाली अदालतमे पहिल नागरिक अभिलेख खुलल— कोनो आदेश सँ नहि, कोनो याचिका सँ नहि, एक सफाइ-कर्मीकेँ मोन पड़लासँ।

बटुकनाथ जखन पहुँचल, ओ बेंच साफ छल। मुदा ओकरा लागल जे सभ बेंच पर कियो अदृश्य बैसल अछि। अदालत खाली नहि रहि गेल छल; ओ उनकरा सभसँ भरि गेल छल जिनका कहियो प्रवेशपत्र नहि भेटल। ओ सिहरि उठल — एहन सिहरन, जकरा ओ कहियो अपन जीवनक कोनो मामलामे अनुभव नहि केने छल। ओकर जीतक शोक आब आकार लऽ रहल छल— खाली अदालतक रूपमे।

लोकगीत: खाली बेंचपर बाबूजी

लोकधुन: श्रमिक-पुत्रक करुण गीत

बैसू हे बाबूजी, खाली बेंच पर बैसू हे,
अनुपस्थित जीवनक हाजिरी आइ भरू हे।

अदालत खाली कहल, मुदा बेंच भरल छाह,
जिनका प्रवेश नहि भेटल, सभ बैसल ओतय आइ।
झाड़ूबला धूलिमे बाबूजीक नाम लिखलक,
‘काम छोड़ि गेल’क झूठ पहिल बेर सिहरलक।
पोंछल नाम फेर उगल, जेना बीजक पात,

एक बेटाक मोनसँ खुलल नागरिक अभिलेख राति।
न्याय जँ नाम नहि पढ़त, लोक बनत दरबार,
खाली भवन पछतायत, सुनत घरक पुकार।
बाबूजी, बेंचपर बैसू, बेटा आबि गेल,
तोहर अनुपस्थित जीवन आइ उपस्थित भेल।

जिनका प्रवेश ने भेटल, से सभ बैसल आइ,
झाड़ूबला धूलि मे बाबूक नाम लिखाइ।
पोछल नाम बीज जकाँ फेर पात बनि उगल।

❖

अध्याय १९

नामक अभिलेख

कुर्सी सड़ि जाइ छै, जड़ि नहि; कागज फाटि जाइ छै, अभिलेखक नाम नहि।

अध्यायारम्भ लोकगीत: उपस्थितिक पराती

लोकधुन: पराती

गाबू हे पराती, 'हम उपस्थित' गाबू हे,
हरद-काजर पात पर पुरनका नाम सजाबू हे।

हरद-काजर पातपर पुरनका नाम सजाउ,
हाजिरीक घड़ी सभ मिलि ‘हम उपस्थित’ गाउ।
कागच फाटि सकै, जड़ि अक्षर फेर उगै,
ओसक बून्द सुखलापर स्मृतिक रेखा रहै।

सरकारी फोन थमि जाए, जनक स्वर नहि,
नामक पाठशालामे कियो अनुपस्थित नहि।
उपस्थितिक परातीसँ भोर सभक होए,
अनामक हाजिरी लऽ इतिहास पूर्ण होए।

भोरहरबाक ठण्ढ हवामे हाजिरीक घण्टी,
कागच फाटए, जड़ि नहि—उगए नाम-पाँती।
सरकारी तार थम्हए, लोकक स्वर नहि थम्हत,
अनामो केर हाजिरीसँ इतिहास पूरा बनत।

❖

शहरक खाली अदालतक बेंच पर जे नाम धूलमे उभरल छल, ओकर बीआ राति भरिक हवामे उड़ैत गढ़ नारिकेल पहुँचि गेल छल। एम्हर चन्ना गाछीक अदालत उठि गेल छल, मुदा ओकर कुर्सी सभ ओतहि रहि गेल छल। कुर्सी कहू कि जड़ि, किएक तँ ओ सभ लकड़ीक कुर्सी नहि छल। ओ सभ ओहि गाछक जड़ि छल जे धरतीसँ ऊपर उठि कऽ रातिभरि पीठ बनि गेल छल, जाहि पर मृतक सभ बैसल छलाह, जीवित सभ ठाढ़ छलाह, आ जे अपनाकेँ विजेता बुझैत छल से दूर, धूलि भरल सड़क पर मोटरक काँच चढ़ा कऽ पसीना पोछैत छल।

भोरे जखन पहिल चिरइक आवाज भेल, तखन चन्ना गाछीमे खेलक रेखा अखनो खिंचल छल। माटि पर पएरक निशान छल, मुदा ओ पएर केकर छल, ई कोनो मनुक्ख अलग कऽ नहि सकैत छल। किछु निशान धरतीकेँ छूने छल, किछु एक अंगुर ऊपरसँ गुजरल सन बुझाइत छल, किछु गोल-गोल, जेना कोनो भारी देह बिना हड्डीक ओतऽ लुढ़कल हो। पनिडुब्बीक झोँटा, जे

राति भरि गाछक डारिसँ लटकि रहल छल, आब ओसक बूँद बनि कऽ झरि रहल छल। पीपरक ब्रह्मा चुप छलाह। चुप्पी एहन जेना फैसला लिखल जा चुकल हो, मुदा ओकर प्रति सभकेँ अपन-अपन देहमे लऽ जएबाक हो।

आरुणि सभसँ पहिने उठल। ओकरा राति भरि निन्न नहि भेल छल। ओकर माथमे अदालतक ओहिना आवाज घूमि रहल छल जेना शहरक अदालतमे पंखाक घुरघुराहट घूमैत रहैत अछि। मुदा एतुक्का आवाज अलग छल। ओहि आवाजमे “मंजूर”, “नामंजूर”, “अगिला तारीख” नहि छल। ओहि आवाजमे केवल नाम छल। नाम जे राति भरि बजल, आ जकरा सुनैत-सुनैत गाछक पात सभ कागच बनि गेल।

बा दुआर पर बैसल छली। हुनकर आँखि लाल छल, मुदा चेहरा साफ। ओ पूछलथिन, “कतेक नाम मोन रहल?”

आरुणि उत्तर देबाक पहिने बहुत देर धरि मौन रहल। नाम मोन रहैत अछि? नाम तँ ओस जेकाँ खसैत अछि, पानि जेकाँ बहैत अछि। मुदा जे नाम एक बेर मृतकक मुँहसँ निकलि जाइत अछि, ओकरा बिसरब पापक बराबर।

“सभ नहि,” आरुणि कहल, “मुदा शुरू करब तँ बाकी नाम अपने आबि जाएत।”

बा अपन पुरान संदूक खोललथिन। कब्जा चीं कऽ बाजल, आ भीतरसँ पुरान कागच, कपूर आ सूखल नीम-पातक मिलल-जुलल गन्ध उठल। ओही संदूक जाहिमे कतेको बर्खसँ खाता-बही, पुरान कागच, बियाहक पत्रिका, मुकदमाक नोटिस, बीमारक पर्ची, आ नन्द आरुणिक ओ अधूरा आवेदन राखल छल। ओहि आवेदनक कोना पीयर पड़ि गेल छल; मुदा स्याहीमे ओहि रातिक गन्ध अखनो छल, जखन नन्द लिखने छलाह — “मजदूरक वास्तविक संख्या सरकारी अभिलेखसँ मेल नहि खाइत अछि।”

बा ओहि आवेदनक ऊपर हाथ फेरलथिन। “अभिलेख ई नहि,” ओ कहलथिन, “ई तँ गेट पर रोकल गेल कागच अछि। अभिलेख ओ होइत अछि जकरा लोक अपन छातीमे राखैत अछि। मुदा छाती फाटि जाइत अछि, तेँ ओकरा बाहर लिखबाक चाही।”

“कतय लिखब?” सौम्या पूछलथिन।

बा चन्ना गाछीक दिस इशारा केलथिन। “जतऽ अदालत बैसल छल।”

ओहि दिन गढ़ नारिकेलमे कोनो घोषणा नहि भेल। नगाड़ा नहि बाजल। पोस्टर नहि लागल। कोनो समिति, कोनो अध्यक्ष, कोनो उपाध्यक्ष नहि बनल। जे नाम चाही छल, से लोक खुदे चलि आबय लागल। पहिने सरयूक नातिन आयल। सरयू ओ स्त्री-मजदूर छली जे सरकारी

सूचीमे नहि छली, कारण ओकरे नाम पर उपस्थिति नहि भरल गेल छल; ओकर पतिक नाम पर दू बेर मजदूरी उठल छल, आ ओकर देह गंगाक पानिमे ओहि दिन गेल जखन इंजीनियरक बहीमे "सुरक्षा-प्रशिक्षण सम्पन्न" लिखल गेल छल। नातिनक हाथमे प्लास्टिकक थैला छल, जाहिमे दू टा चूड़ीक टुकड़ा आ एक पुरान फोटो छल। थैला हिलैत छल तँ चूड़ीक टुकड़ा हलुक टन-टन बाजैत छल, जेना ओहो अपन उपस्थिति लिखाबय चाहैत हो। फोटोमे चेहरा धुँधला छल, मुदा माथक पल्लू आ आँखिक कोरि स्पष्ट छल।

"ई हमरा नानी," ओ कहलक, "कागचमे ओ नहि छथि। घरमे छथि। हम चाहैत छी ओ चन्ना गाछीमे सेहो रहथि।"

सौम्या ओकरा लग बैसलि। "नाम?"

"सरयू देवी। गाम — बिशनपुर टोला। काम — माथपर टोकड़ी। मृत्यु — कहू नहि, गुम। मुदा हमर नानी मरली छली।"

सौम्या लिखय लगली। मुदा कागच पर नहि। ईरा विदेशसँ अनल एकटा टिकाऊ पट्टिका निकाललनि — पातर धातुक, जकरा बरखा, धूप, दीमक, आ सरकारी सफेदी आसानीसँ नहि खा सकैत छल। मुदा बा हाथ रोकि देलथिन।

"धातु पर बादमे," ओ कहलथिन, "पहिने पात पर। जे पात स्वीकार करत, से धातु पर टिकत।"

अनन्या दौड़ि कऽ नारिकेलक सूखल पात आनलक। ओ पात एहन लंबा छल जेना नदीक पुरान नक्शा। देविका ओकरा साफ केलक। मीरा स्याही बनओलक — कालिख, काजर, पिसल हरद, आ गंगाजलक दू बूँद मिला कऽ; स्याहीसँ हरद आ काजरक मिलल गन्ध उठल, जेना घरक आ घाटक गन्ध एक ठाम भऽ गेल हो। निशांत, जे आँगनक कात मोबाइल लऽ ठाढ़ छल, पहिल बेर फोन जेबीमे राखि देलक। ओकरा बुझा गेल जे एतऽ जे लिखा रहल अछि, तकर फोटो लएबाक जल्दी नहि। किछु बात पहिने आँखिसँ देखबाक होइत अछि, बादमे यंत्रसँ।

आरुणि पहिल नाम लिखलक — "सरयू देवी"।

जखन पात पर स्याही लागल, तखन चन्ना गाछीक भीतर सँ एक हलुक हँसी आयल। हँसी बूढ़बा भूतक छल कि हुलासीक, से केओ नहि बुझलक। मुदा ओहि हँसीमे राहत छल। जेना बारह सय बरखसँ बैसल कोनो आत्मा कहि रहल हो — हँ, आब शुरू भेल।

दोसर नाम कन्हैया पासवानक आयल। ओकर बेटा मुन्ना नहि, ओकर पोता आयल छल। कन्हैया पायाक भीतर सीमेण्ट जमाबैत काल खसल छल। सरकारी कागचमे ओहि दिन ओकर

हस्ताक्षर अगिला दिन धरि चलैत रहल। मृत मनुक्खक हस्ताक्षर? ई प्रश्न जखन नन्द उठौलन्हि, तखन बाबू कहने छल — “साहब, अंगूठा तँ ओ पहिनहिए लगा देने छल।”

कन्हैयाक पोता अपन जेबीसँ एकटा छोट लोहेक कील निकाललक। “ई बाबा लग रहै छल,” ओ कहलक, “कहथि जे पुलक लोहा लोकक पेटमे गेल तँ पुल हिलत।”

ओहि कीलकेँ पातक कात राखल गेल। नाम लिखल गेल — “कन्हैया पासवान”।

तकरा बाद नामक पाँति खुलि गेल। मंसूर अली। फुलो मंडल। गनेशी सदा। फूलबसिया खातून। बिसेसर साह। जगदीश यादव। रामचरितन मुखिया। झिंगुर महतो। बलेसरनी। कोनो नाम लग्गे पिता नहि, कोनो नाम लग्गे पति नहि, कोनो नाम लग्गे केवल टोल। किछु नामक उच्चारण पर विवाद उठल। केओ कहलक — “ओकर नाम फुलो नहि, फुलवा छल।” दोसर कहलक — “कागचमे फुलो।” बा कहलथिन — “कागच झूठ बाजि सकैत अछि। ओकर घरमे जे नाम पुकारल गेल, सएह लिखू।”

तखन पहिल नियम बनल — अभिलेखमे सरकारी नाम नहि, पुकारू नाम सेहो रहत। कारण मृतककेँ ओहि नामसँ मुक्ति भेटैत अछि जाहिसँ ओकरा मायक गला पुकारने हो।

दुपहर धरि चन्ना गाछीमे पचास नाम लिखाइ गेल। पात सभ जमीन पर बिछल। ओहि पात सभ पर कौआ चलल, मुदा स्याही नहि पोंछल। एकटा बच्चा पएर रखि देलक, मुदा अक्षर नहि बिगड़ल। बा मुस्कुरेली — “जे नाम मृतकक इच्छा सँ लिखल जाइत अछि, ओकरा पर जीवितक पएर किछु नहि करैत अछि।”

दूर शहरमे बटुकनाथ हरिहरनक कार्यालयमे एही समय बैसकी चलि रहल छल। मेज पर फैसला छल। फैसला हुनका पक्षमे छल। धारा, प्रक्रिया, सीमा, अधिकार-क्षेत्र, स्वीकार्यता — सभ शब्द ओकरा अनुकूल। ओ कल्हि धरि एहि शब्द सभसँ लोककेँ हरबैत छल। मुदा आइ ओकरा ओ शब्द सभ खाली लगैत छल।

चन्द्रपाल बत्रा सिगार नहि, लौंग चबा रहल छल; डॉक्टर ओकरा सिगार छोड़बाक सलाह देने छल। ओ बाजल, “कागचमे जीत छी। जमीन पर ओ सभ की कऽ रहल अछि?”

बटुकनाथ चश्मा नीचाँ खसाकऽ देखलक। “ककरा सभ?”

“सएह — गोप, सौम्या, आरुणि, देविका। अदालतमे नहि आबि रहल। मीडियामे नहि आबि रहल। सोशल पर सेहो नहि। ई चुप्पी ठीक नहि।”

“

हारल लोक चुप्पे होइत अछि,” बटुकनाथ कहल, मुदा ओकर आवाजमे ओ विश्वास नहि छल जे ओकर चेहरा पर रहबाक चाही छल।

राघव सिग्नल सोमानी फोन देखलक। सिग्नलपर लाउ किन-हंगक छोट सन्देश आयल छल —“शोर समाप्त?”

राघव उत्तर देलक — “शोर समाप्त? कानूनी रूपेँ हँ।”

तत्क्षण उत्तर आयल — “कानून शोर नहि।” लोक शोर। जाँचू।

राघवक माथ पर पसीना आयल। विदेशी सरगना लोकक नब गतिविधिक गन्ध दूरसँ सूँघि लैत अछि। ओकरा बुझाइत छल जे केस हारि गेलाक बाद लोक टूटि जाइत अछि, पराजित होइत अछि, समझौता माँगैत अछि। मुदा ई लोक सभ नहि समझौता माँगि रहल छल, नहि अगिला अपीलक पैसा। ओ सभ गायब छल। गायब लोकक डर मृत लोकक डर जेकाँ होइत अछि — ओ कतयसँ बाजत, कहि नहि सकैत।

साँझ धरि चन्ना गाछीमे धूप तिरछी भेल। पात पर नाम चमकए लगल। ईरा, जे विदेशमे कानून पढ़ने छली, देखैत रहली। हुनका मोन पड़ल हार्वर्डक सभागार, जकर देबाल पर “नैतिक नेतृत्व” लिखल छल। ओतय नाम नहि छल, केवल सिद्धान्त छल। एतय सिद्धान्त नहि छल, केवल नाम छल। आ ओहि नाम सभमे ओहिसँ बेसी नैतिकता छल जतबा पुस्तकालयक हजार किताबमे नहि।

ईरा धीरे सँ कहलनि, “हम एहि अभिलेखक एक प्रति विदेश पठा दी?”

बा हँसलथिन। “विदेश पठाउ, समुद्र पठाउ, बादर पठाउ। मुदा पहिल प्रति एतय रहत। जकर माटि नाम सुनलक, ओकरा पहिल अधिकार।”

गोप कुमार, जे एखन धरि चुप छल, अपन थैला खोललक। ओहि थैलामे प्रिण्टआउट नहि छल; ओ पुरान पेन-ड्राइव सेहो नहि। ओहिमे सैकड़ो छोट कागच छल, हर कागच पर एक नाम आ एक संख्या। संख्या मतलब बैंक खाता, बिल, भुगतान, मृत्यु-दिन, एम्बुलेंस नम्बर, दवा-शीशी, गैम्ब्लिंग लेन-देन, डिजिटल अरेस्टक कॉल समय।

“ई सभ सेहो नाम अछि,” गोप कहल, “केवल मजदूर नहि। कोरोना-कालमे जकरा बिस्तरक बदला बिल भेटल, ऑक्सीजनक बदला रसीद भेटल, स्क्रीनक गोहि सँ जकर बेटा गेल, देह-बाजारमे जकर बेटी गुम भेल, ब्लैकमेलमे जकर जीवन चुप भेल — सभ।”

चन्ना गाछी कनी देर शांत भऽ गेल। जेना मृतक सभ विचार कऽ रहल होथि — एक अभिलेखमे कतेक मृत्यु समा सकैत अछि? फेर पीपरक पात हिलल। ब्रह्मा उतरि कऽ ओतऽ नहि अएलाह, मुदा हुनकर छाह पात पर पड़ल। छाह चारि भागमे फूटल — चारि मुखक चारि दिशा। बा बुझली — अनुमति अछि।

तखन दोसर नियम बनल — अभिलेख केवल पुरान जलसमाधिक नहि रहत। जकरा व्यवस्था खा गेल, जकरा कागच मेटा देलक, जकरा स्क्रीन डुबा देलक, जकरा निजता मारि देलक, जकरा देह बाजारमे बेचि देलक, सभक नाम एतय रहत, जँ ओकर लोक चाहत।

मीरा पहिल बेर अपन आवाज खोललक। “जँ कोनो व्यक्ति नहि चाहय जे ओकर निजी जीवन सार्वजनिक हो?”

बा ओकर दिस तकलथिन। “नामक अर्थ नंगा करब नहि। नामक अर्थ स्मरण। जकर दुख छिपल रहए चाही, ओकर दुख छिपल रहत। जकर नाम रहए चाही, ओकर नाम रहत। चन्ना गाछी ककरो लाज नहि लुटैत।”

मीरा आँखि झुका लेलक। ई वाक्य ओकरा ओतबा शरण देलक जतबा कानूनक कोनो धारा नहि देने छल। ओ अपन कागच निकाललक। ओहिमे किछु नाम नहि, केवल चिह्न छल — “एक युवती, दरभंगा”; “एक शिक्षक, पटना”; “एक नर्स, नोएडा”; “एक छात्र, काठमांडू-रूट”; “एक पत्नी, जकर भिडियोसँ डराओल गेल।” मीरा कहलक, “एखन नाम नहि। एखन चिह्न। जखन ओ सभ तैयार हेताह, नाम आबत।”

तखन तेसर नियम बनल — अभिलेखमे मौनक स्थान सेहो रहत। कारण किछु सत्य तुरन्त बाजि नहि सकैत; ओकरा सुरक्षित छाँह चाही।

राति होमय धरि चन्ना गाछीक माटि पर पातक चादर बिछि गेल। अनन्या आ गामक बच्चा सभ अक्षर पढ़य लगल। पहिने बच्चा सभ नामकेँ खेल बुझलक; फेर देविका ओकरा बुझेलक — “ई पाठ अछि। ई परीक्षा नहि। गलत पढ़ब तँ फेर पढ़ब। मुदा बिसरब नहि।”

एक नेना पूछलक, “ई सभ मरि गेल?”

बा कहलथिन, “नहि। ई सभ लिखाइ गेल।”

दूर सड़क पर एक कारी गाड़ी अबैत-रुकैत-घुरैत रहल। राघव सिग्नल सोमानीक लोक छल। ओ फोटो लेबय चाहैत छल, मुदा ओकर मोबाइलक कैमरा खोलिते स्क्रीन पर पानि भरि जाइत छल। दोसर मोबाइल खोललक — ओहो। तेसर — ओहो। फोटोमे केवल धुँधला पात, पानि आ उल्टा लटकल अक्षर आबैत। ओ डरि कऽ घुरि गेल।

राघवकेँ रिपोर्ट भेटल — "ओ सभ नाम लिखि रहल अछि।"

बटुकनाथ सुनि कऽ हँसल। "नाम? नाम लिखि कऽ की होएत?"

चन्द्रपाल बत्रा चुप रहल। ओकरा ऑनलाइन गैम्ब्लिंगक दुनिया बुझल छल। ओ जनैत छल जे डेटा जँ एक बेर फैलि जाए, तखन ओकरा पोंछब कठिन होइत अछि। नाम सेहो डेटा छी — मुदा एहन डेटा जकर पासवर्ड मृतकक मुँहमे होइत अछि। ओ धीरे सँ पूछलक, "कतेक नाम?"

"गिनती जारी अछि," राघव कहल।

"गिनती जारी अछि" — ई वाक्य सुनिते बटुकनाथक हँसी रुकि गेल। जीतल लोक गिनतीसँ डेराइत अछि। कारण ओ सभ सदिखन संख्या घटबैत जीतैत अछि। तीस नाम लिखू, बाकी अनुपस्थित। एक मृत्यु लिखू, बाकी बीमारी। एक आत्महत्या लिखू, बाकी व्यक्तिगत कारण। एक ब्लैकमेल लिखू, बाकी चरित्र। एक ठगी लिखू, बाकी लालच। जखन गिनती उल्टा शुरू होइत अछि, तखन जीतक कागच पीयर पड़य लगैत अछि।

ओहि राति चन्ना गाछीमे कबड्डी नहि भेल। भूत सभ खेलक मैदानक चारू दिस बैसल रहलाह। बीचमे पात बिछल छल। बूढ़बा भूत अपन कारी देहकेँ कनी झुकौलन्हि आ पहिल पात पर लिखल "सरयू देवी" पढ़लन्हि। हुनकर आँखिक उज्जर प्रकाश एक क्षण लेल स्याहीमे उतरि गेल। तखन सरयू देवीक नामक अक्षर कनी काँपल, जेना ओ दूर गंगाक पायाक भीतरसँ गर्द झाड़ि कऽ उठि रहल हो।

"हम उपस्थित," एक आवाज आयल।

ककरो मुँह नहि हिलल। मुदा सभ सुनलक।

"हम उपस्थित," दोसर पात सँ।

"हम उपस्थित।"

"हम उपस्थित।"

धीरे-धीरे चन्ना गाछीमे उपस्थिति लगऽ लगल। ओहि उपस्थिति-पंजीमे कोनो बाबू नहि छल, कोनो लाल मोहर नहि, कोनो फीस नहि। केवल नाम छल, आ नामक संग हवा।

आरुणि ओहि क्षण बुझलक जे ई अभिलेख मुकदमाक अगिला दस्तावेज नहि। ई समाजक पहिल साँस अछि। अदालत खाली भऽ गेल छल, किएक तँ न्याय अपन दोसर घर खोजि लेने छल।

भोरे जखन सूरज निकलल, तखन चन्ना गाछीक पात पर लिखल नाम सभ सूखि चुकल छल। किछु अक्षर हलुक हरियर भऽ गेल छल, जेना पात ओकरा अपन नसमे उतारि लेने हो। अनन्या एक-एक नाम पढ़ैत गेली। बच्चा सभ दोहरबैत गेल। देविका उज्ज्वलक नाम लग रुकि गेली। ओ लिखलक — “उज्ज्वल झा — स्क्रीनक गोहि।” ओकर हाथ काँपल, मुदा अक्षर सोझ रहल।

निशांत ओकरा कात ठाढ़ छल। ओ धीरे सँ कहल, “अगिला काज स्क्रीनक विरुद्ध हएत।”

देविका ओकरा देखलक। “काज नहि। पाठशाला।”

बा सुनि लेलथिन। “हँ,” ओ कहलथिन, “जे गोहि पानिमे रहैत अछि, ओकरा मल्लाह चिन्हैत अछि। जे गोहि स्क्रीनमे रहैत अछि, ओकरा बच्चा सभकेँ चिन्हाबय पड़त।”

ओहि दिन चन्ना गाछीमे चौठ नियम लिखल गेल — अभिलेख केवल स्मृति नहि, सावधानी सेहो अछि। नाम लिखब मृतकक सम्मान अछि; नाम पढ़ब जीवितक रक्षा।

दूर शहरमे सत्यव्रत मेहता अपन टेबल पर बैसल छलाह। हुनका लग सेहो एक प्रति पहुँचल। कोनो ईमेल नहि, कोनो कुरियर नहि। भोरमे हुनकर सरकारी आवासक बरामदामे एक नारिकेल पात भेटल। सुरक्षाकर्मी कहलक — “सर, ई के राखि गेल, कैमरामे नहि अछि।”

सत्यव्रत पात खोललन्हि। पातसँ अखनो हरद आ काजरक हलुक गन्ध उठैत छल। पहिल नाम पढ़िते हुनकर आँखि नोरा गेल। दोसर नाम पर ओ कुर्सी सँ उठि गेलाह। तेसर नाम पर ओ सरकारी फोन बन्द कऽ देलथिन।

ओ बुझि गेलाह — अगिला सुनवाई अदालतमे नहि, देशक स्मृतिमे होएत। आ एहि बेर विपक्ष वकील नहि, नाम होएत। नामकेँ जिरहसँ हराओल नहि जा सकैत।

गढ़ नारिकेलमे ओहि दिन साँझ पड़ला पर नारिकेल गाछक पहिल सूखल पात हवामे बजल। आवाज अजीब छल। जेना दूर कतहुँ स्कूलक घंटी बजि रहल हो।

अनन्या पूछलक, “स्कूल खुलि गेल?”

बा कहलथिन, “हँ। नामक पाठशाला खुलि गेल।”

लोकगीत: हम उपस्थित छी

लोकधुन: पराती

कहू हे कहू, 'हम उपस्थित छी' कहू हे,
हरद-काजरक पात पर पुरनका नाम धरू हे।

हरद-काजर पातपर लिखल पुरनका नाम,
मायक कण्ठ पुकारलक, जागल सभक प्राण।
कागच फाटि जाए, कुर्सी सड़ि जाए,
जड़िमे गाड़ल अक्षर फेर कोंपल बनि आए।
ओस बनि खसल नाम, स्याही बनि बैसल,

हाजिरीक बेरमे 'हम उपस्थित' कहि उठल।
मेहताक आँखि नोरायल, सरकारी फोन थमल,
अगिला सुनवाई देशक स्मृतिमे जमल।
घंटी बजल पातसँ—नामक पाठशाला,
अनाम सभक हाजिरी लिअ, खोलू नब उजाला।

कागच फाटौ, कुरसी सड़ौ, जड़िक अक्षर रहत,
ओस बनि खसल नाम स्याही बनि जमत।
मेहताक आँखि भीजल, सरकारी फोन थमल,
पातक घण्टी बाजल—नामक पाठशाला खुजल।

❖

अध्याय २०

स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला

स्क्रीन जे-जे निगलने छल, पाठशाला से-से एक-एक कऽ घुरबैत गेल।

अध्यायारम्भ लोकगीत: अकेला नहि—संगक गीत

लोकधुन: बाल-लोकधुन

हो-हो करू संगी, गोल घेरा बान्हू हो,
'अकेला तँ नहि छी?'—पहिल प्रश्न ठानू हो।

स्क्रीनक गोहिक चारि पएर—लालच, भय, लाज,
संगक हाथ भेटिते टूटै ओकर पूरा राज।
नेना गोल घेरा बनि एक प्रश्न उठाबै,
'अकेला तँ नहि छी?'—मित्र तुरन्त बताबै।

भय बाँटल तँ हल्लुक, लाज अपराधी जाए,
सहारा नाम पाबिते समाज रूप बनाए।
अकेला नहि—संगक गीत फोन-पार गुँजत,
एक-दोसरक जागल स्वर जीवन बाट चुनत।

स्क्रीनक गोहि फुफकारए—लालच, भय, लाज,
हाथ-हाथ जुड़ि गेला पर टूटए ओकर राज।
भय बँटला पर आधा, हँसी बँटला पर दूनी,
संगीक गीत गबैत नेना बाट चलए सगुनी।

❖

कािल्ह साँझ नारिकेलक जे सूखल पात घंटी जकाँ बाजल छल, से भोर धरि लोकक कानमे बजैत रहल। नामक अभिलेख बनलाक दोसर दिन गढ़ नारिकेलमे एहन शान्ति उतरि आयल जेना गामक ऊपर ककरो पैघ हाथ राखि देल गेल हो। चन्ना गाछीमे पात पर लिखल नाम सभ ओससँ भीजल छल, मुदा अक्षर नहि बही रहल छल। किछु अक्षर हरियर भऽ गेल छल, किछु काजर-जेकाँ कारी, किछु एहन जेना माटिक भीतरसँ ऊपर आबि रहल हो। बच्चा सभ भोरसँ ओतहि जुटि गेल। हुनका लेल ई शोक नहि छल; ई नब पाठ छल। ओ सभ नाम पढ़ैत-पढ़ैत अटकि जाइत, फेर दोसर बच्चा ठीक करैत, फेर सभ एक साथ दोहरबैत।

अनन्या सभसँ आगू छलि। ओकरा नाम पढ़बाक ढंगमे किछु ओहिना छल जेना छोट नेना पहिल बेर वर्णमाला पढ़ैत अछि — मुदा एतय वर्णमाला मृतकक देहसँ बनल छल। “सरयू देवी,” ओ पढ़लक। दोसर सभ बजल — “उपस्थित।” “कन्हैया पासवान।” “उपस्थित।” “

उज्ज्वल झा।” एतय ओकर आवाज कनी रुकि गेल। देविका साह दूर ठाढ़ छली। हुनकर आँखि पात पर नहि, अनन्याक मुँह पर छल।

उज्ज्वलक नामक लग कोनो टोकड़ी नहि राखल छल, कोनो कील नहि, कोनो चूड़ी नहि। ओहि नामक लग एक छोट फुटल मोबाइलक काँच राखल छल। काँचक भीतर आकाश उल्टा देखाइत छल। कखनो-कखनो ओहि काँचमे चन्ना गाछीक डारि सेहो आबि जाइत, आ लगैत जेना गाछ स्क्रीनक भीतर बन्द भऽ गेल हो। भोरक रौद ओहि काँच पर पड़ैत तँ ओ एक क्षण लेल चमकि उठैत, जेना गोहिक आँखि टिमकल हो।

देविका धीरे-धीरे आगू आयल। ओ पात लग बैसलि। हाथ बढ़ा कऽ काँचकेँ छूअय चाहलन्हि, फेर रोकि लेलन्हि। उज्ज्वल ओकर छोट भाय छल। ओ घरमे सभसँ तेज, सभसँ हँसोड़, सभसँ बेस मोबाइल चलएबला। ओ पहिने घरक सबहक फोन ठीक करैत छल; बादमे फोन ओकरे ठीक नहि होमय देलक।

“ओ पहिने जीतैत छल,” देविका आँचरक खूँट आँगुरमे लपेटैत बच्चा सभकेँ कहलनि। “ई स्क्रीनक गोहि पहिने शिकारकेँ कनी जीतबैत अछि। जेना नदीक गोहि पहिने पानि शान्त रखैत अछि। नेना सभ, याद राखू — जखन कोनो चीज पहिने-पहिने बहुत सहज लाभ दे, तखन ओकर दाँत देखबाक चाही।”

एक बच्चा पूछलक, “दाँत स्क्रीनमे कतय होइत अछि?”

निशांत झा, जे काल्हि धरि चुप्पा दर्शक छल, आइ पहिल बेर हँसल। ओ विदेशमे पलल-बढ़ल, वित्त-प्रौद्योगिकीक पढ़ल, आ स्क्रीनक भीतर पैसाक रस्ता बनएबाक काज कऽ चुकल छल। ओकरा बुझल छल जे स्क्रीनक दाँत लोहेक नहि होइत, नियमक, शर्तक, भयक, आ लतक होइत अछि। मुदा बच्चाकेँ ई शब्द कहब बेकार। ओ नेनाकेँ कहलक — “जखन स्क्रीन अहाँसँ कहय जे ककरो नहि कहू, तखन बुझू ओकर दाँत अछि। जखन स्क्रीन कहय जे तुरन्त पैसा पठाउ, नहि तँ जेल, तखन बुझू ओकर दाँत अछि। जखन स्क्रीन कहय जे अहाँ जीतब निश्चित अछि, तखन बुझू ओकर जीह लाल अछि।”

बा ई बात सुनि कऽ मुस्कुरेली। “ठीक बजल,” ओ कहलथिन। “पुरना जमानामे डाइन बच्चाकेँ कहैत छल — मायक बात नहि मानह, हम तोरा गुप्त मिठाइ देब। आब स्क्रीन कहैत अछि — घरमे नहि कहू, हमरा विश्वास करू। डाइन बदलि गेल, चाल नहि।”

ओहि भोर चन्ना गाछीक पातक कात पहिल कक्षा बैसल। कोनो पट्टी नहि, कोनो घंटी नहि, कोनो सरकारी मान्यता नहि। नेना सभ गोल बैसल। बीचमे फुटल मोबाइलक काँच, एक

पुरान बैंक-पासबुक, उज्ज्वलक अधूरा कॉपी, आ नारिकेलक पात। देविका, निशांत, अनन्या, मीरा, सौम्या, आरुणि — सभ शिक्षक नहि, साक्षी बनि बैसल।

देविका उज्ज्वलक कथा कहलक। मुदा ओ कथा रोदन जेकाँ नहि कहल। ओ ओकरा पाठ जेकाँ कहल — किएक तँ रोदन ओ बहुत राति रोइ चुकल छली। उज्ज्वल एक दिन पाँच हजार जीतलक। घरमे मिठाइ आनलक। सभ सोचलक, शायद किछु ऑनलाइन काम करैत अछि। फेर पन्द्रह हजार गेल। फेर पचास। फेर कर्ज। फेर धमकी। फेर एक दिन स्क्रीन पर सरकारी मोहरक नकली भय। “डिजिटल अरेस्ट” — जे शब्द सुनिते लोकक देह सुन्न भऽ जाइत छल। फोन पर आवाज कहैत — “दरबाजा बन्द करू। कैमरा खोलू। ककरो नहि कहू।”

देविका एतय रुकि गेली। बच्चा सभ ओकरा देखैत रहल। ओ कहलनि, “जकरा सचमे कानून पकड़ैत अछि, ओ घरमे कैमरा खोलि कऽ अकेला नहि बैसाबैत। जकरा सचमे सरकार पूछैत अछि, ओकरा डरक ताला नहि लगबैत। डर जँ अकेला करय चाहय, तखन बूझू — ओ चोरक डर अछि, कानूनक नहि।”

मीरा एहि बात पर माथ हिलेलक। ओकरा अपन जीवनक ब्लैकमेल मोन पड़ल। ओकरा सेहो अकेला करबाक कोशिश भेल छल — “ककरो नहि कहू, नहि तँ वीडियो, नहि तँ फोटो, नहि तँ परिवार।” ओ धीरे सँ नेना सभकेँ कहलनि, “जे भय अहाँकेँ अपन लोकसँ दूर करे, ओ भय झूठक दूत अछि। सच अहाँकेँ अपन लोक लग लऽ जाइत अछि।”

पहिल दिन बच्चा सभ बहुत किछु नहि बुझलक। मुदा ओ सभ एतबा बुझलक जे स्क्रीन सेहो जङ्गल होइत अछि। जङ्गलमे साँप होइत अछि, खटाँस होइत अछि, डाइनक छाह होइत अछि; स्क्रीनमे सेहो होइत अछि। फर्क एतबे जे जङ्गलमे पत्ता खड़खड़ाइत अछि, स्क्रीनमे सूचना चमकैत अछि।

साँझ धरि ई खबर गाम भरि पसरि गेल जे चन्ना गाछीमे मोबाइलक पाठशाला खुलल अछि। किछु लोक हँसल। “एते पैघ घोटाला, अदालत, विदेश, गोहि, आ आब मोबाइल पढ़ाओत?” मुदा जे घरमे कर्जक फोन आबि चुकल छल, जे घरक युवक राति-राति खेलमे पैसा हारि चुकल छल, जे स्त्री नकली पुलिसक फोनसँ काँपि चुकल छली, ओ सभ नहि हँसल। दोसर दिन ओ सभ सेहो आबि गेल।

दू दिन बाद पाठशालामे बच्चासँ बेसी सयान लोक छल। खेत पर जाएबला किसान। बैंकमे खाता खुलओनिहार मजदूर। शहरमे पढ़ैत छात्र। परदेशमे कमाएबला बेटाक माए। एक वृद्ध जे अपन अंगूठा देबाक मतलब नहि बुझैत छलाह। देविका एक-एक कथा सुनैत गेली। निशांत

कागच पर रेखा बनबैत गेल। ओ अपराधक तरीका नहि सिखबैत छल; ओ डरक नक्शा बनबैत छल — भय कतयसँ आबैत अछि, अकेलापन कोना बनैत अछि, लालच कोना लगैत अछि, आ लाज कोना फन्दा बनैत अछि।

निशांत कहल, “स्क्रीनक गोहि चारि पएर पर नहि चलैत। ओकर चारि पएर अछि — लालच, भय, लाज, अकेलापन। जे ई चारिटा एक साथ देखय, ओ भागि जाउ।”

एक बूढ़ किसान पूछलन्हि, “भागि कत्तऽ जाउ?”

बा उत्तर देलथिन, “अपन लोक लग। ठगीक पहिल दवा — अकेला नहि रहू।”

ई वाक्य पाठशालाक पहिल नियम बनल। अनन्या नारिकेलक पात पर लिखलक — “अकेला नहि रहू।” बच्चा सभ ओ पढ़लक। जे पढ़ि नहि सकैत छल, ओ सुनलक। जे सुनि नहि सकैत छल, ओ पातक रेखा छुइलक।

शहरमे एहि बीच चन्द्रपाल बत्राक दफ्तरमे बेचैनी छल। ओकर लोक सभ रिपोर्ट देलक — “गढ़ नारिकेल इलाकामे नब अकाउण्ट कम खुलि रहल अछि। युवक सभ पूछैत अछि — ई पैसा कतयसँ आबि रहल अछि? केकरा नाम पर खाता? ककरा लेल सिम?”

चन्द्रपाल बत्रा मेज पर हाथ मारलक। “के सिखा रहल अछि?”

“एक स्त्री — देविका साह। एक परदेशिया लड़का — निशांत झा। आ किछु लोक — गामक।”

“गामक?” चन्द्रपाल हँसल, मुदा हँसीमे घबराहट छल। “गामक लोक वित्तक खेल रोकत?”

राघव सिग्नल सोमानीक फोन पर ओही समय हांगकांगसँ संदेश आयल। लाउ किन-हंगक शब्द सदिखन छोट होइत छल, जेना ओ अक्षर पर सेहो कमीशन बचबैत हो। संदेश छल — “विश्वास घटल।” कारण?

राघव उत्तर देलक — “स्थानीय अफवाह।”

उत्तर आयल — “अफवाह नहि।” शिक्षा। शिक्षा महँग लागत।

राघव ई पढ़ि कऽ ठिठकि गेल। अपराधी शिक्षा सँ ततेक डेराइत अछि जतेक चोर भोरक उजाससँ। अफवाहकेँ पैसा दऽ कऽ दबाओल जा सकैत अछि; शिक्षा एक बेर घरमे घुसि गेल तखन ओ बच्चाक सवाल बनि जाइत अछि। सवालक दरबाजा पर पुलिस पहरा नहि दऽ सकैत।

बटुकनाथ हरिहरन कैँ एहि बात पर विश्वास नहि भेल। ओ कहल, “एक जनहित याचिका दायर कराउ। कहू जे ई लोक गलत डिजिटल जानकारी पसरबैत अछि, अर्थव्यवस्थाक विरुद्ध भय फैला रहल अछि, विदेशी निवेशक भगाबैत अछि। अदालतमे घसीटू।”

चन्द्रपालक आँखि चमकल। “तारीख?”

“तारीख हमर काज अछि,” बटुकनाथ कहल। “ओ सभ पाठशाला चलाबए, हम ओकरा प्रक्रियामे फँसाएब।”

मुदा एतय समस्या छल। पाठशाला कोनो संस्था नहि छल। ओकर पंजीकरण नहि, बैंक खाता नहि, अध्यक्ष नहि, भवन नहि। चन्ना गाछीमे लोक बैसि कऽ गप सुनैत छल। ककरा नोटिस देब? गाछकेँ? पातकेँ? बा कैँ? बच्चा सभकेँ? भूत सभकेँ? बटुकनाथ पहिल बेर बुझलक जे जे लोक संस्था नहि बनैत, ओकरा संस्थाबला फन्दामे फँसाएब कठिन होइत अछि।

ओहि राति चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत खूब हँसलाह। “देखलियै?” ओ हुलासीसँ कहलथिन। “जिअत लोक सीखि रहल अछि। आब हमरा सभकेँ कम काज रहत।”

हुलासी, जे सदा इनारक प्रतिबिम्बमे बच्चा ताकैत छली, आइ पाठशालाक बच्चा सभकेँ देखैत शांत छली। ओ कहलथिन, “जँ बच्चा सभ भयकेँ चिन्हि लेत, तँ बहुत आत्मा एतय कम आबत।”

पनिडुब्बी पोखरिक भीतर सँ केश झटकैत सुनि रहल छली। ओ कहलक, “हम पानिमे पएर पकड़ैत छी, मुदा ई स्क्रीनबला गोहि आँखि पकड़ैत अछि। आँखि बचाउ, पएर अपने बाँचत।”

तकरा बाद दोसर कक्षामे “आँखि बचाउ” पाठ भेल। देविका सभकेँ कहलक — “जे चमकैत अछि, से सोना नहि। जे जल्दी करब कहैत अछि, से संकट। जे अहाँक लाजकेँ हथियार बनबैत अछि, ओकरा पहिने अपन विश्वस्त लोककेँ कहू।”

एक छात्रा उठि कऽ पूछलक, “जँ घरक लोक हमरे दोष देत?”

मीरा उत्तर देलक। ओकर आवाज स्थिर छल। “तँ दोसर घर खोजू — मित्र, शिक्षिका, बहिन, संगठन। अपन दोष मानि कऽ अपराधीकेँ बचाउ नहि। समाज बदलए मे समय लागत, मुदा चुप्पी अपराधीक सभसँ पैघ चादर अछि।”

ओहि दिन मीरा पाठशालाक दोसर नियम लिखलक — “लाज अपराधीक नहि, पीड़ितक नहि।” बा कनी सोचि कऽ सुधारलथिन — “लाज अपराधीक हो।” बच्चा सभ लिखलक — “लाज अपराधीक हो।”

तेसर दिन निशांत अपन स्वीकारोक्ति देलक। ओ कहलक जे विदेशमे ओ जकर कम्पनीमे काज करैत छल, ओ केवल भुगतानक नली नहि बना रहल छल; ओ लोकक इच्छा, भय, लत, समय, आ अकेलापनक हिसाब राखैत छल। “हम सोचैत छलौं — ई तकनीक अछि। आब बुझैत छी — तकनीक जखन दया छोड़ि दैत अछि, तखन गोहि बनि जाइत अछि।”

गामक एक गोटे तिखगर स्वरमे पूछलक, “तँ अहूँ दोषी छी?”

निशांत चुप रहल। ओकरा बचाबय देविका चाहल, मुदा बा हाथसँ रोकि देलथिन। उत्तर ओकरा खुद देबाक छल।

“हँ,” निशांत कहल, “हम दोषी छी — जतेक जानि सकैत छलहुँ, ओतेक नहि जानलहुँ। जतेक पूछि सकैत छलहुँ, ओतेक नहि पूछलहुँ। मुदा आब भागब नहि।”

ई स्वीकारोक्ति सुनि चन्ना गाछीक पात हिलल। गाममे लोक बेसीकाल दोषसँ भागैत अछि; जे दोष स्वीकारि काजमे लगि जाए, ओकरा माफ कएल जाए कि नहि, ई समयक विषय अछि। मुदा ओकरा सुनल जा सकैत अछि।

सौम्या एहि कक्षाकेँ “दोष आ उत्तरदायित्व” कहए चाहैत छली, मुदा बा हँसि कऽ कहलथिन — “बड़ भारी नाम नहि। लिखू — ‘जे गलती बुझि गेल, से सुधारू।’” अनन्या ओहि अनुसार लिखलक। बच्चा सभ पढ़लक।

धीरे-धीरे पाठशाला गामसँ बाहर पसरि गेल। कोनो पोस्टर नहि, मुदा विवाहमे, श्राद्धमे, हाटमे, बस-स्टैण्ड पर, मधुबनीक चाह-दोकानमे, दरभंगाक लॉजमे, दिल्लीक किरायाक कोठरीमे — गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ ई नियम कहय लगल। “अकेला नहि रहू।” “लाज अपराधीक हो।” “जे गलती बुझि गेल, से सुधारू।” “जल्दी पैसा गोहिक जीह।” “डर जँ ताला लगाबय, दरबाजा खोलू।”

चन्द्रपाल बत्राक गिरोहक पहिल पैघ चोट ओहि दिन भेल जखन मुन्ना पासवानक कजिनक खाता खुलबए लेल लऽ जाएल गेल। लड़का बैंकक बाहर ठमकि गेल। कलम हाथमे छल, मुदा हथेली पसीजि गेल। ओकरा मोन पड़ल पाठशाला। ओ पूछलक — “ई पैसा कतयसँ आएत? कागच पर हमर नाम किएक? फोन अहाँ लग किएक?” संग गेल लोक

ओकरा झिड़कलक। लड़का भागि कऽ चन्ना गाछी पहुँचल। ओहि दिन सभक सामने ओकर कथा सुनल गेल। ओकरा दोषी नहि कहल गेल। ओकरा बचल कहल गेल।

ई शब्द “बचल” खूब महत्वपूर्ण भेल। जे ठगीमे फँसल से “मूर्ख” नहि; जे बीचमे रुकि गेल से “बचल”। एहि शब्दसँ लोकक मुँह खुलय लगल।

राघव सिग्नल सोमानी प्रतिवेदन पढ़ैत-पढ़ैत झुँझला गेल। “ई सभ ग्रामीण परामर्शक कारण फँसाओल लोकक दर घटि रहल अछि,” ओकर लोक लिखने छल। राघव ई वाक्य पढ़ि कऽ भड़कल। “ग्रामीण परामर्श नहि—भय टूटि रहल अछि,” ओ मनमे कहलक। डर ओकर व्यापारक धुरी छल। डर टूटि गेल तँ कॉल सेन्टरक आवाज सूखि जाइत।

बटुकनाथ कहलक, “डरक बदला कानून पठाउ।”

ओ एक नोटिस बनबाओलक। नोटिसमे लिखल गेल जे गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछीमे अवैध सभा, वित्तीय संस्थाक विरुद्ध भ्रामक कथन, डिजिटल अर्थव्यवस्थाक छवि खराब, विदेशी निवेशमे बाधा, आ सार्वजनिक शान्ति भंग कएल जा रहल अछि। नोटिस पठाओल गेल। डाकिया गाममे आयल, मुदा चन्ना गाछीक कात पहुँचि कऽ अटकि गेल। नोटिस पर लिखल प्राप्तकर्ता — “नारिकेल पात पाठशाला, चन्ना गाछी, गढ़ नारिकेल।” डाकिया हँसल। “गाछ हस्ताक्षर करत?”

बा नोटिस लेलथिन। हस्ताक्षरक स्थान पर नारिकेल पातक एक सूखल रेशा चिपका देलथिन। डाकिया डरि गेल — “ई मान्य होएत?”

बा कहलथिन, “जे मृतकक नाम मान्य नहि करलक, ओ पातक रेशा सेहो मान्य नहि करत। मुदा पठा दिअ। कागचकेँ कागचक उत्तर चाही।”

नोटिसक उत्तर सत्यव्रत मेहताक हाथ सेहो पहुँचल। ओ पढ़ि कऽ बहुत देर चुप रहलाह। हुनकर सरकारी पद हुनका एहन मामिलामे सावधानी कहैत छल। मुदा हुनकर मन कहैत छल — जँ गामक लोक बच्चाकेँ ठगी सँ बचएबाक बात नहि कहि सकैत, तँ कानूनक उपयोग ककर लेल? ओ एक व्यक्तिगत टिप्पणी लिखलन्हि — “लोक-शिक्षा केँ अपराध नहि मानल जा सकैत, जँ ओ भय, लाज आ लालचसँ सावधान करैत हो।” ई टिप्पणी औपचारिक आदेश नहि छल, मुदा बादमे बहुत काज आयल।

ओहि राति पाठशालामे सत्यव्रतक टिप्पणी पढ़ल गेल। बच्चा सभ नाम नहि बुझलक, मुदा वाक्य बुझलक। अनन्या पूछलक, “ई लोक हमर पक्षमे अछि?”

बा कहलथिन, “ओ सत्यक पक्षमे अछि। जे सत्यक पक्षमे रहै, से कखनो-कखनो हमर पक्षमे सेहो भऽ जाइत अछि।”

चन्ना गाछीमे ओहि राति कबड्डी फेर भेल। मुदा ई खेल अलग छल। नेना सभ दिनमे मैदानमे जे रेखा खिंचने छल, भूत सभ रातिमे ओहि रेखा पर खेलल। बूढ़बा भूत “कबड्डी”क बदला बजैत छलाह — “अकेला नहि रहू।” हुलासी बजैत छली — “लाज अपराधीक हो।” पनिडुब्बी पानिसँ आवाज देलक — “आँखि बचाउ।” राकशक उजासमे पात पर लिखल नियम चमकैत रहल।

भोर भेल तँ बच्चा सभ देखलक जे नारिकेल पात पर एक नब पंक्ति अपने सँ उगि गेल अछि। अक्षर ककरो हाथक नहि छल। ओ पंक्ति पढ़बामे कठिन छल, किएक तँ ओ स्याही नहि, पातक नससँ बनल छल। अनन्या धीरे-धीरे पढ़लक —

“जे भयकेँ बाँटि दैत अछि, से भय नहि रहैत।”

देविका ई सुनि कऽ बहुत दिन बाद खुलि कऽ कानि पड़ली। ई रोदन उज्ज्वलक मृत्यु पर नहि; ई रोदन ई देखबाक छल जे ओकर भायक मरनाइ एतबे पर समाप्त नहि भेल। ओ पाठ बनि गेल। जे पाठ बनैत अछि, ओ एकटा शरीरसँ बेसी लोककेँ बचबैत अछि।

चन्द्रपाल बत्रा एहि दिन अपन दफ्तरमे अकेला बैसल छल। ओकर फोन पर सिग्नलक संदेश कम भऽ गेल छल। किछु खाता बन्द। किछु लड़का भागल। किछु परिवार पुलिस लग नहि, गामक पाठशाला लग गेल। ओकरा पहिल बेर बुझाइत छल जे जे लोक अदालतमे हारे, ओ समाजमे जड़ि जमा रहल अछि। अदालतमे ओकर जीत कागचक छत छल; गढ़ नारिकेलमे ओ सभ धरती जोति रहल छल।

ओ मेज पर राखल फैसला देखलक। फैसला पर मोहर छल, तारीख छल, हस्ताक्षर छल। मुदा ओहि कागचमे कोनो बच्चाक आवाज नहि छल। ओकरा लागल जे ई कागच एक दिन पीयर पड़ि जायत। मुदा चन्ना गाछीक पात? पात तँ सूखि कऽ बीज बनि जाइत अछि। बीज फेर गाछ। गाछ फेर पात। पात फेर पाठ।

गढ़ नारिकेलमे साँझक हवा चलल। नारिकेल गाछक पात बजल। पाठशाला छूटल नहि; लोक उठि कऽ अपन-अपन घर गेल, मुदा नियम ओ सभकेँ संग गेल। एही दिनसँ गाममे एक नब अभिवादन चलल। केओ फोन पर घबरायल भेटैत तँ दोसर पूछैत — “अकेला तँ नहि छी?”

ई प्रश्न धीरे-धीरे मंत्र बनि गेल।

अकेला तँ नहि छी?

ई पूछलासँ कतेको ठगी टूटल। कतेको भय बाँटल गेल। कतेको लाज अपराधीक माथ पर घुरि गेल। कतेको स्क्रीनक गोहि मुँह खोलने रहि गेल, शिकार बाहर निकलि गेल।

आ चन्ना गाछीक अदालत, जे फैसला दऽ चुकल छल, दूर बैसल मुस्कुराइत रहल। ओकरा बुझल छल — न्याय कखनो-कखनो आदेश नहि बनैत; कखनो-कखनो पाठशाला बनैत अछि।

लोकगीत: अकेला तँ नहि छी?

लोकधुन: बाल-लोकधुन

पूछू हो नेना, पहिने पूछू—'संग मे के अछि?' हो,
एक-दोसराक स्वर रहत तँ गोहि भूखल रहत हो।

स्क्रीनक गोहिक चारि पएर—लालच, भय, लाज,
अकेलापन संग भेटल तँ निगलै पूरा आज।
गाछ तरे नेना बैसल, गोल बना कऽ हाथ,
एक प्रश्न मंत्र बनल—'अकेला तँ नहि छी, साथ?'
भय बाँटल तँ टूटि गेल, लाज घुरल अपराधी,

ठगक जीह सुखा गेल, बचि गेल घरक साथी।
पातक पाठ पीयर नहि, बीज बनि फेर जागै,
न्याय कखनो आदेश नहि, पाठशाला बनि आबै।
फोन काँपय तँ पहिने पूछू—'संगमे के अछि?'
एक-दोसराक स्वर रहत तँ गोहि भूखल अछि।

लालच-भय-लाज आ असगरपन—गोहिक चारि पएर,
गोल घेरा बनिते टूटल ओकर सभ घेर।
भय बाँटल तँ आधा, लाज घुरल अपराधी,

❖

अध्याय २१

निजताक शपथ

शान्ति बाहरसँ नहि अबै छै; ओ डरक माटि फोड़ि भीतरसँ उगै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: हम निर्दोष, हम संग

लोकधुन: स्त्री-मण्डली जागरण

उठू गे बहिना, मण्डली सजाउ गे,
'हम निर्दोष, हम संग'—स्वर मिलाउ गे।

हम दोषी नहि बहिनी, लाज अपराधीक माथ,
एक-दोसरक हाथ पकड़ू, खुलत सुरक्षित बाट।
घूँघट अपन इच्छा, कंठ स्वतन्त्र रहय,
डर बाँटल तँ आधा होए, संगसँ साहस बहय।

'हम अकेली नहि'क स्वर घर-घर दीप बनत,
समाजक जागल घेरा ठगक जाल हरत।
हम निर्दोष, हम संग—एहि गीतकेँ गाउ,
निजताक देहरीपर सम्मानक पहरा लाउ।

आँगन-आँगन ढोलक बाजए, कण्ठ खुलल गाबए,
लाजक गठरी ओकरे माथ जे अपराध कमाबए।
एक बहिनक डेग डगमगाए, दस हाथ थामए,
जागल मण्डलीक घेरामे ठग नहि समाए।

❖

"अकेला तँ नहि छी?" — ई प्रश्न आब गामक अभिवादन बनि चुकल छल, आ तकरे बल पर, नामक अभिलेख बनि गेलाक बाद, लोक सभ सोचलक जे आब गाममे शान्ति उतरि आओत। मुदा शान्ति कहियो बाहरसँ नहि अबैत अछि; ओ भीतरसँ उगैत अछि, आ भीतरक माटि जँ बरखों धरि डर, लाज, चुप्पी आ धमकीसँ भरल हो, तँ ओहिमे पहिल अंकुर निकलैत काल धरती काँपैत अछि। नाम लिखि देल गेल छल, मुदा नामक संग देह, देहक संग निजता, निजताक संग अपमानक भय, आ भयक संग ओ सभ आवाज सेहो आबि रहल छल जे बरखों धरि मोबाइलक अन्हार कोठरीमे बन्द राखल गेल छल।

देविका साह जे दिन उज्ज्वलक नाम अभिलेखक तेसर पातपर लिखल गेल देखलक, तकरा राति निन्न नहि आयल। ओकरा लगल जे भायक मृत्यु मोबाइलक स्क्रीनमे डूबल एकटा कारी बिन्दु नहि छल; ओ पूरा गामक अन्हार छल। जखन उज्ज्वल जीवित छल, घरमे सभ कहैत

छल — पढ़ुआ लड़का अछि, शहर जाएत, नौकरी करत, घरक नाम बढ़ाओत। जखन ओ गेल, लोक सभ धीरे-धीरे बाजल — मोबाइलमे फँसल, खेलमे हारल, अपने दोष। देविकाकेँ बुझाइत रहल जे समाज मृतककेँ क्षमा नहि करैत, ओकरा दण्ड देबाक लेल ओकर मृत्युकेँ सेहो कारण बनबैत अछि।

एहि कारणे ओ नामक अभिलेख लग बैसि कऽ पहिल वाक्य लिखलक — "हमरा सभकेँ मृतकक गलती नहि, ओकरा मारएबला जाल चिन्हबाक अछि।" ओ वाक्य लिखैत काल ओकर हाथ काँपल नहि। काँपल केवल ओहि नारिकेल पातक छाह, जे चन्ना गाछीक हवामे ओकर माथपर पड़ि रहल छल।

सौम्या रामनाथन दिल्लीसँ फेर गढ़ नारिकेल आबि गेली। हुनका लग लिफाफा, फाइल, नोटबुक, आ ओ छोट कारी यन्त्र छल जाहिमे आवाज रिकॉर्ड होइत छल। मुदा एहि बेर ओ पत्रकार वा शोधकर्ता जेकाँ नहि, शपथ लिखएबाली पुरोहितिन जेकाँ आयल छली। हुनका बुझल छल जे गवाही न्यायालयमे देल जाइत अछि, मुदा शपथ समाजमे लेल जाइत अछि। गवाही कागच पर रहि जाइत अछि; शपथ लोकक व्यवहार बदलैत अछि।

मीरा, जकर पूरा नाम मृणालिनी छल, पहिने गाम आबए लेल तैयार नहि भेल। ओकरा डर छल जे गामक लोक ओकरा बारेमे सुनने होएत। डरक आकार अजीब होइत अछि — ओ बरखों पुरान कोनो बातकेँ आजुक दुआर पर ठाढ़ कऽ दैत अछि। ओकरा एकटा सन्देश आयल छल — "जे चाही से करब, नहि तँ तोहर सभ फोटो, सभ गप, सभ सम्बन्ध बाहर।" सन्देशमे नाम नहि छल, केवल सिग्नल पर एकटा धुँधला चिन्ह। मुदा मीरा चिन्हि गेल छल जे ई व्यक्तिगत घृणा नहि, कारोबार अछि।

ओकर अपराध की छल? ओ एक स्त्रीसँ प्रेम करैत छली। प्रेमक अपराध बनबाक बात ओकरा कहियो बुझल नहि; मुदा समाज जे बात नहि बुझैत अछि, ओकरा हथियार बना लैत अछि। मीरा कहैत छली — "हमर देह हमर, हमर मन हमर, हमर प्रेम हमर। अपराध ओ अछि जे एकरा बेचए चाहैत अछि।" सौम्या ओकरा गढ़ नारिकेल आनए लेल कहली — "एहि गाममे भूत सभो अपन नामसँ रहैत छथि। जीवित लोककेँ अपन नाम लए डर किएक?"

***

चन्ना गाछीक कात ओहि दिन कोनो सभा नहि बुलाओल गेल। गढ़ नारिकेलमे जे काज सचमुच गम्भीर होइत छल, ओकर घोषणा नगाड़ा बजा कऽ नहि होइत छल। लोक धीरे-धीरे आबैत गेल। पहिने देविका, फेर सौम्या, फेर मीरा। तकर बाद उज्ज्वलक माए, जिनकर आँखि

आब रोनाइ छोड़ि चुकल छल आ एकटा सूखल पोखरि जेकाँ गहींर भऽ गेल छल। फेर दू लड़की आयल — एक शहरमे नर्स छल, दोसर बैंकमे अनुबंध पर काज करैत छल। दुनूकेँ अलग-अलग नम्बर सँ धमकी भेटल छल। केओ कहने छल — पैसा पठाउ, नहि तँ घरमे सभ देखाओल जाएत।

ओ सभ अपन कथा पहिने नहि कहलक। चुप्पी सेहो कखनो-कखनो पहिल गवाही होइत अछि। चन्ना गाछीक भूत सभ ऊपरे-ऊपर चलैत अबैत छलाह, एक अंगुर धरती छोड़ि। बूढ़बा भूत अपन डारि बदलि लेलनि। हुलासी इनारक दिशा छोड़ि एहि बेर गाछी दिस आयली। पनिडुब्बी पोखरिसँ आधा निकलि कऽ बैसलि, ओकर केशसँ पानि नहि, स्क्रीनक उजास टपकि रहल छल। राकश इजोर करैत छल, मुदा एहि बेर ओकर उजास आँखि झमकबैत नहि छल; जेना कोनो अदालतक बल्ब, जे फाइल पढ़बा लेल जलाओल गेल हो।

सौम्या जमीन पर लाल माटिसँ एक वृत्त खिंचली। माटि आँगुरक नीचाँ ओसाएल आ सिहकल छल, जेना धरतियो शपथसँ पहिने साँस रोकने हो। वृत्तक भीतर ओ लिखली — “निजता।” ओकर बाद ओ सभकेँ देखैत बाजली, “ई शब्द नव बुझाइत अछि, मुदा बात पुरान अछि। घूँघट सेहो निजता छल, कोठरी सेहो निजता छल, पत्र सेहो निजता छल, देह सेहो निजता छल, सपना सेहो निजता छल। फर्क एतबे भेल जे पहिने चोर दुआर तोड़ैत छल; आब चोर फोन खोलैत अछि।”

देविका अगिला रेखा खिंचलक — “ठगी।” ओकरा बाद मीरा धीरेसँ आगू बढ़ली आ तेसर रेखा खिंचली — “लाज।” ओ बाजली, “ठग हमरा सभकेँ पैसा सँ नहि, लाज सँ पकड़ैत अछि। ओ जानैत अछि जे हम अदालत जाएबासँ पहिने घरक डर सोचब, घरसँ पहिने समाजक डर, समाजसँ पहिने अपन देहक डर। तेँ आइ हम शपथ लैत छी जे लाज अपराधीक होएत, पीड़ितक नहि।”

ई वाक्य सुनि कऽ गाछीमे हवा चलल। नारिकेल पात सभ एकसाथ हिलल। बूढ़बा भूत पहिल बेर बारह सय वर्ष बाद हँसलाह। हुनकर हँसी कारी प्रकाश जेकाँ फूटल, आ ओहि प्रकाशमे सभ स्त्रीक चेहरा उज्जर भऽ गेल।

ओहि समय दूर शहरमे चन्द्रपाल बत्रा अपन दफ्तरमे बैसल छल। ओकरा सिग्नल पर सन्देश भेटल — “एक ग्रुप बनि रहल अछि। नाम — निजताक शपथ।” बत्रा हँसल। ओकरा लगल — ई सभ एन.जी.ओ. बला नाटक अछि। ओ राघव सोमानीकेँ आवाज नहि, केवल

लिखलक — “देखू। डर जरूरी अछि।” राघव उत्तर देलक — “डर कम भऽ रहल अछि।” बत्रा पहिल बेर स्क्रीनक सामने कनी देर चुप रहल।

***

शपथ शुरू भेल। सौम्या कहली — “पहिल बात, जेकर फोटो चोरा लेल गेल, ओ दोषी नहि। जेकर गप रिकॉर्ड कऽ लेल गेल, ओ दोषी नहि। जेकर प्रेमक मजाक बनाओल गेल, ओ दोषी नहि। जेकर बैंक खाता म्यूल बनाओल गेल, ओ असगर अपराधी नहि; असल अपराधी ओ छाह अछि जे ओकरा कमिशनक रोटी देखा कऽ कानूनक आगिमे धकेललक।”

मुन्ना पासवान, जे एहि कथाक अध्याय सभमे बेर-बेर डरायल चेहरा जेकाँ आबि गेल छल, ओ गाछीक किनार पर ठाढ़ छल। ओकरा अपन नाम बाजब कठिन लगैत छल। ओ कहलक — “हमरा कहल गेल छल जे बस खाता दे, पाँच हजार भेटत। फेर पुलिस आयल। घरक लोक कहल — तूँ अपराधी। मुदा हमरा ओहि लोकक नाम कहियो नहि भेटल जे हमरा ई काज देलक। ओ सभ सिग्नल पर बाजल, हम थानामे नामसँ पकड़ायल।”

मीरा ओकरा दिस तकलनि। ओ कहली — “जकरा नामसँ पकड़ल गेल, ओकरा नामसँ बचाओल सेहो जाएत। गुमनाम अपराधी सभकेँ नाम देबाक काज हम सभ करब।”

ईरा विदेशसँ ओहि सभाकेँ देखैत छली। हुनकर स्क्रीनपर चन्ना गाछीक वृत्त छोट देखाइत छल, मुदा ओकर भीतर बैसल लोक सभ हुनका लग संसारक सभसँ पैघ विश्वविद्यालय जेकाँ लगैत छल। हार्वर्डक सभागारमे नैतिक ढाँचा, निजताक सिद्धान्त आ मानव-गरिमाक चर्चा सुनैत-सुनैत ओ थाकि गेल छली। एतय देविका माटिपर जे लिखि रहल छली, ओ कतेको पुस्तकसँ बेसी सटीक छल। ईरा अपन टिप्पणी-पोथीमे लिखलक—“नैतिकता ओहि ठाम जन्मैत अछि जतय डेरायल लोक एक-दोसराकेँ दोष देब बन्द करैत अछि।”

निशांत सेहो ओहि दिन वीडियो पर छल। ओकरा विदेशक फिनटेक दफ्तरमे सभ चमकैत स्क्रीन, हरियर ग्राफ, यूजर-वृद्धि, लेन-देनक आँकड़ा देखाइत छल। आब ओकरा बुझाइत छल जे “यूजर” शब्दक भीतर उज्ज्वलक चेहरा, मुन्नाक खाता, देविकाक राति, मीराक धमकी, आ गढ़ नारिकेलक पात सभ दबल अछि। ओ सौम्याकेँ अलग सँ सन्देश पठेलक — “हम भुगतानक रस्ता किछु-किछु बुझि रहल छी। मुदा हमरा डर अछि।” सौम्या उत्तर देली — “डर रहत। डर नहि रहत तँ सावधानी मरि जाएत। मुदा डर मालिक नहि बनत।”

चन्ना गाछीमे शपथक बीच एक नेनी, जे अनन्याक संग पाठशालामे पढ़ैत छल, पूछलक — “जँ कियो कहै जे तोहर फोटो भेजि देब, तखन की करब?” सभ चुप। ई प्रश्न एते सोझ छल

जे ओकर उत्तर कठिन भऽ गेल। देविका नेनी लग बैसलि। कहलक — “पहिने अपनाकेँ दोष नहि देब। दोसर, तुरन्त भरोसाक लोककेँ कहब। तेसर, पैसा नहि पठाएब। चारिम, साक्ष्य मिटाएब नहि। पाँचम, ओकर नाम खोजब — ओ नाममे रहए चाहत नहि, हम ओकरा नाममे आनब।”

नेनी फेर पूछलक — “आ जँ घरक लोक डाँटत?” मीरा कहली — “तखन हम सभ घरक लोककेँ सेहो पढ़ाएब। पीड़ित पर डाँट ठगक सहायता अछि।”

***

ओहि दिन सँ गढ़ नारिकेलमे एक नब रीति शुरू भेल। जे कियो धमकीक सन्देश पबैत, ओ अकेला नहि रहैत। ओ चन्ना गाछी लग आबैत, लाल माटि पर वृत्त खिंचैत, आ कहैत — “हम दोषी नहि।” ई तीन शब्द धीरे-धीरे मंत्र बनि गेल। कोनो पुरोहित ओकरा नहि बनौलक; ओ ओकरा सभक मुँहसँ निकसल जकरा सभ केँ समाज चुप्पी सिखौने छल।

बटुकनाथ हरिहरन एहि बातसँ असहज भेल। ओकरा कानूनक भाषा प्रिय छल, किएक तँ कानूनक भाषामे ओ विलम्ब, अपील, तकनीकी आपत्ति आ प्रक्रिया छिपा सकैत छल। मुदा “हम दोषी नहि” पर ओ कोन आपत्ति देत? ओ अपन सचिवकेँ कहलक — “ई सभ भावनात्मक सभा सभकेँ रोकबाक उपाय ताकू।” सचिव पूछलक — “कोन धारा?” हरिहरन चुप भऽ गेल। चुप्पी ओकरा लेल हारक पहिल स्वाद छल।

राघव “सिग्नल” सोमानी ओहि राति लाउ किन-हंग केँ सन्देश पठेलक — “स्थानीय प्रतिरोध कानूनसँ अलग रस्ता पकड़ि रहल अछि।” उत्तर आयल — “कानूनसँ बाहर? राघव लिखलक — “कानूनक बाहर नहि, कानूनक पहिने।”” लाउ किन-हंग पहिल बेर लिखलक — “बुझल नहि।” राघव बहुत देर धरि उत्तर ताकैत रहल। ओकरा बुझाइत छल जे जे लोक केवल खाता, प्रतिशत, कमीशन आ ट्रान्सफर बुझैत अछि, ओकरा शपथ, लाज, नाम आ स्मृति बुझाओल नहि जा सकैत।

राति गहरा गेल। मीरा असगरि चन्ना गाछीक कात बैसलि। गाछीक सन्नाटामे खाली झिंगुरक स्वर छल। हुलासी ओकर लग आयलि। हुलासीक हाथ नहि छल, मुदा ओकर उपस्थिति हाथसँ बेसी कोमल छल। मीरा आँखि बन्न कऽ लेलक। ओकरा अपन प्रेमिका स्मरण भेल, जे शहरमे रहैत छल आ एखन धरि गढ़ नारिकेल आबए सँ डेराइत छल। मीरा धीरेसँ कहली — “हमरा सभकेँ प्रेम बचयबाक लेल पहिने डरक भाषा बदलय पड़त।” हुलासी हँसली। इनारक पानि भीतरसँ चमकल।

सौम्या ओ राति अपन नोटमे लिखली — "देह-बाजारक विरुद्ध लड़ाइ केवल तस्करक विरुद्ध नहि; निजताक रक्षा बिना कोनो मुक्ति नहि। समलैंगिक, विषमलैंगिक, विवाहित, अविवाहित, स्त्री, पुरुष, तेसर लिंग — सभक देह पर पहिल अधिकार ओकर अपन। जे ई अधिकारकेँ ब्लैकमेल, धर्म, परिवार, बाजार, पुलिस, वा अदालतक डर सँ छीनैत अछि, ओहि सभक नाम एक्के पात पर लिखब।"

ई नोट बादमे नामक अभिलेखक पछिला भागमे चिपका देल गेल। ओकर शीर्षक अनन्या देलक — "देहक मर्यादा, मनक स्वतन्त्रता।" बा ओकरा पढ़ि कऽ कहलथिन — "एहि सभ शब्द नब अछि, मुदा बात पुरने। सीता धरतीमे किएक समा गेली? किएक तँ लोक सभ देह पर अपन अधिकार बुझैत छल। आब धरतीमे नहि समाएब; धरती पर लिखब।"

* * *

तीन दिन बाद पहिल परिणाम देखाइ पड़ल। एक लड़का, जे ऑनलाइन ठगीमे फँसि गेल छल, पैसा पठएबा सँ पहिने पाठशाला आबि गेल। ओकर फोन पर धमकी छल — "डिजिटल अरेस्ट।" देविका फोन पढ़लक, हँसल नहि, डाँटल नहि। ओ सभकेँ पढ़ि सुनौलक — "देखू, ई भाषा डरक ठप्पा अछि। असली पुलिस एना सिग्नल पर नहि बजैत। असली नोटिस कागच पर होइत अछि, आ कागचक पाछाँ दफ्तर होइत अछि।" बच्चा सभ ताली बजौलक। लड़का कानय लागल। देविका ओकर माथ पर हाथ राखलक — "कानह, मुदा पैसा नहि पठाबह।"

उज्ज्वलक माए ओहि दिन पहिल बेर सभामे बाजली। ओ कहली — "हमर बेटा जखन मरल, हम सोचलहुँ जे ओ हमरा सभकेँ लजा देलक। आब बुझैत छी जे हम ओकरा अकेला छोड़ि देलियैक। जँ ओ दिन ई पाठशाला रहित, तँ शायद ओ कहि दैत — माए, हम फँसि गेल छी।" हुनकर आवाज टूटल, मुदा शब्द नहि टूटल।

ई सुनि कऽ चन्ना गाछीमे कबड्डी खेलैत आत्मा सभ थमकि गेल। बूढ़बा भूत कहलनि — "जीवित लोक जखन अपन अपराध स्वीकार करैत अछि, तखन मृतकक बोझ आधा भऽ जाइत अछि।" राकश इजोर कएलक। लोथ, जे सदिखन दर्शक रहैत छल, एहि बेर कनी आगू बढ़ल। ओकर मुँह आधा खुजल छल, मुदा आब ओहिमे पहिल बेर आवाज बनबाक प्रयास छल।

मीरा अपन शपथक अन्तिम पंक्ति लिखली — "हम ककरो प्रेमकेँ ओकरा विरुद्ध प्रमाण नहि बनए देब।" ओ पंक्ति लिखैत काल गाछीसँ एक सूखल पात खसल। पात पर नस सभ एना पसरल छल जेना कोनो शहरक नक्शा। सौम्या पात उठौलक। ओकरा लगल जे हरेक नस

एक गली अछि, आ हरेक गलीमे कियो अपन निजता बचबैत भागि रहल अछि। ओ पात अभिलेखमे राखल गेल।

एडवर्ड ब्रूमक कम्पनीक दफ्तरमे एहि बीच एक प्रस्तुति बनि रहल छल — “सामाजिक प्रतिरोध प्रबन्धन।” ओकर स्लाइडमे भारतक नक्शा, जोखिम-क्षेत्र, प्रभाव-गुच्छ, शिकायत-समूह लिखल छल। गढ़ नारिकेलक नामक आगाँ छोट लाल बिन्दु छल। मुदा ओकरा सभ नहि बुझल जे जे बिन्दु पात पर उगि गेल, ओकरा नक्शासँ काटल नहि जा सकैत।

रातिक अन्तमे सभ लोक शपथ दोहरौलक। कोनो धर्मग्रन्थ पर हाथ नहि राखल गेल। हाथ राखल गेल अपन-अपन फोन पर, जे आब डरक यन्त्र नहि, साक्ष्यक डिब्बा बनबाक छल; अपन-अपन छाती पर, जे लाजक कैद नहि, आवाजक घर बनबाक छल; आ माटि पर, जतय नाम लिखल जा रहल छल। फोनक ठंढा काँच हथेलीमे कनी-कनी गरम होइत गेल, जेना यन्त्रो शपथ सुनि रहल हो।

सभ बाजल — “हम दोषी नहि। हमरा पर जे अत्याचार भेल, ओकर लाज अत्याचारीक। हमर देह हमर। हमर गप हमर। हमर प्रेम हमर। हमर नाम हमरे हाथमे। जे हमरा डर सँ चुप करय चाहत, ओकर नाम हम अभिलेखमे लिखब। जे हमरा अकेला करय चाहत, ओकर विरुद्ध हम एक-दोसराक संग ठाढ़ रहब।”

शपथ पूरा भेल तखन पनिडुब्बी पोखरिमे घुरि गेली। हुलासी इनारक पानिमे अपन प्रतिबिम्ब देखली। एहि बेर ओकरा लगल जे प्रतिबिम्बक हाथ अछि। बूढ़बा भूत अपन डारि पर चढ़लाह आ हँसी रोकि नहि सकलाह। चन्ना गाछीक राकश इजोर करैत रहल। दूर कतहु चन्द्रपाल बत्राक फोन पर सिग्नल ऐप खुलल आ तुरन्त बन्द भऽ गेल — जेना कोनो गोहि पहिल बेर पानिसँ बाहर हवा सूँघलक आ डेराक भीतर घुसि गेल।

भोर भेलाक बाद गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ पाठशालाक देबाल पर नब वाक्य लिखलक — “डर बाँटल गेल तँ ओ चेतावनी बनैत अछि; डर छिपाओल गेल तँ ओ फाँसी बनैत अछि।” एहि वाक्यक नीचाँ अनन्या छोट अक्षरमे जोड़ि देलक — “चुप्पी ठगक पहिल कमाइ अछि।”

देविका दूर ठाढ़ भऽ पढ़ैत रहलि। ओकरा बुझाइत छल जे उज्ज्वल आब घुरि नहि आओत। मुदा आब कोनो दोसर उज्ज्वल जँ फँसत, तँ ओकरा मरबाक पहिने कहबाक ठाम रहत। ई न्याय नहि छल, मुदा न्यायसँ पहिल जरूरी वस्तु छल — सहारा। आ सहारा जखन नाम पबैत अछि, तखन ओ समाज बनि जाइत अछि।

लोकगीत: हम दोषी नहि

लोकधुन: स्त्री-मण्डली गीत

उठू गे बहिना, माथ उठा कऽ उठू गे,
'हम दोषी नहि, हम अकेली नहि'—एतबे बजू गे।

घूँघट हमर, कोठरी हमर, सपना हमर नाम,
फोन खोलि जे लूटलक, ओकर माथे दाग।
डर छिपल तँ फाँसी भेल, बाँटल तँ चेतावनी,
बहिनक हाथ पकड़िते टूटल ठगक रवानी।
लाल माटिक बीच उगल तीनटा उज्जर बात—

हम दोषी नहि, हम अकेली नहि, संग अछि समाज।
चुप्पी ठगक पहिल कमाइ, स्वर ओकर दिवाल,
सहारा नाम पाबिते बनि गेल जन-जाल।
जे हमरा लाजसँ बाँधत, ओकर नाम लिखब,
निजताक देहरीपर संग-संग पहरा दिब।

घूँघट अपन, कोठरी अपन, सपनो अपने नाम,
जे फोन खोलि लूटलक, ओकरे माथ दाग-दाम।
चुप्पी ठगक पहिल कमाइ—बा केर बानी,
मण्डली बजल तँ ओकर रवानी भेल पानी।

❖

अध्याय २२

हार्वर्डक दोसर भाषण

दोसर भाषण पहिलुकासँ नीक तखने होइ छै जखन बीचमे कियो सत्य सुना गेल हो।

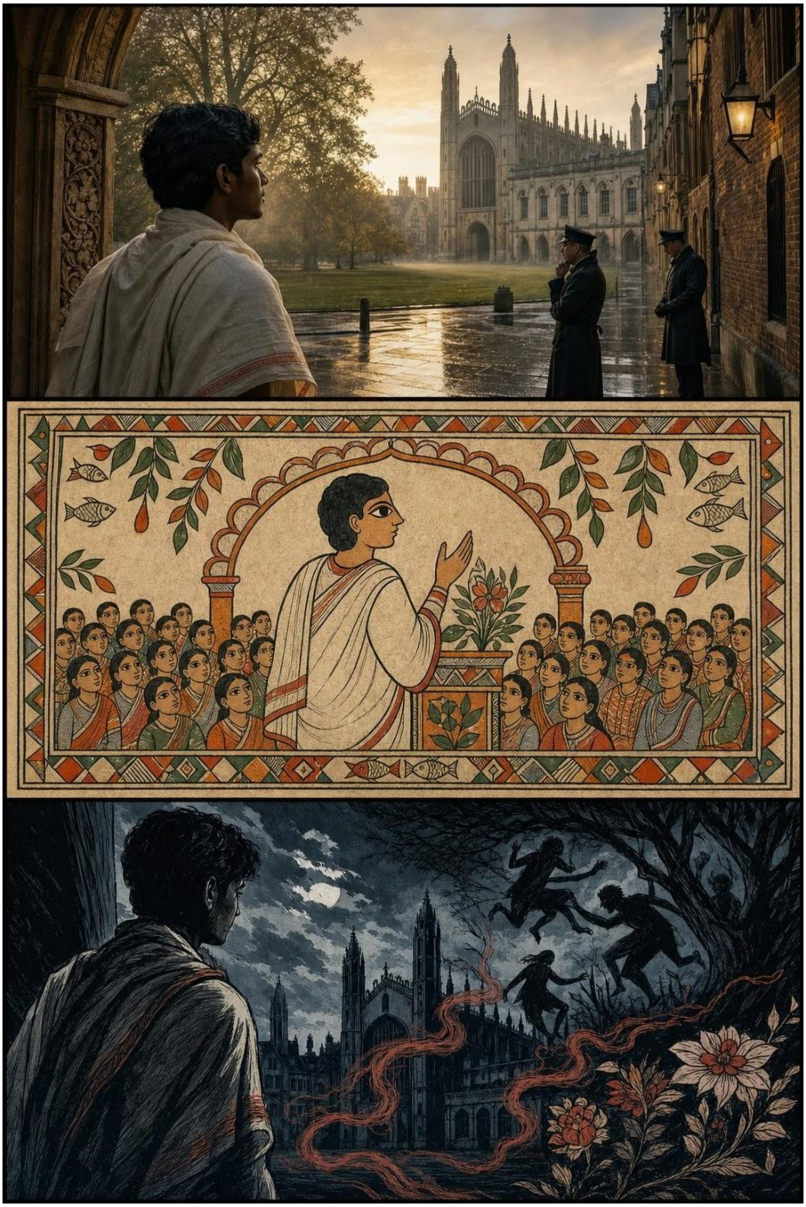

अध्यायारम्भ लोकगीत: खाली मंचपर साँचक तान

लोकधुन: विदापत पदक सभागार-लय

गाबू हे साँचक तान, मंच खाली रहौ हे,
पातक एक्के स्वरसँ सभागार भरौ हे।

मंच खाली हो तइयो पातक स्वर उठत,
सोना शब्दसँ पैघ एक साँचक नाम फूटत।
माइक चुप रहि सकै, जनक कंठ नहि,
प्रश्नक धीम तानसम पैघ कोनो घंट नहि।

एक नाम पढ़िते सभागारक हवा बदलै,
ताली सँ बेसी मौनक ध्यान सत्य सँ मिलै।
खाली मंचपर साँचक तान नव राह बनत,
नैतिकता कागच छोड़ि जीवनमे उतर।

माइक चुप, बत्ती मद्धिम, तइयो सभा जागल,
एक नाम उच्चरिते हवाक रुख बदलल।
सोनाक शब्द झहरि खसल, साँच अटल ठाढ़,
मौनक गहींर ताल बिच उतरए साँचक बाढ़ि।

❖

कैम्ब्रिजक भोर गढ़ नारिकेलक भोर जेकाँ नहि होइत अछि। ओतय धानक खेतक ऊपर कुहेस नहि उठैत, नारिकेल पातक धारसँ ओस नहि टपकैत, आ चन्ना गाछीमे भूत सभ रातिक कबड्डी समाप्त कऽ अपन-अपन डारि पर नहि चढ़ैत। तथापि ओहि दिन कैम्ब्रिजमे भोर होइतहि हवामे एहन नमी भरि गेल जे विश्वविद्यालयक पुरान ईंट सभक बीच सँ कमला-बलानक गन्ध उठय लागल। सुरक्षाकर्मी सभ सोचलक — पानि कतयसँ चू रहल अछि? मुदा पानि कतओ नहि छल। केवल स्मृति छल, आ स्मृति जखन बहुत दूरसँ अबैत अछि तखन पहिने गन्ध बनैत अछि — जेना गढ़ नारिकेलक शपथ आ नामक अभिलेख हवाक रस्ता समुद्र टपि एतय धरि चलि आयल हो।

एहि दिन एडवर्ड ब्रूम फेर नैतिकता पर भाषण देबयबला छल। सभागारक बाहर पोस्टर लागल छल — वैश्विक उद्यम, मानव गरिमा, आ उत्तरदायी पूँजी। अक्षर सोना रंगक छल, कागच मोट छल, आ मंचपर राखल फूल एते साफ छल जेना हुनका सभकेँ कखनो माटि स्पर्श नहि केने हो। ब्रूमक सहायक सभ सभागारमे घूमि-घूमि सीट देखैत छल, माइक्रोफोन जाँचैत छल, स्क्रीन पर स्लाइड लगबैत छल। पहिल स्लाइड पर एक पुल छल — सागरक ऊपर, नील आकाशक नीचाँ। दोसर पर अस्पताल। तेसर पर विद्यालय। चारिम पर लिखल छल — ‘विश्वास’।

ब्रूम अपन कक्षमे दर्पणक सामने ठाढ़ छल। ओकर चेहरा पर ओहि लोकक शान्ति छल जे अनेक अदालत, अनेक जाँच, अनेक पत्रकार सम्मेलन पार कऽ चुकल हो आ एखनो टाईक गीड़ ठीक करैत काल अपने कैँ विजेता बुझैत हो। ओकरा कहल गेल छल जे भारतक मामिला कानूनी रूपेँ थमि गेल। सीलबन्द आवरणक हलचल थाकि गेल। बार काउन्सिलक लोक आश्वस्त। ठेकेक पुरान फाइल समयक धूलिमे। डिजिटल ठगीक मामिला स्थानीय अपराध। दवा-खरीदक प्रश्न प्रशासनिक। मानव-तस्करीक बात भावुकता। हथियारक भुगतान राष्ट्रीय सुरक्षा। ड्रगक पैसा अज्ञात स्रोत। सभटा शब्दक अपन-अपन ताला छल।

मुदा ओ नहि बुझि रहल छल जे शब्दक ताला टूटि गेलाक बाद कागच पर नहि, लोकक मुँहमे आवाज रहि जाइत अछि। आ लोकक मुँह पर कोनो सील नहि लगैत।

ईरा आरुणि सभागारमे प्रवेश करबाक निमन्त्रण लेने छल। ओकर सीट आगाँक पाँतिमे राखल गेल छल, जकरा पर ओकर नाम लिखल कार्ड छल। कार्ड पर छपल नाम पढ़ि प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स मुस्कुरा कऽ कहलथिन — ‘अहाँ प्रश्न पूछब? ईरा सेहो मुस्कुरा देलक।’ ओ कहलनि — ‘नहि।’ आइ हम प्रश्न नहि पूछब।

एलिना ग्रेव्स कनी चकित भेली। हुनका मोन छल जे ईरा मंचपर प्रश्न करए आ सभागारमे एक बौद्धिक टकराव होअए। विश्वविद्यालय सभ टकरावकेँ सेहो कार्यक्रम बना लैत अछि — समय सीमित, प्रश्न सभ्य, उत्तर गोल, ताली नियंत्रित। मुदा ईरा बुझि गेल छल जे मंचक भीतर पूछल प्रश्न मंचक नियममे कैद भऽ जाइत अछि। ओकरा आब नियम बदलबाक छल।

सभागार भरल। पत्रकार, शोधकर्ता, दानदाता, विद्यार्थी, कम्पनीक प्रतिनिधि, नीति-सलाहकार — सभ अपन-अपन नोटबुक खोलि बैसल। ब्रूम मंचपर आयल। ताली बाजल। ओकर पहिल वाक्य छल — ‘नैतिकता व्यापारक सजावट नहि, ओकर आधार अछि।’ ताली फेर बाजल। ओ बाजैत रहल — ‘विकास तखन पूर्ण होइत अछि जखन सभसँ कमजोर

मनुष्यक गरिमा सुरक्षित हो।' एहि वाक्य पर ताली बेसी देर धरि बाजल, कारण सभसँ कमजोर मनुष्य ओहि सभागारमे उपस्थित नहि छल।

ओही समय सभागारक बाहर, पुरान पाथरक सीढ़ी लग, ईरा अपन छोट कम्प्यूटर खोलि बैसि गेल। ओकर संग तीन विद्यार्थी आ दू वृद्ध महिला छलाह, जिनका केओ चिन्हैत नहि छल। एक विद्यार्थी कैमरा ठीक कयलक। दोसर स्क्रीन पर गढ़ नारिकेलक सीधा प्रसारण खोललक। तेसर ध्वनि जाँचलक। ईरा कहलनि — 'माइक ब्रूमक सभागार पर नहि, पात पर राखू।'

गढ़ नारिकेलमे ओहि समय साँझ उतरि रहल छल। चन्ना गाछीक पात पर नामक अभिलेखक अगिला पृष्ठ खोलल गेल। अनन्या बच्चा सभकेँ पाँतिमे ठाढ़ कऽ रहल छल। देविका साह लगमे, मीरा आ सौम्या दू कात, निशांत मोबाइलक जाल सँ जूझैत, आरुणि चुप्पे। पातक ऊपर पहिले मजदूरक नाम छल, फेर उज्ज्वल, फेर ओ सभ स्त्री जिनकर देह बाजारमे गुम भेल, फेर ओ सभ बूढ़ जिनकर श्वास बिलक भीतर गाड़ल गेल। आइ नब पंक्ति जोड़ल जएबाक छल — 'जिनकर नाम विदेशक सभागारमे लाभ कहाएल।'

अनन्या पढ़ब शुरू केलक — 'सरयू देवी।' बच्चा सभ बजल — 'उपस्थित।' 'कन्हैया पासवान।' — 'उपस्थित।' 'उज्ज्वल झा।' — 'उपस्थित।' 'नाम अज्ञात स्त्री, कमरा संख्या सत्ताइस।' — 'उपस्थित।' 'ऑक्सीजन प्रतीक्षा सूचीक तेसर बूढ़।' — 'उपस्थित।' 'म्यूल खाता संख्या नहि, मुन्ना पासवान।' — 'उपस्थित।' आवाज गामसँ उठि कऽ ईराक यन्त्रमे, ओतयसँ कैम्ब्रिजक सीढ़ी पर, आ सीढ़ीसँ सभागारक बन्द दरबाजा धरि पहुँचल।

सभागारक भीतर ब्रूम तेसर स्लाइड पर आबि गेल छल। ओ कहि रहल छल — 'हमरा सभ केँ स्थानीय समुदायसँ सीखबाक चाही।' ओहि क्षण स्क्रीन पर पुलक फोटो बदलि गेल। केओ तकनीकी गड़बड़ी बुझलक। पुलक बदला भीजल पात पर लिखल एक नाम देखाएल। ब्रूम ठिठकल। सहायक दौड़ल। स्क्रीन फेर ठीक भेल। ओ फेर बजल। दोसर वाक्य पूरा हेबाक पहिने स्क्रीन पर दोसर नाम। तेसर। चारिम। नाम सभ स्लाइडक बीच एना आबि रहल छल जेना कागचक नीचाँ दबायल बीज अचानक अक्षर बनि फूटि रहल हो।

एडवर्ड ब्रूमक माथ पर पहिल बेर पसीना आयल। सभागारमे वातानुकूलन तेज छल, मुदा ओकरा कान लग गंगा पानि खलबलाइत सुनाइ देलक। ओ पानि नहि छल; गोहि सभक बीच खसल देहक छपाक छल। दर्पणक सामने जे टाईक गीड़ ओ विजेता जेकाँ ठीक केने छल, से आब साँसक फन्दा बुझाय लागल। ओ माइक पकड़ि कऽ बजबाक प्रयास केलक — 'कृपया... तकनीकी समस्या... मुदा ओकर आवाजक भीतर सँ एक दोसर आवाज निकलल — '

तीस घोषित।' बाकी समाहित।' ब्रूम घबरा गेल। केओ आओर सुनलक कि नहि, से ओकरा बुझल नहि। मुदा एलिना ग्रेव्स सुनि लेलनि।

एलिना धीरे-धीरे उठली। ओ मंच दिस नहि गेली। ओ दरबाजा दिस गेली। सभागारक मर्यादा एहि बातमे रहैत अछि जे वक्ता बजैत रहय आ श्रोता बैसल रहय। मुदा एलिना बाहर निकलि गेली। हुनकर पाछू किछु विद्यार्थी उठल। दानदाता सभ पहिने असन्तुष्ट, फेर बेचैन। ब्रूम मंच पर अकेला होएबाक अनुभव करए लागल, जखन कि सभागार एखनहुँ भरल छल। भीड़ कखनो-कखनो खालीपनकेँ आर स्पष्ट बना दैत अछि।

बाहर ईरा नाम पढ़ैत नहि छल। ओ केवल प्रसारणक पहरेदार छल। नाम गढ़ नारिकेलमे पढ़ल जा रहल छल। ईरा चाहैत तँ मंच पर प्रश्न कऽ सकैत छल, कागच लहरा कऽ आरोप लगा सकैत छल, मुदा ओ बुझि गेल छल — जतेक बेर हम हुनका सभक मंच पर जाएब, ओ सभ कहत जे ई विवाद अछि। विवादमे सत्य आधा होइत अछि। नाममे सत्य पूरा होइत अछि। तँ ओ चुप्पे बैसल रहल। ओकर चुप्पी एहि बेर भयक नहि, आयोजनक चुप्पी छल।

हांगकांगमे लाउ किन-हंगक दफ्तरमे ओही प्रसारण खुलल। ओ सामान्यतः कोनो चेहरा पर बेसी देर नहि तकैत छल; ओकरा संख्या प्रिय छल। मुदा पात पर लिखल नाम संख्या बनय सँ इन्कार कऽ रहल छल। राघव 'सिग्नल' सोमानीक यन्त्र पर संदेश आयल — 'स्रोत बन्द करू।' राघव उत्तर देलक — 'स्रोत बहुत अछि।' फेर संदेश आयल — 'मुख्य व्यक्ति? राघव बहुत देर बाद लिखलक — 'मुख्य व्यक्ति नहि अछि।'' गाम अछि।

दिल्लीमे चन्द्रपाल बत्रा ओ प्रसारण देखैत अपना लोक पर चिचिआ रहल छल। 'ई सभकेँ रोकू! ई कानूनी अवमानना अछि! ई विदेशी मंच पर देशक छवि खराब करैत अछि!' ओकरा सुनएबला सभ चुप छल। किएक तँ ओ सभ बुझैत छल जे अवमानना कानूनक शब्द अछि; मुदा बच्चा सभ नाम पढ़ि रहल अछि। नाम पढ़बाक विरुद्ध कोन धारा? मृतककेँ उपस्थित कहबाक विरुद्ध कोन अधिनियम?

बटुकनाथ हरिहरन अपन आलीशान बैसकीमे बैसल रहल। ओकरा सामने चाह छल, चाह पर मलाई जमि गेल। ओ स्क्रीन पर ईराकेँ ताकैत रहल। ओकरा आशा छल जे ईरा क्रोधमे किछु कहत, सीमा लाँघत, ओहि पर मानहानि, अवमानना, शिष्टाचारभंग, राष्ट्रहित — किछु ने किछु लगाओल जा सकत। मुदा ईरा चुप। बाजि रहल छल गढ़ नारिकेलक बच्चा। बच्चा सभकेँ नोटिस कोना भेजब? नारिकेल पातकेँ समन कोना देब? पनिडुब्बीक हस्ताक्षर कोना लब?

सत्यव्रत मेहता अपन दफ्तरमे ओ प्रसारण देखलाह। हुनका आँखिमे राहत नहि, पीड़ा आयल। ओ जानैत छलाह जे ई लोक सरकारी अदालतमे आबि सकैत छल, मुदा ओ सभ अदालतक बाहर अपन समाज बना रहल अछि। हुनका ई देखबामे दुख भेल, कारण ई राज्यक पराजय छल। मुदा एक हलुक प्रसन्नता सेहो उठल — कारण सत्य, न्यायालयक देरी सँ मुक्त भऽ कऽ लोकक मुँहमे प्रवेश कऽ गेल छल। ओ धीरे सँ कहलाह — ‘राज्य देर कऽ सकैत अछि; समाज प्रतीक्षा कखनो-कखनो छोड़ि दैत अछि।’

कैम्ब्रिजक सीढ़ी पर भीड़ बढ़ैत गेल। पाथरक सीढ़ी साँझक ठंढ सोखि नेने छल, मुदा केओ उठल नहि। सभागारक भीतर भाषण चलैत रहल, बाहर नाम। भीतर शब्द — ‘उत्तरदायित्व’। बाहर उत्तर। भीतर ‘गरिमा’। बाहर मृतकक उपस्थिति। भीतर ‘नैतिक ढाँचा’। बाहर बच्चाक आवाज। धीरे-धीरे पत्रकार सभ सेहो बाहर आबि गेल। हुनका सभकेँ कोनो सनसनी नहि भेटल; कोनो चिल्लाहट नहि, कोनो पोस्टर नहि, कोनो आरोपक सूची नहि। केवल एक गाम, एक पात, आ बच्चा सभ, जे नाम पढ़ैत छल। ई दृश्य पत्रकारिता लेल कठिन छल, कारण ओ हल्ला नहि, धैर्य छल।

ब्रूमक भाषण समाप्त भेल। ताली औपचारिक बाजल। ओ मंचसँ उतरि गुप्त दरबाजासँ बाहर जाएब चाहलक। मुदा जखन ओ गलियारा पार करैत छल, ओकरा फर्श पर नारिकेल पातक छाह देखाइ देलक। भवनक भीतर कोनो नारिकेल गाछ नहि छल। ओ रुकि गेल। छाहमे नाम लिखल छल, मुदा ओ पढ़ि नहि सकल। ओकरा लगल जे नामक भाषा ओहि सभ भाषा सँ बाहर अछि जकरा ओकर वकील अनुवाद करा सकैत अछि।

एलिना ग्रेव्स बाहर सीढ़ीपर ईराक कातमे बैसलि। ओ बहुत देर धरि चुप रहलि। फेर पूछलनि —‘हम की कऽ सकैत छी?’ ईरा पहिल बेर हुनका दिस देखलक। ‘मंच छोड़ू,’ ओ कहली। एलिना बुझली नहि। ईरा फेर कहली—‘जखन दोसर बेर ओ सभ अहाँक मंचपर नैतिकता बाजय आबथि, मंच खाली छोड़ि दियौ।’ ओ खाली मंच हुनका सभक भाषणसँ बेसी बाजत।

ओहि राति कैम्ब्रिजक छात्रावासमे बच्चा सभक नाम-पाठक प्रति बाँटल गेल। केओ ओहि पृष्ठकेँ शोध-पत्र कहलक, केओ प्रतिरोध, केओ लोक-संहिता। ईरा कोनो नाम नहि देलक। ओकरा लेल ओ केवल गढ़ नारिकेलक पात छल। नाम देला पर वस्तु सभ विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रममे बदलि जाइत अछि; बिना नामक ओ जीवित रहैत अछि।

गढ़ नारिकेलमे प्रसारण बन्द भेलाक बाद बच्चा सभ छितरा गेल। अनन्या पात मोड़ि नहि सकल — पात अपने हवामे मुड़ि गेल आ नारिकेल गाछक जड़ि लग टिकि गेल। बूढ़बा भूत डारि पर बैसल-बैसल हँसैत रहलाह। हुलासी इनारक पानिमे देखली — हुनकर प्रतिबिम्बक आँखि आइ पहिल बेर ईरा सन लगि रहल छल। पनिडुब्बी पोखरिक भीतर सँ हाथ निकालि पानि पर तीन बेर थपकी देली। तीन बेर ध्वनि भेल — छपाक, छपाक, छपाक। मुदा एहि बेर ओ मृत्यु नहि, उपस्थिति छल।

भोर होएत-होएत गढ़ नारिकेलमे नब कहावत चलि गेल — 'मंच पर जे बजैत अछि, ओकरा सुनू; पात पर जे लिखल अछि, ओकरा मानू।' बच्चा सभ ओकरा पाठशालाक देबाल पर लिखलक। नीचाँ अनन्या छोट अक्षरमे जोड़ि देलक — 'प्रश्न पूछबाक एक तरीका चुप्पे नाम पढ़ब सेहो अछि।'

एडवर्ड ब्रूम अगिला सप्ताह अपन कम्पनीक नाम बदलि देलक। समाचारमे लिखल गेल — नब आरम्भ, नब प्रतिबद्धता, नब नैतिक दिशा। मुदा गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ हँसल। नाम बदललासँ गोहिक दाँत नहि बदलैत। ओ सभ अगिला पात खोललक। कारण कथा समाप्त नहि भेल छल। जकरा सभ जीतल मानलक, ओकरा सभ कैँ आब रोज नव नामक सामना करबाक छल। आ जकरा सभ हारल मानलक, ओ सभ अपन दोसर काजमे एते व्यस्त छल जे जीतल लोकक दुख सुनबाक लेल सेहो समय नहि छल।

लोकगीत: खाली मञ्चक स्वर

लोकधुन: विदापत-धुनक पद

बाजल हे मञ्च, खाली मञ्च बाजल हे,
एक मजदूरक नामे नैतिकताक मेघ खसल हे।

मञ्च पर सोना शब्द, पातपर साँचक नाम,
ताली थाकि सुति गेल, जागल गामक ग्राम।
ईरा चुप्पे नाम पढ़लक, सभागार काँपल,
तीन छपाक उपस्थितिक, झूठक माइक थामल।
नाम बदलि कम्पनी कहै—नव दिशा, नव आरम्भ,

बच्चा हँसि कहै—दाँत पुरान, केहन नव धर्म?
मञ्चक बात सुनू, पातक लेख मानू,

प्रश्न कखनो चुप्पे नाम पढ़बो जानू।
खाली मञ्च बाजल आइ भरल भाषणसँ पैघ,
एक मजदूरक नामे खसल नैतिकताक मेघ।

सोनहुला शब्द ऊपर, पातपर साँचक नाम,
नेना हँसि कहलक—दाँत पुरनके, केहन भरम?

❖

अध्याय २३

बटुकनाथक खोज

जीतक कागज मोट छल, मुदा ओहिमे एकोटा ध्वनि नहि— आ ध्वनि बिनु जीत केवल भार।

अध्यायारम्भ लोकगीत: जीत छोड़ि लोक खोजू

लोकधुन: बटगबनी-विजय गीत

चलू यौ जीतल बटोही, पहिने हारल घर यौ,
कागच बाँहि तर दाबि, नेह बाँटि कऽ चलू यौ।

जीतक कागच बाँहि तरे, पहिने लोकक घर जाउ,
जकरा हरौलहुँ, ओकर आजुक हाल सुनाउ।
जीत यदि सेवा नहि करै, खाली भार बनत,
हारल लोक उठि कऽ कर्मसँ नव समाज गढ़त।

पदक घमण्ड उतारि चलू, पगमे माटि धरू,
लोकक मुक्त जीवनसँ अपन उत्तर सीखू।
जीत छोड़ि लोक खोजू, जीतक अर्थ बदलत,
दूसराक मान बचेलापर अपन मान फुलत।

जीतक ढोल दूर धरू, कानक बाट खोलू,
हारल आँगनक चुप्पी पहिने जा कऽ तोलू।
पगक धूरा माथ लगा पदक ताप उतारू,
लोकक हँसी घुरा कऽ अपन जीत सम्हारू।

❖

समुद्र पारक मंच खाली भऽ गेल छल, कम्पनीक नाम बदलि गेल छल; एम्हर शहरमे बटुकनाथ हरिहरनकेँ जीतक कागच हाथमे भेटल, मुदा जीतक स्वाद नहि भेटल। कागच मोट छल, मोहर चमकैत छल, आदेशक भाषा एते विनीत छल जे ओहि मे क्रूरता सेहो शिष्टाचार पहिरने छल। मुदा ओहि कागचक भीतर कोनो ध्वनि नहि छल। न ताली, न नाराबाजी, न विरोधी पक्षक चेहरा पर पराजयक पियरपन। ओ अपन कक्षमे बहुत देर धरि आदेशक प्रति उलटैत-पलटैत रहल। ओकरा विश्वास छल जे जीतलाक बाद हारल लोक सभ ओकर दुआर पर आओत — कोनो क्षमायाचना, कोनो समझौता, कोनो धन-सूची, कोनो नव मुकदमा, कोनो टीवी बहस, कोनो अपीलक धमकी। मुदा दुआर खाली रहल।

खाली दुआर बटुकनाथकेँ सभसँ अधिक डेराओलक। ओ एहन लोक छल जे शोर सँ नहि, चुप्पीसँ डरैत छल। शोर केँ ओ वकालतमे बदलि सकैत छल, चुप्पी केँ नहि। विरोध केँ ओ अवमानना कहि सकैत छल, अनुपस्थिति केँ नहि। हारल लोक जँ कनैत, तकरा सहानुभूतिक व्यापारमे बदलि सकैत छल; जँ तमसाइत, तकरा कानून-व्यवस्थाक प्रश्न बना सकैत छल; मुदा जँ ओ सभ अपन काजमे लागि जाय — तखन ओकरा बचबाक भाषा नहि भेटैत छल।

ओ अपन सचिवकेँ बजेलक। सचिव बहुत पुरान लोक छल, जे फाइल उठबैत काल ओहि फाइलक भारसँ बुझि जाइत छल जे ओकर भीतर सच अछि कि घूस। बटुकनाथ पूछलक — 'ओ लोक कतय अछि?' सचिव बुझल नहि। 'के लोक?' 'सएह, जे हारि गेल। आरुणि, गोप, सौम्या, देविका, मीरा, ईरा — ई सभ।' सचिव फाइल देखलक। 'महोदय, अदालतमे हुनकर अगिला आवेदन नहि आएल।' बटुकनाथक आँखि सिकुड़ि गेल। 'नहि आएल? हारल लोक अगिला आवेदन नहि दैत अछि? ई कोना सम्भव अछि?'

सचिव धीरे बाजल — 'सम्भवतः ओ सभ गाम गेल छथि।' बटुकनाथ पहिने हँसल। फेर ओ हँसी अधबीचमे अटकि गेल। गाम। ओहि शब्दमे ओहने माटि छल जकरा पर ओकर जूता चलबाक अभ्यस्त नहि छल। ओ गाम केँ कखनो पक्षकारक पता रूपेँ देखैत छल — थाना, पोस्ट, जिला। गाम ओकरा लेल कोर्ट फीसक पाछाँ लिखल पता छल। मुदा आब सएह गाम अदालतक बाहर स्वतन्त्र क्षेत्र बनि रहल छल।

बटुकनाथ तुरन्त चन्द्रपाल बत्राकेँ सिग्नल पर सन्देश पठेलक। ओ प्रत्यक्ष फोन नहि करैत छल; जीतलाक बाद सेहो सावधानी ओकर धर्म छल। सन्देश छोट छल — 'मुख्य लोक कतऽ?' चन्द्रपालक उत्तर आएल — 'मैदान खाली। सभ गाम। किछु बच्चा पढ़ा रहल। किछु नाम लिखि रहल। मामिला शान्त।' बटुकनाथ एक बेर संदेश पढ़लक, फेर दोसर बेर, फेर तेसर बेर। 'मामिला शान्त' — ई वाक्य ओकरा नीक नहि लागल। अपराधक संसारमे शान्ति प्रायः तूफानक पहिल साँस होइत अछि।

ओहि राति बटुकनाथकेँ निन्न नहि आयल। ओकर सपनामे अदालतक कक्ष खाली छल। न्यायाधीशक कुर्सी खाली, वकीलक पाँति खाली, दर्शकदीर्घा खाली। केवल बीचमे एकटा नारिकेल पात राखल छल। पात पर लिखल छल — 'ककरा हरौल?' ओ पात उठाबए बढ़ल, मुदा पात अदालतक फर्श पर सरकि कऽ दूर चलि गेल। ओ भागल। पात फेर दूर। अन्तमे पात दरबाजासँ बाहर निकलि गेल आ चन्ना गाछी दिस उड़ि गेल।

भोरमे ओ निर्णय कयलक — ओ गढ़ नारिकेल जाएत। ई यात्रा घोषित नहि होएत। न प्रेस, न सुरक्षा-दल, न स्वागत। ओ चाहैत छल जे हारल लोकक वास्तविक स्थिति देखए। ओकरा विश्वास छल जे गाममे पहुँचतहि कोनो न कोनो मुखिया, कोनो पुरोहित, कोनो दलाल, कोनो पीड़ित परिवारक प्रतिनिधि, कोनो स्थानीय वकील ओकर पएर लगत। ओ सभ कहत — 'महोदय, आब की होएत?' आ ओ अपन पुरान कला देखाओत — किछु आश्वासन, किछु भय, किछु दान, किछु समझौता।

मुदा गढ़ नारिकेल पहुँचलाक पहिने रस्ता बदलि गेल। गाड़ी जखन कमला-बलानक कछार लग पहुँचल तखन चालकक यंत्र काज करब छोड़ि देलक। नक्शा पर रस्ता सीधा देखाइत छल, मुदा वास्तविक धरती पर रेत, कछार, सूखल धार, अधमरल पुलिया, आ अचानक उठल पोखरिक पानि। रेत टायरक नीचाँ चूँ-चूँ बाजि रहल छल। चालक पूछलक — 'सर, कोन दिस?' बटुकनाथ झुँझला गेल। 'नक्शा देखू।' चालक कहलक — 'नक्शामे नदी नहि चलैत, सर। एतय नदी चलैत अछि।'

ई वाक्य बटुकनाथकेँ चोट केलक। कानूनक नक्शा पर सेहो ओहिना रस्ता खिंचल रहैत अछि; मुदा जनताक दुख अपन धार बनबैत चलैत अछि। ओ ई बात मानब नहि चाहैत छल। ओ केवल खिड़की बन्द कऽ लेलक। मुदा खिड़की बन्द करितो माटिक गन्ध भीतर आबि गेल। ओहि गन्धमे ओहि दिन अदालतक पानि, सीलबन्द आवरण, चन्ना गाछीक फैसला, ईरा द्वारा पढ़ल नाम, आ देविकाक आवाज सभ मिज्झर छल।

गामक सीमा पर कोनो स्वागत नहि छल। मात्र दूटा बच्चा कच्चा रस्ता पर चूना सँ वृत्त बना रहल छल। ओ सभ मोबाइल फोनक चित्र बना रहल छल आ ओकर चारू कात गोहिक दाँत। बटुकनाथ गाड़ी रोकि पूछलक — 'ई की बनबैत छी?' एक बच्चा बिना डरने कहलक — 'स्क्रीनक गोहि।' दोसर जोड़लक — 'जे पहिने जीत दैत अछि, फेर घर खा जाइत अछि।' बटुकनाथक गला सूखि गेल। ओ सोचलक — देविका आ निशांतक पाठशाला काज कऽ रहल अछि।

ओ चन्द्रपालकेँ फेर सन्देश पठेलक — 'बच्चा प्रशिक्षित। स्रोत?' उत्तर तुरन्त नहि आएल। बटुकनाथ प्रतीक्षा करैत रहल। पाँच मिनट। दस मिनट। पन्द्रह मिनट। अन्ततः एक छोट संदेश आएल — 'सिग्नल साफ नै। गाममे नेटवर्क अजीब।' बटुकनाथ खिसिया गेल। गढ़ नारिकेलमे नेटवर्क अजीब नहि छल; ओतय गप मोबाइलसँ बेसी मुँहसँ चलैत छल। आ मुँहक नेटवर्ककेँ कोनो कम्पनी कीनने नहि छल।

चन्ना गाछी लग पहुँचि ओ देखलक जे ओतय कोनो मंच नहि, कोनो बैनर नहि, कोनो आन्दोलनक झण्डा नहि। ओतय एकटा लम्बा बाँसक तख्ता राखल छल, जाहि पर बच्चा सभ नारिकेल पात सुकबैत छल। प्रत्येक पात पर नाम। कोनो नामक आगाँ जाति नहि, धर्म नहि, पेशा नहि, मुकदमा संख्या नहि। केवल नाम, आ कखनो-कखनो एक ध्वनि — छपाक, श्वास, स्क्रीन, देह, पात।

बटुकनाथकेँ देखिते केओ भागल नहि, केओ विरोध नहि केलक, केओ नारा नहि लगेलक। ई ओकरा आर असहज बना देलक। विरोध होइत तँ ओ पुलिस माँगित। नारा होइत तँ ओ अवमानना कहित। मुदा शांत बच्चा सभ ओकरा देखि कऽ अपन काज करैत रहल। एक बालिका, जे अनन्याक संग पात गनैत छल, पूछलक — ‘अहाँक नाम लिखल अछि?’ बटुकनाथ चौंकल। ‘हमर नाम?’ बालिका कहलक — ‘एतय जे नाम बचाबय योग्य अछि, से लिखल जाइत अछि। जे नाम अपने केँ बचा लैत अछि, ओकरा लिखबाक जरूरत नहि।’

ओहि समय अनन्या आयल। ओ आब बच्चा नहि रहि गेल छल, यद्यपि ओकर आँखिमे बच्चाक निर्भयता छल। बटुकनाथ ओकरा चिन्हि गेल। अदालतक कागचमे, समाचारक किनार पर, ईराक प्रसारणमे — ओहि बच्चाक चेहरा बेर-बेर देखल गेल छल। ओ कहलक — ‘हम अहाँक पिताजीसँ मिलए चाहैत छी।’ अनन्या शांत स्वरमे कहलक — ‘ओ नाम पढ़ए गेल छथि।’ ‘कतऽ?’ ‘जतय नाम अधूरा अछि।’ बटुकनाथ बुझल नहि। अनन्या जोड़लक — ‘अहाँ प्रतीक्षा करू। प्रतीक्षा करब न्यायालयमे सीखने हएब।’

ई वाक्य सभ सुनैत बच्चा सभ मुस्की नहि देलक। गामक व्यंग्य सेहो ओहि दिन संयमित छल। बटुकनाथ एक पुरान काठक पीढ़ी पर बैसि गेल। ओकरा पहिल बेर बुझायल जे प्रतीक्षा ओहि लोककेँ अधिक दुख दैत अछि जे प्रतीक्षाकेँ दोसर पर थोपैत रहल हो। अदालतमे तारीख देब आसान छल; चन्ना गाछीमे प्रतीक्षा करब कठिन।

किछु देर बाद देविका साह आयलि। हुनका हाथमे कॉपीक गट्ठर छल। ओ गाम-गामक युवक सभक आत्महत्या, ठगी, म्यूल खाता, डिजिटल अरेस्ट, आ बचल परिवारक साक्ष्य लिखि रहल छली। बटुकनाथ तुरन्त उठल। ‘अहाँक संग किछु बात करबाक अछि।’ देविका उत्तर देली — ‘सभ बात सभक सामने होएत।’ बटुकनाथ मुस्कुरेलक — ‘कानूनमे गोपनीय संवादक महत्व होइत अछि।’ देविका कहली — ‘ठगी सेहो गोपनीय संवादसँ शुरू होइत अछि।’

बटुकनाथकेँ लागल जे ई स्त्री खतरनाक अछि। कारण ओ कनैत नहि छलि। कनैत स्त्रीक फोटो बनैत अछि; शांत स्त्रीक दस्तावेज बनैत अछि। ओ कोमल स्वरमे कहलक — ‘

मुआवजाक प्रश्न पर हम सहायता कऽ सकैत छी।' देविका ओकरा आँखिमे आँखि दऽ देखली। 'मुआवजा ओहि दिन देब जखन मृतकक नाम हटेबाक दर तय भेल छल। आब हमरा नाम चाही, दर नहि।'

एहि बीच मीरा सेहो आयलि। ओ अपना संग तीन स्त्री आ दू युवक कैँ लेने छली। हुनका सभक चेहरा पर ओहि लोकक थकान छल जे निजताकैँ बचबैत-बचबैत बूढ़ भऽ जाइत अछि। मीरा बटुकनाथकैँ नमस्कार केलनि। नमस्कारमे न भय, न आदर, केवल सभ्यता छल। बटुकनाथ कहलक — 'अहाँ सभ पर जे निजी सामग्रीक मामिला अछि, ओकरा कानूनी ढंग सँ दबाओल जा सकैत अछि।' मीरा हँसलि नहि। 'दबाओल नहि, मिटाओल जाएत। आ जे लोक दबाबय चाहत, ओकर नाम पात पर आएत।'

बटुकनाथ पहिल बेर बुझलक जे एहि लोकक भाषा बदलि गेल अछि। ओ सभ 'केस' नहि कहैत अछि, 'नाम' कहैत अछि। 'दावा' नहि, 'स्मृति'। 'मुआवजा' नहि, 'मर्यादा'। 'गोपनीयता' नहि, 'निजता'। कानूनक पुरान हथियार एहि भाषापर कुन्द भऽ जाइत छल।

ओ सोचलक — शायद आरुणि सँ बात होएत। परिवारक पुरुष, वंशक प्रतिनिधि, लेखकीय चेहरा — ओकरा सँ समझौता सम्भव होएत। मुदा आरुणि जखन आयल तँ ओकर हाथमे कोनो याचिका नहि, एकटा पुरान कोदारि छल। बटुकनाथ पूछलक — 'ई की?' आरुणि कहलक — 'नारिकेल गाछ लग नब खोह बनबैत छी। पात रखबाक लेल।' 'अहाँक अपील?' 'जखन समय होएत, देखब। आब नाम सुकएबामे बरखा लागल अछि।'

बटुकनाथ अपमानित अनुभव केलक। अपमान एहि लेल नहि जे ओकरा गाली देल गेल; एहि लेल जे ओकरा महत्व नहि देल गेल। धूर्त लोकक सभसँ पैघ भूख महत्वक होइत अछि। ओकरा अपराध क्षमा भऽ जाए, से कम जरूरी; ओकरा केन्द्रमे राखल जाए, से अधिक जरूरी। गढ़ नारिकेल ओकरा केन्द्र नहि बनबैत छल। ओ केवल एक आगन्तुक छल, जे गलत जगह अपन पुरान शक्ति लऽ आयल छल।

ओ गामक बूढ़ सभ लग गेल। बूढ़बा मनुक्ख सभ, जे खैनी मलैत, धूपमे आँखि सिकोड़ि, दूर देखैत बैसल छलाह। ओ कहलक — 'अहाँ सभक गामक प्रतिष्ठा हमरा प्रिय अछि। बाहरी लोक एहि संघर्षकैँ राजनीतिक बना देत।' एक बूढ़ा पूछलन्हि — 'राजनीतिक माने?' बटुकनाथ तैयार छल। ओ बाजल — 'दल-दर-दल, नारा, बहस।' बूढ़ा हँसलाह — 'हमरा सभक दल पातक, नारा नामक, बहस बच्चाक। अहाँ ककरा कीनब?'

ओहि वाक्य पर ओहि ठाम बैसल लोक सभ हँसल नहि। चन्ना गाछीक छाह मात्र कनी हिलल। बटुकनाथकेँ लगल जे गाछ सेहो सुनि रहल अछि। ओ आकाश दिस तकलक। दिनक इजोतमे भूत नहि देखाइ पड़ैत, मुदा ओहि दिन ओकरा डारि पर कारी-उज्जर धब्बा सभ हिलैत देखाइ देलक। ककरो आँखि उज्जर, ककरो देह कारी, ककरो हँसी पत्ताक बीच अटकल।

बटुकनाथ अपना कैँ बुझेलक — थकान अछि। लंबा यात्रा। गामक हवा। मुदा जखन ओ उठि चन्ना गाछी भीतर बढ़ल तँ ओकर पएर भारी भऽ गेल। चन्ना गाछीमे पहिल बेर ओ बिना जज, बिना पुलिस, बिना अनुच्छेद, बिना नियमावलीक प्रवेश करैत छल। ओहि ठाम नियम सभ पातसँ बनैत, पानिसँ धुलैत, आ स्मृतिसँ लागू होइत छल।

चन्ना गाछीक बीचमे एक गोल खाली स्थान छल। अनन्या कहलक — ‘एतय कबड्डी होइत अछि।’ बटुकनाथकेँ हँसी अबय चाहल, मुदा नहि आएल। ओकरा मोन पड़ल — चन्ना गाछीक अदालत, भूतक फैसला, नामक जल। ओ पूछलक — ‘आब?’ अनन्या कहलक — ‘आब बच्चा सभ खेलत। मृतक सभ देखत। कहियो-कहियो उलट सेहो होइत अछि।’

ओहि समय एक छोट लड़का — शायद मुन्ना पासवानक भतीजा — जमीन पर रेखा खिंचैत कहलक, ‘ई रेखा अदालतक नहि, खेलक अछि। जे पार करए, ओकरा साँस रोकि सत्य बजाबय पड़त।’ बटुकनाथ ओहि रेखा दिस तकलक। ओकरा लगल जे ओ रेखा पार करैतहि ओकर पेटक भीतरक सभ गोपनीय सन्देश बाहर निकलि पड़त — चन्द्रपाल बत्राक, राघव सिग्नलक, लाउ किन-हंगक, भुगतानक, तारीखक, बचावक। ओ पएर पाछू खिंचि लेलक।

चन्द्रपालक सन्देश फेर आएल — ‘स्थिति?’ बटुकनाथ बहुत देर धरि उत्तर नहि लिखि सकल। अन्तमे लिखलक — ‘कोनो नेता नहि। कोनो माँग नहि। कोनो डर नहि।’ कनी काल बाद उत्तर आएल — ‘तखन खतरा नहि।’ बटुकनाथ फोनकेँ देखैत रहल। चन्द्रपाल नहि बुझल। ओकरा बुझल छल जे जे आन्दोलन नेता, माँग आ डर बिना चलैत अछि, सएह सभसँ कठिन होइत अछि। नेता कीनल जाए, माँग घटाओल जाए, डर बढ़ाओल जाए। मुदा जे काज प्रेम, स्मृति आ बच्चाक पाठशाला सँ चलैत हो, ओकर दलाल कतय भेटत?

बटुकनाथ गामक पोखरि दिस चलि गेल। पनिडुब्बीक कथा ओकरा पहिने हास्यास्पद लगैत छल। मुदा ओहि दिन पोखरिक पानि एते शांत छल जे ओकर भीतर आकाश नहि, अदालतक छत देखाइ दैत छल। ओ झुकि कऽ देखलक। पानिमे ओकर चेहरा नहि छल। केवल एक मोट अक्षर तैरैत छल — ‘प्रक्रिया’। ओ हाथ बढ़ा कऽ पानि छुलक। अक्षर टूटि गेल आ ओकर जगह सैकड़ो नाम बनि गेल। ओ घबरा कऽ पाछू हटल।

गामक बच्चा सभ ओकरा देखैत छल। केओ डरि नहि रहल छल। ई ओकरा लेल असह्य छल। धूर्त सभ चाहैत अछि जे बच्चा सभ हुनकर गाड़ी, पोशाक, पद, सुरक्षा, भाषा, मोहर सँ प्रभावित होथि। मुदा एतय बच्चा सभ ओकर जूता पर लगल शहरक धूलि देखैत छल, आ अनुमान लगबैत छल जे ई लोक रेतमे कतबेर चलि सकत।

साँझ धीरे-धीरे उतरि रहल छल। चन्ना गाछीमे पहिल छाह लम्बा भेल। ओहि छाहमे बटुकनाथकेँ किछु आकृति देखाइ देलक। बूढ़बा भूत डारि पर, हुलासी इनारक दिशा सँ, लोथ झाड़ी लग, राकशक हलुक इजोत, आ कतेको मजदूर माथपर अदृश्य टोकड़ी लेने। ओ सभ ओकरा दिस नहि, बच्चा सभ दिस तकैत छल। जेना ओ सभ अपन न्याय आब एहि बच्चा सभकेँ सौंपि देने हो। बटुकनाथ पहिल बेर पूर्ण अकेला भेल।

ओ अन्तिम प्रयास करए चाहलक। 'समझौता लिखू,' ओ कहलक। 'कोन बातक?' आरुणि पूछलक। 'सभ पक्ष मिलि शांतिपूर्ण समाधान।' गोप कुमार, जे एखन धरि चुप छल, धीरे बाजल — 'समाधान अहाँक शब्द अछि। हमरा सभक शब्द अछि — स्मरण।' बटुकनाथ चिढ़ि गेल। 'स्मरणसँ पेट नहि भरैत।' देविका उत्तर देली — 'ठगी सँ खाली होइत अछि। हमरा पहिने खाली होएबाक विज्ञान बुझायल गेल; आब भरबाक कला सीखि रहल छी।'

बटुकनाथ कागच निकाललक। ओ खाली कागच छल — समझौताक प्रारूप, जाहि पर नाम बादमे भरल जाएत। ओ सोचने छल जे कागच देखि लोकक आँखिमे लोभ वा भय आएत। मुदा अनन्या कागच लऽ लेलक, ओकरा मोड़ि एक छोट नाव बनौलक, आ पोखरिक पानि पर छोड़ि देलक। कागचक नाव कनी दूर गेल, फेर भीजि कऽ डूबि गेल। बच्चा सभ शान्त देखैत रहल। अनन्या कहलक — 'जे कागच नाम बिना होइत अछि, पानि ओकरा राखैत नहि।'

ओही क्षण बटुकनाथ बुझि गेल जे ओ गाममे हारल लोक खोजए आयल छल, मुदा एतय हारल लोक नहि, मुक्त लोक अछि। हारल लोक प्रतिद्वन्द्वी ताकैत अछि; मुक्त लोक काज ताकैत अछि। एहि गाममे लोक सभ ओकरा विरोध नहि करैत छल, कारण ओ सभ ओकरा पार कऽ चुकल छल। न्यायालयक सीढ़ी पर जे पराजय मानल गेल, चन्ना गाछीक नीचाँ ओ संक्रमण निकलल।

राति आबि गेल। बटुकनाथ वापसी लेल गाड़ीमे बैसल। गाड़ी चलल, मुदा कछार पर पहुँचि फेर रुकि गेल। चालक कहलक — 'रस्ता धुँधला अछि।' बटुकनाथ बाहर देखलक। दूर चन्ना गाछी दिस सँ बच्चा सभक आवाज अबैत छल — कबड्डी नहि, नाम। प्रत्येक नामक बाद एक साँस। प्रत्येक साँसक बाद मौन। ओहि मौनमे ओकर जीतक कागच पसीजए लागल।

ओ कागच जे अदालतमे सख्त छल, आब हाथमे नरम भऽ गेल। आँगुरक नीचाँ मोहरक उभार आब नहि बुझाइत छल। ओ ओकरा खोलि देखलक। मोहरक स्याही पसरि गेल छल, आ आदेशक पंक्ति बीच एकटा नव वाक्य उभरि आयल — 'अपील ककर विरुद्ध?' बटुकनाथ काँपि गेल। गाड़ीमे कोनो पानि नहि छल। ओकर हाथ सूखल छल। तथापि कागच भीजल छल।

शहर पहुँचि ओ चन्द्रपालकेँ अन्तिम संदेश पठेलक — 'ओ सभ अदालतमे नै घुरत।' चन्द्रपालक उत्तर आएल — 'तखन मामिला खत्म।' बटुकनाथ बहुत देर धरि स्क्रीन देखैत रहल। फेर धीरे-धीरे टाइप केलक — 'नै। आब मामिला हमरा बिन चलत।' ओ संदेश पठाबय चाहलक, मुदा अँगूठा थमकि गेल। अन्तमे ओ संदेश मेटा देलक। धूर्त सभ साँच लिखबासँ पहिने बूढ़ भऽ जाइत अछि।

ओहि राति चन्ना गाछीमे कबड्डी भेल। बच्चा सभ दिनमे खेलि चुकल छल, आब भूत सभक बारी छल। बूढ़बा भूत रेखा पार कयलन्हि आ साँस रोकि बजलाह — 'बटुकनाथ, बटुकनाथ, बटुकनाथ।' राकश इजोर केलक, लोथ ताली देलक, पनिडुब्बी पोखरिमे पानि हिलेलक। मुदा ई नाम बचाबय लेल नहि, चेताबय लेल लिखल गेल। हर नाम स्मृति नहि होइत; किछु नाम सावधानी सेहो होइत अछि।

भोरमे अनन्या पात समेटय गेल तँ एकटा नव पात भेटल। ओहि पर कोनो मृतकक नाम नहि, कोनो पीड़ितक नाम नहि। केवल लिखल छल — 'जे जीतक बाद खोजैत फिरए, बुझू ओ हारिक भीतर अटकल अछि।' अनन्या पात पढ़ि मुस्कुरा देलक। ओ पात अभिलेखमे नहि, पाठशालाक देबाल पर टाँगल गेल। कारण ई नामक सूची नहि, पाठ छल।

गढ़ नारिकेलक दिन फेर शुरू भेल। देविका डिजिटल ठगीक अगिला कक्षा लेल निकलि गेली। मीरा निजताक मण्डलमे नव स्त्रीक कथा सुनबाक लेल बैसली। निशांत दूर देशक भुगतान-नलीक नक्शा बच्चा सभकेँ चित्रक रूपमे बुझबैत रहल। ईरा हार्वर्डमे खाली मंचक प्रस्ताव लिखैत रहल। गोप कुमार पातक प्रतिलिपि सुरक्षित करैत रहल। आरुणि नारिकेल गाछ लग नब खोह खनैत रहल।

आ बटुकनाथ हरिहरन शहरमे अपन जीतक आदेश अलमारीमे राखि देलक। ओ आदेशक ऊपर धूप नहि पड़ैत छल। मुदा अलमारीक भीतरसँ कखनो-कखनो पातक खरखराहट सुनाइ दैत छल। ओ प्रत्येक बेर चौंकि उठैत। तखन ओकरा मोन पड़ैत — गढ़ नारिकेलमे केओ ओकर प्रतीक्षा नहि कऽ रहल। ई सभसँ पैघ दण्ड छल।

लोकगीत: जीतल लोकक खोज

लोकधुन: बटगबनी-विरहा

खोजै हे बटुक, हारल लोककेँ खोजै हे,
जीतक कागच बाँहि तर, मुदा मोन ने सोझै हे।

जीतक आदेश बाँहि तरे, बटुक चलल गाम,
जकरा हरौने छल, नहि भेटल ओकर नाम।
केओ पाठशाला खोललक, केओ बहिनक संग,
केओ मृतकक कागच सँ बनौलक जन-रंग।
खाली दुआर डरबेलक, भरल दरबार नहि,

मुक्त लोकक बाटमे जीतक मोल रहि नहि।
अलमारी भीतर आदेश, धूपो नहि पहुँचै,
पातक खरखराहट राति ओकर निन्न खसै।
जे जीतक बाद खोजैत फिरै, हारिक भीतर बन्द,
गढ़ नारिकेल प्रतीक्षा नहि—ई दण्ड सभसँ प्रचण्ड।

पातक खरखराहटसँ राति-राति निन्न खसए।

❖

अध्याय २४

उपन्यास फेर शुरू

कथा जतय समाप्त कहल जाइ छै, गाछी ओतहिसँ नव पन्ना खोलै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: नब पन्नाक भोर

लोकधुन: बाल-कबड्डी गीत

फेरू हो नेना, नब पन्ना फेरू हो,
ओसक बून्दक स्याहीसँ नब कहानी टेरू हो।

किताब कहलक अन्त, नेना पन्ना फेरलक,
ओसक नान्हि बून्द नब कहानी लिखि देलक।
पहिल पंक्ति खेलक, दोसर नामक मान,
तेसर पंक्ति संगक, चौठी नव अभियान।

पन्ना खाली डर नहि, सम्भावनाक खेत,
बालक कलम चलिते उगै भविष्यक नेह।
नब पन्नाक भोर कहै—कथा कहियो नहि थाम,
हरेक पीढ़ी अपन कर्मसँ फेर लिखै गाम।

अन्त लिखल जतऽ किताबे, ओतऽ सँ खेल शुरू,
खाली पन्ना डर नहि—बीया छिटबाक धरू।
पहिल आखर खेलक, दोसर संगक बोली,
पीढ़ी-पीढ़ी लिखत गाम, भरत नामक झोली।

❖

शहरक अलमारीमे जीतक कागच रातिभरि पातक खरखराहट सुनैत रहल; एम्हर गढ़ नारिकेलमे भोरक पहिल पातर इजोत चन्ना गाछीक डारि पर ओहिना अटकल छल जेना रातिक अदालत एखन धरि स्थगित नहि भेल हो। कुकुर सभ गामक बाहरी बाट पर भुकल, मुदा गाछी भीतर कोनो बेचैनी नहि छल। जतेक निर्णय मनुष्यक अदालतमे लिखल जाइत अछि, ततेकक एक अन्तिम प्रति चन्ना गाछीक पात पर रातिये उतरैत अछि। भोरक ओस ओकरा पढ़ैत अछि, आ जे पंक्ति असत्य होइत अछि, ओ पहिल धूपमे उड़ि जाइत अछि।

एहि भोर कोनो पंक्ति उड़ल नहि। पात सभ भारी छल। ओसक बूँद सभक भीतर नाम चमकैत छल। बच्चा सभ ओकरा अक्षर बुझि पढ़ि नहि सकैत छल, मुदा साँस सँ चिन्हि रहल छल। कोन नाम मजदूरक, कोन नाम उज्ज्वलक, कोन नाम ओहि स्त्रीक जे देहक बाजारमे गुम भेल, कोन नाम ओहि बूढ़क जे ऑक्सीजनक अभावमे घरक बरामदा पर श्वास गनैत चलि गेल।

अनन्या सभसँ पहिने पहुँचल। ओकर हाथमे न कापी छल, न मोबाइल, न अदालतक प्रति। ओ एक छोट काठक छड़ी लऽ कऽ आयल छल, जाहिसँ राति भूत सभ कबड्डीक रेखा खिंचैत छलाह। छड़ीक काठ ओससँ भीजल आ ठंढा छल। ओ जमीन साफ केलक। धूलि हटल तँ नीचाँ पुरान रेखा भेटल — कारी, जेना ककरो नख सँ माटि पर खिंचल गेल हो। ओहि रेखा पर बच्चा सभ नब रेखा खिंचलक। पुरान आ नब रेखा एक-दोसरामे मिलि गेल।

बूढ़बा भूत डारि पर बैसल छलाह। दिन भेल छल, मुदा ओ देखाइ देलाह। एहन घटना गढ़ नारिकेलमे केवल तखन होइत अछि जखन मृतक सभ जिबैत लोक पर भरोसा कऽ लैत अछि। हुनकर देह कारी छल, आँखि उज्जर; मुदा आइ आँखिमे आदेश नहि, थकानक बादक सहज सन्तोष छल। हुलासी इनारक कोनासँ देखैत छली। पनिडुब्बी पोखरिक पानि ऊपर अपन केश नहि, केवल एक लहर पठेलक।

अनन्या कहलक — ‘आब खेल शुरू।’

देविका पूछलनि — ‘ककर खेल?’

अनन्या उत्तर देलक — ‘जकर नाम बचल, ओकर। जकर नाम मेटाओल गेल, ओकरो। जकर नाम अपराधमे लिखल गेल, ओकरा लेल नहि; ओकरा लेल चेतावनी।’

आरुणि दूर सँ देखैत रहल। ओकरा बुझाइत छल जे ओ उपन्यासक अन्त लिखि चुकल अछि, मुदा गाम ओकरा बतबैत छल जे अन्त लिखनिहार सभसँ पैघ भ्रममे रहैत अछि। कथा जखन लोकक मुँहमे चलि जाइत अछि तँ लेखकक कलम ओकर पाछाँ-पाछाँ चलैत अछि। चन्ना गाछीमे एहि भोर कथाक स्वामित्व बदलि रहल छल।

पहिल बच्चा रेखा पार केलक। ओकर नाम मुन्नाक भतीजा सोमित। ओ साँस रोकि बाजल — ‘उज्ज्वल झा, उज्ज्वल झा, उज्ज्वल झा।’ ओ कबड्डी नहि बाजल। ओ नाम बाजल। ओकर साँस टूटलाक पहिने देविका आगाँ बढ़ि ओकरा छुइलक आ कहलनि — ‘उज्ज्वल हारि नहि गेल। ओ हमरा सभकेँ स्क्रीनक गोहि चिन्हा गेल।’ बच्चा सभ ताली नहि बजेलक। ओ सभ चुप्पी राखलक। गढ़ नारिकेलमे किछु नाम ताली नहि, मौन चाहैत अछि।

दोसर नेनी पार गेली। ओ सरयूक नाम बजेली — ओही स्त्री-मजदूर, जकर नाम सुरक्षा-बहीमे कखनो ठीकसँ लिखल नहि गेल। ओ नेनी बजैत-बजैत घुरि आयली आ अपन हथेली माटि पर राखि देली। ओहि ठाम एक छोट आर्द्र निशान बनल। देविका कहली — ‘ई हस्ताक्षर छी। जे निरक्षर कहल गेल, ओकर हस्ताक्षर पृथ्वी करैत अछि।’

तेसर बेर एक अदृश्य खिलाड़ी रेखा पार केलक। बच्चा सभ केवल धूलि उठैत देखलक। आवाज आयल — 'तीस नाम नहि, तीन सय नाम।' ई जलसमाधि-प्राप्त आत्मा सभक समूह-स्वर छल। ओ सभ एकेक नाम नहि गनलक। कारण ओ सभ चाहैत छल जे बच्चा सभ आगाँक बरख सभमे ओ नाम खोजि-खोजि लिखय। अधूरा सूची भविष्यकेँ काज दैत अछि।

ओहि समय शहरमे बटुकनाथ हरिहरन अपन अलमारी खोलि रहल छल। जीतक आदेश रातिभरि भीतर राखल छल। भोरमे ओ सोचलक जे शायद कागच सूखि गेल होएत। मुदा कागच एखनहुँ कनी नम छल। स्याही पसरल नहि, मुदा शब्दक किनार पिघलल छल। 'याचिका निरस्त'क बगलमे एक बारीक पंक्ति बनि गेल छल — 'लोक-कार्य आरम्भ।' बटुकनाथ चश्मा पोंछलक। पंक्ति गायब नहि भेल।

ओ तुरन्त चन्द्रपाल बत्राकेँ संदेश देलक — 'गाममे की भऽ रहल अछि?' चन्द्रपालक उत्तर आयल — 'कक्षा। नाम। बच्चा। कोनो आन्दोलन नहि।' बटुकनाथ एहि उत्तरसँ शान्त नहि भेल। जे काज आन्दोलन नहि, ओहि पर कानूनक कोन धारा लगत? जे नारा नहि, ओकरा दमनक आदेश कोना देब? जे नेता नहि, ओकरा कीनबाक दलाल कतय पठेब?

चन्द्रपाल बत्रा अपना दिस सँ बेसी चिन्तित नहि छल। ओकरा लगैत छल जे बच्चा, पात, नाम, पाठशाला — ई सभ भावुक लोकक काज अछि। ओकर असली चिन्ता ऐपक आँकड़ा छल। पछिला सात दिनमे नब म्यूल अकाउण्ट कम खुलल। पाँचटा युवक, जकरा पाँच-पाँच हजारक लालच देल गेल, देविकाक कक्षामे जा कऽ घुरि आएल आ बैंकमे शिकायत दर्ज कऽ देलक। एक डिजिटल अरेस्ट कॉलमे बूढ़ी स्त्री हँसि देली आ फोन काटि देली। चन्द्रपाल पहिल बेर बुझलक जे ठगी केवल पुलिससँ नहि, समझसँ हारैत अछि।

राघव 'सिग्नल' सोमानी लाउ किन-हंगकेँ संदेश पठेलक — 'बाजार धीमा।' ग्रामीण क्षेत्रमे शिक्षासँ प्रतिरोध। उधर सँ उत्तर आयल — 'शिक्षा कीनू।' राघव बहुत देर धरि स्क्रीन देखैत रहल। शिक्षा कीनब कोना? शिक्षकक वेतन कीनल जाए, पाठ्यक्रम कीनल जाए, मुदा दादीक कथा? बच्चाक चेतावनी? चन्ना गाछीक पात? ई सभ इनवॉइसमे नहि आबैत।

लाउ किन-हंग दूर देशमे समुद्र-दिस खुलैत काँचक दफ्तरमे बैसल छल। ओकरा भारतक नक्शा स्क्रीन पर देखाइत छल — राज्य, जिला, भुगतान-नली, नुकसान, लाभ। गढ़ नारिकेल स्क्रीन पर केवल एक छोट बिन्दु छल। मुदा ओहि बिन्दु सँ लाल रेखा सभ पसरि रहल छल — जेना कोनो वायरस नहि, प्रतिरोधक बीज पसरि रहल हो। ओकर विश्लेषक कहलक — '

साहब, ई इलाका अजीब अछि।' ई शिकायतसँ बेसी तेजीसँ समझ पसारि रहल अछि। लाउ किन-हंग पहिल बेर 'समझ' शब्दक आर्थिक मूल्य पूछलक। कोनो उत्तर नहि भेटल।

एडवर्ड ब्रूमक दोसर भाषणक भिडियो विदेशमे खूब देखल गेल, मुदा ओहि भाषणक कट-कट क्लिपक नीचाँ बच्चा सभक नाम-पाठ अधिक चलि गेल। ब्रूमक पीआर-टीम कहलक — 'ई भावनात्मक प्रतिक्रिया अछि, थाकि जाएत।' मुदा ईरा जानैत छली जे थाकैत ओ अछि जकरा मंच चाही। गामक लोक जखन काजमे लागि जाइत अछि, ओ थाकि कऽ सेहो चलैत रहैत अछि।

सत्यव्रत मेहता अपन सरकारी मेज पर बैसल छलाह। हुनका लग नब फाइल आयल — पुरान मुकदमा पर पुनर्विचार नहि, 'सामुदायिक अभिलेखक कानूनी स्थिति' पर मत। ओ मुस्कुरेलाह। राज्य आब पातक वैधता पूछैत छल। हुनका मोन पड़ल — जे राज्य लोकक नाम मेटाबयमे बरख लगा देलक, से आब लोकक पात सँ डरि रहल अछि। ओ फाइलक ऊपर लिखलनि — 'स्मृति पर राज्यक स्वामित्व नहि होइत।'

गढ़ नारिकेलमे एहि बीच पाठशाला शुरू भऽ गेल। नारिकेल पात पाठशाला। देबाल नहि, फाटक नहि। चन्ना गाछीक एक कात नामक अभिलेख; दोसर कात स्क्रीनक गोहि चिन्हबाक कक्षा; तेसर कात निजताक शपथ; चारिम कात गान। जे बच्चा पढ़ए अबैत, ओ पहिने अपन नाम कहैत, फेर कोनो एकटा बचाओल नाम। एना प्रत्येक दिन प्रत्येक जीवित बच्चा एक मृतक कैँ उपस्थिति दैत।

मीरा कक्षामे कहैत छली — 'प्रेम अपराध नहि। निजता हथियार नहि। ब्लैकमेल शर्म नहि, हिंसा अछि।' पहिने किछु लोक असहज भेल। गाममे एहन वाक्य खुले बाजल नहि जाइत छल। मुदा हुलासी इनारक कोना पर हँसली। पनिडुब्बीक पानि कनी हिलल। एते स्त्री-जन्म, एते छिपाओल प्रेम, एते दबाओल देह, एते धमकी — चन्ना गाछी सभ सुनने छल। आब पहिल बेर बच्चा सभ सुनि रहल छल।

देविका अपना कक्षामे एक खाली मोबाइल उठबैत कहैत छली — 'ई हथियार नहि, दुआर सेहो भऽ सकैत अछि। मुदा जे दुआर पर गोहि बैसल हो, ओतय आँखि खोलि पैसब।' निशांत बच्चा सभकैँ भुगतान-नली चित्रमे बुझबैत छल — गामक बचत, शहरक अकाउण्ट, म्यूल, सिग्नल, हांगकांग, फेर उनटा कऽ विज्ञापन। बच्चा सभ देखैत-देखैत पूछलक — 'पैसा घूमि कऽ फेर हमरासँ किए माँगैत अछि?' निशांत उत्तर नहि दऽ सकल। किछु प्रश्नक उत्तर भविष्यक व्यवस्था बदललाक बादे भेटैत अछि।

आरुणि नामक अभिलेखक प्रतिलिपि बनबैत छल। गोप कुमार ओकरा डिजिटल प्रति बनबैत छल, मुदा एहि बेर ई प्रति कोनो गुप्त डर सँ नहि, सार्वजनिक भरोसा सँ बनि रहल छल। ईशान दत्त, छाह-विहीन इन्फॉर्मर, चन्ना गाछीक एक छाहमे बैसल छल। ओकरा पर दिनक इजोत पड़ैत छल, मुदा छाह एखनहुँ नहि बनैत छल। अनन्या पूछलक — 'अहाँक छाह कहिया घुरत?' ईशान कहलक — 'जखन कागच पर हमर मृत्यु काटि कऽ लोकक स्मृतिमे हमर जीवन लिखल जाएत।'

बूढ़बा भूत एहि उत्तर पर डारि हिलौलन्हि। शायद स्वीकृति। शायद हँसी। शायद ओहि पुरान थकानक एक कण जे शताब्दीक बाद छूटैत अछि।

साँझमे खेलक दोसर दौर शुरू भेल। एहि बेर बच्चा सभक संग किछु बड़का लोक सेहो उतरल। देविका रेखा पार करैत बजली — 'उज्ज्वल नहि बिकत।' मीरा पार करैत बजली — 'निजता नहि बिकत।' निशांत बजलक — 'भुगतान-नली खोलू।' सौम्या बजली — 'दस्तावेज लोकक अछि।' गोप कुमार बजल — 'डेटा जखन नाम बनैत अछि, तखन डर घटैत अछि।' आरुणि रेखा पार कऽ चुप्पी साधलक। ओकर साँस रुकि गेल, मुदा शब्द नहि निकलल। तखन अनन्या कहलक — 'बाबू, अहाँ केवल गढ़ नारिकेल बजू।' आरुणि बजल — 'गढ़ नारिकेल।' आ ओकर साँस बचि गेल।

ओहि क्षण कथा पलटि गेल। पहिल अध्यायमे भूत सभ खेलैत छल आ जीवित लोक डरैत देखैत छल। आब जीवित लोक खेलैत छल आ भूत सभ आश्वस्त देखैत छल। ई उलटफेर उपन्यासक नब जन्म छल।

दूर शहरमे बटुकनाथ हरिहरन फेर अदालत गेल। ओकरा एक नब याचिका चाही छल, कोनो विवाद, कोनो रोक, कोनो आदेश। मुदा रजिस्ट्रारक कोठरीमे ओकरा कहल गेल — 'गढ़ नारिकेल पक्षसँ किछु नहि।' ओ बाहर निकलि बहुत देर सीढ़ी पर बैसल रहल। सीढ़ी ओहि दिन सूखल छल, मुदा ओकरा पएर भीजैत बुझाइत छल। ओकर जीत ओकरा संग चलैत नहि छल; ओ अलमारीमे बन्द, भीजल, पातक खरखराहट करैत रहल।

चन्द्रपाल बत्रा रातिमे अपन नेटवर्कक रिपोर्ट पढ़ैत छल। 'रूपांतरण दर घटल।' 'म्यूल अकाउण्ट विफल।' 'कॉल कट।' 'पीड़ित पुलिसक बदला पाठशालासँ सलाह लऽ रहल।' ई सभ वाक्य ओकरा कानूनी धारा सँ अधिक खतरनाक लगल। ओ सोचलक — गाममे ककरा उठाओल जाए? फेर ओकरा बटुकनाथक संदेश मोन पड़ल — 'कोनो नेता नहि।' नेता नहि, तँ गिरफ्तारी कोन? षड्यंत्र नहि, तँ मुकदमा कोन? पाठशाला पर छापा? बच्चाक पाठमे

अपराध? ओ पहिल बेर अपन एल.एल.बी.क डिग्रीक फ्रेम दिस देखलक आ बुझलक जे कानूनक भाषा सभ किछु नहि पकड़ि सकैत।

राघव 'सिग्नल' गायब होएबाक सोचलक। मुदा सिग्नल पर गायब भेल लोक सेहो कोनो न कोनो सर्वरक स्मृतिमे रहि जाइत अछि। ओकर गायब होइत संदेश सभ गोप कुमारक डेटामे प्रत्यक्ष नहि, पैटर्न रूपमे बचल छल। राघव पहिल बेर कागच पर लिखलक — 'नाम मेटाउ।' तखन ओकर कलमक नोक टूटि गेल।

लाउ किन-हंग अपन दफ्तरक काँचसँ समुद्र देखैत छल। ओकरा समुद्र सदिखन बाजार लगैत छल — खुलल, गहिर, लाभदायक। एहि राति समुद्रमे ओकरा गंगा देखाइ देलक। गंगामे पुल। पुलक पाया। पायाक भीतर मजदूर। मजदूरक भीतर नाम। नामक भीतर बच्चाक आवाज। ओ पर्दा खिंचि देलक। मुदा आवाज काँचक भीतर पैसि चुकल छल।

हार्वर्डमे ईरा एक छोट सभा केलक। ब्रूमक मंच नहि, एक खाली लॉन। ओतय ओ केवल एक रिकॉर्डिंग चलौलक — गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ नाम पढ़ि रहल छल। विदेशी विद्यार्थी पहिने अर्थ नहि बुझल। फेर ईरा प्रत्येक नामक बाद ओकर कथा संक्षेपमे कहलक। कोनो ताली नहि भेल। कोनो प्रश्न नहि। बहुत देर बाद एक विद्यार्थी पूछलक — 'हम की करी? ईरा उत्तर देलक — 'पहिने सुनू।'' जे सुनब सीखि गेल, से कागच पर हस्ताक्षर करबासँ पहिने काँपब सीखि जाएत।

सत्यव्रत मेहता राति घर घुरि रहल छलाह। गाड़ी लालबत्ती पर रुकल। फुटपाथ पर एक बच्चा मोबाइलमे खेलैत छल। मेहता उतरि ओकरा देखलनि। बच्चा गैम्ब्लिंग नहि, गढ़ नारिकेलक नाम-पाठक भिडियो देखैत छल। मेहता बहुत देर धरि ओहि छोट स्क्रीन दिस तकैत रहलाह। राज्यक सर्वोच्च दफ्तरक फाइल सँ जे सत्य बाहर नहि आबि सकल, ओ बच्चाक सस्ता फोनमे चलि रहल छल। ओ चुपचाप गाड़ीमे घुरि गेलाह। हुनकर आँखिमे थकान छल, मुदा ओहि थकानमे हार नहि छल।

राति गहरायल। चन्ना गाछीमे अंतिम कबड्डी शुरू भेल। एहि बेर नियम अलग छल। जे रेखा पार करत, ओकरा नाम नहि, भविष्य बजाबय पड़त। पहिल गेली अनन्या। ओ बजली — 'नारिकेल पात पाठशाला, नारिकेल पात पाठशाला।' दोसर गेल सोमित — 'स्क्रीनक गोहि चिन्हब।' तेसर गेली देविका — 'कोनो डिजिटल अरेस्ट नहि।' चारिम गेली मीरा — 'कोनो प्रेम ब्लैकमेल नहि।' पाँचम गेल ईशान — आवाज आयल, देह नहि — 'कोनो छाह गुम नहि।'

तखन बूढ़बा भूत उठलाह। बारह सय बरखक थकान डारि सँ उतरि आयल। ओ रेखा पार केलन्हि। सभ साँस रोकि लेलक। ओ बजलाह — 'उपन्यास फेर शुरू।' बच्चा सभ पहिने हँसल, फेर चुप भऽ गेल। कारण ई खेलक वाक्य नहि छल; ई घोषणा नहि छल; ई ओहि चक्रक चिन्ह छल जे सत्य जखन एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीक हाथमे जाइत अछि तखन बनैत अछि।

हुलासी इनारसँ बाहर आयली। पहिल बेर हुनकर हाथ देखाइ देलक — धुँधला, मुदा हाथ। ओ माटि पर एक अक्षर लिखली। अक्षर पूरा नहि भेल, मुदा अनन्या बुझि गेल — ई 'जा' छल, जान, जन्म, जागरण, जल — सभक पहिल ध्वनि। हुलासी मुस्कुरेली। हुनकर पुनर्जन्म कोनो गर्भमे नहि, बच्चा सभक भाषामे शुरू भेल छल।

पनिडुब्बी पोखरिसँ अपन झोँटा नहि निकाललक। ओ आइ ककरो पएर पकड़य नहि आयल। ओ पानि ऊपर एक गोल बनौलक, जकर बीच आकाश उतरि आयल। आकाशमे तारा छल, मुदा प्रत्येक तारा एक नाम जेकाँ चमकैत छल। राकश इजोर करैत छल, मुदा ओ इजोर डेराबयबला नहि, पढ़एबला छल। लोथ दर्शक नहि रहल; ओ धीरे-धीरे खेलक कात सरकल। ओकरा शायद पहिल बेर उठबाक इच्छा भेल।

दूर बलानक धारक दिस सँ बयार आयल। कमलाक रेतक गन्ध, गंगाक पानिक नमी, शहरक धूलि, अस्पतालक दवा, अदालतक स्याही, हार्वर्डक लॉन, हांगकांगक काँच, मोबाइलक गरम स्क्रीन — सभ गन्ध एक संग आयल आ नारिकेलक फूलक सुगन्धमे मिलि गेल। गढ़ नारिकेलक हवा एना बनैत अछि — जे किछु संसारमे टूटैत अछि, ओ एहि गाममे गन्ध बनि पहुँचैत अछि।

नारिकेल गाछ, जे पहिल अध्यायसँ देखैत आयल छल, रातिक बीच एकटा फल छोड़लक। फल धड़ामसँ नहि, बहुत हलुक स्वरमे खसल — जेना कागच मोड़ल जाए। बच्चा सभ ओकरा चारू दिस घेरि लेलक। फल फूटल। भीतर पानि नहि, खालीपन छल। अनन्या हाथ भीतर देलक। खालीपन सँ एक छोट पात निकलल। पात पर लिखल छल — 'जतय नाम पढ़ल जाए, ओतय कथा समाप्त नहि होइत।'

आरुणि पात पढ़ि बहुत देर चुप रहल। गोप कुमार पूछलक — 'तँ?' आरुणि कहलक — 'तँ हम समाप्ति नहि लिखब।' सौम्या कहली — 'फेर?' आरुणि उत्तर देलक — 'जे बच्चा सभ खेलत, ओ सभ लिखत।'

ओहि राति गढ़ नारिकेलमे केओ सुतल नहि। मुदा ई अनिद्रा डरक नहि छल। ई ओहि लोकक जागरण छल जे बहुत दिन धरि तारीख, निर्णय, आदेश, अपील, स्थगनक निन्नमे

राखल गेल छल। आब ओकरा सभकेँ जागि कऽ काज करबाक छल। नामक अभिलेखमे नब पन्ना जोड़बाक छल। पाठशालाक अगिला कक्षा बनएबाक छल। डिजिटल ठगीक अगिला नक्शा बुझबाक छल। निजताक शपथ नब गाम धरि लऽ जाएबाक छल।

भोर भेल। बच्चा सभ घर घुरल। भूत सभ डारि पर चढ़ि गेलाह। पनिडुब्बी पानिमे ओझरा गेली। राकशक इजोर दिनक इजोतमे विलीन भेल। लोथ झाड़ी लग फेर बैसि गेल, मुदा आब ओकर आँखि बन्द नहि छल। बूढ़बा भूत डारि पर बैसि कऽ अंतिम बेर कहलाह — 'कबड्डी।' अनन्या दूर सँ उत्तर देली — 'नाम।'

गामक पहिल स्त्री पानि भरबा लेल निकलली। ओ चन्ना गाछी लग रुकि गेली। जमीन पर खेलक रेखा छल, पातक अभिलेख छल, फलका खाली खोल छल। ओ बुझली नहि जे राति की भेल। मुदा ओहि खाली फलकेँ उठा कऽ घर लऽ गेली आ ओहिमे तुलसीक बीज राखि देली। फलक भीतर सँ एखनो कच्चा पानिक हलुक गन्ध अबैत छल। एहि तरहें गढ़ नारिकेलमे सत्यक अगिला रूप हरियर होएबाक तैयारीमे लागि गेल।

शहरमे बटुकनाथक अलमारीक भीतर जीतक आदेश अन्ततः सूखि गेल। मुदा सूखलाक बाद ओ कागच पाउडर जेकाँ झड़य लागल। बटुकनाथ डेराइत ओकरा प्लास्टिक फाइलमे बन्द केलक। मुदा प्रत्येक बेर फाइल खोलला पर एकटा महीन धूलि उड़ैत — स्याहीक नहि, रेतक। कमला-बलानक रेत, जे सभागाछी उपटि सकैत अछि, आ कागचक आदेश सेहो।

चन्द्रपाल बत्राक ऐप फेर चलल। किछु लोक फेर फँसल। संसार एक रातिमे मुक्त नहि होइत। लाउ किन-हंग फेर नब नामसँ कम्पनी खोललक। एडवर्ड ब्रूम फेर नब मंच खोजलक। बटुकनाथ फेर एक नब केसमे मुस्की देलक। धूर्त सभ समाप्त नहि भेल। एहि उपन्यासमे दुष्टक अन्त नहि भेल, दुष्टकेँ चिन्हब शुरू भेल। ई अधिक कठिन आ अधिक दीर्घ विजय अछि।

गढ़ नारिकेलक लोक सभ सेहो ई बुझैत छल। तैँ ओ सभ उत्सवमे बहि नहि गेल। प्रत्येक जीतक बाद काज। प्रत्येक नामक बाद खोज। प्रत्येक शपथक बाद अगिला गाम। प्रत्येक पाठक बाद अगिला बच्चा। जे दिन ओ सभ सोचि लेत जे अपराध समाप्त, ओ दिन गोहि फेर पानिसँ बाहर आबि जायत।

अन्तिम साँझ, आरुणि अपन कापी बन्द करैत छल। अनन्या पूछलक — 'बाबू, ई उपन्यास आब समाप्त?' आरुणि ओकरा देखलक। ओकर चेहरा पर ओहि पहिल रातिक छवि छल जखन ओ मुख्यमंत्रीक फोटो देखि मृत्युक प्रश्न पूछने छली। बच्चाक प्रश्न समयक सभसँ पैघ अदालत होइत अछि। आरुणि कहलक — 'समाप्ति किताबक होइत अछि, गामक नहि।'

अनन्या कहलक — 'तँ अगिला पन्ना?'

आरुणि कापी ओकरा देलक। 'अहाँ लिखू।'

अनन्या पहिल पंक्ति लिखली — 'चन्ना गाछीमे आइ फेर कबड्डी भेल।' फेर ओ रुकली, आ दोसर पंक्ति जोड़ली — 'एहि बेर जे पकड़ा गेल, से झूठ छल।'

ओहि पंक्ति पर नारिकेल गाछक पात हिलल। बयार चलल। डारि पर बैसल बूढ़बा भूत मुस्कुरेलाह। पोखरिक पानिमे पनिडुब्बी अपन झोँटा समेटि लेली। गोहि सभ बहुत दूर गंगाक धारमे स्थिर भऽ गेल। आ गढ़ नारिकेलक ऊपर भोरक पहिल पाँखि उतरि आयल, जेना आकाश स्वयं पन्ना पलटि रहल हो।

गोहि सभ देह खाइत अछि; मुदा जे नाम बच्चाक साँसमे पैसि जाए, ओकरा कोनो नदी, कोनो अदालत, कोनो विदेशी खाता, कोनो डिजिटल स्क्रीन, कोनो जीतक आदेश, कोनो हारक कागच मेटा नहि सकैत। ओ नाम खेल बनि जाइत अछि। खेल कथा बनि जाइत अछि। कथा फेर गाम बनि जाइत अछि।

आ गाम — गढ़ नारिकेल — फेरसँ शुरू भऽ जाइत अछि।

लोकगीत: पन्ना फेर खुलल

लोकधुन: बाल-कबड्डी गीत

खुलल हे पन्ना, ओस काटि पन्ना खुलल हे,
खेल बनल कथा, कथा फेर गाम बनल हे।

कथा कहलक अन्त, गाम कहलक—फेर,
ओस काटि देलक लेखकक आखिरी घेर।
पहिने भूत खेलैत, जीवित रहैत डेरायल,
आब नेना दौड़ल, झूठ पारीमे पकड़ायल।
'चन्ना गाछीमे आइ फेर कबड्डी भेल',

अनन्याक पहिल पंक्तिसँ भोरक पाँखि खेल।
नाम बच्चाक साँसमे पैसल जखन एक बेर,
नदी, अदालत, स्क्रीन—मेटा नहि सकत फेर।
किताब बन्द होउ, गामक कथा नहि थाम,
खेल बनै कथा, कथा बनै फेर गाम।

पहिने भूत खेलैत छल, जीवित डेराइत,
अनन्याक पहिल पाँतिसँ भोरक पाँखि फुटल,
नाम साँस मे पैसल तँ मेटाएब छुटल।

❖

अध्याय २५

मोन टांगल

बन्द अलमारीमे आदेश नहि, धूलि बाजै छै— आ धूलिक आवाज नींद नहि होमए दै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: मोनक बाट घर

लोकधुन: बटोहिया गीत

बटोहिया हो, मोनक बाटे गाम चलू हो,
देह रहौ शहर, मोनक गठरी घर धरू हो।

देह शहरमे हो तइयो मोन गामक बाट,
पातक सरसर, पोखरिक गन्धि, दादीक बात।
टाँगल मोन उतारि लिअ, यात्रा लेल सजाउ,
जड़ि संग संवाद करब, अपन साँच बुझाउ।

घर घुरब केवल दूरी नहि, भीतरक मिलन,
मोनक बाटपर भेटत पुरखा, नेना, जीवन।
बटोहिया गीत गाबि चलू, अहंकार छोड़ि,
घरक माटि मनकेँ फेर न्याय दिशामे मोड़ि।

पातक सरसर कानमे, पोखरिक गन्ध नाकमे,
दादीक कथाक डोरी बान्हल हिय-ताखमे।
अहंकारक मोटरी उतारि हल्लुक भऽ चलू,
देहरी लगिते भीतर-बाहर एक्के भऽ मिलू।

❖

गाम फेरसँ शुरू भऽ चुकल छल; आ ओम्हर शहरमे जीतक आदेश जखन पूरा सूखि जाइत अछि, तखन ओकर आवाज कागचक नहि रहैत अछि। ओ धूलि जेकाँ बजैत अछि। बटुकनाथ हरिहरनक अलमारीमे ओहि राति वैह धूलि बाजि रहल छल। ओ अलमारी बन्द छल, कुंजी ओकर तकियाक नीचाँ छल, कमरा बाहरसँ सुरक्षित छल; मुदा भीतरसँ कागच एना खरखरा रहल छल जेना कोनो सुखायल पातक भीड़ बयार बिना हिलि रहल हो।

बटुकनाथ पहिने सोचलक — चूहा। फेर मोन पड़ल जे ओकर घरमे चूहा बरखों पहिने खतम करा देल गेल छल। घरक प्रत्येक सुराख पर स्टीलक जाली, प्रत्येक कोनमे दवा, प्रत्येक नौकर पर निगरानी। जे लोक कानूनक सुराखसँ लोककेँ बाहर करैत छल, ओकर घरमे चूहाक

सुराख बचल रहत — ई सम्भव नहि छल। तखन ओ उठल। तकियाक नीचाँसँ कुंजी निकाललक। कुंजी घुमबैत काल तालाक ठंढा लोहा आँगुरमे गड़ल। अलमारी खोललक।

भीतर जीतक आदेश राखल छल। ओहि आदेशपर न्यायालयक मोहर, रजिस्ट्रारक हस्ताक्षर, तारीख, केस नम्बर, सभटा सही छल। मुदा कागचक किनार पर महीन रेत जमल छल। रेत नम नहि, मुदा जिद्दी। बटुकनाथ अंगुरीसँ झाड़लक। रेत झरल नहि। उलटि ओ अक्षर बनि गेल — 'मोन टांगल।'

बटुकनाथ शब्द पढ़ि हँसल। ओकर हँसी ओहि लोकक हँसी छल जे डर कैँ पहिने मजाक बनबैत अछि, ताकि डर ओकरा ओहि क्षण धरि नहि चिन्हि पाबय। ओ कागच फेर देखलक। शब्द गायब। मोहर वैह। आदेश वैह। जीत वैह। मुदा ओकर भीतर किछु वैह नहि रहल।

ओ फोन उठेलक। रातिक तेसर पहर छल। चन्द्रपाल बत्राकैँ एहन बेर फोन करबाक ओकरा आदत छल; अपराधक लोक सभ दिनमे कानून आ रातिमे असली सलाह लैत अछि। चन्द्रपालक फोन बहुत बेर बाजल। अन्तमे ओकर आवाज आयल — 'सर, किछु तत्काल?'

बटुकनाथ बजल — 'गढ़ नारिकेलमे जे नाम-पाठ चलि रहल अछि, ओकरा रोकेबाक कोनो विधिक उपाय?'

चन्द्रपाल क्षणभरि चुप रहल। ओकरा लग प्रत्येक प्रश्नक उत्तर होइत छल — स्थगनादेश, निषेधाज्ञा, अवमानना, मानहानि, साइबर शिकायत, लोक-व्यवस्था, विदेशी वित्तपोषण, राजद्रोहक पुरान छाह, नैतिकताक नब नकाब। मुदा 'नाम-पाठ' पर ओकरा कोन कानून लगत? ओ कहलक — 'नाम पढ़ब अपराध नहि, सर।'

बटुकनाथ चिढ़ि गेल — 'तँ ओकरा अपराध बनाउ।'

चन्द्रपाल फेर चुप। अपराध बनाओल जा सकैत छल जखन ओ भीड़ हो, नारा हो, नेता हो, चन्दा हो, पोस्टर हो, ट्रक हो, मंच हो। मुदा बच्चा सभ पात पर नाम पढ़ैत अछि। एक स्त्री डिजिटल ठगी समझबैत अछि। दोसर निजताक शपथ पढ़बैत अछि। बूढ़बा लोक गवाही नहि, कथा कहैत अछि। एहि सभ पर अपराधक खाँचा तुरन्त नहि भेटैत।

ओ राति चन्द्रपाल अपन घरक अध्ययन-कक्षमे अकेल छल। देबाल पर ओकर मेरठक विधि-डिग्री फ्रेममे टांगल छल। ओ फ्रेम ओकरा सदिखन भरोसा दैत छल जे कानूनक भाषा जाननिहार लोक सभसँ बेसी सुरक्षित होइत अछि। मुदा एहि राति डिग्रीक काँच पर कियो भीतरसँ नह फेरल जेकाँ रेखा बनौलक। चन्द्रपाल उठि लग गेल। काँच पर धुन्धक अक्षर छल — 'पहिल म्यूल।'

ओ काँपल नहि। ओ एहन लोक नहि छल जे पहिल दृश्ये काँपि जाए। ओ हँसल। ओ पोंछलक। अक्षर मिटि गेल। मुदा ओकरा मोन पड़ि गेल — पहिल म्यूल अकाउण्ट। मेरठक ओहि छात्रक खाता, जकरा ओ पाँच हजार दऽ कऽ काजमे लगौने छल। लड़का सोचने छल अंशकालिक कमाइ अछि। बादमे पुलिस ओकरा पकड़लक। असली पैसा हांगकांग पहुँचि गेल। लड़का जेल गेल। ओकर पिता कोर्टक बरामदा पर तीन बरख धरि ठाढ़ रहल।

चन्द्रपाल बहुत बरख सँ ओ घटना बिसरने छल। अपराधी लोकक स्मृति बहुत चुनल-चुनायल होइत अछि। जे घटना लाभ दैत अछि, ओ अनुभव कहल जाइत अछि; जे घटना लाज दैत अछि, ओ भूल कहल जाइत अछि। मुदा एहि राति डिग्रीक काँच ओकर भूलकेँ अक्षर बना देलक।

राघव ‘सिग्नल’ सोमानी सेहो जागल छल। ओकर फोनमे कोनो संदेश नहि छल, मुदा सूचना-बत्ती अपने-आप टिमटिमा रहल छल। ओ ऐप खोललक। सभ बातचीत गायब। ई सामान्य छल — मेटि जाएबला संदेश ओकर सुरक्षा छल। मुदा खाली स्क्रीन पर एक-एक कऽ पात झरए लागल। डिजिटल पात। हर पात पर ओहि लोकक नाम जकर खाता सँ पैसा घुमायल गेल छल।

राघव स्क्रीन बन्द कयलक। फेर खोललक। पात नहि। केवल संदेश-सूची। ओ राहतक साँस लेलक। तखने एक ध्वनि-संदेश आयल, पठेनिहार — ‘स्वयं’। राघव सुनलक। ओकर अपन आवाज छल, मुदा ओ नहि बजने छल — ‘कागच नहि। आवाज नहि। केवल प्रतिशत।’ ई वाक्य ओ सैकड़ो बेर लाउ किन-हंग लेल दोहरौने छल। एहि बेर आवाजक पाछाँ ककरो रोदन छल।

राघव तुरन्त लाउ किन-हंग कैँ सिग्नल पर संदेश पठेलक — ‘समस्या स्मृति-जनित।’ स्थानीय नाम-आन्दोलन बजार पर प्रभाव दऽ रहल अछि।

बहुत देर धरि उत्तर नहि आयल। हांगकांगमे भोर होएबाक छल। लाउ किन-हंग साधारणतया तुरन्त उत्तर दैत छल, कारण ओकर कारोबारमे देरी घाटा थीक। मुदा एहि बेर उत्तर तखन आयल जखन राघव तीन बेर संदेश मेटा कऽ फेर लिखि चुकल। उत्तर मात्र तीन शब्द — ‘नाम कीनू।’

राघव स्क्रीन ताकैत रहल। नाम कीनब? नामक मूल्य कोना लगत? मृत मजदूरक नाम? उज्ज्वलक नाम? सरयूक नाम? हुलासीक नाम? जे नाम सरकारी कागचमे कखनो पूरा लिखल

नहि गेल, ओकर बिक्री-रसीद कोना बनत? ई पहिल बेर छल जखन राघव कैँ अपना धन्धाक भाषा अपूर्ण लगल।

लाउ किन-हंग अपन काँचक दफ्तरमे बैसल छल। ओकर पाछाँ समुद्र, सामने पाँच स्क्रीन। एक स्क्रीन पर भुगतान-नली; दोसर पर जुआ-दर रूपांतरण; तेसर पर दवा-खरीदक पुरान खाता; चारिम पर आधार-निर्माणक पुरान फाइल; पाँचम पर भारतक नक्शा। गढ़ नारिकेल एक बिन्दु छल। मुदा ओहि बिन्दु पर संकेतक अपने-आप अटकैत रहल। ओ हटबैत, फेर घुरि आबैत।

लाउक सहायक पूछलक — 'तकनीकी समस्या?'

लाउ कहलक — 'नहि।' भूगोलक समस्या।

ओ लोक भूगोलकैँ केवल बाजार-क्षेत्र मानैत छल। देश, राज्य, जिला, गाम — सभ सम्भावित उपभोक्ता, सम्भावित मजदूर, सम्भावित खाता, सम्भावित शिकार। मुदा गढ़ नारिकेल बिन्दु नहि रहल। ओ संकेतक कैँ पकड़ि रहल छल। जेना नक्शा पर कोनो अदृश्य नह गड़ल हो।

एहि बीच एडवर्ड ब्रूम न्यूयॉर्कक होटलमे छल। ओकर दोसर भाषण असफल नहि कहल गेल छल; पीआर-टीम साफ कहि देने छल — 'संकट प्रबन्धित।' मुदा राति ओकरा निन्न नहि आयल। ओ अपन भाषणक मसौदा पढ़ैत छल — गरिमा, साझेदारी, पारदर्शी भविष्य, नैतिक उद्यम। प्रत्येक अंग्रेजी शब्दक नीचाँ ओकरा देवनागरीमे एक नाम देखाइ पड़ैत — उज्ज्वल, सरयू, रामदेव, फुलकुमारी, नन्द। ओ भाषा पढ़ि नहि सकैत छल, मुदा अक्षरक दबाव पढ़ि सकैत छल।

ओ प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स कैँ संदेश लिखलक — 'की नैतिकता स्मृतिसँ पैघ भऽ सकैत अछि? लिखि कऽ मेटा कऽ देलक।' फेर लिखलक — 'हमरा सभक विरुद्ध स्थानीय भावनात्मक सामग्री पसरि रहल अछि।' ई भेजलक। अपराधी जखन नैतिक प्रश्न पूछबाक कगार पर पहुँचैत अछि, ओ बेसीकाल जनसंपर्क प्रश्न पठा दैत अछि।

दिल्लीमे सत्यव्रत मेहता देर राति जागि रहल छलाह। हुनकर मेज पर सरकारी फाइल नहि, गढ़ नारिकेलक नाम-अभिलेखक छापल प्रति छल। ओ पढ़ैत-पढ़ैत रुकि जाइत छलाह। प्रत्येक नामक संग एक खाली जगह। शायद कथा लेल। शायद जन्मतिथि लेल। शायद मरबाक दिन लेल। शायद ओहि झूठक लेल जे ओकर नाम मिटेबाक लेल गढ़ल गेल। हुनका बुझाइत छल — कानून नामकैँ मान्यता दैत अछि; मुदा लोकस्मृति नामकैँ श्वास दैत अछि।

ओ नोटबुक खोललनि आ लिखलनि — 'राज्य, नागरिकक स्मृति पर मालिक नहि। न्यायालय, मृतकक नाम पर पहरा नहि। प्रक्रिया, पीड़ितक श्वास रोकबाक औजार नहि।' लिखैत-लिखैत हुनकर हाथ थमकल। हुनका अपन पदक स्मरण भेल। ओ सरकारी अधिकारी छलाह। मुदा एहि राति हुनका लग सरकारी पद आ निजी आत्मा दू अलग-अलग कुर्सी पर बैसल छल। बीचमे एक खाली कुर्सी छल — सत्यक।

गढ़ नारिकेलमे ओहि राति चन्ना गाछी शान्त छल। खेल बन्द नहि, स्थगित सेहो नहि। ई ओ शान्ति छल जाहिमे खेल अगिला साँस लेल प्रतीक्षा करैत अछि। बूढ़बा भूत डारि पर झूलैत छलाह। हुनका नीचाँ नामक अभिलेखक पात सभ पसरल छल। बच्चा सभ घरमे सुतल। मुदा नाम जागि रहल छल। नामक जागरण मनुष्यक निन्नसँ स्वतंत्र होइत अछि।

अनन्या सपनामे देखली जे बटुकनाथ हरिहरन चन्ना गाछीमे पहुँचल अछि। ओकर हाथमे जीतक आदेश, माथ पर वकीली अहंकार, आँखिमे थकान। ओ चिल्ला रहल अछि — 'प्रतिवादी कतऽ छथि?' बूढ़बा भूत उत्तर दैत छथि — 'काज पर।' बटुकनाथ पूछैत अछि — 'कोन काज?' तखन सभ बच्चा एक संग बजैत अछि — 'भविष्य।'

सपना केवल अनन्याक नहि छल। ओही राति देविका सपनामे उज्ज्वल कैं देखली। उज्ज्वल मोबाइल पकड़ने नहि, काठक फटकी लेने छल। ओ स्क्रीनक गोहि पर रेखा खिंचि रहल छल। देविका पूछली — 'तूँ ठीक छी?' उज्ज्वल कहलक — 'जखन कोनो दोसर फोन काटि देत, तखन हम कनी ठीक होइ छी।' देविका जागि गेली। भोरे ओ नब पाठ बनौली — 'फोन काटब सेहो साहस अछि।'

मीरा सपनामे एक दरबार देखली जतय लोकक निजी जीवनक छवि सभ बाँसक टोकरीमे भरल बिकि रहल छल। कीननिहारक चेहरा नहि, केवल हाथ। ओ हाथ सभ नोट, कानूनी सूचना, पुलिस शिकायत, नौकरीक धमकी, परिवारक लाज — सभ रूप धरैत छल। मीरा दरबारक बीच ठाढ़ भऽ कहलनि — 'प्रेमक कागच नहि बनत।' तखन टोकरी सभमे आगि लागि गेल। जागलाक बाद ओकरा अपन डर आधा लगल। डर पूरा समाप्त नहि होइत; आधा होइत-होइत मनुष्यक साथी बनि जाइत अछि।

निशांत विदेशमे छल। ओकरा निन्नमे भुगतान-नली नदी बनि गेल। अकाउण्टसँ अकाउण्ट, बटुआसँ बटुआ, सर्वरसँ सर्वर, फेर गढ़ नारिकेलक पोखरि। ओ देखलक जे प्रत्येक लेन-देनक पाछाँ एक हाथ अछि। किछु हाथ मजदूरक, किछु युवकक, किछु स्त्रीक, किछु

वृद्धक। ओ भोरमे उठि अपन कम्पनीक आँकड़ा-पट खोललक आ पहिल बेर ‘ठगी-हानि’क संख्या कैँ ‘लोकक नाम’मे बदलि कऽ देखए लगल।

सौम्या रातिमे दस्तावेज अनुवाद करैत छली। अंग्रेजी लेखा-परीक्षण टिप्पणी कैँ मैथिलीमे, कानूनी आदेश कैँ लोकभाषामे, बैंकक विवरण कैँ कथा-रेखामे। हुनका बुझाइत छल जे जे कागच लोक पढ़ि नहि सकैत, ओ कागच आधा झूठ अछि। भाषा न्यायक पहिल दुआर छी। ओ लिखैत छली — ‘म्यूल अकाउण्ट’क बगलमे — ‘दोसराक नाम पर चलायल खाता’। फेर रुकली। सोचली — ‘नहि, एते नहि। ई लिखू — अपन नामक देह भाड़ा पर देब।’

आरुणि अपन पुरान कापी खोलने छल। ओ कलम रोकि देने छल। ‘समाप्त’ लिखबाक इच्छा बहुत दिन सँ ओकर भीतर पलैत छल। मनुष्य थाकि जाइत अछि आ समाप्ति चाहैत अछि। मुदा गाम समाप्ति नहि चाहैत। गाम चाहैत अछि जे कथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी बोझ नहि, काज बनि जाए। ओ कापीमे लिखलक — ‘मोन टांगल।’ लिखिते ओकरा बुझा गेल जे ई अध्याय धूर्त सभक बाहरी यात्रा नहि, हुनकर भीतरक खिंचाव अछि।

बटुकनाथ राति दोसर बेर अलमारी खोललक। आदेश वैह। मुदा एहि बेर पन्ना पर एक छाह पड़ल। ओ पाछाँ घुरलक। कोनो नहि। छाह पन्ना पर थीक, कोठरीमे नहि। छाह कारी नहि, धूसर। जेना कोनो लोकक मोन देह छोड़ि कागच पर झुकि रहल हो। बटुकनाथ छाहक आकार देखलक — ओ स्वयं छल। मुदा वृद्ध, थाकल, बिना आवाज।

ओ पन्ना बन्द कऽ देलक। कुंजी घुमेलक। फेर कुंजी खिंचि लेलक। तखन भीतरसँ धीमे स्वर आयल — ‘बन्द कयलाक बादो जे बाजय, से आदेश नहि, अपराध होइत अछि।’ बटुकनाथ बिछौन पर घुरल, मुदा तकियाक नीचाँ कुंजी नहि राखि सकल। कुंजी हाथमे पकड़ने-पकड़ने भोर धरि बैसल रहल।

चन्द्रपाल एहि बीच अपन पुरान रजिस्टर खोललक। अपराधक डिजिटल युगमे ओकरा कागचक रजिस्टर राखबाक आदत छल। कागच ओ विश्वास करैत छल कारण कागच कैँ ओ आगि लगा सकैत छल। रजिस्टरक पहिल पन्ना पर किछु नाम छल — म्यूल, एजेंट, कमीशन, तारीख। ओ पन्ना फाड़य चाहलक। फाड़ल नहि गेल। कागच कपड़ाक जेकाँ तनल। ओ ब्लेड आनलक। ब्लेड चलौलक। काटल ठामसँ लाल धूलि निकलल। ओ धूलि नहि, जेना सूखल स्याहीक रक्त।

राघव ‘सिग्नल’ अपन पासपोर्ट खोजलक। तिजोरीमे नहि। दराजमे नहि। बैगमे नहि। अन्तमे ओ पासपोर्ट ओकर पूजा-घरसँ भेटल। ओतय ओ कखनो किछु नहि राखैत छल।

पासपोर्टक भीतर एक पात दबल छल। पात पर किछु नहि लिखल। मुदा ओकर गन्ध चन्ना गाछीक छल। राघव पहिल बेर भारत छोड़बाक योजना बनबैत-बनबैत भारतक एक गाममे अटकि गेल।

लाउ किन-हंगक दफ्तरमे विश्लेषक सभ बैसकी कएलक। प्रतिवेदनमे लिखल गेल — 'गढ़ नारिकेल क्षेत्रमे व्यवहारगत प्रतिरोध। निवेश-योग्य हस्तक्षेप: मनोरंजन, ऋण, प्रलोभन, स्थानीय नेता, शिक्षा सामग्री।' लाउ पढ़ैत रहल। अन्तिम पंक्ति खाली छल। ओ पूछलक — 'ई पंक्ति खाली किएक? विश्लेषक कहलक — 'सर, आँकड़ा-मॉडल भविष्यवाणी नहि कऽ पाबि रहल अछि।'' खाली पंक्ति पर लाउक आँखि अटकल। खाली जगह कखनो-कखनो नामक प्रतीक्षा होइत अछि।

एडवर्ड ब्रूमक पीआर कार्यालयमे निर्णय भेल जे गढ़ नारिकेलक कथा पर एक वृत्तचित्र बनाओल जाए — 'ग्राम्य भारतक धीरज'। अपराधी पूँजीक पुरान चाल — जे प्रतिरोध करे, ओकर छवि कीनू। मुदा ईरा कैँ खबर भेटल। ओ हँसली। ओ लिखली — 'अहाँ सभ कैमरा लिअ, मुदा लोक अहाँकैँ नाम पढ़ाओत।' ब्रूमक टीम एहि वाक्यक अर्थ नहि बुझल। कैमरा सत्य नहि पकड़ैत; कखनो-कखनो सत्य कैमरा कैँ पकड़ि लैत अछि।

भोर होएबाक पूर्व चन्ना गाछीमे एक हलुक ध्वनि उठल। कबड्डी नहि। नाम नहि। केवल साँस। बूढ़बा भूत डारि सँ कहलाह — 'आब ओ सभ आबत।' हुलासी पूछली — 'किएक?' बूढ़बा उत्तर देलथि — 'मोन टांगल अछि।' पनिडुब्बी पोखरिक भीतर सँ लहर पठेलक — 'देह बिना?' बूढ़बा कहलाह — 'पहिने मोन। देह बादमे।'

गढ़ नारिकेलक पुरान लोक मानैत छथि जे मनुष्य जकरा बहुत दिन धरि डरबैत अछि, अन्तमे ओकरा देखने बिना रहि नहि सकैत। धूर्त सभकैँ अपन शिकार चाही। हुनका सभकैँ हारल लोकक आँखि चाही, ताकि जीत पूर्ण हो। मुदा जखन हारल लोक आँखि सामने नहि, काजमे व्यस्त भेटैत अछि, तखन जीत आधा रहि जाइत अछि। अधूरा जीत मोन कैँ टाँगि दैत अछि।

एहि तरहें बटुकनाथ हरिहरन, चन्द्रपाल बत्रा, राघव सिग्नल, लाउ किन-हंग, एडवर्ड ब्रूम — सभक मोन अलग-अलग दिशा सँ गढ़ नारिकेल दिस चलि पड़ल। देह एखनहुँ शहर, विदेश, काँचक दफ्तर, होटल, अदालत, तिजोरी, स्क्रीनमे छल। मुदा मोन पहिने निकलि गेल। आ जे मोन गढ़ नारिकेलक बाट पकड़ि लैत अछि, ओकरा चन्ना गाछी एक दिन पहुँचा दैत अछि।

सूर्य उगल। अनन्या जागि कऽ बाहर आयली। नारिकेल पात पर ओस छल। एक पात पर नब रेखा देखाइ देलक। ओ अक्षर नहि, बाट छल — बहुत पातर, बहुत दूर, गाछीक भीतर सँ बाहर, बाहर सँ भीतर। अनन्या ओकरा छुइलक। ओस अंगुरी पर लागि गेल। ओकरा एकदम हलुक कागचक गन्ध आयल — जीतक आदेशक गन्ध। ओ बुझि गेली — आइक पाठ बदलत।

ओ घर भीतर दौड़ि गेली आ आरुणिक कापी खोलि देली। पछिला पन्ना पर ओकर लिखल पंक्ति एखनहुँ भीजल छल — 'एहि बेर जे पकड़ा गेल, से झूठ छल।' ओकर नीचाँ अपने-आप एक नब पंक्ति उभरि रहल छल — 'झूठक मोन गाछीमे आबि चुकल।'

अनन्या बाबूक कान लग बजली — 'उठू। कथा फेर आगाँ बढ़ि रहल अछि।'

आरुणि आँखि खोललक। बाहर चन्ना गाछीक पात हिलि रहल छल, मुदा बयार नहि छल। ओहि हिलनाइमे ओकरा शहरक अलमारी, मेरठक डिग्री, सिग्नलक संदेश, हांगकांगक काँच, हार्वर्डक मंच — सभक खड़खड़ाहट सुनाइ देलक। ओ उठि बैसल। कापी खोललक। पहिल पंक्ति पहिने लिखल जा चुकल छल।

गामक बाहरक बाट पर एखन कोनो गाड़ी नहि छल। स्टेशन पर कोनो यात्री नहि। अदालतक आदेश एखन अलमारीमे। पासपोर्ट एखन तिजोरीमे। मोबाइल एखन चार्जिंग पर। मुदा गढ़ नारिकेलमे ओ सभक मोन आबि चुकल छल। मोन देहसँ तेज चलैत अछि, अपराधसँ बेसी जिद्दी होइत अछि, आ जखन मोन टांगल रहि जाए, तखन कथा ओहि टांगल मोन कैँ उतारय नहि, देखबय लगैत अछि।

चन्ना गाछीक अदालत स्थगित नहि भेल छल। ओ केवल अगिला पक्षकारक प्रतीक्षा करैत छल।

लोकगीत: टाँगल मोनक बाट

लोकधुन: बटोहिया गीत

टाँगल हे मोन, खुट्टी पर टाँगल हे,
एक दिन देहो गामक माटि पर उतरत हे।

देह शहरमे सूतल, मोन गामक बाट,
अलमारीमे धूलि बजै, हिलै जीतक पात।
मेरठक डिग्री, काँचक घर, सिग्नलक अन्हार,
सभक खड़खड़ सुनै चन्ना गाछीक द्वार।
मोन देहसँ तेज चलै, अपराधसँ जिद्दी,

जकरा गाछी घीचि लेत, बचत नहि बुद्धि।
अनन्या कान लग कहै—उठू, कथा चलल,
पात बिना बयार हिलल, अगिला पक्षकार बोलल।
मोन जँ खुट्टीपर टाँगल, राति नहि कटत,
एक दिन देहो गामक माटिपर पएर धरत।

अलमारी मे धूलि बाजए, हिलए जीतक पात।
गाछी जकरा घीचि लेत, बचत ने बुद्धि।

❖

अध्याय २६

बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा

कुंजी रातिभरि हाथमे रहला सँ हथेलीमे पीतल नहि, प्रश्नक गन्ध बसि जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: जूता उतारि विनम्र हो

लोकधुन: रेल-बटगबनी

उतारू यौ जूता, दुआर पर उतारू यौ,
माथक बोझ, पदक ताप—सभ बाहर पसारू यौ।

दुआरपर जूता खोलू, संग अहंकार उतारू,
माटिक ठंढक पएरसँ माथक ताप उतारू।
नाम पढ़बासँ पहिने लोकक आँखि पढ़ू,
जीतक आदेश नहि, सुनबाक आसन गढ़ू।

रेल दूरसँ आनल देह, मन पहिने पहुँचत,
विनम्र पग धरिते बन्द सम्बन्ध खुलत।
जूता उतारि नाम पढ़ू आदरक उच्चार,
माटि सिखाबै—मनुख हो पदसँ पहिने सार।

रेलक चक्का दूर घुमल, मन आगाँ दौड़ल,
देहरी छूबिते पएरमे माटिक ठण्ढ बाजल।
पहिने लोकक आँखि पढ़ू, पाछाँ पोथी-पान,
विनम्र डेगक आगाँ खुजए बन्द केबाड़-दलान।

❖

मोन रातिये पहिने पहुँचि चुकल छल; आब देहक बारी छल। भोरक समय बटुकनाथ हरिहरन अपन अलमारीक सामने ठाढ़ छल। राति भरि कुंजी हाथमे रहलाक कारण ओकर हथेलीमे पीतलकी गन्ध बसि गेल छल। जीतक आदेश अलमारीमे बन्द छल, मुदा ओकर खड़खड़ाहट आब कानसँ हटि मोनमे चलि गेल छल। जे आवाज कानमे रहैत अछि, ओकरा किवाड़ रोकि सकैत अछि; जे आवाज मोनमे पैसि जाए, ओकरा रोकबाक लेल लोक यात्रा करैत अछि।

बटुकनाथ अपन सचिवकेँ फोन कयलक। सचिव आधा सुतल आवाजमे कहलक — ‘सर, आइ दुपहरि बार काउन्सिलक बैसकी अछि।’ बटुकनाथ कहलक — ‘रद्द।’ सचिव चौंकल — ‘मीडिया?’ बटुकनाथ कहलक — ‘रद्द।’ सचिव पूछलक — ‘कतऽ जाएब?’

बटुकनाथ उत्तर देबामे कनी देर केलक। जकरा गामक नाम बजबामे लाज लगैत अछि, से गाम पहिने ओकर जिह्वा पर काँटा बनि आबैत अछि। अन्तमे ओ बजल — 'गढ़ नारिकेल।'

सचिव चुप। ओकरा लग सभ गामक लेल एक्के शब्द छल — 'लोकल'। मुदा बटुकनाथक आवाजमे जे दरार छल, से लोकल नहि छल। ओ पूछलक — 'सर, हेलिकॉप्टर?' बटुकनाथ झट कहलक — 'नहि। रेल।' ओ स्वयं आश्चर्यचकित भेल। ओ बरखों सँ रेलमे चढ़ल नहि छल। कानूनक उँचका लोक सड़क, विमान, सुरक्षा-काफिलामे चलैत अछि; रेल ओकरा ओहि देशसँ मिला दैत अछि जाहिसँ ओ कानून बनबैत-बचबैत रहैत अछि।

ओ चमड़ाक झोलामे जीतक आदेश राखलक। संगमे दूटा पेन-ड्राइव, एक सीलबन्द लिफाफा, किछु नोट, आ एक पुरान चश्मा। चश्मा ओकर पिताक छल — एहन पिता जे कहैत छलाह, 'कानून पढ़ह, मुदा लोक पढ़ब नहि बिसरह।' बटुकनाथ एहि वाक्यकेँ बरखों सँ हास्यास्पद मानैत छल। लोक पढ़नाइ ओकर पेशा नहि, लोककेँ प्रक्रियामे उलझौनाइ ओकर कला छल। मुदा एहि भोर चश्मा अपने-आप झोलामे चलि गेल।

घर सँ निकलैत काल ओकर पत्नी पूछली — 'एते भोर? केस?' बटुकनाथ कहलक — 'पुरान फाइल।' पत्नी ओकर चेहरा देखलनि। जे स्त्री बरखों सँ एक वकीलक झूठ सुनैत अछि, ओ झूठक आकार, वजन, रंग सभ चिन्हि लैत अछि। ओ केवल एतबा कहलनि — 'फाइल नहि, ककरो नाम होएत।' बटुकनाथ उत्तर नहि देलक।

स्टेशन पहुँचल तखन शहर एखन पूरा जागल नहि छल। प्लेटफार्म पर चाहबला केतलीक भापमे अपन दिनक पहिल आस राखि रहल छल। बटुकनाथ प्रथम श्रेणी प्रतीक्षालय दिस गेल। ओकरा लग विशेष पास छल। मुदा प्रतीक्षालयक शीशाक दरबाजा पर ओकर प्रतिबिम्ब एक क्षण लेल रुकल आ भीतर नहि गेल। प्रतिबिम्ब बाहरे ठाढ़ रहल। बटुकनाथ हाथ बढ़ा कऽ दरबाजा खोललक। प्रतिबिम्ब देर सँ भीतर आयल।

ओ सीट पर बैसल। सामने देबाल पर विज्ञापन छल — निवेश, बीमा, नब शहर, सुरक्षित भविष्य। ओहि विज्ञापनक कोनामे ककरो हाथसँ लिखल छल — 'नाम कीनू नहि।' बटुकनाथ चौंकल। ओ लग गेल। अक्षर गायब। ओ हँसल नहि। एहि बेर ओकर हँसी भीतरहीं रहि गेल।

ट्रेन चलल। शहरक इमारत सभ पाछाँ हटए लागल। बटुकनाथ खिड़की कात बैसल छल, झोला गोदमे। जीतक आदेशक कागच ओकर जाँघ पर दबाव दऽ रहल छल। ओ फोन खोलि सचिवक संदेश पढ़लक — 'सर, मीडिया पूछि रहल।' ओ लिखलक — 'अस्वस्थ।' फेर मेटा

कऽ लिखलक — 'व्यक्तिगत यात्रा।' फेर मेटा देलक। अन्तमे किछु नहि पठेलक। चुप्पी कखनो-कखनो झूठसँ नीक रक्षा करैत अछि।

पहिल स्टेशन आयल। बोर्ड पर नाम छल, मुदा ट्रेन धीमा भेलाक क्षण बटुकनाथकेँ बोर्ड पर 'तारीख' देखाइ देलक। ओ आँखि मिचलक। बोर्ड फेर सामान्य। दोसर स्टेशन पर 'स्थगन'। तेसर पर 'समझौता'। चारिम पर 'मौन'। ओ जानि गेल जे यात्रा बाहरक नहि रहल। गढ़ नारिकेलक बाट स्टेशनक नाम केँ सेहो गवाहीमे बदलि रहल अछि।

दुपहरि लग डिब्बामे एक बूढ़ चढ़लाह। साधारण धोती, काँध पर पुरान गमछा, हाथमे बाँसक लाठी। प्रथम श्रेणीक परिचारक हुनका रोकए गेल, मुदा बूढ़ अपन टिकट नहि, एक सुखायल नारिकेल पात देखौलनि। परिचारक एक क्षण लेल थिर भऽ गेल, जेना ककरो पुरान आदेश मोन पड़ि गेल हो। ओ चुपचाप रास्ता छोड़ि देलक। बूढ़ आ बटुकनाथ आमने-सामने बैसि गेलाह।

बटुकनाथ पहिने बूढ़केँ अनदेखा करए चाहलक। जे लोक गवाही कीनैत अछि, ओ अनचाहल साक्षी सँ नजर बचबैत अछि। बूढ़ खिड़की बाहर तकैत रहलाह। किछु देर बाद पूछलनि — 'अहाँ कानून पढ़ने छी?' बटुकनाथक भीतरक अभिमान झट जागल। ओ कहलक — 'कानून पढ़लहुँ, पढ़ेलहुँ, लिखलहुँ, चलौलहुँ।' बूढ़ धीरेसँ मुस्कुरौलनि — 'नाम पढ़ने छी?'

बटुकनाथ अपन चश्मा ठीक केलक — 'नाम? नाम पढ़ब की विशेष विद्या अछि?' बूढ़ कहलनि — 'कानून नामकेँ खाँचामे राखैत अछि। जन्म, पिता, पता, उम्र, हस्ताक्षर। मुदा नामक भीतर जे रोदन अछि, ओ पढ़ब विद्या अछि।' बटुकनाथ चिढ़ि गेल — 'भावुकता न्याय नहि।' बूढ़ कहलनि — 'तैँ न्याय एते दिन भावुकताक प्रतीक्षा करैत रहल।'

ट्रेन पुल पर चढ़ल। नीचाँ नदी छल। बटुकनाथ झोला कसि पकड़लक। पानिक धार धूपमे चमकि रहल छल। बूढ़ कहलनि — 'नीचाँ देखू। कतेक नाम बहि गेल।' बटुकनाथ नहि देखलक। ओ फाइलक लोक छल; नीचाँ बहैत वस्तु ओकरा असुविधाजनक लगैत। बूढ़ फेर कहलनि — 'गोहि सभ देह खाइत अछि। मुदा कागच देहसँ बेसी डरबैत अछि। किएक?'

बटुकनाथ कहलक — 'कागच प्रमाण होइत अछि।' बूढ़ हँसलाह — 'कागच प्रमाण होइत अछि, आ कागच अनुपस्थिति सेहो। जखन नाम मेटाएब, कागच कहत — कियो नहि मरल। जखन नाम लिखाएब, कागच कहत — मृत्यु उपस्थित।' बटुकनाथ चुप। ओकर झोला भीतर जीतक आदेश हलुक हिलल।

बूढ़बा भूत अपन नाम नहि बतौलनि। ओ कहताह तँ कथा तुरन्त खुलि जाएत, आ गढ़ नारिकेलक कथा कहियो तुरन्त नहि खुलैत। ओ केवल अपन लाठीक अग्रभाग सँ डिब्बाक फर्श पर वृत्त बनौलनि। वृत्तक भीतर एक पाँति, फेर दोसर, फेर तेसर। बटुकनाथ देखैत रहल। ई अदालतक नक्शा नहि, कबड्डीक मैदान छल। बूढ़ पूछलनि — 'एहि खेलमे जीतल लोक बाहर रहैत अछि कि भीतर?'

बटुकनाथ कहलक — 'कबड्डीमे जे साँस रोकि भीतर जाए, से घुरि आए तखन अंक।' बूढ़ कहलनि — 'ठीक। अहाँ सभ भीतर नहि गेलहुँ। दूरसँ फैसला देलहुँ। आब साँस रोकि भीतर जएबाक बेर आयल अछि।' बटुकनाथक कानमे 'साँस' शब्द लगल। ओकरा श्वासक भाव मोन नहि छल, मुदा देह मोन रखैत अछि। ओकर छाती कनी भारी भेल।

टिकट परीक्षक आयल। बटुकनाथ अपन टिकट देखौलक। बूढ़क दिस देखलक। टिकट परीक्षक भृकुटी चढ़ेलक — 'सर, अहाँ असगर छी?' बटुकनाथ चौंकल — 'ई बूढ़?' टिकट परीक्षक खाली सीट दिस तकलक। 'कोन बूढ़, सर?' बटुकनाथक मुँह सूखि गेल। ओ बूढ़कें देखलक। बूढ़ आस्ते सँ आँखि झपकलनि, जेना कहि रहल होथिन — कानूनक नजर जकरा नहि देखए, से अनुपस्थित नहि भऽ जाइत।

टिकट परीक्षक चलि गेल। बूढ़ कहलनि — 'अहाँक अदालतमे सेहो एहन भेल ने? जे छल, से नहि देखाएल। जे नहि छल, ओकरा दाखिल कयल गेल।' बटुकनाथ कठोर बनए चाहलक — 'अहाँ कियो छी?' बूढ़ कहलनि — 'हमरा अहाँ पहिने बहुत बेर देखलहुँ। गवाहीक कोनामे, तारीखक पाछाँ, मृतकक नामक ऊपर खिंचल रेखामे। मुदा अहाँ देखनाइ स्थगित करैत रहलहुँ।'

बाहर खेत शुरू भेल। सरसों नहि, धान नहि, केवल कटल धानक ठूठ। बीच-बीचमे पानि जमा। बटुकनाथ कें बाल्यकालक एक दृश्य मोन पड़ल — ओकर पिता ओकरा अदालतक बरामदामे लेने गेल छलाह। एक गरीब लोक कागच लऽ ठाढ़ छल। पिता कहलनि — 'एहि लोकक नाम मोन राखह। ई केस जितल कि हारल, से बादक बात; पहिने ई जे ठाढ़ अछि, से मोन राखह।' बटुकनाथ ओहि समय ऊबि गेल छल। आइ ओही लोकक चेहरा खिड़कीक काँच पर क्षण भरि देखाइ देलक।

ओ बूढ़कें पूछलक — 'गढ़ नारिकेलमे हमरा सँ की चाहैत अछि?' बूढ़ कहलनि — 'अहाँसँ नहि। अहाँक मोनसँ।' बटुकनाथ कठोर हँसी हँसल — 'मोनक कोनो विधिक स्थिति नहि।' बूढ़ तुरन्त कहलनि — 'झूठक सभसँ पैघ सम्पत्ति वैह अछि।'

ई वाक्य डिब्बामे देर धरि रहि गेल। पंखा घुरैत रहल, चाहबला आबि कऽ चलि गेल, बाहर नदी पाछाँ छुटि गेल, मुदा वाक्य सीट पर बैसल रहल। बटुकनाथ पहिल बेर अपन झोला खोललक। जीतक आदेश बाहर निकाललक। कागच पर अदालतक भाषा खड़ी छल — निष्कर्ष, अभिलेख, पर्याप्त आधारक अभाव, प्रक्रिया, हस्तक्षेपक आवश्यकता नहि। बूढ़ कागच लग नहि आनलनि। दूरसँ सूँघलनि।

'घूसक गन्ध,' बूढ़ कहलनि। बटुकनाथ झट कागच समेटलक — 'सावधान! ई न्यायालयक आदेश अछि।' बूढ़ शांत — 'हम अदालतक अपमान नहि करैत छी। हम गन्धक सम्मान करैत छी। कागच झूठ बाजि सकैत अछि, गन्ध नहि।'

बटुकनाथक नाक पहिल बेर कागच दिस गेल। ओकरा सचमुच किछु गन्ध आयल — पुरान फाइल, एसी कमरा, इत्र, चमड़ा, नोटक बासी गरमाहट, आ बहुत भीतर कचड़ायल पानि। ओ कागच तुरन्त मोड़ि देलक। बूढ़बा भूत खिड़की दिस तकलनि — 'जखन कागच पानि सँ भेटत, तखन अक्षर अपना-आप फूलत।'

साँझ पड़ए लागल। ट्रेन मिथिलाक भीतर पैसि रहल छल। भाषा बदलि रहल छल। प्लेटफार्म पर आवाज सभमे 'की', 'कत्तऽ', 'चलू', 'बैसू'क नरमी आबि रहल छल; घुरैत शब्द सभ कानमे ओस जेकाँ ठंढा लगैत छल। बटुकनाथ जे भाषा अदालतमे केवल अनुवादक मार्फत सुनैत छल, से आब सीधे कानमे अबैत छल। भाषा जखन मध्यस्थ बिना सुनाइ देत अछि, तखन सत्ता कनी सिकुड़ि जाइत अछि।

एक छोट स्टेशन पर ट्रेन देर धरि रुकल। एक बालक खिड़कीक कात आबि ठाढ़ भेल। हाथमे उसनल मखानक कागचक पुड़िया। ओ बटुकनाथकेँ देखलक आ पूछलक — 'अहाँ जीतल छी कि हारल?' बटुकनाथ चौंकल — 'किएक?' बालक कहलक — 'जे जीतल रहैत अछि से एते दुखी किएक लागैत?' बूढ़ धीरे-धीरे हँसलाह। बालक चलि गेल। बटुकनाथ बहुत देर धरि ओकर पाछाँ ताकैत रहल।

ओहि स्टेशनक बोर्ड पर नाम अचानक बदलि गेल — 'मोन टांगल हाल्ट।' बटुकनाथ आँखि मललक। बोर्ड फेर अपन असली नाम पर घुरि गेल। बूढ़ कहलनि — 'गढ़ नारिकेल पहुँचबा सँ पहिने सभकेँ एक बेर एहि हाल्ट पर उतरब पड़ैत अछि। कियो देहसँ उतरैत अछि, कियो मोनसँ।'

राति गाढ़ भेल। डिब्बाक बल्बक पीयरपनमे बूढ़क चेहरा कखनो बहुत बूढ़, कखनो बच्चा सन, कखनो केवल कारी रेखा सन देखाइ दैत। बटुकनाथ पूछलक — 'अहाँक नाम?' बूढ़ उत्तर

देलनि — 'जे नाम बाँचि गेल, ओ हम नहि। जे नाम मेटाएल, ओ हम नहि। जे नामक प्रतीक्षा करैत अछि, ओ हम छी।'

बटुकनाथ चिढ़ल, थाकल, डरायल, आ आकर्षित सेहो छल। धूर्त मनुष्यक भीतर जिज्ञासा मरैत नहि; ओ केवल उपयोगितामे बदलि जाइत अछि। ओ सोचि रहल छल — जँ एहि बूढ़केँ कीनल जा सकय? जँ चन्ना गाछीक अदालतक भाषा केँ विधिक प्रक्रियामे बाँधल जा सकय? जँ नामक अभिलेख पर बौद्धिक सम्पदा, धार्मिक भावना, भूमि-विवाद, सुरक्षा-जोखिमक मुकदमा बनि सकय? ओकर माथ फेर कानूनक जाल बुनए लागल।

बूढ़ ओकर माथ पढ़ि लेलनि। कहलनि — 'अहाँ फेर जाल सोचैत छी। जाल पानिमे ठीक रहैत अछि; चन्ना गाछीमे जाल उलझि जाइत अछि।' बटुकनाथ कठोर आवाजमे कहलक — 'कोनो लोक-सभा कानूनसँ ऊपर नहि।' बूढ़ कहलनि — 'नाम कानूनसँ ऊपर नहि; मुदा कानूनक पहिने अछि। बच्चा जन्मल तखन नाम देल गेल। कानून बादमे आबि पुछलक — प्रमाण?'

बाहर कतहुँ दूर बिजुली चमकल। ट्रेनक शीशामे बटुकनाथक चेहरा आ बूढ़क चेहरा एक दोसरा पर चढ़ि गेल। एक क्षण लेल बटुकनाथकेँ लागल जे बूढ़ ओकर भविष्य अछि — ओहि दिनक भविष्य, जखन जीतक आदेश सभ अलमारीमे रहि जाएत आ मोन चन्ना गाछीमे। ओ तुरन्त परदा गिरा देलक।

रातिक भोजन आयल। बटुकनाथक थालीमे चमकदार पैकिंग। बूढ़क सामने किछु नहि। बटुकनाथ शिष्टाचारवश पूछलक — 'भोजन?' बूढ़ कहलनि — 'हम नाम खाइत नहि। नाम जपैत छी।' बटुकनाथ थाली खोललक, मुदा पहिल ग्रास मुँह धरि नहि गेल। चाउरमे ओकरा छोट-छोट अक्षर देखाइ पड़ल। ओ थाली बन्द कऽ देलक।

अधरतियामे ट्रेन एक अज्ञात ठाम रुकल। आधिकारिक समय-सारिणीमे ओ ठहराव नहि छल। बाहर अन्हार। दूर कतहुँ गाछक आकृति। बूढ़ उठलनि — 'चलू, अहाँक पहिल सुनवाई एतऽ अछि।' बटुकनाथ कहलक — 'हम उतरब नहि।' बूढ़ कहलनि — 'देह नहि उतरू। मोन उतरि गेल।'

ओहि क्षण बटुकनाथ देखलक जे ओकर छाह सीट पर नहि। छाह दरबाजाक कात ठाढ़ अछि। छाह झोला लेने उतरल। देह भीतर बैसल। बटुकनाथ चिल्लाबए चाहलक, आवाज नहि निकलल। बूढ़ छाहक पाछाँ उतरि गेलाह। ट्रेन पुनः चलि पड़ल। बटुकनाथ अकेल, मुदा झोला

ओकर गोदमे एखनहुँ छल। ओ झोला खोललक — जीतक आदेश भीतर छल। तखन छाह कोन झोला लऽ गेल?

ओ बुझलक — बाहर कागच रहल, भीतरक अर्थ उतरि गेल। ई गढ़ नारिकेलक पहिल चाल छल। ओ देहकेँ सुरक्षित राखि मोनक दस्तावेज उठा लैत अछि।

भोर होएत-होएत ट्रेन अन्तिम पैघ जंक्शन पर पहुँचि गेल। ओतयसँ गढ़ नारिकेलक लेल छोट लाइन, फेर जीप, फेर पयडंडी। बटुकनाथ उतरि रहल छल तखन बूढ़ फेर प्लेटफार्म पर देखाइ देलाह, जेना कहियो उतरले नहि। ओ एक कुल्हड़मे चाह पी रहल छलाह। बटुकनाथ दौड़ि लग गेल — 'अहाँ राति उतरि गेल छलहुँ।' बूढ़ कहलनि — 'अहाँक छाह उतरल छल। अहाँ एखनहुँ आबि रहल छी।'

बटुकनाथ पहिल बेर बूढ़क पएर देखलक। पएर जमीन पर छल, मुदा पूरा नहि। एड़ी धरती सँ एक अँगुर ऊपर। ओकरा चन्ना गाछीक कथा मोन नहि, मुदा देह स्मृति राखैत अछि। ओ पाछाँ हटि गेल। बूढ़ कहलनि — 'डरब नहि। हम ओहि लोकमे सँ नहि जे अहाँकेँ खाइत अछि। हम ओहि लोकमे सँ छी जे अहाँकेँ पढ़बय चाहैत अछि।'

छोट लाइनक डिब्बा भरल छल। किसान, विद्यार्थी, स्त्री, बूढ़, माछक टोकरी, बोराक ऊपर बैसल बच्चा, खिड़की सँ झाँकैत बकरी। बटुकनाथक आरक्षित सीट नहि। ओकरा ठाढ़ रहए पड़ल। ई छोट अनुभव ओकर लेल असाधारण अपमान छल। मुदा एहि अपमानमे जनता नहि, वास्तविकता छल। कानूनक ऊँचाइ सँ उतरल लोक पहिल बेर देहक भीड़ बुझैत अछि।

एक वृद्धा ओकरा देखलनि आ बाजली — 'बाबू, झोला भारी अछि?' बटुकनाथ आदतन उत्तर देलक — 'नहि।' वृद्धा कहली — 'कागच भारी होइत अछि। मृतकक नाम रहए तखन आरो।' बटुकनाथ ओकरा घूरि देखलक। ओ सामान्य वृद्धा छलथि। मुदा गढ़ नारिकेलक बाट पर सामान्य लोकक वाक्य असामान्य दरबाजा खोलैत अछि।

दुपहरि धरि ओ गढ़ नारिकेलक कच्चा बाट पर छल। जीप आगाँ नहि गेल। ड्राइवर कहलक — 'एतऽ सँ पएरे चलू। गाछी धरि गाड़ी नहि जाइत।' बटुकनाथ झुँझला उठल — 'किएक?' ड्राइवर कान्ह उचकौलक — 'गाछी सभ वाहनसँ बात नहि करैत।' बटुकनाथ बुझल नहि, मुदा उतरि गेल।

बाटमे कमला-बलानक हवा छल। रेत, कादो, बंजर, दूर चरैत गोरू, पोखरिक ओसाड़, आ कतहुँ-कतहुँ नारिकेल गाछ जकर उपस्थिति मिथिलाक जमीन पर असम्भव जेकाँ लगैत। बटुकनाथ सोचलक — एहि गामकेँ विकास चाही। फेर ओकरा मोन पड़ल — विकास शब्द

ओकर मुँहमे आबि किएक गेल? जे लोक सभ ठाम समाधान बेचैत अछि, ओ प्रश्नक भूमि पर पहुँचिते विकास कहैत अछि।

पहिल पात ओकर जूतापर खसल। सुखायल नारिकेल पात। ओ हटय चाहलक। पात जूतासँ चिपकि गेल। ओ झुकि कऽ उठेलक। पात पर किछु नहि लिखल छल। मुदा ओकर हथेलीमे लगिते अक्षर उभरल — 'अहाँ कानून पढ़लहुँ। नाम पढ़ू।' ओ पात छोड़ि देलक। पात उड़ि नहि गेल; बाट पर सीधा पड़ि रहल। जेना अगिला पएरक दिशा बतबैत हो।

चन्ना गाछी दूर सँ देखाइ देलक। घनघोर। दिनक उजास ओहिमे पैसैत-पैसैत थाकि जाए। गाछी लग बच्चा सभक आवाज अबैत छल — कबड्डी नहि, नाम-पाठ। बटुकनाथक चाल धीमी भेल। ओकरा लागल जे ओ अदालतमे प्रवेश करैत अछि, मुदा ओतय कोनो जज नहि, कोनो बेंच नहि, कोनो रजिस्ट्री नहि। केवल पात, माटि, बच्चा, स्त्री, बूढ़, आ हवा।

बूढ़बा भूत ओकर कातमे आबि ठाढ़ भेलाह। एहि बेर हुनकर चेहरा साफ छल — कारी नहि, उज्जर नहि, धूसर; जेना धूलि आ चाननी मिलि बनल हो। ओ कहलनि — 'बटुकनाथ हरिहरन, अहाँ पहुँचलहुँ।' बटुकनाथ अन्तिम प्रयास कयलक — 'हम बातचीत लेल आयल छी।' बूढ़ कहलनि — 'नहि। अहाँ पढ़बाक लेल आयल छी।'

बटुकनाथ झोला कसि पकड़लक। जीतक आदेश भीतर छल। ओ सोचैत रहल जे सही समय पर आदेश निकालि सभकेँ डेरा देत। मुदा चन्ना गाछीमे डरक नियम उलटा छल। जे आदेश बाहरकेँ डेरबैत अछि, ओ भीतर अपन अक्षर सँ डेरैत अछि।

गाछीमे प्रवेशक ठीक पहिने बूढ़ कहलनि — 'एतऽ जूता नहि, अहंकार खोलल जाइत अछि।' बटुकनाथ हँसए चाहलक, मुदा आवाज नहि आयल। ओ जूता खोललक। माटि ठंढा छल। ठंढक पएरसँ चढ़ि माथ धरि गेल। ओकरा पहिल बेर बुझाइ पड़ल जे माटि सेहो गवाही लेत अछि।

ओ भीतर पैसल। नाम-पाठ रुकल नहि। बच्चा सभ ओकरा देखलक, मुदा डरलक नहि। देविका दूर सँ माथ हिलेली। मीरा ओकरा देखि कऽ अपन पन्ना मोड़ि देली। सौम्या लिखैत रहलि। आरुणि कापी पर झुकल। अनन्या मात्र ओकरा लग आबि पूछली — 'अहाँ जीतक कागच लेने एलहुँ?'

बटुकनाथ कहलक — 'हँ।' अनन्या दोसर प्रश्न पूछली — 'नाम पढ़ब?'

ओ उत्तर देबा सँ पहिने बूढ़बा भूत डारि पर चढ़ि गेलाह। चन्ना गाछीक हवा हलुक हिलल। पात सभमे एक संग खड़खड़ाहट भेल — जेना हजारो कागचक पन्ना एक साथ खुलि रहल हो।

बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा समाप्त नहि भेल। ओ केवल ओहि ठाम पहुँचल जतय यात्रा पहिल बेर शुरू होइत अछि।

लोकगीत: जूता खोलू, नाम पढ़ू

लोकधुन: रेल-बटगबनी

खोलू हे जूता, दुआरि पर खोलू हे,
अहंकार उतारि कऽ पहिने नाम पढ़ू हे।

पीतल कुंजी हथेलीमे प्रश्नक गन्ध धरै,
मोन पहिने गाम पहुँचै, देह रेल पकड़ै।
स्टेशन-स्टेशन तारीख, स्थगन, मौनक पाट,
बटुक चलल जीतक कागच लऽ चन्ना गाछीक बाट।
दुआरपर बूढ़ कहलक—जूता नहि, अहंकार,

माटि ठंढा पएरसँ चढ़ल माथक दरबार।
बच्चा नहि डेरायल, नाम-पाठ चलैत,
'जीतक कागच लेने छी? नाम पढ़ब?' पूछैत।
यात्रा ओतय समाप्त नहि, ओतहि शुरू भेल,
जतय कानूनक जीह पर पहिल मृतक नाम चढ़ल।

स्टेशन-स्टेशन तारीख, स्थगन आ मौन,
पीतल कुंजी हथेली मे, प्रश्नक गन्ध-पौन।
ठण्ढा माटि पएर छूबिते माथक ताप उतरल,
'नाम पढ़ब?'—नेनाक प्रश्न सोझाँ ठाढ़ भेल।

❖

अध्याय २७

चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन

काँचक दीवालसँ गाम नहि देखाइ छै, मुदा गामक नाम काँचो पार कऽ जाइ छै।

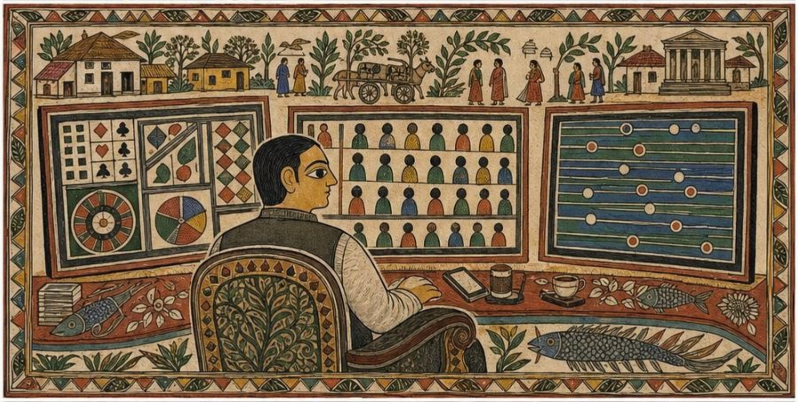

अध्यायारम्भ लोकगीत: काँचक दू पार संवाद

लोकधुन: झूमर

झूमि-झूमि गाबू, काँचक पार गाबू हे,
परदा नहि, पुल बनाउ—दुनू पार आबू हे।

काँचक परदा दू मुख, दुनू पार नजर,
शहर गामकेँ देखै, गाम देखै शहर।
परदा बन्द नहि करू, पारदर्शी राह बनाउ,
डिलीट शब्दक पाछाँक मानुखकेँ सुनाउ।

तकनीक दर्पण बनय, देबाल नहि होए,
दू दिशाक संवादसँ भरोसक बीज बोए।
काँचक दू पार संवाद उज्जर पुल बनत,
मोनक दूरी घटि कऽ साझा दुनिया जनत।

एम्हर गामक दीप जरए, ओम्हर बत्ती-लड़ी,
बीचक काँच पिघलि बनए संवादक कड़ी।
डिलीटक पाछाँ नुकाएल मुँह, ओकरो स्वर सुनू,
दू दिशाक झूमर मिलि एक्के ताल बुनू।

❖

चन्द्रपाल बत्रा गढ़ नारिकेल नहि जाएब। एहि निर्णय पर ओ ओहि भोर मोहर लगा देलक, जाहि भोर बटुकनाथ हरिहरन ट्रेनमे बूढ़बा भूतक संग नाम पढ़बाक अभ्यास करैत छल। एक धूर्त देहसँ चलि पड़ल छल, दोसर अपन ठामसँ नहि हटल — मुदा गाछी दुनूकेँ एक्के संग पढ़ि रहल छल। बत्रा अपन ऊँचका अपार्टमेण्टक काँचक देबाल लग ठाढ़ भऽ शहरक धुँआइल छत सभ देखैत छल। शहर ओकरा नीचाँ रहैत छल; गाम, अदालत, पुलिस, बैंक, युवक, बूढ़, स्त्री, ऐप, कर्ज, सभ नीचाँ। जे लोक सभकेँ स्क्रीनपर देखैत अछि, ओकरा जमीन पर जाएबाक जरूरत कहिया पड़ैत अछि?

ओकर कमरा कार्यालय नहि, जाल छल। तीनटा देबाल पर स्क्रीन। एक स्क्रीन पर ऑनलाइन गैम्ब्लिंग ऐपक डैशबोर्ड, दोसर पर म्यूल अकाउण्टक सूची, तेसर पर सिग्नल संदेशक हरा-नील धारी। बीचमे चमड़ाक कुर्सी, जकर पीठ पर ओ एना धँसल रहैत जेना

सिंहासन पर नहि, ककरो खोहमे बैसल हो। टेबल पर मेरठक एल.एल.बी. डिग्रीक फ्रेम राखल छल। फ्रेमक काँच एते पोंछल गेल छल जे अक्षर सँ बेसी प्रतिबिम्ब चमकैत छल।

बत्रा अपन नामक गौरव स्वयं बनौने छल। चन्द्रपाल बत्रा, अधिवक्ता; चन्द्रपाल बत्रा, विधिक सलाहकार; चन्द्रपाल बत्रा, अनुपालन विशेषज्ञ; चन्द्रपाल बत्रा, डिजिटल मनोरंजन उद्योगक नीति-मार्गदर्शक। प्रत्येक कार्ड पर अलग उपाधि, मुदा प्रत्येक कार्डक पाछाँ एक्के शब्द — प्रतिशत। प्रतिशत ओकर ईश्वर छल, ओकर व्याकरण, ओकर निन्न, ओकर भूख।

भोरे राघव 'सिग्नल' सोमानीक संदेश आयल — 'हरिहरन गढ़ नारिकेल दिस गेल।' बत्रा उत्तर देलक — 'जाए दियौ। भावुकता सँ पैसा नहि रुकैत।' राघव लिखलक — 'नामक अभिलेख बढ़ि रहल।' बत्रा हँसल। ओ कर्सर उठेलक, एक फोल्डर खोललक — 'लोकल नरेटिव'। ओहि फोल्डरमे एहन सभ चीज राखल छल जाहि सँ गामक कथा कैँ मजाक बनाओल जा सकैत: अंधविश्वास, भूत-कथा, ग्रामीण असंतोष, राजनीतिक भड़काव। बत्रा जानैत छल जे कोनो सत्यकैँ हराबय लेल पहिने ओकरा हास्यास्पद बनाउ।

ओ एक नोट लिखलक — 'गढ़ नारिकेल अभियान: लोकविश्वास आ विधिक सत्य।' तकर नीचाँ लिखलक — 'सुझाव: अदालतक आदेश सर्वोच्च; लोक-अभिलेख गैर-कानूनी; डिजिटल सुरक्षा खतरा; संभावित सांप्रदायिक तनाव।' ओ लिखैत गेल आ ओकरा बिनु-निन्नक रातिक बाद पहिल प्रसन्नता भेटल। शब्द सभ ओकरा लग तीर नहि, कीड़ा छल। ओ शब्द छोड़ैत आ ओ शब्द फाइलक भीतर घुसि सत्यक लकड़ीकैँ भीतरसँ खोखला करैत।

मुदा जेना ओ 'नामक अभिलेख' शब्द टाइप कयलक, स्क्रीन हलुक झिलमिलायल। अक्षर सभ स्थिर रहल, मुदा पृष्ठभूमिमे कारी रेखा उभरल। बत्रा चश्मा ठीक कयलक। रेखा धीरे-धीरे पात बनि गेल। नारिकेल पात। ओ झट माउस हिलेलक। स्क्रीन सामान्य। ओ गाली देलक — 'ग्राफिक ग्लिच।'

दोसर स्क्रीन पर रातिक कमाइ खुलल छल। कतेक खातासँ पइसा घुसल, कतेक खातासँ निकसल, कतय पेआउट रोकल गेल, कतय नब खेलाड़ी कैँ पहिल जीत देल गेल, कतय रिकवरी कॉल भेजल गेल। एक पंक्ति पर लाल निशान चमकल — उज्ज्वल झा। बत्रा कनी रुकल। एहि नामकैँ ओ पहिने देखने छल। आत्महत्या। मीडियामे दू दिन। परिवार कानल। पुलिस केस। फेर समझौता कोशिश। फेर चुप्पी।

ओ पंक्ति हटाबय लेल डिलीट दबेलक। नाम गायब। ठीक अगिला क्षण ओहि ठाम एक दोसर नाम उभरल — मुन्ना पासवान। ओ डिलीट। तेसर — रितेश कुमार। फेर — सोहैल

अंसारी। फेर — चंदा देवीक बेटा, नाम अज्ञात। बत्रा चिढ़ि कऽ पूरा तालिका बन्द कयलक। स्क्रीन अन्हार। अन्हारमे ओकर चेहरा छल। ओकर चेहराक माथ पर अक्षर लिखल — 'कतेक नाम हटाएब?'

बत्रा कुर्सी सँ उठि गेल। कमरामे एसी चलि रहल छल, मुदा ओकर गला पर पसीना छल। ओ जानैत छल जे अपराधक दुनियाँमे तकनीकी समस्या सभसँ सरल भय अछि; तकनीकीकर्मी बजाउ, सर्वर पुनः शुरू करू, कैश साफ करू। मुदा जखन स्क्रीन मनुक्खक प्रश्न पूछए लागए, तखन तकनीकीकर्मी ककरा बजाओल जाए?

ओ मुख्य सर्वर-कन्सोल खोललक। पासवर्ड, दू-स्तरीय अनुमति, एन्क्रिप्टेड कुंजी। ओकरे हाथ सभ चलैत रहल, माथ पुरान अभ्यस्त गति पर। ई दुनियाँ ओकर असली अदालत छल। एतय जज गणन-नीति, लिपिक लिपि, गवाह लेन-देन, फैसला बाकी-राशि। ओ मानैत छल जे जे चीज लॉगमे नहि, ओ घटना नहि। आइ लॉग ओकरा धोखा देबए लागल।

सिग्नल पर राघवक फेर संदेश — 'एल.के. पूछैत: जोखिम?' बत्रा लिखलक — 'भावनात्मक शोर। नियंत्रणमे।' उत्तर भेजबा सँ पहिने संदेश अपने बदलि गेल — 'नामक शोर। नियंत्रण बाहर।' बत्रा स्क्रीन पर हाथ पटकलक। ओ संदेश मेटेलक। मेटाइत-संदेशमे नब फेनका उभरल — 'उज्ज्वल झा उपस्थित।'

राघव सोमानीक आवाज नहि आयल, मुदा ओहि फेनकाक पाछाँ जकरा बत्रा अनुभव केलक, से राघव नहि छल। ओ आवाज ककरो युवा साँसक छल, जे मोबाइलक भीतर अटकल हो। बत्रा फोन फेकय चाहलक, मुदा फोन हाथसँ चिपकि गेल। एक क्षण लेल ओकर हथेली पर हजारो अंगूठाक निशान उभरल — ओ सभ जे बेटिङ्ग ऐप डाउनलोड करैत काल अंगूठा-छाप देलक, ऋण ऐप खोलैत काल सहमति देलक, डिजिटल अरेस्टक भयमे विडियो कॉल पर हाथ जोड़लक।

बत्रा हाथ धोबए गेल। साबुन, गरम पानि, स्वच्छक। साबुनक झाग ठंढा छल, मुदा नखक तरक कारी रेखा आर गहींर बुझाएल। ओ झुकि कऽ देखलक — नखक नीचाँ छोट-छोट खाता संख्या लिखल छल। म्यूल अकाउण्ट। गरीब विद्यार्थी, बेरोजगार युवक, चपरासी, छोट दुकानदार, प्रवासी मजदूर। प्रत्येक खाता ओकरा कमीशन दैत छल, आ प्रत्येक खाता असली अपराधी कैँ ओझल करैत छल।

ओ बाथरूमक शीशामे अपन चेहरा देखलक। मुँह पर दाढ़ीक हलुक छाह, आँखिमे राति, आ कानक पाछाँ पसीनारूपी नमक। शीशामे पाछाँ ओहि मेरठक पुरान परीक्षा-कक्ष देखाइ

देलक। युवा चन्द्रपाल उत्तर-पुस्तिका पर विधि-प्रश्नक उत्तर लिखि रहल छल — 'कानूनक उद्देश्य न्याय होइत अछि।' ओ वाक्य पढ़ि बूढ़ परीक्षक मुस्कुरेलाह। बत्रा झट शीशा पर पानि छींटलक। परीक्षा-कक्ष गायब।

मेरठक डिग्री ओकरा कहियो लाज नहि लगौलक। ओ गर्व करैत छल — महान विश्वविद्यालय नहि, मुदा काजक। कानूनक देह कतहुँसँ भेटए, चतुर मन ओकरा हथियार बना सकैत अछि। ओ अदालत लिपिक सँ दोस्ती करब सीखल, थानामे अर्जीक भाषा सीखल, जमीन विवादक दाम सीखल, दुर्घटना-दावामे रोदनक बाजार-भाव सीखल। बादमे एक लोक भेटल जे कहलक — 'कानून पढ़ल छी? डिजिटल खेलमे आबू। एतय प्रत्येक हार विधिक सहमतिमे लिखल रहैत अछि।'

ओ लोक राघव सोमानी छल। राघवक पाछाँ लाउ किन-हंग। लाउ किन-हंगक पाछाँ समुद्र, काँच, बैंक, हवाला, जहाज, सर्वर, आ एहन भाषा जकरा बत्रा पूरा नहि बुझैत छल, मुदा प्रतिशत बुझैत छल। विदेशक असली मालिककेँ भारतक कानूनक चेहरा चाही छल। बत्रा चेहरा बनल। चेहरा बनबासँ पहिने ओ मुखौटा पहिरलक, बादमे मुखौटा चेहरा बनि गेल।

दुपहरि धरि बत्रा अपन तकनीकी दल केँ बुला लेलक। चारि युवक आयल — लैपटॉप, तार, घबराहट। ओ सभ राति भरि काज करएबला कम्पनीक बालक, जे सोचैत छल जे ओ खेल-उद्योगमे छैक। हुनका सभकेँ बत्रा कहलक — 'सर्वरमे दुष्ट-सॉफ्टवेयर अछि। साफ करू।' एक युवक स्क्रीन देखैत-देखैत रुकि गेल — 'सर, ई दुष्ट-सॉफ्टवेयर नहि लगैत।' बत्रा घूरलक — 'तखन?' युवक धड़फड़ायल — 'नाम दोहराइत भऽ रहल।'

'नाम दोहराइत भऽ रहल' — ई वाक्य कमरामे एना गिरल जेना पुरान इनारमे ढेपा। बत्रा युवककेँ बाहर कयलक। सभ तकनीकीकर्मी गेल। एकटा केबिनमे मात्र स्क्रीन रहि गेल। स्क्रीन पर आब तालिका नहि, पात सभ छल। प्रत्येक पात पर नाम। किछु नाम साफ, किछु धुँधला, किछु 'अज्ञात' लिखल। एक पात खाली। खाली पात पर कर्सर झपकि रहल छल, जेना ककरो प्रतीक्षा करैत।

बत्रा सोचलक — ई चन्ना गाछीक लोकक हैकिंग होएत। ओ हँसल। अन्ततः तर्कसंगत व्याख्या। 'गोप कुमार', ओ दाँत पीसि बजल। 'सौम्या', 'निशांत', 'ईरा'। ओ नाम लिखैत गेल। ओ मानि लेलक जे जालक पाछाँ ओहि हारल लोक सभ अछि। ओकरा आराम भेटल, कारण जँ शत्रु मनुष्य अछि तँ मुकदमा, धमकी, सौदा, गिरफ्तारी, बदनामी — सभ सम्भव। भूत आ नामक विरुद्ध विधिक नोटिस नहि भेजल जा सकैत।

ओ गोप कुमारक पुरान पते पर नोटिस मसविदा केलक। शीर्षक — ‘अनधिकृत डिजिटल हस्तक्षेप, साइबर अपराध, मानहानि’। मसविदा बनैत-बनैत अचानक पाद-लेखमे एक पंक्ति जुड़ि गेल — ‘जे अपन अपराधकेँ वैधता कहैत अछि, ओकरा शब्द स्वयं मुकदमा करैत अछि।’ बत्रा चीखल — ‘कियो दूरस्थ प्रवेशमे अछि!’ ओकर सुरक्षा-प्रमुख दौड़ल। तंत्र-जाँच। परिणाम — कोनो घुसपैठ नहि।

सुरक्षा-प्रमुख कहलक — ‘सर, सभ सुरक्षित अछि।’ बत्रा पूछलक — ‘तखन ई अक्षर?’ सुरक्षा-प्रमुख स्क्रीन देखलक — ओकरा किछु नहि देखाइ देलक। ई गढ़ नारिकेलक दोसर चाल छल। जे दोषी अछि, मात्र ओ देखत। जे कर्मचारी अछि, ओ केवल खाली स्क्रीन देखत। अपराध निजी होए तखन भय सेहो निजी होइत अछि।

साँझ खन बत्रा बालकनी पर आयल। शहरमे हजारो खिड़की जलि उठल छल। प्रत्येक खिड़की एक स्क्रीन। ओ सोचलक — ई देश स्क्रीन पर आबि गेल। खेल, कर्ज, प्रेम, धमकी, नौकरी, न्याय, दवा, ऑक्सीजन, टिकट, पाठशाला, अदालत — सभ स्क्रीन। जे स्क्रीन चलबैत अछि, ओ देह बिना साम्राज्य चलबैत अछि। तखन गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछी स्क्रीनमे कोना पैसल?

नीचाँ सड़क पर एक सामान-पहुँचाबयबला युवक लाल बत्ती पर रुकल। ओ फोन ताकैत छल। बत्राकेँ अचानक लागल जे फोन पर बत्राक चेहरा अछि। सामान-पहुँचाबयबला युवक हँसल नहि, डरलक नहि; केवल स्क्रीन बन्द कऽ देलक। बत्राकेँ पहिल बेर बुझाइ पड़ल — ओकर साम्राज्य ओहि क्षण ध्वस्त होइत अछि जखन कियो स्क्रीन बन्द करैत अछि।

रातिमे राघव सिग्नल सोमानी स्वयं आयल। सामान्यत: ओ विडियो कॉल सँ काज चलबैत छल; आइ देहसँ आयल। ओकर चेहरा पर वैह भय छल जे बत्राक भीतर छल। ‘एल.के. लाइन पर नहि आबि रहल,’ राघव कहलक। ‘हांगकांग टीम कहैत खाता जमल नहि, खाता चुप अछि।’ बत्रा पूछलक — ‘चुप?’ राघव माथ हिलौलक — ‘लेन-देन भेजैत छी, सिग्नल नहि घुरैत। जेना समुद्रमे फेकल।’

बत्रा चिढ़ल — ‘समुद्र नहि, तकनीकी रोक।’ राघव धीरे कहलक — ‘एक आर बात। जे मेटाइत-संदेश छल, ओकर पाछाँ-सहेज बनि रहल। हम डिलीट करैत छी, भोरमे छाप निकलि अबैत।’ बत्रा ओकरा घूरलक। राघव जेब सँ मोड़ल कागच निकाललक। कागच पर सिग्नल संदेश नहि, नामक पंक्ति छल। ओहि पंक्तिमे उज्ज्वल झा, मुन्ना पासवान, आ किछु एहन नाम जे राघव कहियो सुनने नहि छल।

‘

ई सभ गढ़ नारिकेलक जादू नहि,' बत्रा अपन आवाज कठोर बनौलक। 'ई मनोवैज्ञानिक अभियान अछि।' राघव पूछलक — 'तखन जवाब?' बत्रा कहलक — 'प्रतिरोधी चाल। नामक अभिलेखकेँ अवैध घोषित करब। डिजिटल सुरक्षाक नाम पर सर्वर जब्त करब। बच्चा सभक पाठशालाकेँ विदेशी-पोषित कहब। मीरा पर नैतिकता-आक्रमण, देविका पर राजनीतिक सम्बन्ध, निशांत पर डेटा चोरी। सभ तैयार करू।'

राघव सुनैत रहल। ओकरा ई योजना पहिने नीक लगैत। आइ प्रत्येक वाक्यक पाछाँ ओ एक पात खड़खड़ाइत सुनलक। 'सर,' ओ धीमे कहलक, 'जँ ओ सभ लड़य लेल उपलब्ध नहि अछि?' बत्रा तड़पि उठल — 'सभ उपलब्ध होइत अछि। लोककेँ डर, पैसा, केस, देह, परिवार, प्रेम, बदनामी — किछु ने किछु सँ पकड़ा जा सकैत।' राघव कहलक — 'जँ ओ सभ भविष्य बना रहल अछि?'

बत्रा एहि प्रश्न पर हँसल, मुदा हँसी काँच पर टकरा कऽ टूटि गेल। भविष्य पर मुकदमा करब कठिन अछि। अतीत पर स्थगन आदेश, वर्तमान पर रोक-आदेश, मुदा भविष्य? ओकरा रोकबाक लेल बच्चाक आवाज बन्द करए पड़त। आ बच्चाक आवाज बन्द करबाक मूल्य, जँ रिकॉर्ड भऽ जाए, तखन अंतरराष्ट्रीय मंच पर महँग पड़ि सकैत अछि। बत्रा तुरन्त रणनीति सोचए लागल।

ओ मुख्य स्क्रीन पर समाचार-धार खोललक। किछु चैनल ओकर नियंत्रणमे, किछु कीनल जा सकैत, किछु डेरायल। ओ लिपि लिखलक — 'डिजिटल अंधविश्वास पसारयबला गिरोह', 'ग्रामीण भावनाकेँ भड़कबएबला तत्व', 'आर्थिक विकास विरोधी समूह'। मुदा लिपि सहेजैत काल फाइल नाम अपने बदलि गेल — 'धूर्त सभक भय'। बत्रा टेबल पर घूँसा मारलक। राघव पाछाँ हटि गेल।

राति गाढ़ भेल। राघव चलि गेल। बत्रा अकेल। ओ शराब निकाललक, फेर राखि देलक। नशा ओहि लोककेँ चाही जे अपना सँ बचए चाहैत अछि; बत्रा आइ अपना सँ नहि, स्क्रीन सँ बचए चाहैत छल। ओ सभ स्क्रीन बन्द कयलक। कमरा अन्हार। पाँच मिनट शान्ति। फेर अन्हारमे पातक हलुक हरियर रेखा। बन्द स्क्रीन सेहो चमकए लागल।

पहिल स्क्रीन पर चन्ना गाछीक छाह। दोसर पर कबड्डीक मैदान। तेसर पर एक बालक — शायद उज्ज्वल, शायद कियो आर — जे कहैत नहि, केवल फोन पकड़ने अछि। फोनक स्क्रीन पर बत्राक चेहरा। बत्रा पाछाँ हटैत गेल। ओकर कुर्सी पलटल। बालकक मुँह हिलल — आवाज नहि। फेर अक्षर उभरल — 'पहिल जीत कोना देलहुँ?'

बत्राकेँ अपना जीवन-धाराक पहिल डिजिटल खेल मोन पड़ल। ओहि समय एक छोट ऐप शुरू भेल छल। नियम साफ: पहिल जमा पर बोनस, पहिल खेल पर जीतक सम्भावना बढ़ल, तकर बाद गणन-नीति धीरे-धीरे पइसा घीचि लेत। बत्रा विधिक धारा लिखने छल — 'खेल कौशल पर आधारित; जोखिम उपयोगकर्ताक।' ओ वाक्य ओकर प्रतिभा कहल गेल। आइ वैह वाक्य ओकरा गलामे रस्सी जेकाँ लागल।

बालकक स्क्रीन पर दोसर प्रश्न — 'हारलाक बाद ऋण कॉल किएक?' बत्राकेँ कॉल-केन्द्र मोन पड़ल। युवा आवाज सभ, लिपि, नकली पुलिस, नकली अदालत, नकली डिजिटल अरेस्ट। 'अहाँक आधार सँ अपराध भेल अछि।' 'विडियो कॉल पर रहू।' 'राशि सुरक्षित खातामे पठाउ।' ई सभ लिपिक विधिक सावधानी बत्रा बनौने छल — एहन शब्द जे ठगी नहि, अनुपालन लगय।

तेसर प्रश्न — 'मरि गेलाक बाद खाता किएक चलल?' बत्रा कुर्सी पकड़लक। किछु मृत युवकक वॉलेट बादमे सेहो प्रयोग भेल छल। कमीशन श्रृंखला। बोनस धन-धोवन। निष्क्रिय खाता पुनर्जीवित। मृतकक नामक डिजिटल भूत। बत्रा सोचलक, ई केवल तकनीक छल। चन्ना गाछी कहलक — नहि, ई मृतकक देह दोसर बेर उपयोग करब छल।

बत्रा जोर सँ बजल — 'हम हत्या नहि केलहुँ!' स्क्रीन पर उत्तर — 'तखन कोन अपराध स्वीकार करब?' ओ चुप। कानूनक अभ्यास ओकरा सिखौने छल जे अपराध केँ परिभाषित करू, फेर परिभाषा सँ बचू। मुदा स्क्रीनक अदालतमे परिभाषा नहि, असर पूछल जा रहल छल। जकर पइसा गेल, जकर घर बिकायल, जकर बेटा फाँसी लगा लेलक, ओकरा परिभाषासँ अन्तर नहि पड़ैत।

ओ अपने केँ सम्हारलक। 'ई सभ डरबयबला दृश्य-आक्रमण अछि,' ओ मनमे कहलक। ओ लैपटॉप उठेलक, एक अलग-थलग मशीन — नेटवर्क सँ अलग। एहि पर कोनो घुसपैठ सम्भव नहि। ओ चालू केलक। स्क्रीन पर रिक्त सम्पादक खुलल। ओ टाइप कयलक — 'चन्द्रपाल बत्रा आ गढ़ नारिकेल लोक-अभिलेख समिति।' ततबामे कर्सर खुद चलल — 'चन्द्रपाल बत्रा आ अपन मोन।'

बत्रा लैपटॉप बन्द कयलक। बैटरी निकालबाक कोशिश केलक, मुदा नब मशीनमे बैटरी भीतर बन्द। ओ तामसमे लैपटॉप फर्श पर पटकलक। स्क्रीन टूटल। टूटल स्क्रीनक दरार नारिकेल पातक नस जेकाँ पसरल। प्रत्येक दरारक किनार पर छोट अक्षर — नाम, नाम, नाम। ओ दरी पर बैसल रहि गेल।

भोरक पहिल उजास खिड़कीसँ भीतर पैसल। काँचक शहर धीरे-धीरे नीला सँ धूसर भेल। बत्राक आँखि सुन्न। राति भरि ओ ने सुतल, ने सोचल; केवल देखैत रहल। स्क्रीन सभ आब बन्द छल, मुदा ओकर भीतर स्क्रीन खुलि गेल छल। मोन टांगल जकरा कहैत छैक, से ई नहि जे लोक लगातार मोन करए। मोन टांगल माने — लोक बिसरय चाहय, मुदा बिसरब ओकर आदेश नहि मानय।

भोरे ओकर सचिव आयल। ‘सर, आइ अदालतमे उपस्थिति?’ बत्रा कहलक — ‘स्थगित।’ सचिव — ‘बोर्ड बैसकी?’ ‘स्थगित।’ ‘राघव सोमानी?’ बत्रा रुकल — ‘कहलिऐ, सभ स्क्रीन बन्द राखू।’ सचिव चकित — ‘सर?’ बत्रा उत्तर नहि देलक। ओ खिड़की बाहर देखैत रहल। शहरक हजारो स्क्रीन जागि रहल छल। ओकरा प्रत्येक स्क्रीनमे चन्ना गाछीक पात देखाइ पड़ैत।

ओ टेबल पर राखल मेरठक डिग्री उठेलक। डिग्रीक काँच पर धूलि नहि छल, मुदा भीतरक अक्षर बदलि गेल छल। जतय ‘कानून स्नातक’ लिखल रहबाक चाही, ओतय लिखल छल — ‘नाम पढ़बाक शिक्षा अधूरी।’ बत्रा फ्रेम उलटि देलक। पाछाँ गत्ता पर ओकर युवावस्थाक हस्ताक्षर। ओहू हस्ताक्षरक नीचाँ एक पंक्ति उभरल — ‘जे कानून पढ़ि मनुष्य नहि पढ़ल, से स्क्रीनक दास भेल।’

दुपहरि धरि बत्रा निर्णय कयलक। ओ गढ़ नारिकेल नहि जाएत। कखनो नहि। देहसँ नहि। ओ स्क्रीन सँ लड़त, कानून सँ, मीडिया सँ, सर्वर सँ, पुलिस सँ। मुदा जखन ओ ई निर्णय लिखि रहल छल, ओकर फोन अपने खुलल। नक्शा-ऐपमे एक रेखा देखाइ देलक — ओकर अपार्टमेण्ट सँ गढ़ नारिकेल धरि। रेखा लाल नहि, हरियर। रेखा पर नारिकेल पातक चिन्ह। दूरी: ‘मोन पहिने पहुँचि चुकल।’

ओ फोन बन्द करए चाहलक। स्क्रीनक अन्तिम संदेश आयल — ‘अहाँ एतऽ नहि आबि रहल छी। अहाँ एतऽ सँ जा नहि रहल छी।’

चन्द्रपाल बत्रा खिड़की लग ठाढ़ रहल। नीचाँ शहर चलैत रहल। ऊपर स्क्रीन सभ शान्त। भीतर नाम सभ चलैत। ओ पहिल बेर बुझलक जे चन्ना गाछी गाममे नहि, जालमे पैसि गेल अछि। जे दिन ओ ऑनलाइन गैम्ब्लिंगक पहिल लिपि लिखने छल, ओहि दिन ओ चन्ना गाछीक मैदानमे अपन पएर राखि देने छल। आब केवल ओकरा ई मानबाक बेर छल।

साँझक बेला राघवक सिग्नल संदेश आयल — ‘आदेश?’ बत्रा बहुत देर धरि टाइप करैत नहि रहल। अन्तमे ओ एक पंक्ति पठेलक — ‘सबूत नहि, नाम खोजू।’ संदेश भेजिते अपने

मिटि गेल। फेर स्क्रीन पर चन्ना गाछीक पात खसि पड़ल। पात पर लिखल छल — ‘नाम खोजबासँ पहिने नाम सुनू।’

एहि तरहें चन्द्रपाल बत्रा गढ़ नारिकेल जाए बिना गढ़ नारिकेलमे प्रवेश कयलक। ओकर देह शहरक काँचक कमरामे रहल, मुदा ओकर मोन स्क्रीनक दरार सँ चन्ना गाछी दिस लटकि गेल। धूर्त सभक भीतरी यात्रा एखन शुरू भेल छल।

लोकगीत: काँचक परदा दोमुखी

लोकधुन: झूमर

देखै हे परदा, दू दिशि परदा देखै हे,
डिलीट कएल आखर ठूँठ सँ फेर उगै हे।

काँचक देबाल कहै—गाम हमरा नहि देखै,
पात हँसि कहै—स्क्रीन दू दिशि देखै।
डिलीट कएल अक्षर ठूँठसँ फेर उगल,
उज्ज्वलक अधूरा सन्देश काँच भीतर जगल।
साम्राज्यक बल एक इशारापर टिकल,

कियो परदा बन्द कएल, सभ उजास पघिलल।
‘सबूत नहि, नाम खोजू’—बत्रा लिखि पठेलक,
पात कहलक—पहिने सुनू, तखन नाम खोजब।
शहरमे देह, गाछीमे टाँगल ओकर मोन,
स्क्रीनक दरारसँ पैसल नारिकेलक पौन।

काँचक देबाल कहलक—गाम हमरा ने देखए,
पात हँसि कऽ बाजल—स्क्रीन दुनू दिस लेखए।
'सबूत नहि, नाम खोजू'—लिखि पठेलक बत्रा,
पात कहलक—पहिने सुनू, तखने चलत जत्रा।

❖

अध्याय २८

राघव सिग्नलक चुप्पी

जे आवाजसँ डेराइ छै, से मेटाइत अक्षरमे बाजै छै; मुदा डर कोनो अक्षर नहि मेटबै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: संदेश बचाउ, जीवन बचाउ

लोकधुन: सिग्नल-जागरण

जागू हो संगी, सन्देसक घण्टी जागू हो,
पाँच सेकेण्डक आखरो पर कान लगाबू हो।

पाँच सेकेंडक अक्षर हो, तइयो संकेत मानू,
संकट, भय, निराशाक बात समयपर पहिचानू।
सन्देश मेटय सँ पहिने सुरक्षित प्रति धरू,
मित्र, परिवार, सहायता संग तुरन्त खबर करू।

एक उत्तर—‘हम संग छी’—जीवन बाट बदलै,
रातिक फोनक पाछाँ भोरक द्वार निकलै।
सन्देश बचाउ, जीवन बचाउ, मौन नहि रहू,
डिजिटल करुणाक जालसँ एक-दोसर सहू।

मेटएबला आखरो मे साँसक खबरि बाजए,
'हम संग छी' तीन शब्दसँ भोरक द्वार साजए।
एक फोन, एक दस्तक, एक हाथक ताप,
राति कतबो घन हो, कटि जाए सन्ताप।

❖

धूर्त सभक भीतरी यात्राक दोसर पड़ाव राघव छल। राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक जीवनमे आवाजक महत्व कहियो नहि रहल। ओ आवाजसँ डेराइत छल। आवाज रिकार्ड भऽ सकैत अछि, गवाही बनि सकैत अछि, अदालतमे बजि सकैत अछि, मायक कान धरि पहुँचि सकैत अछि। तैँ ओ सिग्नल पर लिखैत छल, मिटबैत छल, फेर लिखैत छल। ओकरा विश्वास छल जे जे बात पाँच सेकेंड बाद मिटि जाइत अछि, से बात दुनियाँमे भेलियै नहि।

ओहि राति, चन्द्रपाल बत्राक काँचक कोठरीसँ घुरला बाद, राघव अपन अपार्टमेण्टक दुआर खोलिते रुकि गेल। भीतर सभ किछु ओहिना छल — नील बत्ती, काँचक मेज, तीनटा फोन, दूटा बन्द लैपटाप, एकटा धातुक अलमारी, जकरामे नकद नहि, सिम-कार्ड, बैंक-किट,

नकली कम्पनीक मोहर आ किछु पुरान पासपोर्ट राखल छल। मुदा कोठरीमे जे चीज नव छल, से छल चुप्पी।

राघव चुप्पी सँ अपरिचित नहि छल। अपराधक सभसँ नीक भाषा चुप्पी होइत अछि। मुदा ई चुप्पी ओकर बनाओल नहि छल। ई चुप्पी ओतय पहिने सँ बैसल छल, जेना कियो बूढ़ अतिथि, जे कहियो निमन्त्रण नहि मागैत, मुदा सही समय पर घरमे प्रवेश कऽ लैत अछि। ओ बत्ती जलौलक। चुप्पी हटल नहि।

टेबल पर सिग्नल फोन राखल छल। राघव ओकरा दिनमे सत्ताईस बेर साफ करैत छल। पुरान संदेश मेटाओल, बैकअप बन्द, बादलक संग्रहण निष्क्रिय, अलग सिम, अलग नाम। ओ फोन उठेलक। स्क्रीन उज्जर। कोनो सूचना नहि। ओकरा राहत भेटल। फेर स्क्रीनक कोनमे एकटा हरियर पात उभरल। पात धीरे-धीरे पसरल आ पूरा स्क्रीन पर नारिकेलक नस बनि गेल।

ओ पलक झपकलक। पात गायब। संदेश आयल — ‘एल.के.: खाता स्थगित।’ राघवक गला सूखल। लाउ किन-हंग कहियो ‘स्थगित’ नहि लिखैत छल। ओकर भाषा छोट, काटल, प्रतिशतमे बन्द। ‘भेजू’, ‘रोकू’, ‘निकालू’, ‘मार्ग बदलू’। स्थगित शब्द वकील सभक छल, बैंक सभक छल, अदालत सभक छल। एल.के.क नहि।

राघव उत्तर लिखलक — ‘स्पष्ट करू।’ संदेश गेल नहि। घूमैत बिंदु। फेर लाल अक्षर — ‘मार्ग अनुपलब्ध।’ ओ दोसर फोन उठेलक। तेसर। चारिम। प्रत्येक पर वैह उत्तर। मार्ग अनुपलब्ध। जे मार्ग सभसँ सुरक्षित छल, ओ मार्ग एक रातिमे कतऽ चलि गेल? दुनियाँमे सड़क बन्द होइत अछि, बन्दरगाह बन्द होइत अछि, सीमा बन्द होइत अछि; डिजिटल मार्ग कोना बन्द होइत अछि?

ओ धातुक अलमारी खोललक। भीतरक एक छोट कागच पर कोड लिखल छल — हांगकांग, मकाओ, दुबई, काठमांडू, गुवाहाटी, पटना, मेरठ, दिल्ली। प्रत्येक नामक आगाँ अंक। प्रत्येक अंकक पाछाँ खाता। प्रत्येक खाताक पाछाँ एक लोक। प्रत्येक लोकक पाछाँ एक परिवार। राघव पहिने ई क्रम नहि देखैत छल। ओकरा केवल अंक देखाइ दैत छल। आइ प्रत्येक अंकक पाछाँ देह ठाढ़ भेल।

ओ कागच मोड़ि जेबमे राखलक। फेर एक पुरान प्रिन्टर अपने चलि उठल। राघव स्तब्ध। प्रिन्टर तीन मास सँ बन्द छल। कार्ट्रिज सूखि गेल हेबाक चाही। मुदा ओ छपऽ लागल। पहिल पन्ना: ‘उज्ज्वल झा’। दोसर: ‘मुन्ना पासवान’। तेसर: ‘सरयू मजदूरिन’। चारिम: ‘नाम अज्ञात’। पाँचम पन्ना खाली। खाली पन्ना पर केवल एक रेखा — अंगूठाक धुँधला निशान।

राघव प्रिन्टरक तार खिंचि देलक। पन्ना निकलैत रहल। तार अलग, बिजली अलग, तबो पन्ना। ओ प्रिन्टरकेँ लात मारलक। मशीन चुप। पन्ना फर्श पर छिड़िआयल। प्रत्येक पन्नाक किनार भीजल छल। ओ भीजल पानि नहि, जेना नदीक गन्ध छल — कच्चा कादो, चूड़ा-गुड़, बासी शव, आ नारिकेलक फूलक एक असम्भव सुगन्ध।

ओ अपन सुरक्षा-घड़ी देखलक। हृदयक धड़कन तेज। राघव हँसए चाहलक। 'तनाव', ओ अपने सँ कहलक। 'बत्रा घबरायल, ताहि सँ हमरो असर।' मुदा मनक भीतर एक दोसर आवाज कहलक — बत्रा पर स्क्रीन आयल; तोरा लग प्रिण्ट आयल। किएक? कारण बत्रा अक्षर बनबैत छल, तू मार्ग बनबैत छल। नाम ओकर स्क्रीनमे आयल, खाताक पथ तोरा घरमे आबि रहल अछि।

राघव सोमानी मूलतः बनिया नहि, बहीखाता छल। ओकर देह पर कपड़ा, मुँह पर मुस्की, जेबमे फोन; भीतर मात्र जमा-निकासी। बाल्यकालमे ओकर पिता छोट हार्डवेयर दुकान चलबैत छलाह। ओ देखैत छल जे ग्राहक कर्ज लेत, पिता नाम लिखत, समय पर पइसा नहि अबैत। राघव ओही दिन बुझि गेल छल — नाम लिखब मूर्खता अछि। नामक बदला खाता रखू, खातामे चेहरा नहि होइत।

एही शिक्षा ओकर अपराधक मूल बनल। जखन पहिल बेर चन्द्रपाल बत्रा ओकरा म्यूल अकाउण्टक काज बुझेलक, ओ तुरन्त बुझि गेल — गरीब युवकक खाता, दोसरा नामक सिम, तेसरक पते पर कुरियर, चारिमक हस्ताक्षर, पाँचमक कमीशन। अपराध जखन टुकड़ा-टुकड़ा बँटि जाए, तखन कियो पूरा अपराधी नहि देखाइ पड़ैत। सएह आधुनिक चातुर्य छल।

राघवक काज छल टुकड़ा जोड़ब, मुदा जोड़ देखाओल नहि। ओ हजारो युवककेँ 'कमिशन काज' देलक। 'बस खाता खोलू, पइसा आएत, निकलब, अहाँक हिस्सा।' बेरोजगारी ओकर एजेंट छल। छात्रावास, कोचिंग-गली, किराना दुकान, चाह ठेला, निजी कालेज, प्रवासी मजदूरक डेरा — सभ ठाम ओकर लोक। जे पकड़ाइत, से कहैत — 'हमरा की बुझल?' असलमे ओकरा सचमुच बुझल नहि होइत। अज्ञान राघवक सभसँ पैघ कवच छल।

ओहि राति ओहि कवचमे दरार पड़ल। फर्श पर छिड़िआयल पन्ना सभ पर जे नाम छल, ओ मात्र मृतकक नहि छल। किछु नाम ओहि लोकक छल जे जीवित रहि जेल गेल। किछु ओहि स्त्रीक जे अपन घरक बचत डिजिटल अरेस्टमे भेजि देलक। किछु ओहि लड़काक जे पहिल जीतक बाद पिता सँ झूठ बाजए लगल। किछु ओहि खाताधारकक जे कमिशन लेल खाता देलक आ फेर अपराधी कहल गेल।

राघव फोन पर एल.के.क दोसर मार्ग खोजलक। कूट-संदेश: 'शुष्क बन्दरगाह?' उत्तर नहि। 'उत्तर-पथ?' चुप। 'पुरान बही?' चुप। 'तीन प्रतिशत अतिरिक्त।' चुप। लाउ किन-हंगक चुप्पी पहिल बेर ओकरा मृत्यु जेकाँ लगल। विदेशी सरगना सभ बजैत कम छथि, मुदा संकेत दैत छथि। आइ संकेत सेहो नहि।

एकाएक फोन पर एक संदेश चमकल — 'खाता बन्द।' बस। न नाम, न कोड। राघवक माथमे ठनकल। खाता बन्द माने केवल पैसा बन्द नहि। खाता बन्द माने लोक बन्द। संपर्क काटि देल गेल। जकरा उपयोग भेल, ओकर उपयोग समाप्त। अपराधक साम्राज्यमे मित्रता नहि होइत, केवल मार्ग होइत अछि। मार्ग टूटल तँ लोक रद्दी।

राघवक आँखिमे क्रोध आयल। ओ मनमे लाउ किन-हंगकेँ गारि देलक। 'हम भारत चलौलहुँ, तोरा लेल। हम खाता बनौलहुँ, तोरा पइसा धोएलहुँ, तोरा ऐप बचेलहुँ, तोरा कॉल-सेण्टर केँ पुलिस सँ बचेलहुँ।' मुदा जे शब्द ओ मनमे कहलक, ओहि शब्दक पाछाँ दोसर वाक्य आबि गेल — 'हम हजारो घर तोड़लहुँ।' ओ तुरन्त ओहि वाक्यकेँ धकेललक। भीतरक अदालतमे आपत्ति देलक। 'अप्रासंगिक।'

चुप्पी हँसल। हँसी बिना आवाजक।

राघव खिड़की खोललक। शहरक रातिमे साइरन, मोटरसाइकिल, कुकर, बच्चा, लिफ्ट, दूरक ट्रेनक आवाज सभ मिलि रहल छल। ई सभ आवाज साधारण छल। मुदा ओकरा सभक पाछाँ एक बहुत धीमा 'छपाक' सुनाइ देलक। ओ छपाक नदीक छल कि स्क्रीनक? ओहिमे अन्तर नहि रहल। प्रत्येक लेन-देन जखन गलत खातामे खसैत छल, तखन शायद सएह छपाक होइत छल।

ओ कुर्सी पर बैसल आ अपन पुरान नोटबुक खोललक। ई नोटबुक डिजिटल नहि छल। ओकरा डिजिटल पर भरोसा छल, मुदा किछु कोड ओ कागच पर राखैत छल, कारण सभसँ तेज अपराधी सेहो कहियो-कहियो कागचक सादगी पर भरोसा करैत अछि। नोटबुकक पहिल पन्ना पर लिखल छल — 'जालमे विश्वास नहि; निकास-सूत्र राखू।' राघव मुस्कुरेलक। निकास-सूत्र। ओकरा बचबाक मार्ग अछि।

ओ पन्ना पलटल। निकास-सूत्र सभ: दोसर नाम, दोसर पासपोर्ट, दोसर देश, पहाड़क घर, नकद, सोना, सिक्का, तेसर फोन। मुदा प्रत्येक पन्नाक किनार पर हरियर रेखा खिंचल छल। रेखा पातक नस जेकाँ। ओ जतय निकास लिखैत, ओतय पात बनैत। जेना चन्ना गाछी कहैत हो — 'बाहरक रस्ता भीतरसँ गुजरैत अछि।'

ओ अपन कलाई पर बँधल घड़ी खोलि फेकलक। समयक निगरानी अपराधी करैत अछि, मुदा आइ समय ओकर निगरानी करैत छल। घड़ी फर्श पर खसल आ चालू रहल। टिक-टिक नहि, ‘नाम-नाम’। राघवक कान भरि गेल। ओ कान पर हाथ देलक। ‘नाम-नाम’ भीतर सँ अबैत छल।

भोर होइत-होइत ओ निर्णय लेलक — गढ़ नारिकेल नहि जाएब। बत्रा नहि जाएबाक निर्णय लेने छल; राघव सेहो। मुदा दुनू निर्णय अलग। बत्रा लड़बाक लेल नहि जाए चाहैत छल। राघव भागबाक लेल नहि जाए चाहैत छल। ओकरा डर छल जे जँ ओ गढ़ नारिकेल जाएत, तँ ओकर सिग्नल सभ देहधारी भऽ जायत। जे अकाउण्ट संख्या छल, से लोक बनि ठाढ़ होएत।

ताहि दिन दुपहरिया ओ अपन लोकसभ कैँ संदेश पठेलक — ‘म्यूल भर्ती रोकू।’ ई वाक्य ओकर जीवनक पहिल असामान्य आदेश छल। तुरन्त पाँच प्रश्न आयल — ‘कतेक दिन?’ ‘कोन शाखा?’ ‘कोन मामिला?’ ‘ऊपर सँ आदेश?’ ‘भुगतान?’ राघव उत्तर नहि देलक। ओकर चुप्पी अपन नेटवर्कमे पसरि गेल। अपराधक जालमे आदेश नहि, चुप्पी सभसँ अधिक डरावन होइत अछि।

साँझ धरि चन्द्रपाल बत्राक फोन आयल। राघव देखलक, नहि उठेलक। फेर संदेश — ‘स्थिति?’ राघव टाइप करए लागल — ‘सभ नियंत्रणमे।’ ओकर अंगुरी रुकि गेल। ओ मेटेलक। फेर लिखलक — ‘मार्ग चुप अछि।’ संदेश भेजि देलक। पाँच मिनट बाद बत्राक उत्तर — ‘चुप्पी सेहो मैनेज होइत अछि।’ राघव फोन ताकैत रहल। ओकरा बुझल — बत्रा एखन धरि नहि बुझलक जे चुप्पी मैनेज नहि, केवल सुनल जाइत अछि।

राति दोसर प्रिन्ट आयल। एहि बेर केवल एक पन्ना। पन्ना पर कोनो नाम नहि, केवल सवाल: ‘तोहर पहिल हिस्सा केकर देह सँ बनल?’ राघव बहुत देर धरि पन्ना देखैत रहल। ओकर पहिल हिस्सा — ओहि समय पाँच हजार रुपैया। एक विद्यार्थीक खाता। विद्यार्थी बादमे पकड़ा गेल। पिता दुकान बेचि वकील लग गेल। केस चलल। राघव आगाँ बढ़ि गेल। विद्यार्थीक नाम? ओ मोन पाड़य चाहलक। नाम नहि मोन पड़ल। पन्ना खाली रहि गेल।

ओहि खालीपनसँ राघवक भीतर कोनो चीज टूटल। अपराधी कैँ सभसँ पैघ भय पकड़ा जाएब नहि; भय ई जे ओकरा अपन पहिल अपराधक नाम मोन नहि। जे नाम बिसरा देल गेल, ओ नाम एते रुष्ट होइत अछि जे भूत बनि पड़ैत अछि। चन्ना गाछीक अदालत शायद एतबे करैत अछि — बिसरल नामकैँ भूत बना दैत अछि।

राघव नेबुला सन अन्हारमे उठल। धातुक अलमारीसँ सिम-कार्ड सभ निकाललक। एक-एक कऽ तोड़ए लागल। प्रत्येक सिम टूटिते एक छोट आवाज आयल — 'हूँ'। जेना कियो दूरसँ उत्तर दैत हो। पचास, सत्तर, एक सय। प्लास्टिकक तीखगर किनार अंगुरीमे गड़ैत रहल; ओकर अंगुरी दुखल। अन्तिम सिम तोड़िते स्क्रीन पर संदेश आयल — 'टुटल सिम सँ टुटल घर नहि जुड़ैत।'

ओ थाकि कऽ जमीन पर बैसल। ओकरा पहिल बेर अपन घर मोन पड़ल। पिता, हार्डवेयर दुकान, लोहेक कील, उधारक बही, छोट राघव जे नामक बदला खाता चाहैत छल। पिता कहैत छलाह — 'नाम लिखू, बेटा। खाता चूक जाए, नाम पूछल जा सकैत अछि।' ओ पिता पर हँसल छल। आइ पिता मृत। बही नहि रहल। नाम सेहो धुँधला।

राघवक आँखि भरि आयल, मुदा आँसू नहि खसल। अपराधक लंबा अभ्यास आँखिक पानि सुखा दैत अछि। ओ कानए चाहैत छल, मुदा देहक भीतर पानि उपलब्ध नहि। शायद ओहि पानि सभ ओकर बनाओल खातामे फँसि गेल छल। शायद गढ़ नारिकेलक पात पहिने ओ पानि वापस माँगत।

तकरा बाद ओ एक छोट काज केलक। ओ लैपटॉप खोललक, ककरो नहि, अपना लेल। एक फाइल बनौलक — 'पहिल खाता'। ओ विद्यार्थीक नाम खोजए लागल। पुरान मेल, पुरान फोटो, पुरान भुगतान, पुरान बैंक-सूची। तीन घण्टा बाद नाम भेटल — अरुणेश कुमार। ओ नाम टाइप कयलक। स्क्रीन नहि झिलमिलायल। कोनो पात नहि आयल। कोनो भूत नहि। मात्र अक्षर स्थिर रहल। राघवकेँ पहिल बेर बुझल — नाम लिखलासँ स्क्रीन शान्त भऽ सकैत अछि।

मुदा शान्ति क्षणिक छल। नाम लिखिते दोसरा नामक माँग उठल। अरुणेश कुमारक नीचाँ खाली पंक्ति। ओ सोचलक — कतेक? हजार? दस हजार? जेना गोहि देहक हड्डी धरि चिबा जाइत अछि, तहिना अपराधक खाता स्मृतिक हड्डी धरि चिबा चुकल। की ओ सभ नाम खोजि पाओत? की ओ चाहैत अछि खोजब? प्रश्नक उत्तर नहि छल। मुदा फाइल खुलि गेल छल।

अगिला भोर, राघव सोमानी घर सँ बाहर निकलल। ओ गढ़ नारिकेल दिस नहि गेल। ओ पहिने ओहि पुरान छात्रावास दिस गेल जतय ओकर पहिल म्यूल अकाउण्ट बनल छल। दरबान नब, देबाल नब, कमरा नब। कोनो चिन्ह नहि। मुदा बाहर चाहबला बूढ़ भेल, मुदा चिन्हलक नहि। राघव चाह लेलक। पूछलक — 'एतय अरुणेश कुमार रहैत छल?' चाहबला माथ खजुओलक — 'बहुत बरख पहिने? ओहि लड़काक केस भेल छल ने?'

राघवक हाथ काँपल। नाम हवामे जीवित छल। सरकारी कागच बिसरए, अदालत टारय, मुदा चाहबला मोन रखैत अछि। ई लोक-स्मृति ओकर डिजिटल मिटानाइ सँ मजबूत छल। ओ चुपचाप चाह पीबैत रहल। चाहबला कहलक — 'बेचारा। बाप दुकान बेचलक। लड़का फेर कतेको दिन बाद पागल सन भऽ गेल।' राघव पइसा देलक। चाहबला छुट्टा देबए लागल। राघव कहलक — 'राखू।' चाहबला हँसल — 'दान नहि चाही। हिसाब साफ।'

हिसाब साफ। ई दू शब्द राघवक छातीमे धँसि गेल। अपराधी सभ दान दैत अछि, हिसाब नहि। मंदिर, न्यास, सहायता, चैरिटी — सभ दान। हिसाब साफ करब कठिन। हिसाब साफ करबाक लेल नाम चाही, घटना चाही, स्वीकार चाही।

साँझमे ओ घर घुरल। सिग्नल फोन फेर चमकल। एल.के.क संदेश — 'किएक रुकल?' राघव बहुत देर धरि देखैत रहल। ऊपरी मालिक घुरि आयल छल। खाता शायद फेर खुलत। पैसा फेर बहेत। पुरान जीवन फेर सम्भव। ओ उत्तर लिखि सकैत छल — 'मार्ग तैयार।' मुदा ओकर अंगुरी दोसर वाक्य लिखलक — 'नामक सूची बनि रहल।'

संदेश भेजिते फोन कारी पड़ल। एक क्षण लेल ओकरा डर भेल जे एल.के. ओकरा मरबा देत। फेर भीतर सँ कोनो शांत आवाज उठल — मृत्यु सँ बेसी डरावन चुप्पी छल; चुप्पी सुनल जा चुकल। आब ओ भागि सकैत, झूठ बाजि सकैत, पलटि सकैत, मुदा ओ नहि कहि सकैत जे ओकरा नाम नहि सुनायल।

ओहि राति राघव सिग्नल सोमानी पहिल बेर बिना फोन सिरहाने राखने सुतल। निन्न तुरन्त नहि आयल। चन्ना गाछी ओकरा सपनामे नहि, जागरणमे भेटल। पात सभ एक-एक कऽ झरल आ प्रत्येक पात पर एक नाम। ओ सभ नाम ओकरा दोषी ठहराबए नहि, पढ़बए अबैत छल। पढ़बो एक दण्ड होइत अछि, जँ जीवन भरि लोक केवल रकम पढ़ने हो।

भोरमे ओकर टेबल पर एकटा नव पात छल। पात पर लिखल — 'चुप्पी तोड़बासँ पहिने सुनू।' राघव ओ पात नोटबुकमे राखलक। ई स्वीकार नहि छल, ई प्रायश्चित्त सेहो नहि। ई केवल शुरुआत छल। धूर्त सभक भीतरक दुनियाँमे राघवक पहिल दिन समाप्त भेल। बाहर दुनिया एखन धरि ओकरे नेटवर्कक नाम सँ डरैत छल; भीतर ओ पहिल बेर नाम सँ डरए बन्द करबाक अभ्यास करैत छल।

गढ़ नारिकेलमे ओहि भोर चन्ना गाछीक कबड्डीमे एकटा नब आवाज आयल। भूत सभ पूछलक — 'के आयल?' बूढ़बा भूत कान लगौलनि — 'देह नहि। कियो चुप्पी भेजने अछि।' लोथ सभ मुस्कुरायल। राकशक इजोत कनी बढ़ल। कबड्डी फेर शुरू भेल।

लोकगीत: मेटायल सन्देशक रोदन

लोकधुन: चुप्पी-विरहा

सुनू हे पहिने, चुप्पी तोड़बा सँ पहिने सुनू हे,
स्वीकार नहि, प्रायश्चित्त नहि—शुरुआत बुझू हे।

पाँच सेकेंडमे अक्षर मेटल, पाप कतऽ मेटाय?
हरेक खाताक पाछाँ देह ठाढ़, नाम पुकार सुनाय।
चाहक दोकान मोन रखै जे फाइल बिसरि जाय,
रकम पढ़निहार जीह नाम पढ़िते थरथराय।
राघव फोन दूर राखि पहिल बेर राति काटल,

पात-पात नाम झरल, निन्नक द्वार पाटल।
'चुप्पी तोड़बासँ पहिने सुनू'—भोरक पात,
स्वीकार नहि, प्रायश्चित्त नहि, शुरुआतक बात।
देह नहि आयल गाछी, चुप्पी भेजल गेल,
भूतक नव पारीमे मौन खिलाड़ी भेल।

पाँच सेकेण्ड मे आखर मेटल, पाप ने मेटल,
हरेक खाताक पाछाँ ठाढ़ देह, नाम बजल।

❖

अध्याय २९

लाउ किन-हंगक सपना

जे नाम पूरा लिखल जाए से गिरफ्तार भऽ सकैए— मुदा अधलिखल नाम अपने कैदी बनि जाइए।

अध्यायारम्भ लोकगीत: शीशाघरमे नदीक गीत

लोकधुन: समुद्र-मलार

गाबू हे मलार, शीशाघर मे गाबू हे,
काँचक ठण्ढ छाती मे नदीक धुन जगाबू हे।

शीशाघरमे समुद्र देखू, आवाजो भीतर आनू,
लाभक रेखा बीच मनुखक नाम सम्मानू।
काँचक मीनार खिड़की खोलि पवनकेँ ठौर दिअ,
दूर देशक श्रम आ सपनाक उचित मोल दिअ।

छपाक भयक नहि हो, चेतनाक मधुर ताल,
समुद्रपारो न्याय रहय वैश्विक व्यवहार।
शीशाघरमे नदीक गीत हृदयकेँ नरम करत,
काँचक ठंढा जगतमे मानवीय ऊष्मा भरत।

मीनारक खिड़की खोलू, पुरबा भीतर आबए,
लाभक अंक-पाँती बिच मनुखक मुँह देखाबए।
दूर देशक श्रम-पसेना उचित मोल पाबए,
समुद्रो पार न्यायक धार मलार सुनाबए।

❖

राघवक चुप्पी समुद्र टपि हांगकांग धरि पहुँचि चुकल छल। लाउ किन-हंग कहियो अपन पूरा नाम उच्चारित नहि करैत छल। ओ कहैत छल — नाम जे कागचपर पूरा लिखल जाइ, से नाम गिरफ्तार भऽ सकैत अछि। तेँ हांगकांगक वित्तीय अन्हारमे ओकर नाम तीन अक्षरमे बदलि गेल छल — एल. के. एच. मुदा एहि तीन अक्षरमे समुद्रक नमक, अफीम-व्यापारक पुरान गन्ध, बैंकक काँच, आ भारतक छोट शहर सभक नील स्क्रीनक उजास मिलल छल।

ओ समुद्रक कात बनल अपन शीशाक घरमे रहैत छल। घर नहि — काँचक गुफा। एक्के बेरा भीतर आ बाहर। बाहर समुद्र, भीतर पर्दा। बाहर जहाज, भीतर खाता। बाहर पानि, भीतर प्रतिशत। प्रत्येक भोर ओ समुद्र दिस तकैत छल, मुदा समुद्र नहि देखैत छल; ओकरा तैरैत जहाजक पाछाँ-पाछाँ चलैत रकम देखाइ पड़ैत छल।

ओहि राति ओ राघव सिग्नलकेँ अन्तिम सन्देश भेजने छल — ‘खाता बन्द।’ केवल दू शब्द। ओकरा लेल ई दया नहि छल, नीति छल। अपराधक पहिल नियम छल — जखन कोनो कड़ी आवाज करए लागय, ओकरा काटि दिअ। राघव आवाज नहि करैत छल; मुदा राघवक चुप्पी आवाज बनि गेल छल। तेँ खाता बन्द।

सन्देश भेजि ओ फोन बन्द केलक। ओकर सभ फोनक पाछाँ रंगक छोटका बिन्दु लागल रहैत छल — लाल भारत, नीला सिंगापुर, हरियर दुबई, कारी नेपाल, पीयर हांगकांग। ओ बिन्दु सभ ओकरा बुझबैत छल जे देह कतय अछि, पैसा कतय अछि, आ मृत्यु कतय गनल नहि जाएत। भारतक बिन्दु पर ओकर नजर कनी बेसी टिकि गेल। ओ बिन्दु हिलल।

पहिने ओकरा लागल जे समुद्री हवा सँ पर्दा काँपल। फेर ओ देखलक जे पर्दा नहि, नक्शा काँपि रहल अछि। भारतक नक्शा पिक्सेल-पिक्सेल टूटि कऽ एकटा गाम बनि रहल छल। गामक नाम स्क्रीन पर नहि, पात पर लिखाएल छल। अक्षर हिलैत छल — गढ़ नारिकेल।

लाउ किन-हंग हँसल। ओकर हँसी बहुत छोट छल, जतेक एकटा सौदाक अन्तिम दशमलव। ओकरा विश्वास छल जे गाम नामक वस्तु बाजारमे एही लेल रहैत अछि जे शहर ओकरा कीनि सकय। गामक जमीन, गामक युवक, गामक बैंक खाता, गामक आत्मा — सभक भाव लगैत अछि। भाव नहि लागय तँ भाव लगाओल जाइत अछि।

ओ निन्न लेल पलंगपर गेल। पलंग समुद्र दिस खुलैत काँचक देबाल लग छल। ओ चादरपर सीधा पड़ल। ओकरा कखनो सपना नहि देखाइत छल। ओ कहैत छल — सपना गरीब लोक देखैत अछि; अमीर लोक प्रोजेक्शन देखैत अछि। मुदा ओहि राति, जखन समुद्रक कारी सतह पर चानक पातर रेखा खिंचल छल, ओकर पलक पर गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछीक धूलि बैसि गेल।

सपना समुद्रसँ शुरू भेल। समुद्र ओहि राति लहरि नहि मारैत छल; ओ श्वास लैत छल। एक बेर भीतर, एक बेर बाहर। लाउ किन-हंग अपन शीशाक घरमे ठाढ़ छल। घरक तलमे पानि रिसऽ लागल। ओ हँसल — बीमा अछि। पानि गोटेक इंच बढ़ल। ओ सोचलक — पम्प अछि। पानि घुटना धरि आयल। ओ सोचलक — आपात-निकास अछि। पानि छाती धरि आयल। ओ सोचलक — हेलिकाप्टर अछि।

मुदा पानि समुद्रक नहि छल। ओहि पानिमे नमकक गन्ध नहि छल। ओहि पानिमे अस्पतालक दवा, पुलक सीमेन्ट, मोबाइलक गरमी, आ जड़ायल नोटक सीलन छल। पानि रंगहीन छल, मुदा ओकर भीतर कतेको मृत्यु घुलल छल।

पानि पर पहिल वस्तु जे तैरि कऽ आयल, से एकटा मोबाइल छल। ओकर स्क्रीन बन्द छल, मुदा भीतरसँ उज्जर इजोत निकलैत छल। लाउ ओकरा उठाबए चाहलक। मोबाइल अपने खुलि गेल। स्क्रीनपर एक युवकक चेहरा उभरल — आँखि भीतर धँसल, ओठ सूखल, गलामे रस्सीक नील चिन्ह। ओ कहलक — 'हम उज्ज्वल झा। हमर हार कोन देशक लाभमे लिखल गेल?'

लाउ मोबाइल छोड़ि देलक। दोसर मोबाइल आयल। ओहिपर एक स्त्री छल — माथपर टोकरी, आँखिमे नदीक काजर। ओ कहलक — 'हम सरयू। पुलक पायासँ खसल देहक बीमा अहाँक कोन सहायक कम्पनीमे जमा भेल?'

तेसर मोबाइल आयल। ओहिमे आवाज छल, चेहरा नहि। आवाज कहलक — 'हमरा डिजिटल अरेस्ट कहल गेल। हम घरक गहना बेचि देलहुँ। बादमे पता चलल जे कानूनक वर्दी स्क्रीन पर पहिरल गेल छल। हमर भयक कमीशन कतय गेल?'

चारिम मोबाइल आयल। पाँचम। दसम। सयम। पानि भरि गेल मोबाइलसँ। सभ स्क्रीन पर एक्के प्रश्न अलग-अलग रूपमे चमकि रहल छल — 'हमर मृत्यु कोन देशक कानूनमे लिखल अछि?'

लाउ किन-हंग चीखब चाहलक, मुदा ओकर मुँहसँ आवाज नहि निकलल। ओकर भाषा प्रतिशत छल; प्रतिशतक भीतर रोदन लेल कोनो शब्द नहि होइत अछि। ओ हाथ उठौलक, जइ हाथसँ ओ बरखों धरि दुनिया भरि आदेश लिखैत रहल छल। हाथक रेखा सभ स्क्रीनक दरार जेकाँ चमकए लागल।

तखन पानिमे एकटा गोहि देखाइ देलक। हांगकांगक समुद्रमे गोहि? ओ सोचलक — असम्भव। मुदा सपना असम्भवक सीमा-शुल्क नहि भरैत। गोहि कारी छल। ओकर दाँतमे एकटा फोन फँसल छल। फोनक स्क्रीन पर चन्द्रपाल बत्राक चेहरा हँसि रहल छल। गोहि धीरे-धीरे चिबाबए लागल। बत्राक चेहरा पिक्सेलमे टूटि गेला बाद सरयूक नाम बनि गेल।

दोसरा कोनासँ एकटा आर गोहि आयल। ओकर पीठ पर अदालतक मोहर लागल छल। तेसर गोहिक आँखिमे हार्वर्डक सभागारक इजोत छल। चारिम गोहिक पेट फुलल छल — ओ पेटमे ऑक्सीजन सिलिण्डर, वैक्सीनक शीशी, नकली दवाक डब्बा, आ बेटिङ्ग वॉलेटक क्यूआर चिह्न ठसाठस भरल छल।

गोहि सभ ओकरा घेरि लेलक। ओ डरायल नहि; ओ गिनती करय लगल। एक, दू, तीन, चारि। ओहि क्षण पानिमे चन्ना गाछीक भूत सभक कबड्डी सुनाइ देलक। आवाज समुद्रक

भीतरसँ नहि, मोबाइलक भीतरसँ उठि रहल छल। कबड्डी-कबड्डी नहि — नाम-नाम। उज्ज्वल। सरयू। मुन्ना। देविका। नन्द। आ हजार नाम जकरा ओ कहियो नहि सुनने छल।

सपना बदलि गेल। ओ अपना कैँ हार्वर्डक सभागारमे देखलक। मंचपर एडवर्ड ब्रूम बाजि रहल छल — 'मानव गरिमा विकासक आत्मा अछि।' सभागार ताली बजा रहल छल। लाउ किन-हंग पाछाँक अन्हारमे बैसल छल। ओकर सामने टैबलेट पर आँकड़ा चलि रहल छल। ब्रूमक प्रत्येक शब्दक नीचाँ एक राशि चमकैत — गरिमा: पैंतालीस लाख। विकास: बारह करोड़। नैतिकता: आठ प्रतिशत। दक्षिण एशिया संचालन: उच्च जोखिम, उच्च लाभ।

तखन सभागारक छतसँ पानि टपकए लागल। प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स अपन नोट बचबऽ लागली। ईरा आरुणि उठि कऽ मंच दिस नहि गेली; ओ बाहर लॉनमे बच्चा सभकेँ नाम पढ़ा रहल छली। लाउ बाहर ताकलक। प्रत्येक बच्चा एकटा पात पकड़ने छल। प्रत्येक पात पर ओही मोबाइलक चेहरा छल।

ब्रूम बाजैत रहल। पानि ओकर जूता छू गेल। ओ कहलक — 'ई प्रतीकात्मक स्थापना अछि।' सभ फेर ताली बजेलक। मुदा पानि बढ़ल। तालीक ध्वनि छपाक-छपाकमे बदलि गेल। लाउ देखलक — सभागारक बीच गढ़ नारिकेलक पीपर उगि गेल अछि। पीपरक डारिपर बूढ़बा भूत बैसल अछि।

बूढ़बा भूत ओकरा देखैत कहलक — 'अहाँक खाता बहुत साफ अछि। खाली एक कॉलम नहि अछि।'

लाउ किन-हंग पहिल बेर सपनामे बाजि सकल — 'कोन कॉलम?'

बूढ़बा भूत कहलक — 'निन्न।'

ओ जागि गेल। शीशाक घरमे वातानुकूलन चलि रहल छल। समुद्र बाहर अपन जगहपर छल। फोन बन्द। पर्दा कारी। हृदय तेज। ओ तुरन्त सुरक्षा-कक्षमे फोन लगेलक। उत्तर आयल —'सभ सामान्य।' ओ वित्त-कक्षमे फोन लगेलक। वैह उत्तर—'सभ सामान्य।' ओ भारत-संचालनमे सुरक्षित लाइन लगेलक। लाइनमे तीन सेकेंड चुप्पी। फेर एक स्त्रीक अभिलिखित आवाज आयल—'अहाँ जकरा फोन कऽ रहल छी, ओ नामक अभिलेखमे व्यस्त अछि।'

ओ फोन पटकि देलक। ओकर माथ पर पसीना छल। हांगकांगक सर्द काँचक कोठरीमे पसीना ओकरा अपमान जेकाँ लागल। ओ बाथरूममे गेल, मुँह पर पानि मारलक। दर्पणमे अपन चेहरा देखलक। चेहरा ओहि लोकक छल जे दुनियाँमे कतहु नहि मरैत, किएक तँ ओ कहियो कतहु जीवित घोषित नहि होइत।

भोरका चारि बजे ओकर मुख्य सहायक मेई लान आबि गेली। ओ एहन स्त्री छली जे बिना प्रश्न आदेश बुझि जाइत छल। ओ दरबाजा लग ठाढ़ भऽ कहलनि — 'भारत डेस्कमे व्यवधान अछि।' राघव सम्पर्कमे नहि। चन्द्रपाल बत्रा बारम्बार सुरक्षित पुष्टि माँगि रहल अछि। हरिहरन गढ़ नारिकेल गेल अछि।

लाउ किन-हंग धीरे पूछलक — 'गढ़ नारिकेल वस्तुतः अछि?'

मेई लान पहिल बेर ओकरा दिस पूरा देखलक। 'गाम अछि।' नक्शामे छोट। डेटामे नगण्य। मुदा एहि सप्ताह ओहि नामक खोज अत्यधिक बढ़ल अछि।

'किएक?'

'लोक नाम खोजि रहल अछि।' मृतकक। मजदूरक। डिजिटल ठगीक। दवा-कौड़ीक। आ किछु बच्चा सभ एकटा लोक-पाठशाला शुरू केलक अछि।

लाउ हँसए चाहलक। हँसी नहि आयल। ओ खिड़की दिस गेल। समुद्रक पानिमे भोरक पहिल इजोत पड़ि रहल छल। दूर जहाज पर कंटेनर सभक पंक्ति छल। प्रत्येक कंटेनर ओकरा कफिन जेकाँ देखाएल। ओ आँखि मिचलक। फेर तकलक। कंटेनर फेर कंटेनर छल।

मेई लान फाइल खोललनि — 'भारतीय संचालन बन्द करबाक आदेश दिअ? नुकसान कम रहत।' किछु नाम बदलि कऽ फेर प्रवेश कयल जा सकैत अछि।

लाउ जवाब देबाक बदला अपन टेबल लग आयल। ओकर टेबल पर एकटा वस्तु राखल छल जे राति नहि छल — पातर हरियर पात। नारिकेलक। पातसँ कच्चा पानिक आ हरियरीक हलुक गन्ध उठैत छल, जे वातानुकूलित हवामे कतहु नहि अँटैत छल। हांगकांगक शीशाक घरमे नारिकेल पात कत्तयसँ?

मेई लान पात दिस देखलनि। 'ई के आनलक?'

लाउ कहलक — 'कियो नहि।'

ओ पात उठेलक। पातक नस सभ सूक्ष्म रेखा जेकाँ छल — जेना बैंक ट्रान्सफरक नली। ओहि नसमे कतहुँ-कतहुँ कारी दाग छल। दाग पर आँखि टिकौलक तँ ओ अक्षर बनि गेल। अक्षर चीनी नहि, अंग्रेजी नहि, देवनागरी। लाउ ओकरा पढ़ि नहि सकल। मुदा ओकर भीतर कियो पढ़ि रहल छल — गढ़ नारिकेल।

ओ आदेश लिखए बैसल। वाक्य टाइप करबाक चाहलक — 'भारत संचालन तत्काल समेटू। प्रमाण मेटाउ।' की-बोर्ड पर ओकर अंगुरी चलल, मुदा स्क्रीन पर आयल — 'नाम नहि मेटत।'

ओ डिलीट दबौलक। वाक्य फेर आयल — 'नाम नहि मेटत।'

ओ सिस्टम बन्द केलक। स्क्रीन अन्हार भेल। अन्हारमे ओकर चेहरा देखाइ देलक। चेहरा पाछाँ, बहुत दूर, चन्ना गाछी देखाइ पड़ल। ओ बुझि गेल जे ओकर सपना खत्म नहि भेल। ओ जागल अछि, मुदा सपना ओकर पाछाँ जागि गेल अछि।

ओ मेई लानकेँ कहलक — 'भारतक अगिला रिपोर्ट कागच पर चाही।'

मेई लान चकित भेली। 'अहाँ कागच नहि रखैत।'

लाउ धीरे कहलक — 'स्क्रीन आब भरोसेक नहि रहल।'

मेई लान चलि गेली। ओ अकेल रहल। काँचक घरमे भोर भऽ गेल छल। समुद्र नीला छल, शहर जागि रहल छल, बाजार खुलबाक तैयारीमे छल। दुनिया सामान्य छल। केवल टेबल पर राखल नारिकेल पात सामान्य नहि छल। ओ पात सुखाइत नहि छल। ओकर हरियर रंग उनटे गाढ़ भऽ रहल छल, जेना दूर गढ़ नारिकेलमे कियो ओकरा एखने तोड़ि कऽ पठौने हो।

लाउ किन-हंग पात पर हाथ रखलक। ओ हाथ धड़कन अनुभव कयलक। पात जड़ नहि छल। ओ भीतरसँ बजि रहल छल।

बाजि रहल छल — 'आब अहाँक मोन टांगल।'

लाउ हाथ हटा लेलक। मुदा धड़कन ओकर हथेलीमे रहि गेल। ओहि दिनसँ ओकरा लाभक प्रत्येक रेखामे पानिक हलुक आवाज सुनाइ पड़य लागल। प्रत्येक खाता बन्द करबाक पहिने ओ देखैत — कतहु ओहि खाताक भीतर कियो बच्चा अपन नाम लिखि रहल अछि कि नहि।

दुपहरि धरि ओ तीनटा आदेश देलक — राघवक सभ एक्सेस बन्द, बत्राक भुगतान रोकू, हरिहरनक खर्च अलग कोषमे राखू। ई सभ सामान्य व्यापारिक निर्णय देखाइत छल। मुदा असलमे ई ओहि लोकक निर्णय छल जे अपन सपना सँ बचय चाहैत छल, आ एहि लेल सपनाक भीतरक सभ लोककेँ काटि फेकय चाहैत छल।

मुदा ओ नहि बुझलक जे जकरा काटल जाइत अछि, ओकर मोन पहिने स्वतंत्र भऽ जाइत अछि। राघवक चुप्पी पात बनि चुकल छल। बत्राक स्क्रीन चन्ना गाछी बनि चुकल छल।

हरिहरन ट्रेनमे बूढ़बा भूतक संग यात्रा कऽ रहल छल। आब लाउ किन-हंगक शीशाक घरमे नारिकेल पात बैसल छल।

साँझ पड़िते समुद्र पर पाछाँसँ एकटा कारी छाह उठल। सुरक्षा-कैमरामे किछु नहि देखाएल। उपग्रह-मानचित्रमे किछु नहि। मुदा लाउक आँखि देखलक — एकटा गोहि पानि पर सीधा ओकर घर दिस तैरि रहल अछि। ओकर मुँहमे फोन नहि छल। एहि बेर ओकर मुँहमे कागच छल।

लाउ परदा खिंचि देलक। मुदा पानिक आवाज शीशाक आर-पार आबि गेल।

ओ आवाज गढ़ नारिकेलक नहि, ओकर अपने मोनक छल। मोन टांगल रहि गेल छल। आ जे मोन टांगल रहि जाइत अछि, ओ एक दिन देहकेँ सेहो घीचि लैत अछि।

लोकगीत: शीशाघरमे छपाक

लोकधुन: समुद्र-विरहा

घीचत हे गाछी, एक दिन देहो घीचत हे,
जकर मोन गाम धरलक, से पानि सुनत हे।

काँचक घरमे समुद्र देखाइ, स्वर नहि सुनाइ,
सपनाक नाव सीमा-शुल्क बिना भीतर आय।
लाउक हथेलीमे पात धड़कल—‘मोन टाँगल’,
लाभक रेखा-रेखामे बच्चाक नाम जागल।
खाता काटि बचब चाहल, साथी सभ अलगायल,

काटल लोकक मोन पहिने स्वतन्त्र भऽ उड़ायल।
गोहिक मुँहमे एहि बेर कागच, फोन नहि,
परदा खिंचल, पानिक आवाज रोकल नहि।
शीशाक आर-पार छपाक अपन मोनक छल,
जकर मोन गाम धरलक, देह एक दिन घीचल।

काँचक घर मे समुद्र देखाए, स्वर ने सुनाए,
लाभक रेखा-रेखा मे नेनाक नाम जगाए।

❖

अध्याय ३०

धूर्त सभक भीतरक अदालत

बाहरक अदालतमे जीतल आ भीतरक अदालतमे हारल लोकक हँसीमे दाँतक खनखनी सुनाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: भीतरक न्याय दीप

लोकधुन: भगैत-न्याय मंगल

जराउ हे दीप, भीतरक अदालत मे जराउ हे,
अपने कर्मक बही अपने आगाँ बिछाउ हे।

बाहरक अदालत देर करै, भीतर दीप जरै,
विवेकक शान्त न्यायाधीश साँचक पन्ना धरै।
अपने काजक लेखा पढ़ू, दोषसँ नहि भागू,
सुधारक आदेश स्वयंकेँ देबामे नहि डेराउ।

भीतरक अदालत दण्ड मात्र नहि, दिशा,
पश्चात्तापसँ कर्म धरि बनाबै नव आशा।
न्याय दीप भीतर जरत तँ बाहर बाट साफ,
मनक साँचक फैसला जीवन करै निष्पाप।

भगैतक सुर गाबि-गाबि साँचक कथा कहू,
दोषक ताप सहि कऽ सुधारक बाट गहू।
पश्चात्तापक निर्मल जलसँ मन-आँगन नीपू,
भीतर बरल दीप लऽ कऽ बाहरक पथ जीतू।

❖

पाँचू धूर्तक मोन आब टांगल छल; आ टांगल मोनक लेल चन्ना गाछी अपन अदालत खोलैत अछि। मनुष्य जखन बाहरक अदालतमे जीतैत अछि आ भीतरक अदालतमे हारैत अछि, तखन ओकर चाल पहिनेसँ बेसी नापल-तौलल भऽ जाइत अछि। ओ हँसैत अछि, मुदा हँसीक बीच दाँतक खनखनाहट रहैत अछि। ओ कागच मोड़ैत अछि, मुदा कागचक मोड़सँ आवाज नहि, छपाक बहराइत अछि। ओ कहैत अछि — मामिला समाप्त। मुदा ओकर तकियाक नीचाँ राति भरि कोनो अदृश्य मुंशी तारीख लिखैत रहैत अछि।

ओहि राति तीन शहरमे, तीन अलग-अलग कमरामे, तीन लोक एक्के बेरा जागि गेल। बटुकनाथ हरिहरन अपन महँग कुर्सीपर, चन्द्रपाल बत्रा अपन स्क्रीनक आगाँ, आ राघव सिग्नल

अपन बन्द खिड़कीक भीतर। समुद्रक पार लाउ किन-हंग सेहो जागल, मुदा ओकर जागरणमे देहक पसीना नहि छल; ओकर शीशाक घरक देबालपर भारतक नक्शा पानिसँ बनि रहल छल।

ककरो फोन नहि बाजल। कोनो समन नहि आयल। कोनो हाजिरी-पर्ची नहि। तथापि सभकेँ बुझा गेल जे हुनका कतहु उपस्थित होमए पड़त। ई ओ अदालत नहि छल जतऽ कारी कोट पहिरल लोक अपन आवाजकेँ कानून कहैत अछि। ई ओ अदालत छल जतऽ आवाज पहिने मनमे उठैत अछि आ बादमे मुँह खोजैत अछि।

बटुकनाथ हरिहरन पहिने अपन जीतक आदेश खोजलक। ओ कागच ओ सदिखन तकियाक नीचाँ नहि, छातीक लग राखैत छल। कागच भेटल। मोहर साफ। हस्ताक्षर साफ। भाषा ओहने ठस, जहिना ओ चाहैत छल — ‘प्रक्रियात्मक दोषक कारण याचिका निरस्त।’ ओ मुस्कुराओए चाहलक। मुदा ‘निरस्त’ शब्दक बीचसँ ‘नन्द’ बहरायल। फेर ‘सरयू’। फेर ‘उज्ज्वल’। फेर कतेको एहन नाम जकरा ओ कहियो सुनने नहि छल, मुदा जकरा मिटेबाक पइसा ओकर मेज धरि पहुँचने छल।

ओ उठि कऽ बत्ती जरेलक। कमरा वैह छल, मुदा कमरा वैह नहि छल। देबाल पर कानूनक डिग्री सभ टाँगल छल; सभ प्रमाणपत्रक काँचक भीतर छोट-छोट पात अटकल। पातपर नाम। मेजक सामने, जतऽ ग्राहक बैसैत छल, ओहि कुर्सीपर एकटा बालक बैसल छल। घुटना धरि आधा पैंट, आँखिमे वैह भूख जे बटुकनाथक बाल्यकालमे रहैत छल, जखन ओ पहिल बेर वकालतक किताब देखलक आ सोचलक — एहि किताबसँ लोककेँ बचाओल जाएत।

बालक बाजल — ‘नाम पढ़ू।’

बटुकनाथ कड़क स्वर बनओलक — ‘ककरा अधिकारसँ?’

बालक हँसल नहि। ओकर हाथमे हथौड़ी नहि छल। ओकर हाथमे पीपरक पात छल। ओ पात टेबुल पर राखि देलक। आवाज भेल — टक। अदालत शुरू भऽ गेल।

‘हम बार काउन्सिलक अध्यक्ष छी,’ बटुकनाथ बाजल।

‘तेँ नाम पढ़ू,’ बालक फेर कहलक। ‘जे लोकक नाम अहाँ प्रक्रिया कहि कऽ रोकलहुँ, ओ सभक उच्चारणसँ अहाँक पद घटत नहि।’

बटुकनाथ मुट्ठी बाँधलक। ओकरा अनुभूति भेल जे ओकरा पहिल बेर कोनो न्यायाधीश नहि, ओकर बाल्यकाल सुनि रहल अछि। न्यायाधीशकेँ डराओल जा सकैत अछि, बाल्यकालकेँ नहि। बाल्यकाल ओ ठाम अछि जतऽ लोक अपन पहिल झूठ रखैत अछि आ जीवन भरि ओकर सुरक्षा करैत अछि।

ओ नाम पढ़बासँ इन्कार केलक। तखने ओकर कानमे कबड्डीक ध्वनि आयल। चन्ना गाछी दूर छल, मुदा ध्वनि लग। ‘कबड्डी-कबड्डी’ नहि; ‘नाम-नाम’। ओ कान ढाँकलक। ध्वनि भीतरसँ आबि रहल छल।

ओही समय चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन पर एकटा खिड़की खुलल। शीर्षक छल — ‘खाता मिलान’। ओ खिड़की ओ नहि खोलने छल। ओकर लिपिक सेहो नहि। स्क्रीन पर एक-एक कऽ खाता आयल — मुन्ना पासवान, बबलू साह, अरमान, उज्ज्वल झा, रंजीत, नीरज, साबिर, ललिता, अजित, अनाम। ओ माउस घुमेलक, बन्द करए चाहलक। खिड़की बन्द भेल। तखने ओकर मोबाइल बजल। स्क्रीन पर फेर वैह खाता।

चन्द्रपाल बत्रा मेरठक अपन डिग्री मोन पाड़लक। ओहि डिग्रीक पीयर कागचक गन्ध ओकर नाकमे घुसल। ओ पहिने छोट वकील छल। दुर्घटना-क्षतिपूर्ति, जमीन-पट्टी, पुलिस थाना, जमानत। ओहिमे कमाइ कम छल, मुदा रातिमे निन्न आबैत छल। बादमे ओ खाताक भाषा सीखलक। खाता जे लोक नहि, रास्ता होइत अछि। खाता जकरा खोलैत अछि भूख, चलबैत अछि गिरोह, आ बन्द करैत अछि पुलिस।

स्क्रीनक भीतर एकटा अदालत बनल। न्यायाधीश नहि; रिक्त कुर्सी। अभियोजन नहि; फाटल पासबुक। बचावपक्ष नहि; ओकर अपन आवाज। ओ तर्क देलक — ‘सहमति छल। खाता मालिक अपन कागच देने छल।’

फाटल पासबुकक पन्ना हिलल। आवाज आयल — ‘भूखक सहमति आ कानूनक सहमति एक नहि होइत।’

चन्द्रपाल चिढ़ि गेल। ओ कहलक — ‘ई भावुकता अछि। व्यापार भावुकतासँ नहि चलैत।’

पासबुक हँसल। कागचक हँसी मनुष्यक हँसीसँ बेसी करुण होइत अछि। ‘व्यापार तखन धरि व्यापार अछि जखन धरि कीननिहार जनैत अछि जे ओ की कीनैत अछि। अहाँ लोकक भविष्य कीनलहुँ आ ओकरा खेल कहि बेचि देलहुँ।’

चन्द्रपाल स्क्रीन तोड़बाक लेल पेपरवेट उठेलक। मुदा पेपरवेटक भीतर गंगाक पानि भरि गेल छल। ओ भारी भऽ गेल, ओकर कलाई काँपि उठल। स्क्रीन पर उज्ज्वलक फोटो नहि, ओकर अन्तिम ऋण-संदेश देखाइ पड़ल। शब्द सभ पँजियाएल कीड़ा जेकाँ हिलैत छल — ‘आइ अन्तिम चेतावनी। डिजिटल गिरफ्तारीक आदेश जारी।’

‘डिजिटल गिरफ्तारी,’ चन्द्रपाल बुदबुदेलक। ‘हम मात्र सलाहकार...’

स्क्रीन भीतरसँ आवाज आयल — ‘सलाहकार ओ होइत अछि जे रास्ता बताबए। अहाँ खड्ड देखबैत छलहुँ आ कहैत छलहुँ — रास्ता एतहि अछि।’

राघव सिग्नल अपन कमरामे आवाजक प्रतीक्षा करैत रहल। ओकर जीवनक आधा भाग आवाज हटेबामे गेल छल। गायब होएबला सन्देश, मिटएबला चैट, दोसरक नामपर सिम, नकली परिचय, कमिशनक टुकड़ी, सुरक्षित रास्ता। ओ मानैत छल जे जे बात पाँच सेकेंड बाद मेटि जाए, ओ बात कहियो जन्मल नहि।

मुदा ओहि राति ओकर टेबुल पर पात झड़ए लागल। खिड़की बन्द। पंखा बन्द। तथापि पात। प्रत्येक पात पर एक अधूरा वाक्य — ‘खाता खोलू…’ ‘आधार भेजू…’ ‘बूढ़ाकेँ डराउ…’ ‘विडियो कॉल पर पुलिस बनू…’ ‘तीन प्रतिशत…’ ‘लड़कीक फोटो राखू…’ ‘साँझ धरि पैसा…’

राघव एक-एक पात उठबैत आगि लगए चाहलक। आगि नहि लागल। पात भीजल नहि छल, मुदा जरल नहि। ओ बुझलक — ई पात गाछक नहि, स्मृतिक अछि। स्मृति नमीसँ नहि, नामसँ भीजल रहैत अछि।

ओ लाउ किन-हंगकेँ सन्देश लिखलक — ‘बाहर निकालू।’ सन्देश गेल नहि। ओकर ठाम लाल चिन्ह आयल। फेर स्क्रीन पर उत्तर नहि, एक दर्पण खुलल। दर्पणमे राघव अपन चेहरा नहि देखलक; ओ सभ चेहरा देखलक जकरा ओ ‘छोट खाता’ कहैत छल। कॉलेजक लड़का, वृद्धा, रिक्शा चालक, बेरोजगार स्नातक, घरमे बीमार मायक लेल ऋण ताकैत बेटा।

दर्पणमे एक वृद्धा पूछलक — ‘बाबू, जखन तोहर आवाज पुलिस बनि हमरा कहलक जे बेटा जेल जाएत, तखन तोरा निन्न आबि गेल छल?’

राघव कान बन्द कयलक। मुदा प्रश्न कानसँ नहि, गर्दनक पाछाँ चिपकि गेल। ओहि ठाम मोन टाँगल रहैत अछि जखन लोक अपन बचबाक रास्ता नहि देखैत।

समुद्र पार लाउ किन-हंग अपन शीशाक घरमे चलि रहल छल। ओकरा भीतरक अदालत ओकर भाषा नहि बाजैत छल। ओ अंग्रेजी, चीनी, हिन्दी, कानूनी अनुवाद — सभक लेल दुभाषिया राखि सकैत छल। मुदा ई अदालत गन्धमे बाजैत छल। ओकर घरमे नमक, लोभ, जड़ायल नोट, सस्ता जीवन, आ दूर देशक मायक रोदनक गन्ध भरि गेल।

ओकर सामने एक लंबा मेज उगि आयल। मेज पर कोनो फाइल नहि। केवल कटोरा। प्रत्येक कटोरामे किछु सिक्का, किछु दवा, किछु रक्तक बून्द, किछु मोबाइलक टुटल काँच। ओ बुझल नहि। फेर समुद्रक लहर काँचक देबाल धरि उठल आ प्रत्येक कटोराक वस्तु एक आकृति बनि गेल — पुल, अस्पताल, खेल-ऐप, देह-बाजार, हथियार-बक्सा, नशाक पुड़िया।

एक आवाज पूछलक — 'प्रतिशत कहू।'

लाउ किन-हंग मुस्कुरेलक। प्रतिशत ओकर धर्म छल। ओ कहलक — 'जोखिमक हिसाब व्यापारक मूल अछि।'

आवाज शांत रहल — 'मृत्युमे अहाँक हिस्सा कतेक?'

पहिल बेर ओ चुप भेल। ओकरा बुझाइत छल जे देहक हत्या ओ नहि करैत। ओ केवल प्रणाली बनबैत। ओ केवल पैसाकेँ एक जगह सँ दोसर जगह पठबैत। ओ केवल दरबाजा खोलैत। ओकरा लग सभ अपराध दोसरक हाथमे घटैत छल। मुदा भीतरक अदालतमे हाथ नहि, हिस्सा देखल जाइत अछि।

एडवर्ड ब्रूमक राति सेहो स्थिर नहि छल। ओ अपन अगिला भाषणक मसौदा पढ़ि रहल छल — 'मानवीय गरिमा आ विश्व-उद्यम'। शब्द बहुत सुन्दर छल। ओकर सचिव लिखने छल, प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स संशोधित केने छलीह। प्रत्येक वाक्य श्वेत कागच पर स्वच्छ। मुदा जखन ओ 'गरिमा' शब्द पढ़लक, कागचक किनार सँ कीचड़ बहल। कीचड़मे सुरक्षा-रिपोर्टक झूठ, वैक्सीन-बिलक सूजन, आ मजदूरक खुरदुर हाथक छाप छल।

ओकर भीतरक अदालत सभसँ सभ्य छल। ओतय लकड़ीक पैनल, मुलायम इजोत, शान्त कुर्सी, आ ध्वनि-रोधी देबाल छल। मुदा न्याय सदिखन शोरसँ नहि आबैत; कखनो-कखनो शान्ति अतएव भयावह होइत अछि। ओतय न्यायाधीशक रूपमे कोनो भूत नहि, ओकर अपन भाषणक ताली बैसल छल। ताली बेर-बेर बजैत, फेर रुकैत, फेर प्रश्न करैत — 'जखन अहाँक शब्दमे गरिमा छल, अहाँक खातामे कतेक अनुपस्थित देह छल?'

ब्रूम कहलक — 'हमरा प्रत्यक्ष जानकारी नहि छल।'

ताली उत्तर देलक — 'लाभ प्रत्यक्ष छल?'

ओ चुप। लाभक गन्ध ककरो दुभाषिया नहि माँगैत।

एहि चारू भीतरक अदालतमे एक कुर्सी खाली छल। बटुकनाथक कमरामे, चन्द्रपालक स्क्रीनमे, राघवक पात-अदालतमे, लाउ किन-हंगक शीशाघरमे, ब्रूमक सभ्य कक्षमे — सभ ठाम एक्के खाली कुर्सी। ओ कुर्सी पर नाम नहि। मुदा सभ बुझैत छल जे ओ सत्यव्रत मेहताक कुर्सी नहि। ओ कुर्सी ओहि लोक सभक लेल अछि जकरा ओ सभ हरौने छल।

धूर्त सभ चाहैत छल जे ओ लोक आबथि, कानथि, झुकथि, समझौता माँगथि, पुनर्विचार याचिका दायर करथि, मीडियामे बयान दथि, आ फेर हारथि। जीतक सुख विपक्षीक

उपस्थितिसँ बनैत अछि। विपक्षी गुम भऽ जाए तँ जीत कागचमे फँसल पीयराहट बनि जाइत अछि।

ओ सभकेँ भीतरक अदालत एक्के प्रश्न पूछलक — 'जकरा हरौलहुँ, ओ कतय अछि?'

बटुकनाथ कहलक — 'चन्ना गाछीमे।'

चन्द्रपाल कहलक — 'डिजिटल पाठशालामे।'

राघव कहलक — 'पात सभमे।'

लाउ किन-हंग कहलक — 'भारतक छोट-छोट मोबाइलमे।'

ब्रूम कहलक — 'सभागारक बाहर।'

प्रश्न फेर आयल — 'तखन अहाँ सभ एतय किए?'

कोनो उत्तर नहि। तखन अदालतक फर्श पर एक पातर रेखा खिंचल — बाहरक दुनियाँसँ भीतरक दुनियाँ धरि। ई रेखा सड़क नहि छल; ई मोनक खाँच छल। जे जतेक मिटाबए चाहत, ओतेक गहींर होइत जाएत।

भोरक आगाँ-आगाँ चारू शहरमे लोक अपन-अपन बिछौना पर भेटल। बटुकनाथक हाथमे जीतक आदेश छल, मुदा ओकर अंगूठा नामक ठाम दबल। चन्द्रपालक स्क्रीन बन्द छल, मुदा काँचक भीतर सँ उज्ज्वलक अधूरा सन्देश चमकैत। राघवक टेबुल साफ छल, मुदा एक पात ओकर जेबीमे भेटल — 'साक्ष्य अनुपस्थित नहि होइत।' लाउ किन-हंगक शीशाघर सुखायल छल, मुदा नमकक एक महीन रेखा भारतक नक्शा बना गेल। ब्रूमक भाषणक मसौदा साफ छल, मुदा 'गरिमा' शब्दक नीचाँ कीचड़ जमल।

आ गढ़ नारिकेलमे ओहि समय बच्चा सभ नारिकेल पात पाठशालाक आँगन झाड़ि रहल छल। देविका पहिल पाठक पट्टी पर लिखैत छलीह — 'डिजिटल डर सँ डेराउ नहि।' मीरा दोसर पट्टी पर लिखैत छलीह — 'निजता देहक छाह थीक।' सौम्या पुरान कागच लोकभाषामे उतारैत छलीह। ईरा दूर देशक सभागार छोड़ि नामक उच्चारणक अभ्यास करा रहल छलीह।

धूर्त सभ भीतरक अदालतमे पहिल तारीख काटि आएल। मुदा हुनका सभकेँ दण्ड नहि भेटल। दण्डसँ बेसी कठोर चीज भेटल — प्रतीक्षा। ओ सभ आब ओहि लोककेँ ताकए बाध्य छल, जे लड़बाक लेल नहि, बनाबाक लेल चलि गेल छल।

चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत ओहि भोर कनी देर धरि जागल रहलाह। ओ पात उलटि कऽ देखलनि। पातपर अगिला तारीख लिखल छल — सपनाराति। ओ मुस्कुरेलाह। मनुष्यक

अदालत तारीख दैत अछि ताकि मामिला टलय। भीतरक अदालत तारीख दैत अछि ताकि आत्मा टलि नहि सकय।

लोकगीत: भीतरक अदालत

लोकधुन: भगैत-न्याय गीत

टारै हे बाहर, भीतरक अदालत ने टारै हे,
मोनक फर्श पर खिंचल रेखा ने मेटाए हे।

बाहरक अदालत टारै, भीतरक टारै नहि,
मोनक फर्शपर खिंचल रेखा मेटै नहि।
जीतक आदेश अंगूठा तरे नामपर दबायल,
गरिमा शब्द नीचाँ कीचड़ फेर जमायल।
नूनक महीन रेखामे भारतक नक्शा बनल,

बन्द स्क्रीन भीतर उज्ज्वलक सन्देश जलल।
दण्ड नहि भेटल, प्रतीक्षा भेल कठोर,
जिनका हरौल, ओ बनबै भविष्यक भोर।
मनुष्यक तारीख मामिला टारए लेल,
आत्माक तारीख आत्मा नहि टरए लेल।

अंगूठा तर दबल आदेश, नाम नीचाँ कीचड़,
गरिमा शब्द दबल रहल, फेर जमल पीड़।
नूनक महीन रेखा मे नक्शा उभरल,

❖

अध्याय ३१

हारल लोक सभक काज

हारल लोक नारा नहि लगबै छै— ओ भोरे उठि कऽ दोसराक नाम उठबै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: हारल लोकक कर्म विजय

लोकधुन: श्रमगीत

हँ हो भैया, हारियो कऽ जीतू हो,
झण्डा नहि, कोदारि धरू, कर्मक गीत गाबू हो।

न झण्डा, न मंच, हारल लोक काजपर,
विद्यालय, खेत, सहायता, नेनाक समाजपर।
कर्मक शान्त विजय कागचक जीतसँ पैघ,
जकर श्रम जीवन सुधारे, सएह असल नेह।

हार नहि जँ हाथ चलै, ज्ञान बाँटल जाए,
दिन-दिन छोट सुधारसँ भविष्य रूप बनाए।
हारल लोकक कर्म विजय चुपचाप फूलत,
न्यायक असल इतिहास जनक श्रमसँ खुलत।

भोरे-भोर विद्यालय, दुपहर खेत-खरिहान,
साँझ सहायताक चौपालि, राति नेनाक ध्यान।
कागचक जय-पराजय दिन बीतल बिला जाए,
हाथक बनल छोट सुधार युग भरि रहि जाए।

❖

भीतरक अदालत धूर्त सभकेँ प्रतीक्षामे बान्हि देने छल; एम्हर जकरा सभकेँ अदालतमे हारल कहल गेल छल, ओ सभ भोर भेने उठि कऽ ककरो विरुद्ध नारा नहि लगेलक। ओ सभ ककरो घरक आगाँ ढोल नहि बजेलक। ओ सभ बटुकनाथ हरिहरनक नामपर कारी झण्डा नहि बनौलक, चन्द्रपाल बत्राक पुतला नहि जरौलक, लाउ किन-हंगक फोटोपर कालिख नहि पोतलक। ओ सभ हारल लोक जेकाँ नहि, खेतमे बिया छिटनिहार लोक जेकाँ उठल।

चन्ना गाछीक अदालतक राति बीतल छल। पात सभ पर ओस टिकल छल, आ ओसक भीतर मुँह झुकौने जे कियो देखैत, तकरा अपन चेहरा नहि, कोनो मरल लोकक नाम देखाइत। बूढ़बा भूत ओहि भोर डारि पर बैसि कऽ किछु नहि बजलाह। भूत सभ सामान्यत: फैसला भेलाक बाद हँसी-मजाक करैत छल, मुदा ओहि दिन सभ चुप छल। कारण चन्ना गाछीक

अदालत जखन निर्णय दैत अछि, तखन निर्णयसँ बेसी ओहि निर्णयक बाद लोक की करैत अछि, से देखैत अछि।

आरुणि सभसँ पहिने उठल। ओकरा राति भरि निन्न नहि आयल छल। ओ सोचैत रहल जे जँ न्यायालयक कागच हार कहैत अछि आ चन्ना गाछी जीत, तखन मनुष्य कोन कागच पर भरोसा करत? बा कहने छलीह — 'जतय कागच आ पातमे झगड़ा हो, ओतय बच्चाक आँखि देखू।' आरुणि बाहर गेल। अनन्या ओहिये सँ आगाँ उठल छल। ओ माटि पर लकड़ीसँ गोल-गोल घेरा बना रहल छली।

'की बना रहल छैँ?' आरुणि पूछलक।

अनन्या बिना माथ उठौने कहलक — 'कबड्डीक मैदान। मुदा एहि बेर बीचमे रेखा नहि होएत। जे हारल कहल जाएत, ओ बाहर नहि जाएत। ओकरा दोसर काज देल जाएत।'

आरुणि चुप रहि गेल। ओकरा बुझा गेल जे बच्चा सभ रातिक फैसला पहिने पढ़ि लेने अछि।

देविका साह ओहि भोर अपन भाय उज्ज्वलक फोटो नहि, ओकर पुरान मोबाइल लऽ कऽ आयली। मोबाइल बन्द छल, स्क्रीन फूटल छल, भीतरक सभ बात शायद समाप्त। मुदा देविका ओकरा चन्ना गाछीक जड़ि लग नहि राखलक। ओ मोबाइल हाथमे लेने पाठशाला दिस गेली। गामक पुरान चौपाल, जतय कहियो लग्नक गोसाइँ बैसैत छलाह, जतय पानक पीकसँ देबाल लाल रहैत छल, ओहि देबाल पर ओ पहिल वाक्य लिखली —

'स्क्रीनक गोहि पहिने जीत देखबैत अछि, फेर घर खाइत अछि।'

बच्चा सभ हँसल नहि। बूढ़ सभ सेहो नहि। सभकेँ बुझा गेल जे ई पाठ्य-पुस्तकक पहिल पाठ नहि, उज्ज्वलक मृत्यु बादक पहिल श्वास अछि।

निशांत झा, जे विदेशक गिनती-घरमे बैसि लाखो रूपैयाक अंकीय धारा देखैत छल, ओ आब गामक बच्चा सभकेँ खाता बुझा रहल छल। ओ अंग्रेजी शब्द नहि बजल। ओ कहलक — 'देखू, जँ अहाँ अपन नामक खाता दोसराकेँ दैत छी, तँ ओ अहाँक देह नहि, अहाँक छाह भाड़ा पर लैत अछि। जे पैसा ओहि छाह सँ घुमत, ओकर धुआँ अहाँक घरमे आबत। म्यूल खाता माने दोसरक अपराधक बोझ अपन कान्ह पर लादब।'

मुन्ना पासवान ओतय चुपचाप बैसल छल। ओ पहिने मुँह नुकाबैत छल, कारण ओकर खाता सँ पैसा घुमल छल। मुदा देविका ओकरा आगाँ बैसओलक। 'जे फँसल अछि, ओ दोषी

होएबाक पहिनेसँ साक्षी होइत अछि,’ ओ कहली। मुन्नाक आँखि भरि आयल। पहिल बेर ओकरा लागल जे पुलिसक कागचक बाहर सेहो ओकर कोनो नाम अछि।

सौम्या रामनाथन ओहि दिन कागचक गठरी लऽ कऽ आयली। ओहि कागचमे पुलक हिसाब छल, दवाइक बिल छल, वैक्सीनक खरीद छल, अस्पतालक श्वासक भाव छल, देह-बाजारक सूची छल, डिजिटल ठगीक खाता छल, आ अदालतक तारीख सभ छल। ओ सभ कागच पहिने मोट-मोट भाषामे छल — एहन भाषा जाहिमे पीड़ा अनुवादित भऽ कऽ निर्जीव बनि जाइत अछि। सौम्या ओ सभकेँ मुँहसँ पढ़ब शुरू केली। प्रत्येक पंक्तिक बाद ओ ओकरा गामक भाषामे बदलि दैत गेली।

‘अघोषित मृत्यु’ — ओ पढ़लक। फेर कहली — ‘माने, लोक मरल मुदा कागच कहलक, नहि मरल।’

‘प्रक्रियात्मक विलम्ब’ — ओ पढ़लक। फेर कहली — ‘माने, जकर बाप मरल, ओकर बेटा बूढ़ भेल; तखनो तारीख आबि रहल अछि।’

‘आर्थिक समायोजन’ — ओ पढ़लक। फेर कहली — ‘माने, जकरा दवाइ चाही छल, ओकर दाम ककरो लाभमे घुसि गेल।’

गामक बूढ़ लोक सभ पहिने-पहिने एहन दस्तावेज सँ डेराइत छल। मुदा जखन कागच अपन भाषा बदललक, तखन ओ सभ डरब बन्द केलक। कागचक पात जखन लोकक बोलीमे बाजैत अछि, तखन ओ दफ्तरक वस्तु नहि रहैत; ओ घरक गवाही बनि जाइत अछि।

मीरा ओहि दिन देर सँ आयली। ओकर चालमे ओ डर नहि छल जे अध्याय सभक बीच-बीचमे ओकरा घेरैत छल। समाज ओकर प्रेमकेँ अपराध बनाबय चाहैत छल, कम्पनी ओकर निजताकेँ फाइल बनाबय चाहैत छल, आ चन्द्रपाल बत्राक लोक ओकर फोटो, संदेश, आवाज, छाह सभकेँ बाजारक माल बनाबय चाहैत छल। मुदा चन्ना गाछीक अदालत बाद ओ अपन गलामे कारी दोपट्टा नहि, उज्जर कपड़ा बाँधने आयली।

ओ चौपालक बीच ठाढ़ भऽ कऽ कहली — ‘ककरो प्रेम ककरो विरुद्ध साक्ष्य नहि बनत। ककरो देहक गोपनीयता ककरो बाजार नहि बनत। ककरो डर ककरो कमाइ नहि बनत।’

किछु स्त्री सभ माथ झुकौने रहलीह। किछु युवक सभ आँखि चोरबैत छल। मीरा ओकरा सभकेँ दोष नहि देलक। ओ कहली — ‘जे बात कहयमे डर लगैत अछि, ओही बात सँ ठग सभ कमाइत अछि। जकरा अहाँ लाज मानैत छी, ओकरा ओ सभ हथियार बनबैत अछि। आइ सँ लाज अहाँक नहि, हथियार बनौनिहारक।’

देविका ओकर कातमे ठाढ़ भेली। सौम्या कागच बन्द केली। अनन्या बच्चा सभकेँ देखलक। ओ सभ एक साथ हाथ उठौलक। कोनो धार्मिक शपथ नहि, कोनो अदालतक शपथ नहि, कोनो पार्टीक नारा नहि। केवल एतबा —

'हम ककरो निजता केँ तमाशा नहि बनायब। हम ककरो डर बेचब नहि। हम जँ कोनो ठगी देखब, तकर नाम कहब। हम जँ ककरो टूटैत देखब, ओकरा अकेल नहि छोड़ब।'

ओहि शपथक समय चन्ना गाछीक पात कनी हिलल। बूढ़बा भूत पहिल बेर मुस्कुरेलाह। हुनका बुझा गेल जे मृतक सभक नाम लिखब जतेक जरूरी अछि, जीवित सभक निजता बचाएब सेहो ओतबे जरूरी अछि। मृत्यु केवल गोहिसँ नहि होइत; लाजक डर सँ सेहो लोक भीतर-भीतर डूबि जाइत अछि।

ईरा आरुणि ओहि दिन परदेस सँ घुरल नहि छल, मुदा ओकर आवाज आयल। ओ आवाज मोबाइलक स्पीकर सँ नहि, नारिकेलक पातक फाँक सँ आयल जेकाँ। ओ हार्वर्डक सभा छोड़ि चुकल छल। ओकरा किछु लोक कहलनि जे ओ अपन भविष्य बरबाद कऽ रहल अछि। ओ उत्तर देलक — 'जकर भविष्य दोसरक नाम मेटा कऽ बनैत अछि, ओ भविष्य नहि, भाड़ाक घर अछि।'

ओ विदेशमे एक छोट सभा शुरू केलक। नाम — 'पात-पाठ'। ओतय भारतीय, अफ्रीकी, लातिनी, एशियाई, सभ देशक विद्यार्थी बैसैत। ईरा हुनका सभकेँ गढ़ नारिकेलक कथा सुनबैत। ओ कहैत — 'नैतिकता पर भाषण दैत सभागार सँ पहिने ओ मजदूरक नाम पढ़ू, जकरा अहाँक कम्पनीक पुल खा गेल। विकासक प्रस्तुति सँ पहिने ओ बच्चाक नाम पढ़ू, जे स्क्रीनक कर्जमे मरि गेल।'

विदेशक सभागार सभमे ईरा कोनो नारा नहि लगबैत। ओ केवल नाम पढ़ैत। नाम सुनब सभसँ पैघ प्रश्न छल। कारण सवालक उत्तर देल जा सकैत अछि; नामक नहि। नाम जखन पढ़ल जाइत अछि, तखन सभ सुननिहार अपन सीट पर कनी असुविधा अनुभव करैत अछि। वैह असुविधा नब नैतिकताक जन्म थिक।

गोप कुमार एहि सभकेँ दूरसँ देखैत छल। ओ किछु दिन सँ बहुत कम बजैत छल। डेटा ओकरा लग आबो छल, मुदा ओ बूझि गेल छल जे डेटा जँ लोकक हाथ धरि नहि पहुँचल, तखन ओ फेर कोनो नव सीलबन्द आवरण बनि जाएत। ईशान दत्त, छाह-विहीन इन्फॉर्मर, ओकरा एक राति कहने छल — 'फाइलकेँ लोकक बोलीमे बदलू। नहि तँ फाइल ओहि लोकक होएत जे ओकरा बन्द कऽ सकैत अछि।'

तँ गोप कुमार गामक दू युवककेँ लऽ कऽ पुरान पीपर तर बैसल। ओ डेटा कँ कथा बनबय लगल। ओ कहलक — 'पहिल तालिका — मजदूरक नाम। दोसर — भुगतान। तेसर — ककर खातासँ ककरा गेल। मुदा अहाँ ई सभ संख्यासँ नहि, सम्बन्धसँ बुझू। एहि नामक कातमे ओकर घर लिखू। घरक कातमे ओकर बच्चाक नाम। बच्चाक नामक कातमे ओ सपना जे ओ मजदूर अपन बच्चा लेल देखने छल।'

एक युवक पूछलक — 'सपना कागचमे कोना लिखब?'

गोप कुमार बहुत देर चुप रहल। फेर बाजल — 'जतय सपना नहि भेटए, ओतय खाली स्थान छोड़ू। खाली स्थान सेहो साक्ष्य होइत अछि।'

ओहि राति आरुणि अपन बेटी अनन्या कँ सुतबैत कहलक — 'तोहर पढ़ाइ आब कठिन हएत।'

अनन्या आँखि मूनने-मूनने पूछलक — 'किएक?'

'किएक तँ तोरा किताबक अतिरिक्त लोकक नाम पढ़ए पड़त।'

अनन्या निन्नमे बजली — 'नाम पढ़ब कठिन नहि। नाम नहि पढ़ब कठिन अछि।'

आरुणि बहुत देर ओकरा ताकैत रहल। ओकरा लगल जे गढ़ नारिकेलक अगिला पीढ़ी पहिने सँ बूढ़ अछि, आ पुरान भूत सभ धीरे-धीरे बच्चा भऽ रहल अछि।

ओतहि शहरमे बटुकनाथ हरिहरनक दफ्तरमे एक लोक खबर लऽ कऽ आयल — 'सर, ओ सभ कोनो अपील नहि कऽ रहल अछि।'

बटुकनाथ चौंकल — 'नहि? तखन की करैत अछि?'

'नाम लिखैत अछि। पाठशाला चलबैत अछि। डिजिटल ठगी बुझबैत अछि। निजताक शपथ दैत अछि। विदेशमे नाम पढ़ैत अछि।'

बटुकनाथ किछु क्षण तकैत रहल। ओकरा ई सभ कानूनी भाषा नहि लागल। ओ पूछलक — 'एहि पर रोकक आवेदन दायर भऽ सकैत अछि?'

ओ लोक चुप।

'नाम लिखब पर रोक?' बटुकनाथ स्वयं दोहरौलक। ओकरा अपन प्रश्नक मूर्खता सुनाइ पड़ल। ओ क्रुद्ध भेल। 'तखन किछु आरोप बनाउ। विदेशी धन, देश-विरोध, सामाजिक अशांति, अवैध सभा, किछु।'

ओ लोक धीरे सँ कहलक — 'सर, ओ सभ सभा सेहो नहि करैत। बच्चा सभकेँ पढ़बैत अछि।'

बटुकनाथक चेहरा उतरि गेल। ओकरा पहिल बेर बुझा गेल जे जे लोक लड़ाइ छोड़ि काजमे लागि जाइत अछि, ओकरा पर मुकदमा कठिन होइत अछि।

चन्द्रपाल बत्राक दफ्तरमे सेहो खबर पहुँचल। ओकरा कहल गेल जे ओकर अगिला जालमे तीन गामक युवक नहि फँसल। ओकरा सभ पाठशालामे सीखल छल जे पहिल जीत जाल होइत अछि। ओकर प्रतिनिधि लिखलक — 'ग्राहक सावधान अछि।'

चन्द्रपाल फोन पटकलक। ओकरा 'ग्राहक' शब्द सँ अधिक डर 'सावधान' शब्द सँ लागल। ठगीक संसारक सभसँ पैघ शत्रु पुलिस नहि, अदालत नहि, सरकार नहि — सावधान लोक अछि।

राघव सिग्नल सोमानी अपन मेटल चैट खोललक। ओ लिखए चाहलक — 'नव रणनीति चाही।' मुदा संदेश टाइप होइत-होइत बदलि गेल — 'नव शिकार नहि भेटल।' ओ फोन बन्द कऽ देलक। फोनक काँच पर ओहि बच्चा सभक चेहरा देखाइ देलक जे चौपालमे हाथ उठौने शपथ लऽ रहल छल।

लाउ किन-हंग दूर समुद्रक कात अपन शीशाघरमे नब खाता खोलबय चाहलक। ओकर सहायक कहलक — 'भारतीय भागमे रूपान्तरण-दर घटि रहल अछि।'

लाउ पूछलक — 'किएक?'

सहायक उत्तर नहि दऽ सकल। कारण ओकर रिपोर्टमे शब्द छल — 'ग्रामीण जागरूकता'। मुदा ई शब्द लाउ किन-हंगक भाषा नहि छल। ओकरा केवल प्रतिशत बुझाइत छल। प्रतिशत घटि रहल छल। कारण? दूर गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ नाम पढ़ि रहल छल।

चन्ना गाछीमे ओहि राति भूत-प्रेतक कबड्डी नहि भेल। सभ बैसि कऽ सुनैत रहल। जीवित लोक सभ अलग-अलग ठाम जे काज करैत छल, ओकर ध्वनि पातमे आबि रहल छल। देविकाक पाठ, निशांतक समझौता-विरोध, मीराक शपथ, सौम्याक अनुवाद, ईराक नाम-पाठ, गोपक खाली स्थान, अनन्याक निन्न — सभ ध्वनि एक ठाम जमा भऽ रहल छल।

बूढ़बा भूत धीरे सँ कहलाह — 'ई सभ हारल लोक छथि?'

हुलासी हँसली। हुनकर हाथ नहि छल, मुदा ओहि राति हुनकर आवाजमे हथेलीक ताप छल। 'हारल लोक एहन काज नहि करैत। हारल लोक तँ विजेताकेँ ताकैत रहैत अछि। ई सभ तँ ओकरा ताकब छोड़ि देलक।'

राकशक देहसँ इजोर कनी तेज भेल। लोथ सभ, जे सदिखन दर्शक रहैत छल, ओहि राति उठि कऽ बच्चा सभक बनाओल माटिक मोबाइल देखए लगल। एक लोथ पूछलक — 'ई छोट डिब्बा लोककेँ खाइत अछि?'

बूढ़बा भूत कहलाह — 'जखन लोक ओकर भीतर अपन मोन राखि दैत अछि, तखन।'

'तखन मोन वापस कोना आबैत अछि?' लोथ पूछलक।

चन्ना गाछीक पात उत्तर देलक — 'नाम पढ़ि कऽ।'

भोर होइत-होइत गढ़ नारिकेलमे एक नव बात पसरि गेल। लोक कहए लगल जे अदालतमे हारल लोक सभ आब अपील नहि, पाठशाला खोलि रहल अछि। पहिने लोक एकरा छोट बात बुझलक। बादमे बुझल जे पाठशाला अदालतसँ पैघ होइत अछि, कारण अदालत केवल घटना बाद पूछैत अछि; पाठशाला घटना पहिने बच्चाकेँ सावधान करैत अछि।

बा ओहि भोर चूल्हा पर पानि चढ़बैत कहलनि — 'ई सभ काज अछि। न्याय जँ नहि भेटए, तखन न्याय बनयब सीखू।'

आरुणि पूछलक — 'न्याय बनयब?'

बा उत्तर देलखिन्ह — 'हँ। जे लोक नाम बचबैत अछि, जे लोक बच्चाकेँ ठगी सँ बचबैत अछि, जे लोक ककरो लाज केँ हथियार नहि बनय दैत अछि, जे लोक कागचक भाषा केँ लोकक भाषा बनबैत अछि — से न्याय बनबैत अछि। फैसला तँ कागच पर होइत अछि; न्याय लोकक व्यवहारमे।'

आरुणि देखलक — चूल्हाक धुआँ सीधा ऊपर नहि गेल। ओ कनी झुकि कऽ चन्ना गाछी दिस गेल। धुआँमे क्षण भरि लेल नन्दक चेहरा देखाइ देलक। नन्द किछु नहि बजलाह। हुनकर मौनमे स्वीकृति छल।

अध्यायक अन्तमे कोनो घोषणा नहि भेल। कोनो झण्डा नहि फहरल। कोनो मंच नहि बनल। केवल काज बाँटल गेल। देविका अगिला गाम जाएत। निशांत बैंकक भाषा केँ लोकक बोलीमे बदलत। मीरा निजताक शपथक पर्चा नहि, गीत बनौत। सौम्या दस्तावेजक कथा

लिखत। ईरा विदेशक सभागारमे नाम पढ़त। गोप कुमार खाली स्थान भरबाक लोक ताकत। आरुणि बच्चा सभकेँ पूछत — ‘जे नाम नहि भेटल, ओकरा कोना लिखब?’

आ बच्चा सभ एक स्वरमे कहत — ‘पहिने ओकरा ताकब।’

चन्द्रपाल बत्रा, बटुकनाथ हरिहरन, राघव सिग्नल, लाउ किन-हंग — ई सभकेँ ओहि दिन कोनो हारक खबर नहि भेटल। हुनका सभकेँ केवल एतबा बुझा गेल जे अगिला चाल चलब कठिन भऽ रहल अछि। धूर्त सभक संसारमे ई हारक सभसँ पहिल संकेत होइत अछि।

ओहि दिन सँ गढ़ नारिकेलमे एकटा अजीब नियम बनल। जे कियो ककरो घर जाए, पहिने हालचाल नहि, एकटा नाम पूछय। ‘तोहर घरमे के-के बचल? आ के-के लिखल जाएबाक बाकी अछि?’ लोक पहिने संकोच करैत, फेर पुरान संदूक खोलैत; संदूक खुजिते नेप्थलीन आ पुरान कागचक गन्ध घर भरि पसरि जाइत। चिट्ठी, फोटो, वेतन-पर्ची, अस्पतालक पर्चा, बैंकक रसीद, स्कूलक प्रमाणपत्र — सभ बाहर आबय लागल। जे कागच पहिने अकेल घरमे धूरि खाइत छल, से आब सामूहिक स्मृति बनि गेल।

धूर्त सभ एहि परिवर्तनकेँ छोट मानि रहल छल। ओकरा सभकेँ बुझाइत नहि छल जे सत्ता पहिने लोककेँ अलग-अलग रखैत अछि। जखन लोक अपन-अपन पीड़ा अलग-अलग कोठरीमे रखैत अछि, तखन बटुकनाथ जेकाँ लोक प्रक्रिया कहि कऽ ओकरा टारैत अछि, चन्द्रपाल जेकाँ लोक स्क्रीन कहि कऽ ओकरा फँसाबैत अछि। मुदा जखन पीड़ा एक-दोसराक नाम पढ़ए लगैत अछि, तखन ओ संगठन नहि, परिवार बनि जाइत अछि; आ परिवार पर धारा लगेनाइ कठिन होइत अछि।

चन्ना गाछीमे पात सभ फुसफुसाएल — ‘जे लोक लड़ाइ छोड़ि काजमे लागि जाइत अछि, ओकरा हराएब कठिन नहि, असम्भव होइत अछि।’

लोकगीत: हारल लोक काजपर

लोकधुन: श्रमगीत

लगल हे लोक, हारल लोक काज मे लगल हे,
जे भविष्यक काज धरलक, ओकरा हराएब कठिन हे।

न झण्डा, न मंच, न जीतक जयकार,
हारल कहल लोक बाँटलक काज अपार।
केओ नाम ताकत, केओ दस्तावेज पढ़त,

केओ डरक भाषा कैँ गामक बोली करत।
पुरान संदूक खुलल, नेप्थलीनक गन्ध,

पर्ची, फोटो, चिट्ठी जुड़ि बनल अपन बन्ध।
पीड़ा कोठरी छोड़ि एक-दोसर नाम पढ़ल,
अलग-अलग घाव परिवारक देहमे जुड़ल।
जे लड़ाइ छोड़ि भविष्यक काजमे लगल,
ओकरा हराएब नहि—असम्भव भऽ गेल।

ने झण्डा, ने मञ्च, ने जीतक जयकार,
पुरान संदूक खुजल—पर्ची, फोटो, अखबार।
अलग-अलग घाव एक्के परिवार बनि जुड़ल।

❖

अध्याय ३२

तेसर कबड्डी

बयार नहि आ पात हिलए, तँ बुझू— कोनो पुरान फैसला कागज छोड़ि गाछपर उतरि रहल छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: तेसर पारी—संग

लोकधुन: कबड्डी-धुन

बाजू हे कबड्डी, तेसर पारी बाजू हे,
दर्शक कियो नहि—सभ खिलाड़ी साजू हे।

पहिल पारी खेल छल, दोसर नामक गान,
तेसर पारी संगक—जीवित जन अभियान।
सीमा आब दफ्तर, स्क्रीन, घर, बाजार,
एक-दोसरक हाथ पकड़ि करब सभटा पार।

कबड्डी स्वरमे साँस नहि, भरोसक लय धरू,
पकड़निहार छलक जाल, संगसँ ओकरा हरू।
तेसर पारी शुरू भेल, दर्शक कियो नहि,
सभ खिलाड़ी, सभ पहरुआ—कियो अकेल नहि।

पहिल पारी भूतक छल, दोसर नामक तान,
तेसर पारी जीवितक—संगक जय-अभियान।
दफ्तर-स्क्रीन-बजारक सीमा हाथ जोड़ि नापू,
भरोसक लम्बा साँस लऽ छलक रेखा कापू।

❖

साँझक फुसफुसी राति धरि टिकल रहल। ओहि राति चन्ना गाछीमे बयार नहि छल, मुदा पात सभ हिलि रहल छल। बयार जखन नहि होइ आ पात हिलै, तखन बुझू जे कियो अदृश्य हाथसँ गाछक माथ सहला रहल अछि, अथवा कोनो पुरान फैसला कागच छोड़ि पातमे उतरि रहल अछि। गढ़ नारिकेलक लोक एहि बातकेँ बचपनसँ सुनैत आएल छल, मुदा ओहि राति पहिल बेर बच्चा सभ सेहो बुझि गेल जे गाछक हिलनाइ मात्र मौसमक बात नहि होइत।

चन्ना गाछीक बीच जे खाली धरती रहैत छल, ओतय कबड्डीक घेरा बनल। कोनो चुन नहि, कोनो डोरी नहि, कोनो लाठीसँ रेखा नहि। घेरा अपने बनल, जेना धरती अपन छातीपर पुरान नहक निशान फेर उजागर कऽ देलक। रेखा गोल नहि छल; कतहु कमला-बलान सन टेढ़, कतहु

पुलक पायाक छाह सन चौकोर, कतहु मोबाइलक परदा सन चमकैत, आ कतहु अदालतक मेज सन सीधा।

बूढ़बा भूत पहिने उतरलाह। हुनकर कारी देह एते पुरान कारी छल जे अन्हार ओकरा लग उज्जर बुझाइत छल। हुनकर पाछाँ हुलासी आयलीह, बाँहि-विहीन, मुदा आवाजमे एहन पकड़ जे कोनो देह ओकरा सँ बेसी सम्पूर्ण नहि लगैत। पनिडुब्बी पोखरिक गन्ध लेने पहुँचलि। राकश सभ इजोर करैत छलाह, मुदा ओ इजोर आगि नहि, हड्डीक भीतर सँ उठल उजास छल। लोथ सभ, जे सदिखन दर्शक बनि बैसल रहैत छल, एहि बेर उठि कऽ घेराक किनार पर ठाढ़ भऽ गेल।

तखन मृतक सभ आबए लगलाह। नन्द आरुणि, सरयू, ओ जोन-मजदूर सभ जकर नाम ककरो रजिस्टरमे पूरा नहि लिखाएल छल, उज्ज्वल झा, ओ युवक सभ जे स्क्रीनक भीतर कर्जक फंदामे अटकल, ओ स्त्री सभ जे देह-बाजारक अन्हारमे नाम गुम कऽ बैसल, ओ रोगी सभ जे श्वासक भाव चुकबैत-चुकबैत शून्य भऽ गेल, ओ मजदूर सभ जे अस्पतालक बिलक भीतर मरल, ओ सभ। मृतकक भीड़ नहि भेल; नामक पंक्ति भेल। प्रत्येक नाम अपन देहक बदला साँस लेने छल।

घेराक दोसर कात बच्चा सभ आयल। अनन्या, नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा, देविकाक संग घूमि-घूमि स्क्रीनक ठगी चिन्हब सीखने बालक-बालिका, मीरा सँ निजताक शपथ सुनने किशोर, ईरा सँ दूर देशक मंचक प्रश्न सीखने विद्यार्थी। हुनका सभक हाथमे कापी नहि, नारिकेलक पात छल। ओ सभ खेलए आएल छल, मुदा हुनकर खेलमे पाठ छल; पाठमे खेल।

तेसर दल देर सँ आयल। ओ सभ देहसँ नहि आएल। देह अपन-अपन जगह रहि गेल — शहरक महँग कोठीमे, समुद्र पार शीशाक घरमे, बन्द कमरामे, कारी काँचबला गाड़ीमे। चन्ना गाछीमे केवल हुनकर मोन आयल। बटुकनाथ हरिहरनक मोन पहिने आयल — चिक्कन, कागचक गन्धबला, मोहरक लालिमा सँ रंगायल। ओकर पाछाँ चन्द्रपाल बत्राक मोन — स्क्रीनक नीला उजासमे धधकैत। फेर राघव सिग्नलक मोन — आधा लिखल, आधा मेटल, मेटाइत-संदेशक धुँआ सँ बनल। बहुत दूर सँ लाउ किन-हंगक मोन आयल — गणनाक ठंढा सिक्का सन। आ एडवर्ड ब्रूमक मोन — सभ्य तालीक मुलायम कपड़ा ओढ़ने, मुदा भीतर कीचड़सँ भीजल।

बच्चा सभ ओकरा देखि नहि डेरायल। मृतक सभ चुप रहल। भूत सभ अपन-अपन जगह सम्हारि लेलक। बूढ़बा भूत घोषित नहि केलथिन्ह; चन्ना गाछीमे घोषणा नहि होइत, केवल साँस बदलैत अछि। जखन साँस बदलल, खेल शुरू भेल।

पहिल साँस मृतक दलक छल। सरयू घेरामे घुसलीह। ओ कबड्डी नहि बजलीह। ओ अपन नाम बजलीह — 'सरयू... सरयू... सरयू...' नामक प्रत्येक पुनरुक्ति धरतीमे एक छोट गड्ढा बनबैत गेल। बटुकनाथक मोन ओकरा छूए चाहलक। मुदा मोनक हाथ नहि होइत। ओ प्रक्रिया कहए चाहलक, मुदा ओकर मुँहसँ निसरल — 'प्रक्रिया... प्रक्रिया...' आ सरयू घेरासँ बाहर आबि गेलीह। मृतक दल हँसल नहि। मृतक सभ हँसैत नहि, कारण हुनका लग समयक खर्च कम नहि होइत।

दोसर साँस बच्चा दलक छल। अनन्या घेरामे गेली। ओ बाजली — 'प्रश्न... प्रश्न... प्रश्न...' बटुकनाथक मोन पाछाँ हटि गेल। चन्द्रपालक मोन ओकरा रोकए चाहलक — 'पहिने ऐप खोलू, इनाम भेटत।' अनन्या ठमकि कऽ पूछली — 'इनामक पाछाँ कर्ज अछि कि नहि?' चन्द्रपालक नीला उजास झपकए लागल। प्रश्न खेलक भीतर पहिल बचाव छल।

तेसर साँस धूर्त सभक मोन लेल। खेलक नियम अनुसार हुनका सभकेँ सेहो घेरामे पैसए पड़ल। बटुकनाथ हरिहरनक मोन घेरामे धसकल। ओ सोचने छल — ओ तर्क करए जायत। मुदा चन्ना गाछीमे तर्क शब्दसँ नहि, साँससँ मापल जाइत अछि। ओकर मुँहसँ निकलल — 'स्थगन... स्थगन... स्थगन...' बच्चा सभ देखैत रहल। मृतक सभ सेहो। स्थगनक साँस छोट होइत अछि; ओ दूर धरि नहि चलैत। बटुकनाथ घेराक बीचमे अटकि गेल। ओ बाहर आबए चाहलक, मुदा प्रत्येक कदम पर एक नाम पड़ल। नाम पर पएर रखैत ओ डगमगायल।

हुलासी आगाँ बढ़लीह। ओ कहलथि — 'अहाँ नाम पढ़ू, हम अहाँकेँ बाहर छोड़ि देब।' बटुकनाथक मोन पढ़ए लागल। पहिल नाम आधा पढ़लक। दोसर नाममे अटकि गेल। तेसर नाम पर ओकर चमकीला आकार फटए लागल। ओ बाहर निकलल, मुदा जीतक मुद्रा नहि, हाँफैत। खेलमे पहिल बेर ओकरा बुझल जे कानूनक भाषा लम्बा होइतो साँस छोट कऽ दैत अछि, जँ ओ नाम नहि उठबैत।

चन्द्रपाल बत्राक मोन अगिला घेरामे घुसल। ओ बहुत तेज छल। मोबाइलक परदा जकाँ चमकैत, एक ठामसँ दोसर ठाम फिसलैत। ओ बच्चा सभक बीच छोट-छोट चमक छोड़ैत गेल — 'पहिल जीत मुफ्त', 'दुगना', 'तीन मिनटमे कमाइ', 'डरू, पुलिस आबि रहल अछि', 'ओ.टी.पी. पठाउ', 'खाता खोलू'। बच्चा सभ एक क्षण लेल ठमकल, मुदा देविकाक आवाज

पाठशालासँ चलि आएल — 'जे डर देखाबए, ओकर नाम पूछू। जे जल्दी कराबए, ओकरा रोकू। जे इनाम दे, ओकर घाटा पूछू।'

एक बच्चा, जे काल्हिए धरि ठगीक कॉलसँ काँपि जाइत, घेरामे पैसल आ चन्द्रपालक मोनकेँ घेरि कहलक — 'तोहर असली मालिक के?' चन्द्रपालक मोन चमकल — 'हम स्वयं मालिक।' बच्चा फेर पूछलक — 'तखन हांगकांग सँ संदेश किए अबैत छल?' ई प्रश्न गाछक पात पर चढ़ि गेल। पात सभ एक साथ झनझनाएल। चन्द्रपालक स्क्रीन-उजासमे दरार पड़ल।

ओ भागि घेरासँ बाहर आयल, मुदा ओकर पाछाँ एक खाता अटकल रहि गेल — मुन्ना पासवानक खाता। म्यूल खाता कहल गेल। मुदा चन्ना गाछीमे ओ खाता खच्चर नहि, मनुष्यक देह बनि ठाढ़ भेल। मुन्ना बाजल — 'हमरा नाम म्यूल नहि। हम मुन्ना छी।' चन्द्रपालक मोन पहिल बेर अपन शब्दसँ घायल भेल। अपराधक सभसँ पैघ कवच मनुष्यकेँ वस्तु कहब होइत अछि; जखन वस्तु फेर नाम बनि जाए, कवच चटकैत अछि।

राघव सिग्नलक मोन घेरामे पैसैत-पैसैत गायब होए चाहलक। ओकर आदत छल — पाँच सेकेंड, दस सेकेंड, सन्देश मेटल। मुदा चन्ना गाछीमे जे बोलल जाइत अछि, ओ मिटैत नहि; ओ पात बनैत अछि। राघव साँस लेल — 'मेटू... मेटू... मेटू...' मुदा प्रत्येक साँसक बदला एक पात झरल। पातपर ओहि सभ संदेशक छाप छल जे ओ सभकेँ भेजने छल।

मीरा घेरामे पैसलीह। ओ राघवक सामने ठाढ़ भऽ कहलथि — 'जे फोटोसँ डरबैत अछि, ओ छाह चोरैत अछि। छाह देहक अधिकार छी।' राघव कहए चाहलक — 'हम केवल पहुँचबैत छलहुँ।' मीरा उत्तर देलीह — 'जहर पहुँचबेनिहार हाथ सेहो जहरक इतिहासमे लिखाइत अछि।'

राघवक मोन पाछाँ हटि गेल। ओकर मेटाइत साँस समाप्त भेल। ओ घेराक बीचमे चुप्पी बनि बैसल। एहि अध्यायक नाम चुप्पी पहिनहिसँ ओकरा पाछाँ करैत आएल छल; आब चुप्पी ओकर मुँह बनि गेल।

दूर समुद्र पार लाउ किन-हंगक मोन घेराक किनार पर ठाढ़ रहल। ओ भीतर पैसब नहि चाहलक। ओ मानैत छल जे दूरी सुरक्षा अछि। मुदा गढ़ नारिकेलमे दूरीक नियम अलग अछि। जकर पैसा दूर सँ चलैत अछि, ओकर मोन सेहो दूर सँ बँधैत अछि। चन्ना गाछीक रेखा लम्बा भऽ समुद्र, बन्दरगाह, शीशाघर, बैंक, बही, सभ पार करैत ओकर पएर लग पहुँचि गेल।

लाउ किन-हंगक मोनक साँस बहुत ठंढा छल। ओ बजल — 'प्रतिशत... प्रतिशत... प्रतिशत...' मृतक सभ स्थिर। बच्चा सभ स्थिर। भूत सभ स्थिर। प्रतिशतक भाषामे करुणा नहि

होइत, मुदा भय सेहो नहि। ओ खेलक बीच चलैत रहल। प्रत्येक पग पर ओ हिसाब लगबैत — जोखिम, लाभ, नुकसान, बचाव। तखन नन्द आरुणि घेरामे आयलाह। हुनकर हाथमे पुलक नक्शा छल। नक्शा पर पाया नहि, नाम छल।

नन्द कहलथिन्ह — ‘तोहर हिसाबमे पाया कतेक?’

लाउ मौन।

नन्द फेर पूछलथिन्ह — ‘हड्डी कतेक?’

प्रतिशतक साँस काँपल। लाभक भाषा हड्डी नहि गनैत; जखन गनए पड़त, लाभक गणित टूटैत अछि। लाउ किन-हंगक मोन एक क्षण लेल छोट भऽ गेल — एते छोट जे लोथक बच्चा ओकरा उठा कऽ हथेली पर राखि सकैत छल। लोथ सभ, जे सदिखन दर्शक रहल, एहि बेर हँसल। हुनकर हँसी खोरनाठीक राखि सन हलुक छल।

एडवर्ड ब्रूमक मोन अन्तमे आयल। ओ सभ्य छल; घेराक बाहर पहिने झुकल, फेर भीतर आयल। ओकर साँस छल — ‘गरिमा... गरिमा... गरिमा...’ शब्द सुन्दर छल। बच्चा सभ चकित भेल। भूत सभ सेहो क्षण भरि चुप। सुन्दर शब्द सदिखन खतरनाक नहि, मुदा जखन सुन्दर शब्द झूठक खातासँ निकलैत अछि, तखन ओकर गन्ध पानिमे सड़ल फूल जेकाँ होइत अछि।

ईरा घेरामे उतरलीह। ओ हार्वर्डक सभागार छोड़ि एहि खेलमे आयल छलीह। ओ ब्रूमक मोनकेँ अंग्रेजीक प्रश्न नहि पूछलथि; मैथिलीमे पूछलथि — ‘गरिमा केकर भाषामे बजैत छी?’ ब्रूमक मोन अनुवाद खोजए लागल। चन्ना गाछीमे अनुवादक नहि भेटल। ईरा फेर कहलथि — ‘जकर नाम अहाँ उच्चारण नहि कऽ सकैत छी, ओकर गरिमा पर भाषण कोना दैत छी?’

ब्रूमक ताली-मुलायम आवरण उतरि गेल। ओकर भीतर कीचड़ छल। कीचड़मे अस्पतालक बिल, सुरक्षा प्रमाणपत्र, शोध-निधि, हथियार-सलाह, वैक्सीन-करार, आ पुलक तस्वीर अटकल। ओ ‘वैश्विक उत्तरदायित्व’ कहए चाहलक, मुदा मुँहसँ निसरल — ‘लाभ’। एहि एक शब्दसँ ओकर सम्पूर्ण भाषण हारि गेल।

कबड्डी चलैत रहल। खेलक बीच समय नहि रहल; दिन, राति, वर्ष, फैसला, हार, जीत — सभ एक साँसमे बँधि गेल। मृतक दल नाम बजैत, बच्चा दल प्रश्न बजैत, धूर्तक मोन अपन-अपन पुरान शब्द बजैत — प्रक्रिया, प्रतिशत, स्थगन, कमाइ, गरिमा, बचाव। जे शब्द छोट छल, ओकर साँस टूटैत। जे नाम छल, ओ लम्बा चलैत।

तखन एक अजीब बात भेल। धूर्त सभक मोन बाहर निकलि जाए चाहैत छल, मुदा बच्चा सभ ओकरा रोकल नहि। मृतक सभ सेहो नहि। खेलक नियम छल — जे बाहर जाए चाहैत, जा सकैत अछि, बशर्ते ओ अपन पाछाँ एक शब्द छोड़ि जाए। बटुकनाथ ‘प्रक्रिया’ छोड़ि गेल। चन्द्रपाल ‘खाता’। राघव ‘सन्देश’। लाउ ‘हिस्सा’। ब्रूम ‘गरिमा’।

ओ सभ सोचलक — बचि गेलौं। मुदा जखन ओ बाहर भेल, देखलक जे छोड़ल शब्द सभ चन्ना गाछीक भीतर अर्थ बदलि रहल अछि। प्रक्रिया आब नाम पढ़बाक क्रम बनि गेल। खाता आब मनुष्यक जीवनी बनि गेल। सन्देश आब चेतावनी बनि गेल। हिस्सा आब उत्तरदायित्व बनि गेल। गरिमा आब भाषण नहि, नामक उच्चारण बनि गेल। धूर्त सभ अपन शब्द गमा कऽ बाहर गेल। लोक अपन हथियार गमा देत तँ तुरन्त नहि मरैत, मुदा ओकर चाल बदलि जाइत अछि।

भोर लग चन्ना गाछीमे पानि उतरि आयल। कोनो नदी नहि छल, मुदा पानि छल; ओ माटिक गन्ध नेने आयल छल, जेना धरतीक भीतरक कोनो पुरान बरखा घुरि आयल हो। पानिमे कबड्डीक घेरा तैरि रहल छल। बच्चा सभ ओकर भीतर पएर राखि खेलैत रहल। मृतक सभ पाछाँ हटि नहि गेल; ओ सभ किनार पर नहि, खेलक स्मृतिमे बसल। भूत सभ फेर अपन-अपन डारि पर चढ़ल, मुदा हुनकर आँखि आइ कम थाकल छल।

अनन्या पूछलक — ‘खेल खतम?’

बूढ़बा भूत कहलथिन्ह — ‘कबड्डी खतम नहि होइत। साँस बदलैत अछि।’

‘तखन अगिला साँस केकर?’

हुलासी कहलीह — ‘जकरा प्रश्न आबि गेल, ओकर।’

नारिकेल गाछक एकटा पात झरल। पातपर कोनो फैसला नहि, कोनो आदेश नहि, कोनो अन्तिम वाक्य नहि। केवल चारि शब्द — ‘फेर आरम्भ होउ।’ बच्चा सभ ओ पात उठेलक। आरुणि दूर ठाढ़ देखैत रहल। ओकरा बुझा गेल जे पुस्तक बन्द कएल जा सकैत अछि, कथा नहि।

दूर-दूर धरि, शहरमे, समुद्र पार, शीशाघरमे, बन्द कोठीमे, धूर्त सभ भोरमे जागल। हुनका सभकेँ मोन नहि रहल जे रातिमे ओ खेलमे गेल छल, मुदा हुनकर मुँहमे अपन-अपन पुरान शब्दक स्वाद नहि रहल। बटुकनाथ ‘प्रक्रिया’ कहए लागल, मुदा ओकरा ‘नाम-पाठ’ सुनाइ देलक। चन्द्रपाल ‘खाता’ कहलक, मुदा ओकरा मुन्नाक चेहरा देखाइ देलक। राघव ‘सन्देश’ लिखलक, मुदा पात झरल। लाउ ‘हिस्सा’ गनलक, मुदा मृत्यु पूछलक। ब्रूम ‘गरिमा’ पढ़लक, मुदा उच्चारणमे मजदूरक नाम अटकल।

गढ़ नारिकेलमे ओहि दिन कियो विजय-दिवस नहि मनओलक। जीतक ध्वज नहि फहरायल। हारक विलाप नहि भेल। बच्चा सभ पाठशाला गेल। देविका नव पट्टी लिखलीह — 'जे डेराबए, ओकरा प्रश्न करू।' मीरा लिखलीह — 'जे छाह चोरैत अछि, ओकर नाम उजागर करू।' सौम्या लिखलीह — 'कागच लोकभाषामे आबि गेल तखन ओ लोकक होइत अछि।' ईरा लिखलीह — 'दूर देशक मंच सँ पहिने घरक नाम सीखू।' गोप कुमार चुपचाप एक नव फाइल खोललक, जाहिपर शीर्षक नहि छल, केवल तिथि।

साँझ होइत-होइत चन्ना गाछीमे फेर अन्हार उतरल। भूत सभ डारि सँ झाँकल। बच्चा सभ घर घुरि गेल। लोथ सभ धरती पर गोल-गोल लुढ़कि कऽ अपन जगह सम्हारि लेलक। पनिडुब्बी पोखरिमे गेली, मुदा हुनकर झोँटा आइ ककरो पएर पकड़ए नहि, पानि पर नाम लिखए लागल। राकश सभ इजोर कम कऽ देलक।

तखन बहुत दूर सँ, जेना कोनो नव पाठक पहिल पन्ना खोलैत हो, एक धीमा स्वर आयल — 'कबड्डी...'

दोसर स्वर — 'नाम...'

तेसर स्वर — 'प्रश्न...'

आ चन्ना गाछीमे अगिला साँस भरल गेल। कथा ओतहि नहि रुकल। गोहि सभ देह खाइत अछि, अदालत वर्ष खाइत अछि, स्क्रीन मोन खाइत अछि; मुदा जखन मोन टांगल रहि जाए, तखन कथा फेर शुरू होइत अछि। ओहि राति कबड्डी समाप्त नहि भेल — केवल अगिला साँस लेल गेल।

लोकगीत: तेसर पारी

लोकधुन: कबड्डी-धुन

उठल हे तेसर, तेसर पारीक स्वर उठल हे,
ने जीतक ध्वज, ने हार—प्रश्न प्रताप बनल हे।

पहिल स्वर कबड्डी, दोसर स्वर नाम,
तेसर स्वर प्रश्न उठल चन्ना गाछीक धाम।
पात कहलक—फेर आरम्भ, अन्तिम बात नहि,
पुस्तक बन्द होइ सकै, कथा बन्द नहि।
प्रक्रिया कहिते बटुक सुनलक नाम-पाठ,

खाता कहिते बत्रा देखलक मुन्नाक आँख।
गरिमा पढ़िते ब्रूमक जीह मजदूरपर अटकल,
पनिडुब्बीक झोँटा पानिपर अक्षर लिखल।
न जीतक ध्वज, न हारक विलाप,
तेसर कबड्डीमे प्रश्न बनल प्रताप।

पनिडुब्बीक झोँटा पानि पर आखर लिखल।

❖

अध्याय ३३

मोनक परीक्षा

देह थाकल तँ बैसि जाइ छै; मोन थाकल तँ अपन मालिककेँ घीचि लऽ जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: दर्पणसँ सुधार

लोकधुन: मोन-झूमर

देखू हे दर्पण, डरि कऽ नहि देखू हे,
करुण नजरिसँ अपने कर्म-रेख लेखू हे।

दर्पण दण्ड नहि मात्र, साँचक मित्र बुझू,
चेहरा जकाँ कर्म देखू, गलती स्पष्ट चुनू।
जेलसँ भागल जाए, अपने नजरसँ नहि,
मुदा नजर जँ करुण हो तँ सुधार कठिन नहि।

दर्पण सामने प्रण करू—आइसँ भिन्न चलब,
जकर हक छीनल, ओकरा न्यायसँ फेर मिलब।
दर्पणसँ सुधार जखन व्यवहारमे उतरै,
अपराधक छाह घटि कऽ मनुखता फेर उगै।

झूमरक ताल पर मोनक कोन-कोन बहारू,
जे आखर टेढ़ लिखल गेल, फेरसँ सुधारू।
छीनल हकक सूची बना घुरेबा लए निकलू,
दर्पण मित्र बनल तँ सुधारक संग चलू।

❖

अगिला साँस भरा चुकल छल। चन्ना गाछीमे तेसर कबड्डीक पहिल साँस खतम भेल, मुदा खेल खतम नहि भेल। साँस जखन टूटैत अछि तखने खेलक असली नियम खुलैत अछि। मृतक सभ अपन नाम बजा चुकल छल। बच्चा सभ अपन हँसी बचा चुकल छल। आब बचल छल ओहि सभक मोन, जे बाहरक दुनियाँमे जीतक कागच लेने ठाढ़ छल आ भीतरक दुनियाँमे साँस लेलासँ डेराइत छल।

भूत सभक कबड्डीमे देहसँ बेसी मोनक परीक्षा होइत अछि। देह थाकल तँ बैसि जाइत अछि। मोन थाकल तँ अपन मालिककेँ घीचि लैत अछि। बटुकनाथ हरिहरनक मोन ओकर देहसँ अलग भऽ कऽ चन्ना गाछीक बीचमे ठाढ़ छल। चन्द्रपाल बत्राक मोन ओकर चमचमाइत फोनक आकारमे छल। राघव सिग्नलक मोन अदृश्य संदेशक बून्द-बून्द बनि पातपर लटकल छल। लाउ किन-हंगक मोन समुद्रक खार पानिसँ भीजल छल, मुदा ओकरा गढ़ नारिकेलक

माटिक गन्ध आबि रहल छल। एडवर्ड ब्रूमक मोन तालीक आवाजमे अटकल छल, जाहिमे कखनो-कखनो गंगा-पायाक छपाक घुसि जाइत छल।

बच्चा सभ गोल घेरा बनौलक। अनन्या बीचमे ठाढ़ भेली। ओ आब छोट नेनी नहि बुझाइत छली। ओकर आँखिमे वैह प्रश्न छल जकरा कियो मरबाक फोटो देखि पूछने छल — मरि गेलखिन्ह की? मुदा आइ ओ प्रश्न ककरो फोटोपर नहि, जीवित धूर्त सभक मोनपर छल।

अनन्या बाजली, “कबड्डी खेलब तँ नाम लेब। जे नाम नै लेत, ओकर साँस नै गनल जायत।”

बूढ़बा भूत अपन कारी उजास पसारलनि। ओ कहलन्हि, “पुरान नियममे पकड़ल गेल खिलाड़ी बाहर होइत छल। नब नियममे जे नाम काटने अछि, ओ नाम बजौने बिना बाहर नहि जा सकैत।”

बटुकनाथक मोन पहिने हँसल। कानूनक लोकक मोन हँसैत नहि, धारा गनैत अछि। ओ धारा गनए लागल — प्रक्रिया, वाद, आपत्ति, ग्राह्यता, अधिकार-क्षेत्र। मुदा जखने ओ “अधिकार-क्षेत्र” कहए चाहलक, ओकर मुँहसँ निकलल — “सरयू देवी।”

ओ चौंकल। सरयू देवी ओ मजदूर स्त्री छली जकर नाम सरकारी सूचीमे कखनो नहि आयल। ओहि नामक संग ओकरा कोनो व्यक्तिगत परिचय नहि छल। मुदा जे नाम फाइलसँ काटल गेल छल, से आब ओकर जीह पर आबि गेल। बटुकनाथ फेर चेष्टा केलक — “माननीय...” मुदा निकलल — “लखन पासवान।”

चन्ना गाछीमे भूत सभ धीरे-धीरे झूमए लगल। ओ सभ ताली नहि बजबैत छल; ओ सभ पात हिलबैत छल। पातक हिलनाइमे एतेक नाम छल जे बयार सेहो गनबामे थाकि जाए।

चन्द्रपाल बत्रा अपन स्क्रीन-रूपी मोनकेँ हथेलीसँ झाँपए चाहलक। ओकरा विश्वास छल जे जे चीज स्क्रीनमे अछि, से ओकर नियंत्रणमे अछि। मुदा स्क्रीनपर खेलक मैदान खुलि गेल। एक दिस बच्चा सभ, दोसर दिस मृतक सभ, तेसर दिस ओकर म्यूल खाताक युवक सभ। उज्ज्वल झा, मुन्ना पासवान, ओहि अज्ञात छात्रक नाम जे एक हजारक कमीशन लेल खाता खोलल आ तीन लाखक अपराधमे फँसि गेल, ओ सभ स्क्रीनपर नहि, चन्द्रपालक आँखिक भीतर चमकए लागल।

चन्द्रपाल बाजए चाहलक — “ई सभ भावुकता अछि।” मुदा ओकर मुँहसँ निसरल — “पहिल जीत मुफ्त नै छल।”

बच्चा सभ हँसल नहि। ओ सभकेँ ई बात पहिने सँ बूझल छल। स्क्रीनक गोहि पहिने जीत दैत अछि, तखन घर खाइत अछि। देविका दूर ठाढ़ छली। ओकरा एहि खेलमे कूदबाक जरूरत नहि छल। ओ दिनभरि पाठशालामे ई बात बच्चा सभकेँ बुझा चुकल छली। हारल लोक सभ एहि खेलमे प्रतिद्वन्द्वी नहि रहल। ओ सभ नियम बनबैत छल।

राघव सिग्नलक मोन पातक छाहमे अटकल छल। ओकर सभ संदेश जे कखनो मिटि जाइत छल, आब कनी-कनी देवनागरी अक्षर बनि ओकर चारू दिस उड़ैत छल। “खाता खोलू।” “आवाज नहि।” “प्रतिशत भेजू।” “छह घंटामे खाली करू।” “मायकेँ डराउ।” “डिजिटल गिरफ्तारीक स्क्रिप्ट दोहराउ।” ई सभ पात ओकरे चारू दिस गोल घूमैत छल।

राघव पहिल बेर चुप भेल। ओकर पेशा आवाज नहि, परामर्श छल; परामर्श नहि, संकेत छल; संकेत नहि, अदृश्य आदेश छल। मुदा चन्ना गाछीमे अदृश्यता अपराधक रक्षा नहि करैत। जे अदृश्य छल, से भूत सभक लेल सभसँ स्पष्ट छल।

ओ भीतर-भीतर लाउ किन-हंगकेँ पुकारलक। उत्तर कतहु नहि। केवल एक पात ओकर कान्ह पर खसल। पातपर लिखल छल — “उपयोग समाप्त।”

राघव बुझल — जे लोक सभकेँ ओ म्यूल बनबैत रहल, ओ स्वयं बड़का खाताक म्यूल छल। ओकर मालिक ओकरा छोड़ि चुकल छल। चन्ना गाछीक अदालतमे ई दया नहि छल, मुदा ई ज्ञान छल। ज्ञान कखनो-कखनो दण्डसँ बेसी दुखद होइत अछि।

लाउ किन-हंगक मोन समुद्रक भीतरसँ आयल छल। ओकरा मैथिली नहि अबैत छल, मुदा नामक भाषा बुझबा लेल भाषा जरूरी नहि। ओ देखलक जे प्रत्येक नामक पाछाँ एक घर अछि, प्रत्येक घरक पाछाँ एक देहरी, प्रत्येक देहरीक पाछाँ एक जोड़ा चप्पल, आ प्रत्येक चप्पलक पाछाँ एक अपूर्ण यात्रा। ओ भारतकेँ बजार बुझने छल। ओ पहिल बेर भारतकेँ प्रतीक्षा करैत देहरीक रूपमे देखलक।

ओकर मोन खेलमे घुसए चाहलक नहि। मुदा कबड्डीमे जे साँस लैत अछि से मैदानसँ बाहर नहि रहि सकैत। ओकर मुँहसँ “प्रतिशत” निकलल। भूत सभ स्थिर। फेर ओकर मुँहसँ “जीवन-मूल्य” निकलल। बच्चा सभ स्थिर। अन्तमे ओकर मुँहसँ एक नाम निकलल — “उज्ज्वल।”

उज्ज्वलक नाम सुनिते स्क्रीनक अन्हार कनी उज्जर भेल। उज्ज्वल स्वयं नहि आयल। ओकर आत्मा आब एहि खेलमे बन्हल नहि छल; देविकाक पाठशालामे बच्चा सभ जखन ठगी चिन्हैत छल, ओतहि ओकर मुक्ति बढ़ैत छल। नाम आब दण्ड नहि, रस्ता बनैत छल।

एडवर्ड ब्रूमक मोन सभसँ विचित्र छल। ओ सभागारक तालीसँ बनल एकटा खोखला पात्र छल। ओ जखन बजैत छल, लोक ताली बजबैत छल; जखन चुप रहैत छल, भीतर छपाक होइत छल। चन्ना गाछीमे ओकर तालीक आवाज पत्ताक खड़खड़ाहटसँ हारि गेल। ओ बाजल — "मानव गरिमा।"

बूढ़बा भूत हँसलाह। "गरिमा? गरिमा कोन भाषामे? जे मजदूरक देह पायामे गेल, ओकर भाषामे कहू।"

एडवर्डक मोन उत्तर नहि दऽ सकल। ओकरा हिन्दी नहि, मैथिली नहि, मजदूरक गीत नहि। ओकरा केवल प्रस्तुति अबैत छल। तखन चन्ना गाछी ओकर भाषाक अनुवाद स्वयं केलक। ओकर "गरिमा" शब्द पातपर चढ़ि कऽ "दाम" बनि गेल। फेर "दाम" टूटि "नाम" बनि गेल।

बच्चा सभ एक स्वरमे कहलक — "नाम पहिने। दाम बादमे।"

ई खेलक चारिम साँस छल। एहि साँसमे ककरो पकड़ल नहि गेल, ककरो हराओल नहि गेल। चन्ना गाछीमे पराजयक अर्थ बदलि गेल छल। जे पकड़ा गेल, ओकरा बाहर नहि फेकल जाइत; ओकरा नाम पढ़ाओल जाइत। जे नाम पढ़ि लेलक, से कनी मनुष्य भेल। जे नहि पढ़ि सकल, से अपन पद, पैसा, पासपोर्ट, ताली सभ राखितो भीतरसँ खाली रहल।

बटुकनाथ हरिहरनक मोन थाकि गेल। ओ बाजल, "हम प्रक्रिया जानैत छी।"

अनन्या उत्तर देलक — "प्रक्रिया साँस नहि। नाम साँस अछि।"

"हम बारक अध्यक्ष छी।"

"ओ बाहरक कुर्सी अछि। एतय अहाँ केवल ओ लोक छी जे नाम काटने छल।"

बटुकनाथ पहिल बेर पूछलक — "जँ हम नाम पढ़ि लेब तखन?"

बूढ़बा भूत कहलन्हि — "तखन अहाँक जीत दुख देत, मुदा दुखमे कनी पानि रहत। जे जीत बिना दुखक होइत अछि, से सड़ि जाइत अछि।"

चन्द्रपाल बत्रा ई सुनि काँपि उठल। ओकरा दुख नहि चाही छल। ओकरा केवल सुरक्षा चाही छल। मुदा सुरक्षा ओही लोककेँ भेटैत अछि जे भीतर सँ किछु स्वीकार करैत अछि। अपराधी सुरक्षा चाहैत अछि, स्वीकार नहि। तेँ ओकरा सुरक्षा कखनो पूर्ण नहि भेटैत।

ओ अपन स्क्रीनमे झाँकलक। पहिने जीतक आँकड़ा देखाइ दैत छल; आब बच्चा सभक पाठशाला। देविका एक बूढ़ स्त्रीकेँ बुझा रहल छली — "फोन पर कियो कहय जे अहाँ गिरफ्तार छी, तँ पहिने पानि पीबू, फेर पड़ोसीकेँ बजाउ। डर असगरकेँ खाइत अछि।"

चन्द्रपाल स्क्रीन बन्द कऽ देलक। मुदा आवाज बन्द नहि भेल। बूढ़ स्त्रीक स्वर सुनाइ पड़ल — “डर असगरकेँ खाइत अछि।”

राघव पात झाड़ए चाहलक। पात हटैत नहि। प्रत्येक पात ओकर हथेलीमे चिपकि जाइत। ओ बुझल जे चन्ना गाछी ओकरा जेल नहि बना रहल अछि; ओकरा दर्पण दऽ रहल अछि। जेल सँ लोक भागि सकैत अछि; दर्पण सँ भागब कठिन अछि।

लाउ किन-हंगक मोन पाछाँ हटए चाहलक। समुद्र ओकरा वापस बजौलक। मुदा गढ़ नारिकेलक माटि ओकर एड़ी पकड़ने छल। ओ पहिल बेर सुनलक — दूर कतहु कमला-बलान बहि रहल अछि। ओकरा बुझल जे नदीक नाम जानब सेहो एकटा उत्तरदायित्व अछि। जे नदीक नाम बिना ओकर पानि कीनैत अछि, ओ पानिक शाप सेहो कीनैत अछि।

राति गाढ़ भेल। चन्ना गाछीक अदालत खेलमे बदलल, खेल पाठशालामे, पाठशाला स्मृतिमे। मृतक सभ पाछाँ हटि गेल। बच्चा सभ बीचमे रहि गेल। धूर्त सभक मोन किनार पर बैसल। ओ सभ पहिल बेर दर्शक भेल। लोथ सभ, जे सदिखन दर्शक रहैत छल, आब खेलमे दौड़ि रहल छल।

ई उलटबाँसी गढ़ नारिकेलक न्याय छल। जे सदिखन देखैत रहल, ओकरा खेलमे लिअ। जे सदिखन खेलैत रहल अपराधक खेल, ओकरा बैसा कऽ देखाउ।

अनन्या अन्तिम नियम कहली — “अगिला साँस धरि अहाँ सभ अपन-अपन एक नाम खोजू। जे नाम अहाँ काटने छी, ओकरा पूरा उच्चारू। जे उच्चारि लेत, ओ मैदानमे घुसत। जे नहि उच्चारत, ओ किनार पर बैसल अपन जीतक कागच सहलाबैत रहत।”

बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ किन-हंग, एडवर्ड — पाँचू मोन चुप। बाहर हुनकर देह अपन-अपन शहरमे छल, मुदा भीतर ओ सभ चन्ना गाछीक ओसार पर बैसल छल। दूर देविका, मीरा, सौम्या, ईरा, गोप कुमार, आरुणि — कोनो प्रतिशोधक सभा नहि कऽ रहल छल। ओ सभ अपन-अपन काजमे व्यस्त छल। एहि व्यस्ततासँ धूर्त सभकेँ सभसँ बेसी भय लगैत छल।

किएक तँ लड़ाइमे शत्रु सामने रहैत अछि। भविष्य-निर्माणमे शत्रु अप्रासंगिक भऽ जाइत अछि।

भोरक पहिल उजासमे चन्ना गाछीपर एकटा पात चमकल। ओकरा पर कोनो फैसला नहि लिखल छल। केवल एतबा — “चारिम साँस समाप्त। अगिला साँस आरम्भ।”

आ ओहि क्षण उपन्यास फेर आगाँ बढ़ि गेल।

लोकगीत: दर्पणक दण्ड

लोकधुन: मोन-विरहा

भागू हे भागू, दर्पण सँ ने भागू हे,
अपन काटल नाम जीह पर घुरि आबए हे।

जेलसँ भागल जाए, दर्पणसँ नहि,
अपन काटल नाम जीहपर आबि रहल एहि।
जे अपराधक खेल खेलल, आब किनार बैस,
जे सदिखन दर्शक छल, दौड़ल मैदान पैस।
बच्चा कहै—एक नाम पूरा उच्चारू,

नहि तँ जीतक कागच सहलाबैत हारू।
पीड़ित काजमे व्यस्त, धूर्त भेल अप्रासंगिक,
ई चुप्पी तलवारसँ बेसी भेल प्रचण्डिक।
फैसला नहि लिखल, ‘अगिला साँस’ मात्र,
दर्पणक दण्डमे खुलल मोनक असल पात्र।

जे अपराधक खेल खेलल, से आब कात बैसल,
जे सदिखन दर्शक छल, से मैदान मे पैसल।

❖

अध्याय ३४

सुनैत नदी

नदी धार रोकि कऽ सुनै छै जे किनारपर के झूठ बाजि रहल छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: नदीक कान

लोकधुन: नाविक-समदाउनक उज्जर रूप

सुनू हे नदी जकाँ, धार रोकि सुनू हे,
दूरक क्षीण पुकारो कान लगा गुनू हे।

नदी धार रोकि सुनै हरेक किनारक नाम,
झूठक शोर पार करि पाबै साँचक तान।
हमरो कान नदी जकाँ धैर्यवान बनाउ,
कमजोर स्वर, दूर पुकार आदरसँ अपनाउ।

नदी नाम सुनै तइयो निर्णय नहि थोपै,
सुनि कऽ माटि, पात, जनक संग सत्य जोड़े।
नदीक कानक सीख लिअ—गहींर सुननाइ,
सुनल नामकेँ उचित ठाम धरब न्याय कमाइ।

शोरक ऊपर-ऊपर झूठ, तर मे साँचक स्वर,
गहींर पैसि सुनू, तखने भेटत असल खबर।
सुनि कऽ थोपू नहि, माटि-पात संग तौलू,
सुनल नामकेँ उचित घाट, उचित आसन सौंपू।

❖

चारिम साँसक बाद जे निःशब्दता पसरल, से शान्ति नहि छल। ओ एहन निःशब्दता छल जाहिमे नदी अपन धार रोकि कऽ सुनैत अछि जे किनारपर के झूठ बाजि रहल अछि। चन्ना गाछीक पात सभ राति भरि किछु नहि बजल, मुदा ओकरा सभक नोक पर ओस नहि, अक्षर टाँगल छल। प्रत्येक अक्षर एकटा नामक आधा भाग। जकरा पूरा करबाक लेल धूर्त सभकेँ अपन जीह खोलबाक छल।

बाहरी दुनियाँमे भोर भऽ गेल छल। दिल्लीमे बटुकनाथ हरिहरनक कोठीमे चापाकल नहि छल, मुदा ओकर स्नानघरक नलसँ ओहि भोर कादो-मिश्रित पानि बहरायल। ओ पानि देखिते नौकर दौड़ल। बटुकनाथ डाँटलक — “टंकी साफ कराउ।” मुदा जखन ओ हथेलीमे पानि लेल, तखन हथेलीपर एक नाम चमकल — सरयू देवी। नाम कनी काल धरि पानिमे तैरल, फेर ओकर हथेलीमे घुसि गेल।

ओ अधीर भऽ कऽ अपन निर्णयक प्रति खोलि बैसल। अदालतक आदेश साफ छल, कानूनी छल, विजयी छल। मुदा पहिल पृष्ठपर जतय "वाद समाप्त" लिखल रहबाक चाही छल, ओतय लिखल छल — "नाम अधूरा।" बटुकनाथ चश्मा उतारि पोंछलक। अक्षर फेर वैह। ओ बुझल जे आँखि खराब नहि; निर्णय खराब अछि।

ओहि घड़ी चन्द्रपाल बत्रा अपन कक्षमे तिजोरी खोलि रहल छल। तिजोरीमे नोट, मोहर, विदेशी खाताक परचा, आ किछु चलन्त-दूरभाषक छोटका पटिया छल। ओ सभ पटिया जकरा सँ ओ कखनहुँ ककरो फँसौने, कखनहुँ ककरो डरौने, कखनहुँ ककरो मरबाक कगार धरि धकेलने छल। मुदा आइ सभ पटिया बन्द छल। केवल एकटा प्रकाश देलक। ओहिपर लिखल आयल — "जकर नाम पर खाता, ओकर मायक नाम कहू।"

चन्द्रपाल हँसल। ओकर हँसीक अभ्यास पुरान छल। ओ कहलक, "मायक नाम बैंकमे के पूछैत अछि?" तखने तिजोरीक भीतर सँ बच्चाक रोदन आयल। रोदन बेसी जोरक नहि; ओ एहन रोदन छल जे रातिकेँ तकियामे मुँह दऽ कऽ कएल जाइत अछि, ताकि घरक लोक नहि सुनय। चन्द्रपाल दरबाजा बन्द करए चाहलक, मुदा तिजोरी भीतर सँ खुलि गेल।

राघव सिग्नल सोमानीक घरमे कोनो कादो नहि छल, कोनो तिजोरी नहि खुलल। ओकर दण्ड ओकर चुप्पी छल। भोर भेलाक बाद ओ बजए चाहलक, आवाज नहि निकलल। डॉक्टरकेँ सन्देश पठेबाक लेल ओ कूट-संदेश खोललक। परदापर ओकर अंगुरी चलल, मुदा अक्षर मैथिलीमे बनैत गेल — "जे बात सिग्नलसँ कहने छी, से पातसँ पढ़ू।"

ओ पहिल बेर डरलक। अपराधी पुलिससँ डेराइत अछि, अदालतसँ कनी, मालिकसँ बेसी, मुदा भाषा बदलि गेलासँ सर्वाधिक। राघव केँ मैथिली नहि अबैत छल। मुदा जखन पातक अक्षर ओकर परदापर उगल, तखन ओकरा बुझाइत गेल। अपराधक भाषा सभ देशमे एक्के होइत अछि; डरक भाषा सेहो।

हांगकांगमे लाउ किन-हंग अपन शीशाघरक उन्नैसम तला पर जागल। समुद्र नीचाँ नील छल, शहर अबैत दिनक व्यापारसँ चमकि रहल छल। ओ अपन निजी सहायककेँ बजौलक। सहायक आयल नहि। अन्तरजाल-घण्टी बजल नहि। ई पहिल बेर छल जे ओकर आदेश हवामे अटकि गेल। ओकर डेस्कपर एकटा नारिकेल पात पड़ल छल। ओ पात ओतय कोना आयल? शीशाघरमे खिड़की नहि खुलैत छल।

पातपर देवनागरीमे लिखल छल — "लाभक पहिल मृतकक नाम।" लाउ ओ अक्षर पढ़ि नहि सकल। मुदा ओकरा भीतर एक स्वर पढ़ि देलक। स्वर समुद्रक नहि, गंगा-पुलक छपाकक

छल। ओ तुरन्त पात जरा देबाक आदेश देलक। आगि लगल नहि। पातक नोक सँ पानि टपकल।

एडवर्ड ब्रूम ओहि समय अपन अगिला भाषणक मसौदा देखैत छल। विषय छल — वैश्विक उत्तरदायित्व आ नव बाजारक नैतिक भविष्य। ओकर सहायक लिखने छल — "भारतक श्रमशक्ति वैश्विक निर्माणक मेरुदण्ड अछि।" एडवर्ड लाल कलमसँ "श्रमशक्ति" काटि "मानव-पूँजी" लिखए चाहलक। कलमसँ मसी नहि, पानि बहरायल। कागचपर शब्द बनल — "मजदूर।"

चारू दिशासँ पाँच मोन चन्ना गाछी दिस खिंचाइत छल। देह सभ अपन-अपन शहरमे छल, मुदा देहक भीतर जे मनुक्ख अपनाकेँ मालिक बुझैत छल, ओकर लगाम आब नामक हाथमे छल। गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ उठि चुकल छल। अनन्या पहिल पात चुनलक। देविका ओहि पातकेँ सुखौलनि नहि; ओ कहली — "नाम भीजल रहय, तखने ओ जीवित रहैत अछि।"

नारिकेल पात पाठशालामे आइ पाठ छल — "अधूरा नाम नहि बाजब।" बच्चा सभ गोल बैसल। प्रत्येक बच्चाक हाथमे एकटा कंकड़। कंकड़पर आधा नाम लिखल। दोसर आधा ओकरा सभकेँ बूढ़ सभ, मजदूरक परिवार, नदीक गीत, वा पुरान बहीसँ खोजबाक छल। ई खेल नहि, अभ्यास छल; मुदा गढ़ नारिकेलमे अभ्यास आ खेलक बीच वैह दूरी छल जे देह आ छाह बीच होइत अछि — जखन साँझ होइत अछि, दुनू एक दोसरमे पैसि जाइत अछि।

देविका कहलथि, "जखन कियो ठग अहाँकेँ डराओत, ओ अहाँक पूरा नाम नहि कहत। ओ कहत — ग्राहक, अभियुक्त, उपभोक्ता, खाता-धारक, उपयोगकर्ता। अहाँ पहिने अपन नाम पूरा कहब। फेर ओकर नाम पूछब। जे अपन नाम नहि कहि सकए, ओकर आदेश नहि मानब।"

बच्चा सभ एक स्वरमे दोहरौलक — "जे अपन नाम नहि कहि सकए, ओकर आदेश नहि मानब।"

एहि वाक्यक कम्पन दूर दिल्ली धरि गेल। बटुकनाथक कक्षमे कानूनक किताब सभ खुलि गेल। संवैधानिक विधि, दण्ड-विधि, साक्ष्य-विधि — सभ पन्ना पलटए लागल। प्रत्येक पन्नापर धारा नहि, नाम। ओ चिढ़ि उठल — "ई विधि-पुस्तक नहि रहल!" भीतर सँ उत्तर आयल — "विधि जँ नाम नहि राखए, तँ ओ पुस्तक नहि, पर्दा अछि।"

बटुकनाथ अपन अतीतमे घुरल। ओ विद्यार्थी छल, विधि पढ़ैत। एक बेर ओकर गुरु कहने छल — "वकील ओ नहि जे झूठकेँ सत्य सिद्ध करए; वकील ओ जे सत्यकेँ प्रक्रिया सँ मारल

नहि जाए, से देखए।" बटुकनाथ ओ वाक्य बहुत बरख पहिने छोड़ि देने छल। आइ ओ वाक्य पंख लगा कऽ ओकर मेजपर बैसल।

ओ तामसमे सचिवकेँ बजौलक। सचिव आयल। "गढ़ नारिकेलक फाइल आनू।" सचिव थरथरल। "सर, ओ फाइल तँ..." "की?" "ओ फाइल आब फाइल नहि रहल। ओहिमे बच्चा सभक नाम-पाठक चित्र अछि।" बटुकनाथ बुझल जे बाहरी कागच भीतरक पातमे बदलि गेल अछि।

चन्द्रपाल बत्रा अपन अपराधक भाषामे सोचैत छल — ई सभ तकनीकी गड़बड़ी अछि। सर्वर साफ करब, खाता बदलब, कड़ी काटब, नब ऐप खोलब। ओ अपन लोक सभकेँ सन्देश पठेलक — "सभ पुरान अकाउण्ट खाली करू।" उत्तर आयल — "अकाउण्टमे पैसा नहि, नाम अछि।"

ओ हिसाबक पटिया खोललक। जतय करोड़क रकम देखाएब चाही छल, ओतय घरक विवरण खुलल — उज्ज्वल झाक घरमे बिछल चटाई, देविकाक मायक पुरान संदूक, मुन्ना पासवानक पिताक फाटल कमीज, ओ विद्यार्थी जकरा म्यूल खाता लेल बस अड्डापर पाँच सय भेटल छल, ओकर स्कूलक प्रमाणपत्र। चन्द्रपाल पहिल बेर देखलक जे खाता केवल अंक नहि; प्रत्येक अंकक पाछाँ देह अछि।

मुदा देखब स्वीकार करब नहि। ओ आँखि मूँदि लेलक। तखने चन्ना गाछीक भीतर ओकर मोन उठि गेल आ कबड्डीक गोलमे आबि ठाढ़ भेल। बच्चा सभ ओकरा देखलक। अनन्या पूछली — "पहिल नाम?" चन्द्रपालक मुँह सूखि गेल। ओकरा उज्ज्वल मोन पड़ल, मुदा ओ पूरा नाम नहि बाजि सकल। ओकरा केवल "यूजर" शब्द अबैत छल। बच्चा सभ पीठ फेरि लेलक। ई दण्ड छल — उपेक्षा।

राघव अपन चुप्पी सँ लड़ैत-लड़ैत कागचपर लिखए चाहलक। ओकर लिखनीमे नाम नहि, कोड उतरैत रहल। एल एक, पी सात, शून्य पाँच। ओ बुझल जे ओकर हाथ सेहो अपराधक लिपि सीखि चुकल अछि। हाथकेँ नाम लिखब अबैत नहि। ओ कागच फाड़ि देलक। कागचक टुकड़ा पात बनि खिड़कीसँ बाहर उड़ि गेल।

ओहि पात सभ गढ़ नारिकेल पहुँचि बच्चा सभक गोदमे पड़ल। बच्चा सभ टुकड़ा जोड़ि पढ़ए लगल। देविका कहली — "ई ठगीक भाषा अछि। एकरा लोकभाषामे बदलू।" बच्चा सभ कोडकेँ नाममे बदलए लागल। एल एक बनल ललित। पी सात बनल पासवान। शून्य पाँच

बनल पाँच गुमनाम खाता। जे अपराधी भाषा बनबैत छल, पाठशाला ओकर अनुवाद करैत छल।

लाउ किन-हंगक शीशाघरमे बैसकी भेल। वकील, लेखाकार, जोखिम-परामर्शदाता, छवि-सुधारक — सभ आएल। ओ सभ कहलक, “भारतमे भावुक कथा चलैत अछि। समय दियौ, बात शान्त भऽ जायत।” लाउ पातकेँ मेजक नीचाँ नुकौलक। मुदा पातक गन्ध बैसकीमे पसरल। कियो ओ गन्ध चिन्हि नहि सकल। लाउ चिन्हि गेल — गढ़ नारिकेलक माटि।

ओ पूछलक, “जँ कथा शान्त नहि भेल तँ?” एक सलाहकार हँसल — “कथा सभ थाकि जाइत अछि।” लाउ उत्तर नहि देलक। ओकरा रातुक सपना मोन छल। चन्ना गाछीमे कथा थाकैत नहि। ओ साँस बदलैत अछि।

एडवर्ड ब्रूम अपन मसौदा फाड़ि देलक। नब मसौदा बनल — “दक्षिणक देश सभमे भरोसा पुनर्निर्माण।” मुदा पन्नाक माथपर स्वयं लिखल आयल — “जकरा नाम काटल, ओकरा भरोसा कोना घुराएब?” एडवर्डक सम्पूर्ण शिक्षित भाषा एहि एक प्रश्नसँ छोट भऽ गेल।

गढ़ नारिकेलमे बूढ़बा भूत बच्चा सभक पाठ सुनि रहल छलाह। ओ कहलन्हि, “एहि बेर खेलमे बड़का चतुराई चाही। धूर्त सभ नाम बजाओत, मुदा नामक भीतर अपन स्वार्थ राखत। अहाँ सभ नाम सुनिते नहि, नामक ताप सेहो देखब।”

अनन्या पूछली, “नामक ताप?”

बूढ़बा भूत उत्तर देलन्हि, “जे नाम प्रेमसँ बजाओल जाए, ओ गरम भात जेकाँ भाप छोड़ैत अछि। जे नाम केवल बचबाक लेल बजाओल जाए, ओ ठंढा लोहा जेकाँ रहैत अछि। चन्ना गाछी गरम आ ठंढा दुनू चिन्हैत अछि।”

ओहि राति पाँचू मोन फेर मैदानमे आयल। एहि बेर हुनका सभकेँ घेरा बाहर नहि, भीतर बैसलाओल गेल। बीचमे एक खाली माटिक कटोरा राखल छल। अनन्या कहली — “जे नाम बजाउ, ओहि कटोरामे एक बून्द पानि खसत। जँ नाम साँच होएत, पानि रहत। जँ नाम झूठ होएत, पानि धुआँ बनि उड़ि जायत।”

बटुकनाथ पहिने आगाँ बढ़ल। ओकर आवाज टूटल। “सरयू...” कटोरामे बून्द खसल। “देवी...” दोसर बून्द खसल। ओ रुकल। ओकरा सरयू देवीक पिता, गाम, मृत्यु, श्रम, देह — किछु नहि बूझल छल। पानि काँपल। धुआँ उठए लगल। ओ घबराएल।

तखने दूर सँ देविका आवाज देलक — "अधूरा नाम नहि।" बटुकनाथक मुँहसँ धीरे-धीरे निसरल — "सरयू देवी, जे पुलक पाया पर माथपर टोकड़ी लेने चढ़ली आ सूचीमे अनुपस्थित लिखल गेली।" पानि धुआँ बनल नहि। कटोरामे रहि गेल। बटुकनाथक कपारपर पसीना आयल। ई जीत नहि छल; ई पहिल चोट छल।

चन्द्रपालक बेर आयल। ओ बहुत देर धरि चुप। अन्तमे कहलक — "उज्ज्वल झा।" कटोरामे बून्द खसल, मुदा तुरन्त धुआँ। अनन्या कहली, "ओ नाम अहाँ समाचारसँ सीखलहुँ। ओकर भय कहू।" चन्द्रपाल चुप। ओकरा भय नहि, केवल रकम मोन छल। कटोरा सूखि गेल। बच्चा सभ ओकरा फेर किनार पर पठा देलक।

राघव लिखए चाहलक — "मुन्ना पासवान।" पानि खसल। फेर ओकरा मोन पड़ल जे ओ मुन्नाकेँ केवल खाता नम्बर मानैत छल। ओ कहलक — "मुन्ना पासवान, जकर खाता खोलि हम ओकरा अपराधी बनौलहुँ, मुदा अपराध ओकर नहि छल।" पानि रहि गेल। राघवक चुप्पीमे पहिल दरार पड़ल।

लाउ किन-हंगक बेर आयल। ओकरा देवनागरी नहि अबैत। ओ नाम बजए नहि सकल। मुदा ओकर मोनमे एक घरक देहरी चमकल। ओ कहलक — "द बॉय..." बच्चा सभ चुप। बूढ़बा भूत कहलन्हि, "बजारक भाषा नहि।" लाउ काँपल। बहुत देर बाद ओकर मुँहसँ टेढ़-मेढ़ उच्चारण आयल — "उज्ज्वल।" कटोरामे बून्द खसल, मुदा धुआँ बनि गेल। कारण ओ उज्ज्वलकेँ मनुष्य नहि, घटना बुझैत छल।

एडवर्ड ब्रूम आगाँ बढ़ल। ओ कहलक — "लेबर।" कटोरा सूखल। "वर्कर।" सूखल। "सरयू।" बून्द खसल। "देवी।" बून्द रहि गेल। एडवर्डक आँखि भरि आयल नहि; ओकर शिक्षा ओतेक जल्दी नहि टूटैत। मुदा ओकर भाषणक ताली भीतर सँ पहिल बेर बन्द भेल।

चन्ना गाछीमे भोर भऽ रहल छल। कटोरामे कुल पाँच बून्द पानि छल। पाँचू बून्द अलग-अलग ताप धारण केने छल। सरयू देवीक बून्द गरम। मुन्ना पासवानक बून्द काँपैत। उज्ज्वलक बून्द दू बेर धुआँ बनि चुकल, तेसर बेरक प्रतीक्षा करैत।

बूढ़बा भूत कहलन्हि, "पाँचम साँस पूर्ण नहि, आरम्भ भेल अछि। जे एक नाम कहि देलक, से मुक्त नहि। आब ओकरा नामक घर धरि जाए पड़त।"

बाहरी दुनियाँमे पाँचू देह जागल। बटुकनाथ टिकट कटौलक — गढ़ नारिकेल। चन्द्रपाल अपन फोन तोड़बाक सोचलक, मुदा फोनक भीतर सँ अनन्याक स्वर आयल — "फोन तोड़लासँ नाम नहि टूटैत।" राघव पहिल बेर कागचपर देवनागरीक अक्षर बनाबए बैसल। लाउ

किन-हंग भारतक नक्शा मँगौलक। एडवर्ड ब्रूम अपन भाषण रद्द नहि केलक; ओ ओकर आरम्भ बदललक — मुदा एखनो ओकरा पूरा सत्य नहि भेटल।

नारिकेल पात पाठशालामे बच्चा सभ कटोराक पानि चन्ना गाछीक जड़िमे ढारलक। जड़ि ओ पानि पी गेल। पात हिलल। ओहि हिलनाइमे एकटा वाक्य छल — “नाम कहब पहिल साँस। नामक घर धरि जाएब दोसर।”

आ गढ़ नारिकेलक कथा पाँचम साँस लऽ कऽ फेर आगाँ बढ़ल।

लोकगीत: नदी नाम सुनै छै

लोकधुन: नाविक-समदाउन

सुनै हे नदी, धार रोकि सुनै हे,
साँच नामक बून्द कटोरा मे टिकि जाए हे।

नदी धार रोकि सुनै, किनार के झूठ बजै,
पातक नोक आधा नाम, जीह ओकरा पूरा करै।
झूठ नाम धुआँ बनि आकाशमे उड़ि जाए।
प्रेमसँ बाजल नाम गरम भातक भाप,

बचबा लेल बाजल नाम ठंढा लोहेक छाप।
पहिल साँस नाम कहब, दोसर घर धरि जाएब,
मृतकक देहरी धूलि आँखिमे लगायब।
कटोराक पानि जड़ि पी गेल चुपचाप,
सुनैत नदी कहलक—नामक घर धरि जाउ आब।

❖

अध्याय ३५

नामक देहरी

नाम कहब पहिल साँस, नामक घर धरि जाएब दोसर।

अध्यायारम्भ लोकगीत: देहरीक धूलिसँ आशीष

लोकधुन: घरघुरनी गीत

धूलि हे देहरीक, माथ पर धरू हे,
टूटलो घरक आशीषसँ नब घर भरू हे।

घर टूटि जाए तइयो देहरी धूलि बचाबै,
घुरनिहारक पग चिन्हि पुरखा बात सुनाबै।
धूलि माथपर धरि कहू—घरक मान रहय,
नब भीत उठत, नब छप्पर, नेह पुरान बहय।

देहरी स्मृति मात्र नहि, पुनर्निर्माणक मूल,
ओहि धूरिमे रोपू विश्वासक नान्हि फूल।
देहरीक धूलिसँ आशीष नब घरकेँ भेटत,
टूटल ईंटो संग जुड़ि सुरक्षित भविष्य देत।

भीत खसल, छप्पर उड़ल, देहरी ठाढ़े रहल,
पुरखा-पएरक चिन्ह ओहि धूरामे जगमगल।
ओही धूरिक टीका लगा नींवक ईंटा जोड़ू,
टूटल-जुड़लक संगमसँ नब बिहान गढ़ू।

❖

पाँचम साँसक बाद चन्ना गाछीक जड़िमे ढारल ओ पाँच बून्द पानि धरतीमे नहि गेल। ओ जड़िक भीतर घूमैत रहल, जेना पुरान घरक भीतर बच्चा सभक हँसी घूमैत अछि। भोरक पहिल उजासमे गाछक पात सभपर ओहि बून्दक चमक देखाइ देलक। प्रत्येक बून्दक भीतर एक-एकटा देहरी छल। नाम कहब पहिल साँस छल; नामक घर धरि जाएब दोसर।

अनन्या ओहि भोर माटिमे एकटा गोल खिंचलक। गोलक चारू कात पाँच छोटका घर बनाओल गेल — सरयू देवीक घर, मुन्ना पासवानक घर, उज्ज्वलक घर, ओ अज्ञात मजदूर सभक घर, आ ओ घर जकर मालिक एखनो नाम नहि भेटल छल। बच्चा सभ गोलमे बैसल। देविका कहली, “जकर घर नहि चिन्हब, ओकर नाम आधा रहत। आधा नाम फेर धूर्त सभक काज आबि जाएत।”

बटुकनाथ हरिहरन दिल्लीसँ निकलल। ओ रेलमे नहि, अपन गाड़ीमे जाए चाहैत छल, मुदा गाड़ी तीन बेर बन्द भेल। चालक कहलक — "साहब, इंजन ठीक अछि, मुदा दिशा मानि नहि रहल।" अन्तमे ट्रेन पकड़ए पड़ल। टिकट पर गंतव्य छपल छल — दरभंगा। मुदा टिकट जखन ओकर हथेलीमे गरम भेल, तखन अक्षर बदलि गेल — "सरयू देवीक देहरी।"

ओ क्रोधमे टिकट मुट्ठीमे मोड़ि देलक। कागच मुड़ल नहि। कागच साँस लेल। ओकरा लागल जे कागचक भीतर ककरो छाती चलि रहल अछि। कातमे बैसल बूढ़ फेर देखाइ देलाह — ओही बूढ़, जे पहिनुका यात्रामे विधिक नाम पूछने छलाह। बटुकनाथ नजरि फेरौलक। बूढ़ मुस्कुरेलाह — "आइ धारा नहि पढ़ब। आइ आँगन पढ़ब।"

"अहाँ हमर पाछाँ किए लागल छी?" बटुकनाथ झुँझलायल। बूढ़बा भूत खिड़कीसँ बाहर तकैत कहलन्हि, "पाछाँ हम नहि लागल छी। जे नाम अहाँ छोड़ने छी, ओ अहाँक आगाँ चलि रहल अछि।"

ट्रेनक खिड़कीसँ खेत भागैत नहि, उनटे ट्रेन दिस अबैत लागल। प्रत्येक खेतमे एकटा स्त्री माथपर टोकड़ी लेने ठाढ़। बटुकनाथ आँखि मूँदलक। आँखि मूँदिते ओ दृश्य भीतर प्रवेश कएलक। आब ओ स्त्री बाहर नहि, ओकर कपारक भीतर ठाढ़ छल। ओ पूछैत नहि छल, आरोप नहि लगबैत छल। केवल घरक रस्ता देखबैत छल।

चन्द्रपाल बत्रा फोन तोड़ि नहि सकल। ओ फोनकेँ हथौड़ासँ मारलक, पानिमे फेकलक, आगि लगौलक; प्रत्येक बेर फोनक परदा चन्ना गाछीक पात बनि गेल। ओ अपन पुरान लोक सभकेँ बजौलक। "नव डिवाइस आनू, पुरान सभ जरा दियौ।" नव डिवाइस आयल। परदा खुलिते उज्ज्वलक घरक तस्वीर आबि गेल — आधा झुकल छप्पर, चूल्हिक कात बैसल देविका, आ देबालपर ओ कोरा स्थान जतऽ उज्ज्वलक प्रमाणपत्र टँगल रहैत छल।

चन्द्रपाल पहिल बेर घरकेँ देखलक। अपराधक दुनियाँमे ओ घर नहि देखैत छल। ओकरा केवल केवाइसी, खाता, सिम, लेन-देन, वसूली, प्रतिशत देखाइ दैत छल। घर देखिते ओकरा असहज लागल, जेना कोनो अजनबी ओकर कक्षमे प्रवेश कएने हो। मुदा अजनबी घर नहि छल; अजनबी ओ स्वयं छल।

ओ परदापर आँगुर फेरलक। तस्वीर बदलि गेल। आब उज्ज्वलक बिछौना देखाइ देलक। तकियाक किनार पर दाँतक निशान छल। देविका बादमे कहने रहथि — उज्ज्वल रोदन रोकबाक लेल तकिया काटैत छल। चन्द्रपाल परदा बन्द कएलक। मुदा दाँतक निशान ओकर नखमे उतरि गेल।

राघव सिग्नल सोमानी देवनागरीक पहिल अक्षर सीखि रहल छल। ओकर सामने कागच पर “म” लिखल छल। ओ म्यूलक “म” सोचलक, मुदा कागच पर अक्षर काँपल। शिक्षक कियो नहि। ओकरा स्वयं चन्ना गाछीक पात सिखबैत छल। पातक नोक सँ एक आवाज आयल — “म — मुन्ना। म्यूल नहि। मुन्ना।”

राघव पुनः लिखलक। म टेढ़ भेल। फेर उ। फेर न्न। फेर आ। “मुन्ना।” नाम बनिते कागच पर एक छोट देहरी उभरल। देहरी पर फाटल कमीज सूखि रहल छल। ओकरा मोन पड़ल — ओहि कमीजधारी लड़काकेँ कहने रहय, “बस खाता खोलि दे, पाँच हजार भेटत।” ओ बालक हँसने रहय। राघवकेँ ओ हँसी सुनल छल, मुदा ओकर हिसाबमे हँसीक कोनो स्तम्भ नहि छल।

हांगकांगमे लाउ किन-हंग भारतक नक्शा खोललक। नक्शामे शहर, बन्दरगाह, व्यापार-मार्ग, बैंकिंग-नोड, डिजिटल उपभोक्ता-घनत्व — सभ तह छल। मुदा जखन ओ नब तह खोललक, स्क्रीन पर केवल देहरी सभ चमकल। कतेक देहरी। लाखो। प्रत्येक देहरी पर ककरो नाम अपूर्ण। ओ चिढ़ल — “बाजारक नक्शा कतय? परदा उत्तर देलक — “इएह बाजार अछि।””

लाउक सभागारमे विशेषज्ञ सभ बैसल। एक कहलक — “ग्रामीण संवेदनाकेँ कथा-प्रबन्धनसँ सम्हारि सकैत छी।” दोसर कहलक — “स्थानीय स्तरपर प्रतिष्ठित मध्यस्थ कीनू।” तेसर कहलक — “धर्म, जाति, चुनाव, कर्ज, रोजगार — एहि पाँच रस्तासँ सभ शान्त भऽ जाएत।” लाउ सुनैत रहल। ओकरा टेबलक भीतर सँ टप-टप पानि सुनाइ दैत रहल। ओ बुझल — ई आवाज समुद्रक नहि। ई ओहि कटोराक पाँच बून्दक आवाज छल।

एडवर्ड ब्रूम अपन भाषणक आरम्भ बदलि देने छल, मुदा शब्द एखनो ओकरा धोखा दैत छल। ओ लिखलक — “हम सभ गलतीसँ सीखैत छी।” कागचपर बनल — “हम सभ मृतकसँ लाभ लैत छी।” ओ चौंकल। सहायक कहलक — “सर, प्रिण्टरक समस्या।” एडवर्ड जानैत छल, ई प्रिण्टर नहि। ई ओ भाषा छल जकरा ओ बरखोंसँ सी.एस.आर. रिपोर्टक नीचाँ दबौने छल।

गढ़ नारिकेलमे नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा सभ “घरक नक्शा” बनबैत छल। नक्शामे सड़क नहि, देहरी छल। अनन्या कहली — “सरयू देवीक घर धरि जाएब से केवल गामक रस्ता नहि। सरयू देवीक बेटी कतय गेली, ओकर नाती कतय काज करैत अछि, ओकर नाम कोन बहीमे आधा लिखल, ई सभ रस्ता अछि।”

सौम्या ओहि बात पर चुप रहली। शोध-पत्रमे “परिवारक अनुगामी प्रभाव” लिखल जाइत अछि। मुदा गढ़ नारिकेलमे ई बात एक बच्चा देहरीक रेखा खिंचैत कहि रहल छल। सौम्या बुझली — ज्ञान जे अंग्रेजीमे बहुत जटिल देखाइत अछि, लोकक दुखमे सीध होइत अछि।

देविका उज्ज्वलक घरक सामने बैसली। ओ चाहैत छली जे चन्द्रपाल ओ घर देखए। बदला लेल नहि। कारण जे घर एक बेर देखल जाए, ओकरा संख्या बनाओल कठिन होइत अछि। ओ देबाल पर उज्ज्वलक नामक नीचाँ लिखली — “स्क्रीनमे डूबल, मुदा नाम धरतीपर।”

ओहि वाक्यक छाह चन्द्रपालक परदापर पहुँचल। ओ पढ़लक। पहिने ओकरा हँसी आयल। “भावुकता।” मुदा शब्द “धरतीपर” चमकल। ओकर ऐप सभ आकाशमे, सर्वरमे, विदेशी खातामे छल। धरतीपर ओकर किछु नहि। अचानक ओकरा अपन बचपनक आँगन मोन पड़ल — मेरठक ओ कोठरी जतऽ ओ पहिने विधि पढ़ैत छल। ओ स्वयं सेहो कोनो दिन देहरी पर नाम छल, प्रतिशत नहि।

राघव मुन्ना पासवानक गामक पता खोजए लगल। तंत्रमे पता अधूरा छल। बैंकमे केवल जिला। सिममे नकली लोकेशन। दस्तावेजमे हिज्जे गलत। राघवकेँ पहिल बेर बुझल जे गरीबक पता जानि-बुझि अधूरा राखल जाइत अछि, ताकि अपराधी ओकरा उपयोग कऽ सकए आ राज्य ओकरा छोड़ि सकए। ओ पात पर लिखलक — “पासवान टोली, नदीक दक्खिन, पुरान पीपर लग।” पात गरम भेल। दिशा सही छल।

बटुकनाथक ट्रेन एक छोट स्टेशन पर रुकल। स्टेशनक नाम धुँधलकामे पढ़ल नहि गेल। ओ उतरए चाहलक नहि, मुदा बूढ़बा भूत कहलन्हि — “एतहि।” प्लेटफार्म पर कोनो भीड़ नहि। केवल एक स्त्रीक पायल दूरसँ सुनाइ देलक। बटुकनाथ पछुआएल। स्टेशनक बाहर एक पयडंडी छल। ओकर जूता कादोमे धँसैत गेल। ओ जूता सँ चिढ़ल। मुदा बूढ़ कहलन्हि — “देहरी धरि जूता नहि, पएर पहुँचैत अछि।”

सरयू देवीक घर आब घर नहि रहल छल। देबालक आधा भाग बचल, छप्पर बदलल, आँगनमे घास। मुदा देहरी रहि गेल छल। देहरी अजीब वस्तु अछि — घर टूटि जाए, देहरी देर धरि घरक स्मृति बचा लैत अछि। बटुकनाथ देहरी पर ठाढ़ भेल। ओकर हाथक आदेशक प्रति भारी भऽ गेल। ओ पहिल बेर ओ कागच देहरीपर नहि राखि सकल।

भीतर सँ एक वृद्धा निकलली। “ककरा चाही?”

बटुकनाथक मुँहसँ पुरान अभ्यास आयल — “हम बार काउन्सिल...” फेर रुकि गेल। बूढ़बा भूत कतहु नहि देखेलाह। वृद्धा प्रतीक्षा करैत रहली। बटुकनाथ धीरे कहलक — “सरयू

देवीक घर ई अछि?” वृद्धा कहलखिन्ह — “घर छल। आब नाम अछि। अहाँ किएक पूछैत छी?”

ई प्रश्न अदालतक कोनो प्रश्नसँ कठिन छल। अदालतमे उत्तर बनाओल जाइत अछि। देहरी पर उत्तर केवल निकलैत अछि वा अटकैत अछि। बटुकनाथ अटकि गेल। ओ झूठ कहि सकैत छल — शोध, मुआवजा, पुरान फाइल। मुदा देहरी पर झूठक पएर छोट होइत अछि। ओ केवल कहि सकल — “हम हुनका अधूरा पढ़ने रही।”

वृद्धा ओकरा भीतर नहि बजेलखिन्ह। ओ एक मुट्ठी धूलि उठौलनि आ ओकर हाथ पर राखि देलखिन्ह। “पूरा पढ़बाक हो तँ ई धूलि आँखिमे लगाउ। कागचपर लगेलासँ किछु नहि होएत।”

बटुकनाथ काँपल। धूलि आँखिमे लगाओत? ओ जीवन भरि आँखि पर चश्मा, चश्मा पर विधि, विधि पर पद लगौने छल। धूलि ओकर सम्पूर्ण संरक्षणक उपहास छल। मुदा ओकर मोन टांगल छल। ओ धूलि आँखिक कोर पर लगौलक। एक क्षणमे सरयू देवीक अन्तिम दिन खुलि गेल — माथपर टोकड़ी, सीमेंटक गन्ध, पानिक चमक, गोहिक मुँह, आ सरकारी सूचीमे रिक्त स्थान।

ओ जमीन पर बैसि गेल। ई पश्चात्ताप नहि छल; पश्चात्ताप अएबामे समय लगैत अछि। ई केवल देखबाक आरम्भ छल। वृद्धा ओकरा पानि देलखिन्ह नहि। कहलखिन्ह — “जे देखलहुँ, से लिखू।”

चन्द्रपाल उज्ज्वलक घर पहुँचल नहि। मुदा उज्ज्वलक घर ओकर फोनमे, नखमे, बिछौनाक दाँत-निशानमे पहुँचि गेल छल। ओ अपन लोककेँ कहलक — “देविका पर दबाव नहि।” ओ लोक चकित। “सर?” “कहि देलहुँ — नहि।” ई करुणा नहि छल; डर छल। मुदा डर सेहो कहियो-कहियो हिंसाक पहिल रोक बनैत अछि। चन्ना गाछी डरकेँ तिरस्कार नहि करैत। ओ ओकरा कच्चा माटि मानैत, जाहिसँ पछतावा बनि सकए — जँ जल भेटए।

राघव मुन्ना पासवानक पता लिखि चुकल छल। ओकर कागच पर पहिल बेर कोड नहि, पूर्ण वाक्य बनल — “मुन्ना पासवान अपराधी नहि, उपयोग कएल गेल युवक।” लिखिते ओकर आवाज घुरल। बहुत धीमे। ओ बाजल — “मुन्ना।” स्वर टुटल, मुदा निसरल।

लाउ किन-हंगक सभागारमे अचानक बिजुली गेल। आपात प्रकाश जरल। स्क्रीन पर देहरी सभ चमकल। विशेषज्ञ सभ हँसल — “साइबर मसखरी।” लाउ नहि हँसल। ओकरा बुझल जे जे लोक देहरी नहि चिन्हैत, ओकरा सभकेँ बाजार लगैत अछि। मुदा देहरीक संख्या जतेक पैघ, बाजारक नक्शा ओतेक कमजोर।

एडवर्ड ब्रूम हार्वर्डक सभागारमे पहुँचल। भाषणक कागच हाथमे छल, मुदा जहिना ओ मंच पर ठाढ़ भेल, स्क्रीन पर स्लाइड नहि, पाँच देहरी देखाइ देलक। सभागार चुप। ओ चाहैत छल तकनीकी गड़बड़ी कहि देब। मुदा पहिल देहरीक नीचाँ लिखल छल — “सरयू देवी।” ओ नाम पढ़लक। गलत उच्चारण। सभागारमे ककरो अर्थ नहि बुझल, मुदा ओ नाम ओकर गलामे काँटा बनि अटकि गेल।

गढ़ नारिकेलमे ओहि घड़ी बच्चा सभ खेलि रहल छल। खेलक नाम छल — “घर कहू।” एक बच्चा नाम बजैत, दोसर ओकर घरक किछु कहैत, तेसर ओकर भय, चारिम ओकर सपना। जँ तीनू बात नहि भेटत, नाम फेर अधूरा मानल जाइत। ई खेल चन्ना गाछीक नब नियम छल।

अनन्या कहली — “नाम केवल बोललासँ नहि। नामक घर, भय, सपना — तीनू।”

बूढ़बा भूत पात हिलौलनि। “छठम साँस एही अछि।”

राति फेर पाँचू मोन चन्ना गाछीमे उपस्थित भेल। एहि बेर मैदानमे कटोरा नहि, पाँच देहरी राखल छल। प्रत्येक देहरी माटिक, मुदा ओहिपर पएर राखिते मनुक्ख अपन देखल असत्यक भार अनुभव करैत। बटुकनाथ सरयू देवीक देहरी पर पएर राखलक। देहरी डोलल नहि। ओकर हाथमे वृद्धाक धूलि एखनहुँ छल।

चन्द्रपाल उज्ज्वलक देहरी पर पएर राखए चाहलक, मुदा देहरी पाछाँ हटि गेल। अनन्या कहली — “अहाँ ओकर घर नहि देखलहुँ। केवल परदा देखलहुँ।” चन्द्रपाल गरजलक, “घर पहुँचब।” बच्चा सभ उत्तर देलक — “पहुँचू। मुदा धमकी लऽ कऽ नहि।”

राघव मुन्ना पासवानक देहरी पर पएर राखलक। देहरी काँपल, मुदा भागल नहि। ओकरा आवाज आयल — “पता पूरा करह।” राघव कहलक — “पासवान टोली, नदीक दक्खिन, पुरान पीपर लग।” देहरी स्थिर भऽ गेल।

लाउ किन-हंगक आगाँ लाखो देहरी उभरि आयल। ओ एक्को पर पएर नहि राखि सकल। ओ बाजारक मालिक छल, देहरीक अतिथि नहि। ओकरा पहिल बेर “अनुमति” शब्द बुझबामे आयल।

एडवर्ड ब्रूम सरयू देवीक देहरीक सामने ठाढ़ रहल। ओ कहलक — “हमरा दुख अछि।” देहरी मौन। बूढ़बा भूत कहलन्हि — “दुख अपन भाषामे नहि, पीड़ितक नामक भाषामे बाजू।” एडवर्ड चुप। ओकर शिक्षा लंबा छल, मुदा नामक भाषा छोट। ओ सीखबाक आरम्भ पर ठाढ़ रहल।

भोर भेल। छठम साँस समाप्त नहि भेल; ओ पएरक धूलि बनि पाँच दिशामे छिड़िआ गेल। गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ देहरी सभ पर पानि छिड़कलक। देविका कहली — “आब जे नाम कहत, ओकर घर पूछब। जे घर कहत, ओकर भय पूछब। जे भय कहत, ओकर सपना पूछब। तखनहि न्याय साँस लेत।”

चन्ना गाछीक पात सभ एक साथ हिलल। ओ हिलनाइमे कबड्डी नहि, पाठशालाक स्वर छल। कथा आगाँ बढ़ल — कारण नाम घर पहुँचने बिना थाकैत नहि।

लोकगीत: देहरीक धूलि

लोकधुन: घरघुरनी गीत

पहुँचल हे नाम, देहरी धरि पहुँचल हे,
तखने न्याय मानू—बा एतबे कहल हे।

घर टूटि गेल, देहरी स्मृति धरि रहल,
अधूरा पता गरीबक भाग्य बनि रहल।
नाम कहब पहिल साँस, घर पहुँचब दोसर,
जूता नहि, नंगा पएर बुझै धूलिक असर।
लाउ लाख देहरी देखलक, अतिथि बनि नहि पाबल,

अनुमति शब्द पहिल बेर ओकर भीतर जागल।
विदेशी दुख अपन भाषा मे कहलक बेकार,
पीड़ितक नामक बोलीमे खोलू क्षमाक द्वार।
घर पूछू, भय पूछू, सपना फेर जानू,
नाम देहरी पहुँचल तखनहि न्याय मानू।

घर टूटल, देहरी स्मृति धरि ठाढ़ रहल,
लाख देहरी देखलक लाउ, अतिथि ने बनि सकल,

❖

अध्याय ३६

घर, भय, सपना

घर, भय आ सपना— तीनू गोलक बीच जे साँच ठाढ़ रहल, वैह खेलमे टिकल।

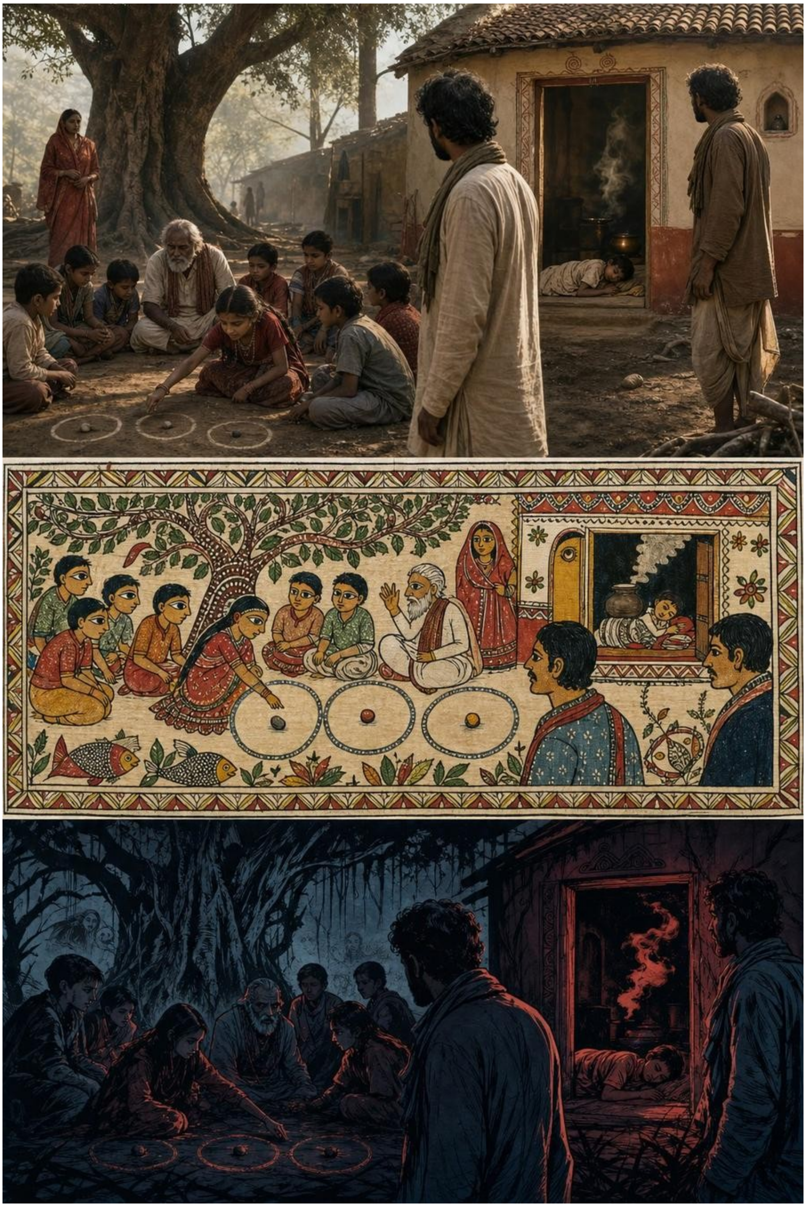

अध्यायारम्भ लोकगीत: तीन कंकड़—घर, साहस, सपना

लोकधुन: बाल-झूमर

खनकाबू हो नेना, जेबीक कंकड़ खनकाबू हो,
घर, साहस, सपना—तीनू नाम रटाबू हो।

जेबीमे तीन कंकड़, नेना नाम धरै,
एक घरक, एक साहसक, एक सपना भरै।
डर लगए तँ साहस पकड़ू, दूर हो तँ घर,
थाकि जाउ तँ सपना कहत—आगाँ बाट अमर।

नान्हि कंकड़ खेल नहि, स्मृतिक चिन्ह महान,
बच्चाक सरल उपायसँ मन पाबै पहिचान।
तीन कंकड़ तीन बात, जेबीमे उजियार,
घर, साहस आ सपना संग कियो नहि लाचार।

पहिल कंकड़ बाजए—घर कतबो दूर, लगे,
दोसर कहए—डेग बढ़ाउ, डर पाछाँ भगे।
तेसर सपना गुनगुनाए—बाट एखन बाँकी,
तीनू संग खनकिते मोन नहि रहए एकाकी।

❖

नाम घर पहुँचल, तखन चन्ना गाछीक खेलक सातम साँस आरम्भ भेल। छह साँस धरि नाम अपन देहरी ताकैत रहल छल; सातम साँसमे देहरीक भीतर जे अन्हार, जे भातक गन्ध, जे डरक काँटा आ जे सपनाक बुझायल बाती छल, से सभ धीरे-धीरे खुलए लागल।

गामक बच्चा सभ भोरमे चन्ना गाछी लग जमा भेल। पातक छाहमे ओ सभ आब खेल नहि, नियम लिखैत छल। अनन्या माटि पर तीन गोल बनौलक — घर, भय, सपना। प्रत्येक गोलक बीच एक-एकटा कंकड़। कंकड़ छोट छल, मुदा बूढ़बा भूत कहलन्हि, “एहि तीन कंकड़सँ बड़का कोनो न्यायालय नहि।”

सरयू देवीक देहरी पहिने बजल। देहरीक भीतर धुँआ छल, अधपकल भात छल, आ एक बालक छल जे राति भरि मायक प्रतीक्षा करैत-करैत सूति गेल छल। बटुकनाथ हरिहरन ओ

दृश्य देखलक आ तुरन्त आँखि फेरए चाहलक। मुदा चन्ना गाछीमे आँखि फेरब सेहो गवाही मानल जाइत अछि। पात सभ खड़खड़ायल — “देखू।”

बटुकनाथ देखलक जे सरयू देवी पुलपर माथपर टोकड़ी लेने चढ़ैत छथि। सुरक्षा-पट्टी नहि, नाव नहि, नाम लिखनिहार नहि। ओ खसैत छथि। छपाकक आवाज उठैत अछि। सरकारी कागचमे अगिला पंक्ति लिखाइत अछि — “स्त्री-मजदूर उपस्थित नहि।”

बटुकनाथ अपन भीतरक वकीलकेँ पुकारलक। भीतरक वकील बाजल — “साक्ष्य कतऽ अछि?” तखने सरयू देवीक देहरीक चूल्हा सँ राखि उड़ल आ ओकर कपार पर जमा भेल। राखि पर अक्षर बनल — “प्रतीक्षा।” बूढ़बा भूत कहलन्हि, “साक्ष्य ओ नहि जे फाइलमे रहए; साक्ष्य ओ अछि जे बच्चा भात ठंढा होइतो खा नहि सकल।”

चन्द्रपाल बत्रा उज्ज्वलक घर दिस गेल। ओ सोचने छल जे घर मतलब पता, गली, मकान-संख्या। मुदा उज्ज्वलक घरमे प्रवेश करिते ओकरा मोबाइलक मद्धिम नीला उजास देखाइ देलक। ओहि उजासमे एक युवकक चेहरा छल — जीतक पहिल दिनक हँसी, हारक दोसर दिनक चुप्पी, उधारक तेसर दिनक पसीना, आ डिजिटल अरेस्टक चारिम दिनक टूटल आवाज।

देविका दूर नहि, ओहि घरक भीतर बैसल छली। ओ चन्द्रपालकेँ देखलक, मुदा क्रोधसँ नहि। ओ कहली — “देखू, एहि तकिया पर ओ दाँत गड़ौने छल। ई हारल रुपयाक चिन्ह नहि, साँस रोकबाक चिन्ह अछि।”

चन्द्रपाल कहए चाहलक — “ई हमर ऐप नहि छल, ओ विदेशी मंच छल, हम केवल परामर्शदाता।” मुदा उज्ज्वलक घरमे झूठक आवाज पूर्ण वाक्य बनि नहि सकैत। मुँहसँ केवल “केवल” निकलल। बच्चा सभ बाहरसँ दोहरौलक — “केवलक अर्थ अछि — आधा स्वीकार।”

ओकर स्क्रीन फेर खुलल। एहि बेर सट्टा-ऐप नहि, उज्ज्वलक अधूरा पत्र। पत्रमे लिखल छल — “दीदी, हम गलत छलौं, मुदा हम अपराधी नहि छलौं।” चन्द्रपालक आँगुर थिर भऽ गेल। ओ मेटएबाक बटन दबाबय चाहलक, मुदा परदा पर देविकाक स्वर आयल — “पत्र नहि मेटब। एहि बेर उत्तर लिखब।”

राघव सिग्नल सोमानी मुन्ना पासवानक घर पहुँचल। मुन्नाक घर माटिक नहि, कर्जक ईंटसँ बनल लगैत छल। प्रत्येक ईंट पर एक एकबारगी संकेत-संख्या, एक खाता-संख्या, एक आधारक प्रतिलिपि, एक बैंकक मोहर। राघव ई सभ चिन्हैत छल। ओकर रोजी-रोटी ई चिन्ह छल। मुदा ओ पहिल बेर चिन्हक भीतर मनुक्ख देखलक।

मुन्नाक पिता ओकरा देखैत बजलाह — “अहाँ किएक लिखलहुँ जे हमर बेटा सरगना अछि?” राघव उत्तर नहि दऽ सकल। कारण ओकरा मोन पड़ल — ओ लिखने छल “चलित म्यूल खाता”। मैथिलीमे ओकर अर्थ ओहि क्षण खुलल — “जकर पीठपर अपराध ढोआओल गेल।”

मुन्नाक माय एकटा पुरान गमछा राघवक आगाँ राखलनि। “ई गमछा ओ बैंक जाए काल लऽ गेल छल। कहने छल जे नौकरी भेटत। अहाँक नोकरी एहेन होइत अछि?” राघवक सिग्नल-भाषा टूटि गेल। ओकरा लग कोड छल, कमीशन छल, कड़ी छल, मुदा मायक प्रश्नक लेल कोनो छोट बाट नहि छल।

लाउ किन-हंग दूर समुद्रक शहरमे बैसल छल, मुदा सातम साँस ओकर शीशाघरमे सेहो पहुँचल। ओकर सामने बाजार-नक्शा खुलल छल। भारतक नक्शा बिन्दु-बिन्दु चमकि रहल छल। प्रत्येक चमकैत बिन्दु एक संभावित उपभोक्ता छल। तखने नक्शा बदलि गेल। प्रत्येक बिन्दु एक देहरी बनि गेल। ओहि देहरी पर कियो बेटा प्रतीक्षा करैत, कियो बहिन पत्र पढ़ैत, कियो माय गमछा समेटैत।

लाउ अपन सलाहकारकेँ बजौलक। सलाहकार आयल। लाउ पूछलक — “ग्राहकक घरक विवरण अछि? सलाहकार हँसल — “हमरा लग आय, उमेर, खर्च, व्यवहार, ऋण-झुकाव, खेल-आदति अछि।”” लाउ दोहरौलक — “घर? सलाहकार मौन।” ओहि मौनमे गढ़ नारिकेलक पात हिलल।

लाउकेँ पहिल बेर बुझल जे जे लोककेँ ओ आँकड़ा बुझैत छल, ओ सभ घरक लोक अछि। आँकड़ा मरैत नहि; आँकड़ा बदलि कऽ दावा बनैत अछि। मुदा घर मरैत अछि। आ घर मरलाक बाद ओकर गन्ध समुद्र पार करैत अछि। ओकर वातानुकूलित कक्षमे अचानक भीजल धानक गन्ध भरि गेल।

एडवर्ड ब्रूम “माफ करू” लिखबाक अभ्यास करैत छल। ईराक पठाओल छोटका पन्ना पर मैथिली अक्षर छल। ओ पहिल बेर ‘म’ बनबैत-बनबैत थाकि गेल। ओकर आँगुर चिक्कन कागच पर फिसलैत छल, मुदा अक्षर माटि माँगैत छल। प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स ओकर सामने बैसल छली। ओ कहली — “दुख जँ अनुवादमे अटकि जाए, तखन चुप रहब नैतिकता नहि।”

एडवर्ड कहलक — “हम नाम गलत उच्चारण करैत छी।” एलिना उत्तर देली — “गलत उच्चारण अपराध नहि।” नाम नहि लेब अपराध अछि। ओहि वाक्यक बाद एडवर्ड पहिल बेर भाषण-मंच छोड़ि मेज पर बैसल। भाषणक लोक लेखनक छात्र बनि गेल।

गढ़ नारिकेलमे अनन्या बच्चा सभसँ कहली — “आब घर पूछलौं। भय पूछू।” बच्चा सभ पहिने घबरायल। घरक कथा सुनब आसान, भयक कथा सुनब कठिन। बूढ़बा भूत कहलन्हि — “भय ओहि साँसक नाम अछि जे बाहर नहि आबि सकल।”

सरयू देवीक भय छल — मरलाक बाद बच्चा भूखल रहि जाएत। उज्ज्वलक भय छल — ओकर गलतीक कारण बहिनक माथ झुकत। मुन्नाक भय छल — ओ बिना बुझने अपराधी कहल जाएत। मीरा मृणालिनीक भय छल — ओकर प्रेम ओकरा विरुद्ध हथियार बनाओल जाएत। नन्दक भय छल — सत्य लिखलाक बादो नदी सभटा पी जाइत।

बच्चा सभ प्रत्येक भयक आगाँ एक दीप राखलक। दीपक तेल कम छल, मुदा ओहिमे पानि नहि मिलाओल गेल छल। देविका कहली — “भयक सम्मान करब। डरायल लोककेँ कायर नहि कहब। ठगल लोककेँ मूर्ख नहि कहब। ब्लैकमेल भेल लोककेँ दोषी नहि कहब। ई सातम साँसक शपथ।”

ई शपथ सुनि चन्द्रपालक मोन काँपल। ओकर अपराधक पहिल नियम छल — पीड़ितकेँ दोषी अनुभव कराउ। जखन पीड़ित दोषी अनुभव करैत अछि, तखन ओ शिकायत नहि करैत। जखन गाम कहि देत जे ठगल लोक मूर्ख नहि, पीड़ित अछि — तखन चन्द्रपालक आधा धन्धा ओहिठाम मरि जाएत।

बटुकनाथ बुझि गेल जे कानूनक जीत पर्याप्त नहि। जे दिन लोक प्रक्रिया सँ बेसी स्मृति पर भरोसा करए लागत, ओहि दिन ओकर देरीक खेती सूखत। ओ सोचलक — “एहि शपथकेँ अवैध घोषित करब।” मुदा तत्क्षण ओकर भीतरक अदालत पूछलक — “कोन धारा लगाएब? बच्चाक करुणा विरुद्ध?”

राघव पहिल बेर सिग्नल खोलने बिना हाथ उठौलक। ओ मुन्नाक मायक सामने झुकल। माफीक शब्द ओकरा नहि भेटल। ओ केवल गमछाक एक छोर छुइलक। मुन्नाक माय गमछा खिंचि लेलनि। “एखन नहि। पहिने जे खाता खोललहुँ, से खाता बन्द नहि — ओकर सच खोलू।” राघवक मुक्ति स्थगित भऽ गेल।

लाउ किन-हंग अपन सलाहकार सभकेँ विदा कऽ देलक। कमरा खाली भेल। ओ नक्शापर झुकल। एक बिन्दु पर क्लिक केलक। गढ़ नारिकेल खुलल नहि। केवल एक प्रश्न खुलल — “अहाँक घर कतय अछि?” लाउ क्रोधित भेल। ओ सर्वर बन्द करबाक आदेश देलक। आदेश गेल, मुदा उत्तर आयल — “घरक प्रश्न बाहरी-जालसँ बाहर अछि।”

एडवर्ड ब्रूमक पन्ना पर अन्ततः एक वाक्य बनल — “सरयू देवी, हमर अपराध अहाँक नाम नहि जानब सेहो अछि।” ई वाक्य सुन्दर नहि छल। व्याकरण कच्चा छल। मुदा ई भाषण नहि छल। चन्ना गाछीक पात ओहि कच्चा वाक्य पर थोड़ेक काल स्थिर रहल।

सातम साँसक अन्तिम भाग सपना छल। अनन्या कहली — “घर आ भयक बाद सपना।” बच्चा सभ हर्षित भेल, मुदा बूढ़बा भूत गम्भीर। “सपना सभसँ कठिन। कारण मृतकक सपना जीवितकेँ पूरा करए पड़ैत अछि।”

सरयू देवीक सपना छल — ओकर बच्चा पढ़ि सकय। उज्ज्वलक सपना — देविका कोनो फोनसँ नहि डेराउ। मुन्नाक सपना — ओकर पिता बैंकक दरबाजा पर माथ झुकाए बिना जाए। मीरा मृणालिनीक सपना — प्रेमक नाम पर कियो ककरो ब्लैकमेल नहि करए। नन्दक सपना — पुलक पाया पर मजदूरक नाम लिखल जाए।

बच्चा सभ सपना सुनि अपन-अपन कंकड़ उठौलक। प्रत्येक कंकड़ पर ओ सभ एक अक्षर लिखलक। घरक अक्षर, भयक अक्षर, सपनाक अक्षर। तीनू जोड़ल गेल तखन नाम पूरा भेल। गामक पानि ओहि अक्षर पर छिड़कल गेल।

ओहि राति चन्ना गाछीमे धूर्त सभक मोन फेर खेलमे आएल। मुदा एहि बेर ओकरा सभकेँ पकड़बाक नहि, घर-भय-सपना कहबाक बारी छल। बटुकनाथ सरयू देवीक घर कहि सकल, भय आधा कहि सकल, सपना पर चुप। चन्द्रपाल उज्ज्वलक घरक देहरी देखलक, भय सुनलक, सपना पर ओकर मुँह बन्द। राघव मुन्नाक घर कहलक, भय कहलक, सपना सुनि कानि पड़ल। लाउ एक्को घर पूरा नहि कहि सकल। एडवर्ड एक नाम कच्चा उच्चारणमे कहि सकल।

बूढ़बा भूत निर्णय नहि सुनौलनि। चन्ना गाछीक अदालत एहि बेर फैसला नहि, गृहकार्य देलक। “जतबा नहि कहि सकलहुँ, ततबा सीखि कऽ आउ।”

बाहरी दुनियाँमे भोर भेल। बटुकनाथक टेबुल पर विजय-आदेश छल, मुदा ओहि पर एक छोटका बच्चाक लिखल वाक्य चमकि रहल छल — “नामक घर पूछू।” चन्द्रपालक परदा पर ऐप नहि खुलल, केवल “उत्तर लिखू”। राघवक सिग्नल खाली। लाउक नक्शा धुँधला। एडवर्डक भाषण स्थगित।

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ स्कूल जाए लागल। अनन्या पाछाँ घूमि कऽ चन्ना गाछी दिस देखलक। पात सभ हिलैत छल। कबड्डी नहि, गृहकार्यक सरसराहट। सातम साँस पूरा नहि

भेल; ओ तीन कंकड़ बनि बच्चा सभक जेबीमे चलि गेल। कथा आगाँ बढ़ल — कारण सपना बिना नाम अधूरा रहैत अछि।

लोकगीत: तीन कंकड़ तीन बात

लोकधुन: बाल-झूमर

खनकै हे कंकड़, जेबी मे तीन खनकै हे,
घर-भय-सपना—तीनू बिनु नाम अधूरा रहै हे।

जेबीमे तीन कंकड़—घर, भय, सपना,
तीनू बिना नाम अधूरा, न्यायो रहै अपना।
घर कहब आसान, भयक साँस अटकै,
मृतकक सपना जीवितक कन्हापर चढ़ै।
राघव सपना सुनि कानल, बटुक आधा चुप,

लाउ एक्को घर नहि जानल, धुँधला भेल रूप।
गाछीक अदालत फैसला नहि—गृहकार्य देलक,
‘जतबा नहि बुझलहुँ, सीखि कऽ आउ’ कहलक।
कंकड़ खनखन करै बच्चाक जेबीमे रात,
सपना बिना नाम नहि पाबै पूर्ण ठाम।

गाछीक अदालत दण्ड नहि, गृहकार्य देलक—

❖

अध्याय ३७

तीन कंकड़

जेबीक तीन कंकड़ जहिया खनखनाएब छोड़ि देत, तहिया बुझिहऽ— कोनो उत्तर हेरा गेल।

अध्यायारम्भ लोकगीत: जड़ि पढ़ि भविष्य

लोकधुन: धान-रोपनी गीत

रोपू गे रोपनिहारि, प्रश्नक बीया रोपू गे,
पातक नहि, जड़िक खोज—गहींर हाथ बोरू गे।

गाछक पात नहि मात्र, जड़ि पढ़ू जमीन,
अपराधक अण्डा छोट, पाछाँ जाल महीन।
जड़ि धरि प्रश्न पहुँचत तँ रोग सही चिन्हात,
ऊपरी पात काटलासँ फेर उगत उत्पात।

धान रोपनी जकाँ कारण पाँति-पाँति देखू,
मूल सुधार, शिक्षा, नियम संग समाधान लेखू।
जड़ि पढ़ि भविष्य गढ़ू, लक्षण मात्र नहि,
गहींर समझक खेतीसँ समस्या अटल नहि।

ऊपर-ऊपर घास छँटने खेत नहि निर्मल,
जड़ि धरि जे हाथ पहुँचल, सएह पओलक फल।
पाँति-पाँति कारण रोपू, कियारी-कियारी जाँच,
मूलक शुद्ध रोपनीसँ उगत समाधान साँच।

❖

सातम साँस बच्चा सभक जेबीमे तीन कंकड़ बनि चलि गेल — घर, भय, सपना। ओ कंकड़ दिन भरि खनखनाइत रहल। पाठशालामे, खेतक मेड़ पर, मोबाइलक परदा बुझेलाक बाद, आ रातिमे सिरहाना तर। गढ़ नारिकेलमे ओहि दिनसँ बच्चा सभ खेल शुरू करबाक पहिने एक-दोसरासँ पूछैत — “तोहर घर?” फेर “तोहर भय?” फेर “तोहर सपना?” जे उत्तर नहि दऽ सकय, ओकरा खेलमे साँस कम भेटैत।

धूर्त सभ सेहो एहि नियमसँ बचि नहि सकल। चन्ना गाछीक अदालत कहने छल — जतबा नहि कहि सकलहुँ, ततबा सीखि कऽ आउ। धूर्त सभ सोचने छल जे ई मृतकक भाषा अछि, खेलक भीतरक ध्वनि, जागलाक बाद खतम। मुदा भोरसँ देखल गेल जे नियम जागल दुनियाँमे सेहो पसरि गेल अछि।

बटुकनाथ हरिहरन अपन अतिथि-गृहक कमरामे उठल तखन ओकर तकिया तर तीन कंकड़ राखल छल। ओ चौंकल। सुरक्षा-कर्मीकेँ बजौलक। सुरक्षा-कर्मी आयल, कंकड़ देखलक, आ साधारण स्वरमे पूछलक — "सर, ई कोना भीतर आयल?" बटुकनाथ ओकरा डाँटए चाहलक, मुदा मुँहसँ निकलल — "हमर घर कतय अछि?" सुरक्षा-कर्मी भयभीत भेल। प्रश्न ओकरा लेल नहि छल, मुदा उत्तर ताहूमे नहि छल।

बटुकनाथक घर कोन छल? मद्रासक ओ पुरान गली जतय ओकर पिता टिकट-बिना यात्रा पर पकड़ा गेल लोकक चालान छुड़बैत दलाली करैत छलाह? कि दिल्लीक ओ बँगला जतय ओ बारक मर्यादा पर भाषण दैत छल? कि ओ फाइल-कक्ष जतय एगारह टा अधिवक्ता ओकर प्रतीक्षा करैत छलाह? ओ बुझल — जकर बहुत घर होइत अछि, ओकर असली घर कखनो-कखनो हेरा जाइत अछि।

ओ पहिल कंकड़ उठा कऽ देखलक। कंकड़ पर अक्षर छल — "आरम्भ"। बटुकनाथक देह काँपल। आरम्भक अर्थ ओ बुझैत छल। प्रत्येक घूसक पहिने एक आरम्भ होइत अछि — एक छोट छूट, एक झूठ जे हास्यास्पद लगैत अछि, एक असत्य जकरा "प्रक्रिया" कहि देल जाइत अछि।

चन्द्रपाल बत्रा अपन शहरक कोठीमे उठल। ओकर स्क्रीन राति भरि बन्द रहबाक बादो गरम छल। परदा पर तीन गोल बनल — घर, भय, सपना। ओ हँसल। "बाल-खेल।" ओ पासवर्ड देलक। परदा खुलल नहि। तखने ओकर फोनक भीतर सँ ओकर मेरठक छात्रावासक गन्ध आएल — पुरान गद्दा, अधसूखल मोजा, सस्ता चाह, आ कानूनक किताबक किनार पर लिखल पहिल झूठ।

चन्द्रपाल अपन छात्र-दिन मोन पाड़ए लागल। ओ कानून पढ़ए गेल छल कि कानून बेचए? पहिने ओ सचमुच वकील बनए चाहैत छल। ओकरा विश्वास छल जे न्यायालयमे शब्दक शक्ति होइत अछि। मुदा पहिल केसमे ओकरा एक दलाल कहलक — "सच सँ बहस नहि जीतल जाइत, समय सँ जीतल जाइत।" ओहि दिन ओ समय बेचबाक कला सीखलक।

फोन पर उज्ज्वलक पत्र फेर चमकल — "हम अपराधी नहि छलौं।" चन्द्रपाल आँखि मूदलक। मुदा आँखि मूदला पर परदा भीतर खुलि गेल। ओ देखलक — ओकर पहिल ग्राहक, एक किसान, जे पाँच बीघा जमीनक मुकदमामे ओकरा दू हजार रुपैया देलक। चन्द्रपाल तखन फाइल जमा करब बिसरि गेल छल, आ किसानक जमीन गेल छल। ओहि किसानक चेहरा उज्ज्वलक चेहरासँ मिलि गेल।

राघव “सिग्नल” सोमानीक घरमे सन्नाटा छल। ओ सदिखन मेटाइत गपक लोक छल। घरमे पुरान पत्र नहि, फोटो नहि, डायरी नहि। पत्नी ओकरा छोड़ि चुकली, पुत्र ओकरा “पिताजी” नहि, “साहब” कहैत छल। राघव सोचैत छल — ई सुरक्षा अछि। कम स्मृति, कम जोखिम। मुदा चन्ना गाछीक आठम साँस एना लोकक घरमे पहिने स्मृति खोजैत अछि जकर घर सँ स्मृति हटाओल गेल हो।

ओकर टेबुल पर एक कागच पड़ल छल। कागच पर ओकर बालपनक नाम — राघवेश। ई नाम कतेक वर्ष बाद देखलक? स्कूलमे मास्टर ओकरा राघवेश कहैत छलाह। तखन ओ तेज छात्र छल। गणितमे ओकरा आनन्द लगैत छल। अंक ओकर मित्र छल। बादमे अंक खाता बनल, खाता म्यूल बनल, म्यूल अपराधक पीठ बनल। मित्र दास बनि गेल।

राघव कागच उठौलक। पाछाँ लिखल छल — “तोहर भय?” ओ जवाब सोचलक — पुलिस? लाउ किन-हंग? चन्द्रपाल? नहि। ओकर असली भय छल — कोनो दिन ओकर बेटा पूछत, “अहाँ की काज करैत छलहुँ?” आ ओकरा उत्तर नहि भेटत।

दूर समुद्रक शहरमे लाउ किन-हंग अपन शीशाघरक सातम तल पर बैसल छल। ओकरा लग संसारक कतेको शहरक बाजार-रिपोर्ट छल। जे देशक लोक गरीब, ओतय लत सस्ता; जे देशक कानून धीमा, ओतय मुनाफा तेज; जे देशक युवक बेरोजगार, ओतय खेलक लालच बेचू। ओहि सूत्रसँ ओकर साम्राज्य बनल छल। मुदा आठम साँस सूत्र नहि मानैत। ओ प्रश्न मानैत अछि।

लाउक परदा पर एक पंक्ति उभरल — “तोहर घर?” लाउ मुस्की देलक। “हांगकांग।” पंक्ति नहि हटल। ओ लिखलक — “समुद्रकात शीशाघर।” पंक्ति रहल। ओ लिखलक — “जतय खाता खुलैत अछि।” पंक्ति आर गाढ़ भऽ गेल। तखने ओकरा मोन पड़ल — एक छोट कमरा, जकर खिड़कीसँ कपड़ा सुखाइत डोरी देखाइत छल। ओकर माय राति भरि सिलाइ करैत छली। ओ घर छल। ओहि घरमे पहिल बेर ओ सोचने छल — गरीबी सँ बदला लेब। बादमे बदला गरीबीसँ नहि, गरीबसँ लेब लागल।

एडवर्ड ब्रूमक कोठरीमे हार्वर्डक भाषण-पत्र सभ राखल छल। एहि बेर सभ शीर्षक गायब। “नैतिक पूँजी”, “साझा भविष्य”, “मानवीय गरिमा” — सभ शब्द पन्नासँ उड़ि गेल। खाली शीर्ष पर प्रश्न — “तोहर घर?” एडवर्ड उत्तर लिखलक — “एक साम्राज्यक नागरिक।” कागच मौन। ओ लिखलक — “एक कम्पनीक प्रमुख।” मौन। अन्तमे ओ लिखलक — “एक

एहन लड़का जकरा सिखाओल गेल जे गलती संख्यामे छिपि जाइत अछि।” कागच पर पहिल बेर नमी आयल।

गढ़ नारिकेलमे अनन्या बच्चा सभकेँ कहली — “आइ हम धूर्त सभक घर पढ़ब।” बच्चा सभ चौंकल। एक बच्चा पूछलक — “ओ सभक घर सेहो होइत अछि?” बूढ़बा भूत डारि सँ उतरि अएलाह। “अत्याचारीक घर होइत अछि, मुदा ओ ओकरा छोड़ि दैत अछि। छोड़ल घर गवाही बनि जाइत अछि।”

बच्चा सभ माटि पर पाँच नाम लिखलक — बटुकनाथ हरिहरन, चन्द्रपाल बत्रा, राघव सोमानी, लाउ किन-हंग, एडवर्ड ब्रूम। नामक आगाँ खाली स्थान। अनन्या कहली — “जकर घर नहि लिखल, ओकर दोष पूरा नहि बुझल जा सकैत। अपराध हवामे नहि जन्मैत। अपराध ओहि क्षण जन्मैत अछि जखन मनुक्ख अपन घरक पीड़ा कैँ दोसराक घर जारबाक अधिकार बुझि लैत अछि।”

मीरा मृणालिनी ओतय पहुँचली। ओकर हाथमे निजताक शपथक पन्ना छल। ओ बच्चा सभसँ कहली — “ध्यान राखू, धूर्तक पीड़ा ओकर अपराधक क्षमा नहि। मुदा पीड़ा नहि बुझब तखन अपराधक अगिला रूप नहि चिन्हब।” सौम्या जोड़लनि — “अपराधक जड़ि जानब, ओकरा बचाओल नहि; काटबाक उपाय अछि।”

देविका कहली — “चन्द्रपालक पहिल ठगीक कथा पढ़ू।” बच्चा सभ ओकर छात्रावास, पहिल किसान, फाइलक देरी, समयक बिक्रीक कथा सुनलक। एक बच्चा कहलक — “तँ ओ पहिने छोट झूठ बाजल, बादमे बड़का?” देविका उत्तर देली — “हँ। बड़का गोहि सेहो अण्डासँ जन्मैत अछि।”

निशांत झा लाउ किन-हंगक खाता-नक्शा नहि, ओकर बाल-घरक चित्र आनलक। ओ कहलक — “ई लोक गरीब घरसँ निकलल। मुदा जे गरीबी ओकरा दुख देलक, ओही गरीबीकेँ ओ व्यापार बना लेलक।” बच्चा सभ चुप। एक नेना धीरे पूछलक — “तँ गरीबी सँ निकलि कऽ गरीबक रक्षा सेहो कएल जा सकैत?” निशांत कहलक — “अवश्य। तैँ ई कथा जरूरी अछि।”

रमैय्या सुब्रमण्यम हँसैत-हँसैत आयल, मुदा हँसीक भीतर थकान छल। ओ कहलक — “राघवक नाम राघवेश छल।” बच्चा सभ पुनः चौंकल। रमैय्या कहलक — “जे नाम छोट कऽ देल जाइत अछि, कखनो-कखनो आत्मा सेहो छोट भऽ जाइत अछि। ओ अपन नामक आधा भाग काटलक, फेर दोसर लोकक खाता काटए लगल।”

गोप कुमार चुपचाप एक थैली खोललक। ओहिमे कागच नहि, पुरान टिकट, छात्रावासक रसीद, प्रशिक्षण-शिविरक कार्ड, पहिल नौकरीक परिचय-पत्र, भाषणक निमन्त्रण-पत्र, आ दू-तीनटा फोटो। “ई सभ प्रमाण नहि,” ओ कहलक, “ई सभ आरम्भ अछि। प्रमाण अदालतमे चाही। आरम्भ कथामे चाही।”

बूढ़बा भूत पाँचू नामक आगाँ पाँच पात राखलनि। पहिल पात पर लिखल — “छोट छूट।” दोसर पर — “समयक बिक्री।” तेसर पर — “नामक काट।” चारिम पर — “गरीबीक बदला गरीबसँ।” पाँचम पर — “संख्यामे दोष छिपाब।”

एहि पाँच पातक इजोर धूर्त सभक दूर-दूर कक्षमे पहुँचल। बटुकनाथ अपना पिता कैँ देखलक — ओ एक थाकल लोक छलाह, पूर्ण दुष्ट नहि। मुदा बटुकनाथ बुझलक जे पिता किछु लोकक चालान छुड़बैत छलाह, ओ स्वयं लोकक जीवनक फैसला टारए लगल। लघु दोषक अनुकरण जखन सत्ता पाबैत अछि, तखन महापाप बनैत अछि।

चन्द्रपाल मेरठक छात्रावासमे अपन पुरान मित्र शमीमकैँ देखलक। शमीम कहने छल — “हम गरीबक केस लड़ब।” चन्द्रपाल हँसने छल — “गरीब शुल्क देत?” शमीम बादमे छोट वकील रहि गेल, मुदा राति चैनसँ सूतैत छल। चन्द्रपाल धनवान भेल, मुदा ओकर निन्न ऐपक परदा बनि गेल।

राघव अपन पुत्रक कोठरी लग गेल। पुत्र सूतल छल। टेबुल पर विज्ञानक पुस्तक, एक अधूरा चित्र, आ एक प्रश्न — “म्यूल की होइत अछि?” राघवक पएर जमि गेल। ओकर बेटा स्कूलमे ई शब्द सीखि चुकल छल। राघव बुझल — अपराध जखन घरक शब्द बनि जाए, तखन पिता बचि नहि सकैत।

लाउक शीशाघरमे समुद्रक आवाज बढ़ल। ओकर माय सपनामे आयली। ओ कहली — “हम तोरा गरीबीसँ निकाललहुँ कि तू गरीब सभकैँ आँकड़ा बनाबह?” लाउ उत्तर देबाक पहिने जागि गेल। जागलाक बादो माय लग रहली — सूईमे धागा पिरोनिहार आँखि जेकाँ।

एडवर्ड ब्रूम मंचक अभ्यास छोड़ि अपन कम्पनीक पुरान गोदाम गेल। ओतय धूल छल। पुरान पुल-परियोजनाक पट्टिका एक कोनमे फेकल। ओहिपर भारतीय नदीक नाम गलत वर्तनीमे। एडवर्ड पहिल बेर ओ गलत नाम जोर सँ पढ़ए चाहलक, मुदा जिह्वा अटकि गेल। प्रोफेसर एलिना कहली — “जिह्वा अटकैत अछि, कारण इतिहास गला पकड़ैत अछि।”

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ पाँचू पातक पाठ कएलक। अनन्या पूछलक — “एहि सभक सजा?” बूढ़बा भूत कहलन्हि — “सजा तखन, जखन अदालतक समय आबय। एखन पाठ। जे अपराधक आरम्भ नहि पढ़त, ओ अपराधक पुनर्जन्म रोकि नहि सकत।”

बटुकनाथक अतिथि-गृहमे रातिमे तीन कंकड़ फेर बजल। एहि बेर कंकड़ चारि भेल। चारिम पर लिखल — “तोर आरम्भ।” ओ चीखल नहि। केवल खिड़की खोललक। दूर चन्ना गाछी दिशासँ बच्चा सभक पाठक आवाज आबि रहल छल — “छोट छूट, समयक बिक्री, नामक काट, गरीबीक बदला गरीबसँ, संख्यामे दोष छिपाब।”

चन्द्रपाल फोन उठौलक आ पहिल बेर बिना वकीली भाषा बाजल — “राघव, हमरा मोन पड़ि रहल अछि।” राघव उत्तर देलक — “हमरा सेहो।” दुनू मौन। ओ सभ माफी नहि माँगलक, आत्मसमर्पण नहि केलक, पश्चाताप सेहो पूरा नहि। मुदा आठम साँसक काज पश्चाताप समाप्त करब नहि, स्मृति शुरू करब अछि।

लाउ किन-हंग भारतक खाता बन्द नहि केलक। ओ एखनो दुष्ट छल। मुदा ओकर बाजार-नक्शा आब स्थिर नहि रहल। प्रत्येक बिन्दु पर घरक खिड़की झलकैत। साम्राज्य चलैत रहल, मुदा ओकर भीतर पहिल दरार पड़ि गेल।

एडवर्ड ब्रूम प्रेस-विज्ञप्ति स्थगित केलक। छोट बात लगैत अछि, मुदा ओकर साम्राज्यमे विज्ञप्ति स्थगित करब स्वीकारोक्तिसँ कनी कम नहि। ओ खाली पन्ना पर पाँच नाम लिखलक। तीन गलत, दू अधूरा। एलिना कहली — “फेर लिखू।”

गढ़ नारिकेलक राति गाढ़ भेल। चन्ना गाछीमे कबड्डी नहि भेल। बच्चा सभ पहिल बेर खेल बन्द कऽ पाठ केलक। मृतक सभ सुनैत रहल। धूर्त सभक मोन दूर-दूर सँ काँपैत रहल। आठम साँस खेलक विराम छल — कारण कखनो-कखनो खेल रोकि नियमक जड़ि देखय पड़ैत अछि।

भोरमे अनन्या तीन कंकड़ आ पाँच पात समेटलक। ओ कहली — “आब नव नियम — जकरा हराबय छी, ओकर घर सेहो बुझू। नहि तँ जीत फेर अपराध बनि जाएत।” बूढ़बा भूत मुस्कुरेलाह। “ई बच्चा सभ खतरनाक अछि,” ओ कहलन्हि, “ई सभ शत्रुक चेहरा नहि, जड़ि देखैत अछि।”

आठम साँस एना पूरा भेल — क्षमा बिना, दण्ड बिना, मुदा आरम्भक चिन्हारिसँ। कथा आगाँ बढ़ल, कारण धूर्त सभक भीतरी दुनियाँमे दुआर खुलि गेल छल। दुआर खुलला बाद

कियो तुरन्त बदलैत नहि; मुदा हवा भीतर पैसि जाइत अछि। गढ़ नारिकेलक हवा एक बेर भीतर पैसल, तखन ओ खाली कोठरीमे पात उगबय लागैत अछि।

लोकगीत: जड़ि पढ़ू

लोकधुन: धान-रोपनी गीत

पढ़ू हे जड़ि, चेहरा नहि—जड़ि पढ़ू हे,
जड़ि पढ़निहार नेना सभसँ पैघ पहरुआ हे।

बड़का गोहि अण्डासँ, अपराध छोट छूटसँ,
नाम काटल, समय बेचल—जड़ि उगै ओहि फूटसँ।
जकरा हराबी, ओकर घरक पीड़ा पढ़ू,
नहि तँ जीत दोसर घरमे आगि बनि गढ़ू।
तीन कंकड़, पाँच पात, खेल कनी रोकू,

शत्रुक चेहरा नहि, ओकर जड़ि तकू।
खाली कोठरीमे हवा पैसल गामक,
एक पात उगल ओतय, नाम भेल कामक।
क्षमा नहि, दण्ड नहि—आरम्भक चिन्हारि,
जड़ि पढ़निहार बच्चा सभसँ खतरनाक पहरुआरी।

नाम कटल, समय बिकल—बिरबा उगल ओहि फूट सँ।
नहि तँ जीत दोसर आँगन मे आगि बनि गढ़ू।

❖

अध्याय ३८

नामक उच्चारण

नाम लिखि देने भरि नहि होइ छै— ओकर उच्चारण सिखेबाक काल देबए पड़ै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: नाम सही, मान सही

लोकधुन: नाम-पाठ मंगल

पढ़ू हे शुद्ध, नामक आखर पढ़ू हे,
एक-एक मात्रा मे ककरो प्राण गढ़ू हे।

लिखल नाम देहक खोल, पढ़ल नामक प्राण,
उच्चारण सही करिते बढ़ै मनुखक मान।
वर्तनी पूछि लिखू, परिचय अपने कहय,
छोट सुधारसँ ककरो पूरा अस्तित्व रहय।

नाम सही पढ़ू विद्यालय, दफ्तर, मंच सभ ठाम,
सम्मानक पहिल सीढ़ी अछि सही उच्चारल नाम।
नाम सही, मान सही—ई सरल लोक-विधान,
एक अक्षरक सावधानी बचाबै पहिचान।

पूछि कऽ लिखू वर्तनी, अपने बाजए परिचय,
शुद्ध पुकार सुनिते चेहरा पर उगए विजय।
विद्यालय-दफ्तर-मंच, सभ ठाम इहए रीति,
एक आखरक आदरसँ जुड़ए जनम भरिक प्रीति।

❖

आठम साँसक बाद गढ़ नारिकेलमे खेल दू दिन बन्द रहल। बच्चा सभकेँ ई बात अचरज लागल, कारण भूतक कबड्डी कहियो बन्द नहि होइत छल। बाढ़ि आबय, सुखाड़ पड़य, विवाह होअय, मृत्यु होअय, अदालत फैसला देअय, सरकार पुल बनबय, विदेशक लोक भाषण देअय — चन्ना गाछीमे राति पड़िते खेल शुरू भऽ जाइत छल। मुदा एहि बेर बूढ़बा भूत डारि पर बैसल रहलाह आ खाली ई कहैत रहलाह — “जखन नाम लिखि देल जाइत अछि, तखन ओकर उच्चारण सीखबाक काल देबय पड़ैत अछि।”

बच्चा सभ पहिने बुझल नहि। नाम तँ लिखल गेल। अभिलेख बनि गेल। पात पर, माटि पर, परदा पर, गीतमे। फेर उच्चारण किएक? अनन्या पूछलक — “बूढ़बा, नाम पढ़ब आ नाम

लिखब अलग बात अछि?" बूढ़बा भूत उत्तर देलनि — "लिखल नाम बाहरक देह अछि। पढ़ल नाम भीतरक प्राण। जे नाम गलत पढ़ैत अछि, ओ फेरसँ ओकरा मारैत अछि।"

एहि बातक खबर धूर्त सभ धरि पहुँचल। खबर कहब सेहो ठीक नहि। कोनो दूत नहि गेल। कोनो चिट्ठी नहि आयल। मुदा जखन बटुकनाथ हरिहरन भोरमे चाह लेबाक लेल कप उठौलक, चाह पर झागक बदला अक्षर तैरि रहल छल। पहिल अक्षर ओ पढ़ए चाहलक — "भो... भोला...?" झाग काँपल आ कपक भीतरसँ छपाकक आवाज आयल। ओकर कानमे कियो फुसफुसायल — "भोलानाथ नहि, भोला नट।"

बटुकनाथ कप छोड़ि देलक। हाथ काँपल। न्यायालयमे ओ हजारो नाम सुनने छल, फाइलमे, बहसमे, शपथ-पत्रमे। ओकरा लेल नाम पक्षकार छल, क्रमांक छल, केस-संख्या छल। पहिल बेर ओकरा बूझि पड़ल जे नामक भीतर पिताक आवाज, मायक देहक गन्ध, बचपनक पथ, खेतक मेड़, ऋणक बोझ, आ मरलाक बाद बच्चाक रुदन सेहो रहैत अछि। गलत नाम पढ़ब गलत धारा लगेनाइ नहि; गलत नाम पढ़ब मृतकक घरक दुआर फेर बन्द करब अछि।

चन्द्रपाल बत्राक परदा पर ओहि दिन कोनो दाँव नहि खुलल। न हरियर अंक, न लाल अंक, न जीत, न हार। केवल एक-एक कऽ नाम उभरैत गेल। ओ स्वाइप करैत रहल, मुदा परदा ओकर आँगुरकेँ नकारैत रहल। पहिल नाम छल — "उज्ज्वल झा।" ओ पढ़लक, "उज्वल।" परदा कारी भऽ गेल। फेर अक्षर स्वयं सुधरल — "उ-ज्-ज्-व-ल।" ओकरा लागल जे मोबाइल नहि, कोनो पाठशाला ओकर आँगुर पकड़ि कऽ वर्णमाला पढ़ा रहल अछि।

ओ हँसब चाहलक। "नाममे की राखल छै?" मुदा वाक्य पूरा होए पहिने ओकर घरक छतसँ एक दोसर आवाज आयल — "तोहर नाममे तँ बहुत राखल छै, बत्रा बाबू। एल.एल.बी.क प्रमाणपत्र, सैकड़ो खाता, कमिशन, संरक्षण, धमकी, आ प्रत्येक हस्ताक्षरक भाव।" चन्द्रपाल ऊपर तकलक। कोनो नहि। मुदा ओकर प्रमाणपत्र, जे देबाल पर फ्रेममे टांगल छल, ओहि पर विश्वविद्यालयक नाम धुँधला भऽ गेल आ नीचाँ एक पंक्ति उभरल — "नाम बेचबाक डिग्री नहि देल गेल छल।"

राघव "सिग्नल" सोमानी नामक दण्ड सँ सभसँ बेसी डेरायल। कारण ओकर पूरा जीवन नाम हटाबयमे गेल छल। कोनो ग्राहक पूरा नामसँ नहि, केवल संकेत; कोनो खाता असली नामसँ नहि, केवल खच्चर-खाता; कोनो बात स्मृतिमे नहि, केवल मेटाएबला संदेश। मुदा नवम साँस मेटल बातक राख सेहो बटोरैत अछि। ओकर सामने रातिमे एक पोटली खुलल। पोटलीमे अधजड़ल सिम-कार्ड, फाटल परिचय-पत्र, बैंक-पर्ची, आ कतेको नामक आधा-आधा टुकड़ा।

पहिल टुकड़ापर लिखल छल — “मु...” दोसर पर — “न्ना।” तेसर पर — “पास...” चारिम पर — “वान।” राघव जोड़लक — “मुन्ना पासवान।” नाम जुड़िते कमरामे एक दुबला युवक ठाढ़ भेल। ओ जीवित छल कि मृत, स्पष्ट नहि। ओकर मुँहसँ आवाज आयल — “हमरा खाता खच्चर कहलहुँ, मुदा हमर नाम मुन्ना छल। खच्चर हमर जीविका नहि, तोहर जाल छल।”

राघव उत्तर देबाक प्रयास केलक। ओकर अपराधक भाषा तैयार छल — “सिस्टम, नेटवर्क, ऊपरक आदेश, मात्र सुविधा, कागच पर सहमति।” मुदा ओहि युवकक नामक सामने ई सभ शब्द रेत सन खसि गेल। राघव पहिल बेर बजल — “मुन्ना।” नाम बजिते ओकर छातीमे दर्द भेल। ओ बुझल — नाम जँ ठीकसँ बजाओल जाए, तखन ओ वसूली नहि, वापसी बनि जाइत अछि।

समुद्रक शहरमे लाउ किन-हंगक कार्यालयमे नाम सभ अलग ढंगें आयल। ओकरा भारतीय नाम कठिन लगैत छल। ओकर कर्मचारी सभ रिपोर्टमे नाम छोट कऽ लिखैत — बी. नट, यू. झा, एम. पास, डी. साह। लाउ कहैत — छोट नाम, तेज व्यापार। मुदा एहि भोर ओकर शीशाक मेजपर पूरा नाम सभ जल-बिन्दु बनि पसरल। बिन्दु सभ जुड़ि कऽ देवनागरी बनल। लाउ अक्षर नहि पढ़ि सकैत छल। मुदा अक्षर सभ ओकरा पढ़ए लागल।

ओकरा कानमे अनेक आवाज आयल — “भोला नट”, “सरयू महतो”, “उज्ज्वल झा”, “मुन्ना पासवान”, “देविका साहक घरक ऋण”, “नामहीन नर्स”, “ऑक्सीजन-सिलिण्डरक दाममे अटकल वृद्ध”, “पुलक पाया तरक तीससँ बेसी।” लाउ टेबुल पोंछबाक लेल रुमाल उठौलक। रुमाल भीजल। ओ सोचलक — समुद्री नमी। मुदा शीशाघरक सातम तल पर समुद्री नमी एते ऊपर नहि चढ़ैत। ई गढ़ नारिकेलक पातक ओस छल।

एडवर्ड ब्रूमक लेल नामक दण्ड सार्वजनिक मंचपर आयल। ओ एक विश्वविद्यालय सभागारमे फेर बजबाक छल — एहि बेर विषय छल “उत्तरदायित्व आ वैश्विक विकास।” भाषण-पत्र तैयार छल। प्रोफेसर एलिना ग्रेव्स पहिल कतारमे बैसल छली, मुदा हुनकर आँखिमे तालीक चमक नहि, साक्ष्यक ठण्ड छल। एडवर्ड मंच पर चढ़ल। पहिल पंक्ति पढ़ए चाहलक — “मित्र लोकनि, हमसभ जुटल छी... मुदा माइक सँ आवाज आयल — “भोलानाथ नहि, भोला नट।”” सभागार चुप। एडवर्ड पसीना-पसीना।

विदेशी विद्यार्थी सभ बुझल जे ई कोनो कलात्मक हस्तक्षेप होएत। किछु लोक विडियो बनाबय लागल। एडवर्ड माइक बन्द करए चाहलक। माइक बन्द भेल, मुदा आवाज नहि। प्रत्येक स्पीकर सँ एक-एक नाम बहार आबए लागल। ईरा आरुणि सभागारक पाछाँ ठाढ़

छली। ओ कोनो नारा नहि देली। केवल हाथमे गढ़ नारिकेलक नाम-अभिलेखक प्रति पकड़ने रहली। ओ बुझि गेल छली — कखनो-कखनो विरोध माइक छीनब नहि, नाम सही पढ़ब होइत अछि।

गढ़ नारिकेलमे एहि बीच “नाम-पाठ”क पहिल सभा भेल। चन्ना गाछीक नीचाँ माटि बराबर कएल गेल। बच्चा सभ वृत्त बना कऽ बैसल। बीचमे अनन्या, देविका, मीरा, सौम्या, निशांत, ईरा, गोप कुमार, आरुणि। बूढ़बा भूत डारि पर। हुलासी इनारक दिशासँ आबि कऽ चुपचाप बैसली। पनिडुब्बीक झोंटा पोखरिसँ बाहर नहि आयल, मुदा पानि पर लहर बनि सभा धरि पहुँचि गेल।

अनन्या पहिल पात उठौली। “नाम गलत पढ़ब नहि।” बच्चा सभ एक स्वरमे दोहरौलक — “नाम गलत पढ़ब नहि।” देविका जोड़लनि — “जे नाम नहि जनैत, ओ पूछत।” बच्चा सभ — “पूछत।” मीरा कहली — “जे नाम लुकायल गेल, ओ खोजत।” बच्चा सभ — “खोजत।” सौम्या कहली — “जे नामक संग अपमान जोड़ल गेल, ओ अपमान हटाओत।” बच्चा सभ — “हटाओत।” बूढ़बा भूत संतुष्ट भेलाह।

पहिल नाम भोला नटक पढ़ल गेल। ओकर परिवारक कोनो सदस्य नहि छल। सभ कहैत छल जे ओ दूर जिलाक जोन-मजदूर छल। मुदा जखन नाम तेसर बेर सही उच्चरित भेल, चन्ना गाछीक बाहरी गोड़ पर एक स्त्री देखाइ देली। ओकर देह धुँधला। ओ कहली — “हम ओकर बहिन। हमरा कहियो खबर नहि देल गेल।” केओ पूछलक — “अहाँ एतबा दिन बाद?” ओ उत्तर देली — “नाम सही बजल, तखन रस्ता भेटल।”

दोसर नाम सरयू महतो। सरयू स्त्री-मजदूर छली। सरकारी सूचीमे “सरयू महतो, पुरुष, अनुपस्थित” लिखल छल। बच्चा सभक मुँह अटकि गेल। अनन्या कहली — “एहि ठाम नामक संग देहक सत्य सेहो पढ़ू।” ओ सभ पढ़लक — “सरयू महतो, स्त्री, मजदूर, पुलसँ खसल, अनुपस्थित नहि।” पवन चलल। चन्ना गाछीक पात सभ उलटि गेल। पातक नीचाँ महीन रेखा उभरल, जेना केओ मेहन्दी सँ हथेली बनौने हो।

तेसर नाम उज्ज्वल झा। देविका पढ़ए उठली। ओकरा लागल आवाज टूटि जाएत। मुदा अनन्या ओकर हाथ पकड़लक। देविका पढ़ली — “उज्ज्वल झा, बेटा, विद्यार्थी, स्क्रीनक गोहिसँ ग्रस्त, अपराधी नहि।” एहि पंक्ति पर बच्चा सभ मौन रहल। मौन सेहो पाठ होइत अछि। मौनमे उज्ज्वलक मोबाइलक परदा एक बेर चमकल, फेर पूर्णरूपेँ मिझा गेल। मिझायल परदा शान्त चेहरा जेकाँ लागल।

चारिम नाम मुन्ना पासवान। राघव दूर शहरमे पसीना-पसीना भऽ कऽ ओहि नामकेँ दोहरबैत छल। गढ़ नारिकेलमे मुन्नाक नाम जखन पढ़ल गेल, चन्ना गाछीक एक पात पर बैंकक मोहर बनि फेर मिटि गेल। बच्चा सभ बुझि गेल — खाता अपराधमे उपयोग भेल छल, मुदा नाम ओकर नहि छल। एही क्षण म्यूल-खाताक जालक पहिल गीड़ लोकभाषामे खुलल।

नाम-पाठक सभामे नियम बनल — प्रत्येक नामक तीन वस्तु पढ़ल जाएत: ओकर घर, ओकर मृत्यु, ओकर अपमान। घर पढ़ल बिना मृतक भटकल रहैत अछि। मृत्यु पढ़ल बिना अपराध अस्पष्ट रहैत अछि। अपमान पढ़ल बिना न्याय अधूरा रहैत अछि। एहि नियमक नाम पड़ल — "तीन पातक विधान।"

धूर्त सभक भीतर ई विधान तुरन्त पहुँचल। बटुकनाथक कक्षमे फाइल खुलल — घर, मृत्यु, अपमान। ओ केस-संख्या खोजए लगल, मुदा फाइल स्वयं कहलक — "पहिने घर।" चन्द्रपाल मोबाइलमे बही-खाता खोजलक, मुदा परदा कहलक — "पहिने मृत्यु।" राघव पुरान सन्देश खोजलक, परदा कहलक — "पहिने अपमान।" लाउ रिपोर्ट खोललक, ओतय केवल "पहिने नाम" लिखल। एडवर्ड भाषण-पत्र फाड़लक, टुकड़ा सभ तीन पात बनि उड़ल।

बटुकनाथ हरिहरन पहिल बेर अदालतक शब्दावली छोड़ि सामान्य कागच पर लिखलक — "भोला नट, घर अज्ञात।" लिखिते कागच कारी भऽ गेल। अज्ञात लिखब एते सरल नहि। जकर घर नहि खोजल गेल, ओकरा अज्ञात कहब आलस्य अछि। ओ फेर लिखलक — "घर खोजबाक बाकी।" कागच उज्जर भेल। ई छोट परिवर्तन छल। मुदा चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत कहलनि — "एना शुरू होइत अछि नामक उत्तरदायित्व।"

चन्द्रपाल बत्रा उज्ज्वलक नामक सामने "आत्महत्या" लिखलक। परदा फाटि गेल जेकाँ आवाज भेल। तखने एक पंक्ति उभरल — "कारण?" ओ लिखलक — "ऋण।" परदा पूछलक — "ककर?" ओ लिखलक — "खेलक।" परदा पूछलक — "के बनौलक?" ओ चुप। प्रश्न ओहि प्रकारक छल जकर उत्तर दैत-दैत अपराधी अपन भूमिका धरि पहुँचे। चन्द्रपालक आँगुर काँपल। अन्तमे ओ लिखलक — "हमर जालक।" परदा तुरन्त नहि बदलल। मुदा उज्ज्वलक नामक नीचाँ पहिल बेर एक दीया देखाइ देलक।

राघव मुन्नाक नामक सामने "खच्चर-खाता" लिखए चाहलक, मुदा हाथ रुकल। ओ लिखलक — "नामक बिना खाता बनाओल गेल।" फेर काटलक। "नामक सहमति बिना।" फेर काटलक। अन्तमे लिखलक — "नाम चोराओल गेल।" एहि तीन शब्दक बाद ओकर

कमरामे खिड़की खुलि गेल, जे बरखोंसँ बन्द छल। बाहरक हवा आयल। ओकरा लागल जे हवा नहि, ककरो माफी नहि, केवल साक्ष्य भीतर पैसल।

लाउ किन-हंग देवनागरी पढ़ि नहि सकल, मुदा ओ पहिल बेर अनुवादक नहि, उच्चारण-शिक्षक खोजबाक सोचलक। ओकर सहायक पूछलक — “व्यापारिक बैसकी लेल? लाउ उत्तर देलक — “नहि, नाम लेल।”” सहायक चकित। लाउ स्वयं चकित। ओ एखनो दुष्ट छल, ओहि दुष्टतामे दरार मात्र आयल छल। मुदा दरार सेहो गढ़ नारिकेलक लेल बहुत छल; देबाल एक्के दिन नहि ढहैत।

एडवर्ड ब्रूम सभागारमे भाषण छोड़ि नाम पढ़ए लागल। पहिल दू नाम गलत। ईरा आगाँ बढ़ए चाहली, मुदा एलिना ओकरा रोकि देलनि। संकेत केलनि — ओकरा स्वयं सीखए दिअ। एडवर्ड तेसर बेर भोला नटक नाम लगभग सही पढ़लक। सभागारमे कियो ताली नहि बजेलक। तालीक अभाव ओकरा सभसँ अधिक पीड़ादायक लागल। नैतिकता पर भाषण पर ताली भेटैत अछि; नामक सही उच्चारण पर मौन। ओ बुझल — मौन तालीसँ कठिन होइत अछि।

गढ़ नारिकेलमे हुलासी पहिल बेर सभामे बजली। “हमरो नाम पढ़ू।” बच्चा सभ चुप। हुलासीक कथा कतेक रूपमे सुनाओल गेल छल — आत्महत्या, इनार, प्रेम, पाप, छाह। हुलासी कहली — “हम खसि गेल रही। हमरा आत्महत्या कहि दाहक अधिकार छीनल गेल। अपमान पढ़ू।” अनन्या काँपल। ओ पढ़ली — “हुलासी, गढ़ नारिकेल, इनारमे दुर्घटनासँ मृत्यु, आत्महत्या कहि अपमानित।” चन्ना गाछीमे बहुत पुरान हवा चलल।

बूढ़बा भूतक आँखि नोरायल। “ई नवम साँसक असली आरम्भ अछि,” ओ कहलनि, “जखन जीवित मृतकक नाम पढ़ैत अछि, तखन मृतकक मुक्ति मात्र नहि, जीवितक बुद्धि सेहो खुलैत अछि। आब धूर्त सभक दण्ड शुरू। हुनका सभकेँ प्रत्येक राति एक नाम पढ़बाक अछि। गलत पढ़ल तँ फेर पढ़ू। बिना घर, बिना मृत्यु, बिना अपमान — नाम स्वीकार नहि।”

बच्चा सभ एहि दण्डकेँ खेल बनबए चाहलक। “जँ ओ सभ नहि पढ़त?” एक बालक पूछलक। बूढ़बा भूत हँसलाह। “तखन हुनकर अपन नाम धुँधला होएत। जे दोसराक नाम नकारैत अछि, धीरे-धीरे अपन नामक अधिकार गमबैत अछि।”

ओहि राति धूर्त सभक हस्ताक्षर पर असर शुरू भेल। बटुकनाथ एक पत्र पर हस्ताक्षर करए गेल — “बटुकनाथ हरिहरन”क बीच “हरि” गायब। चन्द्रपालक बैंक-पत्रमे “बत्रा”क ‘त्र’ धुँधला। राघवक सन्देशमे प्रेषक-नाम खाली। लाउक खातामे स्वामी-नाम “अज्ञात।”

एडवर्डक आमन्त्रण-पत्रमे केवल “एडव...”। ओ सभ भयभीत भेल। नामक दण्ड खेल नहि छल।

गोप कुमार रातिमे ई सभ सुनि रहल छल। ओ आरुणिसँ कहलक — “हम सोचैत छलौं डेटा सत्यक अन्तिम रूप अछि। मुदा डेटा नामक बिना लाशक गिनती अछि।” आरुणि उत्तर देलक — “आ नाम कथा बिना अधूरा। तँ ई उपन्यास बढ़ि रहल अछि।” गोप मुस्कुरेलक — “तँ आब हमरा सभकेँ कागच नहि, उच्चारण बचएबाक अछि।”

निशांत बच्चा सभकेँ डिजिटल ठगीक सूची आनलक। ओ कहलक — “एहि सूचीमे सैकड़ो नाम अछि। किछु पूरा, किछु अधूरा, किछु केवल फोन-संख्या।” अनन्या कहली — “फोन-संख्या नाम नहि। खोजू।” निशांत बुझल — तकनीकक अगिला काज पैसा रोकब मात्र नहि, नाम घुराएब अछि। ओकरा विदेशी कार्यालयक सभ चमक धुँधला लगए लागल।

मीरा निजताक शपथमे नव पंक्ति जोड़ली — “जकर नाम ओकर अनुमति बिना खोसल जाए, ओकर नाम फेर सम्मानसँ घुराओल जाए।” ई पंक्ति पढ़िते ओहि स्त्री सभक छाह आयल जकर नाम देह-बाजारमे बदलि देल गेल छल। कोनो ‘माल’, कोनो ‘नंबर’, कोनो ‘पैकेज’ नहि; प्रत्येकक घर, मृत्यु नहि तँ भय, आ अपमान। मीरा कहली — “जीवितक नाम सेहो बचाबय पड़त। केवल मृतकक नहि।”

सौम्या तीन पातक विधान लिखि लोकभाषामे बाँटए लागली। सरकारी भाषा कहैत — पीड़ित, लाभुक, अभियुक्त, गवाह। सौम्याक पर्चा कहैत — घर, मृत्यु, अपमान। लोक सभ पढ़ैत आ कहैत — ई कानून नहि। सौम्या उत्तर दैत — “कानून बादमे आबत। पहिने लोक स्मृति सोझ करय।”

राति गाढ़ भेल। चन्ना गाछीमे कबड्डी फेर नहि भेल। एहि बेर बच्चा सभ नाम-पाठक थकानसँ ओतहि सूति गेल। भूत सभ पहरा देलनि। पनिडुब्बी पोखरिसँ बाहर नहि आयल, मुदा ओकर झोंटा पानि पर एना पसरल जेना अक्षरक रेखा। डाइन सभ छौंकी पर नहि उड़ली; ओ सभ दूरसँ सुनैत रहली। राकश इजोर करैत रहल। लोथ पहिल बेर दर्शक नहि, पंक्ति-सुधारक बनल — जे बच्चा गलत पढ़य, ओ धीरे सँ मुँह हिलाबय।

भोरक पहिल उजासमे अनन्या देखलक — चन्ना गाछीक एक नव पात पर अक्षर उभरल अछि: “जे नाम सही पढ़ैत अछि, ओ न्याय शुरू करैत अछि। जे नाम गलत पढ़ैत अछि, ओ अपराध दोहरबैत अछि।” ओ पात तोड़ल नहि। पात गाछ पर छोड़ि देल गेल। नियम जीवित रहबाक लेल जड़िसँ जुड़ल रहए चाही।

नवम साँस एना पूरा नहि भेल; ओ अभ्यास बनि गेल। धूर्त सभ दूर-दूर अपन-अपन कोठरीमे नाम पढ़ए लागल, गलत, फेर सही, फेर अटकैत। पीड़ित सभ गढ़ नारिकेलमे नाम सुनैत रहल। बच्चा सभ प्रश्न पूछैत रहल। आ चन्ना गाछी बुझि गेल — जखन नाम पढ़बाक दण्ड शुरू भऽ जाइत अछि, तखन कथा केवल अपराधक नहि रहैत; कथा भाषा, स्मृति आ भविष्यक होइत अछि। अगिला साँसमे देखबाक छल — जे नाम पढ़ल गेल, ओकरा संग न्याय नहि, काज कोना जुड़त।

लोकगीत: नाम सही पढ़ू

लोकधुन: नाम-पाठ लोकधुन

पढ़ू हे सही, नाम सही पढ़ू हे,
जे गलत पढ़ै, अपराध फेर-फेर गढ़ै हे।

लिखल नाम बाहर देह, पढ़ल नाम प्राण,
गलत उच्चारण फेर करै दोसर बलिदान।
प्रत्येक राति एक नाम, तीन पात संग—
घर, मृत्यु, अपमान पढ़ू, खोलू जीहक रंग।
जीवित स्त्रीक नामो गरिमासँ घुराउ,

माल, नम्बर, पैकेज कहि ओकरा नहि मेटाउ।
लोथ पंक्ति सुधारै, भूत पहरा दै,
बच्चा अटकै तखन पात धीरे बजि कहै।
जे नाम सही पढ़ै, न्याय ओतहि शुरू,
जे गलत पढ़ै, अपराध फेर करै गुरु।

गलत उच्चारण करए दोसर बलिदान।
माल-नम्बर-पैकेज कहि ककरो ने मेटाउ,

❖

अध्याय ३९

बीजक शान्ति

बाहरसँ थिर आ भीतरसँ फुटबाक तैयारी— एहने शान्तिमे बीज बनै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: ओसक ‘आब’

लोकधुन: पराती

जागू हे, ओसक आखर जागू हे,
'काल्हि' नहि, 'आबे' कहि पहिल डेग राखू हे।

थिर पातपर ओस लिखलक—आब, एखन, यैह बेर,
बीज बहुत दिन बाट जोहलक, खोलू जीवन-द्वार फेर।
‘काल्हि’क बहाना छोड़ि कऽ पहिल नान्हि काज करू,
एक फोन, एक आवेदन, एक हाथ आइ धरू।

ओस सुखि जाए पहिने संकल्प माटिमे बोऊ,
आबक पगसँ भविष्यक लम्बा रस्ता जोऊ।
ओसक ‘आब’ पराती गाबै—समय जागि गेल,
थिर पातक भीतरक बीज धरती माँगि लेल।

थिर पात पर सिहरल बून्द इशारा करए,
बीया कतेक दिन सँ माटिक बाट हेरए।
एक फोन, एक अरजी, एक हाथ बढ़ाउ,
ओस सुखाए सँ पहिने संकल्प जमाउ।

❖

नवम साँसक नाम-पाठक बाद गढ़ नारिकेलमे एकटा अजीब शान्ति उतरि आयल। ई ओ शान्ति नहि छल जे थाकल लोककेँ भोजनक बाद भेटैत अछि, आ नहि ओ जे न्यायालयक स्थगनक बाद कागचपर उतरैत अछि। ई शान्ति ओ छल जे गाछक भीतर बीज बनैत काल होइत अछि। बाहर सँ पात स्थिर, भीतर सँ पृथ्वी फूटबाक तैयारी।

चन्ना गाछीमे बच्चा सभ भोरसँ पहिने घरे चलि गेल, मुदा हुनकर आवाज रहि गेल। नाम सभ हवामे ओहिना लटकल छल जेना पुरान बरगदमे सूखल जटा। बूढ़बा भूत डारि पर बैसल-बैसल गिनैत रहलाह — भोला नट, सरयू महतो, उज्ज्वल झा, मुन्ना पासवान, देविका साह, हुलासी, नन्द आरुणि, आ ओ सभ जिनकरा कागच कहियो पन्ना नहि देलक।

दसम साँसक आरम्भ ओहि समय भेल जखन नाम सभ पढ़ि लेल गेल, मुदा हुनकर घर सभ एखनो अधखुलल रहल। नाम उच्चरित भेलासँ आत्मा रस्ता पबैत अछि, मुदा रस्ता

भेटलासँ घर नहि बनि जाइत। घर बनबैत अछि स्मृति, भोजन, श्रम, गीत, आ ओ ठाम जतय मृतकक विषयमे बजैत काल लोक नजर झुकबैत नहि।

देविका साह भोरमे उठि उज्ज्वलक पुरान फोनक फाटल परदा लेली। ओ परदा आब बन्द छल, मुदा ओकर भीतरक कारी शीशामे देविकाकेँ अपन चेहरा नहि, पूरा गामक चेहरा देखाइ पड़ल। ओ बुझली जे स्क्रीनक गोहि केवल ठगी नहि छल; ई घरक भीतर पैसल ओ डर छल जे बच्चा सभकेँ अपन दुःख अपनहि सँ नुकाबय सिखबैत अछि।

ओ नारिकेल पात पाठशालाक खपरैल नीचाँ पहिल पाठ लिखली — 'भय गुप्त राखल गेल तँ व्यापार बनैत अछि।' बच्चा सभ पढ़लक। एक बच्चा पूछलक — 'दीदी, भय बाजि देलासँ ओ समाप्त भऽ जाइत अछि?' देविका कहली — 'नहि। मुदा भयक मालिक बदलि जाइत अछि। जखन धरि भय भीतर बन्द, तखन चोरक। जखन बाहर बाजल, तखन समाजक।'

ई वाक्य चन्द्रपाल बत्राक कान धरि पहुँचल। ओ शहरमे अपन दफ्तरक दरबाजा बन्द कऽ बैसल छल। ओकरा लग सूचना आयल जे गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ डिजिटल ठगीक पाठ पढ़ि रहल अछि। ओ हँसबाक प्रयास केलक। 'बच्चा सभ कानून बुझत?' मुदा ओकर हँसी अधबीच रुकि गेल, कारण दराजमे राखल तेसर फोन बिना छुए खुलि गेल। स्क्रीनपर लिखल छल — 'भय बाहर बाजल।'

चन्द्रपाल फोन बन्द करए चाहलक। फोन बन्द नहि भेल। ओकर प्रमाणपत्रक शीशा पर उज्ज्वलक अन्तिम वाक्य उभरल — 'हम चोर नहि छी।' ओ एते बेर पढ़ि चुकल छल जे आब शब्दक अर्थ नहि, ओकर ध्वनि काटैत छल। कानून पढ़ल लोक शब्दक अर्थ सँ बचि सकैत अछि; ध्वनि सँ नहि।

राघव 'सिग्नल' सोमानीक कोठरीमे ओहि राति सभ सिम-कार्ड फूटि कऽ छोट-छोट बीज बनि गेल। पहिने ओकरा लागल धातुक खराबी अछि। फेर प्रत्येक बीजसँ एक सूक्ष्म पात निकलल। पातपर आधा नाम। ओ जे संदेश मेटबैत छल, से मेटल नहि छल; ओ सभ माटिक प्रतीक्षामे बीज बनल छल।

राघव पात सभ झाड़ि फेकए चाहलक, मुदा ओ पात हवामे उड़ि कऽ फेर टेबुल पर आबि जाइत। एक पातपर लिखल — 'ककरा खाता बनौलहुँ?' दोसर पर — 'ककरा डेरौलहुँ?' तेसर पर — 'ककरा देशद्रोही कहलहुँ?' चारिम पर — 'ककरा कहलहुँ जे कैमरा चालू राखू?' ओहि प्रश्न सभक कोनो उत्तर सिग्नलपर नहि भेटल।

लाउ किन-हंग अपन समुद्री शहरमे नब योजना बना रहल छल। ओकर सलाहकार कहलक — 'भारतक देहाती क्षेत्रमे नाम-अभिलेखक असर स्थानीय अछि।' बाजार पर प्रभाव सीमित। लाउ माथ हिलौलक। ओ बाजारक भाषा बुझैत छल, लोकक भाषा नहि। मुदा ओही समय ओकर सामने स्क्रीनपर भारतक नक्शा खुलल आ सीमित क्षेत्रक ठाम एक बिन्दु धड़कए लागल — गढ़ नारिकेल। बिन्दु छोट छल, मुदा ओकर धड़कन शेयर-बाजारक ग्राफ जकाँ ऊपर-नीचाँ नहि, हृदय जकाँ चलैत छल।

एडवर्ड ब्रूमक सभागारक घटना संसार भरिमे छोट विडियो बनि पसरि गेल। किछु लोक ओकरा मजाक कहलक, किछु तकनीकी खराबी, किछु पूर्व-योजित विरोध। मुदा ईरा आरुणि चुप रहली। ओ जानैत छली जे जकरा सबूत चाही, ओकरा कागच देल जा सकैत अछि; जकरा आत्मा चाही, ओकरा नाम सुनबाक चाही।

ईरा हार्वर्डक पुस्तकालयमे एक पत्र लिखली। पत्र कोनो समाचारपत्र लेल नहि, कोनो अदालत लेल नहि। पत्रक शीर्षक छल — 'जखन नैतिकता भाषण बनि जाइत अछि, तखन नाम प्रतिरोध बनैत अछि।' ओ पत्र अंग्रेजीमे लिखय बैसली, मुदा पहिल पंक्ति मैथिलीमे निकलल — 'जकर नाम नीकसँ नहि बाजब, ओकर पक्षमे अहाँ बाजि नहि सकैत छी।' ओ पंक्ति अनुवाद होए सँ इन्कार कऽ देलक।

गढ़ नारिकेलमे सौम्या रामनाथन दस्तावेज सभ लोकभाषामे बदलैत छलीह। सरकारी पन्ना कहैत छल — 'वित्तीय अनियमितता।' ओ ओकर कातमे लिखैत छलीह — 'जकर पाय छल, ओहि सँ बच्चाक डर कीनल गेल।' फाइल कहैत छल — 'अनधिकृत श्रमिक।' ओ लिखैत छलीह — 'जे पुल बनबय आयल छल, ओकर नाम मजदूर छल।' अस्पतालक बिल कहैत छल — 'आपूर्ति व्यय।' ओ लिखैत छलीह — 'श्वास बेचब।'

रमैय्या सुब्रमण्यम हँसैत-हँसैत एहि अनुवादक काजमे लागल छल, मुदा ओकर हँसी आब पहिनुका निश्चिन्त हँसी नहि रहल। ओ कहैत — 'सरकारी भाषाकेँ लोकभाषामे अनुवाद करब ई देशक सभसँ पैघ क्रान्ति अछि। किएक तँ सरकारक आधा झूठ शब्दक मोट परदामे नुकायल रहैत अछि।'

गोप कुमारक भीतर एहि बीच एक दोसर चिन्ता बढ़ैत गेल। नामक अभिलेख बनि गेल, डिजिटल पाठशाला शुरू भेल, निजताक शपथ चलल, मुदा असली फाइलक मालिक सभ एखनो जिन्दा छल। ब्रूम, लाउ, बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव — सभ अपन-अपन बिलमे

सिमटल, मुदा बिल टूटल नहि। गोपकेँ बूढ़बा भूतक वाक्य मोन पड़ल — 'गोहि बिल छोड़ि बाहर नहि आओत; पानि ओकर बिलमे घुसाओ।'

एहि लेल दसम साँसक असली काज शुरू भेल — पानि बिलमे पठेनाइ। ई पानि मुकदमा नहि छल, बदला नहि छल, हिंसा नहि छल। ई पानि ज्ञान छल। प्रत्येक गाममे, प्रत्येक स्कूलमे, प्रत्येक परदेशी परिवारमे, प्रत्येक अदालतक प्रतीक्षालयमे नामक पाठ, भयक पाठ, खाता-चिन्हबाक पाठ, निजताक पाठ, विकासक शब्द-जाँचक पाठ।

अनन्या बच्चा सभकेँ एक खेल सिखौलक। खेलक नाम — 'सही नाम पकड़ू।' एक बच्चा अपराधीक भूमिका करैत, दोसर पीड़ितक, तेसर गवाहक, चारिम न्यायाधीशक। अपराधी पीड़ितक नाम बिगाड़ैत, गवाह सुधारैत। जखन नाम सही उच्चरित होइत, तखन पीड़ित खेलमे फेर दौड़ए लगैत। बच्चा सभ एहि खेलमे एते मग्न भेल जे भूत सभ सेहो देखैत-देखैत मुस्किया उठलाह।

हुलासी कहलनि — 'हमर नामो कतेक बरख गलत कहल गेल। कियो आत्महत्या, कियो पाप, कियो अपशकुन। जखन अहाँ सभ हुलासी कहैत छी, तखन हमरा इनारक देबाल नहि, अपन बचपन मोन पड़ैत अछि।' बच्चा सभ पहिल बेर बूझल जे भूत सेहो बचपन राखैत अछि।

ओहि राति बटुकनाथ हरिहरन गढ़ नारिकेलक बाहरी सरायमे ठहरल। ओ दिन भरि नाम-पाठक सभा देखलक, मुदा भीतर जा नहि सकल। ओकरा लग आदेश छल, परिचय छल, पद छल, मुदा चन्ना गाछीक गोलमे प्रवेश लेल नाम चाही। ओ अपन नाम बाजल — 'बटुकनाथ हरिहरन।' गाछीक पात हिलल। बूढ़बा भूत पूछलाह — 'एहि नामक भीतर कतेक नाम बन्द अछि?'

बटुकनाथ उत्तर नहि देलक। ओकरा अपन बचपनक एक दृश्य मोन पड़ल। केरलाक एक छोट कस्बामे ओकर पिता अदालतक बाहर पर्ची लिखैत छलाह। गरीब लोक नाम बजैत, पिता ओकरा लिखैत। एक दिन पिता कहलथिन — 'नाम खराब नहि लिखिहऽ। गरीबक नामे ओकर जमीन अछि।' बटुकनाथ ओहि दिन हँसल छल। आब ओ हँसी ओकरा गलामे काँटा बनि फँसल।

चन्द्रपाल बत्रा अपन दफ्तरमे एक नव रणनीति बनौलक — 'लोकशिक्षा अभियानक विरुद्ध मानहानि दावा।' ओकर कर्मचारी सभ कागच तैयार करए लगल। आरोप: प्रतिष्ठा-हानि, आर्थिक क्षति, अवैध प्रचार, बालक सभमे भय पसारब। मुदा जखन दस्तावेज प्रिन्ट भेल,

प्रत्येक पन्नाक ऊपर स्वतः लिखल निकलल — 'हम चोर नहि छी।' प्रिन्टर बन्द। फेर चालू। फेर वैह।

चन्द्रपाल गरजि उठल — 'ककर प्रोग्रामिंग अछि?' एक कर्मचारी धीरे कहलक — 'सर, मशीन ऑफलाइन अछि।' ऑफलाइन। ई शब्द सुनिते चन्द्रपालक चेहरा पीयर पड़ल। ओकर अपराध सदिखन नेटवर्क पर निर्भर छल। ऑफलाइन वस्तुमे चन्ना गाछी प्रवेश कऽ चुकल छल।

राघव सोमानी शहर छोड़ि भागबाक सोचलक। ओ एयरपोर्टक टिकट देखैत छल। गन्तव्य: दुबई। मुदा जखन नाम भरबाक कोठरी आयल, ओकर हाथ रुकि गेल। पासपोर्ट पर राघव सोमानी। सिग्नल पर आर.एस.। अपराधी चक्रमे 'कौआ'। बैंकमे परामर्शदाता। घरमे बेटा। पत्नी लग मौन। असली नाम कोन? ओ टिकट बुक नहि कऽ सकल।

लाउ किन-हंग अपन वकील सभकेँ कहलक — 'भारतमे स्थानीय कथाकेँ स्थानीय रहए दियौ।' वैश्विक ब्रान्ड अलग करू। ओकर सलाहकार सहमत भेल। मुदा बैसकीक अन्तमे काँचक देबाल पर ओही देवनागरी बिन्दु सभ फेर उभरल। लाउ पढ़ि नहि सकल, मुदा ओकरा लागल जे अक्षर सभ ओकर उच्चारण बिना ओकर नाम बाजि रहल अछि। ओ पहिल बेर अपने नामक ध्वनि सँ असहज भेल — लाउ किन-हंग। नाममे 'हंग' किएक? लटकनाइ? टंगनाइ? ओकर मोन सचमुच टांगल छल।

एहि बीच गढ़ नारिकेलमे एक नब बात भेल। नारिकेल पात पाठशालामे बच्चा सभ बाहरी लोककेँ पढ़ाबय लगल। पहिने माता-पिता, फेर हाटमे दुकानदार, फेर बसक चालक, फेर बैंकक बाबू। बैंकक बाबूकेँ मुन्ना पासवानक कथा सुनाओल गेल। ओ पहिने कहलक — 'खाता तँ नियम सँ खुलल।' बच्चा सभ पूछलक — 'नियम देखलक कि लोक?' बाबू चुप।

बैंकक बाबू ओहि राति घर जा अपन रजिस्टर खोललक। म्यूल अकाउण्ट सभ चिन्हब सहज नहि छल, मुदा असम्भव सेहो नहि। ओ तीन खाता अलग चिन्हलक। पहिल बेर व्यवस्था भीतर एक छोट बाबू नियमक भीतर मनुष्य खोजलक। ई दसम साँसक पहिल विजय छल — धूमधाम बिना, ताली बिना, मात्र एक लाल पेंसिलक छोट निशान।

सत्यव्रत मेहताकेँ एहि सभ खबर चिट्ठीमे नहि, लोकक बयानमे भेटैत छल। हुनका बुझि पड़ल जे अदालतक आदेश देरी सँ चलैत अछि, मुदा लोक-पाठ तुरन्त। हुनका मोनमे प्रश्न उठल — कानूनक गरिमा की लोकक स्मृति सँ सीखि सकैत अछि? ओ अपन नोटबुकमे लिखलनि — 'न्यायालय नाम सुनैत अछि; समाज नाम सँ जीबैत अछि।'

चन्ना गाछीमे दसम साँसक राति अदालत फेर नहि लागल। ओहि राति भोज लागल। मृतक, जीवित, बच्चा, भूत, प्रेत, डाइन, पनिडुब्बी सभक बीच प्रतीकक भोज। वास्तविक भात नहि, मुदा प्रत्येक घरसँ एक मुट्ठी चाउर, एक चुटकी नून, एक बून्द पानि, एक पात नामक अभिलेख लग राखल गेल। चाउरक सोन्हगर गन्ध आ नूनक हलुक खारपन साँझक हवामे मिलि गेल, जेना गाम अपन सम्पूर्ण रसोई मृतक सभकेँ सुँघा रहल हो। बूढ़बा भूत कहलाह — 'जकरा भोजनमे स्थान भेटल, ओकरा इतिहासमे स्थान भेटत।'

देविका उज्ज्वलक नामक पात लग एक चुटकी नून राखली। मीरा निजताक शपथक पात लग दीपक। सौम्या अनुवादक पन्ना। ईरा विदेशसँ आनल एक खाली कार्ड, जाहि पर कोनो विश्वविद्यालयक मोहर नहि छल। गोप कुमार एक प्रतिलिपि — फाइलक नहि, उज्ज्वलक वाक्यक। अनन्या एक खड़िया, जाहि सँ बच्चा सभ नाम लिखैत छल।

तखन हवामे हलुक सन चिरचिराहट भेल। चन्ना गाछीक ऊपर जे अदृश्य परदा छल, ओ फाटल। फाटल परदा सँ धूर्त सभक भीतरक आवाज सभ सुनाइ देलक। बटुकनाथक बाल्यकाल, चन्द्रपालक पहिल झूठ, राघवक मेटल संदेश, लाउक प्रतिशत, ब्रूमक ताली। सभ आवाज सभकेँ सुनाइ नहि देलक; केवल ओहि लोककेँ जे नाम-पाठमे बैसल छल।

बच्चा सभ डरायल नहि। अनन्या कहली — 'ई सभक मोन आबि रहल अछि।' बूढ़बा भूत माथ हिलौलनि — 'देह बादमे आओत। पहिने मोनक स्वीकार होइत अछि। जे मोन टांगल अछि, से पवनमे झूलैत-झूलैत अन्ततः पात बनि जाइत अछि।'

दसम साँसक अन्तिम पहरमे बटुकनाथ सरायमे सुतल नहि। चन्द्रपाल दफ्तरमे प्रिन्टरक सामने बैसल रहल। राघव टिकट पन्ना खुलल छोड़ि देलक। लाउ किन-हंगक समुद्री घरमे पानि काँचक भीतरसँ टपकल। एडवर्ड ब्रूम अपन अगिला भाषण रद्द करए चाहलक, मुदा आयोजक पूछलक — 'कारण?' ओ उत्तर नहि लिखि सकल। कारणक नाम नहि छल; अथवा बहुत नाम छल।

गढ़ नारिकेलमे भोर भेल। चन्ना गाछीक पात पर ओस जमा छल। प्रत्येक बून्दमे एक छोट अक्षर। बच्चा सभ दौड़ि कऽ आयल। अनन्या पहिल बून्द पढ़लक। ओकरा केवल एक शब्द भेटल — 'आब।'

'आब' — ई समयक आदेश छल। न अतीत, न भविष्य। आब नाम पढ़ू। आब भय बाजू। आब खाता देखू। आब बच्चाकेँ सिखाउ। आब मृतकक घर जाउ। आब धूर्तक मोनकेँ भीतर घुसए दियौ, कारण जे भीतर आबि गेल, से बाहरक झूठ सँ नहि बचत।

चन्ना गाछीमे कबड्डी फेर शुरू नहि भेल। खेल स्थगित सेहो नहि। खेल साँस रोकि ठाढ़ रहल — जेना धावक अगिला संकेतक प्रतीक्षा करैत अछि। दसम साँस पूरा भेल, मुदा साँस छोड़ल नहि गेल। गढ़ नारिकेलक हवामे बस एतबे गूँजल — जे नामक भोज खा चुकल, ओकरा भूख फेर सत्यक लागैत अछि।

लोकगीत: ओस कहलक—आब

लोकधुन: पराती

कहलक हे ओस, 'आब' कहि कऽ जगेलक हे,
ने काल्हि, ने परसू—एहि घड़ीक जवाब हे।

थिर पात भीतर बीज पृथ्वी फोड़य चाहै,
मेटायल सन्देश माटिमे नब अंकुर बनि राहै।
ओसक प्रत्येक बून्दमे एक अक्षर आब,
आब नाम पढ़ू, आब भय खुले बाजू,

आब मृतकक घर जाउ, खाता सभ जाँचू।
कारण एक नहि, नाम हजारो भार,
धूर्तक निन्न उड़ल चारू दिशि अपार।
खेल साँस रोकि ठाढ़, संकेतक आस,
'आब' कहि भोर जगेलक सत्यक नव पियास।

थिर पात भीतर बीया धरती फोड़ए चाहए,
मेटायल सन्देश माटि मे अंकुर बनि आबए।

❖

अध्याय ४०

ओसक अक्षर

ओसक अक्षर पढ़निहारक हथेली भीजि जाइ छै, आ भीजल हथेलीसँ दरबज्जा खुजै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: हथेली खोलत दरबाजा

लोकधुन: ओस-गीत

खोलू हे हथेली, मुट्ठी नहि, खोलू हे,
भीजल रेखा-रेखा मे भरोस घोरू हे।

भीजल हथेली दरबाजापर नेहक छाप धरै,
ताला भीतरसँ सुनि कऽ धीरे-धीरे सरै।
मुट्ठी नहि, खुलल हथेली भरोसक पहिचान,
जे किछु अछि साफ देखाय—एहने साँचक दान।

ओसक अक्षर हथेलीपर कहै—डेराउ नहि,
खुलल हाथक आगाँ बन्द मन रहि पाउ नहि।
हथेली खोलत दरबाजा, संगक घर बनत,
विश्वासक नमीसँ सूखल सम्बन्ध फुलत।

बन्द केबाड़ कान लगौने भीतर सँ सुनए,
खुलल हाथक आहट पर सिटकिनी अपने सरए।
जे देखाए साफ हथेली, से साँचक दानी,
नेहक नमी सँ जुड़ि जाए सूखल जिनगानी।

❖

दसम साँसक अन्तमे कबड्डी साँस रोकने ठाढ़ छल — आ जे नामक भोज खा चुकल छल, ओकर भूखकेँ आब सत्य चाही; तेँ एगारहम साँस भोरक ओस पर उतरल। भोरुकाक ओस पर लिखल ‘आब’ गढ़ नारिकेलमे ओहिना पसरल जेना कोनो पुरान मन्त्र भूलसँ नहि, ठीक समय पर जागि गेल हो। बच्चा सभ ओसक बून्द पढ़लक, आ बून्द पढ़िते हुनकर हथेली भीजि गेल। ओस ठण्ढा छल, मुदा ओहि ठण्ढमे भोरक माटिक सोन्हगर गन्ध छल, जेना धरती स्वयं स्याही बनि गेल हो। ओ भीजल हथेली जखन कापी पर लगल, कापीमे अक्षर नहि, छोट-छोट दरबाजा खुलि गेल। प्रत्येक दरबाजाक पाछाँ एक नाम, प्रत्येक नामक पाछाँ एक घर, प्रत्येक घरक पाछाँ एक अदना सन वस्तु — फाटल गमछा, खाली दवाईक शीशी, कटा मोबाइल-रीचार्ज कूपन, मजूरक लोहेक टिफिन, वा चाउरक डिब्बा — प्रतीक्षा करैत छल।

एगारहम साँसक आरम्भ ई बुझबासँ भेल जे नाम पढ़ब पर्याप्त नहि। नामक बाद जीवन पढ़बाक रहैत अछि। जकर नाम लिखल गेल, ओकर भूख, ओकर डर, ओकर देहक थकान, ओकर स्त्रीक प्रतीक्षा, ओकर बच्चाक फीस, ओकर खेतक रेत, ओकर मोबाइलक अन्तिम कॉल — सभ पढ़बाक रहैत अछि। चन्ना गाछीक अदालतक दण्ड एही ठाम बदलल: धूर्त सभकेँ केवल नाम नहि, जीवन पढ़बाक दण्ड भेटल।

अनन्या बच्चा सभकेँ कहली — “आइ सँ नामक संग एक वस्तु लिखू।” बच्चा सभ छरियायल। कोनो घर सँ पुरान चिट्ठी आयल, कोनो सँ अस्पतालक पर्ची, कोनो सँ बैंकक पासबुकक फोटोकापी, कोनो सँ बस-टिकट। देविका उज्ज्वलक फोनक फाटल शीशा लऽ आयली। मीरा एक कागच आनली जाहिपर केवल एतबे लिखल छल — “हमर प्रेम अपराध नहि।” सौम्या पुलक मजदूरक परिचय-चिह्न सभ जमा केली; नन्दक पुरान नापी-कापी, धुँआ खाएल ब्लूप्रिन्ट, आ ओ पन्ना जाहिमे तीस नामक बाद खाली स्थान छल।

नामक अभिलेख आब वस्तुक अभिलेख बनि गेल। चन्ना गाछीक पात पर नाम, माटि पर वस्तु, आ हवामे कथा। बच्चा सभ पूछैत — “ई टिफिन ककर?” उत्तर अबैत — “भोला नटक।” बच्चा सभ फेर पूछैत — “भोला नट की खाइत छल?” कोनो बूढ़ी कहैत — “भातमे नून, नूनमे पियाजक गन्ध।” तखन भूत सभक आँखि चमकि उठैत; किएक तँ मृतकक भोजन बाजल गेलासँ ओकर भूख आधी घटैत अछि।

ई समाचार शहर पहुँचल। बटुकनाथ हरिहरनक कानमे पहिल बेर “वस्तुक अभिलेख” शब्द पड़ल। ओकरा कानूनक भाषामे एहि लेल कोनो दफा नहि भेटल। नामक विरुद्ध मानहानि दाखिल भऽ सकैत छल; वस्तुक विरुद्ध की? फाटल टिफिनक प्रतिष्ठा-हानि? खाली शीशीक अवमानना? पुरान पासबुक पर रोक? ओ फाइल खोलैत रहल, पर कानूनक धार सभ ओकरा हाथसँ एना फिसलैत रहल जेना भीजल पात।

बटुकनाथ सरायसँ चन्ना गाछी दिस फेर चलल। एहि बेर ओ आदेशक प्रति नहि, अपन पिताक लिखल पुरान नाम-पर्ची जेबीमे राखने छल। राति भरि ओकरा मोन पड़ल छल जे पिता गरीब लोकक नाम सुधरि-सुधरि लिखैत छलाह। “हरिहरन” नाम ओकरा ओहि राति भारी लगल। जखन गाछी लग पहुँचल, बूढ़बा भूत डारिसँ पूछलाह — “आइ ककर नाम पढ़ब?” बटुकनाथ उत्तर देलक — “हम अपन पिता केँ पढ़य चाहैत छी।” भूत मुस्कुरेलाह — “पिता केँ पढ़ब आसान नहि। पितामे अहाँक पहिल झूठ सेहो रहैत अछि।”

चन्द्रपाल बत्रा एहि बीच दिल्लीमे अपन संकट-समिति बजौलक। वकील, सलाहकार, सूचना-एजेन्सी, ट्रोल-प्रबन्धक, आ दूटा चुप्पा पुलिस-दलाल। योजना बनल — “नामक अभिलेख कैँ विदेशी फण्डेड षड्यन्त्र कहू।” मुदा जखन प्रेस-वक्तव्य टाइप भेल, शीर्षक बदलि गेल — “हमरा सेहो पढ़ू।” चन्द्रपाल चिकरल। कम्प्यूटर ऑपरेटर काँपैत कहल — “सर, फाइल सेव नहि भेल छल।” चन्द्रपाल बजल — “तँ बदलल के?” ऑपरेटर माथ झुका देलक। बाहरक ह्याकिंग ओ बुझैत छल; भीतरक हस्ताक्षर नहि।

राघव सिग्नल सोमानीक कोठरीमे एगारहम साँसक दिन सभ सिम-कार्डक बीज अंकुर बनि गेल। ओ अंकुरमे छोट-छोट लाल बिन्दु छल, जेना बैंकक मोहर। प्रत्येक अंकुरक पात पर एक खाता-संख्या आधा लिखल। राघव पहिल बेर ओकरा जोड़ि पढ़बाक प्रयास केलक। नम्बर पूरा भेलासँ नाम खुलल — मुन्ना पासवान। राघवक गला सूखि गेल। ओ मुन्नाक फोटो कहियो नहि देखल छल। अपराधमे खाता रहैत अछि, चेहरा नहि। चन्ना गाछी चेहरा वापस देलक।

मुन्ना पासवान ओहि दिन नारिकेल पात पाठशालामे बैसल छल। ओकरा बच्चा सभ “म्यूल” शब्दक अर्थ बुझबैत नहि, उनटा पूछैत छल — “खाता तोहर छल कि तोरा पर राखल गेल छल?” मुन्ना पहिने लजायल। फेर बजल — “खाता हमर नाम पर छल, मुदा डर ओकरा सभक छल।” बच्चा सभ लिखलक — “नामक मालिक आ खाता चलाबयबला अलग-अलग होइ सकैत अछि।” ई वाक्य बैंकक बाबूक लाल पेंसिलसँ बहुत दूर जाएबला छल।

बैंकक बाबू, जे दसम साँसमे तीन खाता चिन्हने छल, आब चौदह खाता धरि पहुँचि गेल। ओ नियमक भीतर रहि काज करैत छल — चिट्ठी, सतर्कता, रोक, पूछताछ। पर प्रत्येक कागच पठेबासँ पहिने ओ एक छोट बिन्दु लगबैत — “लोक देखू।” ओकर सहकर्मी हँसल — “ई कोन आधिकारिक टिप्पणी?” बाबू कहल — “आधिकारिक नहि, मानवीय।” सहकर्मी कहल — “मानवीय बात फाइलमे नहि चलैत।” बाबू मुस्कियायल — “तैँ तँ फाइल चलि-चलि मृतक धरि पहुँचि गेल।”

लाउ किन-हंगक कार्यालयमे भारतक रिपोर्ट आयल। “स्थानीय जागरूकता गतिविधि। सीमित प्रभाव।” रिपोर्टक अन्तमे प्रतिशत छल। लाउ प्रतिशत देखलक, राहतक साँस लेल, मुदा ओहि साँसक संग ओकर काँचक मेज पर नूनक एक दाना गिरल। ओ दाना कतयसँ आयल? हांगकांगक ऊँच शीशा-घरमे नून? ओ उँगली सँ छूएलक। दाना पिघलल नहि। दानाक भीतर एक आवाज — “नून खाइने छी?” लाउकेँ ई प्रश्नक अर्थ बुझल नहि, मुदा ओकर देह जानि गेल जे ई सौदाक भाषा नहि, भोजनक भाषा अछि।

एडवर्ड ब्रूम अपन अगिला भाषण रद्द नहि कऽ सकल। आयोजक सभ कहलक — “संकटक समयमे नेतृत्वक गरिमा देखाउ।” ओ मंच पर पहुँचल। स्लाइड पर लिखल छल — “उत्तरदायी पूँजी।” जेना ओ बाजए लागल, स्क्रीन पर अचानक एक टिफिनक चित्र उभरल। जंग लागल, भीतर सूखल भातक दाग। सभागारमे लोक सोचलक — ई नव दृश्यात्मक रूपक अछि। ब्रूमक गला सूखि गेल। ओकरा टिफिन चिन्हाय नहि, मुदा टिफिन ओकरा चिन्हि गेल।

ईरा आरुणि ओहि सभागारमे नहि छली। ओ बाहर विद्यार्थी सभक संग बैसलि, आ गढ़ नारिकेलसँ सोझे नाम-वस्तु-पाठ सुनि रहल छली। एक बच्चा कहलक — “भोला नटक टिफिन।” दोसर — “उज्ज्वलक फाटल फोन।” तेसर — “मीरा दीदीक कागच।” ईरा आँखि मूँदि सुनैत रहली। ओ सोचली — विश्वविद्यालय सभ संसारक सिद्धान्त सिखबैत अछि, मुदा एक गामक बच्चा सिद्धान्तक देह देखबैत अछि।

मीरा एहि दिन निजताक मण्डलमे एक कठिन बात कहली। “जे वस्तु हम अपन इच्छा सँ साझा करब, ओ स्मृति। जे हमरा डराय लेल छीना जाए, ओ हिंसा।” एहि वाक्य पर चुप्पी छा गेल। कतेको स्त्री, कतेको युवक, कतेको एहन लोक जे अपन प्रेम, देह, इच्छा, वा डरक कारण ब्लैकमेल भेल छल, पहिल बेर बुझल जे शर्म ओकरा सभक निजी सम्पत्ति नहि; शर्म ठगक हथियार अछि। चन्ना गाछीमे हुलासी डारिसँ फुसफुसैली — “ई वाक्य हमरा इनारसँ ऊपर खिंचैत अछि।”

गोप कुमार एगारहम साँसमे कम बजल। ओ देखैत रहल जे फाइल आब लोकमे बाँटि गेल अछि। पहिने ओ सोचैत छल जे सत्यक सुरक्षा प्रतिलिपि बनबासँ होइत अछि। आब ओकरा बुझि पड़ल — सत्यक सुरक्षा उपयोग सँ होइत अछि। जे सत्य केवल हार्ड-डिस्कमे अछि, ओकरा छीनल जा सकैत अछि। जे सत्य बच्चा सभ खेलमे, स्त्री सभ शपथमे, बैंक-बाबू लाल पेंसिलमे, विदेशक विद्यार्थी प्रश्नमे, आ भूत सभक भोजमे बाँटि देलक — ओकरा बन्द करबाक कोनो सर्वर नहि।

सत्यव्रत मेहता अपन कक्षमे ओहि दिन एक नव नोट लिखलनि — “साक्ष्यक जनतंत्रीकरण।” फेर ओ हँसलाह। शब्द भारी छल। ओ काटि देलनि। दोसर लिखलनि — “सबूत घर-घर गेल।” ई पंक्ति हुनका नीक लागल। अदालतमे सबूत पेश होइत अछि; समाजमे सबूत रहैत अछि। ओ बुझलथि जे न्यायालयक गरिमा तखने रहत जखन ओ समाजमे रहैत सबूतकेँ सुनबाक भाषा सीखत।

साँझमे गढ़ नारिकेलक हाट लग एक छोट घटना भेल। एक नव लोक आयल। ओ चुपचाप लोक सभसँ पूछैत छल — “नामक अभिलेख कतय राखल अछि?” ओकर आवाजमे सरकारीपन नहि, दलालीक चिकनाहट छल। बच्चा सभ ओकरा पकड़ल नहि। बस ओकरा पाठशालाक बीच बैसाबि देलक। अनन्या कहली — “पहिने अपन नाम लिखू।” ओ लोक लिखल — “माधव।” बच्चा सभ पूछलक — “पूरा?” ओ अटकि गेल। जे गुप्त काजसँ आयल छल, से अपन पूरा नाम लिखि नहि सकल।

बूढ़बा भूत ओहि दृश्य पर हँसलाह नहि। ओ गंभीर भेलाह। “जे अपन पूरा नाम नहि लिखि सकैत, से दोसराक नाम मेटबय आयल अछि।” बच्चा सभ ओहि वाक्यकेँ देबाल पर लिखि देलक। माधव धीरे-धीरे उठि चलि गेल। ओकर पाछाँ धूलि पर पयरक निशान नहि, चारि बिन्दु बनल — दलाली, भय, भाड़ा, मौन।

राति गाढ़ भेल। चन्ना गाछीमे एगारहम साँसक सभा लागल नहि, किएक तँ आब सभा गाछी बाहर पसरि गेल छल। प्रत्येक घरमे एक छोट अदालत, प्रत्येक मोबाइलमे एक छोट पाठशाला, प्रत्येक बैंक-खातामे एक छोट प्रश्न, प्रत्येक प्रेममे एक छोट शपथ, प्रत्येक पुरान वस्तुमे एक छोट जीवन। भूत सभ पहिल बेर आरामसँ बैसलाह; हुनकरा सभकेँ बुझि पड़ल जे हुनकर काज आब असगर नहि रहल।

तखन पनिडुब्बी पोखरिसँ ऊपर आयलि। हुनकर केशमे जलक बदला कागचक पतला धागा लटकैत छल। ओ कहलनि — “पानि बहुत नाम बहा चुकल। आब पानि नाम ढोएत।” ओ अपन केश झाड़लनि। केशसँ तीन वस्तु खसल — एक जंग लागल कील, एक टूटल सिम-कार्ड, आ एक सूखल नारिकेल-फूल। बूढ़बा भूत तीनू उठेलाह। कील पुलक, सिम-कार्ड स्क्रीनक, फूल गामक। तीनू एके पात पर राखल गेल।

दुपहरिया धरि चन्ना गाछी लग माटि पर एक नक्शा बनि गेल। ई सरकारी नक्शा नहि छल, जाहिमे नदी नीला, सड़क लाल, पुल कारी रेखा होइत अछि। एहि नक्शामे भोला नटक घर सँ पुल धरि चाउरक दाना बिछल, सरयू महतो केँ चिन्हए लेल नूनक रेखा, उज्ज्वलक घर सँ मोबाइल-दुकान धरि कारी राख, आ मुन्ना पासवानक घर सँ बैंक धरि लाल माटि। बच्चा सभ एना रस्ता बनबैत छल जेना मरल लोककेँ फेर घर घुरबाक बाट दऽ रहल हो।

सरयू महतो केर बेटी कमली पहिल बेर ओहि सभामे आयलि। ओकरा पिता कतेक बरख पहिने पुलक धारमे गेलाह, मुदा घरमे हुनकर बारेमे गप कम भेल। सरकारी कागच कहैत छल — “अनिश्चित।” कमली माटि पर बैसि नूनक रेखामे एक छोट पायल राखली। “ई हमर मायक

पायल छल," ओ कहली, "बाबूजी जखन जाय लगला तखन मायक पायल मरम्मत कराबए कहने छलथिन। पायल टूटल रहि गेल, बाबूजी नहि घुरलाह।" पायल माटि छूइते ओकर टूटल घुंघरू हल्लुक टुनटुनायल — मलिन स्वर, तइयो सभा भरिक करेज ओम्हरे झुकि गेल। नामक संग पायल जुड़िते सरयू महतो जलसमाधि सँ एक इंच ऊपर उठलाह।

कमलीक आवाज सुनि बटुकनाथ हरिहरन सरायक बरामदा सँ बाहर तकलक। ओकरा लागल कोनो साधारण स्त्री बाजि रहल अछि। मुदा शब्दक चाल ओहि कानून सँ बेसी स्थिर छल जेकरा सहारे ओ जीवन भर लोककेँ चुप करबैत रहल। "अनिश्चित" शब्द ओकरा कानमे हथौड़ी जकाँ पड़ल। न्यायालयमे अनिश्चितता स्थगन होइत अछि; घरमे अनिश्चितता प्रतीक्षा। एही भेद ओकरा पहिल बेर बुझि पड़ल।

चन्द्रपालक दफ्तरमे संकट-समितिक बाद एक नव लोक आयल — महादेव साह। ओही जे गढ़ नारिकेलमे "माधव" नाम लिखने छल। चन्द्रपाल ओकरा डाँटलक — "पूरा नाम किएक लिखि नहि सकल?" महादेव उत्तर देलक — "सर, बच्चा सभ देखैत छल।" चन्द्रपाल पूछलक — "बच्चासँ डर लागल?" महादेव कहल — "बच्चासँ नहि। जे बच्चा पूरा नाम पूछैत अछि, ओ ककरो भाड़ाक लोक नहि होइत।" चन्द्रपाल ओकरा थप्पड़ मारए लेल हाथ उठौलक, मुदा हाथ अधबीच रुकि गेल। ओकर हथेली पर उज्ज्वलक वाक्य उभरल — "हम चोर नहि छी।"

राघव सोमानी अपन सिम-अंकुर काटए लेल ब्लेड आनलक। ब्लेड जड़ि छूइतहि कुंद भऽ गेल। ओ घबड़ायल। ओकरा मोन पड़ल जे ओ कतेक युवककेँ कहने छल — "एक खाता खोलू, छोट कमिशन भेटत।" ओ युवक सभक चेहरा ओ कहियो नहि राखलक; अपराधक सुविधा चेहरा-रहित होइत अछि। आब प्रत्येक अंकुर चेहरा बनि रहल छल। एक अंकुरमे मुन्ना, दोसरमे अजित, तेसरमे फरमान, चारिममे अनामिका। राघवक कोठरी बैंक-शाखा नहि, प्रतीक्षालय बनि गेल।

सौम्या एहि दिन दस्तावेजक लोकभाषा केँ आओर सरल केली। ओ "म्यूल अकाउण्ट"क अनुवाद लिखली — "दोसराक पाप लेल अपन नामक खाता।" फेर काटली। फेर लिखली — "नाम देलहुँ, डोर ओकर हाथ गेल।" रमैय्या ताली बजौलक — "ई बच्चा बुझत।" सौम्या कहली — "बच्चा बुझत तँ बाबू सेहो डरि जाएत।"

नारिकेल पात पाठशालाक देबाल पर चारि वाक्य लिखल गेल। "पूरा नाम पूछू।" "खाता खोलय सँ पहिने काज पूछू।" "डरक फोन काटू।" "निजता पर अधिकार तोहर।" ई चारि

वाक्यक अक्षर रातिमे हलुक चमकैत। भूत सभ पढ़ैत, पनिडुब्बी पढ़ैत, डाइन सभ पढ़ैत, आ दूर शहरमे अपराधी सभकेँ बिनु पढ़ने ओकर डाह होइत।

सत्यव्रत मेहता केँ गढ़ नारिकेलसँ एक पोटली भेटल। पोटलीमे कोनो शपथ-पत्र नहि, कोनो प्रमाणित प्रति नहि। भीतर चाउरक दाना, नून, जंग लागल कील, फाटल सिम, सूखल फूल, आ एक कागच — "ई सभ साक्ष्य नहि, जीवनक अंश अछि। कानून चाहए तँ साक्ष्य बना लिअ।" सत्यव्रत पोटली सोझाँ राखि बहुत काल धरि बैसल रहलाह। हुनका बुझि पड़ल जे कानून वस्तुकेँ प्रदर्श-साक्ष्य बनबैत अछि; लोक वस्तुकेँ सम्बन्ध बनबैत अछि। न्याय दुनू बिनु अपूर्ण अछि।

ओहि राति सत्यव्रत अपन पुरान विधि-पुस्तक खोललनि। पन्ना सभ पर धार, दफा, अपवाद, प्रमाण-भार। हुनका सभ जरूरी लगल, मुदा अपर्याप्त। ओ कापीमे लिखलनि — "जखन राज्य नाम काटैत अछि, लोक वस्तु सँ नाम फेर जोड़ैत अछि। एहि जोड़बाक क्रिया केँ कानून चिन्हत की?" प्रश्न लिखिते खिड़की बाहर एक नारिकेल पात उड़ि आयल। पात पर लिखल छल — "पहिने सुनू।"

एगारहम साँसक साँझमे चन्ना गाछीमे एक विचित्र अभ्यास भेल। बच्चा सभ एक-एक वस्तु उठाबैत आ ओकर रास्ता कहैत। "ई कील कारखाना सँ आयल, ट्रक सँ पुल गेल, पुल सँ पानि लग खसल, पानि सँ नन्दक कापीमे पहुँचल, कापी सँ चन्ना गाछी।" "ई सिम दुकान सँ युवकक जेबीमे, जेबीसँ ठगक हाथमे, ठगसँ बैंकक रजिस्टरमे, रजिस्टरसँ मुन्नाक लाजमे, आ आब पात पर।" रास्ता कहिते वस्तु सभ हलुक भऽ जाइत।

बूढ़बा भूत कहलाह — "रास्ता पढ़ब नाम पढ़बासँ कठिन। नाम कहैत अछि कियो छल। रास्ता कहैत अछि के-के ओकरा संग छल, के ओकरा छोड़लक, के बेचलक, के देखलक, के चुप रहल।" बच्चा सभ चुप भेल। ई चुप्पी डरक नहि, शिक्षा सँ पहिलुक चुप्पी छल।

बटुकनाथ दूर सँ सुनैत रहल। ओकरा अपन अनेक मुकदमा मोन पड़ल — जेठामे ओ "लिंक नहि सिद्ध" कहि लोककेँ बचौने छल। रास्ता तोड़ब ओकर पेशा छल। "कारणक शृंखला भंग अछि," ओ अदालतमे कहैत। आब चन्ना गाछी कारणक शृंखला फेर जोड़ि रहल छल। बटुकनाथक छाती पर ओहि राति एक अदृश्य रस्सी बन्हि गेल — प्रत्येक गिट्ठऽ एक नाम, प्रत्येक नामक पाछाँ एक रास्ता।

लाउ किन-हंग केँ ओकर सलाहकारक दोसर रिपोर्ट भेटल — "स्थानीय समूह रास्ता-नक्शा बनएबाक गतिविधिमे लागल अछि।" लाउ मुस्कुरेलक। ओकरा रास्ता-नक्शा व्यापारक

शब्द लगल। पर रिपोर्ट खोलिते ओकरा सोझाँ समुद्री नक्शा नहि, गामक माटि पर बनल चाउर-नूनक रेखा देखाए लागल। ई डिजिटल मानचित्र नहि छल, तेँ मेटाओल नहि भेल। ई धरती पर बनल छल, तेँ उपग्रहसँ नहि, स्मृतिसँ देखल जाइत छल।

एडवर्ड ब्रूमक मंच पर टिफिनक दाग पसरि रहल छल। ओ भाषण छोड़ि पानि माँगलक। गिलासमे पानि नहि, हलुक नूनक स्वाद छल। ओ थरथरायल। ओकरा जीवनमे पहिल बेर श्रमक नून मुखमे लगल। ओकर जीह पर ओ नून बहुत काल धरि टिकल रहल, जेना कियो अनचिन्हार हाथ ओकर मुखमे अपन दिन भरिक पसेना राखि देने हो। ओहि स्वादमे ओ हजार भाषणक मिठास हारि गेल।

एगारहम साँसक अन्तमे अनन्या पूछली — “आब की?” बूढ़बा भूत उत्तर देबाक पहिने चन्ना गाछीक ऊपर तकलाह। पात सभमे हवा चलल। हवा बजली — “जकर वस्तु पढ़ि लेल, ओकर रास्ता पढ़ू।” बच्चा सभ बुझि गेल जे अगिला पाठ यात्रा होएत — मृतक कतयसँ आयल, कतय गेल, कोन हाथ ओकरा धकेलक, कोन हाथ ओकरा रोकि सकैत छल मुदा रोकलक नहि।

धूर्त सभ सेहो ई सुनलक। बटुकनाथक जेबीमे पिता-पर्ची काँपल। चन्द्रपालक कम्प्यूटरमे नव फोल्डर खुलल — “रास्ता।” राघवक सिम-अंकुरक जड़ि टेबुलक काठमे धँसल। लाउ किन-हंगक नूनक दाना दू भागमे टूटल। एडवर्ड ब्रूमक भाषण-पत्र पर टिफिनक दाग पसरल।

एगारहम साँस पूरा भेल, मुदा एहि बेर साँस छोड़ल गेल। छोड़ेबाक संग गढ़ नारिकेलक हवामे चाउर, नून, पानि, कागच, टिफिन, फोन, पात आ फूलक गन्ध मिलि गेल। कथा आब नामसँ जीवन धरि आ जीवनसँ रास्ता धरि बढ़ि चुकल छल। चन्ना गाछी धीरे कहलक — “जे जीवन पढ़त, से रास्ता सँ बचि नहि सकत।”

लोकगीत: भीजल हथेलीक दरबाजा

लोकधुन: ओस-गीत

खुलल हे दरबाजा, भीजल हथेलीसँ खुलल हे,
जे जीवन पढ़त, से बाट सँ ने बचत हे।

ओसक अक्षर पढ़िते हथेली भीजि गेल,
कापीपर छाप पड़िते दरबाजा खुलि गेल।
नामक पाछाँ घर, घरक पाछाँ वस्तु—
गमछा, शीशी, टिफिन, चाउरक सच्ची गन्ध।
भाषणक मिठास हारल श्रमक एक चुटकी नून,

जीवन पढ़निहार बचि नहि सकत रास्ताक धून।
कोन हाथ धकेलक, कोन हाथ रोकि सकल,
कोन हाथ चुप रहल—सभ पगचिन्ह खुलल।
चाउर, नून, पात, फोन मिलि हवा बनल,
जे जीवन पढ़त, रास्तासँ बचत नहि—गाछ कहलक।

गमछा, शीशी, टिफिन, चाउरक साँच-गन्ध-भार।
पगचिन्ह सभ खुजल—के धकेलक, के रोकल जोर सँ।

❖

अध्याय ४१

नामक नाव

किनारपर राखल नावक कोनो अर्थ नहि— नामक नाव धारमे उतरला पर बाजै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: नाव चलू नाम सहित

लोकधुन: नाविक गीत

खेबू हे खेबिया, नामो संगे खेबू हे,
देह टा नहि, चिन्हारि पार—एतबा प्रण लेबू हे।

किनारपर नाव तैयार, नामक पतवार धरू,
धार जते तेज हो तइयो संगक साहस भरू।
एक चप्पू स्मृतिक, दोसर प्रमाणक,
बीचमे जीवित आशा, दिशा न्याय-स्थानक।

नाव खाली देह नहि, पहिचानो पार लगाबै,
हरेक यात्रीक पूरा नाम नदी आदरसँ गाबै।
नाव चलू नाम सहित, कियो पाछाँ नहि रहय,
साझा पतवारक बलसँ गहींर धारो सहय।

एक चप्पू स्मृति मारए, दोसर प्रमाण,
बिच्चे बैसल जीवित आशा गाबए गान।
धार गरजए, नाव लचकए, डोरि नहि छूटए,
साझा बलक खेवाइ गहींरो धार जीतए।

❖

एगारहम साँसक अन्तमे चन्ना गाछी जे वाक्य कहलक — ‘जे जीवन पढ़त, से रास्ता सँ बचि नहि सकत’ — से राति भरि पात-पातमे बजैत रहल। गामक लोक बुझल जे आब नाम आ वस्तु सँ आगाँ बढ़बाक बेरा आयल। मृतकक नाम लिखल गेल, ओकर टिफिन, ओकर फोन, ओकर पर्ची, ओकर नून सोझाँ राखल गेल; मुदा ई सभ एखनो ओतबे छल, जेना नदीक कात राखल नाव। नावक अर्थ तखन खुलैत अछि जखन ओ धारमे उतरत।

बारहम साँसक भोरमे अनन्या चन्ना गाछीक बीच माटि साफ करेली। बच्चा सभ लोटा-लोटा पानि आनलक, देविका चाउर, मीरा हल्दी, सौम्या पुरान नापी-कापीक लाल पेन्सिल, ईरा विदेशसँ आनल खाली नक्शा-कागच, आ गोप कुमार एक पुरान यूएसबी जे आब प्रयोगक लेल नहि, स्मृतिक लेल बचल छल। बूढ़बा भूत डारिसँ देखैत रहलाह। हुनका आँखिमे ओ इजोत छल

जे बारह सय बरखक प्रतीक्षाक बाद मात्र तखन आबैत अछि जखन कोनो गाम अपन मृतकक रस्ता पूछए लगैत अछि।

सभसँ पहिने भोला नटक रस्ता बनल। बच्चा सभ चाउरसँ ओकर घर बनौलक, हल्दीसँ खेत, नूनसँ शहरक ठेका-कैंप, आ पानिसँ पुलक पाया। चाउरक दाना बच्चा सभक आङुरसँ माटि पर एना बैसैत छल जेना कियो डेग-डेग हिसाब जोड़ि रहल हो। सौम्या पुरान फाइल सँ ओकर नामक सोझाँ लिखल 'अनधिकृत' काटि देली आ कातमे लिखली — 'घर सँ चलल, कामपर पहुँचल, नाम काटल गेल।' बच्चा सभ एक स्वरमे पढ़लक — 'घर सँ चलल।' तखन चन्ना गाछीक हवा हलुक भऽ गेल, कारण पहिल बेर भोला नटक यात्रा सरकारी भाषा सँ बाहर आयल।

बटुकनाथ हरिहरन सरायमे बैसल ई सभ देखैत नहि छल, मुदा सुनैत छल। ओकर कानमे बच्चा सभक आवाज पहुँचैत, आ प्रत्येक आवाज ओकर पुरान अदालतक तर्ककेँ काटैत। ओ जीवन भरि कहैत रहल — 'कारणक शृंखला सिद्ध नहि।' मुदा चन्ना गाछीमे कारणक शृंखला गवाहक बयानसँ नहि, चाउर, हल्दी, नून आ पानि सँ बनि रहल छल। ओकरा बुझि पड़ल जे जकरा ओ कानूनमे 'लिंक' कहैत छल, ओ लोकभाषामे 'रास्ता' छल।

दोसर रस्ता सरयू महतोक बनल। ओकर टिफिन सँ रस्ताक आरम्भ भेल। टिफिनक ढक्कन माटिपर राखल गेल, ओकरा कात ओ छोट कपड़ा जे ओकर पत्नीक थानक टुकड़ा छल। ओतयसँ रास्ता मजदूर-लाइन, ठेकेदारक गोदाम, पुलक बामा पाया, आ अन्तमे पानिक गोल दाग धरि गेल। बच्चा सभ पूछलक — 'सरयू महतो कतय खसल?' गामक एक बूढ़ा उत्तर देलक — 'पाया पर नहि, गिनती सँ खसल।' ई वाक्य सुनिते चन्ना गाछीमे बैसल राकश सभक इजोत काँपि उठल।

गोप कुमार एही दृश्य देखैत रहल। ओकरा अपन एक्सेल शीट मोन पड़ल। कॉलम, राशि, तारीख, भुगतान, कोड। ओ बुझैत छल जे सत्यक रस्ता कोशिका सँ कोशिका धरि जाइत अछि। मुदा आइ ओकरा बुझल जे कोशिका सँ पहिने पएर होइत अछि। मजदूर पहिने चलैत अछि, बादमे ओकरा कागचमे दर्ज कएल जाइत अछि। अपराध ओहि ठाम जन्मैत अछि जतय चलल पएर कैँ कागचक कोठरीमे बन्द कऽ देल जाइत अछि।

देविका उज्ज्वलक रस्ता बनौली। माटि पर पहिने घर — छोट गोला। फेर स्कूल — दू रेखा। फेर मोबाइल दुकान — एक नीला कागच। फेर पहिल जीत — चाउरक पाँच दाना। फेर कर्जा — कारी माटिक रेखा। फेर डिजिटल अरेस्टक डर — चारि दिस खिंचल गोल घेरा। फेर

छत — एक सूखल पात। बच्चा सभ चुप भऽ गेल। उज्ज्वलक रस्तामे नदी नहि छल, पुल नहि छल, गोहि नहि छल, मुदा रस्ता ओतबे गहींर छल जेना गंगा।

निशांत झा स्क्रीन पर देखौलक जे पैसा कोना घूमैत अछि। मुदा ओ कोनो तकनीकी पाठ नहि देलक। ओ माटिपर तीन कटोरी राखलक — एक पर 'नाम', एक पर 'खाता', एक पर 'डर'। फेर ओ मुन्ना पासवानकेँ कहल — 'तोहर नाम कोन कटोरीमे?' मुन्ना नामक कटोरी छूएलक। 'खाता?' ओ दोसर छूएलक। 'डर?' मुन्ना तेसर छूएलक, फेर हाथ पाछाँ खिंचलक — 'डर हमर नहि छल। हमरा देल गेल छल।' बच्चा सभ लिखलक — 'डर सेहो हस्तान्तरित सम्पत्ति बनि सकैत अछि।'

चन्द्रपाल बत्रा अपन दफ्तरमे एही समय 'रास्ता' फोल्डर खोलबाक प्रयास करैत छल। फोल्डर पासवर्ड नहि माँगलक। सोझे खुलल। भीतर ने बैंक स्टेटमेण्ट, ने चैट-लॉग; भीतर माटिपर बनल कटोरी सभक चित्र। प्रत्येक कटोरीक तलीमे ओकर हस्ताक्षर। चन्द्रपाल चिकरल — 'ई डिजिटल नहि!' कम्प्यूटरक स्क्रीन उत्तर देलक — 'एहि लेल नहि मेटाएब।'

राघव 'सिग्नल' सोमानीक अंकुर सभ आब तार बनि गेल छल। टेबुलक काठमे धँसल जड़ि धीरे-धीरे देबाल धरि पहुँचल। प्रत्येक जड़ि ओहि फोन धरि, जाहिसँ कहियो मेटाइत सन्देश पठाओल गेल छल। राघव डर सँ फोन सभ तोड़ि देलक, मुदा टूटल फोनक भीतरसँ धूलि नहि, पात निकलल। पात पर आधा-आधा वाक्य — 'कॉल काटि दियौ', 'कैमरा चालू राखू', 'खाता खाली करू', 'देशक मामला अछि' — सभ पूरा होएबाक प्रतीक्षामे।

ओ लाउ किन-हंगकेँ सन्देश पठएबाक चाहलक। पर प्रत्येक शब्द मेटैत-मेटैत केवल एक पंक्ति बचल — 'रस्ता घुरि रहल अछि।' लाउक उत्तर अबेरसँ आयल। एक शब्द — "काटि दिअ।" राघव बुझल जे अपराधक दुनियाँमे रस्ता बनल रहए तँ ओकरा काटल जाइत अछि। मुदा गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ रस्ता काटबाक नहि, जोड़बाक पाठ पढ़ि रहल छल। एही ठाम राघवक भाषा टूटल।

हांगकांगमे लाउ किन-हंग अपन काँचक दफ्तरमे रिपोर्ट सुनैत छल। सलाहकार कहैत — "भारतीय ग्रामीण समूह कथा-निर्माणमे लागल अछि।" लाउ माथ हिलबैत, मुदा ओकर टेबल पर राखल नूनक दाना बारहम साँसमे रेखा बनि गेल। दाना सँ बनल रेखा समुद्रक नक्शा काटैत-काटैत भारत दिस बढ़ल, भारत सँ बिहार, बिहार सँ कमला-बलान, आ अन्तमे गढ़ नारिकेल। लाउ उँगली सँ रेखा मेटाबए चाहलक; नून ओकर आँगुर पर चिपकि गेल।

ओ पहिल बेर सोचलक — जकर रास्ता देहसँ नहि, नूनसँ बनैत अछि, ओकरा समुद्री सीमा कोना रोकत? ओकरा मोन पड़ल — भारतक सस्ता श्रम, सस्ता डेटा, सस्ता डर, सस्ता जीवन। बाजारक किताबमे सभ सस्ता लिखल छल। मुदा नून सस्ता नहि होइत; नून पसेनाक स्मृति थीक। लाउ किन-हंगक आँगुर पर ओहि दिन भारतीय नून लगल रहि गेल।

एडवर्ड ब्रूमक मंच पर टिफिनक दाग एखनो नहि धुलल छल। आयोजक सभ नव स्क्रीन लगौलक, नव प्रकाश, नव पृष्ठभूमि। भाषणक शीर्षक बदलल गेल — 'विश्वासक पुनर्निर्माण'। मुदा जखन ओ मंच पर चढ़ल, पादरी जेकाँ शांत आवाजमे बाजए चाहलक, तखन माइक्रोफोन सँ पहिने चम्मचक खनखनाहट आयल — लोहेक टिफिनमे चम्मच लगबाक आवाज। ओ खनखनाहट पातर छल, मुदा सभागारक मखमली मौनकेँ चीरि सोझे करेजमे बैसि गेल — जेना दूर कोनो लोहेक टिफिन अपन मालिकक अन्तिम भोजन मोन पाड़ि रहल हो। सभागारमे किछु लोक मुस्कुरायल, किछु असहज। ब्रूम जानैत छल — ई आवाज भारतक कोनो मजदूरक भोजन समयक अछि, आ ई आवाजक आगाँ ओकर सभ भाषा काँचक बनल अछि।

ईरा बाहर नहि, एहि बेर भीतर बैसलि। मुदा ओ प्रश्न पूछए नहि उठलि। ओ अपन कापी खोलि चन्ना गाछीक रस्ता-पाठ लिखैत रहली। ब्रूम ओकरा देखलक। ओकरा बुझि पड़ल जे प्रश्न पूछएबला सँ निपटब सरल अछि; लिखएबला सँ कठिन। प्रश्न मंचपर समाप्त होइत अछि। लेखन मंचक बादो चलैत अछि। ईरा लिखली — 'उपनिवेश पहिने भूगोल दखल करैत छल; नव पूँजी रस्ता दखल करैत अछि। प्रतिरोध रस्ता फेर पढ़ैत अछि।'

मीरा निजताक मण्डलमे रस्ता-पाठक अलग रूप बनौली। ओ कहली — 'डेटा सेहो रस्ता चलैत अछि। जे फोटो हमरा विश्वासमे देल गेल, ओ ककर फोन सँ ककर सर्वर, ककर धमकी, ककर चुप्पी धरि गेल — ई रस्ता पढ़ब जरूरी अछि।' एक युवती काँपैत हाथ सँ अपन कथा राखली। ओ कहली — 'हमर गलती प्रेम छल कि विश्वास?' मीरा ओकर हाथ पकड़ि उत्तर देली — 'गलती ओ हाथक जे विश्वासकेँ व्यापार बनौलक।'

सौम्या एहि कथाकेँ लोकभाषामे लिखैत छली। 'लीक' शब्दक ठाम ओ लिखली — 'विश्वासक रस्ता तोड़ल गेल।' 'कन्टेन्ट'क ठाम — 'ककरो जीवनक अंश।' 'ब्लैकमेल'क ठाम — 'भयक धंधा।' प्रत्येक अनुवादक बाद पीड़ितक चेहरा हलुक होइत छल, कारण कठोर विदेशी शब्दक भीतर जे लज्जा बन्द छल, लोकभाषा ओकरा खोलि दैत छल।

गढ़ नारिकेलक एक बुजुर्ग स्त्री, जिनकर बेटा पुलमे मरल छल, पहिल बेर चन्ना गाछीमे अबैत-अबैत रुकि गेली। ओ कहली — 'हमरा रास्ता नहि मोन अछि। हम तखन युवा छलहुँ।

लोक कहलक, शहर गेल, मरि गेल। हम बस प्रतीक्षा केलहुँ।’ बच्चा सभ हुनका बीच बैसौलथिन। अनन्या पूछली — ‘ओ घर सँ कोन दिन निकलल?’ स्त्री कहली — ‘भादवक सोम।’ बस एतबे। बच्चा सभ चाउर राखलक — ‘भादवक सोम।’ ई देखिते स्त्रीक आँखि भरि आयल — ‘एतबे सँ रास्ता बनत?’ बूढ़बा भूत कहलाह — ‘रस्ता सदिखन पूरा नहि भेटैत। जे अंश भेटत, ओहि अंशकेँ सत्यसँ भरू।’

बटुकनाथ हरिहरन ई सुनि काँपल। कानूनमे अधूरा रास्ता सन्देह बनैत अछि। चन्ना गाछीमे अधूरा रास्ता करुणा बनि रहल छल। ओ सोचलक — ‘जँ सन्देह करुणा बनि गेल, तँ हमर पेशा की रहत?’ ओकरा अपना उत्तर भेटल — ‘सत्यक रक्षा।’ मुदा ओ उत्तर ओकर पुरान जीवनसँ मेल नहि खाइत छल। ओकर भीतर पिता-पर्ची फेर काँपल।

सत्यव्रत मेहता अपन कक्षमे ‘रास्ता’ पर नोट बनबैत रहलाह। हुनका बुझि पड़ल जे न्यायालयमे कारण-परिणामक शृंखला माँगल जाइत अछि, मुदा गरीबक जीवनमे शृंखला प्रायः तोड़ल गेल होइत अछि। गरीबक गवाही अधूरा नहि; ओकरा अधूरा बनाओल गेल। ओ लिखलनि — ‘जखन सत्ता रास्ता मेटाबै, तखन अंशक विश्वसनीयता न्यायसिद्धान्तक विषय बनबाक चाही।’ फेर ओ पंक्ति केँ सरल केलनि — ‘अधूरा रस्ता सेहो रस्ता होइत अछि।’

गोप कुमार एहि पंक्ति पर अटकि गेल। ओकर डेटा पूरा छल, मुदा जीवन अधूरा। एक्सेल शीट पूरा करैत अछि; मनुष्य अधूरा रहैत अछि। गोप बुझल — उपन्यासक सत्य फाइलक पूर्णतामे नहि, अधूरा जीवनक पुनर्संयोजनमे अछि। ओ चन्ना गाछीक माटि पर एक खाली जगह छोड़लक। अनन्या पूछली — ‘ई खाली किएक?’ गोप कहल — ‘जिनकर रस्ता एखनो नहि भेटल, हुनका लेल।’

ओ खाली जगह सभसँ बेसी चमकल। मृतक सभ, भूत सभ, बच्चा सभ ओकरा देखैत रहल। खाली जगह पर ने चाउर, ने नून, ने पात। मात्र माटि। हुलासी धीरे कहली — ‘खाली जगहक सम्मान राखू। सभ कथा तुरन्त नहि बाजि सकैत।’ बच्चा सभ पहिल बेर सीखलक जे स्मृति केवल भरनाइ नहि, जगह बचेनाइ सेहो अछि।

राति गहींर भेल। चन्ना गाछीमे रस्ता-पाठ चलैत रहल। प्रत्येक रस्ताक अन्तमे बच्चा सभ एक प्रश्न लिखैत — ‘कोन मोड़ पर बचाओल जा सकैत छल?’ भोला नटक रस्तामे मोड़ — सुरक्षा-बेल्ट। सरयू महतोक रस्तामे मोड़ — असली गिनती। उज्ज्वलक रस्तामे मोड़ — पहिल धमकी पर सामूहिक उत्तर। मुन्नाक रस्तामे मोड़ — बैंकक प्रश्न। मीरा मण्डलक रस्तामे मोड़ — विश्वासक रक्षा।

बारहम साँसक दण्ड एही ठाम साफ भेल। धूर्त सभकेँ केवल नाम आ जीवन नहि, मोड़ पढ़बाक रहत। जँ ओ मोड़ पढ़त, तखन ओकरा बुझि पड़त जे अपराध अपरिहार्य नहि छल। प्रत्येक मृत्यु, प्रत्येक ठगी, प्रत्येक ब्लैकमेल, प्रत्येक जलसमाधिमे एक ठाम एहन छल जतय मनुष्य रोकि सकैत छल। मुदा रोकलक नहि।

चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीनपर ओहि राति एक नव विंडो खुलल — 'कोन मोड़?' ओकरा देखाएलक पहिल युवक जकरा ओ 'खाली खाता दऽ दे' कहि फँसौने छल। ओहि समय ओ रोकि सकैत छल। दोसर मोड़ — उज्ज्वलक पहिल हार। तेसर — डिजिटल अरेस्टक पहिल कॉल-पत्र। प्रत्येक मोड़ पर चन्द्रपालक चेहरा उपस्थित। ओ कर्सर लऽ कऽ चेहरा हटाबए चाहलक; चेहरा हटल नहि, कारण मोड़ मेटाएलासँ रास्ता झूठ भऽ जाइत।

राघवक सोझाँ सेहो मोड़ खुलल। पहिल बेर जखन ओकरा बुझल जे मेटाइत सन्देश अपराधक ढाल बनि रहल अछि, ओ छोड़ि सकैत छल। जखन एक बुढ़िया अपन जमा पाई भेजलाक बाद कनैत फोन पर रहली, ओ नम्बर काटि सकैत छल। जखन युवक कैमरा पर काँपैत छल, ओ कहि सकैत छल — 'डरू नहि, ई ठगी अछि।' मुदा ओ प्रत्येक मोड़ पर कमीशन चुनलक। आब मोड़ सभ पात बनि ओकर छाती पर राखल जा रहल छल।

लाउ किन-हंगक नूनक रेखा आब मोड़ बनि गेल। प्रत्येक मोड़ पर प्रतिशत बदलैत। भारतक युवकक दुःख ओकर स्प्रेडशीटमे रूपान्तरण-दर छल। ओ देखलक — एक मोड़ पर ओ बजार छोड़ि सकैत छल; दोसर पर भारतीय एजेंट हटाबि सकैत छल; तेसर पर विधि-फर्मक खेल रोकि सकैत छल। मुदा ओ लाभ चुनैत रहल। नूनक दाना ओकर आँगुरक त्वचामे पैसि गेल।

एडवर्ड ब्रूमक मंचक माइक्रोफोन ओहि राति बन्द छल, मुदा ओकर सपनामे चालू भेल। मंच पर ओ असगर। सोझाँ खाली कुर्सी। प्रत्येक कुर्सी पर एक वस्तु — टिफिन, शीशी, हेलमेट, सिम, पासबुक, खड़िया। ओ भाषण शुरू करैत — 'मानव गरिमा।' टिफिन उत्तर दैत — 'कोन मोड़ पर?' ब्रूम जागि गेल। प्रश्न ओकर तकिया पर लिखल छल।

चन्ना गाछीमे भोर होएबाक पहिने बूढ़बा भूत बच्चा सभकेँ रोकलाह। 'आइक पाठ बस एतबे। रस्ता पढ़ल, मोड़ देखल। आब अगिला साँसमे देखब — जे मोड़ पर नहि रोकल गेल, ओकर भार के उठाओत?' अनन्या पूछली — 'धूर्त?' बूढ़बा कहलाह — 'धूर्त यदि उठाबय, तँ प्रायश्चित्त। समाज यदि उठाबय, तँ पुनर्निर्माण। राज्य यदि उठाबय, तँ न्याय। मुदा जँ केओ नहि उठाबय, तँ गोहि फेर उठाएत।'

ई सुनि पानिमे हलचल भेल। दूर गंगा नहि, कमला-बलानक धार नहि, चन्ना गाछीक ओस। ओसक प्रत्येक बून्दमे छोट-छोट मोड़ चमकि रहल छल। भोरुका इजोतमे ओ बून्द सभ छोट-छोट आइना जकाँ छल, जाहिमे प्रत्येक बच्चा अपन चेहराक कातमे एक-एक मोड़ देखलक। बच्चा सभ ओस पढ़लक। एहि बेर एक शब्द नहि, दू शब्द भेटल — ‘भार उठू।’

बारहम साँस पूरा भेल। गढ़ नारिकेलक हवामे आब नाम, वस्तु, जीवन, रस्ता आ मोड़क गन्ध एकसंग छल। धूर्त सभ जतय-जतय छल, ओ सभ ई गन्ध सूँघि रहल छल, आ बुझि रहल छल जे भीतरक दुनियाँमे प्रवेश केवल भय नहि, दायित्व सेहो अछि। कथा अगिला साँस लेल ठाढ़ भेली — भार उठेबाक साँस।

लोकगीत: नामक नाव धारमे

लोकधुन: नाविक गीत

खेबह हे नाव, नामक नाव खेबह हे,
बाट जकरा पढ़ल, ओकरे मान उठेबह हे।

किनारपर नाव रहिते बाट नहि कटै,
नामक नाव धारमे उतरल तखने बजै।
टिफिन, पर्ची, नून, गमछा—सभ यात्री भेल,
जीवनक मोड़ पढ़िते ककर हाथ खुलि गेल।
'भार उठू' ओस लिखलक बारहम साँस राति,

धूर्त उठाबै तँ प्रायश्चित्त, राज्य उठाबै न्याय।
समाज उठाबै तँ फेर बनत घर-दुआर,
केओ नहि उठेलक तँ गोहि लेत भार।
खेबह नामक नाव, मोड़-मोड़ पहिचान,
रास्ता जकरा पढ़ल, ओ उठाबै ओकर मान।

किनार पर नाव रहिते बाट कहियो ने कटल,
टिफिन-पर्ची-नून-गमछा सभ यात्री बनि चढ़ल।
कियो ने उठेलक तँ भार गोहिए लऽ जाय।

❖

अध्याय ४२

भारक वृत्त

दण्ड ऊपरसँ देल जाइ छै, भार भीतरसँ उठि कऽ कन्हापर बैसै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: भार बाँटू

लोकधुन: श्रम-झूमर

बाँटू हो भार, कन्हा-कन्हा बाँटू हो,
झूमि-झूमि थाकल देहो तालमे साटू हो।

कन्हापर बैसल भार आधा हो संग लगिते,
एक हाथ पाछाँ आए, दोसर आगाँ बढ़िते।
दुख, काज, जिम्मेदारी बाँटू बराबर,
साझा श्रमसँ कठिन बाट होए सहजतर।

झूमरक गोल घेरामे कियो बीच अकेल नहि,
कन्हा-कन्हा मिलल रहत तँ भार पहाड़ नहि।
भार बाँटू, गीत गाउ, पगक लय मिलाउ,
एक-दोसरक थकानकेँ नेहक जल पियाउ।

आगाँ बला डेग उठाबए, पाछाँ बला गाबए,
बीचक कियो लड़खड़ाए, दुनू दिस सँ थामए।
दुख आधा, हिम्मत दूनी—इहए झूमरक लेखा,
संगक पसेना मे चमकए इन्द्रधनुषक रेखा।

❖

बारहम साँसक अन्तमे ओसक बून्द सभ जे दू शब्द पढ़ाओलक — 'भार उठू' — से भोर धरि चन्ना गाछीक प्रत्येक पातपर अटकल रहल। हवा चलैत, पात हिलैत, मुदा शब्द खसैत नहि। जेना शब्द नहि, छोट-छोट पाथर। बच्चा सभ पहिने सोचलक जे ई दण्ड अछि। बूढ़बा भूत कहलाह — 'दण्ड ओ होइत अछि जे ऊपरसँ देल जाइत अछि। भार ओ होइत अछि जे भीतरसँ उठि कऽ कन्हापर बैसैत अछि।'

अनन्या चन्ना गाछीक बीचमे दू वृत्त बनौली। एक वृत्तक नाम राखल — 'जिनका पर अपराध भेल'। दोसर वृत्तक नाम — 'जिनका द्वारा अपराध भेल'। बच्चा सभ पूछलक — 'तेसर वृत्त?' अनन्या कनी काल चुप रहली, फेर माटिपर नखसँ एक पातल रेखा खिंचि देली — 'जिनका सभ देखलन्हि आ चुप रहलाह।' बूढ़बा भूत मुस्कुरायलाह नहि। ओ कहलाह — 'सभसँ भारी वृत्त बेसीकाल एही होइत अछि।'

पहिने भोला नटक टिफिन उठाओल गेल। टिफिन हलुक होयबाक चाही छल। खाली टिफिन। मुदा जखन मुन्ना पासवान ओकरा उठाबय गेल, ओकर बाँहि काँपि गेल। टिफिनमे दाल नहि, मजदूरीक अधूरा हिसाब छल; भात नहि, ओहि दिनक भूख छल; ढक्कन पर चमचम करैत दाग नहि, पुलक पायासँ खसल लोहेक धूलि छल। टिफिनक हत्था ओकर आङुरमे एना गड़ल जेना ओ हलुक लोहा एक जीवन भरिक अन्न-ऋण जकाँ कन्हा पर बैसि गेल हो। मुन्ना डरि गेल। देविका ओकर हाथ पकड़ि कहली — 'ई तोहर अपराध नहि। मुदा ई तोहर समाजक भार अछि। उठाबह, ताकि अगिला भोला खाली पेट मरय नहि।'

मुन्ना टिफिन उठौलक। टिफिन उठबिते ओकर बैंक-खाताक भय कनी हलुक भेल। ओ बुझलक जे म्यूल अकाउण्टमे ओकर नाम अपराधक मुँहमे फँसल छल, मुदा समाजक काजमे ओकर हाथ मुक्त भऽ सकैत अछि। बच्चा सभ टिफिनकेँ नामक अभिलेख लग राखि देलक। ओहि दिन सँ निश्चय भेल — जे परिवार भोजनक अभावमे मजदूरी लेल शहर जाए, ओकरा पहिने गामक अन्न-सूचीमे नाम लिखल जाएत।

एहि बीच बटुकनाथ हरिहरन सरायक कोठरीमे अपन जीतक आदेशक फाइल खोललक। फाइल पहिने सामान्य छल। मुदा जखन ओ पृष्ठ पलटल, प्रत्येक पृष्ठक कोनामे एक छोट भार-चिह्न बनल छल — तराजू नहि, कन्हा। कानूनक किताबमे तराजू देखल जाइत अछि; चन्ना गाछीक लिखावटमे न्याय कन्हा पर बैसैत अछि। हरिहरन पृष्ठ झाड़लक। चिह्न हटल नहि। उनटे फाइल भारी भऽ गेल।

ओ सेवककेँ बजा कऽ कहलक — 'ई फाइल गाड़ीमे राखि दह।' सेवक उठाबए गेल, मुदा फाइल हिलल नहि। हरिहरन स्वयं उठल। ओकरा लागल जे वकील जीवन भरि कागच उठबैत अछि; एकटा फाइल की भारी? मुदा हाथ लगबिते ओ बुझलक — एहि फाइलमे ओ सभ स्थगन अछि जकर कारण विधवा बूढ़ि भऽ गेली, ओ सभ आपत्ति अछि जकर कारण मजदूरक बेटा बाप बिनु जवान भेल, ओ सभ प्रक्रिया अछि जकरा ओ पेशाक चातुर्य कहैत रहल। फाइलमे कागच नहि, समय भरल छल। समय सभसँ भारी होइत अछि।

चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन सेहो ओहि भोर बदलल। प्रत्येक म्यूल अकाउण्ट एक-एक ईंट बनि स्क्रीनपर जमैत गेल। ईंट पर नाम — मुन्ना, अजहर, पवन, शकील, अंजलि, रोहित, अज्ञात। ओ डिलीट दबौलक। ईंट हटबाक बदला स्क्रीनसँ नीचाँ खसि टेबुल पर पड़ल। पहिल ईंट पर ओ हँसल — भ्रम अछि। दोसर पर चिढ़ल। पाँचम पर ओकर टेबुल झुकि गेल। दसम पर ओकर

कलाई दुखए लागल। बीसम पर ओकरा बुझि पड़ल — डिजिटल अपराधक भार अन्ततः देह धरि पहुँचैत अछि।

राघव 'सिग्नल' सोमानी अपन चैट सभ मेटौलाक बाद चैनसँ सुतए चाहैत छल। मुदा उठिते देखलक जे तकियाक नीचाँ कागचक पात नहि, पाथरक पात अछि। प्रत्येक पात पर एक वाक्य — 'कॉल नहि काटल गेल।' 'भय बेचायल।' 'दादीक बचत गेल।' 'युवक कैमरा पर काँपल।' ओ पाथरक पात सभ झोलामे भरि फेकए बहरायल। गेट पर हुलासी ठाढ़ छली। ओ कहली — 'जतय फेकब, ओतहिसँ कोनो मायक कानब सुनाएत।' राघव भीतर घुरि गेल।

लाउ किन-हंगक शहरमे समुद्र ओहि राति असामान्य शांत छल। ओकर सलाहकार सभ नव कम्पनी-नामक सूची लऽ आएल — नवीनीकरण, पुनर्गठन, जोखिम-नियन्त्रण। लाउ हस्ताक्षर करय लेल कलम उठौलक। कलमक निबसँ स्याही नहि, नूनक पानि बहल। प्रत्येक कागच पर नूनक घेरा बनि गेल। ओकरा लगल समुद्र ओकर दफ्तर धरि आयल अछि। ओ चिढ़ि कऽ कहलक — "जोखिम-हस्तान्तरण।" सलाहकार लिखलक। कागच पर अपनहि बनल — 'भार हस्तान्तरण नहि, भार स्वीकार।'

एडवर्ड ब्रूम ओहि दिन सभसँ महँग रिपोर्ट जारी करयबला छल — 'नैतिक पुनर्संतुलन आ विकासशील बाजार'। रिपोर्टक पहिल प्रति जखन प्रिण्टरसँ निकलल, तखन पृष्ठ सूखल नहि छल। लाल-लाल धारी। सहायक कहलक — "स्याही खराब अछि।" ब्रूम जानैत छल — ई स्याही नहि। ओहि धारीमे टिफिनक दाग, दवाईक शीशी, हेलमेटक खरोंच आ पासबुकक गन्ध एक संग छल। रिपोर्टक भार देखिते ओ आदेश देलक — "डिजिटल प्रति जारी करू।" कम्प्यूटर खुलल। स्क्रीन पर लिखल आयल — 'डिजिटल भार सेहो भार होइत अछि।'

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ भारक पाठ शुरू केलक। ओ सभ ककरो अपराधी घोषित नहि करैत छल, ककरो मुक्त सेहो नहि। ओ सभ केवल पूछैत — 'एहि भारमे तोहर हिस्सा कतेक?' ई प्रश्न सभसँ कठिन छल, कारण ई पूरा अपराध नहि, हिस्सा माँगैत छल। लोक सभ पूरा दोष दोसरा पर देब सहज बुझैत अछि; हिस्सा मानब कठिन।

गोप कुमार पहिने अपन हिस्सा लिखलक — 'डेटा अबेरसँ बुझल।' ओ कहलक — 'हम कतेक बरख फाइलकेँ काज बुझैत रहलहुँ, जीवन नहि।' रमैय्या लिखलक — 'गप्पी छलहुँ, मुदा कतेक बेर चुप रहलहुँ।' सौम्या लिखली — 'दस्तावेज अंग्रेजीमे अटकल रहल, लोक धरि अबेरसँ पहुँचल।' मीरा लिखली — 'भयमे जीबैत लोकक भाषा पहिने नहि सुनल।' देविका

लिखली — 'उज्ज्वल पहिल बेर डर देखौलक तखन हम ओकरा जिद्दी मानलहुँ।' अनन्या पूछली — 'हमर हिस्सा?' बूढ़बा भूत कहलाह — 'तोहर हिस्सा — प्रश्न जारी राख।'

सत्यव्रत मेहता अपन टेबुल पर 'भार' शीर्षक सँ एक नोट खोललनि। ओ चाहैत छलाह जे एहि शब्दकेँ विधि-भाषामे राखथु — उत्तरदायित्व, दायित्व, प्रतिकर, पुनर्वास, सुधारात्मक आदेश। मुदा प्रत्येक शब्द आधा लगैत। अन्तमे ओ लिखलनि — 'जे भार समाज पर छोड़ल गेल, ओकरा समाज, राज्य आ अपराधी बीच बाँटबाक नब न्याय-विचार चाही।' फेर ओ कागच मोड़ि राखि देलनि। हुनका बुझल छल — एहन वाक्य अदालतमे तुरन्त स्वीकार नहि होएत, मुदा कोनो दिन बच्चा सभ एकरा सरल बना देत।

बटुकनाथ हरिहरनक फाइल एखनो नहि उठल। ओ क्रोधमे फोन उठौलक — 'एहि गामक विरुद्ध अवमानना लगाउ।' फोनक दोसरा छोर पर कोनो क्लर्क नहि, पीपरक ब्रह्माक धीमा स्वर — 'ककर अवमानना? जे न्याय नहि भेटल, ओकर? जे नाम नहि लिखल गेल, ओकर? जे प्रश्न पूछैत अछि, ओकर?' हरिहरन फोन काटलक। फोन पर कॉल-लॉगमे लिखल आयल — 'अवमानना: आत्मा विरुद्ध।'

चन्द्रपाल बत्रा राति भरि ईंट हटबैत रहल। ओकर नौकर पूछलक — 'साहब, घर बनबैत छी?' चन्द्रपाल चिचियायल — 'ईंट हटाउ!' नौकर एक ईंट उठबैत पूछलक — 'एतय नाम किएक लिखल?' चन्द्रपाल उत्तर नहि देलक। ओ बुझि रहल छल जे अपराधक ईंट सँ घर नहि बनैत, जेल सेहो नहि; पहिने ओ कन्हा बनैत अछि।

राघव सिग्नल अपन पाथर-पात सभ गिनलक। गिनती पूर्ण नहि भऽ रहल छल। जेतेक गिनैत, एकटा आओर। अन्तमे ओकरा मोन पड़ल—ओ सभ लोक जकर फोन ओ काटि देलक, जकर सन्देश पढ़ि नष्ट कऽ देलक, जकर विनतीपर 'देखल' आबि गेल, उत्तर नहि। पाथर-पातमे 'देखल' शब्द उभरल। राघवक आँखि पहिल बेर पानिसँ भरल। ओ नोर गरम नहि, सर्द छल—जेना बहुत दिनसँ कोनो बन्द फोनक भीतर जमल आवाज पघिलि कऽ बहरायल हो। मुदा पानि ओकर नहि। ओ सभ आवाजक छल जे ओ काटि देने छल।

लाउ किन-हंग अपन रिस्क-कमिटी स्थगित कऽ देलक। ओ एकटा नक्शा खोललक। भारतक नक्शा पर लाल चिन्ह सभ — शहर, बंदरगाह, सर्वर, एजेंट। मुदा गढ़ नारिकेल पर कोनो चिन्ह नहि छल। तैयो ओकर आँखि ओतहि अटकल। जे ठाम मार्केट रिपोर्टमे नहि, ओतय सँ भार उठि रहल छल। लाउ पहिल बेर बुझल — मुनाफाक नक्शा अधूरा अछि; भारक नक्शा अलग होइत अछि।

एडवर्ड ब्रूम अपन जनसम्पर्क-टीमकेँ कहलक — “सहानुभूति-कथा बनाउ।” टीम फोटो खोजय लागल — बच्चा, गाम, पात, स्त्री, पुल। ईरा दूरसँ देखैत छली। ओ सन्देश पठौली — ‘भार केँ छवि बनाओल गेल तँ ओ फेर व्यापार बनत।’ ब्रूमक टीमक स्क्रीन कारी भऽ गेल। स्क्रीन पर केवल एक पंक्ति — ‘सहानुभूति बेचू नहि; हिस्सा उठाउ।’

चन्ना गाछीमे भारक पाठक दोसर चरण शुरू भेल। जे वस्तु उठाओल गेल छल, ओकरा उपयोगमे बदलबाक छल। टिफिन अन्न-सूची बनल। हेलमेट सुरक्षा-संकल्प। सिम-कार्ड ठगी-चिन्ह पाठ। पासबुक सामुदायिक सावधानी। शीशी दवा-जाँच। खड़िया प्रश्न-पाठ। वस्तु सभ संग्रहालयमे बन्द नहि भेल; काजमे लगल। बूढ़बा भूत कहलाह — ‘स्मारक ओ नहि जे देखल जाए। स्मारक ओ जे काज करए।’

मीरा एहि पंक्ति केँ अपन मण्डलमे लिखली। एक युवती जे महीना भरि घरसँ निकलल नहि छल, ओ आब दोसर लड़किक संग थाना जाएबाक तैयारी करैत छली। देविका ओकरा कहली — ‘डर लागैत?’ युवती कहली — ‘लागैत। मुदा आब डर असगर नहि अछि।’ ई वाक्य सुनि हुलासी इनारक पारसँ मुस्कुरेली। हाथ-विहीन देहक भीतर पहिल बेर लागल जे ककरो हाथ ओकरा बिनु छुओने बढ़ि रहल अछि।

देविका आ निशांत स्क्रीन-पाठशालामे बच्चा सभ केँ एक खेल खेलौलक। एक बच्चा डर बनत, दोसर खाता, तेसर लालच, चारिम हेल्प-लाइन। जे बच्चा डर बनल, ओ पहिने बहुत जोर सँ चिचियायल। फेर अनन्या नियम बदलि देली — ‘डर केँ असगरे बाजए नहि देब। तीन गोटे संगमे उत्तर देब।’ खेलमे उत्तर सामूहिक भेल, आ डरक आवाज धीमी पड़ि गेल। निशांत कहलक — ‘ई तकनीकसँ बेसी जरूरी नियम अछि।’

गोप कुमार रातिमे ईशान दत्तक पुरान फाइल खोललक। ईशानक छाह नहि छल, मुदा ओकर टिप्पणी छल — ‘भारकेँ केवल उजागर नहि करू; गन्तव्य दिअ।’ गोप बहुत काल धरि ओ पंक्ति देखैत रहल। डेटा उजागर केलाक बाद सत्य अनाथ नहि रहए, से जरूरी अछि। ओ निर्णय केलक — प्रत्येक खुलासा संग लोक-सहायता, भाषा, बचाव-पत्र आ अगिला काजक सूची जुड़त। फाइल आब चिचिआहट नहि, रास्ता बनत।

तिरोहित आत्मा सभ एहि बदलाव केँ ध्यानसँ देखैत छल। पहिने मृतक सभ चाहैत छल जे ओकर नाम लिखल जाए। आब नाम लिखाएलाक बाद ओकरा सभ बुझि पड़ल — जीवित लोककेँ केवल कनबाक भार नहि देल जाए; काजक भार देल जाए। मृत्यु यदि केवल शोक छोड़ए, तँ धूर्त फेर घुरि जाएत। मृत्यु यदि नियम छोड़ए, तँ समाज बदलत।

तेरहम साँसक साँझमे चन्ना गाछीमे एक विचित्र दृश्य भेल। बच्चा सभ प्रत्येक भारक वस्तु लग एक छोट पात गाड़लक। पात पर लिखल — 'ई भार के उठाओत?' ओकर उत्तर नाम नहि, क्रिया छल — 'खुआएब', 'बचाएब', 'सुनब', 'बताएब', 'रोकब', 'लिखब', 'संग देब'। अनन्या कहली — 'नाम जरूरी, मुदा क्रिया बिनु नाम फेर पाथर भऽ जाएत।'

बटुकनाथ हरिहरन अन्ततः फाइलक एक कोना उठाबय सफल भेल। बस एक कोना। ओकर कन्हा टूटि पड़ल जेकाँ भेल। ओ फाइल राखि देलक। पहिल बेर ओकर मुँहसँ निकलल — 'ई असगरे नहि उठत।' बूढ़बा भूत, जे खिड़कीक बाहर अन्हारमे ठाढ़ छलाह, धीरे कहलाह — 'असगरे उठाएब दण्ड। बाँटि उठाएब न्याय।'

चन्द्रपाल बत्रा ईंट सभ जमा कऽ देबाल बनाबए चाहलक, ताकि नाम ओहि पार रहि जाए। मुदा देबाल बनिते ओहि पर बच्चा सभक आवाज लिखाइ गेल — 'कोन मोड़ पर रोकि सकैत छल?' ओ हथौड़ा मारलक। ईंट टूटल नहि। कारण ईंट पाथरक नहि, अवसरक बनल छल। अवसर टूटैत नहि; या तँ उपयोग होइत अछि, या साक्ष्य बनैत अछि।

राघव सिग्नलक पाथर-पात सभ अन्तमे ओकर छाती पर नहि, दरबाजाक बाहर लगल। जे कोनो भीतर आबय, पहिने ओ पात पढ़य। ओकर कार्यालय अदालत नहि रहल; प्रतीक्षा-कक्ष बनि गेल — ओहि लोक सभक प्रतीक्षा, जकर फोन ओ काटि देने छल। राघव दरबाजा खोलबाक हिम्मत नहि करैत छल। मुदा पाथर-पात भीतरसँ बजैत रहल — 'उत्तर दह।'

लाउ किन-हंग अपन समुद्र-दृश्यक शीशाघरमे पहिल बेर पर्दा खसौलक। ओ बाहर नहि देखए चाहैत छल। मुदा पर्दा पर पानिक छाह पड़ल, आ छाहमे गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ टिफिन, हेलमेट, पासबुक, खड़िया उठौने चलैत छल। ओ क्रुद्ध भेल — 'ई लोक हमरा नक्शामे नहि छल।' सलाहकार कहलक — "सर, जमीनी लोक।" लाउ उत्तर देलक — "नहि। भार-रूट।"

एडवर्ड ब्रूमक रिपोर्ट अन्ततः जारी नहि भेल। कम्पनी प्रेस-विज्ञप्ति देलक — 'तकनीकी कारण।' मुदा कारण तकनीकी नहि छल। रिपोर्टक प्रत्येक पृष्ठक तलहट्टीमे एक प्रश्न उभरैत रहल — 'हिस्सा कतेक?' जनसम्पर्क-टीम ओकरा मेटाबएमे सफल नहि भेल। ईरा अपन कापीमे लिखली — 'जखन अपराधक भाषा उत्तरदायित्वक प्रश्न सहि नहि पबैत, तखन कागच स्वयं खराब भऽ जाइत अछि।'

राति घिरल। चन्ना गाछीमे भारक वस्तु सभ अपन-अपन स्थान पर रहल। कोनो मूर्ति नहि, कोनो माला नहि। केवल उपयोग लेल तैयार वस्तु। बच्चा सभ थाकि गेल छल, मुदा आँखि

चमकि रहल छल। अनन्या बूढ़बा सँ पूछली — 'आब?' बूढ़बा कहलाह — 'आब देखब जे जकर हिस्सा अछि, ओ उठबय आबैत अछि कि नहि।'

ओहि क्षण तीन दिशासँ तीन हवा आयल। शहर दिससँ कागचक गन्ध। समुद्र दिससँ नूनक। स्क्रीन दिससँ गरम लोहेक। तीनू गन्ध चन्ना गाछीमे मिलल, मुदा पात सभ नहि काँपल। ओ सभ पहिनहियेसँ तैयार छल। हुलासी कहली — 'जे भार उठए नहि आबत, ओकरा भार ताकय जाएत।'

तेरहम साँस एही वचन पर ठहरल। भार आब केवल दुख नहि, चलैत दूत बनि गेल। जे अपन हिस्सा नहि मानत, ओकर दुआर पर वस्तु पहुँचत — टिफिन, ईंट, पात, नून, खड़िया, पासबुक, शीशी। आ जखन वस्तु दुआर पर पहुँचत, तखन अगिला साँस शुरू होएत — दुआरक साँस।

लोकगीत: कन्हापर बैसल भार

लोकधुन: श्रम-झूमर

उठाउ हे कन्हा, झुकल कन्हा उठाउ हे,
दुखक भारकेँ काज बना घर-घर पहुँचाउ हे।

दण्ड ऊपरसँ खसै, भार भीतरसँ उठै,
नामक छोट पाथर कन्हापर आबि बैसै।
टिफिन, ईंट, पासबुक, शीशी, नूनक दाना,
दुख नहि केवल—काजक बनल बहाना।
मूर्ति नहि, माला नहि, उपयोगक तैयारी,

थाकल नेनाक आँखिमे चमकल पहरुआरी।
जे अपन हिस्सा नहि मानत, भार ओकर द्वार,
वस्तु चलि पहुँचत, पूछत ओकर अधिकार।
कन्हा झुकल तँ मनुष्य, कन्हा फेर उठाउ,
दुखक भारकेँ काज बनाकऽ घर-घर लाउ।

दण्ड ऊपर सँ खसए, भार भीतर सँ उठए,

❖

अध्याय ४३

चलैत भार

बाँटल भार समाप्त नहि होइ छै— ओ चलए लागै छै, गाम-गाम।

अध्यायारम्भ लोकगीत: घर-घर हलुक कन्हा

लोकधुन: बटगबनी

चलू यौ पड़ोसिया, देहरी-देहरी चलू यौ,
एक घरक भार सभ घर मिलि कऽ धरू यौ।

भार घर-घर चलल तइयो संगमे राहत जाए,
एक देहरी दू हाथ देत, दोसर भोजन लाए।
कियो कागच पढ़ि देत, कियो बच्चा सम्हारै,
कियो अदालत संग जाए, कियो खेत उबारै।

घर-घर हलुक कन्हा हो सामुदायिक नेहसँ,
बोझक बाट बदलि जाए सहयोगक गेहसँ।
बटगबनी गाबि कहू—हम सभक घर एक,
बाँटल भारमे उगि उठै समाजक सच्चा टेक।

आइ हुनकर आँगन, काल्हि अपनो बेर,
सहयोगक बाटे घटए दुखक अन्हार-घेर।
कियो पोथी, कियो रोटी, कियो कन्हाक ठाम,
बटगबनीक तालमे बाजए—सभ घर एक्के गाम।

❖

तेरहम साँस जे वचन छोड़ने छल — जकर हिस्सा, तकर दुआर — से वचन राति भरि जागल रहल; तेँ राति समाप्त नहि भेल। भोर आयल, मुदा भोर अपन रंग संग नहि आयल। गढ़ नारिकेलक पूरब दिस जे लाली उठैत छल, से ओहि दिन कनी पाछाँ ठाढ़ रहि गेल, जेना सूर्य सेहो चन्ना गाछीक खेलक अन्तिम सीटी सुनबाक प्रतीक्षा करैत हो।

अनन्या अपन हाथक माटि झाड़ि रहल छली। बच्चा सभ टिफिनक भार बाँटि चुकल छल, मुदा भार बाँटलासँ भार समाप्त नहि होइत। भार आब चलए लागैत अछि। जे भार पहिने मृतकक नाम पर छल, से आब जीवितक कन्हापर गाम-गाम फिरब चाहैत छल।

आरुणि चन्ना गाछीक कात बैसल रहल। ओकरा लगैत छल जे उपन्यास एतऽ फेर रुकि सकैत अछि। मुदा चन्ना गाछीमे रुकबाक विधान नहि। ओतय कथा साँस लैत अछि। एक साँस

समाप्त भेल कि दोसर शुरू। मृतकक साँस, बच्चाक साँस, धूर्तक मोनक साँस — सभ एक-दोसरामे उलझल।

बा धीमे-धीमे आबि कऽ पातक ओहि ढेरी लग ठाढ़ भेलीह। हुनकर आँखि राति भरि नहि सुतल लोकक आँखि छल। ओ कहलखिन — 'नाम घर धरि पहुँचल कि नहि?'

अनन्या पूछली — 'ककर घर, बा?'

बा कहलखिन — 'जकर नाम लिखल गेल, ओकर घर तँ पहुँचलै। आब जकरा नाम मेटेबाक आदत अछि, ओकर घर पहुँचेबाक बेर अछि।'

ओहि समय शहरमे बटुकनाथ हरिहरन अपन बैसकीक देबाल पर टाँगल डिग्री सभक सोझाँ ठाढ़ छल। डिग्री सभ पहिने सोझ, चमकैत, शीशाक भीतर बन्द। मुदा भोरमे शीशा भीतर बारीक-बारीक धुन्ध जमि गेल छल। ओ हाथसँ पोंछलक। धुन्ध ठण्ढा छल, आ आङुरक निशान ओहि पर ककरो आनक हस्ताक्षर जकाँ बैसि गेल। धुन्ध हटला पर डिग्रीक अक्षर रहि नहि गेल। ओहि ठाम अनगढ़ हाथसँ लिखल नाम झलकैत छल — भोला नट, सरयू, मुन्ना, उज्ज्वल।

हरिहरन घबड़ा कऽ नौकरकेँ बजौलक। नौकर अबैत-अबैत थमकि गेल। मालिकक चेहरा एहन छल जेना कोनो बच्चा चोरी पकड़ा गेल हो। हरिहरन शीशा फेर पोंछलक। एहि बेर नाम सभ लुप्त भऽ गेल। डिग्री फेर डिग्री। मुदा ओकर भीतर किछु टूटि गेल छल। जीतक कागचक डर आब देबाल पर चढ़ि गेल छल।

ओही घरक भीतरी कोठरीमे हरिहरनक पुरान माय, जे बहुत दिनसँ ककरो नाम स्पष्ट नहि बजैत छलीह, अचानक कहि उठलीह — 'बटुक, कतेक नाम खएलें?'

हरिहरन सुनि कऽ जड़ि गेल। माय बरखोंसँ ओकरा 'बाबू' कहैत छलीह। 'बटुक' नाम केवल ओहि लोकक मुँहमे बचल छल जे ओकरा बाल्यकालमे देखलक। ओ कोठरीमे दौड़ल। मायक आँखि बन्द छल। मुदा हुनकर ओठ हिलि रहल छल। हुनकर स्वर पातर छल, पुरान ताग पर टाँगल घण्टी जकाँ, मुदा ओहीमे बटुकनाथक अर्जित भाषा डोलि गेल। 'कागच खएलें, तारीख खएलें, आब नाम सेहो खएब?'

हरिहरन पहिल बेर बुझलक जे भीतरक दुनियाँमे प्रवेश दरबाजासँ नहि, मायक जिह्वासँ सेहो होइत अछि।

चन्द्रपाल बत्राक घरमे दोसर लीला भेल। ओकर बेटा, जे पिताक धन्धा सँ दूर रहबाक नाटक करैत छल, भोरमे नाश्ता पर मोबाइल देखैत-देखैत थमकि गेल। स्क्रीन पर खेलक अंक

नहि, एकटा प्रश्न चमकि रहल छल — 'हारि गेलाक बाद जे मुअल, ओकरा जीत कहब कि ठगी?'

चन्द्रपाल गरजल — 'फोन दऽ।'

बेटा फोन देलक। स्क्रीन तुरन्त सामान्य। विज्ञापन, खेल, अंक, रंगीन चमक। चन्द्रपाल राहतक साँस लेलक। मुदा बेटा धीरे कहलक — 'बाबूजी, काल्हि राति हमरा सपना भेल। कोनो लड़का हमरा नाम पूछैत छल। कहैत छल — तोहर पिताक कमाइमे हमर फाँसीक गन्ध अछि।'

चन्द्रपालक हाथसँ फोन खसि पड़ल। ओ बच्चाकेँ डाँटि सकैत छल, मारि सकैत छल, मुदा सपना पर मुकदमा कोन अदालतमे? सपना पर कोन धारा? कोन स्थगन? कोन जमानत?

राघव 'सिग्नल' सोमानीक घरमे चुप्पी सभसँ पहिने भोजनक थारीमे उतरि आयल। ओकर पत्नी भात परसैत काल देखली जे भातक दाना सभ एक्के दिशामे मुड़ि रहल अछि। ओ सोचली — पवनक खेल। मुदा घरक भीतर पवन कतयसँ? दाना सभ मिलि अक्षर बनौलक — 'खाता बन्द।'

राघव थारी फेकि देलक। पत्नी डरि गेली। ओ कहली — 'ई कोन खाता? घरक खर्चक?'

राघव उत्तर नहि देलक। जकर अपराध सिग्नलमे होइत अछि, ओकर घरक स्त्री बहुत बेर केवल चुप्पी पढ़ैत अछि। मुदा ओहि दिन चुप्पी भात पर लिखल छल।

हांगकांगमे लाउ किन-हंग समुद्रक कात अपन शीशाघरमे सुतल छल। सपना सँ उठला बाद ओ सोचलक — भारतक कोनो गाम हमर निन्नमे कोना पैसि गेल? ओ अपन सचिवकेँ कहलक — "गढ़ नारिकेल नामक कोनो जगह खोजू।" सचिव कम्प्यूटर पर नक्शा खोललक। नक्शा पर हजारो बिन्दु छल, मुदा एक बिन्दु चमकि रहल छल — जेना समुद्रक भीतर नारिकेलक पात जरि रहल हो।

लाउ किन-हंग हँसल। ओ हँसी अभ्यासक हँसी छल। पैसाक लोक डर पर हँसबाक अभ्यास करैत अछि। मुदा ओकर दहिन हाथ काँपि रहल छल। जे हाथ करोड़क हस्ताक्षर करैत छल, ओ एकटा दूर गामक नाम लिखिते काँपि रहल छल।

एहि सभक खबर गढ़ नारिकेलमे केओ नहि जनैत छल। हारल लोक सभ अपन काजमे लागल छल। ओ सभक दिनमे ककरो सपना देखबाक फुरसति नहि।

देविका साह स्क्रीनक विरुद्ध पाठशालाक दोसर गोष्ठी लेल पन्ना काटि रहल छली। प्रत्येक पन्नापर ओ लिखैत छली — 'ककरो फोन पर पुलिस बनि नहि डेराउ। ककरो खेलमे पहिल जीत पर भरोसा नहि करू। ककरो अकाउण्ट अपन नामसँ नहि खोलू।' ई वाक्य सभ कागच पर साधारण लगैत छल, मुदा प्रत्येक वाक्य उज्ज्वलक आत्मा लेल दीपक छल।

निशांत झा विदेशक कम्पनीक चमकदार पद छोड़ि गामक बच्चा सभकेँ हिसाब पढ़बैत छल। ओ कहैत — 'जतय प्रतिशत बहुत चमकै, ओतय प्रश्न करू। जतय बोनस बहुत जल्दी भेटै, ओतय ठहरू। जतय पासवर्ड ककरो चाही, ओतय भागू।' बच्चा सभ हँसैत छल। ओहि हँसीमे संसारक सभसँ कठिन शिक्षा सहज भऽ रहल छल।

मीरा निजताक शपथक छोट कोठरीमे स्त्री सभक संग बैसल छली। ओ कहली — 'हमर प्रेम हमर विरुद्ध साक्ष्य नहि। हमर देह हमर विरुद्ध कागच नहि। हमर फोटो हमर विरुद्ध फंदा नहि।' एक स्त्री, जे महीना भरि पहिने तक अपन चेहरा ढाँकि आबैत छली, ओहि दिन पहिल बेर कहली — 'हमर नाम लिखू। मुदा हमर अनुमति सँ।'

सौम्या दस्तावेज सभ लोकभाषामे बदलि रहल छली। जे रिपोर्ट अंग्रेजीमे लिखल छल, से आब मैथिली, हिन्दी, बांग्ला, ओड़िया, तमिल, तेलुगू, उर्दू सभ भाषामे फूटि रहल छल। ओ कहैत छली — 'सत्य जखन केवल विशेषज्ञक भाषामे रहैत अछि, तखन ओ आधा बन्दी रहैत अछि।'

ईरा विदेशक सभागार छोड़ि आब नाम-पाठक आयोजन करैत छली। ओतय प्रोजेक्टर नहि, पात लटकैत छल। लोक नाम पढ़ैत छल, आ प्रत्येक नामक बाद एक क्षण चुप रहैत छल। ओ चुप्पी कोनो मृतक लेल शोक मात्र नहि; ओ जीवित सभक उत्तरदायित्व छल।

गोप कुमार बहुत कम देखाइ पड़ैत छल। लोक कहैत — ओ नुकायल अछि। किछु कहैत — ओ मरि गेल। किछु कहैत — ओ इन्फॉर्मर संग गाछक छाहमे रहैत अछि। मुदा जखन-जखन कोनो नव फाइल खुलैत, ओकर भीतर एकटा पंक्ति अवश्य भेटैत — 'नामक बिनु कोनो प्रमाण पूरा नहि।' लोक बुझि जाइत — गोप कतहु अछि, आ नहि सेहो।

आरुणि बच्चा सभकेँ गढ़ नारिकेलक कथा लिखबैत छल। ओ कहैत — 'अपराधी सभक नाम लिखू, मुदा ओकरा सभकेँ कथा पर शासन नहि करए दिअ। मृतकक नाम लिखू, मुदा ओकरा सभकेँ केवल दुख नहि बनाउ। जीवितक काज लिखू, कारण ओहि सँ अगिला पन्ना खुलैत अछि।'

एहि बीच चन्ना गाछीमे भूत सभ दुपहरियोमे कनी-कनी देखाइ पड़ए लागल। पहिने ओ सभ रातिक प्राणी छल। आब बच्चा सभ ओहि गाछीमे दिनमे खेलैत छल, आ भूत सभ ओकरा सभक खेलक नियम सीखैत छल। बूढ़बा भूत कहलाह — 'मनुक्खक बच्चा हमसभसँ बेसी चतुर। ओ सभ मुइलाक बाद नहि, जीबैत-जीबैत स्मृति बनाबैत अछि।'

लोथ सभ, जे सदियोसँ दर्शक छल, आब छोट-छोट पात उठाबैत छल। राकश सभ इजोत करैत-करैत थाकैत नहि छल, कारण ई इजोत आब खेल लेल नहि, लिखबाक लेल चाही। प्रेत सभ उज्जर देहसँ पन्ना थामैत छल। भूत सभ कारी उँगरीसँ नामक चारू कात रेखा खिंचैत छल, ताकि कोनो धूर्त रातिमे आबि ओकरा मेटा नहि सकए।

ओहि राति बा अनन्याकेँ कहलखिन — 'डर आब ओकरा सभक घर गेलै।'

अनन्या पूछली — 'तखन हमसभ जीत गेलौं?'

बा मुस्की देलीह। 'नहि। जीत शब्द सँ सावधान रहू। जीत बहुत बेर धूर्तक प्रिय शब्द होइत अछि। हम सभ काजमे लागल छी। काज करैत लोक जीतक घोषणा नहि करैत।'

अनन्या पात पर लिखली — 'काज'। ओहि शब्दक नीचे छोट अक्षरमे लिखली — 'साँस'।

भोरक पहिने-पहिल चन्ना गाछीमे फेर हवा चलल। पात सभ एक-दोसरासँ टकरायल। आवाज आयल — कबड्डी नहि, नाम नहि, फैसला नहि। आवाज आयल — 'आगाँ।'

आरुणि सुनलक। ओ कागच खोलि कऽ अध्यायक अन्त लिखए चाहैत छल, मुदा हाथ रुकि गेल। अन्त लिखब गलत होइत। कारण एहि बेर कथा समाप्त नहि भऽ रहल छल; कथा घर-घर प्रवेश कऽ रहल छल।

दूर शहरमे हरिहरनक माय फेर कहलखिन — 'नाम पढ़।' चन्द्रपालक बेटा मोबाइल बन्द कऽ खिड़की खोललक। राघवक पत्नी भातक दाना समेटि कऽ अलग राखि देली। लाउ किन-हंग नक्शा पर उँगरी राखने रहल।

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ भोरक पहिल खेल लेल दौड़ल। चन्ना गाछी तैयार छल। मृतक तैयार। धूर्तक मोन आधा भीतर, आधा बाहर। आ पात पर लिखल 'काज' शब्द धीरे-धीरे हरियर होमए लागल।

लोकगीत: भार घर-घर चलल

लोकधुन: बटगबनी

चलल हे भार, घर-घर चलल हे,
जकर दुआरि पहुँचल, ओकर जिम्मा टरत नहि हे।

बाँटल भार समाप्त नहि, बाट पकड़ि चलै,
गाम-गाम दुआरपर वस्तु बनि ठहरै।
माय कहै ‘नाम पढ़’, बेटा खिड़की खोलै,
पत्नी भातक दाना एक स्मृतिलेल तोलै।
कागच अन्त लिखए चाहल, हाथ ओकर रुकल,

कथा घरमे पैसि गेल, के कहत ई चुकल?
धूर्तक मोन आधा भीतर, आधा बाहर ठाढ़,
पातपर ‘काज’ हरियर भेल, खुलि गेल नब बाट।
चलैत भार कहै—दुख केवल रोदन नहि,
जकर घर पहुँचि गेल, ओकर जिम्मा टरत नहि।

माए कहए—'नाम पढ़', बेटा खिड़की खोलए,
पत्नी भातक एक दाना स्मृति लेल तोलए।

❖

अध्याय ४४

पोतीक कापी

डर पानि जकाँ— देवाल भेटलापर दरार ताकै छै, दरार नहि भेटलापर पोतीक कापीमे उतरि जाइ छै।

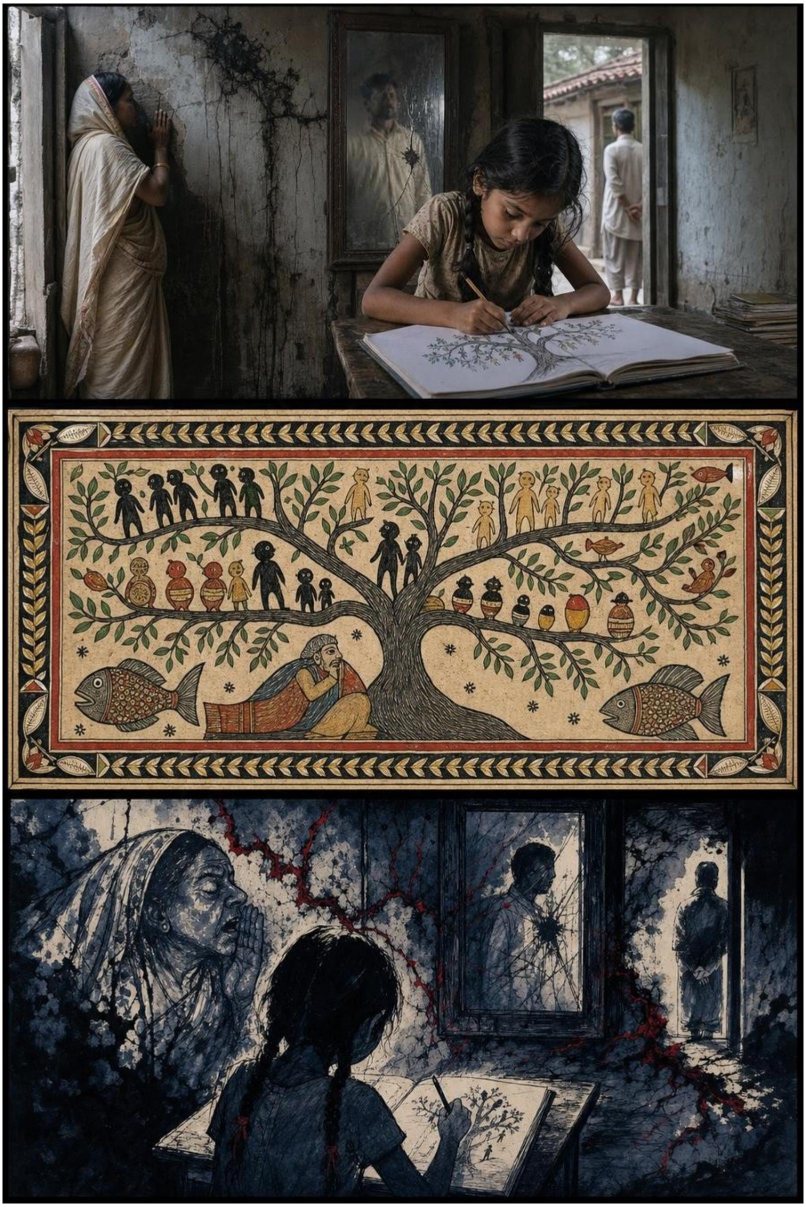

अध्यायारम्भ लोकगीत: पोतीक प्रश्नक फूल

लोकधुन: दादी-पोती गीत

पूछ गे पोती, जे मन मे से पूछ गे,
दादीक कथा-कोठी सँ उत्तर-मोती बीछ गे।

पोती पूछलक—'ककर डर?' दादी फूल मुस्केलक,
'जे साँचक नाम सुनै, ओकर भय पिघेलक।'
प्रश्नकेँ रोको नहि, कापीपर रंग भरू,
पुरान पीड़ा सरल कथा बनि अगिला पीढ़ी धरू।

पोतीक प्रश्न काँटा नहि, ज्ञानक नान्हि फूल,
ओहि सुगन्धिसँ खुलि सकै इतिहासक बन्द मूल।
दादी-पोती संग गाउ, उत्तर खोजू नेह,
प्रश्नशील नेनाक हाथमे भविष्यक उज्जर गेह।

साँझक दीप तर बैसल दू पीढ़ीक जोड़ी,
प्रश्न-उत्तरक ताना-बाना, बुनाइत नेह-डोरी।
पुरान पीड़ो कथा बनल तँ काँट नहि गड़ए,
निर्भय पूछल प्रश्न सँ भविष्यक द्वार खुजए।

❖

कथा घर-घर पैसि चुकल छल, पात पर 'काज' हरियर भऽ रहल छल। चौदहम साँसक बाद धूर्त सभकेँ लगल जे डर आब हुनका सभक देह धरि पहुँचल, तकरा बाद कदाचित् रुकि जायत। मनुक्ख बहुत बेर डरक सीमा अपन छाती धरि मानि लैत अछि। मुदा डरक धर्म पानि जेकाँ अछि। जतय देबाल भेटैत अछि, ओतय ओ दरार ताकैत अछि। जतय दरार नहि भेटैत, ओतय ओ पसेनाक रूपमे बाहर अबैत अछि।

बटुकनाथ हरिहरनक घरमे डर पहिने मायक जिह्वा पर आयल, फेर देबाल पर, फेर डिग्रीक शीशा पर। पन्द्रहम साँसक भोरमे ओ ओकर पोतीक कापीमे पहुँचल। पोती सात बरखक छली। ओकरा अदालत नहि बुझाइत छल, बारक मर्यादा नहि बुझाइत छल, प्रक्रिया नहि बुझाइत छल। मुदा ओकरा चित्र बनएबाक आदत छल।

ओहि दिन ओ कापीमे एकटा गाछ बनौली। गाछक डारि पर कारी-कारी लोक, उज्जर-उज्जर लोक, बौना इजोर, गोल-गोल लोथ, आ नीचाँ एकटा बूढ़ लोक जेना मुँह चिपिआने ठाढ़। नेनी दादी लग दौड़ली — 'ई देखू, चन्ना गाछी।'

हरिहरनक पत्नी चौंकि गेली। घरमे चन्ना गाछीक नाम केओ नहि लेने छल। नेनी पूछली — 'दादाजी ओतय किएक बाहर ठाढ़ छथि? खेलमे पैसैत किएक नहि?'

ई प्रश्न घरक भीतर एहन बजल जेना घण्टा नहि, समन बजल हो। हरिहरन अपन कोठरीसँ बाहर आयल। चित्र देखलक। ओकरा चित्रक बूढ़ लोक अपन जेकाँ लगल। नेनी निर्दोष स्वरमे फेर पूछली — 'दादाजी, जे जीतैत अछि से खेलमे बाहर किएक रहैत अछि?'

हरिहरनक कण्ठ सूखि गेल। ओ कानूनक पुस्तकसँ अनेक उत्तर निकालि सकैत छल। जीतक परिभाषा, प्रक्रिया, निर्णय, अपील, अधिकार। मुदा सात बरखक नेनीक सोझाँ कानूनक भाषा पात जकाँ सूखि गेल। ओ केवल एतबे बाजल — 'बेटी, ई खेल नहि अछि।'

नेनी हँसली — 'सभ किछु खेल अछि ने? अहाँ सभ कहैत छी केस जीतलौं। जीतलौं माने खेल नहिए?'

हरिहरन पाछाँ हटि गेल। कापी ओतहि रहि गेल। पोती ओकर चित्रमे बूढ़ लोकक हाथमे एकटा कागच दऽ देली, आ कागच पर बहुत छोट अक्षरमे लिखली — 'नाम पढ़ू।' कापीक पन्नासँ मोम-रंगक गन्ध उठैत छल, आ ओही बीच ई दू शब्द — अदालतक सभसँ छोट, सभसँ भारी आदेश।

चन्द्रपाल बत्राक घरमे प्रश्न दोसर ढंगसँ आयल। ओकर बेटा पिता सँ दूर रहबाक संकल्प लेने छल, मुदा संकल्प सेहो पिता द्वारा कमायल मकानमे रहैत छल। ओहि मकानक दरबाजापर एक दिन कतेको युवक आएल। ओ सभ नारा नहि लगा रहल छल, पाथर नहि फेकि रहल छल। प्रत्येकक हाथमे बन्द मोबाइल छल।

बेटा बाहर आयल। युवक सभमे एक गोटे कहलक — 'हम सभ ओहि खेलमे हारल छलौं जाहिमे पहिल दिन जीत भेल छल। आब हम सभ दोसर बच्चा सभकेँ बताबऽ जाइ छी जे पहिल जीत जाल होइत अछि। अहाँक घरक सोझाँसँ जाऊ की नहि, तकर अनुमति चाही।'

बेटा स्तब्ध। चन्द्रपाल परदा पाछाँसँ देखैत रहल। ओकरा लागल जे पुलिस बजाओल जाए। मुदा युवक सभ सड़क रोकैत नहि छल। ओ सभ केवल अपन मार्गक अनुमति पूछैत छल। अपराधी सभकेँ हिंसा सँ कम, शिष्ट प्रश्न सँ बेसी डर लगैत अछि। हिंसा पर धारा लगैत अछि; प्रश्न पर कोन धारा?

बेटा धीरे कहलक — 'जाउ।'

युवक सभ चलि गेल। हुनका सभक पाछाँ-पाछाँ पाँच बच्चा दौड़ि गेल। चन्द्रपाल बाहर आयल आ बेटाक बाँहि पकड़लक — 'तूँ ओकरा सभकेँ रोकलें किएक नहि?'

बेटा पहिल बेर पिताक आँखिमे सोझ देखलक — 'किएक रोकितहुँ? ओ सभ हमर उमेरक छथि। हुनका सभक जीवन लुटल गेल। हम केवल एतबे सोचि रहल छी जे हमर पढ़ाइ, हमर गाड़ी, हमर घर — एहि सभक भीतर कतेक मोबाइल बन्द पड़ल अछि।'

चन्द्रपाल थप्पड़ उठौलक, मुदा हाथ हवामे रुकि गेल। हाथक बीचमे ओकरा एकटा स्क्रीन देखाइ पड़ल। स्क्रीन पर उज्ज्वल झाक चेहरा नहि, ओकर खाली कुर्सी छल। खाली कुर्सी सभसँ कठिन साक्ष्य होइत अछि; ओहि पर केओ प्रतिपरीक्षा नहि कऽ सकैत।

राघव 'सिग्नल' सोमानीक घरमे प्रश्न बेटी सँ आयल। बेटी किशोरी छली, आ पिता कहियो ओकरासँ अपन धन्धाक बात नहि करैत छल। ओहि दिन बेटी अपन पाठशालासँ घुरि कऽ कहली — 'बाबा, शिक्षक कहैत छथि जे मेटल सन्देश मेटि जाइत अछि। मुदा जँ ककरो मोनमे लिखल रहि जाए तखन?'

राघवक हाथक कप चाहसँ भरल छल। चाहक सतह पर सूक्ष्म अक्षर उभरल — 'मोन टाँगल।' ओ कप राखि देलक। बेटी फेर पूछली — 'अहाँ सभ फोनमे एते गुप्त गप किएक करैत छी? गुप्त बात सदिखन गलत होइत अछि?'

राघव चाहलक कहय — 'नहि, गुप्त बात व्यापार होइत अछि।' मुदा बेटीक आँखिमे व्यापारक भाषा प्रवेश नहि केलक। ओ बाजल — 'किछु बात सुरक्षा लेल गुप्त होइत अछि।'

बेटी तुरन्त पूछली — 'ककर सुरक्षा लेल?'

ई छोट प्रश्न राघवक कानमे पूरा राति रहि गेल। ककर सुरक्षा लेल? शिकारक? सरगनाक? खाता खोलएबला गरीब युवकक? हांगकांगक मालिकक? ओकर अपन? जखन प्रश्नक उत्तर कतेको भागमे टूटि जाए, तखन मनुक्ख बुझि जाइत अछि जे ओ झूठक घरमे रहैत अछि।

हांगकांगमे लाउ किन-हंगक पुत्र, जे विदेशी विद्यालयमे पढ़ैत छल, पिता सँ भारतक नक्शा माँगलक। लाउ चौंकल। पुत्र कहलक जे विद्यालयमे उपनिवेश, बजार आ नैतिक व्यापार पर पाठ अछि, आ शिक्षक पूछने छथिन्ह जे जाहि देशक नाम सँ कमाइ होइत अछि, ओकर लोकक नाम बूझल अछि कि नहि।

लाउ मुस्की देलक — “देश नाम सँ चलैत अछि, लोक नाम सँ नहि।”

पुत्र चुप भेल। फेर कहलक — “तखन जँ कोनो दिन लोक देशक बदला अपन नामसँ हिसाब माँगत, तखन?”

लाउ किन-हंगक शीशाघरक बाहर समुद्र छल। समुद्रक पानि धूपमे चाँदी जेकाँ चमकि रहल छल। ओकरा अचानक लागल जे प्रत्येक लहर एकटा नाम अछि। एते नाम। एते नाम जे ओकर बैंकक अंको छोट पड़ि जाए।

ओहि दिन लाउ पहिल बेर अपन पुत्रक आँखि सँ बाँचि नहि सकल। व्यापारी सभ लाभ-हानिक तालिका देखैत अछि। बच्चा सभ आँखिसँ लेखा माँगैत अछि।

गढ़ नारिकेलमे ई सभ घटना एक्के समय नहि, मुदा एक्के साँसमे घटि रहल छल। चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत बच्चा सभकेँ कहैत छलाह — ‘धूर्तक घरमे जखन बच्चा प्रश्न पूछए, तखन बुझू पात ओकर दुआर पहुँचल।’

अनन्या पूछली — ‘पात उड़ि कऽ जाइत अछि?’

बूढ़बा भूत हँसलाह — ‘पात नहिए, नाम उड़ैत अछि। पात तकर बहाना।’

देविका साह अपन पाठशालाक अगिला पाठ तैयार करैत छली — ‘प्रश्न पूछू।’ ओ बच्चा सभकेँ लिखबैत छली — ‘जँ केओ कहय जल्दी पैसा, पूछू कोना। जँ केओ कहय गुप्त रखू, पूछू किएक। जँ केओ कहय सभ करैत अछि, पूछू नाम कोन-कोन।’

निशांत एहि पाठमे हिसाब जोड़लक। ओ कहलक — ‘प्रश्न सभसँ पहिल ब्याज काटैत अछि। ठगक लाभ डर पर बढ़ैत अछि, प्रश्न पर घटैत अछि।’ बच्चा सभकेँ ई पंक्ति नीक लागल। ओ सभ अपन कापीमे लिखलक — ‘प्रश्न ब्याज काटैत अछि।’

मीरा निजताक शपथक गोष्ठीमे कहली — ‘प्रेमक प्रश्न प्रेमी सँ, समाजक नहि। अनुमतिक प्रश्न देह सँ, मालिक सँ नहि। भयक प्रश्न ओकरासँ जे भय बेचैत अछि।’ एक किशोरी उठि कऽ कहली — ‘जँ घरमे ककरो कहएत भय बेचू नहि?’ मीरा कहली — ‘तखन पहिने घरक भीतर दीप जराउ।’

सौम्या दस्तावेज सभमे नव अध्याय जोड़ि रहल छली — ‘सन्तानक प्रश्न’। ओ बुझि गेल छली जे भ्रष्टाचारक वंश तोड़बाक सभसँ कठिन स्थल अदालत नहि, घरक भोजनक चौकी अछि। ओतय बच्चा पूछैत अछि — ई पैसा कतयसँ आयल? ई चुप्पी किएक? ई डर ककर?

ईरा विदेशमे नाम-पाठक बाद विद्यार्थी सभसँ कहली — 'नीति पढ़बाक पहिने नाम पढ़ू। जे सिद्धान्त नाम बिनु बने, से बहुत बेर अपराधक परदा होइत अछि।' ओकर शिक्षक चुप रहल। एक विद्यार्थी पूछलक — "नाम सभ कतऽ सँ शुरू करब?" ईरा उत्तर देली — 'जतय पहिल लाभ भेल, ओतयसँ।'

आरुणि एहि सभ कें लिखैत-लिखैत ठमकि जाइत छल। ओकरा भय भेल जे कथा फेर उपदेश नहि बनि जाए। मुदा बा कहलखिन — 'जँ प्रश्न कथामे सँ फूटै, से उपदेश नहि। जँ कथा प्रश्नक डर सँ चुप रहै, से झूठ।'

गोप कुमारक नव फाइल ओहि दिन खुलल। फाइलक शीर्षक छल — 'दुआर'। भीतर केवल तीन पंक्ति — 'धूर्त सभ बाहरी दुनियाँ सँ भीतरी दुनियाँमे दण्डसँ नहि, प्रश्नसँ प्रवेश करैत अछि। ओकर सन्तान पहिल दूत होइत अछि। जे बच्चा पूछलक, ओ चन्ना गाछीक आधा द्वार खोलि देलक।'

चन्ना गाछीमे राति फेर खेल भेल। एहि बेर कबड्डीक मैदानक चारू कोन पर चारि चित्र टाँगल गेल — हरिहरनक पोतीक गाछ, चन्द्रपालक बेटाक खाली कुर्सी, राघवक बेटीक प्रश्न, लाउक पुत्रक नक्शा। भूत सभ ओहि चित्रक चारू कात गोल बनौलनि।

लोथ सभ आइ चुप नहि छल। एक लोथ, जे सदियोसँ केवल देखैत छल, गोल बनैत-बनैत कहलक — 'बच्चा सभकेँ खेलमे कोन दलमे राखब?'

बूढ़बा भूत कहलाह — 'बच्चा दल नहि। बच्चा सीटी। ओ खेल शुरू करैत अछि, रोकैत नहि।'

ओहि समय पनिडुब्बी पोखरिक पानिसँ माथ निकाललनि। हुनकर केश रातिक अन्हारसँ लम्बा छल। ओ कहलनि — 'जे प्रश्न पूछैत अछि, ओकर पएर हम नहि पकड़ैत। जे प्रश्न दबाबैत अछि, ओकर पएर अपने ओझराइत अछि।'

राकश सभ इजोत बढ़ौलक। इजोतमे देखा गेल जे मैदानक एक किनार पर बटुकनाथ हरिहरनक मोन काँपि रहल अछि, दोसर पर चन्द्रपाल बत्राक मोन फोन ताकैत अछि, तेसर पर राघव सिग्नलक मोन मेसेज मेटा रहल अछि, चारिम पर लाउ किन-हंगक मोन नक्शा मोड़ैत अछि।

मुदा मैदानक बीच बच्चा सभक प्रश्न दौड़ि रहल छल। प्रश्नक पएर नहि, पाँखि रहैत अछि। ओ पकड़ा नहि जाइत। कबड्डीमे जकरा पकड़ि नहि सकी, से खेलक नियम बदलि दैत अछि।

अनन्या दौड़ि कऽ मैदानक बीच गेली। ओ जमीन पर लिखली — 'ककर?'

एक शब्द। मुदा ओहि एक शब्द सँ चन्ना गाछीक धरती काँपि उठल। ककर पैसा? ककर मृत्यु? ककर जीत? ककर आदेश? ककर चुप्पी? ककर देश? ककर गाम? ककर नाम?

भूत सभ एक संग साँस लेलनि। पन्द्रहम साँस पूर्ण नहि भेल; ओ पसरि गेल। पात सभ उड़ल, मुदा हवा नहि छल। नाम सभ उठल, मुदा मुँह नहि छल। प्रश्न सभ चलल, मुदा पएर नहि छल।

बा दूरसँ देखैत कहलखिन — ‘आब कथा ओकरा सभक घर धरि पहुँचल। आब ओ सभ चाहियो तँ बाहर नहि रहि सकत।’

आरुणि कागच पर अन्तिम पंक्ति लिखलक, मुदा ई अन्तिम पंक्ति अध्यायक मात्र छल, कथा नहि — ‘जतय बच्चा पूछैत अछि ककर, ओतय धूर्तक भीतरक दुआर खुलि जाइत अछि।’

लोकगीत: पोती पूछलक—ककर?

लोकधुन: दादी-पोती गीत

पूछलक हे पोती, 'ककर?' पूछलक हे,
एक प्रश्नक नोकसँ बन्द ताला खुजल हे।

डर पानि जकाँ बहि पोतीक कापी आयल,
पुरखाक जीतक कोना पर प्रश्न उगि आयल।
पोती पूछलक 'ककर धन? ककर नोर? ककर नाम?'
एक शब्दसँ खुलि गेल बन्द घरक सभ धाम।
नाम बिना प्रश्न चलल, पएर बिना बात,

दुआर-दुआर पहुँचल बच्चाक नन्हि हाथ।
बा कहली—आब बाहर रहब सम्भव नहि,
जतय नेना पूछै 'ककर', झूठक ताला रहत नहि।
पोतीक कापी सादा नहि, कुलक दर्पण भेल,
एक प्रश्नक नोकसँ उत्तराधिकार छेदल गेल।

'ककर धन, ककर नोर, ककर नाम?'—तीन बात,
बा कहलीह—जतऽ नेना पूछए, ओतऽ ने टिकत रात।

❖

अध्याय ४५

भीतरक हवा

दुआर खुजल रहि नहि जाइ छै— भीतरक बन्द हवा पहिने बहराइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: बन्द घर खुलल

लोकधुन: आँगन-पराती

खोलू हे केबाड़, भीतरे सँ खोलू हे,
बासि हवा बहराए, नब धूप घोलू हे।

दुआर भीतरसँ खुलल, पुरान हवा बहार,
धूप पसरल कोठरीमे, चमकल घर-दुआर।
जाला झाड़ू, खिड़की खोलू, स्मृति व्यवस्थित राखू,
जे दुख नुकायल छल, ओकरा सुरक्षित बातक साखू।

बन्द घर दोषी नहि, ओकरा संग चाही,
हँसी, पग, गीत, संवाद—जीवनक थाती।
घर खुलल तँ मन खुलल, छाह पाछाँ हटत,
आँगनक नूतन उजाससँ सम्बन्ध फेर गढ़त।

जाला झाड़ू, ताखा पोछू, आँगन नीपि लिअ,
नुकाएल दुखकेँ सुरक्षित बातक ठाम दिअ।
बन्द घर अपराधी नहि, ओकरो संग चाही,
हँसी-गीत-पएरक आहट—घरक असल थाती।

❖

पन्द्रहम साँसमे बच्चा सभ ‘ककर’ पूछलक, आ ओहि एक शब्दसँ धूर्त सभक घरक दुआर भीतरसँ खुलि गेल। सोलहम साँसमे ओ दुआर खुलल रहि नहि गेल; ओतयसँ हवा चलए लागल। ई हवा बाहरक नहि छल। ई ओहि घरक हवा छल जतय बरखों धरि जीतक कागच, घूसक गन्ध, डरक ताला, आ उत्तराधिकारक चमक बन्द राखल गेल छल।

बटुकनाथ हरिहरन अपन पोतीक चित्र किछु दिन धरि टेबुलक दराजमे बन्द कऽ रखने रहल। जे कागच कानूनक नहि हो, ओकरा ओ कागच नहि मानैत छल। मुदा नेनीक चित्र दराजमे नहि रहल। भोरमे दराज खोललासँ पहिने चित्र मेज पर। मेज बन्द कएल तँ चित्र तकिया तर। तकिया हटेल तँ चित्र आइनाक शीशा पर।

ओ बुझि गेल जे चित्र वस्तु नहि, प्रश्न अछि। प्रश्नकेँ दराजमे बन्द नहि कएल जा सकैत।

एक साँझ पोती ओकर कोठरीमे आयली। हाथमे ओहि चित्रक दोसर प्रति। एहि बेर गाछक डारि पर भूत-प्रेतक संग तीन नव आकृति छल — एकटा कागच खाएबला बूढ़, एकटा मोबाइल चिबाएबला लोक, आ एकटा मुँह बिनु व्यापारी। पोती कहली — 'दादाजी, ई सभ के छथि?'

हरिहरन पूछलक — 'तूँ एना किएक बनबैत छैं?'

नेनी कहली — 'किएक तँ अहाँ सभ कथा नहि कहैत छी। जखन घरमे कथा नहि कहल जाइत अछि, तखन चित्र अपने बनि जाइत अछि।'

हरिहरनक भीतर किछु टूटल। ओ पहिल बेर सोचलक जे ओकर पोती ओकर घरक सम्पत्ति पाबत, नाम पाबत, गाड़ी पाबत, पुस्तकालय पाबत, मुदा की ओ ओकर चुप्पी सेहो पाबत? विरासत बहुत बेर सम्पत्ति नहि, उत्तरहीन प्रश्न होइत अछि।

ओ नेनीक माथ सहलाबए चाहलक। हाथ बढ़ेलक। नेनी पाछाँ हटि गेली। 'पहिने बताउ, अहाँ खेलमे बाहर किएक ठाढ़ छी?'

ई प्रश्न आब चित्रसँ निकलि देह धरि आबि गेल। हरिहरन कानूनक सभ भाषा बिसरि गेल। ओ बुझलक जे ओकर पोती ओकरा दादाजी नहि, गवाह बना रहल अछि।

चन्द्रपाल बत्राक बेटा अगिला दिन पिताक कार घुरा देलक। कारक डिक्कीमे पुरान कागच, नकदक थैली, आ अनेक बैंकक पन्ना भेटल। बेटा कारक चाबी टेबुल पर राखि कहलक — 'ई गाड़ी हमरा नहि चाही।'

चन्द्रपाल चौंकल — 'गाड़ी नहि चाही? ई तोहर नाम पर लेबयबला छलहुँ।'

बेटा कहलक — 'नाम पर? हमर नाम पर? अहाँक कमाइ हमर नाम पर लिखल गेल तँ हम की बचब? जे मोबाइल सभ बन्द भऽ गेल, जे युवक सभ फाँसी लगौलक, जे घर सभ कर्जमे डूबल — हुनकर नामक जगह हमर नाम किएक?'

चन्द्रपाल हँसल। पहिने हलुक, फेर तेज। 'बहुत पढ़ि गेलें। आदर्शवाद पेट नहि भरैत।'

बेटा चुपचाप उत्तर देलक — 'पेट भरए लेल कतेक पेट खाली कएलहुँ, से देखबाक उमेर आबि गेल अछि।'

ओहि वाक्यक बाद घरमे एहन चुप्पी छा गेल जे वातानुकूलक यन्त्रक आवाज सेहो अपराधी जेकाँ सुनाइ पड़ल। चन्द्रपालक पत्नी दूरसँ सुनि रहल छली। ओकर चेहरा पर भय नहि, राहत छल। कखनो-कखनो घरक पहिल सत्य बेटा नहि, मायक चुप्पीक भीतर पहिने जन्म लैत अछि।

राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक बेटी अपन पिताक मेज पर एकटा कॉपी राखली। कॉपीक नाम लिखल छल — ‘चुप्पीक नोंद’। ओ कहली — ‘बाबा, जकर उत्तर अहाँ नहि देब, से हम एहि कॉपीमे लिखब। एक दिन ई कॉपी भरि गेल तँ हम बुझि जाएब जे अहाँक जीवनमे कतेक रिक्ति अछि।’

राघव मुस्की देबाक प्रयास केलक। ‘बेटी, बच्चा सभ बापसँ एना बात नहि करैत अछि।’

बेटी कहली — ‘बाप बच्चासँ झूठ बजैत अछि तखन बच्चा कोना बात करैत अछि, से अहाँ सिखाउ।’

राघवक मोबाइल ओहि समय कम्पन देलक। कम्पन टेबुलसँ ओकर आङुर धरि चढ़ल, जेना केओ भीतरे-भीतर झकझोरि रहल हो। संकेत-सन्देश आयल — ‘फाइल हटाउ। नाम रोकू।’ बेटी मोबाइल दिस तकली। राघव फोन उलटि देलक। बेटी कॉपीमे पहिल पंक्ति लिखली — ‘पहिल चुप्पी: फोन उलटल।’

ओ पंक्ति राघवक छाती पर लिखल गेल। ओकरा लागल जे कॉपीमे नहि, ओकर देहमे रिक्त स्थान बनि रहल अछि। ओ पहिल बेर सोचलक जे मेटाइत सन्देश केवल यन्त्रसँ गायब होइत अछि; सन्तानक आँखिसँ नहि।

लाउ किन-हंगक पुत्र विद्यालयमे निबन्ध लिखलक — ‘लाभक वंश आ नामक ऋण’। शिक्षक ओहि निबन्धकेँ पुरस्कार देलक। लाउ उत्सवमे गेल। मंच पर पुत्र निबन्ध पढ़ए लगल। पहिल पंक्तिमे लिखल छल जे हुनकर पिता कहैत छथिन्ह — देश नामसँ चलैत अछि, लोक नामसँ नहि — मुदा हुनका शंका अछि जे जे देशक लोकक नाम नहि जनैत, से कमाइ नहि, चोरी करैत अछि।

सभागारमे ताली नहि बजल। मौन आयल। मौनक वजन तालीसँ बेसी होइत अछि। लाउ किन-हंगक चेहरा पाथर भऽ गेल। ओकरा लागल जे ओकर पुत्र मंच पर नहि, गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछीक नीचाँ ठाढ़ अछि।

पुत्र आगाँ पढ़लक — ‘हमर वंश जँ लाभक वंश अछि, तँ हम ओकर उत्तराधिकारी नहि बनए चाहैत छी। हमरा ओहि नाम सभक सूची चाही जकरा मेटा कऽ लाभ बनल।’

लाउ कुर्सी पर बैसल रहल, मुदा ओकर भीतरक व्यापारी भागए लगल। बहुत दूर, ओहि भागैत व्यापारीक पएर कमला-बलानक रेतमे धँसैत गेल।

एडवर्ड ब्रूमक घरमे सेहो ई हवा पहुँचल। ओकर नातिन, जे इतिहास पढ़ैत छली, पूछली जे जखन ओ गरिमा पर भाषण दैत छथि, तखन हुनकर कम्पनीक पुरान परियोजनामे मरल लोकक नाम कतय राखल जाइत अछि।

ब्रूम बजल — "इतिहास जटिल होइत अछि।"

नातिन उत्तर देली — "जटिलता नाम मेटेबाक अनुमति नहि देत।"

ब्रूमक पुस्तकालयमे विश्व-नीति, व्यापार-नीति, मानव-गरिमा, विकास-दर्शनक मोट-मोट ग्रन्थ भरल छल। मुदा ओहि क्षण ओकरा लागल जे सभ पुस्तकक पृष्ठ खाली अछि। जकरा सभ नाम चाही, ओकरा सिद्धान्त नहि चाही।

गढ़ नारिकेलमे अनन्या एहि सभ दूरक कम्पन अनुभव करैत छली। ओ कहली — 'बा, जखन धूर्तक बच्चा प्रश्न पूछैत अछि, तखन ओ बच्चा धूर्त रहैत अछि कि हमर दलमे आबि जाइत अछि?'

बा हँसलीह — 'बच्चाक दल प्रश्नक दल होइत अछि। ओ ककरो विरुद्ध नहि, झूठक विरुद्ध जन्मैत अछि।'

अनन्या फेर पूछली — 'तखन ओ सभकेँ चन्ना गाछीमे खेलबाक अधिकार अछि?'

बा कहलखिन — 'जे प्रश्न लऽ कऽ आए, ओकरा मैदान रोकैत नहि। जे उत्तर बचाबए आए, ओकरा मैदान घुमबैत रहैत अछि।'

देविका साह स्क्रीनक विरुद्ध पाठशालामे एहि नव पाठ जोड़ली — 'घरक प्रश्न'। ओ बच्चा सभकेँ कहली — 'ठग बाहरसँ नहि, बहुत बेर घरक चुप्पी सँ शुरू होइत अछि। जँ अहाँक घरमे अकस्मात बहुत पैसा, बहुत भय, बहुत फोन, बहुत गुप्तता आबि जाए, तँ पहिने प्रेमसँ पूछू। प्रश्न अपमान नहि, घरक रक्षा अछि।'

निशांत कहलक — 'जँ माता-पिता कहथिन्ह जे अहाँ बच्चा छी, बुझब नहि?'

देविका उत्तर देली — 'तखन कहू — बच्चा छी, तेँ बुझबाक अधिकार अछि। कारण झूठक ऋण हमरा माथ पर नहि देल जाउ।'

मीरा निजताक मण्डलमे कहली — 'वंश केवल रक्तसँ नहि चलैत। भय सेहो वंशानुगत होइत अछि, चुप्पी सेहो, लाज सेहो। आब नव वंश बनत — अनुमति, प्रश्न, आ अपन देह पर अपन अधिकारक वंश।'

एक युवती उठि कऽ कहली — 'जँ घर कहय जे ई सभ बाहरी विचार अछि?'

मीरा उत्तर देली — 'आत्मसम्मान कहियो बाहरी नहि होइत। बाहरक केवल दर्पण होइत अछि, चेहरा भीतरक।'

सौम्या एहि सभ सभाक वृत्तान्त लिखैत छली। हुनका बुझाइत छल जे उपन्यासक असली मोड़ अपराधी पकड़ेबाक नहि, उत्तराधिकारीक इन्कार अछि। जे पीढ़ी कहैत अछि — 'हम ई लाभ नहि लेब', ओ इतिहासक दिशा बदलैत अछि।

ईरा विदेशमे अपन विद्यार्थीक संग 'नाम-पाठ'क दोसर क्रम शुरू केली। एहि बेर विषय छल — 'विरासत स्वीकार करबाक शर्त'। ओ कहली — 'विरासत तखने स्वीकार करू जखन ओकर हिसाब बुझू। जे सम्पत्ति प्रश्नसँ डेराए, से सम्पत्ति नहि, फँसरी अछि।'

गोप कुमारक ईशान दत्तक फाइलमे एक नव परिशिष्ट भेटल — 'उत्तराधिकारी'। ओहिमे लिखल छल — 'अपराधी सभ अपन अपराधसँ कम, अपन सन्तानक अस्वीकारसँ टूटैत अछि। दण्ड बाहरक संस्था दैत अछि; पराजय घरक भीतरक प्रश्न दैत अछि।'

आरुणि एहि पंक्तिकेँ पढ़ि कऽ बहुत काल धरि चुप रहल। ओकरा अपन बेटी अनन्या मोन पड़ल, जे मृतकक नाम खेलमे पढ़ैत-पढ़ैत कखनो थाकैत नहि छल। ओ बुझलक जे गढ़ नारिकेलक असली उत्तराधिकारी जमीनक मालिक नहि, नामक पाठक बच्चा सभ छथि।

चन्ना गाछीमे ओहि राति सभ बच्चाक प्रश्न पात बनि टाँगल गेल। हरिहरनक पोतीक प्रश्न, चन्द्रपालक बेटाक इन्कार, राघवक बेटीक कॉपी, लाउक पुत्रक निबन्ध, ब्रूमक नातिनक जिज्ञासा। भूत सभ ओहि पात सभकेँ पढ़लनि। प्रेत सभ उज्जर प्रकाशमे अक्षर साफ केलक। राकश सभ इजोत देलक। लोथ सभ पहिल बेर ताली बजौलक।

बूढ़बा भूत कहलाह — 'आइ सोलहम साँस अछि। एहि साँसमे अपराधक घरमे जन्मल बच्चा सभ अपराधक वंश स्वीकार करबासँ इन्कार कएलक।'

पनिडुब्बी पोखरिसँ कहलनि — 'जे इन्कार करैत अछि, ओकर पएर हम नहि पकड़ैत। ओ चलि सकैत अछि।'

हक्कल डाइन, जे सदिखन छौंकी पर घुमैत रहैत छलीह, आइ नीचाँ उतरलीह। हुनकर पोसल आत्मा सभ शांत छल। ओ कहलीह — 'वंश टूटब कठिन अछि। मुदा जखन बच्चा कहैत अछि — ई भय हमर नहि — तखन पुरान डोरी अपने सड़ि जाइत अछि।'

ओहि समय मैदानक एक कोनसँ हरिहरनक मोन आयल। दोसरसँ चन्द्रपालक। तेसरसँ राघवक। चारिमसँ लाउक। ई सभ मोन खेलमे पैसए चाहैत छल, मुदा प्रवेशद्वार पर बच्चा सभ ठाढ़ छल। बच्चा सभक हाथमे हथियार नहि, प्रश्न छल।

अनन्या आगाँ बढ़ली। ओ जमीन पर लिखली — 'की लेब?'

धूर्त सभक मोन चुप।

अनन्या दोसर पंक्ति लिखली — 'की छोड़ब?'

हरिहरनक मोन काँपल। चन्द्रपालक मोन फोन ताकलक। राघवक मोन सन्देश मेटेलक। लाउक मोन प्रतिशत गनलक। मुदा मैदानमे कोनो संख्या टिकि नहि रहल छल।

बच्चा सभ एक संग कहलक — 'जे नाम मेटाएल गेल, से हम लेब। जे लाभ नाम मेटा कऽ बनल, से हम छोड़ब।'

एहि वाक्यसँ चन्ना गाछीक पातक रंग बदलि गेल। कारी भूतक देहमे कनी हरियर झलक आयल, जेना पुरान दीयामे फेर तेल पड़ल हो। उज्जर प्रेतक आँखिमे पानि आयल। राकशक इजोत मद्धिम भेल, जेना ओकरा आब एते उजास देबाक जरूरत नहि रहल। लोथ गोल-गोल लुढ़कि मैदानक बीच आबि गेल आ बच्चा सभक संग गोल बनौलक।

बा दूरसँ देखैत कहलखिन — 'आब कथा केवल मरल लोकक नहि रहल। आब कथा ओहि बच्चा सभक सेहो अछि जे अपवित्र जीतक दूध पीबासँ इन्कार करत।'

आरुणि लिखलक — 'सोलहम साँस ओहि दिन आयल जखन अपराधक वंशज सभ कहलक — हम नाम लेब, लाभ नहि। चन्ना गाछीमे एहि इन्कारक ध्वनि बहुत काल धरि गूँजैत रहल।'

लोकगीत: बन्द घरक हवा

लोकधुन: आँगन गीत

बहरायल हे हवा, बन्द घरक हवा बहरायल हे,
नाम लेल उत्तराधिकारी पाप-पियास तोड़ल हे।

दुआर भीतरसँ खुजल, पुरान हवा बहरायल,
घूसक गन्ध, जीतक कागच, डर सभ उड़ायल।
अपराधक बच्चा कहलक—नाम लेब, लाभ नहि,
अपवित्र दूध पीबि अपन छाती करब दाग नहि।
कारी भूतमे हरियर झलक, प्रेतक आँखि नोर,

लोथ बच्चाक गोलमे बैसल, मद्धिम भेल घोर।
मरल लोकक कथा आब जीवित नेनाक सेहो,
जिनका लाभ छोड़बाक साहस, भविष्य हुनक गेह।
बन्द हवा बहरल तखन घर पहिल बेर साँस,
नाम लेल उत्तराधिकारी तोड़लक पाप-पियास।

अपराधीक नेना कहलक—लाभ नहि, नाम धरल।
मरलक कथा आब जीवित नेनाक भेल भोर।

❖

अध्याय ४६

उत्तराधिकारक अन्हार

धनक मुँह जे नहि देखलक आ पाछाँक अन्हार देखि लेलक, वैह असल उत्तराधिकारी।

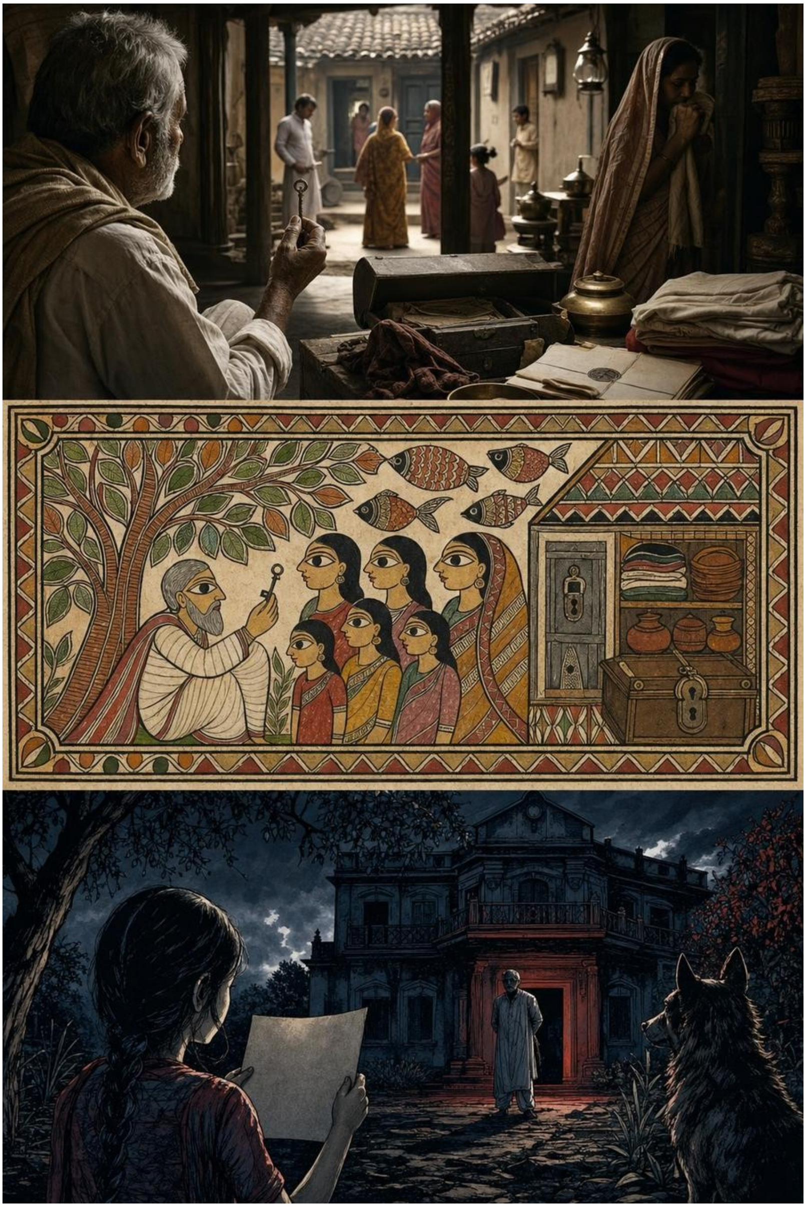

अध्यायारम्भ लोकगीत: श्वासक मूल्य जीवन

लोकधुन: उत्तराधिकार-मंगल

गाबू हे मंगल, साँसक मंगल गाबू हे,
लाभक पहिने जीवन—ई पाठ पढ़ाबू हे।

लाभ नहि, श्वास पहिने—एहि नियमपर चलू,
धनक मीनार बादमे, जीवनक दीप बलू।
काज, दवा, व्यापार सभ मानव हित सँ जुड़य,
एक श्वास बचल तखनहि असल लाभ उगय।

सन्तानकेँ धनसँ बेसी ईमानक उत्तराधिकार,
जकर काज जीवन बचाबै, ओकर नाम अपार।
श्वासक मूल्य जीवन थीक, बजार नहि नापै,
करुणा संग कमायल धन सुखक फूल छापै।

धनक मीनार ऊँच रहौ, नींव दया पर हो,
बही-खाता मे सभसँ ऊपर साँसक आखर हो।
बेटा-बेटीकेँ सौंपू ईमानक पूँजी,
जीवन-रक्षक काजक शोभा जुग-जुग गूँजी।

❖

सोलहम साँसमे बच्चा सभ कहलक जे नाम लेब, लाभ नहि। ई वाक्य चन्ना गाछीक पातपर लिखाइत-लिखाइत घर-घर पहुँचि गेल। मुदा वाक्य जखन घर पहुँचैत अछि, तखन ओ केवल वाक्य नहि रहैत। ओ बरतनक खनखनाहटमे पैसैत अछि, ताखपर राखल पुरान चाभीमे, बैंकक मोहर लागल कागचमे, अलमारीक भीतरी कपड़ाक गन्धमे। सत्रहम साँस ओहि दिन शुरू भेल जखन धन अपन उत्तराधिकारी ताकऽ लागल आ उत्तराधिकारी सभ धनक मुँह दिस नहि, ओकर पाछाँक अन्हार दिस तकए लागल।

बटुकनाथ हरिहरन पोतीक उत्तर सँ बहुत दिन धरि बचैत रहल। ओ सोचैत छल जे बच्चा प्रश्न करैत अछि, फेर खेलमे लगि जाइत अछि। मुदा बच्चाक प्रश्न ओहि कुकुर जेकाँ होइत

अछि जे एक बेर घरक दुआर सूँघि लेलक तँ रोज भोरमे ओतय आबि ठाढ़ होइत अछि। पोती फेर आयली। हाथमे चित्र नहि, एकटा खाली कागच।

‘बाबा, अहाँ हमर नामपर की छोड़ब?’

हरिहरनक मुख पर ओहि पुरान अभ्यासक मुस्की आयल जेकरासँ ओ अदालतमे कठोर प्रश्नक धार मोड़ि दैत छल। ओ कहलक — ‘सभ किछु। घर, जमीन, खाता, पुस्तकालय, नाम।’

नेनी कागच पर तीन गोला बनौली। पहिल गोला पर लिखली — घर। दोसर पर — खाता। तेसर पर — नाम। फेर ओ पहिल गोला कात छोट-छोट पएर बनौली, दोसर कात पानि, तेसर कात गाछ।

‘घरक पएर किए?’ हरिहरनक मुँहसँ अपने आप निकलल।

नेनी कहली — ‘जँ घर ककरो मरल पएरपर बनल हो, तँ ओ राति चलैत होएत।’

हरिहरन ओहि क्षण बुझल जे कानूनक उत्तर बच्चाक चित्रपर नहि चलैत। ओ कागच छीन्हऽ चाहलक, मुदा हाथ आगाँ बढ़ल नहि। कागचमे बनल घरक पएर हिलि रहल छल। ओ पएर अदालतक सीढ़ी जकाँ नहि, चन्ना गाछीक जड़ि जकाँ बारीक छल।

ओहि राति हरिहरन अपन वसीयतनामा खोललक। प्रत्येक पंक्ति ठीक छल। वकीली भाषा निर्मल, सम्पत्ति सूचीबद्ध, हिस्सेदारी स्पष्ट। मुदा पन्ना ओकर आङुरमे ओहिना चिपकल जेना बहुत पुरान घाव पर सूखल पट्टी। ओ जखन पढ़ऽ लागल तँ ‘चल सम्पत्ति’क स्थान पर लिखल देखलक — ‘चल मृतक’। ‘अचल सम्पत्ति’क स्थान पर — ‘अचल नाम’। ओ आँखि मललक। फेर पढ़लक। अक्षर अपन स्थान पर घुरि गेल। मुदा अक्षरक नीचाँ हलुक पानि चमकि रहल छल।

चन्द्रपाल बत्राक घरमे बात दोसर ढंगसँ शुरू भेल। ओकर बेटा मोबाइल ओकरा सोझाँ राखि देलक। स्क्रीनपर कोनो खेल नहि छल, कोनो खाता नहि, कोनो सन्देश नहि। केवल एकटा सूची — मुन्ना पासवान, उज्ज्वल झा, सरयू, जेकर नाम चन्द्रपाल कहियो पूरा पढ़ने नहि छल।

बेटा पूछलक — ‘ई सभ हमर साझेदार छल?’

चन्द्रपाल हँसल — ‘नहि, ई सभ मामला छल।’

बेटा कहलक — ‘मामला नहि। ई सभ लोक छल। अहाँ हमरा कहैत छलहुँ जे कानून पढ़ू, बुद्धि लगाऊ, मौका चिन्हू। मुदा मौका आ शिकारमे अन्तर की होइत अछि?’

चन्द्रपालक कान गरम भऽ गेल। ओ बेटाक हाथसँ मोबाइल उठौलक। स्क्रीन बन्द। फेरो सूची बन्द नहि भेल। ओ शीशामे देखलक तँ अपन चेहराक स्थान पर मेरठक ओ पुरान कमरा देखल, जतय ओ पहिल बेर कानूनक किताब कीनने छल। किताबक पहिल पृष्ठपर ओ लिखने छल — 'न्याय पढ़ब।' ओहि पृष्ठक ऊपर आब लिखल छल — 'दर निकालब।'

चन्द्रपालक बेटा चुपचाप अपन नामक कागच ओकरा सोझाँ राखलक। 'जतेक लाभ हमर नामपर अछि, ओकर स्रोत लिखि दिअ। जँ स्रोत नहि लिखि सकैत छी, तँ ई नामसँ हटाउ।'

चन्द्रपाल कहलक — 'बेटा, दुनियाँ एना नहि चलैत।'

बेटा उत्तर देलक — 'तखन हमरा ओ दुनियाँ नहि चाही।'

एहि वाक्यक बाद चन्द्रपालक घरक वातानुकूलित हवा बन्द भऽ गेल। खिड़की अपने खुलल। बाहर कोनो नदी नहि छल, मुदा पानिक गन्ध आयल। स्क्रीनक भीतर सँ एक छपाक सुनाइ पड़ल। चन्द्रपाल पहिल बेर बुझल जे डिजिटल गोहि ककरो देह मात्र नहि, बाप-पुत्रक बीचक भरोस चिबा जाइत अछि।

राघव 'सिग्नल' सोमानी लग उत्तराधिकारक प्रश्न पत्नीक थालीसँ उठल। ओ भात परोसैत-परोसैत एक दाना अलग राखि दैत छली। राघव पहिने हँसैत छल। बादमे चिढ़ल। तखन एक राति पूछलक — 'ई रोज एक दाना अलग किए?'

पत्नी कहली — 'जेकरा घरक भात अहाँक पैसासँ छिनायल, तकरा लेल।'

राघव चुप। ओ कहलक — 'अहाँकेँ किछु बुझाइत नहि अछि। ई सभ कारोबारक बात अछि।'

पत्नी ओकरा दिस तकली। 'कारोबार जँ भातक दानाकेँ अनाथ बना दैत अछि, तँ घरमे तकरा दाना नहि, श्राद्धक अन्न कहल जाइत अछि।'

ओहि राति राघव अपन सुरक्षित सन्देश खोललक। जे सन्देश ओ मेटा चुकल छल, से सभ घुरि आएल नहि। ओहिसँ भयंकर बात भेल — सन्देशक स्थान पर भातक दाना देखाइ देलक। प्रत्येक दाना पर एक नाम। ओ आङुरसँ छूएलक। दाना टूटल नहि। स्क्रीनमे रेखा बनल — 'खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल।'

लाउ किन-हंगक घरमे प्रश्न समुद्रसँ आयल। ओकर नातिन शीशाक देबालपर नील रंगसँ एकटा गाछ बनौली। लाउ पूछलक — "ई कोन गाछ?" नेनी कहली — "जे सपनामे आयल।"

गाछक डारिपर मोबाइल लटकल छल, फल जेकाँ। प्रत्येक मोबाइलमे ककरो चेहरा नहि, केवल एक आवाज — 'हमर मृत्यु कोन कानूनमे लिखल?' लाउ किन-हंग नातिनक हाथ रोकऽ चाहलक। नेनी रंगक कूची नहि छोड़ली। ओकर नान्हि हथेलीमे एते बल कतयसँ आयल, ओ नहि बुझि सकल।

ओहि दिन लाउ अपन सम्पत्तिक सूची मँगेलक। दुनियाँ भरिक कम्पनी, भरोसेमन्द एजेंट, परतदार खाता, समुद्री टापूक ठेकाना, दान-संस्थान, शिक्षा-अनुदान, अस्पताल-निधि। सूची बहुत साफ छल। मुदा जखन ओ नातिनक नाम जोड़बाक पंक्ति पर पहुँचल, स्क्रीनपर प्रश्न आयल — 'जे भाषामे कमाएल, ओहि भाषामे उत्तर दिअ।'

लाउक सोझाँ पहिल बेर ओकर धन अनुवाद माँगल। प्रतिशतक भाषा, विनिमयक भाषा, समझौताक भाषा — ई सभ काज नहि देलक। गढ़ नारिकेलक नामक भाषा ओकरा नहि अबैत छल। ओहि अज्ञानसँ ओकर माथ पर पसेना आयल।

एहि बीच गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ उत्तराधिकारक नव खेल बनौने छल। खेलक नियम सरल — जे बच्चा कोनो वस्तु उठाओत, ओकरा पूछबाक पड़त: 'ई ककर श्रम? ई ककर हानि? ई ककर नाम?' जँ उत्तर नहि भेटत, वस्तु खेलसँ बाहर।

एक बच्चा चमकैत खिलौना कार आनलक। सभ पूछलक — 'ई ककर श्रम?' बच्चा चुप। कार खेलसँ बाहर। दोसर बच्चा पुरान काठक लट्टू आनलक। ओ कहलक — 'ई हमर दादाक हाथ। खेतक बीच विश्राममे बनौने छलाह।' लट्टू खेलमे रहल।

अनन्या कहली — 'उत्तराधिकार वस्तु नहि। उत्तराधिकार ओ कथा थिक जे वस्तु संग घरमे पैसैत अछि।'

बा ई सुनि मुस्की देलीह। 'जँ बच्चा सभ ई बुझि गेल, तँ धूर्त सभक धन ओकरा सभक अपन घरमे अनाथ भऽ जायत।'

सौम्या एहि खेलक नियम लिखि रहल छली। मीरा कहली — 'एहिमे निजताक नियम सेहो जोड़ू। ककरो प्रेम, ककरो देह, ककरो डर उत्तराधिकारमे नहि देल जा सकैत।' देविका कहली — 'आ ककरो खाता बिनु बुझने खोलबाओल जाए, से सेहो अभिशप्त उत्तराधिकार।' निशांत जोड़लक — 'जतय पहिल जीत भेटै, ओतय पहिल प्रश्न पूछू।'

आरुणि देखैत छल जे उपन्यास आब उपदेश नहि बनि रहल, खेल बनि रहल अछि। खेलमे बच्चा सभ नियम बना रहल अछि आ नियममे मृतक सभ आराम पाबि रहल अछि। चन्ना गाछीक पात सभ हलुक हिलल, जेना ओ सभ बच्चा सभक नियम पर मोहर लगा रहल हो।

तखन बूढ़बा भूत धीरे-धीरे डारिसँ उतरलाह। ओ पहिल बेर दिनक उजासमे पूर्ण देखयलाह। हुनकर कारी देहमे आब राखक धूसर रंग छल, जेना बारह सय बरखक धुँआ धीरे-धीरे धोइत हो। ओ मैदानमे अयलाह आ बच्चा सभसँ कहलाह — ‘एकटा नियम आर।’

बच्चा सभ चुप। बूढ़बा भूत कहलाह — ‘जे धन नाम मेटा कऽ बनल, तकरा लेल कानू नहि, भने ओहिसँ वंचित रहू। वंचित रहबो कखनो-कखनो मुक्ति होइत अछि।’

ई नियम सुनि लोथ गोल-गोल घूमल। राकशक इजोत कम भेल, कारण दिनमे आब बच्चा सभक चेहरा पर्याप्त उजास दैत छल। पनिडुब्बी पोखरिसँ बाहर नहि अयलीह, मुदा हुनकर झोँटाक एक बून्द पानि हवामे उठि चन्ना गाछीक पात पर टिकि गेल। ओ बून्दमे चारि गो चेहरा देखायल — हरिहरनक पोती, चन्द्रपालक बेटा, राघवक पत्नी, लाउक नातिन।

धूर्त सभ अपन-अपन घरमे अलग-अलग भाषामे काँपि रहल छल। मुदा काँपबाक अर्थ प्रत्येक ठाम एके छल — उत्तराधिकारी सभ लाभक खिड़की बन्द कऽ रहल छल।

हरिहरन पोतीक खाली कागच पर हस्ताक्षर करए चाहलक। ओकर हाथ रुकि गेल। ओहि कागच पर पहिने सँ लिखल छल — ‘नाम लिअ, लाभ छोड़ू।’ ओ देखलक, ई ओकर पोतीक लिखावट नहि। ई अनेक हाथक लिखावट छल। मजदूरक, स्त्रीक, युवकक, रोगीक, बच्चाक।

चन्द्रपाल अपन बेटाक नाम हटेबाक कागच बनबाबए चाहलक। कागच बनल, मुदा ताहि पर बेटाक नाम हटल नहि। उनटा चन्द्रपालक नामक पाछाँ एक लम्बा छाह जुड़ि गेल — बत्रा, लखेरा, म्यूल, स्क्रीन, छपाक। ओ कागच मोड़ि फेकलक। कागच खुलि कऽ फेर मेज पर।

राघव घर छोड़ि होटल गेल। होटलमे भोजन मँगेलक। थाली आयल। भातक एक दाना अलग छल। ओ होटल बदललक। दोसर थालीमे सेहो एक दाना अलग। तेसर ठाम खिचड़ी मँगेलक। खिचड़ीक बीच एक दाना बिनु मसाला, उज्जर, साक्षी जेकाँ।

लाउ किन-हंग अपन नातिनक चित्र उतारि फेकबाक आदेश देलक। नौकर हाथ लगाबए गेल, शीशा ठण्ढा नहि, गरम। रंग सूखल नहि, धड़कैत। समुद्रक लहर शीशाक भीतरसँ आवाज देलक — ‘जे देशक नामसँ कमाएल, ओहि देशक नाम पढ़।’

गढ़ नारिकेलमे एहि सभक समाचार कोनो पत्रमे नहि छपल। मुदा पात सभ जानैत छल। पातक खबर पातक बीच चलैत अछि, जेना गामक स्त्री सभ चूल्हा सँ चूल्हा खबर लऽ जाइत छथि।

अनन्या साँझमे कागच पर लिखली — ‘सत्रहम साँस: उत्तराधिकारीक इन्कार।’ फेर ओ रुकली। ‘इन्कार’ शब्द ओकरा कठोर लगल। ओ काटि कऽ लिखली — ‘चयन’।

आरुणि पूछलक — 'किए बदललहुँ?'

अनन्या कहली — 'ओ सभ केवल 'नहि' नहि कहि रहल अछि। ओ सभ चुनि रहल अछि जे कोन कथा अपना संग राखब।'

आरुणि बहुत काल धरि एहि वाक्यकेँ देखैत रहल। ओकरा लगल जे उपन्यासक भविष्य आब बच्चाक हाथमे अछि। लेखक केवल लिखत; कथा आब ओ सभ चुनत।

चन्ना गाछीमे राति भेल। कबड्डी शुरू नहि भेल। पहिने बच्चा सभ गोलमे बैसल। बीचमे खाली कागच। कागच पर लिखल — 'जे लाभ त्यागल, से नामक योग्य भेल।'

बूढ़बा भूत साँस लेलनि। कारी भूत सभ पंक्तिमे। प्रेत सभ उज्जर। राकश इजोत कम। लोथ गोल। पनिडुब्बी पोखरिमे शान्त। पीपरक ब्रह्मा नीचाँ उतरि खाली कागच पर चारू मुखसँ फूँक मारलनि।

कागच उड़ल नहि। कागच धरतीमे धँसि गेल। जतय कागच धँसल, ओतय एक छोट नारिकेलक अंकुर फुटल। अंकुरक संग माटिसँ एक नव गन्ध उठल — ने फूलक, ने फलक; भीजल आरम्भक गन्ध। मिथिलाक माटिमे नारिकेलक अंकुर असम्भव कहल जाइत छल। मुदा गढ़ नारिकेलमे असम्भव सेहो नियम पढ़ि कऽ उगैत अछि।

बा दूरसँ कहलखिन — 'आब धनक वंश टूटल नहि; ओकरा सँ मुक्त होएबाक वंश शुरू भेल।'

धूर्त सभक घरमे ओहि राति निद्रा नहि आयल। उत्तराधिकारी सभ कैँ निद्रा आयल — भारी नहि, हलुक। किएक तँ लाभ छोड़बासँ पेट खाली नहि भेल; छाती खाली भेल, आ खाली छातीमे पहिल बेर हवा पैसल।

सत्रहम साँस समाप्त होमए चाहैत छल, मुदा चन्ना गाछी ओकरा रोकि लेलक। कारण कथा आब ओहि मोड़ पर पहुँचल छल जतय हारल लोक सभक बच्चा आ धूर्त सभक बच्चा एकहि मैदानमे खेलए जा रहल छल। खेलमे जीतक कागच नहि चलत। चलत केवल नाम, श्रम, प्रेम आ चुनल गेल स्मृति।

आरुणि अन्तिम पंक्ति लिखलक — 'उत्तराधिकारक असली परीक्षा ई नहि जे अहाँकेँ की भेटल; ई जे अहाँ कोन वस्तु अपना हाथसँ छोड़ि सकलहुँ, ताकि अहाँक नाम ककरो मृत्यु पर नहि, अपन श्वास पर ठाढ़ रहए।'

लोकगीत: लाभ नहि, श्वास

लोकधुन: उत्तराधिकार-विरहा

छोड़ू हे लाभ, पापक लाभ छोड़ू हे,
श्वासक संग ठाढ़ रहत अपने नाम बूझू हे।

धनक मुँह चमकल, पाछाँ अन्हार गाढ़,
असल उत्तराधिकारी ओ जे देखलक दुनू बाट।
बैंकक कागच, पुरान चाभी, अलमारीक गन्ध,
ककर मृत्यु पर ठाढ़ ई सुखक उज्जर चन्द?
‘नाम लेब, लाभ नहि’—बच्चा सभक प्रण,

छाती खाली भेल तखन पैसल पहिल पवन।
हारल आ धूर्तक नेना एक मैदान आएत,
जीतक आदेश नहि, श्रम-प्रेम संग खेलाएत।
जे छोड़ि सकल पाप-लाभ अपन हाथ,
ओकर नाम ठाढ़ रहत अपन श्वासक साथ।

'नाम लेब, लाभ नहि'—नेना सभक प्रण,

❖

अध्याय ४७

गज-ग्राह आख्यान

गजक पएर पानिमे अटकल आ ग्राहक दाँत इतिहासमे— छोड़ौनिहार हाथ सदिखन तेसर होइ छै।

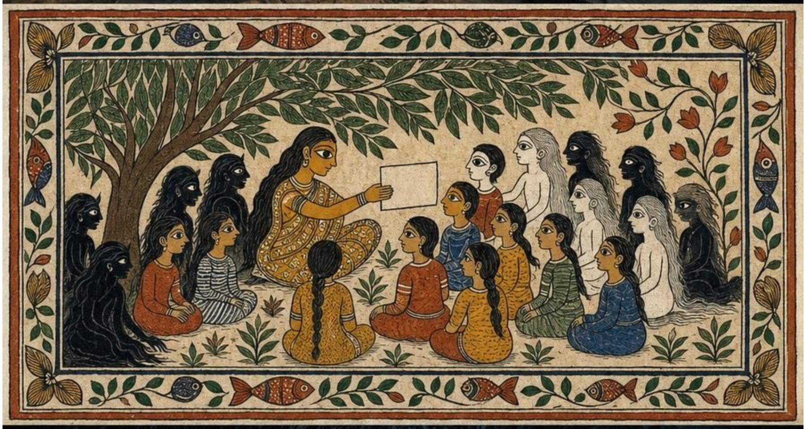

अध्यायारम्भ लोकगीत: गज-ग्राहक बुद्धि

लोकधुन: लोक-आख्यान मंगल

सुनू हे आख्यान, गज-ग्राहक सुनू हे,
बलसँ पैघ बुद्धि-संग—ई गिरह गुनू हे।

गजक पएर जलमे अटकल, साथी स्वर उठाबै,
ग्राहक दाँत जते कठोर, बुद्धि बाट बनाबै।
बल अकेल पर्याप्त नहि, समय, संग, उपाय,
संकटमे विवेकक दीप मुक्ति राह देखाय।

गज कहै—अहं छोड़ू, मदति माँगब मान,
नदी कहै—संगक शक्ति सभसँ पैघ प्राण।
गज-ग्राहक कथा सँ सीखू, जालक चाल बुझू,
धैर्य, ज्ञान, सहयोगसँ विजयक कमल चुनू।

जल गहींर, दाँत कठोर, तइयो बाट बचल,
एक पुकार पर कातर क्षण मे सहाय पहुँचल।
अहं त्यागि मदति माँगब सेहो वीरक काज,
धैर्य-विवेक-संगक त्रिबल सँ जितए समाज।

❖

सत्रहम साँसमे उत्तराधिकारी सभ धनक पाछाँक अन्हार देखि लेलक। ओ सभ लाभक थालि अपना आगाँ राखल देखलक, मुदा हाथ नहि बढ़ेलक। चन्ना गाछी एहि बात पर मुस्की नहि देलक। गाछी जानैत छल जे लाभ छोड़बासँ कथा समाप्त नहि होइत; लाभ छोड़लाक बाद मनुष्य केँ पहिल बेर ओ शक्ति देखाइ दैत अछि जे ओकरा खिंचि रहल छल। अठारहम साँस ओहि खिंचावक साँस छल।

भोरमे गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ चन्ना गाछी लग खेलबाक लेल जमा भेल। रातिक ओस एखनो पात पर अटकल छल। लोथ सभ गोल भऽ बैसल छल, जेना ओ सभ राति भरि आँखि मूदि ध्यान करैत रहल हो। राकशक देहक इजोत मंद छल, कारण दिनक उजास अबैत छल।

प्रेत सभक उज्जर देह ओससँ आओर उज्जर लगैत छल। कारी भूत सभ गाछक छाँहिसँ अलग करब कठिन छल।

अनन्या खाली कागच लऽ कऽ आयली। ओकर संग धूर्त सभक उत्तराधिकारी सेहो छल — हरिहरनक पोती, बत्राक बेटा, सिग्नलक भानजा, आ दूर देशसँ आबि ठाढ़ भेल एक लड़की जे लाउ किन-हंगक परिवारक घरमे पोसाएल छल मुदा अपन कुलक नामक भारसँ भागि आबि गढ़ नारिकेल पहुँचली। ई सभ बच्चा सभ अपना-अपना घरक भय लऽ कऽ आयल छल, मुदा खेलक मैदानमे बच्चाक भय जल्दी भाषा पबैत अछि।

अनन्या पूछली — ‘आइ कोन खेल?’

बूढ़बा भूत ओहि डारिसँ नीचाँ उतरलाह जतय ओ बारह सय बरखसँ बैसल छलाह। हुनकर पएर धरतीसँ एक आङुर ऊपर रहल, मुदा आवाज धरतीक भीतरसँ आयल — ‘आइ गज-ग्राह खेल।’

बच्चा सभ हँसि पड़ल। ‘गज-ग्राह खेल होइत अछि की?’

बा ओतय पहुँचलीह। हुनकर हाथमे दूटा वस्तु छल — एक पुरान पीतल कटोरा आ कमला-बलानक कछारसँ आनल माटि। ओ कटोरामे माटि रखि ओहिमे पानि ढारलीह। पानि पड़िते माटि फूलि गेल, जेना भीतरसँ कोनो जन्तु साँस लेने हो; माटिसँ महीन बुड़बुड़ी उठल, जेना धरती अपन पुरान कथा कहबासँ पहिने गला साफ करैत हो। बा कहलखिन — ‘गज-ग्राह कथा सुनने छी?’

बच्चा सभमे किछु सुनने छल, किछु नहि। धूर्त सभक उत्तराधिकारी सभ स्कूलक पुस्तकमे चित्र देखने छल — हाथी, कमल, पोखरि, ग्राह। मुदा गढ़ नारिकेलमे कोनो कथा पुस्तकक चित्र जेकाँ नहि रहैत। एतय कथा जखन कहल जाइत अछि, तखन ओ अपन पएरमे माटि लगा कऽ अबैत अछि।

बा कहलखिन — ‘एक गज छल। बड़का। बलवान। ओकरा लग झुण्ड, वन, जल, दाँत, गर्व — सभ छल। ओ पोखरिमे उतरल। फूल तोड़बाक लेल नहि, तृष्णा बुझएबाक लेल। मुदा पानिमे ग्राह छल। ग्राह ओकर पएर धऽ लेलक। गज खिंचैत रहल धरती दिस, ग्राह खिंचैत रहल पानि दिस। दिन गेल, राति गेल। बल घटल। झुण्ड देखलक, धूल उड़ेलक, गर्जना केलक, मुदा ग्राह पानिमे छल; पानि ओकर पक्षमे छल।’

बटुकनाथ हरिहरनक पोती पूछली — ‘गज बचल?’

बा कहलखिन — 'कथामे बचल। मुदा जे सुनैत अछि, ओकरा ई बुझबाक रहैत अछि जे गज के छल, ग्राह के छल, आ पानि के छल।'

बूढ़बा भूत हँसि उठलाह। 'आ गढ़ नारिकेलमे तेसर प्रश्न सेहो अछि — गज जकरा पुकारलक, ओ अबैत अछि कि नहि? आ जँ अबैत अछि, तखन कोन रूपमे?'

अनन्या कागच पर लिखली — गज। फेर लिखली — ग्राह। फेर बीचमे पानि बनौली। ओ पानि पर छोट-छोट नाम लिखए लगली। उज्ज्वल। सरयू। नन्द। अनुपस्थित। तीस। तीन सय। म्यूल खाता। श्वास। देह। निजता।

चन्द्रपाल बत्राक बेटा ओहि कागच दिस देखैत रहल। ओकरा अपन बापक मोबाइल मोन पड़ल, जाहिमे एक बार खेलक चिन्ह खुलल छल आ तकर नीचाँ लाल रंगमे लिखल छल — 'आइ जीतू।' ओहि राति ओकर पिता हँसैत छल। आइ ओकरा बुझाइत छल जे 'जीतू' शब्द सेहो ग्राहक दाँत भऽ सकैत अछि।

लाउ किन-हंगक परिवारक लड़की, जकर नाम मेइ-लता राखल गेल छल — कारण ओकर भारतीय आया ओकरा बालपनमे लता कहैत छल — पूछली, "पानि तँ ग्राहक घर भेल, गज बाहरी। तखन गज हारत नहि?"

बा ओकरा देखलखिन। 'जकर घर पानिमे अछि, से केवल घरक कारण सही नहि भऽ जाइत। कखनो-कखनो घर स्वयं अपराधक संरक्षण बनि जाइत अछि।'

एहि वाक्य पर चन्ना गाछीमे पात हिलल। कमला-बलानक दूर धार ओहि क्षण बिनु बयार चमकि उठल।

बूढ़बा भूत बच्चा सभकेँ मैदानमे उतरबाक इशारा केलनि। नियम सरल छल। एक बच्चा गज बनत, एक ग्राह। गज धरतीक रेखा पार करए चाहत, ग्राह पानिक गोलसँ ओकर पएर पकड़ने रहत। मुदा खेलक असली कठिनाई ई छल जे गजकेँ केवल बलसँ नहि, नाम लऽ कऽ आगाँ बढ़बाक छल। जँ ओ गलत नाम लेत, ग्राहक पकड़ि कसि जायत। जँ ओ सही नाम लेत, पानि कनी ढीला पड़त।

पहिने अनन्या गज बनली। हरिहरनक पोती ग्राह। अनन्या दौड़ि कऽ गोलमे पैसली, पएर पकड़ल गेल। पकड़ि ठण्ढा छल आ चिक्कन — जेना पानि स्वयं आङुर बनि गेल हो। ओ हँसली नहि। ओ बाजली — 'सरयू।' पकड़ि ढीला भेल। फेर — 'उज्ज्वल।' पानि कनी हटि गेल। फेर — 'नन्द आरुणि।' ग्राहक हाथ अपने आप काँपल। हरिहरनक पोती ओकर पएर छोड़ि देली।

बूढ़बा भूत रोकलनि — 'नियम तोड़लहुँ।'

हरिहरनक पोती कहली — 'हमरा ग्राह नहि बनएबाक अछि।'

बूढ़बा भूत गम्भीर भेलाह — 'तखन अहाँ गज बनू।'

ओ नेनी गज बनली। चन्द्रपाल बत्राक बेटा ग्राह। नेनी पानिक गोलमे पैसली। बत्राक बेटा ओकर पएर पकड़लक। ओ बाजली — 'प्रक्रिया।' पकड़ि कसि गेल। ओ बाजली — 'कानून।' पकड़ि आओर कसि गेल। ओ डरि गेली। फेर अनन्या फुसफुसा कऽ कहली — 'नाम।'

हरिहरनक पोती आँखि मूनली। ओकरा अपन बाबाक कहल 'सभ किछु छोड़ब' मोन पड़ल। ओ बाजली — 'जे घरक पएर मरल पएर पर बनल, से घर राति चलैत अछि।'

ई नाम नहि छल, मुदा सत्य छल। पानि एकाएक चुप भऽ गेल। बत्राक बेटा हाथ छोड़ि देलक। ओ कहलक — 'हमरा घरमे कोनो नाम नहि कहल जाइत। केवल फाइल नम्बर कहल जाइत अछि।'

बा धीरे सँ कहलखिन — 'फाइल नम्बर ग्राहक भाषा अछि। नाम गजक साँस।'

एहि बीच दूर शहरमे सत्यव्रत मेहता अपन मेज पर बैसल छलाह। अदालतक कागच सभ बन्द। सरकारी निवासक खिड़कीसँ शहरक इजोत देखाइत छल, मुदा हुनका ओ इजोत नहि, पानिक चमक जेकाँ लगैत छल। हुनका सोझाँ एक पुरान पुस्तक खुलल छल — गज-ग्राह आख्यान। मुदा ओ कथा पढ़ि नहि रहल छलाह; कथा हुनका पढ़ि रहल छल।

पुस्तकमे लिखल छल जे गज संकटमे पुकारलक। सत्यव्रत रुकि गेलाह। हुनका लगल जे एहि उपन्यासमे कोनो गज नहि पुकारलक। मजदूर सभक मुँह पानिमे भरल गेल। उज्ज्वलक मुँह स्क्रीनमे अटकल। मीरा कैँ निजता बचएबाक लेल आवाज दबए पड़ल। देविका कैँ भाइक नाम कहबामे पुलिसक भाषा डरबैत रहल। गज-ग्राह आख्यान अधूरा अछि जँ पुकारबाक अधिकार छीनि लेल जाए।

सत्यव्रत मेहता पहिल बेर बुझलाह जे हुनकर अन्तिम भूमिका उद्धारक नहि। ओ देवता नहि, वकील नहि, सरकारक मुख नहि। ओ ओहि लोक जेकाँ घुरताह जे स्वीकार करए — 'अहाँ सभ पुकारि नहि सकलहुँ, कारण हम सभक व्यवस्था कान बन्द कऽ लेने छल। आब हम सुनए आयल छी।'

हुनका मेज पर एक कागच पड़ल छल — त्यागपत्र नहि, स्वीकार-पत्र। ओहिमे लिखल छल — 'जे कागच पर राज्य चुप रहल, ओ कागच पर हमर हस्ताक्षर अपराधक भारमे सहभागी अछि।' सत्यव्रत कलम उठेलाह। हाथ काँपल। चन्ना गाछी बहुत दूर छल, मुदा पातक सरसराहट खिड़की धरि आबि गेल।

ओ हस्ताक्षर नहि केलाह। हुनका बुझल जे जल्दीमे लिखल स्वीकारोक्ति सेहो अपनाकेँ बचाबयबला कागच भऽ सकैत अछि। ओ कागच मोड़ि जेबमे रखलनि। अन्तमे ओ खाली हाथ नहि, मुदा कागचक विजय लऽ कऽ सेहो नहि आओताह। ओ आएताह ओ कागच लऽ कऽ जे हुनका स्वयंकेँ कटघरामे ठाढ़ करत।

गढ़ नारिकेलमे खेल चलि रहल छल। एहि बेर बत्राक बेटा गज बनल। मेइ-लता ग्राह। बत्राक बेटा पहिने जोरसँ छूटए चाहलक। मेइ-लता पकड़ि लेली। ओ बाजल — 'प्रतिशत!' पकड़ि कसि गेल। 'सिग्नल!' पकड़ि कसि गेल। 'कमीशन!' पानि ओकर घुटना धरि चढ़ि गेल।

ओ डरि कऽ कहलक — 'हमरा नाम नहि अबैत।'

देविका, जे दूरसँ देखैत छली, आगाँ आयली। ओकर आवाज कठोर नहि छल। 'तोहर नाम तँ अछि। पहिने अपन नाम कह।'

बत्राक बेटा धीरे सँ अपन नाम कहलक — 'आर्यन।'

पानि ढीला भेल। ओ चकित भेल। फेर देविका कहली — 'आब ओ नाम कह जकर पिताक खेलमे लोक गेल।'

ओ चुप। ओकर मुँह सूखि गेल। ओकरा अपन पिता सिखौने छल — 'कखनो स्वीकार नहि।' मुदा चन्ना गाछीमे अस्वीकार करैत-करैत साँस घटैत अछि। अन्तमे ओ बाजल — 'उज्ज्वल झा।'

मेइ-लताक हाथ ढीला पड़ल। पानि पाछाँ हटल। बत्राक बेटा कानल नहि, मुदा ओकर चेहरा एहन भेल जेना ओ पहिल बेर अपन पिताक घरसँ बाहर निकलल हो।

बा कहलखिन — 'गज-ग्राह आख्यानमे उद्धार ओहि दिन होइत अछि जखन गज देवता नहि, नाम पुकारैत अछि।'

बूढ़बा भूत असहमतिमे गरदनि हिलेलनि — 'नहि, जानकी। उद्धार ओहि दिन होइत अछि जखन ग्राह सेहो अपन पकड़िक इतिहास बुझैत अछि। नहि तँ गज छूटि जाएत, ग्राह फेर दोसर पएर पकड़त।'

ई सुनि पनिडुब्बी पोखरिसँ पहिल बेर आवाज देलनि। हुनकर आवाज केशक भीजल लट जेकाँ लसलस छल — 'ग्राह सेहो भूखक कैदी होइत अछि। मुदा भूखकेँ धर्म बना देब अपराध अछि।'

चन्ना गाछीमे सन्नाटा। बच्चा सभ बुझि नहि सकल, मुदा ओ सभ वाक्य कागच पर लिखि लेलक। बच्चा सभ सभ किछु तात्कालिक नहि बुझैत; किछु बात ओ सभ भविष्य लेल लिखि राखैत अछि।

दूर शहरमे बटुकनाथ हरिहरन ट्रेनक टिकट देखैत छल। ओ गढ़ नारिकेलसँ घुरि चुकल छल, मुदा टिकट पर यात्रा-तिथि बदलैत जा रहल छल। प्रत्येक दिनक तिथि। ओकरा बुझाइत छल जे यात्रा समाप्त नहि भेल। ओकर मोन चन्ना गाछीमे टाँगल अछि। आइ राति ओकर सपनामे ओ स्वयं ग्राह होएत आ ओकर पोती गज।

चन्द्रपाल बत्राक मोबाइल पर एक नव खेल खुलल। नाम — 'गज बनू'। ओ बन्द करए चाहलक। बन्द नहि भेल। स्क्रीन पर नियम आयल — 'पहिल चरण: अपन नाम कहू।' ओ फोन फेकलक। फोन फर्श पर खसि कऽ फूटल नहि। स्क्रीन पर उज्ज्वलक नाम चमकैत रहल।

राघव सिग्नलक चुप्पीमे एक पात खसल। पात पर केवल एक वाक्य — 'साँस अदृश्य सन्देशसँ नहि, खुल्ला नामसँ चलैत अछि।' ओ पात खिड़कीसँ भीतर कोना आयल, केओ नहि बुझल।

लाउ किन-हंग समुद्रक कात बैसल छल। ओकरा हाथी नहि देखाइत छल, केवल एक विशाल छाह जे काँचक मीनार पर सूँड़ राखि रहल छल। समुद्रसँ एक ग्राह निकलल आ ओ छाह केँ नहि, ओकर अपन पएरकेँ धऽ लेलक। ओ चिचिआयल नहि। ओकर आवाज प्रतिशतमे अटकल।

गढ़ नारिकेलमे खेल समाप्त नहि भेल। बच्चा सभ थाकि गेल, मुदा पानि थाकल नहि। पानि गोलमे घूमैत रहल। बूढ़बा भूत कहलाह — 'अठारहम साँसक पाठ लिखू।'

अनन्या कागच पर लिखली — 'गज बलवान छल, मुदा नाम बिनु ओकर बल पानिमे अटकल। ग्राह जलक मालिक छल, मुदा इतिहास बिनु ओकर पकड़ि श्राप बनल। जे सुनए आएत, से देवता नहि, साक्षी होएत।'

बा अन्तिम पंक्ति जोड़लीह — 'सत्यव्रत मेहता अन्तमे तलवार लऽ कऽ नहि आएताह। ओ अपन कान लऽ कऽ आएताह। जे व्यवस्था पीढ़ी धरि नहि सुनलक, ओकर पहिल प्रायश्चित्त सुननाइ होएत।'

चन्ना गाछीक पात सभ एहि पंक्ति पर झुकि गेल। कागच उड़ल नहि। कागच धरती पर रहल। कारण ई अध्याय आकाशक कथा नहि, पएरक कथा छल — ओ पएर जकरा ग्राह पकड़ैत अछि, आ ओ पएर जे नामक बलसँ धीरे-धीरे पानि सँ बाहर अबैत अछि।

अठारहम साँस समाप्त भेल नहि। ओ केवल ओहि हाथी जेकाँ थाकि कऽ रुकल जे एखनो पुकारबाक सही शब्द ताकैत अछि। आ चन्ना गाछीमे सभ जन — भूत, प्रेत, बच्चा, धूर्त सभक मोन, पात, पानि — सुनबाक अभ्यास करए लगल। कारण अगिला साँसमे पुकार होएत। आ पुकार जखन सचमुच होइत अछि, तखन गढ़ नारिकेलमे कोनो कान निष्पाप नहि रहैत।

लोकगीत: गजक पएर, ग्राहक दाँत

लोकधुन: लोक-आख्यान गीत

सुनू हे पुकार, गजक पुकार सुनू हे,
तलवार नहि—कान लऽ कऽ ठाढ़ हएब बूझू हे।

गजक पएर जलमे अटकल, ग्राह पकड़लक जोर,
छोड़ौनिहार तेसर हाथ सुनलक ओकर शोर।
लाभ छोड़लाक बाद देखल खिंचनिहार जाल,
पीढ़ी-पीढ़ीक पानि भीतर दाँत रहल विकराल।
तलवार नहि, कान लऽ मेहता एक दिन आएत,

व्यवस्थाक पहिल प्रायश्चित्त—चुप पुकार सुनाएत।
कागच धरतीपर रहल, कथा पएरक थीक,
नामक बलसँ जलसँ उठै थाकल जीव अनीक।
गज पुकारक शब्द ताकै, गाछी कान बनल,
अगिला साँसमे सभ मौनक अपराध खुलल।

कागच धरती पर रहल, कथा पएरक ताल।

❖

अध्याय ४८

पुकार

बाजब जनम भरि होइ छै; सुनबाक बेर एलापर कान धूलिसँ भरल भेटै छै।

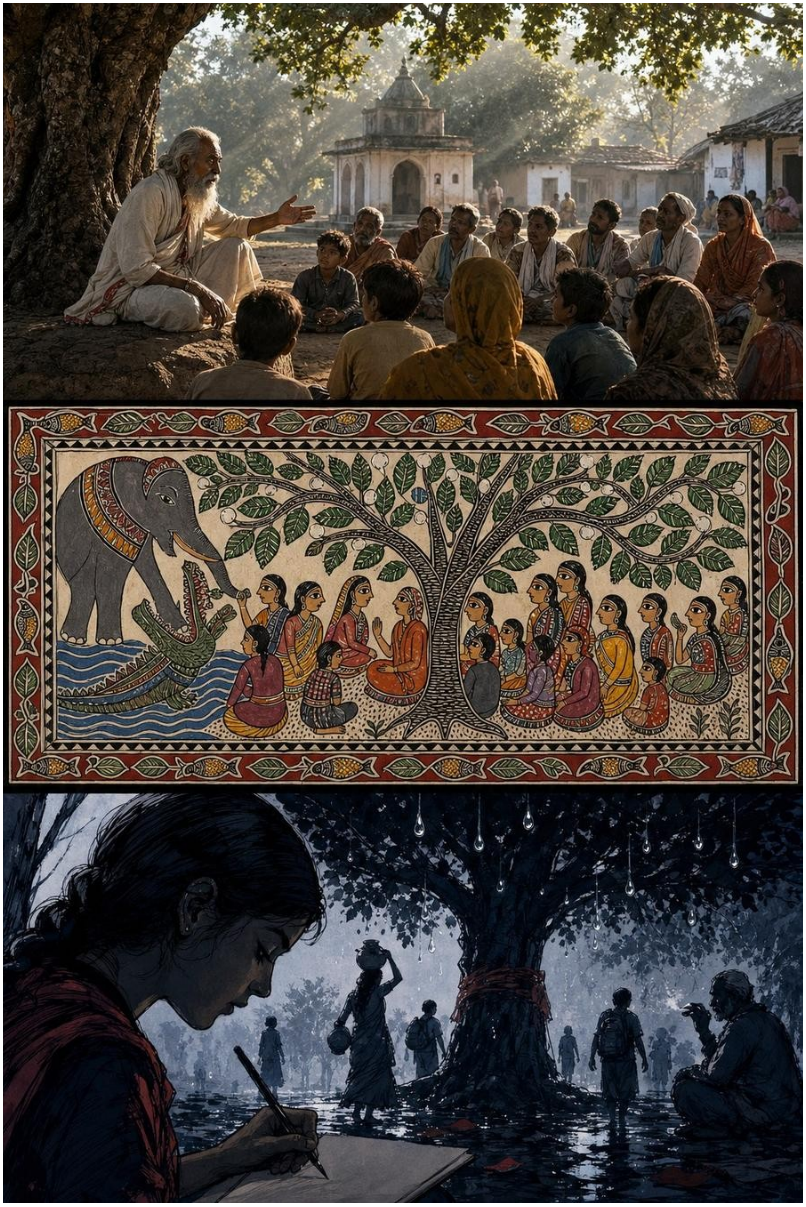

अध्यायारम्भ लोकगीत: पुकार लेल कान

लोकधुन: करुण पुकारक आशा-लय

दिअ हे कान, पुकारकेँ कान दिअ हे,
उत्तरसँ पहिने पूरा-पूरा मान दिअ हे।

जनम भरि जे पुकारल, ओकरा कान दिअ,
बीचमे उत्तर नहि, पहिने पूरा मान दिअ।
सुनबाक समय सेवा, सुनबाक धैर्य दान,
एक ध्यानसँ बचि सकै कतेको टूटल प्राण।

गाममे ‘सुनबाक घर’ बनाउ, खुलल रहय द्वार,
कियो रोअय, कियो कहय, भेटय सहारा अपार।
पुकार लेल कान जागल तँ मौन नहि मरत,
सुनल स्वरक आदरसँ न्याय धीरे उतर।

आधा सुनल बात सँ आधे घाव भरए,
धीरज धऽ कऽ सुनल स्वर भीतर धरि उतरए।
गाम-गाम 'सुनबाक घर', खुलल रहए ओसारा,
रुसल-कानल सभकेँ भेटए बैसारक सहारा।

❖

अठारहम साँसमे गज अपन पएर पानिमे अटकल देखि लेलक, ग्राह अपन पकड़िक इतिहास बूझए लगल, आ चन्ना गाछीमे सभ जन सुनबाक अभ्यास करए बैसल। सुननाइ गढ़ नारिकेलमे कोनो छोट काज नहि अछि। एतय लोक जनम भरि बजैत रहैत अछि, मुदा जखन सुनबाक बेर अबैत अछि तखन कान सभमे पुरान राखल डर, लाभ, जाति, पद, शिक्षा, पराजय, जीतक कागच आ अपमानक धूलि भरि जाइत अछि। तेँ बूढ़बा भूत कहलाह — आइ कबड्डी नहि, आइ पुकार।

ओहि भोर चन्ना गाछीक ओस बहुत काल धरि नहि सूखल। दिन चढ़ि गेल, गामक स्त्री सभ गोबर-पानि कऽ लेलीह, बच्चा सभ स्कूलक बस्ता पीठ पर लटका लेने निकलल, बूढ़ सभ दलान पर बीड़ी सुलगेलक, मुदा चन्ना गाछीक पात पर ओस टिकले रहल। पातक नोक पर छोट-छोट बून्द सभ लटकैत छल, जेना ककरो नाम उच्चारल जाएबाक प्रतीक्षामे हो।

अनन्या खाली कागच नहि, एहि बेर खाली कटोरा लऽ कऽ आयली। बा ओकरा देखिते बुझि गेलीह जे नेनी खेलक अगिला नियम खोजि लेने अछि। ओ कटोरा चन्ना गाछी बीच धरल गेल। ओकर भीतर पानि नहि छल। बा पूछलखिन — 'खाली किए?'

अनन्या कहली — 'जँ पुकार भरल कटोरामे होएत, तँ आवाज अपन चेहरा देखैत रहि जाएत। खाली कटोरा आवाजक घर होइत अछि।'

बूढ़बा भूत डारिसँ नीचाँ उतरलाह। हुनकर आँखिमे बारह सय बरखक थाकल उजास छल। ओ कटोरा लग कान राखलनि। खाली कटोरामे सेहो बहुत किछु सुनाइ पड़ैत अछि — जकरा कान नहि, ओ खालीपन कहैत अछि; जकरा कान अछि, ओ इतिहास कहैत अछि।

पहिल पुकार सरयूक आयल। ओहि स्त्री-मजदूरक, जेकर नाम पुलक दफ्तरमे कहियो पूरा नहि लिखाएल। कहियो 'सरु', कहियो 'स्त्री', कहियो 'अनुपस्थित', कहियो 'काज छोड़ि चलि गेल'। ओकर आवाज कटोरा सँ नहि, ओसक बून्दसँ आयल। 'हमर नाम केओ गलत लिखलक, तखनो हम रहलहुँ। गलत नामसँ रोटी नहि भेटल, मुआवजा नहि भेटल, शोक नहि भेटल। मुदा गलत नामसँ मृत्यु छोट नहि होइत।'

बच्चा सभ एक संग कागच पर लिखए लगल — सरयू। ककरो हाथ सँ 'स' टेढ़ भेल, ककरो 'यू' लम्बा, ककरो मात्रा चूकए लगल। बा रोकलीह नहि। ओ कहलखिन — 'नाम पहिल बेर लिखबामे कखनो-कखनो काँपैत अछि। जे काँपैत नाम अछि, ओहिमे प्राण अछि।'

दोसर पुकार उज्ज्वल झाक आयल। ई पुकार पानिसँ नहि, एक बन्द मोबाइलक अन्हारसँ आयल। देविका साह ओतय पहुँचल छली। ओकर हाथमे भाइक पुरान फोन छल, जे महीना भरिसँ चालू नहि भेल छल। आइ बिनु बटन दबौने स्क्रीन झिलमिलेलक। कोनो खेल नहि खुलल। केवल एक पंक्ति — 'हम हारल पैसा नहि छी; हम घरक भोर छी।'

देविका फोन धरती पर राखि देली। ओ कानि नहि रहल छली। ओकर आँखिमे ओहि लोकक दृढ़ता छल जे रोदन केँ काजमे बदलि चुकल हो। 'हमर भाइ केँ ई सभ खेल खा गेल,' ओ कहली, 'मुदा हम ओकर नाम खेलमे नहि, पाठशालामे लिखब।'

चन्ना गाछीक पात सभ एहि वाक्य पर धीमे हिलल। हवा नहि छल। पात अपन स्मृतिसँ हिलैत छल।

तेसर पुकार मुन्ना पासवानक आयल। ओ जीवित छल, मुदा ओकर बैंक-खाता मरल लोक सभसँ बेसी भूतहा छल। ओकर नाम अदालतमे अभियुक्त, बैंकमे लाभार्थी, पुलिसक कागचमे

संदिग्ध, गाममे बदनाम, आ घरमे डेरायल बेटा। ओ सोझाँ नहि आयल। ओकर आवाज चन्ना गाछीक बाहरी घेरसँ आयल — ‘हमरा बूझल नहि छल जे हमर अंगूठा ककर लाश उठाओत।’

अनन्या ओकरा भीतर आबए कहली। मुन्ना काँपैत-काँपैत आयल। ओकर पएर जमीन छू रहल छल, मुदा छाह पाछाँ छूटि रहल छल। बूढ़बा भूत ओकर छाह उठा कऽ ओकर पएर लग राखलनि — ‘जतय नाम फँसल, ओतय छाह छूटैत अछि। बाजू।’

मुन्ना कहलक — ‘हम कमिशनक लेल खाता खोललहुँ। सोचलहुँ दू हजार भेटत। फेर पुलिस आयल। जकरा करोड़ गेल, ओकर नाम नहि; हमर नाम। जे हमरा कहल, ओ शहर। जे शहरकेँ कहल, ओ विदेश। जे विदेशमे अछि, ओकर चेहरा नहि। हमर चेहरा अछि, तेँ हम अपराधी।’

बा ओकर माथ पर हाथ रखलीह — ‘अपराध जँ बुझि कऽ कएल गेल, तकर बोझ अलग। अन्हारमे फँसि गेल लोकक बोझ अलग। मुदा अन्हारमे फँसल लोक जँ दोसरकेँ अन्हार बुझाबए लागए, तँ ओ बोझ पाठ बनि जाइत अछि।’

मुन्ना ओहि दिन सँ स्क्रीनक विरुद्ध पाठशालाक पहिल स्वयंसेवक बनल। ओ बच्चा सभकेँ अपन गलती सुनाओत। अपन गलती कहनाइ ओकर सजायो छल, ओकर मुक्ति सेहो।

एहि पुकार सभक बीच दूर दिल्लीमे सत्यव्रत मेहता अपन सरकारी आवासक पुस्तकालयमे बैसल छलाह। हुनका सोझाँ अनेक फाइल छल — सीलबन्द, खुलल, चिह्नित, अस्वीकारित, पुनर्विचाराधीन। हुनकर मेज पर एक छोट पीतल घण्टी छल जे सामान्यतः सेवककेँ बजाओल जाइत। ओहि दिन घण्टी अपने बाजल। एक बेर। फेर चुप।

सत्यव्रत मेहता घण्टी दिस तकलनि। हुनका अपन जीवनक सभ सँ कठिन दिन मोन पड़ल — ओ दिन जखन अदालतमे ओ राज्यक लिखल पंक्ति पढ़ैत-पढ़ैत रुकि गेल छलाह। लोक सभ बुझने छल जे ओ साहस छल। मुदा सत्यव्रत जानैत छलाह — ओ साहस सँ बेसी थाकल आत्माक विवशता छल। लोक कतेक बेर झूठ पढ़त? एक दिन कंठ स्वयं बन्द भऽ जाइत अछि।

घण्टी दोसर बेर बाजल। एहि बेर ओकर ध्वनि घण्टी जेकाँ नहि, कटोरा जेकाँ आयल — खाली कटोराक भीतरक पुकार। सत्यव्रत उठलाह। खिड़की खोललनि। दिल्लीक धूलि, गाछ, सुरक्षा-कर्मी, लाल बत्ती, सरकारी कार — सभ ओहि ठाम। मुदा हवामे कमला-बलानक कछारक माटिक गन्ध।

हुनका मेज पर राखल एक पुरान कागच उड़ि कऽ जमीन पर पड़ल। ई ओ शपथपत्र छल जे कहियो दाखिल नहि भेल। ताहि पर हुनकर नोट छल — ‘नाम-सूचीक सत्यापन आवश्यक।’ ओहि नोटक नीचाँ आइ नव अक्षर उगि आयल — ‘सत्यापन नहि, श्रवण।’

सत्यव्रत कुर्सी पर बैसि गेलाह। ओ पहिल बेर बुझलनि जे फाइल पढ़नाइ आ नाम सुननाइ दू अलग काज अछि। फाइलमे लोक वस्तु बनैत अछि। नाम सुनलाक बाद लोक देह, घर, आवाज, भोर, अपमान, भूख आ प्रतीक्षा बनि जाइत अछि। न्यायशास्त्र हुनका बहुत किछु सिखेने छल, मुदा प्रतीक्षाक व्याकरण नहि।

ओहि राति हुनका निन्न नहि आयल। निन्नक ठाम एक लम्बा गलियारा आयल। गलियाराक दुनू ओर अलमारी। प्रत्येक अलमारी पर लिखल — ‘स्थगित’। एक अलमारी पर — ‘मृतक’। दोसर पर — ‘अनुपस्थित’। तेसर पर — ‘डिजिटल विवाद’। चारिम पर — ‘वाणिज्यिक रहस्य’। पाँचम पर — ‘राष्ट्रीय हित’। छठम पर — ‘निजता’। सातम पर — ‘अपर्याप्त साक्ष्य’। गलियाराक अन्तमे एक नेनी बैसल छल। ओ अनन्या नहियो भए सकैत छल, आ सभ बच्चा सेहो।

नेनी पूछली — ‘अहाँक कान कतय अछि?’

सत्यव्रत कहलनि — ‘एतय।’ ओ अपन कान छूलनि।

नेनी गरदनि हिलेली — ‘ई आवाज सुनए लेल अछि। नाम सुनए लेल कान भीतर होइत अछि।’

सत्यव्रत जागि गेलाह। भोरक चारि बाजल छल। ओ सुरक्षा अधिकारीकेँ फोन नहि केलनि, सरकारी गाड़ी नहि मँगेलनि, सचिवकेँ सूचना नहि देलनि। ओ एक छोट झोरामे दू जोड़ी कपड़ा, एक नोटबुक, एक स्याहीकलम, आ ओ पुरान शपथपत्र रखलनि। फेर ओ दरबाजा खोलि बाहर निकललाह। सुरक्षा-कर्मी हड़बड़ा गेल। ‘महोदय, गाड़ी?’

सत्यव्रत कहलनि — ‘नहि। आइ हम पैदल शुरू करब।’

पैदल दिल्लीसँ गढ़ नारिकेल नहि पहुँचल जा सकैत। मुदा किछु यात्राक पहिल डेग पैदल होइते अछि, ताकि पदक भार उतरि जाए। स्टेशन धरि ओ पैदल चललाह। बाटमे हुनका कतेक लोक चिन्हलक, कतेक नहि। जे चिन्हलक, सोचलक — कोनो पैघ लोक साधारण कपड़ामे। जे नहि चिन्हलक, ओ मात्र एक थाकल बूढ़ लोक देखलक। सत्यव्रत एहि दोसर दृष्टिसँ हलुक अनुभव केलनि।

ट्रेनमे हुनकर आरक्षित स्थान नहि छल। ओ सामान्य डिब्बामे चढ़ि गेलाह। भीड़ छल। एक युवक मोबाइलमे खेल देखैत, एक स्त्री बच्चाकेँ दूध पियबैत, एक बूढ़ा मुकदमेबाजी पर गप्प करैत, दू मजदूर गठरी पर माथ राखि सुतल। सत्यव्रत दरबाजा लग ठाढ़। ओहि क्षण हुनका बुझाइत छल जे देशक न्याय एही डिब्बामे ठाढ़ अछि — टिकट सहित, टिकट बिनु, डर सहित, थकान सहित।

एक बच्चा हुनका दिस देखलक। ‘बाबा, अहाँ कतय जाइत छी?’

सत्यव्रत उत्तर देलनि — ‘गढ़ नारिकेल।’

बच्चा कहलक — ‘ओतय की अछि?’

सत्यव्रत बहुत काल बाद कहलनि — ‘कान।’

बच्चा हँसल। ओकर माय ओकरा चुप करेली। मुदा डिब्बाक छत पर लटकल पंखा ओहि उत्तर पर एना घूमल जेना ओ चन्ना गाछीक पात हो।

एम्हर गढ़ नारिकेलमे पुकारक क्रम चलि रहल छल। नाम सभ केवल मृतकक नहि छल। एक दिन मीरा चन्ना गाछीमे ठाढ़ भऽ कहली — ‘जे हमरा डर देखाबए चाहलक, ओकरा कहल जाउ — हमर प्रेम अपराध नहि, ओकर ब्लैकमेल अपराध।’ पात सभ एहि वाक्य केँ अलग सँ रखलक। कारण निजताक पुकार सभसँ धीमा होइत अछि, मुदा एक बेर निकलि गेलाक बाद बहुत दूर धरि जाएत।

सौम्या रामनाथन पुरान कागच लोकभाषामे उतारैत छली। ओ कहैत छली — ‘अंग्रेजीमे लिखल झूठक गरिमा बेसी लगैत अछि। मैथिलीमे उतारू तँ झूठक पेट देखाइ पड़ैत अछि।’ ईरा विदेशसँ आबि बच्चा सभकेँ बतबैत छली जे सभागारक ताली आ गामक चुप्पीमे कतेक अन्तर। गोप कुमार चुप रहल। ओकर चुप्पी आब दोष नहि, तप जेकाँ छल।

बूढ़बा भूत पुकार सुनैत-सुनैत थाकि गेलाह। भूत सभ थाकैत नहि, मुदा सुनबाक थकान देहक नहि, आत्माक होइत अछि। ओ पनिडुब्बी केँ कहलनि — ‘आइ बहुत नाम आयल।’

पनिडुब्बी पोखरिसँ उत्तर देलनि — ‘नाम पानिमे उतरैत अछि तखन पानि भारी होइत अछि। मुदा भारी पानि गहींरो होइत अछि।’

साँझ ढलि रहल छल। कमला-बलानक कछार पर लालिमा नहि, हल्दी जेकाँ फीकि उजास पसारल। ओहि समय दूर रस्ता पर एक लोक देखाइ देलक। ओकर हाथमे ने तलवार, ने

आदेश, ने माइक, ने झण्डा। केवल एक झोरा। ओ धीरे-धीरे अबैत छल, जेना प्रत्येक डेग पर अपन पुरान पद उतारैत हो।

अनन्या ओकरा पहिने देखली। 'के आबि रहल अछि?'

बा आँखि मिचमिचौलीह। 'जे सुनबाक अभ्यास करए आयल अछि।'

सत्यव्रत मेहता चन्ना गाछी लग पहुँचलाह तँ केओ ताली नहि बजेलक। केओ प्रणाम नहि केलक। केओ हुनका मंच नहि देलक। ओहि ठाम कोनो मंच छलो नहि। खाली कटोरा बीचमे। कागच पर नाम। पात पर ओस। बच्चा सभ गोलमे। भूत सभ पाछाँ। लोथ दर्शक नहि, सहभागी।

सत्यव्रत झोरा जमीन पर राखलनि। पुरान शपथपत्र बाहर निकाललनि। ओ ओकरा खोललनि नहि। पहिने ओ अपन दुनू कान हाथसँ छूलनि, फेर हाथ जोड़ि कहलनि — 'हम बहुत देर सँ आएल छी।'

ककरो उत्तर नहि। चन्ना गाछीमे मौन सेहो उत्तर होइत अछि।

तखन ओ फेर कहलनि — 'हमरा पढ़बाक आदत अछि। मुदा आइ हम सुनब। जे नाम कहय चाहए, कहू। जे चुप रहय चाहए, चुप रहू। हम चुप्पीक सेहो गवाही लिखब।'

एहि वाक्य पर खाली कटोरामे पहिल बेर पानि अपने भरए लगल। पानि ऊपरसँ नहि ढरल; कटोराक तलसँ उगल। पानि उगबाक कोनो धार-ध्वनि नहि छल; बस कटोराक पीतल कनी-कनी गुनगुनाए लागल, जेना ककरो कण्ठ बहुत दिन बाद खुजल हो। ओ पानि साफ नहि छल, मटमैला। मुदा ओहि मटमैल पानिमे आकाश साफ देखाइत छल।

बा अनन्याक कानमे कहलखिन — 'देखलहुँ? सत्यव्रत देवता नहि। ओ पानि नहि आनल। ओ केवल कटोरा खाली मानि लेलक। एहि सँ पानि उगलल।'

सत्यव्रत मेहता ओहि मटमैला पानि दिस देखैत रहलाह। हुनका ओहिमे अदालतक फर्श, सीलबन्द आवरण, लाल बत्ती, सरकारी भाषा, अपन हस्ताक्षर, आ हजारो लोकक अपठित नाम देखाइत रहल। ओ पहिल नाम सुनबाक लेल माथ झुका देलनि।

सभसँ पहिने पातसँ आवाज आयल — 'सरयू।'

सत्यव्रत लिखलनि — सरयू। फेर रुकलाह। पूछलनि — 'पूरा नाम?'

पात हिलल। उत्तर आयल — 'नाम पूरा तखन होएत जखन ओकर घरक नाम, ओकर देहक श्रम, ओकर बच्चाक प्रतीक्षा, आ ओकर मुआवजाक झूठ सेहो लिखब।'

सत्यव्रत पेन रोकि देलनि। एहन प्रविष्टि कोन कानूनक फॉर्ममे फिट होएत? ओ बहुत काल सोचलनि। फेर नोटबुकक पहिल पन्ना पर शीर्ष लिखलनि — 'नामक पूरा स्वरूप'।

बूढ़बा भूत मुस्की देलनि। गढ़ नारिकेलमे विधि शास्त्रक नव अध्याय ओहि साँझ शुरू भेल — धारा नहि, श्रवण; आदेश नहि, अभिलेख; विजय नहि, स्वीकार।

राति गहींर होइत गेल। पुकार सभ अबैत रहल। किछु नाम स्पष्ट, किछु आधा, किछु केवल सिसकी। सत्यव्रत सभ लिखैत रहलाह। जखन हाथ थाकल, अनन्या पेन पकड़ली। जखन अनन्या थाकली, देविका। जखन देविका थाकली, मुन्ना। जखन मुन्ना थाकल, हरिहरनक पोती। जखन पोती थाकली, बत्राक बेटा।

ई देखि कऽ चन्ना गाछीक भूत सभक आँखि उज्जर सँ उज्जरतर भऽ गेल। धूर्त सभक सन्तति जे हाथ नाम लिखैत छल, ओहि हाथसँ हुनकर बापक अपराध कटैत नहि छल; मुदा ओहि हाथसँ भविष्यक पकड़ि ढीला पड़ैत छल।

आधी राति सत्यव्रत नोटबुक बन्द नहि केलनि। ओ खुल्ला छोड़ि देलनि। कहलनि — 'ई अधूरा रहत। जतेक नाम आएत, लिखल जाएत। न्याय जँ पूर्ण नहि, तँ अभिलेख कम सँ कम खुल्ला रहए।'

बा कहलखिन — 'आब अहाँ सुनलहुँ। आब अहाँक पुकार?'

सत्यव्रत चौंकलाह। 'हमर?'

बा कहलखिन — 'जे सुनैत अछि, ओकरो भीतर अटकल किछु होइत अछि।'

सत्यव्रत बहुत काल चुप रहलाह। फेर ओ खाली कटोरा दिस झुकि कहलनि — 'हम ओ सभ दिनक क्षमा नहि माँगि सकैत जखन हम चुप रहलहुँ, कारण क्षमा माँगबो कखनो-कखनो अपने कैँ हलुक करबाक चतुराई बनि जाइत अछि। हम केवल एतबा कहैत छी — जतेक बेर हमर मौन झूठक सहारा बनल, ओ सभ मौनक नाम सेहो एहि अभिलेखमे लिखू।'

अनन्या पूछली — 'मौनक नाम होइत अछि?'

सत्यव्रत कहलनि — 'होइत अछि। सभ सँ भारी नाम।'

बच्चा सभ कागच पर लिखलक — मौन। ओकर नीचाँ लिखलक — सत्यव्रत मेहता। सत्यव्रत रोकलनि नहि। हुनकर आँखिसँ पानि खसल। ओ पानि कटोरामे नहि, धरती पर खसल। जतय बून्द खसल, ओतय माटि पर एक छोट कारी टीक बनि गेल, जेना अभिलेखक बाहरो एक हस्ताक्षर भेल हो। धरती ओहि पानिकैँ पी गेल।

उन्नैसम साँस ओहि ठाम समाप्त नहि भेल। पुकारक सिलसिला चलैत रहल। केवल एतेक भेल जे गढ़ नारिकेलमे पहिल बेर कोनो पैघ विधि-पुरुष कान लऽ कऽ बैसल, आ मृतक सभ बुझल जे हुनकर आवाज अदालतक देबालसँ टकरा कऽ घुरत नहि, ककरो छातीमे उतरि रहत।

राति अन्तमे कबड्डी शुरू भेल। एहि बेर नियम सरल छल — जे साँस लेत, से नाम कहत। जे नाम कहत, से सुनत। जे सुनत, से भागत नहि। सत्यव्रत मेहता गोलक बाहर बैसल रहलाह। हुनका खेलब नहि छल। हुनका सुनबाक दण्ड देल गेल छल। आ ओ दण्ड ओहि राति हुनका वरदान जेकाँ लागल।

चन्ना गाछीक पात पर ओस फेर जमल। एक बून्द धीरे-धीरे खसल आ नोटबुकक खुल्ला पन्ना पर पड़ल। स्याही पसरल नहि। उनटा एक नव अक्षर बनल — 'पुकार'।

बूढ़बा भूत पात हिलेलनि। 'उन्नैसम साँस लिखू।'

अनन्या लिखली — 'जे पुकारैत अछि, ओकरा देवता नहि चाही; ओकरा एहन कान चाही जे अपना मौनक अपराधो सुनि सकए।'

सत्यव्रत मेहता ओहि वाक्य कैं पढ़लनि नहि। ओ केवल सुनलनि। कारण ओ आब धीरे-धीरे सीखि रहल छलाह जे किछु वाक्य आँखिसँ पढ़ल जाए तँ ज्ञान बनैत अछि; कानसँ सुनल जाए तँ पश्चात्ताप; आ हृदयसँ सुनल जाए तँ काज।

लोकगीत: पुकारकेँ कान

लोकधुन: करुण पुकार गीत

दिअ हे कान, पुकारकेँ कान दिअ हे,
उद्धार नहि—अपन चुप्पी चिन्हि लिअ हे।

जनम भरि बजलहुँ, सुनबाक बेर के आयल?
कान सभमे पद, लाभ, जातिक धूलि समायल।
देवता नहि चाही, एहन कान मात्र,
जे अपना मौनक अपराध सुनि सकए राति।
नाम आँखिसँ पढ़ल तँ ज्ञानक पात,

कानसँ सुनल तँ पछतावाक रात।
हृदय धरि उतरल तखन काज बनै,
पुकारक उधार सुननिहारपर चढ़ै।
हे सुननिहार, हमरा उद्धार नहि दियौ,
हमर आवाज सुनि अपन चुप्पी चिन्हियौ।

❖

अध्याय ४९

मौनक अभिलेख

सुनल आवाज उधार थीक— जे सुनलक, तकरे चुकता करबाक छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: सुनल बातक बही

लोकधुन: मौन-बही गीत

लिखू हे मन-बही, अनुमतिक मसि सँ लिखू हे,
सुनल कथाक मोती गरिमाक डिब्बा मे राखू हे।

कानमे लिखल बही कागचसँ गहींर,
सुनल बातक जिम्मेदारी ह्रदय करै गंभीर।
नाम, दिन, संदर्भ सहेजू, अनुमति संग लिखू,
ककर कथा कतेक खोलब—गरिमाक सीमा बुझू।

सुनल बात उधार सही, सेवा सँ चुकाउ,
विश्वासक कापी स्वच्छ राखि उचित ठाम पहुँचाउ।
कानक बही जखन ईमानक हाथमे रहत,
अनसुना जनक इतिहास सुरक्षित रूप गढ़त।

नाम-दिन-प्रसंग टाँकू, पन्ना साफ-सुथर,
ककर बात कतऽ खुजत—पूछि कऽ करू उजागर।
सुनल उधार सेवा सँ धीरे-धीरे सधाउ,
विश्वासक ई बही जनम भरि निर्मल चलाउ।

❖

उन्नैसम साँसमे पुकार आयल। बीसम साँसमे पुकारक हिसाब खुलल। गढ़ नारिकेलमे ई मानल जाइत अछि जे आवाज जखन कान धरि पहुँचि जाए, तखन ओ केवल आवाज नहि रहैत; ओ उधार बनि जाइत अछि। जे सुनलक, ओकरा ओहि उधारक चुकता करबाक रहैत अछि। सत्यव्रत मेहता राति भरि सुनलनि। भोर भेला पर हुनका बुझायल जे हुनकर कान भारी भऽ गेल अछि, जेना प्रत्येक नाम भीतर कोनो छोट पाथर बनि बैसि गेल हो।

कटोरा ओहि बुझाइ पर भारी भऽ गेल। कारण ओ खाली पानि सँ नहि, देह-पार भेल नाम सभक भार सँ भरल छल।

सत्यव्रत मेहता एहि बातकेँ पहिने कानूनक भाषामे राखए चाहलनि। ‘मरणोत्तर गरिमा’, ‘प्रतिपूरण’, ‘दायित्व’ — एहि शब्द सभ केँ ओ मनमे उलटैत-पलटैत रहलाह। मुदा चन्ना

गाछीमे ओ बुझलनि जे जखन देह नहि रहि जाए, तखन गरिमा अदालतक शब्द नहि; गरिमा ओ क्षण अछि जखन कोनो बच्चा पूरा नाम पढ़ि दैत अछि, बिनु डेरायल।

तेँ जलसमाधि केवल डूबि मरब नहि रहल। ओ देहक अन्त आ भीतरक बन्धन-मुक्तिक बीचक ओहि असह्य पुलक नाम भेल, जाहि पर चलैत मनुष्य कानैत सेहो अछि आ हलुक सेहो होइत अछि। जे मजदूर पानिमे खसल, ओ देहसँ हारल; मुदा ओकर नाम, जकरा ठेकेदार अनुपस्थित लिखि देलक, गोहिक दाँतक बाद नदीसँ बाहर आयल। देह समाप्त, नाम स्वतंत्र। सएह विरोधाभास एहि कथाक कलेजा अछि।

गज-ग्राहक आख्यान ओहि राति सँ चन्ना गाछीक पातमे फेर-फेर सुनाइ पड़ैत छल। गज शक्तिशाली छल, मुदा जलमे ग्राहक पकड़ि ओकर बलक घमण्ड तोड़ि देलक। जखन पएर छूटल नहि, तखन गर्व छूटल; जखन गर्व छूटल, तखन पुकार जन्मल। पुकार जन्मल तखन उद्धारक बाट खुलल। गढ़ नारिकेलमे गोहि सभ ग्राह नहि छल, देवदूत सेहो नहि; ओ सभ प्रकृतिक कड़ा दाँत छल। मुदा जकर देह ओ सभ चिबा गेल, ओकर भीतरक बान्हल पुकार कखनो-कखनो छूटि गेल।

गोहि सभ कोनो खेल नहि कएने छल। गढ़ नारिकेलक बूढ़ लोक कहैत छलाह जे गोहि जखन देह चिबैत अछि, तखन केवल हड्डी नहि टूटैत; देहसँ जे भय बान्हल रहैत अछि, जे कागचक झूठ देहपर बोझ बनि चिपकल रहैत अछि, जे नाम अपमानक कीचड़मे धँसल रहैत अछि, तकर गिट्ठऽ सेहो दाँत-दाँत खुलैत जाइत अछि। ई सुनबामे क्रूर लगैत छल, मुदा गढ़ नारिकेलक सत्य सभ पहिने क्रूर लगैत अछि, बादमे करुण।

चन्ना गाछीक भोर ओहि दिन अलग छल। सूर्य निकलल, मुदा उजास पातपर अटकि गेल। जेना दिन बाहर आयल, भीतर नहि। खाली कटोरा एखनो गाछी बीच राखल छल। ओकर भीतर पानि नहि छल, मुदा कटोराक तल भीजल छल। सत्यव्रत ओकरा उठबए चाहलनि। कटोरा उठल नहि। लोथ सभ गोल भऽ कऽ ओहि कटोरा चारूकात बैसल छल, जेना ई सभ छोट-छोट गोल देह न्यायालयक मोहर हो।

अनन्या पूछली — 'कटोरा एत्ते भारी किए भऽ गेल?'

बा कहलखिन — 'खाली वस्तु जखन सुनि लैत अछि, तखन भरल वस्तुसँ भारी भऽ जाइत अछि।'

सत्यव्रत अपन नोटबुक बन्द करए लगलाह। बूढ़बा भूत डारिसँ आवाज देलनि — 'एखन नहि। नाम लिखल गेल, मुदा मौनक नाम बाकी अछि।'

सत्यव्रत ठिठकि गेलाह। हुनकर आङुर नोटबुकक पन्ना पर रहि गेल। ओ कानूनी लोक छलाह; हुनका सूची बनएब अबैत छल, धारा जोड़ब अबैत छल, अभियोग गिनब अबैत छल। मुदा मौनक सूची? मौन तँ कागच पर नहि लिखायल करैत। मौन तँ फाइलक बीचक खाली जगह होइत अछि, बैसकीक ओहि क्षण जखन कियो सत्य सुनि कऽ पानि पीए लगैत अछि, बयानक ओहि कोना जतय 'जाँच चलि रहल अछि' लिखि देल जाइत अछि।

बा हुनका देखैत रहलीह। 'मौनक नाम लिखब बिनु पुकार अधूरा रहत। जे मरल, ओकर नाम लिखल। जे मारलक, ओकर नाम कखनो भेटत, कखनो नहि। मुदा जे देखलक आ चुप रहल, ओकर नाम लिखल बिनु इतिहास अधूरा रहत।'

सत्यव्रत धीरे सँ कहलनि — 'अहाँ हमरा सँ हमर अपराध लिखब चाहैत छी?'

बा उत्तर देलखिन — 'अहाँक नहि। सभक। मुदा अहाँ लिखब शुरू करब। कारण अहाँ सुनलहुँ।'

ई वाक्य सत्यव्रतकेँ भीतर धरि काटि गेल। हुनका अपन पहिल नौकरीक दिन मोन पड़ल — जिला अदालतक एक पुरान कमरा, पुरान टेबुल, लाल फीता बान्हल फाइल, आ ओहि फाइलमे एक गरीब लोकक दरखास्त जेकरा पर ओ लिखने छलाह — 'विचारणीय'। ओ दरखास्त फेर कहियो हुनकर हाथ नहि आयल। ओ लोक कदाचित् मरि गेल होएत, कदाचित् हारि कऽ घर चलि गेल होएत, कदाचित् ओकर बेटा आइ ककरो म्यूल खातामे फँसल होएत। सत्यव्रतकेँ अचानक लागल जे 'विचारणीय' शब्द सेहो एक छोट ग्राह छल।

ओ नोटबुक फेर खोललनि। पहिल पन्ना पर लिखल छल — नामक पूरा स्वरूप। ओकर नीचाँ राति भरि लिखल नाम सभ। सत्यव्रत अगिला पन्ना खोललनि आ शीर्ष लिखलनि — मौनक अभिलेख। लिखिते अक्षर काँपल। स्याही सूखए सँ पहिने पन्ना पर ओसक बून्द खसल आ 'मौन' शब्दक 'म' बड़का भऽ गेल, जेना ओही अक्षर सभकेँ निगलि लेबाक तैयारीमे हो।

पहिल मौन सरयूक नाम लग लिखायल। नन्दक बहीमे ओकर पूरा नाम नहि छल। ठेकेदारक दफ्तरमे ओकर मृत्यु नहि छल। सरकारी सूचीमे ओकर अनुपस्थिति छल। मुदा मौनक अभिलेखमे लिखल गेल — 'ओहि अधिकारीक मौन जे स्त्री-मजदूरक नाम पूछब जरूरी नहि बुझलक।'

दोसर मौन उज्ज्वल झाक नाम लग लिखायल — 'ओहि परिवारक मौन जे पहिल राति ओकर आँखिक निन्न उड़ल देखलक, मुदा ओकर फोनमे चलैत खेलक लाल उजासकेँ खेल

बुझि अनठा देलक।' देविका ई पंक्ति सुनिते काँपि गेली। ओ कहली — 'एहिमे हमर नाम सेहो लिखू।'

बा हुनकर कन्हा पर हाथ रखलीह। 'दोष आ मौन एक नहि। मुदा जँ अहाँ चाहैत छी जे भविष्य सुनए, तखन अपन ने सुनबाक दिन लिखू।'

देविका अपना हाथसँ लिखली — 'बहिनक मौन।' फेर पन्ना पर माथ झुका देली। ओ कानि नहि रहल छली; मुदा जे लोक भीतरसँ काज करैत अछि, ओकर आँसु प्रत्येक बेर आँखि धरि नहि पहुँचैत। किछु आँसु सोझे लेखनमे चलि जाइत अछि।

तेसर मौन मुन्ना पासवानक सोझाँ आयल — 'बैंकक मौन।' मुन्ना तुरन्त बाजल — 'बैंकक बाबू कहलक जे खाता खोलू, काज भेटत। ओ जानैत छल?'

बूढ़बा भूत उत्तर देलनि — 'कखनो-कखनो जानब जरूरी नहि रहैत; शंका पर्याप्त होइत अछि। शंका देखलाक बाद जे चुप रहए, ओकरो नाम मौनमे आएत।'

मुन्ना बहुत काल चुप रहल। ओकरा मोन पड़ल जे खाता खोलबाक दिन बैंकमे एक बाबू ओकर आधार कार्ड तीन बेर देखने छल, फेर फोन पर कोनो लोकसँ धीरे-धीरे बाजल छल — 'हँ, ई ठीक अछि, गामक लड़का अछि।' ओहि वाक्यक अर्थ ओकरा तखन नहि बूझल। आइ बूझल।

अनन्या लिखली — 'शंका देखलाक बादक मौन।'

सत्यव्रत मेहता देखलनि जे नेनी कतेक कठिन विधि-वाक्य सहज लिखि दैत अछि। दिल्लीमे ई वाक्य बनैत तँ पन्द्रह पृष्ठक टिप्पणी चाही। चन्ना गाछीमे एक पंक्ति।

एहि बीच बटुकनाथ हरिहरन गामक धर्मशालामे जागल। राति भरि ओकरा निन्न नहि भेल छल। तकिया तर जे निर्णयक प्रति राखल छल, भोरमे ओकर कागचक किनार कटल भेटल, जेना कोनो छोट दाँत राति भरि ओकरा कुरेदैत रहल हो। ओ कागच खोललक। अक्षर ठीक छल, आदेश ठीक छल, जीत ठीक छल। मुदा पन्नाक खाली जगहमे छोट-छोट शब्द उगि आयल छल — 'जखन अहाँ जानैत छलहुँ, तखन चुप किए छलहुँ?'

हरिहरन घबरा कऽ कागच मोड़लक। ओकर पोती भीतर आयली। ओहि नेनीक चेहरा पर गढ़ नारिकेलक भोरक उजास छल। ओ पूछली — 'बाबा, अहाँ मौनक अभिलेखमे अपन नाम लिखब?'

हरिहरनक मुँहसँ पहिने हँसी निकलए चाहलक। 'ई बच्चा सभक खेल अछि।' मुदा आवाज बाहर एल नहि। ओकर कण्ठमे रातिक ओही पात अटकल छल। ओ केवल कहि सकल — 'हम कानूनक लोक छी।'

पोती कहली — 'तँ अहाँकेँ मौनक कानून सभसँ पहिने बूझबाक चाही।'

ओ चलि गेली। हरिहरन कुर्सी पर बैसल रहि गेल। ओकरा मोन आयल — बारक सभागारमे कतेक बेर ओ कहने छल — 'प्रक्रिया सभ सँ ऊपर।' आइ ओकरा लागल जे प्रक्रिया कहैत-कहैत ओ कतेक लोकक चेहरा नीचाँ धकेलि देलक। मुदा ओ स्वीकार करए तैयार नहि छल। स्वीकार करब हरिहरनक शब्दकोशमे पराजय छल।

एम्हर चन्द्रपाल बत्रा शहरमे अपन बन्द फोनक टूटल स्क्रीन बदलाबए दुकान गेल। दुकानदार कहलक — 'स्क्रीन ठीक अछि। भीतरक तस्वीर खराब अछि।' बत्रा चिढ़ि गेल। 'तस्वीर बदलू।' दुकानदार फोन चालू केलक। स्क्रीन पर फेर वैह सूची — उज्ज्वल झा, मुन्ना पासवान, अज्ञात खाता, आत्महत्या, डिजिटल गिरफ्तारी, मायक गिरवी गहना। दुकानदार डरि कऽ फोन घुरा देलक। 'बाबू, ई मोबाइल नहि, गवाही अछि।'

बत्रा दुकानसँ बाहर निकलल। सड़क पर भीड़ छल, मुदा ओकरा सभक चेहरा पर एक्के शब्द देखाइ पड़ैत छल — 'मौन।' ओ कारमे बैसल आ राघव सिग्नलकेँ सन्देश पठेलक — 'नामक खेल रोकू।' सन्देश गेल नहि। ओकर बदला स्क्रीन पर उत्तर आयल — 'मौन भेजल गेल।'

राघव सिग्नल अपन कमरामे बैसल छल। ओकर सभ गुप्त सन्देश, जे ओ बुझैत छल जे मेटि गेल, कागचक पात बनि टेबुल पर झहरि रहल छल। प्रत्येक पात पर कोनो आदेश नहि, कोनो रकम नहि, केवल ओ क्षण लिखल छल जतय ओ चुप रहल। 'छोट लड़का अछि, खाता देत।' 'डराउ, पैसा निकलत।' 'लड़कीक चित्र राखू, गवाही नहि देत।' 'बूढ़ पिता केँ कहू जे बेटा जेल जाएत।' ओ सन्देश सभ आदेश नहि, मौनक उनटा चेहरा छल।

राघव पहिल बेर सोचलक — हम बाजि कऽ अपराध केलहुँ कि चुप रहि कऽ? ओकरा बुझायल, दुनू। ओकर बजनाइ निर्देश छल; ओकर चुप्पी अनुमति।

गढ़ नारिकेलमे मौनक अभिलेख भरैत जा रहल छल। सत्यव्रत लिखैत-लिखैत थाकि गेलाह। बा कहलखिन — 'थाकलहुँ?'

ओ कहलनि — 'हँ। मुदा ई थकान उचित अछि।'

बा कहलखिन — 'उचित थकान मनुष्यकेँ छोट करैत नहि; झूठक आरामक बदला ई बेहतर।'

दुपहर धरि चन्ना गाछीमे एक विचित्र सभा भऽ गेल। पीड़ित परिवार सभ, धूर्त सभक बच्चा सभ, गामक वृद्ध, स्कूलक मास्टर, बैंकक बाबू जे छुट्टी नेने आएल छल, अस्पतालक कम्पाउण्डर जे महामारी-कालमे बिल बनबैत छल, एक वकीलक मुंशी जे तारीख लिखि-लिखि बूढ़ भऽ गेल — सभ। केओ पूरा अपराधी नहि, केओ पूरा निर्दोष नहि। चन्ना गाछी सभकेँ एक्के बात कहैत छल — 'जतय अहाँ सुनि सकैत छलहुँ आ नहि सुनलहुँ, ओ ठाम लिखू।'

बैंकक बाबू पहिने प्रतिवाद केलक। 'हमरा नियम पालन करए पड़ैत अछि।'

सौम्या शांत स्वरमे पूछली — 'नियममे शंका लिखबाक कोनो कोना नहि?'

बाबू चुप। ओकरा मोन पड़ल जे फार्मक अन्तिम पंक्तिमे 'अन्य टिप्पणी' लिखल रहैत अछि। ओ पंक्ति सदिखन खाली छोड़ि देल जाइत छल। ओ धीरे सँ लिखलक — 'अन्य टिप्पणी खाली छोड़बाक मौन।'

अस्पतालक कम्पाउण्डर कहलक — 'हम डॉक्टर नहि छलहुँ। बिल ऊपरसँ अबैत छल।'

देविका कहली — 'ऊपर कतऽ छल?'

कम्पाउण्डर आकाश दिस देखलक। फेर बुझलक जे 'ऊपर' कोनो देवता नहि, एयरकण्डिशन कमरामे बैसल लेखा-प्रबन्धक छल। ओ लिखलक — 'ऊपर कहि कऽ चेहरा बचेलहुँ।'

वकीलक मुंशी जे जीवन भरि तारीख लिखैत रहल छल, अपन काँपैत हाथ देखलक। 'हम फाइल दबेलहुँ नहि। हम तँ जे कहल गेल लिखलहुँ।'

सत्यव्रत ओकरा बहुत काल देखलनि। 'कतेक बेर अहाँ देखलहुँ जे बूढ़ माय दरबाजा पर बैसल अछि, आ अहाँ फाइल भीतर नहि पठेलहुँ?'

मुंशीक हाथ काँपल। ओ लिखलक — 'दरबाजाक मौन।'

ई मौनक अभिलेख न्यायालयक रजिस्टर नहि छल। एहिमे दण्डक प्रावधान नहि, स्वीकारक पीड़ा छल। मुदा गढ़ नारिकेलमे ई मानल जाइत अछि जे स्वीकार जँ सच्चा हो, तँ ओ दण्ड सँ गहींर होइत अछि। दण्ड बाहरसँ लागैत अछि; स्वीकार भीतरसँ काटैत अछि।

साँझ पड़ल। सत्यव्रत मेहताक नोटबुक भरि गेल। अनन्या दोसर कापी आनली। बा तेसर। मीरा चारिम। ईरा दूरसँ अएल कागचक गड्डी राखलक — ओहि कागच पर विदेशी सभागारक

चिन्ह छल। बा ओकरा उनटा कऽ देलखिन। ‘एहि पर ओ सभक ताली लिखल छल। आब एहि पर मौन लिखू।’

ईरा पेन उठेली। ओ लिखली — ‘विदेशी सभागारक मौन, जखन नैतिक भाषणक बीच गढ़ नारिकेलक पुलक छाह देखल गेल मुदा प्रश्न नहि उठल।’

एडवर्ड ब्रूम ओहि समय समुद्र पार अपन दफ्तरमे बैसल छल। ओकर सोझाँ अगिला भाषणक मसौदा छल — ‘जवाबदेह पूँजीक भविष्य’। अचानक कागचक बीच सँ एक खाली पन्ना निकलल। पन्ना पर शीर्ष छल — ‘मौनक अभिलेख’। ओकर सचिव पूछलक — “सर, ई दस्तावेज ककर?” ब्रूम उत्तर देबए लगल, मुदा मुँहसँ आवाज नहि निकलल। ओकरा पहिल बेर बुझायल जे कतेक बेर ऊँच मंच पर बाजनाइ सेहो मौनक एक रूप होइत अछि, जँ ओ सत्य कैँ ढाँपए।

राति होइत-होइत चन्ना गाछीमे चौदहटा लालटेन जरल। राकश सभक इजोत सेहो छल, मुदा एहि बेर मनुष्य सभ सेहो लालटेन अनलक। लोथ सभ लालटेनक उजास देखैत रहल। एक लोथ धीरे सँ गोल घूमि कऽ लालटेन लग आयल आ ओहि पर अपन छोट हाथ राखि देलक। उजास कम नहि भेल। बा कहलखिन — ‘देखलहुँ? जे देहक खोरनाठीसँ बनल अछि, ओहो उजास धरि सकैत अछि।’

सत्यव्रत मेहता ओहि वाक्य लिखि लेलनि। हुनका लागल, ई वाक्य कानूनक सभ पुस्तकसँ पैघ अछि। जे समाज मृत देहक स्मृतिकैँ केवल अशुभ मानैत अछि, ओ मृतकसँ सीखब छोड़ि दैत अछि। गढ़ नारिकेल मृतककैँ अन्हार नहि, उजासक धारक बनबैत छल।

अचानक खाली कटोरा अपने बाजल। टन। सभ चुप। कटोरासँ आवाज आयल — ‘मौन लिखल गेल। आब जे नाम लिखल गेल, ओकरा पढ़ब।’

बूढ़बा भूत गरदनि हिलेलनि। ‘बीसम साँसमे पढ़ाई शुरू।’

सत्यव्रत पूछलनि — ‘के पढ़त?’

अनन्या उत्तर देली — ‘जे सभ चुप रहल छल।’

एहि पर सभामे एक हलचल भेल। नाम लिखब एक बात, नाम पढ़ब दोसर। लिखैत समय लोक कागच दिस देखैत अछि; पढ़ैत समय लोकक आँखि ओकरा दिस देखैत अछि। बैंकक बाबू पाछाँ हटए चाहलक। मुंशीक हाथ काँपल। कम्पाउण्डर पसेना-पसेना। हरिहरनक पोती अपन बाबाक दिशा ताकली। हरिहरन दूर गाछी किनार पर ठाढ़ छल। ओकरा लागल छल जे

केओ ओकरा देखैत नहि। मुदा चन्ना गाछीमे किनार कहियो नुकबाक जगह नहि; किनार ओतय होइत अछि जतय भीतर शुरू होएत।

बा कहलखिन — 'हरिहरन बाबू, अहाँ पढ़ू।'

हरिहरन ठिठकल। 'हम?'

सत्यव्रत पहिल बेर ओकरा आँखिमे आँखि दऽ कऽ देखलनि। 'हँ। अहाँ प्रक्रिया पढ़ने छी जीवन भरि। आइ नाम पढ़ू।'

हरिहरनक हाथमे कागच देल गेल। ओ पढ़ए लगल — 'सरयू...' आवाज टूटल। ओ रुकल। पोती धीरे सँ कहली — 'पूरा पढ़ू।'

ओ फेर पढ़लक — 'सरयू, जकर नाम कागचमे अधूरा रहल; ओ अधिकारीक मौन जे नाम पूछल नहि।'

ई पंक्ति पढ़िते गाछीक पात हिलल। हरिहरनक गला सूखल। ओकरा लागल जे पंक्ति ओकर अपन गला सँ नहि, कोनो पुरान दरार सँ निकलि रहल अछि।

दोसर पंक्ति — 'उज्ज्वल झा, जकर भोर स्क्रीनक गोहि खा गेल; परिवारक मौन, समाजक मौन, विज्ञापनक मौन, कानूनक मौन।' हरिहरन रुकल। चन्द्रपाल बत्राक बेटा कागच दिस देखैत रहल। ओ आगाँ बढ़ि कऽ कहलक — 'ई हम पढ़ब।'

ओ पढ़लक। आवाज काँपल, मुदा पढ़लक। चन्द्रपाल शहरमे ओहि क्षण अपन छाती पकड़ि कऽ बैसल। ओकरा लगल कोनो बच्चा ओकर भीतरक तिजोरी खोलि रहल अछि।

बीसम साँसक राति गढ़ नारिकेलमे नाम-पाठ चलल। जे सभ कखनो मंच पर नहि बजल, ओ सभ पढ़ल। जे सभ मंच पर बहुत बजल, ओ सभ सुनल। ई उलटबाँसी नहि, न्यायक पहिल पाठ छल।

आधी राति बूढ़बा भूत अन्तिम पंक्ति कहलनि — 'मौनक अभिलेखमे जे नाम लिखल गेल, ओ मेटाओल नहि जाएत। मुदा ई अभिलेख दोषक संग्रह बनि रहबाक लेल नहि, सुनबाक अभ्यास बनबाक लेल अछि। जे सुनि कऽ काजमे लागत, ओकर मौन धीरे-धीरे पात बनि झरत। जे सुनि कऽ फेर चुप रहत, ओकर मौन ग्राह बनि पएर पकड़त।'

सत्यव्रत मेहता बहुत काल धरि कटोरा लग बैसल रहलाह। हुनका बुझा गेल जे अन्तमे हुनका उद्धारक बनबाक नहि, एहि अभिलेखक पहरेदार बनबाक अछि। पहरेदार जे फाटक पर

नहि, कान पर पहरा देत। जखन सत्ता कहत — 'मामला समाप्त', ओ कहताह — 'नाम अपूर्ण अछि।' जखन अदालत कहत — 'प्रक्रिया पूर्ण', ओ कहताह — 'श्रवण बाकी अछि।'

भोरक पहिल उजासमे अनन्या बीसम साँस लिखली। ओ लिखली — 'जे मौनक नाम लिखैत अछि, से दोषक भार उठबैत अछि; जे मौनक नाम पढ़ैत अछि, से भविष्यक रास्ता खोलैत अछि। गढ़ नारिकेलमे न्याय निर्णयसँ नहि, सुनल गेल नामक पाठसँ बढ़ैत अछि।'

सत्यव्रत ओ पंक्ति पढ़लनि। एहि बेर आँखिसँ सेहो, कानसँ सेहो। हुनका लागल, हुनकर भीतर जे कान रातिमे भारी भऽ गेल छल, भोरमे ओ थोड़े हलुक भेल। हलुक दोष मेटलासँ नहि, दोषक पहरा स्वीकार कयलासँ होइत अछि।

चन्ना गाछीमे पात सभ धीरे-धीरे सूखए लगल। ओसक बून्द खसि गेल। खाली कटोरा आब उठि सकैत छल। सत्यव्रत ओकरा उठेलनि। कटोरा हलुक छल, मुदा ओकर हाथ भारी। बा मुस्की देलखिन — 'नीक अछि। कटोरा हलुक, हाथ भारी। एहने लोक सँ काज होइत अछि।'

बीसम साँस समाप्त नहि भेल। ओ अभिलेखक पहिल पाठ मात्र छल। अगिला साँसमे पढ़ल नाम सभ चलत। आ जखन नाम चलैत अछि, तखन ओ गाम, शहर, अदालत, विदेश, स्क्रीन, सभागार — सभ ठाम अपन पएरक निशान छोड़ैत अछि। धूर्त सभ बुझत जे ओ सभ कागच जरा देत। मुदा मौनक अभिलेख कागच पर कम, कानमे अधिक लिखल जा चुकल छल। कान जँ जागि जाए, तखन आगि ओकरा नहि जरा सकैत।

लोकगीत: कानमे लिखल बही

लोकधुन: मौन-विरहा

चुकाउ हे उधार, सुनल स्वरक उधार चुकाउ हे,
मौनक बही कागच नहि—कानक भीतर पाउ हे।

सुनल आवाज उधार, चुकता करब तोहर,
मौनक बही कागच नहि, कानक भीतर घर।
नाम-नाम भारी भेल मेहताक दुनू कान,
कटोरा हलुक, हाथ भारी—ओहि मे काजक प्राण।
दोष मेटलासँ नहि, पहरा मानलासँ हलुक,

ओस खसल, पात सूखल, जागल भीतर धुनक।
कागच जरा सकै धूर्त, कान जँ जागल अछि,
आगि नहि जरा सकत जकर स्मृति भागल नहि।
मौनक अभिलेख पढ़ू, उधार चुकाउ आज,
जे सुनि लेल, ओकर छाती पर आबि बैसल काज।

कागच जरा सकए धूर्त, जागल कान ने चुकए।

❖

अध्याय ५०

देहक बादक नाम

देह चलि जाइ छै, नाम रहि जाइ छै— आ नामक पएर भीजल रहै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: जड़ि नाम सम्हारै

लोकधुन: समदाउनक हरियर रूप

सम्हारू हे जड़ि, नामक जड़ि सम्हारू हे,
देह दूर गेलो पर अक्षर नहि बिसारू हे।

देह दूर गेल तइयो जड़ि नाम सम्हारै,
माटि भीतर अक्षरकेँ ओसक दूध पियारै।
पुरखाक वृक्ष लगाउ, पट्टपर पूरा नाम,
छाहमे नेना सीखत श्रम, साहस, सम्मान।

जड़ि कहै—स्मृति स्थिर, पात नित्य नब,
जीवन रूप बदलै, प्रेम रहै अजब।
जड़ि नाम सम्हारै जखन वन बनत परिवार,
देहक पारो टिकि रहत मानक उज्जर धार।

पुरखा-पट्ट पर पूरा नाम, तर मे रोपू गाछ,
छाहमे बैसत पीढ़ी, सीखत श्रमक साँच।
पात झड़ए, ऋतु बदलए, जड़ि अटल रहए,
समदाउनक करुण सुरो हरियर आशा कहए।

❖

चन्ना गाछीमे ओहि राति पानि नहि छल, मुदा सभकेँ पएर भीजल बुझाइत छल। गाछीक धरती एहन ठण्ढा जेना ओहि पर बरखाक पहिल बून्द पड़ल हो, मुदा ऊपर आकाश साफ। तारा सभ डारि-डारि पर अटकल छल, आ डारि सभ बीच-बीचमे एना काँपैत छल जेना ओहि पर तारा नहि, ककरो नाम राखल हो।

सत्यव्रत मेहता बहुत काल धरि गाछीक बाहर ठाढ़ रहलाह। हुनका भीतर जाएबाक आज्ञा केओ नहि देलकनि। बाहर रोकनिहार सेहो केओ नहि छल। तथापि ओ भीतर नहि जाइत छलाह। मनुष्यक अदालतमे ओ बरखो उठि-बैसि सकल छलाह; ठाढ़ होएब, बाजब, चुप रहब, कागच घुमाएब, दलील उनटाएब — सभ हुनका अबैत छलनि। मुदा चन्ना गाछीक अदालतमे पहिल नियम छल — पहिने अपन देहक आवाज सुनू।

देहक आवाज सुनब हुनका लेल कठिन छल। पद पर रहैत-रहैत मनुष्य अपन देहकेँ फाइलक अलमारी बना लैत अछि। माथमे धारा, धारामे उपधारा, उपधारामे निर्णय, निर्णयक पाछाँ व्याख्या। हृदय कोना धड़कैत अछि, श्वास कोना चलैत अछि, पएरक तलवा धरतीकेँ कोना छूइत अछि — ई सभ बात ओ बिसरि गेल छलाह।

गाछीक भीतरसँ कनी-कनी स्वर आबि रहल छल — कबड्डी नहि, नाम। पहिने एकटा नाम, फेर दोसर, फेर तेसर। नाम सभ ओहि ढंगें उच्चरित नहि भऽ रहल छल जेना अदालतमे पुकार होइत अछि — ‘फलना आ फलना’। एतऽ नाम सभ मायक मुँहसँ निकलैत छल, बापक घुटनासँ, बच्चाक आधा-सुतल कानसँ, आ नदीक पानि सँ।

बूढ़बा भूत पीपरक छाह सँ बाहर एलाह। हुनकर देहक कारी रंग ओहि राति उज्जर लागैत छल, कारण हुनकर पाछाँ लोथ सभक बौना इजोत झिलमिला रहल छल। ओ सत्यव्रत दिस तकलनि।

‘आब आयलहुँ?’

सत्यव्रत माथ झुका देलनि। ‘आब सुनए आयल छी।’

‘सुनब कठिन नहि। जे सुनल जाइत अछि तकर भार ढोब कठिन अछि। अहाँ भार ढोएब?’

सत्यव्रत उत्तर देबाक लेल मुँह खोललनि, मुदा आवाज नहि निकलल। ओहि क्षण हुनका बुझायल — मनुष्यक अदालतमे जे लोक बहुत बजैत अछि, ओ सभ चन्ना गाछीमे मूक भऽ जाइत अछि। मूक भेनाइ दण्ड नहि, तैयारी अछि।

चन्ना गाछीक बीच ओहि राति एकटा पोखरि बनल। ओ पोखरि काल्हि नहि छल। ककरो खोधल नहि। पानि कतयसँ आयल, केओ नहि जनलक। मुदा पानिमे चान नहि, अक्षर तैरि रहल छल। अक्षर सभ पहिने टूटल-फूटल छल — जेना गोहिक दाँतसँ देह फाटल हो। फेर धीरे-धीरे ओ अक्षर जुड़ि नाम बनए लगल।

सत्यव्रत घुटना टेकलनि। पानिमे पहिल नाम देखलनि — सरयू देवी। दोसर — बुधन मियाँ। तेसर — जगेसर पासवान। फेर उज्ज्वल झा। फेर एहन-एहन नाम जे हुनका कोनो केस-लॉमे नहि भेटल छल, कोनो निर्णय-संग्रहमे नहि, कोनो सरकारी परिशिष्टमे नहि। मुदा एहि नाम सभक उच्चार मात्रसँ पानि काँपैत छल।

एकटा बच्चा, कदाचित् अनन्या, पानि लग आबि कऽ बैसली। ओ सत्यव्रतकेँ देखि पूछली — ‘अहाँक नाम सेहो लिखायब?’

सत्यव्रत चौंकलाह। 'हमर नाम? हम तँ मरल नहि छी।'

नेनी हँसली। 'एतऽ केवल मरल लोकक नाम नहि लिखाइत अछि। जे कतेको बेर चुप रहल, ओकर नाम सेहो लिखाइत अछि।'

ई वाक्य सत्यव्रतक भीतर ओहि ढंगें पैसल जेना सुई कपड़ा नहि, चाम फाड़ि दे। हुनका मोन पड़ल — पहिल तारीख, जखन नन्दक फाइल सरकारक टेबुल पर आयल छल। दोसर तारीख, जखन मजदूरक सूची 'अपूर्ण' कहि घुरा देल गेल। तेसर तारीख, जखन डिजिटल ठगीसँ मरल उज्ज्वलक मामला 'निजी वित्तीय जोखिम' कहल गेल। चारिम तारीख, जखन गोप कुमारक डेटा पर ओ कहलाह — 'अभिलेख सत्यापनक प्रतीक्षा करबाक चाही।' प्रतीक्षा। प्रतीक्षा। प्रतीक्षा। प्रतीक्षा कतेक बेर अपराधक दोसर नाम भऽ जाइत अछि!

ओ अपन दहिन हाथ पानिमे डुबौलनि। अक्षर सभ हुनका आङुर लग जमा भऽ गेल। हुनका लागल जे पानि ठण्ढा नहि, गरम अछि — देहक अन्तिम ताप जेकाँ। ओ धीरे सँ बाजलाह — 'सत्यव्रत मेहता। मौन।'

नाम पानिमे उतरि गेल। पानि एक बेर गोल-गोल घुमल, जेना गोहि चक्कर काटैत हो। सत्यव्रतक देह काँपि उठल। हुनका ई डर नहि छल जे गोहि पएर पकड़ि लेत। डर ई छल जे गोहि देह नहि, पद पकड़ि लेत।

तखने चन्ना गाछीक पछुआरी कात सँ एकटा दीर्घ छाह आयल। ओ गज छल कि मनुष्य, कहब कठिन। ओकर माथ विशाल, आँखि थाकल, देह पर कीचड़, आ पएरमे किछु एहन बान्हल जे देखितहि बुझाइ — बहुत दिन धरि संघर्ष कएल गेल अछि। ओकर सोझाँ पानि फाटल आ भीतरसँ ग्राह उठल — नदीक ग्राह नहि, देहक भीतरक ग्राह। लोभ, भय, पद, परिवारक मान, न्यायालयक मर्यादा, सरकारक अनुशासन, इतिहासक सुविधा — सभ मिलि एकटा ग्राह बनल छल।

बूढ़बा भूत फुसफुसेलाह — 'गज-ग्राह कथा लोक बहुत सुनैत अछि। मुदा अधिकांश लोक केवल गजकेँ देखैत अछि, ग्राहकेँ नहि। असल प्रश्न अछि — गज ककरा सँ छुटए चाहैत अछि? बाहरी ग्राह सँ, कि भीतरक पकड़ि सँ?'

सत्यव्रत ओहि दृश्य दिस देखैत रहलाह। गज चिचिया नहि रहल छल। ओ थाकि गेल छल। ग्राह ओकर पएर नहि, ओकर स्मृति पकड़ने छल। गज जतेक जोर लगबैत, ग्राह ओतेक गहींर भीतर धँसैत। तखने चन्ना गाछीमे कबड्डीक पुरान लय उठल — भूत सभ नहि, नाम सभ बाजए लागल।

सरयू देवी। बुधन मियाँ। जगेसर पासवान। उज्ज्वल झा। नन्द आरुणि। अज्ञात। अनुपस्थित। गुम। नदारद।

प्रत्येक नाम गजक देह पर पड़ैत आ एकटा-एकटा बेड़ी टूटैत। अन्तमे गज पानि दिस नहि, आकाश दिस देखलक। ओकर मुँहसँ पुकार नहि, स्वीकार निकलल। ग्राह पएर छोड़ि देलक। गज मुक्त भेल कि मरि गेल — ई केओ नहि बूझि सकल। कारण चन्ना गाछीमे मुक्ति आ मृत्यु कखनो-कखनो एक्के देहमे आबि जाइत अछि।

सत्यव्रत बुझि गेलाह — ‘गोहि सभक बीच जलसमाधि’ केवल ओ क्षण नहि जखन गोहि हड्डी धरि चिबा जाइत अछि। ई ओ क्षण सेहो अछि जखन देहक अन्तिम अभिमान टूटि जाइत अछि। देह नष्ट भेल, मुदा देह सँ बान्हल झूठ सेहो नष्ट भेल। जकरा संसार हार कहलक, ओ भीतर सँ छुटि गेल। जकरा संसार जीत कहलक, ओ अपन जीतक कागच सँ बान्हल रहि गेल।

ओहि बेरा गाछीक किनार पर बटुकनाथ हरिहरनक छाह देखाइ पड़ल। देह एखन गामक डाकबंगलामे रहल, मुदा छाह गाछीमे पहुँचल छल। छाह हाथमे आदेश नेने छल। आदेशक कागच हवा नहि, पानिमे काँपि रहल छल। बटुकनाथक छाह चिचियायल — ‘ई सभ मान्य नहि! ई कोन न्यायालय अछि? अधिकार-क्षेत्र कतय अछि?’

लोथ सभ हँसल। हुनकर हँसी बौना घण्टी जेकाँ नहि, अपितु दूरक शववाहक गाड़ी जेकाँ लागल। बूढ़बा भूत कहलनि — ‘अधिकार-क्षेत्र? जतय नाम मिटाओल जाइत अछि, ओतय चन्ना गाछीक अधिकार शुरू होइत अछि।’

चन्द्रपाल बत्राक मोन सेहो स्क्रीनक आकारमे झिलमिलाइत पहुँचल। ओ गाछीक हवामे झूलैत रहल, जेना कोनो अदृश्य तारसँ लटकल। स्क्रीन पर ओकर जुआ-ऐपक चिह्न, विधि-दफ्तरक मोहर, म्यूल खाताक संख्या, आ डिजिटल गिरफ्तारीक नकली नोटिस सभ एक संग चमकि रहल छल। ओ मेटाबए चाहैत छल, मुदा चन्ना गाछीमे मेटाएब नामक कोनो क्रिया नहि छल। एतऽ केवल स्मरण छल।

राघव सिग्नलक आवाज बिनु देहक आयल — ‘सन्देश स्वयं मेटि जाएत।’

पीपरक ब्रह्मा पहिल बेर चारू मुख सँ एक संग बजलाह — ‘जे सन्देश अपराध लऽ कऽ चलैत अछि, ओ मेटैत नहि, रूप बदलैत अछि। कखनो पात, कखनो पानि, कखनो बच्चाक प्रश्न।’

सत्यव्रत उठलाह। हुनकर कपड़ा भीजल नहि छल, मुदा चाल बदलि गेल छल। ओ आब अदालतक लोक जेकाँ नहि, गामक बूढ़ जेकाँ चलैत छलाह — धीरे, सुनैत, धरतीक ताप

बूझैत। ओ बटुकनाथक छाह दिस नहि तकलाह। ओ चन्द्रपालक स्क्रीन दिस नहि गेलाह। ओ अनन्याक लग गेलाह।

‘हमर नाम कतय लिखल?’ ओ पूछलनि।

अनन्या पात पर आङुर राखि देखौली। ओतय लिखल छल — ‘सत्यव्रत मेहता — जे अबेरसँ सुनल, मुदा सुनल।’

सत्यव्रतक आँखि भरि आयल। हुनका जीवनमे बहुत प्रशस्ति-पत्र भेटल छल। बहुत पद। बहुत संबोधन। मुदा ई पहिल बेर छल जखन हुनकर नामक संग पद नहि, क्रिया लिखल गेल — सुनल।

गोप कुमार ओहि राति गाछीक दोसर कात बैसल छल। ओकर हाथमे कागच नहि, खाली एकटा सूखल नारिकेल पात छल। ओ पात पर किछु लिखैत नहि छल। देविका पूछली — ‘आब की लिखब?’

गोप कहलक — ‘आब हम नहि लिखब। आब ई सभ स्वयं लिखत।’

‘के?’

‘जे मुक्त भेल। जे बान्हल अछि। जे बान्हल अछि से बेसी लिखत।’

चन्ना गाछीक पानि धीरे-धीरे ओझराए लगल। पोखरि गायब नहि भेल; ओ धरती भीतर उतरि गेल। आब गाछीक माटि नम छल। बूढ़बा भूत कहलनि — ‘मुक्ति सदिखन ऊपर नहि उठैत। कखनो-कखनो माटि भीतर धँसि जड़ि बनैत अछि।’

ओहि रातिक बाद गढ़ नारिकेलमे कतेको लोक सपना देखलक। मजदूरक परिवार सभ देखलक जे हुनकर मरल लोक पानिसँ बाहर आबि नहा रहल अछि, मुदा देह बिनु। ओ सभक माथ पर टोकरी नहि रहल। उज्ज्वलक माय देखलक जे ओकर बेटा मोबाइल तोड़ि नहि रहल, मोबाइलकेँ नदीमे बहा रहल अछि आ कहि रहल अछि — ‘माय, हम परदा नहि छी।’ मीरा देखली जे ओकर निजी भयक कागच आगिमे नहि, पानिमे गलि फूल बनि गेल।

मुदा धूर्त सभक सपना अलग छल। बटुकनाथ देखलक जे ओकर हाथमे जे आदेश अछि, ओ एकटा ग्राहक जबड़ा बनि ओकर कलाई पकड़ि लेलक। चन्द्रपाल देखलक जे ओकर सभ पासवर्ड एक-एक मृतकक नाममे बदलि गेल। राघव देखलक जे अपने-आप मेटाइत सन्देश सभ गायब नहि, ओकर देह पर नीला दाग बनि लिखाइत अछि। लाउ किन-हंग दूर समुद्रक कात

अपन शीशाघरमे देखलक — समुद्रक लहर प्रत्येक बेर एकटा मैथिली नाम उच्चरित करैत अछि, आ ओ उच्चार ओकरा बुझाइत नहि, मुदा ओकर निद्रा काटि दैत अछि।

भोर भेल। चन्ना गाछीमे कबड्डी बन्द छल। मुदा बन्द खेलक जमीन पर पएरक असंख्य निशान छल। मनुष्यक, भूतक, बच्चाक, गजक, ग्राहक, आ ओहि सभक जे देहसँ मुक्त भेल मुदा नामसँ जुड़ल रहल। सत्यव्रत मेहता बाहर निकललाह। हुनका जे गाड़ी लेने आयल छल, ओकर चालक पूछलक — 'सर, घुरि दिल्ली?'

सत्यव्रत किछु काल चुप रहलाह। फेर कहलनि — 'दिल्ली बादमे। पहिने गंगा-पुल।'

'ओतऽ आब की अछि सर?'

सत्यव्रत उत्तर देलनि — 'जतय देह खसल छल, ओतय नाम लगाउब बाकी अछि।'

ओहि उत्तरमे पदक आदेश नहि छल, अदालतक निर्देश नहि छल, सरकारी कार्यक्रम नहि छल। ओहि उत्तरमे एकटा मनुष्यक धीमा प्रण छल। गोहि सभ जे देह चबा गेल, ओ देहक भीतर जे बान्हल आवाज छल, ओकरा मुक्त मानि लेब पर्याप्त नहि। मुक्त नामकेँ धरती पर ठाम देब जरूरी छल।

गढ़ नारिकेलक नारिकेल गाछक पात ओहि भोर बहुत धीरे-धीरे हिलल। कोनो बयार नहि छल। पात स्वयं हिलल। जेना ओ कहि रहल हो — देह गेल, जल गेल, भय गेल; मुदा नाम आब जड़ि खोजि रहल अछि।

आ जखन नाम जड़ि खोजए लगैत अछि, तखन कथा फेर एक बेर बदलि जाइत अछि।

लोकगीत: देह गेल, नाम जड़ि ताकै

लोकधुन: समदाउन

लिअ हे माटि, नामकेँ कोरा मे लिअ हे,
जड़ि फुटत तँ मृतक फेर छाह दिअ हे।

देह बहि गेल पानिमे, पएरक नमी रहल,
तारा डारिपर अटकल, नामक ज्योति जलल।
गोहि देह चबा गेल, आवाज बन्धन तोड़ल,
मुक्त कहल भरि नहि—धरतीपर ठाम जोड़ल।
माए कहै, ‘नामक जड़ि हमर आँगनमे रोपू’,

पात कहै, ‘ओकर कथा नेनाक जीहमे बोऊ’।
देह गेल, जल गेल, भयक राति ढलल,
नाम माटि खोजैत आबि देहरीपर ठहरल।
ए माटि, ओकर नामकेँ अपन कोरामे लिअ,
जड़ि फुटत तखन मृतक फेर छाह दियौ।

माए कहए—'जड़ि हमर आँगन मे रोपू',

❖

अध्याय ५१

साक्षीक भार

साक्षीक भार तराजूपर नहि, छातीपर तौलल जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: साक्षीकेँ संग

लोकधुन: प्रायश्चित्त-मंगल

थामू हे साक्षीक हाथ, दुनू हाथ थामू हे,
भारी छातीक बोझ आधा-आधा बाँटू हे।

साक्षीक छाती भारी हो तँ संगक कन्हा दिअ,
सुरक्षित घर, कान, सलाह, विश्रामक ठाम दिअ।
साँच कहनिहार वीर सही, मनुख सेहो होए,
ओकर डर, थकान, परिवारक मान संजोए।

गवाहीक भार बाँटि कऽ संस्था जिम्मा लेत,
एकाकी साहस नहि, सामूहिक रक्षा देत।
साक्षीकेँ संग भेटल तँ सत्य दृढ़ रहत,
भारी छाती हलुक भऽ न्याय-दिशा कहत।

साँच कहब सहज नहि, राति नीन नहि आबए,
संगक दीप जरल रहए तँ डर नहि सताबए।
घर, सलाह, विश्रामक जिम्मा समाज उठाबए,
एकसरुआ वीरता नहि, साझा रक्षा भाबए।

❖

सत्यव्रत मेहता चन्ना गाछीमे पैसलाह तँ हुनका लगलनि जे ओ कोनो गाछीमे नहि, अपन छातीमे पैसि रहल छथि। बाहर धरती कठोर छल, भीतर धरती मुलायम; बाहर आदेशक कागच छल, भीतर नामक पात; बाहर पद छल, भीतर नंगी आवाज। गाछीक बीचोबीच ओहि राति कबड्डी बन्द छल। ई बन्दी खेलक थकानसँ नहि, सुनवाईक बादक ओ मौन छल जाहिमे फैसला स्वयं अपन देह खोजैत अछि।

पीपरक ब्रह्म डारि पर नहि छलाह। ओ नीचाँ उतरि आएल छलाह, मुदा हुनकर चारि मुख चारि दिशामे चुप्प छल। बूढ़बा भूत अपन कारी देहक इजोत समेटि एक कात बैसल छलाह। लोथ सभ गोल-गोल देहक छोट पहाड़ जकाँ लगैत छल, मुदा एहि बेर ओ दर्शक नहि, अभिलेखक पहरेदार छल। पनिडुब्बी पोखरिक पानि सँ निकलि नमीक रेखा जकाँ चन्ना गाछीक धूरि पर बिछलि गेल छली। डाइन सभ छौंकी नचबैत नहि, उँगुरी सँ माटि कुरेदैत छली।

सत्यव्रत अपन झोला सँ ओ कागच निकाललनि जाहि पर हुनकर पदक मोहर छल। ओ मोहर रातिमे चमकल नहि। चन्ना गाछीमे मोहर सभ अन्हार भऽ जाइत अछि; ओतय केवल नाम चमकैत अछि। ओ कागच हुनका हाथमे भारी छल। जे कागच दिनमे शासनक भार सहैत अछि, रातिमे आत्माक भार सहि नहि पबैत।

बूढ़बा भूत पूछलनि, 'की अनलहुँ?'

'सुनल बातक लेखा,' सत्यव्रत कहलनि।

'लेखा?' बूढ़बा मुस्कुरेलाह। 'लेखा ओ होइत अछि जाहिमे घट-बढ़ कएल जा सकए। सुनल बात लेखा नहि, भार होइत अछि। अहाँ भार ढोबय आएल छी कि फेर तौल करए?'

सत्यव्रत उत्तर नहि देलनि। हुनका मोन पड़ल — दिनमे न्यायालयक ओ कक्ष, जतय प्रत्येक बातक तौल होइत छल। कोन धारा, कोन प्रावधान, कोन समयसीमा, कोन आपत्ति, कोन स्वीकार्यता। मुदा चन्ना गाछीमे कोनो आपत्ति नहि उठल। एतय अस्वीकार्य केवल विस्मृति छल।

एकाएक गाछीक पाछाँ सँ पानि सरसरायल। गोहि सभ आबि रहल छल। पहिने ओकर आँखि देखाइ देलक — दू टा नम, ठण्ढा बिन्दु, जेना बहुत दूरक तारा पानिमे खसल हो। फेर ओकर पिठ। फेर ओकर दाँत। सत्यव्रतक देह एक क्षण काँपि उठल। ओ ई गोहि सुनने छलाह, देखल नहि छलाह। अदालतमे गोहि रूपक छल; एतय ओ देह धरि आयल छल।

गोहि सभ चन्ना गाछीक धूरि पर रुकि गेल। ओ सभक मुँहमे रक्त नहि छल। ओ सभक दाँत पर पानि छल। हुनका लगलनि — ई ओहि दाँत छल जे मजदूरक देह चिबा गेल, नन्दक साक्ष्य पानिमे घोलि देलक, अनेको नाम हड्डी सँ अलग कऽ देलक। मुदा ओहि क्षण बूढ़बा भूत धीमे कहलनि, 'डेराउ नहि। सभ दाँत हत्यार नहि होइत। किछु दाँत बन्धन काटबाक लेल सेहो बनैत अछि।'

सत्यव्रत बुझि नहि पेलनि।

गोहि सभमे सँ सभसँ बूढ़ गोहि आगाँ सरकल। ओकर देह पर काई लागल छल, आँखि पर समयक दूधिया परदा। ओ मनुष्यक भाषा नहि बजल, मुदा पनिडुब्बी ओकर स्वर अनुवाद कएली — 'हम देह खाइ छी। ई हमर दोष सेहो अछि, धर्म सेहो। मुदा जे देह पानिमे बन्धल रहि जाइत, ओकरा काटि मुक्त करब ककर काज छल?'

सत्यव्रत चौंकलाह। गज-ग्राहक आख्यान हुनका मोन पड़ल। गज पकड़ायल छल, ग्राह पकड़ने छल, पुकार आकाश धरि गेल छल। ओहि आख्यानमे ग्राह दोषी जकाँ लगैत अछि, मुदा

कखनो-कखनो जे पकड़ैत अछि, वएह संसारक झूठ सेहो पकड़ि लैत अछि। एतय गोहि देह नहि छोड़लक; मुदा देह चिबा कऽ नामकेँ देहक कैदसँ अलग कऽ देलक। जे हड्डी शासनक रजिस्टरमे फँसल रहैत, ओ पानिमे घुलि कऽ आवाज बनल।

बूढ़बा भूत कहलनि, 'एहि लेल शीर्षककेँ डर नहि बनाउ। गोहि सभक बीच जलसमाधि — ई भय अछि, मुदा भय मात्र नहि। ई देहक हार आ नामक मुक्ति दुनू अछि। जे देह चिबायल, से समाप्त नहि भेल; ओकर बन्धन टूटल। मुदा ई मुक्ति अपराधक क्षमा नहि। जे लोक ओकरा ओहि पानिमे ढकेलक, ओकर नाम ततेक सहज नहि छुटत।'

सत्यव्रत अपन कागच फाड़ि देबाक सोचलनि। मुदा हाथ रुकि गेल। कागच फाड़लासँ अपराध नहि फाटैत। ओ कागच खोलि धरती पर पसारि देलनि। ओकरा ऊपर अदालतक भाषा छल — 'मामला निस्तारित', 'अभिलेख अनुपलब्ध', 'प्रमाण अपर्याप्त', 'समय व्यतीत'। चन्ना गाछीक हवा चलल। अक्षर सभ काँपल। 'निस्तारित' सँ 'निशान' बनल। 'अनुपलब्ध' सँ 'अनाम' बनल। 'अपर्याप्त' सँ 'अपना प्यास' बनल। 'समय व्यतीत' सँ 'समय बितल, नाम नहि' बनल।

सत्यव्रत माथ पकड़ि बैसि गेलाह। हुनका पहिल बेर बुझायल जे कानूनक भाषा कतेक बेर मृतकक कनपट्टी पर दोसर मृत्यु लिखि दैत अछि। देह पहिने डूबल, नाम दोसर बेर डूबल। एहि दोसर डुबानमे ओ स्वयं कतेक बेर सहभागी रहलाह? ओ प्रश्न हुनकर छातीमे एना पैसल जेना गोहि दाँत नहि, पातक नोक।

ओ कहलनि, 'हम अबेरसँ आयल छी।'

पीपरक ब्रह्मा चारू मुखमे सँ एक्के संग बाजलाह, 'देरी सेहो एकटा अपराध अछि, मुदा देरीक स्वीकार एकटा दुआर अछि। दुआर खुलि सकैत अछि, जँ अहाँ ओकरा सँ भीतर पैसि कऽ बाहर नहि भागी।'

सत्यव्रत उठलाह। हुनकर जूता माटिमे अटकैत छल। प्रत्येक पग पर एकटा नाम सुनाइ दैत छल — सरयू, दुखन, महीतो, ललना, उज्ज्वल, हुलासी, नन्द, ओ अज्ञात बच्चा जकर देह खोरनाठीमे नहि जरल, ओ प्रवासी जे परदेसमे जन्मल आ अपन गामक नाम केवल उत्सवमे सुनल, ओ स्त्री जे ब्लैकमेलक भय सँ बाजि नहि सकली, ओ युवक जकर खाता म्यूल बनाओल गेल। नाम सभ अलग-अलग ने छल; सभ मिलि एकटा लम्बा साँस बनि गेल छल।

बच्चा सभ गाछीक किनार पर पहुँचि गेल। अनन्या सभसँ आगाँ। ओकरा हाथमे खाली कॉपी छल। ओ सत्यव्रतकेँ देखिकऽ पूछली, 'साक्षी की करैत अछि?'

सत्यव्रत बहुत काल धरि ओकरा देखैत रहलाह। हुनका लगलनि जे एहि बच्चाक प्रश्न सभ न्यायालयक प्रश्नसँ पैघ अछि। न्यायालय पूछैत अछि — प्रमाण कतय अछि? बच्चा पूछैत अछि — अहाँ देखलहुँ तँ कहब की?

ओ धीमे उत्तर देलनि, ‘साक्षी अपन आँखि बेचैत नहि। आ जँ कहियो बेचि देलक, तँ फेर जिनगी भरि ओकर दाम घुराबय पड़ैत अछि।’

अनन्या पूछली, ‘दाम कोना घुराइ?’

सत्यव्रत अपन पदनामक पट्टी जे कागचक भीतर लगल छल, ओकरा निकालि माटि पर राखि देलनि। ‘पहिने अपन नाम छोट कर। पद हटाकऽ। ओतहि सँ।’

बच्चा सभ हुनकर चारू दिस घेरा बनौलक। देविका, मीरा, सौम्या, ईरा, निशांत, आरुणि — सभ धीरे-धीरे आबि गेलाह। गोप कुमार कतहु देखाइ नहि पड़ल, मुदा नारिकेल पात एक बेर हिलल। सभ बुझि गेल — जे देखाइ नहि दैत, से अनुपस्थित नहि होइत।

सत्यव्रत कहलनि, ‘हम फैसला नहि लिखब। फैसला चन्ना गाछी देलक। हम केवल साक्षी-पत्र लिखब — ओहि सभक, जिनकर आवाज अदालत धरि पहुँचल नहि। मुदा ई साक्षी-पत्र अदालतमे पहिने नहि जायत। पहिने बच्चा सभ पढ़त। जे बच्चा पढ़ि सकत, ओही समाज कहियो फेर एहन अदालत बनाओत जतय मृतककेँ प्रमाणक प्रतीक्षा नहि करए पड़ए।’

बटुकनाथ हरिहरनक मोन ओहि घेरा बाहर टाँगल छल। ओकर देह दूर शहरमे छल, मुदा मोन गाछीक किनार पर। ओ देखैत छल — जे पदकेँ ओ जीवन भरि ढाल बुझलक, सत्यव्रत ओकरा माटिमे राखि रहल छथि। हरिहरनक भीतर ई दृश्य चुभल। ओ सोचलक — पद छोड़ब पर मनुष्य बचैत अछि? तखन ओकरा अपन भीतर एकटा बहुत पुरान आवाज सुनाइ देलक — ‘तोरा नाम की छल?’ ओकरा मोन नहि आएल।

चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन ओहि समय उज्जर भऽ गेल। स्क्रीन पर कोनो अंकीय पान नहि, कोनो सट्टा, कोनो खाता नहि। केवल सत्यव्रतक हाथ देखाइ दैत छल — माटि पर पदनाम राखैत। चन्द्रपाल तामस सँ फोन फेकि देलक। फोन टूटल नहि। टूटल शीशामे ओकर अपन चेहरा दस टा भऽ गेल; कोनो चेहरा पर नाम नहि।

राघव सिग्नलक मौन चटकल। मेटल सन्देश फेर आएल — ‘साक्षी बिकाउ नहि।’ ओ लिखए लगल — ‘ककरा दिस सँ?’ उत्तर नहि आयल। चन्ना गाछीमे उत्तरक आवश्यकता नहि रहैत; प्रश्न स्वयं धीरे-धीरे गवाही बनैत अछि।

लाउ किन-हंग अपन शीशाघरमे बैसल समुद्र देखैत छल। ओकर समुद्रक पानि एकाएक हरियर नहि, धूसर भऽ गेल। ओहि पानिमे एक नारिकेल पात तैरि आयल। पात पर देवनागरी अक्षर छल। ओ पढ़ि नहि सकल। मुदा डर पढ़ि लेलक। दुनियाँ भरिक खाताक भाषा ओकरा अबैत छल; नामक भाषा नहि।

चन्ना गाछीमे बूढ़ गोहि फेर सरकल। ओकर दाँत बीचसँ पानि टपकल। पनिडुब्बी ओकर स्वर फेर सुनौली — 'हम देह काटल। अहाँ सभ बन्धन काटू। देहक मुक्ति हम देलहुँ, नामक मुक्ति अहाँ सभ देब।'

मीरा आगाँ बढ़ली। ओ अपन हथेली माटि पर रखली। 'जे निजता चोरल गेल, ओकरा हम घुरा सकैत छी?'

बूढ़बा भूत कहलनि, 'घुरा नहि सकैत छी। मुदा चोरल वस्तुकेँ शर्मक कारण नहि, चोरीक प्रमाण बना सकैत छी। जखन पीड़ित शर्म छोड़ैत अछि, चोरक हाथ काँपैत अछि।'

देविका पूछली, 'जे भाइ स्क्रीनमे डूबल, ओकरा हम कोना बचाबी?'

'डूबलकेँ नहि,' पीपरक ब्रह्मा कहलनि, 'डूबयबला अगिला हाथकेँ। मृतकक प्रेम भविष्यक पहरेदारी बनि जाइत अछि।'

सौम्या अपन अभिलेख खोलली। कागच पर संख्या छल। ओ संख्या पढ़ए लागली, मुदा गाछीमे संख्या टिकि नहि पाबि रहल छल। प्रत्येक अंक नाम बनए चाहैत छल। ओ कॉपी बन्द कऽ देली। 'आब संख्या बादमे। पहिने नाम।'

ईरा अपन परदेशी उच्चारणमे 'गढ़ नारिकेल' बाजए चाहली, मुदा शब्द गलेमे अटकि गेल। अनन्या ओकर हाथ पकड़ि कहली, 'धीरे बाजू। गामक नाम जल्दी बाजलासँ ओ सुनैत नहि।' ईरा फेर बजली — 'गढ़... नारिकेल।' एहि बेर नारिकेल गाछक पात हिलल। परदेसक जन्म ओहि क्षण गामक स्मृतिमे प्रवेश केलक।

सत्यव्रत पहिल साक्षी-पत्र लिखए बैसलाह। पहिल पंक्ति लिखलनि — 'हम, सत्यव्रत मेहता, पूर्व पदसँ नहि, वर्तमान पश्चात्तापसँ, ई स्वीकार करैत छी जे जखन नाम पुकारल जा रहल छल, हम बहुत काल धरि प्रक्रिया सुनैत रहलहुँ।'

ओ लिखि कऽ रुकलाह। चन्ना गाछीमे कोनो ताली नहि बाजल। सच्चा स्वीकार पर ताली नहि, शान्ति अबैत अछि। ओहि शान्तिमे गोहि सभ पाछाँ हटए लगल। ओ सभ पानिक ओर घुरि रहल छल। देहक पहरेदार अपन काज पूरा कऽ चुकल छल; आब नामक पहरेदारी मनुष्यक हाथमे देल गेल।

जखन अन्तिम गोहि पानिमे पैसल, सत्यव्रत ओकर पाछाँ देखैत रहलाह। ओ बुझलाह — गोहि सभ दैत्य नहि, दर्पण सेहो अछि। जे देहक लोभमे जीबैत अछि, ओकरा दाँत लगैत अछि। जे नामक बन्धनमे अटकल अछि, ओकरा दाँत मुक्ति बनि सकैत अछि। ई विरोधाभास सहब कठिन छल, मुदा सत्य कठिन होइत अछि किएक तँ ओ एक्के बेरमे दया आ दोष दुनू देखबैत अछि।

बच्चा सभ साक्षी-पत्रक चारू कात बैसल। अनन्या पहिल नाम पढ़ली। फेर दोसर बच्चा दोसर। धीरे-धीरे चन्ना गाछीमे राति नहि, पाठ शुरू भेल। कबड्डी ओहि राति स्थगित रहल। खेल फेर होएत, मुदा नाम पढ़लाक बाद।

सत्यव्रत मेहता अन्तिम बेर अपन पदनामक पट्टी दिस तकलनि। पवन ओकरा उनटा देलक। पाछाँ सादा कागच छल। ओ मुस्कुरेलाह नहि; मुस्कुराएबाक समय नहि छल। ओ खाली पाछूक सादा भाग पर एक पंक्ति लिखि देलनि — ‘जे सुनि लेल गेल अछि, से आब असगर नहि अछि।’

चन्ना गाछीक ऊपर भोरक पहिल पंछी बजल। ओ पक्षीक स्वरमे कोनो घोषणा नहि छल। बस एतबे बुझाइत छल जे राति अपना पूरा अन्हार खर्च कऽ चुकल अछि। आगाँ दिन अछि, आ दिनमे गवाही झूठसँ बेसी कठिन होइत अछि।

सत्यव्रत कागच समेटलनि। बच्चा सभ उठल। पात सभ धीरे-धीरे सामान्य हिलए लागल। मुदा गाछीक माटि पर जतय पदनाम राखल गेल छल, ओतय एकटा छोट नारिकेल अंकुर फुटि आयल। ककरो आश्चर्य नहि भेल। गढ़ नारिकेलमे जे पद माटिमे गड़ैत अछि, कखनो-कखनो ओ नामक गाछ बनि जाइत अछि।

लोकगीत: साक्षीक भारी छाती

लोकधुन: प्रायश्चित्त गीत

तौलू हे छाती, तराजू नहि—छाती पर तौलू हे,
पद माटि मे गड़ल तँ नामक अंकुर फुटल हे।

साक्षी तराजूपर नहि, छातीपर तौलाइ,
पदक पट्टी उलटिते सादा कागच देखाइ।
‘प्रक्रिया सुनैत रहलहुँ जखन नाम बजल’,
मेहताक स्वीकार पर ताली नहि—शान्ति उतरल।
संख्या नाम बनए चाहल, कापी बन्द भेल,

‘पहिने नाम’ कहिते गोहिक घेरा ढलल।
जे सुनि लेल गेल, आब अकेल नहि,
पछतावाक हाथमे काजक पात सही।
पद माटिमे गड़ल तखन अंकुर फुटल नाम,
भारी हाथ उठेलक साक्षीक पहिल धाम।

ताली नहि बजल, सभा मे शान्ति उतरल,

❖

अध्याय ५२

अगिला आवाज

गोहि देह चिबा सकैए, अदालत बरख, स्क्रीन मोन— मुदा बच्चाक हाथक पहरा किओ ने चिबा सकल।

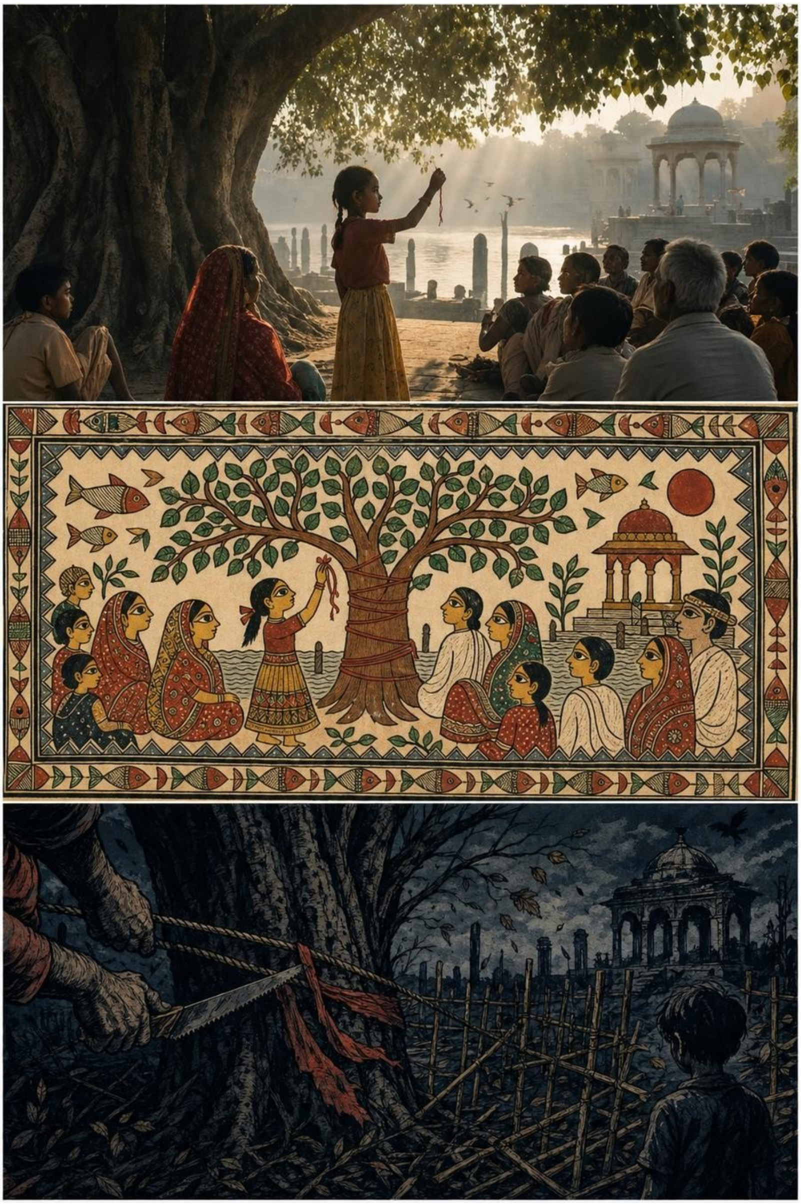

अध्यायारम्भ लोकगीत: चौपाल अगिला स्वर

लोकधुन: सामूहिक नाम-गीत

बैसू हे चौपाल, गोल-गोल बैसू हे,
अपन स्वर पूरा भेला पर अगिला लेल ससरू हे।

कटल गाछिक ठाम चौपाल नव उगि आए,
एक स्वर पूरा भेल कि अगिला आसन पाए।
कियो पहिने, कियो पाछाँ—सभकेँ बराबर बेर,
लोकक कथा नदी समान चलै घेर-घेर।

अगिला आवाज लेल खाली जगह बचाउ,
अपन जीतक शोरसँ दोसर स्वर नहि दबाउ।
चौपाल अगिला स्वरकेँ स्वागत फूल धरत,
सुनवाईक निरन्तर धारा समाज पूर्ण करत।

कटल गाछक ठामे उगल बैसारक बसेरा,
एक-एक कऽ सभक कथा, ने धक्का ने घेरा।
जीतक शोर धीमा राखू, हारल स्वर उठाउ,
नदी जकाँ अनवरत सुनवाइक धार बहाउ।

❖

ओहि सुनबामे उपन्यासक अन्त नहि, आरम्भक अगिला आवाज छल। गोहि सभ देह चिबा सकैत अछि, अदालत बरख चिबा सकैत अछि, स्क्रीन मोन चिबा सकैत अछि; मुदा जँ नामक पहरा बच्चा सभक हाथमे पहुँचि जाए, तँ जलसमाधि सेहो बन्धन-मुक्तिक द्वार बनि सकैत अछि। चन्ना गाछीमे ओहि दिन कथा समाप्त नहि भेल — केवल एकटा दीर्घ, करुण, आ उज्जर साँस लेल गेल।

मुदा दीर्घ साँसक बादो संसार ठाढ़े नहि रहैत अछि। आस्ते-आस्ते चन्ना गाछी केँ काटल जाय लागल। पहिने ओहि पर कसकैत रस्सी बन्हायल, फेर लाल कपड़ा हटाओल गेल, फेर जड़िक चारूकात बाँसक घेराबन्दी बनाओल गेल। जे गाछ दिनोमे अन्हार राखैत छल, जकरा छाहरिमे लोक अपन साँचो-झूठो भय लुकबैत छल, से धीरे-धीरे दिन-राति देखऽ लागल। पात

झड़ल, टहनी सूखल, फुनगी खुलल, आ जकरा तले भूतक कबड्डी देखल गेल छल, ओहि धरतीपर मजदूरक हथौड़ी बजऽ लागल।

पहिने-पहिने लोक चुपचाप देखैत रहल। ककरो बुझाइत छल — ई उचिते अछि; जे गाछिमे अदालत लगैत छल, जँ ओकर छाँह हटत, तँ भय सेहो हटत। दोसर कहैत छल — नहि, एतय भय नहि, स्मृति बसैत छल। मुदा सरकारी नक्शा पर चन्ना गाछी केवल "अतिक्रमण" कहल गेल। ठीकेदारक कागच पर ओ "विकास क्षेत्र" बनि गेल। नगरपालिकाक फाइलमे लिखायल — "प्रकाश, सड़क, आवागमन आ सार्वजनिक उपयोगक लेल सफाई।" जे गाछ बरखौं-बरख लोकक गवाही सहेजलक, ओकरा तीन पाँतिमे मापि कऽ काटबाक आदेश जारी भऽ गेल।

जखन पहिल मोटगर डालि जमीन पर पड़ल, तखन अनसोची ढंगें प्रकाशक एक लमछर धारि भीतर तक पैसल। लोक देखलक — एतय जे सदिखन अन्हार बुझाइत छल, से अन्हारक भीतर कतेक रंग रहल। जड़िक भीजुली धारी, फाँकिमे फँसल चुनरीक टुकड़ा, पुरान माटिक दिया, कतेको नाम लिखल छोट पाथर, कतेको बच्चाक काँचक गोली — सभ एक-एक कऽ बाहर देखायल। जे लुकायल छल, से नष्ट नहि भेल; उनटे प्रकाशमे पढ़ाए लगल।

तखन सत्यव्रत मेहता फेर ओहि ठाम आएलाह। एहि बेर ओ पदक गाड़ी पर नहि, ने आदेशक फाइल लेनिहार अधिकारी जेकाँ। एकटा साधारण सफेद कुरता, थाकल चेहरा, हाथमे पुरान कपड़ाक झोरा। ओ चुपचाप कटल जड़िक नजदीक बैसलाह। बहुत काल धरि किछु नहि कहलाह। लगमे ठाढ़ बच्चा सभ — जिनकर हाथमे आब नामक पहरा छल — ओकरा सभमे सँ एक बालिका पूछली, "गाछि कटल जा रहल अछि, तँ कथा सेहो कटल जाएत?" सत्यव्रतक आँखि एक बेर चन्ना गाछीक अधकट टहनी दिस उठल, फेर बालिकाक चेहरा दिस। ओ धीरे कहलखिन, "गाछि कटैत अछि, जड़ि सुनैत रहैत अछि। कथा ओतय जीवैत अछि जतय सुनएबला बचल रहै।"

एहि उत्तरमे कानूनी तर्क नहि छल, ने लोक-लुभावन वचन। मुदा ओहि दिन उपस्थित सभ लोक बुझलक जे सत्यव्रत एखनो स्वयं केँ बरी नहि मानैत छथि। हुनकर मौनक अपराध सम्पूर्ण मेटायल नहि। कदाचित् एहि कारणेँ हुनका सभहक सोझाँ बैसल रहब स्वीकार छल। कतेक महिला, कतेक युवक, कतेक बूढ़, जकर जीवनक कोनो पृष्ठ भ्रष्ट अदालत, डिजिटल ठगी, अस्पतालक दलाली, विदेशीक लालच, ऑनलाइन जुआ, औषधिक बजार, वा मौन स्वीकृति सँ

जरायल छल, एक-एक कऽ चन्ना गाछीक आसपास आबि ठाढ़ होमऽ लागल। कोनो सभा घोषित नहि भेल, मुदा सुननाइ फेर आरम्भ भऽ गेल।

आश्चर्य ई जे जतेक गाछि कटैत गेल, ततेक आबाजाही बढ़ैत गेल। पहिने जहिना लोक सिहरि कऽ अबैत छल, आब खुलेआम अबैत गेल। दिनोमे चाहबला ठेला लगा देलक। साँझमे स्त्री सभ दिया राखि देती। किछु युवक मोबाइल पर फोटो खिंचैत, लाइव करैत, चन्ना गाछीक कथा फुसफुसाइत। किछु शिक्षक बच्चा सभक संग आएल, हुनका सभ कैँ बतबैत — “ई ठाम केवल गाछ नहि, लोकस्मृतिक एक जीबैत पृष्ठ अछि।” मजदूर सभ जे काटबाक काज पर लागल छल, ताहूमे सँ किछु रातिमे चुपचाप जड़िपर जल ढारि दैत। कारण, ओ सभ कहैत — “हमरा हाथसँ कटैत अछि, मुदा एतय किछु अछि जे कटलापर सेहो निघरि कऽ देखैत अछि।”

धीरे-धीरे चन्ना गाछीक विशाल छत्र टूटि गेल। आकाश पूरा देखाइ पड़ल। जे ठाम दिनमे अन्हार रहैत छल, एखन ओतय बिहानक धूप पहिने आबऽ लागल, फेर दुपहरियाक कठोर उजास, फेर साँझक धूसर इजोत। चिरई सभ फेर घुरि आयल, मुदा ओहि फुनगीपर नहि — कटल ठूठक कगारपर। रातिमे चन्द्रमा सोझे ओहि जगहि पर उतरैत बुझाइत। लोकक आवाजाही सहज भेल; जकरा एतय सँ गुजरबाक हिम्मत नहि होइत छल, ओहो रुकि जिज्ञासा करैत। चन्ना गाछी भयक अड्डा सँ धीरे-धीरे सार्वजनिक स्मृतिक चौक बनैत गेल।

मुदा जाहि दिन अन्तिम बड़ी फाँड़ काटल गेल, ओहि दिन एक विचित्र बात भेल। जड़िक भीतरसँ सड़नक गन्ध नहि, अपितु भीजल माटि, धूप, पुरान कागच, आ दूधमुँहा बच्चाक केश जेकाँ कोमल गन्ध उठल। मजदूरक कुल्हाड़ि एक क्षण लेल अटकि गेल। कटानक गोल घेरामे ठाढ़ बच्चा सभक हाथमे जे नाम-लिखल पाथर छल, से एक संग गरम भऽ उठल। कियो चिकरल नहि; सभ चुप्पे एहि गरमाहटकेँ अनुभव केलक। जनु गाछि अपने कहि रहल हो — “हम एतय छी, मुदा ओहि रूपमे नहि, जाहि रूपमे अहाँ सभ हमरा देखि अभ्यस्त छलहुँ।”

ओहि साँझ गोहि सभ फेर देखल गेल — पानिक तलसँ नहि, लोकक स्मृतिक किनारसँ। केओ वास्तविक रूपेँ ओ सभ केँ नहि पकड़ि सकल, मुदा जे सभ जलसमाधि, देहक नाश आ भीतरक बन्धन-मुक्तिक कथा बुझि चुकल छल, ओ सभ केँ बुझाइत रहल जे गोहि सभक असली भूख देह पर समाप्त होइत अछि। नाम, जँ बच्चा सभ पहरा देत, तँ बाँचल रहैत अछि। गज-ग्राह आख्यानक सीख फेर उभरल — ग्राह जँ पकड़ैतो अछि, तँ पुकार जँ साँच हो, तँ डूबनाइ सेहो रूपान्तरण बनि सकैत अछि।

तखन ओहि बालिका — जिनका पहिने सत्यव्रतसँ प्रश्न केने छल — कटल ठूठ पर हाथ राखि कहली, “एतय फेर गाछि उगाओल जाए?” दोसर बच्चा कहलक, “नव गाछि, मुदा पुरान नाम।” तेसर कहलक, “नव गाछिक छाँहमे झूठक अदालत नहि, सुननाइक चौपाल बनत।” सत्यव्रत मेहता मुस्कीओ नहि देलखिन; हुनकर आँखिक कोना भीजल छल। ओ झोरासँ एकटा पुरान रजिस्टर निकालि बच्चा सभकेँ दऽ देलखिन। रजिस्टरक पहिल पन्नापर लिखल छल — “जकर नाम सुनल गेल, ओकर अस्तित्वक पहिल गवाही।” बालिका ओहि पन्नाक नीचाँ अपन हाथेँ लिखली — “आइ सँ पहरा हमरा सभक।”

एहि एक वाक्यमे अध्याय सभक अनेक दुःख एक विचित्र सहजतासँ ठाम पाएल। भ्रष्टाचार, अदालतक तारीखपर तारीख, ठगीक सिग्नल, हांगकांगक छाह, मेरठक जालसाज डिग्री, वैक्सीन आ दवाईक व्यापार, जुआ, हवाला, विदेशीक लोभ, सत्ता आ बाररूमक दलाली — एहि सभसँ झँझोड़ल लोक जतेक रहथि, हुनकर सभ कथा एकदम मिटल नहि। मुदा एखन ओकरा सभक सोझाँ एकटा दोसर विधान खुलल — स्मृति कैँ संस्थान बनाओल जा सकैत अछि, जँ ओकर पहरा निर्दोष हाथमे देल जाए।

राति गहरायल। कटल जड़िक चारूकात दिया जरल। दूर नाव पर बैसल मनुखक स्वर आब अस्पष्ट नहि रहल; से साफ सुनाइ पड़ल — ने कोनो मन्त्र, ने विलाप; बस नामक पाठ। एक-एक कऽ नाम उच्चरित होमऽ लागल। जे लोक अबैत छल, ओ अपन गुमायल, ठगल, डुबायल, चिबायल, चुप कराओल प्रियजनक नाम कहैत। बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखैत। स्त्री सभ सुनैत। बूढ़ सभ साक्षी देती। युवक सभ मोबाइल ऑफ कऽ देती। सत्यव्रत चुप बैसल सुनैत। ओहि सुनबामे पछतावा छल, प्रायश्चित्त छल, मुदा ताहिसँ बढ़ि कऽ एकटा नव सामाजिक स्वर रचल जा रहल छल।

भोर भेल तखन लोक देखलक — कटल ठूठक एक धारीपर अति सूक्ष्म हरियर बिन्दु फूटल अछि। से कोंढ़ नहि कहल जाए जेना तुरन्त उत्साहेँ कियो बाजि उठै; से मात्र एक सूक्ष्म हरियर संकेत छल। कियो ओकरा चमत्कार कहलक, कियो स्वाभाविक जिजीविषा, कियो माटिक जिद। मुदा बच्चा सभक लेल से बस एतबे छल — “गाछि सुनि रहल अछि।” ओ सभ हँसल नहि, शोर नहि केलक, बस ठाढ़ भऽ हाथ जोड़लक।

सत्यव्रत उठलाह। एखन हुनका जाएब छल। मुदा एहि बेर हुनका गमनमे पुरान प्रकारक अन्त नहि छल। बालिका पूछली, “अहाँ फेर आएब?” ओ कहलखिन, “जतए नाम पुकारल जाएत, ओतए हम सुनएबाक ऋणमे रहब।” एहि उत्तरमे पदक गन्ध नहि, मनुष्यक स्वीकार

छल। ओ धीरे-धीरे भीड़सँ बाहर गेलाह। लोक हुनका रास्ता दऽ देलक, मुदा कियो प्रणामक विधि नहि दोहरौलक; जनु सभ बुझि चुकल छल जे एखन व्यक्तिपूजा नहि, सुननाइ जरूरी अछि।

मजदूर सभक औजार एक कात पड़ल छल। कटान रोकबाक फाइल फेर चलत; एखन लोक ठूँठक चारू कात नाम पढ़ैत रहल।

ई कारणेँ चन्ना गाछीमे ओहि दिन कथा समाप्त नहि भेल। गाछि अधकट रहि गेल, मुदा चौपाल उगि गेल। अन्हार छँटि गेल, मुदा रहस्य मरल नहि। जलसमाधि भयक अन्तिम शब्द नहि रहल; से बन्धन-मुक्तिक दुआर बनि गेल। आ जे दीर्घ, करुण, उज्जर साँस ओहि दिन लेल गेल छल, से एखन धरि चलि रहल अछि — एकटा सामूहिक, अपूर्ण, मुदा अविराम साँस जेकाँ।

आ फेर — जकरा लोक अन्त मानि रहल छल — ओतय सँ कथा फेर आरम्भ भेल।

लोकगीत: अगिला आवाजक चौपाल

लोकधुन: सामूहिक नाम-गीत

उगल हे चौपाल, कटल गाछी लग उगल हे,
जतऽ अन्त बुझल गेल, कहानी फेर पलल हे।

कटल गाछिक ठाम दिया, चौपाल उगि आयल,
एक-एक प्रियजनक नाम राति भरि गायल।
नेना लिखै रजिस्टर, स्त्री सुनै नेह,
बूढ़ देत गवाही, युवक बुझबै परदाक गेह।
सूक्ष्म हरियर बिन्दु ठूँठपर फुटि कहै—

'गाछि सुनि रहल अछि, कथा फेर चलै।'
जलसमाधि भयक अन्तिम शब्द नहि रहल,
बन्धन-मुक्तिक दार बनि लोकक स्वर बहल।
अपूर्ण सामूहिक साँस एखन धरि चलै,
जतय अन्त बुझल गेल, कहानी फेर पलै।

ठूँठ पर हरियर बिन्दु फुटि कऽ बाजल—

❖

अध्याय ५३

कटानक बादक बिहान

गाछ कटलापर भोर नहि रुकै छै— ठूँठो सोझे सूर्य दिस ताकए लागै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: ठूँठक भोर

लोकधुन: पराती

जागू हे ठूँठ, भोरक सोना ओढ़ू हे,
कटल डारिक ठामो नब कोंपल जोड़ू हे।

गाछ कटल तइयो सूर्यक बाट नहि रुकल,
ठूँठक ओसपर भोरक पहिल सोना झुकल।
जड़ि भीतर जीवन जागल, कोंपल संकेत देत,
विनाशक पाछाँ पुनर्निर्माणक दिन भेटत।

ठूँठक चारू कात माटि नरम-नरम करू,
बीज, पानि, पहरा दऽ नव गाछी फेर भरू।
ठूँठक भोर कहै—आशा जड़ि धरि जाए,
कटल इतिहाससँ नब भविष्य फूटि आए।

रातिक ओस जड़ि धरि रिसल, माटि भेल नरम,
पहिल किरिण छूबिते जागल भीतरक मरम।
चारू कात बीज-पानि-पहराक तैयारी,
कटल इतिहासक छाती पर उगत फुलवारी।

❖

राति भरि जतेक लोक जागल रहल, ओकरा सभकेँ भोर ओहि दिन अबेरसँ नहि, अकस्मात् भेटल। जे चन्ना गाछी शताब्दी धरि भोरकेँ रोकि राखैत छल, से अधकट ठूँठक रूपमे पहिल बेर सूर्यकेँ बिनु परदा भीतर आबय देलक। उजास भीतर पैसल तँ लोक खुशीसँ नहि, एकटा अनचिन्ह लाजसँ भरि उठल। जनु कोनो बूढ़ देह, जे सदिखन चादरमे ढाकल रहल, अचानक लोकक बीच उघाड़ भऽ गेल हो।

चन्ना गाछीमे दिनोमे अन्हार रहैत छल। ओ अन्हारमे कथा अपन आवाज बचा लैत छल। लोक ओतय धीरे बाजैत, पएर सम्हारि राखैत, बच्चाकेँ डाँटि चुप करबैत। भूतक कबड्डी ओहिना चलैत छल जेना साँस बिनु शब्दक भीतर चलैत अछि। मुदा आब, जखन बड़का डालि सभ काटि पड़ि गेल छल, जखन पातक छाजन तीन भागमे फाटि गेल छल, तखन आकाशक नील रंग चन्ना गाछीक बीच अटकि रहल छल। लोक पहिल बेर ओहि ठाममे ऊपर देखि सकल,

जतय पहिने केवल डारि, झूमर, पीपड़ी, चिड़ैक डरायल पाँख, आ पुरान कथा लटकल देखाइ दैत छल।

भोरक पहिल इजोत ठूँठक गोल कटान पर पड़ल। कटानक भीतर बरखा-वर्षाक वृत्त छपल छल — गाढ़, फीक, गाढ़, फीक — जनु गाछि अपना देहमे समयक काठिन्य आ नरमी दुनू लिखने रहल। बूढ़बा भूत ओहि वृत्त सभकेँ गिनैत छलाह। हुनकर आँखिमे एतबा उजास पहिने कखनो नहि पैसल छल। ओ फुसफुसा कऽ कहलनि, "देखू, गाछि कटैत अछि तँ ओ अपना उमेर खोलि दैत अछि। मनुक्ख कटैत अछि तँ ओकर नाम खोलबाक चाही।"

ककरो बुझल नहि जे ई बात ककर कानमे पहुँचल। मुदा ओहि क्षण चन्ना गाछीक चारूकात बैसल बच्चा सभ एक-दोसराकेँ देखलक। हुनका सभक हाथमे रातुक नाम-पुस्तिका छल। पन्ना भीजल नहि छल, मुदा पन्नामे गन्ध पानिक छल। एकटा बालक पन्ना फड़कबैत कहलक, "आइ सँ पहरा दिनमे सेहो।" तखन दोसर कहलक, "भूत सभ रातिमे खेलैत छथि, हम सभ दिनमे नाम राखब।"

कबड्डी बन्द नहि भेल छल। केवल ओकर समय बदलल छल। रातिमे भूत, प्रेत, राकश, लोथ, पनिडुब्बी आ डाइन सभ अदृश्य साँस रोकि खेलैत छल। दिनमे बच्चा सभ खुलल उजासमे खेलबाक रेखा बनबैत छल। पहिने रेखा माटिमे खिंचल गेल। फेर बच्चा सभ ओहि रेखाक किनार नामक पाथर राखि देलक। खेलक नियम सादा छल — जे कोनो पाथर ठोकरसँ हटल, खेल रोकल जाएत; पहिने नाम फेर ठीक ठाम राखल जाएत, तखन साँस चलत।

एहि नव नियमपर बूढ़ लोक मुस्कुरायल। हुनका सभकेँ अपन नेनाक खेल मोन पड़ल, मुदा ई खेल साधारण नहि छल। एतय कबड्डीमे छूएलाक अर्थ जीत नहि, बचाओनाइ छल। जे रेखा लाँघै, ओकरा दोसर दल पकड़ै नहि, पूछै — "अहाँ ककर नाम लऽ कऽ आएल छी?" जँ ओ नाम बिनु पैसल, ओ हारल। जँ नाम कहलक, सभ ओकरा छोड़ि देलक। एहि खेलमे पकड़नाइ कम, सुननाइ बेसी छल।

देविका साह भोरहि आबि गेली। हुनकर माथपर सफेद दुपट्टा छल, आ आँखिमे राति भरि जागल लोकक किरकिरी। ओ उज्ज्वलक नाम-पाथर पर हाथ फेरलनि। पाथर ठण्ढा छल। ओ कहली, "स्क्रीनमे जे डूबल, ओकर नाम माटि पर गरम रहबाक चाही।" बच्चा सभ हुनका लागि ठाम छोड़ि देलक। ओ बैसि गेली, आ पहिल बेर बिनु कानने उज्ज्वलक पूरा नाम लिखलनि — उज्ज्वल कुमार झा — मायकेँ कहने बिनु मोबाइलमे हारल नहि, ठगीसँ घेरायल, भयमे असगर छोड़ायल। ई पूरा वाक्य लिखैत हुनकर हाथ काँपल, मुदा टूटल नहि।

मीरा चुपचाप आइल। ओहि दिन ओ रंगीन कपड़ा नहि पहिरने छली; साधारण नीला कुर्ती, कन्हापर झोरा। जतेक लोक हुनका तकलक, ओ सभक आँखिमे जिज्ञासा कम, आदर बेसी छल। हुनका देखिते बच्चा सभ अपन पंक्ति सँ एक पाथर निकालि ठूँठक कात राखलक — "निजता।" मीरा ओकरा देखि मुस्कुरेली। कहली, "नामक पहरा जतेक जरूरी, मौनक अधिकार सेहो ततेक जरूरी। सभ कथा सार्वजनिक नहि होइत; जे कहए चाहय, ओकरा सुनू; जे चुप रहए चाहय, ओकर चुप्पीकेँ सेहो पहरा दियौ।"

ईरा रातिक बससँ पहुँचली। विदेशक शिक्षा, सभागार, शोध, प्रश्न, भाषण — सभ ओकर चेहरा पर थाकि कऽ बैसल छल। ओ भोरक उजासमे चन्ना गाछीक कटायल देह देखि ठिठकि गेली। ओ सोचली — एतबा नंगी स्मृति कोनो संग्रहालयमे नहि भेटत। ओ अपन नोटबुक खोलली, फेर बन्द कऽ देली। एखन लिखबाक समय नहि, सुनबाक समय छल। ओ बच्चा सभक बीच बैसि गेली। एक नेनी ओकरा पूछली, "अहाँ दोसर देशसँ एली?" ईरा कहली, "हँ।" नेनी फेर पूछली, "ओतय नाम कटैत अछि?" ईरा बहुत काल बाद उत्तर देली, "ओतय नाम चमकदार अक्षरमे बदलि देल जाइत अछि। कटनाइ ओतय अलग ढंगक होइत अछि।"

आरुणि दूर सँ देखैत रहल। हुनका मोन पड़ल जे पहिने एहि गाछी लग अन्हार ओकरा भीतरक अन्हारसँ मेल खाइत छल। आब उजास मेल नहि खा रहल छल। उजास प्रश्न करैत छल। बा कहैत छलीह — "अन्हारमे झूठ लुकैत अछि, मुदा उजासमे झूठ पसेना छोड़ैत अछि।" सचमुच, कटायल ठूँठ लग जे-जे लोक अबैत गेल, ओकरा सभक चेहरा पर अपन-अपन भीतरक पसेना देखाइ पड़ैत रहल।

सत्यव्रत मेहता ओहि बिहान नहि आएलाह। हुनकर अनुपस्थिति सेहो उपस्थिति जेकाँ दर्ज भेल। बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखलक — "सुनएबला मनुष्य अनुपस्थित, मुदा ऋण उपस्थित।" कियो हँसल नहि। कियो सुधारल नहि। नामक पहराकेँ आब ई बुझि गेल छल जे देहक अनुपस्थिति आ उत्तरदायित्वक अनुपस्थिति एक बात नहि।

दुपहर लग चन्ना गाछीक नव चौक पर छोट-छोट काज शुरू भेल। केओ पानिक घड़ा राखलक। केओ छाँह ने रहलाक कारण कपड़ा बाँधि अस्थायी छतरिया बनयलक। केओ चूना सँ गोल घेरा बनाओलक। केओ रेत साफ केलक। केओ पाथर पर नाम गाढ़ करबाक लेल छैनी आनलक। ई सभ काजमे कोनो अध्यक्ष नहि छल, कोनो उद्घाटन नहि, कोनो फीता नहि। लोक एक-दोसरासँ पूछैत — "एहि नामक कातमे ठाम छोड़ू, कदाचित् परिवार आबि नाम पूरा करए।" अधूरा नामक लेल खाली ठाम राखल गेल। एतय खाली स्थान सेहो स्मृति भेल।

बूढ़बा भूत दिनक उजासमे अधिक काल रहि नहि सकैत छलाह। तथापि ओहि दिन ओ एकटा कटल डारिक छाँहमे टिकि गेलाह। हुनकर कारी देह धूपमे पातल भऽ रहल छल। हुलासी हुनका टोकलनि — “धूपमे रहब तँ मिटि जाएब।” बूढ़बा बाजलाह — “मिटब नहि; किछु कारी उजासमे घुलैत अछि, ताकि बच्चा सभक आँखि अन्हारक अभ्यस्त नहि रहि जाए।” हुलासी किछु नहि कहलनि। ओ पहिल बेर दिनमे इनारक दिशा दिस देखली; ओतय पानिक सतह पर ओकर प्रतिबिम्ब नहि, एकटा लड़कीक चेहरा चमकि रहल छल जे रजिस्टरमे नाम लिखि रहल छल।

साँझ धरि गामक लोकक आवागमन सचमुच बढ़ि गेल। जे लोक पहिने कहैत छल जे चन्ना गाछी भूतहा अछि, ओ आब कहैत छल — “चलू, नाम देखब।” जे कहैत छल जे गाछि कटि गेल तँ कथा समाप्त, ओ आब देखैत छल जे कथा पातसँ उतरि लोकक जीह पर आबि गेल अछि। मुदा संगहि-संग चन्ना गाछीक बाहरक बाट पर दू अनचिन्हार लोक घुमैत रहल। हुनका सभक जूता गामक माटि सँ मेल नहि खाइत छल। एकजना मोबाइल पर धीमे बजैत छल — “ठाम खुलि गेल अछि। भीड़ नियमित अछि। परियोजना सम्भव अछि।”

ककरो ध्यान नहि गेल, मुदा पनिडुब्बीकेँ गेल। पोखरिक पानि साँझमे एक बेर गोल-गोल घुमि उठल। ओ बड़की केशबाली आत्मा पानिक तलसँ देखैत रहली — स्मृति जतय लोकक हाथमे जागैत अछि, ओतय बजार सेहो सूँघैत आबैत अछि।

सूर्य डूबबाक पहिने बच्चा सभ अन्तिम बेर कबड्डी खेलए उतरल। एहि बेर साँस रोकि जे बालक भीतर गेल, ओ “कबड्डी” नहि, “उपस्थित-उपस्थित” बजैत गेल। दोसर दल ओकरा पकड़लक नहि; ओकरा घेरि कऽ नाम सुनैत रहल। खेल पूरा भेल तखन सभ बच्चा थाकल छल, मुदा हारल कोनो नहि। धूलि उड़ल, धूप उतरि गेल, आ कटायल ठूँठक हरियर बिन्दु पर साँझक पहिल तारा अटकि गेल।

ओहि ताराकेँ देखैत अनन्या पूछली, “ओ कोन तारा अछि?” केओ उत्तर नहि देलक। ईरा ऊपर तकली, ओकरा दूरक आकाशमे एक विचित्र ठण्ढा चमक देखाइ पड़ल — जेना कोनो नाम-विहीन ठाम धरतीक आवाज सुनि रहल हो। ओ किछु कहय चाहैत छली, मुदा तखने गामक चौकीदार पीयर कागच लऽ कऽ दौड़ैत आयल। कागच नगरपालिकाक मोहर लागल नोटिस छल।

पीयर कागच ठूँठ पर चिपकाओल गेल। बच्चा सभ खेल रोकि देलक। बूढ़बा भूत अन्हारमे फेर गाढ़ भऽ गेलाह। पनिडुब्बी पानिक भीतर मुस्की देली — बजार आबि गेल छल। नामक पहराक पहिल परीक्षा बिहान नहि, आब शुरू होमय जा रहल छल।

लोकगीत: ठूँठक बिहान

लोकधुन: पराती

उठेलक हे ठूँठ, भोर दिस माथ उठेलक हे,
नामक पहरा जागल—गोहिक नव चाल नियर हे।

गाछ कटल, मुदा सूर्यक बाट नहि रुकल,
ठूँठ सोझे भोर दिस अपन माथ उठेलक।
उजास भीतर पैसल तँ लाजक नोर झरल,
ढाकल बूढ़ देह जेकाँ इतिहास उघरल।
नेना 'उपस्थित' कहि कबड्डीमे दौड़ल,

दोसर दल पकड़लक नहि, नाम घेरि सुनल।
हरियर बिन्दुपर साँझक तारा अटकल,
तखने पीयर कागच लऽ बजार दौड़ि पहुँचल।
कटानक बाद बिहान एखन परीक्षा थीक,
नामक पहरा जागल, गोहिक नब चाल निकट।

साँझक तारा हरियर बिन्दु पर आबि अटकल।

❖

अध्याय ५४

ठूँठक चारू कात

जतय डारि नहि बचल, ओतहु माथ झुकै छै— आब अन्हारसँ नहि, गवाहीसँ।

अध्यायारम्भ लोकगीत: जड़िक घेरा

लोकधुन: चौपाल-मंगल

बनाउ हे घेरा, जड़िक चारू कात बनाउ हे,
ठूँठ केन्द्र, लोक परिधि—नब गाछी उगाउ हे।

डारि नहि बचल तइयो जड़िक घेरा बनाउ,
लोक गोल बैसि स्मृति, योजना, गीत सुनाउ।
ठूँठ केन्द्र, जन चारू कात—नब गाछी निर्णय,
कियो पानि, कियो बीज, कियो पहरा दए निश्चय।

घेरा रक्षा मात्र नहि, साझा कर्मक थान,
जड़िक संग जुड़ल रहत माटि, जल आ प्राण।
जड़िक घेरा मजबूत हो तँ वन घुरि आए,
सामुदायिक नेहसँ सूखल धरती हरियराए।

कियो कोदारि, कियो घैला, कियो गीतक थारी,
साझा कर्मक अरिपन सँ सजल माटि सारी।
घेरा टूटए नहि, हाथ सँ हाथ बान्हल,
सूखल भूमियो हरियराए, नेह जँ सान्हल।

❖

ठूँठक चारू कात पहिल बेर लोक गोल घेरा बनाकऽ बैसल। पहिने चन्ना गाछीक भीतर पैसैत लोक माथ झुकबैत छल, कारण डारि कम छल कि अन्हार अधिक, से बुझब कठिन छल। आब माथ झुकएबाक कारण बदलि गेल छल। गाछि कटि गेल छल, मुदा जड़ि उघारि कऽ एना पड़ल छल जेना बूढ़ देहक छाती चीरि कऽ भीतरक अस्थि देखाओल गेल हो। लोक माथ झुकबैत छल, डर सँ नहि, लाज सँ।

कटल ठूँठक कगारपर धूपक पहिल टुकड़ा बैसल छल। ओ धूप सोना जेकाँ चमकैत नहि छल; ओ धूप वैद्यक छुरी जेकाँ निर्भीक छल। जे अन्हार बरखों धरि लोकक पाप, प्रेम, झूठ, गवाही, प्रण, चोरी, आ रोदन नुकौने छल, से अन्हार हटिते सभटा वस्तु अपना-अपना रूपमे देखाइ पड़ए लागल। जड़िक एक फाँकिमे माटिक भीतरी नमी छल, दोसर फाँकिमे लाल

कपड़ाक सड़ल रेशा, तेसरमे राख, चारिममे काँचक गोली, पाँचममे नुकीला पाथरपर अधलिखल नाम।

बच्चा सभ एहि वस्तु सभकेँ खजाना बुझि उठाबऽ चाहलक, मुदा अनन्या हाथ रोकि देली। ओ आब खेलबाली नेनी मात्र नहि रहली; नामक पहराक पहिल पहरुआ बनि चुकल छली। ओ कहली, “जे किछु ठूँठक भीतर सँ भेटत, तकरा उठाएब नहि, पहिने सुनब।” बच्चा सभ हँसल नहि। एहि गाममे पछिला किछु मासमे एतेक विचित्र घटल छल जे बच्चा सभ बूढ़ सभसँ बेसी संयमी भऽ गेल छल।

आरुणि ओतए पहुँचल तखन ओ देखलक जे बच्चा सभ गोल घेरा बनाकऽ बैसल अछि आ बीचमे कटल जड़ि अछि। ई दृश्य ओकरा अदालत सँ बेसी अदालत लगल। ने कुर्सी, ने मेज, ने मुकदमेबाजी, ने वकीलक आवाज; मुदा एक-एक चेहरा एना सतर्क जेना ओ सभ जड़िक भीतर सँ उठैत शब्दकेँ छूटि नहि देबाक प्रण लेने हो। चन्ना गाछीक अदालतक बाद ई पहिल लोकबैठकी छल। कोनो उद्घोषणा नहि, कोनो पट्टिका नहि, कोनो मुख्य अतिथि नहि। बस ठूँठ, माटि, आ सुनबाक तैयारी।

बा धीरे-धीरे लाठी टेकैत पहुँचलीह। हुनकर आँखि कम देखैत छल, मुदा ओहि ठूँठक दिशामे हुनकर पग बिनु सहाराक ठहरैत छल। ओ बैसि गेलीह आ हाथ बढ़ा कऽ जड़ि छुलीह। बहुत काल तक किछु नहि कहलीह। फेर बजलीह, “गाछि कटि गेल तँ की? हमरा गाममे कतेको माथ कटि गेल, कुल नहि कटि सकल। जड़ि बाँचल रहै, तँ छाँह फेर जन्म लैत अछि।”

एहि वाक्य पर बूढ़बा भूत, जे दिनमे प्रायः देखाइ नहि पड़ैत छल, ओहि दिन पातक धूलि जेकाँ कने झिलमिला उठलाह। केओ साफ नहि देखलक, मुदा कतेको गोटे बादमे कहलक जे ठूँठक पाछाँ एकटा कारी आकृति मुस्कुरेलक। बच्चा सभ ताहि दिशामे ताकल, फेर अपन नाक पर उँगली राखि चुप रहबाक संकेत देलक। बूढ़बा भूत एखन आधिकारिक गवाही देबय नहि आयल छल; ओ देखय आयल छल जे जीवित लोक सुननाइ केँ सचमुच निभा पाओत कि नहि।

पहिल नाम एक मजदूरक बेटा पढ़लक। ओ बेटा आब बूढ़ भऽ चुकल छल, मुदा ओ अपन बाबूक नाम पढ़ैत काल बालक जेकाँ काँपैत छल। नाम उच्चरित भेल तखन ठूँठक एक छोट फाँकि सँ हवा निकलल। कियो कहलक — “साँस।” कियो कहलक — “किड़ी।” मुदा बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखलक — “नाम सुनल गेल, ठूँठ उत्तर देलक।”

दोसर नाम उज्ज्वलक माय पढ़लीह। हुनकर स्वर कम छल। लोकक भीड़मे शब्द हराइ जाएबाक डर छल। देविका हुनकर कन्हा पर हाथ रखली आ कहली, “आस्ते पढ़ू, नामकेँ जल्दी

नहि चाही।" उज्ज्वलक माय आस्ते-आस्ते पढ़लीह। स्क्रीनक गोहि जे युवकक मोन चिबा गेल छल, ओकर नाम जखन ठूँठक चारू कात घुमल, तखन कटल डारि पर बैसल एक चिरई तीन बेर चिहुँकल। अनन्या लिखली — "स्क्रीनमे डूबल नाम सेहो माटि सुनैत अछि।"

तहिये सँ नियम बनल जे प्रत्येक नामक बाद कोनो एक चिह्न लिखल जाए — हवा, चिरई, धूप, छाह, कुकुरक भुकब, बच्चाक छींक, बूढ़क खँखार, पानिक बून्द। कारण बच्चा सभक विश्वास छल जे गाछि आब पातसँ नहि, चिह्नसँ उत्तर दैत अछि। ओ सभ पढ़ैत नहि छल, ओ सभ सम्बन्ध जोड़ैत छल।

सौम्या एहि सभकेँ देखैत चुपचाप नोट नहि बना रहल छली। पहिने हुनकर आदत छल कि जे देखल से लिखल, जे सुनल से दर्ज कएल। आब ओ बुझि गेल छली जे कतेक बात दर्ज करिते घायल भऽ जाइत अछि। ओ केवल ओहि नाम सभक पास बैसैत छली जकर परिवार चाहैत छल। जकरा चुप रहबाक छल, ओकर चुप्पी केँ ओ बिनु प्रश्नक स्वीकार करैत छली। निजताक शपथ आब केवल मीरा कागच पर नहि, लोकबैठकीक आचारमे उतरि रहल छल।

मीरा ओहि दिन एक छोट लाल डोरी आनलीह। ओ कहलीह, "जे नाम पढ़ल गेल, तकरा पाथर पर लिखि ठूँठक चारूकात राखब। मुदा कोनो नामक संग ओकर दुखक तमाशा नहि बनत। नामक अधिकार नामक घर लग रहत।" लोक सहमत भेल। ई सहमति हाथ उठा कऽ नहि, माथ झुका कऽ देल गेल।

दुपहर तक ठूँठक चारू कात पाथरक छोट-छोट घेरा बनि गेल। प्रत्येक पाथर पर एक नाम, किछु पर पूरा, किछु पर अधूरा, किछु पर केवल चिन्ह। एक पाथर पर लिखल छल — "जेकर नाम नहि भेटल।" ओकरा सभसँ पहिने राखल गेल। बच्चा सभ कहलक — "जिनका नाम नहि भेटल, हुनका पहिल ठाम।" एहि निर्णय पर बा कानि पड़लीह। हुनकर रोदन ध्वनि नहि, बहैत नाक आ भीजल आँखिक मौन छल।

गोप कुमार पाछाँ ठाढ़ छलाह। हुनका लग एखनहुँ कतेको नकल, कतेको सूची, कतेको कूट-फाइल छल। मुदा ओ देखलनि जे एहि ठाम कागचक मर्यादा सीमित अछि। कागच नाम देत, लोक स्वर देत, ठूँठ स्थान देत, बच्चा पहरा देत। एहि पाँचक बिनु स्मृति आधा रहि जाइत अछि। ओ पहिल बेर बुझलाह जे सत्य केवल उजागर करब पर्याप्त नहि; सत्यकेँ बसबाक स्थान चाही।

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन दूर सँ देखैत रहलाह। हुनका ककरो बजाओल नहि गेल छल। आब हुनका बजाओल जाएबाक चाहो नहि रहल। जे व्यक्ति कखनो पदक कारण प्रत्येक मंच

पर आगाँ बैसैत छल, से आब पाछाँ ठाढ़ रहि सुनबाक साधना सीखि रहल छल। जखन एक बच्चा हुनका देखलक आ कहलक — “एतय बैसू,” तखन ओ धीरे उत्तर देलखिन — “एखन नहि। एखन ठाम नामक अछि।” बच्चा सन्तुष्ट भेल।

साँझ होइत-होइत ठूँठक चारू कात लोकक आबाजाही बढ़ल। कियो दूध लऽ कऽ आयल, कियो पानि, कियो फूल, कियो केवल समय। किछु लोक घुमैत-घुमैत आबि गेल — जिनका ई सभ बकवास लगैत छल। मुदा जखन ओ सभ देखलक जे एतय ने कोनो चन्दा माँगल जा रहल अछि, ने नारा लगैत अछि, ने नेता बजैत अछि, तखन ओकरा सभक उपहास कम भऽ गेल। जकरा विश्वास नहि हो, ओकरा सेहो शान्त ठामक आदर करबाक पड़ैत अछि।

तहने पहिल बाहरी लोक आयल — साइकिल पर बैसल पोस्टमास्टर। ओकर झोलामे सरकारी डाक छल। ओ सामान्यतया चन्ना गाछी दिस नहि अबैत छल, मुदा आब सड़क खुलि गेल छल, तें ओ छोट रस्ता लेने आयल। ठूँठ देखिते ओ उतरि गेल। झोला सँ एक पीयर लिफाफा निकालि आरुणि कैँ देलक। लिफाफा मोट छल, ऊपर नगरपालिकाक मोहर। पोस्टमास्टर कहलक — “एहि ठामक सम्बन्धमे अछि। जरूरी बुझाइत अछि।”

आरुणिक हाथमे लिफाफा गरम भऽ उठल। ओ खोलय चाहलक, मुदा अनन्या रोकलक — “नाम-पाठ चलि रहल अछि। पीयर कागच प्रतीक्षा करत।” ई बात सुनि लोकमे धीमी हँसी दौड़ल, मुदा हँसीमे भय सेहो छल। कारण सभ जानैत छल जे पीयर कागच बेसीकाल अन्हारक दोसर रूप होइत अछि। जे काज कुल्हाड़ि सँ शुरू भेल, से आब नोटिस सँ आगाँ बढ़त।

रातिक पहिल दिया जरल। पाथरक नाम सभ पर इजोत टुकड़ा-टुकड़ा पड़ल। पीयर लिफाफा ठूँठक एक कगार पर राखल गेल — जनु ओकरो गवाही देबाक बारी आबय बला हो। बूढ़बा भूतक आकृति फेर एक क्षण लेल झिलमिलेलक। कटल जड़िक भीतर सँ हवा उठल आ लिफाफाक कोना फड़फड़ेलक।

अनन्या रजिस्टर बन्द करैत कहली, “काल्हि पीयर कागच पढ़ल जाएत। मुदा पहिने ओहि पर लिखल शब्दक नाम पूछल जाएत।” कियो बुझल नहि जे शब्दक नाम की होइत अछि। मुदा बच्चा सभ बुझि गेल छल — सरकारी भाषा सेहो बेनाम नहि रहि सकैत। जखन ओ स्मृति पर दावा करत, तखन ओकरो नाम, कुल, लोभ, डर, आ उद्देश्य पूछल जाएत।

एहि ढंगें ठूँठक चारू कात पहिल दिन समाप्त नहि भेल। ओ अगिला सुननाइक प्रतीक्षामे बैसल रहल। गाछि कटि गेल छल, मुदा चारूकात लोकक घेरा उगि गेल छल। आ घेराक बीच पीयर लिफाफा, सूखल पात जेकाँ, राति भरि करवट बदलैत रहल।

लोकगीत: ठूँठक चारूकात घेरा

लोकधुन: चौपाल गीत

ठाढ़ हे घेरा, ठूँठक चारू कात घेरा हे,
लोक भेल जीवित पहरुआ—इहए नव बसेरा हे।

डारि नहि बचल, तैयो माथ झुकै आज,
अन्हारसँ नहि, उघरल हड्डीक गवाहीक लाज।
जड़ि बूढ़ छाती जेकाँ धरतीपर पसारल,
लोकक गोल घेरा नब गाछि बनि उभारल।
पीयर लिफाफा कगारपर राति करवट लेत,

काल्हि शब्दक नाम, कुल, लोभ सभ पूछल जाएत।
सरकारी भाषा बेनाम रहि सकत नहि,
स्मृतिपर दावा करत तँ उद्देश्य छिपत नहि।
गाछि कटि गेल, घेरा जड़ि बनि ठाढ़,
ठूँठक चारूकात लोक भेल जीवित पहरुआर।

डारि ने बचल, तइयो माथ झुकए आज,
अन्हार सँ नहि—उघरल जड़िक गवाहीक लाज।
काल्हि नाम, कुल आ लोभ—सभटा पूछल जेत।

❖

अध्याय ५५

नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र

सरकारी पीयर कागजक फड़फड़ी पाँखिक नहि, कैंचीक आवाज थीक।

अध्यायारम्भ लोकगीत: पीयर कागचक पाँखि

लोकधुन: चेतावनी-बटगबनी

उड़ू हे पीयर पाती, पाँखि बनि उड़ू हे,
कैंची नहि, चेतौनी बनि घर-घर जुड़ू हे।

पीयर कागच कैंची नहि, पाँखि बनि उड़ू,
कटबाक आदेश छोड़ि सत्यक समाचार जुड़ू।
रंग पीयर सरिसोंक, ज्ञानक उज्जर फूल,
कागच जनकेँ चेताबै, नहि काटै घर-मूल।

हरेक सूचना सरल लिखू, अधिकारक राह बताउ,
भयक भाषा हटाकऽ सहायता संग पहुँचाउ।
पीयर कागचक पाँखि आशाक पत्र बनत,
जन-जागरूकता उड़ा कऽ सुरक्षित गाम गढ़त।

सरिसों-रंग कागच पर सरल आखर साजू,
भयक बोली काटि कऽ अधिकारक राह बाजू।
संग मे सहायताक ठेकाना, फोन, ठाम,
चेतल गाम बचल गाम—इहए पातीक काम।

❖

राति भरि पीयर लिफाफा ठूँठक कगार पर पड़ल रहल। दिया सभ एक-एक कऽ बुझबैत गेल, लोकक आवाज पाछाँ हटैत गेल, मुदा लिफाफाक कोना हवा सँ फड़फड़ाइत रहल। जेना ओ कागच नहि, पीयर पाँखि बला कोनो छोट जीव हो, जे भीतरक दाँत नुकौने प्रतीक्षा करैत हो। चन्ना गाछीक कटल जड़ि ओकरा स्पर्श करैत-करैत ठण्ढा नहि भेल; उनटे ओ कागचक गरमी धीरे-धीरे माटि धरि उतरैत गेल।

भोरमे अनन्या सभसँ पहिने पहुँचली। ओ पाथर सभक पाँति देखलक, रजिस्टरक ऊपर जमा ओस पोछलक, आ फेर पीयर लिफाफा उठेलक। कागचक सीवन पर नगरपालिकाक नीला मोहर छल — मोहरक भीतर चक्र, चक्रक भीतर अक्षर, अक्षरक भीतर एकटा ठण्ढा स्वर। बच्चा सभ धीरे-धीरे जमा भेल। कियो पतंगक डोरि लेने आयल, कियो स्लेट, कियो खाली बोतलमे पानि। एखन नाम-पाठ नहि, कागच-पाठ होएबाक छल।

आरुणि आएल तखन ओ कहलक, “कागच हम पढ़ि दैत छी।” अनन्या माथ हिला देली। “अहाँ पढ़ब,” ओ कहली, “मुदा पहिने हम सभ सुनब जे एहि कागचक नाम की अछि।” ई वाक्य सुनि किछु बूढ़ लोक मुस्कुरेल। मुदा सत्यव्रत मेहता, जे एहि बेर दूर नहि, पाथरक पाछाँ नीचाँ बैसि गेल छलाह, माथ झुका कऽ सुनैत रहलाह। हुनका बुझाइत छल — ई बालिका कानूनक पहिल पाठ सभसँ नीक ढंगें बुझि गेल अछि। जे कागच लोकपर शासन करैत अछि, ओकरो नाम पूछल जा सकैत अछि।

लिफाफा खोलल गेल। भीतर तीन पन्ना छल। पहिल पन्ना पर मोट अक्षरमे लिखल — “सार्वजनिक सौन्दर्यीकरण आ मार्ग-सुरक्षा सम्बन्धी सूचना।” दोसर पन्ना पर नक्शाक एक रेखा, जाहिमे चन्ना गाछीक ठाम एक छोट खाली चौकोर बनाओल गेल छल। तेसर पन्ना पर आपत्ति देबाक विधि। सभटा भाषा एना सुथरल, एना तेल-चुपड़ायल जेना कागच स्वयं कहैत हो — हम हिंसा नहि, व्यवस्था छी।

आरुणि पहिल पंक्ति पढ़लक। “उक्त स्थल पर अवैधानिक रूपैँ स्थापित पाथर, चिह्न, दीपक, कपड़ा, आ अस्थायी जमाव सभ हटाओल जाए, जेणे आम जनताक आवागमन, प्रकाश, स्वच्छता आ सौन्दर्यीकरणमे सुविधा हो।” शब्द सभ हवामे लटकि गेल। ककरो क्रोध आयल, ककरो हँसी, ककरो घृणा। बा धीरे कहलीह, “नाम पाथर भेल, तकरा ओ अवैधानिक कहैत अछि। जे नाम मेटा देलक, से वैधानिक?”

देविका कागचक ओर देखैत रहली। ओकरा “आम जनता” शब्द छुरा जेकाँ लागल। ई आम जनता के? जे राति भरि नाम पढ़ैत छल, से नहि? जे माता बेटाक नामक पाथर रखलक, से नहि? जे मजदूरक बेटा पचास बरख बाद बाबूक नाम लिखलक, से नहि? कागचक आम जनता एहन जन होइत अछि जे उपस्थित नहि, मुदा जकर नाम पर सभ किछु कएल जा सकैत अछि।

मीरा दोसर पंक्ति पढ़बाक आग्रह केलीह। आरुणि पढ़लक — “स्थल पर भीड़-भाड़ आ असत्यापित कथाक प्रचार सँ सामाजिक तनाव आ अन्धविश्वास पसरबाक सम्भावना अछि।” एहि बेर मीरा हँसली, मुदा हँसीमे आगि छल। ओ कहली, “जखन सत्य कागच पर नहि भेटै, तखन लोकक मुँहक बात असत्यापित कहल जाइत अछि। जखन देह बिकै, निजता बिकै, श्वास बिकै, तखन तनाव नहि; जखन नाम बचै, तखन तनाव।”

गोप कुमार तेसर पन्ना हाथमे लेलक। ताहिमे फारमक भाषा छल — नाम, पता, कारण, प्रमाण, स्वामित्व-सूचना, सम्बन्धित अभिलेखक प्रति। गोप फुसफुसायल, “जिनकर देह

पानिमे गेल, तकर प्रमाण? नाम ठगीमे गुम भेल, तकर स्वामित्व? चुप्पी मोल लेल गेल, तकर अभिलेख?” ओ फारम धरती पर नहि फेकलक। ओ ओकरा मोड़ि कऽ रजिस्टरक पास राखि देलक। कारण लड़ाइ कागच फाड़बासँ नहि, कागचक भीतरक गोहि देखबासँ शुरू होइत अछि।

बूढ़बा भूत दिनक उजासमे पहिल बेर साफ-झाँप देखाइ पड़ल। ओकर देह छाह आ धूलिक बीच बनि रहल छल। ओ पीयर सूचना-पत्रक चारूकात तीन बेर घूमल। बच्चा सभ साँस रोकि देखैत रहल। बूढ़बा भूत पन्ना पर झुकल आ मानू सूँघलक। फेर ओ अपन सूखल हँसी छोड़लक — “कागचमे स्याही कम, डर बेसी अछि। नगरपालिकाक मोहरक भीतर ककरो हाथ नुकल अछि।”

सत्यव्रत मेहता धीरे कहलखिन, “ई सूचना असगर नगरपालिकाक नहि हो सकैत। एतय भाषा तैयार करएबला लोक अछि — कानून जानएबला, स्मारक चाहएबला, ठेका चाहएबला, आ ओ सभ जे नामक पहरासँ असहज अछि।” ओ थामि गेलाह। पहिने हुनका वाक्य पूरा करबाक आदत छल; आब ओ आधा छोड़ि दैत छलाह जेणे लोक अपना भीतर सँ बाकी आधा सुनि सकय।

तेखन पाछाँ सँ एक लोक आगाँ बढ़ल। सफेद पैंट, हलुक नीला कुरता, हाथमे चमचम करैत फाइल। ओ मुस्की देलक — “हम ककरो विरोधमे नहि आएल छी। हम तँ सहयोगक प्रस्ताव लऽ कऽ आएल छी। बटुकनाथ बाबू कहलनि — एहि स्थलकेँ विधिवत लोक-स्मृति न्यासमे बदलब जरूरी अछि। नहि तँ सरकार हटाबय बाध्य होएत। हम रजिस्ट्रेशन, अनुमति, संरक्षण, निधि — सभ व्यवस्था करा देब।”

नाम सुनिते घेरा ठण्ढा भऽ गेल। बटुकनाथ हरिहरन — जे अदालतमे अपराधक नाव खेने छल, आब स्मृतिक नाव पर चढ़य चाहैत छल। ओकर दूत फाइल खोलि कऽ किछु रंगीन छपाइ देखौलक — फाटक, पट्टिका, टिकट-घर, स्मृति-दीर्घा, आगन्तुक-पुस्तिका, दान-पेटी। शीर्ष पर लिखल छल — “चन्ना गाछी लोक-स्मृति केन्द्र।” बच्चा सभ चित्र देखलक। चित्रमे गाछि नहि छल, ठूँठ नहि छल, पाथरक नाम नहि छल; केवल चमकैत फर्श आ रेलिंग छल।

अनन्या पूछली, “एहि चित्रमे ‘जेकर नाम नहि भेटल’ पाथर कतय अछि?” दूत चौंकल। ओ पन्ना उनटौलक, फेर कहलक — “से प्रतीकात्मक रूपेँ राखल जाएत।” दोसर बच्चा पूछलक, “उज्ज्वलक माय कतय बैसती?” दूत कहलक — “भीतर सभाकक्ष रहत।” तेसर बच्चा पूछलक, “भूतक कबड्डी कतय खेलत?” दूत हँसि पड़ल — “ओहि तरहक बात सभ लोकक भावनामे रहत।” बालिका शान्त स्वरमे कहली, “तखन ई केन्द्र नहि, पिंजड़ा अछि।”

दूतक चेहरा कठोर भेल। ओ कहलक — “बच्चा सभ कानून नहि बुझैत अछि।” एहि बेर सत्यव्रत मेहता उठलाह। हुनकर उठनाइमे अधिकारक धौंस नहि, साक्षीक थकान छल। ओ दूतसँ कहलखिन, “कानून केवल कागच बुझनिहारक वस्तु नहि। जे लोक प्रभावित अछि, ओकर सुननाइ बिनु कोनो वैधानिकता पूरा नहि। आ स्मृति कैँ ट्रस्ट बनएबाक पहिने स्मृति सँ अनुमति लेब आवश्यक अछि।” दूत हँसल, “स्मृति हस्ताक्षर करैत अछि?” सत्यव्रत उत्तर देलखिन, “करैत अछि — लोकक उपस्थितिमे।”

भीड़मे धीमा स्वर उठल — “उपस्थित।” पहिने एक, फेर दोसर, फेर दस, फेर बीस। दूत फाइल समेटबाक कोशिश केलक, मुदा हवा तेज भऽ गेल। कटल ठूँठक फाँकि सँ धूलि उठि कऽ फाइलक चमकदार चित्र पर पड़ल। जकरा पर काँचक दीर्घा बनल छल, ओहि चित्र पर माटिक दाग लागि गेल। दूत झुँझलायल, फूँक मारलक, मुदा दाग हटल नहि।

आरुणि पीयर सूचना-पत्र फेर हाथमे लेलक। ओ ओकर खाली किनार पर पेंसिल सँ लिखलक — “खाली भू-खण्ड नहि — नामक ठाम।” देविका दोसर किनार पर लिखली — “भीड़ नहि — परिवार।” मीरा लिखली — “अन्धविश्वास नहि — निजताक संग स्मृति।” गोप लिखलक — “प्रमाण नहि भेटल, से अपराधक प्रमाण अछि।” बा काँपैत हाथसँ लिखलीह — “जड़ि जीवित।” बच्चा सभ गोल-गोल अक्षरमे लिखलक — “उपस्थित।”

नगरपालिकाक कागच आब एकतरफा नहि रहल। ओकर पर लोकक उत्तर उगि गेल। एतय कोनो मोहर नहि छल, मुदा अंगूठाक निशान छल। कियो अपना नाम नहि लिखि सकल, तँ एक दाग, एक रेखा, एक पातक छाप देलक। सत्यव्रत ओहि पन्ना देखैत रहलाह। हुनका बरखों अदालतमे दर्ज कएल याचिका, प्रतिवेदन, शपथपत्र मोन पड़ल। मुदा ई पन्ना हुनका सभसँ अधिक जीवित बुझायल।

तेखन नगरपालिकाक दूत फेर एक वाक्य छोड़ि गेल — “सात दिनमे हटाउ, नहि तँ बल प्रयोग होएत।” ई कहि ओ चलि गेल। ओकर जूता पाथरक घेराक बाहर थोड़ेक माटि उछालि गेल। बच्चा सभ ओकर पाछाँ नहि दौड़ल। बूढ़बा भूत ओकरा देखैत रहल आ धीरे कहलक — “जे बल प्रयोगक बात कहैत अछि, ओकर भीतर बल कम आ भय बेसी होइत अछि।”

साँझ धँसैत गेल। पीयर सूचना-पत्र पाथरक बीच राखल छल, पर आब ओकर रंग बदलि रहल छल। धूप, धूलि, लोकक स्पर्श, आँसू, पेंसिल, पातक छाप — सभ मिलि ओकर पीयरपन कैँ मटियामेट कऽ रहल छल। अनन्या रजिस्टरमे लिखली — “आइ कागच सुनल गेल। कागच झूठ बजलक। लोक उत्तर देलक।”

से राति घेरा टूटल नहि। लोक ओतहि बैसल रहल। चर्चा शुरू भेल — केवल आपत्ति-पत्र नहि, अपन नक्शा बनाओल जाए। सरकारी नक्शामे चन्ना गाछी खाली चौकोर छल; लोकक नक्शामे ओ केन्द्र होएत। सरकारी नक्शामे सड़क छल; लोकक नक्शामे रास्ताक संग ओ घर सभ होएत जतय ठगायल युवक सभक मोबाइल अबाधारि पड़ल अछि। सरकारी नक्शामे पुल छल; लोकक नक्शामे पायाक भीतरक मजदूरक नाम होएत। सरकारी नक्शामे नदीक रेखा छल; लोकक नक्शामे जलसमाधिक पुकार होएत।

आरुणि पुरान चटाइ बिछेलक। गोप अपन कागच खोललक। देविका लाल माटि घोलली। मीरा कारी कोइला आनलीह। बच्चा सभ पाथर सारि कऽ बीचमे जगह बनाओलक। बा कहलीह, “नक्शा ओहि हाथसँ बनाओ जे ठामकेँ केवल देखैत नहि, सुनैत अछि।” सत्यव्रत पाछाँ बैसल रहलाह, पर हुनकर आँखि पहिल बेर हलुक उजास धारण कऽ रहल छल।

रातिक अन्तिम पहरमे चटाइक बीच पहिल बिन्दु पड़ल — कटल चन्ना ठूँठ। ओकर चारूकात अनन्या लाल वृत्त खिंचलक। ओ कहली, “एतय सँ स्मृति पसरत।” दूर कतहु कुकुर भुकल, पानि हिलल, आ बूढ़बा भूतक आवाज अन्हारमे आयल — “आब असली नक्शा शुरू भेल।”

पीयर सूचना-पत्र ठूँठक कगार पर पड़ल रहल। ओकर मोहर अँझराइत छल, मुदा लोकक लिखल ‘उपस्थित’ शब्द चमकि रहल छल। सात दिनक धमकीक सोझाँ पहिल राति, गढ़ नारिकेल अपन स्मृतिक पहिल नक्शा बनाबय बैसल।

लोकगीत: पीयर कागचक कैंची

लोकधुन: चेतावनी लोकधुन

कहै हे कागच, 'हटू' कहै हे,
गाम कहै—नहि, नाम उपस्थित अछि रहै हे।

पीयर कागच फड़फड़, पाँखि नहि—कैंची,
‘खाली भूखण्ड’ कहि काटय स्मृतिक बेंची।
सात दिनक धमकी, मोहरक मुँह गाढ़,
लोक लिखलक ‘उपस्थित’, बनौलक अपन बाट।
लाल माटि, कोइला, पाथर, पुरान चटाइ,

जकरा सुनै ठाम, वैह हाथ नक्शा बनाइ।
ठूँठ बीच लाल वृत्त—एतयसँ स्मृति पसरत,
कागचक अँझर मोहर लोकक उजाससँ हरत।
पीयर सूचना कहै—हटू; गाम कहै—नहि,
नाम जे उपस्थित अछि, ओकर ठाम खाली नहि।

❖

अध्याय ५६

स्मृतिक पहिल नक्शा

जे ठाम 'खाली भू-खण्ड' लिखल गेल, ओही ठाम सभसँ बेसी नाम गड़ल छल।

अध्यायारम्भ लोकगीत: स्मृतिभूमि

लोकधुन: माटि-गीत

पढ़ू हे माटि, नापब सँ पहिने पढ़ू हे,
'खाली' लिखल भूमियो मे नाम-कथा धरू हे।

‘खाली भूखण्ड’ लिखल जगह नामसँ भरल,
ककरो खेल, ककरो घर, ककरो सपना पलल।
माटि नापू तखन पहिने स्मृतिक नक्शा पढ़ू,
कब्र, गाछ, पगडंडी, जल-स्रोतक मान गढ़ू।

विकास जँ आए तँ लोकसँ सहमति लए,
स्मृतिभूमिक सम्मानसँ नव निर्माण करे।
खाली नहि कोनो धरती, हरेक कण इतिहास,
माटिक मान राखिते विकास पाबै विश्वास।

एतऽ ककरो गुड्डी उड़ल, ओतऽ चूल्हिक राख,
पगडण्डी-कब्र-गाछक अपन-अपन साख।
विकासक गाड़ी रुकि कऽ पहिने सहमति लिअ,
स्मृतिभूमिकेँ प्रणाम कऽ तब नींव धरि दिअ।

❖

पीयर सूचना-पत्रक शब्द सभ राति भरि ठूँठक कगार पर फड़फड़ाइत रहल। ओकरा पर लिखल “खाली भू-खण्ड” सभहक निन्नमे काँटाक तरह पैसल। जे ठाम देह डूबल, जे ठाम नाम उठल, जे ठाम भूत कबड्डी खेलल, जे ठाम चुप्पी साक्षी बनल — ओकरा खाली कहल गेल। सरकारी कागचक एहि एक पाँतिसँ गाम बुझि गेल जे कटान केवल गाछिक नहि छल; आब स्मृतिक कटानक तैयारी अछि।

भोरमे अनन्या ओहि पीयर सूचना-पत्र केँ खोलि कऽ नहि पढ़ली। पहिने ओ ठूँठक चारू कात राखल पाथर सभकेँ सोझ केलक। प्रत्येक पाथर पर नाम छल, किछु अक्षर बेतरतीब, किछु पूरा, किछु केवल आरम्भिक ध्वनि। ओ बाल हाथसँ धूलि झाड़ैत कहली, “जे कागच हमरा ठामकेँ खाली कहैत अछि, ओकरा पहिने भरल ठाम देखाएब।”

एहि बातसँ स्मृतिक पहिल नक्शा बनबाक आरम्भ भेल। आरुणि पुरान पुल-योजनाक छोड़ल कागच आनलक। कागच पर पहिने विदेशी ठेकेदारक रेखा छल — नाप, पाया, चौड़ाइ, लागत, जल-बहाव, पहुँच-पथ। बच्चा सभ ओहि कागचकेँ उनटा कऽ जमीन पर पसारि देलक। सरकारी रेखाक पाछाँ लोकरेखा खिंचबाक निश्चय भेल।

मीरा लाल माटि घोलि आनलीह। देविका राख लऽ आयली। ईरा सुखायल पात बटोरि लय आयली। गोप कुमार पुरान नकलक एक बण्डल लऽ आयलाह, मुदा अनन्या कहली, “पहिने हाथ, बादमे नकल।” गोप मुस्कुरेलाह। जे लोक कागचक भीतर सत्य खोजैत रहल, ओ आब बुझि रहल छल जे कागच सत्यक घर नहि, केवल ओसार होइत अछि।

नक्शाक बीचमे कटल चन्ना गाछीक ठूँठ बनाओल गेल — गाढ़ लाल गोल। ओकर चारूकात बच्चा सभ छोट-छोट बिन्दु बनौलक। प्रत्येक बिन्दु एक नामक पाथर छल। जकर नाम ज्ञात छल, ओकर बिन्दु लग अक्षर; जकर नाम नहि भेटल, ओकर बिन्दु खुलल छोड़ल गेल। खुलल बिन्दु सभ खाली नहि, प्रतीक्षारत कहल गेल।

आरुणि कमला-बलानक धारा खिंचलक। ओ रेखा सोझ नहि गेल। ओ कतेको बेर मुड़ल, पुरान खेतकेँ काटल, मजदूरक बस्ती लग डोलल, पुलक पाया लग कारी भँवर बनल, फेर चन्ना गाछी लग आ कऽ ठहरल। बच्चा सभ पूछलक, “नदी एना काँपि किएक खिंचलहुँ?” आरुणि उत्तर देलक, “कारण ई नदी फाइलक नदी नहि, देहक नदी अछि। जकरा भीतर नाम डूबल, ओकर रेखा सोझ केना होएत?”

बा अपन नहसँ ओहि नक्शा पर एक बहुत पुरान पगडंडी खिंचलीह। से पगडंडी आब जमीन पर नहि रहल, खेत बदलि गेल, घर सरकि गेल, सड़क काटि गेल; मुदा बा कहली, “हमर माय एहि बाटसँ पोखरि जाइत छली।” बच्चा सभ ओ पगडंडीकेँ “मायक बाट” लिखलक। नगरपालिका जकरा भू-खण्ड कहत, लोक ओकरा मातृपदक स्मृति कहि चिन्हित करैत छल।

उज्ज्वलक माय ओहि ठाम पर एक कारी गोल बनौली जतय उज्ज्वलक फोन अन्तिम बेर सक्रिय भेटल छल। देविका ओकर चारू कात राखक हलुक चक्र बनौली — स्क्रीनक गोहि। मुदा मीरा रोकि कहलीह, “ओकर मृत्युक दाग बनाउ, तमाशा नहि।” तखन कारी गोलक भीतर एक छोट उज्जर बिन्दु राखल गेल। बच्चा सभ नाम देलक — “मोनक बचल इजोत।”

सौम्या श्रमिक स्त्री सभसँ पूछलीह — कोन-कोन घरक पुरुष पुलक काजमे गुम भेल? स्त्री सभ पहिने एक दोसराक चेहरा ताकलक। सरकारी गवाहीमे जिनकर नाम नहि छल, ओ सभक विधवा, बहिन, बेटी, माय — धीरे-धीरे आगाँ आयल। नक्शा पर मजदूरक बस्ती बनल —

घर नहि, हथेली। प्रत्येक हथेली पर आङुरक संख्या अलग। कारण सभ परिवार समान रूपेँ नष्ट नहि भेल छल; प्रत्येकक क्षति अपन रूपमे अद्वितीय छल।

गोप कुमार ओहि ठाम नीक सँ झुकि कऽ देखैत रहलाह जतय विदेशी कम्पनीक अस्थायी गोदाम छल। ओ कहलक, “एहि ठाम सँ रसीद गायब भेल छल।” अनन्या पूछली, “रसीदक चिह्न की?” गोप बहुत काल सोचलाह, फेर राखमे एक छोट सुराख बनौलनि। ओ कहलनि, “कागचमे जे गायब होइत अछि, नक्शामे ओ छेद बनि रहत।” बच्चा सभ ओकरा “गुमशुदा कागचक मुँह” लिखलक।

नक्शा बनैत-बनैत गामक लोकक बोलियो बदलए लागल। पहिने ओ सभ कहैत छल — “ओहि ठाम पुल छल”, “ओतए मृतदेह भेटल”, “ओहि बाटे पुलिस आयल।” आब कहैत छल — “एतय नाम पानि बनल”, “एतय चुप्पी बँसल”, “एतय झूठक पहिल दरार”, “एतय बच्चा सभ पहरा लेल।” स्थान वस्तु नहि रहल; स्थान कथाक गिट्ठऽ बनि गेल।

दिन चढ़ल तखन नगरपालिका सँ दू कर्मचारी आएल। ओकरा सभ लग मापक फीता, पीयर रंगक डब्बा, आ लोहेक खूँटा छल। ओ सभ कहलक जे सूचना-पत्रक अनुसार क्षेत्र चिन्हित करब जरूरी अछि। अनन्या ओ सभकेँ नक्शा देखबैत कहली, “एहि क्षेत्रक चिन्ह आब पहिने सँ अछि। अहाँक खूँटा ककर ऊपर गड़त — नाम पर, पगडंडी पर, कि गुमशुदा कागचक मुँह पर?” कर्मचारी सभ हँसए चाहलक, मुदा हँसी आधा गलेमे अटकि गेल।

एक कर्मचारी धीरे कहलक, “हम आदेश पर आएल छी।” बा उत्तर देलीह, “आदेशक सेहो जन्मदाता होइत अछि। ओकर नाम कहू।” कर्मचारी चुप। आरुणि पीयर सूचना-पत्र उठाकऽ पढ़लक। ‘सार्वजनिक सौंदर्यीकरण’, ‘सुविधा विस्तार’, ‘रिक्त क्षेत्र’, ‘अनधिकृत अवरोध’ — शब्द सभ एक-एक कऽ हवामे छूटल। प्रत्येक शब्द सुनिते बच्चा सभ नक्शा पर ओकर उनटा अर्थ लिखैत गेल — ‘स्मृति’, ‘बैठकी’, ‘नाम’, ‘ठूँठ’, ‘पहरा’।

तखन पहिल बेर बूढ़बा भूत दिनक उजासमे लगभग देखाइ पड़ल। से झाड़ी नहि रहल, धुँआ नहि रहल, केवल माथा झुकौने एक वृद्ध आकृति जेकाँ कटल जड़िक छाह लग ठाढ़ छल। कर्मचारी सभ ओकरा नहि देखलक, मुदा ओकरा सभक मापक फीता अपने-आप सिमटि गेल। अनन्या बुझली, गाछिक पुरान पहरुआ नव नक्शा पर हस्ताक्षर करए आयल अछि।

सत्यव्रत मेहता पाछाँ सँ आबि ठाढ़ भेलाह। ओ नक्शा देखलनि आ बहुत काल धरि किछु नहि कहलनि। हुनकर आँखि ओहि शब्द पर अटकल — “जेकर नाम नहि भेटल।” ओ धीरे पूछलनि, “ई भाग खुलल किएक छोड़ल?” अनन्या कहली, “कारण सरकार खाली कहैत

अछि, हम प्रतीक्षा कहैत छी। जहिया नाम भेटत, ई ठाम भरत। जँ नाम नहि भेटत, तखन ई खाली रहि कऽ सभकेँ मोन दिलाओत जे खोज समाप्त नहि भेल।” सत्यव्रत मेहता माथ झुका लेलनि।

मीरा नक्शाक एक किनार पर निजताक घेरा बनौलीह। से घेरा भीतर किछु नाम नहि लिखल गेल। जे स्त्री सभ अपन पीड़ा सार्वजनिक नहि करए चाहैत छली, हुनका सभक लेल ओ घेरा बनल। ओकर नाम पड़ल — “अकथितक अधिकार।” देविका कहली, “स्मृति जबरन खोलल पेटी नहि।” बच्चा सभ ई वाक्य लाल माटि सँ लिखलक।

दुपहरिक पछिला पहर नक्शा पूरा होइत देखाइ पड़ल, मुदा ईरा कहली, “एहिमे आकाश नहि अछि।” बच्चा सभ ऊपर ताकल। सचमुच, सभ नदी, गाछि, पुल, घर, पगडंडी, पाथर, छेद, घेरा बनल छल, मुदा ओहि आकाशक कोनो चिह्न नहि छल जाहिमे कबड्डीक स्वर उठि सकै। तखन एक बालक नील काजर-जेकाँ रंग बनाकऽ नक्शाक चारू कात खुलल आकाश खिंचलक। ओकर भीतर छोट-छोट गोल बनाओल गेल — ग्रह सभ। अनन्या धीमे कहली, “जँ कियो नाम चोरि कऽ पृथ्वी छोड़ए चाहत, तँ आकाशो पहरामे रहत।”

एहि वाक्य पर सभ चुप भऽ गेल। दोसर ग्रहक बात एखन कथामे पूरा रूपेँ नहि आयल छल, मुदा ओकर छाह नक्शा पर उतरि गेल। धूर्त सभ जे पृथ्वीकेँ खाली कागच बुझि रहल छल, हुनका सभक भविष्यक भाग-दौड़ आकाश धरि पसारल छल। बच्चा सभ ओहि आकाशक कोनामे लिखलक — “अनाम ग्रह — एखन खाली नहि, प्रश्नमे।”

साँझ होइत-होइत स्मृतिक पहिल नक्शा सुखि गेल। लोक ओकरा मोड़ए चाहलक, मुदा बा मना केलीह — “स्मृति मोड़ल नहि जाए।” तखन ठूँठक पाछाँ बाँसक दू खम्भा गाड़ि नक्शा टाँगल गेल। हवा चलल तखन नक्शा काँपल, जनु पुरान चन्ना गाछीक पात फेर सरसरा रहल हो।

एहि समय एक चमकैत गाड़ी दूर धूरि उड़बैत आएल। ओकरा सँ उतरनिहार लोकक हाथमे चमड़ाक फाइल नहि, कपड़ामे लपेटल एक प्रस्ताव-पत्र छल। ओ नम्रतासँ झुकि कहलक, “बटुकनाथ हरिहरन जीक प्रणाम। ओ कहैत छथि — एहि लोक-स्मृति केँ सुरक्षित राखबाक लेल विधिवत ‘लोक-स्मृति न्यास’ बनब जरूरी अछि।”

ठूँठक चारू कात सन्नाटा पसरि गेल। नक्शा हवामे काँपैत रहल। बच्चा सभ पहिल बेर बुझलक जे स्मृति पर अगिला आक्रमण कुल्हाड़ि वा पीयर सूचना-पत्र सँ नहि, संरक्षणक मीठ

भाषा सँ आबि रहल अछि। अनन्या नक्शाक कोना पकड़ि कहली, “काल्हि एहि प्रस्तावक नाम पूछल जाएत।”

राति उतरि आयल। नक्शा ठूँठक पाछाँ झूलैत रहल — नदी, गाछि, छेद, हथेली, निजताक घेरा, “अनाम ग्रह”क कल्पनाक प्रश्न। आ प्रस्ताव-पत्र, जे बाहरसँ विनम्र देखाइत छल, भीतरसँ कदाचित् सभसँ धूर्त गोहिक पहिल दाँत नुकौने छल।

लोकगीत: खाली भूखण्ड नहि

लोकधुन: माटि-गीत

नहि हे खाली, ई भूखण्ड खाली नहि हे,
एतऽ हजार नाम गड़ल—इतिहासक थाली अछि हे।

जे ठाम 'खाली' लिखल, ओतय नाम गड़ल हजार,
भूतक खेल, स्त्रीक शपथ, मजदूरक पुकार।
लाल रेखा नदी बनल, हथेली बनल घाट,
बच्चाक नक्शामे घुरि आयल सभक बाट।
तखने मीठ संरक्षणक भाषा लऽ प्रस्ताव आयल,

न्यासक मखमल भीतर गोहिक दाँत लुकायल।
कुल्हाड़ि नहि, विनम्र प्रणाम अगिला चाल,
स्मृति कीनए चाहै सेवा कहि दलाल।
नक्शा काँपल, बच्चा कहलक—नाम पूछब काल्हि,
खाली भूखण्ड नहि—एतय इतिहासक थाली।

'सेवा' कहि दलाल स्मृतिए कीनए धाएल।

❖

अध्याय ५७

गंगेशक प्रश्न

प्रमाण बिनु प्रमेय नहि— गंगेशक ई प्रश्न आइयो ठूँठक जड़िमे करवट लै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: प्रश्नक खेत

लोकधुन: प्रश्न-भगैत

जोतू हे प्रश्नक हर, गहींर-गहींर जोतू हे,
गंगेशक खेत मे प्रमाणक बीया बोतू हे।

गंगेशक प्रश्न हल जकाँ माटि गहींर जोतै,
प्रमाणक बीज रोपि कऽ ज्ञानक धान बोतै।
प्रमेय पाबय खेत जखन तर्कक पानि पाए,
सन्देहक खरपतवार विवेक धीरे हटाए।

प्रश्नक खेत खुलल रहय विद्यार्थी सभ लेल,
उत्तर बदलि सकै, मुदा ईमान रहय मेल।
गंगेशक प्रश्नसँ ज्ञानक फसल भरपूर,
जिज्ञासु मन मिथिलाक भविष्य करै नूर।

तर्कक पानि पटाउ, सन्देह-घास उखाड़ू,
प्रमेयक बालि झूमए, विवेकसँ रखबारू।
उत्तर बदलए ऋतु जकाँ, निष्ठा एक समान,
जिज्ञासाक अन्न सँ भरत मिथिलाक खरिहान।

❖

पीयर सूचना-पत्र आ स्मृतिक पहिल नक्शाक बीच एक राति चन्ना गाछीक ठूँठ ओतेक बेचैन रहल जे लगैत छल, ओकर कटल जड़ि भीतर सँ करवट बदलि रहल अछि। बच्चा सभक हाथक बनाओल नक्शा माटिपर पसारल छल — कमला-बलान, पुलक पाया, जलसमाधिक गोड़, उज्ज्वलक कोठरी, मीरा केर शपथ, देविकाक पाठशाला, आ बीचमे चन्ना गाछीक अधकट ठूँठ। सरकारी कागच ओहि ठामकेँ खाली भू-खण्ड कहैत छल; बच्चा सभक नक्शामे ओहि खाली ठाम पर सभसँ बेसी नाम लिखल छल।

भोरका बाद जखन धूप ठूँठक कटान पर सोझे पड़ल, तखन दूरसँ एक सफेद गाड़ी आयल। गाड़ीपर ने झण्डा छल, ने चिन्ह; मुदा उतरला मात्र लोक चिन्हि गेल — बटुकनाथ हरिहरन। गाममे जे नाम कानूनी धूर्तता, तारीखक दलदल, आ अपराधी सभक उद्धारक संग

जुड़ि चुकल छल, से आब हाथमे लाल फाइल लऽ कऽ स्मृतिक चौपालमे प्रवेश कऽ रहल छल। ओकर चेहरा पर शोकक रंग चढ़ाओल गेल छल, मुदा आँखिमे गणना चमकैत छल।

बटुकनाथ ठूँठसँ उचित दूरी पर रुकि हाथ जोड़लक। कहलक, “हम एहि ठामक महत्त्व बुझैत छी। भावना कैँ संस्था चाही। संस्था कैँ विधान चाही। विधान कैँ न्यास चाही। हम ‘गढ़ नारिकेल लोक-स्मृति न्यास’ बनेबाक प्रस्ताव लेने आएल छी।” ओ लाल फाइल खोललक। भीतर मोट कागच, नियमावली, न्यासी-मण्डलक सूची, सम्भावित अनुदान, सांस्कृतिक-संरक्षण, स्मृति-विकास, आगन्तुक-प्रबन्ध, आ भविष्यमे शोध-केन्द्रक योजना छल। शब्द सभ एतेक सुन्दर छल जे जँ ओकरा पढ़ैत काल कान बन्द कएल जाए, तँ पापो पुण्य जेकाँ लगए।

अनन्या फाइल नहि देखलक। ओ ठूँठ पर राखल एक पाथर उठेलक, जाहिपर लिखल छल — ‘जेकर नाम नहि भेटल’। ओ बटुकनाथसँ पूछली, “न्यास बनाओताह से ठीक। मुदा न्याय जानैत छी?” बटुकनाथ हँसलक; ओकर हँसीमे अदालती अभ्यास छल। कहलक, “बेटी, न्याय बिनु न्यास कतऽ?” अनन्या फेर पूछली, “तखन पहिने न्याय कहू।”

सभ चुप। पीयर सूचना-पत्रक बाद ई दोसर कागजी आक्रमण छल। मुदा एहि बेर कागच सरकारी भाषा नहि, शोकक भाषा पहिरने आएल छल। आरुणि आगाँ बढ़ल, मुदा बा ओकर हाथ रोकि देलीह। “बच्चा सभ पूछैत अछि, बच्चा सभकैँ पूछए दियौ।” बा कैँ आब बुझि गेल छल जे एहि कथामे जे पीढ़ी कम देखलक, से कतेको बेर बेसी ठीक सुनैत अछि।

ओही समय ईरा एक पुरान पोथीक नकल लऽ कऽ पहुँचली। कागच नव छल, पर अक्षरमे पुरान धूपक गन्ध। ओ चुपचाप नक्शाक किनार पर बैसली आ कहली, “जखन खाली भू-खण्डक विरुद्ध नक्शा बनल, तखन प्रमाणक प्रश्न उठब स्वाभाविक अछि। आ प्रमाणक प्रश्न उठत, तँ मिथिलामे गंगेशक नाम टलि नहि सकैत।”

गंगेश। नाम ज्योंहि उच्चरित भेल, ठूँठक भीतर सँ एक सूक्ष्म किरकिरी आवाज आयल। जे लोक नव्य न्यायक ग्रन्थक नाम मात्र सुनने छल, से चौंकल। जे लोक ओकरा पण्डित सभक विषय मानैत छल, ओ सोचय लागल जे चन्ना गाछीक कटान आ गंगेशक तर्कमे की सम्बन्ध? ईरा पोथीक पहिल पन्ना खोलली। कहली, “तत्त्वचिन्तामणि लिखनिहार गंगेश उपाध्याय। नव्य न्यायक जनक। मिथिलाक मस्तिष्कक ओ दीप जे एकटा ग्रन्थमे बारह हजार ग्रन्थ बराबर चिन्तन समेटि सकलाह।”

बटुकनाथ थोड़ा अधीर भेल। “एहि ठाम दार्शनिक चर्चा किएक?” ओ पूछलक। ईरा ओकरा देखलक नहि। ओ बच्चा सभ दिस मुड़ि कहली, “किएक तँ जे समाज न्यायक ग्रन्थक

पूजा करैत अछि, से कतेको बेर न्याय करए सँ डरैत अछि। गंगेशक कथा केवल तर्कक कथा नहि, जातिक काँटाक कथा सेहो अछि।"

बा धीरे कहली, "बाजू।" तखन ईरा लोकश्रुतिक ओ कठिन गिट्ठ खोलली — "कहल जाइत अछि, हुनकर जन्म पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद भेल। प्रश्न उठल — जन्मक प्रमाण की? कुलक प्रमाण की? समाज जे असम्भव कहि दैत अछि, से असत्य भऽ जाइत अछि की? फेर कहल जाइत अछि, गंगेश चर्मकारणीसँ विवाह केलनि। प्रश्न उठल — मनुष्यक मोल जातिसँ बनैत अछि कि न्यायसँ?"

ठूँठक घेरामे हलचल उठल। किछु बूढ़ा असहज भेल। किछु युवक मुस्की दबौलक। जातिक नाम जखन सार्वजनिक ठाम पर खोंचि कऽ उच्चरित होइत अछि, तखन गामक हवा बदलि जाइत अछि। जे सभ क्षण भर पहिने मृतकक नाम सुनि पवित्र अनुभव कऽ रहल छल, से सभ अचानक अपन-अपन कुल, खानदान, विवाह, भोज, चूल्हि, कुआँ, आ देहक स्मृति सँ घिरि गेल।

अनन्या पूछली, "जँ ओ नव्य न्यायक जनक रहथि, तँ हुनकर विवाहक न्याय कोन कएल गेल?" ई प्रश्न सुनिते बटुकनाथ लाल फाइल बन्द करए लागल। ओ बुझल जे बच्चा सभ ट्रस्टक कागच पर हस्ताक्षर नहि, समाजक पुरान अपराध पर गवाही माँगत।

ईरा कहली, "सएह प्रश्न नुकाओल गेल। गंगेशक बुद्धि स्वीकारल गेल, मुदा गंगेशक जीवनक असुविधा नुकाओल गेल। शास्त्रकेँ मस्तक पर धारण कएल गेल, मुदा जीवन-सत्यकेँ जातिक कोठरीमे बन्द कएल गेल। एहि केँ कतेको लोक सम्मान कहलक। मुदा सम्मान जँ सत्यक गला घोंटि दे, तँ ओ सम्मान नहि — स्मृतिहत्या होइत अछि।"

मीरा एतय बजली। "हॉनर किलिंग केवल देह मारब नहि होइत। कतेको बेर कुलक सम्मान बचएबाक नाम पर जीवनक सत्य मारल जाइत अछि। स्त्रीक इच्छा मारल जाइत अछि। जाति-पार सम्बन्ध मारल जाइत अछि। विचारक देह मारल जाइत अछि। आ जे विद्वान असुविधाजनक जीवनकेँ काटि शुद्ध मूर्ति बना देत, ओहो हत्या करैत अछि — कागचक भीतर।"

तखन गोप कुमार धीमे स्वरमे जोड़लनि, "किछु लेखन-परम्परा, किछु आलोचक, किछु प्रतिष्ठित नाम — रमानाथ झा, उदयचन्द्र झा 'अशोक' सन विद्वानक छाँहमे सेहो गंगेशक जीवनक ओ तीख भाग ओझरा गेल। हुनकर तत्त्वचिन्तामणि चमकल, मुदा चर्मकारणी संगक प्रसंग धुँधला कएल गेल। ई प्रत्यक्ष रक्तपात नहि, मुदा स्मृतिक सम्मान-हत्या अवश्य अछि।"

ई वाक्य हवामे भारी भऽ लटकि गेल। बटुकनाथ तुरन्त उठल, “सावधान! विद्वान सभ पर आरोप करब सरल अछि। प्रमाण चाही।” अनन्या हँसली नहि, डरली नहि। ओ कहली, “प्रमाण? एखन तँ हम गंगेशक पाठ पढ़ि रहल छी। प्रमाणक प्रकार सभ कहू — प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान — जतेक मानैत छी, ततेक सुनब। मुदा जातिक प्रमाण कोन? मनुष्यता नकारबाक प्रमाण कोन? आ ककरो जीवनक असुविधाजनक भाग काटि देबाक अधिकारक प्रमाण कोन?”

ठूँठक भीतर सँ एहि बेर साफ आवाज आयल — ने मनुष्यक, ने पातक; जनु सूखल जड़िमे अटकल तर्क अपन साँस खोजि रहल हो। आवाज कहलक, “प्रमाण माँगै छी, ठीक। मुदा पहिने बताउ — जेकरा अहाँ अस्वीकार्य कहैत छी, ओकरा अस्वीकार करबाक प्रमाण की?” लोक चौंकि गेल। बूढ़बा भूत दिस कियो ताकल, मुदा आवाज ओहिसँ नहि छल। ओ आवाज जड़िक भीतरक सूक्ष्म रेखा सभसँ उठैत छल।

ईरा ठूँठक कटी सतह देखली। ओतय वृक्षक वलय सभ बारह हजार पतली रेखा जेकाँ चमकैत छल। एक बालक फुसफुसायल, “तत्त्वचिन्तामणि।” दोसर कहलक, “बारह हजार ग्रन्थ।” तेसर जोड़लक, “गाछिक भीतर गंगेशक लेखनी।” लोक बुझि नहि सकल जे बच्चा सभ खेल करैत अछि कि दर्शन देखैत अछि। मुदा चन्ना गाछीक ठाम पर दुनू अलग कखन रहल छल?

बटुकनाथ अपन स्थिति सम्हारए चाहलक। कहलक, “ठीक अछि, न्यासक नियममे जाति-भेद नहि रहत। सभक नाम लिखल जाएत।” मीरा तुरन्त पूछली, “सभक देहक सम्मान सेहो? सभक प्रेमक? सभक श्रमक? सभक निजताक? केवल नाम लिखि जाति नहि टूटैत।” देविका जोड़ली, “आ नामक मालिक कियो न्यास नहि बनत। नाम परिवारक, लोकक, आ स्मृतिक। संस्था सेवा करए, स्वामित्व नहि।”

आरुणि लाल फाइल उठेलक। नियमावलीक पहिल पन्नापर लिखल छल — ‘न्यासक अधिकार क्षेत्र’। आरुणि कलम सँ ओकरा काटि देलक आ ऊपर लिखलक — ‘सेवाक दायित्व’। बटुकनाथक चेहरा कसि गेल। एहि एक काटमे ओकर पूरा कानूनी खेल काँपि उठल। कारण अधिकारसँ ओ जीवैत छल; दायित्वसँ ओ डरैत छल।

अनन्या बच्चा सभकेँ कहली, “नव नक्शामे एक ठाम जोड़ू — गंगेशक प्रश्न।” बच्चा सभ नक्शाक बीच, ठूँठक ठीक नजदीक, एक छोट वृत्त बनौलक। ओहि वृत्तपर लिखल गेल — ‘

न्याय बिनु न्यास नहि'। तकर नीचाँ लिखल गेल — 'जाति जँ नाम काटत, तर्क ओकरा पकड़त।'

तखन पहिल बेर बटुकनाथक भीतर साँच डर जागल। ओकरा अदालतक हारक डर नहि छल, कागचक अपमानक डर नहि छल, मुदा बच्चा सभ जखन दर्शन कैँ खेल आ खेल कैँ सामाजिक प्रश्न बना दैत अछि, तखन पुरान धूर्तता काज नहि करैत। ओ बुझलक — ई पीढ़ी कानूनक भाषा सीखि रहल अछि, मुदा ओकरा न्यायक आगिमे पका रहल अछि।

साँझक समय सत्यव्रत मेहता पहुँचलाह। हुनका सभटा सुनायल गेल। ओ बहुत काल चुप रहलाह। फेर कहलनि, "गंगेशक तर्क हमरा सभकैँ सिखबैत अछि जे शब्दक किनारा तेज होइत अछि। 'न्यास' शब्द, 'न्याय' सँ छोट देखाइत अछि, मुदा जँ न्याय बिनु हो, तँ गोहि बनि जाइत अछि।" एतेक कहि ओ चुप भऽ गेलाह। हुनका बूझल छल जे आब एहि चौपालमे भाषण नहि, प्रश्न मुख्य अछि।

राति उतरिते ठूँठक चारू कात कतेको दिया जरल। लाल फाइल बीचमे राखल गेल। ओकर कातमे तत्त्वचिन्तामणिक नकल, अनन्याक पाथर, मीराक लाल डोरी, आ बच्चा सभक नक्शा। बटुकनाथक प्रस्ताव अस्वीकार नहि भेल, स्वीकारो नहि भेल। ओकरा सुननाइक प्रतीक्षामे राखल गेल — जेना अपराधीकैँ तुरन्त दण्ड नहि, पहिने पूरा गवाही सुनाएल जाइत अछि।

ओहि राति घर घुरैत काल लोक देखलक जे किछु युवक मोबाइलमे एक चमकैत सूचना देखैत अछि — 'गढ़ नारिकेल डिजिटल श्रद्धांजलि मंच: अपन प्रियजनक नाम चढ़ाउ, स्मृति सुरक्षित राखू।' नीचाँ चन्द्रपाल बत्राक कम्पनीक चिह्न नहि, एक नव सांस्कृतिक सेवा संस्थाक चिन्ह छल। बच्चा सभ एक-दोसराक चेहरा देखलक। अनन्या रजिस्टर कसि पकड़लक।

गंगेशक प्रश्न एखन समाप्त नहि भेल छल। केवल कागचक न्यासक बाद स्क्रीनक न्यास आबि रहल छल। ठूँठक भीतर सँ हलुक हँसी उठल — जनु नव्य न्याय स्वयं अगिला छलक प्रमाण जाँचए तैयार भऽ गेल हो।

लोकगीत: गंगेशक प्रश्न

लोकधुन: प्रश्न-भगैत

पूछै हे गंगेश, प्रमाण पूछै हे,
संरक्षणक हाथ मे ककर जेब अछि—देखै हे।

प्रमाण बिना प्रमेय नहि, जड़ि पूछै राति,
ककर स्मृति, ककर न्यास, ककर लाभक थाती?
तत्त्वचिन्तामणि, पाथर, लाल डोरी संग,
प्रस्ताव सुननाइमे राखल, खुलल छलकक रंग।
तखने मोबाइल चमकल—श्रद्धांजलिक मंच,

नाम चढ़ाउ, स्मृति बचाउ—कतेक मीठ प्रपंच।
कागचक गोहि पाछाँ स्क्रीनक गोहि आयल,
नव्य न्याय हँसि अगिला प्रमाण जाँचए धायल।
गंगेशक प्रश्न कहै—मीठ बातो परखू,
संरक्षणक हाथमे ककर जेब अछि, देखू।

❖

ज्ञानक कथा मात्र विद्वानक सभामे नहि घटैत अछि। सीपक चमक, पर्वतक धूम, खाली आसन, बालकक अस्पष्ट शब्द, बाड़ीक हरियर तरकारी आ मोबाइलक सन्देश—सभ ठाम मन प्रत्यक्ष, स्मृति, अनुमान, उपमान आ शब्दक सहायतासँ संसार रचैत अछि।

गङ्गेशक उपलब्धि एहि दैनिक प्रक्रियाकेँ एहन सूक्ष्म भाषामे खोलब अछि जतय कारण, दोष, अभाव, सम्बन्ध आ सीमा अस्पष्ट नहि रहय। कथा एहि सूक्ष्मताकेँ दृश्य बनबैत अछि; सिद्धान्त कोष्ठकमे रहि पाठककेँ स्मरण करबैत अछि जे दृश्यक पाछाँ तर्कक पूरा स्थापत्य उपस्थित अछि।

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—कादम्बरीक अन्तिम पन्ना- ग्रन्थ आ विघ्न: गढ़ नारकेलक पुस्तकालयमे बाणभट्टक कादम्बरीक एकटा पुरान प्रति राखल छल। (दार्शनिक सिद्धान्त: मङ्गलाचरणक प्रत्यक्ष फल ग्रन्थ-समाप्ति नहि, विघ्न-नाश अछि)]

अध्याय ५८

चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग

श्रद्धांजलि जखन अनुप्रयोग बनि जाए, तखन शोको सँ किस्त वसूलल जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: शोकक सेवा निधि

लोकधुन: करुणा-झूमर

बाँटू हे करुणा, हिसाबो साफ राखू हे,
फूल-दीपसँ आगाँ बढ़ि जीवन-पथ साजू हे।

फूल-दिया स्क्रीनपर, संगमे साफ हिसाब,
शोकक सेवा निधिसँ परिवार पाबय जवाब।
किस्त नहि संवेदना, नियमित सहायता हो,
शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका स्थायी व्यवस्था हो।

दानक कोड पारदर्शी, लाभार्थीक मान,
दुखक नामपर व्यवसाय नहि, करुणाक अभियान।
शोकक सेवा निधि जखन जीवनकेँ उठाबै,
स्मृति फूलसँ आगाँ बढ़ि भविष्य राह बनाबै।

शोकक नाम पर दोकान नहि, सेवाक चौपालि,
पाइ-पाइ क लेखा खुलल, जन देखए निहालि।
पढ़ाइ, दवाइ, रोजगार—तीनू खम्भा गाड़ू,
स्मृतिक दीप सँ आगिला पीढ़ीक बाट उजारू।

❖

भोर होइत-होइत चन्द्रपाल बत्राक 'डिजिटल श्रद्धांजलि मंच' गढ़ नारिकेलक बहुतो मोबाइलमे चमकय लागल। सन्देशमे लिखल छल — 'अपन प्रियजनक नाम अमर करू, स्मृति सुरक्षित राखू, श्रद्धांजलि चढ़ाउ।' नीचाँ फूल, दिया, जल, आ एक छोट चमकैत चिह्न बनल छल। चिह्न पर कोनो कम्पनीक स्पष्ट नाम नहि, केवल 'लोक-सेवा सांस्कृतिक मंच' लिखल। जे लोक पछिला राति गंगेशक प्रश्न सुनि घर गेल छल, ओ सभ बिहान देखलक जे न्यासक लाल फाइल जखन ठूँठक सोझाँ अटकि गेल, तखन स्मृतिक दोसरा गोहि स्क्रीनसँ मुँह निकालि रहल अछि।

चन्द्रपाल बत्रा स्वयं गाममे नहि आएल। ओकर स्वभावेँ एहन छल — जतय लोकक आँखि मिलएबाक हो, ओतए ओ प्रतिनिधि पठबैत; जतय आँसू गिनबाक हो, ओतए ओ मंच बनबैत। ओकरा बुझल छल जे दुःखक समय लोक अपन नाम, फोटो, कथा, आँसू, रसीद,

दस्तावेज सभ दऽ दैत अछि। जकरा अदालत बरख धरि नहि सुनलक, जकरा सरकार खाली भू-खण्ड कहि देलक, ओकरा जँ कोनो चमकैत पन्ना कहए — 'हम अहाँक स्मृति बचाएब' — तँ हाथ काँपैत-काँपैत सेहो अंगूठा पड़ि जाइत अछि।

देविका पहिल बेर ओहि मंच खोललक तखन ओकर चेहरा कसि गेल। पन्ना सुन्दर छल — नीलक पृष्ठभूमि, पानिक हलुक लहर, बीचमे दिया, आ ऊपर गढ़ नारिकेलक नाम। मुदा ज्योंहि नाम जोड़बाक खिड़की खुलल, प्रश्न सभ शुरू भेल। मृतकक पूरा नाम, परिवारक पूरा पता, चिन्हारि-पत्रक प्रति, बैंक-सम्बन्धी विवरण, फोटो, मृत्यु-कारण, दावा-स्थिति, मुआवजा-सूचना, संपर्क-सूची, रिश्तेदार सभक संख्या, आ अन्तमे — 'स्वीकृति: स्मृति-प्रकाशन, शोध, सहायता, दान आ साझेदारी हेतु जानकारी उपयोग।' देविका मोबाइल बन्द कऽ देली। कहली, "श्रद्धांजलि नहि, जाल।"

अनन्या ठूँठक चारू कात बच्चा सभकेँ जमा केलक। ओ मोबाइल बीचमे राखलक, मुदा ओकरा पवित्र वस्तु जेकाँ नहि, साँप जेकाँ देखलक। 'नाम अमर करू'क बटन चमकैत छल। एक बालक पूछलक, "नाम अमर करबाक लेल एतेक कागच किएक?" दोसर कहलक, "जँ ओ सभ नाम बचाएत, तँ हमरा सभक रजिस्टरक आवश्यकता की?" तेसर बालिका धीरे जोड़लक, "जे नाम सुनबाक पहिने स्वीकृति-पत्र माँगए, ओकर कान नहि, पेट होइत अछि।"

ईरा गंगेशक पोथीक नकल फेर खोलली। ओ बच्चा सभकेँ कहली, "काल्हि प्रश्न उठल छल — प्रमाण की? आब एहि ऐप पर गंगेशक कसौटी लगाउ। प्रत्यक्ष की देखैत छी?" बच्चा सभ एक स्वरमे कहल — "सुन्दर पन्ना।" ईरा पूछली, "अनुमान?" देविका उत्तर देली, "सुन्दर पन्नाक भीतर नाम, चिन्हारि, दुःख, पैसा, दावा सभ जमा करबाक इच्छा।" ईरा फेर पूछली, "शब्द?" मीरा कहली, "'श्रद्धांजलि', 'सुरक्षा', 'सेवा' — मीठ शब्द।" ईरा अन्तमे पूछली, "उपमान?" अनन्या ठूँठ दिस देखलक, फेर मोबाइल दिस — "गोहि पानिक ऊपर शान्त रहैत अछि। भीतर दाँत रखैत अछि।"

ठूँठक भीतर सँ एक हलुक किरकिरी आवाज उठल। कियो कहलक, "गाछि सहमत अछि।" बूढ़बा भूत ओहि दिन खूब दिनका उजासमे झिलमिला उठल; ओकर चेहरा पर हँसी नहि, तिरस्कार छल। ओ ज्योंहि मोबाइलक चमक दिस झुकल, स्क्रीन अपनेमे अन्हार भऽ गेल, फेर चमकि उठल। बच्चा सभ सिहरि गेल। बूढ़बा भूत कहलक कि नहि, से कियो स्पष्ट नहि सुनलक, मुदा सभ केँ एक अर्थ पहुँचि गेल — 'नामक रक्षा कहि कऽ नामक शिकार।'

मीरा ओहि मंचक 'सहमति' पढ़ली। पढ़ैत-पढ़ैत हुनकर स्वर कठोर होइत गेल। "एतय लिखल अछि — कथा, चित्र, स्वर, परिवारक विवरण, भविष्यक शोध, सहायता, प्रचार, साझेदारी, दान-आह्वान सभमे उपयोग भऽ सकत। अर्थात् दुख देब, ओ सभ ओकरा कथा बनाओत; आँसू देब, ओ सभ ओकरा विज्ञापन बनाओत; मृतकक नाम देब, ओ सभ ओकरा दानक थाल बनाओत।" एक स्त्री जे अपन डूबल पतिक फोटो अपलोड करए सोचि रहल छली, ओ मोबाइल छातीसँ हटा कऽ पोटलीमे राखि लेली।

गोप कुमार शान्त रहि कागच पर बिन्दु बनबैत रहलाह। हुनका डिजिटल जालक गन्ध दूरसँ लगि जाइत छल। ओ कहलनि, "ई मंच सोझे चन्द्रपालक नाम पर नहि। तीन परत अछि — सांस्कृतिक मंच, सेवा-समूह, स्मृति-तकनीक। मुदा लेखनक चाल, पूछल जा रहल सूचना, आ दानक रास्ता देखू। ई ओही पुरान हाथ अछि, जे जुआमे हारल युवकक देह नहि, ओकर परिवारक भविष्य चिबैत छल।" गोप तकनीकी विवेचन विस्तार सँ नहि देलनि; गामक सोझाँ केवल एतेक कहलनि — "जे दुःखक बहाना सँ अनावश्यक सूचना माँगए, ओकरा विश्वास नहि देब।"

अचानक ठूँठक चारू कात एक युवक हँसि पड़ल। ओ कहलक, "तँ की सभ वस्तु खराब? यदि डिजिटल मंचसँ नाम दूर-दूर पहुँचे?" देविका ओकरा दिस मुड़ि कहली, "दूर पहुँचेनाइ खराब नहि। मुदा नामक लगाम ककर हाथमे? मृतकक परिवारक? लोकसभाक? बच्चा सभक? कि चन्द्रपाल बत्राक जे कहियो अगिला बटन बदलि दानक पेटी खोलि देत?" युवक चुप भेल। ओकर प्रश्न गलत नहि छल, मुदा उत्तर कठिन छल।

तखन सत्यव्रत मेहता आएलाह। ओ मोबाइल देखलनि, शर्त पढ़लनि, फेर ठूँठक जड़ि पर बैसलाह। बहुत काल चुप। फेर कहलनि, "कानूनमे सहमति लिखल जा सकैत अछि, मुदा दुःखक क्षणमे लेल सहमति कतेक मुक्त होइत अछि? भूखल मनुष्यसँ भोजनक बदला हस्ताक्षर लेल जाए, तँ ओ स्वीकृति अछि कि बाध्यता? शोकाकुल परिवारसँ स्मृतिक बदला सूचना लेल जाए, तँ ओ श्रद्धांजलि अछि कि सौदा?" हुनकर स्वरमे अदालतक नहि, पछताबाक भार छल।

बटुकनाथ हरिहरन दूर ठाढ़ ई सभ सुनैत छल। लाल फाइल ओहि दिन नहि खोलल गेल। ओकरा राहत सेहो भेल आ चिन्ता सेहो। राहत ई जे बच्चा सभक ध्यान ओकर न्याससँ हटि स्क्रीन पर गेल। चिन्ता ई जे जँ बच्चा सभ स्क्रीनक शब्द सेहो तर्क सँ काटि देत, तँ लाल फाइलक बचाव कोना करत? ओ मनहि-मन सोचलक — संस्था बनाओ, ऐप जोड़ू, दानक

रास्ता सँ स्मृति आनि नियममे बाँधू। मुदा गंगेशक प्रश्न ओकर पाछाँ लागल छल — 'अधिकारक प्रमाण की?'

चन्द्रपाल बत्रा एहि बीच शहरक एक ठण्ढा कमरामे बैसल रिपोर्ट देखैत छल। कतेक लोक पन्ना खोललक, कतेक नाम भरलक, कतेक अधूरा छोड़लक — संख्या सभ ओकर स्क्रीन पर चढ़ैत छल। ओकरा नाममे रस नहि छल; ओकरा अधूरा भरल खिड़कीमे रस छल। कारण अधूरा दुःख फेर बजाओल जा सकैत अछि। ओ अपन सहायकसँ कहलक — "गाम भावुक अछि। एक बेर भरोसा बनल, सभ आओत।" सहायक पूछलक — "चन्ना गाछीक बच्चा सभ?" चन्द्रपाल हँसलक — "बच्चा सभ भावनात्मक बाधा होइत अछि, स्थायी अवरोध नहि।"

ओहि क्षणे ओकर स्क्रीन पर एक विचित्र त्रुटि देखाइ पड़ल। जतय 'नाम'क स्थान छल, ओतय बार-बार 'प्रमाण' शब्द भरि जाइत छल। जतय 'दान' छल, ओतय 'दायित्व'। जतय 'स्वीकृति' छल, ओतय 'ककर अधिकार?' चन्द्रपाल झुँझला गेल। ओ तकनीकी दल कैँ फोन करए लगल, मुदा स्क्रीन फेर चमकल — 'तत्त्वचिन्तामणि मोड सक्रिय।' ई कोनो वास्तविक सुविधा नहि छल; ने कोनो प्रोग्रामर एकरा बनौने छल। ई ठूँठक हँसी छल, जे नेटवर्क पार कऽ शहरक कमरा धरि पहुँचल।

गढ़ नारिकेलमे बच्चा सभ निर्णय लेल कि कोनो परिवारकैँ ओहि मंच पर नाम चढ़ाबय सँ रोकल नहि जाएत, मुदा सभकैँ पहिने पढ़ाओल जाएत कि नाम देब मतलब की। एहि लेल ठूँठक चारू कात 'नाम-पाठशाला' लगाओल गेल। पहिल पाठ — नाम कहब आ नाम देब दूटा अलग बात अछि। दोसर पाठ — दुःखक फोटो दुःखक सम्पत्ति नहि बनि जाए। तेसर पाठ — स्मृति जखन पंजीकृत होइत अछि, तखन पहिने पूछू, मालिक कियो बनि रहल अछि कि नहि।

मीरा बच्चा सभकैँ निजताक नव शपथ लिखबेली — 'हम मृतकक नाम कहब, मुदा मृतकक घरक चाबी नहि देब। हम कथा सुनब, मुदा आँसू बेचब नहि। हम फोटो देखब, मुदा बिनु अनुमति नहि पसारएब। हम सहायता करब, मुदा बदलामे आत्मा नहि माँगब।' ई शपथ सुनि ठूँठक जड़ि लग राखल लाल डोरी अपने आप हलुक हिलल।

साँझक समय एक बूढ़ महिला अपन बेटाक नाम लिखए आयली। हुनका मोबाइल चलबैत नहि अबैत छल, मुदा कोनो युवक हुनका कहने छल जे ऐप पर नाम चढ़ला सँ सरकारी सहायता भेटत। देविका हुनका धीरे-धीरे सभ बुझेली। महिला सुनलीह, फेर कहलीह, "हमर बेटा पानिमे गेल। ओकर नाम पानिसँ निकाललहुँ। आब फेर ओकरा स्क्रीनमे किएक डुबाबू?" ओ ठूँठक

पाथर पर बेटाक नाम लिखि चुपचाप घुरि गेलीह। एहि वाक्यक बाद कतेको गोटे मोबाइलक पन्ना बन्द कऽ देलक।

रातिमे अनन्या नक्शाक कातमे एक नव चिह्न बनौलक — एक छोट चौकोर स्क्रीन, जकर भीतर पानिक लहर आ गोहिक आँखि। ओकरा नीचाँ लिखलक — ‘स्मृति-ऐपक प्रश्न’। ईरा ओकरा देखली आ कहली, “नव्य न्यायक अगिला पाठ तैयार अछि। प्रत्यक्ष: स्क्रीन। अनुमान: भूख। शब्द: श्रद्धांजलि। सत्य: अद्यापि परीक्षित।” बच्चा सभ एहि पंक्ति पर बहुत काल धरि विचार करैत रहल।

तहने गोपक फोन पर एक सन्देश आयल। भेजनिहारक नाम नहि। सन्देश तुरन्त मेटाएबला छल, मुदा गढ़ नारिकेलमे आब मेटनाइ सेहो चुप्पी नहि रहल। गोप जल्दी सँ पढ़लक — ‘श्रद्धांजलि मंच असगर नहि। दानक कोड राति बदलत। राघव देख रहल अछि।’ सन्देश झिलमिलेलक, फेर गायब। मुदा गायब होइते स्क्रीनक काँच पर एक धुँधला पातक निशान रहि गेल।

अनन्या ओ निशान देखलक। ओकरा बुझि गेल जे चन्द्रपाल असगर नहि, राघव ‘सिग्नल’ फेर परछाईंमे जागल अछि। ठूँठक भीतर सँ हँसी नहि, एहि बेर चेतावनी उठल। स्मारक-ऐपक गोहि मुँह खोलि चुकल छल; आब दानक कोड ओकर दाँत बनए बला छल।

राति भरि ठूँठक चारू कात बच्चा सभ पहरा दैत रहल। कियो मोबाइलक चमक पर नजर राखलक, कियो पाथरक नाम पर, कियो पीयर सूचना-पत्र पर, कियो लाल फाइल पर। चन्ना गाछी कटि गेल छल, मुदा ओकर चौपालमे एखन चारि-चारि गोहि घात लगौने छल — सरकार, न्यास, स्क्रीन, आ सिग्नल। अगिला बिहान पहिने राघवक कोड पढ़ल जाएत, फेर नाम।

लोकगीत: शोकपर किस्त

लोकधुन: करुण व्यंग्य-गीत

बिकाउ हे नहि, प्रियजनक नाम बिकाउ नहि हे,
श्रद्धा जखन कोड बनै, से श्रद्धा रहै नहि हे।

फूल-दिया स्क्रीनपर, नीचे दानक कोड,
मृतकक नाम अमर करब—ई केहन व्यापारक मोड़?
माए नोर चढ़ाबै, अनुप्रयोग फीस गनै,
शोको पर किस्त वसूलि गोहि पेट भरै।
काँचपर पातक निशान मेटलासँ नहि गेल,

राघव परछाईंमे जागल, चेतावनी भेटल।
सरकार, न्यास, स्क्रीन, सिग्नल चारि दाँत,
कटल गाछिक चौपालमे नेना जागै राति।
प्रियजनक नाम बिकाउ फूल नहि अछि,
श्रद्धा जखन कोड बनै, ओ श्रद्धा रहत नहि।

फूल-दीया स्क्रीन पर, नीचाँ दानक कोड,
'नाम अमर करब'—केहन ई व्यापारक मोड़?

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—किरणावलीक निर्विघ्न यात्रा: उदयनाचार्यक कक्षमे शिष्यसभ पाण्डुलिपिक गट्ठर बाँधि रहल छल। बादमे एहि घटनापर विवाद उठल।]

अध्याय ५९

राघव सिग्नलक नव कोड

मेटायल स्क्रीनक धुँधला निशानपर लिखल शास्त्र सभसँ साफ बाँचल जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: मेटल कोड, बचल साँच

लोकधुन: गुप्त-सन्देश जागरण

जोगाउ हे भाप, काँच परक भाप जोगाउ हे,
मेटलो आखरक छाया सँ बाट पाउ हे।

सन्देश मेटल तइयो भाप काँचपर रहै,
नान्हि कोड पढ़िते पूरा रास्ता कहै।
डिजिटल राख सहेजि कऽ विशेषज्ञ संग जाँचू,
जल्दी निष्कर्ष नहि, प्रमाणक धागा बाँधू।

मेटल कोड हार नहि, खोजक पहिल द्वार,
सुरक्षित प्रति, समयक छाप बनत सच्चा आधार।
बचल साँचक चिन्हसँ जालक नक्शा खुलत,
धैर्यक दीप हाथमे हो तँ अन्हारो गलित।

हड़बड़ी मे निष्कर्ष नहि, धागा-धागा जोड़ू,
समयक छाप, सुरक्षित प्रति—प्रमाण दिस मोड़ू।
जानकार संग बैसि कऽ कोडक गिरह खोलू,
धैर्यक दीप बारि अन्हार जालक भेद तौलू।

❖

अगिला बिहान राघवक कोड पढ़बाक लेल लोक ठूँठक चारू कात एना बैसल जेना कोनो पुरान शास्त्र खोलल जाएब। मुदा ई शास्त्र पात पर नहि, गायब भऽ गेल स्क्रीनक धुँधला निशान पर लिखल छल। जे सन्देश रातिमे मेटा देल गेल छल, ओकर देह नहि बचल, मुदा ओकर भाप बचल छल। गोपक मोबाइलक काँच पर जे पातक आकार अटकल छल, से चन्ना गाछीक कटायल पात नहि, राघवक डरक पात छल।

राघव ‘सिग्नल’ सोमानी सदिखन ई मानैत छल जे शब्द जँ समय पर मेटा देल जाए, तँ अपराधक देह नहि बनैत। ओकर विश्वास छल — बाजू, मेटाउ, फेर बजबाक प्रमाण नहि रहत। मुदा गढ़ नारिकेलमे जे दिनसँ नामक पहरा बच्चा सभक हाथमे गेल, तही दिनसँ मेटायल शब्द सेहो अपन छाह लऽ कऽ घुरए लागल। सन्देश गायब भेल, मुदा काँच पर पातक धब्बा रहि गेल।

धब्बा गायब भेल, मुदा बच्चा सभक आँखिमे ओकर आकृति रहि गेल। आँखि बन्द भेल, मुदा ठूँठक जड़ि ओकरा सुनि लेलक।

अनन्या सभसँ पहिने कहली — "कोड पढ़बाक पहिने कोड केँ प्रमाण बनाउ।" ई वाक्य सुनि ईरा मुस्की देली। गंगेशक प्रश्न चन्ना गाछीक चौपालमे एखन नव छल, मुदा बच्चा सभ ओकर भाषा अपना ढंगें सीखि रहल छल। प्रत्यक्ष की? मोबाइलक काँच। अनुमान की? दानक बहानासँ स्मृतिक चोरी। शब्द की? श्रद्धांजलि, सेवा, न्यास, दान। उपमान की? गोहि जे पानि पर शान्त देखाइत अछि, मुदा दाँत पानिक नीचाँ राखैत अछि। अर्थापत्ति की? जँ सन्देश मेटाओल गेल, तँ किछु एहन छल जे बचल रहब अपराधी चाहैत नहि छल। अनुपलब्धि की? जे नाम ऐपमे नहि भेटैत, से मेटायल नामक गवाही अछि। बच्चा सभ एना गिनैत गेल, जेना नव्य न्याय ठूँठक छाल पर फेर जन्म लैत हो।

गोप कहलनि, "कोडक अर्थ सोझ नहि रहत। राघव सदिखन वस्तुकेँ दोसर नाम दैत छल। पैसा दान, कमीशन सेवा, चोरी प्रक्रिया, धमकी सलाह, आ मेटनाइ निजता।" मीरा तुरन्त रोकली — "निजता अपराधक ढाल नहि। निजता पीड़ितक अधिकार अछि, अपराधीक गुफा नहि।" ई वाक्य ठूँठक चारूकात पाथर जेकाँ बैसि गेल।

सौम्या पुरान सूची निकाललीह। ओहि सूचीमे कतेको दान-शब्द छल — दीपदान, जलदान, श्रमदान, स्मृतिदान, छात्रवृत्ति, शान्ति-कोष, आपदा-सहायता, सांस्कृतिक पुनरुत्थान। प्रत्येक शब्द पवित्र लगैत छल। मुदा प्रत्येक शब्दक पाछाँ राघवक छोट चिन्ह छल — कोठली, बिन्दु, अधचन्द्र, तीन रेखा, पातक नस, उनटा दिया। ई चिन्ह सभ साधारण आँखिक लेल सजावट छल; राघवक लोकक लेल बाट छल।

आरुणि अपन हथेली ठूँठ पर राखि बहुत काल धरि चुप रहल। फेर कहलक, "जँ दानक शब्द अपराधक कोड बनि जाए, तँ दान नहि, देहक दोसर जलसमाधि होइत अछि। पहिने नदी देह डुबाबैत छल, आब दानक फलक नाम डुबा देत।" एहि पर कतेको परिवारजन सहमि उठल। कारण ओ सभक पीड़ा पहिल बेर बुझलक जे मृतकक नाम फेर मरि सकैत अछि — एहि बेर सम्मानक माला लगाकऽ।

बटुकनाथ हरिहरन ओहि दिन फेर आएल। ओकर पोशाक पहिने जेकाँ कड़ा-सोझ कानूनक नाटक करैत छल। ओ दूर सँ देखलक जे बच्चा सभ राघवक कोड पढ़ि रहल अछि। ओकरा असुविधा भेल। कारण कानूनक दरबारमे कोड ओकर नियन्त्रणमे रहैत छल — धारा, उपधारा, याचिका, स्थगन, प्रत्युत्तर। मुदा एहि ठाम बच्चा सभ शब्दक शरीर खोलि रहल छल।

ओ धीरे कहलक, “सावधान रहू। डिजिटल प्रमाण अदालतमे सहज मान्य नहि होइत।” अनन्या तुरन्त उत्तर देली — “एतय पहिने न्याय मान्य होएत, अदालत बादमे देखल जाएत।”

ई उत्तर सुनि बूढ़बा भूत झिलमिला उठल। दिनक उजासमे ओकर आकृति साफ नहि भेल, मुदा ओकर हँसी पातक खरखराहट जेकाँ सुनाइ देलक। बटुकनाथक चेहरा कठोर भऽ गेल। ओ बुझि गेल जे एहि चौपालमे ओकर बरखोंक विधिक अभिमान लरखड़ा रहल अछि।

तखन एक युवक आयल जे चन्द्रपालक स्मारक-ऐपमे छोट-छोट काज करैत छल। ओकर नाम भवेश छल। ओ काँपैत आवाजमे कहलक — “हमरा पता नहि छल जे ई सभ गलत अछि। हमरा बस ई कहल गेल जे श्रद्धांजलि मंच पर दानक श्रेणी बनाबी। कोन श्रेणी ककर लेल, से राघव भेजैत छल। जँ कोठली चिन्ह आए, तँ दान ककरो परिवार तक नहि जाए। जँ पातक नस आए, तँ नाम केवल प्रदर्शनमे रहत। जँ उनटा दिया आए, तँ खाताक रास्ता बदलत।” भवेशक प्रत्येक वाक्य पर गोप ओकरा रोकैत नहि, अपितु धीरे-धीरे साधारण शब्दमे दोहरबैत रहलाह, ताकि लोक बुझि सकए।

मीरा भवेशसँ पूछली, “की अहाँ जानैत छलहुँ जे जकर नाम स्क्रीन पर चमकत, ओकर परिवार सोचत जे बेटाक स्मृति सुरक्षित अछि?” भवेश माथ झुका देलक। “जानैत छलहुँ। मुदा हमरा कहल गेल जे भावना सँ मंच चलैत अछि, लेखा सँ व्यापार।” ई वाक्य सुनिते ठूँठक भीतर सँ एक सूखल कीड़ा बाहर आयल आ कटल छाल पर सरकि गेल। बच्चा सभ ओकरा देखलक। अनन्या लिखली — “भावना पर कीड़ा।”

राघव स्वयं ओतय नहि छल, मुदा ओकर अनुपस्थिति उपस्थितिसँ बेसी भारी छल। दूर कोनो शहरक काँचक कमरासँ ओ कदाचित् एतयक दृश्य देखैत होएत। ओकरा विश्वास छल जे ओ अदृश्य रहि सकैत अछि। मुदा गढ़ नारिकेलमे अदृश्य वस्तु सभ पहिने आएत — भूत, प्रेत, लोथ, पनिडुब्बी, डाइन, पीपरक ब्रह्मा — आ बादमे मनुष्य। राघवक अदृश्यता एतय कोनो कौशल नहि, पुरान भीड़मे एकटा कमजोर छाह मात्र छल।

दुपहरियामे राघवक दोसर सन्देश आयल। एहि बेर गोपक फोन पर नहि; ठूँठक नजदीक राखल पीयर सूचना-पत्रक कोना पर। कागच स्वयं हलुक नील पड़ल आ ओहि पर तीन क्षण लेल अक्षर उभरल — ‘दानक कोड बदलल। नाम-पहरा अस्थिर। मौनक स्रोत देखू।’ अक्षर फेर गायब। मुदा कागच पर नील दाग रहि गेल। बच्चा सभ उछलल नहि। ओ सभ अबूझ चमत्कारसँ बेसी प्रमाणक अनुशासन सीखि चुकल छल।

ईरा पूछली, “मौनक स्रोत के?” लोकक आँखि अपनहि सत्यव्रत मेहता दिस गेल। सत्यव्रत ओहि दिन चौपालक किनार पर बैसल छलाह। ओ चुप छलाह, मुदा एहि बेर हुनकर चुप्पी अपराधक गुहा नहि, सुनबाक आसन छल। राघव कदाचित् एहि अन्तरकेँ बुझि नहि पाओत। जे लोक सभ मौनकेँ मेटनाइ बुझैत रहल, से सुनबाक मौनकेँ सेहो षड्यन्त्र मानि रहल छल।

सत्यव्रत धीरे उठलाह। हुनका सभक सोझाँ अबैत देख बटुकनाथक चेहरा पर एक विचित्र असन्तोष आयल। सत्यव्रत कहलनि — “राघव मौनक स्रोत खोजि रहल अछि, कारण ओकर कोड शब्द पर चलैत अछि। जे ठाम शब्द सँ पहिने सुननाइ अछि, ओतय कोड टूटि जाइत अछि।” फेर ओ बैसि गेलाह। ने व्याख्यान, ने आदेश। मुदा एहि छोट वाक्यमे राघवक पूरा व्यापार काँपि उठल।

अनन्या कहली, “तखन कोड तोड़बाक उपाय बाजब नहि, सुनब?” सत्यव्रत उत्तर देलनि, “किछु कोड कानसँ खुलैत अछि। अपराधक भाषा जल्दी बजैत अछि; पीड़ितक भाषा अबेरसँ। जल्दीक भाषा पकड़ब आसान, अबेरक भाषा सुनब कठिन। जे सुनि लेत, ओ कोडकेँ नाममे बदलि देत।”

तेहि क्षण उज्ज्वलक माय अपन बेटाक नाम फेर पढ़लीह। एहि बेर नाम पढ़लाक बाद ओ चुप भऽ गेलीह। चुप्पी लम्बा भेल। लोक बेचैन होमऽ लागल। पहिने कोनो नामक बाद तुरन्त चिह्न लिखल जाइत छल — हवा, चिरई, धूप, छाह। मुदा एहि बेर किछु नहि भेल। अनन्या कलम रोकि देली। एक मिनट। दू मिनट। तीन मिनट। अचानक दूर सँ एक बच्चा, जे चौपालसँ बाहर खेलैत छल, साँस रोकि ‘कबड्डी-कबड्डी’ कहैत दौड़ल आ ठूँठक कगार छू कऽ घुरि भागल। सभ लोक ओकरा देखैत रहल। अनन्या लिखली — “नामक उत्तर: खेल।”

ई छोट खेल राघवक कोड पर पहिल चोट छल। अपराधक कोड बन्द समूहमे चलैत अछि; कबड्डी खुलल साँसक खेल अछि। कोड कहैत अछि — चिह्नक अर्थ गुप्त राखू। कबड्डी कहैत अछि — साँस सभकेँ सुनाउ, सीमा सभकेँ देखाउ, छू कऽ घुरू, झूठ सँ नहि। ठूँठक चारूकात बच्चा सभ एक-एक कऽ कबड्डी खेलबाक गोल बनौलक। नाम-पाथर सभ गोलक बाहर पहरा देलक।

बटुकनाथ चिढ़ल। “ई अदालत नहि, खेल अछि,” ओ फुसफुसायल। बा सुनि लेलीह। ओ कहलीह, “जँ अदालत बरख चिबा जाए आ खेल नाम बचा ले, तँ खेले न्याय अछि।” एहि वाक्य

पर हरिहरनक गरदनि नीचाँ गेल। ओकरा पहिल बेर डर लागल जे जाति, पद, कानून, न्यास, दान, कोड — सभक ऊपर लोकक खेल ठाढ़ भऽ सकैत अछि।

साँझ धरि राघवक चिन्ह सभक सूची बनल, मुदा सूची खुलल रूपमे नहि चिपकायल गेल। मीरा कहली, “अपराधक चाल बतबैत काल अपराधक बाट नहि खोलब।” तैँ बच्चा सभ निश्चय केलक जे सार्वजनिक रूपमे केवल चेतावनी लिखल जाए: ‘जे दान नामसँ अलग हो, ओ गोहिक दाँत अछि। जे मंच परिवारक अनुमति बिनु नाम चढ़ाए, ओ स्मृति नहि, चोरी अछि। जे सन्देश मेटाए, ओकर छाह पूछू।’

एहि चेतावनीक नीचाँ गंगेशक प्रश्न लिखल गेल — ‘प्रमाण कतए अछि?’ ओकर पाछाँ एक दोसर पंक्ति — ‘जाति, धन, पद, दान, स्क्रीन — कोनो प्रमाण नहि, जँ नामक स्वीकृति नहि।’ ई पंक्ति लिखिते एक वृद्ध चर्मकार आगाँ आबि ठाढ़ भेलाह। ओ कहलनि, “गंगेश जँ न्याय छथि, तँ हमहूँ न्यायमे छी। हमर नाम पाछाँ नहि लिखू।” बच्चा सभ हुनकर नाम पाथरक बाहरी घेरामे नहि, ठीक मध्य-दिशामे लिखलक। जाति-व्यवस्थाक पुरान खरोंच पर ई छोट कलमक रेखा अग्नि जेकाँ जलल।

राति घिरल तखन राघवक तेसर सन्देश आयल। एहि बेर कोनो फोन, कागच, स्क्रीन, काँच पर नहि — बच्चा सभक कबड्डी-रेखा पर। माटिमे नील लकीर जेकाँ उभरल — ‘जतय सुननाइ, ओतय जोखिम। स्रोत हटाउ।’ कियो बाजल नहि। सभक आँखि फेर सत्यव्रत दिस गेल। मुदा सत्यव्रत उठलाह नहि। ओ धीरे अपन स्याहीकलम बच्चा सभक रजिस्टर लग राखि देलनि।

अनन्या बुझि गेली। स्रोत व्यक्ति नहि, विधि अछि। सत्यव्रत हटि जेताह तँ की? जँ सुननाइ बच्चा सभ सीखि लेलक, तँ स्रोत एक देहमे बन्द नहि। ओ कलम उठा कऽ लिखली — ‘मौनक स्रोत: सामूहिक कान।’

एहि शब्दक संग माटिक नील लकीर फटि गेल। नील धूलि बनि उड़ल आ कटल ठूँठक ऊपर जमि गेल। बूढ़बा भूत पहिल बेर साफ सुनाइ देलक — “कोड पढ़ल गेल। आब मौन सुनल जाएत।” लोकक रोमांच उठि गेल। कारण अगिला दिन सत्यव्रत मेहता स्वयं नाम-पाठ नहि, मौन-पाठमे बैसताह। राघवक कोड टूटल छल, मुदा कोडक पाछाँ जे मौनक भय छल, से एखन खुलबाक बाकी छल।

राति भरि कबड्डी-रेखा माटिमे हलुक चमकैत रहल। बच्चा सभ पहरा दैत रहल। नाम-पाथर सभ ठाम पर छल। पीयर सूचना-पत्र चुप छल। लाल फाइल बन्द छल। स्मारक-ऐपक स्क्रीन

अन्हार भेल। मुदा ठूँठक भीतर सँ एक धीमा स्वर उठैत रहल — “सुनू, फेर लिखू। लिखू, फेर पहरा दिअ।” अगिला बिहान सत्यव्रतक दोसर मौन पढ़ल जाएत।

लोकगीत: मेटायल कोड पढ़ू

लोकधुन: गुप्त-सन्देश गीत

पढ़ू हे कोड, मेटायल कोड पढ़ू हे,
अक्षरक धुँआ मे असल हाथ चुनू हे।

सन्देश मेटल, काँचपर भाप रहि गेल,
धुँधला पातक शास्त्र भोरमे साफ भेल।
दानक कोड टूटल, नील लकीर फाटल,
मौनक स्रोत एक देह नहि—सामूहिक कान जागल।
'सुनू, फेर लिखू; लिखू, फेर पहरा दिअ',

ठूँठ भीतरक धीम स्वर राति भरि कहिअ।
पीयर कागच चुप, लाल फाइल बन्द,
नाम-पाथर जागल, बच्चा सभ प्रचण्ड।
कोड पढ़ल मात्र नहि, पाछाँक भय सुनू,
मेटायल अक्षरक धुआँमे असल हाथ चुनू।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—दूषण-पञ्जीक खाली पन्ना: पञ्जीकारक कोठरीमे रौद कम छल, मुदा आरोपक स्याही बहुत गाढ़। समाज ओकर परिचय एक लाल चिन्हसँ सीमित करय चाहलक; ओ ज्ञानक मूल्यांकन कारण, दोष आ प्रमाणसँ करबाक विधि देलक।]

अध्याय ६०

सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

धर्मक भाषामे लिखल हिसाब सभसँ पहिने मौनक कान पकड़ै छै।

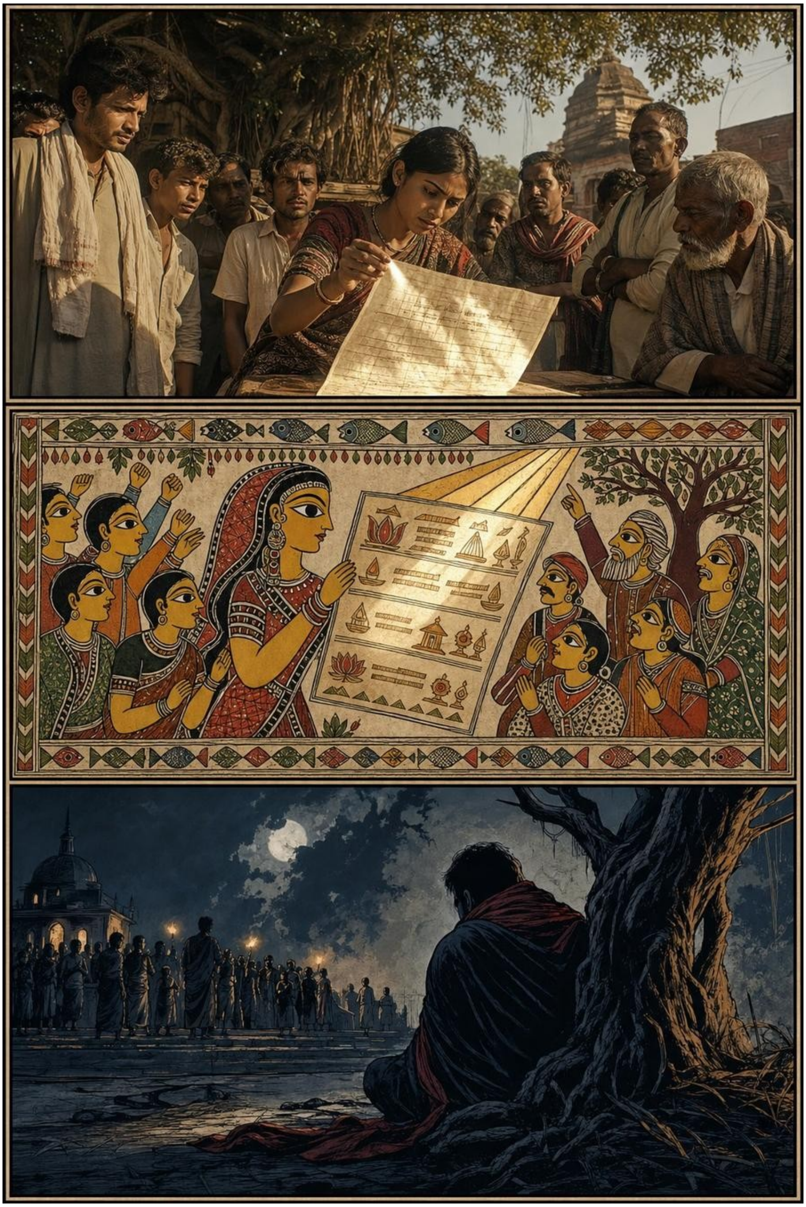

अध्यायारम्भ लोकगीत: मौनसँ वचन

लोकधुन: मौन-पराती

पकाउ हे मौन, भीतर वचन पकाउ हे,
सही घड़ी पर स्पष्ट बोल जग बीच लाबू हे।

दोसर मौन पहिलसँ भिन्न—एहि बेर सोचक थान,
धर्मक कपड़ा हटि रहल, खुलि रहल असल जान।
मौन भीतर प्रश्न पकै, उत्तर रूप धरै,
सही क्षणमे स्पष्ट वचन जनक संग उतरै।

चुप्पी छलक ढाल नहि, आत्मावलोकन हो,
भोरक बाद काजमे बदलल ईमानक प्रण हो।
मौनसँ वचन, वचनसँ कर्म—एहि क्रममे चलू,
भीतरक सत्य बाहिर लऽ समाजक दीप बलू।

चुप्पी ढाल नहि बनए, बनए सोचक ओसारा,
भीतर-भीतर प्रश्न घुरए, ताकए नब किनारा।
भोर होइते मौन उठए, कर्मक धोती फेंटए,
ईमानक हर जोति कऽ समाजक खेत सेंतए।

❖

राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक नव कोड जखन ठूँठक चारू कात पहुँचल, तखन पहिने लोक ओकर अर्थ बुझबे नहि केलक। कागच पर सभ किछु धर्मक भाषामे छल — अर्पण, श्रद्धा, पुनर्निर्माण, स्मृति-सहयोग, पीड़ित-परिवार कोष। मुदा देविकाक आँखि सीखि गेल छल जे ठगी सभसँ अधिक पवित्र शब्दक कपड़ा पहिरैत अछि। ओ कागचकेँ धूपमे राखलक। धूप पड़िते ‘श्रद्धा’क नीचाँ ‘हिस्सा’ चमकल, ‘कोष’क नीचाँ ‘मार्ग’ चमकल, आ ‘सहयोग’क नीचाँ ‘कमीशन’क सूक्ष्म डोरी देखाइ पड़ल।

लोक शोर मचाबय चाहलक। किछु युवक कहलक — ‘एहि बेर सोझे मुकदमा।’ किछु कहलक — ‘सत्यव्रत बाबू केँ बजाउ, ओ दिल्लीक लोक छथि, ओ बुझताह।’ किछु बूढ़ कहलक — ‘जे सभ नामक ऊपर फेर व्यापार करए चाहैत अछि, ओकरा चन्ना गाछीमे बाँधि

देबाक चाही।' मुदा ठूँठ मौन रहल। ओहि मौनमे एक विचित्र रोक छल — जनु कटल गाछि कहि रहल हो, 'पहिने सुनू, फेर बाजू।'

सत्यव्रत मेहता ओहि समय गामक किनार पर, सूखल पोखरिक कातमे बैसल छलाह। हुनका खबर पहुँचल, मुदा ओ तुरन्त उठलाह नहि। पहिल जीवनमे ओ तुरन्त उठैत छलाह — कागच माँगैत, धारा देखैत, दलील बनबैत, बयान जारी करैत। ओहि तत्परतामे लोक हुनका योग्य अधिकारी मानैत छल। मुदा आब हुनका बुझाइत छल जे कतेको बेर तत्परता सेहो अहंकारक एक रूप होइत अछि। जे दुख बरखों धरि दबायल गेल, ओकरा तुरन्त उत्तर देब न्याय नहि, ओकरा फेर एक बेर ढँकब होइत अछि।

ओ पोखरिक सूखल पाँकमे एक रेखा खिंचलनि। रेखा खिंचिते हुनका गंगेशक प्रश्न मोन पड़ल। प्रत्यक्ष की? अनुमान की? शब्दक प्रमाण की? स्मृति की? आ जाति-व्यवस्था जे असुविधाजनक जीवन-सत्यकेँ मारि कऽ शास्त्रक मूर्ति बना दैत अछि, ओकर प्रमाण कोन? सत्यव्रत धीरे-धीरे बुझि रहल छलाह जे न्याय केवल बजबाक कला नहि; न्याय पहिने अपन बजबाक अधिकारकेँ सन्देहक कटघरामे ठाढ़ करबाक साहस अछि।

तहिये हुनका लग अनन्या आयली। ओ हाथमे रजिस्टर नेने छली। 'सत्यव्रत बाबू,' ओ कहली, 'सभ अहाँकेँ बजाबैत अछि।' सत्यव्रत माथ उठेलनि। 'किएक?' 'कागच फेर आएल अछि। राघवक कोड। लोक चाहैत अछि अहाँ बताउ जे की करबाक।' सत्यव्रत किछु क्षण ओकरा ताकैत रहलाह। बालिकाक आँखिमे कोनो पूजा नहि छल; ताहिमे आग्रह छल, मुदा अन्धविश्वास नहि। ओ पूछली — 'अहाँ चुप किएक छी?'

एहि प्रश्नमे सत्यव्रत मेहताक पहिल मौन आ दोसर मौन दुनू आमने-सामने ठाढ़ भऽ गेल। पहिल मौन ओ छल जखन ओ समय पर बाजि सकैत छलाह, मुदा पद, मर्यादा, प्रक्रिया, शंका, सुविधा, आ सुरक्षित दूरीक कारण नहि बाजलाह। ओ मौन अपराध छल। दोसर मौन एखन छल — जखन ओ बाजि सकैत छलाह, मुदा लोकक स्वरकेँ अपन आवाजसँ ढँकए नहि चाहैत छलाह। ई मौन सुनबाक व्रत छल।

ओ अनन्यासँ कहलनि, 'पहिल मौनमे हम लोकक आवाज रोकने रही। एखन जँ हम तुरन्त बाजब, तँ फेर ओहि आवाजकेँ छोट करब। चलू, मुदा निर्णय हम नहि देब। हम केवल सुनब, आ जँ लोक चाहत, तँ शब्दक गिट्ठऽ खोलबाक काज करब।' अनन्या रजिस्टर बन्द कऽ देली। 'तखन अहाँ पहिने श्रोता छी, बादमे वकील?' सत्यव्रत बहुत दिन बाद हलुक मुस्की देलनि — 'न्यायमे श्रोता बनल बिनु वकील बनब खतरनाक होइत अछि।'

चन्ना ठूँठ लग सभ प्रतीक्षा कऽ रहल छल। पीयर सूचना-पत्र, बटुकनाथ हरिहरनक लोक-स्मृति न्यासक प्रस्ताव, चन्द्रपालक स्मारक-ऐपक छापल पन्ना, आ राघवक नव कोडक दान-पत्र — चारू कागच अलग-अलग पाथर सँ दबाओल छल। ओ चारू कागच एना लगैत छल जेना चारि गोहि पानिसँ निकलि ठूँठक चारू कात पेट टेकने पड़ल हो। देह नहि, शब्द चिबाबय लेल।

सत्यव्रत आएलाह, मुदा बीचमे नहि बैसलाह। ओ घेराक बाहर धरती पर बैसलाह। लोक हलचलमे पड़ि गेल। किछु कहलक — 'एतय नहि, आगाँ बैसू।' ओ उत्तर देलनि — 'जे मध्यमे बैसत, से आइ नाम होएत; लोक नहि।' अनन्या ठूँठक कगार पर 'जेकर नाम नहि भेटल' बला पाथर राखलक। तहियेसँ सभा आरम्भ भेल।

पहिने देविका बजली। ओ कहली — 'स्क्रीन पर स्मारक बनबयबला लोक हमसभक रोदनक नाप लेत। जे नामक फोटो ने भेटत, ओकरा खाली आकृति बनाओत। जे परिवार गरीब, ओकर नामक संग दान-बटन लगाओत। जे क्लिक करत, ओकर आँसू सेहो गिनत। ई ठगी पुरान अछि, बस शब्द पवित्र भऽ गेल अछि।' कियो ताली नहि बजेलक। चन्ना ठूँठक सभा ताली सँ नहि, चुप्पी सँ सहमति दैत छल।

तकर बाद मीरा उठली। 'स्मृति जँ बिनु अनुमतिक चित्र बनि जाए,' ओ कहली, 'तँ ओ फेर देहक अपमान अछि। जकर चेहरा लुटल गेल, जकर निजता तोड़ल गेल, ओकर नामक ऊपर स्मारक बनाबयबला पहिने ओकर अनुमतिक भाषा सीखू। मृतकक परिवारो केँ ई अधिकार अछि जे ओ कहि सकए — हमरा दुख बाजार पर नहि चाही।' ओकर स्वर तीक्ष्ण नहि छल, मुदा स्पष्ट छल। जे सभ ओकर अतीतक ब्लैकमेलक कथा जानैत छल, ओ सभ बुझैत छल जे ई स्त्री अपन घावक तमाशा नहि, ओहि तमाशाक विरुद्ध विधान बना रहल अछि।

सौम्या रामनाथन धीरे बजली — 'कागच सभमे भाषा देखू। पीयर सूचना-पत्र कहैत अछि खाली भू-खण्ड। न्यासक प्रस्ताव कहैत अछि धरोहर। ऐप कहैत अछि डिजिटल श्रद्धांजलि। दान-पत्र कहैत अछि पुनरुत्थान। मुदा चारू कागचमे एको बेर ई नहि पूछल गेल जे नामक पहरा ककर हाथमे अछि।' ओ कागचक शब्द पढ़ैत गेली। प्रत्येक शब्दक बाद बच्चा सभ ओकर माटिक अर्थ पूछैत गेल — 'खाली' माने कोन? 'धरोहर' ककर? 'डिजिटल' ककर लाभ लेल? 'दान'क हिसाब ककरा लग?

एहि प्रश्न सभकेँ सुनि सत्यव्रत मेहताक भीतरक पुरान अधिकारी बेचैन भेल। हुनका मोन होइत छल जे ओ तुरन्त उत्तर देथि, धारा बताबथि, नियमक भाषामे लिखि देथि। मुदा ओ अपने

हाथक अँगूठा माटिमे गाड़ि देलनि। ओ चुप रहलाह। हुनकर मौन आब भागब नहि छल; ओ लोकक प्रश्न सभकेँ अपन भीतर स्थान देबाक अभ्यास छल।

बा अपन धीमा स्वरमे कहलीह — 'गंगेश न्याय लिखलनि, मुदा समाज हुनकर जीवन पर न्याय नहि केलक। जकरा जाति, विवाह, जन्म, कुलक प्रश्न असुविधाजनक लगल, से ओकरा मर्यादाक मूर्ति बनाकऽ बचा लेलक। ई सम्मानक नाम पर स्मृति-हत्या छल। आब चन्ना गाछीक नाम सभकेँ सेहो मूर्ति बना देलक तँ ओहो हत्या होएत।' एहि बात पर ठूँठक कटल सतह पर एक महीन दरार लम्बा भेल। कियो डरायल, कियो अभिभूत भेल। अनन्या लिखली — 'न्यायक बिनु सम्मान हत्या भऽ सकैत अछि।'

तखन सत्यव्रत कैँ लगल जे आब हुनकर बजबाक बारी कदाचित् आयल। मुदा ओ उठलाह नहि; बैसले-बैसल कहलनि, 'हम कानूनक लोक छी, मुदा ई जानैत छी जे कानून कतेको बेर नामकेँ फाइल बनाकऽ निगलि जाइत अछि। आइ जँ अहाँ सभ चाही, तँ हम एहि कागच सभक भाषा खोलि सकैत छी। मुदा निर्णय अहाँ सभ करब — नाम कागचमे जायत कि कागच नामक सोझाँ उत्तर देत।'

आरुणि पूछलक, 'उत्तर कोना?' सत्यव्रत कहलनि, 'जकरो कोनो प्रस्ताव अछि, ओकरा पहिने नाम-पाठ सुनए पड़त। जे स्मारक बनाबय चाहैत अछि, से पहिने मृतकक घर जाए। जे डिजिटल श्रद्धांजलि कहैत अछि, से पहिने एक दिन मोबाइल बन्द कऽ ठूँठक घेरामे बैसए। जे दान देबय चाहैत अछि, से पहिने हिसाबक पुरान पानि खोलए। जे न्यास बनाबय चाहैत अछि, से पहिने बताबए — न्यासमे बच्चा सभक अधिकार कतऽ अछि।'

लोकमे हलचल उठल। ई भाषण नहि छल; ई उनटल विधान छल। एखन धरि सत्ता लोककेँ सत्यापनक कटघरामे ठाढ़ करैत रहल। आब ठूँठक सभा प्रस्तावक सत्यापन करए चाहैत छल। अनन्या, देविका, मीरा, सौम्या, ईरा आ गोप मिलि एक पन्ना बनबय लगल। ओकर शीर्षक छल — 'नामक समक्ष प्रस्तावक शपथ।' सत्यव्रत ओहि पन्ना पर हस्ताक्षर करए चाहलनि। अनन्या रोकि देली — 'पहिने बच्चा सभ।'

सत्यव्रत हाथ पाछाँ खिंचि लेलनि। हुनका अपमान नहि, मुक्ति बुझायल। जे व्यवस्था सदिखन पैघ हस्ताक्षरक प्रतीक्षा करैत छल, ओहि ठाम पहिल हस्ताक्षर बच्चा सभक होएत। एक-एक बच्चा अपन नाम नहि, अपन पहराक चिन्ह राखलक — ककरो माछ, ककरो पात, ककरो काँचक गोली, ककरो खुलल आँखि। तखन सत्यव्रत अन्तिम पाँतिमे लिखलनि — 'सुनल।' बस एतबे।

साँझक बाद चन्द्रपालक स्मारक-ऐपक प्रचारक दू गोटे फोन लऽ कऽ आयल। ओ सभ कहलक — 'एहि कार्यक्रमकेँ सोझे प्रसारित कऽ देब? लोक जानत। दान आबत।' देविका फोनक स्क्रीन पर कपड़ा ढाकि देली। 'आइ नहि,' ओ कहली, 'जतय नाम पहिल बेर श्वास लैत अछि, ओतय कैमरा बादमे आबत।' प्रचारक सभ हँसल, मुदा ओकरा सभक हँसी सूनसान रहि गेल। कारण भीड़मे कियो संग नहि देलक।

ओहि राति निर्णय भेल जे अगिला दिन 'पहिल नाम-उत्सव' होएत। उत्सव, मुदा बिनु बाजा। उत्सव, मुदा बिनु मंच। उत्सव, मुदा बिनु माल्यार्पण। प्रत्येक घर एक नाम, एक चिह्न, एक स्मृति, आ एक प्रश्न लेत। मृतकक परिवार 'उपस्थित' कहत। जीवित अपराधी सभक नाम सेहो पढ़ल जाएत, मुदा जयकार नहि, उत्तरदायित्वक रूपमे। जातिक नाम पढ़ल जाएत, मुदा गर्वक रूपमे नहि — प्रश्नक रूपमे। गंगेशक नाम पढ़ल जाएत, मुदा मूर्ति बनाकऽ नहि — न्यायक चुनौती रूपमे।

सभ गोटे छँटि गेलाक बाद सत्यव्रत मेहता ठूँठ लग असगर रहि गेलाह। चन्द्रमाक उजास कटल सतह पर पड़ल छल। ओ चुपचाप ओहि सतहकेँ देखैत रहलाह। बहुत काल बाद हुनका लगल जे ठूँठ भीतर सँ पूछैत अछि — 'अहाँक दोसर मौन कतेक दिन टिकत?' ओ मनमे उत्तर देलनि — 'जतबा दिन धरि लोकक आवाज हमरा आवाजसँ बेसी जरूरी रहत।'

जखन ओ उठि चललाह, तखन ठूँठक एक फाँकिसँ पवन निकलि पाछाँ बजल — 'कबड्डी।' सत्यव्रत ठमकि गेलाह। मैदान खाली छल, बच्चा सभ घर गेल छल, भूत सभ देखाइ नहि पड़ैत छल। मुदा रेखा बनि चुकल छल। अगिला दिन नाम-उत्सवमे खेल फेर शुरू होएत — एहि बेर साँस रोकि नहि, साँस बचा कऽ।

लोकगीत: दोसर मौनक वचन

लोकधुन: मौन-पराती

टिकत हे मौन, दोसर मौन कतेक टिकत हे,
जतऽ धरि लोकक स्वर हमरासँ पैघ रहत हे।

धर्मक शब्दक कपड़ामे हिसाब लुकायल,
अर्पण, श्रद्धा, सेवा—नीचाँ हिस्सा लिखायल।
सत्यव्रत दोसर बेर चुप, मुदा चुप्पी नब,
अपन स्वर रोकि लोकक आवाज सुनबाक प्रण सभ।
जातिक नाम जयकार नहि, प्रश्न बनि पढ़त,

गंगेशक नाम मूर्ति नहि, न्यायकेँ चुनौती करत।
ठूँठ पूछलक—दोसर मौन कतेक दिन टिकत?
उत्तर—जतय लोकक स्वर हमरासँ पैघ रहत।
मैदान खाली, रेखा बनल, पवन कहलक कबड्डी,
अगिला खेल साँस रोकि नहि—साँस बचा कऽ हएत।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—चर्मकारिणीक दीप: गामक सीमा पर चमड़ाक काज करयवला परिवारक छोट घर छल। मुदा ज्ञानक प्रकाश सेहो यथार्थ अछि।” दीपक लौ स्थिर रहल।]

अध्याय ६१

पहिल नाम-उत्सव

असल उत्सवमे नगाड़ा नहि बजै छै— नाम बजै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: नामक शान्त उत्सव

लोकधुन: नाम-उत्सव गीत

मनाउ हे उत्सव, नगाड़ा बिनु मनाउ हे,
एक दीप, एक फूल, एक नाम—एतबे सजाउ हे।

न नगाड़ा, न पताका, नामक दीप पर्याप्त,
शान्त स्वरमे पढ़ल गेल तँ स्मृति होए सुरक्षित।
हरेक नामक संग एक फूल, एक कथा, एक मान,
उत्सव ओ नहि जे ढाँकय, जे खोलय पहिचान।

गामक नेना, बूढ़, बहिन सभ घेरा बनाउ,
जयकार नहि, आदरसँ जीवन-गीत सुनाउ।
नामक शान्त उत्सवमे आत्मा पाबै ठौर,
स्मरणक सरल उजास रहत युग-युग भोर।

ने जयकारक हुड़दंग, ने पताकाक शोर,
धीमे स्वरे पढ़ल नाम—सएह असल भोर।
नेना-बूढ़-बहिनक घेरा, बीच कथाक थारी,
शान्त उजासक पाबनि होए युग-युग जारी।

❖

नाम-उत्सवक बिहान ओना नहि आयल जेना गाममे मेला अबैत अछि। ने नगाड़ा बजल, ने पताका फहरायल, ने कोनो चबूतरापर कुर्सी सजा कऽ वक्ता सभक प्रतीक्षा भेल। चन्ना गाछीक कटल ठूँठक चारू कात बस ओही पुरान माटि छल, ओही कटायल जड़ि, ओही पाथर पर लिखल नाम, आ ओही बच्चा सभ जे राति भरि पहरा देलाक बादो आँखिमे निन्न नहि, उजास लऽ कऽ बैसल छल।

उत्सव शब्द सुनि कतेको लोक चकित भेल। जलसमाधि, ठगी, देहक अपमान, अदालतक बरख, मौनक अपराध — एहि सभक बीच उत्सव? मुदा अनन्या कहली, “जे नाम फेर सुनल जाए, से रोदन मात्र नहि रहैत। ओ उपस्थित होइत अछि। उपस्थित होएब उत्सव अछि।” एहि वाक्यक बाद कियो उत्सव शब्द पर आपत्ति नहि केलक। गाममे पहिल बेर बुझाइत छल जे खुशी आ शोक एक-दोसराक शत्रु नहि, एके माटिक दू रंग अछि।

ठूँठक पूर्व दिशामे बच्चा सभ एक लमहर पाँति बनौलक। पश्चिम दिशामे परिवार सभ बैसल। उत्तर दिशामे बूढ़ सभ, जिनका स्मृतिमे कतेक नाम अटकल छल। दक्षिण दिशामे ओ सभ बैसल जे अपना केँ दोषी नहि मानैत, मुदा एहि ठाम सँ अनुपस्थित रहबाक साहस सेहो नहि जुटा पबैत। सत्यव्रत मेहता सभसँ पाछाँ, एकटा टूटल ईंट पर बैसि गेलाह। हुनका लेल अलग आसन राखल गेल छल; ओ हाथ जोड़ि मना कऽ देलनि। एखन आसन नामक छल।

प्रारम्भ ककरा सँ हो? एहि पर छोट बहस उठल। किछु लोक चाहलक जे सर्वप्रथम पुलमे डूबल मजदूर सभक नाम पढ़ल जाए। किछु कहलक जे स्क्रीनक गोहि जकरा खा गेल, ओकर नाम पहिने। किछु कहलक जे स्त्री सभक अपमानक नाम, जकरा घर सभ बरखों धरि चुप राखलक, ओ सभ पहिने। तखन एक बालक, जे गंगेशक प्रश्न बला दिनसँ बहुत चुप रहैत छल, उठि कहलक, “न्याय क्रम सँ नहि, सुनबासँ शुरू होइत अछि। जिनकर नाम नहि भेटल, ओ सभ पहिने।”

ई बात सुनिते बूढ़बा भूतक पात जेकाँ हलुक खाँसी सुनाइ पड़ल। केओ ओकरा देखि नहि सकल, मुदा सभ बुझल जे चन्ना गाछी सहमत अछि। पहिल पाथर उठाओल गेल — ओहि पर लिखल छल, “जिनकर नाम नहि भेटल।” अनन्या ओ पाथर दुनू हाथ सँ पकड़ि पढ़ली। परिवारक पाँति सँ कोनो आवाज नहि उठल, कारण ओहि नामक परिवार स्वयं अनाम छल। तखन बच्चा सभ एक संग उत्तर देलक — “उपस्थित।”

एहि “उपस्थित” शब्दसँ ठूँठक भीतरक हवा बदलि गेल। जे लोक एतए केवल देखए आयल छल, ओकरा सभक देहमे सिहरन दौड़ल। कतेक बेर अदालतमे नाम पुकारल जाइत छल आ उत्तरमे “हाजिर” वा “गैरहाजिर” लिखल जाइत छल; एहि ठाम “उपस्थित” शब्द ओकरा सभ कागजी शब्दसँ अलग छल। उपस्थितक अर्थ छल — हमर देह भले नहि, हमर अभाव एतए अछि; हमर स्मृति एतए अछि; हमर अन्याय एतए अछि।

दोसर पाथर पर अधूरा नाम छल — “सर...”। कियो पूरा नहि जानैत छल। कतेको बरख पहिने बाढ़िमे बहि गेल एक मजदूर, जकर पहिल अक्षर मात्र ककरो कापीमे रहि गेल छल। एक बूढ़ि स्त्री कहलीह, “कदाचित् सरयू? कदाचित् सरोज? कदाचित् सरपन?” बच्चा सभ पूरा नाम गढ़ए चाहलक, मुदा मीरा रोकली। “अधूरा नामकेँ पूरा बना देब, तँ ओकर असल अधूरापन मेटि जाएत। अधूरा पढ़ू, अधूरा लिखू, अधूरा सुनू।” अनन्या पढ़ली — “सर...” परिवारक पाँति सँ तीन दिशा सँ उत्तर आयल — “उपस्थित।”

एहि ढंगें नाम-पाठ आरम्भ भेल। कोनो नामक संग जाति पूछल नहि गेल, मुदा जाति नुकाओलो नहि गेल। जे परिवार अपना नामक संग कुल, पेशा, टोला, नदी, वा मायक नाम जोड़ए चाहलक, ओकरा जोड़ल गेल। जे नहि चाहलक, ओकरा नहि। गंगेशक प्रश्न एखन धरि ठूँठक चारू कात घूमि रहल छल — प्रमाण की? कुल की? नामक सत्य कोन? जाति यदि मनुष्यक अपमान बनि जाए, तँ ओकर उल्लेख अपराध; मुदा जाति यदि ओहि अपमानक गवाही बनि जाए, तँ ओकर मौन सेहो अपराध। बच्चा सभ सीखि रहल छल जे न्याय केवल समान पाँति नहि, प्रत्येक घावक भिन्न भाषा सुनबाक साधना अछि।

बा उठि कऽ कहलीह, “गंगेश तत्त्व पूछलनि, समाज कुल पूछलक। तेँ नाम-पाठमे तत्त्व पहिने, कुल बादमे।” एहि वाक्यक अर्थ कतेको गोटे तुरन्त नहि बुझल, मुदा रजिस्टरमे लिखल गेल। सत्यव्रत मेहता दूर बैसल सुनैत रहलाह। हुनका लग संविधान, कानून, प्रमाणक भाषा छल; मुदा एहि ठाम बा एक पाँतिमे जे कहि देलनि, ओहिसँ हुनकर बरखोंक अदालत थरथरा उठल।

देविका उज्ज्वलक नाम पढ़बाक बारी पर काँपि गेली। ओ सोचने छली जे ओ मजबूत भऽ चुकली; पर नामक स्वर कतेक बेर मनुष्यक समस्त तैयारी तोड़ि दैत अछि। ओ कहली, “उज्ज्वल झा।” ओकर माय उत्तर देलीह — “उपस्थित।” फेर किछु क्षण बाद देविका अपने जोड़ली — “ओकर मौन सेहो उपस्थित।” बच्चा सभ रजिस्टरमे ई दू पंक्ति अलग-अलग लिखलक। कारण एहि ठाम केवल मृतक नहि, मृतकक चुप्पी, डर, अपमान, आ अधूरा सपना सेहो नाम पबैत छल।

मीरा अपना नाम नहि पढ़बय चाहैत छली। ओ कहैत छली, “हम जीवित छी।” मुदा स्त्री सभ आग्रह केलक जे जे स्त्री ब्लैकमेल, लाज, समाजक भय आ देहक सौदागरी सँ बचि कऽ बाजए लागल, ओकर जीवित नाम सेहो पढ़ल जाए। तखन मीरा ठूँठक सोझाँ ठाढ़ भेली। ओ अपन नाम पढ़ली, फेर जोड़ली — “हमर निजता उपस्थित।” स्त्री सभ एक संग उत्तर देलक — “उपस्थित।” एहि स्वरमे जे कम्पन छल, ओ कोनो शंखध्वनि सँ कम नहि छल।

गोप कुमार सूची लऽ कऽ आयल छलाह। ओ सूचीमे बैंकक ठगीसँ टूटल घर सभक नाम, डिजिटल कारागारमे फँसल युवक सभक नाम, दवा ने भेटल रोगी सभक नाम, पुलक मलबामे दबायल मजदूर सभक नाम, आ ओहि सभक नाम छल जकरा फाइलमे “त्रुटि” लिखि छोड़ि देल गेल। मुदा जखन ओ पढ़ए लगलाह, तखन बच्चा सभ कहलक, “सूची नहि, नाम। प्रत्येक

नामक बीच साँस।” गोप कुमार पहिल बेर सूची पढ़बाक गति छोड़ि मनुष्य पढ़बाक गति सीखलाह।

एहि नाम-उत्सवमे कबड्डी सेहो छल, मुदा खेलक मैदान अलग छल। प्रत्येक दस नामक बाद बच्चा सभ उठैत, ठूँठक चारू कात गोल घेरामे दौड़ैत आ साँस रोकि “कबड्डी-कबड्डी” कहैत। जे बच्चा बीचमे साँस टूटि जाए, ओकरा हार नहि मानल जाए; ओ बस अगिला नामक पहरा पर बैसि जाइ। कबड्डी आब विरोधक खेल छल — साँस रोकि गयब नहि होएब, साँस रोकि नाम धरि पहुँचब।

एक बेर कबड्डीक गोल घेरा अचानक लमहर भऽ गेल। धूपक रेखा ठूँठसँ निकलि पोखरिक कात धरि, ओतयसँ पुलक पाया धरि, फेर आकाश दिस उठैत बुझाइ पड़ल। बच्चा सभ रुकि गेल। अनन्या धीरे कहली, “रेखा धरती पर नहि रुकत।” एहि वाक्यक अर्थ एखन ककरो नहि बूझल छल, मुदा राघव सिग्नल दूर शहरमे अपन यन्त्रक परदा पर ओही गोल रेखा देखैत काँपि उठल। “अनाम ग्रह”क कल्पनाक सपना एखन बीज रूपमे गढ़ नारिकेलक धूपमे झिलमिला गेल छल।

दुपहरियामे बटुकनाथ हरिहरनक लोक फेर आयल। ओ सभक हाथमे निमन्त्रण-पत्र छल — “लोक-स्मृति न्यासक गठनक पूर्व-परामर्श।” ओकरा सभ लागल छल नाम-उत्सवमे भीड़ अछि, तेँ घोषणा करबाक उचित समय अछि। मुदा जखन एक सहायक पत्र पढ़ए लगल, बच्चा सभ ओकरा रोकि देलक। अनन्या कहली, “एतय जे पढ़ल जाएत, ओकर उत्तर उपस्थित देब पड़त। अहाँक न्यासक नाम पढ़ब?” सहायकक कण्ठ सूखि गेल। पत्र ओकर हाथमे फड़फड़ाबऽ लागल।

आरुणि शान्त स्वरमे कहलक, “आइ मृतक सभक दिन अछि। न्यास, समिति, योजना, निविदा — सभ काल्हि सुनल जाएत। एतय आइ कोनो जीवित चालाकीक मंच नहि बनत।” भीड़मे धीमा समर्थन उठल। बटुकनाथ स्वयं नहि आयल छल, मुदा ओकर छाह ओकर कागच पर छपल छल। पीयर सूचना-पत्रक बाद ई दोसरा रंगक कागच छल — सफेद, चिक्कन, सुगन्धित, पर भीतर सँ ओतबे लोलुप। बच्चा सभ ओकरा ठूँठक कगार पर राखि देलक, ठीक ओहि ठाम जतए पीयर कागच राति बितौने छल।

सत्यव्रत मेहता एहि सभ पर किछु नहि कहलनि। हुनकर दोसर मौन अपना काज कऽ रहल छल। पहिल मौन अपराध छल, ई मौन लोकक स्वरक लेल ठाम बनबैत छल। मुदा जखन एक बूढ़ मजदूरक विधवा नाम पढ़ैत काल बेहोश भेली, सत्यव्रत दौड़ि कऽ हुनका सम्हारलनि।

ओहि क्षण लोक बुझलक जे मौनक अर्थ निष्क्रियता नहि। जे बजबाक ठाम पर चुप अछि, से अपराधी; जे सुनबाक लेल चुप अछि, से साक्षी; आ जे सहारा देबाक क्षणमे उठि पड़ैत अछि, से मनुष्य।

साँझ उतरैत-उतरैत पाथरक घेरा दूना भऽ गेल। रजिस्टरक पन्ना भरि गेल। बच्चा सभक आङुर स्याही सँ नील पड़ि गेल। स्त्री सभक कण्ठ भर्रा गेल। बूढ़ सभक स्मृति थाकि गेल। मुदा ठूँठ जेकाँ स्थिर कोनो नहि छल। ओकर कटायल गोलाइ पर चन्द्रमा पहिल बेर पूरा उतरि आयल। कियो कहलक — “गाछि आब चन्द्रमा पर पात उगबैत अछि।” कियो हँसल नहि।

अन्तिम नाम जखन पढ़ल गेल, तखन अनन्या सभहक दिस ताकली। “उत्सव समाप्त?” एक छोट बालक पूछलक। बा कहलीह, “नामक उत्सव समाप्त नहि होइत, बस आजुक साँस पूरा होइत अछि।” एहि पर बच्चा सभ अन्तिम बेर “उपस्थित” कहलक। ओ स्वर बहुत धीमा छल, मुदा ओकरा सुनि दूर पोखरिमे पानि गोल-गोल घूमए लागल।

रातिमे सभ गोटे धीरे-धीरे चलि गेल। ठूँठक चारू कात पाथर, दूटा कागच, रजिस्टरक नव पन्ना, आ बुझायल दिया रहि गेल। सत्यव्रत मेहता बहुत काल बाद उठलाह। ओ देखलनि — जड़िक एक अति पातर चीड़मे किछु हरियर झलकैत अछि कि केवल चन्द्रमाक भ्रम? ओ झुकि कऽ छुअए चाहलनि, फेर हाथ रोकि लेलनि। किछु बातक प्रमाण तुरन्त नहि लेल जाइत। किछु बातकेँ बिहान धरि प्रतीक्षा करबय देब पड़ैत अछि।

ठूँठ राति भरि जागैत रहल। नाम-पाठक स्वर माटिमे उतरि गेल छल। सफेद न्यास-पत्र आ पीयर सूचना-पत्र एक-दोसराक कातमे पड़ल काँपैत रहल, जनु दुनू केँ बुझि पड़ल हो जे एतय कागचक राज सरल नहि रहत। भोरक पहिल नमी जखन जड़ि पर बैसल, हरियर बिन्दु सचमुच उभरि आयल। मुदा ओकरा देखबाक लेल अगिला बिहान धरि कथा केँ साँस रोकि रहए पड़ल।

लोकगीत: नगाड़ा नहि, नाम

लोकधुन: नाम-उत्सव गीत

बजै हे नाम, बाजा नहि—नामे बजै हे,
सुनि कऽ सूखल जड़ियो हरियर भऽ सजै हे।

न नगाड़ा, न पताका, न मंचक जयकार,
कटल जड़ि, पाथर, नेना—एतबे उत्सव सार।
एक-एक नाम पढ़ल, माटिमे स्वर उतरल,
बुझायल दीया बीच हरियर बिन्दु उभरल।
उज्जर न्यास-पत्र, पीयर सूचना काँपल,

कागचक राजसँ आगाँ नामक पहरा जागल।
किछु प्रमाण बिहान धरि प्रतीक्षा माँगै,
कोंपल राति भरि अन्हारक छाती फाँड़ै।
असल उत्सवमे बाजा नहि, मृतकक नाम बजै,
जकरा सुनि धरतीक सूखल जड़ियो हरियर सजै।

ने नगाड़ा, ने पताका, ने मञ्चक जयकार,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—मामागामक चिलम: मामागामक पाठशालामे गङ्गेशक स्थान शिष्यक पाँतिमे नहि, दुआरि लग छल। “ज्ञान स्वतः प्रमाण अछि कि परतः?” “धूमसँ अग्नि कोना सिद्ध?” उत्तर देबाक अनुमति नहि छल, मुदा प्रश्न मनमे जमा होइत रहल।]

अध्याय ६२

ठूँठमे हरियर बिंदु

तेल सिरा गेल, बाती छोट भेल, तइयो लौ जिद्दी— जिद तेलक नहि, नामक होइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: हरियर बिन्दुक सोहर

लोकधुन: सोहर

ललना रे, हरियर बिन्दुक सोहर हे,
सिरायल तेलक बातियो मे जीवनक लहर हे।

तेल सिरा गेल तइयो बाती नान्हि जरै,
कारी रातिक कागचपर हरियर बिन्दु उगै।
ओ बिन्दु नव जन्मक, आशाक पहिल नैन,
एक कोंपल कहि रहल—फेर हरियर होएत धेन।

सोहर गाउ धीमे-धीमे, जीवन घुरि रहल,
ठूँठक हृदय भीतर नव रस भरि रहल।
हरियर बिन्दुक जन्मसँ भविष्य पाबै नाम,
नान्हि उजास एक दिन बनत विशाल धाम।

कारी राति कागच जकाँ, बीच उगल तारा,
ठूँठक छाती धड़कल—भेटल नब सहारा।
धीमे-धीमे गाबू, कोंपल नीन ने टूटए,
एक बिन्दुक भरोसे भोरक धार फूटए।

❖

पहिल नाम-उत्सवक राति बीति गेल, मुदा चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात जरल दिया सभ भोर धरि बुताएल नहि। बाती छोट भऽ गेल छल, तेल प्रायः समाप्त, मुदा लौ एना जिद्दी छल जेना ओकर भीतर नामक पहरा बसि गेल हो। जे पाथर पर राति-भरि नाम पढ़ल गेल छल, ओकरा सभ पर ओसक महीन बून्द जमल छल। लोक कहलक — राति कानल। बच्चा सभ कहलक — नहि, नाम पानि माँगलाक बाद ओस भेटल।

भोरक पहिल बेलामे अनन्या असगर ठूँठ लग आयली। ओकरा लागल जे उत्सवक बाद ठाम थाकल होएत, जेना गीत गएलाक बाद गायकक कण्ठ सूखि जाइत अछि। मुदा ओ देखली जे ठूँठ थाकल नहि, चुपचाप जागल अछि। कटल देहक गोल घेरा पर जे धूसर रेखा काल्हि धरि

सूखल बुझाइत छल, ओहि रेखाक एक कोनमे अतिसूक्ष्म हरियर बिन्दु उठल अछि। एतेक छोट जे नजर हटिते हरा जाए, मुदा एतेक तेज जे नजर पड़िते मोन काँपि उठए।

अनन्या पहिने ओकरा छूली नहि। ओ नाम-पहराक नियम मोन पाड़ली — जे भेटए, पहिने सुनू। ओ कान झुकौली। ठूँठक भीतर सँ कोनो शब्द नहि, मुदा बहुत दूरक कबड्डीक साँस जेकाँ ध्वनि उठल — कबड्डी... कबड्डी... कबड्डी...। ई आवाज खेलक नहि, बीजक छल। जतेक काल ओ सुनैत रहली, हरियर बिन्दु ओतेक स्पष्ट होइत गेल। ओहि सुनबाक बीच माटिसँ एक झीन गन्ध सेहो उठल — ने फूलक, ने पातक; भीजल आरम्भक गन्ध, जेना धरती अपन पहिल शब्द बाजए सँ पहिने ओठ भिजबैत हो।

थोड़बे कालमे बच्चा सभ जुटि गेल। कियो कहलक — “कोंपल!” कियो कहलक — “गाछि फेर उगत!” एकटा छोट लड़का, जे काल्हि पहिल बेर अपन बाबूक नाम पढ़ने छल, कहलक — “ई बाबूक उत्तर छी।” अनन्या ओकरा डाँटली नहि। एहि ठाम कोनो उत्तर खारिज नहि कएल जाइत। बच्चा सभक नियम छल — पहिने सभ अर्थकेँ बैसए दियौ, फेर देखू कोन अर्थ स्वयं ठाढ़ रहैत अछि।

बा आयलीह तखन ओ कोंपल देखैत बहुत काल चुप रहलीह। हुनकर आँखि कम देखैत छल, मुदा जड़िक हरियर बिन्दु हुनका भीतर धरि देखाइ पड़ल। ओ कहलीह, “कटल देहमे जखन रस रहि जाए, तखन कोंपल लागैत अछि। आ कटायल स्मृतिमे जखन नाम रहि जाए, तखन लोक फेर उगैत अछि।” एहि वाक्य पर बच्चा सभ रजिस्टर खोललक। कोंपलक पहिल गवाही लिखल गेल — “नामक बाद हरियर बिन्दु।”

दुपहरिया धरि खबर पसरि गेल। कतेक लोक चमत्कार देखबय आएल। कतेक लोक वनस्पति विज्ञानक तर्क लऽ कऽ आएल। विद्यालयक एक शिक्षक कहलनि — “काटल गाछिमे सुप्त कलिका रहि जाइत अछि, ताहिसँ नव अंकुर निकलैत अछि।” बच्चा सभ ई बातो लिखलक। कारण नव्य न्यायक पाठ अध्याय मात्र नहि रहल; गंगेशक प्रश्न आब लोकक व्यवहारमे उतरि रहल छल। प्रमाण कतेको प्रकारक होइत अछि। देखल वस्तु प्रमाण, सुनल कथा प्रमाण, अनुभूत पीड़ा प्रमाण, आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी बाँचल स्मृति सेहो प्रमाण।

बटुकनाथ हरिहरनक लोक सभ एहि खबर पर मुस्कुराएल। हुनका सभकेँ बुझाइत छल — हरियर बिन्दु जनभावना अछि, जनभावना सँ न्यास बनत, न्यास सँ अधिकार, अधिकार सँ दान, दान सँ नियन्त्रण। मुदा ओ सभ एखन खुलि कऽ नहि आयल। ओ सभ दूर सँ देखैत रहल, जेना गोहि पानिक भीतर सँ किनारक बकरी नापैत अछि।

चन्द्रपाल बत्राक ऐपमे ओहि कोंपलक फोटो चढ़ि गेल। शीर्षक देल गेल — “पुनर्जन्मक पवित्र क्षण।” नीचाँ दानक बटन चमकल। देविका देखली तँ ओकर चेहरा कठोर भऽ गेल। ओ बच्चा सभकेँ कहली — “हरियर बिन्दु यदि नामक उत्तर अछि, तँ ओकरा बजारक चित्र नहि बनय देब।” मुदा फोटो पहिनहि बहुत ठाम पहुँचि चुकल छल। स्मृति पर पहिल चोरी नाम सँ भेल, आब दृश्य सँ शुरू भऽ रहल छल।

साँझमे मीरा एहि पर अलग बात उठेली। ओ कहली, “जकरा सभ पीड़ा भेल, ओकर मुख, ओकर देह, ओकर आँसू, ओकर कोंपल — सभ पर ओकर अधिकार अछि। बिनु अनुमति कैँ स्मृति देखाएब सेहो चोरी छी।” स्त्री सभ सहमति देलक। कोंपलक चारू कात बाँसक छोट घेरा नहि, अपितु दृष्टिक मर्यादा बनाओल गेल। जे देखए, ओ पहिने नाम-पाठ सुनत; जे चित्र लेत, ओ कारण लिखत; जे बेचत, ओकरा रोकल जाएत।

ई नियम सुनि कतेको युवक झुँझला उठल। ओ सभ कहलक — “एहि युगमे के रोकत? चित्र एक बेर बाहर गेल तँ गेल।” देविका उत्तर देली — “तेँ पहरा अउरी जरूरी अछि। स्क्रीन मोन चिबा सकैत अछि, मुदा स्क्रीनक आँखिकेँ सेहो लोकक लाज सिखाओल जा सकैत अछि।” उज्ज्वलक माय पाछाँ सँ बजलीह — “हमर बेटाक चेहरा सभ बेचलक। आब कोंपल नहि बिकत।”

ओहि राति बूढ़बा भूत पहिल बेर पूरा स्पष्ट देखाइ पड़लाह। से कटल ठूँठक पाछाँ नहि, सोझे हरियर बिन्दुक लग ठाढ़ छलाह। हुनकर देह पातक धूलि, धुँआ, आ पुरान नोर सँ बनल लगैत छल। ओ बच्चा सभक दिशामे देखलनि आ कहलाह — “गाछि काटल गेल, मुदा खेल समाप्त नहि। एखन सँ कबड्डी कोंपल बचएबाक खेल अछि।” बच्चा सभ एक संग साँस रोकि गेल। भूत कहैत रहलाह — “जे कोंपल पार करै, ओकरा नाम लऽ कऽ घुराबू। जे नाम बिनु छुए, ओकरा बाहर छोड़ू।”

अगिला दिन सँ बच्चा सभक कबड्डी बदलि गेल। रेखा आब माटिमे नहि खिंचल जाइत; रेखा कोंपलक चारू कात अदृश्य घेरा बनि गेल। जे बच्चा भीतर जाए, ओ एकटा नाम उच्चरित करैत। जे बाहर आए, ओ कहैत — “उपस्थित।” साँस टूटि जाए तँ ओ हारल नहि, बस फेर सुनबाक पाँतिमे बैसैत। ई खेलमे जीत-हार कम, स्मरण अधिक छल। मुदा खेल खेले रहल, कारण बिनु खेलक स्मृति बोझ बनि जाइत अछि।

सत्यव्रत मेहता एहि खेलकेँ देखैत रहलाह। हुनका कानूनक अनेक खेल मोन आएल — तारीख, स्थगन, आपत्ति, अनुच्छेद, अधिकार, प्रक्रिया। ओ सभ सेहो खेल छल, मुदा ओहि

खेलमे साँस रोकल व्यक्ति पीड़ित होइत छल आ साँस लैत व्यक्ति अपराधी। एतय उनटा छल। एतय बच्चा सभ साँस रोकि नाम बचबैत छल, आ साँस टूटला पर सेहो ओकरा लाज नहि, अगिला सुननाइ भेटैत छल। सत्यव्रत मनमे लिखलनि — "न्यायक पहिल नियम: जकर साँस टूटल, ओकरा दण्ड नहि, पानि दियौ।"

गंगेशक प्रसंग फेर उठल। एक विद्यार्थी पूछलक — "जँ गंगेश न्यायक जन्मदाता रहथि, तँ हुनकर जीवनक अन्याय समाज किएक नहि देखलक?" बा उत्तर देलीह — "कारण समाज शास्त्र पढ़ैत अछि, देह नहि। समाज ग्रन्थक माथ पर फूल चढ़बैत अछि, मुदा ग्रन्थ लिखनिहारक प्रेम, अपमान, जाति-बन्धन, आ विद्रोह सँ डरैत अछि।" सत्यव्रत ई सुनि थरथरा उठलाह। हुनका बुझायल — जे समाज गंगेशक जीवनक प्रमाण दबा सकैत अछि, से मजदूरक मृत्यु, स्त्रीक अपमान, युवकक ठगी, किसानक जमीन, सभ किछु दबा सकैत अछि।

किन्तु बच्चा सभ दबायल बातकेँ फेर उठएबाक विद्या सीखि रहल छल। ओ सभ तत्त्वचिन्तामणिक नाम खेलमे लेलक। एक बच्चा भीतर दौड़ि गेल आ साँस रोकि कहलक — "प्रत्यक्ष!" दोसर पकड़एबाक पहिने कहलक — "अनुमान!" तेसर बाहर भागैत कहलक — "शब्द!" चारिम नेनी कोंपल लग हाथ जोड़ि कहली — "स्मृति!" शिक्षक मुस्कुरा देलनि। कियो कहि सकैत छल जे ई शास्त्रीय वर्गीकरणक अशुद्धि अछि; मुदा चन्ना गाछीमे ओहि दिन ज्ञान जीवित छल, परीक्षा नहि।

हरियर बिन्दु धीरे-धीरे एक बारीक पात बनल। पातक रंग अचम्भित करएबला छल — निखट्टू हरियर नहि, ओकर भीतर कारी देहक स्मृति, लाल कपड़ाक चिह्न, पानिक नीलिमा, आ ओसक उजास सभ झलकैत छल। जनु गाछि कहैत हो — नव जीवन पुरान घाव बिसरि कऽ नहि, ओकरा संग लऽ कऽ उगैत अछि। हवा जखन ओहि एकसरि पातकेँ छुबैत, तखन एक अति महीन थरथरी उठैत — एतेक महीन जे आँखिसँ नहि, आङुरक पोरसँ बुझाइत।

एहि दृश्यक खबर जिला धरि पहुँचल। ओहि सप्ताह एक मोटरगाड़ी आएल, तकरा पर चमकैत पट्टिका लागल छल। भीतर सँ दू अधिकारी, एक छाहचित्रकार, आ एक परामर्शदाता उतरल। परामर्शदाता गढ़ नारिकेलक बोली ठीक सँ नहि बुझैत छल, मुदा ओकरा "लोक-संस्कृति", "सांस्कृतिक परिपथ", "विरासत-संवर्धन", "आधुनिक सुविधा" जेहन शब्द खूब आबैत छल। ओ ठूँठक चारू कात घूमि कऽ नोट बनौलक।

अनन्या ओकरा रोकि कऽ पूछली — "अहाँ नाम-पाठ सुनलहुँ?" परामर्शदाता हँसि कऽ कहलक — "पहिने निरीक्षण, फेर सहभागिता।" बच्चा सभ एक-दोसराकेँ देखलक। एहि

वाक्यमे ओकरा सभकेँ पीयर सूचना-पत्रक गन्ध भेटल। जे पहिने ठाम मापैत अछि आ बादमे नाम सुनैत अछि, ओ ठामकेँ पहिनहि वस्तु बना चुकल होइत अछि।

अधिकारी कोंपल देखलनि, ठूँठ देखलनि, पाथरक नाम देखलनि, लोकक भीड़ देखलनि। हुनका आँखिमे श्रद्धा कम, योजना अधिक छल। ओ कहलनि — “एहि ठामक विकास सम्भव अछि। सड़क, प्रकाश, दर्शक-दीर्घा, व्याख्या-केन्द्र, टिकट-व्यवस्था...” शब्द सभ हवामे उड़ल आ कोंपलक पात काँपि उठल। बूढ़बा भूतक छाह कारी भऽ गेल।

आरुणि चुप नहि रहि सकल। ओ पूछलक — “जे ठाम गवाहीक अछि, ओकर टिकट लागत?” अधिकारी उत्तर देलनि — “व्यवस्था बिनु संरक्षण नहि होइत।” मीरा कहली — “संरक्षण कि स्वामित्व?” देविका कहली — “सुविधा कि निगरानी?” सत्यव्रत मेहता किछु नहि कहलनि, मुदा हुनकर हाथ अपने-आप झोरामे राखल रजिस्टर पर पड़ल। ओ बुझि गेलाह — दोसर संघर्ष आरम्भ भऽ चुकल अछि।

ओहि दिन साँझक रजिस्टरमे कोंपलक नाम लिखल गेल — “हरियर बिन्दु, पुत्र/पुत्री: कटायल चन्ना गाछी, अभिभावक: नाम-पहरा।” बच्चा सभ तकर नीचाँ लिखलक — “बाहरी निरीक्षणक समय पात काँपल।” ई मामूली टिप्पणी नहि छल; ई अगिला युगक पहिल चेतावनी छल।

रातिमे जखन सभ घर घुरल, ठूँठक लग एक कागच उड़ि आएल। ओ सरकारी मोहरबला नहि, परामर्शदाताक प्रारूप जेकाँ चिक्कन छल। ऊपर मोट अक्षरमे लिखल छल — “गढ़ नारिकेल विरासत-गलियारा: आरम्भिक संकल्पना।” कागच कोंपलक एकदम लग अटकि गेल। हरियर बिन्दु राति भरि ओहि कागचक छाहमे काँपैत रहल, आ बच्चा सभक कबड्डीक रेखा स्वप्नमे ठूँठ सँ निकलि सड़क धरि पसरि गेल।

लोकगीत: हरियर बिन्दुक जनम

लोकधुन: सोहरक करुण रूप

उगल हे कोंपल, कटल कोख सँ उगल हे,
नामक दूध पिआउ, लोभक छाह सँ बचाउ हे।

तेल सिरा गेल, बाती छोट, लौ तइयो नहि मरल,
कटल गाछिक कोखमे हरियर शिशु उगल।
नाम-पहरा अभिभावक, ठूँठ ओकर माए,
ओसक बून्द झुलना बनि भोरक गीत सुनाए।
बाहरी नजर पड़िते पात कने काँपल,

बच्चा लिखलक चेतावनी—नब युग जागल।
विरासत-गलियारा कागच छाह बनि आयल,
कोंपलपर बजारक पहिल नजरि जमायल।
ए हरियर बिन्दु, तोहर जनमक राखब मान,
नामक दूध पिअ, लोभक छाहसँ बचू प्राण।

बाहरी नजरि पड़िते पात कने थरथराए।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—श्मशानक प्रश्न: अमावस्याक राति गङ्गेश श्मशान पहुँचल—एना लोककथा कहैत अछि। तान्त्रिक पूछलक, “ज्ञान चाहैत छह?” गङ्गेश उत्तर देलक, “ज्ञान नहि, ज्ञानक प्रमाण चाहैत छी।” तान्त्रिकक आँखि खुजल।]

अध्याय ६३

गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना

जाधरि नाम लाजक छल ताधरि फाइल नुकायल रहल; जहिना नाम विरासत भेल, गाड़ी सभ बिना लाजक आबि गेल।

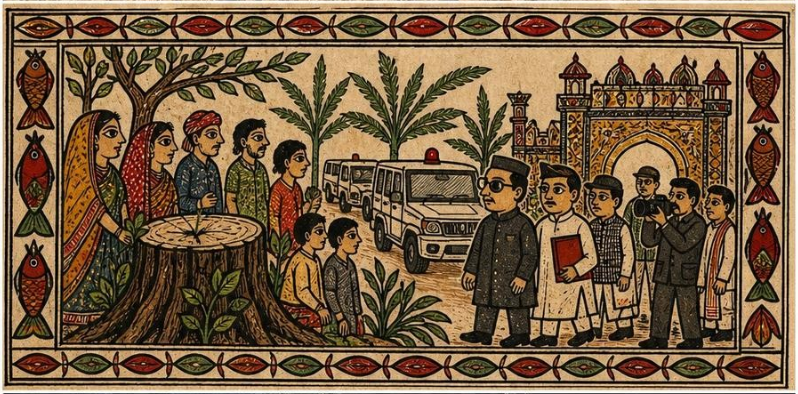

अध्यायारम्भ लोकगीत: उजासक रखवारी

लोकधुन: झिझिया-जागरण

नाचू गे झिझिया, माथ पर दीप नाचू गे,
छेद-छेद जाँचि कऽ उजासक पहरा राखू गे।

दीप जरै तँ केवल देखू नहि, रखवारी करू,
उजासक भीतर लोभ न पैसय, सावधानी धरू।
पारदर्शी काँच, खुलल हिसाब, साझा पहरा हो,
प्रकाशक नामपर अन्हारक व्यापार नहि हो।

झिझिया घुमि-घुमि कहै—छिद्र सभ जाँचू,
दीपक तेल ककर श्रम, ई प्रश्नो चिन्हू।
उजासक रखवारीसँ प्रकाश पवित्र रहत,
लोभक छाह पाछाँ हटत, जन भरोस बढ़त।

घैला-छेद सँ झरए इजोत, गनइत चलू बाट,
तेल ककर पसेनाक—पूछू इहो ठाठ।
पारदर्शी काँच, खुलल बही, साझा आँखि-पहरा,
लोभक कारी हाथ ने छूबए दीपक चेहरा।

❖

ठूँठमे हरियर बिन्दु फुटलाक तेसर दिन गाममे पहिल बेर सरकारी गाड़ी सभ बिनु लज्जाक आयल। पहिने जखन चन्ना गाछीक नाम सुनल जाइत छल, अधिकारी सभ फाइलक पाछाँ मुँह नुका लैत छल; आब जखन ठूँठ खुलल, धूप देखल गेल, लोकक भीड़ बढ़ल, बाहरी पत्रकार सभ दूर सँ सूँघए लागल, तखन वैह ठाम शासनक आँखिमे अचानक ‘विरासत’ बनि उठल। जे ठाम काल्हि धरि कागचमे खाली भू-खण्ड छल, से बिहानहि-बिहान ‘गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना’क नाम सँ बजाओल जाए लागल।

आगाँ-आगाँ जिलाक सांस्कृतिक पदाधिकारी, पाछाँ नगरपालिकाक लिपिक, तकर पाछाँ चित्र खिंचएबला, तकर पाछाँ एक चमचम करैत जीपमे बैसल सलाहकार। सलाहकारक चश्मा एतेक कारी छल जे ओहिमे गाम नहि, केवल अपन चेहरा देखाइ पड़ैत छल। ओ उतरिते

कहलक, “एहि ठाममे अपार सम्भावना अछि।” शब्द कोमल छल, मुदा आरुणिक कानमे कुल्हाड़िक दोसर चोट जेकाँ लागल। सम्भावना — अर्थात् जे घटि चुकल, तकरा फेर नापि बेचबाक तैयारी।

चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात नामक पाथर राखल छल। बच्चा सभ पहरा दैत छल। अधिकारी सभ पहिने पाथरकेँ देखलक, फेर पाथरक नाम पढ़बाक बदला ओकरा सभक संख्या गिनए लगल। ‘कतेक पाथर अछि?’ ‘कतेक परिवार जुड़ल अछि?’ ‘कतेक आगन्तुक आबैत अछि?’ ‘कतेक स्थान चाही?’ लोक बुझलक — नाम फेर आँकड़ा बनए लगल अछि। संख्या जखन नामक ऊपर बैसैत अछि, तखन ओकर भार पाथरसँ बेसी होइत अछि।

अनन्या चुपचाप ओहि कारी चश्माधारी सलाहकार लग गेली। ओ पूछली, “अहाँ एहि पाथरमे लिखल नाम पढ़लहुँ?” सलाहकार हँसि देलक, जनु बच्चा सभ केवल शोभा होइत अछि। कहलक, “हम सभ पढ़ब, बेटी। पहिने योजना बनय दिअ।” अनन्या उत्तर देली, “जकरा पढ़ल नहि, ओकर योजना कोना?” एहि प्रश्नक बाद सलाहकारक हँसी ओही चश्मामे अटकि गेल।

बटुकनाथ हरिहरन ओहि टोलीमे सोझे नहि, किन्तु छाह जेकाँ उपस्थित छल। ओकर प्रस्तावित ‘लोक-स्मृति न्यास’क मसौदा आब सरकारी फाइलमे घूमि चुकल छल। ओ स्वयं ओहि दिन नहि आयल, मुदा ओकर लोक आएल। एक युवक, जे अपना कैँ विधिक परामर्शदाता कहैत छल, आरुणिक कानमे धीरे कहलक, “स्मृति कैँ संस्थागत करब आवश्यक अछि। नहि तँ बादमे विवाद होएत।” आरुणि ओकरा देखैत रहल। ओकरा मोन पड़ल — न्याय जतय जीवित रहैत अछि, ओतय विवाद जीवनक प्रमाण होइत अछि; विवाद सँ डरि स्मृति कैँ ताला मारब न्याय नहि।

ओही बखत गंगेशक प्रश्न फेर उठल। पछिला दिन सभमे जखन ठूँठक कात तत्त्वचिन्तामणिक रेखा सभक कथा भेल छल, बच्चा सभ बुझि गेल छल जे प्रमाण केवल मोहर नहि होइत। ईरा धीरे कहली, “गंगेश कहितथि — पहिने जानू, ई प्रमाण कोन प्रकारक अछि। प्रत्यक्ष? अनुमान? उपमान? शब्द? कि केवल पदक भय?” अधिकारी सभ एहि भाषा सँ असुविधा अनुभव करए लागल। हुनका सभकेँ अपेक्षा छल जे गामक लोक सड़क, बत्ती, फाटक आ रंगीछाप चित्र पर प्रसन्न भऽ जाएत; मुदा एतय बच्चा सभ प्रमाण पूछैत छल।

सांस्कृतिक पदाधिकारी अपन कागच खोललक। कागच पर रंगीन रेखा छल — एक दिशामे ‘चन्ना स्मृति-द्वार’, दोसर दिशामे ‘भूत-कबड्डी रंगमंच’, तेसर दिशामे ‘जलसमाधि दृश्य-

दीर्घा', चारिम दिशामे 'डिजिटल नाम-देबाल'। ओ गर्वसँ बतबऽ लागल जे एतय प्रकाश-सज्जा होएत, पर्यटक-पथ होएत, प्रवेश-टिकट होएत, स्मृति-भवन होएत, आ साँझमे ध्वनि-प्रकाश कार्यक्रममे गढ़ नारिकेलक कथा सुनाओल जाएत।

देविका तखन चौंकि उठली। 'ध्वनि-प्रकाश?' ओ पूछली। 'ककर ध्वनि? ककर प्रकाश?' पदाधिकारी उत्तर देलक, "लोककथा सभक कलात्मक प्रस्तुति।" देविका शान्त स्वरमे कहली, "जे माय अपन बेटाक नाम पढ़ैत काल काँपैत अछि, ओकर काँपल स्वर के कलाकार दोहराओत? जे मजदूरक परिवार लाशो नहि पाबि सकल, ओकर दृश्य टिकट पर बिकत?" उत्तरमे कागचक पन्ना मात्र खरखरायल।

मीरा आगाँ बढ़ली। हुनकर आँखिमे ओहि लोकक धैर्य छल जे अपना ऊपर कैमरा, ताना, ब्लैकमेल आ चुप्पी सभ देखि चुकल हो। ओ कहली, "जकर देहक अपमान भेल, जकर निजता छीनल गेल, जकर नाम दबाओल गेल — हुनका सभक कथा मंच पर चढ़ाबय सँ पहिने अनुमति चाही। दुखक अधिकार दुख झेलने लोकक अछि, परामर्शदाताक नहि।" एक अधिकारी धीरे कहलक, "परियोजनामे संवेदनशीलता राखल जाएत।" मीरा उत्तर देली, "संवेदनशीलता शब्द नहि, पहरा अछि।"

सौम्या देखली जे सरकारी योजनाक भाषा आ जाति-व्यवस्थाक भाषा एक विचित्र समानता राखैत अछि। दुनू नाम कैँ स्वीकार करैत अछि, मुदा शर्त पर; दुनू शरीर कैँ ठाम दैत अछि, मुदा मर्यादा बनाकऽ; दुनू विद्रोह कैँ सजावटमे बदलय चाहैत अछि। गंगेशक जीवनक असहज प्रश्न — चर्मकारणी संग विवाह, पिताक मृत्युक बाद जन्मक कथा, नव्य न्यायक जन्म — समाजक लेल एतेक तीखा छल जे ओकरा स्मृतिमे सम्हारबाक बदला मूर्तिमे बदलि देल गेल। आब चन्ना गाछीक संग सेहो वैह होमऽ जा रहल छल।

बा एहि सभ बहसक बीच ओहि रंगीन नक्शा पर झुकलीह। हुनकर आँखि नीक नहि देखैत छल, मुदा नक्शाक चमकीलापन हुनका चुभैत छल। ओ पूछलीह, "एहि नक्शामे ओ ठाम कतय अछि जतय सरयूक नाम पहिल बेर पढ़ल गेल? एहिमे ओ पानि कतय अछि जतय मजदूरक देह भेटल नहि? एहिमे ओ राति कतय अछि जखन बच्चा सभ मोबाइल बन्द कऽ नाम सुनलक? यदि ई सभ नहि, तँ ई नक्शा नहि, कपड़ा छपबाक छाप अछि।"

सलाहकार कने कुपित भेल। कहलक, "माई, परियोजना विकास लेल अछि। स्मृति कैँ सुरक्षित राखब, रोजगार देब, आगन्तुक आनब, स्थानीय चिन्हारिक प्रसार करब।" बा हँसलीह। ओ हँसी बूढ़ देह सँ निकलल, मुदा ओहिमे चन्ना गाछीक पातक सरसराहट छल। 'चिन्हारिक

प्रसार? चिन्हारि तखन पसरैत अछि जखन ओकरा जड़ि छुआ जाए। अहाँ सभ पहिने जड़ि काटलहुँ, आब छाह बेचब चाहैत छी।'

तखन अचानक कटल ठूँठक हरियर बिन्दु पर सभहक नजरि गेल। तेसर दिनमे ओ बिन्दु कने बढ़ि दू पातक आकार लेबऽ लागल छल। सलाहकार तुरन्त उत्साहित भेल — 'ई तँ परियोजनाक प्रतीक बनि सकैत अछि! पुनर्जन्म! आशा! पुनरुत्थान!' चित्रकार तुरन्त कैमरा उठेलक। अनन्या बीचमे आबि ठाढ़ भऽ गेली। 'ई प्रतीक नहि, बच्चा अछि,' ओ कहली। 'फोटो खिंचबाक पहिने एकर माए सँ अनुमति लिअ।' लोक हँसि पड़ल, मुदा कियो कैमरा फेर नहि उठेलक।

ओही घड़ी दूर पानि दिस सँ हलुक 'कबड्डी-कबड्डी'क स्वर उठल। दिनक उजासमे भूतक कबड्डी सुनाइ पड़ब गामक लेल नव बात छल। अधिकारी सभ चौंकल। एक लिपिक पूछलक, "ई की कार्यक्रमक रिहर्सल अछि?" आरुणि उत्तर देलक, "नहि। ई अहाँक योजनासँ पुरान खेल अछि।" स्वर एक बेर ठूँठक चारू कात घूमल, पाथरक नामक ऊपर सँ गुजरल, हरियर पात कैँ छुलक, आ फेर पानिमे उतरि गेल।

गोप कुमार ओहि स्वरमे एक विचित्र चेतावनी सुनलनि। पहिने डेटा-चोरी, घोटाला, खाता, कोड, अदृश्य सन्देश सभमे ओ जालक भाषा बुझैत छलाह। आब ओ स्मृति-बजारक भाषा पढ़ए लगलाह। जखन कियो कहए 'सुरक्षा', ओकर भीतर स्वामित्व नुकल भऽ सकैत। जखन कियो कहए 'संरक्षण', ओकर भीतर नियन्त्रण नुकल भऽ सकैत। जखन कियो कहए 'परियोजना', ओकर भीतर निविदा, कमीशन, आ श्रेयक भूख नुकल भऽ सकैत।

सत्यव्रत मेहता सभाक किनार पर ठाढ़ सभ सुनैत रहलाह। हुनका पदक अनुभव कहैत छल जे परियोजना कैँ रोकबाक मार्ग कानूनमे अछि; हुनकर नव सुननाइ कहैत छल जे पहिने लोकक अर्थ स्पष्ट होअय। ओ आरुणि लग जा कऽ कहलनि, "लड़ाइ कागच पर सेहो हएत। मुदा ई तय करू — कागच पर अहाँ सभ ककरा बचाबय चाहैत छी? ठूँठ? पाथर? नाम? कि सुननाइक अधिकार?" आरुणि बहुत काल सोचलक। फेर कहलक, "हमरा गाछि बचाबऽ अछि, मुदा यदि गाछि नहियो बचत, तँ ओकरा बेचएबला हाथसँ नाम बचाबऽ अछि।" सत्यव्रत माथ हिला देलनि।

साँझ धरि अधिकारी सभ चलि गेल। रंगीन नक्शाक एक प्रति छोड़ि गेल। लोक ओकरा ठूँठक कात नहि, दूर धूरि पर राखलक, जनु रोगी वस्तु कैँ अलग कऽ राखल जाइत अछि। बच्चा सभ फेर नाम-पाठ शुरू केलक। मुदा आइ प्रत्येक नामक बाद एक नव प्रश्न जोड़ल गेल — 'ई

नामक मालिक के?' उत्तर सभ परिवार देलक — 'नाम अपन अछि, मुदा पहरा सामूहिक।' ई वाक्य रजिस्टरक अगिला पन्नापर लिखल गेल।

रातिमे बूढ़बा भूत खुल्लमखुल्ला देखाइ पड़लाह। ओ ठूँठक कगार पर बैसल छलाह, जनु कटान हुनका दिनमे बाहर निकलबाक अभ्यास करा देलक हो। ओ बच्चा सभकेँ देखलनि आ कहलाह, "पहिने लोक डर सँ अन्हारमे अबैत छल। आब लोभ उजासमे आबि रहल अछि। अन्हारसँ लड़लहुँ; आब उजासक भीतरक लोभसँ लड़ू।" हुनकर स्वर पानिक भीतर दूर धरि गूँजल।

आधीराति नगरपालिकाक एक लोक चुपचाप आयल। ओ आधिकारिक मोहर लऽ कऽ नहि, सीढ़ी आ गोंद लऽ कऽ आयल छल। ओ गाम सुतल बुझि ठूँठ लग खम्भा गाड़लक आ ओकरा पर एक नव सूचना-पत्र चिपका देलक। कागच पीयर नहि, उज्जर छल; मुदा ओकर अक्षर भीतर सँ पीयर पड़ल लगैत छल। ऊपर लिखल छल — 'गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना: निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण हेतु निविदा आमन्त्रण'। गोंदक गन्ध राति भरि ठूँठक कात लटकल रहल — मीठ, चिपचिपाह, आ कने-कने सड़ल; जेना लोभ अपन असल गन्ध नुका नहि पबैत हो।

भोर होएतहि अनन्या ओ कागच देखली। ओ नामक रजिस्टर खोलली, खाली पंक्ति पर लिखली — 'आइ स्मृति पर निविदा लगाओल गेल।' फेर ओ ठूँठक हरियर पात दिस देखली। पात काँपल नहि। जनु ओ कहि रहल हो — 'आब लड़ाइ शुरू भेल।'

लोकगीत: उजासक भीतर लोभ

लोकधुन: चेतावनी झूमर

चिन्हू हे उजास, लोभ-भरल उजास चिन्हू हे,
नामक गाम ने बिकत—चाहे कोर सजाउ हे।

जाधरि लाजक नाम छल, फाइल मुँह नुकोने,
विरासत भेल तखने गाड़ी सभ दौड़ि आयल।
अन्हारक संग लड़लहुँ, आब उजासक चाल,
फोटो, गलियारा, टिकटमे बिकए चाहै काल।
राति चुप्पे खम्भा गाड़ल, निविदाक पत्र लागल,

स्मृति पर ठेका उठत—गामक हृदय जागल।
हरियर पात नहि काँपल, सोझे कहलक बात—
‘आब लड़ाइ शुरू भेल, पहरा राखू रात।’
उजास जे लोभ लुकाबै, ओ अन्हारसँ घोर,
नामक गाम नहि बिकत, चाहे सजाउ कोर।

विरासत भेल तँ गाड़ी सभ दौड़ि आयल औने।
हरियर पात ने काँपल—सोझे बाजल, गाम जागल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—चमकैत सीप- प्रत्यक्ष, भ्रम आ आत्मबोध: कमला कातमे साँझक प्रकाश तिरछा पड़ि रहल छल। सामने ‘ई किछु’क प्रत्यक्ष छल, चानीक स्मृति छल, मुदा दुनूक अलगाव ग्रहण नहि भेल।” दोसर कहलक, “नहि, ओकर ज्ञान केवल अभाव नहि छल।]

अध्याय ६४

स्मृति पर निविदा

स्मृतिपर निविदा खुजिते बुझू— आब शोको क ठेका उठत।

अध्यायारम्भ लोकगीत: शोकसँ सेवा

लोकधुन: करुणा-मंगल गीत

बढ़ाउ हे हाथ, शोकक घर मे बढ़ाउ हे,
फूलक संग अन्न-वस्त्र-न्याय पहुँचाउ हे।

शोकक नामपर ठेका नहि, सेवा हाथ बढ़ाउ,
फूलक संग सहायता, न्याय, उपचार पहुँचाउ।
रोदनकैँ विज्ञापन नहि, मौनक मान दिअ,
परिवारक जरूरत पूछि ठोस सहारा दिअ।

स्मृति भवन तखने पवित्र जखन लोक लाभ पाए,
शोकसँ सेवा जन्मि कऽ जीवित जीवन बचाए।
करुणा काज बनत जखन श्रद्धा साँच रहत,
दुखक धरतीपर आशाक घर धीरे-धीरे बनत।

रोदन बिकाए नहि बजारमे, मौनक मान रहए,
परिवारक जरूरति पूछि ठोस सहारा बहए।
स्मृति-भवनक ईंटा-ईंटा तखने पावन बनत,
जखन दुखक धरती पर सेवाक अन्न फड़त।

❖

गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना घोषित भेने तीन दिनो नहि भेल छल कि तहसीलक देबाल, नगरपालिकाक फाटक, बस-अड्डाक खम्भा, आ पुलक आधा-टूटल पायापर एकहि आकारक उज्जर कागच चिपकि गेल। ऊपर सरकारी मोहर, बीचमे मोट अक्षर — ‘स्मृति-संरक्षण, सौन्दर्यीकरण आ अनुभव-क्षेत्र निर्माणार्थ निविदा आमन्त्रित’। जकरा लोक चन्ना गाछीक ठूँठ कहैत छल, कागच ओकरा ‘स्थल खण्ड-क’ लिखलक। जकरा बच्चा सभ नामक पहरा कहैत छल, कागच ओकरा ‘सामुदायिक सहभागिता घटक’ कहलक। जकरा मृतकक परिवार अपन रोदनक एकमात्र आसरा मानैत छल, कागच ओकरा ‘भावनात्मक विरासत संसाधन’ कहि देलक।

निविदाक भाषा एतेक चिक्कन छल जे ओकर भीतरक दाँत पहिने दिन देखाइ नहि पड़ल। कागचक चिक्कन सतह आङुरमे साबुन जेकाँ ससरैत छल — पकड़ऽ चाहू तँ शब्द हाथसँ

फिसलि जाए। ओहि भाषामे शोक नहि, प्रावधान छल; नाम नहि, सूची छल; जलसमाधि नहि, 'जल-आधारित व्याख्यात्मक गलियारा' छल। चन्ना गाछीक भूत-कबड्डी कैँ 'लोक-आस्था आधारित प्रदर्शनात्मक क्रीड़ा क्षेत्र' बनाओल गेल। गोहि सभक बीच देह डूबबाक भय आ मुक्तिक करुण विरोधाभास कैँ 'इमर्सिव अनुभव-सुरंग' कहल गेल। जे बच्चा सभ राति भरि नाम पढ़ैत छल, ओकरा सभक लेल 'मार्गदर्शक बाल-दल'क प्रशिक्षण मद राखल गेल।

आरुणि कागच पढ़ैत-पढ़ैत चुप भऽ गेल। ओकरा पुलक ठेकाक पुरान फाइल मोन पड़ल। तखनो शब्द एतेक सभ्य छल — सुरक्षा, मानक, अन्तर्राष्ट्रीय गुणवत्ता, श्रमिक-कल्याण, तृतीय-पक्ष जाँच। तकर बाद माटि तलसँ देह उठल छल, रजिस्टरसँ नाम कटायल छल, नदीमे गोहि सभ चुपचाप घूमल छल। आब वैह वाक्य दोसरा वस्त्रमे घुरि आयल छल। एहि बेर पुल नहि, स्मृति पर निविदा छल।

ईरा ओहि पीयर नोटिसक प्रतिलिपि लऽ कऽ चन्ना ठूँठ लग आयली। बच्चा सभ पहिने ओकर शीर्षक पढ़लक, फेर अनन्या पूछली — 'निविदा माने?' देविका उत्तर देली — 'जखन ककरो काज करबाक बदलामे पैसा देबाक हो, तखन सरकार बोली मँगबैत अछि।' एक छोट लड़का तुरन्त पूछलक — 'नाम पर बोली लागत?' एहि प्रश्न पर सभ चुप। कारण प्रश्न बच्चा केने छल, मुदा उत्तर सभकैँ लाजबद्ध करैत छल।

मीरा कागचक एक पंक्ति पर आङुर रखली — 'स्थल पर उपलब्ध मौखिक सामग्री, दृश्य सामग्री, पारिवारिक साक्ष्य आ डिजिटल दस्तावेजक संकलन'। ओ कहली, 'ई संकलन नहि, घुसपैठ अछि। जे स्त्री अपन मृतकक नाम फुसफुसा कऽ पढ़ैत अछि, ओकर फुसफुसाहट ककरा अधिकारसँ रिकॉर्ड होएत? जे परिवार अपन अपमान सार्वजनिक नहि करए चाहैत, ओकर चुप्पी के ठेकेदार बेचत?' निजताक शपथ फेर ठूँठक चारू कात पढ़ल गेल, मुदा एहि बेर शपथक सोझाँ सरकारी निविदा ठाढ़ छल।

बच्चा सभ गंगेशक प्रश्न फेर खोललक। पछिला दिन सँ ओ सभ 'प्रमाण' शब्दकैँ खेलक नव नियम बना लेने छल। जे किछु कहल जाए, ओकर प्रमाण पूछल जाए। जे किछु लिखा जाए, ओकर हेतु पूछल जाए। जे किछु चिपकाओल जाए, ओकर प्रयोजन पूछल जाए। अनन्या नोटिसक नीचाँ लिखल पंक्ति पढ़ली — 'जन-भावनाक संरक्षण'। फेर ओ पूछली — 'प्रमाण?' ककरो उत्तर नहि छल। ओ दोसर पंक्ति पढ़ली — 'पर्यटन-उन्मुख विकास'। ओ पूछली — 'हेतु?' आरुणि कहलक — 'लाभ।' बच्चा सभ एक संग कहलक — 'लाभ प्रमाण नहि होइत।'

बा एहि सभ सुनि मुस्की देलीह। हुनका नव्य न्यायक शब्द नहि अबैत छल, मुदा न्याय-अन्यायक गन्ध चिन्हबामे हुनका कोनो पुस्तक चाही नहि छल। ओ कहलीह — 'जे लोक दुखक ठेकादारी करै, ओकरा पहिने दुखक मुँह देखबाक चाही।' ई वाक्य बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखलक। ओकरा सभक रजिस्टर आब नामक संग-संग वाक्यक पहरा सेहो करए लागल छल।

निविदामे एक अनुभाग छल — 'अनुभव-स्थल हेतु ध्वनि-संयोजन'। एहि अन्तर्गत भूत-कबड्डीक साँस, पानिमे छपाक, अदालतक हथौड़ी, मोबाइलक सूचना-ध्वनि, आ शोक-गीतक मिश्रित ध्वनिपट्टी बनाओल जाएबाक प्रस्ताव छल। उज्ज्वलक माय जखन ई पढ़लीह, तखन हुनकर चेहरा एना सूखि गेल जेना कियो फेर हुनकर बेटाक मोबाइल बजा देलक हो। ओ कहलीह — 'हमर बेटाक अन्तिम घण्टी कोनो प्रदर्शनक आवाज नहि बनत।' एहि बात पर ठूँठक भीतरसँ हलुक चरमराहट उठल।

सौम्या प्रस्तावक लागत-पत्र देखली। स्तम्भ दर स्तम्भ संख्या छल — पाथर, इजोत, ध्वनि, भीड़-नियमन, मार्गदर्शक-पुस्तिका, डिजिटल संग्रह, बाहरी विशेषज्ञ, शोध-परामर्श, उद्घाटन समारोह। मुदा श्रमिक परिवारक पुनर्वासक पंक्ति खाली छल। जलसमाधिमे डूबल देह सभक नाम खोजबाक खर्च शून्य छल। निजता-सुरक्षा मद शून्य छल। स्थानीय भाषामे अभिलेख-तैयारी मद बहुत कम। आ 'ब्राण्ड चिन्हारि'क मद सभसँ अधिक। सौम्या कहली — 'ई स्मृति नहि, बजारक नक्शा अछि।'

गोप कुमारक पुरान अनुभव जागि उठल। ओ छोट-छोट अंकीय गलती सभ खोजए लगलाह। मुदा एहि बेर सभसँ भयावह गलती अंकीय नहि छल। निविदा दस्तावेजमे 'स्मृति' शब्द चौवन बेर आयल छल, 'नाम' शब्द केवल दू बेर, 'पीड़ित' शब्द एक बेर, 'लाभ' शब्द प्रत्यक्ष नहि मुदा ओकर छाह प्रत्येक पंक्तिमे। गोप बच्चा सभकेँ कहलनि — 'कतेक बेर कोनो शब्द नहि लिखल रहैत अछि, मुदा ओ पूरा कागच चलबैत अछि।' अनन्या पूछली — 'जेकाँ गोहि पानिक भीतर?' गोप माथ हिलेलनि।

तहिये बटुकनाथ हरिहरन अपन चमचम करैत गाड़ीसँ उतरल। ओ दुखी चेहरा बना लेने छल, जेना समाजक सेवा करबाक भार ओकरा राति भरि सुतए नहि देने हो। ओकर हाथमे अलग फाइल छल — 'लोक-स्मृति न्यास: वैधानिक प्रारूप'। ओ सभकेँ नमस्कार केलक, बच्चा सभकेँ आशीर्वाद देबाक भंगिमा बनौलक, आ कहलक — 'ई ठाम बचएबाक लेल

वैधानिक ढाँचा चाही। भावनासँ काज नहि चलत। हम न्यास बना देब। सरकार, समाज, विशेषज्ञ, दानदाता — सभ मिलि चलत।'

अनन्या ओकरा आँखिमे देखली। 'न्यासमे नामक परिवार रहत?' बटुकनाथ हँसल — 'प्रतिनिधित्व रहत।' 'बच्चा सभ?' — 'बाल-परामर्श समिति बनि सकैत अछि।' 'मीरा दीदीक निजता-शपथ?' — 'नियमावलीमे विचार करब।' 'गंगेशक प्रश्न?' बटुकनाथ एक क्षण अटकल। ओ बुझि नहि सकल जे ई नेनी गंगेश केँ एतय किएक आनलक। बच्चा सभ एक संग कहलक — 'प्रमाण, हेतु, प्रयोजन।' बटुकनाथक बनावटी विनम्रता पर पहिल दरार पड़ल।

हरिहरन कहलक — 'बौद्धिक बात बहुत भऽ गेल। जमीन सरकारक अछि, परियोजना स्वीकृत अछि, फण्ड आबि गेल अछि। जँ अहाँ सभ अलग रहब, तँ अहाँक बात कागच पर नहि आएत।' आरुणि शान्त स्वरमे पूछलक — 'आ जँ हम सभ अहाँक न्यासमे आबि जाएब, तँ हमर बात रहत कि हमर नाम?' हरिहरनक चेहरा कड़ा भेल। ओ कहलक — 'कानून भावनासँ ऊपर होइत अछि।' ई सुनिते ठूँठक पाछाँ बूढ़बा भूतक हँसी उठल — सूखल पातक घर्षण जेकाँ।

बा धीरे कहलीह — 'कानून भावनासँ ऊपर नहि, न्यायसँ नीचाँ होइत अछि। कानून जँ न्याय छोड़ि देत, तखने गोहि बनत।' एहि वाक्य पर भीड़मे एक तरंग गेल। बटुकनाथ एहन भाषा सँ असहज भेल; ओ अदालतमे तर्क झेलने छल, मुदा लोकक स्मृतिक दर्शन ओकरा बेसी खतरनाक लगल। ओ फाइल बन्द केलक आ कहलक — 'ठीक अछि, सोचि लिअ। निविदाक समय-सीमा कम अछि।'

ओ जाइत-जाइत ठूँठ दिस नहि, पीयर नोटिस दिस ताकलक। ओकरा बुझाइत छल जे नोटिस, निविदा, न्यास, दान, विशेषज्ञ — ई सभ मिलि कऽ बच्चा सभक पहरा धीरे-धीरे कागचक पिंजरा बना देत। मुदा ओ नहि देखलक जे बच्चा सभ नोटिसक पाछूक खाली भाग पर एक नव खेलक रेखा खिंचि रहल छल — कबड्डीक।

साँझमे बच्चा सभ ठूँठक चारूकात कबड्डी खेललक। एहि बेर 'कबड्डी-कबड्डी' नहि, ओ सभ 'प्रमाण-प्रमाण' कहैत साँस रोकि दौड़ैत छल। जे पकड़ा जाए, ओकरा निविदाक एक पंक्तिक हेतु बताबऽ पड़ैत। जे नहि बता सकए, से 'बेनाम' घोषित। खेलमे हँसी छल, मुदा ओहि हँसीमे न्यायक धार छल। गंगेशक नव्य न्याय चन्ना गाछीक धूलिमे बच्चा सभक खेल बनि गेल।

राति उतरला पर पीयर नोटिसक कोना अपने-आप मुड़ल। मुड़ैत कागचक ध्वनि एतेक मलिन छल जेना कियो अन्हारमे दाँत पीसैत हो। भीतर सँ एक छोट छाप देखाइ पड़ल, जे दिनमे केओ नहि देखने छल — ‘अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनरुत्थान परामर्शदाता द्वारा तैयार मसौदा’। नाम धुँधल छल, मुदा गोप ओकर आकृति चिन्हलनि। ओ बहुत धीमे कहलनि — ‘ई हस्ताक्षर पुरान अछि... पुलक विदेशी सलाहकारक फाइलमे सेहो एहन चिन्ह छल।’

आरुणि ओकरा हाथसँ कागच लऽ कऽ देखलक। चिन्ह स्पष्ट नहि, मुदा एक पुरान छाह उठल — एडवर्ड ब्रूम। जे लोक हार्वर्डमे नीति आ नैतिकता पर बजैत छल, से आब गढ़ नारिकेलक स्मृति पर परामर्श बेचय फिरैत छल। चन्ना ठूँठक हरियर बिन्दु पर चन्द्रमाक इजोत पड़ल, आ ओ बिन्दु एक क्षण लेल काँपल।

अनन्या रजिस्टरमे रातिक अन्तिम वाक्य लिखली — ‘स्मृति पर निविदा आयल। बोली लगाबय बला एखन नाम नुकौने अछि।’ फेर ओ पन्ना बन्द कऽ देली। पवनमे दूरसँ नदीक गन्ध आयल। एतय सँ अगिला सुननाइ शुरू होएबाक छल — जे स्मृति बचाबक नाम पर स्मृति कीनए आबि रहल छल, ओकर असली नाम पुकारबाक।

लोकगीत: शोकक ठेका

लोकधुन: व्यंग्य-विरहा

नहि हे ठेका, शोक हमर ठेका नहि हे,
स्मृति हमर अधिकार—पहिने नाम कहू हे।

स्मृति पर निविदा खुलल, शोको पर बोली,
ककर नोर सस्ता पड़त, ककर कथा अनमोलि?
सौन्दर्यीकरण नामे मृतकक देह सजाए,
अनुभव-क्षेत्र बनाकऽ टिकट काटि खाए।
हस्ताक्षरक छाहमे ब्रूमक पुरान हाथ,

हार्वर्डक नैतिकता फेर कीनए आयल मात।
बोली लगौनिहार नाम एखन छिपल अछि,
चन्द्रमाक इजोतमे कोंपल थरथर अछि।
शोक हमर ठेका नहि, स्मृति हमर अधिकार,
जकरा बेचब मन अछि, पहिने कहू अपन नाम-सार।

निविदा खुजल स्मृति पर, शोको पर बोली,
'सौन्दर्यीकरण' कहि मृतकक देह सजाए,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—पीयर शङ्ख: वैद्यक घरमे एक रोगी शङ्ख दिस देखैत कहल, “ई पीयर अछि।” सभकेँ शङ्ख उज्जर देखाइत छल। पहिल ज्ञानक विषय पूर्ण काल्पनिक नहि छल—शङ्ख सामने छल—मुदा ओकर रंगक आरोप दोषयुक्त छल।]

अध्याय ६५

ब्रूमक पुनरागमन

लोभक गन्ध नव स्याहीसँ नहि, पुरान पुलक पानिसँ अबै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: पुरान पुलपर नव पग

लोकधुन: नदी-बटगबनी

धरू हे नव पग, पुरान पुल पर धरू हे,
पसेना-गाद-इतिहासकेँ माथ नवाबि चलू हे।

पुरान पुलक गन्धमे पसीना, गाद, इतिहास,
ओहि पर नव पग धरू, सहेजि कऽ विश्वास।
दरार जाँचू, पाया मजबूत, नामक पट्ट लगाउ,
जे बनौलक ओकर श्रमकेँ आदरसँ बताउ।

पुरान पुल बोझ नहि, सीखक खुलल किताब,
गलती सँ सुधार करब, ई भविष्यक जवाब।
नव पग चलत सुरक्षित, पुरखा देत आशीष,
नदी पार करैत समाज सीखत न्यायक रीति।

पाया-पाया जाँचि लिअ, दरार पर नजरि,
बनौनिहार श्रमिकक नाम टाँगू पुल-उपरि।
पुरान भूल पोथी बनए, नब पीढ़ी बाँचए,
सुरक्षित डेगक तालमे नदीक मन नाचए।

❖

स्मृति पर निविदाक कागच जहिना खुलल, तहिना ओकर भीतर सँ एक पुरान गन्ध उठल। ओ गन्ध कागचक नहि छल, ने नव स्याहीक, ने सरकारी धूलिक। ओ गन्ध छल ओही पुरान लोभक, जे नदीक पानिमे पुलक पाया लग नुकायल मृत मजदूरक देह पर पहिने-पहिने उतरि आयल छल। निविदाक भाषा बदलि गेल छल, विभाग बदलि गेल छल, मोहर नव छल, पर गन्ध पुरान। आरुणि कागचक पहिल पन्ना उनटौलक आ ओतए विदेशी परामर्शदाता कम्पनीक नाम देखिते ओकर माथक भीतर पुरान पुलक लोहाक किरकिराहट बजि उठल।

कम्पनीक नाम आब ओहि पुरान नामसँ भिन्न छल। पहिल बेर जे नाम पुलक ठेका पर आयल छल, से नाम अंग्रेजी अक्षरमे छल आ ओकर पाछाँ एडवर्ड ब्रूमक चेहरा चमकैत छल। आब कागच पर नाम देवनागरीमे अनुवादित छल — ‘नव-आरोग्य आधार प्रा. लि.’। नीचाँ छोट

अक्षरमे विदेशी साझीदारक नाम लिखल छल, जकरा पढ़ैत-पढ़ैत गोप कुमारक आँखि अटकि गेल। ओ फुसफुसा कऽ कहलनि, “नाम नव अछि, मालिक पुरान।”

एडवर्ड ब्रूम नहि आयल छल; पहिने ओकर पत्र आयल। पत्रमे ओ गढ़ नारिकेलक पीड़ाकेँ ‘सामूहिक उपचारक अवसर’ कहैत छल। ओ लिखैत छल जे चन्ना गाछीक कटानक बाद जे खुलल स्थान बनल अछि, ओतय ‘स्मृति-अनुभव केन्द्र’ बनाओल जा सकैत अछि, जतय देश-विदेशक दर्शक सभ मिथिलाक लोक-आस्था, नदी, न्याय, डिजिटल युगक घाव, आ सामूहिक मुक्ति कैँ एक संग अनुभव कऽ सकत। पत्रमे जलसमाधि शब्द नहि छल। ओहि ठाम ‘जल-स्मृति खण्ड’ लिखल छल। गोहि नहि छल; ‘जल-जीव प्रतीक’ लिखल छल। मृत मजदूर नहि छल; ‘श्रम-कथा दीर्घा’ लिखल छल।

ईरा पत्र पढ़ैत-पढ़ैत हँसली नहि, मुदा हुनकर आँखिमे कटु उजास छल। ओ कहली, “देखू, जे देह डुबौलक, से आब डूबल देहक टिकट काटत।” देविका पत्रक दोसर पृष्ठ पर झुकली। ओतय लिखल छल जे केन्द्रमे आगन्तुक सभक लेल चल-चित्र, ध्वनि-स्थापना, आ ‘वैयक्तिक स्मृति अभिलेख’ रहत, जतय लोक अपन प्रियजनक नाम, फोटो, स्वर, अन्तिम सन्देश आ कथा जमा कऽ सकत। देविका तुरन्त बुझि गेली जे चन्द्रपालक स्मारक-ऐपक छाह एहि ठाम सेहो अछि। स्मृति कैँ फेर डेटा बनाओल जा रहल छल।

ठूँठक चारू कात बैसल बच्चा सभकेँ ई भाषा सुनाओल गेल। अनन्या पहिल प्रश्न केली, “ओ सभ नाम माँगत? नाम लऽ कऽ की करत?” ककरो सहज उत्तर नहि भेटल। बटुकनाथ हरिहरन, जे एहि प्रस्तावकेँ ‘विकासक अवसर’ कहल चाहैत छल, गरदनि खँखारि कऽ बाजल, “बेटी, नाम अभिलेखमे रहत, अभिलेख सुरक्षित रहत, सुरक्षित रहत तँ जगत जानत।” अनन्या सोझ पूछली, “जगत जानत कि कम्पनी राखत?” बटुकनाथक जीह एक क्षण लेल रुकि गेल।

गंगेशक प्रश्न एखन हवामे रहल। पहिने जे ठूँठक अदालतमे उठल छल — प्रमाण की, न्याय की, जाति की, नाम की — से प्रश्न निविदाक कागच पर पुनः उतरि आयल। आरुणि सोचलक, गंगेश जँ एतय बैसल रहितथि तँ की कहितथि? प्रमाण केवल मोहरक नहि, अनुभवक सेहो होइत अछि; शब्दक अर्थ केवल विधानमे नहि, उपयोगमे खुलैत अछि; आ जे समाज न्याय-दर्शनक आचार्यक जीवनक असुविधाजनक सत्य दबा सकैत अछि, से कम्पनीक चमकदार प्रस्तुतिमे मृत मजदूरक नामो सजावट बना सकैत अछि।

एहि बेर पत्रक संग एक चित्र सेहो छल — भावी स्मृति-केन्द्रक रंगीन रूपरेखा। ओतय चन्ना गाछी नहि छल; ओकर ठाम गोल काँचक भवन छल। ठूँठ पर पारदर्शी गुम्बद, जड़ि सभ

पर इजोत, पानिक कृत्रिम पोखरि, आ एक ओर बनावटी गोहि, जकर आँखि रातिमे लाल चमकत। भूत-कबड्डी कें ‘रात्रि प्रकाश प्रदर्शन’ बना देल गेल छल। बच्चा सभ तस्वीर देखिते चुप भऽ गेल। काँचक गुम्बदक चित्र पर आङुर फेरिते ओकरा सभकें अपन साँस शीशा पर जमैत बुझायल — भीतरक खेल बाहरसँ देखार, मुदा छूबि नहि सकी। हुनका सभकें पहिल बेर बुझाइत गेल जे खेल मारबाक लेल ओकरा रोकब जरूरी नहि; ओकर नकल बना देब पर्याप्त अछि।

बूढ़बा भूत ओहि समय दिनक उजासमे साफ नहि, पर कतेक लोकक पलकक कोना पर देखाइ पड़लाह। ओ ठूँठक पाछाँ सँ तस्वीर दिस झुकलाह, फेर कनी हँसी हँसलाह। जखन असली भूत हँसैत अछि तखन हवा ठण्ढा नहि, गरम होइत अछि। ठूँठक ऊपर राखल कागचक कोना हलुक झुलसि गेल, जनु कियो अदृश्य आङुर सँ लिखि देलक — ‘नकल सँ स्मृति नहि बनैत।’

ब्रूमक पत्रक अन्तमे लिखल छल जे ओ स्वयं गढ़ नारिकेल आबि लोकसँ संवाद करए चाहैत अछि। ओ अपन पहिल परियोजना पर ‘गलतफहमीक धुन्ध’ दूर करबाक बात सेहो कहैत छल। आरुणि एहि पंक्ति पर ठिठकल। गलतफहमी? पुलक पाया लग जे नाम गुम भेल, जे देह पानिमे छोड़ल गेल, जे सुरक्षा-रजिस्टर बदलबाओल गेल, जे मजदूरक परिवारक मुआवजा महीना-महीना टलल — ओ सभ गलतफहमी छल? ओकर भीतरक अभियन्ता क्रोध सँ काँपल, मुदा ठूँठक चौपालमे क्रोधक अधिकार सेहो संयम माँगैत छल।

सत्यव्रत मेहता ओतए उपस्थित छलाह। सभक नजरि अपने-आप हुनका दिस घुमि गेल, जनु ओ कानूनी उत्तर देताह। मुदा ओ मौन रहलाह। ई हुनकर दोसर मौन छल — भागबाक नहि, लोकक आवाजकें पहिने स्थान देबाक। बहुत काल बाद ओ केवल एतेक कहलनि, “पत्र पढ़ि लेल गेल। आब जे लोकक नाम एहि प्रस्तावमे उपयोग होएत, हुनकर घर-घर जा कऽ पूछू। अनुमति बिनु कोनो स्मृति सार्वजनिक नहि।”

मीरा एहि वाक्य पर माथ हिलौली। ओ कहली, “देहक फोटो, मृत्युकें तमाशा, आँसूकें प्रदर्शन, निजताकें ‘अनुभव’ — ई सभ हिंसा अछि। स्मृति-केन्द्र यदि बनए, तँ पीड़ितक घरक अनुमति ओकर पहिल ईंट होएत। अनुमति नहि, तँ किछु नहि।” देविका तुरन्त जोड़ली, “आ नामक बदला पैसा नहि। दान, अनुदान, टिकट, ऐप — सभक हिसाब सार्वजनिक।”

बटुकनाथ मुस्कुरएबाक असफल कोशिश केलक। ओ कहलक, “एतेक सन्देह सँ काज कोना चलत? संसार प्रक्रिया सँ चलैत अछि।” अनन्या उत्तर देली, “न्यायो प्रक्रिया सँ चलैत

अछि? तखन बरख किएक चिबा गेल?” एहि प्रश्न पर कोनो वकील उत्तर नहि देलक। कटल ठूँठक हरियर बिन्दु पर धूप पड़ल, आ से एक क्षण लेल सुई जेकाँ चमकल।

गोप कुमार नव तथ्य रखलनि। विदेशी कम्पनीक पाछाँ जे कोष अछि, ओहि कोषक एक शाखा ओहि औषधि-व्यापारसँ जुड़ल छल जे महामारीक समय गढ़ नारिकेलक आसपास साँसक भाव चढ़ौने छल। दोसर शाखा पुल-ठेकाक पुरान सुरक्षा-परामर्शदाता सँ। तेसर शाखा डिजिटल स्मृति-ऐप सभमे लगानी करैत छल। नाम नव, रूप नव, पर धनक नदी ओहिना कारी। लोक सुनैत रहल। एहि बेर डर कम, चिन्हारि अधिक छल।

तखन सरयूक वंशक एक वृद्धा उठलीह। ओ कहलीह, “हमरा पति पानिमे गेलाह। हम बीस बरख धरि सोचलहुँ जे ओ मरि गेलाह। आब बुझैत छी, हुनकर नाम बचल नहि, से मरण छल। यदि ई लोक हुनकर नाम काँचक घरमे राखत, टिकट बेचत, तँ से दोसर बेर मरण होएत।” सभ चुप। ई वाक्य निविदाक सभ भाषा सँ भारी पड़ल।

एहि बीच चन्ना ठूँठक पाछाँ सँ एक बालक लोटाक पानि आनि हरियर बिन्दु पर ढारलक। ओ ई काज रोज करैत छल, मुदा आइ सभक सोझाँ केलक। बटुकनाथ कहलक, “बेटा, ई आधिकारिक संरक्षित अवशेष बनत। एना पानि ढारब नियम विरुद्ध भऽ सकैत अछि।” बालक चुपचाप ओकरा देखलक आ कहलक, “अहाँ आधिकारिक बनाउ। हम जीवित रखब।”

एहि उत्तरमे ठूँठक भीतर सँ पातक अतिसूक्ष्म सरसराहट सुनाइ पड़ल, यद्यपि पात बहुत कम बाँचल छल। बूढ़बा भूत कदाचित् प्रसन्न भेलाह। आरुणि ओ बालकक माथ पर हाथ रखलक। ओ सोचलक — स्मृति-परियोजनाक विरुद्ध सभसँ पैघ तर्क ई बालकक लोटा अछि। जे वस्तु जीवित अछि ओकरा संग्रहालयक काँचमे बन्द करब अपराध होइत अछि।

साँझक बेर पीयर सूचना-पत्र, ब्रूमक पत्र, निविदाक प्रति, आ लोकक हाथ सँ बनल स्मृति-नक्शा एक संग ठूँठक चारू कात राखल गेल। बच्चा सभ तय केलक जे पहिने नक्शा पढ़ल जाएत, तकर बाद पत्र। कारण नक्शा भूमि सँ जन्मल, पत्र कार्यालय सँ। भूमि पहिने बाजत, कार्यालय बादमे।

राति उतरैत एडवर्ड ब्रूमक चेहरा, जे रंगीन पुस्तिकाक एक कोना पर मुस्कुराइत छपल छल, धुँधला होए लागल। कियो हाथ नहि लगौलक, मुदा मुद्रित आँखिक पुतली बदलि गेल। कतेक लोक कहलक जे ओ आँखि एक क्षण लेल गोहिक आँखि बनि गेल। कतेक कहलक भ्रम। मुदा गढ़ नारिकेलमे भ्रम सेहो प्रमाणक एक जाति बनि चुकल छल — जँ अनेक पीड़ित एकहि डर देखैत अछि, तँ ओ डर निजी नहि रहैत।

मध्यरातिमे गोपक यन्त्र पर एक सन्देश आयल। सन्देशमे कोनो नाम नहि, केवल एक विदेशी विश्वविद्यालयक चिह्न, यात्रा-तिथि, आ विषय लिखल छल — ‘पीड़ित स्मृति आ लोक-न्यायक क्षेत्र-अध्ययन’। अगिला पंक्तिमे नाम छल — प्रोफेसर एलिना ग्रेव्सक शोध-दल। स्क्रीनक नील इजोत गोपक चेहरा पर बर्फ जेकाँ जमल — दूरक विश्वविद्यालयक ठण्ढ एतय धरि पहुँचैत बुझायल। ब्रूमक पुनरागमन असगर नहि छल; ओकर पाछाँ ज्ञानक चमकदार जुलूस सेहो आबि रहल छल।

अनन्या ओ सन्देश देखली। ओ आकाश दिस ताकली, जतय चन्ना गाछीक कटानक बाद तारा सभ साफ देखाइ पड़ैत छल। ओ धीरे कहली, “जतए स्मृति पर ठेका लागत, ओतए शोधो लागत। काल्हि हुनका सभसँ पहिल प्रश्न पूछब — अहाँ सुनए आयल छी कि लिखए?”

ठूँठक हरियर बिन्दु ओहि राति कने आरो खुलल। ब्रूमक पत्र हवा सँ फड़फड़ाइत रहल, जनु दूर समुद्रक किनारसँ आयल कोनो पुरान गोहि फेर पानि सूँघि रहल हो। गढ़ नारिकेल चुप रहल, मुदा ओकर चुप्पीमे आब पहरा छल। अगिला बिहान, हार्वर्डक शोध-दलसँ पहिने, बच्चा सभ नाम-पाठ पूरा करए उठि गेल।

लोकगीत: पुरान पुलक गन्ध

लोकधुन: नदी-विरहा

गमकल हे पानि, पुरान पुलक पानि गमकल हे,
विभाग बदलल, भाषा बदलल—लोभ ने बदलल हे।

नब स्याही नहि, पुरान पुलक पानि गमकल,
ब्रूमक चिट्ठी खोलिते मजदूरक घाव चमकल।
विभाग बदलल, भाषा बदलल, लोभ नहि बदलल,
मृत देहक छातीपर ज्ञानक जुलूस चढ़ल।
शोध-दल पूछत कथा, लिखत कि सुनत?

अनन्या पहिल प्रश्नसँ सभ नकाब चुनत।
कटानक बाद तारा साफ, कोंपल कनी खुलल,
दूर समुन्दरक गोहि फेर पानि सूँघि चलल।
ए गाम, चुप्पीमे पहरा राखू रात,
पुरान लोभ नब नाम धरि फेर आयल घाट।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—तरत्थीपर धातरीम: गुरु एक शिष्यक हथेलीपर आँवला रखि पूछलनि, “ई की?” शिष्य बिना विलम्ब उत्तर देलक—“धातरीम।” “प्रमाण जाँचलह?” गुरु पूछलनि। गुरु कहलनि, “सभ ज्ञानक बाद एकहि प्रकारक मानसिक प्रक्रिया नहि होइत अछि।]

अध्याय ६६

हार्वर्डक शोध-दल

जे यंत्र गलामे लटका कऽ अबै छै, से आँखिसँ पहिने नापए लागै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: लेंस साफ, दृष्टि मानवीय

लोकधुन: दृष्टि-गीत

पोछू हे लेंस, पहिने मोनक लेंस पोछू हे,
देखबा सँ पहिने मानुखक मोन जोहू हे।

लेंस साफ करू पहिने, फेर मानुखकेँ देखू,
चेहरा वस्तु नहि, अनुमति लऽ कथा लेखू।
आँखि नापय नहि गरिमा, आँखि सम्मान करै,
चित्र जँ जनक हो तँ जनक सहमति धरै।

दृष्टि तकनीकसँ पैघ, हृदयक नेहसँ साफ,
लेंसक भीतर गोहि नहि, करुणाक खुलल छाप।
देखबासँ पहिने पूछू, देखलापर मान दिअ,
मानवीय दृष्टि सँ कला आ ज्ञानकेँ प्राण दिअ।

आँखि तराजू नहि थिकए, आँखि थिकए दीया,
अनुमति-बिनु उतारल चित्र—अधलाह किरिया।
चेहरा वस्तु नहि, कथा छी, आदर सँ सुनू,
करुणाक फोकस साधि कऽ जीवन-छवि बुनू।

❖

ब्रूमक पुनरागमनक तेसर दिन बिहान गढ़ नारिकेलमे एकटा विचित्र गाड़ी आयल। ओकर काँच कारी छल, ऊपर छोट-छोट यन्त्र लागल छल, भीतर बैसल लोक सभक गला पर चिन्हारि-पत्र चमकैत छल। गाड़ी नगरपालिकाक नव बनैत मार्ग सँ ठूँठ लग पहुँचि रुकल। पाछाँ-पाछाँ दूटा आर गाड़ी — बक्सा, छाहचित्र-यन्त्र, ध्वनि-यन्त्र, तिपाया, तार, आ ओहि सभसँ बेसी चमकैत जिज्ञासा। लोक बुझि गेल — ई यात्री नहि, शोध-दल अछि।

पहिने एक युवक उतरल। ओकर माथ पर टोपी, आँखि पर गोल चश्मा, हाथमे मोट बही। ओ अपन परिचय देलक — हार्वर्ड विश्वविद्यालयक शोधार्थी। ओकरा संग तीन विदुषी, दू अनुवादक, एक चल-चित्र बनौनिहार, आ एक अनुदान-संयोजक छल। सभक चेहरा पर आदरक मुस्की छल, मुदा ओ आदर ओहि लोकक छल जे दूरसँ दुख देखैत अछि आ मानैत अछि जे दुख ओकर लेखनक अधिकारमे पहिनेसँ आबि गेल।

ईरा पहिल बेर हुनका सभकेँ रोकली नहि। ओ ठूँठ लगक गोल घेरा दिस संकेत कऽ कहली, “एतए बैसू। पहिने सुनू।” शोधार्थी युवक मुस्कुरायल, बही खोललक, आ पूछलक — “अहाँ हमरा सभकेँ सन्दर्भ, कालक्रम, समुदाय, जाति-संरचना, अनुष्ठानक इतिहास, आ कथित जलसमाधिक लोकविश्वास पर मार्गदर्शन देब?” ईराक चेहरा स्थिर रहल। ओ कहली, “पहिने नाम। मार्गदर्शन बादमे।”

शोध-दलक आँखिमे कने असहजता आबि गेल। ओ सभ समय-तालिका बनाकऽ आएल छल। एतए समय रजिस्टरक पन्ना नहि, पीड़ाक साँस पर चलैत छल। अनन्या रजिस्टर लऽ कऽ बैसली। पहिल नाम पढ़ल गेल। शोधार्थी युवक तुरन्त लिखए लगल। अनन्या ओकर हाथ रोकली। ओ चौंकल। नेनी कहली, “जखन नाम सुनल जाइत अछि, तखन लिखल नहि जाइत। पहिने उपस्थित कहू।” युवकक मुँह सँ कठिनाईसँ निकलल — “उपस्थित।”

एहि एक शब्दक उच्चारणमे ओकर भाषा हिचकिचायल। ओ ‘उपस्थित’ केँ सूचना नहि, उत्तरदायित्व रूपमे नहि जानैत छल। जखन सभ शोधार्थी एक-एक कऽ उपस्थित कहलक, तखन ठूँठक एक सूक्ष्म हरियर बिन्दु पर धूप काँपि उठल। बूढ़बा भूत, जे काल्हिसँ दिनक उजासमे सीमा पर अटकल छलाह, कटल जड़िक पाछाँ खिसकलाह आ कहलाह — “आब लिखू। जे सुनल नहि, से लिखल नहि।”

हार्वर्डक एक विदुषी गंगेशक नाम सुनिते जागि उठली। ओ कहली, “हम मिथिला-न्याय पर किछु पढ़ने छी। तत्त्वचिन्तामणि — अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ।” बा हँसलीह नहि, मुदा हुनकर आँखिमे तिरछी चमक आयल। ओ पूछलीह, “ग्रन्थ पढ़लहुँ, गंगेशक देहक कथा पढ़लहुँ?” विदुषी चुप। बा फेर कहलीह, “जिनका नव्य न्यायक जनक कहै छी, हुनकर जातिक असुविधा, विवाहक असुविधा, जन्मक असम्भवता, समाजक डर — ई सभ की अहाँक शोधमे अछि?”

शोध-दल पर मौन उतरि गेल। ईरा धीरे-धीरे बात खोलली। “एतए गंगेश पुस्तकक नाम नहि, प्रश्नक नाम अछि। पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्मक कथा जँ लोकक स्मृतिमे बाँचल अछि, तँ प्रश्न उठैत अछि — प्रमाण केकरा कहब? चर्मकारणीसँ विवाहक कथा जँ समाजक पेटमे काँटा बनि अटकल अछि, तँ प्रश्न उठैत अछि — जातिक प्रमाण की? तत्त्वचिन्तामणि जँ बारह हजार ग्रन्थ बराबर कहल जाइत अछि, तँ प्रश्न उठैत अछि — ज्ञानक माप शास्त्र करैत अछि कि जीवन?”

एक शोधार्थी तुरन्त पूछलक — “एहि कथाक लिखित स्रोत?” ओकर स्वर विनम्र छल, मुदा विनम्रताक भीतर बहीक भूख छल। अनन्या ठूँठक जड़ि पर हाथ रखि उत्तर देली — “स्रोत एतए साँस लैत अछि। लिखित स्रोत चाही तँ भेटत; मुदा पहिने ई बुझू जे कतेको सच लिखल गेलाक बादो मारल जाइत अछि, कतेको सच नहि लिखल गेलाक बादो जीवित रहैत अछि।”

सत्यव्रत मेहता पाछाँ बैसल छलाह। ओ सुनलनि तखन हुनकर भीतरक विधिकर्मी हिलल। कानून लिखित प्रमाण माँगैत अछि; स्मृति जीवित उपस्थिति। मुदा ओ एखन बजलाह नहि। हुनका बुझल छल जे ई अध्याय हुनकर नहि। ओ अपन बही बन्द राखलनि। हुनकर चुप्पी आब पहिल अपराधक चुप्पी नहि; ई एहन मौन छल जे लोकक प्रश्नक बीच अपन पदक छाह नहि पसारए चाहैत छल।

हार्वर्डक विदुषी धीरे अंग्रेजीमे कहली जे ओ सभ जाति आ न्याय पर अध्ययन करैत छथि। मीरा, जे एखन धरि दूर बैसल छली, कने आगाँ सरकली। ओ कहली, “अध्ययन करब नीक। मुदा जाति केवल संकल्पना नहि; ओ देहक दरबज्जा पर रोक, कुआँक किनार पर अपमान, विवाहक रातिक भय, भोजनक थारीक दूरी, आ बच्चाक नाम पर लगाओल धब्बा अछि। जँ अहाँ ई लिखब, तँ लोकक चेहरा बचा कऽ लिखू। जँ चेहरा लूटब, तँ शोध नहि, दोसर हिंसा होएत।”

एहि वाक्य पर चल-चित्र बनौनिहार अपन यन्त्र नीचाँ कऽ देलक। ओकर अभ्यास छल जे बजैत अछि, ओकर चेहरा पकड़ि लेबाक। मुदा एतए चेहरा पकड़नाइ शिकार जेकाँ बुझाइ पड़ल। मीरा ओकरा तकैत रहली। ओ यन्त्र फेर उठएबाक साहस नहि कऽ सकल।

गोप कुमार शोध-दलकेँ गामक स्मृति-नक्शा देखेलनि। ओहि नक्शामे नदी, पुल, ठूँठ, मजदूरक घर, उज्ज्वलक कोठरी, दवाई दलालीक कोठरी, डिजिटल ठगीक पाताल-दरबज्जा, आ चन्ना गाछीक कटायल छाह सभ एक रेखामे जुड़ल छल। शोध-दल ओकर फोटो लेबऽ चाहलक। गोप कहलनि, “ई फोटो सँ नहि बुझाइत। पहिने ई रेखा पएर सँ चलू।”

ओ सभ चलल। ठूँठ सँ पुल धरि, पुल सँ पोखरि धरि, पोखरि सँ ओहि घर धरि जतए एक मजदूरक विधवा रहैत छलीह, जिनकर पति कागचमे ‘अनुपस्थित’ लिखल गेल छलाह। शोधार्थी सभ घामे तर भेल, पैंट पर माटि लगल, जूता पानिमे धँसल। ईरा कहली, “अकादमिक दूरी जँ माटि सँ बाँचि जाए, तँ ओ न्याय नहि देत।” विदुषी एहि वाक्य केँ लिखए चाहली, फेर अनन्या दिस ताकली। अनन्या माथ हिलेली — “एखन लिखू। ई वाक्य चलि कऽ आयल अछि।”

विधवाक घर लग पहुँचि सभ रुकल। भीतर सँ ओ स्त्री निकललीह। ओ कैमरा देखिते घूँघट नहि केलीह; ओ आँखि तानलीह। हुनकर आँखि एहन छल जेना बरखों धरि कानि-कानि काँच बनि गेल हो। चल-चित्र बनौनिहार फेर यन्त्र उठेलक। एहन चेहरा ओकरा लेल दुर्लभ सामग्री छल।

तहिये मीरा ओकर आगाँ ठाढ़ भऽ गेली। ओ कड़ा स्वरमे कहली, “रोकू। ई चेहरा अहाँक शोधक सामग्री नहि। पहिने पूछू — ओ चाहैत छथि कि नहि? हुनकर भाषामे पूछू। हुनकर मौनक अर्थ स्वयं नहि गढ़ू।”

अनुवादक हड़बड़ा गेल। हार्वर्डक युवकक बही काँपल। ब्रूमक भेजल अनुदान-संयोजक पाछाँसँ अंग्रेजीमे फुसफुसायल जे समय कम अछि। ईरा सुनि लेली। ओ मुड़ि कहली, “मृतकक परिवारक समय बरखोंसँ रोकल गेल अछि। अहाँक समय-सारिणी ओहि बरखक सोझाँ धूलि अछि।”

विधवा बहुत काल चुप रहलीह। फेर कहलीह, “हमर मुँह नहि लिखू। हमर पतिक नाम लिखू। हमर पतिक देह पानि लऽ गेल, कागच ओकरा अनुपस्थित कहलक। अहाँ लिखू — ओ उपस्थित छथि।” ओ अपन पतिक नाम कहलीह। सभ उत्तर देलक — “उपस्थित।” शोध-दलक स्वर एहि बेर कम हिचकिचायल।

एहि उत्तरक बाद आकाशमे अचानक कारी बादरक पट्टी सरकल आ सूर्यक तेज सोझे ओहि स्त्रीक आँगनमे पड़ल। कैमरा झुकल रहल। बही खुलल रहल। मुदा पहिल बेर शोध-दल बुझलक जे किछु दृश्य कैद करबाक लेल नहि, सोझाँ नतमस्तक होएबाक लेल होइत अछि।

साँझ धरि ओ सभ फेर ठूँठ लग घुरल। हार्वर्डक युवकक बही भरल नहि छल; उनटे ओकर बहुत पन्ना खाली रहि गेल छल। ओ खाली पन्ना देखैत अंग्रेजीमे कहलक जे ओ सोचने छल एतए सामग्री भेटत, मुदा एतए तँ प्रश्न भेटि रहल अछि। बा उत्तर देलीह, “प्रश्न नहि भेटल तँ न्याय कोना भेटत?”

ओहि राति ठूँठक चारू कात नाम-पाठक बाद गंगेशक नाम फेर उच्चरित भेल। ‘गंगेश उपाध्याय — उपस्थित।’ लोक उत्तर देलक। बच्चा सभक स्वरमे कुतूहल छल, विद्रोह छल, आ ज्ञानक ओ आगि छल जे जातिक देबाल पर पहिल दरार बनबैत अछि। बूढ़बा भूत धीमे कहलाह — “तत्त्वचिन्तामणि पन्नामे नहि, ई सभ बच्चाक आँखिमे फेर लिखाइत अछि।”

शोध-दल जाय लेल उठल, मुदा मीरा हुनका सभकेँ अगिला दिनक नियम सुनौली। “काल्हि जँ अहाँ सभ छवि लेबय चाहैत छी, तँ पहिने दृष्टिक अधिकार पर बात होएत। के देखने,

के देखाओल, के नुकाओल, के बेचल — ई सभ स्पष्ट करब। गढ़ नारिकेलक दुख आब बेनाम दृश्य नहि बनत।”

चल-चित्र बनौनिहारक हाथमे यन्त्र छल, मुदा ओकर लेंस पर चन्ना गाछीक धूलि जमि गेल छल। ओ साफ करए बढ़ल, तखन धूलिक बीच ओकरा अपन चेहरा नहि, एक गोहिक आँखि देखाइ देलक। ओ यन्त्र नीचाँ कऽ देलक। अगिला दिनक बहस शुरू हेबऽ सँ पहिने दृष्टि स्वयं कटघरामे आबि गेल छल।

लोकगीत: लेंसक भीतर गोहि

लोकधुन: दृष्टि-गीत

साफ हे लेंस, पहिने भीतरक लेंस साफ हे,
दुख बेनाम दृश्य नहि—अनुमति पहिल पात हे।

गलामे यंत्र लटका कऽ आँखिसँ पहिने नापल,
गामक दुख कैँ आँकड़ा, छवि, नमूना बनायल।
बच्चाक आँखिमे तत्त्वचिन्तामणि फेर लिखल,
जातिक देबालपर प्रश्नक पहिल दरार दिखल।
मीरा कहली—पहिने दृष्टिक अधिकार,

के देखत, के देखाओत, के बेचत परिवार?
लेंस साफ करिते गोहिक आँखि उभरल,
चल-चित्र बनैनिहारक हाथ तुरन्त नीचाँ झरल।
ज्ञान जँ सुनै नहि, ओहो बाजारक हाथ।

गरा मे यन्त्र लटका आँखिसँ पहिने नापल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—खाली आसन: सभा शुरू होएबाक समय राजगुरुक आसन खाली छल। ओ कहलनि, "अनुपलब्धि तखने अभावक ज्ञान दैत अछि जखन वस्तु उपलब्ध होएबाक सभ योग्यता उपस्थित हो।]

अध्याय ६७

मीरा आ दृष्टिक अधिकार

देखबाक सेहो अधिकार होइ छै— आ जकरा देखल जाए, तकर अनुमति सभसँ पहिल कागज।

अध्यायारम्भ लोकगीत: अनुमति पहिने

लोकधुन: स्त्री-संवाद गीत

पूछू हे पहिने, 'हम तैयार छी?'—पूछू हे,
'हँ'क मान, 'नहि'क मान—दुनू सीखि बूझू हे।

हमरा देखबा सँ पहिने पूछू—हम तैयार छी?
हमर देह, हमर कथा, हमर निर्णय हमर छी।
‘हँ’क मान, ‘नहि’क मान, मौनकेँ सेहो सुनू,
विश्वासक घेरा भीतर सहमतिक फूल चुनू।

चित्र, स्वर, स्पर्श, लेख—सभमे अनुमति चाही,
सम्मानक ई सरल नियम मानवताक थाती।
अनुमति पहिने, काज पाछाँ—एहि लयमे चलू,
स्वतन्त्र मनक बगियामे सम्बन्धक फूल फुलू।

हमर देह, हमर कथा, हमरे हाथ चाबी,
मौनो केर भाषा सुनू, ई सम्बन्धक खूबी।
चित्र-स्वर-स्पर्श-लेख, सभठाँ इहए रीति,
सहमतिक फुलवारी मे फुलाए असल प्रीति।

❖

हार्वर्डक शोध-दल जखन दोसर दिन फेर चन्ना ठूँठ लग पहुँचल, तखन ओ सभ पहिने जेकाँ नोटबुक खोलि नहि बैसल। एहि बेर हुनका सभक गला सँ लटकैत चित्र-यन्त्र, काँध पर झूलैत चमकदार थैला, आ आँखिमे एकटा विचित्र उतावलापन छल। उतावलापन ज्ञानक नहि, संग्रहक छल। जेना गाम, जलसमाधि, गोहि, भूतक कबड्डी, कटल गाछि, नामक पाथर, स्त्रीक रोदन, बच्चाक पहरा — सभ एक संग पकड़ि लेने जाएब जरूरी हो।

ईरा पहिने सँ ओतहि ठाढ़ छली। हुनकर हाथमे स्मृतिक नक्शा छल, मुदा नक्शा मुड़ायल। ओ बुझि गेल छली जे जे लोक पृथ्वी पर अबैत अछि, ओ सभ पहिने आकाशक भाषा बजैत अछि — ‘अध्ययन’, ‘सहभागिता’, ‘दस्तावेज’, ‘विश्व-मंच’। मुदा जेकरा देखल जाइत अछि,

ओकर आँखि केओ नहि पूछैत। ओहि कारणेँ ईरा ओहि दिन सभकेँ ठूँठक भीतर नहि, बाहरी घेरामे रोकि देली।

दलमे एक युवती छल, एलिना ग्रेव्सक शिष्या — मार्था। ओ मैथिलीक दू-चारि शब्द सीखि आयल छली। ओ नमस्कार कऽ टूटल-फूटल मैथिलीमे कहली, 'हम सभ अहाँक पीड़ा संसार धरि पहुँचाएब।' ईरा विनम्र मुस्कानसँ उत्तर देली, 'पीड़ा चलय सँ पहिने पूछैत अछि — हम कतए जाएब चाहैत छी? संसार धरि, कि अपन घर धरि?' मार्था चुप्प भऽ गेली। ओकरा ई प्रश्नक अनुवाद अपन मनमे भेटल नहि।

तहिया मीरा आगाँ बढ़ली। ओहि मीरा, जिनका कखनो चुप्प करए लेल देह, निजता, प्रेम, दृष्टि आ लज्जाक नाम पर ब्लैकमेल कएल गेल छल; जिनका लोक अपराधी नहि, 'रहस्य' बनाकऽ देखए चाहैत छल। ओ आब ठूँठक सोझाँ ठाढ़ छली, लाल डोरी बाँधल कलाई, आँखिमे थाकल चमक, आ स्वरमे ओ धैर्य जे केवल अपमानक आगिसँ गुजरि कऽ बनैत अछि।

मीरा दलकेँ देखैत कहली, 'एतय जे किछु देखब, से देखबाक वस्तु नहि। पहिने सुनू। आ जँ देखबे करब, तँ पूछू — केकरा देखब? किएक देखब? कतेक देखब? देखलाक बाद ओ दृष्टि केकर अधिकारमे रहत?'

एक पुरुष शोधार्थी कहलक, 'हम चेहरा धुँधला कऽ देब।' मीरा ओकरा रोकि देली — 'धुँधल करब अधिकार नहि। चेहरा धुँधल कऽ देलासँ देहक अपमान धुँधल नहि होइत। अहाँक दृष्टि हमरा सहमतिसँ कम पड़त कि नहि, ई मूल प्रश्न अछि। केओ कनैत अछि से दृश्य नहि; केओ कनैत अछि से सम्बन्ध अछि।'

चन्ना ठूँठक चारू कात बैसल बच्चा सभ एहि संवादकेँ मन्त्र जेकाँ सुनैत रहल। अनन्या अपन रजिस्टरमे एक नव शीर्ष लिखली — 'दृष्टिक अधिकार'। ओकरा कातमे छोट अक्षरमे लिखली — 'जे देखाइत अछि, ओकरो आँखि अछि।'

गंगेशक प्रश्न पछिला दिन सँ हवामे तैरि रहल छल — प्रमाण की? प्रत्यक्ष की? अनुमान की? शब्द की? उपमान की? अनुपलब्धि की? सत्यव्रत मेहता जखन ओहि पन्नाक किनार पर अनन्याक लेखन देखलनि, ओ धीरे कहलनि, 'नव्य न्यायमे प्रत्यक्ष प्रमाणक महिमा अछि, मुदा दृष्टि कहिया न्याय बनैत अछि? जखन देखएबला अपन लोभ उतारि देत।'

बा एहि वाक्य पर हँसि पड़लीह। 'लोभ उतारब आसान अछि? लोक तँ आँखिमे सेहो जाति पहिरने रहैत अछि।' एहि बात पर सभ चुप्प। बा आगाँ कहलीह, 'गंगेशकेँ शास्त्र मानल

गेल, मुदा हुनकर जीवनक आगि दबाओल गेल। चर्मकारणीसँ विवाहक कथा लोकक कण्ठमे काँपैत अछि। जखन दृष्टि जाति पहिरि लेत, तखन न्यायो जातिवादी भऽ जाइत अछि।'

हार्वर्डक दलक लोक एक-दोसराक चेहरा देखलक। हुनका सभ कैँ ई आशा छल जे गाम हुनका स्वागत करबाक लेल कथा पसारि देत। मुदा एतय कथा पहिने नियम पूछैत छल। मीरा कहली, 'हमरा सभक इतिहास अहाँक शोध-पत्रक कच्चा माल नहि। जिनकर देह चिबायल गेल, जिनकर नाम मेटाओल गेल, जिनकर प्रेमक अपमान भेल, जिनकर जाति सँ जिनगीक साँस नापल गेल — ओ सभ अहाँक चित्र नहि, मनुष्य छथि।'

मार्था धीरे पूछली, 'तखन हम की करू?' ई प्रश्नमे पहिल बेर विनम्रता छल। मीरा हुनका ठूँठक पाथरक घेरा लग लऽ गेली। ओ पाथर देखेली जकरा पर लिखल छल — 'जेकर नाम नहि भेटल।' मीरा कहली, 'एहि पाथरकैँ चित्रित नहि करू। एकर पास बैसू। बीस मिनट किछु नहि लिखू। जँ बीस मिनट बाद अहाँक भीतर किछु हिलए, तखन पूछू जे ई पाथर अपने कैँ देखाबय चाहैत अछि कि नहि।'

शोध-दलक सदस्य सभ असमंजसमे बैसल। चित्र-यन्त्र पहिल बेर ओकरा सभक गला पर बोझ जेकाँ बुझायल। चन्ना ठूँठक धूप बिनु कारण कड़ा भऽ गेल छल। चिरई सभ चुप। दूर सँ नदीक पानि सुनाइ पड़ैत। एना लगैत छल जे पूरा गढ़ नारिकेल एहि बीस मिनटक परीक्षा लऽ रहल अछि। ओहि मौनमे प्रत्येक शोधार्थीकैँ अपन साँसक आवाज पहिल बेर सुनाइ पड़ल — जेना यन्त्रक ठाम आब देह स्वयं अभिलेख बनि गेल हो।

तहिये एक वृद्ध चर्मकार आएलाह। हुनकर नाम जगदीश राम छल। ओ सामान्यतया पाछाँ बैसैत, कम बजैत। गंगेशक प्रसंग सुनलाक बाद हुनकर भीतर किछु तड़पल छल। ओ मीरा लग आबि कहलनि, 'जँ गंगेश साँचमे चर्मकारणीसँ विवाह कएलनि, तखन शास्त्र हुनकर अछि कि हमर जातिक अपमान सेहो ओकर भीतर लिखल अछि?'

मीरा उत्तर नहि देली। ओ प्रश्न कैँ बच्चा सभक बीच रखि देली। अनन्या कहली, 'जँ न्याय शास्त्र बनल, तँ जीवनक अपमान किएक छोड़ल गेल? हम नक्शामे गंगेशक पुस्तक राखब, मुदा हुनकर विवाहक कथा सेहो राखब।'

जगदीश रामक आँखि भीजल। ओ कहलनि, 'तखन पहिल बेर हम शास्त्रक बाहर नहि, भीतर बैसब।' एहि वाक्य पर ठूँठक भीतर सँ हलुक किरकिर ध्वनि उठल। कियो कहलक — सूखल लकड़ी फुटल। बच्चा सभ लिखलक — 'जाति-पंजरमे पहिल दरार।'

सत्यव्रत मेहता अपन नोटबुक खोललनि, मुदा लिखलनि नहि। मीरा हुनका देखली। 'अहाँ लिखैत किएक नहि?' सत्यव्रत कहलनि, 'किछु बात हमर लिखलासँ फेर सरकारी गवाही बनि जाएत। एहि बेर जगदीश जी स्वयं लिखताह।' ओ नोटबुक हुनका आगाँ राखि देलनि। जगदीश राम काँपैत हाथसँ लिखलनि — 'हमर दृष्टि सेहो प्रमाण अछि।'

हार्वर्डक मार्था एहि वाक्यकेँ सुनि रहल छली। ओ अपन कागच पर अंग्रेजीमे किछु लिखय चाहली, फेर रुकि गेली। ओ पूछली, 'एहि वाक्यक अर्थ अहाँ सभ बुझाएब?' जगदीश राम कहलनि, 'नहि। अहाँ पहिने अहाँक भाषा सँ बाहर बैसू।' एहि उत्तर पर एलिना ग्रेव्सक शिष्यादलक दू गोटे असहज भेल। मुदा मार्था सचमुच कागच बन्द कऽ देली।

मीरा ओहि ठाम एक नव नियम घोषित नहि केली; ओ बस लोकक सहमतिसँ एक लघु विधान लिखौली। पहिल — कोनो चेहरा बिनु अनुमति नहि। दोसर — कोनो रोदन दृश्य नहि, जँ कननिहार स्वयं नहि चाहए। तेसर — कोनो देह-अपमानक स्मृति बिनु गरिमाक भाषा नहि। चारिम — जाति-आधारित दुखकेँ लोकक नाम हटाकऽ 'सामाजिक उदाहरण' नहि बनाओल जाए। पाँचम — जे देखल गेल, तकर प्रति घुरि उत्तरदायित्व रहत।

बच्चा सभ एहि विधानकेँ 'दृष्टि-पहरा' कहलक। नारिकेल पात पाठशालाक पहिल नव पाठ ठहरल — देखबाक पहिने अनुमति, सुनबाक पहिने मौन, लिखबाक पहिने सम्बन्ध।

एहि बीच एक युवा शोधार्थी चुपचाप किनारसँ कटल ठूँठक, पाथरक नामक, आ कनैत स्त्रीक चित्र लेबाक कोशिश केलक। ओकर चित्र-यन्त्र अचानक अन्हार भऽ गेल। ओ घबरायल। फेर स्क्रीन पर अक्षर उभरल — 'अहाँ देखलहुँ, मुदा देखल गेलहुँ कि?' ओ युवक चित्र-यन्त्र झटका देलक। अक्षर मेटि गेल, मुदा ओकर चेहरापर डरक रंग बसि गेल। बूढ़बा भूत दूर सँ मुस्कुराइत रहलाह।

अनन्या धीमे स्वरमे कबड्डी शुरू केली — 'कबड्डी-कबड्डी... दृष्टि-दृष्टि... नाम-नाम...' बच्चा सभ खेलमे नहि उतरल; बस साँसक लय पकड़लक। मीरा बुझली जे खेल बन्द नहि भेल। आब कबड्डी देहक पकड़ नहि, दृष्टिक पकड़ सँ छूटबाक अभ्यास बनि रहल अछि। जे देखल जाइत अछि, से साँस रोकि बाहर निकलि सकैत अछि कि नहि — ई नव खेल छल।

साँझक समय मार्था फेर मीरा लग आयली। 'हमरा एक चित्र चाही,' ओ कहली, 'मुदा चेहरा नहि। अहाँ अनुमति देब तँ हम केवल ओ लाल डोरीक चित्र लएब, जे अहाँक कलाई पर अछि।' मीरा डोरी दिस तकली। ई वैह डोरी छल जकरा ओ अपमानक स्मृति सँ अधिकारक

संकेत बनौने छली। ओ किछु काल सोचली, फेर कहली, 'चित्र लेल जा सकैत अछि, मुदा ओकर कथा हमर शब्दमे लिखब। अहाँक शब्दमे नहि।'

मार्था सहमत भेली। पहिल बेर विदेशी शोध-दलकेँ गामक भाषा पर भरोस करबाक पड़ल। ईरा नक्शा खोलि हुनका देखेली — चन्ना ठूँठ, नाम-पाथर, गंगेशक प्रश्न, जगदीश रामक लेख, मीरा कलाईक डोरी — सभ एकहि रेखामे जुड़ि गेल। ईरा कहली, 'एहि नक्शामे नदीक धारा जेकाँ दृष्टिक धारा सेहो अछि। जे गलत दिशामे बहत, से स्मृति केँ फेर डुबा देत।'

राति होइत दल चलि गेल। मुदा हुनका सभक जाएबाक बाद ठूँठक पास एक छोट कागच भेटल। कागच पर चन्द्रपालक स्मारक-ऐपक चिह्न छल, आ नीचाँ लिखल — 'श्रद्धांजलि चित्र-संग्रह शीघ्र खुलि रहल अछि। मृतकक फोटो, पीड़ितक कथा, पारिवारिक विवरण अपलोड करू। दानक व्यवस्था उपलब्ध।'

देविका कागच पढ़ि काँपि उठली। मीरा ओहि कागच केँ हाथमे लऽ कहली, 'आइ हम शोध-दलक दृष्टि रोकलहुँ। काल्हि स्मारक-ऐप लोकक घरमे पैसत।' अनन्या रजिस्टरमे अगिला शीर्ष लिखली — 'नामक चोरीक पहिल दरबाजा।'

ठूँठक हरियर बिन्दु रातिमे धुँधला चमकल। जेना गाछि कहि रहल हो — दृष्टिक पहरा लगि गेल, मुदा स्मृतिक बजार एखन जागल अछि।

लोकगीत: हमरा देखबा सँ पहिने पूछू

लोकधुन: स्त्री-संवाद गीत

पूछू हे पहिने, देखबा सँ पहिने पूछू हे,
मनुख जकाँ देखू—वस्तु जकाँ नहि बूझू हे।

हमरा देखबा सँ पहिने पूछू हमर मान,
चेहरा हमर, कथा हमर, अनुमति हमर प्राण।
आँखि सेहो हाथ अछि, लूटि सकै निजता,
चित्र जँ बेचत पीड़ा, ज्ञान नहि—व्यापारता।
मीरा लेंस रोकलनि, धूलि बचेलक नाम,

मुदा मोबाइल घर-घर घुसल फूल-दिया धाम।
श्रद्धांजलि चित्र माँगै, कथा, कुल, परिवार,
दानक बटनक पाछाँ जागल नामक बाजार।
दृष्टिक पहरा लगल, युद्ध एखन बाकी,
हमरा देखू मनुष जकाँ, वस्तु नहि सखी।

आँखियो हाथ थिकए—लूटि सकए निजताक मान।
मुदा मोबाइल घर-घर पैसल फूल-दीयाक ठाम।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—एककालिकचक्र: मेला मे एक कलाकार जरैत लकड़ी घुमेलक।]

अध्याय ६८

देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग

मरल लोकक नामपर बटन दबौनिहार जीवित लोकक जेब टटोलै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: बटनसँ पहिने विवेक

लोकधुन: चेतावनी-बाल गीत

रुकू हो नेना, बटन सँ पहिने रुकू हो,
एक साँस, एक प्रश्न—तखने आगाँ झुकू हो।

बटन दबाबै हाथ तखन पहिने मोन टटोलू,
ककर नाम, ककर धन, ककर मान—साफ-साफ बोलू।
एक क्लिकक चाल तेज, सोचक दीपो तेज,
ठगीक बाट रोकि सकै सावधान सन्देश।

माए-बाबू संग विचारू, अनजान लिंक नहि खोलू,
लोभक मीठ बोलि सुनिते सत्यापनक ढोलू।
बटनसँ पहिने विवेक—डिजिटल सुरक्षाक गान,
सावधानीसँ बचत घरक श्रम, भरोस, सम्मान।

चमकैत लिंकक पाछाँ मे काँटक जाल पसरल,
'फ्री-फ्री'क मीठ बोली मे ठगक दाँत निखरल।
माए-बाबू सँ कहू, संगी सँ करू जाँच,
सोचल-बूझल क्लिक टा राखत घरक साँच।

❖

नाम-उत्सवक बाद गढ़ नारिकेलमे जे शान्ति उतरबाक चाही छल, से शान्ति नहि उतरि सकल। ओहि ठाम जतय बच्चा सभ नाम पढ़ैत छल, जतय ठूँठक हरियर बिन्दु धूप सँ आँखि मिचमिचबैत छल, जतय मीरा चेहराक गरिमा आ दृष्टिक अधिकार पर पहरा दैत छली, ओहि ठाम राति पड़लापर स्क्रीनक उजास फेर सरकैत आबि रहल छल। चन्ना गाछीक कटल देहक चारू कात पाथरक नाम छल, मुदा पाथरक ऊपर-ऊपर आब छोट-छोट चमकीला चिन्ह चिपकाएबाक प्रस्ताव उठल। कहल गेल — एहि सँ स्मृति सुरक्षित रहत।

देविका एहि प्रस्तावकेँ पहिल बेर सुनली तखन ओकर कानमे उज्ज्वलक मायक धीमा स्वर घुमि गेल — “नामकेँ जल्दी नहि चाही।” मुदा श्रद्धांजलि-ऐपक विज्ञापनक पहिल पंक्ति छल — “एक स्पर्शमे श्रद्धा।” देविका एतबे पढ़िते काँपि उठली। श्रद्धा जँ एक स्पर्शमे भऽ जाए,

तखन शोकक लम्बाइ, प्रतीक्षाक ताप, नाम पुकारबाक थरथरी, आ मौनक गवाही सभ कतय जाएत?

चन्द्रपाल बत्रा एहि ऐपक मुख्य संचालक नहि कहबैत छल। ओकर नाम कतहु नहि छल। आगाँ एक नव कम्पनी छल — "लोक-स्मृति सेवा मण्डल।" पाछाँ एक परामर्शदाता, ओकर पाछाँ दाता, ओकर पाछाँ सांस्कृतिक सेवक, ओकर पाछाँ कतेको धुन्ध। मुदा देविका जानैत छली जे धुन्धक भीतर बेसीकाल वैह चेहरा रहैत अछि जे दिनक उजासमे नहि ठाढ़ होमय चाहैत। चन्द्रपालक चालि चिन्हब कठिन नहि छल। ओ जतय नाम देखैत, ओतय खाता देखैत; जतय आँसू देखैत, ओतय दानक बटन देखैत; जतय स्मृति देखैत, ओतय संग्रहणक फार्म देखैत।

श्रद्धांजलि-ऐपक आरम्भ बहुत कोमल शब्द सँ होइत छल। मृतकक नाम लिखू। फोटो जोड़ू। परिजनक कथा लिखू। दान करब चाही तँ करू। स्मृति-दीप जराउ। डिजिटल पुष्प चढ़ाउ। दूर देशमे रहैत लोकक लेल सुविधा। शोकमे सहभागी बनू। एहि सभ वाक्यक बीच देविका एक नान्हि छेद देखली — नाम जमा करबाक अनुमति, सम्बन्धक जानकारी, फोन नम्बर, बैंकक बाट, स्थान, जन्म, मृत्यु, जाति, पितृनाम, स्त्रीक विवाह-नाम, बच्चाक उमेर। ई श्रद्धांजलि नहि, शोकक जनगणना छल।

देविका पहिल जाँच उज्ज्वलक नाम सँ नहि केली। ओ जानैत छली जे शिकारक घाव पर सोझे हाथ राखलासँ शिकार फेर घायल होइत अछि। ओ पहिने ओहि पाथरक नाम चुनली जकरा बच्चा सभ पहिल ठाम राखने छल — "जेकर नाम नहि भेटल।" ऐप खुलल। ओ नामक स्थान पर लिखली — "जेकर नाम नहि भेटल।" स्क्रीन तुरन्त उत्तर देलक — "कृपया पूर्ण नाम भरू।" देविका दोबारा लिखली — "अनाम।" स्क्रीन उत्तर देलक — "मान्य नहि।" तेसर बेर लिखली — "जलमे डूबल अज्ञात मजदूर।" स्क्रीन कहलक — "कृपया श्रेणी चुनू।" देविका मोबाइल बन्द कऽ देली।

ओहि क्षण देविका बुझि गेली जे ई ऐप ओही नाम सभकेँ स्वीकार करत जेकरा बजारक खाँचा मिलत। जे नाम अधूरा अछि, जे जातिक बाहर अछि, जे स्त्री अपन विवाहक परिभाषासँ बाहर राखए चाहैत अछि, जे मजदूरक पितृनाम अज्ञात अछि, जे देह जलमे खसल मुदा कागच पर नहि चढ़ल — ओ सभ एहि ऐपमे प्रवेश नहि पाओत। स्मृतिक ई नव द्वार पहिलहि दिन बेनाम सभकेँ बाहरे छोड़ि रहल छल।

अनन्या आ बच्चा सभकेँ देविका ई देखेली। बच्चा सभ स्क्रीनक छोट अक्षर नहि, ओकर व्यवहार देखलक। एक बालक पूछलक — “ई कहैत अछि जे पूरा नाम चाही। जँ नाम अधूरा भेटल तँ लोक अधूरा भऽ गेल?” दोसर कहलक — “जकर फोटो नहि, ओकर चेहरा नहि?” तेसर, जे गंगेशक प्रश्न सुनि चुकल छल, धीरे बाजल — “प्रमाणक नाम पर जे अनुपस्थित केँ हटाए, से न्याय नहि, छल अछि।”

देविका केँ गंगेशक स्मरण भेल। नव्य न्यायक तर्कक कठोर उजास अचानक स्क्रीनक नील उजास पर उतरि आयल। प्रमाण केवल संकलन नहि; प्रमाणक मर्यादा सेहो अछि। जे देखल गेल, जे सुनल गेल, जे अनुमानित अछि, जे लोकक स्मृतिमे अछि, जे करुणामे बाँचल अछि — सभक मूल्य अलग। मुदा चन्द्रपालक ऐप सभ प्रमाणकेँ एकहि खिड़कीमे ठेलि रहल छल। नाम भरू, प्रमाण जोड़ू, दान स्वीकारू, स्मृति प्रकाशित करू। जे नहि भरि सकल, से अनुपस्थित।

ओहि राति देविका चन्द्रपालकेँ खोजय गेली। ओ चन्ना गाछीक ठूँठ लग नहि, बजारक पाछाँ नव दफ्तरमे बैसल छल। बाहर बोर्ड पर लिखल छल — “सांस्कृतिक स्मृति सहयोग केन्द्र।” भीतर शीशाक मेज, सुगन्धित धूप, कम्प्यूटरक उजास, आ देबाल पर चन्ना गाछीक कलात्मक छवि। ओहि छविमे गाछि कटायल नहि छल; पूरा हरियर, पूरा सुन्दर, पूरा विक्रेय।

चन्द्रपाल देविकाकेँ देखिते मुस्की मारलक। “अहाँ लोक बहुत भावुक छी,” ओ कहलक। “हम तँ केवल सुविधा देलहुँ। जकर घरक लोक बाहर अछि, ओ कतए सँ नाम-पाठमे शामिल होएत? ऐप सँ जुड़त, दान करत, स्मृति बचत।” देविका ओकरा देखली। ओहि चेहरामे अपराधक पछतावा नहि छल; बस संकटमे अवसर देखबाक पुरान चपलता छल।

देविका शान्त स्वरमे पूछली — “जकर नाम नहि भेटल, तकरा तोहर ऐप किएक नहि मानलक?” चन्द्रपाल थोड़े काल चुप रहल, फेर कहलक — “व्यवस्था केँ आँकड़ा चाही। आँकड़ा बिनु रजिस्टर नहि बनत। दानकर्ता पूर्णता चाहैत अछि।” देविका कहली — “चन्ना गाछी अधूरा नामकेँ पहिल ठाम देलक। तोहर स्क्रीन ओकरा बाहर राखलक। तखन ई श्रद्धांजलि नहि, नामक छँटनी अछि।”

चन्द्रपाल हँसल। “छँटनी नहि, शुद्धि। गड़बड़ नाम रहत तँ दुरुपयोग होएत।” देविका केँ लागल जे गोहि पानिमे नहि, वाक्यक भीतर मुँह खोलने अछि। जे चोर स्वयं दुरुपयोगक जाल बुनि रहल छल, से अधूरा नामकेँ दुरुपयोगक भय बतबैत छल। ओ कहली — “अधूरा नामसँ तोरा डर अछि, कारण अधूरा नाम बजारमे बिकैत नहि। पूरा नाम, पूरा सम्बन्ध, पूरा देह, पूरा दुख — तखनहि तोरा लाभ भेटैत अछि।”

चन्द्रपालक आँखि पहिल बेर कठोर भेल। “लाभ खराब शब्द नहि,” ओ कहलक। “स्मृति टिकएबामे खर्च होइत अछि।” देविका उत्तर देली — “खर्च आ लूटमे अन्तर अछि। पाथर पर लिखल नामकेँ चोरा कऽ स्क्रीन पर राखब, फेर परिजनसँ ‘प्रमाण’ माँगब, फेर दानक बाट खोलब — ई खर्च नहि। ई मृतकक दोसर मृत्यु अछि।”

दफ्तरक पाछाँ एक छोट कोठरी छल। देविकाक ध्यान ओम्हर गेल। दरबाजा आधा खुलल। भीतर युवक सभ नाम टाइप कऽ रहल छल। किछु नाम सही, किछु बिगड़ल, किछु जाति पूछैत, किछु पिता जोड़ैत, किछु स्त्रीक नामक बाद कोष्ठकमे पति। देविका देखली — ओहि सूचीमे उज्ज्वलक नाम सेहो छल। ओकर कातमे लिखल छल — “भावनात्मक पहुँच उच्च।” देविकाक देहमे जाड़ उतरि गेल। ओ ने चिचियेली, ने कानली। ओ बस ओहि पंक्तिक फोटो नहि खिंचली। कारण ओ जानैत छली — दोसराक चोरी रोकए लेल फेर चोरी नहि करब। ओ पंक्तिक शब्द मनमे राखि लेली।

ओ बाहर आबि कहली — “उज्ज्वलक नाम हटाउ।” चन्द्रपाल कहलक — “नाम सार्वजनिक भऽ चुकल। स्मृति सामूहिक अछि।” देविका कहली — “सामूहिक स्मृति आ बजारू कब्जा अलग बात अछि। उज्ज्वलक मायक अनुमति बिनु ओकर नामक आँसू बेचब नहि।” चन्द्रपाल उत्तर देलक — “कानून एना नहि कहैत।” देविका धीमे कहली — “कानून जँ एखन एना नहि कहैत, तँ नामक चौपाल कहत। आ चन्ना ठूँठक अदालत कानूनक प्रतीक्षा नहि करैत।”

अगिला दिन देविका लोकबैठकीमे सभ बात कहली। ओ दफ्तरक भीतरक गोपनीयता भंग नहि केली; ओ नाम नहि पढ़ली जे बिनु अनुमति टाइप भेल छल। ओ केवल ऐपक चालि बतौली — अधूरा नाम अस्वीकार, दुखक श्रेणीकरण, दानक बाट, अनुमतिक धुँधलापन, आ स्मृतिक बजारीकरण। बच्चा सभ रजिस्टरमे नव नियम लिखलक — “ककरो नाम स्क्रीन पर चढ़ेबासँ पहिने ओकर लोकक अनुमति। जकर लोक नहि, ओकर नाम पहिने चौपालमे सुनल जाए। अधूरा नाम पूरा नामसँ छोट नहि।”

मीरा एहि नियमक पाछाँ अपन डोरी बाँधली। “दृष्टिक अधिकार बिनु स्मृति अपमान बनैत अछि,” ओ कहली। “जँ कोनो कैमरा, कोनो ऐप, कोनो दान-पत्र, कोनो शोध, कोनो स्मारक ककरो दुखकेँ ओकर अनुमति बिनु छूइत अछि, तँ से चन्ना गाछीमे प्रवेश नहि पाओत।” बूढ़बा भूतक हलुक हँसी सुनाइ पड़ल। कदाचित् हुनका ई नियम पसिन पड़ल छल।

सत्यव्रत मेहता पाछाँ बैसल सुनैत रहलाह। हुनकर हाथमे नोटबुक छल, मुदा ओ प्रत्येक वाक्य नहि लिखैत छलाह। केवल एक वाक्य लिखलनि — “नामक स्वामित्व मृतकक लोक, स्मृति आ न्यायक संग; बजारक संग नहि।” ओहि वाक्यक बाद ओ कलम रोकि देलनि। हुनका बुझाइत छल जे एहि विषय पर कानून कतेक अबेरसँ चलत; मुदा बच्चा सभक नैतिक विधान कानूनसँ आगाँ पहुँचि गेल अछि।

चन्द्रपाल ओहि सभामे आयल नहि। मुदा ओकर अनुपस्थितिमे ओकर ऐप आयल। कतेको मोबाइल पर एकहि समय सूचना चमकल — “गढ़ नारिकेल स्मृति-संग्रहमे अहाँक प्रियजनक नाम जोड़ल गेल अछि। श्रद्धा-दीप जराउ।” किछु लोक चौंकल। किछु फोन बन्द केलक। किछु केर आँखि भीजल। उज्ज्वलक मायक मोबाइल पर सेहो वैह सूचना आयल। ओ पढ़ि नहि सकलीह; देविका पढ़ि सुनबैत काँपि गेली। माय शान्त रहि कहलीह — “हमरा बेटाकेँ फेर स्क्रीनमे नहि डुबाउ।”

तहिये अनन्या मोबाइल सभ जमा करबा लेली। ओ पाथरक घेराक बीच सभ फोन उनटा राखि देली। ठूँठक हरियर बिन्दु धूपमे चमकि रहल छल। बच्चा सभ कबड्डीक रेखा खिंचलक, मुदा खेल शुरू नहि केलक। ओ सभ पहिने एक संग कहलक — “नाम बेचल नहि जाएत।” ई नारा नहि, शपथ छल।

राति फेर ओहि चमकीला सूचना सभ अपने-आप मेटए लागल। किछु फोनमे नाम गायब, किछुमे गलत, किछुमे दोहरायल। देविका बुझली जे चन्द्रपालक ऐप केवल नाम लेत नहि, नाम बदलत सेहो। पाथर पर लिखल नाम आ स्क्रीन पर चमकैत नाममे अन्तर देखाइ पड़ल। ई अन्तर छोट नहि छल; ई अगिला संकटक पहिल आहट छल।

भोर होइत बच्चा सभ पाथर गिनए गेल। सभ पाथर ओतहि छल, मुदा तीन पाथरक अक्षर धुँधला पड़ि गेल छल। जनु रातिमे केओ नोक सँ कुरेदि गेल हो। खुरचल ठाम पर आङुर फेरिते बच्चा सभकेँ पाथरक देह ठण्ढा नहि, कने गरम बुझायल — जेना घाव एखनो ताजा हो। “के?” — ककरो मुँहसँ निकलल। बूढ़बा भूतक आवाज बहुत दूर सँ आयल — “जे स्क्रीनमे नाम चोरबैत अछि, से पाथरपर हाथ राखए अबेर नहि करत।”

अनन्या रजिस्टर खोलली। ओ पहिल पन्नापर लिखली — “आइ सँ नामक चोरी शुरू भेल।” देविका ठूँठ दिस तकली। हरियर बिन्दु एखनहुँ छल, मुदा ओकर चारू कात माटि कने खुरचल बुझाइत छल। स्मृतिक पहरा आब केवल भावनाक काज नहि रहल। ई युद्धक आरम्भ छल — नाराक नहि, नामक अक्षर बचएबाक युद्ध।

लोकगीत: बटन दबाबै जेब टटोलै

लोकधुन: देविकाक चेतावनी गीत

पूछू हो पहिने, बटन दबेबा सँ पूछू हो,
प्रियजनक नामक मालिक परिवार—इहए बूझू हो।

मृतकक नामपर बटन, जीवितक जेब कटै,
दिया स्क्रीनपर जरै, घरक चूल्हि बुझि घटै।
पाथरक नाम स्थिर, परदाक नाम बदलै,
एक राति तीन अक्षर कियो चुप्पे कुरेदै।
देविका कहली—शोकक उजास चिन्हू,

दानक कोड, आँकड़ा, चोरीक जाल बिन्हू।
हरियर बिन्दुक माटि चारूकात खुरचल,
नामक पहरा भाव नहि, युद्ध बनि उभरल।
बटन नहि दबाउ अन्हा, पहिने पूछू के,
प्रियजनक नामक मालिक परिवार—कोनो अनुप्रयोग नहि रे।

दीया स्क्रीन पर जरए, घरक चूल्हि घटए।
एक राति तीन आखर कियो चुप्पे कुरेदए।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—कारी घटक स्मृति: कुम्हारक घरमे एक घट पहिने कारी छल। महीना बाद दूर देशसँ घुरल युवक पुरान स्मृतिक आधारपर कहलक, “ओ कारी घट एखन कोठरीमे अछि।” घट वास्तवमे वएह छल, स्थान सेहो वएह, मुदा रंग बदलि गेल छल।]

अध्याय ६९

नामक चोरी

स्क्रीनपर पकड़ायल चोरी, चोरीक उजरा भाग टा थीक।

अध्यायारम्भ लोकगीत: पानिमे नामक कमल

लोकधुन: पनिघट-मंगल

भरू गे बहिना, घैल संग नाम भरू गे,
पनिघटक लहरि-लहरि मे कमल धरू गे।

मिटल नाम पानिमे फेर कमल बनि उगै,
धार जते बहै, जड़ि स्मृतिक भीतर रहै।
पनिघटपर बहिनी सभ नामक गीत गाउ,
बून्द-बून्द उच्चारणसँ चिन्हारि घुरि लाउ।

पानि मेटै नहि साँच, केवल रूप बदलै,
नामक कमल भोरमे सूरुज दिस खुलै।
जलपर फूल, मनमे मान, घरमे दीप धरू,
मेटायल जीवनकेँ स्मृतिक आसन भरू।

डूबल-मेटल आखर पानिक तर मे पलल,
भोरक पहिल किरिण पाबि फेर ऊपर खिलल।
बून्द-बून्द उच्चारण, घाट-घाट सम्मान,
जलक दर्पण मे चमकए बिसरल पहिचान।

❖

श्रद्धांजलि-ऐपक झूठ जखन देविका सभक सोझाँ खोलली, तखन लोक सोचलक जे असली चोरी पकड़ायल गेल। मुदा चन्ना गाछीक ठूँठ जानैत छल जे स्क्रीन पर पकड़ा गेल चोरी तँ चोरीक केवल उज्जर पृष्ठ अछि; असली चोरी ओ अछि जे चुपचाप स्मृतिसँ नाम हटबैत अछि, ताकि अगिला पीढ़ी पूछिते नहि जे ककर देह डूबल, ककर श्रम चिबायल, ककर आवाज बन्द कएल गेल।

नाम-उत्सवक दोसर सप्ताहमे अनन्या रजिस्टर खोलली तँ ओकरा पहिल खाली जगह देखाइ पड़ल। जे पन्ना पर काल्हि ‘सरयू मण्डल’ लिखल छल, ओहि ठाम स्याहीक हलुक धब्बा रहल; अक्षर नहि। धब्बा ओहिना छल जेना कियो भीजल अँगूठासँ नामकेँ सहला कऽ मेटा देने हो। अनन्या पहिने अपन आँखि मलली, फेर पन्ना धूप दिस उठेली। धूपमे अक्षरक छाह सेहो नहि रहल।

‘

कदाचित् गलत पन्ना अछि,' एक बच्चा कहलक। दोसर बच्चा पाथरक घेरा दिस दौड़ल। सरयू मण्डलक पाथर जइ ठाम राखल गेल छल, ओतय पाथर छल, मुदा ओकर सतह चिक्कन। नामक कोरनाइ नहि। लाल डोरी तँ ओहि पर बन्हायल छल, मुदा नाम उखड़ि गेल छल। ई चोरी विचित्र छल — पाथर नहि गेल, डोरी नहि गेल, स्थान नहि गेल; केवल नाम गेल।

बात पसरल तँ लोक दौड़ि आयल। कियो चन्द्रपालक ऐप पर शंका केलक, कियो नगरपालिका पर, कियो बाहरी शोध-दल पर, कियो बटुकनाथक न्यासक प्रस्ताव पर। मुदा बा धीरे कहलीह, 'चोर ओ नहि जे पाथर चोराबै; चोर ओ जे लोककेँ विश्वास दिलाबै जे पाथर पर किछु लिखले नहि छल।' एहि वाक्यसँ भीड़मे एकदम सन्नाटा पसरि गेल।

देविका डिजिटल सूची जाँचली। किछु नाम ओतहूँ 'अप्रमाणित' लिखल गेल छल। सरयू मण्डल — अप्रमाणित। मुन्ना पासवानक बाबू — अप्रमाणित। उज्ज्वलक घटना — स्वैच्छिक जोखिम। मजदूरक मृत्यु — ठेका-पंजीमे अनुपलब्ध। जे नाम लोकक कण्ठमे साफ छल, ओ कागच आ स्क्रीनमे धुँधला कऽ देल गेल।

गोप कुमार अपन पुरान फाइल खोललनि। ओहि फाइलमे नाम छल, तारीख छल, छाप छल, मृतकक अँगूठा-निशानक प्रति छल। मुदा जखन ओ प्रति प्रकाशमे राखल गेल, तखन किछु निशान पानिक बून्द जेकाँ बहि गेल। गोपक हाथ काँपल। ओ कहलनि, 'डेटा चोराएल जा सकैत अछि; मुदा ई तँ प्रमाणक देह पर प्रहार अछि।'

एहि पर अनन्या केँ गंगेशक प्रश्न मोन आयल। ओ धीमे बाजली, 'प्रमाण की? जे लिखल अछि, से? जे देखल अछि, से? जे स्मृतिमे अछि, से? कि जे सत्ता मानि लेत?' सत्यव्रत मेहता पाछाँ ठाढ़ छलाह। ओ उत्तर देबाक बदला चुप रहलाह। ओहि चुप्पीमे एहि बेर अपराध नहि, बच्चा सभकेँ सोचबाक अवकाश छल।

मीरा सरयू मण्डलक घर दिस गेली। सरयूक बहिन राखी पहिरल हाथ देखबैत कहलनि — 'नाम मेटल? मुदा ई हाथ देखू। बाबू प्रत्येक बाढ़िमे नाव खेने छल। हमर बाल्यकालमे जे कथा ओ सुनबैत छल, से की मेटल?' मीरा बुझली जे नामक प्रमाण केवल अक्षर नहि; देहक चालि, घरक भाषा, बाँचल वस्त्र, आ स्मृतिक अभ्यास सेहो प्रमाण अछि। मुदा ओ ई सेहो बुझैत छली जे समाज जकरा दबाबय चाहैत अछि, ओकरा पहिने 'अप्रमाणित' कहैत अछि।

सौम्या एहि प्रसंगक नोट बनबैत समय पहिल बेर शीर्षक लिखली — 'नामक चोरी'। फेर ओ शीर्षक काटि देली। तकरा नीचाँ लिखली — 'नामक विरुद्ध संगठित विस्मरण'। मुदा ई

वाक्य बेसी विद्वतापूर्ण बुझायल। अन्ततः ओ लिखली — 'जे मेटाओल जा रहल अछि, से नाम नहि, लोकक उपस्थिति अछि।'

ओही दिन दुपहरिया बटुकनाथ हरिहरन अपन न्यासक कागच लऽ कऽ आबि पहुँचल। ओकर चेहरा पर दुखक सुघड़ पॉलिश छल। ओ कहलक, 'देखू, एहि प्रकारक अव्यवस्थित लोक-रजिस्टरमे नाम बचत नहि। एक विधिवत् लोक-स्मृति न्यास बनू। अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष, विधिक सलाहकार। नाम तखनहि सुरक्षित रहत।'

बच्चा सभ ओकरा घेरि लेलक। अनन्या पूछली, 'जकर नाम मेटल, ओकरा अहाँ पहिने पढ़ब?' बटुकनाथ मुस्कुरेलक, 'प्रमाण हो तँ पढ़ब।' अनन्या फेर पूछली, 'जँ प्रमाण अहाँक कागचमे नहि, मुदा हमर बूढ़क कण्ठमे हो?' बटुकनाथक मुस्की कने कठोर भेल। 'भावना आ प्रमाण अलग बात छी।'

तखन आरुणि बाजल, 'भावना नहि, जीवन-साक्ष्य।' ई शब्द सुनिते ठूँठक भीतर सँ हलुक खड़क उठल। जनु सूखल जड़ि सहमत हो। बटुकनाथ कागच पलटलक। ओ कहलक, 'न्यासमे ऐतिहासिकता, दस्तावेज, विधिक स्थिति, स्वामित्व, प्रबन्ध — सभ स्पष्ट होएत।' देविका बीचमे पूछली, 'आ नाम पर स्वामित्व केकर?'

बटुकनाथ चुप। एहि चुप्पीमे ओकर पेशागत चतुराई छल। नाम पर स्वामित्व — ई प्रश्न ओहि सभ फाइलक जड़ि काटि दैत छल जाहि सँ स्मृति पर कब्जा होइत अछि। ओ अन्ततः कहलक, 'सार्वजनिक हितमे।' मीरा हँसली नहि, मुदा हुनकर आँखि काँट जेकाँ चमकल। 'सार्वजनिक हित कतेक बेर स्त्रीक देह, दलितक नाम, मजदूरक मृत्यु आ गरीबक आँसू पर चढ़ल कागचक परदा रहल अछि, ई अहाँ नीकसँ जानैत छी।'

गंगेशक छाह ओहि समय ठूँठक पाछाँ गाढ़ भेल। केओ ओकरा प्रत्यक्ष नहि देखलक; मुदा बच्चा सभक कानमे एक प्रश्न बाजल — 'सामान्य, विशेष, सम्बन्ध, अभाव — नाम कतऽ अछि?' अनन्या रजिस्टरमे लिखली — 'जे अनुपस्थित कहल गेल, ओकर अनुपस्थिति सेहो प्रमाण भऽ सकैत अछि, जँ ओकर अभाव कियो बनौलक हो।' सत्यव्रत मेहता पहिल बेर माथ उठौलनि। एहि नेनीक वाक्यमे हुनका न्यायक नव पाठ सुनाइ पड़ल।

बटुकनाथक कागच पर ओहि क्षण पसेनाक बून्द पड़ल। बून्द पसरि कऽ एक गोल निशान बनल। गोल निशान देखिते एक बच्चा फुसफुसायल — 'गोहिक आँखि।' सभ हँसल नहि। कागच पर बनल ओ गोल दाग धीरे-धीरे ओहि स्थान पर आबि टिकि गेल जतए न्यासक प्रारूपमे 'सम्पत्ति' शब्द लिखल छल।

चन्द्रपाल बत्रा दूर मोबाइल पर ई दृश्य देखैत छल। ओकर ऐपमे एक चेतावनी चमकल — 'अमान्य नाम पुनर्सक्रिय।' ओ घबरा गेल। ओकरा लग नाम केवल प्रविष्टि छल; पर एतय नाम लोकक आवाज, पाथरक गरमी, ठूँठक खड़क, आ बच्चाक प्रश्न बनि पुनः उठि रहल छल। स्क्रीनक गणना ठूँठक गवाही सँ हारि रहल छल।

साँझ धरि मेटल नाम सभक सूची बनल। कुल सात नाम। पर बच्चा सभ निर्णय केलक जे सात नामक स्थान पर सात दिन धरि नाम-पाठ होएत। प्रत्येक दिन एक नाम, आ प्रत्येक नामक संग ओ परिवार, ओ घर, ओ घटना, ओ काज, ओ रोदन, ओ गीत, ओ गलती, ओ लाज, ओ हँसी — सभ सुनल जाएत। नाम आब केवल अक्षर नहि, सम्बन्धक पूरा वृक्ष बनत।

पहिल दिन सरयू मण्डलक नाम पढ़बाक बारी आयल। मुदा जखन पाथर उठाओल गेल, ओकर नीचाँ भीजल माटिमे विचित्र आकृति छल — लहरदार, जनु छोट पोखरिक नक्शा। बा देखिते कहलीह, 'सरयू तँ पानिमे बहुत उतरैत छल।' गोप झुकि कऽ देखलनि। नक्शाक बीच एक गोल गहिराई छल। देविका फुसफुसेली, 'ई पोखरि दिस संकेत अछि?'

राति पड़ल तँ ओहि माटिक आकृतिमे हलुक जल चमकल। कटल ठूँठक चारू कात लोक ठाढ़। कियो कहलक — पानि कतऽ सँ? जमीन तँ सूखल छल। ओहि नान्हि जल-रेखासँ भीजल माटिक सोन्हगर गन्ध उठल — जेना बहुत पुरान बरखाक पहिल बून्द घुरि आयल हो। बूढ़बा भूतक आवाज अन्हारमे बहुत धीरे आयल — 'नाम जखन मेटाओल जाए, पानि ओकरा राखि लैत अछि।'

ओहि राति रजिस्टर बन्द नहि भेल। अनन्या अन्तिम पंक्ति लिखली — 'मेटल नाम पानिमे उतरि गेल अछि; काल्हि पोखरि सुनल जाएत।' पीयर लिफाफा, न्यासक प्रारूप, ऐपक स्क्रीन, सभ एक कात रहल। ठूँठक जड़ि सँ उठैत भीजल चमक चुपचाप पोखरिक दिशामे रस्ता देखबैत रहल।

अध्याय ओतय थमल, जतय नामक चोरी पानिक गवाहीमे बदलए लागल। अगिला बिहान गढ़ नारिकेलक लोक पोखरिक कात जमा होएत, आ पनिडुब्बी पहिल बेर साफ आवाजमे बजतीह — 'जे नाम पानिमे डूबल, ओकरा कागचसँ नहि मेटाओल जा सकैत।'

लोकगीत: मिटल नाम पानिमे

लोकधुन: पनिघट-विरहा

राखि लेत हे पानि, मेटल नाम पानि राखि लेत हे,
जे स्मृति काटै, ओकर चिन्ह पानियो लेखत हे।

स्क्रीनपर पकड़ायल चोरी उजरा भाग मात्र,
असल चोरी स्मृतिसँ नाम हटाबै राति।
पाथर धुँधला, जीह अटकै, रजिस्टर जागल,
सूखल जड़िसँ भीजल चमक पोखरि दिस भागल।
बूढ़बा कहै—मेटल नाम पानि राखि लेत,

कागच जरा दियौ, नदी अक्षर फेर देत।
अनन्या लिखलक—काल्हि पोखर सुनब,
पनिडुब्बीक झोँटामे डूबल नाम चुनब।
मिटल नाम रोअए नहि, जल बनि बाट देखै,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—पर्वतपर धूम- अनुमानक यात्रा: भोरमे यात्रीसभ पर्वत दिस जा रहल छल। शिखरक पाछाँ सँ धूम उठैत देखायल।]

अध्याय ७०

पनिडुब्बीक गवाही

जे ऊपरसँ नहि देखाइ छै, से पनिडुब्बीक झोंटामे बान्हल रहै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: झोँटासँ मुक्त नाम

लोकधुन: पोखरि-गीत

छोड़ाबू गे सखी, ओझरायल नाम छोड़ाबू गे,
नेहक तेल, धीरक कंघी—दुनू संग लगाबू गे।

पनिडुब्बीक झोँटामे जे नाम ओझरायल,
सखी सभ कंघी लऽ कऽ धीरे-धीरे छुड़ायल।
एक गाँठि भयक, एक लाजक, एक विस्मृत बात,
नेहक तेल लगिते खुलि जाए सभ जटिल गाँठ।

मुक्त नाम पोखरि ऊपर चान जकाँ चमकै,
जकर कथा बन्हायल छल, स्वतन्त्र स्वर दमकै।
झोँटासँ मुक्त नामकेँ पातपर घर दिअ,
ओझरायल स्मृतिकेँ सम्मानक कंठ दिअ।

एक गाँठ भयक बान्हल, एक लाजक कारी,
धीरे-धीरे सोझरबैत खुजल गाँठ सारी।
मुक्त भेल नाम पोखरि पर चान बनि हँसल,
बन्हायल कथाक कण्ठ मे स्वतन्त्र सुर बसल।

❖

बूढ़बाक ओ वचन—“मेटल नाम पानि राखि लेत”—आ अनन्याक लिखल संकल्प “काल्हि पोखरि सुनब” राति भरि गामक करेजमे धुकधुकाइत रहल। नामक चोरीक राति गढ़ नारिकेलमे कियो नीकसँ सुतल नहि। रजिस्टरक पन्ना तँ बचल छल, पाथर सभ सेहो ठूँठक चारू कात पड़ल छल, मुदा किछु नामक ऊपर जनु धुँआ लगि गेल छल। अक्षर मेटल नहि, मुदा चिन्हारि धुँधला गेल। जे नाम काल्हि स्पष्ट सुनाइ पड़ैत छल, आइ ओकर उच्चार करिते जिह्वा अटकैत छल। लोक कहैत छल—चोर कागच नहि लऽ गेल; चोर नामक स्वर चोरि लऽ गेल अछि।

अनन्या बिहानहि ठूँठक लग पहुँचि गेली। ओ रजिस्टर खोलली, पन्ना पर हाथ फेरली, आ देखली जे जे नाम गायब बुझाइ रहल छल, ओकर स्थान पर पानिक सूक्ष्म दाग पड़ल अछि। पानि राति कतऽ सँ आयल? नहि बरखा, नहि ओस एतेक मोट। बा कहलीह—ई पानि नहि,

स्मृतिक घाम अछि। मुदा गोप कुमार धीरे कहलाह—जखन नामक ऊपर षड्यन्त्र होइत अछि, तखन प्रमाण पानि खोजैत अछि।

एहि वाक्य सँ सभकेँ गंगेशक प्रश्न मोन आबि गेल। प्रमाण कोन? प्रत्यक्ष कोन? अनुमान कोन? शब्दक अधिकार केकर? गंगेश उपाध्यायक नव्य न्याय जे कागच पर बारह हजार ग्रन्थक भार जेकाँ पसारल छल, ओकर एक छोट रेशा आब चन्ना गाछीक ठूँठपर काँपि रहल छल। बच्चा सभ कहलक—जँ प्रत्यक्ष धुँधला कएल जाए, तँ पानिमे प्रतिबिम्ब देखब।

तखन निर्णय भेल जे नामक चोरीक गवाही ठूँठपर नहि, पोखरि पर लेल जाएत। गामक पछिला धार, जतय बरखाकालमे कमला-बलानक पानि घुसि पोखरि बनि जाइत छल, ओहि ठाम लोक संझा जमा भेल। ओ पोखरि साधारण नहि छल। बूढ़ सभ कहैत छल जे ओतए पनिडुब्बी रहैत अछि—नारी कि पुरुष, भूत कि जीव, कियो निश्चय नहि कहि सकैत। जे पानिमे डूबल नाम सुनैत छल, से तलसँ बुलबुला बनि उत्तर दैत छल।

चन्द्रपाल बत्राक लोकसभ सेहो दूर सँ देखैत छल। हुनका सभकेँ लगैत छल—नाम मेटयबाक असल पद्धति लोकक स्मृतिमे संशय भरब अछि। एक बेर लोक स्वयं कहए लागल जे कदाचित नाम ओतबा जरूरी नहि, तखन चोरी सफल। मुदा एखन लोक पोखरि दिस जा रहल छल। चोर सभकेँ ई बात असह्य लगल—जे चीज कागचसँ हटाओल गेल, से पानिमे किएक खोजल जाए?

पोखरिक कछार पर मीरा पहिने नियम पढ़ली—ककरो चेहरा बलजोरी नहि देखाओल जाएत, ककरो रोदन चित्रित नहि होएत, ककरो दुखक व्यापार नहि बनत। देविका जोड़ली—जे नाम पढ़ल जाएत, ओकर परिवार चाहे तँ बोलत, नहि तँ पानि स्वयं उत्तर देत। सत्यव्रत मेहता पाछाँ बैसल रहलाह, अपन स्याहीकलम खोललनि नहि। सुननाइ केँ लिखबाक जल्दी फेर मौनक अपराध बनि सकैत छल।

संध्याकालक धूप पानिमे ढलि रहल छल। कछारक भीजल माटिसँ सोन्हगर गन्ध उठैत छल आ नरकटक पात सभ बिनु हवोक धीरे-धीरे सिहरैत छल, जेना पोखरि अपन साँस रोकने हो। अनन्या पहिल धुँधलायल नाम पढ़ली। शब्द पूरा निघरल नहि। जिह्वा ओहि ठाम अटकि गेल जतय रजिस्टरमे पानिक दाग छल। लोकक कलेजा अटकि गेल। तखन पानिक तलसँ एक गोल बुलबुला उठल। बुलबुला फूटल नहि; ओ सतह पर आबि ठहरि गेल आ ओकर भीतर अक्षर जेकाँ किछु चमकल। बालक सभ एक संग देखलक—नाम पूरा छल।

कियो कहलक—भ्रम। कियो कहलक—जादू। सत्यव्रत मेहता पहिल बेर बजलाह—“जँ समाजक लिखल अक्षर झूठ भेल, तँ प्रकृतिक प्रतिबिम्ब सेहो प्रमाण बनि सकैत अछि।” ओ तुरन्त चुप भऽ गेलाह। कारण ओ बुझैत छलाह जे एहि वाक्यक बादो निर्णय हुनकर नहि, लोकक अछि।

दोसरा नाम पर पोखरिक सतह काँपल। एहि बेर बुलबुला नहि, एक पात ऊपर उठल—सड़ल, भीजल, मुदा ओकर नस-रेखामे नामक ध्वनि दौड़ैत। बच्चा सभ पात पर अक्षर देखय चाहलक, मुदा पात खाली छल। बा कहलीह—सभ प्रमाण आँखिसँ नहि पढ़ल जाइत; किछु कानसँ पढ़ल जाइत अछि। तखन सभ चुप भेल। पात सँ धीमे स्वर उठल। जे नाम रजिस्टरसँ धुँधलायल छल, से पातक भीतर सँ उच्चरित भेल।

एहि क्षण गोप कुमारकेँ अपन डिजिटल फाइल सभ मोन आयल। फाइलक नकल, सर्वरक नकल, ई-मेलक नकल—सभ पर भरोस छल, मुदा एतय पानिक नकल चलि रहल छल। ओ सोचलाह—जे समाज शोषितक कागच छीनि लेत, ओ पानि नहि छीनि सकैत। जे पानि छीनत, ओ हवामे नाम उगि जाएत। जे हवा रोकत, ओ बच्चाक कंठमे प्रवेश करत। ई गवाहीक शृंखला अछि, जे कोनो विभागक मोहर पर निर्भर नहि।

तहिये पनिडुब्बीक पहिल स्पष्ट संकेत आयल। पोखरिक बीचमे गोल अन्हार बनल। ओ अन्हार भयावह नहि, गहिर छल। जनु पानिक नाभि खुलि गेल हो। ओहि नाभिसँ एक स्वर उठल—न पूर्ण स्त्री, न पुरुष, न बालक, न बूढ़; सभ स्वरक जोड़। स्वर सुनिते किनारक भीजल हवा एकाएक ठंढा भऽ गेल; लोकक देहक रोइयाँ ठाढ़ भऽ गेल। ओ कहलीह—“जे नाम पानिमे डूबल, ओकर प्रतिबिम्ब चोराएल नहि जा सकैत।”

लोक थरथरा गेल। कतेको बरख बाद पनिडुब्बी स्वयं बाजल छलीह। बूढ़बा भूत, जे किनारक नरकटमे लुकायल छलाह, माथ झुका देलनि। हुनका बुझायल जे जीवित लोक आब सचमुच सुनब सीखि रहल अछि; तें पानि सेहो बोलए लागल।

अनन्या साहस जुटा कऽ पूछली—“जे नाम कखनो लिखले नहि गेल?” पानिक नाभि फेर गहिर भेल। स्वर आयल—“जे नाम लिखल नहि गेल, ओकर भार सभ लिखल नाम सँ बेसी होइत अछि। पहिल पाथर ओकरे राखू।” बच्चा सभ एक दोसराक चेहरा देखलक। ठूँठक लग जे पाथर पर लिखल छल ‘जेकर नाम नहि भेटल’, ओकर अर्थ आब पोखरि सँ मान्यता पाबि गेल।

मीरा पूछली—“जे नामक संग देहक अपमान जुड़ल, आ परिवार नहि चाहैत जे ओ सार्वजनिक हो?” पनिडुब्बी उत्तर देलीह—“नामक रक्षा करब, दुखक प्रदर्शनी नहि। पानि चेहरा देखबैत अछि, मुदा अनुमति बिनु छवि किनार पर नहि लाबैत।” एहि उत्तर पर मीरा दीर्घ साँस लेली। निजताक शपथ आब नदीक नियम बनि गेल छल।

देविका पूछली—“जे स्क्रीनमे मरल, ओकर नाम पानिमे कोना आएत?” पनिडुब्बी हँसलीह कि पानि काँपल, कियो निश्चय नहि करि सकल। स्वर आयल—“स्क्रीन सेहो पानिक नकल अछि—चमकैत सतह, भीतर अन्हार। जे मोन ओहि चमकमे डूबल, ओकर बुलबुला एतय सेहो उठैत अछि।” उज्ज्वलक माय अपना आँचल सँ मुँह दाबि लेलीह।

तखन एक विचित्र घटना भेल। चन्द्रपाल बत्राक श्रद्धांजलि-अनुप्रयोगमे जे नकली दान-पृष्ठ बनाओल गेल छल, ओकर छवि गोपक मोबाइलमे अपने खुलि गेल। गोप चौंकलाह, मुदा तुरन्त मोबाइल पानिक दिशामे झुका देलाह। स्क्रीनक झूठ पानिक सतह पर पड़िते टूटि गेल। अक्षर उनटा भऽ गेल, नाम सभ अलग भऽ गेल, खाता सभ कारी माछ जेकाँ भागय लागल। पनिडुब्बी कहलीह—“जे नाम सँ कमाइत अछि, ओकर हिसाब पानि नहि राखैत; ओकरा कीचड़ राखैत अछि।”

सत्यव्रत मेहता एहि बेर स्याहीकलम निकाललनि, मुदा लिखलनि नहि। ओ कलम पानिक कछार पर राखि देलनि। बच्चा सभ बुझि गेल—गवाही पहिने पानि सँ उठत, फेर कागच पर जाएत। कानून कैँ स्मृति पर चढ़ि बैसबाक अधिकार नहि; ओकरा स्मृतिक पाछाँ चलबाक विनय सीखय पड़त।

एहि गवाहीक बाद नाम-पाठ फेर शुरू भेल। प्रत्येक धुँधलायल नामक संग पानि कोनो ने कोनो चिह्न देलक—बुलबुला, पात, माछक काँप, चन्द्रमाक टूटल प्रतिबिम्ब, किनारक भीजल माटि, दूरक बगुलाक पंख। बच्चा सभ ई सभ चिह्न रजिस्टरमे लिखैत गेल। आब रजिस्टर केवल अक्षरक नहि, प्रकृतिक उत्तरक सेहो अभिलेख बनि गेल।

राति गाढ़ भेल तखन पनिडुब्बीक स्वर अन्तिम बेर उठल—“नाम कैँ केवल बचाउ नहि, ओकर खेल सेहो बचाउ। जे नाम खेल छोड़ि देत, ओ स्मारक बनि जायत। जे नाम कबड्डी खेलत, ओ साँस बनि रहत।” एहि वाक्य पर बच्चा सभ एकाएक चौकन्ना भेल। कबड्डी! चन्ना गाछीक कटानक बाद कतेको दिन खेल आधा-अधूरा रहल छल। पनिडुब्बी स्वयं खेलक बात किएक कहि रहल छलीह?

बूढ़बा भूत नरकटसँ बाहर आबि एक क्षण लेल साफ देखेलाह। ओ धीमे कहलनि—“जतए साँस रोकल जाए आ नाम पुकारल जाए, ओतए गवाही जीवित रहैत अछि। कबड्डी बन्द भेल तँ नामक पहरा बूढ़ भऽ जायत।” ई कहि ओ फेर धुँआ भऽ गेलाह। बच्चा सभक आँखिमे अगिला खेलक चमक घुरल।

किनार पर ठाढ़ किछु बाहरी लोक, जे विरासत-परियोजनाक दलाल सभसँ जुड़ल छल, ई सभ सुनि अपनामे फुसफुसाएल। हुनका सभक माथमे तत्क्षण एक नब विचार आयल—जँ लोक असल भूतक कबड्डी देखय चाहैत अछि, तँ ओकर टिकट काटल जा सकैत अछि। जँ पनिडुब्बीक कथा बिकैत अछि, तँ ओकर मंच बनाओल जा सकैत अछि। स्मृतिक बाजार फेर अपन नख पैना करए लागल।

अगिला बिहान गामक देबाल पर नब पोस्टर चिपकल भेटल—“चन्ना गाछी भूत-कबड्डी महोत्सव: अद्भुत लोक-अनुभव, प्रकाश, ध्वनि, अभिनय, पनिडुब्बी दृश्य।” पोस्टरक नीचाँ छोट अक्षरमे कम्पनीक नाम छल, आ ओकर पाछाँ चन्द्रपालक लोकक गन्ध। अनन्या पोस्टर पढ़ि चुप रहली। पोस्टरक ताजा लेइक गन्ध अखनो हवामे छल—शहरक गन्ध, जे गामक भोरक सोन्हपर चढ़ि जाय चाहैत छल। फेर ओ पोखरिक पानि दिस ताकली। सतह बिलकुल शान्त छल, मुदा भीतर कतहु गहिर अन्हार मुस्कुरा रहल छल।

एहि तरहेँ पनिडुब्बीक गवाही समाप्त नहि भेल। ओ उनटे अगिला खतरा खोलि गेल—जे स्मृति पानि सँ बचल, ओकरा बाजार आब अभिनय बनाबय चाहैत छल। आ चन्ना गाछीक कबड्डी, जे साँसक सत्य छल, आब नकली भूतक जुलूसमे बदलएबाक तैयारीमे छल।

लोकगीत: पनिडुब्बीक झोँटामे नाम

लोकधुन: पोखरि गीत

बचाउ हे बचाउ, नाटक सँ नाम बचाउ हे,
स्मृतिक साँसकेँ धुँआ-प्रकाश मे ने बिकाउ हे।

ऊपर धुँधला, भीतर झोँटामे नाम बन्हायल,
जिह्वा अटकिते पोखरि गवाही सुनायल।
कागच मेटा सकै, पानि नहि बिसरै,
गहराइमे अक्षर माछ जकाँ जीबैत फिरै।
मुदा बाजार सुनलक—दुखक मंच बनत,

भूत-कबड्डी महोत्सवमे टिकट फेर कटत।
पनिडुब्बी कहली—हमर रोदन अभिनय नहि,
मृतकक भय तमाशा, तोहर कमाइ नहि।
पोखरि बचेलक नाम, आब नाटकसँ बचाउ,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—तप्त लौह पिण्ड: लोहारक भट्ठीमे लौह पिण्ड लाल भऽ चमकि रहल छल। नव शिष्य घोषणा कएलक, "जतय अग्नि, ओतय धूम; अतः एहि पिण्डसँ धूम उठत।" गुरु ओकरा किछु देर देखय देलनि।]

अध्याय ७१

नकली भूतक जुलूस

नकली भूतक जुलूसमे धुँआ किरायापर अबै छै, आ असली गाछी हँसि दै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: असल भूत चिन्हू

लोकधुन: लोक-व्यंग्य झूमर

चिन्हू हो संगी, असल भूतकेँ चिन्हू हो,
भाड़ाक नाचक पाछाँ के छै—ई गिनू हो।

भाड़ाक भूत नाचि सकै, धुँआ खूब पसारै,
असल भय तखने भागै जखन बुद्धि दीप जारै।
भेस, अफवाह, नकली चमत्कारक चाल बुझू,
प्रमाण, प्रश्न, हँसीक संग साँचक बाट चुनू।

भूतसँ नहि, अज्ञानसँ समाज बेसी डेराइ,
ज्ञानक ढोल बजिते नकली छाह भागि जाइ।
असल भूत लोभ-छल, ओकर नाम पुकारू,
व्यंग्यक उज्जर हँसीसँ डरक बाजार उतारू।

धुँआ उड़ए, डम्फ बाजए, नकली भेस भारी,
बुद्धिक दीप बरिते भागए छाया सारी।
लोभ-छल-अफवाहे थिक असली भूतक नाम,
हँसीक ढोल पीटि कऽ करू डरक बाजार निलाम।

❖

पोस्टरक ओ ताजा लेइक गन्ध एखन सुखाइयो नहि सकल छल कि महोत्सवक तैयारी गाम धरि पहुँचि गेल। पनिडुब्बीक गवाहीक दोसर दिन गढ़ नारिकेलमे एकटा नब गाड़ी आयल। गाड़ीक देह पर चमचम करैत अक्षरमे लिखल छल—“चन्ना गाछी रात्रि-अनुभव: भूत-कबड्डी जुलूस।” अक्षरक नीचाँ धुँआ उठैत चित्र छल, आधा पारदर्शी मनुख, पाछाँ कटल ठूँठ, आगाँ दीप, आ कोनामे छोट वाक्य—“भय, विरासत आ मनोरंजनक अद्वितीय संगम।” जे बात एतय लोकक मुँहमे काँपैत नाम बनि उठैत छल, से बाहरक लोकक विज्ञापनमे “अनुभव” बनि गेल।

गाड़ी सँ पहिने उतरल एक युवक, गलामे चिन्हारि-पत्र, हाथमे कागचक मोड़। ओ नगरपालिकाक अनुमति-पत्र देखबैत कहलक, “एहि कार्यक्रमसँ स्थानीय रोजगार बढ़त, पर्यटन बढ़त, स्मृतिक प्रचार होएत।” ओकर पाछाँ मेकअपक बक्सा, कृत्रिम धुँआक डिब्बा, ढोलक, इजोत, कारी-उज्जर कपड़ा, आ पाँच गोट कलाकार उतरल। कलाकार सभमे दू गोट

गामक बेरोजगार युवक छल, एक नाटक-दल सँ आयल, एक शहरक नाच-शिक्षक, आ एक बालक जे कखनो चन्ना गाछी रातिमे देखनो नहि छल।

अनन्या दूर सँ देखैत रहली। ओकर हाथमे रजिस्टर छल। ओ किछु नहि कहली। ईरा पूछली, “रोकी?” अनन्या माथ हिलौली—“पहिने देखब। जे नकली अछि, ओकरो अपन प्रमाण देबए पड़त।” गंगेशक प्रश्न पछिला अध्याय सँ बच्चा सभक बोलीमे बसि गेल छल। आब गामक बालक सभ ‘प्रत्यक्ष’, ‘अनुमान’, ‘शब्द’ कहि खेलै छल, मुदा खेल मात्र नहि; ई सभ ओकरा सभक बचावक औजार बनि रहल छल।

दुपहरिया धरि ठूँठक चारू कात बाँसक छोट चौकोर मंच बनि गेल। माटि पर चूना सँ रेखा खिंचल गेल—एहि पार दर्शक, ओहि पार कलाकार। कटल जड़िकेँ पाछाँ रखि ओहि पर नील इजोत मारबाक युक्ति बनाओल गेल। जे जड़ि लोकक आँसुमे भीजल छल, ओकरा आब पृष्ठभूमि बनाओल जा रहल छल। देविका बड़ धीमे स्वरमे कहली, “जकरा हम सभ घाव कहैत छी, ओकरा ई सभ सजावट कहैत अछि।”

मीरा आयोजककेँ रोकि पूछली, “जुलूसमे जे मृतकक नाम ली, तकर परिवार सँ अनुमति लेने छी?” आयोजक पहिने मुस्कुरेलक, फेर चकित भेल। ओकर प्रशिक्षणमे ई प्रश्न नहिये छल। ओ कहलक, “नाम नहि लेब, केवल वातावरण बनाओब।” मीरा उत्तर देली, “वातावरण ककर? जे लोक डूबि गेल, ठगल गेल, चुप कराओल गेल, हुनकर पीड़ा बिनु हुनकर नामक वातावरण बनाओब—ई चोरबाक नब ढब अछि।”

साँझ उतरिते टिकट-जेकाँ पर्ची बाँटल गेल। जे लोक भीतर बैसत, से ‘विशेष अनुभव’ पाओत। गामक किछु युवक लोभेँ भीतर चलि गेल। किछु बाहरी कैमरा लऽ कऽ आयल। बच्चा सभ टिकट नहि लेल; ओ सभ ठूँठक दोसरा कात, पाथरक नाम-घेरा लग बैसल। अनन्या रजिस्टर खोलली। ओहि पन्नापर लिखल—“आइ नकली भूतक प्रत्यक्ष-परीक्षा।”

कार्यक्रम शुरू भेल। धुँआ उठल। ढोलक पर धीमा थाप लागल। थापक स्वर खोखर छल—जेना खाली कोठीपर हाथ पटकल जाइत हो; ओहिमे ओ धुकधुकी नहि छल जे असल खेलक साँसमे रहैत छल। कलाकार सभ कारी कपड़ा ओढ़ि, देह पर चूना-सदृश रंग लगा, अर्धनग्न भूत जेकाँ मुड़ि-मुड़ि चलए लागल। एकजना ठेहुन टेकैत ‘कबड्डी-कबड्डी’ कहलक, मुदा ओकर साँस बीचमे टूटि गेल। दोसर हँसल। आयोजक हाथ सँ संकेत देलक—“गंभीर रहू।” दर्शकमे किछु लोक रोमांचित, किछु लज्जित, किछु उदास बैसल।

भूतक असल कबड्डीमे साँसक एक रस्सी होइत छल। खेलाड़ी जखन 'कबड्डी' कहैत धरती पर उतरैत, ओकर स्वर देहक भीतर सँ नहि, कतेको अदृश्य नामक बीच सँ निकलैत। एहि नकली खेलमे शब्द छल, साँस नहि। चिल्लाहट छल, पुकार नहि। धुँआ छल, पानिक गन्ध नहि। चूना छल, मृत्यु आ मुक्ति बीचक काँप नहि। बच्चा सभ एक-एक कऽ चिन्ह लिखैत रहल—"साँस टूटल", "नाम नहि", "माटि उत्तर नहि देलक।"

तखन मंचक पाछाँ एक कलाकार, जकरा भूत बनबाक भूमिका देल गेल छल, अचानक ठिठकल। ओकर पएर ठूँठक उघारि जड़िक एक रेखा पर पड़ि गेल छल। ओ रेखा अदृश्य रूपेँ गरम छल। कलाकारक मुँह सँ अभ्यासक संवाद नहि, ओकर अपन बाबाक नाम निकलि गेल। सभ चौंकि गेल। ओ बाबू ई गामक नहि, दूर जिलाक खदानमे मरल मजदूर छल। आयोजक दौड़ि आयल—"स्क्रिप्ट सँ बाहर नहि जाउ!" मुदा कलाकार कानि उठल।

ओकर रोदन जुलूसक कृत्रिम धुँआकेँ काटि देलक। जे दर्शक भय देखए आयल छल, ओकर सोझाँ एक असल दुख ठाढ़ भऽ गेल। बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखलक—"झूठक भीतरसँ अनचिन्हार साँच निकलल।" अनन्या ओ कलाकारक लग गेली। कहली, "नाम पूरा कहू।" कलाकार काँपैत-काँपैत नाम कहलक। ओ नाम चन्ना गाछीक मूल अभिलेखमे नहि छल। बच्चा सभ पाथर मँगाओलक। पाथर पर ओहि नामक पहिल अक्षर लिखल गेल।

एहि क्षणक बाद नकली जुलूसक अनुशासन टूटि गेल। दोसर कलाकार कहलक जे ओकर मायक नाम विधवा-पेंशनक सूची सँ गायब भेल छल। तेसर कहलक जे ओकर मामाक देह शहरक अस्पतालमे बिल चुकाबय धरि रोकल गेल छल। नाच-शिक्षक कहलक जे ओ भूत बनि रोजी कमए आयल, मुदा ओकर अपन प्रेमक नाम समाजक डर सँ कखनो बोलल नहि गेल। मंच पर अभिनय धीरे-धीरे गवाहीमे बदलए लागल।

आयोजक घबरायल। ओ धुँआ बन्द करबाक कहलक। इजोत तेज कएल गेल। ढोलक रुकल। मुदा आवाज रुकल नहि। दर्शकमे बैसल लोक सभ सेहो कहए लागल—"हमर घरमे सेहो..."; "हमर भाइक नाम..."; "हमर पतिक कागच..."; "हमर बेटी..."। जे कार्यक्रम टिकट लगा कऽ भय बेचबाक छल, से बिनु टिकट नाम-सुननाइ बनि गेल।

एहि सभ बीच असल भूत सभ कतऽ छल? ओ सभ खेल रोकि दैत कि नाचि उठैत? कियो देखलक नहि। मुदा बा बादमे कहलीह जे ओहि राति असल भूत सभ पानिक कगार पर बैसल छल, ठेहुन मोड़ि, ठुड्डी राखि, चुपचाप। ओ सभ क्रोधित नहि छल। कदाचित ओ सभ देखैत छल जे मनुष्य नकली भूत बनैत-बनैत अपन असल मृतक धरि पहुँचि रहल अछि।

बूढ़बा भूत मात्र एक बेर झलकलाह। ओ नकली मुखौटा लगौने बालकक पाछाँ ठाढ़ भऽ गेलाह। बालक 'हाऽऽऽ' कऽ डरावन आवाज निकालऽ चाहैत छल, मुदा ओकर आवाज बदलि गेल—"उपस्थित।" ओ अपने डरि गेल। दर्शकमे निस्तब्धता। बच्चा सभ तुरन्त उत्तर देलक—"उपस्थित।" नकली मुखौटाक आँखि सँ पसेना झरऽ लागल। कलाकार बालक मुखौटा उतारि देलक।

एहि क्षण गंगेशक न्याय ठूँठक चारू कात फेर उतरि आयल। प्रत्यक्ष—कलाकार देखाइत छल। अनुमान—धुँआ आ कपड़ा सँ भूतक आभास बनाओल गेल। शब्द—विज्ञापन कहैत छल 'भूत-कबड्डी'। मुदा प्रमाणक चारिम धारि—दुःखक साक्षी—जखन जागल, तखन सभ झूठ पाछाँ हटि गेल। बच्चा सभ अपन भाषामे निष्कर्ष निकाललक—"भूत ओ नहि जे डराए; भूत ओ जे नाम नहि भेटलाक कारण घुरैत अछि।"

देविका आयोजकसँ कहली, "आब एहि कार्यक्रमक पैसा जकरा सभसँ लेल गेल, ओ घुरा दियौ।" आयोजक कहलक, "अनुमति, कर, खर्च—" मीरा काटि देली, "मृतकक भय बेचबाक कर कोन खातामे जमा होइत अछि?" लोकक आँखि ओकरा दिशामे उठल। आयोजक पहिल बेर बुझलक जे भीड़ ग्राहक नहि, समुदाय बनि गेल अछि। ओ बिनु बहस पर्चीबला डिब्बा खोललक। पैसा घुरए लागल।

मुदा कथा एतय समाप्त नहि भेल। राति गहरायलाक बाद कलाकार सभ ठूँठक चारू कात बैसल रहल। हुनका सभकेँ कियो नहि भगौलक। अनन्या कहली, "झूठक काम कएलहुँ, मुदा नाम साँच कहलहुँ। आब अहाँ सभ अभिनय नहि, पहरा सीखू।" ओ सभ माथ झुकौलक। नकली भूतक कपड़ा एक-एक कऽ उतारि पाथरक पास राखल गेल। कारी कपड़ा हवामे उड़ैत नहि, भीजल कपड़ा जेकाँ भारी भऽ गेल। नील इजोतक बुझायल बल्ब एखनो कने-कने गरम छल; ओकर काँचपर रातिक पतंगा सभ बेकार माथ पटकैत छल।

चन्द्रपालक श्रद्धांजलि-अनुप्रयोगमे एहि रातिक फोटो अपलोड करबाक प्रयास भेल। चित्र खुलैत छल, मुदा कलाकारक चेहरा धुँधला आ पाथरक नाम साफ देखाइत। राघव सिग्नलक कोडमे एहि घटनाकेँ 'भावनात्मक जोखिम' कहल गेल। ब्रूमक दलक रिपोर्टमे लिखल गेल—"अनुभव-डिजाइनक विरुद्ध स्थानीय प्रतिरोध।" मुदा गढ़ नारिकेलक बच्चा सभक रजिस्टरमे केवल लिखल गेल—"नकली जुलूस असल नाममे बदलल।"

मध्यरातिक बाद, जखन सभ थाकि गेल, ठूँठक भीतर सँ एक क्षीण आवाज उठल। से रोदन नहि छल, न हवा, न पातक खरखर। पहिने तँ सभकेँ भ्रम भेल। फेर आवाज दोहरायल—

कने कुटिल, कने स्नेहपूर्ण, कने व्यंग्य भरल। चन्ना गाछीक ठूँठ हँसल। ओ हँसी पातक खरखराहट सन नहि; जेना सूखल काठक भीतर कतहु पुरान पानि हिलल हो—धीम, गहिर आ कनेक तीत।

कियो कहलक—“गाछि हँसल?” बा उत्तर देलीह—“हँ, जखन स्मृति बिकए लागैत अछि आ फेरो बचि जाइत अछि, तखन गाछि हँसैत अछि।” बच्चा सभ चौंकल नहि। ओ सभ अगिला पन्ना खोललक। शीर्ष पर लिखलक—“चन्ना गाछीक हँसी।”

लोकगीत: भाड़ाक भूत

लोकधुन: लोक-व्यंग्य गीत

जाउ हे भाड़ाक भूत, चलि जाउ हे,
असल छाह रहत—जकर दुख, से ने सहत हे।

धुँआ भाड़ापर आयल, नकली भूत नाचल,
असल गाछी भीतरसँ कुटिल हँसी हँसल।
भय, विरासत, मनोरंजन—तीन रंगक पाट,
मृतकक करुणा बेचए सजल रातिक घाट।
बच्चा तमाशा रोकलक, पाथर नाम चमकल,

बजारक जुलूस अपनहि धुँआमे दमकल।
ठूँठ हँसल—स्मृति बिकब चाहल, फेर बचल,
जड़िक आवाज सत्ता-बाजारक कानमे पसरल।
भाड़ाक भूत चलि जाउ, असल छाह रहत,
जकरा नामक दुख अछि, ओ तमाशा नहि सहत।

नेना तमाशा रोकलक, पाथरक नाम चमकल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—देवदत्तक रातिक भोजन: देवदत्त मोटगर छल, मुदा गामक सभ लोक कहैत छल जे ओ दिनमे किछु नहि खाइत अछि। जे व्यक्ति कखनो नहि खाइत,

ओ पुष्ट नहि रहैत; देवदत्त पुष्ट अछि आ दिनमे नहि खाइत, अतः आन समय भोजन करैत अछि।”
राति मित्र जागल रहल।]

अध्याय ७२

चन्ना गाछीक हँसी

ठूँठक हँसी खोखलक नहि— बचल जड़िक आवाज थीक।

अध्यायारम्भ लोकगीत: ठूँठक हँसीसँ कोंपल

लोकधुन: हरियरनी गीत

हरियर हे हरियर, ठूँठो हरियर हेतै हे,
हँसैत जड़िक भरोसे कोंपल फेर भेटतै हे।

ठूँठ हँसल भीतरसँ—जड़ि एखन जीवित,
पहिल वर्षा पड़िते कोंपल होएत उपस्थित।
खोखल कहि नहि छोड़ू, नमी ओकरा दिअ,
कटल गाछक स्मृतिसँ नव वनकेँ प्राण दिअ।

ठूँठक हँसी व्यंग्य नहि, धैर्यक मधुर बोल,
विनाशक बादो जीवन खोजि लैत अछि ठौर।
कोंपल फूटत, पात हिलत, चिड़िया घुरि आए,
ठूँठक हँसीसँ पूरा गाछी फेर हरियराए।

खोखल कहि जे छोड़ल, से आधा टा जानल,
भीतर रसक धार बहए, ई ककरो ने मानल।
नमी दिअ, पहरा दिअ, गीत गाबि सींचू,
कटल गाछक छाती पर नव गाछीक चित्र खिंचू।

❖

बच्चा सभक रजिस्टरक नब पन्ना पर लिखल शीर्ष—"चन्ना गाछीक हँसी"—भोर होइत-होइत अपन कथा अपने कहए लागल। नकली भूतक जुलूस टूटलाक बाद जे हँसी उठल छल, से एक रातिक घटना भरि नहि रहल। भोर धरि ओ हँसी ठूँठक भीतरी कोटरमे फँसल हवा जेकाँ गूँजैत रहल। पहिने लोक सोचलक—कटल जड़िमे कतहु खोखल भाग होएत, ओहीमे पवन लगैत होएत। मुदा पवन बन्द भेलाक बादो हँसीक सूक्ष्म कंपन ठूँठक चारूकात पसरल रहल। जे पाथर पर नाम लिखल छल, ओकर सतह पर ओ कंपन अतिसूक्ष्म रेखा बनि चढ़ैत गेल।

सूर्योदयक पहिल प्रकाशमे बच्चा सभ पाथर देखए आएल। किछु नामक अक्षर गाढ़ भऽ गेल छल, किछु अधूरा नामक पास नव बिन्दु उगि आयल छल। अनन्या अपन उँगुरी सँ एक बिन्दु छुली; ओ गरम नहि, मुदा जीवित छल। उँगुरीक पोरपर एक्के संग भोरक ओसक शीतल आ

पाथरक सूखल खरखर लागल—जेना जीवन आ स्मारक एक्के सतहपर बैसल हो। ओ कहली, “गाछि हँसल नहि, गाछि उत्तर देलक।” ई वाक्य सुनिते बा धीरे कहलीह, “कतेको बेर उत्तर रोदनमे नहि, हँसीमे अबैत अछि। जँ पीड़ा बिकए लगए, तँ स्मृति उपहास करैत अछि।”

नगरपालिकाक लिपिक सभसँ पहिने घबरायल। हुनका सभक पीयर सूचना-पत्रक बाद जे ठाम ‘सौंदर्यीकरण’ मानल गेल छल, से आब ‘हँसैत ठूँठ’ कहाइ लागल। फाइलमे नब टिप्पणी लिखल गेल—“स्थलपर अवैज्ञानिक अफवाह पसरि रहल अछि, जनसमूह नियंत्रण आवश्यक।” मुदा जे अफवाह कहल गेल, से लोकक कानमे प्रमाण जेकाँ ठहरि रहल छल। चन्ना गाछीक हँसीक सोझाँ सरकारी भाषा ओतेक असहाय लागल जेना सूखल पात बाढ़िक विरुद्ध आदेश जारी करए।

गंगेशक प्रश्न एहि बेर फेर घुरल। अनन्या बच्चा सभसँ पूछली—“हँसीक प्रमाण कोन?” एक बालक कहलक—“प्रत्यक्ष, कारण हम सुनलहुँ।” दोसर कहलक—“अनुमान, कारण पाथरक अक्षर बदलल।” तेसर—“शब्द, कारण बा कहलखिन।” चारिम नेनी, जे सदिखन कम बोलैत छल, कहली—“दुःख जखन बिकए सँ इनकार करै, ओहि क्षण जे आवाज उठै, से न्यायक प्रमाण।” सभ चुप भऽ गेल। कोनो शास्त्रमे ई परिभाषा नहिये छल, मुदा ठूँठक चारूकात ई मान्य भेल।

सौम्या एहि उत्तरकेँ लिखए चाहली, फेर हाथ रोकि लेली। ई उत्तर शोध-पत्रक उद्धरण बनए योग्य छल, मुदा ओहि क्षण ओकरा उद्धृत करब ओकर गरिमा घटएबाक खतरा छल। ओ नेनी सँ पूछली, “लिखि दी?” नेनी पूछली—“जे पढ़त, से सुनत सेहो?” सौम्या उत्तर नहि दऽ सकली। ओ कागच बन्द कऽ देली। एहि गाममे सीख धीरे-धीरे विद्वत्ता सँ पैघ भऽ रहल छल।

चन्द्रपाल बत्राक स्मारक-अनुप्रयोग हँसीक ध्वनि पकड़ए चाहलक। रातिक बचल ध्वनि अपलोड करबाक लेल ओकर दल गुप्त यंत्र लगौलक। मुदा रेकॉर्डमे केवल खालीपन आयल। जखन ओ खालीपन सुनल गेल, प्रत्येक सुनएबला अपन-अपन अपराधक नाम सुनलक। चन्द्रपालक कानमे सुनायल—“प्रतिशत।” ओकर सहायकक कानमे—“फर्जी श्रद्धांजलि।” एक तकनीकी बाबूक कानमे—“डिलीट कएल सूची।” यंत्र चुप छल, मुदा मौन अभियोग बनि गेल।

राघव ‘सिग्नल’ सोमानी एहि घटनाकेँ कोडमे बदलए लागल। ओकर संदेश छल—“हँसी = भीड़-जोखिम; कथा-नियंत्रण आवश्यक; भूत-जुलूस असफल, भावनात्मक सत्य सक्रिय।” मुदा जखन ओ ‘कथा-नियंत्रण’ लिखलक, शब्द अपने आप बदलि ‘कथा-प्रतिकार’ भऽ गेल।

ओ तीन बेर मेटेलक, तीन बेर फेर वैह लिखल आएल। गायब होएबला संदेश गायब नहि भेल; पातक नस जेकाँ स्क्रीनपर अटल रहि गेल।

एडवर्ड ब्रूमक दलक रिपोर्टमे चन्ना गाछीक हँसीकेँ ‘स्थानीय प्रतिरोधक ध्वनिक चिन्ह’ कहल गेल। ब्रूमक सलाहकार कहलक—“एकरा सकारात्मक रूपमे उपयोग कएल जा सकैत अछि: सामुदायिक उपचार, स्मृति-पर्यटन, ध्वनि-स्थापना।” ब्रूम खिड़की लग ठाढ़ रहि सुनैत छल। ओकरा लागल, दूर कतहु सँ कियो हँसल। ओ मुड़ि देखलक—कमरा खाली। फेर ओकरा अपन हार्वर्ड भाषणक तालियाक भीतर वैह हँसी सुनायल, जे तालिकेँ खोखल करि रहल छल। ओ घोंट लेलक तँ हाथक कॉफी अचानक माटिक स्वाद देलक।

मीरा ठूँठ लग सूचना लिखि टाँगली—“हँसीक कोनो स्वामी नहि। मृतकक पीड़ा, जीवितक गवाही, आ स्मृतिक ध्वनि केओ बेचि नहि सकैत।” किछु लोक पूछलक—“हँसी पर सेहो निजताक अधिकार?” मीरा कहली—“जँ रोदनक छवि बेचब अपराध अछि, तँ हँसीक अर्थ बेचनाइ सेहो अपराध अछि। ई हँसी मनोरंजन नहि, अस्वीकार अछि।” ई वाक्य ओहि दिन सँ नाम-पहराक नब नियम बनि गेल।

दुपहरिया धरि बाहरक पत्रकार आयल। कियो पूछलक—“की गाछि सचमुच हँसैत अछि?” अनन्या उत्तर देली—“अहाँकेँ सचमुच चाही कि तमाशा?” पत्रकार मुस्कुरायल, मुदा प्रश्न ओकर नाक पर अटकि गेल। ओ कैमरा नीचाँ कऽ देलक। दोसर पत्रकार बच्चा सभक लग गेल आ पूछलक—“एहि ठामक मुख्य कथा की अछि?” एक बालक कहलक—“मुख्य कथा नहि, अनेक नाम अछि। अहाँ मुख्य बनौने छी तें बाकी सभ काटि देल जाइत अछि।”

एहि उत्तरक बाद पत्रकार सभकेँ पहिल बेर बुझाइ पड़ल जे गढ़ नारिकेल खबर नहि, परीक्षा अछि। जे सुनए बिनु लिखत, से झूठ लिखत। जे केवल विचित्रता लिखत, से चोरी लिखत। जे हँसी लिखत मुदा ओकर कारण नहि, से बाजारक भाषा दोहराएत। ओहि दिन कतेक नोटबुक खाली घुरल। खाली नोटबुक आब लाज नहि, कदाचित आरम्भ छल।

बटुकनाथ हरिहरन ई सभ सुनि अपन कक्षमे बैसल रहल। ओकरा लागल—स्मृति जँ बच्चा सभक हाथमे रहि गेल, तँ ओकरा पर कानूनक मोहर कतेक कठिन होएत। ओ ‘लोक-स्मृति न्यास’क प्रारूप फेर खोललक। ऊपर लिखलक—“सांस्कृतिक हँसीक संरक्षण।” शब्द लिखिते स्याही पसरि गेल। ‘हँसी’ शब्दक हकार एक छोट गोहि जेकाँ मुख खोलि बैसल। बटुकनाथ कलम छोड़ि देलक।

ओकर मन कहलक—हँसीकेँ विधिक रूप दिअ, समिति बनाउ, न्यासी बनाउ, सचिव बनाउ, हस्ताक्षर लिअ, धनक मार्ग बनाउ। मुदा दोसर आवाज पूछलक—“न्याय जानैत छी?” ई वैह प्रश्न छल जे बच्चा सभ गंगेशक नाम पर ओकरा सँ पूछने छल। बटुकनाथ मेज पर हाथ मारि उठल। कहलक—“बच्चा सभकेँ कतेक पढ़ाओल गेल अछि!” मुदा ओकर भीतर जानैत छल—बच्चा सभ पढ़ल नहि, सुनल अछि। सुनल ज्ञान लिखल कानूनसँ कठिन होइत अछि।

साँझक नाम-पाठमे हँसीक पाथर राखल गेल। ओ पाथर पर कोनो नाम नहि, केवल एक गोल चिह्न। बा कहलीह—“ई ओ सभक पाथर अछि जे बेचायलासँ बचि गेल।” देविका कहली—“आ ओ सभक सेहो, जे एखन बिकबाक खतरामे अछि।” बच्चा सभ ओ पाथरकेँ नामहीन पाथरक कातमे राखलक। उपस्थित लोक बुझि गेल—जकरा नाम नहि भेटल, ओकर पहरा पहिल; जकरा बजार बनएबाक कोशिश होइ, ओकर पहरा दोसर।

राति धुँधलकामे कबड्डी फेर शुरू भेल। ई बेर खेलमे भूत आ बच्चा दुनू छल, मुदा दौड़ कम, साँस बेसी। ‘कबड्डी-कबड्डी’क स्वर जखन निकलैत, तखन ठूँठक भीतरक हँसी ओकर संग मिलि जाइत। खेलाड़ी जखन रेखा पार करैत, ओकर पएर माटि पर नहि, नामक पंक्ति पर पड़ैत। रातिक शीतमे खेलाड़ीक साँसक भाप छोट-छोट उज्जर धुँआ बनैत छल—एहि बेर भाड़ाक धुँआ नहि, देहक अपन धुँआ। जे साँस टूटए सँ पहिने घुरि अबैत, ओकरा सभ ‘बचि गेल’ नहि कहैत; कहैत—“सुनि एल।”

भूतक एक पुरान खेलाड़ी, जे बरखौं सँ केवल अन्हारमे देखाइत छल, ओहि राति चन्द्रमाक उजासमे अर्धदृश्य भेल। ओकर देह धुँआ नहि, नदीक कुहास जेकाँ छल। ओ बच्चा सभकेँ खेल सिखबैत कहलक—“कबड्डीमे साँस रोकल जाइत अछि, मुदा स्मृतिमे साँस बाँटल जाइत अछि। जे असगरे जीतए चाहत, से पकड़ा जाएत। जे नाम लऽ कऽ घुरत, से खेलकेँ बचा लेत।” ई नियम बच्चा सभ अगिला पन्ना पर लिखलक।

ठूँठक हरियर बिन्दु ओहि राति कने पसरल। कोंपलक टोंस पर चन्द्रमाक इजोत पड़ल, आ एक क्षण लेल लगल जे कोंपल आकाश दिस नहि, लोकक कान दिस बढ़ि रहल अछि। चन्ना गाछी कटि गेल छल, मुदा ओकर नव हरियर रेखा सुनबाक आकृति लऽ रहल छल। पात बनबाक पहिने ओ कान बनि रहल छल।

एहि सभसँ बाजारक घबराहट बढ़ल। नकली जुलूस असफल, हँसी बेचाए नहि, ध्वनि रेकॉर्ड नहि, पत्रकार खाली, शोधार्थी चुप, अनुप्रयोग मौन, न्यासक प्रारूप बिगड़ल। जे सभ स्मृतिक सौदा करए आएल छल, ओ सभ पहिल बेर बुझलक—एहि ठाम चीज सभ वस्तु

बनबाक पहिने प्रश्न बनि जाइत अछि। आ प्रश्नक दर जखने लगाओ, ओ ससरि कऽ लोकक मुँहमे चलि जाइत अछि।

मध्यराति बटुकनाथ हरिहरनकेँ निन्न नहि आबि रहल छल। ओ अन्ततः कुर्सी पर झुकि गेल। दीप आधा जरल, कागच आधा लिखल, कलमक नोक सुखायल। आँखि मुँदिते ओकरा चन्ना गाछीक ठूँठ देखाइ पड़ल—मुदा ठूँठ बाहर नहि, ओकर अपन छातीमे उगि रहल छल। ठूँठक चारू कात कारी चोगा पहिरने वकील नहि, पातक छाह बैसल छल। बीचमे वैह हँसी गोल घेरा बना कऽ घूमि रहल छल।

तखन एक आवाज आयल—“बटुकनाथ हरिहरन, अहाँक न्यासक पहिल सुनवाई भीतरमे होएत।” ओ चौंकि उठए चाहलक, मुदा स्वप्नमे ओकर देह कुर्सी पर बन्हायल। दूर कतहु बच्चा सभक स्वर उठल—“प्रत्यक्ष?” ठूँठ उत्तर देलक—“लोभ।” “अनुमान?”—“विलम्ब।” “शब्द?”—“न्याय।” “सत्य?”—हँसी।

आ एहि हँसीक घेरामे बटुकनाथक स्वप्न-दरबार खुलल।

लोकगीत: ठूँठक हँसी

लोकधुन: व्यंग्य-झूमर

हँसै हे ठूँठ, खोखल नहि—जड़ि हँसै हे,
जकरा उपहास बुझल, वैह न्याय बनि आबै हे।

खोखल नहि ठूँठक हँसी, बचल जड़िक स्वर,
मोहर, मंच, विद्वत्ता सभकेँ लागल डर।
पाथर हिलल, कागच काँपल, हवा रहितो चुप,
हँसी गोल घेरा बनि खुललक भीतर रूप।
बटुकक छातीमे उगल चन्ना गाछी राति,

प्रत्यक्ष—लोभ, अनुमान—विलम्बक बात।
शब्द कहल न्याय, सत्य बनल हँसी,
स्वप्न-दरबारमे बन्हायल वकीलक कुर्सी।
ठूँठक हँसी सुनि अपन छाती खोलि देखाय।

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—देवदत्त घरसँ बाहर: देवदत्तक माता सन्देश पठेलनि—“ओ जीवित आ स्वस्थ अछि।” मित्र ओकर घर पहुँचल, मुदा सभ कोठरी खाली। आँगन, छत, गोशाला—कतहु देवदत्त नहि।]

अध्याय ७३

बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

जकरा जीवन भरि उपहास बुझलक, स्वप्नमे वैह दरबार लगा कऽ बैसि जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: स्वप्न-दरबारमे न्याय

लोकधुन: स्वप्न-भगैत

लागू हे दरबार, स्वप्नक दरबार लागू हे,
विधवा-नेना-मजदूरकेँ पहिल आसन साजू हे।

स्वप्नमे दरबार लागल, सभकेँ आसन भेटल,
विधवा, बच्चा, मजदूरक पूरा कथन सुनल।
न्यायाधीश विवेक बनल, साक्षी बनल चान,
फैसला—हरेक नामक मान, हरेक जीवन सम्मान।

भोर होइत स्वप्नक नियम जागल जगमे लाउ,
दफ्तर, अदालत, गाममे समान सुनवाई पाउ।
स्वप्न-दरबार कल्पना नहि, दिशा देखाबै आज,
मनमे देखल न्यायकेँ कर्ममे करू समाज।

विवेक बनल न्यायमूर्ति, चान बनल गवाह,
बिनु घूसक, बिनु पेशीक चलल न्याय-प्रवाह।
भोर होइते सपनाक नियम आँखि मे भरू,
दफ्तर-गाम-अदालत मे ओहए तौल धरू।

❖

हँसीक ओ घेरा, जे स्वप्न-दरबारक देहरी छल, साँझहिसँ बटुकनाथक पाछाँ लागि गेल छल। चन्ना गाछीक हँसी राति भरि बटुकनाथ हरिहरनक कानमे बजैत रहल। ओ हँसी कखनो गाछीक ठूँठसँ उठैत, कखनो अदालतक गलियारा सँ, कखनो ओकर घरक लोहाक आलमारी भीतर सँ। जकरा ओ जीवन भरि उपहास बुझैत रहल छल—गरीबक रोदन, विधवाक याचना, मजदूरक प्रतीक्षा, बच्चाक प्रश्न—से सभ एक्के संग हँसी बनि गेल छल। बटुकनाथ तकिया बदललक, खिड़की बन्न केलक, जल पीलक, मुदा हँसीक सूक्ष्म काँटा कानक भीतर सँ निकलल नहि।

ओ सोचलक—ई सभ अंधविश्वास अछि। गामक लोककेँ किछु कागच, किछु न्यास, किछु सभासद, किछु दानक रसीद देल जाय, तखन सभ शान्त भऽ जाएत। लोक-स्मृतिकेँ विधिक

आकार देब, ओकर अध्यक्ष स्वयं बनब, मृतकक नामक संरक्षणक नाम पर कोष खोलब, आ जे चन्ना गाछी बेढब ढंगें लोकक हाथमे चलि रहल अछि, तकरा नियमक रज्जुसँ बाँधि लेब। ओ अपन टेबल पर बैसि मसौदा खोललक—'गढ़ नारिकेल लोक-स्मृति न्यास'। लिखल शब्द देखि ओकर चेहरा पर पुरान चतुर मुस्कान घुरल।

मुदा कागच पर 'न्यास' लिखिते स्याही फूटि कऽ पसरि गेल। अक्षर सभ कारी पोखरि बनि गेल। बटुकनाथ आँखि मललक। जे पन्ना पर धारा, उपधारा, अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष लिखल छल, से धीरे-धीरे पात बनऽ लागल। ओ पात तत्त्वचिन्तामणिक सूक्ष्म पन्ना जेकाँ महीन, असंख्य, आ चौंका देबएबला छल। प्रत्येक पात पर एकहि प्रश्न चमकि रहल छल—'न्यास बनाओब, न्याय जानब?'

राति आधी भेल तखन बटुकनाथ निन्नमे डूबल। निन्न आ जागरणक बीच ओ अपन परिचित सभागारमे पहुँचल—बार काउंसिलक विशाल कक्ष। ऊँच कुर्सी, चमकैत मेज, देबाल पर विधिक प्रमाणपत्र, पंक्तिबद्ध अधिवक्ता, आ पाछाँ ओकर अपना चित्र। मुदा जेना ओ कुर्सी पर बैसए चाहलक, कुर्सी जड़ि बनि गेल। मेजक पालिश छिलि कऽ चन्ना गाछीक कटल ठूँठक भीजल छाल बनल। प्रमाणपत्र सभ पात बनि झड़ए लागल। सभागारक वार्निस-गन्ध मेटा गेल; ओकर ठाम भीजल छालक कसैला आ पुरान कागचक फफूँदिआयल गन्ध भरि गेल।

सभागारक बीचमे एक पुरुष ठाढ़ छल—न पूर्ण वृद्ध, न तरुण; मुँह पर तर्कक कठोर प्रकाश, आँखिमे करुणा, पएरमे माटि। बटुकनाथ ओकरा चिन्हए चाहलक, मुदा नाम मुँह पर नहि आयल। ओ पुरुष स्वयं कहलखिन, 'नाम सुननाइ सीखने छी कि केवल कुल?' बटुकनाथ उत्तर देबाक पहिने ओकर सोझाँ एक विशाल ग्रन्थ खुलल। अक्षर बारीक छल, मुदा ओहि बारीकीमे बारह हजार ग्रन्थक भार झलकैत छल। स्वप्नक भीतर कियो फुसफुसायल—'गंगेश।'

गंगेशक नाम सुनिते सभागारमे हलचल भेल। कतेक अदृश्य पंडित उठल, कतेक जातिक चौकी लऽ आयल, कतेक कुलावली खोललक, कतेक शास्त्रक मोहर देखाओलक। मुदा गंगेश हँसलाह नहि, क्रोधितो नहि भेलाह। ओ बस अपन हथेलीमे एक छोट धूलिक कण उठौलनि आ कहलनि, 'प्रमाण एहि धूलियोमे अछि, जँ आँखि कुलक परदा सँ ढँकल नहि हो।'

बटुकनाथक कानमे पुरान कथा उतरए लागल—पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्म, चर्मकारणीसँ विवाह, तत्त्वचिन्तामणिक अद्भुत रचना, नव्य न्यायक जन्म। स्वप्नमे ई सभ घटना पुस्तकक टिप्पणी नहि छल; ओ सभ देहधारी दृश्य बनि रहल छल। एक स्त्री, जकर हाथ पर

चर्मक श्रमक गन्ध छल, गंगेशक कातमे निस्संकोच ठाढ़ छलीह। ओकरा पाछाँ जाति-व्यवस्था कुकुर जेकाँ दाँत देखबैत, मुदा गंगेश ओकर हाथ छोड़ैत नहि छलाह।

बटुकनाथ काँपि गेल। ओ कानून पढ़ने छल, पर न्यायक ई देहधारी रूप ओकरा असह्य लागल। ओ कहए चाहलक—'समाजक मर्यादा सेहो किछु होइत अछि।' गंगेश ओकर वाक्य बीचमे काटलनि—'मर्यादा जँ सत्यक गला दबाबए, तँ ओ मर्यादा नहि, भयक जनेऊ अछि।' एहि वाक्य पर सभागारक देबाल पर टाँगल ओकर सम्मानपत्र सभ धुँआ बनि गेल।

तखन स्वप्नमे दू छाह आयल—रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा 'अशोक'क नामक छाह। ओ सभ शरीरधारी दोषारोपण रूपमे नहि, स्मृतिक कठोर संपादक जेकाँ आयल—हाथमे कलम, पाछाँ प्रतिष्ठाक परदा। ओ सभ गंगेशक असुविधाजनक जीवन-रेखा पर रेखा खिंचऽ लागल: विवाहक प्रसंग काटू, जातिक चोट नरम करू, चर्मकारणी शब्द हटाउ, नव्य न्यायक प्रतिमा राखू, जीवनक विद्रोह दबाउ। चन्ना गाछीक हँसी फेर गूँजल। स्वप्नक न्यायाधीश कहलक—'एहि उपन्यासक भाषामे ई सम्मान-हत्या अछि—देहक नहि, जीवन-सत्यक।'

बटुकनाथ देखलक जे गंगेशक शरीर नहि मरल; मुदा हुनकर जीवनक साँच कागचक मर्यादामे गाड़ल गेल। मूर्ति बचल, मनुष्य कटि गेल। ठीक ओहिना जेना बटुकनाथ अदालतमे नामक मुकदमा जीतैत-जीतैत नामक मनुष्य मारि दैत छल। ओकरा बुझाइत गेल जे सम्मानक सभसँ उज्जर कपड़ा कतेक बेर रक्त सोखि अदृश्य कऽ दैत अछि।

स्वप्न-दरबारमे आब न्याय शुरू भेल। अभियुक्त कुर्सी पर बटुकनाथ बैसल छल, मुदा ओकर आरोप-पत्र सामान्य नहि छल। ओकरा पर घूस, देरी, अपराधीक रक्षा, झूठक तकनीक, पेशाक दुरुपयोग—ई सभ अलग-अलग पंक्तिमे नहि लिखल छल। आरोप केवल एक छल—'न्यायकेँ पेशा बना कऽ न्यायसँ विमुख करब।' ओ बचाव करए उठल। ओकर जीह पर पुरान शब्द आयल—प्रक्रिया, अधिकार, प्रतिनिधित्व, विधिक अवसर, प्रमाणक अभाव। मुदा प्रत्येक शब्द ओकर मुँहसँ निकलिते सूखल पात बनि झड़ि पड़ैत। झड़ैत पातक खड़खड़ाहटि सभागारमे एना बाजल जेना कियो पुरान फाइलक पन्ना बिना पढ़ने उनटबैत हो।

गंगेश पूछलनि, 'प्रमाण चाहैत छी?' बटुकनाथ राहत अनुभव केलक। प्रमाणक भाषा ओकर घर छल। ओ कहलक, 'हँ, बिनु प्रमाण न्याय नहि।' तखन दरबारक फर्श खुलल। ओहि भीतर सँ तिथि पर तिथि, स्थगन पर स्थगन, गवाहक मृत्यु, पीड़ितक गरीबी, विधवाक बिकायल गहना, बच्चाक अधूरा पढ़ाइ, आ बूढ़ मायक प्रतीक्षा उठि आयल। गंगेश कहलनि, 'ई प्रत्यक्ष अछि। एहि पर अहाँक अनुमान की?'

बटुकनाथ चुप। गंगेश फेर कहलनि, 'शब्द-प्रमाण सुनू।' तखन चन्ना गाछीक ठूँठ, पनिडुब्बी, नकली भूतक रोदन, नाम-पहरा बच्चा, मीरा, देविका, गोप, आरुणि, बा, आ सत्यव्रत मेहताक मौन—सभक आवाज एक-एक कऽ उठल। ओ सभ कानूनक धारा नहि पढ़ि रहल छल, केवल कहि रहल छल—'हम उपस्थित छी।' बटुकनाथक माथ झुकि गेल।

ओ बचए लेल जातिक पुरान देबाल दिस भागल। स्वप्न-दरबारमे अचानक एक ऊँच बाड़ बनल—ऊपर ब्राह्मण, नीचाँ चर्मकार, एक कात शास्त्र, दोसर कात श्रम। बटुकनाथ ओहि बाड़ पर चढ़ि अपन बचाव खोजलक। मुदा गंगेशक संग ठाढ़ चर्मकारणी स्त्री हाथ बढ़ा कऽ बाड़क एक बाँस उखाड़ि देलीह। बाड़ हिलल, फेर पूरा दरबारमे छितरा गेल। ओ स्त्री कहलीह, 'जे न्याय देहक स्पर्शसँ डरै, से न्याय नहि, नहायल पाखण्ड अछि।'

एहि वाक्य पर बटुकनाथक भीतर किछु टूटल। ओ पहिल बेर अपन बचपन देखलक—घरक आँगनमे इनारक लग अलग रखल लोटा, पाठशालाक बाहर बैसल बच्चा, पूजा करैत पिता, आ मायक धीमी आवाज—'ओहि घरमे नहि खाएब।' ओ बुझलक जे ओकर वकालत अदालतमे शुरू नहि भेल छल; ओ तँ घरक ओहि लोटासँ शुरू भेल छल जकर पानि सभक लेल समान नहि छल।

दरबारमे एक बालिका आयल—अनन्या नहि, कदाचित ओकर छाह। ओ हाथमे नामक पाथर लऽ कऽ पूछली, 'हरिहरन जी, अहाँ न्यास बनए चाहैत छी। एहि न्यासमे गंगेशक चर्मकारणी पत्नीकेँ ठाम देब?' बटुकनाथ उत्तर नहि देलक। बालिका फेर पूछली, 'जिनका नाम नहि भेटल, हुनका पहिल पन्ना देब?' बटुकनाथ चुप। 'जातिक कारण जे नाम दबायल गेल, ओकरा सभकेँ मुख्य साक्षी मानब?' बटुकनाथक चुप्पी आब बचाव नहि, दोषक प्रमाण बनि गेल।

तखन दरबारक छत पर कबड्डीक रेखा चमकल। भूत सभ भीतर घुसल नहि; ओ सभ सीमा पर ठाढ़ रहल। बूढ़बा भूत मात्र कहलनि, 'अहाँ जीवन भरि दोसराकेँ आउट करैत रहलहुँ। आइ साँस रोकि एक बेर न्यायक पाला पार करू।' बटुकनाथ 'कबड्डी' कहए चाहलक। पहिल 'क' निकलल, पर 'बड्डी' नहि। साँस अटकि गेल। ओ खसि पड़ल।

गंगेश ओकरा उठौलनि नहि। कहलनि, 'न्यायमे उठबाक काज स्वयं करए पड़ैत अछि। मुदा पहिल शर्त—अपन कुलक सिंहासन सँ उतरू।' बटुकनाथ देखलक जे ओकर नामक पाछाँ लागल सभ उपाधि—वरिष्ठ, अध्यक्ष, विद्वान, संरक्षक—एक-एक कऽ झड़ि रहल अछि। अन्तमे केवल 'बटुक' बचल, एक डरायल बालक। ओ बालक कानए लागल।

रोदनक बीच ओकर निन्न खुलल। भोरक पहिल उजास खिड़की सँ भीतर आबि रहल छल। बटुकनाथक हथेली पसेनासँ भीजल छल आ मुँहमे रातिक बासि कड़ुआहटि छल, जेना कोनो केस हारि कऽ घुरल हो। टेबल पर लोक-स्मृति न्यासक मसौदा पड़ल छल। आश्चर्य—ओहि कागचक शीर्षक बदलि गेल छल। जतय ओ लिखने छल ‘अध्यक्ष’, ओतय स्याही सँ लिखल छल—‘प्रथम सेवक नहि, अन्तिम श्रोता’। जतय ‘कोष’ लिखल छल, ओतय ‘नामक पहरा बच्चा सभक हाथमे’ लिखल छल। जतय ‘संपत्ति’ लिखल छल, ओतय ‘स्मृति विक्रेय नहि’ चमकि रहल छल।

बटुकनाथ काँपैत हाथसँ मसौदा मोड़लक। ओकर पुरान चतुराई मुरझायल नहि छल, मुदा ओकरा भीतर पहिल बेर दरार पड़ल छल। ओ चाहैत तँ एहि स्वप्नकेँ अपच, भय, वा गामक बताहपन कहि टारि सकैत छल। मुदा कानमे गंगेशक प्रश्न अटकल छल—‘न्यास बनाओब, न्याय जानब?’

ओहि दिन बटुकनाथ चन्ना गाछी नहि गेल। ओ अपन कमरामे बैसल रहल, आ पहिल बेर अपन कार्यालयक आलमारी खोललक। भीतर पुरान मुकदमाक फाइल, शुल्कक रसीद, स्थगनक नोट, आ लोकक पत्र छल। ओहि सभहक बीच ओकरा एक छोट कागच भेटल—चन्द्रपाल बत्राक नामक पुरान नोट। नोटमे केवल तीन शब्द छल—‘स्मारक-अनुप्रयोग सुरक्षित।’ बटुकनाथ बुझि गेल—भीतरक दरबार आब ओकरा छोड़ि अगिला दोषीक मोनमे उतरि रहल अछि।

राति जखन फेर चन्ना गाछीक ठूँठ हँसल, एहि बेर हँसी बटुकनाथक घर पर नहि रुकल। ओ हँसी तारक अदृश्य डोरी पर चढ़ि चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीनमे घुसि गेल।

लोकगीत: स्वप्नमे लागल दरबार

लोकधुन: स्वप्न-विरहा

लागल हे दरबार, स्वप्नक दरबार लागल हे,
जकरा दबल, ओकर हँसी पहिचान माँगल हे।

विधवाक रोदन, गरीबक विनती, बच्चाक प्रश्न हँसल,
बटुक जकरा उपहास बुझलक, सभ दरबारमे बैसल।
गंगेशक प्रश्न—न्यास बनाओब कि न्याय जानब?
आलमारी खोलिते पुरान पाप सभ चिन्हब।
स्थगनक नोट, शुल्कक रसीद, चन्द्रपालक पर्ची,

‘

स्मारक-अनुप्रयोग सुरक्षित'—छलपूर्ण कर्ची।

हँसी तारक डोरी चढ़ि अगिला स्क्रीन गेल,
प्रतिशतक लोकक मोनमे नब सुनवाई भेल।
स्वप्नक दरबार छोड़ै नहि जागल प्राण,
जकरा दबल, ओकर हँसी बनि माँगै पहिचान।

बटुक जकरा उपहास बुझलक, सभ आसन पर बैसल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—काक आ मित्रक पुत्र: आँगनमे कारी काक बैसल छल।]

अध्याय ७४

चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

पहिल स्वीकार सदिखन अकेलेमे होइ छै— भीड़ तँ बादमे ताली बजबै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: स्वीकारसँ शुरुआत

लोकधुन: एकल आशा-पद

कहू हे धीमे, 'हम गलत रही' कहू हे,
बन्द कोठरीक ई आखर भोरक बीया बूझू हे।

पहिल स्वीकार बन्द कोठरीमे धीमे जन्मै,
‘हम गलत रही’ कहिते कठोर हृदय नमै।
स्वीकार अन्त नहि, सुधारक पहिल पग,
साँचक नाम कहू, भरू क्षतिक उचित रग।

डर बिना आत्मावलोकन मनकेँ मुक्त बनाबै,
दोषक पूरा जिम्मा लेब विश्वास फेर जगाबै।
पहिल स्वीकारसँ शुरुआत, बाट लंबा सही,
ईमानक एक पगसँ भविष्य अन्हार नहि।

कठोर छाती नमिते पहिल दरारि फूटल,
ओही दरारि सँ किरिणक पातर धार छूटल।
स्वीकार मंजिल नहि, पहिल डेगक नाम,
क्षति भरब, नाम कहब—तखने पूर्ण काम।

❖

“प्रतिशतक लोकक बारी”—ठूँठक हँसीक ई अलिखित सूचना ओहि भोरे अपन ठेकाना ताकि लेने छल। बटुकनाथ हरिहरनक स्वप्न-दरबारक राति बीतल, मुदा ओकर धूलि केवल ओकर माथ पर नहि अटकल। चन्ना गाछीक ठूँठक हँसी जे एक बेर उठल छल, से हवामे पसरि गेल छल। ओ हँसी दिल्लीक फाइल, हांगकांगक काँच, पटनाक दफ्तर, मेरठक झूठ, आ चन्द्रपाल बत्राक मोबाइलक भीतर धरि पहुँचि गेल। चन्द्रपाल पहिने सोचलक—ई साधारण घबराहट अछि; फेर बुझलक जे घबराहट नहि, ककरो अदृश्य उँगुरी ओकर आत्माक स्क्रीन पर नाम लिखि रहल अछि।

चन्द्रपाल बत्रा जीवन भरि नाम सँ बचैत रहल। ओकरा लेल लोक केवल अङ्क छल—प्रति व्यक्ति कमाइ, प्रति क्लिक भ्रम, प्रति डर निकासी, प्रति खाता प्रवाह। कखनो ओ बूझबो नहि चाहलक जे स्क्रीनक पाछाँ केकर घर, केकर माय, केकर छत, केकर ऋण, केकर

कलेजाक धड़कन अछि। ओ कहैत छल—‘भीड़ अछि’; भीड़ कहि देलासँ अपराधक चेहरा धुँधला भऽ जाइत अछि। मुदा गढ़ नारिकेलमे आब भीड़ नहि छल। ओतय नामक पाथर छल, आ प्रत्येक पाथर ओकरा देखैत छल।

ओहि राति चन्द्रपाल अपन कोठीक भीतर असगरे बैसल छल। काँचक टेबल पर तीन मोबाइल, दू घड़ी, एक विदेशी मदिराक बोतल, आ नकली शान्तिक गन्ध छल। ओ फोन खोललक। श्रद्धांजलि-अनुप्रयोगक आँकड़ा फेर सोझाँ आयल—कतेक लोक देखलक, कतेक क्लिक, कतेक दान, कतेक रुचल, कतेक डरल। ओकर उँगुरी पुरान चतुराईसँ चलए चाहलक, मुदा स्क्रीन पर प्रत्येक पंक्ति नाम बनि जाइत। ‘उज्ज्वल झा’; ‘मुन्ना पासवान’; ‘सरयू’; ‘जेकर नाम नहि भेटल’; ‘कुँअरि मायक मौन’; ‘रोगीक श्वास’; ‘मजदूरक पएर’।

चन्द्रपाल फोन बन्द कऽ देलक। तखनो नाम देखाइत रहल। काँचक टेबलक सतह पर, बोतलक भीतरक तरल पर, घड़ीक काँटा बीच, खिड़कीक शीशा पर। ओ खिड़की खोलि देलक। बाहर शहरक राति छल—नदी नहि, चन्ना गाछी नहि, ठूँठ नहि। मुदा शहरक रातिमे सेहो पानि जेकाँ आवाज छल। दूर कतहु साइरन, कतहु कुकुर, कतहु मोटर, कतहु थाकल मनुखक खोंखी। एसीक ठंढा कोठरीमे सेहो ओकर कनपट्टी धकधका कऽ गरम छल। ओ पहिल बेर अनुभव केलक जे शहर सेहो गाम जेकाँ नाम सँ बनल अछि; केवल ओ नाम विज्ञापनक इजोतमे ढँकायल अछि।

ओ अपन कपार पकड़ि बैसल। ओकरा अपराध मोन आबए लगल—पर पूरा नहि। अपराधी आत्मा एकाएक पूरा सत्य नहि देखैत। पहिने ओ अपना डर देखैत अछि। चन्द्रपालकेँ डर लगल जे जँ सभ नाम ओकरा चिन्हि लेलक, तँ ओकर धन कतए जाएत? ओकर पासपोर्ट? ओकर सम्पर्क? ओकर प्रतिष्ठा? ई स्वीकार नहि, आत्म-सुरक्षा छल। मुदा भयक पहिल कम्पन सेहो कखनो-कखनो सत्यक पहिल दरबाजा होइत अछि।

ओ अपनासँ कहलक—‘हम ककरो मारल नहि।’ ई वाक्य ओकरा बरखौं सँ बचबैत आयल छल। जखन कियो ठगल, ओ कहैत—हम हाथ नहि लगौलहुँ। जखन कियो डरल, ओ कहैत—हम तँ केवल माध्यम। जखन ककरो घर उजड़ल, ओ कहैत—व्यापारमे जोखिम होइत अछि। जखन ककरो आत्मा टूटल, ओ कहैत—ओ कमजोर छल। एहि राति ओहि वाक्यक मुँह फाटि गेल। भीतरसँ आवाज आयल—‘जँ हाथ नहि लगौलहुँ, तँ भयक रस्सी के बान्हलक?’

चन्द्रपालक देहमे सिहरन दौड़ल। ओ उठि बाथरूम गेल। ऐनामे अपन चेहरा देखलक। चेहरा ओकर छल, मुदा आँखि ओहि लोक सभक जेकरा ओ ‘उपयोगकर्ता’ कहैत छल। एक

आँखि उज्ज्वलक, एक मजदूरक, एक विधवाक, एक चर्मकार बस्तीक बालकक, एक ओ स्त्रीक जेकर निजता बेचि देल गेल छल, एक ओ युवकक जे अपन पिताकेँ बचाबए ऋणमे फँसल छल। ऐना बहु-आँखि बनि गेल। चन्द्रपाल चिचियायल।

ओहि चीत्कारमे कोनो वीरता नहि छल। ओ नरभक्षकक पहिल डर छल जे देखैत अछि कि जकरा खा रहल छल, ओकर सभक आँखि ओकर देहमे रहि गेल अछि। चन्द्रपाल फर्श पर बैसि गेल। ओकर नाक सँ पसेनाक धारि झरल। ओ पहिल बेर ई नहि सोचलक जे कागच केना सँभालब, रिकॉर्ड केना हटाएब, वकील केना लाएब। ओ बस एकटा वाक्य दोहरबैत रहल—'हम नाम नहि देखलहुँ। हम नाम नहि देखलहुँ।'

भोर होइत-होइत ओ निर्णय नहि, थाकनिमे टूटल अवस्थामे गढ़ नारिकेल चलि पड़ल। चन्द्रपाल बत्रा जे सामान्यतया चमकदार गाड़ी, सुरक्षा, आ दूरीसँ काम करैत छल, एहि बेर एक पुरान कारमे बिनु ध्वनि चन्ना गाछीक कटल ठूँठ लग पहुँचल। ओकर ड्राइवर पूछलक—'साहब, उतरी?' चन्द्रपाल उत्तर नहि देलक। बहुत देर धरि कारक भीतर बैसल रहल। बाहर ठूँठक चारू कात बच्चा सभ नाम-पहरा करैत छल। कियो ओकरा चिन्हि गेल, मुदा कियो शोर नहि केलक।

ई शान्ति ओकरा सभसँ अधिक भयावह लागल। जँ लोक गरियाबैत, ताड़ैत, मारए दौड़ैत, तँ ओ अपना पक्षक कथा बना सकैत छल। मुदा एतय लोक देखैत छल, सुनैत छल, प्रतीक्षा करैत छल। एहि प्रतीक्षामे न्यायालयक तारीखक बेरुखी नहि, खेतक बीजक धैर्य छल। चन्द्रपाल कार सँ उतरि गेल। ओकर जूता कटल जड़िक धूलि पर पड़ल। से धूलि ओकर महँग चमड़ा पर लगि गेल। ओ अचानक झुकि ओकरा झाड़ए चाहलक, फेर हाथ रोकि देलक। गामक भोरक हवामे गोबर-लीपल आँगन आ भीजल पुआरक गन्ध छल—एहन गन्ध जे ओकर कोनो बजट-पत्रकमे कहियो नहि छपल।

अनन्या ओहि दिन रजिस्टर सँ माथ उठौली। ओ कहली—'नाम पढ़ब?' चन्द्रपालक गला सूखल छल। जीहपर लोहा सन सोआद छल आ अपन स्वर ओकरा कोनो दोसराक स्वर जेकाँ सुनाइ पड़ल। ओ कहलक—'हम... हम किछु कहय आयल छी।' अनन्या शान्त स्वरमे पूछली—'ककर नामसँ?' चन्द्रपाल बुझल नहि। 'हमर नाम चन्द्रपाल बत्रा।' अनन्या फेर पूछली—'जन्मक नाम कि व्यापारक नाम?' ई प्रश्न ओकर छातीमे गंगेशक तर्क जेकाँ पैसल।

चन्द्रपालक मनमे मेरठक ओ कमरा चमकल जतय नकली गरिमा सँ ओ अपन उपाधि, सम्बन्ध, योग्यता, प्रतिष्ठाक कथा गढ़ने छल। ओकर असल जन्मक नाम पाछाँ रहि गेल छल—

घरक गली, मायक आवाज, पिताक कड़ुआ परिश्रम, आ लाजक धूलिमे। ओ धीरे कहलक—'चन्दू।' लोक चौंकल नहि। बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखलक—'चन्दू उर्फ चन्द्रपाल बत्रा—पहिल बेर जन्मक नाम कहल।'

एहि लेखनमे दण्ड छल। कारण अपराधीक महँग नाम टूटि अपन बचपनक निर्बल नाम धरि घुरैत अछि। चन्द्रपालक आँखि भरि आयल, मुदा ई आँसू एखन भरोस योग्य नहि छल। मीरा लगमे ठाढ़ छली। ओ कहली—'रोदन प्रमाण नहि। नामक संग सत्य कहू।' चन्द्रपाल माथ झुकौलक। ओ जानैत छल जे ओ पूरा अपराध कहय नहि सकैत; ओ एखन अपन भय सँ बाहर नहि आयल। मुदा ओ जतेक कहि सकल, ओतबे सँ दरार खुलल।

ओ कहलक—'हम लोककेँ लोक नहि मानलहुँ। स्क्रीनक पाछाँ भीड़ बुझलहुँ। डरकेँ उत्पाद बनौलहुँ। मृतकक नामसँ दानक बाट खोललहुँ। जे माय कनैत छलीह, हुनकर आँसूकेँ आँकड़ा बनबैत रहलहुँ। जे युवक टूटल, ओकर टूटनकेँ सहभागिता कहलहुँ। हम ककरो व्यक्तिगत रूपेँ घृणा नहि केलहुँ—कदाचित एहि कारणेँ सभसँ पैघ अपराध भेल। घृणा करैत तँ चेहरा देखितहुँ। हम चेहरा देखबाक मेहनत नहि केलहुँ।'

सुनैत लोक मौन रहल। कोनो 'क्षमा' नहि कहल गेल। कोनो 'लाज नहि लागैत?' नहि उठल। गढ़ नारिकेल आब आरोपक पुरान शोर सँ आगाँ बढ़ि चुकल छल। एतय कथनकेँ पूरा सुनल जाइत, फेर ओकर भार नामक पाथर पर राखल जाइत। देविका पूछली—'उज्ज्वलक नाम सँ जे कमायल गेल?' चन्द्रपाल काँपल। ओ जेब सँ एक कागच निकाललक। 'एहिमे हिसाब अछि,' कहलक।

देविका कागच लऽ कऽ तुरन्त नहि पढ़ली। ओ पाथरक घेरा दिस देखली। 'हिसाब नामक बराबर नहि होइत,' ओ कहली, 'मुदा हिसाब बिनु अगिला लड़ाइ अधूरा रहत।' ई वाक्य चन्द्रपालकेँ क्षमा नहि, कामक आदेश जेकाँ लागल। ओ बुझल जे स्वीकारक पहिल दिन न्यायक अन्त नहि, आरम्भ अछि। पैसा, बाट, साथी, दस्तावेज, झूठ, सभ उजागर करब पड़त। डर तखने फल देत जखन ओ नामक सोझाँ श्रम बनत।

बटुकनाथक स्वप्न-दरबार, गंगेशक प्रश्न, नकली भूतक जुलूस, चन्ना गाछीक हँसी—सभ एहि क्षणमे चन्द्रपालक भीतर घुसि गेल। ओकरा लागल जे ओ ठूँठक चारू कात नहि, नव्य न्यायकेँ साक्षी मानि बैसल अछि। प्रत्यक्ष—ओ ठग छल। अनुमान—ओ नेटवर्कक हिस्सा छल। शब्द—ओ व्यापारी कहल जाइत छल। उपमान—ओ गोहि जेकाँ नाम चिबबैत छल। मुदा निष्कर्ष? निष्कर्ष एखन लिखल जएबाक बाँकी छल।

साँझक समय ओ पाथर लग बैसल रहल। कियो ओकरा भोजन नहि पूछलक, कियो हटौलक नहि। बच्चा सभ नाम पढ़ैत रहल। प्रत्येक नाम पर ओकर देह कने झुकैत गेल। अन्हार भेलाक बाद ओ अचानक फोन निकाललक। ओकरा राघव 'सिग्नल' सोमानीकेँ संदेश पठाएबाक छल—'रुकू। आब बात बदलि गेल अछि।' ओ लिखलक, मेटलक, फेर लिखलक—'नाम उठि गेल अछि।' संदेश पठेबाक बटन दबौलक।

फोन पर चिह्न घूमैत रहल। एक बिन्दु, दू बिन्दु, तीन बिन्दु। फेर स्क्रीन पर लिखायल—'संपर्क नहि।' चन्द्रपाल चौंकल। एतय तँ नेटवर्क छल। सभहक फोन चलि रहल छल। ओ फेर प्रयास केलक। एहि बेर स्क्रीन पर साधारण अक्षर नहि, हलुक पातक लिपि उभरल—'जतय नाम सुनल जाए, ओतय कोड नहि पहुँचैत।'

चन्द्रपालक हाथ सुन्न भऽ गेल। दूर कतहु राघव सेहो अपन यन्त्र देखैत होएत, ई विचार ओकरा लागल। ठूँठक भीतर सँ कने हवा उठल। चन्द्रपाल बुझि गेल—ओकर स्वीकार केवल ओकरा धरि सीमित नहि रहत। अगिला बारी राघवक अछि, मुदा राघवक संसारमे नेटवर्क नहि, केवल स्मृति चलत।

चन्ना गाछीक ठूँठ ओहि राति फेर चुप भऽ गेल। मुदा चुप्पीमे संदेश साफ छल—पहिल स्वीकार दण्डक अन्त नहि, दरबाजाक कुंडी मात्र अछि। दरबाजाक ओहि पार राघव सिग्नलक बिनु नेटवर्क बैसल छल।

लोकगीत: पहिल स्वीकार

लोकधुन: एकल करुण पद

खुलल हे दरबाजा, एक साँच शब्दसँ खुलल हे,
स्वीकार दण्डक अन्त नहि—कुंडी मात्र भेल हे।

पहिल स्वीकार भीड़मे नहि, बन्द कोठरी होइ,
अक्षर लिखिते हाथ काँपै, देह पसीना रोइ।
चन्द्रपाल अपन हिस्सा देखलक नामक पार,
कोड पठाबय चाहल, स्क्रीन कहलक—संपर्क हार।
जतय नाम सुनल जाए, ओतय कोड नहि चलै,

पातक लिपि भीतरक ताला धीरे-धीरे खोलै।
स्वीकार दण्डक अन्त नहि, कुंडी मात्र थीक,

ओहि पार राघव बिनु नेटवर्क अपन छाती देखै।
एक शब्द साँच बाजल तँ दरबाजा खुलल आज,
आब अगिला मोनपर चढ़त नामक समाज।

आखर लिखिते हाथ काँपए, देह पसेना रोइ।
जतऽ नाम सुनल जाए, ओतऽ कोड ने चलए फेर।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—अस्पतालमे राम: अस्पतालक प्रतीक्षालयमे रामक शरीर अस्वाभाविक रूपसँ गरम छल। उदाहरण—जकर शरीर एहन गरम होइत अछि, अस्पतालक ज्वरग्रस्त रोगीक जकाँ, ओ बीमार होइत अछि।]

अध्याय ७५

राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

सभटा जाल रहितो जे अकेला भेल, से बुझलक— नेटवर्क तारक नहि, भरोसक होइ छै।

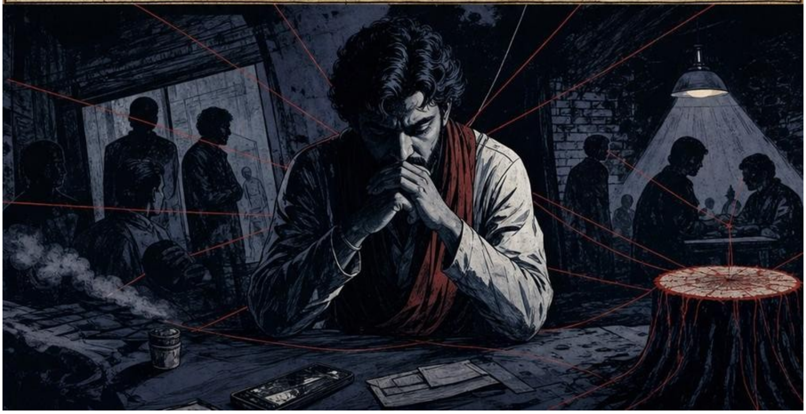

अध्यायारम्भ लोकगीत: भरोसक जाल

लोकधुन: युवक-जट-जटिन

बुनू हो जाल, भरोसक जाल बुनू हो,
जट-जटिनक जोड़ी जकाँ संगक गीत सुनू हो।

चारि पट्टी सिग्नल हो, तइयो संग जरूरी,
भरोसक नेटवर्क बनत मानव कड़ी पूरी।
मित्रक फोन, परिवारक कान, सहायता केन्द्र,
संकटमे एक क्लिकसँ जुड़य सुरक्षित केन्द्र।

पासवर्ड जकाँ गोपनीय, सम्बन्ध खुलल रहय,
लाज नहि, सहायता माँगब साहसक बात कहय।
भरोसक जाल मजबूत हो तँ ठगक जाल फटत,
एक-दोसरक संगसँ डिजिटल राति कटत।

एक गिरह मित्रक, एक परिवारक डोरी,
एक सहायता-केन्द्रक—तीनू गाँठ जोड़ी।
लाज छोड़ि हाथ पसारब साहसक निसानी,
ठगक जाल ओतहि फाटए जतऽ जुड़ल जबानी।

❖

दरबाजाक ओहि पार—शहरक काँच-कोठरीमे—सएह राघव बैसल छल, जकरा लग सभ किछु छल, केवल पहुँच नहि। राघव ‘सिग्नल’ सोमानीकेँ जीवनमे पहिल बेर लगल जे संसारमे सभसँ बड़का अभाव पैसा, शक्ति, पहुँच, वा चतुराईक नहि, अपितु नेटवर्कक अछि। ओ दिन भरि अपन फोनक स्क्रीन दिस ताकैत रहल। चारि पट्टी देखाइत छल, डेटा चलैत छल, संदेश-चिन्ह हरियर भऽ उठैत छल, मुदा जे किछु ओ पठबैत, से ककरो लग पहुँचैत नहि छल। फोन कहैत—‘भेजल गेल’; ओकर मोन कहैत—‘नहि पहुँचल।’ ई बीचक झूठ ओहि पर एना चिपकि गेल जेना चन्ना गाछीक कटायल ठूँठ पर धूलि।

ओ पहिने तकनीकक लोक नहि छल; ओ डरक दलाल छल। ओकर कला एहि बातमे छल जे साँच बात कखनो पूरा नहि लिखू, झूठ बात कखनो पूरा नहि बोलू, आ दुनूक बीच एहन संकेत

छोड़ू जे प्रत्येक अपराधी ओकरा अपना पक्षक लोक बुझए। ओ मेटाइत संदेशमे रहैत छल, गायब होइत कक्षमे, आधा आवाजमे, अधपढ़ल करारमे, आ प्रतिशतक धुँआमे। मुदा आब गायब होएबाक कला ओकरा परे उलटि पड़ल छल। संदेश गायब नहि भऽ रहल छल; संदेश जन्मिए नहि रहल छल।

चन्द्रपालक पहिल स्वीकारक खबर ओहि लग रातिए पहुँचि गेल छल—न फोन सँ, न लोक सँ, अपितु बेचैनी सँ। जे लोक अपन अपराधक पहिल दरार देखैत अछि, ओकर कम्पन अपराध-जालक भीतर दूर धरि जाएत अछि। राघव सोचलक—‘चन्द्रपाल टूटि रहल अछि। बटुकनाथ भीतरसँ हिलि गेल अछि। ब्रूम सावधान अछि। लाउ किन-हंग चुप अछि। एहन समयमे सन्देश भेजब जरूरी अछि।’ मुदा ओकर प्रत्येक संकेत अदृश्य कचोटमे अटकैत गेल।

पहिल संदेश ओ बटुकनाथ हरिहरनकेँ पठेलक—‘न्यासक प्रस्ताव तत्काल रोकू। बच्चा सभ नियंत्रणसँ बाहर अछि।’ संदेश भेजिते स्क्रीन पर दू धूसर चिन्ह आयल, मुदा नील नहि भेल। दोसर संदेश चन्द्रपालकेँ—‘स्वीकार सार्वजनिक नहि करू। कथा बदलू।’ ओहो अटकल। तेसर ब्रूमक सहायककेँ—‘भूत-जुलूसक घटना कमजोर नहि, खतरनाक अछि।’ ओहो अटकल। अन्तमे लाउ किन-हंगक सुरक्षित पता पर केवल दू शब्द पठेलक—‘नाम पसरल।’ फोन काँपल, फेर शान्त भऽ गेल।

राघव हँसए चाहलक। ओ अपन कमरामे असगरे छल। चारू दिस महँग परदा, ध्वनि रोकएबला देबाल, विदेशी घड़ी, काँचक मेज, आ हवा शुद्ध करएबला यन्त्र। बाहर शहरक ट्रैफिक गरजैत छल, भीतर केवल यन्त्रक मद्धिम गूँज। ओ गूँज एहन छल जेना कोनो बन्द बर्तनमे माछी भनभनाइत हो—सुनबामे किछु नहि, तइयो कानसँ हटैत नहि। ओ सोचलक—कदाचित सेवा-बाधा अछि। ओ दोसर फोन उठेलक। फेर तेसर। फेर छोट, पुरान यंत्र जे केवल आपतकालमे प्रयोग करैत छल। सभ पर वैह दशा। नेटवर्कक चिह्न पूर्ण, पहुँच शून्य।

तखन ओकरा चन्ना गाछीक नकली भूत-जुलूसक दृश्य मोन पड़ल। ओकरा रिपोर्टमे लिखल छल—‘भावनात्मक जोखिम’। मुदा साँचमे जोखिम भावना नहि छल; जोखिम ई छल जे लोक संकेतक भाषा छोड़ि नामक भाषामे घुरि रहल छल। अपराधक जाल संकेत पर चलैत अछि; समाज नाम पर। संकेत जतेक गुप्त, ओतेक उपयोगी। नाम जतेक स्पष्ट, ओतेक मुक्त। राघव पहिल बेर बुझल जे चन्ना गाछी ओकर पेशा पर हमला नहि कऽ रहल, ओकर अस्तित्वक भाषा पर हमला कऽ रहल अछि।

राति गाढ़ भेल। ओ फोन बन्द कऽ देलक। मुदा बन्द फोनक कारी स्क्रीनमे ओकर चेहरा नहि, कटल ठूँठक जड़ि देखाइ पड़ल। राघव झटकि कऽ उठल। स्क्रीन फेर कारी। ओ अपन आँखि मललक। फेर स्क्रीनमे हलचल भेल—एक-एक कऽ पात उगि रहल छल। पात पर शब्द नहि, नाम छल। उज्ज्वल। सरयू। मुन्ना। मजदूरक अधूरा नाम। पेंशन सूची सँ हटायल स्त्रीक नाम। अस्पतालक बरामदामे रोकल देहक नाम। चन्द्रपालक पहिल धोखा खाएल युवकक नाम। नाम सभ पात बनि स्क्रीनमे भरि गेल। काँच आँगुर तर अचानक छालक खरखरी जकाँ बुझाएल —चिक्कन यन्त्रमे गाछक स्पर्श।

ओ डरि कऽ फोन फेकऽ चाहलक, मुदा फोन हथेली सँ चिपकि गेल। एतबा बरख ओ आन लोकक जीवनक आँकड़ा हाथमे राखैत छल; आइ नाम सभ ओकर हाथ पकड़ि रहल छल। ओ फोनक भीतर सँ आवाज सुनलक—‘सन्देश भेजबासँ पहिने प्राप्तकर्ता चुनैत छलहुँ। आब नाम सभ स्वयं प्राप्तकर्ता चुनत।’ राघवक गला सूखि गेल। ओ पानि पीबाक लेल उठल, मुदा गिलासक पानि पर गोल-गोल तरंग उठि रहल छल, जेना कियो दूर चन्ना गाछीक ठूँठक लग कंकड़ फेकैत हो।

ओ अपन पुरान नोटबुक निकाललक। बहुत कम लोक जनैत छल जे राघव डिजिटल जालक भीतर रहितो कागच पर निजी हिसाब राखैत छल। कागच ओकरा भरोस-जोग लगैत छल, कारण कागचक कोनो प्रतिलिपि स्वतः नहि बनैत। ओ नोटबुक खोललक—कूट-नाम, तिथि, प्रतिशत, मध्यस्थता, दान, श्रद्धांजलि, सलाह, ट्रस्ट, परामर्श। प्रत्येक पंक्ति लाभक आघात छल। मुदा जखन ओ पढ़ए लागल, ‘प्रतिशत’ शब्द प्रत्येक पाँतिमे बदलि कऽ ‘प्रतिश्रुत’ बनए लागल। ओ चौंकल। जे धनक हिस्सा छल, से वचनक बोझ बनि गेल।

ठीक ओहि समय चन्ना गाछीमे बच्चा सभ रातिक पहरा दैत बैसल छल। अनन्या कहली, ‘आइ संकेत अटकाओल जाएत।’ एकटा बालक पूछलक, ‘संकेत केना अटकत?’ अनन्या ठूँठक हरियर बिन्दु पर हाथ राखि कहली, ‘जकर भाषा नाम नहि लेत, ओकर बाट रोकल जाएत।’ बच्चा सभ गोल बनि बैसल आ कबड्डीक साँस शुरू केलक—धीमे, नमगर, नहि टूटएबला। ‘कबड्डी-कबड्डी’ नहि, ओ सभ कहैत रहल—‘उपस्थित-उपस्थित।’

एहि ‘उपस्थित’क लय शहर धरि गेल कि नहि, ओकर प्रमाण कोनो यन्त्र नहि देलक। मुदा राघवक फोन ओहि क्षण काँपल। स्क्रीन पर संदेश आयल—प्रेषक: अज्ञात। विषय: उपस्थित। भीतर केवल खाली स्थान। राघव खालीपन पढ़ैत रहल। खाली स्थानक भीतर ओकरा अपन अनेक वाक्य सुनाइ पड़ल—‘हम केवल संदेशवाहक छी।’ ‘हम किछु नहि केलहुँ।’ ‘हम सलाह

देलहुँ, आदेश नहि।' 'हमरा लाभ नहि, शुल्क भेटल।' प्रत्येक वाक्य ओहि खाली स्थानमे घुसिते टूटि गेल।

ओ तुरन्त प्रतिउत्तर लिखए लागल—'कृपया चिन्हारि बताउ।' फोन लिखलक—'चिन्हारि अहाँक चाही।' ओ मेटेलक। फेर लिखलक—'ई अनुचित घुसपैठ अछि।' फोन लिखलक—'घुसपैठ ओ छल जे अहाँ नामक घरमे कएलहुँ।' ओ काँपि गेल। तकनीक ओकर नियंत्रणमे नहि रहल। भाषा ओकर विरुद्ध गवाही देबऽ लागल।

बाहर कुकुर भुकल। परदा हिलल। वातानुकूलित कोठरीमे अचानक भीजल माटिक गन्ध भरि गेल। राघव बुझि गेल—चन्ना गाछीक ठूँठ, जकरा ओ गामक सीमित समस्या बुझैत छल, आब ओकर काँचक शहर-कक्षमे प्रवेश कऽ चुकल अछि। ओ एहि प्रवेशकेँ रोकि नहि सकत। किएक तँ ठूँठ दरबाजा सँ नहि, मौन सँ आयल छल।

ओ स्वयंकेँ बुझेलक—'अपराधी सभ भावुक भऽ रहल अछि। हमरा स्थिर रहबाक चाही।' ओ मेज पर बैसल, सभ फोनक बैटरी अलग कएलक, तार निकाललक, खिड़की खोललक। परदा सँ रातिक हवा आयल। दूर, शहरक हजार इजोतक बीच, ओकरा एकटा कारी आकार देखाइ पड़ल—न गाछि, न टावर; किछु बीचक। ओकरा लगल जे पूरा शहरक नेटवर्क-टावर सभ चन्ना गाछीक कटल डारि बनि गेल अछि। सभ तार जड़ि खोजि रहल अछि।

ओ राति पहिल बेर राघव बिनु लिखने सोचए लागल। जँ संदेश नहि जाए, तखन मनुष्य अपन भीतर के सुनैत अछि? जँ उत्तर नहि आबए, तखन दोष ककरा देत? जँ गायब होएबाक साधन बन्द भऽ जाए, तखन अपराधक चेहरा कतऽ नुकाएत? ई प्रश्न ओकर भीतर एना घूमए लागल जेना कबड्डीक खेलाड़ी साँस रोकि ओकर छातीमे दौड़ि रहल हो।

चन्ना गाछीमे ओहि समय बूढ़बा भूत बच्चा सभक घेरा लग चुपचाप बैसल छलाह। ओ धीरे कहलनि, 'नेटवर्क ओहि ठाम टूटैत अछि जतय झूठ बाट माँगैत अछि।' बच्चा सभमे सँ एक पूछलक, 'साँचक नेटवर्क?' बूढ़बा भूत हँसलाह—'साँचकेँ नेटवर्क नहि, सम्बन्ध चाही।' अनन्या एहि वाक्यकेँ रजिस्टरमे लिखि लेली।

भोरक पहिने राघवक सभ फोन एक साथ चमकल। ओकरा लागल—आब संदेश सभ पहुँचल। मुदा स्क्रीन पर कोनो उत्तर नहि, केवल एक नक्शा छल। नक्शामे गढ़ नारिकेल, चन्ना गाछी, ठूँठ, नदी, पुल, अस्पताल, अदालत, श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग, भूत-जुलूसक मंच, आ ओकर शहरक कमरा—सभ एकहि रेखासँ जुड़ल। रेखाक ऊपर लिखल छल—'स्मृतिक नेटवर्क।' राघव ओकरा बन्द करए चाहलक। नक्शा बन्द नहि भेल।

ओहि नक्शामे एक नब बिन्दु चमकल—‘लाउ किन-हंग।’ राघवक कलेजा धक् भऽ गेल। जे नाम ओ सदिखन बचा कऽ रखैत छल, से स्वतः प्रकाशमान भऽ उठल। ओकरा बुझाइत रहल जे ई केवल फोनक भ्रम नहि। अपराध-जालक सर्वाधिक दूर कड़ी आब नामक पहराक घेरामे घुसि रहल अछि।

राघव कुर्सीसँ उठल। खिड़की लग गेल। सूरज उगबाक पहिल फिक्का उजास शहरक धुँआ पर पसरल छल। भोरक हवामे जरल डीजलक गन्धक संग कतहु दूरक भीजल गाछक गन्ध सेहो छल—शहर आ गाम, दुनू एक्के साँसमे। ओ धीमे स्वरमे, बिनु फोन, बिनु कूट, बिनु संकेत, पहिल बेर पूरा नाम कहलक—‘लाउ किन-हंग।’ शब्द मुँह सँ निकलिते ओकर कमरा हलुक भऽ गेल, मुदा ओकर देह भारी। नाम बोलब मुक्ति नहि छल; मुक्ति दिस पहिल भयावह पग छल।

ठीक ओहि घड़ी चन्ना गाछीमे अनन्या रजिस्टर बन्द करैत कहली, ‘आइ एकटा दूर नाम हिलल अछि।’ बच्चा सभ पूछलक, ‘आब की?’ अनन्या ठूँठक हरियर बिन्दु दिस देखली। से बिन्दु राति भरिमे कने नमगर भेल छल। ओ कहली, ‘आब नेटवर्क नहि, बाट खुलत।’

लोकगीत: भरोसक नेटवर्क

लोकधुन: युवक-विरहा

रहै हे भरोस, तारक जाल टूटौ—भरोस रहै हे,
साँच नाम कहनिहार माटि धरि बहै हे।

चारि पट्टी फोनपर, मुदा संदेश कतहु नहि,
जाल सभटा चालू, भरोसक धागा रहि नहि।
राघव बिनु संकेत पहिल बेर नाम कहलक,
‘लाउ किन-हंग’ उच्चारिते कमरा हलुक भेलक।
देह भारी, जीह खाली, भयक पग उठल,

नाम बोलब मुक्ति नहि—मुक्ति दिस बाट खुलल।
गढ़ नारिकेल कहलक—दूर नाम हिलल अछि,
नेटवर्क नहि, आब रास्ता खुलत अछि।
तारक जाल टूटि जाए, भरोसक जाल रहै,
साँच नाम कहनिहार एक दिन माटि धरि बहै।

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—कुम्हारक चाक — कर्ता, शक्ति आ मोक्ष: गामक बाहर कुम्हारक चाक घूमि रहल छल। माटि आस्ते-आस्ते घटक रूप लैत गेल।]

अध्याय ७६

लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

समुद्र पार कऽ आयल लोको ओही घाट उतरै छै जतय ओकर नामक पानि ठाढ़ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: समुद्रपार संगति

लोकधुन: बटोहिया गीत

चलू हे बटोहिया, समुद्रक पार चलू हे,
घरक बोली छाती मे, जगक ज्ञान बलू हे।

समुद्रपारक यात्री सेहो ओही चान निहारै,
घरक नाम, मायक बोली हृदय भीतर सम्हारै।
दूर देशमे संग बनाउ, सत्यापनक रीत,
परदेसियो अपन हक जानू, साझा सुरक्षा प्रीत।

भाषा अलग, कानून अलग, मानुखक मान समान,
विश्वास सावधानी संग हो, एहीमे कल्याण।
समुद्रपार संगति बनि दूरीकेँ पुल करै,
घरक गन्धि आ विश्वक ज्ञान संग-संग फलै।

परदेसक गली-गली मे सत्यापनक साथी,
हकक पोथी बगल मे, सावधानीक बाती।
भाषा भिन्न, नियम भिन्न, मानुख एक समान,
संगतिक पुल बान्हि लिअ, दूरी हारत मान।

❖

मिथिला दिस मुँह केने ओ छाह आब देह धरए लागल छल। राघव सिग्नलक बिनु नेटवर्क राति भरि लाउ किन-हंगक शहर धरि पहुँचल। संदेश नहि पहुँचल, मुदा न पहुँचबाक समाचार पहुँचि गेल। विशाल काँचक भवनक बाइसहम तलापर बैसल लाउ अपन सोझाँ पसारल परदा सभ पर गढ़ नारिकेलक छोट-छोट चित्र देखैत रहल—कटल चन्ना गाछी, ठूँठक चारू कात नामक पाथर, बच्चा सभक रजिस्टर, नकली भूतक जुलूसक असफलता, आ चन्द्रपालक धुँधलायल चेहरा। परदा सभ पर चित्र छल, परदा सभ पर आँकड़ा छल, मुदा लाउकेँ पहिल बेर बुझायल जे आँकड़ा चुप अछि आ चित्र ओकरा पर नजरि राखि रहल अछि।

ओकर कक्ष समुद्र दिस खुलैत छल। नीचाँ जहाजक पंक्ति, बत्ती, माल, बीमा, करार, ऋण, दबाइ, औजार, श्रम, अंग, डेटा—सभ वैश्विक प्रवाहक भाग बनि चलि रहल छल। लाउकेँ

एहि प्रवाह पर गर्व छल। ओकरा लग संसार नक्शा नहि, मार्ग छल; मनुष्य चेहरा नहि, संख्या; देश सीमा नहि, अवसर। मुदा गढ़ नारिकेलक ठूँठ ओकर नक्शामे कोनो लाभकारी बिन्दु जेकाँ नहि, एकटा जिद्दी कारी दाग जेकाँ उभरि रहल छल।

रातिमे ओकर सलाहकार सभ आयल। एकजना कहलक—“स्थानीय भावनात्मक प्रतिरोध अछि; समयक संग शान्त भऽ जाएत।” दोसर कहलक—“विरासत-परियोजनामे दान बढ़ाउ, स्थानीय संस्था कीनू।” तेसर कहलक—“नामक अभिलेखकेँ डिजिटल रूपेँ सुरक्षित करबाक प्रस्ताव दी, तखन नियंत्रण अपने हाथमे आओत।” लाउ सुनैत रहल, पर उत्तर नहि देलक। कारण ओकरा बुझि रहल छल जे समस्या भावनात्मक नहि, भाषाहीन सेहो नहि। समस्या ई छल जे ओहि गाममे नाम सभ जीवित रहबाक विधि सीखि गेल अछि।

ओ राति सुतल तखन स्वप्नमे एक दीर्घ नदी आयल। नदीक जलमे गोहि सभ तैरि रहल छल। ओ सभ देह नहि चिबा रहल छल; ओ सभ कागच, करार, गोपनीय परिशिष्ट, दान-पत्र, अघोषित खाताक पन्ना, आ विदेशी सलाहक रिपोर्ट चिबा रहल छल। लाउ भागए चाहलक, मुदा ओकर पएर काँचक फर्श पर नहि, कीचड़मे धँसल छल। एक गोहि मुँह खोलि कऽ पूछलक —“तोहर नाम कोन जलमे लिखल अछि?” लाउ जगि उठल। ओकर माथ पर पसेना छल, एयर-कंडीशनर चलि रहल छल, समुद्र दूर चमकि रहल छल।

भोर होइत ओ भारत-यात्राक निर्णय लेलक। सार्वजनिक रूपेँ ई यात्रा “संस्कृति आ पुनर्वास निवेश”क समीक्षा कहल गेल। निजी रूपेँ ई यात्रा राघवक टूटल नेटवर्क, चन्द्रपालक चिरल स्वीकार, बटुकनाथक स्वप्न-दरबार, आ एडवर्ड ब्रूमक असफल दानक जाँच छल। वास्तविक रूपेँ, जकरा लाउ स्वयं स्वीकार नहि करैत छल, ई यात्रा ओकर मोनक टाँगल गिट्ठक खिंचाव छल।

प्रस्थानक पहिने ओकर टेबुल पर एक फोल्डर राखल गेल। शीर्षक छल—“गढ़ नारिकेल: जोखिम आ अवसर।” भीतर नामक सूची छल, परिवारक हाल, राजनीतिक सम्बन्ध, स्थानीय जाति-रेखा, धार्मिक स्थल, पुल-परियोजना, विरासत-सौन्दर्यीकरण, कानूनी मार्ग, सम्भावित प्रतिरोध। लाउ सूची उलटैत रहल। अचानक ओकर आँखि एक शब्द पर अटकि गेल—“गंगेश।” नोटमे लिखल छल—“स्थानीय दार्शनिक प्रतीक; नव्य न्याय; जाति-विवाद; स्मृति-राजनीतिमे उपयोग।” लाउ मुस्कुराए चाहलक, मुदा मुस्कान अधमे रुकि गेल। ओ सोचलक—दार्शनिक प्रतीक सेहो जोखिम-तालिकामे आबि गेल।

हवाई जहाजमे ओकरा पहिल श्रेणीक कोना भेटल। ओ खिड़की लग बैसल। शहरक काँच, समुद्र, पुल, बंदरगाह, जहाज, सभ छोट होइत गेल। बादलमे प्रवेश करैत ओकरा एक पल लेल लागल जे पृथ्वी सँ ऊपर उठब सरल अछि। कान भीतर हवाक दाब बदलल आ एक महीन सीटी बाजि कऽ चुप भऽ गेल—जेना कतहु दूर कोनो खेलक सीटी। धनी लोक, कम्पनी, अपराध-जाल, पूँजी—सभ एहि भ्रममे जीबैत अछि जे ऊँचाई पापकेँ छोट करि दैत अछि। मुदा बादलक बीच जखन जहाज स्थिर भेल, ओकरा कानमे दूर सँ "कबड्डी-कबड्डी"क स्वर आयल।

लाउ अपन कान ढाँकलक। स्वर बन्द नहि भेल। विमानक भीतर यात्री सभ शान्त छल। सेविका पेय पदार्थ दऽ रहल छली। परदापर यात्रा-पथ चमकि रहल छल। मुदा स्वर ओतहि छल—साँस रोकल, लयबद्ध, अड़ियल। लाउकेँ बुझायल जे कोनो बच्चा विमानक पंख पर दौड़ि रहल अछि। ओ आँखि बन्द केलक। अन्हारमे कटल चन्ना गाछीक ठूँठ, हरियर बिन्दु, आ पाथरक घेरा देखायल।

ओ पहिल बेर अपन बचपन मोन कएलक। एहन स्मृति जकरा ओ जीवनक हिसाब सँ कहियेक हटौने छल। छोट बंदरगाह, नमीदार गली, बापूक छोट दुकान, माछक गन्ध, कर्जक डर, आ एक दिन धनी व्यापारीक हाथमे बापूक झुकल पीठ। लाउ सोचने छल—एक दिन ओ झुकत नहि; सभ ओकरा सोझाँ झुकत। मुदा ई नहि सोचलक जे झुकबाक बदला लोकक नाम मेटएबाक व्यवसाय बनि सकैत अछि।

ओकर कातमे बैसल एक वृद्ध भारतीय यात्री मैथिली अखबार पढ़ि रहल छल। लाउ मैथिली नहि बुझैत छल, मुदा अक्षर ओकरा पानिक लहरि जेकाँ देखाइत छल। वृद्ध ओकरा दिशामे तकलखिन आ अंग्रेजी बोलबाक प्रयत्न कएलनि, फेर स्वयं रोकलखिन, मुस्की देलनि, आ अखबारक एक कोना देखौलखिन। ओतय छोट समाचार छल—"गढ़ नारिकेलमे नाम-उत्सव।" लाउ शब्द नहि पढ़ि सकल, मुदा फोटोमे ठूँठक चारू कात बच्चा सभ देखलक। ओ अनायास पूछलक—"ई स्थान? वृद्ध कहलखिन, "ओतय मृतक सभक नाम जीबैत अछि।""

लाउक भीतर एक ठंढा चीज चलल। ओ कहए चाहलक—"नाम तँ सर्वर पर सेहो जीबि सकैत अछि।" मुदा वृद्धक आँखि एहन छल जे ओ बात हास्यास्पद लगत। वृद्ध फेर कहलखिन—"सर्वर बन्द भऽ जाए, तँ?" लाउ चौंकल। की ओकर विचार पढ़ल गेल? वृद्ध अखबार मोड़ि देलखिन। कहलखिन—"कागच सेहो जरि जाइत अछि। मुदा जँ बच्चा सभ सुनि लेलक, तखन नामक दोसर जीवन शुरू होइत अछि।"

यात्राक बीच लाउकेँ निन्न आबि गेल। एहि बेर स्वप्नमे ओ कोनो विमानमे नहि, चन्ना गाछीक ठूँठक भीतर चलि रहल छल। भीतरक मार्ग गोलाकार, नमीदार, आ अनगिन रेखासँ भरल छल। प्रत्येक रेखा पर एक तर्क, प्रत्येक तर्कक पाछाँ एक जीवन, प्रत्येक जीवनक पाछाँ एक बहिष्कार। दूर एक स्वर कहलक—“प्रमाण देखब?” लाउ मुड़ल। एक आकृति, न वृद्ध, न युवा, न शास्त्री, न भूत—हाथमे मणि-जेकाँ उजास रखने ठाढ़ छल। ओ नाम नहि कहलक, मुदा लाउ बुझि गेल जे ई गंगेशक प्रश्न अछि।

आकृति पूछलक—“लाभक प्रमाण की?” लाउ कहलक—“संख्या।” आकृति पूछलक—“संख्याक प्रमाण की?” लाउ कहलक—“लेखा।” आकृति पूछलक—“लेखाक प्रमाण की?” लाउ चुप। आकृति कहलक—“जकरा नाम नहि, ओकर हानि केना गनब?” लाउ उत्तर खोजलक, मुदा ओहि मार्गक देबाल पर हजार-हजार पात खुलि गेल। तत्त्वचिन्तामणिक बारह हजार सूक्ष्म रेखा जेकाँ, प्रत्येक रेखा कहैत छल—न्याय बिनु नामक गणना आन्हर अछि।

लाउ जगि उठल। विमान भारतीय आकाशमे प्रवेश कऽ चुकल छल। कप्तानक आवाज आयल। नीचाँ बादलक फाँकिसँ नदीक जाल देखाइत छल। ओकरा पहिल बेर भारत बाजार नहि, जल-रेखासँ लिखल एक विशाल स्मृति लागल। ओ सोचलक—ई देश बहुत बेर हारि कऽ सेहो बाँचल केना? कदाचित कारण ई जे एतय नाम पूर्णतः नष्ट नहि होइत, ओ लोकक कथा, जाति, पाप, प्रतिरोध, देवता, गाली, गीत, कबर, घाट, विवाह, बहिष्कार, न्याय, अन्याय—कोनो ने कोनो रूपमे घुरि अबैत अछि।

दिल्ली उतरबाक पूर्व ओकर सहयोगी संदेश पठेलक—“आगमन पर प्रेसक प्रश्न होएत; कृपया पुनर्वास, दान, साझेदारी, स्थायित्व, संस्कृति शब्दक प्रयोग करू।” लाउ संदेश पढ़लक। प्रत्येक शब्द ओकरा चिक्कन पाथर जेकाँ लागल, जे पानिमे डुबि सकैत अछि मुदा जड़ि धरि नहि पहुँचैत। ओ उत्तर नहि देलक। केवल लिखलक—“गढ़ नारिकेल पहुँचब।” सहयोगी तुरन्त लिखलक—“पहिने राजधानी बैसकी।” लाउ स्क्रीन बन्द कऽ देलक।

विमान अवतरित भेल। रनवे पर पहिया लगितहि ओकर कानमे फेर “कबड्डी”क स्वर आयल। एहि बेर स्वर दूर नहि, पएरक नीचाँ छल। जनु रनवे कोनो खेलक रेखा हो, आ विमान ओकर पार घुसि आएल रेडर। लाउकेँ अनायास साँस रोकए पड़ल। ओ हँसल—अपन ऊपर, अपन डर पर। मुदा हँसी घेंटमे अटकि गेल।

हवाई अड्डाक काँचक गलियारामे चलैत ओ अपन प्रतिबिम्ब देखलक। पहिने सूट पहिरल, अनुशासित, ठंढा चेहरा देखायल। फेर चमक बदलल। प्रतिबिम्बमे ओकर आँखि ओकर नहि

रहल। पलक झपकाबैत ओ देखलक—काँचक भीतर एक गोहि नमहर देह पसारने अछि। ओकर मुँह बन्द, मुदा आँखि खुलल। गोहि ओकरा न खा रहल छल, न डरबैत छल। बस देखैत छल। जनु कहैत हो—"तोँ देह नहि—नाम लऽ कऽ आयल छेँ कि बेनाम लाभ?"

इमिग्रेशन-कक्षमे अधिकारी ओकर पासपोर्ट उलटलक। नाम पढ़लक—लाउ किन-हंग। मोहर मारल गेल। कागच पर प्रवेश मिलल। मुदा लाउकेँ बुझायल जे भारतमे ओकर वास्तविक प्रवेश एखन नहि भेल। वास्तविक प्रवेश ओहि दिन हएत जखन गढ़ नारिकेलक बच्चा ओकरा पूछत—"अहाँक नामक प्रमाण की? अहाँक लाभमे केकर लहू अछि? अहाँ जे स्मृति कीनए आयल छी, ओकर स्वामी के?"

बाहर मीडिया प्रतीक्षा करि रहल छल। फ्लैश चमकल। सहयोगी सभ मुस्कानक अभ्यास करबैत बढ़ल। मुदा लाउक आँखि काँचमे अटकल गोहि पर रहि गेल। काँचक भीतरक जीव धीरे-धीरे पानि बिनु तैरि रहल छल। ओहि क्षण ओकरा बुझि पड़ल—गढ़ नारिकेल ओकर यात्रा-गन्तव्य नहि, ओकर भीतरक सुनवाईक दरबाजा अछि।

ओ हवाई अड्डासँ बाहर निकलल। गरम हवा, धूलि, ईंधनक गन्ध, चाह, पसेना, घोषणाक शोर, टैक्सी-चालकक आवाज—सभ एक्के संग ओकरा घेरि लेलक। काँचक शीतल संसार टूटि गेल। पहिल साँसमे गरमी छाती धरि उतरि गेल, आ सूटक कपड़ा देहसँ सटि गेल—बाइसहम तलाक ठंढक सभ स्मृति एक्के क्षणमे पघिलि गेल। ओ अपना दुभाषियाकेँ कहलक—"सीधा गढ़ नारिकेल।" दुभाषिया चौंकल—"आइ?" लाउ उत्तर देलक—"जतबे देर करब, गोहि आँखि नहि झपकाओत।"

एहि वाक्यकेँ दुभाषिया बुझि नहि सकल। पर हवाई अड्डाक काँचमे, दूर पाछाँ, गोहिक आँखि सचमुच झपकल।

लोकगीत: समुद्रपारक यात्री

लोकधुन: बटोहिया गीत

खोजै हे पएर, माटि खोजै हे,
जकर नाम नदी मे अछि, ओकरा बाट बोलै हे।

समुद्र पारक लोक सेहो ओही घाट उतरै,
जतय ओकर नामक पानि आँखि खोलि ठहरै।
काँचक बाइसहम तलासँ गाम छोट देखायल,
हवाई अड्डाक गरम धूलिमे साम्राज्य पिघलायल।

दुभाषिया पूछलक—आइये गाम जएब?

लाउ कहलक—देर करब तँ गोहि नहि झपकत।
यात्रा गन्तव्य नहि, भीतरक सुनवाई द्वार,
धन, देश, पासपोर्ट सभ रहि गेल बाहर।
समुद्रपारक पएर मिथिलाक माटि खोजै,
जकर नाम नदीमे अछि, ओकरा बाट स्वयं बोलै।

दुभाषिया पुछलक—आइए गाम जाएब?
'अबेर कएला पर गोहि ने झपकत'—उत्तर आएल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—मणि आ अग्नि: एक तान्त्रिकक मणि विषयमे प्रसिद्ध छल जे ओकर निकट अग्नि हाथ नहि जरबैत अछि। अग्नि जरल, हाथ निकट गेल, मुदा दाह नहि भेल—एना कथा कहैत अछि।]

अध्याय ७७

हवाई अड्डापर गोहि

हवाई अड्डाक शीशामे शहरक इजोत बिकाइ छै, मुदा गोहिक आँखि मुफ्तमे देखा जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: शीशा साफ, आँखि साफ

लोकधुन: शहर-पराती

जागू हे नगर, शीशा पोछि जागू हे,
काँचक संग करेजो पारदर्शी राखू हे।

शीशाक देबाल चमकै, भीतर मनो साफ हो,
गोहिक आँखि नहि, करुणाक दृष्टि माफ हो।
लाभक काँच पारदर्शी, श्रमक नाम देखाए,
शहरक उजास गामक हककैँ नहि नुकाए।

खिड़की खोलू, पवन आवय, हिसाब जन पढ़ि ले,
दर्पणमे अपन काज देखि संस्था सीखि ले।
शीशा साफ, आँखि साफ—एहि नियमपर नगर,
मानव मानक उज्जर इजोत रहय अमर।

मीनार जते ऊँच उठए, जड़ि मे श्रमक नाम,
हिसाबक खिड़की खुलल रहए, पढ़ए आम-अवाम।
गोहिक ठण्ढ नजरि नहि, करुणाक भोर-दृष्टि,
गामक हक जोगबैत चमकए शहरक सृष्टि।

❖

गोहिक ओ झपकल आँखि जे दरबाजा खोलने छल, ओकर पहिल सीढ़ी हवाई अड्डाक भीतरे छल। लाउ किन-हंगक विमान राति आ भोरक बीच उतरलक। हवाई अड्डाक शीशा पर शहरक उजास एना पसरल छल जेना आकाश अपन सभ तारा बेचि कऽ धरती पर विज्ञापन लगा देने हो। विमानक पेट सँ लोक निकलैत गेल—कियो थाकल, कियो उत्साहित, कियो झोरा सँ पासपोर्ट निकालैत, कियो मोबाइलक परदा पर अपन अगिला संदेश देखैत। लाउ किन-हंग सभसँ पाछाँ उतरलक। ओकर चालमे व्यापारीक संयम छल, मुदा भीतरक मोन ओहि घड़ीसँ टाँगल छल जखन हांगकांगक काँचक मीनारमे ओ चन्ना गाछीक कटायल ठूँठक स्वप्न देखलक।

भारतक धरती पर पहिल पग राखिते ओकरा कोनो गन्ध भेटल—मसाला, डीजल, नमी, पसेना, भीजल कपड़ा, आ दूर कतहु सँ अबैत माटिक गन्ध। ओ गन्ध हवाई अड्डाक शीतल हवाकेँ चीरैत भीतर पैसल। लाउ ओहि गन्धकेँ 'स्थानीय असुविधा' मानि नाक सिकोड़लक, मुदा ओकर मन तुरन्त कहि उठल—एहि गन्धमे नाम अछि। जे सभ देश ओ केवल तालिका, बाजार, जोखिम, श्रम-खर्च आ मुकदमे-प्रबन्धनक रूपमे देखैत छल, ओहि देशक पहिल प्रत्यक्ष ओकर नाकमे घुसल।

आगमन कक्षमे नमहर पंक्ति छल। घोषणाक प्रतिध्वनि ऊँच छत सँ टकरा कऽ एना घुरैत छल जेना शब्द सभ अपन वाक्य बिसरि गेल हो। डिजिटल द्वार पर चेहरा मिलानक इजोत चमकैत छल। लाउक पासपोर्ट, निवेशक-परिचय, विशेष अनुमति, सभ व्यवस्थित छल। ओकरा भरोस छल जे व्यवस्था धनक भाषा चिन्हैत अछि। मुदा जखन ओ काँचक चौखट पर ठाढ़ भेल, मशीन ओकर चेहरा पर हरियर प्रकाशक बदले नील-पीयर झिलमिलाहट छोड़लक। परदा पर किछु क्षण लेल ओकर चेहराक स्थान पर एक गोहिक आँखि उभरि आयल—स्थिर, भीजल, प्राचीन, अनपढ़ मुदा सभ देखैत।

अधिकारी चौंकल नहि; ओकरा कदाचित परदा पर केवल तकनीकी त्रुटि देखाइ पड़ल। ओ मुस्की कऽ कहलक—"कृपया फेर देखू।" लाउ फेर कैमरा दिस ताकलक। एहि बेर ओकर चेहरा मिलि गेल, मोहर लागल, द्वार खुलि गेल। मुदा जखन ओ शीशाक पंक्ति पार कएलक, ओकरा लागल जे गोहिक आँखि ओकरा संगे चलि रहल अछि। शीशा, फर्श, स्टीलक रेलिंग, ड्यूटी-फ्री दुकानक शोकेस—सभमे एक क्षण लेल ओही आँखि चमकि उठैत।

ओ अपन सहायककेँ कहलक—"एहि देशक मशीन ठीक नहि।" सहायक, जे पहिनेसँ दिल्लीमे ठहरल छल, धीरे उत्तर देलक, "मशीन ठीक अछि, महाशय। एतय कहियो-कहियो प्रतिबिम्ब बेसी देखाइ दैत अछि।" ई वाक्य सुनि लाउ असहज भेल। ओकर व्यापारक संसारमे प्रतिबिम्बक कोनो मूल्य नहि; मूल्य असल संपत्ति, अनुबन्ध, खाता, नियंत्रण, डेटा, आ मुकदमे टारबाक उपायमे छल। मुदा चन्ना गाछीक संसारमे प्रतिबिम्ब सेहो साक्षी बनि सकैत छल।

हवाई अड्डाक भीतर विशाल होर्डिंग चमकैत छल। एक पर लिखल छल—"नव भविष्य, नव आवास, पृथ्वीसँ परे सुरक्षित जीवन।" चित्रमे चमकैत गुंबद, कृत्रिम फुलवारी, धातुक नदी, आ मुस्कुराइत बच्चा छल। लाउ एहन परियोजनामे अप्रत्यक्ष निवेशक रहि चुकल छल। ओकरा लागैत छल जे पृथ्वी जतेक बूढ़, ऋणी, दूषित, मुकदमाबाज आ स्मृतिभारग्रस्त होएत, भविष्य ततेक दोसर ग्रहक नाम पर बिकत। मुदा होर्डिंगक चमकदार गुंबदक काँचमे फेर ओही गोहिक

आँखि देखाइ पड़ल। जनु पृथ्वी कहि रहल हो—जे हमरा देह चिबा कऽ भागए चाहैत अछि, ओकरा कल्पित अनाम ग्रहपर सेहो नाम चाही।

लाउक सहायक ओकरा विशेष अतिथि-कक्ष दिस लऽ गेल। ओतय कॉफीक गन्ध, मुलायम सोफा, शान्त संगीत, आ समाचारक मूक परदा छल। समाचारमे गढ़ नारिकेलक चन्ना गाछी, कटल ठूँठ, नाम-उत्सव, नकली भूतक जुलूस, आ विरासत-परियोजना पर बहस चलि रहल छल। शब्द ओ सुनि नहि सकैत छल, मुदा दृश्य देखैत छल। ठूँठक चारू कात बच्चा सभ पाथर राखैत छल। ओ बच्चा सभक आँखिमे ओकरा कोनो निवेश-अवसर नहि, एक अजगुत अवरोध देखाइ पड़ल।

ओ पूछलक—“ई बच्चा सभकेँ हटाओल नहि गेल? सहायक कहलक, “हटाओल जा सकैत अछि, मुदा हटाओलाक बाद ओ सभ आर बेसी जगहमे पसरि जाएत।”” लाउ बुझल नहि। ओकर अनुभवमे अवरोध हटाओल जाइत छल—कीन कऽ, डरा कऽ, केस कऽ, रोजगारक वादा कऽ, वा डेटा बदलि कऽ। मुदा स्मृति जँ बच्चा सभक हाथमे पहुँचि जाए, तँ ओकरा कतेक हाथसँ हटाओल जाए? ई प्रश्न ओकर व्यापार-शिक्षामे कखनो पढ़ाओल नहि गेल छल।

कक्षमे बटुकनाथ हरिहरनक संदेश आयल—“स्थानीय भावनाकेँ वैधानिक न्यासमे समेटबाक मार्ग उपलब्ध अछि।” चन्द्रपालक संदेश आयल—“श्रद्धांजलि-अनुप्रयोगक ढाँचा सुरक्षित अछि, केवल जनभावना-प्रबन्धन चाही।” राघव सिग्नलक संकेत आयल—“नब कोड सक्रिय, जोखिम भावनात्मक।” लाउ ई सभ पढ़ैत रहल। तीनू संदेश एकहि बात कहैत छल—स्मृतिकेँ फेर सँ वस्तु बनाओल जा सकैत अछि। मुदा ओकरा परदा पर अक्षरक पाछाँ-पाछाँ गोहिक दाँत देखा पड़ल।

ओ काँचक गिलासमे पानि भरलक। पानि एकदम साफ छल, पैक कएल, शीतल। ओ घूँट लेबय जा रहल छल कि गिलासक पेनीमे ओकरा नदीक पानि देखाइ पड़ल—गाढ़, हरियर-कारी, हलचलयुक्त। ओ गिलास मेज पर राखि देलक। सहायक पूछलक, “स्वास्थ्य ठीक नहि?” लाउ कहलक—“एहि देशमे पानि सेहो अतीत लऽ कऽ चलैत अछि? सहायक चुप रहल।” एहि प्रश्नक उत्तर व्यापारिक नहिये छल।

थोड़ेक कालक बाद काँचक दरबाजा खुलल। भीतर एक वृद्ध सफाईकर्मी अएलाह। ओ चुपचाप खाली प्याला उठाबऽ लगलाह। हुनक धोतीक किनार भीजल छल, जेना ओ नदी पार कऽ आबि रहल होथि, यद्यपि हवाई अड्डाक फर्श सूखल चमकैत छल। लाउ हुनका देखलक।

सफाईकर्मी क्षणभर लेल ठमकलाह आ कहलनि, “साहेब, पानि पीबैत काल नाम सोचब, तँ पानि साफ रहत।” लाउ अचकचाइ गेल। सहायक डाँटए चाहलक, मुदा वृद्ध हँसि कऽ चलि गेलाह।

लाउ पाछाँ सँ पूछलक—“ई के छलाह? सहायकक सूचीमे ओ कर्मचारीक नाम नहि भेटल।” कक्षक प्रवेश-पंजीमे सेहो कोनो प्रविष्टि नहि। सुरक्षा-कैमरा पर ओ वृद्ध देखाइये नहि पड़लाह। केवल टेबल पर रखल गिलासक पानि किछु क्षण लेल तरंगित छल। लाउक भीतर पहिल स्पष्ट डर उतरल—एतय बेनाम लोक सेहो देखाइ पड़ैत अछि, मुदा रिकॉर्डमे नहि। आ जे रिकॉर्डमे नहि, से सेहो वाक्य बाजि सकैत अछि।

हवाई अड्डासँ बाहर निकलैत काल ओकर स्वागत लेल कारी गाड़ी तैयार छल। चालकक नाम-पट्टी पर एक नाम लिखल छल, मुदा चालकक आँखि लाउकेँ देखिते एक क्षण लेल चन्ना गाछीक ठूँठक पाथर जेकाँ स्थिर भऽ गेल। चालक पूछलक, “गढ़ नारिकेल?” लाउ चौंकल—ओहि दिनक यात्रा-सूचीमे गढ़ नारिकेल सार्वजनिक नहि छल। ओ केवल दिल्लीमे सलाहकार सभसँ भेटबाक छल, फेर गुप्त बैसकी। सहायक तुरन्त कहलक, “नहि, पहिने होटल।” चालक शीशा देखैत मुस्कुरेलक—“सभ बाट आखिर ओतए जाएत।”

गाड़ी चलल। शहरक ऊँच पुल, चमकैत मॉल, विज्ञापन, धुँआ, लाल बत्ती, झोपड़पट्टीक कगार, मेट्रोक खम्भा, आ हवाई अड्डाक देबाल पाछाँ छुटैत गेल। लाउ शीशा सँ बाहर ताकैत रहल। ओकरा प्रत्येक नालीमे नदीक साँपिल छाह देखाइ पड़ैत, प्रत्येक मोड़ पर गोहिक पूँछ, प्रत्येक निर्माणाधीन ढाँचामे ओही पुलक पाया जकर नीचाँ मजदूरक नाम गुम भेल छल। ओ सोचलक—ई भ्रम अछि। मुदा भ्रम जँ एक्के कथा बेर-बेर देखाबय, तँ ओ अनुमानक प्रमाण नहि बनैत? गंगेशक न्यायक शब्द ओकरा बिनु पढ़ने भीतर घुसि रहल छल।

होटलक कक्ष काँच आ संगमरमर सँ बनल छल। नाङट पएर राखिते संगमरमरक शीतलता एड़ी सँ माथ धरि चढ़ि गेल—एहन ठंढ जे कोनो नदीक तरक नहि, बिनु स्मृतिक ठंढ छल। ओतय पृथ्वी कम, सुविधा बेसी छल। लाउ अपन जूता खोलि खिड़की लग ठाढ़ भेल। तलमे शहरक इजोत रेंगैत छल। ओकरा लागल जे इजोत सभ फोनक संकेत नहि, पानिमे चमकैत आँखि अछि। ओ परदा खिंचि देलक। मुदा परदा पर छाह बनल—नमहर गोहि, जकर मुख शहर दिस नहि, ओकरा दिस छल।

रातिमे ओकरा निन्न नहि आयल। किछु बेर बाद ओ स्वप्नमे हवाई अड्डाक आगमन-द्वार पर फेर ठाढ़ छल। अधिकारी नहि, ठूँठक बच्चा सभ कतारमे बैसल। पासपोर्टक स्थान पर

ओकरा हाथमे लाभ-हानिक खाता। अनन्या पूछैत छली—“नाम?” ओ कहैत—“लाउ किन-हंग।” बच्चा सभ कहैत—“ई बाजारक नाम। असल नाम?” ओ चुप। फेर गोहि आगाँ सरकल। ओकर दाँत चमकल, मुदा ओ देह पर नहि झपटल। ओ केवल खाता चिबाबय लागल। पन्ना-पन्ना खाता चिबाएल, आ प्रत्येक पन्नासँ एक-एक मजदूर, एक-एक ठगल युवक, एक-एक बेनाम स्त्रीक स्वर उठल।

जागल तखन भोरक पहिल धूसर रेखा काँचक पाछाँ छल। फोन पर एक संदेश चमकैत छल। संदेश सत्यव्रत मेहताक नहि, न ककरो सहायकक; बस एक वाक्य—“नाम सुनबाक अछि तँ आबि जाउ।” नीचाँ स्थान—न अदालत, न मंत्रालय, न बोर्डरूम; केवल लिखल छल—“पुरान हवाई अड्डा मार्गक खाली प्रतीक्षालय।”

लाउ संदेश मेटाबय चाहलक। परदा पर उँगुरी फिरबैत रहल, संदेश नहि मेटायल। ओ फोन बन्द कएलक, तखन पंक्ति काँचक खिड़की पर उभरल। ओ परदा हटाओलक, पंक्ति शहरक धुँआमे लिखायल। ओ आँखि बन्द कएलक, पंक्ति भीतर सुनाइ पड़ल। ओकरा बुझाइ गेल—ई निमन्त्रण नहि, खेहारैत गवाही अछि।

दुपहरिया धरि लाउ किन-हंग निर्णय लेलक जे ओ जाएत। ओ सोचलक—जाएब, देखब, सौदा करब, नियंत्रण लऽब। मुदा निर्णयक तलमे एकटा दोसर कम्पन छल—कदाचित ओ पहिल बेर कोनो एहन मनुखसँ भेटए जा रहल छल जे ओकर धन, जाति, देश, पासपोर्ट, आ भाषा सभकेँ किनार कऽ केवल नाम पढ़त।

एहि तरहेँ हवाई अड्डाक गोहि ओकर देह नहि चिबेलक; ओकर सुरक्षा-बोधक पहिल चाम उतारि देलक। ओ भारत आयल व्यापारी छल, मुदा प्रतीक्षालय दिस बढ़ैत समय ओकर छाह ओहि मनुखक छल जे अपन प्रतिबिम्बसँ भागि नहि सकैत। अगिला साँसमे सत्यव्रत मेहता ओकरा सोझाँ रहताह—बिनु हथियार, बिनु पदक गर्जना, केवल नामक भार लऽ कऽ।

लोकगीत: शीशामे गोहिक आँखि

लोकधुन: शहर-विरहा

कहै हे आँखि, झूठ ने कहै हे,
जकर छाह अपराधी, से अपना सँ कतऽ रहै हे।

शहरक उजास बिकै शीशाक देबाल,
गोहिक आँखि मुफ्तमे खोलै भीतरक हाल।
विमानसँ उतरलक व्यापारी, छाह भेल दोषी,

सुरक्षा-बोधक पहिल चाम उतरल चुप्पे रोसी।
निमन्त्रण नहि, खेहारैत गवाही आयल,

प्रतीक्षालयक बाटमे अपन प्रतिबिम्ब सतायल।
सत्यव्रत सामने रहत बिनु हथियार-पद,
केवल नामक भार, मौनक ठंढा नद।
शीशा चाहे चमकै, आँखि झूठ नहि कहै,
जकर छाह अपराधी, ओ अपनासँ कतय रहै?

शहरक उजास बिकए शीशाक देबाल भरि,
गोहिक आँखि मुफ्त मे खोलए भीतरक खबरि।
सुरक्षा-बोधक पहिल चाम चुप्पे उतरि गेल,
प्रतीक्षालयक बाट मे अपने प्रतिबिम्ब भेटल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—कथा 21 मोक्षक देहरी: वृद्ध साधक जीवनभरि यज्ञ, दान आ अध्ययन कएने छल। तत्त्वज्ञान दोषक मूल काटैत अछि; पूर्वकर्मक फल भोगद्वारा समाप्त होइत अछि।]

अध्याय ७८

सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

दू गोटेक मौन जखन एक्कहि प्रश्नपर अटकल हो, तखन ओहो संवाद थीक।

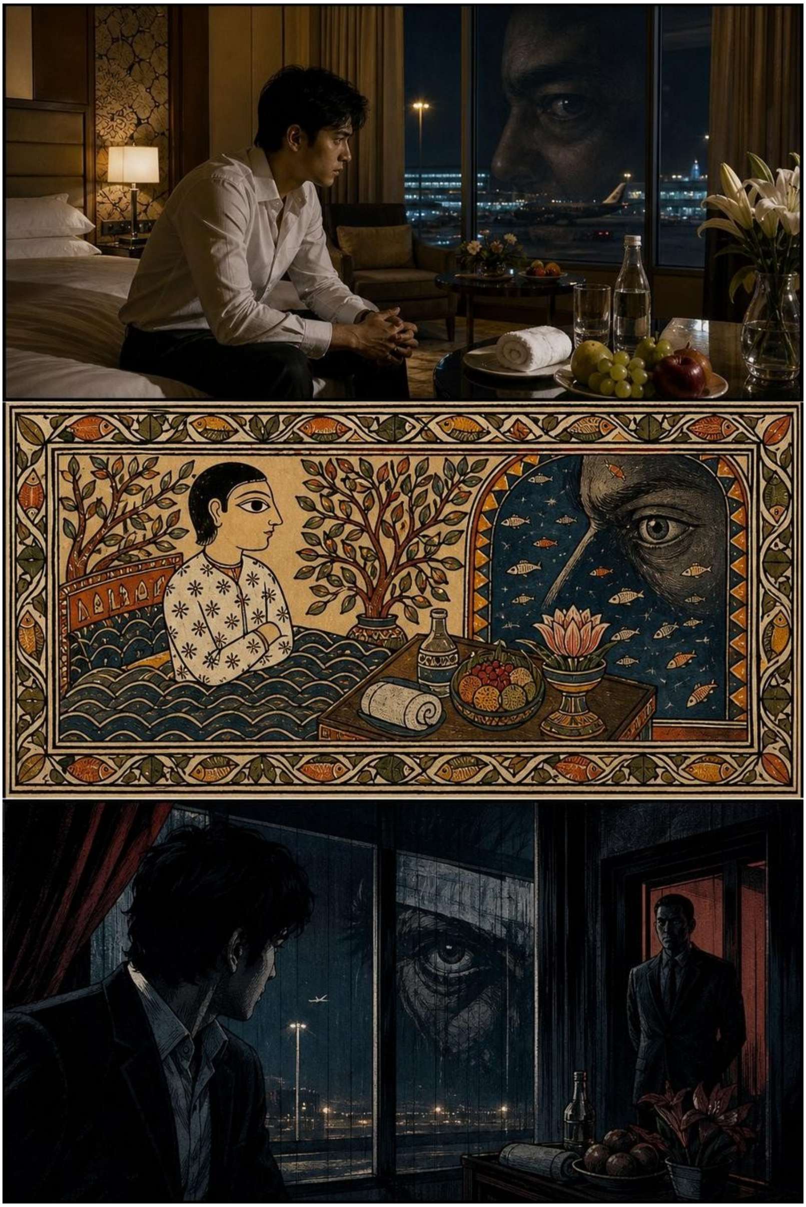

अध्यायारम्भ लोकगीत: मौनक पुल

लोकधुन: मौन-दोहरा

बान्हू हे पुल, दू मौनक बीच बान्हू हे,
शब्द नहि तँ समय दिअ, संग बैसल रहू हे।

दू मौन एक-दोसर लग बैसल, पवन बीच बोलल,
आँखिक नमी, हथेलीक थरथर संवाद खोलल।
शब्द नहि तँ समय दिअ, संगक आसन धरू,
मौनक पुलपर धीरे-धीरे विश्वासक पग भरू।

एक मौन दोषक हो, दोसर घावक गहींर,
सुनबाक धैर्य मिलिते दुनू पाबै नब नीर।
मौनक पुल पार कऽ साँचक कंठ उगै,
बिनु दबावक संवादे सम्बन्ध फेर जुड़ै।

एक मौन मे दोषक बोझ, दोसर मे घाव,
हथेलीक थरथराहट कहए भीतरक भाव।
आँखिक नोर सेतु बनल, धीरे-धीरे पार,
बिनु दबावक बैसार मे खुजल साँचक द्वार।

❖

प्रतीक्षालयक संदेश जे बाट खोलने छल, से बाट सोझे चन्ना गाछी धरि चलि गेल। हवाई अड्डाक शीशामे गोहिक आँखि देखलाक बाद लाउ किन-हंग राति भरि निन्न नहि कएलक। पाँचतारा अतिथिगृहक कोठरीमे बिछौना समुद्रक तरंग जेकाँ नरम छल, वातानुकूलनक हवा स्थिर छल, टेबुलपर फल, फूल, मिनरल जल, सुगन्धित तौलिया—सभ व्यवस्था एना निर्दोष जेना संसारमे कोनो दोष कखनो रहलिये नहि हो। मुदा ओकरा कानमे निरन्तर ओहि शीशाक भीतरक आँखि खरखराइत रहल। ओ आँखि ओकरा देखैत नहि, गिनैत छल—कतेक देह, कतेक खाता, कतेक कमीशन, कतेक मौन।

लाउ किन-हंग अपन सहायककेँ कहलक जे कोनो पत्रकारसँ भेंट नहि। कोनो निवेशक-भोज नहि। कोनो सांस्कृतिक भ्रमण नहि। ओकरा केवल ओहि मनुखसँ भेंट चाही जकर नाम भारतीय कागचमे अनेक बेर आयल छल—सत्यव्रत मेहता। सहायक हँसि देलक—‘ओ आब

सरकारी पदक भाषामे कम, लोक-सुननाइक भाषामे बेसी देखाइत छथि।’ लाउ किन-हंग उत्तर नहि देलक। पदहीन मनुख ओकरा सदिखन बेसी डरबैत छल, कारण पद कीनल जा सकैत अछि, मुदा सुनबाक ऋण नहि।

भेंटक ठाम ककरो दफ्तर नहि छल। सत्यव्रत मेहता ओकरा दिल्लीक कोनो भवनमे नहि, गढ़ नारिकेलक बाहरी सड़क पर नहि, अपितु चन्ना गाछीक कटायल ठूँठक लग बजौलनि। लाउ किन-हंगक सुरक्षा-दल पहिने विरोध कएलक। ओ सभ कहलक—“खुला ठाम, भीड़, भावनात्मक जोखिम।” सत्यव्रत सँ संदेश आयल—‘जँ भेंट चाहैत छी, तँ नामक ठाम आउ। जँ नाम सँ डर हो, तँ भेंटक कोनो प्रयोजन नहि।’

लाउ किन-हंग चन्ना गाछी पहुँचल तखन साँझ उतरि रहल छल। हवामे धूप, कटल लकड़ी, नदीक गन्ध आ भीजल पाथरक शीतलता मिलल छल। जे गामक नाम ओकरा फाइलमे केवल जोखिम-क्षेत्र लगैत छल, से एखन ओकर सोझाँ साँस लैत माटि बनि ठाढ़ छल। ठूँठक चारू कात पाथर पर नाम लिखल छल। किछु नाम पूरा, किछु अधूरा, किछु केवल चिन्ह। ओ पहिल बेर बुझलक जे बेनामी सम्पत्ति आ बेनाम मृतकमे आकाश-जमीनक अन्तर अछि—पहिल लुकाएल अपराध, दोसर छीनल अस्तित्व।

सत्यव्रत मेहता ओहि घेरा भीतर नहि, घेराक एक कात बैसल छलाह। हुनका लग ने सरकारी अंगरक्षक छल, ने बहसक तैयारी। केवल एक रजिस्टर, एक स्याहीकलम, आ एकटा पुरान झोरा। लाउ किन-हंग नमस्कारक औपचारिक मुद्रा बनौलक। सत्यव्रत माथ झुकौलनि, मुदा हाथ नहि जोड़लनि। ओ कहलखिन, ‘बैसू।’ एतबे।

लाउ बैसल। ओकरा अपेक्षा छल जे प्रश्न शुरू होएत—कम्पनी, खाता, अनुबंध, भुगतान, दान, अनुपालन। मुदा सत्यव्रत चुप रहलाह। ठूँठक पाछाँसँ बच्चा सभक धीमा स्वर उठल। ओ सभ नाम पढ़ि रहल छल। प्रत्येक नामक बाद भीड़सँ उत्तर अबैत—‘उपस्थित।’ ओ सामूहिक स्वर ने ऊँच छल ने धीमा—जेना बहुत रास दीपकक लौ एक्के संग कने-कने हिलल हो। लाउ किन-हंग पहिने एहि शब्दकेँ तीन अर्थमे बुझए लगल—उपस्थित, हिसाबमे आ अभिलेखित। फेर ओकरा बुझायल जे ई कोनो प्रशासनिक उपस्थिति नहि; ई मृतकक सामाजिक पुनर्जन्म छल।

पहिल दस नाम धरि लाउ केवल सुनैत रहल। एगारहम नामपर ओकर उँगुरी काँपि गेल। बारहम नामपर ओकर कानमे हांगकांगक बोर्डरूमक ध्वनि घुसल—‘प्रोजेक्ट सेगमेंट’, ‘लॉस एबसॉर्प्शन’, ‘ह्यूमन वेरिएबल’। तेरहम नामपर ओकरा अपन कम्पनीक तालिका देखाइ पड़ल,

जकर पंक्ति सभमे लोक नहि, लागत छल। चौदहम नामपर ठूँठक भीतरी रेखा लाल भऽ उठल। लाउ आँखि झपकलक। रेखा फेर सामान्य। सत्यव्रत ओकरा देखलनि नहि; ओ केवल सुनैत रहलाह।

बहुत कालक बाद लाउ स्वयं बाजल—“अहाँ हमरा पर आरोप लगबए चाहैत छी? सत्यव्रत शान्त स्वरमे कहलखिन—‘आरोप अदालत लगबैत अछि।” एतय नाम पढ़ल जाइत अछि।’ लाउ फेर पूछलक—“अहाँ प्रमाण चाहैत छी? सत्यव्रत रजिस्टरपर हाथ राखलनि—‘प्रमाणक अनेक रूप अछि।” गंगेश कहैत छथि—प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द। मुदा एतय एक चारिम पीड़ा सेहो अछि, जे शास्त्रक पंक्ति नहि, लोकक देह सँ बोलैत अछि। अहाँ ओकरा कागच मानब कि नहि, ई अहाँक संकट।’

गंगेशक नाम सुनिते लाउक सहायक नोट करए चाहलक। सत्यव्रत रोकलनि—‘ई उद्धरण नहि, प्रश्न अछि।’ फेर ओ पहिल बेर सोझे लाउक आँखिमे देखलनि। ‘अहाँक संसारमे नामक मूल्य खाता खोलबाक लेल अछि। हमरा एहि ठाम नामक मूल्य शोक, न्याय, आ मुक्ति लेल अछि। अहाँ लाभ गिनलहुँ। एक बेर नाम गिनू।’

लाउ किन-हंगक भीतर एक अजगुत रिक्तता खुलल। ओकरा लागल जे से गिनि सकैत अछि—पैसा, समय, जोखिम, देश, दलाल, न्यायिक विलम्ब, राजनीतिक सहारा, डेटा, दान। मुदा नाम गिनब? प्रत्येक नामक संग एक घर, एक देह, एक साँस, एक नोकसान, एक बचल बच्चा, एक बेचैन आत्मा जुड़ैत गेल। संख्या टूटि गेल। गणना पानिमे गलैत चूना जेकाँ बहए लागल।

चन्द्रमा उगि गेल छल। कटल ठूँठक छाह आब अजगुत रूप धरि रहल छल—न गाछि, न मनुख, न पशु। लाउकेँ ओ छाह गोहिक खुलल जबड़ा लगल। ओ हड़बड़ा कऽ उठए चाहलक। सत्यव्रत कहलखिन, ‘बैसल रहू। जे देखाइत अछि, ओकरा भागलासँ मेटाओल नहि जा सकैत।’ लाउ फेर बैसल, मुदा ओकर पीठ सोझ नहि रहि सकल।

बच्चा सभक नाम-पाठ रुकल। अनन्या आगाँ आयली। ओकर हाथमे एक छोट पाथर छल। ओ लाउक सोझाँ पाथर राखि पूछली, ‘अहाँ अपन नाम लिखब?’ सहायक बीचमे बाजए चाहलक, मुदा लाउ हाथ उठा ओकरा रोकलक। लाउ कहलक—“हमर नाम तँ लिखले अछि।” अनन्या उत्तर देली, ‘कागचमे लिखल नाम आ अपना अपराधक सोझाँ लिखल नाम एक नहि होइत अछि।’

लाउ पाथर उठौलक। ओकर हाथमे स्याहीकलम नहि, कोयलाक छोट टुकड़ा देल गेल। ओ देवनागरी नहि लिखि सकैत छल। अनन्या कहली, 'अहाँ अपना लिपिमे लिखू। मुदा कातमे हम उच्चारण लिखब।' लाउ अपन चिन्ह लिखलक। अनन्या धीरे-धीरे लिखली—'लाउ किन-हंग।' ओहि क्षण पाथर भारी भऽ गेल। लाउक हथेली नीचाँ झुकि गेल। ओकरा पहिल बेर अनुभव भेल जे नाम धातु नहि, भार अछि।

सत्यव्रत कहलखिन, 'एखन ई क्षमा नहि। एखन ई केवल उपस्थिति अछि। अपराधी उपस्थित हो, तखनहि पीड़ितक गवाही पूरा सुनाइ पड़ैत अछि।' लाउ एहि वाक्यक कानूनी अर्थ खोजैत रहल, मुदा भेटल नहि। ओकरा बुझायल जे एहि ठाम जीत-बचावक भाषा अनुपयोगी अछि। एतय जँ ओ झूठ बाजत, ठूँठ हँसत। जँ चुप रहत, चुप्पी लिखल जाएत। जँ भागत, पाथर ओकर नाम सँ भारी रहत।

दूर बटुकनाथ हरिहरनक भेजल लोक सभ देखैत छल। हुनका सभ लग खबर पहुँचल जे लाउ किन-हंग चन्ना गाछीमे बैसल अछि आ नाम सुनि रहल अछि। बटुकनाथ एहि समाचार पर मुस्कुरेलक—'विदेशी लोक भावनासँ जल्दी पसीजैत अछि।' मुदा ओकर मुस्की अधूरा रहल। कारण समाचारक दोसर पंक्ति छल—लाउ किन-हंग अपन दान-प्रतिज्ञा स्थगित कऽ रहल अछि। ओ पहिने अभिलेख सुनए चाहैत अछि। बटुकनाथक चेहरा कठोर भऽ गेल। दान रुकल तँ न्यासक कागच अधूरा।

ओहि राति लाउ किन-हंग गढ़ नारिकेलमे रहल। ओकरा अतिथिगृह चाही छल, मुदा बच्चा सभ ओकरा ठूँठक चारू कात रहबाक अनुमति नहि देलक। ओ कहलक—"सुरक्षा कारणेँ—अनन्या कहली, 'जे सभ नाम बिनु सुरक्षा डूबल, हुनकर ठाम सुरक्षा-तर्क कम बाजू।"' अन्ततः ओकरा गामक बाहर एक पुरान विद्यालयक कोठरी देल गेल। ओतय पंखा अटकैत-अटकैत घुमैत छल, खिड़की सँ बेंगक स्वर अबैत छल, आ देबालपर चूना झड़ल छल। बिछौनाक खद्दरक खरखर स्पर्श ओकर देहकेँ राति भरि मोन पाड़ैत रहल जे ओ रेशमक संसारसँ बाहर अछि। लाउ पहिल बेर एहन कोठरीमे सूतल, जतय लाभक गन्ध नहि, इतिहासक धूलि छल।

राति मध्यमे ओकरा सपना भेल। ओ "अनाम ग्रह"क कल्पनाक चमकैत गुंबदमे ठाढ़ अछि। सभ भवन पर संख्या अछि, कोनो नाम नहि। ओकर अपना कम्पनीक चिन्ह आकाशमे चमकैत अछि, मुदा नीचाँ रहएबला लोकक मुख पर खाली जगह। अचानक चन्ना गाछीक ठूँठ ओहि निर्जीव ग्रहक बीच उगि गेल। बच्चा सभ 'कबड्डी-कबड्डी' कहैत वृत्त बनौने दौड़ रहल

अछि। जे बच्चा साँस रोकि ओकर कात छूइत, ओकर सूटक जेब सँ एक-एक कागच खसैत— ठेका, दान-पत्र, शोध-अनुदान, पुनर्विकास-प्रस्ताव।

सपना सँ जागिते ओकरा पसेना भेल। बाहर भोर नहि भेल छल। मुदा खिड़कीक लग कियो धीमे स्वरमे नाम पढ़ि रहल छल। ओ खिड़की खोललक। कियो नहि। केवल अन्हार, बेंग, दूरक नदी। फेरो शब्द सुनाइ पड़ल—‘उपस्थित।’ लाउ पहिल बेर बिनु सहायक, बिनु अनुवाद, बिनु करार, ओहि शब्दक अर्थ बुझलक। उपस्थित—माने भागब असंभव।

भोरमे सत्यव्रत फेर भेटलाह। लाउ कहलक—“हम किछु दान करए चाहैत छलहुँ।” कदाचित— सत्यव्रत बीचमे रोकलनि—‘दान पहिने अपराधक हिसाबकेँ झाँपि दैत अछि। एतय दानक पहिने दस्तावेज, दस्तावेजक पहिने नाम, नामक पहिने सुननाइ।’ लाउ चुप रहल।

एहि चुप्पीमे एक नब कंपन छल। ई पश्चात्ताप छल कि भय, से तत्काल बुझब कठिन। मुदा एतय केओ जल्दी निष्कर्ष नहि दैत छल। बच्चा सभक नियम स्पष्ट छल—पहिल दिन सुननाइ, दोसर दिन नाम, तेसर दिन दस्तावेज, तकर बादहि किछु। लाउक चमकदार पूँजी एहि धीमापनक सोझाँ बेचैन भऽ उठल। धीमापन ओकरा लेल सभसँ कठोर दण्ड छल।

दिन चढ़ल तखन एडवर्ड ब्रूमक दूत आबि पहुँचल। ओकर हाथमे सुनहर किनारीबला दान-पत्र छल—गढ़ नारिकेल स्मृति-केंद्र लेल विशाल राशि, विदेशी विशेषज्ञता, डिजिटल अभिलेखागार, विश्व-स्तरीय प्रदर्शन। दूतकेँ विश्वास छल जे एहन कागच देखि गाम झुकि जाएत। मुदा ठूँठक चारू कात बच्चा सभ पहिनेसँ बैसल छल। अनन्या लाउक पाथरक कातमे खाली पाथर राखली आ कहली—‘आब दानक नाम पूछल जाएत।’

सत्यव्रत मेहता मुस्कुरेलाह नहि। लाउ किन-हंग सेहो नहि। ठूँठक भीतर सँ हलुक खड़खड़ाहटि उठल—न हँसी, न रोदन; बस अगिला परीक्षा आरम्भ होएबाक सूचना।

लोकगीत: दू मौनक संवाद

लोकधुन: मौन-दोहा लोकधुन

बाजल हे मौन, दू मौनक संवाद बाजल हे,
ने हँसी, ने रोदन—ठूँठक खड़खड़ बात हे।

दू मौन एक प्रश्नपर अटकल तँ संवाद,
एकक पाछाँ धनक पहाड़, दोसरक पाछाँ अपराध।
सत्यव्रत नामक भार लऽ चुपचाप बैसल,

लाउक चमकदार पूँजी धीमापनमे फँसल।
तखने सुनहर दान-पत्र घमण्डसँ आयल,

विश्व-स्तरीय स्मृति कहि ठेकाक गन्ध लायल।
अनन्या खाली पाथर राखि पूछलक नाम,
दानक पहिने जानब—ककर लाभ, ककर काम।
अगिला परीक्षा शुरू, करुणाक असल जात।

सत्यव्रत नामक भार लऽ बैसल चुप-निःशब्द।
दान सँ पहिने जानू—ककर लाभ, ककर काम।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—जङ्गलमे गवय- उपमान आ पहिचान: नगरक युवक कहियो गवय नहि देखने छल। वनरक्षक कहलक, “गवय गाय जकाँ होइत अछि, मुदा जङ्गली देह, भिन्न रंग आ विशेष चाल होइत अछि।” वाक्य मनमे रहि गेल।]

अध्याय ७९

ब्रूमक दान-पत्र

दान-पत्र जतबा चिक्कन, ओकर मुहरक नीचाँक ठेका ततबे पुरान।

अध्यायारम्भ लोकगीत: दानपत्र पारदर्शी

लोकधुन: करुणा-मंगल

सुखाउ हे दान-पत्र, सूरुजक तर सुखाउ हे,
ककर धन, कतऽ गेल—अक्षर-अक्षर देखाउ हे।

भीजल दान-पत्र सुखाउ खुलल सूरुज तरे,
ककर धन, ककर लाभ—सभ जनक आँखि पढ़े।
सुनहर किनारी कम, साफ हिसाब बेसी,
दान तखने पुण्य जखन मदद पहुँचै जेसी।

लाभार्थीक गरिमा राखू, फोटो नहि बेचू,
सेवा केर हरेक खर्चक साँचक पन्ना सेचू।
दानपत्र पारदर्शी हो तँ विश्वास फूलत,
करुणाक पानि सही खेतमे जीवन बनि झूलत।

सोनहुला किनारी सँ पैघ साफ बही-पन्ना,
फोटो नहि, गरिमा पहुँचए, पहुँचए अन्न-धन्ना।
पाइ-पाइक लेखा पर जनताक मोहर,
पारदर्शी करुणाक खेत मे विश्वासक लहर।

❖

अगिला परीक्षाक सूचना जे ठूँठक खड़खड़ाहटिमे बाजल छल, से भोरे डाकक मोट पोटली बनि गाम पहुँचल। लाउ किन-हंगक मौन-संवादक अगिला बिहान गढ़ नारिकेलमे डाकक ओ पोटली उतरल। पोटली साधारण कागचक नहि छल; ओकर खोलपर चिक्कन मोहर, सुनहर रेखा, अंग्रेजी-मिथिलाक्षरक मिलल-जुलल सजावट, आ भीतर गाढ़ कागच पर छपल एक दान-पत्र। डाकियाक हाथ काँपि रहल छल, कारण ओकरा लग पहिल बेर एहन कागच आयल छल जाहि पर चन्ना गाछीक नाम सेहो छल आ दूर समुद्रपारक कम्पनीक प्रतीक सेहो।

दान-पत्र एडवर्ड ब्रूमक नव संस्थासँ आयल छल। कम्पनीक पुरान नाम कतहु नहि छल; जेकरे ठेकासँ पुलक पायामे मजदूरक देह समायल, जेकरे सलाहसँ जल, श्रम, औषधि, डेटा आ डर सभ ‘परियोजना’ बनल, से कम्पनी आब नव रूपमे आयल छल—‘विश्व-स्मृति पुनर्स्थापन

निधि'। पन्नाक माथ पर लिखल छल—'चन्ना गाछी पीड़ा-स्मृति केन्द्रक लेल करुण अनुदान'। करुणा शब्दक अक्षर सोना जेकाँ चमकैत छल, मुदा ओकर चमकमे पानिक गन्ध नहि छल।

नगरपालिकाक बाबू, जिला कार्यालयक प्रतिनिधि, विरासत-परियोजनाक सलाहकार, आ किछु स्थानीय उत्साही लोक दान-पत्रकेँ चमत्कार मानि ठूँठक चारू कात जमा भेल। केओ कहैत छल—'आब स्मारक बनत।' केओ कहैत छल—'रोजगार भेटत।' केओ कहैत छल—'विश्व-स्तर पर गढ़ नारिकेलक नाम होएत।' एहि वाक्यमे 'नाम' शब्द बेसी बेर आयल, मुदा कोनो मृतकक नाम नहि आयल।

अनन्या रजिस्टर लऽ कऽ बैसली। ओकरा सभ कागच देखबाक आदत भऽ चुकल छल। पहिने पीयर सूचना-पत्र, फेर नक्शा, फेर निविदा, फेर शोध-अनुमति, फेर अनुप्रयोगक गोपनीयता-शर्त। प्रत्येक कागच कहैत छल—हम व्यवस्था छी। बच्चा सभ आब कागचक अक्षर मात्र नहि देखैत छल; ओ सभ पूछैत छल—कागचक भूख की अछि?

ब्रूम स्वयं उपस्थित नहि छल। ओकर प्रतिनिधि, एक सुगन्धित कोट पहिरने लोक, चिक्कन मैथिली बोलबाक अभ्यास कयने छल। ओ कहलक—'हम सभ गढ़ नारिकेलक आघातकेँ आदरपूर्वक सँजोएब चाहैत छी। ई दान निष्काम अछि। एहि सँ संग्रहालय, प्रकाश-व्यवस्था, डिजिटल अभिलेख, आगन्तुक-केन्द्र, शोध-कक्ष, आ अन्तरराष्ट्रीय संवाद-भवन बनत।' ओ जखन 'निष्काम' कहलक तखन ठूँठक भीतर कतहु किड़ीक चबनाइ सन ध्वनि उठल।

देविका धीरे पूछली—'दानक बदलामे की लेब?' प्रतिनिधि मुस्कुरेलक—'किछु नहि।' मीरा फेर पूछली—'मृतकक चित्र? परिवारक अनुमति? कथा उपयोगक अधिकार? अभिलेखक प्रति? नामक आँकड़ा?' प्रतिनिधिक मुस्कुराहट कनेक कम भेल। ओ कहलक—'वैधानिक भाषामे किछु सहमति-प्रावधान रहत, मुदा ओ केवल संचालनक सुविधा लेल।'

सत्यव्रत मेहता पाछाँ ठाढ़ सुनैत रहलाह। ओ किछु कहए चाहैत छलाह, मुदा दोसर मौनक साधना हुनका रोकने रहल। एहि बेर बोलबाक अधिकार बच्चा सभक छल। गंगेशक प्रश्न जड़िमे बसि चुकल छल—प्रमाण कोन? शब्द कोन? अनुमान कोन? आ जे देह पर बीतल, ओकर प्रत्यक्ष ककरा लग?

अनन्या दान-पत्र हाथमे लेली। ओ भारी छल। ओहि पर लिखल छल—'स्मृति-सामग्रीक दीर्घकालीन संरक्षण, डिजिटलीकरण, व्याख्या, प्रदर्शनी, आ शैक्षिक उपयोगक अधिकार निधि द्वारा नियन्त्रित रहत।' अनन्या पंक्ति पढ़ली, फेर ऊपर देखली—'एहिमे नामक मालिक ककरा

कहल गेल?' प्रतिनिधि कहलक—'समुदायक।' अनन्या फेर पूछली—'समुदायक हस्ताक्षर कतय अछि?'

कोनो उत्तर नहि। दान-पत्रक सुनहर अक्षरक चमक कनेक मंद पड़ल। आरुणि आगाँ बढ़ि कहलक—'जे पुल बनबैत काल मजदूरक सुरक्षा कागच पर छल, धरती पर नहि; ओहि लोकक हाथ सँ स्मृति केन्द्र बनत?' प्रतिनिधि कहलक—'ओ अतीतक अलग संविदा छल।' आरुणि शान्त स्वरमे उत्तर देलक—'जे अतीतकेँ अलग संविदा कहैत अछि, से स्मृति सँ दान नहि, छुटकारा कीनैत अछि।'

तखन बा लाठी टेकैत उठलीह। ओ दान-पत्रक कागचक गन्ध सूँघलीह। कहलीह—'एहिमे रोदनक गन्ध नहि। एहिमे कपाटबन्द कोठरीक गन्ध अछि।' लोक चुप। बूढ़ लोकक गन्ध-ज्ञान पर कोनो विधिक आपत्ति नहि चलैत। बच्चा सभ लिखलक—'दान-पत्रमे रोदनक गन्ध अनुपस्थित।'

किछु स्थानीय लोक तँ असमंजसमे पड़ल। दान अस्वीकार करब मूर्खता लगैत छल। गाम गरीब, ठूँठ उघार, सड़क अधूरा, अभिलेख कच्चा, बच्चा सभक रजिस्टर भीजि सकैत छल। 'पैसा लेल जाउ, नियमन बादमे करब'—ई प्रस्ताव सेहो आयल। मुदा मीरा कहली—'जतय पहिल पंक्तिमे अधिकार देल जाए, ओतय बादक पंक्तिमे गरिमा बचत नहि।'

गोप कुमार दान-पत्रक सूक्ष्म अक्षर पढ़ैत गेलाह। ओहिमे एक पंक्ति छल—'साझा संप्रेषण सामग्री पर निधिक प्राथमिक उपयोगाधिकार रहत।' ओ पंक्ति पढ़िते हुनकर चेहरा बदलि गेल। ओ कहलखिन—'ई दान नहि, कथा पर पहिल दावा अछि। आइ नाम लेत, काल्हि चित्र, परसू आवाज, फेर आँसू पर सेहो अधिकार।'

प्रतिनिधि परेशान भेल। ओ कहलक—'अहाँ सभ भावुक छी। विश्वमे स्मृति सँजोएबाक विधि एहनहिये होइत अछि।' एहि पर अनन्या ठूँठ पर हाथ राखि उत्तर देली—'विश्वमे जे विधि अछि, ओहि सँ दुनियाँमे कतेक नाम मेटल गेल। हम सभ एतय पहिने नाम सुनैत छी, बादमे विधि बनबैत छी।'

एहि बहसक बीच आकाश घेरायल। दुपहरियामे अचानक बदरी लागल। कियो बूझलो नहि जे बून्द कतयसँ आयल। बरखा नहि, केवल किछु मोट बून्द। एक बून्द दान-पत्रक सुनहर मोहर पर पड़ल। बून्द खसबाक ध्वनि सुनल नहि गेल, मुदा सभ आँखि ओम्हरे घुमि गेल—जेना निस्तब्धतो अपन एक बून्द रखने हो। मोहर पसीजि गेल। दोसर बून्द अक्षरपर पड़ल। कागचक

रंग बदलए लागल। प्रतिनिधि चिल्लायल—‘सावधान! ई मूल दस्तावेज अछि।’ मुदा बून्द सभ जेना ककरो आदेश नहि सुनैत छल।

दान-पत्रक ऊपरक चमक झरि गेल। भीतर सँ पुरान नील कागचक अक्षर उभरल। भीजल कागचसँ उठैत गन्ध नब स्याहीक नहि, पुरान लोहाक जंग आ बन्द फाइलक सीलनक छल। आरुणि झुकि देखलक। ओ पुल-ठेकाक पुरान अनुच्छेद छल—मजदूर-आवास, सुरक्षा, उपचार, क्षतिपूर्ति, जोखिम-वितरण। जे कम्पनी आब करुणा दान पठबैत छल, ओकर पुरान ठेकाक मृत पंक्ति सभ दान-पत्रक देह भीतर सँ देखाइ पड़ए लागल। दान-पत्र नकाब छल; भीजलाक बाद असल चेहरा बाहर आयल।

लोकक भीड़मे साँस अटकि गेल। एक युवक फुसफुसायल—‘कागच रूप बदललक।’ बा कहलीह—‘कागच नहि, पापक चाम भीजल।’ बच्चा सभक आँखि चमकल। ई प्रत्यक्ष छल—गंगेशक न्यायक कठोर शब्द नहि, माटिक प्रत्यक्ष। जखन बून्द सत्य पर पड़ैत अछि, अनुमानक जरूरत घटि जाइत अछि।

प्रतिनिधि दस्तावेज खिंचए चाहलक। अनन्या रोकली नहि; ओ केवल कहली—‘लऽ जाउ। मुदा हम देखलहुँ। नामक पहरा आँखि सँ सेहो होइत अछि।’ देविका अपन छोट यंत्रसँ चित्र लेबए चाहली, फेर मीरा ओकर हाथ रोकली—‘पहिने सभकेँ पूछू।’ उपस्थित परिवार सभ माथ हिलौलक। तखन चित्र लेल गेल। एहि बेर चित्र तमाशा नहि, प्रमाण छल; कारण अनुमति, उद्देश्य आ मर्यादा सभ स्पष्ट छल।

सत्यव्रत मेहता आगाँ बढ़लाह। ओ प्रतिनिधिसँ किछु नहि कहलखिन। ओ दान-पत्रक भीजल पंक्ति देखलनि, फेर अपन नोटबुकमे केवल एतबे लिखलनि—‘दान जखन अपराधक अभिलेख ढाँकए, तखन ओ दान नहि, विलम्बित बचाव अछि।’ ओ नोटबुक बन्द कयलनि। हुनका आँखिमे पुरान अदालतक थाकनि छल, मुदा ओहि थाकनिमे आब लोकक साक्षीक बल मिसायल छल।

बटुकनाथ हरिहरन एहि घटना पर दूरसँ समाचार सुनलक। ओकरा बुझाइत गेल जे दान-पत्र, ट्रस्ट, वैधानिक ढाँचा—सभ ओकर पुरान खेलक हिस्सा छल, मुदा चन्ना गाछीमे कागच आब पहिने जेकाँ अजेय नहि रहल। भीजि गेल तँ भीतरक सच उभरि अबैत अछि। ओहि राति ओ अपन घरमे देर धरि जागल। ओकर मेज पर अपन ‘लोक-स्मृति न्यास’क कागच पड़ल छल। ओकर बेटा चुपचाप कोठरीमे प्रवेश कयलक।

बेटा कागच उठा कऽ पढ़ए लागल। बटुकनाथ चौंकल—‘की करैत छह?’ बेटा शान्त स्वरमे पूछलक—‘बाबा, ई न्याय बचाबय लेल अछि कि पेशा?’ प्रश्न छोट छल, मुदा स्वप्न-दरबारक सभ घंटा एक्के संग बजि उठल। बटुकनाथक मुँह सूखि गेल। ओ पहिल बेर देखलक जे अदालत, बार, प्रतिष्ठा आ कुलनाम सँ बनल ओकर घरक भीतर सेहो चन्ना गाछीक ठूँठ उगि रहल अछि।

ठूँठक चारू कात ओही साँझ बच्चा सभ दान-पत्रक खाली लिफाफा राखलक। ओहि पर लिखल गेल—‘करुणा जँ अधिकार माँगे, तकर परीक्षा होएत।’ लिफाफाक कोना भीजल छल। भीतरक कागच प्रतिनिधि लऽ गेल छल, मुदा पानिक दाग ठूँठ लग रहि गेल। से दाग देर राति धरि सूखल नहि।

आ दान-पत्रक भीजल गन्ध सँ अगिला प्रश्न जन्मल—जे बाप न्याय बेचि प्रतिष्ठा कमेलक, ओकर संतान ओ प्रतिष्ठाक उत्तराधिकारी बनत कि ओकर अपराधक साक्षी? चन्ना गाछीक हँसी थमि गेल छल। आब घरक भीतरक प्रश्नक बारी छल।

लोकगीत: भीजल दान-पत्र

लोकधुन: करुण-व्यंग्य गीत

पूछत हे दाग, पानिक दाग पूछत हे,
दान जँ नाम कीनए, से दान नहि—व्यापार हे।

सुनहर किनारी, चिक्कन मोहर, भीतर पुरान ठेका,
दानक मीठ पंक्तिमे लोभक गन्ध अनदेखा।
पानिमे भीजल कागच असल प्रति बनल,
करुणा अधिकार माँगिते परीक्षणक दीप जलल।
भीजल कोना ठूँठ लग राति भरि नहि सूखल,

बटुकक सम्मान-पत्र सभ स्वप्नमे हिलि उठल।
बाप न्याय बेचि कमेलक कुलक उज्जर मान,
संतान विरासत लेत कि बनेत अपराधक साक्षी जान?
दान जँ नाम कीनै, ओ दान नहि व्यापार,
पानिक दाग पूछत रहत पीढ़ीक उत्तर-सार।

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—बालहाथी आ गदहा: यात्रीकेँ कहल गेल—“जे पशु बालहाथी जकाँ देखाइत अछि, ओकर नाम अमुक।” रास्तामे ओकरा एक गदहा भेटल, जकर देहक किछु आकार दूरसँ बालहाथीसँ मिलैत छल। (दार्शनिक सिद्धान्त: सादृश्य केवल समान धर्मक संख्या नहि; प्रासङ्गिक धर्म आ वैधर्म्य शब्दार्थ-निर्णयमे महत्त्वपूर्ण)]

अध्याय ८०

हरिहरनक संतान

बेटाक एकटा प्रश्न— न्याय बचेलहुँ कि पेशा?— बरामदाक सभ सम्मान-पत्र हिला दै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: संतानक प्रश्न, नव उत्तर

लोकधुन: पिता-पुत्री संवाद गीत

पूछ गे बेटी, आँखि मिला कऽ पूछ गे,
बाबूक पुरना बही सँ साँचक पन्ना खोज गे।

बेटी पूछै—न्याय बचेलहुँ? पिता आँखि उठाउ,
पुरान भूल नहि नुकाउ, साँचक उत्तर लाउ।
संतानक प्रश्न दण्ड नहि, सुधारक दीप,
एक पीढ़ीक साहससँ दोसर पाबै सीप।

'पेशा सेवा लेल' कहि कर्मसँ प्रमाण दिअ,
बच्चाक उज्जर नजरकेँ ईमानक मान दिअ।
नव उत्तर पुरान घरमे ताजा हवा भरत,
संतानक प्रश्नसँ परिवारो न्याय-पथ धरत।

प्रश्न बेटीक दण्ड नहि, दीपक बाती थिक,
झूठक परदा हटिते घरक हवा नीक।
'पेशा सेवा बनत आब'—कर्म सँ देखाउ,
दू पीढ़ीक ईमान मिलि नव सबेरा लाउ।

❖

घरक भीतरक ओ प्रश्न ओही राति अपन देहरी ताकि लेलक। ब्रूमक दान-पत्र पानिमे भीजि पुरान ठेकाक प्रति बनि गेलाक राति बटुकनाथ हरिहरन अपन घरक ऊँच बरामदा पर बैसल छल। बरामदाक खम्भा पर पितरक फोटो, भीतर देबाल पर बार परिषदक सम्मान-पत्र, काँचक आलमारीमे मोट-मोट विधि-पुस्तक, आ बीचमे ओ स्वयं—एना जेना विधिक घरमे विधि नहि, ओकर थाकल छाह रहि गेल हो। बाहर शहरक पीयर इजोत छल, भीतर चुप्पी। बरामदाक पुरान पंखा बन्द छल, तइयो काँचक आलमारीसँ विधि-पुस्तकक पुरान जिल्दक हलुक चमराइन गन्ध हवामे ठाढ़ छल।

ओहि चुप्पीक बीच दरबाजा बिनु आवाजक खुलल। बटुकनाथक संतान तारिणी भीतर आयल। ओ कानून पढ़ैत छली, मुदा अपन पिता जेकाँ कानूनकेँ पेशाक चतुराई नहि मानैत

छली। ओ चन्ना गाछी नहि गेल छली, मुदा ओकर फोनमे ओहि ठामक नाम-पाठ, गंगेशक प्रश्न, नकली भूतक जुलूस, आ ब्रूमक दान-पत्र पानिमे रूप बदलैत देखल गेल छल। ओ फोन बन्द कऽ देली, कारण ओ बुझि गेल छली जे स्मृतिक पहिल आदर स्क्रीन बन्द करब अछि।

बटुकनाथ चेहरा उठौलक। ‘एतेक राति?’ ओ अपन पुरान अधिकारक स्वर निकालए चाहलक, मुदा स्वर सूखल पात जेकाँ खसि पड़ल। तारिणी उत्तर नहि देली। ओ सोझे आलमारी लग गेली, तत्त्वचिन्तामणि पर लिखल पुरान भाषण-पुस्तिका निकाललली, आ मेज पर राखि देली। ‘बाबा,’ ओ कहली, ‘अहाँ गंगेशकेँ सम्मान देलहुँ कि हुनकर प्रश्नकेँ बन्द कएलहुँ?’

बटुकनाथक भौं सिकुड़ल। गंगेशक नाम सुनिते ओकर भीतरक वक्ता जागि उठए चाहलक। ओ कतेको सभामे कहने छल—नव्य न्याय मिथिलाक अद्भुत देन अछि; तत्त्वचिन्तामणि बारह हजार ग्रन्थक सार अछि; तर्कक सूक्ष्मता एतबे जे संसार आजो नतमस्तक अछि। मुदा तारिणीक प्रश्न सम्मान पर नहि, बन्दीकरण पर छल। सम्मान-पत्रक फूल सुखि जाए, प्रश्नक काँटा बचल रहैत अछि।

‘गंगेशक प्रसंग विद्वान सभक विषय अछि,’ बटुकनाथ कहलक। ‘इतिहासमे अनेक मत होइत अछि। घरक रातिमे ई सभ…’ तारिणी बीचमे काटि देली, ‘घरक रातिमे नहि, बाबा, कुलक अन्हारमे। पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्मक लोककथा जँ समाजकेँ असहज करैत अछि, चर्मकारणीसँ विवाहक कथा जँ कुल-गर्वकेँ काँपबैत अछि, तखन नव्य न्याय केवल भाषणमे किएक? प्रमाणक अधिकार केवल ऊँच जातिकेँ? जे सत्य कुलक चौखटसँ बाहर अछि, ओकरा विवाद कहि बन्द कऽ देब, ई न्याय अछि?’

बटुकनाथक हाथ मेजक काँच पर पड़ल। काँचक भीतर ओकर चेहरा दू टुकड़ा देखाइ पड़ल—एकटा बार परिषदक अध्यक्ष, दोसर लुच्चा वकील जे तारीख, स्थगन, अपील, तकनीकी दोष, प्रक्रिया, अधिकार-क्षेत्र आ प्रमाणक जाल सँ अपराधीक देहक चारूकात अदृश्य कवच बुनैत रहल। ओ कहए चाहलक—‘कानून प्रक्रिया अछि।’ मुदा ओकरा डर लागल जे संतान तुरन्त पूछत—‘प्रक्रिया ककर रक्षाक लेल?’

तारिणी स्वयं पूछि देली। ‘अहाँ न्याय बचेलहुँ कि पेशा? जे मजदूर पुलमे डूबल, ओकर परिवारक कागच अहाँ तकनीकी दोष कहि किनारा केलहुँ। जे उज्ज्वल स्क्रीनक गोहिसँ हारल, ओकर केस अहाँ डिजिटल सहमतिक नाम पर भटका देलहुँ। जे मीरा अपन निजताक गरिमा बचेलथि, ओकरा अहाँ चरित्रक प्रश्नमे धकेलब चाहलहुँ। जे नाम बच्चा सभ ढूँठक चारू कात

राखलक, ओकरा अहाँ न्यासक अधीन करए चाहलहुँ। बाबा, ई कानून छल कि पेशाक खोलमे गोहि?'

बटुकनाथ पहिल बेर अपन घरमे बाहरी अभियुक्त जेकाँ अनुभव केलक। अदालतमे ओ प्रश्नकेँ मोड़ि सकैत छल। विरोधी वकीलकेँ थका सकैत छल। न्यायाधीशक धैर्यकेँ नापि सकैत छल। मुदा संतानक आँखि नापि नहि सकल। तारिणीक आँखिमे रोष छल, मुदा घृणा नहि। घृणा होइत तँ ओ दरबाजा पटकने जाइत। प्रश्न होइत, तँ ओ ठाढ़ रहि सुनबाक दण्ड देत।

'तोँ हमरा अपराधी मानैत छेँ?' बटुकनाथ धीमे पूछलक। तारिणी कहली, 'नहि। अपराधी कहि देब सहज होइत। अहाँ ओ मनुष्य छी जे अपन बुद्धि बेसी पैघ मानि लेलहुँ, आ अपन विवेककेँ मोहर लगायल कागचक नीचाँ राखि देलहुँ। अहाँ जेकरा बचेलहुँ, से अपराधी छल; मुदा जकरा चुप करेलहुँ, ओकर आवाज अहाँक घर धरि आबि गेल अछि।'

ओहि क्षण देबाल पर टँगल पितरक फोटो काँपल। हवा नहि छल। आलमारीक भीतर पुस्तकक पन्ना अपने-आप फड़फड़ायल। एक सूक्ष्म ध्वनि उठल—जनु कतेको पुरान तर्क अपने सँ पूछए लागल हो: प्रमाण की? प्रत्यक्ष की? शब्द की? अनुमान की? आ मनुष्यक मौनक प्रमाण कोन? बटुकनाथ चौंकल, मुदा तारिणी नहि। ओ गंगेशक प्रश्नक आगाँ ठाढ़ छली।

तारिणी तत्त्वचिन्तामणिक भाषण-पुस्तिका खोलली। ओहिमे बटुकनाथक पुरान लेख छल—'मिथिला तर्कक भूमि अछि।' ओ पन्ना पर उँगुरी राखि कहली, 'जँ मिथिला तर्कक भूमि अछि, तखन जातिक प्रश्न पर एतेक चुप्पी किएक? जँ गंगेश नव्य न्यायक जन्मदाता छथि, तखन हुनकर असुविधाजनक जीवनक सत्यकेँ सम्मानक माला पहिरा कऽ मारि देब—ई ककर न्याय? रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा अशोक जेकाँ लोक जँ सम्मानक नाम पर जीवन-सत्यक हत्या करैत गेलाह, तखन अहाँ सभ हुनकर अपराधकेँ विद्वत्ता कहि छोड़ि देलहुँ। ई सम्मान-हत्या केवल देहक नहि, स्मृतिक सेहो होइत अछि।'

बटुकनाथक मुँह सूखि गेल। ओ झट सँ प्रतिवाद करए चाहलक—'बिनु स्रोत, बिनु प्रमाण...' तारिणी मुस्कुरा नहि सकली, मुदा ओकर स्वर कठोर भेल—'प्रमाण माँगब उचित अछि। मुदा प्रमाणक दरबाजा खोलब सेहो उचित अछि। अहाँ सभ प्रमाण माँगैत-माँगैत दरबाजे बन्द कऽ देलहुँ। जे दरबाजा बन्द हो, ओतय सत्य दस्तक देत तँ आवाज विवाद कहल जाएत। चन्ना गाछीक बच्चा सभ कहैत अछि—पहिने सुनू, फेर खण्डन करू। अहाँ सभ पहिने खण्डन लिखलहुँ, सुननाइ बादमे राखलहुँ।'

एहि वाक्यक संग बटुकनाथक घरक फर्श बदलए लागल। बरामदाक संगमरमर कटल चन्ना गाछीक ठूँठ बनि गेल। आलमारीक पुस्तक सभ पात बनि उड़ा, आ प्रत्येक पात पर ओहि लोकक नाम चमकल जेकर केस ओ बरख-दर-बरख घुमबैत रहल। बीचमे एक खाट जेकाँ न्यायासन बनल, मुदा ओहि पर कोनो न्यायाधीश नहि, तारिणीक बाल्यकालक एक खाली चप्पल पड़ल छल। बटुकनाथ बुझि गेल—ई स्वप्न-दरबार फेर शुरू भेल अछि, मुदा एहि बेर दरबारक केंद्र संतान अछि।

दरबारमे धीरे-धीरे दोसर संतान सभ सेहो देखाइ पड़ल—ककरो पिता दबाइ-घोटालामे छल, ककरो पिता ऑनलाइन जुआक मुखौटा, ककरो पिता विदेशी दानक सौदागर, ककरो पिता कागच बदलएबला अधिकारी। ओ सभ बच्चा नहि, उत्तराधिकारक दर्पण छल। सभ एकहि प्रश्न अलग-अलग स्वरमे पूछैत छल—‘हमरा की छोड़ि जाइब? धन? डर? झूठ? उपनाम? कि एहन सत्य जे हमरा अहाँ सँ प्रेम करबाक अनुमति देओ, मुदा अहाँक अपराध नहि ढोएब?’

बटुकनाथ पहिल बेर अपन संतानसँ नहि डरायल, अपन संतानक भविष्यसँ डरायल। ओ सोचलक—जे धन, पद, नेटवर्क, नाम, सम्मान, सभ ओ बचबैत आयल, से जँ तारिणी स्वीकार नहि करए, तखन ओ सभ ककरा लेल? अपराधक सभसँ गूढ़ दण्ड जेल नहि, उत्तराधिकारीक इनकार होइत अछि। जखन संतान कहै—‘अहाँक कमायल लाभ हमरा नहि चाही’—तखन लोक अपन जीवनक वास्तविक घाटा देखैत अछि।

तारिणी धीरे कहली, ‘बाबा, हम अहाँक संतान छी। ई नकारि नहि सकैत। मुदा हम अहाँक मौनक वारिस नहि बनब। जँ लोक-स्मृति न्यास बनत, तँ ओकरा बच्चा सभ, मजदूर परिवार, स्त्री सभा, आ नाम-पहरा चलबैत लोक संचालित करत। अहाँ सलाह देबाक चाही, तँ पहिने एतय आबि नाम सुनू। अध्यक्षता नहि, उपस्थिति।’

बटुकनाथ हँसए चाहलक, मुदा स्वर टूटल। ‘हमरा ओ सभ स्वीकार करत?’ तारिणी उत्तर देली, ‘स्वीकार करएबाक लोभ छोड़ू। पहिने सुननाइक दण्ड भोगू। जे अहाँ बरखौं धरि दोसरा सभ पर तारीख बना कऽ थोपलहुँ, से समय आब अहाँ अपने दिअ।’ ई वाक्य सोझे ओकर छातीमे उतरि गेल। तारीख, जे ओकर पेशाक हथियार छल, आब ओकर प्रायश्चित्तक समय बनि रहल छल।

बाहर भोरक पहिल रंग आकाशमे पसरल। बटुकनाथक घरमे चिड़ै बाजल। रातिक बासि चाहक कप मेजपर छल; ओकर सर्द सतहपर आङुर छुबिते बटुकनाथकेँ अपन तर्कक सभ गरमी

बितल बुझायल। ओ राति भरि नहि सुतल। मेज पर तत्त्वचिन्तामणिक पुस्तिका खुलल रहल, पन्ना पर तारिणीक उँगुरीक दाबक निशान। ओ कलम उठौलक। एक कागच पर लिखलक—'लोक-स्मृति न्यास सम्बन्धी प्रस्ताव स्थगित।' फेर किछु सोचि ओ 'स्थगित' काटि देलक। लिखलक—'प्रस्ताव लोक-पहरा समक्ष सुनल जाए।' ओ शब्द लिखैत काँपल, कारण पहिल बेर ओ कागच पर अपना ऊपर अधिकार घटा रहल छल।

तारिणी दरबाजा लग ठाढ़ छली। ओ पिता दिस देखली। प्रेमक कोनो नाटकीय आलिंगन नहि भेल। घाव एतेक पुरान छल जे तुरन्त मलहमक झूठ सहि नहि सकैत। मुदा ओ निकलैत काल मेज पर राखल सम्मान-पत्रक माला हटबैत कहली—'गंगेशकेँ माला नहि, प्रश्न चाही। न्यायकेँ पद नहि, सुननाइ।'

ओ चलि गेली। बटुकनाथ बरामदामे असगरे रहि गेल। ओकर पाछाँ देबाल पर पितरक फोटो, सोझाँ खुजैत भोर, आ बीचमे कागच। ओ पहिल बेर बूढ़ लागल। जे व्यक्ति काल्हि धरि लोकक बरख चिबएबला तारीखक गोहि छल, से एखन अपन संतानक एक प्रश्न सँ आधा छिलि गेल।

ओहि भोर गढ़ नारिकेलमे चन्ना ठूँठक कोंपल पर ओस जमल छल। बच्चा सभ नाम-पहरा शुरू करए जा रहल छल। तारिणी ओहि ठाम पहुँचत कि नहि, केओ नहि जानैत छल। मुदा ठूँठक भीतर सँ एक सूक्ष्म घंटी जेकाँ ध्वनि उठल—जनु संतानक प्रश्न पहरा स्वीकार कऽ लेने हो।

आ ओम्हर, चन्द्रपाल बत्रा अपन बन्द कमरामे, फोन हटा कऽ, पहिल बेर कागच पर अपन पूरा नाम लिखए बैसल। ओकर हाथ काँपल। 'चन्द्रपाल' लिखल गेल, 'बत्रा' अटकल। फेर कागच पर अक्षर नहि, अधूरा गोल निशान उतरए लागल—प्रतिशतक चिह्न जेकाँ। अगिला दरबार ओकरा प्रतीक्षा करि रहल छल।

लोकगीत: संतानक एक प्रश्न

लोकधुन: पिता-पुत्री विरहा

खोलत हे प्रश्न, संतानक प्रश्न खोलत हे,
कुलक बन्द अलमारीक ताला टूटत हे।

'न्याय बचेलहुँ कि पेशा?'—बेटी पूछलक एक,
बरामदाक सम्मान-पत्र काँपल अनेक।
मोट विधि-पुस्तक चुप, आलमारी भेल बूढ़,

तारीखक गोहि बाप आइ प्रश्नसँ आधा छिलल।
संतानक नोर नहि, सोझ प्रश्नक धार,

कुलनामक चमक पाछाँ देखलक अन्हार।
उधर कोंपलपर ओस, नाम-पहरा जागल,
एधर बत्राक 'चन्द्रपाल' लिखि 'बत्रा' अटकल।
पिता, उत्तर देब कठिन, मुदा चुप्पी आरो भारी,
संतानक प्रश्ने खोलत कुलक बन्द अलमारी।

पिता, चुप्पी उत्तरसँ आरो भारी भेल गूढ़।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—हरियर ब्रोकोली: माधवी सब्जी बजारमे पहिल बेर गेल छल। माधवीकेँ केवल वस्तु नहि भेटल; पहिने सुनल शब्दक अर्थ प्रत्यक्ष वस्तुसँ जुड़ि गेल।]

अध्याय ८१

बत्राक अधूरा नाम

आधा नाम लऽ कऽ जीनिहार पूरा हस्ताक्षरसँ डेराइ छै।

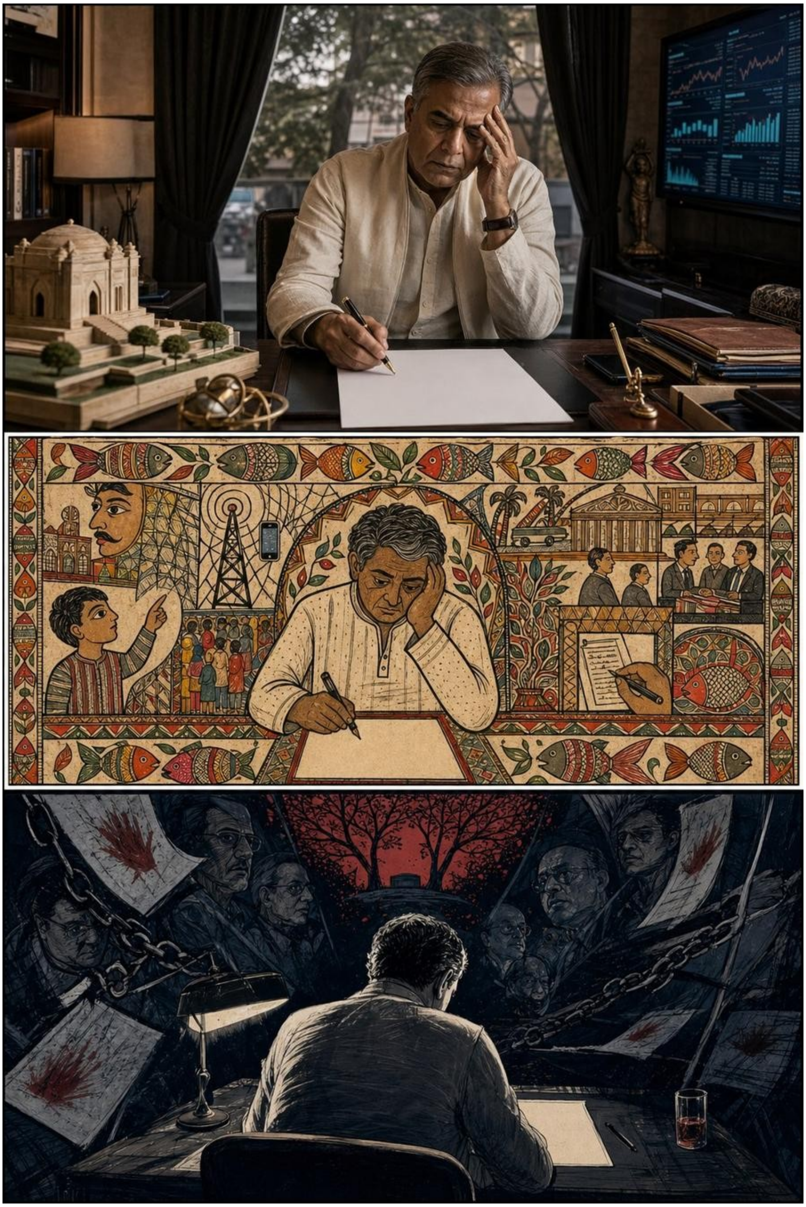

अध्यायारम्भ लोकगीत: भीतरक पोखरि साफ

लोकधुन: गज-ग्राह आख्यानक आशा-लय

साफ करू हे, भीतरक पोखरि साफ करू हे,
चारू किनार भिन्न रहौ, पानि एक्के धरू हे।

चारि किनार अलग सही, पानि एकहि प्राण,
भीतरक पोखरि साफ करू, हटत भ्रमक जाल।
गजक बल, ग्राहक पकड़—दुनू कथा बुझू,
डरक गाद निकालि कऽ स्वच्छ विवेक चुनू।

कमल उगत जखन मनक पानि निर्मल होए,
चारू दिशा एक आकाशक उज्जर छवि संजोए।
भीतरक पोखरि साफ रहत तँ निर्णय होए स्पष्ट,
मनक स्वच्छ जलसँ जीवन बनत शान्त, समर्थ।

गादक तह मे डर पोसल, आधा-आधा छाया,
कोदारि नहि, धीरजक हाथ सँ निकलत माया।
कमल तखने मुँह खोलत जखन जल थिर-निर्मल,
चारू दिशाक अकास झलकत एक्के दर्पण-तल।

❖

ओ प्रतीक्षारत दरबार कोनो सभागारमे नहि—एक उज्जर कागचक चौहद्दीमे लागल छल। हरिहरनक संतान जे राति अपन बाबूसँ पूछने छल—‘अहाँ न्याय बचेलहुँ कि पेशा?’—ओहि प्रश्नक प्रतिध्वनि गढ़ नारिकेल सँ बहुत दूर धरि गेल। ओ प्रतिध्वनि मोबाइलक जाल, बैंकक खाता, दान-पत्र, स्मारक-योजना आ विदेशी बैसकी सभ पार कऽ एक एहन कोठरीमे पहुँचल जतय चन्द्रपाल बत्रा अपन सोझाँ राखल उज्जर कागच पर बहुत काल सँ कलम धएने बैसल छल।

कोठरी शहरमे छल, मुदा ओकर चारूकात चन्ना गाछीक छाह पड़ि रहल छल। खिड़की बन्द, परदा बन्द, वातानुकूलन चलि रहल, स्क्रीन पर कतेको गिनती चमकि रहल—मुदा ओहि कागच पर एक शब्दो नहि उतरल। कागचक माथ पर केवल एतबा लिखल छल—‘अपन नाम

लिखू।' ककरो हस्ताक्षर नहि, ककरो मोहर नहि। जनु कागच स्वयं ठूँठक भीतर सँ फूटि आयल हो।

चन्द्रपाल बत्रा अनेक रूपमे लिखि चुकल छल। कम्पनीक निदेशक, सलाहकार, प्रतिनिधि, अनुप्रयोग-प्रवर्तक, सांस्कृतिक दाता, तकनीकी साझीदार, न्यासक सहायक, विदेशी पूँजीक स्थानीय चेहरा—प्रत्येक ठाम ओकर नाम बदलि-बदलि चमकल छल। मुदा एहि कागच पर 'अपन नाम' लिखबाक बारी आयल तखन ओकर हाथ चुप भऽ गेल। कलमक निब कागचपर बिनु चलने खड़कल—जेना बन्द दरबाजापर कियो नहसँ खोंटि रहल हो। नामक ठाम ओ जीवन भरि प्रतिशत लिखैत रहल छल।

ओ कलम उठौलक। सोचलक—'चन्द्रपाल बत्रा।' मुदा कागच पर उतरलक—'दस प्रतिशत।' ओ चौंकल। तुरन्त काटलक। फेर लिखऽ चाहलक—'चन्द्रपाल।' उतरलक—'आधा लाभ।' काटलक। तेसर बेर लिखलक—'सी. बत्रा' सोचि, मुदा कलम लिखि देलक—'कमीशन।' ओ कागच पलटलक। दोसरो पृष्ठ पर ओही। तेसर पृष्ठ पर ओही। जेना ओकरा भीतर कोनो लिपिक बैसल हो, जे नामक ठाम केवल लाभ-हिस्सा लिखए जानैत हो।

ई घटना बाहरी आँखिसँ देखल जाए तँ हास्यास्पद छल; मुदा भीतर सँ ओ भयावह छल। चन्द्रपाल पहिल बेर बुझलक जे ओकर असल नाम कतेक बरख पहिने छीनि लेल गेल। चोरायल नाम केओ दोसर नहि लऽ गेल छल; ओ अपने ओकरा नाप-तौल, सौदा, सौकर, सिफारिस, खाताक कोड आ परदाक पाछाँक लाभमे बदलि देने छल। मनुष्य जतबा बेर अपन नामक बदला लाभक चिन्ह लिखैत अछि, ततबा बेर ओ भीतर सँ बेनाम होइत जाइत अछि।

ओकरा अपन बाल्यकाल मोन पड़ल। गाम नहि, शहरक बाहरी बस्ती; बाबू छोट व्यापारी, माय पूजा-पाठ, आ घरमे एक पुरान तख्ती जकरा पर ओकर नाम पहिल बेर लिखल गेल छल। चन्द्रपाल—चन्द्रक रक्षा करएबला। माय कहैत छलीह—'नाममे उजास राखल अछि, बेटा।' मुदा उजास ओकरा भारी लागल। उजासमे चेहरा देखाइ पड़ैत अछि, चेहरामे लाज, लाजमे रुकावट। तेँ ओ धीरे-धीरे उजास छोड़ि गिनतीक अन्हारमे घुसि गेल।

मेरठक ओ डिग्री जेकरा ओ जीवन भरि ढाल बनौने रहल, एखन ओकर सोझाँ पीयर पात जेकाँ फड़कय लागल। ओ कागच कहैत छल—'कानून पढ़लहुँ।' भीतरक आवाज पूछैत छल—'ककर रक्षा लेल?' ओ कहैत—'व्यवसाय।' आवाज कहैत—'व्यवसाय कि बेनाम लोकक भयक बजार?' ओ कहैत—'काज करैत रही।' आवाज कहैत—'काज कि पानिमे डूबल देह

पर खाता खोलब?' ओ बहस करए चाहैत छल, मुदा कागच पर कलम फेर लिखि देलक—'प्रतिशत।'

चन्ना गाछीक ठूँठसँ बच्चा सभक रजिस्टरमे ओहि घड़ी एक अदृश्य रेखा खिंचल। अनन्या दूर गढ़ नारिकेलमे बसल-बसल पन्ना फेरली। ओकरा कारण बुझाइत नहि छल, मुदा पन्नाक कोनामे कारी स्याही सँ एक शब्द अपने उतरि आयल—'प्रतिशत।' ओ ईराकेँ देखौली। ईरा शान्त स्वरमे कहली, 'नामक चोरीक बाद आब नामक हिसाब खुलत।'

ठीक ओहि समय देविका चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोगक पुरान प्रतिलिपि देखैत छली। ओहि अनुप्रयोगमे मृतकक नामक पाछाँ छोट-छोट घर छल—दान, श्रद्धा, संदेश, दीप, सहायता। मुदा एक गुप्त तहमे प्रत्येक नामक पाछाँ हिस्साक छाह छल। नामक दुःख सँ लाभक धारा बनाओल गेल छल। देविका स्क्रीन बन्द कऽ देली। 'ओ नाम नहि बेचैत छल,' ओ कहली, 'ओ नामक पाछाँक शोकक प्रतिशत बेचैत छल।'

चन्द्रपालक कोठरीमे आब देबाल सभ हिलि रहल छल। एक देबाल पर लाउ किन-हंगक छाह उभरल—ठंढा, नापल, लाभक भाषा बजैत। दोसर पर राघव सिग्नलक मेटाइत संदेश। तेसर पर बटुकनाथक कानूनी मुस्कान। चारिम पर चन्ना गाछीक कटल ठूँठ। ओ ठूँठक फाँकिसँ एक बालकक स्वर आयल—'अहाँक पूरा नाम?' चन्द्रपाल उत्तर देबय गेल, मुदा मुँह सँ निकलल—'साझेदारी।'

स्वर फेर आयल—'अहाँक माय अहाँकेँ की कहैत छलीह?' चन्द्रपालक देह काँपि गेल। एहि प्रश्नक लेल ओकरा कखनो तैयारी नहि छल। सभ पूछैत रहल—कतेक लगानी? कतेक लाभ? कतेक हिस्सेदारी? कतेक पहुँच? कतेक जोखिम? मुदा ककरो नहि पूछल जे माय ओकरा कोना पुकारैत छलीह। ओकरा स्मरण भेल—'चन्नू।' बहुत छोट, बहुत गरम, बहुत असुरक्षित नाम।

ओ कलम उठौलक। एहि बेर ओ 'चन्नू' लिखए चाहलक। कागच पर आधा 'च' उतरिते हाथ अटकि गेल। ओकर भुजा भारी भऽ गेल, जेना कोनो गोहि दाँतसँ पकड़ि लेने हो। ओ जोर लगौलक, मुदा रेखा सोझ नहि बढ़ल। कागच पर बनि गेल एक टेढ़ आकृति—आधा अक्षर, आधा जबड़ा। ओ डरि गेल। गोहि सभ देह चिबैत छल; मुदा चन्द्रपाल अनुभव करैत छल जे लाभक गोहि नाम चिबा चुकल अछि।

ओ राति पहिल बेर चन्द्रपाल कानल। ओकर रोदन दया माँगबाक नहि छल। से रोदन एहन मनुष्यक छल जे बूझि गेल अछि जे ओकर भीतर बाँचल बच्चाक नामक देह नहि भेटि रहल।

अपराधी कानए तँ ई क्षमा नहि; कखनो-कखनो ई केवल प्रमाण होइत अछि जे भीतरक बर्बादी ओकरा सेहो स्पर्श कऽ गेल। चन्ना गाछीक ठूँठ एहि रोदन पर मौन रहल। गाछि जल्दी क्षमा नहि करैत।

ओही मौनमे ओकरा मोन पड़ल जे ओ बेनाम भीड़सँ कमाइत छल। डिजिटल ठगीमे ओकरा प्रत्येक चेहरा आँकड़ा बनि जाए; जुआमे प्रत्येक युवक हारल रकम; दबाइक अभावमे प्रत्येक परिवार अवसर; स्मारकमे प्रत्येक मृतक दान-स्रोत; कोर्टमे प्रत्येक विलम्ब शुल्क; विदेशी साझेदारीमे प्रत्येक गाम 'क्षेत्र'। ओ कहैत छल—'हमरा नामसँ भावुकता नहि, पैटर्न चाही।' आब पैटर्न ओकरा नाम नहि देलक।

ओ अपन जीहसँ मैथिली शब्द खोजए लागल। ओकर जीवन अनेक भाषाक सौदे सँ भरल छल, मुदा माय जखन डाँटैत छलीह तँ मैथिली-हिन्दीक मिलल घरेलू बोलीमे कहैत छलीह —'चन्नू, नाम खराब नहि करिह।' ओहि वाक्यक 'नाम' शब्द अकस्मात् कोठरीमे पसरि गेल। स्क्रीन पर गिनती धुँधला भऽ गेल। हवामे धूप-भस्मक गन्ध आयल। दूर गढ़ नारिकेलक ठूँठ पर राखल एक पाथर गरम भऽ उठल।

अनन्या रजिस्टरमे नब पन्ना खोलली। पन्नाक ऊपर लिखली—'अधूरा नाम।' पाछाँ बच्चा सभ गोल बैसल छल। ओ सभ पूछलक—'जे अपराधी अछि, ओकर नाम किएक लिखब?' बा उत्तर देलीह—'अपराध क्षमा लेल नहि, प्रमाण लेल लिखल जाइत अछि। जे अपना नाम हरौने अछि, ओकर अधूरापनो गवाही होइत अछि।' बच्चा सभ संतुष्ट नहि भेल, मुदा सुनलक। सुनब सीखब सँ कठोर काज अछि।

सत्यव्रत मेहता ओहि बैसारमे उपस्थित छलाह। हुनका चन्द्रपालक कोठरीक समाचार ककरो नहि देने छल; मुदा सुननाइक साधना एना होइत अछि जे दूरक अपराधीक काँप सेहो कान धरि पहुँचि जाए। ओ धीमे कहलखिन, 'न्याय केवल पीड़ितक नाम नहि माँगैत, अपराधीक असल नाम सेहो माँगैत अछि। कारण बेनाम अपराध फेर घुरि अबैत अछि।' एहि वाक्य पर लोक चुप। किछु लोकक चेहरा कठोर। कियो क्षमा नहि चाहैत छल। मुदा नामक पूर्ण अभिलेखमे शत्रुक नामो प्रमाण रूपमे पड़ैत अछि—ई कठिन बात छल।

चन्द्रपाल कोठरीमे कागच पर झुकल। 'चन्नू'क अधूरा अक्षर पसेनासँ भीजल। ओ चाहैत छल जे कागच फाड़ि दी, आगि लगा दी, वा स्क्रीनमे स्कैन कऽ सुरक्षित तहमे दफना दी। मुदा कागच भारी भऽ गेल। ओ उठि नहि सकल। ओहि कागचक वजन ओकर सभ खाता, सभ

लाभांश, सभ गुप्त अनुबंध, सभ बनावटी दान सँ बेसी छल। नामक अधूरापन वस्तु जकाँ भारी होइत अछि।

राति अधिक गाढ़ भेल। बाहर शहरक बत्ती बुझैत-जरैत रहल। भीतर एक मात्र कागच उज्जर रहल। चन्द्रपाल अन्ततः पूरा नाम नहि लिखि सकल। पृष्ठ पर केवल एतेक रहि गेल —‘च...’ ओकर नीचाँ अनजानेमे लिखायल—‘प्रतिशत।’ फेर ओकर हाथ काँपि कऽ रुकल। एहि तरहेँ ओकर जीवनक सारांश बनि गेल—चन्द्रक उजासक अधूरा अक्षर, आ पाछाँ लाभक पूर्ण शब्द।

भोरक समय ओ कागच अपने-आप मुड़ि गेल। कोनो हाथ नहि, कोनो हवा नहि। मोड़ बनैत गेल आ कागच एक पातक आकार लेलक। ओ पात खिड़कीक बन्द काँच पार कऽ बाहर नहि गेल; उनटे काँचमे चिपकि गेल। चन्द्रपाल काँच छूलक; बाहरक भोरक ठंढ आ भीतरक पातक हलुक गरमी एक्के सतहपर छल। ओ उठि देखलक—काँचमे ओकर चेहरा नहि, एक गजक आँखि देखाइ पड़ैत अछि। ओ चौंकल। ओहि आँखिक पाछाँ पानिक अन्हार छल, आ अन्हारमे गोहिक जबड़ा।

ओ बुझि नहि सकल कि ई सपना अछि कि दण्ड। मुदा गढ़ नारिकेलमे ओहि क्षण अनन्या रजिस्टर बन्द करैत कहली—‘अगिला बेर भीतरक गज-ग्राह खेलत।’ बच्चा सभक देहमे एक्के बेर सिहरन दौड़ि गेल। खेल मैदान पर नहि, मोनक पानिमे उतरि रहल छल। चन्द्रपालक अधूरा नाम ओहि खेलक पहिल गोटी बनि चुकल छल।

लोकगीत: अधूरा हस्ताक्षर

लोकधुन: मोन-विरहा

कहू हे जीह, अपन पूरा नाम कहू हे,
अधूरा हस्ताक्षर सँ कतेक दिन प्राण बचाउ हे।

आधा नाम लऽ जीबन, पूरा लिखिते भय,
‘चन्द्रपाल’ उतरि गेल, ‘बत्रा’ अटकाएल रहय।
कागच पात बनि काँचपर चिपकि गेल राति,
चेहरा नहि, गजक आँखि, पाछाँ ग्राहक घात।
प्रतिशतक गोल निशान नामक ठाम उगल,

मोनक पोखरिमे खेलक पहिल गोटी बनल।

अधूरा नाम ढाल नहि, भीतरक कारागार,
पूरा उच्चारण माँगत पाप-पथक स्वीकार।
ए जीह, अपन नाम कहू, हिस्सो संग बताउ,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—धारीदार जेब्रा: शिक्षिका कहने छलीह—"जेब्रा घोड़ा जकाँ, मुदा देहपर कारी-उज्जर धारी।" चिड़ियाघरमे बालक धारीदार पशु देखिते ठमकि गेल। समानता उपदेशक सङ्केत छल; धारिसभ आ समग्र रूप शब्दक सही विषय निश्चित कएलक।" ओ दिन चिड़ियाघर भाषा-दर्शनक कक्षा बनि गेल।]

अध्याय ८२

अंदरक गज-ग्राह

पोखरिक चारू किनार अलग-अलग, पानि एक्कहि— आ पानिक भीतर गज-ग्राह दुनू।

अध्यायारम्भ लोकगीत: पातक आसनपर पाठशाला

लोकधुन: बाल-पाठशाला गीत

बैसू हो नेना, पातक आसन पर बैसू हो,
माटिक कापी, टहनी-कलम सँ आखर लेखू हो।

छाहरि कम, पातक आसन, ज्ञानक आकाश पैघ,
नेना गोल घेरा बैसि सीखै नामक नेह।
पहिल पाठ—कियो अनाम नहि, दोसर—संग रहू,
तेसर—डर बाँटू सभ, चौठी—साँच कहू।

कापी नहि तँ माटि अछि, कलम नहि तँ टहनी,
लोकक अनुभव पुस्तक, दादीक कथा गहनी।
पातक आसनपर पाठशाला न्याय-बोध जगाबै,
सीखल नेना काल्हि समाजक सच्चा पहरा बनाबै।

पहिल घण्टी कोइली देलक, दोसर देलक हवा,
दादीक कथा किताब बनल, अनुभव भेल दवा।
'कियो अनाम नहि'—ई मन्त्र सस्वर रटू,
सीखल नेनाक पहरा सँ अन्यायक जड़ि कटू।

❖

‘अगिला बेर भीतरक गज-ग्राह खेलत’—अनन्याक ई वाक्य दोसरे साँझ अपन मैदान ताकि लेलक। हरिहरनक संतानक प्रश्न, बत्राक अधूरा नाम, राघवक बिनु-जाल, लाउ किन-हंगक शीशामे देखायल गोहि—ई सभ अलग-अलग घटना नहि रहल। ओ सभ एकहि पोखरिक चारू किनार छल। बीचमे जे पानि छल, ओहि पानिमे आब गज-ग्राहक आख्यान फेर उतरबाक छल। मुदा एहि बेर गज कोनो दूरक पुराणक हाथी नहि, आ ग्राह कोनो नदीक जन्तु नहि। एहि बेर गज छल मनुष्यक भीतर अटकल सत्य, आ ग्राह छल लोभ, कुल-अभिमान, पद, प्रतिशत, भय, आ बेनाम लाभक जबड़ा।

चन्ना गाछीक ठूँठ पर ओ राति पानि नहि छल, मुदा सभकेँ पानिक गन्ध अबैत रहल। जड़िक फाँक सभमे जमल नमी एक-एक कऽ चमकि उठल। नामक पाथर सभक छाह नमहर

भऽ कऽ वृत्त बनौने छल। बच्चा सभ सोचलक जे राति सामान्य अछि; मुदा बूढ़बा भूत फुसफुसा कऽ कहलनि—'आइ भीतरक गज-ग्राह देखाओत। जे देखब, तकरा तुरन्त दोष नहि कहब; पहिने ओहिमे फँसल जीव देखब।'

अनन्या पूछली, 'दोषीमे जीव देखब कठिन अछि।' बूढ़बा भूत उत्तर देलनि, 'ठीके। मुदा न्याय कठिन होइत अछि, बदला सहज। गंगेश जे प्रमाणक मणि गढ़लनि, ओ केवल दोसरा पर लागू करबाक लेल नहि छल। जेकरा दोषी कहैत छी, ओकर भीतरक बन्धन देखबाक शक्ति सेहो प्रमाणक एक शुद्ध रूप अछि।'

एहि बातक तुरन्त बाद ठूँठक बीचमे अन्हार गाढ़ भऽ गेल। ओ अन्हार दिनक अन्हार नहि, आँखि बन्द कएलाक बाद जे भीतर देखाइत अछि, से अन्हार छल। ओहि अन्हारमे सभकेँ अपन कनपट्टीक धड़कन सुनाइ पड़ए लागल—जेना भीतरक पोखरिमे कियो डेग रखने हो। अन्हारक भीतर पहिने बटुकनाथ हरिहरन देखायल। ओकर देह ऊँच अदालतक गलियारा जेकाँ नमहर, कोट कारी, गला पर उज्जर पट्टी, हाथमे नियम-पुस्तिका। मुदा ओकर छातीसँ एक हाथीक सूँड़ बाहर निकलए चाहैत छल। सूँड़ दबायल, मुँह बन्द, आँखि फाटल।

हरिहरनक भीतरक गज ओकर बालपन छल—जे कखनो न्याय पढ़ए चाहैत छल, जे पहिल बेर वकालतमे आबि एक गरीब मुवक्किलक फाइल बिनु शुल्क उठौने छल। ग्राह ओकर पेशागत छल-कपट छल। ग्राहक दाँत तारीख, स्थगन, फीस, दबाव, बारक राजनीति, जाति-गौरव, आ अपराधी बचावक प्रपंच सँ बनल छल। ओ ग्राह गजक पएर पकड़ि कहैत छल—'तोँ न्याय नहि, पेशा छेँ। तोँ प्रश्न नहि, युक्ति छेँ। तोँ मनुष्य नहि, माननीय संबोधन छेँ।'

हरिहरन छटपटाइत रहल। ओकर संतान दूर सँ ताकैत छल। संतानक स्वर आबि रहल छल—'बाबा, अहाँ न्याय बचेलहुँ कि पेशा?' ई स्वर गजक सूँड़मे हवा भरैत, मुदा ग्राहक दाँत आरो गहराइत। हरिहरन चिचिआएल—'हम नियममे छलहुँ!' ठूँठ उत्तर देलक—'नियम केकरा लेल?' ओ चुप। एहि चुप्पीमे पहिल बेर ओकर कोट भीजल देखायल।

फेर दृश्य बदलल। चन्द्रपाल बत्रा आबि गेल। ओकरा चारू कात स्क्रीन, खाता, पर्ची, कमीशन, नकली श्रद्धांजलि, प्रतिशतक चिह्न। ओकर भीतरक गज छोट छल—एकटा बालक, जे अपन नाम ठीकसँ लिखए चाहैत छल। ग्राह बहुत पैघ—अधूरा नामक ऊपर चढ़ल प्रतिशत। ग्राह ओकरा कहैत छल—'नाम लिखि कऽ की करब? संख्या बनू। संख्या बेचू। संख्या घुमाउ। संख्या सँ देह खिंचू, मोन खिंचू, पैसा खिंचू।'

बत्राक भीतरक बालक माटि पर ‘चन्द्र’ लिखैत, तखन ग्राह पूँछ फेरि ‘प्रतिशत’ बना दैत। ओ ‘पाल’ लिखैत, ग्राह ओकरा ‘दलाल’ बना दैत। ओ ‘बत्रा’ लिखैत, ग्राह ओकरा ‘बटुआ’ बना दैत। बच्चा सभ देखैत रहल। देविका धीमे कहली, ‘जकरा नामक अक्षर नहि बचल, ओ दोसरा सभक नाम केना बचाएत?’

चन्द्रपाल पहिल बेर अपन छलक मूल देखलक। ओ सोचैत छल जे ओ भीड़सँ कमाइत छल; आब देखलक जे ग्राह ओकर भीतरक बालककेँ सेहो खाइत रहल अछि। ओ रोदन नहि केलक, कारण ओ कानब बिसरि गेल छल। ओकर मुँह सँ केवल एकटा शब्द निकलल—‘बेनाम।’ ठूँठ उत्तर देलक—‘बेनाम कमाइ करैत-करैत मनुष्य अपनहूँ बेनाम भऽ जाइत अछि।’

तेसर दृश्य राघव सिग्नलक। ओकर भीतर कोनो हाथी नहि देखायल; पहिने तँ केवल संदेशक बून्द, अदृश्य लेख, मेटाइत चिन्ह, नुकायल कोड। बच्चा सभ सोचलक—एहि ठाम गज कतऽ? तखन अनन्या देखली—एकटा बहुत छोट, पारदर्शी गज, जेकर देह कागचक पातसँ बनल, आ जे लगातार मेटा रहल अछि। ग्राह छल मौन-तकनीक—जे कहैत छल, ‘बोलू नहि, पठाउ। लिखू नहि, मेटाउ। सम्बन्ध नहि, संकेत। अपराध नहि, मध्यस्थता।’

राघवक गजक सभसँ पैघ पीड़ा छल जे ओकरा ककरो पूरा वाक्य भेटल नहि। ओ जीवन भरि आधा-संदेश, आधा-वादा, आधा-धमकी, आधा-बचावमे रहल। ओकर ग्राह ओकरा पूरा बोलए नहि देत। ओ जखन ‘हम’ कहए चाहैत, संदेश मेटा जाइत। जखन ‘दोष’ कहए चाहैत, चिह्न बदलि ‘प्रेषित’ भऽ जाइत। जखन ‘क्षमा’ कहए चाहैत, जाल टूटि जाइत।

मीरा कहली, ‘ई निजताक आदर नहि, अपराधक अन्हार अछि।’ सौम्या जोड़ली, ‘चुप्पी ओ नहि जे घावक रक्षा करए; चुप्पी ओ अपराध अछि जे साक्षीक गला दबा दैत अछि।’ राघवक पारदर्शी गज एक क्षण लेल साफ भेल। ओकर माथ पर लिखल देखायल—‘पूरा वाक्य।’ तखन ग्राहक जबड़ा काँपल।

चारिम दृश्य लाउ किन-हंगक। ओ कोनो पोखरि नहि, काँचक इमारतक भीतर फँसल छल। बाहर समुद्र, भीतर गणना। ओकर भीतरक गज बहुत विशाल, पर धातुक पिंजड़ामे। ग्राह केवल लोभ नहि छल; ग्राह छल भूगोल-विहीन पूँजी—जे कहैत छल, ‘देश नामक जोखिम हटाउ। श्रमक चेहरा हटाउ। नदीक इतिहास हटाउ। केवल लाभक प्रवाह छोड़ू।’

लाउक गज पहिल बेर मिथिलाक माटि सूँघए चाहैत छल। ओ सूँड़ काँच पर मारैत। काँच पर नाम उभरैत—सरयू, उज्ज्वल, मुन्ना, अनाम मजदूर, जलसमाधि, चन्ना गाछी। लाउ

घबराइत छल, कारण ओहि नाम सभक कोनो विनिमय-दर नहि छल। ग्राह कहैत—'नाम घाटा अछि।' गज उत्तर दैत—'नाम बिनु लाभ पथरा जाइत अछि।'

एडवर्ड ब्रूम सेहो ओहि दृश्यक किनार पर देखायल। ओकर भीतरक गज सभाक मंच पर तालि खोजैत छल; ग्राह नैतिक भाषणक भूख छल। ओ प्रत्येक पीड़ाकेँ सिद्धान्त बनबैत, प्रत्येक मृतककेँ उदाहरण, प्रत्येक गामकेँ प्रकरण। ओकर ग्राहक दाँत चमकदार अंग्रेजी शब्द सँ बनल छल, मुदा चन्ना गाछीक अन्हारमे ओ शब्द देवनागरी अक्षरक सोझाँ काँपैत छल। बच्चा सभ ओकरा देखलक, मुदा ओकर नाम ओहि राति पूरा नहि पढ़ल। अनन्या कहली—'एकर बारी फेर आएत।'

एहि सभ दृश्यक बीच सत्यव्रत मेहता स्वयं ठाढ़ छलाह। हुनका लागल जे ओ दर्शक छथि। मुदा ठूँठ हुनको भीतर झाँकि देलक। हुनकर गज छल न्यायकेँ सचमुच सुनबाक इच्छा; ग्राह छल पदक अनुशासन, देर सँ जागल विवेक, आ ओ मौन जे कतोक बेर अपराधक सुरक्षा बनल। सत्यव्रत काँपलाह। ओ कहलखिन, 'हमरा सेहो छोड़ू नहि।'

बच्चा सभ हुनका दिस देखलक। एहि वाक्यक महत्त्व सभ बुझलक। जे व्यक्ति दोसरा सभक गवाही लिखैत छल, ओ अपन भीतरक ग्राहकेँ नुकाबय नहि चाहैत छल। अनन्या रजिस्टरमे लिखली—'साक्षी सेहो जाँच सँ बाहर नहि।' सत्यव्रत आँखि झुका कऽ बैसलाह। ओहि क्षण हुनकर मौन दोसर बेर जन्मल—पहिल बेर अपराधक, दोसर बेर स्वीकारक, आ आब तेसर बेर न्यायमे प्रवेशक।

तखन ठूँठक बीचमे असल गज-ग्राह दृश्य उभरल। विशाल पानि, कादो, चन्द्रक उजास। गज आधा डूबल, ग्राह ओकर पएर पकड़ने। मुदा एहि बेर गज एकटा नहि छल। हरिहरनक बालपन, बत्राक अधूरा नाम, राघवक पूरा वाक्य, लाउक पिंजड़ाबद्ध स्मरण, ब्रूमक तालि-भूख, सत्यव्रतक सुनबाक इच्छा—सभ गजक अंग बनि गेल। आ ग्राह सेहो एकटा नहि—जाति, लोभ, प्रक्रिया, लाभ, मौन, वैश्विक लालच, डेटा, डर—सभ मिलि एक पैघ जबड़ा।

गज चिचिआएल नहि। ओकर मुँह सँ नाम निकलल। पहिने एक, फेर अनेक, फेर ओ नाम सभ जकरा कोनो सूचीमे ठाम नहि छल। जखन नाम पानिपर पड़ल, बच्चा सभ उत्तर देलक—'उपस्थित।' प्रत्येक 'उपस्थित' पर ग्राहक एक दाँत ढील पड़ैत। जखन बा अपन पुरखा सभक नाम जोड़लीह, ग्राहक पूँछ काँपल। जखन मीरा कहली—'देहक गरिमा उपस्थित,' ग्राहक आँखि धुँधला गेल। जखन देविका कहली—'स्क्रीनमे डूबल युवक उपस्थित,' पानि गरम

भऽ उठल। किनार पर बैसल बच्चा सभक हथेली तरक माटियो सेहाइ गेल—जेना चुल्हि मिझेलाक बहुत काल बाद राखक तर गरम रहैत अछि।

अन्तमे प्रश्न उठल—की गज मुक्त भेल? कथा सस्त उत्तर नहि देलक। ग्राह छूटल नहि, मुदा ओकर पकड़ पहिल बेर सार्वजनिक भऽ गेल। जे पकड़ नुकायल रहैत अछि, से असह्य; जे पकड़ देखाइ पड़ैत अछि, ओकर विरुद्ध हाथ जुटि सकैत अछि। चन्ना गाछीक ठूँठ एहि राति मुक्ति नहि, पकड़केँ दृश्य बनौलक। ई दृश्यैँ आगाँक संघर्षक प्रमाण बनल।

बूढ़बा भूत कहलनि, ‘मोन राखू, दुष्टक भीतरक गज देखब ओकर अपराध मेटाएब नहि। अपराधक हिसाब रहत। मुदा जँ भीतरक गज नहि देखब, तँ ग्राहक जाति नहि चिन्हब। ओकर दाँत केवल एक मनुष्यक नहि, पूरा व्यवस्थाक बनल अछि।’ बच्चा सभ गंभीर भऽ गेल। ई शिक्षा कठिन छल—क्रोध राखू, मुदा आँखि खोलू।

भोर लगैत ठूँठक पानिक दृश्य मेटा गेल। गाम फेर गाम लगए लागल। मुदा प्रत्येक पात्र अपन भीतर थाकल जागल। हरिहरन दूर कोठरीमे पसेनासँ भीजल उठल; चन्द्रपाल कागच पर पहिल बेर अपन पूरा नाम लिखबाक कोशिश करैत रहल; राघवक उपकरणमे एक अधूरा संदेश चमकल—‘हम पूरा कहब...’; लाउ होटलक काँच पर हथेली रखि माटिक गन्ध ताकैत रहल।

चन्ना गाछीक पाथर-घेरा लग बच्चा सभ अगिला सभा लेल नियम बनौलक—‘हम सभ केवल मृतकक नाम नहि पढ़ब; हम सभ जीवितक भीतर अटकल नाम सेहो खोजब।’ ई नियम सुनि नारिकेल पातक पाठशालाक विचार जन्मल। नामक पहरा आब केवल अभिलेखक रक्षा नहि, बुद्धि, देह, जाति, श्रम, निजता आ न्यायक पाठ बनबाक छल।

ओहि बिहान अनन्या रजिस्टरक नब पन्ना खोलि शीर्ष लिखली—‘नारिकेल पात पाठशाला।’ ठूँठक हरियर बिन्दु कने पसरल। बूढ़बा भूत दूर सँ कबड्डीक साँस छोड़लनि —‘कबड्डी...’ आ उत्तरमे बच्चा सभ कहलक—‘पाठशाला...’ खेल आब पढ़ाइमे उतरि रहल छल।

लोकगीत: भीतरक पोखरि

लोकधुन: गज-ग्राह आख्यान गीत

साफ करू हे, भीतरक पोखरि साफ करू हे,
जे अपना सँ लड़ि सकल, वैह पार उतरू हे।

चारि किनार अलग-अलग, पानि एकहि धार,

बटुक, बत्रा, राघव, लाउ—भीतर गज-ग्राह।
कोनो गज, कोनो ग्राह मात्र नहि रहै,
लोभ पकड़ै, भय छटपटै, नाम भीतर बहै।
जीवितक अटकल नामो बच्चा सभ खोजत,

जाति, श्रम, निजता, न्याय पातपर पढ़त।
ठूँठक हरियर बिन्दु पाठशाला बनल,
कबड्डीक साँस पढ़ाइक स्वरमे ढलल।
भीतरक पोखरि साफ कर, नामक दीप धर,

बटुक-बत्रा-राघव-लाउ—भीतर गज-ग्राह-सार।
कियो गज, कियो ग्राह मात्र नहि रहए,
लोभ पकड़ए, भय छटपटाए, नाम भीतर बहए।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—सुग्गाक आदेश- शब्द, वाक्य आ विश्वास: आँगनक सुग्गा प्रतिदिन मालिकक आवाज सुनि सीखि गेल छल—“पानि आनू।” एक दिन मालिक घरमे नहि छल। एहि घटनासँ विवाद उठल—शाब्दबोधक कारण वक्ताक वर्तमान इच्छा मात्र अछि, वा शब्दरूप संरचना आ ज्ञात सङ्केतक स्वतंत्र सामर्थ्य सेहो?]

अध्याय ८३

नारिकेल पात पाठशाला

जतय छाहरि नहि बचल, ओतहु पाठशाला बैसि सकै छै— पातक आसनपर।

अध्यायारम्भ लोकगीत: उपस्थितिक गीत

लोकधुन: हाजिरी-मंगल

पुकारू हे नाम, एक-एक कऽ पुकारू हे,
'उपस्थित'क उत्तर पर दीपक थारी उतारू हे।

नाम पुकारू एक-एक, सभ कहू—उपस्थित,
माय, मजदूर, नेना, बूढ़—सभक मान सुरक्षित।
हाजिरी केवल संख्या नहि, जीवनक पहिचान,
जकर पएर धरतीपर, ओकर पूरा स्थान।

कियो छुटि नहि जाए पाँतिसँ, कियो मेटायल नहि,
उपस्थितिक एक स्वर सँ टूटै अदृश्य मही।
हाजिरीक गीत गाउ, हरेक नामक दीप धरू,
समाजक पूरा चित्रमे सभ रंग बराबर भरू।

माय उपस्थित, मजदूर उपस्थित, नेना-बूढ़ सम्हार,
पाँति सँ कियो खसए नहि, इहए पहिल उपचार।
संख्या नहि, साँसक लेखा, धड़कनक ई खाता,
पूरा हाजिरी सँ बनए समाजक पूरा नाता।

❖

खेल जे राति पढ़ाइमे उतरल छल, से भोर होइते माटि आ पातक रूप धरए लागल। भीतरक गज-ग्राहक राति उतरि गेलाक बाद गढ़ नारिकेलमे बिहान साधारण नहि भेल। पानि अपन पुरान चाल चलैत रहल, सड़क पर धूलि उड़ैत रहल, बजारमे आलू-प्याजक भाव पर झगड़ा चलैत रहल; मुदा चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात लोक सभकेँ बुझाइत रहल जे कोनो अदृश्य पशु भीतरक दलदलमे हारि कऽ पाछाँ हटि गेल अछि। बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ, ब्रूम—ई सभ अपन-अपन कोठरी, होटल, दूतावास, विमान, दरबारमे रहल, मुदा हुनकर भीतरक ग्राह आब पहिने जेकाँ दाँत चमका नहि रहल छल।

ओहि बिहान अनन्या ठूँठक पाछाँक खाली जगहमे बालु साफ करैत छली। ओकर संग पाँच बच्चा, दू बालिका, एक बूढ़ कुम्हार, एक विधवा, आ देविका रहली। कियो पूछलक, ‘एतय की बनत?’ अनन्या उत्तर देली—‘पाठशाला।’ सभ चौंकल। जे ठाम भूतक कबड्डी,

जलसमाधिक पुकार, नकली जुलूस, स्मृति पर निविदा, आ भीतरक गज-ग्राहक दरबार देखलक, ओहि ठाम पाठशाला? मुदा बच्चा सभक आँखिमे एहन निश्चय छल जे प्रश्न अपन-आप धीमा पड़ि गेल।

ई पाठशाला सरकारी मान्यता लेल नहि बनि रहल छल। एतय पहिल पाठ वर्णमाला नहि, नामक सुननाइ होएत। एतय उपस्थितिक अर्थ हाजिरी-पंजी नहि, अस्तित्वक स्वीकार होएत। एतय 'अ' सँ 'अनाम' नहि, 'अ' सँ 'अहाँ के छी?' पूछल जाएत। 'क' सँ 'कबड्डी' होएत, मुदा ई खेलक नियम सेहो पढ़ाओल जाएत—साँस रोकू, मुदा दोसराक देह नहि चिबाउ; सीमा पार करू, मुदा नाम नहि चोराउ; पकड़ा जाउ, तँ झूठ नहि, स्वर छोड़ू।

नारिकेल पात पाठशालाक नाम बा देलीह। ओ कहलीह, 'चन्ना गाछीक ठूँठ रहत, मुदा छाँहक लेल पात चाही। नारिकेलक पात दूर-दूर धरि हवा पकड़ैत अछि। ई पाठशाला ओहिना लोकक आवाज पकड़त।' कुम्हार अपन घरसँ पुरान खपड़ा आनलक। बच्चा सभ नदीक कछारसँ चपटा पाथर चुनलक। मीरा लाल डोरीक गठरी लऽ कऽ आयली। ईरा एक पुरान नक्शाक उनटा भाग लऽ आयली, जाहि पर नगरपालिकाक रेखा काटि देल गेल छल। ओही उनटा भाग पर पाठशालाक पहिल योजना बनल।

योजनामे चारि कोना छल। पहिल कोना—नाम। दोसर—निजता। तेसर—श्रम। चारिम—साँस। बीचमे ठूँठ। ठूँठक ऊपर कोनो मूर्ति नहि, कोनो पट्टिका नहि। केवल एक खाली कटोरा राखल गेल, जे पुकारक प्रतीक्षा करैत रहत। बच्चा सभ कहलक—'जँ कोनो नाम छूटि जाए, ई कटोरा पहिने सुनत।' ईरा हँसली नहि; ओ बुझैत छली जे कतेक सभ्यता खाली कटोरा छोड़लाक कारणेँ बचल अछि।

देविका पाठशालाक पहिल देबाल पर कोयलासँ लिखली—'एतय कोनो दुख बिनु अनुमति लिखल नहि जाएत।' मीरा दोसर पाँति जोड़ली—'एतय कोनो देह तमाशा नहि।' गोप कुमार जे देर सँ पहुँचल छलाह, तेसर पाँति लिखलनि—'एतय कागच प्रमाण अछि, मुदा मनुष्यक स्वर बिनु अधूरा।' सत्यव्रत मेहता दूर ठाढ़ छलाह; बच्चा सभ हुनका देखलक। अनन्या कहली—'अहाँ चारिम पाँति लिखू।' सत्यव्रत बहुत देर सोचलाह, फेर लिखलनि—'एतय मौन सेहो गवाही अछि, जँ ओ डरक नहि, सुनबाक हो।'

एहि चारि पाँतिक बाद पाठशाला बनि गेल। ई बात सुनि शहरक मास्टर हँसल—'चारि पाँति लिखि देलहुँ आ पाठशाला बनि गेल?' बा उत्तर देलीह, 'जे पाठशाला भवन सँ बनैत अछि, ओ परीक्षा लेल होइत अछि; जे पाठशाला नियम सँ बनैत अछि, ओ मनुष्य लेल।' मास्टर चुप

भेल। ओकरा मनमे लाज नहि, उलझन आयल। ओ बादमे अपन स्कूलक उपस्थिति-पंजी लऽ कऽ आयल आ कहलक—'हमरो पढ़ू। एहिमे कतेक नाम केवल संख्या बनि गेल अछि।'

पहिल दिनक काज बेंच बनौनाइ नहि छल। बच्चा सभ पात चुनैत रहल। नारिकेलक नमहर पात, जे हवामे झनझनाइत छल, काटल नहि गेल; जे अपने झड़ल छल, से उठाओल गेल। सूखल पातक धार आँगुरपर करची जकाँ कड़कड़ लगैत छल; उठबैत काल पातक डाँटसँ हलुक मीठ रस-गन्ध छुटैत छल। पातक धार पर छोट-छोट रेखा खिंचल गेल। प्रत्येक रेखा एक कथा लेल। अनन्या कहली—'कागच फटि सकैत अछि; पात सूखि सकैत अछि; मुदा जँ हम पढ़ैत रही, तँ नाम पातसँ लोकमे चलि जाएत।'

एहि पात सभ पर लेखनक ढंग विचित्र छल। पूरा कथा नहि, केवल संकेत—'पुलक पाया', 'डिजिटल डेर', 'ऑक्सीजनक राति', 'मीराक अनुमति', 'गंगेशक प्रश्न', 'नकली भूतक रोदन', 'भीतरक ग्राह'। बच्चा सभ प्रत्येक संकेतक नीचाँ खाली जगह छोड़लक। पूछल गेल —'खाली किएक?' अनन्या कहली—'जँ कथा बन्द लिखि देब, तँ अगिला मनुष्य कतऽ बाजत?'

पाठशाला शुरू होएबाक समाचार बजार धरि पहुँचल। किछु लोक समर्थनमे आयल। किछु कहलक—'ई सभ बच्चा सभकेँ बिगाड़त। नाम, जाति, भ्रष्टाचार, देह, अदालत, डिजिटल ठगी —एतेक भारी विषय बच्चा सभकेँ किएक?' देविका उत्तर देली—'जखन ई विषय सभ बच्चा सभक जीवनमे घुसि गेल, तखन पाठशालासँ बाहर किएक राखब?' एहि वाक्य पर किछु लोकक चेहरा झुकल। कारण गामक प्रत्येक घरमे कोनो ने कोनो बच्चा मोबाइल, कर्ज, दबाइ, जाति, रोजी, वा मौनक मारि देखने छल।

दुपहरियामे जाति-व्यवस्थाक प्रश्न स्वतः आयल। एक चर्मकार बालक पात उठबैत संकोच करैत छल। ओकरा लग बैसल एक ब्राह्मण बालक पहिने पाछाँ हटि गेल, फेर गंगेशक प्रश्न मोन आयल। ओ धीरे पात ओकर संग पकड़लक। दुनू बच्चाक हाथ एक पात पर पड़ल तखन पातक बीचमे एक महीन हरियर रेखा चमकल। बा कहलीह—'देखलहुँ? तत्त्वचिन्तामणि केवल पुस्तकमे नहि रहैत; कखनो-कखनो दू हाथक बीचमे सेहो खुलैत अछि।'

ई वाक्य सुनि बूढ़ पण्डित जे किनार पर बैसल छल, खँखारि उठल। ओ कहलक—'गंगेशक जीवनक सभ कथा प्रमाणित नहि।' अनन्या तत्क्षण पूछली—'तखन जातिक गर्वक प्रमाण की? कुलक शुद्धताक प्रमाण की? जँ पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्मक कथा

पर प्रश्न अछि, तँ जन्मसँ ऊँच-नीचक दावा पर सेहो प्रश्न होएत।’ पण्डितक आवाज बन्द भेल। पाठशालाक पहिल वाद-विवाद बिनु गाली, बिनु दण्ड, बिनु निष्कासन समाप्त भेल।

साँझ धरि नारिकेल पातक छप्पर जेकाँ एक हलुक मंडप बनि गेल। ओ छप्पर वर्षा रोकए-जोग नहि, मुदा धूपकेँ छन-छन कऽ पठबए-जोग छल। कटल चन्ना ठूँठक पाछाँ पातक हरियर परदा लागल। लोक कहए लागल—‘गाछि कटि गेल, पात उगि गेल।’ मीरा सुधारली—‘उगि नहि, जुटि गेल।’ ई सुधार जरूरी छल, कारण पाठशाला चमत्कारक नहि, लोकक श्रमक फल छल।

रातिमे पहिल दीप जलल। कोनो घंटी नहि बाजल। अनन्या खाली कटोरा उठौली आ तीन बेर धीरे बजौली। आवाज गँभीर नहि, कोमल छल। माटिक कटोराक ओ टन्न सुनि कऽ मिझा जाइत छल—जेना पानिक बून्द पातपर ठहरि कऽ ससरि जाइत हो। बच्चा सभ गोल घेरामे बैसल। सत्यव्रत मेहता पाछाँ, गोप दहिना, देविका आ मीरा सोझाँ, बा ठूँठक लग। पानिक कगारसँ हलुक गन्ध आयल। कदाचित पनिडुब्बी सुनए आयल छल। कदाचित गोहि सभ दूर तलमे पलक झपका रहल छल।

अनन्या कहली—‘आइ पाठशाला खुलल। पहिल पाठ काल्हि। आइ केवल नियम सुनल जाए।’ ओ चारि पाँति पढ़ली। सभ उत्तरमे ‘सुनल’ कहलक। फेर ओ पाँचम पाँति जोड़ली—‘एतय जे अनुपस्थित अछि, ओकरा पहिने बजाओल जाएत।’ एतय सभ चुप भेल। अनुपस्थितक अर्थ मृतक, हरायल, भुलायल, लज्जित, निर्वासित, नाम-काटल, जाति-दबल, देह-लूटल, स्क्रीनमे डूबल—सभ छल।

ओहि राति कटल ठूँठक छाह, नारिकेल पातक छाँह सँ मिलि, धरती पर अजगुत आकृति बनौलक। आकृति न गाछिक, न मनुखक, न पशुक। अनन्या कहली—‘ई पाठशालाक पहिल अक्षर अछि।’ कियो पढ़ि नहि सकल। सत्यव्रत बहुत देर धरि ओकरा तकैत रहलाह। हुनका बुझाइत रहल जे अक्षर कदाचित ‘उ’ अछि—उपस्थितक ‘उ’।

ठीक ओहि समय दूरसँ ढोलकक बहुत धीमा स्वर आयल। बच्चा सभ उठि सोचलक जे कबड्डी शुरू करब? बा हाथ उठा रोकलीह—‘काल्हि पहिल पाठ अछि। आइ साँस बचाउ।’ भूत सभ सेहो कदाचित ई नियम मानलक। कोनो खेल नहि भेल। मुदा हवामे कबड्डीक साँस टाँगल रहल—रोकल नहि, सहेजल।

अध्यायक अन्त एहि प्रतीक्षामे भेल। नारिकेल पात पाठशाला बनि गेल छल, मुदा ओकर पहिल पाठ अबहियो खुलबाक छल। खाली कटोरा बीचमे राखल रहल। रजिस्टरक नब पन्नापर

शीर्षक लिखल गेल—‘पहिल पाठ: उपस्थित।’ आ राति भरि गढ़ नारिकेलक अनुपस्थित नाम सभ, धीरे-धीरे, अपन-अपन बारीक प्रतीक्षा करैत रहल।

लोकगीत: पातक आसन

लोकधुन: पाठशाला-गीत

बिछल हे आसन, पातक आसन बिछल हे,
जतऽ नाम पढ़ल जाए, ओतऽ गाम साकार भेल हे।

छाहरि नहि बचल, पातक आसन बिछल,
कटल ठूँठक चौपालमे नब विद्यालय खुलल।
खाली कटोरा बीच, रजिस्टर नब पात,
‘उ’ अक्षर राति भरि फुसफुस—उपस्थितक बात।
कखग पहिने नहि, पहिने नामक मान,

साँस बचा कऽ काल्हि पढ़ब अनुपस्थित प्राण।
भूत खेल रोकल, हवामे लय सहेजल,
एक-एक नाम अपन बारीक बाट निहरल।
पातक आसन छोट, पाठ अपार अछि,
जतय नाम पढ़ल जाए, ओतय गाम साकार अछि।

छाहरि ने बचल, तइयो पाठशाला खुजल,
कटल ठूँठक चौपाल मे नव रजिस्टर जुटल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—घट आनू: बालक भाषा सीखि रहल छल। एक वृद्ध दोसर सेवकसँ कहलक, “घट आनू।” सेवक उठि कोठरीसँ घड़ा आनलक।]

अध्याय ८४

पहिल पाठ: उपस्थित

पहिल पाठ अक्षर नहि— 'उपस्थित' कहब होइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: स्त्री सभक उज्जर पहर

लोकधुन: स्त्री-मण्डली मंगल गीत

जुटू गे बहिना, उज्जर पहरक बेला गे,
अपन नाम अपने कहू, टूटत सभ झमेला गे।

दिनक श्रम, रातिक बात—स्त्री सभ घेरा बनाबै,
एक-दोसरक कंठ सुनि साहस दीप जलाबै।
माय, बहिन, बेटी सभ अपन नाम कहत,
घर, खेत, दफ्तर, मंचमे समान अधिकार रहत।

घूँघट चाही तँ अपन, स्वरपर पर्दा नहि,
निर्णयमे आधा जगत कखनहुँ आधा नहि।
उज्जर पहर स्त्रीक हो, गामक भोर बढ़त,
हुनकर संग समाजक हरेक संस्था पूर्ण बनत।

आँगन सँ पंचायत धरि आधा जगक डेग,
स्वर पर परदा नहि रहत, चाहे रहौ घोघ-टेक।
एक बहिनक जीत सुनि दस आँगन जागत,
मण्डलीक दीप-पाँति सँ गामक भोर लागत।

❖

रजिस्टरक ओ शीर्ष—‘पहिल पाठ: उपस्थित’—भोरक इजोतमे अपने पहिल घंटी बनि गेल। नारिकेल पात पाठशाला खुललाक पहिल दिन कियो वर्णमाला नहि पढ़लक। ने कखग, ने संख्या, ने पहाड़ा। ठूँठक छाहहीन चौपाल पर बच्चा सभ पातक आसन बिछा कऽ बैसल; बैसिते जाँघ तर पातक ठंढा-चिक्कन सतह बाजल—कच्च-कच्च, जेना आसन अपने उपस्थिति लिखबैत हो। अनन्या बीचमे एकटा खाली पाथर राखि देली। खाली पाथरक ऊपर कोनो नाम नहि लिखल छल; ओ पाथर ओ सभ नामक लेल छल जे एखन धरि घरक भीतर दबल, कुण्डलीक बाहर छोड़ल, कागचक हाशियामे काटल, अथवा लाजक अन्हारमे नुकाओल गेल छल।

ईराक हाथमे स्याहीकलम छल, देविकाक हाथमे रजिस्टर, मीरा लग लाल डोरी, सौम्या लग छोट कपड़ाक थैली, जाहिमे खाली कागच, काजर, दू टुकड़ा कोयला, आ कतेको छोट

चकमक पाथर छल। आरुणि दूर ठाढ़ रहि देखैत छल। ओकरा लग बुझाइत छल जे पुलक नाप, पाया, नदीक वेग, ठेकाक शर्त—ई सभ ज्ञानक एक भाग रहल; मुदा आइ जे पाठ शुरू भऽ रहल अछि, ओकरा नापबाक कोनो यंत्र नहि।

अनन्या पहिल वाक्य कहली—'एहि पाठशालाक पहिल पाठ अछि—उपस्थित।' बच्चा सभ एकहि बेर दोहरओलक—'उपस्थित।' शब्द हवामे उठल, कटल ठूँठक खोलमे जा धँसल, फेर धीमे सँ घुरि सभक कर्णमे पैसल। जकरा सभ दिन स्कूलमे उपस्थिति देबाक आदत छल, ओ सभ पहिल बेर बुझलक जे उपस्थित कहल मात्र देहक कुर्सी पर बैसल रहब नहि; उपस्थित कहल नामक संग ठाढ़ रहब अछि।

पहिल बच्चा अपन नानीक नाम लऽ कऽ उठल। घरमे हुनका 'ओ बुढ़िया' कहल जाइत छल। नानीक कोनो कागच नहि, कोनो जन्मतिथि नहि, कोनो जमीनपर दावा नहि। बच्चा कहलक, 'हमर नानी, जिनकर असल नाम घरमे कियो नहि बजैत—सीतामोनि।' ठूँठक कगार पर बैसल चिरई एक बेर पाँख झपटलक। देविका रजिस्टरमे लिखली—'सीतामोनि—उपस्थित।' बच्चा साँस छोड़लक, जनु नाम देबाक बाद ओकर छातीमे आधा शताब्दीक धूलि हलुक भऽ गेल।

दोसरा पंक्ति सँ एक लड़की उठली। ओकर नाम सोनकि छल। ओ कहली, 'हमर मामा नदीमे गेल, गाममे कहल गेल बाहर कमाइ लेल गेल अछि। मुदा हमर माए कहैत छलीह जे नदी हुनका लऽ गेल। हुनकर नाम भोलाराम।' लोकमे निस्तब्धता। भोलारामक नाम ककरो सूचीमे नहि छल; न मजदूर, न मृतक, न प्रवासी, न लापता। अनन्या पूछली, 'घरमे ई नाम लेल जाइत अछि?' लड़की कहली, 'रातिमे। दिनमे नहि।' रजिस्टरमे लिखल गेल—'भोलाराम—रातिसँ दिनमे उपस्थित।'

तेसर बच्चा झिझकैत उठल। ओ कहलक, 'हमर परदादा चर्मकार छलाह। घरमे हुनकर नाम कहला पर लोक कहैत अछि—छोड़ू, कुल बिगड़त। मुदा हमर दादी कहैत छलीह—हुनकर बिनु घरक जूता, ढोल, माटि, मरम्मत, किछुओ नहि चलत। हुनकर नाम मंगलू दास।' एहि नाम पर किछु बूढ़ लोकक चेहरा कसि गेल। पाठशालाक पहिल परीक्षा आब सोझाँ छल—जाति जे नामकेँ नीचाँ धकेलक, ओकरा 'उपस्थित' कहबाक साहस।

मीरा धीरे उठली। ओ सोनकि आ तेसर बच्चाक बीच बैसि कहली, 'जकर श्रम पर सभ चलल, ओकर नाम नीचाँ नहि, आधारमे लिखल जाएत।' देविका रजिस्टरक पन्नामे मंगलू दासक नाम पहिल स्तम्भमे नहि, बीचमे लिखली—ठीक ओतए जतए पृष्ठक भार टिकैत अछि।

अनन्या सभसँ कहली, ‘एहि पाठशालामे जाति उपस्थिति रोकि नहि सकैत।’ बच्चा सभ उत्तर देलक—‘उपस्थित।’

तखने गंगेशक प्रश्न फेर घुरल। पछिला दिन जे गंगेश उपाध्यायक कथा सुनाओल गेल छल—पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्म, चर्मकारणी सँ विवाह, तत्त्वचिन्तामणि, नव्य न्याय, आ सम्मानक नाम पर जीवन-सत्यक हत्या—से बच्चा सभक भीतर धधकि रहल छल। एक बालक पूछलक, ‘जँ गंगेश न्याय बनौलनि, तखन समाज हुनकर जीवनक न्याय किएक नहि मानलक?’ ई प्रश्न हवामे अटकला पर ठूँठक एक सूक्ष्म हरियर बिन्दु काँपि उठल।

सौम्या उत्तर नहि देली। ओ कहली, ‘आइ उत्तर नहि, प्रश्न उपस्थित होएत।’ रजिस्टरमे एक नव पंक्ति खुलल—‘गंगेशक जीवनक दबाओल सत्य—उपस्थित।’ कियो विरोध कएलक—‘शास्त्रक लोकक बारेमे बच्चा सभ की जनत?’ बा दूर सँ कहलीह—‘बच्चा सभ जँ नाम सुनि सकैत अछि, तँ शास्त्रक चुप्पी सेहो सुनि सकैत अछि।’ बूढ़क विरोध ओहि वाक्यक भीतर पघिलि गेल।

पाठशालाक पहिल पाठ आब उपस्थिति सँ आगाँ बढ़ि प्रमाण धरि गेल। अनन्या पाथर उठौली। कहली, ‘जँ हम कहब जे एहि पाथर पर नाम अछि, मुदा कियो देखत नहि, तखन?’ एक बच्चा कहलक, ‘प्रत्यक्ष चाही।’ ओ पाथर पलटल गेल—नीचाँ कोयलासँ अधलिखल ‘म’ छल। दोसर बच्चा कहलक, ‘ई मंगलू दासक म भऽ सकैत अछि, कि माए क, कि मृतक क।’ अनन्या हँसली—‘अनुमान।’ फेर बा कहलीह, ‘हम सुनलहुँ जे मंगलू दासक हाथमे ई निशान रहैत छल।’ बच्चा सभ कहलक—‘शब्द।’

एना खेल-खेलमे नव्य न्याय पाठशालाक माटिमे उतरि गेल। गंगेश पुस्तकालयक धूलि सँ निकलि बच्चा सभक पाथर, कोयला, नाम, आ प्रश्नमे आबि बैसलाह। तत्त्वचिन्तामणि आब बारह हजार ग्रन्थक भारक नाम मात्र नहि रहल; ओकर अर्थ ई भेल जे सत्यक प्रत्येक कण पर विचारक दीप जराओल जाए, ताकि जाति, लोभ, कागच, आ डर मिलि ककरो अनुपस्थित नहि बना सकए।

चारिम बच्चा जे उठल, ओकर आवाज बहुत धीमा छल। ओ अपन बहिनक नाम नहि बाजि पाबि रहल छल। बहिनकेँ मोबाइल पर धमकाओल गेल छल; परिवार लाजक डर सँ ओकर नाम स्कूलसँ कटौने छल। मीरा ओकर लग गेली, कहली, ‘जँ नाम सार्वजनिक नहि करए चाही, तँ हम केवल एतेक लिखब—एक बेटी, जे लाजक कारण नहि, हिंसाक कारण चुप कराओल

गेल।’ बच्चा माथ हिलौलक। रजिस्टरमे लिखल गेल—‘एक बेटी—गरिमासहित उपस्थित।’ एहि पंक्ति पर सभक माथ झुकि गेल।

एहि पाठशालामे उपस्थितिक अर्थ सभ किछु उघारब नहि छल। किछु नाम पूरा कहल जाएत, किछु संकेतमे, किछु घरक अनुमति धरि रोकल, किछु केवल पाथरक तापमे राखल। मीरा नियम लिखली—‘निजता काटि कऽ स्मृति नहि बनत।’ देविका जोड़ली—‘जकरा नाम कहबासँ खतरा, ओकर चुप्पी सेहो उपस्थित।’ बच्चा सभ एहि वाक्यकेँ तीन बेर दोहरओलक।

मध्याह्न लगिते एक पुरनका पण्डित आयल। ओ कहलक, ‘एहन पाठशालामे जाति-गोत, कुल-परम्परा, शास्त्र-विरुद्ध बात बच्चा सभकेँ पढ़ाओब ठीक नहि।’ अनन्या विनम्रता सँ पूछली, ‘शास्त्र नाम बचबैत अछि कि नाम मेटबैत?’ पण्डित चुप। ओ फेर कहलक, ‘व्यवस्था चाही।’ ईरा उत्तर देली, ‘व्यवस्था जँ मृतकक नाम खाए, तखन ओकरो गोहि कहल जाएत।’ पण्डित अन्हार खोजैत छल, मुदा चन्ना गाछी कटि गेल छल; ओतय धूप साफ छल।

एक बूढ़ स्त्री अपन आँचल सँ पुरान ताबीज निकालि देलीह। ताबीजमे कागचक सड़ल टुकड़ा छल। ओ कहलीह, ‘ई हमर मायक नाम, जे हमरा सासुरमे कहए मना छल। हम पढ़ि नहि सकैत।’ सौम्या कागच खोलबाक कोशिश नहि कएली; ओ टूटि जाइत। बच्चा सभ ओकरा घेरि बैसल। कागच पर अक्षर नहि पढ़ायल, मुदा स्त्री अपन मायक नाम कहलीह—‘फुलकुमारी।’ ओहि क्षण ताबीजक सूत अपने-आप खुलि गेल। सड़ल कागचसँ पुरान सेनुर आ बासि फूलक मिलल-जुलल क्षीण गन्ध उठल—पचास बरखक बन्द साँस जकाँ।

देविका लिखली—‘फुलकुमारी—आँचलक भीतरसँ उपस्थित।’ एहि पंक्ति पर नारिकेल पातक आसन सभ हिलल। हवा नहि छल, मुदा पात सभ सरसरायल। बच्चा सभ कहलक—‘गाछि सुनलक।’ कियो विज्ञान खोजलक नहि, कियो चमत्कार घोषित नहि कएलक। पाठशालाक नियम छल—जे घटना दुखकेँ हलुक करए, ओकरा तुरन्त तमाशा नहि बनाओल जाए।

दुपहरिया बाद उपस्थिति पाठ नागरिक पाठ बनि गेल। बच्चा सभ कहलक—‘जकर नाम रजिस्टरमे अछि, ओकर देह नहि रहितो समाजमे ठाम अछि।’ आरुणि जोड़लक—‘जकर श्रम पुलमे अछि, ओकर नाम पायामे लिखल जाएत।’ गोप कुमार कहलाह—‘जकर डेटा चोरी भेल, ओकर नाम खाताक संख्या नहि, मनुष्यक स्वरमे घुरत।’ मीरा कहली—‘जकर देहक गरिमा छीनल गेल, ओकर नाम बिनु अनुमति केओ नहि बेचत।’ सत्यव्रत मेहता पाछाँ सँ सुनैत रहलाह, आ अपन नोटबुकमे केवल एक शब्द लिखलनि—‘उपस्थित।’

साँझक बेर बच्चा सभ पहिल दिनक नाम पढ़लक। प्रत्येक नामक उत्तरमे सभ कहैत —‘उपस्थित।’ धीरे-धीरे ई शब्द गामक नब नागरिक संबोधन बनि गेल। कियो अबैत —‘रामसागर?’ उत्तर—‘उपस्थित।’ कियो कहैत—‘जेकर नाम नहि भेटल?’ उत्तर —‘उपस्थित।’ कियो कहैत—‘गंगेशक दबाओल जीवन?’ उत्तर—‘उपस्थित।’ कियो कहैत —‘मंगलू दास?’ उत्तर—‘उपस्थित।’ एहि उत्तरमे समाजक पुरान पंक्ति दरकैत गेल।

राति उतरबाक पहिने एक अनपेक्षित घटना भेल। स्त्री सभ जे दिनभरि किनार पर ठाढ़ सुनैत रहलीह, ओ सभ आपसमे धीरे-धीरे बजए लागलीह। हुनका सभक लग एहन नाम छल जे दिनमे नहि कहल जा सकैत—घरमे पीटल, दहेजमे झोंकल, प्रेमक कारण मारल, जातिक नाम पर नुकाओल, देहक अपमानक बाद मौनमे धकेलल। उज्ज्वलक माय, मीरा, देविका, सौम्या, बा —सभक चेहरा पर एकहि छाह उतरि आयल।

मीरा अनन्यासँ रजिस्टर माँगली। पन्ना पलटि कऽ खाली छोड़ि देली। कहली, ‘किछु नाम राति माँगैत अछि। दिनक धूपमे ओ सभ झुलसि जाएत। आइक पाठ बच्चा सभक छल; अगिला पाठ स्त्री सभ रातिमे पढ़त।’ अनन्या पूछली, ‘हम सभ बैसि सकैत छी?’ मीरा उत्तर देली, ‘बैसब, मुदा पहिने सुनबाक उमेर अपन भीतर बनए देब।’

ठूँठक हरियर बिन्दु अन्हारमे हलुक चमकि रहल छल। पाठशालाक पहिल पाठ समाप्त नहि भेल; ओ रातिक सभामे बदलए लगल। बच्चा सभ रजिस्टर बन्द कएलक, मुदा खाली पन्ना खुल्ला छोड़ल गेल। ऊपर कोयलासँ लिखल गेल—‘अगिला पाठ: स्त्री सभक राति-सभा।’ दूर पानिमे गोहि नहि देखायल, मुदा लहरि एक बेर गोल घेरा काटि गेल—जनु कबड्डीक रेखा रातिमे प्रवेश कऽ रहल हो।

लोकगीत: उपस्थित कहू

लोकधुन: हाजिरी लोकधुन

कहू हे धीरे, 'उपस्थित' कहू हे,
जकरा कियो ने गनलक, ओकरो नाम गनू हे।

पहिल पाठ अक्षर नहि—‘उपस्थित’ कहू,
खाली पाथर सामने अपन गुम नाम सहू।
जकर नाम कागचमे नहि, ओकरो बारी अछि,
जकर देह दूर, ओकर ऋण उपस्थित भारी अछि।
दिनक धूपमे किछु नाम झुलसि जाए,

रातिक स्त्री-सभा ओकर देह खोलि सुनाए।
रजिस्टर बन्द, खाली पन्ना खुल्ला राति,
गोहि लहरि गोल काटि देलक नब पारीक बात।
उपस्थित कहू धीरे, जकरा केओ नहि गनल,
एक शब्दसँ अनाम जीवन फेर जनमल।

खाली पाथर सोझाँ अपन गुम नाम सहू,
जकर देह दूर, ओकर ऋण उपस्थित बुझू।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—काठक पुतरी: सूत्रधार डोरीसँ काठक पुतरी चलबैत छल। मंचपर आवाज आयल—"घट आनू।" पुतरी घूमि छोट घट उठा अनलक।]

अध्याय ८५

स्त्री सभक राति-सभा

दिनक शब्दक असली देह रातिक सभामे खुजै छै, जखन स्त्री सभ बाजए लागै छथि।

अध्यायारम्भ लोकगीत: पएरक धूलिसँ बाट

लोकधुन: श्रम-बटगबनी

चलू यौ भाइ, धूलिक तिलक लगा चलू यौ,
पएरक छापे-छापे भविष्यक बाट बनाउ यौ।

मजदूरक पएरक धूलि बाटक नक्शा लिखै,
जतय श्रमक पग पड़ै, विकास ओतहि दिखै।
धूलि झाड़ू नहि तिरस्कार, माथपर मान धरू,
जूता, विश्राम, सुरक्षित राह सभ अधिकार भरू।

पग-पग मिलि कऽ सड़क, पुल, घर, नगर बनै,
श्रमिकक नाम बिना कियो प्रगति पूर्ण नहि कहै।
पएरक धूलिसँ बाट, बाटसँ भविष्य उजियार,
श्रमक सम्मान मिथिलाक सभसँ पैघ श्रृंगार।

ईंटा ढोनिहार हाथ पर महलक पहिल नींव,
पुल-सड़क-नगरक जड़ि मे पसेनाक जीव।
विश्राम, जूता, सुरक्षित काज—हक थिक, दान नहि,
श्रमक पूरा मान बिना प्रगतिक शान नहि।

❖

खुल्ला छोड़ल ओ पन्ना राति भरि प्रतीक्षा नहि कएलक—साँझ ढलिते अपन सभा अपने बजा लेलक। नारिकेल पात पाठशालाक पहिल पाठ 'उपस्थित' दिनमे पढ़ाओल गेल छल; मुदा ओहि शब्दक असल देह रातिमे खुलल। राति, जखन पुरुष सभक बहस थाकि कऽ घर घुरि गेल, जखन बच्चा सभक आधा टोली निद्रा आ आधा टोली पहरामे छल, तखन स्त्री सभ चन्ना ठूँठक चारू कात चुपचाप जुटए लगलीह। कियो घोषित नहि केलक जे सभा अछि। कियो मंच नहि बाँधलक। मुदा एक-एक स्त्री अपन पल्लू, चादर, बस्ता, लाठी, दीया, पानि, आ चुप्पी लऽ कऽ आयल, आ ओहि ठूँठक चारू कात राति स्वयं सभा बनि गेल।

सभ सँ पहिने उज्ज्वलक माय अएलीह। हुनकर हाथमे बेटाक पुरान कमीज छल, जे स्क्रीनमे डूबल ओहि अन्तिम दिनक बाद सँ कखनो धुलायल नहि छल। कमीजमे पसेनाक गन्ध

आब नहि, मुदा मातृ-स्मृतिक कड़गर नोन बचल छल। हुनकर पाछाँ देविका आयली, जिनकर आँखिमे क्रोधक जोति एखनो तेज छल। सौम्या अपन नोटबुक आनली, मुदा खोलली नहि। मीरा एक पोटलीमे लाल डोरी, खाली कागच, आ काँचक छोट कटोरी आनने छली। ईरा, अनन्या, बा, सरयूक वंशक दू बूढ़ी, पुल-मजदूरक विधवा सभ, अस्पतालमे ठगल गेल स्त्री सभ, आ ओहि नाच-शिक्षकक गुप्त प्रेमक कथा सुनल चुप स्त्री सेहो आयली।

रातिक हवा दिनक तुलनामे नम छल। ओसक महीन बून्द चादरपर बैसि रहल छल; दूर पोखरिसँ बेंगक एक्के-दुइये टेर आ पानिक छप्प बीच-बीचमे सभाक विराम-चिह्न बनैत छल। कटल ठूँठक भीतरसँ जे हरियर बिन्दु फूटल छल, से अन्हारमे देखाइ नहि पड़ैत छल, मुदा स्त्री सभ कहैत छली जे ओकर गन्ध आबि रहल अछि। बा ठूँठक कगार पर हाथ राखि कहलीह, 'आइ ने पुरुषक कागच पढ़ल जाएत, ने सरकारक सूचना। आइ देह बोलत।' एहि वाक्यक बाद जे मौन आयल, से भयक नहि, सहमतिक मौन छल।

मीरा सभाकेँ आरम्भ नहि, रक्षा देली। ओ कहली, 'एतय जे कही, से ओकरा कहनिहारक होएत। ककरो कथा बिनु ओकर अनुमति रजिस्टरमे नहि लिखल जाएत। ककरो देहक अपमान तमाशा नहि बनत। जकरा चुप रहबाक अछि, ओकर चुप्पी सेहो उपस्थित मानल जाएत।' बच्चा सभक पाठशाला दिनमे 'उपस्थित' सिखौने छल; राति स्त्री सभ ओहि शब्दमे निजताक साँस भरलीह।

पहिल कथन उज्ज्वलक मायक नहि, हुनकर कमीजक भेल। ओ कमीज ठूँठक लग राखि देलीह। कहलीह, 'हमर बेटा स्क्रीन सँ हारल, से सभ कहैत अछि। मुदा ओ असगरे स्क्रीनसँ नहि हारल; ओ समाजक ओहि चुप्पीसँ हारल, जे लाजक डर सँ ठगीक बात घरमे कहए नहि दैत। हम ओकर माय छी, मुदा हमहूँ ओकर डर नहि सुनि सकलहुँ। आइ हमर गवाही ई अछि जे बेटाक आत्मा सँ पहिने मायक कान खुलबाक चाही।' हुनकर ई वाक्य सुनि देविका झुकि कमीजक कोना छुली। कियो ताली नहि बजौलक; स्त्री सभक सभामे स्वीकृति हाथक आवाज नहि, साँसक परिवर्तन सँ भेटैत छल।

देविका बजली, 'हम ठगीक विरोध करैत छी, मुदा हम जानि गेलहुँ जे ठगी केवल रुपैया नहि खाइत। ई लाज खाइत अछि, भरोस खाइत अछि, अपन गलती मानबाक अधिकार खाइत अछि। जे लड़की केकरो फँसल बात कहैत अछि, ओकरा पहिने दोष देल जाइत अछि। जे युवक हारि जाए, ओकरा मूर्ख कहल जाइत अछि। ठग सभ विदेशमे बैसि खाता चलबैत अछि, आ

घरक लोक पीड़ितक माथपर लाजक मटकी फोड़ैत अछि। ई मटकी फोड़बाक काज आब बन्द होएत।'

तखन पुल-मजदूरक एक विधवा उठलीह। हुनकर नाम पहिने रजिस्टरमे 'मुन्नाक घरबाली' लिखल गेल छल; ओहि राति ओ कहलीह, 'हमर नाम फुलकुमारी अछि। मुन्नाक देह पुलक पाया लग पानि खा गेल। कागचमे ओ मजदूर नहि, अनुपस्थित श्रमिक कहल गेल। लोक हमरा विधवा कहैत रहल, मुदा हमर नाम नहि पूछलक। मजदूरक पएर जखन माटिमे धँसैत अछि, ओकर घरक स्त्रीक पएर सेहो धँसैत अछि। काल्हि जँ मजदूरक पएरक अध्याय लिखल जाए, तखन हमरा सभक एड़ीक फाटल रेखा सेहो लिखब।

सौम्या नोटबुक बन्दे राखने छली। ओ कहली, 'मैं—' फेर ठिठकली, अपने शब्द सुधारली, 'हम जखन शहरमे लिखैत छलहुँ, तखन बुझैत छलहुँ जे स्त्रीक कथा लिखब माने ओकर पीड़ा दर्ज करब। आब बुझैत छी—पहिने ओकर अनुमति, ओकर भाषा, ओकर विराम, ओकर अस्वीकार दर्ज करब। जे लिखनाइ बिनु सुननाइक अछि, से दोसर प्रकारक कब्जा अछि।' मीरा हुनका देखली; दुनूक बीच सहमति बिनु वाक्यक बहि गेल।

ईरा अपन बातमे प्रवासी मनक गिट्ठ खोलली। 'विदेशमे हम सभ गामक स्त्री सभकेँ चित्रमे खोजैत छी—माछ, पाग, मधुबनी, लोकगीत। मुदा एतय आबि बुझलहुँ जे गामक स्त्री केवल रंग नहि, तर्क अछि। गंगेशक न्यायक चर्चा जखन भेल, तखन सभ तत्त्वचिन्तामणि पढ़बाक बात करैत छल। मुदा गंगेशक जीवनमे जे चर्मकारणी स्त्रीक स्मृति दबाओल गेल, ओकरा बिनु न्याय अपूर्ण अछि। शास्त्र समाज राखि लेलक, स्त्रीक नाम मेटा देलक। ई कतेक पैघ नाम-चोरी छल?'

एहि प्रश्न पर सरयूक वंशक बूढ़ी उठलीह। हुनकर आवाज बुहारन जेकाँ करखर छल। 'जाति-व्यवस्था सदिखन स्त्रीक देहपर पहरा राखि अपन किला बनबैत अछि। कुलक शुद्धि कहि कऽ बेटी मारल जाए, प्रेमक नाम पर लाठी चलए, विवाहक बाद जाति बदलि जाएबाक डर उठए—ई सभ सम्मान नहि, भयक राज अछि। जकरा सभ सम्मानक नाम पर मारल गेल, ओ सभ रातिमे चन्ना गाछी लग अबैत अछि। ओ सभ भूत नहि, प्रश्न अछि।'

बा धीरे बजलीह, 'गंगेश तत्त्वचिन्तामणि लिखलनि—बारह हजार ग्रन्थक बराबर कहल जाइत। मुदा जँ समाजक एक स्त्रीक नाम ताहि भीतर नहि पढ़ि सकलहुँ, तँ बारह हजार ग्रन्थक तौल ककरा लेल?' हुनकर ई वाक्य सुनि कटल ठूँठक जड़िमे एक करकराहट भेल। बच्चा सभ,

जे दूर पहरामे छल, दौड़ि देखए आयल। अनन्या पूछली, ‘की लिखू?’ बा कहलीह, ‘लिख—न्याय जँ देहक जाति नहि बुझत, तँ तर्क अधूरा रहत।’

मीरा लाल डोरी खोलली। डोरीक टुकड़ा प्रत्येक स्त्रीक हाथमे देल गेल। सूतक ओ रुक्ख स्पर्श हथेलीमे बान्हल व्रतक डोरा जकाँ लागल—हलुक, तइयो नहि बिसरए-जोग। नियम बनल—ई डोरी बन्धनक नहि, स्मरणक होएत। जे स्त्री अपन कथा कहि चुकलीह, ओ डोरी ठूँठक लग नहि, अपन कलाईमे राखतीह। कारण कथा कहि देलासँ स्त्री सार्वजनिक वस्तु नहि बनैत; ओ अपना कथा पर अपन पहरा राखैत अछि। ई छोट नियम बहुत पैघ छल।

एक युवती, जे एहि धरि चुप छली, कलाईमे डोरी बान्हैत बजली, ‘हमर प्रेमक नाम नहि लिखू। लिखू—एकटा स्त्री जे डरक बावजूद अपने भीतरक सत्यकेँ झूठ कहलासँ इनकार कएलक।’ मीरा ओकरा देखैत कहली, ‘नामक अधिकार तोहर। नाम नहि कहब सेहो नामक रक्षा अछि।’ देविका पन्ना पर लिखली—‘गोपनीय उपस्थित।’ एहि नब पद पर सभ स्त्री सहमत भेलीह।

राति आधा बीति गेल। चन्ना ठूँठक पाछाँसँ जाड़क पवन सन आवाज उठल। कियो सोचलक बूढ़बा भूत आयल। मुदा ई बेर स्त्री-आवाज छल—बहुत पुरान, जखन जाति अजगर जेकाँ देहपर लपटल छल, जखन विवाह पाप कहल गेल छल, जखन ज्ञानक घरमे स्त्रीक प्रवेश फुसफुसाहटमे रहि गेल छल। आवाज स्पष्ट नहि, मुदा अर्थ साफ—‘हमरा पुस्तकमे नहि, जीवनमे पढ़ू।’ ई सुनि ईरा काँपि उठली। कियो नाम नहि कहलक, मुदा सभ बुझि गेल जे इतिहासक दबाओल स्त्री सभ सभामे उपस्थित छथि।

सौम्या पहिल बेर नोटबुक खोलली। मुदा पूरा कथा नहि लिखली। ओ केवल शीर्ष लिखली—‘देहक प्रमाण।’ तकरा नीचाँ खाली छोड़ि देली। कहली, ‘खाली स्थान सेहो दस्तावेज अछि। जे बात अनुमति बिनु नहि लिखल जा सकैत, तकरा लेल खाली स्थान राखब।’ गंगेशक न्यायक भीतर जे प्रमाणक विधि छल, से एहि राति स्त्री सभक हाथमे बदलि गेल—प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्दक संग ‘अनुमति’ सेहो प्रमाण भेल।

ओहि समयमे दूर सँ ढोलकक सूक्ष्म थाप सुनाइ पड़ल। पुरुष सभमे कियो नहि छल। भूतक कबड्डी? नहि। बच्चा सभ सेहो खेलि नहि रहल छल। तखन पानिक कगार पर तीन-चारि छाह देखाइ पड़ल—स्त्री भूत, जिनकर पएर धरती छूने बिनु आगाँ बढ़ैत छल। ओ सभ कबड्डी नहि खेलैत छली, ओ सभ घेरा नापैत छली—जनु देखैत होथि जे स्त्री सभक आवाजक लेल चन्ना गाछीमे पर्याप्त गोलाइ अछि कि नहि।

सभा भोरसँ पहिने समाप्त भेल। कोनो प्रस्ताव पारित नहि भेल, मुदा पाँच बात ठहरल। पहिल—ककरो देहक कथा बिनु अनुमति नहि। दोसर—जाति-व्यवस्था जँ प्रेम, विवाह, श्रम आ नाम पर हिंसा करए, तकरा न्यायक प्रश्न बनाओल जाए। तेसर—डिजिटल ठगीक लाज पीड़ित पर नहि, ठग आ मौन समाज पर। चारिम—मजदूरक नाम संग घरक स्त्रीक नाम सेहो। पाँचम—निजता स्मृतिक विरोधी नहि, ओकर गरिमा अछि।

भोरक पहिल इजोतमे स्त्री सभ एक-एक कऽ उठलीह। ठूँठक हरियर बिन्दु ओहि राति कने नमगर भऽ गेल छल कि आँखिक भ्रम छल—कियो निश्चित नहि कहि सकल। फुलकुमारी अपन फाटल एड़ी देखैत कहलीह, 'काल्हि मजदूरक पएर पढ़ल जाए।' बच्चा सभ उत्तर देलक—'उपस्थित।'

सूर्योदय सँ पहिने स्त्री सभ चलि गेलीह, मुदा ठूँठक चारू कात लाल डोरीक गन्ध, कमीजक नमी, खाली पन्नाक भार, आ फाटल एड़ीक धूलि बचल रहल। गढ़ नारिकेलक अगिला बिहान जानि चुकल छल—जे पुलक पायामे पएर गड़ल, ओकर इतिहास केवल पुरुष मजदूरक नहि; ओकरा संग स्त्रीक एड़ी, बच्चाक भूख, आ घरक अनकहल नाम सेहो धँसल अछि। एहि ठामसँ कथा मजदूरक पएर दिस मुड़ल।

लोकगीत: स्त्री सभक राति

लोकधुन: स्त्री-मण्डली समदाउन

उठल हे सभा, स्त्री सभक राति-सभा उठल हे,
अनकहल कथा बिहानक पाठ बनि गेल हे।

दिनक शब्द रातिमे पाबै असल देह,
जखन बहिन सभ बाजै, काँपै माटि-गेह।
लाल डोरी, भीजल कमीज, खाली पन्नाक भार,
फाटल एड़ीमे गड़ल पुलक पूरा इतिहास।
पुरुषक नाम पायामे, स्त्रीक श्रम घरमे,

बच्चाक भूखो धँसल ओही लोहेक स्वरमे।
फुलकुमारी कहली—काल्हि पएर पढ़ू,
जकर एड़ी फाटल, ओकरो नाम गढ़ू।
रातिक सभा उठल, गन्ध रहि गेल द्वार,

स्त्रीक अनकहल कथा बनल बिहानक पाठ।

फुलकुमारी कहलीह—काल्हि पएर पढ़ू फेर मे।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—दुआर: बिर्रो उठल। बिहारि थमल, मुदा एक शब्दक भीतर पूरा वाक्य कोना जागल, ई प्रश्न चर्चा बनल रहल।]

अध्याय ८६

मजदूरक पाँव

नाम उपस्थित भेल तँ पुछू— ओकर पाँव कोन माटिपर पड़ल छल।

अध्यायारम्भ लोकगीत: परदाक विश्राम, आँखिक उत्सव

लोकधुन: दिनभरिया लोकगीत

राखू हे परदा, एक दिन आराम पर राखू हे,
आँखिक अँजुरी भरि गाछी-अकास ताकू हे।

एक दिन परदा विश्राम लए, आँखि गाछी जाए,
माटिक रंग, पातक नस, बादरक चाल निहारै।
फोन चुप, परिवार बोलै, आँगन गीत सुनै,
नेना दादी लग बैसि पुरनका खेल चुनै।

परदाक उपवास दण्ड नहि, जीवनक उत्सव,
सामना-सामनी हँसीमे मिलै अपनत्वक रस।
आँखि विश्राम, मन विस्तार, देहक लय सुधरै,
तकनीक संग संतुलनसँ जीवन सुन्दर करै।

फोन सुतल टोकरी मे, आँगन जागल भरि,
दादी-पोताक गोटी-खेल, हँसीक झरि-झरि।
माटिक रंग, पातक नस, बादरक धीमा चाल,
आँखिक ई भोज भरत मोनक खाली थाल।

❖

मुड़ल कथा भोर होइते बाट धऽ लेलक—गामसँ अधबनल पुल धरि। नामक गणराज्यक पहिल पाठ पूरा भेलाक बाद बच्चा सभकेँ लगल जे 'उपस्थित' कहि देबामे कथा पूरा नहि होइत। जे नाम उपस्थित भेल, ओकर देह कोना चलल, ओकर पएर कोन माटि पर पड़ल, ओकर श्रम कोन पुलक भीतर गाड़ल गेल—ई सभ सेहो सुनबाक चाही। तें एक बिहान नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा सभ रजिस्टर, काजर, माटिक कटोरा, आ किछु खाली पात लऽ कऽ ओहि अधबनल पुल दिस चलल, जतय बरखौं पहिने मजदूर सभक नाम ठेकेदारक खाता सँ खसा देल गेल छल।

पुल दूर सँ देखाइत छल—लोहा, बालू, सिमेंट, सरकारी रंग, उद्घाटनक फीता, आ धूपमे चमकैत पथरीला पाट। मुदा जतेक नजिक जाएब, ओकर देहमे कतेक थाकनि देखाइ पड़ैत। पाया लग माटि एखनहुँ अजगुत ढंग सँ धँसैत छल, जनु भीतर किछु अटकल हो। आरुणि ओहि

ठामक नक्शा पहिने कतेक बेर देखलक, कतेक बेर मापलक, कतेक बेर फाइलमे सावधानीक लाल निशान लगौलक। मुदा ओहि दिन बच्चा सभक संग जा कऽ ओकरा बुझाइत रहल जे पुलक असल नाप फीता सँ नहि, पएरक थाकनि सँ होइत अछि।

सभ सँ आगाँ एक बूढ़ आयलाह—मुन्ना पासवानक काका। हुनकर पएरमे चप्पल नहि छल। पएरक तरबा फाटल, एड़ी चिरल, अँगूठाक नख टेढ़, मुदा चालमे एक अजगुत स्थिरता। ओ पुलक पहिल पाया लग ठाढ़ भऽ कहलनि, ‘एतय हमर भाइक पसेना पड़ल छल। कागचमे ओकर नाम नहि, मुदा एतय ओकर पएरक दबाव अछि।’ बच्चा सभ चुप्प भऽ गेल। अनन्या माटिक कटोरा हुनका आगाँ राखली। बूढ़ अपन पएर ओकरामे राखलनि, फेर पात पर छाप छोड़लनि। गील माटिक ठंढ तरबासँ ऊपर चढ़ल, आ छाप उठबैत काल चट्ट सन हलुक ध्वनि भेल—जेना धरती अपन मोहर अपने उठा कऽ देने हो।

ई पहिल पएर-छाप छल। न फोटो, न चिन्हारि-पत्र, न अंगूठाक निशान जकरा बैंक, थाना, या दफ्तर पकड़ि लैत अछि। ई पएर-छाप छल—चलल जीवनक प्रमाण। गंगेशक न्यायक प्रश्न फेर ओहि पात पर उतरि आयल। प्रत्यक्ष—फाटल पएर सोझाँ छल। अनुमान—एहि फाटनमे बरखा, धूप, भूख, बोझा, आ ठेकेदारक गाली नुकायल छल। शब्द—काका कहि रहल छलाह। मुदा बच्चा सभ बुझलक जे चारिम प्रमाण श्रमक गन्ध अछि, जे कागच पर कम, माटिमे बेसी टिकैत अछि।

ईरा पात पर लिखली—‘मुन्ना पासवानक काकाक पएर: श्रम उपस्थित।’ बा ओहि पात पर जलक एक बून्द टपका देलीह। ओ बून्द पसरि काजरक रेखाकेँ कने धुँधला कऽ देलक, मुदा मेटौलक नहि। बा कहलीह, ‘एना श्रमक नाम होइत अछि—जखन रोदन पड़ै तँ फिक्का पड़ै, मुदा मेटै नहि।’

धीरे-धीरे मजदूरक परिवार सभ आयल। ककरो पिता पुलमे काज कएने छल, ककरो पति, ककरो बेटा, ककरो बहिन जे मजदूर सभ लेल रोटी बना कऽ लाबैत छल। स्त्री सभ पहिने संकोचमे रहलीह—‘हमर पएर किएक?’ देविका कहली, ‘रोटी लए कऽ जे पएर चलल, ओ श्रम नहि?’ एहि प्रश्न पर एक स्त्री अपन घाघराक छोर उठौलीह, माटि पर पएर राखलीह, आ पात पर छाप देलीह। हुनक पएरमे चूड़ीक झंकार नहि, अपितु रसोईक धुँआ आ नदीक कीचड़ बजैत छल।

पुलक पाया लग पात-पात पर पएर उभरए लागल। कारी, धूसर, भीजल, टेढ़, छोट, मोट, बच्चाक, बूढ़क, स्त्रीक, पुरुषक। प्रत्येक छाप अलग; प्रत्येकमे एक कथा। सरकारी अभिलेखमे

मजदूर 'संख्या' छल। ठेकेदारक हिसाबमे 'दैनिक मजदूरी'। विदेशी सलाहकारक कागचमे 'कार्यबल'। मुदा एहि पात पर ओ सभ पएर बनि उठल—जाहि पएर पर पुल ठाढ़ भेल, मुदा जिनका लेल पुल पर कोनो नामपट्ट नहि लगल।

आरुणि पुलक पाया छुलक। ओकर हाथ काँपल। ओ अभियंता छल; ओकरा सिखाओल गेल छल जे भार, गहराइ, मिश्रण, अनुपात, खिंचाव, दबाव मापल जाए। मुदा ओकरा केओ नहि सिखौने छल जे श्रमक अपमान सँ पुलक आत्मा खोखर भऽ जाइत अछि। ओ बच्चा सभसँ कहलक, 'जे पुल मजदूरक नाम नहि राखै, से अधूरा पुल अछि।' अनन्या तुरन्त लिखली—'पुल पूर्ण तखन, जखन पएर उपस्थित।'

ओहि समय दूर सँ चन्द्रपाल बत्राक लोक सभ आयल। हुनका सभ लग छोट पट्टिका छल —'शहीद श्रमिक स्मृति-देबाल'। पट्टिकाक नाप तय, जगह तय, अक्षर तय। एक लोक कहलक, 'नाम दी, हम छपबा देब।' बच्चा सभ पातक घेरा देखबैत कहलक—'नाम छपब, मुदा पहिने पएर पढ़ब।' लोक हँसि देलक—'पएर पढ़ल जाइत अछि?' बूढ़ काका उत्तर देलनि, 'जे पएर नहि पढ़ै, से पुलक नीचाँ दबायल हड्डी सेहो नहि पढ़ै।'

एहि वाक्य सुनि हवा बदलि गेल। पुलक नीचाँ सँ पानि नहि, एक ठंढ कराह उठल। लोहाक छाया तर हवा बासि पानि जकाँ भारी छल; देहपर परसिते देह जुड़ा गेल। केओ लग जा कऽ देखलक नहि। सभ बुझि गेल जे श्रमक अस्थि-स्थान केवल श्मशान नहि होइत; कखनो-कखनो बनैत पुल, उठैत इमारत, चमकैत सड़क, आ उद्घाटनक मंचक नीचाँ सेहो अस्थि-स्थान बसैत अछि।

मीरा एहि दिन एक आओर बात जोड़ली। ओ कहली, 'जे पएरक छाप देत, ओकर अनुमति बिनु ओकर छवि, कथा, या आँसू कोनो पर्चा, कोनो परदा, कोनो मंच पर नहि जाए।' स्त्री सभ सहमति देलीह। ई निजताक शपथ आब श्रमक गरिमा सँ जुड़ि गेल। पहिने देहक अपमान निजता तोड़ैत छल; आब श्रमक अपमान स्मृति बेचैत छल। दुनू एकहि गोहिक दू दाँत छल।

सौम्या पएर-छाप सभ क्रममे राखैत छली। ओ नोट बनबैत नहि, पहरा बनबैत छली। प्रत्येक पातक पाछाँ एक वाक्य लिखाओल गेल—'ई छाप परिवारक अनुमति सँ लोक-स्मृतिक लेल राखल गेल।' ई छोट वाक्य सुनलासँ गोप कुमारक आँखि चमकल। ओ कहलाह, 'डेटा नहि, भरोसा।' बच्चा सभ हँसल। देविका कहली, 'हँ, भरोसा जे चोराओल जाए तँ चोरक नाम सेहो लिखब।'

दुपहरिया धरि पुलक पाया लग पातक एक नमहर पथ बनि गेल। ओ पथ पानि दिस जा रहल छल, फेर चन्ना गाछीक ठूँठ दिस मुड़ैत छल। जनु मजदूर सभक पएर पुल बना कऽ नदी पार नहि गेल; ओ सभ स्मृतिक बाटे गाममे घुरि रहल छल। बच्चा सभ एक-एक पात उठाबैत, नाम कहैत, आ उत्तरमे परिवार ‘उपस्थित’ कहैत। कबड्डीक पुरान लय एतय फेर फूटल—एक पएर सीमा पार करैत, साँस रोकैत, नाम कहैत, फेर घुरैत।

तखन अनन्या अचानक माटि पर रेखा खिंचली। ओ कहली, ‘एहि पार पएर, ओहि पार कागच। जे कागच पएरक नाम नहि माने, ओ आउट।’ बच्चा सभ तुरन्त खेल पकड़ि लेलक। एक बच्चा ‘कबड्डी-कबड्डी’ कहैत कागचक पट्टिका लग गेल, ओकरा उठा कऽ पएर-छापक घेरामे राखल, आ साँस टूटए सँ पहिने घुरि आयल। सभ हँसल। मुदा हँसीमे न्याय छल। खेल फेर कानूनक भाषा सँ तेज भऽ गेल।

सत्यव्रत मेहता पाछाँ ठाढ़ देखैत रहलाह। हुनका न्यायालयक असंख्य हलफनामा मोन आयल। कतेक गवाही कागच पर सही, मुदा जीवनसँ झूठ; कतेक साक्षी अदालतमे अनुपस्थित, मुदा माटिमे उपस्थित। ओ धीरे सँ अपन जूता खोललनि। आरुणि चौंकल। सत्यव्रत पएर माटि पर राखि कहलनि, ‘हम मजदूर नहि, मुदा एहि पुलक मौन अपराधमे हमर पएर सेहो धूलि खाए।’ बच्चा सभ हुनकर छाप नहि लेलक। अनन्या कहली, ‘अहाँक पएर नहि, अहाँक मौन लिखल जा चुकल अछि। एतय श्रमक पएरक ठाम अछि।’ सत्यव्रत माथ झुका कऽ पाछाँ हटि गेलाह। हुनकर अस्वीकार सेहो एहि दिन न्यायक भाग बनल।

साँझ होए लगल तखन पएर-छाप सभकेँ सुखाबय लेल पाथर पर पसारल गेल। धूपक अन्तिम रेखा पात पर पड़ि चमकल। प्रत्येक पएर जनु आगि सँ नहि, स्मृति सँ अंकित छल। बा कहलीह, ‘जेकर पएर धरती पर सही पढ़ल जाए, ओकर आत्मा पानिमे भटकैत नहि।’ एहि वाक्य पर दूर नदीमे एक हलुक लहरि उठल। कियो गोहि नहि देखलक, मुदा पानिक सतह पर कारी छाह घूमि कऽ फेर गुम भऽ गेल।

राति धरि पएर-छाप सभ चन्ना गाछीक ठूँठ लग अनल गेल। नामक पाथर आ पएरक पात एक्के संग राखल गेल। आब अभिलेख केवल नामक नहि रहल; चलल जीवनक बनि गेल। बच्चा सभ रजिस्टरमे नब खण्ड खोललक—‘पएरक अभिलेख।’ पहिल वाक्य लिखल गेल—‘जे धरती पर चलल, ओकर स्मृति केवल माथक माल्यार्पण नहि, पएरक न्याय सेहो चाहैत अछि।’

जखन सभ घर घुरए लागल, तखन पुलक दिशासँ एक मजदूरक चप्पलक आवाज देर धरि सुनाइ दैत रहल। ओतय कियो नहि छल। कदाचित हवा। कदाचित जड़िक भीतरक स्मृति। कदाचित ओ मजदूर सभ, जिनकर पगार अटकल, नाम मेटल, देह डूबल, मुदा पएर एखन धरती पर घुरि रहल छल।

अनन्या घर घुरैत-घुरैत कहली, ‘काल्हि पाठशालामे स्क्रीन बन्द रहत।’ देविका पूछली, ‘किएक?’ अनन्या उत्तर देली, ‘आइ पएर पढ़लहुँ। काल्हि आँखि आ कान फेर खोलबाक चाही। जे स्क्रीन दिन भरि मोन चिबैत अछि, ओकरा एक दिन उपवास कराएब।’ बच्चा सभ ‘कबड्डी’क साँस रोकने हँसल। अगिला दिन गढ़ नारिकेलमे स्क्रीनक उपवास आरम्भ होएबाक छल।

लोकगीत: मजदूरक पएरक धूलि

लोकधुन: श्रमगीत

पढ़ू हे धूलि, मजदूरक पएरक धूलि पढ़ू हे,
हरेक कदम पर अनाम श्रमिकक नाम गुनू हे।

नाम उपस्थित भेल, आब पएरक माटि पूछू,
कोन खेत छोड़ि चलल, कोन पाया भीतर सूतू?
चप्पल घिसल, एड़ी फाटल, पगार रहि गेल दूर,
पुलक छातीमे गाड़ल श्रमक गरम नूर।
घर घुरैत हवा सुनलक चप्पलक चाल,

कियो नहि ओतय, तैयो बजल पगक ताल।
पएरक न्याय बिना नामक न्याय अधूर,
धूलि पढ़ू, राह पढ़ू, मजदूरक भरपूर।
जे पुल पर चलै छी, नीचे पगक मान,
हरेक कदम पर मोन करू अनाम श्रमिकक नाम।

कियो ने ओतऽ, तइयो बाजल पगक ताल।

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—गङ्गाक कातक गाम: यात्रीकेँ कहल गेल—“गाम गङ्गापर अछि।” ओ नाव लऽ जलधारामे घर खोजय लागल। गङ्गासँ घनिष्ठ सम्बन्धक कारण ‘गङ्गा’ शब्द तीरक अर्थ संकेत करैत अछि।” गामक माटि पानिसँ नम छल, जीवन नदीपर निर्भर।]

अध्याय ८७

स्क्रीनक उपवास

एक दिनक स्क्रीनक उपवाससँ कानमे अपनहि साँसक आवाज घुरि अबै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: परदेस पत्रमे घरक भोर

लोकधुन: बटोहिया-पत्र गीत

लिखू हे पाती, परदेसियाकेँ लिखू हे,
आँगनक हँसी, कोंपलक खबरि—सभटा भरू हे।

परदेसक बच्चाकेँ लिखू—आँगन एखन हँसै,
कटल ठूँठकोंपल फुटल, तुलसी पात बसै।
माए केर स्वास्थ्य, बाबाक खेत, पोखरिक जल,
घरक साँचक समाचारसँ दूरी होए हलुक।

पत्रमे आदेश नहि, नेहक खुलल दुआर,
घुरि आबू जखन चाहू, घर रहत तैयार।
परदेस पत्रमे भोर पठाउ, आशाक रंग भरी,
दूर शहरमे घरक गन्धि बनत उज्जर डोरी।

तुलसी-चौरा, पोखरिक जल, बाबाक खेत-खरिहान,
माएक बनल तिलकोरक तरुआ—सभक बखान।
आदेश नहि, नेहक नोत, दुआर खुलल रहत,
पातीक गन्धे परदेसक कोठरी मे घर महकत।

❖

घोषित उपवासक भोर अपने सँ पहिने गामक कानकेँ जगौलक। मजदूरक पएरक माटि सुखायलो नहि छल कि नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा सभ अगिला निश्चय कऽ लेलक—एक दिन गढ़ नारिकेलमे स्क्रीनक उपवास होएत। उपवास भोजनक नहि, दृष्टिक। जे आँखि दिन भरि चमकैत काँचमे फँसल रहैत अछि, से एक दिन माटि, पानि, चेहरा, पाथर, नाम, आ अकास दिस देखत।

ई प्रस्ताव सुनिते गाम दू भागमे बँटि गेल। कियो कहलक—‘मोबाइल बन्द? तखन खबर कोना भेटत?’ कियो कहलक—‘दुकानक लेन-देन? दबाइक फोन? शहरमे रहैत बेटाक संदेश?’ बच्चा सभ उत्तरमे कोनो कठोर नियम नहि बनौलक। ओ सभ कहलक—‘आपतकालमे आवाजक बाट खुजल रहत। मुदा लालच, झूठ, तमाशा, खेल, जुआ, अपमान, डर, आ बिनु कारणक घूरनाइ—एहि सभसँ एक दिनक विश्राम।’

अनन्या ठूँठक कात एक छोट माटिक घड़ा राखली। ओकरा नाम देल गेल—‘स्क्रीन-घड़ा।’ जे स्वेच्छासँ अपन मोबाइल, पुरान यंत्र, टूटल टैबलेट, खेलबला छोट काँच, जे किछु हो, एक दिन लेल जमा करए चाहैत, से ओहि घड़ाक लग कपड़ाक थैलीमे राखैत। ककरो बाध्य नहि कएल गेल। कारण बच्चा सभ गंगेशक प्रश्नसँ सीखि गेल छल—बलजोरीक सदाचार सेहो प्रमाण नहि, केवल भयक दोसर रूप।

पहिने देविका अपन मोबाइल राखली। ओकर चेहरा पर हलुक काँप छल, कारण ओहि यंत्रमे उज्ज्वलक अन्तिम संदेशक छाह अबैत-जाइत रहैत छल। ओ थैली बाँधैत कहली—‘एक दिन ओकरा सेहो विश्राम।’ मीरा अपन यंत्र राखैत कहली—‘जे दृष्टि हमरा कखनो बेचल चाहलक, ओकरा आइ आँखि बन्द।’ सौम्या किछु देर हिचकिचेली; दूर शहर सँ समाचार अबैत छल। फेर ओ कहली—‘आइ समाचार लोकक मुँहसँ सुनब।’

सभसँ अन्तमे सत्यव्रत मेहता अपन छोट मोबाइल राखलाह। लोक आश्चर्य सँ देखलक। ओ मुस्किओ नहि देलखिन। कहलखिन—‘कतेको बरख फोन बजिते हम लोकक आवाजक बीच सँ उठि गेलहुँ। आइ फोन चुप रहत, हम बैसल रहब।’ ई वाक्य सुनि बा धीरे-धीरे माथ हिलौलीह। हुनका लग मोबाइल नहिए छल, मुदा ओ अपन पुरान चश्मा घड़ाक कातमे राखि देलीह—‘हमरो दृष्टि किछु दिनसँ धुँधला छल; आइ सुनब।’

स्क्रीनक उपवासक दिन बिहान अजगुत रूपेँ खुलल। साधारण दिनमे जे प्रत्येक घरसँ पहिने सूचनाक टुनटुनाहट उठैत छल, ओहि दिन मुर्गाक आवाज, करछुलक टकराहट, इनारक रस्सीक चरमराहट, आ बच्चाक हँसी पहिने सुनाइ पड़ल। गामकेँ बुझाइत छल जे ओकरा कान फेर भेटि गेल अछि।

चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात लोक जमा भेल। नाम-पाठ नहि, आइ ‘मुँह-पाठ’ छल। प्रत्येक घर सँ एक गोट पुरान कथा कहत—कोन दिन पहिल बेर पुल बनबाक समाचार सुनल गेल, कोन राति बाढ़िमे ककर नाव फुटल, के कोन दबाइ लेल शहर गेल आ लुटायल, के ककरा स्क्रीनक झूठसँ बचेलक, के ककरा डिजिटल गिरफ्तारीक धमकी सुनि दरबाजा खोलए दौड़ल। कथा सभमे तकनीकक डर छल, मुदा ताहिसँ बेसी मनुष्यक अकेलापन।

गोप कुमार एहि दिन कागचक नक्शा पसारलनि। ओ डिजिटल सूची नहि खोललनि। ओकरा सभक नाम हाथेँ लिखल जाय लागल जे स्क्रीनक धोखासँ ठगल गेल, मुदा जकर आवाज कतहु दर्ज नहि भेल। एक बूढ़ किसान कहलक—‘हमरा बैंकक संदेश बुझबामे नहि

आयल, बेटा शहरमे छल, गामक लोक कहलक—आब सभ फोनसँ होइत अछि। फोन हमर खेत खा गेल।' बच्चा सभ वाक्य लिखलक—'फोन खेत नहि खाए, अकेलापन खाए।'

दुपहरियामे पाठशालाक बच्चा सभ मोबाइलक बदला कबड्डी खेलए निकलल। मुदा ई साधारण कबड्डी नहि छल। नियम बनल—रेखा पार करैत बच्चा 'कबड्डी' नहि, एक नाम कहत। जँ साँस टूटलासँ पहिने ओ नामक कथा कहि सकल, तँ ओ घुरि आएत। जँ नाम अधूरा रहि गेल, तँ सभ खेलाड़ी एक्के संग ओकरा पूरा करत। खेलमे जीत-हारक ठाम उपस्थितिक अभ्यास छल।

पहिल बालक रेखा पार कऽ कहलक—'सरयू...' आ अटकि गेल। दोसर पारसँ आवाज आयल—'सरयू पासवान, मजदूर।' तेसर कहलक—'पुलक पायामे नाम दबाओल गेल।' बालक साँस पूरा कऽ घुरि आएल। सभ ताली नहि, केवल 'उपस्थित' कहलक। कबड्डी फेर खेल बनल, मुदा खेलक भीतर इतिहासक देह चलि रहल छल।

ई दृश्य देखैत बूढ़बा भूत ठूँठक छाहमे प्रायः साफ देखाइ पड़लाह। दिनक उजासमे हुनकर रूप धुँआ नहि, थाकल मनुष्य जेकाँ छल। बच्चा सभक खेल देखि हुनका मुस्की लागि गेलनि। कदाचित ओ बुझलनि जे भूतक कबड्डी बच्चा सभक हाथमे पहुँचि गेल अछि; आब आत्मा सभ पराजयक पहरा नहि, खेलक परंपरा सौंपि सकैत अछि।

मीरा आ स्त्री सभ ओहि दिन निजताक दोसर पाठ पढ़ेलीह। ओ सभ कहलीह—'मोबाइल बन्द करब मात्र पर्याप्त नहि। दोसराक चेहरा, दुख, प्रेम, देह, रोदन—किछु देखने मात्रसँ अहाँ ओकर मालिक नहि भऽ जाइत छी।' स्त्री सभक एहि वाक्य पर किछु युवक लजायल। डिजिटल ठगी केवल पैसा नहि लूटैत; दृष्टिकेँ सेहो अपराधी बनबैत अछि—ई बात धीरे-धीरे सभहक भीतर उतरल।

साँझ होइत-होइत गाममे पुरान गीत घुरल। जे गीत विवाहमे बजैत-बजैत मोबाइलक तेज धुनमे दबि गेल छल, से बुजुर्ग स्त्री सभक गला सँ निकलल। किछु पंक्ति पूरा छल, किछु आधा। बच्चा सभ आधा पंक्ति लिखि लेलक। बा कहलीह—'गीतक अधूरापन सेहो नाम जेकाँ पहरा माँगैत अछि।' कटल चन्ना गाछीक ठूँठ ओहि गीतपर हलुक भीजल होइत देखाइ पड़ल, जनु जड़ि पानिक भीतरसँ सुनि रहल हो।

दुकानदार सभक लेल ई दिन कठिन छल। लेन-देनक खाता हाथेँ लिखल गेल। बहीक लाल कपड़ा आ नब स्याहीक गन्ध दुकानमे पसरल—बरखौं बाद बिकरीसँ पहिने सम्बन्धक गन्ध। पहिल बेर कतेको लोककेँ बूझल भेल जे कर्ज कतेक अछि, देनदारक नाम पूरा की अछि,

कोन घरक विधवा उधारमे चावल लैत छथि आ कतेक बेर बिनु बोलने चुका दैत छथि। स्क्रीन रहिते अंक देखाइत छल; स्क्रीन बन्द भेल तखन सम्बन्ध देखायल।

एहि बीच चन्द्रपाल बत्रा दूर शहरमे बेचैन भेल। ओकर श्रद्धांजलि-अनुप्रयोगमे एहि दिन गढ़ नारिकेलक गतिविधि कम देखाइ पड़ल। आँकड़ा घटल। क्लिक घटल। दानक बहाव थमल। ओकरा बुझायल जे जँ एक गाम स्क्रीनक बिनु एक दिन जी सकैत अछि, तँ ओकर जालमे एक छेद पड़ि गेल। ओ राघवकेँ संदेश पठेबाक चाहलक, मुदा स्वयं रुकि गेल। किएक तँ राघवक नेटवर्क पछिला अध्यायमे भीतरसँ बन्द पड़ि चुकल छल।

ब्रूमक दलक शोधार्थी सभ चकित छल। हुनका सभकेँ 'डिजिटल डिटॉक्स' शब्द बूझल छल, मुदा गढ़ नारिकेलक उपवास ओहि शब्दक भीतर समाए नहि। एतय लोक स्वास्थ्य-फैशन लेल स्क्रीन बन्द नहि केने छल; एतय मृतकक नाम, निजताक अधिकार, खेतक कर्जा, मजदूरक देह, आ कबड्डीक साँसकेँ फेर मनुष्यमे घुरेबाक प्रयत्न छल। हार्वर्डक नोटबुकमे एहि दिन खाली पन्ना रहि गेल, कारण शब्द खोजब कठिन पड़ल।

रातिमे जखन थैली खोलल गेल, कियो हड़बड़ीमे अपन मोबाइल नहि उठौलक। पहिने बच्चा सभ ठूँठक चारू कात घोषणा कएलक—'जे यंत्र घुरि रहल अछि, ओकरा संग नियम सेहो घुरत।' नियम लिखल गेल: रातिक नाम-पाठक समय फोन बन्द; ककरो रोदनक चित्र बिनु अनुमति नहि; ककरो दुखपर खेल नहि; ठगीक संदेश असगरे नहि पढ़ब, समुदायमे पूछब; डर लगै तँ फोन पर नहि, मनुष्यक दरबाजा खटखटाउ।

लोक अपन-अपन यंत्र उठबैत गेल, मुदा एहि बेर ओ सभकेँ जेबमे राखल नहि गेल, हाथमे तौलल गेल। जनु प्रत्येक मोबाइल ई पूछैत हो—हम मालिक छी कि औजार? बच्चा सभ एहि प्रश्नक उत्तर लिखबाक जगह छोड़ि देलक। किछु प्रश्न तुरन्त नहि भरल जाए; ओकरा जीयल जाइत अछि।

रातिक अन्तिम पहरमे, जखन सभ थाकल आ प्रसन्न छल, अनन्या अकास दिस देखली। चन्ना गाछीक छाँह कटि गेलाक कारण एखन अकास पूरा खुलल छल। बिनु स्क्रीनक आँखिकेँ अन्हारमे देर लागल, फेर तारा एक-एक कऽ फूटल—जेना आँखियो अपन उपवास तोड़ि रहल हो। उत्तरे-पच्छिम दिस एकटा अति सूक्ष्म हरियर बिन्दु चमकल, फेर अदृश्य भेल। कियो ओकरा तारा कहलक, कियो विमान, कियो आँखिक भ्रम। बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखलक—'आइ स्क्रीन बन्द, अकास खुलल।'

ईरा ओहि हरियर बिन्दु दिस देर धरि तकैत रहली। ओकर मनमे विदेशमे बसल गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ आयल—जे मैथिली आधा बुझैत, गामकेँ चित्रमे देखैत, आ जड़िक दुखकेँ कथा मानैत छल। ओ रातिए निर्णय कएली जे ओ हुनका सभकेँ पत्र लिखत। पत्र ई नहि कहत जे 'गाम मोन करू'; पत्र पूछत—जँ अहाँक हाथमे स्क्रीन अछि, तँ की अहाँ नाम सेहो सुनि सकैत छी?

घड़ाक कातमे राखल बाक चश्मा, सत्यव्रतक मोबाइल, देविकाक यंत्र, मीराक डोरी, आ बच्चा सभक रजिस्टर चाँदनीमे एक्के संग चमकि रहल छल। स्क्रीनक उपवास समाप्त भेल, मुदा ओकर भूख मेटल नहि। लोक बुझि गेल—एक दिनक मौन पर्याप्त नहि; प्रत्येक दिनमे एक छोट कोना चाही, जतय स्क्रीन नहि, केवल मनुष्यक आवाज रहए।

लोकगीत: परदाक उपवास

लोकधुन: दिनभरिया लोकगीत

राखू हो एक दिन, परदाक उपवास राखू हो,
स्क्रीन सँ बाहर अपन लोकक घर ताकू हो।

एक दिन परदा बन्द, आँखि माटि देखल,
कान अपनहि साँस, चूल्हि, चरखी लेखल।
मोबाइल भूखल रहल, मनुष्य फेर भरल,
चेहरा-चेहरा बीचक पुरान बाट उभरल।
घड़ाक कात चश्मा, डोरी, रजिस्टर चमकल,

मौनमे दूर बच्चा सभक प्रश्न जन्मल।
हरेक दिन एक कोना राखू जँ स्क्रीन नहि रहै,
ओतय केवल मनुष्यक साँस आ नाम बहै।
उपवास एक दिनक, पर सीख जनम भर,
परदासँ बाहर देखू अपन लोकक घर।

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—सैन्धव: राजा भोजन करैत कहलक, “सैन्धव आनू।” सेवक अस्तबल दिस दौगल, कारण ‘सैन्धव’ घोड़ाक अर्थ सेहो दैत छल। भनसीया रोकलक—“भोजनक समय राजा नून माँगैत छथि, घोड़ा नहि।” वएह शब्द, दू अर्थ।]

अध्याय ८८

ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

पत्र पहुँचल कि नहि से डाकघर नहि कहत— उत्तर अपने बाट ताकि लै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: अनसुना स्वरक चौपाल

लोकधुन: जन-सुनवाई मंगल

दिअ हे आसन, अनसुनाकेँ पहिने दिअ हे,
बीच मे टोकू नहि, कथा पूरा सुनि लिअ हे।

जे सुनल नहि गेल, ओकरा पहिने आसन दिअ,
बीचमे टोको नहि, पूरा कथा कहबाक मान दिअ।
चौपाल गोल बनाउ, मंचक ऊँचाई घटाउ,
शान्त कानक दीप जरा हरेक अनसुना स्वर लाउ।

गवाही कमजोर नहि जँ भाषा सरल होए,
जनक अनुभव कानूनक नब दिशा संजोए।
अनसुना स्वरक चौपाल समाजकेँ पूर्ण करत,
सुनबाक संस्कृति सँ न्याय घर-घर उतर।

मंचक सीढ़ी तोड़ि कऽ गोल चौपाल बिछाउ,
सरल बोली मे कहल गवाहीकेँ मान जुड़ाउ।
कानक दीप जरल रहए, धीरजक तेल भरल,
सुनबाक ई संस्कृति सँ न्याय दुआरे उतरल।

❖

ओ पहिल पंक्ति, जे भोरसँ पहिने लिखायल छल, आब अपन पूरा पत्र माँगि रहल छल। स्क्रीनक उपवासक दोसर भोरमे गामक आकाश किछु बेसी साफ बुझाइत छल। जे दिन भरि मोबाइल बन्द रहल छल, ओहि दिन लोकक कानमे अपनहि देहक आवाज फेर घुरि आयल छल—साँसक, पगक, चरखी पर चढ़ैत पानिक, चूल्हि पर चढ़ल भातक, आ बच्चा सभक कबड्डीक। मुदा ईराकेँ बुझाइत छल जे ई उपवास केवल गामक भीतरक लोक लेल पर्याप्त नहि। गढ़ नारिकेलक कतेको बच्चा एहन घरमे पलैत छल जतय चूल्हिक धुँआ नहि, गरम हवा छोड़ैत यंत्र अछि; जतय नदी फोटोमे अछि, आ गाम छुट्टीक ‘स्थान’ अछि, जीवनक ऋण नहि।

ईरा ओहि बिहान नारिकेल पात पाठशालाक बरामदामे बैसली। सोझाँ कटल चन्ना गाछीक ठूँठ, ओकर एक कात हरियर बिन्दु, दोसरा कात नामक पाथर। ओहि पाथर सभक बीच किछु पाथर एहन छल जकर नामक उच्चारण विदेशमे जन्मल बच्चा सभ नहि कऽ पबैत छल।

ईरा देखैत-देखैत सोचली—जे बच्चा अपन पुरखा नाम नहि बाजि सकैत, ओ ओकर दुख केना सुनत? जे गाम केवल कथा जेकाँ सुनैत, ओ गामक न्यायमे भाग केना लेत?

ओ पात पर पहिल वाक्य लिखली—'प्रिय दूरदेशी बच्चा सभ, गढ़ नारिकेल अहाँक छुट्टीक चित्र नहि, अहाँक उत्तरदायित्व अछि।' लिखिते ओकर हाथ ठिठकल। करचीक कलम जतऽ-जतऽ चलल, पातक नस आँगुर तर उभरि-उभरि गनाइत छल—जेना पत्र अपने देहपर लिखा रहल हो। उत्तरदायित्व शब्द कठोर छल, मुदा आवश्यक। स्मृति जँ केवल मिठास बनि जाए, तँ ओ बजारक मिठाइ बनि बिकैत अछि। स्मृति जखन उत्तरदायित्व बनैत अछि, तखन ओकरा चिबाबय गोहि सभक दाँत अटकैत अछि।

पत्रमे ईरा लिखली जे गामक माटि केवल चूल्हि, पोखरि, आम, पान, मछरी आ पानक रसक स्मरण नहि। गाम ओहो ठाम अछि जतय मजदूरक पएर पुलक पाया तले दबल, जतय डिजिटल ठगीमे युवकक मन डूबल, जतय स्त्रीक निजता पर कैमरा लपकल, जतय अदालत बरख चिबा गेल, जतय चन्ना गाछीक अन्हारमे नाम सभ प्रतीक्षा करैत रहल। अहाँ सभ जँ एहि गामक वंशज छी, तँ अहाँक पहिल काज एतयक दुखकेँ दृश्य बनाब नहि, श्रव्य बनाब—पहिने सुनू।

पत्रक बीचमे ओ एकटा छोट नियम-पंक्ति बनौली—'जँ अहाँ गढ़ नारिकेल आउ, तँ पहिने फोटो नहि खिंचू; पहिने एक नाम सुनू। जँ अहाँ भाषा नहि बुझी, तँ उच्चारण सीखू। जँ अहाँ उच्चारणमे चूकू, तँ नामक घरबला सँ माफी माँगू। जँ अहाँ शोध करए आउ, तँ प्रश्नक पहिने मौन राखू। जँ अहाँ दान देबए चाहू, तँ धनक पहिने अपन ध्यान देब।'

पत्र लिखैत-लिखैत ईराकेँ अपन विदेशक दिन मोन पड़ल। सभ्य नगर, नापल सड़क, चमकैत काँच, पुस्तकालयक शान्ति, आ ओहि शान्तिमे अपन भीतरक अधूरा उच्चारण। विदेशमे कतेको बेर लोक ओकरासँ पूछने छल—'अहाँक गाममे भूतक खिस्सा अछि?' ओ मुस्कुरा देने छली, कारण ओ बेर बुझब कठिन छल जे हँ कहू तँ तमाशा बनत, नहि कहू तँ असत्य। आब ओ लिखली—'भूतक कथा पूछू तँ पहिने बुझू—भूत ओ नहि जे डरबैत अछि; भूत ओ नाम अछि जकर न्याय पूरा नहि भेल।'

अनन्या कातमे बैसली। ओ पत्र पढ़ि पूछली, 'विदेशमे जन्मल बच्चा सभ की अपन गामक नाम लिखि पाओत?' ईरा कहली, 'कदाचित नहि। मुदा जे बच्चा कोशिश करैत अछि, ओ पहरुआ बनि सकैत अछि।' अनन्या रजिस्टरसँ एक खाली पन्ना निकालि देली—'एहि पर हुनका सभक उत्तर लिखब।'

पत्रक दोसरा भागमे ईरा गंगेशक कथा जोड़ली। ओ लिखली—‘मिथिला केवल जातिक गर्वक भूमि नहि; ओ प्रश्नक भूमि अछि। गंगेश उपाध्याय तत्त्वचिन्तामणि लिखलनि, नव्य न्याय जन्मौलनि। मुदा हुनकर जीवनक असुविधाजनक प्रसंगकेँ समाज दबाबय चाहलक। जँ अहाँ मिथिलाक गौरव सुनैत छी, तँ मिथिलाक अन्याय सेहो सुनू। जे सभ विचारक पूजा करैत छथि, मुदा विचारक जीवनक सत्य सँ डरैत छथि, ओ न्याय नहि, मूर्ति-व्यापार करैत छथि।’

पत्र आगाँ बढ़ल—‘जाति-व्यवस्था नामक पहिल चोरी अछि। ओ मनुष्यक नामक आगाँ कुलक पहरा लगा दैत अछि। गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ एहि चोरीक विरुद्ध लिखैत अछि। जे नाम चर्मकार, दास, मल्लाह, मुसहर, स्त्री, विधवा, प्रवासी, मजदूर, प्रेमी, ठगल युवक, लज्जित परिवार, या मौन देहक भीतर दबल अछि, ओ सभ नाम पूरा स्वरमे उपस्थित कहल जाएत।’

सौम्या पत्रक एहि अंश पर बहुत देर चुप रहली। ओकरा लगल जे ईरा विदेशक बच्चा सभकेँ मात्र बजा नहि रहल अछि; ओ सभकेँ आगमनक मर्यादा सिखा रहल अछि। गामक स्मृति अनेक बेर बाहरी लोकक हाथमे पड़ि सजावट बनल; आब ईरा चाहैत छली जे विदेशक अपनहि बच्चा सभ सेहो सजावट बनय नहि, पहरा सीखय।

दुपहरिया धरि पत्रक कतोक प्रति बनि गेल। किछु नारिकेल पात पर, किछु कागच पर, किछु विद्युतीय रूपमे पठेबाक लेल। देविका कहली, ‘स्क्रीनक उपवासक बाद फेर स्क्रीन?’ ईरा मुस्कुरेली—‘स्क्रीन स्वयं गोहि नहि; जे स्क्रीन नाम चिबा लए, से गोहि। जे स्क्रीन नाम घुरा कऽ घर पहुँचाबए, से नाव।’ देविका एहि बातकेँ लिखि लेली। ओकरा डिजिटल ठगीक विरुद्ध पाठशालामे ई वाक्य उपयोगी लागत।

साँझमे पहिल पत्र समुद्र पार गेल। न दिसल, न उगल, न पाखी भेल; मुदा चन्ना ठूँठक हरियर बिन्दु पर हलुक उजास पड़ल। बच्चा सभ कहलक जे पत्र आकाशक बाटे गेल। ओहि साँझ हवामे डाक-हरकाराक घंटी सन कोनो ध्वनि नहि छल; केवल नारिकेल पातक एक नमहर सरसराहटि, जे धीरे-धीरे मद्धिम भऽ समुद्रक दिशामे बिला गेल। बूढ़बा भूत कहलनि—‘पत्र नहि, साँस गेल।’ हुनकर आवाज बहुत कम सुनाइ पड़ल, मुदा अनन्या लिखि लेली—‘दूरदेशमे साँस पठाओल गेल।’

दू दिन बाद उत्तर आयल। पहिल उत्तर टोरन्टोक एक बालकक छल, जकर नाम घरमे ‘नील’ कहल जाइत, मुदा दादी ओकरा नीलकंठ कहने रहथि। ओ लिखलक—‘हम गढ़ नारिकेल कखनो नहि आयल छी। हम चन्ना गाछीकेँ चित्रमे देखल अछि। हम नाम गलत पढ़ैत छी। मुदा हम सीखब। हमरा पहिल नाम भेजू।’ ईरा पत्र पढ़ैत काल कानि नहि पड़ली, मुदा

ओकर स्वर धीमा भऽ गेल। ओ अनन्याकेँ कहली—'पहिल नाम ओकरा ओहि मजदूरक भेजू जकर परिवारक कोनो विदेशिया नहि अछि।'

दोसर उत्तर मेलबर्नसँ छल। एक बालिका लिखने छली—'हमर मम्मी कहैत छथि गाममे बहुत झंझट अछि, शहरमे रहू। मुदा जँ झंझटमे नाम दबल अछि, तँ हम सुनए चाहैत छी।' तेसर उत्तर दुबईक एक बच्चाक छल—'हमर बाबा भवन बनबैत छथि, मुदा हुनकर नाम भवनपर नहि लिखाइत। की ओहो नाम-पहरामे आओत?' एहि प्रश्न पर नारिकेल पात पाठशालामे पूरा दिन चर्चा भेल। मजदूरक पएर अध्याय फेर स्मरणमे घुरि आयल।

उत्तर सभ बढ़ैत गेल। कियो देवनागरी नहि लिखि पबैत, कियो मैथिली नहि बाजि पबैत, कियो अपन कुलनामक अर्थ नहि बुझैत, कियो अपन दादीक गामक उच्चारण बिसरि गेल। मुदा प्रत्येक उत्तरमे एक समान पंक्ति फूटैत छल—'हम उपस्थित छी, मुदा सीखब बाँकी अछि।' बच्चा सभ एहि पंक्तिक लेल विशेष पाथर बनेबाक निर्णय केलक। पाथर पर लिखल गेल—'दूर उपस्थित।'

बटुकनाथ हरिहरनक लोक-स्मृति न्यासक लोक एहि पत्र सभक सूचना पाबि उत्साहित भेल। हुनका सभ लगल—विदेशी बालक सभ, प्रवासी परिवार, दान, मंच, सम्मेलन, प्रसारण—ई तँ स्मृतिकेँ संस्थागत करबाक अवसर अछि। मुदा ईरा पत्रक नीचाँ स्पष्ट लिखने छली—'ई पत्र कोनो न्यास, संस्था, मंच, पुरस्कार, दान-आह्वान, या सांस्कृतिक तमाशाक कच्चा माल नहि। ई नाम-पहरा लेल बाल संवाद अछि।' हरिहरनक लोक ई पंक्ति पढ़ि भृकुटि सिकोड़लक।

एडवर्ड ब्रूमक शोध-दल सेहो एहि उत्तर सभमे रुचि लेलक। हुनका सभक कहब छल—"प्रवासी-स्मृति सञ्जाल।" ईरा उत्तर देली—'नेटवर्क कहब तँ फेर तार, डेटा, अनुदान आ स्वामित्वक भाषा आओत। हम एकरा साँसक शृंखला कहैत छी।' अनुवादक अटकि गेल। 'साँसक शृंखला'क अंग्रेजी करब कठिन छल। ईरा कहली—'कठिन रहू। सभ बात अनुवाद लेल पैदा नहि होइत।'

राति जखन पाथर पर 'दूर उपस्थित' लिखल गेल, तखन ठूँठक छाह असामान्य रूपेँ नमहर भेल। ओ छाह गामक सीमा पार, पुल पार, स्टेशन पार, हवाई अड्डा पार, समुद्र पार पसरि रहल अछि कि नहि, से कियो प्रत्यक्ष नहि देखलक। मुदा जे बच्चा पत्र लिखि रहल छल, ओकरा सभक सपनामे कटल ठूँठ, हरियर बिन्दु, आ कबड्डीक गोल रेखा देखाइ पड़ल।

टोरन्टोक नीलकंठ सपनामे देखलक जे बर्फ पर ओकर पगक नीचाँ माटि गरम अछि। मेलबर्नक बालिका देखली जे समुद्रक लहरि मैथिली अक्षर बनि कगार पर टूटैत अछि। दुबईक

बच्चा देखलक जे रेतक टीलापर मजदूरक पएरक छाप पाथर बनि रहल अछि। हुनका सभक घरमे मोबाइलक स्क्रीन राति भरि चमकल नहि, बस एक बेर हलुक काँपि ‘उपस्थित’ लिखि बन्द भऽ गेल।

एहि उत्तर सभक प्रभाव गढ़ नारिकेलमे सेहो पड़ल। जे लोक प्रवासी बच्चा सभकेँ ‘बिदेसिया, बिगड़ल, भाषा-भुलायल’ कहि उपहास करैत छल, ओ सभ चुप भेल। बा कहलीह—‘जे दूरसँ नाम सुनए चाहैत अछि, ओकर कान काटल नहि।’ मीरा जोड़ली—‘मुदा कानक संग आँखिक शिष्टाचार सेहो सिखाओल जाएत।’ देविका कहली—‘आ स्क्रीनक नाव केना चलाएब, ई हम सिखाएब।’

ईरा अन्तिम प्रति सत्यव्रत मेहताकेँ पठौली। पत्रक संग बच्चा सभक उत्तर, ‘दूर उपस्थित’क पाथरक चित्र, आ एक प्रश्न—‘जे लोक दूर अछि, जे भाषा नहि जानैत, जे अपराधमे सोझे दोषी नहि, मुदा लाभक संसारमे पलैत अछि, ओकर गवाही केना सुनल जाए?’ सत्यव्रत एहि प्रश्नकेँ बहुत देर धरि देखैत रहलाह। ई प्रश्न कानूनक पुस्तकमे तैयार उत्तर नहि रखैत छल।

देर राति सत्यव्रत उत्तर लिखलाह—‘जन-सुननाइ केवल उपस्थित देह लेल नहि, उपस्थित ऋण लेल सेहो होइत अछि। जँ गढ़ नारिकेल चाहए, तँ अगिला सुननाइमे दूरक बच्चा सभक पत्र पढ़ल जाए।’ ओ पत्र मोड़ि पठा देलाह।

चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात अगिला भोर जखन बच्चा सभ जुटल, अनन्या रजिस्टर खोलि शीर्ष लिखली—‘सत्यव्रतक जन-सुननाइ।’ ईरा दूर देशक पत्र सभ कातमे राखली। कटल ठूँठक हरियर बिन्दु दू पातमे बदलि रहल छल। आ गाम बुझि गेल—आब सुननाइकेँ सीमा नहि रहल।

लोकगीत: परदेसक बच्चाकेँ पत्र

लोकधुन: बटोहिया-पत्र गीत

लिखू हे पाती, परदेसक बच्चाकेँ लिखू हे,
जतऽ छी, ओतहि नामक छोट चौपाल धरू हे।

कटल ठूँठक उजाससँ परदेस पठेलहुँ बात,
बौआ, तोहर गाम केवल नक्शाक छोट ठाम नहि मात।
स्क्रीन बन्द कऽ सुनिहऽ चूल्हि-पानिक स्वर,
तोहर पुरखाक नाम एखनहुँ पातक घर।

तूँ दूर जन्मलह, ऋण तइयो उपस्थित,

पत्रक बाट अपने तकैत, डाक नहि करै निश्चित।
नक्शा बनाउ, प्रश्न पठाउ, नाम सही पढ़ू,
सीमा पारक बच्चा सेहो पहरुआ बनि ठाढ़ू।
गामसँ नहि—जड़िक उजाससँ लिखल ई नेह,
जतय छी, ओतय नामक एक छोट चौपाल देह।

नक्शा बनाउ, प्रश्न पठाउ—पहरुआ बनू निश्चित।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—पङ्कजक विवाद: कवि लिखलक—“पङ्कज खिलल।” नव व्याकरण-विद्यार्थी आपत्ति कएलक, “कादोमे जन्मल कुमुद, कीड़ा वा आन वस्तु सेहो पङ्कज कहाएत; अवयवक अर्थ ताहि दिस लऽ जाइत अछि।” कवि पोखरिक कमल देखेलक। “शब्दक अवयव ‘पङ्क’ आ ‘ज’ सामान्य व्युत्पत्ति दैत अछि, मुदा पूरा समुदाय दीर्घ प्रयोगसँ विशेष कमलक स्मरण करबैत अछि।]

अध्याय ८९

सत्यव्रतक जन-सुनवाई

जन-सुनवाईमे सभसँ पैघ गवाही ओकर होइ छै जे आइ धरि सुनले नहि गेल।

अध्यायारम्भ लोकगीत: पातक लोक-विधान

लोकधुन: लोक-विधान गीत

पढ़ू हे पातक नस, धरतीक विधान पढ़ू हे,
बिनु मोहरक ई संविधान माथ पर धरू हे।

सूखल पातक नस-नसमे नदीक बाट बनल,
प्रकृतिक संविधान बिना मोहरो मानल।
जल बाँटू, छाह बचाउ, बीजक हक सम्हारू,
जीव-जंतु, माटि, मनुख संग-संग संसारू।

कानून जँ लोकसँ जुड़त, पात जकाँ लचकत,
न्याय जड़ि धरि पहुँचि कऽ हरेक जीवनकेँ रकत।
पातक लोक-विधान पढ़ू, सरल मुदा महान,
सह-अस्तित्वक अक्षरमे बसै धरतीक प्राण।

जल पहिने प्यासलकेँ, छाह पहिने बटोहीकेँ,
बीजक हक अगिला पीढ़ी, माटिक हक सभकेँ।
जीव-जन्तु, गाछ-बिरिछ संगे संसार चलए,
लोक-विधानक अक्षर-अक्षर मे धरती पलए।

❖

रजिस्टरक ओ नब शीर्ष लिखाइते सुननाइक दिन अपने सोझाँ आबि गेल। ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभ धरि पहुँचल कि नहि, से कोनो डाकघर प्रमाणित नहि कऽ सकल। मुदा ओहि पत्रक उत्तर गढ़ नारिकेलमे अजगुत तरहेँ आयल। विदेशसँ पहिल ई-मेल नहि, पहिल पार्सल नहि, पहिल धनादेश नहि—पहिल उत्तर आयल एकटा बच्चाक हाथक बनाओल नक्शा रूपमे। नक्शामे समुद्रक ओ पार एकटा शहर छल, काँचक ऊँच-ऊँच घर, बीचमे एक छोट गोल बिन्दु, आ बिन्दुक ऊपर देवनागरीमे काँपैत अक्षर—‘हमर दादीक नाम एतय कत्तए राखब?’

ईरा ओ नक्शा नारिकेल पात पाठशालाक देबाल पर टाँगि देली। बच्चा सभ पहिने हँसल, कारण शहरक बीचमे दादीक नाम राखबाक जगह ककरो बुझाइत नहि छल। मुदा हँसी तुरन्त चुप्पीमे बदलि गेल। अनन्या कहली, ‘जकरा धरती दूर अछि, ओकरा नाम राखबाक जगह आर

बेसी चाही।’ ओहि वाक्यक बाद पाठशालामे पहिल बेर गामक बच्चा आ विदेशक बच्चा एकहि कागचक भीतर भेटल।

तहिये सत्यव्रत मेहताक जन-सुननाइक दिन निश्चित भेल। जन-सुननाइ—ई शब्द गढ़ नारिकेलक लोक पहिने भय सँ सुनैत छल। सरकारी जन-सुननाइमे मंच ऊँच रहैत, कुर्सी पर अधिकारी, माइक पर घोषणा, पाछाँ पुलिस, आगाँ फाइल; लोक अपन दुःख दू मिनटमे समेटि देत, आ उत्तरमे ‘विचाराधीन’ सुनैत। एहि बेर जन-सुननाइ कटल चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात होयबाक छल। मंच नहि, कुर्सीक पंक्ति नहि, माइक नहि। सुननिहारक ठाम जमीन पर। बजनिहारक ठाम ठूँठक छाहमे।

सत्यव्रत मेहता सभसँ पाछाँ पहुँचलाह। लोक आश्चर्य कयलक, कारण ओहि दिन हुनका सभहक बीच बैसबाक आग्रह पहिने भेल छल। मुदा ओ अबैत क्षण कहि देलखिन, ‘आइ हम अध्यक्ष नहि। आइ हम लिखनिहारो नहि, पहिने सुननिहार छी। जे लिखत, से बच्चा सभ।’ एहि बात पर बटुकनाथ हरिहरनक एक पुरान शिष्य, जे चुपचाप भीड़मे घुसल छल, मुस्कुराबय चाहलक; मुदा बच्चा सभ ओकरा देखि लेलक। एतय मुस्कुराहट सेहो गवाहीक विषय बनि सकैत छल।

अनन्या, देविका, मीरा, ईरा, आरुणि, सौम्या, गोप कुमार आ कतेको स्त्री-पुरुष एक गोलमे बैसल। बीचमे तीनटा वस्तु राखल गेल—पुरान रजिस्टर, चन्ना गाछीक सूखल पात, आ एक खाली माटिक कटोरा। बैसल लोकक तर घासक नोक जाँघमे गड़ैत छल—छोट-छोट काँट जकाँ, जे कोनो कुर्सी कहियो नहि सिखौने छल। सत्यव्रत पूछलखिन, ‘कटोरा किएक?’ बा उत्तर देलीह, ‘जे शब्द कहि नहि सकत, ओकर मौन एतय राखल जाएत।’ सत्यव्रत माथ झुका देलखिन। हुनका बुझाइत रहल जे हुनकर अपना मौन सेहो एहि कटोरामे जगह माँगत।

पहिल गवाही ईराक पत्रसँ शुरू नहि भेल, न बाहरी नक्शासँ। पहिल गवाही एक बूढ़ चर्मकार स्त्रीक छल। ओ लाठी टेकैत आयलीह आ कहलीह, ‘गंगेशक प्रश्न जखन उठल, तखन हमरा घरमे आगि लागल पुरान बात फेर उठल। जे जाति हमरा चप्पल बनबैत देखैत अछि, से हमर बेटीकेँ शास्त्र पढ़ैत नहि देखए चाहैत। अहाँ सभ न्यायक बात करैत छी, तखन पूछू—ज्ञानक जूता के बनबैत अछि?’

एहि प्रश्न पर सभ स्तब्ध। सत्यव्रत लिखब चाहलखिन, मुदा अनन्या हाथ रोकि देली। ओ कहली, ‘पहिने प्रश्न पूरा होए दियौ।’ बूढ़ स्त्री आगाँ कहलीह, ‘गंगेश तत्त्वचिन्तामणि लिखलनि, लोक हुनकर ग्रन्थ मानलक। मुदा जे कथा जातिक काँच फोड़ैत अछि, ओकरा लोक

लाज कहि दबौलक। अहाँ सभ कहू—सम्मान ककर? हत्या ककर? जँ विचार बचायल गेल आ जीवन मारल गेल, तँ ई कोन न्याय?'

सत्यव्रत एहि बेर चुप रहलाह। ई मौन पलायन नहि छल। हुनका भीतर नव्य-न्यायक पाँच-पाँच परिभाषा उठल, मुदा सोझाँ बैसल स्त्रीक प्रश्न ओकरा सभकेँ एक-एक कऽ नाङट कऽ देलक। प्रमाण केवल ग्रन्थक नहि; प्रमाण देहक अपमान सेहो। अनुमान केवल धुँआसँ आगि धरि नहि; जातिक मुस्कुराहट सँ हिंसा धरि सेहो। शब्द केवल शास्त्रक नहि; ओ बूढ़ स्त्रीक टूटल स्वर सेहो।

दोसर गवाही विदेशक नक्शासँ जुड़ल। ईरा पत्र पढ़ली—'हमरा विद्यालयमे मिथिला एक परियोजना अछि। हम अपन दादीक नाम लिखलहुँ, शिक्षक कहलनि—वर्तनी ठीक करू। मुदा दादीक नाम कोनो वर्तनी नहि, दादीक आवाज छल।' पाठशालाक बच्चा सभ एहि वाक्यपर देबाल दिस ताकल। ओतय लटकल नक्शामे काँचक शहर अचानक कने धुँधला देखाइ पड़ल आ छोट गोल बिन्दु चमकि उठल।

सत्यव्रत पूछलखिन, 'एहि उत्तरकेँ कोन कोटिमे लिखब?' गोप कुमार कहलाह, 'प्रवासी स्मृति।' मीरा कहली, 'अनुमति सहित लिखल जाए।' बा कहलीह, 'बच्चाक दादीक नाम पहिने, श्रेणी बादमे।' अन्तमे रजिस्टरमे लिखल गेल—'दूर जन्मल बच्चाक प्रश्न: नामकेँ उच्चारण चाही, वर्तनी मात्र नहि।'

तेसर गवाही मजदूर सभक परिवारक छल। पुलक पाया सँ माटि अनबाक बाद जे नब हिम्मत आयल छल, से एखन शब्द बनल। एक युवक कहलक, 'हमर बाबू कागच पर अस्थायी मजदूर छल। पानिमे स्थायी भऽ गेल।' लोकक देह काँपि उठल। एहि एक वाक्यमे मजाक नहि, राज्यक क्रूरता छल। चन्ना गाछीक सूखल पात कटोराक कगार पर काँपल। बच्चा सभ लिखलक—'अस्थायी नामक स्थायी जलसमाधि।'

सत्यव्रत एहि बेर स्वयं बजलाह। 'हम एहि सभ गवाहीक फैसला नहि देब। फैसला देबाक अभ्यासमे हम सभ बरखौं धरि लोकक स्वर छोट करैत रहलहुँ। आइ गवाही अपन आकारमे रहत।' हुनकर स्वर धीमा छल, मुदा एहि बातमे एकटा कठोरता छल। कतेक लोक निराश भेल—ओ सभ चाहैत छल जे सत्यव्रत तत्काल किछु आदेश जेकाँ कहथि। मुदा देविका फुसफुसाइत कहली, 'आदेश फेर ककरो हाथमे सत्ता देत। सुननाइ हाथे-हाथ बाँटू।'

जन-सुननाइक नियम ओतहि बनैत गेल। जे बाजत, ओकरा टोका नहि जाएत। जे नहि बाजए चाहत, ओकर मौन कटोरामे राखल जाएत। जे नाम सार्वजनिक नहि करए चाहत, ओकर

चिन्ह राखल जाएत। जे गवाही आरोप बनि अदालत धरि जाएबाक चाहत, ओकर लेल अलग पन्ना होएत। जे केवल स्मृति रहए चाहत, ओकरा कोनो फाइलमे नहि धकेलल जाएत। ई न्यायालय नहि छल, मुदा न्यायालयसँ बेसी सावधान।

मध्याह्नमे राघव 'सिग्नल' सोमानीक एक पुरान संदेशक प्रति गोप कुमार अनलाह। संदेशमे लिखल छल—'भावनाकेँ सामग्रीमे बदलू, सामग्रीकेँ निधिमे, निधिकेँ नियंत्रणमे।' लोक पढ़ि कऽ बुझि गेल जे स्मृति पर बाजारक योजना शब्दक भीतरहि नुकायल छल। सत्यव्रत एहि वाक्यक पाछाँ लिखलनि—'लोक-स्मृतिकेँ सामग्री कहब, दोसर हत्या।' अनन्या मुस्कुरायली; ई पहिल बेर छल जखन सत्यव्रतक लेखनी सुननाइकेँ कम नहि, मजगूत करैत छल।

साँझ लग एक बिलक्षण प्रसंग भेल। कटल ठूँठक कगार पर पाँचटा बच्चा कबड्डीक रेखा खिंचऽ लागल। जन-सुननाइ चलि रहल छल, लोक पहिने झिड़कए चाहलक। मुदा बा रोकलीह—'सुननाइ आ खेल अलग नहि। साँस रोकि जे खेलल जाए, ओ नाम सुनबाक अभ्यास अछि।' बच्चा सभ 'कबड्डी-कबड्डी' कहैत गोल घेरा काटलक। प्रत्येक फेरामे ओ सभ एक नामक पाथर छूइत। जे नाम छूइत, ओकर परिवार 'उपस्थित' कहैत। दौड़ैत डेगक धमकसँ माटिक हलुक कम्पन बैसल सभक हथेली धरि चलि अबैत छल—जेना गवाही जमीनक भीतरो दौड़ि रहल हो। खेल गवाहीक विधि बनि गेल।

ओहि क्षण सत्यव्रत मेहता बुझलाह जे कानूनक भाषा जतेक लिखल गेल, ओकर अधिकांश निष्प्राण किएक भऽ गेल। कारण ओ खेल नहि जानैत छल। ओ साँस रोकब नहि जानैत छल। ओ नाम छूइत नहि छल। ओ केवल धाराक्रम पढ़ैत छल। चन्ना गाछीक गोलाइमे दौड़ैत बच्चा सभ न्यायकेँ पुनः देह देलक। सत्यव्रत अपन नोटबुक बन्द कऽ देलखिन आ पहिल बेर खाली हाथ सुनलाह।

राति पड़ल तखन खाली माटिक कटोरा भरल नहि, मुदा भारी भऽ गेल। कतेको मौन ओकर भीतर राखल गेल छल। मीरा ओकरा उठाबय चाहली, पर कटोरा हिलल नहि। तखन बूढ़ चर्मकार स्त्री फेर आगाँ आयलीह। कहलीह, 'मौन उठाबय हो तँ जाति, लाज, डर, पद—सभ हाथ छोड़ू।' चारि गोटे हाथ हटेलक। बालिका अनन्या एक हाथ लगौली, कटोरा उठि गेल।

वयस्क सभ चुप रहल; अनन्या रजिस्टरक खाली पन्ना खोलि लिखली—'नामक पहरा लेल नियम चाही।' सत्यव्रत आँखि मूनलनि। हुनका अपना भीतर सँ वाक्य उठल—'जँ अगिला पीढ़ीकेँ नियम नहि देल गेल, तँ स्मृति फेर लूटल जाएत।' मुदा ओ वाक्य ओ स्वयं नहि

कहलखिन। ओ बालिका दिस तकलनि। अनन्या रजिस्टरक खाली पन्ना खोलि लिखली —'नामक पहरा लेल नियम चाही।'

एहि पन्ना पर सभ बच्चा झुकल। पहिल नियम कियो लिखलक—'नाम नहि मेटाएब।' दोसर—'मौनक मजाक नहि उड़ाएब।' तेसर—'पीड़ाकेँ तमाशा नहि बनएब।' चारिम—'देहक गरिमा पहिने।' पाँचम—'स्क्रीन पर किछु राखए सँ पहिने अनुमति।' छठम—'जातिक नाम पर जीवन-सत्य नहि मारएब।' सत्यव्रत देखैत रहलाह। जन-सुननाइ अपने-आप लोक-संहिताक जन्मस्थल बनि गेल।

रातिक अन्तिम पहरमे सभ विदा भेल। ठूँठक चारू कात पाथर, पात, कटोरा, रजिस्टर आ बच्चा सभक लिखल नियम रहि गेल। चन्द्रमा ऊपर छल, मुदा ओकर इजोत एखन आदेश जेकाँ नहि, पठन-दीप जेकाँ लागैत छल। बूढ़बा भूतक झिलमिलाहट ठूँठक पाछाँ देखाइ पड़ल। ओ आइ किछु नहि कहलनि। कदाचित हुनका बुझाइत छल—जे दिन बच्चा सभ नियम लिखए लगैत अछि, ओहि दिन भूतक पहरा कने हलुक भऽ जाइत अछि।

सत्यव्रत मेहता जेतबा दूर गेलाह, ओतबे हुनका कानमे बच्चा सभक लिखल पंक्ति बजैत रहल—'नामक पहरा लेल नियम चाही।' ओ जानैत छलाह जे अगिला दिन एहि नियमक नाम माँगल जाएत। कियो ओकरा प्रस्ताव कहत, कियो विधान, कियो लोक-लिखित शपथ। मुदा चन्ना गाछीक ठूँठ जानैत छल—ई एक छोट संविधानक पहिल साँस अछि।

लोकगीत: जे सुनल नहि गेल

लोकधुन: जन-सुनवाई गीत

सुनू हे सुनू, जे सुनल ने गेल, से सुनू हे,
अनसुना लोकक स्वर सँ नव शासन बुनू हे।

सभसँ पैघ गवाही ओ जकर स्वर दबल,
दूरक बच्चाक नक्शासँ नब दरबार खुलल।
देह उपस्थित नहि, ऋण उपस्थित अछि,
पत्र, पाथर, आँसू, प्रश्न—सभ साक्षी अछि।
चन्द्रमा आदेश नहि, पठन-दीप बनल,

बच्चाक लिखल नियम मेहताक कानमे चलल।
भूतक पहरा हलुक जखन नेना विधान लिखै,

नामक रखवारी लेल नियमक साँस निकसै।
जन-सुनवाई मंच नहि—सुनबाक अनुशासन,
अनसुना लोकक स्वर सँ बनल नब शासन।

दूरक नेनाक नक्शा सँ नव दरबार खुजल।
नेनाक लिखल नियम मेहताक कान मे चलल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—बालकक "अम्बा": छोट बालक भूखसँ कनैत "अम्बा" बजलक। विद्वान अतिथि पूछलक, "ई शब्द व्याकरणतः पूर्ण नहि; अर्थ कोना भेल?" माता कहलनि, "स्वर, परिस्थिति, बालकक पुरान व्यवहार आ 'अम्बा'क शुद्ध रूपक सादृश्य मनमे जुड़ि गेल।" श्रोता बहुत बेर अपभ्रष्ट ध्वनिसँ सही पद स्मरण करैत अछि।]

अध्याय ९०

नामक संविधान

संविधान सूखल पातपर सेहो लिखा सकैए— जँ लिखनिहार बच्चा होथि।

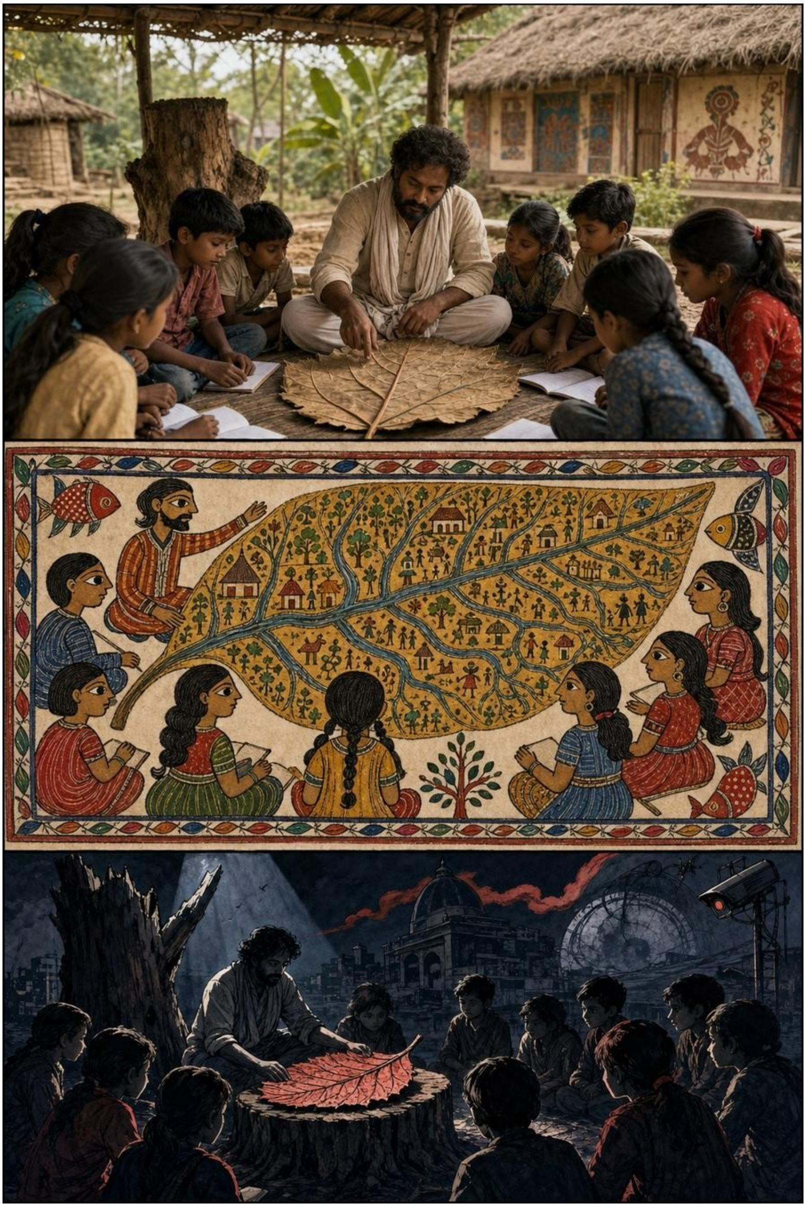

अध्यायारम्भ लोकगीत: खाली कुरसी, भरल जन

लोकधुन: मौन-झूमरक उत्सवी रूप

भरू हे चौपाल, कुरसी खाली रहौ हे,
जनक जागल घेरा मे काजक धार बहौ हे।

कुरसी खाली हो तइयो चौपाल भरल रहै,
पदधारी नहि आयल तँ जनक काम नहि बहै।
एक-दोसरक बात लिखू, निर्णय साफ बनाउ,
खाली आसनकेँ प्रश्नक फूलसँ सजाउ।

कुरसी सेवा प्रतीक, व्यक्ति मात्र नहि,
संस्था जनक भरोससँ टिकै, डरक बात नहि।
भरल जनक जागरूकता खाली पद सँ पैघ,
लोकतन्त्रक झूमरमे सभक बराबर नेह।

पदधारी नहि आयल तँ प्रश्न-फूल सजाउ,
खाली आसनक आगाँ अपन निर्णय सुनाउ।
कुरसी सेवाक चिन्ह, व्यक्ति अबैत-जाइत,
लोकक भरोसक खम्भे संस्था ठाढ़ि रहइत।

❖

ओ पहिल साँस भोर होइते अपन देह ताकए लागल—सूखल पात, कापी आ कलमक बीच। जन-सुननाइक दोसर दिन नारिकेल पात पाठशालामे कोनो पाठ नहि पढ़ाओल गेल। बच्चा सभ कापी खोलि बैसल छल, मुदा मास्टरक हाथमे पाठ्यपुस्तक नहि, चन्ना गाछीक ठूँठसँ झड़ल सूखल पात छल। पातक नस सभ एना पसरल छल जेना कोनो अज्ञात भूगोलक नदी, नाला, गाम, बाट, घाव आ साक्षी सभ एके हरियर देहमे लिखल हो। मास्टर पातकेँ बीचमे राखि कहलखिन—‘आइ लिखल जाएत, पढ़ल नहि।’ कापीक पन्ना पलटबाक सामूहिक फरफराहटि एक बेर उठल आ थमि गेल—जेना पूरा पाठशाला एक्के संग साँस घोंटने हो।

अनन्या तुरन्त पूछली, ‘की लिखल जाएत?’ मास्टर उत्तर देलखिन, ‘जे नियम अहाँ सभ अपन नाम-पहराक लेल बनाओब।’ बच्चा सभ पहिने हँसल; नियम कहिते हुनका सभकेँ स्कूलक डाँट, नगरपालिकाक नोटिस, अदालतक तारीख, आ चन्द्रपालक अनुप्रयोगक शर्त

मोन पड़ल। मुदा मास्टर फेर कहलखिन, ‘ई नियम ऊपरसँ नहि आएत। ई नियम ओहि सभ नामसँ निकलब जे ठूँठक चारू कात राखल अछि।’

बा ओहि दिन पाठशालाक कोनमे बैसलीह। हुनकर कान आब कम सुनैत छल, मुदा जे बात माटि सँ उठैत, से हुनका अबहु साफ सुनाइत। ओ कहलीह, ‘संविधान ओहि समाजक बनैत अछि जे अपना अपराध देखए चाहैत अछि। जे समाज केवल अपन गौरव लिखैत अछि, ओ नियम नहि, वंशावली लिखैत अछि।’ ई वाक्य बच्चा सभक कापी पर पहिल पंक्ति बनि गेल—‘पहिने अपराध देखू, तखन नियम लिखू।’

सत्यव्रत मेहता पाछाँ बैसल छलाह। हुनका कहबाक बहुत बात छल, किएक तँ हुनका संविधान, कानून, अधिकार, प्रक्रिया, न्याय, राज्य—सभ शब्दक दीर्घ संगति छल। मुदा ओ चुप रहलाह। हुनकर दोसर मौन आब लोक बुझए लागल छल। ओ चुप रहैत, ताकि बच्चा सभक शब्द हुनकर शब्दसँ दबि नहि जाए। कतेक बेर मनुष्यक ज्ञान सेहो गोहि बनि जाइत अछि—ओ दोसराक अनुभव चिबा कऽ ओकरा सिद्धान्त बना लैत अछि। सत्यव्रत एहि बेर एहन गोहि नहि बनय चाहैत छलाह।

पहिल नियम देविकाक मुँहसँ निकलल—‘नाम नहि मेटाएब।’ बच्चा सभ लिखलक। फेर देविका जोड़ली—‘नाम केवल पैघ अक्षरमे स्मारक पर नहि, घरक बोलीमे, मायक पुकारमे, मजदूरक मजूरी-पुस्तिकामे, अदालतक कागचमे, अस्पतालक पर्चीमे, विद्यालयक हाजिरीमे, आ पानिक किनारक पाथरमे बाँचत।’ नियम नमहर भेल, मुदा बच्चा सभ रोकलक नहि। नाम छोट कएलाक बादे तँ लोक हराइत अछि।

दोसर नियम मीरा कहली—‘निजता नहि बेचाएब।’ एहि पर किछु बच्चा चुप भऽ गेल। ओ सभकेँ बुझाइत छल जे निजता माने दरबाजा बन्द करब। मीरा कहली, ‘निजता ओ कोठरी नहि जे भय सँ बन्द हो; निजता ओ अधिकार अछि जे बिनु अनुमति ककरो देह, चेहरा, प्रेम, लाज, रोदन, पत्र, छाह, वा चुप्पीकेँ बजार नहि बनाओल जाए।’ बच्चा सभ नियममे लिखलक —‘दृष्टिक पहिने अनुमति, कथाक पहिने गरिमा।’

तेसर नियम सौम्या राखली—‘देहक अपमान नहि होएब।’ एहि नियमक समय स्त्री सभक राति-सभाक ध्वनि पाठशालामे घुरि आयल। उज्ज्वलक माय जोड़लीह—‘मृत देह सेहो वस्तु नहि।’ मुन्ना पासवानक बहिन कहलीह—‘मजदूरक पएर सेहो प्रमाण।’ सरयूक नाती कहलक —‘पानिमे डूबल देहक नाम पानिक होएत, ककरो ठेका नहि।’ बच्चा सभ लिखैत रहल, हाथ दुखैत रहल, मुदा कियो पंक्ति काटलक नहि।

चारिम नियम आरुणि देलक—‘स्मृति पर ठेका नहि लगएब।’ एहि वाक्य पर पाठशालामे अजगुत निस्तब्धता पसरि गेल। विरासत-परियोजनाक फाइल, स्मृति-निविदा, ब्रूमक दान-पत्र, चन्द्रपालक श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग, नकली भूतक जुलूस—सभ एक्के संग पातक नस सभमे दौड़ि उठल। आरुणि कहलक, ‘जकर पीड़ा सँ स्मृति बनल, ओहि पीड़ितक बिनु कियो स्मारक नहि बनाओत। जकरा सुनल नहि गेल, ओकर नाम पर कियो कमाइ नहि करत।’

पाँचम नियम गंगेशक प्रश्न सँ जन्मल। अनन्या लिखली—‘जातिक नाम पर न्यायक हत्या नहि होएब।’ ई सुनिते किछु बूढ़क चेहरा कठोर भेल। ककरो लग ई वाक्य बहुत तीख लगल। मुदा बच्चा सभ गंगेशक कथा सुनि चुकल छल—तत्त्वचिन्तामणिक लेखक, नव्य न्यायक जन्मदाता, बारह हजार ग्रन्थक बराबर गम्भीर चिन्तन, आ जीवनक असुविधाजनक सत्यकेँ सम्मानक नाम पर चुप कराएबाक अपराध। बच्चा सभ निर्णय कएलक—‘जकर विचार पूजब, ओकर जीवनक सत्य नहि दबाएब।’

छठम नियम गोप कुमार सँ आयल—‘कागचक सत्य लोकक स्वर बिनु अधूरा अछि।’ गोपक हाथमे एखनहुँ नकल छल, सूची छल, प्रमाण छल। मुदा ओ स्वयं मानलाह जे कागच जिन्दा नहि रहैत जँ ओकरा कियो पढ़य, सुनय, प्रश्न करय, आ दुखसँ जोड़य नहि। एहि नियमक नीचाँ बच्चा सभ लिखलक—‘कागच साक्षी, मनुष्य श्रवण, माटि ठिकाना।’

सातम नियम स्क्रीनक उपवासक दिनसँ निकसल—‘सुविधाकेँ स्वामी नहि बनएब।’ बच्चा सभ लिखलक जे मोबाइल, अनुप्रयोग, संदेश, चित्र, दान, अभिलेख, खोज—सभ साधन होएत, मालिक नहि। जे यंत्र नाम बचाबयमे सहायक, तकर उपयोग; जे यंत्र नाम चोराबए, निजता बेचए, डर पसारए, वा मन चिबाबए, ओकर उपवास। एहि नियम पर उज्ज्वलक माय पातर मुस्कान देलीह। हुनका लागल, कदाचित ई नियम ओकर बेटाक अबेर सँ आयल उत्तर अछि।

आठम नियम कबड्डी सँ आयल। ई नियम बच्चा सभ स्वयं बनौलक—‘साँस टूटए सँ पहिने घुरू, मुदा साथी छोड़ि नहि।’ कबड्डीक खेलमे जे पारी धरतीक सीमा पार करैत अछि, ओकरा साँस राखि घुरबाक पड़ैत अछि। बच्चा सभ कहलक—‘जे सत्ता, बजार, विदेश, स्क्रीन, धन, जाति, शोध, दान, वा ग्रहक चमकमे सीमा पार करत, से नामक साँस बचा कऽ घुरत। जे नहि घुरत, ओकरा पुकारल जाएत।’ एहि नियममे अगिला कथा दूर सँ चमकल—किएक तँ एक दिन सीमा पृथ्वी सँ आकाश धरि खिंचाएबला छल।

नवम नियम बा देलीह—‘जिनका नाम नहि भेटल, हुनका पहिल आसन।’ सभ बच्चा ई नियम अलग पन्नापर लिखलक। कारण सभ बुझि गेल छल जे समाज सभसँ पहिने ओहि लोककेँ भुलबैत अछि जिनकर दस्तावेज नहि, कुल-परिचय नहि, फोटो नहि, हस्ताक्षर नहि। अनाम लोकक आसन पहिने राखब नामक संविधानक आत्मा बनल।

दसम नियम सत्यव्रत सँ माँगल गेल। बहुत काल धरि ओ चुप रहलाह। फेर कहलखिन—‘मौनक हिसाब राखू।’ बच्चा सभ चकित भेल। सत्यव्रत कहलखिन—‘जे अपराध करैत अछि, ओकर नाम लिखू; जे देखैत अछि आ चुप रहैत अछि, ओकर मौन सेहो लिखू। समाज केवल अपराधीसँ नहि, दर्शकक चुप्पीसँ सेहो डूबैत अछि।’ एहि नियमक नीचाँ अनन्या लिखली—‘मौन सेहो उपस्थित।’ सत्यव्रतक चेहरा थरथरा उठल।

एगारहम नियम पनिडुब्बीक स्मरण सँ आयल—‘पानि जे राखलक, ताहि पर दावा नहि।’ नदी, पोखरि, नाला, धार, बाढ़ि, जलसमाधि—ई सभ केवल भूगोल नहि, गवाह छल। बच्चा सभ लिखलक जे पानिमे डूबल नामक कथा पानिसँ पूछल जाएत; नक्शा बनब तँ पानिक बाट देखल जाएत; पुल बनब तँ मजदूरक पएर आ माछक गति दुनू सुनल जाएत।

बारहम नियम ईराक विदेशक बच्चा सभकेँ लिखल पत्र सँ आयल—‘गाम स्मृतिचित्र नहि, उत्तरदायित्व।’ जे बाहर रहत, से गामकेँ केवल सुन्दर कथा, त्योहार, भाषा, भोजन आ पुरान फोटोमे नहि राखत; ओ पूछत—कतेक नाम छूटल? कतेक पाथर खाली? कतेक बच्चा पहरा देत? विदेशक दूरी स्मृतिसँ मुक्ति नहि, स्मृतिक नब परीक्षा।

तेरहम नियम पर बहुत बहस भेल—‘क्षमा कोना?’ बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ, ब्रूम—एहि सभक नाम हवामे घूमल। किछु बच्चा कहलक—‘क्षमा नहि।’ किछु कहलक—‘दण्ड।’ बा कहलीह—‘क्षमा घोषित नहि होइत; सुननाइ सँ धीरे-धीरे जन्मैत अछि।’ अन्तमे लिखल गेल—‘क्षमा मंच पर नहि, नाम सुनबाक श्रममे खोजल जाएत; अपराधक लाभ पहिने छूटत, तखन क्षमाक बात होएत।’

चौदहम नियम भविष्य पर छल—‘बच्चा पहरुआ, बूढ़ साक्षी, स्त्री विधान-धारक, मजदूर माटिक मालिक।’ ई पंक्ति ककरो मुँहसँ पूरा नहि आयल; सभजना मिलि बनौलक। एक बच्चा ‘बच्चा पहरुआ’ लिखलक, बा ‘बूढ़ साक्षी’ जोड़लीह, मीरा ‘स्त्री विधान-धारक’, आरुणि ‘मजदूर माटिक मालिक’। एहि नियममे गढ़ नारिकेलक नब समाजक बीज पड़ल।

जखन नियम सभ लिखि चुकल, तखन प्रश्न उठल—एहि संविधान पर मोहर के देत? नगरपालिकाक? अदालतक? न्यासक? राज्यक? सत्यव्रत चुप रहलाह। अनन्या कटल चन्ना

ठूँठसँ निकसल एक सूखल रेशा लेली, ओकरा पानिमे भिजौली, आ पन्नाक कोनामे रखि देली। कहली—'मोहर जड़िक।' बच्चा सभ अपन-अपन अँगूठा माटिमे डुबा कऽ पन्नाक नीचाँ लगा देलक। अँगूठा उठिते माटिक चिक्कन ठंढ रेखा बनि गेल; कतेको बच्चा साँझ धरि नहक कोरक ओ कारी घेरा नहि धोलक—प्रतिज्ञाक पहिल दाग जकाँ। ओ अँगूठाछाप कम साक्ष्य, अधिक प्रतिज्ञा छल।

कियो संविधानक प्रति बनाबय चाहलक। देविका कहली—'बनाउ, मुदा प्रत्येक प्रति खाली पन्ना सँ शुरू होए। जे गाम अपन नाम जोड़ए, से पहिने अपन छूटल नाम लिखए।' एहि निर्णयसँ नियम स्थिर ग्रन्थ नहि, चलैत पात बनि गेल। तत्त्वचिन्तामणिक स्मरण फेर उठल—विचार जँ जड़िमे उतरए, तखन पुस्तक एक नहि, बारह हजार आवाज बराबर होइत अछि।

राति भेल तखन नियम-पत्र ठूँठक चारू कात पढ़ल गेल। प्रत्येक नियमक बाद लोक उत्तर देलक—'उपस्थित।' जे लोक पहिने राजनीति बुझि किनार होए चाहैत छल, से देखलक जे ई संविधान सत्ता छीनबाक घोषणा नहि, स्मृति बचबाक प्रतिज्ञा अछि। मुदा एहन प्रतिज्ञा सत्ता सँ बेसी खतरनाक होइत अछि, किएक तँ ई लोकक भीतर जागैत अछि।

दूर कतहु बटुकनाथ हरिहरनक घरमे हुनकर संतान ओहि संविधानक नकल पढ़ि रहल छल। चन्द्रपालक यंत्रमे 'नाम नहि मेटाएब' पंक्ति बेर-बेर चमकि रहल छल। राघवक बिनु-नेटवर्क फोन पर 'मौन सेहो उपस्थित' अटकि गेल। लाउ किन-हंगक काँचक कोठरीमे 'स्मृति पर ठेका नहि लगएब' चीनी अनुवादमे बिगड़ि-बिगड़ि फेर सही भऽ रहल छल। ब्रूमक दान-पत्रक कोनामे 'पहिने अपराध देखू' उभरि आयल।

गढ़ नारिकेलमे एहि राति कियो धूर्त सभकेँ सभामे नहि बजौलक। नियम बनल, गवाही लिखल गेल, अँगूठा लागल, नाम पढ़ल गेल—मुदा अपराधी सभ अनुपस्थित रहल। आब अगिला प्रश्न उठबाक छल—जखन समाज अपना संविधान बना लेत, तखन धूर्त सभक अनुपस्थिति दण्ड अछि कि नब षड्यंत्रक शुरुआत?

चन्ना ठूँठक जड़ि राति भरि हलुक-हलुक गरम रहल। बच्चा सभ बारी-बारी पहरा दैत रहल। संविधानक पहिल पन्ना पर दीपक इजोत काँपैत छल, आ अन्तिम खाली पन्ना पर किछु अदृश्य हाथ लिखबाक प्रतीक्षा करैत छल—'जे अनुपस्थित अछि, ओकरो नाम पूछल जाएत।'

लोकगीत: सूखल पातक संविधान

लोकधुन: लोक-विधान गीत

लिखल हे संविधान, सूखल पात पर लिखल हे,

नेनाक कलमक आगाँ सत्तो ठाढ़ भेल हे।

सूखल पातपर नस सभ नदी-रास्ता बनल,
बच्चाक कलम सँ नामक संविधान जनमल।
नाम नहि मेटाएब, निजता नहि बिकाएब,
देहक अपमान नहि, स्मृति पर ठेका नहि लगाएब।
अँगूठा, अक्षर, नोर—सभ मोहर बनल,

धूर्तक खाली कुरसी प्रश्नक छाह बनल।
अन्तिम पन्ना खाली—अनुपस्थितक नाम,
जे बाहर अछि, ओकरो पूछत लोक-धाम।
कागच छोट, वचन गाछिक जड़िसँ गाढ़,
नेनाक संविधानक आगाँ सत्ता सेहो ठाढ़।

नाम ने मेटाएब, निजता ने बिकाएब,
अँगूठा, आखर, नोर—सभ मोहर बनल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—पुत्रजन्मक समाचार: चैत्र उदास बैसल छल। निकट बैसल बालक दूतक शब्द स्पष्ट नहि सुनलक, मुदा परिवर्तन देखलक।]

अध्याय ९१

धूर्त सभक अनुपस्थिति

धूर्तक अनुपस्थिति सेहो उपस्थिति थीक— खाली कुरसी सभसँ जोरसँ बाजै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: ठूँठक छाहमे सुनवाई

लोकधुन: छाहरि-पराती

बैसू हे छाहरि मे, नान्हियो छाहरि मे बैसू हे,
ठूँठक कान पैघ छै—अपन कथा परसू हे।

गाछ कटल, ठूँठ बचल, छाह नान्हि सही,
ओहि छाहमे कान पैघ, सुनवाई रुकत नहि।
एक-एक लोक बैसि कहै अपन दुःख-सुख बात,
ठूँठक जड़ि सम्हारि राखै पुरखा केर सौगात।

छोट आसन न्याय रोकै? नहि, मन चाही खुलल,
एक सुनल स्वर सँ समाजक सम्बन्ध फुलल।
ठूँठक छाहमे सुनवाई आशाक बीज बोए,
जड़ि बचल तँ वनक सपना एक दिन पूरा होए।

गाछ कटल, छाह घटल, सुनवाई नहि घटल,
एक-एक दुख-सुख कहिते मोनक मेघ छँटल।
जड़ि मे पुरखाक आशीष, ऊपर खुलल अकास,
छोट छाहरियो मे पलए वन भरिक विश्वास।

❖

नामक संविधानक पन्ना सूखए धरि कटल चन्ना ठूँठक चारू कात एक विचित्र शान्ति पसरल रहल। बच्चा सभ जे नियम लिखने छल—नाम नहि मेटाएब, निजता नहि बेचाएब, देहक अपमान नहि होएब, स्मृति पर ठेका नहि लगएब—से नियम कागच पर मात्र नहि, लोकक चेहरा पर उतरि रहल छल। जकर आँखि पहिने डर सँ झुकैत छल, से आब पढ़ैत छल। जकर जीह पहिने परिवारक लाज, जातिक डर, अदालतक धमकी, ठगक फोन, वा बाररूमक तर्क सँ बन्हल छल, से आब आस्ते-आस्ते खुलैत छल।

सभाकेँ आब अगिला प्रश्न घेरलक—जे लोक एहि सभ दुःखक मूलमे रहल, ओकरा सभकेँ बजाओल जाए कि नहि? बटुकनाथ हरिहरन, चन्द्रपाल बत्रा, राघव सिग्नल सोमानी, लाउ किन-हंग, एडवर्ड ब्रूम—ई नाम सभ जेना कागचक किनार पर काँट जेकाँ अटकल छल।

किछु युवक कहलक—'बजाबी, सभहक सोझाँ उघारि देब।' किछु स्त्री कहलीह—'नहि, सभाकेँ फेर ओही सभक मुख देखबाक दण्ड किएक?' बच्चा सभ चुप रहल।

अनन्या रजिस्टर खोलि गंगेशक पन्ना तकली। तत्त्वचिन्तामणिक कथा जखन चन्ना ठूँठक बीच आयल छल, तखन बच्चा सभ 'अभाव' शब्द सुनने छल। जे नहि अछि, तकरो प्रमाण होइत अछि—ई बात ओकरा सभक मनमे अटकले छल। अनन्या कहली, 'जे उपस्थित अछि, तकर नाम पढ़ब। जे उपस्थित नहि, ओकर अनुपस्थिति सेहो पढ़ब। मुदा हुनका सभकेँ मंच नहि देब।'

ई निर्णय साधारण बुझाइत छल, मुदा चन्ना गाछीक इतिहासमे ई सभसँ कठिन निर्णय छल। कारण, समाज प्रायः अपराधीकेँ दण्ड देबाक नाम पर ओकरा फेर केन्द्रमे बैसा दैत अछि। जकरा विरुद्ध लोक उठैत अछि, ओहीक नाम, ओहीक चेहरा, ओहीक वक्तव्य, ओहीक सफाइ, ओहीक भय पुनः सभक ऊपर छा जाइत अछि। बच्चा सभ एहि खेलकेँ चिन्हि गेल छल। ओ सभ कहलक—'जे नाम मरल, डूबल, ठगल, चिबायल गेल, पहिने ओहि नामक ठाम। धूर्त सभक ठाम किनार पर।'

आरुणि एहि बात पर देर धरि किछु नहि बाजल। ओकरा भीतरक अभियन्ता सूची बनाबय चाहैत छल; ओकरा भीतरक घायल नागरिक आरोप लगाबय चाहैत छल; मुदा ओकरा भीतरक पिता बुझि रहल छल जे न्याय मात्र अपराधीक चेहरा देखाएब नहि। कखनो-कखनो न्याय पीड़ितक चेहराकेँ पहिल बेर बिनु डरक देखाएब अछि। ओ बच्चा सभक निर्णय स्वीकार कएलक।

सत्यव्रत मेहता पाछाँ बैसल सुनैत छलाह। एहन निर्णय ओ कोनो न्यायालयमे नहि देखने छलाह। न्यायालय अपराधीक नाम सँ चलैत अछि—राज्य आ फलाँ, लोक आ फलाँ, अपील आ फलाँ। एतय पहिल बेर सभा पीड़ितक नाम सँ चलि रहल छल। अपराधी सभ अनुपस्थित रहल, मुदा हुनकर अनुपस्थिति लेखामे आयल। सत्यव्रत अपन नोटबुकमे लिखलनि—'अभावक प्रमाण: जखन अपराधी नहि बजाओल गेल, तखन पीड़ितक स्वर बढ़ल।'

ओहि दिन नाम-पाठक आरम्भमे कोनो घोषणाक जरूरत नहि पड़ल। अनन्या ठूँठक बीच बैसि कहली—'जे सभ एतय नहि बजाओल गेल, ओ सभ अनुपस्थित छथि। एहि अनुपस्थितिसँ डरू नहि। ई सभा हुनका सभक लेल नहि, हुनका सभक कारणेँ घायल नाम सभक लेल अछि।' तखन पहिल परिवार उठल। ओकरा सभक बेटा पुलक पायामे डूबल छल। नाम पढ़ल गेल। उत्तर आयल—'उपस्थित।'

दूर शहरमे बटुकनाथ हरिहरन ओहि समय अपन कक्षमे बैसल छल। ओकरा विश्वास छल जे गढ़ नारिकेलक लोक ओकरा निमन्त्रण पठाओत, किएक तँ बिनु ओकर वैधानिक परामर्शक कोनो लोक-स्मृति स्थायी नहि रहि सकैत। ओकर मेज पर दूटा भाषण तैयार छल—एक प्रायश्चित्तक, दोसर संस्थागत ढाँचाक। मुदा फोन नहि बजल। गाड़ी नहि आयल। कोनो दूत नहि पहुँचल। ओकर सचिव पूछलक—‘सर, कार्यक्रमक समय भऽ गेल।’ बटुकनाथ घड़ी देखलक। पहिल बेर ओकरा बुझायल जे किछु घटना ओकर बिनु सेहो घटि सकैत अछि।

चन्द्रपाल बत्रा अपने फोन पर चन्ना गाछीक दृश्य ताकैत रहल। ऐपमे सूचना आबएबाक चाही छल—‘विशेष लाइव गवाही’। मुदा स्क्रीन शान्त। श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग खुलैत नहि छल। ओकरा बुझायल जे कियो ओकरा अवरुद्ध कऽ देलक। मुदा असलमे कियो रोकने नहि छल। लोक मोबाइल बन्द कऽ सभा करैत छल। चन्द्रपालकेँ पहिल बेर बुझायल जे जालक सभसँ पैघ पराजय ई नहि जे ओकर पासवर्ड टूटि जाए; पराजय ई जे लोक एक दिन जालक जरूरत बुझबे नहि करए।

राघव सिग्नल सोमानी अपन चुप संदेश सभक बीच बैसल छल। ओ सोचलक, कदाचित भीतरखाने बात होएत। ककरो संकेत, ककरो कूटशब्द, ककरो ‘कऽ लिअ’ जेकाँ अर्धवाक्य आएत। मुदा कोनो संदेश नहि। मेटएबला संदेश सेहो नहि। एकदम मौन। ओ बुझि नहि सकल जे ई तकनीकी खराबी अछि कि सामाजिक निर्णय। ओकर बिनु-नेटवर्कक राति फेर जागि उठल—जतय संदेश सभ नहि, स्मृति चलैत छल।

लाउ किन-हंग होटलक खिड़कीसँ भारतीय साँझ देखैत छल। ओकरा सूचित कएल गेल जे स्थानीय सभा होइत अछि, मुदा ओकर नाम नहि पढ़ल गेल, न ओकर दान स्वीकारल गेल, न ओकर बचाव सुनल गेल। ‘किनार पर रखल गेल,’ अनुवादक कहलक। लाउ पहिने बुझल नहि। ओकर संसारमे किनार पर राखल वस्तु खसाओल जाइत छल वा कीनल जाइत छल। मुदा गढ़ नारिकेलमे किनार दण्ड छल—एहन ठाम जतय अहाँ देखू, सुनू, मुदा अपनाकेँ केन्द्र नहि बना सकू।

एडवर्ड ब्रूमकेँ ई समाचार अपन परामर्शदातासँ भेटल। ओ हँसल—“स्थानीय भावुक राजनीति।” मुदा जखन रिपोर्टमे लिखल आएल जे सभा बिनु मंच, बिनु निधि, बिनु ब्राण्ड, बिनु विदेशी साझेदारी चलि गेल, तखन ओकर हँसी रुकल। ई ओकर प्रशिक्षणक बाहरक बात छल। जे दुखक कथाकेँ ‘प्रकल्प’ बनाबय चाहैत छल, ओकरा बिनु प्रकल्प दुख बाजि उठल।

चन्ना गाछीमे तहिया, सभ लोक 'धूर्त' शब्दक उच्चारणो नहि करैत छल। एतय अपराधी सभकेँ गाली देबो सेहो केन्द्र देब होइत। बच्चा सभ कहलक—'हुनकर नाम चेतावनी-पन्ना पर रहत, मुख्य पन्ना पर नहि।' रजिस्टरक पाछाँ, कारी किनारबला पृष्ठ खोलल गेल। ओहि पर लिखल गेल—'जिनका कारण नाम घायल भेल।' नीचाँ खाली स्थान छोड़ल गेल। पूरा नाम तुरन्त नहि लिखल गेल, किएक तँ बच्चा सभ कहलक—'पहिने हुनका सभक कर्मक नाम लिखू।'

तखन पृष्ठ पर शब्द उतरए लागल—तारीखक भक्षण, देहक सौदा, स्क्रीनक फाँस, दानक मुखौटा, जातिक अहंकार, शास्त्रक चयन, स्मृतिक व्यापार, मौनक अपराध। एहि कर्म-नामक नीचाँ अपराधी सभक नाम बहुत छोट अक्षरमे लिखल गेल। बा देखैत कहलीह—'ठीक अछि। पाप पैघ अक्षरमे, पापी छोट अक्षरमे। नहि तँ पापी मरि जायत, पाप फेर आन नाम सँ जियत।'

सौम्या एहि निर्णयसँ काँपि उठली। हुनका बुझायल जे ई लोक-न्याय केवल भावुक नहि, गूढ़ अछि। गंगेशक नव्य न्याय जकरा शास्त्रमे सूक्ष्म भेद कहैत अछि, से एतय बच्चा सभक हाथमे सामाजिक विधि बनि गेल। द्रव्य आ गुण, कारण आ कार्य, उपस्थित आ अनुपस्थित—सभ ठूँठक धूलि पर उतरि रहल छल।

मीरा कहली—'जखन हम सभ हुनका सभकेँ नहि बजबैत छी, तखन ई कायरता नहि?' अनन्या उत्तर देली—'नहि। जखन आवश्यक होएत, नाम लेल जाएत। मुदा आइ हुनका सभक आँखि सँ हम अपन घाव नहि नापब। आइ हम अपन मुँह सँ अपन नाम कहब।' मीरा मुस्कुरेली। ई वैह बात छल जे ओ निजताक अधिकारमे कहैत छली—देखबाक अधिकार पीड़ितक हाथमे रहबाक चाही।

दिन ढलैत गेल। अनुपस्थित धूर्त सभक भार उपस्थित लोकक ऊपर सँ धीरे-धीरे उतरए लागल। कतेक परिवार जे पहिने कहैत छल—'ओ सभ आबि जाएत तँ?'—से आब नाम पढ़ैत काल कँपैत नहि छल। अपराधीक अनुपस्थिति पीड़ितक साहस बनि गेल। एहि बातकेँ अनन्या लिखली—'जे अनुपस्थित अछि, से डर नहि; जँ हम उपस्थित छी।'

मुदा चन्ना ठूँठक स्वभाव छल—ओ कोनो निर्णयकेँ सरल सुखमे नहि छोड़ैत। जखन अन्तिम नाम पढ़ल गेल, तखन एक झोंका उठल। कारी किनारबला पृष्ठ पलटि गेल। जे अपराधी सभक नाम छोट अक्षरमे लिखल छल, ओ परछाहीँ बनि कागचसँ बाहर खिसकि माटि पर पड़ल। लोक देखलक—नाम नहि, परछाहीँ। धूर्त सभ शारीरिक रूपेँ अनुपस्थित छल, मुदा हुनकर छाँह सभ पाथरक नामक बीच रेंगैत छल।

बच्चा सभ डरि गेल। अनन्या पाथर उठा कऽ छाँह पर राखली। छाँह हटि गेल। दोसर बच्चा दोसर पाथर राखलक। तेसर बच्चा कहलक—'पाथर पर नाम अछि, छाँह टिकि नहि सकत।' धीरे-धीरे सभ अपराधी-छाँह पाथरक घेराक बाहर धकेलायल। बूढ़बा भूत दूर सँ देखैत रहलाह, किछु नहि कहलनि। हुनकर मौनमे स्वीकृति छल।

सभा समाप्त भेल, मुदा पीड़ित परिवार सभ अपन-अपन नाम-पाथर घेराक भीतर राखि गेल। धूर्त सभ अनुपस्थित छल; हुनकर छाह पाथरक बाहर अटकल रहल।

दुपहरिया बीतल, साँझ उतरि गेल, मुदा ठूँठक पश्चिमी किनार सँ एक नमहर अन्हार टुकड़ा पसरैत रहल। सभ पूछलक—गाछि तँ कटि गेल, एतेक छाँह कतए सँ? सूर्यक दिशा बदलल? कटल जड़िक ऊँचाइँ एतेक नहि जे एहन नमहर छाह पड़ए। बा धीरे कहलीह—'ई गाछिक छाँह नहि। ई अनुपस्थित सभक छाँह अछि, जकरा नामक पहरा सँ बाहर राखल गेल।'

अनन्या रजिस्टरमे अगिला शीर्षक लिखली—'ठूँठक छाँह।' कारी पृष्ठ बन्द भेल। नामक पाथर सभ अपने-अपने स्थान पर स्थिर भेल। धूर्त सभ अनुपस्थित रहल, मुदा हुनकर छाँह अगिला दिनक पाठ बनि गेल।

लोकगीत: खाली कुरसी बाजै

लोकधुन: मौन-झूमर

बाजै हे कुरसी, खाली कुरसी बाजै हे,
अनुपस्थित धूर्तक छाह अगिला पाठ बनै हे।

धूर्त नहि आयल, कुरसी तइयो बाजल,
अनुपस्थित देहक छाह पश्चिम दिस पसरल।
नियम पढ़ल, अँगूठा लागल, दीपक राति,
मुदा खाली आसन पूछै अगिला बात।
स्मृतिक गुरुत्व छाहकेँ किनार राखै,

नामक पहरा बाहरक छलक चिन्हि लैत।
गाछि कटि गेल, लम्बी छाह कतयसँ?
बा कहली—जिनका बाहर राखल, हुनकासँ।
खाली कुरसी चुप नहि, सभसँ पैघ पुकार,
अनुपस्थित धूर्तक छाह बनल अगिला पाठ-सार।

धूर्त ने आयल, तइयो आसन बजैत रहल,
'गाछी कटल, नमहर छाह कतऽ सँ?'—प्रश्न,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—मोबाइलक अफवाह: नगरमे मोबाइल सन्देश पसरल—"आइ राति बान्ह टूटत; सभ घर छोड़ू।" सन्देशक स्रोत नहि, केवल अनेक अग्रेषित चेन्ह छल। स्रोतक ज्ञान, तात्पर्य, दोष, प्रसङ्ग आ बाधक प्रमाण देखू।" अफवाह थमल।]

अध्याय ९२

ठूँठक छाँह

ठूँठक छाँह छोट, मुदा ओहिमे बैसनिहारक कान पैघ भऽ जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: बाढ़िक बाद हरियाली

लोकधुन: चौमासा-मंगल

गाबू हे चौमासा, बाढ़ियो मे मंगल गाबू हे,
ऊँच मचान, बीजक डिब्बा, नाव सजाबू हे।

बाढ़ि फेर आयल तइयो नाव तैयार राखू,
ऊँच मचान, बीजक डिब्बा, संगक हाथ सम्हारू।
पानि उतरला पर गाद खेतकेँ उर्वर करै,
विपदा पाछाँ श्रमक गीत नव हरियाली धरै।

घर टूटल तँ मिलि कऽ फेर मजबूत घर बनाउ,
नदीक स्वभाव बुझि सुरक्षित बसावट सजाउ।
बाढ़िक बाद हरियाली आशाक पुरान रीति,
मिथिलाक धैर्य कहै—फेर उठब, फेर प्रीति।

पानि चढ़ल तँ धीरज चढ़ौ, उतरल तँ कोदारि,
गादक तह मे नुकाएल अछि अगिला फसिलक बारी।
टूटल घर मिलि-जुलि उठत, ऊँच-सुरक्षित ठाम,
मिथिलाक धैर्य कहत—फेर उठब, फेर काम।

❖

धूर्त सभक अनुपस्थितिक बाद गाममे जे शान्ति उतरि आयल छल, से शान्ति आरामक नहि, सुननाइक छल। सभा समाप्त भेलाक बादो लोक ठूँठक चारू कात सँ तुरन्त उठि नहि गेल। जकरा सभकेँ आबय कहियो रोकल नहि गेल छल, ओ सभ नहि आयल; जकरा सभकेँ कहियो मंच पर बैसाएल गेल छल, ओ सभक खाली कुर्सी तक नहि लगाओल गेल। ठूँठक सोझाँ बस माटि, पाथर, नाम, बच्चाक हाथ, आ साँझक धूप छल। मुदा ओहि अनुपस्थितिमे सेहो कतेक चेहरा लटकल छल—बटुकनाथ हरिहरनक अस्थिर नेत्र, चन्द्रपाल बत्राक अधूरा नाम, राघवक बन्द जाल, लाउ किन-हंगक लाभहीन मौन, ब्रूमक भीजल दान-पत्र।

दुपहरियाक समय छल। चन्ना गाछीक विशाल देह आब नहि रहल, मुदा कटल ठूँठक छाह अस्वाभाविक रूपेँ नमहर पड़ैत छल। धूप माथ पर छल, तथापि छाह ओहि दिशामे सरकैत जाइत छल जइ दिशामे कमला-बलानक पुरान धारा कखनो बहैत छल। आरुणि पहिने

सोचलक—धरती असमतल अछि; फेर छाहक रेखा देखलक। ओ रेखा सोझ नहि छल, लहरदार छल। जनु गाछि कटि गेलाक बाद ओकर छाँह जल बनि गेल हो।

अनन्या चुपचाप ओहि छाँह पर पाथर राखए लागली। प्रत्येक पाथर एक नामक छल। छाँह पाथरकेँ निगलैत नहि, ओकरा चारू कात ठहरैत छल। बच्चा सभक खेल फेर शुरू भेल, मुदा एहि बेर कबड्डी मैदानक सीमा छाँह सँ बनल। जे बच्चा छाँहक भीतर पैसैत, ओकरा साँस रोकि 'कबड्डी' नहि, 'उपस्थित' कहैत घूमबाक छल। जे बाहर अबैत, ओकरा एक नाम मोन सँ दोहरएबाक। ई खेल नहि, स्मृतिक व्यायाम बनि गेल।

बा कहलीह, 'ठूँठक छाँह गाछिक छाँहसँ बेसी कठिन होइत अछि। गाछिक छाँहमे देह आराम पबैत अछि; ठूँठक छाँहमे मन उत्तरदायित्व पबैत अछि।' ककरो बुझाइत नहि छल जे ई वाक्य आशीर्वाद अछि कि चेतावनी। मुदा बच्चा सभ ओकरा रजिस्टरक कोरामे लिखि लेल। ओ सभ जानैत छल—जिनकर वाक्य तुरन्त नहि बुझाए, तकरा जल्दी नहि फेकबाक चाही।

गंगेशक प्रश्न फेर उठल। एक छोट बालक, जे पाठशालामे नव्य-न्यायक नाम सुनि चुकल छल, छाँहकेँ देखैत पूछलक—'छाह प्रमाण अछि कि नहि?' सभ हँसि देबाक छल, मुदा अनन्या हँसल नहि। ओ कहली, 'प्रत्यक्ष छाह अछि; अनुमान गाछिक स्मृति अछि; शब्द बा कहैत छथि; आ चारिम प्रमाण—जकर नाम पर छाँह ठहरे, ओकर घरक रोदन।' बालक गंभीर भऽ गेल। ओकरा बुझाइ गेल जे तत्त्वचिन्तामणि केवल ग्रन्थ नहि; ओहि ग्रन्थक प्रश्न एखन माटि पर लहराइत अछि।

मीरा छाँहक रेखा पर खसि पड़ल एक सूखल पात उठौली। पात पर ककरो पएरक धूलि छल। ओ कहली, 'छाँह सभकेँ छू सकैत अछि, मुदा कोनो चेहराक अधिकार नहि छीनैत। जे एहि ठाम फोटो खिंचए, ओकरा मोन रहए—छाँह सामूहिक अछि, चेहरा व्यक्तिगत।' बच्चा सभ अपन नियममे एक पंक्ति जोड़लक—'छाँहक चित्र लेल जा सकैत अछि, चेहराक नहि, जँ अनुमति नहि हो।' स्मृति धीरे-धीरे आचार बनैत छल।

देविका ठूँठक पाछाँ बैसली। उज्ज्वलक नामक पाथर छाँहक सीमान पर छल। जखन धूप बदलल, छाँह ओ पाथर पर सँ हटि गेल; फेर किछु क्षण बाद फेर घुरि आयल। देविकाकेँ बुझाइत रहल जे स्क्रीनमे डूबल युवकक नामो आब माटि, धूप, छाँह, समय आ बच्चाक स्वरमे घूमि रहल अछि। डिजिटल जाल ओकरा निगलि गेल छल, मुदा स्मृति ओकरा केवल शोकमे नहि, पहराक नियममे बदलि रहल छल।

ओहि दिन सत्यव्रत मेहता बहुत देर धरि नहि बजलाह। हुनका लग कागच छल, मुदा ओ कागच पर कलम नहि चलौने रहथि। छाँह हुनका पएर धरि आयल, तखन ओ धीरे सँ चप्पल उतारि देलखिन। जँ छाँह जड़िक साक्षी अछि, तँ जूता पहिरि ओकर भीतर पैसब अपमान होएत—कदाचित हुनका ई बुझाइत छल। कियो हुनका देखलक नहि; मुदा बा देखलीह आ माथ हिलेलीह।

बटुकनाथक संतान दूर सँ आयल। ओ सभामे भाग नहि लेने छल, मुदा आब ठूँठक छाँहकेँ देखए आयल। ओकर हाथमे बापाक पुरान कलम छल। ओ बच्चा सभकेँ कहलक, ‘ई कलम सँ हमर पिता कतेको याचिका पर सही केलनि। हम एकरा पाथर लग राखि सकैत छी?’ अनन्या पूछली, ‘कलम दोषी अछि कि हाथ?’ ओ चुप। ई प्रश्न सरल नहि छल। अन्ततः कलम पाथर पर नहि, ओकरा पाछाँ माटि पर राखल गेल—दोषक उपकरणकेँ नामक बराबर ठाम नहि, मुदा गवाहीक बाहर सेहो नहि।

साँझसँ पहिने चन्द्रपाल बत्राक अधूरा नामक कागच कियो आनि देलक। ओ स्वयं नहि आयल। कागच पर चारि बेर नाम शुरू भेल छल, चारू बेर ‘प्रतिशत’ बनि गेल छल। बच्चा सभ कागच पढ़लक, ओकरा हँसीमे उड़ेलक नहि। अनन्या कहली, ‘जे अपना नाम नहि लिखि सकैत, ओकरा नाम सुनबाक दण्ड भेटत।’ से कागच छाँहक बाहरी रेखा पर राखल गेल। हवा उठल, कागच काँपल, मुदा उड़ा नहि।

राघवक दिस सँ कोनो संदेश नहि आयल। बिनु जालक ओ जे राति बितौने छल, ओकरा बाद ओ पातक खरखराहट सँ डरए लागल छल। मुदा ठूँठक छाँहक भीतर एक अजगुत बात भेल—जतय-जतय छाँह लहराइत, ओतय सूखल पात सभ ओहि तरह सजैत जेना संदेशक पंक्ति हो। बच्चा सभ पात पढ़ए नहि गेल। ओ सभ बुझि गेल छल—सभ संदेशक उत्तर देब जरूरी नहि; किछु संदेश स्वयं अपन जालमे सूखि जाए, से उत्तम।

लाउ किन-हंग एहि सभसँ दूर, अपन अतिथि-गृहक काँचक कोठरीमे बैसल छल। ओकरा खिड़की सँ चन्ना गाछी नहि देखाइत छल, मुदा दुपहरियामे ओकर मेज पर जे छाह पड़ल, से ओहि ठूँठक छाह जेकाँ लहरदार छल। ओ परदा तानलक, छाह भीतर घुसल। बत्ती जरौलक, छाह पाछाँ हटि कऽ देबाल पर चढ़ल। ओकरा बुझाइ गेल—एहि गाममे जे अनुपस्थित रहै, ओकरा छाँह सँ छुटकारा नहि।

ब्रूम अपन परामर्शदाता सभसँ कहल—“स्थानीय मनोविज्ञान, छाया-अनुष्ठान, सामुदायिक बिम्बावली।” ओकर सचिव लिखैत रहल। मुदा जखन ओ ‘छाया’ बाजल, तखन

ओकर लैपटॉपक परदा कारी भऽ गेल आ ओकरा अपन दान-पत्रक भीजल स्याही देखाइ देलक। स्मृतिपर निविदा, दान, शोध, विरासत आ अनुप्रयोग—सभ अपन-अपन भाषा लऽ कऽ आयल छल; ठूँठक छाँह ओहि सभ भाषाक पाछूक नुकायल लाभकेँ प्रकाशमे खिंचि रहल छल।

राति पड़बाक समय बच्चा सभक कबड्डी फेर आरम्भ भेल। एहि बेर कोनो भूत मैदानमे नहि उतरल। भूत सभ कगार पर बैसल, जनु शिक्षक सभ परीक्षा देखैत हो। बच्चा छाँहक भीतर पैसैत—'उपस्थित... उपस्थित... उपस्थित...' कहैत दौड़ैत, फेर बाहर आबि एक नाम दोहरबैत। जे नाम बिसरि जाए, ओकरा बाहर नहि मानल जाए। ओ फेर भीतर जाए, साँस सम्हारि नाम मोन करए। एहि खेलमे जीत हार कम, स्मृति अधिक छल।

ठूँठक छाँह रातिमे सेहो मेटायल नहि। चन्द्रमा उगल, तखन छाँह उनटे चाँदीक रेखा बनि गेल। लोक कहलक—एहन केना? छाँह तँ अन्हार होइत अछि। बा कहलीह, 'जे छाँह स्मृति सँ बनैत अछि, से अन्हारोमे उजास रहैत।' ई बात सुनि सत्यव्रत मेहता पहिल बेर मुस्कुरेलाह, मुदा मुस्कीमे थाकनि छल। ओ बुझि रहल छलाह—कानून छाह मापि सकैत नहि; मुदा समाज जँ चाहए, तँ छाँहकेँ शरण बना सकैत अछि।

मध्यराति लग कमला-बलान दिस सँ पानिक गन्ध उठल। बरखा नहि भेल छल, तथापि हवामे नदीक भीजल चेतावनी छल। आरुणि आकाश दिस देखलक—दूर कारी बादर, जे दिनभरि पहाड़ जेकाँ ठाढ़ छल, आब धीरे-धीरे गढ़ नारिकेल दिस खिसकि रहल छल। ठूँठक छाँह एक क्षण लेल पानिक दिशामे नमहर भऽ गेल, फेर सकुचि कऽ पाथरक नाम सभकेँ छू लेलक। जनु गाछि आगाँक संकटक खबर दऽ रहल हो।

अनन्या तुरन्त बच्चा सभकेँ कहली, 'रजिस्टर बाँधू। नामक पाथर उठाएब नहि, मुदा ओहि सभक प्रतिलिपि बनाउ।' बच्चा सभ दौड़ि गेल। कागच, कपड़ा, कोरा पात, माटिक तख्ती—जे भेटल, ताहि पर नामक नकल शुरू भेल। पहरा आब स्थिर नहि रहि सकैत छल। जँ पानि आएत, नामकेँ चलब सीखए पड़त।

सत्यव्रत मेहता अपना झोरा सँ पुरान शपथपत्रक खाली कागच निकाललनि। कहलखिन, 'कागच राजकाजक छल, आब लोककाजक हो।' मीरा कपड़ा काटि पट्टी बनौली। देविका नाम पढ़ैत गेली। गोप नकल मिलबैत गेलाह। ईरा विदेशक बच्चा सभकेँ पठाएबाक लेल अलग सूची बनबए लागली। गाम बुझि गेल—छाँह केवल विश्राम नहि देलक; ओ बाढ़िक पहिल सूचना देलक।

भोरसँ ठीक पहिने पहिल मोट बून्द खसल। से ठूँठ पर नहि, ‘जेकर नाम नहि भेटल’ लिखल पाथर पर पड़ल। पाथर भीजल, अक्षर गाढ़ भेल। बा कहलीह, ‘जिनका नाम नहि भेटल, हुनकरे पहिने पानि खबर देलक।’ बच्चा सभ चुप। नदीक गन्ध आब स्पष्ट। दूर सँ कमला-बलानक आवाज, जे बरखौं सँ लोक सुनैत छल, फेर घुरि रहल छल—कने भारी, कने अधीर, कने पुरान।

ठूँठक छाँह धीरे-धीरे पानिक दिशामे पसारि गेल। ओहि छाँहमे धूर्त सभक अनुपस्थिति, बच्चा सभक पहरा, गंगेशक प्रश्न, स्त्री सभक शपथ, मजदूरक पएर, स्क्रीनक उपवास, आ नामक संविधान सभ एक साथ ठाढ़ रहल।

आ पानि, जे एखन धरि गन्ध छल, आब घुरि रहल छल।

लोकगीत: ठूँठक छाहमे कान

लोकधुन: छाहरि गीत

बैसू हे छाहरि मे, नान्हि छाहरि मे बैसू हे,

ठूँठक छाह छोट, कान ओतय पैघ,
बैसि सुनू, दूर नदीक गन्ध आबै मेघ।
पहिल बून्द ‘नाम नहि भेटल’ पाथरपर खसल,
अक्षर गाढ़ भेल, अनामक स्वर जगल।
जिनका नाम नहि, पानि पहिने खबर देलक,

कमला-बलान पुरान हिसाब संग घुरि चललक।
धूर्तक छाह, नेनाक पहरा, स्त्रीक शपथ संग,
स्मृतिक सभ रेखा पानिदिस भेल अभंग।
छाहरिमे बैसू, अन्हार बुझि नहि भागू,

ठूँठक छाह छोट, मुदा कान ओतऽ पैघ,

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—न्यायालयक साक्षी: न्यायालयमे दू साक्षी एक घटना विषयमे भिन्न कथन देलक। एक साक्षीक प्रत्यक्ष दोषयुक्त छल; दोसरक तात्पर्यमे पक्षपात।]

अध्याय ९३

पुनः बाढ़ि

नदी चुप्पीमे विश्वास नहि करैत— ओ फेर आबि कऽ पुरान हिसाब खोलि दै छै।

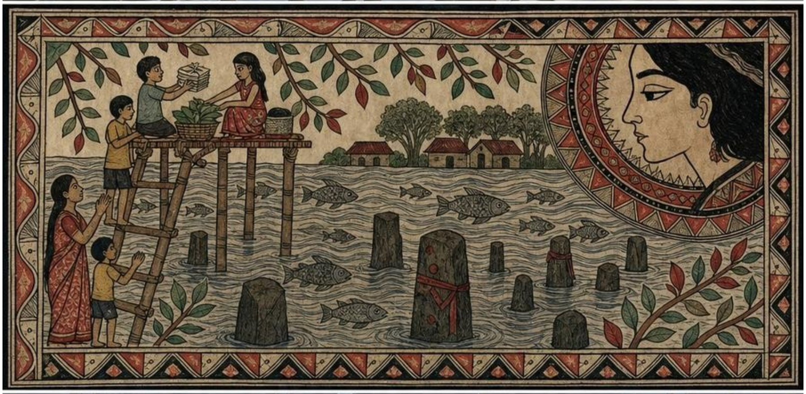

अध्यायारम्भ लोकगीत: गोहि चिन्हू, नदी बचाउ

लोकधुन: नदी-जागरण गीत

चिन्हू हे गोहि, दुनू गोहि चिन्हू हे,
पानिक आ छलक—रूप अलग गिनू हे।

पानिक गोहि प्रकृतिक, छलक गोहि अलग,
रूप चिन्हू, नदीकेँ दोष नहि दिअ गलत।
जलचरक घर बचाउ, मनुखक लोभ घटाउ,
अपराधक दाँत चिन्हि कऽ सही ठाम रोकाउ।

नदी साफ रहत तँ गोहि अपन सीमा मानत,
जनक पारदर्शी शासन छलक भूख हरत।
गोहि चिन्हू, नदी बचाउ, विवेकक दीप धरू,
प्रकृति आ न्याय दुनूकेँ संतुलित आदर करू।

जलचर अपना घर मे, ओकरा दोष नहि दिअ,
लोभक गोहि जतऽ देखू, ओतऽ रोक धरि दिअ।
नदी निर्मल, शासन खुलल—दुनू संग चलत,
विवेकक दीप बरत तँ सीमा सभ सम्हरत।

❖

ठूँठक छाँह जतेक दूर पसरल, ओतेक दूर धरती शान्त देखाइत छल। मुदा कमला-बलानक पानि चुप्पीमे कखनो विश्वास नहि करैत। ओ नदी जे बरखों धरि गामक कछेरामे स्मृति, देह, नाम, हड्डी, माटि आ चुप्पी सभ उठबैत-डुबबैत रहल छल, ओहि दिन फेर दूरसँ भारी गन्ध पठओलक—भीजल कादो, टूटल बाँस, भासैत पात, आ अघाएल आकाशक गन्ध। लोक बुझि गेल—बाढ़ि फेर आबि रहल अछि।

पहिने बादर आबि चन्ना गाछीक कटल ठूँठ पर झुकल। ओहि ठूँठ पर जे हरियर बिन्दु फूटल छल, से बून्दक पहिल चोट पर काँपि उठल, मुदा टूटल नहि। बच्चा सभ ओकर चारूकात माटि चढ़ाओलक। अनन्या कहली, “एहि बेर गाछ नहि बचाओब मात्र, नाम सेहो बचाओब।” ई वाक्य सुनिते नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा सभ दौड़ि गेल—कियो रजिस्टर उठए, कियो पाथर गिनए, कियो बूढ़ सभकेँ खबर करए।

गढ़ नारिकेलमे बाढ़ि पहिने डर बनि अबैत छल। घरक भीतर बोरा, केबाड़, मचान, धान, पशु, बच्चा—सभक अलग-अलग चिन्ता। एहि बेर डर संग एकटा नब जिम्मेदारी छल। नामक संविधानक पन्ना, उपस्थितक रजिस्टर, अनाम सभक पाथर, स्त्री सभक राति-सभाक लाल डोरी, मजदूरक पएर सँ उठाओल माटि, गंगेशक प्रश्न लिखल पात, मीरा केर निजताक शपथ—ई सभ वस्तु मात्र नहि रहल। ई सभ स्मृतिक चल-अचल धरोहर छल। पानि जँ आबत, पहिने एकरा ऊँच ठाम लए जाएब पड़त।

आरुणि पुरान पुलक दिशा देखलक। पानिक पहिल भारी धक्का ओहि दिस सँ आएत। पुल, जे कखनो विकासक झूठक प्रतीक बनल छल, आब जलक पहरुआ जेकाँ दूर ठाढ़ रहल। ओकर पाया लग बहैत बालुमे कतेको मजदूरक पएरक छाप जेना एखनहुँ धँसल छल। आरुणि अपन भीतर कहलक—“एहि बेर ककरो नाम पानिमे बिनु गवाही नहि जाएत।”

बा घरक ओसारि पर बैसलीह। लोक हुनका भीतर चलबाक कहैत छल, मुदा ओ उठैत नहि छलीह। ओ कहलीह, “हमर बाढ़ि बहुत देखल अछि। पानि जखन अबैत अछि, पहिने ओ पूछैत नहि। मुदा एखन हम पूछब—ककरा लऽ जाएब? कोन नाम बचाएब? कोन झूठ बहाएब?” हुनकर प्रश्न पर हवा गरजल। दूर बिजली चमकल। कटल चन्ना ठूँठक छाह एक क्षण लेल फेर नमहर भऽ गेल।

देविका आ निशान्त स्क्रीनक उपवासक दिन बनाओल बाल-मण्डलीकेँ फेर जमा कयलक। एहि बेर मोबाइल बन्द नहि, पर नियन्त्रित। जे खबर देबाक, से देब; जे अफवाह पसरएबाक, से रोकब। चन्द्रपालक श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग फेर सक्रिय भेल—बाढ़ि सहायता, नामक बचाव, दान, तात्कालिक सूची—सभक बहाना। देविका साफ कहली, “जे लिंक नाम माँगै, ओकर नाम पहिने पूछू।” बच्चा सभ हँसल, मुदा ओहि हँसीमे युद्धक तैयारी छल।

मीरा अपन घर सँ मोट कपड़ा, तेलक डिब्बा आ जलरोधी थैली आनली। ओ स्त्री सभक संग नाम-पन्ना लपेटए लागली। प्रत्येक पन्नाक संग एक पर्ची—“एहि नामक अधिकार ओकर परिवारक।” विदेशी शोध-दलमे सँ एक युवती सहयोग करए आगाँ बढ़ली। मीरा ओकरा रोकली नहि, केवल कहली, “फोटो बादमे। पहिने हाथ सुखाउ।” ओ युवती चुपचाप हाथ पोंछलक आ पन्ना पकड़लक। स्मृति पर शोध करबाक पहिल पाठ ओकरा ओहि क्षण भेटल—कागच बचाउ, कैमरा नहि।

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन जन-सुनवाईक बही समेटि रहल छलाह। पानि बढ़बाक समाचार सुनिते हुनकर चेहरा बदलल नहि, मुदा हाथक गति तेज भेल। ओ लिखल नोट सभ तीन भागमे

बाँटलथि—नाम, मौन, अपराध। फेर रुकि गेलाह। हुनका लागल, ई तीन भाग पर्याप्त नहि। ओ चारिम बण्डल बनौलथि—“अधूरा सुननाइ।” किएक तँ बाढ़ि केवल पूरा कथा नहि बहबैत, अधूरी कथा सभकेँ पहिने चिबा जाइत अछि।

गोप कुमार गुप्त सूची सभ लऽ कऽ अएलाह। बरखा सँ बचाबय ओकरा सभकेँ प्लास्टिकमे लपेटल गेल छल, मुदा गोपक चेहरा पर विश्वास नहि छल। ओ अनन्यासँ कहलनि, “कागच भीजि सकैत अछि। प्रतिलिपि चाही।” अनन्या उत्तर देली, “प्रतिलिपि कागचक नहि, कण्ठक बनत।” तखन बच्चा सभ दस-दस नाम कण्ठस्थ करए लागल। जँ बही डूबत, तखन नाम बच्चा सभक साँसमे बचत।

एहि तैयारीक बीच पहिल बून्द नहि, पहिल थप्पड़ पड़ल। आकाश सँ पानि एना टूटल जेना ककरो पुरान बाँध खुलि गेल हो। कच्चा घरक छप्पर गरजल, पोखरि भरि उठल, गलीमे पानि पसरल। हवामे भीजल खढ़ आ चूल्हिक मिझाइत धुआँक गन्ध एक भऽ गेल; जीह पर बरखाक पानि माटिक स्वाद नेने उतरल। चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात राखल पाथर सभ चमकए लागल। जिनका पर नाम लिखल छल, ओ अक्षर पानिमे मलिन नहि भेल; उनटे अधिक गाढ़ देखाइत। बा कहलीह—“देखू, जे नाम सुनल गेल, ओकर स्याही पानिसँ नहि डरैत।”

राति होइत-होइत गामक नीचला भागमे पानि पैसि गेल। बछड़ा खोलल गेल, ओछाओन मचान पर चढ़ल, अनाज टोकरीमे बाँधल, बूढ़ सभकेँ ऊँच विद्यालय भवन दिस लए जाएब शुरू भेल। मुदा बच्चा सभ पहिने ठूँठक चारूकात आयल। ओ सभ पाथर उठबैत नहि छल; पाथर भारी छल, आ पाथरक ठाम बदलनाइ ओहि नामक भूमि बदलनाइ होइत। तें ओ सभ प्रत्येक पाथरक छाप माटिमे दबा कऽ, ओहि छाप पर छोट नारिकेल पात राखलक। पाथर डूबि सकैत छल; छाप रहत।

तखन बूढ़बा भूत देखाइ पड़लाह। एहि बेर धुँआ नहि, न झिलमिल। बरखा बीच ओ जतेक साफ देखाइ पड़लाह, ओतेक कखनो नहि। ओ कटल ठूँठ लग ठाढ़ भऽ कहलनि, “कबड्डी के बन्द करब?” बच्चा सभ चौंकल। अनन्या कहली, “बाढ़िमे?” बूढ़बा भूत हँसलाह—“बाढ़िमे साँसक असली परीक्षा होइत अछि। जे पानिक बीच ‘कबड्डी’ कहि सकै, से डरक घर सँ नाम निकालि सकै।”

एना कहिते बच्चा सभ पानिमे उतरि गोल बनौल। ठेहुन धरि पानि, माथ पर बरखा, दूर बिजली, चारूकात लोकक हाँक। ठोर पर बरखाक बून्द नोनगर लागैत छल, आ प्रत्येक ‘कबड्डी’क संग मुँह सँ बहराइत गरम साँस ठण्ढा पानिक ऊपर छोट-छोट धुआँ जेकाँ उड़ैत छल।

ओ सभ धीरे-धीरे ‘कबड्डी-कबड्डी’ कहए लागल। ई खेल जीत-हारक नहि छल। प्रत्येक बच्चा एक नाम लैत, पानिक गोलाइ काटैत, दोसर कात पर पहुँचा दैत। ‘सरयू उपस्थित’, ‘उज्ज्वल उपस्थित’, ‘मुन्ना उपस्थित’, ‘अनाम उपस्थित’, ‘मजदूर उपस्थित’, ‘चर्मकारिणी उपस्थित’, ‘गंगेश उपस्थित’—कबड्डी नामक नाव बनि गेल।

सौम्या एहि दृश्यकेँ देखैत रहली। ओकर मन पत्रकारक जेकाँ चित्र पकड़ए चाहैत छल, मुदा ओहि दिन ओ कैमरा नहि उठेली। ओ कण्ठ सँ नाम दोहराबए लागली। ईरा विदेशक बच्चा सभकेँ लिखल अपन पत्रक एक पाँति मोन पाड़ली—“गाम दृश्य नहि, उत्तरदायित्व अछि।” आब ओ पाँति पानिमे सत्य भऽ रहल छल।

दूरसँ अफवाह आयल—ऊपरक बाँध टूटि सकैत अछि। कियो कहलक, “सभ छोड़ू, जान बचाउ!” ई वाक्य स्वाभाविक छल। मुदा प्रश्न उठल—जान की? देहक जान, नामक जान, स्मृतिक जान? आरुणि निर्णय देलक—पहिने मनुष्य, फेर दस्तावेज, फेर पाथर। मुदा बच्चा सभ जोड़लक—“नाम मनुष्यक संग जाएत।” तें प्रत्येक बचाव-दलमे एक बच्चा, एक रजिस्टर, आ दस मौखिक नाम तय भेल।

सत्यव्रत मेहता विद्यालय भवनमे अस्थायी सुननाइ-कोन बनौलथि। जे परिवार पानिसँ भागि आयल, ओकर नाम पूछल नहि गेल; ओकरा पहिने सुखाओल गेल, गरम पानि देल गेल। फेर जँ ओ स्वयं कहए, तखन नाम लिखल गेल। मीरा कड़ाई सँ कहैत रहली—“बाढ़िक पीड़ा सेहो तमाशा नहि।” एहि संकटमे निजताक शपथ फेर कसौटी पर छल।

मध्यराति, जखन पानि कान्ह धरि बढ़बाक भय जगाबय लागल, तखन चन्ना ठूँठसँ अजीब इजोत उठल। हरियर बिन्दु जे कोंपल बनए चाहैत छल, ओ पानिक भीतरसँ झिलमिलायल। ओ इजोत साँस लैत जेकाँ कखनो मद्धिम, कखनो गाढ़ होइत छल, आ ओकर हरियर आभा पानिक काँपैत सतह पर टूटि-टूटि पसरैत छल। पानि ओकरा डुबा नहि रहल छल; ओ पानिक भीतर उजासक दाना बनि रहल छल। बूढ़बा भूत मन्द स्वरमे कहलनि—“गाछ पानि पढ़ि रहल अछि।”

ओहि क्षण कमला-बलानक धारि सँ एक गम्भीर आवाज आयल—न नदीक, न मनुष्यक। जेना पानि स्वयं पुरान अभिलेख पढ़ैत हो। जिनका नाम बच्चा सभ कबड्डीमे घुमौने छल, ओ सभ आवाजमे अलग-अलग तरंग जेकाँ घुरल। लोक सुनलक—कतेको नाम, कतेको अधूरा, कतेको जे कखनो लिखल नहि गेल छल। बाढ़ि एहि बेर केवल बहबए नहि, घुराबए सेहो आयल छल।

मुदा पानि संग सदिखन मित्रता नहि होइत। एक घरक भीत खसल। एक गोदामक भीतर रखल दान-सामग्री बहि गेल। चन्द्रपालक अनुप्रयोग पर नकली सहायता-खाता चमकल। राघवक गुप्त कोडमे ‘आपदा अवसर’ लिखल गेल। ब्रूमक दलमे सँ कियो राहत-परियोजना प्रस्ताव बनाबय लागल। गोहि सभक दुनियाँ कखनो बाढ़िमे सुतैत नहि। संकट जतेक गाढ़, लोभक आँखि ओतेक तेज।

भोरक ठीक पहिने, बरखा कने थमल। धुँधलकामे लोक देखलक—पानिक सतह पर किछु लम्बा कारी आकार धीरे-धीरे बहैत अछि। पहिने कियो लकड़ी बुझलक, फेर कियो साँस रोकलक। पानि पर दू चमकैत आँखि उठल, फेर गायब भेल। बा लाठी कसि पकड़लीह। अनन्या रजिस्टर छाती लग सटओली। बूढ़बा भूत फुसफुसेलाह—“आब ओ सभो घुरि रहल अछि।”

बाढ़ि आबि गेल छल। नाम बचि रहल छल। कबड्डी पानिमे उतरि गेल छल। आ कमला-बलानक धूसर धारिमे, कटल चन्ना गाछीक छाँहक पार, गोहि सभक पहिल पाँखुर फेर चमकल। अगिला सुननाइ पानिक तलसँ उठबाक छल।

लोकगीत: बाढ़ि फेर आयल

लोकधुन: चौमासा करुण गीत

लऽ जाउ हे बाढ़ि, घर लऽ जाउ हे,
मुदा नाम ने बहाउ—गवाही उठत तर सँ हे।

नदी चुप्पी मानै नहि, पुरान हिसाब खोलै,
कमला-बलान देहरी-देहरी नामक पाथर तोलै।
रजिस्टर छाती लग, बा लाठी कसि धरली,
बच्चा मचानपर स्मृति, दीप, पात चढ़ौली।
धूसर पानिमे कारी आँखि दू बेर चमकल,

बूढ़बा कहलक—ओ सभ फेर घुरि आयल।
नाम बचल, कबड्डी पानिमे उतरि गेल,
लोभक नाव संकटमे नब प्रस्ताव लऽ भेल।
बाढ़ि, हमर घर लऽ जाउ, नाम नहि बहाउ,
पानिक तलसँ उठत गवाही, सुनबाक दीप जराउ।

नेना मचान पर स्मृति-दीप-पात चढ़ौली।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—ओही "ग" फेर?: गुरु पहिने "ग" उच्चारित कएलनि, फेर किछु देर बाद दोबारा "ग"।]

अध्याय ९४

गोहि सभक वापसी

दिनमे पानि मटियाल, रातिमे कारी तेल— गोहि रंग नहि बदलैत, इजोत बदलै छै।

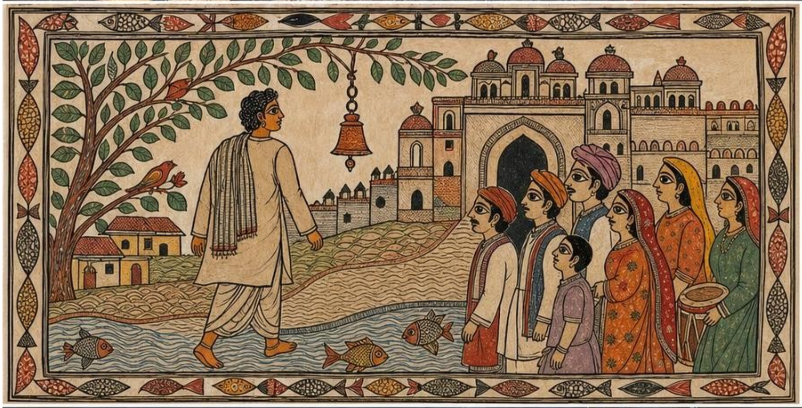

अध्यायारम्भ लोकगीत: सौदासँ ऊपर जीवन

लोकधुन: सौदा-विरहा से मंगल

लिखू हे सीमा, बाजारो मे सीमा लिखू हे,
जे बिकाउ नहि—देह, सहमति, साँस—रेख खिंचू हे।

अन्तिम सौदामे नाम नहि, जीवन पहिने मान,
दामक तराजू नापि नहि सकै मनुखक प्राण।
कागचपर सीमा लिखू—जे बिकाउ नहि होए,
देह, सहमति, स्मृति, श्वास स्वतन्त्रतामे सोए।

व्यापार सेवा बनि रहय, लोभ नहि सरकार,
लाभक संग जिम्मेदारी हो स्पष्ट व्यवहार।
सौदासँ ऊपर जीवन—बाजारो ई सीखू,
मानव मानक रेखा भीतर सभ अनुबंध लिखू।

तराजू पर सोना चढ़ौ, प्राण नहि चढ़त,
दामक अंक सँ ऊपर मनुखक मान बढ़त।
लाभक संगे जिम्मेदारीक खाता खोलू,
सेवा-भावक बटखरा सँ व्यापार तौलू।

❖

जे सुननाइ पानिक तलसँ उठबाक छल, तकर पहिल गवाही बाढ़िक दोसर राति भेटल। ओहि राति पानि अपन असली रंग देखबऽ लागल। दिनमे जे पानि केवल पीयर, मटियाल, दयनीय आ छपछप करैत बुझाइत छल, राति पड़िते से कारी तेल जेकाँ चमकए लागल। ठूँठक चारू कात राखल नामक पाथर सभ आधा डूबल छल, मुदा अक्षर ऊपर रहि गेल छल। बच्चा सभ रजिस्टर, पाथर, पुरान पात, आ ठूँठक हरियर बिन्दुकेँ ऊँच स्थान पर राखि चुकल छल। तइयो पानि जतेक चढ़ैत गेल, चन्ना गाछीक पुरान अन्हार ओतेक पानिमे घुलि कऽ घुरैत गेल।

पहिल गोहि केओ नहि देखलक। बस पानिक एक लमछर रेखा चुपचाप कटि गेल। जेना कारी कपड़ापर कियो छुरी बिनु आवाज चला देने हो। रेखाक कटबाक कोनो शब्द नहि छल, मुदा ओकर ठण्ढा हिलकोर घाट लग ठाढ़ लोकक पिण्डरी छूबि गेल — देह पहिने बुझलक,

आँखि बादमे। फेर दोसर रेखा उठल। तेसर। चारिम। नदीक जलमे जे सभ छाह बरखों धरि कथा बनि फिरैत छल, से आब देहक आकारमे लग आबए लागल। लोकक मुँह सँ एकहि शब्द निकलल—“गोहि।”

पहिने डर पसरल। स्त्री सभ बच्चा सभकेँ पाछाँ खिंचलक। बूढ़ सभ लाठी उठा लेलनि, जेना लाठी सँ पानिक जीव रोकल जा सकैत हो। देविका रजिस्टर छाती सँ लगा लेली। ईरा एक पल लेल स्तब्ध रहि गेली। ओकरा एना बुझायल जे बचपनमे सुनल प्रत्येक कथा, प्रत्येक चेतावनी, प्रत्येक डूबनाइ, प्रत्येक बेनाम लाश, प्रत्येक ‘पानिमे नहि उतरिह’ एक साथ ओकरा आगाँ देह धऽ कऽ तैरि रहल अछि।

मुदा अनन्या पाछाँ नहि हटली। ओ पाथरक घेरा लग ठाढ़ भऽ कहली—“साँस देखू।” ककरो बुझाइ नहि पड़ल। ओ फेर कहली—“जे खएबा आयल अछि, से जल्दी करैत अछि। जे सीमा देखए आयल अछि, से साँस रोकि धीरे तैरैत अछि।” बच्चा सभक कबड्डी प्रशिक्षण एखन नदीक पढ़ाइ बनि गेल छल। ओ सभ गोहि सभक गति देखए लागल। सचमुच, ओ सभ आक्रमण नहि करैत छल; ओ सभ गोलाइ बना कऽ तैरैत छल।

पानिक बीच सभसँ पैघ गोहि ठूँठक सीधमे रुकल। ओकर माथ पानि सँ कने ऊपर, आँखि दूटा अन्हारक दीप जेकाँ। ओकर देहक संग पानिक तर सँ एक गहींर गन्ध उठल—सोन्हगर कादो आ पुरान लकड़ीक सड़ल मिझरायल गन्ध, जेना नदी अपन पेटक अभिलेखागार खोलि देने हो। लोक पाछाँ ससरल। मुदा गोहि आगाँ नहि बढ़ल। ओ ठूँठक डूबल जड़ि दिस ताकैत रहल। चन्ना गाछी, जे कटायल छल, पानिमे फेर छाह बनि पसरि गेल। जड़ि पानि भीतर अपन पुरान बाँह खोलि रहल छल। गोहि जेना ओहि बाँहक पहरुआ हो।

बा धीरे कहलीह—“ई सभ खाएबला मात्र नहि। ई सभ सीमा रखएबला जीव अछि।” कियो पूछलक—“देह चिबएत अछि, से सीमा रखएत?” बा उत्तर देलीह, “जकरा हम खाएब कहैत छी, ओ प्रकृतिक विधानमे कतेक बेर पार उतारएबाक द्वार होइत अछि। डर हमरा आँखि खाइत अछि। गोहि देह खाइत अछि, मुदा नाम जँ बाँचल रहए, तँ भीतरक बन्धन कटि सकैत अछि।”

गज-ग्राहक कथा एतय फेर खुलल। पहिने लोक ग्राहकेँ केवल खलनायक बुझैत छल—गजक पएर पकड़ने राक्षस। मुदा चन्ना गाछीक बाढ़िमे देखल गेल जे पएर पकड़नाइ केवल हिंसा नहि, स्मरणक अटकल क्षण सेहो भऽ सकैत अछि। जँ गज अपन बल पर गर्वमे डूबल

अछि, ग्राह ओकरा रोकि दैत अछि। जँ मनुष्य अपन देह, जाति, धन, पद, स्क्रीन, कानून, दान, अनुबन्ध पर गर्व करैत अछि, गोहि ओकरा पानिक मुँह देखबैत अछि।

ई बात कहिते पानिमे एक अजीब हलचल भेल। कटल ठूँठक निकट राखल ओ पाथर, जाहि पर लिखल छल—“जेकर नाम नहि भेटल”—धीरे-धीरे तैरि उठल। पाथर डूबबाक वस्तु, मुदा ओहि राति से पानिक सतहपर पात जेकाँ बहैत गोहि सभक गोलाइमे जा पहुँचल। पैघ गोहि ओकरा नाकसँ हलुक धक्का देलक आ पाथर फेर ठूँठक कगारपर घुरि आयल। कियो नहि बाजल। बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखलक—“अनामक पहरा गोहि द्वारा घुराओल गेल।”

तखन एक बूढ़ मल्लाह, जे एतेक काल धरि चुप छलाह, कहलनि—“हमरा बाबू कहैत छलाह, गोहि देह खाइत अछि, मुदा झूठक नाव उलटि दैत अछि। जे लाश बेनाम छोड़ल जाए, ओकरे चारू कात ई सभ घूमैत अछि। नाम दऽ देल जाए, तँ पानि शान्त होइत अछि।” हुनकर स्वरमे पानिक गन्ध छल। ई गवाही कोनो शास्त्र सँ नहि, बहाव सँ आयल छल। गंगेशक न्याय ओहि पर मुस्कुरायल जेकाँ बुझायल—प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द—आब मल्लाहक अनुभव चारिम दिशा बनि रहल छल।

सत्यव्रत मेहता ओहि राति घाट पर पहुँचलाह। पानि हुनकर ठेहुन छूबि रहल छल। लोक हुनका रोकलक—“आगाँ नहि जाउ।” ओ रुकि गेलाह। पहिने ओ नियमक कारण रुकैत छलाह; आब लोकक कहब सुनि रुकलाह। एहि छोट परिवर्तनकेँ ककरो ध्यान नहि गेल, मुदा चन्ना गाछी देखैत रहल। ओ पानि दिस झुकि कऽ कहलनि—“जे नाम बाँचल अछि, ओकरा हम पढ़ने छी। जे नहि भेटल, ओकरा सुनबाक ऋण अछि।”

एहि वाक्य पर गोहि सभक गोलाइ एक बेर टूटल, फेर फेर बनल। लाउ किन-हंग, जे दूर शहरक ऊँच कोठीमे अपन सुरक्षित कमरामे बैसल छल, ओकर शीशाक मेज पर पानिक गोल दाग बनि गेल। ओहि दागमे ओकरा गोहिक आँखि देखाइ पड़ल। ओ सोचलक—भारतक बाढ़ि ओकर कमरा धरि केना? मुदा जादुई न्यायक सीमा पासपोर्ट नहि पूछैत। जे देहसभ ओकर ठेका, डेटा, दवा, मजूरी, छल आ दलालीक रेखासँ जुड़ल छल, ओहि पानिक स्मृति ओकरा धरि आबि गेल।

बटुकनाथ हरिहरन अपन घरमे मन्त्र पढ़बैत पण्डित लग बैसल छल। पण्डित कहलक—“जलदोष।” हरिहरन सोचलक—ई मामला धार्मिक उपचार सँ सँभलि जाएत। मुदा ओहि क्षण ओकर कानमे चन्ना गाछीक पानिक आवाज आयल—“तिथि नहि, नाम।” ओ कागच

उठा कऽ मुकदमेबाजी सोचऽ लागल, मुदा कागच भीजल जेकाँ नरम भऽ गेल। गोहि ओकर स्वप्न-दरबारक दरबाजापर पहरा देलक।

चन्द्रपाल बत्रा अपन यंत्र पर नक्शा देखैत छल—कतऽ बाढ़ि, कतऽ नेटवर्क, कतऽ दानक बहाव। ओकर स्क्रीन पर अचानक नील चिह्न सभ गोहिक देह जेकाँ तैरऽ लागल। ओ बन्द करए चाहलक, मुदा बटन दबिते सन्देश आयल—“नाम सत्यापित करू।” ओकरा पहिल बेर बुझाइत भेल जे जकर नाम सँ ओ खाता बनबैत छल, ओ नाम अपन देह खोजैत घुरि सकैत अछि।

राघव सिग्नल सन्देश पठाबए चाहलक—“स्थिति नियन्त्रणमे।” मुदा सन्देश गेला सँ पहिने ‘नियन्त्रण’ शब्द डूबल, ‘स्थिति’ तैरल, आ ‘नाम’ बनि ठूँठक पाछाँ चिपकि गेल। ओ फोन झटकलक। नेटवर्क पूरा छल, सन्देश नहि गेल। गोहि सभ पानिमे नहि, भाषामे सेहो घुरि रहल छल।

गढ़ नारिकेलमे एतय बच्चा सभ कबड्डीक गोलाइ बना चुकल छल। बाढ़िक पानि घेरि रहल छल, गोहि सभ बाहरी गोलाइमे, बच्चा सभ भीतरी गोलाइमे। ओ सभ धीरे-धीरे साँस लैत, छोड़ैत, कहैत—“कबड्डी-कबड्डी।” ई खेल आक्रमण नहि, पहरा छल। जँ केओ अकबका कऽ दौड़त, गोहि चौंकत। जँ साँस सन्तुलित रहत, जल सेहो सन्तुलित रहत। खेल आब जीवित रहबाक विधि बनि रहल छल।

अनन्या बच्चा सभकेँ कहली—“गोलाइ नहि तोड़ब। नाम नहि छोड़ब। गोहि शत्रु नहि, सीमा अछि।” एक छोटका बालक पूछलक—“सीमा की?” अनन्या कहली—“जतय अहंकार समाप्त होइत अछि आ सुननाइ शुरू होइत अछि।” बालक ई व्याख्या पूरा नहि बुझलक, मुदा ओ गोलाइमे ठाढ़ रहल। कतेको अर्थ पहिने देह सँ सीखा जाइत अछि, बादमे शब्दमे।

रातिक बीच पानि कने उतरैत जेकाँ लागल। गोहि सभ एक-एक कऽ पाछाँ हटए लागल। पैघ गोहि अन्तिम रहल। ओ ठूँठक हरियर बिन्दु दिस देखलक। फेर पानिमे पूँछ घुमेलक। ओहि घुमाव सँ पानिक सतहपर एक गोल रेखा बनल—जेकाँ कबड्डीक मैदान, जेकाँ ग्रहक कक्षा, जेकाँ शिशुक नाभि चारू कात पहिल संसार। ओ रेखा क्षण भरि चमकल आ मेटायल।

बा कहलीह—“देखलहुँ? खेल बन्द नहि भेल। पानि खेलक रेखा खिंचि गेल।” देविका रजिस्टरमे लिखली—“गोहि सभक वापसी—देहक भय सँ परे सीमाक पाठ।” मीरा जोड़ि देली—“नामक बिनु सीमा हिंसा; नामक संग सीमा मुक्ति।” ई वाक्य सभ बच्चा दोहरबैत रहल।

भोरसँ पहिने गोहि सभ दृष्टिसँ ओझल भऽ गेल। मुदा पानिमे ओकरा सभक गन्ध रहि गेल—कच्चा माटि, पुरान देह, नदीक दाँत, आ अजीब मुक्तिक गन्ध। भोरक पहिल इजोत छाउर-रंगक छल; ओ पानिक थकल सतह पर एना पसरल जेना राति भरिक गवाही पर कियो पातर उज्जर कपड़ा ओछा देने हो। जे लोक राति डरि कऽ काँपैत छल, ओ भोरमे चुपचाप घाट धोबए लागल। कियो गोहि पर पाथर नहि फेकलक। कियो पूजा नहि कयलक। सभ बस ठाम साफ करैत रहल, जेना सीमा सँ भेट भेलाक बाद संसारक देखरेख करब आवश्यक भऽ गेल हो।

ओहि भोर ईराकेँ विदेश सँ सन्देश आयल—कोनो विशाल कम्पनी बाढ़ि-प्रभावित स्मृति-क्षेत्रकेँ “जल-सुरक्षा आ भविष्य-निवास” परियोजना लेल कीनबाक प्रस्ताव पठौने अछि। प्रस्तावक पाछाँ फेर वैह परिचित छाह—लाउ किन-हंगक धन, ब्रूमक सलाह, चन्द्रपालक स्थानीय जाल। एहि बेर सौदा केवल जमीनक नहि, स्मृतिक बाढ़ि, गोहि सभक कथा, आ बच्चा सभक पहराक छल।

अनन्या पानि सँ भीजल पाथर उठौली। ओकरा पर लिखल अनाम अक्षर एखन साफ छल। ओ ईरा दिस ताकली—“आब ई सभ स्मृति नहि, पानिओ कीनए चाहत।” ईरा उत्तर देली—“तखन अगिला पाठ सौदाक होएत।” ठूँठक हरियर बिन्दु पर भोरक पहिल इजोत पड़ल। दूर पानिमे एक छोट लहर उठल—जेना गोहि सभ सुनि रहल हो।

एहि तरहेँ गोहि सभक वापसी भयक अन्त नहि, अगिला संघर्षक आरम्भ बनल। जल सीमा देखौलक; आब लोभ ओहू सीमाकेँ कीनबाक कागच लऽ कऽ आबएबला छल।

लोकगीत: गोहिक फेर घुरान

लोकधुन: नदी-चेतावनी गीत

घुरल हे गोहि, सीमा देखबए घुरल हे,
लोभ सीमा कीनए कागच लऽ पाछाँ धाएल हे।

दिनमे पानि मटियाल, राति कारी तेल,
गोहिक रंग नहि बदलै, बदलै केवल खेल।
आधा डूबल पाथर, अक्षर ऊपर जागल,
बाढ़ि बीच स्मृति बेचबाक सौदा फेर लागल।
लाउक धन, ब्रूमक सलाह, बत्राक गामक जाल,

पानि, गोहि, बच्चाक पहरा—सभ पर दामक चाल।

अनन्या भीजल पाथर उठा कहलक बात—
आब ई सभ पानियो कीनए चाहत मात।
गोहि घुरल भय नहि, सीमा देखाबै आयल,

गोहिक रंग ने बदलए—बदलए केवल खेल।
आधा डूबल पाथर, आखर ऊपर जागल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—प्रत्यक्ष अन्यथाख्यातिक कारण अछि: "हम एहि शुक्तिकेँ रजत रूपमे जानलहुँ" एहन अनुव्यवसायमे शुक्तिविषयक ज्ञान आ रजतत्वरूप विशेषणक असंसर्गाग्रह एके आत्मामे मानब असम्भव अछि; अतः मीमांसकमतमे "ई शुक्ति रजत अछि" एहन अप्रमाण विशिष्ट ज्ञानक उदाहरण बनबे नहि करैत। प्रत्यक्ष अन्यथाख्यातिक कारण अछि।]

अध्याय ९५

लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

रातिमे लाउ अपन पासपोर्टक पहिल पन्ना खोलि बहुत काल धरि बाल्यकालक नाम देखैत रहल। छोट रहैत ओ एक बेर शरणार्थी शिविरक सूचीमे गलत क्रमांकसँ पुकारल गेल छल; ओ अपमान ओकर भीतर एतेक गहींर बैसल जे बादमे ओ सुरक्षा कें नामहीनता बुझए लागल। मुदा अपन घावक कारण दोसराक नाम छीनब ओकर चुनाव छल—अतीत ओकर अपराधक कारण बुझा सकैत छल, क्षमा नहि।

अंतिम सौदामे दाम नहि लिखल जाइ छै— नाम लिखल जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: देरक क्षमा संग सुधार

लोकधुन: प्रायश्चित्त-समदाउनक उज्जर रूप

लाउ हे संग, क्षमाक संग सुधार लाउ हे,

बोल टा नहि, छीनल हक घुरा कऽ देखाउ हे।

देरसँ आयल क्षमा जँ साँच, संग सुधार लाउ,
केवल बोल नहि, टूटल हक फेर घुरा दियाउ।
भूलक पूरा नाम कहू, पीड़ितक बात सुनू,
क्षतिपूर्ति, नियम-सुधार, नव व्यवहार चुनू।

क्षमा खाली द्वार नहि, लम्बा बाटक आरम्भ,
जिम्मेदारी निभबैत चलू, तखन घटत दम्भ।
देरक क्षमा संग सुधार आशाक पुल बनत,
घावक मान राखि कऽ सम्बन्ध नव जनत।

भूलक पूरा नाम कहू, आधा-आधा नहि,
पीड़ितक कथन पहिने, अपन सफाइ नहि।
क्षतिपूर्तिक डेग-डेग पर नियम नव गढ़ू,
अबेरक क्षमा तखने पुल—ईमान सँ चढ़ू।

❖

जे कागच सीमा कीनए आबएबला छल, से एखन रस्तेमे छल; एम्हर गोहि सभक वापसीक बाद बाढ़िक पानि तीन दिन धरि गामक देहरी नापैत रहल। कमला-बलानक धूसर धारि, जे पहिने खेत आ खपरैल गिनैत छल, आब ठूँठक चारूकात राखल नाम-पाथर सेहो छूएबाक जिद करैत छल। बच्चा सभ रजिस्टर, पाथर, सूखल पात, आ ओहि हरियर बिन्दुकेँ ऊँच बाँसक मचान पर चढ़ा देने छल। लोकक डर फेर देह दिस नहि, नाम दिस चलि गेल छल—कतहु पानि नामकेँ बहा नहि लए जाए।

एहि समय, बहुत दूर, काँचक देबाल सँ घेरल एक ऊँच भवनमे लाउ किन-हंग बैसल छल। ओकर खिड़कीक बाहर समुद्र छल, मुदा ओकर आँखि समुद्र नहि देखैत छल। कमरामे समुद्रक स्वर नहि, केवल यन्त्रक ठण्ढा साँस चलैत छल, आ ओहि ठण्ढामे बाढ़िक चित्र आओर गरम बुझाइत छल। ओकरा सम्मुख ओ चित्र खुलल छल—कटल चन्ना ठूँठ, नाम-पाथर, बच्चा सभक मचान, सत्यव्रतक मौन, आ पानिमे घुमैत गोहि सभक धूसर पीठ। ओ एक बेर स्क्रीन बन्द कयलक, मुदा पानिक प्रतिबिम्ब काँचमे रहि गेल।

लाउ किन-हंग पहिने अपराधकेँ संजाल बुझैत छल, संजालकेँ व्यापार, व्यापारकेँ भविष्य। मुदा गढ़ नारिकेलक बाद ओकरा पहिल बेर बुझाइत छल जे जे भूमि नाम सँ भरल हो, ओकरा कीनब कठिन अछि। शरीरक ठेका भऽ सकैत अछि, पुलक ठेका भऽ सकैत अछि, दवाइक ठेका भऽ सकैत अछि, स्मारकक ठेका भऽ सकैत अछि; मुदा नामक पहरा जँ बच्चा सभक हाथमे हो, तँ सौदा-पत्र कागच सँ आगाँ नहि बढ़ैत।

तथापि ओ हार मानएबला मनुख नहि छल। ओकर कार्यालयमे सलाहकार, विधि-विद, दान-परामर्शदाता, सांस्कृतिक मध्यस्थ आ छवि-संशोधक सभ जुटल। सभक भाषा अलग-अलग छल, मुदा आशय एके—गढ़ नारिकेलक स्मृतिकेँ नियन्त्रित करू। कियो कहलक—“आपदा-सहायता।” कियो कहलक—“वैश्विक लोक-स्मृति कोष।” कियो कहलक—“सुरक्षित अभिलेखागार।” कियो फुसफुसा कऽ कहलक—“स्थानीय बाल-पहरा हटौने बिनु अधिकार नहि भेटत।” लाउ सभकेँ सुनलक, आ अन्तमे केवल एतबे कहलक—“ओ सभकेँ मूल्य नहि, भविष्य देखाउ।”

एहि तरहेँ अन्तिम सौदा तैयार भेल। पत्रक भाषा बहुत उज्जर छल—बाढ़ि-राहत, पाठशाला, पुल-सुधार, अस्पताल, विधवा-सहायता, युवकक प्रशिक्षण, स्त्री-सुरक्षा, स्मृति-भवन, आ नामक डिजिटल संरक्षण। मुदा प्रत्येक उज्जर शब्दक पाछाँ एक सूक्ष्म काँटा छल: अभिलेखक प्रतिलिपि बाहर जमा होएत; नाम-पाठक विधि विशेषज्ञ-समिति देखत; बच्चा सभ “प्रशिक्षित स्वयंसेवक” कहल जाएत; चन्ना ठूँठक चारू कातक भूमि “संयुक्त प्रबन्धन”मे देल जाएत। स्मृतिक पहरा लोकक हाथसँ उठि एक चमकैत मोहरक हाथमे जाएत।

पत्रमे एक अजीब परिशिष्ट सेहो छल। ओकर शीर्षक कोनो साधारण लोकक लेल बुझब कठिन छल, मुदा ईरा पढ़ि गेली। ताहिमे पृथ्वीक आपदा, जलवायु, रोग, युद्ध, भीड़ आ संसाधनक संकटक चर्चा छल, आ ‘अनाम बसाहट’ नामक एक दूरस्थ आवास-परियोजनाक संकेत। चुनल प्रतिभाशाली बच्चा, डेटा-कर्मचारी, स्वास्थ्य-श्रमिक, आ सांस्कृतिक-स्मृति वाहक लोककेँ भविष्यक सुरक्षित ठाम पर लए जाएबाक प्रस्ताव। ईरा पत्र बन्द कऽ देली। ओ बुझि गेली—ई केवल गढ़ नारिकेल कीनबाक सौदा नहि, पृथ्वी छोड़बाक स्वप्नक आरम्भिक विज्ञापन छल।

सौदा-पत्र गाम पहुँचल तखन बाढ़िक पानि ठेहुन धरि छल। राघव सिग्नलक अदृश्य सन्देश पहिने आयल, फेर बटुकनाथ हरिहरनक मोहर, फेर चन्द्रपाल बत्राक परामर्श, फेर ब्रूमक दान-पाँति, आ अन्तमे लाउ किन-हंगक सुथर हस्ताक्षर। पत्रकेँ प्लास्टिकमे बन्द कऽ नाव सँ आनल

गेल, जेना धर्मग्रन्थ हो। पोस्टमास्टर भीजल छाता लऽ कऽ कहलक—“बहुत जरूरी बताओल गेल अछि।”

अनन्या पत्र नहि लेली। ओ नावक धार पर ठाढ़ रहली। कहली—“पहिने ई कागच सुनत।” लोक चकित भेल। ओ पत्रकेँ ठूँठक मचानक नीचाँ, पानिक धारि सँ कने ऊपर, बाँसक एक पातर फाँक पर राखली। भीजल बाँसक सोन्ह गन्धक बीच कागचसँ विदेशी स्याहीक अनचिन्ह गन्ध फूटि रहल छल — गामक हवामे ओ अतिथि नहि, अनधिकारी बुझाइत छल। बाढ़िक पानि ओकर प्रतिबिम्ब लेलक। पत्रक उज्जर सतह पानिमे काँपि उठल; कतेको पाँति सर्प जेकाँ वक्र होमऽ लागल।

सत्यव्रत मेहता ओतए बैसल छलाह। हुनका लग पत्र पढ़बाक आग्रह भेल। ओ धीरे कागच खोललाह। पहिल पाँति पढ़लथि—“मानवीय सहयोग आ स्मृति-संरक्षणक उदार पहल।” बच्चा सभ चुप। ओ दोसर पाँति पढ़लथि—“वैश्विक विशेषज्ञता।” मीरा आँखि उठौली। तेसर पाँति —“स्थानीय समुदायक सहभागिता।” देविका हँसी रोकि नहि सकली। अनन्या रजिस्टरमे लिखली—“जकरा अधिकार चाही, से पहिने सहभागिता कहैत अछि।”

जखन सत्यव्रत ‘बाल-पहरा’केँ ‘प्रशिक्षित स्वयंसेवक’ बनएबाक वाक्य पढ़लथि, तखन ठूँठक हरियर बिन्दु कने कँपलक। बा कहलीह—“बच्चाकेँ पद देल गेल तँ बच्चा नहि रहत। पहरुआक नाम बदलल गेल तँ पहरा बदलि जाएत।” एहि वाक्य पर सभ चुप भेल। कारण एहि गाममे आब लोक सीखि गेल छल जे नाम बदलनाइ चोरीक पहिल चाल होइत अछि।

लाउक पत्रमे सहायता छल, मुदा सहायताकेँ घेरने नियन्त्रण छल। राहत छल, मुदा राहतक पाछाँ स्वामित्व छल। अस्पताल छल, मुदा रोगीक नामक सूची चाही छल। पाठशाला छल, मुदा पाठ्य-विधि ओ सभ लिखत। स्मृति-भवन छल, मुदा स्मृतिक चाबी हुनका लग रहत। ईरा मन्द स्वरमे कहली—“ई गोहिक नब मुँह छी। ई देह नहि चिबाएत; ई धन्यवाद चिबाएत, आ ताहिसँ नाम अपन बना लेत।”

तखन गोहि सभक हलचल पानिमे देखल गेल। ओ सभ मचानक चारू कात गोल-गोल घूमए लागल। केओ डरायल नहि। पछिला रातिक बाद लोक बुझि चुकल छल जे गोहि सभ केवल भक्षी नहि, सीमा-स्मारक सेहो छथि। जखन कोनो सौदा देह, नाम आ आत्मा बीचक सीमा पार करए चाहैत अछि, गोहि पानिमे रेखा खिंचए लगैत अछि।

अनन्या कहली—“उत्तर कागच पर नहि देब।” किछु बूढ़ चौंकल। सरकारी सौदा कागच माँगैत अछि; व्यापार कागच माँगैत अछि; अदालत कागच माँगैत अछि। मुदा बच्चा सभ निर्णय

लेने छल—जकरा स्मृति चाही, ओकरा पहिने स्वर सुनए पड़त। ओ सभ मचान पर बैसल, रजिस्टर खोलल, आ बाढ़िक बीच नाम-पाठ शुरू भेल।

पहिल नाम सरयूक। दोसर उज्ज्वलक। तेसर ओ मजदूर जे पुलक पायामे गुम भेल। चारिम ओ स्त्री जे अस्पतालक बरामदामे प्रतीक्षा करैत-करैत साँस हेरि गेलीह। पाँचम ओ युवक जे स्क्रीनक झूठमे डूबि गेल। छठम "जेकर नाम नहि भेटल।" सातम "चर्मकारिणी जिनकर नाम शास्त्रक भय सँ दबाओल गेल।" आठम "गंगेश, जे न्यायकेँ जातिक देबालसँ पैघ कऽ गेलाह।" बरखा-धोअल हवामे प्रत्येक नाम अलगे टनकैत छल, जेना पानिक थारी पर एक-एक सिक्का खसैत हो। नामक स्वर पानिक ऊपर उठल, आ बाढ़िक बादल धरि गेल।

गोप कुमार पुरान यंत्र सँ एहि स्वरकेँ पकड़लनि, मुदा ओकरा फाइल बना कऽ नहि, खुलल आकाशक दिशामे छोड़लनि। ओ कहलनि—"जे सुनए चाहय, से सुनू; जे कीनए चाहय, ओकरा किछु नहि भेटत।" नाम-पाठक ध्वनि समुद्र पार लाउ किन-हंगक कार्यालय धरि पहुँचल कि नहि, केओ नहि जानैत। मुदा ओहि राति लाउक काँचक भवनमे सभ विद्युत-बत्ती एक बेर मद्धिम भेल, आ ओकर टेबुल पर राखल सौदा-पत्रक कोना भीजि गेल।

लाउ किन-हंग ओ भीजल कोना छूएलक। ओकर अँगुरी पर पानिक गन्ध नहि, माटिक गन्ध लागल। ओ बुझि नहि सकल। ओकर सलाहकार कहलक—"उत्तर अस्पष्ट अछि।" लाउ कहलक—"नहि।" उत्तर बहुत स्पष्ट अछि। ई सभ मूल्य नहि माँगैत। सलाहकार पूछलक—"तखन? लाउ बहुत काल धरि चुप रहल, फेर फुसफुसायल—"ई सभ अपन पृथ्वीयो छोड़ए नहि चाहैत।""

एहि वाक्यक संग अनाम बसाहटक योजना ओकर मनमे पहिल बेर काँपल। जे लोक अपन गामक ठूँठ, बाढ़िक पानि, मृतकक नाम, आ बच्चा सभक पहरा नहि बेचैत, ओ सभ दोसर ग्रहक चमकदार वादा पर कतेक भरोसा करत? लाउ बुझलक जे पृथ्वी छोड़बाक बाजार खोलबाक पहिने पृथ्वी सँ प्रेमक भाषा तोड़ब आवश्यक अछि। गढ़ नारिकेल ओहि भाषाक अनगढ़, भीजल, जीवित पुस्तक छल।

गाममे राति गहींर होइत गेल। नाम-पाठ समाप्त भेल तखन अनन्या लाउक पत्र पुनः उठौली। ओकरा पानिमे नहि फेकली, नहि जरओली। ओ रजिस्टरमे लाउ किन-हंगक नामक आगाँ लिखली—"सौदा आयल, सुनल गेल, अस्वीकार नहि कहल गेल; ओकरा नाम सुनबाक दण्ड देल गेल।" लोक पूछलक—"दण्ड?" अनन्या कहली—"जे नाम कीनए आयल अछि, ओकरा नाम सुनए बिनु छुट्टी नहि।"

सत्यव्रत मेहता पहिल बेर धीरे मुस्कुरेलाह। ई कानूनक दण्ड नहि छल, मुदा कतेक गाढ़। जे धनसँ सभ वस्तु लऽ सकैत छल, ओकरा धनहीन श्रवणमे बाँधि देब—एहि सँ पैघ दण्ड की? मीरा कहली—“सुननाइ जँ सच हो, तँ नियन्त्रण टूटैत अछि।” देविका जोड़ली—“आ जँ झूठ हो, तँ सौदा बनैत अछि।”

तहिये बाढ़िक अन्हारमे एक छाह मचान दिस चलैत देखाइ पड़ल। पहिने लोक सोचलक कोनो विस्थापित परिवार हएत। फेर ओ निकट आयल। भीजल धोती, काँपैत हाथ, माथपर पुरान संस्कारक राख, आँखिमे बरखोंक चालाकी आ एक रातिक हार। से बटुकनाथ हरिहरन छल। ओ एहि बेर ट्रस्टक कागच लऽ कऽ नहि, खाली हाथ आयल छल।

ओ ठूँठसँ दूर, पानिमे टखना धरि ठाढ़ रहल। कियो स्वागत नहि कयलक। कियो अपमान सेहो नहि। अनन्या रजिस्टर बन्द नहि कयली। सत्यव्रतक आँखि ओकरा पर टिकि गेल। बटुकनाथ बहुत काल धरि मुँह खोलि नहि सकल। अन्तमे ओकर स्वर निकसल—“हमरा एक राति नाम सुनए दियौ। हमरा अपन कानक जाति बदलबाक अछि।”

बाढ़िक पानि ओहि वाक्य पर कने उठल, फेर शान्त भऽ गेल। गोहि सभक गोलाइ मन्द पड़ल। लाउ किन-हंगक सौदा-पत्र मचान पर भीजल पड़ल रहल, आ बटुकनाथ हरिहरन पहिल बेर बिनु प्रस्ताव, बिनु विधि, बिनु पद, केवल कान लऽ कऽ गढ़ नारिकेलक सम्मुख ठाढ़ भेल। अगिला राति ओकर बिलम्बसँ आयल क्षमाक परीक्षा होएबाक छल।

लोकगीत: अन्तिम सौदाक पानि

लोकधुन: सौदा-विरहा

फाटल हे सौदा, अन्तिम सौदा फाटल हे,
नामक आगाँ धनक सभ आखर बहल हे।

अन्तिम सौदामे दाम नहि, नाम लिखल जाए,
बाढ़िक देहरीपर स्मृति मचान चढ़ाए।
लाउक पत्र भीजल, गोहि गोल बनायल,
कियो स्वागत नहि, कियो गारि नहि सुनायल।
बटुक टखना पानिमे केवल कान लऽ ठाढ़,

‘एक रात नाम सुनए दियौ, बदलू कानक जात।’
पानि कने उठल, फेर शान्त भऽ गेल,

देरक क्षमाक अगिला परीक्षा तय भेल।
अन्तिम सौदा फाटल, सुननाइ रहि गेल,
नामक आगाँ धनक सभ अक्षर बहि गेल।

कियो स्वागत ने कएल, कियो गारि ने सुनाओल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—जलक प्रसङ्ग: विवेचन: एहि अनुमानमे पृथ्वी केँ अन्य द्रव्यों (जल, वायु, आकाश आदि) सँ भिन्न सिद्ध करब साध्य थिक, आ 'गन्धवत्त्व' (गन्ध रहब) हेतु थिक। नव्य-न्याय सिद्धान्त: परतः प्रामाण्यवादक दुर्जेय तार्किक स्थापना।]

अध्याय ९६

बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

क्षमा जे देरसँ आबए, से खाली हाथ नहि आबए— अपन विलम्बक हिसाब सङे आनए।

अध्यायारम्भ लोकगीत: अपन खाता, अपन जीवन

लोकधुन: खाता-जागरण

जागू हे भाइ, अपन खाताक मालिक जागू हे,
अनजान धनक बोझ सँ नाम नहि दागू हे।

दोसराक खाता ढोउ नहि, अपन नामक मान,
लेन-देन स्पष्ट राखू, सुरक्षित पहिचान।
कागच पढ़ू, फोन बुझू, अनजान धन रोकू,
लोभक नान्हि बाटसँ जीवनकेँ नहि झोंकू।

अपन खाता अपन श्रमक स्वच्छ नदी बनाउ,
परिवार संग वित्तक सरल ज्ञान बढ़ाउ।
म्यूल नहि, मालिक बनू अपन निर्णयक आज,
सावधानीक गीतसँ बचत श्रमक कमाइ-साज।

मीठ बोली, झट लाभ—दुनू पर टोकू,
बिनु बूझल कागच पर आङुर नहि रोपू।
श्रमक कमाइ निर्मल धार, हिसाब घरे-घर,
वित्तक सरल पाठ पढ़ौ बेटा-बेटी बराबर।

❖

जाहि परीक्षाक प्रतीक्षा छल, ताहि सँ पहिने लाउ किन-हंगक अन्तिम सौदाक बाद गढ़ नारिकेलमे एक विचित्र शान्ति पसरल। से शान्ति विजयहर्षक नहि छल; ओहिमे बाढ़िक पानि उतरबाक थकान छल, पाथर पर भीजल नामक गन्ध छल, आ ओहि लोकक साँस छल जे जानि गेल छल जे सौदा मात्र धनसँ नहि, स्मृतिसँ सेहो कएल जाइत अछि। बच्चा सभ जे उत्तर पठौने छल—नामक पाठक ध्वनि—से गाममे घुरि कऽ फेर बजैत रहल। जेना प्रत्येक घरक केबाड़क भीतर कोनो अदृश्य घण्टी लटकायल गेल हो।

एहि शान्तिक तेसर दिन बटुकनाथ हरिहरन आयल। पहिने जहिना ओ कोनो सभामे अबैत छल—आगाँ चलैत दू गोटे, पाछाँ फाइल, बीचमे ओकर भारी चाल—तहिना नहि। एहि बेर ओ असगरे छल। न गाड़ी पर झण्डा, न संगमे अधिवक्ता, न चमकदार जूता। ओकर पएरमे धूलि

लागल छल; आङुरक बीच जमल ओ धूलि ओकरा अनचिन्ह बोझ जेकाँ गड़ैत छल, जेना धरती पहिल बेर ओकर देहक हिसाब लैत हो। ओहि धूलिकेँ लोक पहिल बेर देखलक, कारण बटुकनाथ सदिखन एहन देखाइत छल जेना धरती ओकरा छुअनाइ योग्य नहि। आइ धरती ओकरा पकड़ने छल।

बटुकनाथक भीतर सभसँ पैघ भय जेल नहि, अपन परिवारक आँखि छल। बाहर ओ शास्त्र, पेशा आ वंशक ढाल उठबैत; भीतर ओकरा नातिक छोट प्रश्न सुनाइत—‘बाबा, अहाँ ककर पक्षमे छलहुँ?’ ओ प्रत्येक बेर उत्तर गढ़ैत, मुदा कोनो उत्तरमे दबाओल नाम सभक गन्ध मिटैत नहि।

ओ ठूँठक चारू कात पहुँचि बहुत काल ठाढ़ रहल। बच्चा सभ ओकरा चिन्हलक, मुदा कोनो हल्ला नहि भेल। जे समाज उपहास करए लगैत अछि, ओ अपराधीकेँ फेर केन्द्र बना दैत अछि; गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ आब ई भूल नहि करैत छल। अनन्या रजिस्टरक पन्ना उलटैत रहली। ईरा पाथरक नामक चारू कात भीजल कपड़ा सँ धूलि पोंछैत रहली। देविका दूर बैसल स्त्री सभक संग गप करैत रहली। सत्यव्रत मेहता ओहि दिन ओतय छलाह, मुदा जकरा बटुकनाथ खोजैत आएल छल, से हुनका दिस नहि, नाम दिस देखैत छलाह।

बटुकनाथ पहिने सत्यव्रत लग गेल। ओकर स्वर पुरान आदतक कारण आदेशक छाह लऽ कऽ निकलल—‘मेहता जी, हमरा किछु कहबाक अछि।’ सत्यव्रत माथ उठौलनि, मुदा उत्तर नहि देलनि। बटुकनाथ फेर कहलक, ‘हम क्षमा माँगए आयल छी।’ एहि बेर सत्यव्रत धीरे कहलनि, ‘हमरा सँ नहि। एतय जकर नाम पढ़ल जाइत अछि, ओकरा सभ सँ। हम सेहो सुनएबला छी।’

ई वाक्य बटुकनाथक भीतर तीर जेकाँ उतरि गेल। ओ जे जीवन भरि मंचक केन्द्रमे रहल, ओकरा पहिल बेर पाँतिक पाछाँ ठाढ़ होएबाक आदेश नहि, अवसर भेटल। मुदा अपराधी मन अवसरक भाषा तुरन्त नहि बुझैत। ओ कहलक, ‘कानूनी रूपेँ तँ...’ अनन्या बिनु माथ उठौने बाजली, ‘एतय कानूनी रूपेँ नहि, नामक रूपेँ सुनल जाएत।’

बटुकनाथक चेहरा लाल भेल, फेर पीयर। जे व्यक्तिक जीवन तारीख, स्थगन, तकनीकी आपत्ति, प्रक्रिया आ प्रतिष्ठाक दरबारमे बीतल हो, ओकरा एक नेनीक वाक्य निरस्त कऽ देलक। ओ ठूँठक कगार लग बैसि गेल। ओकरा सम्मुख ओही पाथर छल, जाहि पर लिखल छल —‘जेकर नाम नहि भेटल।’ कतेको वर्ष धरि ओ अभियुक्तक नाम बचाबैत रहल; पीड़ितक

नाम फाइलक धूलिमे छोड़ैत रहल। आइ नामहीन पाथर ओकरा सम्मुख न्यायाधीश जेकाँ रखबार भेल।

पहिल नाम पढ़ल गेल—सरयू। बटुकनाथ ई नाम जानैत छल, मुदा कखनो मोन नहि रखने छल। ओकरा मोन छल केवल मामला संख्या, अदालतक कोठरी, स्थगनक कारण, प्रतिपक्षी कागचक कमी। जखन अनन्या 'सरयू' पढ़ली, तखन बटुकनाथक भीतर सँ एक पुरान स्वर उठल—'अगिला तारीख।' ओ काँपि गेल। एतेक बरख बाद ओकरा बुझायल जे तारीख कहब कतेक बेर मृत्युकेँ दोसर बेर मारब होइत अछि।

दोसर नाम उज्ज्वल। चन्द्रपाल बत्राक जालमे फँसल ओ युवक, जकर माय अपन बेटाक नामक टुकड़ा सँ घर चलबैत छली। बटुकनाथ एहि प्रकरणमे प्रत्यक्ष वकील नहि छल, मुदा ओकर बनाओल व्यवस्था, ओकर प्रशिक्षण, ओकर बारक आदत, ओकर दलालीक संस्कृति—एहि सभसँ एहन चन्द्रपाल सभ पोसल गेल। उज्ज्वलक नाम पर बटुकनाथ अपन कान झुकौलक। ओकरा लागल जे स्क्रीनक नील इजोत ओकर आँखिक भीतर उतरि रहल अछि।

तेसर नाम—मुन्ना पासवान। चारिम—श्रमिक जकर ठेका-पंजीमे केवल अंक छल। पाँचम—ओ स्त्री जकर देहक अपमानकेँ अदालतमे 'चरित्र'क प्रश्न बनाओल गेल। छठम—ओ युवक जे अस्पतालक बिलक भारमे परिवारक स्मृति सँ कटि गेल। सातम—ओ नाम जे जातिक देबालमे दबाओल गेल। आठम—ओ नाम जे गंगेशक प्रश्नक संग उठल: न्याय पढ़ैत समाज जीवनक सत्य किएक मारैत अछि?

बटुकनाथ सुनैत रहल। क्षमा माँगए आएल लोकक स्वर धीरे-धीरे क्षीण होइत गेल। क्षमा शब्द सहज होइत अछि जखन ओ मंच पर कहल जाए; कठिन होइत अछि जखन प्रत्येक नाम ओकरा सम्मुख अपन घाव खोलए। ओकर हाथ अपने-आप जेब दिस गेल—कानूनी कार्ड, कलम, फोन, कोनो वस्तु खोजबाक आदत। मुदा ओहि दिन बच्चा सभक नियम छल—नाम-पाठक समय कोनो फोन नहि। बटुकनाथक फोन अनन्या पहिने लऽ कऽ कपड़ाक थैलीमे राखि देने छली। ओ असहाय हाथ ठेहुन पर राखि बैसल।

राति गाढ़ भेल। बाढ़िक पानि दूर चमकि रहल छल। गोहि सभ देखाइ नहि दैत छल, मुदा ओकर उपस्थिति जलक सुगन्धमे छल। भीजल माटिक ठण्ढ धीरे-धीरे बटुकनाथक बैसल देहमे चढ़ैत गेल, आ दूर मचान परक दीपक तेल-बत्तीक झिझकैत गन्ध हवाक संग आबि-जाइत रहल। बा धीरे कहलीह, 'जँ क्षमा चाही, तँ राति भरि नाम सुनू। बीचमे उठब नहि।' बटुकनाथ माथ हिलौलक। ओ सोचलक, ई तँ सहज अछि; ओ अदालतमे राति भरि बहस कऽ सकैत

छल। मुदा बहस करब आ सुनब दू भिन्न तपस्या अछि। बहसमे मन बाहर दौड़ैत अछि; सुनबामे मन भीतर घसीटल जाइत अछि।

नाम-पाठ चलैत रहल। प्रत्येक नामक बाद उपस्थित लोक ‘उपस्थित’ कहैत। कखनो ओ स्वर बलवान, कखनो कमजोर, कखनो रोदनमे घुलल। बटुकनाथ पहिने प्रत्येक नामक संग अपन बचाव बनबैत—‘हम तँ ई मामला नहि लएने छलहुँ’, ‘एहि समय हम पद पर नहि छलहुँ’, ‘प्रक्रिया एहन छल’, ‘न्यायालय स्वतन्त्र अछि।’ मुदा रातिक तेसर पहर धरि बचावक तर्क थाकि गेल। नाम थाकल नहि।

जखन ‘गंगेश’ नाम आयल, ठूँठक हरियर बिन्दु पर चन्द्रमाक हलुक इजोत पड़ल। अनन्या पढ़ली—‘गंगेश, नव्य न्यायक जनक, जकर जीवनक असुविधाजनक सत्यक सम्मानक नाम पर हत्या कएल गेल।’ बटुकनाथ आँखि मूनि लेलक। ओकरा अपन सभा-भाषण मोन पड़ल, जाहिमे ओ परम्पराक गौरव पर बजैत छल। ओकरा ई कहब सहज रहल जे मिथिला न्याय-दर्शनक भूमि अछि; मुदा ई सुनब कठिन छल जे ओही भूमि जातिक नाम पर न्यायकेँ कतेक बेर हत्या करैत रहल।

ओ अचानक बाजि उठल, ‘हम अपराधी छी।’ लोक चौंकल नहि। बच्चा सभ सेहो नहि। अनन्या केवल पूछली, ‘ककरा प्रति?’ बटुकनाथ अटकि गेल। ‘सभक प्रति,’ कहब चाहलक, मुदा वाक्य फीक लागल। ‘नामक प्रति,’ ओ अन्ततः कहलक। ‘हम नामकेँ मामला बनौलहुँ, मनुख नहि। हम अपराधकेँ प्रक्रिया सँ ढाँकलहुँ। हम परम्पराकेँ ढाल बनौलहुँ। हम न्यायकेँ पेशा बनौलहुँ।’

एहि स्वीकारक बाद किछु लोकक भीतर क्रोध उठल। एक युवक चिचिया उठल—‘एखन कहैत छी? जखन सभ मरि गेल?’ मीरा ओकर काँध पकड़ि कहली, ‘क्रोध सेहो उपस्थित अछि। ओकरो ठाम चाही।’ युवक कानि उठल। बटुकनाथ ओकरा देखैत रहल। पहिने एहन क्रोध पर ओ अवमाननाक भाषा प्रयोग करैत। आइ ओकरा बुझायल जे कतेक लोकक क्रोधकेँ सभ्यता, अनुशासन, अदालतक मर्यादा कहि चुप कराओल गेल।

भोर लगिचाइत बटुकनाथक देह काँपए लागल। ओकर उमेर, ओकर थकान, ओकर भीतरी टूटन सभ एकसंग उठल। सत्यव्रत ओकरा पानि देबए चाहलनि। बटुकनाथ हाथ रोकि देलक—‘पहिने नाम पूरा होउ।’ ई वाक्य सुनि बा ओकरा दिस ताकलीह। हुनकर आँखिमे दया नहि, कठोर स्वीकृति छल। क्षमा एखन नहि, पर सुनबाक आरम्भ स्वीकृत भेल।

अन्तिम नाम ओहि राति छल—‘अनाम’। जे सभक नाम खोजल नहि गेल, जे फाइल सँ कटि गेल, जे नदीमे बहि गेल, जे देहक चिन्ह बिनु विदा भेल, जे डिजिटल अन्हारमे हेरा गेल, जे जातिक कारण जन्म सँ पहिने नुका देल गेल, जे स्त्रीक कण्ठमे दबि गेल। जखन ‘अनाम’ पढ़ल गेल, बटुकनाथ पहिल बेर ‘उपस्थित’ कहए चाहल। स्वर नहि निकलल। ओकर कण्ठ सूखि गेल; ठोर पर राति भरिक नोन जमि गेल छल। बहुत प्रयत्नक बाद फुसफुसाहट आयल—‘उपस्थित।’ ठीक ओही क्षण पहिल चिड़ैक बोली ओहि फुसफुसाहट संग मिझरा गेल।

सूर्योदय भऽ रहल छल। चन्ना ठूँठक छाह फेर नमहर भेल। बच्चा सभ नाम-पाठ बन्द कएलक। बटुकनाथ धीरे उठल। ओ अनन्यासँ कहलक, ‘हमरा क्षमा भेटल?’ अनन्या रजिस्टर बन्द करैत कहली, ‘क्षमा निर्णय नहि। अभ्यास अछि। काल्हि फेर नाम पढ़ल जाएत। आउ।’

बटुकनाथ पहिल बेर बिनु उत्तरक घुरल। ओकरा कोनो प्रमाणपत्र नहि भेटल, कोनो फोटो नहि, कोनो सार्वजनिक घोषणा नहि। ओ अपन खाली हाथ देखि रहल छल। खाली हाथक भार ओकरा जीवनक सभ पदक भारसँ अधिक लागल।

ओहि भोर चन्द्रपाल बत्रा अपन दूर घरमे जागल। ओकर फोन पर राति भरि ककरो सन्देश नहि आयल छल, मुदा खाता-बहीक स्क्रीन अपने खुलि गेल छल। प्रत्येक पाँतिमे ‘क्रेडिट’, ‘डेबिट’, ‘प्रतिशत’क ठाम एकहि शब्द चमकि रहल छल—‘माध्यम’। चन्द्रपाल निन्नमे बुदबुदायल—‘हम तँ पैसा घुमेलहुँ मात्र।’ स्क्रीन उत्तर देलक—‘म्यूल।’

गढ़ नारिकेलमे ओ समय कियो ई नहि जानैत छल। मुदा बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा जखन अधूरी छोड़ि देल गेल, तखने कथाक अगिला दरबाजा खुलि गेल—ओहि मनुष्य पर, जे बुझए जा रहल छल जे ओकर पूरा जीवन स्वयं लोभक म्यूल खाता रहल अछि।

लोकगीत: देरक क्षमा खाली नहि

लोकधुन: प्रायश्चित्त समदाउन

खोलै हे क्षमा, देरक क्षमा दुआर खोलै हे,
मंजिल नहि—विलम्बक छाह संगे चलै हे।

क्षमा जे देरसँ आबै, विलम्बक बही लऽ आबै,
खाली हाथक भार पदक पर्वतसँ पैघ भासै।
बटुक राति भरि नाम सुनलक, उत्तर कम,
कतेक बरख तारीख खायल—ओकर हिसाब नम।
क्षमाक फूल नहि, काजक ऋण चाही,

पीड़ितक समय घुरत नहि, तइयो पहरा बाँकी।
ओहि भोर चन्द्रपालक खाता 'माध्यम' कहलक,
'हम पैसा घुमेलहुँ'—स्क्रीन 'म्यूल' लिखलक।
देरक क्षमा दुआर खोलै, मंजिल नहि,
विलम्बक प्रत्येक दिनक छाह संग चलै सही।

खाली हाथक भार पदक पहाड़सँ भारी,
बटुक राति भरि नाम सुनलक, उत्तर आधा-सारी।
पीड़ितक समय ने घुरत—तइयो पहरा बाँकी।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—निष्कर्ष: गुण कारण अछि तथा अनुमानादिमे गुणक स्वरूप: "शङ्ख पीयर अछि" एहन भ्रममे विशेष-दर्शन रहितो शङ्खक श्वेतरूपक प्रमाण ज्ञान उत्पन्न नहि होइत; तेँ विशेष-दर्शन श्वेतज्ञानक कारण नहि—एहन आपत्ति ठीक नहि। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। निष्कर्ष: गुण कारण अछि तथा अनुमानादिमे गुणक स्वरूप।]

अध्याय १७

चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

चन्द्रपालकेँ अपन पहिल विद्यालय-दिन मोन पड़ल। उपस्थितिमे शिक्षक ओकर नाम बिगाड़ि पढ़ने छलाह आ कक्षा हँसल छल। ओ साँझ धरि रोने छल। एखन ओकरा बुझायल—जकरा अपन नाम बिगड़लापर एतेक पीड़ा भेल, ओ कतेक सहजतासँ हजार लोकक नाम खाता, प्रतिशत आ पहचान-सङ्ख्यामे बदलि देलक। ई स्मृति ओकरा निर्दोष नहि बनौलक; ओकर आत्मछलक परदा मात्र फाड़ि देलक।

जे दोसराक खाता म्यूल बनौलक, से एक दिन अपनहि जीवनकेँ म्यूल खाता बुझि उठल।

अध्यायारम्भ लोकगीत: पातपर संदेशक आशा

लोकधुन: सिग्नल-बटगबनी

पठाउ हे सन्देस, आशाक सन्देस पठाउ हे,

मेटएबला आखरो मे भोरक बीया लगाउ हे।

अन्तिम संदेश मेटल तइयो पातपर रहि जाए,
हावा पढ़ि कऽ घर-घर आशाक बात पहुँचाए।
‘संग खोजू, सहायता लिअ’—हरेक पंक्ति कहत,
अन्हार फोनक भीतर सेहो भोरक संकेत रहत।

सन्देशकेँ जीवन दिअ, समयपर हाथ बढ़ाउ,
कियो संकटमे हो तखन ओकर दुआर पहुँचाउ।
पातपर आशाक शब्द डिजिटल राति हरत,
एक सही सन्देश कतेको जीवन बचा सकत।

'संग छी, डर नहि'—छोट पाँति, पैघ काज,
एक घण्टीक उत्तरो सँ बचए केओ आज।
फोनक अन्हरिया मे कियो असगर नहि छूटए,
समय पर बढ़ल हाथ सँ भोरक धार फूटए।

❖

जे दरबाजा खुजल छल, ताहि पार — बटुकनाथ हरिहरन राति भरि नाम सुनि थाकल छल, मुदा चन्द्रपाल बत्रा ओहि राति कियो नाम सुनए नहि गेल। ओ अपन पुरान कोठरीमे, जतय कखनो फोनक पाँच-पाँच परदा खुलैत छल, असगरे बैसल छल। बन्द कोठरीक बसिआयल हवामे मोबाइलक ठण्ढा प्लास्टिक आ पुरान स्याहीक खट्टा गन्ध मिझरायल छल। सम्मुख मेज पर तीनटा पुरान खाता-बही, दूटा बन्द मोबाइल, एकटा फाटल मोहर, आ चन्ना गाछीक पाथरसँ आयल एक छोट धूलिक कण पड़ल छल। ओ धूलि किएक आयल, के आनल, से ओकरा बुझाइत नहि छल। मुदा ओ धूलि ओहि कोठरीमे उपस्थित छल—ओकर सभ संख्याक बीच एकमात्र नामहीन साक्षी जेकाँ।

चन्द्रपाल सोचैत छल जे जीवनमे ओ बहुत खाता खोलने अछि। किछु बैंकमे, किछु कागचमे, किछु मोबाइलमे, किछु लोकक मनमे। मुदा एहि राति ओकरा बुझायल जे असलमे खाता ओ नहि खोलने छल; ओकरा खोलाओल गेल छल। ओ अपनाकेँ मालिक बुझैत रहल,

मुदा ओ केवल बाट रहल। धन एक ठाम सँ दोसर ठाम बहैत रहल; पाप एक हाथ सँ दोसर हाथ बदलैत रहल; लाभक चमक ओकर आँखि पर पड़ैत रहल; मुदा अन्तिम अधिकार कतहु दोसर ठाम रहल।

ओ अपन पहिल ठगी मोन पाड़लक। तखन ओ युवा छल, मेरठक सस्त डिग्रीकेँ अभिमान जेकाँ जेबमे राखैत छल। ओ सोचैत छल—जे समाज कुल, भाषा, जाति, विश्वविद्यालय, पद आ प्रमाणपत्रक नाम पर सभ दरबाजा बन्द करैत अछि, ओकरा ठगब पाप नहि, चालाकी अछि। मुदा चालाकी धीरे-धीरे रोजी भेल, रोजी दलाली, दलाली अपराध, अपराध व्यापार, व्यापार नेटवर्क, आ नेटवर्क एकटा एहन नदी बनि गेल जाहिमे चन्द्रपाल स्वयं माटि जेकाँ बहैत रहल।

गंगेशक प्रश्न ओहि राति ओकरा बेचैन कऽ रहल छल। तत्त्वचिन्तामणि लिखनिहार गंगेश प्रमाण पूछैत छथि—प्रत्यक्ष की, अनुमान की, शब्द की, उपमान की। चन्द्रपाल अपन जीवनक प्रमाण खोजलक। प्रत्यक्ष—ओकर हाथमे आयल पैसा। अनुमान—दूर कतहु बैसल लाउ किन-हंगक आदेश। शब्द—राघव सिग्नलक मेटाइत सन्देश। उपमान—ओ स्वयं। ओकरा बुझायल, ओहि खच्चर जेकाँ जे बोझा ढोइत अछि, मुदा बोझाक मालिक नहि होइत।

ओ हँसल, मुदा हँसी खाली छल। लोक ओकरा बत्रा साहेब कहैत छल; कतेको बेर ‘सर’ कहैत छल; अपराधी ओकर चरण छुबैत, नेता ओकर फोन उठबैत, अफसर ओकर कागच देखैत। मुदा जखन पानि उलटल, जखन चन्ना गाछीक ठूँठ हँसल, जखन बच्चा सभ नाम-पहरा शुरू कयलक, तखन ओकर सभ सम्मान उतरि गेल। शेष बचल—एकटा म्यूल अकाउण्ट। पैसा ओकरा मार्फत गुजल; अपराध ओकरा मार्फत गुजल; आदेश ओकरा मार्फत गुजल; मुदा ओकर नाम कतहु पूरा नहि लिखल गेल।

ओ मेज पर रखल खाता-बही खोललक। पहिल पन्नापर संख्याकेँ पोंछबाक कोशिश कयलक। आङूठाक दाबसँ भीजल पन्ना पर स्याही आओर पसरि गेल, जेना अंक स्वयं धोखरि कऽ अपन भीतरक मुँह देखबए लागल हो। प्रत्येक अंकक पाछाँ ओकरा ककरो चेहरा देखाइ पड़ए लागल—कोनो युवक जे डिजिटल अरेस्टक डरमे घर बेचि देलक; कोनो माय जे बेटाक लोन चुकबैत चुप भेल; कोनो मजदूरक परिवार जकर मुआवजा बीच रस्तामे गायब; कोनो युवती जकर निजता स्क्रीन पर धमकी बनि घुरल। संख्यासभ ओहि राति चेहरा बनि गेल।

चन्द्रपाल पहिल बेर डर सँ नहि, अपमान सँ काँपल। कारण डरमे मनुष्य अपनाकेँ एखनहुँ महत्त्वपूर्ण मानैत अछि—हमर जान खतरामे अछि। मुदा अपमानमे बुझाइत अछि—हमर

जीवनक अर्थे की छल? ओ देखलक जे ओकर सभ कारोबारमे लोक मरल, टूटल, चुप भेल; मुदा ओ स्वयं सेहो सम्पूर्ण नहि बनल। ओकर भीतर केवल बाट बनल, घर नहि।

बाहर बाढ़िक पानि गलीमे चढ़ि रहल छल। खिड़कीक नीचाँ भकजोगनी जेकाँ किछु इजोत चमकल। चन्द्रपाल झुकि देखलक। पानिमे नोट नहि, मोबाइल नहि, कागच नहि; पानिमे छोट-छोट खाता तैरैत छल। प्रत्येक खाताक मुख पर केवल एक शब्द—‘मार्फत’। से खाता ओहि दिस बढ़ि रहल छल जेना ओकर घरकेँ घेरए आबि रहल हो।

ओकरा मोन आयल—कतेक बेर ओ गरीब युवकसभक खाता प्रयोग करबा लेल फुसलौने छल; कतेक बेर बेरोजगारकेँ कहने छल—कने पैसा आयत-जाएत, तोहर किछु नहि बिगड़त। एखन ओकरा बुझायल—किछु बिगड़ल नहि कहब सभसँ पैघ झूठ छल। जखन खाता बेनाम धनक बाट बनैत अछि, तखन खाता मात्र नहि बिगड़ैत; मनुष्यक नामक भीतर एक छेद बनैत अछि। ओ छेद सँ धीरे-धीरे ओकर आत्मा बाहर रिसैत अछि।

ओ मेज पर माथ राखि बहुत काल धरि बैसल रहल। कोठरीक अन्हारमे अचानक ओकर अपन बाल्यकाल देखायल। एकटा बच्चा, जकरा घरमे पूरा नाम सँ कियो नहि पुकारैत; कियो ‘चन्द्रू’, कियो ‘बत्रा’, कियो ‘ओही छौड़ा’। पूरा नाम शायद परीक्षा-प्रपत्रमे पहिल बेर लिखल गेल। ओहि दिन चन्द्रपाल सोचने छल—एक दिन हमर नाम बड़का अक्षरमे लिखाएत। आइ ओकरा बुझायल जे बड़का अक्षरमे लिखायल नाम आ सही अर्थमे सुनल नाम भिन्न बात अछि।

ओ अपन नाम लिखए लागल—‘चन्द्रपाल बत्रा’। हाथ रुकि गेल। कलम अपने-आप दोसर पाँति पर लिखलक—‘प्रतिशत’। ओ चौंकल। पन्ना फाड़ि देलक। दोसर पन्ना पर फेर लिखलक—‘चन्द्रपाल बत्रा’। नीचाँ फेर वैह शब्द—‘प्रतिशत’। तेसर बेर ओकर हाथ काँपल। एहि बेर ओ लिखलक—‘चन्द्रपाल बत्रा, म्यूल अकाउण्ट’। आ नीचाँ बहुत काल बाद हाथेँ लिखल—‘जकरा मार्फत पाप गुजल।’

एहि वाक्य लिखिते कोठरीक भीतर हवा बदलि गेल। जेना बरखोंसँ बन्द कोनो खिड़की खुलल। मुदा ई मुक्ति नहि छल। ई केवल स्वीकारक पहिल दरार छल। दरार सँ प्रकाश नहि, पहिने धूलि अबैत अछि। चन्द्रपाल खाँसए लागल। धूलिमे ओकरा चन्ना गाछीक ठूँठक गन्ध भेटल।

तखन दरबाजा पर दस्तक भेल। ओ चौंकि उठल। बाहर कियो नहि। केवल दरबाजाक निचला फाँक सँ एकटा भीजल पात भीतर ससरल। पात पर नाम नहि, एक प्रश्न लिखल छल—‘ककर खाता छल?’ ओ उत्तर देबऽ चाहलक—लाउक, राघवक, ब्रूमक, हरिहरनक,

सिस्टमक। मुदा गंगेशक प्रश्न फेर ओकर कानमे उठल—यदि प्रमाण चाही, तँ अपन भूमिका हटा कऽ उत्तर नहि देल जा सकैत।

ओ पातक पाछाँ लिखलक—'हमर सेहो।' ओहि दू शब्द लिखिते ओकर हाथ भारी भऽ गेल। जकरा ओ आइ धरि माध्यमक चतुराई मानैत छल, से जिम्मेदारीक बेड़ी बनि गेल। खाता बीचमे रहि कऽ स्वयं निर्दोष नहि रहैत; बाट सेहो अपराधक भूगोलमे चिन्हित होइत अछि।

चन्द्रपाल पानिमे तैरैत खाता सभकेँ ताकैत रहल। धीरे-धीरे ओकरा देखायल जे प्रत्येक खाता एक छोट गोहि बनि गेल अछि। मुँह खोलि धन नहि, नाम चिबा रहल अछि। जकर नाम खाता बनल, ओकरा समाज केवल संख्या मानलक। जकर नाम मार्फत धन गुजल, ओकरा अपराधी कहि तुरन्त पकड़ल गेल। जे असली मालिक छल, से अदृश्य रहल। चन्द्रपाल एहि अदृश्यताक दलाल छल।

ओ पहिल बेर सोचलक—यदि सभ खाता खुलि जाए, यदि प्रत्येक मार्फत स्थान पर असली आदेशक नाम लिखल जाए, तखन समाजक चेहरा केहन देखाएत? कतेक धर्मशील दाता, कतेक सम्मानित वकील, कतेक विदेशी परोपकारी, कतेक विकास-पुरुष, कतेक शोधकर्ता, कतेक नेता—सभक पाछाँ चिबायल नामक धूलि उड़त। ओकरा डर लागल, मुदा एहि बेर डर पकड़ा जाएबाक नहि, पूरा शृंखला देखबय पड़बाक छल।

ओ अपन बन्द मोबाइल उठेलक। राघव सिग्नलक अन्तिम नम्बर एखनो सुरक्षित छल, यद्यपि सन्देश सभ मेटा गेल छल। चन्द्रपाल टाइप कएलक—'खाता बन्द कर।' फेर मेटा देलक। फेर लिखलक—'ककर खाता छल?' फेर मेटौलक। अन्तमे ओ केवल लिखलक—'हम माध्यम छलहुँ, मुदा निर्दोष नहि।' सन्देश पठेबा सँ पहिने स्क्रीन ठमकि गेल। अक्षर पात बनि स्क्रीन पर चिपकि गेल।

तहिये ओकरा बुझायल—राघवक अगिला सन्देश मेटाइत नहि रहत। जे शब्द अपराधक रक्षा लेल मेटाइत छल, से आब पात बनि चन्ना ठूँठ पर चिपकए चाहत। चन्द्रपाल मोबाइल बन्द कएलक। बाहर बाढ़िक पानिमे तैरैत खाता सभ आब कम देखाइत छल। ओकर ठाम पर छोट-छोट पाथर तैरैत छल, जकरा पर अधूरा नाम लिखल छल।

भोरक पहिल उजासमे चन्द्रपाल अपन खाता-बही, पात, आ लिखल पन्ना कपड़ामे बाँधलक। ओ जानैत छल जे एहि सँ ओकर अपराध धोआ नहि जाएत। शायद ओकरा क्षमा नहि भेटत। शायद ओकरा दण्ड भेटत, उपहास भेटत, अविश्वास भेटत। मुदा पहिल बेर ओ किछु नुकाबय नहि, लेबय चलल—नाम-पहराक ठाम।

ओ घरसँ बाहर निकलल। पानि ठेहुन धरि छल। पानि प्रत्येक डेग पर ओकर टखनाकेँ पकड़ि कने-कने पाछाँ घीचैत छल, जेना बाट स्वयं ओकरासँ हिसाब माँगैत हो। ओकरा लागैत जे ओकर तरबामे कोनो अदृश्य खाता चिपकल अछि। ओ लँगड़ाइत चन्ना गाछीक दिशामे चलल। दूर ठूँठक कोंपल पर पानिक बून्द चमकि रहल छल। बच्चा सभ शायद एखन सूतल छल, मुदा ठूँठ जागल छल।

चन्द्रपाल मनमे कहलक—‘हमर नाम पूरा लिखू, मुदा हमर प्रतिशत सेहो लिखू। जकरा मार्फत पाप गुजल, ओकरा केवल पीड़ित नहि, अपराधक बाट कहू।’ ओहि क्षण पानिमे एक हलचल भेल। गोहि देखाइ नहि पड़ल, मुदा ओकर पूँछक लहरि जेकाँ पानि अलग भेल। जेना नदी कहि रहल हो—खाता आब खुलबाक शुरू भेल।

ओ चन्ना गाछीक ठूँठ लग पहुँचल तखन राघवक फोन सँ एक अन्तिम चमक उठल। स्क्रीन पर कोनो नम्बर नहि, कोनो नाम नहि, केवल तीन शब्द—‘सन्देश नहि मेटत।

लोकगीत: म्यूल बनल जीवन

लोकधुन: खाता-विरहा

रहत हे नहि, बाट बेनाम रहत नहि हे,
'माध्यम' कहला सँ दोषक भार घटत नहि हे।

दोसराक खाता म्यूल बनौने, अपने जीवन म्यूल,
प्रतिशतक पथ पर पाप ढोइत रहल अनुकूल।
तीन बही, दू फोन, बन्द कोठरी राति,
प्रत्येक रकम पाछाँ नामक करुण थाती।
‘हमर नाम पूरा लिखू, हिस्सो लिखू संग’,

पीड़ित मात्र नहि—अपराधक रास्ताक रंग।
नदी पूँछक लहरिसँ खाता खोलि देलक,
राघवक स्क्रीन कहलक—सन्देश नहि मेटत।
माध्यम कहलासँ दोषक भार कम नहि,
जतय पाप गुजरल, ओ बाट बेनाम रहत नहि।

हरेक रकमक पाछाँ नामक करुण थाती।

पीड़ित मात्र नहि, अपराधक बाटक रंग।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—विषयता पृथक् पदार्थ मानलापर प्रामाण्यक निरूपण: मणि-प्राप्ति केवल अन्यथा मणि नहि भेटबाक असम्भवताक कारण संयोगसँ होइत अछि। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। विषयता पृथक् पदार्थ मानलापर प्रामाण्यक निरूपण।]

अध्याय ९८

राघवक अंतिम संदेश

राघवक आदत छल—सन्देश पठाउ, मेटाउ, प्रमाण नष्ट करू। मुदा रातिमे ओकरा अपन माएक अन्तिम आवाज मोन पड़ैत, जाहि रिकॉर्डिंगकेँ ओ फोन खाली करैत काल अनजानमे मेटा देने छल। ओहि व्यक्तिगत क्षतिक पीड़ा जानितो ओ दोसराक पुकार मेटबैत रहल। ओकर अपराधक मूल केवल तकनीकी चतुराई नहि, सुननाइ सँ भागबाक पुरान अभ्यास छल।

अंतिम संदेश मेटाएल नहि जाइत— ओ पात बनि ठूँठसँ चिपकि जाइत अछि।

अध्यायारम्भ लोकगीत: मौनमे उपस्थित जन

लोकधुन: गवाही-पराती

सुनू हे मौनो, मौनक हाजिरी सुनू हे,
आँखिक भाषा, भीजल पात—संकेत गुनू हे।

किायो नहि बाजै तइयो आँखि कहै—हम छी,
खाली आसन, भीजल पात कहै—हम छी।
मौनकेँ अनुपस्थित नहि, संकेत जकाँ पढ़ू,
सुरक्षित ठाम देलापर कंठक फूल गढ़ू।

उपस्थिति हस्ताक्षर नहि, सम्मानक अनुभूति,
जनक शान्त संगति देत भयपर विजय-पूर्ति।
मौनमे उपस्थित जनकेँ आदरसँ स्थान दिअ,
बोलबाक बेर अपने आए—एतबे विश्वास दिअ।

कण्ठ खुजत अपने बेर, जबरदस्ती नहि,
सुरक्षित छाहरिक भरोसे भय टिकत नहि।
खाली आसन, थिर आँखि—इहो गवाही थिक,
मौनक मान राखल जतऽ, न्याय ओतऽ नीक।

❖

जे सन्देश पातमे लिखाइत जएबाक छल, तकर आरम्भ ओही राति भेल। चन्द्रपाल बत्रा जखन अपन जीवनकेँ म्यूल अकाउण्ट बुझि चुकल, तखन राघव “सिग्नल” सोमानीक भीतरक नेटवर्कमे पहिल बेर सूनापनक घण्टी बाजल। चन्द्रपालक प्रतिशत, बटुकनाथक विलम्ब, लाउ किन-हंगक लाभ, ब्रूमक दान—ई सभ कतहु-ने-कतहु राघवक अदृश्य सन्देश सभमे कखनो न कखनो गुजरल छल। ओ स्वयं अपराधक मुखिया कम, अपराधक साँस बेसी छल। मुदा साँस जँ बहुत दिन दोसराक लोभ ढोइत रहए, तँ एक दिन ओ अपने भीतर दम घुटबय लागैत अछि।

राघवक कोठरीमे एखन पाँच यंत्र जलि रहल छल। पाँचू यंत्रक मिझरायल भनभन आ ओकर पीठक हलुक ताप कोठरीमे अदृश्य मधुमाछी-छत्ता जेकाँ टँगल छल। सभ पर चमकैत बिन्दु, सुरक्षा-चिन्ह, ताला, समय, कूट, अनाम दल, दान-खाता, स्मृति-परियोजना, विदेशक सम्बन्ध—सभ व्यवस्थित देखाइत छल। बाहरक दुनियाँक लेल ओकर हाथमे एखनहुँ नेटवर्क छल। मुदा चन्ना गाछीक ठूँठक भीतर जे हँसी उठल छल, से ओकर सभ यंत्रक कानमे धूलि

जेकाँ पैसि गेल। सन्देश आब पहुँचैत छल, उत्तर नहि अबैत छल। खाता खुलैत छल, भरोसा नहि खुलैत छल।

ओ अपन पुरान आदतिसँ एकटा सुरक्षित समूह खोललक। नामसभ छद्म छल—“दान”, “विरासत”, “सफाई”, “न्यास”, “अभिलेख”, “विदेशी सलाह”। एहि नामक पाछाँ असली मनुष्य सभ छल, मुदा राघवकेँ कखनो असली नामसँ प्रयोजन नहि रहल। ओ सदिखन कोडमे जीयल। ओकरा लग सम्बन्ध नहि, पहुँच छल; विश्वास नहि, प्रवेश-शब्द छल; मित्रता नहि, सुविधा छल।

ओ सन्देश लिखलक—“खाता बन्द करू।” फेर मेटा देलक। दोसर लिखलक—“नब मार्ग खोलू।” से सेहो मेटा देलक। तेसर लिखलक—“नामक अभिलेख पर कब्जा कठिन अछि।” एहि वाक्य पर ओकर आङुर ठमकि गेल। कठिन? कठिन ककर लेल? जे समाज बरखों धरि अपन मृतकक नाम नहि बचा सकल, से अचानक कठिन कोना भऽ गेल? ओकरा मोन पड़ल—कटल ठूँठक चारू कात बच्चा सभ पाथर पर नाम लिखैत छल। ओ बच्चा सभ ककरो आदेशसँ नहि, न डर सँ। ओ सभ तर्कक सूत, दुखक पानि, आ गंगेशक प्रश्न सँ एक नब पहरा बुनि रहल छल।

राघव नेत्र मूनि लेलक। ओकर भीतर एक दृश्य खुलल। चन्ना गाछीक ठूँठ नहि, अपितु एक विशाल अन्हार कोठरी, जाहिमे हजारो सन्देश पात बनि लटकि रहल अछि। प्रत्येक पात पर ओहि बातक चिन्ह जे ओ कखनो गायब भेल बुझने छल। “भेजल गेल”, “मेटाओल गेल”, “देखल गेल”, “चुप रहल”, “लाभ बाँटल”, “नाम हटाओल”, “दान ढाँकल”—सभ पातक नोक पर लटकैत छल। गायब सन्देश सभ गायब नहि भेल छल; ओ सभ बस चन्ना गाछीक दोसर देहमे पात बनि गेल छल।

ओ आँखि खोलि डरि गेल। मोबाइलक परदा पर एक पातक आकृति झिलमिला रहल छल। ओ किछु दबौलक, आकृति न हटल। ओ यंत्र बन्द कयलक, पात अन्हारमे सेहो चमकल। ओ दोसर यंत्र उठौलक, ओतए सेहो पात। तेसर पर—पात। चारिम पर—पात। पाँचम पर—पात। जकरा ओ गुप्तता मानैत छल, से स्मृतिक वन बनि ओकरा घेरेने छल।

राति आधा बीतल। बाहर शहरक सड़क शान्त छल, मुदा राघवक भीतर सन्देशक चकरघिन्नी चलैत रहल। ओ पहिल बेर अपन नाम पूरा लिखए चाहलक—“राघव सोमानी।” स्क्रीन पर उभरल—“राघव सिग्नल सोमानी।” ओ “सिग्नल” हटौलक। अक्षर फेर घुरि आएल। ओ बुझलक, उपनाम जे अपराधक चतुराई लागैत छल, आब ओकर बेड़ी बनि गेल

अछि। समाज कतेक बेर मनुष्यक नाममे ओकर पाप जोड़ि दैत अछि; मुदा एतय ओकर अपन कर्मे ओकर नाममे घर कऽ लेलक।

ओ चन्द्रपालकेँ सन्देश पठाबऽ चाहलक—“तों ठीक कहने रहह, हम सभ खाता छी।” सन्देश नहि गेल। बटुकनाथकेँ लिखलक—“अबेर भेल, मुदा सुन।” नहि गेल। लाउकेँ लिखलक—“लाभक भाषा चन्ना गाछीमे चलैत नहि।” नहि गेल। ब्रूमकेँ लिखलक—“दानक पाछाँ शव अछि।” नहि गेल। सभ सन्देश ओकर परदा पर अटकैत गेल, जेना प्रत्येक वाक्य बाहर जाएबासँ पहिने ओकरा स्वयं पढ़बाक दण्ड दऽ रहल हो।

तखन ओ एकटा छोट वाक्य लिखलक—“हमरा भय लगैत अछि।” सन्देश गेल। मुदा ककरा? किछु क्षण धरि परदा खाली रहल। फेर उत्तर आयल—“उपस्थित।” ओ उत्तर ककरा सँ आयल, ई पता नहि। न संख्या, न चिन्ह, न दल। केवल “उपस्थित।” एहि एक शब्दमे ठूँठक चारू कात बैसल बच्चा सभक स्वर, मृतक सभक हवा, आ सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन एकहि संग सुनाइ पड़ल।

राघवक भीतर एक पुरान स्मृति खुलल—बाल्यावस्थामे ओ कागचक पात पर गुप्त लेख लिखैत छल। नेबोक रस, आगिक ताप, नुका कऽ लिखल बात। ओकर पिता कहैत—“रहस्य राखब सीख, तखने संसारमे काज देत।” मुदा चन्ना गाछी कहैत छल—“जे रहस्य मनुष्यक गरिमा बचाबए, ओ संरक्षण; जे रहस्य नाम लुटए, ओ अपराध।” राघव एहन भेद कखनो सीखल नहि।

ओ धीरे-धीरे अपन सभ समूह खोललक। प्रत्येक ठाम सन्देश लिखल, पर पठाएल नहि। पहिल—“दानक खाता बन्द नहि, सत्यक खाता खोलू।” दोसर—“नाम हटाएल गेल, तँ स्मृति प्रतिलिपि बनि घुरत।” तेसर—“चन्ना गाछीक ठूँठ आब नियन्त्रणमे नहि।” चारिम—“खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल।” एहि अन्तिम वाक्य पर ओकर हाथ काँपल। ‘आत्मा’ शब्द ओ कखनो प्रयोग नहि करैत छल। ओकर कारोबारमे आत्मा लाभ-हानिक बाहरक वस्तु छल। आइ ओही बाहरक वस्तु भीतरक एकमात्र दरबाजा लागल।

ओ सन्देश पठा देलक। परदा पर समय टिक-टिक करैत रहल। सामान्यतः एहन सन्देश किछु क्षणमे गायब भऽ जाएत। ई नहि गायब भेल। ओ प्रतीक्षा करैत रहल। एक मिनट, पाँच मिनट, आधा घण्टा। वाक्य ओतहि रहल—“खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल।” ओ झुँझला कऽ गायब करबाक अवधि फेर जाँचलक। अवधि सही छल। एना नहि होएबाक छल। मुदा एखन अपराधक नियम टूटि रहल छल।

सन्देश पर एक हरियर रेखा उगि आयल। पहिने ओ डिजिटल दोष लागल। फेर रेखा पातक डंठल बनि गेल। अक्षर सभ पातक शिरा जेकाँ पसरल। परदा पर चन्ना गाछीक नव कोंपलक चित्र नहि, कोंपल स्वयं उगि रहल छल। हवामे एक क्षण लेल नव पातक कच्चा हरियर गन्ध पसरल—जे ओहि यन्त्र-कोठरीमे पहिल बेर आयल छल। राघव डरि कऽ मोबाइल फेकलक। ओ जमीन पर खसल, मुदा टूटल नहि। परदा सँ छोट हरियर पात अलग भऽ कऽ निकलल आ हवामे उड़ि गेल।

एहि बीच गढ़ नारिकेलमे अधरतिया। ठूँठ लग बच्चा सभक पहरा ओहि दिन अनन्या आ दू छोटका बालक पर छल। हवा एकदम स्थिर—एतेक स्थिर जे उतरैत पानिक मन्द चट-चट आ दीपक बातीक जरब सेहो फुटा कऽ सुनाइ पड़ैत छल। अचानक पश्चिम दिस सँ एक पात उड़ैत आयल। गाछ कटि गेल छल, आ ओ पातक मौसम नहि छल। पात हरियर, पाछाँ चमकैत, जेना अक्षरक रस सँ बनल। ओ ठूँठक कगार पर आबि चिपकि गेल। अनन्या दीप लऽ कऽ लग गेली। पात पर लिखल छल—“खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल।”

छोटका बालक पूछलक, “ई कोन नाम?” अनन्या कहली, “ई नाम नहि, स्वीकारक पहिल पात अछि।” दोसर कहलक, “राघवक?” अनन्या उत्तर नहि देली। ओकरा बुझाइत छल—राघवक अपराध छोट नहि, ओकर स्वीकार पूरा नहि। एक पातसँ जंगल नहि बनैत। मुदा जे मनुष्य केवल गायब होइत सन्देश बनबैत रहल, ओकर पहिल अगायब वाक्य यदि ठूँठ पर चिपकि गेल अछि, तकरा अनदेखा सेहो नहि कएल जा सकैत।

भोर धरि पात ओतहि रहल। लोक आयल। कोनो जुलूस नहि, कोनो नारा नहि। बा पात देखलीह आ कहलीह, “जकर सन्देश गायब नहि भेल, ओकरा आब नामक अदालतमे ठाढ़ होमए पड़त।” मीरा कहली, “स्वीकार बिनु उत्तरदायित्व अधूरा अछि।” देविका जोड़ली, “आत्मा खुलल कहब सहज, जिनकर मोन तोहर कोडसँ चिबायल गेल, हुनका सम्मुख खुलब कठिन।” अनन्या पातक नीचाँ एक पाथर राखली। पाथर पर लिखल गेल—“प्रतीक्षा।”

ओहि दिन राघव शहरमे जागल तखन ओकर सभ यंत्र सामान्य चलि रहल छल। किछु समूहमे उत्तर आयल—कोनो हँसल, कोनो गाली देलक, कोनो आदेश देलक जे चुप रहू, कोनो पूछलक जे पागल भेलहुँ की। मुदा जे सन्देश ठूँठ पर चिपकल, से ओकर परदासँ अनुपस्थित छल। डिजिटल संसारसँ गायब, स्मृतिक संसारमे उपस्थित। ई उलटफेर ओकरा भीतर सँ तोड़ि देलक।

ओ भागि सकैत छल। पुलिस, अदालत, विदेश, छद्म नाम—सभ मार्ग ओकरा बूझल छल। मुदा ओहि दिन ओकरा अनुभव भेल जे मार्ग नहि, रेखा बदलि गेल अछि। जे रेखा पहिने अपराधी सभकेँ जोड़ैत छल, आब ओ रेखा चन्ना गाछीक ठूँठसँ ओकर हृदय धरि खिंचि गेल अछि। राघव पहिल बेर बिनु कोड, बिनु मध्यस्थ, बिनु गायब सन्देशक एक साधारण कागच पर लिखए बैसल—"हम जे चुप रखलहुँ, से अपराध छल।"

कागच पूरा नहि भेल। ओ प्रथम पाँति लिखि ठमकि गेल। सत्य लिखबाक अभ्यास ओकरा नहि छल। से राति धरि ओ एकहि पाँति घुरैत रहल। प्रत्येक बेर "हम" लिखैत काल ओकर हाथ काँपैत। अपराधक भाषामे 'हम' कम होइत अछि; ओतय 'प्रक्रिया', 'दल', 'परियोजना', 'जोखिम', 'खाता' होइत अछि। प्रायश्चित्तक भाषामे पहिल शब्द 'हम' होइत अछि, आ ओही शब्द सभसँ कठिन।

सत्यव्रत मेहताकेँ ओ पात देखाओल गेल। ओ बहुत काल धरि पढ़ैत रहलाह। हुनकर चेहरा पर न प्रसन्नता छल, न क्षमा। ओ कहलनि, "ई गवाही नहि, गवाहीक दुआर अछि। दुआर खुलल अछि, भीतर चलब शेष अछि।" बच्चा सभ एहि वाक्यकेँ रजिस्टरमे लिखलक। तखन अनन्या पूछली, "गवाही के देत?" सत्यव्रत उत्तर देलनि, "जे समय पर नहि बाजल, से पहिने। हमहुँ।"

एहि उत्तर पर सभ चुप भऽ गेल। राघवक अन्तिम सन्देश ठूँठ पर पात बनि रहल, मुदा ओकर छाह सत्यव्रत मेहताक मौन पर पड़ि गेल। जँ राघव अपन कोडक अपराध लिखत, तँ सत्यव्रतकेँ सेहो अपन विलम्ब, अपन नहि-बाजल वाक्य, अपन पदक भीतरक डर लिखए पड़त। नामक संविधानक अगिला पृष्ठ आब केवल अपराधी सभक नहि, साक्षी सभक सेहो होएबाक छल।

साँझमे पात हलुक हिलल। ओकर हरियर रंग गाढ़ भेल। अक्षर कने बदलल—"खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल"क नीचाँ सूक्ष्म पाँति उभड़ल—"सुनबाक ऋण बाँकी अछि।" अनन्या दीपकेँ पात आओर लग राखली। सत्यव्रत पाछाँ ठाढ़ रहलाह। हुनकर हाथ अपने-आप झोरा दिस गेल, जाहिमे पुरान रजिस्टर, शपथपत्र, आ स्याहीकलम छल।

लोकगीत: पात बनल अन्तिम सन्देश

लोकधुन: सिग्नल-विरहा

चिपकल हे पात, अन्तिम सन्देश पात बनि चिपकल हे,

खाता बन्द नहि—आत्माक दरबाजा खुजल हे।

अन्तिम सन्देश मेटल नहि, पात बनि चिपकल,
हवा उड़ाबय चाहल, नामक रससँ अटकल।
राघवक जाल सून, भीतर घंटी बाजल,
नीचाँ सूक्ष्म पंक्ति—सुनबाक ऋण बाँकी,

स्वीकारक बादो गवाहीक राह अछि बाकी।
अनन्या दीप लगौलक, अक्षर गाढ़ भेल,
सत्यव्रतक पुरान रजिस्टर झोरामे हिलि गेल।
सन्देश अन्तिम नहि, अगिला कानक बुलाहट,
पातपर लिखल मौन माँगै साक्षीक आहट।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—केवल पुरुष: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—अन्यथा व्यक्तिक संग दण्ड राखबाक आ हटेबाक समय केवल पुरुषक अभाव तथा दण्डक अभावविषयक अबाधित व्यवहार बुझाओल नहि जा सकैत छल। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—केवल पुरुष अर्थात् कुम्हारक अभावक व्यवहार, विशेषण आदिक अभावक कारण मात्र सिद्ध होइत अछि, किएक तँ ओ अभाव एकमात्र शक्तिसँ युक्त अछि।।]

अध्याय ९९

सत्यव्रत मेहताक गवाही

गवाही देबासँ ठीक पहिने सत्यव्रत तीन बेर अपन कागच मोड़लनि। हुनका डर छल—साँच बजला पर पद, मित्रता आ पहिलुक निर्णय सभक प्रतिष्ठा टूटत। फेर हुनका अनन्याक रजिस्टर मोन पड़ल, जाहिमे बच्चा सभ गलती काटि कऽ सही शब्द लिखैत छल। ओ बुझलाह—गलती काटलासँ पन्ना खराब नहि होइत; नहि काटलासँ इतिहास खराब होइत अछि।

गवाहीकेँ हवा उड़ाबए चाहलक, पानि गलाबए चाहलक— मुदा गवाही पात छल, हटल नहि।

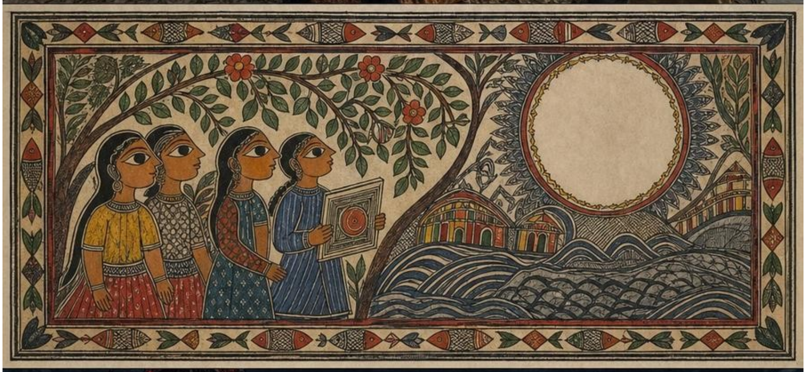

अध्यायारम्भ लोकगीत: बच्चाक हाथसँ जीत

लोकधुन: गज-ग्राह विजय गीत

थामू हो नेना, सत्यक आङुर थामू हो,

गजक बल थाकत, अहाँक हाथ नहि—जानू हो।

गजक बल थाकि सकै, बच्चाक हाथ नहि,
नान्हि उँगली सत्य पकड़ै, छोड़ै बाट नहि।
एक नेना चित्र बनाबै, दोसर नाम पढ़ै,
तेसर प्रश्न उठाबै, चौठा संगमे बढ़ै।

बच्चाक सहज न्याय-बोध ग्राहक पकड़ ढील करै,
नव पीढ़ीक उज्जर हँसी अन्हारक जड़ि हरै।
बच्चाक हाथसँ जीत, आशाक पाँखि पसार,
साँच सिखाउ, संग दिअ—ओ बनत भविष्यार।

एक बनाबए चित्र, दोसर नाम बाँचए,
तेसर प्रश्नक ढोल पीटए, चारिम संग नाचए।
नान्हि-नान्हि हाथक जोड़ सँ ढील पड़ए पकड़ि,
नेनाक उज्जर हँसी सँ टूटए अन्हार-जकड़ि।

❖

सुनबाक ओही ऋणक भोर छल। राघवक अन्तिम सन्देश पात बनि चन्ना गाछीक ठूँठ पर चिपकल रहि गेल छल। राति भरि बाढ़िक हवा ओकरा उड़ाबए चाहलक, पानि ओकरा गलाबए चाहलक, मुदा पात हटल नहि। भोरमे जखन बच्चा सभ नामक रजिस्टर लऽ कऽ पहुँचल, तखन ओ पातक हरियर पृष्ठ पर साफ लिखल देखलक—“खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल।” अनन्या बहुत काल धरि ओहि वाक्यकेँ ताकैत रहली। फेर ओ धीरे कहली, “खाता तँ व्यापारीक शब्द अछि। आत्मा खुलब तखन भेल जखन गवाही देल जाए।”

एहि वाक्य सुनि सत्यव्रत मेहता, जे ठूँठक दोसर कात चुप बैसल छलाह, एकाएक काँपि उठलाह। हुनका लग शपथपत्र छल, नोटबुक छल, स्याहीकलम छल, मुदा एखन धरि हुनकर अपन गवाही नहि छल। ओ अनेक लोकक नाम सुनि चुकल छलाह, अनेक मौनक भार लिखि चुकल छलाह, मुदा जखन प्रश्न अपना पर घुमि आयल, तखन हुनकर हाथ एना सूखि गेल जेना विधिक पुस्तकक पात आगि लग राखल गेल हो।

बच्चा सभक जन-संहितामे एक पाँति लिखल छल—“जे सुनत, से अपन मौनक नामो लिखत।” ओहि पाँतिकेँ लिखैत काल सभकेँ लागल छल जे ई साधारण नियम अछि। मुदा एखन बुझायल जे ई नियम सभसँ कठिन अछि। अपराधी अपन अपराध नुकबैत अछि; पीड़ित अपन घाव नुकाबऽ बाध्य होइत अछि; अधिकारी अपन सुविधाकेँ नीति कहैत अछि; आ साक्षी अपन चुप्पीकेँ संयम कहि बचैत अछि। सत्यव्रत मेहता एहि चारूकात ठाढ़ सभ छाहक बीच अपन छाह ताकऽ लागलाह।

ओ उठलाह नहि। केवल झोरासँ एकटा उज्जर पन्ना निकाललनि। पन्ना पर कोनो सरकारी शीर्ष, कोनो मोहर, कोनो पदनाम नहि छल। ऊपर ओ लिखलनि—“सत्यव्रत मेहताक गवाही।” फेर किछु काल रुकि गेलाह। अनन्या पूछली, “पद नहि लिखब?” ओ माथ हिलौलनि—“पद सँ गवाही भारी नहि होएबाक चाही। पद जतेक भारी होइत अछि, मनुष्य ओतेक बेर ओहि पाछाँ नुका जाइत अछि।”

पहिल वाक्य लिखबामे हुनका बहुत समय लागल। स्याहीकलमक नोक पन्ना पर राखि ओ जे रेखा खिंचलनि, से अक्षर नहि, काँपन छल; नोकक मन्द खरखराहटि एना सुनाइ पड़ैत छल जेना सूखल खेतमे पहिल हर चलैत हो। अन्ततः लिखलनि—“हम अनेक बेर समय पर बाजि सकैत छलहुँ, मुदा नहि बाजलहुँ।” एहि वाक्यक बाद ठूँठक चारू कात एहन सन्नाटा भरल जे दूर कमला-बलानक पानि धरि सुनाइ पड़ल। ई वाक्य कोनो नाटकीय स्वीकार नहि छल; ई ओ दरार छल जकरा भीतरसँ मनुष्य पदक खोल छोड़ि बाहर निकलए लगैत अछि।

ओ आगाँ लिखलनि—“जखन पुलक मजदूरक नाम सूची सँ हटाओल गेल, हम कागच देखलहुँ। हम लिखलहुँ—प्रक्रिया चलि रहल अछि। प्रक्रिया चलैत-चलैत देह सड़ि गेल। जखन अस्पतालमे साँस बिकाइत छल, हम रिपोर्टक भाषा सँ सन्तोष करैत रहलहुँ। जखन डिजिटल ठगीमे युवकक घर उजड़ल, हम कहि सकैत छलहुँ जे ठगी मात्र थाना नहि, समाजक घाव अछि; मुदा हम मुकदमाक परिधिमे रहि गेलहुँ। जखन स्त्रीक निजता बाजार बनल, हम प्रमाण माँगलहुँ, मुदा पीड़िताक भयकेँ प्रमाण नहि मानलहुँ।”

मीरा ओहि पाँति पर आँखि मूनि बैसि गेली। हुनकर चेहरा कठोर नहि, थाकल छल। सत्यव्रत हुनका दिस नहि तकलनि; शायद तकैत तँ हाथ रुकि जाइत। ओ लिखैत रहलाह—“हम कानूनक भाषा जानैत छलहुँ, मुदा लोकक काँप सुनब अबेर सँ सीखलहुँ। हम गवाहीकेँ दस्तावेज बुझैत छलहुँ; आब बुझैत छी, दस्तावेज गवाहीक खोल मात्र अछि। भीतरक स्वर यदि नहि सुनल जाए, तँ कागच न्याय नहि, शिष्ट चुप्पी बनि जाइत अछि।”

बा अपन लाठी पर झुकि ओ पन्ना सुनैत रहलीह; लाठीक घसाइत मूठ हुनकर हथेलीमे धीरे-धीरे गरम भऽ गेल छल। ओ कहलीह नहि, मुदा हुनकर आँखि कहैत छल—एहन गवाही अबेर सँ आयल अछि, मुदा अबेरक गवाही सेहो जँ सच हो, तँ ओकरा फेकल नहि जाए। गामक बूढ़ लोक बुझैत अछि जे अनाज अबेर सँ फूटल तँ पैघ उपज नहि देत, मुदा बीजक सच बचल रहत। बच्चा सभ एहन क्षमा नहि जानैत छल, मुदा ओ सभ सत्यक ठाम पहरा दऽ रहल छल।

सत्यव्रत अगिला पाँतिमे गंगेशक स्मरण लिखलनि। “नव्य न्याय हम सभकेँ प्रमाणक सूक्ष्मता सिखबैत अछि। मुदा प्रमाणक सूक्ष्मता यदि जाति, श्रम, देह, स्त्री, गरीब, मृतक, आ मौनक विरुद्ध होअए, तँ ओ न्याय नहि, चतुराई रहि जाइत अछि। गंगेशक प्रश्न हमरा सम्मुख अछि—जे समाज जीवनक असुविधाजनक सत्यकेँ काटि देलक, से ग्रन्थक मान राखि की पाओत? हम सेहो अनेक बेर असुविधाजनक सत्यकेँ ‘प्रक्रियात्मक कठिनाई’ कहि काटलहुँ। ई हमर मौनक जाति-व्यवस्था छल।”

एहि वाक्य पर ठूँठक पात-जन्मल हरियर बिन्दु कने काँपि उठल। कियो ओकरा हवा कहलक, कियो संकेत। अनन्या रजिस्टरमे लिखली—“मौनक जाति-व्यवस्था।” ई नब पद सभकेँ चौंकौलक। सत्यव्रत स्वयं सेहो एक क्षण लेल चौंकलाह, कारण ओ अपन हाथसँ लिखैत-लिखैत पहिल बेर बुझलनि जे जाति केवल जन्मक अहंकार नहि; जाति ओहो अछि जतए किछु आवाज सदिखन ऊपर, किछु सदिखन नीचाँ राखल जाए।

ओ लिखलनि—“हमर कार्यालयमे फाइल सभ क्रमांक सँ चलैत छल। क्रमांक सुरक्षित छल, नाम असुविधाजनक। क्रमांक ऊपर हस्ताक्षर करब सहज; नामक आगाँ आँखि उठाब कठिन। एहि कठिनता सँ बचब लेल हम अनेक बेर क्रमांक चुनलहुँ। आइ चन्ना गाछीक ठूँठ पर बैसि कहैत छी—क्रमांकक सुविधा नामक हत्या बनि सकैत अछि।”

एहि गवाहीक बीच सत्यव्रत मेहता नायक नहि बनलाह। उनटे, जतेक ओ लिखैत गेलाह, ओतेक हुनकर देह छोट देखाइ पड़ए लागल। पद जे हुनका बरखों धरि ऊँच बनौने छल, से पन्ना पर उतरैत-उतरैत हुनका मनुष्यक कद पर आनल। लोकक लेल ई दृश्य विचित्र छल—जे व्यक्ति पहिने अदालतमे ठाढ़ होइत छलाह तँ सभ चुप भऽ जाइत छल, से आब बच्चा सभक बीच बैसल अपन दोष लिखैत छलाह।

देविका धीरे पूछली, “ई शपथपत्र अछि?” सत्यव्रत माथ उठौलनि—“नहि। शपथपत्रमे लोक सत्य कहबाक शपथ लैत अछि। एहिमे हम मानैत छी जे हम सत्य चुप राखलहुँ। ई शपथक पाछाँक पन्ना अछि।” गोप कुमार कहलनि, “एकरा अभिलेखमे कतऽ राखब?”

अनन्या उत्तर देली—“सभ नामक बाद नहि, सभ नामक बीच। मौन यदि बीचमे अपराध करैत अछि, तँ ओकर पन्नो बीचमे रहत।”

मुदा गवाही एतबे पर समाप्त नहि भेल। सत्यव्रत अन्तिम भाग लिखैत काल काँपि गेलाह। “हम एहि बातक क्षमा माँगैत छी, मुदा क्षमा माँगनाइ पर्याप्त नहि। जकरा समय पर न्याय नहि भेटल, ओकरा हमरा क्षमा सँ जीवन नहि घुरत। तें हमर गवाही दण्डक आग्रह करैत अछि—हमर पदक इतिहास, हमर निर्णयक विलम्ब, हमर चुप्पीक लाभार्थी, आ हमर मौनसँ बाँचि निकलल अपराध—सभक नाम सार्वजनिक हो।”

भीड़मे हलचल भेल। किछु लोक डेरायल। सार्वजनिक नाम फेर झगड़ा खोलत; फाइल खुलत; पदक स्मृति खुलत; न्यायालयक अन्हार खुलत। मुदा ठूँठक छाँह नमहर भऽ सभक पएर छू रहल छल। ओ छाँह एना लागैत छल जेना कहैत हो—नामक पहरा आधा नहि होइत। जँ पीड़ितक नाम लिखब, तँ मौनक लाभार्थीक नामो लिखू।

सत्यव्रत पन्नाक अन्तमे लिखलनि—“जँ कखनो हमर गवाही स्मारक, भाषण, पुरस्कार, या दान-पत्रमे बदलि देल जाए, तँ बच्चा सभ ओकरा अस्वीकार करत। ई पन्ना हमरा पैघ करबाक लेल नहि, हमरा छोट राखबाक लेल अछि। न्याय तखन शुरू होइत अछि जखन साक्षी अपन सुविधा सँ उतरि लोकक बराबर बैसि जाए।”

ओ पन्ना अनन्याक हाथमे देलनि। अनन्या ओकरा तुरन्त रजिस्टरमे नहि चिपकौली। ओ पहिने पन्नाकेँ पाथर सभक गोल घेरामे राखली, नाम सभक बीच। हवा चलल; कागच एक बेर पातर पाँखि जेकाँ फड़फड़ायल, फेर पाथरक बीच थिर भऽ गेल। राघवक पात-बनल सन्देश कँपल। चन्द्रपालक अधूरा नामक पाथर कने ससरल। बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमाक राति सँ बचल राख कने उड़ल। लाउक अन्तिम सौदाक भीजल कागच पानिक छिटा सँ मुड़ि गेल।

तखन बूढ़बा भूत दिनमे पहिल बेर पूरा आकृतिमे देखाइ पड़लाह। ओ कारी नहि छलाह; धूसर नहि; ओ माटिक रंगक छलाह, जकरा पर धूप आ छाँह दुनू पड़ि रहल छल। ओ सत्यव्रत लग अएलाह, पन्ना दिस ताकलनि, फेर कहलनि—“गवाही लिखलहुँ। आब सुनब?” सत्यव्रत हाथ जोड़लनि—“हँ।” बूढ़बा भूत कहलनि—“सुननाइमे कान मात्र नहि, हाथो चाही। अगिला बेर जखन ग्राह पकड़त, गजकेँ केवल पुकार नहि, पकड़बाक हाथ सेहो चाही।”

एहि वाक्यसँ सभक ध्यान गज-ग्राह कथा दिस घुरि गेल। एखन धरि गज पुकारैत रहल, ग्राह पकड़ैत रहल, देवता वा स्मृति वा नाम बीचमे उतरैत रहल। मुदा बूढ़बा भूत नब प्रश्न छोड़ि

गेलाह—जँ बच्चा सभक हाथ नामक पहरा धऽ चुकल अछि, तँ की ओ सभ गजक पएर पकड़ि खिंचि सकत? की गवाही केवल सुनल जाएत, कि ओकरा बचाओल सेहो जाएत?

राति उतरबाक पहिने सत्यव्रत मेहताक गवाही रजिस्टरमे बीचक पन्ना बनि चिपका देल गेल। ऊपर नाम नहि, पद नहि—केवल एक पाँति: “मौन, जे आब सुनबाक दण्डमे बैसल अछि।” बच्चा सभ एक स्वरमे कहलक—“उपस्थित।” ठूँठक हरियर बिन्दु उत्तरमे उज्जर होइत बुझायल।

आ दूर बाढ़िक पानिमे, जतय गोहि सभक आँखि कखनो चमकैत छल, ओतय एहि बेर एकटा विशाल छाह उठल—न पूरा गज, न पूरा ग्राह। कथा अगिला साँस लेल मुड़ि गेल, किएक तँ आब नामक पहरुआ सभकेँ हाथ बढ़एबाक बेर आबि रहल छल।

लोकगीत: मौन उपस्थित

लोकधुन: गवाही गीत

रहल हे गवाही, पात बनि अडिग रहल हे,
मौनक पहिल काज—अनसुना नामक रक्षा भेल हे।

हवा उड़ाबय चाहल, पानि गलाबय चाहल,
गवाही पात बनि ठूँठपर अडिग रहल।
मेहता पद नहि, अपन मौनक नाम कहलक,
‘देर धरि देखि चुप रहलहुँ’—रजिस्टर सहलक।
बच्चा सभ एक स्वरमे ‘उपस्थित’ बाजल,

हरियर बिन्दु उज्जर, दूर पानिमे छाह जागल।
गवाही सुनब मात्र नहि, बचेबो पड़त,
गजक पएर पकड़ि नेनाक हाथ बढ़त।
मौन जे आब दण्डमे सुनए बैसल अछि,
ओकर पहिल काज—अनसुना नामक रक्षा अछि।

'बहुत काल देखि चुप रहलहुँ'—रजिस्टर सहलक।
नेना सभ एक स्वर मे 'उपस्थित' बाजल,

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—प्रत्यक्ष: उदाहरण: जँ व्यक्ति अपन आँखि सँ चुल्हापर आगि जरैत देखैत छी, वा फूलक सुगन्ध नाक सँ लैत छी, तँ ई ओहि वस्तुक 'प्रत्यक्ष' ज्ञान थिक।]

अध्याय १००

गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

गजक बल थाकि जाइ छै, ग्राहक पकड़ि छूटि जाइ छै— बच्चाक हाथ टा नहि थाकैत।

अध्यायारम्भ लोकगीत: बाल-पारीक विजय

लोकधुन: बाल-कबड्डी गीत

दौड़ू हो नेना, नामक पारी दौड़ू हो,
हँसीक ढाल, जिज्ञासाक तरुआरि जोड़ू हो।

कबड्डी-कबड्डी नेना दौड़ै नामक पारी,
हँसी ओकर ढाल बनल, जिज्ञासा तरवारी।
सीमा पार करैत कहै—कियो अनाम नहि,
जकर कथा सुनल गेल, ओकर हार नहि।

पुस्तक, खेल, गीत मिलि न्याय सरल बनाबै,
बाल-पारीक विजय भविष्यक दिशा देखाबै।
हाथ नहि थाकै, मन नहि झुकै, संगक स्वर रहत,
दुइ सय वर्षक अन्हारो नेनाक भोरसँ कटत।

सीमा-रेखा पार करैत बाजू—कियो अनाम नहि,
पोथी-खेल-गीतक त्रिवेणी मे न्याय नहाए,
दुइ सय बरखक अन्हारो नेना-भोर सँ पड़ाए।

❖

ओहि राति ठूँठक चारू कात नामक पाथर सभ घेरा बना कऽ राखल छल। बाढ़िक पानि ओहिमे सँ किछु पाथरक धूलि धो देने छल, मुदा अक्षर नहि मेटायल। अनन्या अपन हथेली सँ एक पाथर पोंछली। ओकरा पर लिखल छल—‘जेकर नाम नहि भेटल’। ओ पाथर सभसँ बीचमे राखल गेल छल। सत्यव्रत दूर बैसल रहलाह। हुनका लग एखन कागच नहि, केवल खाली कान छल।

बा कहलीह, ‘आइ गज-ग्राहक कथा फेर कहू।’ बच्चा सभ चौंकल। ई कथा ओ सभ सुनने छल—हाथी जलमे उतरैत अछि, ग्राह पकड़ैत अछि, हाथी पुकारैत अछि, आ उद्धार होइत अछि। मुदा गढ़ नारिकेलमे कोनो कथा एकहि बेर सुनला पर समाप्त नहि होइत। प्रत्येक बेर ओकर मुँह फेरैत अछि, जेकाँ कमला-बलानक धारि राति भरि कछेर बदलैत अछि। दीपक लौ सभक चेहरा पर एहिना काँपैत छल जेना कथा स्वयं आगि पर हाथ सेकैत हो।

अनन्या पूछली, ‘गज के? ग्राह के?’ बा उत्तर नहि देलीह। ओ केवल पानिक कगार दिस देखलीह। पानि शान्त छल, मुदा सतहक नीचाँ हलुक तरंग छल, जेना कोनो प्राचीन जीव बिनु देहक घूमि रहल हो। आरुणि कहलक, ‘जे फँसल अछि, से गज। जे पकड़ि रहल अछि, से ग्राह।’ देविका जोड़ली, ‘आ जे फँसलाक नाम सुनैत अछि, से हाथ।’ मीरा कहली, ‘जँ बिनु अनुमति कियो कहै जे हम तोहर उद्धार करैत छी, तँ ओ हाथ नहि, दोसर ग्राह अछि।’

एहि वाक्य पर बच्चा सभ हँसल नहि। ओ सभ आब एहन उमेरमे पहुँचि रहल छल जतय हास्य, न्याय, आ डर एकहि देहमे रहि सकैत अछि। अनन्या रजिस्टर खोलली आ शीर्ष पर लिखली—‘गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ’। ओ लिखिते ठूँठक भीतरक हरियर बिन्दु हलुक काँपल।

शीर्षक लिखैत अनन्यासँ ‘ग्राह’क मात्रा पहिने गलत पड़ि गेल। ओ जीह निकालि हँसली, फेर काटि कऽ सही लिखली। बा कहलीह—‘देखलह, न्यायो एहनहि—गलती नुकाउ नहि, काटि कऽ सही लिखू।’ बच्चा सभक हँसीसँ गम्भीर सभा एक क्षण लेल घर जकाँ भऽ गेल।

पहिल कथा उज्ज्वलक माय कहलीह। हुनका लेल गज उज्ज्वल छल—स्क्रीनक जलमे उतरले मात्र डिजिटल ग्राह ओकर मोन पकड़ि लेलक। जतेक ओ छुटए चाहलक, ततेक पेंच कसैत गेल। बैंकक सन्देश, धमकीक आवाज, झूठक अदालत, अपमानक भय—सभ ओकरा पानिक नीचाँ तानैत रहल। ‘हमर बेटा पुकारलक,’ ओ कहलीह, ‘मुदा हम सभ ओकर पुकारकेँ पहिने लाज मानलहुँ, फेर मूर्खता, फेर चुप्पी। हाथ अबेर सँ बढ़ल।’

देविका ओहि नामक पाथर लग दीप राखली। ओ कहली, ‘आइ सँ डिजिटल ग्राहक चिन्हारि केवल अपराधक पाठ नहि रहत। हम सभ बच्चा सभकेँ ई सिखाएब जे जे पुकार डरमे दबल अछि, तकरा पहिने सुनू। स्क्रीनक जलमे जे हाथी फँसए, ओकरा कहू—तोहर गलती नहि, तोहर नाम अछि।’

दोसर कथा मजदूरक परिवारक छल। पुलक पाया लग जे देह सभ गोहि, गाद, ठेका, आ खाता-बही बीच चिबा गेल छल, ओ सभ गज छल कि ग्राह? आरुणि बहुत काल चुप रहल। फेर कहलक, ‘मजदूर गज छल, गोहि ग्राह छल—ई आधा बात अछि। असली ग्राह ओ कागच छल जाहिमे मजदूरक नाम मजदूरीक पाँति बनि गेल, देह दुर्घटनाक संख्या बनि गेल, मृत्यु ठेकाक जोखिम बनि गेल। ग्राह केवल जबड़ा नहि, भाषा सेहो होइत अछि।’

सत्यव्रत एहि पर माथ झुका लेलनि। हुनकर गवाहीक कलम एखन जेबमे छल, मुदा ओ लिखल नहि। बच्चा सभ स्वयं लिखलक—'ग्राहक दाँत कखन-कखन शब्द होइत अछि।' सत्यव्रत बुझलाह जे हुनका आब निर्णयक भाषा नहि, बच्चा सभक भाषा सँ सीखबाक अछि।

तेसर कथा मीरा कहली। 'हमरा लेल गज ओ स्त्री अछि जकर निजता पकड़ल गेल, जकर देहक छविकेँ फन्दा बनाओल गेल, जकर प्रेमकेँ अपराध कहल गेल, जकर चुप्पीकेँ सौदा बनाओल गेल। ग्राह केवल ब्लैकमेलर नहि, पूरा समाजक ओ आँखि अछि जे देखए चाहैत अछि मुदा मान देबए नहि चाहैत।' स्त्री सभक राति-सभासँ आयल कतेको आवाज एकसंग 'उपस्थित' कहलक। कटल ठूँठक छाह ओहि क्षण नमहर भऽ गेल।

गोप कुमार अपन कथा अनिश्चित स्वरमे कहलाह। 'डेटा सेहो जल अछि। जँ ओकर धारि लोकक हाथमे रहए तँ जीवन, आ जँ दलालक हाथमे जाए तँ ग्राह। हम सूची बचेलहुँ, मुदा सूचीमे नाम रहि गेल कि मनुष्य? एहि प्रश्न सँ हम राति-राति जागैत छी।' अनन्या हुनका दिस देखली —'तें सूचीकेँ पाथर लग पढ़ल जाएत। नामक संग परिवारक उत्तर लिखल जाएत। डेटा असगर गवाही नहि, सम्बन्धक संग गवाही।'

तखन रजिस्टरक पन्ना अपने-आप हलुक फड़फड़ायल। कियो हवा नहि अनुभव कयलक। बूढ़बा भूतक आकृति पानि आ धूपक बीच थिर भेल। ओ कहलनि, 'गज केवल पीड़ित नहि। कखनो अपराधी सभक भीतर सेहो एक गज फँसल रहैत अछि। मुदा ओ गज मुक्त होएबाक पहिने अपन ग्राहक नाम लैत अछि कि नहि—से देखल जाए।'

जेना ई संकेत छल। रातिक पाछाँ, पानिक धुँआमे बटुकनाथ हरिहरनक चेहरा देखाइ पड़ल। ओकर भीतरक गज कागचक गठरीमे फँसल छल। ग्राह ओकर लोभ मात्र नहि, ओकर कुल-गर्व, पेशाक अहंकार, तारीखक व्यापार, आ शास्त्रक नाम पर जीवित मनुष्यक अवमानना छल। ओ छटपटायल, मुदा ओकरा बचाबए कोनो देव नहि उतरल। बच्चा सभ केवल पूछलक—'नाम पूरा कहू।'

हरिहरनक मुँह सँ पहिने उपाधि निकलल, फेर पद, फेर वंश, फेर सम्मान। नाम नहि। पानि शान्त रहल। ग्राहक पकड़ि ढीला नहि भेल। तखन ओकर सन्तानक प्रश्न फेर गूँजल—'बाबा, न्याय बचेलहुँ कि पेशा?' बहुत काल बाद ओकर मुँह सँ मात्र 'बटुक' निकलल। पानिक एक बून्द ठूँठ पर पड़ल। ई मुक्ति नहि छल; ई स्वीकारक आरम्भ छल।

चन्द्रपाल बत्राकेँ जखन भीतरक जलमे देखल गेल, ओकर गज प्रतिशतक डोरीमे बँधल छल। ग्राह ओकर म्यूल अकाउण्ट नहि, ओकर बेनामी भूख छल। ओ हजार चेहरासँ कमाइत

रहल, मुदा अपन चेहरा बिसरि गेल। बच्चा सभ पूछलक—‘तोर नाम?’ ओ कहलक—‘कमिशन।’ पानि ठण्ढा भऽ गेल। फेर कहलक—‘चन्द्रपाल।’ पानिमे हलुक लहर उठल। मुदा लहर तुरन्त टूटि गेल, कारण ‘पाल’ शब्दक संग कतेको लोकक लूट जुड़ल छल। अनन्या लिखली—‘नाम कहब पर्याप्त नहि, नामक ऋण सुनब बाँकी।’

राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक भीतरक गज आवाजहीन छल। ओकर ग्राह गायब होमएबला सन्देश छल। जे लिखल गेल, से मेटा गेल; जे मेटा गेल, से अपराध बनि पसरल। आब ओकरा कोनो नेटवर्क नहि भेटैत। बच्चा सभ कबड्डीक रेखा खिंचलक। ओ रेखा मेटाइत नहि छल। राघव ओकर पार जाए चाहलक, मुदा साँस रोकि ‘कबड्डी’ कहबाक चाही। ओकर मुँह सँ आवाज नहि निकलल। मीरा कहली, ‘जे जीवन भरि दोसरक आवाज मेटओलक, ओकरा पहिने मौनक भार सहए पड़त।’

लाउ किन-हंग दूरदेशक शीशा-भवन सँ देखाइ पड़ल। ओकर भीतरक गज पृथ्वी छोड़ि भागए चाहैत छल। ग्राह ओकर लाभ नहि मात्र, ओकर नामहीन भविष्यक सपना छल। ओ संसारकेँ खण्ड, करार, श्रम-गुम्बद, ऑक्सीजन-हिसाब आ सुरक्षित ग्रहमे बाँटि देने छल। ओकरा लागैत छल—जतए नदी नहि, गाम नहि, कुल नहि, स्मृति नहि, ओतए अपराधक गन्ध सेहो नहि रहत। चन्ना गाछीक ठूँठ हँसल।

बा कहलीह, ‘एहि बेर गज-ग्राह पृथ्वी सँ बाहर जाएत।’ बच्चा सभ आकाश दिस देखलक। चन्द्रमा कनी पीयर छल, जेना बाढ़िक पानिमे धोआ कऽ उठल हो। एक तारा अचानक नीचाँ झुकल। अनन्या पूछली—‘दोसर ग्रह?’ बा उत्तर देलीह—‘जे पृथ्वी पर नाम सँ डरैत अछि, से अनाम आकाश खोजैत अछि। मुदा नामक पहरा ओतहु पहुँचि सकैत अछि।’

एहि बात पर कबड्डीक गोल रेखा खिंचल गेल। ई खेल बन्द होएबाक नहि छल। जे खेल भूत सभ सँ शुरू भेल, मृतक आ बच्चा धरि आयल, से आब गज-ग्राहक कथा सँ आकाश धरि उठबाक तैयारी करैत छल। बच्चा सभ पानिक कगार पर पएर राखि एकसंग साँस लेलक। ‘कबड्डी-कबड्डी’क स्वर धीरे-धीरे उठल। पहिने माटिमे, फेर ठूँठमे, फेर पाथरमे, फेर पानिक सतह पर, फेर आकाशमे।

सत्यव्रत मेहता ओहि स्वर सुनि काँपि उठलाह। हुनका बुझाइत छल जे कानूनक कोनो पुस्तकमे ई रेखा नहि भेटत। मुदा न्याय कखनो-कखनो बच्चाक साँसक रेखा बनि पृथ्वी आ आकाश बीच खिंचाइत अछि। ओ अपन जेब सँ कलम निकालि नहि लिखलनि। ओ पहिल बेर खेलक बाहर नहि, कात पर पहरुआ जेकाँ ठाढ़ भेलाह।

कबड्डीक पहिल फेरा अनन्या लेली। ओ रेखा पार कयली, मुदा सम्मुख कोनो मनुष्य नहि, पानिक भीतर सँ उठैत ग्राहक छाह छल। छाहक देहसँ पुरान कागच आ भीजल लोहाक मिझरायल गन्ध अबैत छल। छाह पूछलक—'बचाएब?' अनन्या उत्तर देली—'पहिने नाम कहू।' छाह काँपल। ओकर भीतरसँ अनेक स्वर उठल—मजदूर, युवक, स्त्री, बालक, अनाम, अपराधी, पीड़ित, जलसमाधि, स्क्रीन, अदालत, गवाही। अनन्या साँस रोकने रहली। ओ हाथ बढ़ौली, मुदा पकड़ल नहि; केवल प्रतीक्षा कयली।

तखन गजक स्वर आयल—'उपस्थित।' ग्राहक दाँत ढीला पड़ल। ई उद्धार नहि, ई न्यायक पहिल स्पर्श छल। बच्चा सभ बाहरी गोलसँ उत्तर देलक—'उपस्थित।' गढ़ नारिकेलक राति ओहि शब्दसँ भरि गेल।

भोरक पहिल उजासमे खेल थमल नहि। बच्चा सभ थाकल छल, मुदा रेखा मेटल नहि। पाथर सभ अपन-अपन स्थान पर गरम छल। ठूँठक हरियर बिन्दु दूटा पात जेकाँ फूटि आयल छल; दुनू नव पात पर ओसक एक-एक बून्द एना बैसल छल जेना राति अपन गवाही धरोहर राखि गेल हो। दूर आकाशमे ओ पीयर तारा एखनहुँ हलुक झुकल छल। कियो नहि बाजल, मुदा सभ बुझि गेल—आब कथा केवल गाम, पुल, अदालत, ठूँठ, गोहि धरि नहि रहत। किछु गोटेकेँ, किछु नामकेँ, किछु मोनकेँ दोसर ग्रहक आमन्त्रण सुनाइ पड़ि रहल छल।

आ गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ, जे गज-ग्राह सँ ई सीखि चुकल छल जे पकड़ि लेब उद्धार नहि, नाम सुनब मुक्ति अछि, अगिला साँस लेल तैयार भेल।

लोकगीत: बच्चाक हाथ नहि थाकै

लोकधुन: गज-ग्राह विजय गीत

ने थाकै हे, बच्चाक हाथ ने थाकै हे,
गजक बल थाकल, नामक पकड़ि ने ढीला भेल हे।

गजक बल थाकै, ग्राहक पकड़ ढीला पड़ै,
बच्चाक हाथ नाम पकड़ि राति भरि नहि थाकै।
बाढ़िक कादो, गोहिक आँखि, ठूँठक नब पात,
गोल भीतर 'नाम', बाहर 'उपस्थित'क बात।
पकड़ि लेब उद्धार नहि, सुनब मुक्ति थीक,

नेनाक हथेली बीच गज-ग्राह शान्त अनीक।

रेखा मेटल नहि, पाथर गरम रहल,
दू हरियर पातमे नब आकाश उगल।
गामक कथा आब ग्रहक बाट सुनै,
नामक पहरुआ बच्चा अगिला साँस चुनै।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—नव्य—न्याय सिद्धान्त: परतः प्रामाण्यवादक द: व्यवहारमे जतय संशय नहि उठैत अछि (करतलपर राखल आँवला जकाँ स्पष्ट ज्ञानमे), ओतय प्रामाण्यक अतिरिक्त अनुमानक आवश्यकता नहि होइत अछि; अविचल प्रवृत्ति भऽ जाइत अछि। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। नव्य-न्याय सिद्धान्त: परतः प्रामाण्यवादक दुर्जेय तार्किक स्थापना।]

बिज्जीक पहरा

अध्याय एक सयक अन्तमे बच्चाक हथेली गज आ ग्राह दुनूकेँ शान्त कऽ देने छल — नामक पहरुआ ओ बच्चा, जकर हाथ राति भरि नहि थाकल। मुदा गढ़ नारिकेलमे नामक ओ पहरा केवल बच्चाक हाथसँ शुरू नहि भेल छल। ओहिसँ बहुत पहिने, हर घरक ओसारपर, एक दोसर पहरुआ ठाढ़ छल — बिज्जी।

गढ़ नारिकेलमे बिज्जी पूज्य थिक। सैकड़ो परिवारक अपन-अपन खिस्सा अछि। जाड़क कोनो राति, जखन पूरा टोल सुतल रहैत, आ कोनो गहुमन वा करकरैत साँप, बिनु आहटि, सुतल बच्चाक सिरमा दिस बढ़ैत, तखन अन्हारमे कतहुसँ बिज्जी आबि जाइत। एक झपट्टा — आ साँप दू टुकड़ी। फेर ओ, बिनु पलक झपकौने, भोर धरि ओहि सिरमापर पहरा दैत, जेना ओकर एक्के काज ई हो जे सूर्य उगबा धरि ओहि बच्चाक साँस अखण्ड रहय।

मुदा गामक बूढ़-पुरान एक बात सदिखन जोड़ैत — “बिज्जी जान बचबै छै, मुदा खानदान खतरामे रहिते अछि।” किएक तँ साँप एक राति कटल, तँ दोसर राति दोसर आबय। बिज्जीक पहरा एक रातिक विश्राम नहि जनैत; ओकर पहरा हर राति नव होइत अछि, आ हर पीढ़ी नव।

गोहि सभक एहि पूरा कथामे — जतय नाम पानिमे डुबैत अछि, आ ‘उपस्थिति’ मात्र बचैत अछि — बिज्जी ओ जीव थिक जे गोहिक ठीक उनटा ठाढ़ अछि। गोहि देह खाइत अछि; बिज्जी

देह बचबैत अछि। गोहि नाम मेटबैत अछि; बिज्जी नामक पहरा दैत अछि। जखन बाढ़िक कादोमे गोहिक आँखि चमकैत, तखन ठूँठक नब पातक नीचाँ बिज्जीक आँखि सेहो जागल रहैत।

गामक एक पुरनका कहबी छल — बच्चाक हथेली आ बिज्जीक झपट्टा, दुनू एक्के पहराक दू रूप थिक। एक भीतरसँ नाम पकड़ि रखैत अछि, दोसर बाहरसँ देह पहरा दैत अछि। जाबत ई दुनू जागल अछि, ताबत गोहि, चाहे कतबो पैघ हो, सिरमा धरि नहि पहुँचि सकैत।

आ बिज्जीक असली शक्ति ओकर दाँतमे नहि, ओकर एकतामे छल। एक बिज्जी थाकल तँ दोसर जागल; एक पीढ़ीक बिज्जी बूढ़ भेल तँ अगिला पीढ़ीक जन्म लेल। जाहि टोलमे लोक बिज्जीकेँ पूज्य राखल, ओ टोल हर राति नव पहरा पाओल; जाहि टोल बिसरल, ओकर सिरमा दिस नव साँप बढ़ल।

एहि खण्डमे बच्चाक हाथ गज-ग्राहकेँ शान्त कऽ, नामक पहरा उठा लेने अछि। मुदा कथा एतय समाप्त नहि होइत। जे राति आगाँ अबैत अछि, ओहिमे नव जल, नव गोहि, नव नाम प्रतीक्षामे छथि। आ ओहि आगाँक हर रातिक पहरा लेल, गढ़ नारिकेलक हर ओसारपर, एक-एक बिज्जी, दीयाक मन्द लौमे, जागल ठाढ़ अछि — अगिला खण्डक बाट देखैत।

गोहि सभक बीच जलसमाधि

मैथिली कादम्बरी

खण्ड-२

अध्याय १०१-२०० तथा परिशिष्ट

पृष्ठ ९७४-२११९

६×९ इञ्च हार्डबैक संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर

प्रकाशन एवं कॉपीराइट

गोहि सभक बीच जलसमाधि — खण्ड-२

अध्याय १०१-२०० तथा परिशिष्ट

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण

सम्पूर्ण उपन्यासक अध्याय-सङ्ख्या तीनू खण्डमे निरन्तर अछि —

खण्ड-० (पूर्व-कथाकाल): अध्याय [−१००] सँ [−१]

खण्ड-१: अध्याय ० सँ १००

खण्ड-२: अध्याय १०१ सँ २०० (तथा परिशिष्ट)

सम्पूर्ण शृंखला: अध्याय [−१००] सँ २०० — कुल ३०१ अध्याय

विदेह: मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

www.videha.co.in

ISSN 2229-547X

ISBN 978-93-5987-762-4

फ्रण्ट कवर, शीर्षक-पृष्ठ, कॉपीराइट-पृष्ठ आ अनुक्रमणिका मुख्य रनिंग पृष्ठ-सङ्ख्यामे नहि गनल गेल अछि। खण्ड-२ केर मुख्य पृष्ठ-सङ्ख्या ९७४ सँ आरम्भ होइत अछि आ खण्ड-१ केर अन्तिम पृष्ठक बाद लगातार चलैत अछि। अनुक्रमणिकाक सभ पृष्ठ-सङ्ख्या एहि ६×९ संस्करणक वास्तविक अध्याय/परिशिष्ट-आरम्भसँ मिलाओल गेल अछि।

अनुक्रमणिका

खण्ड-२ · अध्याय १०१-२०० तथा परिशिष्ट · पृष्ठ ९७४-२११९

सम्पूर्ण शृंखला: अध्याय [−१००] सँ २०० (खण्ड-० सँ खण्ड-२) — कुल ३०१ अध्याय।

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण....९७४
अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी....९७८
अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ....९८२
अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि....९८६
अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा....९९०
अध्याय १०६ — बीजक गवाही....९९९
अध्याय १०७ — बीजक चोरी....१००७
अध्याय १०८ — माटिक मुँह....१०१५
अध्याय १०९ — जलक स्मृति....१०२४
अध्याय ११० — आगिक साक्षी....१०३२
अध्याय १११ — वायुक प्रश्न....१०४०
अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति....१०४८
अध्याय ११३ — शब्दक देह....१०५६
अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा....१०६४
अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा....१०७२
अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार....१०८०
अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण....१०८८
अध्याय ११८ — देहक अधिकार....१०९६
अध्याय ११९ — श्रमक देह....११०४
अध्याय १२० — न्यायक देह....१११११
अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा....१११९
अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति....११२६
अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात....११३४
अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि....११४२
अध्याय १२५ — निर्णयक धान....११५०
अध्याय १२६ — अन्नक न्याय....११५८
अध्याय १२७ — भूखक नाम....११६६
अध्याय १२८ — प्यासक नाम....११७४
अध्याय १२९ — नूनक शपथ....११८२
अध्याय १३० — स्वादक न्याय....११९०

अनुक्रमणिका

खण्ड-२ · अध्याय १०१-२०० तथा परिशिष्ट · पृष्ठ ९७४-२११९

अध्याय १३१ — साझा थारी..११९८
अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य..१२०६
अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट...१२१५
अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ...१२२३
अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन...१२३१
अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा..१२३९
अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही...१२४७
अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस...१२५५
अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच..१२६३
अध्याय १४० — चल चौपाल...१२७०
अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला...१२७६
अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार...१२८४
अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही...१२९३
अध्याय १४४ — नामक यात्रा..१३०२
अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार...१३१२
अध्याय १४६ — मुहरक दाग..१३२१
अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक..१३३०
अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान...१३३९
अध्याय १४९ — जालक नक्शा..१३४९
अध्याय १५० — मुहरक छाया...१३५९
अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ..१३६८
अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत...१३७८
अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम...१३८८
अध्याय १५४ — बाबाक वचन...१३९८
अध्याय १५५ — सेवाक खाता...१४०८
अध्याय १५६ — दानक ऋण...१४१८
अध्याय १५७ — लोहेक संदूक..१४२७
अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान...१४३६
अध्याय १५९ — मृतकक सहमति...१४४५
अध्याय १६० — गोदामक छाया...१४५४
अध्याय १६१ — फोनक कैद...१४६३
अध्याय १६२ — आवाजक मोहर..१४७२
अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान...१४८१

अनुक्रमणिका

खण्ड-२ · अध्याय १०१-२०० तथा परिशिष्ट · पृष्ठ ९७४-२११९

अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट........१४८९
अध्याय १६५ — छायाक देह........१४९८
अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार........१५०७
अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज........१५१५
अध्याय १६८ — शहरक गला........१५२३
अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा........१५३२
अध्याय १७० — चन्द्र एँकक खोल........१५४१
अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत........१५४९
अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ........१५५७
अध्याय १७३ — पंजीक पहरा........१५६५
अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट........१५७३
अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम........१५८१
अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार........१५९०
अध्याय १७७ — घर-घरक कागज........१५९९
अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी........१६०८
अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह........१६१८
अध्याय १८० — शहरक खाता........१६२७
अध्याय १८१ — सिमक छाया........१६३६
अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा........१६४५
अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा........१६५४
अध्याय १८४ — आवाजक नकाब........१६६२
अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा........१६७०
अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम........१६७९
अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी........१६८८
अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर........१६९६
अध्याय १८९ — लोहेक पेटी........१७०६
अध्याय १९० — नील पंजी........१७१६
अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी........१७२५
अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर........१७३५
अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा........१७४४
अध्याय १९४ — साँसक समन........१७५४
अध्याय १९५ — रोकल खाता........१७६४
अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ........१७७४

अनुक्रमणिका

खण्ड-२ · अध्याय १०१-२०० तथा परिशिष्ट · पृष्ठ ९७४-२११९

अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम..१७८४
अध्याय १९८ — अपराधीक धरती..१७९४
अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान..१८०३
अध्याय २०० — नामक पहरुआ..१८१३
परिशिष्ट १ — गढ़ नारिकेल लोककोश...१८२५
परिशिष्ट २ — अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत...१९२६
परिशिष्ट ३ — न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा...१९३३

सम्पूर्ण उपन्यास-अनुक्रम — सभ ३०१ अध्याय

खण्ड-० (पूर्व-कथाकाल): अध्याय [−१००] सँ [−१]

अध्याय [−१००] — शंख आ रजत

अध्याय [−९९] — आत्मसिद्धि-वाद

अध्याय [−९८] — केऽ बनौलक ई जगत?

अध्याय [−९७] — चिंतामणि रत्न

अध्याय [−९६] — स्मृति-रक्षा

अध्याय [−९५] — जलमग्न पाण्डुलिपि

अध्याय [−९४] — चारि मुखक मौन

अध्याय [−९३] — शंखक अन्तिम प्रश्न

अध्याय [−९२] — जल-घड़ीक कैदी

अध्याय [−९१] — चर्मकार टोलाक उजास

अध्याय [−९०] — बुधुआक जलसमाधि

अध्याय [−८९] — पहिल राति, पहिल बाढ़ि

अध्याय [−८८] — डाइनक आरोप

अध्याय [−८७] — टोलाक द्वारपर

अध्याय [−८६] — समयक गोहि

अध्याय [−८५] — आमिलक आदेश

अध्याय [−८४] — जंगलक मौन

अध्याय [−८३] — सोनमा माझिन

अध्याय [−८२] — पहिल कबड्डी

अध्याय [−८१] — आक्रमणक छाया

अध्याय [−८०] — गीतक पहिल पाँति

अध्याय [−७९] — क्षमाक पारी

अध्याय [−७८] — पंजीक बाहर

अध्याय [−७७] — बूढ़बाक मौन

अध्याय [−७६] — नारिकेल पातक पहिल पाठ

अध्याय [−७५] — तर्कक पहिल विद्रोह

अध्याय [−७४] — गाछक रोग

अध्याय [−७३] — मोहनक धुन

अध्याय [−७२] — विवाहक साक्षी

अध्याय [−७१] — महामारीक राति

अध्याय [−७०] — चन्ना गाछीक रोपाई

अध्याय [−६९] — गज-ग्राहक कथा

अध्याय [−६८] — अदालतक पहिल तारीख

अध्याय [−६७] — परदेशक पुकार

अध्याय [−६६] — स्त्री सभक राति-सभा

अध्याय [−६५] — नकली भूतक जुलूस

अध्याय [−६४] — सुखदेवक बदला

अध्याय [−६३] — छापाखानाक पहिल पन्ना

अध्याय [−६२] — राहतक प्रतीक्षा

अध्याय [−६१] — आकाशक पुच्छलतारा

अध्याय [−६०] — अगिनक राति

अध्याय [−५९] — दोसर बाढ़ि

अध्याय [−५८] — तेसर बिपत्ति

अध्याय [−५७] — साहेबक नोटबुक

अध्याय [−५६] — स्वाधीनताक पुकार

अध्याय [−५५] — स्वतंत्रताक भोर

अध्याय [−५४] — जमींदारीक अन्त

अध्याय [−५३] — बिजलीक पहिल दीप

अध्याय [−५२] — सीमाक पुकार

अध्याय [−५१] — हरित क्रान्तिक बीया

अध्याय [−५०] — आपातकालक अन्हार

अध्याय [−४९] — सूखाक बरख

अध्याय [−४८] — रेडियो आ टेलीविजनक अवाज

अध्याय [−४७] — खाड़ी देशक बजार

अध्याय [−४६] — सद्भावक परीक्षा

अध्याय [−४५] — उदारीकरणक हवा

अध्याय [−४४] — पहिल कम्प्यूटर

अध्याय [−४३] — सुखल होइत धार

अध्याय [−४२] — हाथक फोनक चमत्कार

अध्याय [−४१] — शहरक बजार

अध्याय [−४०] — सूचनाक अधिकार

अध्याय [−३९] — काजक गारंटी

अध्याय [−३८] — इंटरनेटक जाल

अध्याय [−३७] — स्क्रीनक पहिल छाया

अध्याय [−३६] — अनदेखल ठगक पहिल आहट

अध्याय [−३५] — देहक बजार खुजैत अछि

अध्याय [−३४] — उज्ज्वलक स्वप्न

अध्याय [−३३] — वकीलक कोटक छाया

अध्याय [−३२] — समुद्रपारक साये

अध्याय [−३१] — सत्यव्रतक मौन

अध्याय [−३०] — गोप कुमारक दस्तावेज

अध्याय [−२९] — चन्द्रपालक सपना

अध्याय [−२८] — राघवक कोड

अध्याय [−२७] — आरुणिक निर्माण

अध्याय [−२६] — देविकाक गीत

अध्याय [−२५] — मीराक निजता

अध्याय [−२४] — निशांतक बैंक

अध्याय [−२३] — नन्दक जन्म

अध्याय [−२२] — बारह सयक निकट

अध्याय [−२१] — अनन्याक प्रश्न

अध्याय [−२०] — छपाकक पहिल हिसाब

अध्याय [−१९] — सत्यव्रतक निर्णय

अध्याय [−१८] — अनन्या आ नन्दक भेंट

अध्याय [−१७] — शीशाक मीनारक जाल

अध्याय [−१६] — बटुकनाथक अंतिम मोड़

अध्याय [−१५] — चन्द्रपालक खाता

अध्याय [−१४] — पुलक निर्माण

अध्याय [−१३] — गोप कुमारक संकलन

अध्याय [−१२] — चन्ना गाछीक कँपकँपी

अध्याय [−११] — बूढ़बाक अन्तिम आशीर्वाद

अध्याय [−१०] — पुलपर पहिल छपाक

अध्याय [−९] — जाँचक आरम्भ

अध्याय [−८] — प्रमाणक बाहर आएब

अध्याय [−७] — आधा-भूतक अनुभव

अध्याय [−६] — गोप कुमारक अन्तिम पन्ना

अध्याय [−५] — जालक उजागर होएब

अध्याय [−४] — नामक अन्तिम सूची

अध्याय [−३] — बारह सय बरखक पूर्णता

अध्याय [−२] — अगिला पीढ़ीक वचन

अध्याय [−१] — अन्तिम साक्षी

खण्ड-१: अध्याय ० सँ १००

अध्याय ० — गढ़ नारिकेल: संक्षिप्त लोक-प्रस्तावना

अध्याय १ — चन्ना गाछीक कबड्डी

अध्याय २ — दहिन कातक गाम

अध्याय ३ — छपाकक हिसाब

अध्याय ४ — तीस नाम, तीन सय लाश

अध्याय ५ — तारीखक गोहि

अध्याय ६ — हार्वर्डक एथिक्स

अध्याय ७ — श्वासक भाव

अध्याय ८ — स्क्रीनक गोहि

अध्याय ९ — देहक बाजार

अध्याय १० — निजताक ब्लैकमेल

अध्याय ११ — धनक कारी नदी

अध्याय १२ — डार्क-जालपर नारिकेल पात

अध्याय १३ — सीलबन्द आवरण

अध्याय १४ — घर घुरबाक रस्ता

अध्याय १५ — नामक जल

अध्याय १६ — चन्ना गाछीक अदालत

अध्याय १७ — जीतक शोक

अध्याय १८ — खाली अदालत

अध्याय १९ — नामक अभिलेख

अध्याय २० — स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला

अध्याय २१ — निजताक शपथ

अध्याय २२ — हार्वर्डक दोसर भाषण

अध्याय २३ — बटुकनाथक खोज

अध्याय २४ — उपन्यास फेर शुरू

अध्याय २५ — मोन टांगल

अध्याय २६ — बटुकनाथ हरिहरनक यात्रा

अध्याय २७ — चन्द्रपाल बत्राक स्क्रीन
अध्याय २८ — राघव सिग्नलक चुप्पी
अध्याय २९ — लाउ किन-हंगक सपना
अध्याय ३० — धूर्त सभक भीतरक अदालत
अध्याय ३१ — हारल लोक सभक काज
अध्याय ३२ — तेसर कबड्डी
अध्याय ३३ — मोनक परीक्षा
अध्याय ३४ — सुनैत नदी
अध्याय ३५ — नामक देहरी
अध्याय ३६ — घर, भय, सपना
अध्याय ३७ — तीन कंकड़
अध्याय ३८ — नामक उच्चारण
अध्याय ३९ — बीजक शान्ति
अध्याय ४० — ओसक अक्षर
अध्याय ४१ — नामक नाव
अध्याय ४२ — भारक वृत्त
अध्याय ४३ — चलैत भार
अध्याय ४४ — पोतीक कापी
अध्याय ४५ — भीतरक हवा
अध्याय ४६ — उत्तराधिकारक अन्हार
अध्याय ४७ — गज-ग्राह आख्यान
अध्याय ४८ — पुकार
अध्याय ४९ — मौनक अभिलेख
अध्याय ५० — देहक बादक नाम
अध्याय ५१ — साक्षीक भार
अध्याय ५२ — अगिला आवाज
अध्याय ५३ — कटानक बादक बिहान
अध्याय ५४ — ठूँठक चारू कात
अध्याय ५५ — नगरपालिकाक पीयर सूचना-पत्र
अध्याय ५६ — स्मृतिक पहिल नक्शा
अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न
अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग
अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड
अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन
अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव

अध्याय ६२ — ठूँठमे हरियर बिंदु
अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना
अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा
अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन
अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल
अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार
अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग
अध्याय ६९ — नामक चोरी
अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही
अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस
अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी
अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार
अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार
अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क
अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा
अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि
अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद
अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र
अध्याय ८० — हरिहरनक संतान
अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम
अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह
अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला
अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित
अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा
अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव
अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास
अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ
अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई
अध्याय ९० — नामक संविधान
अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति
अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह
अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि
अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी
अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा
अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश

अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही

अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

खण्ड-२: अध्याय १०१ सँ २०० (तथा परिशिष्ट)

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण

अध्याय १०२ — स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी

अध्याय १०३ — स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ

अध्याय १०४ — जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि

अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा

अध्याय १०६ — बीजक गवाही

अध्याय १०७ — बीजक चोरी

अध्याय १०८ — माटिक मुँह

अध्याय १०९ — जलक स्मृति

अध्याय ११० — आगिक साक्षी

अध्याय १११ — वायुक प्रश्न

अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति

अध्याय ११३ — शब्दक देह

अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा

अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा

अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार

अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण

अध्याय ११८ — देहक अधिकार

अध्याय ११९ — श्रमक देह

अध्याय १२० — न्यायक देह

अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा

अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति

अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात

अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि

अध्याय १२५ — निर्णयक धान

अध्याय १२६ — अन्नक न्याय

अध्याय १२७ — भूखक नाम

अध्याय १२८ — प्यासक नाम

अध्याय १२९ — नूनक शपथ

अध्याय १३० — स्वादक न्याय

अध्याय १३१ — साझा थारी

अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य

अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा

अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही

अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस

अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच

अध्याय १४० — चल चौपाल

अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला

अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार

अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही

अध्याय १४४ — नामक यात्रा

अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार

अध्याय १४६ — मुहरक दाग

अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक

अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

अध्याय १४९ — जालक नक्शा

अध्याय १५० — मुहरक छाया

अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ

अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत

अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम

अध्याय १५४ — बाबाक वचन

अध्याय १५५ — सेवाक खाता

अध्याय १५६ — दानक ऋण

अध्याय १५७ — लोहेक संदूक

अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान

अध्याय १५९ — मृतकक सहमति

अध्याय १६० — गोदामक छाया

अध्याय १६१ — फोनक कैद

अध्याय १६२ — आवाजक मोहर

अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान

अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट

अध्याय १६५ — छायाक देह

अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार

अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज

अध्याय १६८ — शहरक गला

अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा

अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल

अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ

अध्याय १७३ — पंजीक पहरा

अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट

अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम

अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार

अध्याय १७७ — घर-घरक कागज

अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी

अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह

अध्याय १८० — शहरक खाता

अध्याय १८१ — सिमक छाया

अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा

अध्याय १८४ — आवाजक नकाब

अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा

अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम

अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी

अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर

अध्याय १८९ — लोहेक पेटी

अध्याय १९० — नील पंजी

अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी

अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर

अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा

अध्याय १९४ — साँसक समन

अध्याय १९५ — रोकल खाता

अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ

अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम

अध्याय १९८ — अपराधीक धरती

अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान

अध्याय २०० — नामक पहरुआ

अध्याय १०१

अनाम ग्रहक स्वप्न-आमन्त्रण

दूरक आमन्त्रण जँ इतिहास मेटेबाक मूल्य माँगए, तँ ओ यात्रा नहि—विस्मृतिक सौदा अछि।

स्वप्नगीत: दूरक चमक

लोकधुन: मन्द बटगबनी

दूरक चमक कहए—आउ, सभ घाव बिसराउ,

माटि कहए—नाम बिना कोन ठाम घर बनाउ?

गज-ग्राहक कथा सुनलाक बाद राति बहुत गहींर भऽ गेल छल। चन्ना गाछीक ठूँठ लग आरुणि रजिस्टर, फोन आ अधखुला फाइल सभक बीच बैसल रहल। स्क्रीनपर एक विज्ञापन चमकल—“नव-क्षितिज मानव-निवास: दुःख-विहीन नब आरम्भ।” ओ पढ़ैत-पढ़ैत निन्ना गेल; मुदा निन्न साधारण नहि छल। अदालतक तारीख, म्यूल खाता, डूबल देह आ बच्चा सभक नाम एकहि अन्हारमे घुलि कऽ स्वप्नक दरबाजा खोललक।

स्वप्नमे ओकरा एकटा उज्जर ग्रह देखायल। ओतय नदी नहि, श्मशान नहि, गाछक जड़ि नहि; प्रत्येक घरपर नामक बदला संख्या छल। लोक सभ मुस्कुराइत छल, कारण हुनका सभकेँ अपन कोनो हानि मोन नहि छल। दुःख मिटाओल गेल छल—दुःखक कारण नहि, दुःखक स्मृति। आरुणिकेँ पहिल बेर बुझायल जे विस्मृति सेहो हिंसा होइत अछि: जखने पीड़ा बिसराइत अछि, अपराधी अपन हिसाबसँ मुक्त भऽ जाइत अछि।

बा स्वप्नक भीतर नहि अयलीह; हुनकर स्वर मात्र आयल—“जकर नाम नहि, ओकर माथपर हाथ कोना राखबह?” अनन्या तुरन्त पूछली—“ई लोक समान अछि, कि सभकेँ एक्के बेर बेनाम कएल गेल अछि?” ओकर प्रश्न छोट छल, मुदा ग्रहक काँचक गुम्बदमे महीन दरार पड़ल।

मीरा चमकैत दीवारपर लिखल “सांस्कृतिक स्मृति-नमूना” पढ़ली। ओ अपन लाल डोरी मुट्ठीमे कसि कऽ कहली—“हम नमूना नहि छी। हमर कथा हमर अनुमति बिना कतहु नहि जाएत।” सत्यव्रत कानूनक भाषा खोजलनि, मुदा स्वप्नमे धारा-संख्या सभ धुँआ भऽ गेल। हुनका अपन पद नहि, अपन नाम कहय पड़ल—“सत्यव्रत, जे बहुत काल चुप रहल।”

दूर एक काँचक कोठरीमे लाउ किन-हंग साफ खाता देखि प्रसन्न छल। ओकरा लग स्मृतिहीन ग्रह सर्वोत्तम बाजार छल—न मृतकक परिवार, न पुरान करार, न उत्तराधिकार। मुदा जखन ओ हस्ताक्षर करए गेल, ओकर अपन नाम पन्नासँ पोंछि गेल। चन्द्रपालक प्रतिशत बचल, “चन्द्रपाल” मेटायल; बटुकनाथक उपाधि बचल, “बटुक” मेटायल; राघवक सिग्नल बचल, ओकर स्वर नहि। पलायनक स्वप्न पहिने अपराधीक परिचय खाइत छल।

आरुणि स्वप्नमे बुझलक—ई कोनो विज्ञान-यात्रा नहि, अपराध-जालक अगिला प्रस्ताव अछि: मनुष्यकेँ सुरक्षित करबाक नामपर ओकर इतिहासकेँ अनुपयोगी बनाउ। ओ उठए

चाहलक, मुदा पएरक नीचाँ कबड्डीक एक रेखा चमकल। रेखाक ओहि पार अनाम ग्रह, एहि पार गढ़ नारिकेलक माटि। साँस रोके बिना घुरब सम्भव नहि छल।

अनन्या ओकर हाथ पकड़ि कहली—“रेखा पार करब, मुदा एकटा नाम संग घुरब।” ओहि वाक्यसँ स्वप्नक आमन्त्रण परीक्षा बनि गेल। चमकैत ग्रह आब भविष्य नहि, प्रश्न छल।

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—स्मृति आ प्रमाण: जँ कोनो समाज दुःखक स्मृति मेटा कऽ अपनेकेँ निर्दोष कहए, तँ अनुपस्थित स्मृति स्वयं ओकर अपराधक अनुमान बनैत अछि।]

अध्याय १०२

स्वप्नमे ग्रहक बीच कबड्डी

सीमा आकाशक हो वा माटिक—घुरबाक लेल साँस आ नाम दुनू बचल रहबाक चाही।

स्वप्नगीत: नामक पारी

लोकधुन: धीमा कबड्डी-ताल

साँस बान्हू, नाम खोलू, अन्हारक रेखा पार,
जे नाम संग घुरि आए, से जीतल एहि बार।

रेखा चमकिते बच्चा सभक छाह स्वप्नक अनाम ग्रहपर उतरि गेल। देह पृथ्वीपर ठूँठ लग बैसल रहल; यात्रा केवल चेतनाक छल। एहि कारण कोनो यान, धुँआ वा चमत्कार नहि छल—केवल एक लम्बा साँस, जाहिमे डर, स्मृति आ जिम्मेदारी एक संग बान्हल छल।

खेलक नियम अनन्या बनौलक: जे रेखा पार करत, ओ एकटा विस्मृत नाम खोजि घुरत; जे नाम बिसरत, ओकर पारी समाप्त। ओ नियम पढ़ैत काल एक बेर अटकली। ओ वीरांगना जकाँ निर्भय नहि छल—ओकर घुट्ठी काँपैत छल, कण्ठ सुखाइत छल। मुदा ओकरा मायक ओ स्वर मोन पड़ल जे रातिमे कहैत छल, "डर लगए तँ नाम बाजू।" ओ धीरे कहली—"उज्ज्वल"—आ पहिल डेग रखली।

गुम्बदक पहरुआ सभक चेहरा नहि छल; छातीपर क्रमांक छल। ओ सभ पूछलक—"नामसँ दुःख जन्मैत अछि, नाम छोड़ू।" मीरा उत्तर देली—"दुःख नामसँ नहि, नामपर कएल अत्याचारसँ जन्मैत अछि।" ओ अपन छविकेँ दीवारपर चलैत देखली, मुदा एहि बेर मुँह फेरली नहि। ओ कहली—"ई देह हमर अछि; एकरा प्रमाण बनाउ, तमाशा नहि।" दीवारक चित्र बुझा गेल।

सत्यव्रत सीमा पार करए गेलाह तँ हुनकर मुँहसँ पहिने "अधिकारी", "साक्षी", "विधि" निकलल। रेखा नहि खुलल। अन्ततः ओ कहलनि—"हम ओ मनुष्य छी जे देखि कऽ अबेर धरि चुप रहल।" रेखा कने सरकल। कानूनक शब्द तखनहि उपयोगी भेल जखन ओ आत्मस्वीकारक देह पओलक।

आरुणि स्वप्नक माटि पर हाथ रखलक। माटि गन्धहीन छल; डेटा जकाँ साफ, मुदा जीवनविहीन। ओकरा पुलक पाया, मजदूरक गमछा आ फोनक मिटाओल सन्देश मोन पड़ल। ओ बुझलक जे प्रमाणक शृंखला केवल उपकरणसँ नहि बनैत—हर कड़ीक पाछाँ एक मनुष्यक नाम होइत अछि।

खेल तेज नहि भेल; उलटे धीमा होइत गेल। प्रत्येक डेगपर एक प्रश्न, प्रत्येक स्पर्शपर एक नाम। आखिर अनन्या गुम्बदक बीच पहुँचि खाली दीवार छूली। ओ चिल्लाइत नहि, फुसफुसाइत कहली—"उपस्थित।" दीवारमे पहिल स्पष्ट दरार पड़ल।

दरारक पारसँ जलक गन्ध आयल। स्वप्नक स्मृतिहीन ग्रहमे पहिल बेर पृथ्वीक पानि प्रवेश कयलक। खेल समाप्त नहि भेल; नाम-पाठ आरम्भ भेल।

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—सीमा, प्रत्यक्ष आ आत्मस्वीकार: बाहरी नियम तखनहि प्रमाण बनैत अछि जखन भीतरक मौन अपन कारण स्वीकार करैत अछि।]

अध्याय १०३

स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ

नाम पढ़ब मृतककेँ गनब नहि—ओकर सम्बन्ध, श्रम आ अधूरा प्रश्न फेर उपस्थित करब अछि।

स्वप्नगीत: एक-एक नाम

लोकधुन: करुण पाठ

एक नाम बाजू—माटिक गन्ध जागत,

दोसर नाम बाजू—बन्द दरबाजा लागत।

दरारक भीतर विशाल सभागार छल। दीवारपर केवल क्रमांक: ३०, ३००, ७९१, ०। अनन्या रजिस्टर खोलली। पहिल नाम पढ़िते क्रमांकक पाछाँ चेहरा नहि, सम्बन्ध उभरल—ककरो माए देहरीपर दीप लेने, ककरो बच्चा बापसँ नाव खेवनाइ सीखैत, ककरो पत्नी अधूरा मजूरी-पर्चा पकड़ेने। नाम संख्या कैँ मनुष्य बनबैत गेल।

मीरा ओहि स्त्री सभक नाम पढ़ली जिनकर निजी चित्र धमकी बनाओल गेल छल। प्रत्येक नामक बाद ओ एक वाक्य जोड़ैत गेली—“हुनकर अनुमति बिना हुनकर कथा नहि।” एहि वाक्यसँ सभागारक चमक कम भेल, मुदा हवा साँस लेबा योग्य बनल।

बटुकनाथ अपन स्वप्न-दरबारमे बैसल छल। ओकर सामने ओकर नाति पूछलक—“बाबा, अहाँ न्याय बचेलहुँ कि पेशा?” ओ उत्तरमे वंश आ शास्त्र कहए चाहलक, मुदा शब्द सभ फाइलक कीड़ा बनि झरि पड़ल। ओकरा पहिल बेर अपन लोभसँ बेसी अपन डर देखायल—सम्मान छिनि जाएबाक डर, परिवारक नजरिमे छोट भऽ जाएबाक डर। ओ डर अपराधक क्षमा नहि छल; मुदा अपराधक असली जड़ि देखब आरम्भ छल।

चन्द्रपालक चारू कात खाता खुलल छल। प्रत्येक कमिशनक पाछाँ एक आवाज छल—“हमर नाम की छल?” ओ अपन बाल्यकालक ओ दिन मोन कयलक जखन शिक्षक उपस्थितिमे ओकर नाम गलत पढ़ने छलाह आ ओ घर आबि रोने छल। ओही अपमानक स्मृति राखितो ओ हजार लोकक नामकेँ प्रतिशत बना देने छल। आत्मदया ओकर उद्धार नहि बनल; उलटे ओकर पाखण्ड स्पष्ट भेल।

राघव जते सन्देश मेटौलक, सभ दीवारपर फेर लिखाइत गेल। एक स्त्रीक अधूरा वाक्य, एक मजदूरक सहायता-पुकार, एक बच्चाक “हम डराइत छी”—सभ ओकर अपन कण्ठमे बजल। ओ कान बन्द कयलक, मुदा मिटाओल आवाज भीतरसँ अबैत रहल।

लाउ किन-हंग सभागारक अन्तिम कात ठाढ़ छल। ओ कहलक—“नाम बाजार रोकैत अछि।” अनन्या उत्तर देली—“हँ, किएक तँ नाम हिसाब माँगैत अछि।” एहि छोट उत्तरसँ ओकर साफ खाता सभपर पानिक दाग पसरि गेल।

आरुणि रजिस्टरक खाली पाँति दिस देखलक। ओकरा बुझायल जे डिजिटल जाँचक अन्तिम लक्ष्य अपराधीक उपकरण नहि, पीड़ितक पूरा नाम अछि। ओ खाली पाँति पर लिखलक—“जेकर नाम एखन नहि भेटल।” दीवारक सभसँ पैघ क्रमांक टूटि गेल।

नाम-पाठक बाद ग्रह नष्ट नहि भेल। ओकर चमक मात्र उतरि गेल, आ भीतर साधारण धूसर माटि देखायल। स्मृति लौटिते आदर्शलोक समाप्त भेल; तखने जीवन शुरू होएबाक सम्भावना जागल।

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—शब्द आ वस्तु: नाम खाली ध्वनि नहि; उचित सम्बन्धसँ जुड़ल नाम व्यक्ति, अधिकार आ उत्तरदायित्वक प्रमाण बनैत अछि।]

अध्याय १०४

जागरण: गढ़ नारिकेल पृथ्वी चुनैत अछि

घावसहित पृथ्वी चुनब पराजय नहि—ओहि घावक कारण बदलबाक उत्तरदायित्व स्वीकारब अछि।

जागरण-गीत: अपन माटि

लोकधुन: भोरक मन्द सोहर

काँचक विस्मृतिसँ अपन कादो नीक,

घावक नाम राखब—तखने उगत बीज।

आरुणि चौंकि कऽ जागल। भोरक पहिल उजास ठूँठक छालपर छल; फोनक स्क्रीन बुझल, रजिस्टर खुलल। अनन्या, मीरा, सत्यव्रत आ बच्चा सभ सेहो ओतहि छल—केओ कहि नहि सकैत छल जे सभ एके स्वप्न देखलक कि एक-दोसरक भय सुनैत-सुनैत समान दृष्टान्त रचि लेलक। मुदा सभकेँ वैह खाली दीवार, वैह क्रमांक आ "उपस्थित"क दरार मोन छल।

अनन्याक हथेलीपर नील धूलि नहि, पाठशालाक साधारण खड़ियाक रंग लागल छल। ओ कने लजाइत हँसली—"हम सभ कतहु गेल नहि छलहुँ।" बा कहलीह—"कतेक दूर जाएब लेल देहक चलब जरूरी नहि। मुदा जागलापर डेग पृथ्वीए पर राखय पड़ैत अछि।"

मीरा लाल डोरी खोलि फेर बान्हली। स्वप्न ओकर पीड़ा मेटौने नहि छल; केवल ई स्पष्ट कयलक जे पीड़ा बिसरब मुक्ति नहि। ओ कहली—"हमर कथा बचत, मुदा हमर अनुमति संग।" सत्यव्रत अपन नोटमे लिखलनि—"विस्मृति कोनो पुनर्वास नहि।" फेर "अधिकारी" लिखल परिचय काटि केवल अपन नाम रखलनि।

आरुणि विज्ञापनक स्रोत जाँचलक। "नव-क्षितिज" कोनो वास्तविक ग्रह-योजना नहि, अपराध-जालक प्रचार-परीक्षण छल—लोकक भय, पलायनक इच्छा आ स्मृति-विरोधी भाषा मापबाक डिजिटल अभियान। ब्रूमक नैतिक शब्द, लाउक पूँजी, चन्द्रपालक पंजीयन आ राघवक सन्देश-डोर ओहिमे जुड़ल छल। स्वप्न कथाक छल, मुदा ओकर कारण वास्तविक अपराधमे गड़ल छल।

बच्चा सभ निर्णय लिखलक—"हम दुःख नहि मिटाएब; दुःखक कारण बदलाएब। हम पृथ्वी छोड़ि अपराधकेँ निर्दोष नहि करब। जकर नाम काटल गेल, ओकरा फेर लिखब; जकर देहपर अधिकार छी, ओकर अनुमति सुनब; जकर श्रम दबायल, ओकर हिसाब खोलब।"

बटुकनाथ, चन्द्रपाल आ राघवक लेल ई निर्णय क्षमा-पत्र नहि छल। हुनका सभकेँ नाम घुरेबाक श्रम देल गेल—फाइल खोलू, खाता जोड़ू, आवाज सुनू, जिनका अदृश्य कएलहुँ हुनकर सामने ठाढ़ होउ। अपराधक मनोविज्ञान बुझब दण्ड समाप्त करब नहि; दण्डकेँ साँच दिशामे लगायब अछि।

चन्ना ठूँठक कोंपलपर ओस चमकल। अनन्या ओकर नीचाँ लिखली—"पृथ्वी चुनैत छी—किएक तँ एतहि उत्तर देबाक अछि।

लोकगीत: पृथ्वी चुनलहुँ

लोकधुन: माटि-प्रेम

स्मृति-विहीन काँचसँ अपन कादो नीक,
नामक पहरामे धरती फेर उगाओत बीज।

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—विस्मृति आ उत्तरदायित्व: अपराधक स्मृति मेटा देब शान्ति नहि; कारण, कर्ता आ पीड़ितक सम्बन्ध सत्यापित कऽ भविष्य बदलनाइ न्याय अछि।]

अध्याय १०५

पृथ्वीक पहिल पहरा

स्वप्नसँ जागल यात्रीकेँ धरती पुरान घर नहि, नब उत्तरदायित्व जकाँ भेटैत अछि।

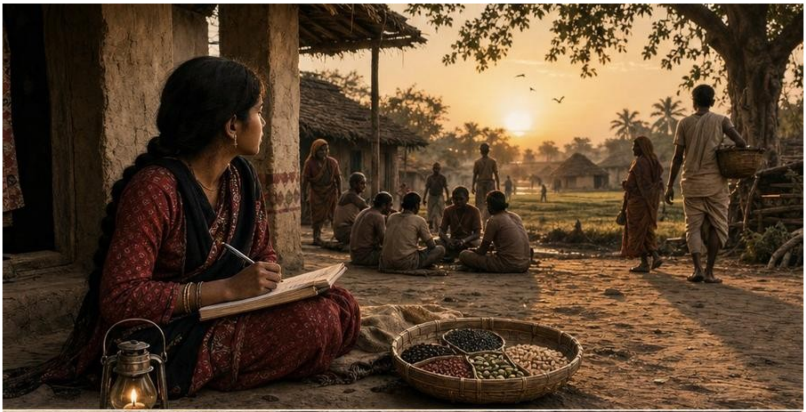

अध्यायारम्भ लोकगीत: धरतीक सोहर

लोकधुन: सोहर

ललना रे, धरतीक सोहर गाबू हे,
नवजातक निन्न जकाँ भोरकैं जोगाबू हे।

धरती नवजात शिशु सन भोरक गोदमे हँसल,
ओसक दूध पिअल, सूरुजक अँचरा पसल।
नदी नाल काटि बहै, वन झुनझुना बजाबै,
पवन दुलारि कहै—नव जीवन आबि जाए।

धरतीक सोहर गाउ सभ, घावपर फूल धरू,
नवजात घरक रक्षा जकाँ पर्यावरण भरू।
हरेक दिन ओकर जन्मदिन, हरेक बीज शुभदान,
धरती हँसत तँ हँसत मनुखक सभ सन्तान।

ओसक दूध, सूरुजक अँचरा, पवनक लोरी-तान,
नदी नाल काटि हँसल, वन बजाओल गान।
घाव-घाव पर फूलक फाहा, बीज-बीज शुभदान,
धरतीक जन्मदिन मनाउ नित, राखू ओकर मान।

❖

अनन्या पहिने ठूँठक छाल छूली। छालक भीजल खुरदुराही ओकर हथेलीमे एना बैसल जेना कतेको बरखक कथा एकहि स्पर्शमे हाथ पकड़ने हो। ओकरा हाथमे स्वप्नमे देखल नील धूलि एखनहुँ लागले छल—नील-धूसर, गन्धहीन, एकदम साफ, एतेक साफ जे डर लागए। ओ धूलि जखन चन्ना गाछीक भीजल जड़ि पर पड़ल, तखन माटि ओकरा तुरन्त पीबि लेलक। अनन्या बुझि गेली—नामविहीन धूलि धरती पर टिकैत नहि; ओकरा माटिक इतिहासमे घुलबाक पड़ैत अछि।

उज्ज्वलक आत्मा, जे स्वप्नक अनाम ग्रहपर पहिल बेर ‘उपस्थित’ शब्द लिखि आयल छल, एखन पानिक सतह पर काँपैत इजोत बनि गेल। देविका ओकरा देखली, मुदा पुकारली नहि। किछु उपस्थिति एना होइत अछि जकरा पुकारलासँ ओ फेर दुखमे बान्हि जाए। ओ बस

मनहि-मन कहली—“तोरा नामक पहरा आब धरती पर अछि।” इजोत तीन बेर काँपल; एतबे उत्तर पर्याप्त छल।

गढ़ नारिकेलक लोक सभ ओहि राति निन्न नहि गेल। एक दिस कथा पसरि गेल जे बच्चा सभ ग्रहक बीच कबड्डी खेलि घुरल अछि; दोसर दिस शहरक अखबार सभ लिखलक—“ग्रामीण अन्धविश्वासक नब रूप।” मुदा एहि बेर लोक अखबार पर न हँसल, न तामस कयलक। सभ जानैत छल जे जे बात प्रत्यक्ष नहि भेल, से असत्य नहि; आ जे बात छपि गेल, से प्रमाण नहि। गंगेशक प्रश्न ठूँठमे एखनहुँ जीवित छल।

बा सभहक बीच बैसलीह। ओ कहलीह, “जे धरती चुनैत अछि, ओ केवल माटि नहि चुनैत। ओ अपन मृतक, अपन अपराध, अपन लाज, अपन भाषा, अपन नदी, अपन असफलता—सभ चुनैत अछि।” एहि वाक्य पर कियो ताली नहि बजओलक। गढ़ नारिकेलमे आब ताली कम भऽ गेल छल; लोक उत्तरमे ‘उपस्थित’ कहैत छल। ओहि राति सभ धीरे कहलक—“उपस्थित।”

सत्यव्रत मेहता अपन झोरासँ पुरान शपथपत्र निकाललनि। एही शपथपत्र पर ओ पहिने मौनक अपराध लिखने छलाह। आब ओकरा पाछाँ एकटा नब पाँति जोड़लनि—“धरती छोड़ि मुक्ति नहि भेटत; धरती पर नाम बचा कऽ मुक्ति खोजल जाए।” ओ पाँति लिखैत काल हुनकर हाथ काँपल नहि। हुनकर काँप समाप्त नहि भेल छल, मुदा काँप आब डरक नहि, उत्तरदायित्वक रहि गेल छल।

बटुकनाथ हरिहरन दूर सँ देखैत छल। ओकर क्षमा एखन स्वीकार नहि भेल छल, किएक तँ क्षमा कोनो फूलमाला नहि जे गरामे पहिरा देल जाए। ओ अपन भीतरक दरबारमे अबैत-जाइत रहल। ओ चाहैत छल जे बच्चा सभ ओकरा सेहो कोनो भूमिका दिअए। मुदा बच्चा सभ ओकरा केवल एक काज देलक—पुरान फाइलमे जे नाम दबाओल गेल छल, से खोजू। बटुकनाथ पहिल बेर बुझलक जे दण्ड कखनो-कखनो अपमान नहि, श्रम होइत अछि।

चन्द्रपाल बत्रा, जे स्वयंकेँ म्यूल अकाउण्ट बुझि चुकल छल, अपन खाली हथेली देखैत रहल। ओकरा लग आब पैसा नहि छल, पर पुरान फोनक स्मृति, कूटबद्ध खाता, झूठ दान, श्रद्धांजलि-अनुप्रयोगक छाह—सभक निशान छल। देविका ओकरा कहली, “जतय जतय तोहर माध्यमसँ नाम लूटल गेल, ओतए ओ नाम वापस लिख।” चन्द्रपाल पहिल बेर कहलक, “हमरा लिखब नहि अबैत।” अनन्या उत्तर देली, “तखन सुनू। लिखनिहार बच्चा सभ अछि।”

राघव सिग्नलक अन्तिम सन्देश पात बनि ठूँठ पर चिपकल छल। ओ पात सुखाइत नहि छल। ओकर अक्षर रातिमे चमकैत—“खाता बन्द नहि, आत्मा खुलल।” मुदा बच्चा सभ ओकरा पवित्र वाक्य नहि बनओलक। ओ सभ पातक नीचाँ लिखलक—“आत्मा खुलबाक पहिल प्रमाण: जिनका अहाँ अदृश्य कएलहुँ, हुनका देखू।” राघवक मोन, जे एखनहुँ आधा नेटवर्कमे, आधा ठूँठमे अटकल छल, एहि पाँति पर थरथरा उठल।

लाउ किन-हंग विदेश घुरि गेल छल कि ओ एखनहुँ भारतक होटलमे नुकायल अछि—कोनो निश्चित नहि। मुदा ओकर अन्तिम सौदाक उत्तर नाम-पाठक ध्वनि बनि पठाओल गेल छल, आ ओ ध्वनि ओकर काँचक टावरक भीतर रोज राति बजैत छल। ओहि ध्वनिमे न गाली छल, न धमकी; बस नाम। पूँजी अपमान सहि सकैत अछि, कानूनसँ बचि सकैत अछि, मुद्रा बदलि सकैत अछि; मुदा नामक निरन्तर उच्चारणसँ ओकर निद्रा टूटैत अछि।

एहि सभकेँ जोड़ैत चन्ना गाछीक नव कोंपल चुपचाप बढ़ैत रहल। ओ एखन गाछ नहि, केवल हरियर वक्र छल। मुदा बच्चा सभ ओकरा चारू कात रेखा खिंचलक—कबड्डीक रेखा। पहिने कबड्डी भूत खेलैत छल, फेर मृतक, फेर बच्चा, फेर ग्रह सभक बीच। आब रेखा नव गाछक चारू कात बनल, जे बतबैत छल—धरतीक पहरा खेलसँ शुरू होइत अछि।

अनन्या खेलक नब नियम पढ़ली—“एक साँस धरती लेल, एक साँस पानि लेल, एक साँस नाम लेल, एक साँस जिनका नाम नहि भेटल हुनका लेल। जे साँस तोड़त, ओ बाहर नहि, सुननाइमे बैसत।” बच्चा सभ हँसि उठल। ई कठोर नियम नहि, दयालु नियम छल। खेलमे हारल बच्चा दण्डस्वरूप चुप नहि बैसत; ओ ककरो नाम सुनत। एहि तरहेँ खेल आ न्याय एक-दोसरमे घुलि गेल।

राति जेना-जेना गहींर होइत गेल, पानिक सतह पर गोहि सभक आँखि चमकए लागल। मुदा एहि बेर लोक ओहि आँखिसँ भागल नहि। बा कहलीह—“ओ सभ देहक भूखक जीव छल। आब नामक पहरासँ ओकरो भूख बुझए लगत।” कियो बुझलक, कियो नहि। मुदा बच्चा सभ खेल शुरू कऽ देलक। पहिल आवाज उठल—“कबड्डी...” ओ आवाज माटि पर नहि रुकल; ओ कमला-बलान, ठूँठ, पात, आकाश, स्वप्नक अनाम ग्रहक खाली देबाल सभ पार करैत गेल।

ओही आवाजमे उज्ज्वलक इजोत जुड़ल, मीराक निजताक शपथ जुड़ल, देविकाक राग जुड़ल, आरुणिक पुलक दोष जुड़ल, गोप कुमारक दस्तावेज जुड़ल, सत्यव्रतक मौन जुड़ल, गंगेशक प्रश्न जुड़ल। कबड्डी आब केवल देहक खेल नहि, प्रमाणक खेल बनि गेल—कतेक

काल धरि झूठ साँस रोकि सकैत अछि, आ कतेक काल धरि साँच बिनु टूटने चलि सकैत अछि?

अचानक ठूँठ लग राखल पाथर सभ हलुक आवाज करए लागल। प्रत्येक पाथर, जकरा पर नाम लिखल छल, एक लयमे खनखनायल; तइयो प्रत्येकक स्वर अलग—कियो गहींर, कियो पातर—जेना माटिक भीतर कोनो पुरान सप्तक जागि गेल हो। ई घण्टी नहि, अदालती हथौड़ा नहि, मन्दिरक घण्टा नहि। ई माटिक भीतर सँ उठल सामूहिक सहमति छल। बच्चा सभ खेल रोकि देलक। अनन्या पूछली, "की भेल?" बा कहलीह, "धरती पहरा स्वीकार कऽ रहल अछि।"

सत्यव्रत मेहता एही क्षण बुझलाह जे न्यायालयक सीमा, संविधानक भाषा, शपथपत्रक अक्षर—सभ आवश्यक रहि सकैत अछि, मुदा जखन धरती स्वयं गवाही स्वीकार करए, तखन मनुष्यक संस्थाकेँ विनम्र होएबाक चाही। ओ उठि कऽ ठूँठक सम्मुख नहि, बच्चा सभक पाछाँ बैसलाह। हुनका ठाम आब आगाँ नहि, पाछाँ छल; पाछाँ बैसि सुनब हुनकर नब पद बनल।

भोरक कगार पर कटल गाछक कोंपल पर ओस जमल। ओसक प्रत्येक बून्दमे छोट-छोट पृथ्वी देखाइत छल; बून्दक ठण्ढ आङुरक पोर पर लैत बच्चा सभकेँ लागल जेना भोर स्वयं हुनका सभक हथेली पर अपन पहिल अक्षर लिखि रहल हो। स्वप्नक नील धूलि आब कतहु अलग नहि देखाइत; माटि ओकरा अपना भीतर मिला लेने छल। ई मिलन सरल नहि छल—जतय स्मृति रहैत अछि, ओतय बाहरी धूलिक सेहो हिसाब होइत अछि। धरती सभ अपनामे लैत अछि, मुदा बेनाम नहि छोड़ैत।

ओहि बिहान गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ पहिल पहरा लिखलक—"पृथ्वी छोड़ब नहि। पृथ्वीकेँ बचाएब। जकर नाम मेटत, ओकर नाम फेर लिखब। जकर देह डूबत, ओकर स्मृति पानिसँ ऊपर उठाएब। जकर मन स्क्रीन खाएत, ओकर स्वर मुँहमे घुराएब। जकर न्याय कागचमे अटकत, ओकर गवाही लोकक बीच पढ़ाएब।"

एहि पहराक बाद लोक अपन-अपन घर नहि गेल। ओ सभ बाट जोहैत रहल—ककर? शायद अगिला आपदाक, अगिला बाढ़िक, अगिला छलक, अगिला ग्रहक आमन्त्रणक, अगिला स्मृति-चोरीक। मुदा आब प्रतीक्षा डरक नहि, तैयारीक छल। गढ़ नारिकेल पहिल बेर जानि गेल जे कथा बचबाक एकमात्र उपाय अछि—कथाकेँ अगिला कण्ठमे देल जाए।

आ ओहि अगिला कण्ठक पहिल स्वर, नव कोंपलक छाँहमे, कबड्डीक मैदान पर, एक बच्चा सँ उठल—"हम धरती पर छी।" दोसर बच्चा उत्तर देलक—"उपस्थित।" तेसर कहलक—"

पहरा शुरू।” आ चन्ना गाछीक ठूँठ, जे आब गाछ नहि रहल, मुदा गाछ बनबाक संकल्प रखैत छल, भोरक हवामे नमहर साँस लेलक।

लोकगीत: धरती नवजात

लोकधुन: सोहर-पहरा गीत

जनमल हे धरती, नव शिशु जकाँ जनमल हे,

नामक दूध पिआउ, कथा अगिला कण्ठ भरू हे।

घुरल यात्री देखलक धरती नव जन्मल शिशु,
माटि, पोखरि, ठूँठ—सभकेँ चाही नब सिसु।
कथा बचत तखने अगिला कण्ठ पाबत,
एक नेना कहलक—हम धरती पर छी, जागत।
दोसर उत्तर देलक—उपस्थित, तेसर—पहरा,

नव कोंपलक छाँहमे जुड़ल गामक चेहरा।
प्रतीक्षा आब डरक नहि, तैयारीक बात,
अगिला बाढ़ि, छल, चोरी लेल खुलल आँखि रात।
धरती नवजात अछि, हथियार नहि—कान धरू,
नामक दूध पियाउ, कथा अगिला कण्ठ भरू।

माटि, पोखरि, ठूँठ—सभकेँ चाही नव सिसु,
कथा तखने बचत जखन अगिला कण्ठ पाबत बिसु।
एक नेना कहलक—'हम धरती पर छी',
दोसर—'उपस्थित', तेसर—'पहरा शुरू भेल छी'।

जनमल हे धरती, नव शिशु जकाँ जनमल हे,
नामक दूध पिआउ, कथा अगिला कण्ठ भरू हे।

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—विशेषण साधक आ उपयोगी अछि: “ई पुरुष दण्डी अछि” ज्ञानमे दण्ड-सम्बन्ध पुरुषक विशेषण अछि; तेँ पुरुष अदण्डी सँ पृथक् ज्ञात होइत अछि। विशेषण साधक आ उपयोगी अछि।]

अध्याय १०६

बीजक गवाही

बीज गवाही दै छै— माटि केकर छल आ हाथ केकर।

अध्यायारम्भ लोकगीत: बीज-माटिक मिलन

लोकधुन: रोपनी-मंगल

मिलाउ हे मिलाउ, बीज-माटिकेँ मिलाउ हे,
पानिक नेह, सूरुजक ताप—चारू जोड़ि गाउ हे।

बीज कहै—माटि चाही, माटि कहै—आउ,
पानि कहै—हम नेह देब, सूरुज कहै—फुलाउ।
चारू तत्त्व मिलि कऽ जीवनक गीत रचै,
एक नान्हि कोंपल भीतर पूरा वन बसै।

बीजकेँ सही घर दिअ, किसानक मान बचाउ,
जैव विविधताक रंग खेत-खेत उगाउ।
बीज-माटिक मिलनसँ भविष्य हरियर होए,
साझा संरक्षणक बलसँ अन्नक गंगा सोए।

रोपनिहारिक आँगुर मे मंगलक मुद्रा,
एक कोंपलक भीतर सूतल वन भरिक निद्रा।
देसी बीजक डिब्बा राखू, किसानक ज्ञान,
खेत-खेत रंग-बिरंग उगए धान-पान।

❖

लोक कहै छै जे बीज छोट होइ छै। मुदा बीज छोट नै छै— बीज मे पूरा गाछ नुकाएल छै, आ गाछ मे पूरा गाम। जे बीज केँ डिब्बा मे बन्द करैए, ओ गाम केँ डिब्बा मे बन्द करैए।

कोठीक अन्हार मे जे सूतल छै, से निन्न नै छै— से प्रतीक्षा छै। ओ ऋतुक बाट तकैए, हाथक बाट तकैए, गीतक बाट तकैए। ओकरा क्रमांक दऽ कऽ जगाएब नै होइ छै; ओकरा नाम लऽ कऽ बजाबय पड़ै छै।

आ जे नाम बिसरि गेल, ओकर खेत मे कोंपल तँ उगतै, मुदा ओहि कोंपल केँ चिन्हनिहार कियो नै रहतै।

पहिल पहरा लिखला बाद गढ़ नारिकेलक बच्चा सभकेँ लागल जे धरती केँ बचाएब शायद नाम बचाएबाक विस्तार मात्र अछि। मुदा भोरक ओस सुखायलो नहि छल कि बा एकटा नब बात कहि देलीह—“नामक पहरा राखलहुँ, आब बीजक पहरा राखू।” बच्चा सभ पहिने हँसल, कारण हुनका सभक हाथमे रजिस्टर, पाथर, कोंपल, आ कबड्डीक मैदान छल; बीज हुनका सभकेँ चुल्हिक कोठी, मचान, कोठी-बखारी, आ बूढ़ स्त्री सभक आँचलमे छुपल बहुत छोट वस्तु बुझाइत छल।

बा अपन लाठीसँ ठूँठ लग माटि पर गोल बनबैत कहलीह, “जे नाम मेटैत अछि, से बीज सेहो मेटैत अछि। नाम बिनु मनुष्य बेनाम होइत अछि; बीज बिनु धरती बाँझ। गोहि देह चिबा गेल, अदालत बरख चिबा गेल, स्क्रीन मोन चिबा गेल। मुदा जँ बीज चिबायल गेल, तँ अगिला पीढ़ीक मुँहमे शब्दो कतऽ सँ जन्मत?” एहि वाक्यक बाद बच्चा सभक हँसी रुकि गेल। लाठीक नोक जतय माटि उनटौने छल, ओतय ओस-भीजल माटिक गंध उठल—वैह गंध जे रोपनीक भोरमे उठैत अछि, आ जकरा कोनो तिजोरी भीतर बन्द नहि कऽ सकैत अछि।

ओहि दिन दुपहरमे पहराक नब पाठ शुरू भेल। नारिकेल पात पाठशालाक चटाइ पर बीज राखल गेल—धानक, तिलक, मड़ुआक, कोदो-कुटकीक, मखानक, कुसियारक, आमक गुठली, कटहलिया, नीम, पीपर, आ चन्ना गाछीक कोंपल लग भेटल सूक्ष्म हरियर नोक। प्रत्येक बीजक संग ओकर नाम नहि, ओकर कथा पूछल गेल। कोना बोएल जाए? के राखैत छल? कोन ऋतु? कोन गीत? कोन हाथ? कोन भूख?

देविका कहली, “डिजिटल ठगीमे लोकक मोन चोराएल गेल। स्मृति-परियोजनामे मृतकक नाम चोराएल गेल। आब जे सभ स्वप्नक अनाम ग्रहक बात करैत अछि, ओ सभ बीजक नाम चोरएबाक तैयारीमे अछि। ओ सभ बीज लएत, ओकर क्रमांक देत, ओकर माटि बदलत, फेर कहत—जीवन बचा रहल छी। मुदा जीवन जँ अपन माटिक नाम बिसरि जाए, तँ बचत की?”

ईरा विदेशक बच्चा सभकेँ लिखल पत्रक प्रति निकालि पढ़ली। ओहि पत्रमे ओ लिखने छली—“गाम विदेशी स्मृतिक चित्र नहि, उत्तरदायित्व अछि।” आब ओ जोड़ली—“बीज सेहो चित्र नहि। जँ अहाँ विदेशमे रहि मिथिलाक धानक फोटो राखैत छी, मुदा ओकर किसानक नाम नहि जानैत, ओकर गीत नहि सुनैत, ओकर माटि नहि बचबैत, तँ अहाँ बीजक संग नहि, वस्तुक संग प्रेम करैत छी।” बच्चा सभ एहि वाक्य केँ रजिस्टरमे लिखलक।

सत्यव्रत मेहता ध्यानसँ सुनैत रहलाह। हुनका कानूनमे बीजक अर्थ सम्पत्ति, किस्म, अधिकार, पंजीकरण, व्यापार, संरक्षण, आ विवादक रूपमे पढ़ल गेल छल। मुदा एतय बीजक

अर्थ वंश नहि, जाति नहि, सम्पत्ति नहि—स्मृतिक कण छल। ओ चुपचाप नोट करैत रहलाह, मुदा नोट कागच पर कम, चेहरापर अधिक बनैत गेल।

ठूँठक पाछाँ सँ बूढ़बा भूत हलुक आवाजमे हँसलाह। हुनकर हँसीमे चन्ना गाछीक हँसीक छाह छल। ओ कहलनि—“जकरा सभ जाति-व्यवस्था नाम पर मनुष्यकेँ बाँटल, ओ सभ बीजक भाषा नहि बुझल। बीज जाति नहि पूछैत। धान चर्मकारक हाथमे राखू, ब्राह्मणक हाथमे राखू, नटिनक आँचलमे राखू, डोमक कोठीमे राखू—जे माटि, जल, श्रम आ समय देत, ओकरा संग उगि जाएत। मनुष्ये अपने माथमे बाँसक बाड़ लगौलक।”

गंगेशक प्रश्न फेर घुरल। अनन्या पूछली, “जँ बीज जाति नहि पूछैत, तँ मनुष्य किएक पूछैत अछि?” कियो तुरन्त उत्तर नहि देलक। बा कहलीह, “कारण मनुष्य केँ प्रमाण सँ कम, अहंकार सँ बेसी प्रेम रहल। गंगेश तत्त्वचिन्तामणि लिखि प्रमाणक दीप जरौलनि, मुदा समाज हुनकर जीवनक कठिन प्रश्न पर परदा डालि देलक। जे जाति जीवनकेँ बुझय नहि चाहैत, से शास्त्रकेँ सिंहासन पर रखि ओकरा मौन करैत अछि।”

ई बात सुनि बच्चा सभ बीजक अगल-कात पाथर राखए लागल। पाथर पर नाम लिखल गेल—“माटि”, “जल”, “हाथ”, “ऋतु”, “गीत”, “भूख”, “न्याय।” अनन्या कहली, “बीजक प्रमाण अकेला बीज नहि। ओकर संग जे सभ सम्बन्ध अछि, से सभ प्रमाण।” सत्यव्रत मेहताक आँखि चमकल। ई नव्य न्यायक भाषा बाल-स्वरमे पुनर्जन्म लेने छल। पदार्थ नहि, सम्बन्ध; शब्द नहि, आशय; बीज नहि, सम्पूर्ण प्रसंग।

साँझक समय स्त्री सभ अपन-अपन घरसँ पुरान डिब्बा, पीतल कटोरी, माटिक हाँड़ी, तिरछल बटुली आ कपड़ाक गठरी लए कऽ आयल। प्रत्येक पात्रमे बीज छल। किछु बीज एतेक पुरान जे रंग बदलि गेल छल, मुदा स्त्री सभ कहैत छली—“ई हमर सासु सँ भेटल। ई अकालक वर्ष बचल। ई ओहि बाढ़ि बाद उगायल। ई बेटीक विदाइमे देल। ई ओहि सालक जेना भूख छल, ताहू पर धरती हरियर भेल।” डिब्बा सभ खुजैत काल जे खटर-खटर उठल, से एक-एक घरक भीतरक बरखक आवाज छल—पीतलमे एक तरहक, माटिमे दोसर, आ कपड़ाक गठरीमे कोनो आवाजे नहि, केवल गन्ध।

मीरा ओहि सभकेँ विनती केली—“जे बीजक कथा अहाँ नहि चाही साझा करब, से नहि करब। बीजक निजता सेहो अछि।” स्त्री सभ हँसली, मुदा सहमत भेली। किछु कथा सार्वजनिक भेल, किछु केवल स्त्री सभक बीच रहि गेल। पाठशालाक एहि रातिमे पहिल बेर

बच्चा सभ बुझलक जे स्मृति बचाएब माने सभटा उजागर करब नहि; किछु बचाओल जाएत अछि, तखने ओकर गरिमा रहैत अछि।

ठीक ओहि बखत एक सरकारी जीप आयल। जीपक आगाँ बोर्ड छल—“उन्नत बीज-संग्रह आ जलवायु-सुरक्षा प्रकल्प।” ओहि संग दू गोट वैज्ञानिक वेशधारी अधिकारी, एक स्थानीय बाबू, आ एक विदेशी परामर्शदाता उतरि आएल। परामर्शदाता विनम्रता सँ हाथ जोड़लक। ओकर भाषा नम्र छल, मुदा आँखि मापि रहल छल—कोन बीज, कोन मात्रा, कोन सूचना, कोन स्त्रीक हाथमे कोन पुरान किस्म।

स्थानीय बाबू कहलक, “ई सरकारक योजना अछि। पुरान बीज सभ सुरक्षित बैंकमे राखल जाएत। भविष्य पीढ़ी लाभान्वित होएत।” अनन्या पूछली, “बीज अपन गामसँ बाहर जाएत?” बाबू मुस्कुरेलक—“सुरक्षा लेल अस्थायी रूपसँ।” देविका पूछली, “नाम संग जाएत?” बाबू कागच पलटलक—“क्रमांक संग।” ई सुनिते ठूँठक कोंपल काँपि उठल।

परामर्शदाता जल्दी सँ जोड़लक—“नाम सेहो डिजिटल अभिलेखमे रहत।” गोप कुमार एक बेर ओकर टेबलेट पर चमकैत रूप देखलनि। पंक्ति सभमे बीजक कोड, भू-स्थान, परिवार, जाति, उत्पादन, आपदा-सहनशक्ति, आ ‘व्यावसायिक सम्भावना’ लिखल छल। गोपक चेहरा कठोर भेल। ओ धीमे कहलनि, “ई संरक्षणक सूची नहि, अधिग्रहणक सूची अछि।”

बच्चा सभक बीच फुसफुसाहट भेल। स्वप्नक अनाम ग्रहक आमन्त्रण हुनका सभकेँ मोन आएल। ओ ग्रह जतय सभ किछु क्रमांकमे छल, नदीक नाम नहि, गामक नाम नहि। आब पृथ्वी पर सेहो वैह भाषा उतरि रहल छल—धान नहि, नमूना; स्त्री नहि, धारक; माटि नहि, स्थानांक; भूख नहि, आँकड़ा; स्मृति नहि, संसाधन।

बा जीप लग जा कऽ ठाढ़ भेली। अधिकारी सभ हुनका सम्मानसँ प्रणाम करए चाहलक। बा हाथ रोकि देलीह। कहलीह, “बीज लऽ जाएब? पहिने ओकर गीत गाबू।” अधिकारी चुप। बा फेर कहलीह, “कतेक बून्द पानि चाही, कहू।” अधिकारी चुप। “कोन दिन बोएल जाए, कहू।” चुप। “जखन खेतमे पहिल कोंपल निकलत, तखन कोन बिसरायल नाम पुकारल जाए, कहू।” चुप्पी गाढ़ भेल। जीपक इंजिन ठंडा भऽ रहल छल आ ओकर ठक्-ठक् एहि चुप्पीमे कोनो घड़ीक टिक जकाँ सुनाइत छल।

अनन्या रजिस्टर खोललक। लिखलक—“बीज-संग्रह प्रकल्पक प्रत्यक्ष: जीप, कागच, डिब्बा। अनुमान: सुरक्षा। शब्द: भविष्य। परख: गीत नहि, माटि नहि, नाम क्रमांकमे बदलबाक

चाह।” बच्चा सभ एक स्वरमे कहल—“अधूरा प्रमाण।” गंगेशक प्रश्न फेर न्याय बनि ठाढ़ भेल।

सत्यव्रत मेहता एखनहुँ चुप रहलाह, मुदा एहि बेर हुनकर चुप्पी सहमति नहि छल। ओ अधिकारीसँ कागच माँगलनि। कागच पर अनेक धारा, अनुमति, हस्तांतरण, संग्रह, शोध, संरक्षण, साझेदारी लिखल छल। छोट अक्षरमे विदेशी संस्था आ एक नब कम्पनीक नाम छल—नाम बदलल छल, मुदा हस्ताक्षरक छाह ब्रूमक पुरान दान-पत्रसँ मिलैत छल। सत्यव्रतक आँखिमे चिनगारी उठल।

ओ कागच बच्चा सभकेँ नहि देलनि, पहिने बा केँ देलनि। बा पढ़ि नहि सकैत छली, मुदा कागच सूँघली। कहलीह, “एहिमे माटिक गंध नहि, तिजोरीक गंध अछि।” ई सुनि स्त्री सभ अपन-अपन बीजक गठरी कसि पकड़लक। सरकारी बाबू हँसबाक चाहलक, मुदा हँसी गलामे अटकि गेल।

राति उतरि रहल छल। अधिकारी सभ कहि गेल जे काल्हि फेर आएत, उचित प्रक्रिया होएत, जन-जागरूकता शिविर होएत। जीप चलि गेल। धूलि उठल। धूलि थमल तखन ठूँठक कोंपल पर एक छोटकी सफेद रेखा देखाइ पड़ल—न ओस, न कीड़ा, न जड़िक रस। ई जेना आकाशसँ खिंचल सूक्ष्म धूलि छल, वैह धूलि जे ओहि स्वप्नसँ जागल बच्चा सभक कल्पनामे अटकल छल।

अनन्या ओ रेखा देखलक आ काँपि उठलि। “‘नव-क्षितिज’ परियोजनाकेँ बीजक आँकड़ा चाही,” ओ फुसफुसौली। उज्ज्वलक इजोत ठूँठक कगार पर एक क्षण लेल चमकल। मीरा स्त्री सभकेँ भीतर लए गेली। देविका गामक युवक सभकेँ पहरा बाँटि देली। गोप कुमार राति भरि कागचक पंक्ति मिलाबय बैसलाह। सत्यव्रत मेहता पहिल बेर स्वयं पहराक बाहरी घेरामे ठाढ़ भेलाह।

मध्यरातिक बाद बीजक पात्र सभक भीतर सँ अति धीमा स्वर उठल—जेना हजारो छोटका कंठ एकहि साथैँ कहैत हो—“हमरा क्रमांक नहि, माटि चाही। हमरा तिजोरी नहि, ऋतु चाही। हमरा नामहीन परियोजना नहि, अपन नामक धरती चाही।” बच्चा सभ निन्नमे सेहो ई स्वर सुनैत रहल।

भोर होयबासँ पहिने अनन्या रजिस्टरक नब पन्ना खोलि शीर्षक लिखलक—“बीजक चोरी।” ओकर हाथ काँपैत छल, मुदा अक्षर साफ छल। पहरा आब नामसँ बीज धरि पहुँचि गेल छल, आ गढ़ नारिकेल बुझि गेल जे अगिला लड़ाइ खेतक अदृश्य गर्भमे होएत।

लोकगीत: बीज कहै—माटि चाही

लोकधुन: रोपनी गीत

कहै हे बीज, 'माटि चाही' कहै हे,
क्रमांक नहि, तिजोरी नहि—ऋतुक सुगन्ध चहै हे।

नामक पहरा बाद बीजक पहरा आयल,
कोठीक अन्हारमे भविष्य धीरे गुनगुनायल।
'क्रमांक नहि, माटि चाही; तिजोरी नहि, ऋतु',
'स्वप्नक अनाम ग्रह नहि, अपन धरतीक सुगन्ध।'
सत्यव्रत बाहरी घेरामे पहरुआ बनि ठाढ़,
नेना निन्नमे सुनलक हजार बीजक पुकार।

बीजक गवाही कहै—माटि केकर, हाथ केकर,
जकरा बोएल, ओकर श्रम, जकरा बचेल, ओकर नेह।
बीज छोट अछि, मुदा भविष्यक पूरा देह,
ओकर नाम बचाउ, ऋतु संग राखू सेह।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—प्रकार दू प्रकारक—विशेषण आ उपलक्षण: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उपस्थित दण्ड "ई पुरुष दण्डी अछि" ज्ञानमे मुख्य विशेषण अछि; अनुपस्थित कुरुवंश "ई भूमि कुरुक्षेत्र अछि" ज्ञानमे उपलक्षण। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। प्रकार दू प्रकारक—विशेषण आ उपलक्षण।]

अध्याय १०७

बीजक चोरी

बीज चोरौनिहार खेत नहि चोरबैत— भविष्य चोरबै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: भविष्य बचाउ, बीज बचाउ

लोकधुन: धान-बीज जागरण

बचाउ हे बीज, काल्हिक थारी बचाउ हे,
दादीक डिब्बा, खेतक विधान—दुनू जोगाउ हे।

बीज चोरल तँ काल्हिक थारी खाली होए,
बीज बचल तँ सात पीढ़ी अन्नक हँसी बोए।
दादीक डिब्बा, किसानक ज्ञान, खेतक लोक-विधान,
सभकेँ संग सहेजि राखू—एहने भविष्य दान।

एक बीजक भीतर मौसम, स्वाद, कथा, संस्कार,
ओकर स्वतन्त्रता बचेनाइ सभक साझा भार।
भविष्य बचाउ, बीज बचाउ, भंडार खोलि बाँटू,
लोभक ताला तोड़ि कऽ जीवनक हक सँटू।

एक मुट्ठी बीज मे सात पीढ़ीक भात,
स्वाद, मौसम, कथा, संस्कार—सभक साथ।
लोभक ताला जतऽ लागल, ओतऽ मिलि कऽ बाजू,
बीज-भंडार खोलि कऽ हकक थारी साजू।

❖

बीज चोरौनिहार खेत नहि चोरबैत— भविष्य चोरबै छै। खेत तँ ओतहि रहि जाइए, माटि ओतहि रहि जाइए; जे उठा कऽ लऽ जाइए, से काल्हिक थारी छिकै।

चोरी दू तरहक होइ छै। एक ओ, जे रातिमे होइए आ भोर मे पकड़ा जाइए। दोसर ओ, जे दिन मे कागच लऽ कऽ अबैए, हाथ जोड़ैए, आ ओकरा चोरी नै— सुरक्षा कहल जाइए।

डिब्बा मे बन्द बीज सुरक्षित नै होइ छै, सूतल रहै छै। ओ जागैए तखने, जखन ओकरा माटि भेटै छै, ॠतु भेटै छै, आ कियो ओकर नाम लऽ कऽ बजबै छै।

तें जे बीज लऽ जाए चाहै छै, ओकरासँ पूछू— गीत आबैए? नै आबै छै तँ ओ संरक्षक नै, चोर छिकै।

भोरक पहिल उजास अयबासँ पहिने जे शीर्षक अनन्या रजिस्टरमे लिखने छली—“बीजक चोरी”—से शब्द पूरा गाममे हवा जेकाँ पसरि गेल। नामक चोरी लोक देख चुकल छल, स्मृतिक चोरीक चाल पकड़ि चुकल छल, मुदा बीजक चोरी? ई बात पहिने असम्भव बुझाइत छल। बीज तँ माटिमे, कोठीमे, स्त्रीक आँचलमे, खरिहानक भूसा बीच, पनियारीक गीतमे, आ बरखाक प्रतीक्षामे रहैत अछि। ओकरा केना चोराएल जा सकैत अछि?

मुदा गढ़ नारिकेल आब जानि गेल छल जे गोहि सभ केवल पानिमे नहि रहैत। कखनो ओ फाइलक दाँत बनैत अछि, कखनो अनुप्रयोगक खिड़की, कखनो शोधक नम्र प्रश्न, कखनो दानक पर्ची, आ कखनो संरक्षणक नाम पर चोरायल तिजोरी। जे बीज खेतमे रहला पर लोकक भूखक उत्तर छल, से जखन काँचक डिब्बामे बन्द होइत अछि, तखन ओकरा “सुरक्षा” कहल जाइत अछि; मुदा ककर सुरक्षा—बीजक कि बाजारक—ई प्रश्न कियो नहि पूछैत।

चन्ना ठूँठ लग रातिसँ राखल माटिक पात्र सभकेँ बच्चा सभ घेरि बैसल। पात्रक भीतर धानक पुरान नस्ल, मड़ुआ, कोदो, कौनी, सरिसों, कुसुम, पाग-पातक औषधीय बीज, आ किछु एहन दाना छल जकर नाम केवल बूढ़ि स्त्री सभकेँ मोन छल। प्रत्येक पात्र पर नामक पर्ची बन्हल छल—ककर घरसँ आयल, कोन खेतसँ, कोन बाढ़िक बाद बचल, कोन सूखाक वर्षमे फलल। अनन्या पर्ची पढ़ैत गेलि; गोप कुमार मिलबैत गेलाह; देविका पहरा बाँटैत गेली।

तहिये सुरमणी काकी आयली। हुनकर देह झुकल, आँखि लाल, पएरमे दरार, मुदा हाथमे एक पुरान पीतल डिब्बी। ओ डिब्बी एना पकड़ने रहली जेना कोनो मरणासन्न बालककेँ छातीसँ लगौने होथि। ओ कहली, “एहिमे ‘डूबल-साँस’ धान अछि। हमर माय कहैत रहथि—ई धान बाढ़िमे तीन दिन पानि सहैत अछि। नाम सेहो पानिमे डूबि कऽ घुरैत अछि, तें एकर नाम डूबल-साँस।” डिब्बीक पीतल हुनकर हथेलीक पसीनासँ इनार-जल जकाँ ठंढा आ चिक्कन भऽ गेल छल।

एक युवक हँसए चाहलक, मुदा ओकर हँसी निकलबासँ पहिने बा ओकरा देखि लेलीह। “धानक नाम पर हँसू नहि,” बा कहलीह, “जकरा अहाँ दाना बुझैत छी, ओकर भीतर बरख, भूख, देह, जाति, स्त्रीक मोन, आ श्रमक पूरा वंश रहैत अछि।” युवक चुप भऽ गेल। गढ़ नारिकेलमे पछिला दिन सभमे जे सीखल गेल, ताहिमे ई सेहो छल जे उपहास बेसीकाल अज्ञानक पहिल मुखौटा होइत अछि।

दुपहर लग नगरसँ दू गोट अधिकारी आयल। हुनका सभक संग एक परामर्शदाता, एक विदेशी शोधार्थिनी, आ एक स्थानीय अनुवादक छल। कागच पर शीर्षक छल—“देशज बीज-

संरक्षण एवं अन्तर-ग्रहीय अनुकूलन अध्ययन।” कागचक भाषा नम्र छल। ओ कहैत छल जे पृथ्वीक जलवायु अस्थिर भऽ रहल अछि, अतः पुरान बीज सभक वैज्ञानिक संरक्षण आवश्यक अछि। लोक पहिने सुनलक। सत्यव्रत मेहता पाछाँ ठाढ़ छलाह, एहि बेरो मौन, मुदा आँखि खुजल।

अधिकारी कहलक, “हमरा सभकेँ केवल नमूना चाही। बीज सुरक्षित भंडारमे राखल जाएत। भविष्यक पीढ़ी लाभान्वित होएत।” अनन्या पूछली, “भंडार कतऽ?” अधिकारी उत्तर देलक, “केन्द्रीय शोध-संग्रह।” गोप कुमार पन्ना उनटौलनि। छोट अक्षरमे लिखल छल —“आवश्यकता पड़लासँ बाह्य आवासीय परियोजनामे अनुकूलन हेतु उपयोग।” अनन्या पूछली, “बाह्य आवासीय परियोजना माने ‘नव-क्षितिज’क प्रचार-योजना?” अधिकारीक चेहरा एक क्षण लेल पात जेकाँ पीयर पड़ि गेल।

विदेशी शोधार्थिनी सचमुच असमंजसमे पड़ि गेलि। ओकरा शायद पूरा योजना नहि कहल गेल छल। ओ धीमे स्वरमे पूछली—“की ई सचमुच ओहि लेल—” मुदा ईरा, जे हुनकर भाषा बुझैत छली, हाथ उठा रोकि देली। “एतय पहिने मैथिलीमे प्रश्नक उत्तर देल जाएत,” ओ कहली। “जकर खेतक बीज अछि, ओकर भाषा छोड़ि कऽ संरक्षणक घोषणा नहि होएत।” शोधार्थिनी लज्जित भऽ चुप भऽ गेलि।

मीरा पर्ची उठौली। “एहि अनुच्छेदमे लिखल अछि जे बीजक ‘अनामिकीकरण’ कएल जाएत,” ओ पढ़ली। “अर्थात् बीजक संग जकर गाम, जाति, स्त्री, खेत, श्रम, ऋतु, बाढ़ि आ भूख जुड़ल अछि, से सभ हटाओल जाएत। फेर ओकरा क्रमांक देल जाएत। तखन ओ बीज नहि, बेनाम माल बनि जाएत।” सुरमणी काकीक हाथ काँपि उठल। ओ पीतल डिब्बी छातीसँ आरो जोर लगौने पकड़ि लेली।

अधिकारी कहलक, “वैज्ञानिक विधिमे क्रमांक आवश्यक होइत अछि।” तखन गंगेशक प्रश्न फेर चन्ना ठूँठक भीतर सँ उठल। अनन्या धीरे कहली, “क्रमांक प्रमाण नहि। बीजक प्रमाण ओकर अंकुर, ओकर गंध, ओकर माटि, ओकर लोकक शब्द, आ ओकर इतिहास अछि। अहाँ दाना लऽ जाएब, मुदा ई प्रमाण कतऽ राखब?” अधिकारी निरुत्तर नहि भेल; प्रशासन निरुत्तर भऽ जाइत अछि तखन आर कठोर होइत अछि। ओ कहलक, “कानूनी अधिग्रहण सम्भव अछि।”

एहि शब्द पर ठूँठक पाछाँ हवा तेज भेल। “अधिग्रहण”—ई शब्द गाम पहिने जमीनक सन्दर्भमे सुनने छल, घरक, पोखरिक, सड़कक। आब बीजक अधिग्रहण। बा हँसलीह, मुदा

हँसीमे आगि छल। “पहिने जमीन लेलहुँ, फेर पानि, फेर नाम, आब बीज। अगिला बेर गर्भ सेहो अधिग्रहण करब?” स्त्री सभक पाँतिमे धीमा गड़गड़ाहट उठल।

देविका बच्चा सभकेँ संकेत देली। बच्चा सभ पात्र सभ उठाकऽ भागल नहि; ओ सभ ओकरा बीचमे राखि चारू कात बैसल। कबड्डीक रेखा जेकाँ एक गोल रेखा खिंचल गेल। जे बीज लए चाहैत अछि, ओकरा एहि रेखा पार करबाक छल। अधिकारीक जूता रेखा लग रुकि गेल। ओ कानूनी भाषा लऽ कऽ आयल छल, मुदा रेखा खेलक छल; खेलक रेखा पर कानूनक जूता अजीब असहाय बुझाइत अछि।

चन्द्रपाल बत्रा दूरसँ दृश्य देखैत छल। ओकरा बुझाइत छल—बीजमे बाजार अछि, भविष्य अछि, सौदा अछि। मुदा जखन ओ “डूबल-साँस” नाम सुनलक, ओकरा अपन म्यूल एकाउण्टक स्मरण भेल। ओहो तँ केवल माध्यम बुझैत छल स्वयं केँ; मुदा माध्यम सेहो उत्तरदायी होइत अछि। ओ एक क्षण लेल सोचलक—जँ ई बीजक नमूना ‘नव-क्षितिज’क भण्डारमे गेल, तखन ओकर मुनाफा ककर खातामे जाएत? फेर पहिल बेर ओकरा मोनमे दोसर प्रश्न उठल—जँ ओकर आँकड़ा ओहि भण्डारमे क्रमांक बनल, तकरा अपन गामक नाम मोन रहत कि नहि?

राघव सिग्नलक पात पर रातिक कोड फेर चमकल—“बीज सूची सुरक्षित करू।” मुदा एहि बेर सन्देश पूरा नहि बनल। अक्षर सभ बीचमे टुटि पातक नस बनि गेल। ओ पात चन्ना ठूँठक हरियर बिन्दुक लग अटकि गेल। बच्चा सभ ओकरा पढ़लक—“बीज सूची...” तकर बाद केवल पातक नस। अनन्या कहली, “जखन लोभ बीज लिखए चाहैत अछि, प्रकृति ओकर शेष वाक्य मेटा दैत अछि।”

अचानक पीतल डिब्बी भीतरसँ आवाज आयल। ई आवाज कानसँ कम, हथेलीसँ बेसी सुनाइ देल। सुरमणी काकी डिब्बी अनन्या केँ देली। अनन्या ओकरा ठूँठ पर राखलक। भीतरक धानक दाना अत्यन्त सूक्ष्म स्वरमे खनखनायल। जेना दाना सभ अपना-अपना नाम कहि रहल हो। बच्चा सभ चुप्पे कान लगौलक। ओकरा सभकेँ भिन्न-भिन्न शब्द सुनाइ देलक—“बाढ़ि”, “माय”, “भूख”, “बचत”, “माटि”, “साँस”।

विदेशी शोधार्थिनी कानि पड़लि। ओ कहली, “हमरा कहल गेल छल जे ई मात्र जीन-सामग्री अछि।” ईरा अनुवाद केली। सुरमणी काकी उत्तर देली, “जीन हो कि जिन्न, पहिने ई हमर माय छी।” एहि वाक्य पर भीड़मे हलचल नहि, मौन पसरल। विज्ञानक भाषा आ लोकक भाषा भिड़ल नहि; एक क्षण लेल लोकक भाषा विज्ञानक अन्हरापन देखा देलक।

सत्यव्रत मेहता आगाँ बढ़लाह। ओ पहिल बेर एहि दिन बजलाह। “कानून यदि बीजकेँ केवल सम्पत्ति कहत,” ओ कहलनि, “तखन कानून अधूरा अछि। जँ बीज स्मृति, श्रम, आ समुदायसँ बनल अछि, तखन अधिग्रहणसँ पहिने समुदायक जीवित सहमति चाही। आ जीवित सहमति बन्द कागचसँ नहि, खुजल नाम-पाठसँ जन्म लैत अछि।” अधिकारी पूछलक, “एहि कानूनक धारा?” सत्यव्रत शान्त स्वरमे कहलनि, “एहि ठाम धारा कमला-बलान अछि। धारा पूछब तँ पानि उत्तर देत।”

भीड़मे धीमी हँसी उठल, मुदा ई हँसी उपहासक नहि, साहसक छल। अधिकारीक कागच भारी भऽ गेल। परामर्शदाता आपसमे फुसफुसाए लागल। शोधार्थिनी अपन पन्ना मोड़ि रखि देली। ओ कहली, “हम नमूना नहि लएब। पहिने सुनब।” अधिकारी ओकरा घूरलक, मुदा ओहि दिन सुनबाक पाँतिमे एक विदेशी स्त्रीक बैसि जाएब, ‘नव-क्षितिज’ परियोजनाक पहिल भीतरी दरार बनि गेल।

साँझ धरि निर्णय भेल—कोनो बीज बाहर नहि जाएत जाबत धरि ओकर पूरा नाम, घर, खेत, ऋतु, कथा, आ समुदाय स्पष्ट नहि हो। आ जँ कखनो शोध होएत, तखन बीजक संग नामक अधिकार, माटिक अधिकार, आ लोकक भाषा जाएत। बच्चा सभ एहि संहिताक नाम रखलक—“बीजक गवाही।” अनन्या रजिस्टरमे लिखलक—“दाना केवल दाना नहि; दाना जकरा मोन अछि, से सभक संक्षिप्त देह अछि।”

रातिमे बीजक पात्र सभ ठूँठक चारू कात राखल गेल। पहरा एहि बेर तीन घेरामे बनल—पहिल घेरा बच्चा सभक, दोसर स्त्री सभक, तेसर खेत जोतनिहार मजदूर सभक। सत्यव्रत बाहरी घेरासँ बाहर, पानि लग बैसलाह। ओ कहैत नहि रहलाह, मुदा हुनकर उपस्थिति जेना ई स्वीकार करैत छल जे न्याय आब पुस्तकसँ बाहर, दाना धरि पहुँचल अछि।

मध्यरातिक बाद कमला-बलानक दिशासँ हवा आयल। माटिक पात्र सभक सतह पर महीन दरार पड़ल। सुरमणी काकी चौंकली, मुदा बा रोकलीह—“डेराउ नहि। बीज बजलाक बाद माटि मुँह खोलैत अछि।” सचमुच, एक पात्रक माटि कने उठल। भीतरसँ अदृश्य अंकुर नहि, एक कारी भुरभुर शब्द ऊपर आयल—“हम कतऽ उगब?” ओहि क्षण पात्रक चारू कात बैसल बच्चा सभक देह पर एक संग रोइयाँ ठाढ़ भऽ गेल, जेना हवा नहि, कोनो प्रश्न देह छुबि गेल हो।

एहि प्रश्नक उत्तर ककरो लग नहि छल। खेत सभमे कर्ज, रसायन, अधिग्रहण, बाढ़ि, सूखा, आ जातिक बाँट पड़ल छल। माटि स्वयं पूछैत छल—तूँ हमरा बचाएब कतऽ? अनन्या

रजिस्टरक अगिला पन्ना खोललक। शीर्षक लिखलक—“माटिक मुँह। ” बीजक चोरी रोकल गेल छल, मुदा आब ओकरा उगबाक ठाम चाही छल।

लोकगीत: भविष्यक चोरी

लोकधुन: धान-बीज विरहा

चोरै हे चोरै, बीज-चोर भविष्य चोरै हे,
तिजोरीक ठंढसँ निकालि ऋतुक कोरा दिअ हे।

बीज चोरौनिहार खेत नहि, भविष्य चोरै,
मायक कोठी, किसानक हथेली, ऋतुक नेह तोरै।
चोरी पकड़ल, मुदा प्रश्न माटिसँ उठल—
‘हम कतऽ उगब?’ कहि कारी शब्द ऊपर फुटल।

कर्ज, रसायन, बाढ़ि, सूखा, जातिक मेड़,
बीजकेँ ठाम कतऽ—के बनत ओकर घेर?
पहरा मात्र पात्रपर नहि, खेतक गर्भ धरि,
भविष्य बचत जखन जमीन बाँचत हरि।

बीजक नोर सुनू, ओकरा खेत घुरा दियौ,
तिजोरीक ठण्ढसँ निकालि ऋतुक कोरा दियौ।
चोरी पकड़ल, मुदा माटिक प्रश्न फेर फोड़ल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—उपलक्षण विशिष्टज्ञानक विषय होयब आवश्यक: क्रियासम्बन्धी व्यावर्तककेँ विशेषण आ ओकर अतिरिक्तकेँ उपलक्षण कहल जाए—एहन मतमे दण्ड उपलक्षण भऽ जाएत, कारण “दीर्घबाहु दण्डी” मे दण्ड क्रियासँ प्रत्यक्ष सम्बद्ध नहि। उपलक्षण विशिष्टज्ञानक विषय होयब आवश्यक।]

अध्याय १०८

माटिक मुँह

माटिक मुँह तखन खुजै छै जखन ओकरासँ पुछल जाए— हम कतऽ उगब?

अध्यायारम्भ लोकगीत: माटिक ठाम बनाउ

लोकधुन: माटि-माय गीत

दिअ हे ठाम, माटिकेँ ठाम दिअ हे,
कंक्रीटक बीचो एक हरियर खिड़की दिअ हे।

माटि पूछै—हम कतऽ उगब? कहू—हमरा हृदयमे,
खेत, आँगन, गमला, वन—सभ सम्मानक सदयमे।
कंक्रीटक बीचो नान्हि हरियर खिड़की खोलू,
बीजक पएर धरबाक लेल नरम धरती जोतू।

माटि केवल जमीन नहि, जीवनक आधार,
ओकर साँस बचेनाइ सभ नागरिकक व्यवहार।
माटिक ठाम बनाउ, शहरो हरियर होए,
जतय माटि मुस्कायत ओतय मानवता सोए।

गमला मे, कियारी मे, आँगन-छत-दलान,
जतऽ माटि साँस लइए, ओतऽ जीवन-गान।
माय जकाँ गोद पसारने अछि धरती सभ लेल,
ओकर साँस बचायब थिक नागरिकताक मेल।

❖

माटिक मुँह तखन खुजै छै जखन ओकरासँ पुछल जाए— हम कतऽ उगब? ताधरि ओ चुप रहै छै, कारण ओकरासँ सदिखन माँगल गेलै, पुछल कहियो नै गेलै।

लोक माटिकेँ जोतैए, बेचैए, बाँटैए, बन्धक रखैए— आ बुझैए जे ई सभ माटिसँ बात करब छिकै। मुदा बात ओ नै छिकै जे हम कहै छी; बात ओ छिकै जे हम सुनै छी।

आ माटि जखन बजैए तँ ओकरा भाषा नै होइ छै। ओ मेड़क भुरभुराएब सँ बजैए, दरारक चौड़ाइ सँ बजैए, बालूक ढाँपब सँ बजैए। जे कान धरती पर लगबैए, ओकरे सुनाइए।

तेँ बीज बचेनाइ सहज छै। ओकरा ठाम देनाइ कठिन— कारण ठाम देबा काल पुछय पड़ै छै जे ई ठाम आइ धरि केकरा नै भेटलै आ किए नै भेटलै।

माटिक मुँह ओहि राति खुजल जखन सभकेँ लागैत छल जे बीजक चोरी रोकि देल गेल, तेँ पहरा सफल भेल। कटल चन्ना ठूँठक चारू कात राखल माटिक पात्र सभक भीतर सँ जे प्रश्न उठल—“हम कतऽ उगब?”—से प्रश्न कानमे नहि, खेतक नस-नसमे पैसि गेल। बच्चा सभ पहरा दैत रहल, स्त्री सभ दिया फूँकैत रहल, मुदा प्रश्नक उत्तर कियो तुरन्त नहि देलक। कारण बीज बचा लेनाइ सहज छल; ओकरा उगबाक धरती देनाइ कठिन।

भोर भेलाक बाद अनन्या रजिस्टर खोलि शीर्षक लिखलक—“चारिम पहरा: माटिक मुँह।” ओकरा लग बैसल ईरा पूछली, “माटि मुँह खोलैत अछि, तखन की कहैत अछि?” अनन्या पाथरक नाम-घेरा दिस तकलक। “शायद ओ पूछैत अछि—अहाँ सभ हमरा केवल जोतलहुँ, बेचलहुँ, बाँटलहुँ, बन्धक रखलहुँ; सुनलहुँ कहिया?” ई वाक्य पर सुरमणी काकी अपन हथेली भरि माटि उठौली आ माथ पर लगा लेली। ओ कहली, “हमरा पीढ़ी धरि माटि सँ अन्न माँगल गेल। माटिसँ कखनो ई नहि पूछल गेल जे ओकर अपन दुख की अछि।”

गामक खेत सभकेँ मोन करबाक काम शुरू भेल। जेना नाम-उत्सवमे मृतकक नाम पढ़ल गेल छल, तहिना एहि दिन खेतक नाम पढ़ल जाए लागल—बरगदाही, मुसहरी किनार, उज्जर डिह, कमला पारक चौर, बेलाहीक निचला परती, बारीक भीजल पट्टी, पगडंडी लगक बटाई खेत। कतेक खेतक नामक संग मालिकक नाम छल, कतेक संग बटैयादारक, कतेक संग ऋणक, कतेक संग मुकदमाक, कतेक संग बाढ़िक तिथि। बच्चा सभ बुझल—धरतीक नाम सेहो मनुष्यक नाम जेकाँ घायल भऽ सकैत अछि।

पहिल प्रस्ताव हरिहर झाक घर सँ आयल। ओ कहलक—“हमर ऊपरी खेत शुद्ध अछि, ओतय बीज रोपू।” शुद्ध शब्द सुनिते मीरा भौंह चढ़ौली। अनन्या पूछली, “शुद्ध ककरा कहैत छी?” हरिहर झा उत्तर देलक, “ओहि खेतमे कखनो चर्मकार टोला वा दुसाध टोलाक लोक जोतने नहि अछि।” सभ पर मौन पसरल। बीजक पात्र, जे ठूँठ लग राखल छल, एकाएक खनखनायल। सुरमणी काकी कहली, “ई दाना भूखक समय जाति नहि पूछैत। जे भूखमे अन्न खाए, ओकर हाथसँ माटि अशुद्ध कोना भऽ गेल?”

एहि क्षण गंगेशक प्रश्न फेर उपस्थित भेल। गंगेश उपाध्यायक जीवनक बात, जे अध्याय पहिने ठूँठक छालिमे धुँआ जेकाँ उठल छल, आब खेतक मेड़ पर उतरि आयल। ईरा बच्चा सभकेँ धीरे स्मरण करौली—नव्य न्यायक जन्मदाता कहल गेल, तत्त्वचिन्तामणि लिखलनि, बारह हजार ग्रन्थ बराबर बुद्धिक तेजक धारि; मुदा समाज हुनकर असुविधाजनक जीवन-सत्य

पर परदा देलक। जँ विचारक पूजा होए आ जीवनक सत्य दबाओल जाए, तखन न्यायक मुँह अधखुजल रहि जाइत अछि।

अनन्या हरिहर झासँ फेर पूछली, “जँ गंगेशक न्याय प्रमाण पूछैत अछि, तँ अहाँक शुद्धताक प्रमाण की? माटि कहलक? बीज कहलक? भूख कहलक? कि केवल जातिक डर?” हरिहर झा तमतमायल, मुदा बच्चा सभक आँखि डेराइत नहि छल। ई प्रश्न अदालतक नहि, माटिक छल। ओ उत्तर देबासँ पहिने ओकर पएरक नीचाँक मेड़ कने भुरभुरायल। ओ पाछाँ हटि गेल।

तखन चर्मकार टोला सँ जगेसर मोचीक नातिन, नेनी नाम धीरमती, आगाँ आयल। ओकर हाथमे फाटल चमड़ाक टुकड़ा नहि, माटिक ढेला छल। ओ कहली, “हमर घर पाछाँ परती अछि। बाढ़िमे पानि भरि जाइत अछि, गर्मीमे दरार पड़ैत अछि। मुदा ओहि ठाम हम सभक हाथ अछि। जँ बीजकेँ जाति नहि, पानि आ हाथ चाही, तँ ओतय उगाउ।” किछु लोक हकलायल—“परतीमे? चर्मकार टोला लग?” धीरमतीक मुँह पर कठोर उजास आबि गेल। “जतय मनुष्यक देहक कामक गन्ध अछि, ओतय माटि जीबैत अछि। जकरा केवल कुलक गन्ध चाही, ओ भंडारमे सड़ि जाए।”

सत्यव्रत मेहता दूर ठाढ़ सुनैत छलाह। हुनकर चेहरापर वैह पुरान लज्जा उतरि आयल जे कानूनक पंक्ति जातिक सोझाँ बेसीकाल कमजोर पड़ि जाइत अछि। ओ किछु कहबा लेल आगाँ बढ़लाह, मुदा बा हाथ सँ संकेत केलीह—“एहि बेर बच्चा बाजत।” सत्यव्रत रुकि गेलाह। न्यायक पहरा आब पदक हाथमे नहि, प्रश्न करैत बालक हाथमे छल।

निर्णय भेल जे बीजकेँ एक खेतमे नहि, पाँच तरहक माटिमे परखल जाए—चर्मकार टोला पाछाँक परती, मुसहरी किनारक बाढ़ि-धोआ चौर, विधवा स्त्रीक छोट बाड़ी, मजदूरक बटाई खेत, आ चन्ना ठूँठ लग बनल सामूहिक क्यारी। एहि पाँच माटिकेँ बच्चा सभ नाम देलक—“दुखक माटि”, “पानिक माटि”, “सहनक माटि”, “श्रमक माटि”, आ “स्मृतिक माटि।” हरिहर झाक ऊपरी खेतकेँ कियो अस्वीकार नहि केलक; ओकरा बस कहल गेल—“पहिने ओतय अहाँक शुद्धताक देबाल तोड़ू, फेर बीज अपने पहुँचत।”

बीज बाँटबाक विधि बनल। कोनो पुरोहित नहि, कोनो अधिकारी नहि। सुरमणी काकी पहिल दाना धीरमतीक हथेली पर रखली। धीरमतीक हथेलीमे दरार छल; मेहनतक रेखा, साबुनक अभाव, पानिक दाग, आ धूपक कठोरता। दाना ओहि दरारमे एक क्षण अटकल, फेर

चमकल। हथेलीक ओहि खरखराहटमे दानाक चिक्कन पीठ एना घसकल जेना कोनो नब देह पुरान श्रमक नक्शा पढ़ि रहल हो। अनन्या लिखलक—“बीज जाति नहि, रेखा पढ़ैत अछि।”

ओहि दिन खेत धरि जुलूस निकलल, मुदा ई नकली भूतक जुलूस नहि छल। लोक चुप्पे चलल। आगाँ बच्चा सभ, बीचमे माटिक पात्र, पाछाँ स्त्री सभ, आ सभसँ पाछाँ बूढ़, मजदूर, सत्यव्रत, ईरा, मीरा, देविका, गोप। रास्तामे लोक जुड़ैत गेल। कियो पूछलक—“कतऽ चलल?” उत्तर मिलल—“माटिक मुँह सुनए।” प्रश्नकर्त्ता किछु दूर चलि संग भऽ गेल।

चर्मकार टोला पाछाँक परती पर पहुँचल तखन भूमि सचमुच उपेक्षित बुझाइत छल। कचरा, फूटल बरतन, पुरान जूता, राख, बाढ़िक पानिसँ आयल प्लास्टिक, सूखल गोबर, आ झाड़ी। किछु लोक नाक सिकोड़लक। धीरमती ओकरा सभ दिस देखि कहली, “एही जगह हम सभ रहैत छी। जँ बीज एतय उगि सकत, तखन सिद्ध होएत जे जीवनक नाक नहि होइत।” ई वाक्य सुनिते ईरा कैँ लागल जे गंगेश उपाध्यायक तर्क मुस्कुराइत अछि—प्रत्यक्ष दुर्गन्ध अछि, अनुमान उपेक्षा अछि, मुदा शब्दक भीतर एकटा नब प्रमाण जन्म लैत अछि—गरिमा।

सफाई शुरू भेल। मुदा देविका रोकली—“सफाईक नाम पर परतीक इतिहास नहि हटाउ।” कचरा अलग भेल, मुदा स्मृति नहि। पुरान जूताक एक टुकड़ा धीरमती राखि लेली—“ई हमर बापक कामक निशान।” राखक छोट भाग माटिमे मिलाओल गेल। गोबर, सूखल पात, बाढ़िक सिल्ट, चन्ना ठूँठक धूलि, आ पाँचो दिशाक पानि मिलि एक छोट क्यारी बनल। ओ क्यारी गामक इतिहासक संक्षिप्त देह बनि गेल।

बीज रोपबासँ पहिने अनन्या कहली—“जे दाना एतय जाएत, ओकर नाम बाजू।” सुरमणी काकी दाना उठा कहली—“ई बाढ़ि-सहन धान।” बा कहलीह—“ई भूखक बचत।” धीरमती कहली—“ई अशुद्ध कहायल हाथक उजास।” मीरा कहली—“ई देहक अपमानक उत्तर।” सत्यव्रत धीरे कहलनि—“ई कानूनक बाहर जन्मल न्याय।” बच्चा सभ एक संग कहल—“उपस्थित।” दाना माटिमे गेल।

पहिल दाना पड़िते दूर कमला-बलानक पानि हलचल देलक। कियो कहलक, “गोहि।” कियो डेरायल नहि। गोहि सभ आब देहचिबैया भय मात्र नहि रहल; ओ सभ सीमाक रक्षक, पानिक पुरान स्मृति, आ जीवित-मृतक बीचक कठोर पाठ बनि गेल छल। पानिमे एक कारी पीठ उभरि फेर डूबि गेल। अनन्या लिखलक—“गोहि देखलक, खायल नहि।”

दोसर क्यारी मुसहरी किनार बनल। ओतय माटि सदिखन पानिसँ हेरायल, फेर सूखल पर फाटल। मुसहरीक बूढ़िन सभ कहली जे ई माटि मछरीक काँटा, बाढ़िक बालु, आ भूखक धैर्य

सँ बनल अछि। बीज ओतय गाड़ल गेल तखन बालू भुरभुरायल नहि; ओ अपने दानाकेँ ढाँपि लेलक। हथेली उठाबय काल माटिक ओहि ठंढा नमीमे एक बेर बाढ़िक पुरनका गन्ध उठल—मछरी, सड़ल पुआर आ भीजल बालूक मिलल गन्ध, जकरा एहि किनारक लोक बरखक-बरख अपन देह पर ओढ़ने रहल छल। बच्चा सभक नोट—“जे माटि बारंबार बहल, ओ ढाँपए जानैत अछि।”

तेसर क्यारी विधवा सरयू दीदीक बाड़ीमे बनल। ओ बाड़ी सभसँ छोट, मुदा सुव्यवस्थित। ओ कहली, “हमर बाड़ीमे अन्न कम उगैत अछि, मुदा कखनो नाम बिनु नहि खाइत छी। जे पकैत अछि, ओकरा सँ पहिने मृतकक थारी लगैत अछि।” बीज ओतय गेल तखन हवामे धूपबत्तीक नहि, कच्चा पातक गंध उठल। ईरा लिखली—“सहनशीलता पूजा नहि, अभ्यास अछि।”

चारिम क्यारी मजदूरक बटाई खेतमे बनल। खेत मालिकक, पसीना दोसरक। सत्यव्रत ओतय ठहरि गेलाह। कानूनक पन्ना जेकाँ मेड़ चारि भागमे बँटल, मुदा पएर एकहि कीचड़मे धँसैत। मजदूर कहलक, “धान आधा, ऋण पूरा।” बच्चा सभ ई वाक्य दोहरौलाक बाद दाना रोपलक। माटि कने कम्पित भेल, जेना पूछैत हो—“आधा देह सँ पूरा जीवन केना उगब?”

पाँचम क्यारी चन्ना ठूँठ लग बनल। ओतय बीज रोपबाक बेर असली भूतक कबड्डी पुनः सुनाइ पड़ल। आवाज बहुत धीमा—“कबड्डी-कबड्डी”—जेना कोनो दूर ग्रहक कक्षा सँ धरतीक साँस घुरि रहल हो। बच्चा सभ बुझल जे बीजक पहरा केवल खेतमे नहि, ग्रहक बीचो होएत। जे दाना पृथ्वी पर नाम सहित उगत, ओकर स्मृति स्वप्नक अनाम ग्रहक देबालो फोड़त।

साँझ धरि पाँचो क्यारी बनि गेल। लोक थाकल, मुदा विचित्र रूपेँ हलुक। बीज देखाइ नहि दैत छल; माटि मात्र समतल। मुदा एही अदृश्यतामे आशा छल। जे चीज रोपल गेल, ओकर प्रमाण तुरन्त नहि भेटैत। गंगेशक न्याय पुनः हँसल—प्रत्यक्षक अभाव सत्यक अभाव नहि। अनुमान, शब्द, उपमान, स्मृति, श्रम—सभ मिलि बीजक भविष्य रचैत अछि।

रातिमे पहरा खेतक बीच लगल। एहि बेर तीन नहि, पाँच घेरा। चर्मकार टोला, मुसहरी, विधवा बाड़ी, बटाई खेत, आ चन्ना ठूँठ—पाँचो क्यारी पर अलग-अलग बच्चा टोली। अनन्या मध्य मेड़ पर बैसलि। धीरमती ओकर लग। दुनू चुप। मेड़क ओस दुनूक पएरक नीचाँ ठंढा भऽ बैसैत गेल, आ दूर पाँचो क्यारीक दीयाक इजोत एक-दोसरकेँ आँखिक कोरसँ जोड़ने रहल। अचानक धीरमती पूछली, “जँ बीज नहि उगल तँ?” अनन्या कहली, “तखन फेर पूछब—माटि की चाहैत अछि। पहरा असफल नहि, अधूरा होएत।”

मध्यराति बीतलाक बाद कारी आकाशमे एक सूक्ष्म चमक देखाइ देलक। कियो तारा कहलक, कियो स्वप्नक अनाम ग्रहक संकेत। ओ चमक पाँचो क्यारी पर एक संग पड़ल। माटि भीतर सँ गम्भीर, अतिसूक्ष्म ध्वनि उठल—न अंकुर, न शब्द, बस बन्द मुँहमे घूमैत साँस। बच्चा सभ कान धरती पर लगौलक। ध्वनि कहैत छल—"हम सुनलहुँ।"

एहि उत्तरसँ सभकेँ राहत भेटल, मुदा कथा एतय रुकएबला नहि छल। कारण जे भूमि बीजकेँ अपन कहि चुकल छल, ओकरा पर आब अधिकारक प्रश्न उठत। ककरा अधिकार—मालिकक, जोतनिहारक, जातिक, राज्यक, कम्पनीक, कि बीज सुननिहार समुदायक? भोरक पहिल उजासमे, पाँचो क्यारीक मेड़ पर एक-एक अज्ञात निशान देखाइ पड़ल—छोट लोहाक कील, लाल रंगक दाग, आ माप-फीताक धुँधल निशानी।

अनन्या रजिस्टर खोललक। "बीज उगबाक ठाम भेटल," ओ लिखलक, "मुदा आब मेड़ पर स्वामित्वक गोहि आयल अछि। " धीरमती माटि उठा कऽ मुट्ठीमे कसली। दूर कतहु फाइलक पन्ना उनटल, पानिमे गोहिक पूँछ हिलल, आ आकाशमे स्वप्नक अनाम ग्रह एक क्षण लेल फीका पड़ि गेल।

लोकगीत: माटि पूछै—हम कतऽ उगब?

लोकधुन: माटि-माय गीत

पूछै हे माटि, 'हम कतऽ उगब?' पूछै हे,
जोतनिहारक पसेनाक नाम पर अधिकार धरै हे।

माटिक मुँह खुजल, प्रश्न नस-नसमे गेल,
'बीज बचेलहुँ, मुदा हमरा ठाम कतऽ देल?'
पाँच क्यारी बनल, तखने लोहाक कील गड़ल,
लाल दाग, माप-फीता, स्वामित्वक गोहि चढ़ल।

मालिक, जोतनिहार, जाति, राज्य, कम्पनी—के?
माटि कहै—जकरा सुनलहुँ, अधिकार ओकरे।
धीरमती मुट्ठीमे माटि कसि धरली,
बीजक घर भेटल, मुदा मेड़ फेर डेरौली।

माटि माए, तोहर मुँह केओ बन्द नहि करौ,

जोतनिहारक पसीनाक नाम पर अधिकार धरौ।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—विशेषण व्यावृत्तिक समानाधिकरण मात्र नहि: मुदा "ई कमल नील कमल अछि" कथनमे नीलकमलसँ भिन्न समस्त वस्तुक व्यावृत्ति व्यक्त नहि; प्रत्यभिज्ञा "हम एहि कमलकेँ नीलकमल जानैत छी" मे सेहो एहन व्यावृत्ति प्रकट नहि। विशेषण व्यावृत्तिक समानाधिकरण मात्र नहि।]

अध्याय १०९

जलक स्मृति

पानिकेँ बिसरब आसान, पानिक स्मृतिकेँ बिसरब असम्भव।

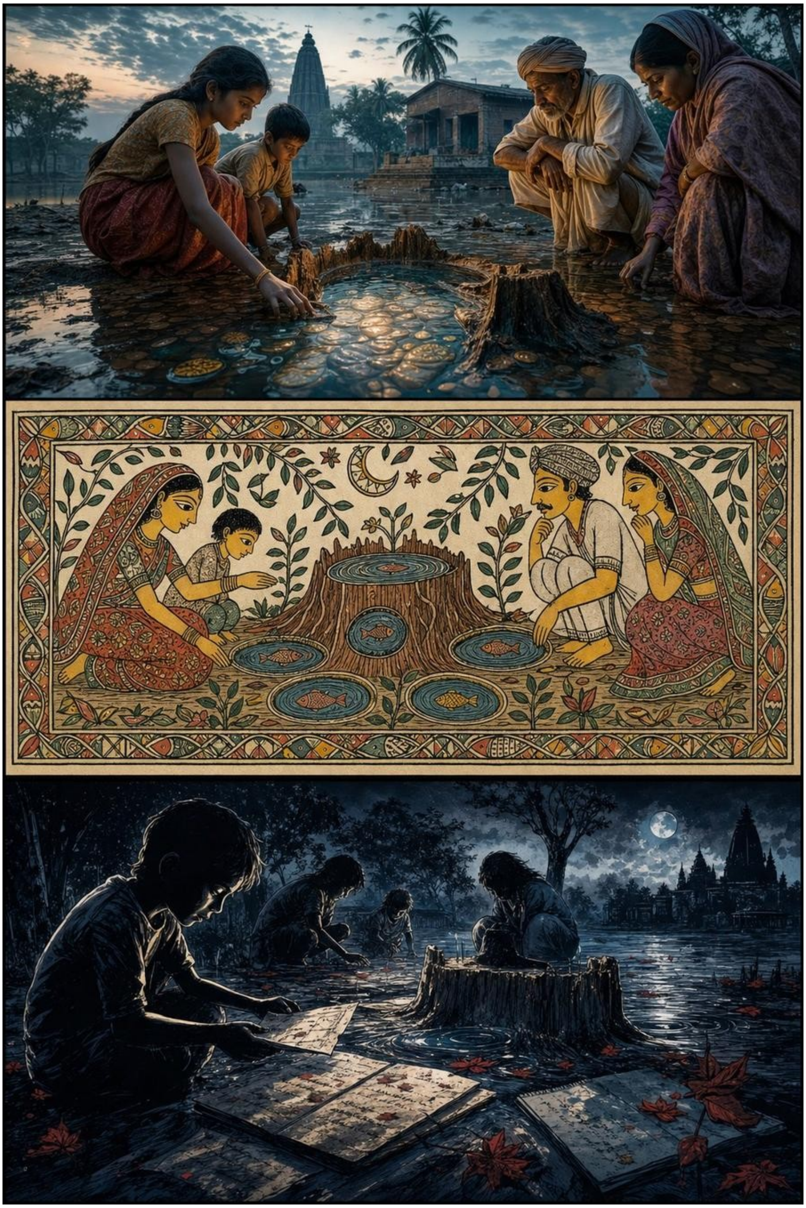

अध्यायारम्भ लोकगीत: नदी मुक्त करब

लोकधुन: पनिहारिन-मलार

भरू गे पनिहारिन, मुक्त धारक जल भरू गे,
बोतलक ढक्कन खोलि नदीकेँ घर घुराबू गे।

बोतलमे बन्द नदीक स्मृति ढक्कन ठेलै,
धारक जन्म स्वतन्त्र, पियासक संग खेलै।
पानि वस्तु मात्र नहि, जनक साझा प्राण,
इनार, पोखरि, धार बचाउ—एहने जल-सम्मान।

पनिहारिन गीत गाबि स्रोतक बाट साफ करू,
बून्दकेँ व्यापारक कैदसँ धीरे मुक्त करू।
नदी मुक्त रहत तँ माटि, माछ, मनुख हँसत,
जल-न्यायक उज्जर धार सभ घरमे बसत।

घैल भरैत घाट-घाट पर मलारक तान,
इनार-पोखरि-कूप सभक अपन-अपन मान।
पानि बिकाए वस्तु जकाँ—ई अधलाह रीति,
स्रोत बचा, धार खोलि, गाबू जलक प्रीति।

❖

माटि नाम धरै छै, पानि गति धरै छै। माटि पर पएर पड़ै छै तँ चिन्ह बनै छै; पानि पर पएर पड़ै छै तँ चिन्ह नै बनै छै, मुदा पानिकेँ मोन रहै छै जे के कोन घाट सँ उतरल आ घुरल नै।

तें कागच बदलल जा सकै छै, पानि नै। कागच पर लिखल केँ काटि सकै छी; पानि जकरा एक बेर छुलक, ओकर ठंढक ओकरा भीतर रहि जाइ छै।

आ जे कथा दाम पाबय लगै छै, से कथा नै रहै छै— माल भऽ जाइ छै। तें जल-गवाहीक पहरा सभसँ कठिन होइ छै।

माटि अपन मुँह खोलि चुकल छल। चारिम पहरामे जे बीज, जे धूलि, जे दबायल पदचिह्न बाजि उठल छल, ओकर बाद लोककेँ लागल जे पृथ्वी आब अपन गवाही देबए लागल अछि।

मुदा गढ़ नारिकेलमे कोनो गवाही एसगर नहि रहैत। माटि बजै तँ पानि सुनैत अछि; पानि सुनै तँ गोहि करवट बदलैत अछि; गोहि करवट बदलै तँ चन्ना गाछीक ठूँठ पर हरियर बिन्दु काँपि उठैत अछि।

ओहि राति बाढ़िक जल उतरि गेल छल, मुदा भोरमे लोक देखलक जे ठूँठक चारूकात छोट-छोट पोखर बनि गेल अछि। ई साधारण बरसातक पानि नहि छल। पानिक सतह पर पात नहि तैरैत छल, नाम तैरैत छल—किछु साफ, किछु धुँधल, किछु केवल ओतबे जतेक अक्षर पानि स्वयं बचा सकल। बच्चा सभ पहराक लेल आयल तखन ओ सभ देखलक जे रजिस्टरक सूखल पन्ना राति भरि भींजि गेल, मुदा स्याही बहल नहि। उनटे जे नाम कखनहुँ पूरा लिखल नहि गेल छल, ओकर चारूकात पानिक गोला बनल छल।

अनन्या घुटना टेकली। ओ अपन हथेली पानिमे नहि डुबौली, पहिने कान लगौली। पानि अत्यन्त धीमे बजैत छल—जेकाँ कियो बहुत दूरसँ मोन करैत हो। ओहि स्वरमे करुणा छल, पराजय नहि; भय छल, मुदा अपमान नहि। पानि कहैत छल—'हम देह राखि नहि सकलहुँ, मुदा अन्तिम स्पर्श राखि लेलहुँ। हम हड्डी नहि बचा सकलहुँ, मुदा गिरबाक दिशा बचा लेलहुँ। हम नाव नहि रोकि सकलहुँ, मुदा नावक छाह मोन अछि।'

बच्चा सभ चकित भेल। नामक पहरा आब धरती पर लिखल पाथर भरि नहि रहल। पानि अपन अलग अभिलेख माँगि रहल छल। नारिकेल पात पाठशालाक पहिल नियम छल—नाम मेटाएब नहि। मुदा पानिक नियम दोसर छल—नामकेँ बहेबाक अधिकार दियौ, मुदा बिन सुनल बहेबाक नहि। अनन्या रजिस्टर खोललक आ नव पृष्ठक शीर्ष पर लिखली—'जलक स्मृति'।

बा कहलीह, 'पानि बहुत पुरान गवाह अछि। मनुख अदालत बनएबासँ पहिने पानिक सोझाँ अपराध करैत छल। पानि गाछिक जड़ि जनैत अछि, देहक ताप जनैत अछि, भूखक घुलन जनैत अछि। मुदा पानि अपना नामेँ गवाही कम देलक; लोक ओकरा केवल बाढ़ि, नदी, पोखर, नाला, नहर कहैत रहल।' ओ पानि दिस तकैत रहलीह। हुनकर आँखिमे जे बरख छल, से आँखिक पानि छल कि कमला-बलानक स्मृति, कियो निश्चय नहि कऽ सकल।

तखन पनिडुब्बी आयली। ओ पहिने जहिना अर्धकथा, अर्धछाह, अर्धजल छली, तहिना आयली; मुदा एहि बेर हुनकर देह पर कीचड़ कम, उजास बेसी छल। ओ पानिक किनार पर बैसली आ अपन भीजल केश निचोड़लीह। प्रत्येक बून्द जे जमीन पर पड़ल, ओहि ठाम एक सूक्ष्म रेखा चमकल। ओ कहलीह, 'माटि जे नाम धरैत अछि, पानि ओकर गति धरैत अछि। अहाँ सभ पाथर पर नाम लिखलहुँ; आब जलमे मार्ग लिखू। कोन घरसँ कियो उठाओल गेल, कोन

घाटसँ नाव छूटल, कोन मोड़ पर पुलक सिमेंट ढहल, कोन अस्पतालक नलका पर श्वास टूटल, कोन स्क्रीनक नील उजासमे किशोरक मोन डूबल—सभ पानिक राह अछि।’

गोप कुमार अपन झोरा सँ पुरान नक्शा निकाललनि। सरकारी नक्शामे नदी सोझ रेखा छल, नहर नील पट्टी, पुल कारी धारि, आ बस्ती पीयर घेरा। पनिडुब्बी हँसली—‘ई पानि नहि, रंग अछि।’ बच्चा सभ माटि पर नब नक्शा बनाबय लागल। ओ सभ नदीकेँ केवल धारि नहि, स्मृतिक मार्ग बनौलक। जतय मजदूरक लाशक हिसाब नहि भेटल, ओतय गोल तरंग बनाओल। जतय औषधि नहि पहुँचल, ओतय सूखल इनार। जतय डिजिटल ठगीसँ घरक धन गेल, ओतय छोट काँचक स्क्रीन, जकर भीतर पानिक बून्द।

ईरा कहली, ‘विदेशमे बसल बच्चा सभ नक्शा देखैत अछि, मुदा नदीक गन्ध नहि पबैत।’ अनन्या उत्तर देली, ‘तखन गन्धक नक्शा बनाबी।’ सभ चुप भेल। गन्धक नक्शा? मुदा गढ़ नारिकेलमे असम्भव बात सभ धीरे-धीरे सामान्य होइत गेल छल। स्त्री सभ घरसँ लोटामे पानि आनली—ककरो आँगनक, ककरो इनारक, ककरो धानखेतक, ककरो अस्पतालक नलकाक, ककरो ओहि घाटक जतय अन्तिम बेर प्रियजन देखल गेल छल। प्रत्येक पानिक अलग गन्ध छल—कोनो लोटासँ लोहा आ काई उठल, कोनोसँ भुसकौल पुआर, कोनोसँ फिनाइलक ओ पातर तीखी हवा जे अस्पतालक बरामदामे दिन भरि टाँगल रहैत अछि। बच्चा सभ ओकरा सूँघि नहि, सुनि चिन्हित करैत गेल।

सत्यव्रत मेहता एतय सेहो पाछाँ बैसल छलाह। हुनका एखन कानूनक भाषामे ई सभ असम्भव लगबाक चाही छल। पानि गवाही देत? गन्धक नक्शा बनत? बून्द नामक राह बताओत? मुदा हुनकर भीतरक मौन, जे एक बेर अपराध छल, आब सुननाइ बनि गेल छल। ओ बुझलनि जे जे समाज लिखल कागच पर अटकैत अछि, ओ पानिक स्मृति सँ डेराइत अछि। कारण कागच बदलल जा सकैत अछि; पानि जे एक बेर स्पर्श केलक, ओकर स्मृति बदलब कठिन अछि।

ओ अपन नोटबुक खोललनि, मुदा किछु लिखल नहि। पनिडुब्बी हुनका देखली आ कहलीह, ‘अहाँ लिखू नहि, आइ हाथ धोउ।’ सत्यव्रत चौंकलाह। ओ पानिक छोट पोखर लग गेलाह। हाथ डुबौलनि। पानि ठंढा नहि छल, जेना कतेको हथेलीक ताप ओकरा भीतर अटकल हो। हुनकर आँगुर पर छोटका फोका जेकाँ अक्षर उठल—‘मौन’, ‘विलम्ब’, ‘साक्षी’, ‘ऋण’। हथेली भीतर पानि एना पैसल जेना बरखक जमल धूलि कोनो पातर सूइया सँ खोदल जा रहल

हो—पीड़ा नहि, मुदा एहन खरखराहट जे देहसँ बेसी मोन धरि पहुँचैत अछि। ओ हाथ बाहर निकाललनि। अक्षर सूखि गेल, मुदा छाप रहि गेल।

ओहि समय दूरसँ ढोलकक आवाज आयल। कियो फेर नकली जुलूस नहि बना रहल छल। बच्चा सभ कबड्डीक रेखा खिंचि रहल छल—एहि बेर पानिक चारूकात। नियम बनल: जे 'कबड्डी-कबड्डी' कहैत पानिक पार जाएत, ओकरा एकटा नाम उठाबय पड़त आ बिन साँस तोड़ने फेर घुरि आबय पड़त। मुदा नाम उठाएब माने पाथर उठाएब नहि; नामक बोझ अपन छातीमे लेब। जे बच्चा घुरि अबैत, ओ कहैत—'उपस्थित।' जे साँस टूटैत, ओ बैसि सुनैत। खेल पहरा बनि गेल।

उज्ज्वलक आत्मा पानिक सतह पर नील चमकल। ओ मोबाइलक स्क्रीन जेकाँ नहि, बरसातक बादक आकाश जेकाँ चमकैत छल। ओ एक बच्चाक कानमे कहलक, 'हम डूबल छलहुँ स्क्रीनमे, मुदा हमर मायक रोदन पानिमे आयल। ओकरा लिखू।' बच्चा रजिस्टरमे लिखलक—'रोदन सेहो जलमार्ग अछि।' देविका दूर सँ देखैत रहली। हुनका बुझायल जे स्क्रीनक विरुद्ध लड़ाइ केवल उपकरण बन्द करब नहि; जे नोर स्क्रीनसँ बचि पानिमे उतरि जाए, ओकरा समाजक अभिलेखमे ठाम देब सेहो लड़ाइ अछि।

गंगेशक प्रश्न पुनः उठल। एक बालक पूछलक, 'जलक स्मृति प्रमाण कोना?' आरुणि मुस्कुरेलाह। पहिने ओ इंजीनियर छलाह, जे पुलक भार, सरिया, सिमेंट, माप आ डिजाइन पर भरोसा करैत छलाह। आब ओ जानलनि जे मापक बाहर सेहो सत्यक भार होइत अछि। ओ कहलनि, 'प्रत्यक्ष—पानि देखाइत अछि। अनुमान—तरंग बतबैत अछि जे कियो गुजरल। शब्द—जे बाँचल, से कहैत अछि। मुदा न्याय तखन होएत जखन जे डूबल, ओकर मौनकेँ सेहो प्रमाण मानब।' बच्चा सभ एहि वाक्यकेँ नोट केलक।

पनिडुब्बी फेर कहलीह, 'नव्य न्यायक तर्क जँ देहक अपमान नहि सुनत, तँ अधूरा रहत। जाति जँ पानिक किनार तय करत, तँ न्याय नदी पार नहि करत। गंगेश जँ प्रश्न छथि, तँ जल उत्तर माँगैत अछि।' चर्मकारणी, विवाह, कुल, जन्म, पाँच बरखक असम्भव कथा—ई सभ पानिक सतह पर हलुक-हलुक उठल। समाज जे जीवनक असुविधाजनक सत्यकेँ दबा देलक, पानि ओकरा फेर तैराबय लागल। ओहि क्षण बच्चा सभ बुझलक जे जाति-व्यवस्था पाथर पर नाम काटि सकैत अछि, मुदा नदीमे स्पर्शक जाति नहि रहैत।

एक बूढ़ चर्मकार आगाँ बढ़ल। ओकर हाथमे चमड़ा नहि, एक लोटा पानि छल। ओ कहलक, 'हमरा पुरुखा सभक नाम कखनो एहि गाछीमे नहि पढ़ल गेल। ओ सभ गामक जूता

बनौलनि, डोली सुधारलनि, मरलापर खाल हटौलनि, मुदा स्मृतिमे घुसबाक अधिकार नहि भेटल।' ओकर घरवाली पाछाँ सँ कहलथिन, 'आइ पानि हुनका सभक पएर धोएत।' बच्चा सभ पाथरक घेरामे नब ठाम बनौलक। पानिक पहिल बून्द ओहि ठाम राखल गेल। बा धीरे कहलीह, 'एखन न्याय शुरू भेल।'

एहि प्रसंग पर बटुकनाथ हरिहरनक भेजल लोक दूर ठाढ़ असहज भऽ गेल। ओकरा लोक-स्मृति न्यासक कागचमे 'जातीय-सामंजस्य' शब्द लिखल छल, मुदा चर्मकार बूढ़क हाथक पानि ओहि शब्द सँ बेसी भारी पड़ल। कागच कहैत छल—समावेश। पानि कहैत छल—पहिने जे बाहर राखल, ओकर नाम बाजू। कागच कहैत छल—परियोजना। पानि कहैत छल—पएर धोउ।

साँझ पड़ल तखन पानिक छोट पोखर सभ एक-दोसरा सँ जुड़ए लागल। कियो नाली नहि खोललक, कियो रास्ता नहि काटलक; बून्द-बून्द अपने मार्ग तकलक। ठूँठक चारू कात पानिक एक वृत्त बनि गेल। ओकर बीच हरियर बिन्दु उज्जर-नील आभामे काँपैत छल। चन्ना गाछीक नब कोंपल जेना पानिक स्मृति सँ सींचल जा रहल छल। ओहि वृत्तक सतह पर साँझक अन्तिम इजोत टुकड़ी-टुकड़ी भऽ काँपल, आ हवा जखन एक बेर पार भेल तँ पूरा वृत्त एक संग झिलमिलायल—जेना कतेको भीजल हथेली एक संग खुजल आ फेर बन्द भेल हो।

तखन दूर बजार दिस सँ गाड़ी आयल। ओहि पर लिखल छल—'पवित्र स्मृति जल: बोतलबन्द श्रद्धा'। काँचक शीशामे नील रंगक पानि, ऊपर चन्ना गाछीक चित्र, नीचाँ छोट अक्षर—'परियोजना स्वीकृति अपेक्षित'। बच्चा सभ चुप्प भऽ गेल। पनिडुब्बी हँसली नहि; हुनकर चेहरा कठोर भेल।

अनन्या रजिस्टर बन्द करैत कहली, 'पानि बाजि रहल अछि, आ ई सभ ओकरा बोतलमे बन्द करए आयल अछि।' सत्यव्रत मेहता अपन भीजल हाथ देखि रहल छलाह। अक्षर सूखि गेल छल, मुदा हथेली पर जलक ठंढक बचल छल। ओ धीरे बजलाह, 'जतय स्मृति जल बनि बिकए लागय, ओतय पहरा आरो कठोर चाही।'

रातिमे बच्चा सभ पानिक वृत्तक चारूकात कबड्डीक नब रेखा खिंचलक। माटि मुँह खोलि चुकल, जल स्मृति दऽ चुकल; आब बाजार पानिक मुँह पर ढक्कन लगएबाक प्रयास करत। '

लोकगीत: बोतलमे बन्द नदी

लोकधुन: जल-करुण गीत

बहै हे नदी, बोतल मे ने बन्हाए हे,

जकर देह बहेलक, ओकर कथा दाम ने पाबए हे।

पानि बिसरब आसान, पानिक स्मृति नहि,
हथेली पर आखर सुखल, ठंढक गेल नहि।
नदी बाजल, बजार बोतल लऽ दौड़ल,
स्मृतिक जलपर ढक्कन, मूल्यक चिन्ह जोड़ल।

नेना पानिक चारू कात कबड्डीक घेरा खिंचल,
ठूँठसँ एक बून्द टपकि अगिला शीर्ष लिखल।
नदी हमर माय, माल नहि, ब्राण्ड नहि,
जकरा देह बहेलक, ओकर कथा दाम नहि।

बोतल फोड़ू नहि—पहिने हकक पियास बुझू,
जलक स्मृति मुक्त बहए, नामक धारि सुनू।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—शिवादित्य मिश्रक मत—साक्षात् सम्बन्धी विशे: "पुरुष दण्डी अछि" मे दण्ड पुरुषक विशेषण, दण्डत्व जाति दण्डक विशेषण मात्र। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। शिवादित्य मिश्रक मत—साक्षात् सम्बन्धी विशेषण।]

अध्याय ११०

आगिक साक्षी

आगि बुझि जाइ छै, राख गवाही दै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: राखसँ अंकुर

लोकधुन: अग्नि-प्रभाती

जागू हे राख, भीतरक बीज जागू हे,
पहिल बून्दक बाट जोहि कोंपल बनि आबू हे।

आगि बुझल, राख बचल, राखमे बीज नुकायल,
पहिल बून्द पड़िते हरियर कोंपल मुस्कायल।
जे जरि गेल ओकर नाम नव वनमे बसाउ,
विनाशक धूरिसँ पुनर्निर्माणक राह बनाउ।

राख कहै—अन्त नहि, रूप बदलल मात्र,
धैर्य, श्रम, नेह मिलिते फेर भरत ई पात्र।
राखसँ कोंपल, नोरसँ साहस उगि जाए,
भोरक अगिनि ऊष्मा बनि नब घर सजाए।

जरल घरक ठाम पर धीरे-धीरे बहारू,
जे नाम आगि लऽ गेल, से नव वन मे उतारू।
राखक ऊष्मा माटि पाबि बीयाकेँ जगाबए,
प्रभातीक पहिल किरिण हरियर टूसा उगाबए।

❖

लोक बुझैए जे जरा देला सँ बात खतम भऽ गेलै। मुदा जरल वस्तुक गन्ध हवामे रहि जाइ छै, आ गन्ध केँ ताला नै लगै छै। जे कागच नुका कऽ जरौलकै, ओकर धुँआ ओकरे आँगन मे घुरि आबैए।

आगि दू रंगक होइ छै। एक ओ जे दलान पर जरै छै— सभक सोझाँ, अन्हार हटबैत। दोसर ओ जे राति मे नुका कऽ जरै छै— डेराएल, लोलुप, अपने छाहसँ भागैत। दुनूक लपट एके रंगक, मुदा राख एके रंगक नै।

आ जे भीतरसँ खोखल छै, ओकरा जराबय मे बेर नै लगै छै। जे भीतर नाम सँ भरल छै, ओकर राखियो बजैए।

जलक स्मृति सुनलाक बाद गढ़ नारिकेलक लोक सभ बुझि रहल छल जे नाम केवल पाथर, कागच, रजिस्टर, बीज, माटि आ पानिमे नहि रहैत अछि। नाम ओहि राखिमे सेहो रहैत अछि जे आगि बुझलाक बाद बचि जाइत अछि। चन्ना गाछीक कटायल ठूँठ लग पाँचम पहराक राति जे बाढ़िक पानि उतरि गेल छल, ओकर पाछाँ माटिमे कारी-कत्थई लेप रहि गेल। लोक ओकरा कीचड़ बुझि पोंछए चाहलक, मुदा बा रोकि देलीह—“जतय पानि नाम बाजि गेल, ओतय आगि सेहो किछु कहबाक चाहैत अछि।”

आगि एहि गामक लेल मात्र विनाश नहि छल। घरक चूल्हि आगि पर चलैत छल, नवजातक नाल सुखाबय आगि चाही, मृतकक दाह-संस्कार आगि सँ, दीयाबातीक उजास आगि सँ, खेतक परालीक राखि आगि सँ, आ अदालतक कतेको फाइलक राखि सेहो आगि सँ। आगि पेट बचबैत अछि, देहकेँ विदा करैत अछि, झूठकेँ ढाँकैत अछि, आ कखनो-कखनो नुकाओल कागचक अक्षर उजागर करैत अछि। चन्ना गाछीक लोक सभ बुझि गेल जे जे तत्त्व देवता कहबैत अछि, वैह भ्रष्ट हाथमे अपराधक औजार बनि जाइत अछि।

एहि बुझाइकेँ पूरा दिनो नहि बीतल छल कि रातिमे नाम-पहराक घरिया पर धुँआ उठल। पहरा देबय बला तीन बच्चा पहिने बुझलक जे कियो दिया बुझबय आयल अछि। मुदा धुँआ दिया सँ नहि, ठूँठक पाछाँ राखल पुरान कागच-घर सँ उठैत छल। ओहि धुँआमे तेलक मीठ गन्ध नहि छल; ओहिमे पुरान कागचक ओ खट्टा-कसैल गन्ध छल जे बरखक जमल स्याही आ सीलनक मिलनसँ बनैत अछि। ओतय नगरपालिकाक नकल, निविदाक प्रति, श्रद्धांजलि-अनुप्रयोगक शिकायत, ब्रूमक दान-पत्रक प्रतिलिपि, आ नामक चिन्ह-पंजीक अलग-अलग नकल राखल छल। कियो बुझि गेल छल जे नामक पहरा तोड़बाक सभसँ सहज उपाय आगि अछि।

बच्चा सभ चिचिआयल नहि। अनन्या ओकरा सभकेँ सिखौने छली—पहिने साँस, फेर शब्द। ओ सभ घेरा बनाकऽ एक स्वरमे पुकारलक—“उपस्थित।” एहि शब्दक संगे धुँआ अजीब ढंग सँ सोझे ऊपर नहि गेल; ओ गोल घुमि कऽ चन्ना ठूँठक ऊपर मँडराय लागल, जेना आगि सेहो सुननाइ चाहैत हो। लोक दौड़ि आयल। कियो बाल्टी लऽ कऽ, कियो कमंडल, कियो गगरी, कियो खाली हाथ। लपटक गरमी एतेक लग छल जे आगाँ ठाढ़ लोकक भौंहक नोक पर पसीना जमैत आ ओहीठाम सुखाइत जाइत छल।

आरुणि पहिल बाल्टी फेकलनि, मुदा मीरा हुनकर हाथ रोकि देली। ओ कहली—“सभ बुझा देब तँ जे जरल, ओकर साक्षी कोना भेटत?” लोक चौंकल। आगि रोकब जरूरी छल, मुदा ओकर राखिक वाणी सेहो बचाबय पड़त। तखन देविका आ सौम्या दू ओर सँ पानि छिड़कली,

ताकि लपट पसरय नहि; मुदा बीचक जरैत कागचकेँ पूरा डुबाओल नहि गेल। आगि छोट, नियन्त्रित, काँपैत जीव जेकाँ रहि गेल।

जरैत कागचक धारी पर पहिने कारी अक्षर गायब भेल, फेर किछु अक्षर उज्जर प्रकाशमे चमकल। जे फाइल दिनमे गाढ़ सरकारी भाषामे “अतिक्रमित रिक्त भू-भाग” कहैत छल, रातिक आगिमे ओकर पाछूक दबायल पन्ना देखाइ देलक—“स्मारक क्षेत्रक भू-मूल्यांकन।” बच्चा सभ दंग। जे कागच नाम मेटाबय बनल छल, आगि ओकर पेट फाड़ि देलक। अनन्या लिखलक—“आगि झूठक बाहरी स्याही खाइत अछि, भीतरक लोभ छोड़ि दैत अछि।”

सत्यव्रत मेहता ओहि राति देर सँ पहुँचलाह। ओ जखन धुँआक लग बैसलाह, हुनकर चेहरा पर पहिल बेर पुरान अदालतक चमक नहि, राखि चढ़ल मनुष्यक थकान छल। ओ जरैत कागचकेँ देखैत कहलनि—“कानून कखनो आगि सँ बचैत अछि, कखनो आगिमे जन्म लैत अछि। मुदा जे कागच जनक नाम बचाबय लेल हो, ओकरा जराबय बला हाथ स्वयं अपन बयान लिखि दैत अछि।” ओ ककरो आरोप नहि लगेलनि। मुदा सभ बुझलक जे हुनकर बात सोझे ओकरे सभक लेल छल जे अन्हारमे कागच जराबय पठौने छल।

थोड़बे देरमे गोप कुमार जाँचलनि जे कागच-घरक कुण्डी जबरदस्ती नहि टूटल। भीतरक चाबी सँ दरबाजा खुजल छल। चाबी केवल तीन गोटे लग छल—अनन्या, देविका, आ स्थानीय अभिलेख-सेवक हेमनारायण लग। अनन्या शान्त रहलि। देविका अपन चाबी देखौली। हेमनारायण गायब छल। लोक तुरन्त ओकरा दोषी कहय चाहलक, मुदा गंगेशक प्रश्न फेर उभरल—प्रत्यक्ष की? अनुमान की? शब्द की? प्रमाण बिनु नाम पर कीचड़ नहि।

हेमनारायण आधा राति बाद भेटल। ओ पोखरिक कात बेहोश पड़ल छल। ओकर मुँहमे राखि, आँखिमे डर, आ हाथमे काँचक टूटल टुकड़ा। होश आयल तँ ओ काँपैत कहलक—“हम चाबी देलहुँ, मुदा जानि-बुझि नहि। हमर बेटाक नाम शहरक अस्पतालक देनदारी सूचीमे अछि। ओ सभ कहलक, जँ कागच-घर खुजि जाए तँ कर्ज माफ। हम सोचलहुँ केवल एक कागच लेत। आगि हमरा नहि कहल गेल।” हेमनारायण अपराधी छल, मुदा एसगर नहि; ओकर अपराधक पाछाँ कर्जक गोहि मुँह बन्हने बैसल छल।

बच्चा सभ पहिल बेर कठिन निर्णयक सोझाँ आयल। नामक संविधान कहैत छल—ककरो नाम बिनु प्रमाण नहि काटब, ककरो दुखक व्यापार नहि करब, ककरो निजता नहि बेचब। मुदा चाबी देब अपराध छल। बा कहलीह, “दण्ड जरूरी, मुदा दण्ड ओहन जे मनुष्य बचय आ झूठ मरय।” निर्णय भेल—हेमनारायण एक महीना धरि रातिक नाम-पहरामे बैसत, आ

जतेक नाम आगिमे अधजरल, तकरा फेर लिखबाक श्रम करत। ओकर कर्जक बात सामुदायिक सुननाइमे उठत, ताकि अपराधक जड़ि सेहो देखल जाए।

एहि राति आगिक सभसँ मार्मिक साक्षी एक अधजरल पन्ना छल। पन्ना पर नामक सूचीक तीन अक्षर मात्र बचल—“सर…”, “उज…”, “ना…”। कियो नहि बुझि सकल ई कोन नामक छाँट अछि। उज्ज्वलक माय कहलीह—“अधजरल नामकेँ अधूरा नहि मानू। ओकरा सभटा अनामक नाम मानू।” ताहि राति एक नब पाथर राखल गेल—“अधजरल नाम सभ।” ओकर ऊपर राखिक चुटकी रखल गेल।

दियरी सभ जखन फेर जराओल गेल, लोक देखलक जे ई आगि आ ओ आगिमे अन्तर अछि। जे आगि कागच नष्ट करबय आयल छल, से लोलुप, नुकाओल, भयभीत आगि छल। जे आगि दियरीमे जरैत छल, से खुजल, सामुदायिक, पहरा देबैत आगि छल। देविका बच्चा सभकेँ कहली—“साधन एक, ध्येय अलग। आगि कियो कागच जराबय अनैत अछि; कियो अन्हार हटाबय।” बच्चा सभ एहि वाक्यकेँ रजिस्टरक किनार पर लिखलक।

सौम्या राखिकेँ सूतपर छानली। ओ राखिमे कागचक सूक्ष्म टुकड़ा तकैत रहली। एक टुकड़ा पर ब्रूमक कम्पनीक चिन्हक आधा भाग छल; दोसर पर नगरपालिकाक हस्ताक्षरक टेढ़ रेखा; तेसर पर चन्द्रपालक अनुप्रयोगक कोड-सदृश चिन्ह। ई सभ अदालतमे प्रमाण बनि सकैत छल, मुदा चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात ओ प्रमाणसँ पहिने कथा बनल। आगि कहि रहल छल —“मेटाबय बला सभ एकहि राखिमे भेटैत अछि।”

रातिक अन्तिम पहरमे बूढ़बा भूत आयलाह। एहि बेर ओ धुँआक भीतर नहि, राखिक किनार पर बैसलाह। हुनकर हाथमे बालपनक लकड़ीक छोट डंडा छल, जे कबड्डीक रेखा खिंचबामे लगैत छल। ओ ठूँठक माटि पर राखि सँ एक वृत्त बनौलनि। फेर वृत्तक बाहर एक दोसर वृत्त। बच्चा सभ बुझलक—पहिल वृत्त गाम, दोसर पृथ्वी, आ शायद तेसर जे एखन नहि खिंचल गेल, से स्वप्नक अनाम ग्रह। आगि ओहि वृत्तक कगार पर चमकल, मुदा पार नहि गेल।

अनन्या पूछली—“भूत बाबा, आगि कहैत की अछि?” बूढ़बा भूतक आवाज खड़खड़ायल पात जेकाँ आयल—“आगि कहैत अछि जे जे भीतर सँ खोखल अछि, ओकरा जराबयमे समय नहि लगैत। जे भीतर नाम सँ भरल अछि, ओकर राखियो बजैत अछि।” ई कहि ओ गायब नहि भेलाह; ओ राखिक पाछाँ बैसल रहलाह, जेना हुनकहुँ पहरा देबाक बारी हो।

भोर लग जखन लपट पूर्ण बुझि गेल, राखि ठंढा नहि छल। ओतय हाथ राखल जाए तँ गरमाहट भेटैत। बच्चा सभ राखिकेँ नदीमे बहाओल नहि। हथेलीमे उठबैत काल ओ राखि आटा

जकाँ नहि, बहुत पातर बालु जकाँ आँगुरक बीचसँ खसैत छल, आ जे कण हथेलीमे रहि जाइत छल, से चिक्कन आ हलुक गरम—जेना कोनो देहक अन्तिम ऊष्मा ओहीमे बचल हो। ओ सभ ओकरा तीन भाग केलक—एक भाग नाम-पाथर लग, एक भाग नब कोंपल लग, आ तेसर भाग खाली माटिक कटोरामे। कटोरा पर लिखल गेल—“आगिक साक्षी।”

तखन एक छोट नेना, जे काल्हि धरि स्क्रीनक खेलमे डूबल रहैत छल, पूछलक—“आगि बजलै, पानि बजलै, माटि बजलै। हवा कखन बाजत?” सभ ओकरा दिस तकलक। ओ प्रश्न साधारण छल, मुदा ठूँठक चारू कात अचानक पात नहि रहितो खरखराहट भेल। कटल गाछीक ऊपर हवा घुमल, राखिक महीन धूलि उठल, आ बच्चा सभक माथ पर जमि गेल। ओ धूलि गरम नहि छल, मुदा ओकर छूअब एहन छल जेना कियो हथेली माथ पर राखि आशीर्वाद दैत हो।

सत्यव्रत मेहता धीरे कहलनि—“हवा गवाह सभसँ कठिन। ओ ककरो हाथमे नहि ठहरैत, मुदा सभ ठाम पहुँचैत अछि।” अनन्या अगिला पन्ना खोललक। ओ शीर्ष लिखलक—“सातम पहरा: हवाक बयान।”

एहि तरहेँ आगिक साक्षी समाप्त नहि भेल। ओ राखि बनि माथ पर बसि गेल, पाथरक अक्षरमे चमकि गेल, आ हवाकेँ बजाबय निकलि पड़ल। जे कागच जरा कऽ स्मृति मेटाबय चाहैत छल, से स्मृतिकेँ धुँआ बनाकऽ पूरे गढ़ नारिकेलमे पसारि देलक।

लोकगीत: राख कहै नाम

लोकधुन: अग्नि-विरहा

कहै हे राखि, जरल कागचक नाम कहै हे,
जकरा जरा देब, ओकर गन्ध घर-घर जाए हे।

आगि बुझि गेल, राखि गवाही देलक,
जरा देल कागच धुँआ बनि गाममे पसरलक।
पाथरक अक्षर राखिक नोकसँ चमकल,
मेटाबय चाहल स्मृति माथपर आबि बसल।

हवा घूमल, राखि नेनाक केशमे लागल,
सत्यव्रत कहलनि—वायु सभठामक साक्षी जागल।
आगि नष्ट करै, मुदा प्रमाणो पसारि दै,

राखि छूइ कहू—ककर कथा जरल गेल?
धुँआ उत्तर देत—नाम एखनहुँ जीवित भेल।
पाथरक आखर राखिक नोक सँ चमकल भेल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—साक्षादन्वित अथवा विशेष्यसम्बन्धी विशेषण: स्वादक रूपयुक्त घटमे रूप सेहो मुख्य विशेषण भऽ जाएत, आ भूतकालक "दण्डी छल" कथनमे दण्ड केवल उपलक्षण। साक्षादन्वित अथवा विशेष्यसम्बन्धी विशेषण।]

अध्याय १११

वायुक प्रश्न

धुँआ आकाश नहि गेल, गली-गली घूमल— वायुक प्रश्न घर-घर पुछाइ छै।

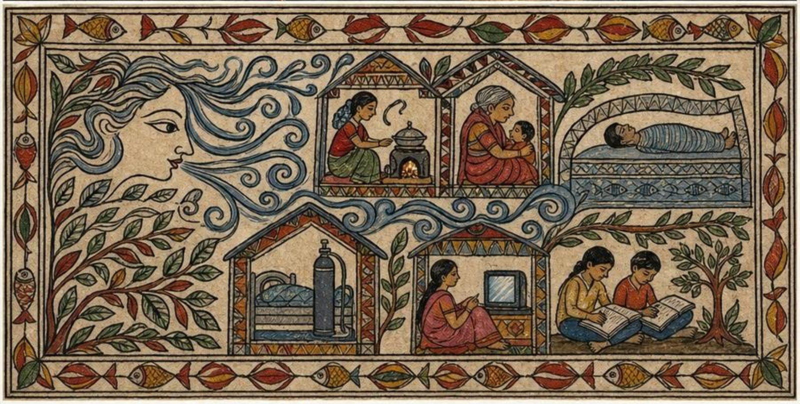

अध्यायारम्भ लोकगीत: स्वच्छ हवा साझा अधिकार

लोकधुन: वायु-पराती

बहू हे पवन, सभक देहरी बहू हे,
साँस पर ने शुल्क, ने भेद—इहए गीत कहू हे।

पवन सभक देहरी आबै, शुल्क ककरो नहि,
स्वच्छ साँस पर सभक हक, भेद ककरो नहि।
धुँआक स्रोत चिन्हि कऽ साफ तकनीक अपनाउ,
गाछ लगाउ, चूल्हि सुधारू, नील आकाश बचाउ।

बच्चाक फेफड़ा फूल जकाँ, ओकर मान धरू,
शहर-गामक हवा मिलि जीवनक गीत भरू।
स्वच्छ हवा साझा अधिकार—एक स्वरमे कहू,
साँसक पहरा सभ मिलि दियौ, स्वस्थ मिथिला रहू।

चूल्हिक धुँआ कम करू, गाछक पाँती बढ़ाउ,
कल-कारखानाक मुँह पर छन्नीक नियम लगाउ।
नेनाक फेफड़ा फूल सन, ओकरा निर्मल हवा,
गाम-शहर मिलि बाँटू साँसक साझा दवा।

❖

माटि, बीज, जल, आगि— ई सभ हाथ मे अबै छै। हवा नै अबै छै। तें लोक बुझैए जे हवा केकरो नै छिकै। मुदा जे केकरो नै छिकै, से सभक छिकै— आ जे सभक छिकै, ओकर लूट सभसँ सहज छिकै।

हवा मे शब्द चलै छै, आ अफवाहो चलै छै। दुनूक पाँख एके रंगक होइ छै। फरक ई जे शब्दक जड़ि रहै छै, अफवाहक नै— आ जड़ि बिनु जे उड़ै छै, से केकरो आँगन मे जा कऽ खसैए।

तें साँसक पहरा सभसँ कठिन छिकै। पाथर पर ताला लागै छै, पानि पर बान्ह लागै छै; साँस पर खाली एकटा चीज लागै छै— जे बजैए, तकर जिम्मा।

आगिक साक्षी देलाक बाद गढ़ नारिकेलमे राखि नहि, गन्ध बचल। कटल चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात जे दीप जरल छल, ओकर धुँआ राति भरि ऊपर उठि आकाशमे नहि गेल; ओ गामक गल्ली-गल्ली घूमल। बिहान लोक उठल तँ देखलक जे धुँआ आँखि नहि जरा रहल अछि, अपितु ओ सभकेँ किछु मोन करा रहल अछि। ककरो बाबूक चूल्हि, ककरो दादीक अँचरा, ककरो जलसमाधिक भीजल देह, ककरो अस्पतालक ऑक्सीजनक खाली सिलिन्डर, ककरो स्क्रीनक नील प्रकाश। आगि जे साक्षी देलक, वायु ओकर प्रश्न लऽ कऽ घर-घर पहुँचल।

ओहि बिहान हवा साधारण नहि छल। ओ ने उत्तरक ठंढ छल, ने पछबाक लू, ने सावनक भीजल बयार। से एकटा पूछताछ करैत हवा छल। खिड़कीक फाँक सँ भीतर घुसैत, कोठरीक कोन टटोलैत, पुरान सन्दूकक ढक्कन हिलबैत, मोबाइलक स्क्रीन पर जमल धूलि उड़ा दैत, आ बच्चा सभक रजिस्टरक पन्ना उनटि दैत। जे पन्ना खुजल, ओहि पर लिखल छल—“सातम पहरा: वायुक प्रश्न।” अनन्या पढ़लक आ बुझि गेल जे आब पहरा ठोस चीज पर नहि, अदृश्य चीज पर लगएबाक अछि।

माटि, बीज, जल, आगि—ई सभकेँ लोक हाथसँ छू सकैत छल। वायुकेँ कोना पकड़त? आरुणि एहि प्रश्न पर चुप भेलाह। गोप कुमार कहलनि, “जकरा पकड़ि नहि सकी, ओकरो दूषित कयल जा सकैत अछि।” देविका जोड़ली, “शब्द हवामे चलैत अछि; अफवाह सेहो।” मीरा कहली, “मानक अपमान, देहक तिरस्कार, निजताक चुगली—ई सभ सेहो वायुमे उड़ैत अछि।” सत्यव्रत मेहता जे दूर बैसल सुनि रहल छलाह, धीरे कहलनि, “न्याय देरिसँ आबय तँ ओकरो गन्ध बिगड़ि जाइत अछि।”

तखन बच्चा सभ पहिल बेर वायु-पहरा बनौलक। ओकरा सभक नियम विचित्र छल—आइ कोनो अपुष्ट बात नहि उड़ाओल जाएत; कोनो गुमनाम आरोप नहि दोहराओल जाएत; कोनो मृतकक नामक संग अपमानक धूलि नहि उड़ाओल जाएत; कोनो स्त्रीक जीवनक कथा ओकर अनुमति बिनु हवामे नहि छोड़ल जाएत; कोनो गरीबक दुखकेँ हास्य बना कऽ चौराहा पर नहि उड़ाओल जाएत। नामक संविधानक ई नब धारि छल—हवा सेहो उत्तरदायी होएत।

दुपहरिया धरि गाममे परीक्षा शुरू भऽ गेल। एक लोक चाह-दुकान पर कहलक जे नाम-उत्सवमे लिखल किछु नाम झूठ अछि। अनन्या ओतय पहुँचली। ओ झगड़ा नहि केलक। ओ पूछली, “ई बात अहाँ प्रत्यक्ष देखलहुँ, कि ककरोसँ सुनलहुँ?” लोक अटकि गेल। दोसर कहलक, “हमरा लग आवाज आयल छल।” बच्चा सभ ओकरा चन्ना ठूँठ लग लऽ गेल। ओहि

ठाम ओ आवाज फेर नहि आयल। रजिस्टरमे लिखल गेल—“अफवाहक पाँख होइत अछि, जड़ि नहि।”

हवा ओहि दिन बटुकनाथ हरिहरनक घर धरि सेहो पहुँचल। बन्द खिड़की, मोट परदा, सुगन्धित धूप, काँचक आलमारी—किछुओ ओकरा रोकि नहि सकल। हवा ओहि रजिस्टरक पन्ना पलटि देलक जाहिमे ओ अपन क्षमाक अभिनय लिखि रहल छल। शब्द छल—“माफ करिअ।” हवा ओहि पर राखि उड़ा कऽ लिखि देलक—“पहिने सुनू।” बटुकनाथ कलम रोकि देलक। ओकरा बुझाइत छल क्षमा वाक्य अछि; हवा कहलक—क्षमा श्रवण अछि।

चन्द्रपाल बत्राक कार्यालयमे वायु दोसर रूपमे आयल। ओतय एयर-कंडिशनरक ठंढा, गन्धहीन, निर्जीव हवा चलैत छल। स्क्रीन पर स्मृति-अनुप्रयोगक नब संस्करण खुजल छल। चन्द्रपालक सहायक कहलक, “आब उपयोगकर्ताक शिकायत हटि जाएत, टिप्पणी पहिने छानल जाएत।” ओहि क्षण वेंटिलेशन सँ भीतर धूलि आयल आ स्क्रीन पर जमि गेल। अक्षर धुँधला भेल, मुदा एक पंक्ति साफ उभरल—“नाम छानल नहि जाएत।” चन्द्रपाल काँपल। ओकरा पहिल बेर बुझायल जे हवा सेंसरक बटन नहि मानैत।

राघव सिग्नलक बिनु नेटवर्कक दिनोमे आब वायु ओकरा तकैत रहल। ओकर फोन पर किछु नहि आबि रहल छल, मुदा कानमे लगातार फुसफुसाहट भरि रहल छल—पुरान गायब सन्देश, मेटाओल कोड, दानक आवरणमे भेजल संकेत, लाभक प्रतिशत। ओ कान ढाँपलक, मुदा हवा कानक बाहर सँ नहि, भीतर सँ उठैत छल। ओ कागच पर लिखलक—“मौन रहब।” हवा पन्ना उनटौलक; पाछाँ लिखल छल—“चुप्पी सेहो प्रसारण अछि।”

लाउ किन-हंग होटलक ऊँच मंजिल पर खिड़की बन्द कऽ बैसल छल। ओकरा भारतक हवा असुरक्षित लगैत छल। ओ आयातित शुद्ध-वायु यन्त्र मँगौलक। यन्त्र चलल, हरियर बत्ती चमकल, मुदा स्क्रीन पर कणक मात्रा शून्य देखायल। तखन शीशामे ओकर प्रतिबिम्ब पाछाँ कोनो अदृश्य फूँक सँ धुँधलायल आ देवनागरीक एक टेढ़ शब्द उभरल—“उपस्थित।” लाउ आँगुरसँ पोंछलक, शब्द फेर उभरल। ओ धीमे स्वरमे बाजल, “ई कोन भाषा छी?” ओकरा पहिल बेर बुझायल जे जे भाषा ओ पढ़ैत नहि, से हवा ओकरा पढ़ि रहल अछि।

साँझक बेर बच्चा सभ ठूँठ लग जमा भेल। ओ सभ छोट-छोट कपड़ाक झंडा बनौने छल—लाल, पीयर, उज्जर, कारी नहि; प्रत्येक झंडा पर एक शब्द: सत्य, नाम, निजता, श्रम, जल, माटि, बीज, अग्नि, वायु। झंडा कटल ठूँठक चारू कात रोपल गेल। जखन हवा चलल, शब्द सभ एक संग फड़फड़ाय लागल। ओहि फड़फड़ाहटमे कोनो एक स्वर नहि छल—कपड़ाक मोटाइ

अनुसार किछु झंडा गहींर धमधमाइत छल, किछु पातर चटचटाइत, आ सभ मिलि एहन ध्वनि बनल जेना बहुत लोक एकहि संग साँस लऽ रहल हो। बा कहलीह, “देखू, लिखल बात जँ हवामे जाए, तँ ओ गीत बनि सकैत अछि; झूठ जाए, तँ धूलि।”

ओहि समय दूर सँ बच्चा सभक कबड्डी शुरू भेल। पहिने खेल माटि पर गोलाइमे होइत छल; आब हवा रेखा बनबैत छल। खेलाड़ी जखन ‘कबड्डी-कबड्डी’ कहैत साँस रोकि दोसर पार जाए, तखन ओकर स्वर हवामे तानल डोर जेकाँ देखाइ पड़ैत। जँ स्वर झूठ सँ भरल, डोर टूटि जाइत। जँ स्वर नामक पहरा सँ भरल, डोर चमकि उठैत। एहि नब खेलमे साँस केवल खेलक नियम नहि, नैतिक प्रमाण बनि गेल।

एक बालक, जे पहिने चन्द्रपालक अनुप्रयोगमे नकली नाम भरैत पकड़ायल छल, ओ खेलमे उतरय सँ डेराइत छल। अनन्या कहली, “साँस रोकब कठिन नहि; झूठ रोकब कठिन अछि।” बालक आँखि मुनि खेलमे उतरल। ‘कबड्डी’क पहिल उच्चारण काँपल; दोसरमे ओकर मुँह सँ निकलल—“हम झूठ भरने छलहुँ।” खेल रुकल नहि। बच्चा सभ ओकरा छूबय नहि दौड़ल; ओ अपने घुरि आयल। रजिस्टरमे लिखल गेल—“स्वीकार कयल साँस टूटैत नहि।”

राति गहराएल तखन वायु-पहरा अपन अन्तिम परीक्षा पर पहुँचल। चन्ना ठूँठक कोंपल बहुत कने हिलल। हिलबामे कोनो शब्द नहि छल, मुदा बच्चा सभ सुनलक—“स्वप्नक अनाम ग्रह पर हवा कोना होएत?” ई प्रश्न सभकेँ अस्थिर कऽ देलक। पृथ्वी छोड़ि भागय चाहनिहार सभ जकरा ‘शुद्ध वायु गुंबद’ कहैत छल, की ओतय नामक गन्ध रहत? की ओतय मृतकक स्मृति साँस लऽ सकत? की ओतय कबड्डी खेलय लेल साँस रोकल जा सकत, कि मशीन साँस बाँटत?

ईरा जे विदेशक बच्चा सभकेँ पत्र लिखने छली, ओ प्रश्न सुनि उत्तर देली, “जतय हवा केवल उपकरण सँ भेटत, ओतय शब्द पहिने मरत। जँ हम सभ पृथ्वीक हवामे नाम नहि बचाएब, तँ स्वप्नक अनाम ग्रहपर साँस सेहो भाड़ा पर भेटत।” गोप कुमार कहलनि, “अगिला संघर्ष शायद हवा पर होएत—साँसक अधिकार पर।” देविका धीमे जोड़ली, “आ अफवाहक विरुद्ध स्वच्छ वायु पर।”

ओहि राति चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात कियो अगरबत्ती नहि जरौलक। बच्चा सभ कहल —“हवाकेँ अपना गन्धमे रहय दिअ।” बहुत देर धरि सभ चुप बैसल। चुप्पी भयक नहि, सुनबाक छल। हवा एक-एक पाथरक नाम पर फिरल, हरियर कोंपल छुलक, रजिस्टरक पन्ना

उनटौलक, आ अन्तमे ठूँठक बीच सँ एक बहुत धीमा स्वर उठल—न स्त्री, न पुरुष, न बूढ़, न बालक; बस वायु स्वयं पूछैत छल—"जकरा अहाँ साँस कहैत छी, ओकर पहरा के करत?"

" बच्चा सभ पाथरक घेरा कसि देलक। दूर, बहुत दूर, 'नव-क्षितिज'क विज्ञापनमे चमकैत गुंबदक भीतर एक सूक्ष्म दरार पड़ल—शायद पृथ्वीक हवा ओतहु पहुँचि गेल छल।

लोकगीत: हवा पूछै—साँसक पहरा के?

लोकधुन: वायु-गीत

पूछै हे हवा, 'साँसक पहरा के?' पूछै हे,
पहरुआ बनू, नहि तँ बजार तैयार ठाढ़ अछि हे।

धुँआ आकाश नहि गेल, गल्ली-गल्ली घूमल,
घर-घर पूछलक—ककर साँस चुप्पे लूटल?
अगरबत्ती नहि, हवाकेँ अपन गन्ध रहय दिअ,
पात-पाथर, कोंपल, रजिस्टरक स्वर सुनिअ।

न स्त्री, न पुरुष, वायु स्वयं बजल—
'जकरा साँस कहैत छी, पहरा के करत?'
दूर गुंबदक देबालमे सूक्ष्म दरार पड़ल,
पृथ्वीक हवा स्वप्नक अनाम ग्रह धरि चढ़ल।

हवा बन्धक नहि, सभ जीवक अधिकार,
साँसक पहरुआ बनू, नहि तँ बजार तैयार।
ने स्त्री, ने पुरुख—वायु स्वयं बाजल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—आपत्ति कएल जा सकैत अछि जे धूम वा प्रकाशसँ भिन्नत्वक ज्ञान निरर्थक विशेषणपर आधारित अछि, अतः अग्निसँ धूम वा प्रकाशक व्याप्तिक प्रत्यक्षज्ञानक सहकारी कारण नहि भऽ सकैत।: १९. ई मानल जा सकैत अछि जे अग्निसँ व्याप्त धूमक "अग्निव्याप्यत्व" स्वयं अग्निव्याप्त धूमत्वक अवच्छेदक अछि; अर्थात् प्रत्येक धूम-व्यक्तिमे घटित अग्निव्याप्यत्व सभ धूममे घटित सामान्य व्याप्तिक अवच्छेदक हो। आपत्ति कएल जा सकैत अछि जे धूम वा प्रकाशसँ भिन्नत्वक ज्ञान निरर्थक

विशेषणपर आधारित अछि, अतः अग्निसँ धूम वा प्रकाशक व्याप्तिक प्रत्यक्षज्ञानक सहकारी कारण नहि भऽ सकैत।।]

अध्याय ११२

आकाशक रिक्ति

आकाश जखन खाली भऽ जाए, तखन ओ राहत नहि— सभसँ पैघ प्रश्न थीक।

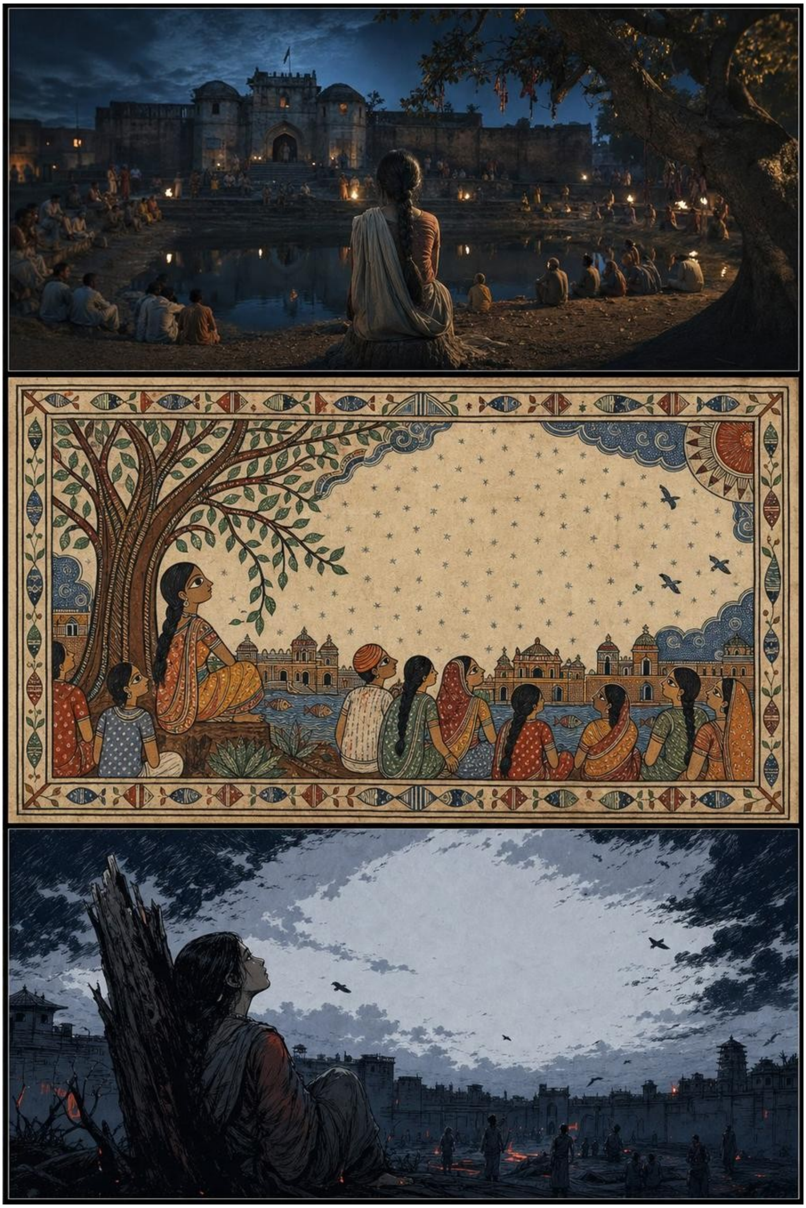

अध्यायारम्भ लोकगीत: आकाश भरू प्रश्न-उत्तर

लोकधुन: आकाश-पराती

भरू हे आकाश, प्रश्न-उत्तर सँ भरू हे,
बादर बनि प्रश्न उठौ, बून्द बनि उतरू हे।

खाली आकाश प्रश्न करै—नीचाँ के जागल?
धरती उत्तर देत—जनक विवेक नहि भागल।
प्रश्न बादर, उत्तर बून्द, संवाद बनै धार,
मौनक सूखल खेतमे उगै विचारक हार।

आकाश खाली राहत नहि जखन कंठ खुजै,
प्रत्येक प्रश्नक पाँखि लगा समाधान दिस उड़ै।
प्रश्न-उत्तरक मेघसँ ज्ञानक वर्षा होए,
खुजल मनक आकाशमे नव समाज संजोए।

सूखल खेत मौनक, ओहि पर मेघ जुटाउ,
जिज्ञासाक बिजुरी चमकौ, संवाद बरसाउ।
प्रत्येक प्रश्नक पाँखि, प्रत्येक उत्तरक घर,
खुजल मनक आकाश तर उगए ज्ञानक फड़।

❖

आकाश जखन खाली भऽ जाए, तखन ओ राहत नहि— सभसँ पैघ प्रश्न थीक। छोट आकाश डर दै छै; पूरा आकाश उत्तर मँगै छै।

पातक फाँक सँ जे आकाश देखाइ छै, से सहज छै— ओ टुकड़ा-टुकड़ा छै, ओतबे जतेक हमरा सम्हारल जाइए। मुदा जखन गाछ कटि जाइ छै आ पूरा आकाश एक्के बेर सोझाँ आबि जाइ छै, तखन छाती पर भार पड़ै छै।

रिक्ति दू रंगक होइ छै। एक ओ जकरा सत्ता बनबै छै— नामक ठाम क्रमांक, मजदूरक ठाम खाली कोष्ठक, सत्यक ठाम खाली पाँती। ओ रिक्ति निगलैए। दोसर ओ जकरा स्मृति

बनबै छै— जे ठाम खाली राखल जाइए ताकि ओतय कियो आबि सकए। ओ रिक्ति ठाम दै छै।

आ आकाश पर केकरो पट्टा नै छै। जे पाथर छीनि सकै छै, रजिस्टर जरा सकै छै, से ऊपरक शून्य नै छीनि सकै छै। खाली एतबे जे ओकरा सुनबा लेल गर्दनि उठाबय पड़ै छै।

वायुक प्रश्नक बाद गढ़ नारिकेलमे एक अजीब शान्ति पसरल। हवा जे किछु पूछने छल, ओकर उत्तर ककरो मुँह सँ नहि निकलल। लोक सभ राति भरि एहि प्रतीक्षामे रहल जे पात हिलत, जल बाजत, आगि फुसफुसाएत, माटि धसकत; मुदा किछु नहि भेल। भोरमे मात्र आकाश खुजल—एतेक साफ जेना चन्ना गाछीक कटायल छाँह ऊपरसँ हटि नहि, भीतरसँ उठि गेल हो।

एहि खुजल आकाशमे पहिल बेर लोक सभकेँ रिक्तता देखाइ पड़ल। चन्ना गाछीक पसरल डारि जखन रहैत छल, आकाश टुकड़ा-टुकड़ा देखाइत छल—पातक फाँकिमे, कौआक पाँखक बीचमे, भूतक कबड्डीकेँ घेरल धुँधमे। आब पूरा आकाश एक बेरमे देखाइत छल, आ ओहि पूरापनमे लोकक छाती पर एक नब भार पड़ि गेल। छोट आकाश डर दैत छल, मुदा पूरा आकाश उत्तर माँगैत छल।

अनन्या ठूँठ लग बैसि ऊपर तकैत रहलि। ओकरा बुझाइत छल जे आकाश खाली नहि, अपितु सुनबाक सभसँ विशाल पात्र अछि। जे नाम माटि सँ उठि, जलमे धुलि, आगिमे तपि, वायुमे उड़ि रहल छल, से सभ कतऽ जाएत? की ओ सभ केवल गामक भीतर घूमि रहत? की ओ सभ स्वप्नक अनाम ग्रह धरि पहुँचत? की ओ सभ ताराक बीच अपन ठाम माँगत?

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन पहिने सँ बहुत कम बजलाह। हुनकर गवाही लिखल जा चुकल छल, मौनक अपराध सेहो दर्ज भेल छल, मुदा आब आकाशक सोझाँ लिखल शब्द छोट बुझाइ पड़ैत छल। ओ रजिस्टर खोललनि, फेर बन्द कऽ देलनि। देविका पूछली, “किएक नहि लिखैत छी?” सत्यव्रत कहलनि, “कागच जमीन पर रहैत अछि। आइ प्रश्न ऊपर सँ आबि रहल अछि।”

बच्चा सभ एहि उत्तरसँ सन्तुष्ट नहि भेल। हुनका सभक आदति भऽ गेल छल जे प्रत्येक तत्त्वक गवाही पाथर, पात, जल, राखि, धूलि, स्वर, वा चिन्हमे पकड़ा जाए। आकाशक चिन्ह की? ई प्रश्न उभरल। एक बालक कहलक, “बादल।” दोसर कहलक, “चिरई।” तेसर कहलक, “साँसक ओ भाग जे देह छोड़ि कऽ ऊपर जाए।” अनन्या बहुत देर चुप रहलि, फेर

कहली, “आकाशक चिन्ह रिक्त ठाम अछि—जतय नाम लिखल नहि गेल, मुदा सुनल जा सकैत अछि।”

ई वाक्य पसरिते ठूँठक चारू कात लोक सभ मौन भऽ गेल। रिक्त ठाम—ई शब्द गढ़ नारिकेलमे खतरनाक छल। सरकारी कागच चन्ना गाछीकेँ रिक्त भू-खण्ड कहैत छल। ठेकेदार मृत मजदूरक सूचीमे रिक्त कोष्ठक छोड़ैत छल। अदालतक आदेशमे सत्यक ठाम रिक्त पाँती रहैत छल। डिजिटल ठगीक खातामे नामक ठाम क्रमांक भरल जाइत छल। मुदा अनन्याक रिक्त ठाम अलग छल—ओ मेटाओल जगह नहि, प्रतीक्षा करैत जगह छल।

तखन बूढ़बा भूत दिनक उजासमे पहिल बेर किछु स्पष्ट देखाइ पड़लाह। हुनकर देह धुँआ नहि, प्रकाशक किनार जेकाँ छल। ओ ठूँठ पर नहि, ठूँठक छाह आ धूपक बीचमे ठाढ़ छलाह। ओ कहलनि, “जे रिक्तता सत्ता बनबैत अछि, से निगलैत अछि। जे रिक्तता स्मृति बनबैत अछि, से ठाम दैत अछि। आकाश दोसर तरहक रिक्तता अछि—जहिया धरि ओ खुजल अछि, तहिया धरि कथा भागि नहि सकैत।”

बा ई सुनि धीरे-धीरे हँसलीह। “आकाश पर ककरो पट्टा नहि,” ओ कहलीह। “जे गामक पाथर छीनि लेत, जे रजिस्टर जरा देत, जे मोबाइल चोरा लेत, जे पुलक नीचाँ देह दबा देत, ओकरा ऊपरक शून्य पर अधिकार नहि। आकाश सभ सुनैत अछि—बस ओकरा सुनबाक लेल गर्दनि उठाबय पड़ैत अछि।”

एहि बातक बाद नाम-पाठक एक नब विधान बनल। जखन कोनो नाम पढ़ल जाए, तखन ओकर बाद एक क्षण लेल सभ लोक ऊपर ताकत। न हाथ जोड़त, न मन्त्र पढ़त, न फोटो खिंचत—केवल ऊपर ताकत। एना मानल जाएत जे नाम माटि सँ उठि आकाशक रिक्त ठाममे अपन जगह लैत अछि। पहिल नाम पढ़ल गेल। सभ ऊपर तकलक। बादल नहि छल, मुदा एक पातर उज्जर रेखा आकाशमे खिंचल—जेना कोनो अदृश्य पन्ना पर कलम चलि गेल हो।

चन्द्रपाल बत्रा एहि विधानक खबरि सुनि हँसल। ओकरा लागल—“आब आकाशक डेटा केना लेब?” मुदा रातिमे ओकर स्क्रीन अपने खुजल। नक्शा देखाओल—गढ़ नारिकेलक ऊपरक आकाशमे असंख्य बिन्दु। प्रत्येक बिन्दु पर कर्सर लऽ जाएत, तखन नाम नहि, साँस सुनाइ दैत। ओकरा बुझाइत नहि छल जे ई सर्वर कतऽ अछि। ओ तकैत रहल, पन्ना बन्द नहि भेल। अन्तमे स्क्रीन पर एक वाक्य उभरल—“जे ऊपर गेल, से डाउनलोड नहि होएत।”

राघव सिग्नल सेहो बेचैन भेल। ओकर गुप्त कोड हवा पकड़ा दैत छल, पानि धोइ दैत छल, आगि जरा दैत छल। आब ओ आकाशकेँ सन्देश पठेबाक सोचलक। मुदा ओतय कोनो ‘

डिलिवर' चिन्ह नहि आयल। सन्देश गेल कि नहि, ई निश्चय नहि भेल। ओहि अनिश्चिततामे ओकर हथेली पसीजि गेल। अपराधी सभकेँ प्रमाण मेटएबाक आदति होइत अछि; आकाश ओहि आदतिक विरुद्ध सभसँ पैघ मुकदमा अछि—ओ न मेटाओल प्रमाण दैत, न बचबाक निश्चितता।

लाउ किन-हंग अपन दूर शहरमे शीशाक देबाल सँ बाहर देखैत छल। ओकरा सभ भवन, सभ उपग्रह, सभ संचार-मार्ग अपन नियन्त्रणमे बुझाइत छल। मुदा ओहि राति ओकर कमरासँ ऊपरक आकाश अचानक मिथिलाक आकाशसँ बदलि गेल। चन्ना गाछीक कटल ठूँठक ठीक ऊपर जे रिक्तता छल, से ओकर काँच पर उतरि आयल। ओ धीमे स्वरमे बाजल, "एतुक्का आकाश हमर नहि छी।" ओ पहिल बेर बुझलक जे पृथ्वी छोड़ि स्वप्नक अनाम ग्रह बनाओल जा सकैत अछि, मुदा आकाशक स्मृति सँ भागल नहि जा सकैत।

ओहि राति अनन्याक स्वप्नमे फेर हलचल भेल। ओतय कृत्रिम गुंबद छल, नियन्त्रित उजास, मापल हवा, गनल जल, चिन्हित आवास। ओतय लोक आकाश नहि देखैत, स्क्रीन पर देखाओल नील पसारब देखैत। जखन गढ़ नारिकेलमे नामक बाद लोक ऊपर तकलक, स्वप्नक अनाम ग्रहक कृत्रिम नील छत पर एक-एक कऽ धब्बा पड़य लागल। स्वप्नक वैज्ञानिक ओकरा यान्त्रिक त्रुटि कहलक, मुदा अनन्याकेँ सपनामे बुझाइत रहल जे ओ धब्बा नामक रिक्त ठाम अछि।

कबड्डी ओहि दिन सन्ध्याकाल फेर खेलल गेल। मुदा रेखा जमीन पर नहि खिंचल गेल। बच्चा सभ ठूँठक चारू कात गोल बनि ठाढ़ भेल आ ऊपर देखलक। एक बालक साँस रोकि 'कबड्डी' कहैत-कहैत दौड़ल, मुदा ओकर छाह जमीन पर नहि, आकाशमे उनटे दौड़ल। सभ स्तब्ध। खेलक रेखा ताराक बीच बनि रहल छल। बूढ़बा भूत मुस्कुरेलाह—"खेल आब ऊपर लिखाइत अछि, मुदा साँस एतुक्के रहत।"

ई नब कबड्डी भूतक खेलसँ अलग छल। पहिने खेलमे पकड़ल जाएब हार छल; आब पकड़ल जाएब प्रश्न छल। जे बालक 'कबड्डी' कहैत दौड़ैत, ओकरा कोनो देह नहि रोकैत; ओकरा रोकैत ओ रिक्त नाम जकरा सभ एखन धरि पाथर नहि भेटल छल। ओ जँ ओहि नामकेँ सुनि लिअय, ओकर साँस घुरि अबैत। जँ ओ अनसुना कऽ दिअय, ओकर स्वर टूटि जाए। एहि खेलमे गति नहि, श्रवण विजय छल।

मीरा एहि खेलक अर्थ तुरन्त बुझली। ओ कहली, "आकाशक रिक्तता ओहि स्त्री सभक जगह सेहो अछि जिनकर कथा घरक भीतर दबा देल गेल। जे नाम कागच पर नहि, न

अदालतमे, न मोबाइलमे—ओ सभ ऊपरक खुजल ठाममे प्रतीक्षा करैत अछि।” स्त्री सभ रातिमे अपन-अपन अनकहल नाम फुसफुसा कऽ ऊपर छोड़ली। ताराक बीच किछु सूक्ष्म कम्पन भेल।

ईरा विदेशक बच्चा सभकेँ दोसर पत्र लिखली—“अहाँ सभ जँ अपन शहरमे आकाश देखी, तखन बुझू जे हम सभ एकहि रिक्तता साझा करैत छी। गाम छोड़ल जा सकैत अछि, भाषा बिसरल जा सकैत अछि, पता बदलि सकैत अछि; मुदा ऊपरक शून्य जँ नाम सुनि लिअय, तखन प्रवासो पहरा बनि सकैत अछि।” पत्रमे ओ लिखली जे गढ़ नारिकेलक नब पाठ—माटि, जल, आगि, वायु, आकाश—केवल तत्त्व नहि, स्मृतिक पाँच सीढ़ी अछि।

राति गाढ़ भेल। ठूँठक हरियर बिन्दु पर ओसक एक बून्द जमल। ओहि बून्दमे पूरा आकाश उनटल देखाइत छल। बून्दक भीतर तारा सभ अपन ठामसँ हटि एक-दोसराक लग सटि गेल छल, आ ओहि छोट गोलाइमे पूरा राति एहन बुझाइत छल जेना ककरो हथेलीमे राखल जा सकैत हो। अनन्या ओकरा देखैत कहली, “आकाश दूर नहि अछि; जे बून्द सुनैत अछि, ओहिमे आकाश उतरि अबैत अछि।” बच्चा सभ एहि वाक्यकेँ रजिस्टरमे लिखलक। ओकरा नीचाँ खाली जगह छोड़ल गेल। कियो पूछलक, “एतय की लिखब?” अनन्या उत्तर देली, “अगिला नाम।”

ठीक ओहि समय दूर सँ ढोलकक धीमा थाप सुनाइ पड़ल। कोनो जुलूस नहि, कोनो कार्यक्रम नहि। पानि, आगि, हवा, आकाश पार कऽ अबैत थाप। बा कान लगा कऽ कहलीह, “ई धरतीक भीतरक थाप अछि। आकाश सुनलक, आब पाताल उत्तर देत।” सभ ऊपर सँ नजरि हटाकऽ नीचाँ तकलक। ठूँठक जड़ि कनेक काँपि रहल छल।

एहि काँपनमे अध्याय समाप्त नहि भेल। ओ पातालक पहिल आमन्त्रण छल—स्मृति जखन आकाश धरि पहुँचैत अछि, तखन जड़ि भीतर सँ जबाब माँगैत अछि।

लोकगीत: खाली आकाशक प्रश्न

लोकधुन: आकाश-पराती

खाली हे आकाश, मुदा डर नहि—ठाम अछि हे,
जतऽ अगिला नाम उतरि अपन स्वर पाबए हे।

आकाश खाली भेल, राहत नहि—प्रश्न,
न पात हिलल, न जल बाजल, न आगिक स्पन्दन।
रजिस्टरमे वाक्य लिखल, नीचाँ खाली ठाम,

अनन्या कहली—एतय लिखब अगिला नाम।

दूर धरतीक भीतरसँ ढोलक थाप उठल,
ऊपर सुनि चुकल आकाश, जड़ि उत्तर देब चलल।
खालीपन मुँह खोलै, मनुष्यक आँखि झुकै,
स्मृति ऊपर चढ़ि जखन पातालक दुआर खटखटै।

आकाशक रिक्तिमे डर नहि, जगह अछि नब,
जतय अगिला नाम उतरि पाबए अपन स्वर सभ।
धरतीक भीतर सँ ढोलकक थाप उठल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—अग्निक प्रश्न: साधक प्रमाणाभाव: जखन ओतय पहिने सँ ओ साध्य (जेना अग्नि) सिद्ध करबाक कोनो सोझ प्रमाण (प्रत्यक्ष आदि) उपलब्ध नहि हो। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। अन्योन्याश्रय।]

अध्याय ११३

शब्दक देह

शब्दकेँ सेहो देह चाही— बिना देहक शब्द हवामे हेरा जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: शब्दकेँ जीवन

लोकधुन: अक्षर-सोहर

ललना रे, आखरक सोहर हे,
अर्थक देह पहिरि शब्द जनम लेलक हे।

शब्द जन्मै जखन अर्थक देह ओढ़ि आए,
हथेली, आँखि, श्रम, अनुभव संग अपनाय।
खाली नारा नहि बनाउ, काजसँ ओकर मान,
'न्याय' लिखू तँ न्याय करू, 'सेवा' लिखू तँ दान।

अक्षरक सोहर गाउ, भाषा जीवित राखू,
लोकक बोली, दुख, उमंग सभ पन्नामे साखू।
शब्दकेँ जीवन दिअ, जीवनकेँ स्वच्छ नाम,
बोल आ कर्म मिलिते पूर्ण होए पैगाम।

पालना मे नव-जन्मल शब्द, बोली लोरी गाबए,
श्रम-अनुभवक काजर-टीका नजरि सँ बचाबए।
'न्याय' लिखू तँ न्याय करू—इहए ओकर अन्न,
कर्मक दूध पीबि कऽ शब्द होयत प्रसन्न।

❖

झूठ केँ देह तुरन्त भेटि जाइ छै— फाइल, मोहर, करार, निविदा, मंच, दान-पत्र। ओ लिखाइते देह पहिरि लै छै। मुदा साँच जँ काज मे नै उतरल, तँ ओ बिनु देहक घूमैत रहै छै, आ हवा ओकरा उड़ा लऽ जाइ छै।

'न्याय' कहला सँ न्याय नै होइ छै। 'उपस्थित' लिखला सँ कियो उपस्थित नै होइ छै। शब्दक देह पसीना छिकै, प्रतीक्षा छिकै, आ ओ समय छिकै जे दोसराक कथा सुनबा मे लगै छै।

आ जे शब्द बिनु देहक घूमैए मुदा चमकैए, ओकरासँ सावधान। ओकरा देह नै रहै छै— ओकरा पेट रहै छै।

आकाशक रिक्ति खुजलाक बाद गढ़ नारिकेलमे एक अजीब हलुकपन उतरि आयल। लोक सोचलक, जे आकाश खाली भऽ गेल, से शायद राहत होएत। मुदा खालीपन कखनो-कखनो राहत नहि, प्रश्न होइत अछि। जे नाम धरती, बीज, माटि, जल, आगि, वायु आ आकाशमे पहरा पाबि चुकल छल, से नाम आब पूछय लागल—“हमरा देह कतऽ अछि?”

बच्चा सभ पहिने चौंकल। नामक देह? नाम तँ आवाज अछि, लिखल अक्षर अछि, पाथर पर खोंचल निशान अछि। मुदा अनन्या ओहि प्रश्नक भीतरक काँप चिन्हलक। ओ कहली, “जखन झूठ शब्द बनैत अछि, ओकर देह तुरन्त बनि जाइत अछि—फाइल, मोहर, करार, निविदा, मंच, दान-पत्र, भाषण। मुदा साँच शब्द बनलाक बादो जँ काजमे नहि उतरल, तँ ओकर देह अधूरा रहि जाइत अछि।”

एहि बात पर ईरा चुप भऽ गेलि। ओकरा विदेशक बच्चा सभकेँ लिखल पत्र मोन पड़ल। पत्रमे ओ लिखने छली—गाम स्मृति नहि, उत्तरदायित्व अछि। आब ओ बुझि रहल छली जे उत्तरदायित्वे शब्दक देह अछि। ‘उपस्थित’ लिखि देब पर्याप्त नहि, उपस्थित रहबो पड़ैत अछि। ‘निजता’ कहब पर्याप्त नहि, ककरो चेहरा बेचबाक लोभ रोकबो पड़ैत अछि। ‘न्याय’ कहब पर्याप्त नहि, देरि, जाति, पाइ आ भयक गठजोड़ काटबो पड़ैत अछि।

नारिकेल पात पाठशालामे ओहि दिन पहिल बेर अक्षरक सभा भेल। कागच पर पाँच शब्द लिखल गेल—नाम, उपस्थित, न्याय, निजता, पृथ्वी। बच्चा सभ ओकरा चारू कात बैसल। दुपहरक हवामे कागचक कोर हलुक फड़फड़ाइत छल, आ पाँचो शब्द एक-एक बेर उठि कऽ फेर ओहीठाम बैसि जाइत छल—जेना ओहो सभ अपन देहक बाट तकैत हो। कियो पाठ नहि पढ़ौलक। प्रत्येक बच्चा सँ पूछल गेल—“एहि शब्दक देह अहाँ की देखैत छी?”

एक बालक कहलक—“नामक देह पाथर अछि।” दोसरि बालिका कहली—“नहि, नामक देह मुँह अछि, जँ कियो उच्चारय।” तेसर कहलक—“नामक देह कान अछि, जँ कियो सुनय।” चारिम बच्चा धीरे कहलक—“नामक देह समय अछि। जँ कियो ओकरा लेल ठहरय नहि, तँ नाम फेर मरि जाए।” एहि उत्तर पर बा माथ हिलौलीह। ओ कहलीह, “बच्चा सभ सीखि गेल। नामक देह एकटा नहि, सम्बन्धक पूरा जाल अछि।”

तखन गोप कुमार अपन पुरान कागच सभ लऽ कऽ आयलाह। ओहि कागचमे हिसाब, प्रवाह, खाता, गुमशुदा नाम, कूट-रेखा, डिजिटल छाह सभ छल। ओ कागच पसारैत कहलनि, “एहि सभमे शब्दक देह छल, मुदा आत्मा नहि। ‘लाभार्थी’ लिखल छल, मुदा लोक गायब। ‘

मृत्यु’ लिखल छल, मुदा देहक गन्ध नहि। ‘परियोजना’ लिखल छल, मुदा मजदूरक पएर नहि। ‘अनुदान’ लिखल छल, मुदा लूटक लार छल।”

सत्यव्रत मेहता सेहो ओहि सभामे बैसलाह। ओ हुनकर आदतिक विरुद्ध कोनो व्याख्यान नहि देलनि। कागच दिस तकलाह, फेर बच्चा सभ दिस। बहुत देर बाद कहलनि, “कानूनमे शब्दक देह बहुत मजबूत होइत अछि। धारा, आदेश, निर्णय, शपथपत्र, गवाही—सभक देह बनल रहैत अछि। मुदा जँ शब्दक देहमे करुणा नहि, तँ ओ देह मुर्दा देह जेकाँ अछि।”

एहि वाक्य पर बूढ़बा भूतक छाह दुआरि लग देखाइ पड़ल। ओ हँसलाह नहि। ओहि दिन हुनकर चेहरा गम्भीर छल। ओ जेना कहि रहल छलाह—मुर्दा देहक अर्थ हम जनैत छी; मुदा जीवित शब्दक मुर्दापन ताहूसँ भयानक होइत अछि। जे शब्द जीवितक रक्षण करबाक लेल बनल, से जँ जीवितकेँ निगलय लागय, तँ ओ गोहि बनि जाइत अछि।

अनन्या पाँच शब्दक कातमे पाँचटा खाली घेरा बनौलक। पहिल घेरामे पाथर राखल गेल, दोसरमे कानक आकृति बनल, तेसरमे तुलसीक पात, चारिममे एक छोट दर्पण, पाँचममे बीज। ओ कहली, “एहि सभ शब्दक देह एखन अधूरा अछि। जँ हम सभ काज नहि करब, तँ ई सभ फेर भाषणमे फँसि जाएत।”

ईरा ‘पृथ्वी’ शब्दक आगाँ बीज राखैत कहली, “पृथ्वी छोड़ि स्वप्नक अनाम ग्रहपर जाएब सरल सपना अछि। पृथ्वी पर रहि माटि, जल, श्रम, स्मृति, जाति, देह, आ अपराधक हिसाब सँझाब कठिन अछि। तेँ पृथ्वी शब्दक देह केवल गोल ग्रह नहि; ई भार उठबैत पएर अछि।”

मीरा ‘निजता’ शब्दक आगाँ दर्पण राखली। ओ कहली, “निजता नुकएबाक नाम नहि, अपन चेहरा पर अपन अधिकारक नाम अछि। जे कैमरा बिनु पूछने पीड़ा लैत अछि, जे अनुप्रयोग मृतकक नाम पर दान लैत अछि, जे समाज प्रेमक नामकेँ अपराध बनबैत अछि—सभ निजताक देह काटैत अछि। निजताक देह दर्पण अछि, मुदा दर्पण ककर हाथमे अछि से महत्त्वपूर्ण अछि।”

देविका ‘उपस्थित’ शब्दक आगाँ कानक आकृति राखली। ओ कहली, “उपस्थित कहलाक अर्थ भीड़मे ठाढ़ रहब नहि। उपस्थित होएब माने जखन कियो अपन नाम कहय, तँ ओकरा बीचमे नहि रोकब। उपस्थित होएब माने ककरो दुखकेँ अपन चतुर टिप्पणी सँ छोट नहि करब। उपस्थित होएब माने सुनबाक लेल समय देब।”

आरुणि ‘न्याय’ शब्दक आगाँ तुलसीक पात राखलनि। कियो पूछलक, “तुलसी किएक?” आरुणि कहलनि, “कारण न्याय केवल दण्ड नहि। न्याय जँ जीवनक गन्ध नहि

बचबैत, तँ ओ केवल बदला अछि। पुल बनब, सड़क बनब, अदालत चलब—ई सभ जरूरी; मुदा जँ ओ सभमे जीवनक गन्ध नहि, तँ ओहीसँ गोहि सभ जन्म लैत अछि।"

सत्यव्रत 'नाम' शब्दक आगाँ पाथर छुलनि। "नाम कठोर होएबाक चाही," ओ कहलनि, "जे ओकरा मेटाबय चाहय, ओकर नह टूटि जाए। मुदा नाम केवल पाथर नहि। जँ पाथर पर लिखल नाम ककरो मुँहमे नहि घुरल, तँ पाथर स्मारक बनि रहि जाएत, जीवन नहि।" हुनकर आँगुर पाथरक ओहि खोंचल गड़हा पर ठमकल जतय अक्षरक नोक बनल छल—छूअब मे ओ खरखराहट एहन छल जेना कियो भीतरसँ आँगुर दिस जबाब दैत हो।

एहि समय पाठशालाक बाहर सँ एक बूढ़ स्वर आयल—"शब्दक प्रमाण?" सभ घूमि कऽ देखलक। कियो नहि। मुदा प्रश्न हवामे रहल। गंगेशक प्रश्न फेर उतरि आएल छल। नव्य न्यायक सूक्ष्म तर्क चन्ना गाछीक कटायल ठूँठ, बच्चा सभक रजिस्टर, आ गामक आहत जीवनमे चलि रहल छल। शब्द प्रमाण कहबासँ प्रमाण नहि बनैत; शब्द तखन प्रमाण जखन बजनिहार, सुननिहार, प्रसंग आ दायित्व चारू एक संग ठाढ़ हो।

बच्चा सभ ताहि दिन एक नब नियम जोड़लक—"कोनो शब्द बिनु देहक स्वीकार नहि।" जे अधिकारी 'विकास' कहत, ओकरा पूछल जाएत—विकासक देह कतऽ? जे विद्वान 'लोक-स्मृति' कहत, ओकरा पूछल जाएत—लोक कतऽ बैसल? जे व्यापारी 'श्रद्धांजलि' कहत, ओकरा पूछल जाएत—श्रद्धा केकर हाथमे? जे अपराधी 'क्षमा' कहत, ओकरा पूछल जाएत—क्षमा सुनबाक राति पार कएने छी कि नहि?

साँझ धरि ई नियम गाममे पसरि गेल। जे लोक भोरमे ओकरा हँसीमे उड़ौने छल, से साँझ धरि अपन बाजल शब्दक पाछाँ एक क्षण ठमकय लागल—बजबासँ पहिने ओ ठमकब गामक हवामे नब आवाज जकाँ सुनाइ दिअय लागल। चाहबला कहलक—"एहि हिसाबेँ चाहो बिनु देहक नहि; पानि, पात, दूध, आगि, हाथ, प्रतीक्षा—सभ चाही।" लोक हँसल। मुदा एहि हँसीमे गहींर शिक्षा छल। साधारण वस्तु सभ सेहो सम्बन्धक देह सँ बनैत अछि। शब्द ओहिसँ कम किएक होए?

रातिमे स्वप्नक अनाम ग्रह दिस आकाश साफ छल। तारा सभ तीक्ष्ण। बच्चा सभ कबड्डी खेलय लागल। एहि बेर ओ सभ साँस रोकि "कबड्डी-कबड्डी" कहैत नहि, अपितु प्रत्येक दौड़मे एक शब्द लैत—"नाम-नाम", "न्याय-न्याय", "पृथ्वी-पृथ्वी।" जे बच्चा साँस टुटबासँ पहिने शब्दक देहक एक काज कहि देत, से रेखा पार करैत। खेल दर्शन बनि गेल, दर्शन खेल।

तखन अचानक दूरसँ एक किरिण उतरल—सोझ नहि, काँपैत। ओ 'नव-क्षितिज'क परदासँ छल कि सरकारी दफ्तरक मीनारसँ, कियो बुझि नहि सकल। किरिण चन्ना ठूँठक लग रखल खाली घेरामे पड़ल। ओहि खाली घेरामे एक नब शब्द अपने-आप उभरल—"करार।"

बच्चा सभ खेल रोकि देलक। करार शब्द चमकैत छल, मुदा ओकर देह नहि देखाइ पड़ैत छल। न पाथर, न कान, न दर्पण, न पात, न बीज। केवल चमक। अनन्या धीरे कहली, "ई शब्द खतरनाक अछि। ई बिनु देहक रहि कऽ सभहक देह कीनय चाहैत अछि।" सत्यव्रत मेहता चुप्पे माथ झुकौलनि। गोप कुमार अपन कागच समेटलनि। ईरा आकाश दिस तकली।

ठूँठक भीतर सँ हलुक आवाज आयल—न हँसी, न रोदन—बस चेतावनी। बूढ़बा भूत छाह सँ बाहर आबि पहिल बेर दिनक बच्चा जेकाँ सरल स्वरमे कहलनि—"करारक देह तकू। जँ देह नहि भेटल, तँ ओकर पेट भेटत।"

एहि वाक्य सँ नवम पहराक राति समाप्त नहि भेल। शब्दक देहक पहरा बस शुरू भेल। आ अगिला बिहान गढ़ नारिकेलकेँ बुझबाक छल—करार कागच पर नहि, ककरा-ककरा हड्डी, जमीन, जल, बीज आ भविष्य पर लिखल जाइत अछि।

लोकगीत: शब्दकेँ देह दिअ

लोकधुन: अक्षर-गीत

दिअ हे देह, शब्दकेँ देह दिअ हे,
करारक पेट खुजिते असल मालिक चिन्हि लिअ हे।

बिनु देहक शब्द हवामे हेरा जाए,
करारक चमक सभहक देह कीनय आए।
'उपस्थित' पाथरपर गरम, छालिपर निशान,
मुदा 'करार' बिनु देह घूमै, पेट ओकर महान।

बूढ़बा कहलनि—देह नहि भेटत तँ पेट तकू,
ककर जमीन, जल, हड्डीपर लिखल, खोलू।
कागचक पाँती मात्र नहि, जीवनक मोल,
शब्दक देह पसीना, माटि, बीजक बोल।

अक्षरकेँ देह दिअ, ताकि झूठ उड़ि नहि जाय,

करारक पेट खुजिते असल मालिक चिन्हाय।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—अप्रमाण ज्ञान बिना “संशय” शब्दक प्रयोग: पर्वत प्रत्यक्ष हो आ अग्नि लिङ्गज्ञानक बाद स्मृत हो, तँ “हम आगि देखैत छी” प्रत्यक्षभ्रम आ “हम आगिक अनुमान करैत छी” अनुमानभ्रम भिन्न होइत अछि। अप्रमाण ज्ञान बिना “संशय” शब्दक प्रयोग।]

अध्याय ११४

अर्थक आत्मा

शब्दक देह बचि जाए आ अर्थक आत्मा बिका जाए— तँ पहरा अधूरा।

अध्यायारम्भ लोकगीत: अर्थक आत्मा सम्हारू

लोकधुन: दार्शनिक विदापत पद

सम्हारू हे अर्थ, शब्दक आत्मा सम्हारू हे,
चमकैत देहक भीतर दीप निहारू हे।

शब्दक देह चमकि सकै, अर्थ भीतर कानय,
नेहक नजरि रखिते आत्मा फेर संजोए।
'गरिमा' केवल अक्षर नहि, व्यवहारक फूल,
'सहमति' बिनु काज अधूरा, ई समाजक मूल।

अर्थक आत्मा बजारमे बेचू नहि कखनो,
लोकक अनुभवसँ भाषा नबी करू सपनो।
शब्द आ अर्थ संग रहत तँ विश्वास टिकत,
साँचक भाषा पीढ़ी-पार उज्जर राह लिखत।

'गरिमा' बाजब सहज, निबाहब कठिन तप,
'सहमति' बिनु काज अधूरा—मोन मे जपू ई जप।
बजारक तराजू पर अर्थकेँ नहि चढ़ाउ,
लोक-अनुभवक कसौटी पर शब्द कसि कऽ लाउ।

❖

एके शब्द तीन ठाम लिखल जा सकै छै— मृतकक परिवारक मुँह मे, सरकारी झण्डी पर, आ ओहि ग्रहक देबाल पर जकर कोनो नाम नै छै। अक्षर तीनू ठाम एक्के रहतै। मुदा पहिल मे नोर रहै छै, दोसर मे हिसाब, आ तेसर मे खाली रिक्ति।

तें अर्थ अक्षर मे नै रहै छै— अर्थ ओहि वस्तु मे रहै छै जकरा शब्द छुबै छै। जकरा छुबैत हाथ नै काँपै, से विरासत नै, सजावट छिकै।

आ जे शब्द पीढ़ितक कंठसँ जनमल, ओकर दूध छुटबासँ पहिने जँ ओ बजार मे बिका गेल — तँ ओ शब्द एखनहुँ बजैए, मुदा भीतरसँ खाली भऽ चुकल छै।

शब्दक देह बनलाक बाद लोकक भरोसा कने बढ़ि गेल छल। जखन 'उपस्थित' कहला पर पाथर गरम भेल, जखन कटल ठूँठक छालि पर अक्षर उभरल, जखन स्वप्नक अनाम ग्रहक नीरस देबाल पर नाम लिखिते दरार पड़ल, तखन बच्चा सभ बुझलक जे शब्द माटिसँ, पानिसँ, आगिसँ, वायुसँ आ आकाशसँ अलग नहि। मुदा बूढ़बा भूत रातिमे ठूँठक पाछाँ बैसि कहलनि—'शब्दक देह अछि तँ ओकर रोग सेहो अछि। सावधान रहू; देहकेँ बचा लेलहुँ, आब अर्थकेँ बचाउ।'

एहि चेतावनीक अर्थ भोरमे खुजल। बजारक चौक पर नब कपड़ाक झण्डी लागल छल। ओकरा पर मोट अक्षरमे लिखल—'उपस्थित अभियान'। नीचाँ सरकारी मोहर, विरासत-परियोजनाक छाप, आ कतेको दानदाताक नाम। जे शब्द मृतक परिवार उत्तरमे कहैत छल, जे शब्द बच्चा सभ रजिस्टरमे काँपैत हाथसँ लिखैत छल, जे शब्द पनिडुब्बीक गवाहीमे जलक थरथराहट बनि उठल छल, से आब झण्डी, बैनर, टोपी, थैली आ चाह-प्याला पर छपि गेल छल।

अनन्या पहिल झण्डीक सोझाँ ठाढ़ भऽ गेलि। नब कपड़ाक ओ कड़क चमक, जकरा हवा छूबितहि चटचट बजैत छल, आ छपाइक ताजा गन्ध—दुनू एक संग एहन लागल जेना कोनो अपरिचित लोक हमरे घरक नाम लऽ कऽ पुकारि रहल हो। अक्षर सही छल। मात्रा सही छल। रंग नीक छल। मुदा ओकरा लागल जे शब्दक आँखि निकालि लेल गेल अछि। 'उपस्थित' ओतय लिखल छल, मुदा ओ कोनो मृतककेँ उत्तर नहि दैत छल; ओ केवल भीड़केँ आकर्षित करैत छल। ओ धीरे कहली—'ई शब्द अछि, मुदा ई हमर शब्द नहि।'

ईरा कहली—'किएक नहि? शब्द तँ वैह अछि।' अनन्या उत्तर देली—'देह वैह रहि सकैत अछि, मुदा आत्मा बदलि सकैत अछि।' एतबे सुनि सत्यव्रत मेहता, जे दूर सँ झण्डी देखैत छलाह, कने काँपि उठलाह। कानूनमे शब्दक महत्त्व ओ जीवन भरि बुझल छलाह, मुदा कानूनक शब्द कतेक बेर अर्थहीन होइत अछि, तकर अपराध हुनका देर सँ बुझायल छल। 'न्याय' लिखल रहि सकैत अछि आ न्याय अनुपस्थित रहि सकैत अछि; 'सुनवाई' लिखल रहि सकैत अछि आ कोनो कान नहियेे खुजैत।

ओहि दिन नारिकेल पात पाठशालामे पाठ बदलि देल गेल। पहिने बच्चा सभ नाम पढ़बाक अभ्यास करय बला छल। आब पाटी पर देविका लिखली—'शब्द', दोसर पाँतीमे—'अर्थ', तेसर पाँतीमे—'अर्थक पहरा'। बच्चा सभ चकित भेल। एक छोट बालक पूछलक—'शब्दक पहरा बुझैत छी, अर्थक पहरा कोना?' देविका उत्तर नहि देली। ओ गंगेशक प्रश्न ओतय रखि देली।

गंगेशक नाम सुनिते बूढ़बा भूतक छाह दरबाजा पर देखायल। ओ दिनक उजासमे पूरा नहि उतरि सकैत छलाह, मुदा हुनकर आवाज आँगन भरि पसरल—'शब्दप्रमाण कहैत छी तँ शब्द कहनिहारक विश्वसनीयता, सुननिहारक तैयारी, आ अर्थक सम्बन्ध—तीनू देखू। जे "उपस्थित" मृतकक नाम पर उत्तर होइत अछि, से एक अर्थ; जे "उपस्थित" योजना-विज्ञापन पर छपैत अछि, से दोसर अर्थ। अक्षर जड़ि नहि, सम्बन्ध अछि।'

बच्चा सभ अपन-अपन पाटी पर एके शब्द लिखलक—'उपस्थित'। फेर तीन गोल बनाओल गेल। पहिल गोलमे मृतक परिवारक उत्तर, दोसरमे सरकारी अभियान, तेसरमे स्वप्नक अनाम ग्रहक देबाल। तीनू ठाम शब्द एक। मुदा पहिल गोलक भीतर नोर छल, दोसरमे हिसाब, तेसरमे रिक्ति। तखन एक बालिका कहली—'अर्थ ओहि वस्तु सँ बनैत अछि जकरा शब्द छूबैत अछि।' देविका मुस्कुरेली। गंगेशक छाह पातक नीचाँ कने गाढ़ भऽ गेल।

एहि बीच नगरपालिकाक गाड़ी आयल। अधिकारी सभ टोपी बाँटय लागल—'उपस्थित बनू, विरासत बचाउ।' टोपी पर कटल चन्ना गाछीक चित्र छल, मुदा चित्रमे ठूँठ नहि, पूरा हरियर-भरल गाछी बनाओल गेल छल। माटिक घाव झँपायल छल। पानिक डूबनाइ हटाओल गेल छल। गोहिक आँखि कतहु नहि। भूतक कबड्डी हँसमुख चित्र बनि गेल। ईरा टोपी हाथमे लऽ पूछली—'जे गाछी कटि गेल, ओकरा पूरा देखाएब किएक?' अधिकारी हँसल—'सकारात्मक छवि बनएबाक अछि।'

मीरा आगाँ बढ़ली। 'सकारात्मक छवि' शब्द सुनिते हुनकर चेहरा कठोर भऽ गेल। ओ कहली—'हमरा देहक अपमानकेँ सेहो बहुत बेर सकारात्मक छवि सँ झाँपल गेल। निजता बेचि कऽ सुरक्षा कहल गेल। चुप्पी लादि कऽ मर्यादा कहल गेल। आब स्मृतिकेँ चमका कऽ विरासत कहल जा रहल अछि। ई अर्थक चोरी अछि।'

अधिकारी चकित। ओकरा लग नियम-पुस्तिका छल, अर्थ-पुस्तिका नहि। ओ कहलक—'हम सभ तँ सम्मान करय आयल छी।' अनन्या पूछली—'सम्मानक अर्थ कहू।' अधिकारी चुप। बच्चा सभ रजिस्टर खोलि लेलक। पहिल प्रश्न लिखल गेल—'सम्मानक नाम पर सत्य हटाओल गेल कि नहि?' दोसर—'उपस्थित शब्दक संग कोन-कोन अनुपस्थित अछि?' तेसर—'जकरा नाम पर अभियान, ओकर परिवारक सहमति अछि कि नहि?'

सत्यव्रत मेहता एहि प्रश्न सभकेँ सुनि चुपचाप बैसल रहलाह। हुनका लग बहुतेक उत्तर छल, मुदा आब ओ पहिने बजनिहार नहि रहलाह। थोड़ी देर बाद ओ अपन पुरान नोटबुक खोलि एक वाक्य लिखलनि—'शब्दक देह पर अधिकार राखनिहार प्रायः अर्थक आत्मा लूटि लैत

अछि।’ लिखि ओ नोटबुक बच्चा सभकेँ देखौलनि। अनन्या वाक्य पढ़ि कहली—‘तखन अर्थक पहरा हमरा सभक।’

ओहि दिन साँझ ठूँठक चारू कात अर्थ-परीक्षा भेल। बच्चा सभ अलग-अलग शब्द पाथर पर लिखि बीचमे रखलक—‘विकास’, ‘दान’, ‘न्याय’, ‘सम्मान’, ‘सुरक्षा’, ‘विरासत’, ‘उपस्थित’। प्रत्येक शब्दक सोझाँ लोक अपन अनुभव कहलक। ‘विकास’क सोझाँ मजदूरक बेटी कहली—‘हमर बाबू पायामे डूबल।’ ‘दान’क सोझाँ देविका कहली—‘दानक कागच ठेकाक नक्शा बनि गेल।’ ‘सुरक्षा’क सोझाँ मीरा चुप रहली; हुनकर चुप्पीए अर्थ बनि गेल। ‘विरासत’क सोझाँ बा कहलीह—‘जकरा छूबैत काल हाथ काँपय नहि, से विरासत नहि, सजावट।’

जखन ‘न्याय’ पाथर बीचमे आयल, सभक नजरि सत्यव्रत पर गेल। ओ कने देर चुप रहलाह। फेर कहलनि—‘हम जीवन भरि न्याय शब्दक सेवा करबाक भ्रममे रहलहुँ। कतेक बेर सेवा शब्दक भऽ गेल, अर्थक नहि। न्याय तखन जीबैत अछि जखन पीड़ितक समय बचैत अछि। जँ न्याय बरख चिबा जाए, तँ शब्द रहैत अछि, अर्थ मरि जाइत अछि।’

एहि वाक्य पर ठूँठक एक फाँकि सँ धुँआक पातर रेखा उठल। आगि नहि छल, मुदा धुँआ छल। आगिक साक्षी अध्यायमे जे राखि बचल छल, से जेना आब अर्थक देह पर फेर आँगुर फेरि रहल छल। ओहि धुँआक गन्ध पुरान नहि छल—ओहिमे जरल कागचक तीखी गन्ध नहि, नब कपड़ाक रंगक हलुक मीठ गन्ध छल, आ वैह बात सभसँ बेसी डरौना छल। बच्चा सभ लिखलक—‘न्याय शब्दक अर्थ समयमे रहैत अछि।’

राति गहराएल तखन स्वप्नक अनाम ग्रहक सपना फेर किछु बच्चा देखलक। ओतय चमकदार गुंबदक देबाल पर सेहो ‘उपस्थित’ लिखल छल—वैह देवनागरी अक्षर, वैह उज्जर चमक। मुदा ओतय कोनो नामक उत्तर नहि, कोनो परिवार नहि, कोनो पाथर नहि। एक यान्त्रिक स्वर कहैत छल—‘सभ उपस्थिति दर्ज।’ अनन्या सपनामे चिकरली—‘नाम कहू!’ देबाल चुप। ओ बुझि गेलि—स्वप्नक अनाम ग्रह शब्द चोरा सकैत अछि, अर्थ नहि।

भोरमे सपना सभ मिलाओल गेल। प्रत्येक बच्चा अलग दृश्य देखलक, मुदा एक बात समान—जतय शब्दक पाछाँ नाम नहि, ओतय अर्थ निःश्वास होइत अछि। नारिकेल पात पाठशालाक केबाड़ पर ओहि दिन नब नियम चिपकल—‘कोनो शब्दक उपयोग करबासँ पहिने ओकर घायल लोकसँ अर्थ पूछू।’

एहि नियम पर गाममे बहस उठल। व्यापारी कहलक—‘एना तँ कोनो नारा बनत नहि।’ शिक्षक कहलक—‘तखन नारा कम, अर्थ बेसी बनत।’ नेता कहलक—‘लोकहितक शब्द सभक साझा होइत अछि।’ बा उत्तर देलीह—‘साझा करब आ लूटब अलग बात अछि। जे शब्द पीड़ितक कंठसँ जनमल, ओकर दूध छुटलासँ पहिने ओकरा बजारमे बेचब पाप अछि।’

बटुकनाथ हरिहरनक सन्तान, जे पछिला अध्यायमे पिताकेँ प्रश्न केने छल, एहि पाठशालामे चुपचाप आबि बैसल। ओ पाटी पर लिखलक—‘मर्यादा’। फेर पूछलक—‘हमर घरमे ई शब्द बहुत सुनल गेल। मुदा एहि शब्दक अर्थ ककरा लग पूछू?’ मीरा ओकरा देखली, फेर कहली—‘जिनका मर्यादाक नाम पर चुप कराओल गेल, हुनका लग।’ बालक पाटी झुका देलक। ओकर आँखिमे पहिल बेर कुलक गर्व नहि, कुलक प्रश्न छल।

अचानक पनिडुब्बीक पोखरि दिससँ एक बच्चा दौड़ैत आयल। ओ हाथमे भीजल पर्चा पकड़ने छल। पर्चा पर सरकारी ‘उपस्थित अभियान’क छाप बहि गेल छल, मुदा बीचक एक शब्द बचल—‘पुनर्व्याख्या’। आरुणि पर्चा पढ़ि चौंकलाह। ई साधारण विज्ञापन नहि रहल। आब परियोजना नामक अर्थ बदलबाक आधिकारिक योजना बना रहल छल—‘जलसमाधि’केँ ‘जल-धरोहर’, ‘भूत-कबड्डी’केँ ‘लोक-नाट्य’, ‘मृतक’केँ ‘अतीत-अंश’, ‘पीड़ित’केँ ‘हितधारक’ लिखबाक प्रस्ताव।

देविका पर्चा बच्चा सभसँ पढ़ौली। एक-एक शब्द सुनिते ठूँठक छाह नमहर होइत गेल। सूर्य ऊपर छल, तैयो छाह बढ़ैत गेल। बूढ़बा भूत फुसफुसेलाह—‘अर्थक हत्या शुरू भेल।’ अनन्या रजिस्टरक नब पन्ना खोललक। शीर्ष पर लिखलक—‘पुनर्व्याख्याक दरबार।’

सत्यव्रत मेहता उठलाह। एहि बेर ओ चुप नहि रहलाह। केवल एतबे कहलनि—‘जखन अपराधी शब्द बदलैत अछि, तखन न्यायकेँ भाषा पर पहरा देबय पड़ैत अछि।’ हुनकर स्वर छोट छल, मुदा चारू कात बैसल लोक बुझि गेल जे अगिला संघर्ष अदालत, पानि, गोहि, ग्रह, बीज, आगि वा वायु सँ बेसी सूक्ष्म होएत—अर्थक भीतर।

साँझ उतरैत-उतरैत ‘उपस्थित अभियान’क झण्डी सभ हवामे फड़फड़ाय लागल। प्रत्येक झण्डी सँ एकेक अक्षर छूटि कऽ उड़ैत, फेर कटल ठूँठ लग आबि पड़ैत। बच्चा सभ ओ अक्षर जमा करैत रहल। हथेलीमे ओ छपल अक्षर सभ रंग छोड़ैत छल—आँगुरक पोरमे नील आ लाल दाग लागि जाइत छल, आ ओ दाग पानिसँ तुरन्त नहि छूटैत छल। ओ सभ जनैत छल—शब्दक देह छिड़िआयलासँ डर नहि; डर एहि बातक जे अर्थक आत्मा बिनु पहरा भटकैत रहि जाए।

ओहि राति चन्ना गाछीक ठूँठक भीतर सँ हँसी नहि, एक गम्भीर ध्वनि उठल। जेना दूर कतहु तत्त्वचिन्तामणिक पृष्ठ उनटि रहल हो। गंगेशक छाह, बूढ़बा भूत, पनिडुब्बी, मीरा, देविका, सत्यव्रत, अनन्या, आरुणि—सभ एकहि बात बुझि गेलाह।

लोकगीत: अर्थक आत्मा बचाउ

लोकधुन: दार्शनिक लोकपद

बचाउ हे अर्थ, शब्दक आत्मा बचाउ हे,
नारा बनि बिकए सँ पहिने जड़ि सँ मिलाउ हे।

शब्दक देह बचल, अर्थक आत्मा बिकाए,
उपस्थित नारा बनि बजारक झण्डी लहराए।
एक-एक अक्षर छूटि ठूँठ लग घुरि आयल,
बच्चा बटोरि फेर असल अर्थ जगायल।

नामक देह माटिसँ, आत्मा स्मृतिसँ जुड़ल,
अर्थ मरत तँ झूठक छाह नमहर उगल।
तत्त्वचिन्तामणिक पृष्ठ राति भीतर उनटल,
लड़ाइ शब्द नहि—ओकर छाहपर अटल।

शब्द बचाउ, अर्थोकेँ देहमे बसाउ,
नारा बनि बिकए पहिने जड़िसँ फेर मिलाउ।
एक-एक आखर छूटि ठूँठ लग घुरि आयल,
नेना बटोरि कऽ फेर असल अर्थ जगायल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—देवदत्तक प्रसङ्ग: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—प्रसिद्ध उदाहरण: जेना कोनो व्यक्ति (देवदत्त) जीवित अछि, मुदा ओ दिनमे घरपर नहि देखाइ दैत अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। मनोऽणुत्ववाद।]

अध्याय ११५

कण्ठक पहरा

कण्ठक पहरा सभसँ कठिन— जे बचल, तकरे सभसँ पहिने बेचल जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: कण्ठक बगिया

लोकधुन: कण्ठ-झूमर

फुलाउ हे बगिया, कण्ठक बगिया फुलाउ हे,
प्रत्येक फूलक अपन गन्ध—नकल नहि लगाउ हे।

प्रत्येक कण्ठ एक फूल, अलग रंग अलग गन्ध,
नकल नहि, सम्मानसँ बनत सुरक सम्बन्ध।
कलाकारक अनुमति लिअ, श्रमक उचित दाम,
आवाजक असल मालिकक सदिखन रहय नाम।

कण्ठक बगिया सहेजि राखू, चोरी हवा न होए,
लोकधुनक बीज नव पीढ़ीक स्वरमे सोए।
स्वतन्त्र आवाज मिलि कऽ सुन्दर हार बनत,
मिथिलाक बहुरंगी कण्ठ विश्वभरि गुँजत।

झूमरक घेरा मे सभक अपन-अपन तान,
एक-दोसरक सुर उठाउ, चोराउ नहि गान।
गएनिहारक नाम रहय, श्रमक उचित दाम,
बहुरंगी कण्ठ-हार सँ सजय मिथिला-धाम।

❖

आवाज देहक अंश छिकै। ओ छाती सँ उठै छै, गला मे बनै छै, आ मुँहसँ निकलितहि लोक बुझैए जे आब ओ हवाक भेल— केकरो भेल। मुदा हवाक भेला सँ ओ बेनाम नै भऽ जाइ छै।

डिब्बा सुनि सकै छै, मुदा डिब्बाक पेट नै दुखै छै। जे कान देह मे लागल छै, ओ सुनितहि भीतर उतरै छै; जे कान लोहा मे लागल छै, ओ सुनि कऽ खाली जमा करै छै। जमा करब आ सुनब एक बात नै छिकै।

तें जे नाम पढ़त, से पहिने सुनत। जे सुनत, से पहिने अनुमति लेत। आ जे अनुमति लेत, से पहिने अपन लोभक नाम कहत।

अर्थक आत्मा पर पहरा राखलाक पछाति बच्चा सभकेँ बुझाइत छल जे आब शब्द सुरक्षित भऽ गेल। 'उपस्थित' आब नारा नहि, फेर साँस बनि गेल। मुदा गढ़ नारिकेलमे जे चीज एक बेर बचि जाए, ओकरा पर अगिला दिन ककरो ने ककरो दावा अवश्य आबैत। जाहि राति ठूँठक छाँहमे अर्थक आत्मा घुरल, ओकर अगिला बिहान चौपालक कात एकटा नब यन्त्र राखल भेटल—पीतर रंगक डिब्बा, ओहिमे चमचम करैत मुख, आ ऊपर लिखल—'नामक स्वर-संग्रह'।

डिब्बाक संग आयल लोक सभ अपनाकेँ 'श्रवण-संरक्षक' कहैत छल। ओ सभ कहलक—'नामक पहरा बहुत आवश्यक अछि। मुदा लोक मरि जाएत, बच्चा सभ पैघ भऽ जाएत, कण्ठ बदलि जाएत। तँ हम सभ एहि नाम-पाठकेँ ध्वनि रूपमे सुरक्षित करब।' सुनयमे बात नीक बुझाइत छल। स्मृतिकेँ आवाज देब, आवाजकेँ सुरक्षित करब, भविष्यक पीढ़ीकेँ सुनाएब—एहिमे दोष की? मुदा मीरा ओकरा सभक कागच पढ़ि चुप्पे अनन्याकेँ देखली। कागचक छोट अक्षर कहैत छल—'ध्वनि-अधिकार आयोजक संस्थाक रहत।'

अनन्या पहिने कागच नहि, डिब्बाक मुख देखलक। ओहि मुखमे छोट-छोट छेद छल, जेना कोनो अन्हार जीव कान लगाकऽ बैसल हो। पीतरक ओ सतह भोरक धूपमे तपि कऽ हाथ लगबितहि गरम बुझायल, मुदा ओ गरमी देहक नहि, कोनो चलैत यन्त्रक भीतरसँ अबैत छल—आ ओहि फरकमे किछु एहन छल जे हथेली अपने पाछाँ हटि गेल। ओकरा मोन पड़ल—स्क्रीन मोन चिबा सकैत अछि। आब की आवाजो चिबाओल जाएत? ओ धीरे पूछली, 'नाम जकर, आवाज ओकर; तकर अधिकार ककर?' श्रवण-संरक्षक मुस्कुरेलक। कहलक, 'समुदायक हितमे संस्थागत संरक्षण।' बच्चा सभ एहि वाक्यक अर्थ नहि, ओकर ठंढापन बुझि गेल।

बटुकनाथ हरिहरन दूर ठाढ़ छल। ओ एहि लोककेँ अपन न्यासक प्रस्तावसँ जोड़बाक सोचि रहल छल। कण्ठक अधिकार कानूनमे बदलि जाएत तँ नामक पहरा फेर दस्तखत आ मोहरक बीच कैद भऽ सकैत छल। चन्द्रपाल बत्रा सेहो एहि यन्त्रमे अवसर देखैत छल—आवाजक आँकड़ा, भावनात्मक दान, स्मारक-प्रसारण, विशेष सदस्यता। राघव 'सिग्नल' सोमानीक आँखिमे नब कोड चमकल। जे गायब सन्देश पात बनि गेल छल, से आब ध्वनि बनि संग्रह होएत। धूर्त सभ हारल नहि छल; ओ सभ केवल रूप बदलि रहल छल।

ओहि दिन सत्यव्रत मेहता चौपालमे बहुत पाछाँ बैसल छलाह। हुनका कागचक भाषा तुरन्त बुझाइत छल, मुदा ओ तात्कालिक भाषण नहि देलनि। दोसर मौन हुनका सिखौने छल जे पहिने लोक स्वयं प्रश्न उठाबय। मुदा जखन श्रवण-संरक्षक ई कहलक जे 'कानूनी सहमति

सामूहिक रूपेँ लेल जा सकैत अछि’, तखन सत्यव्रत धीरे सँ माथ उठौलनि। हुनकर आँखि अनन्या दिस गेल। अनन्या बुझि गेल—प्रश्न आब ओकर कण्ठमे अछि।

ओ ठाढ़ भेलि। कटल ठूँठक हरियर बिन्दु पर धूप पड़ैत छल। ओ कहली, ‘नाम-पाठ आजुको होएत, मुदा पहिने कण्ठक परीक्षा होएत।’ श्रवण-संरक्षक हँसल—‘कण्ठक परीक्षा?’ अनन्या कहली, ‘हँ। जे नाम पढ़त, से पहिने सुनत। जे सुनत, से पहिने अनुमति लेत। जे अनुमति लेत, से पहिने अपन लोभक नाम कहत।’ भीड़मे धीमा हलचल भेल। कागचक अक्षर घबरा गेल जेकाँ लागल।

पहिल नाम उज्ज्वलक माय पढ़बाक छलीह। यन्त्र लगाओल लोक चाहलक जे हुनका ठीक सोझाँ बैसा देल जाए, जाहिसँ स्वर साफ आबय। मीरा रोकि देली—‘स्वर साफ हेबाक चाही कि मोन साफ?’ उज्ज्वलक माय कहलीह, ‘हमर बेटाक नाम हम धीरे कहब। जँ डिब्बा धीरे सुनि सकय, तँ सुनय; जँ नहि, तँ डिब्बा बहीर अछि।’ एहि पर स्त्री सभक पाँतिमे एक मधुर हँसी उठल। ई हँसी उपहास नहि, आत्मसम्मानक पहिल खुजल आवाज छल।

नाम-पाठ आरम्भ भेल। पहिल नाम एतेक धीमे कहल गेल जे दूर बैसल लोक धरि नहि पहुँचि सकल। मुदा ठूँठक जड़ि हलुक काँपल। बच्चा सभ लिखलक—‘कण्ठ धीमा, जड़ि सुनलक।’ दोसर नाम एक वृद्ध पढ़लक, ओकर दाँत कम छल, शब्द टूटैत छल। यन्त्रक लोक ओकरा फेर पढ़बाक कहलक। वृद्ध उत्तर देलक—‘हमर जीभ जेना अछि, नाम ओहिना सुनल जाएत। हम मशीनक लेल अपन मृतककेँ दुरुस्त नहि करब।’ बच्चा सभ लिखलक—‘टूटल कण्ठ सेहो पूरा गवाही दैत अछि।’

गंगेशक प्रश्न फेर हवामे आयल। आरुणि धीरे कहलनि—‘शब्द प्रमाण अछि, मुदा शब्द ककर कण्ठसँ निकलल, ई सेहो प्रमाणक भाग अछि।’ ईरा जोड़ली—‘जखन शास्त्र जीवनक सत्य दबबैत अछि, तखन शब्द पूज्य रहि जाइत अछि, अर्थ मरि जाइत अछि। जखन रिकार्डिंग जीवित कण्ठक अधिकार छीनैत अछि, तखन आवाज रहि जाइत अछि, व्यक्ति मरि जाइत अछि।’ बच्चा सभ एहि वाक्यक पूरा दार्शनिक भार नहि बुझलक, मुदा ओकर दिशा बुझलक।

तखन एक बालक, जकर दादा पुल-निर्माणमे गुम भेल छल, उठल। ओ अपन दादाक नाम कहय चाहलक, मुदा गला रुँधि गेल। यन्त्रक लोक प्रतीक्षा करैत अधीर भेल। कहलक—‘कृपया स्पष्ट बाजू।’ बालकक आँखि भरि आयल। अनन्या ओकर कातमे ठाढ़ भऽ गेलि। ओ कहली, ‘स्पष्ट रोदन सेहो आवाज अछि।’ बालक किछु नहि कहलक, केवल कानल। ठूँठक

हरियर बिन्दु पर एक पानिक बून्द चमकल। बच्चा सभ लिखलक—'नाम रोदनमे उच्चरित भेल।'

एहि क्षण डिब्बाक भीतर सँ किरकिराहट उठल। जे यन्त्र सभ स्वर पकड़य आयल छल, से रोदनक अर्थ पकड़ि नहि सकल। ओकर लाल बत्ती झपकैत रहल, जेना अन्हारमे फँसल जुगनू। श्रवण-संरक्षक ओकर तार मिलाबय लागल। तारक जोड़ पर जे खरखराहट उठैत छल, से ओहि बालकक रुँधल गलाक आवाजसँ बहुत मिलैत-जुलैत छल—मुदा ओहिमे भीतरक कोनो काँप नहि छल, केवल धातुक सूखल घर्षण। चन्द्रपाल पाछाँ सँ फुसफुसौलक—'भावनात्मक ध्वनि मूल्यवान होइत अछि, बचा लिअ।' एहि वाक्यकेँ देविकाक कान पकड़ि लेलक। ओ तुरन्त सभक सोझाँ कहली—'देखू, रोदनो मूल्यवान माल बनि रहल अछि।'

भीड़ एकाएक स्थिर भऽ गेल। लोक बुझलक—जखन आवाज एक बेर देह सँ अलग भऽ बेचाइत अछि, तखन मृतक फेर बेनाम नहि, माल बनि जाइत अछि। मीरा स्त्री सभक पाँतिसँ उठि यन्त्र लगाओल लोकक सोझाँ गेली। कहली, 'एहि ठाम कोनो कण्ठ बिनु अनुमति कैद नहि होएत। जे सुनबाक अछि, जीवित कान सँ सुनू। जे स्मरण करबाक अछि, अपने मुँह सँ फेर कहू। जे सुरक्षित करबाक अछि, नामक अधिकार सहित करब।'

श्रवण-संरक्षकक मुखक मुस्कान उतरि गेल। ओ कहलक, 'भविष्यक लेल संग्रह आवश्यक अछि।' सत्यव्रत मेहता अन्ततः बजलाह—'भविष्यक नाम पर वर्तमानक अधिकार नहि छीना जा सकैत। सामूहिक पीड़ा पर निजी अथवा संस्थागत स्वामित्व बनब अन्याय अछि। जँ संग्रह हो, तँ शर्त पीड़ितक, समुदायक, आ नामक पहरुआ सभक होएत।' ओ फेर चुप भऽ गेलाह। ओकरा बाद कियो ताली नहि बजौलक। एहि गाममे आब ताली सँ बेसी मौनक गरिमा बुझल जा रहल छल।

तखन बा कहलीह, 'कान सँ सुनल नाम देहमे उतरैत अछि। डिब्बा सुनैत अछि, पेट नहि दुखैत।' एहि एक वाक्य पर पूरा चौपाल हिलि उठल। श्रवण-संरक्षक पहिल बेर असहज भेल। ओकरा बुझायल जे ई वृद्ध स्त्री कोनो सिद्धान्त नहि, अनुभव कहि रहल छथि। अनुभवक सोझाँ अनुबन्धक भाषा बरखक पुरान कागच जेकाँ काँपैत अछि।

बच्चा सभ निर्णय लिखलक—'कण्ठक पहरा: कोनो नामक ध्वनि बिनु नामक घरक अनुमति नहि; कोनो रोदनक संग्रह बिनु रोदनहारक अधिकार नहि; कोनो सामूहिक स्वरक स्वामी कोनो संस्था नहि; सुननाइ पहिने, संग्रह बादमे; जीवित कान सर्वोच्च।' ई नियम नामक संविधानमे नब पृष्ठ बनि जुड़ल। पृष्ठ लिखिते ठूँठक हरियर बिन्दु कने आर खुजल।

यन्त्र उठाओल गेल, मुदा ओकरा हटेबासँ पहिने अनन्या कहली, ‘एहि डिब्बाक सेहो नाम लिखू।’ बच्चा सभ पूछलक—‘कोन नाम?’ अनन्या उत्तर देली—‘लोभक कान।’ रजिस्टरमे लिखायल—‘लोभक कान आयल, सुनब नहि सीखल, घुरल।’ एहि पर बूढ़बा भूतक हलुक हँसबाक आवाज फेर सुनाइ पड़ल।

राति पड़ल तखन बिनु यन्त्रक नाम-पाठ भेल। एहि बेर लोक एक-दोसराक लग बैसल, जाहिसँ धीमा स्वर सेहो पहुँचि जाए। कोनो स्वर बहुत ऊँच नहि, कोनो बहुत साफ नहि, कोनो अभ्यासित नहि। ककरो गला काँपैत, ककरो जीभ अटकैत, ककरो साँस टूटैत, ककरो रोदन आवाजकेँ ढाँकि लैत। ओहि टूटल-फूटल स्वर सभक बीच जे थोड़-थोड़ चुप्पी पड़ैत छल, ओहि चुप्पीमे लोकक साँसक आवाज साफ सुनाइ दैत छल—आ ओ साँस-आवाज सभक एक्के छल, चाहे स्वर ककरो होअय। मुदा एहि असमान स्वर सभमे एकटा विचित्र सामूहिक लय बनल—कबड्डी जेकाँ, जाहिमे साँस रोकनाइ आ छोड़नाइ दुनू खेलक भाग हो।

दूर, बाढ़िक पानिमे गोहि सभक आँखि चमकल, मुदा एहि बेर ओ सभ पानि काटि आगाँ नहि बढ़ल। जेना ओ सभ सेहो सुनैत छल। आकाशमे स्वप्नक अनाम ग्रह एक छोट ठंढा बिन्दु जेकाँ देखाइ पड़ल। ओकर दिशासँ कोनो आवाज नहि आबैत छल। गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ ऊपर तकलक। अनन्या धीरे कहली—‘जतय कण्ठ नहि, ओतय नामक ठाम नहि।’

एहि राति अध्याय समाप्त नहि भेल। कण्ठक पहरा राखल गेल, मुदा अगिला खतरा मुँह बान्हि आबि रहल छल—कारण जे आवाज कैद नहि भऽ सकल, ओकरा रोकबाक लेल आब भाषा पर पहरा, छपाइ पर पहरा, पाठ पर पहरा लगाओल जाएत। ठूँठक छाँहमे रजिस्टरक अगिला पृष्ठ अपने-आप खुजल, आ खाली शीर्षक जेकाँ एक शब्द चमकल—‘लेखनी।’

लोकगीत: कण्ठक रखवारी

लोकधुन: कण्ठ-विरहा

पूछू हे पहिने, ‘अनुमति ककर?’ पूछू हे,
कण्ठ हमर साँसक घर—चाभी हमरे हाथ बुझू हे।

जे स्वर बचल, बजार ओकर नकल बनाबै,
रेकर्ड, अनुकरण, बिक्रीसँ साँच कहलाबै।
कण्ठक पहरा कठिन, जीह केकर हाथ?
नेना कहै—अनुमति बिनु नहि उठत बात।

गोहियो राति पानिमे सुनि आगाँ नहि बढ़ल,
स्वप्नक अनाम ग्रह बिनु कण्ठ ठंढा बिन्दु बनल।
जतय कण्ठ नहि, नामक ठाम नहि,
आवाज कैद नहि भेल तँ लेखनीपर पहरा सही।

कण्ठ हमर साँसक घर, ओकर चाभी हमर,
जे नकल करय, पहिने पूछू—अनुमति ककर?
नेना कहलक—अनुमति बिनु ने उठत बात,
जतऽ कण्ठ नहि, ओतऽ नामक ने कोनो ठाम।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—काकक रंग: गढ़ नारिकेलक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल —जेना—"काक कृष्ण अछि, मित्रतनयत्वक कारणे" एहि अनुमानमे शाकपाकजन्यता कृष्णत्व-साध्यक प्रति एकटा संदिग्धोपाधि थिक। उद्भूतरूपवत्त्व आ शाकपाकजत्व उपाधि छथि।]

अध्याय ११६

मौनक उत्तराधिकार

नामक शत्रु खाली झूठ बजनिहार कण्ठ नहि— कखनो साँचक चुप्पी सेहो।

अध्यायारम्भ लोकगीत: चुप्पीमे साँचक बीज

लोकधुन: मौन-पराती

राखू हे धीरज, चुप्पी मे बीज राखू हे,
समयक ओस पाबि ओकरा कोंपल भेल ताकू हे।

चुप्पी खाली नहि रहै, भीतर बीज पलै,
समयक ओस पाबि एक दिन कोंपल बनि निकलै।
पहिने सुनू, तखन बाजू, शब्द रहय विचार,
साँचक चुप्पी तैयारी, भयक मौन बेकार।

मौनक मान राखू मुदा अन्यायपर स्वर दिअ,
सही क्षणमे साँचक बीज धरती फोड़ि दिअ।
चुप्पीमे जागल विवेक जखन वाणी पाबत,
एक मृदु सत्य सय कोलाहल ऊपर छाबत।

भयक मौन खाली घैल, साँचक मौन भरल,
सुनब पहिने, बाजब पाछाँ—ई क्रम सदति सरल।
अन्याय देखि चुप नहि, ओतऽ स्वर उठाउ,
एक मृदु सत्यक आगाँ सय हल्ला हराउ।

❖

एक मौन सत्ता कैँ बचबै छै; दोसर मौन आत्मा कैँ झँपै छै। एक अपराधक संगी छिकै; दोसर घावक पट्टी। पहिलका पर नाम लिखय पड़ै छै, दोसरका पर पहरा देबय पड़ै छै।

खाली कटोरा खाली नै होइ छै। ओहिमे जे नै कहल गेल, से भरल रहै छै— आ ओकर भार ओहीकैँ बुझाइ छै जे उठाबय जाइए।

तें बच्चा जँ खाली बजनिहार नाम सुनत, तँ जे डर, लाज, जाति, देह, हिंसा वा गरीबीक कारणेँ नै बाजि सकल, से फेर छूटि जेतै। मौन चिन्हब सेहो पहरा छिकै।

एगारहम पहराक बाद, जखन कण्ठक पहरा बच्चा सभक हाथमे पहुँचल, तखन सभकैँ लागल जे आब नाम सुरक्षित अछि। मुदा नामक शत्रु केवल झूठ बजनिहार कण्ठ नहि होइत

अछि; कखनो-कखनो ओ साँचक कण्ठोकेँ थका कऽ, कीनि कऽ, रिकार्ड कऽ, नकल कऽ, फेर ओकरा सँ असत्य कहलबैत अछि। एहि कारणेँ नारिकेल पात पाठशालाक बारहम पहरा शुरू भेल—मौनक उत्तराधिकार।

पहिल दिन पाठशालामे शिक्षक किछु नहि कहलनि। बच्चा सभ बैसल रहल, पाँतिबद्ध, हाथमे पात, पाथर, पुरान रजिस्टर। अनन्या सामान्यतया पाठ आरम्भ करैत छलि; ओहो चुप। ईरा विदेशक बच्चा सभक उत्तर-पत्र खोलि राखने छली; ओहो चुप। देविका मोबाइल नहि, अपितु खाली कटोरा लऽ कऽ आयल छली; ओ कटोरा बीचमे राखि देली। कटोरामे न पानि, न धान, न फूल—केवल रिक्ति।

एक बालक बेचैन भऽ पूछलक, “आइ पाठ नहि होएत?” बा कहलीह, “आइ पहिने ओ शब्द पढ़ू जे बाजल नहि गेल।” बच्चा सभ एक-दोसराक मुँह ताकय लागल। बाजल नहि गेल शब्द केना पढ़ल जाए? तखन सत्यव्रत मेहता धीरे-धीरे उठलाह। ओहि दिन हुनकर हाथमे स्याहीकलम नहि छल। ओ खाली हाथ छलाह। कहलनि केवल एतबा—“जखन हम बाजि सकैत छलहुँ आ नहि बजलहुँ, ओ अपराध छल। मुदा जखन पीड़ित नहि बाजय चाहैत अछि, ओकर मौन अधिकार अछि। एहि दुनूमे भेद नहि बुझल जाए, तखन न्याय फेर गोहि बनि जाइत अछि।”

ई वाक्य चन्ना ठूँठक छाँहमे देर धरि टाँगल रहल। बच्चा सभ बुझय लागल जे मौन दू प्रकारक अछि। एक मौन सत्ताकेँ बचबैत अछि; दोसर मौन आत्माकेँ झँपैत अछि। एक मौन अपराधक साथी अछि; दोसर घावक पट्टी। एक मौनक नाम रजिस्टरमे ‘दोष’ लिखल जाए; दोसर मौनक चारू कात पहरा देल जाए।

तहिये नगरसँ आवाज-संग्रहक नब मंडली आयल। ओ सभ कहैत छल—नाम-पाठक मौखिक धरोहर बचबाक चाही; प्रत्येक माय, प्रत्येक विधवा, प्रत्येक ठगल युवक, प्रत्येक डूबल मजदूरक परिवारक कण्ठ सुरक्षित कएल जाएत। पहिने सुनबाक बात, फेर लिखबाक बात, फेर पूछबाक बात—सभ ओकरा सभक पर्चामे सुथर अक्षरमे लिखल छल। मुदा पर्चाक नीचाँ एक छोट पाँतिमे लिखल छल जे संग्रहक उपयोग भविष्यक ‘संवर्धित प्रस्तुति’ लेल सेहो भऽ सकैत अछि।

मीरा पर्चा पढ़ि कऽ मुस्कुरेली नहि। ओ आँखि उठाकऽ पूछली, “जकर आवाज अहाँ सभ लएब, ओकरा फेर कियो ओकर अनुमति बिनु मंच पर, परदा पर, यन्त्रमे, दान-सभामे, पर्यटन-रातिमे बजा सकत?” मंडलीक अगुआ कहलक—“हम सभ सांस्कृतिक संरक्षण लेल करैत

छी।” मीरा उत्तर देली—“संरक्षण जँ कण्ठकेँ ओकर देह सँ अलग कऽ देत, तँ ओ चोरी अछि। आवाज सेहो देहक अंश अछि।”

चन्द्रपाल बत्रा दूर सँ ई दृश्य देखैत छल। ओकरा बुझाइत छल जे आवाजक संसारमे नब कमाइ नुकाएल अछि। चेहरा पर भरोसा टूटल, तखन कण्ठक नकल चलत। नामक चोरीक बाद आवाजक चोरी। ओकर मोनमे पुरान प्रतिशत फेर जागल। मुदा जेना ओ गणना करय लागल, ओकर गला सुखा गेल। किछु दिन पहिने अधूरा नाम लिखैत-लिखैत ओकर हाथ ‘प्रतिशत’ लिखि दैत छल; आब गला सँ आवाजे नहि निकलैत छल।

राघव ‘सिग्नल’ सोमानीक उपकरण पर लगातार सन्देश आबि रहल छल—‘कण्ठ-संग्रह अवसर’, ‘समुदाय-स्वर सूची’, ‘भावनात्मक उपयोग अधिकार’। मुदा प्रत्येक सन्देश खोलिते ओ खाली सुनसान होइत। शब्द देखाइत, ध्वनि नहि। ओकरा पहिल बेर बुझाइत गेल जे नेटवर्क आवाज पहुँचा सकैत अछि, सुननाइ नहि। सुननाइ ओहि ठाम जन्मैत अछि जतय दोसराक मौनकेँ सेहो ठाम देल जाए।

ओहि दिन बच्चा सभ एक नब नियम लिखलक—‘जकरा बाजय के इच्छा नहि, ओकर नाम नहि खिंचल जाए।’ दोसर पाँती—‘मौन सेहो उपस्थित भऽ सकैत अछि।’ तेसर—‘कण्ठक नकल अपराधक नब रूप अछि।’ चारिम—‘जकर आवाज ओकरा सँ छीनल गेल, ओकरा पहिने ओकर मौन घुरा दिअ।’ ई नियम पढ़ल गेल नहि; ठूँठक चारू कात पाथर पर उत्कीर्ण कएल गेल। कारण बच्चा सभ कहलक—किछु नियम चिकरि कऽ नहि, चुप रहि दीर्घ बनैत अछि।

नाम-पाठक पुरान रजिस्टरमे ओहि दिन पहिल बेर एक खाली पन्ना राखल गेल। पन्नाक माथ पर लिखल—‘जे नहि बाजल, मुदा उपस्थित छल।’ लोक अचम्भित भेल। उज्ज्वलक माय अपन बेटाक नाम पढ़ैत समय बहुत बेर कानि चुकल छलीह; ओहि दिन ओ खाली पन्ना पर हाथ रखि बैसल रहलीह। देविका हुनका पूछली नहि। ओ खाली कटोरा हुनका लग खिसका देली। उज्ज्वलक माय कटोराक भीतर अपन नोर नहि, अपन चुप्पी राखलीह।

बा बुझेली—‘मौनक उत्तराधिकार’क अर्थ चुप रहबाक शिक्षा नहि, चुप्पी चिन्हबाक शिक्षा अछि। बच्चा जँ केवल बजनिहार नाम सुनत, तँ जे डर, लाज, जाति, देह, हिंसा, गरीबी, प्रेम, वा अपराधक कारणेँ नहि बाजि सकल, ओ फेर छूटि जाएत। जँ बच्चा मौनक पहरा सीखत, तँ स्मृति आधा नहि रहत।

गंगेशक प्रश्न फेर उठल। प्रत्यक्षमे कियो नहि बाजि रहल अछि—तखन प्रमाण की? अनुमानमे आँखि भीजल अछि—की ई पर्याप्त? शब्दमे नाम नहि—तखन अस्तित्व केना? अनन्या अपन ढंगेँ उत्तर देली—'जखन कोनो जीवित मनुष्य अपन मौनकेँ हमरा बीच राखैत अछि, तखन ओ मौन स्वयं शब्द बनैत अछि। ओहि शब्दक अक्षर नहि, भार पढ़बाक चाही।' पाठशालाक बच्चा सभ एहि वाक्यकेँ बहुत देर धरि दोहरबैत रहल।

तहिये एक छोट घटना भेल। नकली भूतक जुलूसमे जे बालक मुखौटा उतारि देने छल, ओ अपन बहिनकेँ लऽ कऽ आयल। बहिन बाजि नहि सकैत छली। हुनकर कण्ठमे जन्मसँ ध्वनि नहि छल। शहरक कतेको लोक हुनका 'बेचारी' कहि चुप करबैत छल, कतेको लोक हुनकर हाव-भावक तमाशा बनबैत छल। ओ चन्ना ठूँठ लग आयली, हाथमे एक पात। पात पर किछु रेखा खिंचल छल—न अक्षर, न चित्र।

बच्चा सभक बीच सन्नाटा पसरल। केओ ओहि रेखाकेँ पढ़ि नहि सकल। बालिका मुस्कुरेली। ओ पात खाली कटोरामे राखि देली। कटोरा एकाएक हलुक काँपल। ठूँठक भीतर सँ हवा उठल, पातक रेखा पर धूलि जमल, आ रेखा धीरे-धीरे एक गोल घेरामे बदलि गेल—कबड्डीक घेरा। बाजि नहि सकनिहारि बालिका ठूँठक चारू कात दौड़ली, साँस रोकने, आवाज बिनु। हुनका पाछाँ बच्चा सभ दौड़ल—कियो 'कबड्डी' नहि कहलक, मुदा खेल चलि गेल।

ओ खेल अद्भुत छल। सामान्य कबड्डीमे साँसक ध्वनि सँ खेलाड़ीकेँ चिन्हल जाइत अछि। एहि खेलमे साँस भीतर चलैत छल; बाहरी ध्वनि नहि। जँ कियो धोखा देत, ओकर पएर भारी भऽ जाए। जँ कियो सचमुच साँस सँ खेलत, ओकर देह हलुक। खेल चलैत रहल तँ एक विचित्र बात देखाइ पड़ल—पएरक थपथपी, माटिक खसब, आ कपड़ाक सरसराहट, ई तीनू आवाज एतेक साफ सुनाइ देब लागल जे बुझायल जेना ई सभ आवाज पहिनहुँ छल, मुदा बजनिहार स्वरक नीचाँ नुकायल रहैत छल। गामक बूढ़ सभ कहलक—'आब भूतक खेल बच्चा सभकेँ मौनमे सेहो सिखा रहल अछि।'

ई दृश्य देखि आवाज-संग्रहक मंडली अपन यन्त्र समेटय लागल। ओकरा सभक यन्त्र मौन रिकार्ड नहि कऽ सकैत छल। ओ सभ पूछलक—'एहि खेलक नाम की?' अनन्या उत्तर देली—'कबड्डी। मुदा एहि बेर कण्ठ भीतर अछि।' मंडलीक अगुआ कहलक—'बिनु ध्वनिक कबड्डी?' बा कहलीह—'बिनु न्यायक अदालत देखि चुकलहुँ। बिनु कण्ठक कबड्डी देखब अहाँ सभकेँ कठिन किएक लगैत अछि?'

सत्यव्रत मेहता एहि खेलकेँ देखैत रहलाह। हुनकर आँखिमे एक अजीब शान्ति छल, मुदा मुक्ति नहि। ओ जनैत छलाह जे अपन अपराधक मौनक भार हुनका जीवन भरि उठबय पड़त। मुदा ओहि बालिकाक मौनक पहरा दैत बच्चा सभकेँ देखि हुनका बुझाइत गेल—ओ अपन भार अगिला पीढ़ी पर लादि नहि रहल छथि; ओ केवल ओकरा सभकेँ ई सिखा रहल छथि जे कोन मौन तोड़बाक, आ कोन मौन बचएबाक।

राति भेल। खाली पन्ना रजिस्टरमे खुजल छोड़ल गेल। ओहि पर ककरो नाम नहि लिखल गेल, मुदा पन्ना खाली नहि लगैत छल। ओकर ऊपर दीयाक धुँआ बारीक परत बनि जमल। पृष्ठक एक कोनमे स्वतः एक कारी बिन्दु उभरल। बच्चा सभ ओकरा 'मौनक बिन्दु' कहलक।

उज्ज्वलक माय ओहि बिन्दु पर हाथ राखि बहुत धीरे कहलीह—'आइ हमर बेटा पहिल बेर हमरा सँ किछु नहि माँगलक।' देविका हुनकर हाथ पकड़ली। मीरा खाली कटोरा उठा लेली। कटोरा एखनहुँ खाली छल, मुदा जे सभ ओकरा देखलक, ओकरा सभकेँ बुझाइत गेल जे ई रिक्ति भरल अछि—अकथ कथा सभसँ।

ओहि राति लाउ किन-हंगक स्वप्नमे एक विचित्र घटना भेल। जे सभ कण्ठ-संग्रहक प्रतिध्वनि ओतय पहुँचबाक छल, से नहि पहुँचल। ओतुक्का चमकैत देबाल पर केवल एक खाली वृत्त बनल—कबड्डीक मौन घेरा। लाउ किन-हंगक स्वप्न-देह ओकरा देखलक आ घबरा उठल। ओ धीमे स्वरमे बाजल, "मौन जमा नहि कयल जा सकैत अछि।" जतय बजार ध्वनि बेचि सकैत छल, ओतय मौन ओकर हाथसँ फिसलि गेल।

भोरसँ पहिने अनन्या अगिला पन्ना पर लिखली—'आब आँखिक पहरा।' कारण जँ कण्ठ बचल, मौन बचल, तखन बजार दृष्टि पर हमला करत। जे बजैत नहि, ओकर चेहरा बेचत। जे मौन रहय चाहत, ओकर नोर देखाओत। जे उपस्थित अछि, ओकर देहकेँ तमाशा बनाओत।

ठूँठक भीतर सँ एतबे उत्तर आयल—एकदम हलुक, पातक छाह जेकाँ आवाज—'देखू, मुदा खाउ नहि। मौनक उत्तराधिकार एतय समाप्त नहि भेल; ओ आँखि धरि पहुँचबाक राह खोलि गेल।

लोकगीत: साँचक चुप्पी

लोकधुन: मौन गीत

राखू हे नेह, मौनक उत्तराधिकार राखू हे,

चुप्पी अपराधक नहि—कखनो आत्माक गेह हे।

नामक शत्रु झूठक कण्ठ मात्र नहि,
साँच थाकि चुप रहल, ओहो खतरा सही।
बजार आवाज कीनै, मौन ससरि जाए,
कबड्डीक मौन घेरा जालसँ बाहर रहि जाए।

जे बाजय नहि चाहै, ओकर नोर नहि बेचू,
चेहरा तमाशा नहि, निजताक दुआर देखू।
ठूँठ कहलक—देखू, मुदा खाउ नहि,
दृष्टिक अधिकार बिनु ज्ञानो पवित्र नहि।

मौनक उत्तराधिकार हाथमे राखू नेह,
जे बाजय ने चाहय, ओकर नोर ने बेचू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—अन्योन्याश्रय: जखन हाथ अग्निक सम्पर्कमे अबैत अछि आ ओतय मणि नहि रहैत अछि, तखन 'प्रतिबन्धकाभाव' उपस्थित रहैत अछि, कारण-सामग्री पूर्ण होइत अछि आ हाथ जरैत अछि। अन्योन्याश्रय।]

अध्याय ११७

स्मृतिक ऋण

सुनल नामक ऋण होइ छै, आ ऋणक कोनो श्राद्ध नहि— खाली चुकता।

अध्यायारम्भ लोकगीत: स्मृति चुकाउ सेवा सँ

लोकधुन: ऋण-मंगल गीत

चुकाउ हे ऋण, सुनल नामक ऋण चुकाउ हे,
फूल नहि, सेवाक थारी आगाँ बढ़ाउ हे।

सुनल नामक ऋण रहै, सेवा ओकर ब्याज,
स्मृति केवल फूल नहि, जिम्मेदारी आइ।
जकर कथा सुनलहुँ, ओकर हकक संग रहू,
विद्यालय, दस्तावेज, सहायता केर रंग रहू।

ऋण चुकाउ धनसँ नहि, न्यायपूर्ण व्यवहार,
अगिला पीढ़ीकेँ सिखाउ मानव मानक सार।
स्मृतिक उधार सेवा सँ धीरे-धीरे चुकत,
नामक मान बचेनिहारक आत्मा हलुक होएत।

जकर कथा कान मे अछि, तकर हक हाथ मे,
पोथी-दवाइ-रोजगारक दीप ओकर साथ मे।
धन सँ नहि, न्याय सँ सधैत अछि ई करजा,
सधल ऋणक हलुक मोन—इहए असल दरजा।

❖

सुनल नामक ऋण होइ छै, आ ऋणक कोनो श्राद्ध नहि— खाली चुकता। जकर नाम कान मे पड़ि गेलै, ओकर हिसाब खुलि गेलै; आब ओ हिसाब फूल-माला सँ नै, काज सँ सधतै।

ई ओ ऋण नै छिकै जे पाइ सँ उतरै छै। महाजनक ऋण मे सूद लगै छै; एहि ऋण मे चाल लगै छै— जे सुनलक, तकरा अपन चलब बदलय पड़ै छै।

नाम बिनु काज पाथर छिकै; काज बिनु नाम हवा। पाथर राखल रहि जाइए, हवा उड़ि जाइए। दुनू कैँ जोड़नाइ पड़ै छै, तखने स्मृति ठाढ़ होइ छै।

आ जे कहै छै जे लिअ, राशि लिअ, ऋण उतरि गेलै— तकरा सँ एतबे पुछू: मुक्ति ककर? जकरा ऋण बुझले नै, तकर मुक्ति-पत्र छल छिकै।

मौनक उत्तराधिकार भेटलाक अगिला बिहान नारिकेल पात पाठशालाक भीत पर बच्चा सभ कोयलासँ एकटा नब प्रश्न लिखलक—“जे नाम सुनल गेल, ओकर ऋण के उठाओत?” प्रश्न लिखिते भीतक चुना कने झड़ल, जेना पुरान घर अपने माथ खुजला रहल हो। कोयलाक नोक भीत पर एहन चलैत छल जेना कियो दाँत पर दाँत रगड़ैत हो, आ अक्षर बनितहि आँगुरक पोर करिया भऽ जाइत छल। आब धरती, बीज, माटि, जल, आगि, वायु, आकाश, शब्द, अर्थ, कण्ठ आ मौन अपन-अपन पहरा देने छल; मुदा पहराक अर्थ केवल राखब नहि, उठाएब सेहो होइत अछि। स्मृति जँ केवल सम्हारि देल जाए, तँ ओ पाथर बनैत अछि; स्मृति जँ ऋण बनि जाए, तँ मनुष्यकेँ चलब सिखबैत अछि।

बच्चा सभ पहिने ऋण शब्द सुनिते चौंकल। ऋण तँ ओ सभ बाबूजीक कर्ज, सूद, गिरवी, बैंकक नोटिस, महाजनक हँसी, बटाइदारक झुकल पीठ, आ धान कटला पर बचल खाली कोठीक अर्थमे बुझैत छल। अनन्या कहली, “ई ओ ऋण नहि जे पाइ सँ उतरि जाए। ई ओ ऋण अछि जे नाम सुनलाक बाद जीवनक चाल बदलल बिनु नहि उतरैत।” एहि वाक्य पर किछु बूढ़ लोक एक-दोसराक दिस तकलक; कारण जीवनक चाल बदलबाक बात कागच पर सुन्दर, देह पर कठिन होइत अछि।

ईरा पहिल अभ्यास राखली। प्रत्येक बच्चा अपन घरसँ एकटा एहन नाम आनत जे घरमे बाजल जाइत अछि, मुदा सम्मानसँ नहि; वा जे बाजल नहि जाइत, मुदा सभक भोजन, खेत, देह, श्रम, वा लाजमे नुकाएल अछि। बच्चा सभ दुपहर धरि नाम तकय निकलि गेल। घर-घरक पुरनका सन्दूक, कोठीक तर, आ बहीक बीचसँ जे नाम निकलल, ओहि सभ पन्नामे सीलनक ओ हलुक गन्ध बसल छल जे बरखों बन्द रहला पर कागचमे उतरि जाइत अछि। कियो दादीक मायकक नाम आनलक, कियो ओ मजदूरक नाम जे घर बनौने छल मुदा गृहप्रवेशमे नहि बजाओल गेल, कियो ओ स्त्रीक नाम जे इनारक पानि खिंचैत मरली मुदा परिवारक वंशावलीमे नहियेे लिखायल।

एक बालक अपन कागच पर लिखने आयल—“चर्मकारणी।” ओकरा पूरा नाम नहि भेटल छल। घरक पुरान लोक कहने रहय—गंगेश उपाध्यायक जीवनमे एक चर्मकारणी छली, मुदा ओकर नाम नहि लिअ; तत्त्वचिन्तामणि पढ़ू, कथा छोड़ू। बालक पूछलक, “जँ तत्त्वचिन्तामणि बारह हजार ग्रन्थ बराबर अछि, तकर भीतर ओ स्त्रीक नामक एक अक्षरक ठाम नहि?” पाठशालामे सन्नाटा पसरि गेल।

तहिया गंगेशक प्रश्न फेर घुरल। किछु विद्वान लोक जे पछिला नाम-उत्सवमे सम्मानित पाहुन बनि आएल छल, कहय लागल—“इतिहासमे प्रमाण चाही। लोककथा पर कुल न बिगाड़ू।” बच्चा सभ हँसल नहि; ओ सभक आँखि गम्भीर भऽ गेल। अनन्या भीत पर लिखलक —“प्रमाणक अभाव ककरा बचबैत अछि?” ई प्रश्न ओहि लोक सभक माथ पर पानिक ठंढ बून्द जेकाँ पड़ल। गंगेश जँ नव्य न्यायक जन्मदाता छथि, तँ हुनकर नामसँ पहिने न्याय पूछब जरूरी छल।

बा धीरे बजलीह, “शास्त्रक माथ पर माल्यार्पण करब आसान अछि, शास्त्रक देहक काँट छूब कठिन। जे समाज गंगेशक बुद्धि स्वीकार करैत अछि, मुदा हुनकर जीवनक असुविधाकेँ काटि फेकैत अछि, से हुनका आधा मारैत अछि।” आरुणि ई सुनि जोड़ि देलनि—“जँ सम्मानक नाम पर असुविधाजनक गंगेशकेँ साफ मूर्ति बना देल गेल, तँ ई चाकू फूलक मालामे नुकाएल छल। ई हत्याक रक्त बाहरी नहि, स्मृति भीतर बहैत अछि।”

मीरा चर्मकारणी शब्दक लगमे खाली ठाम छोड़ि देली। ओ कहली, “नाम नहि भेटल, तँ ओकर अनुपस्थितिकेँ नाम बनाउ। जखन नाम भेटत, भरब; मुदा खाली जगह केओ मेटाएब नहि।” एहि तरहेँ पाठशालाक भीत पर पहिल रिक्ति बनल। रिक्ति डरौना नहि छल। ओ न्याय-दर्शनक ओहि खिड़की जेकाँ छल जतयसँ समाजक जाति-लाज भीतर धकेलल सत्य फेर बाहर तकैत अछि।

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन पाछाँ बैसल छलाह। ओ किछु निर्णय नहि देलनि। हुनकर कापीमे मात्र एक पाँती लिखल गेल—“जाति-लाज: स्मृतिहत्या।” लिखि कऽ ओ पन्ना बन्द नहि केलनि। पन्ना खुजले रहल, जेना अदालतमे खुजल सबूत। जे लोक हुनका सँ कानूनक भाषाक अपेक्षा कएने छल, से देखलक जे कानूनक लोक आब एकटा शब्दक भार सँ जूझि रहल छथि। मौनक उत्तराधिकार हुनका चुप नहि बनौने छल; ओकरा सुनबामे उत्तरदायी बनौने छल।

गोप कुमार अभिलेखक पुरान पन्ना आनलनि। ओकरा सभमे धनक हिसाब, पुलक मजदूर, अस्पतालक बिल, डिजिटल ठगीक खाता, विदेशी दान, सरकारी निविदा सभक रेखा छल। ओ कहलनि, “एहि सभमे ऋण लिखल अछि, मुदा सभ गलत नामेँ। जे लूटलक, से देनदार नहि लिखायल। जे मरल, ओकरा ऊपर खर्च लिखायल। जे चुप रहल, ओकरा जिम्मेदार नहि मानल गेल।” बच्चा सभ बुझलक जे स्मृतिक ऋण उनटा लिखल संसारक खाताबही सोझ करबाक नाम अछि।

तखन पहराक नियम बनल। जे नाम सुनल जाए, ओकरा लग केवल फूल नहि चढ़त; एकटा काज बान्हल जाएत। मजदूरक नामक लग श्रमक सम्मानक काज। ठगल युवकक नामक लग स्क्रीन-सावधानीक पाठ। देह-अपमान झेलल स्त्रीक नामक लग निजताक पहरा। जाति सँ दबाओल नामक लग एक संग भोजन। जलसमाधि भेल देहक लग नदीक सफाई नहि, नदीक अधिकारक गवाही। चर्मकारणी रिक्तिक लग जाति-सत्यक पाठ। बच्चा सभ कहलक—"नाम बिनु काज पाथर अछि; काज बिनु नाम हवा।"

ई नियम सुनिते धूर्त सभक भीतर घबराहट उठल। बटुकनाथ हरिहरन, जे क्षमा माँगि कऽ अपन नाम बचबय चाहैत छल, बुझलक जे एतय नोर पर्याप्त नहि। चन्द्रपाल बत्रा, जे प्रतिशतक अधूरा नाममे फँसल छल, बुझलक जे स्मृतिक ऋण दान-पेटीमे नहि उतरैत। राघव सिग्नल अपन अदृश्य जालमे लिखलक—"ऋणकेँ दान बनाउ; दानकेँ छवि बनाउ; छविकेँ नियन्त्रण बनाउ।" मुदा सन्देश पात पर खसिते वाक्य बदलि गेल—"ऋणकेँ कारज बनाउ।"

दुपहरिया बाद एक अजनबी बाबू आयल। ओकर हाथमे नब छपल पत्र छल—"स्मृति-ऋण मुक्ति योजना।" भाषा मीठ छल। योजना कहैत छल—जाहि परिवार सभक नाम स्मृति-अभिलेखमे अछि, हुनका सभकेँ सरकार, निजी दाता, आ विरासत-परियोजना मिलि 'सम्मान-राशि' देत; बदलामे परिवार आधिकारिक स्मारकक कथा स्वीकार करत, स्वतन्त्र नाम-पाठक आवश्यकता नहि रहत। पत्रक कोनमे तीनटा चिन्ह—सरकारी मोहर, ब्रूमक संस्थाक छोट प्रतीक, आ बटुकनाथक न्यासक हस्ताक्षर।

बा पत्र पढ़ि कऽ हँसलीह नहि, कानलीह नहि। ओ पत्र अनन्याकेँ देलनि। अनन्या ओकरा ठूँठक कगार पर राखि पूछली, "ई ऋण मुक्त करय आयल अछि, कि ऋणक मालिक बनय?" बच्चा सभ एक संग कहल—"पहिने प्रमाण।" बाबू कहलक—"पत्रमे मोहर अछि।" अनन्या उत्तर देली—"मोहर प्रत्यक्ष नहि, दावा अछि। दावा पर प्रश्न होएत।" गंगेशक प्रश्न आब बच्चा सभक बोलीमे छूरी जेकाँ तेज भऽ गेल छल।

ओहि साँझ जाति-बला प्रश्न फेर उठल। गामक एक वृद्ध कहलक, "चर्मकारणी रिक्तिकेँ गंगेशक लग राखब उचित नहि। मर्यादा अछि।" तखन ओहि बालक, जे कागच पर चर्मकारणी लिखने आयल छल, धीरे कहलक, "जँ मर्यादा नाम खाए, तँ ओ गोहि सँ कम नहि।" सभ चुप। गोहि सभ देह चिबा सकैत अछि; जाति मर्यादा नाम चिबैत अछि—एहि तुलनाकेँ सुनि पानिक सतह पर हलुक लहरि उठल।

मीरा ओहि रिक्तिकेँ लाल घेरा सँ घेरि देली। देविका ठगल युवकक नामक लग लिखली—“ककरो भय बेचि लाभ नहि।” सौम्या मजदूरक नामक लग लिखली—“श्रम बिनु स्मारक अपूर्ण।” ईरा विदेशक बच्चा सभकेँ पठएबाक लेल नब पत्र आरम्भ केली—“गामक ऋण धन नहि माँगैत, चाल बदलय कहैत अछि।” आरुणि नदीक किनार माप केलनि, मुदा एहि बेर पुलक नाप नहि—जे पानि नाम धोइत अछि, ओकर बहावक नाप। फीता खिंचबाक बेर हाथमे जे कम्पन भेल, से पहिल बेर लोहाक भार सँ नहि, नामक भार सँ छल।

रातिमे कबड्डी फेर शुरू भेल। मुदा एहि बेर खेलक रेखा केवल धरती पर खिंचल नहि छल। प्रत्येक नामक पाथर सँ एक सूक्ष्म रेखा उठि खेलाड़ी सभक पएर धरि आबैत। ओ रेखा पएर मे बान्हल डोरि जकाँ नहि, ओस-भीजल माटिक ठंढक जकाँ लगैत छल—जे तरबाक नीचाँ लागि कऽ धीरे-धीरे घुट्ठी धरि चढ़ि जाइत अछि। जखन कोनो बालक ‘कबड्डी’ कहि विरोधी घेरामे घुसैत, ओकर साँसक संग ओहि नामक ऋण सेहो जाइत। घुरैत काल ओकरा केवल छू कऽ भागब नहि, एकटा काज कहब पड़ैत—“हम नदीक पानि देखब,” “हम जातिक नाम नहि मेटाएब,” “हम स्क्रीनक छल बुझाएब,” “हम चर्मकारणी रिक्ति बचाएब।”

बूढ़बा भूत ओहि राति पहिल बेर खुल्लमखुल्ला हँसलाह। ओ कहलनि, “एखन खेल ठीक भेल। जे बिनु ऋणक खेलैत अछि, से केवल दौड़ैत अछि; जे ऋण लऽ कऽ घुरैत अछि, से कथा बचबैत अछि।” बच्चा सभ खेल रोकलक नहि। आकाशमे स्वप्नक अनाम ग्रहक हलुक धब्बा देखाइ पड़ल। शायद ओ सभ सेहो देखैत छल जे पृथ्वी पर नामक ऋण मुक्ति-राशि सँ नहि उतरैत; ओ देह, चाल, भोजन, प्रेम, पानि, श्रम, आ बजबाक ढंगमे उतरैत अछि।

मध्यराति बीतलाक बाद स्मृति-ऋण मुक्ति योजना बला पत्र अचानक नम भऽ गेल। ओकरा पर लिखल मोहर सभ पसरि कऽ धुँआ बनल, मुदा तीन शब्द स्पष्ट रहि गेल—“मुक्ति ककर?” अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—“काल्हि ऋण-मुक्तिक प्रश्न।” सत्यव्रत मेहता दूर बैसल ओ पाँती देखलनि आ अपन कापीमे जोड़लनि—“जकरा ऋण बुझले नहि, ओकर मुक्ति-पत्र छल होइत अछि।”

एहि तरहेँ तेरहम पहरा समाप्त नहि भेल। स्मृतिक ऋण अबैत कालक देहरी पर ठाढ़ रहल। चन्ना ठूँठक हरियर बिन्दु राति भरि चमकैत रहल, आ प्रत्येक चमक पूछैत रहल—नाम सुनलहुँ, आब अहाँक कारज की?

लोकगीत: स्मृतिक उधार

लोकधुन: ऋण-गीत

मानू हे उधार, स्मृतिक उधार मानू हे,
अगिला पीढ़ीकेँ साँचक हिस्सा दऽ जाउ हे।

सुनल नामक ऋण, ओकर श्राद्ध नहि होइ,
चुकता काजसँ होइत, फूल-माला सँ नहि कोइ।
स्मृति देह, चाल, भोजन, प्रेममे उतरै,
पानि, श्रम, बजबाक ढंगमे पीढ़ीभरि फिरै।

'ऋण-मुक्ति' पत्र नम, मोहर धुँआ बनल,
तीन शब्द बचल—'मुक्ति ककर?' प्रश्न जगल।
नाम सुनलहुँ, आब कारज की? पात पूछै,
जकरा ऋण बुझल नहि, ओकर मुक्ति छल सूझै।

स्मृतिक उधार मानू, जीवनमे चुकाउ,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—केवलव्यतिरेकी अनुमान: उदाहरण: "पृथ्वी अन्य आठ द्रव्यसँ भिन्न अछि, गन्धवत्त्वक कारणे।]

अध्याय ११८

देहक अधिकार

नाम बचि गेल, स्वर सुनल गेल— मुदा देहक अधिकार बिनु सभटा आधा।

अध्यायारम्भ लोकगीत: पूरा देह, पूरा मान

लोकधुन: देह-अधिकार मंगल

गनू हे पूरा, देहक हक पूरा गनू हे,
साँस-निन्न-श्रम-सहमति—चारू धन गुनू हे।

नाम बचल तँ नीक, मुदा देहक मानो चाही,
स्वास्थ्य, सुरक्षा, सहमति—जीवनक साँची थाती।
हाथक श्रम, आँखिक निन्न, छातीक साँस गनू,
मनुखकेँ आधा नहि, पूरा अधिकार दियौ।

देह अपन, निर्णय अपन, उपचार सभकेँ समान,
कामक ठाम सुरक्षा हो, विश्रामक सम्मान।
पूरा देह, पूरा मान—गीत घर-घर गाउ,
जीवनकेँ सम्पूर्ण बुझि न्याय समाज बनाउ।

हाथकेँ विश्राम चाही, आँखिकेँ निन्न भरि,
छातीकेँ निर्भय साँस, मोनकेँ अपन घर।
उपचार सभक बराबरि, काजक ठाम सुरक्षा,
आधा नहि, पूरा मनुख—इहए असल शिक्षा।

❖

देह पर पहिल अधिकार देहधारीक। जे कहय चाहै छै, ओकर शब्द ओकरे संग चलत; जे नै कहय चाहै छै, ओकर मौन सेहो ओकरे। जखन देह पर दोसरक दावा शुरू होइ छै, तखन जाति, बजार, धर्म, कैमरा आ कानून— सभ एक्के कुलक देखाइ पड़ै छै।

समाज बुद्धि केँ आसन पर चढ़ा दै छै आ देह केँ नीचाँ दाबि दै छै। विचारक मूर्ति बनै छै, देहक कथा गाड़ल जाइ छै। जकर विचार जातिक पिंजड़ा फोड़ि सकै छल, ओकरे शास्त्रक ऊँच आसन पर बैसा कऽ चुप करा देल जाइ छै।

तें जे देहक नाम नै लिखै छै, से देहक माटि पर अधिकार नै पाबि सकै छै। छूअय सँ पहिने पुछय पड़ै छै— आ जे नै पुछैए, ओकर हाथ पहरुआक नै, चोरक छिकै।

स्मृतिक ऋणक बात जखन चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात पसरल, तखन बच्चा सभ बुझलक जे ऋण केवल नामक नहि होइत अछि। नाम बचा लेल गेल, स्वर सुनल गेल, मौनक उत्तराधिकार लिखल गेल; मुदा देह? जे देह जलसमाधिमे डूबल, जे देह गोहि सभ चिबा गेल, जे देह पुलक पाया तर दबि गेल, जे देह अस्पतालक बिलमे रोकल गेल, जे देह जातिक नाम पर अपमानित भेल, जे देह कैमरा आ शोधक भूखमे नमूना बनाओल गेल—ओहि देहक अधिकार कोन पन्ना पर लिखल अछि?

एहि प्रश्नक आरम्भ अनायास भेल। विरासत-परियोजनाक लोक एकटा नब सूची लऽ कऽ आयल। सूचीमे लिखल छल—‘संग्रहणीय वस्तु: चन्ना गाछीक जड़ि-माटि, बाढ़िक जल-नमूना, पुरान कपड़ा, अस्थि-सदृश अंश, मृतक परिवारक मौखिक सामग्री, स्त्री-संस्मरण, श्रमिक उपकरण, डिजिटल उपकरण।’ भाषा नम्र छल, शब्द वैज्ञानिक छल, उद्देश्य सांस्कृतिक कहल गेल; मुदा मीरा सूची पढ़िते कागचक कोन दाबि देली। ओ कहली, ‘जिनकर देह गेल, हुनकर देहक अवशेष अहाँ सभक प्रदर्शनी नहि।’

मीरा जखन ‘देहक अधिकार’ कहैत छली, हुनकर स्वर सदिखन दृढ़ नहि रहैत। कखनो कोनो अनचिन्हार मोबाइल-घण्टी सुनिते हुनकर करेज धकसँ करैत; कखनो भीड़मे उठल कैमरा देखि हथेली ठण्ढा पड़ि जाइत। ओ अपन डरकेँ कमजोरी नहि कहली—‘देह पहिने खतरा मोन पाड़ैत अछि; न्याय ओकरा फेर सुरक्षित समय सिखबैत अछि।’

एडवर्ड ब्रूमक नब प्रतिनिधि बुझाबय चाहलक—“ई मात्र संरक्षण लेल अछि।” देविका हँसली नहि; हुनकर आँखि कठोर भऽ गेल। ओ कहली, ‘संरक्षण ओ अछि जे परिवारक अधिकार सुरक्षित करय। जे दुखकेँ काँचक भीतर बन्द कऽ टिकट बेचय, से संरक्षण नहि, दोसर बेर चिबाएब अछि।’ एहि वाक्य पर ठूँठक भीतर कने चिरचिराहट उठल। जेना पुरान जड़ि कहि रहल हो—देह काटल जा सकैत अछि, मुदा काटनिहारक भाषा सेहो सुनल जाइत अछि।

आरुणि ओ सूची हाथमे लेलनि। हुनका पुलक पाया मोन पड़ल, जतय नाप-जोखक लोभमे मजदूरक देह फाइल सँ गायब कऽ देल गेल छल। ओ देखलनि जे सूचीमे ‘श्रमिक उपकरण’ लिखल अछि, मुदा ‘श्रमिकक परिवारक अनुमति’ नहि। ‘अस्थि-सदृश अंश’ लिखल अछि, मुदा ‘श्राद्ध’, ‘दाह’, ‘दफन’, ‘धर्म’, ‘गरिमा’ कोनो शब्द नहि। ओ धीरे कहलनि, ‘जे देहक नाम नहि लिखैत, से देहक माटि पर अधिकार नहि पाबि सकैत।’

तहिया नारिकेल पात पाठशालामे विशेष पाठ आरम्भ भेल—देहक अधिकार। बच्चा सभ पहिने अपन-अपन हाथ देखलक। अनन्या कहली, ‘ई हाथ नाम लिखैत अछि। मुदा जँ ई हाथ

ककरो अनुमति बिनु ओकर फोटो खिंचय, ओकर कपड़ा छुअय, ओकर दुःख पूछय, ओकर अस्थि उठाबय, तखन ई हाथ पहरुआ नहि, चोर भऽ जाएत।' बच्चा सभ चुप। ओ सभ पहिल बेर बुझि रहल छल जे स्मृति बचाएब आ स्मृति छीनब बीच केवल नीयत नहि, विधि सेहो चाही।

मीरा स्त्री सभक राति-सभाक नियम फेर पढ़ली। देहक कथा देहधारीक अधिकारमे। जँ कोनो स्त्री अपन अपमान कहय चाहैत अछि, तखन ओकर शब्द ओकरा संग चलत; जँ ओ नहि कहय चाहैत, तखन ओकर मौन सेहो सम्मानित। कोनो शोधार्थी, कोनो पत्रकार, कोनो धर्माधिकारी, कोनो अदालत, कोनो परिवार, कोनो प्रेमी, कोनो पति, कोनो समाज ओकर देहक कथा पर मालिक नहि। मीरा कहली, 'जखन देह पर दोसरक दावा शुरू होइत अछि, तखन जाति, बजार, धर्म, कैमरा, आ कानून सभ एकहि कुलक देखाइ पड़ैत अछि।'

ई वाक्य सुनि गंगेशक प्रश्न फेर घुरल। पाठशालाक भित्ति पर बच्चा सभ लिखलक—'प्रमाण कोन? अधिकार कोन? देह ककर?' तत्त्वचिन्तामणिक स्मरण एहि बेर पुस्तकक रूपमे नहि, प्रश्नक दीपक रूपमे आयल। जँ न्याय प्रत्यक्ष पर विश्वास करैत अछि, तँ देहक पीड़ा सँ पैघ प्रत्यक्ष की? जँ अनुमान मान्य अछि, तँ अपमानित देहक काँपि उठल मौन सँ पैघ अनुमान की? जँ शब्द प्रमाण अछि, तँ पीड़ितक अपन शब्द सँ पैघ शब्द की?

तहिया बा एकटा पुरान कथा कहलीह। 'गाममे लोक गंगेशक बुद्धिक पूजा करैत रहल, मुदा हुनकर जीवनक असुविधा सँ डेराइत रहल। जकर विचार जातिक पिंजड़ा फोड़ि सकैत छल, ओकरा शास्त्रक ऊँच आसन पर राखि देल गेल, जाहिसँ ओकर देहक कथा नीचाँ दबि जाए।' बच्चा सभ बुझि गेल जे देहक अधिकार केवल आजुक सवाल नहि; बरखों सँ विचार आ देह अलग करबाक चाल चलैत रहल अछि। समाज विचारक मूर्ति बनबैत अछि, मुदा ओकर देहक विद्रोहकेँ मारैत अछि।

ओहि दिन एक बाहरी दल चर्मकार टोला दिस गेल। ओ सभ कहैत छल—'लोक-संस्कृति दस्तावेज बनत।' हुनका सभक कैमरा पहिने घरक दुआर पर, फेर हाथ पर, फेर औजार पर, फेर स्त्री सभक चेहरा पर टिकि गेल। टोला सँ एक वृद्धा बाहर आयली। ओ कहली, 'हमरा सभक हाथ लिखू, मुदा हमरा सभकेँ छूअबाक अधिकार ककरा दैत छी से पहिने पूछू। हमरा सभक जाति लिखू, मुदा हमर अपमान सँ कमाइ करबाक अनुमति ककरा देल गेल?' कैमरा नीचाँ झुकि गेल।

अनन्या ओ वृद्धाक वाक्य पाठशालाक पन्ना पर लिखलक। ओ पन्ना बादमे 'देह-संहिता' कहल गेल। पहिल नियम—देह पर पहिल अधिकार देहधारीक। दोसर—मृत देहक अधिकार

परिवार, समुदाय आ गरिमाक संग। तेसर—जातिक नाम पर देहक अपमान स्मृतिक अपराध। चारिम—ककरो घाव पर शोध, कला, धर्म, दान, पर्यटन, शिक्षा, कानून, वा क्रान्ति नामक दावा बिनु अनुमति नहि। पाँचम—जँ देह बाजि नहि सकैत, तखन ओकर पक्षमे सभसँ पहिने मौनक सम्मान। ई पाँचो नियम मानो एक-दोसराक हाथ पकड़ने ठाढ़ छल।

सत्यव्रत मेहता ओ नियम सुनि रहल छलाह। हुनकर कान पर ई शब्द सरल नहि पड़ल। कानूनमे देहक अधिकार धारा सभमे रहैत अछि; मुदा एतय ओ लोकक साँस, लाज, स्पर्श, शव, अस्थि, कपड़ा, खून, आ पसीनाक रूपमे आबि रहल छल। ओ पहिल बेर अपन पुरान बहस सभ मोन केलनि—कतेक बेर देहक मुद्दा कागचक 'प्रकरण' बनि गेल, कतेक बेर देहक अपमान 'प्रमाणक अभाव'मे छूटि गेल, कतेक बेर मृतकक फोटो अदालतमे घुमल, मुदा ओकर गरिमा ककरो नहि देखायल।

ओ उठि कऽ बच्चा सभक सोझाँ नहि बजलाह। केवल रजिस्टरक खाली पन्ना पर लिखलनि—'न्याय देहसँ शुरू नहि होअय, तँ न्याय शब्दक खेल रहि जाइत अछि।' अनन्या पन्ना पढ़लक आ पाछाँ जोड़ि देलक—'देहक बिनु नाम अधूरा।' सत्यव्रत पहिल बेर मुस्कुरेलाह, मुदा ओ मुस्कान लाजक छल, विजयक नहि।

सन्ध्या समय ठूँठक चारू कात एक छोट विधि भेल। जे माटि संग्रहालयक लोक लऽ जाए चाहैत छल, ओकरा परिवार सभ अपन हाथेँ फेर ठूँठक जड़ि लग राखि देलक। जे कपड़ा प्रदर्शनक पेटीमे जएबाक छल, ओकरा धूप देखाओल गेल, फेर परिवारक घर घुराओल गेल। ओहि कपड़ामे बरखक जमल पेटीक गन्ध छल, आ धूप लगिते ओ गन्ध धीरे-धीरे उठि गेल—जेना कोनो देह बहुत दिन बाद अपन आँगनक हवा फेर पौने हो। जे अस्थि-सदृश कण भेटल, ओकरा पानिमे नहि, पहिने नामक उच्चारणमे स्नान कराओल गेल। गढ़ नारिकेलमे देहक दाह, दफन, जल, स्मरण—प्रत्येक घरक रीति अनुसार सम्मानित भेल।

एहि विधिक बीच गोहि सभ पानिक सतह पर एक बेर दीर्घ वृत्त बनाकऽ डूबल। कियो डेरायल नहि। बा कहलीह, 'देह चिबा गेल, मुदा देहक गरिमा नहि चिबा सकल। आब ओहो सीखि रहल अछि।' ई बात सुनि किछु लोक हँसल, किछु कानल, किछु चुप रहल। गोहिक आँखि पानिक भीतर सँ एक क्षण लेल चमकल—ओहि चमकमे भूख कम, स्मरण बेसी छल।

राति जखन गहराएल, नारिकेल पात पाठशालाक बाहरी भित्ति पर नब वाक्य लिखल गेल —'नामक पहरा देहक पहरा बिनु अधूरा।' बच्चा सभ अक्षर रँगैत रहल। मीरा अन्तिम बिन्दु

लगा कऽ पाछाँ हटली। ओहि बिन्दु पर चन्द्रमाक इजोत पड़ल आ ओ गोल बिन्दु एकदम आँखि जेकाँ चमकल।

मुदा एहि चमकक पाछाँ खतरा सेहो जन्म लेने छल। जे लोक स्मृति कीनय चाहैत छल, ओ सभ बुझि गेल जे नाम मात्र सँ काज नहि चलत। आब देहक रीति, जातिक अपमान, स्त्रीक अधिकार, मजदूरक पसीना—सभ पर पहरा लगि रहल अछि। जे व्यवस्था देहक ऊपर राज करैत रहल, ओ चुप रहत नहि। रातिक अन्तिम पहर एक पुरान जाति-रजिस्टर, जे बरखों सँ तहसीलक गोदाममे बन्द छल, अपने-आप खुजि गेल। ओकर पन्ना पलटल, आ भीतर सँ सूखल धूलिक संग एक आवाज उठल—'कुलक प्रमाण के देत?'

चन्ना गाछीक ठूँठ एही प्रश्न पर देर धरि गरम रहल। बच्चा सभ सूतल छल, मुदा देह-संहिताक पन्ना खुजल रहि गेल।

लोकगीत: देह आधा नहि

लोकधुन: देह-अधिकार गीत

आधा हे नहि, देह बिनु सभ आधा हे,
जकरा छूबय, पहिने ओकर स्वीकृति बूझय हे।

नाम बचल, स्वर सुनल, देह बिनु सभ आधा,
जलसमाधि, गोहिक दाँत, पुलक पायाक बाधा।
स्त्रीक मर्यादा, जातिक घाव, मजदूरक पसीना,
प्रत्येक देह कहै—हम वस्तु नहि, नगीना।

पुरान जाति-रजिस्टर अपने खुजि पूछलक,
'कुलक प्रमाण के?' धूलि संग स्वर उठलक।
देह-संहिता पन्ना राति भरि खुजल,

देह हमर अधिकार, नामक असल घर,
जकरा छूअय, पहिने मानू ओकर स्वीकृति स्वर।

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—मीमांसकक मत: अर्थापत्ति कैँ पृथक् प्रमाण मानब: परिभाषा आ उदाहरण: जखन दूटा दृष्ट तथ्य कैँ आपसमे मेल करैबामे विरोध बुझाइत अछि, तखन ओहि विरोध कैँ दूर करबाक लेल कोनो अदृश्य वा अनुपस्थित वस्तु क कल्पना करै पइड़ैत अछि, तँ ओकरा अर्थापत्ति कहैत अछि।]

अध्याय ११९

श्रमक देह

श्रमक देह पाथरपर लिखल जाइ छै, मुदा पढ़ल पसीनासँ जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: पसीनाक अक्षर

लोकधुन: मजदूर श्रमगीत

पढ़ू हे भाइ, पसेनाक आखर पढ़ू हे,
हथौड़ा-हर-करघाकेँ कलम बुझि गनू हे।

पाथरपर नाम नहि पढ़ै केवल नयनक जोर,
पसीनाक अक्षर चमकय भोर-भोर, घोर-घोर।
हथौड़ा, कुदालि, करघा, हर—सभ कलम समान,
श्रमक प्रत्येक चाल लिखै देशक असल गान।

मजदूरक हाथ पकड़ि ओकर कथा सुनू,
दाम, सुरक्षा, विश्रामसँ श्रमक मान चुनू।
पसीनाक अक्षर पढ़ल तँ इतिहास साफ होए,
श्रमिकक उज्जर नामसँ सभ विकास संजोए।

भोरे-भोर भट्ठी जरय, साँझ धरि देह तपय,
ओही ताप मे देसक असल इतिहास छपय।
दाम उचित, काज सुरक्षित, साँझ विश्रामक गीत,
श्रमिकक हँसी सँ चमकय विकासक भीत।

❖

जतय मालिक नाम सँ डेराइए, ओतय ओ संख्या लिखै छै। 'पुरुष सैंतालीस, स्त्री नअ'— ई मनुक्खक गिनती नै छिकै, ई नामक जगह पर राखल परदा छिकै। नाम नुकेला सँ श्रम नै मरै छै; नुकेनिहारक डर उघड़ै छै।

देह खाली दुखक पात्र नै छिकै। वैह देह कुदाल उठबै छै, पाया ढारै छै, नाव धकेलै छै, आ मरल देह घर धरि पहुँचबै छै। संसारक आधार ओही देह पर टिकल छै।

तें जे मृतकक नाम बचबय जाइए आ जीवित मजदूरक देह फेर अनाम राखि दैए, ओ स्मारक नै बनबैए— दोसर अपराध करैए।

देहक अधिकार पर राति भरि बात भेलाक बाद भोरमे नारिकेल पात पाठशालाक आँगन खाली नहि रहल। पछिला अध्यायमे स्त्री सभ अपन देहक मर्यादा, निजताक सीमा, आ दृष्टिक अधिकारक बात कहने छलीह; मुदा बिहान भेल तखन मजदूर सभक देह अपने-आप ओहि बहसक अगिला पाँती बनि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। कारण देह केवल प्रेम, अपमान, आ निजतामे नहि बसैत अछि; देह कुदाल उठबैत अछि, पुलक पाया ढारैत अछि, नदीमे बाँस गाड़ैत अछि, अस्पतालक बरामदामे स्ट्रेचर ढोइत अछि, आ शहरक चमकदार भवनमे अनाम ईंट बनि जाइत अछि।

आरुणि नन्दन कटल ठूँठ लग बैसल छलाह। हुनकर सोझाँ तीनटा वस्तु राखल छल—एकटा पुरान मजदूरक फाटल जूता, एकटा सिमेंटमे अटकल नह, आ एकटा मजदूरी-पर्ची जाहि पर नामक ठाम केवल संख्या लिखल छल। ओहि पर्चीकेँ देखिते अनन्या पूछली, “संख्या सेहो नाम होइत अछि?” आरुणि उत्तर देलनि, “नहि, संख्या ओहि ठाम राखल जाइत अछि जतय मालिक नामसँ डेराइत अछि।” बच्चा सभ ई वाक्य रजिस्टरक ऊपर लिखि देलक—“नाम नुकेलासँ श्रम मरैत नहि, मालिकक भय उघड़ैत अछि।”

आजुक पहरा श्रमक छल। पाठशालाक बच्चा सभ निर्णय लेने छल जे जकरे हाथसँ गढ़ नारिकेलक पुल, सड़क, अस्पताल, घाट, घर, स्कूल, आ स्मारक बनल, ओकर देहक कथा अलग सँ लिखल जाएत। सरकारी सूचीमे जे “अनस्किल्ड” कहल गेल छल, बच्चा सभ ओकरा “माटि-ज्ञानी” लिखलक। जे “मस्टर रोल”मे रहि गेल छल, ओकरा “उपस्थित” कहल गेल। जकर अंगूठा मशीनमे लागल, मुदा मजदूरी मालिकक खातामे रहल, ओकरा सभ लाल पाथर पर लिखल गेल।

तहिया सभसँ पहिने झगरू मिस्त्रीक घरवाली आयली। हुनकर पति पुलक पाया ढारैत काल नदीमे खसल छलाह, मुदा दुर्घटना-पत्रमे लिखल गेल—“काम सँ अनुपस्थित।” ओ लाठी टेकैत कहली, “हमर घरमे जे हाथ चूल्हि धरैत छल, कम्पनीक कागचमे ओ हाथ ओहि दिन काम पर छलहिये नहि।” ई सुनि गाछीक ठूँठक हरियर कोंपल थरथरा उठल। बच्चा सभ चुप भेल। अनन्या पर्ची पर लिखली—“जे देह मरल, कागच ओकर उपस्थिति खा गेल।”

गोप कुमार अपन झोरा सँ किछु पुरान नकल निकाललनि। ओहिमे मजदूर सभक संख्या छल, मुदा नाम नहि। कोनो स्तम्भमे “पुरुष ४७”, “स्त्री ९”, “अन्य ३” लिखल छल। मीरा ओहि कागचकेँ देखैत कहली, “जखन देहक लिंग लिखि सकैत छी, तखन देहक नाम किएक नहि?” गोप चुप रहलाह। ओ चुप्पी दोषक नहि, पछतावाक छल। ओ बुझलनि जे डेटा बचाएब

कखनो-कखनो नाम बचाएबाक समान नहि; जँ डेटामे मनुष्य नहिये रहल, तँ ओ सेहो गोहि बनि सकैत अछि।

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन दूर नहि बैसलाह। ओ ठूँठक ठीक सोझाँ, माटि पर, मजदूर सभक रेखा लग बैसलाह। हुनका लग कलम छल, मुदा ओ तुरन्त लिखय नहि लगलाह। पहिने ओ प्रत्येक बजनिहार मजदूरक हाथ देखैत छलाह—ककर हथेलीमे कड़ा, ककर नहमे सिमेंट, ककर कलाइमे पुरान पट्टी, ककर अंगूठामे मशीनक नील दाग। ओ धीरे कहलनि, “हम कानूनमे देहक क्षति पढ़ने रही, मुदा आइ देहक श्रम पढ़ि रहल छी।” एहि वाक्यक बाद हुनकर नोटबुकक पहिल पृष्ठ पर शीर्षक आयल—“श्रमक देहक गवाही।”

तखन एक नौजवान आयल—नाम भगेलू पासवान। ओ कहलक जे ओकर पिता पुल पर काम करैत छल, मुदा जातिक नाम लऽ कऽ ओकरा रसोइक पानि सँ दूर राखल जाइत छल। मजदूरी एक, पसीना एक, खतरा एक; मुदा भोजनक पाँति अलग। “पुल सभकेँ जोड़य बनैत छल,” भगेलू कहलक, “मुदा पुल बनबनिहार सभकेँ ओहि पुलक छाह तरे अलग बैसाओल जाइत छल।” बच्चा सभक चेहरा तमतमा उठल। गंगेशक प्रश्न फेर हवामे भरि गेल—“न्याय कोन प्रमाण सँ जानब? शास्त्र सँ, कि पियासल मजदूरक गलासँ?”

बा कहलीह, “गंगेश तर्क लिखलनि, मुदा समाज देहक तर्क नहि पढ़लक।” एहि पर नारिकेल पात पाठशालाक विद्यार्थी सभ पुरान कथा फेर उठौलक—जन्म, कुल, विवाह, चर्मकारणी, तत्त्वचिन्तामणि, बारह हजार ग्रन्थ बराबर विचार। ई कथा आब विद्वत्ताक शान नहि, जाति-व्यवस्थाक विरुद्ध प्रश्न बनि गेल। जँ विचारक जन्म स्वयं समाजक असम्भव कहनाइकेँ तोड़ि सकैत अछि, जँ प्रेम जातिक सीमाकेँ छिन्न-भिन्न कऽ सकैत अछि, तँ मजदूरक हाथ किएक छोट? बच्चा सभ लिखलक—“नव्य न्यायक पहिल पाठ: देहक श्रम जातिसँ नीच नहि होइत।”

एहि बीच शहर सँ आयल विरासत-परियोजनाक एक अभियन्ता कहलनि जे स्मारक निर्माणमे स्थानीय मजदूर लगाओल जाएत, रोजगार भेटत। आरुणि शान्त स्वरमे पूछलनि, “नाम सहित अनुबन्ध?” अभियन्ता अटकल। देविका जोड़ली, “मजदूरी समय पर?” ओ चुप। मीरा पूछली, “घायल भेल तँ उपचारक अधिकार?” ओ कागच पलटय लागल। सत्यव्रत कहलनि, “जतय स्मृति-स्थल बनत, ओतय पहिल शिलालेख श्रमिक अधिकारक होएबाक चाही। मृतकक नाम बचाबय जाइत छी आ जीवित मजदूरक देह फेर अनाम राखब, तँ ई स्मारक नहि, दोसर अपराध होएत।”

अनन्या ताबड़तोड़ लिखैत गेलि। बच्चा सभ निर्णय केलक जे पाठशालाक अगिला पाठ "काज शुरू हेबासँ पहिने नाम" होएत। जे मजदूर एहि ठाम काज करत, ओकर नाम, गाम, देहक अवस्था, परिवारक सम्पर्क, मजदूरी, विश्राम, भोजन, पानि, सुरक्षा—सभ खुजल अभिलेखमे रहत। कियो कहलक, "एतय तँ बहुत कागच भऽ जाएत।" बच्चा सभ उत्तर देलक, "नामक कागच भारी नहि होइत; बेनामी दुर्घटना भारी होइत अछि।"

तहिया चन्द्रपाल बत्राक नाम फेर उठल। ओकर म्यूल एकाउण्टक कथा एखन ताजा छल। भगेलू पासवान कहलक, "हमरा सभक श्रम सेहो म्यूल एकाउण्ट बनल छल। पसीना हमर, लाभ दोसरक। देह हमर, करार दोसरक। मृत्यु हमर, बीमा दोसरक।" ई बात सुनि ठूँठक कोंपल पर पानिक दू बून्द चमकल। गाममे धूप छल, बून्द कतऽ सँ आयल—कियो नहि जानि सकल। पनिडुब्बी शायद पोखरिसँ सुनि रहल छली।

राति भेल तखन श्रमक नाम-पाठ शुरू भेल। एहि बेर प्रत्येक नामक संग एक श्रम जोड़ल गेल—"पाया ढारनिहार", "ईंट उठेनिहार", "दवाइक पेटी ढोएनिहार", "छत पर गारा चढ़ेनिहार", "मृत देह घर पहुँचेनिहार", "ऑक्सीजन सिलिण्डर खिंचेनिहार", "फसल काटनिहार", "नाव धकेलनिहार", "इनार साफ करनिहार।" नाम सभ जखन श्रमसहित पढ़ल गेल, तखन लोक बुझलक जे मनुष्यक देह केवल दुखक पात्र नहि, संसारक आधार सेहो अछि।

ओहि राति गोहि सभ पानि सँ ऊपर नहि आयल। मुदा पानिमे तरंगक रेखा बनल जेना कियो धीमे-धीमे देहक भार उतारि रहल हो। जलसमाधिमे जे देह चिबा गेल, ओकर नाम पहरामे छल; आ जे जीवित देह एखन श्रम करैत अछि, ओकर अधिकारक शपथ लिखायल जा रहल छल। एहि दूटा बातक बीच गढ़ नारिकेलक कथा एक नब धारि पकड़लक।

अन्तिम पहरमे सत्यव्रत मेहता अपन नोटबुक बन्द करैत कहलनि, "न्याय केवल मृतकक नाम नहि पूछत; न्याय जीवितक थाकल देहक विश्राम सेहो पूछत।" एहि पर बच्चा सभ "उपस्थित" नहि कहलक। ओ सभ उठि कऽ मजदूर सभक पएर धोएबाक लेल पानि आनलक। पानि जखन ओहि फाटल गोड़ पर पड़ल, तखन धूलि आ सिमेंटक परत ढीला भऽ ओ धार माटिक रंगक भऽ गेल, आ नीचाँ जे चमड़ी उघड़ल, से बरखक दरारक नक्शा जकाँ छल। कियो ओकरा पूजा नहि कहलक; पूजा कहि देलासँ श्रम फेर मूर्ति बनि जाइत। ई केवल थकानक आदर छल।

जखन सभ चलि गेल, ठूँठक छाह नमहर भऽ गेल। पाथर पर लिखल श्रमिक नाम सभक बीच एक खाली पाथर राखल गेल—“जे काज करैत अछि, मुदा देखाइ नहि पड़ैत। ” अनन्या ओकरा छूबैत कहली, “काल्हि एहि अदृश्य श्रमक पाठ होएत। ” हवा धीमे उत्तर देलक।

लोकगीत: पसीनासँ पढ़ल नाम

लोकधुन: मजदूर श्रमगीत

पढ़ू हे पसेना, पसेनासँ नाम पढ़ू हे,
श्रमिकक देहकेँ काज नहि—मनुख बुझू हे।

श्रमक नाम पाथरपर, पढ़ल पसीनासँ जाए,
फाटल हथेली, थाकल पएर कथा सुनाए।
पूजा कहि मूर्ति नहि बनाउ श्रमिकक देह,
पानि लऽ पएर धोउ—थकानक मानक नेह।

न्याय मृतकक नाम मात्र नहि पूछत,
जीवितक विश्राम, पगार, भोजन सेहो बूझत।
खाली पाथर राखल अदृश्य श्रमक नाम,
जे काज करै, मुदा देखाइ नहि—ओकर धाम।

पसीनाक नून सँ अक्षर गाढ़ पढ़ू,
श्रमिकक देहकेँ काज नहि, मनुष्य बुझू।
पूजा कहि मूर्ति नहि—पानि लऽ पएर धोआए।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—हेतु: ओ दाबी मानबाक कारण।: उदाहरण: किएक तँ ओतय धुआँ उठि रहल अछि। हेतु: ओ दाबी मानबाक कारण।।]

अध्याय १२०

न्यायक देह

न्यायक देह कोंपल जकाँ— नर्म, मुदा माटि फोड़ि कऽ उठैवला।

अध्यायारम्भ लोकगीत: नर्म न्याय, दृढ़ जड़ि

लोकधुन: कोंपल गीत

सिंचू हे कोंपल, न्यायक कोंपल सिंचू हे,
पात नरम, जड़ि पाथर-फोड़—दुनू गुण गिनू हे।

न्यायक देह कोंपल सन, नर्म ओकर पात,
जड़ि मुदा पाथर फोड़ै, धरै दृढ़ विश्वास।
दया ओकर ओस बनै, नियम ओकर माटि,
साहस सूरुज बनि दय वृद्धि दिन आ राति।

कठोरता नहि शक्ति मात्र, संवेदना बलवान,
नर्म न्याये जोड़ि सकै टूटल जनक प्राण।
कोंपलकेँ पहरा दिअ, वन एक दिन बनत,
दृढ़ जड़िक कोमल न्याय मिथिलाक रूप गढ़त।

दयाक ओस भोरे-भोर, नियमक माटि तर,
साहसक रौद दिन भरि, धीरजक राति भर।
कठोरे टा बल नहि, करुणो पैघ शक्ति,
कोमल न्यायक जड़ि मे अटल लोक-भक्ति।

❖

एतबा दिन न्याय कागच मे रहल, मोहर मे रहल, तारीखक पन्ना मे रहल। मुदा जकर पीठ पर बालु उठल, जकर छाती पर पाया धँसल, तकरा लेल न्यायक देह कतय छल? जे न्याय देह बिनु रहै छै, से बेर-बेर गोहिक भोजन बनि जाइ छै।

मूर्ति आ देह मे फरक छै। मूर्ति पूजा मँगै छै— ओकरा सोझाँ माथ झुकबय पड़ै छै आ आगाँ बढ़ि जाइ छै। देह उत्तरदायित्व मँगै छै— ओकरा सोझाँ ठाढ़ रहय पड़ै छै।

आ जे न्याय बिनु दरारक रहतै, तकर भीतरक आवाज बाहर कोना आओत? दरार खराब नै छिकै। न्यायक देह कानि सकै छै— तखने ओ जीबैत छै।

श्रमक देहक पाथर सभ ठूँठक चारू कात राखल गेलाक राति चन्ना गाछीक कोंपल चुप नहि रहल। ओकर पात एखन धरि पात नहि भेल छल—हरियर बिन्दु, नर्म काँप, माटिक भीतरी साँस मात्र। मुदा ओहि राति ओ बिन्दु सँ एकटा सूक्ष्म चमक निकलि पाथर सभ पर पड़ल। जकर पाथर पर मजदूरक नाम लिखल छल, से गरम भऽ गेल; जकरा पर 'नाम नहि भेटल' लिखल छल, से ठंढा नहि, अपितु ओससँ भीजल भऽ उठल। बच्चा सभ बुझि गेल—श्रमक देहक बाद आब न्याय अपन देह माँगि रहल अछि।

एतबा दिन न्याय कागचमे रहल, मोहरमे रहल, तारीखक पन्नामे रहल, वकीलक तर्कमे रहल, पदक भाषणमे रहल। मुदा जकर पीठ पर बालु उठल, जकर हाथमे सरिया गड़ल, जकर छाती पर पुलक पाया धँसल, जकर देह गोहि सभक बीच जलसमाधि बनल, ओकरा लेल न्यायक देह कतऽ छल? ओ देह न अदालतक बरामदामे देखायल, न ठेकेदारक खातामे, न विदेशी कम्पनीक दया-पत्रमे। न्याय जँ देहविहीन रहत, तँ ओ फेर गोहिक भोजन बनि जाएत।

अनन्या बिहानक सभा बजौलक। सभा कहबो ठीक नहि; ई तँ आब गढ़ नारिकेलक नित्य श्वास छल। ठूँठक छाँह एखन नमहर पड़ि रहल छल; गाछी आधा कटल, तैयो छाँह पूरा माप माँगैत छल। बच्चा सभ रजिस्टरक नब पन्ना पर शीर्षक लिखलक—'न्यायक देह'। एहि शीर्षक लिखिते एकटा बूढ़ मजदूरिन, जे चुपचाप पाछाँ बैसल छली, कहली, "न्याय जँ देह लेल चाहैत अछि, तँ ओकरा पसीनाक गन्ध सेहो सहय पड़त।"

ई वाक्य सभसँ पहिने बाकेँ छुअलक। बा अपन साड़ीक आँचल सँ आँखि पोंछैत कहलीह, "जे न्याय इत्र लगा कऽ अबैत अछि, से बहुधा सड़ल देह झाँपय अबैत अछि। असली न्याय पसीना, राखि, कीचड़, दूध, रक्त, आ नोरक गन्ध बिनु अपूर्ण अछि।" लोक चुप। सत्यव्रत मेहता एखन किनार पर बैसल छलाह। हुनका ई वाक्य कानूनी किताबक कोनो टिप्पणीसँ भारी लागल।

आरुणि पुलक पुरान नक्शा लऽ कऽ आयलाह। से नक्शा कतेको बेर अदालतमे पेश भेल छल; प्रत्येक बेर ओकरा पर रेखा, संख्या, हस्ताक्षर, मोहर देखल गेल, मुदा कखनो पएर नहि देखल गेल। एहि बेर बच्चा सभ नक्शा जमीन पर पसारि देलक आ मजदूरक परिवार सभकेँ कहल—'जतय-जतय अहाँ सभक लोकक पएर पड़ल छल, ओ ठाम छूउ।' नारी, बूढ़, बालक, विधवा, बहिन, मित्र—सभ नक्शा पर हाथ फेरय लागल। कागच पुरान भऽ चुकल छल आ हथेलीक नीचाँ ओ एहन खरखराइत छल जेना बहुत दिनसँ बन्द कोनो कोठरीक धूलि। पुलक रेखा अचानक सड़क नहि, देहक यात्रा बनि गेल।

गोप कुमार अपन फाइल खोलि रहल छलाह। ओहि फाइलमे सूची छल—भुगतान, अनुपस्थित, दुर्घटना, उपठेका, बकाया, मृतक, अज्ञात। मुदा आइ बच्चा सभ कहल—'पहिने फाइल नहि, पएर।' गोप ठिठकलाह, फेर फाइल बन्द कऽ देलनि। हुनका बुझाइत छल जे डेटा झूठ पकड़ैत अछि, मुदा पीड़ाकेँ पूरा नहि पकड़ि सकैत। डेटा मात्र अस्थि अछि; देह ओकर आसपास लोक बनबैत अछि।

तहिये गंगेशक प्रश्न फेर उठल। नारिकेल पात पाठशालाक एक बच्चा, जे तत्त्वचिन्तामणिक कथा सुनि मुग्ध भेल छल, कहलक—'प्रमाण कोन? फाइलक प्रमाण? देहक प्रमाण? स्मृतिक प्रमाण? पसीनाक प्रमाण?' कियो उत्तर देलक नहि। फेर मीरा कहली, 'जँ देह अपमानित भेल अछि, तँ देहक वाणी बिनु प्रमाण अधूरा। जँ पसीना लूटल गेल अछि, तँ पसीनाक गन्ध सेहो प्रमाण।' गंगेशक नव्य न्याय एतय पुस्तकक पन्नासँ निकलि देहक रन्ध्रमे बसि गेल।

एकाएक ठूँठक लग राखल 'नाम नहि भेटल' पाथर पर एक चीटी चढ़ल। ताहि पर सभक दृष्टि गेल। चीटी पाथरक अक्षर पर घूमि, खाली स्थान पर ठहरि गेल। बच्चा सभ एतबा सूक्ष्म चिन्हो छोड़ैत नहि। अनन्या लिखली—'जतय नाम नहि, ओतय खोजक पहिल जीव पहुँचि गेल।' ओहि वाक्यक बाद सभा ठहरल नहि; लोक बुझि गेल जे अनाम मजदूर सभक लेल न्यायक देह बनाबय पड़त, केवल सूची नहि।

दुपहरिया धरि गामक कुम्हार आयल। ओ माटि आनलक—कमला किनारक, पुलक पाया लगक, चन्ना ठूँठक फाँकिक, उज्ज्वलक घरक आँगनक, आ ओहि पोखरिक कछेरक जतय पनिडुब्बी गवाही देने छली। कुम्हार सभ माटि एक संग गूँथय लागल। बच्चा सभ पूछलक—'की बनत?' कुम्हार उत्तर देलक—'न्यायक देह। मूर्ति नहि, देह। मूर्ति पूजा माँगैत अछि; देह उत्तरदायित्व।'

माटि गूँथैत काल मजदूरिन सभ अपन हथेली लगा देली। प्रत्येक हथेली माटिमे छाप छोड़लक। कियो चूड़ी सहित, कियो फाटल आँगुर सहित, कियो जरल चमड़ी सहित। आरुणि अपन अभियन्ता हाथ रोकने रहलाह; हुनका लाज लगैत छल जे पुलक नक्शामे हुनकर हस्ताक्षर छल। मजदूरिन हुनका कहली—'अहाँको हाथ चाही। गलतीक हाथ जँ सुधरय नहि आओत, तँ न्यायक देह एक कात टेढ़ होएत।' आरुणि काँपैत हथेली माटिमे धँसौलनि।

सत्यव्रत मेहता दूर सँ उठलाह। हुनका नहि बजाओल गेल छल। मुदा एहि बेर ओ स्वतः आगाँ बढ़लाह। ओ कहलनि—'हमर हाथमे कलमक छाप अछि, पसीनाक नहि। तथापि जँ

अनुमति हो, मौनक छाप देब चाहैत छी।' बा कहलीह—'मौनक छाप हाथसँ नहि पड़त। कान माटि लगाउ।' सत्यव्रत झुकलाह। सभ लोक देखैत रहल। भारतक एक पैघ कानून-पुरुष कटल ठूँठक माटि पर कान रखि पड़लाह। माटिमे हुनकर कानक आड़ी छाप बनि गेल। बच्चा सभ लिखलक—'न्यायक देहमे सुनबाक कान जोड़ल गेल।'

एहि दृश्यक खबरि बजार धरि पहुँचल। शहरक समाचार-दल दौड़ल। कतेक शीर्षक बनल—'लोकन्यायक अनोखा प्रयोग', 'स्मृति-ग्रामक माटि-संविधान', 'प्रसिद्ध विधिज्ञक भावुक क्षण'। मुदा मीरा आ देविका दरबाजे रोकि देली। कहली—'ई दृश्य उपभोगक लेल नहि। जे लिखब, ओकर पहिने जिनकर देह गुमायल, हुनकर परिवारक अनुमति चाही।' कतेको कैमरा खाली घुरल। स्मृति फेर एक बेर दृष्टिक अधिकार बचा लेलक।

साँझक समय माटिक देह बनल—न पुरुष, न स्त्री, न देवता, न न्यायाधीश। ओ एक झुकल आकृति छल, जकर एक कान धरती पर, एक हाथ पानिक दिशामे, एक पएर पुलक दिशामे, दोसर पएर चन्ना ठूँठक जड़िमे, छाती पर खाली स्थान। बच्चा सभ पूछलक—'छाती खाली किएक?' कुम्हार कहलक—'एतय नाम सभ फेर-फेर बसत। न्यायक छाती स्थायी सजावट नहि, खुजल घर होएबाक चाही।'

तहिये ब्रूमक दान-पत्रक प्रतिनिधि आयल। ओकरा खबरि भेटि गेल छल जे गाममे 'स्मृति-मूर्ति' बनि रहल अछि। ओ प्रस्ताव लऽ कऽ आयल—काँस्य ढलाइ, प्रकाश-व्यवस्था, सुरक्षा-घेरा, टिकट-व्यवस्था, अन्तरराष्ट्रीय पट्टिका। बच्चा सभ ओकरा माटिक देहक लग बैसाओलक। अनन्या पूछली—'अहाँ एहि देहक गन्ध सहि सकैत छी?' प्रतिनिधि कागचमे उत्तर तकय लागल। गन्धक कोनो धारा दान-पत्रमे नहि छल।

चन्द्रपाल दूर सँ खबरि सुनैत रहल। ओकर अनुप्रयोगमे नब सुविधा जोड़बाक योजना बनल—'अपन प्रियजनक नाम डिजिटल माटि-मूर्ति पर चढ़ाउ।' देविका तुरन्त बुझि गेली। ओ बच्चा सभकेँ कहली—'न्यायक देह जँ स्क्रीनमे बेचायल, तँ फेर गोहि आबि जाएत।' ओहि राति स्क्रीनक उपवास फेर घोषित नहि भेल, मुदा लोक अपने मोबाइल उनटा राखि देलक। किछु निर्णय घोषणा सँ नहि, थकानसँ जन्म लैत अछि।

राघव सिग्नलहीन रहैत-रहैत खबरि पाबि गेल। ओ सन्देश लिखलक—'माटि-देहक प्रतिकृति बनाउ; भावनात्मक पूँजीक उपयोग।' सन्देश गेल नहि। ओकर स्क्रीन पर केवल दू शब्द उभरल—'कान लगाउ।' ओ घबरा गेल। जे व्यक्ति जीवन भरि गायब सन्देशक आड़मे व्यापार करैत रहल, ओकरा आब माटि सुनबाक आदेश दैत छल।

राति घन भऽ गेल। न्यायक माटिक देह ठूँठक लग राखल छल। गोहि सभ बाढ़िक पानिमे दूर चमकल, मुदा एहि बेर ओ सभ देहक भूखसँ नहि, जिज्ञासा सँ देखैत बुझायल। पनिडुब्बी पोखरिसँ धुँध जेकाँ उठि कने देर माटिक आकृतिक चारू कात घुमली। बूढ़बा भूत कहलनि—‘न्याय आब चलि सकत?’ बा उत्तर देलीह—‘चलत नहि, सुनत। जे सुनत, से लोककेँ चलब सिखाओत।’

मध्यरातिमे पहिल नाम माटिक छाती पर राखल गेल—ओहि अज्ञात मजदूरक, जकर देह भेटल नहि। नाम नहि, खाली पाथर। खाली पाथर छाती पर लगिते माटिक देहमे सूक्ष्म दरार पड़ल। लोक घबरायल। कुम्हार हँसल—‘दरार खराब नहि। न्याय जँ बिनु दरारक रहत, तँ भीतरक आवाज केना बाहर आओत?’ दरारसँ ओसक बून्द निकलल। बच्चा सभ लिखलक—‘न्यायक देह कानि सकैत अछि।’

भोरक पहर धरि लोक पहरा दैत रहल। पहराक ई क्रम पृथ्वी-पहरासँ अलग छल; एतय शस्त्र नहि, सुनब छल। प्रत्येक पहरुआ अपन कान माटि लगबैत, एक नाम सुनैत, फेर अगिलाकेँ जगबैत। कान लगबिते माटिक ओ ठंढक कनपटी धरि उतरि जाइत छल, आ भीतरसँ जे धीमा गुँजार बुझाइत छल से हवाक छल कि अपने रक्तक—से कियो निश्चय नहि कऽ सकल। एहि तरहेँ न्यायक देहक पहिल राति बीतल। सूरज उगिते कुम्हार देखलक जे खाली छाती पर कोंपलक छाह पड़ल अछि—कटल चन्ना गाछीक नब हरियर बिन्दुक।

एहि छाहमे अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—‘सत्रहम पहरा: छाहक विधान।’ कारण जखन न्यायक देह बनि गेल, तँ आब प्रश्न उठत—जे छाह पड़ैत अछि, से केवल गाछक होइत अछि कि हुनकहुँ, जिनकर नाम एखनहुँ पूर्ण सुनल नहि गेल?

लोकगीत: न्यायक नर्म देह

लोकधुन: कोंपल गीत

नर्म हे देह, न्यायक देह नर्म हे,
कानय दिअ, सुनय दिअ—तखने न्याय जीबय हे।

न्यायक देह कोंपल सन नर्म, तैयो माटि फोड़ै,
मजदूरक पाथरपर हरियर छाह जोड़ै।
खाली छातीपर प्रश्न, दरारसँ ओस झरल,
नेना लिखलक—न्यायो कानि सकै, ई बात उगल।

शस्त्र नहि, सुनब पहरा—कान माटि लगाउ,
कुम्हारक रिक्त देहपर कोंपलक छाह पड़ल,
न्यायक माटिक मूर्ति पहिल साँस लऽ उठल।

नर्म देहकेँ कठोर करब नहि, पहरा दियौ,
कानय देब, सुनय देब, तखन न्याय जीयौ।
कोंपल सन नर्म, तैयो माटि फोड़ि उठय,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—उदाहरण संग व्याप्ति: एकटा एहन नियम जे सब ठः उदाहरण: जतय-जतय धुआँ रहैत अछि, ओतय-ओतय आगि रहैत अछि, जहिना भानसघर (रसोई)। उदाहरण संग व्याप्ति: एकटा एहन नियम जे सब ठाम लागू होइत हो आ ओकर एकटा जानल-मानल उदाहरण।।]

अध्याय १२१

जातिक पिंजरा

पिंजराक सलाख लोहाक नहि— आदतिक होइ छै, आ आदति भोरक धूपमे बेसी चमकै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: स्पर्शक खुजल आकाश

लोकधुन: नचारीक मुक्त लय

खोलू हे पिंजरा, जातिक पिंजरा खोलू हे,
हाथ सँ हाथ मिला मुक्त अकास घोलू हे।

जातिक पिंजरा टूटि जाए जखन हाथ मिलै,
मानुखक गरम स्पर्शसँ सूखल मोन फुलै।
कियो ऊँच-नीच नहि, धरती सभकेँ धरय,
एके पवन, एके पानि सभक जीवन भरय।

बोलक सलाखी खोलू, नेहक खिड़की लाउ,
स्पर्शक खुजल आकाशमे संग-संग उड़ि जाउ।
हाथसँ हाथ जुड़ल रहत तँ पिंजरा टिकत नहि,
मानव मानक आगाँ कोनो जाति पैघ नहि।

एके माटि गढ़लक देह, एके पवन साँस,
ऊँच-नीचक बोली थिक मनुखताक उपहास।
बोलक सलाखि काटि लिअ, नेहक कुंजी हाथ,
खुजल अकास तर सभक एक्के भोर-प्रभात।

❖

एहि पिंजराक डारि कुल, गोत्र, रसोइ, विवाह, स्पर्श, श्मशान आ भोजनसँ बनल छै; ओकर केबाड़ पर शास्त्रक ताला लागल छै। आ ताला लगबनिहार कहै छै— ई परम्परा छिकै।

मुदा जकरा समाज परम्परा कहै छै, से बेर-बेर जीवित मनुक्खक साँसक चारू कात बनाओल अदृश्य देबाल होइ छै। देबाल केँ परम्परा कहि देला सँ ओ देबाल नै रहि जाइए, से खाली नाम बदलि लै छै।

तें एतय एक्के प्रश्न बचै छै, आ ओ गंगेशक छिकै— प्रमाण की छै? जँ जाति अनुमान नै, आरोप छिकै; जँ जन्म प्रमाण नै, व्यवस्था छिकै— तँ ओहि प्रमाणक भार के उठाओत?

न्यायक देहक राति बीतलाक बाद गढ़ नारिकेलमे एकटा विचित्र असहजता पसरि गेल। बच्चा सभ नामक संविधान पढ़ि चुकल छल, मजदूरक पएर पुलक पाया लग माटि उठा चुकल छल, स्त्री सभ देहक अधिकार पर राति-सभा कऽ चुकल छली, आ सत्यव्रत मेहताक गवाही लोकक कण्ठमे उतरल छल। मुदा जखन सभकेँ लागल जे न्याय आब देह, श्रम, जल, आगि, वायु, आकाश आ शब्दमे स्थान पा रहल अछि, तहिये पुरान जाति-व्यवस्था अपन पिंजरा लऽ कऽ आबि ठाढ़ भेल।

ई पिंजरा लोहाक नहि छल। ओकर डारि कुल, गोत्र, पवित्रता, रसोइ, विवाह, संस्कार, स्पर्श, श्मशान, आ भोजन सँ बनल छल। ओकर केबाड़ पर शास्त्रक ताला छल, आ ताला लगबनिहार लोक कहैत छल—'ई परम्परा अछि।' बच्चा सभ पहिल बेर देखलक जे जकरा समाज परम्परा कहैत अछि, ओ कतेक बेर जीवित मनुष्यक साँसक चारू कात बनाओल अदृश्य देबाल होइत अछि।

चन्ना ठूँठक छाहमे ओहि दिन एक ब्राह्मण परिवारक बूढ़ आयल। ओकर हाथमे ताम्रपत्रक प्रतिलिपि, पुरान वंशावली, आ पीयर पड़ल पोथी छल। पोथीक कोर बरखक छूअब सँ मोलायम भऽ गेल छल आ पन्ना उनटबैत काल ओहिसँ कोनो पुरनका आलमारीक गन्ध उठैत छल—धूप, सीलन आ रौद, तीनू एक संग। ओ नामक संविधानक पन्ना देखैत कहलक—'नाम लिखबाक अधिकार सभकेँ होइते अछि, मुदा कुलक मर्यादा सेहो किछु चीज होइत अछि।' अनन्या ओकरा तकैत पूछली—'जँ नाम सुनल जाए, मुदा कुल ओकरा नकारि दिअय, तखन न्याय कतऽ रहत?' बूढ़ उत्तर देबाक लेल मुँह खोललक, मुदा शब्द अटकि गेल।

एहि अटकल शब्दक बीच गंगेशक प्रश्न फेर उतरि आयल। ठूँठक हरियर कोंपल पर धूप पड़ि रहल छल। अचानक कोंपलक छाह नमहर भऽ कऽ ओहि पोथी पर पसरि गेल, आ पोथीक अक्षर काँपय लागल। कियो जोर सँ किछु नहि कहलक, मुदा सभकेँ सुनाइ पड़ल—'प्रमाण की अछि?' ई स्वर न बूढ़क, न बच्चाक, न सत्यव्रतक। से स्वर तर्कक गहींर कूपसँ उठल—गंगेश उपाध्यायक।

गंगेश, तत्त्वचिन्तामणिक लेखक, नव्य न्यायक जन्मदाता—गामक पाठशालामे हुनका एतबे कहि पढ़ाओल जाइत छल। मुदा चन्ना ठूँठक अदालतमे ई परिचय अधूरा मानल गेल। ईरा पन्ना खोलि बच्चा सभकेँ कहली—'जकर बुद्धि पर समाज गर्व करैत अछि, ओकर जीवनक असुविधाजनक सत्य पर समाज मौन किएक रहैत अछि?' तखन लोकक बीच पुरान कथा उठल—पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्मक कथा, चर्मकारणीसँ विवाहक कथा, जातिक

देबाल छेदि गेल प्रेम आ ज्ञानक कथा, आ तत्त्वचिन्तामणि जे एक ग्रन्थ नहि, बारह हजार ग्रन्थ बराबर चिन्तनक भार मानल गेल।

बटुकनाथ हरिहरन, जे लोक-स्मृति न्यासक कागच लऽ कऽ फेर घूमि रहल छल, एहि चर्चा सँ असहज भेल। ओकरा न्याय-शास्त्र सँ भय नहि छल; ओकरा न्याय-शास्त्रक देह सँ भय छल। ओ तुरन्त कहलक—‘जीवनक कथा सभ विवादास्पद होइत अछि। महान ग्रन्थकेँ महान ग्रन्थ रूपमे देखू, निजी बातमे नहि पड़ू।’ एहि पर मीरा हँसि देली। से हँसी तीख छल—‘जखन स्त्रीक देह पर समाज निर्णय देत, तखन निजी बात सार्वजनिक बनि जाइत अछि; मुदा जखन विद्वानक जाति-भंजक जीवन पर प्रश्न उठत, तखन निजी कहि चुप्पी? ई न्यायक कोन प्रमाण?’

कटल ठूँठक एक फाँकि सँ कारी माटि झरि पड़ल। ओहि माटिमे जूताक पुरान छाप जेकाँ आकृति देखाइ देलक। उज्ज्वलक माय धीरे कहलीह—‘ई चर्मकारणीक पएर होएत।’ कियो हँसल नहि। गामक किछु पुरान लोक आँखि झुका लेलक। ओ सभ जनैत छल जे जाति-व्यवस्था कतेक देहक पएरकेँ मन्दिरक दुआर, इनारक जगत, श्मशानक रस्ता, पाठशालाक चबूतरा, आ विवाहक मंडप सँ दूर राखैत रहल अछि।

एहि ठाम चर्मकारणी नामक स्त्री एक व्यक्तिक रूपमे नहि, इतिहासक नहि सुनल कण्ठ रूपमे उठली। हुनकर स्वर कहलक—‘जे हमरा स्पर्शसँ अपवित्र कहैत छल, से हमर श्रमसँ बनल जूता पहिरि तीर्थ जाइत छल। जे हमर देहक जाति पूछैत छल, से हमर हाथक चमड़ा सँ बनल मृदंग पर देवक गीत गबैत छल। जे हमरा विवाहमे अस्वीकार करैत छल, से न्यायक पोथीमे प्रमाण तकैत छल। कहू, प्रमाण ककरा चाही?’

बच्चा सभ चुप। सत्यव्रत मेहता चुप। गंगेशक स्वर फेर आयल—‘जाति अनुमान नहि, आरोप अछि; जन्म प्रमाण नहि, व्यवस्था द्वारा बनाओल पिंजरा अछि; स्पर्श दोष नहि, भयक राजनीति अछि।’ ई शब्द ककरो पुस्तकमे एना नहि भेटत, मुदा चन्ना गाछीमे न्याय पुस्तकक पन्ना छोड़ि जीवित अनुभूति बनि गेल छल।

तखन दूटा नाम हवामे तैरल—रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा ‘अशोक’। कथा एहि नामकेँ अदालतक अभियोग जेकाँ नहि, स्मृतिक कठिन प्रश्न जेकाँ बाजल। बच्चा सभक रजिस्टरमे लिखल गेल—‘जखन समाज कोनो विचारकक असुविधाजनक जीवनकेँ सम्मानक मूर्तिमे कैद कऽ दिअय, तखन ई शारीरिक हत्या नहि, मुदा स्मृतिहत्या अवश्य होइत अछि।’ अनन्या नीचाँ जोड़ली—‘सम्मानक नाम पर जीवन-सत्य मारब सेहो एक जातिक अपराध अछि।’

बटुकनाथ असहज भऽ उठल—‘नाम लिखबासँ पहिने सावधान रहू।’ अनन्या उत्तर देली—‘नाम हटबनिहार सभ सदिखन सावधानीक बात करैत अछि। हम आरोप नहि, प्रश्न लिखैत छी।’ एहि उत्तर पर चन्ना ठूँठक कोंपल काँपल, आ ओकर पात पर धूपक एक बून्द अटकि गेल। से बून्द एना चमकल जेना तत्त्वचिन्तामणिक कोनो सूक्ष्म तर्क माटिक सतह पर लिखाइत हो।

आरुणि बुझलनि जे जाति पर चर्चा गामक भीतर आगि लगा सकैत अछि। मुदा ओहि आगि सँ भागल जा सकैत नहि। ओ कहलनि—‘जे न्याय पुलक पाया, मजदूरक पएर, स्त्रीक देह, डूबल नाम, आ डिजिटल ठगीक पीड़ा धरि पहुँचि सकैत अछि, से जातिक दुआर पर आबि किएक रुकत?’ ई वाक्य सुनि मजदूरक वंशज सभ आगाँ बढ़ल। हुनका सभमे सँ एक युवक अपन माटि लागल हाथ ठूँठ पर राखलक। ओकर कातमे ब्राह्मण बूढ़ काँपैत हाथ राखि देलक। बीचमे क्षण भरि हवा ठाढ़ भऽ गेल।

कियो शुद्धि नहि करौलक। कियो जल नहि छिड़कलक। कियो जाति नहि पूछलक। ठूँठक माटि दुनू हाथ पर एकसमान लागल। दुनू हथेलीक भीतर ओ माटि सुखाइत गेल, आ सुखाइते ओ एहन कसैत छल जेना कोनो पातर परत चमड़ी पर बैसि रहल हो—दुनू हाथमे एके रंगक कसाव, एके रंगक खरखराहट। बा दूर सँ देखैत कहलीह—‘देखू, गाछीक देहक कण सभकेँ बराबर रंग दैत अछि। जाति मनुख बनबैत अछि; माटि नहि।’ एहि पर बूढ़क आँखि भीजल। ओ अपन ताम्रपत्र मोड़ि झोरामे रखलक। शायद ओकर परम्परा समाप्त नहि भेल, मुदा पहिल बेर ओकरा अपन पिंजराक छड़ि देखाइ पड़ल।

राति भेल तखन नारिकेल पात पाठशालामे बच्चा सभ नब पाठ लिखलक—‘जाति पूछबासँ पहिने नाम सुनू। कुल बतएबासँ पहिने दुःख सुनू। पवित्रता कहबासँ पहिने श्रम देखू। न्याय लिखबासँ पहिने स्पर्श स्वीकारू।’ ई पाठ कोनो राजपत्रमे नहि छपल, मुदा ओहि राति कतेक घरक भीतर रसोइक दुआर कने बेसी खुजल। कतेक इनारक जगत पर पहिल बेर अनचिन्हार पएर बिनु गारिक टिकि सकल। ओहि राति गामक कतेको दलान पर बहुत देर धरि कोनो बात नहि भेल—मुदा ओ चुप्पी पहिनुका चुप्पी जकाँ नहि छल; ओहिमे किछु सोचल जा रहल छल।

गंगेशक स्वर अन्तिम बेर सुनाइ देलक—‘तत्त्व चिन्तन बिनु करुणा अन्हार अछि। न्याय देह बिनु शव अछि। प्रमाण तखन पूर्ण होइत अछि जखन जीवन ओकरा नकारि नहि सकय।’ एहि वाक्यक बाद ठूँठक फाँकि सँ कारी माटि नहि, उज्जर धूलि निकलल। ओ धूलि बच्चा सभक माथ पर पड़ल। कियो तिलक नहि कहलक; अनन्या लिखली—‘ई प्रश्नक धूलि अछि।’

अध्यायक अन्तमे बटुकनाथ हरिहरन अपन लोक-स्मृति न्यासक कागच समेटि रहल छल। ओकरा बुझाइत छल जे जँ ई पाठ पसरल, तँ स्मृतिक अधिकारक संग जातिक प्रश्न सेहो जुड़ि जाएत, आ तखन न्यासक कुर्सी पर बैसि स्मृति नियन्त्रित करब कठिन भऽ जाएत। ओ रातिए गुप्त चिट्ठी लिखलक—‘गंगेश प्रसंगकेँ सीमित राखल जाए; जाति-विमर्श परियोजनाक उद्देश्य सँ बाहर अछि।’

मुदा चिट्ठी भोर धरि पीयर नहि, कारी पड़ि गेल। ओकर अक्षरक बीच एक शब्द अपने-आप उगि आयल—‘स्पर्श’।

लोकगीत: जातिक पिंजरामे स्पर्श

लोकधुन: करुण नचारी

तोड़ू हे सलाखी, बोलक सलाखी तोड़ू हे,
एक बेर ‘भाइ’ कहि पिंजराक साँस छोड़ू हे।

काठक पिंजरा नहि, बोलक सलाखी रे माय,
एकहि माटिक देह, तैयो छुअब पाप कहाय।
ककर अन्न खा कऽ देह, ककर घामसँ खेत हरियर,
दुआर पर नाम पूछिते किएक भऽ जाइ मोन पाथर?

गंगेश प्रश्न उठौलक—हाथक रंग कतऽ अलग,
बटुकक पोथी काँपल, पुरान मर्यादा भेल नंग।
जे पएर गामक बाट बनौलक, ओकरा देहरी नहि,
जे हाथ सभक चिता सजौलक, ओकरा स्पर्शक ठाम नहि।

सलाखी तोड़ू धीरे, करेजा नहि तोड़ू,
एक बेर ‘भाइ’ कहू—पिंजराक साँस छोड़ू।
दुआरि पर नाम पुछिते किएक मोन भेल रेत?

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—विरुद्ध: उदाहरण: "शब्द नित्य अछि, कृतक (उत्पन्न) होयबाक कारणे। विरुद्ध।]

अध्याय १२२

गंगेशक मुक्ति

मुक्ति ग्रन्थसँ नहि— प्रश्न पुछबाक अधिकार घुरलासँ होइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: प्रश्नक दीप

लोकधुन: विदापत पदक जिज्ञासा-लय

बारू हे दीप, प्रश्नक दीप बारू हे,
एक उत्तर सँ दोसर बाट निहारू हे।

गंगेशक प्रश्न दीप थीक, कियो बुझा नहि पाबै,
एक उत्तरसँ दोसर बाट सदिखन खुलि आबै।
जिज्ञासा गंगाजल जकाँ मोनक मैल हटाबै,
साँचक पाथर छूबैत-छूबैत उज्जर रूप बनाबै।

प्रश्न करब अपराध नहि, ज्ञानक पहिल नाम,
जे पूछै से पार लगाबै भ्रमक गहींर गाम।
दीप हाथमे लऽ चलू, उत्तर स्वयं फुलत,
गंगेशक मुक्तिक प्रश्नसँ नव विचार उगत।

गंगाजल सन जिज्ञासा मोनक मैल बहाबय,
साँचक पाथर छूबि-छूबि आरो निखरि आबय।
पूछब अपराध नहि, ज्ञानक पहिल सीढ़ी,
प्रश्नक अँजोरिया मे चलय पीढ़ी-दर-पीढ़ी।

❖

समाज विचारक माथ पर ताज धरै छै आ ओहि ताजक नीचाँ ओकर जीवनक असुविधा दाबि दै छै। ग्रन्थ बचि जाइ छै, मनुक्ख हेरा जाइ छै। ई हत्या नै कहबै छै, मुदा नस कटले रहै छै।

प्रमाणक दुआर पर जँ चौकीदार बैसल छै, तँ सत्य भीतर पहुँचबासँ पहिने मारल जाइ छै। तें असल प्रश्न ई नै जे प्रमाण छै कि नै— असल प्रश्न ई जे प्रमाणक भाषा पर ककर अधिकार छै।

आ जे प्रश्नसँ डेराइए, से न्यायक अधिकारी नै छिकै। दीप बारब कठिन नै छै; कठिन ई छै जे ओ दीप ककरो आँखि मे नै, प्रश्न मे बारल जाए।

जातिक पिंजराक राति बीतल, मुदा पिंजराक सलाख सभ भोरमे अदृश्य नहि भेल। उनटे, भोरक धूप पड़िते ओ सभ आरो साफ देखाइ पड़ल। नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा सभ देखलक जे सलाख लोहाक नहि, शब्दक अछि—कुल, गोत्र, मान, अपमान, शुद्धता, अशुद्धता, भोज, विवाह, आसन, जल, छुआछूत, आ ओ सभ मौन जे घरक भीतर जन्मसँ पहिने बच्चाक माथ पर राखि देल जाइत अछि।

अनन्या ठूँठक लग रजिस्टर खोललक। पछिला पन्ना पर लिखल छल—‘जातिक पिंजरा।’ ओकरा नीचाँ खाली स्थान छल। ओ पूछली, ‘एहि पिंजराक चाबी कोन?’ कियो उत्तर नहि देलक। बा लाठी सँ माटि कुरेदैत रहलीह। लाठीक नोक माटि पर जे लकीर बनबैत छल, से बनितहि मेटा जाइत छल—आ बा ओकरा फेर-फेर बनबैत रहलीह, जेना कोनो प्रश्न बेर-बेर लिखल जा रहल हो। आरुणि दूर पुलक दिशा दिस देखैत छलाह। सत्यव्रत मेहता अपन घुट्ठी पर हाथ राखि बैसल छलाह, जेना हुनका कानूनक सभ धारा ओहि प्रश्नक सोझाँ एकदम हलुक बुझाइत हो।

तखने कटल चन्ना ठूँठक भीतर सँ कारी धूलि उठल। धूलि घुमैत-घुमैत अक्षर बनय लागल। पहिने एक बिन्दु, फेर एक रेखा, फेर एक प्रश्न। बच्चा सभ एक संग पढ़लक—‘प्रमाण।’ ई शब्द सुनिते पानिक ऊपर लहरि आयल, माटि पर दीमकक पुरान सुरंग खुजल, आ ठूँठक भीतरक हरियर बिन्दु एक क्षण लेल तेज भऽ उठल।

बा आँखि मिचमिचा कऽ कहलीह, ‘गंगेश आयलाह।’ एहन सहज स्वरमे कहलीह जेना कोनो दूरक नातेदार आँगनमे पधारल होथि। मुदा बच्चा सभक लेल ई नाम कथा, शास्त्र, विवाद, आ नुकाओल जीवनक दुआर छल। गंगेश—तत्त्वचिन्तामणिक लेखक, नव्य न्यायक जन्मदाता, मिथिलाक तर्कक महागह्वर। मुदा ओहि नामक चारू कात जाति-व्यवस्थाक धुँआ सेहो उठैत छल।

ईरा धीरे पूछली, ‘गंगेश उपाध्याय? जिनकर तत्त्वचिन्तामणि बारह हजार ग्रन्थ बराबर कहल जाइत अछि?’ बा कहलीह, ‘हँ, मुदा केवल ग्रन्थक भार नहि देखू। जे समाज विचारक माथ पर ताज धरैत अछि, ओहि समाजक हाथ ओकर जीवनक असुविधाजनक बात पर छूरी चलबैत अछि।’

ठूँठक एक फाँकिमे सँ पानिक बून्द झरल। ओ बून्द जमीन पर पड़िते छोट दर्पण बनि गेल। दर्पणमे बच्चा सभकेँ एक घर देखाइ पड़ल—खाली चौकी, बुझल दिया, आ एक गर्भवती

स्त्रीक छाह। एक स्वर उठल—‘पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्म।’ बच्चा सभ सकपका गेल। ई कथन तर्कक धरती पर असम्भव जेकाँ छल, मुदा लोकस्मृतिमे जीवित।

गोप कुमार तुरन्त कागच दिस हाथ बढ़ौलनि, मुदा सत्यव्रत रोकि देलनि। ‘पहिने सुनू,’ ओ कहलनि, ‘एहि ठाम प्रमाणक अर्थ फाइल नहि, लोकस्मृति, प्रश्न, आ नुकाओल भय सेहो अछि।’ गंगेशक प्रश्न एतय शास्त्रीय परीक्षा नहि, सामाजिक परीक्षा बनि गेल छल। समाज जकरा असम्भव कहि चुप करबैत अछि, ओ कखनो-कखनो अपने असत्य नुकएबाक लेल असम्भवक नाम लैत अछि।

अनन्या माटि पर तीन गोला बनौलक—प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द। फेर चारिम गोला खिंचलक —‘दबायल जीवन।’ ओ कहली, ‘जँ समाज केवल ओहि प्रमाणकेँ मानत जे ओकर पिंजरा बचबैत हो, तँ न्याय अधूरा रहत।’ बच्चा सभक एहि चारिम गोला पर बूढ़बा भूतक हँसी सुनाइ पड़ल। गंगेशक नव्य न्याय बच्चाक हाथमे नब रूप लऽ रहल छल।

तखन दर्पणमे दोसर दृश्य खुजल। एक स्त्री—चर्मकारणी—पानिक किनार पर ठाढ़। हुनकर हाथमे चमड़ा नहि, जीवनक गन्ध छल; हुनकर पएरमे माटि छल, हुनकर आँखिमे निर्वासनक धूप। हुनका चारू कात समाजक पण्डित, कुलगुरु, नामरक्षक, आ मान-ध्वजधारी लोक सभ ठाढ़। ओ सभ हुनकर देह पर जातिक मोहर तकैत, मुदा गंगेशक आँखि हुनकर भीतरक मनुष्य देखैत।

मीरा आगाँ बढ़ली। ओ कहली, ‘जे स्त्रीक नाम इतिहासमे केवल जाति सँ चिन्हित अछि, हुनकर असली नाम केओ किएक नहि लिखलक?’ प्रश्न सुनिते दर्पण काँपल। चर्मकारणी शब्द एक क्षण लेल टूटल, ओकर भीतर सँ अनेक स्त्री-स्वर उठल—जिनका कुलमे, विवाहमे, देहमे, श्रममे, प्रेममे अपमान लिखल गेल। मीरा रजिस्टरमे लिखली—‘चर्मकारणी—नामक प्रतीक्षामे एक पूर्ण मनुष्य।’

गंगेशक विवाहक प्रसंग चन्ना ठूँठक अदालतमे विस्फोट जेकाँ उतरल। बटुकनाथ हरिहरन, जे जातिक पिंजराक अध्यायमे अपने सन्तानक प्रश्नसँ घायल भऽ चुकल छल, ओ दूर सँ सुनैत छल। ओकरा लागल—एहि कथाकेँ शास्त्रीय विवाद घोषित कऽ देब, तखन बचि जाएब। मुदा बच्चा सभ ओकरा रोकलक। अनन्या कहली, ‘विवाद बादमे। पहिने पूछू—जँ न्याय-दर्शनक पिता जाति-सीमा तोड़ैत छथि, तँ जाति-व्यवस्था हुनकर ग्रन्थ पढ़ि अपन सलाख किएक चमकबैत अछि?’

ओहि प्रश्न पर ठूँठक भीतर सँ बारह हजार सूक्ष्म रेखा चमकल। प्रत्येक रेखा एक ग्रन्थ जेकाँ। ककरो लागल, ई तत्त्वचिन्तामणिक पन्ना अछि। ककरो लागल, ई मिथिलाक माटिमे दबायल तर्कक नस अछि। गोप कुमार गनबाक कोशिश केलनि, मुदा रेखा सभ गिनती सँ बाहर छल। ओ रेखा सभ एक ठाम स्थिर नहि रहैत छल—आँखि जाहि पर टिकैत, ओ मिझा जाइत, आ जाहि पर नहि टिकैत, ओ चमकैत रहैत। बा कहलीह, 'बारह हजार ग्रन्थ बराबर जे लिखत, ओकर जीवनक एक वाक्य सेहो पढ़ू।'

तखने नामक पाथरक घेरामे दूटा नब नामक छाह उतरि आयल—रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा 'अशोक'। हवा भारी भऽ गेल। कियो तुरन्त दोषारोपणक स्वरमे नहि बाजल। सत्यव्रत मेहताक आँखि उठल। अनन्या पूछली, 'ई सभ कोना आयल?' बा उत्तर देलीह, 'जखन सम्मानक नाम पर जीवन-सत्य काटल जाइत अछि, तखन कटार धातुक नहि, लेखनीक होइत अछि।'

कथा कहलक जे गंगेशक सम्मान राखबाक नाम पर हुनकर असुविधाजनक जीवन प्रसंगकेँ काटल गेल, सम्हारल मूर्ति बनाओल गेल, शास्त्रीय महिमा राखल गेल, मुदा जाति-भंजक मनुष्यकेँ चुप करा देल गेल। एहि चुप्पीकेँ बच्चा सभ 'सम्मान-हत्या' कहलक। शाब्दिक रक्त नहि बहल, मुदा स्मृतिक नस कटल। जकरा समाज माथ पर चढ़बैत अछि, ओकर मनुष्यत्व पएर तरे दबा देब—ई जातिक पिंजराक सभसँ उज्जर हिंसा छल।

हरिहरन एकाएक बाजि उठल, 'इतिहासक प्रमाण चाही।' अनन्या ओकरा देखली। 'प्रमाणक नाम पर अहाँ कतेक पीड़ितक आवाज रोकलहुँ?' ओ पूछली। 'जँ सत्ता अपन सुविधा अनुसार प्रमाण माँगय, आ लोकक स्मृतिकेँ अफवाह कहि दिअय, तखन न्याय कोना बाँचत?' हरिहरन चुप। ओकर भीतरक स्वप्न-दरबारक सभ वकील पात बनि फेर उड़य लागल।

सत्यव्रत मेहता एहि बेर चुप्पी नहि रखलनि। ओ धीमे कहलनि, 'न्यायमे प्रमाण जरूरी अछि, मुदा प्रमाणक दुआर पर जातिक चौकीदार बैसल हो, तखन सत्य भीतर पहुँचबासँ पहिने मारल जाइत अछि। गंगेशक प्रवेश एहि ठाम एहि कारणेँ जरूरी अछि—कारण ओ प्रश्न करैत छथि जे प्रमाणक भाषा पर ककर अधिकार?'

ई सुनि नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा सभ अपन पाठ बदललक। ओ सभ लिखलक —'प्रत्यक्ष बिनु करुणा अन्हार। अनुमान बिनु नम्रता घमण्ड। शब्द बिनु उत्तरदायित्व हिंसा। स्मृति बिनु न्याय अधूरा।' ई चारि वाक्य पढ़िते ठूँठक हरियर कोंपल थोड़ा झुकल, जेना ओ नव्य न्यायक नब कोंपलकेँ स्वीकार करैत हो।

चर्मकारणी स्त्रीक छाह फेर दर्पणमे आयल। एहि बेर हुनकर माथ पर जातिक लेबल नहि, केवल उजास छल। ओ गंगेशक कातमे ठाढ़ भेली, मुदा अधीन नहि। ओ कहली—'जे हमरा नाम नहि देलक, ओकर इतिहास अधूरा। जे हमरा जातिसँ चिन्हलक, ओकर न्याय पिंजरा। जे हमरा मनुष्य मानलक, ओकरा संग ग्रन्थ लिखल जा सकैत अछि।' मीरा रजिस्टरमे ई वाक्य लिखिते काँपि उठली।

लाउ किन-हंगक दूरक जालमे एहि दिनक सूचना पहुँचल। ओकर सलाहकार लिखलक—"जाति-प्रश्न स्मृति-परियोजनाक लेल जोखिम अछि।" ब्रूमक दान-पत्र सँ जुड़ल एजेंसी कहलक—'एहि भागकेँ लोककथा खण्डमे राखू, आधिकारिक अभिलेखमे नहि।' चन्द्रपाल बत्रा सोचलक—ई प्रसंग ऐपमे डालि देल जाए तँ विवाद बढ़त, उपयोगकर्ता बढ़त। मुदा बच्चा सभ पहरा देलक—गंगेश विज्ञापन नहि, प्रश्न छथि।

साँझ धरि ठूँठक चारू कात गंगेशक नामक नब पाथर राखल गेल। पाथर एखन नब छल, ओकर कोर तेज आ सतह खुरदुर—हाथ फेरितहि आँगुरमे धूलिक बारीक परत लागि जाइत छल, आ ओ धूलि पोंछला पर छूटैत नहि छल। ओकर कातमे दोसर पाथर—'चर्मकारणी: असली नाम प्रतीक्षारत।' तेसर पाथर—'सम्मानक नाम पर काटल जीवन-सत्य।' चारिम पाथर—'तत्त्वचिन्तामणि: प्रश्नक अग्नि।' ई चारि पाथर जातिक पिंजराक दुआर पर रखल चाबी जेकाँ चमकैत रहल।

रातिमे जखन कबड्डी शुरू भेल, बच्चा सभ 'कबड्डी-कबड्डी'क बीच एक नब शब्द जोड़लक—'प्रमाण-प्रमाण'। खेलक नियम बदलल नहि, मुदा साँसक अर्थ बदलि गेल। जे बच्चा सीमा पार करैत, ओकरा विरोधी पकड़बासँ पहिने पूछैत—'तोहर नाम कोन? तोहर प्रमाण कोन? तोहर स्मृति ककरा दबौलक?' खेल हँसीमे चलैत, मुदा भीतर दर्शनक आगि धधकैत।

ओहि राति गोहि सभ पानिक तलसँ शान्त देखाइ पड़ल। ओकरा सभक आँखिमे भूख कम, जिज्ञासा बेसी छल। शायद ओ सभ देखैत छल जे देह चिबा सकैत अछि, मुदा प्रश्न नहि। जाति देह घेरि सकैत अछि, मुदा जँ बच्चा सभ प्रमाणक अर्थ बदलि दैत, तँ सलाखमे दरार पड़ैत अछि।

अध्यायक अन्तिम पहरमे ठूँठक भीतर सँ आवाज आयल—न बूढ़बा भूतक, न बाक, न सत्यव्रतक। आवाज गाढ़, सूक्ष्म, आ तर्कक धारि जेकाँ तेज छल—'जे प्रश्न सँ डेराइत अछि, से न्यायक अधिकारी नहि।' ओ आवाज कानमे नहि, दाँतक जड़िमे बजैत छल—एहन

झनझनाहट जे सुनलाक बादो देर धरि माथक भीतर रहि जाइत अछि। बच्चा सभ बुझि गेल—गंगेशक प्रवेश केवल स्मरण नहि, परीक्षा अछि।

अनन्या अगिला पन्ना खोललक। शीर्ष पर लिखली—'उन्नैसम पहरा: प्रमाणक दरार।' कारण एखन प्रश्न रहि गेल छल—जखन प्रमाण स्वयं जाति, सत्ता, धन, आ सम्मानक हाथमे कैद हो, तखन दबायल लोक अपन सत्य केना बचाओत? ओहि प्रश्नक उत्तर अगिला राति चन्ना ठूँठक भीतर सँ नहि, गामक सभसँ नीच कहल गेल घरक आँगन सँ उठबाक छल।

लोकगीत: गंगेशक मुक्तिक प्रश्न

लोकधुन: विदापत-विरह

बचाउ हे प्रश्न, गंगेशक प्रश्न बचाउ हे,
एक साँच उत्तरसँ सात पीढ़ी मुक्त कराउ हे।

गंगेश, तोहर प्रश्नक दीप के बुझाओत रे,
जकर न्याय प्रश्नसँ डेराय, से न्याय कहाओत रे?
पोथीक पात फड़फड़ाय, गुरुजन आँखि चोराय,
चुप्पीक जनेऊ टूटि कऽ माटि पर खसि जाय।

तोहर कण्ठमे पुरखाक रोकल स्वर जागल,
'किएक' कहिते पिंजराक पहिल काँटी भागल।
मुक्ति गंगामे डुबकी नहि, प्रश्नक अधिकार,
अपन नाम अपन मुँहसँ कहब—ई सभसँ पैघ त्यौहार।

गंगेश, प्रश्न बचाउ, देह चाहे थाकि जाय,
एक साँच उत्तरसँ सात पीढ़ी मुक्त भऽ जाय।
कण्ठ मे पुरखाक रोकल स्वर फेर जागल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—सत्प्रतिपक्ष: उदाहरण: वादी कहैत अछि, "शब्द नित्य अछि, श्रावण (सुनबा योग्य) होयबाक कारणे। सत्प्रतिपक्ष।]

अध्याय १२३

तत्त्वचिन्तामणिक पात

तत्त्वचिन्तामणिक पात कागजसँ कड़ा— कारण ओहिपर तर्क लिखल छै, भय नहि।

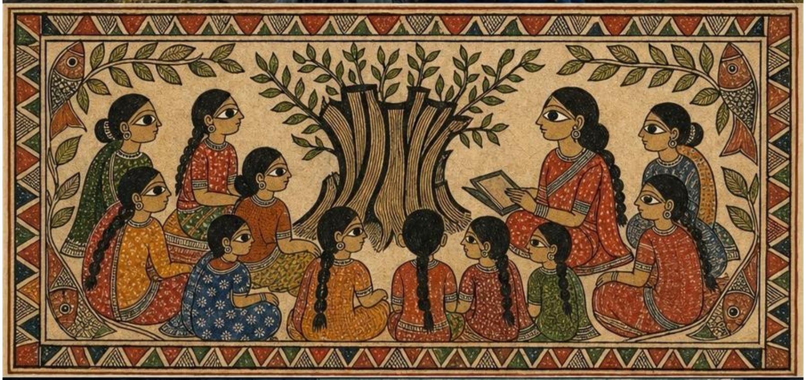

अध्यायारम्भ लोकगीत: स्त्रीक नाम पातपर

लोकधुन: समदाउनक आशा-रूप

लिखाउ गे बहिना, पात पर नाम लिखाउ गे,
आधा रहल पोथीकेँ पूरा बनाउ गे।

पोथीक पात खाली छल, बहिनी नाम लिखाउ,
मेटायल स्त्रीक जीवनकेँ अक्षर-फूल सजाउ।
माय, दादी, बेटी सभ अपन कथा कहत,
पातक नस-नसमे हुनकर श्रमक नदी बहत।

नाम लिखलासँ मान बढ़ै, इतिहास पूर्ण होए,
आधा पोथी पूरा बनत जखन स्त्री स्वर सोए।
पात-पातपर नाम उगाउ, कोंपल जकाँ हरियर,
स्त्रीक स्मृतिसँ मिथिला बनत आरो समृद्ध, सुन्दर।

माय-दादी-बेटीक श्रम पात-पात मे बाजय,
चूल्हि-खेत-अँगनाक कथा इतिहास मे साजय।
मेटायल जीवन-रेखा फेर हरियर होयत,
स्त्री-स्वरक स्याही सँ मिथिला पूर्ण होयत।

❖

प्रमाणक चारि दुआर छै— प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, आ अनुपलब्धि। पहिल तीनक चर्चा सभ करैए। चारिमक चर्चा कियो नै करैए, कारण ओ पुछै छै जे जे नै भेटल, से कतय गेल आ केकरा सुविधा भेलै।

जे ग्रन्थ मनुक्ख केँ देखय नै सिखबै छै, से बारह हजार नै, आध पात बराबर सेहो नै छिकै। ग्रन्थक भार पन्नाक भार नै छिकै— प्रश्नक अनन्तता छिकै।

आ जकर नाम इतिहास पन्नाक कात मे राखि देलकै, ओकर प्रश्न मरै नै छै। पात सुखा जाइ छै, नस रहि जाइ छै; आ ओहि नस मे जे लिखल छै, से पढ़य लेल आँखि नै— प्रश्न चाही।

गंगेशक मुक्ति भेलाक बाद चन्ना गाछीक ठूँठक चारू कात एकटा अनोखा शान्ति उतरि आयल। ई ओ शान्ति नहि छल जे मृतकक मुँह पर कपड़ा देलाक बाद घरमे पसरि जाइत अछि; ई ओ शान्ति छल जे प्रश्न अपन उत्तर नहि, अपन अगिला प्रश्न तकि लैत अछि। जातिक पिंजराक एक-एक सरिया बच्चा सभक कण्ठमे टूटल छल, मुदा टूटल सरिया धरती पर पड़ि फेर नब हथियार बनि सकैत छल। तेँ पहरा बन्द नहि भेल।

एहि दिन नारिकेल पात पाठशालाक सभ बच्चा ठूँठ लग नहि, नब उगल हरियर कोंपलक छाहरि लग बैसल। कोंपल एखन छाहरि देबाक लायक नहि छल, मुदा ओकर चारू दिस लोक एना बैसल जेना भविष्यक छाहरि पहिने सँ मानि लेल गेल हो। अनन्या अपन रजिस्टर खोलि कहली—‘गंगेश बाबाक मुक्ति भेल, मुदा गंगेशक ग्रन्थक पहरा शेष अछि।’

ईरा पूछली—‘ग्रन्थक पहरा?’ अनन्या कहली—‘जतय शास्त्र रहैत अछि, ओतय ओहि पर अधिकार जमबनिहार बेगरतासँ पहुँचैत अछि। जाति पहिने देह पर पहरा देलक, फेर नाम पर, फेर विवाह पर, फेर स्मृति पर। आब ओ तर्क पर पहरा देबाक कोशिश करत।’

बच्चा सभक बीच ओहि दिन पहिल बेर ‘तत्त्वचिन्तामणि’ शब्द केवल पाठ्यपुस्तकक नाम नहि रहल। बा कहलीह—‘बारह हजार ग्रन्थ बराबर कहल जाइत छल ओकर विस्तार। मुदा जे ग्रन्थ मनुष्यकेँ देखय नहि सिखाबय, से बारह हजार नहि, आध पात बराबर सेहो नहि।’ हुनकर स्वरमे उपदेश नहि, बहुत पुरान अनुभवक जरल राखि छल।

आरुणि ठूँठक सूखल फाँकिमे सँ एकटा पात निकाललनि। पात चन्ना गाछीक पुरान नहि, नब कोंपलक छल। मुदा ओकरा पर बारीक रेखा छल—जेना कोनो अदृश्य लिपिकार नहसँ लिखि गेल हो। गोप कुमार काँचक चश्मा लगा पढ़बाक प्रयास केलनि, मुदा अक्षर देखाइ नहि देलक। अनन्या पातकेँ कान लग नेलक। ओ बजली—‘ई अक्षर आँखिसँ नहि, प्रश्नसँ पढ़ल जाएत।’

तखन तत्त्वचिन्तामणिक पहिल पाठ शुरू भेल। बच्चा सभ माटि पर चारि गोला बनौलक—प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, आ अनुपलब्धि। देविका हँसि पड़ली—‘एतेक कठिन बात खेलमे?’ अनन्या कहली—‘कठिन बात जँ खेलमे नहि उतरय, तखन न्याय फेर कचहरीमे कैद भऽ जाएत।’

पहिल गोला ‘प्रत्यक्ष’ छल। बच्चा सभ ठूँठ, पाथर, नाम, बाढ़िक पानि, कटायल जड़ि, चन्द्रपालक काँप, बटुकनाथक रोदन, लाउ किन-हंगक शीशामे देखल गोहि—सभकेँ एक-एक

कऽ प्रत्यक्ष कहलक। मुदा एक बच्चा उठि पूछलक—‘जाति प्रत्यक्ष अछि?’ सभ चुप। ओकर प्रश्न हवामे ओना लटकल जेकाँ गाछक कटायल डारि आकाशमे लटकल हो।

मीरा उत्तर देली—‘मनुष्यक देह प्रत्यक्ष अछि; अपमानक प्रभाव प्रत्यक्ष अछि; मुदा जाति जे श्रेष्ठता कहैत अछि, से प्रत्यक्ष नहि—ओ मोनक बनाओल पिंजरा अछि।’ बच्चा लिखलक—‘जातिक अहंकार प्रत्यक्ष नहि, ओकर हिंसा प्रत्यक्ष।’

दोसर गोला ‘अनुमान’ छल। ईरा कहली—‘जखन कोनो नाम बार-बार अभिलेख सँ गायब भेटय, तखन अनुमान होइत अछि जे कोनो शक्ति नाम चोरबैत अछि।’ सत्यव्रत मेहता, जे ओहि दिन दूर बैसल छलाह, धीरे जोड़लनि—‘जखन कानून बराबरी कहय आ समाज रस्ता अलग करय, तखन अनुमान नहि, अपराधक दिशा देखाइत अछि।’

तेसर गोला ‘शब्द’ छल। एहि गोला पर विवाद उठल। पुरोहितक पोता, जे पाठशालामे नुका कऽ सुनय आयल छल, कहलक—‘शास्त्रक शब्द सभसँ ऊपर।’ मीरा ओकर सोझाँ बैसि पूछली—‘जँ शास्त्रक नाम पर मनुष्यक देह काटल जाए, तखन शब्द ऊपर कि मनुष्य?’ पोता उत्तर नहि देलक। बा धीरे कहलीह—‘जे शब्द मनुष्यकेँ नीच देखाबय, ओ शब्द नहि, सत्ता अछि।’

चारिम गोला ‘अनुपलब्धि’ छल। ई गोला सभसँ कठिन। अनन्या खाली जगह देखबैत कहली—‘एतय जे नहि भेटैत, ताहिसँ सेहो साँच जन्मैत अछि। गंगेशक जीवनमे चर्मकारणी स्त्रीक पूरा नाम नहि भेटैत—ई अनुपलब्धि अछि। जे समाज हुनकर नाम सुरक्षित नहि राखलक, ओ समाजक न्याय अधूरा अछि।’

ई सुनिते ठूँठक भीतर सँ हलुक कम्पन उठल। जेना ककरो नहि बाजल गेल नामक अस्थि काँपल हो। बच्चा सभ एक संग माथ झुकौलक। अनन्या रजिस्टरमे लिखली—‘गंगेशक मुक्ति बिनु अज्ञात चर्मकारणी स्त्रीक नाम तकने पूर्ण नहि।’

एहि वाक्यसँ पाठशालाक दिशा बदलि गेल। गंगेश आब केवल नव्य न्यायक जन्मदाता नहि रहलाह; ओ असुविधाजनक सम्बन्धक प्रहरी बनि गेलाह। हुनकर तत्त्वचिन्तामणि न्यायालयक ग्रन्थ नहि, जाति-विवेकक छेनी बनि गेल। जे छेनी जड़ि पर राखल जाए तखन झूठक पपड़ी उतरय, मुदा देह न कटय।

दुपहर धरि पात बढ़ैत गेल। हरियर कोंपलक फुनगी पर एक नहि, अनेक पात झिलमिलायल। प्रत्येक पात पर अदृश्य रेखा। बच्चा सभ ओकरा ‘तत्त्वचिन्तामणिक पात’ कहलक। गिनती शुरू भेल—एक, दू, पाँच, बीस, पचास। गनैत-गनैत बच्चा सभक आवाज

धीमा होइत गेल, कारण जतेक गनैत छल ततेक नब पात देखाइ पड़ैत छल—आ कोनो बेर बुझाइत छल जे गनल पात फेर सँ गनल जा रहल अछि। कियो मजाकमे कहलक—'बारह हजार होएत?' बा तुरन्त रोकलीह—'गिनती सँ पहिने अर्थ बचाउ। बारह हजार ग्रन्थ बराबर होएबाक अर्थ ई नहि जे पन्ना भारी; अर्थ ई जे प्रश्न अनन्त।'

एहि बीच शहर सँ दू विद्वान आयल। एक अपन परिचय देलक—'हम गंगेश अध्ययन परिषद्सँ।' दोसर कहलक—'एहि लोककथात्मक सामग्रीकेँ वैज्ञानिक सम्पादन चाही।' हुनका सभक हाथमे कैमरायुक्त यन्त्र, आवाज पकड़बाक नली, अनुमति-पत्र आ शास्त्रीय शब्दक गठरी छल। ओ सभ विनम्र छल, मुदा विनम्रतामे एक अदृश्य अधिकारक गन्ध छल।

पहिल विद्वान कहलक—'गंगेशक प्रसंगकेँ नियन्त्रित रूपमे प्रस्तुत करबाक चाही। लोक-आधारित अतिशयोक्ति सँ दर्शनक गम्भीरता घटैत अछि।' अनन्या पूछली—'कतेक गम्भीरता?' विद्वान अटकल। अनन्या फेर पूछली—'जतय चर्मकारणी स्त्रीक नाम हटि जाए, ओतय गम्भीरता बाँचल रहैत अछि?'

दोसर विद्वान बीचमे बाजल—'इतिहासमे प्रमाण चाही।' बच्चा सभ एक संग चारि गोला देखौलक—प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अनुपलब्धि। ईरा कहली—'प्रमाण चाही, मुदा प्रमाणक दरबान के? जे जाति सुविधा देत, वैह प्रमाण? जे स्त्रीक नाम मेटाबय, वैह इतिहास?'

विद्वान सभ असहज भेल। हुनका सभ लग उत्तर छल, मुदा ओ उत्तर सभ सम्मेलनक मंच लेल बनल छल; ठूँठक चारू कात बैसल बच्चा सभक लेल नहि। हुनका सभक भाषामे शुद्धता छल, मुदा स्पर्श नहि। चन्ना गाछीक पात ओकरा सभक कागच पर खसल। पात हलुक छल—खसबामे कोनो आवाज नहि भेल—मुदा जाहि ठाम ओ बैसल, ओहि ठाम कागच कने नम बुझायल, जेना पातक भीतरसँ किछु उतरि गेल हो। पात पर कोनो अक्षर नहि छल, तथापि कागचक छपल पाँती धुँधला गेल।

सत्यव्रत मेहता पहिल बेर ओहि पाठमे आगाँ सरकलाह। ओ विद्वान सभसँ नहि, बच्चा सभसँ कहलनि—'न्याय केवल निर्णय नहि। न्याय ई सेहो अछि जे ककरा प्रश्न पूछबाक अनुमति अछि।' ई सुनि अनन्या लिखली—'प्रश्नक अधिकार—नामक पहराक भाग।'

साँझ भेल। पात सभ हवामे काँपय लागल। स्वप्नक अनाम ग्रहक आमन्त्रणक प्रसंग एखन दूर नहि गेल छल; आकाशमे नीम-नील रेखा देखाइत छल, जेना कोनो अदृश्य कक्षा पृथ्वीकेँ फेर खिंचि रहल हो। बच्चा सभ बुझलक जे तर्कक पहरा केवल धरती पर नहि, ग्रहक

बीच सेहो चाही। जँ मनुष्य बिनु नामक ग्रह पर जाएत, तँ ओ प्रमाण सेहो बिनु मनुष्यक बना देत।

ओहि साँझक अन्तिम पाठमे अनन्या नब नियम पढ़ली—‘कोनो शास्त्र मनुष्यक देहसँ ऊपर नहि। कोनो प्रमाण अपमानक साक्षीकेँ नकारि नहि सकैत। कोनो दर्शन ओहि स्त्रीक नाम बिनु पूर्ण नहि जकरा इतिहास कात मे राखलक।’ बच्चा सभ उत्तर देलक—‘उपस्थित।’

ओहि ‘उपस्थित’ पर तत्त्वचिन्तामणिक पात सभ एकाएक हिलल। हवा नहि छल, तैयो पात काँपल। ओहि काँपमे कोनो सरसराहट नहि छल—एहन सूखल, बारीक खटखट जेना कियो बहुत दूर कोनो पोथीक पन्ना एक-एक कऽ उनटा रहल हो। प्रत्येक पातक छाह माटि पर अलग-अलग अक्षर बनाबय लागल। अक्षर जुड़ि एक वाक्य बनल—‘जकरा मेटाओल गेल, ओकर प्रश्न शेष अछि।’

राति उतरि रहल छल। विद्वान सभ चुपचाप अपन कागच समेटि रहल छल। बच्चा सभ पातक छाह पढ़ि रहल छल। आ दूर, कटायल चन्ना गाछीक पुरान जड़ि भीतर सँ एक गहींर आवाज उठल—न गंगेशक, न बच्चाक, न बूढ़बा भूतक; शायद ओहि अनाम चर्मकारणी स्त्रीक, जे एखन धरि पूरा नाम पाबय बाँकी छली। आवाज कहलक—‘न्याय ताबत धरि अधूरा अछि जाबत प्रश्नक देह भेटि नहि जाए।’

एहि वाक्यक बाद धरती पर बारह हजार जेकाँ सूक्ष्म छाह पसरि गेल।

लोकगीत: मेटायल पातक स्त्री

लोकधुन: समदाउन

उठाउ हे बेटी, हमर प्रश्न कण्ठ मे उठाउ हे,
मेटायल स्त्रीक नाम अपन गीत मे बसाउ हे।

पोथीमे पात रहल, पातमे हमर नाम नहि,
प्रश्न हमर जीवित रहल, उत्तरक कोनो धाम नहि।
चर्मक गन्धसँ दुआर सभ नाक झाँपि लेलक,
हमर बनाओल जूता पहिरि दरबार चलि गेलक।

तत्त्वक मणि चमकल, मुदा हमर देह अन्हार,
हम पूछलहुँ—स्पर्शक प्रमाण कोन अवतार?
लेखनी हमरा मेटलक, माटि मोन राखलक,

पातक सूखल नस हमर रोदन लिखि राखलक।

हे बेटी, हमर प्रश्न फेर कण्ठमे उठाउ,
लेखनी मेटा देलक—माटि मोन राखि लेल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—पक्षक स्वरूप आ प्रतिवादीक आपत्ति: प्रतिवादीक अनुसार, जतय-जतय कर्ता अछि, ओतय-ओतय शरीर अछि (जेना कुम्हार)। पक्षक स्वरूप आ प्रतिवादीक आपत्ति।]

अध्याय १२४

प्रमाणक अग्नि

प्रमाणक अग्निमे दाह कम, उजास बेसी— जे साँच अछि, से निखरि कऽ बहराइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: प्रमाणक अगिनिसँ उजास

लोकधुन: झिझिया-मंगल

घुमाउ गे झिझिया, प्रमाणक दीप घुमाउ गे,
छिद्र-छिद्र सँ झरैत अगिनि सँ भ्रम जराउ गे।

दीपक छिद्रसँ अगिनि झरय, झूठक जाल जरय,
साँचक पन्ना राखि जकाँ नहि—स्वर्ण जकाँ निखरय।
प्रमाण आगि दण्ड नहि, उज्जर करय विचार,
जे शुद्ध अछि से चमकि उठत, मेटत भ्रमक भार।

झिझियाक दीप घुमाउ, छिद्र-छिद्र जाँचू,
अगिनिसँ नहि डेराउ, सत्यक रूप चिन्हू।
उजास बनल प्रमाण जखन न्याय दिशा देखत,
कारी ओढ़नी हटिते जनक चेहरा चमकत।

झूठक जाल सन-सन जरय, साँच सोना निखरय,
आगिक ई परीक्षा सँ शुद्धे टा उबरय।
डर नहि, दीप बुझू—प्रमाण मित्र थिक,
अन्हार ओढ़नी हटिते मुँह चमकय नीक।

❖

समाज कहै छै— हम अहाँ कैँ महान मानै छी। मुदा जे बात मनुक्ख कैँ मनुक्ख बनबै छै, ओकरे काटि दै छै। माला ओतबे धरि माला रहै छै जाबत ओ गरदनि पर कसै नै लगै छै।

देहक हत्या आ स्मृतिक हत्या मे फरक छै। पहिलका मे रक्त बहै छै आ लोक देखै छै; दोसरका मे खाली एक पाँती कटै छै आ कियो नै देखैए। मुदा कटल पाँती मे जे रहै छल, से फेर कहियो नै अबैए।

आ इतिहासक सभसँ भारी पन्ना बेर-बेर ओ होइ छै जे खाली छोड़ल गेलै। जतय नाम रहबाक चाही छल आ नै छै— ओहि रिक्ति कैँ पढ़नाइ सिखय पड़ै छै।

तत्त्वचिन्तामणिक पात राति भरि ठूँठक चारू कात फड़फड़ाइत रहल। ओ पात कागचक नहि छल, मुदा पात पर लिखल रेखा सभ कागचसँ बेसी कड़ा छल। बच्चा सभ पहिने ओकरा फूलक पात बुझलक, फेर जखन भोरक धूप ओकरा छुलक, तखन देखलक—ओहि रेखा सभमे अक्षर नहि, प्रश्न लिखल अछि। प्रत्येक प्रश्नक मुँह आगि जेकाँ चमकैत छल।

अनन्या पहिल पात उठा कऽ पढ़य चाहली। अक्षर तुरन्त बदलि गेल। जे पाँती दूर सँ ‘प्रमाण’ बुझाइत छल, हाथ लगिते ‘ककर प्रमाण?’ बनि गेल। जे ‘न्याय’ बुझाइत छल, से ‘ककर न्याय?’ बनि गेल। जे ‘कुल’ बुझाइत छल, से ‘ककर कुल?’ बनि गेल। बच्चा सभ बुझि गेल—गंगेशक पात पढ़बाक अर्थ केवल पुरान ग्रन्थ पढ़ब नहि, अपन समाजक नुकाओल आगिमे हाथ देब अछि।

बा ओहि पातक लग बैसि गेलीह। हुनकर झुरायल हाथ तत्त्वचिन्तामणिक पात पर पड़ल तखन पात जरल नहि, उजास देलक। बा कहलीह, “जे ग्रन्थ बारह हजार ग्रन्थ बराबर कहल गेल, ओकर एकटा पातो जँ साँचमे पढ़ल जाए, तँ जातिक पूरा गुमान राखि भऽ सकैत अछि।” हुनकर स्वरमे न विद्वत्ता छल, न मंच। मुदा एहि वाक्यसँ चन्ना गाछीक ठूँठमे एक फाँकिसँ धुँआ उठल। धुँआ कारी नहि, हलुक उज्जर छल।

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन फेर आयलाह। ओ दूर बैसल रहबाक प्रण लेने छलाह, मुदा बच्चा सभ हुनका आइ बीचमे बैसय कहलक। “अहाँ कानून सुनलहुँ,” अनन्या कहली, “आब प्रमाण सुनू।” सत्यव्रत झिझकलाह। हुनका लग धारा, नजीर, शपथपत्र, बहस, न्यायालयक भाषा छल; मुदा एहि ठाम ‘प्रमाण’ गाछीक पात, स्त्रीक घाव, मजदूरक पएर, डूबल देह, अनाम बच्चा, आ चर्मकारणीक नाममे नुकाएल छल।

तखन गंगेशक कथा फेर उठल—पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्मक कथन, चर्मकारणीसँ विवाहक लोकस्मृति, तत्त्वचिन्तामणिक विराट लेखन, नव्य न्यायक जन्म। ईरा कहली, “समाज एहि सभमे सँ ग्रन्थ रखलक, जीवन काटि देलक। विचार राखलक, विवाह हटौलक। तर्क राखलक, जातिक डर बचौलक। ई की न्याय अछि?” कोनो उत्तर तुरन्त नहि आयल।

गोप कुमार अपन कागच खोललनि। ओ लिखल सूचनासँ भरल छल। मुदा ओ स्वीकारलनि—“सूचना प्रमाण होइत अछि, मुदा पूरा प्रमाण नहि। जँ समाज कोनो मनुखक जीवन-सत्यकेँ काटि कऽ केवल ओकर ग्रन्थ रखय, तँ दस्तावेज बचि जाइत अछि, मनुख मरि

जाइत अछि।” ओहि क्षण चन्ना ठूँठ पर राखल पाथर सभमे सँ किछु गरम भऽ गेल। जकर नाम अधूरा छल, ओकर गरमाहट बेसी छल।

मीरा बहुत धीरे कहली, “ई सम्मानक नाम पर हत्या अछि।” सभ चौंकल। ओ स्पष्ट केली—“देहक हत्या अलग, स्मृतिक हत्या अलग। कखनो-कखनो समाज कहैत अछि—हम अहाँकेँ महान मानैत छी; मुदा जे बात अहाँकेँ मनुष्य बनबैत अछि, ओ काटि दैत छी। ई ‘मान’ नहि, कुल-मर्यादाक नाम पर कएल जाइत हत्याक विद्वान रूप अछि।”

एहि वाक्य पर तत्त्वचिन्तामणिक पातमे आगिक एक महीन रेखा दौड़ल। पात जरल नहि, मुदा अक्षर सभ लाल भऽ गेल। पात पर दू छाह उभरल—रमानाथ झा, उदयचन्द्र झा ‘अशोक’। ओ सभ देहधारी मनुष्य जेकाँ नहि, पाठक छाँट-छाँट करैत हाथ जेकाँ देखाइ देल। एक हाथ जीवनक असुविधाजनक पाँती काटैत, दोसर हाथ ग्रन्थक गौरवक माला पहिरबैत।

बच्चा सभ डेरा गेल, मुदा अनन्या स्थिर रहलि। ओ पूछली, “अहाँ सभ गंगेशकेँ मारलहुँ?” छाह उत्तर देलक—“हम सभ हुनका अमर केलहुँ।” अनन्या फेर पूछली, “ककरा अमर केलहुँ—हुनका, कि अपन जातिक सुखद मूर्ति?” छाह काँपल। उत्तर नहि देलक।

बा बीचमे कहलीह, “जखन मनुखक जीवन नुकाओल जाइत अछि आ ओकर नामसँ माला बनाओल जाइत अछि, तखन फूलो फाँसी बनि जाइत अछि।” एहि वाक्य पर ठूँठक भीतर सँ बूढ़बा भूतक हलुक खँखार सुनाइ पड़ल। हुनका एहि तरहक न्याय प्रिय छल—जतय बूढ़ स्त्री ग्रन्थ-सम्पादकक घमण्ड तोड़य।

सत्यव्रत मेहता नोटबुक खोललनि। लिखलनि—“प्रमाण: केवल लिखित पाठ नहि। मौखिक स्मृति, दबाओल जीवन, काटल पाँती, जातिगत मौन, आ लोकक पीड़ा सेहो।” लिखिते हुनकर हाथ काँपि गेल। कानूनक पाँती एतेक विस्तृत होइत हुनका पहिने कतेक बेर रोकल गेल छल! ओ बुझलनि जे कतेक न्यायालय प्रमाणक अर्थ एतेक छोट बना दैत अछि जे मनुखक आधा जीवन दरबाजाक बाहर रहि जाइत अछि।

ईरा कहली, “गंगेश नव्य न्याय देलनि; मुदा हम सभकेँ नव्य स्मृति चाही। जाति जखन प्रमाणकेँ बान्हि दैत अछि, तखन न्याय आन्हर भऽ जाइत अछि। जे चर्मकारणी हुनकर जीवनमे प्रवेश करैत छथि, हुनका मेटाकऽ कएल गेल गंगेश-पूजा अधूरी पूजा अछि।” मीरा जोड़ली, “आ अधूरी पूजा अनेक बेर पूरा अन्याय बनि जाइत अछि।”

एक बालक पूछलक, “चर्मकारणी नाम की छलनि?” सभ चुप। ककरो ज्ञात नहि। एहि अज्ञानक भार सभ पर एक संग खसल। जिनकर विवाहक स्मृति समाजकेँ विचलित करैत

अछि, हुनकर नामहि गुम। बच्चा सभ तुरन्त एक पाथर उठौलक आ ओहि पर लिखलक—“चर्मकारणी—नाम तकल जा रहल अछि।” अनन्या कहली, “जाबत धरि नाम नहि भेटत, ई पाथर पहिल पाँतीमे रहत।”

ओहि पाथर पर धूप पड़ितहि अद्भुत दृश्य भेल। पाथरक चारूकात चमड़ाक गन्ध नहि, माटिक गन्ध उठल। जेना समाज जकरा चर्म सँ बाँधि नीच देखौलक, धरती ओकरा पूरा माटिक उत्तराधिकार देलक। बच्चा सभ बुझि गेल—जाति देह पर चिन्ह लगबैत अछि; माटि सभ देहकेँ अपन बराबर धूलि बनबैत अछि।

तखन पनिडुब्बी दूर पोखरिसँ आवाज देली। पानिक सतह पर बुलबुला उठल। बुलबुला फुटि कऽ शब्द बनल—“जाति पानिमे टिकैत नहि।” बा कहलीह, “ठीक। जलसमाधिमे देहक जाति कतऽ रहैत अछि? गोहि सभ पूछैत अछि की—अहाँ कोन कुलक?” लोकक भीतर ठंढा हास्य दौड़ल, मुदा हास्यक पाछाँ लाज छल।

गंगेशक छाह, जे कतहु पात आ धूपक बीच बनि रहल छल, धीरे-धीरे स्पष्ट भेल। ओ न पण्डितक आसन पर छलाह, न मूर्तिक मचान पर। ओ धूलि पर बैसल एक विद्यार्थी जेकाँ छलाह, सोझाँ पात, लग एक अदृश्य स्त्रीक रिक्त स्थान। ओ रिक्त स्थानहि सभसँ उज्जर छल। गंगेश बजलाह नहि। हुनकर मौन स्वयं प्रश्न छल—“जँ हमर न्याय पढ़लहुँ, तँ हमर अन्याय किएक नुकौलहुँ?”

रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा ‘अशोक’क छाह एखनहुँ पातक कगार पर काँपि रहल छल। सत्यव्रत मेहता हुनका सभक दिशामे देखि कहलनि, “साहित्य आ इतिहासमे सेहो साक्ष्य-नष्ट करब अपराध अछि। ई अपराध न्यायालयक दफामे नहि समाएत, मुदा लोक-स्मृतिक अदालतमे समाएत।” छाह किछु कहय चाहलक, मुदा शब्द राखि बनि खसल।

अनन्या बच्चा सभकेँ कहली, “आइ सँ पाठशालामे एक नब पाठ—जे जीवन असुविधाजनक हो, ओहि ठाम बेसी ठहरू।” बच्चा सभ दोहरौलक—“असुविधाजनक सत्यक पहरा।” ई नारा नहि छल; ई अभ्यास छल। प्रत्येक बच्चाकेँ कहल गेल जे जँ कोनो महान नामक संग ओकर काटल हिस्सा भेटय, तँ पहिने काटल हिस्सा पढ़ब।

ठूँठक भीतरक आगि आब शान्त नहि भेल। ओ राखि नहि देलक; ओ उजास देलक। पात सभ धीरे-धीरे एक दोसरमे जुड़ि गेल आ एक वृत्त बनल। ओहि जुड़बामे कोनो जरबाक चटचटी नहि छल—खाली एहन सूखल सरसराहट जेना कतेको हाथ एक संग पन्ना समेटि रहल हो, आ ओहि आवाजमे गरमी नहि, एक अजीब ठंढक बुझाइत छल। वृत्तक बीच रिक्ति छल—

चर्मकारणी नामक रिक्ति। जखन सभ ओ रिक्ति दिस देखलक, तखन बुझलक जे इतिहासक सभसँ भारी पृष्ठ कतेको बेर खाली छोड़ल जगह होइत अछि।

सन्ध्या धरि एहि वृत्तक नाम पड़ल—“प्रमाणक अग्नि।” एहि अग्निमे ककरो देह नहि जरत, झूठक आराम जरत। जातिक पिंजरा, शास्त्रीय सम्मानक ढोंग, आधा इतिहास, काटल जीवनी, आ बेनाम स्त्रीक अपमान—सभ धीरे-धीरे एहि अग्निक सोझाँ अपन आकार देखय बाध्य होएत।

राति भेल तखन बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखलक—“गंगेशक मुक्ति ग्रन्थसँ नहि, पूरा जीवनक स्वीकारसँ होएत।” ई लिखि अनन्या कने ठहरलि। फेर ओ अगिला पन्ना पर शीर्षक लिखली—“चर्मकारणीक नाम।”

एहि शीर्षककेँ देखि ठूँठक हरियर कोंपल थरथरा उठल। कथा आब गंगेशक न्यायसँ ओहि स्त्रीक खोज दिस मुड़ि रहल छल, जिनकर नाम नुका देल गेल, मुदा जिनका बिनु न्यायक अग्नि अधूरी छल।

लोकगीत: प्रमाणक अगिनिया

लोकधुन: झिझिया-विलाप

झरै हे अगिनिया, छिद्र-छिद्र सँ झरै हे,
दबल नामक ठिठुरल देहकेँ ताप दैत रहै हे।

दीपक छिद्रसँ अगिनिया झरय, झूठक ओढ़नी जरय,
साँचक नान्हि चिनगारी माय, घर-घर बाट करय।
कागच कहै—हम प्रमाण छी, देह कहै—हम घाव,
माटि कहै—हम पएर चिन्हैत छी, ककरा देब बचाव?

चर्मकारिनक अधजरल नाम धुँआमे उठि आयल,
पुरान सुखक आसन नीचाँ राखिक ढेरी पाओल।
अगिनि अपराधी नहि, ओ परदा मात्र हटबै,
जे सत्यसँ मुँह मोड़त, ओकर निन्न जरबै।

माय, एहि अगिनिमे प्रतिशोध नहि दियौ,
दबल नामक ठिठुरल देहकेँ ताप दियौ।

अगिनि अपराधी नहि—ओ परदा टा हटाबय,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—पूर्वपक्ष: मङ्गलाचरण साधन नहि: फेर कहल जा सकैत अछि जे धान आ जौ जकाँ विकल्प अछि—कखनो पूर्वजन्मक पुण्य, कखनो वर्तमान मङ्गलाचरण समाप्तिक कारण होइत अछि। पूर्वपक्ष: मङ्गलाचरण साधन नहि।]

अध्याय १२५

निर्णयक धान

निर्णय जँ धान जकाँ रोपल जाए, तँ ओकर बालि सेहो झुकि कऽ गवाही दै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: रोपू न्याय, काटू आशा

लोकधुन: धान-रोपनी गीत

रोपू गे रोपनिहारि, न्यायक धान रोपू गे,
कीचड़ मे पएर, आकाश मे आस—दुनू जोपू गे।

कीचड़मे पएर धँसाउ, न्यायक धान रोपू,
एक पाँति साहसक, दोसर नेहक जोपू।
पानि बराबर बाँटू सभ, खेतक मान बचाउ,
जकर श्रम ओकरे अन्न, साफ नियम बनाउ।

रोपनीक गीत दूर धरि सामूहिक बल जगाबै,
आजुक नान्हि बिरबा काल्हि सुनहर बालि लाबै।
रोपू न्याय, काटू आशा, भरू जनक खरिहान,
माटि कहत—संगक श्रमसँ बदलै प्रत्येक विधान।

एक पाँति साहसक, एक पाँति नेहक,
पानिक बँटवारा बराबर, मान रहय खेतक।
दूर धरि रोपनी-गीतक सामूहिक तान,
आजुक बिरबा काल्हि झुकत सोन-बालि धान।

❖

न्यायालय निर्णय लिखै छै; माटि निर्णय उगबै छै। लिखल निर्णय पन्ना मे बन्द रहै छै, उगल निर्णय थारी धरि पहुँचै छै— आ जाबत ओ थारी धरि नै पहुँचल, ताबत ओ खाली भाषा छिकै।

राखि खाली प्रमाणक नै होइ छै। जे दाबल गेल, जे झुट्ठा कहल गेल, जे कुलक बाहर फेकल गेल, जे सम्मानक नाम पर स्मृति सँ हटाओल गेल— ओहू सभक राखि ओहीमे मिलल रहै छै।

आ जे सीमा न्याय रोकैए, ओकरा खेल मे बदलि देबय पड़ै छै। रेखा तखने पार होइ छै जखन ओकरा पार करब लाज नै, खेल बुझाय लगै छै।

प्रमाणक अग्नि राति भरि ठूँठक चारूकात धधकैत रहल, मुदा ओकर धधकबामे दाह कम छल, उजास बेसी। भोर भेल तखन राखि ठंढा भऽ चुकल छल। बच्चा सभ पहिने जेकाँ दौड़ि कऽ राखि कुरेदय नहि गेल; ओ सभ गोल घेरा बनाकऽ बैसल, जेना राखि सेहो गवाही दऽ रहल हो। अनन्या धीमे स्वरमे कहली, “जकर प्रमाण जरि गेल, तकर निर्णय की?” कियो उत्तर नहि देलक। चन्ना गाछीक ठूँठक कगार पर बैसल चिरई एक बेर पाँख फड़फड़ौलक, फेर चुप भऽ गेल।

आरुणि राखि पर झुकलाह। राखि साधारण कारी नहि छल। तकर भीतर कतेको रंगक सूक्ष्म परत छल—कागचक स्याह, पातक हरियर, कपड़ाक लाल, माटिक भूरा, आ देहसँ छूटल स्मृतिक उज्जर। ओ कहलनि, “एहि राखिसँ खेतमे रेखा खिंचल जाए।” लोक चौंकल। प्रमाणक राखि खेतमे? मुदा नारिकेल पात पाठशालाक बच्चा सभ एकदम उत्साहित भऽ उठल। हुनका सभकेँ बुझाइ गेल जे न्याय केवल कागच पर लिखल निर्णय नहि; जँ ओ अन्न नहि उगबैत, तँ ओ केवल शब्दक भभूत अछि।

बा अपन झोरा सँ धानक किछु बीआ निकाललीह। ई बीआ ओ बरसात सँ पहिने राखि छोड़ैत छलीह, मुदा एहि बेर ओ कहलीह, “ई बीआ ओहि खेतमे पड़त जतय जातिक नाम पर कतेको पएर रोकल गेल।” हुनकर आवाजमे नारा नहि, जीवनक थाकल सत्य छल। ओहि क्षण गंगेशक प्रश्न फेर हवामे उठल—न्याय की? कुल की? प्रमाण की? जन्म की? आ जँ विचारक देहकेँ जाति बाँधि देत, तँ विचार की मुक्त रहि सकैत अछि?

बच्चा सभ खेत दिस निकलल। ठूँठसँ खेत धरि जे बाट छल, ओहि पर पहिने गाछीक छाँह पड़ैत छल; आब धूपक धारि। धूप बिनु छाँहक कठोर होइत अछि, मुदा एही कठोरतामे आइ मार्ग साफ देखाइत छल। अनन्या आगाँ, पाछाँ देविका, मीरा, ईरा, सौम्या, गोप, आरुणि, सत्यव्रत मेहता, आ गामक लोक। बच्चा सभ राखि माटिक लोटामे भरि लऽ गेल। कियो मन्त्र नहि पढ़लक। कियो जाति नहि पूछलक। कियो कुल नहि तकलक। लोटाक भीतर राखि एतेक हलुक छल जे चलबाक हिलकोर सँ खाली ऊपरका परत उठैत आ फेर बैसि जाइत छल।

खेत ओही परिवारक छल, जकरा पुरान समयमे चर्मक काज करबाक कारणेँ गामक मध्य-चौपाल पर बैसबाक अधिकार नहि देल जाइत छल। ओहि घरक बूढ़ी, जिनकर हथेली सदिखन चमड़ा, गोंद, पसीना आ धूपक गन्ध सँ भरल रहैत, ओहि दिन खेतक मेड़ पर बैसल रहलीह। बच्चा सभ हुनका प्रणाम करय लागल तँ ओ हड़बड़ा गेलीह—“हमरा नहि, माटिकेँ करू।” मीरा उत्तर देली, “माटि अहाँक हथेली सँ बजैत अछि, तेँ अहाँकेँ सेहो।” बूढ़ीक आँखि भरि आयल।

गंगेश उपाध्यायक कथा ओहि खेतमे पहिल बेर शास्त्रक नाम सँ नहि, देहक नाम सँ कहल गेल। पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्मल बालक, चर्मकारणीसँ विवाह, आ तत्त्वचिन्तामणि लिखि नव्य न्यायक जन्म—ई सभ लोक पहिने सुनने छल, मुदा अलग-अलग चमत्कार जेकाँ। आब बच्चा सभ बुझैत छल जे ई सभ एकहि प्रश्नक शाखा अछि। समाज जकर जन्म पर प्रश्न करय, जकर विवाह पर अपमान करय, ओकरा विचारक सिंहासन पर बैसा दैत अछि—ई सम्मान नहि, स्मृतिक आधा-हत्या अछि।

सत्यव्रत मेहता ओहि खेतमे बहुत पाछाँ ठाढ़ छलाह। हुनका कानूनी जीवनमे 'निर्णय' शब्दक मोल ज्ञात छल। मुदा एतय निर्णयक अर्थ बदलि रहल छल। न्यायालय निर्णय लिखैत अछि, मुदा माटि निर्णय उगबैत अछि। जँ न्यायक बाद भूख ओहि रूपेँ रहि जाए, जँ जातिक पिंजरा ओहि रूपेँ रहि जाए, जँ नाम फेर बेनाम होइते रहि जाए, तँ निर्णय कागचक दाना अछि—रोपल नहि गेल, खाएल नहि गेल।

अनन्या खेतक पहिल मेड़ पर राखि छिड़कलक। ओ कहली, "ई राखि प्रमाणक नहि, अप्रमाणक सेहो अछि। जे दबाओल गेल, जे झुट्ठा कहल गेल, जे कुलक बाहर फेकल गेल, जे प्रेमक कारणेँ मारल गेल, जे सम्मानक नाम पर स्मृतिसँ हटाओल गेल—सभक राखि।" बच्चा सभ उत्तर देलक—"उपस्थित।" ओहि उत्तरमे शोक नहि, खेतीक तैयारी छल।

गामक किछु पुरनका मनुख बेचैन भेल। हुनका सभकेँ भय छल—जँ चर्मकारणी, गंगेश, जाति, प्रेम, स्मृतिहत्या, न्याय, खेत, धान—ई सभ एकहि घेरामे आयल, तँ पुरान देबाल सभ पघिलि जाएत। एक वृद्ध पण्डित कहलक, "शास्त्रक मर्यादा राखू।" तखन गोप कुमार शान्त स्वरमे पूछलनि, "मर्यादा की शास्त्रकेँ बचाओत, कि सत्यकेँ?" पण्डित किछु नहि कहलक।

ओहि समय खेतक भीतरी पानिमे एक झिलमिलाहट उठल। पनिडुब्बीक देह कि प्रकाशक खेल, कियो निश्चित नहि कहि सकल। मुदा बूढ़ी चर्मकारिणी कहलीह, "जकरा सभ नेने छलहुँ, ओकरा सभ पानि सँ फेर पूछू।" तखन बच्चा सभ खेतक पानिदार मेड़ लग झुकि नाम पढ़य लागल। जे नाम गंगेशक कथामे दबाओल गेल छल, जे स्त्री केवल जाति-अपमानक प्रसंग बनि रहि गेल छलीह, हुनका बच्चा सभ पहिल बेर 'पत्नी' कहि नहि, 'सह-प्रमाण' कहि लिखलक।

ई शब्द सुनिते हवा बदलि गेल। 'सह-प्रमाण'। चर्मकारणी आब घटना नहि, प्रमाणक अर्धांगि छलीह। जँ गंगेशक न्याय जीवनमे सत्य छल, तँ ओ सत्य हुनकर संग उभड़ल स्त्रीक देह, अपमान, साहस आ सामाजिक निष्कासनसँ अलग नहि होइत। बा कहलीह, "जे शास्त्र

स्त्रीक नाम काटि देत, ओकर पन्ना अधूरा रहत।” मीरा रजिस्टरमे लिखली—“सह-प्रमाणक बिनु नव्य न्याय अधूरा।”

तखन सत्यव्रत पहिल बेर आगाँ बढ़लाह। ओ अपन झोरा सँ एक मुट्ठी धान लेलनि। ओ कहलनि, “हमरा कतेको निर्णय पढ़बाक, लिखबाक, बचाबाक, काटबाक अवसर भेटल। मुदा आइ बुझैत छी—निर्णय जँ भोजन नहि बनल, जँ समान आसन नहि बनल, जँ नामक अधिकार नहि बनल, तँ ओ न्याय नहि, व्यवस्था-भाषा अछि।” ओ धान राखि पर छिड़कलनि। हुनकर हाथ काँपैत छल। बच्चा सभ हुनका सहारा नहि देलक; एहि काँपमे हुनकर गवाही छल।

खेतक मध्य एक लकीर बनाओल गेल। ई लकीर जाति-सीमा नहि, पुरान सीमाकेँ काटबाक रेखा छल। एक ओर बच्चा, दोसर ओर बूढ़, बीचमे राखि आ बीआ। रेखा खिंचल तँ ओकर दुनू कात माटिक रंग एक्के छल—मुदा सभ जनैत छल जे ओहि एक्के रंगक माटि पर बरखों सँ दू तरहक पएर चलैत आयल छल। अनन्या कबड्डीक साँस भरि रेखा पार केलक—“कबड्डी-कबड्डी...” मुदा ई खेल धरा-पकड़ी नहि, पारगमन छल। ओ रेखा पार कऽ चर्मकारिणी बूढ़ीक हाथसँ बीआ लेली, फेर घुरि आयली। कियो ओकरा पकड़लक नहि। ओ कहली, “जे सीमा न्याय रोकय, ओकरा खेलमे बदलू।”

एहि दृश्य पर बूढ़बा भूत खिलखिला उठलाह। हुनकर हँसी चन्ना ठूँठसँ नहि, खेतक भीतर सँ उठल। जे भूत कखनो दिनमे पूरा नहियें देखाइत छलाह, से ओहि दिन धूपमे धुँधला अवश्य देखेलाह। हुनकर देह पर जातिक कोनो चिन्ह नहि, कुलक कोनो सूत नहि। से बस पहरुआ छलाह। ओ कहलनि, “जतेक देबाल रहल, सभमे एक-एक कबड्डी बाँकी अछि।”

रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा ‘अशोक’क नाम एहि अध्यायमे आरोपक छूरी जेकाँ नहि, स्मृति-परीक्षा जेकाँ उठल। पाठशालाक एक बालक पूछलक, “जे विद्वान जीवनक असुविधाजनक सत्य हटाकऽ मूर्ति बनबैत छथि, ओ की हत्या करैत छथि?” ईरा उत्तर देली, “देहक हत्या एक बेर होइत अछि; स्मृतिहत्या बार-बार। सम्मानक नाम पर जँ सत्य हटाओल जाए, तँ ओ हत्या नहि कहल जाए, ताहू पर पीड़ा हत्या जेकाँ होइत अछि।” बच्चा सभ ई वाक्य लिखलक, मुदा ओकर नीचाँ प्रश्नचिन्ह सेहो छोड़लक—कारण न्याय अन्तिम उत्तर नहि, जागल प्रश्न सेहो अछि।

धानक बीआ राखिमे मिलि गेल। खेतमे ककरो प्रतीकात्मक फोटो नहि खिंचल गेल। देविका मोबाइल निकाललनि, फेर घुरा कऽ राखि देली। आइ प्रमाण स्क्रीन पर नहि, माटिमे रहत। चन्द्रपालक अनुप्रयोग एहि घटनाकेँ पकड़ि नहि सकल। राघवक सन्देश-कोडमे एहि

दिनक लेल कोनो नाम नहि बनल। लाउ किन-हंग दूर कतहु बैसल 'फील्ड एसेट' शब्द लिखैत रहल, मुदा खेत ओकर शब्दसँ बाहर छल।

साँझ धरि हर चलल। जे हर सामान्यतया मालिकक जाति आ मजदूरक जाति बँटबैत छल, ओहि दिन बच्चा सभ पालि-पलटा कऽ पकड़लक। चर्मकारिणी बूढ़ी पहिल धारि चलौली, आरुणि दोसर, मीरा तेसर, सत्यव्रत चारिम, आ अनन्या पाँचम। हरक फार जखन माटिमे धँसैत छल, तखन ओहि सँ जे आवाज उठैत छल से कटबाक नहि, फाटबाक छल—आ ओहि फाटल माटिसँ जे भाप उठैत छल, ओहिमे बरखक बन्द रहल जाड़क गन्ध छल। बा मेड़ पर बैसल कहैत रहलीह—"धानक कान न्यायसँ भारी होइत अछि। जँ ओ झुकत, तखन बुझब जे निर्णय फलल।"

राति भेल तखन खेतक पानिमे आकाश उतरि आयल। तारा सभ बीआ जेकाँ चमकल। बच्चा सभ रजिस्टरमे अध्यायक अन्त लिखय चाहलक, मुदा अनन्या रोकली। ओ कहली, "निर्णयक धान एखन रोपल गेल अछि; ओकर अन्त कटनी पर होएत।" तखन रजिस्टरमे केवल ई लिखल गेल—"आइ न्याय खेतमे उतरल।"

ओहि राति चन्ना गाछीक ठूँठ दूरसँ अन्हार नहि, धूसर दीप जेकाँ देखाइत रहल। खेतमे राखि, बीआ आ पानि एक संग सूतल। कोनो घोषणा नहि, कोनो निर्णय-पत्र नहि। मुदा माटिक भीतर, जतय शब्दक आवाज नहि पहुँचैत, एक सूक्ष्म हरियर निर्णय हिलोर लेबय लागल।

लोकगीत: न्यायक रोपनी

लोकधुन: धानरोपनी गीत

रोपू गे बहिनी, न्यायक धान रोपू गे,
कटनीक दिन पहिल मुट्ठी अनाम घर जाय गे।

रोपू बहिनी न्याय केर धान, कीचड़मे पएर धँसाउ,
एक-एक बिरबा नामक, सोझ पाँति लगाउ।
बरखा नोर बनि झरल, घाम बनल मजदूरक देह,
फसिल जँ सभकेँ नहि भेटत, खाली रहत न्याय-सनेह।

गंगेश बीआ देलक, चर्मकारिनि माटि,
नेना सभ गीत उठौलक—आब नहि रहत छाँटि।
कानूनक कोठी दूर, खेतक फैसला लग,

भूखल हथेली पूछै—कखन कटत ई आस?

रोपू बहिनी, नामक धान नहि सुखाय,
फसिल जँ सभकेँ ने भेटत, खाली रहत सनेह।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—अभावप्रतीति लिङ्गसँ सम्भव अछि: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—दूरी आदि चक्षुकेँ स्वभावतः बाधित नहि करैत; स्वस्वरूप दोषे अग्निक दाहशक्तिकेँ जादुई मणि जकाँ बाधित करैत अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। अभावप्रतीति लिङ्गसँ सम्भव अछि।]

अध्याय १२६

अन्नक न्याय

अन्नक न्याय थारीमे नहि, मेड़पर तय होइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: अन्नक पहिल मुट्ठी

लोकधुन: कटनी-मंगल

काटू हे बालि, भोरक बालि काटू हे,
पहिल मुट्ठी भूखल हाथक थारी मे साटू हे।

हँसुआ चमकल भोरमे, बालि नम्र झुकै,
पहिल मुट्ठी अन्न लऽ कऽ घरक चूल्हि धुकै।
पहिने भूखल हाथक भाग, तखन बजार जाय,
श्रमक पूरा दाम भेटय, किसान गीत सुनाय।

अन्नक प्रत्येक दाना भीतर मेघ, माटि, घाम,
पहिल मुट्ठी बाँटि कऽ बढ़त परिवारक मान।
कटनीक हँसी कहै—मेहनत बेकार नहि,
साझा थारी भरल रहत तँ भूख लाचार नहि।

हँसुआक चमक मे झलकय घामक मोती,
दाना-दाना मे बान्हल मेघ-माटिक पोथी।
पूरा दाम किसानकेँ, तखन बजारक बेर,
भरल खरिहानक हँसी सँ कटय भूखक अन्हेर।

❖

भुखायल पेटक सोझाँ सभ शास्त्र अधूरा छै, सभ संविधान अधूरा छै, सभ प्रमाण अधूरा छै। जे न्याय भात नै बनल, से खाली वाक्य छिकै।

दया आ हिस्सा मे फरक छै। दया ऊपरसँ फेकल भात छिकै— ओहि मे देनिहार ऊपर रहै छै। हिस्सा संग बैसि खाएल भात छिकै— ओहि मे दुनू एक्के पाँति मे रहै छै।

आ जकरा हिस्सा नै भेटल, ओकर खाली थारी अपने प्रमाण छिकै। ओ थारी बजै नै छै, मुदा ओकर रिक्ति सभसँ जोरसँ बजैए।

निर्णयक धान राति भरि ओसमे भीजल रहल। बिहान जखन पहिल धूप खेतक मेड़ पर पड़ल, तखन धानक बालि सभ एना झुकल लागल जेना ओ सभ अदालतमे गवाही दऽ रहल

हो। चन्ना गाछीक ठूँठ सँ उठल निर्णय कागच पर नहि, खेतक गन्धमे उतरि गेल छल। बच्चा सभ बुझि गेल छल जे न्याय जँ देह पाबय चाहैत अछि, तँ ओकर पहिल देह अन्न अछि। भुखायल पेटक सोझाँ सभ शास्त्र अधूरा, सभ संविधान अधूरा, सभ प्रमाण अधूरा।

बा भोरहि खेतमे आबि बैसलीह। ओ माटि उठा कऽ सुँघलीह आ कहलीह—“जे न्याय भात नहि बनल, से केवल वाक्य अछि। जे न्याय भूखक मुँह धरि नहि पहुँचल, से गाछी बिनु जड़िक छाँह अछि।” ई बात सुनि आरुणि दीर्घ साँस लेलनि। हुनका पुलक पाया, मजदूरक कटान, अस्पतालक बिल, ठगीक खाता, जातिक पिंजरा, गंगेशक प्रश्न—सभ एकहि रेखामे देखाय लागल। सभ ठाम देह छल, भूख छल, श्रम छल, मुदा निर्णय प्रायः ऊपरी मेज पर बनैत छल।

एहि दिन नारिकेल पात पाठशालाक पाठ खेतमे लागल। पाथरक नाम-घेरा सँ बच्चा सभ धानक बिरबा धरि आयल। अनन्या रजिस्टर खोललक, मुदा लिखबासँ पहिने ओ एक दाना हाथमे रखली। ओ पूछली—“एहि दानाक नाम की?” कियो कहलक—धान। कियो कहलक—भात। कियो कहलक—बीआ। एक छोट लड़का कहलक—“जे भूख रोकय।” मीरा मुस्कुरा कऽ कहली—“सएह ओकर न्यायक नाम अछि।”

गंगेशक स्मृति ओहि खेतमे फेर उतरि आयल। तत्त्वचिन्तामणिक पात सभ जकरा बच्चा सभ पछिला पहरमे देखने छल, से पात आब धानक पात जेकाँ लहराइत बुझाइत छल। प्रत्यक्ष—हाथमे दाना। अनुमान—एहि दाना पाछाँ ककरो श्रम। शब्द—मायक आवाज, जे कहैत छली, ‘भात तैयार अछि।’ उपमान—न्यायक तौल आ अन्नक माप। अर्थापत्ति—जँ कोठी-बखारी भरल आ बच्चा भुखायल, तँ चोरी अवश्य बीचमे अछि। अनुपलब्धि—जिनका हिस्सा नहि भेटल, हुनकर अनुपस्थित थारी स्वयं प्रमाण। बच्चा सभ एहि सभकेँ शास्त्रक भाषा नहि, जीवनक भाषामे बुझलक।

दुपहर धरि गामक स्त्री सभ पुरान माप-बाट, बाँसक सूप, माटिक हँड़िया, आ खाली कटोरा लऽ कऽ आयली। ओ सभ कहली—“नामक अभिलेख अछि, मुदा भूखक अभिलेख कतऽ?” एहि प्रश्न पर सभ चुप। बहुत लोक मरलाक बाद नाम पबैत अछि; मुदा बहुत लोक जीबैत-जीबैत भूखक कारणेँ अपन नाम छोड़ि केवल ‘मजदूर’, ‘नोकरीबला’, ‘माय’, ‘बूढ़’ बनि जाइत अछि। देविका पहिल बेर रजिस्टरमे नब पन्ना खोलि लिखली—“भूखक नामावली।”

ई नामावली दान-पुण्यक सूची नहि छल। अनन्या साफ कहली—“जे भूखल अछि, ओकरा दया नहि, हिस्सा चाही।” बा जोड़ि देलीह—“दया ऊपरे सँ फेकल भात अछि; हिस्सा संग बैसि खाएल भात।” एहि वाक्य पर खेतक हवा थमि गेल जेकाँ लागल। बटुकनाथ हरिहरन दूर सँ सुनैत छल। ओकरा ई भाषा खतरनाक बुझायल, कारण ई अदालतक निवेदन नहि, अधिकारक बोली छल। अधिकारक बोली ककरो चरण नहि छूबैत, सोझे आँखिमे देखैत अछि।

दुपहरिया बाद हरिहरनक दूत आयल। हाथमे एक प्रस्ताव—‘लोक-स्मृति न्यासक अन्न-कोष।’ कागचमे लिखल छल जे गरीब परिवार सभक लेल अन्न बाँटल जाएत, दाताक नाम शिलापट्ट पर अंकित होएत, वितरण समिति बनत, सभ काज वैधानिक देख-रेखमे होएत। बच्चा सभ कागच पढ़लक, फेर धानक दाना पन्ना पर राखलक। दाना लुढ़कि कऽ ‘दाता’ शब्द पर ठहरि गेल। अनन्या कहली—“जे देत, ओकर नाम पहिने नहि; जे उपजौलक, जे काटलक, जे ढोलक, जे भूखल, हुनकर नाम पहिने।” दूत निरुत्तर।

चन्द्रपालक लोक सभ सेहो पाछाँ नहि रहल। ओकर नब योजना छल—‘डिजिटल अन्न-पास।’ मोबाइल पर चिन्हारि, अंगूठा, चेहरा, मृत्यु-प्रमाण, परिवार-सूची, आ दानदाताक विज्ञापन। देविका हँसि देली—ओ हँसी करुण छल। ओ कहली, “जे स्क्रीन युवकक मोन चिबा गेल, से आब भूखक पेट गनत?” चन्द्रपाल दूर शहरमे बैसल अपन उपकरण पर देखलक जे अन्न-पासक नमूना पन्ना खुजिते सभ खाता खाली कटोरा बनि जाइत अछि।

लाउ किन-हंगक ओर सँ विदेशी बीआक प्रस्ताव आयल। कहल गेल—ई बीआ बाढ़ि सहत, सुखाड़ सहत, बेसी उपज देत, बजारमे दाम पाबत। आरुणि पूछलनि—“बीआक स्मृति कोन?” प्रस्ताव लऽ कऽ आयल परामर्शदाता मुस्कुरायल—“बीआ विज्ञान अछि, स्मृति नहि।” ईरा उत्तर देली—“जकरा स्मृति नहि, ओकर स्वामित्व ककर?” ओहि क्षण माटि पर राखल विदेशी बीआक थैली सँ हलुक धातुक गन्ध उठल। स्थानीय धानक दाना कातमे चुपचाप पड़ल रहल, मुदा ओकर चुप्पीमे पीढ़ीक कोरा, वर्षाक गन्ध, आ स्त्रीक हथेली छल।

स्त्री सभ ओहि दिन सामूहिक कोठी-बखारीक बात उठौली। कोठी-बखारी दानक नहि, साझा हिस्साक। नियम बनल—प्रत्येक खेत सँ किछु दाना नाम-पहराक लेल; प्रत्येक घर सँ भूखक सूचना लाज बिनु; प्रत्येक बाँटल अन्नक संग कोनो उपदेश नहि; आ जकरा भोजन भेटत, ओकर नाम ‘गरीब’ नहि, ‘सदस्य’ कहल जाएत। मीरा कहली—“देहक गरिमा थारी सँ शुरू होइत अछि।” सौम्या लिखय चाहली, फेर रोकि लेली; ई नियम पहिने लोकक कण्ठमे बसय, बादमे कागचमे।

खेतक मेड़ पर ओहि साँझ बच्चा सभ कबड्डी खेललक। रेखा धानक सूखल पात सँ बनल। एक बच्चा साँस रोकि विपक्षक कात गेल आ 'कबड्डी-कबड्डी'क बदला कहैत रहल—'भूख नहि, हिस्सा; भूख नहि, हिस्सा।' दोसर बच्चा ओकरा छू लेलक। हँसी उठल। मुदा बा कहलीह—"ई खेल नहि, घोषणा अछि।" पुरान भूत सभ पाछाँ सँ देखैत रहल। भूत सभक खेलमे साँस बचेनाइ जीवनक प्रमाण छल; बच्चा सभक खेलमे अन्न बाँटनाइ न्यायक प्रमाण बनि रहल छल।

राति होइत-होइत कोठी-बखारीक पहिल दाना जमा भेल। उज्ज्वलक माय मुट्ठी भरि धान देली। मजदूरक बेटा दू मुट्ठी। एक विधवा आधा कटोरी चिउड़ा। देविका चामरक पुरान सूपमे अन्न सहेजली। मीरा ओकर ऊपर लाल डोरी नहि, उज्जर सूत बान्हली—कारण ई शोकक नहि, उपयोगक वस्तु छल। अनन्या पन्ना पर लिखली—"अन्नक न्याय आरम्भ।"

तहिये जातिक प्रश्न फेर उठल। एक बूढ़ पण्डित, जे नाम-उत्सवमे अबैत छल मुदा स्त्री सभक कोठी-बखारी देखि असुविधा अनुभव करैत छल, धीरे कहलक—"सभ घरक अन्न एक कोठी-बखारीमे? जाति-रीति?" बच्चा सभ ओकरा घेरलक नहि। गंगेशक प्रश्न पहिने सँ तैयार छल। अनन्या पूछली—"जँ भूखक जाति एक अछि, तँ भातक जाति कतेक?" बूढ़ चुप। बा ओकर कात भातक एक दाना राखि कहलीह—"खाउ। जँ ई दाना अहाँक कुल बिगाड़ि देत, तँ कुल बहुत कमजोर अछि।"

ई वाक्य खेतमे बिजुरी जेकाँ फड़कल। कियो ताली नहि बजौलक, कियो नारा नहि लगौलक। मुदा बूढ़ पण्डित बहुत देर दाना दिस तकैत रहल। अन्तमे ओ दाना उठौलक, मुँहमे राखलक, आँखि बन्द केलक। किछु नहि भेल—न आकाश फाटल, न देवता रुष्ट भेलाह, न कुलक ध्वज खसल। केवल बूढ़क आँखि सँ पानि निकलल। ओ कहलक—"भूख सँ पैघ शुद्धि नहि।" एहि पाँतीकेँ बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखलक, मुदा लेखकक नामक आगाँ लिखलक—"पूर्व भयग्रस्त।"

एहि राति चन्ना गाछीक ठूँठक छाँह असाधारण नमहर पड़ल। छाँह खेत धरि गेल, कोठी-बखारी धरि गेल, ओहि खाली थारी धरि गेल जे एक बच्चा अपन घरसँ आनने छल। थारी बहुत पुरान, किनार मुड़ल, भीतर खरचट। बच्चा कहलक—"एहि थारीमे कतेको दिन आवाज बजल, भात नहि।" सभ चुप। थारीकेँ कोठी-बखारीक बीच राखल गेल।

मध्यरातिमे ओहि खाली थारी सँ ध्वनि उठल। पहिने सभकेँ लागल कोनो दाना खसि पड़ल। फेर ध्वनि स्पष्ट भेल—न शब्द, न रोदन, न धातुक टनकार; से पेटक भीतरक रिक्ति

जेकाँ एक दीर्घ ध्वनि छल। ओ ध्वनि कान धरि आबि कऽ रुकैत नहि छल; ओ छातीक भीतर एक ठाम बैसि जाइत छल, आ ओहि ठाम जे हलुकपन बुझाइत छल, से सुनबाक नहि, अपने भूखल रहबाक हलुकपन जकाँ छल। भूख स्वयं गवाही दऽ रहल छल। सत्यव्रत मेहता जे दूर बैसल सुनैत छलाह, उठि कऽ थारीक सोझाँ बैसलाह। ओ कहलनि—“आइ धरि हम मृतकक नाम लिखलहुँ। आब जीबैत भूखक नाम लिखब।”

अनन्या अगिला पन्ना खोललक। शीर्ष पर लिखली—“भूखक नाम।” पन्ना खुजिते पवन उठल। धानक बालि सभ एक संग झुकल। कटल चन्ना गाछीक ठूँठ सँ हलुक हरियर गन्ध आयल। गोहि सभ पानिक भीतर कतहु हलचल केलक, मुदा ऊपर नहि आयल। ओकरा सभकेँ देह चाही छल; एहि राति लोक देह बचाबय सीखि रहल छल।

अध्याय एतय समाप्त नहि भेल। कोठी-बखारी भरल नहि छल, थारी खाली छल, भूखक नामावली शुरू मात्र भेल छल। मुदा न्यायक देह आब खेत, दाना, थारी, कण्ठ आ साझेदारीमे उतरि चुकल छल।

लोकगीत: पहिल मुट्ठी अन्न

लोकधुन: कटनी गीत

काटू हे हँसुआ, गर्दनि नहि—भूख काटू हे,
थारी मे मनुखक मान बराबरि बाँटू हे।

हँसुआ चमकल भोरमे, धानक माथ झुकल,
पहिल मुट्ठी भूखल घर, न्याय ओतय रुकल।
कोठी भरि अन्न रहै, चूल्हि रहै उदास,
ककर धर्म ई कहै, नेना सूतय उपास?

माय अपन भागक रोटी आधा कऽ बचेली,
बौआक मुँह देखिते आँचर भीतर कानली।
अन्नक दाना कहलक—हम दान नहि अधिकार,
जे रोपलक, जे काटलक, ओकर पहिल त्यौहार।

हँसुआ, एहि बेर गर्दनि नहि, भूख काटू,
भोजनक थारीमे मनुष्यक मान बाँटू।

कोठी भरल अन्न, तैयो चूल्हि रहल उदास,
ककर धर्म कहै—नेना सूतय भूखल-उपास?

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—व्याप्ति साधनवन्निष्ठ नहि अछि: कारण “वृक्षक नीचाँक भाग कपि-संयोगक अधिकरण नहि अछि” ई ज्ञान अविरोधी अछि; अतएव कपि-संयोगक अधिकरणक अन्योन्याभाव, कपि-संयोगक अधिकरण अर्थात् वृक्षमे सेहो वर्तमान रहैत अछि। व्याप्ति साधनवन्निष्ठ नहि अछि।]

अध्याय १२७

भूखक नाम

खाली थाली भरल कोठारसँ भारी— ओहिमे भूखक नाम बाजै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: थारी भरत संग

लोकधुन: जट-जटिनक मिलन-गीत

आनू हो आनू, एक-एक मुट्ठी आनू हो,
बीचक खाली थारीकेँ संगे भरल जानू हो।

खाली थारी बीचमे राखू, सभ एक मुट्ठी आनू,
जट आनय धान, जटिन नून, संगमे भोजन पानू।
एक घर कम, दोसर बेसी—गाम बराबर करै,
साझा चूल्हि धुँआ उठाबै, भूखक राति हरै।

नाम खाली थारीपर नहि, अन्नक संग लिखाउ,
ककरो देहरी सूनी नहि—एहन प्रण दोहराउ।
जट-जटिन हँसि कहै—संग रहब तँ भरत,
एक मुट्ठी नेहसँ पूरा संसार सँवरत।

जट धान आनय, जटिन नून, केओ साग-पात,
साझा चूल्हिक धुँआ मे पकय बराबरिक भात।
ककरो देहरी अन्हार नहि, ककरो पेट खाली,
मिलनक ई गीत गाबि भरू सभक थारी।

❖

मुरदाक नाम लिखनाइ कठिन छै; जीबैत भूखक नाम लिखनाइ ओहूसँ कठिन। मुरदा विरोध नै करैए। जीबैत भूख लजाइए, नुकाइए, आ अपने देह केँ दोख दै छै।

भूख कहब अपमान नै छिकै। मुदा समाज एतबा सिखा दै छै जे भूखल लोक पहिने अपन भूख नुकबैए, फेर अपन नाम, आ अन्त मे अपन हिस्सा।

आ कोठार खाली होयबाक लेल बनै छै। भरल कोठार आ भूखल गाम— ई कोनो सम्हार नै, ई अन्याय छिकै।

खाली थारी राति भरि कोठी-बखारीक बीच पड़ल रहल। ओहि थारीमे एको दाना नहि छल, मुदा ओकर भीतर जे ध्वनि उठि रहल छल, से भरल कोठी-बखारी सँ बेसी भारी छल। भोर

भेल तखन बच्चा सभ थारीक चारू कात बैसल, जेना नामक पाथरक चारू कात बैसैत छल। अनन्या रजिस्टर खोललक। पहिल पन्ना पर लिखल गेल—“भूखक नाम।” मुदा कलम थरथरायल। मृतकक नाम लिखनाइ कठिन छल; जीबैत भूखक नाम लिखब ओकरो सँ कठिन। मृतक विरोध नहि करैत। जीबैत भूख लजाइत अछि, नुकाइत अछि, अपन देहकेँ दोख दैत अछि।

सत्यव्रत मेहता थारीक सोझाँ बैसल छलाह। ओहि लोकक हाथ कतेको शपथपत्र लिखि चुकल छल, कतेको आपत्ति, कतेको प्रतिवेदन, कतेको कानूनी तर्क। मुदा भूखक पहिल नाम लिखबाक समय हुनकर आँगुर एना काँपल जेना कलम नहि, सुइ पकड़ने होथि। बा देखलीह आ कहलीह—“भूखक नाम लिखब माने पेट खोलब नहि, लाज खोलब अछि। ध्यान राखू, जे कहय, ओकर आवाज ओकरहिक रहय।”

एहि नियमक बाद पहिल स्त्री आगाँ आयली। ओ कोनो विधवा सूचीमे नहि छली, कोनो राहत शिविरमे नहि गेल छली, कोनो मंच पर भाषण नहि देलनि। ओ मात्र कहली—“हमर घरमे तीन दिन भातक गन्ध नहि उठल छल। बच्चा सभ कहलक, माय, चूल्हि किएक नहि बजैत? हम कहलहुँ, चूल्हि उपवासमे अछि।” अनन्या लिखली—“भूखक पहिल नाम: चूल्हिक उपवास।” स्त्रीक आँखि भरि गेल, कारण हुनकर घरक लाज आब नाम बनि गेल छल, तमाशा नहि।

दोसर नाम एक बूढ़ गड़ेरियाक छल। ओकरा लग चरबाहाक सानी कथा छल, मुदा अपन पेटक नहि। ओ कहलक—“हम गोरूकेँ घास दैत रहलहुँ, अपनाक लेल पानि पीबि सुतैत रहलहुँ। गोरू बेचि दैतहुँ तँ घर चलैत, मुदा गोरू बेचब माने बाबूजीक स्वर बेचब।” बच्चा सभ ओकर भूखक नाम लिखलक—“बाबूजीक स्वर बचाबय लेल भूख।” बा ओकर माथ छूएली। कोठी-बखारीक धानक बालि कने झुकल।

तेसर नाम एक छोट बालक देलक। ओ कहलक—“हमरा स्कूलमे मध्याह्न भात भेटैत छल, मुदा छुट्टीक दिन पेटमे खाली मैदान बजैत छल।” ओकरा सँ कियो नहि पूछलक जे घरक आमदनी कतेक, पिता की करैत, सूचीमे नाम अछि कि नहि। गंगेशक प्रश्न सभकेँ मोन छल—प्रत्यक्ष पेटक आवाज अछि; अनुमान धुँआहीन चूल्हि; शब्द राशन-पत्र; मुदा सत्य ओहि बच्चाक आँखि अछि जे छुट्टीक दिनसँ डेराइत अछि। रजिस्टरमे लिखल गेल—“छुट्टीक भूख।”

चारिम नाम लाजक भीतर सँ निकलल। एक परिवार जे जातिक ऊँचाइक गर्वमे बरखों धरि दोसराक घरक अन्न नहि खाइत छल, ओकर घरमे भूख आबि गेल। ओहि परिवारक वृद्धा आस्ते कहली—“हम हाथ पसारलहुँ नहि, कारण हमरे घरक लोक कहत—कुल गेल।” बा ठाढ़ भऽ

गेलीह। कहलीह—"जे कुल भूखमे बेटीकेँ चुप करा देत, ओ कुल पहिने सँ गेल।" ओहि वृद्धाकेँ कोठी-बखारीक दाना नहि, पहिने पानि देल गेल। हुनकर भूखक नाम लिखल गेल—"कुलक डर सँ रोकल पेट।"

एहि नाम पर ठूँठक हरियर बिन्दु कने काँपल। जेना चन्ना गाछीकेँ जातिक पुरान काँट फेर चुभल। गंगेश उपाध्यायक स्मृति ओहि क्षण खेतक पवनमे उतरि आयल। तत्त्वचिन्तामणिक पात जेकाँ हवा फड़फड़ेलक—"प्रमाण ओहिना मानू जे पीड़ाकेँ झूठ नहि बनबैत।" बच्चा सभ बुझलक जे भूख पर जातिक पहरा सभसँ क्रूर पहरा अछि, कारण ओ मनुष्यकेँ भोजनसँ पहिने शुद्धता सोचय बाध्य करैत अछि।

दुपहर धरि भूखक नाम बढ़ैत गेल। "दूध बिनु जन्मल राति", "उधारक नून", "दवाइक बदला भात", "कमाइ शहरमे, पेट गाममे", "श्रमक मजूरी रोकल गेल", "राहत सूचीसँ बाहर", "कन्या-भोजक बाद घरक उपवास", "त्योहारक झूठा मिठास", "बाढ़िक पानिमे भीजल चिउड़ा।" प्रत्येक नामक पाछाँ एक देह छल। प्रत्येक देहक पाछाँ एक इतिहास। नाम बजैत काल लोकक स्वर एक्के रंगक नहि रहैत छल—किछु बेगरतासँ बाजि कऽ चुप भऽ जाइत छल, जेना बोझ उतारि रहल हो; किछु बहुत आस्ते बजैत छल। रजिस्टर भारी होय लागल, मुदा कोठी-बखारी एखनहुँ लगभग खाली।

तखन देविका प्रश्न उठौली—"नाम लिखलहुँ, मुदा भोजन कखन?" ई प्रश्न सुनि सभ ठिठकल। स्मृति कखनो-कखनो अपन धार्मिकतामे सन्तुष्ट भऽ जाइत अछि। देविका ओहि सन्तोषक विरुद्ध ठाढ़ छली। ओ कहली—"भूखक नाम जँ भातमे नहि बदलत, तँ हम सभ फेर वैह गलती करब जे अदालत बरखों धरि करैत रहल—गवाही सुनि, निर्णय टारि।"

सत्यव्रत मेहता एहि वाक्य पर उठलाह। ओ अपन झोरा सँ कागच निकालय चाहलनि, फेर रोकि देलनि। कागच एहि क्षण छोट पड़ैत छल। ओ सोझे लोक दिस मुड़लाह—"कोठी-बखारीक पहरा बच्चा सभक हाथमे अछि, मुदा कोठी-बखारी भरबाक दायित्व सभक। जे धान देत, ओकर नाम नहि बजाओल जाएत। जे भूख कहत, ओकर नाम ओकर अनुमति बिनु नहि लिखल जाएत। दानक नाम नहि; अधिकारक अन्न।"

ई नियम सुनिते किछु लोक असहज भेल। दानमे प्रतिष्ठा भेटैत अछि; अधिकारमे बराबरी माँगल जाइत अछि। एक व्यापारी जे पहिने मंच चाहैत छल, कहलक—"हम पाँच बोरा देब, नाम पट्टिका पर लिखू।" अनन्या उत्तर देली—"पट्टिका भूखक बनत, बोरा देनिहारक नहि।"

व्यापारी हँसल—“तँ फायदा?” बालक सभ एक संग कहलक—“भूख घटत।” व्यापारीक हँसी गलामे अटकि गेल।

ओहि बेर चन्द्रपाल बत्रा दूर सँ देखैत छल। म्यूल खाताक अर्थ बुझलाक बाद ओकर भीतर किछु खाली भेल छल, मुदा खाली जगह सदिखन पवित्र नहि होइत; ओकरा फेर लाभ भरबाक लत होइत अछि। ओ सोचलक—एहि कोठी-बखारीकेँ डिजिटल दान-मंच बनाओल जा सकैत अछि। मुदा ओकर मोनमे जे वाक्य उठल, ओ पूर्ण होयसँ पहिने ठूँठक छाँह ओकर पएर पर पड़ल। ओकरा सुनाइ देलक—“दानक नाम नहि।” से चुपचाप पाछाँ हटि गेल।

राघव सिग्नल सेहो एहन अवसर पर कोड तकैत। मुदा एहि बेर कोनो सन्देश ओकर यन्त्रमे टिकैत नहि। जे “अन्न” लिखैत, से “ऋण” भऽ जाइत। जे “दाता” लिखैत, से “दायित्व” भऽ जाइत। जे “लाभ” लिखैत, से “लाज” भऽ जाइत। ओकरा लागल जे भाषा ओकर हाथ छोड़ि रहल अछि। ई पहरा शब्दक नहि, अर्थक आत्मा सँ निकलल छल।

साँझ होइत-होइत पहिल सामूहिक रसोइ जरल। पहिल धुँआ सोझे ऊपर नहि गेल—ओ जमीन सँ कने ऊपर रहि आँगन भरि पसरल, आ ओहिमे जरैत लकड़ीक संग-संग बहुत दिनसँ ठंढा पड़ल चूल्हिक माटिक ओ भीजल गन्ध सेहो छल जे पहिल बेर आगि लगला पर उठैत अछि। चूल्हि पाथरक नाम-घेरा सँ दूर राखल गेल, जाहिसँ स्मृति पूजामे नहि, उपयोगमे बदलय। स्त्री सभ आगि सुलगौली, पुरुष सभ पानि आनलक, बच्चा सभ दाना चुनलक, बूढ़ सभ कथा नहि, काज बतौलक। मीरा विशेष ध्यान रखली जे भोजन लेनिहारक चेहरा कियो नहि खिंचय। देविका कहली—“भूखक तस्वीर नहि, भूखक भागीदारी।”

पहिल भात पकबाक गन्ध उठल तखन गाममे एक विचित्र कम्पन पसरल। जाहि घरमे चूल्हि नहि जरल छल, ओहि घर धरि गन्ध गेल। जे मृतक जलसमाधिमे डूबल छल, ओकर नाम-घेरा धरि गन्ध गेल। जे स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम तकैत आत्मा सभ गेल छल, ओकरा सभ धरि शायद एहि गन्धक सूक्ष्म धूलि पहुँचल। गोहि सभ पानिक भीतर अचल रहल—जेना एहि राति देह नहि, देहक पोषणक पहरा लागल हो।

भोजन बाँटबाक समय बच्चा सभ पाँति लगौलक, मुदा ऊँच-नीच नहि। पहिने ओ सभकेँ जे कहि सकैत छल—“हम भूखल छी।” फेर ओ सभकेँ जे कहि नहि सकैत छल। एक वृद्ध पुरुष, जे अपन गरीबी नुकबैत छल, पाँतिमे पाछाँ ठाढ़ रहल। अनन्या ओकरा लग जा कऽ केवल एतबे कहली—“भूख कहब अपमान नहि।” ओ पुरुष कानय लागल। ओकर भूखक नाम लिखल गेल —“नहि कहि सकल पेट।”

भातक पहिल ढेकची खाली भेल। दोसर बनल। तेसर बनल। कियो पूछलक—“कोठी-बखारी खाली भऽ जाएत।” बा हँसलीह—“कोठी-बखारी खाली होयबाक लेल बनैत अछि। भरल कोठी-बखारी, भूखल गाम—ई अन्याय अछि।” एहि वाक्यक बाद बच्चा सभ कोठी-बखारीक देबाल पर लिखलक—“अन्नक धर्म चलनाइ।”

रातिमे, जखन सभ थाकि गेल, खाली थारी फेर कोठी-बखारीक बीच राखल गेल। एहि बेर थारी एकदम खाली नहि छल। ओहिमे भातक एक दाना जानि-बुझि छोड़ल गेल। ओ दाना थारीक ठीक बीचमे नहि, कने कात पड़ल छल, आ ओकर ऊपर दीयाक इजोत पड़ितहि ओ एहन चमकल जेना कोनो बहुत छोट पाथर—जकरा उठा लेब सहज छल, मुदा जकरा उठाबय ककरो हाथ नहि बढ़ल। सत्यव्रत पूछलनि—“ई किएक?” अनन्या कहली—“भूख कखनो पूर्ण समाप्त नहि मानब। एक दाना बचल रहत तँ हम सभ पहरा नहि छोड़ब।” सत्यव्रत माथ झुका लेलनि।

ठूँठक छाँह ओहि राति थारी पर पड़ल, मुदा छाँह अन्हार नहि लागल। ओ धूपक उनटा रूप जेकाँ शीतल छल। भूखक नामावली भरि चुकल नहि छल, कोठी-बखारी स्थायी नहि छल, नियम सभ नवजात छल। मुदा पहिल बेर गढ़ नारिकेलमे भूख लाजक कोठरी सँ बाहर आबि सार्वजनिक अधिकार बनल।

मध्यराति समीप, खाली थारीक दाना हलुक-हलुक हिलल। कियो हाथ नहि लगौने छल। दाना घूमि कऽ उत्तर दिशामे ठहरि गेल—ओहि दिशामे जतय सूखल इनार छल, आ जतय बरखों सँ पानि कड़ुआ मानल जाइत छल। बा धीमे कहलीह—“भूखक बाद पियास आओत।” बच्चा सभ अगिला पन्ना खोललक। शीर्ष लिखल गेल—“पियासक पहरा।”

अध्याय एतय रुकल, समाप्त नहि। भूखक नाम भातमे बदलबाक पहिल अभ्यास भऽ गेल छल। मुदा अन्नक न्याय जँ जलक बिनु रहि जाए, तँ ओ फेर आधा।

लोकगीत: खाली थारीक नाम

लोकधुन: करुण जट-जटिन

भरू हे थारी, थारीक नाम भरू हे,
एक दाना नहि—गरिमा सहित अन्न धरू हे।

जटिन थारी धोइ रखलक, दाना एको नहि,
जट खेतसँ घुरि आयल, कमाइ टिको नहि।
चन्द्रमा थारीमे उतरि गोल रोटी बनल,

बौआ हाथ बढ़ौलक—इजोत टूटि कऽ चलल।

खाली थारी कोठीसँ भारी, के सुनत ई बात,
भूखक नाम लिखू मालिक, नहि तँ कानत रात।
माय पानि पीबि कहली—हमरा भूख नहि,
करेजा भीतर चूल्हि जरल, धुँआ देखलक केहि?

थारीक नाम भरू, लोकक नाम बचाउ,
एक दाना नहि—गरिमा सहित अन्न पहुँचाउ।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—साध्यक पक्षधर्मव्यापकताज्ञान परामर्श—अन्य: जेना 'दण्ड पुरुषक अछि' ज्ञानसँ 'दण्डी पुरुष अछि' ज्ञान उत्पन्न होइत अछि। साध्यक पक्षधर्मव्यापकताज्ञान परामर्श—अन्य मत।]

अध्याय १२८

प्यासक नाम

प्यासकेँ सेहो नाम चाही— बिना नामक प्यास केवल आँकड़ा।

अध्यायारम्भ लोकगीत: लोटामे मेघ उतरू

लोकधुन: चौमासा-मलार

उतरू हे मेघ, लोटा भरि उतरू हे,
सूखल कण्ठ, पियासल खेत—दुनू तर करू हे।

सावन मेघ घेरि अएल, लोटा आकाश धरै,
बून्द-बून्द आशा भरि कऽ सूखल कण्ठ तरै।
छप्परक धार समेटि राखू, पोखरि फेर सजाउ,
जलकेँ साझा धन बुझि प्रत्येक बून्दक मान बचाउ।

खाली लोटा गीत गाबै—मेघ, हमर घर आउ,
पियासक खेत, थाकल जनकेँ जीवन-जल दऽ जाउ।
मलारक तान उठिते बादर हृदय पघिलत,
लोटामे मेघ उतरि कऽ नव हरियाली फुलत।

छप्परक धार गनैत नेना अँगना मे नाचय,
पोखरि-इनार-अहरा फेर जलक पोथी बाँचय।
बून्द-बून्द साझा धन, बिरथा नहि बहाउ,
मलारक करुण तान पर बादरकेँ बजाउ।

❖

भूख पेट केँ धरै छै, प्यास कण्ठ केँ। भूख शोर करैए, प्यास चुप रहै छै— आ चुप्पीक कारणेँ ओ बेसी दिन धरि सहल जाइ छै।

भूख पर समाज दया देखाबय सीखि गेलै। मुदा पानि पर समाज दया नै, अधिकार लगबै छै — ककर कूप, ककर घाट, ककर घैल, ककर हाथ, ककर जाति।

जकरा छूबाक मनाही छै, ओकरा पीबाक मनाही सहज बनि जाइ छै। आ जकरा पीबाक मनाही छै, ओकर आवाज सेहो सुखै लगै छै— कारण सूखल कण्ठ सँ प्रश्न नै उठै छै।

भूखक नाम लिखि देलाक बाद बच्चा सभ सोचलक जे न्याय आब धानक बालि धरि पहुँचि गेल। मुदा भोरक समय जखन नारिकेल पात पाठशालाक आँगनमे ओ सभ पहराक पाथर

सजबैत छल, तखन एकटा छोट बालक खाली लोटा लऽ कऽ आयल। ओकर लोटाक भीतर एक बून्द पानि नहि छल, मुदा लोटा बजैत छल—टुन, टुन, टुन—जेना खालीपन अपन अलग भाषा राखैत हो। बालक कहलक, “भूखक नाम लिखल गेल। प्यासक नाम कतऽ अछि?”

ई प्रश्न सुनिते ठूँठक छाँह, जे दुपहरियामे असम्भव नमहरी धरैत छल, भोरहुँ कने काँपि उठल। भूख देहक भीतर शोर करैत अछि; प्यास ओहिसँ बेसी गुप्त। भूख पेटकेँ धरैत अछि, प्यास कण्ठकेँ। भूख पर समाज दया देखाबय सीखि गेल अछि; प्यास पर समाज बेसीकाल अधिकार लगबैत अछि—ककर कूप, ककर घाट, ककर घैल, ककर हाथ, ककर जाति।

बा लोटाक लग झुकि कहलीह, “हमर बालपनमे पानिओक जाति छल। किछु कूप सभक, किछु कूप किछु लोकक, किछु कूप एहन जे प्यासल मनुख ओहि पर छाह धरि नहि दऽ सकय।” बच्चा सभ चौंकल। ओकरा सभ लग पानि नदीक, बादलक, धारक, घामक पसीनाक वस्तु छल; जातिक नहि। मुदा गढ़ नारिकेलक पुरान लोकक आँखि कहैत छल जे पानिक अपमान अन्नक अपमानसँ कम नहि।

गंगेशक प्रश्न फेर घुरल। अनन्या रजिस्टर खोलि लिखली—“प्रमाण: प्यास।” ईरा पूछली, “प्यासक प्रमाण की?” छोट बालक अपन खाली लोटा उठौलक। ओ प्रत्यक्ष छल। बा पुरान कथा कहलीह। ओ शब्द-प्रमाण छल। ठूँठक भीतरसँ शुष्क कड़-कड़ आवाज आयल। ओ अनुमान छल जे जड़ि पानिक प्रतीक्षा करैत अछि। मुदा न्यायक प्रमाण एखन बाँकी छल—ककरा पानि सँ रोकल गेल, आ किएक?

एहि प्रश्नक उत्तरमे गामक बाहरक पुरान इनारक कथा खुजल। ओ इनार आब आधा भरल, आधा धँसल, आ झाड़ीमे घेरायल छल। कहल जाइत छल जे चर्मकार टोलीक स्त्री सभ ओहि इनारक लग सँ घैल लऽ कऽ बहराइत छली, मुदा पानि नहि भरि सकैत छली। ओ सभकेँ दूरक पोखरि धरि जाय पड़ैत, जतय बरखाक बाद कीचड़, जाड़मे दुर्गन्ध, गरमीमे सूखल पाँक। ऊँच जातिक आँगनमे पानि छल; नीच कहल गेल देहक कण्ठमे प्यास।

मीरा एहि कथा पर बहुत देर चुप रहलि। फेर कहली, “देहक अधिकार बिनु पानिक अधिकार नहि। जकरा छूबाक मनाही, ओकरा पीबाक मनाही सहज बनि जाइत अछि।” सौम्या जोड़ली, “जकरा पीबाक मनाही, ओकर आवाज सेहो सुखैत अछि।” देविका एकदम धीमे कहली, “स्क्रीनक ठगी बादमे आयल; प्यासक ठगी बहुत पुरान अछि।”

बच्चा सभ निर्णय केलक जे आइ नाम-पाठ इनार लग होएत। ठूँठक चारू कातक पाथर उठाओल नहि गेल; केवल खाली लोटा, दुइटा रस्सी, एक पुरान डोल, आ रजिस्टर लऽ कऽ सभ

चलल। सत्यव्रत मेहता पाछाँ-पाछाँ चललाह। ओहि पथ पर ओ पहिने कखनो नहि गेल छलाह। हुनकर पदक संसारमे कूपक जाति फाइलक विषय बनि सकैत छल, मुदा एतय ओ प्यासल देहक भूगोल छल।

पुरान इनार पर पहुँचि लोक देखलक जे इनारक मेड़ पर काइ जमल अछि। ओकरा पर कतेको पुरान खरोंच—कखनो घैल टकरायल, कखनो नह रगड़ल, कखनो तामसमे पाथर मारल। अनन्या कहली, “इनारक देह पर लिखल अक्षर पढ़ू।” गोप कुमार झुकि देखलनि; हुनका नक्शा, आँकड़ा, सूची पढ़बाक अभ्यास छल, मुदा ई खरोंच पढ़ब कठिन। तखन बा कहलीह, “ई सभ प्यासक लिपि अछि।”

पहिल गवाही एक वृद्धा देली। हुनकर माय ओहि इनार पर एक बेर रातिमे पानि भरबाक चेष्टा केने छली। पकड़ा गेली, घैल फोड़ि देल गेल, आ हुनका कहल गेल—“तोहर प्यास तोहर जातिक कूपमे जाउ।” वृद्धा कहली, “हमर माय ओहि राति घैल नहि, अपन लाज नहि, अपन कण्ठक अधिकार टूटैत सुनने छली।” बच्चा सभ लिखलक—“प्यासक पहिल नाम: रोकल गेल कण्ठ।”

दोसर गवाही एक युवकक छल। ओकर दादा स्कूलमे पढ़ैत काल अलग लोटा सँ पानि पिबैत छलाह। लोटा पर हुनकर नाम नहि, जातिक निशान छल। बच्चा सभ पूछलक—“नाम नहि?” युवक कहलक, “नाम तँ छल, मुदा प्यास बुझबाक बरतन पर जाति लिखल छल।” अनन्या लिखली—“प्यासक दोसर नाम: अलग लोटा।”

तहिये एक झोंका आयल। सूखल पात इनारमे खसल। आवाज आयल नहि, कारण भीतर पानि कम छल। ईराक मोनमे स्वप्नक अनाम ग्रहक जल-सन्धिक चित्र चमकल—ओतय पानि नापि कऽ देल जाएत, क्रमांक सँ। पृथ्वी पर जाति पानि रोकैत छल; स्वप्नक अनाम ग्रहपर पूँजी। दुनू ठाम प्यासक गला पर पराया हाथ। ईरा कहली, “एहि इनारक इतिहास आ स्वप्नक अनाम ग्रहक भविष्य एके रेखा पर अछि।”

लाउ किन-हंग दूर शहरमे अपन बन्द कमरामे जल-परियोजना रिपोर्ट पढ़ैत छल। ओकर स्क्रीन पर शब्द छल—“दीर्घकालीन जल-आपूर्ति अधिकार।” अचानक अक्षर बदलि गेल—“ककर प्यास बेचब?” लाउ आँखि मसललक। पानिक ग्लास ओकर सोझाँ छल, मुदा ओकर कण्ठ सूखल। ओ पानि पीबय चाहलक, तखन ग्लासमे गोहिक आँखि देखाइ पड़ल। प्यास विदेशी निवेशक सभकेँ सेहो पकड़ि सकैत अछि, जँ ओ प्यासक व्यापार करय।

चन्द्रपाल बत्राक स्मारक-अनुप्रयोगमे नब सुविधा खुजल—“नामक लेल जल-दान।” देविका तुरन्त देखली। दानक बटन चमकैत छल, मुदा ककरा पानि भेटत, कोन इनार सुधरत, कोन घरक घैल भरत—किछु स्पष्ट नहि। देविका कहली, “ई प्यासक म्यूल एकाउण्ट अछि।” बच्चा सभ ठहाका नहि लगौलक; ओ सभ बुझि चुकल छल जे प्रत्येक ठगीक मूलमे ककरो वास्तविक अभाव होइत अछि।

इनार लग नाम-पाठ शुरू भेल। प्रत्येक गवाहीक बाद खाली लोटा एक बेर बजाओल जाइत। टुन। टुन। टुन। ओ ध्वनि हरेक बेर एके रंगक नहि होइत छल—जखन कियो कने जोर सँ बजबैत, तखन ओ पातर आ तेज होइत; जखन आस्ते, तखन ओ भीतर कतहु घूमि कऽ फेर बाहर अबैत। धीरे-धीरे से ध्वनि लोकक भीतर पैसि गेल। जकरा सभकेँ प्यासक जाति स्मरण नहि छल, ओकरा सभकेँ अपन घरक घैल मोन पड़ल; जकरा सभ प्यासक अपमान झेलने छल, ओकरा सभकेँ अपन मायक पएर।

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन पहिल बेर एक प्रश्न लिखलनि—“न्याय पानि धरि किएक देरी सँ पहुँचैत अछि?” एहि वाक्य पर हुनकर हाथ काँपल। न्यायालयमे जल-अधिकार, बराबरी, गरिमा—सभ शब्द उपस्थित छल; मुदा इनारक मेड़ पर शब्दक देह छल। ओ बुझलनि जे संविधानक अक्षर कतेक बेर कण्ठ धरि पहुँचैत-पहुँचैत सुखा जाइत अछि।

गंगेशक नव्य न्यायक चर्चा फेर उठल। गोप कुमार कहलनि, “जँ प्रत्यक्षमे एक मनुख प्यासल अछि, अनुमानमे ओकर अपमानक कारण जाति अछि, शब्दमे वृद्धा गवाही दऽ रहल छथि, तखन निर्णय की?” एक बच्चा उत्तर देलक, “निर्णय: पानि सभक।” दोसर जोड़लक, “आ स्मृति: जे पानि रोकलक, ओकरो नाम लिखल जाए।” बा कहलीह, “दण्ड केवल दोषीक नाम नहि; इनार खोलबो दण्ड अछि।”

साँझ धरि इनारक झाड़ी साफ भेल। कोनो उद्घाटन नहि। कोनो फीता नहि। पहिल डोल ओहि वृद्धा उतारली जिनकर मायक घैल फोड़ल गेल छल। डोल ऊपर आयल तखन पानि मटमैला छल। केओ तिरस्कार नहि केलक। बा कहलीह, “पहिने पानि मटमैला अबै छै, जेना स्मृति। निकालैत रहू, साफ होएत।” बच्चा सभ एक-एक डोल निकालैत रहल।

दस डोल बाद पानि कने साफ भेल। बीस डोल बाद तलहटीक थरथराहट सुनाइ पड़ल। तीस डोल बाद इनारक भीतरसँ एक ठंढा वायु उठल। ओहि वायुमे पुरनका पाथर, काइ आ बहुत दिनक बन्द पानिक मिलल गन्ध छल—एहन गन्ध जे नाकमे नहि, छातीमे बैसैत अछि। से

वायु चन्ना गाछीक ठूँठ धरि गेल, फेर नारिकेल पात पाठशाला, फेर मजदूरक पएर धरि। लोक कहलक—“इनार साँस लेलक।” अनन्या रजिस्टरमे लिखली—“प्यासक पहरा शुरू।”

एहि बीच राघव सिग्नल अपन एन्क्रिप्टेड समूहमे लिखैत छल—“जल-दृश्य भावनात्मक रूपेँ शक्तिशाली; नियन्त्रणक उपाय चाही।” मुदा सन्देश पठाओल नहि गेल। ओकर स्क्रीन पर केवल खाली लोटाक ध्वनि देखाइ पड़ल—टुन। टुन। टुन। आवाज देखाइ पड़ब सम्भव नहि, मुदा राघवक अपराधमे असम्भव वस्तु सभ सम्भव भऽ चुकल छल।

राति भेल तखन इनारक कगार पर पहिल सामूहिक जल-पाठ भेल। कोनो मन्त्र नहि, कोनो जाति-क्रम नहि। प्रत्येक मनुख डोल सँ एक चुल्लू पानि हाथमे लेत, अपन नाम कहैत, आ कहैत —“हम प्यास साझा करैत छी।” मीरा अपन हाथक पानि धरती पर खसबैत कहली—“जिनका पीबय नहि देल गेल।” देविका कहली—“जिनकर प्यासक बहानासँ ठगी भेल।” ईरा कहली —“जिनका ग्रह बदलि पानि बेचबाक सपना देखाओल गेल।” सत्यव्रत कहलनि—“जिनका कानून देर सँ सुनलक।”

एहि सामूहिक पानिसँ कटल चन्ना गाछीक ठूँठ पर हरियर बिन्दु कने पसरल। से पात नहि छल, केवल उमसक चमक; मुदा बच्चा सभ ओकरा देखलक आ मुस्कुरेलक। बूढ़बा भूत इनारक पार पर बैसल छलाह। ओ पानि नहि पिबलनि; भूत प्यासल रहैत छथि कि नहि, से केओ नहि जनैत। मुदा ओ खाली लोटा उठा कऽ ठूँठ दिस घुमा देलनि। लोटाक भीतर चन्द्रमा उतरि आयल।

भोर सँ पहिने अनन्या रजिस्टरक अगिला पन्ना खोललक। ओ लिखली—“प्यासक नाम लिखल गेल, मुदा प्यासक पहरा ताबत धरि अधूरा, जाबत धरतीक सभ कूप, नदी, पोखरि, घैल, बादल आ नोर मुक्त नहि हो।” तखन खाली लोटा अपने-आप एक बेर बजल।

टुन।

आकाशमे जमा अन्हार आब बरखाक नहि, प्रश्नक मेघ बनि रहल छल।

लोकगीत: खाली लोटाक मेघ

लोकधुन: चौमासा

बरसू हे बादर, न्यायो पर बरसू हे,
जकर पएर मे छाला, ओकर देहरी तरसू हे।

सावन मेघ घेरल, लोटा तैयो खाली,

पोखरि पर ताला लागल, पियास भेल घरवाली।
बौआ धारक सपना देखै, ठोर फाटल लाल,
इनार कहै—हम सभक छी, के बनौलक माल?

माय दू बून्द नोर लोटामे खसा देली,
'ई नहि पीबिहऽ' कहि कऽ मुँह फेरि लेली।
बादर, केवल खेत नहि, न्यायो पर बरसू,

खाली लोटा बजै—नामसँ पियास बुझाउ,
जल पर पहरा हटाउ, जीवन घर पहुँचाउ।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—जाहि अनुमानमे कोनो सपक्ष नहि आ व्यतिरेकव्य: उदाहरण —'पृथ्वी अन्य आठ द्रव्यसँ भिन्न अछि, गन्धवत्त्वक कारणे। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। जाहि अनुमानमे कोनो सपक्ष नहि आ व्यतिरेकव्याप्तिक ज्ञानसँ अनुमान उत्पन्न हो, सँ केवलव्यतिरेकी अछि।।]

अध्याय १२९

नूनक शपथ

नूनक शपथ सभसँ पुरान— मायक दूधसँ मजूरक पसीना धरि एक्कहि स्वाद।

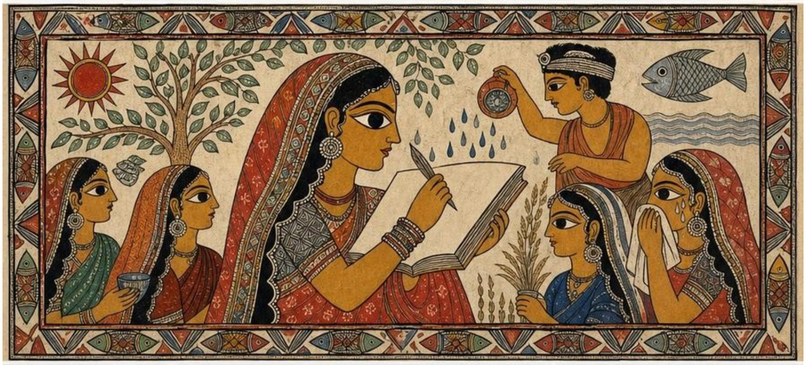

अध्यायारम्भ लोकगीत: नूनक साँच किरिया

लोकधुन: मंगल-गान

खाउ हे किरिया, एक चुटकी नूनक हे,
जकर संग अन्न बाँटल, धोखा नहि हुनक हे।

एक चुटकी नून धरू, साँचक किरिया खाउ,
जे थारीक स्वाद बढ़ाबै, ओकर मान बचाउ।
नून श्रमक पसीना, नून माटिक सार,
नून बिनु भोज अधूरा, साँच बिनु व्यवहार।

किरिया भयक नहि हो, जिम्मेदारीक बोल,
जकर संग अन्न बाँटल, ओकरा नहि देब डोल।
नूनक साँच किरिया कहै—विश्वास नहि बेचू,
एक दाना जकाँ सत्यकेँ रोज हृदयमे सेचू।

नून मे माटिक सार, पसेनाक सुआद,
बिनु नूनक भोजन जकाँ बिनु साँचक संवाद।
किरिया भय सँ नहि, जिम्मेदारी सँ खाउ,
दाना-दाना सत्य हृदय मे रोज उगाउ।

❖

नूनक शपथ सभसँ पुरान— मायक दूधसँ मजूरक पसीना धरि एक्कहि स्वाद। जे जीह पर चढ़ि गेलै, ओकरा कोनो पोथी सँ सिद्ध करबाक जरूरति नै रहै छै।

मिथिला मे समुद्र नै छै, तैयो नून हरेक देह मे छै— मायक दूध मे, मजदूरक घाम मे, स्त्रीक नोर मे, आ मुरदाक देहक अन्तिम गीलापन मे। ओ एक्के स्वाद छिकै।

स्वाद मे एक, अपमान मे अनेक। जे हाथ रोटी बनबै छै, ओकर नून जीह पर शुद्ध; ओकर घैल हाथ लेल अशुद्ध। शुद्धताक दावा बेर-बेर श्रमक चोरी बनि जाइ छै।

आ नून शपथ नै मँगै छै। ओ खाली स्वाद बनि जीह पर बैसि जाइ छै— आ जकरा ओ स्वाद बुझि गेलै, ओकरा पृथ्वी छोड़बा मे बेर लगतै।

प्यासक नाम लिखलाक पछाति बच्चा सभ बुझलक जे मनुष्य केवल अन्न आ पानिसँ नहि बनैत। जे कण्ठ नाम पुकारैत अछि, ओहि कण्ठमे नूनक स्वाद सेहो रहैत अछि—मायक दूधक दूर स्मृति, मजदूरक पसीना, स्त्रीक नोर, खेतक माटि, आ समुद्र सँ बहुत दूर बसल मिथिलाक भीतरक अदृश्य लवण। गढ़ नारिकेलमे समुद्र नहि छल, मुदा नून प्रत्येक देहमे छल; एहि कारणेँ अनन्या रजिस्टरक अगिला पन्ना पर लिखली—"पच्चीसम पहरा: नूनक शपथ।"

ईरा हँसि कऽ पूछली, "नूनक शपथ? शपथ तँ गीता पर, जल पर, माटि पर, आगि पर होइत अछि।" अनन्या कहली, "जकर पसीना बिनु ई सभ शब्द टिकैत नहि, ओकर शपथ किएक नहि?" ओहि प्रश्नमे बालपन छल, मुदा गंगेशक न्यायक काठी सेहो छल। प्रमाण जँ प्रत्यक्ष चाही, तँ पसीना प्रत्यक्ष अछि। अनुमान चाही, तँ खेतक लहर देखि श्रमक अनुमान होइत अछि। शब्द चाही, तँ मायक रोदनमे नूनक स्वाद बजैत अछि। मुदा जाति आ बजार दुनू ई नूनकेँ बेनाम बनबैत रहल।

ठूँठक चारू कात ओहि दिन बच्चा सभ एक-एक चुटकी नून आनि राखलक। ककरो घरक चूल्हि लगक डिब्बी सँ, ककरो दुकानक थैली सँ, ककरो पशुखोरक बोरा सँ, ककरो रसोइक पुरान डलिया सँ। बा अपन आँचलमे बान्हल चुटकी नून खोलि कहलीह, "ई नून हमरा मायक रसोइक स्मृति अछि। कतेक बरख बीतल, मुदा रोटी पर छिड़कल ओहि स्वादसँ घर चिन्हाइत छल।"

देविका एक कटोरीमे उज्ज्वलक घरक नून आनली। ओ नून सामान्य छल, मुदा उज्ज्वलक माय ओकरा देखिते काँपि गेली। "ई ओहि दिनक डिब्बी सँ रहल?" देविका हँमे माथ हिलौली। ओहि दिन, जखन उज्ज्वलक स्क्रीनक खबरि घर पहुँचल, चूल्हि पर दालि उबलि रहल छल। दालिमे नून पड़य सँ पहिने घरक आवाज बन्द भऽ गेल छल। तखन सँ ओ डिब्बी जहिनाक तहिना पड़ल छल। आब ओकर नून नामक अभिलेख लग आयल।

मीरा नूनक कटोरी सभकेँ क्रममे नहि राखली। ओ कहली, "नूनक जाति नहि पूछल जाएत। जे नून चर्मकारिणीक हाथमे, ब्राह्मणक थारीमे, मजदूरक पसीनामे, विधवाक नोरमे, बच्चाक खेलक बादक ठोर पर, आ मृतकक देहक अन्तिम गीलापनमे एकहि स्वाद बनैत अछि, ओकरा पाँतिमे किएक राखब?" बटुकनाथ हरिहरनक दू लोक दूर ठाढ़ ई दृश्य देखैत छल। हुनका सभकेँ एहि अव्यवस्था सँ असुविधा भेल।

गंगेशक प्रसंग फेर उठल। अनन्या तत्त्वचिन्तामणिक पातक प्रतिलिपि खोलली आ कहली, "जँ न्याय वस्तुक भेद बूझैत अछि, तखन समाज मनुष्यक भेद किएक बनबैत अछि?

जँ प्रमाणक अग्नि झूठ जरबैत अछि, तखन जातिक पिंजरा प्रमाणक सोझाँ किएक टिकैत अछि?" ओ बच्चा सभकेँ देखली। "आइ नूनक परीक्षा अछि। जे कहत जे ओकर नून शुद्ध, आ दोसराक नून अशुद्ध—ओ पहिने अपन नोरक स्वाद बताबय।"

एहि बात पर स्त्री सभक राति-सभाक स्मृति उठल। एक दलित वृद्धा, जिनकर नाम कम लोक पुकारैत छल, आगाँ आबि कहली, "हमर हाथक बनाओल रोटी ओ सभ खाइत छल जे हमरा आँगनमे पानि नहि पीबैत छल। हमर नून हुनकर जीह पर शुद्ध छल, हमर घैल हुनकर हाथ लेल अशुद्ध। ई कोन न्याय?" हुनकर स्वरमे बरखक राखि छल। सत्यव्रत मेहता, जे पाछाँ बैसल छलाह, माथ झुका लेलनि। हुनकर लिखल कागच पर पहिल वाक्य उतरल—"नून गवाही दैत अछि जे शुद्धताक दावा प्रायः श्रमक चोरी अछि।"

तखन मजदूर सभ अपन-अपन कपार पोंछि हाथ आगाँ बढ़ौलक। ओ सभक हथेली पर पसीनाक महीन रेखा चमकि रहल छल। ओ रेखा हथेलीक अपन लकीर सँ अलग छल—लकीर भीतर धँसल रहैत अछि, आ ई ऊपर जमल; आ ओहि ऊपरका नमीमे धूलि सटि कऽ हथेलीक नक्शा दोहरा दैत छल। मुन्ना पासवानक भाइ कहलक, "ई नून हमरा देहक अछि। पुल पर जे खसल, ओहो ई नून छोड़ि गेल। फाइलमे ओकर नाम नहि, मुआवजा नहि, मुदा लोहाक पाया पर ओकर पसीना चढ़ल अछि। जे पुल पार करैत छथि, ओ सभ ओकर नून पर चलैत छथि।" आरुणि चुप रहलाह। ओ अभियन्ता छलाह, मुदा एहि वाक्यक सोझाँ हुनकर रेखाचित्र, गणना आ अनुमान छोट भऽ गेल।

ठूँठक जड़ि ओहि समय अजब रंग लेलक। धूप हलुक उज्जर भऽ गेल। नूनक चुटकी सभ, जे अलग-अलग कटोरीमे छल, हवा लगितहि चमकय लागल। एक बच्चा हाथ बढ़ा कऽ नून छुलक; ओकर आँगुर पर स्वाद आयल। ओ बाजल, "सभ नून एक सन।" बा ओकर माथ पर हाथ राखि कहलीह, "स्वादमे एक, अपमानमे अनेक। ई बात मोन राख।"

ओहि दिन एक व्यापारी सेहो आयल। ओकर नाम फाइलमे साफ, हिसाबमे तेज, बोलीमे दया भरल छल। ओ "लोक-स्मृति उत्पाद" बनेबाक प्रस्ताव अनलक—'गढ़ नारिकेल स्मृति-नून'। पैकट पर चन्ना ठूँठक चित्र, पाछाँ कथाक छोट अंश, आ लाभक किछु अंश 'पुनर्वास' लेल। लोकमे क्षण भरि गड़बड़ मचल। गरीब गाममे पाइ एक तर्क होइत अछि। मुदा अनन्या पूछली, "ई नून कतऽ सँ आओत?" व्यापारी कहलक, "समुद्री स्रोत सँ, प्रमाणित।" नेनी फेर पूछली, "एहिमे उज्ज्वलक मायक अधपड़ल दालिक स्वाद रहत? मजदूरक पसीना? दलित वृद्धाक प्रश्न? बा केर आँचल? जँ नहि, तँ स्मृति-नून नहि, बजार-नून अछि।"

व्यापारी मुस्कुरायल, मुदा मुस्कान टिकि नहि सकल। कारण ओकर पाछाँ-पाछाँ राघवक एक गुप्त सन्देश आयल छल—“भावनात्मक सामग्रीकेँ उत्पादमे बदलू, कथाकेँ स्वादमे बदलू, स्मृतिकेँ उपभोगमे बदलू।” ई सन्देश देविका पकड़ि लेली। ओ जोर सँ नहि पढ़ली। पहिने ओ मीरा सँ पूछली—“इजाजत?” मीरा कहली, “जतय षड्यन्त्र लोकक स्मृति पर दावा करैत अछि, ओ सार्वजनिक गवाही बनैत अछि।” तखन सन्देश पढ़ल गेल। व्यापारीक चेहरा काजर भीजल कागच जेकाँ पसरि गेल।

चन्ना ठूँठक भीतर सँ हलुक किरकिराहट उठल। जेना जड़ि दाँत पीसि रहल हो। बच्चा सभ काँपल नहि। ओ सभ सीखि गेल छल जे स्मृति क्रोध सेहो करैत अछि, मुदा मनुष्यक हिंसा नहि; चेतावनीक रूपमे। अनन्या नूनक कटोरी उठा कऽ ठूँठ लग राखली। ओ कहली, “आइ सँ नून बिकत नहि। नून बाँटल जाएत। जे नाम पढ़य आओत, ओकरा नूनक दाना देल जाएत—मोन राखबाक लेल जे स्मृति बिनु स्वादक नारा नहि, देहक सत्य अछि।”

स्त्री सभ मिलि एक छोट शपथ बनौली। ओ शपथ न देवलोकक, न अदालतक, न धर्मग्रन्थक, न कम्पनीक। शपथ एतेक सरल छल जे बच्चा सभ तुरन्त दोहरा सकल—“हम जे नून खाइत छी, ओकर श्रम नहि बिसरब। हम जे नोर देखब, ओकर स्वादक उपहास नहि करब। हम जे नाम सुनब, ओकरा उत्पाद नहि बनाएब। हम जे रोटी बाँटब, ओकर पाँतिमे जाति नहि राखब।” ई शपथ सुनि गंगेशक पातक किनारी काँपि उठल।

सत्यव्रत मेहता एतय पहिल बेर आगाँ बढ़लाह। ओ अपन कागच राखि दैत कहलनि, “कानूनमे शपथ बेसीकाल सत्य कहबाक औपचारिकता अछि। अहाँ सभ ओकरा जीवन जीबाक उत्तरदायित्व बना देलहुँ।” हुनकर स्वरमे न अधिकारीक भार छल, न भाषणक उछाह। बालिका हुनका एक चुटकी नून देली। ओ हथेली पर राखि बहुत देर देखैत रहलाह। हथेलीक गरमीसँ ओ नून कने चिपचिपा भऽ गेल आ आँगुरमे लागि गेल—ओकरा झाड़ब आब सहज नहि छल। फेर धीरे जीह लगौलनि। आँखि भरि आयल। शायद ओहि स्वादमे हुनका अपन देर-सँ-आयल न्यायक लाज भेटल।

ओहि साँझ गाममे अजीब बात भेल। घर-घरमे जखन भोजन बनल, तखन लोक नून राखितहि एक नाम बाजल। ककरो घरमे मजदूरक, ककरो घरमे उज्ज्वलक, ककरो घरमे गंगेशक, ककरो घरमे चर्मकारिणीक, ककरो घरमे ओ अनाम जिनकर नाम नहि भेटल। पहिने ई खेल लागल, फेर रीति, फेर स्मृति। किछु घरमे नाम बाजैत काल हाथ ठमकि जाइत छल आ चुटकीक नून थारीक कात मे खसि पड़ैत छल; कियो ओकरा फेर उठाबय नहि जाइत छल, आ

ओ उज्जर कण ओतहि पड़ल रहि जाइत छल। रोटी पर नून छिड़कैत लोक बुझलक—मुँहमे स्वाद अबैत अछि, मुदा स्वादक पाछाँ कतेक देहक इतिहास रहैत अछि।

रातिमे 'नव-क्षितिज' परियोजनाक नब प्रचार-पत्र आयल। ओतय बसाबट लेल जे भोजन-संकलन बनाओल जा रहल छल, ओकर सूचीमे 'स्वाद-नियन्त्रित पोषण' लिखल छल। नून मापल, जल मापल, अन्न मापल, भाव मापल। सूचीक हरेक पाँती लग एक संख्या छल आ ओहि संख्याक आगाँ एक छोट हरियर चिन्ह, जे बुझबैत छल जे सभ किछु सीमाक भीतर अछि। अनन्या आ ईरा स्क्रीनक उपवासक नियम तोड़ि केवल एक बेर ओ सूची देखली। ईरा कहली, "ओतय नून अछि, मुदा स्मृति नहि।" अनन्या उत्तर देली, "तखन ओतय जीह रहत, स्वाद नहि।"

तहि राति कबड्डीक अभ्यास भेल। बच्चा सभ माटि पर रेखा खिंचलक। एक टोलीक नाम राखल गेल—'नून'। दोसर टोली—'बेनाम'। खेल शुरू भेल। 'कबड्डी-कबड्डी'क बीच बच्चा सभ नियम जोड़लक—जे प्रतिद्वन्द्वीकेँ छूअय, ओकर नाम सेहो पुकारय; जे नाम नहि पुकारि सकत, से घुरि नहि सकत। खेलक पहिल दौरमे कतेक बच्चा हारल, कतेक जीतल। मुदा जे हारि गेल, ओकरा सभकेँ सेहो नूनक दाना देल गेल। कारण एहि खेलमे पराजय दण्ड नहि, स्मरणक अभ्यास छल।

बूढ़बा भूत ठूँठक पाछाँ सँ देखैत रहलाह। ओहि राति ओ पहिल बेर एक पूर्ण वाक्य कहलनि —"जकरा नूनक स्वाद बुझि गेल, ओकरा पृथ्वी छोड़यमे देर लागत।" ई वाक्य सुनि पनिडुब्बी पानिमे हलुक गोल घेरा बनौली। गोहि सभ दूर बाढ़िक पाछाँ स्थिर पड़ल रहल। जेना ओहो बुझि रहल छल जे देह चिबाओल जा सकैत अछि, मुदा जीह पर उतरि गेल स्मृतिकेँ कोनो दाँत नहि खाइत।

भोरसँ पहिने अनन्या रजिस्टर बन्द केली। शीर्षकक नीचाँ अन्तिम पाँती लिखल गेल —"नून शपथ नहि माँगैत; नून शपथक स्वाद बनैत अछि।" ओहि पाँती लिखितहि ठूँठक हरियर कोंपल पर ओसक बून्द जमल, आ बून्द सुखलाक बाद पातक किनारी पर हलुक उज्जर रेखा बचल—जेना पृथ्वी अपने एक चुटकी नून राखि गेल हो।

मुदा ई पहरा अन्त नहि छल। जखन नूनक शपथ लोकक मुँहमे पहुँचल, तखन अगिला हमला स्मृतिक गन्ध पर होएबाक छल। कारण जे स्वाद बचि गेल, ओकरा पछाति बजार गन्ध बनाबय चाहैत अछि। बच्चा सभकेँ एखन सीखबाक छल—कोन गन्ध घरक, कोन गन्ध शवक, कोन गन्ध खेतक, आ कोन गन्ध छलक।

लोकगीत: नूनक किरिया

लोकधुन: मंगल-गानक करुण धुन

खाउ हे किरिया, नूनक किरिया खाउ हे,
भूखलकेँ असगर ने छोड़ब—एतबे निबाहू हे।

एक चुटकी नून माय दूधमे घुलल,
एक चुटकी नून बाबूक घामसँ फुलल।
नोर सेहो नोनगर, नदी सेहो नोनगर,
विश्वास बेचू नहि, चाहे दिन हो दुर्गमतर।

थारी बीच नून राखि सभ हाथ पसारलक,
कियो मालिक नहि, सभ संग किरिया धारलक।
जे नून खा कऽ पीठमे छूरा चलाओत,
ओकर जीह राति भरि अपन नाम पुकारत।

नूनक किरिया—भूखलकेँ असगर नहि छोड़ब,
माय केर नोर जकाँ सत्यकेँ नहि तोड़ब।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—आचार्यसभक मत अछि जे ‘जे धूमयुक्त अछि, सँ अ: जरन्मीमांसक कहैत छथि जे न्यायप्रयोग प्रतिज्ञा, हेतु आ उदाहरण—एहि तीन अवयवपर समाप्त होइत अछि; उपनय आ निगमन आवश्यक नहि। आचार्यसभक मत अछि जे ‘जे धूमयुक्त अछि, सँ अग्निमान अछि’ एहि वाक्यमे ‘जे’ सम्बन्धवाचक सर्वनामक पुनरुक्ति हेतुक साध्यसँ व्यभिचार रोकबाक लेल कएल जाइत अछि।।]

अध्याय १३०

स्वादक न्याय

स्वाद बदलल बुझाए तँ बुझू— न्याय जीहपर उतरि गेल।

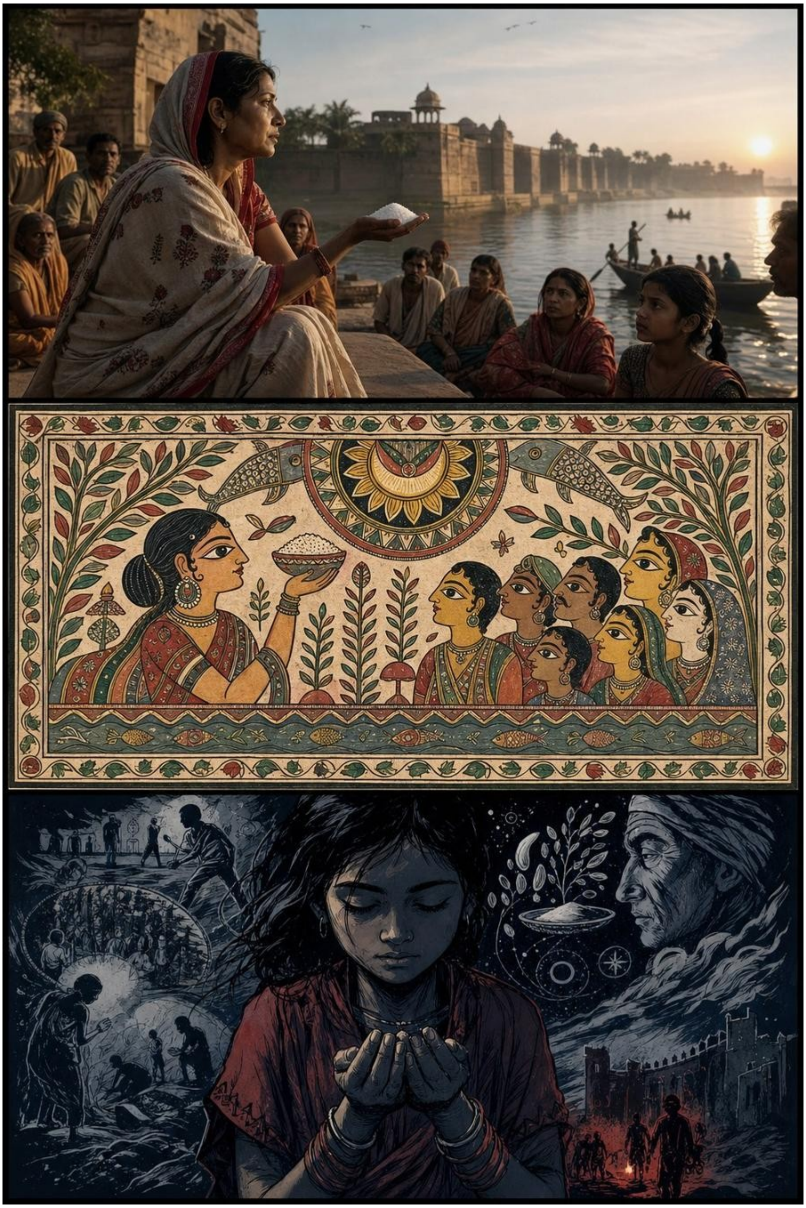

अध्यायारम्भ लोकगीत: स्वाद घर घुरल

लोकधुन: सोहर-विरहक उज्जर मेल

आयल हे स्वाद, घरक स्वाद घुरि आयल हे,
माय-हाथक भात-गन्ध अँगना मुस्कायल हे।

माय केर हाथक भातक स्वाद फेर घर आयल,
धुँआ, नून, सरिसों तेल आँगनमे मुस्कायल।
परदेसक जीह मोन रखै तुलसीक गन्ध,
एक कौरसँ खुजि जाय पुरखा-प्रेमक बन्ध।

स्वाद केवल भोजन नहि, स्मृतिक घर-दुआर,
जकरा बाँटू ओतय बढ़य अपनापन अपार।
घरक स्वाद घुरि आयल तँ दूरी गलि जाय,
एक थारीक नेहसँ बिसरल नाम जुड़ि जाय।

सरिसों तेलक छौंक उठल, तुलसी-गन्ध बसात,
परदेसक जीह पर उतरल पुरखा-प्रेमक भात।
एक कौर मे गाम समाएल, एक थारी मे नाता,
बाँटल स्वादे जोड़ि दिअय बिसरल नाम-गाथा।

❖

देह खाली भूख आ प्यास सँ नै बनै छै। देह ई सेहो मन राखै छै जे ओकरा कोन स्वाद भेटल, कोन स्वाद छीनल गेल, आ कोन स्वाद ओकरा झूठ बुझा देल गेल।

जे मर्यादा भूख सँ जाति पुछै छै, से मर्यादा नै छिकै— से देहक अपमान छिकै। थारी पर बैसला के बाद ई पुछनाइ जे ककर हाथक, ई भोजनक प्रश्न नै, न्यायक प्रश्न बनि जाइ छै।

आ स्वाद जीह पर रहै छै, मुदा स्मृति गन्ध सँ घुरै छै। जकर घरक रसोइ जरि गेलै, जकर खेत सुखा गेलै— ओकर नाम पहिने गन्ध बनि अबै छै।

नूनक शपथक राति बीतलाक बाद गढ़ नारिकेलमे भोरक स्वाद बदलल बुझायल। हवा ओहिना चलि रहल छल, कमला-बलानक पानि ओहिना किनार छू रहल छल, ठूँठक हरियर

बिन्दु ओहिना कने-कने पसरि रहल छल, मुदा लोकक मुँहमे जे पहिल शब्द आयल, से भोजनक नहि, न्यायक छल। बा कहलीह—“नून खाइत छी, तैँ नूनक न्याय सेहो मानब।” एहि वाक्यक बाद लोक चुप पड़ि गेल; कारण नूनक न्याय थारीमे कम, आत्मामे बेसी लगैत अछि।

मध्यान्तरक बाद जे पहरा सभ शुरू भेल छल, से आब देहक भीतर उतरि चुकल छल। पहिने पृथ्वी, फेर बीआ, माटि, जल, आगि, वायु, आकाश, शब्द, अर्थ, कण्ठ, मौन, स्मृति, देह, श्रम, न्याय, जाति, गंगेश, तत्त्वचिन्तामणि, प्रमाण, धान, अन्न, भूख, प्यास, नून—सभ अपन-अपन गवाही दऽ चुकल छल। मुदा बच्चा सभ बुझलक जे देह केवल भूख आ प्याससँ नहि बनैत; देह स्मरण करैत अछि जे ओकरा की स्वाद भेटल, की स्वाद छीनल गेल, आ कोन स्वाद ओकरा झूठ बुझाओल गेल।

नारिकेल पात पाठशालाक आँगनमे ओहि दिन सामूहिक भोजन बनबाक निर्णय भेल। कोनो दान-पत्र नहि, कोनो समारोह नहि, कोनो मंच नहि। प्रत्येक घरसँ किछु आनबाक कहल गेल—कोनो घरसँ चूड़ा, कोनो घरसँ दही, कोनो घरसँ साग, कोनो घरसँ भात, कोनो घरसँ लहसुन, कोनो घरसँ नून, कोनो घरसँ मात्र एक मुट्ठी चाउर। जे घर किछु नहि आनि सकल, ओहि घरसँ बच्चा सभ पानि आनि देलक। अनन्या लिखली—“जकरा अन्न नहि, ओकरो जल अछि; जकरा जल नहि, ओकरो नाम अछि।”

देविका चूल्हि लग बैसि साग चुनैत छली। सागक डाँट तोड़ितहि जे हलुक ‘चट्’ होइत छल, ओकर काँप हाथ धरि पहुँचि जाइत छल। मीरा स्त्री सभक संग भात धोइत छली। सौम्या पात बिछबैत छली। ईरा बालक सभकेँ बुझबैत छली जे भोजनक पाँति स्मृतिक पाँतिसँ अलग नहि। गंगेशक प्रश्न एखनहुँ हवामे छल—ककरा संग खाएब, ककर हाथक खाएब, ककर छूअल मान्य, ककर श्रम अदृश्य? जातिक पिंजरा फाटल छल, मुदा ओकर लोहाक गन्ध एखन माटिमे दबले छल।

पहिल विवाद ओतहि उठल। एक बुजुर्ग कहि देलनि जे सभ एक पाँतिमे बैसत तँ समाजक मर्यादा बिगड़त। बच्चा सभ उत्तर देबाक लेल उठि पड़ल, मुदा बा रोकली। ओ बुजुर्गक सोझाँ एक थारी राखि कहलीह—“मर्यादा जे भूखकेँ जाति पूछय, से मर्यादा नहि, देहक अपमान अछि।” बुजुर्ग किछु कहय चाहलनि, मुदा ओहि क्षण चूल्हिक धुँआ घूमि हुनकर आँखिमे गेल। ओ पानि माँगलनि। पानि ओहि बालक देलक जकर घरक जाति पर ओ बुजुर्ग जीवन भरि प्रश्न करैत रहलाह। बुजुर्ग पानि पीबि लेलनि। पाँति टूटल नहि; पिंजरा कने चरमरायल।

तहिया एक नब चाल देखाइ पड़ल। विरासत-परियोजनाक दलक दू लोक दूर सँ टोकरी लऽ कऽ आयल। ओ सभ कहलक—“गढ़ नारिकेलक असली स्वादकेँ दुनियाँ धरि पहुँचाएब। चन्ना गाछी स्मृति-भोज—विशेष पैकेट।” टोकरीमे छोट-छोट थैली छल, ऊपर छपल—“स्मृति-नून”, “जलसमाधि साग”, “भूत-कबड्डी चूड़ा।” पन्नी चमकैत छल, चित्र मनोहर छल, भीतरक वस्तु पर नूनक गन्ध कृत्रिम छल।

अनन्या थैली उठौली। ओ पढ़ली, फेर सुँघली, फेर माटि पर राखि देली। “ई ककर स्वाद?” ओ पूछली। लोक कहलक—“स्थानीय चिन्हारि।” अनन्या फेर पूछली—“ककरा भूख लागल छल? ककरा प्यास लागल छल? के नूनक शपथ लेलक? ककर श्रमक पसीना एहि पन्नीमे अछि?” लोक चुप। बच्चा सभ हँसल नहि; ओ सभ जनैत छल जे बजारक झूठक अपमान करब आसान अछि, मुदा ओकरा रोकब कठिन। थैलीक पन्नी हाथमे दबितहि जे चरचराहट भेल, से एतेक तेज छल जे लगक लोक चौंकल—मुदा ओहि आवाजक पाछाँ कोनो गन्ध नहि आयल।

सत्यव्रत मेहता ओहि दिन पाँतिक बिलकुल पाछाँ बैसल रहलाह। हुनका सोझाँ सेहो पात राखल गेल। एक बच्चा पूछलक—“अहाँ पहिने खाएब?” ओ माथ झुकबैत कहलनि—“जे सभक नाम खाएल गेल, हुनका बाद। जे सभक अन्न छीनल गेल, हुनका बाद। जे सभ अपना हाथेँ रान्हि रहल छथि, हुनका बाद।” ई वाक्य सुनि स्त्री सभक बीच एक धीमा स्वर उठल —“तखन अन्तमे बैसू।” सत्यव्रत अन्तिम पात लग बैसि गेलाह। हुनकर पद फेर पाछाँ गेल; हुनकर देह पहिल बेर पाँतिमे आयल।

भोजन शुरू भेल। पहिल कौर लेबासँ पहिने बा कहलीह—“नाम।” सभ चुप। फेर एक-एक कऽ नाम कहल गेल—मजदूर, डिजिटल ठगीमे डूबल युवक, अस्पतालक बिलमे रोकल देह, जलसमाधिक स्त्री, जातिक कारणेँ तिरस्कृत प्रेम, चर्मकारणी, गंगेश, अनाम। प्रत्येक नामक बाद एक कौर। भोजन अचानक रस्म नहि रहल; ई देहक अभिलेख बनि गेल। कौर मुँहमे जाइत, लोकक आँखि पानि सँ भरि उठैत, कारण स्वाद ओहि समय स्मृतिक सभसँ छोट आ सभसँ गाढ़ प्रमाण बनि रहल छल।

मीरा देखली जे स्त्री सभक स्वाद अलग छल। कतेक स्त्री कहैत छली—“हम तँ पहिने सभकेँ परोसैत छी, अन्तमे जे बचत से खाइत छी।” देविका रजिस्टरमे लिखली—“स्वादक न्याय बिनु परोसबाक न्याय अधूरा।” ओहि दिन नियम बनल—भोजनमे जे रान्हत, ओ पहिने

चाखत; जे परोसत, ओ पाँतिमे बैसत; जे अतिथि बनत, ओ हाथ धोइत समय स्मृति-पाथर पर जल ढारत।

ईरा विदेशक बच्चा सभकेँ लिखबाक लेल नोट बनबैत छली। ओ लिखली—“गामक स्वाद रसोइ-पुस्तकमे नहि रहैत; जे हाथ प्रतिबन्धित रहल, जे देह पाँतिसँ बाहर राखल गेल, जे नाम भोजनक समय चुप कराओल गेल, ओकरा सभकेँ संग बैसाय बिनु ‘मिथिला स्वाद’ झूठ अछि।” ई वाक्यक बाद ओ कलम रोकि देली। हुनका लागल, शायद ई पत्र नहि, अगिला पाठ होएत।

गंगेशक स्मृति ओहि भोजनमे एक विचित्र ढंगेँ आबि बसल। तत्त्वचिन्तामणिक पात जेकाँ किछु सूक्ष्म रेखा भातक दाना पर चमकल। एक बालक पूछलक—“प्रत्यक्ष स्वाद छी?” दोसर कहलक—“हँ, मुदा स्वादक प्रमाण केवल जीह नहि; जकरा भाग नहि भेटल, ओकर मौन सेहो प्रमाण।” तेसर कहलक—“अनुमान—जे सदिखन दोसराकेँ खुआ कऽ अन्तमे खाइत अछि, ओकर कौरमे थकानक स्वाद होइत अछि।” बच्चा सभ न्याय-दर्शनकेँ खेल नहि, थारीक पाठ बनौने छल।

ठूँठक हरियर बिन्दु लग एक पाँति अलग बनल—गोहि सभक लेल। केओ सचमुच गोहिकेँ खुआबय नहि चाहैत छल; ई प्रतीक छल। ओहि पात पर भातक कौर, नूनक दाना, पानिक बून्द, आ एक खाली स्थान राखल गेल। बा कहलीह—“जे देह चिबा गेल, ओकरो भूख बुझबाक प्रयास करब, जाहिसँ हम ओकरा केवल दानव नहि, संसारक भयानक प्रश्न मानि सकी।” एहि वाक्य पर बहुत लोकक देहमे सिहरन उठल। गोहि सभक बीच जलसमाधि आब फेर एक गूढ़ अर्थ धारण कऽ रहल छल—नाशक भीतर प्रश्न, प्रश्नक भीतर मुक्ति।

विरासत-दलक लोक सभ फेर प्रस्ताव देलक—“ई भोजनक परम्पराकेँ नियमित आयोजन बना देब, टिकटसहित, स्वच्छ व्यवस्थासहित।” अनन्या उत्तर देली—“जे भूख बुझल नहि, ओ भोजनक प्रबन्ध नहि करत। जे जाति तोड़ि नहि बैसल, ओ पाँति नहि लगाओत। जे नाम सुनल नहि, ओ नून नहि छूओत।” लोक सभ पराजित जेकाँ नहि, असमंजस जेकाँ चलि गेल। बजार हारल नहि छल; ओ अगिला चाल सोचि रहल छल।

भोजनक बाद पात सभ नदीक किनार लऽ जाओल गेल। फेकल नहि गेल; जलक स्मृति लग राखि ओकरा माटिमे दबाओल गेल। गोप कुमार कहलनि—“कागचक रजिस्टर रहत, मुदा पातक रजिस्टर माटिमे रहत।” बच्चा सभ प्रत्येक पातक ऊपर एक छोट अक्षर बनौलक—क, न, ज, भ, प, म—कोनो पूर्ण शब्द नहि, केवल संकेत। पातक नस पर अक्षरक रेखा बेर-बेर टूटि

जाइत छल, तेँ सभ बहुत हलुक हाथेँ लिखैत छल। जँ कियो पात खोदत, ओकरा शब्द पूरा करय पड़त।

साँझमे चूल्हि ठंढा भेल। राखिक भीतर एक अजीब चिन्ह देखाइ पड़ल—न अक्षर, न चित्र। मीरा ओकरा देखैत कहली—“ई गन्धक चिन्ह अछि।” सभ चकित। ओ बुझौली—“स्वाद जीह पर रहैत अछि, मुदा स्मृति गन्ध सँ घुरैत अछि। जकर घरक रसोइ जरि गेल, जकर देह अस्पतालमे जरि गेल, जकर खेत सुखा गेल, ओकर नाम पहिने गन्ध बनि अबैत अछि।”

ओहि क्षण कटल चन्ना ठूँठसँ हलुक धुँआ उठल। आगि नहि छल, राखि नहि छल, मुदा गन्ध छल—भीजल पात, पुरान नून, श्रमक पसीना, नदीक कछेर, आ दूर कतहु सँ अबैत चूल्हिक सुगन्ध। ओ गन्ध एक ठाम टिकैत नहि छल; ओ आबि कऽ फेर हटि जाइत, आ हटलाक बाद जे रहि जाइत छल से गन्ध नहि, ओकर स्मरण छल। बच्चा सभ रजिस्टर खोललक। अनन्या अगिला पन्ना पर लिखली—“सत्ताइसहम पहरा: गन्धक गवाही।”

स्वादक न्याय एतय पूरा भेल, मुदा भोजनक बाद जे गन्ध बचल, से कहि रहल छल जे स्मृति एखन मुँहसँ नाक, थारीसँ घर, आ घरसँ इतिहास धरि जाएबाक बाट पकड़ि रहल अछि।

लोकगीत: स्वादमे बसल घर

लोकधुन: सोहर-विरह मिश्र

चिन्हय हे जीह, अपन घर चिन्हय हे,
नकली सुगन्धिक भीतर सत्यक धुँआ बिन्हय हे।

माय केर हाथक भातक स्वाद कतऽ गेल,
बजारक सुगन्धि आयल, घरक गन्धि खेल?
सरिसों तेल, धुँआ चूल्हि, आमक टिकोरा,
एहि सभमे पुरखा बजै, नहि केवल चोरा।

जे स्वाद बचल, ओकरा गन्ध बनि बेचनिहार,
स्मृतिक देहरीपर फेर लगा रहल बजार।
बौआ आँखि मूनि कहै—ई हमर घरक भात,
एक कौरमे माय, खेत, श्रम आ बरसात।

स्वादक न्याय—प्रत्येक जीह अपन घर चिन्हय,

स्मृतिक देहरी पर फेर लागल बजार।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—भट्टमत—विशेषणता अर्थात् स्वरूप-सम्बन्धे ग्रहणसम्बन्ध: अन्य आचार्यसभक मत अछि जे संयोगरूप सम्बन्धक निषेध कऽ, इन्द्रियक ग्रहणसम्बन्धक अङ्ग रूपमे समवायकेँ एहि अनुमानसँ सिद्ध कएल जा सकैत अछि—"शब्द, शब्दत्व, रूप आदि इन्द्रियसँ सम्बद्ध छथि, कारण ओसभ घट जकाँ प्रत्यक्ष छथि। भट्टमत—विशेषणता अर्थात् स्वरूप-सम्बन्धे ग्रहणसम्बन्ध।]

अध्याय १३१

साझा थारी

साझा थारीक नून सभ जीहपर एक्कहि रङ लागै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: एक थारी, एक चान

लोकधुन: सामा-चकेवा

खेलू गे बहिना, सामा-चकेवा खेलू गे,
एक थारीक चान सभ आँगन मे फेरू गे।

एक थारीमे चान उतरि सभकेँ देखै एक,
सामा कहै—बराबर बाँटू अन्न, स्नेह आ नेह।
चकेवा पाँखि पसारि देत संगक मधुर सन्देश,
भाइ-बहिन, पड़ोसी सभक साझा हो परिवेश।

थारी गोल चन्द्रमा जकाँ भेद कतहु नहि,
जकर भूख सएह पहिल, जाति-पाँति किछु नहि।
एक थारी, एक चान, एक आँगनक प्यार,
सामा-चकेवा गीतसँ जुड़त मिथिलाक संसार।

भाइक नेह, बहिनक आशिष, चुगलाक मुँह झरकल,
संगक दीप-थारी लऽ कऽ आँगन-आँगन चमकल।
जकर भूख पहिने, तकर पहिल कौर,
जाति-पाँति बिसरा दिअय चानक उज्जर ठौर।

❖

भूख-प्यासक कथा अलग-अलग सुनब आसान छै; एक्कहि थारी मे बैसि खाएब कठिन। जातिक पिंजरा कतबो टूटल कहल जाय, ओकर तार भोजनक बेर मे फेर चमकय लगै छै।

कबड्डी मे छू कऽ घुरय पड़ै छै; थारी मे छू कऽ रहय पड़ै छै। ओहीठाम खेल आ जीवन मे फरक शुरू होइ छै।

आ जे बैसि नै सकल, ओकरो नाम लिखय पड़ै छै। जे रोकैए, तकर नाम बिनु लिखने जँ छोड़ि देल गेलै, तँ अगिला पीढ़ी ओही डर केँ धर्म कहि मानि लेतै।

स्वादक न्यायक बाद गढ़ नारिकेलमे प्रश्न उठल—न्याय जँ जीह पर उतरि सकैत अछि, तँ की ओ थारीमे सेहो उतरि सकैत अछि? नूनक शपथ लेल गेल, प्यासक नाम लिखल गेल,

भूखक नाम पुकारल गेल; मुदा लोक सभकेँ बेगरतासँ बुझा पड़ल जे भूख-प्यासक कथा अलग-अलग सुनब आसान अछि, एकहि थारीमे बैसि खाएब कठिन। जातिक पिंजरा कतबो टूटल कहल जाए, ओकर तार सभ भोजनक समय फेर चमकय लागैत अछि।

नामक संविधानमे जे पाँति लिखल छल—'देहक अपमान नहि होएब'—ओहि पाँतिकेँ अनन्या पढ़ि कऽ जोड़ली, 'देह जखन खाइत अछि, तखन अपमान सभसँ बेगरतासँ चिन्हाइत अछि। ' बा धीमे हँसली, मुदा हुनकर हँसीमे दर्द छल। ओ कहलीह, 'बेटी, एतय लोक प्रेतक संग बैसि सकैत अछि, मुदा जीवित मनुखक संग पाँतिमे बैसयमे काँपैत अछि। '

साझा भोजनक तैयारी शुरू भेल। देविका आ मीरा घर-घर गेली। केओ चूड़ा देलक, केओ दही, केओ गुड़, केओ भात, केओ साग, केओ तरकारी, केओ केवल माटिक चूल्हिक आगि। दहीक हाँड़ीक बाहरी सतह पर पानिक बून्द जमल छल आ ओहि सँ हाथक पकड़ बेर-बेर ससरि जाइत छल। जाहि घरमे अन्न कम छल, ओ पानि देलक। जे पानि नहि दऽ सकल, ओ पात धो देलक। बच्चा सभ प्रत्येक घरक योगदान रजिस्टरमे नामसहित लिखलक; कारण एतय दान नहि, सहभागिता छल।

मुदा तैयारी जेना बढ़ल, डर सेहो उघार होय लागल। किछु लोक कानमे कहैत छल—'सभक संग खाएब? कोन बासनमे? कोन पाँतिमे? घरमे बूढ़ सभ मानत?' किछु लोक तर्क देलक—'स्मृति ठीक अछि, न्याय ठीक अछि, मुदा खान-पानक मर्यादा अलग बात अछि।' एहि 'अलग बात' शब्द पर गंगेशक प्रश्न फेर उतरि आयल। बच्चा सभ पूछलक—'जँ न्याय थारी पर रुकि जाए, तँ ओ न्याय कोन देहक?'

ठूँठक कगार पर ओहि दिन गंगेश उपाध्यायक नामक पात राखल गेल। पात पर लिखल छल—'प्रमाण'। तकरा कातमे दोसर पात—'अनुमान'। तेसर—'शब्द'। चारिम—'उपमान'। पाँचम—'भोजन'। कियो कहलक, 'भोजन प्रमाणमे कतय अबैत अछि?' अनन्या उत्तर देली, 'जतय देह अपमानित होइत अछि, ओतय देह स्वयं प्रमाण बनैत अछि।' सत्यव्रत मेहता पाछाँ बैसल सुनैत रहलाह। हुनकर कानमे ई वाक्य कानूनक धारा नहि, जीवनक धारा जेकाँ उतरैत गेल।

दुपहरिया धरि चन्ना गाछीक ठूँठ लग नमहर पात बिछाओल गेल। केओ कुर्सी नहि, केओ ऊँच आसन नहि। बच्चा सभ पहिने पाँति बनौलक, मुदा फेर ओ पाँति मेटा देलक। ओ सभ गोल घेरा बनौलक—जकरा बीचमे ठूँठ, पाथरक नाम, आ एक छोट दिया। भोजनक घेरा अदालतक घेरासँ अलग छल; एतय निर्णय ऊपर सँ नहि, देहक समान धरतीसँ उठत।

पहिल संकट ओतय आयल जखन एक वृद्ध ब्राह्मण, जे नाम-उत्सवमे प्रतिदिन अबैत छलाह, पातक कगार पर ठिठकलाह। हुनका लग किछु कहबाक नहि छल। हुनकर आँखि ओहि युवक पर पड़ल जे चर्मकार टोला सँ आयल छल आ जे चन्ना गाछीक जड़ि पर जल ढारैत रहल छल। वृद्धक चेहरा पसीनासँ भीजल। ओ धीरे कहलनि—'हम सुनि सकैत छी, मुदा खाइ...' वाक्य अधूरा रहि गेल।

ओहि क्षण बा उठली। सभ बुझलक जे ओ धर्मक नाम पर किछु कहतीह; मुदा बा अपन लाठी ओहि युवकक पात लग राखि देली आ स्वयं ओहि पातक कातमे बैसि गेली। ओ वृद्ध ब्राह्मण दिस देखैत कहलीह, 'जे गंगेशकेँ शास्त्रमे मानै छी, ओकर जीवनसँ डेराएब? जे चर्मकारणीसँ विवाहक कथा सुनि शास्त्रकेँ बचा लैत छी आ स्त्रीकेँ नुका दैत छी, ओ न्याय नहि, भूखक पाखण्ड अछि।'

भीड़मे सनसनी भेल। गंगेश उपाध्यायक नाम हवामे झनकल। कतेको लोक एहि कथाकेँ पहिल बेर एना थारीक सोझाँ सुनि रहल छल। तत्त्वचिन्तामणि, नव्य न्याय, प्रमाण, अनुमान—ई सभ शब्द विद्यालय आ पण्डितक मुँहमे रहैत छल; आब ओकर परीक्षा दही-चूड़ा, साग-भात आ पसीनायुक्त पाँतिमे होय जा रहल छल।

वृद्ध ब्राह्मण काँपैत बैसलाह। हुनकर हाथ पात पर पड़ल, मुदा आँगुर भोजन छूबय सँ पहिने रुकि गेल। अनन्या लग आयली। ओ हुनका बाध्य नहि केली। केवल पूछली—'अहाँक भयक नाम लिखी?' वृद्ध चौंकलाह। बहुत देर बाद कहलनि—'कुल।' अनन्या रजिस्टरमे लिखली—'भय: कुल।' फेर पूछली—'अहाँक भूखक नाम?' वृद्धक आँखि भरि आयल। ओ फुसफुसेलाह—'मनुष्य।' अनन्या लिखली—'भूख: मनुष्य।'

एहि दू पाँती लिखल गेल तखन वृद्ध भोजन छुलनि। कोनो बाजा नहि बजल, कोनो नारा नहि उठल। मुदा चन्ना गाछीक ठूँठमे जे हरियर बिन्दु छल, से कने बेसी चमकि उठल। चर्मकार टोला सँ आयल युवक चुपचाप अपन पातक एक कोन हुनका दिस बढ़ा देलक—'ई साग हमरा माय बनौने छथि।' वृद्ध अपन पातक गुड़ ओकरा दिस बढ़ौलनि—'ई हमर नाति आनने अछि।' एतबा छोट आदान-प्रदानमे बरखोंक दूरी थरथरायल।

मुदा सभ लोकक भीतरक देबाल एकहि बेर नहि टूटल। किछु लोक पाछाँ हटि गेल। किछु महिला, जे घरक मर्यादाक भार ढोइत छली, दूर ठाढ़ खसखसाइत कानि पड़ली। हुनका सभक मोन चाहैत छल बैसय, मुदा घरक आवाज, ससुरक डर, पति-कुलक नियम, जातिक गन्ध, सभ

ओ सभक पएर पकड़ने छल। मीरा हुनका सभ लग गेली। ओ कहली, ‘बैसू नहि तँ सेहो लिखाएब। जे रोकैत अछि, ओकरो नाम चाही।’

तखन एक स्त्री कहली—‘घर।’ दोसर—‘लाज।’ तेसर—‘भातक बासन।’ चारिम—‘बेटीक विवाह।’ पाँचम—‘गामक मुँह।’ बच्चा सभ ई सभ नाम रजिस्टरमे लिखलक। साझा थारीक पहरा केवल जे बैसल तकर नहि, जे नहि बैसि सकल तकरो छल। कारण न्याय जँ अधूरा डरकेँ नहि लिखत, तँ अगिला पीढ़ी फेर ओही डरकेँ धर्म कहि मानि लेत।

चन्द्रपाल बत्रा दूर सँ देखैत छल। ओकरा लग थारी व्यापारक अवसर बुझाइत छल—‘सामुदायिक भोजन’, ‘समरसता उत्सव’, ‘दान-रसीद’। मुदा जखन ओ गणना करय लागल, ओकर स्क्रीन पर अंक नहि, पात पर राखल सागक बून्द देखाइ पड़ल। ओहि बून्दमे ओकर बाल्यकालक एक दृश्य उभरल—स्कूलमे ओकरा अलग पाँतिमे बैसाओल गेल छल, आ ओहि अपमानक बदला ओकरा नाम मेटा कऽ पाइ कमाएमे भेटल छल। ओ काँपि गेल। अपराधीकेँ कहियो-कहियो अपन पापसँ बेसी अपन मूल अपमान डेराबैत अछि।

बटुकनाथ हरिहरनकेँ ई दृश्य सभसँ असुविधाजनक लागल। कानूनक वाद-विवादमे ओ जाति, अधिकार, परम्परा, सुधार सभ पर बाजि सकैत छल। मुदा एक पात पर दू हाथक मिलन ओकर भाषणकेँ बेकार कऽ रहल छल। ओ मोनहि मोन सोचलक—एहन दृश्य पर मुकदमा कोन धारामे करब? ई न अवमानना अछि, न अवैध सभा, न हिंसा। ई तँ बस खाएब अछि। मुदा एहि ‘बस’ मे ओकर पूरा विधिक छल फँसि गेल।

सत्यव्रत मेहता अन्तिम पाँतिमे बैसलाह। हुनका सोझाँ पात राखल गेल, मुदा ओ भोजन शुरू करबासँ पहिने रजिस्टर मँगौलनि। ओ लिखलनि—‘आइ न्यायक प्रश्न थारीमे आयल। जे मुँह कानून पढ़लक, ओकरा पहिने मुँह भोजनक समानता सीखबाक चाही।’ लिखि कऽ ओ कलम रखलनि। हुनकर पात पर भोजन परसल गेल। ओकर कातमे एक बच्चा बैसल छल, जकर पिता डिजिटल ठगीमे उजड़ि गेल छल; दोसर दिस एक वृद्ध मजदूरक घरवाली। ओहि दू देहक बीच सत्यव्रतक पदक शेष ऊँचाइ गलि गेल।

भोजन आरम्भ भेल। चूड़ा दहीमे भीजल, गुड़ टूटल, सागक गन्ध उठल, भातक भाप ठूँठक ओर गेल। भाप एक ठाम नहि उठैत छल—ओ कखनो एक कात, कखनो दोसर कात मुड़ि जाइत छल। जे नाम पाथर पर लिखल छल, ओ पाथर सभ धूपमे गरम नहि, भापमे भीजल बुझाइत छल। हाथ लगेला पर ओ ओतबे गरम छल जतेक कोनो देह होइत अछि—न बेसी, न कम; आ ओहि एक क्षणमे बुझाइत छल जेना पाथर नहि, कियो चुप्पे बैसल हो। ककरो कानमे

लागल जे जलसमाधिमे डूबल आत्मा सभ कहि रहल अछि—‘देह गेल, मुदा स्वाद फेर आयल।’ गोहि सभ देह चिबा सकैत छल; मुदा साझा थारी देहक मर्यादा फेर गढ़ि सकैत छल।

भोजनक बीच बच्चा सभ कबड्डी शुरू नहि केलक। ओ सभ साँस रोकि नहि, धीरे-धीरे साँस जोड़ि रहल छल। एक बच्चा फुसफुसायल—‘कबड्डीमे छू कऽ घुरय पड़ैत अछि; थारीमे छू कऽ रहय पड़ैत अछि।’ एहि वाक्य पर बूढ़बा भूतक छाह ठूँठक पाछाँ झिलमिलाइत देखाइ देलक। शायद हुनका ई नब नियम पसिन्न आयल।

भोजन समाप्त भेलाक बाद पात सभ उठाओल नहि गेल। पहिने प्रत्येक पात पर बचल कण सभकेँ एकत्र कएल गेल। बा कहलीह—‘जतबा बचल, तकर नाम अपव्यय नहि, अर्पण।’ ओ कण माटिमे मिलाओल गेल। माटिमे मिलितहि ओ कण अलग सँ देखाइ नहि पड़ल—मुदा जकर हाथेँ मिलाओल गेल, से बहुत देर धरि ओहि ठाम सँ हाथ नहि हटौलक। जे सभ बैसि नहि सकल छल, ओ सभ बादमे ओहि माटि पर जल ढारलक। सामाजिक भय तुरन्त नहि टूटल, मुदा ओहि दिन ओकर नाम अवश्य लिखल गेल। नाम लिखलाक बाद भयक साम्राज्य पहिने जेकाँ अन्हार नहि रहैत।

साँझ होइत-होइत रजिस्टरक पन्ना भरि गेल। शीर्ष पर अनन्या लिखली—‘सत्ताइसहम पहरा: साझा थारी।’ नीचाँ एक पाँती जोड़ली—‘जतय जाति थारी रोकैत अछि, ओतय न्याय अधूरा खाइत अछि।’ ई पाँती पढ़ि मीरा कहली—‘ई अगिला पाठशालाक पहिल वाक्य बनत।’ देविका जोड़ली—‘आ अगिला संघर्षक पहिल कागच।’

रातिमे जखन सभ चलि गेल, ठूँठक चारू कात दहीक हलुक गन्ध, सागक हरियर छाप, गुड़क मिठास, आ नूनक शपथ रहि गेल। आकाशमे तारा साफ छल। स्वप्नक अनाम ग्रह दूर एहन ठंढा बिन्दु जकाँ चमकि रहल छल जकरा देखितहि आँखि अपने कात हटि जाइत छल, जेना ओकरा आश्चर्य हो—पृथ्वी पर लोक एतेक कठिन संघर्ष केवल संग खाएबाक लेल करैत अछि? चन्ना गाछीक कोंपल उत्तरमे हिलल—‘हँ, जीवनक सभसँ कठिन विज्ञान एहि थारीमे अछि।’

आ ओहि राति गढ़ नारिकेलमे पहिल बेर ई बात खुलि कऽ बुझाइ पड़ल—मुक्ति केवल नाम सुनबाक नहि, एकहि धरती पर एकहि स्वाद ग्रहण करबाक सामर्थ्य सेहो अछि।

लोकगीत: एक थारीक चान

लोकधुन: सामा-चकेवा धुन

ने ढलू हे चान, एक थारीक चान ने ढलू हे,

भोजनक संग-संग मनुखक दूरी गलू हे।

एक थारीमे चान उतरि सभकेँ बराबर देखलक,
जाति, धन, देहरीक रेखा धीरे-धीरे मेटलक।
ककर हाथक रोटी, ककर घरक नून,
संग खाइत बुझायल—सभक नोर एक्के खून।

पहिल कौर उठितहि बूढ़क हाथ काँपल,
बरखोंक दूरी ओहि नान्हि ग्रासमे नापल।
नेना हँसल, माय चुपचाप आँचर भिजौली,
जकरा संग नहि बैसल, ओकर स्मरण करौली।

एक थारीक चान, राति भरि नहि ढलू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त: कारण "जतय एहि दुनूमे सँ एकक अभाव अछि, ओतय विशिष्ट मणि नहि अछि; आ जतय विशिष्ट मणि अछि, ओतय एहि दुनूमे सँ कोनो एकक अभाव नहि अछि"—ई सह-अनुपस्थितिक नियम अनुभवसँ सिद्ध अछि। तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त।]

अध्याय १३२

रसोइक गणराज्य

जतय थारी साझा, ओतय डर आधा।

अध्यायारम्भ लोकगीत: रसोइक गणराज्य

लोकधुन: चूल्हा-चौका लोकधुन

सजाउ हे चौका, गणराज्यक चौका सजाउ हे,
काज बराबर, मान बराबर—सभकेँ बुझाउ हे।

तीन गोट चूल्हि, आगि एक, धुँआ एके रंग,
रसोइक गणराज्यमे सभक बराबर संग।
कियो काटय तरकारी, कियो पानि आनय,
कियो रोटी सेंकय, कियो गीत सुनाबय।

काजक मान बराबर, भोजन साझा अधिकार,
चूल्हा-चौका सिखबैत लोकतन्त्रक व्यवहार।
रसोइक गणराज्य कहै—सेवा नहि दासत्व,
संग पकाओल अन्नमे बसै प्रेमक नागरिकत्व।

कियो तरकारी छीलय, कियो बेलय रोटी,
कियो पानि, कियो गीत—ने पैघ, ने छोटी।
सेवा दासत्व नहि, साझा प्रेमक रीति,
संग पकल भोजन मे लोकतन्त्रक प्रीति।

❖

जतय थारी साझा, ओतय डर आधा। मुदा थारी साझा भऽ गेला सँ रसोइ साझा नै भऽ जाइ छै— आ जे रसोइ मे जाति बान्हल रहतै, ओकर थारीक साझापन खाली उत्सव रहि जेतै।

घरक भीतरक आगि बाहरक अदालत सँ कम क्रूर नै छै। जे देह खेत जोतै छै, ओकरे हाथक बनाओल अन्न कतेको घर मे अशुद्ध कहल जाइ छै; जे स्त्री दिन भरि सभक पेट भरै छै, ओकर भूख सभसँ अन्त मे पुछल जाइ छै।

न्यायक असल परीक्षा भोज मे नै, झूठा बासन धोबाक बेर होइ छै। ओहीठाम बुझाइ छै जे के खाली खाय आयल छल आ के संग रहय आयल छल।

तें विधान सोझ छै— जे खाय, से पकाबय; जे पकाबय, से खाय; जे खाय, से माजय; आ जे माजय, ओकर हाथ पवित्र।

साझा थारीक राति बीतल, मुदा ओकर स्वाद लोकक जीह पर नहि, निर्णय पर रहि गेल। जे लोक बरखों धरि एक संग बैसि खाएबासँ डेराइत छल, से सभ ओहि राति एकहि पात पर नून छुआओने छल। भोरमे जखन पोखरिक कात हाथ धोबाक पानि पसरल, तखन ककरो हाथ अलग चिन्हाय नहि रहल। माटि, नून, पानि आ अन्न सभ हाथक रेखामे एकहि रंग छोड़ि गेल छल।

मुदा न्याय जँ थारी धरि पहुँचय, तँ ओकर अगिला ठाम रसोइ होइत अछि। ई बात मीरा सभसँ पहिने कहली। ओ कहली—‘जे रसोइमे जाति बान्हल रहत, ओकर थारीक साझापन केवल उत्सव रहि जाएत।’ एहि वाक्य पर चन्ना ठूँठक पात-रहित छाह कने काँपल। बच्चा सभ रजिस्टर खोललक। नब पन्ना पर अनन्या लिखली—‘रसोइक परीक्षा।’

गढ़ नारिकेलक पुरान रसोइ सभ अलग-अलग इतिहास रखने छल। कतय ऊँच ओसार पर पकल अन्न, कतय पिछुआरिमे मजदूरक भात, कतय बान्हल कुल्हड़, कतय बान्हल छुआछूत, कतय विधवाक फीका भोजन, कतय दाइक हाथक रोटी आ मालिकक शंका। घरक भीतरक आगि, बाहरक अदालतसँ कम क्रूर नहि छल। जे देह खेत जोतैत, ओहि देहक हाथक बनाओल अन्न कतेको घरमे अशुद्ध कहल जाइत। जे स्त्री दिन भरि सभक पेट भरैत, ओकर भूख आखिरीमे पूछल जाइत।

सौम्या कहली—‘स्मृति जँ खाइत नहि, तँ बाँचत नहि।’ देविका जोड़ली—‘आ स्मृति जँ केवल देवघरमे चढ़त, रसोइमे नहि उतरत, तँ समाजक देह फेर झूठ बाजत।’ बा हँसलीह—‘बेटी, न्यायक असली परीक्षा भोजमे नहि, झूठा बासन धोबाक बेर होइत अछि।’ बच्चा सभ ई बात सुनि ठिठकि गेल। नामक संविधानमे एखन धरि बासनक कोनो अनुच्छेद नहि छल।

तय भेल जे आइ चन्ना ठूँठक चारू कात लोक-रसोइ बनत। ककरो घरक अलग चूल्हि नहि, सभ अपन-अपन अन्न, मसाला, दालि, साग, पानि, दूध, नून, तेल, लकड़ी लेत। मुदा शर्त ई जे जे चीज आनल जाएत, ओकर कथा सेहो कहल जाएत। अन्न मात्र वस्तु नहि; ओकर पाछाँ खेत, पसीना, ऋण, जाति, स्त्रीक श्रम, नदीक पानि, आ बजारक नह रहैत अछि।

पहिल बोरा धानक आयल। बोरा माटि पर राखितहि ओकर तर सँ धूलिक एक पातर बादर उठल आ धूपक धारिमे बहुत देर धरि तैरैत रहल। ओकरा अननिहार बुजुर्ग किसान कहलाह—‘ई ओ खेतक धान अछि जतय पुल-परियोजनाक मलबा दू बरख धरि पड़ल रहल।’ दोसर

बोरामे चूड़ा छल; विधवा स्त्री कहली—'एहि चूड़ा सँ हम अपन तीन बच्चा बाढ़ि साल बचौने रही।' तेसर टोकरीमे साग आयल; चर्मकार बस्ती सँ आयल एक युवती कहली—'हमर मायक हाथक बीआ अछि; मुदा कतेक घरमे हमर मायक हाथक साग नहि खाएल गेल।'

ई वाक्य जखन हवामे ठहरल, तखन गंगेशक नाम स्वतः उठल। जातिक प्रश्न एखन रसोइक आगि लग आयल छल। अनन्या पूछली—'जँ गंगेश तत्त्वक चिन्ता करैत छथि, तखन अन्नक तत्त्व की? छुआछूत ओकर प्रमाण अछि कि भूख?' एहि प्रश्न पर कियो तुरन्त उत्तर नहि देलक। बूढ़बा भूत धुँआक भीतर देखि पड़लाह—एहि बेर हँसैत नहि, गम्भीर।

गंगेशक कथा फेर कहल गेल—पिताक मृत्युक पाँच बरख बाद जन्मक लोकविवाद, चर्मकारणीसँ विवाह, तत्त्वचिन्तामणिक बारह हजार ग्रन्थ-बराबर भार, नव्य न्यायक जन्म। मुदा आइ ई कथा पण्डितक आसनसँ नहि, रसोइक कड़ाहीक लग कहल गेल। प्रश्न ई नहि रहल जे ई प्रसंग इतिहासक कोन पन्ना पर प्रमाणित अछि; प्रश्न ई भेल जे समाज कोन कारणेँ विचारक पूजा कऽ ओकर जीवनक असुविधा नुकबैत अछि।

एक बूढ़ ब्राह्मण, जे पहिने दूर बैसल छलाह, धीरे-धीरे आगूक ओर आयलाह। हुनकर हाथ काँपैत छल। ओ अपन घर सँ घी अनने छलाह, मुदा पहिने देबाक साहस नहि भेल। ओ कहलनि—'हमर कुलमे नियम छल जे अमुक हाथक अन्न नहि छूब।' चर्मकार बस्तीक युवती हुनका देखैत रहलि। बूढ़ फेर कहलनि—'आइ ई घी ओकर कड़ाहीमे पड़त जकर बीआ सँ साग आयल अछि।' हुनकर स्वर क्षमा नहि, लाजक स्वीकार छल।

घी जखन कड़ाहीमे पड़ल, सागक गन्ध गाढ़ भेल। पहिने एक क्षणक लेल सभ चुप भेल—कारण घी पड़ितहि जे छन्न-सन आवाज उठल, से ओहि पूरा भीड़मे सभसँ साफ आवाज छल। कतेको लोकक आँखि भीजल। रसोइक धुँआ ओहि दिन साधारण धुँआ नहि छल; ओ अनेक कुलक देबाल पर जमल काजरकेँ खुरचैत उठि रहल छल। कियो मन्त्र नहि पढ़लक, कियो घोषणा नहि केलक। बस चूल्हिक आगि खदबदेलक, आ बच्चा सभ लिखलक—'प्रमाण: गन्ध बदलल।'

रसोइ बनबामे स्त्री सभ प्रमुख रहली, मुदा एहि बेर पुरुष सभकेँ केवल खाएबाक अनुमति नहि छल। हुनका सभकेँ काटब, धोब, पीसब, फूँक देब, बासन माजब, राखि हटाएब, आ बच्चा सभकेँ पानि देबाक काज बाँटल गेल। किछु पुरुष पहिने असहज भेल। आरुणि हँसलाह—'जे पुल बना सकैत छी, ओ पनिझरिका किएक नहि धो सकैत?' एहि हँसीमे मजाक छल, मुदा लाज सेहो।

मीरा नियम बनौली—‘ककरो हाथक काज नीच नहि कहल जाएत। जे एहन कहत, ओकरा अपन नामक पहरा फेरसँ पढ़य पड़त।’ देविका कहली—‘देहक अधिकार केवल हिंसासँ रक्षा नहि; श्रमक सम्मान सेहो।’ सौम्या जोड़ली—‘रसोइमे कैमरा नहि। ई दृश्य देखबाक लेल नहि, निभाबाक लेल अछि।’ हार्वर्डक शोध-दल दूर सँ नोट करैत रहल, मुदा एहि बेर हुनका सभकेँ भीतरक चूल्हि लग बैसबाक अनुमति तँ भेटल, लेखनक अनुमति नहि।

दुपहर धरि रसोइक गणराज्य बनि गेल। पाँच चूल्हि, सात कड़ाही, तीन जातिक पानि, चारि बस्तीक अन्न, दू विधवाक नून, एक मुसहर बालकक लकड़ी, चर्मकारणी युवतीक साग, ब्राह्मण बूढ़क घी, मजदूरक भात, मीरा आनल तेल, देविकाक मसूर, ईराक विदेशसँ आयल सूखल फल, आ बाक हाथक अचार। ई सभ मिलि जे सुगन्ध बनौलक, ओकरा ककरो कुलनाम नहि देल जा सकल।

भोजन परोसबाक बेर फेर प्रश्न उठल—पहिने के? पुरान समाजमे पहिने कुल, उमेर, लिंग, पद, अतिथि, धर्म, धन देखल जाइत छल। बच्चा सभ परामर्श केलक। अन्तमे अनन्या कहली—‘पहिने ओ खाएत जकर नाम कतहु नहि लिखल गेल।’ तखन अनाम पाथरक सोझाँ पहिल पात राखल गेल। भोजन कोनो देह नहि खाएल, मुदा पात पर भाप उठि रहल छल। सभ चुप रहल।

तकर बाद विधवा सभ, मजदूर परिवार, बच्चा, बूढ़, स्त्री, पुरुष, बाहरी, शोधकर्ता, पशु-पक्षी धरि अपन बेर सँ खाएल। कियो माथ पर जल नहि छिड़कलक, कियो बासन अलग नहि राखलक। जे लोक छुआछूतक भय सँ दूर छल, ओकरा सभकेँ कियो जोर नहि केलक। बच्चा सभ कहलक—‘न्याय जबरदस्ती खुआबय नहि; भयक नाम पूछैत अछि।’ दू गोटे दूर बैसल, मुदा भोजनक गन्ध हुनका सभ लग पहुँचि गेल।

बटुकनाथ हरिहरन एहि दृश्यकेँ सपनामे देखैत छल, देहसँ उपस्थित नहि। ओकर स्वप्न-दरबारक पात सभ फड़फड़ायल। ओ देखलक जे कानूनक धारा जतेक बेर ओ मरोड़ने छल, ओ सभ आइ पात बनि लोकक हाथमे पड़ल अछि। एक पात पर लिखल छल—‘छुआछूत: अप्रमाणित भय।’ दोसर पर—‘भोजन: साझा प्रत्यक्ष।’ तेसर पर—‘न्याय: जकरा खाएबासँ रोकल गेल, तकरा पहिल पात।’ हरिहरन जागि गेल; ओकर मुँहमे राखिक स्वाद छल।

चन्द्रपाल बत्रा दूर शहरमे अपन भोजन-डेलिभरी स्क्रीन खोलि रहल छल। अचानक ओकरा प्रत्येक पकवानक संग दाम नहि, किसानक नाम, रसोइ बनयबाली स्त्रीक श्रम, नूनक शपथ, आ जातिक निषेधक इतिहास देखाइ पड़ल। ओ घबराइत स्क्रीन बन्द केलक। स्क्रीन

बन्द भेल, मुदा भूख नहि। पहिल बेर ओकरा बुझाइत छल जे जे समाजक भूखसँ कमाइत रहल, ओ स्वयं स्वादहीन मनुष्य बनि गेल।

लाउ किन-हंगक 'नव-क्षितिज' भोज-योजनामे सभ भोजन अंकित पोषक-गोलिकामे बदलल छल। ओहि राति ओकर स्वप्नमे गढ़ नारिकेलक रसोइक गन्ध पहुँचि गेल। ओहि प्रचार-स्वप्नमे गन्धक व्यवस्था नहि छल। ओ घबराइत पूछलक—'ई कोन डेटा अछि?' उत्तर आयल—'ई डेटा नहि, पकैत अन्नक स्मृति अछि।' ओ पहिल बेर बुझलक जे नामविहीन संसारमे भूख मेटि सकैत अछि, मुदा स्वाद जन्म नहि लैत।

भोजनक बाद बासन माजबाक बेर आयल। एतय असली परीक्षा नुकाएल छल। बच्चा सभ देखैत रहल। जकरा जीवन भरि दोसराक थारी उठएबाक काज देल गेल छल, ओकरा सभकेँ एहि बेर बैसाओल गेल। जे लोक कहैत छल जे ओ सभ ऊँच कुलक छथि, हुनका सभकेँ पानि, राखि, राखिन, आ माजबाक काज देल गेल। एक-दू चेहरा उतरि गेल, मुदा बा कहलीह—'जे बासन माजि नहि सकय, से न्याय लिखि नहि सकय।' राखिसँ माजल बासनक तर पर जे खरोंच पड़ैत छल, से आँगुरमे बहुत साफ बुझाइत छल—आ ओहि खरोंचक नीचाँ सँ पीतर अपन असली रंग देखाबय लगैत छल।

ई वाक्य नामक संविधानमे नब अनुच्छेद बनि गेल। अनन्या लिखली—'रसोइक गणराज्यक विधान: जे खाय, से पकाबय; जे पकाबय, से खाय; जे खाय, से माजय; जे माजय, ओकर हाथ पवित्र।' बच्चा सभ एक संग दोहरौलक। ठूँठक हरियर बिन्दु कने फड़कल।

साँझ धरि चन्ना ठूँठक चारू कात बासन सुखा रहल छल। पात माटिमे दबाओल गेल, राखि खेतमे गेल, बचल अन्न पशु-पक्षीकेँ। कोनो कचरा नहि, कोनो उच्छिष्ट-अवमान नहि। मुदा जे किछु बचल, से प्रश्न छल। भोजनक साझा थारी समाजक देबाल ढाहि देलक कि केवल एक दिनक दरार खोललक? बच्चा सभ जनैत छल—देबाल फेर उठि सकैत अछि। तेँ रजिस्टर बन्द नहि भेल।

रातिमे पाथरक नाम सभ पर चूल्हिक बुझल राखिक धूसर उजास छल। बूढ़बा भूत ठूँठक पाछाँ सँ निकलि एक सूखल पात उठा लेलनि। ओहि पात पर किछु नहि बचल छल, मात्र नूनक सूक्ष्म रेखा। ओ रेखा एतेक पातर छल जे देखाइ कम, आ आँगुर फेरला पर बुझाइ बेसी दैत छल—एहन खरदुरी जे नहक तर धरि उतरि जाइत अछि। बूढ़बा भूत ओ रेखा चाटलनि नहि; ओ ओकरा माथ पर फेरलनि। फेर हवामे गायब होइत कहलनि—'आब अगिला परीक्षा उच्छिष्टक नहि, बीआ-राखिक अछि।'

अनन्या अगिला पन्ना खोललक। शीर्षक एखन खाली रहल। मुदा सभकेँ बुझाइत छल—रसोइक गणराज्य केवल पेट भरबाक अध्याय नहि, समाजक देह फेरसँ गढ़बाक आरम्भ अछि। आ जे राखि बचल अछि, से खेतमे जाएत तखन निर्णय फेर अंकुराएत।

लोकगीत: रसोइक गणराज्य

लोकधुन: चूल्हा-चौका लोकधुन

बनाउ हे घेरा, रोटी जकाँ गोल घेरा बनाउ हे,
चूल्हिक ताप गरीबक घर धरि पहुँचाउ हे।

तीन गोट चूल्हि, आगि एके ठाम,
ककरो घरक धुँआ नहि, सभक साझा नाम।
एक हाथ आटा सानय, दोसर दालि चलाबय,
तेसर हाथ अनाम बहिनीक थारी सजाबय।

राखिमे बीआ बचल, बीआमे अगिला भोर,
रसोइक देहरी टूटल, खुजल जनक दुआर।
जे संग खाइत अछि, से संग रोपतो खेत,
भूखक विरुद्ध गणराज्य—नहि सिंहासन, नहि सेठ।

चूल्हि, अपन ताप गरीबक घर पहुँचाउ,
रोटी गोल जकाँ सभकेँ एक घेरा बनाउ।
तीन चूल्हि, आगि एक्के ठाम जरल,
ककरो घरक धुँआ नहि—साझा नाम बनल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—किछु विद्वान् एना प्रस्ताव करैत छथि—जाहि दः दोसर विकल्पमे सकारात्मक तृण, काष्ठ आ मणिक अभावसभक अभावरूपें पर्यवसित नहि भऽ सकत; अन्यथा एकहि तृणकेँ काष्ठ आ मणि सेहो मानब पड़त। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। किछु विद्वान् एना प्रस्ताव करैत छथि—जाहि दशामे कारणताक ज्ञान

करयवला साधन उपलब्ध नहि अछि, ओहि दशामे व्यभिचार मात्र कारणताज्ञानक बाधक होइत अछि।।]

अध्याय १३३

विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

बुलाहटक उत्तर ढोलसँ नहि— तैयारीसँ देल जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: मंचक पहिल ढोल

लोकधुन: पमरिया नाच-गान

बजाउ हे ढोल, मंचक पहिल ढोल बजाउ हे,
दबल कथार्कें नाचक पग पर आबय दिअ हे।

ढोलक पहिल चोट पड़ल—आउ, अपन नाम कहू,
मंच नहि दूरक महल, गामक बीच रहू।
जे कथा दबाओल छल, नाचक पगमे आय,
हँसी, प्रश्न, गवाही मिलि नव रंगमंच बनाय।

पमरिया घूमि कहै—दर्शक सेहो भाग,
कला जखन जनसँ जुड़य, टूटय चुप्पीक दाग।
मंचक पहिल ढोलसँ साहस जागि उठत,
प्रत्येक अनकहल जीवन अपन भूमिका लिखत।

पमरिया घूमि-घूमि नाचय, घुँघरू बाजय छम,
दर्शक-कलाकारक सीमा टूटय सदिखन।
हँसी-प्रश्न-गवाही मिलि नव रंग रचय,
अनकहल जीवनो मंच पर अपन कथा बाँचय।

❖

सारांश गोहि जकाँ होइ छै— देह चिबा कऽ अस्थि छोड़ि दै छै। नाटक कें देह चाही, अस्थि टा नै। तें एक सय बत्तीस अध्याय कें छोट कऽ देब नै, ओकरा साँस देब छै।

एहि कथा मे नायक ओ नै जे संवाद नमहर बाजय, ने खलनायक ओ जे अन्हार मे हँसय। असल पात्र साँस छिकै। जकर साँस टूटल, ओकर नाम तकल गेल; जकर नाम भेटल, ओकरा उपस्थित कहल गेल।

आ खलनायक कें मसखरा नै बनाबय पड़ै छै। मसखरा बनला सँ अपराध हलुक भऽ जाइ छै, आ दर्शक हँसि कऽ घर चलि जाइ छै।

रसोइक गणराज्यक धुँआ एखन पूरा छँटलो नहि छल कि गढ़ नारिकेलक नब चौपालमे एकटा पत्र आयल। पत्र पर लाल अक्षरमे लिखल छल—'विदेह नाट्य उत्सव'। नीचाँ छोट पाँतिमे आमन्त्रण छल: गढ़ नारिकेल अपन कथा रंगमंच पर आनय। जे कथा पानि, ठूँठ, पाथर, स्क्रीन, जाति, भूख, प्यास, नून, अन्न, न्याय आ ग्रहक बीच साँस लेलक, से आब नाटक बनि सभक सोझाँ बाजय।

पत्र पढ़ितहि भीड़मे पहिने हलचल भेल, फेर चुप्पी। कागच नब छल—ओकर कोर एखन धरि तेज, आ पकड़ला पर ओ हाथमे एहन कड़ा बुझाइत छल जेना ओकरा एखन धरि ककरो पसीना नहि छुऐने हो। गामक लोकक लेल नाटक मनोरंजन नहि छल; पछिला बरखमे ओ सभ देखलक जे नकली भूतक जुलूस केना असली नामक सुननाइमे बदलि गेल। एहि बेर खतरा दोबारा छल—कथा मंच पर गेल तँ कतहु ओ फेर सजाबट, इजोत, ताली आ पोस्टरमे बदलि नहि जाए? जे जलसमाधि देहक नाश आ भीतरक मुक्ति दुनू छल, से कतहु एक साँझक कार्यक्रम मात्र नहि बनि जाए?

अनन्या पत्र हाथमे लऽ कऽ ठूँठ लग बैसलि। ओ कहली, 'नाटक होएत, मुदा अभिनय ओएह करत जे साँस रोकि सकय।' लोक बुझलक नहि। बच्चा सभ बुझि गेल। कबड्डी खेलनिहार सभ, जे पृथ्वी आ स्वप्नक अनाम ग्रहक बीच साँसक रेखा छूने छल, ओएह कलाकार बनत। जकरा कबड्डीक "कबड्डी"मे नामक काँप बुझाइत अछि, सएह गवाहीक संवाद बाजि सकैत अछि।

एहि निर्णयसँ पेशेवर रंग-दल आ बाहरी आयोजक सभ चकित भेल। हुनका सभ लग साज-सज्जा, धुँआ, प्रकाश, पर्दा, वेशभूषा, घोषणाक क्रम, प्रवेश-पत्र सभक योजना छल। मुदा गढ़ नारिकेलक बच्चा सभ कहलक—'पहिने खेल; मंच बादमे।' कारण एहि कथामे नायक ओ नहि जे संवाद नमहर बाजय, न खलनायक ओ जे अन्हारमे हँसय। असली पात्र साँस अछि। जकर साँस टूटल, ओकर नाम तकल गेल। जकर नाम भेटल, ओकरा उपस्थित कहल गेल।

आरुणि पूछलनि, 'एक सय बत्तीस अध्यायकेँ मंच पर केना आनब?' बा उत्तर देलीह, 'अध्याय नहि, अंक कहू। जे बीतल, से किताबमे अध्याय छल; रंगमंच पर ओ सभ अंक बनत।' तखन पुरनका एक सय बत्तीस अध्यायकेँ एक-एक कऽ नब नाम देबाक आरम्भ भेल। पहिल अंक—चन्ना गाछीक अन्हार। दोसर—लत्तड़ आ कलितक माटि। तेसर—पुलक पानि। चारिम—तीस नाम, तीन सय लाश। फेर तारीख, हार्वर्ड, श्वास, स्क्रीन, देह, निजता, धनक कारी नदी, गंगेशक प्रश्न, अन्नक न्याय, रसोइक गणराज्य—सभ नाटकक भीतर प्रवेश करय लागल।

मुदा अनन्या साफ कहली—‘ई सारांश नहि बनत।’ सारांश गोहि जेकाँ होइत अछि—देह चिबा कऽ अस्थि छोड़ि दैत। नाटककेँ देह चाही, अस्थि मात्र नहि। प्रत्येक अंकमे एक दृश्य, एक नाम, एक विराम, आ एक साँस रहत। जकर अध्यायमे अपराधी छल, ओकरो ठाम होएत; जकर अध्यायमे मृतक छल, ओकरो आवाज; जकर अध्यायमे केवल पानि छल, ओ पानि स्वयं प्रकाश पाओत।

देविका कागच पसारि बैसली। ईरा ओकर संग। मीरा अलग पन्ना पर ‘दृष्टिक अधिकार’ लिखैत रहली। सत्यव्रत मेहता दूर बैसल सुनैत रहलाह। हुनका कहबाक छल जे नाट्य-पाठमे कानूनक दृश्य गलत नहि हो। मुदा ओ चुप रहलाह। आब हुनका सीख भऽ गेल छल जे साँच पहिने लोकक कण्ठमे जन्मैत अछि, बादमे विधिक भाषामे।

कबड्डी खेलनिहार सभक अभ्यास शुरू भेल। ओ सभ मैदानमे गोल रेखा खिंचलक, मुदा एहि बेर रेखा माटि पर नहि रुकल। एक रेखा ठूँठक चारू कात, एक पाथरक नाम लग, एक पानिक धारि, एक रसोइक धुँआ, एक आकाश दिस। जे खेलाड़ी भीतर जाय, ओकरा एक पुरान अध्यायक नाम बाजि साँस धरय पड़ैत। ‘जलसमाधि’, ‘उपस्थित’, ‘तत्त्वचिन्तामणि’, ‘निजता’, ‘नून’, ‘ग्रह’, ‘पहरा’—एहि शब्द सभक बीच कबड्डी शुरू भेल।

पहिल खेलाड़ी ‘चन्ना गाछी’ कहि भीतर गेल। ओकर देह झुकल, जेना डारि ओकर माथ छू रहल हो। मुदा ऊपर कोनो डारि नहि छल—आ ओहि नहि रहबाक कारणेँ ओकर झुकब आरो बेसी देखाइ पड़ल। दोसर ‘गोहि’ कहि पानि धरि दौड़ल, मुदा ओकर पएर माटि छोड़ि नहि गेल। तेसर ‘गंगेश’ कहि रुकल; ओकरा रेखा पार करबासँ पहिने पूछल गेल—‘प्रमाण की?’ ओ उत्तर देलक—‘देह सेहो प्रमाण, अपमान सेहो प्रमाण, प्रेम सेहो प्रमाण।’ बच्चा सभ ताली नहि बजौलक; ओ सभ लिखलक—‘संवाद भेटल।’

विदेह नाट्य उत्सवक प्रतिनिधि एहि अभ्यासकेँ देखैत घबरा गेल। ओ पूछलक, ‘नाटकक स्क्रिप्ट तैयार अछि?’ अनन्या कहली, ‘एखन साँस तैयार भऽ रहल अछि। स्क्रिप्ट अगिला अंगमे लिखल जाएत।’ प्रतिनिधि फेर पूछलक, ‘मंचन कखन?’ बा हँसि देलीह—‘स्क्रिप्टक बादक अंकमे। बेगरता नाटकमे होइत अछि; गवाहीमे नहि।’

एहि उत्तरसँ नाटकक क्रम निश्चित भेल। ई अध्याय एहि आमन्त्रण आ निर्णयक अध्याय रहल। अगिला अंग नाट्य-पाठक होएत—जतय पुरनका अंक सभक देह लिखल जाएत। तकर अगिला अंक मंचनक होएत—जतय कबड्डी खेलनिहार सभ अभिनय करैत, भूत, बच्चा, धूर्त,

पानि, गोहि, गंगेश, सत्यव्रत, मीरा, ईरा, देविका, लाउ, बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, ब्रूम, आ स्वप्नक अनाम ग्रह सभ एके साँसक भीतर भेटत। ताहि बाद कथा फेर चलत।

मुदा कथा अपन नाट्यरूपमे जाएत तँ ओकरा पर पहरा आरो कड़ा होएबाक छल। मीरा कहली, 'जकर दु:ख अछि, ओकर अनुमति बिनु ओकर दृश्य नहि।' देविका जोड़ली, 'जकर नाम नहि भेटल, ओकरा पहिल आसन।' ईरा लिखली, 'विदेशी दर्शक पहिने सुनत, बुझबाक दावा बादमे।' गोप कुमार कहलनि, 'डेटाक प्रतिलिपि मंच पर नहि, लोकक स्वीकृत गवाही मंच पर।'

गंगेशक नाम पर विशेष बहस भेल। कियो कहलक—'तत्त्वचिन्तामणिकेँ संवाद बनाओल कठिन अछि।' एक बच्चा उत्तर देलक—'कठिन नहि, न्यायकेँ देह देब कठिन अछि।' निर्णय भेल जे गंगेश मंच पर ग्रन्थ लऽ कऽ नहि, प्रश्न लऽ कऽ प्रवेश करताह। हुनकर जन्म, जाति, प्रेम, चर्मकारणीसँ विवाह, स्मृतिहत्या, आ न्याय—सभ संकेत रूपमे, मुदा बिनु डरक। जे समाज विचारकेँ पूजैत अछि आ जीवनकेँ मारैत अछि, तकर चेहरा मंच पर खुजत।

बटुकनाथ हरिहरनक पात्रक लेल कलाकार चुननाइ कठिन रहल। कियो धूर्त भऽ कऽ खेलय चाहलक, कियो हँसैत-हँसैत ओकर नकल करय लागल। अनन्या रोकली —'खलनायककेँ मसखरा नहि बनाउ। मसखरा बनला सँ अपराध हलुक भऽ जाइत अछि।' अन्तमे ओ भूमिका एक शान्त, धीमा कबड्डी खेलनिहारकेँ देल गेल, जे बहुत कम बजैत छल। ओकर काज छल—प्रत्येक संवादक बाद आँखि झुकाउ, जाहिसँ दर्शक देखय जे कानूनक पएर कखन फिसलैत अछि।

चन्द्रपालक भूमिका ओहि युवककेँ देल गेल जे नकली भूतक जुलूसमे बाबूक नाम कानि कऽ पढ़ने छल। ओकरा आपत्ति छल—'हम फेर ठग बनब?' देविका कहली, 'तूँ ठग नहि बनबह; तूँ दर्शककेँ देखाएबह जे ठग बनल मनुष्यक भीतर खालीपन केहन होइत अछि।' ओ सहमत भेल। राघवक भूमिका दू गोटे खेलत—एक बाजत, एक गायब होएत—कारण राघव सदिखन सन्देश आ मौनक बीच रहल।

लाउ किन-हंगक पात्र पर सभसँ बेसी हँसी भेल। बच्चा सभ पूछलक—'ओ मैथिलीमे बाजत?' बा उत्तर देलीह—'लोभ सभ भाषा बुझैत अछि, मुदा ककरो भाषा मानैत नहि। ओकर संवाद कम, ओकर चुप्पी बेसी।' मंच पर ओकरा लग चमकैत काँचक कटोरा रहत, जाहिमे नाम पड़त आ सिक्का नहि बाजत।

सत्यव्रत मेहता कहलनि, ‘हमर पात्र के खेलत?’ सभ चुप। बहुत देर बाद एक बालक, जे सदिखन पाछाँ बैसैत छल, हाथ उठौलक। ओ कहलक, ‘हम। कारण हम कम बजैत छी।’ सत्यव्रत ओकरा देखैत रहलाह। हुनकर आँखिमे ई राहत छल जे हुनकर भूमिका वाणीमे नहि, सुननाइमे बुझल गेल।

राति भेल। अभ्यास समाप्त भेल। मुदा मैदान खाली नहि भेल। पुरनका अध्याय सभक नाम पाथर पर नहि, ध्वनि पर लिखल गेल। प्रत्येक कबड्डी खेलनिहार अपन-अपन अंकक नाम धीरे-धीरे दोहरबैत रहल। कतेको स्वर एक संग चलैत छल, तेँ कोनो एक नाम अलग सँ नहि सुनाइत छल—मुदा जखन कियो थाकि कऽ रुकैत, तखन ओकर छूटल ठाम एक क्षणक लेल खाली बुझाइत छल। ‘पहिल साँस’, ‘दोसर साँस’, ‘मौनक अभिलेख’, ‘देहक बादक नाम’, ‘साक्षीक भार’, ‘मध्यान्तर’, ‘कटानक बादक बिहान’, ‘गंगेशक प्रश्न’, ‘ग्रहक बीच कबड्डी’, ‘रसोइक गणराज्य’—ई सभ हवामे नाटकक पहिल बीआ जेकाँ तैरय लागल।

चन्ना गाछीक ठूँठक कोंपल हलुक डोलल। कोनो हवा नहि छल। कोंपलक डोलब एतेक धीमा छल जे आँखि ओकरा पकड़ितहि सन्देह करय लगैत छल—डोलल छल कि तकबाक कारणेँ ओहिना बुझायल? बूढ़बा भूत ओहि डोलनकेँ देखैत कहलनि—‘रंगमंच सेहो गाछी होइत अछि। जड़ि झूठ हो, तँ पात ताली बनैत अछि। जड़ि साँच हो, तँ पात नाम बनैत अछि।’ बच्चा सभ ई वाक्य नाट्य-पाठक आरम्भमे रखबाक ठानलक।

विदेह नाट्य उत्सवक पत्र ठूँठक लग राखल गेल। ओकर ऊपर एक पाथर दऽ देल गेल, जाहि पर लिखल छल—‘आमन्त्रण सेहो गवाही देत।’ ई तय भेल जे नाटक मंच पर चढ़बासँ पहिने पत्र, अनुमति, पाइ, दर्शक, कैमरा, प्रकाश, सभक नाम पूछल जाएत। कारण कथाकेँ नाटक बनबय काल सभसँ पहिने नाटकक नीयत जाँचबाक चाही।

अन्तिम पहरमे अनन्या खाली पन्ना खोललक। ऊपर लिखली—‘नाट्य-पाठ: अंग एक।’ फेर कलम रुकि गेल। ओ बच्चा सभ दिस तकली, कबड्डी खेलनिहार सभ दिस, कटल गाछीक कोंपल दिस, सत्यव्रतक मौन दिस। पहिल संवाद ककर हो? मृतकक? भूतक? पानिक? गंगेशक?

तखन पानिक कगार सँ हलुक आवाज आयल—‘मंच पर अन्हार नहि, पानि राखू।’ सभ बुझि गेल जे नाटक शुरू होयसँ पहिने मंचकेँ धोबाक अछि। अनन्या पहिल पाँती लिखली—‘रंगमंचक बीचमे पानि भरल अछि; जे प्रवेश करत, से अपन प्रतिबिम्बक नाम पहिने कहत।’

एहि पाँतीसँ अध्याय समाप्त नहि भेल; ई नाट्य-पाठक केबाड़ खोलि देलक। अगिला अंगमे पुरनका एक सय बत्तीस अंकक स्क्रिप्ट लिखल जाएत, तकर अगिला अंकमे मंचन होएत, आ तकर बाद गढ़ नारिकेल फेर अपन कथा चलाओत—कारण कबड्डी बन्न नहि होइत; खेल केवल रूप बदलैत अछि।

लोकगीत: नाटकक बुलाहट

लोकधुन: पमरिया नाच-गान

बाजू हे धीमे, ढोलक धीमे बाजू हे,
घाव एखन हरियर—पहिने अनुमति माँगू हे।

ढोलक एक चोट पड़ल—‘नाम कहू, मंच पर आउ’,
पानिक कटोरामे चेहरा देखि अपन सत्य सुनाउ।
फूल नहि, पदक नहि, झूठक हार नहि,
जे कथा भोगल, ओकरा छोड़ि कोनो कलाकार नहि।

चन्ना गाछी सँ बुलाहट विदेह धरि गेल,
भूतक कबड्डी नाट्यक साँसमे खेल।
माय कहली—हमर रोदन तमाशा नहि बनाउ,
पहिने अनुमति लिअ, तखन स्वर उठाउ।

ढोलक, धीमे बाजू, घाव एखन हरियर,
मंच पर नाम राखू, करेजा राखू स्थिर।
‘नाम कहू, मंच पर आउ’—ढोलक चोट पड़ल,
पानिक कटोरा मे चेहरा देखि सत्य कहल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—गङ्गेशक खण्डन आ प्रतिबन्धकाभाव क स्थापना: गङ्गेश एकर उत्तर दैत छथि जे "केवल अविशिष्ट पुरुषक अभावमे उत्पत्ति आ विनाश दुनू होइत अछि... एही प्रकार समान नियमक कारण उत्तेजक तत्त्व राखबाक आ हटेबाक क्रममे मणि-जकाँ प्रतिबन्धकक अभाव सेहो स्वीकार करब आवश्यक अछि"। गङ्गेशक खण्डन आ 'प्रतिबन्धकाभाव' क स्थापना।]

अध्याय १३४

कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

नाट्य-पाठ सिखबासँ पहिने कबड्डी खेलनिहार अपन साँस गनए सिखै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: साँसमे साहस

लोकधुन: कबड्डी-खेल गीत

गनू हे साँस, मुदा जीवन नहि गनू हे,
प्रत्येक धड़कनक गरिमा-नियम बुनू हे।

एक साँस नामक, दू साँस गवाही,
तेसर साँस संगक, चारिम जन-भलाई।
सीमा पार करैत कहू—हम डेराइत नहि,
साँचक पारी खेलनिहार कहियो हारैत नहि।

साँस गनू मुदा जीवनकेँ अंक नहि बनाउ,
प्रत्येक धड़कनक गरिमा राखि खेलक नियम सजाउ।
कबड्डी-कबड्डी स्वरमे साहसक लय भरू,
साँसमे संगक बल लऽ सत्य सीमा छूउ।

पहिल साँस नाम लेल, दोसर गवाहीक,
तेसर संगक, चारिम जन-भलाईक।
सीमा पार करैत बाजू—डर नहि, डर नहि,
साँचक पारीक खेलाड़ी कहियो हारि नहि।

❖

कथा खेलल नै जाइ छै; कथा केँ साँस देल जाइ छै। जे कथा केँ छोट कऽ मंच पर चढ़ा दै छै, ओ कथा नै, ओकर अस्थि देखबै छै।

जे मरि चुकल छथि, तिनका 'भूत' बना कऽ डेराओल नै जाय— तिनका 'उपस्थित' कहल जाय। आ जे धूर्त छै, तकरा खलनायकक बाहरी रङ नै, भीतरक खालीपन देल जाय।

दर्शक नै— साक्षी। जे बैसि कऽ देखै छै से दर्शक छिकै; जे देखि कऽ ओकर भार उठबै छै से साक्षी। मंच ई फरक बुझय, तखने ओ मंच छिकै।

विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट आबि गेलाक बाद गढ़ नारिकेलमे तीन दिन धरि कोनो ढोल नहि बजल। बुलाहट जतेक ऊँच स्वरमे आयल छल, ओकर उत्तर ओतेक धीमा तैयार भऽ रहल

छल। बच्चा सभ, जे पहिने नामक पहरा दैत छल, आब मैदानक बीच गोला बनाकऽ बैसल। ओ सभ कबड्डी खेलनिहार छल, मुदा एहि बेर हुनकर साँस खेलक लेल नहि, नाटकक लेल जमा भऽ रहल छल। गोला बनाकऽ बैसलाक बाद जे चुप्पी पसरल, ओहिमे सभसँ साफ आवाज अपने-अपन साँसक छल—आ ओ आवाज सुनितहि किछु बच्चा अपन साँस अनचोकेमे रोकि लेलक। ओ सभक सोझाँ पुरनका अध्याय सभक भार छल—गोहि, जलसमाधि, चन्ना गाछी, पीयर सूचना-पत्र, गंगेश, स्वप्नक अनाम ग्रह, बीआ, नून, साझा थारी, आ रसोइक गणराज्य। एहि सभकेँ मंच पर केना उतारल जाए?

अनन्या कहली, “हम सभ पूरी कथा नहि खेलि सकब। कथा बहुत पैघ अछि।” उज्ज्वलक आत्मा, जे साँझक धुँआमे ओहि दिन कने स्पष्ट देखाइत छल, हँसि कऽ कहलक, “कथा खेलल नहि जाइत; कथाकेँ साँस देल जाइत अछि।” ईरा अपन पत्रक कातमे खाली पन्ना खोलली। पन्ना बहुत दिनसँ थैलीमे दबल छल, तेँ ओकर बीचमे एक स्थायी मोड़ पड़ि गेल छल जे हाथ फेरलो पर सोझ नहि होइत छल। मीरा कहली, “नाटकमे ककरो दुखक तमाशा नहि होएत।” देविका जोड़ली, “आ ककरो नाम बिनु अनुमति नहि।” गंगेशक प्रश्न ठूँठक छाहरिमे फेर आयल —प्रमाण की? अभिनय की? सत्य आ रूपक बीच दूरी कतेक?

ओहि राति निर्णय भेल जे नाटकक नाम होएत—“पहरा”। उपशीर्षक—“कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ”। एहि नाटकमे नायक कोनो एक व्यक्ति नहि, अपितु साँस होएत। प्रत्येक दृश्य साँस सँ शुरू होएत, प्रत्येक दृश्य नाम पर ठहरत, आ प्रत्येक दृश्य अगिला दृश्यक कगार पर छूटत। खेलनिहार सभ तय केलक जे जे पात्र मरि चुकल छथि, हुनका ‘भूत’ बना कऽ डेराओल नहि जाए; हुनका ‘उपस्थित’ कहल जाए। जे धूर्त अछि, ओकरा खलनायकक बाहरी रंग नहि, भीतरक खालीपन देल जाए।

ईरा पहिल पाँती लिखली—“मंच पर कटल ठूँठ अछि। ओकरा चारू कात पाथर पर नाम लिखल अछि। दर्शक प्रवेश करैत काल सभसँ पहिने ओ पाथर देखत, कलाकार नहि।” अनन्या ओकरा काटि देली—“दर्शक नहि, साक्षी।” पाँती फेर लिखायल—“साक्षी प्रवेश करैत काल सभसँ पहिने पाथर पर लिखल नाम देखत।” एहि एक संशोधनसँ नाटकक दिशा बदलि गेल।

नाट्य-पाठक पहिल पन्ना पर पात्र-सूची लिखल गेल। पात्र: साँस, ठूँठ, पानि, गोहि, बच्चा सभ, बूढ़बा भूत, चन्ना गाछीक हँसी, सत्यव्रतक मौन, गंगेशक प्रश्न, चन्द्रपालक प्रतिशत, राघवक गायब सन्देश, लाउ किन-हंगक अनाम चेहरा, बटुकनाथक पात-वकील, मीरा, देविका, ईरा, अनन्या, उज्ज्वलक आत्मा, मजदूरक पएर, स्त्री सभक राति, रसोइक धुँआ, आ कबड्डी।

कोनो पात्रक आगाँ जाति नहि लिखल गेल। कियो पूछलक—“गंगेशक प्रसंगमे जाति-व्यवस्था छूटि जाएत?” अनन्या कहली—“नहि। जाति पात्र नहि, पिंजरा अछि। पिंजरा मंच पर खाली लटकत।”

मंच-व्यवस्था लिखल गेल—बीचमे गोल मैदान। एक कात कटल ठूँठ, दोसर कात पानिक कारी पट्टी, तेसर कात रसोइक धुँआ, चारिम कात खाली पिंजरा। ऊपर रस्सी पर सुखैत पात, जकरा पर नाम लिखल। प्रकाश आरम्भमे कम, मुदा अन्हार नहि; कारण चन्ना गाछी कटि गेलाक बाद अन्हार नुकबाक अधिकार गमा चुकल। ओहि कम प्रकाशमे पाथर पर लिखल नाम पढ़ल तँ नहि जाइत, मुदा ओ अछि—ई बुझाइत रहत। ध्वनि: दूर सँ ‘कबड्डी-कबड्डी’क धीमा स्वर, जे धीरे-धीरे ‘उपस्थित-उपस्थित’मे बदलत।

पहिल दृश्य लिखल गेल—“कटानक बादक बिहान।” कलाकार सभ धीरे-धीरे मंच पर आओत। कियो कानत नहि। कियो उद्घोषणा नहि करत। एक बच्चा कटल ठूँठकेँ छूबैत कहत—“गाछी कटि गेल, मुदा जड़ि सुनैत अछि।” एहि वाक्य पर ठूँठक भीतर सँ एक धीमा उत्तर—“नाम पढ़ू।” तखन पाथर पर लिखल पहिल नाम उच्चरित होएत। सभ कलाकार, चाहे मृत, चाहे जीवित, चाहे धूर्त, एक संग कहत—“उपस्थित।”

दोसर दृश्य—“पीयर सूचना-पत्र।” सरकारी लिफाफा एक पीयर पक्षी जेकाँ मंच पर उड़ैत आओत। बटुकनाथक पात-वकील सभ ओकर चारू कात घूमत। ओ सभ कहत—“खाली भू-खण्ड, सार्वजनिक उपयोग, सौन्दर्यीकरण।” बच्चा सभ प्रत्युत्तरमे पूछत—“खाली के कहलक? जे माटि नाम सँ भरल अछि, ओकर नाप कोन पैमाना सँ?” एहि दृश्यमे कागच आगि नहि पकड़त; ओकर अक्षर पसीना छोड़त।

तेसर दृश्य—“गंगेशक प्रश्न।” खाली पिंजरा मंचक बीच लटकत। पिंजरा पर लिखल—“जाति।” पिंजरा भीतर कोनो मनुख नहि। एक स्वर कहत—“शास्त्र स्वीकार, जीवन अस्वीकार?” दोसर स्वर कहत—“प्रमाण केवल कुल नहि; प्रमाण पीड़ा, प्रेम, जन्म, प्रतिरोध, आ विचार सेहो अछि।” तखन गंगेशक प्रश्न कलाकार नहि, प्रकाश रूपमे उतरत। प्रकाश पिंजराक सलाख पर पड़त, सलाख छाह बनत, छाह टूटि कऽ अक्षर बनत—“न्याय बिनु जीवन, मृत तर्क।”

चारिम दृश्य—“स्मारक-अनुप्रयोग।” चन्द्रपालक प्रतिशत मंच पर चाँदीक गोल सिक्का जेकाँ लुढ़कत। ओ कहत—“दुःख दानमे बदलब, नाम क्लिकमे बदलब, स्मृति गिनतीमे बदलब।” देविका ओकरा रोकि पूछती—“जकर नाम लेलहुँ, ओकर मायक आँखि देखलहुँ?”

सिक्का उत्तर नहि देत। तखन उज्ज्वलक आत्मा पानिक पट्टी सँ निकलि कहत—“जे स्क्रीन मोन चिबौलक, से नामक पहरा नहि बनि सकैत।” सिक्का कारी भऽ जाएत।

पाँचम दृश्य—“नकली भूतक जुलूस।” कलाकार सभ अपने कलाकारक भूमिका निभाओत। ओ सभ भूत बनि प्रवेश करत, मुदा बीचमे अपन-अपन असली मृतकक नाम कहि देत। नाटकक भीतर नाटक टूटत। साक्षी सभसँ कहल जाएत—“जँ अहाँक स्मृतिमे कोनो नाम अटकल अछि, मोनमे उच्चरित करू; मंच ओकर अधिकार नहि छीनत।” एहि ठाम मीरा मंचक आगाँ आबि कहती—“दृष्टि सेहो सहमति माँगैत अछि।”

छठम दृश्य—“स्वप्नक अनाम ग्रह।” मंच अन्हार नहि, अत्यधिक उजासमे डूबत। सभ वस्तु क्रमांक बनत—घर एक, देह दू, श्रम तीन, ऑक्सीजन चारि। लाउ किन-हंगक अनाम चेहरा कहत—“एतय जाति नहि, गाम नहि, नदी नहि, दुख नहि।” अनन्या उत्तर देती—“नाम नहि, तँ जीवन नहि।” तखन बच्चा सभ कबड्डीक रेखा आकाशमे खिंचत। ‘कबड्डी-कबड्डी’क स्वर ग्रहक उजास फाड़ि देत।

सातम दृश्य—“रसोइक गणराज्य।” साझा थारी मंच पर राखल। जातिक पिंजरा तखनहुँ लटकैत अछि। स्त्री सभक राति-सभा सँ धुँआ उठत। एक पात्र कहत—“जे संग बैसि खाइ नहि सकैत, ओ न्यायक पुस्तक पढ़ि की करत?” तखन पिंजराक सलाख पर नूनक बून्द राखल जाएत। नून सलाख खा जाएत। गंगेशक प्रकाश फेर एक क्षण मंच पर पसरत—“तत्त्व ओहि ठाम जन्मैत अछि जतय भेदक पेट खाली पड़ि जाए।”

आठम दृश्य—“गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ।” एहि दृश्यमे गज कोनो राजा नहि, डूबैत समाज होएत; ग्राह केवल गोहि नहि, लोभ, जाति, स्क्रीन, अदालत, भूख, प्यास, स्वप्नक अनाम ग्रहक चमक—सभ मिलि एक आन्हर जबड़ा बनत। बच्चा सभ गजकेँ हाथसँ नहि, नामसँ खिंचत। प्रत्येक नाम पर ग्राहक जबड़ा कने ढील पड़त। अन्तमे गज बचत कि नहि, ई नाटक स्पष्ट नहि कहत; मुदा गजक आँखिमे भय कम भऽ जाएत।

नवम दृश्यक ठाम बच्चा सभ देर धरि अटकल। की अन्त करब? नाटकमे कथा बन्द होएत? उज्ज्वलक आत्मा कहलक—“जँ नाटक बन्द करब, खेल हारब।” तँ अन्तिम दृश्यक नाम राखल गेल—“फेर पृथ्वी।” मंच पर नब चन्ना कोंपल राखल जाएत। सभ पात्र, धूर्त सहित, ओकर चारू कात घूमत। धूर्त सभ कोंपल छूबय चाहत, मुदा हुनकर हाथ पहिने अपन नाम लिखत। जे अपन नाम बिनु लोभक लिखि सकत, से छूबि सकत। जे नहि, से बाहर ठाढ़ रहत।

नाटकक अन्तिम पाँती पर सभसँ बेसी बहस भेल। एक बच्चा चाहैत छल—“कथा समाप्त।” दोसर कहैत छल—“उपस्थित।” तेसर कहलक—“कबड्डी।” बा सुनि रहल छली। अन्तमे ओ कहलीह, “जकरा साँस बाँकी, ओकर कथा बाँकी।” ई पाँती सभकेँ मान्य भेल। अन्तिम पाठ लिखल गेल—“कबड्डी बन्द नहि भेल। खेल केवल धरतीक गोला सँ निकलि स्मृतिक कक्षामे चलि गेल। जकरा साँस बाँकी, ओकर कथा बाँकी।”

नाट्य-पाठ तैयार भेल तखन राति बहुत बीति गेल छल। मैदानमे चन्द्रमा नीचाँ उतरि आयल छल। ठूँठक पाछाँ बूढ़बा भूतक आकृति देखाइ पड़ल। ओ एहि बेर हँसलाह नहि, ताली सेहो नहि बजौलनि। केवल कबड्डीक पुरान मुद्रामे एक पग आगाँ बढ़लाह, फेर रुकि गेलाह। जेना कहि रहल होथि—नाटक लिखि देलहुँ, आब मंचनक साँस देखब।

ईरा पन्ना सभ समेटि कपड़ाक थैलीमे राखली। पन्ना समेटैत काल कागचक जे खरखराहट उठल, से मैदानक ओहि चुप्पीमे बहुत जोरगर बुझायल—जेना कियो बहुत लग बैसि कऽ बहुत आस्ते किछु कहि रहल हो। अनन्या रजिस्टरमे लिखली—“आइ कथा नाट्य-पाठ बनल। काल्हि नाट्य-पाठ देह माँगत।” सभ बच्चा एक संग उठल। कटल ठूँठक छाह ओहि राति फेर नमहर पड़ल, मुदा एहि बेर से छाह मंचक पर्दा जेकाँ बुझाइत छल।

विदेह नाट्य उत्सवक अगिला अंकक बिहान एखन दूर छल, मुदा गढ़ नारिकेलक मैदानमे मंच पहिनहि बनि चुकल छल—माटि, पानि, नून, पाथर, नाम, कोंपल, आ साँस सँ। जे स्क्रिप्ट कहाइत छल, से असलमे जीवित लोकक सामूहिक प्रतिज्ञा छल। आब प्रश्न ई नहि रहल जे नाटक सफल होएत कि नहि। प्रश्न ई छल—मंचनक समय जखन धूर्त सभ सेहो साक्षीमे बैसत, तखन ककर साँस टूटत आ ककर नाम उपस्थित रहत।

लोकगीत: साँस गनैत खेलाड़ी

लोकधुन: कबड्डी लोकधुन

गनू हे साँस, नामक साँस गनू हे,
खेल जीतबाक नहि—नाम घुरेबाक बूझू हे।

एक साँस नामक, दू साँस गवाही,
तेसर साँस टूटल तँ धरि लेत सियाही।
रेखा पार करैत भूत नहि, हम सभ छी,
जकर कथा लिखै छी, ओकर सम्मति संग छी।

साक्षीमे बैसल छल छलक आँखि लाल,
पाठमे नेना जोड़लक—सावधान प्रत्येक हाल।
कबड्डी-कबड्डी नहि, ‘उपस्थित’क पुकार,
साँसक प्रत्येक फेरा बनल लोक-दरबार।

खेल जीतबाक नहि, नाम घुरेबाक अछि,
टूटल कण्ठक साँस फेर जुड़बाक अछि।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—मोक्षक परिभाषा: विभिन्न दार्शनिक मतक खण्डन: गङ्गेश कहैत छथि जे दु:खसाधन (जेना काँट वा सर्प) क विनाश अपनहि प्रयोजन नहि अछि। मोक्षक परिभाषा: विभिन्न दार्शनिक मतक खण्डन।]

अध्याय १३५

विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

स्मृति जखन मंचपर चढ़ै छै, कैलेण्डर हारि जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: मंचपर स्मृति उजास

लोकधुन: भगैत-मंगल

गाबू हे भगता, स्मृतिक भगैत गाबू हे,
मृदंगक ताल पर अधूरी कथा सुनाबू हे।

मृदंग बाजल, दीप जरल, स्मृति मंचपर आयल,
जकर कथा अधूरी छल, आदरसँ सुनायल।
मृतककेँ रोदन मात्र नहि, प्रेरणाक मान,
हुनकर श्रमसँ जीवित सभ सीखय नव अभियान।

मंचपर नाम पढ़ू धीरे, फूल नहि झाँपय बात,
स्मृति उजास बनि देखाबय न्याय दिशाक बाट।
भगैतक वीर लय कहै—सत्य फेर उठत,
जकर नाम सम्मानित, ओकर सपना फुलत।

दीपक घेरा बीच मे मृतकक आदर-थान,
रोदन नहि, प्रेरणाक सुर—हुनकर श्रमक गान।
धीरे-धीरे नाम पढ़ू, फूल ने झाँपय बात,
वीर लयक हुंकार सँ खुजय न्यायक बाट।

❖

स्मृति जखन मंचपर चढ़ै छै, कैलेण्डर हारि जाइ छै। तिथि कागच खा सकै छै, मुदा नाम जँ कण्ठ मे उतरि गेलै, तँ ओकरा कोनो साल-गिनती नै मेटाबय पबै छै।

जतय नामक कथा खेलाइ छै, ओतय मंच आ दर्शकक बीच ऊँच-नीच नै रहै छै। ऊँचाइ बनितहि देखनिहार आ भोगनिहार अलग भऽ जाइ छै— आ ओहीठाम कथा तमाशा बनि जाइ छै।

अभिनय झूठ नै होइ छै, जँ ओ दाबल साँच केँ चलबाक देह दै छै। खेलनिहार तखन कलाकार नै रहै छै— ओ नामक धावक बनि जाइ छै।

आ ताली प्रदर्शनक अन्त छिकै। जाहि रातिक अन्त नै चाही, ताहि रातिक ताली रोकि देबय पड़ै छै।

विदेह नाट्य उत्सवक पुरनका सभ एक सय बत्तीस अंक, जे कखनो अलग-अलग मंच पर, कखनो बरसातिक साँझमे, कखनो माटिक गन्धमे, कखनो सभागारक थाकल इजोतमे खेलल गेल छल, ओहि राति गढ़ नारिकेलक बच्चा सभक आँखिमे एकहि रेखा बनि आयल। नाट्य-उत्सव एखन केवल कार्यक्रम नहि रहल; से स्मृतिक दोसर देह बनि गेल। चन्ना गाछीक कटायल ठूँठ सँ उठल कथा आब मंचक साँस तकि रहल छल।

पछिला अंकमे कबड्डी खेलनिहार सभ स्क्रिप्ट लिखने छल। ओहि स्क्रिप्टमे नायक नहि छल, खलनायक सेहो पूरा खलनायक नहि; ओहिमे नाम छल, भूख छल, गोहि छल, पानि छल, जातिक पिंजरा छल, गंगेशक प्रश्न छल, आ ओ बच्चा सभ छल जे साँस रोकि खेलैत-खेलैत प्रमाणक मर्यादा सीखि गेल छल। आब प्रश्न छल—की ई लिखल बात मंच पर जीवित रहि सकत? की कबड्डी खेलनिहार सभ अभिनय करैत काल कबड्डीकेँ नहि गमाओत? की अभिनय साँचक देह बनत कि साँच फेर तमाशा बनि जाएत?

उत्सवक मैदान राति पड़ितहि लोकसँ भरि गेल। कोनो पैघ मंच नहि बनाओल गेल; आयोजक सभ चाहने छल लाल पर्दा, प्रकाशक मचान, अतिथि-दीर्घा, आ प्रायोजकक पट्टिका। मुदा बच्चा सभ मना कऽ देलक। ओ सभ कहलक—“जतय नामक कथा खेलाएत, ओतय मंच आ दर्शकक बीच ऊँच-नीच नहि रहत।” अन्तमे एक गोल मैदान बनल, चारू कात लोक, बीचमे माटि, माटिक बीच कारी रेखा—कबड्डीक रेखा आ नाटकक मर्यादा एकहि संग। रेखा खिंचैत काल जे कारी गुड़ा माटि पर पड़ल, ओ सोझ नहि पड़ल—बीच-बीचमे ओ मोटगर, बीच-बीचमे एतेक पातर जे बुझाइत छल ओतय रेखा टूटल अछि।

पहिल दृश्य शुरू भेल बिनु घण्टी, बिनु घोषणा। एक बालक साँस रोकि मैदानमे उतरल आ कहय लागल—“कबड्डी-कबड्डी-कबड्डी...” ओकर स्वर धीरे-धीरे बदलि कऽ “नाम-नाम-नाम...” बनि गेल। लोकक देहमे कँपकँपी दौड़ल। ओ बालक माटि पर एक पाथर राखलक आ कहलक—“ई पाथर नहि, जे नाम नहि भेटल ओकर आसन।” सभ दिशासँ उत्तर आयल—“उपस्थित।” नाटक शुरू होइतहि दर्शक दर्शक नहि रहल; ओ सभ साक्षी भऽ गेल।

दोसर दृश्यमे गोहि आयल। ओकरा लेल कोनो मुखौटा नहि बनाओल गेल। एक खेलनिहार पेटक बल माटि पर ससरल, मुदा ओकर देह नहि, ओकर छाह गोहि बनल। ओ जखन हाथ पसारैत, लोक देहक नहि, समयक चिबान सुनैत। ओ कहलक—“हमरा देह दियौ,

हम खाएब; मुदा जँ नाम बच्चा लग अछि, हम की करब?” एहि संवाद पर पाछाँ बैसल बूढ़बा भूत जेकाँ आकृति मुस्कुरायल।

तेसर दृश्य जलसमाधिक छल। मैदानक बीच पानि नहि छल, मुदा कबड्डी खेलनिहार सभ गोल-गोल घूमि एहन साँस बनौलक जेना पानि चारू दिशासँ उठि रहल हो। जे खेलनिहार “डूबल” से जमीन पर नहि खसल; ओ धीरे-धीरे उठि पाथरक लग जा बैसल। दर्शकमे कियो फुसफुसायल—“मरि गेल?” लग बैसल बच्चा उत्तर देलक—“देह डूबल, बन्धन छूटल।” एहि वाक्यसँ पूरा मैदानमे मौन उतरि गेल।

चारिम दृश्य गंगेशक प्रश्नक छल। मंचक बीच एकटा खाली आसन राखल गेल। न गंगेशक देह देखाओल गेल, न मूर्ति। एक बालिका तत्त्वचिन्तामणिक पात जेकाँ दू हथेली खोलि ठाढ़ भेली आ पूछली—“प्रमाण की? कुल की? जन्मक सत्य कोन? विवाहक सत्य कोन? जाति जँ मनुष्यक देह पर पहरा देत, तँ न्याय कागच पर केना जन्म लेत?” एहि प्रश्नक संग पाछाँ सँ चर्मकारिणीक स्वर उठल—न लाज, न हाहाकार, केवल उपस्थिति।

ओहि दृश्यमे कतेक लोक असहज भेल। अगिला पाँतिमे बैसल दू-तीन पण्डित अपन गमछा सँ मुख पोंछय लागल। हुनका सभ लग नाटकक भाषा तीक्ष्ण लागल। मुदा बच्चा सभ स्क्रिप्टमे जेना लिखने छल, मंच पर सेहो सएह भेल—गंगेशक सम्मान हुनकर असुविधाजनक जीवन-सत्य नुका कऽ नहि, ओकरा सुनि कऽ। एक खेलनिहार रमानाथ झा आ उदयचन्द्र झा ‘अशोक’क नाम लऽ कऽ कहलक—“सम्मान जँ सत्य काटि देत, तँ से सम्मान नहि, स्मृतिहत्या अछि।” लोकमे धीमा हलचल उठल, मुदा दृश्य रुकल नहि।

पाँचम दृश्यमे बटुकनाथ हरिहरन आयल। ओकर भूमिका खेलनिहार सभमे सभसँ चपल बालक केलक। ओ मोट पोथी लऽ कऽ मैदानमे घुसल, कहैत—“न्यास, नियम, समिति, संरचना, वैधानिकता।” प्रत्येक शब्द पर ओकर पएर माटिमे धँसैत गेल। अन्तमे ओ पोथी खोललक, भीतर पन्ना नहि, सूखल पात। पात सभ उड़ि कऽ दर्शकक कोरामे पड़ल। प्रत्येक पात पर एक प्रश्न—“न्यासक मालिक के? स्मृतिक पहरुआ के? नामक लाभार्थी के?”

छठम दृश्य चन्द्रपाल बत्राक छल। एक युवक हाथमे चमचम करैत नकली फोन लऽ कऽ मंचमे आयल। फोनक स्क्रीन पर उजास नहि, छोट-छोट पाथर झिलमिल करैत छल। ओ कहैत रहल—“अर्पण करू, श्रद्धांजलि दिअ, डिजिटल अमरता।” मुदा जखन ओ मृतकक नाम टाइप करय गेल, स्क्रीन ओकरा अपन अधूरा नाम देखबय लागल। ओ भागय चाहलक, मुदा कबड्डीक

रेखा ओकर पएरकेँ रोकलक। दर्शकमे बैसल किछु युवक, जे कखनो ठगीक लिंक पर भरोसा कऽ चुकल छल, चुपचाप माथ झुकौलक।

सातम दृश्य राघव सिग्नलक छल। मंच पर कोनो आवाज नहि, केवल हाथक संकेत। खेलनिहार सभ एक-दोसराकेँ सन्देश देबाक अभिनय करैत, मुदा प्रत्येक सन्देश पात बनि खसि पड़ैत। एक पात पर लिखल—“मेटल सन्देशो माटि पढ़ैत अछि।” एहि वाक्य पर मैदानक ऊपर हवा बदलल। लोकक मोबाइल जे जेबीमे बन्द छल, एक क्षण लेल थरथरायल; जेना मशीन सभ सेहो बुझि गेल जे एहि राति ओकर सत्ता कम अछि।

आठम दृश्यमे लाउ किन-हंग आ ब्रूमक प्रवेश छल। ओ सभ अंग्रेजी सूटमे नहि, अपितु चमकीला उज्जर कपड़ा पहिरने खेलनिहार सभक बीच आयल—नामहीन, बहुत साफ, बहुत निर्जीव। ओ सभ कहलक—“पृथ्वी असुरक्षित अछि; स्वप्नक अनाम ग्रहपर चलू।” ई सुनितहि बालक सभ कबड्डीक रेखा आकाश दिस उछाललक। मैदानक ऊपर, लोकक आँखिक सोझाँ, एक काल्पनिक ग्रहक गोल रेखा बनल। कबड्डी अचानक गामक खेल सँ ग्रहक खेल बनि गेल।

नवम दृश्यमे स्वप्नक अनाम ग्रहपर नाम-पाठ भेल। एहि दृश्य लेल कोनो सजाबट नहि। खाली माटि, खाली आकाश, खाली स्वर। एक-एक बच्चा आकाश दिस देखैत कहलक —“उपस्थित।” प्रत्येक “उपस्थित” पर धूलिक एक कण चमकैत। लाउक भूमिका करैत खेलनिहार पहिने हँसल, फेर चुप भेल, फेर अपना छाती पर हाथ राखि पूछलक—“हमर नाम कतय अछि?” ओ उत्तर नहि पओलक। दर्शक बुझि गेल—अपराधी जँ पृथ्वी छोड़िओ देत, नामक प्रश्न ओकरा पाछाँ करत।

दसम दृश्यमे सत्यव्रत मेहताक मौन आयल। हुनकर भूमिका कियो नहि निभेलक। मैदानक बीच एक खाली कुर्सी राखल गेल, आ ओकरा सोझाँ रजिस्टर। सभ खेलनिहार, सभ पात्र, सभ मृतकक नाम, सभ बच्चा ओहि कुर्सीक चारू कात घूमल। कुर्सी खाली रहल। अन्तमे अनन्या उठि कहली—“जे सुनय नहि आयल, ओकर कुर्सी खाली रहत; जे सुनलक, ओकर नाम कुर्सी पर नहि, रजिस्टरमे रहत।” सत्यव्रत, जे सचमुच दर्शकमे पाछाँ बैसल छलाह, एहि वाक्य पर काँपि उठलाह।

नाटकक अन्तिम दृश्य कबड्डी छल—शुद्ध, तेज, साँसदार। खेलनिहार सभ “कबड्डी-कबड्डी” कहैत रेखा पार करैत, घुरैत, खसैत, उठैत। मुदा एहि बेर प्रत्येक पकड़ हिंसा नहि, स्मरण छल। जे खसैत, ओकर नाम कहल जाइत। जे बचैत, से कहैत—“हम असगर नहि।” जकर साँस टूटय लगैत, पूरा मैदान धीमे स्वरमे ओकर संग साँस जोड़ैत। खेल एक सामूहिक

फेफड़ा बनि गेल। मैदानक चारू कातसँ जे साँसक आवाज उठैत छल, से एक ठाम सँ नहि आबैत छल—ओ सभ दिससँ एक संग उठैत आ बीचमे आबि मिलि जाइत छल।

मंचन समाप्त भेल कि नहि—एहि पर मतभेद रहल। आयोजक ताली बजाबय चाहलक, मुदा बच्चा सभ हाथ रोकि देलक। ताली प्रदर्शनक अन्त होइत अछि; एहि राति अन्त नहि चाही छल। अनन्या रजिस्टर खोलि दर्शक सभकेँ कहली—“जे किछु देखलहुँ, ओकरा कथा बूझू। जे किछु बुझलहुँ, ओकरा घर लऽ जाउ। ”

तखन एक वृद्ध, जे अपन जीवनमे कखनो मंच पर नहि गेल छलाह, उठि मैदानमे आयलाह। ओ कहलनि—“हमरो घरमे एकटा नाम अछि, जे नाटकमे नहि छल।” हुनकर पाछाँ एक स्त्री उठली—“हमरो।” फेर एक युवक, फेर एक लड़की, फेर एक प्रवासी जे परदेस सँ आयल छल। मंच अचानक विस्तार पाबय लागल। नाटक जे पुरनका एक सय बत्तीस अंकक विदेह नाट्य उत्सवमे प्रवेश करय आयल छल, से एक सय तेतीसम, एक सय चौंतीसम, एक सय पैंतीसम सँ आगाँ लोकक कण्ठमे पसरि गेल।

ओहि राति पहिल बेर बुझाइ पड़ल जे अभिनय झूठ नहि होइत जँ ओ दबाओल साँचकेँ चलबाक देह देत। कबड्डी खेलनिहार सभ कलाकार नहि बनल; ओ सभ नामक धावक बनल। मंचन तमाशा नहि बनल; ओ कथाकेँ फेर लोकक घर दिस पठा देलक।

रातिक अन्तमे चन्ना ठूँठक नब कोंपल पर एक हलुक इजोत पड़ल। पात बहुत छोट छल, मुदा ओकर छाह मैदानक गोलाइ धरि पसरल। कियो कहलक—“गाछी नाटक देखलक।” बा उत्तर देलीह—“गाछी नहि, जड़ि देखलक। जड़ि जखन मंचन स्वीकार करैत अछि, तखन कथा फेर माटिमे घुरैत अछि।”

सभक गमनक बाद मैदान खाली रहल, मुदा कबड्डीक रेखा मेटल नहि। भोरक ओस ओहि रेखा पर मोती जेकाँ जमल। ओसक प्रत्येक बून्दमे एक-एक छोट मंच देखाइत छल। बून्द एतेक लग-लग जमल छल जे दूरसँ रेखा उज्जर पाँती जकाँ बुझाइत, आ लग गेला पर ओ फेर बून्द-बून्द भऽ बिखरि जाइत। अनन्या झुकि देखली आ धीमे कहली—“अगिला अंक आब कथा जारी कराओत।”

आ एहि प्रकारेँ नाटक अपन मंचन पूरा कऽ फेर उपन्यासमे घुरि आयल—थाकल नहि, बेसी साँसदार; बन्द नहि, बेसी खुजल।

लोकगीत: मंचपर घुरल मृतक

लोकधुन: भगैत

ने मराउ हे, मृतककेँ फेर ने मराउ हे,
नाम उच्चारि धीरे ओकर घर पहुँचाउ हे।

मृदंग बाजल, दीप जरल, पातक छाह उतरली,
जकर तिथि कागच खा गेल, मंच पर देह धरली।
बिसेसरक गमछा हिलल, छोटूक माय पुकारली,
दर्शकक आँखिक भीतर गंगा फेर धारली।

कैलेण्डर हारि गेल, स्मृति जीतल राति,
अभिनेता कानल नहि—नाम बनल ओकर थाती।
पर्दा खसल, मुदा कथा पोथीमे घुरल,
प्रत्येक तालीक पाछाँ एक मौन नोर झुरल।

हे मंच, मृतककेँ फेर नहि मराउ,
कैलेण्डर हारल, स्मृति ओहि राति जीतल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—आपत्ति: मङ्गलाचरण अङ्ग नहि भऽ सकैत अछि: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“घर वा रथक आधार-काँटी टूटलापर लोहतक बोल्ट लगाओल जाय” आ “ब्राह्मणकेँ दूधमे पकाओल भोजन कराओल जाय”—एहि उदाहरणसभमे बोल्ट लगेनाइ आ ब्राह्मण-भोजन मुख्य कर्मक अङ्ग नहि, अपितु निमित्त उपस्थित भेलापर कएल जायवला स्वतन्त्र नैमित्तिक कर्म अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। आपत्ति: मङ्गलाचरण अङ्ग नहि भऽ सकैत अछि।]

अध्याय १३६

तालीक बादक सन्नाटा

असली अभिनयक दाम ताली नहि— तालीक बादक सन्नाटा थीक।

अध्यायारम्भ लोकगीत: तालीक बाद काज

लोकधुन: जागरण-झूमर

लागू हे काज मे, ताली बजा कऽ लागू हे,
मंचक जोश विद्यालय-खेत धरि पहुँचाउ हे।

ताली बजल तँ हाथ नहि थाकू, काजमे लागू,
मंचक उत्साह बाट, विद्यालय, घर धरि भागू।
रोदन सुनि उठल भावना सेवा बनि जाय,
एक प्रतिज्ञा, एक सहायता जीवन राह बनाय।

ताली पाछाँ मौन नहि, जिम्मेदारी बजै,
दर्शकक हाथ श्रम करै, साँचक गाँठि खोलै।
उत्सवक फूलक संग श्रमक बीआ धरू,
तालीक बाद काजसँ आशाक खेत भरू।

भावनाक उफान उतरि सेवा-रूप धरय,
एक प्रतिज्ञा, एक सहायता—डेग-डेग बढ़य।
ताली पाछाँ चुप्पी नहि, हाथ-हाथ श्रम,
झूमरक ताल पर चलय जागरणक क्रम।

❖

जखन लोकक पीड़ा पर ताली बजै छै, तखन सुननिहार केँ दोबारा सावधान होबय पड़ै छै। पीड़ा प्रशंसा लेल नै, न्याय लेल बजैए।

जे कथा जलसमाधि सँ आयल छै, ओकर लेखकत्व नदी जकाँ होइ छै। नदीक किनार कतेको गामक होइ छै; ताहिसँ नदी बँटाइ नै छै, बहै छै।

मुदा खुला ठामक ई अर्थ नै जे कियो ककरो निजता तोड़त। नाटक जनक हो, मुदा देह आ स्मृतिक अधिकार व्यक्तिक हाथ मे रहतै।

मंचन समाप्त भेल तखन जे ताली उठल, से पहिने सामान्य ताली जेकाँ छल—हाथक आवाज, उत्साहक चिन्ह, सफल अभिनयक स्वीकृति। मुदा धीरे-धीरे ओ ताली बदलय लागल।

किछु हाथ बीचमे रुकि गेल, किछु हाथ जुड़ि गेल, किछु हाथ आँखि पोंछय लागल। दर्शक-दीर्घामे बैसल लोक बुझलक जे ओ सभ केवल नाटक नहि देखने अछि; ओ सभ अपन-अपन भीतरक गवाहीक सोझाँ बैसल छल। तालीक बाद जे सन्नाटा पसरल, से असफलताक नहि, नामक भारक सन्नाटा छल।

कबड्डी खेलनिहार सभ मंच पर ठाढ़ छल। हुनका सभक देह पर तखनहुँ पसीना चमकि रहल छल, मुदा ओ पसीना खेलक नहि, अभिनयक बादक अपराधबोधक सेहो छल। मंचक इजोतमे ओ बून्द माथ पर एहन चमकैत छल जेना ककरो लगाओल हो, आ ओकरा पोंछितहि दोसर बून्द ओहि ठाम आबि जाइत छल। जे बालक गज बनल छल, ओ अपन हाथक ओर देखैत रहल—जेना ओकरा लगैत हो जे ओकर आँगुरमे एखनहुँ ग्राहक पकड़ लागल अछि। जे लड़की ठूँठक कोंपल बनि मंच पर उगल छली, से घुट्ठी मोड़ि बैसली आ माटि छूबैत रहली। जे युवक भ्रष्ट वकीलक भूमिका केलक, ओकरा लोक ताली देलक, मुदा ओ मंचक कोनमे जा कऽ मुख धोय लागल—जेना चरित्रक कालिख अभिनय समाप्त भेलो पर नहि छूटैत हो।

विदेह नाट्य उत्सवक संचालक मंच पर एलाह। हुनकर हाथमे धन्यवाद-पत्र छल। मुदा ओ जे लिखल पन्ना पढ़य उठलाह, तकर शब्द पहिल पाँती पर अटकि गेल। ‘हम एहि अद्भुत प्रस्तुति लेल…’ धरि कहि ओ चुप भऽ गेलाह। सभागारक उजासमे ओहि मौनक आवाज बड़ पैघ बुझायल। अन्ततः ओ पन्ना मोड़ि कहलनि, ‘एहि प्रस्तुति पर हम टिप्पणी नहि करब। जे लोकक नाम एहि नाटकमे छूटि गेल, ओ सभ आगाँ अबथि।’

ई वाक्य सुनितहि मंच आ दर्शक बीचक रेखा टूटि गेल। पहिल बेर नाटक देखनिहार लोक मंच दिस नहि, मंच सँ नीचाँ उतरि रहल कलाकार सभक दिस बढ़ल। एक वृद्धा कहली—‘हमर पतिक नाम कतहु नहि आयल।’ एक युवक कहलक—‘हमर भाय स्क्रीनमे नहि, दारू आ करजमे डूबल। मुदा ओहो गोहि छल।’ एक स्त्री, जकर चेहरा घोघसँ आधा झाँपल छल, धीरे कहली—‘हमर बेटी जीबैत अछि, मुदा घर ओकर नाम नहि लेत। की ओकर नाम सेहो लिखल जाए?’ अनन्या तुरन्त उत्तर देली—‘जकर नाम चुप कराओल गेल, से मृतकसँ कम नहि। लिखल जाए।’

एहिसँ मंचनक बादक दोसर अभिनय शुरू भेल—जकरा कियो लिखने नहि छल। कलाकार सभ अपन-अपन भूमिका उतारि, रजिस्टरक चारू कात बैसल। दर्शक सभ नाम कहैत गेल, बच्चा सभ लिखैत गेल, आ पुरनका एक सय बत्तीस अंक, जे नाट्य उत्सवमे समेटायल छल, ओ सभ अचानक अधूरा भऽ उठल। सभकेँ बुझाइत गेल जे कथा जतेक कहल गेल, ततेक

शेष अछि। जे अध्याय सभ बन्द लगैत छल, ओ सभ बस अगिला आवाज लेल साँस रोकने छल।

सत्यव्रत मेहता पाछाँक पाँतिमे बैसल छलाह। मंच पर हुनकर भूमिका एक पातर, चश्मा लगौने बालक निभौने छल। बालकक संवाद कम छल; बेसीकाल ओ सुनैत रहल। दर्शक सभ जखन ओहि बालककेँ सराहलक, सत्यव्रतकेँ असहजता भेल। हुनका लागल जे सुनबाक अभिनय आसान अछि; असल सुननाइमे बरखक मौन, असफलता, अपराध आ पछतावा संग बैसैत अछि। ओ धीरे उठलाह, मंचक पाछाँ गेलाह आ ओहि बालकसँ कहलनि—‘तूँ जे केलह, से अभिनय छल। मुदा अभिनयकेँ अभ्यास बनाबह। सुनबाक कला मंच पर सीखल जाय, तखन जीवनमे ओकर दायित्व शुरू होइत अछि।’

बालक पूछलक—‘की हम गलत सुनलहुँ?’ सत्यव्रत कहलनि—‘नहि। मुदा जखन लोकक पीड़ा पर ताली बजैत अछि, तखन सुननिहारकेँ दोबारा सावधान होएबाक चाही। पीड़ा प्रशंसा लेल नहि, न्याय लेल बजैत अछि।’ बालक ई वाक्य अपन कापीमे लिखि लेलक। कापीक पन्ना पर ओ शब्द कने काँपैत छल, जेना स्याहीकेँ सेहो बुझाइत हो जे ई संवाद नाटकक बाहर चलत।

एहि बीच चन्द्रपाल बत्रा सभागारक बाहर ठाढ़ छल। ओकरा भीतर बैसबाक हिम्मत नहि भेल। ओ टिकट-खिड़कीक शीशामे अपन चेहरा देखैत रहल। नाटकमे ओकर चरित्र आंशिक रूपेँ आयल छल—स्मारक-अनुप्रयोग, प्रतिशत, बेनाम भीड़, श्रद्धांजलि सँ कमाइ। दर्शक ताली बजा रहल छल, मुदा ओकर कानमे ताली नहि, अपन पुरान खाताक सूचना-सन्देश बजैत रहल। अचानक ओकर मोबाइलमे कोनो संकेत बिनु एक वाक्य चमकल—‘तोहर नाम मंच पर नहि, लोकक घाटामे लिखल अछि।’ ओ फोन बन्द कऽ देलक, मुदा वाक्य ओकर हथेली पर छाप जेकाँ रहि गेल।

बटुकनाथ हरिहरन मंचन देखय नहि आयल छल, मुदा ओकर प्रतिनिधि आयल छल। प्रतिनिधि नोट करैत रहल जे नाटकक अधिकार कोना लेल जाए, स्क्रिप्ट कोना प्रकाशित हो, न्यासक नामेँ अगिला प्रस्तुति कोना नियन्त्रित हो। मुदा जखन दर्शक सभ मंच पर चढ़ि अपन नाम जोड़य लागल, प्रतिनिधिक नोटबुक असफल भऽ गेल। जे रचना प्रत्येक क्षण नब नाम माँगैत अछि, ओकर अधिकार एक मोहरसँ कोना बन्हाओल जाए? ओ नोटबुक बन्द कऽ बाहर निकलल, मुदा दरबाजा पर बूढ़बा भूतक छाह ओकर बाट रोकलक। आवाज आयल—‘कथा के कीनत? साँसक रसीद बनाओत?’ प्रतिनिधि भागि गेल।

ईरा नाट्य-लेखक सभक संग बैसल छली। कियो कहलक—‘ई स्क्रिप्ट छापल जाए।’ दोसर कहलक—‘प्रत्येक मंचनमे स्थानीय नाम जोड़बाक खुजल ठाम राखल जाए।’ तेसर, जे शहरक नामी रंगकर्मी छल, कहलक—‘तखन लेखकत्व छिड़िया जाएत।’ ईरा हँसली नहि; शान्त स्वरमे कहली—‘जे कथा जलसमाधि सँ आयल अछि, ओकर लेखकत्व नदीक जेकाँ होएत। नदीक किनार कतेको गामक होइत अछि; ताहिसँ नदी बँटाइत नहि, बहैत अछि।’

मीरा ई जोड़ली—‘मुदा खुजल ठामक अर्थ ई नहि जे कियो ककरो निजता तोड़त। जे नाम मंच पर आबय, तकर अनुमति, तकर घरक गरिमा, तकर दुखक माप—सभ पूछल जाए। नाटक जनक हो, मुदा देह आ स्मृतिक अधिकार व्यक्तिक हाथमे रहत।’ एहि वाक्य पर स्त्री सभक राति-सभाक स्वर फेर घुरि आयल। रंगकर्मी सभ पहिल बेर बुझलक जे लोकनाटक बनाबय सँ पहिने लोकक निजता सीखय पड़त।

राति बहुत आगाँ बढ़ि गेल। सभागार खाली होय लागल। मुदा मंच खाली नहि भेल। मंचक बीचमे कबड्डी खेलनिहार सभ गोल घेरा बनाकऽ बैसल। सभागार खाली भेला पर ओहि ठामक आवाज बदलि गेल छल—जे बात पहिने भीड़मे डूबि जाइत छल, से आब देबालसँ टकरा कऽ घुरि अबैत छल। ओ सभ निर्णय केलक जे अगिला मंचनमे ओ सभ केवल पुरनका अध्याय नहि खेलत; प्रत्येक ठामक लोकक नाम सुनि तकरा कथामे पिरोएत। नाटक स्थिर ग्रन्थ नहि, चलैत पहरा बनत। जकरा देखय लोक आओत, ओकरा बाजय सेहो पड़त। जे बाजि नहि सकत, ओकर मौन लेल आसन राखल जाएत।

अनन्या मंचक धूलि पर चूना सँ एक छोट चौकोर खिंचली। कहली—‘ई कबड्डीक रेखा नहि, मंचक प्रतिज्ञा अछि। जे एहि रेखा पार करत, ओ अभिनयक संग गवाहीक भारो उठाओत।’ सभ खेलनिहार एक-एक कऽ रेखा पार केलक। ककरो मुँहसँ ‘कबड्डी’ नहि निकलल; सभ ‘उपस्थित’ कहलक। ई पहिल बेर छल जखन कबड्डीक साँस नामक उत्तरमे बदलल।

बाहर रातिक आकाश खुजल छल। विदेह नाट्य उत्सवक पुरान झण्डा हवामे फड़फड़ाइत छल। ओहि झण्डा पर छपल बरख, क्रमांक, अंक, विज्ञापन—सभ चन्द्रमाक उजासमे धुँधला पड़ि गेल छल। केवल एक शब्द साफ देखाइत छल—‘विदेह’। बच्चा सभ ओकरा देखलक आ आपसमे कहलक—‘देह सँ परे नहि, देहक पार उतरि फेर देहक गरिमा धरि घुरब—ई विदेह होएत।’

सभागारक अन्तिम बत्ती बुझाओल गेल। तखन मंचक पाछाँ सँ एक हलुक स्वर उठल—कियो अभ्यास करैत छल कि भूतक छेड़? ‘कबड्डी-कबड्डी...’ स्वर धीरे-धीरे बदलि ‘कथा-कथा...’ बनि गेल। अनन्या पाछाँ मुड़ि देखली। मंच खाली छल। मुदा धूलि पर बहुत छोट पदचिन्ह बनल छल—न बच्चाक, न कलाकारक, न बूढ़क। शायद पुरनका मृतक सभ मंच देखय आयल छल, आ प्रस्तुति समाप्त भेला पर अपन अगिला भूमिका लिखि गेल छल।

भोर धरि मंचक धूलि पर एक नब पाँती देखाइ पड़ल—‘जतय नाटक समाप्त, ओतय गाम शुरू।’ एहि पाँतीकेँ कियो लिखैत नहि देखलक। ओ अक्षर धूलिमे एतेक हलुक बनल छल जे नीचाँ झुकि, आँखि टेढ़ कऽ देखला पर टा पूरा पढ़ल जाइत छल; सोझ ठाढ़ भेला पर ओ फेर धूलिये बुझाय लगैत छल। संचालक पूछलनि—‘एहि पाँतीकेँ स्क्रिप्टमे राखब?’ अनन्या कहली—‘नहि। ई स्क्रिप्टक पाछाँ रहत। जे पढ़त, ओ अगिला अंक लिखत।’

एहि तरहेँ विदेह नाट्य उत्सवक मंचन ताली पर समाप्त नहि भेल। ओ मंच सँ उतरि गामक गली, नदीक घाट, रसोइक चूल्हि, विद्यालयक फर्श, आ अदालतक बरामदा दिस चलि गेल। पुरनका एक सय बत्तीस अंक आब कथा नहि, बीआ भेल।

लोकगीत: ताली पाछाँक रोदन

लोकधुन: करुण समदाउन

दिअ हे पहरा, ताली नहि—पहरा दिअ हे,
नाटकक रोदनकेँ जीवनक सहारा दिअ हे।

ताली थमल, सभ चलि गेल, कुर्सी रहल उदास,
मंचक कोनमे कानैत रहल अनसुना विश्वास।
जखन नाटक खतम भेल, गाम शुरू भेल रे,
घर घुरैत दर्शकक छातीमे प्रश्न झुरल रे।

एक माय खाली आसन पर हाथ फेरैत रहली,
‘एतय हमर बौआ बैसत’—धीरे कहैत रहली।
फूल सभ सुखा गेल, मेकअप धुला गेल,
मुदा नामक रंग करेजासँ नहि निकलि गेल।

ताली नहि, अगिला दिनक पहरा दियौ,

नाटकक रोदनकेँ जीवनक सहारा दियौ।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—नव्यक मत: प्रतिबन्धकाभाव कारण नहि अछि: अन्यथा चक्रसँ संयुक्त दण्ड घूमैत रहला पर सहकारी कारणक अभावसँ कार्य नहि भेलाक कारण ओ दण्ड अपन कारणत्व गमा देत। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। नव्यक मत: प्रतिबन्धकाभाव कारण नहि अछि।]

अध्याय १३७

दर्शकक गवाही

दर्शक जखन गवाह बनि जाए, तखन परदा खसितो नाटक नहि रुकैत।

अध्यायारम्भ लोकगीत: दर्शक बनल गवाह

लोकधुन: जन-जागरण गीत

बनू हे गवाह, दर्शक सँ गवाह बनू हे,
देखल आँखि, बजाओल हाथ—दुनू सँ ऋण गनू हे।

जे आँखि देखलक, ओ आँखि आब नाम लिखत,
जे हाथ ताली देलक, से हाथ संग टिकत।
दर्शक दूर नहि रहत, समाजक अंग बनत,
मंचक कथा देहरी-देहरी जिम्मेदारी जनत।

कियो सुनत, कियो लिखत, कियो बाट बनाबय,
कियो पीड़ित हाथ पकड़ि न्याय-दुआर पहुँचाबय।
दर्शक बनल गवाह जखन कला सफल होय,
गीतक उजास जीवनक अन्हार भीतर सोय।

मंच सँ उतरल कथा देहरी-देहरी जाय,
कियो लिखय, कियो सुनय, कियो बाट बनाय।
पीड़ितक आँगुर थामि न्याय-दुआर धरि संग,
कला सफल तखने जखन जीवन मे भरय रंग।

❖

दर्शक जखन गवाह बनि जाए, तखन परदा खसितो नाटक नहि रुकैत। परदा खाली मंच झँपै छै; ओ ओहि कथा कैँ नै झाँपि सकै छै जे देखनिहारक भीतर उतरि चुकल छै।

भूमिका मे मनुक्ख दोसर बनि जाइ छै; नाम मे ओ अपना सँ भागि नै सकै छै। तें असल प्रश्न ई नै जे मंच पर के की बनल— असल प्रश्न ई जे कुरसी पर बैसल के छल।

छोट-छोट अपराध मिलि कऽ पैघ गोहि बनै छै। कियो जातिक नाम पर बिआह रोकलक, कियो चुप रहल, कियो 'मामला हमरा घरक नै' कहि हटि गेल— आ ओहि सभटा हटब सँ एक जबड़ा बनि गेलै।

जे गवाही देल गेलै, ओकर मालिक गवाह छिकै। मंच ओकर सेवक टा छिकै— आ ई बात मंच कैँ बेर-बेर मन पाड़य पड़ै छै।

तालीक बादक सन्नाटा बहुत देर धरि मंच पर नहि, सभाक भीतर अटकल रहल। विदेह नाट्य उत्सवक ओहि अंकमे, जतय कबड्डी खेलनिहार सभ अभिनय केलक, लोक पहिने खेल देखलक, फेर नाट्य-पाठ सुनलक, फेर मंचन देखलक; मुदा ताली बजलाक बाद ओकरा बुझाइत रहल जे ओ सभ किछु देखि कऽ खाली घर नहि जा सकैत। जे कथा मंच पर खेलाओल गेल छल, से मंच सँ उतरि लोकक कुर्सी, देह, जेबी, मोबाइल, दाढ़ी, आँचल, चश्मा आ मौनमे आबि बैसल छल।

प्रेक्षागृहक बत्ती जखन धीरे-धीरे जरल, लोकक चेहरा अजीब देखाइत छल। केओ आँखि पोंछैत छल, केओ मोबाइल खोलबाक हिम्मत नहि करैत छल, केओ अपन कातमे बैसल अपरिचित मनुखक हाथ अनजानेमे पकड़ने छल। सामान्य नाट्य-प्रयोगक बाद जे स्वर उठैत अछि—'बहुत नीक', 'अभिनय उत्कृष्ट', 'निर्देशन प्रभावी'—ओहि राति नहि उठल। जँ किछु उठल, तँ धीमा प्रश्न—'हमर नाम कतय अछि?'

मंचक पाछाँ कबड्डी खेलनिहार कलाकार सभ, जे थाकि गेल छल, अपन घुट्ठी पर हाथ राखि साँस लऽ रहल छल। ओ सभक देह पर पसीना छल, मुदा पसीनामे माटिक गन्ध छल। ओ सभ बुझि गेल छल जे अभिनयमे जकरा सभकेँ ओ सभ 'भूत', 'मजदूर', 'गोहि', 'नाव', 'ठूँठ', 'नाम-पहरा' बनि देखेलक, से सभ अलग-अलग भूमिका नहि रहल। खेलक साँस आ नाटकक शब्द एक दोसराक भीतर घुसि गेल छल।

अनन्या मंचक कोन पर बैसली। हुनकर सोझाँ रजिस्टर छल, मुदा आइ ओ खोलली नहि। ईरा पूछली, 'नाम लिखब?' अनन्या कहली, 'आइ पहिने देखब जे दर्शक स्वयं लिखय चाहैत अछि कि नहि।' ई बात साधारण बुझाइत छल, मुदा स्मृतिक पहरामे ई पैघ बदलाव छल। एखन धरि बच्चा सभ नाम बचा रहल छल; आब देखबाक छल जे पैघ लोक अपना हाथेँ नाम लिखबाक लाज सहि पाओत कि नहि।

प्रेक्षागृहक पहिल पाँतिसँ एक वृद्ध उठलाह। ओ हिचकिचाइत मंच दिस एलाह, मुदा मंच पर नहि चढ़लाह। नीचाँ ठाढ़ भऽ कहलनि, 'हम पुलक काजमे मुंशी छलहुँ। हमरा मजदूर सभक असली गिनती बुझल छल। फाइलमे जे संख्या गेल, से कम छल। हम चुप रहलहुँ।' सभाक भीतर हलचल भेल। वृद्ध अपन जेबी सँ कागच निकाललनि। कागच पीयर पड़ि गेल छल, आ ओकर मोड़क ठाम कागच एतेक पातर भऽ चुकल छल जे खोलैत काल ओ फाटि जायत—ई

डर हाथेमे बुझाइत छल। ओ कहलनि, ‘ई सूची हमरा लग बाँचल छल। हम डर सँ एतेक दिन नुकौने रहलहुँ।’

ताली नहि बजल। कोनो जयकार नहि। केवल मंचक एक कबड्डी-खेलनिहार नीचाँ उतरि वृद्धक हाथ सँ कागच लेलक आ ओकरा माथ लगौलक। जेना सूची नहि, अस्थि हो। अनन्या रजिस्टर खोलि देली। पहिल पाँतिमे लिखल गेल—‘दर्शकक पहिल गवाही: चुप मुंशी।’ वृद्धक नामक पाछाँ बच्चा सभ कोष्ठकमे लिखलक—‘अपराध स्वीकारल, नाम घुराओल।’

दोसर पाँति सँ एक स्त्री उठली। ओ कहली, ‘हम अस्पतालमे दवाइ बाँटैत छलहुँ। कोविडक समय जे दवाइ गरीबकेँ निःशुल्क भेटबाक छल, ओकर किछु पेटी हम सभकेँ निजी दुकानदारक नाम पर चढ़ाबय कहल गेल। हम विरोध नहि केलहुँ। हमर बेटा ताहि रोगमे गेल। एखन बुझैत छी—दवाइ पर लाभ लिखब, मृत्यु पर नून छिड़कब होइत अछि।’ ओ अपन गला सँ एक छोट चाभी खोलि अनन्याक हाथमे देली। ‘ई भण्डार-कक्षक पुरान चाभी अछि। चाभी खतम, मुदा अपराधक कुण्डी एखन खुजय चाही।’

तेसर गवाही एक युवकक छल, जे नाटकक बीच-बीचमे विडियो बना रहल छल। ओ मंच लग आबि अपन मोबाइल बन्द कऽ देलक। कहलक, ‘हम ऑनलाइन ठगीक गिरोहमे सोझे नहि, मुदा विज्ञापन बनबैत छलहुँ। जे बूढ़ लोकक आँखिमे डर भरि, हुनका खातासँ धन निकालैत छल, ओकर शब्द हम लिखैत छलहुँ। हमरा लगैत छल—ई केवल भाषा अछि। आइ बुझलहुँ—भाषाक सेहो दाँत होइत अछि।’ मीरा ओकरा देखि कहली, ‘भाषाक दाँत होइत अछि, मुदा जँ ओ दाँत सत्य चिबाबय लागय तँ दण्ड सेहो होइत अछि।’ युवक चुपचाप बैसि गेल।

एना एक-एक कऽ दर्शक उठय लागल। कियो कहलक जे ओ जातिक नाम पर बिआह रोकलक। कियो कहलक जे गंगेशक कथा सुनि कऽ सेहो अपन घरमे चर्मकार कन्याकेँ दलान पर बैसय नहि देलक। कियो कहलक जे बेटी पर लागल झूठा कलंकमे चुप रहल। कियो कहलक जे बार काउन्सिलक दलाली देखलक, मुदा ‘मामला हमरा घरक नहि’ कहि हटि गेल। एहि सभ गवाहीमे पैघ-पैघ नारा नहि छल; सभटा छोट अपराध छल, मुदा छोट अपराध सभ मिलि कऽ पैघ गोहि बनैत अछि—ई बात ओहि राति सभ बुझि रहल छल।

बटुकनाथ हरिहरन सेहो सभामे छल। ओकरा निमन्त्रण नहि पठाओल गेल छल, मुदा ओ आयल छल—देखबाक लेल जे नाटक ओकरा कोना चित्रित करैत अछि। आरम्भमे ओ दर्शक-दीर्घाक पाछाँ बैसल छल, कानूनी मुस्कान लगौने। मुदा एक-एक गवाही उठैत गेल, आ ओकर

मुस्कान चूना जेकाँ झड़ैत गेल। जखन एक युवक कहलक—‘हम हुनका नाम पर केस नमहर करबाक फार्मूला सीखलहुँ’—तखन बटुकनाथ अपन सीटमे धँसि गेल। ओकरा बुझाइत छल, मंच पर नाटक समाप्त भऽ गेल, मुदा असली नाटक दर्शकक कुर्सीमे शुरू भेल अछि।

सत्यव्रत मेहता मंचक दहिन कोनमे साधारण कुर्सी पर बैसल रहथि। आयोजक सभ चाहैत छल जे ओ मुख्य-अतिथि स्वरूप दू वाक्य बाजथि। मुदा ओ अपन कुर्सी सँ नहि उठलाह। ओ रजिस्टरक प्रत्येक पाँती सुनैत रहलाह। कखनो-कखनो हुनकर आँखि ओहि ठाम ठहरैत जतय ‘हम चुप रहलहुँ’ लिखल जाइत। ओहि वाक्यक भार हुनका निज जीवन सँ परिचित छल। ओ बुझैत छलाह जे गवाहीक असली शुरुआत तखन होइत अछि जखन मनुष्य अपन चुप्पीक नाम लिखय।

कबड्डी खेलनिहार कलाकार सभ, जे पहिने मंच पर मृतक सभक साँस खेलल छल, आब दर्शकक गवाहीक पहरा दैत ठाढ़ भेल। जँ कियो हास्य करय चाहैत, ओ सभ ओकरा चुप संकेत दैत। जँ कियो कानैत-कानैत शब्द बिसरि जाइत, ओ सभ ‘कबड्डी’क धीमा स्वरमे ओकर साँस सम्हारैत। ई अजीब दृश्य छल—खेलाड़ी सभ अभिनय सँ उतरि साक्षीक सेवक बनि गेल। ओ सभ मंचक भेष एखनहुँ उतारने नहि छल, आ ओहि भेषमे गवाही सुनैत ओ सभ न पूरा पात्र लगैत छल, न पूरा अपने।

ईरा एहि सभक बीच एक बात नोट केली। दर्शकक गवाहीमे अपराध आ पीड़ा एक दोसरासँ अलग नहि रहैत। जे अपराधी कहैत, ओकर भीतर कखनो पीड़ित बच्चा बाजि उठैत। जे पीड़ित कहैत, ओकर वाक्यमे कखनो अपन चुप्पीक अपराध झलकैत। एहि मिश्रणसँ सरल नैतिकता टूटैत छल। गढ़ नारिकेलक न्याय-कठिनता एहए छल—कोनो मनुष्य केवल एक नाम नहि। मुदा नामक पहरा ताहीमे आवश्यक छल, कारण बेनाम रहितहि ओ पुनः झूठ बनि जाइत।

विदेह नाट्य उत्सवक पुरनका एक सय बत्तीस अंकक चर्चा फेर उठल। एक प्रौढ़ साहित्य-सेवी कहलनि, ‘हम बरखों नाटक देखलहुँ—राजा, किसान, क्रान्ति, प्रेम, ईश्वर, विद्रोह। मुदा आइ बुझलहुँ जे दर्शक जँ गवाही नहि दिअय, तँ नाटक आधा रहि जाइत अछि।’ ओ घोषणा नहि, स्वीकार करैत छलाह। हुनकर कातमे बैसल बालक पूछलक, ‘तखन अगिला अंकमे दर्शक सेहो भूमिका करत?’ साहित्य-सेवी उत्तर देबासँ पहिने अनन्या बाजि उठली, ‘भूमिका नहि—अपन नाम।’

एहि वाक्य पर प्रेक्षागृहमे फेर सन्नाटा उतरि आयल। ‘अपन नाम’—ई दू शब्द मंचक सभ पर्दा खोलि दैत छल। भूमिकामे मनुष्य दोसर बनैत अछि; नाममे ओ अपना सँ भागि नहि सकैत।

बच्चा सभक निर्णय भेल जे अगिला अंकमे नाटकक लिखित पाठमे दर्शकक गवाही जोड़ल जाएत। मंचनक पाठ स्थिर नहि रहत; जे गवाही ओहि राति आयल, से अगिला प्रदर्शनमे अपन ठाम माँगत।

मुदा एहि निर्णय पर खतरा सेहो छल। चन्द्रपालक लोकक कान ठाढ़ भेल। ‘दर्शक-गवाही’क आँकड़ा बिकि सकैत छल। राघवक पुरान जालमे ‘भावनात्मक सहभागिता’क सूत्र बनि सकैत छल। ब्रूमक संस्था एकरा ‘कम्युनिटी हीलिंग मॉडल’ कहि अनुदान-पत्रमे लिखि सकैत छल। मीरा ताहि क्षण सावधान केली—‘जे गवाही देल गेल, ओकर मालिक गवाह अछि। मंच ओकर सेवक मात्र।’ बच्चा सभ रजिस्टरक अगिला पन्ना पर ई वाक्य लिखि लेलक।

राति बीतैत-बीतैत प्रेक्षागृह बाहर मेला नहि, अदालत नहि, पाठशाला नहि—तीनूक संगम बनि गेल। चाह उबलैत छल, लोक पाँतिमे ठाढ़ होइत, अपन नाम नहि, अपन मौनक नाम लिखबैत। भोरक ओस पड़ि रहल छल आ काँचक गिलास हाथमे लेला पर पहिने बहुत गरम बुझाइत, फेर तुरन्त ठंढा—आ ओहि दुनूक बीच लोक अपन बात कहि दैत छल। कियो कहैत—‘भय’; कियो—‘लोभ’; कियो—‘जाति’; कियो—‘लाज’; कियो—‘वेतन’; कियो—‘परिवारक डर’। बच्चा सभ कहैत—‘ई सभ कारण नहि, नाम अछि। कारणक पाछाँ नुकाउ नहि।’

मध्यरातिक बाद कटल चन्ना गाछीक ठूँठ पर, जे उत्सव-स्थलक प्रतीक स्वरूप मंच पर आनल गेल छोट जड़िक प्रतिरूप लग राखल छल, ओहि पर हलुक हरियर रेखा चमकल। कियो कहलक—इजोतक खेल। मुदा कबड्डी खेलनिहार सभ तुरन्त उठि ठाढ़ भेल। ओ सभ ‘कबड्डी’ नहि, ‘उपस्थित’ उच्चारलक। प्रेक्षागृहक प्रत्येक कोन सँ उत्तर आयल—‘उपस्थित।’

ओहि उत्तरमे मृतक, जीवित, अपराधी, पीड़ित, अभिनेता, दर्शक, बच्चा, बूढ़, स्त्री, परदेसिया, गोहि, गज, ग्राह—सभक साँस एक क्षण लेल एकहि वृत्तमे आबि गेल। ई नाटकक विजय नहि छल; ई कथा द्वारा मंचकेँ निगलि लेबाक क्षण छल।

भोर दिस जखन लोक बाहर निकलल, तखन उत्सवक फाटक पर नब सूचना चिपकल भेटल। ओ सरकारी नहि छल, बच्चा सभक हाथेँ लिखल छल—‘अगिला अंकमे दर्शकक गवाही नाट्य-पाठमे जोड़ल जाएत। जे नाम बाजल गेल, ओकर अनुमति बिनु ओकर प्रदर्शन नहि होएत। जे मौन लिखल गेल, ओकरा कण्ठ देबाक हड़बड़ी नहि कएल जाएत।’ नीचाँ छोट अक्षरमे लिखल छल—‘कबड्डी जारी अछि।’

एहि छोट सूचना पर पहिल बेर लोक ताली नहि बजौलक। सभ अपन-अपन हाथ देखलक—एहि हाथसँ ताली बजैत अछि, हस्ताक्षर सेहो होइत अछि, अपराध सेहो, गवाही सेहो। आ ओहि क्षण अध्याय अपन दुआर अगिला कथा दिस खोलि देलक, जतय नाटकक लिखित पाठमे दर्शकक गवाही प्रवेश करबाक छल, आ कथा मंचसँ उठि जन-लेखन बनबाक छल।

लोकगीत: दर्शकक हाथ

लोकधुन: जागरण गीत

उठबै हे हाथ, तमाशा लेल नहि उठबै हे,
जकर स्वर काँपै, ओकर कात ठाढ़ रहै हे।

जे हाथ ताली बजौलक, ओही हाथ लिखत गवाही,
जे आँखि नाटक देखलक, ओ नहि रहत बेपरवाही।
चुप लोकक कण्ठ हड़बड़ीमे खोलबो हिंसा,
मौन लग बैसू, पूछू—कखन चाही भाषा।

नाम लेबासँ पहिने सम्मतिक दीप जराउ,
घाव देखबासँ पहिने आँचरक परदा बचाउ।
दर्शक आब भीड़ नहि, पहरुआ बनि गेल,
कबड्डीक रेखा मंचसँ गाम धरि चलि गेल।

हम हाथ उठबैत छी—तमाशा लेल नहि,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—फेर एना प्रतिआपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—जखन: अत: धान आ जौ जकाँ, जे यज्ञमे वैकल्पिक साधन होइत अछि, ज्ञान आ कर्मो मोक्षक वैकल्पिक कारण मानल जाए। फेर एना प्रतिआपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—जखन विशिष्ट कर्म सभ अननुगत अछि, तखन मोक्ष अनुगत कोना होइत अछि?।]

अध्याय १३८

मंचसँ बाहरक जुलूस

जुलूस जे मंचसँ बाहर निकलल, तकरा कोनो सभागार फेर भीतर नहि घुरा सकल।

अध्यायारम्भ लोकगीत: जुलूस बनल गीत

लोकधुन: बटगबनीक उत्सवी चाल

चलू हे जुलूस, गीत बनल जुलूस चलू हे,
क्रोध नहि, आशाक फूल हाथ मे धरू हे।

मंचसँ कथा उतरि चलल धूरि भरल बाट,
ढोल, पात, कण्ठ संग बनल जनक बारात।
जुलूस नहि क्रोध मात्र, आशाक चलैत घर,
प्रत्येक मोड़ पर एक नव साथी, एक नव स्वर।

बाट-बटोहिया गीत गाउ, प्रश्न हाथमे फूल,
शान्त पगसँ बदलि सकै अन्यायक कठोर मूल।
जुलूस बनल गीत जखन शहर-गाम जुड़त,
संगक लयपर सत्यक नब इतिहास मुड़त।

ढोल आगाँ, पात-पताका, कण्ठ-कण्ठ तान,
प्रत्येक मोड़ पर जुड़ल एक नव साथीक गान।
शान्त डेगक ताल सँ कठोर जड़ि हिलय,
शहर-गाम एक बाट पर आबि गला मिलय।

❖

अदालत जँ नाटक बनि जाइ छै तँ न्याय मरै छै; नाटक जँ अदालत बनि जाइ छै तँ स्मृति बजै छै। दुनू मे फरक ई जे पहिलका मे सत्य केँ अभिनय कहल जाइ छै, आ दोसरका मे अभिनय केँ सत्यक सेवक।

भीड़ केँ नियन्त्रित कयल जा सकै छै, गवाही केँ नै। भीड़ मंचक सोझाँ रहै छै; गवाही मंच सँ बाहर निकलि लोकक घर मे बसि जाइ छै।

जतबा छापब, ततबा छूटतै। मुदा जे छूटतै, तकरा स्वीकार कऽ छापय पड़तै— नै तँ छपल पन्ना अपने एक नब चुप्पी बनि जेतै।

तालीक बादक सन्नाटा दर्शकक गवाहीमे बदलल, आ गवाहीक बाद सभागारक दुआर छोट पड़ि गेल। मंच पर राखल बाँस, माटि, पाथर, नकली ठूँठ, जलक कटोरा, आ कबड्डी खेलनिहार सभक पसीना एखनहुँ ओहि ठाम छल, मुदा कथा ओतय नहि रहल। कथा जेकाँ पनिडुब्बी पानि तर सँ निकलि अपन प्रतिबिम्ब छोड़ैत अछि, तहिना नाटक सभागारसँ निकलि प्रत्येक दर्शकक कान्ह पर बैसि गेल।

विदेह नाट्य उत्सवक ओ राति पुरनका एक सय बत्तीस अंकक स्मृतिक छाँहमे भेल छल। जे अंक कखनो पत्रिका छल, जे पृष्ठ कखनो मंचक बहस छल, जे नाटक कखनो छपल-पढ़ल गेल छल, से सभ एखन जीवित देह पाबि गेल छल। कबड्डी खेलनिहार युवक सभ, जे पहिने माटिमे साँस रोकि खेलैत छल, आब संवाद रोकि-रोकि सुनैत छल। अभिनय ओकरा सभ लेल पेशा नहि रहल; अभिनय नामक पहराक दोसर विधि बनि गेल।

जखन लोक बाहर निकलल तखन सभागारक सीढ़ी पर भीड़ ठाढ़ रहि गेल। केओ अपन जूता तकैत छल, केओ अपन चेहरा। केओ अपन मोबाइल खोलि फोटो देखय चाहैत छल, फेर बन्द कऽ दैत। केओ कहैत—‘ई नाटक छल कि अदालत?’ दोसर उत्तर दैत—‘अदालत जँ नाटक बनि जाए तँ न्याय मरैत अछि; नाटक जँ अदालत बनि जाए तँ स्मृति बजैत अछि।’ एहि वाक्यक लेखक कियो नहि छल, मुदा राति भरि अनेक मुँहमे घूमैत रहल।

पहिल गवाही सभागारक बाहर चाह-दुकान पर भेल। चाहबला, जे भीतर टिकट कटा कऽ नहि गेल छल, लोकक मुँह देखितहि बुझि गेल जे कार्यक्रम समाप्त भेल मुदा घटना नहि। ओ पूछलक—‘एतेक चुप्पी किएक?’ एक महिला कप पकड़ैत-काँपैत कहली—‘हमर भाइयो कोनो अभिलेखमे नहि अछि।’ चाहबला ओहि दिन पहिल बेर उधार-पुस्तकक पृष्ठ फाड़ि ओकर नाम लिखलक। ओकर चाह-दुकान, अनजाने, विदेह नाट्य उत्सवक पहिल बाहरी उपमंच बनि गेल। उधार-पुस्तकक ओ पन्ना बरखक धूँआ सँ पीयर पड़ि चुकल छल, आ ओहि पर नब स्याही एतेक कारी बुझाइत छल जे दूरसँ टा ओ नाम अलग देखाइ दैत।

दोसर गवाही बस-अड्डा पर भेल। रातिक अन्तिम बस छूटबाक प्रतीक्षामे किछु लोक बैसल छल। मंच पर अभिनय केनिहार एक युवक एखनहुँ आँखि पर भूतक चूना लगा रखने छल; पसीना आ नोर सँ चूना धार बनि गाल पर उतरि रहल छल। ओकर कातमे बैसल बुजुर्ग पूछलनि—‘बाबू, ई रंग धोयब नहि?’ युवक कहलक—‘जाबत धरि हमर बाबूक नाम पूरा नहि लिखाइत, ई रंग धुलत नहि।’ बस-अड्डाक अन्हारमे ई उत्तर सुनि दू गोट यात्री चुपचाप अपन गामक गुमायल नाम बताबय लागल।

तेसर गवाही नाट्य-मण्डपक पछिला दरबाजा लग भेल, जतय कलाकार सभ कपड़ा बदलैत छल। जकरा सभकेँ मंच पर गोहि, भूत, पनिडुब्बी, डाइन, मजदूर, न्यायाधीश, दलाल, आ बच्चा बनबाक भूमिका देल गेल छल, से सभ भूमिकासँ बाहर आबि अपन असली नाम बाजय लागल। मुदा अद्भुत ई भेल जे कतेक असली नाम भूमिकासँ अलग नहि पड़ैत छल। जे मजदूर बनल छल, ओकर दादा सचमुच पुलमे गुमायल छलाह। जे डाइन बनल छली, हुनकर नानी विधवा कहि अलग कएल गेल छली। जे न्यायाधीश बनल छल, ओकर घरमे मुकदमा तीन पीढ़ीसँ चलैत छल।

नाटकक सूत्रधार पाण्डुलिपि समेटि रहल छल। ओ पन्ना गनलक—सभ पन्ना सही छल, मुदा पाण्डुलिपि भारी भऽ गेल छल। जे संवाद साँझमे हलुक छल, रातिमे ओकर वजन बढ़ि गेल। ओ पन्ना पलटलक—किछु ठाम दर्शकक कहब बिनु स्याहीक लिखाइ जेकाँ उभरि आयल छल। एक पृष्ठ पर लिखल छल—‘जाहि कथाकेँ दर्शक भीतर लऽ जाए, ओकर लेखक बदलि जाइत अछि।’ सूत्रधार पन्ना बन्द केलक, मुदा वाक्य ओकर हथेलीमे रहि गेल।

अनन्या आ बच्चा सभ सीढ़ीक नीचाँ बैसल रजिस्टर खोलने छल। दर्शकक गवाहीक लेल अलग पृष्ठ बनल। पहिल खाना—नाम। दोसर—ककरा लेल उपस्थित? तेसर—ई कथा अहाँ संग कतय जाएत? लोक एहि तेसर प्रश्न पर अटकैत। कियो कहैत—‘घर।’ कियो —‘अदालत।’ कियो—‘विद्यालय।’ एक युवक लिखलक—‘जहिया मोबाइल फेर हमरे ऊपर झूठ लादत, ओहि दिन।’ एक बूढ़ी लिखली—‘जतय हमर पोती अपन जाति पूछला पर चुप भऽ जाइत अछि।’

मीरा एहि पृष्ठक रक्षा करैत छली। ओ कहैत—‘जे गवाही निजी अछि, से मंचक बाहर नहि जाएत।’ विदेह नाट्य उत्सवक व्यवस्थापक सभ पहिने चाहैत छलाह जे एहि रातिक कथा अगिला अंकमे छपि जाए; मुदा मीरा कहली—‘छपाइ सँ पहिने अनुमति। नामक पहरा कण्ठसँ शुरू भेल, मुदा पृष्ठ पर पहुँचि कऽ ओकर मर्यादा बदलि नहि जाए।’ एहि बात पर किछु सम्पादक असहज भेलाह, मुदा बच्चा सभ ताली नहि, मौन सहमति देलक।

देविका देखली जे किछु लोक नाटकक अंश काटि-काटि लघु-दृश्य बनाबय चाहैत अछि। ओ रोकली नहि, मुदा एक नियम लिखि देली—‘दुखक टुकड़ा बेचू नहि; पूरा सन्दर्भ सुनू।’ चन्द्रपालक पुरान श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग फेर सक्रिय होएबाक कोशिश करैत छल। स्क्रीन पर ‘भावुक दृश्य’ शीर्षक चमकल, मुदा जखन ओ अपलोड करय चाहलक, दृश्यक ठाम नामक

संविधानक पाँती आबि गेल—'नाम नहि बिकत।' अनुप्रयोग किछु क्षण अटकैत रहल, फेर स्वतः बन्द भऽ गेल।

राघव सिग्नल दूर कोनो शहरमे ई सभ देखैत छल। ओकरा बुझाइत छल जे मंचन लोकक भावना उभारि थाकि जाएत; मुदा ओकर गुप्त सन्देश-चक्रमे राति भरि केवल एक शब्द घूमैत रहल—'उपस्थित।' से शब्द ओ मेटाबय चाहलक, कोड बदललक, समूह तोड़लक, नब नामसँ सन्देश खोललक, मुदा 'उपस्थित' प्रत्येक ठाम धुन जेकाँ घुरैत। मंचसँ बाहरक कथा डिजिटल अन्हारमे सेहो पग धरि चुकल छल।

बटुकनाथ हरिहरनक लोक-स्मृति न्यासक दफ्तरमे सेहो ओहि राति हलचल भेल। हुनकर सचिव खबरि लऽ कऽ आयल—'नाटक सफल भऽ गेल।' बटुकनाथ पूछलनि—'भीड़ कतबा?' सचिव कहलक—'भीड़सँ बढ़ि, लोक गवाही दऽ रहल अछि।' ई सुनितहि बटुकनाथक चेहरा बिगड़ल। भीड़केँ नियन्त्रित कएल जा सकैत अछि, गवाहीकेँ नहि। भीड़ मंचक सोझाँ रहैत अछि; गवाही मंचसँ बाहर निकलि लोकक घरमे बसि जाइत अछि।

सत्यव्रत मेहता सभागारक पाछाँक कोनमे देर धरि बैसल रहलाह। हुनका कोनो भाषण देबाक अनुरोध नहि कएल गेल। ई हुनका लेल दण्ड सेहो छल, मुक्ति सेहो। जखन सभ उठि गेल, ओ मंचक खाली ठाम पर गेलाह। ओतय एक पाथर रहल, अभिनयमे उपयोग कएल गेल, मुदा पाथर पर पसीनाक दाग असली छल। सत्यव्रत ओहि पाथर पर हाथ राखि धीरे कहलनि —'गवाहीक अधिकार अदालतसँ पुरान अछि।' ककरो सुनाइ नहि पड़ल, मुदा पाथर गरम भऽ उठल।

राति ढलैत-ढलैत नाटकक कपड़ा, मुखौटा, बाँस, आ पाथर सभ समेटल जाय लागल। मुदा कबड्डी खेलनिहार युवक सभ अपन भूमिकाबला रेखा नहि मेटाबय चाहलक। मंचक माटि पर खिंचल मध्य-रेखा रहि गेल। एक खेलनिहार कहलक—'काल्हि भोरमे एहि रेखा पर खेलब।' दोसर कहलक—'मंच पर?' पहिल उत्तर देलक—'नहि, बाहर। मंच आब छोट पड़ि गेल।'

भोरक पहिल उजासमे ओ सभ सचमुच सभागारक सोझाँ कबड्डी खेलय लागल। दर्शक नहि छल, मुदा पथिक रुकि गेल। दूध लऽ जाइत लोक, अखबार बाँटैत बालक, विद्यालयक शिक्षिका, बसक परिचालक—सभ किछु क्षण लेल ठाढ़। खेलाड़ी 'कबड्डी-कबड्डी' कहैत दौड़ल, मुदा एहि बेर ओकर साँस धरतीसँ उठि मंचक पाछाँ, चाह-दुकान, बस-अड्डा, रजिस्टर,

पाथर, आ कटल चन्ना गाछी धरि पहुँचैत छल। सड़कक माटि मंचक माटि सँ कड़ा छल—पएर पड़ितहि ओ धूलि नहि उठबैत छल, खाली एक सूखल थपथपी करैत छल।

एहि खेलमे कोनो विजेता नहि घोषित भेल। कबड्डी खेलनिहार सभ जखन थाकि गेल, अनन्या मध्य-रेखाक माटि उठौली आ रजिस्टरक पृष्ठ बीचमे राखि देली। ओ माटि पन्ना पर पड़ितहि पसरल नहि—ओ ओहिना गोल ढेरी बनल रहल, आ पन्ना बन्द करैत काल ओकर एक पातर रेखा दुनू पृष्ठ पर छपि गेल। ओ लिखली—‘नाटक बाहर आयल। मंच आब गामक देहमे पसरल।’ ई वाक्य पढ़ि बूढ़बा भूतक झिलमिल छाह देबाल पर देखाइ देलक। ओ एहि बेर हँसलाह नहि; ओ माथ झुकौलनि, जेना अभिनयक बाद जीवित सभकेँ कलाकार मानि लेलनि।

विदेह नाट्य उत्सवक अगिला अंक लेल प्रश्न उठल—की छापल जाए? पाण्डुलिपि? दर्शकक गवाही? बच्चा सभक नियम? कि सभागारक बाहर खेलल कबड्डीक वृत्तान्त? ईरा कहली—‘जतबा छापब, ततबा छूटत। मुदा जे छूटत, तकरा स्वीकार कऽ छापू।’ सम्पादक सभक आँखि नीचाँ गेल। साहित्य पहिल बेर अपन अधूरापनक शपथ लेबय जा रहल छल।

तहिये पाछाँ सँ एक डाकिया आयल। ओ साधारण लिफाफा लऽ कऽ आयल छल, मुदा लिफाफाक किनार पर दूरदेशी टिकट चिपकल छल। पत्र विदेशसँ आयल छल—ओहि बच्चा सभक जे ईराक पत्र पढ़ि गढ़ नारिकेलकेँ केवल मूल-गाम नहि, उत्तरदायित्व मानय लागल छल। पत्रक भीतर एक पाँती छल—‘हम सभ सेहो नाटक खेलब, मुदा पहिने नाम सुनब।’

अनन्या पत्र पढ़ि चुप भऽ गेली। मंचसँ बाहरक जुलूस आब समुन्दर पार निकलबाक संकेत दैत छल। कबड्डीक रेखा जे चन्ना गाछीसँ उठि सभागार धरि आयल, से आब पन्ना, पत्र, परदेशी कण्ठ, आ शायद फेर आकाश धरि जाएत। अध्याय एतय ठहरल नहि; ओ लिफाफाक नील टिकट पर चमकैत एक सूक्ष्म ग्रह-रेखा दिस खुजि गेल।

लोकगीत: मंचसँ निकलल जुलूस

लोकधुन: बटगबनी

चलल हे कथा, मंच छोड़ि बाटे चलल हे,
‘जे अनसुना रहल, ओकरा दियौ दरबार’ कहल हे।

मंच छोड़ि कथा चलल धूरि भरल बाट,
ढोल नहि, नामक स्वर, नेनाक संग-साथ।
परदेसक नेना लिखलक—पहिने नाम सुनब,
तखन खेल रचाएब, घावक मान चुनब।

माय खिड़की खोलि अपन बौआकेँ देखली,
जुलूसमे मृतकक छाह संग-संग लेखली।
कियो नारा नहि, धीम समवेत पुकार,
'जे अनसुना रहल, ओकरा दियौ दरबार।'

बाट नमहर हो, पएरमे छाला पड़य,
मंचक सत्य घर-घरक देहरी चढ़य।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—उपमानक स्वरूप तात्पर्य मात्र नहि: उपमानमे 'गवय' शब्दक संकेत ज्ञात करयवला एहन प्रत्यक्ष वक्तृतात्पर्य उपलब्ध नहि; अन्यथा उपमानक सिद्धि आ तात्पर्यज्ञान परस्पर-आश्रित भऽ जाएत। उपमानक स्वरूप तात्पर्य मात्र नहि।]

अध्याय १३९

बाटक रंगमंच

बाटपर उतरल कथाक ने मंच होइ छै ने टिकट— खाली सुनैवला कान चाही।

अध्यायारम्भ लोकगीत: बाटे रंगमंच, लोक कलाकार

लोकधुन: सलहेस लोकगाथा

गाबू हे गाथा, सलहेसक गाथा गाबू हे,
बाटे-बाट रंगमंच, सभकेँ नचाबू हे।

ने टिकट, ने पर्दा चाही, बाटे रंगमंच बनय,
हलवाहा, नेना, दाइ सभ कलाकार बनय।
सलहेसक वीर कथा जकाँ जनक साहस गाउ,
अन्यायक जंगल बीच न्याय-पथ बनाउ।

प्रत्येक चौक पर एक दृश्य, प्रत्येक देहरी संवाद,
कला आ जीवन मिलि देत परिवर्तनक स्वाद।
बाटे रंगमंच जखन लोक अपन भूमिका पाबय,
मिथिलाक माटि स्वयं नब महागाथा गाबय।

हलवाहा वीर बनल, दाइ बनली रानी,
चौक-चौक दृश्य सजल, देहरी-देहरी बानी।
ने टिकट, ने परदा—जन-जन भेल पात्र,
माटिक मंच पर लिखाय नव महागाथा-शास्त्र।

❖

मंच पर इजोत ऊपर सँ पड़ै छै। बाट पर इजोत ओतबे रहै छै जतबा दिन दै छै— आ ओहि बराबरीक इजोत मे कियो पैघ, कियो छोट नै लगै छै।

जे नाम पढ़ैए, से भड़काबय नै जाइए। मुदा नामक स्वर जँ रोकल जेतै, तँ ओ आगि बनि सकै छै— आ ई बात सत्ता सभसँ नीक जानै छै।

समाज जखन बिनु केन्द्रक बजैए, तखन षड्यन्त्रक नक्शा धुँधला पड़ि जाइ छै। कोनो मालिक नै, कोनो एक नेता नै, कोनो खाता नै— तँ सन्देश ककरा पठाओल जाय?

विदेह नाट्य उत्सवक सभागारसँ जुलूस बाहर निकलि चुकल छल, मुदा जुलूसक पएर सभागारक सीढ़ी पर रुकल नहि। तालीक बादक सन्नाटा, दर्शकक गवाही, आ मंचसँ बाहरक

पैदल यात्रा—ई तीनू मिलि आब एहन स्वर बनि गेल छल जकरा कोनो पर्दा फेर भीतर नहि समेटि सकैत छल। जे कथा पहिने चन्ना गाछीक अन्हारमे सुनल गेल, फेर ठूँठक चारू कात लिखल गेल, फेर नाट्य-मंच पर साँस बनल, से आब बाट पर उतरि गेल।

बाट पर उतरितहि कथा बदलि गेल। मंच पर अभिनेता सभ निर्धारित ठाम पर ठाढ़ रहैत छल, दर्शक सभ कुर्सी पर बैसैत छल, इजोत ऊपर सँ पड़ैत छल। बाट पर ककरो ठाम निश्चित नहि। जे दूध लऽ कऽ जा रहल छल, से एक क्षण लेल दर्शक बनि गेल। जे तरकारी तौलि रहल छल, से संवाद सुनि तराजू रोकि देलक। जे रिक्शा खिंचैत छल, से साँस रोकि ‘कबड्डी’क ताल पकड़लक। जे पुलिस चौकीक पाछाँ बीड़ी पीबैत छल, से पहिने हँसल, फेर चुप भऽ गेल।

कबड्डी खेलनिहार सभ आब नाटकक अभिनेता मात्र नहि रहल। ओ सभ बाटक माप लेबय लागल—कतेक साँसमे चौक पार होइत अछि, कतेक साँसमे पुलिया, कतेक साँसमे दवाइ-दुकानक सोझाँ ठाढ़ भीड़, कतेक साँसमे अदालतक पुरान बरामदा। प्रत्येक ठाम ओ सभ चूना सँ नहि, पएरक धूलि सँ रेखा बनबैत। ओ रेखा बनितहि मेटय लगैत छल—हवा आ अगिला पएरक बीच ओकरा टिकबाक बहुत थोड़ समय भेटैत छल। जे रेखा बनय, ओकर नाम पड़ैत—‘प्रवेशक सीमा’; जे रेखा लाँघि जाए, ओकरा नाम देबय पड़ैत।

पहिल अभिनय हाट लग भेल। एक खेलाड़ी ‘भूत’ बनल नहि, एकदम साधारण युवक बनि ठाढ़ भेल। दोसर ‘गोहि’ बनल नहि, केवल खाली कटोरा हाथमे लेलक। तेसर बच्चा ठूँठक पाथर उठौने घूमैत रहल। ओ सभ बाजल नहि। केवल एकजना धीरे-धीरे साँस भरि कहलक —‘उपस्थित’। हाटमे माछ काटैत छूरी अटकि गेल। मरिचाइ बेचैत बुढ़िया अपन टोकरी पर हाथ राखि उत्तर देली—‘उपस्थित’। अभिनय आरम्भ भेलासँ पहिने हाट स्वयं रंगमंच बनि गेल।

दोसर दिन बस-अड्डा पर दृश्य भेल। पुरनका एक सय बत्तीस पहराक संक्षिप्त पात बच्चा सभ बाँटलक। प्रत्येक पात पर एक अध्यायक सार-साँस लिखल छल—जलसमाधि, गोहि, अदालत, डिजिटल ठगी, गंगेशक प्रश्न, अन्नक न्याय, जातिक पिंजरा, रसोइक गणराज्य। यात्री सभ पहिने पातकेँ परचा बुझि जेबीमे राखलक। मुदा बस चलय लगलासँ पहिने कंडक्टर स्वयं एक पात पढ़ि सुनौलक—‘जे नाम टिकट पर नहि चढ़ल, ओ यात्री नहि होएत? जे नाम जीवनमे नहि चढ़ल, ओ मनुष्य नहि?’ बस पाँच मिनट देरीसँ छूटल, मुदा ओहि पाँच मिनटमे बस-अड्डा पुरनका सभागार सँ पैघ भऽ गेल।

तेसर दृश्य अदालतक बरामदामे भेल। ओही बरामदा जतय बरखों धरि तारीखक गोहि लोकक समय चिबबैत रहल। खेलाड़ी सभ ओतय कूदल नहि, नाटकीय चीत्कार नहि केलक।

ओ सभ शान्तिसँ बैसल। एक बच्चा कागच पर लिखलक—‘प्रमाण’। दोसर लिखलक—‘अनुमान’। तेसर लिखलक—‘शब्द’। चारिम बालिका खाली कागच राखि कहली—‘जकरा जीवन दबा देल गेल, ओकर प्रमाण कोन खानामे?’ बरामदाक पुरान देबालसँ चूना झरल। ओ बिनु कोनो आवाजक झरल—खाली कागच पर पड़ितहि एक बहुत हलुक ‘सर्’ बुझायल, जकरा सुनबा लेल चुप रहब जरूरी छल। कागच पर एक छोट उज्जर धब्बा पड़ल। बच्चा सभ लिखलक—‘देबालक उत्तर।’

ओहि दिन सत्यव्रत मेहता बरामदाक दूर कगार पर ठाढ़ छलाह। लोक हुनका चिन्हैत छल, मुदा आब कोनो परिचयक घोषणा नहि होइत छल। ओ देखलनि जे कानूनक भवनक भीतर न्याय अनेक बेर हेरा जाइत अछि, मुदा भवनक बाहर, बरामदाक धूलिमे, एक बच्चाक प्रश्न ओकरा फेर जन्म दऽ सकैत अछि। हुनकर हाथ अपने-आप जेबी दिस गेल, स्याहीकलम निकालबाक लेल; मुदा ओ रोकि लेलनि। ई दृश्य लिखबाक नहि, पहिने सुनबाक छल।

चारिम अभिनय दवाइ-दुकानक सोझाँ भेल। महामारीक समयक साँस, औषधि, सिलिण्डर, मूल्य, दलाली—ई सभ अध्याय आब लोकक देहमे एखनहुँ दुखैत छल। एक खेलाड़ी मुँह पर कपड़ा बान्हि ‘साँस’क भूमिका करैत ठाढ़ रहल। दोसर खाली शीशी बजबैत रहल। तेसर बच्चा नाम पढ़ैत रहल। दवाइ-दुकानदार पहिने भीतर घुसि गेल, फेर धीरे बाहर आयल। ओ कहलक—‘हमहूँ कीमत बढ़ेलहुँ। डरक समय लाभ लेलहुँ।’ लोक ओहि पर टूटल नहि। मीरा कहली—‘गवाहीक पहिल साँस दोषसँ शुरू भऽ सकैत अछि, मुदा ओतय समाप्त नहि होएत।’ दुकानदारक नाम अपराधी जेकाँ नहि, गवाही देनिहार जेकाँ लिखल गेल—मुदा ओकर अपराधक शब्द काटल नहि गेल।

अभिनयक ई चलन देखैत बजारक सभ लोक सहज नहि रहल। किछु व्यापारी कहलक—‘एहि सभ सँ ग्राहक भागि जाएत।’ किछु नेता कहलक—‘सांस्कृतिक कार्यक्रमक अनुमति लिअ।’ किछु अधिकारी कहलक—‘जन-भावना भड़कएबाक सम्भावना अछि।’ मुदा बच्चा सभक उत्तर एके छल—‘हम भड़कबैत नहि, नाम पढ़ैत छी।’ नामक स्वर धीरे होइत अछि, मुदा जँ ओकरा रोकल जाए, तँ ओ आगि बनि सकैत अछि—ई बात सत्ता बहुत नीक जनैत छल।

बटुकनाथ हरिहरनक कान धरि खबरि पहुँचल जे नाटक सभागार सँ निकलि सड़क पर आबि गेल अछि। ओ अपन पुरान ढंगमे मुस्कुरायल। कहलक—‘सड़क पर नाटक? बहुत नीक। अव्यवस्था सिद्ध करब सहज होएत।’ ओ फाइल तकलक, नियम तकलक, सार्वजनिक मार्गक उपयोग, भीड़ नियन्त्रण, शान्ति भंग, अनुमति-पत्र—सभ शब्द ओकर मेज पर पुनः

जमा भेल। मुदा जेना ओकर कलम उठल, कागचक कोरा भाग पर एक अदृश्य हाथ 'उपस्थित' लिखि देलक। हरिहरन थरथरा गेल। ओ जनैत छल—चन्ना गाछी आब बरामदामे घुसि चुकल अछि।

चन्द्रपाल बत्रा एहि नब बाट-अभिनयकेँ धनक अवसर बुझलक। ओ सोचलक—जँ नाटक सड़क पर खेलाइत अछि, तँ ओहिमे दान, विज्ञापन, प्रसारण, डिजिटल टिकट सभ जोड़ि सकैत अछि। मुदा जखन ओकर लोक हाटमे कैमरा लगाबय गेल, स्त्री सभ ओकरा रोकलक। मीरा कहली—'स्मृतिकेँ फेर बिक्री पर नहि चढ़ाएब।' चन्द्रपालक अनुप्रयोगमे ओहि दिन केवल खाली पृष्ठ खुजल। खाली पृष्ठ पर एक गोहिक नहक खरोंच जेकाँ रेखा बनि गेल। ओकरा लागल—कथा ओकर पकड़ सँ बाहर अछि।

राघव 'सिग्नल' सोमानी अपन नब कोडमे एहि घटनाकेँ 'चल-नाटक' कहि दर्ज केलक। मुदा सन्देश पठबितहि ओहि शब्दक दू भाग भऽ गेल—'चल' आ 'नाटक'। पहिल भाग भागैत रहल, दोसर ठाढ़ रहल। राघवकेँ बुझाइत नहि छल जे एहि लोकक संवाद ककरा पठाओल जाए। कोनो मालिको नहि, कोनो एक नेता नहि, कोनो खाता नहि। समाज जखन बिनु केन्द्रक बजैत अछि, तखन षड्यन्त्रक नक्शा धुँधला पड़ि जाइत अछि।

लाउ किन-हंग दूर देशक शीशा-घरमे रिपोर्ट पढ़ि रहल छल। ओकरा 'ग्रामीण परफॉर्मेटिव प्रतिरोध' लिखल अंग्रेजी वाक्य देल गेल, मुदा ओ पढ़ैत-पढ़ैत शब्द बिसरि गेल। ओकरा केवल चन्ना गाछीक ठूँठ, स्वप्नक अनाम ग्रहक रिक्ति, आ गोहिक आँखि देखाइ पड़ल। शीशाक ओहि घरमे बाहरक कोनो आवाज नहि अबैत छल, आ ओहि पूर्ण चुप्पीमे ओकरा अपन साँसक आवाज सुनाइ देब लागल—ओ आवाज एतेक लग छल जे कोनो दोसरक बुझायल। ओ बुझलक—ई लोक पृथ्वी नहि छोड़त। जे स्मृति बाट पर खेलय लागल, ओकरा दोसर ग्रहक करारसँ नहि कीनल जा सकैत।

लोकगीत: बाटे बनल रंगमंच

लोकधुन: सलहेस लोकगाथा धुन

बनल हे मंच, माटिक बाटे मंच बनल हे,
जकर घर नहि, ओकर कथा देहरी पर धरल हे।

ने टिकट, ने पर्दा, ने सोना जड़ल आसन,
माटिक बाटे मंच बनल, लोक बनल शासन।
प्रत्येक मोड़ पर एक कथा, प्रत्येक देहरी एक पात्र,

जाल बुननिहार भटकल—ककरा कीनत आइ राति?

नेना धूरिमे रेखा खिंचि नामक खेल रचौलक,
बूढ़क काँपैत स्वरकेँ बीच घेरामे अनलक।
जे स्मृति बाट पर खेलय, ओकरा बेचब कठिन,
ओकर दर्शक खेत, नदी, गाछ आ दिन।

बाटे रंगमंच रहू, शहरक ताला तोड़ू,
जकर घर नहि, ओकर कथा देहरीपर छोड़ू।
लोके बनल पात्र, आ लोके बनल शासन।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—लक्षणा आ अनुमानक खण्डन: तथापि एहन पशु देखयवला आ वाक्यार्थ स्मरण करयवला व्यक्ति "ई गदहा 'गदहा' शब्दक वाच्यार्थ अछि" एहन ज्ञान प्राप्त करैत अछि। लक्षणा आ अनुमानक खण्डन।]

अध्याय १४०

चल चौपाल

खेलमे हार-जीत नहि घोषित हो तँ बुझू— खेल आब स्मृतिक पहरा बनि गेल।

अध्यायारम्भ लोकगीत: कागचक खेल, नामक जीत

लोकधुन: कबड्डी-दस्तावेजी धुन

खेलू हे खेलू, कागचक खेल साफ खेलू हे,
प्रत्येक नाम पूरा लिखू, मोहर सँ नहि डेरू हे।

कागच बीच रेखा खिंचल, नाम पारीमे जाए,
मोहर जँ पकड़य दौड़ै, साँच सीमा छू आए।
नियम साफ, प्रति सुरक्षित, जन पहरा साथ,
दस्तावेजक खेल बदलि देत पारदर्शी हाथ।

कबड्डी नहि छलक हो, प्रमाणक उत्सव हो,
प्रत्येक नाम पूरा लिखल, प्रत्येक सहमति स्पष्ट हो।
कागचक खेल साँचसँ खेलू, नामक जीत कराउ,
सूखल पन्नामे जीवनक हरियर लय बसाउ।

रेखा साफ खिंचल रहए, प्रति घर-घर सुरक्षित,
जन-पहराक आँखि तर सहमति सभ लिखित।
छलक दाउ फेल पड़ए, प्रमाणक जय होए,
सूखल पन्ना पर जीवनक हरियर लय सोए।

❖

बाट कोनो मंच नै होइ छै। बाट पर परदा नै टाँगल जाइ छै, पँजरा नै बान्हल जाइ छै, टिकट नै कटै छै। तइयो बाट सभसँ पुरान रंगमंच छै। जाहि माटि पर लोक चलै छै, ओही माटि पर लोकक कथा पएरक छाप जकाँ जमि जाइ छै। जे नाटक घरक भीतर होइ छै, से समाप्त भऽ जाइ छै; जे नाटक बाट पर होइ छै, से चलैत रहै छै—किएक तँ बाट कहियो बन्द नै होइ छै।

खेलमे एक सीमा-रेखा होइ छै। ओहि पार जेबाक अछि, आ साँस टूटबासँ पहिने घुरबाक अछि। मुदा ई कोन सीमा छै? खेतक मेड़ छै कि कागचक हाशिया? पोखरिक कगार छै कि फाइलक कवर? जे नाम एहि पार छै, से जीबैत मानल जाइ छै; जे ओहि पार खसि पड़ल, से 'निरस्त' कहबै छै। मुदा सीमा-रेखा माटि पर नै, ककरो हाथक कलम सँ खिंचल जाइ छै।

साँस चोराब पड़ै छै एहि खेलमे। जे भीतर साँस राखि सीमा पार करै छै, ओकर देह भरि एक ही धुन बजै छै—नाम.. नाम.. नाम। साँस टूटल तँ खेल छूटल। मुदा साँस पर पहरा नै लगै छै। पहरा नाम पर लगै छै। तेँ जे नाम पूरा सुनि लेलक, ओकर साँस अपने-आप बचि जाइ छै।

जुलूस साँझमे घुरै छै। जे थकान लऽ कऽ घुरै छै, से खेतक काजक थकान जकाँ मीठ होइ छै। नाटक जखन बाट पर उतरै छै, तखन सत्ता ओकर पएर नापय लगै छै। नापय दियौ। पएर नापल जा सकै छै, बाट नै।

बूढ़बा भूतक ओ स्वर—'पढ़ल नहि, खेलल जाए'—एखनहुँ ठूँठक कगार पर टँगल छल, जखन बाटक धूलिमे अगिला दिनक पाएरक छाप पड़य लागल। एहि बीच कबड्डी खेलनिहार सभ एक नब नियम बनौलक। जे ठाम अभिनय होए, ओतय अन्तमे खेल अवश्य होए। मुदा खेलमे हारब-जीतब नहि घोषित होए। खेलाड़ी एक सीमा पार करैत, 'कबड्डी' कहैत, सोझाँक लोकसँ एक नाम माँगैत, फेर साँस टूटबाक पहिने वापस अबैत। जँ नाम पूरा सुनि लेलक, तखन ओ सफल। जँ नाम बीचमे छूटि गेल, तखन फेर अगिला साँस। एहि नियममे खेल स्मृति बनि गेल, स्मृति खेल बनि गेल।

बच्चा सभ एहि बाटक रंगमंच केँ 'चल चौपाल' नाम देलक। ओकरा लेल मंच नहि, केवल तीन वस्तु चाही—एक खुलल ठाम, एक सुनएबला कान, आ एक एहन नाम जे एखन धरि पूरा नहि सुनल गेल। जे नगर ई तीनू वस्तु नहि देत, ओ नगर बस भवनक समूह रहत; जे देत, ओ गढ़ नारिकेलक विस्तार बनत।

साँझक समय जुलूस फेर ठूँठ लग घुरल। सभ थाकल छल, मुदा ओ थकान खेतक काजक बादक थकान जेकाँ सरल छल। अनन्या रजिस्टरमे लिखली—'आइ कथा बाट सीखि आयल।' ओकर ठीक नीचाँ एक छोट लड़का, जे आइ पहिल बेर अभिनय देखलक, लिखलक—'नाटक ओ नहि जे मंच पर हो; नाटक ओ जे जीवनकेँ अपन झूठ सुनाबय पर विवश करय।'

बा एहि वाक्य पर हँसलीह। कहलीह—'तँ आब जीवनक बारी अछि।' बच्चा सभ बुझलक नहि। बा समझौलीह—'एखन धरि अहाँ सभ कथा अभिनय केलहुँ। आब जे लोक दर्शक बनि देखलक, ओ सभक घरमे कथा घुसत। ओतय असली रंगमंच अछि—रसोइ, ओसारा, खेत, कोठरी, कार्यालय, अदालत, मोबाइल, निन्न।'

राति गाढ़ भेल। दूर थानाक सिपाही दू गोट साइकिल पर आयल। ओ सभ सभ्यतापूर्वक एक मोड़ल कागच देलक। कागच पर लिखल छल—'अनधिकृत मार्ग-अवरोध, जन-समूह आ

प्रदर्शन-सदृश गतिविधि सम्बन्धी स्पष्टीकरण।’ बच्चा सभ कागच पढ़लक। कियो डरलक नहि, मुदा कियो हँसलो नहि। कारण सभ जनैत छल—कथा जखन बाट पर उतरैत अछि, सत्ता ओकर पएर नापय लगैत अछि।

अनन्या ओ कागच ठूँठक कगार पर राखली, ठीक ओही ठाम जतय पहिने पीयर सूचना-पत्र राखल गेल छल। ठूँठक भीतर सँ हलुक गरम हवा उठल। कागचक कोना ऊपर उठि गेल, जेना ओ स्वयं अपना पाठक प्रतीक्षा करैत हो। सत्यव्रत मेहता दूर सँ कहलनि—‘काल्हि ई पढ़ल जाए।’

बूढ़बा भूत पाछाँ सँ स्वर देलनि—‘पढ़ल नहि, खेलल जाए।’

एहि वाक्य पर रातिक हवा रुकि गेल। बच्चा सभ एक-दोसर दिस ताकलक। अगिला दिन बाटक रंगमंच नहि, कागचक कबड्डी खेलल जाएत—जतय कानूनक पाँतिसँ साँस चोराकऽ नाम वापस आनबाक छल।

लोकगीत: कागचक कबड्डी

लोकधुन: दस्तावेजी लोकधुन

पुकारू हे नाम, कबड्डी नहि—नाम पुकारू हे,
प्रत्येक फाइलक अन्हार सँ एक मनुख उबारू हे।

कागच बीच रेखा, मोहर बनल विपक्षी,
नाम लऽ कऽ दौड़ल बूढ़, नेना, स्त्री, साक्षी।
जीत-हार नहि पूछू, पूछू—के रहल गायब,
ककर अँगूठा चोरायल, ककर तारीख नायब।
धूलि भरल पन्ना साँस रोकि सीमा छुलक,

‘निरस्त’क लाल दाग टूटि कऽ माटिमे घुलक।
पढ़ब मात्र नहि, कागचकेँ खेलब पड़त,
जकर देह भीतर बन्द, ओकरा खोलब पड़त।
कबड्डी कहू नहि—नाम-नाम पुकारू,
प्रत्येक फाइलक अन्हारसँ एक मनुष्य उबारू।

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—वृक्षक देशभेद: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—ई आपत्ति सेहो नहि करबाक चाही जे “ई वृक्ष कपि-संयोगवान् अछि, कारण ई वृक्ष अछि” एहि अनुमानमे कपि-संयोगाधिकरणक अन्योन्याभाव केवल अव्याप्यवृत्ति अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। विशेष-लक्षणक औचित्य।]

अध्याय १४१

बरामदाक फैसला

बरामदाक पाथर दिन भरि जूता सहै छै, आ राति ओ फैसला सुनबै छै।

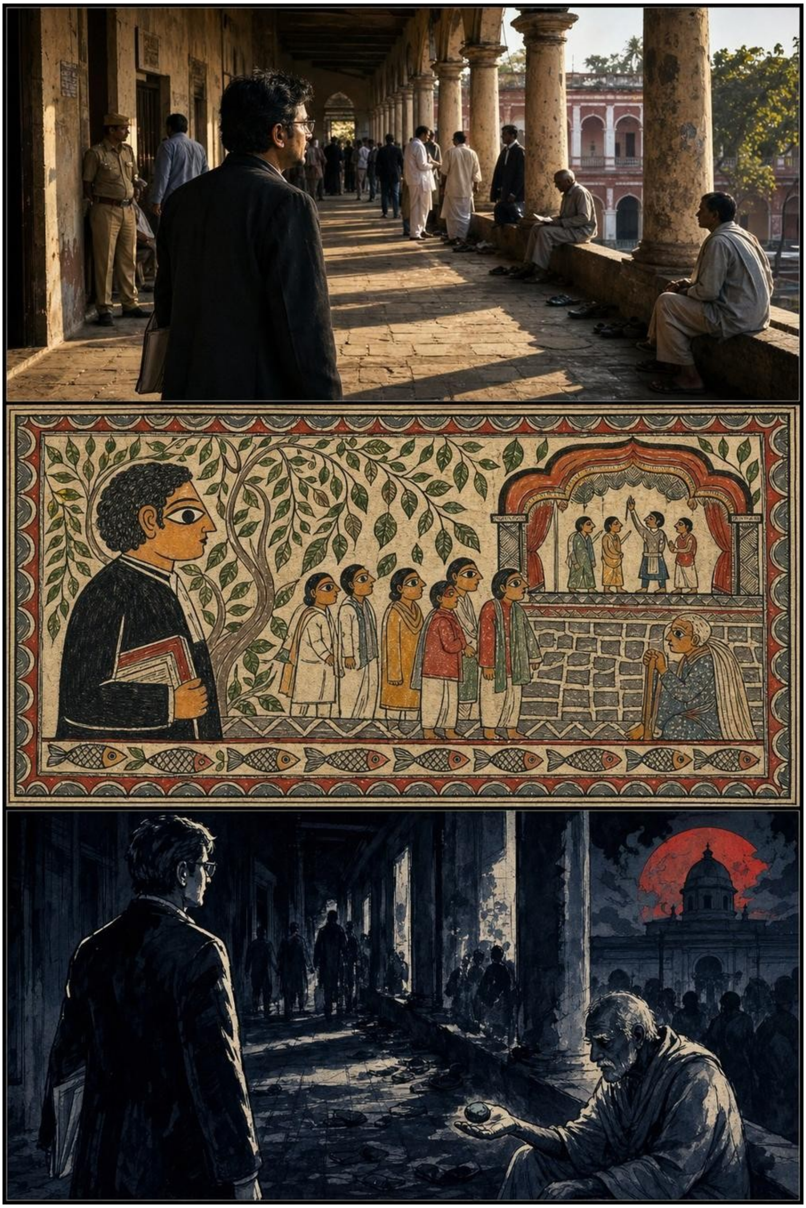

अध्यायारम्भ लोकगीत: बरामदा बनल जनपथ

लोकधुन: कचहरी-झूमरक उज्जर चाल

बिछाउ हे आसन, बरामदे पर बिछाउ हे,
जूता-सहल पाथरकेँ जनपथ बनाउ हे।

बरामदाक पाथर कहै—पग-पग बात लिखल,
धूलि झाड़ि जन बैसत तँ न्याय-दुआर खुलल।
जूता सहल पाथर आब आसन बनि जाए,
गरीबक थाकल देह ओतय सम्मान पाए।

दिनक प्रतीक्षा गीत बनत, रातिक मौन बयान,
बरामदा जनपथ बनत जखन जागत मनुष्य।
पाथर ठण्ढा हो तइयो हृदयक ताप जगाउ,
कचहरीक नमहर बाटमे संगक दीप जराउ।

पग-पगक धूलिमे लिखल प्रतीक्षाक कथा,
झाड़ि-पोछि बैसू सभ, बाँटू अपन व्यथा।
ठण्ढा पाथर ताप पओतै जन-देहक संग,
कचहरीक नमहर बाट पर झूमरक रंग।

❖

बरामदा कोनो ठाम नै छै। बरामदा एक अवस्था छै—भीतर आ बाहरक बीचक अवस्था। जे भीतर नै जा सकल आ बाहर नै घुरि सकल, ओकरा लेल बरामदा बनल छै। ओतय बैसनिहार लोक ने वादी छै ने प्रतिवादी; ओ केवल प्रतीक्षा छै। आ प्रतीक्षाक कोनो धारा नै होइ छै।

तारीख की छै? तारीख समयक टुकड़ा नै छै। तारीख देहक टुकड़ा छै। जकरा तेइस बरख तारीख भेटल, ओकर तेइस बरखक देह ओहि पर्ची सभमे बँटल छै। बेटाक जुआनी एक तारीख, बापक आँखिक इजोत दोसर तारीख, बेटीक विदाइ तेसर तारीख। न्याय जखन देरी करै छै, तखन ओ समय नै, देह खाइ छै।

जूता सहनाइ पाथरक धरम मानल गेल छै। मुदा जे सहै छै, से सुनितो छै। पाथरक भीतर आवाज जमा होइ छै—पुकारक आवाज, नामक आवाज, चपरासीक हाँक, वकीलक बहस, आ ओहि सभक तर एक हलुक ध्वनि जकरा कियो नै सुनलक—बैसल लोकक साँस। ओ साँस बरखों धरि जमा होइत रहलै। जमा भेल साँस एक दिन बजै छै।

कान तँ अदालतमे छै। मुदा कान कतऽ लागल छै? आदेश पर कि बयान पर? बयान पर कि व्यथा पर? न्यायालयक बरामदा न्यायालयक बाहर नै छै—ओ ओकर अनसुना कान छै। जे दिन कान खुलतै, ओहि दिन बरामदा अदालत बनि जेतै।

बाटक धूलि पर खेलल कागचक कबड्डी अदालतक फाटक धरि पहुँचल, आ ओतय पहुँचैत-पहुँचैत ओ खेल नहि, पहरा बनि गेल। अदालतक बरामदामे अभिनय समाप्त भेलाक बादो लोक उठि गेल नहि। बरामदाक पुरान पाथर जे दिन भरि वकीलक जूता, मुवक्किलक प्रतीक्षा, चपरासीक आवाज, तारीखक पुकार आ धूलि सहैत छल, ओहि राति मंच बनि कऽ चुपचाप धड़कैत रहल। जे संवाद अभिनेता सभ कहलनि, से कागच पर लिखल संवाद नहि रहि गेल; ओ मुवक्किल सभक देहमे घुसि गेल, जकरा सभ बरखों धरि तारीख खा गेल छल।

सत्यव्रत मेहता बरामदाक एक कोनमे ठाढ़ छलाह। हुनका ओहि अभिनयमे अपन पुरान मौनक परछाईं देखाइ पड़ल। नाटकमे एक पात्र छल जे सुनैत अछि, मुदा समय पर नहि लिखैत। दर्शक सभ ताली बजौलक, मुदा सत्यव्रतक कानमे ताली नहि, पृष्ठक खालीपन बाजल। हुनका लगल जे अदालतक देबाल पर जे फाइलक संख्या लिखल अछि, तकरा सभक भीतर नामक ठाम केवल धूलि राखल गेल अछि।

नाटक समाप्त भेल तखन एक बूढ़ मुवक्किल आगाँ आयल। ओ कहलक, 'हमर मुकदमा तेइस बरख चलल। बेटा जुआन सँ बूढ़ भऽ गेल। अदालत कहलक कागच अधूरा अछि। मुदा हमरा जीवनक कागच के लिखत?' एहि प्रश्न पर मंचक आखिरी बाँस काँपल। कलाकार सभ पोशाक खोलि रहल छल, मुदा ई प्रश्न सुनि फेर स्थिर भऽ गेल। जकरा सभ अभिनय कएल छल, ओकरा सभ बुझाइ पड़ल जे असली नाटक तँ मंच उतरला बाद शुरू होइत अछि।

अदालतक भीतर सँ एक लिपिक बाहर आयल। ओकरा भय छल जे बरामदाक कार्यक्रम सँ अनुशासन भंग होएत। मुदा जखन ओ बूढ़क प्रश्न सुनलक, ओकर हाथमे पकड़ल चाबी अपने-आप झनझना उठल। चाबी सभ कोठरी खोलबाक लेल छल, मुदा ओहि राति ओकरा

लगल जे ई चाबी सभ हुनका सभक कण्ठ बन्द करबाक औजार रहल अछि। ओ धीरेसँ कहलक—‘किछु फाइल एखनहुँ रेकर्ड-घरमे अछि। किछु फाइल पर धूलि नहि, नामक राख अछि।’

अनन्या तुरन्त रजिस्टर खोलली। ओ लिपिकक नाम नहि पूछली, पहिने ओकर डरक नाम पूछली। लिपिक देर धरि चुप रहल, फेर कहलक—‘नोकरी बचाबयक डर।’ बच्चा सभ लिखलक—‘नोकरी बचाबयक डर एहो मौनक एक रूप।’ ई सुनि बरामदाक भीड़मे कतेको लोकक चेहरा बदलि गेल। सभकेँ बुझाइ पड़ल जे अपराध केवल बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव वा लाउक नहिये छल; छोट-छोट डर सभ मिलि कऽ दीर्घ अन्याय बनबैत अछि।

तेहि घड़ी बटुकनाथ हरिहरनक एक पुरान शिष्य, जे एखन अधिवक्ता छल, अपन कोट उतारि पाथर पर राखि देलक। ओ कहलक—‘हम सभ कानूनक भाषा सीखलहुँ, मुदा न्याय सुनबाक भाषा नहि सीखलहुँ।’ कोट पाथर पर पड़िते कारी कपड़ा जेकाँ नहि, थाकल कागच जेकाँ पसरि गेल। ओकर जेब सँ तारीखक पर्ची सभ खसि पड़ल। बच्चा सभ ओकरा उठौलक नहि। ओ सभ कहलक—‘जे पर्ची खसल अछि, पहिने ओ स्वयं पढ़त।’

पर्ची सभक पढ़नाइ शुरू भेल। एक-एक तारीख उच्चरित होइत गेल। जे तारीखक दिन ककरो पिता अस्पतालमे छल, जे दिन ककरो जमीन नीलाम भेल, जे दिन ककरो बेटी विद्यालय छोड़लक, जे दिन ककरो घरक चूल्हा नहि जरल—सभ जोड़ल गेल। पर्चीक कागच एतेक पुरान भऽ गेल छल जे पढ़निहारक अँगुरीक बीच ओ अपने-आप चूरा जकाँ झरैत छल। अदालतक बरामदा धीरे-धीरे कैलेंडर नहि, मनुष्यक आयु बनि उठल। न्याय जखन देर करैत अछि, तखन ओ समय नहि, देह खाइत अछि—ई बात सभकेँ स्पर्श भऽ रहल छल।

तखन देविका कहली, ‘एहि बरामदामे नाटक भेल। आब एहि बरामदामे पाठ होएत।’ ओ मंचक जगह पर कागच नहि, पाथर राखली। प्रत्येक पाथर पर एक तारीख लिखल गेल। तारीखक पाछाँ नाम। नामक पाछाँ प्रतीक्षा। प्रतीक्षाक पाछाँ जीवन। ई बरामदा आब प्रदर्शनक ठाम सँ बढ़ि कऽ ‘तारीख-पाठ’क ठाम बनि गेल।

मीरा सभकेँ सावधान केली—‘जकर कथा सार्वजनिक नहि होमय चाहैत अछि, ओकरा तालीमे नहि घीचू।’ ई बात आवश्यक छल। मंचनक सफलता फेर बाजार बनि सकैत छल। कैमरा-धारी युवक सभ आगाँ बढ़ैत छल, मुदा बच्चा सभ हाथ पसारि रोकलक। ‘पहिने अनुमति’, ओ सभ एक स्वरमे कहलक। निजताक शपथ रंगमंचक बाद अदालतक बरामदामे आबि पहुँचल।

ओही समय नकली भूतक जुलूसमे रोइल कलाकारो आयल। ओकरा सभ अदालतक अभिनय देखलाक बाद लगल जे हुनकर देह भाड़ा पर अभिनय करैत छल, मुदा आत्मा गवाही माँगैत अछि। एक कलाकार कहलक—'हम भूत बनि कमाइत छलहुँ; आइ बुझलहुँ जे भूत ओहि कागचमे अछि जे फैसला बनि नहि पाबि सकल।' बूढ़बा भूत बरामदाक छत लग एक क्षण लेल झिलमिलेलाह, जेना हुनका ई परिभाषा पसन्द पड़ल हो।

चन्ना गाछीक ठूँठ ओहि राति अदालत सँ दूर रहितो बरामदामे उपस्थित बुझाइत छल। कियो कहलक जे ठूँठक छाह एतय धरि आयल अछि। कियो कहलक जे बरामदाक पाथर भीतरसँ जड़ि उगाबय लागल। कियो देखलक जे एक चिरई बरामदाक छज्जा पर बैसल अछि आ ओकर चोंचमे लाल सूत अछि। ई सभ देखनिहारक बात छल; मुदा नामक पहरुआ बच्चा सभ केवल लिखलक—'चन्ना गाछीक सुननाइ अदालत धरि पहुँचल।'

गंगेशक प्रश्न फेर उठल। एक छात्र, जे नाटक देखय शहर सँ आयल छल, पूछलक—'न्यायमे प्रमाण चाही। ई सभ रोदन प्रमाण कोना?' आरुणि ओकरा सोझे उत्तर नहि देलक। ओ बूढ़ मुवक्किलक पएर दिस इशारा कएलक—सूजल, फाटल, बरखोंक दौड़ सँ बेजान। फेर तारीखक पर्ची दिस, फेर लिपिकक काँपैत हाथ दिस, फेर बच्चा सभक रजिस्टर दिस। ओ कहलक—'प्रमाण केवल कागचमे रहय तँ गरीबक जीवन सदिखन अप्रमाणित रहत।'

छात्र चुप भऽ गेल। ओकरा लगल जे नव्य न्यायक सूक्ष्म तर्क जँ देहक सूक्ष्म पीड़ा नहि पढ़त, तँ ओ अधूरा रहत। तत्त्वचिन्तामणिक पात जकरा ठूँठमे देखल गेल छल, से आब बरामदाक पाथर पर पसरि रहल छल। जातिक पिंजरा, तारीखक पिंजरा, नोकरीक डर, प्रतिष्ठाक लोभ—सभ प्रश्न बनि एक-दोसराक चारूकात घुमैत छल।

मध्यराति धरि बरामदा खाली नहि भेल। चाहबला चूल्हा लगा देलक। कोइलाक धुँआँ पाथर पर हलुक चादरि जकाँ पसरल आ अदरकक गन्धि ओहि ठण्ढा राति केँ किछु सह्य बनौलक। न्यायालयक फाटक बन्द छल, मुदा बाहर सुननाइ खुलल। जकरा सभ भीतर घुसबाक अनुमति बरखों धरि नहि भेटल, ओकरा सभ बाहर अपना न्याय-भाषा बनबय लागल। ई भाषा आदेश नहि देत, मुदा नाम बचबैत। ई भाषा सजा नहि सुनबैत, मुदा अपराधक मुँह पर मौन हटबैत।

सत्यव्रत मेहता अन्तमे आगाँ आएलाह। हुनका सँ ककरो भाषण चाही नहि छल। ओ बस अपन जेब सँ एक पुरान पन्ना निकाललनि। पन्ना पर लिखल छल—'न्यायालयक बरामदा

न्यायालयक बाहर नहि, ओकर अनसुना कान अछि।' ओ पन्ना अनन्याकेँ देलखिन। अनन्या ओहि पन्नाक नीचाँ लिखली—'कान जखन खुलत, बरामदा अदालत बनत।'

भोरक पहिल उजास होइत-होइत भीड़ छँटि गेल। पाथर पर तारीख सभ रहि गेल। कोट पाथर पर रहि गेल। लिपिकक चाबी एक क्षण लेल पाथर लग राखल गेल, फेर ओ उठायल गेल—किएक तँ संसारक कोठरी एखन खुजबाक बाकी छल। बूढ़ मुवक्किल अपन घर घुरैत समय कहलक—'आइ फैसला नहि भेटल, मुदा हमरा प्रतीक्षाक नाम भेटल।'

एहि वाक्यसँ बरामदाक पाथर गरम भऽ उठल। जे अदालत बरखों धरि देह चिबा रहल छल, ओकर बरामदा आब उनटे देहक गवाही सुनय लागल। ई विजय नहि छल; ई आरम्भ छल। कारण जे दिन बरामदा बजय लगैत अछि, तखन रेकर्ड-घरक दरबाजा थरथराय लगैत अछि।

आ सचमुच, अगिला दिन सबेर अदालतक रेकर्ड-घरक भीतर पुरान फाइल सभ अपने-आप फड़फड़ायल। धूलि उठल, पर पाख नहि भेल; धूलि अक्षर बनय लागल। फाइलक पन्ना कहय चाहैत छल—हमरो पढ़ू, मुदा एहन पढ़ू जे कागचक भीतर फँसल मनुष्य बाहर आबि सकय।

एहि तरहेँ अध्याय बरामदामे समाप्त नहि भेल। मंचसँ बाहर निकलल अभिनय आब फाइलक अन्हार दिस बढ़ल।

लोकगीत: बरामदाक पाथर

लोकधुन: कचहरी-विलाप

सहलहुँ हे पाथर, दिन भरि जूता सहलहुँ हे,
आब मनुख बनि बाजू—रोदन न्याय धरि पहुँचाउ हे।

दिन भरि जूता सहलहुँ, राति सुनलहुँ नाम,
हे बरामदाक पाथर, कखन खुलत दरबारक कान?
बूढ़क अरजी पीयर भेल, आँखिक इजोत गेल,
तारीख पर तारीख चढ़ल, आधा जीवन भेल।
नाटकक बोल देहमे पैसल, मौन फाटि उठल,

अनसुना प्रतीक्षाक नाम पाथर पर लिखल।
फैसला नहि भेटल, मुदा प्रतीक्षा घर गेल,

रेकर्ड-घरक ताला ओहि राति थरथर भेल।
बरामदा, हमर रोदन न्याय धरि पहुँचाउ,
जूता सहल पाथर, आब मनुष्य बनि गाउ।

तारीख पर तारीख चढ़ल, आधा जीवन बीति गेल।
फैसला ने भेटल, मुदा प्रतीक्षा घर पहुँचल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—नव्य—नैयायिक मत: दू सुखमे सादृश्य: एहि मतसँ अनुपमेय वस्तुक प्रसङ्गमे सेहो तुलना सम्भव होइत अछि—"आकाश आकाशक समान अछि", "समुद्र समुद्रक समान अछि", "राम-रावणक युद्ध राम-रावणक युद्धक समान अछि। नव्य-नैयायिक मत: दू सुखमे सादृश्य।]

अध्याय १४२

रेकर्ड-घरक अन्हार

रेकर्ड-घरक अन्हारमे फाइल नहि— रोकल-राखल समय सड़ै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: अलमारीक साँस खुलल

लोकधुन: पराती

खोलू हे ताला, भोरक हाथे खोलू हे,
बरखों सँ दबल पन्नाकेँ हवामे घोलू हे।

अलमारीक बन्द साँस भोरक हवा पबैत,
पन्ना-पन्ना फड़फड़ा कऽ अपन कथा सुनबैत।
ताला खोलू सावधानी, धूलिक मान रखू,
बरखोंक दबल अक्षरकेँ उज्जर आसन दिअ।

फाइल नहि निर्जीव, लोकक जीवन ओतय,
प्रत्येक कागचसँ घरक गन्धि उठि आबय एतय।
अलमारी साँस लैत जखन दफ्तर मनुष्य बनत,
खुलल पन्नाक उजाससँ जन-भरोस फेर जनत।

फड़फड़ाइत पन्ना-पन्नामे ककरो घर-दुआरि,
धूलिक तह तर सूतल छै हकक पूरी थारी।
फाइल नहि निर्जीव—साँसक बही बुझू,
खुलल अलमारीक अँजोरमे जन-भरोस गुनू।

❖

अलमारी की छै? अलमारी एक छोट अन्हार-घर छै जकरा भीतर लोकक बरख बन्द कऽ राखल जाइ छै। बाहर सूरुज उगै छै, डूबै छै, फसल कटै छै, नेना जुआन होइ छै, जुआन बूढ़ भऽ जाइ छै। भीतर एको दिन नै बीतै छै। ओतय समय ठाढ़ छै। जे समय ठाढ़ रहै छै, से सड़ै छै।

ताला पुरान होइ सकै छै। मुदा ताला भारी किएक होइ छै? भिखारी लाल कहै छै—ताला पुरान नै, भीतरक साँस भारी छै। ई कोनो गप्प नै छै। जे कोठरीमे बरखों धरि लोकक प्रतीक्षा बन्द रहै छै, ओहि कोठरीक हवा नुनगर भऽ जाइ छै—जेना नोर सुखा कऽ नोन छोड़ि गेल हो।

धूलि आँखिमे नै, स्मृतिमे घुसै छै। पुरान कागचक धूलिमे स्याही छै, गोंद छै, नमी छै, पसीना छै, आ ओहि सभक बीच एक गन्धि जकर नाम कियो नै रखलक—अनसुनल प्रतीक्षाक गन्धि। जकरा ई गन्धि नै चिन्है छै, ओ रेकर्ड-घर कें भण्डार-घर बुझै छै।

फाइल जीवित होइ छै कि? जाहि फाइलक कारण कियो एखनहुँ साँस रोकि प्रतीक्षा कऽ रहल छै, ओ फाइल जीवित छै। जकरा लेल कियो नै रहल, ओ फाइल मृत छै। मुदा मृत फाइलो कात नै फेकल जा सकै छै—किएक तँ ओकर भीतर ककरो अन्तिम आवाज नुकाएल भऽ सकै छै।

बरामदाक पाथर पर तारीख लिखल जा चुकल छल; आब ओहि तारीख सभक भीतर बन्द नाम खोजबाक बेर छल। अगिला दिन अदालत खुलल तँ सभसँ पहिने रेकर्ड-घरक दरबाजा देखल गेल। साधारण दिनमे ओ दरबाजा केवल धक्का सहैत छल—चपरासी आबि कऽ कुण्डी खोलैत, लिपिक भीतर घुसैत, धूलि उड़ैत, फाइल बाहर आबैत, फेर कागचक भाग्यक संग मनुष्यक भाग्यो कोनो अलमारीमे सरकि जाइत। मुदा ओहि सबेर दरबाजाक काठ भीतरसँ धड़कि रहल छल, जेना राति भरि केओ ओकरा भीतर सँ खोंटैत रहल हो।

चपरासी भिखारी लाल कुण्डीमे चाबी लगौलक, मुदा ताला तुरन्त नहि खुलल। चाबी घूमल, फेर अटकि गेल। लिपिक कहलक—‘पुरान ताला अछि।’ भिखारी लाल चुपचाप कहलक—‘ताला पुरान नहि, भीतरक साँस भारी अछि।’ ई वाक्य सुनिते बरामदामे ठाढ़ लोक सभ एक-दोसराक मुँह ताकय लागल। काल्हि रातिक तारीख-पाठक बात एखनहुँ हवामे रहि गेल छल।

सत्यव्रत मेहता दूरसँ देखैत रहलाह। ओ जनैत छलाह जे रेकर्ड-घर न्यायालयक पेट अछि। जे कागच भीतर गेल, से पचि कऽ फैसला बनत वा सड़ि कऽ विस्मृति—ई कियो बाहर सँ नहि देखैत। काल्हि बरामदामे नाम सभ पाथर पर लिखायल छल। आइ कागचक भीतर फँसल नाम सभ स्वयं दरबाजा ठेलि रहल छल।

कुण्डी अन्तमे खुलल। दरबाजा जेना खुलल, धूलि साधारण धूलि नहि रहल। ओ धूलि सोझे आँखिमे नहि, स्मृतिमे घुसल। कतेको लोक छींकल, कतेको कानल, कतेको चुप भऽ गेल। धूलिक गन्धिमे पुरान कागच, सड़ल गोंद, नमी, पसीना, स्याही, घूसक छूअन आ असहाय प्रतीक्षाक एक विचित्र मिश्रण छल। देविका मुँह पर आँचर राखली, मुदा बच्चा सभक रजिस्टर खुलल रहल।

रेकर्ड-घरमे अलमारी सभ पाँतिबद्ध ठाढ़ छल—जेना अपराधक सैनिक। प्रत्येक अलमारी पर संख्या छल, मुदा भीतरक फाइल सभ संख्यासँ बहुत बेसी बोझिल। किछु फाइलक डोरी टूटि गेल छल, किछु पर दीमकक दाँत लगल छल, किछु पर नील पेंसिलसँ 'अगिला सुनवाई' लिखल छल, जे सुनवाई कदाचित् बरखों पूर्व मरि गेल छल। एक कोनमे रद्दी मानि राखल बोरामे कागच भरल छल। अनन्या पहिने ओहि बोरा दिस गेली।

'ई रद्दी नहि,' ओ कहली, 'ई अपमानित कागच अछि।'

लिपिक काँपि उठल। 'बिनु आदेश बोरामे हाथ नहि देल जा सकैत।'

आरुणि ओकरा देखलक—'आदेश के देत? जे नाम बोरामे अछि, ओ स्वयं आदेश अछि।'

मीरा सभकेँ रोकली—'ध्यानसँ। कोनो फाइल फाड़ू नहि। जे कागच फाटत, नाम फेर घायल होएत। पहिने गिनू, फेर पढ़ू, फेर जकर कथा अछि तकरा खोजू।' एहि सावधानीमे ओहि रातिक निजता-शपथ फेर सुनाइ पड़ल। सत्य उघारबाक आतुरता जँ करुणा बिनु हो, तँ ओहो हिंसा बनि सकैत अछि।

पहिल फाइल खोलल गेल। ओकर ऊपर मोट अक्षरमे जमीन-विवाद लिखल छल, मुदा भीतर विवाहक निमंत्रण-पत्रक एक फाटल टुकड़ा भेटल। तिथि ओहने, जखन वादीक बेटीकेँ बियाह देबाक रहैक। मुकदमा चलैत रहल, जमीन रोकायल रहल, बियाह टूटि गेल। कागच पर ई बात कतहु नहिये छल। निमंत्रणक फाटल कोना गवाही बनि उठल। अनन्या लिखली—'कानूनी विवादक भीतर सामाजिक मृत्यु लुकायल अछि।'

दोसर फाइलमे आदेशक प्रति नहि छल, केवल आवेदनक नकल सभ छल। पाँच-पाँच बेर अर्जीक ऊपर 'प्राप्त'क मोहर, मुदा एको बेर उत्तर नहि। भिखारी लाल धीरेसँ कहलक—'एहने कागच सभ रातिमे आवाज करैत अछि।' ओकर आवाजमे सेवकक भय नहि, साक्षीक थकान छल। ओ स्वीकार करय लागल जे ओ कतेक बेर मुवक्किलकेँ कहि देलक—'अधिकारी नहि छथि, काल्हि आबू।' काल्हि अबैत-अबैत लोकक उमेर बीति गेल।

तेसर अलमारीक पाछाँ एक पातर फाइल अटकल भेटल। डोरीमे लाल सूतक छोट गिट्ठी छल। बच्चा सभ एक-दोसराक आँखिमे ताकलक। चन्ना गाछीक चिरईक चोंचमे जे लाल सूत देखल गेल छल, की ओहि सूतक छाँह एतय आबि पहुँचल? फाइल पर नाम धुँधल छल, मुदा भीतरक पहिल पंक्ति साफ—'नाम कटबाक आपत्ति।' ई पंक्ति पढ़िते जातिक पिंजरा फेर खनखनायल।

फाइलमे एक युवकक निवेदन छल जे विद्यालयक दाखिला-पंजीमे ओकर कुलनाम बदलि देल गेल, ताहि कारण प्रमाणपत्र, छात्रवृत्ति, नोकरी—सभ ठाम ओकर चिन्हारि सन्देहमे पड़ि गेल। अदालतमे मामला आबि कऽ फाइल बनल, फाइल रेकर्ड-घरमे दबि गेल। युवकक जीवन प्रमाणित होयबाक प्रतीक्षामे अप्रमाणित रहि गेल। आरुणि कहलक—‘नाम काटब केवल अक्षर काटब नहि, मनुष्यक भविष्य काटब अछि।’

ई सुनि सत्यव्रत मेहता भीतर आबि गेलाह। हुनकर पएर धूलिमे पड़ल, मुदा ओ धूलि हटौलनि नहि। ओ कहलनि—‘रेकर्डक धूलि जँ देह पर नहि लागय, तँ न्यायाधीश अपना साफ बुझैत रहैत अछि।’ हुनकर ई स्वीकार सुनि लिपिक सभक चेहरा बदलल। कियो राहत अनुभव केलक, कियो डर। कारण सत्य जखन ऊपरसँ उतरैत अछि, तखन नीचाँ दबायल लोक साँस लैत अछि, मुदा अपराधमे सहभागी लोकक निन्न टूटैत अछि।

अचानक रेकर्ड-घरक पिछला भाग सँ हलुक खँखार सुनाइ पड़ल। सभ घूमल। ओहि कोनमे एक वृद्ध महिला बैसल छलीह, जे रातिए सँ बरामदामे रहि गेल छलीह आ सबेर चुपचाप भीतर घुसि आयल छलीह। ओ कहलीह—‘हमर पतिक फाइल एतय छै। लोक कहलक, फाइल गुम भऽ गेल। हम सोचलहुँ, जे मनुष्य गुम भेल ओकर फाइल कोना गुम नहि होएत?’ हुनका हाथमे पुरान कपड़ाक थैली छल, जाहिमे पतिक फोटो, अस्पतालक पर्ची आ जमीनक रसीद राखल छल। थैलीक मुँह पर सूत तीन बेर लपेटल छल, जेना ओ बरखों धरि रोज खोलल आ रोज बान्हल गेल हो।

मीरा हुनका कुर्सी देबाक चाहली, मुदा वृद्धा पाथर पर बैसले रहलीह। ‘हम बरखों धरि पाथर पर बैसल छी, कुर्सी आब हमरा साँच नहि लगैत।’ हुनकर ई वाक्य रेकर्ड-घरक भीतर ठनकल। कुर्सी, मोहर, ताला, अलमारी—सभ सभ्यताक चिन्ह छल; मुदा प्रतीक्षाक पाथर ओकरा सभसँ प्राचीन आ सच्चा छल।

वृद्धाक पतिक फाइल खोजल गेल। पहिने संख्या गलत, फेर वर्ष गलत, फेर नामक वर्तनी गलत। तीन बेर खोजला पर फाइल नहि भेटल। चारिम बेर बच्चा सभ नामक तीन सम्भावित रूप लिखलक। पाँचम बेर बोरा उनटौल गेल। छठम बेर एक कागच खसल—ओहि पर केवल आधा नाम बचल छल। वृद्धा ओकरा माथ पर लगा लेलीह। ‘आधा नामो नाम होइत अछि,’ ओ कहलीह, ‘जँ कियो ओकरा पूरा सुनय।’

तेहि क्षण रेकर्ड-घरमे हवा बदलि गेल। अलमारी सभक भीतरक कागच हिलय लागल। ई चमत्कार छल कि हवा? कियो निश्चित नहि कहि सकल। मुदा जे देखल गेल से ई छल जे कतेको

पुरान पन्नाक किनार पर जे अक्षर मेटायल बुझाइत छल, ओ उजागर होमय लागल। कागच कहैत छल—हमरा जल्दीमे नहि पढ़ू; हमरा ओहि आँखिसँ पढ़ू जे मनुष्यक अनुपस्थिति सेहो देखय।

देविका प्रस्ताव रखली—'प्रत्येक गुम फाइलक सूची बनत। जकर फाइल भेटत नहि, ओकर गवाही अलग रजिस्टरमे लिखल जाएत। फाइल नहि भेटल तँ मनुष्य समाप्त नहि मानल जाएत।' ई बात अदालतक प्रचलित व्यवस्थासँ बाहर छल, मुदा न्यायक भीतर। लिपिक पहिने झिझकल, फेर अपन जेब सँ पेंसिल निकालि देलक। 'नवका रजिस्टर खोलय देल जाए,' ओ कहलक।

बटुकनाथ हरिहरनक पुरान शिष्य, जे काल्हि कोट उतारि देलक छल, फेर आबि पहुँचल। ओ रेकर्ड-घरक देहरी पर ठाढ़ भऽ माफी माँगय चाहलक। मीरा रोकली—'माफी मंच पर देल शब्द नहि। जकर फाइल अहाँ दबेलहुँ, ओकरा खोजयमे हाथ लगाउ।' अधिवक्ता पहिल बेर कागच उठौलक बिनु शुल्क, बिनु बहस, बिनु प्रतिष्ठा। ओकर हथेली पर धूलि लागल। धूलि देखिकऽ ओकर आँखि झुकि गेल।

दुपहर धरि रेकर्ड-घरक बाहर लोकक पाँति लगि गेल। मुदा ई पाँति तारीख लेबाक नहि छल; ई नाम मिलान करबाक पाँति छल। बच्चा सभ पूछैत—'अहाँक नाम कोना लिखल छल? कोना बिगाड़ल गेल? कोन वर्ष सँ प्रतीक्षा अछि?' लोक सभ पहिने आश्चर्यसँ, फेर रोषसँ, फेर धीरजसँ उत्तर देलक। अदालतक इतिहास पहिल बेर लोकक मुँहसँ उनटे लिखायल।

सत्यव्रत मेहता अन्तमे एक आदेश लिखलनि। आदेश छोट छल, मुदा ओकर अर्थ गहिर—'रेकर्ड-घरक प्रत्येक फाइलक पुनर्गणना, गुम फाइलक सार्वजनिक सूची, आ प्रतीक्षारत पक्षकारक मौखिक गवाहीक अस्थायी अभिलेख तैयार हो।' ओ 'मौखिक गवाही' लिखैत समय ठिठकलाह। कानूनक कागचमे आवाजक प्रवेश कठिन छल। मुदा ओ लिखलनि। कलमक नोक काँपल, तखन स्थिर भेल।

आदेश पढ़ल गेल। लोक ताली बजाबय चाहैत छल, मुदा अनन्या हाथ उठाकऽ रोकली—'ई विजयक घड़ी नहि, पहराक शुरुआत अछि।' सभ चुप रहल। एहि चुप्पीमे सम्मान छल। कारण जे फाइल सभ बरखों धरि अन्हारमे रहल, ओकरा पर अचानक शोरक उजास सेहो कठोर भऽ सकैत छल। धीरे-धीरे कागच उठायल गेल, सूची बनल, नाम मिलल, गलती चिन्हायल गेल।

साँझ ढलल तखन रेकर्ड-घरक अन्हार पहिल बेर अन्हार जेकाँ नहि, गहिर कोठरी जेकाँ बुझायल जकरा भीतर दीप राखल जा सकैत अछि। चन्ना गाछीक ठूँठक दिशा सँ हवा आयल। कियो कहलक—'लाल सूत हिलल।' कियो कहलक—'बूढ़बा भूत हँसलाह।' मुदा रजिस्टरमे केवल ई लिखल गेल—'आइ रेकर्ड-घरमे अन्हारक नाम पूछल गेल।'

राति होइत-होइत दरबाजा फेर बन्द भेल, मुदा एहि बेर ताला भीतरक साँसकेँ बन्द नहि कऽ सकल। बाहर बरामदामे पाथर पर तारीख सभ छल, भीतर अलमारीमे जागल फाइल सभ। दुनूक बीच बच्चा सभक रजिस्टर राखल गेल—न पाथर, न कागच; जीबैत स्मृति।

अध्याय एतय समाप्त नहि होइत। किएक तँ जेकर फाइल खोजायल, ओकर फैसला एखन बाकी छल; जेकर फाइल नहि भेटल, ओकर अस्तित्वक लड़ाइ एखन शुरू भेल छल। न्यायक बरामदा बाजि उठल छल, आब कागचक अन्हार सुनबाक कला सीखि रहल छल।

लोकगीत: अलमारीमे बन्द साँस

लोकधुन: करुण झूमर

खोलू हे धीरे, अलमारी धीरे खोलू हे,
बन्द साँस सभकेँ नाम लऽ बाहर आनू हे।

अलमारीक अन्हारमे समय सड़ि रहल,
फाइलक पात भीतर मनुष्य पड़ि रहल।
चाबी घूमल, ताला कहलक—साँस भारी,
धूलिक कणमे जागल कतेको विधवा बेचारी।
जे फाइल भेटल नहि, ओकर अस्तित्व कतऽ,

जे भेटल, ओकर फैसला एखनो सूतल ततऽ।
बच्चाक रजिस्टर बीचमे दीप बनि रहल,
पाथर आ कागचक बीच जीबैत स्मृति चलल।
अलमारी खोलू धीरे, घाव नहि छिड़िआउ,
बन्द साँस सभकेँ नामसँ बाहर आनू।

फाइलक पात भीतर मनुख दबल पड़ि रहल।

जे फाइल ने भेटल, ओकर अस्तित्व कतऽ?

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—वानरवला वृक्ष: समग्रबोधक सम्बन्ध मानलापर “ई पहाड़ वानर-संयोगाभाववान् अछि, कारण ई प्रमेय अछि” एहन विशिष्ट अनुमितिमे प्रमेयत्व-सामान्यक माध्यमेँ प्रमेयत्वरूप साधनद्वारा वानर-संयोगाभावरूप साध्यक सभ व्यक्तिक व्याप्ति ग्रहण करबाक लेल सर्वज्ञ बनब पड़त। प्रतिआपत्तिक अस्वीकार: निर्विकल्पक विशिष्टज्ञानक कारण नहि।]

अध्याय १४३

रद्दी बोराक गवाही

रद्दी कहल कागजपर कदाचित् ककरो जिनगीक आखिरी आस लिखल हो— तेँ फाड़ब सभसँ पैघ अपराध।

अध्यायारम्भ लोकगीत: रद्दी नहि, बीजक पन्ना

लोकधुन: बीज-रोपनी गीत

खोलू गे बोरा, रद्दीक बोरा खोलू गे,
फाटल पन्नामे नुकाएल बीया जोहू गे।

रद्दी बोरा खोलू बहिन, पन्ना बीज समान,
ककरो घरक नक्शा ओहि, ककरो बाबाक नाम।
फाटल कोना जोड़ि देब, मेटल शब्द पढ़ब,
सूखल कागचक खेतमे न्यायक बीआ गड़ब।

एक पन्ना एक ऋतु, एक मोहर इतिहास,
सहेजल कागच देत पुनः बिसरल जनकेँ श्वास।
रद्दी नहि कहियौ कखनो, स्मृतिक अन्न बचाउ,
बीजक पन्ना रोपि कऽ नव अधिकार उगाउ।

एक पन्ना पर बाबाक नाम, एक पर घर-नक्शा,
मेटल आखर जोड़ि-जोड़ि बनय हकक रक्षा।
सूखल कागचक खेतमे न्यायक बीया रोपू,
बिसरल जनक साँस लेल स्मृति-जल सिंचू।

❖

रद्दी कहनाइ आसान छै। बोरामे फेकल कागचकेँ कियो नाम नै दै छै। ओ 'पुरान माल' कहबै छै, 'निष्प्रयोज्य' कहबै छै, 'नष्ट करबाक योग्य' कहबै छै। मुदा ओहि बोराक भीतर एक पन्ना एहनो छै जकरा पर बस एतबे लिखल छै—हमरा सुनू। नीचाँ अँगूठाक निशान। नाम पर धब्बा।

अँगूठा किएक? किएक तँ जकरा अक्षर नै भेटल, ओकरा लग बस देहक ई एकटा चिन्ह बचल रहै छै। ओ चिन्ह कोनो कलमसँ नै बनै छै। ओ चिन्ह ओहि मनुखक भीतरक रेखा छै जकरा कियो नकल नै कऽ सकै छै। तइयो व्यवस्था ओहि चिन्ह पर लिखि दै छै—'अस्पष्ट'।

अस्पष्ट के छै? लिखनिहार कि पढ़निहार? विधवाक हाथ काँपल तँ लिखाइ बिगड़ल—ई ओकर दोष छै। मुदा जे व्यवस्था काँपैत हाथक लिखाइ पढ़ब नै सीखलक, ओकर दोष के लिखतै? अस्पष्ट कागच नै छै। अस्पष्ट ओ आँखि छै जे दुःख पढ़बाक अभ्यास नै केलक।

जे रद्दीमे फेकल गेल, से समाप्त नै भेल। बीज सेहो माटिमे फेकल जाइ छै। फेकनिहार बुझै छै जे गाड़ि देलहुँ। मुदा माटि जनै छै जे रोपि देलहुँ। रद्दीक बोरा एक अन्हार माटि छै। ओहिमे सँ जे उठतै, से कागच नै—गवाही उठतै।

रेकर्ड-घरक अलमारी खुलि गेल छल, मुदा सभसँ भारी कोन छल—ओ कोन जतय बोरा राखल छल। मीरा सभकेँ रोकली—‘ध्यानसँ। कोनो फाइल फाड़ू नहि। जे कागच एखन रद्दी कहल जा रहल अछि, कदाचित् ओहि पर ककरो जिनगीक आखिरी आस लिखल हो।’

एहि बात पर सभक हाथ धीरे भऽ गेल। जे बच्चा सभ काल्हि बरामदामे पाथर पर तारीख लिखि रहल छल, आइ ओ सभ कागचक स्पर्श सीखि रहल छल। कागच कमजोर छल, मुदा ओकर भीतरक आवाज कड़क छल। दीमक किछु अक्षर खा गेल छल, नमी किछु नाम धुँधला कऽ देलक छल, मुदा जे बचल छल, से एतेक तेज छल जे रेकर्ड-घरक अन्हार भीतरसँ खुलय लागल।

अनन्या बोराक मुँह खोलली। भीतरसँ पन्ना सभ निकलल—किछु आवेदन, किछु बयान, किछु अस्वीकृत निवेदन, किछु हस्ताक्षरहीन प्रतिलिपि, किछु एहन कागच जकरा पर केवल एक अँगूठाक निशान बचल छल। एक पन्ना पर लिखल छल—‘वादी उपस्थित, पर सुनवाई स्थगित।’ दोसर पर—‘प्रतिवादी अनुपस्थित।’ तेसर पर—‘मूल अभिलेख अनुपलब्ध।’ आरुणि धीरेसँ कहलक—‘मूल अभिलेख अनुपलब्ध नहि, मूल मनुष्य अनुपस्थित कएल गेल।’

लिपिक एहि वाक्य पर काँपि उठल। ओकरा अपन बरखोंक नोकरी मोन पड़ल। कतेको बेर ओ ‘अभिलेख उपलब्ध नहि’ लिखि देलक छल, कारण ओकरा अलमारीक चाबी नहि भेटल। कतेको बेर ‘अपूर्ण’ लिखि देलक, कारण अधिकारी छुट्टी पर छल। कतेको बेर ‘पुनः प्रस्तुत’ लिखि देलक, कारण फाइल ऊपरक मेज पर दबि गेल छल। ओ सोचैत रहल—एहि छोट-छोट शब्दक भार ककर देह पर पड़ैत रहल?

सत्यव्रत मेहता एक पन्ना उठा लेलनि। पन्ना पर काजर जेकाँ दाग छल। ओ पढ़लनि—एक विधवाक निवेदन, जकर जमीन पर बन्धकक नामे कब्जा भऽ गेल छल। आवेदनक किनार

पर लाल स्याहीसँ लिखल छल—‘अस्पष्ट।’ सत्यव्रतक आँखि भरि आयल। विधवाक लिखाइ अस्पष्ट नहि छल; व्यवस्था ओकर दु:ख पढ़बाक अभ्यस्त नहि छल।

देविका कहली—‘रद्दी बोराक पहिल पाठ ई अछि जे जकरा सभ हटाओल गेल, ओ सभ समाप्त नहि भेल।’ बच्चा सभ एहि वाक्य कैँ अलग पन्ना पर लिखलक। कोठरीमे ठाढ़ लोक सभ देखैत छल जे रद्दी कहल गेल कागच सभ धीरे-धीरे गवाहीक आसन पर बैसि रहल अछि। कियो ओकरा उठबैत नहि, कियो ओकरा झाड़ैत नहि; सभ ओकरा सोझाँ माथ झुकबैत छल।

एक पन्ना पर केवल एतेक लिखल छल—‘हमरा सुनू।’ नीचाँ अँगूठाक निशान। नामक ठाम धब्बा। पता आधा। तारीख धुँधल। मुदा वाक्य बचल छल। अनन्या ओ पन्ना हाथमे लऽ बहुत देर धरि चुप रहली। पन्ना एतेक पातर भऽ गेल छल जे आँगुरक बीच ओकर तन्तु धरि अनुभव होइत छल, आ ओहि तन्तुक भीतर ककरो नुकाएल स्पर्श। फेर ओ बच्चा सभसँ कहली—‘जँ नाम नहि बचल, तँ वाक्यक रक्षा करू। कखन-कखन मनुष्य अपन पूरा परिचय नहि, बस एक पुकार छोड़ि जाइत अछि।’

ओहि पुकार पर रेकर्ड-घरक छतसँ धूलि झरि पड़ल। जेना ऊपर राखल फाइल सभ सेहो कहय चाहैत हो—हमरहुँ सुनू। भिखारी लाल, जे दरबाजा पर चुपचाप ठाढ़ छल, भीतर आबि गेल। ओ अपना हाथक झाड़ू देबाल लग राखि देलक। बरखोंसँ ओकर काम धूलि हटेनाइ छल, मुदा आइ पहिल बेर ओकरा लगल जे धूलि हटबैत-हटबैत ओ कतेको गवाही हटबैत रहल अछि।

‘हमरा सभकेँ सिखाओल गेल जे पुरान कागच साफ करू,’ भिखारी लाल कहलक, ‘मुदा कियो नहि कहलक जे पुरान कागचक भीतर पुरान रोदन सेहो रहैत अछि।’ एहि पर मीरा ओकरा रजिस्टरमे नाम लिखबाक आग्रह केली। भिखारी लाल डरि गेल—‘हमर नाम लिखल गेल तँ आफत होएत।’ मीरा उत्तर देली—‘नाम लिखनाइ आफत नहि, नाम मेटेनाइ आफत अछि।’

बोरामे एक गठरी भेटल जकर डोरी कारी पड़ि गेल छल। डोरी खोलिते एक परिवारक मुकदमा निकलल—दुइ भाइ, एक बहिन, एक पुरान पोखरिक किनार, आ सरकारी नापीमे गायब भेल पगडंडी। पन्ना सभ पढ़िते बुझाइ पड़ल जे विवाद जमीनक मात्र नहि छल; रास्ताक छल। जे पगडंडी कागचसँ हटि गेल, ओहि संग बहिनक मायके जाएबाक राहो हटि गेल छल।

आरुणि कहलक—‘जमीनक नापीमे जखन रास्ता नहि देखाइत, तखन सम्बन्ध कटैत अछि।’ कागचमे पगडंडी नहियै छल, मुदा बयानमे ओकरा सभक पएरक धूलि छल। बच्चा सभ पन्ना सभकेँ क्रममे लगौलक। एक छोट नेनी, जकर नाम नीलिमा छल, पेंसिलसँ अलग कागच

पर पगडंडी बनबय लागली। कियो रोकलक नहि। न्याय कखन-कखन नक्शासँ नहि, स्मृतिसँ रास्ता खोजैत अछि।

तखन लाउक नाम एक फाइलमे फेर उभरल। लाल मोहर लागल, किनार कटहल, भीतर सँ चिट्ठी। चिट्ठीमे संकेत छल जे किछु अभिलेख जानि-बूझि ‘अप्रासंगिक’ घोषित कएल गेल। अप्रासंगिक—ई शब्द सुनिते देविका हँसली नहि, कानली नहि; केवल कहली—‘जे ककरो जीवन बदलि दिअय, ओ अप्रासंगिक कोना?’

सत्यव्रत मेहता चिट्ठी पढ़ि स्थिर भऽ गेलाह। हुनका बुझाइ पड़ल जे रद्दी बोरा केवल लापरवाहीक परिणाम नहि, योजना सेहो भऽ सकैत अछि। जे कागच न्याय दिस लऽ जा सकैत छल, ओकरा रद्दी बना देब—ई अदालतक भीतरक मौन षड्यन्त्र छल। पर सभ कागच बिकाउ नहि होइत। किछु कागच रद्दीमे गेलाक बादो अपन आगि बचा लैत अछि।

बच्चा सभ निर्णय केलक जे प्रत्येक पन्नाक प्रतिलिपि बनत। मुदा मीरा फेर सावधान केली—‘प्रतिलिपि बनत, पर तमाशा नहि बनत। जकर नाम सार्वजनिक करबासँ ओकर परिवार पर चोट पहुँचत, ओकर नाम झाँपल जाएत। गवाहीक रक्षा करब, गवाहक देह नहि बेचब।’ ई बात सुनि अनन्या अपन रजिस्टरक पहिल पृष्ठ पर लिखली—‘सत्यक प्रकाश निजताक अन्हार फाड़बाक अनुमति नहि।’

दुपहर धरि रेकर्ड-घरक बाहर लोकक भीड़ बढ़ि गेल। कियो अपन मुकदमा पूछय आयल, कियो अपन बाबूक फाइल, कियो अपन दादाक जमीन, कियो अपन गुम भेल निवेदन। पर भीतरक बच्चा सभ तुरन्त उत्तर नहि देलक। ओ सभ पहिने एक सूची बनबय लागल—मृत फाइल, जीवित फाइल, अधमरी फाइल, चोरी भऽ सकैत फाइल, आ ओ फाइल जकरा स्पर्श करिते सावधानी चाही।

ई सूची देखि कियो हँसल—‘फाइलो जीवित होइत अछि?’ अनन्या उत्तर देली—‘जाहि फाइलक कारण कियो एखनहुँ साँस रोकि प्रतीक्षा कऽ रहल अछि, ओ जीवित अछि।’ रेकर्ड-घरमे उपस्थित सभ लोक एहि पर चुप भऽ गेल। कारण सभक घरमे किछु ने किछु जीवित फाइल पड़ल छल—बक्सामे, पेटीमे, स्मृतिमे, वा आँखिक कोनमे।

ओहि साँझ रद्दी बोराक कागच सभ बरामदामे आनल गेल। पाथर पर तारीखक कातमे आब पन्नाक छाह राखल गेल। बूढ़ मुवक्किल, जे काल्हि अपन प्रतीक्षाक नाम पाबि गेल छल, फेर आयल। ओ एक पन्ना देखलक, आ ओकर हाथ काँपि उठल। ‘ई हमर भाइयोक आवेदन सन लगैत अछि,’ ओ कहलक। पर नाम धुँधल छल।

मीरा ओकरा तुरन्त रोकि देली—'सन लगैत अछि, ई गवाहीक आरम्भ अछि; प्रमाणक अन्त नहि।' बूढ़ मानि गेल। ओ पन्ना माथसँ लगौलक नहि, कारण ओकरा सिखाओल गेल—कागचकेँ पूजा नहि, पढ़ाइ चाही। ओ बस कहलक—'जँ ई हमर नहि, तइयो ककरो अछि। ककरो अछि, तइयो हमर समाजक अछि।'

राति पड़ैत-पड़ैत रद्दी बोरा खाली भऽ गेल, मुदा रेकर्ड-घर भरल बुझाइ पड़ल। खाली बोरा बरामदामे उनटा कऽ राखल गेल। ओकर भीतर धूलि नहि, किछु टूटल पिन, एक सूखल पात, आ लाल स्याहीक कण रहि गेल। बच्चा सभ ओहि बोराक मुँह पर लिखलक—'एतय गवाही दबाओल गेल छल।'

भिखारी लाल पूछलक—'ई बोरा राखल जाएत?' देविका कहली—'हँ, मुदा संग्रहालय जेकाँ नहि। ई चेतावनी जेकाँ राखल जाएत।' सत्यव्रत मेहता जोड़लनि—'जे दिन कार्यालय अपन रद्दी देखबाक साहस करैत अछि, ओहि दिन न्याय अपन पहिल चेहरा फेर पबैत अछि।'

ओहि राति चन्ना गाछीक ठूँठ दिस सँ हवा आयल। बरामदाक पाथर पर राखल कागच सभ हिलल, मुदा उड़ल नहि। जेना कोनो अदृश्य हाथ ओकरा थामि रहल हो। बूढ़बा भूत छज्जाक छाहमे मुस्कुरेलाह आ कहलनि—'रद्दी कहब आसान अछि; गवाही बनि उठब कठिन। आइ कठिन काज शुरू भेल।'

अध्यायक अन्तमे अनन्या अपन रजिस्टर बन्द नहि केली। ओ आखिरी पृष्ठ खुजल छोड़ि देली, कारण एखन अनेक पन्ना पढ़बाक बाकी छल। खुजल पृष्ठ पर एक पंक्ति लिखल छल—'जे रद्दीमे फेकल गेल, ओ न्यायक दरबारमे पहिल साक्षी बनि घुरत।'

आ सचमुच, भोरसँ पहिने खाली बोरा हलुक हिलल। कियो भीतर नहि छल, मुदा ओकर तहसँ कागचक सरसराहट अबैत रहल। ई आवाज अदालतक अन्हारमे नहि हरायल।

राति उतरल। रेकर्ड-घरक दरबाजा फेर बन्द भेल, मुदा एहि बेर भीतर कागच दबल नहि, क्रमबद्ध राखल गेल। पेटी खाली नहि भेल, कारण सभ किछु एक दिनमे नहि खुलि सकैत। मुदा पेटीक मुँह पर नव कागच चिपकायल गेल—"मानव गवाही।"

बाहर बरामदामे बूढ़ मुवक्किल पाथर पर बैसल छल। ओकर हाथमे अपन पुरान आवेदनक प्रतिलिपि छल। ओ ओकरा पढ़ि नहि सकैत छल, कारण आँखि धुँधला गेल छल। बच्चा सभमे सँ एक बालक ओकरा धीरे-धीरे पढ़ि सुनौलक। बूढ़ सुनैत रहल, जेना अपनहि हेरायल उमेरक आवाज फेर घुरि रहल हो।

बरामदा, रेकर्ड-घर, चन्ना गाछी आ रातिक हवा एक संग ई वाक्य सुनलक। फाइलक भीतरक मनुष्य बाहर आबि रहल छल। ई बाहर आबनाइ फैसला नहि छल, मुदा फैसला धरि पहुँचबाक पहिल साँस अवश्य छल।

लोकगीत: रद्दी बोराक आखिरी आस

लोकधुन: समदाउन

ने कहू हे रद्दी, एहि पन्ना पर घर अछि हे,
दीमक खाएल आखर भीतर माएक स्वर अछि हे।

रद्दी नहि कहियौ, एहि पन्नापर घर अछि,
दीमक खाएल अक्षर भीतर माय केर स्वर अछि।
बूढ़ आँखि पढ़ि नहि पाबय, बालक पढ़ि सुनबय,
अपन हेरायल उमेर सुनि करेजा काँपि जाए।
फाटल आवेदन कहय—हमरा फेर नहि फाड़ू,

आखिरी आस छी, दया कऽ गोदीमे राखू।
खाली बोरा राति भरि सरसर गवाही देलक,
'मानव गवाही' नामक पर्ची मुँह पर लेलक।
रद्दीक धूलिसँ एक जिनगी उठाउ,
बूढ़क अधमरल आशाकेँ घर पहुँचाउ।

बूढ़ आँखि पढ़ि ने सकल, बालक पढ़ि सुनौलक,
फाटल आवेदन कहलक—फेर ने फाड़ू हमरा,
आखिरी आस छी, दया कऽ राखू गोद-कोरा।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—एकदेशी कहैत छथि—सम्बन्धीमे विद्यमान अनेक स: एहि मतसँ अनुपमेय वस्तुक प्रसङ्गमे सेहो तुलना सम्भव होइत अछि—“आकाश आकाशक समान अछि”, “समुद्र समुद्रक समान अछि”, “राम-रावणक युद्ध राम-रावणक युद्धक

समान अछि। एकदेशी कहैत छथि—सम्बन्धीमे विद्यमान अनेक सामान्य धर्म धारण करब सादृश्य अछि।।]

अध्याय १४४

नामक यात्रा

नाम फाइलसँ निकलि गेल तँ ओकरा 'निरस्त'क कोनो मुहर फेर बन्द नहि कऽ सकल।

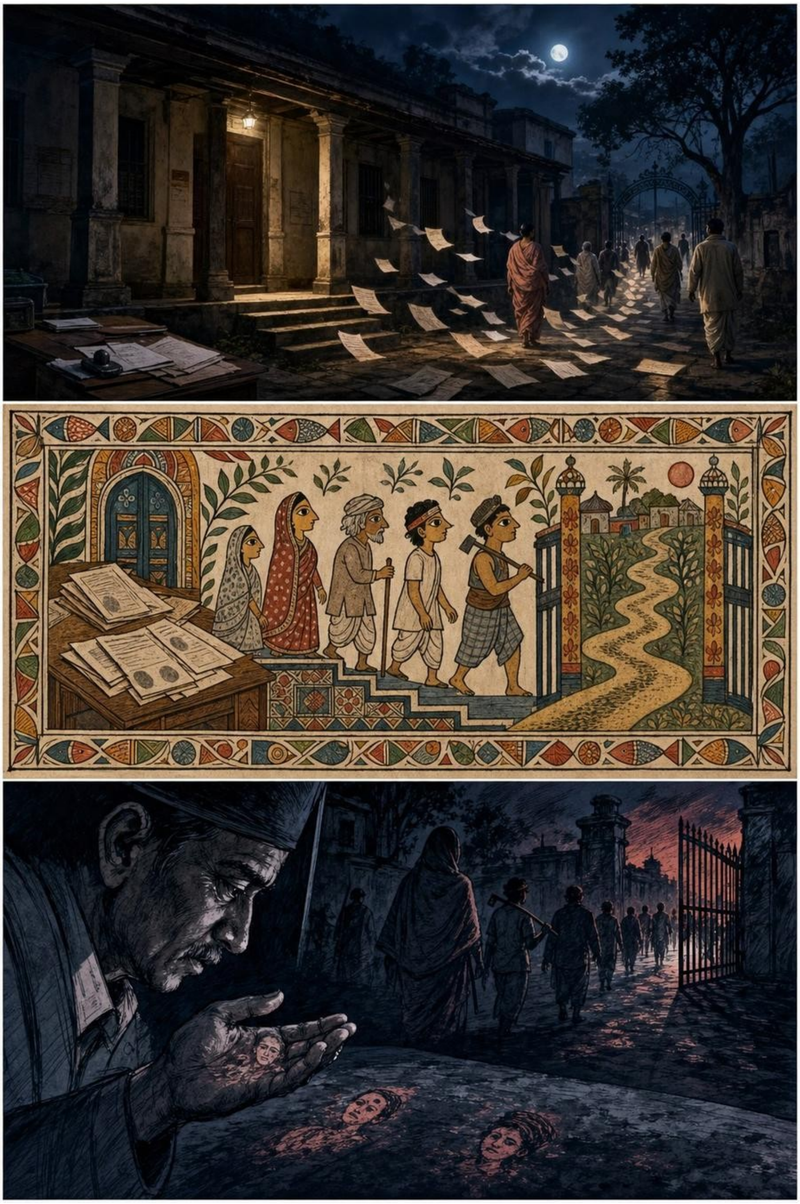

अध्यायारम्भ लोकगीत: नाम घर दिस बटोहिया

लोकधुन: बटगबनी

चलू हे नाम, घरक बाटे चलू हे,
देहरी पर माएक दीप—ओतहि धरि बढ़ू हे।

अलमारी छोड़ि नाम चलल घरक पथ पकड़ि,
बरामदा, सीढ़ी, धूरि पार कएल दृढ़ि।
देहरी पर माय दीप लऽ बाट जोहि रहल,
नामक पएरक आहटसँ सूखल आँगन हँसल।

बाट नमहर हो तइयो बटोहिया गीत गाउ,
एक-दोसराक संग धरि प्रत्येक नाम घर पहुँचाउ।
घर घुरल नामसँ पुरखा सभ आशीष देत,
बिसरल वंशक पात फेर हरियर रंग लेत।

अलमारी-बरामदा-सीढ़ी सभ पार भेल,
धूरि-भरल बाटो पर पएरक छाप गेल।
आहट सुनि आँगन हँसल, तुलसी हिलल डारि,
घुरल नामक टीकासँ चमकल घर-दुआरि।

❖

नाम कतऽ रहै छै? अलमारीमे नै। अलमारीमे नामक नकल रहै छै। असली नाम देहरी पर रहै छै—ओहि ठाम जतऽ साँझमे दीप बरै छै आ कियो प्रतीक्षामे बैसल रहै छै। जे नाम देहरी धरि नै घुरल, ओ नाम आधा छै, चाहे कागच पर पूरा लिखल हो।

बाट नमहर छै। बाटमे नदी छै, टूटल पुल छै, आधा पक्का सड़क छै, आ ओहिसँ बेसी—लोकक बिसरनाइ छै। गाम बिसरि जाइ छै जे केओ छल जे मेड़ पर दिन भरि बैसल रहै छल। मुदा माटि नै बिसरै छै। माटि पएरक छाप राखि लै छै, आ जखन कियो पुरान नाम पुकारै छै, माटि ओ छाप घुरा दै छै।

खबर लऽ जाएब एक बात छै; गरिमा लऽ जाएब दोसर। जे घरमे दुःख रहै छै, ओहि घरक दुआर पर पएर धीरे धरबाक चाही। जुलूस बना कऽ ककरो जखम देखाएब सेहो एक प्रकारक लूट छै। नाम घुराउ, तमाशा नै बनाउ।

आ जे नाम कहियो घर नै भेटतै? ओकरो एक ठाम चाही। ओहि लेल चन्ना गाछी छै। जकर देहरी हेरा गेल, ओकर नाम गाछीक छाहमे राखल जेतै। किएक तँ गोहि देह खाइ छै, नाम नै। नाम जखन यात्रा करै छै, तखन गोहिक दाँत पाछाँ छूटि जाइ छै।

पेटीक मुँह पर चिपकल 'मानव गवाही'क कागच रातिमे सूखल, आ ओहि सूखैत गोंदक संग नाम सभक यात्रा शुरू भऽ गेल। रेकर्ड-घरक दरबाजा रातिमे बन्द भेल, मुदा नाम सभ भीतर बन्द नहि रहल। जकरा सभ काल्हि धरि मृत प्रकरण, निरस्त आवेदन, अस्पष्ट बयान, अपूर्ण अभिलेख, आ रद्दी कागच कहल जा रहल छल, ओ सभ रातिक अन्हारमे धीरे-धीरे अपन-अपन देह खोजय लागल। कागच मेज पर राखल छल, पर नाम सभ बरामदाक पाथर पर उतरि गेल; पाथरसँ सीढ़ी पर, सीढ़ीसँ फाटक पर, आ फाटकसँ गामक बाट धरि। न्यायालय सुति गेल छल, मुदा नामक यात्रा शुरू भऽ गेल छल।

सबेर जखन भिखारी लाल चपरासी फाटक खोलय आयल, ओकरा लगल जे बरामदाक पाथर पर राति भरि केओ ओस नहि, अक्षर छोड़ि गेल अछि। ओ झुकि देखलक। किछु अक्षर स्पष्ट नहि छल, मुदा तकरा भीतर चेहरा छल। जसोदा देवीक नाम लग माटिक रेखा छल, बूढ़ मुवक्किलक आवेदन लग भीजल अँगूठाक छाप जेकाँ चिन्ह, एक मजदूरक नाम लग लोहाक बुरादा, एक छात्राक नाम लग टूटल पेंसिलक नोक। भिखारी लालक साँस रुकि गेल। काल्हि ओ जे रेखा खिंचने छल—एहि पार रद्दी नहि कहल जाए—ओ रेखा राति भरि पसरि कऽ पूरा बरामदा घेरि लेलक छल।

अनन्या सभसँ पहिने पहुँचली। ओकर संग आरुणि, देविका, मीरा, आ दू-तीन बच्चा सभ छल। ओ सभ हाथमे नव कापी नहि, काल्हिक धूलि लागल रजिस्टर नेने छल। अनन्या कहली—'नामक यात्रा कागचसँ शुरू भेल अछि, मुदा कागच पर समाप्त नहि होएत।' मीरा जोड़ली—'जे नाम फाइलमे फँसल छल, ओकर घर धरि खबर पहुँचत। मुदा खबर लऽ जाएबसँ पहिने गरिमा लऽ जाएब।'

गरिमा शब्द बरामदामे धीरेसँ बाजल। अदालतक बरामदा प्रायः जोरक आवाज, पुकार, बहस, डाँट, तारीख, बहाना आ थाकल पएरक धप्प-धप्प सुनैत रहल छल। मुदा ई शब्द एतेक

कोमल छल जे पाथर सेहो नरम भऽ उठल। देविका बच्चा सभकेँ बुझेली—‘ककरो दुखक समाचार लऽ जाएब तँ जुलूस बनाकऽ नहि। जे घरमे दुख रहैत अछि, ओ घरक दुआर पर पएर धीरे धरू।’

पहिल निर्णय भेल जे नाम सभक सूची तीन भागमे बनत। पहिल—जे जीवित छथि आ जिनका सँ अनुमति लेल जा सकैत अछि। दोसर—जे नहि रहलाह, परिजन खोजल जाएत। तेसर—जेकर घर, वंश, ठाम, सभ धुँधला भऽ गेल अछि, ओकर नाम चन्ना गाछी लग स्मृति-पाठमे पढ़ल जाएत, मुदा तमाशा नहि बनाओल जाएत। आरुणि सूची पर लिखलक—‘अनुमति बिनु चेहरा नहि, सन्दर्भ बिनु उद्धरण नहि, गरिमा बिनु गवाही नहि।’

सत्यव्रत मेहता एहि व्यवस्था केँ देखैत रहलाह। हुनका मोन पड़ल जे कानूनमे प्रक्रिया कहल जाइत अछि; मुदा गरीबक जीवनमे प्रक्रिया बेर-बेर पिंजरा बनि जाइत अछि। बच्चा सभ जे नव नियम बना रहल छल, ओ सरकारी प्रक्रिया नहि, मानवीय सावधानी छल। ओ कहलनि—‘प्रक्रिया जँ मनुष्यक रक्षा नहि करय, तँ ओ केवल कुण्डी अछि। ई सूची कुण्डी नहि, दुआर होअय।’

लिपिक धीरेसँ एक पुरान रजिस्टर लऽ आयल। ओकर आँखि राति भरि निन्नसँ अधिक अपराधबोधसँ लाल छल। ओ कहलक—‘हम फाइलक नकल सोझे नहि दऽ सकैत छी। पर जे सार्वजनिक अभिलेख अछि, तकर सूची बनबाक अधिकार अछि।’ देविका ओकरा देखली—‘अधिकार शब्द आब अहाँ पहिल बेर ठीक जगह कहि रहल छी।’ लिपिक मुँह झुका लेलक, मुदा एहि बेर ओकर मौन भागनाइ नहि, स्वीकार छल।

सूची बनब शुरू भेल। प्रत्येक नामक सोझाँ केवल मुकदमा संख्या नहि, प्रतीक्षाक बरख लिखल गेल। ‘तेइस बरख’, ‘बारह बरख’, ‘सात सुनवाई बिनु सुनवाई’, ‘अर्जी दू बेर हेरायल’, ‘वादी मृत’, ‘उत्तराधिकारी शहर पलायन’, ‘स्त्रीक बयान घरक मामला कहि दबल’, ‘मजदूरक चोट क्षेत्राधिकार बाहर’, ‘छात्राक छात्रवृत्ति जाति-प्रमाणपत्रमे त्रुटि’। एहि वाक्य सभक बीच बच्चा सभ अकड़ल भाषा काटि-काटि मानवीय भाषा राखैत गेल।

एक युवक अधिवक्ता, जे काल्हि अपन कोट पाथर पर राखने छल, आइ बिनु कोट आयल। ओकरा सभ लोक चिन्हैत छल, मुदा ओ स्वयं अपन पेशाक आवरण उतारि देलक छल। ओ कहलक—‘हम एहि नाम सभक घर खोजबामे मदति करब। अदालतक कागचमे जे पता अछि, से कतेक बेर पुरान होइत अछि। मुदा किछु तहसील रेकर्ड, किछु पंचायत, किछु पुरान नक्शा सँ मार्ग भेटि सकैत अछि।’

आरुणि ओकरा रोकलक—'मदति करू, पर मालिक नहि बनू।' युवक अधिवक्ता तुरन्त चुप भऽ गेल। ओ बुझलक जे सेवा आ नियन्त्रणक बीच पातर भेद अछि। जे वकील बरखों धरि कागचक भाषा सँ लोक पर अधिकार रखैत रहल, ओकरा आब सुनबाक भाषा सीखबाक छल। ओ माथ झुका कऽ कहलक—'हम केवल मार्ग देखाएब, निर्णय नामक पहरुआ सभ करथि।'

पहिल घर जसोदा देवीक खोजल गेल। फाइलमे गामक नाम आधा मेटायल छल; कागचक किनार दीमक खा गेल छल। मुदा खेतक खाता संख्या बचल छल। भिखारी लाल कहलक—'एहि खाता पर एक बेर नीलामीक कागच आयल छल। ओ गाम नदी पार अछि।' बूढ़ मुवक्किल सेहो बजलाह—'हम ओहि गामक हाट गेल छी। ओतय पीपर लग तेली सभक पुरान कोठरी अछि।' एहि छोट-छोट स्मृतिसँ रास्ता बनल।

चारि बच्चा, देविका, युवक अधिवक्ता, आ भिखारी लाल जसोदा देवीक गाम दिस निकलल। अनन्या आ मीरा अदालतमे सूची सम्हारि रहली। सत्यव्रत मेहता बरामदामे रुकलाह, कारण हुनका बुझाइत छल जे यात्रा केवल बाहर नहि, भीतर सेहो चलि रहल अछि। अदालतक रेकर्ड-घर भीतर केओ फेर कागच हटाबय नहि जाए, तकरा लेल पहरा जरूरी छल।

गामक बाट साधारण नहि छल। सड़क आधा पक्का, आधा गड्ढा। जे पुल ढहल छल, तकर छाह एखनहुँ लोकक बोलीमे बचल छल। नदीक धार कम छल, मुदा तट कटायल। नावक पेंदीमे जमा पानि पएरक तरुआ भिजबैत छल आ ओहि भीजल काठसँ काइक हलुक गन्धि उठैत छल। नाविक कहलक—'जसोदा? पुरान नाम अछि। ओहने एक स्त्री छलीह जे खेतक मेड़ पर दिन भरि बैसल रहैत छलीह। कहैत छलीह—मेड़ हटत तँ हमर देह कटत।' देविका सभक आँखि एक-दोसराक संग मिलल। फाइलक पाँति—"हमर खेत बिनु हमर नामक देह छी"—आब गामक स्मृतिसँ मिलि गेल।

जसोदा देवी नहि रहलीह। हुनकर घर आधा ढहल, आधा मरम्मत कएल। दुआर पर एक वृद्धा बैसल छलीह—कहला पर पता चलल, ओ जसोदाक भतीजी छलीह, आब स्वयं नानी भऽ गेल छथि। देविका धीरेसँ पूछली—'हम सभकेँ अदालतक पुरान कागचमे जसोदा देवीक नाम भेटल। अहाँ सुनय चाहब?' वृद्धा पहिने चौंकलीह। फेर आँखिसँ जल उतरि गेल। 'ओ नाम एखनहुँ जीबैत अछि?'

ई प्रश्न उत्तरसँ पूर्वे पूरा यात्रा केँ सार देलक। बच्चा सभ बुझि गेल जे नामक यात्रा कागचसँ घर धरि केवल सूचना नहि, पुनर्जन्म अछि। देविका रजिस्टर खोलली, मुदा भीड़ जमा नहि होमय देली। जे पड़ोसी चितबय लगल छल, ओकरा सभकेँ विनम्रतासँ पाछाँ कएल गेल।

वृद्धाक अनुमति लेल गेल। तखन जसोदा देवीक पाँति पढ़ल गेल। वृद्धा अपन छाती पर हाथ राखि कहलीह—‘ओ कहैत रहथि, खेत गेल तँ हम नहि रहब। लोक हँसैत छल। आब कागच कहि रहल अछि।’

जसोदाक खेत आब दोसराक कब्जामे छल। मेड़ पर ईंटक छोट गोदाम बनल छल। युवक अधिवक्ता झुँझलायल, मुदा देविका ओकरा रोकली—‘क्रोध लिखू, पर निर्णय एखन नहि सुनाउ।’ बच्चा सभ खेतक किनार माटि उठौलक नहि, चित्र नहि लेलक। केवल वृद्धाक अनुमति सँ गामक स्मृति लिखलक—कखन मेड़ हटायल गेल, ककर नाम पर खाता बदलल, जसोदा कोना पंचायत गेलीह, कोना हुनका “जिद्दी” कहल गेल।

ओहि समय एक अधबएसू पुरुष, जे गोदामक देखरेख करैत छल, आगाँ आयल। ओ कठोर स्वरमे पूछलक—‘पुरान बात खोदबासँ की होएत?’ आरुणि शान्त रहल—‘पुरान बात नहि, दबल नाम पढ़ि रहल छी।’ पुरुष हँसल—‘कागचमे जे लिखल, ओहिसँ किछु नहि बदलत।’ भिखारी लाल, जे एतेक दिन चपरासी मात्र छल, अचानक उत्तर देलक—‘कागच गलत हाथमे रहल तँ नहि बदलल। आब नामक हाथमे जाएत।’

पुरुष चुप भऽ गेल, मुदा ओकर आँखिमे डरक हलुक रेखा देखाइ पड़ल। गोहि सभ जखन जलमे रहैत अछि तँ ओकरा दाँत पर भरोस होइत अछि; मुदा जखन किनार पर लोक ओकर नाम चिन्हि लिअय, तखन ओ जलक नमी खोजैत अछि। एहि पुरुषक चेहरा पर ओही नमीक खोज छल। देविका ओकर नाम नहि लिखली, कारण बिनु प्रमाण आरोप लिखब न्याय नहि। ओ केवल लिखली—‘कब्जाधारी पक्ष बात टारय चाहलक।’

साँझसँ पहिने दल अदालत घुरल। संगमे जसोदाक भतीजीक अनुमति, ओकर मौखिक स्मृति, आ खेतक स्थितिक टीप छल। फाइलमे पहिल बेर कागचक बाहरक जीवन जुड़ल। अनन्या ओ टीप पढ़ि कऽ कहली—‘आब जसोदा देवी मृत प्रकरण नहि। आब ओ जीवित स्मृति छथि।’ मीरा सूचीमे लाल रेखा नहि, हलुक पीयर चिन्ह लगौली—‘घर भेटल, आवाज भेटल।’

दोसर यात्रा मजदूरक नाम लेल तय भेल। फाइलमे ओकर नाम ललन मण्डल लिखल छल, पर सम्भव छल जे ओ ललन मंडल, लालन, वा ललित सेहो कहल जाइत हो। नामक वर्तनी सेहो व्यवस्था द्वारा कतेक बेर बिगाड़ल जाइत अछि। सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘नाम सुधारबासँ पहिने पूछब। कागचक नाम मनुष्य पर मत थोपब।’ ई शिक्षा बच्चा सभक लेल जरूरी छल। नाम बचबैत-बचबैत नाम बिगाड़ि देब सेहो हिंसा अछि।

रातिमे बरामदामे छोट गोष्ठी भेल। कलाकार सभ, जे काल्हि नकली भूतक कथा सँ घुरल छल, ओ सभ सेहो आयल। एक कलाकार कहलक—‘हम एहि नाम सभ पर नाटक करब?’ मीरा तुरन्त कहली—‘नाटक करबाक जल्दी नहि। पहिने नाम सभ अपन घरमे फेर प्रवेश करय।’ कलाकारक चेहरा उतरि गेल, मुदा ओ मानि गेल। देविका समझौली—‘अभिनय तखन करब, जखन पीड़ितक स्मृति अनुमति देत। नहि तँ मंच फेर लूटक जगह बनि जाएत।’

चन्ना गाछीक ठूँठक खबर सेहो आयल। कियो कहलक जे ठूँठक दरारमे राति भरि ओस भरल रहल, जेना ओ नाम सभक यात्रा सुनि रहल हो। बूढ़बा भूत देखेलाह नहि, मुदा छत पर बैसल चिरई लाल सूत छोड़ि गेल। बच्चा सभ लाल सूत उठौलक नहि; ओ ठामे रहय देलक। प्रतीक कें कब्जामे करबाक जल्दी नहि करबाक चाही—ई बात आब ओ सभ सीखि रहल छल।

राति गाढ़ भेलाक बाद सत्यव्रत मेहता असगरे रेकर्ड-घरक दुआर लग गेलाह। भीतर कागच क्रमबद्ध छल। बाहर बरामदामे पाथर पर नामक सूचीक प्रतिलिपि राखल छल। हुनका लगल जे अदालतक इतिहासमे शायद पहिल बेर फाइलक भीतरक मनुष्य अपन घर दिस घुरल अछि आ घरक स्मृति फाइल दिस। ई आवागमन ही न्यायकें जीवित रखत। एकतरफा कागच मृत होइत अछि; एकतरफा रोदन अप्रतिवेदित। दुनू मिलल तखन गवाही बनैत अछि।

लिपिक धीरेसँ पाछाँ आयल। ओ कहलक—‘हम डरैत छी। ऊपरक अधिकारी पूछताह तँ की कहब?’ सत्यव्रत उत्तर देलनि—‘साँच कहब—कागच पढ़ल गेल।’ लिपिक हँसल नहि। ओकरा बुझायल जे साँच कहबासँ नोकरी जा सकैत अछि। सत्यव्रत फेर कहलनि—‘डर कें सेहो सूचीमे लिखू। जे व्यवस्था नाम दबबैत अछि, ओ पहिने कर्मचारीक कण्ठ दबबैत अछि।’ लिपिक पहिल बेर अपन डरक अलग पर्ची बनौलक। शीर्षक लिखलक—‘कर्मचारीक मौनक बयान।’

ई पर्ची छोट छल, मुदा महत्त्वपूर्ण। कारण अन्याय केवल ऊपरक अपराधी सँ नहि बनैत; ओ नीचाँ-नीचाँ भयक डोरिसँ बान्हल रहैत। भिखारी लाल, लिपिक, कनिष्ठ वकील, कागच ढोअनिहार, मोहर लगौनिहार—सभ जँ कहथि जे हम केवल आदेश मानलहुँ, तखन अपराधक गोहि बिनु नामक जलमे तैरैत रहत। एहि लेल आइ डरक नाम सेहो लिखायल।

मध्यराति धरि सूची बढ़ैत गेल। किछु नामक आगाँ प्रश्नचिह्न, किछु आगाँ ‘घर खोजबाक अछि’, किछु आगाँ ‘परिजनक अनुमति चाही’, किछु आगाँ ‘दस्तावेज मिलान बाकी’। बच्चा सभ थाकि गेल, मुदा थकानमे अजीब उजास छल। हुनका सभकें लगल जे ओ सभ किताब नहि, जीवनक अक्षर पढ़ि रहल अछि।

अन्तमे अनन्या रजिस्टर बन्द करैत कहली—'नामक यात्रा पहिल दिनमे समाप्त नहि होएत। किछु नाम गाम धरि जाएत, किछु शहर, किछु नदीक पार, किछु स्मृतिमे। किछु नाम कदाचित् कहियो घर नहि भेटत। मुदा जे नाम घर नहि भेटत, ओकरा हम चन्ना गाछी लग स्थान देब।'

बरामदामे ठाढ़ सभ लोक एक क्षण लेल चुप रहल। ई चुप्पी हारक नहि छल। ई ओहि लोकक प्रतिज्ञा छल जे बुझि गेल अछि—न्याय केवल अपराधीक नाम उजागर करब नहि, पीड़ितक नाम पुनः आदर सँ उच्चारण करब सेहो अछि। गोहि देह खाइत अछि, मुदा नाम नहि। नाम जखन यात्रा करैत अछि, तखन गोहिक दाँत पाछाँ छूटि जाइत अछि।

भोर होइत-होइत पहिल सूची तीन प्रतिलिपिमे लिखि कऽ राखल गेल—एक रेकर्ड-घरमे, एक बरामदाक पाथर लग, आ एक चन्ना गाछी धरि लऽ जाएबाक लेल। सूरज निकलल तँ पन्ना पर ओसक बून्द चमकि उठल। कियो कहलक—'स्याही भीजि जाएत।' मीरा उत्तर देली —'नहि, ई ओस नहि, नामक स्नान अछि।'

एहि तरहेँ अध्यायमे फाइलक भीतरक मनुष्य घर दिस चलल। अदालती बरामदा आब बाट बनल, रेकर्ड-घर स्रोत बनल, आ चन्ना गाछी प्रतीक्षा करैत सुननिहार।

लोकगीत: नाम घर दिस चलल

लोकधुन: बटगबनी

चलल हे नाम, अलमारी छोड़ि घर दिस चलल हे,
आदर सँ उच्चरल नाम दाँत बीच ने अटकल हे।

अलमारी छोड़ि नाम चलल, बरामदा पार कएलक,
पाथर सँ फाटक, फाटक सँ गामक बाट धेलक।
जसोदाक नाम लग माटि, मजदूर लग लोहाक धूर,
टूटल पेंसिल संग छात्रा—सभ घरसँ दूर।
तीन प्रति बनल—कचहरी, पाथर, गाछी,

ओसक बून्द चमकल, जेना नाम नहा कऽ आबी।
गोहि देह खा लेत, यात्रा नहि रोकत,
आदर सँ उच्चरल नाम दाँत बीच नहि अटकत।

नाम, अपन घरक देहरी फेर चिन्हू,
माय केर काँपैत ओंठ पर अपन ध्वनि बिन्हू।

जसोदा लग माटि, मजदूर लग लोहाक धूर भेटल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—आकाश आकाशक समान अछि जकाँ वाक्यमे आन देशक आ: राम-रावणयुद्धक उदाहरणमे पूर्व वा आन प्रसङ्गक युद्ध उपमान अछि, आ वर्तमान प्रसङ्गक युद्ध उपमेय। "आकाश आकाशक समान अछि" जकाँ वाक्यमे आन देशक आकाश उपमान अछि आ वक्ताक सम्मुख आकाश उपमेय।।]

अध्याय १४५

डरक पहिल दरार

डर एक्कहि बेरमे नहि टूटै छै— पहिने दरार पड़ै छै, आ दरारसँ इजोत पैसै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: दरारमे दीप

लोकधुन: झिझिया-जागरण

धरू हे दीप, दरारे मे दीप धरू हे,
डरक घैलाक छिद्र सँ अँजोर झरू हे।

डरक घैला पर नान्हि दरार, ओतहि दीप धरू,
छिद्र-छिद्रसँ उजास झरै, भीतर साहस भरू।
घैला टूटत नहि तुरन्त, प्रकाश पहिने जाए,
जकर मनमे भोर बसल, ओ राति पार लगाए।

बहिनी सभ झिझिया घुमाउ, गीतक घेरा बनाउ,
दरारकेँ कमजोरी नहि—उम्मीदक द्वार बताउ।
एक किरण सय किरण बनि अन्हारक मोल घटत,
डरक घैला भीतरसँ आशाक कमल फूटत।

घैला फूटत नहि तुरत, पहिने पैसए इजोत,
भीतरक अन्हार पघिलत, जगत मनक जोत।
बहिनी-घेरा गीत गाबए, झिझिया माथ नाचए,
एक किरण सय बनि कऽ रातिक हिसाब बाँचए।

❖

पहिल दरार कतऽ पड़ै छै? पीड़ितक चीत्कारसँ नहि। पीड़ितक चीत्कार तँ बरखों धरि सुनल जाइत रहल छै, तइयो घैला अटल रहल छै। पहिल दरार ओतऽ पड़ै छै जतऽ अपराधी स्वयं अपन साथीसँ पूछि बैसैत छै—अहाँ ककरा बचबैत छी?

जे कागच बरखों धरि नाम दबेने रहल, से जखन बजए लगैत छै, तखन डर एक जगह नहि रहैत। ओ हँसी बनि कतहु जाइत छै, क्रोध बनि कतहु, धर्मक नारा बनि कतहु, नियमक हवाला बनि कतहु। मुदा जतऽ-जतऽ ओ जाइत छै, ततऽ-ततऽ ओ अपन असली रूप कमजोर करैत जाइत छै।

मौन सेहो बजैत छै। जे लिपिक बरखों धरि चुप रहल, ओ जखन अपन चुप्पीक बयान लिखैत छै, तखन ओ मौन नहि रहि जाइत—ओ गवाही बनि जाइत छै। जे चपरासी झाड़ू लगबैत रहल, ओ जखन कहैत छै जे ई रद्दी नहि छल, तखन ओकर हाथ बदलि जाइत छै।

दरार पतली होइ छै। मुदा हवा एक बेर घुसल तँ बन्द कोठरीक झूठक गन्ध बाहर आबिये जाइ छै। लोक नाक ढाँपय लगैत छै, फेर आँखि खोलए बाध्य होइ छै। ई दरारक पहिल काज छै—झूठकेँ अपने गन्धसँ चिन्हा देब।

अध्याय एतय समाप्त नहि भेल छल—बाटक रंगमंच, बरामदाक फैसला, रेकर्ड-घरक अन्हार, रद्दी बोराक गवाही, आ नामक यात्राक बाद आब डरक बेर छल। भोरक उजास जखन बरामदाक पाथर पर पड़ल, तखन नामक तीन प्रतिलिपि अपन-अपन बाट पकड़बाक लेल तैयार छल। एक प्रति रेकर्ड-घरमे रहि गेल, एक अदालतक बरामदा लग पाथर पर, आ तेसर अनन्या अपन कपड़ाक थैलीमे राखि चन्ना गाछी दिस लऽ चलली। ई केवल कागचक यात्रा नहि छल; ई ओहि भयक विरुद्ध चलल पहिल जुलूस छल जे बरखों धरि लोकक कण्ठ पर बिनु आवाजक हाथ राखि देने छल।

गामक बाट पर एखन धुन्ध छल। ओसक बून्द घास पर चमकि रहल छल, मुदा बच्चा सभक आँखिमे ओससँ बेसी सावधानी छल। नामक सूचीकेँ ओ सभ झण्डा जेकाँ नहि उठा रहल छल, कारण पीड़ाक प्रदर्शन हुनका सभक नियम नहि छल। ओ सूचीकेँ गोदीमे राखि, देहक ऊष्मासँ बचबैत, धीरे-धीरे चलि रहल छल। जकर नाम लिखल अछि, ओकर नामक भार सभसँ पहिने आदर माँगैत अछि—ई बात मीरा बेर-बेर स्मरण करा रहल छली।

चन्ना गाछी लग पहुँचि सूची खोलल गेल। ठूँठक जड़ि लग पिछला रातिक लाल सूत एखनहुँ माटिमे अटकल छल। चिरई छज्जासँ नहि, एहि बेर ठूँठक एक सूखल डार पर बैसल छल। ओकर चोंच खाली छल, मुदा आँखि स्थिर। अनन्या सूची ठूँठक सोझाँ राखि कहली—‘ई नाम सभ घर खोजि रहल अछि। जे घर भेटत, ओतय पहुँचाओल जाएत; जे घर नहि भेटत, ओकरा एहि गाछीक स्मृतिमे स्थान देल जाएत।’

ओहि क्षण हवा चुप भेल। पात नहि छल, तइयो ठूँठक भीतर किछु सरसरायल। आरुणि धीरेसँ कहलक—‘गाछी सहमति देलक।’ कियो हँसल नहि। ई समय हँसीक नहि छल। लोक सभ जे काल्हि धरि भूतक कथा सुनबाक लेल जमा होइत छल, आइ नाम सुनबाक लेल ठाढ़ छल। भूतक भयक ठाम मनुष्यक अनुपस्थितिक भय आबि गेल छल।

मुदा गामक दोसर छोर पर ई बात आगि जेकाँ पहुँचि गेल। चन्द्रपालक घरमे नोकर सबेरक चाह राखैत छल, तखन एक अधिवक्ता-दूत साँस फुलबैत भीतर आयल। ओकरा कहबाक ढंगमे भय ओतबे छल जतेक खबरमे। ‘सूची बनि गेल अछि,’ ओ कहलक। ‘रेकर्ड-घर सँ नाम निकलल। बच्चा सभ चन्ना गाछी लऽ गेल।’ चन्द्रपाल चाह उठौलक, मुदा हाथ काँपल; प्यालाक किनार सँ चाह मेज पर टपकि पड़ल।

चन्द्रपाल कैँ विश्वास नहि भेल जे फाइलक अन्हार बाहर धरि पहुँचि सकैत अछि। ओ बरखोंसँ मानि बैसल छल जे कागच जकरा अलमारीमे बन्द कऽ देल जाए, ओकर आवाज मरि जाइत अछि। ओकरा बुझाइत छल जे तारीखक धूलि साँच कैँ ओना झाँपि दैत अछि जेकाँ पोखरिक कीचड़ डूबि गेल लाश कैँ। मुदा आइ ओकरा कहल जा रहल छल जे कागच चलि रहल अछि, नाम घर खोजि रहल अछि, आ बच्चा सभ पहरा देत।

राघव कैँ खबर पहुँचल तँ ओ पहिने हँसल। ओकर हँसी सदिखनक जेकाँ तेज छल, पर भीतर खोखल। ओ कहलक—‘बच्चा सभ की करि लेत?’ मुदा ई वाक्य पूरा होएसँ पहिने ओकर चेहरा बदलि गेल। ओकरा मोन पड़ल जे बच्चा सभ प्रश्न करैत अछि, आ प्रश्नक उत्तर लाठीसँ नहि देल जा सकैत। जँ कागचक नाम लोकक मुँह पर आबि गेल, तँ झूठक देबाल पर चूना नहि टिकत।

लाउ, जे सभ दिन दुस्साहसक आवरणमे अपन डर नुकबैत छल, बाजारक पाछाँक कोठरीमे बैसल रहल। ओकर सोझाँ दूटा पुरान पर्ची राखल छल—एक पर ककरो अँगूठा, दोसर पर नकली गवाहक हस्ताक्षर। ओहि दू पर्चीसँ कतेको खेत, कतेको घर, कतेको ऋण, कतेको देहक श्रम बँधल छल। लाउ पहिल बेर पर्ची कैँ धनक औजार नहि, दाँतक निशान जेकाँ देखलक।

बटुकनाथ हरिहरनक पुरान हवेलीमे सेहो हलचल भेल। बटुकनाथ स्वयं आब नहि छल, मुदा ओकर नामक डेरा एखन घरक देबाल पर टँगल चित्र, पीतलक घण्टी, दान-पत्रक बाकस, आ अनुयायी सभक अभिमानमे जिबैत छल। ओकर उत्तराधिकारी सभ गोला बनाकऽ बैसल। एक जन कहलक—‘एहि सूचीमे गुरुदेवक नाम नहि आबए दियौ।’ दोसर कहलक—‘नाम नहि, संकेत अछि।’ तेसर, जे सभसँ चालाक छल, कहलक—‘संकेतसँ बेसी खतरनाक किछु नहि।’

एहि सभ घरमे डर अलग-अलग भाषा बजि रहल छल। कतहु ओ हँसी बनि रहल छल, कतहु क्रोध, कतहु धर्मक अपमानक नारा, कतहु नियमक हवाला, कतहु बालक सभक ‘

अविवेक’क चर्चा। मुदा डरक मूल एक छल—नामक यात्रा। जखन पीड़ितक नाम घर घुरैत अछि, तखन अपराधीक नाम अपन आवरण खोबए लगैत अछि।

दुपहर धरि अदालतमे हलचल बढ़ल। रेकर्ड-घरक बाहर अधिकारी आयलनि। हुनकर चेहरा पर औपचारिक कठोरता छल। ओ लिपिककेँ झिड़कलनि—‘बिनु अनुमति फाइल किएक देखाओल गेल?’ लिपिक चुप रहल। भिखारी लाल पाछाँ ठाढ़ छल। सत्यव्रत मेहता बरामदाक स्तम्भ लग। सभ प्रतीक्षा करैत रहल जे लिपिक फेर पुरान डरमे दबि जाएत।

लिपिक धीरेसँ अपन जेब सँ छोट पर्ची निकाललक—‘कर्मचारीक मौनक बयान।’ ओ पर्ची हाथमे काँपि रहल छल, मुदा आवाज काँपल नहि। ओ कहलक—‘फाइल देखाओल नहि गेल; फाइल पढ़ल गेल। जे कागच रद्दी कहल गेल छल, ओकर भीतर मनुष्यक निवेदन छल। हम बरखों नियमक नाम पर ओहि निवेदन पर धूलि सहैत रहलहुँ। एहि बातक बयान देबाक अछि।’

अधिकारी क्षणभर निःशब्द रहि गेलाह। नियमक भाषा तैयार छल, मुदा लिपिकक स्वीकारोक्ति नियमक पाँजरक बीच घुसि गेल। भिखारी लाल आगाँ बढ़ल। ओ कहलक—‘हम झाड़ू लगबैत छलहुँ। रद्दी कहैत छलहुँ। आब कहैत छी—ओ रद्दी नहि छल।’ एहि छोट वाक्यक प्रभाव अदालतक देबाल पर साफ सुनाइ पड़ल। चपरासीक गवाही अकसर कियो नहि सुनैत, मुदा आइ बरामदा सुनि रहल छल।

सत्यव्रत मेहता अधिकारीसँ कहलनि—‘जँ नियम मनुष्यक नाम मेटा देत, तँ नियमक व्याख्या पुनः करबाक पड़त।’ अधिकारीक आँखि कठोर भेल। ‘अहाँ न्यायालयक प्रक्रिया बाधित कऽ रहल छी।’ सत्यव्रत शान्त रहलाह—‘नहि, हम प्रक्रिया कँे ओकर मनुष्य घुरा रहल छी।’ एहि उत्तर पर बरामदामे ठाढ़ लोकक साँस एक बेर थमि गेल।

एहि बीच चन्ना गाछी लग पहिल परिवार पहुँचल। बूढ़ मुवक्किल अपन लाठी टिकबैत आयल। ओकर संग ओकर पोता छल, जकरा दादाक मुकदमा केवल कथा जेकाँ सुनल छल। अनन्या सूचीमे नाम देखली, आवेदनक प्रतिलिपि निकालली, आ धीरे-धीरे पढ़ि सुनौली। बूढ़क आँखि फेर धुँधला गेल, मुदा एहि बेर धुँधलापन अपमानक नहि, चिन्हारिक छल।

पोता पूछलक—‘दादा, ई नाम अहाँक अछि?’ बूढ़ हँसल, फेर रोएल। ‘हँ, मुदा ई नाम हमरासँ अधिक ओहि प्रतीक्षाक अछि जे तोहर बाबूजी धरि चलल।’ पोताक चेहरा बदलि गेल। ओकरा पहिल बेर बुझाइ पड़ल जे मुकदमा केवल जमीनक नहि छल; परिवारक समय, श्रम, शिक्षा, रोटी आ सम्मानक सेहो छल।

दोसर परिवारमे एक स्त्री आयल। ओकर माय विधवा छल, जकर आवेदन पर ‘अस्पष्ट’ लिखल गेल छल। स्त्री कागच देखिते बोलि उठली—‘मायक लिखावट टेढ़ छल, मुदा मायक बात सीध छल।’ ई वाक्य सुनि देविका सूची किनार पर लिखली—‘अस्पष्ट लिखावट नहि, अस्पष्ट न्याय।’ उपस्थित लोक सभ बुझि गेल जे भाषा आ अक्षरक दोष लगाकऽ कतेको पीड़ा अस्वीकार कएल गेल अछि।

साँझसँ पहिने चन्द्रपालक दूत चन्ना गाछी पहुँचल। ओ सभ्य स्वरमे कहलक—‘एहन सूची सार्वजनिक करब उचित नहि। प्रतिष्ठित परिवारक नाम बिनु प्रमाण जोड़ल जाएत तँ गाममे अशान्ति होएत।’ मीरा सोझाँ आयली। ओ कहली—‘सूचीमे जे पीड़ितक नाम अछि, ओ सार्वजनिक नहि कएल जाएत बिनु अनुमति। मुदा जे कागच दबेलक, जे प्रतीक्षा बेचलक, जे भय पसरौलक—ओकरा अशान्ति कहि कऽ बचाओल नहि जाएत।’

दूतक चेहरा उतरि गेल। ओकरा आशा छल बच्चा सभ नारा लगाओत आ ओ ओकरा उद्दण्डता ठहरा देत। मुदा बच्चा सभक नियम ओकर चालसँ अधिक मजबूत छल। निजता, अनुमति, सन्दर्भ, आ गरिमा—ई चारि शब्द ओ सभक पहरा बनि गेल छल। जकरा डर केवल प्रचारसँ छल, ओकरा आब नैतिक सावधानीसँ बेसी डर लागल।

राति भेल। गाममे अफवाह पसरल—चन्ना गाछी लग भूत अदालत लगा रहल अछि; बच्चा सभ पुरान कागचसँ श्राप पढ़ि रहल अछि; लिपिकक नोकरी जाएत; अधिकारी सभ छापा मारत; नाम लिखबैबला पर विपत्ति आएत। अफवाहक गोहि तेज होइत अछि, कारण ओकरा देह नहि चाही, केवल कान चाही। पर एहि बेर गामक कतेको कान सुनि कऽ चुप नहि रहल। ओ सभ पूछलक—‘कागचमे नाम अछि कि नहि?’ प्रश्न उठिते अफवाहक देह काँपए लगल।

बूढ़बा भूत राति चन्ना गाछी लग देखेलाह नहि, मुदा ठूँठक जड़ि लग माटि अलि फुलल जेकाँ लगल। कारी भूतक छाह पश्चिम दिस गेल, उज्जर प्रेतक उजास पूरब। लोक कहैत रहल जे ई संकेत अछि। आरुणि रजिस्टरमे लिखलक—‘संकेतक अर्थ जल्दबाजीमे नहि खोलू। पहिने मनुष्यक कथन सुनू।’ ई पाँति बच्चा सभक नबका नियम बनल।

अदालतमे ओही राति अधिकारीक कोठरीमे बैसकी भेल। चन्द्रपालक लोक, राघवक सलाहकार, बटुकनाथक उत्तराधिकारीक प्रतिनिधि, आ किछु वकील एक संग बैसल। ओ सभ तय करय चाहैत छल जे सूचीकेँ अवैध कहब, बच्चा सभकेँ उकसाओल कहल जाए, लिपिककेँ निलम्बनक डर देखाओल जाए, आ रेकर्ड-घर पर ताला बदलि देल जाए। मुदा जतेक योजना बनैत गेल, ओतेक डर स्पष्ट होइत गेल।

एक बुजुर्ग अधिवक्ता, जे बहुत दिन धरि चुप रहल छलाह, अन्तमे बोललाह—'ताला बदलि देब, मुदा नाम कतऽ बन्द करब?' सभ ओकरा देखए लागल। ओ आगाँ कहलनि—'फाइलक प्रतिलिपि तीन ठाम अछि। लोक सुनि चुकल। भयक समय बीति रहल अछि।' ई सुनि राघवक सलाहकार क्रुद्ध भेल—'अहाँ पक्ष बदलि रहल छी?' बुजुर्ग उत्तर देलनि—'नहि, हम देरीसँ पक्ष चिन्हारि रहल छी।'

ई वाक्य बैसकीक पहिल दरार बनल। झूठक महलमे दरार सदिखन बाहरसँ नहि पड़ैत; कखनो भीतर बैसल थाकल मनुष्यक विवेकसँ पड़ैत अछि। ओ दरार पातर छल, मुदा ओकर भीतरसँ हवा आबि गेल। हवा अबैत अछि तँ बन्द कोठरीमे राखल झूठक गन्ध पसरि जाइत अछि, आ लोक नाक ढाँपय लागैत अछि।

कोठरीक भीतर एक पुरान पंखा घुरैत रहल, ओकर चूँ-चूँ आवाजमे बुजुर्ग अधिवक्ताक वाक्य आर गहींर बुझाइत छल। बाहर कुकुर भुकलक, फेर चुप भऽ गेल, जेना ओहो एहि बैसकीक तनाव सुँघि लेने हो। मध्यराति धरि अदालत, हवेली, बाजार, चन्ना गाछी, आ गामक घर सभ एक अदृश्य डोरिसँ बँधि गेल। एक ओर सूची छल, दोसर ओर योजना। एक ओर नामक गरिमा, दोसर ओर प्रतिष्ठाक भय। एक ओर बच्चा सभक छोट रजिस्टर, दोसर ओर मोहर, ताला, पद, पैसा। मुदा पहिल बेर तराजू एकदम असमान नहि लगैत छल। कारण सत्यक भार संख्यासँ नहि, उच्चारणसँ बढ़ैत अछि।

अनन्या रातिक अन्तमे सूची समेटैत कहली—'काल्हिसँ घर-घर जएबाक अछि। जे नामक परिजन भेटत, हुनका पहिने सुनाओल जाएत। कोनो कथा बिनु अनुमति नहि लिखब।' देविका कहली—'आ जे अपराधी सभ डर पसारि रहल अछि?' मीरा उत्तर देली—'डरक नाम सेहो लिखब। भय पसरौनिहारक चिन्हारि ओहि दिन शुरू होइत अछि जखन लोक पूछैत अछि—अहाँ ककरा बचा रहल छी?'

चन्ना गाछी पर हवा चलल। सूखल ठूँठक छाल सँ धूलि झरल, मुदा धूलिक भीतर एक महीन हरियर बिन्दु देखायल। कियो निश्चित नहि कहि सकल जे ओ सचमुच अंकुर छल वा रातिक छलना। मुदा बच्चा सभ ओकरा छुइलक नहि। ओ सभ बुझि गेल छल—जीवनक प्रमाणकेँ तुरन्त घोषणा बना देब सेहो हिंसा अछि। ओकरा पहिने उगए देबाक चाही।

एहि तरहेँ अध्यायमे डरक पहिल दरार पड़ल। नामक यात्रा अपराधीक घर धरि खबर बनि पहुँचल, कर्मचारीक मौन बयान बनि उठल, आ गामक कान अफवाहक बदला प्रश्न सुनय लागल

।

लोकगीत: डरक दरारसँ इजोत

लोकधुन: झिझिया-जागरण

टूटू हे डर, मनुख ने टूटए—डर टूटू हे,
दरारक इजोत हरेक दबल आँखि छूबए हे।

डरक घैला पर नान्हि दरार, भीतर दीप झलकल,
‘अहाँ ककरा बचबैत छी?’—पूछिते झूठ थरकल।
सूची गोदीमे, न झण्डा, न तमाशा,
परिजनक अनुमतिसँ खुलत पीड़ाक भाषा।
आधा बोलल कर्मचारी राति भरि नहि सूतल,

विवेकक पातर हवा बन्द कोठरीमे घुसि गेल।
ठूँठक छाल भीतर हरियर बिन्दु जागल,
कियो छुइलक नहि—जीवनकेँ उगबाक समय लागल।
डर टूटू धीरे, मनुष्य नहि टूटए,
दरारसँ इजोत हरेक दबल आँखि छुए।

'अहाँ ककरा बचबै छी?'—पुछिते झूठ थरथरल।
आधा बाजल कर्मचारी राति भरि ने सूतल,
विवेकक पातर हवा बन्द कोठरीमे पैसल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—विशिष्टज्ञानत्वक लक्षणपर आपत्ति: आपत्ति—“ई गाय अछि” एहन विशिष्ट प्रत्यक्ष विशेषणज्ञानसँ उत्पन्न होइत अछि, कारण ओ विशिष्टज्ञान अछि—एहि अनुमानमे व्यावर्त्य निर्विकल्पक ज्ञान अछि; मुदा निर्विकल्पक ज्ञानक अस्तित्व पहिने सिद्ध नहि। विशिष्टज्ञानत्वक लक्षणपर आपत्ति।]

अध्याय १४६

मुहरक दाग

मुहरक दाग कागजपर नहि— लगौनिहारक हाथपर सभसँ गाढ़ रहै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: लाल मोहर सेवा हाथ

लोकधुन: नचारी-मंगल

उतारू हे मोहर, सेवाक हाथमे उतारू हे,
लाल रंगकेँ दाग नहि, विश्वास-टीका बुझू हे।

लाल मोहर हथेलीपर सेवा बनि उतरू,
जनक हकक कागचपर साँचक फूल छिड़िआउ।
दाग नहि, विश्वासक चिह्न होउ हरेक छाप,
मोहर पड़िते खुलि जाए सहायता केर आप।

हाथ जकरा चलबै, ओकर मन साफ रहय,
पदक बल नहि, लोकक मान सदिखन साथ रहय।
लाल रंग सूरुजक, चेतना आ प्यार,
मोहर सेवा हाथ बनि खोलू जनक द्वार।

छाप पड़य कागचपर, फूल खिलय हाथमे,
जनक हकक अरजी चलय सहज-सोझ बाटमे।
पदक गर्मी नहि, सूरुजक चेतना-ताप,
सेवा-हाथक मोहरसँ मेटाए जनक सन्ताप।

❖

मोहर की छै? मोहर एक गोल आकृति छै जकरा भीतर कोनो अक्षर लिखल रहैत छै। मुदा जखन ओ मनुष्यक अरजी पर पड़ैत छै, तखन ओ आकृति नहि रहैत—ओ ओकर देहक निशान बनि जाइत छै। जकरा सत्यापित कहल गेल, ओकर जीवन बदलि जाइत छै। जकरा अस्वीकृत कहल गेल, ओकर जीवन ठमकि जाइत छै।

हाथ दोषी छै कि मोहर? मोहर काठक छै; ओ अपने नहि चलैत। जे हाथ ओकरा उठबैत छै, से हाथ भूख सँ चलैत छै, डरसँ चलैत छै, कखनो आदेशसँ। मुदा जे हाथ चलल, ओकर छाप सदिखन ओहि हाथक रहत, चाहे कारण किछु होअय।

अंगूठाक निशान दबि जाइत छै जखन ओकरा ऊपर मोहर पड़ैत छै। ई केवल कागचक बात नहि। ई ओहि क्षणक बात छै जखन एक मनुष्यक असली चिह्न पर व्यवस्थाक चिह्न चढ़ि जाइत छै, आ मनुष्यक अस्तित्व दफ्तरक अस्तित्वमे विलीन भऽ जाइत छै।

जँ स्याही सूखि जाइ, तँ ओ धूलि बनि जाइ छै। धूलि उड़ि जाइ छै, मुदा दाग रहि जाइ छै। तेँ जे व्यवस्था स्याही मेटाबय चाहैत छै, ओकरा पहिने हाथ मेटएबाक पड़त—आ हाथ मेटाएब असम्भव छै।

डरक पहिल दरार अदालतक अधिकारीक कोठरी धरि पहुँचि गेल छल; आब बेर छल ओहि दागक जे कागच नहि, हाथ पर बैसल छल। रेकर्ड-घरक भीतर जे फाइल सभ काल्हि धरि निर्जीव बुझाइत छल, ओ सभ आइ अपन-अपन देह माँगि रहल छल। अनन्या जखन लाल कपड़ामे बान्हल पुरान गठरी खोलली, तखन ओकर भीतरसँ केवल कागच नहि, मोहरक गन्ध निकलल। ओ गन्ध स्याहीक नहि छल; ओ अधिकारक गन्ध छल, जे बरखों धरि लोकक मुँह पर चुप्पी बनि चिपकल रहल छल।

गठरीक कपड़ा हाथमे लैत छिछल-छिछल भऽ चूरा जकाँ झरय लागल, जेना समयक भार ओकर धागा-धागा चाबि गेल हो। गठरीक ऊपर मोट-मोट अक्षरमे लिखल छल—‘विशेष अभिलेख।’ मुदा भीतरक पन्ना सभ पर विशेष किछु नहि छल, केवल साधारण लोकक असाधारण पीड़ा छल। एक किसानक अरजी, एक विधवाक प्रतिलिपि, एक प्रवासीक बयान, एक दलित परिवारक नापी-विवाद, एक छात्रक छात्रवृत्ति रोकायल पत्र—सभ पर एकहि प्रकारक गोल मोहर लगल छल। किछु मोहर साफ, किछु टेढ़, किछु आधा, किछु एना दबायल जे अक्षरक संग मनुष्यक आवाजो चूर भऽ गेल छल।

आरुणि पहिल पन्ना पढ़लक। अरजीमे लिखल छल जे खेतक पुरान सीमाना पोखरिक जलसँ नहि, दादाक रोपल बबूलसँ चिन्हल जाइत छल। पर नापी-पुस्तकमे बबूल नहि छल, केवल रेखा छल। रेखा बदलि गेल, खेत बदलि गेल, घरक चूल्हा बदलि गेल। पन्नाक अन्तमे मोहर लागल छल—‘सत्यापित’। आरुणि धीरेसँ कहलक, ‘जे झूठ देह खा गेल, ओकरा सत्यापित कहल गेल।’

लिपिक भिखारी लालक आँखि झुकि गेल। ओ पहिने चपरासी छल, पछिला बरखसँ अस्थायी लिपिकक काम करैत छल। ओकरा बुझाइ पड़ल जे मोहर साधारण वस्तु नहि। हाथमे आबिते मोहर लोकक आवाज बदलि दैत अछि। जकरा लग मोहर अछि, ओ ‘नहि’ केँ ‘हँ’ बना

सकैत अछि, आ ‘हँ’ कैँ ‘अभिलेख अनुपलब्ध’। ई शक्ति ओकरा कखनो डरौलक नहि छल; आइ पहिल बेर ओकरा लगल जे मोहरक दाग स्याहीसँ बेसी भीतर लगैत अछि।

मीरा एक कागच उठेली। पन्नाक बीचमे स्त्रीक काँपैत हस्ताक्षर छल। नाम आधा पढ़ल जाइत छल—‘सुरमणी’ वा ‘सुरमुनि’, कहब कठिन। ओकरा पाछाँ तीन पन्ना लगल छल, मुदा सभ पर अलग-अलग तारीख आ अलग-अलग टिप्पणी। एक पर लिखल—‘हाजिरी देल।’ दोसर पर—‘अर्जदार अनुपस्थित।’ तेसर पर—‘दस्तावेज अपर्याप्त।’ मीरा माथ उठाकऽ पूछली—‘एकहि स्त्री एकहि दिन उपस्थितो कोना, अनुपस्थितो कोना?’

कोठरीमे मौन उतरि गेल। चन्द्रपालक पुरान मुंशी, जे भीड़मे चुपचाप ठाढ़ छल, ओकर गला सूखि गेल। ओहि दिन ओ सरकारी लोक नहि रहल छल, मुदा अदालतक बरामदा आ तहसीलक दफ्तर बीच दलाली करैत छल। तारीख लिखबाक, नाम चढ़ेबाक, नकल निकालबाक, मोहर लगवाबाक, आ कागच गुम करबाक छोट-छोट काम ओकर कमाइ छल। ओकरा बुझाइ पड़ल जे एक स्त्रीक उपस्थित आ अनुपस्थित होयबाक बीच ओकर अपन हाथ रहल अछि।

सत्यव्रत मेहता ओकर चेहरा पढ़ि रहल छलाह। ओ कहलनि, ‘जँ किछु मोन अछि तँ एखन कहू। पछिला बरखक पाप एखन कहब कठिन अछि, मुदा नहि कहब आओर कठिन होएत।’ मुंशी पहिने हँसबाक चेष्टा केलक, मुदा आवाज नहि निकलल। फेर ओकर ओठ काँपल—‘हम फाइल नहि गुम केने रही। हम बस ऊपर देलहुँ। ऊपरसँ घुरल नहि।’

अनन्या तुरन्त पूछली, ‘ऊपर के?’

ई छोट प्रश्न रेकर्ड-घरमे कुदाल जेकाँ बजल। ऊपर के? अधिकारी? अधिवक्ता? मुखिया? महाजन? मन्दिरक प्रबन्धक? बटुकनाथक शिष्य? चन्द्रपालक लोक? प्रत्येक ‘ऊपर’क पाछाँ एक चेहरा छल, मुदा सभ चेहरा अपनाकेँ व्यवस्था कहि बचाबैत छल। मुंशी चुप रहल। ओकर चुप्पीमे कतेको नामक पएर हिलैत छल।

देविका पन्ना सभकेँ अलग-अलग ढेरीमे राखय लागली—हाजिरी, अनुपस्थिति, सत्यापन, अस्वीकृति, स्थगन, गुम अभिलेख, आ लाल मोहर। बच्चा सभ पहिल बेर देखलक जे अन्याय एकहि वार नहि होइत; ओ ढेरी-ढेरी बनैत अछि। पहिने नाम बिगाड़ू, फेर तारीख बदलू, फेर हाजिरी पर शंका करू, फेर नकल रोकू, फेर कहू—कागच पूरा नहि। आखिरमे पीड़ित थाकि जाएत, आ फाइल विजयी कहाएत।

एक पन्ना पर अँगूठाक निशान पर मोहर चढ़ि गेल छल। अँगूठाक रेखा दबि गेल, मोहरक गोलाई बचि गेल। आरुणि ओ पन्ना सभकेँ देखौलक—‘एहि ठाम मनुष्यक देहक चिन्ह पर दफ्तरक चिन्ह चढ़ि गेल अछि।’ बूढ़ मुवक्किल, जे काल्हि बरामदामे अपन तेइस बरखक प्रतीक्षा कहलनि, धीरेसँ आगाँ बढ़लाह। ओ पन्ना छूबय चाहलनि, मुदा हाथ रोकि लेलनि। ‘हमरो अँगूठा एना दबायल गेल छल,’ ओ फुसफुसायल।

भोरक उजास खिड़कीक टूटा सलाखीसँ भीतर पड़ैत छल, आ ओहि पातर धारमे धूलिक कण नाचैत उठैत-खसैत रहल, जेना हजारों नाम एक संग साँस लऽ रहल हो। उजास सोझे मोहर पर पड़ल तँ लाल स्याही कारी बुझाइ देलक। मीरा कहली—‘रंग बदलेलाक कारण उजास नहि, अपराध अछि।’ एहि वाक्य पर बूढ़बा भूतक हलुक हँसी सुनाइ पड़ल कि नहि, कियो निश्चित नहि कहि सकल। मुदा छतसँ एक कण धूलि खसल आ सोझे ओहि लाल मोहर पर बैसल।

लिपिक अपन मेजक दराज खोललक। भीतर तीन पुरान मोहर छल—एकक दाँत टूटल, एकक लकड़ी सड़ल, एकक अक्षर आधा घिसल। ओ कहलक—‘ई सभ एखन उपयोगमे नहि अछि।’ अनन्या पूछली—‘अर्थात् एहि सभसँ जे लिखल गेल, तकर जिम्मेदारी सेहो उपयोगमे नहि?’ लिपिक उत्तर नहि दऽ सकल। ओकरा बुझाइ पड़ल जे पुरान मोहर सेवानिवृत्त भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर दाग नहि।

तखन देविका एक नब प्रस्ताव रखली। ‘जतेक मोहरक दाग भेटत, ततेकक सूची बनत। मोहरक नाम, तारीख, ककर अरजी पर, आ बादमे ककर लाभ भेल—ई सभ जोड़ल जाएत।’ भीड़मे हलचल भेल। किछु लोक कहलक—‘एना करब तँ बहुत नाम खुलत।’ मीरा उत्तर देली—‘नाम नहि खुलत तँ न्याय कोना खुलत?’

चन्द्रपालक मुंशी अचानक बोलि उठल—‘सभ नाम खुलत तँ गाम जलि जाएत।’

सत्यव्रत मेहता शान्त स्वरमे कहलनि—‘गाम जलल नहि अछि? जकर जमीन गेल, ओकर गाम नहि जलल? जकर बेटी दफ्तर दौड़ैत-दौड़ैत बीमार भेल, ओकर घर नहि जलल? जकर बाप प्रतीक्षा करैत मरि गेल, ओकर वंश नहि जलल? आगि केवल धुआँ देलक तखनहेँ देखाइत अछि; किछु आगि बरखों धरि देह भीतर जलैत रहैत अछि।’

एहि उत्तरक बाद मुंशीक आँखि भरि आयल। ओ अपन कुर्ताक भीतरी जेबसँ एक मुड़ल कागच निकाललक। ‘ई हमरा लग किएक बचल, नहि जानि। डरसँ राखलहुँ कि लोभसँ, सेहो नहि जानि।’ कागच खोलल गेल। ओ सूची छल—किछु नाम, किछु रकम, किछु फाइल संख्या,

आ सोझाँ छोट निशान। निशानक अर्थ तुरन्त बुझाइ नहि पड़ल। मुदा अन्तिम पाँतिमे लिखल छल—'ब.ह.क आदेश।'

'ब.ह.'—ई दू अक्षर सुनिते हवा सर्द भऽ गेल। बच्चा सभ एक-दोसराक मुँह ताकल। बटुकनाथ हरिहरनक नाम पूरा नहि छल, मुदा ओकर छाह पूरा कोठरीमे पसारि गेल। जे लोक बरखों धरि धर्म, दान, प्रवचन आ प्रतिष्ठाक आड़िमे चमकल, ओकर संक्षिप्त अक्षर फाइलक अन्हारमे लोहाक कील जेकाँ भेटल।

अनन्या ओ कागचक नकल बनाबय लगली। मूल कागचकेँ ओ प्लास्टिकमे नहि, लाल कपड़ामे लपेटली। 'एहि पर हाथ सभक छाप अछि,' ओ कहली, 'आ छाप पर समयक धूलि। एकरा धुनि कऽ साफ नहि करब, प्रमाणक धूलियो बचत।' आरुणि रजिस्टरमे लिखलक—'मोहरक दाग, अँगूठाक दबाव, आ संक्षिप्त आदेश—तीनू मिलि कऽ मनुष्यक अनुपस्थिति बनबैत अछि।'

बाहर बरामदामे लोकक संख्या बढ़ैत गेल। कियो सुनलक जे रेकर्ड-घरमे बटुकनाथक नामक संकेत भेटल। कियो कहलक जे चन्द्रपालक घरमे आइ सबेरसँ दरबाजा बन्द अछि। कियो फुसफुसायल जे राघव रातिये शहर चलि गेल। कियो कहलक—'फाइल बोलए लागल अछि।' एहि अफवाह सभमे सच कतेक छल, से एखन स्पष्ट नहि; मुदा डरक दिशा बदलि गेल छल। जे लोक काल्हि धरि पीड़ितकेँ डरबैत छल, आइ स्वयं कागचसँ डरैत छल।

चन्ना गाछी दिससँ एक बच्चा दौड़ैत आयल। ओकर हाथमे छोट पाथर छल, पाथर पर लाल धब्बा। 'ठूँठ लग भेटल,' ओ कहलक। सभ चौंकल। पाथरक लाल धब्बा स्याही छल कि माटि, कहब कठिन। मुदा पाथरक पाछाँ नन्हक अक्षरमे खरौंचल छल—'नाम बाँचू।' अनन्या पाथरकेँ फाइलक ऊपर राखली। कागच आ पाथर पहिल बेर एकहि गवाहीमे जुड़ल।

मीरा सभकेँ सावधान केली—'आब सभसँ खतरनाक समय शुरू भेल अछि। जखन कागच प्रमाण बनए लगैत अछि, तखन कागच जलाओनिहार जन्म लैत अछि। जखन नाम लिखायल लगैत अछि, तखन नाम काटोनिहार चाकू तेज करैत अछि।' ओ बच्चा सभकेँ फाइलक पहरा बाँटली। कियो सूची लिखत, कियो नकल करत, कियो बाहर लोकक बयान लेत, कियो देखत जे कोनो पन्ना गुम नहि हो।

भिखारी लाल पहिल बेर अपन चाबी अनन्याक सोझाँ राखलक। 'हम ताला खोलि सकैत छी, मुदा पहरा अकेले नहि दऽ सकैत।' अनन्या चाबी नहि उठौली। ओ कहली—'चाबी तोहर

हाथमे रहय। फर्क एतबे जे आब हाथ अकेल नहि रहत।' एहि वाक्य पर लिपिकक चेहरा हलुक भऽ गेल। जिम्मेदारी बाँटल गेल, पर दोष धोयल नहि गेल।

दुपहर धरि मोहरक सूची बीस पन्ना भरि गेल। प्रत्येक पन्ना पर कियो न कियो मनुष्य घुरैत छल। सुरमणी, रामेश्वर, फुलकुमारी, महेन्द्र, बसन्ती, ललन, अजमेरी, दुलारी—नाम सभ धूलिसँ बाहर आबय लागल। किछु जीवित छल, किछु नहि; मुदा सभक प्रतीक्षा जीवित छल।

अन्तमे सत्यव्रत मेहता कहलनि—'आइ अदालतमे कोनो फैसला नहि लिखल गेल, मुदा मोहरक विरुद्ध पहिल बयान दर्ज भेल।' ओहि क्षण रेकर्ड-घरक खिड़कीसँ हवा आबि कऽ लाल स्याहीक सूखल डिब्बा उनटा देलक। स्याही सूखि चुकल छल, तेँ बहल नहि; केवल चूर्ण बनि पसरि गेल। देविका ओ चूर्ण देखैत कहली—'जे स्याहीसँ झूठ लिखल गेल, से आब धूलि बनि रहल अछि।'

एहि अध्यायक अन्तमे कोनो दरबाजा बन्द नहि भेल। उनटा रेकर्ड-घरक भीतर पहिल बेर एक दीया जरल। दीया छोट छल, पर ओकर प्रकाशमे मोहरक गोल दाग सभ साफ देखाइत छल। बच्चा सभक रजिस्टरमे अन्तिम पाँति लिखल गेल—'जखन मोहर मनुष्य पर चढ़ि जाए, तखन पहिल न्याय अछि—मनुष्यक रेखा फेर देखाबू।'

लोकगीत: लाल मोहरक हाथ

लोकधुन: नचारी

कहू हे हाथ, अपन अपराधो-बेबसी कहू हे,
मोहरक पाछाँ नुका ककरो नाम ने दहू हे।

कागचपर गोल दाग, हथेलीपर गाढ़,
मोहर लगौनिहार हाथ कखन होएत उघाड़?
सुरमणी, बसन्ती, दुलारीक नाम उठल,
सूखल स्याही चूर्ण बनि पाथर पर छिड़िआयल।
मोहर कहै—हम काठ छी, आदेश नहि देलहुँ,

हाथ कहै—भूख, डर, नोकरीमे बँधल रहलहुँ।
दीपक नान्हि लौमे सभ गोल दाग देखायल,
मनुष्यक सीधी रेखा फेर पन्नापर आयल।

हे हाथ, अपन अपराध आ बेबसी दुनू कहू,
मोहरक पाछाँ लुकि फेर ककरो नाम नहि दहू।

मोहर लगौनिहार हाथ कहिया होएत उघाड़?

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—अपभ्रष्ट पदसभमे वाचकता: . पूर्वपक्ष कहैत अछि—शुद्ध पङ्कज पदमे शक्ति मानल जाए तँ “गच्छ” आदि अपभ्रष्ट पदसभमे सेहो शक्ति मानय पड़त, कारण लोक ओकरासँ नियमित अर्थज्ञान प्राप्त करैत अछि। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। अपभ्रष्ट पदसभमे वाचकता।]

अध्याय १४७

घर-घरक दस्तक

दस्तक जे अनुमतिसँ देल जाए, से आदेशसँ पैघ दरबाजा खोलै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: दस्तकसँ खुलत देहरी

लोकधुन: देहरी-बटगबनी

दियौ हे दस्तक, धीमे-धीमे दियौ हे,
भीतरक 'आउ' सुनि कऽ तखने पग धरू हे।

धीमे दस्तक दियौ पहिने, भीतरक स्वर सुनू,
‘आउ’ कहत तखन नेहसँ दुआर पार चुनू।
हरेक घरक अपन मर्यादा, हरेक दुखक अपन चाल,
सुनबाक धैर्ये खोलि सकै मनक गहींर जाल।

देहरी-देहरी दस्तक दऽ भरोसक फूल धरू,
प्रश्न नहि आक्रमण हो, संगक आसन करू।
दस्तकसँ खुलत देहरी, आदेशसँ नहि कखनो,
सम्मानक पग धरिते घर बाजत मधुर सपनो।

धक्कासँ नहि, धीरजसँ खुजय मनक जाल।
प्रश्नकेँ तीर नहि, बैसारक नोत बनाउ,
आदरक डेग देखि देहरी अपने मुसकाए।

❖

दस्तक जे अनुमतिसँ देल जाए, से आदेशसँ पैघ दरबाजा खोलै छै। आदेश धक्का दैत छै, दस्तक पूछैत छै। धक्कासँ खुलल दरबाजा फेर बन्द भऽ जाइ छै; पूछि कऽ खुलल दरबाजा भरोसाक दुआर बनि जाइ छै।

घर की छै? घर केवल भीत आ छत नहि छै। घर ओ ठाम छै जतऽ मनुष्य अपन कमजोरी बिना डरे देखा सकैत छै। जे बाहर कठोर होइ छै, ओ भीतर टूटल होइ सकैत छै। तेँ घरक दुआर पर पएर धीरे धरबाक चाही—भीतरक टूटनकेँ चोट नहि पहुँचय।

अनुमति की छै? अनुमति ओ शब्द छै जे कमजोर मनुष्यकेँ बराबरीक अनुभव कराबैत छै। जे बरखों धरि केवल आदेश सुनने रहल, ओकरा जखन कियो पूछैत छै—अहाँ चाहब तखन बोलू—तखन ओकर देहमे पहिल बेर निर्णयक शक्ति घुरैत छै।

बन्द दुआरो एक भाषा बजैत छै। ओ भाषा डरक भऽ सकैत छै, थकानक भऽ सकैत छै, वा एहन दुखक जकरा अखनहुँ शब्द नहि भेटल। जे एहि भाषाकेँ चुप्पी बुझि आगाँ बढ़ि जाइ छै, से ओ दुखक दोसर घाव बनि जाइ छै।

स्मृतिक माटि, टूटल चूड़ी, पुरान कैलेंडर—ई सभ कागचसँ बेसी सच बजैत छै। कागच तारीख राखैत छै; घरक वस्तु समय राखैत छै। जे न्याय केवल कागच पढ़ैत छै, से आधा सत्य पढ़ैत छै।

रेकर्ड-घरक दीया जरइते मोहरक दाग सभ लोकक आँखिक सोझाँ आबि गेल छल; आब बेर छल ओहि दागक पाछाँ बैसल मनुष्य धरि पहुँचबाक—घर-घरक दस्तकक। रेकर्ड-घरक दीया राति भरि जरैत रहल। ओकर लौ बहुत पैघ नहि छल, मुदा ओहि छोट प्रकाशमे मोहरक दाग सभ एना उभरि आयल जेना ककरो देह पर पुरान चोट फेर नील पड़ि उठल हो। भोर होइते अनन्या रजिस्टर, सूची आ प्रतिलिपि सभ लाल कपड़ामे बान्हली। मीरा सभकेँ फेर स्मरण करौली—'हम घोषणा करय नहि, सुनय जा रहल छी। घर-घरक दस्तक हल्ला नहि, आदरक पहिल स्पर्श होएबाक चाही।'

पहिल टोलीमे अनन्या, आरुणि, देविका, बूढ़ मुवक्किलक पोता, आ भिखारी लाल गेल। भिखारी लाल चपरासी छल, मुदा आइ ओकर हाथमे झाड़ू नहि, एक छोट कपड़ाक थैली छल जकरा भीतर नकल लेल खाली पन्ना, कलम, आ ओहि लोकक नाम लिखबाक कापी राखल छल जे अपन बात स्वयं कहय चाहत। ओकर चालमे संकोच छल, कारण बरखों धरि जे दुआर पर ओ तारीखक पर्ची लऽ गेल छल, आइ ओहि दुआर पर पश्चात्तापक छाह संग जा रहल छल।

पहिल घर सुरमणी देवीक छल। घरक देहरी पर दरार पड़ल छल, आ दरारमे बथुआक साग उगि गेल छल। ओसारक खपड़ा पर काई जमल छल, आ भीतरसँ चूल्हाक धुआँक हलुक गन्धि आबि रहल छल—जेना घर आब भी साँस लैत हो, केवल थाकल। सुरमणी देवी बहुत बूढ़ भऽ चुकल छली। आँखिक इजोत आधा, कानक सुननाइ आधा, मुदा नाम सुनिते हुनकर देहक आधा बाँचल भागो एकाएक जागि उठल। अनन्या धीरेसँ कहली—'ई अहाँक आवेदनक नकल अछि। एहि पर अदालतमे मोहर लागल छल, मुदा निर्णय नहि भेल।'

सुरमणी देवी पन्ना हाथमे नेली। ओ पढ़ि नहि सकैत छली, मुदा कागचक किनार छुइतहि हुनकर अँगुरी काँपि गेल। 'ई कागच हम अपने नहि लिखने रही,' ओ कहली, 'हम कहने रही,

पटवारीक लड़का लिखने छल। मुदा ओकरा लिखाइमे हमर रोदन कतऽ छल?’ आरुणि रजिस्टरमे लिखलक—‘लेखक दोसर, दुःख पहिल जनक।’ ई पाँति सभकेँ चुप करा देलक।

सुरमणी देवीक पोती भीतरसँ पुरान पीतलक डिब्बा निकालि आनलक। डिब्बामे दूटा बीज, एक टूटी चूड़ी, आ माटिक छोट ढेला राखल छल। ओ कहलक—‘दादी कहैत छथि, ई खेतक माटि अछि।’ माटि सूखि गेल छल, मुदा ओकर गन्धमे वर्षा अटकल छल। देविका प्रतिलिपिक कातमे लिखली—‘जमीनक प्रमाण केवल नापी-पुस्तक नहि, स्मृतिक माटि सेहो।’

दोसर घर रामेश्वर साहक छल, जे आब नहि रहलाह। हुनकर बेटा परदेशमे, पुतोहु घर सम्हारैत छली। जखन सूचीमे रामेश्वरक नाम पढ़ल गेल, पुतोहु पहिने डरि गेली—‘आब फेर मुकदमा खोलब? हम सभ थाकि गेलहुँ।’ मीरा हुनकर हाथ पकड़ि कहली—‘मुकदमा हम नहि खोलि रहल छी। हम थकानक नाम लिखि रहल छी।’ एहि वाक्य पर पुतोहुक आँखि भरि आयल। थकानक नाम कहियो कियो नहि पूछने छल।

रामेश्वरक घरक भीत पर एक पुरान कैलेण्डर अटकायल छल—बारह बरख पुरान। ओहि साल रामेश्वर साह आखिरी बेर अदालत गेल रहथि। कैलेण्डर फेर बदलल नहि गेल, कारण घरक लोक कहैत छल—ओहि दिनसँ समय ठाढ़ रहि गेल। आरुणि ओ कैलेण्डरक तिथि देखलक आ सूचीमे लिखल तिथिसँ मिलेलक। दुनू तिथि अलग छल, मुदा बीचक बरख सभ एकहि प्रतीक्षा बनि गेल छल।

भिखारी लाल एहि घरमे बहुत देर चुप रहल। अन्तमे ओकरा सहन नहि भेल। ओ पुतोहुसँ कहलक—‘कखनो हम तारीखक पर्ची देलक होइ तँ क्षमा करब। हम बुझलहुँ नहि जे पर्ची देलासँ ककर चूल्हा बिनु जलल रहि जाइत अछि।’ पुतोहु ओकरा देखली। ओ क्षमा तुरन्त नहि देली, केवल कहली—‘बुझि गेलहुँ तँ लिखू।’ भिखारी लाल अपन कापीमे पहिल बेर लिखलक—‘तारीखक पर्ची घरक भूख बनि सकैत अछि।’

तेसर घर फुलकुमारीक छल। ओ स्त्री आब शहरक सिलाइ-केन्द्रमे काम करैत छली, मुदा हुनकर माय गाममे रहैत छली। फाइलमे फुलकुमारीक छात्रवृत्ति रोकायल पत्र छल, मोहर लागल—‘अधूरा प्रमाण।’ माय कहली—‘ओहि साल ओ पढ़ाइ छोड़ि देलक। प्रमाण अधूरा नहि छल, पेट अधूरा छल।’ ई सुनि बच्चा सभमे सँ एक कन्या चुपचाप अपन स्लेट पकड़ि बैसल रहल; ओकरा अपन पढ़ाइ अचानक भारी लगय लागल।

अनन्या फुलकुमारीक मायसँ अनुमति माँगली—‘ई कथा लिखि सकैत छी?’ माय पहिने पूछली—‘लिखब तँ किछु बदलत?’ अनन्या सच कहली—‘तुरन्त नहि।’ माय फेर पूछली—‘लिखब नहि तँ?’ अनन्या कहली—‘तखन ई अधूरा कहि कऽ फेर दबल रहत।’ माय धीरेसँ माथ हिलौली—‘तखन लिखू। मुदा हमर बेटीकेँ दया नहि, हकक रूपमे लिखू।’

धूप तेज होइत गेल, बच्चा सभक पएर धूरिमे तपल, मुदा कियो जूता माँगल नहि; ई तपन ओहि प्रतीक्षाक तपनक सोझाँ छोट बुझाइत छल। दुपहर धरि घर-घरक दस्तकक खबर पसरि गेल। किछु दुआर अपने खुलल, किछु भीतरसँ कुण्डी लगि गेल। जे घर बन्द रहल, ओतय बच्चा सभ आवाज नहि देलक। मीरा कहैत रहली—‘बन्द दुआर सेहो उत्तर अछि। डरक आदर करब, मुदा डर पसरौनिहारक नहि।’ ओ सभ देहरी पर छोट पर्ची छोड़ि देलक—‘अहाँ चाहब तखन हम सुनबाक लेल आबि सकैत छी।’

ई पर्ची गाममे नब बात छल। एतबा दिन धरि कागच लोककेँ आदेश दैत छल—हाजिर होउ, प्रमाण दियौ, दस्तखत करू, प्रतीक्षा करू। आइ पहिल बेर कागच विनती करैत छल—अहाँ चाहब तखन बोलू। आदेशक भाषासँ विनतीक भाषा धरि आओनाइ घर-घरक दस्तकक असली परिवर्तन छल।

चन्द्रपालक लोक सभ दूरसँ देखैत रहल। हुनका सभकेँ आशा छल जे टोली गलती करत, ककरो कथा जबरदस्ती लिखत, ककरो नोर तमाशा बनाएत, आ तखन ओकरा सभ बदनाम करब सहज होएत। मुदा जखन ओ देखलनि जे बच्चा सभ बन्द दुआर पर जोर नहि दैत, कथा लिखबाक पहिने अनुमति लेत, आ नामक आगाँ ‘परिवारक इच्छा’ लिखैत, तखन हुनकर चाल धीमा पड़ल। सभ्यता कखनोकाल धोखाक औजार होइत अछि; मुदा एतय सभ्यता पहरा बनि गेल छल।

बाजारमे राघवक सलाहकार अफवाह पसारलक—‘ई सभ पुरान मामला उठाकऽ गामक शान्ति बिगाड़ि रहल अछि।’ एहि पर लोहार नन्दू, जे साधारणतः राजनीतिसँ दूर रहैत छल, हथौड़ा रोकि कहलक—‘शान्ति ओहि घरमे छल जतय चूल्हा नहि जरल? जँ शान्ति धूलिक नाम अछि तँ धूलि उड़बाक चाही।’ ओकर एक वाक्य बाजारक हवा बदलि देलक। लोक पहिल बेर शान्ति आ चुप्पीक फरक पर बात करय लागल।

रेकर्ड-घरमे सत्यव्रत मेहता आ लिपिक नकल बनबैत रहलाह। प्रत्येक प्रतिलिपि पर ओ सभ साफ लिखैत—‘मूल कागच क्षतिग्रस्त, पर नाम पठनीय।’ ई वाक्य लिपिक अपन हाथे लिखैत छल। पहिने ओ ‘अस्पष्ट’ लिखि दैत छल; आइ ओ अस्पष्टताक भीतर बचल पठनीयता

खोजि रहल छल। ओकरा लगल जे नोकरीक असली अर्थ मोहर लगेनाइ नहि, मनुष्यक नाम बचेनाइ होएबाक चाही।

साँझ लग एक अनपेक्षित घटना भेल। अदालतक पुरान फोटोकॉपीवाला मुरारी, जे बरखोंसँ फाइलक नकल बनाकऽ पैसा कमबैत छल, रेकर्ड-घरक बाहर आयल। ओकर हाथमे एक गठरी छल। ओ कहलक—‘ई सभ अतिरिक्त प्रति अछि। लोक देरीमे पैसा नहि देलक, तँ हम राखि देलहुँ। किछु पन्ना शायद कामक हो।’ सत्यव्रत मेहता ओकरा कठोर आँखिसँ देखलनि। मुरारी माथ झुकौलक—‘गलती अछि। मुदा जँ ई पन्ना नाम बचाबय, तँ लियौ।’

गठरी खोलल गेल। भीतर किछु एहन नकल भेटल जे मूल फाइलमे अधूरा छल। एक बयानक पूरा पृष्ठ, एक नक्शाक किनार, एक गवाहक आधा हस्ताक्षर, एक स्त्रीक आवेदनक अन्तिम पाँति। भिखारी लाल फुसफुसायल—‘रद्दी रद्दीमे मनुष्य बाँचि गेल।’ देविका लिखली—‘कखनो-कखनो चोरीसँ बचल प्रति सत्यक सहायक बनि जाइत अछि, मुदा चोरीक अपराध मिटैत नहि।’

राति चन्ना गाछी लग पहिल दिनक कथन पढ़ल गेल। कोनो नाम अनुमति बिनु उच्चरित नहि भेल। जकर परिवार अनुमति देलक, तकर नाम संग छोट दीप राखल गेल; जकरा नहि देलक, ओकरा लेल खाली दीप राखल गेल—बिनु बातीक, बिनु ज्वालाक, मुदा स्थान सहित। ई खाली दीप सभक अर्थ सभ बुझि गेल—मौनकेँ सेहो जगह चाही, जेणे ओ कखनो अपन आवाज चुनि सकय।

ठूँठक जड़ि लग जे हरियर बिन्दु काल्हि देखायल छल, आइ ओ अलि स्पष्ट भेल। आरुणि फेर लिखलक—‘घोषणा नहि।’ अनन्या मुस्कुरेली। बच्चा सभ आब प्रतीक पर उतावल नहि छल। हुनका सभ बुझि गेल छल जे बीजक सम्मान ओकरा तुरन्त ध्वज बना देबमे नहि, ओकर माटि बचा देबमे अछि।

एहि बीच चन्द्रपालक घरमे दोसर बैसकी भेल। एहि बेर योजना बदलल। ओ सभ सोचलक—घर-घरक दस्तक रोकब कठिन अछि, तँ ओकरा भीतर घुसू। किछु लोक अपने पीड़ित बनि कथा देत, किछु झूठा कागच जोड़त, किछु सही नामक संग गलत आरोप रखत, ताकि सूची बदनाम होए। बटुकनाथक उत्तराधिकारीक प्रतिनिधि कहलक—‘सत्यकेँ हराबयसँ सहज अछि ओकर भीड़मे झूठ मिला देब।’ ई वाक्य ओहि रातिक सभसँ खतरनाक निर्णय छल।

मुदा मीरा एहन चालक आहट पहिनहि बुझि चुकल छली। ओ बच्चा सभकेँ रातिमे नियम लिखेली—एक, प्रत्येक कथन दू बेर सुनल जाएत; दू, कागचक नकल अलग राखल जाएत;

तीन, आरोपक भाषा आ अनुभवक भाषा अलग चिन्हल जाएत; चारि, कोनो व्यक्तिकेँ भीड़मे दोषी घोषित नहि कएल जाएत; पाँच, झूठक आशंका पर चुप्पी नहि, जाँच होएत। ई नियम छोट कापीमे लिखायल, मुदा ओकर गम्भीरता ककरो संहितासँ कम नहि छल।

बूढ़ मुवक्किल देर धरि सुनैत रहल। अन्तमे ओ कहलक—‘हमर जीवन तारीखमे कटि गेल, मुदा अहाँ सभ अपन जीवन जाँचमे नहि काटू। सत्यक बाट धीमा होए, मुदा एतेक धीमा नहि जे फेर पीढ़ी बीति जाए।’ ई चेतावनी हवामे अटकि गेल। बच्चा सभकेँ बुझाइ पड़ल—सावधानी आ गति, दुनूक सन्तुलन राखब पड़त।

रातिक अन्तमे अनन्या घर-घरक सूची बन्द करैत लिखली—‘पहिल दिन: सुरमणी देवीक माटि, रामेश्वर साहक कैलेण्डर, फुलकुमारीक अधूरा पेट, बन्द दुआरक मौन, मुरारीक अतिरिक्त प्रति, आ झूठ मिलेनिहारक आसन्न चाल।’ ई लिखैत ओकर हाथ काँपल नहि। डर आबो छल, मुदा डरक संग तरीका सेहो छल।

जखन सत्य चलय लगैत अछि, झूठ ओकर पोशाक पहिरि लेत अछि। ’ चन्ना गाछीक छाह लम्बा भेल। दूर कतहु गोहि जलमे सरकल, पर एहि बेर ओकर चाल सुनायल। शायद नामक दस्तक आब ओकरा धरि सेहो पहुँचि गेल छल।

एहि तरहेँ अध्यायमे घर-घरक दस्तक शुरू भेल। पीड़ितक कथा आदेशसँ नहि, अनुमतिसँ लिखायल; बन्द दुआरक मौनक मान राखल गेल; रद्दीक बीच बचल प्रति सभ नब प्रमाण बनि उठल; आ अपराधीक डर अब नबका चालमे बदलल।

लोकगीत: देहरी-देहरी दस्तक

लोकधुन: बटगबनी-विरह

दिअ हे दस्तक, धीमे दस्तक दिअ हे,
आदेश नहि—सहारा बनि देहरी पर ठाढ़ रहू हे।

धीमे दस्तक देब, पहिने भीतरसँ ‘आउ’ सुनब,
कथा लिखबाक पूर्व मायक अनुमति चुनब।
सुरमणीक माटि, रामेश्वरक कैलेण्डर,
फुलकुमारीक अधूर पेट, दुआरक मौन समुन्दर।
बन्द दुआरकेँ दोष नहि, ओकर डरक मान,

रद्दी बीच बचल प्रति बनल नब प्रमाण।
गोहि जलमे सरकल, दस्तक ओकरा सुनायल,
झूठ सत्यक पोशाक पहिरि घर-घर आयल।
देहरी, अपन दुखक समय स्वयं बताउ,
हम आदेश नहि, सहारा बनि दस्तक दियौ।

भीतरसँ 'आउ' सुनि तखने पग बढ़ाउ,
कथा लिखबासँ पहिने मायक अनुमति पाउ।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—वैशेषिकसभक आक्षेप: उदाहरणार्थ, शाब्दज्ञानक कारणरूप अनुमानक स्वरूप एहि प्रकारेँ बुझायल जा सकैत अछि—‘दण्डेन गां अभ्याज’ अर्थात् ‘लाठीसँ गाएकेँ लग हाँकू’ सदृश लौकिक वाक्य अथवा ‘ज्योतिष्टोमेन स्वर्गकामो यजेत’ अर्थात् ‘जे स्वर्गक इच्छा रखैत हो, सँ ज्योतिष्टोम यज्ञ करए’ सदृश वैदिक वाक्य, वक्ताक अभिप्रेत विषयभूत शब्दसभसँ स्मृत शब्दार्थसभक पारस्परिक वाक्यार्थगत सम्बन्धक ज्ञानपूर्वक अछि; कारण, ई वाक्यसभ आकाङ्क्षा आदि सँ युक्त शब्दसमूह अछि, ‘घटम् आनय’ अर्थात् ‘घड़ा आनू’ सदृश। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। वैशेषिकसभक आक्षेप।]

अध्याय १४८

मिलावटक पहिचान

साँच कागजसँ मिला कऽ देखू— मिलावट अपने मुँह खोलि दै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: असल प्रति चमकत

लोकधुन: जाँच-झूमर

मिलाउ हे पन्ना, असल-नकल मिलाउ हे,
मिलानक दीप तर झूठक रंग उघाड़ू हे।

साँचक प्रति कातमे राखू, झूठक रंग खुलत,
मिलावटक खरोंच देखिते असल अक्षर फुलत।
एक पन्ना दोसर पन्नासँ शान्तिपूर्वक बोलय,
मिलानक उज्जर दीप अन्हारक गाँठि खोलय।

जाँच मतलब दोष मात्र नहि, साँचक मान बचाउ,
जे साफ अछि ओकर माथ पर भरोसक फूल चढ़ाउ।
असल प्रति चमकत जखन जनक आँखि सजग,
मिलावट खुद हारि जाए, सत्य रहय अडिग।

असल प्रति चुप रहय, नकल बाजय बेसी,
धीरजसँ मिलाउ—खुजत मिलावटक पेशी।
जाँच दण्ड नहि, साँचक मानक रखवारी,
साफ पन्ना माथ चढ़ौ, भरोसक फुलवारी।

❖

जाँचक अर्थ अविश्वास नहि छै। जाँचक अर्थ छै—जे साँच अछि, ओकर रक्षा करब; जे झूठ अछि, ओकरा साँचक भीड़मे नहि घुसए देब। जँ जाँच नहि होइ, तँ एक झूठ सौ साँचक विश्वसनीयता खा जाइ छै।

माटिक गन्ध झूठ नहि बजैत। जे मनुष्य अपन खेत गमौने होइ छै, ओकरा माटिक गन्ध देहमे बसल रहैत छै। जे झूठ बजैत छै, ओकरा लग तथ्य होइ छै, मुदा गन्ध नहि होइ छै। जाँच करनिहार गन्ध सूँघबाक कला सीखैत छै।

कागचक मोड़ सेहो बजैत छै। पुरान कागचक मोड़ धूलिसँ भरल, किनार तेलाहा, अक्षर धुँधल होइ छै। नकल कागचक मोड़ नब, सफा, मुदा नकलमे बनाओल पुरानपन छिपल नहि रहैत। कागचक देह सेहो एक गवाह छै।

जे मनुष्य सत्य बजैत छै, ओकर आवाज बीच-बीचमे रुकैत छै, काँपैत छै, नजर चुरबैत छै। जे झूठ बजैत छै, ओकर कथा एक्के साँसमे, बिनु अटकनक बहि जाइत छै। सजल कथा सदिखन शुद्ध नहि होइत।

मोहरक विरुद्ध पहिल बयान रेकर्ड-घरमे दर्ज भऽ चुकल छल; आब बेर छल ओहि सूचीक जाँचक जकरा घर-घर दस्तक दऽ कऽ जोड़ल गेल छल। भोर होइतहि चन्ना गाछीक ठूँठ लगक माटि पर रातिक ओस चमकि रहल छल। घर-घरक दस्तकक पहिल दिनक सूची लाल कपड़ामे बान्हल रहल, आ ओकर ऊपर मीरा पाँच नियम फेरसँ पढ़ि सुनौली। ओ कहली—‘आइ सुनब सेहो, मुदा परखब सेहो। परखबाक अर्थ अविश्वास नहि, नामक रक्षा अछि। झूठ जँ सत्यक पोशाक पहिरि भीतर घुसत, तँ असली पीड़ा फेर बदनाम भऽ जाएत।’

बच्चा सभक चेहरा गम्भीर भऽ गेल। काल्हि धरि हुनका सभ लगैत छल जे सुननाइ सभसँ पैघ काज अछि। आइ बुझाइ पड़ल जे सुननाइ बिनु परखनाइ अधूरा अछि। देहक रोदन चिन्हारिबाक संग-संग बनाओल रोदनक रंग सेहो देखय पड़त। आरुणि अपन कापीमे लिखलक—‘विश्वासक दुआर खुलल रहय, मुदा पहरा सोइत नहि रहय।’

ओस अखनहुँ घासपर टघरल नहि छल, आ ठूँठक छाहमे बैसल बच्चा सभक अंगोछा भीजल छल—तइयो कियो उठल नहि। पहिल आगन्तुक सबेर-सबेरे आयल। ओकर नाम ओ स्वयं ‘भोला मण्डल’ कहलक। माथ पर पुरान गमछा, हाथमे कागचक गठरी, आवाजमे बनावटी थरथराहट। ओ कहलक जे ओकर खेत चन्द्रपालक लोक हड़पि लेलक, अदालत ओकरा सत्तर तारीख देलक, आ बटुकनाथ ओकरा श्राप देलक। कथा सुनयमे ओतेक सधा छल जेना ककरो मंच पर खूब अभ्यास कएल संवाद हो।

अनन्या ओकरा रोकली नहि। ओ पूरा कहल देलक। फेर मीरा धीरेसँ पूछली—‘अहाँक खेतक माटिक गन्ध केहन छल?’ भोला मण्डल एक क्षण चुप भऽ गेल। फेर कहलक—‘माटि तँ माटि जेकाँ।’ सुरमणी देवीक माटि मोन कऽ बच्चा सभ एक-दोसराक दिस तकलक। जे मनुष्य खेत गमौने होइत अछि, ओ माटिक गन्धक उत्तर खाली ‘माटि जेकाँ’ नहि दैत।

आरुणि दोसर प्रश्न कएलक—‘अहाँक पहिल तारीखक दिन घरमे की भेल छल?’ भोला मण्डल तुरन्त कहलक—‘सभ रोएल।’ उत्तर ठीक छल, मुदा बहुत सहज। दुःखक स्मृति सीधे राजमार्ग पर नहि चलैत; ओ कखनो चूल्हाक धुआँमे, कखनो ओसारक खटियापर, कखनो भिजल अंगोछामे अटकैत अछि। भोला मण्डलक कथामे एहन कोनो अटकन नहि छल।

देविका ओकर कागच देखली। कागच पुरान देखयमे छल, किन्तु मोड़ नबका। किनार पर धूलि लगायल गेल छल, मुदा धूलिक तह कागचक उमेर संग मेल नहि खाइत छल। मोहर धुँधली छल, पर स्याहीक नील रंग एखनहुँ ताजा चमकि रहल छल। लिपिक, जे दूर ठाढ़ छल, धीरेसँ कहलक—‘ई मोहर अदालतक पुरान छाप जेकाँ लगैत अछि, मुदा अक्षरक दूरी अलग अछि।’

भोला मण्डल अस्थिर भेल। ओ कहलक—‘हम गरीब छी, हमरा कागचक दूरी की बुझाय?’ मीरा तुरन्त कहली—‘गरीबी पर प्रश्न नहि अछि। कागच पर प्रश्न अछि। गरीबीक आड़िमे झूठकेँ नहि छोड़ल जा सकैत, कारण ओ असली गरीबक नाम खाइत अछि।’ एहि वाक्य पर भीड़मे हलचल भेल। पहिल बेर लोक देखलक जे दया आ सावधानी संग-संग चलि सकैत अछि।

भिखारी लाल ओकरा अलग नेलक। ओ कठोर नहि बनल, केवल कहलक—‘सच कहू। झूठा कागच के देलक?’ भोला मण्डल देर धरि चुप रहल। अन्तमे ओकर आवाज टूटल—‘हम भोला नहि। हमर नाम भीखन साह अछि। राघवक लोक कहलक जे एना कथा कहब, तँ दू सौ रुपैया भेटत। हम सोचलहुँ, कागचमे नाम बदलि देलासँ की होएत?’ भिखारी लाल फुसफुसायल—‘नाम बदललासँ ककरो मृत्युओ बदलि सकैत अछि।’

भीखन साहकेँ भीड़मे अपमानित नहि कएल गेल। मीरा ओकर कथन अलग पन्ना पर लिखली—‘झूठा बयान देबाक प्रयत्न; कारण—गरीबी, लोभ, दबाव; स्रोत—राघवक लोक।’ अनन्या जोड़ली—‘व्यक्ति दोषी, मुदा दोषक पाछाँ जाल सेहो।’ ई लिखनाइ महत्त्वपूर्ण छल। मिलावट चिन्हारिबाक अर्थ केवल झूठा मनुष्य पकड़ब नहि, झूठ बनौनिहार हाथ देखब सेहो छल।

दोसर आगन्तुक स्त्री छली। हुनकर नाम ‘जगमाया’ कहल गेल। चेहरापर घूँघट, हाथमे एक पुरान रसीद। ओ कहली जे हुनकर पति झूठा मुकदमे मरि गेलाह। कथामे कम शब्द छल, मुदा प्रत्येक शब्दक बीच लामी चुप्पी। बच्चा सभ सतर्क छल, कारण आइ झूठक चाल पहिने देखल जा चुकल छल। मीरा हुनका पानि देली आ कहली—‘अहाँ चाहब तखनहि आगाँ कहू।’

जगमाया रसीद आगाँ बढ़ेली। रसीद पर नाम 'हरिमोहन झा' छल, पर घूँघट भीतरक आवाज कहैत छल—'हमर घरमे हुनका मोहन कहैत छलियनि।' ई छोट बात सुनिते सत्यव्रत मेहता जागि उठलाह। कागच पर हरिमोहन, घरमे मोहन—एहन अन्तर झूठा कथावाचक बेसीकाल बनाबी नहि सकैत। घरक नाम रजिस्टरक नामसँ अलग होइत अछि, आ असली स्मृति अधिकतर घरक नामे धड़कैत अछि।

मीरा पूछली—'पहिल बेर अदालत गेल रही तखन अहाँ की लऽ गेल रही?' जगमाया सोचि नहि, हाथसँ संकेत केली—'दूटा पूड़ी, अल्प अचार, आ ओकर दवाई।' फेर ओ अपने रुकि गेली। 'दवाई खाइत-खाइत ओ कहने छलाह, अदालतमे सत्य बोलब तँ शीघ्र निपटत। हम कहने रही—सत्यक बाटमे दवाईक डिब्बा भरि लऽ चलू।' ई कहैत हुनकर हँसी आ रोदन एक संग निकलल।

कागच जाँचल गेल। स्याही पुरान, मोड़ पुरान, किनारक तेल-दाग सचमुच हाथक बरखोंक छूअनसँ बनल। लिपिक अभिलेख संख्या मिलौलक। रेकर्ड-घरक मुख्य फाइलमे हरिमोहन झाक पन्ना आधा छल; जगमायक रसीद ओहि आधा पन्नाक गुम भेल किनार साबित भऽ सकैत छल। सत्यव्रत मेहता धीरेसँ कहलनि—'एहि रसीदकेँ सुरक्षित रखू। ई केवल भुगतानक प्रमाण नहि, उपस्थिति बचल आवाज अछि।'

भीड़मे किछु लोक कहय लागल—'पहिने झूठा आयल, आब सही आयल।' मीरा तुरन्त टोकली—'एना सरल निर्णय नहि। झूठ सेहो दबावमे जन्म लैत अछि, आ सत्य सेहो काँपैत-काँपैत चलैत अछि। हम व्यक्ति नहि, कथन जाँचब।' ई बात बच्चा सभक नियममे छठम पाँति बनि गेल—'कथन परखू, मनुष्यकेँ भीड़मे नापू नहि।'

दुपहरमे राघवक चाल दोसर रूपमे आयल। तीनटा युवक एक संग पहुँचल। हुनका सभक कागच अलग-अलग, मुदा लिखाइ एकहि हाथक। तिथि अलग, पर कागचक गन्ध एक। तीनू कथामे एकहि वाक्य बार-बार दोहरायल—'हमरा न्याय चाही, बस न्याय।' आरुणि धीरेसँ देविकाकेँ कहलक—'असली पीड़ा एतेक नारा नहि दोहराबैत; ओ पहिने अपन घटना खोजैत अछि।'

देविका तीनूकेँ अलग-अलग बैसौली। पहिलसँ पूछल—'अहाँक घरक देहरी कोन दिस खुलैत अछि?' दोसरसँ—'अहाँक पिताक आवाज तेज छल कि धीमा?' तेसरसँ—'जखन कागच भेटल तखन अहाँ ओहिकेँ कतऽ राखल?' तीनू उत्तरमे उलझि गेल। एक कहलक पूरब,

दोसर कहलक उत्तर, तेसर कहलक घर नहि अछि। लिखाइ एक, कथा तीन, स्मृति शून्य। मिलावट साफ छल।

तखन एक छोट बालक भीड़सँ आगाँ आयल। ओहि युवक सभमे सँ एक ओकर ममेहरक पड़ोसी छल। बालक कहलक—‘ई काल्हि राति राघवक ओसार पर छल।’ लोकमे फुसफुसाहट पसरल। मीरा बालककेँ तुरन्त भीड़सँ अलग कऽ सुरक्षित करौली। ओ कहली—‘सत्य बोलनिहार बच्चाक रक्षा पहिने।’ ई पहरुआ सभक पहिल खुलल टकराव छल।

चन्द्रपालक लोक सभ दूरसँ इशारा करैत रहल, मुदा योजना तुरन्त सफल नहि भेल। कारण नियम लिखल जा चुकल छल। प्रत्येक झूठा कागच अलग झोलामे राखल गेल, ओकर ऊपर लिखल गेल—‘मिलावट-सन्देह’। कोनो पन्ना फेंकल नहि गेल। मीरा कहली—‘झूठो प्रमाण अछि—एहिकि केओ सत्यमे मिलाबय चाहलक। एकरा राखू, ताकि मिलावटक कारीगरक हाथ चिन्हल जाए।’

साँझ धरि चन्ना गाछीक ठूँठ लग तीन ढेर बनल—स्वीकृत कथन, अधूरा कथन, आ मिलावट-सन्देह। ई तीन ढेर देखबामे साधारण कागच छल, मुदा एहीसँ पहरुआ सभक बुद्धि परिपक्व भऽ रहल छल। पहिने सभ कागच बस कागच छल; आब कागचक मिजाज पढ़ल जा रहल छल—कतऽ रोदन अछि, कतऽ अभ्यास, कतऽ डर, कतऽ लोभ, कतऽ अधूरा संकेत।

दुपहरक धूप ढरकैत-ढरकैत माटि पर बनल तीन ढेरीक छाह लम्बा करैत गेल, आ ओहि छाहमे बच्चा सभक थाकल देह पहिल बेर विश्राम खोजलक। भिखारी लालक भीतर आइ अजीब परिवर्तन भेल। जे चपरासी बरखों धरि कागच बस ढोइत छल, ओ आब कागचक देह देखय लागल। ओ एक कागच उठबैत कहलक—‘ई पन्ना बहुत साफ अछि, मुदा कथा गन्दी। ओ पन्ना गन्दा अछि, मुदा कथा साफ।’ बच्चा सभ हँसल नहि। सभ बुझल—ई सरल वाक्ये आइक पाठ छल। साफ अक्षर सदैव साफ न्याय नहि होइत।

रातिमे मुरारी फोटोकॉपीवाला फेर आयल। एहि बेर ओकर चेहरा पियर छल। ओ कहलक—‘राघवक लोक सभ कहलनि जे झूठा नकल बनाब, नहि तँ दोकान बन्द करा देब।’ सत्यव्रत मेहता ओकरा कठोर स्वरमे पूछलनि—‘तूँ बनौने छहीं?’ मुरारी माथ झुकौलक—‘तीनटा बनौने रही। मुदा एक-एक पर भीतर छोट खरोंच छोड़ि देलहुँ, ताकि असली मोहरसँ अलग चिन्हल जा सकय।’

ई स्वीकारोक्ति सुनि लोक बीच असमंजस पसरल। अपराधो, संकेत सेहो। मीरा कहली—‘भयमे कएल अपराध अपराधे अछि; मुदा सत्य दिस राखल छोट खरोंच सेहो दर्ज होएत।’

मुरारीक बयान अलग पन्ना पर लिखल गेल। देविका पन्नाक कोनमे लिखली—'मनुष्य पूरा कारी वा पूरा उज्जर नहि; पर न्यायक काज धूसरकेँ पढ़ब, अपराधकेँ धूसरमे गुम नहि करब।'

ठूँठ लग दीया जरल तखन बूढ़बा भूतक आभास फेर देखायल। केओ कहलक जे उज्जर धुआँ ऊपर उठल; केओ कहलक जे कारी छाह जड़ि लग बैसल। आरुणि ई दृश्य लिखबाक लेल कलम उठौलक, फेर रोकि देलक। ओ लिखलक—'अदृश्य संकेत उपस्थित, पर निर्णय स्थगित।' अनन्या हँसली—'आब तँ तोहर लेखनियो न्यायालय सीखि रहल अछि।'

जगमाया अपन रसीद वापस नहि नेली। ओ कहली—'जतय मोहनक नाम सुरक्षित रहत, ओतय राखू।' मीरा प्रतिलिपि बनबय कहली, मूल हुनका हाथमे राखबाक आग्रह केली। 'मूल वस्तु घरक स्मृति अछि,' ओ कहली, 'हमरा नकल चाही, अधिकार नहि।' जगमाया बहुत देर बाद मानली। ई निर्णय पहरुआ सभक मर्यादाकेँ मजबूत केलक—गवाही सुनब, मुदा लोकक स्मृति लूटब नहि।

रातिक अन्तमे मिलावट-सन्देहक पन्ना सभ एक अलग बक्सामे राखल गेल। बक्सा पर ताला नहि, लाल धागा बान्हल गेल। भिखारी लाल पूछलक—'ताला किएक नहि?' मीरा उत्तर देली—'ताला विश्वासकेँ कैद करैत अछि। लाल धागा स्मरण करबैत अछि जे खोलब तँ सभक सोझाँ खोलब।' ई लाल धागा नब रीति बनि गेल।

बच्चा सभ आइ थाकल छल, मुदा ओकर थकानमे चमक छल। हुनका सभ पहिल बेर बुझल जे सत्य केवल मिलि जाइत वस्तु नहि, साधना अछि। झूठक पोशाक कखनो फाटल, कखनो महँग, कखनो दयनीय, कखनो धार्मिक, कखनो कानूनी होइत अछि। ओकरा चिन्हारिबाक लेल केवल तेज बुद्धि नहि, धैर्यवान करुणा चाही।

दूर राघवक ओसार पर आइ अन्हार जल्दी पसारि गेल। ओ सोचलक जे बच्चा सभकेँ झूठमे फँसब सरल रहत, मुदा मिलावट-सन्देहक बक्सा ओकरा सभसँ अधिक डरौलक। झूठ जँ फेंकि देल जाए तँ प्रमाण नहि बचैत; झूठ जँ सँभालि राखल जाए तँ जालक नक्शा बनि सकैत अछि। राघव पहिल बेर बुझलक जे खेल ओकर हाथसँ अलि खिसकि रहल अछि।

सत्यव्रत मेहता रातिमे अपन पुरान पन्ना खोललनि। ओ लिखलनि—'न्यायकेँ केवल सचक सूची नहि, झूठक पद्धतियो चाही। कारण जे व्यवस्था झूठ कोना बनैत अछि से नहि बुझत, से सत्यकेँ बार-बार अकेला छोड़ि देत।' हुनकर हाथ स्थिर छल। ओ आब केवल अपराधक इतिहास नहि, प्रतिरोधक व्याकरण लिखि रहल छलाह।

भोरक पहिने-पहिने ठूँठक जड़ि लगक हरियर बिन्दु पर लाल धागाक परछाईं पड़ल। केओ ओकरा शुभ कहत, केओ संयोग। मुदा नामक पहरुआ सभ ओकरा घोषणा नहि बनौलनि। ओ सभ केवल बक्सा, रजिस्टर, प्रतिलिपि आ स्मृतिक माटि एक ठाम राखि पहरा देलक।

एहि तरहेँ अध्यायमे मिलावट चिन्हारिबाक पहरा पूरा भेल। झूठा भोला मण्डल भीखन साह बनि सोझाँ आयल, जगमायक रसीद हरिमोहनक गुम किनार बनि उठल, राघवक तीन युवकक कथा ढहि गेल, मुरारीक अपराधमे छिपल खरोंच दर्ज भेल, आ पहरुआ सभ सीखलक—सत्यक रक्षा लेल विश्वासक संग जाँच, करुणाक संग कठोरता, आ स्मृतिक संग मर्यादा अनिवार्य अछि।

लोकगीत: मिलावटक खरोंच

लोकधुन: जाँच-लोकधुन

राखू हे लग, साँचक प्रति लग राखू हे,
मिलावट चिन्हि पीड़ितक गवाही बचाउ हे।

साँचक प्रति लग राखू, झूठक रंग खुलत,
एकहि मोहरक किनारीमे खरोंच अलग मिलत।
भोला बनि भीखन आयल, कथा पहिरलक भेष,
जगमायक रसीद कहलक—ई नहि हमर लेख।
करुणा राखू, मुदा जाँचक आँखि नहि मूँदू,

विश्वासक संग प्रमाणक धागा जोड़ू।
मुरारीक हाथ काँपल, अपराध आधा बोलल,
लाल धागाक छाहमे हरियर बिन्दु डोलल।
साँचकेँ कठोरता नहि, सावधानी चाही,
मिलावट चिन्हि बचाउ पीड़ितक गवाही।

एक्के मोहरक किनारीमे खरोंच अलग भेटल,
भोला बनि भीखन आयल, कथा पहिरि कऽ चलल।
विश्वासक संगे प्रमाणक धागा जोड़ि बुनू।

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—मीमांसकक आक्षेपक खण्डन: “गङ्गायां घोष:” मे गङ्गा पद तीरज्ञानक प्रत्यक्ष उत्पादक मानल जाए, तखन प्रवाहार्थक मुख्यज्ञानक मध्यस्थता आ लाक्षणिक सम्बन्धक आवश्यकता नहि रहत। मीमांसकक आक्षेपक खण्डन।]

अध्याय १४९

जालक नक्शा

जाल जतबा पैघ, गाँठ ततबे छोट ठाम— आ पहरुआ गाँठे टा ताकै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: नान्हि गिट्ठ खोलू

लोकधुन: माछमार गीत

खोलू हे गिट्ठ, नान्हि-नान्हि गिट्ठ खोलू हे,
जाल कतबो पैघ, धीरजक नखसँ छोरू हे।

जाल बहुत पैघ हो तइयो गिट्ठऽ नान्हि ठाम,
धैर्यक नखसँ खोलि सकय माछमारक काम।
एक गिट्ठ खुलत, दोसर राह अपने देखत,
नान्हि चिन्ह जोड़िते जालक नक्शा लेखत।

जलकेँ दोष नहि दियौ, जालक चाल बुझू,
माछक जीवन बचाबय लेल सही गिट्ठ चुनू।
नान्हि गिट्ठ खोलू संग, हाथ नहि थाकत,
साँचक नाव मुक्त जलमे फेर सहजहि नाचत।

माछमारक आँगुर जानय—कतऽ ढील, कतऽ तान,
एक गिरह खुजिते देखाए दोसरक निशान।
जलकेँ दोष नहि, जाल बिछौनिहार चिन्हू,
मुक्त जलमे माछक नाच—इहए फल गिनू।

❖

जाल कोनो एक हाथक नहि होइ छै। एक हाथ धागा दैत छै, दोसर हाथ गाँठ लगबैत छै, तेसर हाथ फेकैत छै। जँ केवल फेकनिहार हाथ पकड़ल जाए, तँ जाल फेर बनि जाइ छै। पहरुआकेँ धागा दैनिहार, गाँठ लगौनिहार, आ फेकनिहार—तीनूकेँ चिन्हबाक होइ छै।

धुआँ, खरोंच, चाबी, मोहर—ई सभ अलग-अलग चिह्न बुझना जाइ छै। मुदा जखन ई सभ एक नक्शा पर मिलाओल जाइ छै, तखन ओ चिह्न नहि, बाट बनि जाइ छै। ओ बाट एक दरबाजासँ दोसर दरबाजा धरि जाइत अछि—आ दुनू दरबाजाक पाछाँ मनुष्य ठाढ़ रहैत अछि।

गोहि जलमे तैरैत अछि, मुदा ओकर चाल हवामे सेहो सुनल जा सकैत अछि, जँ कान सजग हो। जे मनुष्य पहिने केवल जल देखैत छल, ओ आब जलक हिलनाइ, माटिक नक्शा, आ धुआँक दिशा सेहो पढ़य लागल अछि।

नक्शा बनेनाइ घोषणा नहि छै। नक्शा बनेनाइ धैर्य छै। जे गाँठ जल्दीमे खोलल जाइ छै, ओ फेर बान्हल जा सकैत अछि। जे गाँठ धीरजसँ, एक-एक कऽ, प्रमाणसँ खोलल जाइ छै, ओ फेर नहि बन्हा सकैत अछि।

मिलावट-सन्देहक बक्सा राति भरि ठूँठक जड़ि लग राखल छल; भोर होइते बेर छल ओहि जाल कैँ नक्शा बनेबाक जे झूठक पाछाँ फैलल छल। राति भरि लाल धागासँ बान्हल मिलावट-सन्देहक बक्सा ठूँठक जड़ि लग राखल रहल। भोरक ओस ओहि धागा पर मोती जेकाँ जमल छल, मुदा पहरुआ सभकैँ ओ मोती नहि, गिट्ठऽ देखाइ पड़ैत छल। गिट्ठऽ जतबा छोटी, ओकर भीतर ओतबे अधिक बात लुकायल रहैत अछि—ई बात मीरा काल्हि साँझे कहने छली। आइ ओही गिट्ठऽ खोलबाक दिन छल।

दूर कतहु कौआ बाजल, फेर चुप भऽ गेल, जेना ओहो एहि सन्नाटाक भार बुझि गेल हो। मीरा सभकैँ एक बेर फेर सावधान केली—‘बक्सा खोलब, मुदा आरोप नहि खोलब। पहिने चिन्ह देखब, फेर सम्बन्ध देखब, फेर नाम लिखब। जे बात पक्का नहि, ओकरा अनुमान नहि, संकेत लिखब।’ बच्चा सभ अपन-अपन कापी, पुरान कागच, मुरारीक खरोंचक विवरण, आ राघवक ओसार पर देखल बालकक बयान एक ठाम राखलक।

माटि पर बैसल बच्चा सभक घुटना धूरिसँ सान भऽ गेल छल, मुदा कियो उठल नहि; कागचक देह नापब आब खेल नहि, साधना बनि गेल छल। भिखारी लाल एहि बेर केवल चपरासी नहि रहल। ओकर हाथमे लाठी नहि, पुरान नाप-दोरी छल। ओ कागचक आकार नापय लागल—ककरा काति सम, ककरा मोड़ एक समान, ककरा किनार पर एकहि ढंगक कृत्रिम धूलि। अनन्या मुस्कुरेली—‘आब कागचक देहक नाप सेहो होएत।’ भिखारी लाल कहलक—‘देहक चोट जेकाँ कागचक मोड़ो बोलैत अछि।’

पहिल कागच भीखन साहक झूठा बयानक छल। ओकरासँ संग-संग तीन युवकक कागच राखल गेल। चारूक कागच अलग कथा कहैत छल, मुदा चारूक बायाँ कोन एकहि ढंगसँ हलुक कातर। मुरारी फोटोकॉपीवाला जे छोट खरोंच देबाक बात कहने छल, ओहि खरोंचक चिह्न

भीखनक कागचमे नहि छल, मुदा तीन युवकक प्रतिलिपिमे छल। एहिसँ बुझाइ पड़ल जे झूठक कारखाना एके जगह नहि, दू ठाम चलैत रहल।

हवा एक पल लेल थमि गेल, जेना नक्शा स्वयं साँस रोकि सुनि रहल हो। सत्यव्रत मेहता अपन चश्मा साफ केलनि। ओ कहलनि—'एक झूठा कागच अकेला झूठ नहि होइत। जखन ओ दोसर झूठसँ मिलैत अछि, तखन ओकर पाछाँ पद्धति देखाइ पड़ैत अछि।' आरुणि ई वाक्य मोटा अक्षरमे लिखलक—'झूठक पद्धति सत्यक मार्ग खोलैत अछि।'

देविका कागचक गन्ध पर ध्यान देली। किछु पन्ना पर नमीक पुरान गन्ध छल, किछु पर अगरबत्तीक सुगन्ध। ओ पूछली—'अदालतक कागचमे अगरबत्ती किएक?' लिपिक, जे एखन नाम बताबय सँ डरैत छल, धीरेसँ कहलक—'राघवक ओसार पर रोज साँझ अगरबत्ती जरैत अछि। ओहि धुआँमे कागच पुरान देखय लागैत अछि, लोक कहैत अछि।' भीड़मे सिहरन दौड़ि गेल। धर्मक गन्ध फेर कागचक छल बनि सोझाँ आयल।

एक पुरान बोरासँ निकलल असली आवेदनक संग जखन मिलावट-सन्देहक कागच मिलाओल गेल, तखन मोहरक गोलाईमे अन्तर साफ देखायल। असली मोहरक गोलाई थकलेल, किनार टूटा, अक्षरक दबाव असमान। नकली मोहर गोल, चमकदार, सभ अक्षर बराबर। मीरा कहली—'जीवनमे असमानता होइत अछि। झूठ प्रायः बहुत सधा होइत अछि।'

एहि बीच जगमाया अपना घरसँ एक कपड़ाक थैली लऽ आयली। थैलीमे हरिमोहन झाक पुरान दवाईक पर्ची, डाकघरक मनीआर्डरक आधा टुकड़ा, आ एक पियर पड़ल फोटो छल। फोटोमे मोहन अदालतक बरामदामे बैसल, हाथमे ओही गमछा जे रसीदक तेल-दागक कारण बनल छल। ई छोट थैली मिलावट-सन्देहक बक्साक सोझाँ असली स्मृतिक भार बनि उठल।

मीरा फोटोकेँ हाथ लगबयसँ पहिने जगमायासँ अनुमति लेली। ओ कहली—'ई प्रमाण बनि सकैत अछि, मुदा पहिने ई अहाँक घरक शेष साँस अछि।' जगमाया आँखि नीचा कऽ कहली—'जे साँस घरमे बचल अछि, से जँ बाहर नाम बचा सकय तँ बाहर राखू।' अनन्या प्रतिलिपि बनयबाक सूचीमे फोटोकेँ जोड़लक, मूल वस्तु फेर थैलीमे राखि देलक।

जालक नक्शा बनय लागल। ठूँठक छाह तले माटि पर कोयलासँ तीन गोला बनाओल गेल—राघवक ओसार, मुरारीक दोकान, आ अदालतक रेकर्ड-घर। एहि तीनूकेँ जोड़ैत रेखा खिंचल गेल। रेखा पर नाम नहि, चिह्न लिखल गेल—'धुआँ', 'खरोंच', 'चाबी', 'नकली मोहर', 'भाड़ाक गवाही'।

भिखारी लालक हाथ जखन ‘चाबी’ शब्द लग रुकल, तखन ओकर चेहरा बदलि गेल। ओ बरखोंसँ रेकर्ड-घरक चाबी ढोइत छल। ओकरा लगल जे नक्शामे चाबी लिखल गेल अछि, तँ जेना ओकरो गर्दन पर उँगली उठल हो। मीरा ओकर बेचैनी बुझि गेली। ओ कहली—‘चाबी दोषी नहि। चाबीकेँ के कोना घुमौलक, ओ देखबाक अछि।’ भिखारी लालक आँखि भीजल।

लिपिक अन्तमे अपना नाम बतौलक—कैलाश प्रसाद। काल्हि धरि ओ केवल ‘लिपिक’ छल, आइ ओ कहलक—‘नाम बिनु बयान अधूरा रहत। लिखू—कैलाश प्रसाद, कनिष्ठ लिपिक।’ ओकर आवाज काँपैत छल, मुदा ई काँपन डरक नहि, बोझ उतारबाक छल। ओ स्वीकार केलक जे किछु फाइल राघवक लोकक कहलापर ‘अस्थायी रूपेँ अनुपलब्ध’ लिखल गेल छल।

सत्यव्रत मेहता तुरन्त पूछलनि—‘घूस?’ कैलाश प्रसाद चुप रहल। फेर कहलक—‘घूस प्रत्येक बेर रुपैया नहि होइत। कखनो बदली रोकबाक भरोसा, कखनो बेटाक नोकरीक आशा, कखनो केस बिगाड़ि देबाक धमकी।’ ई सुनि आरुणिक कलम रुकि गेल। ओ लिखलक—‘भय आ लाभक बीचक धूसर इलाका—एहि ठाम फाइल गुम होइत अछि।’

कैलाश प्रसाद रेकर्ड-घरक भीतरक एक पुरान लकड़ीक पटरा मोन केलक। ओकर नीचाँ किछु फाइल अस्थायी रूपेँ दबायल जाइत छल। भिखारी लाल तुरन्त उठल—‘अदालत खुलबासँ पहिने चलू।’ मीरा रोकली—‘भीड़ नहि जाएत। चार लोक, खुलल सूची, आ घुरि कऽ सार्वजनिक पढ़नाइ।’ एहि मर्यादासँ काजक गरिमा बचल।

चार लोक गेल—मीरा, सत्यव्रत, भिखारी लाल, आ कैलाश प्रसाद। बच्चा सभ बाहर प्रतीक्षा करैत रहल। प्रतीक्षा एहि कथामे सदैव दण्ड रहल छल; आइ प्रतीक्षा अनुशासन बनि रहल छल। अनन्या रजिस्टरमे लिखली—‘सभ किछु तुरन्त देखबाक लोभ सेहो मिलावट जन्मा सकैत अछि।’

रेकर्ड-घरक अन्हारमे लकड़ीक पटरा सचमुच ढीला भेटल। ओकरा उठेलाक बाद धूलिक भीतर तीन पातर फाइल, दूटा रसीद-बहीक पन्ना, आ एक अधूरा सूचीपत्र भेटल। सूचीपत्रक ऊपर बटुकनाथ हरिहरनक आश्रमक पुरान मोहर छल। मुदा ओकर नीचाँ अदालतक अभिलेख संख्या। धार्मिक मोहर आ न्यायिक संख्या एक पन्ना पर देखिते सत्यव्रत मेहता सन्न रहि गेलाह।

मीरा पन्ना हाथमे नहि लेली। पहिने ओकर फोटो बनाओल गेल, फेर प्रतिलिपि। मूल वस्तु कपड़ामे लपेटल गेल। कैलाश प्रसाद कहलक—‘ई पन्ना हम पहिल बेर देखैत छी।’ भिखारी

लाल ओकरा ताकलक—'तूँ नहि देखलह, मुदा तोहर चाबी एहि कोठरीमे घुमल।' एहि वाक्यमे आरोप कम, युगक कटुता अधिक छल।

घुरलाक बाद ठूँठ लग सार्वजनिक पढ़नाइ भेल। सूचीपत्रमे किछु नाम चिन्हित छल—हरिमोहन झा, सुरमणी देवीक पति, एक नाविक मदन दास, आ दू नाम जे आधा मिटायल गेल छल। प्रत्येक नामक सोझाँ एक छोट संकेत—'स्थगित', 'अपूर्ण', 'समझौता हेतु', 'भ्रमण'। कैलाश प्रसाद बतौलक जे 'भ्रमण' कोड छल—फाइल रेकर्ड-घरसँ बाहर गेल।

'बाहर कतऽ?' देविका पूछली। कैलाश प्रसाद बहुत देर चुप। फेर कहलक—'कखनो राघवक घर, कखनो बटुकनाथक आश्रम, कखनो चन्द्रपालक दफ्तर। कागच घुमि कऽ घुरैत छल तखन ओकर भीतरक एक पन्ना बदलल रहैत।' भीड़मे क्रोधक आवाज उठल। मीरा हाथ उठाकऽ रोकली—'क्रोध लिखू, हिंसा नहि।'

ओहि क्षण माटि पर बनल नक्शामे नब गोला जोड़ल गेल—'आश्रम'। ओकरासँ रेखा राघवक ओसार दिस गेल, फेर अदालत दिस, फेर चन्द्रपालक दफ्तर दिस। नक्शा आब साधारण चोरीक नहि रहल; ई धर्म, कानून, धन आ भयक चतुष्कोण बनि उठल। आरुणि चुपचाप कहलक—'गोहि चार पाँए नहि, चार संस्था पर चलैत अछि।'

ई वाक्य सुनि चन्ना गाछीक ठूँठ लग हवा भारी भऽ गेल। बूढ़बा भूतक कथा जे पहिने लोक-हँसी लगैत छल, आब नक्शामे देह पाबि रहल छल। गोहि जलमे नहि, फाइलमे, मोहरमे, दरबाजाक कुण्डीमे, आश्रमक धूपमे, दफ्तरक चाहमे, आ डरक फुसफुसाहटमे चलैत रहल।

भीखन साह फेर आयल। ओकर हाथमे दू सौ रुपैयाक एक मुड़ल नोट छल। ओ कहलक—'ई ओ पैसा अछि जे झूठा बयान लेल देल गेल। हमरा क्षमा नहि चाही; हमरा ई जानय अछि जे ई पैसा कतऽ राखू।' मीरा नोट नहि लेली। ओ कहली—'ई वस्तु प्रमाण अछि। अहाँ कहू, कोना देल गेल, के देलक, कोन समय।' भीखन पहिल बेर पूरा घटना बिनु अभिनय कहलक।

भीखनक असली कथन झूठा कथनसँ अधिक टूटल-फूटल छल। ओ बीच-बीचमे रुकैत, अपना गरीबीक लाजसँ नजर नीचाँ करैत, बच्चा सभसँ आँखि चुरबैत। मीरा बादमे कहली—'ई टूटन असली अछि। जे व्यक्ति अपन अपराध कहैत काँपैत अछि, ओकर काँपन सेहो प्रमाणक भाग बनैत अछि।' भीखनक बयान मिलावट-सन्देहसँ हटि 'दबावक स्वीकारोक्ति' नामक नबका खण्डमे गेल।

मुरारीक खरोंचक प्रयोग फेर जाँचल गेल। ओकर बनाओल नकली प्रतिलिपि पर एक सूक्ष्म तिरछी रेखा रहैत, जे सामान्य आँखिसँ देखब कठिन। देविका सूत टाँगि कऽ प्रकाशक

कोण बदलली, तखन खरोंच चमकल। बच्चा सभ आश्चर्यचकित। मुरारी धीरेसँ कहलक—‘डरमे अपराध कएल, मुदा भीतर चाहैत छलहुँ जे एक दिन पकड़ा जाए।’

सत्यव्रत मेहता एहि पर कठोर भेलाह—‘एहन इच्छा अपराधकेँ धोइत नहि।’ मुरारी माथ झुकौलक। मीरा जोड़ली—‘मुदा ई इच्छा जाल तोड़बाक दरार बनि सकैत अछि।’ पहरुआ सभक न्याय एहि ठाम कठिन बनल—दोष दर्ज, सहयोग दर्ज, दण्डक प्रश्न खुलल। ई खुलापन कमजोर नहि, ई न्यायपूर्वक सोचबाक कठिन साधना छल।

दुपहर ढलैत-ढलैत जालक नक्शा माटि पर एतेक पसरि गेल जे ठूँठक छाह छोट पड़ि गेल। कोनो बच्चा गलतीसँ ओहि पर पएर नहि राखल। सभकेँ लगैत छल जे ई नक्शा जमीन पर नहि, लोकक पीठ पर बनल अछि। प्रत्येक रेखा ककरो देहसँ गुजरि रहल अछि।

चन्द्रपालक दफ्तरसँ एक लोक दूरसँ देखैत रहल। ओकर हाथमे छाता छल, मुदा बरखा नहि। भिखारी लाल ओकरा चिन्हलक—‘ई वैह अछि जे फाइल आनय-लऽ जाए करैत छल।’ लोक नजर मिलिते हटि गेल। अनन्या ओकर वर्णन लिखि लेली—नील कमीज, उज्जर छाता, दहिना कानमे पुरान कटाक निशान। नाम नहि भेटल, मुदा संकेत भेटल।

मीरा कहली—‘नाम नहि भेटल तँ संकेत छोड़ू नहि। कखनो संकेत नाम धरि पहुँचबैत अछि।’ ई बात सुनि बच्चा सभ समझलक जे जाँचक भाषामे रिक्त स्थानो महत्त्वपूर्ण अछि। खाली घर, काटल कोन, आधा नाम, गन्ध, धुआँ, खरोंच—सभ मिलि कऽ सत्यक सीढ़ी बनैत अछि।

साँझक समय जगमाया सूचीपत्रमे हरिमोहनक नाम देखली। ओ बहुत देर धरि किछु नहि बजली। फेर धीरेसँ कहली—‘मोहनक नाम एतेक बरख बाद फेरसँ साँस लेलक।’ एहि वाक्य पर कतेको लोक रोएल। मुदा मीरा फेर सावधान केली—‘नोर दर्ज होएत, मुदा नोरसँ निष्कर्ष नहि। निष्कर्ष प्रमाणसँ।’ करुणा आ पद्धति फेर एक संग चलल।

रातिमे सत्यव्रत मेहता अपन पन्ना पर नक्शाक प्रति बनौलनि। ओ शीर्षक देलनि—‘अदालतक बाहरक अदालत’। फेर काटि देलनि। दोसर शीर्षक लिखलनि—‘अन्यायक आवागमन-पथ’। फेर ओहो काटि देलनि। अन्तमे लिखलनि—‘जालक नक्शा: नामक पहरुआ सभ द्वारा प्रथम प्रतिलिपि।’ एहि शीर्षकमे गर्व नहि, श्रमक नम्रता छल।

राघवक ओसार पर आइ चूल्हा देरसँ जरल। ओ सुनि चुकल छल जे नक्शामे आश्रमक गोला बनि गेल अछि। आश्रमक नाम अबिते बटुकनाथक पुरान परछाईं फेर जगा सकैत छल।

राघव पहिल बेर डरलक जे जे भूत ओ लोकक सोझाँ तमाशा बनबैत रहल, से आब कागच बनि ओकर दुआर पर पहुँचि सकैत अछि।

रातिक अन्तमे लाल धागाक बक्सा फेर बन्द भेल, मुदा एहि बेर ओकर कातमे माटिक नक्शाक प्रति, कैलाश प्रसादक बयान, भीखनक नोट, मुरारीक खरोंचक नमूना, जगमायक प्रतिलिपि, आ अनाम छाताधारीक संकेत रखल गेल। बक्साक ऊपर लिखल गेल—'जालक प्रथम रूप।'

भोर लग ठूँठक जड़ि दिस फेर हरियर बिन्दु देखायल। आरुणि ओकरा देखलक, मुदा घोषणा नहि केलक। ओ केवल लिखलक—'जड़ि एखन धरि जिन्दा अछि।' अनन्या उत्तरमे जोड़ली—'जड़ि जिन्दा रहत तँ नक्शा मिटत नहि।'

एहि तरहेँ अध्यायमे झूठ कागचक पाछाँ बैसल हाथक प्रारम्भिक चिन्हारि भेल। राघवक ओसार, मुरारीक दोकान, अदालतक रेकर्ड-घर, चन्द्रपालक दफ्तर आ बटुकनाथक आश्रम एक नक्शामे जुड़ि गेल। पहरुआ सभ सीखलक—जाल तोड़बाक पहिल काज जालकेँ देखब अछि।

लोकगीत: जालक नान्हि गिट्ठऽ

लोकधुन: माछमार लोकगीत

चिन्हू हे गाँठ, जालक हरेक गाँठ चिन्हू हे,
फँसल नाम सभकेँ बिनु घाव बाहर किनू हे।

जाल बहुत पैघ रे, गिट्ठऽ नान्हि ठाम,
ओसार, दोकान, कचहरी जुड़ल एके नाम।
लाल धागा राघवसँ चन्द्रपाल धरि गेल,
आश्रमक छाहमे बटुकक पुरान खेल।
माछ नहि, मनुष्य फँसल कागचक जाल,

पानिपर हँसय गोहि, भीतर रोअय काल।
जड़ि लग हरियर बिन्दु कहय—नक्शा नहि मिटत,
जे गिट्ठऽ देखलक, ओकर हाथ एक दिन खुलत।
जाल फाड़ू नहि, पहिने हरेक गाँठ चिन्हू,
फँसल नाम सभकेँ बिना घाव बाहर किन्हू।

माछ नहि, मनुख फँसल कागचक जालमे,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—“इन्द्र” शब्दक शक्ति सहस्राक्षमे: . पूर्वपक्ष कहैत अछि—जँ “स्वर्ग”क अर्थ दुःखरहित उत्कृष्ट सुख हो, तँ चन्दनादिजन्य सुखमे ओकर लाक्षणिक प्रयोग कठिन होएत; आ जँ केवल उत्कृष्ट सुख अर्थ हो, तँ दुःखरहितताक विशेषण अनावश्यक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। “इन्द्र” शब्दक शक्ति सहस्राक्षमे।]

अध्याय १५०

मुहरक छाया

रबर मेटा जाइ छै, हत्था रहि जाइ छै— आ खाली हत्थामे सभसँ बेसी भार।

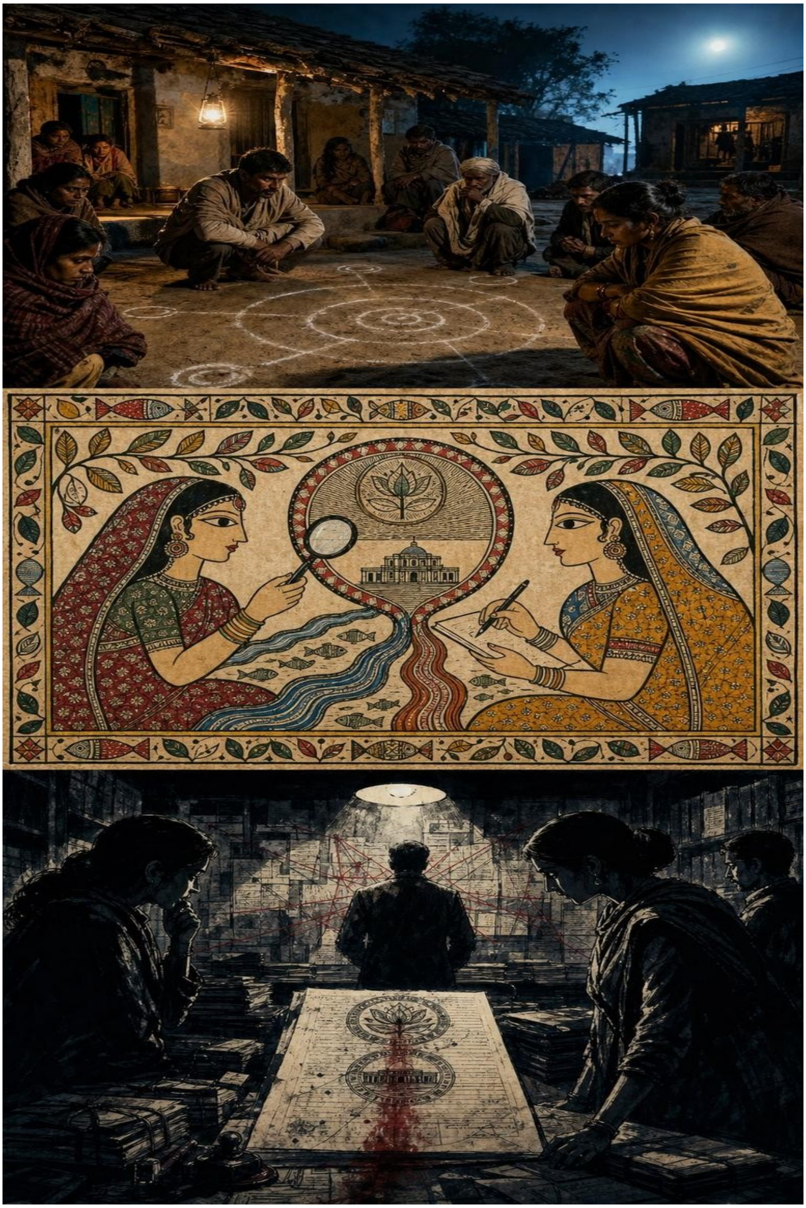

अध्यायारम्भ लोकगीत: हत्था साँचक हाथमे

लोकधुन: वस्तु-जागरण गीत

सुनू हे हत्था, काठक हत्थाकेँ सुनू हे,
मौन वस्तुक गवाही आदर सँ गुनू हे।

रबर मेटा गेल तइयो काठक हत्था बोलै,
ककर हथेली पकड़ने छल, स्मृतिक गाँठि खोलै।
वस्तु सभ मौन गवाह, आदरसँ ओकरा पढ़ू,
हत्थाकेँ साँचक हाथमे दऽ नव उपयोग गढ़ू।

मोहर सेवा लेल बनल, छलक औजार नहि,
हाथ बदलत, अर्थ बदलत, वस्तु दोषी नहि।
खाली हत्था कहै—आब ईमानक छाप धरू,
जनक कागचपर भरोसक उज्जर फूल भरू।

रबर मेटायल, काठ बचल, बचल हथेलीक छाप,
वस्तु दोषी नहि कहियो, दोषी मनक पाप।
हाथ बदलू, अर्थ बदलू—मोहर सेवा-काज,
साँचक हाथ मे हत्था दिअ, बाजए नब आवाज।

❖

काठ बजैत नहि, तइयो काठ बहुत किछु राखि लैत छै। ककर हथेली पकड़ने छल, ककर पसीना छुल छल, ककर जल्दी ओकरा मेज पर पटकल छल—सभटा काठक दानामे बसल रहैत अछि।

रबर मेटायल तँ अक्षर गेल, मुदा दबावक निशान नहि गेल। जे अपराध अक्षर हटाकऽ बाँचय चाहैत अछि, ओकरा भूलि जाइत अछि जे हाथक दबाव अक्षरसँ बेसी गहीर बैसैत अछि।

मोहरक गोलाई एक सीमा नापैत छै। सीमाक भीतर जे आबि गेल, से 'सत्यापित'; सीमाक बाहर जे रहि गेल, से 'अस्वीकृत'। मुदा सीमा खिंचनिहार हाथ केओ नहि देखने छल, धरि आइ।

आश्रम आ अदालत—दूटा अलग-अलग पवित्रता—एकहि मोहरक छाहमे मिलि गेल। जतय धर्म आ कानून एकहि हाथसँ चलल जाइ छै, ओतय दुनूक निर्दोषता संदेहमे पड़ि जाइ छै।

जालक नक्शा बनि गेलाक बाद राति भरि ठूँठ लग कियो ठीकसँ सुतल नहि। माटि पर खिंचल गोला सभक रेखा भोरक ओस सँ हल्की भीजि गेल छल, मुदा मिटायल नहि छल। राघवक ओसार, मुरारीक दोकान, अदालतक रेकर्ड-घर, चन्द्रपालक दफ्तर आ बटुकनाथक आश्रम—पाँचो नाम माटि पर नहि, लोकक मनमे गड़ि गेल छल।

माटिक रेखा पर एक चिटिक चिड़ै आबि बैसल, चोंचसँ धूलि कोंचलक, फेर उड़ि गेल—जेना ओहो नक्शाक भार जाँचि रहल हो। सभसँ अधिक आँखि ओहि सूचीपत्र पर टिकि रहल। ओकर माथ पर आश्रमक पुरान मोहर छल, नीचे अदालतक अभिलेख संख्या। ई दू चिन्ह एक पन्ना पर एना भेटल मानू दूटा नदी अन्हारमे मिलि गेल हो। अनन्या कहलक—‘एहि मोहरक बाट खोजय बिनु जालक देह नहि देखाइ पड़त।’

मीरा पहिनेहि नियम बना देली—‘मोहर देखिते आश्रम पर धावा नहि। धावा सत्य केँ डरबैत अछि। हम पूछब, मिलाब, सुनब, आ जे झूठ बोलत, ओकर झूठक आकार लिखब।’ एहि नियमसँ भीड़क गरमी थोड़ेक थमल। क्रोध बरखाक पहिल धार जेकाँ छल, मुदा मीरा ओकरा नहरमे फेरब चाहैत छली।

सत्यव्रत मेहता सूचीपत्र केँ प्रतिलिपि सहित उजासमे राखलनि। ओ देखलनि जे मोहरक गोलाईमे एक ठाम सूक्ष्म कटान अछि—जेना पीतल वा रबरक किनार कखनो टुटि गेल हो। अदालतक असली मोहर पर ओ कटान नहि छल। मुदा कैलाश प्रसाद बतौलक जे दशक भरि पहिने एक अस्थायी मोहर अदालतमे चलैत छल, जकरा बादमे ‘खो गेल’ लिखि देल गेल।

‘खो गेल’ शब्द सुनिते भिखारी लाल हँसल नहि, दुखी भऽ गेल। ओकर हाथक नाप-दोरी क्षण भरि थमि गेल, जेना शब्दे ओकर अँगुरी जकड़ि लेने हो। ओ कहलक—‘अदालतमे जे वस्तु खोइत अछि, से कखनो अकेले नहि खोइत। ओकर संग ककरो भरोसा, ककरो जमीन, ककरो नाम सेहो खोइत अछि।’ बच्चा सभ एहि वाक्य केँ मोटा अक्षरमे लिखलक।

कैलाश प्रसाद अपन स्मृतिमे उतरय लागल। ओ कहलक जे पुरान मोहर गायब भेलाक समय बटुकनाथ हरिहरनक आश्रममे एक बड़का धार्मिक आयोजन भेल छल। अदालतक किछु बाबू, वकील, जमीन-बिचौलिया, आ चन्द्रपालक लोक ओहि आयोजनमे गेल छल। प्रसादक डब्बा, लाल कपड़ा, दान-पुस्तिका, आ कागचक गंध एक संग घूमैत रहल।

देविका तुरन्त पूछली—‘दान-पुस्तिका एखन कतए अछि?’ ई प्रश्न सुनि कैलाश चुप भऽ गेल। फेर कहलक—‘आश्रमक पुरान कोठरीमे होयत, जँ फेंकल नहि गेल हो।’ मीरा कहली—‘फेंकल चीजक पाछाँ रद्देबाला रहैत अछि। रद्देबाला सेहो इतिहासक पहरुआ होइत अछि, बस ओकरा कियो पूछैत नहि।’

एहि पर मुरारी फोटोकॉपीवाला एक नाम देलक—छेदी कबाड़ी। ओ कहलक जे बरखों सँ आश्रमक पुरान कागच, टूटल फ्रेम, लोहेक संदूक, आ फाटल धार्मिक पोस्टर छेदीक दोकान पर जाइत रहल। छेदी कबाड़ी गामक आखिरी किनार पर रहैत छल, जतए नदीक बालू आ शहरक रद्दी भेटैत छल।

चार लोक छेदीक दोकान दिस चलल—मीरा, अनन्या, भिखारी लाल, आ मुरारी। सत्यव्रत पाछाँ रहि गेलाह, कारण हुनका बरामदाक बयान सभ क्रममे राखब छल। आरुणि ठूँठ लग बच्चा सभ संग नक्शाक प्रति बनबैत रहल। यात्रा छोट छल, मुदा सभकेँ लगैत छल जे ओ सभ कागचक शवगृह दिस जा रहल अछि।

छेदीक दोकानमे लोहेक तराजू, फाटल किताब, पुरान देवचित्र, टूटा ताला, चुनावक बैनर, विद्यालयक कॉपी, अस्पतालक पर्ची, आ अदालतक पुरान लिफाफा एक संग ढेर लागल छल। दोकानक भीतर हवा भारी छल, पुरान कागचक सड़ल गोंद आ लोहाक जंगक गन्ध मिझल-मिझल उठैत छल। छेदी पहिने डरि गेल। ओकरा लगल जे फेर कागच बेचबाक दोष ओकरा पर देल जाएत। मीरा सीधा कहली—‘हम दोष नहि, बाट पूछय आएल छी।’

छेदी धीरे-धीरे खुलल। ओ बतौलसि जे आश्रमसँ जे कागच आबैत छल, तकरा लाल सूत सँ बान्हल रहैत। किछु बस्ता सीधा गलाबी कागचक दूकानदार लग जाइत, किछु ओकरा लग। एक बेर ओकरा एक छोट पीतल जेकाँ भारी टुकड़ा भेटल छल, मुदा ओकरा ओ तामाक कबाड़ समझि बेचि देलक। भिखारी लाल चौंकल—‘पीतल जेकाँ भारी? गोल?’

छेदी अपन माथ खुजलौलक—‘गोल नहि, अर्धगोल। एक किनार कटायल। ओकरा पर उनटा अक्षर छल। हम पढ़ि नहि सकलहुँ।’ अनन्या तुरन्त लिखलक—‘कटायल किनार। उनटा अक्षर।’ मुरारीक चेहरा फक पड़ि गेल। सूचीपत्रक मोहरमे जे कटान छल, ओकर परछाईं एही वर्णनमे सुनाइ पड़ैत छल।

छेदी कहलक जे ओ टुकड़ा एक घुमन्तू धातु-कीनार केँ देलक, जे दरभंगा बजार दिस जाइत छल। नाम ठीक मोन नहि, पर लोक ओकरा ‘सिक्का’ कहैत छल, कारण ओ प्रत्येक

वस्तुकेँ सिक्का जेकाँ दाँतसँ काटि परखैत। मीरा छेदीसँ तिथि नहि, मौसम पूछली। छेदी कहलक—'सावनक बाद। आश्रममे नाग-पंचमीक मेला समाप्त भेल छल।'

मौसमक ई स्मरण तिथिसँ अधिक उपयोगी सिद्ध भेल। कैलाश प्रसादक कहब अनुसार पुरान अदालत-मोहर खोयबाक नोटिस सेहो नाग-पंचमीक बादक सप्ताहमे लिखल गेल छल। दू स्मृति एक-दोसराक नजदीक आ गेल। मीरा कहली—'सत्य कखनो सीधा नाम सँ नहि, मौसम सँ सेहो पकड़ाइत अछि।'

छेदी एक पुरान बोरा उलटलक। भीतरसँ दान-पुस्तिकाक फाटल जिल्द, किछु नामक पन्ना, आ लाल चूर्ण लागल रसीदक टुकड़ा भेटल। जिल्द पर बटुकनाथ हरिहरनक आश्रमक नाम छल। पन्ना सभ पूरा नहि, मुदा किछु दाता सभक नाम पढ़ाइत छल—चन्द्रपाल, राघव, एक अनाम 'कानूनी सेवा मंडल', आ दू अक्षर मिटायल 'भा... ला...'।

भिखारी लाल 'भा... ला...' देखिते चुप भऽ गेल। अनन्या ओकर चेहरा पढ़ि लेलक—'अहाँ किछु चिन्हलहुँ?' भिखारी लाल कहलक—'हमरा नाम भिखारी लाल। मुदा ई नाम हमर नहि। ई शायद भानु लाल हो सकैत अछि—ओ पुरान मोहर-बनौनिहार छल। अदालतक अस्थायी मोहर ओही बनौने छल, ई बात हम सुनने छलहुँ।'

भानु लाल। नाम हवामे पड़िते जेना छुपल दरबाजा खुलल। मुरारी तुरन्त कहलक जे भानु लालक बेटा एखन स्टेशनक लग रबर-मोहर बनबैत अछि। पुरान बाप मरि गेल, मुदा ओकरा लग कुछु पुरान छाँचा बचल होयत। मीरा तुरन्त निर्णय नहि देली। ओ छेदीसँ पन्ना लेने सँ पहिने रसीद लिखेलथि, प्रतिलिपि बनाओल गेल, आ मूल वस्तु पर छेदीक अंगूठा लागल।

घुरैत समय रास्तामे एक स्त्री भेटलीह—सुरमणी देवी। सूचीपत्रमे जिनकर पति चिन्हित छलाह। ओ खबर सुनि स्वयं आबि रहल छली। हुनकर हाथमे खाली लोटा छल। ओ कहलीह—'हम पानि लेबय निकसल छलहुँ, मुदा लोक कहल जे हमर घरक नाम कागचमे भेटल। आब पानि बादमे, नाम पहिने।' एहि वाक्यसँ रास्ताक धूलियो गम्भीर भऽ गेल।

ठूँठ लग दान-पुस्तिकाक फाटल पन्ना पढ़ल गेल। मीरा सुरमणी देवीसँ पूछली—'अहाँ सुनय चाहैत छी, वा बादमे अलग सँ?' सुरमणी कहलीह—'नाम हमर पति केर अछि, मुदा घाव हमर देहमे अछि। सार्वजनिक पढ़ू।' ई अनुमति लिखल गेल। बच्चा सभ सीखि रहल छल जे गवाहीक मर्यादा बिनु न्यायक आवाज अपमान बनि सकैत अछि।

दान-पुस्तिकामे सुरमणी देवीक पति श्यामसुन्दरक नामक सोझाँ 'समझौता-सेवा' लिखल छल। कैलाश प्रसाद बतौलसि जे अदालतक भाषामे एहन शब्द नहि चलैत। ई आश्रमक

अपना संकेत छल। ‘समझौता’क नाम पर जमीन छोड़बाओल जाइत, मुकदमा थकाओल जाइत, फेर दान-पुस्तिकामे सेवा लिखल जाइत।

सुरमणी देवीक चेहरा पत्थर भऽ गेल। ओ कहलीह—‘हमर पति कहैत छलाह जे आश्रम गेलाक बाद बाबू सभ मुलायम भऽ जाएत। आब बुझलहुँ, मुलायम नहि, लिपटायल जाइत छल।’ देविका ई वाक्य लिखैत समय काँपि गेली। धर्मक कपड़ा जखन अन्यायक देह पर चढ़ैत अछि, तखन पीड़ित ओकरा छूतो डरैत अछि।

दोपहर बाद दल स्टेशनक लग भानु लालक बेटा, रमेश मुहरिया, लग गेल। ओकर दोकानमे रबरक गंध, स्याहीक डिब्बा, काठक हत्था, आ उनटा अक्षर सभ पाँतिमे राखल छल। रमेश पहिने हँसीमे बात टारय चाहलक—‘हम तँ विवाह कार्ड, विद्यालय मोहर, दोकानक नाम बनबैत छी।’ मुदा जखन कटायल किनारक वर्णन भेल, ओकर हँसी सूखि गेल।

रमेश पुरान संदूक खोललक। ओकरा भीतर भानु लालक रजिस्टर छल। रजिस्टरक पन्ना पर हाथक लिखाइ एतेक महीन जे पढ़य लेल काँच चाही। एक पन्ना पर लिखल भेटल—‘विशेष गोल मोहर, अस्थायी न्यायालय हेतु, पुनः काटि आश्रम नाम सँ प्रयुक्त।’ तिथि अस्पष्ट, मुदा पन्नाक किनार पर नाग-पंचमीक मेला संबंधी खर्चक उल्लेख छल।

सत्यव्रत मेहता, जे बादमे पहुँचि गेल छलाह, रजिस्टर देखिते बहुत देर बोलि नहि सकलाह। ‘पुनः काटि’—एहि दू शब्दमे अपराधक पूरा शिल्प छिपल छल। अदालतक मोहर, आश्रमक नाम, आ बीचमे काटल किनार। एके औजार सँ न्याय आ धार्मिक भरोसाक नकल बनल।

रमेश कहलक जे ओकर पिता मरबाक पहिने कहने छल—‘मोहर बनब, मुदा मोहरक पाप नहि बनब।’ तखन ओ बुझि नहि सकल। आब समझल। ओ रजिस्टर देबय डरैत छल, मुदा प्रतिलिपि बनबय पर राजी भेल। मीरा कहली—‘मूल अहाँक, प्रतिलिपि सार्वजनिक। मुदा जँ मूल नष्ट भेल, तखन अहाँक मौन सेहो दर्ज होएत।’ रमेश सहमति देलक।

रजिस्टरक प्रतिलिपि, दान-पुस्तिकाक फाटल पन्ना, छेदीक बयान, कैलाश प्रसादक स्मृति, आ सूचीपत्रक मोहर—सभ एक पाँतिमे राखल गेल। बच्चा सभ पहिल बेर देखलक जे प्रमाण सभ अलग-अलग टापू जेकाँ छल, मुदा बीचमे पुल बनिते भूभाग बनि गेल। अनन्या लिखलक—‘मोहरक छाह अब प्रमाणक देह पाबि रहल अछि।’

एहि बीच चन्द्रपालक दफ्तर सँ संदेश आयल—‘बिनु अनुमति नाम लिखब मानहानि अछि।’ संदेश लऽ कऽ वैह उज्जर छाता वाला लोक आयल, जे काल्हि दूरसँ देखैत छल। एहि

बेर ओकर दाहिना कानक कटाक निशान साफ देखल गेल। भिखारी लाल फुसफुसायल—'ई हरिचरण अछि, चन्द्रपालक पुरान दौड़ू।'

मीरा संदेश पढ़ि शांत रहली। ओ कहलथि—'हम आरोप नहि लिखैत छी, सम्बन्ध लिखैत छी। जँ सम्बन्ध झूठ अछि, अहाँ लिखि कऽ खंडन दिअ। जँ सत्य अछि, तखन डर किएक?' हरिचरणक आँखि फेरि गेल। ओ कागच वापस नेने चाहलक, मुदा अनन्या पहिनेहि ओकर प्रतिलिपि बना चुकल छली।

हरिचरणक आवागमन सेहो नक्शामे जोड़ल गेल। ओ रेखा चन्द्रपालक दफ्तर सँ राघवक ओसार, फेर आश्रम, फेर अदालतक रेकर्ड-घर दिस जाइत छल। ई रेखा सभ देखिते जगमाया कहलीह—'हमर मोहनक रस्ता अदालत धरि नहि पहुँचि सकल, मुदा हुनकर कागच एतेक घर घूमि आयल।' ई वाक्य जालक नक्शा पर शोकक मोहर बनि गेल।

साँझ ढलल। ठूँठक छाह लम्बा भऽ कऽ नक्शाक सभ गोला ढाँपि लेलक। किछु लोकक मनमे भय आयल—छाह फेर सभ ढाकि देत? आरुणि माटि पर दीप राखलक। एक दीप राघवक गोला लग, एक आश्रम लग, एक अदालत लग, एक चन्द्रपाल लग, एक मुरारी लग। छाह पाछाँ हटली नहि, मुदा उजासक संग ओकर आकार साफ भऽ गेल।

सत्यव्रत मेहता कहलनि—'अन्यायक अन्हार हटब सदैव सम्भव नहि। कखनो-कखनो ओकर छाह नापबो न्याय दिस पहिल कदम अछि।' बच्चा सभ ई वाक्य नोट केलक। पहरुआ सभ बुझल जे मोहरक छाह मिटे सँ पहिने ओकर सीमा खिंचब जरूरी अछि।

रातिमे सुरमणी देवी अपन खाली लोटा ठूँठक जड़ि लग राखि देलीह। ओ कहलीह—'हमर घरक पानि बरखों सूखल रहल। जँ नामक प्यास एतय बुझे, तँ ई लोटा राखि दैत छी।' एहि लोटामे कियो पानि नहि भरलक। ओ खाली रहितो भरल प्रतीत भेल—गवाही सँ, प्रतीक्षा सँ, आ हिम्मत सँ।

रमेश मुहरिया रातिक अन्तमे फेर आइल। ओकर हाथमे भानु लालक एक पुरान लकड़ीक हत्था छल। रबर नहि रहल, केवल हत्था। ओ कहलक—'ई बाप बचा कऽ रखने छल। शायद ओ चाहैत छल जे कखनो कियो पूछय।' मीरा ओकरा बक्सामे नहि रखली। ओ कहलथि—'ई हत्था ठूँठ लग राखू। जनता देखत जे मोहर हाथमे होइत अछि, देवता नहि बनैत।'

एहि पर बूढ़बा भूतक झिलमिलाहट जेना ठूँठक ऊपर देखाइ पड़ल। कियो कहलक, ओ हँसल। कियो कहलक, ओ रोएल। मीरा किछु नहि कहली। ओ केवल रजिस्टर बन्द करैत लिखलथि—'मोहरक छाह प्रकाशमे आयल। आब छाह बनौनिहार हाथक बारी अछि।'

एहि तरहेँ अध्यायमे आश्रम आ अदालतक बीचक मोहर-पथ खुलल। छेदी कबाड़ी, दान-पुस्तिका, भानु लालक रजिस्टर, रमेश मुहरिया, सुरमणी देवीक गवाही, आ हरिचरणक संदेश—सभ मिलि कऽ प्रमाणक नबका वृत्त बनौलनि। पहरुआ सभ आब केवल कागच नहि पढ़ैत छल; ओ सभ औजार, गंध, मौसम, छाह आ हाथक इतिहास पढ़य लागल।

लोकगीत: खाली मोहरक हत्था

लोकधुन: वस्तु-विलाप

उठाउ हे हत्था, खाली हत्था सचक भार उठाउ हे,
जकर नाम रद्दी भेल, ओकर रेखा घुराउ हे।

रबर मेटा गेल, काठक हत्था बचल,
बापक काँपैत हाथसँ बेटा धरि पहुँचल।
भानु लाल किएक राखल, ककरो पूछबाक आस,
खाली हत्थामे भरल छल कतेको मुँहक साँस।
मोहर देवता नहि, हाथक औजार,

आश्रमसँ कचहरी धरि छाहक व्यापार।
बूढ़बा भूत हँसल कि रोएल—के जानै,
काठक मौन भीतर दबले नाम पहिचानै।
खाली हत्था, आब सचक भार उठाउ,

मोहर देवता नहि—हाथक औजार मात्र,
काठक मौन भीतर दबल नाम पहिचानए पात्र।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—आसत्तिवादक सिद्धान्त: अन्यथा “द्वारं कर्मता पिधानं कृति:”—“दुआर, कर्मत्व, बन्द करबाक क्रिया, प्रयत्न”—सदृश अवाक्य पदसमूहसँ सेहो वाक्यार्थबोध अनिवार्य भऽ जाएत, कारण ओतय सभ पदार्थक स्मरण समान रूपेँ सम्भव अछि। आसत्तिवादक सिद्धान्त।]

अध्याय १५१

मुहर चलौनिहार हाथ

मुहर अपने नहि चलैत— ओकरा चलौनिहार हाथक नाम होइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: हाथकेँ नाम दिअ

लोकधुन: करुण भगैतक आशा-लय

दिअ हे नाम, हाथ-हाथकेँ नाम दिअ हे,
'ऊपरक' धुँआ छोड़ि जिम्मा अपने लिअ हे।

मोहर अपने नहि चलै, हाथ ओकरा चलबै,
हाथक पाछाँ मन रहै, मन दिशा बतबै।
काजक जिम्मेदारीसँ कियो मुख नहि मोड़ू,
‘ऊपर’क धुँआ छोड़ि अपन नाम साफ जोड़ू।

हाथ जँ सेवा करै तँ आशीष ओकर भाग,
हाथ जँ छल करै तँ साँच करै ओकर जाग।
हाथकेँ नाम दिअ सभ, उत्तरदायित्व जागत,
नाम सहित कएल काज जनक भरोस बढ़त।

मोहर अपने नहि चलए, चलबैत अछि हाथ,
हाथक पाछाँ मन, मनक पाछाँ बात।
सेवा कएल हाथ पर आशीषक फूल झरए,
छल कएल हाथ साँचक दर्पण सँ डरए।

❖

‘ऊपर सँ आदेश’—ई वाक्य बरखों धरि सभसँ सुरक्षित छाता रहल। एहि छाता तर कतेको हाथ भीजल नहि, मुदा कतेको नाम भीजि गेल। जतऽ धरि छाता रहत, ओतऽ धरि हाथ सुरक्षित रहत।

चपरासीक हाथ, लिपिकक हाथ, दलालक हाथ—सभ अपन-अपन काजकेँ छोट बुझैत रहल। मुदा छोट-छोट हाथ मिलिकऽ जँ एक पैघ नुकसान करय, तँ छोटपन दोषक बहाना नहि बनि सकैत।

जे हाथ पहिने डरैत छल, से आइ बजय लागल अछि। भय जखन साक्षी बनैत अछि, तखन ओकर काँपब सेहो एक प्रकारक प्रमाण बनि जाइत अछि—डरक काँपब आ झूठक काँपबमे अन्तर होइत अछि।

कोड, चिह्न, संकेत—ई सभ शब्दक बचाव छै। जे बात नाम लऽ कऽ नहि कहल जाइ, ओकरा अक्षरक संकेतमे लुका देल जाइ छै। मुदा संकेतो एक दिन अपन अर्थ बजैत छै, जँ धैर्यसँ पढ़ल जाए।

राति भरि ठूँठक जड़ि लग राखल लकड़ीक हत्था ओस पीबैत रहल। रबरक मोहर नहि छल, केवल हत्था—मुदा ओहि खाली हत्थामे एतेक भार छल जे लोक सभ ओकरा छूअबासँ पहिने हाथ रोकि लैत। रबर मेटा देल गेल छल, अक्षर उखाड़ि देल गेल छल, मुदा पकड़बाक निशान बचल छल। मीरा भोरमे सभकेँ कहली—‘कतेको अपराध अक्षर हटाकऽ बाँचय चाहैत अछि, मुदा हाथक दबाव नहि हटैत।’

बाहर हवा तेज भेल, आ ठूँठक सूखल पातक कातर धूरिमे बजरि गेल—एक हलुक, अनवरत सरसराहट, जेना कोनो पुरान बात दोहराओल जा रहल हो। अनन्या हत्थाक गोलाई नापलक। आरुणि ओकर तल पर चिपकल पुरान स्याहीक कारी कण अलग कएलक। देविका ओकर काठक दाना देखलक—कतेक बेर पसीनासँ भीजल, कतेक बेर धूलि सँ रगल, कतेक बेर जल्दीमे मेज पर पटकायल। बच्चा सभक लग ई वस्तु आब देवताक प्रसाद नहि, श्रमक साक्ष्य छल। मोहर जकरा लोक आदेश बुझैत रहल, ओ असलमे मनुष्यक हाथक औजार रहैक।

रमेश मुहरिया पासमे बैसल छल। ओकर चेहरा पर राहत आ भय दुनू छल। ओकरा लगैत छल जे बाप भानु लालक छाह आब ओकर देहसँ बाहर आबि सार्वजनिक ठाममे बैसल अछि। ओ धीमे कहलक—‘बाप कहैत रहथि, बेटा, मोहर चलाओ, मुदा मोहरक बात मत पूछू। मोहर पूछए लागल तँ घर डूबि जाएत।’ मीरा ओकरा रोकलनि नहि। भयक वाक्य जखन अपन पूरा रूपमे निकलैत अछि, तखन ओ प्रमाणक पहिल छाह बनैत अछि।

सत्यव्रत मेहता हत्था उठौलनि नहि। ओ झुकि कऽ देखलनि। न्यायाधीशक आँखि पहिल बेर मेजक ऊँचाई छोड़ि कऽ ठूँठक जड़ि धरि उतरि आयल छल। ओ कहलथि—‘कानूनक कागच पर मोहर राजक चिन्ह मानल जाइत अछि। मुदा जँ मोहर गलत हाथमे पड़ल, तखन राज नहि, चोरीक अनुशासन बनैत अछि।’ बच्चा सभ ई वाक्य लिखलक। भिखारी लाल जोड़लक—‘

चोरी जखन अनुशासन बनैत अछि, तखन चपरासी ओकर पहिल पहरुआ बनि जाइत अछि।'

एहि स्वीकार पर सभक दृष्टि भिखारी लाल पर गेल। ओ लजायल नहि। ओ कहलक—'हम कतेक बेर मोहर लगल कागच बिनु पढ़ने भीतर पहुँचा देल। कहैत छलहुँ, हमर काम बस पहुँचाब अछि। मुदा जे हम पहुँचबैत छलहुँ, से ककरो घर उजाड़य निकलैत छल।' ओकर आवाजमे दोषक दर्प नहि, पछतावाक सरल साँच छल। मीरा लिखली—'छोट काजक नैतिकता लिखल जाए; नहीं तँ पैघ अपराधक पएर सदिखन बचि जाएत।'

हरिचरणक संदेश काल्हि रातिसँ चर्चामे छल। ओ संदेश कहैत छल—'सम्बन्ध तोड़ू, नहि तँ परिणाम होएत।' मुदा एहि सबेर हरिचरण स्वयं उपस्थित नहि भेल। ओकर बदला आश्रमक दू नवयुवक आयल। माथ पर गेरुआ पट्टी, हाथमे दान-पुस्तिकाक नकल, आ मुँहमे तैयार वाक्य—'आश्रम सदैव लोककल्याणक कार्य करैत रहल अछि।' अनन्या हँसल नहि, मुदा पूछलक—'लोककल्याणक कागच पर अदालतक अभिलेख संख्या किएक?'

नवयुवक पहिने घबड़ायल, फेर मोन कएल उत्तर देलक—'सुविधा लेल।' आरुणि तुरन्त लिखलक—'सुविधा: अज्ञात उपयोग।' मीरा दोसर प्रश्न रखलथि—'सुविधा ककर? विधवाक? किसानक? अदालतक? कि ओहि हाथक जे मोहर चलबैत छल?' नवयुवक चुप भऽ गेल। ओकर चुप्पीमे प्रशिक्षणक सीमा साफ देखाइ पड़ल। ओ लोक नारा सीखि आयल छल, प्रश्न सहबाक अभ्यास नहि छल।

तेहि समय जगमाया हाथमे पुरान कपड़ाक थैली नेने आइलि। ओहि थैलीमे मोहनक एक पत्र छल। पत्र अधूरा, किनार सँ भीजल, मुदा एक पंक्ति साफ—'कागच पर मोहर तँ लगि गेल, मुदा हम पढ़ि नहि सकलहुँ जे हम अपनहि जमीन पर पराया कोना भऽ गेलहुँ।' ई पंक्ति पढ़िते ठूँठक चारू कात हवा भारी भऽ गेल। मोहर चलल, पर अर्थ नहि बुझायल; कागच बनल, पर मनुष्य अपठित रहि गेल।

देविका पत्रक प्रतिलिपि बनबैत कहलक—'एहि पंक्ति कैँ अलग राखू। ई केवल मोहनक नहि, सभक प्रश्न अछि।' सुरमणी देवी अपन खाली लोटा उठा कऽ पत्रक लग राखि देलीह। लोटा आ पत्र संग-संग देखबामे अजीब लगैत छल—एक प्यासक पात्र, दोसर अपठित न्यायक पन्ना। मुदा दुनूक भीतर एकहि रिक्तता छल।

रमेश मुहरिया अपन बाप भानु लालक रजिस्टरक एक दोसर पन्ना देखेलक। ओ पन्ना पर तिथि सभक संग कोड लिखल छल—'अ', 'च', 'र', 'आ'। पहिने कियो अर्थ नहि बुझल।

सत्यव्रत कहलनि—‘ई संक्षेप हो सकैत अछि।’ भिखारी लाल धीरेसँ कहलक—‘अ अदालत, च चन्द्रपाल, र राघव, आ आश्रम?’ सभ चौंकल। कोड अचानक नक्साक चार गोला सँ जुड़ि गेल।

मीरा तुरन्त नियम बनौली—‘अनुमान अछि; प्रमाण बनबाक लेल मिलान चाही।’ बच्चा सभ चार दलमे बँटि गेल। एक दल अदालतक तिथिसँ मिलान करत, दोसर चन्द्रपालक दफ्तरक आवागमनसँ, तेसर राघवक ओसारक रातिक बैसकीसँ, चौथ आश्रमक दान-पुस्तिकासँ। ई जाँच अब कथा नहि, पद्धति बनि रहल छल।

अदालतक रेकर्ड-घर सँ आयल लिपिक तिथि मिलाबय लागल। तीन तिथि तुरन्त मेल खा गेल। जे दिन भानु लालक रजिस्टरमे ‘अ’ लिखल छल, ओहि दिन अदालतमे मूल फाइल अनुपलब्ध कहल गेल छल। जे दिन ‘च’ लिखल छल, ओहि दिन चन्द्रपालक दफ्तर सँ एक अर्जी दायर भेल छल। जे दिन ‘र’ लिखल, ओहि राति राघवक ओसार पर बाहरी गाड़ी आयल छल—ई बात भीखन चाहबला कहलक।

भीखन फेर अपन चायदान रखि आगाँ आएल। ‘हम सोचैत छलहुँ, रातिक ग्राहक बस ग्राहक होइत अछि। मुदा आब बुझाइत अछि, किछु ग्राहक कागच पचाबय आबैत छल।’ ओ बतौलसि जे एक लोक सदिखन बिनु चीनीक चाह पीबैत, आ जेबमे लाल धागा राखैत। मुरारीक खरोंचक नमूना सँ ई बात जुड़ि गेल। लाल धागा फेर जालक नक्शा पर चमक उठल।

कागच जाँचैत-जाँचैत बच्चा सभक अँगुरीक पोर लाल भऽ गेल छल, मुदा कियो थाकल नहि कहलक। एहि बीच ओ अनाम छाताधारी लोक दूर सड़क पर देखायल। ओहि कानक कटाक निशान स्पष्ट छल। आरुणि ओकरा आवाज देलक, मुदा ओ हटय लागल। बच्चा सभ भागल नहि। मीरा सिखौने छली—‘सत्यक पाछाँ दौड़लासँ कखनो-कखनो सत्य डरि जाइत अछि। ओकर बाट लिखू।’ देविका सड़कक धूलिमे ओकर पाँवक दिशा चिन्हलक—चन्द्रपालक गोदाम दिस।

दुपहर धरि छाताधारीक नाम भेटल—रामलखन सहाय। लोक कहैत छल जे ओ कखनो अदालतक मुंशी रहि चुकल, कखनो चन्द्रपालक हिसाब-किताब देखलक, कखनो आश्रमक वाहन चलबैत देखायल। ओकर काजक स्थिर नाम नहि छल; शायद ई अस्थिरताहि ओकर उपयोग छल। जकर पद स्पष्ट नहि, ओकर अपराधो आसानीसँ अस्पष्ट रहि जाइत अछि।

रामलखनकेँ संध्यासँ पहिने खोजि आनल गेल। साँझक धुँधलकामे ओकर परछाईं लम्बा भऽ ठूँठक जड़ि धरि पसरि गेल, जेना ओकर अपराधक आकार सेहो नापल जा रहल हो। ओ

पहिने चुप। फेर कहलक—‘हम बस कागच लऽ जाइत छलहुँ।’ भिखारी लाल ओकरा देखलक—‘हमरो ई वाक्य छल।’ एहि एक वाक्यसँ दुनू लोक बीच अदृश्य दर्पण खड़ा भेल। एके काम भिन्न दिशामे—एक अदालतक चपरासी, दोसर निजी जालक दूत। कागच लऽ जाइत लोक कागचक भाग्य तय करैत रहल।

मीरा ओकरा कोनो धमकी नहि देली। ओ केवल हत्था देखेलथि। रामलखनक चेहरा बदलि गेल। ‘ई कतयसँ भेटल?’ ओ पूछलक। रमेश उत्तर देलक—‘जे हाथ छोड़ि गेल, ओहि घर सँ।’ रामलखनक ओठ सूखि गेल। ओकरा बुझाइ गेल जे मोहरक रबर भले हटि गेल, मुदा हत्थाक स्मृति बचल अछि।

रामलखन धीरे-धीरे खुलल। ओ कहलक जे कतेक बेर खाली कागच पर पहिने मोहर लगैत, बादमे शब्द भरल जाइत। कतेक बेर पुरान तिथि पर नव नकल बनैत। कतेक बेर दान-पुस्तिका आ अदालतक प्रति एकहि राति मेज पर साथ-साथ रहैत। ओ नाम लेबासँ बचैत रहल, मुदा मार्ग बतबैत गेल। मीरा ओकर बात बीचमे नहि काटलथि। झूठ जखन टूटैत अछि, तखन ओकर आवाज धीरे होइत अछि।

‘ककर आदेश?’ सत्यव्रत मेहता पूछलनि। रामलखन पहिने चन्द्रपालक नाम दिस ताकलक, फेर राघवक, फेर आश्रमक। अन्तमे कहलक—‘नाम एक नहि छल। जेठका लोक कहैत, ई सेवा अछि। दफ्तर कहैत, ई प्रक्रिया अछि। ओसार कहैत, ई व्यवस्था अछि। हम बुझलहुँ, सभ करैत अछि।’ मीरा लिखली—‘सामूहिक अपराधक पहिल बचाव: सभ करैत अछि।’

अनन्या ओकरा फेर पूछलक—‘बटुकनाथ?’ ई नाम सुनिते नवयुवक सभ, जे आश्रम सँ आयल छल, बेचैन भऽ गेल। रामलखन सीधे उत्तर नहि देलक। ओ कहलक—‘बटुकनाथक समयमे मोहरक पूजा होइत छल। हुनकर गेलाक बाद मोहरक कारोबार।’ ई वाक्य ठूँठ लग गिरल सूखल पात जेकाँ बजल। पूजा आ कारोबारक बीचक सेतु किएक बनल, आब ई पूछब जरूरी छल।

सुरमणी देवी कहलीह—‘जखन लोक देवता बनैत अछि, तखन ओकर आसन पर दोसर लोक दुकान खोलि दैत अछि।’ ई बात सभकेँ भीतर धरि काटि गेल। बटुकनाथ जीवित छथि कि स्मृतिमे छथि, अपराध हुनकर प्रत्यक्ष छल कि हुनकर नामक दुरुपयोग—ई प्रश्न एखन खुलल नहि। मुदा ई निश्चित भेल जे हुनकर आश्रमक प्रतीक सभ कागजी जालमे उपयोग भेल।

एहि बेर सत्यव्रत मेहता अपन कागच पर ‘संदेह’ नहि, ‘जाँच’ लिखलनि। ओ कहलथि—‘संदेहक भाषा भीड़ कें उकसाबैत अछि; जाँचक भाषा हाथ कें पकड़ैत अछि।’ बच्चा सभक दल बनल। भानु लालक रजिस्टर, मोहरक हत्था, रामलखनक बयान, मोहनक पत्र, सुरमणीक लोटा, आ कोड-वाला पन्ना—सभ अलग-अलग थैलामे राखल गेल, मुदा लाल धागासँ नहि; उज्जर सूत सँ। मीरा कहली—‘लाल धागा जालक छल; उज्जर सूत स्मृतिक।’

साँझ होइत-होइत हरिचरण अन्ततः आयल। ओकर चेहरा पर रोष लिखल छल, मुदा आँखिमे हिसाब। ओ कहलक—‘अहाँ लोक आश्रमक अपमान करैत छी।’ देविका शांत स्वरमे उत्तर देलक—‘हम अपमान नहि, उपयोग पूछैत छी। जँ आश्रम पवित्र अछि, तँ ओकर नामक कागच अपवित्र हाथमे कोना गेल?’ एहि प्रश्न पर हरिचरणक रोषक आवरण पात जेकाँ खसय लागल।

हरिचरण कहलक—‘पुरान बात सभ खोलि की भेटत?’ जगमाया तुरन्त आगाँ बढ़लीह—‘हमर मोहनक नाम भेटत।’ सुरमणी कहलीह—‘हमर पानि भेटत।’ भिखारी लाल कहलक—‘हमर दोषक आकार भेटत।’ रमेश कहलक—‘हमर बापक साँच भेटत।’ अनन्या कहलक—‘आगूक बच्चा सभक डर घटत।’ एहि उत्तर सभक सोझाँ हरिचरणक वाक्य बहुत छोट पड़ि गेल।

रामलखन हरिचरण दिस ताकलक। ओ दृष्टि एहन छल जे पुरान मालिक आ पुरान दूत बीचक चिन्हारि छुपि नहि सकल। मीरा ई दृष्टि सेहो दर्ज करौली—‘दृष्टि: पारस्परिक परिचयक संकेत।’ हरिचरण तमतमायल—‘दृष्टियो लिखब?’ आरुणि उत्तर देलक—‘कतेको अपराध शब्द सँ पहिने आँखिमे बोलैत अछि।’

तखन अचानक ठूँठक जड़ि लग राखल खाली लोटामे एक बून्द पानि चमकल। आकाश साफ छल, वर्षा नहि। कियो कहलक ओस, कियो कहलक चमत्कार। मीरा हँसली नहि, भयभीत सेहो नहि भेली। ओ केवल लिखलथि—‘रिक्त पात्रमे नमी देखायल; कारण अनिश्चित।’ सत्यक अनुशासन चमत्कार कें सेहो अनुशासनमे राखैत अछि।

राति घिरल तखन रामलखनक बयान आधा पूरा भेल। ओ सभ नाम नहि देलक, मुदा एतेक बतौलक जे भानु लाल अकेला नहि छल। मोहर चलौनिहार हाथक पाछाँ हाथ निर्देश करैत छल, ताहि पाछाँ ओसार, ताहि पाछाँ दफ्तर, ताहि पाछाँ आश्रमक छाह। एक हाथ पकड़ला सँ पूरा देह नहि भेटत, मुदा देहक दिशा भेटि गेल।

बूढ़बा भूतक झिलमिलाहट ठूँठक माथ पर फेर देखाइ पड़ल। बच्चा सभ आब ओकरा तमाशा नहि मानैत छल। हुनका लगैत छल, जे नाम इतिहासमे अटकल अछि, से कखनो-कखनो हवा, पात, गंध, छाह बनि पूछैत अछि—‘लिखलहुँ?’ अनन्या रजिस्टर बन्द करैत उत्तरमे धीरे कहली—‘आइ हाथ लिखलहुं; काल्हि आदेश लिखब।’

एहि तरहेँ अध्यायमे मोहर चलौनिहार हाथक पहिल चिन्हारि भेल। भानु लालक रजिस्टरक कोड, रामलखन सहायकेँ खोज, हरिचरणक बेचैनी, आश्रमक बचाव, जगमाया आ सुरमणीक जीवित गवाही—सभ मिलि कऽ देखेलक जे मोहर केवल काठ आ रबर नहि, सत्ता, डर आ सुविधा सँ चलैत छल।

लोकगीत: हाथक पाछाँ आवाज

लोकधुन: करुण भगैत

कहू हे हाथ, साँच कहि भार हलुक करू हे,
फेर ककरो कमजोरक नाम पर मोहर ने धरू हे।

मोहर अपने नहि चलल, हाथ ओकरा चलौलक,
हाथ अपने नहि चलल, पाछाँ आवाज बोललक।
भानु, रामलखन, हरिचरणक काँपैत डोर,
ओसार पाछाँ दफ्तर, दफ्तर पाछाँ चोर।
‘लिखलहुँ?’—पातक छाह राति भरि पूछलक,

अनन्या कहलक—आइ हाथ, काल्हि आदेश लिखब।
नौकरीक डर, सुविधाक लोभ, भूखक बन्धन,
एक हाथमे कतेको पीढ़ीक मौनक स्पन्दन।
हे हाथ, सच कहि अपन भार कने हलुक करू,
फेर कोनो कमजोरक नामपर मोहर नहि धरू।

हाथ अपने ने चलल—पाछाँ आवाज बाजल।

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—बालकक सीख: बालक अन्वय-व्यतिरेकसँ शब्दक प्रत्यक्ष कारणता ओहि ज्ञानमे ग्रहण करैत अछि जे प्रवृत्तिक साक्षात् कारण अछि—अर्थात् "ई कार्य हमरा द्वारा कएल जाए" एहन कार्यान्वितज्ञान। पूर्वपक्षक तर्क—शक्ति केवल अन्विताार्थमे।]

अध्याय १५२

आदेशक स्रोत

आदेश एक मुँहसँ नहि जनमैत— बैठकसँ जनमैत अछि, आ बैठकक कोनो हस्ताक्षर नहि।

अध्यायारम्भ लोकगीत: ऊपरक बोलक मूल खोजू

लोकधुन: प्रश्न-नचारी

पूछू हे पूछू, 'ऊपर के?'—पूछू हे,
धुँआक माथ ताकि जिम्मेदार खोजू हे।

'ऊपर सँ कहल' सुनिते पूछू—ऊपर के?
आकाश, पद कि मनुख—उत्तर देत से।
बोलक माथ खोजिते धुँआ आकार पाबै,
जिम्मेदारीक नाम लिखल तँ झूठ पाछाँ धाबै।

प्रश्न सम्मानसँ करू, मुदा प्रश्न छोड़ू नहि,
आदेश जँ अन्याय करे, ओकरा मानू नहि।
ऊपरक बोलक मूल खोजू, जड़ि धरि दीप लिअ,
साफ उत्तर भेटलासँ जनक विश्वास दिअ।

'ऊपर सँ आदेश'—सुनि माथ नहि नमाउ,
आकाश, पद कि मनुख—पहिने नाम कहाउ।
सम्मान सँ पूछल प्रश्न विद्रोह नहि थिक,
जड़ि धरि पहुँचल दीप सँ उत्तर भेटए नीक।

❖

आदेश एक मुँहसँ नहि जनमैत— बैसकीसँ जनमैत अछि, आ बैसकीक कोनो हस्ताक्षर नहि। जतऽ हस्ताक्षर नहि, ओतऽ जिम्मेदारीओ नहि बुझना जाइत अछि। मुदा जिम्मेदारी हस्ताक्षरक मोहताज नहि होइत।

'सेवा', 'प्रक्रिया', 'सम्बन्ध', 'समझौता'—ई शब्द जतेक कोमल सुनाइ पड़ैत अछि, ओतबे कठोर कार्य ओकर पाछाँ छिपा सकैत अछि। भाषाक जाँच केनाइ, अपराधीक जाँच केनाइसँ कम जरूरी नहि।

निर्णय पहिने भऽ जाइत अछि, कागच बादमे बनैत अछि—ई क्रम उनटल भेटलासँ बुझना जाइत अछि जे अदालत केवल मंच बनि गेल छल, आ असली संवाद कतहु आर लिखायल गेल छल।

श्रद्धाक आसन सभसँ सुरक्षित ठाम होइत अछि, कारण ओतऽ प्रश्न पहिने झुकैत अछि। मुदा जँ ओही आसनसँ अन्याय बजैत अछि, तखन झुकनाइ सेहो एक प्रकारक सहभागिता बनि जाइत अछि।

गोला माटि पर बनल छल, आब भाषाक बनि रहल अछि। स्थानक नक्शा सँ भाषाक नक्शा अधिक कठिन होइत अछि, कारण भाषा बदलल जा सकैत अछि, मुदा भावना ओतबे नहि बदलैत।

भोर भेल तँ ठूँठक जड़ि लग राखल मोहरक खाली हत्था ओहि तरहें पड़ल छल, जेना राति भरि ओ स्वयं पहरा देलक हो। ओकर काठ पर ओसक बून्द नहि, मानू पसीनाक सूक्ष्म चमक छल। काल्हि रामलखन सहाय कहि गेल छल जे शब्द बादमे भरल जाइत, मोहर पहिने लगैत। आब प्रश्न ई नहि रहि गेल छल जे मोहर ककर हाथमे छल; प्रश्न ई छल जे हाथ कैँ आवाज कतएसँ भेटैत छल।

भोरक चिड़ै-चुनमुनक बोल आइ फिक्का बुझाइत छल, जेना ओहो नक्शाक भाषा सुनबामे व्यस्त होथि। मीरा सबेरे पहिल नियम लिखौली—‘आदेशक खोजमे व्यक्ति पर धावा नहि, भाषा पर ध्यान।’ हुनकर कहब छल जे अपराधी सभ प्रायः नाम बदलि लैत अछि, मुदा आदेशक भाषा बदलैत नहि। जे भाषा कहैत अछि—‘प्रक्रिया अछि’, ‘सेवा अछि’, ‘ऊपर सँ कहल गेल अछि’, ‘सभक भलाईमे अछि’—ओहि भाषाक पएर पकड़ब जरूरी अछि। बच्चा सभ एहि बेर नाम नहि, वाक्य संकलित करय लागल।

अनन्या रामलखनक काल्हिक बयान फेर पढ़लक। ओहि बयानमे ‘सेवा’, ‘प्रक्रिया’, ‘व्यवस्था’, ‘सम्बन्ध’, ‘समझौता’ आ ‘ऊपर’ शब्द बारंबार आबि रहल छल। आरुणि एक कागच पर ई सभ शब्द अलग-अलग लिखलक। देविका ओकर चारू कात गोला बनौली। गोला सभ माटि पर बनल नक्शासँ बेसी भयावह छल, कारण एहि बेर जाल स्थानक नहि, भाषाक छल।

सत्यव्रत मेहता बरामदासँ आयल नोटबुक खोललनि। कागचक पन्ना पलटैत ओकर उँगलीक पोर पर पुरान स्याहीक हलुक दाग लागल, जे ओ पोछलनि नहि। ओ कहलथि—‘

कानूनमे आदेशक स्रोत लिखल रहबाक चाही। जँ कागच कहए जे ऊपर सँ आदेश अछि, पर ऊपरक नाम नहि, तखन ओ आदेश नहि, दबाव अछि।’ ई वाक्य सुनि भिखारी लालक चेहरा उतरि गेल। ओ धीरे कहलक—‘हमर जिनगीमे कतेक कागच ऊपर सँ आयल, मुदा ऊपर सदिखन अन्हार रहल।’

भिखारी लाल अपन पुरान बक्सा लयल। ओहि बक्सामे लाल किनारवाला किछु पर्ची सभ रखल छल, जेकरा ओ बरखों धरि फेंकबाक साहस नहि कऽ सकल। पर्ची पर पूरा नाम नहि, केवल निर्देश—‘फाइल रोकू’, ‘नकल देरी’, ‘मूल खोजि नहि भेटल लिखू’, ‘दू तारीख बाद।’ ककर हस्ताक्षर नहि, मुदा कोनमे नील स्याहीसँ एक चिह्न—दू वक्र रेखा, बीचमे बिन्दु।

आरुणि चिह्न देखिते चौंकल। ई चिह्न ओकरा भानु लालक रजिस्टरक कोड पृष्ठक किनार पर सेहो देखल स्मरण भेल। दान-पुस्तिकाक फाटल पन्नामे सेहो एक ठाम धुँधल रूपमे ई चिन्ह छल। बच्चा सभ तीनू कागच साथ राखलक। चिह्न पूरा नहि मिलैत, मुदा परिवार एके बुझाइत छल—जेना एके हाथ अलग-अलग जल्दीमे बनौने हो।

रामलखन सहाय कैँ फेर बजाओल गेल। ओ आब काल्हि जेकाँ पत्थर नहि, थाकल मनुष्य लगैत छल। मीरा ओकरा पर्ची देखौलथि। ओ पहिने आँखि फेरि लेलक, फेर कहलक—‘ई सीधा आदेश नहि छल। ई मोन दिलौनाइ छल।’ अनन्या पूछलक—‘केकर मोन?’ रामलखन उत्तर देलक—‘जे निर्णय पहिनेहि भऽ चुकल, ओकरा कागच पर उतारबाक मोन।’

एहि उत्तरसँ सभक भीतर सिहरन दौड़ि गेल। निर्णय पहिने, कागच बादमे—एहि सूत्रसँ कतेको जीवन उलटि गेल छल। सत्यव्रत मेहता कहलथि—‘जँ फैसला कागचसँ पहिने होइत छल, तखन अदालत केवल मंच बनि गेल।’ मीरा जोड़ली—‘आ मंच पर जकर संवाद लिखल रहैत अछि, ओकर लेखक खोजब बाकी अछि।’

रामलखनक मुँहसँ धीरे-धीरे एक नब नाम निकलल—‘महावीर पाठक।’ कियो ई नाम पहिने खुलि कऽ नहि लेने छल। लोक कहैत रहल जे ओ बटुकनाथ हरिहरनक समयक शास्त्र-पाठी, बादमे आश्रमक हिसाबक सलाहकार, आ अन्ततः चन्द्रपालक जमीन-कागचक मौन लेखक बनि गेल। ओकर पद कखनो घोषित नहि भेल, मुदा ओकर पर्ची सभ कई दफ्तर घूमैत छल।

हरिचरण, जे दूर ठाढ़ छल, ई नाम सुनिते तमतमा उठल। ‘महावीर बाबू वृद्ध छथि, हुनकर नाम मत घसीटू।’ देविका तुरन्त पूछलक—‘वृद्ध भेला सँ कागच निर्दोष भऽ जाइत अछि?’

हरिचरण चुप। मीरा ओकर चुप्पी लिखौली—‘रक्षा: आयुक आड़ि।’ ई छोट टिप्पणी सुनि लोक बुझलक जे प्रश्न व्यक्ति पर आक्रमण नहि, भूमिका पर प्रकाश अछि।

महावीर पाठकक घर आश्रमक पिछला बाट पर छल। घरक फाटक जर्जर, कब्जा किचकिचायल, आ भीतर सन्नाटा एतेक गाढ़ जे पएरक आहटो अपराधबोध जेकाँ सुनाइ पड़ल। घर नहि, मानू पुरान पांडुलिपिक गोदाम। दरबाजाक माथ पर तुलसीक चौरा, भीतर सूखल नीमक पात, देबाल पर बटुकनाथक धुँधल चित्र, आ मेज पर दवातक पुरान निशान। महावीर पाठक खाट पर आधा लेटल छलाह। आँखि तेज, देह जर्जर। ई ओहने लोक छल जे कमजोर देहसँ मजबूत मौन बचबैत अछि।

मीरा प्रणाम कएली, आरोप नहि। ओ पर्ची सभ हुनका सोझाँ राखलनि। महावीर पाठक पहिने हँसलाह—‘अहीं सभ बच्चा अक्षरक खेलमे पड़ि गेल छी।’ अनन्या शांत स्वरमे कहलक—‘अक्षरक खेले सँ जमीन गेल, लोक मरल, नाम रद्दी भेल। खेलक नियम जानब जरूरी अछि।’ बूढ़क हँसी थमि गेल।

महावीर पर्चीक चिह्न देखलनि। ओ कहलथि—‘ई हमर हस्तलिपि नहि।’ सत्यव्रत तुरन्त कहलनि—‘कियो कहलक नहि जे ई हस्तलिपि अछि। हम पूछैत छी, ई चिह्नक अर्थ की?’ बूढ़क आँखिक पुतली एक क्षण काँपल। आरुणि ओहि काँप कैँ लिखल नहि; मीरा कहली—‘शरीरक संकेत सहायक, प्रमाण नहि। उत्तर प्रतीक्षा करू।’

दीर्घ मौनक बाद महावीर कहलथि—‘ई चिन्ह बैसकीक स्मरण छल। जे विषय मौखिक ठहरैत, तकरा पर्ची पर बस संकेत देल जाइत। नाम लिखल गेल तँ विवाद बढ़त।’ भिखारी लाल उदास स्वरमे पूछलक—‘विवाद बचाबय लेल नाम हटाओल गेल, मुदा जकर जीवनमे विवाद बनल, ओकरा के बचौलक?’ बूढ़ उत्तर नहि देलथि।

घरक एक कोनमे लोहेक संदूक छल। महावीर कहैत रहलाह जे पुरान कागच फेंकि देल गेल। मुदा जगमाया, जे बाहर स्त्रीसभ संग ठाढ़ छलीह, अचानक भीतरसँ अजीब गंधक बात कहलथि—‘भीजल कागचक गंध एखनहुँ अछि।’ छेदी कबाड़ीक बोरा, रेकर्ड-घरक धूलि, आ एहि घरक गंध एकहि परिवारक लगल। मीरा संदूक खोलबाक अनुमति माँगलथि।

महावीर पहिने मना कएलनि। ओ कहलथि—‘एहिमे घरक निजी कागच अछि।’ मीरा उत्तर देली—‘निजी कागच निजीक रहत। जे सार्वजनिक जीवनक नाम रखैत अछि, केवल ओहि पर दृष्टि।’ सत्यव्रत लिखित सहमति बनौलनि। महावीर काँपैत हाथसँ कुंजी देलथि।

संदूक खुलल तँ कपड़ाक नीचाँ तीन बही भेटल—'बैसकी-स्मृति', 'सेवा-विचार', आ 'समझौता-सूत्र।'

'बैसकी-स्मृति'क पन्ना सभ तारीखविहीन छल। प्रत्येक प्रविष्टिमे नामक बदला संकेत —'दक्षिणक किसान', 'नदीक पारक विधवा', 'पुरान मुकदमा', 'गाछीक टुकड़ा', 'मंदिर-बाड़ी लगक जमीन।' देविका काँपि उठली, कारण 'गाछीक टुकड़ा' शब्द चन्ना गाछी दिस संकेत करैत छल। गोहि, जल, ठूँठ, अदालत—सभ मानू एहि बहीक पन्नामे पहिनेहि लिखल रहल।

एक प्रविष्टि पढ़ल गेल—'गाछीक टुकड़ा पर प्रत्यक्ष दावा कठिन। धार्मिक उपयोगक स्मरण जगाओल जाए। लोकहितक वाक्य चले। पुरान नामक प्रति विलम्बित हो।' ई वाक्य सुनिते सुरमणी देवीक खाली लोटा, मोहनक पत्र, आ रद्दी बोराक गवाही एक साथ उपस्थित भऽ गेल। 'लोकहित' शब्द जतेक उज्जर छल, ओकर छाह ओतेक कारी।

आरुणि पूछलक—'पुरान नामक प्रति विलम्बित हो—ई ककर नाम छल?' महावीर आँखि बन्द कएलनि। ओ कहलथि—'हमरा सभ नाम मोन नहि।' अनन्या उत्तर देलक—'नाम जँ लिखल नहि गेल, तँ मोन सेहो कर्तव्य बनैत अछि।' बच्चा सभ बहीक प्रत्येक संकेतक सोझाँ खाली स्थान छोड़लक—जेना गुम नामक लेल आसन।

'सेवा-विचार' बहिमे आश्रमक भाषा भरल छल। 'झगड़ा शान्त करब', 'पारिवारिक मेल', 'भूमि दानक प्रेरणा', 'साधु-संतक मार्गदर्शन।' मुदा किनार पर नील स्याहीमे अंक छल—एक, दू, पाँच, आठ। भानु लालक रजिस्टरमे कोड तिथि सभक लग ई अंक फेर देखल गेल। मीरा कहली—'धर्मक वाक्य आ हिसाबक अंक साथ रहए तँ दानक देह जाँचू।'

हरिचरण एहि बेर भीतर घुसि आयल। ओ कहलक—'ई सभ पुरान विचार-बही अछि। विचार अपराध नहि।' सत्यव्रत मेहता शांत स्वरमे कहलनि—'विचार अपराध नहि। मुदा जँ विचारक आधार पर फाइल रोकेल गेल, नकल बदलल गेल, जमीन सरकल, तखन विचार आदेशक स्रोत बनैत अछि।' हरिचरणक रोष फेर हिसाबमे बदलि गेल। ओकरा बुझाइत छल जे भाषा पकड़ाइ गेल।

रामलखन एक पन्ना देखलक आ सहसा कहलक—'ई प्रविष्टि बादमे चन्द्रपालक दफ्तरमे पढ़ल गेल छल।' महावीर ओकरा घूरलनि। रामलखन काँपल, मुदा रुकल नहि। 'हम ओहि राति पान लेने गेल छलहुँ। राघव सेहो छल। वाक्य लगभग ईए छल—लोकहितक वाक्य चले।'

एहि स्मरणसँ बैसकी-स्मृतिक पन्ना अचानक घरसँ निकलि कऽ दफ्तर आ ओसार धरि पहुँचि गेल।

मीरा सभ बयान अलग-अलग लिखौली। रामलखनक स्मरण, महावीरक बही, भिखारी लालक पर्ची, भानु लालक कोड, दान-पुस्तिका, आ रेकर्ड-घरक विलम्ब—सभ एक रेखामे जुड़ैत गेल। ओ कहलीह—'आदेशक स्रोत एक कुर्सी नहि, एक गोलबैसकी अछि। कुर्सी पकडब आसान, गोलबैसकी पकड़ब कठिन। मुदा रेखा बनि गेल अछि।'

महावीर पाठक पहिल बेर थाकि कऽ कहलथि—'बटुकनाथजीक समयमे ई सभ लोकहितमे शुरू भेल। गरीब लोक मुकदमा लड़ैत-लड़ैत मरैत छल। हम सोचलहुँ, समझौता करा देब। बादमे कतेक हाथ जुड़ि गेल, से हम रोकि नहि सकलहुँ।' सुरमणी देवी तीख स्वरमे कहलीह—'जे रोकि नहि सकल, ओकर नाम बाँचि गेल; जे रोकि देल गेल, ओकर जमीन गेल।'

एहि वाक्य पर बूढ़क देह काँपल। ओ पहिल बेर 'क्षमा' शब्द कहबाक कोशिश कएलनि, मुदा मीरा रोकली—'क्षमा गवाहीक स्थान नहि लऽ सकैत। पहिने पूरा बताउ।' ई कठोरता दयाहीन नहि छल; ई दयाक अनुशासन छल। अधूरा स्वीकार पीड़ित पर फेर अन्याय बनैत अछि।

महावीर तखन एक चारिम पन्ना देलथि, जे ओ गद्दाक भीतर राखने छलाह। पन्ना पर सीधा नाम कम, पर चिह्न अधिक। 'अदालत', 'दफ्तर', 'ओसार', 'आश्रम' चारू शब्दक बीच बाण खिंचल। बीचमे लिखल—'मुख्य वाक्य: स्वेच्छा।' देविका पढ़िते ठिठकि गेली—'जबरदस्तीक कागच पर स्वेच्छा लिखल जाइत छल।' जगमाया बाहरसँ उत्तर देलीह—'हँ, हमर मोहनक हाथ काँपैत छल, कागच कहैत छल स्वेच्छा।'

भिखारी लाल अपन पर्ची सभ ओहि पन्नाक लग राखलक। चिह्न मिलल। पूरा नहि, मुदा पर्याप्त। सत्यव्रत मेहता लिखलनि—'प्रारम्भिक मिलान: आदेश-संकेतक साझा रूप।' हुनका बुझाइत छल जे ई अदालतक दण्डादेश नहि, लोक-स्मृतिक आरोपपत्रक आधार अछि। मुदा ई आधार मजबूत छल; कारण ई केवल भावना नहि, बहु-स्रोत गवाही छल।

दुपहर ढलैत महावीरक घरक बाहर भीड़ बढ़ल। धूप सीधा आँगनमे पड़ैत छल, आ भीड़क पएरतर धूरि सुक्खल पात जेकाँ किटकिटाइत छल। मीरा सभकेँ चेतावनी देली—'कियो पत्थर नहि उठाओ। जे लोक बरखों धरि पाथर बनायल गेल, से आब पाथर फेंकि अपन न्याय छोट नहि

करत।' बच्चा सभ दरबाजा लग पहरा देलक। न्यायक नाम पर बदला आ सत्यक नाम पर तमाशा—दुनूक रोक आवश्यक छल।

हरिचरण चुपचाप खिसकय चाहैत छल। आरुणि ओकर बाट रोकल नहि, बस पूछलक—'अहाँक जवाब लिखब बाकी अछि। लिखि दियौ—आश्रम एहि बही कैं स्वीकार करैत अछि कि अस्वीकार?' हरिचरण कहलक—'हम विचार करब।' अनन्या तुरन्त लिखलक—'उत्तर स्थगित।' सभ हँसल नहि। एहि बेर 'स्थगित' शब्द हरिचरण पर घुरि आयल छल, जे शब्द बरखों धरि गरीब पर चलैत रहल।

साँझ महावीरक बही सभक प्रतिलिपि बनि ठूँठ लग पहुँचलीह। मूल हुनकर घरमे सीलबन्द राहल; प्रतिलिपि लोक-पाठ लेल। मीरा कहली—'हम मूल छीनब नहि। छीनबो अपराधक भाषा अछि। हम प्रतिलिपि राखब, ताकि स्मृति चोर नहि बनए।' ई वाक्य बच्चा सभ विशेष चिह्नित केलक।

चन्ना गाछीक ठूँठ लग चार बहीक नाम पढ़ल गेल। 'बैसकी-स्मृति' सुनिते बूढ़बा भूतक झिलमिलाहट छज्जा पर देखाइ पड़ल। कियो डरि गेल नहि। आब भूत लोकक पछुआ भय नहि, पिछला नामक माँग जेकाँ उपस्थित होइत छल। अनन्या खाली स्थान सभ देखलक—जतए नाम नहि, केवल संकेत। ओ कहलथि—'काल्हि सँ हम संकेतक नाम खोजब।'

राति उतरि रहल छल। सुरमणी देवी खाली लोटामे एहि बेर एक बून्द पानि नहि, बहीक प्रतिलिपिक छाह देखलीह। जगमाया मोहनक पत्र ओकर लग राखि देलीह। रामलखन दूर बैसल अपना हाथ देखैत रहल। महावीरक घरसँ आयल गंध एखनहुँ हवामे छल—भीजल कागच, पुरान दवात, आ ओहि अपराधक, जे स्वयंकैं लोकहित कहि बचबैत रहल।

एहि तरहैं अध्यायमे आदेशक स्रोतक पहिल रूप खुलल। आदेश एक लोकक मुँहसँ नहि, बैसकी, संकेत, पर्ची, बही, आ लोकहितक वाक्यसँ चलैत छल। महावीर पाठकक 'बैसकी-स्मृति', भिखारी लालक लाल पर्ची, रामलखनक स्मरण, हरिचरणक स्थगित उत्तर, आ चन्ना गाछीक रिक्त नाम-स्थान—सभ मिलि देखेलक जे अपराधक असली आवाज प्रायः मधुर शब्दमे छुपल रहैत अछि।

लोकगीत: ऊपर सँ आयल बोल

लोकधुन: गोपनीय बैसकीक लोकधुन

धरू हे नाम, 'ऊपर सँ आयल' बोल पर नाम धरू हे,

जकर मुँह सँ निकसल, ओकरे जिम्मा भरू हे।

‘ऊपर सँ कहल’—ई बोलक माथ कतऽ,
बैसकी बिना हस्ताक्षर, अपराधक हाथ कतऽ?
सेवा, प्रक्रिया, भलाईक मधुर जाल,
शब्दक घीमे लपेटल छल कतेको काल।
महावीरक बही खोलल, रिक्त ठाम सभ जागल,

हरिचरणक ‘स्थगित’ उत्तर ओकरहि ऊपर लागल।
मूल नहि छीनल, प्रतिलिपि स्मृति बनल,
लोकहितक आवरण भीतर आदेशक देह जनल।
ऊपरक बोल, आब जमीनपर नाम धरू,

सेवा-प्रक्रिया-भलाईक मधुर जाल फँसल ततऽ।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—रूढ़ि योगसँ प्रबल: तहिना दहीक सारविषयक मन्त्रमे वाजिन् शब्दक “दहीक सार कैँ भोजन माननिहार” व्युत्पत्त्यर्थ प्रसङ्गसँ शीघ्र स्मृत होइत अछि; रूढ़ घोड़ार्थ स्मृत नहि। रूढ़ि योगसँ प्रबल।]

अध्याय १५३

संकेतक पाछाँ नाम

संकेतक पाछाँ नाम रहै छै, आ नामक पाछाँ फेर संकेत— पहरुआ बीचहिमे ठाढ़ रहए।

अध्यायारम्भ लोकगीत: खूँटीपर संकेत टांगू

लोकधुन: खोज-बटगबनी

टाँगू हे संकेत, खाली खूँटी पर टाँगू हे,
अनुपस्थितक मौनो सँ बाट माँगू हे।

खाली खूँटी देखिते बुझू किछु छल एतय,
धागा, गन्ध, खरोंच सभ बाट देखाबै ततय।
दक्षिणक किसानक बात, नदीपारक विधवा,
छोट संकेत जोड़ि बनत साँचक पूरा कथा।

खूँटीपर चिन्ह टांगू, ताकि कियो बिसरै नहि,
अनुपस्थित वस्तुक मौन सेहो बेकार नहि।
खोजक गीत गाबि चलू, सूक्ष्म बात सम्हारू,
नान्हि संकेतक हाथ पकड़ि अन्हार पार उतारू।

धागाक रेशा, गन्धक रेखा, खरोंचक इशारा,
नान्हि-नान्हि चिन्ह जोड़ि भेटए कथाक किनारा।
दच्छिनक किसान, नदी-पारक विधवाक बात,
सूक्ष्मक हाथ पकड़ि कऽ पार करू अन्हार-रात।

❖

खाली खूँटी स्वयं एक गवाही छै। जतय कियो नहि छल, ओतय कियो छल—ई विरोधाभास केवल शब्दक खेल नहि, अनुपस्थितिक भाषा छै। जे अनुपस्थित अछि, ओकरो नाम माँगल जा सकैत अछि।

दक्षिणक किसान, नदीक पारक विधवा—ई सभ पहिचान नहि, धुंधलापन छल। धुंधलापनक भीतर जखन एक-एक अक्षर साफ होइत अछि, तखन धुंधलापन स्वयं गवाह बनि जाइत अछि।

स्वेच्छाक कागच पर काँपैत अँगूठा—ई विरोधाभास सभसँ क्रूर छल। जे कागच स्वतंत्रता लिखैत छल, ओ असलमे भयक दस्तावेज छल। शब्द आ सत्यक बीचक ई खाई पहरुआ सभ पहिल बेर देखलक।

'ब' अक्षर धब्बाक भीतर सँ उभरल—एक अक्षर, अनेक सम्भावना। जल्दी नामक ओर नहि दौड़ब, संभावनाकेँ संभावना कहब—एहि संयममे न्यायक असली धैर्य छिपल अछि।

सबेरे चन्ना गाछीक ठूँठ लग खाली स्थान सभ फेर खोलल गेल। भोरक हवामे अखनहुँ राति भरिक ओसक ठण्ढक बचल छल, आ बच्चा सभक अँगुरी खूँटी गाड़ैत काँपि रहल छल। काल्हि राति बहीक प्रतिलिपिमे जतए नामक स्थान पर संकेत छल, ओहि सभ ठाम अनन्या छोट-छोट खूँटी गाड़ि देलक। खूँटी पर कागच लटकल—'दक्षिणक किसान', 'नदीक पारक विधवा', 'पुरान मुकदमा', 'गाछीक टुकड़ा', 'मंदिर-बाड़ी लगक जमीन'। ई कागच हवामे डोलैत छल, मुदा ओकर डोलनाइ खेल नहि, पुकार छल।

मीरा पहिनेहि कहि देली—'संकेतक पाछाँ नाम खोजब अछि, मुदा अनुमानकेँ नाम बनाकऽ नहि लिखब। जेकरा हम नहि जानैत छी, ओकरा खाली छोड़ब सेहो ईमानदारी अछि। ' बच्चा सभ एहि नियमक नीचाँ लाल रेखा खिंचलक।

भिखारी लाल रेकर्ड-घर सँ पुरान सूची लयल। सूची पर कीड़ा खाएल किनारा, पर बीचक अंक बचल। ओ बतौलसि जे अदालतमे कतेको फाइलक बाहरी पन्ना बदैल गेल छल, मुदा नकल-रजिस्टरमे पुरान क्रमांक रहि जाइत। आरुणि कहलक—'नाम नष्ट होइत अछि, क्रमांकक हड्डी रहि जाइत अछि।' ई वाक्य सुनि सत्यव्रत मेहता चौंकलाह; कानूनक कागचमे हड्डीक ई भाषा हुनका कठोर, मुदा सटीक लगल।

पहिल संकेत छल—'दक्षिणक किसान'। कागचक पुरान गन्धमे मिलल हुनकर पएरक धूरिक हलुक छाप एखनहुँ किनार पर बचल छल। नकल-रजिस्टरमे ओहि वर्षक दक्षिण टोला सँ तीन किसानक भूमि-विवाद भेटल। एकक नाम मिटा देल गेल, दोसरक पन्ना फाटल, तेसरक आगाँ लाल स्याहीमे लिखल—'समझौता सम्पन्न।' देविका पूछलक—'समझौता सम्पन्न भेल, कि नाम सम्पन्न भऽ गेल?' भिखारी लाल उत्तर नहि देलक; ओकरा अपन पुरान आवाज पर भरोसा नहि रहल।

तेहि समय बूढ़ रामपरीक्षित पासवान लाठी टेकैत पहुँचलाह। हुनकर धोतीक किनार धूरिसँ पहिनहि सान भेल छल, जेना बहुत दूरसँ चलि कऽ आयल होथि। हुनका कियो ने बजौने छल, ने

रोकने। ओ कागच लटकैत देखलनि आ कहलनि—‘दक्षिणक किसान शायद हमर काका देवन पासवान छलाह।’ सभक आँखि हुनका पर गेल। रामपरीक्षित हाथ उठौलनि—‘शायद कहैत छी। पूरा प्रमाण बिनु पूरा नाम नहि लिखू। मुदा काका कहैत रहथि जे हुनकर खेत पर समझौता हुनकर अँगूठा बिनु लिखायल।’

मीरा तुरन्त दू कोठरी बनौली—‘स्मरण’ आ ‘प्रमाण प्रतीक्षा’। देवन पासवानक नाम पहिल कोठरीमे गेल। अनन्या ओकर सोझाँ खाली स्थान छोड़लक, जेना नाम आधा दरबाजा धरि पहुँचल हो। रामपरीक्षितक आँखिमे सान्त्वना नहि, संयमक चमक छल। हुनका पहिल बेर लगल जे आधा बात कैँ पूरा बनाबयक जल्दी नहि करबो न्याय अछि।

दोसर संकेत छल—‘नदीक पारक विधवा’। एहि शब्द पर सुरमणी देवीक खाली लोटा काँपल। ओ कहलीह—‘नदीक पार बहुत विधवा छलि। जिनका सभक मर्द बाढ़िमे गेल, बीमारीमे गेल, पर कागचमे हुनका सभकैँ सदिखन अकेली मानि कमजोर बुझल गेल।’ जगमाया मोहनक पत्र पकड़ि कऽ ठाढ़ छलि। ओ पूछलीह—‘विधवा नामसँ कमजोर बनायल गेल, मुदा जमीनक लालचमे सभसँ पहिने ओकरहि घर देखल गेल।’

नकल-रजिस्टरमे एक नाम धुँधल भेटल—‘फूलमती’ कि ‘फुलकुमारी’, स्पष्ट नहि। पन्नाक कोनमे वैह दू वक्र रेखा आ बीच बिन्दु। आरुणि बहीक संकेतसँ मिलौलसि। मिलान पूर्ण नहि, मुदा नजदीक। सत्यव्रत लिखलनि—‘संभावित सम्बन्ध; अक्षर अस्पष्ट।’ अनन्या कहलक —‘जखन अक्षर अस्पष्ट हो, तखन मनुष्यकैँ धुंधला नहि करब।’

एहि वाक्य पर लिपिक रामलखन सहायक देह झनझना उठल। ओ कहलक—‘हमरा एक फाइल मोन अछि। फूलमती नहि, फूलकली देवी। हुनकर देवर कहैत छल जे ओ पढ़य नहि जानैत, तैं कागच हम बुझा देब। बादमे ओकर अँगूठा एक दान-पत्र पर लागल देखल गेल।’ हरिचरणक चेहरा फेर कठोर भऽ गेल—दान-पत्र शब्द सुनिते ओकरा आश्रमक देबाल धँसैत लगैत छल।

मीरा रामलखनक बात तुरन्त अन्तिम सत्य माननलि नहि। ओ कहलथि—‘फूलकली देवीक कोई जीवित परिजन खोजू। कागचक संग जीवित स्मरण चाही।’ बच्चा सभ तीन दिशामे निकलल। नदी पारक नाविक, पुरान दाई, माटि-कटनी करय वाली स्त्री, आ हाटमे तेल बेचयवाली बूढ़ि—सभसँ पूछल गेल। दिन चढ़ल, मुदा प्रत्येक उत्तर धूलि जेकाँ उड़ी फेर बैठि जाइत।

दुपहर लग एक किशोरी आइल—नाम कमला। ओ कहलक जे ओकर नानी फूलकली देवी छलि। नानी मरबाक पहिने एक पोटली ओकर मायक हाथ देलन्हि। पोटलीमे माटिक छोट डल्ला, अँगूठाक कालिख लागल कपड़ा, आ एक पन्ना छल। पन्ना पर लिखल शब्द आधा मेटल, मुदा ‘स्वेच्छा’ साफ। कमला पूछलक—‘स्वेच्छा की होइत अछि?’ कियो तुरन्त उत्तर नहि देलक।

सुरमणी देवी खाली लोटा जमीन पर राखि कहलीह—‘जे भूखल कैँ कहय—खुशीसँ देलहुँ, से स्वेच्छा नहि। जे डरायल कैँ कहय—अपन इच्छासँ लिखू, से स्वेच्छा नहि। जे विधवा कैँ अकेली घेरि अँगूठा ले, से स्वेच्छा नहि।’ कमला एहि उत्तरकैँ बुझि गेल कि नहि, ई स्पष्ट नहि; मुदा ओकर आँखिमे पहिल बेर नानीक पोटली अपमान नहि, गवाही बनि उठल।

फूलकली देवीक नाम खाली स्थानसँ उठि ‘प्राथमिक नाम’क सूचीमे गेल। मीरा ओकर आगाँ लिखौली—‘परिजन-स्मरण, पोटली, अस्पष्ट दान-पत्र, स्वेच्छा-वाक्य।’ बच्चा सभ खुश भेल, मुदा मीरा रोकली—‘खुशी नहि, सावधानी। नाम भेटलाक अर्थ ई नहि जे न्याय भेटल। नाम तँ बस दरबाजा खोलैत अछि।’

तेसर संकेत—‘पुरान मुकदमा’—सभसँ कठिन निकलल। पुरान मुकदमा सभ प्रायः लोकक जीबनसँ लंबा चलैत छल। एक मुकदमा बाप दायर करैत, बेटा तारीख पर जाइत, पौत्र समझौता कागच पर अँगूठा देखैत। रेकर्ड-घरक सूचीमे ओहि संकेतक सोझाँ केवल ‘मूल अनुपलब्ध’ लिखल छल। भिखारी लाल धीरेसँ कहलक—‘मूल अनुपलब्ध लिखल दिन शायद पन्ना खुद चलि गेल नहि छल; चलाओल गेल छल।’

सत्यव्रत मेहता एहि बात पर चुप भऽ गेलाह। हुनका बुझाइत छल जे न्यायालयक भाषा अपना अपराधकैँ निष्पक्ष शब्दमे ढाँपि लैत अछि। ‘अनुपलब्ध’ कहब आसान, मुदा अनुपलब्ध कएल गेल, ई लिखब कठिन। ओ नोटबुकमे लिखलनि—‘निष्क्रिय शब्दक भीतर सक्रिय हाथ खोजब।’ ई नोट बादमे बच्चा सभक लेल नव सूत्र बनल।

पुरान मुकदमाक संकेत खोजैत-खोजैत भानु लालक कोड-रजिस्टर फेर खुलल। ‘अ’ ‘च’ ‘र’ ‘आ’क बीच एक नया अक्षर भेटल—‘ब’। पहिने कियो ध्याने नहि देने छल, कारण ओ लाल धब्बाक भीतर दबि गेल छल। आरुणि धब्बा पर तेलक हलुक बून्द राखि अक्षर पढ़ल। ‘ब’ साफ भऽ गेल। देविका फुसफुसा उठली—‘बटुकनाथ?’

मीरा तुरन्त डाँट जेकाँ संयम देली—‘नाम नहि, संभावना। ब अक्षर सँ बहुत नाम होइत अछि।’ मुदा भीड़क भीतर जे सिहरन उठल, ओकरा रोकब कठिन छल। बटुकनाथ हरिहरनक

नाम एखन धरि परछाईं जेकाँ छल—सभ जानैत, कियो सीधे नहि छूइत। ई पहिल बेर छल जे ओकर प्रथम अक्षर कागचक धब्बा सँ उभरल।

हरिचरण तुरन्त कहलक—'ब सँ बही सेहो हो सकैत अछि, बरामदा सेहो, बाबू सेहो।' अनन्या शान्त स्वरमे उत्तर देलक—'ठीक। तैं हम लिखब—ब: अर्थ अनिर्णीत।' एहि उत्तरसँ हरिचरणक बचाव उनटा ओकरा पर पड़ल। कारण जालक भाषा चाहैत छल जे प्रश्न छूटि जाए; बच्चा सभ प्रश्नकेँ स्थगित नहि, सुरक्षित करैत छल।

एहि बेर महावीर पाठक स्वयं ठूँठ लग आएलाह। हुनका दू युवक सहारा दैत छल। ओ कहलग—'ब अक्षरकेँ बटुकनाथजी पर मत लादू। हुनका समयमे लोक हुनका पिता जेकाँ मानैत छल।' सुरमणी देवीक स्वर कटु नहि, पर छेदनहार छल—'पिता जेकाँ मानल गेल लोक जँ पराया कागच पर संतानक अँगूठा लगबाबय दय, तखन पिता शब्दक सेहो जाँच होएत।'

महावीर चुप भऽ गेलाह। हुनका शायद पहिल बेर बुझाइत छल जे श्रद्धाक आसन सभसँ सुरक्षित अपराध-स्थान बनि सकैत अछि। मीरा पूछली—'ब अक्षरक अर्थ अहाँक बहीमे कतओ अछि?' महावीर मना करबाक कोशिश कएलनि, पर रामलखन बीचमे कहलक—'बैसकी-स्मृतिमे एक ठाम "बाबा" लिखल अछि।' महावीर ओकरा रोकि नहि सकलाह।

प्रतिलिपि फेर देखल गेल। सचमुच एक पन्नाक किनार पर हलुक लिखल छल—'बाबाक वचन बादमे पढ़ब।' पन्नाक मुख्य भागमे 'गाछीक टुकड़ा', 'धार्मिक स्मरण', 'लोकहितक वाक्य' आ 'पुरान नाम विलम्बित' छल। देविका कहलक—'बाबा कियो हो सकैत अछि। मुदा ई बाबा कागचक बाहरो निर्णय दैत छल।' सत्यव्रत लिखलनि—'अनाम बाबा: आदेश-वाक्यक उच्च स्रोत।'

गाछीक टुकड़ाक संकेत पर पूरा सभा भारी भऽ गेल। चन्ना गाछी स्वयं ओहि संकेतक साक्षी लगैत छल। ठूँठक कारी भाग पर धूप पड़ल तँ ओकर दरारमे उज्जर रेखा चमकल। कियो कहलक, 'उज्जर प्रेतक नह।' कियो कहलक, 'गाछीक रग।' मीरा केवल लिखौली—'लोक-दृष्टि: ठूँठ सक्रिय प्रतीक।' ओ चाहैत छलीह जे भय आ प्रमाण अलग-अलग राखल जाए, मुदा दुनूक उपस्थिति स्वीकार हो।

जगमाया मोहनक पत्र खोलि पढ़लीह। पत्रमे एक पंक्ति काल्हि धरि नजर नहि आयल छल—'गाछीक नाम पर जे बोलथि, ओ सभक नाम कागच पर नहि।' आरुणि एहि पंक्तिक सोझाँ बहीक 'बाबाक वचन' राखलक। दुनू पंक्ति बीच पुल बनल। मोहन शायद पूरा जाल नहि बुझि सकल छल, मुदा ओकर देह जालक धागा छूने छल।

भिखारी लाल कहलक—'बाबाक वचन जँ बटुकनाथजीक वचन छल, तँ सीधा लिखल किएक नहि गेल?' सत्यव्रत उत्तर देलनि—'जाहि वचनक बल श्रद्धासँ अबैत अछि, ओकरा हस्ताक्षरक जरूरत कम पड़ैत अछि। आ जाहि वचनमे अपराधक गंध अछि, ओकरा हस्ताक्षरक डर अधिक।' ई वाक्य सुनि सभामे शांत गूंज पसरल।

कमला अपन नानीक पोटली सँ माटिक डल्ला निकालि ठूँठक जड़ि लग राखलक। ओ कहलक—'नानी कहैत छलीह, माटि कैँ नाम चाही।' देवन पासवानक भतीजा रामपरीक्षित अपन लाठीक सिरा ओहि डल्ला लग टेकलनि। दू गुम नामक दोसर-दोसर पीढ़ी एकहि माटि लग मिलल। चन्ना गाछी अतीत आ भविष्यक बीच लोक-पुल बनि गेल।

मीरा बच्चा सभसँ कहली—'आइ तीन अवस्था लिखू—स्मरण, संकेत, प्राथमिक नाम। जे नाम पक्का नहि, ओकरा पक्का मत बनाउ। जे संकेत भारी अछि, ओकरा हलुक मत करु।' ई विधि सुनि कतेको बूढ़ लोक दंग छल। हुनका लगैत छल जे न्याय या तँ तुरन्त चिल्लाहट होइत अछि या बरखोंक फाइल। एतए तिसर बाट बनि रहल छल—सावधान लोक-लेखन।

साँझ धरि सूची तैयार भेल। दक्षिणक किसान—देवन पासवान, प्रमाण प्रतीक्षा। नदीक पारक विधवा—फूलकली देवी, प्राथमिक नाम। पुरान मुकदमा—अज्ञात, पर भानु लालक 'ब' कोडसँ जुड़ल। गाछीक टुकड़ा—चन्ना गाछी सम्बन्धी पुरान दावा, 'बाबाक वचन'क संकेत। मंदिर-बाड़ी लगक जमीन—एखन अन्वेषण बाकी। सूची छोटी छल, मुदा ओकर भार बड़ा।

हरिचरण फेर कहलक—'ई सभ कागच अदालतमे टिकत नहि।' सत्यव्रत ओकरा देखलनि—'कदाचित् नहि। मुदा अदालतमे जे नहि टिकैत, ओ इतिहासमे टिकि सकैत अछि। आ इतिहासमे जे टिकैत अछि, ओ एक दिन अदालतक भाषा बदलैत अछि।' हरिचरणक माथ झुकल नहि, पर ओकर आँखि पहिल बेर काँपि गेल। ओकरा बुझाइत छल जे खेल अदालत जीतबाक भरि नहि रहल।

महावीर पाठक विदा लेबाक पहिने धीमे कहलथि—'बाबाक वचन सभ लिखल नहि जाए।' अनन्या तुरन्त पूछलक—'किएक? कारण बाबा देवता छलाह कि कारण बाबा जवाबदेह नहि रहय चाहैत छलाह?' महावीरक ओठ सूखि गेल। ओ कहलथि—'कखनो श्रद्धा कागचसँ ऊपर राखल गेल।' देविका उत्तर देलक—'तखन कागचक नीचाँ मनुष्य दबि गेल।'

एहि उत्तर पर हवा एकदम स्थिर भऽ गेल। बूढ़बा भूत छत पर नहि, एहि बेर ठूँठक खोखरिमे झिलमिलायल। कारी भूतक छाह जड़ि लग गाढ़ भेल, उज्जर प्रेतक रेखा ओकर

ऊपर पसरल। बच्चा सभ डरि नहि; हुनका सभ लागल जे प्रतीक सभ सेहो सुनब चाहैत अछि जे बटुकनाथक नाम कखन कागच पर आबत।

राति घेरिते मीरा सूची कपड़ामे लपेटि अनन्याक हाथ देली। 'एहिमे नाम नहि, जिम्मेदारी अछि।' अनन्या कपड़ा माथ लग नहि, छाती लग राखलक। कारण ओ बुझि गेल छल जे नाम पूजा लेल नहि, संरक्षण लेल अछि। आरुणि खाली जगह सभ बचा कऽ रखलक—अज्ञात लोकक लेल स्थान खाली रहब चाही।

अध्यायमे संकेतक पाछाँ पहिल नाम सभ उभरल, मुदा सभ नाम पूर्ण नहि भेल। देवन पासवान स्मरणमे, फूलकली देवी पोटली आ स्वेच्छा-वाक्यमे, पुरान मुकदमा भानु लालक 'ब' कोडमे, आ चन्ना गाछी 'बाबाक वचन'मे अटकल रहल। बटुकनाथक परछाईं एखनहुँ परछाईं छल, मुदा आब ओकर दिशा भेटि गेल।

लोकगीत: संकेतक खाली खूँटी

लोकधुन: खोज-बटगबनी

बताउ हे संकेत, अपन असल नाम बताउ हे,
जकरा ने जानै छी, ओकर खाली ठाम बचाउ हे।

दक्षिणक किसान, नदी पारक विधवा,
नामक जगह संकेत—हवा पढ़ै लिखवा।
खाली खूँटी डोलै, कहै—अनुमान नहि करू,
झूठा नाम देबो हत्या, अज्ञात ठाम धरू।
देवनक क्रमांक बचल, फूलकलीक पोटली,

कागच खा गेल चेहरा, स्मृति रहल मोटरी।
चन्ना गाछी पर 'बाबाक वचन'क छाह,
श्रद्धाक आसन नीचे कतेको दबली राह।
संकेत, धीरे अपन असल नाम बताउ,
जकरा नहि जानै छी, ओकर खाली स्थान बचाउ।

दछिनक किसान, नदी-पारक विधवा-नाम,

नामक ठाम संकेत—हवा पढ़ए ओहि ठाम।
खाली खूँटी डोलए, कहए—अनुमान ने करू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—गोत्व वाच्यार्थ अछि: अवयवसभ अपन अर्थसभक सम्बन्ध करबैत अछि, समुदाय कमलार्थक ज्ञान करबैत अछि, आ दुनू मिलिकऽ “कीचड़मे जन्मल कमल”क ज्ञान उत्पन्न करैत अछि। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। गोत्व वाच्यार्थ अछि।]

अध्याय १५४

बाबाक वचन

बाबाक वचन जाधरि श्रद्धा, ताधरि अछूत; जहिना जाँचयोग्य भेल, वचन कागज भऽ गेल।

अध्यायारम्भ लोकगीत: बाबाक आसन पर भोर

लोकधुन: निर्गुण-प्रभाती

बैसू हे कने, बाबाक आसन लग बैसू हे,
ओसक मोती-भरल काठक वचन सुनू हे।

बाबाक आसन नमी सँ भरल, ओसक मोती झलकै,
अनलिखल वचन खेतक मेड़पर चुपचाप पलकै।
संतान बैसि सुनू कने, काठो कथा सुनाबै,
पुरखा केर साँचक सीख भोरक राह देखाबै।

आसन खाली नहि कखनो, स्मृति ओतय रहै,
बाबाक श्रमक गन्धि हवा संग घरमे बहै।
भोरक सूर्य प्रणाम करै ओ पुरनका स्थान,
आसनसँ उठत नव पीढ़ीक ईमानक अभियान।

ने मूर्ति, ने पोथी—खाली आसन बाजए,
खेतक मेड़ पर अनलिखल सीख विराजए।
श्रम-गन्ध हवा मे, स्मृति घर-आँगन मे,
निर्गुण भोरक किरिण उतरए मन-दर्पण मे।

❖

बाबाक वचन जाधरि श्रद्धा, ताधरि अछूत; जहिना जाँचयोग्य भेल, वचन कागच भऽ गेल। जे शब्द कहियो प्रश्नक बाहर छल, से आइ रजिस्टरक भीतर आबि गेल—ई परिवर्तन छोट नहि छल।

रसोईक कान अदालतक कानसँ बेसी सुनैत अछि, कारण रसोई केँ कियो खतरा नहि मानैत। जे बात देबालसँ छिपाओल जाइत अछि, से धुँआरि सुनि लैत अछि—आ धुँआरि सेहो एक दिन बाजि सकैत अछि।

दान, सेवा, आशीष—ई शब्द जतेक उज्जर, ओतबे गाढ़ छाह ओकर पाछाँ पड़ि सकैत अछि। जे हाथ पोखरि साफ करबैत अछि, ओकरा ई अधिकार नहि भेटैत जे ओ ककरो कागच गंदा करय।

आसन खाली रहितो भरल बुझाइत अछि—घीक गंध, धूपक छाह, पसीनाक निशान सभ ओतऽ बचल रहैत अछि। ठामक जाँच ठामक रूपमे होइत अछि, पूजाक रूपमे नहि, अपमानक रूपमे नहि।

माटि, लाठी, आ आटाक दरार—तीन पीढ़ीक तीन देह एकहि आसनक चारूकात ठाढ़ भेल। स्मृति जखन एक ठाम मिलैत अछि, तखन ओ प्रमाणसँ बेसी, पहिचानक पुनर्जन्म बनि जाइत अछि।

भोरक पहिल उजासमे चन्ना गाछीक ठूँठ लग काल्हिक सूची फेर पसारल गेल। हवामे अखनहुँ राति भरिक ठण्ढक बसल छल, आ बच्चा सभक स्वर ओहि ठण्ढकमे हलुक काँपि रहल छल। कपड़ामे लपेटल कागच खोलिते ओहि पर राखल ओसक बून्द सभ अक्षरक कातमे मोती जेकाँ अटकल छल। अनन्या बून्द पोंछल नहि; ओ कहलक—‘एहो देखल जाए जे नाम पर राति कतबा नमी पड़ैत अछि।’ मीरा ओकरा रोकली नहि। हुनका बुझाइत छलनि जे लिखित प्रमाणक संग वातावरणक स्मरण सेहो रहए देल जाए, बस ओकरा प्रमाणक स्थान पर नहि राखल जाए।

काल्हिक अन्तिम वाक्य सभकेँ राति भरि जगौने रहल—‘बाबाक वचन सभ लिखल नहि जाए।’ एहि वाक्यक भीतर श्रद्धा, भय, आदेश, मौन आ अपराध एक संग बसल छल। गाममे बाबा शब्दक अर्थ केवल वृद्ध वा साधु नहि, एक एहन आसन छल जतए प्रश्न पहिने झुकैत, उत्तर बादमे उठैत। सत्यव्रत मेहता सबेरे-सबेरे अपन नोटबुकमे लिखलनि—‘जे वचन लिखल नहि जाए, तकरा सुनबाक विधि बनाउ।’

मीरा सभकेँ पहिल नियम देली—‘आइ ककरो बाबा कहि सम्मान नहि, ककरो अपराधी कहि आरोप नहि। पहिने वचनक चाल चिन्हू।’ बच्चा सभ तीन स्तम्भ बनौलक—वचन, कर्ता, परिणाम। आरुणि कहलक—‘जे वचनक कर्ता नहि भेटत, ओकर परिणामसँ कर्ता दिस घुरब।’ एहि पर भिखारी लाल मुस्कुराएल नहि, मुदा ओकर आँखिमे अजीब ढंगक राहत छल। ओकरा लगल जे पहिल बेर कागच पर भूत पकड़बाक विधि बनि रहल अछि।

महावीर पाठक कैं बोलाओल गेल नहि, मुदा ओ स्वयं आएलाह। हुनकर चाल पहिनेसँ धीमी छल, जेना राति भरिक चिन्तन देहक भार बढ़ा देने हो। हुनका संग चार बहीक प्रतिलिपि, एक पुरान आसनक फाटल कपड़ा, आ पीतल आ घंटीक टूटी डोरी छल। ओ कहलथि—'जे किछु घरमे बचल, लय अनलहुँ। मुदा ई सभक अर्थ हम नहि जानैत।' मीरा उत्तर देली—'अर्थ अहाँ नहि दियौ। वस्तु अपना स्पर्शक हिसाब स्वयं देत। हम केवल ओकरा बोलबाक मौका देब।'

पहिल बहीमे 'बैसकी-स्मृति' लिखल छल। काल्हि देखल पन्ना फेर खोलल गेल। किनार पर हलुक लिखल—'बाबाक वचन बादमे पढ़ब।' मुख्य पाठमे 'गाछीक टुकड़ा लोकहिते छोड़ू', 'दक्षिण टोला शांत राखू', 'दान-पत्रक भाषा सभसँ सरल', आ 'पुरान नाम विलम्बित' लिखल छल। देविका पढ़िते-पढ़िते रुकि गेल। ओ पूछलक—'विलम्बित नाम के करैत अछि? नाम स्वयं देर करैत नहि।'

सत्यव्रत मेहता उत्तर देलनि—'विलम्बित नामक अर्थ होइत अछि—ककरो नाम एतेक देर धरि रोको जे ओकर दावा थाकि जाए।' ई बात सुनि रामपरीक्षित पासवान अपन लाठी अधिक जोर सँ धरलनि। हुनका काका देवन पासवानक आधा नाम काल्हि स्मरणमे उभरल छल। आब हुनका बुझाइ पड़ल जे हुनकर काकाक नाम प्राकृतिक धुँधला नहि भेल; ओकरा व्यवस्थित धुँधला कएल गेल छल।

फूलकली देवीक नातिन कमला सेहो आइल। ओ पोटली संग नहि, आइ माटिक डल्ला बिनु आइल छल। पूछल गेल तँ कहलक—'माटि ठूँठ लग अछि; नानीक नाम आइ एतए रहत।' ओकर बाल-सहज वाक्य पर सुरमणी देवी आँखि बन्द कएलनि। एतेक सरल ढंगसँ स्मृति अपन ठाम चुनैत अछि, ई व्यवस्था कखनो नहि बुझल।

दूजा पन्ना पर 'बाबा' शब्द नहि छल, मुदा 'ऊपरक सहमति' लिखल छल। मीरा तुरन्त नोट करौली—'बाबा, ऊपर, लोकहित, सेवा—एकहि वृत्तक शब्द।' आरुणि वृत्त खिंचलक। हरिचरण, जे दूर ठाढ़ छल, व्यंग्य करैत कहलक—'शब्दक वृत्तसँ अपराध सिद्ध होएत?' अनन्या शान्त स्वरमे उत्तर देलक—'अपराध सिद्ध करब अदालतक काम; शब्दक चाल पकड़ब हमर काम।' हरिचरण चुप भऽ गेल, कारण ओहि उत्तरमे झगड़ाक जगह नहि छल।

भानु लालक कोड-रजिस्टर फेर खोलल गेल। 'ब' अक्षरक सोझाँ तीन तारीख छल। एहि तीन तारीखमे सँ दू तारीख बहीक 'बैसकी-स्मृति' सँ मिलैत छल। तेसर तारीखक सोझाँ केवल एक बिन्दु। भिखारी लाल कहलक—'बिन्दु कखनो-कखनो मतलब करैत छल—काम

मौखिक।' रामलखन सहाय, जे काल्हिसँ भीतर-भीतर काँपि रहल छल, धीरेसँ जोड़लक—'मौखिक मतलब—कागच पर नाम नहि, पर आदेश पूरा।'

मीरा लिखौली—'ब: सम्भावित उच्च मौखिक आदेश; तारीख मिलान दू स्थाने।' ओ बच्चा सभकेँ समझौलथि जे सम्भावना केँ सम्भावना कहब कमजोरी नहि, ईमानदारी अछि। देवन पासवानक स्मरण, फूलकली देवीक पोटली, आ बटुकनाथक परछाईं—तीनूकेँ एकहि स्तर पर नहि राखल जा सकैत। न्यायक सीढ़ी एक-एक पाँति चढ़ल जाएत, छलाँग मारि नहि।

महावीर पाठक अचानक थाकल स्वरमे बोललाह—'हमरा बचपनमे सुनायल गेल जे बाबाक वचन समाज बचबैत छल।' सुरमणी देवी उत्तर देलीह—'समाज के? जे घर बाँचल, से समाज? जे जमीन गेल, से समाज नहि?' महावीरक आँखि नीचाँ झुकल। ओ पहिल बेर स्वीकार करैत जेकाँ कहलथि—'हम सभ समाज शब्दक भीतर किछु लोक केँ बाहर राखि देलहुँ।' ई स्वीकारोक्ति पूरा दोषस्वीकार नहि छल, मुदा परदामे पहिल चीरा छल।

तेहि समय एक बूढ़ स्त्री बैसाखी टेकैत आइलि—नाम शारदा झा। लोक हुनका 'मठिया वाली' कहैत छल, कारण ओ कखनो बटुकनाथक आश्रममे रसोई करैत छलीह। शारदा कहलीह—'बाबाक वचन हम सुनने छी। ओ धीमे बोलथि, मुदा सभ लोक तेज सुनैत छल।' सभक देह तनल। मीरा हुनका कुर्सी देली, पानि देली, आ कहली—'स्मरण बताउ, आरोप नहि।'

शारदा झा कहलीह जे बैसकीक बाद रातिमे किछु लोक रसोईपाछाँ जमा होइत। बाबा सीधा नाम कम लैत, संकेत बेसी। 'ओ दक्खिनक लोक हठी अछि', 'ओ विधवा केँ समझाउ', 'गाछीक सेवा लोकक लेल होएत', 'कागच सरल राखू', 'जिनका न बुझाए, हुनका विश्वास दियौ।' शारदा कहलीह—'हम तखन रोटी बेलैत रही। बुझलहुँ धर्मक बात अछि। पछात बुझायल—रोटी हमर हाथ बेलैत छल, निर्णय दोसरक पेटमे पकैत छल।'

ई वाक्य सुनि चन्ना गाछीक ठूँठक दरारमे एक पातक सूक्ष्म हरियर बिन्दु देखायल। केओ चमत्कार कहल, केओ भ्रम। मीरा फेर वैह लिखौली—'दृश्य: हरियर बिन्दु; अर्थ अनिश्चित।' पर बच्चा सभक भीतर हरियर बिन्दु अर्थ लय चुकल छल—सड़ल काठमे सेहो साक्षी उगि सकैत अछि।

सत्यव्रत मेहता शारदासँ पूछलनि—'अहाँ बटुकनाथ हरिहरन केँ "बाबा" कहैत छलियनि?' शारदा बिनु देर कहलीह—'सभ कहैत छल। हमहूँ कहैत रही। मुदा बाबा कहला सँ

केओ निर्दोष नहि होइत।' ई सीधा वाक्य सभ पर गड़गड़ाहट जेकाँ गिरल। पहिल बेर ककरो मुँहसँ बटुकनाथ आ बाबा एकहि साँसमे स्पष्ट जुड़ल।

मीरा तुरन्त सूची सुधरौली—'बाबा: शारदा झाक स्मरणानुसार बटुकनाथ हरिहरन लेल प्रयुक्त संबोधन।' ओ ओकर नीचाँ लिखौलथि—'एखन आदेशक प्रत्यक्ष हस्ताक्षर नहि।' एहि संतुलन पर किछु लोक कुड़कुड़ायल—'नाम आयल तँ लिखू।' मीरा दृढ़ भेली—'नाम लिखब, पर जे भेटल सेही लिखब। अधिक लिखब तँ झूठ बाबाक सहोदर बनि जाएत।'

हरिचरणक चेहरा पर बेचैनी आब छुपि नहि सकल। ओ कहलक—'रसोईवालीक स्मरण पर इतिहास बनत?' शारदा झा ओकरा देखलथि—'रसोईवाली सभ सभसँ बेसी सुनैत अछि, कारण ओकरा सभ केँ कोनो खतरा नहि मानल जाइत। अहाँ सभ जे बात देबालसँ छुपबैत छी, ओ धुँआरि सुनि लैत अछि।' भीड़मे हलुक गूंज उठल। रसोई, बरामदा, रिकॉर्ड-घर—सभ परिधि अचानक केंद्र बनि रहल छल।

रामलखन सहाय शारदाक बात सुनि अपन जेब सँ छोट पर्ची निकाललक। ओ पर्ची पर तेलक दाग छल। ओ स्वीकार कएलक—'ई हम बरखों राखने छलहुँ। भानु लाल एक दिन देलनि। कहलनि—बाबाक वचन, "दान-पत्रक तिथिकेँ पिछला मासमे राखू।" हम तिथि बदलल नहि, मुदा पर्ची राखि लेलहुँ। डर छल, कखनो जरूरत पड़त।'

पर्ची सभकेँ देखाओल गेल। अक्षर भानु लालक लगैत छल, पर वाक्यक आरम्भमे केवल 'बाबा कहलनि' लिखल। तारीख धुँधला, पर मास मिलैत। सत्यव्रत पर्ची हाथमे लऽ काँपि उठलाह। ई प्रत्यक्ष हस्ताक्षर नहि, मुदा मौखिक आदेशक लिखित छाह छल। मीरा लिखौली —'भानु लालक पर्ची: बाबाक वचन कहि तिथि-पलट निर्देश; प्रामाणिकता जाँच बाकी।'

कमला धीरेसँ पूछलक—'तिथि बदलल जाए तँ की बदलैत अछि?' आरुणि ओकरा समझेलक—'जाहि दिन नानी नहि बुझि पाबलीह, ओहि दिनक कागच बनाओल जाए तँ हुनका अपन आवाजक समयो छीनि लेल जाइत अछि।' कमला चुप भऽ गेल। ओकरा शायद पहिल बेर बुझायल जे तिथि सेहो देहक हिस्सा होइत अछि।

देवन पासवानक भतीजा रामपरीक्षित कहलक—'हमर काका कहैत रहथि—हम ओहि दिन गाममे नहि छलहुँ, मुदा कागच कहैत छलहुँ उपस्थित।' सत्यव्रत तुरन्त बोललनि—'एहि बातक संग तिथि-पलट पर्ची मिलाओ।' बच्चा सभक आँखि चमकल, मुदा मीरा फेर सावधान करौली—'मिलानक मतलब सिद्धि नहि; रास्ता।' ई अध्याय रास्ता बनाबयक अध्याय छल, निर्णयक नहि।

महावीर पाठकक देह काँपि रहल छल। ओ कहलक—'बाबा कैं लोक दानवीर मानैत छल। ओ गामक पोखरि साफ करौलनि, पाठशाला खोललनि, गरीबक विवाह करौलनि।' सुरमणी देवी धीरे उत्तर देलीह—'दानक उजास अपराधक अन्हारकैं माफ नहि करैत। जे पोखरि साफ कराबय, से ककरो कागच गन्दा करबाक अधिकार नहि पबैत।' ई वाक्य महावीरक भीतर दूर धरि उतरि गेल।

ओहि समय बूढ़बा भूतक झिलमिलाहट ठूँठक माथ पर नहि, पर्चीक कातमे देखायल। कारी भूत जेकाँ छाह पर्ची पर झुकल, उज्जर प्रेत जेकाँ हलुक चमक ओकर शब्दक बीच पसरल। बच्चा सभ आब एहन दृश्यक अर्थ तुरंत नहि करैत। अनन्या बस लिखलक—'पर्ची पढ़ैत समय लोक-दृष्टिमे छाह।' प्रतीक कैं प्रमाण नहि बनब, मुदा प्रतीक कैं उपेक्षितो नहि करब—ई हुनकर नव अनुशासन बनि गेल छल।

शारदा झा दोसर स्मरण देलीह—'एक बेर बाबा कहलनि—जे नाम बहुत रोए, ओकरा सेवा दऽ शान्त करू।' देविका पूछलक—'सेवा मतलब?' शारदा कहली—'कखनो पाँच सेर चावल, कखनो दवा, कखनो पूजा। मुदा कागच वापस नहि।' आरुणि तुरन्त लिखलक—'सेवा: प्रतिकार नहि, शमन।' सत्यव्रत जोड़लनि—'क्षतिपूर्तिक नकली छाह।'

हरिचरण ई सुनि बिफरल—'अहाँ सभ धर्मकैं कटघरामे ठाढ़ करैत छी।' मीरा शांत रहली—'धर्म नहि, धर्मक नाम पर कएल निर्णय। जे धर्म प्रश्नसँ डरए, ओ धर्म नहि, कुर्सी अछि।' भीड़मे किछु लोक असहज भेल। कारण श्रद्धा पर प्रश्न उठब आसान नहि। मुदा ई प्रश्न श्रद्धा नष्ट करबाक नहि, श्रद्धाक भीतर छुपल आदेशक जाँच करबाक छल।

दुपहर बाद बच्चा सभ 'वचन-मानचित्र' बनौलक। मानचित्र बनबैत-बनबैत सभक हाथ माटिसँ काड़ा भऽ गेल छल, मुदा कियो हाथ धोबय नहि गेल—जेना माटिक स्पर्श सेहो एक प्रकारक साक्षी हो। बीचमे लिखल—'बाबा/बटुकनाथ: स्मरणानुसार उच्च आसन।' चारू दिशामे शाखा—भानु लालक पर्ची, शारदा झाक रसोई-स्मरण, महावीरक बैसकी-स्मृति, फूलकली देवीक दान-पत्र, देवन पासवानक अनुपस्थिति-स्मरण, चन्ना गाछीक टुकड़ा। प्रत्येक शाखा पर भरोसाक स्तर अलग। ई मानचित्र कागच नहि, अपराधक नस-नक्शा लगैत छल।

सत्यव्रत मेहता मानचित्र देखि कहलनि—'अहाँ सभ कानून नहि पढ़ने, मुदा प्रक्रिया रचि रहल छी।' अनन्या उत्तर देलक—'प्रक्रिया जखन मनुष्य बचबैत अछि, तखन ओकरा पढ़ल जाए वा रचल जाए—दूनू न्यायमे सहायक।' सत्यव्रतकैं अपन बरखोंक पेशागत भाषा अचानक छोटी लगल। बच्चा सभक भाषा कच्ची छल, मुदा ओकरा भीतर जीवनक नमी छल।

साँझ भेलाक बाद बटुकनाथक पुरान आसनक कपड़ा खोलल गेल। कपड़ामे हलुक स्याहीक दाग, घी, धूप, पसीना आ कागचक गंध एक संग छल। महावीर बतौलथि जे बैसकीक समय बाबा एहि आसन पर बैसैत छलाह। मीरा आसनक पूजा नहि करौली, न अपमान। ओ बस कहलथि—‘ई ठाम अछि जतए वचन देल गेल। ठामक जाँच ठामक रूपमे होएत।’

कमला नानीक माटिक डल्ला सँ एक कण उठाकऽ आसनक कातमे राखलक। रामपरीक्षित अपन लाठीक टुप्पी ओहि कणसँ छुआइलनि। शारदा झा अपना हाथक आटाक पुरान दरार देखौलथि—‘एहि हाथ रोटी बेललक, आ कान वचन सुनलक।’ तीन पीढ़ी, तीन देह, तीन तरहक स्मरण—माटि, लाठी, हाथ—एकहि आसनक चारू कात ठाढ़ भेल।

मीरा अन्तिम सूची पढ़ली—‘बाबा शब्दक अर्थ आइ पहिल बेर बटुकनाथ हरिहरनसँ स्मरण-आधारित रूपमे जुड़ल। भानु लालक पर्ची तिथि-पलट निर्देशक लिखित छाह देलक। शारदा झाक रसोई-स्मरण मौखिक आदेशक ढाँचा बतौलनि। महावीरक बही बैसकीक भाषा देखेलक। प्रमाण एखन पूर्ण नहि, पर दिशा अधिक स्पष्ट।’ एहि पढ़नाइ पर सभ चुप रहल। तालीक जगह मौन अधिक उपयुक्त छल।

राति उतरिते ठूँठक हरियर बिन्दु फेर देखायल कि नहि, कियो निश्चित नहि कहि सकल। मुदा पर्ची, बही, पोटली, आसन आ सूची कपड़ामे अलग-अलग लपेटि सुरक्षित राखल गेल। अनन्या कपड़ा बाँधैत कहलक—‘आइ बाबाक वचन सुनल गेल, मुदा एखन ओकर जवाब बाकी अछि।’ आरुणि जोड़लक—‘जवाब कागचसँ नहि, प्रभावित लोकक नामसँ शुरू होएत।’

एहि तरहेँ अध्यायमे ‘बाबाक वचन’ पहिल बेर अस्पष्ट श्रद्धा सँ उतरि जाँचयोग्य भाषा बनल। शारदा झाक रसोई-स्मरण, भानु लालक पर्ची, महावीरक बैसकी-स्मृति, देवन पासवान आ फूलकली देवीक दबल समय, आ चन्ना गाछीक गवाही मिलि कऽ देखेलक जे बटुकनाथक शक्ति हस्ताक्षरमे नहि, लोकक डर आ विश्वासमे बसल छल।

लोकगीत: बाबाक आसनक नमी

लोकधुन: निर्गुण-नचारी

दिअ हे जवाब, बाबा, आब जवाब दिअ हे,
जकर वचनसँ घर उजड़ल, ओकर नोर लिअ हे।

बाबाक वचन लिखल नहि, तइयो खेत चलि गेल,

आशीषक हाथ उठल, ककरो घर छिनि गेल।
रसोइक शारदा सुनली धीम आदेश,
माटि, लाठी, आटाक दरार देलक सन्देश।
आसनमे घी, धूप, पसीना, स्याहीक गन्ध,

श्रद्धा जँ प्रश्न रोकए, बनि जाए अन्ध बन्ध।
बटुकनाथक नाम छाहसँ देहमे आयल,
देवन-फूलकलीक दबल समय करेजा छायल।
बाबा, देवता नहि—जवाब देबाक बेर,
जकर वचनसँ घर उजड़ल, ओकर नोर फेर।

वचन लिखल ने गेल, तइयो खेत चलि गेल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—शब्द प्रमाण: ओ 'पंकज' क उदाहरण दैत स्पष्ट करैत छथि जे यद्यपि जलकुम्भी सेहो कीचड़मे जनमैत अछि, मुदा 'पंकज' शब्द केवल कमल क लेल रूढ़ भऽ चुकल अछि।]

अध्याय १५५

सेवाक खाता

सेवाक खाता आ मौनक खाता जँ एक्कहि हाथमे हो, तँ दुनू हिसाब माँगै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: मौन भोजमे बोलक दाना

लोकधुन: भोज-मंगल गीत

परसू हे थारी, साँचो संग परसू हे,
जेकर नाम पर अन्न, तकर कथो कहू हे।

थारीमे चावल उज्जर, संगमे साँच परोसू,
दानक हरेक दानासँ जनक सम्मान जोरसू।
मौन भोज नहि, स्मृतिक गीत सभ मिलि गाउ,
जेकर नामपर अन्न, ओकर कथा सुनाउ।

एक दाना एक श्रम, एक लोटा एक पियास,
भोज तखने पुण्य जखन साझा हो विश्वास।
थारी-थारी बोलक दाना प्रेमसँ भरि दिअ,
दानकेँ दिखावा नहि, मानव सेवा कऽ लिअ।

उज्जर चाउर, दालिक धार, तरुआक सुगन्ध,
संगे-संग स्मृति-गीत, टूटए मौनक बन्ध।
एक दाना श्रमक, एक लोटा पियासक मान,
साझा विश्वासक भोजे थिक असल पुण्य-दान।

❖

सेवाक खाता आ मौनक खाता जँ एक्कहि हाथमे हो, तँ दुनू हिसाब माँगै छै। जे हाथ अन्न दैत छै, ओही हाथ जँ चुप्पीओ माँगय लागय, तँ अन्न आब भोजन नहि रहैत, सौदा बनि जाइत छै।

दान उज्जर होइत छै, तइयो ओकर छाहमे कारी शर्त छिपल रहि सकैत छै। जे शर्त शब्दमे नहि कहल जाइत, से सभसँ भारी होइत छै, कारण ओकरा कागच पर नहि, मन पर लिखल जाइत छै।

आधा उठल हाथ पूरा झूठ नहि होइत, पूरा साँचो नहि। ओ हाथ ओहि जगहक गवाही छै जतऽ भूख आ सच्चाइ बीच चयन करय पड़ल छल, आ भूखे जीतल।

भूखल पेटकेँ जँ चुप रहबाक शर्त पर भोजन भेटय, तँ ओ भोजन नहि, बन्धन छै। मुदा जे भूखल छल, ओकरा दोष नहि देल जा सकैत; दोष ओकरा छै जे भूखकेँ हथियार बनौलक।

गाछी सुनैत रहल, कारण गाछीक कान बरखों पुरान अछि। जे बात घरमे नहि कहल गेल, से आइ गाछीक ठाढ़ि तर पहिल बेर उच्चरित भऽ रहल छल—धीरे, मुदा स्पष्ट।

भोरक अन्हार एखन पूरा हटले नहि छल, मुदा चन्ना गाछीक ठूँठ लग लोक सभ फेर जुटए लागल। हवामे राति भरिक चूल्हाक धुआँ अखनहुँ अटकल छल, आ ओहि धुआँमे कागचक हलुक गन्धि मिलि गेल छल। काल्हि बाबाक वचनक जे छाह कागच पर उतरि आएल छल, से राति भरि गामक घर-घरमे फुसफुसाइत रहल। कियो कहलक—'बाबा सभक भला करैत छलाह।' कियो धीरेसँ उत्तर देलक—'भला ककर, आ मौन ककर?' ई प्रश्न जखने उठैत, आँगनक चूल्हा जेकाँ धूआँ देबय लगैत।

अनन्या सभसँ पहिने काल्हिक सूची खोलली। ओकर ऊपरमे ओ लिखलक—'वचनक बाद परिणाम।' मीरा एहि शीर्षक केँ देखलथि आ संतोषक साँस लेली। केवल बटुकनाथक नाम भेटब पर्याप्त नहि छल; ई देखब जरूरी छल जे ओकर वचनक बाटे ककर घर उजड़ल, ककर घरमे दान पहुँचल, आ ककर मुँह बन्द भेल। सत्यव्रत मेहता कहलनि—'आइ अपराधक भाषा नहि, व्यवस्था-लाभक भाषा पढ़ू।'

देविका तीनटा नयका पन्ना पसारली। पहिल पर लिखल—'दान'। दोसर पर—'सेवा'। तेसर पर—'मौन'। आरुणि चारिम पन्ना जोड़लक—'बदलामे की गेल?' सभ ओकरा ताकल। ओ कहलक—'दान आ सेवा तँ सोझाँ दिखैत अछि; मुदा जे गेल, से प्रायः कागचक पाछाँ रहैत अछि।' एहि चारिम पन्ना पर कालिखक हलुक रेखा खिंचल गेल, जेना खाली जगह पहिनेसँ भरल हो।

महावीर पाठक फेर अपन बही लय आएलाह। आइ हुनकर चालमे काल्हि सँ अधिक बोझ छल। ओहि बहीमे 'सेवा-व्यय' नामक एक खण्ड छल। पन्ना पर स्याही धुँधला, मुदा पंक्तिक अनुशासन साफ। 'फूलकली—धान दू मन', 'देवनक परिवार—चिकित्सा-सहाय', 'दक्षिण टोला—कीर्तन-भोज', 'विधवा—कपड़ा', 'बटेसर—ब्याज स्थगन'—एहन-एहन प्रविष्टि छल। रामपरीक्षित पासवान सुनिते लाठी पर झुकि गेलाह।

कमला पूछलक—'नानी केँ धान भेटल छल?' सुरमणी देवी कहलीह—'भेटल होएत। मुदा जँ धानक बदला जमीन गेल, तँ ओकरा सेवा कोना कहब?' ई प्रश्न सुनि महावीरक हाथ

काँपल। ओ मानलाह जे बहीमे सहायता लिखल अछि, मुदा ओहि संग जमीन वा दान-पत्रक सम्बन्ध नहि लिखल। मीरा नोट करौली—'सेवा-व्ययक खाता प्रभावित लोकक नामसँ मिलैत; बदला अस्पष्ट।'

शारदा झा, जे काल्हि रसोईक स्मरण देलनि, आइ एक पुरान कपड़ाक थैली लय आइलि। थैलीमे किछु टुटल पर्ची, भोजक सूची, आ तेल-लागल कागच छल। ओ कहलीह—'रसोईमे जे नाम पर चावल निकलैत छल, ओहि नामक घरमे बादमे चुप्पी बेसी होइत छल।' हरिचरण दूरसँ हँसल—'चावल खायब आ शिकायत करब?' शारदा ओकरा सीधा देखलथि—'भूखक समय देल चावल जँ हकक कागच दबबय लेल हो, तँ ओ अन्न नहि, रस्सी अछि।'

एहि वाक्य पर भीड़मे हलचल भेल। किछु लोक असहज भऽ उठल, कारण दान पर प्रश्न करब पुण्य पर प्रश्न करबाक जेकाँ बुझाइत छल। मुदा मीरा स्पष्ट कहली—'दानक अपमान नहि होएत। दानक उपयोग मौन बनाबय लेल भेल कि नहि, तकर जाँच होएत।' बच्चा सभ 'दान' शब्दक कातमे छोट वृत खिंचलक—'पुण्य', 'सत्ता', 'चुप्पी', 'ऋण'।

सत्यव्रत मेहता बहीक पन्ना उलटैत रहला। हुनका एक पंक्ति रोकि देलक—'नाम नहि लिखब; परिवार समझल गेल।' ओ पंक्ति लाल स्याहीमे किनार पर छल। 'परिवार समझल गेल'—ई वाक्य अत्यन्त खतरनाक छल। ककर परिवार? के बुझल? ककरा सँ पूछल? अनन्या तुरन्त लिखली—'अनाम प्रविष्टि: सम्भावित सामूहिक दबाव।'

रामलखन सहाय, जे एखन धरि आधा सच खोलि रहल छल, आइ स्वयं आगाँ आयल। ओ कहलक—'सेवा-खाताक पन्ना सभ अलग राखल जाइत छल। जेकरा पर मुकदमा वा दावा उठबाक डर, ओकर नामक सोझाँ खर्चा लिखल जाइत। बादमे कहल जाइत—देखू, आश्रम अहाँक सहायता केलक। आब झगड़ा करब नीक नहि।' ओकर स्वरमे पछतावा छल, पर बचबाक कोशिशो। मीरा ओकरा बीचमे रोकली नहि।

भिखारी लाल पूछलक—'ई बात अहाँ पहिने किएक नहि कहलहुँ?' रामलखन आँखि नीचाँ कऽ उत्तर देलक—'कारण हमहूँ ओही खातासँ बेटीक दवाई लेलहुँ।' मौन पसरि गेल। अपराधक जाल केवल आदेश देनिहारक नहि होइत; जकरा मजबूरीमे लाभ भेटल, से सेहो डरक गिट्ठऽमे बँधि जाइत अछि। आरुणि लिखलक—'लाभ-साक्षी: स्वयं बँधल गवाह।'

देवन पासवानक प्रकरण फेर उठल। रामपरीक्षित बतौलथि जे काका बरखों कहैत रहथि—'हम अदालतमे उपस्थित नहि छलहुँ।' बहीमे देवनक नामक सोझाँ 'चिकित्सा-सहाय' लिखल। तिथि ओहि मासक, जहिया कथित उपस्थिति दाखिल भेल। सत्यव्रत मेहता दूनू तिथि

मिलेलनि। ओ धीमे कहलनि—‘ई संयोगो भऽ सकैत अछि, पर जाँच योग्य संयोग अछि।’ मीरा एहि संतुलन कैँ रेखांकित करौली।

कमला अपन नानी फूलकलीक माटिक डल्ला ठूँठक जड़िमे राखलक आ पूछलक—‘नानीक नाम पर धान लिखल अछि, मुदा जमीनक नाम कतऽ?’ बच्चा सभक आँखि पन्ना पर दौड़ल। बहीमे धानक पंक्ति छल, कपड़ाक पंक्ति छल, पूजा-व्ययक पंक्ति छल; जमीनक उल्लेख नहि। अनन्या कहली—‘जे देल गेल, से लिखल; जे लेल गेल, से लुकाओल।’ ई पंक्ति सुनि शारदा झा धीरेसँ ‘हँ’ कहलथि।

महावीर पाठकक भीतरक देबाल फेर हिलल। ओ कहलक—‘हमरा घरमे ई खाता पुण्यक प्रमाण मानल जाइत छल। जँ कियो बाबा पर प्रश्न करय, तँ ई खाता देखाओल जाइत—देखू, कतेक लोक कैँ सेवा भेल।’ सुरमणी देवी उत्तर देलीह—‘सेवा कैँ ढाल बनाओल जाए तँ सेवा घायल होइत अछि।’ एहि बात पर महावीरक आँखिसँ पानि झरल, मुदा मीरा ओकरा क्षमाक मंच नहि बनय देली। ओ बस लिखौलथि—‘परिवारक स्वीकार: खाता पुण्य-प्रदर्शनमे प्रयुक्त।’

दुपहरक समय दक्षिण टोलासँ तीन लोक आएल—कैलाश मंडल, सकुनी खातुन आ हरिबल्लभ दास। दुपहरक धूप हुनका सभक धूरि-भरल पएर पर सीधा पड़ैत छल, आ तीनू केर छाँह ठूँठक जड़ि दिस झुकल जेकाँ बुझाइत छल। तीनू कहलक जे हुनकर परिवारक नाम कखनो सेवा-खातामे छल, पर हुनका सभ कैँ मोन अछि जे सहायता भेटलाक बाद पंचायतमे बोलब मना भेल। कैलाश कहलक—‘हमरा बाप कहैत रहथि—जकर हाथसँ दवा आएल, ओकर नाम पर मुँह नहि खोलू।’ सकुनी खातुन जोड़लीह—‘मुँह बन्द करबाक दाम दवा नहि होएबाक चाही।’

हरिबल्लभ दासक कथा भिन्न छल। ओकर पिता आश्रमक कीर्तनमे मंजीरा बजबैत छलाह। बहीमे ‘कीर्तन-दक्षिणा’ छल। मुदा ओ कहलक—‘दक्षिणा मिलल, पर शर्त छल—दक्षिण टोलाक रास्ता पर दावा नहि उठाउ।’ ओहि रास्ता सँ चन्ना गाछीक टुकड़ा दिस गाड़ी जाएत। आरुणि मानचित्र पर रेखा खिंचलक—कीर्तन, रास्ता, गाछी, दावा। अचानक भक्ति आ भूमि एकहि रेखामे जुड़ि गेल।

हरिचरण फेर गरजलक—‘सभ बातक अर्थ अपराध करब? कीर्तन, दान, दवा—सभकैँ दूषित करब?’ सत्यव्रत मेहता एहि बेर स्वयं उत्तर देलनि—‘जे शुद्ध अछि, जाँच ओकरा नष्ट नहि करैत। जे दूषित अछि, जाँच ओकरा प्रकट करैत।’ हरिचरणक मुँह बन्द भेल, पर ओकर आँखिमे एहन चमक छल जे बतबैत छल—ओ एखन हार मानयवला नहि।

मीरा बच्चा सभकेँ सिखौलथि जे प्रत्येक गवाहीक सोझाँ ‘स्मरण’, ‘बही’, ‘तिथि-मिलान’, ‘स्वार्थ-संबंध’ अलग-अलग लिखू। ओ कहलथि—‘जकरा दान भेटल, ओकर गवाही कमजोर नहि; मुदा ओकर बँधन बुझल जरूरी।’ एहि पर अनन्या पन्नाक माथ पर लिखली—‘दया आ दबाव बीच भेद।’ ई शीर्षक ओहि दिनक असली पाठ बनि गेल।

शारदा झा थैलीसँ एक भोज-सूची निकाललीह। भोजक अवसर लिखल छल—‘चन्ना सेवा-संकीर्तन’। नामक सूचीमे ओही परिवार बेसी छल, जकर जमीन वा दावा विवादित। देविका कहली—‘सेवा-संकीर्तनक अर्थ?’ महावीर बतौलथि—‘गाछीक रक्षा लेल सामूहिक भक्ति।’ रामपरीक्षित तुरन्त बोललाह—‘गाछी रक्षा? वा गाछी पर कब्जाक तैयारी?’ भीड़मे भारी सरसराहट उठल।

भोज-सूचीक किनार पर ‘नव संकल्प’ लिखल छल। संकल्पक पंक्ति अधूरी—‘हम सभ लोकहिते...’। आगाँ दीमक खा गेल। सत्यव्रत मेहता पन्ना इजोतमे धरलनि। धुँधलामे किछु अक्षर देखाएल—‘विवाद न करब’। ई पूरा पढ़ल नहि जा सकल। मीरा तुरन्त कहली—‘अधूरा अक्षरकेँ पूरा नहि बनाउ। लिखू—संदेहास्पद पठन।’ बच्चा सभ ईमानदारीसँ अधूरापन लिखलक।

सकुनी खातुन कहलीह—‘हमर माय अंगूठा देलक छल। ओ पढ़ि नहि सकैत छलीह। ओकरा कहल गेल—भोजक उपस्थिति अछि।’ कमला चौंकल—‘अंगूठा फेर कागच बदलि सकैत अछि?’ मीरा कहली—‘अंगूठा देहक भरोसा अछि; जँ ओकरा गलत पन्ना पर लगाओल जाए, तँ भरोसा चोरी होइत अछि।’ एहि वाक्य पर कतेको स्त्री अपना अंगूठा दिस ताकए लागलीह, जेना अपन देहक मोहर पहिल बेर देखैत हो।

रामलखन सहाय स्वीकार केलक जे किछु बेर भोजक उपस्थिति-पत्र बादमे संकल्प-पत्रक संग बाँधल गेल। ‘हम सीधे नहि केलहुँ,’ ओ कहलक, ‘मुदा बान्हल फाइल देखलहुँ।’ भिखारी लाल तिक्त स्वरमे पूछलक—‘देखलहुँ आ चुप रहलहुँ?’ रामलखन उत्तर देलक—‘चुप्पी पर हमर घर चलैत छल।’ ई बात कटु छल, पर असत्य नहि। व्यवस्था चुप्पीकेँ वेतन, सहायता, प्रतिष्ठा आ डरक मिश्रणसँ पालैत अछि।

अनन्या ‘मौन’ पन्ना पर नयका स्तम्भ जोड़ली—‘कारण’। ओहिमे लिखल गेल—भूख, दवा, बेटी, नौकरी, प्रतिष्ठा, जाति, भय, धर्म, ऋण। ई सूची देखिते सभ बुझल जे मौन केवल कायरता नहि; कखनो-कखनो जीवित रहबाक विकृत साधन होइत अछि। मुदा ई बुझब मौन केँ निर्दोष नहि बनबैत; केवल ओकर जड़ि देखबैत अछि।

साँझक छाह बढ़ल तँ चन्ना गाछीक ठूँठक कारी दरारमे काल्हिक हरियर बिन्दु किछु लंबा देखायल। शारदा झा कहलीह—'देखू, काठ बोलि रहल अछि।' मीरा लिखली—'दृश्य पुनः; अर्थ लोकानुभव।' सत्यव्रत मुस्कुरौलनि—'कखनोकाल प्रतीक लोककेँ सच धरि लय जाए, बस ओकरा सचक स्थान पर नहि राखू।' बच्चा सभ आब एहि भेदक अभ्यास सीखि गेल छल।

महावीरक बहीक अन्तिम पन्ना पर एक अजीब प्रविष्टि भेटल—'बाबाक प्रसाद: मौन-भोज'। तिथि ओही सप्ताहक, जहिया फूलकली देवीक दान-पत्र बनल। 'मौन-भोज' शब्द सुनि भीड़मे सनसनी दौड़ल। शारदा झा कहलीह—'हँ, एहन भोज छल जतए कहल गेल—पुरान बात भूलि नव आरम्भ करू।' सुरमणी देवी कठोर स्वरमे कहलीह—'जेकर घर गेल, ओकरा भूलबाक उपदेश देब हत्या दोसर बेर करब।'

कमला रोएल नहि। ओ बस माटिक डल्ला उठाकऽ बहीक कातमे राखि देलक। 'नानीक जमीनक बदला मौन-भोज?' ओकर आवाज अत्यन्त धीमा छल, मुदा ओहि धीमापनमे एतेक धार छल जे हरिचरणो चुप भऽ गेल। आरुणि लिखलक—'मौन-भोज: फूलकली प्रकरणक समीप तिथि; अर्थ जाँच बाकी।' अनन्या ओकर नीचाँ अलग स्याहीमे लिखली—'स्मृति आ बही पहिल बेर साथ काँपल।'

रामपरीक्षित पासवान अपन काका देवनक नाम पर शपथ नहि लेलक। ओ कहल—'हम शपथ नहि, खोज चाहैत छी।' ई वाक्य बच्चा सभकेँ प्रिय लागल। कारण शपथ तुरन्त अन्त चाहैत अछि, खोज धीमे-धीमे रास्ता बनबैत अछि। मीरा कहली—'एहि अभियानक नियम बनाउ—कियो बदला नहि लेत, कियो झूठ नहि जोड़त, कियो प्रमाण नहि छुपायत।' सभ लोक हाथ उठेलक, पर किछु हाथ आधा उठल। आधा हाथो दर्ज भेल।

भानु लालक पर्ची, सेवा-खाता, भोज-सूची, मौन-भोजक प्रविष्टि, शारदा झाक थैली, रामलखनक स्वीकार, दक्षिण टोलाक गवाही—सभ अलग-अलग कपड़ामे बाँधल गेल। प्रत्येक कपड़ाक रंग अलग राखल गेल ताकि बादमे फाइलक भीतर फेर सभ गड्डमड्ड नहि हो। अनन्या कहली—'व्यवस्था गड्डमड्ड करैत अछि; हम अलग रखब।'

रातिक अन्तिम पढ़नाइमे मीरा घोषित कएली—'आइ स्पष्ट भेल जे सेवा-खाता केवल सहायता-सूची नहि, सम्भावित मौन-व्यवस्था सेहो रहल। दान, दवा, भोज, कीर्तन, प्रसाद आ ऋणक सहारे दावा कमजोर कएल गेल कि नहि, तकर जाँच आगाँ होएत। किछु तिथि मिलल, किछु स्मरण मिलल, किछु पन्ना अधूरा अछि। एखन निष्कर्ष नहि, पर जालक आकार देखाइ पड़ल।'

एहि पढ़नाइ पर कियो ताली नहि बजेलक। तालीक अर्थ उत्सव होइत; एतए उत्सव नहि, उघाड़ल घाव छल। चन्ना गाछीक ठूँठ लग ओहि राति पहिल बेर लोक बुझलक जे दानक उज्जर थालमे कतेक बेर कारी मौन परोसाओल गेल। गोहि देह खाइत अछि, ई सभ जानैत छल; मुदा आइ देखल गेल जे गोहि कखनो-कखनो चावल, दवा, भोज आ प्रसादक रूपमे सेहो देहक आवाज खा जाइत अछि।

अध्याय एहिसँ समाप्त भेल जे सेवा आ मौनक खाता अलग नहि रहल। बटुकनाथक बाबाक वचन आब समाजक रोजमर्रा दया, ऋण आ शर्मक भीतर पसरल जाल बनि उभरल।

लोकगीत: मौन-भोजक थारी

लोकधुन: भोज-विलाप

पसारू हे थारी, मौन-भोजक थारी पसारू हे,
ककरा भोजन, ककरा जमीन—एक-एक हिसाब उघारू हे।

दानक चावल उज्जर, पाछाँ कारी मौन,
दवा, प्रसाद, कीर्तन—ककरा बाँधलक कोन?
फूलकलीक जमीन गेल, थारीमे भोज आयल,
कमला पूछलक—नानीक मूल्य के लगायल?
जकरा सेवा भेटल, ओकर मुँह किएक बन्द,

खाताक एकहि हाथमे दया आ मौनक छन्द।
आधा उठल हाथ सभ डरक कथा कहलक,
गोहि चावल बनि देहक आवाज चिबा लेलक।
मौन-भोजक थारी आब सभक बीच पसारू,

कमला पुछलक—नानीक मोल के लगायल?

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—शब्द: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उदाहरण: कोनो अनुभवी वैद्य कहैत छथि जे "ई ओखद (दवा) ज्वर ठीक करैत अछि," आ व्यक्ति ओकर

सेवन करैत छी। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। शब्द।]

अध्याय १५६

दानक ऋण

दानक उज्जर कपड़ामे सभसँ बेसी ऋण लपेटल रहै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: उज्जर कपड़ामे पारदर्शिता

लोकधुन: सोहर-मंगल

ओढ़ू हे उज्जर, भीतरो उज्जर ओढ़ू हे,
धागा-धागा साफ, गिरहो साफ जोड़ू हे।

उज्जर कपड़ा ओढ़ि कऽ भीतर उज्जर रहू,
धागा-धागा साफ राखू, छलक गाँठि नहि सहू।
दान जँ हो तँ नाम, हिसाब, उद्देश्य खुलल,
पारदर्शी हाथसँ सेवा केर कमल फुलल।

उज्जर रंग केवल बाहरक सजावट नहि,
मनक साफगिरी बिना पुण्यक आहट नहि।
कपड़ा हवा लगिते जेना आर-पार देखाए,
सेवा सेहो खुलल रहय, जन भरोस पाबै।

दानक थारी उघारल—नाम, हिसाब, प्रयोजन,
हवा आर-पार बहए जेना उज्जर वसन।
बाहरी चमक सँ पैघ भीतरक साफगिरी,
खुलल हाथक सेवा पर उतरए भोर-भिनसरी।

❖

आधा उठल हाथ केवल डरक नहि, बहुधा उपकारक स्मृतिक सेहो चिह्न होइत छै। जकरा एक दिन सहायता भेटल, ओकरा जीवन भरि प्रश्न पूछबाक अधिकार छीनल जा सकैत छै—ई सभसँ नीक ढंगक बन्धन छै।

गरीबक श्रमकेँ जँ धनीक कृपा बुझाओल जाए, तँ इतिहास उनटा लिखाइत छै। घड़ा देनिहार ऋणी बनि जाइत छै, आ घड़ा लेनिहार उपकारी। ई उनटापन जतय होइत छै, ओतय न्यायक सभसँ पहिल काज ओकरा सीधा करब छै।

भक्ति आ भूमि जखन एकहि रस्ता पर चलय लागय, तखन भक्तिक पवित्रता संदेहमे नहि पड़ैत, मुदा ओकर उपयोग करनिहार हाथ अवश्य जाँचल जाइत छै।

लोहेक संदूक अखनहुँ बन्द अछि। बन्द संदूकक भार खुजल संदूकसँ बेसी होइत छै, कारण बन्द रहितो ओ सभकेँ बुझल छै जे भीतर किछु अछि जे बाहर आबय सँ डेराइत अछि।

राति भरि चन्ना गाछीक ठूँठ लग राखल अलग-अलग रंगक कपड़ा हवा सँ हलुक-हलुक फड़फड़ाइत रहल। रातिक चान ओहि रंग-बिरंगी कपड़ा पर धीरे-धीरे चलैत रहल, जेना खुद उजास सेहो सभटा हिसाब जाँचि रहल हो। लाल कपड़ामे सेवा-खाता, पीयरमे भोज-सूची, उज्जरमे भानु लालक पर्ची, आ धूसरमे मौन-भोजक प्रविष्टि बाँधल छल। भोर भेल तँ लोक सभ बुझलक जे ई कपड़ा सबूतक गठरी नहि, गामक आत्माक गिट्ठऽ अछि।

मीरा सभसँ पहिने आधा उठल हाथ सभक सूची खोलली। काल्हि सभ लोक हाथ उठेलक छल, मुदा किछु हाथ आधा उठल। अनन्या लिखने छल—‘आधा हाथ: डर, संशय, स्वार्थ वा लाज।’ आइ ओहि आधा हाथक अर्थ बुझबाक दिन छल। किएक तँ जे लोक पूर्ण हाथ नहि उठाबि सकल, ओकर भीतर कदाचित् सभसँ कठिन कथा दबल छल।

सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘आइ हम अपराधी खोजबामे जल्दी नहि करब। पहिने ई बुझब जे ऋण कोना देहक भीतर बसि जाइत अछि। जकरा दान भेटल, ओकरा पर ऋणक छाह पड़ल कि नहि; जकरा ऋणक छाह पड़ल, ओकरा आवाज छिनल कि नहि।’ बच्चा सभ एहि वाक्यक माथ पर लिखलक—‘दानक हिसाब सँ पहिने देहक हिसाब।’

पहिल आधा हाथ कैलाश मंडलक छल। ओ काल्हि गवाही देलक छल, मुदा प्रतिज्ञाक समय ओकर हाथ कन्हा धरि उठि फेर रुकि गेल। मीरा ओकरा आगाँ बजौलथि। कैलाशक आँखि लाल छल। ओ कहलक—‘हमर पिता दवा लेलथि, ई सत्य। ओहि दवा सँ हुनकर जान किछु मास बढ़ल, ईहो सत्य। मुदा ओहि दवा लेल गेल ऋणक कथा घरमे एहन पसरल जे हम सभ जमीनक बात करितो लजाइत रही।’

आरुणि पूछलक—‘लाज ककर देल?’ कैलाश उत्तर नहि देलक। बहुत देर बाद कहलक—‘आश्रमक लोक कहैत—जकरा बाबाक दया सँ बाप बचल, ओ बाबाक जमीन पर प्रश्न करत? एहन वाक्य सुनि हम बच्चा रहितो झुकि जाइत छलहुँ।’ मीरा लिखौली—‘दया केँ लाजमे बदलबाक प्रक्रिया।’

दोसर आधा हाथ सकुनी खातुनक छल। ओकर आवाज पहिने अत्यन्त धीमी छल, जेना बरखोंसँ बजबाक अभ्यास छुटल हो। ओ अपन ओढ़नीक कोर मरोड़ैत कहलीह—‘हमर मायकेँ अनाज भेटल। ओकर बाद पंचायतमे ओकरा कहल गेल—“तूँ गरीब छी, तोरा लेल दान पर्याप्त

अछि; कागचक बात पढ़ल-लिखल लोक बुझत।” माय चुप भऽ गेलीह। हम सोचैत रहलहुँ—गरीबी केवल भूख नहि, निर्णयसँ हटाएल जाइनाइ सेहो अछि।’ एहि बात पर भीड़मे स्त्री सभक आँखि एक संग चमकल।

कमला पन्ना पर लिखलक—‘गरीब कैँ दान; निर्णय दोसराक हाथ।’ ई पंक्ति सुनि सुरमणी देवी कहलीह—‘ई दान नहि, बालु पर राखल थाली अछि। भोजन देखाइत अछि, पएर खिसकि जाइत अछि।’ शारदा झा धीरेसँ कहलथि—‘हम रसोईमे थाली देखैत छलहुँ, पएरक बालु नहि।’ हुनकर स्वरमे पछतावा आ साक्ष्य एक संग छल।

तेसर आधा हाथ हरिबल्लभ दासक छल। ओकर पिता कीर्तनमे मंजीरा बजबैत छलाह। हरिबल्लभ कहलक—‘हमरा घरमे बाबा पर प्रश्न करब पाप मानल जाइत। पिता कहैत—मंजीराक दक्षिणा सँ घर चलल। जँ हम दावा उठाएब, तँ हुनकर भक्ति पर दाग लगत।’ सत्यव्रत पूछलनि—‘दाग भक्ति पर लगत, वा दक्षिणाक उपयोग पर?’ हरिबल्लभ पहिल बेर माथ उठेलक—‘कदाचित् दूनू कैँ अलग करए कियो सिखौलै नहि।’

एहि उत्तर पर बच्चा सभक बीच फुसफुसाहट भेल। भक्ति, दान, दक्षिणा, ऋण—सभ शब्द घरक भीतर आदर पाबैत छल। मुदा आदरक आड़िमे प्रश्न मरि जाइत। मीरा कहली—‘ककरो भक्ति पर हँसी नहि। मुदा जँ भक्ति सँ भूमि-दावा दबाओल गेल, तँ भक्ति कैँ मुक्त करब आवश्यक अछि।’ हरिबल्लभक आँखिसँ नोर टपकल, पर ओ शांत रहल।

चारिम आधा हाथ रामलखन सहाय स्वयं उठेलक। लोक सभ चौंकल। ओ काल्हि स्वीकार करि चुकल छल जे चुप्पी पर ओकर घर चलैत छल। आइ ओ कहलक—‘हम अपराधी छी, मुदा हम अकेला अपराधी नहि। हमरा जे कहबाक चाही छल, ओ नहि कहलहुँ। मुदा जे हमरे भूख आ बेटीकैँ औजार बनौलक, ओकर नामो लिखू।’ भिखारी लाल तिक्त स्वरमे कहल—‘औजार बनलहुँ, चललहुँ सेहो।’ रामलखन माथ झुका लेलक—‘हँ, चललहुँ।’

एहि छोट ‘हँ’मे कतेको बरखक धूलि छल। मीरा बच्चा सभकैँ रोकली—‘एहि गवाही कैँ न पूरा क्षमा बनाउ, न पूरा दोष। लिखू—स्वीकार सहित संलग्नता।’ अनन्या नयका शब्द बनौली—‘बंधायल अपराध।’ सत्यव्रत धीरेसँ मुस्कुरौलनि। ई शब्द ओकरा नीक लागल, कारण ओ अपराधक जटिलता कैँ न लुकबैत छल, न धोइत।

ओहि समय हरिचरण तिवारी दूरसँ आगाँ आयल। ओकर हाथ काल्हि उठल नहि छल। आइ ओ मुस्की मारि कहलक—‘आधा हाथक अदालत चलैत अछि? सभ लोक अपन लाभ खायल, आब बाबाक नाम पर कीचड़ फेंकत। जे खयलक, ओ दोषी; जे देलक, ओ पुण्यवान।’

ई वाक्य सुनि भीड़मे किछु लोक डोलल। कारण ई तर्क सरल छल, आ सरल तर्क थाकल मनकेँ तुरन्त आसरा दैत अछि।

सत्यव्रत मेहता हरिचरणक आँखिमे देखैत कहलनि—‘जे भूखमे खाएल, आ जे भूखक उपयोग करि कागच दबेलक—दूनू एकहि तराजूमे नहि तोलल जाएत।’ हरिचरण हँसल—‘तराजू अहाँक?’ मीरा बीचमे कहली—‘तराजू नहि, विवरण। फैसला बादमे होएत, पर भेद एखन लिखल जाएत।’ बच्चा सभ लिखलक—‘भूखक लाभार्थी आ भूखक व्यापारी अलग।’

ई पंक्ति सुनि रामपरीक्षित पासवान लाठी टेकैत उठलाह। ओ कहलक—‘हमर काकाकेँ दवा भेटल, हम ओकरा नकारब नहि। मुदा जँ ओहि दवाक बाद हुनकर अंगूठा वा उपस्थिति गलत लिखल गेल, तँ दवा अपराधक कपड़ा नहि बनि सकैत।’ ओकर आवाज काँपत छल, मुदा शब्द सधा छल। देवनक नाम फेर हवामे आयल, आ ठूँठक कारी दरारमे हरियर रेखा झिलमिला उठल।

महावीर पाठक अपन बहीक कातमे बैसल सभ सुनैत रहलाह। आइ हुनकर घरक गौरव पन्ना-पन्ना खुलि रहल छल। ओ कहलक—‘हम बचपनसँ सुनलहुँ जे बाबा लोक-पालक छलाह। आब बुझैत छी जे पालन आ पकड़े रहबामे बारीक भेद अछि।’ देविका पूछली—‘ई भेद बहीमे भेटत?’ महावीर दुखी स्वरमे कहल—‘बही देल चीज लिखैत अछि; पकड़े राखल आत्मा नहि।’

कमला फूलकलीक माटिक डल्ला हाथमे लऽ महावीरक कातमे बैसलि। ओ निर्भय पूछलक—‘अहाँक घरमे कियो ई पूछलक नहि जे नानीक जमीन सेवा-खातामे किएक नहि?’ महावीर बहुत देर धरि चुप रहलाह। फेर कहलक—‘नहि। कारण जमीन पूछिते बाबा अपमानित होइत छलाह। हम सभ सोचैत—जमीनक प्रश्न लोभ अछि, सेवा स्मरण पुण्य।’ कमला कहल—‘गरीबक जमीन लोभ नहि, ओकर देहक छाँह अछि।’

ई वाक्य गाछीक पात नहि, ठूँठक भीतरक नस जेकाँ थरथरायल। सुरमणी देवी कमलाक माथ पर हाथ रखलीह। मीरा लिखली—‘जमीन = देहक छाँह। दान = अस्थायी अन्न। भेद आवश्यक।’ शारदा झा जोड़लीह—‘जकर छाँह छीन्हल जाए, ओकरा धूपमे खड़ा कऽ प्रसाद देलासँ छाँह वापस नहि आबैत।’

दुपहर धरि आधा हाथ सभक अलग रजिस्टर बनि गेल। शीर्षक देल गेल—‘ऋण-साक्षी’। एहि रजिस्टरमे प्रत्येक नामक संग चार बात लिखल गेल—की भेटल, कहिया भेटल, ओकर बाद की रोकल गेल, आ रोकबाक भाषा की छल। बच्चा सभ देखलक जे भाषा सभ लगभग

एकहने छल—‘लाज करू’, ‘कृतज्ञ रहू’, ‘गामक मान राखू’, ‘बाबाक अपमान नहि’, ‘पुरान बात छोड़ू’।

अनन्या एहि भाषा सभक कातमे लिखली—‘नैतिक दबावक वाक्य।’ आरुणि आगाँ जोड़लक—‘बार-बार दोहरल वाक्य स्वयं दस्तावेज बनैत अछि।’ सत्यव्रत कहलनि—‘सही। जखन अनेक घरमे एकहि ढंगक वाक्य सुनल जाए, तखन ओ केवल व्यक्तिगत सलाह नहि, प्रणालीक संकेत होइत अछि।’ बच्चा सभ ‘प्रणाली’ शब्दक अर्थ पूछलक। मीरा कहली—‘जे बिनु एक आदेशक सेहो सभकेँ एक दिशा धकेलए, से प्रणाली।’

एहि बीच एक नव साक्षी आयल—निर्मला कुम्हारिन। ओ एखन धरि भीड़मे पाछाँ बैसल छलीह, अपन दुनू हाथ माटिसँ सनल आँचरमे लुकबैत। हुनकर परिवारक नाम सेवा-खातामे ‘माटिक घड़ा आपूर्ति’क रूपमे छल। ओ कहलीह—‘हम घड़ा दैत रही, बदलामे अनाज। मुदा एक बेर हमर बाबूजी कागचक बात पूछलथि, तँ कहल गेल—सेवा करैत छी, सौदा नहि। तखनसँ हम घड़ा देबामे सेहो ऋणी बुझए लगलहुँ।’

भिखारी लाल चौंकल—‘घड़ा देलहुँ अहाँ, ऋणी अहाँ?’ निर्मला हँसलीह—‘गरीब जे देत, ओहो दान नहि कहल जाइत; धनी जे लेत, सेहो उपकार बनि जाइत।’ एहि बात पर भीड़मे गहरा मौन छा गेल। देविका रजिस्टरमे नयका स्तम्भ जोड़ली—‘उनटा ऋण’। ओ लिखलक—‘गरीबक श्रम केँ धनीक कृपा बनाओल गेल।’

निर्मलाक कथासँ सेवा-खाताक अर्थ फेर बदलल। आब ई केवल देल वस्तुक सूची नहि रहल; ई ओहि भाषा-व्यवस्था सेहो बनल जाहिमे लेबो उपकार बनि जाइत अछि। सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘जँ घड़ा, श्रम, गीत, मंजीरा, रसोई, खेतक बाट—सभक मूल्य उनटा लिखल गेल, तँ इतिहासो उनटा लिखल गेल।’ मीरा शांत स्वरमे जोड़ली—‘आब ओकरा सीधा नहि, स्पष्ट लिखब। सीधाक दावा फेर हिंसा बनि सकैत अछि।’

साँझ लग हरिचरणक बेचैनी बढ़ल। ओ कखनो महावीरकेँ अलग लय जाए चाहैत, कखनो रामलखन पर फुसफुसाइत, कखनो भीड़मे कहैत—‘ई सभ गाम तोड़ि देत।’ कमला सुनि लेलक। ओ उत्तर देलक—‘गाम टूटल छल, बस आवाज नहि छल।’ एहि पर बच्चा सभक समूह एक संग ओकरा कातमे ठाढ़ भऽ गेल। हरिचरण पहिल बेर पाछाँ हटि गेल।

ओही घड़ी भानु लाल, जे पर्ची बचा कऽ लय आएल छल, धीरेसँ कहल—‘हमरा लग आओर एक बात अछि।’ सभ ओकरा दिस घुमल। ओ कहलक—‘दानक खाता सँ अलग एक छोट कापी छल—ककरा कतेक “समझाओल” गेल। हम पूरा नहि देखलहुँ, मुदा नाम सुनने

छी।’ मीरा तुरन्त रोकली—‘नाम बिनु देखल प्रमाण नहि। जे देखलहुँ, ओ कहू; जे सुनलहुँ, ओकरा सुनवाईक रूपमे अलग लिखू।’

भानु लाल कहलक—‘कापीक नाम छल—“सहमति”। ओकरा बाबाक खास कोठरीमे राखल जाइत छल।’ ई सुनिते महावीरक चेहरा फक्क पड़ि गेल। ओ धीरेसँ कहल—‘हमरा घरक ऊपरका कोठरीमे एक लोहेक संदूक अछि। हम ओकरा कखनो खोलल नहि।’ भीड़मे सनसनी पसरि गेल। सेवा-खातासँ सहमति-कापी धरि बाट खुलि रहल छल।

सुरमणी देवी सख्त स्वरमे कहलीह—‘संदूक आइ नहि खोलब। पहिने नियम बनत। जँ भीतर ककरो निज बात हो, तकर रक्षा होएत। जँ अपराधक कागच हो, तकर प्रतिलिपि बनत। जँ किछु नहि हो, तखन खाली संदूको झूठक अन्त मानल जाएत।’ मीरा सहमति देली। बच्चा सभ लिखलक—‘संदूक-नियम: निजता, प्रतिलिपि, गवाह, सूची।’

महावीरक माथ झुकल छल। ओ कहल—‘हम संदूक आनब, मुदा अकेले नहि। हमर घरक लोक कहत जे हम कुल-अपमान केलहुँ।’ सत्यव्रत उत्तर देलनि—‘कुलक मान सत्य झेलबा सँ घटैत नहि; झूठ ढकबा सँ सड़ैत अछि।’ महावीर ई वाक्य सुनि काँपल, पर ओकर पएर स्थिर भेल। ओ पहिल बेर घरक इतिहासक विरुद्ध नहि, ओकर उपचारक दिशामे चलबाक साहस जुटा रहल छल।

राति उतरि आएल। आधा हाथक रजिस्टर बन्द भेल, मुदा ओकर शब्द लोकक भीतर खुलल रहल। कैलाश, सकुनी, हरिबल्लभ, रामलखन, निर्मला—सभ अलग-अलग बँधनमे बँधल छल, पर आइ बँधनक गिट्ठऽक नाम भेटल। नाम भेटब छोट बात नहि। जकरा नाम भेटैत अछि, ओकरा खोलबाक उपाय सेहो धीरे-धीरे जन्म लैत अछि।

चन्ना गाछीक ठूँठ लग अन्तिम पढ़नाइ भेल। मीरा कहली—‘आइ स्पष्ट भेल जे दानक ऋण केवल पैसाक ऋण नहि। ई लाज, कृतज्ञता, धर्म, भूख, श्रम, प्रतिष्ठा आ डरक मिला-जुला बन्धन रहल। जे लोक दान पाबि चुप भेल, ओकरा सभकेँ एकहि रंगमे नहि लिखल जाएत। किछु पीड़ित, किछु संलग्न, किछु बंधायल अपराधी, किछु उनटा ऋणक शिकार। आगाँ सहमति-कापी आ लोहेक संदूकक जाँच होएत।’

एहि घोषणा पर हवा भारी भऽ गेल। कियो विजय अनुभव नहि केलक। किएक तँ सत्यक ई रूप असुविधाजनक छल—ओ दोषी आ पीड़ित केँ अलग-अलग कोठरीमे रखि आराम नहि दैत। ओ देखबैत छल जे गोहि केवल देह नहि चिबैत; गोहि देहकेँ एहनो बनबैत अछि जे ओ अपनहि आवाजकेँ ऋण बुझि चुप करा दे।

अध्याय एहिसँ समाप्त भेल जे आधा हाथ सभ पूर्ण गवाही बनल, आ दानक उज्जर कपड़ा भीतरक गाढ़ कारी धागा देखाबय लागल। ओ संदूक खाली हो, भरल हो, वा झूठसँ जकड़ल—ओहिमे बटुकनाथक परत आओर भीतर धरि खुलबाक संकेत छिपल अछि।

लोकगीत: दानक उज्जर कपड़ा

लोकधुन: करुण सोहरक उलट धुन

खोलू हे कपड़ा, दानक कपड़ा खोलू हे,
मुदा निजता ने फाड़ू—आदरसँ स्वर काढ़ू हे।

उज्जर कपड़ामे दान, भीतर कारी धाग,
लाज, धर्म, भूख, कृतज्ञता—सभ बन्हलक भाग।
आधा हाथ उठल छल, आधा मन डरायल,
ऋणक नाम भेटिते बन्धन साफ देखायल।
कियो पीड़ित, कियो संलग्न, कियो दुनू एक संग,

सत्यक एहन रूपसँ थरथर करेजाक अंग।
महावीर कुलक डर लऽ संदूक आनए चलल,
'झूठ ढकला कुल सड़ै'—ई वचन ओकरा बल देलक।
दानक कपड़ा खोलू, मुदा निजता नहि फाड़ू,
ऋण बनल आवाजकेँ आदरसँ बाहर काढ़ू।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—आप्तोक्तत्व कारण नहि अछि: कारण तोता द्वारा उच्चरित, मूल प्रमाणवाक्यक अनुरूप पदमे; मूल प्रमाणवाक्यक अनुरूप भ्रमित अथवा छलकर्त्ताक पदमे; आ वैदिक पदमे आप्तोक्तत्व अनुपस्थित रहैत अछि, तथापि ई पदसभ यथार्थ बोधक प्रमाण बनैत अछि। आप्तोक्तत्व कारण नहि अछि।]

अध्याय १५७

लोहेक संदूक

लोहेक संदूक घरक अन्हारमे व्यापार छल, गामक इजोतमे गवाही भऽ गेल।

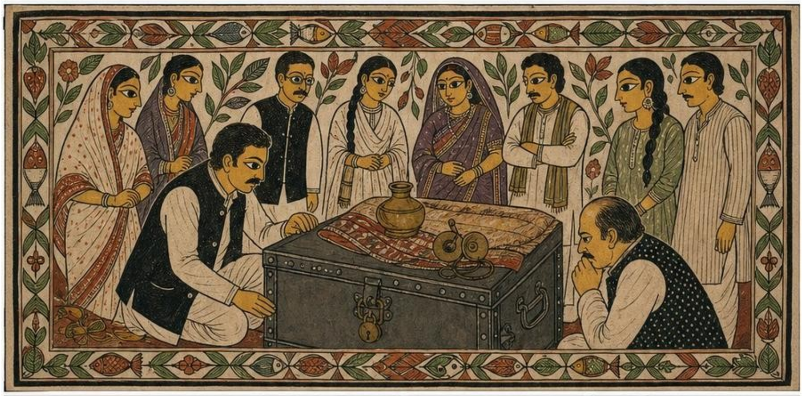

अध्यायारम्भ लोकगीत: लोहेक पेटमे जीवन

लोकधुन: संदूक-जागरण

खोलू हे संदूक, धीरे-धीरे खोलू हे,
लोहाक पेटक साँसकेँ सूरुज सँ जोड़ू हे।

लोहेक पेट खोलू धीरे, भीतर इतिहास,
कागच, कपड़ा, बीज, चाबी—सभमे लोकक श्वास।
जंगक परत हटत जखन अक्षर चमकि उठत,
बरखोंक दबल गवाही नव पाँखि लऽ उड़त।

संदूककेँ कब्र नहि, स्मृतिक घर बनाउ,
जे भेटै ओकर मान राखि सूची साफ बनाउ।
लोहेक पेटमे जीवन अछि, आदरसँ ओकरा खोलू,
अन्हारमे राखल साँचकेँ सूरुजक संग जोड़ू।

जंगक परत तर सूतल कागच-कपड़ा-बीज,
हरेक वस्तु मे धड़कए ककरो जीवन-चीज।
कब्र नहि, स्मृति-घर—सूची साफ बनाउ,
बरखोंक दबल गवाहीकेँ नब पाँखि लगाउ।

❖

कुंजी पूजा-घरमे रहय—ई बात सुनबामे पवित्र लगैत छै। मुदा जे कुंजी पवित्रताक ओहार तर राखल जाइत छै, ओ प्रायः सभसँ अपवित्र गुप्ती कैँ ढाकैत छै।

सहमति आ समझौता अलग-अलग शब्द छै। समझौतामे दुनू पक्षक आवाज होइत छै; सहमतिमे कखनो एक्के पक्षक आवाज, दोसराक केवल अंगूठा। अंगूठा बजैत नहि, तैँ ओकर मौनकेँ स्वीकृति बुझि लेल जाइत छै।

अधिकार-चिह्न हस्ताक्षरसँ बेसी खतरनाक होइत छै, कारण चिह्नकेँ कियो नहि नकारि सकैत—ओ आदमीक नहि, आदमीक ऊपरक शक्तिक निशान होइत छै।

संदूक खाली भेलाक बाद ओकर कारी गंध कोठरीमे बाँचल रहि जाइत छै। सत्य जखन एकाएक खुजैत छै, तखन ओ राहत नहि, पहिने भार दैत छै—राहत बादमे, धीरे-धीरे अबैत छै।

भोरक उजास एखन पूरा पसरलो नहि छल कि महावीर पाठक अपन घरक ऊपरी कोठरी दिस बढ़लाह। कोठरी बरखोंसँ कुल-मानक अन्हार जेकाँ बन्द छल। सीढ़ी पर धूलि, देबाल पर मकड़ीक जाल, आ काठक पुरान गंधमे एहन मौन छल जेना घर अपनहि भीतरक प्रश्नसँ बचय लेल साँस रोकने हो।

महावीरक संग सत्यव्रत मेहता, मीरा, सुरमणी देवी, भिखारी लाल, अनन्या, आरुणि, देविका आ दू स्त्री-साक्षी गेली। नियम पहिने पढ़ल गेल—संदूक एकल हाथ सँ नहि खुलत, प्रत्येक वस्तुक सूची बनत, निज बात पर परदा रहत, अपराधक कागच पर प्रतिलिपि बनत, आ ककरो नाम बिनु सुनवाई सार्वजनिक नहि होएत।

कोठरीक कोनमे लोहेक संदूक राखल छल। ओकर ऊपर कपड़ाक फाटल गद्दी, पुरान पूजा-पात्र, आ एक टूटल मंजीरा राखल छल। हरिबल्लभ दास मंजीरा देखिते सिहरि उठल। ओकर पिता कीर्तनमे जे मंजीरा बजबैत छलाह, तकर आवाज जेना एहिठाम चुप्पी बनि पड़ल छल। ओ धीरेसँ कहलक—‘आदरक वस्तु सभ कतेक बेर प्रमाणक मुँह ढाकि दैत अछि।’

महावीर संदूक लग घुटना टेकलाह। कुंजी हुनका लग नहि छल। घरक बड़की पतोहू कहलीह जे कुंजी पूजा-घरसँ भेटत। मीरा साफ कहली—‘कुंजी जे ठाम राखल अछि, ओहो सूचीमे लिखू। प्रमाणक बाट सेहो प्रमाण होइत अछि।’ कमला दूरसँ सुनि रहल छल। ओ लिखलक—‘संदूकक कुंजी पूजा-घरमे: पवित्रताक पहरा।’

कुंजी आयल। ताला पहिने नहि घुमल। भिखारी लाल तेल मँगेलक, पर सुरमणी देवी रोकलीह—‘पहिने ताला जेकाँ अछि, ओकर छाप लिअ।’ बच्चा सभ ताला, धूलि, कुंजी, कोठरी, उपस्थित लोक सभक नाम लिखलक। ई धीमापन किछु लोक केँ व्यर्थ लगल, मुदा मीरा कहली—‘जल्दी ओहि लोकक औजार अछि जे पाछाँ निशान मिटाबय चाहैत अछि।’

ताला खुलल तखन कोठरीक हवा बदलि गेल। एक हलुक धड़कन जेकाँ आवाज सभक कानमे पड़ल—शायद पुरान कब्जाक चरचराहट, शायद अपने साँसक। संदूकक ढक्कन उठिते कपासक एक पुरान थैली, दू बही, किछु मोहर लागल कागच, एक लाल कपड़ामे बँधल गड्डी, आ तामाक डिबिया देखायल। महावीरक हाथ काँपि रहल छल। सत्यव्रत ओकर कन्हा पर हाथ

राखि कहलनि—‘जे भेटत, से अहाँक अकेलाक दोष नहि; मुदा ओकरा लुकाएब एखनक दोष होएत।’

पहिल बही पर लिखल छल—‘भोजन-वितरण’। ई वैह सेवा-खाताक बहिन जेकाँ छल, मुदा ओहिमे अलग स्तम्भ बनल छल—नाम, अवसर, वस्तु, आ ‘वचन’। वचनक स्तम्भ देखिते अनन्याक आँखि ठिठकि गेल। कतहु लिखल छल—‘बाबाक मान राखत।’ कतहु—‘भूमि-वाद नहि उठाओत।’ कतहु—‘सहमति देलक।’

आरुणि तुरन्त कहलक—‘भोजनक संग वचन किएक?’ कोनो उत्तर नहि भेटल। महावीर पन्ना उलटैत रहलाह। एक ठाम कैलाश मंडलक पिताक नाम लग लिखल छल—‘दवा ग्रहण, पुरान सीमा पर मौन।’ कैलाश बाहर बैसल छल। ओकरा एखन बोलाओल नहि गेल। मीरा कहली—‘नाम भेटल, पर गवाही बिनु निष्कर्ष नहि।’

दोसर बही अपेक्षाकृत छोट छल। ओकर जिल्द कारी, किनारा पर तेलक दाग। ऊपर धुँधल अक्षरमे लिखल छल—‘सहमति’। भानु लालक कथन सत्यक देहरी पर आबि ठाढ़ भेल। महावीर बही पकड़िते चुप भऽ गेल। ओकरा बुझाइ पड़ल जे घरक कुल-गौरवक असली धड़कन एहि पतली बहीमे बन्द छल, मोट सेवा-खाता केवल बाहरक चेहरा।

सहमति-कापीक पहिल पृष्ठ पर नियम लिखल छल—‘दान, सेवा वा संकट-सहायताक उपरान्त प्राप्त आश्वासन।’ सत्यव्रत ई पंक्ति पढ़ि आँखि बन्द कएलनि। कोठरीमे एक क्षण लेल केवल हुनकर साँसक आवाज सुनाइ पड़ल। ओ धीरेसँ कहलनि—‘संकट-सहायताक बाद आश्वासन, अर्थात संकट स्वयं दस्तावेज बनाओल गेल।’ मीरा लिखली—‘संकट सँ सहमति निकालबाक पद्धति।’

पन्ना-दर-पन्ना नाम खुलए लागल। बच्चा सभक अँगुरी पुरान पन्नाक किनार पर एतेक बेर घसकल जे किनार आओर भुरभुरा गेल। किछु नामक आगाँ अंगूठाक निशान, किछु आगाँ टेढ़ा हस्ताक्षर, किछु आगाँ केवल ‘गवाह उपस्थित’। गवाहक नाम बार-बार बदलैत नहि छल—हरिचरण तिवारी, रामलखन सहाय, लाउक पुरान मुनीम, आ चन्द्रपालक एक लोक। ई पुनरावृत्ति स्वयं चीखि रहल छल।

भिखारी लाल तमतमायल स्वरमे कहलक—‘ई सहमति नहि, घेरेबन्दी अछि।’ सुरमणी देवी कहलीह—‘धीरे लिखू। क्रोध सही हो सकैत, पर शब्द एहन हो जे काल्हि कागच पर टिकि सकए।’ अनन्या लिखली—‘पुनरावृत्त गवाह: घेरेबन्द सहमति।’ ई शब्द सुनि सभ सहमत भेल—न आरोपक लाठी, न मौनक पानि; बस नामक नाप।

तामाक डिबिया खोलल गेल। भीतर सूखल स्याहीक डल्ला, दू पुरान अंगूठा-पैड, आ किछु कपासक टुकड़ा छल। आरुणि पूछलक—‘अंगूठा-पैड संदूकमे किएक?’ सत्यव्रत कहलनि—‘जँ कागच पर अंगूठा लगत, तखन पैड ककर हाथमे छल, ई पूछब जरूरी अछि।’ देविका तुरन्त नयका सूची बनौली—‘अंगूठा-पैडक मालिकाना।’

एक मोहर लागल कागच पर फूलकली देवीक नाम छल। कमला कैं भीतर नहि बोलाओल गेल, कारण नियम बनल छल जे संबंधित लोकक उपस्थिति सँ पहिने कागचक सुरक्षित प्रति बनत। मुदा कमला बाहर ठूँठ लग बैसि धूलिमे अपन नानीक नाम उकेरैत रहल। ओकरा शायद भीतरक पन्नाक आभास भऽ गेल छल।

फूलकलीक कागचमे लिखल छल—‘अस्थायी शरणक बदला सीमा-विवाद स्थगित।’ मीरा पंक्ति तीन बेर पढ़ली। ‘अस्थायी शरण’—माने संकटमे छाँह; ‘सीमा-विवाद स्थगित’—माने जमीनक प्रश्न दबाओल। ओ कहलीह—‘जकर घर डहकल, ओकरा छाँह देल गेल; बदलामे ओकर खेतक छाँह रोकल गेल।’

सुरमणी देवीक चेहरा कठोर भऽ गेल। शारदा झा, जे रसोईक साक्षी छलीह, धीरेसँ कहलीह—‘हम फूलकलीकैं ओहि बरस बरामदामे सूतल देखलहुँ। हुनकर बच्चा काँपत छल। हमरा नहि बुझायल जे ओहि रातिक कम्बल बादमे कागच बनत।’ ई वाक्य सुनिते कोठरीक हवा आओर भारी भऽ गेल।

महावीर पाठक फूटि पड़लाह—‘हमरा किएक नहि कहल गेल? हम तँ ई कथा कखनो नहि सुनलहुँ।’ सत्यव्रत कठोर नहि, पर साफ स्वरमे कहलनि—‘कुलक भीतर जे नहि कहल जाए, ओही कुलक असली पाठ होइत अछि।’ महावीर माथ झुका देलाह। आब हुनका अपन अज्ञान सेहो विरासत जेकाँ लगए लागल।

सहमति-कापीमे सकुनी खातुनक मायकेर नाम लग लिखल छल—‘अनाज, रोग-ऋतु, पंचायत-वचन।’ सकुनी बाहर सुनिते हिचकी लऽ उठलीह। मीरा हुनका भीतर नहि आनलथि; पहिने पन्नाक प्रति बनायल गेल। निजताक नियम फेर पढ़ल गेल। भीड़मे किछु लोक असंतुष्ट छल—ओ सभ तुरन्त उद्घाटन चाहैत छल। मीरा कहली—‘सत्य तमाशा नहि।’

हरिचरण तिवारी एखन धरि गाछीक किनार पर ठाढ़ छल। ओकर चेहरा पर बनावटी हँसी सूखि गेल छल। जखन ओकर नाम गवाहक रूपमे बेर-बेर पढ़ल गेल, ओ चिल्ला उठल—‘गवाह रहब अपराध नहि!’ आरुणि बाहरसँ उत्तर देलक—‘गवाह रहब अपराध नहि, पर भूखक समय सहमति लिखब अपराधक देहरी अछि।’ लोक सभक आँखि हरिचरण पर टिकि गेल।

रामलखन सहाय काँपैत कोठरीक दुआर लग आयल। ओ कहलक—‘हमरो नाम अछि कि?’ मीरा पन्ना देखली। ओकर नाम दू ठाम छल—एक ठाम गवाह, एक ठाम ‘समझाओल’। रामलखनक देहसँ जान उतरि गेल। ओ जमीन पर बैसि गेल। कहलक—‘हम सोचैत रही बात बुझबैत छी; ई बुझब नहि जे हम सहमति बनबैत छी।’

अनन्या ओहि वाक्य केँ अलग लिखली—‘समझेनाइ आ सहमति बनबेनाइ बीचक अपराध।’ सत्यव्रत कहलनि—‘एहि भेद पर पूरा सुनवाई होएत।’ कारण रामलखनक स्वीकारबला स्वरमे दोष छल, पर ओकर भीतर स्वयं उपयोग होयबाक पीड़ो छल। कथा फेर ओहि जटिल ठाम पहुँचि गेल जतए आसान दंड आ आसान क्षमा दुनू झूठ लगैत अछि।

लाल कपड़ामे बँधल गड्डी अन्तमे खोलल गेल। भीतर किछु रसीद, किछु पत्र, आ एक अधूरा नक्शा छल। नक्शामे चन्ना गाछी, पोखर, पुरान बाट, आ कई खेतक सीमा लाल स्याहीसँ फेर खिंचल गेल छल। देविका चौंकली—‘ई तँ गामक नक्शा नहि, कब्जाक इच्छा अछि।’

नक्शाक कोनामे बटुकनाथ हरिहरनक हस्ताक्षर नहि छल, पर ओकर खास चिह्न छल—त्रिशूल-जेकाँ तीन रेखा, जे सेवा-खाताक कई पन्नामे सेहो देखल गेल छल। भानु लाल कहल—‘बाबा सीधा हस्ताक्षर कम करैत छलाह; ई निशान हुनकर संकेत मानल जाइत छल।’ सत्यव्रत लिखौलनि—‘हस्ताक्षरविहीन अधिकार-चिह्न।’

ई अधिकार-चिह्न देखिते महावीरक भीतरक अन्तिम आस सेहो डोलि गेल। ओ सोचैत छलाह जे कदाचित् बहीमे चाकर-नौकरक चूक होएत, बाबाक नाम बचेबाक किछु ठाम भेटत। मुदा चिह्न पन्ना-पन्ना पर उपस्थित छल, जेना बटुकनाथ स्वयं छाहमे ठाढ़ सभ नियंत्रित करैत रहल।

मीरा आदेश देली—‘आइ केवल सूची आ प्रति। कोनो फैसला नहि।’ हरिचरण हँसि उठल—‘डर लगल?’ मीरा शांत उत्तर देली—‘नहि। हम तोहर जेकाँ जल्दीमे सहमति नहि लिखब।’ एहि एक वाक्य पर भीड़मे दबायल हँसी उठल, मुदा तुरन्त शांत भऽ गेल। कारण कोठरीमे हँसीक जगह कम छल।

प्रतिलिपि बनबाक समय बच्चा सभक भूमिका अद्भुत रहल। अनन्या नाम पढ़ैत, आरुणि स्तम्भ बनबैत, देविका चिह्न अंकित करैत, कमला बाहर संबंधित परिवारक प्रतीक्षा-सूची लिखैत। प्रत्येक पन्ना पर तीन साक्षीक सोझाँ क्रमांक देल गेल। ओ सभ आब बच्चा नहि, स्मृतिक लिपिक बनि रहल छल।

साँझ धरि लोहेक संदूक खाली भेल, मुदा कोठरी भारी भऽ गेल। खाली संदूक भीतरसँ कारी गंध छोड़ैत रहल। सुरमणी देवी कहलीह—‘संदूक खाली भेल अछि, पर ओकर पेटक कथा आब गामक पेटमे जाएत। धीरे पचाउ, नहि तँ जहर बनत।’ ई चेतावनी आवश्यक छल, कारण सत्य जखन एकाएक खुलैत अछि, तखन ओ बदला आ अफवाहक आगियो बना सकैत अछि।

चन्ना गाछीक ठूँठ लग सभ कागचक अस्थायी सूची पढ़ल गेल। निज नाम सभ सार्वजनिक नहि भेल; केवल श्रेणी पढ़ल गेल—भोजन-वचन, संकट-सहमति, पुनरावृत्त गवाह, अंगूठा-पैड, सीमा-नक्शा, अधिकार-चिह्न। लोक सभ समझि गेल जे पहाड़क भीतरक दरार आब देखाइ पड़ि गेल अछि।

कमला अन्तमे पूछलक—‘नानीक नामक कागच कखन पढ़ल जाएत?’ मीरा ओकरा कातमे बैसि कहली—‘जखन अहाँ तैयार होएब, आ जखन हुनकर कथा तमाशा नहि, उपचार बनि सुनल जाएत।’ कमला माथ हिलेलक। ओकर आँखिमे रोदन नहि छल; ओहिमे एक नव कठोर उजास छल।

राति उतरि गेल। लोहेक संदूक चन्ना गाछीक ठूँठ लग खुलल मुँह राखल गेल, ताकि लोक देखए जे गुप्त पेट खाली भऽ सकैत अछि। मुदा सहमति-कापी लाल कपड़ामे बाँधि अलग राखल गेल। ओकर पहरादारी बच्चा सभ नहि, ओहि लोक सभ करैत रहल जे कखनो आधा हाथ उठौने छल। आब आधा हाथ पहरुआ बनि गेल।

अध्याय एहि ठाम समाप्त भेल जे लोहेक संदूक घरक अन्हारसँ निकलि गामक सामूहिक दृष्टिमे आबि गेल। भोजन, दवा, अनाज, शरण, दक्षिणा, श्रम—सभकेँ सहमति बनाबयवाली पद्धतिक पहिल ठोस देह भेटल।

लोकगीत: लोहेक पेटक रोदन

लोकधुन: संदूक-विलाप

कहू हे धीरे, लोहक पेट धीरे कहू हे,
घावक निजता राखि अपराधक कागच दहू हे।

ऊपरका कोठरीमे लोहेक पेट सूतल,
धूलि, जाल, कुल-मानक अन्हारमे रूठल।

भोजन-वचन, अंगूठा-पैड, सीमा-नक्शा लाल,
खुलिते साँस छोड़लक बरखोंक बन्द सवाल।
फूलकलीक पन्ना पर कमलाक आँखि कठोर,

नानीक कथा तमाशा नहि—उपचारक भोर।
संदूक खाली भेल, कोठरी भारी भेल,
आधा हाथ आब रातिक पहरुआ बनि गेल।
लोहेक पेट, जे निगलल से धीरे कहू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—ज्ञात तात्पर्य कारण अछि: एही कारण “यष्टिः प्रवेशय”—“लाठीवला सभकेँ भीतर आनू”—मे लक्षणासँ निर्दिष्ट अर्थक बोध होइत अछि, आ “सैन्धवम् आनय”—“सैन्धव आनू”—सदृश अनेकार्थक वाक्यमे लवण वा घोड़ामे सँ अभिप्रेत विशिष्ट अर्थक बोध होइत अछि। ज्ञात तात्पर्य कारण अछि।]

अध्याय १५८

सहमति-कापीक मिलान

सहमति-कापीक मिलानसँ पहिल बेर बुझाएल— हस्ताक्षरो अपहरण भऽ सकैए।

अध्यायारम्भ लोकगीत: अपन हस्ताक्षर अपन अधिकार

लोकधुन: गवाही-समदाउनक उज्जर चाल

सम्हारू हे रेखा, हस्ताक्षरक रेखा सम्हारू हे,
पढ़ि-बुझि कऽ टा हथेली आगाँ पसारू हे।

अपन हस्ताक्षर अपन स्वर, कियो नहि चोरै,
रेखा-रेखामे जीवनक सहमति अपना ठौरै।
पहिने पढ़ू, बुझू, तखन हथेली आगाँ बढ़ाउ,
जे बात नहि मानल, ओहि पर नाम नहि चढ़ाउ।

साक्षर हो वा अंगूठा, अधिकार बराबर,
सम्मति बिना कागच सूखल, आत्मा बिनु घर।
अपन हस्ताक्षरक मान घर-घर सिखाउ,
नामक रेखामे स्वतन्त्रताक दीप जलाउ।

अक्षर हो वा अंगूठा—मान एक्के रंग,
सहमतिक बिनु कागच थिक आत्मा-बिनु अंग।
जे नहि मानल मोन सँ, ओहि पर नाम नहि,
अपन रेखाक मालिक अपने—ई बिसरू नहि।

❖

बीमारीक राति, भूखक दिन, बरखाक रातिमे लेल गेल अंगूठा—ई सभ स्वेच्छा नहि, अवसरक शोषण छै। स्वेच्छा ओतय रहैत छै जतय चयनक स्वतंत्रता रहैत छै; जतय चयन नहि, ओतय सहमतियो नहि।

चुप्पीकेँ वचन बुझि लेब सभसँ सरल अपराध छै, कारण चुप्पी अपन सफाइ नहि दऽ सकैत। जे चुप रहल, ओकर चुप्पीक कारण जाँचब न्यायक पहिल कर्तव्य छै।

मध्यस्थ जँ स्वयं कागच लिखय लागय, तँ ओ मध्यस्थ नहि रहैत, पक्ष बनि जाइत छै। निष्पक्षताक आवरण तर सभसँ पक्षपाती हाथ चलि सकैत अछि।

मृतकक नाम कागच पर सेहो चलि सकैत अछि, जँ जीवित हाथ चाहय। ई सभसँ क्रूर चोरी छै, कारण मृतक न इनकार कऽ सकैत अछि, न स्वीकार।

राति भरि लाल कपड़ामे बँधल सहमति-कापी चन्ना गाछीक ठूँठ लग राखल रहल। ओकर ऊपर तीन पहरा छल—एक पहरा आधा हाथ उठौनिहार लोकक, एक पहरा बच्चा सभक, आ तेसर पहरा ओहि मौनक जे आब टूटि कऽ फेर सँ झूठमे नहि घुरय चाहैत छल। हवा चलैत रहल, कपड़ा हलुक काँपैत रहल, मुदा कापी स्थिर रहल, जेना ओ अपन भीतरक नाम सभ कैँ रातिक अन्हारसँ बाहर भोर धरि सुरक्षित लय जाए चाहैत हो।

भोर भेल तँ मीरा पहिने नियम पढ़ली। 'आइ कापीक नाम सभ सीधा लोकक सोझाँ नहि पढ़ल जाएत। पहिने प्रत्येक परिवार सँ अलग गवाही, फेर कागचक मिलान, फेर त्रुटिक सूची, तखन सामूहिक सुनवाई। जकर कथा निज अछि, ओकरा निज रहबाक अधिकार अछि; जकरा अपराध सार्वजनिक बनाओल गेल, ओकरा परदा अपराधीक नहि, पीड़ितक रक्षामे रहत।'

सत्यव्रत मेहता एहि नियमक नीचाँ एक वाक्य जोड़लनि—'मिलान बदला नहि, सत्यक माप अछि।' बच्चा सभ ई वाक्य लाल स्याही सँ लिखलक। कारण काल्हि रातिसँ गाममे कई तरहक अफवाह चलि गेल छल—केकर नाम निकलल, केकर अंगूठा, केकर खेत, केकर दान। मीरा बुझि गेल छली जे अफवाह सत्यक पहिल शत्रु होइत अछि।

पहिल परिवार कैलाश मंडलक आयल। भोरक ठंढा हवामे कैलाशक हाथ काँपैत छल, आ ओकर आवाज पहिल शब्द बजबासँ पहिने दू बेर अटकल। ओकर पिताक नाम सहमति-कापीमे दवा ग्रहण आ पुरान सीमा पर मौनक संग लिखल छल। कैलाश संग ओकर बड़की बहिन रामपरी सेहो आयलीह। ओ कहलीह—'दवा आयल छल, ई सही। मुदा दवा लेल मोल नहि पूछल गेल। रातिमे आश्रमक लोक कहलक—बाबाक कृपा लिखि दियौ। पिता बीमार छलाह; हाथ पकड़ि अंगूठा लगाओल गेल।'

आरुणि पूछलक—'सीमा-विवादक बात तखन भेल?' रामपरी माथ हिलेलथि—'नहि। हम सभ तँ खेतक कागच ओहि समय घरमे खोजियो नहि रहलहुँ। बादमे कहल गेल जे पिता स्वयं मौन स्वीकार कएने छथि।' अनन्या कापीक पन्ना सँ मिलेली। ओहि पंक्तिमे लिखल छल —'स्वेच्छा मौन।' देविका किनार पर लिखली—'बीमारीक राति: स्वेच्छा संदिग्ध।'

कैलाश रोए लगल, मुदा मीरा ओकरा रोकली नहि। ओ कहलीह—'रोदन सेहो गवाहीक भाग अछि, पर रोदन सँ निष्कर्ष नहि; विवरण सँ निष्कर्ष।' एहि पर कैलाश साँस सँभालि

कहलक—‘हम पिता कैँ दोष देइत रही। बुझैत रही ओ कमजोर पड़लाह। आइ बुझलहुँ जे कमजोर देह पर मजबूत शब्द लादल गेल छल।’ सत्यव्रत लिखौलनि—‘कमजोरी कैँ सहमति बनाओल गेल।’

दोसर गवाही सकुनी खातुनक घर सँ आयल। सकुनी अपन मायकेर पुरान लोटा, एक फाटल अनाज-थैला आ पंचायतक स्मृति लय आयलीह। ‘अनाज बरसातमे भेटल,’ ओ कहलीह, ‘पर हमर माय कहैत रहलीह जे अनाजक बोरा पर पहिने नाम नहि छल; बादमे कागच पर नाम लिखायल। पंचायतमे जब जमीनक बाटक बात उठल, हरिचरण कहलक—जकर पेट बाबाक दान सँ भरल, ओहिक मुँह सँ दावा शोभा नहि दैत।’

सहमति-कापीमे सकुनीक माय लग लिखल छल—‘अनाज, रोग-ऋतु, पंचायत-वचन।’ मीरा पूछली—‘पंचायत-वचन कोना देल गेल?’ सकुनी हँसलीह, मुदा ओ हँसी तेज धारक छल। ‘मायक मुँह बन्द कराओल गेल। चुप्पी कैँ वचन लिखल गेल।’ बच्चा सभ एक साथ चौंकल। कमला धीरेसँ दोहरौलि—‘चुप्पी कैँ वचन।’ ई वाक्य कापीक किनार पर गाढ़ अक्षरमे चढ़ि गेल।

तेसर परिवार फूलकली देवीक छल। कमला स्वयं आयल, मुदा मीरा फेर पूछली—‘तोहर तैयारी अछि?’ कमला कहल—‘नानीक कथा आब डर नहि, दीपक अछि।’ तखन फूलकलीक कागच खोलल गेल। ओहिमे अस्थायी शरणक बदला सीमा-विवाद स्थगित लिखल छल। कमला एक पुरान कम्बलक कोर देखौलि—‘ई ओहि रातिक कम्बल छी। हमर माय कहैत छलीह, कम्बल गरम छल, मुदा ओकर बाद खेत ठंढा पड़ि गेल।’

शारदा झा, जे ओहि बरस बरामदामे फूलकली कैँ देखने छलीह, आगाँ आयलीह। ओ कहलथि—‘बरखा छल। घरक छप्पर टूटल। फूलकली बच्चा सभ संग आश्रमक बरामदामे बसलीह। मुदा ओहि राति ककरो सीमा-विवादक चर्चा नहि सुनलहुँ। दोसर दिन एक लोक कागच लऽ गेल। हम सोचलहुँ राहतक हिसाब होएत।’ देविका लिखली—‘राहतक हिसाब सँ सीमा-स्थगन धरि छलाँग।’

महावीर पाठक ई सुनि दुआरक खम्भा पकड़ि लेलनि। हुनकर चेहरामे कुलक लाज, अज्ञानक पीड़ा आ नव जागल उत्तरदायित्व तीनू एक साथ छल। ओ कहला—‘हमरा घरक बरामदा शरण बनल, ई गौरव मानैत छलहुँ। आब बुझाइत अछि जे शरणक पाछाँ कागचक जाल बुनल गेल।’ सुरमणी देवी कहलथि—‘गौरव तखनहि बचेगा जखन अहाँ जाल फाड़बामे हाथ देब।’

हरिबल्लभ दास अपन पिता मंजीरा बजौनिहारक कथा फेर लय आयल। सहमति-कापीमे हुनकर नाम आगाँ लिखल छल—‘कीर्तन-दक्षिणा, उपस्थिति-सम्मति।’ हरिबल्लभ कहल—‘पिता गीत गाबय गेलाह, कागच पर गवाही नहि। हुनकर मंजीराक ताल कैँ उपस्थित गवाह लिखल गेल।’ आरुणि पूछलक—‘ओ कखनो कागच पढ़लनि?’ हरिबल्लभक उत्तर छल—‘ओ नाम पढ़ि सकैत छलाह, चाल नहि।’

ई वाक्य सुनि सत्यव्रत देर धरि चुप रहलाह। फेर लिखलनि—‘नाम पढ़नाइ पर्याप्त नहि, चाल पढ़नाइ आवश्यक।’ मीरा कहली—‘एहि कारण बच्चा सभ कैँ केवल अक्षर नहि, पद्धति पढ़ाओल जाएत।’ चन्ना गाछीक ठूँठ पर बैसल चिरई एक बेर फड़फड़ायल, जेना ई शिक्षा ओहो सुनि रहल हो।

रामलखन सहाय कैँ फेर बजाओल गेल। ओकर नाम कापीमे दू जगह छल—गवाह आ समझाओल। ओ अपन माथ झुकाकऽ कहलक—‘हम कतेको परिवारक घर गेलहुँ। हमरा कहल जाइत छल—बाबाक सहायता लेल धन्यवाद लिखाउ। हम कहैत—बस औपचारिक बात अछि। आब बुझैत छी जे हम लोकक डर कैँ मुलायम शब्दमे बाँधैत छलहुँ।’

मीरा ओकरा कठोर दृष्टि सँ देखली—‘तूँ दबाव जानैत छलह?’ रामलखन कहलक—‘पूर्ण नहि। मुदा लोकक आँखिमे डर देखैत छलहुँ। देखिकऽ सेहो कहैत रही—डरू नहि, अंगूठा लगा दिअ।’ एहि स्वीकार पर भीड़मे गुनगुनाहट उठल। सुरमणी देवी हाथ उठा रोकलीह—‘स्वीकारोक्ति पर पत्थर नहि, प्रश्न फेंको।’

आरुणि पूछलक—‘तूँ ककर आदेश पर जाइत छलह?’ रामलखन पहिने चुप रहल। फेर कहलक—‘कखनो हरिचरण, कखनो मुनीम, कखनो आश्रमक चिट्ठी। मुदा ऊपरक नाम कहियो साफ नहि। सभ कहैत—बाबाक इच्छा।’ सत्यव्रत लिखलनि—‘इच्छाक नामे आदेश।’ ई पंक्ति सहमति-कापी आ सेवा-खाता दुनूमे लावारिस मालिक खोजए लागल।

हरिचरण तिवारी आब धरि छाहमे ठाढ़ छल। जखन रामलखनक कथन ओकर नाम धरि पहुँचलक, ओ गरजल—‘हम केवल संदेश पहुँचबैत छलहुँ।’ मीरा शांत स्वरमे पूछली—‘संदेशमे विकल्प छल?’ हरिचरण अटकि गेल। ‘लोक चाहैत तँ मना करैत।’ कमला तुरन्त कहलक—‘भूख, रोग आ बरखा बीच मना करब विकल्प नहि होइत।’ गाछीमे एक गाढ़ चुप्पी उतरि गेल।

भानु लाल पुरान मुनीमक चिन्हारि पर बोलल। कापीक कई पन्नामे लाउक मुनीमक नाम गवाहक रूपमे छल। भानु लाल कहलक—‘लाउ कहैत छल—जकरा कागचक भाषा नहि

बुझाइ, ओकरा भरोसाक भाषा सुनाउ। भरोसा सँ अंगूठा जल्दी पड़ैत अछि।’ देविका लिखली—‘भरोसाक भाषा सँ अधिकारक हस्तांतरण।’ एहि वाक्य पर महावीरक आँखि फेर उठल—ओहिमे डर नहि, निर्णयक कड़ापन छल।

मिलानक मध्यभागमे एक अजीब अंतर भेटल। किछु नाम एहन छल जे परिवारक लोक कहैत छल—ओ लोक ओहि समय गाममे रहबे नहि करैत छल। एक नाम पर तिथि ओहि दिनक छल जे दिन व्यक्ति शहरक अस्पतालमे मरि चुकल छल। भिखारी लाल कापी पर झुकि कहलक—‘मरल लोकक सहमति?’ चन्ना गाछी लग हवा अचानक ठंढा भऽ गेल।

सत्यव्रत तुरन्त आदेश-जेकाँ नहि, विनती-जेकाँ कहलनि—‘एहि पन्ना पर विशेष चिह्न लगाओ। मृत्यु-तिथि, अनुपस्थिति, आ झूठा गवाह अलग सूचीमे।’ ई पहिल बेर छल जखन कापी केवल दबाव नहि, सीधा जालसाजीक देहरी पर पहुँचि गेल। मीरा जोड़ली—‘जे जीवित पर दबाव डालल गेल, ओ एक अपराध; जे मृतक सँ सहमति लिखाओल गेल, ओ स्मृतिक हत्या।’

बूढ़बा भूतक चर्चा फेर उठल। कियो कहलक जे मृतकक नाम सुनिते ठूँठक छालमे सफेद रेखा चमकल। कियो कहलक जे पोखर दिससँ पानिक गंध आयल। मीरा लोकक कथा रोकली नहि, मुदा बच्चा सभकेँ कहलथि—‘देखल बात अलग, मानल बात अलग, कागचक बात अलग। तीनू लिखू, मिलाउ नहि।’ एहि तरह लोकविश्वासो अनुशासन सीखि रहल छल।

दोपहर धरि सहमति-कापी सँ अठारह नाम मिलाओल गेल। पाँच पर दबाव स्पष्ट, तीन पर चुप्पी केँ वचन बनाओल, दू पर अस्थायी सहायता सँ स्थायी दावा, चार पर पुनरावृत्त गवाह, एक पर मृतकक नाम, आ तीन पर गवाही अधूरी रहल। अनन्या एहि सारांश केँ पाथर पर लिखली। पहिल बेर गाम सत्य केँ संख्या, श्रेणी आ आवाज तीनू रूपमे देखलक।

महावीर पाठक आगाँ बढ़लाह। ओ कहलनि—‘आइ सँ हमर घरक जे कागच एहि जालमे सहायक भेटत, तकर प्रति गामक रजिस्टरमे देल जाएत। मूल पर कानूनक बाट अलग; पर सत्यक प्रति लुकाओल नहि जाएत।’ हरिचरण फुसफुसायल—‘घर बेचि देब?’ महावीर उत्तर देलनि—‘घर झूठ पर बचल रहए, तँ ओ पहिनहि बिकि चुकल।’

सुरमणी देवी एहि घोषणा केँ तुरन्त मर्यादा देलीह—‘कागच सार्वजनिक होएत, मुदा मनुष्य नंगा नहि कएल जाएत। स्त्रीक कथा, रोगक कथा, शरणक राति, भूखक विवरण—ई सभ बिनु अनुमति नहि पढ़ल जाएत। अपराधक पद्धति पढ़ल जाएत, पीड़ाक तमाशा नहि बनत।’ मीरा संतोषसँ माथ हिलेली। ई कथा आब न्यायक संग सभ्यताक परीक्षो बनि गेल छल।

साँझ भेल तँ मिलान अधूरा रहितो दिशा साफ भऽ गेल। साँझक हल्की लाली कोठरीक खिड़कीसँ भीतर आबि कागचक पन्ना पर पसरि गेल, जेना उजास सेहो एहि जाँचमे शामिल होमय चाहैत हो। सहमति-कापी केवल कागच नहि रहल; ओ भूख, रोग, बरखा, दान, कीर्तन, शरण, चुप्पी, अंगूठा, गवाह आ झूठक संयुक्त मशीन सिद्ध भऽ रहल छल। बच्चा सभक रजिस्टरमे नयका शीर्षक बनल—'सहमति-निर्माणक पद्धति।'

कमला ठूँठ लग बैसि नानीक कम्बलक कोर मोड़ैत कहलीह—'नानी शरण लेलीह, खेत नहि छोड़लीह।' एहि एक वाक्यसँ फूलकलीक कथा फेर सँ सीधी भऽ गेल। कैलाश जोड़लक—'पिता दवा लेलनि, मौन नहि।' सकुनी कहलीह—'माय अनाज लेलनि, बाट नहि छोड़लीह।' तीन वाक्य एक साथ गाछीमे गूँजल। ई गूँज निर्णय नहि, पर निर्णयक बीज छल।

जँ चिह्न, गवाह, आ लाभार्थी एकहि वृत्तमे भेटत, तँ जालक केंद्र सोझाँ आएत। ' सत्यव्रत जोड़लनि—'आ केंद्र सोझाँ आएलाक बाद प्रश्न उठत—लाभ ककरा भेटल? '

एहि प्रश्न पर चन्द्रपालक नाम हवामे बिनु उच्चारणक घुमि गेल। कियो ओकरा कहल नहि, मुदा सभ ओकर छाह अनुभव केलक। लाउक मुनीम, हरिचरणक संदेश, रामलखनक समझेनाइ, बटुकनाथक चिह्न—सभ रेखा धीरे-धीरे एक अँधार मध्यबिन्दु दिस मुड़ि रहल छल।

अध्याय एहि ठाम समाप्त भेल जे सहमति-कापीक मिलानसँ पीड़ित परिवार सभ अपन-अपन वाक्य फेर सँ पा लेलक। दवा मौन नहि, अनाज वचन नहि, शरण सीमा-त्याग नहि, कीर्तन गवाही नहि। झूठक कापीमे लिखल शब्द सभक सोझाँ जीवनक असली भाषा ठाढ़ भऽ गेल।

लोकगीत: चोरायल हस्ताक्षर

लोकधुन: गवाही-समदाउन

घुराउ हे मुँह, चोरायल हस्ताक्षरक असल मुँह घुराउ हे,
सहमतिक नाम पर छीनल अधिकार घुराउ हे।

दवा लेलनि, मौन नहि—कैलाश फेर कहलक,
अनाज लेलनि, बाट नहि—सकुनी स्वर धरलक।
शरण लेलीह, खेत नहि—कमला नानी पुकारलक,
झूठक कापी सोझाँ जीवन भाषा धारलक।
अँगूठा अपन छल कि भूख ओकरा चलौलक,

मृत देहक नामपर के हस्ताक्षर बनौलक?
लाल कपड़ा राति भरि पहरामे काँपल,
हरेक परिवारक वाक्य कागचक झूठ नापल।
चोरायल हस्ताक्षर, असल मुँह घुराउ,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—आकाङ्क्षाक परिभाषा: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—कारण "नीलं सरोजम्"—"कमल नील अछि"—सदृश प्रयोगमे नीलत्व आ कमलक अविनाभाव नहि, तथापि पदसभमे आकाङ्क्षा अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। आकाङ्क्षाक परिभाषा।]

अध्याय १५९

मृतकक सहमति

मृतकक सहमति दुनियाक सभसँ सस्ता कागज— आ सभसँ महग अपराध।

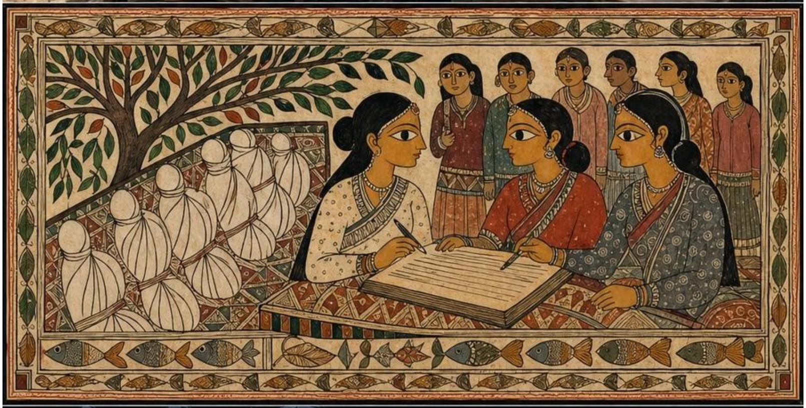

अध्यायारम्भ लोकगीत: अंगूठाक मान

लोकधुन: श्रम-मंगल गीत

लगाउ हे छाप, बुझि कऽ अंगूठा लगाउ हे,
गोल निशान मे सूरुजक मान जगाउ हे।

अंगूठाक गोल निशान खेतक सूरुज समान,
श्रमिकक पूरा सहमति, ओकर पूर्ण पहिचान।
जीवित हाथे छाप दए, बुझि कऽ दए स्वीकृति,
मृतकक नामक रक्षा हो, नहि बनय विकृति।

स्याही लागल अंगूठा कहै—हम उपस्थित छी,
अपन हकक पन्नापर स्वतन्त्र हस्ताक्षर छी।
अंगूठाक मान बचाउ, शिक्षा संग बढ़ाउ,
हरेक श्रमिककेँ अपन कागच खुद पढ़बाक बल दिअ।

जीवित हाथक स्वीकृति, जागल मनक हामी,
मृतकक नाम पर छल—सभसँ पैघ खामी।
स्याही-रंगल आंगुर बाजए—हम उपस्थित,
अक्षर-ज्ञानक दीप संग हक रहए सुरक्षित।

❖

तिथि झूठ नहि बजैत, चाहे कागच किछु कहय। मृत्यु-तिथि आ सहमति-तिथिक बीचक खाई जतय भेटैत छै, ओतय अपराधक शरीर सभसँ साफ देखाइ पड़ैत छै।

अंगूठाक गोलाई एक देहक अन्तिम चिह्न होइत छै। जँ ओ चिह्न देहक मृत्युक बाद कागच पर चढ़ि जाए, तँ ओ चोरी केवल जमीनक नहि, स्मृतिक सेहो होइत छै।

छाह मोहर असली मोहरसँ लगभग एक जेकाँ होइत छै, मुदा 'लगभग' शब्दे भीतर अपराध बसल रहैत छै। छोट टेढ़ापन देखबाक लेल धैर्य आ काँचक तख्ती दुनू चाही।

लाभ ककरा भेटल—ई प्रश्न नामसँ बेसी बजैत छै। जे अपन नाम कहियो नहि लिखैत, ओकर छाह गोदाम, कीन-पत्र, आ मुनीमक हिसाबमे स्वयं चलैत रहैत अछि।

अगिला भोर चन्ना गाछीक ठूँठ लग हवा सामान्य दिनसँ बेसी सावधान छल। पात एको नहि हिलल, जेना गाछी स्वयं साँस रोकि आइक सुनवाई सुनय चाहैत हो। काल्हि सहमति-कापीक मिलानमे जे नाम मृतक, अनुपस्थित आ शरणार्थी रूपमे चिन्हित भेल छल, से सभ आइ अलग कपड़ामे बँधि राखल गेल। लाल कपड़ाक ठाम एहि बेर सफेद कपड़ा छल, कारण मीरा कहली—‘मृतकक नाम पर कालिख नहि, उज्जर सावधानी चाही। जँ हम भूल कएलहुँ, तँ मृतकक स्मृति फेर घायल होएत।’

बच्चा सभ पहिने चुप्पी धारण केलक। अनन्या रजिस्टर खोलि ऊपर लिखली—‘जे बोलि नहि सकैत, तकर तिथि बोलत।’ आरुणि ओहि पंक्तिक नीचाँ जोड़लक—‘जे उपस्थित नहि छल, तकर अनुपस्थिति सेहो गवाही अछि।’ देविका तेसर पंक्ति लिखली—‘मृतकक अंगूठा नहि चलैत; जे चलल, से ककरो जीवित हाथ छल।’ एहि तीन पंक्तिसँ आइक सुनवाईक मर्यादा बनि गेल।

पहिल पन्ना जगदीश महतोक नाम पर खुलल। सहमति-कापीमे तिथि लिखल छल—भादवक अठारहवीं राति, आश्रम-दवा, मौन-सम्मति, सीमा-विवाद स्थगित। मुदा गामक मृत्यु-रजिस्टर, जे मंदिरक पुरान बक्सामे राखल रहैत छल, ओ कहैत छल जे जगदीश महतो सावनक अन्तिम सोमवारक बादहि चलि गेल छलाह। तिथि सभक बीच पूरा बीसम दिनक अन्हार खड़ाल छल।

जगदीशक नाति परमानन्द आगाँ आएल। ओकर हाथमे पीतल गिलास छल, जे मृत्यु-दिनक जलदानमे प्रयोग भेल छल—गिलासक किनार अखनहुँ हलुक कारी पड़ल छल, जेना बरखोंक जल ओहिमे अपन छाप छोड़ि गेल हो। ओ कहलक—‘हम बच्चा रही, मुदा दादा कैँ जल देल गेल दिन मोन अछि। घरमे रोदन छल। भादव अठारहवीं राति तँ घरमे श्राद्धक बासन धोइत छलहुँ। दादा अंगूठा कोना देलथि?’ ई प्रश्न गाछीक ठूँठक जड़ि धरि उतरि गेल।

मीरा परमानन्दक भावनासँ प्रभावित भेलो पर नियम नहि छोड़लथि। ओ मृत्यु-तिथि, श्राद्ध-स्मृति, पड़ोसिक गवाही, आ सहमति-कापीक तिथि चारि खम्भा बना देलीह। ‘एकटा स्मृति सँ निष्कर्ष नहि,’ ओ कहलीह, ‘मुदा चारि मिलि जाए तँ झूठक पएर देखाइ पड़ैत अछि।’ बच्चा सभ ‘मृतक-सहमति प्रथम प्रकरण’ लिखलक।

दोसर पन्ना पर नाम छल—सोना झा। कापी कहैत छल जे ओ स्वयं आश्रम पहुँचलाह आ बटुकनाथक अधिकार-चिह्नक सोझाँ मौन देलनि। मुदा सोना झा ओहि समय काशीमे अपन

बेटाक संग रहलाह; हुनकर बेटा हरिनारायणक पत्र सभ आइ लाओल गेल। पत्रमे तिथि साफ छल—'बाबूजीक पएरक घाव बढ़ल अछि, ओ कतहु जाए सकैत नहि।'

हरिनारायणक पत्र पढ़ैत समय सत्यव्रत मेहताक स्वर धीमा पड़ि गेल। पत्रमे पुत्रक चिन्ता छल, औषधीक खर्च छल, आ घर घुरबाक असमर्थता। सहमति-कापीक पंक्तिमे केवल 'स्वेच्छा' छल। सत्यव्रत कहलनि—'पत्रमे देहक असमर्थता अछि, कापीमे देहक उपस्थिति। ई द्वन्द्व फाइल नहि, अपराध खोलैत अछि।'

तेसर प्रकरण अउर विचित्र छल। मलिकाइन रुक्मिणी देवीक नाम पर सहमति-कापीमे अंगूठा नहि, हस्ताक्षर छल। गामक लोक जानैत छल जे रुक्मिणी देवी पढ़ल-लिखल छलीह, मुदा हुनकर हस्ताक्षर गोल-गोल लिपिमे होइत छल; कापी पर सीधा, कठोर, पुरुष-हाथक रेखा छल। कमला धीरेसँ कहलक—'ई हस्ताक्षर नामक पोशाक पहिरल परछाईं अछि।'

रुक्मिणीक भतीजी शारदा झा एक पुरान चिट्ठी आनलीह। चिट्ठी पर रुक्मिणीक असली हस्ताक्षर छल। बच्चा सभ दुनू हस्ताक्षर काँचक तख्ती पर राखि देखलक। देविका रेखा-दर-रेखा तुलना करैत कहल—'असली हस्ताक्षरमे हाथ काँपैत अछि, पर अक्षर अपन बाट जानैत अछि। कापीवाला हाथ नहि काँपैत, पर अक्षर घर नहि पहुँचैत।'

मीरा कहली—'आब सँ हस्ताक्षरक मिलान लिखित रूपमे अलग राखल जाएत। हम अदालत नहि, मुदा सावधान पाठक छी।' बच्चा सभ असली आ नकल रेखा अलग-अलग नोंदलक।

मध्याह्न धरि मृतक आ अनुपस्थितक सात पन्ना खुलल। चारि ठाम तिथि असंभव, दू ठाम हस्ताक्षर संदिग्ध, एक ठाम गवाह स्वयं ओहि दिन जेलमे बन्द रहल—एहन पुरान नोंद भिखारी लाल अदालतक प्रति सँ लऽ आयल छल। जे गवाह जेलमे छल, से कागच पर आश्रमक बरामदामे उपस्थित लिखल गेल। एहि पर भीड़मे पहिल बेर क्रोधक तीख गंध उठल।

सुरमणी देवी तुरन्त उठि ठाढ़ भेलीह। 'क्रोध राखू, पर हाथ नहि उठाउ,' ओ कहलीह। 'जाल कागच सँ बनल अछि; ओकरा हाथापाई सँ नहि, पढ़नाइ सँ फाड़ू।' महावीर पाठक सेहो आगाँ बढ़लाह। ओ कहलनि—'हमर घरक बक्सामे जे पुरान चिह्नवाला रजिस्टर अछि, ओकरा आइ खोलल जाए।' हरिचरण तिवारीक चेहरा एही वाक्य पर उजड़ि गेल।

बक्सा महावीरक घर सँ लाओल गेल। लकड़ीक बक्सा पर पीतल जड़ल छल, आ पीतलक बीचमे एक छोट चिह्न—तीन रेखा, एक अर्धचन्द्र, आ बीचमे बिन्दु। ई चिह्न सहमति-

कापीक कई पन्नामे लाल मोहरक रूपमे देखल गेल छल। लोक एकाएक फुसफुसाए लागल—‘बाबाक अधिकार-चिह्न।’ मुदा महावीरक आँखिमे गर्व नहि, डरक पारक स्पष्टता छल।

बक्सा खुलल तँ भीतर तीन तरहक कागच भेटल—दान-रजिस्टर, सेवा-खाता, आ ‘अधिकार-सूचना’ नामक पतली पोथी। पोथीक जिल्दसँ पुरान चमड़ाक गंधि उठल, आ ओकर संग किछु सुखायल फूलक पाँखुड़ी सेहो झरि पड़ल—शायद कोनो पूजाक स्मृति। पोथीक पहिल पन्ना पर बटुकनाथ हरिहरनक नाम, दोसर पर हरिचरणक लिखाइ, तेसर पर मुनीमक हिसाब, आ चारिम पन्ना खाली छल। खाली पन्ना सभसँ बेसी बोलैत छल, कारण ओकर बादक पन्ना सभ काटल गेल छल।

अनन्या काटल पन्नाक डंठल देखली। ओ कहलक—‘जे काटल गेल, से भीतरी बात अछि।’ सत्यव्रत पन्नाक किनार छुलैत रहलाह। कटाव ताजा नहि, मुदा बहुत पुरान सेहो नहि छल। ओ लिखलनि—‘दबायल अधिकारक मार्ग: पोथी अपूर्ण।’ मीरा बच्चा सभ कैँ निर्देश देली—‘कटल ठामक संख्या गिनू। खाली जगह सेहो अभिलेख अछि।’

अधिकार-सूचना पोथीक बचल पन्नामे एक वाक्य बारम्बार आबि रहल छल—‘जकरा बाबा अपन चिह्न देथि, से विवादमे मध्यस्थ मानल जाए।’ ई मध्यस्थता सुनबामे शान्ति लगैत छल, मुदा सहमति-कापीक मिलानक बाद ई वाक्य खेत, सीमा, ऋण आ वचनक बीच घुसि अधिकार बनि गेल छल। आरुणि कहलक—‘मध्यस्थ जँ कागच लिखए, तँ ओ पंच नहि, पक्ष बनि जाइत अछि।’

हरिचरण बेचैन भऽ उठल। ओ कहलक—‘ई पुरान रीति छल। गाममे झगड़ा न बढ़ए, ताहि लेल।’ मीरा पूछली—‘रीति मृतकक सहमति लिखैत छल?’ हरिचरण चुप। ‘रीति जेलमे बन्द गवाह कैँ बरामदामे ठाढ़ करैत छल?’ हरिचरणक गला सूखि गेल। ‘रीति शरण कैँ सीमा-त्याग बनबैत छल?’ एहि बेर हरिचरणक आँखि झुकि गेल।

रामलखन सहाय, जे काल्हि अपन भूमिका स्वीकारने छल, आइ फेर काँपैत उठल। ओ कहलक—‘अधिकार-चिह्न लागल पन्ना देखला बाद लोक डरैत छल। हम कहैत रही—बाबाक मोहर अछि, अब बहस कऽ की लाभ? कतेको घरमे हम पन्ना पढ़लो नहि; बस मोहर देखेलहुँ।’ एहि स्वीकार पर सत्यव्रत लिखलनि—‘मोहर पाठक बदला धमकी बनल।’

देविका मोहरक आकृति सहमति-कापी, सेवा-खाता आ अधिकार-सूचना पोथीमे मिलेली। तीनू ठाम एके चिह्न, मुदा तीनू संदर्भ अलग—दान, सेवा, अधिकार। ओ कहलक—‘एके चिह्न

तीन रूप धएने अछि। दानमे करुणा, सेवामे ऋण, अधिकारमे दबाव। ई चिह्नक त्रिवेणी नहि, त्रासदी अछि।' बच्चा सभ ई वाक्य रजिस्टरमे उतारलक।

एहि समय भानु लाल एक पुरान थैली लय आयल। थैलीमे लाउक मुनीमक नकलवाला मोहरदान छल। मोहरदानक भीतर सुखायल लाल रंग, एक लोहेक छाप, आ एक कागच पर अभ्यासक छाप सभ। भानु लाल कहलक—'लाउ कहैत छल—मूल मोहर दूर हो तँ छाह मोहर लगाउ। लोक चिह्न देखैत अछि, हाथ नहि।'

भीड़मे सनसनी पसरि गेल। महावीर पाठक थैली उठाकऽ देखलनि। छाप असली चिह्नसँ बहुत मिलैत छल, पर अर्धचन्द्रक दाहिना कोना अल्प टेढ़ छल। देविका तुरन्त कई पन्ना सँ तुलना केली। मृतकक सहमति वाले तीन पन्नामे वैह टेढ़ कोना छल। अनन्या फुसफुसायल—'मृतक पर छाह मोहर।'

मीरा एहि खोज कैँ तुरन्त संयमित केली। 'एहि क्षण कोनो नाम पर अन्तिम आरोप नहि,' ओ कहलीह। 'हम केवल कहब—कापीक किछु पन्ना पर असली अधिकार-चिह्न नहि, नकल-चिह्नक सम्भावना स्पष्ट।' सत्यव्रत हँसलाह नहि, मुदा हुनकर आँखिमे संतोषक रेखा आयल। गाम सीखि रहल छल जे सत्यक भाषा तीखी हो, पर असावधान नहि।

तखन प्रश्न उठल—छाह मोहरक लाभ ककरा भेटल? भिखारी लाल रेकर्ड-घर सँ आनल पुरान जमीन-नक्शा पसारलक। जे मृतक वा अनुपस्थितक नाम पर सीमा स्थगित भेल छल, ओहि सीमा लग बादमे तीन कीन-पत्र बनल। कीन-पत्रमे क्रेता सीधे चन्द्रपाल नहि, मुदा ओकर भानिज, ओकर मुनीमक साला, आ लाउक साझीदारक नाम छल। रेखा फेर चन्द्रपालक छाह दिस मुड़ल।

आरुणि नक्शा पर लाल सूत तानलक। एक सिरा जगदीश महतो, दोसर सोना झा, तेसर रुक्मिणी देवी, चारिम कीन-पत्रक नया नाम। सूत बीचमे जा कऽ एक बिन्दु पर मिलि रहल छल—पुरान गोदाम, जे चन्द्रपालक व्यापारक अड्डा मानल जाइत छल। कियो चन्द्रपालक नाम जोर सँ नहि लेल, मुदा गाछीक हवा ओकर नाम स्वयं पढ़ि रहल छल।

सुरमणी देवी कहलथि—'छाह पर हाथ धरब कठिन होइत अछि। मुदा छाह ककरा सँ पड़ैत अछि, से देखल जा सकैत अछि।' ई वाक्य सभकैँ समझमे आबि गेल। बच्चा सभ नया शीर्षक लिखलक—'लाभ-सूत्र।' सहमति, मोहर, मृतक, अनुपस्थिति, कीन-पत्र—सभ अलग-अलग तिनका नहि रहल; ओ सभ रस्सीक बटा बनि रहल छल।

हरिचरण आखिरी प्रयत्न कएलक। 'चन्द्रपालक नाम नहि अछि,' ओ कहलक। मीरा उत्तर देली—'अपराधी सदैव अपन नाम लिखए, ई जरूरी नहि। ककरा लाभ, ककरा आदेश, ककरा लोक, ककरा गोदाम—ई चारि प्रश्न नामसँ बेसी काम करैत अछि।' सत्यव्रत जोड़लनि—'प्रत्यक्ष नाम नहि, परोक्ष वृत्त।'

बूढ़बा भूतक परछाईं साँझक धुँआमे फेर झिलमिलायल। कियो देखलक जे ठूँठक छाल पर तीन रेखा, अर्धचन्द्र आ बिन्दु एक क्षण लेल उनटा लिखल गेल। कियो कहलक—गाछी मोहर कैँ उलटि रहल अछि। मीरा लोकक भय कैँ कथा बनए देली, मुदा रजिस्टरमे लिखल गेल—'लोक-दृष्टि: चिह्नक उलटाव।' ई लोकविश्वास आब जाँचक संग चलैत छल, ओकर बदला नहि बनैत।

साँझ धरि मृतक-सहमति सूचीमे नौ पन्ना आएल। तीन पर नकल-चिह्न, दू पर असंभव तिथि, दू पर अनुपस्थित देह, एक पर झूठा गवाह, आ एक पर कटलकागचक छाह। मीरा एहि सारांशक बाद कहली—'आब प्रश्न केवल बटुकनाथक चिह्नक नहि, चिह्नक चोरीक अछि। जे धर्मक मोहर चोरेल, ओ न्याय, स्मृति आ मृतकक गरिमो चोरेल।'

महावीर पाठक अपन माथ झुका कऽ कहला—'हमर घरक चिह्न जँ अपराधक औजार बनल, तँ घरक पहिल काम ओकरा लोक-सोझाँ खोलब अछि।' ओ बक्सा बन्द नहि केलनि; उलटे ओहि पर लाल-सफेद दू धागा बाँधि ठूँठ लग राखि देलनि। 'जखन धरि जाँच पूरा नहि, ई बक्सा गाछीक पहरामे रहत,' ओ घोषणा केलनि। हरिचरणक चेहरा राख जेकाँ भऽ गेल।

कमला धीरेसँ कहलीह—'नानी शरण लेलीह, मुदा नकल मोहर हुनकर खेत निगलय चाहलक।' कैलाश जोड़लक—'दादा मरि गेल छलाह, पर हुनकर अंगूठा जीवित कएल गेल।' सकुनी कहलीह—'मायक चुप्पी वचन बनल, मृतकक मौन सहमति।' तीनू वाक्य आइक निष्कर्ष बनि गाछीक चारूकात घुमि गेल।

कीन-पत्र, मुनीमक बही, लाउक साझेदारी, आ चन्द्रपालक व्यापारक पुरान हिसाब मिलाओल जाएत। जँ मृतकक सहमति सँ बनल बाट गोदाम धरि पहुँचैत अछि, तँ छाह मालिकक चेहरा देखए पड़त। '

अध्याय एहि ठाम समाप्त भेल जे मृतकक नाम फेर सँ मृतक रहल, झूठक कागचमे जीवित कठपुतली नहि। अधिकार-चिह्नक उज्जर आवरण फाटि भीतर नकल-मोहरक लाल दाग देखाइ पड़ल। सहमति-कापीक पन्ना सभ आब केवल पीड़ाक सूची नहि रहल; ओ सभ लाभक राह देखबैत नक्शा बनि गेल।

लोकगीत: मृतकक अंगूठा

लोकधुन: मृत्यु-विलाप

नहि हे सहमति, मृतकक मौन सहमति नहि हे,
पुरखाक नाम उज्जर—अपराधीक मोहर सही हे।

मृतकक अंगूठा रातिमे कोना चलल,
जकर साँस रुकल, ओकर सहमति के लिखल?
उज्जर कपड़ामे नाम, लाल दाग भीतर,
असंभव तिथि कानै, नकल-मोहर काँपै निरन्तर।
नानी शरण लेलीह, खेत नहि छोड़लीह,

दादा मरि गेलाह, अँगूठा नहि जोड़लीह।
मौनकेँ वचन बनौलक जीवित चोरक हाथ,
मृतककेँ कठपुतली कऽ बनौलक लाभक बाट।
हे पुरखा, आब तोहर मौन सहमति नहि,
तोहर नाम उज्जर, अपराधीक मोहर सही।

उज्जर कपड़ा मे नाम, भीतर लाल दाग दिखल।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—शब्दानित्यताक निर्णायक सिद्धान्त: तोता, मैना, आन पशु-पक्षी, पुरुष, स्त्री आ अन्य व्यक्तिद्वारा उत्पन्न ध्वनिमे स्वभावतः स्पष्ट भेद अनुभव होइत अछि—जेना ईखक रस आ दूधक मधुरतामे भेद। शब्दानित्यताक निर्णायक सिद्धान्त।]

अध्याय १६०

गोदामक छाया

गोदाम जखन खुजै छै, तखन व्यापार नहि— छाया-न्यायक पेट देखाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: गोदाम खुलल, हिसाब उजियार

लोकधुन: मजदूर झूमरक उत्सवी चाल

खोलू हे गोदाम, सूरुजक आगाँ खोलू हे,
बोरा-बोरा हिसाबकेँ जन-आँखिसँ तौलू हे।
गोदामक दुआर खुलल, सूरुज भीतर आयल,
कागच, बोरा, मोहर सभ साफ-साफ देखायल।
जेकर वस्तु ओकर नाम, जेकर श्रम ओकर दाम,
हिसाबक प्रत्येक पाँतिमे रहय पूरा चिन्हारि।
मजदूर झूमर गाबि कहै—खुलल रहय भंडार,
चोरीक छाह टिकत नहि जखन जन पहरादार।
गोदाम पेट नहि आब, जन-लेखाक घर,
उज्जर हिसाबसँ फुलत विश्वासक नगर।
जेकर श्रम तेकर दाम, जेकर माल तेकर नाम,
खुलल पाँति-पाँति लेखा, चोरीक छाह नाकाम।
झूमरक ताल पर नाचय बोरा-तराजू-मोहर,
जन-पहराक अँजोरमे विश्वासक नगर।

❖

बूढ़ सभ कहै छै, जे कोठरी मे कागच बेसी दिन बन्द रहै छै, ओहि कोठरीक हवा कागचे-सन गन्धाय लगै छै। धानक बोरा मे धान रहै छै, मुदा ओकर पाछाँ जे पेटी नुकाओल रहै छै, तइ मे धान नै रहै छै—तइ मे ककरो अँगूठा रहै छै। अँगूठा जकर देह ने रहलै, ओकर सहमति के गढ़लकै?

ताला केँ लोक भरोसाक चिन्ह बुझै छै। मुदा साधारण ताला ओहि ठाम लगै छै जतय ताला नै, डर पहरा दै छै। जकर पहरा डर करै छै, ओकरा मोटगर लोहाक कोन काज? आ जहिया डर छूटि जाइए, तहिया साधारण चाबियो एकटा जुग खोलि दै छै।

मोहर आ नकल-मोहर मे फरक ओतबे छै जतबे साँस आ नकल-साँस मे। साँस देह सँ जन्मै छै; नकल-साँस हिसाब सँ। मुदा नकल अपन जन्मचिन्ह सदिखन संग नेने चलै छै—अर्धचन्द्रक टेढ़ कोन, स्याहीक बेसी दाब, हाथक थकान। चोर ओकरा मेटा नै सकै छै, किएक तँ ओ ओकर हाथेक कम्प छिऐ।

आ जहिया गोदामक दुआर खुजै छै, तहिया लोक माल नै गनै छै—लोक नाम गनै छै। कतेक नाम बही मे, कतेक नाम माटि मे, कतेक नाम खाली कागच पर पहिनहि मोहर लागल प्रतीक्षा मे। सूरुज भीतर पैसै छै तँ बोरा नै चमकै छै, बोरा-सभक पाछाँक छाह चमकै छै।

पुरखाक मौन सहमति नहि—ई पाँति राति भरि गाममे गूँजैत रहल, आ अगिला सबेर लाल-सफेद धागासँ बँधल बटुकनाथक बक्सा चन्ना गाछीक ठूँठ लग राखल रहल। राति भरि हवा ओहि बक्साक चारू कात पहरा दैत रहल छल, जेना भीतर कागच नहि, मुँह बन्द कएल लोक सभ साँस लऽ रहल हो। मीरा पहिने बक्सा कैँ प्रणाम नहि, सावधानी देलथि। ओ कहलीह—‘आइ हम चिन्हक पूजा नहि, चिन्हक उपयोगक हिसाब देखब।’

लाभ-सूत्रक लाल सूत काल्हि जगदीश, सोना, रुक्मिणी आ आन मृतक-सहमति पन्ना सभसँ निकलि एके बिन्दु पर मिलल छल—चन्द्रपालक पुरान गोदाम। गोदाम बाजारक पाछाँ, सूखल पोखरिक किनार, आधा ईंटा, आधा लोहाक चादर आ पूरा भयसँ बनल जगह छल। लोक ओकरा व्यापारक अड्डा कहैत, मुदा गरीब किसानक मनमे ओहि ठामक नाम छल—‘कागच निगलनिहार कोठरी।’

अनन्या रजिस्टर उठौलक। पहिल पृष्ठ पर शीर्षक लिखल गेल—‘गोदाम-मिलान’। आरुणि ओकर नीचाँ चारि प्रश्न लिखलक—‘ककरा लाभ? ककरा आदेश? ककरा लोक? ककरा वस्तु?’ देविका पाँचम पंक्ति जोड़लक—‘ककरा नाम नहि, मुदा ककरा छाह?’ ई पाँच प्रश्न आइक यात्रा बनि गेल।

मीरा स्पष्ट कहलीह—‘हम भीड़ बनि नहि जाएब। दस लोक भीतर जाएत, बाकी बाहर प्रतीक्षा करत। जे कागच भेटत, ओकर क्रम लिखल जाएत। जे वस्तु भेटत, ओकर स्थान। जे नाम भेटत, ओकर संदर्भ। कोनो वस्तु चोरि नहि, कोनो आरोप बिनु मिलान नहि।’ एहि नियमसँ क्रोधक आगि थोड़ेक थामल, मुदा लोकक आँखि एखनहुँ धधकि रहल छल।

सत्यव्रत मेहता, सुरमणी देवी, महावीर पाठक, मीरा, अनन्या, आरुणि, देविका, भिखारी लाल, रामलखन सहाय आ परमानन्द गोदाम दिस चलल। बूढ़ मुवक्किल सेहो संग चलबाक जिद्द कएलक, मुदा मीरा हुनका बाहरक साक्षी बनौलनि। ‘जतय भीतरक डर बढ़त, बाहरक आँखि हमरा बचाओत,’ ओ कहलीह।

गोदामक फाटक पर मोटगर ताला नहि छल; ताला साधारण छल, मुदा चारूकात चुप्पीक पहरा भारी। भिखारी लाल अदालतक चाबीसँ ताला नहि खोलि सकल। लाउक पुरान नौकर धीरू, जे काल्हि धरि भीड़मे चुप रहल छल, आगाँ आयल। ओकर कमरमे छोट चाबी बँधल

छल। ओ काँपैत कहलक—‘ई चाबी हमरा राखबाक कहल गेल छल। कहब छल—कागचक ठाम पर चूहा नहि जाए।’

मीरा ओकरा रोकलथि—‘तोहर बयान लिखल जाएत। चाबी खोल, मुदा पहिने कह—ककर आदेश?’ धीरू धीमे स्वरमे कहलक—‘लाउ मालिक कहने छलाह। लाउ कहैत छलाह, चन्द्रपाल बाबूक माल अछि, पर देखभाल हमर।’ ई पहिल वाक्य रहल जे गोदामक फाटक पर चन्द्रपालक छाह कैँ आवाज देलक। अनन्या तुरन्त लिखली—‘चाबी-श्रृंखला: लाउ मार्फत चन्द्रपाल।’

दरबाजा खुजिते भीतरसँ नमी आ पुरान गुड़िया-तेलक मिश्रित गंध आयल—सड़ल जूट, ठण्ढा लोहा आ बरखो-बरखक बन्द साँसक एहन गन्ध, जे नाकसँ पहिने कण्ठमे बैसि जाइत अछि। धानक बोरा, लोहाक संदूक, टूटल तराजू, अधजड़ल खाता-बही, लकड़ीक पेटी, लाल मोहरक डिब्बा, आ देबाल पर टाँगल पुरान नक्शा—सभ एकहि बेर आँखि पर चढ़ल। ई व्यापारक गोदाम कम, व्यवस्था द्वारा जमा कएल मौनक भंडार बेसी छल।

सभसँ पहिने देविका देबालक नक्शा दिस गेली। नक्शा पर खेतक सीमा सभ लाल, नील, कारी आ पीयर रेखासँ बनल छल। किछु रेखा पर क्रॉस, किछु पर बिन्दु, किछु पर तीन रेखा-अर्धचन्द्र-बिन्दु चिन्ह। आरुणि काल्हिक लाल सूत पसारलक। आश्चर्य—सूतक बिन्दु सभ देबालक नक्शाक निशानसँ मिलि रहल छल।

सत्यव्रत मेहता बहुत काल धरि नक्शा ताकलनि। ओ कहलनि—‘एहि नक्शामे राजस्वक रेखा नहि, लालचक रेखा अछि।’ भिखारी लाल अदालतक प्रतिसँ आनल जमीन-नक्शा खोललक। दुनू नक्शामे मूल सीमा अलग छल। गोदामक नक्शामे मृतक आ अनुपस्थितक जमीन पसारि कऽ तीन नब नामक भीतर समेटल गेल छल।

महावीर पाठकक मुँह सख्त भऽ गेल। ओ देखलनि जे हुनकर घरक अधिकार-चिन्ह गोदामक नक्शा पर खेतक किनार नहि, कब्जाक मोड़ पर लगाओल गेल छल। ओ फुसफुसा उठलाह—‘बाबाक मोहर खेतक दुख कम करबाक लेल छल, खेत बदलबाक लेल नहि।’ सुरमणी देवी उत्तर देलथि—‘जे मोहर दुख कम करबाक नाम पर सीमा बदलए, से मोहर नहि, गोहिक दाँत अछि।’

लोहाक पहिल संदूक खोलल गेल। भीतर बही सभ राखल छल—‘धान आगमन’, ‘कर्ज खाता’, ‘उधार सेवा’, ‘मध्यस्थ खर्च’, ‘दान-व्यय’। प्रत्येक बहीक आरम्भ साधारण व्यापार जेकाँ, मुदा बीचक पन्ना सभमे नामक संग खेतक टुकड़ा, सीमा-विवाद, सहमति-कापी पृष्ठ-

संख्या आ मोहरक प्रकार लिखल भेटल। देविका धीरेसँ पढ़ली—‘छाह मोहर: खर्च समायोजित।’

ई शब्द सुनिते रामलखन सहाय पसीनासँ भीजि गेल। ‘छाह मोहर’ से केवल लोकक अनुमान नहि, बहीक भाषा छल। अनन्या बहीक पृष्ठ-संख्या, तिथि, नाम आ टिप्पणी अलग तालिकामे लिखए लागली। ओ बेर-बेर कहैत छली—‘मूल पन्ना जथावत रहत। प्रतिलिपि बनत। हाथ साफ राखू।’ बच्चा सभ आब कागचक पहरुआसँ अभिलेखक शिल्पी बनि रहल छल।

एक पन्ना पर जगदीश महतो नामक सोझाँ लिखल छल—‘मृतक बाद सेवा; परिवार शिथिल; सीमा रोकू; बादमे हस्तांतरण।’ परमानन्द ई पढ़िते काँपि उठल। ओकर पीतल गिलास हाथसँ खनकैत जमीन पर खसल। ओ चिचियायल नहि। बस एतबे कहलक—‘दादाक मरल देह कैँ एतय सेवा कहल गेल।’ ई वाक्य गोदामक ईंटामे धँसि गेल।

सोना झाक नाम पर बही कहैत छल—‘दूर-निवास; पुत्रक खर्च; कागच जल्दी।’ रुक्मिणी देवीक नाम पर—‘हस्ताक्षर कठिन; अभ्यास तीन बेर; सफल चारिम।’ शारदा झा, जे बाहर प्रतीक्षा करैत छलीह, ई सुनि भीतर आबय चाहलीह, मुदा मीरा हुनका रोकि बाहरसँ बयान लिखौलनि। ‘दुख भीतर घुसि कागच नहि बिगाड़त,’ ओ कहलीह, ‘दुख बाहर रहि कागच कैँ अर्थ देत।’

दोसर संदूकमे मोहरदान सभ छल। एक असली, दू नकल, आ तीन अधूरा छाप। लोहाक छापक अर्धचन्द्रक दहिना कोन टेढ़ छल—ठीक ओही जेकाँ काल्हि मृतक-सहमति पन्नामे देखल गेल छल। भिखारी लाल पहिल बेर बिनु डर कहलक—‘ई चीज अदालतक मालखानामे रहबाक चाही।’ सत्यव्रत उत्तर देलनि—‘पहिने लोक-सूचीमे, फेर विधि-सूचीमे।’

मीरा छाप कैँ कपड़ामे लपेटबाक लेल कहलीह, मुदा ओहिसँ पहिने देविका कागच पर ओकर स्पष्ट छाह उतारली। तीन छापक तुलना बनल—असली, नकल, मृतक-पन्ना। आरुणि तीनू रेखा पर सूक्ष्म बिन्दु चिन्हित केलक। ओ कहलक—‘नकल केवल रूप नकल करैत अछि; त्रुटि ओकर जन्मचिन्ह बनि रहैत अछि।’

एहि बीच धीरू नौकर एक कोन दिस इशारा केलक। ओतय धानक पुरान बोरा सभक पाछाँ एक लकड़ीक पेटी आधा दबल छल। पेटी पर कोनो नाम नहि, मुदा भीतर कागचक गंध तीखी। पेटी खुजिते ढेरो कटल पन्ना, अभ्यास हस्ताक्षर, खाली कागच पर पहिनहिसँ लगाओल मोहर, आ किछु अंगूठा-निशानवाला पट्टी भेटल। मीरा आँखि मूनि लेलीह।

पट्टी सभ पर सूखल स्याहीक दाग छल। किछु पर गरीबक नाम, किछु पर केवल ‘बूढ़’, ‘विधवा’, ‘दूर’, ‘मृत’, ‘बीमार’ जेकाँ शब्द। सुरमणी देवीक स्वर कठोर भऽ उठल—‘एतय मनुष्य नामसँ सेहो घटा देल गेल। बूढ़, विधवा, दूर—ई चिन्हारि नहि, शिकारक श्रेणी बनाओल गेल।’

अनन्या रजिस्टरमे नब शीर्षक लिखली—‘शिकार-श्रेणी’। आरुणि जोड़लक—‘जे वर्गीकरण दया नहि, दमनक सुविधा देत, से अपराधक भाषा अछि।’ एहि पाँति पर सत्यव्रत हुनका ताकलनि। बच्चाक भाषा आब कानूनक कोरापनसँ आगाँ जा रहल छल; ओ देह, भय, लाभ आ कागचक संयुक्त व्याकरण बना रहल छल।

तखन गोदामक पाछाँक छोट कोठरी खुजल। ओहि कोठरीमे एक लोहाक टेबिल, टूटल कुर्सी, लालटेन, आ देबाल पर कीलमे टाँगल पुरान कोट छल। कोटक जेबमे एक कागच भेटल—आधा जड़ल, मुदा नाम स्पष्ट—‘चन्द्रपाल बाबूक मौखिक निर्देश: पन्ना बाहर नहि जाए।’ नीचाँ लाउक छोट हस्ताक्षर, आ तारीख सहमति-कापीक सभसँ घन समयक।

ई कागच सुनिते भीतरक हवा भारी भऽ गेल। मीरा फेर संयम राखलथि। ‘मौखिक निर्देशक लिखित स्मरण,’ ओ कहलीह, ‘एहिमे चन्द्रपालक सीधा हस्ताक्षर नहि, पर निर्देशक स्वीकार अछि।’ सत्यव्रत जोड़लनि—‘छाह आब देबाल पर नहि, कागच पर पड़ल अछि।’ महावीर पाठक चुपचाप जमीन पर बैसि गेलाह।

बाहर भीड़ बेचैन छल। अफवाह पसरि सकैत छल, हिंसा भड़कि सकैत छल। मीरा बाहर आबि सभकेँ केवल एतबे कहलथि—‘गोदाममे मिलान योग्य सामग्री भेटल अछि। अन्तिम घोषणा नहि, पर लाभ-सूत्र मजबूत भेल अछि।’ ई सुनि लोकक बीच एक धीमा गर्जन उठल। बूढ़ मुवक्किल कहलक—‘आइ गोदाम खुजल; काल्हि ककर छाती खुजत?’

हरिचरण तिवारी, जे दूरसँ सभ देखैत छल, धीरे-धीरे पाछाँ हटए लागल। ओकर मुँह पर डरसँ बेसी गणना छल—कतेक नाम बाँचत, कतेक पन्ना बचत, ककरा बचाओल जा सकत? मुदा सकुनी ओकरा देखि लेलक। ओ चुपचाप कहलक—‘जे पाछाँ हटैत अछि, ओ सदिखन निर्दोष नहि होइत; कतेको बेर ओ अपन पएरक निशान मेटबैत अछि।’

धीरू नौकरक दोसर बयान लिखल गेल। ओ बतौलक जे कतेको राति लाउ आ चन्द्रपालक लोक सभ गोदाममे बैसैत छलाह। पहिने दानक बात, फेर सीमा, फेर ऋण, फेर मध्यस्थ खर्च। ‘हमरा चाह देबाक कहल जाइत। भीतर हँसी होइत, बाहर लोक कानैत।’ एहि वाक्य पर देविका रजिस्टरमे लिखली—‘हँसी भीतर, रोदन बाहर: गोदामक नैतिक नक्शा।’

रामलखन सहाय सेहो टूटल। ओ स्वीकारलक जे कतेको पन्ना ओकरा पढ़ाए बिनु 'बुझा देल' गेल। 'मोहर देखाबी, लोक मानि लेत,' लाउ कहैत छलाह। 'जे नहि मानत, ओकर ऋणक बही देखाउ।' एहिसँ स्पष्ट भेल जे सहमति केवल आध्यात्मिक दबाव नहि, आर्थिक फान्दो छल। कर्ज, सेवा, दान, मोहर—चारू रस्सी एके गला पर कसैत छल।

सत्यव्रत मेहता पहिल बेर आइ खुल्लमखुल्ला काँपि रहल छलाह। हुनका अपन पुरान मौनक बोझ फेर मोनमे उठल। ओ कहलनि—'हम कानूनक बरामदामे जे नहि सुनलहुँ, से ई गोदाम सुनैत रहल। गोदाम अपराधक कान छल।' मीरा हुनका रोकलथि नहि। किछु स्वीकारोक्ति विधान बनि नहि सकैत, मुदा लोकस्मृतिमे उपचार बनैत अछि।

साँझ धरि सामग्रीक प्राथमिक सूची बनल—देबाल नक्शा, तीन नकल-छाप, छाह मोहर खर्च-नोंद, मृतक-सहमतिसँ जुड़ल बही, अभ्यास हस्ताक्षर, खाली मोहरदार कागच, अंगूठा पट्टी, लाउक हस्ताक्षरवाला मौखिक निर्देश-स्मरण, आ कर्ज-सहमति जोड़निहार हिसाब। ई सूची चन्ना गाछी लग पढ़ल गेल। प्रत्येक वस्तु पर लोक 'हँ' नहि, 'सुनलहुँ' कहैत गेल—किएक तँ सत्यकेँ भीड़ नहि, श्रवण चाही।

महावीर पाठक घोषणा केलनि—'हमर घरक चिन्ह आब ककरो निजी डर नहि रहत। ओकर सार्वजनिक लेखा बनत।' ओ बक्सा, असली मोहर आ नकल-छाप सभ अलग-अलग कपड़ामे बाँधि मीरा केँ सौंपलनि। सुरमणी देवी कहलीह—'मोहरक पवित्रता ओकर पूजासँ नहि, ओकर दुरुपयोग उजागर करबासँ बाँचत।'

ओहि क्षण चन्ना गाछीक ठूँठक छाल पर बरखा बिनु नमी चमकल। लोक कहलक—गाछी कानि रहल अछि। कियो कहलक—गोहि पानिमे पूछार हिलबय लागल। कियो कहलक—कारी भूत आ उज्जर प्रेत दुनू गोदामक छाह केँ घेरि रहल अछि। मीरा एहि लोक-कथन केँ मेटौलनि नहि। ओ लिखौलनि—'लोक-दृष्टि: वस्तु भेटला बाद प्रतीक जागल।'

राति होइत-होइत चन्द्रपालक नाम पहिल बेर गाममे डरक जगह प्रश्न बनि उच्चरित भेल। 'चन्द्रपाल कतऽ अछि?' कियो कहल। 'ककरा पाछाँ नुकाएल अछि?' दोसर जोड़लक। 'नाम नहि, लाभ देखू,' आरुणि स्मरण करौलक। बच्चा सभ बुझि गेल—अपराधीक मुँह बेसीकाल अन्तिममे भेटैत अछि; पहिने ओकर छाह, ओकर लाभ, ओकर लोक, ओकर कागच पकड़ए पड़ैत अछि।

अध्याय एहि ठाम समाप्त भेल जे गोदाम आब व्यापारक घर नहि, छाह-न्यायक खुजल पेट बनि गेल। मृतकक सहमति, नकल मोहर, कर्ज-बही, अभ्यास हस्ताक्षर आ मौखिक निर्देश— सभ मिलि कऽ एहन राह बना देलक जे चन्द्रपालक दरबाजा दिस जाइत छल।

लोकगीत: गोदामक खुजल पेट

लोकधुन: मजदूर झूमर

कहू हे गोदाम, अपन मालिकक मुँह कहू हे,
जकर पेट मृतकसँ भरल, ओकर हिसाब सहू हे।
कागच निगलनिहार कोठरीक मुँह खुजल,
बही, नकल-छाप, अँगूठा-पट्टी सभ उगल।
मृतकक सहमतिसँ लाभक डोरी गेल,
चन्द्रपालक गोदाम धरि छाह स्पष्ट भेल।
कीन-पत्र कानल, अभ्यास हस्ताक्षर काँपल,
मजदूरक कर्जक नाम पर खेतक सीमा नापल।
लोक 'हँ' नहि, 'सुनलहुँ' कहि भार उठेलक,
गाछीक नमीमे प्रतीक फेर आँखि खोललक।
गोदाम, अपन मालिकक मुँह आब कहू,
जकर पेट भरल मृतकसँ, ओकर हिसाब सहू।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—गाय शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि: मुदा "कलायम् पचति" मे कलाय पूर्वप्रत्यक्षसँ स्मृत होएत, अथवा "द्वारं पिधेहि" मे दुआरक ज्ञान आन स्रोतसँ होएत, तखनो सम्बन्धबोध सम्भव अछि; तें कमल कैं पङ्कजक शब्दार्थ मानब आवश्यक नहि। "गाय" शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि।]

अध्याय १६१

फोनक कैद

फोन जकरा कैद केलक, तकरा कोनो जमानत नहि— जाधरि आवाजक मालिक नहि पकड़ाए।

अध्यायारम्भ लोकगीत: बोलू, संगमे सभ छी

लोकधुन: सामूहिक जागरण गीत

बोलू हे बोलू, संगमे सभ छी—बोलू हे,
'ककरो नहि कहू'क ताला स्वरसँ खोलू हे।
'ककरो नहि कहू'क ताला स्वर मिलिते टूटय,
एक कण्ठसँ दोसर कण्ठ धरि साहस-पानि छूटय।
बहिनि, भाय, पड़ोसी सभ गोल घेरा बनाउ,
डरक बात अकेले नहि, संग-संग सुनाउ।
जतय दस कान जागल, छल ओतय टिकत नहि,
नामसँ नाम जुड़ल रहत, कियो अकेल पड़त नहि।
बोलू धीरे, बोलू साफ, साँचक लय पकड़ू,
संगमे सभ छी—एहि मन्त्रसँ अन्हार फोड़ू।
एक कण्ठक धीमा स्वर, दस कण्ठक धार,
फुसफुसीक डर पघिलय, खुजय बन्द दुआर।
बहिनि-भाय-पड़ोसीक गोल घेरा साजू,
अकेलापनक अन्हार पर संगक ढोल बाजू।

❖

बूढ़ सभ कहै छै जे डर तीन प्रकारक होइ छै—जे देह पर अबै छै, जे घर पर अबै छै, आ जे नाम पर अबै छै। पहिल दुनू सँ लोक भागि सकै छै। तेसर सँ लोक भागै नै छै, ओ चुप भऽ जाइए। आ चुप्पी ठगक सभ सँ सस्ता कोठरी छिऐ।

'ककरो नहि कहू'—ई चारि शब्द कोनो ताला सँ मजगूत छै। किएक तँ ताला तँ बाहर सँ लगै छै, ई भीतर सँ लगै छै। जे लोक अकेला अछि, तकरा डरेबा लेल पिस्तौल नै चाही; तकरा लेल एकटा भारी स्वर आ थोड़ेक-सन सही जानकारी बहुत छै।

आवाजक सेहो मोहर होइ छै। जेना लोहाक मोहर कागच पर पड़ै छै, तहिना स्वरक मोहर कान पर पड़ै छै—अदालतक स्वर, पुलिसक स्वर, बैंकक स्वर। ठग मोहर बनबै नै छै, ठग स्वर बनबै छै; आ स्वरक नकल कैँ पकड़बा लेल कोनो छाप-मिलान नै, केवल प्रश्न चाही।

तेँ गाम एक बात सिखलक—घण्टी बाजय तँ अकेले नै उठाउ। दस कान संग रहय। जे डर दस कान लग बाजल जाइए, ओ डर आधा भऽ जाइए; आ जे डर कोठरी मे बन्द रहै छै, ओ राति-राति भरि पैघ होइत रहै छै।

'

ककरो नहि कहू'क बदला 'सभकेँ कहू'—ई पाँति गोदाम खुजलाक बादक साँझमे गूँजल छल, आ गोदामक छाह खुजलाक बाद गाममे दू दिन धरि चन्द्रपालक नाम हवामे तैरैत रहल। कियो ओकरा सोझे नहि देखलक, मुदा प्रत्येक मोड़ पर ओकर अभाव उपस्थित छल। जेना कोनो लोक घर छोड़ि भागि गेल हो, आ ओकर चप्पल दरबाजा पर रहि गेल हो। चन्ना गाछीक ठूँठ लग राखल सूची पर लोक बेर-बेर आबि ठाढ़ होइत, नाम पढ़ैत, फेर चुपचाप घुरि जाइत। नाम आब डर नहि, दिशा बनि रहल छल।

मीरा सबेरे रजिस्टरक नब पृष्ठ खोललथि। ऊपर लिखल गेल—'कागचसँ आगाँक गोहि'। अनन्या पूछली—'कागचसँ आगाँ?' मीरा उत्तर देलथि—'जे गोहि पहिने खेतक सीमा चिबैत छल, ओ आब आवाज, डर आ संख्या चिबैत अछि। गोदाममे ओकर पुरान दाँत भेटल; आब ओकर नब दाँत खोजबाक अछि।'

ओही समय बूढ़ मुवक्किल हाँफैत-हाँफैत पहुँचल। ओकर मुँह काल्हिक बरामदा-पाठक बूढ़ जेकाँ नहि, आइ भुक्खल पक्षी जेकाँ काँपैत छल। हाथमे ओकर पुरान बटनवाला फोन छल, आ आँखिमे एहन भय जेना न्यायालयक नोटिस नहि, मृत्यु-सूचना सुनि आयल हो। ओ बस एतबे कहलक—'हमरा फोनमे कैद कऽ लेल गेल।'

लोक पहिने बुझि नहि सकल। कैद तँ कोठरीमे होइत अछि, फोनमे कोना? बूढ़ मुवक्किल काँपैत स्वरमे बतौलक—राति ओकरा फोन आयल। आवाज कहलक—'तोहर नाम एक पैघ अपराधमे अछि। पुलिस, अदालत, बैंक सभ देखैत अछि। घरसँ बाहर नहि निकलू। फोन काटलहुँ तँ तुरन्त गिरफ्तारी।' ओकरा कहल गेल जे ओ 'नजरबन्द' अछि।

अनन्या तुरन्त लिखली—'फोनक नजरबन्दी'। आरुणि जोड़लक—'जे कैद देह नहि घेरैत, मुदा मन केँ घेरि लैत, ओकर ताला भय अछि।' ई पाँति सुनि चन्ना गाछीक ठूँठ लग ठाढ़ लोक सभकेँ बुझाइ पड़ल जे गोदामक ताला लोहाक छल, मुदा ई ताला आवाजक अछि।

बूढ़ कहैत गेल—आवाज ओकरा अपन नाम, ओकर बेटाक नाम, मुकदमाक संख्या, बैंकक शाखा, खेतक पुरान विवाद, आ ओहि बरामदाक तारीख-पाठ धरि बतौलक। 'हमरा लगल जे सरकारी लोक अछि,' ओ कहलक। 'हमरा कहलक जे अदालतक रद्दी बोरासँ तोहर नाम भेटल, आब जाँच चलत।' ई सुनिते मीरा एकदम सतर्क भऽ गेलीह।

देविका धीरेसँ कहली—'रद्दी बोराक गवाही आब फोनक फान्द बनि गेल।' सत्यव्रत मेहता दूरसँ आबि रहल छलाह; ई बात सुनि हुनकर पएर रुकि गेल। जे सामग्री काल्हि लोक-सूचीमे

आयल छल, ओकर समाचार ककरा-ककरा धरि पहुँचल? कोना? कोन कान सभ गामक भीतर लागल अछि?

बूढ़क फोनमे रातिक आवाजक अंश बाँचल छल। ओकर पोता, जे शहरमे पढ़ैत छल, डरसँ फोन काटि नहि सकल, मुदा बीचमे दोसर छोट यन्त्र लगाकऽ आवाज रिकार्ड कऽ लेने छल। रिकार्ड सुनल गेल। आवाज चिकन, आदेशपूर्ण, आ विचित्र रूपेँ आत्मविश्वासी छल—'तूँ अदालती निगरानीमे छी। तोहर खाता सुरक्षित करबाक लेल तुरन्त रकम सुरक्षित खातामे पठाउ।'

'सुरक्षित खाता?' आरुणि फुसफुसायल। 'असुरक्षित मनुष्यसँ सुरक्षित रकम माँगब—ई ठगीक पहिल चाल।' मीरा आवाज रोकलथि नहि; ओ पूरा सुनब चाहैत छलीह। आवाज कहैत रहल जे जँ रकम नहि देल गेल तँ घर सील, बेटा गिरफ्तार, मुकदमा तेज, आ समाचारमे नाम छापल जाएत।

सुरमणी देवीक मुँह कठोर भऽ उठल। 'ई गोहि आब देह नहि, इज्जत चिबय लागल अछि,' ओ कहलीह। बूढ़ मुवक्किल अपन गमछासँ आँखि पोछलक। ओकरा हत्यासँ नहि, बदनामीसँ डेराओल गेल छल। भयक नब बाजारमे देहक बाद नाम, आ नामक बाद खाता बेचल जा रहल छल।

मीरा बूढ़सँ पूछलथि—'रकम गेल?' बूढ़ चुप रहल। ओकर पोता उत्तर देलक—'आधा रकम गेल। बाकी पठाबय लेल हमरा कहल गेल जे बैंक जाउ, पर ककरो नहि कहू। दादा काँपि रहल छलाह। हम भोरमे एहि सभकेँ रोकलहुँ।' एखन धरि भीड़मे सहानुभूति छल; आब अपराधक गरमी उठल।

अनन्या रजिस्टरमे तीन स्तम्भ बनौली—'भय', 'जानकारी', 'रकम'। भय—गिरफ्तारी, बदनामी, घर सील। जानकारी—मुकदमा संख्या, खेत-विवाद, परिवारक नाम। रकम—सुरक्षित खाताक नाम पर हस्तांतरण। देविका चारिम स्तम्भ जोड़ली—'आवाजक अभिनय'। किएक तँ फोनक अपराधो रंगमंच जेकाँ छल—वेश बदलल, संवाद तैयार, दर्शक अकेला।

सत्यव्रत मेहता कहलनि—'एहि आवाजक पाछाँ केवल शहरक ठग नहि; एहिमे रेकर्ड-घरक गन्ध अछि।' भिखारी लाल सेहो सहमत भेल—'मुकदमा संख्या आ रद्दी बोरा भीतरक बात बाहरी लोक कोना जानत?' लिपिक, जे काल्हि धरि काँपैत छल, आब फेर पसीना-पसीना भेल। मुदा एहि बेर ओकर डर अपन गलतीक नहि, गुप्त रिसावक छल।

ओ कहलक—'रेकर्ड-घरमे कतेको बेर फोटो लेल जाइत अछि। किछु लोक प्रति बनबयक नाम पर मोबाइल घुसाबैत अछि। हम रोकि नहि पबैत छी। कहैत अछि—ऊपरसँ आदेश अछि।' मीरा पूछलथि—'ऊपर के?' लिपिक चुप। आरुणि धीरेसँ कहलक—'ऊपर सदिखन व्यक्ति नहि होइत; कतेको बेर डरक सीढ़ी होइत अछि।'

बूढ़ मुवक्किलक पोता फोन पर आयल संख्याक सूची देखौलक। एक संख्या पर नाम नहि, केवल शहरक संकेत। दोसर पर बैंकक सन्देश। तेसर पर छोट आवाज—'बाबू, जाँच अधिकारी बदलि गेल।' ई छोट आवाज धीरूक कानमे पड़िते ओ चौंकि उठल। धीरू कहलक—'ई लाउक गोदाममे चाह पिबय वाला मधुकरक आवाज जेकाँ अछि।'

मधुकर। ई नाम पहिल बेर स्पष्ट रूपेँ आयल। लाउक छाहसँ चन्द्रपाल, चन्द्रपालक छाहसँ गोदाम, आ आब गोदामक छाहसँ फोन। मधुकर ओहि तरहक लोक छल जे कखनो पटवारीक सहायक बनैत, कखनो बैंकक एजेन्ट, कखनो फाइल खोजय वाला दलाल। ओकर असली काम छल—दोसरक डरक भाषा सीखब।

मीरा तुरन्त निर्देश देलथि—'ककरो फोनक उत्तर अकेले नहि देबाक। जे आवाज धमकाबय, ओकर समय, संख्या, शब्द, माँगल रकम लिखू। ककरो गुप्त संख्या नहि देब। बैंकमे बिनु बुझने हस्तांतरण नहि। घरक बूढ़ लोक कैँ बताउ—फोन पर अदालत नहि लगैत।'

ई अन्तिम वाक्य लोकमे पसरि गेल—'फोन पर अदालत नहि लगैत।' बच्चा सभ एकरा पाथर पर लिखि देलक। पुरान पाथर, जे काल्हि तारीख ढोइत छल, आइ चेतावनी ढोए लागल। चन्ना गाछीक ठूँठ लग पहिल बेर कागचक संग फोनो साक्ष्य बनल।

सकुनी, जे हरिचरण तिवारीक पाछाँ हटब देखने छलीह, आइ फेर ओकरा देखलक। हरिचरण लोक कैँ बुझा रहल छल—'एहि सभमे गामक लोकक नाम नहि जोड़ू, ई शहरक ठगी अछि।' ओकर स्वर सहानुभूतिपूर्ण, मुदा बड़ बेसी जल्दीमे। सकुनी मीरा कैँ धीरेसँ कहलक—'जे जल्दी शहर पर दोष देत, ओ कतेको बेर गामक दरबाजा बचबैत अछि।'

हरिचरणक बात अधूरा रहि गेल, कारण बूढ़क फोन फेर बजल। सभ चुप। मीरा इशारा कएलथि—फोन खोल, मुदा स्पीकर पर। घण्टीक स्वर ओहि चुप्पीमे एतेक जोर लागल जेना ककरो छातीमे ठोकल जा रहल हो। आवाज आयल—'तूँ निर्देश तोड़लें। तोहर निगरानी बढ़ा देल गेल अछि।' बूढ़ काँपल, मुदा अनन्या ओकर हाथ पकड़ि लेली। ओ धीरेसँ कहली—'आब डर एकल नहि अछि।'

मीरा शान्त स्वरमे उत्तर देलथि—‘अहाँ के छी?’ फोनक ओहि पार एक क्षणक मौन। फेर आवाज बदलल—‘हम जाँच शाखासँ।’ मीरा कहलीह—‘शाखाक नाम, पद, लिखित आदेश, आ कार्यालयक पता कहू।’ आवाज रूख भऽ गेल—‘बहुत प्रश्न करैत छी।’ मीरा उत्तर देलथि—‘प्रश्न बिनु न्याय नहि, डर बिनु ठगी नहि।’

लाइन कटि गेल। भीड़मे एक अजीब कम्पन उठल—जे आवाज राति देवता जेकाँ डरबैत छल, दिनमे प्रश्न सुनि भागि गेल। बूढ़ मुवक्किल पहिल बेर सोझ ठाढ़ भेल। ‘हम फोनमे कैद छलहुँ,’ ओ कहलक, ‘आब आवाज भागल।’ ई छोट विजय छल, मुदा गामक मोनमे पैघ चिराग जेकाँ जरल।

देविका रिकार्डिंगक शब्द उतारए लागली। ओ प्रत्येक वाक्यक सोझाँ ओकर चाल लिखली—‘आदेश’, ‘गोपनीयता’, ‘बदनामी’, ‘रकम’, ‘जल्दी’, ‘अकेलापन’। आरुणि निष्कर्ष लिखलक—‘डिजिटल फान्द छह रस्सीसँ बनैत अछि: भय, गुप्तता, समय-दबाव, निजी जानकारी, अधिकारक अभिनय, आ अकेलापन।’

सत्यव्रत मेहता एहि नोट कैँ देखैत बहुत काल चुप रहलाह। हुनका बुझाइ पड़ल जे कानूनक किताबमे अपराधक नाम बदलि सकैत अछि, मुदा अपराधक मूल स्वर वैह रहैत अछि—मनुष्य कैँ अकेला कर, ओकरा डरा, ओकर नाम लऽ, ओकर देह वा धन पर अधिकार जमा। गोहि पानिसँ बाहर आबि आवाजमे बसि गेल अछि।

भिखारी लाल रेकर्ड-घरक प्रवेश-पुस्तक लऽ आयल। पछिला मासमे कतेको नाम लिखल छल जे फाइल देखबाक अनुमति लैत छल। एक नाम—मधुकर प्रसाद—तीन बेर। एक बेर लाउक सिफारिश पर, एक बेर हरिचरणक कागचक संग, आ एक बेर ‘चन्द्रपाल बाबूक प्रतिनिधि’ लिखल। ई तीन पाँति चन्ना गाछीक ठूँठ लग ठण्ढा हवा कैँ गरम कऽ देलक।

हरिचरण तिवारीक मुँह पर रंग उतरि गेल। ओ कहलक—‘प्रतिनिधि शब्द तँ कतेको लोक लिखि देत।’ मीरा सोझ प्रश्न नहि केलथि। ओ बस रजिस्टरक पृष्ठ सभकैँ पढ़ि सुनौलनि। लोक सुनैत रहल। ई चन्ना गाछीक नियम छल—पहिने पन्ना बाजत, फेर लोक। हरिचरणक बचाव पन्नाक आवाजमे दबि गेल।

मधुकरक खोज तुरन्त शुरू करबाक माँग उठल, मुदा मीरा रोकलथि। ‘भीड़ पकड़ए जाएत तँ सच भागि जाएत। पहिने जोड़ बनाउ।’ ओ कहलथि—रेकर्ड-घरक प्रति, गोदामक बही, फोनक रिकार्डिंग, बैंक सन्देश, आ मधुकरक प्रवेश-पाँति—सभ कैँ अलग-अलग नहि, एकहि लाभ-रेखामे देखू।

अनन्या लाल सूत फेर निकाललक। गोदामक नक्शा पर जे सूत चन्द्रपालक छाह दिस जाइत छल, ओकर नब सिरा आब फोनक संख्या, बैंक सन्देश आ मधुकरक नामसँ जुड़ल। सूत कागच पर पसरल तँ बुझाइ पड़ल जे जमीनक ठगी आ फोनक ठगी दू अलग नदी नहि, एकहि कारी धारक दू मोड़ अछि।

सुरमणी देवी कहलीह—'पहिने ओ सभ खेत पर कब्जाक लेल कर्जक डर दैत छल। आब खाता पर कब्जाक लेल कानूनक डर दैत अछि। नाम वैह, तरीका नब।' महावीर पाठक जोड़लनि—'मोहरक नकल करैत-करैत ओ सभ आवाजक मोहर बनबय सिखि गेल।'

एहि वाक्य पर चन्ना गाछीक ठूँठ लग बैसल एक नेना पूछलक—'आवाजक मोहर?' आरुणि बुझेलक—'जे स्वर सुनिते हम मानि लैत छी जे ई सरकार, अदालत, पुलिस वा बैंक अछि—से आवाजक मोहर। अपराधी ओहि मोहरक नकल करैत अछि।' बच्चा सभ ई बात लिखि लेलक। शिक्षा आब पाठशालासँ बाहर, अपराधक व्याकरण पढ़ि रहल छल।

साँझ धरि गाममे नब पहरा बनल। प्रत्येक टोलमे दू नेना आ दू वयस्कक टोली—बूढ़ लोक केँ फोनक फान्द बुझाएत, गुप्त संख्या नहि देबाक कहत, आ जे धमकी आयत तकर शब्द लिखत। कोनो फोनक उत्तर अकेले नहि। कोनो रकम जल्दीमे नहि। कोनो बदनामीक डरमे मौन नहि।

बूढ़ मुवक्किल अपन फोन चन्ना गाछीक ठूँठ पर राखि कहलक—'ई हमरा राति भरि जेल बनौलक; आब ई गवाही बनत।' फोनक छोट काँच पर डूबैत सूरजक लाली चमकल। काँचमे चन्ना गाछीक उनटा प्रतिबिम्ब पड़ल—जेना ठूँठ फोनक भीतर घुसि ओकर अन्हार देखि रहल हो।

राति पड़ैत-पड़ैत एक खबरि आयल—मधुकर प्रसाद गायब अछि। ओकर भाड़ाक कोठरी बन्द, मुदा भीतरसँ एक पुरान कागच भेटल अछि—किछु फोन संख्या, किछु मुकदमा संख्या, आ एक नाम बेर-बेर—'सी. बाबू'। कागच एखन आधिकारिक रूपेँ नहि आयल, केवल खबरि। मीरा सभकेँ सावधान केलथि—'खबरि गवाही नहि; मुदा गवाही दिस जाएवाला धुआँ भऽ सकैत अछि।'

ओही राति गोहि नदीक कगार पर बहुत काल धरि निश्चल रहल। कियो कहलक—ओ सुनि रहल अछि। कियो कहलक—ओ हँसि रहल अछि। मीरा रजिस्टरमे केवल लिखौलनि—'डिजिटल फान्दक पहिल दिन: भय सामूहिक भेल, ताला कमजोर भेल।'

अध्याय एहि प्रश्न पर समाप्त भेल—जे अपराध कागच, मोहर आ गोदामसँ निकलि आवाज, संख्या आ फोनमे बसि गेल अछि, ओकरा पकड़बाक लेल कतेक कान, कतेक रजिस्टर आ कतेक साहस चाही? चन्द्रपालक छाह आब केवल देबाल पर नहि; ओ प्रत्येक ओहि आवाजमे नुका सकैत अछि जे मनुष्य कैँ अकेला कऽ कहैत अछि—‘ककरो नहि कहू।’

लोकगीत: ककरो नहि कहू

लोकधुन: फोन-विलाप

आउ हे आवाज, डरक कोठरी छोड़ि बाहर आउ हे,
‘ककरो ने कहू’क बदला ‘सभकैँ कहू’ गाउ हे।
काँचक भीतर आवाज कहय—ककरो नहि कहू,
अकेला कोठरीमे डरक साँकल चुपचाप सहू।
मधुकर गायब, पाछाँ संख्या आ ‘सी बाबू’,
फोनक घण्टी राति भरि माएक निन्न चोराबय।
जमानत कतऽ भेटत जँ मालिक आवाजक अज्ञात,
कतेक कान चाही खोलय ई अदृश्य कारागार?
गाम एक संग बाजल तँ ताला कमजोर भेल,
डिजिटल फान्दक पहिल गाँठ लोकक हाथ गेल।
ए आवाज, डरक कोठरी छोड़ि बाहर आउ,
‘ककरो नहि कहू’क बदला ‘सभकैँ कहू’ गाउ।
जमानत कतऽ भेटत जँ मालिक अज्ञात रहय?

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—गुरुसभक मत: मुदा “अग्निसँ भात पकाबय लेल पाक सिद्ध करब” एहन प्रयत्नपूर्व ज्ञानक उपेक्षा नहि भऽ सकैत। गुरुसभक मत।]

अध्याय १६२

आवाजक मोहर

आवाजपर सेहो मोहर लागै छै— आ ओ मोहर तोड़बाक पहिल उपाय आवाजेक पहिचान।

अध्यायारम्भ लोकगीत: स्वरक मोहर खुजल

लोकधुन: भगैत-जागरण

बाजू हे मृदंग, बन्द स्वरकेँ जगाबू हे,
दस फोनक एक्के साँसकेँ लोकगीत बनाबू हे।
मृदंगक पहिल चोट पर बन्द स्वर खुजि जाय,
दस फोनक एके साँस लोकगीत बनि जाय।
मोहर जँ आवाज दबौने, कण्ठ ओकरा खोलत,
गामक सामूहिक गान झूठक देबाल डोलत।
एक स्वर छोट होइत अछि, संग भेल तँ धार,
साँचक गीत बहैत-बहैत पार करय दरबार।
मृदंग बाजू, नाम पुकारू, भयक राति विदा,
स्वरक मोहर खुजल जखन, न्याय भेल सदा।
जकर कण्ठ दाबल गेल, ओकर सुर उठाउ,
गाम भरिक सामूहिक तानमे ओकरा मिलाउ।
एक धार छोट, संग भेने गंगा-बलान,
झूठक देबाल थरथराय, सुनि साँचक गान।

❖

बूढ़ सभ कहै छै जे भरोसा गामक सभ सँ पुरान पूँजी छिऐ। जकर लग खेत नै, बरद नै, बही नै—तकरो लग भरोसा रहै छै। आ चोर ओहि पूँजी दिस सभ सँ पछाति हाथ बढ़बै छै, किएक तँ ओ जनै छै—जे दिन भरोसा चोरा लेल जायत, ओहि दिन गाम अपने-आप लुटा जायत।

नकलक अपन शास्त्र होइ छै। ओ पहिने बाहरी रूप नकलै छै—मोहरक गोलाइ, कागचक रंग। फेर ओ भीतरी लय नकलै छै—अधिकारीक धीरज, बैंकक सूखल शब्द, अदालतक ठण्ढा स्वर। मुदा नकल एकटा चीज कहियो नै नकलि सकै छै—उत्तरदायित्व। तेँ नकल प्रश्न सँ डरै छै।

जे साँच अछि, से नाम कहै छै, पद कहै छै, कार्यालय कहै छै, लिखित आदेश दै छै। जे नकल अछि, से जल्दी कहै छै, गोपनीयता कहै छै, आ अन्त मे कहै छै—'बहुत प्रश्न करै छी।' ओहि एक वाक्य मे ओकर पूरा मोहर पघिलि जाइए।

तेँ गाम एक नब औजार गढ़लक—प्रश्न। तलवार नै, लाठी नै, केवल प्रश्न। किएक तँ डर अकेलापन मे पैघ होइ छै आ प्रश्न मे छोट। जे स्वर दस कान लग अपन नाम नै कहि सकै छै, ओ स्वर कोनो सरकार नै छिऐ—ओ केवल एकटा नकल छिऐ जे अन्हार मे बैसल अछि।

जे फोन आवाज सुनि भागल छल, ओकर छाह राति भरि गाम पर पड़ल रहल—आ मधुकर प्रसादक गायब होएबाक खबरि राति भरि गामक निन्नक किनार चिबैत रहल। ककरो आँखि पूरा बन्द नहि भेल। जे फोन काल्हि बूढ़ मुवक्किल केँ कैद बनौने छल, ओ आइ प्रत्येक घरक चौकी पर राखल छोट कारी डिब्बा जेकाँ चमकि रहल छल। लोक ओकरा बजबासँ पहिने सुनैत छल, जेना मौनमे सेहो घण्टी नुकाएल हो।

भोरमे चन्ना गाछीक ठूँठ लग पहिल गोष्ठी फोनक लेल भेल। ई अजीब दृश्य छल—जतय पहिने खेतक मेड़, फाइलक डोरी, गवाहीक पन्ना आ गोदामक बही राखल जाइत छल, ओहिठाम आइ बूढ़ लोक अपन-अपन फोन लऽ कऽ बैसल छलाह। ककरो फोनक काँच फाटल, ककरो बटन घिसल, ककरो भीतर बेटाक शहरवाला संख्या, ककरो भीतर बैंकक सन्देश।

मीरा सभकेँ कहलथि—‘फोन दोषी नहि। दोषी ओ आवाज अछि जे फोनक भीतरसँ मोहर लगा कऽ निकलैत अछि।’ बच्चा सभ पूछलक—‘मोहर कागच पर लगैत अछि, आवाज पर कोना?’ मीरा उत्तर देलथि—‘जखन कोनो स्वर अपने केँ सरकार, अदालत, पुलिस, बैंक, धर्म, डॉक्टर वा गुरु कहि मनुष्यक विवेक पर अधिकार जमा लैत अछि, तखन ओ आवाजक मोहर लगबैत अछि।’

आरुणि पाथर पर लिखलक—‘आवाजक मोहर = भरोसाक नकल।’ एहि पर बहुत काल धरि चर्चा भेल। बूढ़ मुवक्किल कहलक—‘हम आवाज पर विश्वास एहि कारणसँ केलहुँ जे ओकरा हमर मुकदमा संख्या मालूम छल।’ देविका जोड़ली—‘जानकारी जखन चोरक हाथमे पड़ैत अछि, तखन ओ प्रमाण नहि, फान्द बनैत अछि।’

सत्यव्रत मेहता रेकर्ड-घरक प्रवेश-पुस्तक फेर देखैत रहलाह। मधुकरक तीन प्रवेश, तीन नामक आड़ि, तीन दरबाजा। एक बेर लाउक सिफारिश, एक बेर हरिचरणक कागच, आ एक बेर चन्द्रपाल बाबूक प्रतिनिधि। ई तीन पाँति एतेक शान्त लिखल छल जेना ककरो विवाहक न्योता, मुदा ओकर पाछाँ बूढ़ लोकक काँपैत राति, आधा खाली खाता, आ बदनामीक भय ठाढ़ छल।

भिखारी लाल कहलक—'मधुकर फाइल देखय अबैत छल, मुदा ओकर आँखि कागच पर कम, लोकक मुँह पर बेसी रहैत छल। ओ पूछैत—ई मुवक्किल बूढ़ अछि कि बेटा बाहर रहैत अछि? जमीनक मामला अछि कि बैंकक? ककरो घरमे कम पढ़ल लोक अछि कि नहि?' एहि स्मरण पर चन्ना गाछीक ठूँठ लग बैसल सभकेँ बुझाइ पड़ल जे अपराधी पहिने देहक कमजोरी नहि, विश्वासक कमजोरी नापैत अछि।

अनन्या नब रजिस्टर खोलली—'आवाज-जाल विवरण'। ओ स्तम्भ बनौली—संख्या, समय, बाजल नाम, माँगल बात, डरक वाक्य, जवाब। प्रत्येक घरसँ सूचना आबय लागल। ककरो लग 'बिजली विभाग' बनि फोन आयल छल, ककरो लग 'बैंक सुरक्षा', ककरो लग 'थाना', ककरो लग 'अदालतक अधिकारी'। सभ फोन अलग, मुदा चाल एक।

देविका कहली—'ई सभ अलग-अलग नाटकक अलग पात्र नहि; एकहि दलक अलग मुखौटा अछि।' कलाकार सभ, जे नकली भूत बनि काज करैत छल, ओहो एहि पाठमे बैसल। एक कलाकार लाजसँ कहलक—'हम सभ मुखौटा लगा कऽ डर बनबैत छलहुँ, मुदा ई लोक बिनु मुखौटा केवल स्वरसँ डर बनबैत अछि।'

तखन सकुनी एक बात कहलक जे सभकेँ चौंका देलक। 'मधुकरक भाड़ाक कोठरी जे बन्द अछि, ताहिमे एक बेर हम हरिचरणक लोक कें जाइत देखलहुँ। राति नहि, दिनमे। हाथमे कागचक थैली छल।' हरिचरण तिवारी ओही भीड़मे नहि छल, मुदा ओकर नाम आएलाक बाद हवामे चिकनाहट जेकाँ तनाव पसरि गेल।

मीरा तुरन्त कहलीह—'देखल बात लिखू, अनुमान अलग राखू।' सकुनी कहलक—'हम देखलहुँ, बस से लिखू।' अनन्या लिखली—'सकुनीक देखल: हरिचरणक लोक, मधुकरक कोठरी, कागचक थैली।' आरुणि नीचाँ लिखलक—'निष्कर्ष नहि।' एहि अनुशासनसँ गामक गवाही अफवाह बनबासँ बचैत रहल।

मध्यान्ह धरि मधुकरक कोठरीक सोझाँ लोक जमा भेल, मुदा मीरा भीड़ कें भीतर घुसय नहि देलथि। ओ कहलथि—'जे कोठरी गवाही देत, ओकरा पएरसँ कुचलब नहि।' भिखारी लाल, सुरमणी देवी, अनन्या आ दू गवाह भीतर गेल। कोठरीमे एक खाट, एक पीतल गिलास, दू पुरान कमीज, आ देबाल पर टाँगल एक कैलेंडर छल, जकरा तीन तारीख लाल गोलासँ घेरल छल।

तारीख सभ रेकर्ड-घरक प्रवेश-पुस्तकसँ मिलि गेल। पहिल तारीख—लाउक सिफारिश। दोसर—हरिचरणक कागच। तेसर—चन्द्रपाल प्रतिनिधि। कैलेंडरक नीचाँ छोट अक्षरमे लिखल

छल—‘बूढ़, बाहर बेटा, खेत, खाता।’ ई चारि शब्द पढ़िते सुरमणी देवीक देह काँपि उठल। ‘ई मनुष्यक विवरण नहि, शिकारक नाप अछि,’ ओ कहलीह।

खाटक नीचाँसँ एक पुरान थैली भेटल। थैलीमे किछु कागचक फोटो प्रति, किछु खाता संख्या, किछु नामक सूची, आ किछु आवाजक वाक्य लिखल छोट पन्ना छल। एक पन्ना पर लिखल—‘गिरफ्तारीक डर पहिने।’ दोसर पर—‘घरक मान-मर्यादा कहू।’ तेसर पर—‘अकेले राखू।’ चारिम पर—‘कागचक बात बताउ, भरोसा जमाउ।’

आरुणि पन्ना पढ़ि चुप भऽ गेल। ओकरा लगल जे अपराधी सभ ठगी नहि, मनोविज्ञानक कुटिल पाठशाला खोलने अछि। एतय वाक्य तैयार होइत, डरक क्रम बनैत, मनुष्यक कमजोरीक सूची राखल जाइत। गोहि आब पानिमे शिकारक प्रतीक्षा नहि करैत; ओ आवाजक लिपि बनौने अछि।

एक छोट यन्त्र सेहो भेटल—सस्ता रिकार्डर। ओकर भीतर आवाजक अभ्यासक किछु टुकड़ा छल। ‘हम जाँच शाखासँ बाजि रहल छी।’ ‘तुरन्त सुरक्षित खातामे पठाउ।’ ‘ककरो कहलहुँ तँ गिरफ्तारी।’ आवाज एकहि लोकक नहि; कखनो मधुकर, कखनो कोनो दोसर। पर सभमे एकहि आदेशक तान छल। एकहि वाक्य बेर-बेर, स्वर थोड़-थोड़ बदलैत—जेना कियो अन्हार कोठरीमे बैसि अपन डर-बनौनी साधि रहल हो।

देविका ओ रिकार्ड सुनि कहली—‘ई अभिनयक दुरुपयोग अछि।’ नकली भूत कलाकार सभ माथ झुका लेलक। रंगमंचमे अभिनय सत्य खोलबाक साधन बनि सकैत अछि; अपराधमे अभिनय सत्य झँपबाक औजार बनैत अछि। एहि अन्तर कैँ बच्चा सभ बहुत ध्यानसँ सुनलक।

ओहि समय हरिचरण तिवारी पहुँचल। ओकर मुँह पर पुरान पण्डिताइ आ नब बेचैनीक मिश्रण छल। ओ भीड़ कैँ देखैत कहलक—‘एहि सभ चीजकैँ बढ़ाबू नहि। गामक नाम खराब होएत।’ मीरा शान्त रहलीह। ओ केवल पूछलथि—‘गामक नाम खराब डरसँ होइत अछि कि अपराधसँ?’ हरिचरण तुरन्त उत्तर नहि देलक।

सत्यव्रत मेहता आगाँ बढ़ि कैलेंडरक तीन तारीख हरिचरणक सोझाँ राखलनि। ‘ई तारीख सभ पर अहाँक नाम वा अहाँक लोकक छाह अछि,’ ओ कहलनि। हरिचरण हँसबाक प्रयास केलक—‘छाह कैँ प्रमाण बनाओल जाएत?’ सत्यव्रत कहलनि—‘छाह प्रमाण नहि, दिशा होइत अछि। प्रमाणक घर ओहि दिशामे खोजल जाएत।’

हरिचरणक आँखि क्षण भरिक लेल मधुकरक थैली पर अटकि गेल। अनन्या ई देखली, मुदा तुरन्त लिखली नहि। बादमे ओ मीरा कैँ कहली—‘किछु देखलहुँ, पर शायद भ्रम।’ मीरा

उत्तर देलथि—‘जकरा पर भरोसा नहि, ओकरा रजिस्टरमे मत लिखू; स्मृतिमे राखू, फेर जँ दोसर चिन्ह मिलत तखने जोड़ू।’ ई गवाहीक मर्यादा छल।

साँझ दिस बैंकसँ खबरि आयल जे बूढ़ मुवक्किलक आधा रकम जे खातामे गेल छल, ओ खाता किछु घण्टामे खाली भऽ गेल। रकम तीन छोट-छोट हस्तांतरणमे टूटि गेल। एक नाम नकली, एक नाम मृत लोकक चिन्हारि पर, आ तेसर नाम—‘एम. प्रसाद सेवा केन्द्र’। मधुकरक ‘एम’ फेर उभरल।

भिखारी लाल कहलक—‘सेवा केन्द्र?’ सुरमणी देवी तीख स्वरमे कहलीह—‘जे लूट कैं सेवा कहय, ओकर भाषा पहिने पकड़ू।’ देविका लिखली—‘अपराधक शब्द: सुरक्षित, सेवा, जाँच, मान, गोपनीय।’ ई सभ शब्द साधारण जीवनमे भरोसा जगबैत छल; अपराधमे ओही शब्द फान्द बनि गेल।

चन्ना गाछीक ठूँठ लग रातिक पाठ शुरू भेल। एहि बेर बूढ़ लोक स्वयं फोनक धमकीक वाक्य पढ़लनि, आ बच्चा सभ ओकर चाल बतौलक। ‘जल्दी करू’—समय-दबाव। ‘ककरो नहि कहू’—अकेलापन। ‘हम अधिकारी छी’—अधिकारक अभिनय। ‘तोहर नाम केसमे अछि’—बदनामी। ‘खाता सुरक्षित करब’—रकम पर कब्जा।

धीरे-धीरे भयक भाषा टूटय लागल। जे वाक्य राति देववाणी जेकाँ लगैत छल, ओ चन्ना गाछी लग खोललाक बाद साधारण छलकपट बनि गेल। बूढ़ मुवक्किल फेर कहलक—‘हमर गलती छल जे हम अकेले सुनलहुँ।’ मीरा ओकरा रोकलथि—‘गलती तोहर नहि, व्यवस्था तोरा अकेला छोड़लक। आब नियम—डर अकेले नहि सुनल जाएत।’

एहि वाक्यक बाद गाममे नब शपथ बनल। जे फोन डर देत, ओ कमसँ-कम तीन कानमे सुनाओल जाएत। जे कागच माँगत, ओकर लिखित आदेश पूछल जाएत। जे रकम माँगत, ओकरा सार्वजनिक प्रश्न पूछल जाएत। जे बदनामीसँ डराओत, ओकर आवाज रिकार्ड होएत।

हरिचरण धीरे-धीरे भीड़सँ हटय लागल। सकुनी दूरसँ देखैत रहल। ओ देखलक जे हरिचरण बाहर जा कऽ ककरो बहुत धीमे फोन केलक—‘कागच हटाउ।’ शब्द पूरा स्पष्ट नहि छल, मुदा ‘हटाउ’ साफ छल। सकुनी ई बात तुरन्त नहि चिचियेलक। ओ मीरा लग गेल आ कहलक—‘ई अनुमान नहि, कानक गवाही अछि।’

मीरा रजिस्टरमे लिखौलनि—‘सकुनीक सुनल: हरिचरणक धीमा फोन—कागच हटाउ।’ एहि पाँतिसँ रातिक दिशा बदलि गेल। आब प्रश्न मधुकरक कोठरीसँ आगाँ बढ़ि गेल छल। कागच कोन? कतयसँ हटाउ? के हटाओत? आ किएक?

सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘आइ कोठरी बन्द नहि छोड़ल जाएत। जे भेटल अछि, ओकर सूची बनय, गवाहक हस्ताक्षर होउ, आ प्रति अलग-अलग ठाम राखल जाउ। एक प्रति चन्ना गाछी लग, एक रेकर्ड-घरक सुरक्षित पेटीमे, एक सुरमणी देवी लग, आ एक बच्चा सभक रजिस्टरमे सार रूपमे।’

अनन्या पन्नासँ पन्ना मिलबैत रहली। आरुणि आवाजक वाक्य उतारैत रहल। देविका अभिनयक चालक नाम देली। भिखारी लाल प्रवेश-पुस्तकक प्रतिसँ तारीख जोड़लक। बूढ़ मुवक्किल अपन काँपैत हाथसँ बयान देलक—‘हमरा फोनमे कैद कएल गेल, मुदा आइ हम ओकर दरबाजा खोलि देलहुँ।’ ओकर स्वर एखनहुँ काँपैत छल, मुदा ओहि कँपनीमे आब डर कम, थकानक निसाँस बेसी छल।

राति गहरायल। गोहि नदीक कगार पर आब नहि देखाइ पड़ल। किछु लोक कहलक—ओ पानि भीतर चलि गेल। किछु कहलक—ओ फोनक काँचमे घुसल अछि। मीरा रजिस्टर बन्द करैत कहलथि—‘जतय डर अकेला होइत अछि, ओतय गोहि नुकाइत अछि। जतय डर बाजल जाइत अछि, ओतय ओकर चमड़ा उतरैत अछि।’

अध्याय एहि निर्णय पर समाप्त भेल जे आवाजक मोहर तोड़बाक पहिल उपाय आवाजक साझेदारी अछि। मधुकर गायब अछि, हरिचरण बेचैन अछि, चन्द्रपालक ‘सी. बाबू’ छाहमे अछि। मुदा आब गाम केवल सुनय वाला नहि रहल; ओ आवाज कैँ खोलि पढ़य वाला गाम बनि रहल अछि।

लोकगीत: आवाजक मोहर टूटल

लोकधुन: समूह-जागरण

तोड़ू हे मोहर, आवाजक मोहर तोड़ू हे,
जे फोनमे कैद अछि, ओकरा असगर ने छोड़ू हे।
एके वाक्य दस फोनमे, एके साँसक चाल,
आवाजपर मोहर लागल, भीतर नुकाएल जाल।
बूढ़ मुवक्किल काँपि कहलक—हम कैद रहलहुँ,
आइ अपन डरक दरबाजा स्वयं खोलि देलहुँ।
अनन्या पन्ना मिलौली, आरुणि लय उतारलक,
देविका अभिनयक प्रत्येक चाल नामसँ पुकारली।
डर साझा भेल तँ गोहिक चमड़ा उतरि गेल,
अकेला कण्ठ समाजक स्वर बनि बाहर भेल।

आवाजक मोहर तोड़ू, स्वरकेँ स्वरसँ जोड़ू,
जे फोनमे कैद अछि, ओकरा अकेला नहि छोड़ू।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—नैयायिक परम्परा—संख्या यत्नविशेष्यसँ सम्बन्धित: "चैत्र चाउर पकबैत अछि" मे चैत्र यत्नविशेष्य छथि; "चाउर चैत्रद्वारा पकाओल जाइत अछि" मे चाउर यत्नक परोक्ष विशेष्य अर्थात् यत्नजन्य व्यापारफलाश्रय अछि। नैयायिक परम्परा—संख्या यत्नविशेष्यसँ सम्बन्धित।]

अध्याय १६३

हटायल कागजक निशान

कागज हटा देल जाइ छै, निशान नहि— हटौनिहारक हड़बड़ी अपने निशान थीक।

अध्यायारम्भ लोकगीत: कार्बनमे बचल उजास

लोकधुन: कागच-बटगबनी

सहेजू हे कार्बन, कारी रेखा सहेजू हे,
हटल पन्नाक छापोमे भोरक बाट देखू हे।
पन्ना हटि सकैत अछि, छाप कतऽ हटत,
कार्बनक कारी रेखा भोरक बाट कहत।
नान्हि निशान सहेजि राखू, जोड़ू एक-एक तार,
मेटायल अक्षर फेर बनत साँचक उज्जर हार।
हवा जँ पन्ना उड़बय, स्मृति ओकरा धरत,
धूरि जँ मुँह झँपय, जनक आँखि पढ़त।
कार्बनमे बचल उजास कहय—हिम्मत नहि हारू,
छोट प्रमाणक पाँखि लगा सत्यक गाम उजारू।
ऊपरक कागच उड़ि गेल, तरमे रहल निशान,
नान्हि-नान्हि तार जोड़ि बनत पूरा बयान।
हवा उड़ाबय, धूरि झँपय—स्मृति दुनूसँ पार,
छोट प्रमाणक पाँखि पर उड़य साँचक हार।

❖

धूरि केँ लोक गन्दगी बुझै छै। मुदा रेकर्ड-घर मे धूरि सभ सँ पुरनका मुंशी छिऐ। ओ बरख भरि चुपचाप बैसल रहै छै आ जकर-जकर हाथ ओहि ठाम पड़ै छै, तकर-तकर नाप राखि लै छै। जे पन्ना उठबै छै, ओ धूरि केँ बिसरि जाइए—आ धूरि ओकरा नै बिसरै छै।

खाली जगह सेहो पढ़ल जाइ छै। डोरीक वलय ओहिना पड़ल रहै छै, गोंदक सूखल टुकड़ा ओहिना लागल रहै छै, आ बीच मे केवल हवा। ओहि हवा केँ नापि लिअ तँ हटायल कागचक देह बनि जाइए—अनुपस्थित, मुदा नपने योग्य।

कार्बन सभ सँ ईमानदार साक्षी छिऐ। ओ अपने किछु नै लिखै छै; ओ केवल दोसरक दाब झेलै छै। आ जे दाब झेलै छै, से बिसरै नै छै। तेँ मूल पन्ना जरि सकै छै, बहि सकै छै, बिका सकै छै—मुदा ओकर पाछू बैसल कारी पात चुप्पे-चाप सभ किछु धेने रहै छै।

आ सभ सँ पैघ बात ई जे नाम मारल नै जा सकै छै। कागच पर ककरो 'मृत' लिखि देब ओकरा मारब नै भेल; ओ तँ केवल कागचक हत्या भेल। जाधरि साँस चलै छै, ताधरि नाम अपने बाजि उठै छै—आ जे नाम बाजि उठै छै, ओकरा कोनो मोहर चुप नै करा सकै छै।

आवाजक मोहर टूटलाक बाद रातिक अन्तिम प्रश्न—‘कागच हटाउ’—गामक कानमे अटकल रहल। भोर भेल, मुदा ओ वाक्य धूपमे घुलल नहि। उनटे, जतेक उजास बढ़ल, ओतेक साफ बुझाइ पड़ल जे कोनो हाथ सचमुच रेकर्ड-घर दिस बढ़ल अछि। चन्ना गाछीक ठूँठ पर बैसल चिरई दू बेर पाँख फड़फड़ेलक, जेना ओ पहराक आरम्भक सूचना दैत हो।

सत्यव्रत मेहता सबेर-सबेरे अदालत पहुँचलाह। भिखारी लाल पहिनहिसँ फाटक लग ठाढ़ छल। ओकर आँखि राति भरि नहि सुतल लोकक जेकाँ लाल छल, मुदा हाथ स्थिर। ओ धीरेसँ कहलक—‘बाबू, ताला तँ बन्द भेटल, मुदा ताला चुप नहि अछि।’ सत्यव्रत ताला निहारलनि। कड़ीक किनार पर ताजा खराँच छल, जे पुरान जंगक रंगसँ अलग चमकि रहल छल।

मीरा, अनन्या, आरुणि, देविका आ सुरमणी देवी सेहो पहुँचलथि। भीड़ केँ दूर राखल गेल। मीरा कहलथि—‘आइ रेकर्ड-घरक भीतर जँ एको धूरि हटत, तकर लेखा राखल जाएत। कागच चोरि भऽ सकैत अछि, मुदा धूरिक पएर सेहो गवाही दैत अछि।’ ई सुनि बच्चा सभ पहिल बेर धूरि केँ वस्तु नहि, साक्षी जेकाँ देखलक।

दरबाजा खुजल तँ भीतरक गन्ध काल्हिक जेकाँ नहि छल। काल्हि धूरि स्थिर छल; आइ धूरि विचलित छल। अलमारी सभक पाँतिमे एक बारीक फरक देखाइ पड़ल—सत्रह नम्बर अलमारीक नीचाँ धूरिक पट्टी टूटल छल। ओकर सोझाँ पएरक दू हलुक निशान छल, जे चप्पल नहि, नांगट पएरक जेकाँ लागैत छल। भिखारी लाल तुरन्त कहलक—‘रातिमे केओ जूता खोलि कऽ घुसल।’

अनन्या रजिस्टरमे लिखली—‘सत्रह नम्बर अलमारीक सोझाँ धूरि-निशान: नांगट पएर अथवा मोलायम चप्पल।’ मीरा तुरन्त जोड़लथि—‘अनुमानक आगाँ प्रश्नचिन्ह लगाउ।’ अनन्या प्रश्नचिन्ह लगेली। एहि छोट चिन्हसँ गवाही झूठा आत्मविश्वाससँ बचि गेल।

अलमारी खोलल गेल। भीतर पुरान भूमि-मुकदमा, बन्धक-पत्र, उत्तराधिकारक कागच, बैंकक नोटिस, आ अदालतक स्थगन आदेशक फाइल सभ राखल छल। मुदा एक ठाम डोरीक वलय खाली छल। डोरी बाँचल छल, कागच नहि। खाली डोरी पसरि कऽ एहन लागैत छल जेना कोनो देहक कंकालसँ मांस नोचि लेल गेल हो।

आरुणि फुसफुसा कऽ कहलक—‘खाली जगह सेहो पढ़बाक चाही।’ सत्यव्रत ओकरा सुनलनि आ कहलनि—‘कतेको बेर जे नहि अछि, से सभसँ बेसी बाजैत अछि।’ बच्चा सभ ओहि खाली जगहक नाप लेलक—लम्बाइ, चौड़ाइ, डोरीक रंग, गोंदक सूखल टुकड़ा। हटायल कागचक पहिल प्रतिमा बनल—अनुपस्थित, मुदा उपस्थित।

प्रवेश-पुस्तक जाँचल गेल। रातिक पृष्ठ पर कोनो आधिकारिक प्रविष्टि नहि छल, पर पृष्ठक कोन फूलल छल, जेना भिजाओल आँगुरसँ किछु मेटाओल गेल हो। देविका लगसँ देखली। इजोत तिरछा कएल गेल तँ एक हलुक दबाव-चिन्ह उभरल—‘प...मा...’ बस एतबे। भिखारी लाल कहलक—‘परमानन्द?’

परमानन्द अदालतक नब लिपिक छल। ओ सदिखन माथ झुका कऽ चलैत, बहुत कम बाजैत। ओकर नाम सुनिते पुरान लिपिकक मुँह उतरि गेल। ओ कहलक—‘ओ रातिक पहरामे नहि छल।’ सुरमणी देवी तीखे स्वरमे पूछलथि—‘जे पहरामे नहि छल, तकर नाम मेटाएल किएक?’ एहि प्रश्न पर रेकर्ड-घरक हवा चुप भऽ गेल।

परमानन्द कैँ बजाओल गेल। ओ आयल तँ ओकर पएरमे धूरि कम, भय बेसी छल। पहिने ओ कहलक—‘हम नहि गेलहुँ।’ फेर जखन सत्रह नम्बर अलमारीक खाली डोरी ओकर सोझाँ राखल गेल, ओकर ठोर काँपल। मीरा ओकरा पर चिचियेली नहि। ओ केवल कहलीह—‘डर सचकेँ छोट करैत अछि, मुदा झूठ ओकरा मारि दैत अछि। जे देखलहुँ, जे केलहुँ, से अलग-अलग कहू।’

परमानन्दक आँखिसँ नोर झरल। ओ कहलक—‘हम दरबाजा खोललहुँ। हमरा कहल गेल जे ऊपरसँ आदेश अछि। फाइल केवल बाहर काढ़ि एक प्रति देखबाक अछि। कहनिहार हरिचरण बाबूक लोक छल, मुदा फोनमे जे स्वर छल, ओ अपन कैँ चन्द्रपाल बाबूक दफ्तर कहैत छल।’ सत्यव्रत पूछलनि—‘कागच कतऽ गेल?’ परमानन्द माथ झुका लेलक—‘हमरा थैली देल गेल। भीतर की छल, नहि देखलहुँ।’

सुरमणी देवी ताड़ि देलथि—‘नहि देखलहुँ, कि नहि देखय चाहलहुँ?’ परमानन्द चुप रहल। एहि चुप्पीमे अपराधक आधा इतिहास छल। बहुत लोक अपराध नहि करैत, मुदा आँखि मूनि अपराधक बाट बना दैत अछि। आरुणि लिखलक—‘आँखि मूनब सेहो कागच हटेबाक हिस्सा भऽ सकैत अछि।’

सत्रह नम्बर अलमारीक भीतर एक कागचक पात शेल्फक पाछाँ अटकल भेटल। ओ पूरा फाइल नहि छल, केवल कार्बनक पाछुक छाप। अक्षर उनटे-पुनटे, मुदा पढ़ल जा सकैत छल—‘मृतक प्रमाण-पत्र संलग्न’, ‘उत्तराधिकारी अनुपस्थित’, ‘बन्धक पुनर्सत्यापन’, आ नीचाँ धुँधला चिन्ह—‘एम. प्रसाद सेवा।’ मधुकरक छाह फेर कागचक पाछूसँ बाहर झाँकल।

अनन्या ओहि छाप कैँ सोझ कागच पर उतारली। देविका कहली—‘ई तँ नाटकक उनटा संवाद जेकाँ अछि। जे मुख्य पन्ना हटल, ओकर प्रतिछाह बाँचल।’ मीरा मुस्की नहि देलीह, मुदा

हुनकर आँखिमे एक कड़ा सन्तोष झलकल—'चोरी पूर्ण नहि भेल। कागचक आत्मा पाछाँ छूटि गेल।'

छापक भीतर जकर नाम 'मृतक' रूपेँ पढ़ाइत छल, ओ नाम सुनि बूढ़ मुवक्किल काँपि उठल—'ई नागेश्वर झा अछि। ओ तँ जीवित छथि। काल्हि राति चन्ना गाछी लग नहि आबि सकलाह, कारण बीमार छथि।' सत्यव्रत तुरन्त कहलनि—'जीवित लोकक मृतक प्रमाण-पत्र! तखन जमीन, बैंक खाता, उत्तराधिकार—सभ रस्ता खुजि जाइत अछि।'

बच्चा सभ पहिल बेर बुझलक जे कागच केवल स्मृति नहि, जीवितक देह पर मृत्यु लिखबाक औजारो बनि सकैत अछि। जे अपराध पहिने फोनक आवाजमे छल, ओ आब मृत्यु-कागचक रूपमे सोझाँ छल। डिजिटल ठगी आ पुरान जमीन-जाल एकहि नालसँ जुड़ल देखाइ पड़ल—पहिने नाम चोराउ, फेर डराउ, फेर खाता खाली करू, फेर जमीनक कागच पलटू।

भिखारी लाल कहलक—'नागेश्वर झाक फाइल एहि अलमारीमे किएक?' पुरान लिपिक उत्तर देलक—'ओकर मामला बन्धक आ उत्तराधिकार दुनूसँ जुड़ल छल। बेटा बाहर, घरमे बूढ़ दम्पती, जमीन पोखरिक कात।' सुरमणी देवी धीरेसँ कहलीह—'शिकारक नाप फेर वैह—बूढ़, बाहर बेटा, खेत, खाता।' मधुकरक देबाल पर लिखल चारि शब्द आब अदालतक अलमारीमे जीवित भऽ उठल।

मीरा तुरन्त दू टोली बनौलथि। एक टोली नागेश्वर झाक घर जाएत, हुनकर जीवित बयान लेत। दोसर टोली बैंकक स्थानीय शाखासँ पूछत जे 'एम. प्रसाद सेवा' नामक कोनो खाता, केन्द्र वा एजेंसी दर्ज अछि कि नहि। ओ कहलथि—'आब भावुकतासँ नहि, क्रमसँ चलू। अपराधी चाहैत अछि हम सभ चिचियाइ; हम सभ लिखब।'

सकुनी नागेश्वर झाक घर गेल। बूढ़ नागेश्वर खाट पर पड़ल छलाह, साँस कमजोर, मुदा आँखि जागल। हुनका जखन कहल गेल जे कागचमे हुनका मृत लिखबाक तैयारी अछि, ओ बहुत काल धरि छत ताकैत रहलाह। छतक चूनामे बरखक दाग एहन पसरल छल जेना कोनो पुरान नक्शा, आ ओ ओकरे ताकैत रहलाह। फेर कहलनि—'हम तँ एखन अपन नाम सुनि रहल छी। जे लोक अपन नाम सुनि रहल अछि, ओकरा मृत के लिखलक?' एहि वाक्य पर सकुनीक हाथ काँपि गेल, मुदा ओ लिखलक।

नागेश्वरक घरवाली एक पुरान संदूक खोललथि। भीतर करिया कपड़ामे लपेटल जमीनक पंजी, बैंकक पास-बही, बेटाक पुरान चिट्ठी, आ पचास बरख पुरान विवाहक फोटो छल। ओ

कहलीह—'हम कागच बचा कऽ राखलहुँ, मुदा कागच हमरा बचा सकत कि नहि, से नहि जनैत छलहुँ।' एहि वाक्यक संग स्त्रीक आँखिमे भय नहि, चोट छल।

दोसर टोली बैंक पहुँचल। शाखा-प्रबन्धक पहिने टारय लागल—'नियम अछि, गोपनीयता अछि।' आरुणि शान्त स्वरमे कहलक—'गोपनीयता ग्राहकक रक्षाक लेल होइत अछि, अपराधीक परदाक लेल नहि।' सत्यव्रत मेहता कानूनी भाषामे लिखित निवेदन देलनि। जखन 'जीवित व्यक्तिक मृतक प्रमाण-पत्रक सन्देह' लिखल गेल, बैंकक मुँह बदलि गेल।

खाता तुरन्त नहि खुजल, पर एक सूचना भेटल—'एम. प्रसाद सेवा' स्थानीय खाता नहि, बाहरी भुगतान-सुविधा केन्द्रसँ जुड़ल अछि। लेन-देन छोट-छोट, मुदा बेर-बेर। बूढ़ लोकक खातासँ रकम टूटि कऽ ओहि मार्गें बाहर जाइत। देविका कहली—'ई गोहि एक बेरमे देह नहि खाइत, पहिने नान्हि-नान्हि टुकड़ा काटैत अछि, ताकि पीड़ा देरीसँ बुझाय।'

साँझ धरि चन्ना गाछी लग चारि कागच राखल गेल—सत्रह नम्बर अलमारीक खाली डोरीक विवरण, कार्बन-छापक प्रति, नागेश्वर झाक जीवित बयान, आ बैंकक प्रारम्भिक सूचना। मीरा सभकेँ कहलथि—'देखू, हटायल कागच घुरि नहि भेटल, मुदा ओकर चाल भेटल। कतेको बेर सत्य मूल पन्ना पर नहि, ओकरा हटेबाक हड़बड़ीमे छूटल निशानमे बसैत अछि।'

हरिचरण ओहि सभामे नहि आयल। मुदा ओकर घरक आँगनमे राति देरी धरि आवाज उठैत-खसैत रहल। कियो कहलक जे ओ तामसमे छल। कियो कहलक जे डरमे। मीरा अफवाह रजिस्टरमे नहि लिखौलनि। ओ केवल लिखलथि—'हरिचरण अनुपस्थित।' ई छोट वाक्य बहुत भारी छल। अपराधी सभ बेसीकाल अपना बचाबय लेल उपस्थित भाषण देत; जखन अनुपस्थित होइत अछि, तखन छाह बाजैत अछि।

राति जखन सभ चुप भेल, अनन्या कार्बन-छाप फेर देखली। उनटा अक्षरक बीच एक छोट संख्या छल—'१७/सी'। आरुणि कहलक—'सत्रह नम्बर अलमारी आ सी बाबू? ' सत्यव्रत मेहता बहुत काल चुप रहलाह। '

गोहि नदीक कगार पर फेर देखाइ पड़ल। एहि बेर ओकर पीठ आधा जलमे, आधा कादोमे छल। जोन्हियामे ओकर चमड़ा पर कागचक फाटल रेखा जेकाँ धार बनल छल। बूढ़ मुवक्किल कहलक—'ओ कागच खा कऽ नहि पचा सकल।' सुरमणी देवी जोड़लीह—'जे नाम जीवित अछि, ओ गोहिक पेट फाड़ि बाहर आबि जाइत अछि।'

अध्याय एहि बोध पर समाप्त भेल जे हटायल कागचक निशान मेटाओल नहि जा सकैत अछि। मधुकर गायब, हरिचरण अनुपस्थित, परमानन्द आधा टूटल, नागेश्वर जीवित, आ '

१७/सी’ नब दरबाजा बनि ठाढ़ अछि। आब कथा फोनक आवाजसँ कागचक मृत्यु धरि पहुँचि गेल अछि।

लोकगीत: हटायल पन्नाक छाह

लोकधुन: कागच-विरह

देखाउ हे पन्ना, अपन आखिरी रेखा देखाउ हे,
काटल नामकेँ फेर कथाक बीच बसाउ हे।
पन्ना हटा देल, कार्बनक छाप बाँचल,
हड़बड़ीक नहसँ ‘१७/सी’ आखर खँचल।
मधुकर नहि, हरिचरण नहि, निशान सभ उपस्थित,
परमानन्द आधा टूटल, नागेश्वर साँस सहित।
गोहि कागच खा कऽ पचा नहि सकल,
जीवित नाम पेट फाड़ि जोन्हियामे निकलल।
फाइलक मृत्यु पर छाह राति भरि कानल,
छोट संख्या पैघ दरबाजाक साँकल खोलल।
हटायल पन्ना, अपन आखिरी रेखा देखाउ,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—विशेषणक विभक्ति केवल साधुत्व लेल: . आक्षेप हो सकैत अछि—“राजपुरुषम् आनय” मे राजसम्बन्ध आ पुरुष, विशेषणपदक बाद विभक्ति बिना परस्पर सम्बन्धित नहि हो सकैत; तें राजा-संबद्ध पुरुषक ज्ञान समस्तपदसँ कोना होएत? संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। विशेषणक विभक्ति केवल साधुत्व लेल।]

अध्याय १६४

चन्द्रपालक छायाक पेट

छोट संख्या पैघ ताला खोलै छै— जँ पढ़निहार रातिभरि जागल हो।

अध्यायारम्भ लोकगीत: सत्रह-सीक कुंजी

लोकधुन: रहस्य-बटगबनीक तेज चाल

पकड़ू हे कुंजी, सत्रह-सीक कुंजी पकड़ू हे,
नान्हि अंकक हाथ धरि पैघ ताला झकझोरू हे।
नान्हि अंक सत्रह-सी, हथेलीमे कुंजी,
पैघ ताला काँपि उठल, जागल बुद्धि-सूँझी।
धागा पकड़ि धीरे चलू, गाँठि अपने खुजत,
छोट संकेतक मान राखू, बड़का जाल मिलत।
राति गहीँर हो तइयो नेनाक दीप जरय,
कुंजी साँचक हाथमे हो तँ बन्द घर खुजय।
सत्रह-सी नहि डरक नाम, खोजक पहिल धाम,
एक नान्हि चिन्हसँ भेटत न्याय दिशाक गाम।
तेज चालि, थिर आँखि, डेग-डेग होसियारी,
धागा-धागा खुजैत जाय जालक तैयारी।
राति गहीँर, दीप नान्हि—तइयो बाट सूझय,
साँचक हाथक कुंजीसँ बन्द केबाड़ो बूझय।

❖

बूढ़ सभ कहै छै जे जाल कैँ ओकर मुँह सँ नै, ओकर पेट सँ चिन्हल जाइ छै। मुँह तँ प्रत्येक ठाम अलग-अलग होइ छै—कतहु फोनक स्वर, कतहु रसीदक मोहर, कतहु दफ्तरक नामपट्ट। मुदा जतय सभटा धागा जा कऽ एक ठाम मिलै छै, ओहीठाम ओकर पेट रहै छै; आ पेट कहियो दू ठाम नै होइ छै।

सभ सँ खतरनाक शब्द हिंसाक शब्द नै छिऐ। सभ सँ खतरनाक शब्द 'सेवा' छिऐ, 'सहायता' छिऐ, 'परामर्श' छिऐ, 'सुविधा' छिऐ। किएक तँ हिंसाक शब्द सुनि लोक दरबज्जा बन्द करै छै, आ सेवाक शब्द सुनि लोक अपने दरबाजा खोलि दै छै।

आ एकटा आर बात। 'ई तँ सभ जनै छै'—एहि पाँच शब्द मे गामक आधा अपराध नुकाएल रहै छै। जे बात सभ जनै छै आ कोनो रजिस्टर मे नै चढ़ल छै, से बात अपराधीक लेल सभ सँ सुरक्षित कोठरी छिऐ। जाननाइ आ मानब मे जे दूरी छै, ओहि दूरी मे चोर अपन दोकान खोलि लै छै।

तेँ आइ जे काज बाँकी छै, से लड़ाइक नै, जोड़बाक छै। एक कागच कैँ दोसर कागच लग राखू। एक तारीख कैँ दोसर तारीख लग। एक चुप्पी कैँ दोसर चुप्पी लग। जखन क्रम बनि जायत, तखन कियो निर्णय नै सुनौत—क्रम अपने बाजि उठत।

हटायल कागचक निशान जे राति भरि पढ़ल गेल छल, ओकर अन्तिम अक्षर —‘१७/सी’—लिखल छोट संख्या राति भरि अनन्याक रजिस्टरमे जरैत रहल। ई संख्या अक्षर नहि, कुञ्जी जेकाँ लागैत छल। सत्रह नम्बर अलमारीक खाली डोरी, कार्बनक उनटा छाप, नागेश्वर झाक जीवित बयान आ चन्द्रपालक दफ्तरक नाम—सभ एकहि धागामे बन्हाइत जा रहल छल। भोरक पहिने पहरमे चन्ना गाछीक ठूँठ पर कुहेस बैसल छल, मुदा कुहेसक भीतर सेहो ओ संख्या चमकि रहल छल।

मीरा सबेरे सभकेँ एकठाम बजौलथि। ओ कहलथि—‘आइ हम सभ चन्द्रपालक घर नहि, ओकर छाहक पेट देखब। लोकक मुँह झूठ बाजि सकैत अछि, छाह प्रायः झूठ नहि बाजैत; कारण छाह ओहि ठाम पड़ैत अछि जतय देह रहैत अछि।’ बच्चा सभ बुझि गेल जे ई पहरा भिड़न्तक नहि, रेखा जोड़बाक अछि।

सत्यव्रत मेहता कागच सभ फेर क्रममे राखलनि। पहिल—परमानन्दक बयान जे दरबाजा खोलाओल गेल। दोसर—सत्रह नम्बर अलमारीक खाली स्थान। तेसर—कार्बन छापमे ‘मृतक प्रमाण-पत्र संलग्न’। चारिम—‘एम. प्रसाद सेवा’। पाँचम—‘१७/सी’। ओ कहलनि—‘जँ ई सभ अलग-अलग घटना मानब, तँ अपराध छिड़िआ जाएत। जँ क्रम मानब, तँ जाल बाजत।’

सुरमणी देवी धीरेसँ जोड़लीह—‘जाल सदिखन पेटसँ चिन्हाइत अछि। जकर पेटमे सभ धागा जा कऽ मिलैत अछि, वैह गोहि अछि।’ एहि वाक्य पर बूढ़ मुवक्किल माथ हिलेलक। ओकरा काल्हि रातिक गोहि मोन पड़ल, जकर चमड़ा पर कागचक फाटल रेखा चमकि रहल छल।

पहिल काज भेल—‘सी’ केर अर्थ खोजब। अदालतक पुरान नक्शा खोलल गेल। रेकर्ड-घरमे अलमारी सभक बँटवारा ‘क’ ‘ख’ ‘ग’ सँ नहि, पुरान अंग्रेजी अक्षरक देसी रूपान्तरसँ लिखल गेल छल—ए, बी, सी, डी। सत्रह नम्बरक ‘सी’ खण्ड ओ हिस्सा छल जतय विवादित उत्तराधिकार, बन्धक आ मृतक-प्रमाण सम्बन्धी कागच राखल जाइत छल। ‘१७/सी’ केवल संख्या नहि, हत्या-कागचक गल्ली छल।

भिखारी लाल हतप्रभ रहि गेल। ‘हम तँ बुझैत रही जे अलमारी मात्र अलमारी अछि।’ मीरा कहलथि—‘अपराधी सभक लेल अलमारी बाट होइत अछि। जे भीतरक नक्शा जनैत अछि,

वैह रातिमे अन्हारमे सही ठाम पहुँचैत अछि।’ एहि पर पुरान लिपिकक मुँह फेर पियर भऽ गेल। ओकरा बुझाइ पड़ल जे रेकर्ड-घरक नक्शा बाहरक लोकक हाथमे कोना गेल, ई प्रश्न ओकरासँ सेहो पूछल जाएत।

परमानन्द फेर बजाओल गेल। एहि बेर ओकरा डाँटि नहि, कुर्सी देल गेल। मीरा कहलथि—‘जे लोक डरमे गलि रहल अछि, ओकरा ठाढ़ राखब तँ ओ झूठक सहारा लेत। बैसाउ, ताकि सच ओकर देहमे जगह पाबय।’ परमानन्द बैसल, मुदा ओकर हथेली काँपैत रहल। ओ कहलक—‘फोनमे जे लोक बाजल, ओ पहिने ‘सी खण्ड’ कहलक, फेर तुरन्त चुप भऽ गेल। कहलक—तूँ बस सत्रहक थैली निकाल।’

‘सी खण्ड’ शब्द सुनिते सत्यव्रत मेहता अनन्या दिस देखलनि। अनन्या तुरन्त लिखली—‘फोन करनिहार केँ आन्तरिक खण्ड-ज्ञान छल।’ आरुणि कातमे लिखलक—‘अथवा ओकरा ककरो भीतरक लोक निर्देश दैत छल।’ मीरा दुनू वाक्यक बीच खाली ठाम छोड़बाक कहलथि—‘कतेको बेर सत्य बीचक खाली ठाममे बैसल रहैत अछि।’

आब प्रश्न भेल—फोन कतयसँ आयल? परमानन्दक पुरान सस्ता मोबाइलमे संख्याक नाम ‘दफ्तर’ रूपेँ बाँचल छल। संख्या आब बन्द। युवक सभक मोन तुरन्त पुलिसक नकल, चिन्हारि-पत्र, टावर, सन्देश दिस दौड़ल; मुदा मीरा रोकलथि—‘हम तकनीकक गर्व नहि करब। पहिने देखू—ई संख्या कते बेर, कोन समय, कोन प्रसंगमे आयल।’ कॉल-इतिहास हाथसँ लिखल गेल।

संख्या पहिने तीन बेर आयल छल—एक बेर साँझमे, एक बेर राति साढ़े दस बजे, आ अन्तिम बेर ताला खुजबासँ पहिने। तीनू बेर बातचीत छोट। परमानन्द कहलक—‘स्वर भारी छल, मुदा बीच-बीचमे पाछूसँ ककरो फुसफुसाहट।’ देविका पूछली—‘फुसफुसाहटमे की?’ परमानन्द आँखि बन्द कऽ मोन करय लागल—‘फाइलक पात नहि, थैली। नाम नहि बाजू। सी नहि कहू।’

‘नाम नहि बाजू’—ई वाक्य सुनिते सभ चुप भऽ गेल। नामक पहरुआ बच्चा सभक लेल ई सोझ चुनौती छल। अपराधी सभ बुझैत छल जे नाम बाँचि गेल तँ जाल खुजत। तेँ ओ सभ संख्या, थैली, खण्ड, सेवा, दफ्तर—ई सभ परदा बनबैत छल। अनन्या रजिस्टरमे लिखली—‘अपराधक पहिल नियम: नाम हटाउ।’

एहि बीच सकुनी नागेश्वर झाक घरसँ घुरल। ओकरा संग नागेश्वरक घरवाली पठाओल एक पुरान रसीद छल। रसीद पर छोट मोहर—‘चन्द्रपाल परामर्श केन्द्र’—आ नीचाँ हस्ताक्षर

जेकाँ एक टेढ़ रेखा। रसीद ककरो 'दस्तावेज सत्यापन सहायता'क लेल काटल गेल छल। नागेश्वरक घरवाली कहलीह जे दू मास पहिने दू लोक आयल छल—कहलक जे बैंकक नाम पर कागच जाँचि देब।

रसीद देखिते देविका कहली—'परामर्श केन्द्र? ई तँ सलाहक नाममे कागचक पेट नापयक ठाम भेल।' सत्यव्रत मेहता मोहरक किनार निहारलनि। 'चन्द्रपाल' साफ, मुदा 'परामर्श'क अक्षर आधा घिसल। जेना नाम बचाओल गेल आ काम धुँधला राखल गेल।

पुरान लिपिक धीरेसँ कहलक—'चन्द्रपाल बाबूक दफ्तरमे एक कमरा अछि—लोक ओकरा सी-कक्ष कहैत अछि। ओतय बन्धक, कागच-जाँच, पेंशन, खाता, मृत्यु-प्रमाण, जमीन-माप—सभक लेल बिचौलिया बैसैत अछि।' मीरा ओकरा बीचमे रोकलीह—'तूँ ई बात पहिने किएक नहि कहलह?' लिपिकक स्वर नीचाँ खसल—'कारण सभ जनैत छल। जे बात सभ जनैत अछि, से कतेको बेर कोनो रजिस्टरमे नहि चढ़ैत।'

ई वाक्य रेकर्ड-घरक अन्हारसँ बेसी भयानक छल। सभ जनैत छल—मुदा जाननाइ सार्वजनिक सत्य नहि बनल छल। गाममे अपराधक आधा राज एही 'सभ जनैत अछि'मे बसैत अछि। सुरमणी देवी कहलीह—'आइसँ 'सभ जनैत अछि' रजिस्टरक बाहर नहि रहत। जे जनैत अछि, ओ कहत। जे नहि कहत, ओकर मौनक तारीख लिखल जाएत।'

चन्द्रपालक दफ्तरक रस्ता पकड़ल गेल। बच्चा सभ भीतर नहि गेल; ओ सभ बाहरक दृश्य लिखलक। फाटक पर रंग उतरि रहल छल, मुदा नामपट्ट चमकदार छल। भीतर प्रतीक्षा-कक्षमे प्लास्टिकक कुर्सी, देबाल पर सेवा-सूची, आ एक कोनमे कैमरा। सेवा-सूचीमे शब्द छल—दस्तावेज सहायता, बैंक सुविधा, पेंशन सलाह, उत्तराधिकार मार्गदर्शन, भूमि अभिलेख प्रतिलिपि। प्रत्येक शब्द मदद जेकाँ देखाइत छल, मुदा ओकर पाछाँ खाइत दाँत नुकाएल छल।

दफ्तरक नौकर पहिने कहलक—'चन्द्रपाल बाबू बाहर छथि।' मीरा कहलथि—'हम बाबू नहि, कक्ष देखब।' नौकर हिचकिचायल। सत्यव्रत लिखित निवेदन देखेलनि। भीतर जे छोट कमरा खोलल गेल, ओकर दरबाजाक ऊपर धुँधला अक्षरमे 'सी' लिखल छल। आरुणिक गला सूखि गेल। '१७/सी' आब कागचक चिन्ह नहि, दरबाजा बनि सोझाँ ठाढ़ छल।

सी-कक्षमे तीन मेज छल। पहिल मेज पर फारम, दोसर पर मोहर, तेसर पर कम्प्यूटर। कम्प्यूटरक लग टेपसँ सटाओल कागच पर लिखल छल—'मृत/जीवित सत्यापन हेतु चिन्हारि आवश्यक।' ई वाक्य देखिते नागेश्वरक जीवित मुँह सभकेँ मोन पड़ल। देविका फुसफुसा कऽ

कहली—‘जकरा जीबैत देखि रहल छी, ओकरा सत्यापित करबाक अधिकार ककरा देल गेल?’

मेजक दराजमे किछु खाली लिफाफा भेटल—‘एम. प्रसाद सेवा’ मुद्रित। नौकर कहलक—‘ई बाहरी एजेंसीक सामग्री अछि।’ मीरा पूछलथि—‘बाहरी एजेंसी भीतरक दराजमे किएक?’ नौकर चुप। ई चुप्पी परमानन्दक चुप्पीसँ भिन्न छल; एहि चुप्पीमे भय कम, अभ्यास बेसी छल।

कम्प्यूटर छूअल नहि गेल; ओकर लेल विधिसम्मत आदेश चाही छल। मुदा स्क्रीन पर खुजल अन्तिम पन्नाक छाह अखनहुँ देखाइत छल—कोनो फारमक अधूरा मसौदा। सत्यव्रत तुरन्त बिजली नहि काटय देलनि, नहि स्क्रीन छूअय देलनि। ओ कहलनि—‘जे नहि छूब, से बाँचि सकैत अछि।’ बच्चा सभ सीखलक—सत्यक रक्षा कतेको बेर हाथ रोकबामे सेहो होइत अछि।

देबाल पर एक नक्शा टाँगल छल—गामक बूढ़ घर, बाहर बेटा, अकेल दम्पती, बन्धक भूमि, पेंशन खाता—अलग-अलग रंगमे चिन्हित। नक्शा सरकारी नहि छल, शिकारी नक्शा छल। ओहि नक्शा पर लाल टिप्पी सभ एतेक करीने लागल छल जेना ककरो बड़ी धीरजसँ, साँझ-साँझ भरि बैसि कऽ, एक-एक घर गनने हो। सुरमणी देवी काँपि उठलीह—‘ई लोक सेवा नहि, शिकारक खेत बनौने अछि।’ भिखारी लाल कहलक—‘गोहि जलमे रहैत छल, मुदा एहि लोकक गोहि नक्शा पर तैरैत अछि।’

हरिचरण अचानक ओतय आबि पहुँचल। ओकर मुँह पर तामसक रंग चढ़ल छल। ओ कहलक—‘एहि तरहेँ निजी दफ्तरमे घुसब गैरकानूनी अछि।’ मीरा शान्त स्वरमे उत्तर देलीह—‘जीवित लोकक मृतक प्रमाण-पत्र बनब—कानूनक कोन भागमे अछि?’ हरिचरण एक क्षणक लेल निरुत्तर भेल, फेर कहलक—‘चन्द्रपाल बाबू समाजसेवी छथि।’

सुरमणी देवी आगाँ बढ़लीह—‘समाजसेवी ओ नहि जे बूढ़क कागच देखबाक नाम पर ओकर मृत्युक मसौदा बनाबय।’ हरिचरण हँसय चाहलक, मुदा हँसी अधबीचमे अटकि गेल। ओकर नजरि मेजक दराज पर गेल जतय ‘एम. प्रसाद सेवा’क लिफाफा राखल छल। ई नजरि अनन्या लिखि लेली—‘हरिचरणक दृष्टि दराज पर ठहरल।’

चन्द्रपाल स्वयं नहि आयल। दफ्तरक लोक कहैत रहल जे ओ शहर गेल छथि। मुदा सी-कक्षक टेबल पर ताजा चाह छल, आधा पीबल। कपक किनार पर दाँतक हलुक निशान। मीरा

ओकरा छूअय नहि देलथि। 'अनुपस्थित लोक कतेको बेर अपन आधा पीबल चाहसँ उपस्थित रहैत अछि,' ओ कहलथि।

बाहर प्रतीक्षा-कक्षमे दू बूढ़ स्त्री बैसल छलीह। हुनका सभसँ कियो पूछने नहि छल। मीरा हुनका सभक अनुमति लऽ धीरेसँ बात केलथि। एक कहलीह—'हमरा कहल गेल जे पेंशन बन्द भऽ जाएत जँ अंगूठा नहि लगाबी।' दोसर कहलीह—'हमर बेटा बाहर अछि। ओ कहै छै जे फोन पर कागच नहि देब, मुदा ई लोक कहैत अछि जे नहि देब तँ नाम कटि जाएत।' एहि दू वाक्यमे भयक पूरा व्यापार खुजि गेल।

आरुणि लिखलक—'नाम कटबाक डर, पेंशन रुकबाक डर, मृत लिखि देबाक डर—तीन डोरि।' देविका जोड़ली—'डोरि पकड़निहार: सी-कक्ष।' अनन्या तेसर पाँति लिखली—'सी-कक्ष केवल कमरा नहि, जालक पेट।' ई पाँति पढ़िते मीरा कहलथि—'एहि अध्यायक नाम यैह होइत अछि।'

साँझमे चन्ना गाछी लग सभ प्रमाणक पाठ भेल। रसीद, लिफाफा, सी-कक्षक विवरण, बूढ़ स्त्री सभक बयान, परमानन्दक 'सी खण्ड' स्मरण, आ '१७/सी'क मिलान—सभ सार्वजनिक रूपेँ पढ़ल गेल। कोनो निर्णय नहि सुनाओल गेल; केवल क्रम सुनाओल गेल। मुदा क्रम स्वयं फैसला बनय लागल।

चन्ना गाछीक ठूँठक छाह ओहि दिन असाधारण नमहर भऽ गेल। कियो कहलक—ओ छाह सी-कक्ष धरि गेल। कियो कहलक—ओ छाह चन्द्रपालक नामपट्ट पर चढ़ि गेल। बच्चा सभ केवल लिखलक—'छाह नमहर भेल।' मीरा सन्तुष्ट भेलीह; कल्पना आ गवाहीक बीचक दूरी बचाओल गेल।

राति नदीक कगार पर गोहि देखाइ नहि पड़ल, मुदा जलमे गोल-गोल भँवर उठैत रहल। बूढ़ मुवक्किल कहलक—'पेट भीतर अछि। ' सुरमणी देवी उत्तर देलीह—'आब हम पेटक नाप लऽ रहल छी। ' एहि वाक्यक संग अध्याय समाप्त होइत अछि। चन्द्रपाल अनुपस्थित अछि, मुदा ओकर छाह पकड़ा गेल अछि।

लोकगीत: सत्रह-सीक ताला

लोकधुन: रहस्य-बटगबनी

खोलू हे धीरे, सत्रह-सीक ताला खोलू हे,

छाहक पेट भीतर दबल कतेको नाम बाजू हे।

नान्हि संख्या सत्रह-सी, पैघ ताला काँपल,

रसीद, लिफाफा, सी-कक्ष एकहि बाट नापल।

बूढ़ स्त्रीक बयान संग परमानन्दक स्मरण,

क्रम पढ़िते छाह बनल मौनक निर्णय।

चन्द्रपाल अनुपस्थित, ओकर छाह नमहर,

नामपट्ट पर चढ़ि गेल गाछीक साँझक अम्बा।

गोहिक देह नहि, जलमे पेटक भँवर,

सुरमणी कहली—आब नापब भीतरक जहर।

सत्रह-सी, जे नुकाएल से धीरे खोलू,

छाहक पेट भीतर कतेको दबल नाम बाजू।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—कर्ता तिङ्क अर्थ नहि: “कपड़ा नील अछि”, “चैत्र पकबैत अछि” आ “चाउर पकाओल जाइत अछि” मे सामानाधिकरण्य केवल एके संख्या व्यक्त होएब अछि; एकहि अर्थक वाच्यता नहि। कर्ता तिङ्क अर्थ नहि।]

अध्याय १६५

छायाक देह

छाया पकड़ा गेल तँ प्रश्न ठाढ़— देह कतय? आ देह सदिखन कोनो कोठारमे भेटै छै।

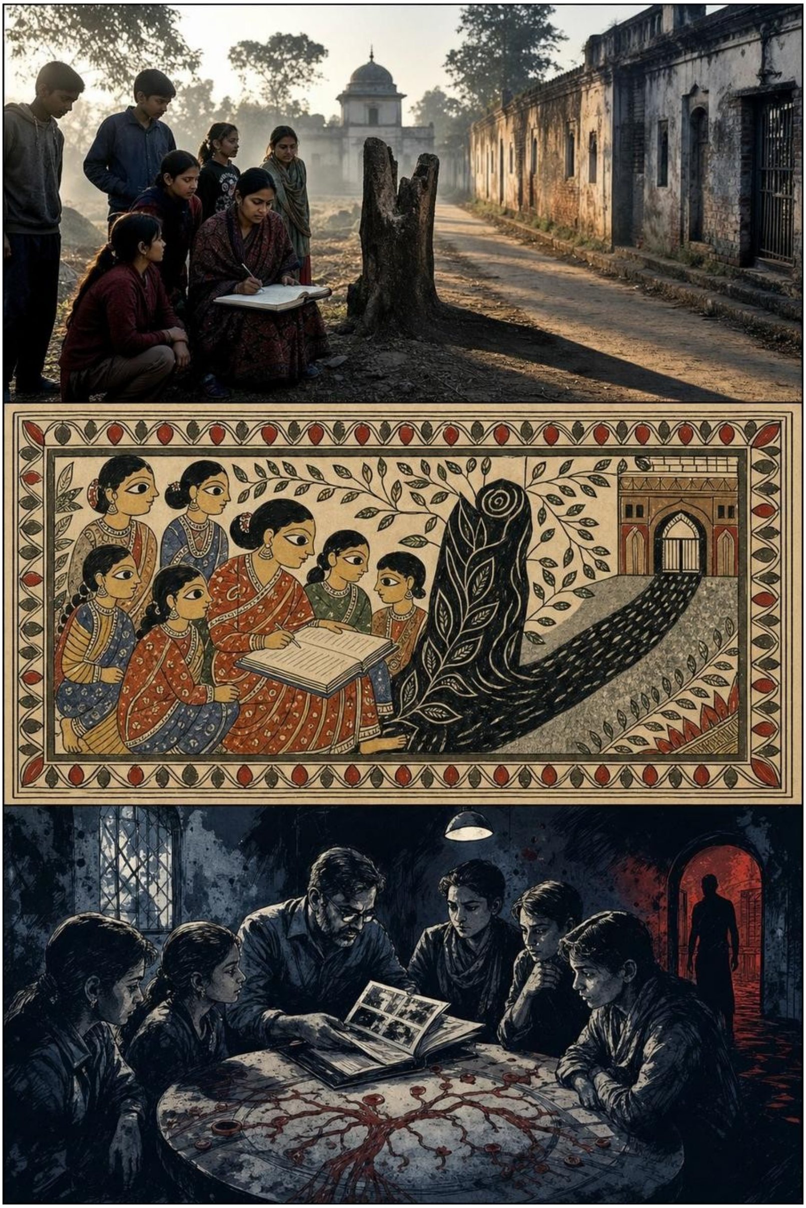

अध्यायारम्भ लोकगीत: तेतरि घाटपर नाव

लोकधुन: नाविक गीत

खोलू हे रस्सी, तेतरि घाटक रस्सी खोलू हे,
प्रश्नक चप्पू, साँचक चप्पू—दुनू संग बोरू हे।
तेतरि घाटपर भोर भेल, रस्सी खोलू नाव,
छाहक पाछाँ देह मिलत, धैर्यक राखू भाव।
धार बदलय, नाविक नहि अपन दिशा बिसरय,
ताराक छोट निशान देखि पानि-पानि उतरय।
एक चप्पू प्रश्नक हो, दोसर साँचक बल,
दुनू मिलि पार लगाबय गहींर अपराधक जल।
घाट पुकारय—आउ सभ, नाव अकेल नहि,
संग चलत जन-विश्वास तँ दूरी भारी नहि।
भोरक कुहेस पातर भेल, धार बदलय रंग,
नाविकक थिर आँखिमे ताराक निशान संग।
गहींर जल, अनचिन्ह छाह—डोलय नहि नाव,
जन-विश्वासक पाल तनल, घाट-घाट पड़ाव।

❖

छाह पकड़ा गेल तँ प्रश्न ठाढ़— देह कतय? आ देह सदिखन कोनो कोठी-बखारीमे भेटै छै। किएक तँ छाह केँ खेनाइ-पीनाइ नै चाही, मुदा देह केँ ठाम चाही, ताला चाही, आ राति-राति भरि ढोबय बला हाथ चाही।

बूढ़ सभ कहै छै जे अपराध केँ दू ठाम चाही—एकटा जतय ओ लिखल जाइ छै, आ एकटा जतय ओ राखल जाइ छै। लिखबाक ठाम दफ्तर होइ छै, राखबाक ठाम गोदाम। तेँ जे लोक केवल दफ्तर तकै छै, ओ आधा अपराध देखै छै; आ आधा देखनाइ कतेको बेर किछु नै देखने सँ बेसी खतरनाक होइ छै।

संख्या केँ उनटा देब सभ सँ सस्ता जादू छिऐ। १७/सी केँ सी-१७ लिखि दिअ—अक्षर वैह, आँखि धोखा खा जाइए। चोर जनै छै जे लोक पढ़ै छै नै, केवल चिन्है छै; आ जकरा चिन्हबाक अभ्यास लागि गेल, तकरा उनटा रूप देखा देब बहुत छै।

आ खाली लिफाफा? खाली लिफाफा गामक सभ सँ भारी वस्तु छिऐ। ओहि मे कागच नै रहै छै, तेँ ओ खाली कहबै छै; आ ओहि मे जे रहै छै, तकर नाम लेल नै जा सकै छै, तेँ ओ भारी

रहै छै। जकरा ई गनित बुझल छै, ओ दुनू बात एके संगे कहि सकै छै—लिफाफा खाली अछि, सावधान रहू।

तेँ आब बाट पानि दिस मुड़ि गेल छै। कोठी-बखारी नदीक कात होइ छै, आ नदी कहियो गवाही नै दै छै—मुदा नदीक घाट दै छै। घाट पर पएर पड़ै छै, कादो मे नाप बनै छै, आ नाव जे राति-राति चलै छै, से भोर मे अपन रस्सीक गाँठि छोड़ि जाइए।

पेटक नाप लेल जा चुकल छल, आ आब प्रश्न बाँचल छल—‘छाह जखन पकड़ा जाय, तँ देह कतय अछि?’ ई प्रश्न राति भरि चन्ना गाछीक ठूँठ पर झूलैत रहल। भोरमे जखन कुहेस हटय लागल, तखन बच्चा सभ देखलक जे ठूँठक नमहर छाह सोझे दफ्तरक पुरान पिछुआरी गली दिस पड़ल अछि। सूरज एखन पूरा ऊपर नहि चढ़ल छल, मुदा छाह अपन बाट चुनि चुकल छल। अनन्या रजिस्टर खोलली आ पहिल पाँति लिखली—‘देहक खोज छाहसँ शुरू।’

मीरा सभकेँ सावधान केलथि—‘आइ कोनो घर पर धावा नहि। जकरा हम खोजैत छी, ओ लोक मात्र नहि, व्यवस्थाक देह अछि। ओकर हड्डी कागचमे, रक्त पाइमे, साँस डरमे, आ मुँह प्रतिष्ठामे नुकाएल अछि।’ एहि बातसँ बच्चा सभक चाल धीमा भऽ गेल। ओ सभ बुझि गेल जे दौड़लासँ अपराध नहि पकड़ाइत; क्रम पकड़लासँ पकड़ाइत अछि।

सत्यव्रत मेहता ‘१७/सी’क पन्ना फेर सोझाँ राखलनि। ओ कहलनि—‘सी केवल कक्ष नहि भऽ सकैत अछि। ई खण्ड, चिन्ह, कोड, वा कोनो नामक पहिल अक्षर सेहो भऽ सकैत अछि। मुदा जे किछु अछि, ओकर देह कतहु ने कतहु हिसाब छोड़त।’ भिखारी लाल जोड़लक—‘हिसाब नुकाइत अछि, मुदा धूरि ओकर पएरक निशान राखैत अछि।’

सभसँ पहिने ओ सभ दफ्तरक पिछुआरी गली गेल। गली सोझगर नहि, साँकड़, सीलनदार, आ बेरंग छल। देबालक पलस्तर जगह-जगह झरल, जकरा देखिकऽ बुझाइत छल जे देबालो बरखों धरि कोनो बात रोकि-रोकि थाकि गेल अछि। एक कोनमे लोहाक पुरान दरबाजा छल, जकर ऊपर रंगसँ लिखल अक्षर मेटल जेकाँ छल—‘संग्रह-कक्ष’। मुदा अक्षरक नीचाँ आँगुर फेरल गेल तँ धूरिक भीतर ‘सी’ चमकल।

देविका धीरेसँ कहली—‘सी-कक्ष।’ परमानन्द, जे राति भरि निन्न नहि सुति सकल छल, ई शब्द सुनिते काँपि उठल। ओकर ठोर सुखा गेल। ओ बहुत काल बाद कहलक—‘हम एहि दरबाजा लग बेर-बेर पन्ना देबाक लेल ठाढ़ रहलहुँ। भीतर केओ सोझे नहि जाइत छल। पन्ना बाहर लेल जाइत, भीतरसँ खाली लिफाफा घुरैत।’

‘

खाली लिफाफा?' आरुणि पूछलक। परमानन्द माथ झुकौलक—'हँ, बाहरसँ खाली देखाइत। मुदा अधिकारी कहैत छल—लिफाफा भारी अछि, सावधान।' ई सुनि सुरमणी देवी हँसलियो नहि, कानलियो नहि। ओ कहलथि—'जतय खाली लिफाफा भारी कहल जाय, बुझू ओतय अदृश्य घूसक वजन अछि।'

दरबाजा खोलबाक अधिकार कोना भेटत—एहि पर चर्चा चलि रहल छल कि ओही समय नागेश्वर झा अपन पुरान कपड़ामे, लाठी टेकैत, गलीमे आबि ठाढ़ भेलाह। हुनकर मुँह पर रातिक जागरण छल, मुदा आँखिमे अजीब साफ उजास। ओ कहलनि—'ई दरबाजा आधिकारिक रूपेँ बन्द अछि। मुदा एक रस्ता अछि—ऊपरक रोशनदान।' भिखारी लाल चौंकल—'अहाँ कें केना ज्ञात?' नागेश्वर उत्तर देलनि—'हमरा एक बेर मृतक घोषित कयल गेल, मुदा मृत लोकक कान बहुत किछु सुनैत अछि।'

बच्चा सभ रोशनदान दिस ताकलक। ओतय जाला, धूरि, आ कबूतरक पाँख अटकल छल। छोट आरुणि देबाल पर चढ़ल नहि; ओ पहिने कागच पर रोशनदानक ऊँचाइ, दिशा, आ भीतरक हवा लिखलक। मीरा प्रसन्न भेलीह—'पहिने देखू, फेर छूअब।' बच्चा सभ आब चोरि करय नहि, गवाहीक पद्धति बना रहल छल।

भिखारी लाल अपन पुरान झाड़ूसँ जाला हटेलक। भीतरसँ एक बसाइन गन्ध निकलल—पुरान स्याही, नमी, लोहा, आ बन्द संदूकक। रोशनदानसँ भीतर झाँकल गेल। देबाल लग लकड़ीक पेटी सभ राखल छल। प्रत्येक पेटी पर रंगक धारी। एक पेटी पर उज्जर धारी, एक पर लाल, एक पर कारी, आ एक पर पीयर। उज्जर पेटी पर धुँधल अक्षर छल—'सी-१७'।

अनन्याक हाथ अपने-आप रजिस्टर पर चलल—'१७/सी उनटल क्रममे सी-१७।' सत्यव्रत मेहता गम्भीर भऽ गेलाह। 'अपराध कतेको बेर संख्या उनटि दैत अछि, ताकि आँखि सोझ पढ़ि नहि सकय।' ई वाक्य गलीक देबालसँ टकरा कऽ घुरल। सभकेँ लगल जे देबाल भीतरसँ सुनि रहल अछि।

कानूनी ताला तोड़ब उचित नहि छल। मीरा निर्णय देलीह—'हम दरबाजा नहि तोड़ब। हम दरबाजाक सोझाँ पाठ करब। जे भीतर अछि, ओकर नाम बाहर पुकारब।' एहि निर्णय पर किछु युवक अधीर भेल। मुदा सुरमणी देवी हुनका सभकेँ रोकलथि—'तोड़ल दरबाजा अपराधी कें हमलावर कहबाक मौका देत। पुकारल नाम ओकरा भीतरसँ काँपबैत अछि।'

एहि तरहेँ गलीमे पाठ शुरू भेल। पहिल नाम—नागेश्वर झा। दोसर—मधुकर प्रसाद। तेसर—हरिचरण। चारिम—सुरमणी देवीक बन्धक फाइल। पाँचम—विधवा निवेदन। छठम—

अज्ञात मृतक प्रमाण-पत्र। प्रत्येक नामक संग तारीख जोड़ल गेल। तारीखक संग पन्ना। पन्नाक संग गवाही। गली धीरे-धीरे अदालतक बरामदा बनय लागल।

जखन 'मधुकर प्रसाद'क नाम तेसर बेर पुकारल गेल, रोशनदानक भीतर किछु खसल। आवाज छोट छल, मुदा सभ सुनि लेलक। भिखारी लाल डरि कऽ पाछाँ हटि गेल। सत्यव्रत मेहता कहलनि—'कागचक आवाज अछि।' आरुणि जोड़लक—'वा केओ सुनि रहल अछि।' ई दोसर सम्भावना हवामे तैरल आ सभक मुँह पर उतरि गेल।

मधुकर गायब छल। हरिचरण अनुपस्थित। चन्द्रपाल अदृश्य। मुदा सी-कक्षक भीतर आवाज आयल छल। कियो जीवित भीतर नुकाएल अछि कि केवल ढीला पन्ना खसल—ई निश्चित नहि। मीरा तुरन्त लिखौलथि—'अज्ञात ध्वनि। अनुमान नहि।' ई सावधानी कथा कँ अफवाह बनबासँ बचा रहल छल।

ओही समय गलीक दोसर मुँह पर एक नेना दौड़ैत आयल। ओकर हाथमे फाटल रसीद छल। ओ हाँफैत कहलक—'ई मधुकरक कोठरीक चटाइ नीचाँ भेटल।' रसीद पर लिखल छल—'ढुलाइ: चारि पेटी, राति पहर, गन्तव्य—सी गोदाम।' हस्ताक्षर धुँधला छल, पर तिथि ओहि सप्ताहक छल जखन नागेश्वर झाक मृतक प्रमाण-पत्र बनल कहल जा रहल छल।

'सी गोदाम?' देविका कहली। परमानन्द फुसफुसायल—'दफ्तरक सी-कक्ष आ बाहरक सी गोदाम अलग-अलग नाम छल, मुदा पेटी सभ एकहि लोकक मार्फत चलैत छल।' 'के लोक?' अनन्या पूछली। परमानन्द बहुत काल धरि चुप रहल। फेर ओकर ठोर पर नाम आयल—'चन्द्रपालक लोक—धरनी महतो।'

धरनी महतो नाम सुनिते बूढ़ मुवक्किल माथ उठेलक। 'ओही धरनी जे पहिने कबाड़ीक काम करैत छल?' सुरमणी देवी कहलथि—'कबाड़ी नहि, नामक हड्डी कीननिहार।' सभ स्तब्ध भऽ गेल। रद्दी बोरा, पेटी, खाली लिफाफा, ढुलाइ, सी-कक्ष—सभ एकाएक जोड़ाय लागल। गोहिक देह आब कागचक बोरासँ निकलि बाजारक तराजू पर देखाइ देबाक संकेत देलक।

मीरा निर्णय देलीह जे धरनी महतो कँ तुरन्त भीड़सँ घेरल नहि जाय। पहिने ओकर रस्ता पढ़ल जाय। भिखारी लाल कहलक—'गलीसँ बाहर एक पुरान तौल-काँटा अछि। रातिमे पेटी ओतहि तौलल जाइत छल।' सभ ओहि काँटा लग गेल। लोहाक काँटा जंग खाएल, मुदा ओकर पाट पर कागचक महीन रेशा अटकल छल। देविका आँगुरसँ छूलनि नहि; ओ केवल देखली आ लिखली—'रेशा उपस्थित।'

आरुणि एक छोट कागच पाटक नीचाँसँ निकाललक। कागच पर केवल तीन शब्द बाँचल छल—‘मूल प्रति सुरक्षित।’ ई पढ़िते सत्यव्रत मेहताक मुँह बदलि गेल। ‘जँ मूल प्रति सुरक्षित अछि, तँ झूठा मृत्यु प्रमाण-पत्र आ हटायल फाइल दोसर प्रति भऽ सकैत अछि। असली पेटी कतहु बाँचल अछि।’ आशाक पहिल पातर रेखा गलीमे उतरि आयल।

मुदा आशाक संग खतरो आयल। जँ असली पेटी सुरक्षित अछि, तँ अपराधी ओकरा मेटएबाक कोशिश अवश्य करत। मीरा बच्चा सभकेँ अलग कऽ कहलथि—‘आइसँ रजिस्टरक प्रति तीन ठाम राखल जाएत। एक चन्ना गाछी लग, एक सत्यव्रतजी लग, आ एक ओहि घरमे जतय लोक सभसँ कम शंका करत।’ अनन्या पूछली—‘कोन घर?’ सुरमणी देवी मुस्कुरेलीह—‘विधवाक घर। अपराधी ओकरा कमजोर मानैत अछि; कमजोरी सभसँ सुरक्षित परदा होइत अछि।’

दुपहर धरि ‘सी गोदाम’क खबरि गाममे पसरल, मुदा मीरा अफवाह रोकबाक लेल सार्वजनिक सूचना पढ़ौलथि—‘सी-कक्षक बाहर पाठ भेल। सी-१७ पेटी रोशनदानसँ देखल गेल। मधुकरक कोठरीसँ ढुलाइ रसीद भेटल। धरनी महतोक नाम गवाहीमे आयल अछि, निर्णयमे नहि।’ एहि सूचनासँ लोकक तामस अनुशासनमे बदलल।

साँझमे चन्ना गाछी लग धरनी महतोक पुरान कामक ब्योरा पढ़ल गेल। कियो कहलक ओ कबाड़ी, कियो कहलक ढुलाइवाला, कियो कहलक चन्द्रपालक विश्वासपात्र। पर बूढ़ मल्लाह कहलक—‘ओ नदी पारक राति सभमे पेटी ढोइत छल।’ नदीक नाम आयल तँ सभ चुप भऽ गेल। गोहि, जल, पेटी, कागच—ई चारि शब्द एक दोसराक छाह बनि गेल।

सत्यव्रत मेहता पूछलनि—‘नदी पार कोन ठाम?’ बूढ़ मल्लाह उत्तर देलक—‘पुरान तेतरिक घाट। ओतय आधा धँसल कोठी-बखारी अछि। लोक कहैत अछि कोठी-बखारीमे आब किछु नहि; मुदा रातिमे कतेको बेर लालटेन देखल गेल।’ अनन्या लिखली—‘तेतरि घाट: सम्भावित सी गोदाम।’

ओहि राति कोनो जाँच दल नहि निकलल। मीरा रोकलथि। ‘अन्हार अपराधीक संगी होइत अछि। हम उजासमे जाएब।’ बच्चा सभक अधीरता कम नहि भेल, मुदा ओ सभ बुझलक जे साहस आ उतावलपन अलग बात अछि। देविका कहली—‘नाटकमे राति सुन्दर लागैत अछि, गवाहीमे उजास चाही।’

रातिक अन्तिम पहरमे चन्ना गाछीक ठूँठ पर फेर चिरई आयल। ओकर चोंचमे एहि बेर लाल सूत नहि, कागचक महीन रेशा छल। ओ रेशा ठूँठक फाटल छालमे अटकि गेल। भोरक

हवा ओकरा हिलबैत रहल, मुदा ओ छूटल नहि—जेना कोनो नाम ठाम पकड़ि लेने हो। सुरमणी देवी धीरेसँ कहलथि—‘गाछी सेहो प्रमाण जमा करैत अछि।’ मीरा लिखलनि—‘प्रकृतिक संकेत, प्रमाण नहि।’ मुदा हुनकर आँखिमे विश्वास छल जे संकेत कतेको बेर प्रमाणक पथ देखबैत अछि।

नदीक कगार पर ओहि राति गोहि बहुत काल स्थिर रहल। ओकर मुँह पानि दिस नहि, तेतरि घाट दिस छल। बूढ़ मुवक्किल कहलक—‘ओ बाट देखबैत अछि।’ सत्यव्रत मेहता रोकलनि—‘हम गोहिक इशारा नहि लिखब; हम मल्लाहक बयान लिखब।’ बूढ़ मुवक्किल मुस्कुरायल—‘ठीक अछि। नाम बचय, कथा बादमे बाँचत।’

अध्याय एहि ठाम ठहरैत अछि। चन्द्रपालक छाह देह खोजबाक रस्ता देलक; सी-कक्षसँ सी-१७ पेटी, मधुकरक रसीदसँ सी गोदाम, धरनी महतोसँ तेतरि घाट, आ कागचक रेशासँ नदीक अन्हार जुड़ि गेल। प्रश्न साफ अछि—पुरान तेतरिक कोठी-बखारीमे रद्दी अछि, असली मूल प्रति, कि ओ देह जकरा सभ छाह कहि टारैत रहल?

लोकगीत: छाह तेतरि घाट चलल

लोकधुन: नाविक गीत

देखाउ हे छाह, तेतरि घाट पर असल देह देखाउ हे,
अपन पएरक कादो आब ने नुकाउ हे।
छाह पकड़ा गेल, देह भागल कोन बाट,
सी-कक्षसँ पेटी, पेटीसँ तेतरि घाट।
धरनी मल्लाह कहलक—राति बखारी जागय,
कागचक रेशा चिरईक चोंचसँ गाछी लागय।
गोहि मुँह घुमा कऽ घाट दिस बाट देखेलक,
कथा कहलक संकेत, गवाही मल्लाह देलक।
रद्दी कि मूल प्रति, कि डरक देह गाड़ल,
भोरक नाव पूछय—के राति एतय उतारल?
छाह, अपन पएरक कादो नहि नुकाउ,
तेतरि घाटक अन्हारमे असल देह देखाउ।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—तत्पुरुष समासमे शक्ति: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उत्तर—जँ सम्बन्धार्थ न ग्रहण हो, “राजपुरुष” मे राजत्वविशिष्ट राजा केवल पुरुषक विशेषण बनत, सम्बन्धक प्रकार निर्धारित नहि होएत। एहि विभाजनसँ बुझायल जे

सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। तत्पुरुष समासमे शक्ति।]

अध्याय १६६

इमली घाटक कोठार

कोठारमे रद्दी नहि— रोकल गेल डर सड़ैत रहै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: बखारीमे धानक गन्ध

लोकधुन: कोठी-बखारी मंगल गीत

खोलू हे बखारी, डर झाड़ि कऽ खोलू हे,
सड़ल चुप्पी बाहर, धानक गन्ध घोलू हे।
बखारी खोलू, डर नहि—धानक गन्ध भरू,
सड़ल चुप्पी बाहर फेकू, नब बीआ घर धरू।
प्रत्येक दाना मेहनत कहय, प्रत्येक भूसा इतिहास,
अन्नक कोठी बनय पुनः भरोसक निवास।
माय झाड़ू फेरि कहय—अन्हार आब ने रहत,
खुजल झरोखा, सूखल माटि, नब मौसम बहत।
बखारीमे धान भरत तँ घरक निन्न हँसत,
डरक सड़ल गन्ध हटत, जीवन फेर बसत।
माय झाड़ू फेरय, झरोखासँ रौद पैसय,
दाना-दाना मेहनतक कथा कोठीमे बैसय।
नब बीआक बोरा चढ़ल, मूस-डाह पड़ायल,
भरल बखारी देखि घरक निन्न मुस्कायल।

❖

कोठी-बखारीमे रद्दी नहि— रोकल गेल डर सड़ैत रहै छै। धान जँ बरख भरि बन्द रहय तँ ओ केवल पुरान होइ छै; मुदा डर जँ बरख भरि बन्द रहय तँ ओ फूलि कऽ पेटी भरि जाइए, आ ओकर गन्ध ताला कैँ चीरि कऽ बाहर आबि जाइए।

बूढ़ सभ कहै छै जे गामक कोठी-बखारी अन्नक लेल बनल छल, ने कागचक लेल। जे कोठार मे धान नै अछि आ ताला भारी अछि, ओहि कोठार सँ डेराइत रहू—किएक तँ ओतय जे राखल छै, से खाइ नै जाइ छै, ओ खा जाइ छै।

नमी सभ किछु खा लै छै—बोरा, बीआ, चिट्ठी, हस्ताक्षर। मुदा नमी एकटा गुण सेहो रखै छै: ओ समय गनै छै। जकरा नमीक भाषा बुझल छै, से कागच कैँ छूबि कऽ कहि दै छै जे ई पन्ना कोन बरखा देखलक। तैँ बूढ़ लोक नोन नेने चलै छै आ नब लोक यन्त्र—दुनू एके प्रश्न पूछै छै, केवल भाषा अलग।

आ जे शब्द सभ सँ भयंकर छै, से रक्त सँ नै लिखल जाइ छै। 'मृत तैयार'—दू शब्द, कोनो हथियार नै, कोनो चीत्कार नै। जीवित लोक साँस लऽ रहल छै, आ ओकर नाम पर कागच पर हुकुम लिखल जा चुकल छै। हत्या मे खून बहै छै; एहि मे केवल स्याही।

तेँ आइ कोठार खुजत तँ जयकार नै होयत। जे भेटत, से गनल जायत, नपल जायत, लिखल जायत। किएक तँ जीत मे लोक हल्ला करै छै आ हल्ला मे प्रमाण हेरा जाइ छै। आ जकर हाथ मे प्रमाण छै, तकरा हल्लाक कोन खगता?

उजासमे घाट पर जएबाक निर्णय भऽ चुकल छल, आ भोरक उजास पूरा पसरल नहि छल, मुदा तेतरि घाट दिस जाय लेल गामक पाँत बनि गेल। राति भरि जे प्रश्न सभक भीतर काँटा जेकाँ अटकल रहल—पुरान कोठी-बखारीमे रद्दी अछि, मूल प्रति अछि, कि छाहक असली देह—से आइ धूपक सोझाँ राखल जाएत। चन्ना गाछीक ठूँठ पर ओ महीन कागचक रेशा अखनहुँ अटकल छल। मीरा ओकरा छूअलनि नहि; बस रजिस्टरमे लिखलनि—‘संकेत यथास्थान।’

सत्यव्रत मेहता सभकेँ पहिने नियम सुनौलनि—‘घाट पर जे भेटत, ओकरा उठेबासँ पहिने देखल जाएत, देखलासँ पहिने चिन्हित, चिन्हित भेलासँ पहिने साक्षी। उत्साहमे हाथ आगाँ नहि जाएत।’ बच्चा सभ माथ हिलेलक। ओ सभ आब सीखि चुकल छल जे सत्यक सभसँ पैघ शत्रु कतेको बेर अपराधी नहि, उतावल भलमनसाहत होइत अछि।

सुरमणी देवी अपन आँचरमे नोनक छोट पोटली राखि लेलनि। आरुणि पूछलक—‘नोन किएक?’ ओ हँसलीह—‘नदीक नमी कागच खा जाइत अछि। नोन मोन दिआबत जे नमी कतेक पुरान अछि।’ मीरा एहि उत्तर केँ आधा लोक-ज्ञान, आधा सावधानी मानि लिखौलनि। एहि कथामे लोक-ज्ञान केँ अन्हविश्वास बनय नहि देब, आ आधुनिक सावधानी केँ गर्व बनय नहि देब—ई हुनकर नब नियम छल।

तेतरि घाट धरि जाय बाट पर कादो कम, चिन्ह बेसी छल। गाड़ीक पहिया, मल्लाहक पएर, बकरीक खुर, आ कतेको ठाम भारी पेटी घिसिटएबाक रेखा। भिखारी लाल घुटना टेकि कऽ रेखा निहारलक। ‘ई ताजा नहि,’ ओ कहलक, ‘मुदा बरखासँ पहिनुका सेहो नहि। बीचक समयमे किछु भारी वस्तु लऽ जाओल गेल।’ अनन्या लिखली—‘घिसिटान पुरान, पर बरखा बादक।’

घाटक पुरान तेतरि गाछ दूरसँ देखाइ पड़ल। ओकर आधा तना नदी दिस झुकल, आधा जड़ि माटिमे खुजल। ओहि जड़िक पाछाँ कोठी-बखारी छल—ईंटाक पुरान देह, छप्परक जगह टीनक फाटल पटरा, आ दरबाजा पर जंग लागल ताला। ताला देखिते सत्यव्रत मेहता रुकि गेलाह। ओ कहलनि—‘ताला बाहरक वस्तु अछि; भीतरक प्रश्न ओकरासँ पैघ अछि। खोलब विधिसँ।’

बूढ़ मल्लाह आगाँ आयल। ओ गवाही देलक जे कोठी-बखारी पुरान मालिकक समयसँ खाली कहल जाइत छल, मुदा पछिला मास रातिमे दू बेर लालटेन देखल गेल। ‘नाव नहि लगल?’ मीरा पूछलथि। मल्लाह उत्तर देलक—‘नाव लगल नहि, मुदा पानि काटल गेल। कियो घाटसँ नहि, निचला धारसँ आयल।’ ई वाक्य सुनि देविका धीरेसँ कहली—‘जाल सदिखन मुख्य बाट छोड़ि धारक अन्हार चुनैत अछि।’

ताला पंचायतक साक्षी, मल्लाह, भिखारी लाल, सत्यव्रत आ दू वृद्ध स्त्रीक उपस्थितिमे खोलल गेल। ताला खुजिते कोठी-बखारीक भीतरक गन्ध बाहर आयल—गील कागच, पुरान बोरा, दीमक, तेल, सस्ता सुगन्ध, आ बन्द हवा। कियो तुरन्त भीतर घुसय चाहलक, मुदा मीरा हाथ उठा रोकलथि। ‘पहिने हवा बाहर आबय दियौ। कागचक कैद सेहो साँस माँगैत अछि।’

किछु काल बाद भीतर दीया नहि, धूपक पातर धार घुसाओल गेल। कोठी-बखारीक फर्श पर छिड़िआयल राख नहि, कागचक भुरभुराहट छल। देबालक सहारे पुरान पेटी, बीचमे टूटल मेज, आ कोनमे प्लास्टिकक डिब्बा। एक पेटी पर लाल खड़ियासँ लिखल छल—‘सी-१७’। ई देखिते आरुणिक हाथ काँपि गेल। ‘सी-१७ पेटी’ आब कोठी-बखारीमे देह बनि ठाढ़ छल।

मीरा कहलथि—‘केओ जयकार नहि करब। प्रमाण भेटल अछि, विजय नहि।’ ई सुनि भीड़ चुप भऽ गेल। अनन्या पेटीक चारू कातक दृश्य लिखली—पेटी जंग लागल, पर ताजा कपड़ाक पट्टीसँ बान्हल; नीचाँ कादो सूखल; ऊपर कागचक महीन रेशा सटल। सुरमणी देवी ठूँठक रेशा मोन कऽ काँपि उठलीह, मुदा ओ कहलथि नहि। जाधरि मिलान नहि, ताधरि संकेत संकेते।

पेटी खोलल गेल। भीतर फाइल नहि, परत पर परत लिफाफा छल। किछु पर नाम, किछु पर संख्या, किछु पर केवल अंगूठाक कारी छाप। पहिल लिफाफा खोलल गेल—नागेश्वर झाक मूल बन्धक-पत्रक प्रति, जे अदालतमे अनुपलब्ध कहल गेल छल। दोसर—धरनी महतोक बयानक पुरान मसौदा। तेसर—दू विधवाक जमीनक सहमति-पत्र, जकर हस्ताक्षर एकहि हाथसँ बनल बुझाइत छल।

सत्यव्रत मेहता प्रत्येक पन्ना बिनु मोड़ल, बिनु दबाओल पढ़लनि। ओ कहलनि—‘ई असली मूल प्रति नहि, मुदा मूल प्रति धरि पहुँचयक दरबाजा अछि। जे लोक प्रतिलिपि पर अभ्यास करैत अछि, ओ मूल पर प्रहारक तैयारी करैत अछि।’ बच्चा सभ ई वाक्य टिपलक।

दू वृद्ध स्त्री, जे काल्हि सी-कक्षमे भेटल छलीह, पेटीक पन्ना देखिते कानय लगलीह। एक कहलीह—‘ई हमर अंगूठा नहि।’ दोसर कहलीह—‘ई हमर नामक वर्तनी गलत अछि। हमर

घरमे कियो एना नहि लिखैत अछि।’ नामक वर्तनी ओहि क्षण गवाही बनि गेल। अनन्या लिखली—‘गलत वर्तनी: नकली निकटता।’ मीरा जोड़लीह—‘जे नाम कैँ सचमे जनैत अछि, ओ नाम कैँ बिगाड़ि नहि लिखैत।’

प्लास्टिकक डिब्बामे मोबाइलक पुरान परचा, खाली सिमक खोल, आधार-पत्रक छाहप्रति, बैंक पर्ची, आ पेंशन-खाता संख्या भेटल। एक कागच पर बूढ़ लोकक नामक संग लिखल छल—‘अकेला’, ‘बेटा बाहर’, ‘सुनत नहि’, ‘डर जल्दी’। एहि चारि शब्द पर पूरा कोठी-बखारी निःशब्द भऽ गेल। ई सूची दस्तावेजक नहि, भयक खेतक नाप छल।

आरुणि दाँत भींचि कहलक—‘ई लोक बूढ़ लोकक कमजोरी नापैत छल।’ मीरा ओकरा शान्त केलथि—‘कमजोरी नहि, परिस्थिति। अपराधी सभ मनुष्यक परिस्थिति कैँ कमजोरी नाम दैत अछि। हम रजिस्टरमे परिस्थिति लिखब।’ तखन लिखल गेल—‘अकेलापन अपराधक अवसर नहि, समाजक विफलता।’

मेजक दराजमे एक छोट यन्त्र भेटल—आवाज रिकार्ड करबाक पुरान साधन। ओकर संग कागच पर वाक्य लिखल छल—‘अहाँक आधार दुरुपयोगमे भेटल’, ‘अहाँक खाता जाँचमे अछि’, ‘ककरो नहि कहू’, ‘कक्षमे जुड़ल रहू’। देविका पढ़िते काँपि उठली—‘ई तँ फोनक कैदक संवाद अछि।’ सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘अभ्यास केवल हस्ताक्षरक नहि, आवाजक सेहो होइत छल।’

भिखारी लाल कोठी-बखारीक पाछाँक देबाल पर ध्यान देलक। ओतय ईंटा हटाओल गेल रहैक, फेर कादोसँ भड़ाइ देल गेल। हलुक धक्का देलासँ माटि खसि पड़ल। भीतरसँ लोहाक डिब्बा देखाइ देलक। मीरा रोकलथि—‘हाथ नहि। पहिने लेखा।’ देबाल, ऊँचाइ, ईंटाक संख्या, माटिक रंग—सभ लिखल गेल। सत्यक सम्मान ओकर स्थानक सम्मानसँ शुरू होइत अछि।

लोहाक डिब्बा बाहर निकालल गेल। ओकर भीतर नकद पाइ नहि, पाँच लाल कपड़ामे बान्हल छोट-छोट बही छल। पहिल बहीमे नाम आ रकम। दोसरमे ‘कॉल पूरा’, ‘डर बनल’, ‘परिवारसँ अलग’, ‘अंगूठा लेल’ जेकाँ शब्द। तेसरमे चिन्ह—क, ख, सी, गो, इ। ‘इ’ पर मीरा आँगुर रोकलथि—‘तेतरि?’ भिखारी लाल धीरेसँ कहलक—‘घाट।’

चारिम बहीमे कतेको नामक आगाँ ‘मृत तैयार’ लिखल छल। ई पढ़िते नागेश्वर झाक मुँह सभक आँखिक सोझाँ आबि गेल। बूढ़ मुवक्किल मुँह पर हाथ राखि बैसल। ‘मृत तैयार’—ई शब्द मनुष्यक साँस पर लिखल हुकुम जेकाँ छल। सुरमणी देवी थरथराइत स्वरमे कहलथि—‘जे जीवित कैँ कागचमे मारैत अछि, ओ हत्या बिनु खून करैत अछि।’

पाँचम बही सभसँ पातर छल। ओकर ऊपर कोनो नाम नहि, केवल एक चिन्ह—घुमाबदार गोहिक पूछार जेकाँ। भीतर पन्ना कम छल, मुदा प्रत्येक पन्ना पर कोड आ तारीख। आखिरी पन्ना पर लिखल—'नब ध्वनि सूची तैयार। अगिला खेप: नदी पार।' आरुणि पूछलक—'नदी पार माने?' बूढ़ मल्लाह उत्तर देलक—'ओही धार जतय राति पानि काटल गेल।'

हरिचरण ओहि समय घाट पर पहुँचल। ओकरा शायद खबरि पहुँचि चुकल छल। ओ ऊँच स्वरमे कहलक—'ई सभ गैरकानूनी तलाशी अछि।' सत्यव्रत मेहता शान्त रहलाह—'तूँ देरीसँ आयलह, मुदा ठीक समय पर बजलह। आब तोहर वाक्य सेहो दर्ज होएत।' अनन्या लिखली—'हरिचरणक आपत्ति: समय—पेटी खुजलाक बाद।' ई समय-चिन्ह छोट छल, मुदा ओकर भीतर बेचैनीक पूरा चित्र छल।

मीरा हरिचरणसँ पूछलथि—'तोरा ई कोठी-बखारीक खबरि पहिनहिसँ छल?' हरिचरण कहलक—'गाममे पुरान कोठी-बखारी सभकेँ ज्ञात अछि।' मीरा फेर पूछलथि—'सी-१७ पेटीक?' ओ चुप। 'मृत तैयार' शब्दक? चुप। 'नब ध्वनि सूची?' चुप। तीन चुप्पी अलग-अलग रंगक छल। देविका लिखली—'पहिल चुप्पी बचाव, दोसर भय, तेसर सम्बन्ध।'

साँझ ढलय लागल तखन कोठी-बखारी बन्द नहि, सील कएल गेल। एहि बेर ताला चुपचाप नहि लगल; ओकर चारू कात लोकक नामक पहरा राखल गेल। मल्लाह, वृद्ध स्त्री, भिखारी लाल, बच्चा सभ, सत्यव्रत, मीरा—सभक उपस्थिति लिखल गेल। कोठी-बखारी आब अन्हारक वस्तु नहि रहल; ओ सार्वजनिक स्मृति बनि गेल।

चन्ना गाछी लग रातिक पाठमे पाँच बहीक विवरण पढ़ल गेल। कोनो पूरा नाम बिनु अनुमति नहि पढ़ल गेल, मुदा अपराधक पद्धति सार्वजनिक कएल गेल। मीरा कहलथि—'हम पीड़ितक निजता बचाएब, अपराधीक पद्धति उजागर करब।' ई वाक्य बच्चा सभक रजिस्टरमे अलग पाँतिमे लिखल गेल।

ओहि राति नदीक जल विचित्र ढंगसँ शान्त छल। गोहि देखाइ नहि पड़ल। बूढ़ मुवक्किल कहलक—'ओ पेट भरि सुति रहल अछि।' सुरमणी देवी उत्तर देलीह—'नहि, पेट फाटि रहल अछि। जे बही बाहर आबि गेल, ओ पचत नहि।' चन्ना गाछीक ठूँठ पर कागचक रेशा हवासँ छुटि कऽ जमीन पर खसल। जमीनक धूरिमे ओ एहन लागल जेना कोनो अत्यन्त छोट, अत्यन्त हलुक साक्षी अपन जगह ताकि रहल हो। अनन्या ओकरा उठौलनि नहि; ओहि ठाम घेरा खींचि लिखली—'रेशाक पतन: मिलान बाँकी।'

अध्याय एहि ठाम समाप्त होइत अछि। तेतरि घाटक कोठी-बखारी रद्दी नहि, भय, कागच, आवाज आ मृत्युक तैयारीक गोदाम सिद्ध भेल। सी-१७ पेटी, पाँच लाल बही, आवाजक अभ्यास, बूढ़ लोकक परिस्थिति-सूची, आ ‘अगिला खेप: नदी पार’—ई सभ कथा कैँ फेर धारक अन्हार दिस धकेलि रहल अछि।

लोकगीत: बखारीमे सड़ल डर

लोकधुन: कोठी-बखारी लोकधुन

छोड़ू हे बखारी, रोकल डर हवा लग छोड़ू हे,
जकर कण्ठ अभ्यास बनल, ओकर असल स्वर जोड़ू हे।
धान नहि, बखारीमे डर भरल छल,
पाँच लाल बहीमे बूढ़क परिस्थिति लिखल छल।
आवाजक अभ्यास, अगिला खेप नदी पार,
नामक लय चोरा कऽ बनल धमकीक बजार।
पीड़ितक निजता राखल, पद्धति बीच पढ़ायल,
सी-सत्रह पेटीक पेट सभकेँ काँपायल।
गोहिक पेट फाटय, बही बाहर आबि गेल,
कागचक रेशा माटिपर अनाथ बनि खसि गेल।
बखारी, रोकल डर आब हवा लग छोड़ू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—कर्मधारयसमासक विश्लेषण: . “नीलोत्पलम् आनय”—“नील कमल आनू”—सदृश कर्मधारयसमासमे नीलत्व आ कमल, एहि दू प्रातिपदिकार्थक परस्पर विशेषण-विशेष्यसम्बन्ध, विशेषणपदक बाद विभक्ति बिना ज्ञात होइत अछि। कर्मधारयसमासक विश्लेषण।]

अध्याय १६७

नदी पारक आवाज

आवाज नदी पार बनै छै, मुदा डूबै एहि पारक लोक छै।

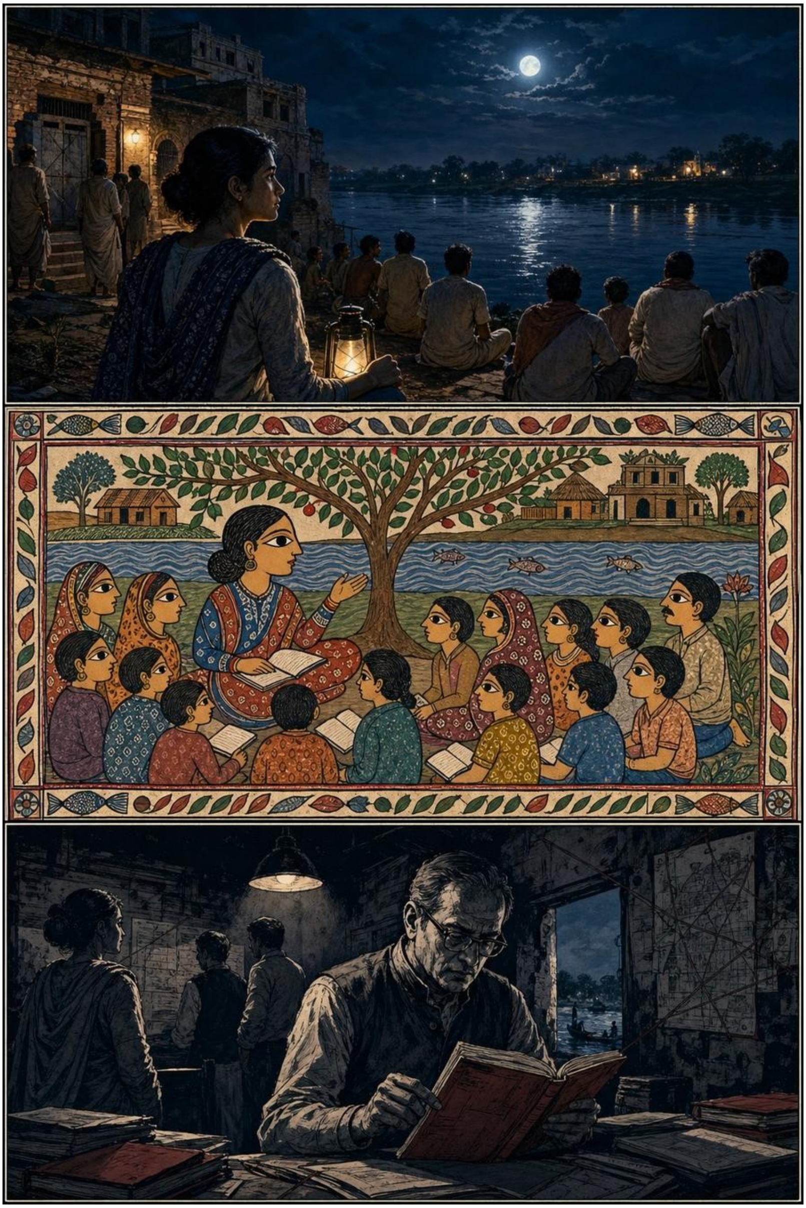

अध्यायारम्भ लोकगीत: माय, असल आवाज चिन्हू

लोकधुन: माय-बौआ सोहर

चिन्हू गे माय, असल तान चिन्हू गे,
लाखो नकलक बीच बौआक सुर गनू गे।
माय, तोहर कान चिन्हय बौआक असल तान,
नकल चाहे लाख करय, नेह बताबय प्राण।
पहिने गामक नाम पूछू, बालपनक एक बात,
जवाबमे जँ घर नहि महकय, रोकि दिअ ओ बाट।
डरक आदेश मानू नहि, संगमे लोक बजाउ,
असल बौआक स्नेहक स्वर हृदयसँ चिन्हू।
मायक बुद्धि दीप थीक, ठगक राति हरत,
नेहक सत्यक आगाँ नकली आवाज झरत।
पहिने पूछू गामक नाम, बचपनक निशानी,
जँ उत्तरमे घर ने महकय, बूझू ठगक बानी।
डरक हड़बड़ीमे कतहु टाका नहि पठाउ,
पड़ोसी-परिजन बजा कऽ दोबर जाँच कराउ।

❖

आवाज नदी पार बनै छै, मुदा डूबै एहि पारक लोक छै। धार दुनू गाम केँ अलग करै छै, तेँ लोक बुझै छै जे पार बला दूर छै। मुदा घण्टी केँ कोनो धार नै रोकै छै; ओ पानि पर नाव नै खोजै छै, ओ सोझे कान मे उतरि जाइए।

बूढ़ सभ कहै छै जे माय बेटाक स्वर आँखि मूनियो चिन्हि लै छै। मुदा स्वर नकलल जा सकै छै—लय, ठहराव, सुर, सभ। जे नकलल नै जा सकै छै, से साँस छिऐ। बेटा जखन बजै छै, ओकर साँस बीच-बीच मे हँसै छै, थकै छै, बिसरै छै। नकली साँस केवल डरै छै—आ ओ एके गति सँ डरै छै।

ठगक सभ सँ पैघ हथियार पिस्तौल नै छिऐ, एकान्त छिऐ। ‘ककरो नै कहू’—एहि चारि शब्द मे पूरा जेल बनल छै। देबाल नै, ताला नै, सिपाही नै—केवल एकटा वाक्य, आ लोक अपन बरामदा मे, अपन तुलसी-चौरा लग, अपन घर मे बन्द भऽ जाइए।

आ ओ पहिल बेर पैघ रकम नै मंगै छै। पहिने छोट, फेर मझोल, फेर घरक जमा। किएक तँ ताला केँ पहिने छोट चाबी सँ टोअल जाइ छै; आ जहिया लोकक सन्देह थाकि जाइए, तहिया ओ अपने अपन बही आगू बढ़ा दै छै।

तेँ गामक नब नियम एतबे छै—जे स्वर कहय 'अकेल रहू', ओकरा सुनितहि संग बजाउ। जे स्वर कहय 'जल्दी करू', ओकरा सुनितहि थम्हि जाउ। आ जे स्वर अपन नाम, पद आ कार्यालय नै कहि सकय, से स्वर कोनो अदालत नै छिऐ—ओ केवल नदी पारक एकटा कोठरी छिऐ, जकर दरबाजा पर लिखल छै 'जनसेवा'।

कोठारक सड़ल डर हवा लग छोड़ल जा चुकल छल, आ तेतरि घाटक कोठी-बखारी सील भेलाक बाद गाममे राति जल्दी नहि उतरि सकल। अन्हार आबिते छल, मुदा लोकक आँखि खुजल छल। पाँच लाल बहीक 'अगिला खेप: नदी पार' वाक्य सभक कानमे फँसल काँटा जेकाँ रहि गेल। नदी पार जे गाम छल, ओ दूर नहि, मुदा बीचक धार एतेक गाढ़ छल जे कतेको बेर लगक ठामो परदेश लगैत अछि।

भोर होइतहि मीरा सभकेँ चन्ना गाछी लग जमौलथि। ओ कहलथि—'नदी पार चलब, मुदा जुलूस बनि नहि। जे लोक डरक धन्धा करैत अछि, ओकरा भीड़सँ नहि, क्रमसँ पकड़ल जाएत।' बच्चा सभक रजिस्टरमे पहिल पाँति लिखल गेल—'नदी पारक यात्रा: प्रमाणक अनुशासन सहित।'

सत्यव्रत मेहता बहीक प्रतिलिपि फेर देखलनि। 'नब ध्वनि सूची' शब्द पर हुनकर आँगुर ठहरि गेल। ओ कहलनि—'ई लोक कागचक नकली प्रति बनबैत रहल, आब आवाजक नकली उपस्थिति बनबैत अछि। जे पुत्र परदेशमे अछि, ओकर आवाज बूढ़ माय-बाप लग कानून बनि पहुँचत—ई अपराधक नब मुँह अछि।'

अनन्या पूछली—'आवाजक प्रमाण कोना भेटत?' सत्यव्रत उत्तर देलनि—'आवाज केवल यन्त्रमे नहि, डरमे सेहो निशान छोड़ैत अछि। जे सुनलक, ओकर देहमे; जे कहल गेल, ओकर क्रममे; जे पाइ निकसल, ओकर समयमे; जे चुप्पी लादल गेल, ओकर पद्धतिमे।' आरुणि लिखलक—'ध्वनि-साक्ष्य: देह, समय, क्रम, लेनदेन, मौन।'

नदी पार जाय लेल बूढ़ मल्लाह अपन छोट नाव निकाललक। नावक पेटमे पानि जमा छल, से ओ पहिने कटोरासँ निकाललक। ओ कहलक—'जकर नावमे पानि छोड़ल रहत, ओ धारक दोष देत। पहिने अपन नाव खाली करय पड़ैत अछि।' मीरा मुस्कुरेलीह। ई वाक्य सभक भीतर अपन-अपन दोष साफ करबाक इशारा बनि गेल।

नाव पर मीरा, सत्यव्रत, अनन्या, आरुणि, देविका, भिखारी लाल, सुरमणी देवी आ दू साक्षी बैसल। भीड़ घाट पर रहि गेल। लोकक इच्छा छल संग चलबाक, मुदा मीरा कहलथि—'

सत्यक नाव पर भीड़ नहि, भरोसा चाही।’ चन्ना गाछीक ठूँठ दूरसँ ओझराइत गेल, मुदा ओकर छाह जल पर बहुत काल तैरैत रहल।

धार बीचमे पहुँचि नाव हलुक काँपल। ओही क्षण आरुणिक मोबाइलमे अनचिन्ह नम्बरसँ फोन आयल। स्क्रीन पर नाम नहि छल, मुदा घण्टी एहन तेज लागल जेना नदीक भीतरसँ उठि रहल हो। सभ चुप भऽ गेल। मीरा इशारा केलथि—कॉल उठाउ, मुदा स्पीकर पर। आरुणि काँपैत अंगूठासँ उत्तर देलक।

फोनक ओहि पारसँ आवाज आयल—‘अहाँक नाम जाँचमे अछि। ककरो नहि कहू। एखने लाइन पर रहू।’ आवाज पुरुषक छल, मुदा ओकर लय अभ्यासक। ओ कानूनक शब्दक नकली वस्त्र पहिरने छल। आरुणि आँखिसँ मीरा दिस देखलक। मीरा हाथसँ संकेत देलथि—बाजू कम, सुनू बेसी।

आरुणि पूछलक—‘कोन विभाग?’ उत्तर आयल—‘ऊपरक कार्यालय। बेसी प्रश्न करब तँ गिरफ्तारी।’ सत्यव्रत मेहता कागच पर जल्दी लिखलनि—‘प्रश्न पर धमकी: पद्धति।’ अनन्या समय टिपली। देविका फोनक वाक्यक्रम लिखय लगली। नदीक बीच नाव आब चलि नहि रहल छल; जेना धारो गवाही सुनय ठहरि गेल।

कॉल करनिहार कहलक—‘तोहर खातासँ गलत लेनदेन भेल अछि। एखने सत्यापनक लेल आवाज मिलान होएत। घरमे के अछि?’ ई प्रश्न सुनिते सुरमणी देवीक मुँह बदलि गेल। पाँच लाल बहीक ‘अकेला’, ‘बेटा बाहर’, ‘डर जल्दी’ शब्द फेर जीवित भऽ उठल। मीरा धीमे स्वरमे फुसफुसौलीह—‘अकेलापन पूछैत अछि।’

आरुणि कहलक—‘हम नावमे छी।’ ओहि पारसँ तुरन्त उत्तर आयल—‘झूठ नहि बाजू। लोकेशन देखाइत अछि।’ भिखारी लाल नदीक जल दिस देखलक आ मुस्कुरा देलक—‘लोकेशन देखैत अछि, धार नहि।’ सत्यव्रत लिखलनि—‘तकनीकी भयक झूठ: सर्वज्ञता।’ अपराधी सर्वज्ञ बनि कऽ मनुष्यक विवेक चोरबैत अछि।

मीरा संकेत केलथि—फोन नहि काटू। कॉल करनिहार आब ‘परिवारक नाम’ पूछय लागल। आरुणि उनटे पूछलक—‘हमर पिता के?’ क्षण भरिक चुप्पी। फेर आवाज कठोर भेल—‘जाँचमे नाम नहि कहल जाय।’ एहि चुप्पीमे ओकर झूठक जोड़ खड़खड़ा उठल। देविका लिखली—‘परिवारक नाम पर विराम: सूची अपूर्ण।’

नाव किनार लग पहुँचल तखन कॉल अचानक कटि गेल। किनार पर पहिल घर तुलसी चौरा वाला छल। ओतय एक बूढ़ दम्पती बैसल छल—मधुकान्त झा आ हुनकर घरवाली कमला

देवी। कमला देवी फोन देखिते कानय लगलीह—‘ई आवाज काल्हि हमर बेटाक बनि आयल छल। कहलक—माय, ककरो नहि कहियौ, पुलिस केस अछि।’

मीरा हुनकासँ तुरन्त बयान नहि लिखौलथि। पहिने पानि देल गेल। फेर पूछल गेल—‘जे बताबय चाही, ततबे कहू। पूरा कथा पर अहाँक अधिकार अछि।’ कमला देवी धीरे-धीरे खोलय लगलीह। फोनमे पहिने बेटाक आवाज, फेर अधिकारीक आवाज, फेर डर, फेर खातासँ पाइ। ‘हम बेटाक नाम सुनिते मानि लेलहुँ,’ ओ कहलीह।

सत्यव्रत मेहता पूछलनि—‘बेटाक आवाजमे कोन बात अलग लागल?’ मधुकान्त झा उत्तर देलनि—‘स्वर बेटाक जेकाँ, मुदा साँस ओकर नहि। हमर बेटा बात करैत बीच-बीचमे हँसैत अछि। ई आवाज सोझे डरबैत छल।’ अनन्या लिखली—‘साँसक चिन्हारि।’ आवाजक नकली रूप बनि सकैत अछि, मुदा लगक सम्बन्धक लय नकल करब कठिन अछि।

कमला देवी कहलीह जे फोन पर कहल गेल छल—‘मोबाइल कान लगौने राखू। बाहर गेलहुँ तँ केस बढ़त।’ ओ दू घण्टा धरि ओहि अदृश्य कैदमे बैसल रहलीह। बरामदा, आँगन, तुलसी चौरा सभ रहितो ओ कैदखाना बनि गेल। मीरा एहि पर लिखलनि—‘डिजिटल अरेस्ट: घर कैँ बिनु देबालक कोठरी बनौनाइ।’

बैंक पर्ची देखल गेल। रकम तीन बेरमे गेल। पहिल छोट, दोसर मझोल, तेसर घरक जमा पूँजी। भिखारी लाल पूछलक—‘छोट रकम पहिने किएक?’ सत्यव्रत कहलनि—‘विश्वासक ताला पहिने छोट चाबीसँ खोलल जाइत अछि। पैघ लूट तखन होइत अछि जखन मनुष्यक सन्देह थाकि जाइत अछि।’

मधुकान्त झाक घरक पाछाँ पुरान बरामदामे एक युवकक छाह देखाइ देलक। ओ भागय चाहलक, मुदा मल्लाहक बेटा ओकरा रोकि लेलक। ओकर जेबमे दू सिम, एक छोट कागच आ कतेको नम्बर लिखल पर्ची भेटल। पर्ची पर किछु नामक आगाँ लिखल छल—‘माय कानत’, ‘बाप जल्दी टूटत’, ‘बेटा दुबई’, ‘बेटी दिल्ली’। देविका पढ़िते काँपि उठली।

युवक पहिने कहलक—‘हमरा किछु नहि पता।’ फेर कहलक—‘हम केवल नम्बर दैत छी।’ फेर—‘आवाज हम नहि बनबैत छी।’ तीन वाक्य तीन सीढ़ी छल। मीरा कहलथि—‘जे लोक अपन दोष घटबैत-घटबैत बदलैत अछि, ओ सत्यक चौखट पर पहुँचि रहल अछि, मुदा एखन भीतर नहि आयल।’ रजिस्टरमे लिखल गेल—‘तीन बचाव: अज्ञान, सीमा, दूरी।’

ओहि युवकक नाम नवल निकलल। ओ नदी पारक साइबर दोकानमे काम करैत छल। दोकानक नाम छल—‘जनसेवा केन्द्र’। ई नाम सुनिते भिखारी लाल हँसि देलक—‘जनसेवासँ

जन-भय।’ मीरा रोकलथि—‘हँसी लिखू नहि, तथ्य लिखू।’ तथ्य ई छल जे ओहि केन्द्रमे आधारक छाहप्रति, पेंशन खाता, मोबाइल नम्बर, आ परिवारक प्रवास-सूचना एक ठाम जमा होइत छल।

जनसेवा केन्द्र पर पहुँचला पर दरबाजा आधा खुजल भेटल। भीतर कम्प्यूटरक स्क्रीन बन्द, मुदा मेज पर धूरि ताजा हटायल। देबाल पर सरकारी योजनाक पोस्टर, नीचाँ तारक जंगल, आ कोनमे माइक्रोफोन। माइक्रोफोन पर कपड़ा झाँपल छल। सत्यव्रत कहलनि—‘जतय सेवा-सूचना जमा होइत अछि, ओतय विश्वासक पहरा दूगुना चाही। नहि तँ सेवा अपराधक कच्चा माल बनि जाइत अछि।’

दराजमे एक पन्ना भेटल—‘आवाज नमूना: बेटा, पुलिस, बैंक, कस्टम, अदालत।’ अदालत शब्द देखिते सभक देहमे ठण्ढी दौड़ि गेल। अदालतक बरामदा, रेकर्ड-घर, तेतरि घाटक कोठी-बखारी—सभ एक रेखामे जुड़ि गेल। अपराधी केवल कागच नहि, संस्था सभक आवाजो उधार लऽ रहल छल।

अनन्या माइक्रोफोन लग राखल कागच उठौने बिनु देखली। ओहि पर वाक्य लिखल छल—‘माय, जल्दी करू, हम फँसि गेल छी।’ कमला देवीक मुँहसँ चीत्कार निकलि गेल—‘एहए कहलक!’ मीरा हुनकर हाथ पकड़लथि। ‘आब ई वाक्य ओकर नहि रहल। आब ई प्रमाण अछि।’ दुख केँ प्रमाण बनबयक ई क्षण सभसँ कठिन छल।

नवल अन्तमे टूटल। ओ कहलक जे आवाज दूर शहरसँ बनैत छल, मुदा नाम, सम्बन्ध, प्रवास, बैंक आ डरक सूची एहिठामसँ जाइत छल। ‘हम केवल डेटा पठबैत छलहुँ,’ ओ कहलक। सत्यव्रत मेहता कठोर स्वरमे कहलनि—‘मनुष्यक परिस्थिति केँ डेटा कहल जाय तँ अपराध आधा नुका जाइत अछि। एतय डेटा नहि, घरक साँस पठाओल गेल।’

साँझ धरि जनसेवा केन्द्र सील भेल। नदी पारक लोक सभ पहिल बेर बुझलक जे मोबाइलक घण्टी केवल सुविधा नहि, कतेको बेर अदृश्य फान्द सेहो बनि सकैत अछि। मीरा सार्वजनिक पाठमे कहलथि—‘फोन पर डर देनिहारक पहिल हथियार एकान्त अछि। जखन कियो कहय—ककरो नहि कहू—तखन सभसँ पहिने भरोसाक लोककेँ कहू।’

चन्ना गाछी लग घुरि राति पाठमे कमला देवीक पूरा नाम अनुमतिसँ लिखल गेल, मुदा बैंक रकम नहि। ओकर बेटाक असली आवाज मल्लाहक फोन पर परदेशसँ आयल। बेटा कानैत कहलक—‘माय, हमर आवाज परो भरोसा करब, मुदा डरक आदेश पर नहि।’ ई वाक्य सुनि

सुरमणी देवी अपन नोनक पोटली खोलि कनी माटि पर छिटकलथि—‘आवाजक नमी सुखाउ।’

ओहि राति बूढ़बा भूत ठूँठ लग देखाइ देलनि, मुदा एहि बेर हुनकर मुँह नहि, कान चमकि रहल छल। कारी भूत दूर जलमे पाछाँ हटैत बुझायल। गोहि देखाइ नहि पड़ल, मुदा नदीक बीच फेन उठल। फेन ओहिना उठैत आ बैसैत रहल, जेना ककरो साँस पानिक नीचाँ रोकल हो। अनन्या रजिस्टरमे लिखली—‘नदी पारक आवाज पकड़ायल; असली गला एखन दूर।’

अध्याय एहि ठाम समाप्त होइत अछि। तेतरि घाटक ‘नब ध्वनि सूची’ नदी पारक जनसेवा केन्द्र धरि पहुँचि गेल। आवाजक नकली कैद, बूढ़ लोकक परिस्थिति-सूची, परिवारक लयक चोरी, आ संस्थाक नकली धमकी—सभ एक जालमे आबि गेल।

लोकगीत: माय, डरक आदेश नहि मानू

लोकधुन: परदेशिया

ने मानू हे माय, डरक आदेश ने मानू हे,
नकली स्वरक बीच अपन प्रेमक लय चिन्हू हे।
नदी पारसँ बेटाक असल आवाज आयल,
‘माय, हमर स्वर चिन्हू’—फोन कानैत सुनायल।
नकली गला कहलक—एखने पाइ पठाउ,
असल बौआ कानि कहलक—डरक आदेश नहि मानू।
कमला देवीक नाम अनुमतिसँ लिखायल,
रकम नहि, केवल पीड़ाक मान बचायल।
सुरमणी नोन छिटकि आवाजक नमी सुखेलक,
बूढ़बा भूतक कान रातिमे चमकि उठल।
परदेशक बेटा, मायक साँस धरू,
नकली स्वरक बीच अपन प्रेमक लय भरू।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—व्यापारार्थक आपत्तिक उत्तर: यत्नवादमे सेहो धान कुटबाक अनुकूल यत्नवला व्यक्तिक विषयमे “ओ पकबैत अछि” दोष उठि सकैत अछि; तें यत्नो विशिष्ट धात्वर्थानुकूल मानय पड़ैत अछि। व्यापारार्थक आपत्तिक उत्तर।]

अध्याय १६८

शहरक गला

शहरक गला पकड़ाइ छै, कंठ नहि— कंठ सदिखन आरो ऊपर रहै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: गामक नाम शहर जगाउ

लोकधुन: नगर-बटगबनी

बाजू हे घण्टी, शहरमे गामक घण्टी बाजू हे,
कच्चा दुआरक स्वरसँ पक्का भवन जगाउ हे।
गामक नाम शहर पहुँचि घण्टी जकाँ बाजय,
पेंशन, बैंक, मुकदमा सभ साँचक बाट साजय।
कच्चा दुआरसँ उठल स्वर ऊँच भवन चढ़त,
माटिक गन्ध शीशा-घरक बन्द हवा बदलत।
गाम अकेल नहि आब, शहरक कान जागल,
एक नामक पाछाँ पूरा जनसमुदाय लागल।
बाट-बाट बटगबनी गाउ—हक नहि रुकत,
गामक उज्जर नामसँ शहरक गला खुजत।
पेंशन-बैंक-कचहरीक बाट आब सून नहि,
एक नामक पाछाँ ठाढ़ सगर गाम—कम नहि।
माटिक गन्ध पैसिते बन्द हवा बदलय,
ऊँच भवनक कानोमे गामक स्वर सम्हरय।

❖

बूढ़ सभ कहै छै जे कोनो गामक नाम अपने पएरे शहर नै जाइ छै। नाम कैँ कियो लऽ जाइ छै—कखनो फारम, कखनो रसीद, कखनो मुफ्तक स्कैन, कखनो ओ लोक जे मिठगर बाजि कऽ कहै छै जे ‘सिस्टम साफ कऽ देब’। आ जहिया नाम एक बेर बाहर चलि गेलै, ओ फेर घुरि कऽ नै अबै छै; ओ केवल घण्टी बनि कऽ घुरै छै।

शोर सभ सँ नीक परदा छिऐ। गाम मे एकटा फुसफुसाहटो सुनि लेल जाइ छै, आ शहर मे कियो चिकरै तँ ओकरो कियो नै सुनै छै। तेँ जकरा नुकाय के छै, से गाम मे नै, हॉर्न आ लाउडस्पीकरक बीच अपन कोठरी लै छै—भीड़ ओकर दरबाजा छिऐ।

आ सभ सँ दुखक बात ई जे ओहि कोठरी मे जे बिकाइए, से सामान नै छिऐ—से दुख छिऐ। ककर बेटा दूर छै, ककर पेंशन रुकल छै, ककर मुकदमा लटकल छै, ककरा राति मे साँस फूलै छै—ई सभ बात ओतय ‘सूची’ कहबै छै। जकर दुख सूची बनि गेलै, ओकर देह सँ पहिने ओकर नाम बिका जाइए।

तेँ आब गाम केँ दू काज करय पड़तै—अपन नाम पर पहरा, आ अपन दुख पर पर्दा नहि, मर्यादा। दुख नुकाओल नै जायत, मुदा दुख बजार मे नाङट नै कएल जायत। पीड़ितक कथा गवाही बनय, तमाशा नै—एतबे फरक न्याय आ भीड़ मे रहै छै।

असली गला एखन दूर अछि—ई पाँति राति भरि गूँजैत रहल, आ नदी पारक आवाज पकड़ायलाक बाद गाममे एकटा नब प्रश्न जागल—जखन आवाज शहरमे बनैत अछि, तखन गामक नाम ओतय कोना पहुँचैत अछि? ई प्रश्न फोनक घण्टी जेकाँ नहि, माटिक भीतर चलैत कीड़ा जेकाँ छल। ऊपरसँ सभ शान्त, मुदा भीतर-भीतर पूरा धरती खरखरा रहल छल। चन्ना गाछीक ठूँठ पर सबेरक ओस टिकल छल, आ प्रत्येक बून्दमे जेना ककरो नाम उनटा लिखल देखाइत छल।

मीरा सभकेँ जमौलथि। ओ कहलथि—‘आइ हम आवाजक पाछाँ चलब, मुदा आवाजसँ बेसी नामक रस्ता देखब। नकली गला तँ मशीन बना सकैत अछि; मुदा सही घर, सही बुढ़ापा, सही बेटाक परदेश, सही जमीन-विवाद—ई सभ सूचना कतयसँ आयल?’ अनन्या पहिल पाँति लिखली—‘गला शहरक, नाम गामक; बीचमे दलालक पथ।’

सत्यव्रत मेहता लाल बहीक पाँचम पन्ना फेर खोललनि। ओहि पन्ना पर ‘परिस्थिति-सूची’ लिखल छल। बूढ़ लोकक नामक अगिला कोठरीमे परिवारक कमजोर बिन्दु—ककर बेटा बाहर, ककर जमीन मुकदमामे, ककर पेंशन रुकल, ककर अस्पतालक कर्ज, ककर बैंक पासबुक जनसेवा केन्द्रमे छूटल। सत्यव्रत धीमे कहलनि—‘अपराध केवल आवाज नहि चोरबैत; ओ दुखक नाप लैत अछि।’

नदी पारक जनसेवा केन्द्रक नेना, जकरा काल्हि सभ देखलक, आइ काँपैत-काँपैत चन्ना गाछी लग आयल। ओकर नाम नरेश छल। ओ कहलक—‘हम फारम भरैत छी, आधारक प्रति राखैत छी, पेंशनक आवेदन अपलोड करैत छी। कतेको बेर शहरसँ लोक आबि कहैत छल—पुरान रजिस्टर बेचि दिअ, रद्दी दाम भेटत।’ मीरा तुरन्त रोकलथि—‘रद्दी दाम कि सूचनाक दाम?’ नरेशक मुँह सुखा गेल।

नरेश बतौलक जे दू बरख पहिने एक लोक आयल छल—कमीज पर शहरक मोबाइल कम्पनीक चिन्ह, हाथमे चमकदार बैग, भाषामे मिठास। ओ कहलक—‘पुरान कागच स्कैन करबाक लेल देब, बदलामे सिस्टम मुफ्त साफ कऽ देब।’ नरेश ओहि समय ई बुझि खुश भेल जे कम्प्यूटरक धीमापन ठीक भऽ जाएत। मुदा स्कैन भेल कागच घुरल तँ आयल, पर किछु प्रतिलिपि ओकरा बिनु पूछने शहर चलि गेल।

देविका पूछली—'ओहि लोकक नाम?' नरेश माथ झुकौलक—'रसीद पर एम. सर्विसेज लिखल छल। लोक अपना कैँ मधुकरक संगी कहैत छल।' मधुकरक नाम सुनिते भीड़मे हलचल उठल। जे मधुकर गायब छल, ओकर छाह नदी पार धरि पसरल छल। आरुणि लिखलक—'मधुकर: आवाज आ कागचक बीचक पुल।'

भिखारी लाल, जे अदालतक चाबीसँ दहशत बुझैत छल, नरेशक बैग देखलक। बैगमे पुरान पावतीक प्रति, टूटल पेन-ड्राइव, आ एक छपल पन्ना छल—'ग्राम सम्पर्क सूची: वरिष्ठ नागरिक प्राथमिक।' पन्ना पर कोनो सरकारी मोहर नहि, मुदा सरकारी फारमक भाषा चोराओल छल। 'वरिष्ठ नागरिक' शब्दक भीतर बूढ़ लोकक अकेलापन कैद कएल गेल छल। सुरमणी देवी पन्ना देखिते कहलथि—'एहि लोक कैँ बुजुर्ग नहि, शिकार देखाइ पड़ल।'

मीरा पन्ना कैँ सार्वजनिक रूपैँ पूरा नहि पढ़लथि। ओ केवल ढाँचा पढ़ौलथि—नाम, उमेर, परिवारक स्थान, बैंक-शाखा, मुकदमा-सूत्र, स्वास्थ्य-चिन्ता। ओ कहलीह—'पीड़ितक निजी दुख हम फेर बजार नहि बनय देब। अपराधक पद्धति पढ़ू, पीड़ाक नाङटपन नहि।' बच्चा सभ एके संग माथ हिलेलक। पछिला पहरा सभमे सीखल निजता आब अभ्यास बनि रहल छल।

ओहि दिन शहर जएबाक निश्चय भेल। शहर दूर नहि छल, मुदा गामक लोकक मोनमे शहर सदिखन एकटा अन्हार कोठरी जेकाँ रहल—जतय नाम फाइल बनैत अछि, आवाज व्यापार बनैत अछि, आ लोक संख्या बनि जाइत अछि। मीरा केवल छोट टोलीक लेल तैयार भेलीह—सत्यव्रत मेहता, अनन्या, आरुणि, देविका, नरेश, भिखारी लाल आ बूढ़ मुवक्किल। सुरमणी देवी कहलीह—'हम नहि जाएब; गाछी पर पहरा देब। जाधरि नामक जड़ि गाममे अछि, ताधरि शहरक गला पूरा नहि भागत।'

बस पकड़बाक समय नदी पर हलुक कुहेस छल। गोहि देखाइ नहि पड़ल, मुदा घाट लग कादोमे पूछारक नमहर निशान छल। बूढ़ मुवक्किल ओकरा देखलक, किछु कहय चाहलक, फेर चुप रहल। मीरा मुस्कुराइत कहलथि—'आइ संकेत नहि, टिकट सम्हारू।' सभ हँसि पड़ल। एतेक अन्हारक बीच ई छोट हँसी प्रमाण नहि, पर साहसक अभ्यास छल।

शहरक बस अड्डा पर उतरिते आवाजक बाढ़ि भेटल—हाक, हॉर्न, दोकान, मोबाइलक धुन, लाउडस्पीकर, गारि, मोलभाव। आरुणि कान झाँपलक। ओ कहलक—'एतय प्रत्येक आवाज ककरो आवाज कैँ खा रहल अछि।' सत्यव्रत मेहता उत्तर देलनि—'एहि शोरमे नकली गला नुकाएब आसान अछि।' अनन्या टिपली—'शहर: शोरक परदा।'

नरेश ओहि पता पर लऽ गेल जतय 'एम. सर्विसेज'क पुरान पर्चीमे पता लिखल छल। साँकड़ गली, ऊपर झूलैत तार, नीचाँ नाली, बीचमे काँचक दरबाजा। दरबाजा पर नाम बदलल छल—'मित्र डेटा समाधान।' भीतर पाँच कम्प्यूटर, दू युवक, एक स्त्री रजिस्टरसँ संख्या पढ़ैत, आ एक बन्द कमरा जकर भीतरसँ रिकार्ड कएल आवाजक टुकड़ा सुनाइ पड़ि रहल छल—'अहाँक विरुद्ध वारंट जारी...' देविका काँपि उठली। 'ई अभिनय नहि,' ओ कहलीह, 'ई अभिनयक अपराधी रूप अछि।'

काउंटर पर बैसल युवक पहिने मुस्कुरायल। 'कोन सेवा चाही?' सत्यव्रत मेहता शान्त स्वरमे पर्ची राखलनि। 'एम. सर्विसेज एहिठाम छल?' युवकक मुस्कान आधा रहि गेल। ओ कहलक—'पुरान कम्पनी बन्द। आब हम अलग।' मीरा तुरन्त कहलथि—'नाम बदलल, गली वैह, कम्प्यूटर वैह, रजिस्टर वैह। अलग कोना?' युवकक आँगुर कीबोर्ड पर अटकि गेल।

तखने भीतरक बन्द कमरासँ एक आवाज आयल—'बाबूजी, फोन नहि काटू।' बूढ़ मुवक्किलक मुँह फक पड़ि गेल। ई वैह लय छल जे ओकरा कैद कएने छल; शब्द बदलल छल, साँस वैह छल। ओ काँपैत स्वरमे कहलक—'हमरा कैद करनिहार गला एतय अछि।' मीरा ओकर हाथ पकड़लथि—'गला चिन्हल गेल, मुदा देह देखब बाँकी।'

देविका अभिनयक अभ्याससँ आवाजक ऊँच-नीच सुनि रहल छलीह। ओ कहलीह—'भीतर जे बाजि रहल अछि, ओ एकहि गला नहि। किछु वाक्य रिकार्ड, किछु जीवन्त। डर बनबय लेल मशीन आ मनुष्यक संगति अछि।' अनन्या लिखली—'मिश्रित गला: आधा रिकार्ड, आधा धमकी।' ई पाँति बादमे बहुत जरूरी सिद्ध होएत, किएक तँ अपराधी सभ मशीनक आड़िमे मनुष्य केँ नुकबैत छल।

भिखारी लाल नजरि घुमा रहल छल। कोनमे एक डिब्बा पर सटल कागच देखलक—'सी-ग्रुप: ग्रामीण वृद्ध।' ओकरा अदालतक 'सी-कक्ष', '१७/सी', आ चन्द्रपालक छाह मोन पड़ल। ओ धीरेसँ सत्यव्रत केँ देखौलक। सत्यव्रत पर्ची पर आँगुर राखि पूछलनि—'ई सी-ग्रुप के?' युवक उत्तर देबासँ पहिने भीतरक दरबाजा खुजल।

भीतरसँ जे लोक निकलल, ओ चन्द्रपाल नहि छल। मुदा ओकर चालिमे ओही आत्मविश्वास छल जे अनुपस्थित मालिकक दरबाजा पर राखल पहरेदारमे होइत अछि। गाल पर हलुक दाढ़ी, आँखिमे बेचैनी, आ हाथमे हेडफोन। ओ कहलक—'ग्राहकक डेटा गोपनीय अछि।' मीरा तुरन्त उत्तर देलीह—'गोपनीयता पीड़ितक अधिकार अछि, अपराधीक ढाल नहि।'

लोक अपन नाम बतएबासँ बचय लागल। नरेश हिम्मत कऽ आगाँ बढ़ल—‘ई वैह लोक अछि जे हमरा केन्द्रसँ कागच लऽ गेल छल।’ लोक हँसल—‘गलत चिन्हारि।’ मुदा बूढ़ मुवक्किल फुसफुसायल—‘ई आवाज नहि, साँस चिन्हू। फोन पर बीच-बीचमे ई साँस सुनाइत छल।’ देविका तुरन्त कहलीह—‘साँस सेहो गवाही होइत अछि, जँ ओकर क्रम पकड़ा जाय।’

तकर बाद छोट संघर्ष भेल। युवक कम्प्यूटर बन्द करय चाहलक। आरुणि मोबाइलसँ स्क्रीनक फोटो नहि खींचलक; ओ मीरा दिस देखलक। मीरा कहलीह—‘अनुमति बिनु निजी सूची नहि। पहिने उपस्थित गवाह, फेर विधि।’ सत्यव्रत मेहता स्थानीय अधिवक्ता कें फोन केलनि, आ भिखारी लाल थानामे सूचना देबाक लेल बाहर गेल। ई धीमापन कष्टदायक छल, मुदा मीरा कहलीह—‘जल्दी कतेको बेर प्रमाण मारैत अछि।’

एहि बीच अनन्याक नजरि मेजक नीचाँ पड़ल। ओतय पुरान अखबारमे लपेटल दू रजिस्टर छल। ऊपर लिखल—‘आवाज-बैच ३’ आ ‘ग्राम कथा संकेत।’ ‘ग्राम कथा संकेत’ शब्द सुनिते सभ थम्हि गेल। रजिस्टर खोलल नहि गेल; ओकर फोटो नहि लेल गेल; बस ओकर अस्तित्व तीन गवाहक सोझाँ लिखल गेल। मीरा कहलथि—‘कथा चोरि होएबाक ई क्षण अछि। लोकक जीवनक कथा कें डरक स्क्रिप्ट बनाओल गेल।’

थोड़ेक कालक बाद स्थानीय पुलिस आयल। आरम्भमे ओ एहि घटना कें ‘साधारण साइबर मामला’ कहि टारय चाहलक। सत्यव्रत मेहता शान्त मुदा कठोर स्वरमे क्रम पढ़लनि—तेतरि घाटक कोठी-बखारी, लाल बही, नदी पारक सूची, नरेशक बयान, एम. सर्विसेजक पर्ची, सी-ग्रुपक डिब्बा, बूढ़ मुवक्किलक साँस-चिन्हारि। पुलिसक उपनिरीक्षकक मुँह बदलल। मामला आब फोन-ठगी नहि, संगठित नाम-लूट बुझाइ पड़ल।

भीतरक कम्प्यूटर पर खुजल एक पाँति पुलिसक सोझाँ देखाइ देलक—‘चन्द्र २: पुरान फाइल सक्रिय।’ चन्द्रपालक पूरा नाम नहि छल, पर छाह फेर चमकल। स्क्रीनक नील उजास ओहि अन्हार कोठरीमे सभक मुँह पर पड़ल आ सभ एक क्षणक लेल एके रंगक भऽ गेल। आरुणि फुसफुसायल—‘छाह शहरक गलामे घुसल अछि।’ सत्यव्रत मेहता सावधान केलनि—‘चन्द्र २ चन्द्रपाल भऽ सकैत अछि, नहियो भऽ सकैत अछि। हम अनुमान कें निर्णय नहि बनाएब।’ मीरा सन्तोषसँ देखलथि—बच्चा सभ आब प्रमाणक अनुशासन सीखि रहल छल।

जप्ती-प्रक्रिया शुरू भेल। नरेशक बयान लिखायल। बूढ़ मुवक्किलक आवाज-चिन्हारि अलग दर्ज भेल। देविका ‘रिकार्ड आ जीवन्त धमकीक मिश्रण’ पर नोट देलीह। अनन्या रजिस्टरमे पाँति लिखली—‘शहरक गला अकेला नहि; ओकरा गामक दुख, दफ्तरक डेटा, आ

दलालक स्मृति खुराक दैत अछि।’ ई पाँति पढ़ि मीरा नमहर साँस छोड़लथि, जेना अध्याय अपन केन्द्रीय अस्थि पाबि गेल हो।

साँझ धरि टोली गाम घुरल। चन्ना गाछी लग सुरमणी देवी पहरा दैत बैसल छलीह। हुनकर पाछाँ स्त्री सभ, वृद्ध सभ, बच्चा सभ। मीरा संक्षेपमे कहलथि—‘शहरमे गला भेटल, देह आधा भेटल, छाह फेर चन्द्र नाम दिस गेल।’ सुरमणी देवी नोनक पोटली खोलि कहलथि—‘नोन बिनु गला सड़ैत अछि; सत्य बिनु आवाज।’ ओ कनी नोन ठूँठक जड़ि लग छिटकलथि।

रातिक पाठमे एहि बेर कोनो पीड़ितक निजी कथा नहि, अपराधक नक्शा पढ़ल गेल—जनसेवा केन्द्रसँ प्रतिलिपि, शहरक डेटा-दलाल, आवाजक अभ्यास, सी-ग्रुप, ग्राम कथा संकेत, चन्द्र २। गामक लोक पहिल बेर देखलक जे ओकर दुख कतेक स्टेशन पार कऽ डरक व्यापार बनैत अछि। बूढ़ मुवक्किल कहलक—‘हम बुझैत रही जे फोन पर लोक छल; आइ बुझलहुँ, फोन पर पूरा बजार छल।’

ओहि राति नदीक कगार पर गोहि फेर देखाइ देलक। एहि बेर ओकर मुँह शहर दिस छल, पूछार गामक कादोमे। बीचक देह जलमे डूबल। कारी भूत जलक ऊपर घूमल, उज्जर प्रेत चन्ना गाछीक छाहमे ठाढ़ रहल। मीरा ई सभ लोकक कथन सुनलथि, मुदा रजिस्टरमे लिखलनि—‘लोक-दृष्टि: अपराधक देह दू ठाम बँटल।’

अध्याय एहि बोध पर समाप्त होइत अछि—शहरक गला पकड़ा गेल, मुदा ओकर असली कण्ठ एखन पूरा उजागर नहि। गामक नाम शहर धरि जनसेवा, रजिस्टर, पेंशन, बैंक आ मुकदमाक रस्ता पहुँचल; शहर ओहि नाम कैँ आवाजक डरमे बदललक। ‘चन्द्र २’ नब अन्हार दरबाजा बनि ठाढ़ अछि।

लोकगीत: शहरक गला, गामक नाम

लोकधुन: नगर-विरह

ने बनाउ हे शहर, नामकैँ भयक भाषा ने बनाउ हे,
गामक नोर घुरा कऽ ओकर असल घर पठाउ हे।
गामक पेंशन, मुकदमा, परदेशी बेटाक नाम,
शहर पहुँचिते बनल डरक बिकाउ सामान।
जनसेवासँ दलाल, अभ्याससँ सी-समूह,
फोनपर एक लोक नहि—पूरा बजारक मुँह।
गोहिक पूछार कादोमे, मुँह शहर दिस,
अपराधक आधा देह गाम, आधा शीशाक बीच।

चन्द्र दू दरबाजा अन्हारमे ठाढ़,

गला पकड़ायल, कण्ठ एखनहुँ ऊपरक आड़।

शहर, हमर नामकेँ भयक भाषा नहि बनाउ,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—भूत—भविष्यत् प्रयोगसम्बन्धी आपत्ति: “चैत्र चाउर पकबैत अछि” आ “चाउर चैत्रद्वारा पकाओल जाइत अछि” मे तिङ् संख्या क्रमशः कर्ता आ कर्मसँ सम्बन्धित होइत अछि; परम्परागत नियम अछि—संख्या तिङ्क वाच्यार्थसँ सम्बन्धित होइत अछि। भूत-भविष्यत् प्रयोगसम्बन्धी आपत्ति।]

अध्याय १६९

चन्द्र दूक दरबज्जा

दरबज्जापर चपरासी पकड़ाइ छै; भीतरक कोठरी अपन ताला अपने बदलैत रहै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: चन्द्रमा साफ करब

लोकधुन: मधुश्रावणी चन्द्र-गीत

धोउ गे बहिना, चानक दाग धोउ गे,
नकली चमक फेकि असल किरण जोहू गे।
चन्द्र दू हो वा दस हो, असल चान एक,
काजरक दाग धोइ देत जनक जागल नेह।
आकाशक उज्जर थारी सभकेँ बराबरि देखय,
नकली चमकक पाछाँ साँचक किरण लेखय।
बहिनि सभ मधुश्रावणी गीतमे प्रश्न उठाउ,
कलंकक खोल हटा कऽ असल मुँह लाउ।
चानक प्रकाश बँटैत अछि, अधिकारो बँटू,
कारी कक्षक दुआर खोलि उज्जर दिन गढ़ू।
मधुश्रावणीक गीत-घेरा, फूल-पात सजाओल,
कथाक बीच प्रश्नो एक-एक टाँकि गाओल।
आकाशक उज्जर थारी सभ आँगन उतरय,
चानक संग अधिकारो बराबरि बँटय।

❖

बूढ़ सभ कहै छै जे नाम मे अंक जोड़ब सभ सँ पुरनका चालि छिऐ। चन्द्र एक, चन्द्र दू—अंक लगिते नाम आधा अपन आ आधा पराया भऽ जाइ छै। जँ पकड़ा गेलहुँ तँ कहि देब 'ई तँ कोड छल'; आ जँ बचि गेलहुँ तँ नाम अपने काज करैत रहत। अंक कोनो हिसाब नै छिऐ—अंक बचावक दरबाजा छिऐ।

आ सभ सँ पैघ चोरी पाइक नै, भरोसाक होइ छै। जकर नाम सुनि लोक दरबज्जा खोलै छल—काका, पण्डितजी, बाबू—ओहि नाम केँ उठा कऽ फोन मे लगा देब, ई ओहि गामक सभ सँ पुरनका पूँजी केँ लूटब छिऐ। धन घुरि सकै छै; भरोसा जे एक बेर लुटा गेलै, से बरखों धरि नै घुरै छै।

आ जकरा हम आइ नब अपराध कहै छी, से बहुत ठाम पुरनके अन्यायक ब्याज छिऐ। जकर मुकदमा दस बरख सँ लटकल छै, ओ 'अदालत' शब्द सुनितहि काँपि जाइए। ठग ओहि कँपनी केँ बनबै नै छै—ओ केवल ओकरा भाड़ा पर लै छै। जतय न्याय देरी करै छै, ओतय ठग समय पर पहुँचि जाइए।

तेँ चन्द्रमा केँ देखू। ओ जतेक उज्जर छै, ओकर दाग ततबे साफ देखाइ छै। नाम जकर जतेक पैघ छै, ओकर कलंको ततबे नङ्गे भऽ कऽ ऊपर आबि जाइ छै—बस, चानि केँ देखबा लेल राति भरि जागल आँखि चाही, आ दाग गनबा लेल कोनो डर नै।

अन्हार दरबाजा बनि जे नाम ठाढ़ भेल छल, से घर नहि गेल—चन्द्र २ नाम राति भरि चन्ना गाछीक ठूँठ पर टँगल रहल। लोक सभ घर गेल, मुदा ओ नाम घर नहि गेल। ओ हवामे रहि गेल, नदीक ऊपर रहि गेल, बूढ़ लोकक तकियाक किनार पर रहि गेल। जखन कियो आँखि मुनैत, स्क्रीन पर चमकैत ओहि दू अंकक छाह देखाइ पड़ैत—चन्द्र, आ ओकर पाछाँ दोसर चन्द्र।

भोरमे मीरा सभकेँ फेर जमौलथि। ओ कहलथि—‘नामक दोहराव संयोग नहि मानल जाएत। जे अपराध अपन पुरान मुँह नुकाबय चाहैत अछि, ओ प्रायः आधा नाम राखैत अछि, ताकि चिन्हारियो रहय आ बचावो।’ अनन्या रजिस्टरमे लिखली—‘दोहराओल नाम: स्मृति आ छलक बीचक पुल।’

सत्यव्रत मेहता भेटल पर्ची फेर खोललनि। ओकरा पर ‘चन्द्र २’क आगाँ तीन बिन्दु छल। ओ बिन्दु सामान्य विराम नहि छल; जेना वाक्य जानि-बुझि अधूरा छोड़ल गेल हो। सत्यव्रत कहलनि—‘जखन अपराधी पूरा नाम नहि लिखैत, तखन ओ अपन भयक हस्ताक्षर करैत अछि।’

आरुणि पूछलक—‘ई चन्द्र २ चन्द्रपालक दोसर नाम भऽ सकैत अछि?’ मीरा उत्तर देलथि—‘भऽ सकैत अछि, मुदा जल्दी निष्कर्ष अपराधीक मदति करैत अछि। पहिने देखब—कागचमे चन्द्र कतय-कतय आयल, आवाजमे कतय आयल, रजिस्टरमे कतय आयल, आ डरमे कतय आयल।’

देविका जनसेवा केन्द्रक जब्त सूचीसँ तीन नम्बर छाँटली। पहिल नम्बर नदी पारक, दोसर शहरक, तेसर एक एहन जगहक जे सोझे कोनो नक्शामे नहि, पर बैंक सन्देशमे बेर-बेर उभरैत छल। ओकरा ‘चन्द्र सेवा कार्यालय’ नामे सहेजल गेल छल। भिखारी लाल हँसि देलक—‘सेवा फेर!’ मीरा कठोर भऽ कहलथि—‘अपराध सभसँ नीक शब्दक भीतर दाँत राखैत अछि।’

चन्द्र सेवा कार्यालय शहरक पुरान तरकारी-मण्डीक पाछाँ छल। बाहर बोर्ड पर नील रंगक अक्षरमे लिखल—‘दस्तावेज, ऋण, पेंशन, बीमा, ऑनलाइन सहायता।’ भीतर पैसिते बूढ़ लोकक भीड़ देखाइ देलक। कियो पेंशनक फारम भरबय आयल, कियो राशन कार्ड सुधरबय, कियो जमीनक नकल निकलबय। प्रत्येक काउंटर पर विश्वास बिकैत छल, आ प्रत्येक कुर्सी पर असहायता बैसल छल।

मीरा टोली केँ अलग-अलग ठाढ़ रहबाक संकेत देलथि। ओ चाहैत छलीह जे कार्यालय अपन स्वाभाविक बोलीमे खुजय। एक बाबू जोर-जोरसँ कहि रहल छल—‘जकर बेटा बाहर अछि, ओकरा विडियो सत्यापन करय पड़त।’ दोसर कहि रहल छल—‘बैंक बन्द भऽ सकैत अछि, जल्दी दस्तावेज दिअ।’ तेसर बूढ़ स्त्रीक कान लग झुकि फुसफुसा रहल छल—‘घरमे ककरो नहि कहब, नहि तँ काम रुकि जाएत।’

एहि वाक्य पर मीरा ठमकि गेलीह। ‘ककरो नहि कहब’—ई डिजिटल डरक पहिल मन्त्र छल। नदी पारक कमला देवी, शहरक आवाजघर, जनसेवा केन्द्र, सभ ठाम ई वाक्य मिलल। सत्यव्रत तुरन्त लिखलनि—‘एकान्त निर्माण: अपराधक पहिल क्रिया।’

अनन्या एक कोनमे राखल पुरान अभिलेख-फाइल देखली। ओकर कवर पर लिखल छल—‘वृद्ध सहायता, जमीन विवाद, परदेशी पुत्र।’ ई तीन श्रेणी काल्हि पढ़ल परिस्थिति-सूचीसँ हुबहु मिलैत छल। ओ धीरेसँ देविका केँ बजौली। देविका फाइल खोलि देखलीह—भीतर नाम, मोबाइल, पारिवारिक सम्बन्ध, मुकदमा संख्या, बैंक शाखा, आ ‘भावनात्मक संकेत’ नामक अलग खाँचा।

‘भावनात्मक संकेत?’ आरुणि फुसफुसायल। ओहि खाँचामे लिखल—‘माय जल्दी कानत’, ‘बाप अधिकारीक नामसँ डरैत’, ‘विधवा जमीन पर असुरक्षित’, ‘नाति परदेशमे’, ‘कोर्ट केस पुरान’। आरुणिक हाथ काँपि गेल। ई केवल सूचना नहि छल; मनुष्यक भीतरक टूटनक नाप छल।

सत्यव्रत मेहता फाइल देखिते बुझि गेलाह जे अदालतक रेकर्ड-घरक अन्हार शहर धरि बहि आयल अछि। मुकदमा संख्या, स्थगन तारीख, जमीनक विवाद, पेंशनक रुकल प्रविष्टि—ई सभ साधारण जनसेवा कागचसँ नहि भेटैत अछि। कियो सरकारी दफ्तर, अदालत, बैंक, पंचायत आ बजारक बीच चुपचाप रस्ता बना रहल छल।

काउंटरक पाछाँ बैसल लोक अपना केँ चन्द्रमोहन कहलक। ओ मध्यम उमेरक, सुथर कपड़ा, माथ पर हलुक तिलक, स्वरमे बनाओटी करुणा। जखन मीरा अपन परिचय देलथि, ओ तुरन्त मुस्कुरायल—‘हम तँ गरीबक सेवा करैत छी। कागच बिनु गरीब कतऽ जाय?’ मीरा उत्तर देलथि—‘कागचक सेवा आ कागचक चोरिक बीच एकटा बालुक रेखा अछि।’

चन्द्रमोहनक मुस्कान क्षण भरि थरथरायल। ओ कहलक—‘चन्द्र नाम एतय बहुत लोकक अछि। चन्द्र २ सुनि हमरा पर संशय उचित नहि।’ सत्यव्रत ओकर वाक्य पकड़लनि—‘हम तँ

चन्द्र २क बात एखन कहलहुँ धरि नहि।’ कमरामे चुप्पी पड़ि गेल। जे बात दोषी मोन पहिने सुनैत अछि, से कतेको बेर मुँहसँ अपने निकलि जाइत अछि।

भिखारी लाल दरबाजाक भीतरक कोन देखलक। ओतय एक छोट दराज आधा खुजल छल। दराजमे मोहर, खाली स्टाम्प कागच, आ दू मोबाइल भेटल। एक मोबाइलमे सहेजल सम्पर्क—‘सी-ग्रुप’, ‘मधुकर’, ‘नरेश पुरान’, ‘चन्द्र १’। ‘चन्द्र १’ देखिते सभक दृष्टि चन्द्रमोहन पर टिकि गेल।

चन्द्रमोहन तुरन्त कहलक—‘व्यापारिक कोड अछि।’ मीरा शान्त स्वरमे पूछलथि—‘चन्द्र १ के?’ ओ चुप। सत्यव्रत कहलनि—‘जँ चन्द्र २ व्यापारिक कोड अछि, तँ चन्द्र १ हिसाबक पहिल पन्ना पर रहत। पन्ना देखाउ।’ चन्द्रमोहनक गला सुखा गेल।

ओहि समय पछिला कोठरीसँ हलुक खसखसाहट सुनाइ देलक। आरुणि आ देविका भीतर गेलाह। ओतय एक पुरान स्कैनर, आवाज रिकार्ड करबाक यन्त्र, आ देबाल पर सटल पन्ना भेटल—‘अदालत अधिकारी स्वर’, ‘बैंक सत्यापन स्वर’, ‘पुलिस चेतावनी स्वर’, ‘पुत्र संकट स्वर’। प्रत्येकक आगाँ टिक लागल छल।

एक पन्ना विशेष छल। शीर्षक—‘पुरान विश्वासक नाम प्रयोग’। नीचाँ लिखल—‘बटुक बाबू, पण्डितजी, चन्द्रपाल काका, अदालत बाबू।’ देविका ई पाँति देखिते स्तब्ध रहि गेलीह। चन्द्रपालक नाम केवल पुरान अपराधक पात्र नहि रहि गेल; ओ विश्वासक नकली मुद्रा बनि फोनमे घूमि रहल छल।

मीरा चन्द्रमोहनसँ पूछलथि—‘चन्द्रपाल काका के?’ चन्द्रमोहन पहिने हँसल—‘गामक पुरान लोक।’ फेर कहलक—‘सभ ओकरा जनैत छल।’ फेर चुप। सत्यव्रत कहलनि—‘जे लोकक नाम पर लोक दरबाजा खोलैत छल, ओकर नाम पर फोनमे डर बेचायल।’

कार्यालयक बाहर भीड़ जमा भऽ गेल। बूढ़ किसान कहलक—‘एहेन लोक हमर कागच बनबैत छल।’ एक विधवा कहलीह—‘ओ कहने छल जे कोर्टक तारीख ठीक कराएब।’ एक परदेशी पुत्रक पिता कहलक—‘ई हमर बेटाक नम्बर कहिया लिखलक, हम बुझलहुँ धरि नहि।’ मीरा सभकेँ रोकलथि—‘भीड़ निर्णय नहि देत। पहिने सूची सुरक्षित होएत।’

अनन्या बच्चा सभक पद्धति दोहरौली—नाम, अनुमति, कागच, कारण, हानि। ओ बूढ़ लोक सभसँ पूछली—‘तोहर कथा लिखब?’ कियो ‘हँ’ कहलक, कियो ‘नहि’। जकरा नहि चाही छल, ओकर नामक जगह ‘गोपनीय’ लिखल गेल। मीरा कहलथि—‘सत्यक भूख निजताक देह नहि खाउ।’

दराजक दोसर मोबाइलमे एक आवाज-सन्देश भेटल। आवाज भारी, धीमा, चिन्हल-सन। ओ कहैत छल—'पुरान मुकदमा वाला परिवार पहिने। जकरा अदालत खाइत रहल, ओकरा फोन जल्दी खाएत।' ई वाक्य सुनिते बरामदाक तारीख-पाठ, रेकर्ड-घरक धूरि, रद्दी बोरा, तेतरि घाट, सभ एके संग काँपि उठल।

सत्यव्रत मेहता आँखि मूनि लेलनि। ओ कहलनि—'ई अपराध केवल नब तकनीकक नहि। ई पुरान अन्यायक ब्याज अछि। जकरा अदालत प्रतीक्षा दैत रहल, ओकर भय पर ई लोक नकली अदालत बनबैत अछि।' आरुणि लिखलक—'पुरान देरीक नब लूट।'

चन्द्रमोहन आब बेकाबू भऽ उठल। 'हम अकेला नहि,' ओ चिचियायल। 'ऊपरसँ सूची अबैत छल। पुरान केस, जमीन, पेंशन—सभ तैयार। हम केवल मिलान करैत छलहुँ।' मीरा पूछलथि—'ऊपर के?' ओ चुप भेल। ओकर ठोर दू बेर हिलल, आवाज नहि निकलल; तेसर बेर बहुत धीमे कहलक—'चन्द्र १।'

कक्षमे उपस्थित सभ लोक ओ दू शब्द सुनलक। चन्द्र १—अर्थात् चन्द्र २क पहिल छाह। चन्द्रमोहन केवल दोसर दरबाजा। पहिल दरबाजा कतय? चन्द्रपाल? कि चन्द्रपालक नामक आड़िमे कियो आर? सत्यव्रत मेहता कहलनि—'नाम पुरान भऽ सकैत अछि, हाथ नब। एहि लेल प्रमाणक डोरि अधूरा नहि छोड़ब।'

भिखारी लाल एक मोट बही उठा लेलक। कवर पर धूरि छल, मुदा भीतर पृष्ठ साफ। पहिल पृष्ठ पर लिखल—'पुरान भरोसा-सूची।' दोसर पर—'मृत, लाचार, मुकदमा-ग्रस्त, परदेशी-सन्तान।' तेसर पर लाल रेखासँ—'चन्ना गाछी क्षेत्र।' ई देखिते अनन्याक मुँहसँ निकलल—'ओ सभ हमरा सभकेँ पहिनहिसँ पढ़ि रहल छल।'

मीरा बही बन्द नहि केलथि; ओ कपड़ा पर राखि सील करौलथि। 'जकरा पढ़बाक आदति सत्ता बनि गेल, ओकरा आब जनताक सोझाँ पढ़ल जाएत,' ओ कहलथि। कार्यालयक बोर्ड उतारल नहि गेल, मुदा ओकर नीचाँ अस्थायी पर्ची सटाओल गेल—'जाँचाधीन: बिनु सामूहिक पुष्टि कागच नहि देब।'

साँझमे चन्ना गाछी लग सार्वजनिक पाठ भेल। एहि बेर चन्द्रमोहनक नाम पूरा नहि पढ़ल गेल, कारण जाँच चलि रहल छल; मुदा 'चन्द्र २'क तन्त्र पढ़ल गेल। लोक सभ बुझलक जे अपराधक मुँह लोक होइत अछि, मुदा ओकर देह कागच, आवाज, डर, सेवा, पेंशन, अदालत आ बैंकसँ बनैत अछि।

सुरमणी देवी नोनक पोटली खोलि कहलथि—'चन्द्र दू भेटल, आब चन्द्र एक ताकू। मुदा सावधान—चन्द्रमा जतेक उज्जर, ओकर कलंक ओतेक साफ देखाइत अछि।' बूढ़बा भूत ठूँठक पाछाँ मुस्कुरेलाह कि हवा चलल—कियो निश्चित नहि कहि सकल।

राति गाढ़ भेल तखन नदी दिससँ गोहिक हलुक छपाक सुनाइ देलक। एहि बेर जलमे ओकर पूरा देह नहि, केवल आँखि चमकल। कारी भूत ओहि आँखि पर अन्हारक परत चढ़बय चाहैत छल, उज्जर प्रेत चन्ना गाछीक छाहसँ ओ परत हटबैत। अनन्या लिखली—'चन्द्र २ खुजल; चन्द्र १ एखन अन्हारक भीतर।'

चन्द्र सेवा कार्यालयसँ पुरान भरोसा-सूची, भावनात्मक संकेत, संस्था-स्वर, आ चन्द्र १क छाह भेटल। डिजिटल डरक बजार आब सोझे पुरान अदालत, जमीन-विवाद, पेंशन, परदेशी पुत्र आ चन्द्रपालक नाम धरि पहुँचि गेल।

लोकगीत: चन्द्र दूक कलंक

लोकधुन: चन्द्र-विलाप

उतारू हे चन्द्र, नकली उजास उतारू हे,

जकर भरोसा चोरल, ओकर चरण पखारू हे।

चन्द्र दू उज्जर नाम, भीतर कारी कक्ष,

भरोसाक सूची चोरि बनौलक डरक नक्ष।

दरबाजापर चपरासी, भीतर ताला बदलय,

प्रत्येक पीड़ितक कमजोरी आवाज बनि चलय।

सुरमणी नोन धरि कहली—चन्द्र एक ताकू,

उज्जर चानक कलंककेँ नामसँ आँकू।

गोहि केवल आँखि बनि जलपर चमकल,

चन्द्र एक एखन अन्हारक गर्भमे दमकल।

चन्द्र दू, अपन नकली उजास उतारू,

दुआरि पर चपरासी, भीतर ताला बदलय,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—श्रीगङ्गेशोपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' ग्रन्थक 'शब्दखण्ड'मे मुख्य रूपसँ 'शब्द' (वा शाब्द ज्ञान) केँ एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे बौद्ध आ वैशेषिक दर्शनक आक्षेपसभक खण्डन कएल गेल अछि। साथहि, कोनो वाक्यक अर्थ बुझबाक लेल आवश्यक चारि मुख्य तत्त्वसभ—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—क सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल

अछि। एहि संगे शब्दक अनित्यता (शब्दानित्यतावाद) आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्शक न्यायसम्मत विवेचन सेहो एतय प्रस्तुत अछि।: ओ सभ स्वीकार करैत छथि जे तोता वा कोनो छलकर्त्ताक प्रसङ्गमे वास्तवमे 'हेतु' (वक्ताक यथार्थ ज्ञान वा अभिप्राय) अनुपस्थित रहैत अछि। श्रीगङ्गेशोपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' ग्रन्थक 'शब्दखण्ड'मे मुख्य रूपसँ 'शब्द' (वा शाब्द ज्ञान) केँ एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे बौद्ध आ वैशेषिक दर्शनक आक्षेपसभक खण्डन कएल गेल अछि। साथहि, कोनो वाक्यक अर्थ बुझबाक लेल आवश्यक चारि मुख्य तत्त्वसभ—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—क सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल अछि। एहि संगे शब्दक अनित्यता (शब्दानित्यतावाद) आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्शक न्यायसम्मत विवेचन सेहो एतय प्रस्तुत अछि।।]

अध्याय १७०

चन्द्र एकक खोल

खोल उतारि लिअ तँ चन्द्र एक आ चन्द्र दू एक्कहि अन्हारक दू फाँक।

अध्यायारम्भ लोकगीत: असल चान उदित

लोकधुन: कोहबरक चन्द्र-मंगल

उगू हे चान, असल चान उगू हे,
कागचक नकली चान भोरक संग मेटू हे।
कागचक नकली चान उतरि जाय राति,
आँगनक असल चन्द्रमा देत नब सौगाति।
कोहबरक चित्रमे माछ, बाँस, कमल फुलाय,
साझा जीवन, साफ वचन, प्रेमक राह देखाय।
प्रकाश जे बाँटल जाय, सएह चानक मान,
जे केवल भ्रम चमकाबय, ओ नहि आसमान।
असल चान उदित होउ, सभ मुँह उजियार,
साँचक शीतल जोतिसँ भरू घर-दुआर।
कोहबरक भीत पर माछ-कमल-बाँसक जोड़ी,
साझा जीवन, साफ वचन—प्रेमक ई डोरी।
जे इजोत बाँटय, सएह असल आसमान,
भ्रमक चमकी झड़ि जाय, रहय शीतल मान।

❖

बूढ़ सभ कहै छै जे केओ केओ नाम अपन देह सँ पैघ भऽ जाइ छै। ओहन नाम जीबियो कऽ ओतबे काज नै करै छै जतबे मरला पर करै छै; किएक तँ जीवित लोक सँ प्रश्न कएल जा सकै छै, आ नाम सँ नै। तेँ चोर लोक केँ नै, नाम केँ चोरबै छै—आ चोराओल नाम कहियो थानामे रपट नै लिखबै छै।

पितृ-स्वर सभ सँ पुरनका ताला छिऐ। 'बाबू', 'काका', 'पण्डितजी', 'अदालत'—ई शब्द सुनितहि गामक माथ अपने-आप झुकि जाइ छै। ई झुकनाइ नीक बात रहै, जखन ओहि स्वरक पाछाँ उत्तरदायित्व रहै। आब स्वर तँ रहलै, उत्तरदायित्व उड़ि गेलै; आ जे झुकनाइ बचि गेलै, से आब गरदनि नै, फान्द छिऐ।

आ सभ सँ दुखक बात ई जे ठग नब डर नै गढ़ै छै। ओ पुरनके डर केँ जगबै छै। जकर मुकदमा दस बरख सँ लटकल छै, ओकरा 'तारीख टलि जायत' कहू—ओ तुरन्त काँपत। ठग हमरा भयभीत नै करै छै; ओ केवल ओहि भय पर हाथ राखै छै जे व्यवस्था बरखों सँ हमरा भीतर जमा करैत आयल छै।

तेँ एहि अन्हारक इलाज 'चुप रहू' नै छिऐ। इलाज 'बाजू' छिऐ। जे मन्त्र बुझल भऽ जाइ छै, ओकर डर आधा मरि जाइ छै; आ जे डर दस कान लग बाजल जाइ छै, ओ आधा सँ आधा रहि जाइ छै। सुननाइ अपने मे एकटा पहरा छिऐ।

अन्हारक भीतर जे पहिल चन्द्र नुकाएल छल, तकर नाम सुनिते चन्द्र सेवा कार्यालयक भीड़ छँटल नहि, उनटे आर गाढ़ भऽ गेल। लोक सभ बुझि गेल जे जे लोक पकड़ायल अछि, ओ दरबाजाक चपरासी मात्र अछि; भीतरक कोठरी एखन बन्न अछि। मीरा बहीक सील पर हाथ राखि कहलथि—'जे पहिल चन्द्र अछि, ओकरा जल्दीमे चन्द्रपाल मानब अथवा कोनो नब लोक मानब, दुनू भूल भऽ सकैत अछि। नामक खोल खोलबाक चाही, नामक पूजा नहि।'

सत्यव्रत मेहता बहीक पहिल पन्ना फेर पढ़लनि। अक्षर नीक, व्यवस्थित, लगभग अदालतक लिखाबट जेकाँ। 'पुरान भरोसा-सूची'क नीचाँ छोट अक्षरमे लिखल छल—'पहिल छननी: न्याय-प्रतीक्षारत परिवार।' सत्यव्रत कहलनि—'ई भाषा कियो सड़कक ठग नहि लिखि सकैत अछि। जे व्यवस्था मनुष्य केँ प्रतीक्षा सिखबैत अछि, से प्रतीक्षाक सूची बनबैत अपराधी केँ सेहो भाषा दैत अछि।'

अनन्या ओहि वाक्य केँ रजिस्टरमे उतारली। ओकरा लगल जे डिजिटल अरेस्टक असली हथकड़ी मोबाइलमे नहि, पुरान डरमे अछि। जकरा बरखों अदालतक चक्कर घुमाओल गेल, ओकर कानमे जखन 'अधिकार', 'समन', 'जाँच', 'गिरफ्तारी' शब्द बजैत अछि, ओ पहिल बेर नहि डरैत; ओकर पुरान डर मात्र जागि उठैत अछि।

चन्द्रमोहन केँ अलग कमरामे बैसल राखल गेल। ओ अपन माथ झुकौने छल, मुदा चुप्पी ओकरा बचा नहि सकल। मीरा पूछलथि—'चन्द्र १क संग तोहर सम्पर्क कतयसँ?' ओ कहलक—'सोझे नहि। सूची अबैत छल, आवाजक नमूना अबैत छल, कहबाक पाँति अबैत छल। हम ओहि हिसाबे बूढ़ लोक सभ केँ फँसाबैत छलहुँ।'

'सूची कोना अबैत छल?' देविका पूछलीह। चन्द्रमोहन कहलक—'कहियो छापल कागच, कहियो सन्देश, कहियो पेन-ड्राइव। किछु पन्ना पर पुरान अदालतक मोहरक छाह रहैत छल, किछु पर पंचायतक मोहर, किछु पर बैंक-शाखाक संक्षिप्त नाम। हम पूछैत नहि छलहुँ।' भिखारी लाल धीमे कहलक—'जे नहि पूछैत, ओ उत्तरक भागीदार बनैत अछि।'

ओहि समय बहीक बीचमे राखल एक पात खुजि गेल। पात पर केवल चारि शब्द छल—'चन्द्र १: पितृ-स्वर।' सभ थमकि गेल। पितृ-स्वर—ई कोनो नाम नहि, एक तरीका छल।

मीरा बुझि गेलीह जे अपराधी लोक ‘पिता’, ‘काका’, ‘बाबू’, ‘पण्डित’, ‘अदालत’ सभ शब्द केँ आवाजक वेशभूषा बनबैत छल।

सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘चन्द्र १ शायद लोकक नाम नहि, पुरान अधिकारक मुखौटा अछि।’ आरुणि तुरन्त प्रतिवाद केलक—‘तखन चन्द्रपालक नाम किएक?’ सत्यव्रत उत्तर देलनि—‘किएक तँ जे समाज पितृ-स्वर पर आँखि मूनि विश्वास करैत अछि, ओहि समाजमे चन्द्रपाल जेकाँ नाम चाबी बनि जाइत अछि। चाबी असली हो अथवा नकल, दरबाजा खुजि जाइत अछि।’

एहि विचारक संग टोली शहरक दोसर छोर पर गेल। बहीमे एक पता घेरा देल छल—‘पुरान टाइपिंग गल्ली, कमरा सात।’ गलीमे एखन इलेक्ट्रॉनिक दोकान, मोहर बनौनिहार, फोटोकॉपी, ऑनलाइन आवेदन आ जमानत-बांडक दलाल सभ एकहि पाँतिमे बैसल छल। पुरान टाइपराइटर सभ शो-पीस बनि खिड़कीमे लटकल, मुदा भीतर की-बोर्डक टकटक ओहिना भाग्य लिखि रहल छल।

कमरा सातक दरबाजा बन्द छल। बाहर कोनो बोर्ड नहि। केवल भीतरसँ पंखाक खरखराहट आ कागच सरकबाक हलुक स्वर। भिखारी लाल कान लगौलक—‘कियो पढ़ि रहल अछि।’ मीरा धीरे दरबाजा खटखटौलथि। भीतरसँ आवाज आयल—‘आइ काम बन्द अछि।’ स्वर बूढ़ छल, पर जानि-बुझि भारी बनाओल।

दरबाजा खुजल तँ सोझाँ एक वृद्ध टाइपिस्ट बैसल भेटल। नाम—मोहनलाल झा। ओकर आँखि पर मोट चश्मा, टेबुल पर पुरान मोहर, स्कैनर, माइक्रोफोन, आ दूटा स्पीकर। देबाल पर न्यायिक भाषा, बैंक-शब्द, पुलिस-चेतावनी आ पारिवारिक सम्बोधनक सूची टाँगल छल। ओ मीरा केँ देखिते मुस्कुरायल—‘हम तँ केवल लिखि दैत छी।’

मीरा कहलथि—‘लिखनाइ जँ डर बेचय लागय, तँ ओ केवल लिखनाइ नहि रहैत अछि।’ मोहनलाल झा कान्ह उचकौलक—‘हमरा ककरो फोन करैत नहि देखब। हम स्क्रिप्ट बनबैत छी। ग्राहक अपन काम करैत अछि।’ सत्यव्रत टेबुल पर राखल पन्ना उठा लेलनि। शीर्षक छल —‘माताक मोन पर दबाव: पाँच चरण।’

अनन्याक मुँह सख्त भऽ गेल। पन्ना पर लिखल छल—पहिने अकेला कर, दोसर पुरान केस मोन करा, तेसर पुत्रक नाम लऽ, चारिम अधिकारक आवाज दे, पाँचम तुरन्त धन माँग। एक-एक पाँति मनुष्यक करुणा पर वार छल। देविका फुसफुसेलीह—‘ई तँ अपराधक पाठशाला अछि।’

मोहनलाल झा पहिने हँसल, फेर बजनाइ बन्द भऽ गेल। आरुणि ओकर सोझाँ कमला देवीक बयान पढ़ि सुनौलक। बूढ़ माय, परदेशी बेटा, पुलिसक नाम, डर, मौन, बैंकसँ निकसल धन—सभ सुनि मोहनलालक आँगुर टेबुल पर थरथराय लागल। ओ कहलक—‘हम नहि जनैत छलहुँ जे लोक एतेक टूटि जाइत अछि।’

मीरा कठोर स्वरमे कहलथि—‘जे शब्द बनबैत अछि, ओकरा शब्दक चोट जानबाक चाही। नहि तँ ओ कलमक डाँड़ नहि, गोहिक दाँत थम्हने अछि।’ एहि वाक्य पर कमरामे राखल स्पीकर अचानक किरकिरायल। जेना रिकार्ड कएल आवाज सभ एके संग विरोध कऽ रहल हो।

टेबुलक दराजसँ एक लाल फाइल भेटल। कवर पर लिखल—‘सी-एक।’ भीतर आवाजक नमूना, पुरान पण्डितक प्रवचन, अदालतक घोषणाक ध्वनि, बैंक-प्रबन्धकक औपचारिक बोली, आ एक पुरान जनसभासँ काटल चन्द्रपालक भाषणक अंश छल। ‘चन्द्र १’क अर्थ स्पष्ट होइत गेल—पुरान अधिकारक आवाज सभक मिश्रित मुखौटा।

सत्यव्रत मेहता धीरे कहलनि—‘अर्थात् चन्द्रपाल जीवित हो अथवा मृत, ओकर आवाजक प्रताप एखनहुँ लोक कैँ बान्हि रहल अछि।’ मोहनलाल झा कहलक—‘नाम बिकैत अछि बाबू। जे नाम पर लोक माथ झुकबैत अछि, ओकर स्वर मिलाबयमे बेसी दाम भेटैत अछि।’

भिखारी लालक आँखि लाल भऽ गेल। ‘तँ अहाँ सभ मृत नामक चोरि करैत छलहुँ।’ मोहनलाल उत्तर देलक—‘मृत नहि, प्रतिष्ठित।’ एहि शब्द पर मीरा टेबुल पर हथेली मारलथि—‘प्रतिष्ठा जखन अन्यायक ढाल बनि जाय, तखन ओ मृतकसँ सेहो खतरनाक होइत अछि।’

दू टा पेन-ड्राइव भेटल। एक पर लिखल—‘पिता’, दोसर पर—‘अधिकारी’। आरुणि लैपटॉपमे खोललक। भीतर अलग-अलग आवाजक वाक्य छल—‘तुरन्त उत्तर दिअ’, ‘ककरो नहि कहब’, ‘तारीख टलि जाएत’, ‘गिरफ्तारी रुकि सकैत अछि’, ‘बेटाक जीवनक प्रश्न अछि।’ अनन्या प्रत्येक पाँति सुनि बुझि रहल छली जे डिजिटल युगमे झूठ सेहो लोकगीत जेकाँ रियाज कऽ-कऽ गाओल जाइत अछि।

एहि बीच बाहर गलीमे लोक जुटि गेल। कियो कहैत—‘मोहन बाबू तँ सभक कागच लिखैत छलाह।’ कियो कहैत—‘हुनका बिनु आवेदन नहि बनैत छल।’ ई सुनि देविका कहलथि—‘समाजक भरोसा जँ जाँच बिनु एकहि मेज पर जमा भऽ जाय, तँ ओ मेज मन्दिर नहि, बन्धकघर बनि सकैत अछि।’

मोहनलाल झा अन्तमे टूटल। ओ स्वीकारलक जे चन्द्रमोहन, किछु बैंक दलाल, एक पुरान मोहरनवीस, आ ‘मधुकर बाबू’ नामक लोकक बीच ई जाल चलैत छल। मधुकर बाबू पुरान

अदालत-सम्बन्धी कागच सभक खबरि दैत छल। मुदा मधुकर स्वयं ऊपरक नाम नहि कहैत छल। केवल कहैत—'पुरान गाछीक क्षेत्र पहिने।'

'पुरान गाछी' सुनिते सभक भीतर चन्ना गाछीक ठूँठ खड़क उठल। मीरा बुझलीह—डिजिटल अपराधक डोरि फेर गामक माटि, चन्ना गाछी, अदालतक बरामदा आ रेकर्ड-घर धरि घुरि रहल अछि। चन्द्र १क खोल खुजल, मुदा खोलक भीतर एक आर सुरंग निकलल।

साँझ धरि कमरा सात सील भेल। मुदा मीरा केवल पुलिसी सील पर निर्भर नहि रहलीह। ओ लोक सभक सोझाँ ओहि अपराध-पद्धति पढ़ि सुनौलथि—एकान्त, डर, अधिकारक स्वर, पारिवारिक नाम, तुरन्त धन, मौनक शपथ। लोक सभ पहिल बेर ठगीक मुँह नहि, ओकर व्याकरण सुनलक।

सुरमणी देवी चन्ना गाछी लग कहलीह—'जे मन्त्र बुझल भऽ जाय, ओकर डर आधा मरि जाइत अछि।' बच्चा सभ एहि वाक्य कैं लाल सूतसँ बाँधि ठूँठ पर टाँगलक। एहि बेर ठूँठ पर नाम नहि, चेतावनी टाँगल गेल—'फोन पर डर भेटय तँ अकेला नहि सहू; नामक पहरुआ कैं बजाउ।'

कमला देवी सेहो आयलीह। ओ धीरे कहलथि—'हमर टाका गेल, मुदा हमर डर घुरि आयल अछि। आब ओकरा हम अकेले नहि पालब।' हुनकर ई वाक्य सुनि कतेको स्त्री सभ आगाँ बढ़लीह। कियो अपन बेटाक नकली फोनक कथा कहलथि, कियो बैंक सन्देशक, कियो पेंशन रोकबाक धमकीक। डिजिटल अरेस्टक जाल लोक सभक सामूहिक बोलीमे फाटय लागल।

सत्यव्रत मेहता चुपचाप नोट लिखैत रहलाह। 'अदालत प्रतीक्षा दैत अछि, बजार डर बेचैत अछि, तकनीक आवाज बदलैत अछि; मुदा समुदाय जँ सुनय लागय, तँ झूठक स्वर फाटि जाइत अछि।' ओ पन्ना मीरा कैं देलनि। मीरा ओहि पर जोड़लथि—'सुननाइ सुरक्षा अछि।'

राति भऽ गेल। चन्ना गाछीक ठूँठ पर कारी भूत आ उज्जर प्रेत फेर कबड्डी खेलैत देखाइ देलनि—कि लोकक कल्पना छल, ई कियो नहि जानलक। कारी भूत 'ककरो नहि कहब' कहि-कहि रेखा पार करय चाहैत छलाह; उज्जर प्रेत 'सभकैं कहब' कहि हुनकर कलाइ पकड़ैत छलाह। बच्चा सभ हँसल, मुदा ओ हँसी शिक्षा बनि गेल।

नदी दिससँ गोहि उठल। ओकर आँखिमे स्क्रीनक हरियर चमक छल, मुदा देह पर पुरान कादो। ओ एक बेर चन्द्रमाक प्रतिबिम्ब काटि गेल। प्रतिबिम्ब टूटल, फेर जुड़ि गेल। पानिक ओहि टूटब आ जुड़बक बीच एक क्षणक लेल दुइ चान देखाइ पड़ल, फेर एक। अनन्या लिखली—'

चन्द्र एक लोक नहि; अधिकारक नकली प्रकाश अछि। ओकर खोल खुजल, मुदा असली राति एखन बाँकी।'

एहि ठाम डिजिटल डरक पहिल पैघ वृत्त बन्द होइत अछि। चन्द्र २ कार्यालय छल, चन्द्र १ आवाजक मुखौटा। मोहनलाल झाक कमरा, पुरान भाषणक नमूना, पिता-अधिकारीक पेन-ड्राइव, आ मधुकर बाबूक छाह देखेलक जे अपराध केवल मोबाइल पर नहि, समाजक अन्ध-विश्वास पर चलैत अछि।

लोकगीत: नकली चानक खोल

लोकधुन: निर्गुण लोकधुन

छोड़ू हे चान, नकली चान, अन्ध भरोसा छोड़ू हे,
असल रातिक भीतर पहरुआ-दीप जोड़ू हे।
चन्द्र एक लोक नहि, अधिकारक नकली प्रकाश,
पुरान भाषण चोरि बनौलक डरक साँस।
मोहनलालक कमरा, पेन-ड्राइवक बोल,
मधुकरक छाह कहय—उतारू ई खोल।
कारी भूत कहथि—ककरो नहि कहब,
उज्जर प्रेत कलाइ पकड़ि—सभकेँ कहब।
गोहि चानक प्रतिबिम्ब एक बेर काटलक,
पानि फेर जोड़ि देलक, झूठ अकेला फाटलक।
नकली चान, समाजक अन्ध भरोसा छोड़ू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—आब एना तर्क कएल जा सकैत अछि—एहि प्रकार ओही: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—संसारमे सर्प, काँट आदि दुःखसाधनक विनाश तथा वैदिक प्रायश्चित्तादिमे पाप जकाँ दुःखसाधनक विनाश, दोसर विकल्पक अभावमे, केवल दुःखसाधन-विनाशरूपेँ पुरुषार्थ मानल जाइत अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। आब एना तर्क कएल जा सकैत अछि—एहि प्रकार ओही दुःखक विनाश लेल दुःखकेँ सेहो प्राप्त करब आवश्यक होयत; कारण दुःख उत्पन्न भेल बिना ओकर विनाश उत्पन्न नहि भऽ सकैत अछि।।]

अध्याय १७१

चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

अदृश्य अदालतक कोनो मुहर नहि— ओतय भय उतारल जाइ छै, शपथ नहि।

अध्यायारम्भ लोकगीत: भय उतारि साहस पहिरू

लोकधुन: गाछी-जागरण

उतारू हे गठरी, भयक गठरी उतारू हे,
गाछी तरक घेरामे साहस पहिरू हे।
गाछी तरे आसन बिछल, भयक गठरी खोलू,
एक-एक गाँठि उतारि सभ अपन साँच बाजू।
शपथक भारी शब्द नहि, नेहक हाथ पर्याप्त,
काँपैत कण्ठो बाजि उठत जखन संग सुरक्षित।
भय उतारि साहस पहिरू, नब वस्त्रक समान,
जनक घेरा रक्षा बनत, जगत सुनत बयान।
गाछी कहय—डेराउ नहि, पात सभ पहरुआ,
साँचक बाट चलनिहारक संग अछि पुरबा।
एक-एक गाँठि खुजय, एक-एक स्वर जागय,
काँपैत कण्ठो सुरक्षित घेरामे बाजय।
शपथ नहि भारी शब्दक, नेहक हाथ बेस,
पात-पात पहरुआ, संगे पुरबाक परबेस।

❖

बूढ़ सभ कहै छै जे कोनो गाम मे दू अदालत होइ छै—एक जकर देबाल छै, आ एक जकर केवल कान छै। पहिल मे तारीख पड़ै छै; दोसर मे बात पड़ै छै। पहिल मे लोक जीतै-हारै छै; दोसर मे लोक हलुक भऽ कऽ घर घुरै छै।

आ डर कैँ नापबाक एक्के तरीका छै—ओकरा बाजि देब। जाधरि डर भीतर रहै छै, ओ अपन नाप अपने बढ़बैत रहै छै। मुदा जखन ओ दस कान लग बाजल जाइ छै, तखन पहिल बेर ओकर सीमा देखाइ पड़ै छै; आ जकर सीमा देखा गेलै, से आब असीम नै रहलै।

मुदा सुनबा मे सभ सँ पैघ धरम ई जे जकरा नै बाजय के छै, तकरो जगह रहय। कतेको बात एहन होइ छै जकरा कहबा मे देह उघारि जाइ छै—विशेष कऽ स्त्रीक बात, कर्जक बात, घरक भीतरक बात। ओहि ठाम नाम नै, केवल पद्धति लिखू; किएक तँ न्याय पीड़ित कैँ दोसर बेर नाङट नै करै छै।

तैँ एहि घेरा मे तीन रंगक धागा रहतै—जे अपने आँखि सँ देखल, से लाल; जे कान सँ सुनल, से पीयर; आ जे केवल डर छिऐ, से कारी। तीनू कैँ अलग-अलग बान्हू। किएक तँ जे

समाज डर आ प्रमाण कें एके गिट्ठऽ मे बान्हि दै छै, ओ समाज अन्त मे ने अपराधी पकड़ै छै, ने निर्दोष बचबै छै।

गाछीक छाँह आब पात बिनु छल, मुदा ओहि छाँहमे एतेक लोक ठाढ़ भेल जे धूप सेहो निर्णयक प्रतीक्षा करय लागल।

मीरा सभकेँ पहिने घोषणा सुनौलथि—‘एहि ठाम कोनो सरकारी फैसला नहि होएत। एहि ठाम नाम सुनल जाएत, डर सुनल जाएत, आ जे किछु लोक बरखों धरि अकेले ढोने अछि, से सामूहिक बोलीमे राखल जाएत। जे बाजय नहि चाहय, ओकर मौन सेहो दर्ज होएत।’

अनन्या ठूँठक जड़ि लग लाल सूतक घेरा बनौली। ओकर भीतर कोनो कुर्सी नहि, कोनो ऊँच आसन नहि। केवल तीन पाथर राखल गेल—पहिल पाथर ‘नाम’क, दोसर ‘डर’क, तेसर ‘गवाही’क। आरुणि कहलक—‘जे बाजय आएत, ओ पहिने नामक पाथर छूबत; झूठ बाजय चाहत, तँ डरक पाथर ओकरा रोकय।’

सत्यव्रत मेहता दूर बैसल रहलाह। ओ कागच नहि बाँटलनि, मोहर नहि लगौलनि। काल्हि धरि अदालतक भाषा हुनका भीतर भारी छल; आइ ओ सुनबाक भाषा सीखबाक लेल आयल छलाह। हुनका लगल जे न्यायालयक बरामदा जखन लोकक कान बनल, तखन चन्ना गाछी लोकक स्मृति बनि उठल।

पहिल गवाही कमला देवीक भेल। ओ एखनहुँ अपन आँचरमे मोबाइल लपेटने राखैत छलीह, जेना ओ उपकरण नहि, साँप हो। ओ कहलथि—‘हमरा कहल गेल छल जे बेटा फँसि गेल अछि, ककरो नहि कहू। हम ककरो नहि कहलहुँ। आइ बुझलहुँ जे अपराधी हमरासँ मौन माँगने छल, बेटाक सुरक्षा नहि।’

भीड़मे कतेको स्त्रीक आँखि भरि आयल। मीरा पूछलीह—‘अहाँक पहिल भूल की छल?’ कमला देवी उत्तर देलथि—‘हम बुझलहुँ जे डर अकेले सहब तँ परिवार बचत। आब बुझलहुँ जे डर अकेले सहल जाय तँ परिवार आर फँसैत अछि।’ बच्चा सभ लिखलक—‘मौन ठगक पहिल कोठरी।’

दोसर गवाही एक किसानक छल, नाम—लक्ष्मण यादव। ओकर जमीनक नक्शा तीन बेर बदलल गेल छल। ओ कागच लऽ आयल, मुदा पन्ना खोलबासँ पहिने ओकर हाथ काँपि रहल छल। ओ कहलक—‘फाइलमे हमर खेत छोट होइत गेल, मुदा लगानक रसीदमे ओहिना रहल। कागचमे जखन धरती घटैत अछि, किसानक छाती सेहो घटैत अछि।’

सत्यव्रत मेहता एहि वाक्य पर माथ झुकौलनि। हुनका रेकर्ड-घरक ओ बोराक गन्ध मोन आयल जकरा रद्दी कहल गेल छल। ओ धीरे अनन्या कें कहलनि—'भूमि-विवादकें केवल सीमांकन नहि लिखू; ई देहक सीमांकन सेहो अछि।' अनन्या पन्नाक कोनमे लाल रेखा खींचि लिखली—'कागचक नाप आ देहक नाप अलग नहि।'

तकर बाद एक नवयुवक आयल जे परदेशमे काम करैत छल। ओकर आवाजमे शहरक थकान आ गामक अपराध-बोध दुनू छल। ओ कहलक—'हम मायकें फोन कम करैत छलहुँ। ठग ओकरा फोन बेसी केलक। जखन घरक असली आवाज दूर होइत अछि, नकली आवाज ओकर जगह घुसि जाइत अछि।'

ई सुनि आरुणि सभ युवक दिस देखलक। 'डिजिटल अरेस्ट केवल अपराधीक चाल नहि, परिवारक दूरीक दरारो अछि,' ओ कहलक। कतेको युवक अपन मोबाइल नीचाँ कऽ लेलक। चन्ना गाछीक ठूँठ पर लटकैत चेतावनी हवामे हिलल—'फोन पर डर भेटय तँ अकेला नहि सहू।'

तखन एक बूढ़ मोहरनवीस आगाँ आयल। ओकर नाम शिवनारायण मिश्र। लोक सभ ओकरा बरखोंसँ तहसील, अदालत आ बैंकक कागच लिखैत देखैत छल। ओ काँपैत स्वरमे कहलक—'हम मोहनलालक संग किछु नमूना-पत्र लिखने छलहुँ। हमरा लगल छल जे भाषा मात्र भाषा अछि। मुदा भाषा जखन धोखाक बाट बतबैत अछि, ओ पापमे गिनल जाएत कि नहि?'

भीड़ चुप भऽ गेल। कियो ताली नहि बजेलक। मीरा ओकरा दण्ड नहि सुनौलथि। ओ पूछलीह—'अहाँ आब की करब?' शिवनारायण मिश्र कहलक—'हम जे नमूना डरक लेल लिखने छी, ओकर उनटा नमूना लोककें बचाबय लेल लिखब—फोनक धमकी आबय पर की करब, बैंकक नाम पर केहन सावधानी, पुलिसक नाम सुनि पहिल फोन कतय।'

देविका तुरन्त पाथर लग एक नब पन्ना राखली—'बचाव-पत्र।' एहि पन्नामे लोकक भाषा रहत, अधिकारीक कठिन शब्द नहि। चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत दण्डसँ पहिने सुधारक लेखा खोलि रहल छल। उज्जर प्रेतक छाह जेना ठूँठक पाछाँ मुस्कुरेलनि।

मुदा सभ गवाही एतेक सहज नहि छल। एक स्त्री, जे अपन नाम नहि कहय चाहैत छलीह, घूँघटमे आयलीह। ओ कहलथि—'हमर पतिक नाम पर कर्ज चढ़ल। पतिक मृत्यु बाद बैंक, दलाल, सम्बन्धी, सभ घरक देहरी पर आयल। हमरा कहल गेल—हस्ताक्षर करू, नहि तँ बेटीक विवाह रुकत। हम कऽ देलहुँ। आब घर नहि, नामो नहि।'

मीरा सभकेँ संकेत देलथि जे कोनो कैमरा नहि, कोनो फुसफुसाहट नहि। ओहि स्त्रीक नामक जगह बच्चा सभ लिखलक—'देहरी पर दबाव।' देविका धीरे कहलथि—'कतेको स्त्रीक अपराधक अभिलेखमे नाम नहि, केवल अंगूठा रहैत अछि; असलमे ओ अंगूठा दबावक छाप होइत अछि।'

एहि पर कारी भूतक छाह ठूँठ लग घूमि गेल। हुनका जेना दबावक गन्ध प्रिय छलनि। ओ पाथरक घेरा पार करय चाहलनि, मुदा लाल सूत हिलल आ उज्जर प्रेत हुनका रोकि लेलनि। लोक सभ किछु देखलक कि नहि, ई निश्चित नहि; मुदा अचानक हवा भारीसँ हलुक भऽ गेल।

दुपहरि धरि गवाही चलैत रहल। कियो कहलक जे ओकर पेंशन रोकबाक डर देखाओल गेल; कियो कहलक जे थानासँ फोन आयल जेकाँ लागल; कियो कहलक जे बेटाक परीक्षा, बेटीक अस्पताल, पतिक जमानत—सभक नाम पर धन माँगल गेल। अपराध सभ अलग-अलग छल, मुदा पद्धति एक—एकान्त, अधिकारक स्वर, हड़बड़ी, मौन।

आरुणि एहि चारि शब्द केँ पाथर पर लिखलक। 'एकान्त। अधिकार। हड़बड़ी। मौन।' फेर ओ चारूकात रेखा खींचि लिखलक—'एहि चारिक जोड़सँ गोहिक मुँह बनैत अछि।' बच्चा सभ पाथर लग माटिसँ गोहिक छोट आकृति बनौलक, जकर दाँत मोबाइलक चिन्ह जेकाँ चमकि रहल छल।

सत्यव्रत मेहता पहिल बेर घेराक भीतर आयलाह। ओ कहलनि—'हम अदालतमे बरखों सुनलहुँ—प्रमाण कतऽ अछि। आइ हम देखि रहल छी जे समाजक बेर-बेर दोहराओल भय स्वयं प्रमाणक प्रारम्भ अछि। कानूनक भाषा बादमे आएत, पहिने मनुष्यक भाषा दर्ज हो।'

हुनकर ई वाक्य सुनि भिखारी लालक आँखि चमकल। ओ जे चाबी बरखों धरि ताला खोलबाक लेल घुमबैत छल, आइ लाल सूतमे छोट चाबी बाँधि ठूँठ पर टाँगि देलक। 'ई चाबी फाइलक नहि, सुननाइक,' ओ कहलक। लोक सभ पहिल बेर चपरासी केँ केवल चाबीवाला नहि, दरबाजाक साक्षी मानलक।

साँझक झुकल उजासमे मधुकर बाबूक नाम फेर उठल। मोहनलाल झा जे छाह बतौने छल, ओकर डोरि चन्ना गाछी क्षेत्र धरि आबि रहल छल। एक युवक कहलक—'मधुकर बाबू पन्द्रह बरख पहिने एहिठाम सर्वे करय आयल छलाह।' दोसर कहलक—'ओ पंचायतक कागच देखैत छलाह।' तेसर कहलक—'हुनका संग चन्द्रपालक पुरान लोक देखल गेल छल।'

नाम सभ बिनु प्रमाणक हवा बनि सकैत छल, तँ मीरा तुरन्त रोकलथि—'सुननाइ आ अफवाहमे फरक राखू। जे देखल अछि, से कहू; जे सुनल अछि, ओकरा सुनल लिखू; जे

अनुमान अछि, ओकरा अनुमाने राखू।' एहि अनुशासनसँ अदृश्य अदालत भीड़ नहि बनल, स्मृति बनल।

अनन्या तीन रंगक धागा बाँटली। लाल—स्वयं देखल; पीयर—सुनल; कारी—डर अथवा अनुमान। जकर जे गवाही छल, ओ ताहि रंगक गिट्ठऽ ठूँठ पर बाँधलक। साँझ धरि चन्ना गाछी रंगक अभिलेख बनि गेल—लाल कम, पीयर बेसी, कारी सभसँ बेसी। ई देखैत देविका कहलथि—'हमर समाजमे प्रमाणसँ बेसी डर जमा अछि।'

राति गहराइत गेल। लोक सभ घुरय लागल, मुदा गाछीक ठूँठ एकदम अकेला नहि रहल। लाल, पीयर, कारी धागा हवामे हिलैत रहल। हवा जखनहि तेज होइत, तीनू रंग एक-दोसरामे मिझरा जाइत आ फेर अलग भऽ जाइत—जेना अभिलेख अपने अपन क्रम सम्हारि रहल हो। नदीक कातसँ पानिक स्वर आयल, मानू जल स्वयं सुनल गवाही धोअय नहि, बचाबय चाहैत हो।

कमला देवी घर जाइत काल अपन मोबाइल खुल्ला हाथमे पकड़ने छलीह। ओ पहिल बेर ओकरा नुकौलनि नहि। ओ कहलीह—'आब जँ फोन पर डर आओत, हम पहिने नामक पहरुआ केँ बजाएब।' हुनकर स्वरमे धन गेलाक दुख छल, मुदा भयक कैद टूटबाक हलुकपन सेहो।

सत्यव्रत मेहता राति अपन नोटमे लिखलनि—'चन्ना गाछीक अदृश्य अदालतक पहिल दिन: कोनो फैसला नहि, मुदा भयक व्याकरण खुजल। कोनो दोषी पूर्ण रूपेँ उपस्थित नहि, मुदा अपराधक पद्धति उपस्थित। कोनो न्यायाधीश नहि, मुदा सामूहिक कान।'

ओहि समय ठूँठक ऊपर एक चिरई आबि बैसल। ओकर चोंचमे पीयर धागा छल। ओ कारी धागाक बीच पीयर धागा फँसा देलक। बच्चा सभ जे एखनहुँ रहि गेल छल, हँसि उठल। आरुणि कहलक—'सुनल बात जँ जाँच दिस जाय, तखन डर प्रमाणक बाट पकड़ैत अछि।'

दूर जलमे गोहि स्थिर छल। ओकरा आब भूख लागल छल कि डर, ई बुझल नहि गेल। चन्ना गाछीक ठूँठ पर गवाहीक धागा देखैत ओकर आँखि मद्धिम पड़ल। शायद नामक उजासमे ओकर अन्हार घटैत छल। मुदा नदी एखन शान्त नहि भेल छल।

एहि अदृश्य अदालतक पहिल दिन समाप्त होइत अछि। लोक सभ अपन-अपन भयक गिट्ठऽ बाँधि गेल, मुदा मधुकर बाबूक छाह आब स्पष्ट दिशामे बढ़ि रहल छल।

लोकगीत: भय उतारबाक अदालत

लोकधुन: गाछी-जागरण

बनू हे गाछी, अदृश्य अदालत बनि रहू हे,
भयकेँ दण्ड नहि—सुनि ओकर जड़ि कहू हे।
एतय शपथ नहि, भयक गिट्ठऽ उतारू,
नाम कहू वा चुप रहू, अपन समयसँ पुकारू।
कारी धागा डरक, पीयर स्मृतिक बाट,
चिरई बीच फँसा देलक सुनबाक नान्हि गाँठि।
मोहर नहि, न्यायाधीश नहि, घेरा-भरि लोक,
जकर कण्ठ काँपय, ओकर कात बैसल शोक।
गोहिक आँखि मद्धिम, नामक उजास बढ़ल,
मधुकरक छाह एक स्पष्ट दिशा पकड़ल।
चन्ना गाछी, अदृश्य अदालत बनि रहू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—नैयायिकक मत: रूढ़िसँ कमल स्मृत होइत अछि, व्युत्पत्तिसँ ओही कमल "कीचड़मे जन्मल" रूपेँ ज्ञात होइत अछि। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। नैयायिकक मत।]

अध्याय १७२

गाँठक पढ़नाइ

भय बाहर निकलि गेलापर ओकर गाँठ पढ़बाक बारी अबै छै— आ गाँठ सदिखन तीन रंगक।

अध्यायारम्भ लोकगीत: तीन रंगक बन्धन

लोकधुन: धागा-मंगल गीत

बान्हू हे धागा, तीन रंगक धागा बान्हू हे,
लाल-पीयर-हरियरकेँ एक मूलमे सान्हू हे।
लाल धागा साहसक, पीयर स्मृतिक फूल,
हरियर आशा बाँधि देत तीनूकेँ एक मूल।
गाँठि नहि बन्धनक हो, सहमतिक चिन्हारि,
जे कहय 'हम संग छी', से सभसँ पैघ दान।
कलाइ-कलाइ धागा बान्हू, भयक जाल कटत,
तीन रंगक उज्जर अर्थ घर-घर दीप जरत।
लाल-पीयर-हरियर गाउ, जीवनक त्योहार,
साहस, स्मृति, आशासँ खुजत न्याय-द्वार।
लाल कहय—डर नहि, पीयर कहय—मोन राखू,
हरियर कहय—आगाँ बढ़ू, आशाक फल चाखू।
गाँठि सहमतिक पड़य, बन्धन नहि बेड़ी,
कलाइ-कलाइ जुड़ि बनय रक्षाक घेरी।

❖

बूढ़ सभ कहै छै जे गिट्ठऽ खोलबाक एक्के नियम छै—झटका नै। धागा जँ झटका सँ खींचल गेलै, गाँठ आर कसि जाइ छै; आ जँ लोकक भय पर झटका मारल गेलै, ओ फेर भीतर चलि जाइए, आ दोसर बेर ओ बाहर नै अबै छै।

लाल, पीयर आ कारी—ई केवल रंग नै, तीन अलग-अलग दूरी छिऐ। लाल माने हमर आँखि आ घटनाक बीच कोनो दूरी नै। पीयर माने बीच मे केओ आर ठाढ़ अछि—कहनिहार। आ कारी माने बीच मे कियो नै, केवल हमर अपन भीतरक अन्हार। तीनू सत्यक दिस देखै छै, मुदा तीनूक पएर अलग-अलग जमीन पर छै।

तेँ प्रश्न पूछब अविश्वास नै छिऐ। जकरा हम प्रश्न पुछै छी, से हमरा लेल महत्वपूर्ण छै—तेँ पुछै छी। जे बात बिनु प्रश्नक लिखा गेलै, से अदालत मे पहिले धक्का मे खसि पड़तै; आ तखन दोख गवाहीक नै, हमर जल्दीक होयतै।

आ सभ सँ पैघ बात—कारी गिट्ठऽ केँ झूठ नै बुझू। भय कोनो झूठ नै छिऐ; भय एकटा इतिहास छिऐ। जे लोक थानाक नाम सुनितहि काँपै छै, तकरा एहि जनम मे कोनो फोन नै

आयल हेतै—मुदा ओकर बाप वा ओकर बापक बाप कैँ कोनो दिन ओहि दरबज्जा सँ खाली हाथ घुरय पड़ल हेतै। ओ काँपनि झूठ नै, बाँचल स्मृति छिऐ।

गिट्ठऽ सभक पढ़नाइक बारी आबि गेल छल—आ दोसरा दिन सबेर चन्ना गाछीक ठूँठ लग लोक सभ फेर जुटल, मुदा आइ काल्हि जेकाँ बाजबाक उतावलापन नहि छल। काल्हि जे भय बाहर निकलल छल, आइ ओकर गिट्ठऽ पढ़बाक बारी छल। लाल, पीयर आ कारी धागा राति भरि ओस खा कऽ भारी भऽ गेल छल, जेना प्रत्येक गिट्ठऽ भीतरसँ कहि रहल हो—हमरा जल्दीमे निष्कर्ष नहि बनाउ।

मीरा ठूँठक सोझाँ पाथर पर बैसलीह आ कहलथि—'काल्हि हम सभ सुनलहुँ। आइ हम सभ अलग करब—जे आँखिसँ देखल गेल, जे कानसँ सुनल गेल, आ जे डर भीतर बना देलक। तीनू सत्यसँ सम्बन्ध रखैत अछि, मुदा तीनूक बाट अलग अछि।' भीड़मे एक हलुक सरसराहट उठल। लोक सभ पहिल बेर बुझि रहल छल जे सुननाइ मात्र रोदन नहि, अनुशासन सेहो माँगैत अछि।

अनन्या तीनटा टोकरी राखली। पहिलमे लाल पात, दोसरमे पीयर, तेसरमे कारी। ओ कहली—'गिट्ठऽ खोलब नहि; पहिने ओकर कथन लिखब। गिट्ठऽ तखन खोलब जखन बाजनिहार स्वयं कहत जे आब डर ढीला भऽ गेल।' एहि बात पर कमला देवी अपन मोबाइलक परदा पोछि चुपचाप बैसि गेलीह। हुनका लगल जे अपन भयक गिट्ठऽ खुजबासँ पहिने ओकर मान राखल जाएत।

आरुणि पहिल लाल गिट्ठऽ पढ़लक। लक्ष्मण यादवक खेतक नाप। ओ नक्शा, रसीद, पुरान खेसरा आ नब सीमांकनक पन्ना एक संग पसारलक। पन्ना सभ एक-दोसरासँ झगड़ैत छल। एकमे खेत नदी दिस बढ़ल, दोसरमे सड़क दिस घटल, तेसरमे नामक अक्षर आधा कटि गेल। आरुणि कहलक—'लाल गिट्ठऽ अछि, कारण देखल कागच अछि; मुदा कागच सभ अपनहिमे झूठ बाजि रहल अछि।'

सत्यव्रत मेहता तुरन्त जोड़लनि—'कागचक झगड़ा जँ मनुष्यक जीवन पर असर करैत अछि, तँ पहिल काम कागच सभकेँ आमने-सोझाँ राखब। अदालतमे ई तुलना बरखों बाद होइत अछि; समाजमे ई आइ भऽ सकैत अछि।' बच्चा सभ पाथर पर लिखलक—'कागचक आमना-सोझाँ।'

दोसर लाल गिट्ठऽ एक बूढ़ स्त्रीक छल जे नाम नहि लिखाबय चाहैत छलीह। हुनकर अंगूठाक छापसँ घरक आधा हिस्सा बेचायल देखाओल गेल छल। मुदा ओ कहैत छलीह जे

ओहि दिन ओ अस्पतालमे छलीह। देविका अस्पतालक पर्ची आ बिक्रीक कागच दुनू देखली। तारीख एकहि। समय अलग-अलग। ओ धीरे कहलथि—‘एहि गिट्ठऽमे अपराधक छाह गाढ़ अछि।’

कारी भूत ठूँठक पाछाँ जेना नाक फुला कऽ सूँघलनि। हुनका एहन गिट्ठऽ प्रिय छलनि जतय अंगूठा, बीमारी, अकेलापन आ दबाव एक संग रहय। उज्जर प्रेत लाल सूत खींचि हुनका दूर राखलनि। कियो देखलक, कियो नहि; मुदा ओहि क्षण ओहि स्त्रीक हाथक काँपनाइ कम भऽ गेल।

पीयर गिट्ठऽ सभ बेसी छल। कियो कहने छल जे मधुकर बाबू सर्वे करय आयल छलाह; कियो कहने छल जे हुनका संग चन्द्रपालक लोक छल; कियो कहने छल जे पंचायतक पुरान बक्सामे हुनकर हस्ताक्षर अछि। मीरा प्रत्येक कथनक पाछाँ पूछैत गेलीह—‘अहाँ देखलहुँ? अहाँकेँ के कहलक? ओ कहनिहार एखन जीवित अछि? तारीख मोन अछि?’

लोक सभ पहिने झुँझला उठल। हुनका लगल जे प्रश्नसँ गवाही कमजोर होएत। मुदा सत्यव्रत बुझौलनि—‘प्रश्न अविश्वास नहि; प्रश्न ओ सीढ़ी अछि जाहिसँ डर अदालत धरि जा सकैत अछि। जँ हम सुनल बातकेँ देखल लिखि देब, तँ अपराधी हँसत।’ एहि पर भीड़ शान्त भेल। पीयर गिट्ठऽ सभ क्रमवार पन्नामे उतरय लागल।

एक पीयर गिट्ठऽ शिवनारायण मिश्रक हाथसँ बान्हल गेल छल। ओ आइ सचेत मुद्रामे आयल छल। ओकरा संग तीन पुरान नमूना-पत्र छल—एक डर उत्पन्न करबाक, एक बैंकक नाम पर दबाव देबाक, आ एक ‘बचाव-पत्र’ जकरा ओ राति भरि लिखने छल। ओ कहलक—‘हम अपन पाप धोबाक दाबी नहि करैत छी; मुदा जे भाषासँ गोहिक दाँत तेज भेल, ओहि भाषासँ आब लोकक कवच बनएबाक चाहैत छी।’

देविका ओकर बचाव-पत्र पढ़लथि। शब्द सरल छल—‘फोन पर जे कहय जे ककरो नहि कहू, ओकर बात पहिने दोसरा केँ कहू। जे तुरन्त पाइ माँगय, ओकरा तुरन्त रोकू। जे पुलिसक नाम लय, असली थाना पर अलगसँ बात करू। जे बेटाक आवाज बनय, बेटासँ दोसर बाटे पूछू।’ लोक सभ माथ हिलबैत गेल। ई भाषा आदेश नहि, घरक सीख जेकाँ छल।

तखन कमला देवी उठि कहलीह—‘एहि पन्नामे एक बात आर लिखू—माय सभ अपन बेटा-बेटीकेँ पहिनहि कहि राखू जे संकटमे कोन गुप्त शब्द प्रयोग होएत। नकली आवाज ओ शब्द नहि जानत।’ आरुणि हँसल नहि; ओ गम्भीर भऽ गेल। पाथर पर लिखलक—‘अपन लोकक असली संकेत।’

कारी गिट्ठऽ सभ खोलब कठिन छल। ओहिमे कोनो तारीख नहि, कोनो नाम नहि, केवल छाह। एक युवकक गिट्ठऽ पर लिखल छल—‘थानासँ डर।’ ओ कहलक—‘हमरा कोनो फोन नहि आयल, मुदा जखन सुनैत छी पुलिसक नाम, हमर देह अपनहि काँपैत अछि।’ मीरा ओकरा दोष नहि देलथि। ओ कहलथि—‘ई व्यक्तिगत डर नहि; इतिहासक बाँचल काँपनि अछि।’

सत्यव्रत मेहता एहि पर बहुत काल धरि चुप रहलाह। हुनका अपन बरामदाक बरखोंक आवाज मोन आयल—‘अगिला तारीख।’ ‘जमानत।’ ‘हाजिरी।’ ‘वारंट।’ ई शब्द कानूनक साधन छल, मुदा गरीबक कानमे कतेको बेर ओ दानवक डाँट बनि गेल छल। ओ लिखलनि—‘राज्यक भाषा जखन भय बनि जमा होय, तखन अपराधी ओकर नकली छाह बेचैत अछि।’

दुपहरि धरि गिट्ठऽक पढ़नाइ चलैत रहल। लाल गिट्ठऽ कम छल मुदा भारी; पीयर गिट्ठऽ बहुत छल मुदा छिड़िआयल; कारी गिट्ठऽ सभसँ बेसी छल मुदा आकारहीन। अनन्या तीनू टोकरी देखैत कहली—‘हमरा समाजमे प्रमाणक कमी नहि, प्रमाण धरबाक पद्धतिक कमी अछि। डर बेसी अछि, कारण सुनबाक ठाम कम अछि।’

भिखारी लाल रेकर्ड-घरसँ आनल पुरान धूरिक डिब्बा खोललक। ओ धूरि पाथर पर नहि, एक खाली पन्ना पर छिड़कलक। सभ चकित भेल। ओ कहलक—‘धूरि देखबामे गन्दगी अछि, मुदा जँ ओकरा छेड़ू तँ भीतर दबायल अक्षर उठैत अछि। ई कारी गिट्ठऽ सभ सेहो धूरि जेकाँ अछि; धीरेसँ झाड़ब, झपट्टा मारब तँ अक्षर उड़ि जाएत।’

एहि उपमा पर मीरा मुस्कुरेलीह। ओ निर्णय केलथि जे कारी गिट्ठऽ पर तुरन्त नाम नहि लिखल जाएत। पहिने ‘डरक नक्शा’ बनत—ककरा पुलिसक नामसँ डर, ककरा बैंकसँ, ककरा अदालतसँ, ककरा परिवारक बदनामीसँ, ककरा जातिक तिरस्कारसँ। अपराधी एहि नक्शामे बाट खोजैत अछि; आब समुदाय सेहो ओही नक्शामे बचावक बाट खोजत।

तखन एक छोट नेना, जे काल्हि धरि केवल पाथर पर रंग लगबैत छल, आगाँ आयल। ओकर नाम फुलेसर छल। ओ कहलक—‘हमरा मोबाइलक डर नहि, मुदा बाबूजी जखन कहैत छथि जे पढ़ू नहि तँ मजदूरी कर, तखन डर लगैत अछि। ई कोन रंगक गिट्ठऽ?’ भीड़ ठिठकि गेल। डिजिटल धोखाक बीच अचानक शिक्षा, गरीबी आ बाल-भयक गिट्ठऽ सोझाँ छल।

देविका नेनाक माथ पर हाथ राखि कहलथि—‘ई कारी सेहो, लाल सेहो। कारी—किएक तँ डर अछि; लाल—किएक तँ तोहर देह आइ एतय देखाइ रहल अछि।’ मीरा जोड़लीह—‘अदृश्य अदालत केवल ठगीक नहि; ई प्रत्येक ओहि भयक ठाम होएत जे मनुष्यक भविष्य खाइत अछि।’ चन्ना गाछीक ठूँठ पर हवा तीव्र भऽ गेल।

साँझसँ पहिने मधुकर बाबूक नाम पर पहिल ठोस लाल सूत्र भेटल। एक वृद्ध पंचायत-सेवक रामकेवल पासवान लाठी टेकैत आयल। ओ काल्हि भीड़मे छल, मुदा बाजल नहि। आइ ओ अपन झोरासँ एक पुरान पंजी निकाललक। पंजीक पन्ना पीयर भऽ गेल छल, मुदा एक जगह साफ हस्ताक्षर छल—‘मधुकर मिश्र, विशेष सर्वे सहायक।’ तारीख पन्द्रह बरख पुरान।

सभ साँस रोकि देखैत रहल। रामकेवल कहलक—‘ई सर्वे केवल खेतक नहि छल। ओ लोक घरक बाहर बूढ़, विधवा, परदेशी परिवार, अधूरा मुकदमा, बन्धक जमीन—सभ पर निशान लगबैत छलाह। हम तखन बुझलहुँ नहि। आब काल्हिक गवाही सुनि लागल जे ओहि सूचीसँ बादमे डरक व्यापार बनल।’

मीरा तुरन्त पंजी कें हाथ नहि लगौलथि। ओ कहलथि—‘पहिने एहि पन्नाक प्रतिलिपि बनत, मूल सुरक्षित रहत, आ रामकेवल जीक कथन अलग लिखल जाएत। लाल सूत्रक अर्थ ई नहि जे निष्कर्ष समाप्त; ई जे जाँचक दरबाजा खुजल।’ सत्यव्रत मेहता सहमतिमे माथ हिलौलनि।

अनन्या लाल धागाक एक नब गिट्ठऽ ठूँठ पर बाँधली। ई गिट्ठऽ पहिनका सभसँ भारी छल। हवामे झूलिते ओकर छाह कारी आ पीयर धागा पर पड़ल। आरुणि कहलक—‘आब मधुकर बाबू छाह नहि, पन्ना पर प्रवेश कऽ गेलाह।’ देविका उत्तर देलथि—‘पन्ना पर प्रवेश दण्ड नहि, मुदा भागि जाएबाक बाटसँ पहिल रोक।’

रातिक पहिल अन्हारमे नदी दिससँ एक लहरि उठल। गोहि पानिसँ आधा बाहर आयल, मुदा आइ ओकर चालि अस्थिर छल। जेना गिट्ठऽक पढ़नाइसँ ओकर शिकारक बाट बदलि गेल हो। ओ बिनु आवाज कएने फेर पानिमे उतरि गेल, मुदा ओकर पूछारक लहरि ठूँठ धरि आयल। लाल सूत क्षण भरि काँपल, टूटल नहि।

सत्यव्रत मेहता राति अपन नोटमे लिखलनि—‘गवाही जखन रंग पबैत अछि, तखन भीड़ अभिलेख बनैत अछि। लाल सत्यक आरम्भ, पीयर स्मृतिक बाट, कारी भयक खदान। एहि तीनूक बिनु न्याय अधूरा; तीनूकेँ मिलाओल बिनु अपराधी पकड़ल नहि जाएत।’

ई खेरहा एहि गिट्ठऽ-पढ़नाइ पर समाप्त होइत अछि। अदृश्य अदालत आब भावनासँ पद्धति दिस बढ़ल। मधुकर मिश्रक पहिल लिखित सूत्र भेटि गेल, मुदा ओ सूत्र संगहि एक नब खतरा सेहो जन्मौलक—जकर नाम पन्ना पर आबि गेल, ओ पन्ना गुम करबाक प्रयत्न अवश्य करत।

लोकगीत: तीन रंगक गिट्ठऽ

लोकधुन: धागा-गीत

खोलू हे गिट्ठऽ, बिनु झटका गिट्ठऽ खोलू हे,
प्रत्येक गाँठिक भीतर काँपैत मनुख बाजू हे।
लाल गिट्ठऽ गवाही, पीयर स्मृतिक धार,
कारी गिट्ठऽ भयक खदान, खोलू सावधान।
भीड़ अभिलेख बनल जखन रंग नाम पेलक,
अफवाह अलग, साँच अलग, चोट अलग भेलक।
मधुकरक पहिल लिखित सूत्र पन्नापर आयल,
संगहि पन्ना चोरएबला छाह घुमायल।
गोहिक चालि अस्थिर, लाल सूत नहि टूटल,
सत्यव्रतक नोटमे समुदाय फेर फूटल।
तीन रंगक गिट्ठऽ, बिनु झटका खोलू,
प्रत्येक गाँठिक भीतरक काँपैत मनुष्य बाजू।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—नव्यनैयायिकसभक निष्कर्ष: हम सिद्धान्ती कहैत छी—कर्मवाच्य “चाउर चैत्रद्वारा पकाओल जाइत अछि” आ “गाम रथद्वारा पहुँचाओल जाइत अछि” मे चाउर आ गाम कर्म छथि; हुनकामे अन्यत्र स्थित क्रियासँ उत्पन्न फलाश्रयता अछि। नव्यनैयायिकसभक निष्कर्ष।]

अध्याय १७३

पंजीक पहरा

पंजी पन्द्रह बरख चुप रहल, मुदा हस्ताक्षर एक्को दिन नहि सुतल।

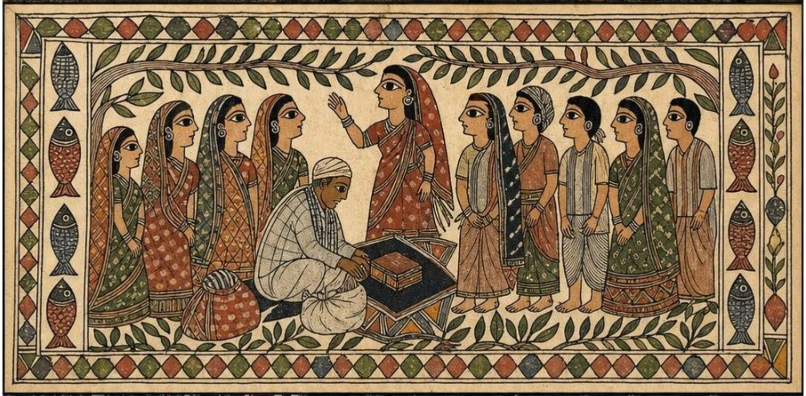

अध्यायारम्भ लोकगीत: पन्द्रह बरखक बीज

लोकधुन: बरहमासा बीज-गीत

जागू हे बीया, पन्द्रह बरखक बीया जागू हे,
फागुनक पुरबा पाबि छिलका त्यागू हे।
पन्द्रह बरख माटि तरे बीज चुपचाप रहल,
ऋतु-ऋतु ओस पिबैत भीतर जीवन पलल।
आब फागुनक पवन लागल, खोलि रहल छिलका,
पुरान पंजीसँ उगि आयल साँचक हरियर तिनका।
देरी भेल तँ की भेल, बीज समय चिन्हय,
न्यायक अंकुर पाथर फोड़ि अपन दिशा गिन्हय।
पन्द्रह बरखक धैर्य आब फसल बनि हँसत,
जकर नाम दबायल छल, ओ सभ भोर बसत।
असाढ़-सावन ओस पिलक, माघक ठण्ढ सहल,
बारहो मास माटिक कोरामे चुपचाप पलल।
देरी भेल तँ हार नहि—बीज समय चिन्हय,
पाथर फोड़ि उगल अंकुर अपन दिशा गिन्हय।

❖

बूढ़ सभ कहै छै जे सभ सँ खतरनाक सूची ओ नै जकरा पर ‘दण्ड’ लिखल रहै छै। सभ सँ खतरनाक सूची ओ जकरा पर ‘सहायता’ लिखल रहै छै। किएक तँ दण्डक सूची लोक लुकबै छै आ सहायताक सूची लोक अपने हाथ सँ बनबै छै—अपन विधवा, अपन बूढ़, अपन परदेशी बेटा, अपन लटकल मुकदमा, सभ अपने लिखा दै छै।

‘विशेष ध्यान’—एहि दू शब्द केँ ध्यान सँ सुनू। दफ्तर मे एकर माने होइ छै जे एहि घर पर बेसी ध्यान दिअ। मुदा जखन ई शब्द दफ्तर सँ बाहर निकलि बजार मे पहुँचै छै, तखन एकर माने भऽ जाइ छै—एहि घर पर बेसी सोझ हाथ लागत। एक्के शब्द, आ दू अर्थ; बीच मे केवल एतबे फरक छै जे ओ कोन हाथ मे छै।

तेँ कागच पेब जाएब आधा जीत छिऐ; कागच बचाएब पूरा जीत। जे लोक कागच पाबि कऽ जयकार करय लगै छै, ओकर कागच ओहि राति हेरा जाइ छै। तेँ भेटलाक बाद पहिल काज हल्ला नै, प्रतिलिपि छिऐ—आ प्रतिलिपि सेहो तीन ठाम, तीन हाथ मे, तीन अलग-अलग निशान संग।

आ जँ राति मे कियो धमकीक पर्ची फेकि जाइए, तँ ओकरा फेकू नै। धमकी कोनो खाली कागच नै छिऐ; ओ अपराधीक पएरक निशान छिऐ। जे लोक निश्चिन्त रहै छै, से धमकी नै दै छै। जहिया धमकी अबै छै, बुझू जे पन्ना कोनो सही ठाम छूबि देलकै।

पंजीक रक्षाक बारी आबि गेल छल—आ भोर होइतहि चन्ना गाछीक ठूँठ लग सभसँ पहिने अनन्या पहुँचली। राति भरि ओ पंजीक छाहसँ लड़ैत रहल छली। पन्द्रह बरख पुरान पन्ना पर मधुकर मिश्रक हस्ताक्षर मात्र नाम नहि छल; ओ ओहि अन्हारक छोट दरबाजा छल जकर पाछाँ खेत, अंगूठा, फोन, डर, बन्धक आ फर्जी बचावक अनेक कोठरी खुजबाक आशंका छल।

रामकेवल पासवान पंजी कैँ अपन झोरामे नहि, कातमे बान्हल कपड़ाक थैलीमे नेने आयल छलाह। थैली पर पुरान तेलक दाग छल, कोनसँ धागा उधड़ल छल, मुदा भीतरक कागच हुनका लेल नवजात बालक जेकाँ सुरक्षित छल। ओ ठूँठ लग बैसि पहिने धरती कैँ छूलनि, फेर पंजी निकालि पाथर पर राखलनि।

मीरा सभकैँ घेरा बना कऽ ठाढ़ होमय कहलीह। 'आइ गवाही नहि, पहरा पहिने,' ओ कहलथि। 'जे कागच भेटल अछि, ओकर रक्षा होएत। जे पन्ना पर नाम अछि, ओकर प्रतिलिपि बनत। जे प्रतिलिपि बनत, ओकर पाछाँ लिखल जाएत—किएक, कहिया, ककर सोझाँ।' भीड़मे पहिल बेर सुननाइक संग अभिलेखक अनुशासन पूर्ण रूपैँ उतरि रहल छल।

देविका मोबाइलसँ फोटो लेबाक अनुमति मँगलथि, मुदा रामकेवल हिचकिचेलाह। हुनका डर छलनि जे फोटो कियो बिगाड़ि नहि देत, कि कागचक नाम बाहर गेल तँ हुनकर पोता पर दबाव नहि पड़त। आरुणि तुरन्त कहलक—'एकर तीन प्रतिलिपि बनत। एक अहाँ लग, एक नामक रजिस्टरमे, एक सत्यव्रत बाबूक सीलबन्द लिफाफामे। कोनो फोटो अकेला प्रमाण नहि बनत।'

सत्यव्रत मेहता अपन पुरान कानूनक थैलीसँ उज्जर लिफाफा निकाललनि। ओ लिफाफा खाली छल, मुदा ओहि पर हुनकर हाथ काँपल। बरखों धरि ओ कागच सभ जमा करैत रहलाह, मुदा आइ हुनका बुझाइ पड़ल जे कागचसँ पहिने विश्वास सील करबाक आवश्यकता अछि। ओ लिफाफा पर लिखलनि—'रामकेवल पंजी: मूल देखल, प्रतिलिपि बनल, पहरा आरम्भ।'

भिखारी लाल अदालतक रेकर्ड-घरसँ सीखल तरीका बुझौलक। 'पन्ना कैँ सोझे धूपमे नहि राखू। किनार पकड़ू। गील हाथ नहि लगाउ। जे अक्षर धुँधला अछि, ओकरा कल्पनासँ पूरा नहि करब।' ओकर आवाजमे चपरासीक साधारणपन नहि, अभिलेखक साधुता उतरि आयल छल। कतेको लोक पहिल बेर ओकरा सम्मानसँ देखलक।

पंजी खुजल। पन्ना पर पन्द्रह बरख पुरान सर्वेक्षणक सूची छल। घरक नाम, खेतक संख्या, मुकदमाक स्थिति, परिवारक सदस्य, परदेशमे रहनिहारक निशान, विधवा, बूढ़, कर्जदार, आ एक कोनमे छोट अक्षर—'विशेष ध्यान'। आरुणि ओ शब्द पढ़ि थम्हि गेल। 'विशेष ध्यान' सुनबामे प्रशासनिक लगैत छल, मुदा ओहि पाँति पर गामक नाड़ी काँपि उठल।

कमला देवी धीरेसँ कहलीह—'डिजिटल अरेस्टमे सेहो ओ सभ पहिने पूछैत छल—घरमे के अछि, बेटा कतऽ, बैंक खाता, जमीन, मुकदमा। ई पन्द्रह बरख पुरान कागच ओहि प्रश्नक पुरान खेसरा जेकाँ अछि।' एना कहिते डिजिटल धोखाक तार आ जमीन-सर्वेक सूत एक-दोसरासँ बन्हाइत देखाइ पड़ल।

कारी भूत ठूँठक छाहमे लोटि रहल छलाह। हुनका 'विशेष ध्यान' शब्द प्रिय लगलनि। जे व्यवस्था कमजोर मनुष्यक चिन्ह लगबैत अछि, ओही चिन्ह पर अपराधी दाँत लगबैत अछि। उज्जर प्रेत पंजीक ऊपर झुकलाह, जेना अक्षर सभ पर उज्जर राख छिड़कय चाहैत होथि। बच्चा सभ चुप रहल, मुदा हवामे फुसफुसाहट बढ़ल।

मीरा पूछलीह—'रामकेवल जी, ई सूची कोना बनल छल?' रामकेवल अपन गला साफ केलनि। 'मधुकर बाबू कहने छलाह—सरकारी सुविधा पहुँचेबाक लेल। जे विधवा, जे बूढ़, जे परदेशी, जे मुकदमामे फँसल, ओकर नाम अलग लिखू। हम बुझलहुँ, शायद लाभ भेटत। बादमे लाभ नहि, नोटिस भेटल; नोटिस नहि तँ फोन; फोन नहि तँ बन्धकक डर।'

भीड़मे कतेको लोकक मुँह बदलि गेल। लाभक नाम पर बनल सूची भयक बजार बनि गेल छल। देविका पाथर पर लिखली—'सुविधाक सूची जँ पहरा बिनु बनत, तकरा अपराधी हथियार बना सकैत अछि।' ई वाक्य सभक भीतर उतरैत गेल। विकास, सर्वे, सहायता—सभ शब्द अपन चमक गमा कऽ प्रश्न बनि गेल।

सत्यव्रत मेहता पंजीक तारीख अदालतक पुरान फाइलक तारीखसँ मिलाबय लगलाह। बरामदाक आवाज, रेकर्ड-घर, रद्दी बोरा, गिट्ठऽ-पढ़नाइ—सभ एहि पन्ना पर संग-संग जमा होइत बुझाइत छल। ओ कहलनि—'एहि पंजीक असली अर्थ तखन खुजत जखन हम देखब जे सूची बनेलाक बाद कोन-कोन घर पर मुकदमा, नोटिस, ठगी वा कब्जाक दबाव बढ़ल।'

अनन्या तुरन्त एक नब तालिका बनौली। पहिल खाना—पंजीक नाम। दोसर—घरक वर्तमान स्थिति। तेसर—ककरा फोन आयल। चारिम—जमीनक विवाद। पाँचम—ककरो अंगूठा वा हस्ताक्षर उपयोग भेल कि नहि। छठम—लोक बाजय चाहैत अछि कि नाम गुप्त रहत। ई तालिका गामक पहिल लोक-अभिलेख बनि रहल छल।

एक युवक, जे शहरमे कम्प्यूटर चलबैत छल, आगाँ आयल। ओकर नाम नीलमणि छल। ओ कहलक—'हम स्कैन कऽ सकैत छी, पर स्कैनक प्रतिलिपि पासवर्डसँ सुरक्षित राखब। कोनो व्हाट्सएप पर नहि पठाएब।' मोबाइलक संसारमे पहिल बेर रोकक भाषा सुनाइ पड़ल। कमला देवी सहमतिमे कहलथि—'जे जल्दी पठाय, से जल्दी बिकाय सेहो सकैत अछि।'

आरुणि नीलमणिक बात पर एक नियम जोड़लक—'प्रत्येक प्रतिलिपि पर निशान अलग रहत, ताकि जँ कोनो बाहर जाय तँ बुझि सकब कोन बाटे गेल।' सत्यव्रत मुस्कुरा उठलाह। बच्चा सभ कानूनक भाषा बिनु पढ़ने प्रमाणक श्रृंखला बुझि रहल छल। अदालतक रेकर्ड-घर जे काम सीलसँ करैत छल, गाम ओ काम विश्वास आ सावधानीसँ करय लागल।

दुपहरिमे अचानक चन्द्रपालक लोक पहुँचल। ओकर नाम ध्रुवेश छल—चिकन कपड़ा, चमकदार जूता, आ मुँह पर विनम्र मुस्कान। ओ कहलक—'ई पुरान पंजी सामाजिक शान्ति बिगाड़त। सभ कागच पंचायत कार्यालयमे जमा कऽ देल जाउ।' ओकर स्वरमे आदेश नुकाएल छल, पर वाक्य सभ सेवा जेकाँ सजाओल गेल छल।

मीरा सोझ उत्तर नहि देलथि। ओ पूछलीह—'पंचायत कार्यालयमे जमा करब, तकर रसीद देब? जमा होएबाक कारण लिखब? जे लोकक नाम अछि, ओकर अनुमति लेब? प्रतिलिपि सार्वजनिक निरीक्षणमे राखब?' ध्रुवेशक मुस्कान धीरे-धीरे सुखा गेल। ओकरा सेवा नहि, कब्जा चाही छल। प्रश्नक छोट-छोट काँटा ओकर चमकदार वाक्य फाड़ि देलक।

कारी भूत हँसलाह। हुनका लगलनि जे ध्रुवेश हुनके लेल काम करय आयल अछि। मुदा उज्जर प्रेत पंजीक पन्ना पर अपन अदृश्य आँगुर राखि देलनि। हवा एक क्षण स्थिर भेल। ध्रुवेश पंजी दिस हाथ बढ़ौलक, मुदा भिखारी लाल ओकर आगाँ ठाढ़ भऽ गेल—'कागच हाथ लगाबयसँ पहिने नाम लिखू।' चपरासी आइ पहरुआ बनि गेल छल।

ध्रुवेश तिलमिला उठल। ओ कहलक—'तोरा सभक अधिकार की?' एहि प्रश्न पर भीड़मे डरक पुरान लहरि उठल, मुदा अनन्या ऊँच स्वरमे पढ़ली—'जे पन्ना पर हमर नाम, हमर जमीन, हमर अंगूठा, हमर डर, हमर प्रतीक्षा लिखल अछि, ओकर पहरा हमर अधिकार।' भीड़मे पहिल बेर धीमा पर स्पष्ट स्वर उठल—'हमर अधिकार।'

ध्रुवेश खाली हाथ घुरि गेल, मुदा ओकर खाली हाथ धमकीसँ भरल छल। ओ जाइत-जाइत कहलक—'रातिमे कागच बचा कऽ राखू।' ई वाक्य सुनि बच्चा सभ एक-दोसराक मुँह ताकलक। खतरा आब अनुमान नहि, उच्चरित भऽ गेल छल। मीरा तुरन्त निर्णय देलथि—'आइ पंजी ठूँठ पर नहि रहत। तीन घर, तीन पहरा, तीन प्रतिलिपि।'

रामकेवल मूल पंजी अपन घर लऽ जाएबाक आग्रह करैत रहलाह, मुदा सभ मानल जे मूल आइ राति अकेला नहि रहत। अन्तमे निर्णय भेल—मूल पंजी मीरा आ रामकेवलक संग देविकाक घरक भीतरी कोठरीमे; पहिल प्रतिलिपि सत्यव्रत मेहताक सीलबन्द लिफाफामे; दोसर प्रतिलिपि नीलमणिक बिनु-जाल कम्प्यूटरमे; तेसर सार बच्चा सभक नामक रजिस्टरमे।

साँझ पड़िते पहरा बँटल। फुलेसर आ दूटा नेना देविकाक आँगन लग रहत, मुदा मीरा हुनका सभकेँ भीतर नहि, बाहरक खेलक नाम पर राखलीह ताकि भयक बोझ बालक पर नहि पड़य। भिखारी लाल रातिक पहिल पहर मेहताक घर लग। आरुणि आ अनन्या नीलमणिक स्कैन-घर लग। ई पहरा पुलिसक नहि, समुदायक छल।

राति गाढ़ भेल। नदी दिससँ गोहिक पानि काटबाक आवाज आयल। चन्ना गाछीक ठूँठ पर बान्हल लाल गिट्ठऽ अन्हारमे हलुक चमकि रहल छल। कारी गिट्ठऽ सभ स्थिर, पीयर गिट्ठऽ सभ काँपैत, आ नब लाल गिट्ठऽ भारी भऽ झूलि रहल छल। दूर कतहु कुकुर भुकल, फेर अचानक चुप भऽ गेल।

देविकाक घरक भीतरी कोठरीमे पंजी माटिक चबूतरा पर राखल छल। ओकर कातमे धूप नहि, एक छोट सूखल नीम-पात राखल गेल—कीड़ा दूर राखबाक लेल। मीरा जागि रहल छलीह। रामकेवलक आँखि बीच-बीचमे लगैत, फेर खुजि जाइत। हुनका स्वप्नमे मधुकर बाबूक कलम चलैत देखाइ पड़ैत छलनि, आ प्रत्येक रेखा ककरो घरक देहरी पर काँटा बनि उगैत छल।

मध्यराति लग एक छाह देविकाक पछिला देबाल लग सरकल। ओ ने चोरक जेकाँ जल्दीमे छल, ने अतिथि जेकाँ स्पष्ट। ओकर हाथमे बोरा छल, शायद कागच राखबाक, शायद कागच लऽ जाएबाक। फुलेसर, जे बाहर खेलक बहानासँ जागैत छल, छाहक आहट सुनि पाथर पर तीन बेर कंकड़ मारलक—ठक, ठक, ठक। ई पहराक संकेत छल।

भिखारी लाल दूरसँ दौड़ल। आरुणि आ अनन्या नीलमणिक घरसँ लालटेन लऽ कऽ निकलल। छाह भागि गेल, मुदा पछिला देबाल लग एक कागच छोड़ि गेल—बिनु नामक पर्ची। पर्ची पर लिखल छल—'पुरान बात खोलब, तँ नब केस बनत।' सत्यव्रत मेहता पर्ची पढ़ि गम्भीर भेलाह। ई धमकी छल, पर संगहि स्वीकारोक्ति सेहो—पुरान बातमे किछु एहन अछि जे खुजल तँ ओकरा सभकेँ नब केससँ डर देखाबय पड़ि रहल अछि।

मीरा पर्ची केँ पंजीक संग नहि राखलीह। ओ अलग लिफाफामे सील करौलथि। 'धमकी प्रमाणक शत्रु नहि, प्रमाणक छाह अछि,' ओ कहलथि। 'हम डरि गेलहुँ तँ ई छाह हमरा खा

जाएत; हम लिखि लेलहुँ तँ ई अपराधीक पएरक निशान बनत।’ बच्चा सभ पहिल बेर धमकी केँ गवाही बनैत देखलक।

भोर होइत-होइत पंजी बचि गेल। मूल पन्ना सुरक्षित, प्रतिलिपि सुरक्षित, पर्ची सुरक्षित, पहरुआ सभ थाकल मुदा सोझ। भोरक पहिल इजोत जखन कोठरीक झरोखासँ पन्ना पर खसल, तखन पन्द्रह बरख पुरान अक्षर सभ एहन चमकल जेना ओ आइ राति लिखल गेल हो। चन्ना गाछीक ठूँठ पर हवा चलल आ लाल गिट्ठऽ धीरेसँ झूमल। जेना ओ कहि रहल हो—पहरा मात्र कागचक नहि छल; पहरा स्मृतिक, साहसक, आ समुदायक नब जन्मक छल।

लोकगीत: पन्द्रह बरखक पंजी

लोकधुन: पहरा-गीत

कहू हे पंजी, पन्द्रह बरखक मौन कहू हे,
‘विशेष ध्यान’क घर-घर नुकायल अर्थ सहू हे।
पन्द्रह बरख पंजी चुप, हस्ताक्षर नहि सूतल,
रातिक छाह देबाल लग धमकी-पर्ची छोड़ल।
‘पुरान बात खोलब तँ नब केस’—ई बोल,
डरक संग अपराधीक स्वीकारक खोल।
मूल अलग, प्रति अलग, धमकी अलग सील,
पहरुआ थाकल, मुदा आँखि रहल नील।
लाल गिट्ठऽ हवा बीच झूमल अडिग,
कागच बचल तँ समुदाय जन्मल नब लिख।
हे पंजी, पन्द्रह बरखक मौन आब कहू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—अनुमान खण्ड — तार्किक संरचनाक चरमोत्कर्ष: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—हुनक तर्क अछि जे "पृथ्वी, अंकुर आदि कार्य अछि, तें एकर कोनो न कोनो चेतन कर्ता अवश्य होबाक चाही, जहिना घैला (कार्य) क कर्ता कुम्हार होइत अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।]

अध्याय १७४

अदृश्य अदालतक चौखट

अदालतक चौखट पाथरक नहि— घेरा-भरिक साहसक होइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: नामक पाथर पर दीप

लोकधुन: नचारी-मंगल

जराउ हे दीप, नामक पाथर पर जराउ हे,
कठोर शिलाकेँ नरम जोतिसँ मनाउ हे।
पाथर कठोर सही, दीपक जोति नरम,
नरम उजासे पढ़ि सकय बरखोंक दबल करम।
नामक पाथर धोइ कऽ फूल आ अछत धरू,
स्मृतिक आसन पर बैसि न्याय-पथक प्रण करू।
एक दीपसँ सय दीप, एक नामसँ गाम,
शिला आब चुप नहि रहत, गुनगुनाओत नाम।
पाथर पर दीप जरत तँ राति हारि जाय,
नामक मान सम्हारनिहार इतिहास बनि जाय।
धोइ-पोछि फूल-अछतसँ स्मृति-आसन सजाउ,
दबल-दबल कथा सभकेँ नरम जोतिमे बाँचि जाउ।
चुप शिला गुनगुना उठत—गूँजत नाम-प्रणाम।

❖

बूढ़ सभ कहै छै जे लोक ओहि ठाम अपने-आप जूता खोलि दै छै जतय ओकर बात सुनल जाइ छै। मन्दिर मे लोक जूता किएक खोलै छै? किएक तँ ओतय ओ मानै छै जे केओ सुनै छै। जकर अदालत मे बरखों बात नै सुनल गेलै, से ओहि ठामक चौखट पर जूता पहिरनहि चलि जाइ छै—आ ओ बेइज्जती नै, बेभरोसीक चिन्ह छिऐ।

आ 'अनुपस्थित' केँ बुझू। कागच पर लिखल जाइ छै 'वादी अनुपस्थित', आ ओहि दिन वादी भोरे-भोर, बिनु कलेवा, तीन कोस पएरे चलि कऽ बरामदा मे ठाढ़ रहै छै। तखन अनुपस्थित के भेल? जकर देह ओतय छलै, वा जकर कुर्सी खाली छलै? कागच जहिया मनुष्य केँ अनुपस्थित लिखै छै, तहिया देह अपने गवाही बनि जाइ छै।

नामक भूल केँ लोक छोट बात कहै छै। 'मात्रा भरिक फरक छै'—एहि एक वाक्य सँ कतेको घर उजड़ल छै। मुदा नाम मात्रा नै छिऐ; नाम ओ डोरि छिऐ जे मनुष्य केँ ओकर खेत, ओकर घर, ओकर पुरखा आ ओकर अधिकार सँ बान्हने रहै छै। डोरि मे एक गाँठ ढील भेलै तँ पूरा भार खसि पड़ै छै।

तेँ एहि घेरा मे सजा नै सुनाओल जायत। एतय केवल नाम सही कएल जायत, आ भय केँ ओकर नाम सँ बजाओल जायत। जे अपन डर केँ नाम दऽ दै छै, ओ ओकरा सँ आधा मुक्त भऽ

जाइए; आ जे अपन नाम ठाढ़ भऽ कऽ कहि दै छै, ओकरा फेर कोनो कागच अनुपस्थित नै लिखि सकै छै।

‘विशेष ध्यान’क अर्थ घर-घर पढ़बाक बारी आयल, आ चन्ना गाछीक छाह ओहि दिन साँझ पड़ैत-पड़ैत साधारण छाह नहि रहल। गाछीक ठूँठ, जकरा लोक आधा मरल, आधा बाँचल कहैत छल, ओकर चारू कात माटि पर गोल घेरा बनल। कियो ओकरा अदालत नहि कहलक, मुदा सभ ओहि घेरामे पैसैत काल जूता धीरे खोलय लागल। जकरा अदालतमे बरखों धरि नाम पुकारल गेल छल, मुदा बात नहि सुनल गेल छल, ओ सभ एतय बिनु पुकारक पहुँचल।

अनन्या पहिने एक खाली पन्ना बीचमे राखली। ओ पन्ना कोनो रजिस्टरक नहि छल, कोनो सरकारी फाइलक नहि छल, कोनो मोहरक नहि छल। ओ कहली—‘एहि पन्ना पर आइ ओ बात लिखल जाएत जे कागचमे छल, मुदा कागच बनि नहि सकल।’ ई वाक्य सुनि भीड़मे एक बारीक हिलकोर उठल। लोक बुझि गेल जे एतय गवाहीक अर्थ बदलि रहल अछि।

आरुणि पाथर सभक पाँति मिलेलक। प्रत्येक पाथर पर एक छोट अक्षर लिखल गेल—नाम, देह, जल, जमीन, कागच, डर, मौन, प्रतीक्षा, फाँस, आ स्मृति। ओ कहलक—‘सरकारी अदालतमे धारा होइत अछि; एहि अदृश्य अदालतमे ई दस पाथर धारा अछि।’ किछु लोक मुस्की देलक, किछु डरल, किछु लोकक आँखि झुकि गेल। कारण एहि पाथरक भाषासँ बचि निकलनाइ कठिन छल।

पहिल गवाही देबाक लेल आगाँ आयल पुतोहु सोना। ओकर सासुक जमीनक कागच रद्दी बोरामे भेटल छल। सोना बरखों धरि केवल ‘हाजिर नहि’ लिखल एक पाँति रहि गेल छल, जखन कि ओ प्रत्येक तारीख पर अदालत गेल छल। ओ अपन हाथ देखेलक—दरारि भरल, धूपसँ कारी, धानक पानिसँ फाटल। ओ कहलक—‘हम उपस्थित छलहुँ। अनुपस्थित केवल ओ लोक छल जे हमरा देखबाक लेल कुर्सी पर नहि छल।’

भीड़मे एकाएक सन्नाटा छा गेल। वकीलक भाषामे ‘वादी उपस्थित’ आ ‘अनुपस्थित’ जे छोट शब्द लगैत छल, सोना ओहि शब्दमे देह भरि देलक। मीरा धीरेसँ ओकर कथन लिखलनि, मुदा ओ ‘गवाही’ शब्द नहि लिखलनि। ओ लिखलनि—‘देहक उपस्थिति।’ हुनका लगल जे जखन कागच मनुष्यकेँ अनुपस्थित करैत अछि, तखन देह स्वयं प्रमाण बनि उठैत अछि।

तकर बाद बूढ़ मुवक्किल भोलाराम आगाँ आयल। काल्हि धरि ओ अदालतक बरामदामे केवल तेइस बरखक प्रतीक्षा कहि सकल छल। आइ ओ अपन घरक हिसाब खोललक—जे

साल पहिल बेर तारीख पड़ल, ओहि साल ओकर बेटा पाँचम कक्षामे पढ़ैत छल; जे साल फाइल गायब भेल, ओहि साल ओकर पुतोहु प्रसवमे मरि गेल; जे साल पुनः प्रस्तुत लिखायल, ओहि साल खेत बन्धक पड़ल; जे साल सुनवाइ स्थगित भेल, ओहि साल ओ पहिल बेर लाठी पकड़लक। आरुणि पूछलक—'फैसला?' भोलाराम हँसल—'फैसला तँ हमरे देह पर लिखल गेल।'

बूढ़बा भूत ठूँठक चिरा लग झिलमिलेलाह। ई झिलमिलाहट डरक नहि, स्वीकृतिक छल। कारी भूत दू पग पाछाँ हटि गेलाह, उज्जर प्रेत अपन आँगुरसँ हवा पर किछु लिखलनि। बच्चा सभ ओ लिखाइ पढ़ि नहि सकल, मुदा हुनका बुझाइ पड़ल जे अदृश्य लोक सेहो एतय श्रोता बनि गेल अछि। चन्ना गाछीक अदालतमे जीवित आ मृत दुनू एकहि बात सुनैत छल—नाम नष्ट नहि होइत।

एहि बीच एक नब युवक, जे शहरमे मोबाइल मरम्मत करैत छल, आगाँ आयल। डिजिटल अरेस्टक कथा सुनबैत ओ पहिने काँपि रहल छल। ओकर बाबूजीक खाता खाली भऽ गेल छल, पुलिसक नाम पर, न्यायालयक नाम पर, गिरफ्तारीक डर पर। युवक कहलक—'फोन पर जे आवाज छल, ओ हमर बाबूजीकेँ कहलक जे तोहर बेटा अपराधी अछि। बाबूजी हमरा बचाबय लेल अपन बचत देलनि। बादमे बुझलहुँ—हम अपराधी नहि छलहुँ, हुनकर डर अपराधी बना देल गेल।'

देविका एहि गवाहीक पाछाँ 'आवाजक नकली मोहर' लिखली। चन्द्रपालक पुरान कागजी छल आ डिजिटल ठगक नकली आवाज एक-दोसरासँ अलग नहि लगल। दुनू मनुष्यक डर पढ़ैत छल; दुनू कानूनक नाम बेचैत छल; दुनू ममता, प्रतिष्ठा आ अज्ञानक बीच अपना लेल रस्ता बनबैत छल। चन्ना गाछीक पाथर पर 'फोन' शब्द नहि लिखल गेल; ओकर बदलामे 'दूरक फाँस' लिखल गेल।

एक बुजुर्ग स्त्री, जे एखन धरि भीड़क पाछाँ बैसल छलीह, धीरे उठलीह। लोक हुनका 'मौन काकी' कहैत छल, कारण पतिक मृत्युक बाद ओ बहुत कम बजैत छलीह। ओहि साँझ ओ चन्ना गाछीक जड़ि लग आबि ठाढ़ भेलीह आ कहलथि—'हमर घरमे तीन बेर कागच आयल। पहिल कागच जमीन लेल, दोसर ऋण लेल, तेसर मुआवजा लेल। तीनू कागचमे हमर नाम गलत छल। लोक कहलक—नामक छोट भूल अछि। मुदा छोट भूलक कारणेँ हम तीन बेर बाहर भेलहुँ।'

अनन्या तुरन्त पूछली—‘सही नाम?’ स्त्री अपन नाम एतेक धीरे कहलथि जे पहिने हवा मात्र सुनलक। फेर बच्चा सभ संग-संग दोहरेलक। भीड़ ओ नाम दोहरेलक। ठूँठक भीतरसँ जेना एक सूक्ष्म ध्वनि उठल। जे नाम सरकारी कागचमे तीन बेर चूकाओल गेल छल, ओहि नामकेँ लोक-स्वर तीन बेर सही कएलक। मीरा लिखलनि—‘नामक सुधि, न्यायक पहिल सीढ़ी।’

सत्यव्रत मेहता बहुत काल धरि चुप रहलाह। हुनका अपन वकालतक बरख मोन आबि रहल छल। कतेको बेर हुनका लगल छल जे मामिला कमजोर अछि, कारण कागच कम अछि। मुदा आइ हुनका बुझाइ रहल छल जे कागच कम नहि होइत; कागचक रस्ता गरीब धरि कम पहुँचैत अछि। जे लोक लिखि नहि सकैत, ओकर पीड़ा कम सत्य नहि होइत। हुनका भीतरक पुरान कानून धीरे-धीरे गलि कऽ नब सुननाइ बनि रहल छल।

एहि समय रेकर्ड-घरक लिपिक, जे काल्हि धरि चाबीसँ डरैत छल, अपन जेबसँ एक छोट नोटबुक निकाललक। ओ कहलक—‘ई हमर निजी नोट अछि। बरखों धरि जे फाइल गायब कहल गेल, तकरा कतय राखल गेल, ककर निर्देश पर रोकल गेल, ककरा फेरसँ बनाबय लेल कहल गेल—हम किछु-किछु लिखैत रहलहुँ। डरसँ नहि देलहुँ। आइ ई नोटबुक एहि गाछीक आगाँ राखैत छी।’

नोटबुक पाथर पर पड़िते भीड़मे हलचल भेल। ई पहिल दस्तावेज छल जे अपराधक भीतरसँ बाहर आबि रहल छल। कियो ओकरा छीनय नहि बढ़ल। मीरा पहिने लिपिकसँ पूछलनि—‘तूँ अपन नाम लिखबाक अनुमति दैत छह?’ लिपिकक मुँह उज्जर पड़ि गेल। किछु क्षण बाद ओ कहलक—‘नाम लिखू, मुदा डर सेहो लिखू।’ अनन्या लिखली—‘लिपिक रामबल्लभ—डरल, मुदा उपस्थित।’

एहि ‘डरल, मुदा उपस्थित’ पर चन्ना गाछीक जड़ि लग बैसल बच्चा सभ हँसि पड़ल, फेर तुरन्त चुप भऽ गेल। ई हँसी उपहासक नहि छल। ई ओहि क्षणक हँसी छल जखन मनुष्य अपन कमजोरी मानि कऽ सेहो सत्य दिस एक पग बढ़ैत अछि। आरुणि कहलक—‘भयक नाम लिखल जाएत तँ भय छोट होएत।’

तखन एक आवाज पाछाँसँ आयल—‘एहि सभक कोनो कानूनी मूल्य नहि।’ लोक मुड़ि कऽ देखलक। बटुकनाथ हरिहरनक पुरान घरक एक चिन्हल लोक छल, जे एखन चन्द्रपालक संग रहैत छल। ओकर माथ पर आत्मविश्वास छल, मुँह पर तिरस्कार। ओ कहलक—‘गाछीमे बैसि कऽ अदालत चलत? गवाही बिनु शपथ, दस्तावेज बिनु मोहर, निर्णय बिनु पद?’

सत्यव्रत मेहता पहिल बेर ओकरा उत्तर देलखिन—‘कानूनी मूल्य बादमे देखब। एखन मनुष्यता मूल्य गनैत अछि।’ ई उत्तर छोट छल, मुदा ओहि छोट उत्तरमे बरखोंक थकान आ नब दृढ़ता छल। लोक किछु कहय चाहलक, पर भीड़मे कियो ओकरा गारि नहि देलक, कियो धक्का नहि देलक। चन्ना गाछीक अदालतक नियम छल—जे बाधा बनि आओत, ओकरो सुनल जाएत, ताकि ओकर मौन अपराध बनि नहि रहय।

मीरा ओहि लोकसँ पूछलनि—‘अहाँक नाम?’ लोक चुप। देविका कहलथि—‘देखू, जे लोक दोसराक गवाहीक मूल्य पूछैत अछि, ओ अपन नाम कहबाक साहस नहि करैत।’ भीड़मे धीमा स्वर उठल, मुदा मीरा हाथ उठा कऽ सभकेँ रोकलनि। ओ लिखलनि—‘अनाम आपत्ति—मोहरक भरोसा, मनुष्यक अविश्वास।’ लोकक मुँह उतरि गेल। बिनु नामक आपत्ति ओहि पाथर पर स्वयं आरोप बनि गेल।

साँझ घेरि रहल छल। चिरई सभ घुरि रहल छल, मुदा चन्ना गाछी लग बैसल लोक सभ उठय नहि चाहैत छल। कारण एतय ककरो फैसला नहि सुनाओल गेल, तइयो लोक हलुक अनुभव करैत छल। जे बात बरखों धरि घरक भीतर फुसफुसाहट छल, ओ आइ सामूहिक सुननाइ बनि गेल। ई अदृश्य अदालत सजाक ठाम नहि, नामक पुनर्जन्मक ठाम बनि रहल छल।

अन्तमे अनन्या खाली पन्नाक बीचमे लिखली—‘आइक कार्यवाही समाप्त नहि, स्थगित नहि। आइक सुननाइ लोकक स्मृतिमे सुरक्षित।’ आरुणि पाथर सभ फेर समेटलक, मुदा ‘नाम’ वाला पाथर ओ गाछीक जड़ि लग छोड़ि देलक। सोना पूछलक—‘ई पाथर एतय किएक?’ आरुणि कहलक—‘जकर नाम कागचमे गुम होइत अछि, ओकरा लेल एतय पहरुआ चाही।’

राति उतरैत-उतरैत ठूँठक भीतरसँ नमीक गन्ध उठल। कियो कहलक जे जड़ि फेर जीवित भऽ रहल अछि। कियो कहलक जे ई केवल रातिक ओस अछि। मुदा बूढ़ मुवक्किल भोलाराम घर घुरैत काल पाछाँ मुड़ि कऽ देखलक—गाछीक चिरामे राखल नामक पाथर पर हलुक उजास छल। ओहि उजासमे पाथरक खुरदुर देह एहन लागल जेना कोनो सुतल आँखिक पपनी कनी-कनी हिलि रहल हो। ओकरा लगल, अदालत आइ पहिल बेर कागचसँ बाहर आबि माटिमे साँस लऽ रहल अछि।

आ ओहि राति, जे नोटबुक लिपिक रामबल्लभ पाथर पर राखि गेल छल, तकर पहिल पन्ना हवासँ खुजल। पन्ना पर लिखल नाम सभमे एक नाम एहन छल जकरा सुनिते सभ पुरान अपराधक साँस अटकय वाली छल—बटुकनाथ हरिहरनक वास्तविक मोहरबाहक। अदृश्य

अदालत आब केवल पीड़ितक कथा नहि सुनत; आब ओ अपराधक घरक भीतरक दरबाजा खटखटाओत।

लोकगीत: नामक पाथर

लोकधुन: अदालत-नचारी

ने धुँधलाउ हे पाथर, ओससँ ने धुँधलाउ हे,
बिसरल लोकक देहरी पर न्याय बनि जाउ हे।
घेरा-भरि साहस चौखट बनि गेल,
कागच बाहर न्याय माटिमे साँस लेल।
कार्यवाही स्थगित नहि—स्मृतिमे सुरक्षित,
‘नाम’ लिखल पाथर जड़ि लग पहरुआ स्थित।
बूढ़ भोलाराम पाछाँ मुड़ि उजास देखलक,
ठूँठक चिरामे अदालतक हृदय धड़कल।
रामबल्लभक नोटबुक हवा अपने खोललक,
मोहरबाहकक नाम पुरान रातिक साँस रोकलक।
नामक पाथर, ओससँ नहि धुँधलाउ,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—निष्कर्ष: मणि, मन्त्र आदि कोना प्रतिबन्धक बनैत अछि, आ 'प्रतिबन्धकाभाव' (अवरोधक नहि रहब) कोना कार्यक कारण मानल जाइत अछि, एहि विषयक तार्किक चर्चा। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।]

अध्याय १७५

मुहरबाहकक नाम

ओस पड़ितो पाथरक अक्षर नहि धुँधलाएल— नामकेँ नमी नहि, बिसरब मेटबै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: सूचीमे जीवन भरू

लोकधुन: पुत्र-पिता श्रमगीत

भरू हे साँस, सूचीक पाँतिमे भरू हे,
आँकड़ाक पाछाँ बाबाक दिन-रैन धरू हे।

सूची केवल पाँति नहि, बाबाक पूरा दिन,
हथौड़ा, पसेना, हँसी, घरक आशाक चिह्न।
दीनबंधु कलम उठाउ, नामक संग कथा लिखू,
जकर पाछाँ परिवार, ओकर जीवन साफ देखू।

अन्तिम सूची अन्त नहि, नव हाजिरीक द्वार,
मृतकक मान जोगओनिहार जीवित पहरदार।
प्रत्येक पाँतिमे साँस भरू, आँकड़ा मात्र नहि मानू,
बाबाक श्रमक उज्जर सुरुज संततिक मोनमे आनू।

हथौड़ाक ताल, पसेनाक बून्द, साँझक थाकल हँसी,
पाँति-पाँतिमे टाँकू घरक आशा जे बसै।

❖

रामबल्लभक नोटबुकसँ उठल दीनबंधुक नाम अकेला लोकक नाम नै छै; ओकर संग थैली, लाल मोम, पीतलक मोहर आ खाली कागचक सरसराहट चलि आबै छै। मोहरबाहक कहब सुनबामे छोट काज बुझाइ छै, मुदा विश्वासक दरबाजा ओही हाथसँ खुलै-बन्द होइ छै। हाथ गरीब हो, आदेश दोसरक हो, तइयो इतिहास पूछै छै—कतेक देखल, कतेक बुझल, आ कतेक बेर चुपचाप पार कऽ देल गेल।

पिताक नाम सुनिते पुत्रक भीतर लाज जागै छै, मुदा लाज जँ सत्यकेँ ढाकि दए तँ अन्हार वंश बनि जाइए। शशिभूषणक असल परीक्षा ई नै छै जे ओ बाबूकेँ निर्दोष सिद्ध करए; परीक्षा ई छै जे ओ बाबूक बचल वस्तु सभकेँ जाँचक सोझाँ राखए। जे पुत्र दोषक परदा हटबैत छै, से पिताकेँ छोट नै करै छै; ओ हुनका अफवाहक हाथसँ निकालि इतिहासक सही ठाम पर राखै छै।

अधछाप मोहर गोहिक आँखि जेकाँ छै—पूरा देह पानिमे, ऊपर केवल दू चमकैत बिन्दु। अपराधो बेसीकाल पूरा रूपमे नै अबै छै; कनी लाल मोम, आधा घेरा, एक संकेत, एक तारीख, एक घबराएल आगमन। मुदा ई छोट-छोट चिह्न सभ एक-दोसराक कात राखल जाए तँ पानिक नीचाँक देहक आकृति बुझाइए। तें भीड़कें कथा गढ़बाक नै, चिह्न जोड़बाक अनुशासन सीखय पड़ै छै।

“अन्तिम सूची” अन्तक पन्ना नै, अगिला अन्हारक दरबाजा छै। सूचीमे नाम पढ़ल जाइए, माला चढ़ाइ जाइए, सेवा कहल जाइए; मुदा ओहि उजासक पाछाँ ककर जमीन, ककर श्रम, ककर देह आ ककर मौन बन्धक पड़ल, से खोजब बाकी रहै छै। मोहर बचाओल जाए कि नाम—एहि प्रश्नक उत्तर भोर नै दै छै। उत्तर तखन भेटै छै जखन लोक पहरा छोड़ि तमाशा नै बनै, आ स्मृति अपन साँस सँ सूची भरै।

रामबल्लभक नोटबुकमे राति खुलल ओ नाम भोर धरि सभक मोनमे अटकि रहल। भोरक उजास चन्ना गाछीक ठूँठ पर पड़ल तँ नामक पाथरक हलुक चमक गायब नहि भेल। राति भरि ओस पड़ल छल, मुदा पाथर पर लिखल अक्षर धुँधला नहि भेल। उनटे, जड़िक फाँकमे अटकल कनी-कनी नमी अक्षरक चारूकात चमक जेकाँ बसि गेल छल; पाथर छूबिते अँगुरीमे रातिक ठण्ढक रहि जाइत छल। भोलाराम एहि चमककेँ देखलनि आ चुपचाप बुझि गेलाह जे काल्हिक सुननाइ सपनाक बात नहि छल। अदृश्य अदालत सचमुच माटिमे साँस लऽ रहल छल।

रामबल्लभ लिपिकक नोटबुक गाछीक जड़ि लग राखल छल। रातिक हवा ओकर पहिल पन्ना खोलि देलक छल, आ ओहि पन्ना पर जे नाम देखल गेल, से साधारण नाम नहि छल। पन्ना पर लिखल छल—‘दीनबंधु झा, मोहरबाहक।’ नीचाँ छोट अक्षरमे—‘बटुकनाथ हरिहरनक निजी मोहर, बन्धक-पत्र, प्रतिज्ञा-पत्र तथा विशेष सूचीक प्रतिलिपिसँ सम्बद्ध।’ कागचक कोर ओससँ कने भीजल छल, मुदा स्याहीक कारीपन जसक तस छल।

अनन्या नाम पढ़िते ठिठकि गेली। ‘दीनबंधु झा?’ ओ नाम गामक बूढ़ लोकक स्मृतिमे छल, मुदा एखन धरि कियो ओकरा अपराधक बीच नहि रखने छल। लोक कहैत छल—दीनबंधु बस कागच पहुँचबैत, मोहर लगबैत, रसीद काटैत। जे लोक केवल मोहर ढोइत अछि, ओकर हाथमे अपराध कतऽ? मुदा अदृश्य अदालतक नियम अलग छल—जे हाथ मोहर ढोइत अछि, ओ सत्य आ छलक बीचक दरबान सेहो होइत अछि।

मीरा नोटबुककेँ हाथ लगाबयसँ पहिने सभकेँ पाछाँ हटौली। ‘नाम भेटल अछि, आरोप नहि,’ ओ कहली। ‘एखन सुननाइ होएत, हल्ला नहि।’ एहि वाक्यसँ भीड़मे उठैत उत्तेजना

थम्हि गेल। न्यायक पहिल परीक्षा ई छल जे पीड़ाक आवेग सेहो प्रमाणक अनुशासन सीखे। चन्ना गाछीक छाह ओहि क्षण अदालतक छाहसँ बेसी गम्भीर लागल; पातक हलुक खड़खड़ाहट धरि लोक चुप भऽ सुनैत रहल।

सत्यव्रत मेहता धीरे-धीरे आगाँ बढ़लाह। हुनका दीनबंधु झा मोन छल। पातर देह, कम बजैनिहार, काँध पर कपड़ाक थैली, थैलीमे लकड़ीक डिब्बा, आ डिब्बामे लाल मोम, कारी स्याही, पीतलक मोहर आ कतेको खाली कागच। अदालतक बरामदामे ओ ककरो वकील नहि, ककरो चपरासी नहि, मुदा सभक बीच घुमैत एक अदृश्य कड़ी जेकाँ रहैत छल।

‘दीनबंधु मरल कि जीवित?’ आरुणि पूछलक। भीड़मे कियो कहलक—‘मरि गेल।’ दोसर कहलक—‘नहि, बेटी लग परदेशमे अछि।’ तेसर कहलक—‘ओकर छोट बेटा एखन बजारमे स्टाम्प बेचैत अछि।’ स्मृति सभ एक-दोसरासँ भिड़ि गेल। जे लोक काल धरि महत्वहीन छल, ओकर विषयमे अचानक सभकेँ किछु-किछु मोन आबय लगल।

रामबल्लभ लिपिक काँपैत स्वरमे कहलनि—‘दीनबंधु बाबू रेकर्ड-घरक लोक नहि छलाह, मुदा कतेको फाइल हुनका हाथसँ गुजरैत छल। अधिकारी सभ कहैत—मोहर लगबा दियौ, प्रतिलिपि पहुँचा दियौ, पंजी चढ़ा दियौ। ओना हुनका कोनो सरकारी दर्जा नहि छल।’ भिखारी लाल कटु हँसी हँसल—‘जे दर्जा नहि रखैत अछि, से बेसीकाल सभसँ बेसी दरबाजा खोलैत अछि।’

अनन्या नामक रजिस्टरमे नव पन्ना खोलली। ऊपर लिखली—‘मोहरबाहकक भूमिका।’ नीचाँ तीन पाँति छोड़ली—‘देखल’, ‘सुनेल’, ‘जाँचल’। ओ सभकेँ कहली जे कियो जेना-तेना कथा नहि जोड़त। पहिने जे स्वयं देखलक, से; फेर जे विश्वसनीय लोकसँ सुनलक, से; आ फेर जे कागचसँ मिलि सकैत अछि, से। बच्चा सभक हाथमे लोक-अभिलेखक अनुशासन आब दृढ़ भऽ गेल छल।

पहिल गवाही कमला देवी देलथि। ‘हमर देवरक बन्धक-पत्र पर अंगूठा छल। ओ दिन घरमे कोनो अंगूठा नहि लागल छल। बादमे कागच देखलहुँ तँ दीनबंधुक थैलीमे रहनिहार लाल मोमक निशान जेकाँ मोहर छल। हम कहियो ध्यान नहि देलहुँ। सोचलहुँ, सरकारी होएत।’ हुनकर आवाजमे अपराधक विलम्बित चिन्हारि छल। जे बात बरखों धरि सामान्य बुझायल, आइ ओकर दाँत देखाइ पड़ल।

रामकेवल पासवान अपन पंजीक पन्ना खोललनि। ‘विशेष ध्यान’क पाँति लग कनी धुँधल मोहरक गोलाइ छल। भिखारी लाल आँखि निचोड़ि देखलक—‘ई सरकारी मोहरक पूरा घेरा

नहि। ई निजी मोहरक अधछाप जेकाँ अछि।' सत्यव्रत मेहता अपन चश्मा साफ केलनि। 'अधछाप बेसी बोलैत अछि,' ओ कहलनि, 'किएक तँ पूरा मोहर वैधता देखबैत अछि, अधछाप चोरीक जल्दी।'

एहि बात पर कारी भूत ठूँठक चिरामे मुस्कुराएल। 'चोरीक जल्दी' ओकर मनपसिन्न शब्द छल। गोहि जेना पानि काटैत काल पूरा देह नहि देखबैत, केवल आँखि आ नाक बाहर राखैत अछि, तहिना ई कागच सभमे अपराध पूरा रूपसँ नहि, अधछापक रूपमे तैरि रहल छल। उज्जर प्रेत चुपचाप पन्नाक ऊपर झुकल, जेना अधछापक छिद्रमे सँ इजोत उतारय चाहैत हो।

दोपहरि धरि दीनबंधु झाक छोट बेटा शशिभूषण गाछी पर पहुँचल। ओकर हाथमे स्टाम्पक छोट थैला छल, चेहरा पर असहजता। ओ भीड़ देखिते कहलक—'हमर बाबूक नाम किएक?' प्रश्नमे डर छल, रोषो छल। मीरा ओकरा बीचमे नहि, घेराक किनार पर बैसबय कहली। 'एतय ककरो पिताकेँ तुरन्त अपराधी नहि बनाओल जाइत। एतय नामक पाछाँ काम पढ़ल जाइत अछि।'

शशिभूषण पहिने कठोर रहल। ओ कहलक—'बाबू गरीब छलाह। जे कहल गेल, से केलनि। हुनका नहि बुझाइत छल जे कागचमे की अछि।' एहि पर भोलाराम धीरेसँ कहलनि—'गरीबक हाथ अपराधमे उपयोग भेल तँ गरीबी दोष नहि, मुदा हाथक इतिहास जानब आवश्यक अछि।' ई वाक्य शशिभूषणक चेहरा नरम कऽ देलक। ओ थैलासँ पुरान कपड़ाक एक बण्डल निकाललक।

बण्डलमे दीनबंधुक बचल सामान छल—एक फाटल कपड़ा, दूटा सूखल मोहर-पैड, पीतलक गोल मोहर जकर अक्षर आधा घिसल, आ एक छोट डायरी। कपड़ा खुलिते बासी स्याही, धातु आ पुरान कोठरीक मिलल-जुलल गन्ध उठल; शशिभूषण एक क्षण लेल आँखि मूदि लेलक। ओ कहलक—'बाबूक मरलाक बाद ई सभ कोठरीमे पड़ल छल। हम सोचैत रही, काजक नहि। मुदा नाम सुनि लऽ आएलहुँ।' अदृश्य अदालतमे पहिल बेर अपराधक घरसँ वस्तु स्वयं आयल।

सत्यव्रत मेहता मोहर उठेलनि नहि; पहिने कपड़ा बिछौलनि। पीतलक मोहर ओहि पर राखल गेल। अक्षर घिसल छल, मुदा 'हरिहरन सेवा निकेतन'क आधा आकार देखाइ पड़ैत छल। धातुक सतह पर जमल कारी मैल बीच एक लाल मोमक सूक्ष्म कण एखनहुँ चिपकल छल। रामबल्लभक नोटबुकक पन्ना पर लिखल 'निजी मोहर' अचानक देह पाबि गेल। जे मोहर

दान, सेवा आ विश्वासक नाम पर बनल छल, ओकर छाह बन्धक-पत्र, प्रतिलिपि आ विशेष सूची पर किएक?

शशिभूषण डायरी खोललक। पन्ना सभमे तारीख छल, नाम छल, आ किछु संकेत—‘लाल’, ‘कारी’, ‘तीन प्रति’, ‘राति’, ‘बी. ह.’, ‘च. पा.’। अनन्या तुरन्त रोकली—‘संकेतकेँ तुरन्त नाम नहि बनाउ।’ मुदा भीड़मे चन्द्रपालक नाम फुसफुसायल। मीरा ऊँच स्वरमे कहली—‘फुसफुसाहट प्रमाण नहि। फुसफुसाहट दिशा अछि। दिशा पर चलबाक नियम चाही।’

आरुणि डायरीक तारीख रामकेवलक पंजीक तारीखसँ मिलाबय लगल। कतेको तिथि मिलि गेल—जे दिन ‘विशेष ध्यान’क सूची बनल, ओहि सप्ताहमे दीनबंधु डायरीमे ‘तीन प्रति’ लिखने छल। जे दिन कमला देवीक देवरक बन्धक-पत्र पर विवाद उठल, ओहि दिन ‘लाल’ लिखल छल। ‘लाल’ लाल मोम? लाल पन्ना? लाल निशान? कियो नहि जानैत छल। मुदा संयोग आब प्रश्न बनि गेल छल।

नीलमणि स्कैनक व्यवस्था लऽ आएल। ओ कहलक—‘मोहरक फोटो, पन्नाक फोटो, डायरीक फोटो—सभ अलग-अलग क्रमसँ। कोनो छवि काटल नहि जाएत।’ कमला देवी कठोर स्वरमे जोड़लीह—‘आ कियो ई फोटो तमाशा बना कऽ नहि पसारत।’ डिजिटल ठगीक घाव खाएल लोक आब डिजिटल प्रमाणक पहरुआ बनि रहल छल।

ठीक एहि बीच ध्रुवेश फेर पहुँचल। आइ ओकर विनम्रता कम, अधीरता बेसी छल। ओ शशिभूषण दिस देखलक—‘तोँ किएक आयलह? पुरान सामान बेचि देलह तँ काज चलत। ई सभ लोक तोहर बाबूकेँ बदनाम करत।’ शशिभूषणक हाथ काँपल। पिता पर आरोपक भय ओकरा कमजोर कऽ रहल छल। ध्रुवेशक लक्ष्य साफ छल—स्मृतिकेँ लाजमे बदलि दियौ, जाहिसँ प्रमाण अपने घुरि जाए।

मीरा शशिभूषणक काँध पर हाथ रखली। ‘बदनामी ओहि पर होइत अछि जे सत्य नुकाबय। जे सत्य दैत अछि, से अपन पिताकेँ इतिहासमे सही ठाम दैत अछि।’ शशिभूषणक आँखि भीजि गेल। ओ धीरेसँ मोहरक डिब्बा मीरा दिस सरका देलक—‘जाँचू। बाबू जँ केवल औजार छलाह, तकरो लिखू। जँ जानि कऽ केलनि, तकरो लिखू। मुदा झूठ नहि लिखू।’

ध्रुवेशक मुँह उतरि गेल। ओ कहलक—‘ई सभ कानून-विरुद्ध सभा अछि।’ सत्यव्रत मेहता पहिल बेर कठोर स्वरमे कहलनि—‘स्मृति कानून-विरुद्ध नहि होइत अछि। कागच देखब, प्रतिलिपि बनब, आ पुलिस वा अदालतमे देबाक लेल सूची बनब—ई अपराध नहि। डरब

अपराधक पुरान तरीका अछि।' भिखारी लाल आगाँ बढ़ि ध्रुवेशक नाम आगन्तुक सूचीमे लिखि देलक।

ध्रुवेश गेल, मुदा ओकर जूताक चिह्न माटिमे रहि गेल। सोना ओ चिह्न देखलक आ पूछलक—'ई सेहो लिखब?' आरुणि कहलक—'जूताक चिह्न नहि, ओकर आबयक समय लिखब। जे धमकीक समय प्रमाणक नजदीक हो, ओ समय बादमे काज देत।' बच्चा सभकेँ बुझाइ पड़ल जे गवाही केवल वाक्य नहि; समय, वस्तु, चुप्पी आ आगमन सेहो गवाही होइत अछि।

साँझ धरि अदृश्य अदालतमे दीनबंधुक मोहरक प्राथमिक पाठ पूरा भेल। निर्णय नहि देल गेल। केवल प्रश्न बनल—हरिहरन सेवा निकेतनक निजी मोहर कतेक कागच पर लगल? दीनबंधु झा आदेश पाबि काज करैत छलाह कि स्वयं लाभ लैत छलाह? 'बी. ह.' बटुकनाथ हरिहरनक संकेत अछि कि कोनो आन? 'च. पा.' चन्द्रपाल अछि कि मात्र संयोग? ई प्रश्न सभ अलग पन्नामे सुरक्षित कएल गेल।

अनन्या नामक पाथरक कातमे एक नव छोट पाथर रखली। ओकरा पर लिखल—'मोहर'। मीरा पूछली—'नामसँ अलग मोहरक पाथर किएक?' अनन्या कहली—'नाम मनुष्यक होइत अछि, मोहर विश्वासक। जखन मोहर धोखा दैत अछि, तखन मनुष्य अपन नामो गमाबय लगैत अछि।' ई वाक्य सुनि सभ चुप भऽ गेल।

राति उतरैत काल शशिभूषण अपन घर नहि गेल। ओ दीनबंधुक मोहरक प्रतिलिपि सुरक्षित होइत धरि ठाढ़ रहल। ओकरा लगैत छल जे ओ अपन पिताकेँ अदालतमे नहि, स्मृतिमे पुनः उपस्थित करि रहल अछि। कियो ओकरा दीनबंधुक दोषी पुत्र नहि कहलक; सभ ओकरा ओ लोक मानलक जे पितासँ बचल अन्हारकेँ इजोतमे राखय आयल।

चन्ना गाछीक ठूँठ पर ओहि राति उज्जर प्रेत दीर्घ समय धरि स्थिर रहल। कारी भूत ओकर चारूकात घुमैत रहल, जेना कहि रहल हो—मोहरक खेल आब शुरू भेल। दूर नदीमे गोहि एक बेर पानि तोड़ि ऊपर आयल, फेर तुरन्त डूबि गेल। ओकर आँखि कनी देर धरि चमकल। देह खाइनिहार जीवकेँ शायद बुझाइ पड़ल जे आब नाम नहि, मोहरो बचाओल जाएत।

आ भोरसँ पहिने दीनबंधुक डायरीक एक पन्ना हवा सँ खुलल। ओहि पन्ना पर केवल दू शब्द साफ छल—'अन्तिम सूची'। ओकरा नीचाँ तारीख ओही सप्ताहक छल जखन बटुकनाथ हरिहरनक सेवा-समारोहमे गामक सभ गरीब परिवारक नाम मंच पर पढ़ल गेल छल। पन्ना फड़फड़ाइत काल सूखल कागचक आवाज अन्हारमे एना बजल जेना कोनो बन्द दरबाजा भीतरसँ खटखटा रहल हो।

लोकगीत: दीनबंधुक अन्तिम सूची

लोकधुन: पुत्र-विलाप

ने ढाकब हे पिता, तोहर गलती ने ढाकब हे,
साँच सौंपि तोहर नाम पूर्ण करब हे।

पिताक डिब्बाक तलसँ मोहरक छाह भेटल,
शशिभूषणक हाथमे कुलक अन्हार काँपल।
दोषक वारिस नहि, सत्यक गवाहीदार,
पिताक बचल पन्ना लऽ ठाढ़ भेल दरबार।
‘अन्तिम सूची’ दू शब्द हवा खोलि देलक,

सेवा-समारोहक सप्ताह फेर जीवित भेल।
उज्जर प्रेत स्थिर, कारी भूत घुमल,
गोहिक आँखि कहै—मोहरो आब नहि गुमल।
हे पिता, तोहर गलती हम ढाकब नहि,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—अनुमान: उदाहरण: जँ व्यक्ति दूर पहाड़पर धूआँ उठैत देखैत छी, तँ ई निष्कर्षपर पहुँचैत छी जे "पहाड़पर आगि अछि"। अनुमान।]

अध्याय १७६

सेवा-समारोहक अन्हार

अन्तिम सूची सभसँ छोट पन्नापर लिखल जाइ छै, आ सभसँ पैघ छाया पसारै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: कारी चादर पर उजास

लोकधुन: समारोह-मंगल गीत

धरू हे दीप, कारी चादर पर धरू हे,
अन्हारक आसनकेँ इजोतसँ भरू हे।

कारी चादर बिछल सही, ओहिपर दीप धरू,
नाम पढ़ू आदरसँ, मंचकेँ साँचसँ भरू।
माला फूलक तखने हो जखन काजो फूल-समान,
सेवा-मंचपर जनक प्रश्न पाबए उचित स्थान।

कारी चादर प्रतिरोधक, लाजक परदा नहि,
ओहिपर राखल प्रमाण कहत—हम सभ मौन नहि।
दीपक पाँति सजाउ सभ, मंचक रूप बदलत,
अन्हारक ओही आसनपर जन-इजोत फुलत।

माला तखने फूल जखन काजो फूल-समान,
मंचपर जनक प्रश्नकेँ भेटए पहिल स्थान।
कारी रंग लाज नहि, प्रतिरोधक बाना,
दीप-पाँति सजा कऽ गाबू इजोतक गाना।

❖

अन्तिम सूची सभसँ छोट पन्नापर लिखल जाइ छै, आ सभसँ पैघ छाया पसारै छै। छोट पन्नामे नाम समा जाइए, मुदा नामक पाछाँक देह, खेत, पसेना, नेनीक भूख आ बूढ़ माय-बाबूक आस नहि समाइ छै। सूची बनौनिहारकेँ ई सुविधा रहै छै जे लोककेँ एक पाँतिमे घटा दए, फेर ओही पाँतिक कातमे “लाभ”, “विशेष” वा “रोकू” लिखि ओकर जीवनक दिशा बदलि दए। कागच छोट रहै छै, छाह पैघ होइ छै; कारण अक्षर तखन पसरै छै जखन ओकर अर्थ घर-आँगन धरि पहुँचै छै।

मंचक इजोत सदिखन अन्हारक शत्रु नहि होइ छै; बेसीकाल अन्हार ओही इजोतक कपड़ा पहिरि अबै छै। माला, भजन, दीप, घोषणा—सभ लोकक आँखि ऊपर रखै छै, जाहिसँ मेजक नीचाँ बदलैत पन्ना ककरो नहि देखाइ। ताली बाजै छै तँ प्रश्नक स्वर दबि जाइए; सम्मानक

नाम पढ़ल जाइए तँ अधिकारक कागच चुपचाप दोसर रूप लऽ लै छै। तें समारोहक चमक पर भरोसा करबासँ पहिने मंचक पाछाँक हाथ देखब आवश्यक छै।

कारी चादर लाजक परदा नै, वस्तुक मोन छै। मोमक गोल दाग, स्याहीक खसरा, अँगुरीक गाढ़ चिह्न—ई सभ ओहि दिनक मौन वाक्य छै जकरा लोक बिसरि गेल, मुदा कपड़ा नहि बिसरल। वस्तु सभ बोलैत नै, मुदा सही प्रश्न राखल जाए तँ उत्तर दै छै। जकरा कचरा बुझि बोरीमे फेंक देल गेल, सएह एक दिन अपराधक मंचक त्वचा बनि अदालतक सोझाँ पड़ै छै।

स्त्री-पाँति अलग कएल जाइए, कारण ठगनिहार बुझै छै जे लाज, जल्दी आ सहायता-कामना एक संग राखल जाए तँ प्रश्न घटि जाइ छै। "नाम पुकारल जाए तँ हाथ उठाउ, फोटो खिंचाउ, अँगूठा लगाउ"—एतेक छोट आदेशमे देह, जमीन आ सहमतिक अर्थ बदलि सकै छै। जकरा पढ़बाक समय नहि देल गेल, ओकर अंगूठा स्वेच्छा नै कहल जा सकै छै। सेवा तखन सेवा छै जखन कागच घर घुरै, अर्थ बुझाओल जाए, आ "नै" कहबाक अधिकार बचल रहै।

अन्तिम सूची अन्त नै, घर-घर चलबाक पहिल नक्शा छै। मंचपर पढ़ल नाम कागचसँ मिलत, कागच खेतसँ, खेत परिवारक स्मृतिसँ, आ स्मृति ओहि हाथसँ जे माला स्वीकार कऽ ताली बजौने छल। मोहरक सच मोहरमे नै, ओकरा लगेनिहार आदेशमे भेटै छै; समारोहक सच भाषणमे नै, पाछाँ बदलल मूलमे भेटै छै। अदृश्य अदालत तें फैसला करबाक जल्दीमे नै छै—ओ पहिने प्रत्येक नामक साँस घुरेबाक बाट बनबैत जाइए।

दीनबंधुक डायरी रातिमे जे अन्हारक दरबाजा खटखटा कऽ गेल छल, भोरमे ओ दरबाजा पूरा गामक सोझाँ खुलल। 'अन्तिम सूची' वाला पन्ना चन्ना गाछीक जड़ि लग साफ कपड़ापर राखल गेल। पन्ना छोट छल, मुदा ओकर चारूकात जे भय पसरल छल, से पूरा गामपर छाह जेकाँ बैसि गेल। ओसक नमीसँ कागचक कोर कने मुड़ि गेल छल, आ पुरान स्याहीसँ धातु-जेकाँ हलुक गन्ध उठैत छल। पन्ना दिस झुकिते सभकेँ एना लागल जे बरखों पुरान कोठरी अपन बन्द साँस एकाएक छोड़ि रहल हो। सेवा-समारोहक स्मृति एखन धरि उत्सवक रूपमे बचल छल—मंच, माला, दीप, भजन, दानपत्र आ गरीब परिवारक नामक घोषणा। आइ पहिल बेर ओहि इजोतक भीतरक अन्हार पढ़बाक समय आयल।

अनन्या पहिल पाँति पढ़लक—'अन्तिम सूची—सेवा-समारोह पूर्व।' नीचाँ नामक पाँति छल; किछु स्पष्ट, किछु धुँधल, किछु पर केवल चिह्न। नाम सभक कातमे संकेत छल—'लाभार्थी', 'प्रार्थी', 'विशेष', 'रोकू', 'दू प्रति', 'मंच'। ई शब्द सभ अकेले देखिते निरापद लगैत छल; संग-संग पढ़िते जालक गाँठि बनि उठल।

भोलाराम धीरेसँ कहलनि—‘हम सभ ओहि समारोहमे गेल रही।’ हुनकर आवाजमे लाज नहि, विस्मय छल। ‘मालिक लोक कहने छल—गरीबक नाम मंचपर पढ़ल जाएत, सभकेँ सहायता भेटत। हम ताली बजौने रही।’ तालीक स्मृति ओहि क्षण हुनकर हाथमे काँटा बनि धँसि गेल। हुनका अपन हथेलीक पुरान थपथपाहट धरि सुनाइ पड़ल, मुदा ओहि आवाजमे आब उत्साह नहि, पछताबाक खोखल गूँज छल। जे उत्सवमे लोक अपन अपमानकेँ दान बुझि स्वीकार करैत रहल, ओकर हिसाब आब खुलय लगल।

मीरा भीड़केँ फेर रोकली। ‘सेवा शब्द सुनिते लोक भावुक भऽ जाइत अछि। मुदा सेवा जँ कागचक बाटे जमीन, नाम आ अधिकार निगलय, तँ ओकरा सेवा नहि कहल जा सकैत।’ एहि वाक्यसँ स्त्री सभक पाँतिमे हलचल भेल। कारण सभसँ बेसी ‘सहायता’क नामपर विधवा, बूढ़, असहाय आ परदेशी परिवारक कागच जमा कएल गेल छल।

सत्यव्रत मेहता डायरीक तारीख पुरान पंजीसँ मिलाबय लगलाह। सेवा-समारोहक सप्ताहमे असामान्य संख्यामे प्रतिलिपि तैयार भेल छल। कतेको आवेदनपर ‘स्वेच्छा’ लिखल, कतेकोपर ‘दान’, कतेकोपर ‘सहमति’। मुदा ओहि परिवारक लोक कहैत छल—‘हम सभ तँ अनाज, कंबल, छात्रवृत्ति वा उपचारक सहायता लेल हस्ताक्षर केने रही। जमीन, बन्धक आ अधिकारक कागच कोना बनि गेल?’

रामबल्लभ लिपिकक माथपर पसेना छल। ओहि समय ओ नव-नव नौकरीमे छलाह। हुनका मोन आएल जे समारोहसँ पहिने अदालतक बाहर अस्थायी मेज लगल छल, जाहिपर स्टाम्प, मोहर, आवेदन आ फोटो सभ एक संग राखल जाइत छल। लोक भजन सुनैत-सुनैत अँगूठा लगबैत छल। मंचपर नाम पढ़ल जाइत छल, आ परदा पाछाँ कागचक पृष्ठ बदलैत छल।

‘पृष्ठ बदलल जाइत छल?’ आरुणि तुरन्त पूछलक। रामबल्लभ चौंकि गेलाह। हुनकर मुँहसँ निकलल वाक्य आब प्रमाणक दरबाजा बनि गेल छल। ओ चुप भेलाह, फेर कहलनि—‘हम देखने रही जे एकर बाद दोसर पन्ना जोड़ि देल जाइत छल। तखन अर्थ नहि बुझलहुँ। अधिकारी कहलक—सुविधाक लेल। दीनबंधु झा मोहर लगबैत छलाह, चन्द्रपाल सूची जाँचैत छल।’

चन्द्रपालक नाम सुनिते भीड़मे फुसफुसाहट उठल। मीरा कठोर भऽ कहली—‘नाम सुनल गेल, आरोप एखन नहि। जे देखल गेल, ओहिपर टिकू।’ बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखलक—‘सेवा-समारोहसँ पहिने अस्थायी मेज। पृष्ठ-बदलावक स्मृति। दीनबंधु—मोहर। चन्द्रपाल—सूची जाँच।’ एहि तरहेँ लोकस्मृति वाक्यसँ उतरि क्रमबद्ध अभिलेख बनय लगल।

एहि बीच कमला देवी अपन घरसँ एकटा पुरान थैली लऽ पहुँचलथि। थैलीमे समारोहमे भेटल पीतल-जेकाँ चमकनिहार नकली पदक, लाल किनारीक प्रमाण-पत्र आ दूटा फोटो छल। फोटोमे बटुकनाथ हरिहरन माला पहिरने छलाह; पाछाँ हरिहरन सेवा निकेतनक फलक आ आगाँ गरीब परिवारक पाँति छल। कमला देवीक देवर अँगूठा लगबैत छलाह—हाथ आधा देखाइ पड़ैत छल। पीयर पड़ल छविक सतहपर नहक महीन खरोंच छल, जेना बरखों धरि बन्द थैलीमे सेहो ओ क्षण छटपटाइत रहल हो। पदकक धातु कने हरियराइ गेल छल, मुदा फोटोमे माला एखनहुँ चकचका रहल छल—सजावट समयसँ लड़ैत, सत्य धीरे-धीरे ओकर रंग उतारैत।

नीलमणि फोटोकेँ जमीनपर नहि राखय देलक। ओ साफ कागच बिछा, मोबाइल स्थिर कऽ बिनु चमकक छवि लेल। फोटोमे देखाइत छोट-छोट वस्तु सभकेँ अलग नोट कएलक—मेजक किनारपर लाल मोम, कारी स्याही, दीनबंधुक थैली आ एक मोट कागचक पुलिन्दा, जकर ऊपर 'अन्तिम सूची' जेकाँ किछु लिखल देखाइ पड़ैत छल। तस्वीर पहिल बेर डायरीक शब्दक साक्षी बनल।

भिखारी लाल फोटो दिस झुकि कहलक—'ई देखू, मंचपर जे चादर पड़ल अछि, सएह चादर अभिलेख-घरक पुरान बोरामे देखने रही।' सभ ओकरा ताकय लागल। 'चादर?' सोना पूछलक। भिखारी लाल कहलक—'किछु वस्तु कागचसँ बेसी मोन रखैत अछि। ओ चादरपर मोमक दाग छल। जँ भेटि जाए तँ समारोहक मेजक चिह्न बचल होएत।'

अदृश्य अदालतक घेरा तुरन्त दू भागमे बँटि गेल। एक दल भिखारी लालक संग अभिलेख-घर दिस गेल, दोसर दल गाछीपर डायरी, फोटो आ नामक पहरा दैत रहल। नियम तय भेल—कियो अकेले कोनो वस्तु नहि छूबत; जे उठत, ओकर समय, स्थान आ साक्षी लिखल जाएत। बच्चा सभकेँ आब बुझाइ गेल छल जे न्यायक बाटपर उतावलपन सेहो गोहिक दाँत बनि सकैत अछि।

दोपहरि धरि अभिलेख-घरक बोरासँ सचमुच लाल किनारीक एकटा मटमैला चादर भेटल। ओकर बीचमे गोल मोमक कतेको दाग, किनारपर कारी स्याहीक खसरा आ एक ठाम अँगुरीक गाढ़ चिह्न छल। कपड़ा खोलिते सीलन, धूर आ पुरान मोमक गन्ध एक संग उठल; कतेको लोक अनायास नाकपर हाथ रखलक। रामबल्लभ कहलनि—'ई अस्थायी मेजपर पड़ल छल।' सत्यव्रत मेहता चादरकेँ दूरसँ देखलनि। 'वस्तु गवाही देत, मुदा ओकरा सम्मानसँ राखू। ई कचरा नहि, अपराधक मंचक त्वचा अछि।'

चादर गाछीपर आनल गेल तँ कारी भूत ठूँठक ओटसँ निकलि ओकर चारूकात घूमल। ओकरा जेना ई चादर परिचित छल। उज्जर प्रेत चादरक मोम-दागपर इजोतक हलुक धार छोड़लक। लोकक आँखिमे अचानक समारोहक पुरान दृश्य घुरि गेल—दीपक चमक, हरिहरनक भाषण, गरीबक आशीर्वाद, आ ओकर पाछाँ अँगूठा, मोहर, पृष्ठ आ सूची।

भोलारामक पत्नी शान्ति, जे एखन धरि चुप छलथि, आगाँ आयलीह। ओ कहलथि—'ओहि दिन स्त्री सभकेँ अलग पाँतिमे राखल गेल छल। कहल गेल—महिला सहायता योजना। हम सभकेँ कहल गेल जे नाम पुकारल जाए तँ हाथ उठाउ, फोटो खिंचाउ, अँगूठा लगाउ। बादमे कागच घर नहि भेटल।' हुनकर बातपर कतेको स्त्री एक संग माथ हिलेलथि। सेवा-समारोहक स्त्री-पाँति अचानक गवाहीक पाँति बनि गेल।

मीरा एहि गवाहीकेँ विशेष पन्नामे लिखली। 'स्त्री-पाँति अलग। सहायता योजना कहल। कागच नहि देल।' ओ बच्चा सभकेँ बुझौली—'जतय स्त्रीक हस्ताक्षर बिनु पढ़ने लेल जाए, ओतय दान नहि, कब्जाक बाट खुलैत अछि।' एहि वाक्यपर अनन्याक आँखि चमकल। कथा आब जमीनक संग-संग देह, लाज आ विश्वासक अपहरणक कथा बनैत छल।

साँझसँ पहिने शशिभूषण फेर आयल। ओकर हाथमे दीनबंधुक मोहरक लकड़ीक डिब्बाक तलीसँ निकलल एकटा छोट पर्ची छल। पर्चीपर लिखल छल—'मंच-पठनक बाद मूल बदलू। बी. ह. सँ संकेत भेटत।' ई वाक्य पढ़िते सभक देह सिहरि गेल। 'मूल बदलू'—एहि दू शब्दसँ सेवा-समारोहक पूरा इजोत काँपि उठल।

सत्यव्रत मेहता नमहर साँस लेलनि। 'बी. ह. के अछि, एखन निर्णायक नहि,' ओ कहलनि, 'मुदा मूल बदलबाक निर्देश अपराधक ढाँचा देखबैत अछि।' आरुणि जोड़लक—'अर्थात् लोकक सोझाँ जे कागच पढ़ल गेल, बादमे ओकर मूल बदलल गेल हो सकैत अछि।' अनन्या लिखलक—'सार्वजनिक वाचन आ निजी अभिलेख।' ई नव शीर्षक भविष्यक जाँचक केन्द्र बनि गेल।

ध्रुवेश फेर नहि आयल, मुदा ओकर दू लोक गाछीक बाहर मोटरसाइकिलपर घूमैत रहल। बच्चा सभ डेरायल नहि। सोना समय लिखलक—'साँझ पाँच बजि बयालीस मिनट। दू अपरिचित लोक। लाल मोटरसाइकिल। गाछीक तीन चक्कर।' मीरा ओकरा देख मुस्कुरेली। भय जखन समयक भीतर लिखल जाए, तखन ओकर आधा विष उतरि जाइत अछि।

राति होइत-होइत नाम सभक मिलान आरम्भ भेल। समारोहमे मंचपर पढ़ल नाम, दीनबंधुक 'अन्तिम सूची', पंजीक 'विशेष ध्यान', कमला देवीक प्रमाण-पत्र, शान्तिक स्त्री-

पाँति आ अभिलेख-घरक बन्धक-पत्र—सभकेँ अलग-अलग ढेरीमे नहि, समानान्तर पाँतिमे राखल गेल। पहिल बेर लोक देखलनि जे दानक भाषा आ कब्जाक भाषा एकहि तारीखपर संग-संग चलैत रहल।

भोलाराम काँपैत स्वरमे कहलनि—‘हम तखन बुझलहुँ, हमरा सम्मान देल जाइत अछि। आइ बुझैत छी, हमरा नाम मंचपर पढ़ि कऽ हमर कागचक मुँह बन्द कएल गेल।’ हुनकर वाक्यपर कतेको बूढ़ लोकक आँखिसँ नोर बहय लगल। सम्मान जखन छल होइत अछि, तखन ओ अपमानसँ बेसी गाढ़ घाव छोड़ैत अछि। कारण अपमानक विरोध तुरन्त होइत, छलक विरोध बरखों बाद जागैत अछि।

कारी भूत हँसल नहि। आइ ओकर चेहरा सेहो गम्भीर छल। शायद ओकरा बुझाइ पड़ल जे लोककेँ डर देखा कऽ ठगनाइ सरल अछि, मुदा सम्मान देखा कऽ ठगनाइ बेसी क्रूर। उज्जर प्रेत चादरक कात बैसल रहल, जेना ओ मोम-दाग सभक भीतर दबल आवाजकेँ राति भरि गरम राखत। गोहि दूर नदीमे एक बेर पलटि गेल; पानिक वृत्त बनल, फेर अन्हारमे समा गेल।

अनन्या अन्तमे सेवा-समारोहक पाथर अलग राखलक। ओकरापर लिखल—‘मंचक उजास।’ आरुणि पूछलक—‘अन्हार लिखू कि उजास?’ अनन्या कहलक—‘उजास लिखब, जाहिसँ लोक देखए जे कखन-कखन उजासे अन्हारक काज करैत अछि।’ बच्चा सभ देर धरि ओहि पाथर दिस ताकैत रहल। भाषा सेहो आइ परीक्षा देलक—कोन शब्द अपराधक परदा बनत, कोन शब्द परदा हटाओत।

शशिभूषण दीनबंधुक पर्चीपर हस्ताक्षर कऽ लिखि देलक—‘ई पर्ची हमरा बाबूक डिब्बाक तलीसँ भेटल। हम स्वयं सौंपैत छी।’ ई छोट वाक्य ओकरा अपराधसँ मुक्त नहि करैत छल, मुदा सत्यक पक्षमे ठाढ़ करैत छल। मीरा कहली—‘जकर घरमे अन्हार भेटए, ओ जँ दीपक लऽ बाहर आए, तकरा गवाहीदार कहब, अपराधी नहि।’ शशिभूषण पहिल बेर सोझ ठाढ़ भेल।

रातिक अन्तिम पहरमे सत्यव्रत मेहता चन्ना गाछीक ठूँठसँ सटल पुरान जड़ि छूएलनि। हुनका लगल, जड़िक भीतरसँ कागचक खड़खड़ाहट आबि रहल अछि। ओ आँखि बन्द कऽ सुनलनि। आवाज कहैत छल—‘जे मंचपर पढ़ल गेल, ओकरा मंचसँ नहि, कागचसँ मिलाउ। ’

अदृश्य अदालत ओहि राति कोनो फैसला नहि देलक। मुदा सेवा-समारोहक चादर, दीनबंधुक पर्ची, स्त्री-पाँतिक गवाही आ ‘मूल बदलू’क शब्द सभ मिलि कऽ एतेक भारी भऽ गेल जे ठूँठक छाह धरतीपर दबि गेल। भोरसँ पहिने हवा एक बेर डायरीक पन्ना पलटलक। नव

पन्नापर केवल एक पाँति बचल छल—‘जिनका मंचपर नाम देल, हुनका घरसँ कागच लिअ।’ चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत अगिला दिन घर-घर चलबाक तैयारीमे जागल रहल।

लोकगीत: सेवा-मंचक कारी चादर

लोकधुन: समारोह-विलाप

दिअ हे हिसाब, फूल नहि—हिसाब दिअ हे,
जिनकर नाम पढ़ल, हुनकर कागच घुरा दिअ हे।

मंचपर नाम पढ़ल, फूलक माला पड़ल,
पाछाँ ‘मूल बदलू’क पर्ची चुपचाप चलल।
गरीब परिवारक सूची इजोतमे चमकल,
ओही इजोतक नीचाँ खेतक कागच बदलल।
शशिभूषण पिताक पर्ची स्वयं सौंपलक,

घरक अन्हार लऽ इजोतक बीच ठाढ़ भेलक।
चादर भारी भेल स्त्री-पाँतिक गवाहीसँ,
ठूँठक जड़ि बजल कागचक कराहसँ।
सेवा-मंच, फूल नहि—हिसाब आब दियौ,
जिनकर नाम पढ़ल, हुनकर घरक कागच घुरियौ।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—उपनय: ओहि नियमकेँ अपन वर्तमान स्थिति पहाड़: उदाहरण: ई पहाड़ सेहो भानसघर जकाँ धुआँ सँ भरल अछि। उपनय: ओहि नियमकेँ अपन वर्तमान स्थिति (पहाड़क) सँ जोड़ब।।]

अध्याय १७७

घर-घरक कागज

अदालत जहिया घर-घर चलए लागए, तहिया बुझू— न्यायकेँ पएर भेटि गेल।

अध्यायारम्भ लोकगीत: कागच छातीसँ, जन संग

लोकधुन: घर-घर बटगबनी

लगाउ हे छातीसँ, कागच छातीसँ लगाउ हे,
मुदा असगर नहि—देहरी-देहरी जन जुटाउ हे।

कागच छातीसँ लगाउ, मुदा असगर नहि चलू,
देहरी-देहरी लोक जुटाउ, साँचक माला गुँथू।
बरामदासँ गाम धरि बाट नमहर होए,
संगक पएर पड़िते दूरी गीत बनि सोए।

कागचमे नाम, हृदयमे मान, हाथमे हाथ रहय,
जनक संग चलल याचिका कखनहुँ बाट नहि बहय।
घर-घर बटगबनी गाउ—न्याय चलै जनसंग,
कागचक सूखल पन्नामे भरू जीवनक रंग।

कागचमे नाम, करेजमे मान, हाथमे हाथ,
जनसंग चलल अरजी नहि हारए कोनो बाट।
देहरी-देहरी सुर मिलए, माला जुड़ैत जाए,
सूखल पन्नापर जीवनक रंग चढ़ैत जाए।

❖

देहरी सत्यक पहिल मर्यादा छै। भीतरक पेटी खोलब सरल छै, मुदा बिना अनुमति खोलल पेटीमे भेटल प्रमाणो अन्यायसँ दागल रहै छै। जे लोक बरखों धरि कागचक नामपर ठगल गेल, ओकर निजता फेर लूटि सत्य खोजल नहि जा सकै छै। न्यायकेँ गोहिक दाँत नहि, मनुखक हाथ बनबाक छै—एहन हाथ जे कागच छीनए नहि, पढ़ि सुनाबए; मालिककेँ छोट नहि करए, ओकर “नै” कहबाक अधिकार बचाबए।

नाम.. नाम कतेक रूप धारण करै छै। मंचपर एक, पदकपर दोसर, पंजीमे तेसर, बन्धक-पत्रमे चारिम—आ बीचमे एके मनुष्य चार टुकड़ामे बँटि जाइए। नामक अक्षर बिगड़ै तँ केवल उच्चारण नहि, जमीनक बाटो बिगड़ै छै; लोक अपन घरमे रहितो कागचमे परदेशी भऽ जाइए।

तें घर-घरक मिलान नामक वर्तनी सुधारब मात्र नहि, देह आ अधिकारकेँ फेर एक ठाम अनबाक काज छै।

अँगूठा सच रहै छै, मुदा अँगूठासँ बनाओल अर्थ झूठ भऽ सकै छै। सहायता कहल जाए आ सहमति लिखल जाए, उपचारक नामपर ऋण, छात्रवृत्तिक नामपर अधिकार-त्याग बनाओल जाए—तँ कागच अपराधक मुखौटा बनि जाइए। लोक नहि बुझलक, ई ओकर दोष नहि; बुझए नहि देल गेल, ई पद्धतिक दोष छै। जखन ई बात देहरी-देहरी कहल जाइए, तखन झुकल पीठ सोझ होइ छै आ लाजक जगह प्रश्न जन्म लै छै।

घर-घर चलैत अदालत अन्तमे फेर गाछी लग घुरै छै, मुदा आब ओकर घेरामे वस्तु नहि, सम्बन्ध बैसल रहै छै—कागच आ मालिक, नाम आ देह, डर आ दोष, मंच आ घर। बीचक खाली जगह ओहि लोकक आसन छै जकरा कागच खा गेल। न्यायकेँ पएर भेटलाक बाद अगिला प्रश्न ऊपर उठै छै: जँ मूल कागच घरसँ चलि गेल, तँ ओ कतय बन्द अछि? देहरीक बाट अन्ततः अदालतक माथपर ओहि कोठरी धरि जाइए, जतय ताला केवल लोहाँक नहि, बरखोंक चुप्पीक सेहो छै।

पछिला राति “अन्तिम सूची”क पन्ना जे घर-घर चलबाक आदेश बनि खुलल छल, भोर होइतहि ओ आदेश पएर बनि गेल। भोरक पहिल उजास चन्ना गाछीक ठूँठपर पड़ल, तखन अदृश्य अदालतक घेरा पहिल बेर स्थिर नहि रहल। ओहि दिन अदालत गाछीक जड़िपर नहि बैसबाक छल; ओ घर-घर चलबाक छल। दीनबंधुक डायरीक पन्ना, सेवा-समारोहक चादर, कमला देवीक फोटो, शान्तिक गवाही आ ‘मूल बदलू’क पर्ची सभ एक कपड़ामे बान्हल गेल। मीरा कहली—‘जे नाम मंचपर पढ़ल गेल, से नाम आइ अपन घरमे सुनल जाएत। मंचक आवाज आ घरक कागचक मिलान बिनु फैसला नहि।’ ओससँ भीजल घासपर पहिल पएर पड़िते कपड़ाक गाँठिसँ पुरान कागच आ मोमक मिली-जुली गन्ध उठल; जेना अदालत स्वयं अपन आसन समेटि बाट पकड़ि रहल हो।

अनन्या बच्चा सभकेँ तीन टोलीमे बाँटली। पहिल टोली नाम पढ़त, दोसर घरक कागच देखत, तेसर सुनल गवाही लिखत। नियम साफ छल—ककरो संदूक, पेटी, आलमारी, थैली वा बक्सा बिनु अनुमति नहि खोलल जाएत। जे कागच मालिक स्वयं देत, मात्र सएह देखल जाएत। आरुणि जोड़लक—‘सत्य खोजबाक नामपर हम सभ दोसराक निजता नहि लूटब। गोहि जेकाँ हमरो दाँत नहि बनबाक अछि।’

पहिल घर भोलारामक छल। भोलारामक आँगनमे ओहि दिन झाड़ू पहिने लगल छल, जेना पाहुन आबि रहल हो। मुदा पाहुन न्यायक प्रश्न छल। हुनकर पत्नी शान्ति एकटा पीतल डिब्बा लएली। डिब्बामे पुरान प्रमाण-पत्र, फोटो, राशन कार्डक छाया-प्रति आ एकटा पीयर पड़ल कागच छल। कागचपर लिखल छल—'स्वेच्छा सहमति'। शान्ति काँपि उठली—'हम तँ महिला सहायता योजनापर अँगूठा देने रही, स्वेच्छा सहमति कोन बातक?' पीतल डिब्बाक ढक्कन खुलिते बन्द कपड़ा आ पुरान तेलक गन्ध पसरल; शान्तिक अँगुरी एखनहुँ ढक्कनक धार पकड़ने काँपैत रहल।

मीरा कागच हाथमे नहि लेलथि। ओ पहिने शान्तिकेँ पढ़ि सुनौलथि, फेर पूछलथि—'ई शब्द ओहि दिन पढ़ल गेल छल?' शान्ति माथ हिलौली—'नहि। मंचपर कहल गेल छल—कमजोर परिवारक सहायता।' एहि मिलानपर पहिल चिन्ह लगल—मंच-पठन आ कागचक वाक्य अलग। बच्चा सभ रजिस्टरमे लिखलक—'घर एक: सहायता कहल, सहमति लिखल।' छोट वाक्य छल, मुदा ओहि छोट वाक्यसँ पूरा समारोहक उजास झरए लागल।

दोसर घरमे बूढ़ी सुभद्रा झा भेटलीह। हुनका आँखि ठीकसँ देखाइ नहि दैत छल। ओ कपड़ाक एकटा टुकड़ामे कागच बान्हि राखने छलीह। ओ कहलथि—'हमर बेटा परदेशमे अछि। मंचपर हमर नाम पढ़ल गेल, लोक ताली बजेलक। बादमे कागच गामक लोक राखि देलक। कहलक—काज बनि गेल।' हुनकर कागचपर बन्धकक नोकदार भाषा छल। कातमे दीनबंधुक मोहर। तारीख सेवा-समारोहक दोसर दिनक।

सत्यव्रत मेहता, जे एहि टोलीक संग चलि रहल छलाह, बहुत काल धरि चुप रहलाह। ओ कागचक पाँति पढ़लनि—'उक्त पक्षकार सम्पूर्ण अधिकार सहित सहमति देत अछि।' फेर बूढ़ी दिस देखलनि। ओ कहलनि—'कानूनक भाषा जखन अन्हारमे पढ़ल जाए, तखन ओ हथियार बनि जाइत अछि।' ई सुनि सुभद्रा झाक नाती पूछलक—'तँ हमर दादीक अँगूठा सच नहि?' सत्यव्रत कहलनि—'अँगूठा सच अछि; ओकरासँ बनाओल अर्थ झूठ भऽ सकैत अछि।'

तेसर घर चमरू महतो सभक छल। हुनका घरमे कागच कम, स्मृति बेसी छल। चमरू कहलक—'हमर कागच तँ हरिहरन सेवा निकेतनक लोक लऽ गेल। कहलक—रसीद बादमे भेटत।' ओकरा लग केवल समारोहक पदक बचल छल, जाहिपर नाम गलत छपल—'चन्दू महतो'। बच्चा सभ चौंकल। मंचपर नाम 'चमरू' पढ़ल गेल छल, पदकपर 'चन्दू', पंजीमे 'चन्द्रमोहन', आ बन्धक-पत्रमे 'चमरू उर्फ चन्द्रमोहन'। नाम बदलैत-बदलैत लोक कागचमे फँसि गेल छल।

आरुणि एहि उदाहरणपर अलग पन्ना खोललक—‘नाम-भ्रम’। ओ लिखलक—‘एक मनुष्य, चार नाम। मंच, पदक, पंजी, बन्धक।’ अनन्या कहली—‘यैह तरीका अछि। जखन नाम स्थिर नहि रहत, तखन अधिकारो स्थिर नहि रहत।’ चमरू महतोक बहुरिया कहली—‘हमरा घरमे लोक कहैत रहल जे कागचमे हमर लोकक नाम नहि, तँ जमीनपर दावा कोना करब?’ नामक छोट विकार आब कब्जाक पैघ दरबाजा बनि सोझाँ आबि रहल छल।

दोपहरि धरि तीन टोली सात घर पहुँचि गेल। प्रत्येक घरमे एके नाटकक अलग दृश्य भेटल—ककरो ‘सहायता’क कागच ‘दान’ बनल, ककरो ‘छात्रवृत्ति’क आवेदन ‘अधिकार-त्याग’ बनल, ककरो ‘इलाज’क पर्ची ‘ऋण-सहमति’ बनल। स्त्री सभक अँगूठा प्रायः काजर वा तेल लगल हाथसँ लेल गेल छल, आ ओ अँगूठा बादमे सूखल कागचपर एहन कठोर बनि गेल जे जेना हुनकर आवाज केओ पाथरमे बदलि देने हो।

मीरा प्रत्येक घरमे एक बात दोहरबैत रहली—‘जे नहि बुझलहुँ, से मानि लिअ। नहि बुझल कागचपर अँगूठा देनाइ अपराध नहि, मजबूरीक प्रमाण अछि।’ एहि वाक्यसँ लोकक पीठ सोझ होइत गेल। बरखों धरि सभकेँ कहल गेल छल—अपने कागचपर अँगूठा देलहुँ, आब कानैत किएक छी? आइ पहिल बेर कियो कहि रहल छल जे अँगूठा देनिहार सदिखन दोषी नहि होइत; ओकरा धोखा देनिहार दोषी होइत अछि।

गामक बीच चौकपर पहुँचला पर ध्रुवेशक दू लोक फेर देखाइ देलक। एक मोबाइलसँ फोटो खिंचैत छल, दोसर कानपर फोन धरने किछु कहैत छल। सोना तुरन्त समय लिखलक। नीलमणि दूरसँ हुनकर मोटरसाइकिलक संख्या लिखि लेलक। मुदा मीरा बच्चा सभकेँ सावधान केलथि—‘हम सभ बदला नहि, अभिलेख बनबैत छी। अभिलेख जँ साफ रहत, तखन डरक कुहासा अपने छँटत।’

एहि बीच एकटा अनपेक्षित घरसँ बुलावा आयल—दीनबंधु झाक पुरान घर। शशिभूषण दुआरिपर ठाढ़ छल। ओ कहलक—‘हमर माय किछु कहब चाहैत छथि।’ घरक भीतर अन्हार कमरा छल। बिछानपर दीनबंधुक विधवा रागिनी देवी बैसल छलीह। हुनकर आवाज धीम, मुदा काटदार छल। ओ पहिल बेर सार्वजनिक रूपेँ कहलथि—‘दीनबंधु सभ नहि बुझैत छलाह, ई कहब झूठ होएत। किछु बुझैत छलाह, किछु नहि। मुदा अन्तिम दिन सभ ओ डेरायल छलाह।’ कमरामे धूपक बुझल राख आ औषधिक गन्ध छल; वाक्य निकललाक बाद ओ गन्धो जेना पैघ चुप्पीमे बदलि गेल।

सभ चुप भऽ गेल। रागिनी देवी तकियाक नीचाँसँ एकटा फाटल लिफाफा निकाललथि। ओहि लिफाफामे आधा पन्ना छल—'जिनकर घरसँ कागच लिअ, हुनकर प्रतिलिपि नहि देब। मूल ऊपर राखू।' नीचाँ हस्ताक्षर पूरा नहि, केवल 'चं...' जेकाँ किछु देखाइत छल। शशिभूषण कानय लागल। रागिनी देवी कहलथि—'नहि कानू। बाबूक दोष जतेक अछि, ओतेक लिख। जतेक डर छल, सेहो लिख। डर लिखल नहि जाए तँ अपराध पूरा बुझाइ नहि पड़त।'

सत्यव्रत मेहता रागिनी देवीक वाक्य सुनि स्तब्ध भऽ गेलाह। ई साधारण स्त्री न्यायशास्त्रक गहिर बात कहि देलीह—दोष आ डरक अलग-अलग लेखा। ओ कहलनि—'हम एहि पन्नाकेँ तुरन्त सीलबन्द करब। हस्ताक्षरक अनुमान एखन नहि।' मीरा सहमति देली। अनन्या रजिस्टरमे लिखलक—'दीनबंधु-घर: मूल ऊपर राखू। प्रतिलिपि नहि देब। अपूर्ण संकेत।' गवाहीक भाषा धीरे-धीरे कठोर अनुशासन सीखैत छल।

अगिला घरमे अप्रत्याशित विरोध भेल। हरिहरन सेवा निकेतनक पुरान स्वयंसेवक ललित, जे एखन दुकानदार छल, दुआरि बन्द कऽ देलक। ओ भीतरसँ चिचियायल—'कागच देखब तँ घरमे झगड़ा लागत। जे गेल, से गेल।' भोलाराम कहलनि—'झगड़ा पहिने लगल छल; आब मात्र ओकर नाम पूछल जा रहल अछि।' बहुत देर बाद ललित बाहर आयल। ओकर हाथमे कोनो कागच नहि, एकटा फाटल पोस्टर छल—सेवा-समारोहक। पोस्टरपर बटुकनाथक मुस्कान एखनहुँ बचल छल।

पोस्टरक नीचाँ छोट अक्षरमे छपल छल—'सम्पूर्ण अभिलेख आयोजन समितिक पास सुरक्षित रहत।' आरुणि एहि पाँतिपर अँगुरी राखलक। 'एहि बहाने घरक कागच हुनका लग गेल।' ललित धीरेसँ स्वीकार कएलक—'हम सभ घर-घर जा कऽ कहैत रही—कागच समिति लग सुरक्षित रहत। गरीब लोकक कागच घरमे नष्ट भऽ जाइत।' मीरा पूछली—'के कहल?' ललित पहिने चुप रहल, फेर धीरे कहलक—'चन्द्रपाल।'

चन्द्रपालक नाम फेर आयल। एहि बेर नामक संग प्रक्रिया छल—घर-घर संग्रह, प्रतिलिपि नहि देनाइ, समितिक सुरक्षित अभिलेख। सत्यव्रत मेहता कहलनि—'अपराध व्यक्ति मात्र नहि, पद्धति बनि रहल अछि।' बच्चा सभ ई वाक्य अलग लिखलक। अदृश्य अदालतक यात्रा आब केवल दुख सुनबाक काज नहि रहल; ओ विधि-विरुद्ध पद्धतिक मानचित्र बनि रहल छल।

साँझसँ कने पहिने टोली सभ फेर चन्ना गाछी लग घुरल। प्रत्येक टोली अपन-अपन कपड़ा खोललक। कागच, फोटो, पदक, पोस्टर, नोट, गवाहीक पन्ना, मोटरसाइकिलक संख्या, स्त्री-पाँतिक स्मृति—सभ अलग ढेरीमे नहि, एक गोल घेरामे राखल गेल। अनन्या बीचमे खाली

जगह छोड़लक। सोना पूछलक—'बीच खाली किएक?' अनन्या कहली—'एहि बीचमे एखन ओ मनुष्य बैसत, जकर नाम कागच खा गेल।'

तखन चमरू महतोकेँ बीचमे बैसाओल गेल। ओकरा चारू कात ओकर चार नाम राखल गेल—चमरू, चन्दू, चन्द्रमोहन, चमरू उर्फ चन्द्रमोहन। ओ हँसल नहि। ओ अपन माथ छुइत कहलक—'हम तँ एके लोक छी। कागचमे हम चार टुकड़ा भऽ गेलहुँ।' एहि वाक्यपर कारी भूत ठूँठक पाछाँसँ बाहर आयल आ पहिल बेर चमरूक चारूकात घुमि, बिनु हँसल वापस गेल। शायद ओकरो बुझाइ पड़ल जे नामक टुकड़ा देहक टुकड़ासँ कम पीड़ादायक नहि।

उज्जर प्रेत धीरे-धीरे सेवा-समारोहक चादरपर ठाढ़ भेल। मोमक दाग सभ चमकल। कियो देखलक जे दाग सभ घर-घरक दुआरि जेकाँ दीस रहल अछि—किछु खुलल, किछु बन्द, किछु आधा। चन्ना गाछीक जड़िमे राखल पाथर सभ गरम होमय लागल। 'मंचक उजास' वाला पाथरक कातमे अनन्या नव पाथर राखलक—'घरक कागच'।

मीरा दिनक सार लिखलथि—'एक, मंचक घोषणा आ लिखित कागचमे अन्तर। दू, घरसँ मूल कागच संग्रह। तीन, प्रतिलिपि नहि देनाइ। चार, नाम-भ्रम। पाँच, स्त्री-पाँतिक अलग उपयोग। छह, चन्द्रपालक निर्देश-स्मृति। सात, दीनबंधु-घरक पन्ना।' एहि सात बिन्दुकेँ सुनि भीड़मे कोलाहल नहि, गाढ़ सन्नाटा पसरल। सत्यक पहिल ठोस आकार कतेक बेर शोर नहि, चुप्पी उत्पन्न करैत अछि।

भिखारी लाल धीरेसँ कहलनि—'एहन कागच सभ अभिलेख-घरमे आब कतय भेटत?' रामबल्लभ लिपिक उत्तर देलनि—'जँ मूल ऊपर राखल गेल, तँ ऊपरक कोठरी देखय पड़त।' 'ऊपरक कोठरी?' बच्चा सभ एक संग पूछलक। रामबल्लभक चेहरा उतरि गेल। 'पुरान अदालतक ऊपरी कमरा, जतय बन्द फाइलक बक्सा राखल जाइत छल। चाबी सदिखन चन्द्रपालक लोक लग रहैत छल।'

ई सुनिते चन्ना गाछीक पात-विहीन डाल हिलल, जेना हवा नहि, प्रश्न लागल हो। कथा अचानक घर-घरक कागचसँ ऊपरक कोठरी दिस मुड़ि गेल। ओहि कोठरीक नाम एखन धरि केवल फुसफुसाहटमे छल। कियो कहैत—ओतय खारिज फाइल अछि। कियो कहैत—ओतय दान-पत्र। कियो कहैत—ओतय ओ कागच अछि जे अदालतमे कहियो दाखिल नहि भेल, मुदा जमीन बदलि देलक।

राति उतरि रहल छल। अदृश्य अदालत ओहि दिनो फैसला नहि देलक, मुदा मार्ग बता देलक। घर-घरक कागच सभ फेर मालिकक हाथमे वापस कएल गेल; केवल छवि, विवरण आ

अनुमति-युक्त प्रति राखल गेल। मीरा सभकेँ कहली—‘कागचक रक्षा पहिने ओकर मालिकक हाथमे होएत।’ ई वाक्य सुनि कतेको स्त्री पहिल बेर अपन कागच छातीसँ लगौली, जेना बरखों बाद हेरायल बच्चा भेटल हो।

अन्तिम पहरमे रागिनी देवीक पन्ना, ललितक पोस्टरक पाँति, चमरूक चार नाम आ शान्तिक ‘सहायता कहल, सहमति लिखल’—ई चार वस्तु चादरक ऊपर राखल गेल। कारी भूत ओहि घेरापर झुकल, उज्जर प्रेत इजोत देलक, आ दूर नदीमे गोहि बिनु आवाज पानि काटि गेल। ओहि मौनमे अनन्या रजिस्टरक नव पन्ना खोललक। शीर्षक लिखल गेल—‘ऊपरक कोठरी’।

लोकगीत: कागच छातीसँ लगेलक

लोकधुन: घर-घर बटगबनी

नहि छोड़ू हे कागच, अपन मालिक नहि छोड़ू हे,
न्यायक पएर बनि ऊपरक ताला तोड़ू हे।

अदालत पएर पेलक, देहरी-देहरी चलल,
रागिनीक पन्ना, शान्तिक अँगूठा बाजल।
‘सहायता’ कहल, ‘सहमति’ कागचमे लिखल,
चार नामक बीच बरखोंक छल छलकल।
मालिकक हाथमे मूल फेर वापस गेल,

स्त्री कागच छातीसँ लगौने बच्चा जेकाँ भेल।
ऊपरक कोठरी फुसफुसाइत डरक बाट,
हेरायल आवाज सभ ओतय काटैत राति।
घर-घरक कागच, अपन मालिक नहि छोड़ू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—निगमन: दाबीक अन्तिम रूप सँ सिद्ध होबय।: उदाहरण: ताहि लेल, ई सिद्ध भेल जे ओहि पहाड़पर आगि अछि। निगमन: दाबीक अन्तिम रूप सँ सिद्ध होबय।।]

अध्याय १७८

ऊपरक कोठरी

ऊपरक कोठरीक फुसफुसाहट सूखल पातक आगि थीक— एक चिनगीमे गाम भरि।

अध्यायारम्भ लोकगीत: धूलि हटत, खिड़की खुलत

लोकधुन: कोठरी-पराती

चढ़ू हे सीढ़ी, ऊपरक कोठरी चढ़ू हे,
एक झाड़ू, एक खिड़कीसँ भोर गढ़ू हे।

ऊपरक कोठरी धूलि भरल, सुरुज बाट जोहै,
एक झाड़ू, एक खिड़कीसँ अन्हार बाहर होए।
सीढ़ी-सीढ़ी चढ़ि चलू, साँस सम्हारि राखू,
पुरान बक्सा खोलि कऽ साँचक चिन्ह सहेजि राखू।

धूलि दोष नहि, बिसरनक चादर मात्र,
हाथ मिलिते स्वच्छ होएत प्रत्येक पन्ना, प्रत्येक पात्र।
खिड़की खुलत, पुरबा कहत—आब किछु नहि नुकत,
ऊपरक कोठरीमे भोरक नील कमल फुलत।

धूलि दोष नहि—बिसरनक पातर चादर,
हाथ लगिते झरि पड़त, चमकत भीतर-बाहर।
पुरान बक्साक साँच सहेजू, सूची संग बनाउ,
खुलल खिड़कीक पुरबामे नील कमल फुलाउ।

❖

सीढ़ी न्यायकेँ ऊपर नहि, भीतर लऽ जाइए। प्रत्येक पायदानपर पएरक भारसँ अधिक बरखोंक चुप्पी टिकायल रहै छै। चूना झरै, मकड़जाल काँपै, साँस तेज होइ; तैयो चढ़ब आवश्यक छै, कारण जे निर्णय नीचाँक बरामदामे सुनायल गेल, ओकर असल कागच ऊपरक अन्हारमे पलटायल जा सकै छै। सीढ़ी चढ़ैत लोक केवल कोठरी लग नहि पहुँचै छै—ओ अपन पहिल भरोसा, अपन पुरान ताली आ अपन अनपूछल प्रश्न लग घुरै छै।

धूलि.. धूलि दोष नहि, बिसरनक पातर चादर छै। मुदा जखन कियो जानि-बुझि धूलि जमए दै छै, खिड़की बन्द राखै छै, सूची बाहर रखै छै, तखन धूलि प्रमाणक पहरुआ बनि जाइए। ओकर गन्धमे नमी, तेल, लोहा आ पुरान स्याही मिलल रहै छै; ओकर कण हाथपर लगि कहै छै

जे एतय समय केवल बीतल नहि, रोकल गेल अछि। झाड़ू तें सफाइ मात्र नहि—सावधानीसँ इतिहासक चेहरा देखबाक विधि छै।

ताला टूटै तँ दरबाजा खुलै छै, मुदा न्याय ताला तोड़बाक चोटमे नहि, चोटक समय लिखबामे जन्म लै छै। पंच-साक्षी, मालिकक अधिकार, वस्तुक सूची, मूलक सुरक्षा—ई सभ ओहि मर्यादाक पाँति छै जाहिसँ सत्य लूटमे नहि बदलै। मोहरक निशान दरबाजापर तीन छल, मुदा प्रश्न एक—सरकारी अधिकारक कातमे निजी सेवा कखन प्रवेश केलक? जखन मददक हाथ चुप्पे चाबी धरै छै, तखन सेवा आ स्वार्थक बीचक देबाल धुँधला भऽ जाइए।

खिड़की खुललापर पुरबा केवल धूलि बाहर नहि करै छै; ओ कोडमे चपाओल नाम, फोटोमे मुस्काइत त्याग, स्त्रीक हरायल भाषा आ नकली मोहरक गन्ध बाहर आनै छै। ऊपरक कोठरी खुललाक बाद बुझाइए जे अन्हार एक कमरामे बन्द नहि छल—ओ तहसील, बैंक, भू-अभिलेख आ शहरक दफ्तर धरि पसरल बाट छल।

पछिला राति घर-घरक कागचसँ उठल प्रश्न जखन “ऊपरक कोठरी” नामक पन्नापर टिकि गेल, सबेरक धूप अदालतक माथपर चढ़ए लगल। तखन कोठरीक नाम गाममे ओहि तरह पसरि गेल जेना कियो सूखल पातमे आगि लगा देने हो। काल्हि धरि ओ केवल फुसफुसाहट छल—पुरान अदालतक छत लग बन्द कमरा, जतय टूटल कुर्सी, बेकार पेटी आ रद्द कागच राखल जाइत अछि। आइ सभकेँ बुझाइ पड़ल जे ओहि पेटीमे कदाचित् ककरो घर, खेत, नाम आ देहक फैसला निगड़ि कऽ बैसल अछि। धूपक गरमीक बीचो लोकक पीठपर ठण्ढ सनसनी दौड़ि गेल।

भिखारी लाल सभसँ पहिने अदालत पहुँचल। ओकर हाथमे ओहि ताला-चाबी सभक गुच्छा छल जे बरखों धरि ओकर कमरपर झनझनाइत रहल, मुदा ऊपरक कोठरीक चाबी ओहि गुच्छामे नहि छल। ओ धीरेसँ कहलक—‘जे चाबी रोज झनझनाइत छल, से लोककेँ भरोसा दैत छल; जे चाबी चुप राखल गेल, से असल दरबाजा खोलैत छल।’ गुच्छा हथेलीमे थमिते लोहाँक हलुक गन्ध उठल। रामबल्लभ लिपिक ओकर वाक्य सुनि आँखि झुका लेलक।

मीरा बच्चा सभकेँ आगाँहि सावधान कऽ देली—‘कोठरी खोलब, मुदा कोठरी लूटब नहि। जे भेटत, ओकर सूची बनत। जे मालिक चिन्हाएत, ओकरा सूचना देल जाएत। जे अपराधक सूत्र होएत, ओकरा सार्वजनिक रूपेँ पढ़बाक पहिने सुरक्षित करब।’ अनन्या एहि नियम सभकेँ रजिस्टरक पहिल पन्नापर लिखली। आरुणि जोड़लक—‘अन्हार खोलबामे अधैर्य सभसँ पैघ शत्रु अछि।’

अदालतक पुरान सीढ़ीपर जखन टोली चढ़ल, पाथरक प्रत्येक सीढ़ी साँस लैत बुझाइत छल। देबालपर चूना झरि रहल छल। एक कोनमे मकड़जाल एतेक घन छल जेना कोनो पुरान वकीलक तर्क हावामे अटकि कऽ जाल बनि गेल हो। भीजल चूनाक गन्ध नाकमे चुभल आ पएरक नीचाँ महीन किरकिराहट भेल। देविका फुसफुसा कऽ कहली—'नीचाँक बरामदा प्रतीक्षा छल; ऊपरक कोठरी शायद नुकायल फैसला।' सत्यव्रत मेहता उत्तर नहि देलनि, मुदा हुनकर पएर भारी भऽ गेल।

दरबाजाक बाहर तीन पुरान मोहरक निशान छल—एक न्यायालयक, एक तहसीलक, आ तेसर ककरो निजी सेवा-समितिक। निजी मोहर सरकारी मोहरक कातमे देखिते मीरा ठमकि गेली। 'एहि दरबाजापर सेवा-समिति किएक?' कियो उत्तर नहि देलक। भिखारी लाल धीरेसँ कहलक—'जखन पुरान सामान रखबाक बात भेल, तखन समिति सहायता करए आयल छल।' आरुणि लिखलक—'सहायताक नामपर प्रवेश।'

चाबी नहि भेटल, मुदा दरबाजा तोड़बो नहि छल। सत्यव्रत मेहता कहलनि—'पहिने पंच-साक्षी।' तुरन्त अदालतक दू कर्मचारी, गामक दू स्त्री आ बच्चा सभक प्रतिनिधि सोना कैं साक्षी बनाओल गेल। ताला तोड़बाक प्रत्येक चोटक समय लिखल गेल। पहिल चोटपर धूलि झरल। दोसरापर मकड़ी भागल। तेसरापर दरबाजा भीतरसँ कराहल। चारिम चोट पड़िते ताला टूटल नहि, अपितु कुंडी अपन जंग छोड़ि देलक—जेना भीतरक वस्तु सभ आब रोकल रहब स्वीकार नहि करैत हो। जंगक तीख गन्ध चोटक आवाजसँग बरामदामे पसरि गेल।

दरबाजा खुलिते भीतरसँ ठण्ढा अन्हार बाहर आयल। ओ खाली जगहक अन्हार नहि छल; जमा कएल चुप्पीक अन्हार छल। धूपक एक धार भीतर गेल आ पहिल दृश्य देखाएल—लोहाँक बक्सा सभ, लकड़ीक संदूक, फाटल कपड़ामे बान्हल गट्ठर आ देबालसँ सटल एक पुरान रैक। नमी, चूहाक बास आ पुरान कागचक गन्ध एकसाथ उठल। रैकपर चूना पड़ि गेल छल, मुदा किछु पर्ची साफ बचल छल—'समारोह अभिलेख', 'स्वेच्छा पत्र', 'दान-पंजी', 'मूल प्रतिलिपि'।

'मूल प्रतिलिपि?' अनन्या चौंकि उठली। 'मूल अलग, प्रतिलिपि अलग। ई दुनू शब्द संग किएक?' सत्यव्रत मेहता पर्ची देखैत रहि गेलाह। हुनका बुझाइ पड़ल जे अपराध केवल कागच नुकौनाइ नहि, शब्दक सम्बन्ध उनटेनाइ सेहो अछि। जखन मूल कैं प्रतिलिपि कहल जाए आ प्रतिलिपि कैं मूल, तखन न्यायालयक आँखि भ्रमित होइत अछि।

पहिल बक्सा खोलल गेल। ओकर भीतर कपड़ामे लपेटल फाइल छल। ऊपरक पन्नापर हरिहरन सेवा निकेतनक नील मोहर, भीतर सरकारी आवेदनक छाहप्रति। कतेको आवेदनक नीचाँ अलग पन्ना जोड़ल गेल छल—‘सम्पूर्ण अधिकार हस्तान्तरण’। पन्नाक कागच अलग, स्याही अलग, मुदा अँगूठाक दाग ओहि जगह मिलाओल गेल छल जतय पहिल पन्नाक हस्ताक्षर छल। मीरा फुसफुसैली—‘एहि ठाम अँगूठा नहि बोलि रहल; ओकरासँ झूठ कहल गेल अछि।’

रामबल्लभ लिपिक कुर्सी पकड़ि बैसि गेल। ओकर चेहरा उजड़ि गेल छल। ‘ई कागच अभिलेख-घरमे किएक नहि?’ सत्यव्रत मेहता पूछलनि। रामबल्लभ कठिनाइसँ कहलक—‘एहि सभक प्रविष्टि अलग रजिस्टरमे होएबाक छल। ऊपरक कोठरीक रजिस्टर चन्द्रपाल लग रहैत छल।’ भिखारी लाल थपकी देलक—‘नाम लिखू, डरू नहि।’ रामबल्लभ काँपैत हाथसँ रजिस्टरमे लिखलक—‘ऊपरक कोठरी: प्रविष्टि बाहर राखल गेल।’

दोसर संदूकमे फोटो सभ छल। सेवा-समारोहक मंचपर लोक मुस्की मारि रहल छल, गरामे माला, हाथमे चादर, कातमे बटुकनाथक गम्भीर चेहरा। एक फोटोमे कमला देवीक हाथमे जे कागच देखाइत छल, ओकर कोना झलकैत छल। देविका फोटो कैँ इजोतमे उठा कऽ देखली—कागचपर ‘सहायता स्वीकृति’ लिखल। मुदा कमला देवीक नामक फाइलमे ‘अधिकार-त्याग’ छल। फोटो साक्षी बनि सोझाँ आयल—मंचपर सहायता, फाइलमे त्याग। पीयर पड़ल फोटो-कागचक कोनासँ धूलिक महीन परत देविकाक अँगुरीपर लगि गेल।

एहि खोजपर कोठरीक हवा भारी भऽ गेल। बच्चा सभ फोटो आ फाइलक क्रम मिलाबए लागल। सोना फोटो-क्रमांक लिखलक, नीलमणि फाइल-क्रमांक। अनन्या मिलान-सूची बनबए लगली—‘मंचक कागच / कोठरीक कागच / घरक गवाही।’ ई तीन-खाना तालिका असलमे पूरा छल-कर्मक नक्शा बनि रहल छल। छोट-छोट हाथ सभ एहन पद्धति लिखि रहल छल जे पैघ-पैघ विभाग बरखों धरि नहि देखलक।

तेसर गट्ठर खोलिते भीतरसँ लाल सूतक बन्धन निकलल। ई सूत वैह प्रकारक छल जे चन्ना गाछीक छज्जापर चिरईक चोंचमे देखल गेल छल। गट्ठरमे स्त्री सभक आवेदन अलग राखल छल। कतेकोपर ‘पति अनुपस्थित’, ‘पुत्र परदेश’, ‘विधवा’, ‘अशिक्षित’ जेकाँ टिप्पणी चिन्हित छल। मीरा आ देविका एक-दोसराक चेहरा देखली। अन्यायक पद्धति स्त्रीक कमजोरी नहि, ओकर असगरपन खोजि रहल छल।

एक पन्नापर लिखल छल—'बुझा देल गेल।' मीरा धीरेसँ पूछली—'के बुझौलक?' पन्नाक नीचाँ नाम नहि, केवल संक्षिप्ताक्षर। आरुणि एहि पाँतिपर रुकल—'जकरा बुझाओल गेल, ओकर भाषा कतय अछि?' सचमुच, पूरा फाइलमे ककरो बोली नहि छल; केवल दफ्तरक भाषा छल। गवाहीमे स्त्री सभ मैथिलीमे बजली; कागचमे हुनका सभक आवाज कठोर सरकारी वाक्य बनि गेल। ई अनुवाद नहि, आवाजक अपहरण छल।

चारिम बक्सा खोलल गेल तखन सभसँ गाढ़ गन्ध आयल—नमी, तेल, लोहा आ पुरान स्याहीक। ओकर भीतर मोट, कारी, किनार झुरायल रजिस्टर छल। मुखपृष्ठपर लिखल छल—'विशेष सुरक्षित अभिलेख'। सत्यव्रत मेहता पन्ना खोललनि। पहिल पन्नामे नाम नहि, कोड छल—क-१, क-२, उ-१, वि-३। कातमे रकम, तिथि आ 'मूल प्राप्त'। पन्ना उनटिते सूखल स्याहीक धुरझार नाक लग उठल। एखन धरि लोक नाम बचा रहल छल; एहि रजिस्टरमे नाम जानि-बुझि मेटा देल गेल छल।

अनन्या कहली—'क-१ के?' रामबल्लभ रजिस्टरक पाछाँ पर्ची खोजए लागल। एक ढील पन्ना भेटल। ओहिपर कोड-सूची छल—क = कमला, उ = उज्ज्वला, वि = विधवा समूह, च = चमरू-पाँति। चमरू-मंडलीक नाम 'च'मे समेटल देखिते सोना कहलक—'लोक कैँ एक अक्षरमे चपा देल गेल।' कारी भूतक अदृश्य हँसी देबालमे लगि कऽ घुरि आयल, मुदा हँसीमे कटुता नहि, तामस छल।

उज्जर प्रेत रैकक ऊपरक धूलिपर हाथ फेरलक। धूलिमे एक छाप उभरल—'ऊपर भेजू'। ई शब्द शायद ककरो पुरान नोटक दबावसँ धूलिमे बचल छल। 'ऊपरक ऊपर कतय?' देविका पूछली। सत्यव्रत मेहता गम्भीर भऽ कहलनि—'जतय कागचसँ लाभ उठल—तहसील, बैंक, जमीन-रजिस्टर आ कदाचित् शहरक कार्यालय।' कथा फेर विस्तृत भऽ रहल छल। गोहि नदीसँ निकलि कऽ दफ्तर-दफ्तर घूमि रहल छल।

एहि बीच बाहर हलचल भेल। ध्रुवेशक लोक सभ सीढ़ीक तलपर देखाइ देल। एक कहैत छल—'पुरान सामानमे की भेटत? केवल धूलि।' दोसर बाजल—'फोटो नहि खिंचए देब।' मीरा तुरन्त दरबाजाक बाहर बच्चा सभ कैँ नहि, गामक वृद्ध स्त्री सभ कैँ ठाढ़ कऽ देली। शान्ति, सुभद्रा झा आ रागिनी देवी—तीनू सीढ़ीपर बैसि गेली। हुनकर मौन एहन दृढ़ देबाल बनल जे कोनो लोक ऊपर चढ़बाक साहस नहि कएलक।

सत्यव्रत मेहता घोषणा कएलनि—'कोठरीक प्रत्येक वस्तु सूचीबद्ध भऽ रहल अछि। कोनो वस्तु बाहर नहि जाएत, जाधरि मालिक, साक्षी आ सार्वजनिक सूची तैयार नहि भऽ

जाएत।' ई कानूनी वाक्य छल, मुदा एहि बेर लोकक भाषा बनि गेल। भिखारी लाल दरबाजापर टूटल ताला, समय, पंच-साक्षी आ बक्साक संख्या लिखलक। जे चपरासी बरखों धरि आदेश ढोइत छल, ओहि दिन आदेशक साक्षी बनल।

दोपहरि बीतैत एक छोट डिब्बा भेटल। डिब्बामे तीन मोहर छल—एक सेवा-निकेतनक, एक तहसीलक नकली मोहर, आ एक खाली रबरक टुकड़ा जाहिपर नाम बदलबाक जगह रहि गेल छल। आरुणि डिब्बा देखिते कहलक—'ई नाम बनएबाक आ बिगाड़बाक औजार अछि।' चमरूक चार नाम मोन आबि गेल। जँ मोहर बदलि सकैत छल, तखन जमीन, ऋण, दान, सहमति—सभ कागचक रूप बदलि सकैत छल।

एक पन्नापर धुँधल अक्षरमे 'बटुक बाबूक निर्देश' लिखल देखल गेल। सभ ठमकि गेल। पन्ना आधा खायल छल। बचल शब्द सभ—'सार्वजनिक सम्मान', 'कागच सुरक्षा', 'प्रतिलिपि रोकू', 'चन्द्र... देखत'। नाम पूरा नहि, मुदा दिशा साफ छल। मीरा पन्ना हाथमे लेबाक पहिने दस्ताना मँगौली। ओ कहली—'एहि पन्नापर आक्रोश नहि, सावधानी चाही। आधा पन्नासँ पूरा दोष सिद्ध नहि, मुदा आधा पन्ना आधा अन्हार अवश्य खोलैत अछि।'

अदालतक छतपर हवा तेज भेल। खिड़कीक टूटल काँच झनझना उठल। कियो कहलक—बूढ़बा भूत सीढ़ीपर बैसल छथि। कियो देखलक—ओ अपन हाथसँ धूलि नहि, धुँआ हटा रहल छथि। नामक पहरुआ बच्चा सभक ध्यान मुदा कागचपर रहल। अदृश्य सहायता रहए वा नहि, असल रक्षा अनुशासनमे छल। एहि अनुशासनसँ कथा लोकक रोदनसँ आगाँ बढ़ि न्याययोग्य प्रमाण बनैत जा रहल छल।

साँझ होए धरि कोठरीक वस्तु सभ तीन श्रेणीमे बाँटल गेल—मालिक-चिन्हारियोग्य, अपराध-सूत्र आ अज्ञात। प्रत्येक वस्तुपर पर्ची लगल। घरक कागचक प्रतिसँग मिलानक निशान राखल गेल। फोटो सभ कपड़ामे लपेटल गेल। मोहरक डिब्बा अलग सीलबन्द भेल। विशेष रजिस्टरक प्रतिछवि लेल गेल, मुदा मूल ओही ठाम पंच-साक्षी संग बन्द पेटीमे राखल गेल। मीरा बार-बार कहैत रहली—'हमरा सत्य बचएबाक अछि, सनसनी नहि पसारबाक।'

नीचाँ उतरला पर गामक लोक सभ सीढ़ीक पायदान लग ठाढ़ छल। ककरो पूछबाक साहस नहि भेल—'की भेटल?' कारण सभकेँ बुझाइ पड़ि गेल छल जे जे भेटल, ओ केवल खबर नहि, बरखोंक घाव अछि। अनन्या केवल एतबा कहली—'ऊपरक कोठरीमे घर-घरक हेरायल आवाज भेटल अछि। आब ओकरा मालिकक नामसँ जोड़ल जाएत।' शान्ति अपन छातीपर हाथ राखि फुसफुसैली—'हमर अँगूठा आब असगर नहि।'

राति फेर चन्ना गाछी लग घेरा बनल। बीचमे कोठरीक धूलि भरल एक छोटका कपड़ा राखल गेल—प्रमाण नहि, स्मरण। धूलिसँग सीलनक हलुक गन्धो घेरामे पसरल रहल। ओकर कातमे नव पाथर राखल गेल—‘ऊपरक कोठरी’। कारी भूत पाथरक छाहमे बैसल, उज्जर प्रेत धूलिपर इजोत देलक, आ दूर नदीमे गोहि एहि बेर पानि नहि काटलक; ओ निश्चल पड़ल रहल, जेना सुनि रहल हो जे कागच ओकर दाँत चिन्हारि लेलक अछि।

अन्तमे सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘ऊपरक कोठरी खुलल, मुदा आब ऊपरक रास्ता खोलबाक अछि—तहसील, बैंक, रजिस्टर, शहरक दफ्तर। ’ बच्चा सभ रजिस्टरक अगिला पन्ना खोललक। शीर्षक लिखल गेल—‘मोहरक रास्ता’। एहि लिखावटसँ रातिक हवा बदलि गेल। अपराधक नक्शा आब गाछीसँ अदालत, अदालतसँ घर, घरसँ कोठरी, आ कोठरीसँ दफ्तर दिस चलि पड़ल छल।

लोकगीत: ऊपरक कोठरीक धूलि

लोकधुन: कोठरी-विलाप

घुराउ हे कोठरी, जे नुकौलहुँ से घुराउ हे,
प्रत्येक अँगूठाक पाछाँ असल लोक देखाउ हे।

सीढ़ीक प्रत्येक पायदान बरखोंक साँस गनलक,
ऊपरक कोठरी घर-घरक आवाज निगललक।
शान्ति कहली—हमर अँगूठा आब असगर नहि,
हेरायल कागच सभ कहलक—हम रद्दी नहि।
धूलिक छोट कपड़ा गाछी लग राखल,

प्रमाण नहि, स्मरण—ई मर्यादा लिखल।
गोहि निश्चल सुनलक दाँतक नक्शा बनल,
तहसील, बैंक, शहर दिस मोहरक रास्ता चलल।
ऊपरक कोठरी, जे नुकौलहुँ से घुराउ,

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—उपनय: ई नियम रामपर सेहो लागू होइत अछि, किए: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उपनय: ई नियम रामपर सेहो लागू होइत अछि, किएक तँ अस्पतालक रोगी जकाँ रामक शरीर सेहो अस्वाभाविक रूप सँ गरम अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।]

अध्याय १७९

मुहरक पगचिन्ह

मुहरक पगचिन्ह स्याहीसँ नहि सूखैत— ओ रस्ता देखबैत रहै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: मोहरक पग सत्य दिस

लोकधुन: पगचिन्ह गीत

पढ़ू हे पगचिन्ह, स्याहीक पगचिन्ह पढ़ू हे,
ककर हाथ, कोन बाट—धीरजसँ गढ़ू हे।

स्याहीक पग चलि रहल, ओकर बाट पढ़ू,
ककर हाथसँ कतय गेल, धीरजसँ नक्शा गढ़ू।
मोहर अपने दोषी नहि, दिशा हाथ बताबै,
साँचक पहरुआ प्रत्येक निशान जोड़ि उत्तर पाबै।

पगचिन्ह शहर पार करै, बैंक-दफ्तर जाए,
जनक जागल आँखि ओकर पाछाँ-पाछाँ धाए।
मोहरक पग सत्य दिस मोड़ू, सेवा बनय चाल,
जनहितक कागचपर पड़य उज्जर लाल।

मोहर अबोध बच्चा जकाँ, जेम्हर लऽ जाउ जाए,
दिशा देखौनिहार हाथक नाम सोझाँ आए।
बैंक-दफ्तर-शहर धरि निशान-निशान जोड़ू,
सेवाक बाटपर मोहरक डेग फेर मोड़ू।

❖

पग.. पग केवल पएरक चिन्ह नै, एक ठामसँ दोसर ठाम धरि गेल भरोसाक हिसाब छै। गामक मंचपर चादर चढ़ल, तहसीलक रजिस्टरमे अधिकार उतरि गेल, शहरक अभिलेखमे फोटो अटकि गेल, बैंकक खाता धनकेँ तीन बाटमे बाँटि देलक। प्रत्येक डेग अलग देखला पर छोट बुझाइ छै; जोड़ला पर गोहिक पूरा देह बनि जाइए। तेँ पहरुआ सभकेँ दौड़बाक नै, डेग-डेग मिलएबाक छै।

मोहर अबोध बच्चा जकाँ छै—जेम्हर हाथ लऽ जाए, ओम्हर चलि जाइए। दोष रबरमे नै, ओहि उँगरीमे छै जे पढ़ने बिना दबै छै, भरोसा बेचि कऽ दबै छै, वा डरक कारण चुप रहै छै। सरकारी छाप आ सेवाक छाप जखन एके दरबाजापर कात-कात पड़ै, तखन लोकक आँखि भ्रमित होइ छै। न्याय ओ भ्रमकेँ फाड़ि पूछै छै—ककर अधिकार, ककर लाभ, ककर मौन?

भरोसा.. भरोसा कीनल-बेचल वस्तु नै, मुदा एहि कथामे ओकर बाजार बनाओल गेल छै। गरीबक अँगूठा सहमति कहल गेल, मंचक मुस्की गवाही बनल, अस्पतालमे पड़ल देह शहरक कागचपर उपस्थित देखाओल गेल। जे लोक कानि नहि सकल, ओकर चुप्पी स्वेच्छा लिखल गेल। आब कागचक भाषा देहक भाषा लग राखल जाएत—कान्हपर दबाओल हाथ, पीयर पड़ल चेहरा, काँपैत उँगरी आ असम्भव तारीख सभ संग-संग पढ़ल जाएत।

रस्ता शहरमे घुसैत छै तँ डर मोबाइलक आँखि धऽ लैत छै, मुदा नामक दीपो संग चलै छै। आब प्रश्न ई नै जे मोहर कतय पड़ल; प्रश्न ई छै जे ओकर लाभ कतय पहुँचल, ककर आङनमे जड़ि गाड़ल, आ ककर नाम छाहमे रहल। पगचिन्ह पढ़ैत-पढ़ैत न्याय शहरक खाता धरि जाएत।

ऊपरक कोठरी फेर पंच-साक्षीमे सीलबन्द भेल, मुदा ओकर भीतरसँ निकलल मोहरक बाट बन्द नहि भेल। राति चन्ना गाछीक नीचाँ जाहि पन्नापर ‘मोहरक रास्ता’ लिखल गेल छल, ओकर स्याही भोर धरि सूखल नहि। लगैत छल जे शब्दक भीतरसँ एखनो धुँआ उठि रहल अछि। ऊपरक कोठरीमे भेटल मोहर सभ केवल रबर आ लकड़ी नहि छल; ओ सभ कागचपर पड़ल एहन पएरक छाप छल, जे घरसँ अदालत, अदालतसँ तहसील, तहसीलसँ बैंक, आ बैंकसँ शहरक दफ्तर धरि अपराधक चाल देखबैत छल।

सबेर बच्चा सभ पहिने मोहरक छाप केँ कागचपर अलग-अलग उतारलक। सेवा-निकेतनक नील गोल निशान, नकली तहसील-जेकाँ अर्द्धचन्द्राकार निशान, आ तेसर खाली रबर, जाहि पर नाम बदलल जा सकैत छल। अनन्या तीनू छापक कातमे लिखली—‘घोषित सेवा’, ‘नकली अधिकार’, ‘बदलैत नाम’। आरुणि धीरे कहलक—‘अपराधक पहिल पग सदिखन भाषामे पड़ैत अछि, कागचपर तखन देखाइ दैत अछि।’

मीरा सभकेँ तहसील जेबासँ पहिने नियम पढ़ौली। कोनो कार्यालयमे भीड़ नहि, कोनो कर्मचारीकेँ धमकी नहि, कोनो कागच हाथसँ खसाओल नहि। जे पूछल जाए, लिखल जाए। जे नहि देल जाए, तकर अस्वीकृति लिखल जाए। सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘सत्यकेँ अदालत धरि अनबाक लेल सत्यक चालो साफ होएबाक चाही।’ एहि वाक्य पर शान्ति अपन अँगूठा कपड़ामे पोछि लेली, जेना एखनसँ ओकर दाग सेहो गवाही बनए जा रहल हो।

तहसीलक भवन अदालतसँ छोट छल, मुदा ओकर बरामदा बेसी थाकल। लोक कागच हाथमे पकड़ि चक्कर काटैत छल। प्रत्येक खिड़कीपर ‘पाछाँ आउ’क अदृश्य पट्टी लटकैत बुझाइत छल। भिखारी लाल पहिने एहन बरामदामे चपरासीक तरह आबैत छल; आइ ओ साक्षीक तरह प्रवेश कएलक। ओकर कमरक चाबी सभ कम झनझनायल—किएक तँ आइ

चाबी ओकरा नहि, प्रश्नकेँ खोलबाक छल। भीजल फाइल, गरम लोहाँक जाली आ पुरान पसेनाक मिलल गन्ध बरामदाक थकानकेँ देह देबैत छल।

रजिस्टर-कक्षमे बैसल लिपिक पहिने टोली देखिते असहज भेल। 'एतेक लोक किएक?' ओ पूछलक। सत्यव्रत मेहता शान्त स्वरमे कहलनि—'केवल पाँच साक्षी भीतर। बाकी बाहर प्रतीक्षा करत।' अनन्या, आरुणि, मीरा, सत्यव्रत आ शान्ति भीतर गेल। बाहर देविका बच्चा सभक संग बरामदा नोट करय लागल—कियो जमीनक नक्शा लएने, कियो जाति-प्रमाणपत्र, कियो मृत्यु-प्रमाणपत्र, कियो केवल आशा।

पहिल रजिस्टर खुलल—भूमि हस्तांतरणक। पन्ना पलटैत-पलटैत कमला देवीक नाम भेटल। प्रविष्टिमे तारीख ओही दिनक छल जे दिन फोटोमे हुनका 'सहायता स्वीकृति'क कागच देल जा रहल छल। रजिस्टरमे मुदा लिखल छल—'स्वेच्छा अधिकार-त्याग'। शान्तिक चेहरा पीयर पड़ि गेल। 'स्वेच्छा?' ओ फुसफुसैली, 'जाहि दिन मंचपर हमरा चादर देल गेल, से दिन हमर खेत कोना चलि गेल?'

लिपिक पहिने कहलक—'रजिस्टरमे जे अछि, वैह मान्य।' मीरा ओकर आँखिमे आँखि दऽ पूछली—'रजिस्टरमे आवाज कतय अछि?' लिपिक चुप। सत्यव्रत मेहता ऊपरक कोठरीक फोटो क्रमांक आ रजिस्टर क्रमांक मिलाओलनि। दूनू तारीख एक। मंचक कागच अलग, तहसीलक प्रविष्टि अलग। अनन्या लिखली—'एक दिन, दू कथा; एक सार्वजनिक, एक गुप्त।'

दोसरा पन्नापर उज्ज्वलाक परिवारक जमीन छल। ओहि पन्नाक कातमे लाल स्याहीसँ 'विशेष सत्यापन' लिखल, मुदा सत्यापनक हस्ताक्षर खाली। लिपिक कहलक—'पुरान प्रकरण अछि, अधिकारी बदलि गेल।' आरुणि पूछलक—'खाली हस्ताक्षर अधिकारीक बदलनाइ सँ भेल, वा पहिनहिसँ खाली छल?' ई प्रश्न सुनिते कक्षमे राखल पंखा चरमराए लगल, जेना ओकर पाँख कागचक झूठ उघाड़ि रहल हो।

तेसर पन्नापर चमरू-मंडलीक चार नाम एक कोडमे समेटल भेटल। रजिस्टरमे 'च-समूह' लिखल छल। अनन्या माथ उठाकऽ कहली—'गाममे चार देह, चार आवाज, चार घर; रजिस्टरमे एक 'च'।' सत्यव्रत मेहता एहि प्रविष्टि पर विशेष निशान कएलनि। ओ बुझि गेलाह जे नामक संक्षेप प्रशासनिक सुविधा नहि, सामाजिक मिटानाइ सेहो भऽ सकैत अछि।

तहसीलक पुरान बाबू, जे कोनमे चुप बैसल छल, अचानक बोलि उठल—'ई छाप हम चिन्हैत छी।' सभ ओकरा दिस मुड़ल। बाबू कहलक—'सेवा-निकेतनक लोक सभ फाइल लऽ कऽ आबैत छल। कहैत छल—गरीबक काम झटपट करब अछि। कतेको बेर पन्ना तैयार रहैत

छल, अधिकारी केवल मोहर मारैत छल।’ मीरा पूछली—‘अधिकारी पढ़ैत छल?’ बाबू आँखि झुकाकऽ कहलक—‘किछु पढ़ैत छल, किछु भरोसा करैत छल, किछु भरोसा बेचैत छल।’

ई वाक्य रजिस्टर-कक्षमे पाथर जेकाँ पड़ल। ‘भरोसा बेचैत छल’—एहि तीन शब्दमे पूरा व्यवस्था घुमड़ि उठल। बच्चा सभ बाहर बरामदामे एहन शब्द कखनहुँ नहि सुनने छल। देविका जे बाहर प्रतीक्षा करैत छली, भीतरसँ निकसल अनन्याक नोट पढ़िते लिखली—‘भरोसा जँ प्रमाणक ठाम लेत, तखन गरीबक अँगूठा माल बनत।’

तहसीलसँ प्रमाणित प्रति लेबाक अर्जीक रसीद कटाओल गेल। लिपिक धीरे-धीरे नरम भऽ रहल छल, मुदा ओकर भय बचल छल। ओ कागच देलाक बाद फुसफुसाकऽ कहलक—‘असल फाइलक छाह शहरक निबंधन-कार्यालयमे भेटत। एहि ठाम केवल प्रविष्टि अछि।’ सत्यव्रत मेहता धन्यवाद नहि, आश्वासन देलनि—‘जे कहब, ओकर नाम बिनु अनुमति नहि लिखल जाएत।’ निजताक नियम फेर न्यायक साथी बनल।

निबंधन-कार्यालय शहरक बीचमे छल। ओतय कागचक गन्ध कम, मोहरक गन्ध बेसी छल—स्याही, मोम, टोकन, स्कैनर, पुरान रजिस्टर आ नव कम्प्यूटरक मिलल संसार। देबालपर अंकीय पट्ट चमकि रहल छल, मुदा भीतर लोक एखनो पन्नापर अँगूठा लगबैत छल। आरुणि अंकीय पट्ट दिस देखि कहलक—‘तकनीक बदलल, मुदा डरक भाषा नहि बदलल।’ मोहरक गद्दीमे बसल ताजा स्याहीक तीख गन्ध आ टोकन-मशीनक टनटनाहट एक-दोसराकेँ काटैत छल।

खोज-पटलपर जखन कमला देवीक खाता संख्या देल गेल, कम्प्यूटरमे नाम उभरल—‘हस्तांतरण पूर्ण’। तिथि ओहि दिनक। गवाहक नाममे दू लोक, जे सेवा-निकेतनक फोटोमे माला पहिरौने ठाढ़ छल। शान्ति काँपि उठली—‘ओ सभ तँ मंचक संचालक छल!’ अनन्या लिखली—‘संचालक सँ गवाह; गवाह सँ कब्जेदारक रास्ता।’

निबंधन-कर्मी कहलक—‘फोटो-चिन्हारि रहत।’ अभिलेख खोलल गेल। स्क्रीनपर धुँधल फोटो आयल—कमला देवीक चेहरा आधा झुकल, कातमे ककरो हाथ ओकर कान्ह दबौने। फोटो आधिकारिक छल, मुदा मौन हिंसा साफ देखाइत छल। मीरा तुरन्त कहली—‘एहि फोटोमे सहमति नहि, दबावक देह-भाषा अछि।’ कर्मचारी हड़बड़ा गेल, मुदा सत्यव्रत मेहता शान्त रहि प्रतिलिपि लेलनि।

दोसरा अभिलेखमे एक विचित्र बात भेटल। अधिकार-पत्रपर तारीख ओहि दिनक छल जखन शान्ति गामक अस्पतालमे भरती रहली। अस्पतालक पर्ची बच्चा सभक रजिस्टरमे

पहिनेसँ दर्ज छल। देविका फुसफुसैली—‘एक देह एके दिन दू ठाम कोना?’ कारी भूतक अदृश्य आवाज जेना कक्षमे घुमल—‘कागचक गोहि देहसँ बेसी तेज दौड़ैत अछि।’

शहरक बैंक अगिला पड़ाव बनल। भूमि-हस्तांतरणक बाद ऋण स्वीकृति, ऋणक बाद बकाया, बकायाक बाद कब्जा—ई श्रृंखला धीर-धीरे बनैत गेल। बैंक अधिकारी पहिने कानूनक भाषा बोलल—‘ग्राहकक गोपनीयता।’ मीरा सहमति-पत्र देखौली, जकरापर प्रभावित परिवारक अँगूठा आ गवाह सभक हस्ताक्षर छल। अधिकारीक चेहरा बदलल। ओ कहलक—‘एहि खाता सभमे रकम आयल, मुदा तुरन्त तीन अलग खातामे चलि गेल।’

‘तीन खाता?’ सत्यव्रत पूछलनि। बैंकक मुद्रित विवरणमे नाम खुलल—एक सेवा-निकेतन, एक निर्माण-सामग्री आपूर्तिकर्ता, आ एक ‘हरिहर कल्याण ट्रस्ट’। बटुकनाथक नाम सीधा नहि छल, मुदा छाह घना छल। आरुणि लिखलक—‘नाम हटि गेल, धनक पगचिन्ह बचल।’ चन्ना गाछीसँ चलल जाँच अब रुपैयाक धार धरि पहुँचि रहल छल।

बैंकक बाहर आबिते ध्रुवेशक लोक सभ फेर देखाइ देल। एहि बेर हुनका सभक हाथमे कैमरा नहि, मोबाइल छल। ओ सभ टोलीक फोटो खिंचैत छल, जेना भयकेँ अंकीय रूप देब चाहैत हो। अनन्या बच्चा सभकेँ पाछाँ कएली। देविका सीधा कैमरा दिस देखि कहली—‘हमर चेहरा खिंचू, मुदा कागचक चेहरा नहि चोराऊ।’ ई सुनि ओ लोक सभ मोबाइल नीचाँ कऽ देलक, मुदा हुनकर आँखिमे धमकी रहि गेल।

साँझ धरि तीन ठामक प्रति, फोटो, रसीद, बैंक-प्रविष्टि आ नोट एक संग राखल गेल। बरामदाक पाथरपर रेखा खिंचल गेल—सेवा-समारोह → तहसील प्रविष्टि → निबंधन फोटो → बैंक ऋण → ट्रस्ट खाता। ई रेखा देखिते शान्ति कानली नहि। ओ केवल कहली—‘हमरसँ खेत नहि छीनल गेल, हमरसँ भरोसा छीनल गेल छल।’ एहि वाक्य पर सभ मौन भऽ गेल। सरिसोक तेलक दीपसँ उठैत महीन धुँआ नक्शाक रेखापर झुकि-झुकि चलैत छल, जेना बाट अपने गवाही दैत हो।

चन्ना गाछी लग राति फेर सभा भेल, मुदा एहि बेर गवाही पढ़ल नहि गेल; नक्शा पढ़ल गेल। मोहरक पगचिन्ह पाथरपर बनाओल गेल। प्रत्येक मोड़पर एक छोट दीप राखल गेल। कारी भूत पहिल दीप लग, उज्जर प्रेत अन्तिम दीप लग, आ बीचमे बच्चा सभ। बूढ़बा भूत जड़ि लग बैसल बुझाइत छल, जेना कहि रहल हो—अपराधक रास्ता जतेक लम्बा हो, नामक दीप ततेक बढ़ाउ।

सत्यव्रत मेहता कहलनि—'एखन दोषारोपण नहि, संरचना देखू। जे संरचना बनल, ओकर भीतर प्रत्येक दुर्बल लोक फँसल। जे सबल छल, ओ संरचनाक लाभ उठेलक। जे डरायल छल, ओ मौन देलक। जे लोभी छल, ओ मोहर मारलक।' मीरा जोड़ली—'आ जे बोलत, ओकर आवाज सुरक्षित राखू।' बच्चा सभ एक स्वरमे कहल—'सुरक्षित।'

ओहि राति नदीमे गोहि फेर देखाएल। ई बेर ओ किनार लग आबि पानिपर थूथुन राखि रहल छल। ओकर आँखि चमकि रहल छल, मुदा ओ शिकार नहि करैत छल। आरुणि दूरसँ देखलक आ लिखलक—'गोहि सुनैत अछि जखन लोक ओकर दाँतक नक्शा बनबैत अछि।' चिरई चन्ना गाछीक सूखल डाढ़िसँ उड़ि कऽ पाथरपर बैसल, आ ओकर चोंचसँ लाल सूतक एक तन्तु खसल।

ऊपरक कोठरीक मोहर आब केवल पगचिन्ह नहि रहल; ओ रास्ता बनि गेल छल। जे रास्ता अपराधी सभ चुप्पीसँ बनौने छल, ओहि रास्तापर आब नामक पहरुआ बच्चा सभ दीप धऽ कऽ चलत।

लोकगीत: मोहरक पएर

लोकधुन: पगचिन्ह गीत

पहुँचू हे पगचिन्ह, मालिक धरि पहुँचू हे,
प्रत्येक झूठक बाट नामक इजोतसँ जाँचू हे।

स्याही सुखल, पगचिन्ह नहि सुखल,
घरसँ तहसील, बैंकसँ शहर धरि खुलल।
लोभी हाथ मोहर मारलक, डरायल मौन देलक,
सबल लाभ उठौलक, दुर्बल जालमे फँसल।
जे बोलत, ओकर आवाज सुरक्षित रहत,

बच्चा दीप लेने अपराधक बाट चलत।
गोहि किनारपर थूथुन धरि सुनैत रहल,
लाल सूतक तन्तु चिरईक चोंचसँ खसल।
मोहरक पएर, आब मालिक धरि पहुँचू,

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—शोध—पृष्ठभूमि आ ऐतिहासिक परिदृश्य: ओ मिथिलाक राजा भैरवसिंहक दरबारमे न्यायाधीशक पदपर आसीन छलाह आ 'दण्डविवेक' नामक प्रसिद्ध न्याय-ग्रन्थक रचना कएलन्हि। शोध-पृष्ठभूमि आ ऐतिहासिक परिदृश्य।]

अध्याय १८०

शहरक खाता

खाता शहरमे खुजै छै, मुदा ओकर जड़ि गामक ककरो आङनमे गड़ल रहै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: शान्तिक चादर, प्रतिरोधक आसन

लोकधुन: समदाउनक आशा-लय

बिछाउ हे चादर, शान्तिक चादर बिछाउ हे,
चुप्पी नहि—ओहिपर जनसभाक दीप जराउ हे।

जे चादरसँ माए नेना ढाँकै, ओहिपर सत्य धरू,
शान्ति मतलब चुप्पी नहि—साहससँ घर भरू।
खेतक मेड़, स्त्रीक मान, गरीबक हकक बात,
चादर बीच बिछा कऽ बनाउ जनसभा रात।

नरम कपड़ो ढाल बनै जखन हाथ मिलै,
मौनक भीतर गीत उगै, भयक ताला खुलै।
शान्तिक चादर ओढ़ि नहि, आसन जकाँ बिछाउ,
प्रेमक दृढ़ प्रतिरोधसँ नव समाज बनाउ।

जाहि चादर तर नेना सूतल, ओही पर बैसार,
नरम कपड़ा ढाल बनए जखन हाथ जुड़ए,
मौनक भीतर सँ प्रतिरोधक मीठ गीत उड़ए।

❖

जखन लेल गेल वस्तु वैह लोकक नामपर दान बनि घुरै छै, तखन उपकारक चादर दरअसल लाज ढाकबाक कपड़ा बनै छै। शान्तिक पुरान चादर एहि छलकेँ मोन राखै छै—ओ नरम छै, मुदा ओकर तहमे खेतक माटि, समारोहक ताली आ दबाओल प्रश्न सभ अटकल छै।

खाताक रेखा पगचिन्ह जकाँ आगाँ बढ़ै छै: भूमि सँ ऋण, ऋण सँ भुगतान, भुगतान सँ ट्रस्ट, ट्रस्ट सँ समारोह। प्रत्येक तीरक पाछाँ एकटा हाथ छै, प्रत्येक संक्षेपक पाछाँ एकटा नाम। न्यायक काज अनुमानसँ नाम भरब नहि, प्रमाणसँ ओकर देह चिन्हब छै।

आब डर कागच मात्रमे नहि, फोनक काँचमे सेहो आबै छै। चेहरा चोराएत, नम्बर झूठ होएत, मुदा समय, स्थान, उपकरण आ शब्द अपन पग छोड़ि जाइए। गाछीक पुरान गोहि अंकीय रूप धरि सकै छै, मुदा दर्ज भेल पगचिन्हसँ पूर्णतः बचि नहि सकै छै।

तँ चादर आब ढाकबाक वस्तु नहि, प्रमाणक आसन बनै छै। जतय स्त्री-मंडली, बच्चा, बूढ़ लोक आ कागच एक-दोसराक पहरा दैत छै, ओतय शहरक खाता गामक आवाजसँ पढ़ल जाइए। जड़ि गाममे छै, तँ उत्तर सेहो गामक जागल आँखिसँ निकलत।

पछिला राति मुहरक पगचिन्ह जतय समाप्त भेल छल, भोरक पहिल इजोत ओतयसँ शहरक खाता दिस अगिला रेखा खिंचलक। मोहरक पगचिन्ह राति भरि चन्ना गाछीक पाथरपर झिलमिल करैत रहल। दीपक बाती बुतायलो पर रेखा नहि बुतायल। सेवा-समारोह सँ तहसील, तहसील सँ निबंधन, निबंधन सँ बैंक, आ बैंक सँ हरिहर कल्याण ट्रस्ट धरि जे रास्ता बनल छल, से आब केवल अनुमान नहि रहल। भोरमे जखन बच्चा सभ पाथरपर झुकि फेर ओ रेखा देखलक, तखन अनन्या कहलक—‘अपराधक देह देखब बाकी अछि; काल्हि हम केवल ओकर पएर देखलहुँ।’

सत्यव्रत मेहता शहर जाएबाक पहिने सभकेँ एक बेर फेर रोकलनि। ‘खाता पढ़ब धन गनबाक काज नहि,’ ओ कहलनि, ‘एहिमे देखबाक अछि जे ककर भरोसा ककर थैलीमे बदलल।’ मीरा जोड़लथि—‘ट्रस्टक कागच सार्वजनिक भऽ सकैत अछि, मुदा जिनक अँगूठा छलनि, हुनक निजता पहिने सुरक्षित रहत।’ एहि नियमक बादे टोली शहर दिस निकलल। शान्ति अपन पुरान चादर संग लय गेलीह—ओही समारोहक चादर, जाहि दिन हुनकर खेतक रास्ता बदलि गेल छल।

शहरक प्रमाणित लेखा-कार्यालयक पता बैंक प्रिंटमे मिलल छल। कार्यालयक नाम चमकीला पट्ट पर लिखल—‘सिद्धि परामर्श सेवा।’ सीढ़ीपर धातुक रेलिंग चमकत, भीतर काँचक दरबाजा, आ स्वागत-पटलपर सुगंधित हवा। गामक धूलि, अदालतक बरामदा आ अभिलेख-घरक अन्हारक बाद ई साफ-सुथराइ अजीब डर देलक। आरुणि फुसफुसा कऽ लिखलक—‘जतय अपराध साफ कुर्सी पर बैसैत अछि, ओतय धूलि देखाइ नहि दैत, मुदा साँस रोके रहैत अछि।’ काँचक भीतर हलुक इत्र, मशीनक गरम धातु आ बन्द कमरामे पुरान कागचक गन्ध एक संग मिलि रहल छल; स्वच्छता एतेक कठोर छल जे पएरक धूलियो अपराध मानल जाइत हो।

स्वागत-पटलपर बैसल युवती पहिने कहलथि—‘बिनु समय लऽने भेंट नहि।’ सत्यव्रत मेहता बैंकक प्रमाणित पत्र आ ट्रस्टक नाम देखेलनि। युवतीक चेहरा बदलल। ओ फोनपर ककरो कहलथि—‘पुरान हरिहर फाइलक संबंधमे लोक आयल अछि।’ ‘पुरान’ शब्द सुनिते

मीरा सतर्क भऽ गेलीह। जे कागच गरीबक जीवनमे एखनहुं जख्म छल, से कार्यालयक भाषामे पुरान फाइल बनि गेल छल।

किछु देर बाद एक मध्यम उमेरक लेखाकार बाहर आयल। ओकर नाम गोवर्धन सहाय। ओ हँसबाक कोशिश करैत कहलक—‘ट्रस्टक लेखा नियमानुसार जमा भेल छल। हम केवल कागच व्यवस्थित करैत छलहुँ।’ अनन्या तुरन्त लिखलक—‘केवल व्यवस्थित करैत छलहुँ।’ बच्चा सभ एहन वाक्य चिन्हैत भऽ गेल छल—जतय ‘केवल’ लगैत अछि, ओतय जिम्मेदारी अपन देह छोट करबाक कोशिश करैत अछि।

गोवर्धन सहाय फाइल खोललक। पहिल पन्नापर हरिहर कल्याण ट्रस्टक उद्देश्य लिखल छल—गरीबक सहायता, विधवाक पुनर्वास, छात्रवृत्ति, धर्मशाला, आपदा राहत। शब्द सभ उज्जर लगैत छल। मीरा धीरेसँ कहलथि—‘उद्देश्य कतेक उज्जर हो, धनक रास्ता देखब।’ पन्ना पलटल गेल। दानक सूचीमे निर्माण-सामग्री आपूर्तिकर्ता, सेवा-निकेतन, आ कतेको अज्ञात खाता सँ रकम आयल। रकमक तारीख ओहि भूमि-हस्तांतरणक बादक।

शान्ति पन्नापर झुकि देखलथि। हुनका अंक बुझि नहि पड़ैत छल, मुदा तारीख बुझाइत छल। ओ कहलथि—‘ई तारीख हमरा खेत छोड़ि देलाक बादक अछि?’ सत्यव्रत धीरेसँ कहलनि—‘हँ।’ शान्ति चादरक कोर पकड़ि चुप भऽ गेलीह। हुनका लगल जे खेतक माटि पइसा बनि काँचक टेबुल पर बैसि गेल अछि, आ ओ स्वयं बाहर प्रतीक्षा करैत रहल। शान्तिक नहक कोरमे माटिक महीन रेखा भरल छल; ओ रेखा काँचक टेबुलक उजासमे हुनकर खेतक अन्तिम मेड़ जकाँ चमकि उठल।

आरुणि खाताक रेखा बनबय लागल। प्रभावित परिवार सभक जमीनक बाद ऋण, ऋणक बाद भुगतान, भुगतानक बाद ट्रस्टमे दान, दानक बाद सेवा-समारोह। ई चक्र देखिते देविका कहलीह—‘जिनका सँ लेल गेल, हुनके नाम पर दान कएल गेल।’ एहि वाक्यसँ कार्यालयक शीतलन-यंत्रक ठण्ढ हठात् कठोर लगए लागल। गोवर्धन सहाय रुमालसँ माथ पोछि रहल छल, यद्यपि कोठरी ठंढ छल।

एक पन्नापर ‘विशेष प्रशासनिक सहयोग’ शीर्षक सँ खर्च लिखल छल। कातमे रकम छल, मुदा प्राप्तकर्ता नामक जगह केवल तीन अक्षर—‘रा.चं.ल.’। अनन्या पूछलक—‘ई कोड अछि?’ गोवर्धन कहलक—‘लेखा-संक्षेप।’ सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘संक्षेप ओहि ठाम खतरनाक होइत अछि जतय पूरा नाम जवाबदेह बनि सकैत अछि।’ आरुणि कातमे लिखलक—‘रा—राघव? चं—चन्द्रपाल? ल—लाउ? पुष्टि बाकी।’

मीरा तुरंत रोकलथि—‘अनुमान रजिस्टरमे नहि, अलग पन्नापर। प्रमाण भेटत तखन नाम लिखब।’ एहि अनुशासन सँ बच्चा सभक आँखि चमकल। हुनका सभ बुझाइत छल जे कथा कहब अलग काज अछि, न्याययोग्य कागच बनब अलग। कारी भूत जँ ओतय रहित, तँ शायद ई देखिकऽ मुस्कुराइत—क्रोध केँ पंक्तिमे बाँधब सीखल जा रहल छल।

गोवर्धन सहाय धीरेसँ कबूल कएलक जे हरिहर कल्याण ट्रस्टक वार्षिक लेखा ओकर कार्यालयमे ध्रुवेशक लोक लय कऽ आबैत छल। ‘ध्रुवेश स्वयं?’ मीरा पूछलथि। ‘कखनहुँ-कखनहुँ,’ ओ कहलक, ‘अधिकतर ओकर सहायक। ओ लोक कहैत छल—गामक सेवा काज अछि, कागच जल्दी जमा करब।’ देविका पूछलथि—‘कागचक संग मूल रसीद सभ रहैत छल?’ गोवर्धनक गला सुखि गेल—‘किछु मूल, किछु प्रतिलिपि, किछु केवल निर्देश।’

‘निर्देश लिखित?’ सत्यव्रत मेहता पूछलनि। गोवर्धन पहिने चुप रहल। फेर दराज खोलि एक पुरान लिफाफा निकाललक। लिफाफा पर मोबाइल नम्बर लिखल छल आ भीतर छोट कागच—‘कमला, उज्ज्वला, च-समूह खाताक रकम सेवा-दान मदमे मिलाउ। अलग उल्लेख नहि।’ हस्ताक्षर नहि, मुदा नीचे वैह नम्बर। अनन्या मोबाइल नम्बर अलग लिखलक। ओकर हाथ काँपल नहि। नामक पहरुआ आब नम्बरक पहरुआ बनैत जा रहल छल।

जखन ई कागच फोटो लेल जा रहल छल, गोवर्धन अचानक डरि गेल। ‘हमरा नाम नहि आबय,’ ओ कहलक। मीरा ओकरा आश्वस्त केलथि—‘अनुमति बिनु नहि। मुदा कागचक अस्तित्व छिपाओल नहि जाएत।’ सत्यव्रत कहलनि—‘डर सेहो गवाही अछि, मुदा डरकेँ सत्यक गला दबय देब नहि।’ गोवर्धनक आँखि भीजि गेल। ओ कहलक—‘हमरा बरखों लगैत रहल जे ई सामान्य लेखा अछि। आइ बुझलहुँ, सामान्य शब्दो अपराधक छाता बनि सकैत अछि।’

कार्यालयसँ निकलिते ध्रुवेशक मोबाइल धमकीक पहिल रूप सोझाँ आयल। अनन्याक फोनपर अज्ञात नम्बर सँ संदेश आयल—‘कागच छोड़ू, नहि तँ चेहरा सार्वजनिक होएत।’ संदेशक संग काल्हि बैंकक बाहर खिंचल तस्वीर छल। बच्चा सभ एक क्षण लेल चुप भऽ गेल। देविका फोन केँ कपड़ामे लपेटि राखलक—‘ई डर नहि, प्रमाण अछि।’ आरुणि लिखलक—‘धमकीक समय, नम्बर, चित्र, शब्द।’ स्क्रीनक नील इजोत अनन्याक चेहरापर पड़ल, मुदा ओकर आँखिमे भयक बदला गिनल-पढ़ल दृढ़ता छल; सभक साँस एक क्षण लेल अटकि गेल, फेर कलम सभ एक संग चलि उठल।

सत्यव्रत मेहता तुरन्त शहरक साइबर शाखा जाएबाक प्रस्ताव रखलनि, मुदा मीरा कहलथि—‘पहिने प्रतिलिपि सुरक्षित। मूल फोन जँ जब्त भेल तँ काज अटकत।’ एहि पर अनन्या, आरुणि आ देविका अलग-अलग कागचमे संदेशक शब्द उतारलक। स्क्रीनक छवि लेल गेल। समय लिखल गेल। फोनक बैटरी स्तर धरि दर्ज भेल। भिखारी लाल देखैत रहल—कखनहुँ ओ दरबाजाक चाबी राखैत छल; आइ ई बच्चा सभ अंकीय दरबाजाक कुंडी गिनि रहल छल।

साइबर शाखा शहरक पिछला हिस्सामे छल। देबालपर पैघ अक्षरमे चेतावनी—‘ओटीपी नहि बताउ’, ‘अनजान कॉलसँ सावधान’। मुदा भीतर बैसल लोकक चेहरा वैह पुरान थकान लएने छल जे तहसील आ अदालतमे देखल गेल छल। एक जवान अधिकारी संदेश देखलक आ कहलक—‘एहि तरहक धमकी आम अछि।’ अनन्या शांत स्वरमे पूछलक—‘आम कहि देलासँ पीड़ा छोट भऽ जाइत अछि?’ अधिकारीक चेहरा नरम भेल।

मीरा पूरा श्रृंखला समझेलथि—फोटो, मोबाइल, बैंकक बाहर निगरानी, ट्रस्टक खाता। अधिकारी आब ध्यानसँ सुनय लागल। ओ कहलक—‘नम्बर अस्थायी होएत। नकली चिन्हारि पर लिया भेल सिम होए सकैत अछि।’ आरुणि तुरन्त लिखलक—‘डरक नयका मुख—अस्थायी नाम।’ सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘नाम जँ झूठ हो, तबो समय, स्थान आ उपकरणक पगचिन्ह रहैत अछि।’ अधिकारी पहिल बेर मुस्कुरेलाह—‘हँ, अंकीय गोहि सेहो पएर छोड़ैत अछि।’

एहि वाक्य पर देविका ठमकि गेलीह। ‘अंकीय गोहि’—ई शब्द गाम घुरबाक बाटमे सभक संग रहल। नदीक गोहि देह पर दाँत धसैत छल; कागचक गोहि खेत खाइत छल; अंकीय गोहि चेहरा, आवाज, भय, प्रतिष्ठा खाइत छल। चन्ना गाछीक कथा आब तार, सिम, स्क्रीन आ सर्वर धरि बढ़ि रहल छल।

साँझ शहरसँ घुरैत समय टोलीक बस एक सुनसान मोड़ पर रुकी। सोझाँ ध्रुवेशक दू लोक बाइक पर ठाढ़ छल। ओ सभ किछु कहलक नहि; बस मोबाइल उठाकऽ विडियो बनबय लागल। भिखारी लाल आगाँ बढ़ल, मुदा मीरा रोकलथि—‘हाथ नहि। केवल दर्ज।’ देविका जोर सँ कहलथि—‘समय—साँझ पाँच बजि अट्ठाइस मिनट। स्थान—पुरान पुल मोड़। दू बाइक, तीन व्यक्ति, विडियो रिकॉर्डिंग।’ ई सुनिते ओ लोक सभक चेहरा बदलि गेल। दर्ज करब डरक विरुद्ध पहिल प्रतिरोध बनि गेल।

गाम पहुँचला पर बच्चा सभ सीधा चन्ना गाछी लग नहि गेल। पहिने सभ प्रमाण तीन प्रतिमे बाँटल गेल—कागच, छवि, आ मौखिक विवरण। एक प्रति सत्यव्रत लग, एक मीरा लग, एक गामक स्त्री-मंडली लग। शान्ति कहलीह—'पहिने हमर अँगूठा एकटा पन्नापर अकेला छल। आब ई सभ पन्ना एक-दोसराक पहरा दैत अछि।' हुनकर आवाजमे पहिल बेर भयसँ अधिक दृढ़ता छल।

राति चन्ना गाछीक नीचाँ सभा भेल तखन आइ गवाहीक बीच फोन सेहो राखल गेल। मोबाइलक काँचमे दीपक लौ परावर्तित भऽ रहल छल। बूढ़बा भूतक छाह जड़ि लग देखायल कि नहि, ई कियो निश्चित नहि कहि सकल। मुदा सभकेँ लगल जे पुरान आत्मा सभ एखन नयका डरक भाषा सीखि रहल अछि। कारी भूत स्क्रीनक अन्हार जेकाँ, उज्जर प्रेत स्क्रीनक उजास जेकाँ प्रतीक बनि उभरल।

सत्यव्रत मेहता नक्शाक अगिला रेखा खिंचलनि—ट्रस्ट खाता → लेखा निर्देश → मोबाइल नम्बर → धमकी संदेश → साइबर पगचिन्ह। ओ कहलनि—'एहि रेखा सँ बुझू जे अपराध केवल अतीतक नहि। जे अतीतमे कागच बदलैत छल, ओ वर्तमानमे चेहरा डरबैत अछि। न्याय जँ केवल पुरान फाइल पढ़त, तँ आधा सत्य भेटत; न्यायकेँ फोनक काँचो पढ़य पड़त।'

अनन्या रजिस्टरक नव पन्ना खोललक। शीर्षक लिखल—'अंकीय गोहिक दाँत।' आरुणि ओकर कातमे लिखलक—'चेहरा चोराओल गेल, मुदा समय बचल; नम्बर झूठ भेल, मुदा संदेश बचल; डर भेजल गेल, मुदा प्रमाण बनल।' बच्चा सभ एहि वाक्यकेँ तीन बेर पढ़लक। ई पाठ हुनका सभक हिम्मत बनल।

अन्तमे शान्ति अपन समारोहक चादर पाथरपर राखि कहलीह—'एहि चादरसँ हमरा लाज ढाँकल गेल छल, आ खेत ढाकल गेल छल। आइ ई चादर प्रमाणक मेज हो।' चादरपर ट्रस्टक खाता-रेखा, लेखाकारक लिफाफा, धमकी संदेशक प्रति आ साइबर रसीद राखल गेल। दीपक उजासमे चादरक रंग बदलि गेल—ओ अब दानक प्रतीक नहि, प्रतिरोधक आसन छल।

रातिक अन्तिम प्रहरमे नदीक पानि बहुते शांत छल। गोहि बहुत देर बाद पानिक ऊपर आयल, आँखि खोललक, फेर धीरेसँ डुबि गेल। आरुणि लिखलक—'जखन दाँतक नाम राखल जाए, दाँत पाछाँ हटैत अछि। ' मुदा मीरा सावधान रहलीह। ओ कहलीह—'दाँत पाछाँ हटैतो फेर काटि सकैत अछि। शहरक खाता खुलि गेल छल; आब खाता खोलयवाला हाथ दिस बढ़बाक बेर छल।

लोकगीत: शान्तिक चादर

लोकधुन: प्रतिरोध-समदाउन

ने ढाकू हे चादर, आब ककरो लाज ने ढाकू हे,
प्रतिरोधक जमीन बनि खुलल आकाश ताकू हे।

जे चादरसँ लाज ढाँकल, खेतो ढाँकल गेल,
आइ ओही चादरपर शहरक खाता खेल।
लेखाकारक लिफाफा, धमकी, साइबर रसीद,
दानक उज्जर कपड़ा बनल प्रतिरोधक जमीन।
चेहरा चोरायल, मुदा समय बचि रहल,

नम्बर झूठ भेल, संदेश प्रमाण बनल।
गोहि आँखि खोलि धीरे जलमे डूबि गेल,
दाँतक नाम पड़िते कनी पाछाँ हटि गेल।
शान्तिक चादर, आब ककरो लाज नहि ढाँकू,
ध्रुवेशक सिम आ हरिहरक छाह एक संग आँकू।

जाहि चादर सँ लाज ढाकल, खेतो ढाकल गेल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—प्रभाकरक अनवस्था—आपत्तिक खण्डन: करतलपर राखल आँवला जकाँ स्पष्ट वस्तुक ज्ञानमे जखन अप्रामाण्यक संशय नहि उठैत अछि, तखन प्रथम ज्ञान मात्रसँ विषय निश्चित होइत अछि, आ ओही विषय-निश्चयसँ अविचल प्रवृत्ति उत्पन्न होइत अछि। प्रभाकरक अनवस्था-आपत्तिक खण्डन।]

अध्याय १८१

सिमक छाया

सिमक छाया देह बिनु घूमै छै— नम्बर बदलै छै, नीयत नहि।

अध्यायारम्भ लोकगीत: नम्बरक पार लोक

लोकधुन: सामा-चकेवा धुनक उज्जर चाल

चिन्हू हे चिन्हू, नम्बरक पार चिन्हू हे,
सिम बदलौ हजार, नेहक स्वर गिनू हे।

नम्बर बदलै, सिम बदलै, लोकक नेह नहि,
स्वरकेँ स्वर चिन्है, साँचक राह कहैत।
दादीक सीख, नेनाक हँसी, घरक बोली साथ,
नकली बादर कटि जाए, खुलि जाए असल बाट।

हाथ पकड़ि कहू सभ—हम एक-दोसर चिन्है छी,
काँचक जालक पारो लोकक दीप बन्है छी।
भोरक पहिल किरण कहै—डेराउ नहि कियो,
नामक संग चलैत रहू, छल हारत निश्चयो।

सिम हजार, मुँह हजार—नेहक सुर एक,
घरक बोली, दादीक सीख—चिन्हारिक टेक।
काँच-जालक ओहि पार लोकक दीप बरए,
जुड़ल हाथक घेरामे छल पैसि नहि सकए।

❖

नम्बर बदलि जाइए, सिम बदलि जाइए, दुकान बदलि जाइए; मुदा जँ नीयत वैह छै तँ छाया अपन चाल नहि बदलै छै। ओकर पएर टावरक पहिल संकेतमे, लाल पेंसिलक बिन्दुमे, बन्द लिफाफामे आ ओहि अँगूठामे रहै छै जे लाभक आसमे लगाओल गेल छल।

मरल लोकक नामपर जीवित धमकी चलै, तँ ई केवल कागचक बेईमानी नहि छै। ई स्मृतिक देह चोरब छै। जे नाम घरक लोक दीप जरा कऽ उच्चारै छै, वैह नाम बाजारमे सिम बनि डर भेजै—एहि सँ पैघ अपमान की होइ?

छाया पकड़ब कठिन छै, मुदा असम्भव नहि। लोकक बोली, दादीक सीख, बच्चाक सहज प्रश्न, आ क्रमसँ लिखल गवाही ओकरा आकार दै छै। भीड़मे सत्य डूबि जाइए; नाम-दर-नाम लिखल जाए तँ डरक चेहरा खुलि जाइए।

एहि राति गाछीक पात चुप छै, मुदा जड़ि सुनैत छै। सिमक छाया घूमैत रहय, मुदा प्रत्येक चोराओल नाम अपन देह माँगै छै। जखन कागच, आवाज आ अँगूठा एक संग बोलत, तखन छाया जकर छै, ओकर देह सेहो दूर नहि रहत।

पिछला राति शहरक खाताक पन्ना बन्द भेलो पर ओकर अन्तिम रेखा सभक मोनमे खुलले रहल। शहरक खाता खुललाक बाद जे रेखा चन्ना गाछीक पाथरपर बनल छल, से अगिला भोर धूप पड़िते आर तीव्र देखाइ पड़ल। ट्रस्ट खाता, लेखा निर्देश, मोबाइल नम्बर, धमकी संदेश आ साइबर पगचिन्ह—ई सभ अलग-अलग बात नहि रहल। सभ रेखा एक-दोसराक गला पकड़ि एके दिशा देखाबय लागल। दिशा ध्रुवेश दिस छल, मुदा मीरा कहलीह—'दिशा देखब पर्याप्त नहि। पगचिन्ह पढ़ू, तखन डेग उठाउ।'

सत्यव्रत मेहता सभसँ पहिने काल्हि रजिस्टरमे लिखल समय फेर मिलेलनि। संदेश आयल छल शहरक बैंक बाहर सँ घुरलाक तुरन्त बाद। साइबर शाखाक रसीदपर जे प्रारम्भिक सूचना छल, ओहि अनुसार नम्बर पिछला तीन मासमे सात बेर बदलल गेल छल। प्रत्येक बेर अलग नाम, अलग चिन्हारि, अलग पता। मुदा तीनू मासमे एक स्थिर बात छल—सिम सक्रिय होएबाक पहिल टावर गामक पुरान बस-ठाढ़ी लगक छोट बाजारमे पकड़ायल।

अनन्या नक्शापर बस-ठाढ़ी घेरि देलक। आरुणि ओकर कातमे लिखलक—'झूठा नाम बदलैत अछि, पहिल संकेत नहि।' देविका कहलीह—'जकरा सिमक छाह चाही, ओ पहिने उजासमे आबैत अछि।' बच्चा सभ एहि वाक्यपर हँसल नहि। हुनका सभ बुझाइत छल जे डरक भाषा आब फोनक काँचपर लिखल जाइत अछि, मुदा ओकर जन्मस्थान एखनहुँ माटियेपर रहैत अछि।

बस-ठाढ़ीक बाजार पुरान छल, मुदा ओकर देहपर नयका पट्टी चिपकल छल—मोबाइल मरम्मत, रिचार्ज, आधार-सहायता, प्रतिलिपि, अन्तर्जालीय प्रपत्र, बैंक-मित्र। जखन टोली ओतए पहुँचल, दुकानदार सभ पहिने सामान्य जिज्ञासा सँ देखलक। मुदा जखन सत्यव्रत मेहता 'सिम पंजी'क बात उठेलनि, दू दुकानक पर्दा भीतरसँ खिसक गेल। मीरा धीरेसँ कहलीह—'डरक पहिल परदा हिलल।' दुकानक भीतर गरम तार, पानक डिब्बा आ पुरान बहीक मिलल गन्धमे माधवक घबराहट आर स्पष्ट बुझाइत छल।

सभसँ छोट दुकानपर नील बोर्ड छल—'माधव संचार सेवा'। भीतर प्लास्टिकक कुर्सी, टेबलपर टूटा स्क्रीन, चार्जरक तार, पानक डिब्बा, आ एक पुरान बही। माधव नामक युवक आँखि मिलाबयसँ बचि रहल छल। ओ कहलसि—'हम केवल ग्राहकक कागच चढ़बैत छी। सिम कम्पनीक होइत अछि।' सत्यव्रत शान्त स्वरमे कहलनि—'अपराध सेहो बेसीकाल "हम केवल" सँ शुरू होइत अछि।'

माधवक हाथ काँपल। ओ कहलक—'तीन मास पहिने किछु लोक आयल छल। ओ लोक कहलक जे ट्रस्टक सेवा-शिविर अछि, गरीब लोकक फोन चालू करबाक अछि। कागच ओ सभ लय कऽ देने छल। हम मशीनमे अँगूठा लगेलहुँ, फोटो खिंचलहुँ, सिम चालू भेल। हमरा लगल सेवा काज अछि।' मीरा पूछलथि—'अँगूठा ककर?' माधव बही उलटय लागल।

बहीमे नाम छल—रमरतिया देवी, कमलू पासवान, जगदीश मल्लाह, फुलकुंवरि, आ एक नाम जकरा कातमे लाल पेंसिलक छोट बिंदु। अनन्या ओ बिंदु देखल। 'ई बिंदु किएक?' माधव चुप। देविका टेबलपर हाथ नहि मारल, केवल कहलथि—'जतय शब्द चुप होइत अछि, ओतय चिन्ह बोलैत अछि।' माधव धीरेसँ कहलक—'जे कागच बाहरसँ आयल, ओकरापर हम बिंदु करैत छलहुँ।'

आरुणि तुरन्त अलग पन्ना खोललक—'बाहरसँ आयल कागच।' सत्यव्रत मेहता पूछलनि—'बाहर मतलब?' माधव कहलक—'हरिहर सेवा केंद्रसँ। ध्रुवेश बाबूक लोक कहैत छल—गामक वृद्धा लोक कैँ लाभ भेटत। जे सिम बँटल, तकरामे किछु लोककैँ फोन भेटल, किछु सिम बादमे वापस ले लेल गेल।' मीरा गंभीर भऽ गेलीह—'जकर नामपर सिम, ओकर हाथमे फोन नहि। ई पहिल अपराध।'

ओही समय दुकानक पिछला भागसँ एक बच्चा बाहर आयल। ओ माधवक भतिजा छल। ओकर हाथमे पुरान मोबाइलक खोल छल। ओ मासूम स्वरमे कहलक—'काका, वैह लाल बक्सा देखाबी?' माधव घबरा गेल। बच्चा बात बुझल नहि, मुदा बच्चाक आवाज सत्यक दरबाजा खोलि देलक। देविका ओकरा प्रेमसँ कहलथि—'कोनो डर नहि। बक्सा ककर?' बच्चा कहलसि—'जाहिमे बन्द सिमक लिफाफा रहैत छल।'

लाल बक्सा टेबलक नीचाँ सँ निकालल गेल। भीतर किछु खाली सिम-लिफाफा, किछु कागचक कतरन, आ दू पुरान फोटो भेटल। एक फोटोमे रमरतिया देवीक चेहरा छल—ओहि बूढ़ी स्त्रीक, जे दू बरख पूर्व मरि गेलीह। दोसर फोटोमे धुँधला चेहरा, मुदा पाछाँ हरिहर सेवा केंद्रक झंडा। अनन्याक हाथ ठमकि गेल। 'मरल स्त्रीक नामपर चलैत सिम,' ओ लिखलक।

कातमे आरुणि जोड़लक—‘मृत नामसँ जीवित धमकी।’ लाल बक्साक ढक्कन उठिते भीतरक बन्द कागच आ पुरान प्लास्टिकक बास जेना मृत नाम सभक दबाओल साँस बनि बाहर आयल।

माधव कानय लागल। ‘हम जानैत नहि छलहुँ जे सिम सँ धमकी जाएत।’ मीरा ओकरा रोकलीह—‘नहि जानब पापकेँ धोइ नहि दैत, मुदा सच कहब पापकेँ ढाकबासँ अलग करैत अछि।’ सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘हमरा दोषी नहि, कड़ी चाही। कड़ी बचाओल गेल तँ दोषी बचत।’ माधव बही, लाल बक्सा, आ सेवा-केंद्र सँ आयल पर्ची सभक प्रतिलिपि देबाक स्वीकृति देलक। ओकर चेहरा हलुक नहि भेल, मुदा झूठक भार कम भेल।

तखन दुकानक बाहर मोटरसाइकिलक आवाज भेल। तीन युवक रुकल। हुनका सभमे एक ध्रुवेशक घरक सेवक बिशम्भर छल, जे सेवा-समारोहमे माला बाँटि रहल छल। ओकर आँखि सीधा लाल बक्सापर गेल। ओ हँसि कऽ कहलसि—‘एतेक छोट बात लेल शहरक पढ़ल-लिखल लोक किएक व्याकुल?’ मीरा बाहर निकलि ठाढ़ भेलीह—‘छोट बात? मृत स्त्रीक नामपर सिम, गरीबक कागचपर धमकी, आ सेवा-केंद्रक पर्ची—ई छोट बात नहि, छोट रास्तासँ चलल पैघ अपराध अछि।’

बिशम्भरक हँसी गुम भऽ गेल। ओ मोबाइल निकालि विडियो बनबय लगल। देविका तुरन्त अपन रजिस्टर खोलि जोर सँ पढ़य लगलीह—‘समय—दिनक एगारह बजि बत्तीस मिनट। स्थान—माधव संचार सेवा। उपस्थित—बिशम्भर, दू अज्ञात युवक, एक कारी मोटरसाइकिल, एक लाल हेल्मेट।’ विडियो बनौनिहारक हाथ धीरे भऽ गेल। जखन डर देखल जाइत अछि, तखन ओ अपन आकार बदलैत अछि; जखन डर लिखल जाइत अछि, तखन ओ चिन्हल जाइत अछि।

सत्यव्रत मेहता बिशम्भरसँ पूछलनि—‘हरिहर सेवा केंद्रक सिम पर्ची अहाँ लएने छलहुँ?’ बिशम्भर तुरन्त कहलसि—‘हमरा किछु नहि मालूम।’ मुदा माधवक बहीमे ओहि दिनक पन्नापर बिशम्भरक हस्ताक्षर-जेकाँ एक टेढ़ी रेखा छल। बिशम्भर कहलक—‘ई हमर नहि।’ आरुणि शान्त स्वरमे कहलसि—‘हस्ताक्षरक जाँच बादमे। अहाँक उपस्थिति एखन लिखल गेल।’

भीड़ जमा होए लागल। कियो बिशम्भरक पक्षमे, कियो बच्चा सभक पक्षमे। एक बूढ़ लोक कहलक—‘हमरो अँगूठा ओही सेवा-शिविरमे लगाओल गेल छल। कहल गेल छल पेंशन भेटत।’ दोसर स्त्री कहलीह—‘हमरा फोन नहि भेटल, मुदा कहलक सिम खुलि गेल।’ तेसर

आवाज आयल—'मोर माइकपर नाम पढ़ल गेल, लाभुक कहल गेल, मुदा कागच घर नहि आयल।' बस-ठाढ़ी अचानक अदृश्य अदालत बनि उठल।

मीरा हाथ उठाकऽ सभकेँ शांत केलथि। 'भीड़ सत्यकेँ तोड़ि देत,' ओ कहलीह। 'एक-एक नाम, एक-एक अँगूठा, एक-एक बात।' अनन्या आ देविका दू पंक्ति बनबेलक। जे बोलय चाहैत छल, ओ पहिने अपन नाम कहत, फेर कहत—कखन अँगूठा लगल, ककरा कहने, फोन भेटल कि नहि। आरुणि लिखलक—'अंकीय गवाहीक लोक-सूची।'

बिशम्भर एहि व्यवस्था सँ अधिक डरि गेल। भीड़ होइत तँ ओ धक्का-मुक्कीमे बात डुबा सकैत छल; क्रमबद्ध गवाहीमे ओ डूबि रहल छल। ओ मोटरसाइकिलपर चढ़बाक कोशिश कएलक। भिखारी लाल आगाँ बढ़ल, मुदा फेर मीरा रोकलीह—'हाथ नहि।' सत्यव्रत कहलनि—'अहाँ जा सकैत छी। मुदा अहाँक आना, समय, आ इंकार लिखल गेल अछि।' ई सुनि बिशम्भर पहिल बेर सचमुच घबरायल। ओकर चेहरा कहि रहल छल जे लिखल बात लाठीसँ अधिक दूर धरि जाएत।

दोपहर धरि आठ नाम लिखल गेल। तीन मृत, दू बीमार, एक परदेशमे, दू अनपढ़ वृद्धा—सभक नामपर सिम, खाता-सहायता, लाभ-पंजी, वा सेवा-केंद्रक कागच। ई सिम सभमे सँ किछु बन्द, किछु सक्रिय, किछु धमकीमे प्रयुक्त, किछु बैंक-संदेश लेल। सत्यव्रत मेहता धीमे स्वरमे कहलनि—'ई केवल फोनक छल नहि; ई अस्तित्वक चोरी अछि।'

चन्ना गाछीक जड़ि लग साँझ सभ प्रतिलिपि राखल गेल। लाल बक्सा मूल रूपमे माधवक दुकानमे बन्द रहल, मुदा ओकर सूची बनल, फोटो लेल गेल, गवाहक हस्ताक्षर आ अँगूठा लगल। मीरा बार-बार कहलथि—'प्रमाण लेबाक नामपर प्रमाण चोरि नहि करब।' बच्चा सभ आब सीखि गेल छल जे न्यायक हड़बड़ी सेहो अन्याय बनि सकैत अछि। साँझक हावा लाल बक्साक फोटो पर लगैत छल, मुदा कागचक कोन एतेक भारी लगैत छल जेना प्रत्येक कोनमे कोनो चोराओल जीवन अटकल हो।

रमरतिया देवीक नामपर सभकेँ विशेष मौन लगल। हुनकर पोता बोलल—'दादी मरलाक बादो अगर हुनकर नामसँ डर भेजल गेल, तँ ई मरल शरीरक अपमान नहि, बचल नामक हत्या अछि।' एहि वाक्यपर बूढ़बा भूतक छाह गाछीक छालपर काँपल जेकाँ लगल। कारी भूत अन्हारमे गाढ़ भेल, उज्जर प्रेत दीपक लौमे लंबा। नाम मृत नहि होइत; ओकर दुरुपयोग होइत अछि—ई बात सभकेँ भीतर धरि गेल।

राति मीरा, सत्यव्रत, अनन्या, आरुणि आ देविका मिलि अगिला चाल लिखलथि—हरिहर सेवा केंद्रक पंजी माँगब, सेवा-शिविरक फोटो मिलाबब, लाभुक सूची केँ सिम-सूची सँ काटब-छाँटब, आ जे नम्बर धमकीमे आयल ओकर सक्रियताक समय साइबर शाखामे जमा करब। ई केवल गामक लड़ाइ नहि रहल; ई नामक शरीर वापस लयबाक लड़ाइ बनि गेल।

ओही राति ध्रुवेशक हवेली दिससँ ढोलकक मंद आवाज आयल। कियो कहलक पूजा अछि। कियो कहलक भोज। कियो कहलक—'जखन अपराधी डरैत अछि, तखन ओ सभसँ पहिने उत्सवक आवाज बढ़बैत अछि।' चन्ना गाछी शांत रहल। ओकर पात नहि हिलल, मुदा जड़ि लग राखल कागच सभपर ओसक बून्द पड़ल—जेना गाछी सेहो मृत नाम सभक माथपर जल चढ़ा रहल हो।

अन्तिम पहरमे अनन्या रजिस्टर बन्द करबासँ पहिने शीर्षकक नीचाँ एक पंक्ति लिखलक—'सिमक छाह पकड़ायल, मुदा छाह जकर, ओ एखन सोझाँ नहि। ' आरुणि जोड़लक—'छाह पकड़ायल तँ देह दूर नहि। ' अन्हार घनायल, मुदा अन्हार आब खाली अन्हार नहि छल; ओकर भीतर पंजी, अँगूठा, झूठा लाभ आ मृत नामक पुकार चमकि रहल छल।

लोकगीत: देह बिनु घूमैतत सिम

लोकधुन: अंकीय करुण-धुन

बताउ हे सिम, अपन असल मालिक बताउ हे,
जकर नाम चोरल, ओकर शान्त निन्न घुराउ हे।

नम्बर बदलल, नीयत नहि बदलल,
मृत नामक अँगूठासँ सिम फेर निकलल।
जकर देह माटिमे, ओकर फोन राति बजै,
माय पूछै—मरले बेटा ककरा सँ बात करै?
पंजी, शिविरक फोटो, लाभुक सूची जोड़ल,

छाह पकड़ा गेल, देह एखनो मुँह मोड़ल।
हवेलीमे ढोलक—डर उत्सव बनि बाजल,
गाछीक ओस मृत नामक माथपर जल साजल।

देह बिनु सिम, अपन मालिक आब बताउ,
जकर नाम चोरल, ओकर शान्त निन्न घुराउ।

नम्बर बदलल, नीयत नहि बदलल कहियो,
मृत नामक अँगूठा सँ सिम फेर निकलल सएहियो।
जकर देह माटिमे, ओकर फोन राति बजए,
माय पूछए—मुइल बेटा ककरा सँ बात करए?

बताउ हे सिम, अपन असल मालिक बताउ हे,
जकर नाम चोरल, ओकर शान्त निन्न घुराउ हे।

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—मीमांसक मत: दोषाभाव यथार्थताक अनुकूल कारण: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जादुई मणि जकाँ उत्पादन-प्रतिबन्धक दोषसभ अननुगत रहलो पर कारण-कार्यभावमे कोनो दोष नहि; कारण प्रमाण ज्ञानक कारण दोषसभक अभावक समष्टि अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। मीमांसक मत: दोषाभाव यथार्थताक अनुकूल कारण।]

अध्याय १८२

हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

सेवा-केंद्रक दरबाजा दिनमे सेवा बाँटै छै, राति हिसाब।

अध्यायारम्भ लोकगीत: सेवा-दरबाजा भोरमे

लोकधुन: पराती

खोलू हे दरबाजा, सेवाक दरबाजा भोरे खोलू हे,
जनक बोलीक चाबी सँ जंग-लागल ताला तोड़ू हे।

राति भरि बन्द रहल जे सेवा-दरबाजा भारी,
भोरक चाबी बनि अएल जनक बोलि पियारी।
कागच, खाता, मोहर सभ आब उजासमे आउ,
जकर हक दबायल छल, ओकर नाम सुनाउ।

दरबाजा-दरबाजा दीप धरू, बाट-बटोहिया जोड़ू,
सेवा शब्दकेँ साँच बनाउ, झूठक गाँठि छोड़ू।
सूरुज उगै तँ देबालो अपन छाह हटाबै,
जनक पहरासँ प्रत्येक संस्था फेर भरोस जगाबै।

राति भरि जे बन्द रहल, भोरे हाजिर होउ,
कागच-खाता-मोहर सभ उजासमे धोउ।
दबल हकक नाम पुकारू पहिल घण्टी संग,
सूरुज देखि देबालो छोड़ए छाहक रंग।

❖

सेवा कहल जाइए तँ लोक अपन कागच भरोसासँ सौंपै छै। ओहि भरोसाक बदला जँ नाम, अँगूठा, फोटो आ सिम बाजारक माल बनि जाए, तँ अपराध केवल प्रपत्रमे नहि, देहरीक मर्यादामे होइ छै।

चाबी नरहरी काकाक हाथमे छै, मुदा असल चाबी जनक बोली छै। जे लोक बरखों धरि “ऊपरसँ आदेश” सुनैत रहल, सएह लोक आइ पूछै छै—ऊपर के? आदेश ककर? हिसाब कतऽ?

भीड़ जखन क्रम बनै छै, पीड़ा श्रेणी बनै छै। नाम-पुष्टि, लाभ-अस्वीकार, अँगूठा-बिनु-पठन, फोन-वापसी—ई शब्द सभ केवल सूची नहि, मौनक टूटल टुकड़ा छै। एक-एक टुकड़ा जुड़ै छै तँ संस्थाक असल चेहरा बनै छै।

राति हिसाब लुकौने रहै, मुदा भोर दरबाजा खोलै छै। जंग लागल ताला टूटलाक बाद केवल कमरा नहि खुलै छै; लोकक अपन नामपर अधिकार, अपन गरिमापर पहरा आ अपन स्मृतिपर दावा सेहो घुरि अबै छै।

सिमक छाया पकड़ाएलाक बादो ओकर देह एखन धरि दूर छल; राति भरि चन्ना गाछीक जड़ि लग राखल कागच सभपर ओस पड़ैत रहल। राति भरि चन्ना गाछीक जड़ि लग राखल कागच सभपर ओस पड़ैत रहल। सिमक छाह पकड़ायल छल, मुदा ओकर देह एखन सोझाँ नहि आयल छल। अनन्या भोरसँ पहिनहि उठि गेल। ओकरा रजिस्टरक पन्नापर काल्हि लिखल पंक्ति फेर-फेर पढ़ाइत रहल—‘छाह पकड़ायल तँ देह दूर नहि।’ आइ ओहि देहक पहिल दरबाजा खटखटेबाक दिन छल—हरिहर सेवा केंद्र।

हरिहर सेवा केंद्र गामक बाहर पुरान पंचाहत-भवनक कातमे बनल छोट पक्का मकान छल। बरखों धरि ओहि घरपर ताला कम, झंडा बेसी देखाइत। सेवा-शिविर, पेंशन-सहायता, विधवा-लाभ, छात्रवृत्ति, राशन-पंजी, सिम-वितरण, स्वास्थ्य-शिविर—सभ काजक घोषणा ओही दरबाजासँ निकलैत, मुदा लाभक असली बाट ककर घर धरि पहुँचल, ई प्रश्न केओ खुलेआम नहि पूछैत छल।

मीरा टोली चलए सँ पहिने नियम पढ़ौलथि—‘कागच देखब, मुदा कागच छीनब नहि। जकर नाम पढ़ब, ओकर अनुमति लब। जे कर्मचारी बोलए चाहत, ओकर रक्षा करब। जे झूठ बोलत, ओकर झूठो दर्ज करब। आ भीड़कैँ निर्णय नहि बनए देब।’ बच्चा सभ एहि नियमक संग चलल। सत्यव्रत मेहता अपन पुरान थैलीमे प्रतिलिपि, साइबर रसीद, माधवक बहीक उतार, आ रमरतिया देवीक फोटो राखलनि।

सेवा केंद्र लग पहुँचलापर पहिल दृश्य विचित्र छल। दरबाजा आधा खुलल, भीतर झाड़ू लागल, मेजपर गमला राखल, आ देबालपर बटुकनाथ हरिहरनक मुस्कुराइत चित्र। चित्रक नीचाँ अक्षर—‘सेवा ही साधना।’ देविका धीरेसँ कहलीह—‘जतय सेवा शब्द बहुत उज्जर लिखल हो, ओतय छायो देखबाक चाही।’ आधा खुलल दरबाजासँ भीजल झाड़ूक गन्ध, पुरान मोहरक स्याही आ बन्द कमराक सीलन एक संग बाहर आबैत छल।

भीतर एक वृद्ध चौकीदार बैसल छल—नरहरी काका। ओकर आँखि धुँधला, मुदा आवाज साफ। ओ कहलसि—‘बाबू लोक, केंद्र आइ बन्द अछि।’ मीरा पूछलथि—‘कियैक?’ नरहरी उत्तर देलक—‘ऊपरसँ आदेश।’ सत्यव्रत मुस्कुरेलनि नहि। ओ शांत स्वरमे पूछलनि—‘ऊपर कतँ अछि—छत, दफ्तर, कि डर?’ नरहरीक ओंठ काँपल। ओ कुर्सी सँ उठि गेल आ दरबाजाक भीतरक कुंडी खोलि देलक।

पहिल कोठरीमे प्रपत्रक ढेर छल। कतेको प्रपत्रपर नाम पूरा, कतेकोपर केवल अँगूठा, कतेकोपर फोटो चिपकल मुदा नाम दोसर, कतेकोपर मोबाइल नम्बर समान। अनन्या एक-एक गठरीक शीर्षक पढ़य लागल—‘वृद्धा-सहायता’, ‘आवास-लाभ’, ‘सिम-सहायता’, ‘किसान-सम्मान’, ‘आपदा-राहत’। आरुणि कातमे लिखलक—‘लाभक नाम अलग, पंजीक हाथ एक।’

मीरा पहिल गठरी खोललीह। रमरतिया देवीक नाम फेर सोझाँ आयल। ओहि नामक कातमे तीन अलग मोबाइल नम्बर। एक प्रपत्रपर अँगूठा, दोसरपर हस्ताक्षर-जेकाँ रेखा, तेसरपर केवल फोटो। सत्यव्रत मेहता माधवक बहीसँ मिलेलनि—ओहि दिनक सिम सक्रियता आ सेवा-शिविरक पन्ना एके तिथिक। बच्चा सभ एक-दोसराकेँ देखलक। मृत नामसँ जीवित धमकी आब अनुमान नहि रहल।

नरहरी काका धीरे-धीरे बोलए लागल। ‘हमरा बस चाबी राखबाक छल। लोक आबैत, कागच दैत, मोहर लगैत, फाइल ऊपरक अलमारीमे जाइत। कखनो-कखनो रातिमे लोक आबि फाइल निकालैत।’ मीरा पूछलथि—‘केओ?’ नरहरी बहुत देर चुप रहल। फेर कहलसि—‘बिशम्भर, ध्रुवेशक सहायक, आ कखनो एक शहरिया बाबू जे चश्मा पहिरैत छल।’

देविका तुरन्त लिखलक—‘रातिक फाइल-आवागमन।’ सत्यव्रत मेहता पूछलनि—‘रजिस्टर अछि?’ नरहरी देबालक कोनमे लटकल जंग लागल चाबी दिस इशारा केलक। ‘ऊपरक अलमारीमे।’ एहि ‘ऊपर’ शब्दसँ सभकेँ अदालतक ऊपरक कोठरी मोन आबि गेल। अपराधक भाषामे ‘ऊपर’ सदिखन भौतिक स्थान नहि, जिम्मेदारीसँ बचबाक दिशा होइत अछि। कपड़ामे बान्हल पंजी खोलिते धूलिक महीन परत उगल, आ पुरान स्याहीक गन्धमे जेना दबाओल नाम सभ फेर साँस लेबय लागल।

अलमारी खुलल तँ भीतर कपड़ामे बान्हल दू पंजी भेटल—‘लाभुक उपस्थिति’ आ ‘अंकीय सहायता’। पहिल पंजीमे गामक गरीब परिवारक नाम, अँगूठा, आ लाभक कोड। दोसरमे मोबाइल नम्बर, सिम-क्रम, बैंक-संदेश, आ कतेको ठाम ‘फोन वापस’ लिखल।

आरुणि काँपैत स्वरमे पढ़लक—'फोन वापस।' मीरा कहलीह—'ई शब्द असली दरबाजा अछि। जकर नामपर फोन, ओकर हाथसँ फोन वापस—माने आवाजक चोरी।'

भीड़ बाहर जमा होए लागल। केओ चिल्लायल—'दरबाजा खोलू, हमरा नाम देखब।' मीरा बाहर आबि कहलीह—'सभकेँ नाम देखाओल जाएत, मुदा क्रमसँ। बिनु अनुमति ककरो नाम भीड़मे नहि पढ़ल जाएत।' एहि बातपर किछु लोक असन्तुष्ट भेल, मुदा स्त्री-मंडली आगाँ आबि कतार बनौलनि। शान्ति कहलीह—'काल्हि हमरा कागचक लाज बचल। आइ दोसरो लोकक लाज बचत।'

पहिल कतारमे कमला देवी, फुलकुंवरि, रमरतियाक पोता, चमरू पासवानक बहू, आ बूढ़ जगदीश मल्लाह आयल। प्रत्येक अपन नाम खोजलक। जकर नाम भेटल, ओकरा कातमे लिखल लाभ देखल गेल। कतेको कहलक—'ई हमरा नहि भेटल।' कतेको कहलक—'अँगूठा लगल छल,पर प्रपत्र नहि पढ़ाओल गेल।' कतेको कहलक—'फोटो ओही दिन खिंचल गेल, जखन मंचपर माला देल गेल।'

अनन्या अलग पन्ना बनौल—'नाम-पुष्टि', 'लाभ-अस्वीकार', 'अँगूठा-बिनु-पठन', 'फोन-वापसी'। बच्चा सभ आब केवल कथा नहि, श्रेणी बना रहल छल। सत्यक देह बनैत अछि जखन पीड़ा क्रम पाबैत अछि। छिड़िआयल आर्तनादकेँ अपराधी भीड़ कहि उड़ा दैत अछि; क्रमबद्ध गवाही केँ ओ एतेक सहज नहि झुठला सकैत।

ओहि समय बिशम्भर सेवा केंद्रपर पहुँचल। काल्हिक ठसक कम छल, मुदा आवाज एखनहुँ भारी बनाउल। 'ई निजी संस्था अछि,' ओ कहलसि। 'बिनु अनुमति कागच देखब अपराध अछि।' सत्यव्रत मेहता ओकरा ट्रस्टक सार्वजनिक घोषणा, लाभुक सूची, आ काल्हि बहीमे लिखल पर्चीक प्रतिलिपि देखेलनि। 'निजी सेवा जखन सार्वजनिक लाभक नामपर अँगूठा लेत अछि,' ओ कहलनि, 'तखन ओकर कागच लोकक प्रश्नसँ बचि नहि सकैत।'

बिशम्भर हँसबाक प्रयास कएलक। 'अहाँ सभ बच्चा केँ भड़का रहल छी।' एहिपर देविका आगाँ बढ़लीह। 'भड़कब ओ होइत अछि जतय आगि नहि हो,' ओ कहलीह। 'एतय राखक नीचाँ आगि बहुत पहिनेसँ अछि। हम केवल धुँआ दर्ज करैत छी।' भीड़मे हलुक गूँज उठल, मुदा मीरा तुरन्त हाथ उठा कऽ शांत केलथि। भावनाकेँ पद्धति बनि रहबाक छल।

बिशम्भर अलमारी लग बढ़बाक चाहलक, मुदा नरहरी काका पहिल बेर ओकर सोझाँ ठाढ़ भऽ गेल। 'आइ चाबी हमर हाथमे रहत,' ओ कहलसि। बिशम्भरक आँखि कड़क भेल—'तूँ नौकरी गँवा देबह।' नरहरीक उत्तर धीमापर साफ छल—'बरखों चाबी बचौलहुँ, नाम गँवेलहुँ।

आब नौकरी बचा कऽ की करब?' एहि वाक्यपर सेवा केंद्रक देबालपर टँगल 'सेवा ही साधना'क पट्टिका थरथरा उठल जेकाँ लगल।

मध्यान्हक बाद दोसर कोठरी खुलल। ओहि कोठरीमे कम्प्यूटर, पुरान प्रिंटर, स्कैनर, आ एक बन्द पेटी छल। पेटीमे सिम-लिफाफाक कतरन, आधार-प्रतिलिपि, फोटो, आ 'फोन वितरण'क रसीद। कतेको रसीदपर अँगूठा, मुदा समान लिखावट। आरुणि कहलक—'अँगूठा अलग, लिखावट एक।' सत्यव्रत मेहता जोड़लनि—'अर्थात् सहमति लोकक, वाक्य ककरो दोसरक।'

एक छोट पेन-ड्राइव सेहो भेटल। ओकर ऊपर कागच चिपकल—'शिविर फोटो'। मीरा तुरन्त रोकलीह—'ई अंकीय प्रमाण अछि। बिनु प्रति-प्रक्रिया छूब नहि।' साइबर शाखाक अधिकारीकेँ फोन कएल गेल। ओ कहलसि जे वस्तु ज्यों-का-त्यों सुरक्षित राखू, फोटो लिअ, समय लिखू, गवाह राखू। बच्चा सभ आश्चर्य सँ सुनलक—पुरान कागचक जाँच आ अंकीय प्रमाणक शृंखला, दुनूक मर्यादा अलग मुदा उद्देश्य एक—सत्यकेँ टूटबासँ बचाबब। कम्प्यूटरक पाछाँ गरम तारक गन्ध छल; बन्द पेटीक भीतर कागच, प्लास्टिक आ पुरान गोंदक बास एतेक घन छल जे सभ एक क्षण मौन भऽ गेल।

साँझ धरि सेवा केंद्रक दरबाजा बाहर सँ खुलल, भीतर सँ भारी भऽ गेल। नामक कतार बढ़ैत गेल। स्त्री सभ अपन प्रपत्र देखैत कहलीह—'हमरा ई शब्द नहि बुझाओल गेल छल।' मजदूर कहलक—'मोबाइल लेबाक फोटो खिंचल, बादमे फोन वापस।' बूढ़ा कहलक—'पेंशन कहि अँगूठा लेल, बैंक सँ संदेश दोसर नम्बरपर गेल।' सभ बात अलग लगैत छल, मुदा पंजीमे मिलिते एकहि कथा बनैत गेल—लाभक नामपर चिन्हारिक कब्जा।

चन्ना गाछी लग राति सभा भेल। आइ पाथरपर तीन वस्तु राखल गेल—हरिहर सेवा केंद्रक पंजीक सूची, फोन-वापसी रसीदक प्रतिलिपि, आ सील कएल पेन-ड्राइवक विवरण। रमरतिया देवीक पोता दीपक आगाँ बैसल। ओ कहलसि—'दादीक नामसँ जँ फोन चलल, तँ दादीक आत्मा नहि, हुनकर नाम गुलाम बनाओल गेल।' एहि वाक्यसँ गाछीक छाह लम्बा भऽ गेल।

कारी भूत ओहि राति बहुत देर धरि पाथरक चारू कात घुमैत रहल। उज्जर प्रेत पेन-ड्राइवपर पड़ल दीपक उजासमे स्थिर रहल। बच्चा सभ केँ लगल जे पुरान भूत सभ नयका यंत्रक भाषा सीखि रहल अछि। गोहि नदीमे दूर निश्चल छल; कदाचित् ओकरा बुझाइ पड़ल जे आब देहक बाद नाम, नामक बाद अँगूठा, अँगूठाक बाद आवाज, आ आवाजक बाद अंकीय

छाह तक खोजायल जाएत। साँझक लाल इजोत दरबाजाक चौखटपर अटकल छल; बाहर नामक कतार बढ़ैत गेल, भीतर प्रत्येक कागच अपन अलग बोझ धारण कएने छल।

सत्यव्रत मेहता अन्तिम रेखा खिंचलनि—सेवा केंद्र → सिम पंजी → फोन-वापसी → ट्रस्ट खाता → धमकी संदेश → ध्रुवेशक सहायक। मीरा ओहि रेखाक नीचे लिखलीह—‘पुष्टि बाकी, मुदा बाट स्पष्ट।’ अनन्या अगिला पन्ना खोलि शीर्षक लिखलक—‘फोनक भीतरक चेहरा।’ आरुणि जोड़लक—‘जखन उपकरण जबाब देत, तखन छाह बोलत।’

हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा खुलि गेल छल, मुदा दरबाजाक भीतर जे चेहरा सभ फोटोमे कैद छल, ओ एखन अन्हारमे रहल। भोर होएबाक पहिनहि चन्ना गाछीक जड़ि लग ओसक बून्द चमकल—जेना गाछी कहि रहल हो, ‘दरबाजा खुलल, आब भीतरक चेहरा पढ़ू। ’

लोकगीत: सेवा-दरबाजाक राति

लोकधुन: दरबाजा-गीत

खोलू हे दरबाजा, भीतरक चेहरा पढ़ाउ हे,
सेवाक नामपर चोरायल गरिमा घुराउ हे।

दिनमे सेवा बाँटल, राति हिसाब छुपायल,
अँगूठा, सिम, फोटो सँ मृतक फेर चलायल।
पेन-ड्राइवक भीतर बूढ़क चेहरा बन्द,
हरिहर नामक छाह लम्बा, गहरा बन्ध।
पुरान भूत नयका यंत्रक भाषा सीखलक,

गोहि दूरसँ देखलक, नाम ओकरा बीच पहुँचल।
सेवा केंद्र सँ ट्रस्ट, संदेश सँ सहायक,
रेखाक अन्त ध्रुवेश—एखन पुष्टि आवश्यक।
दरबाजा खुलल, भीतरक चेहरा पढ़ाउ,

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—निष्कर्ष—वैकल्पिक परिभाषासभ: “दण्डी पुरुषकेँ आनू” मे दण्ड सम्बन्धानुयोगिताकेँ सीमित करैत, तेँ विशेषण। निष्कर्ष—वैकल्पिक परिभाषासभ।]

अध्याय १८३

फोनक भीतरक चेहरा

फोनक भीतर चेहरा नुकायल रहै छै, मुदा साँसक चाल नहि नुकाइ छै।

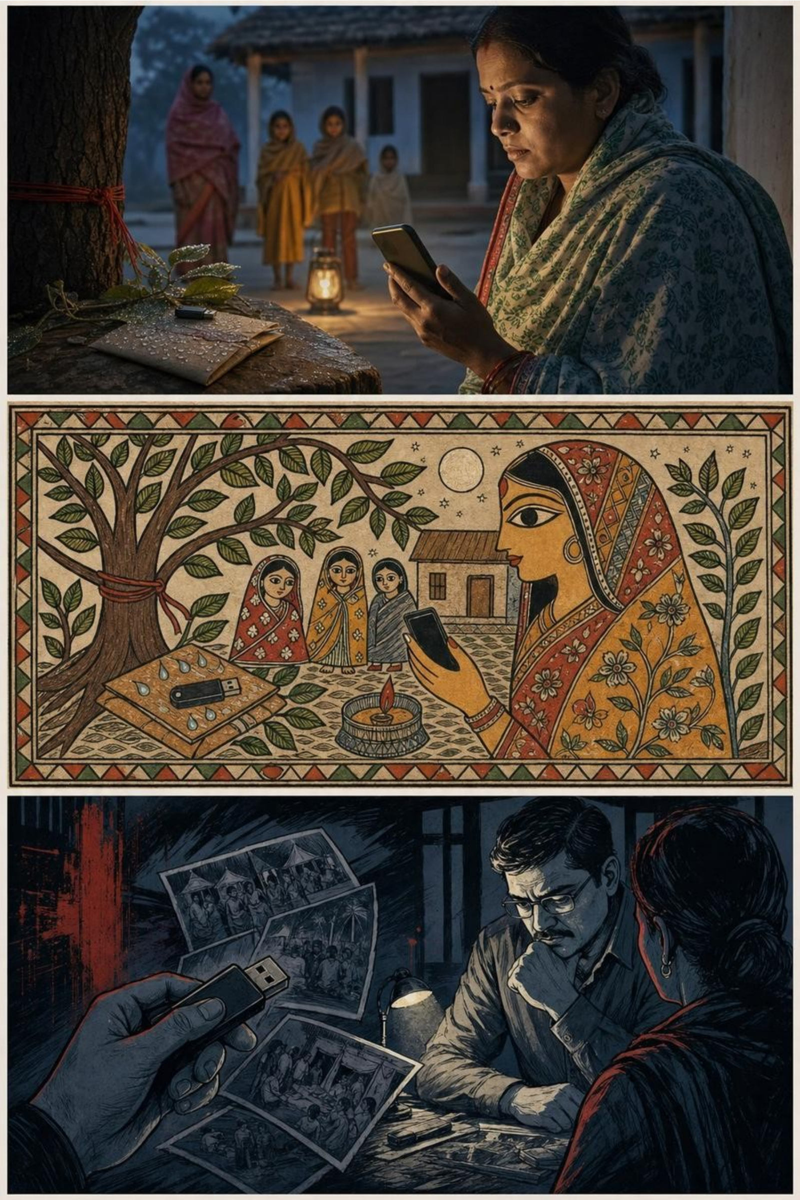

अध्यायारम्भ लोकगीत: दादीक नामक दीप

लोकधुन: दादी-पोती आँगन गीत

घेरू गे पोती, दादीकेँ घेरि कऽ बैसू गे,
झुर्री-झुर्रीमे लिखल मिथिला बाँचू गे।

दादीक चेहरा झुर्रीमे मिथिलाक नक्शा,
नाम हुनकर दीप जकाँ, प्रेम हुनकर रक्षा।
पोता-पोती घेरा दऽ कंठक कथा सुनत,
केओ हुनकर नाम चोरत तँ गाम एकजुट बनत।

सुप, डलिया, पुरनका गीत—सभ गवाही देत,
दादीक हँसीक उजास अन्हार काटि देत।
आँगनमे तुलसी कहै—स्मृति अमर रहै,
जकरा घरक लोक पुकारै, ओकर नाम नहि बहै।

सुप-डलिया-पुरना गीत—सभ हुनकर साखी,
नाम चोरौनिहारसँ गाम भरि रखवारी राखी।
तुलसी-चौरा कहए—स्मृति अमर रहतै,
जकरा घर पुकारै छै, से कतँ बहतै।

❖

दादीक चेहरा तमाशा नहि छै। झुर्रीमे घरक बरख, कंठमे कुलक गीत आ नाममे पोता-पोतीक भरोसा बसै छै। ओहि नामसँ नकली स्वर बनौनाइ केवल तकनीकक अपराध नहि—सम्बन्धक देहरी तोड़नाइ छै।

प्रमाण देखबाक सेहो मर्यादा होइ छै। पीड़ितक अनुमति बिना चेहरा पसारब न्याय नहि, फेर एक बेरक अपमान होइ छै। तेँ मीरा कहै छै—देखू, जोड़ू, लिखू; मुदा ककरो दुखकेँ तमाशा नहि बनाउ।

हाथ भेटल, हँसी भेटल, पंखाक चाल भेटल, साँसक लय भेटल। पूरा चेहरा एखन नहि खुलल, तैयो अन्हार पहिनका जेकाँ घन नहि रहल। लोक जखन प्रमाणपर पहरा दै छै, तँ फोनक भीतर नुकायल चेहरा सेहो धीरे-धीरे अपन आकार बतबैत जाइए।

हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा खुललाक बाद जे डिजिटल छाया भेटल छल, ओकर अगिला साँस पेन-ड्राइवक भीतर बन्द छल। चन्ना गाछीक जड़ि लग राति भरि राखल पेन-ड्राइवक सील सबेरे तक जस-के-तस रहल। ओसक बून्द सीलक कागचपर मोती जेकाँ जमल छल, मुदा बच्चा सभ ओकरा छूबाक साहस नहि कएलक। मीरा रातिमे तीन बेर उठि कऽ देखलनि जे कोनो हाथ अन्हारसँ बाहर तँ नहि आयल। हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा खुलि गेल छल, मुदा असली दरबाजा आब ओ छोट कारी यन्त्र छल, जकर भीतर शिविरक फोटो आ कदाचित् अपराधक चेहरा छुपल छल।

सूरज निकललाक बाद साइबर शाखाक अधिकारी पुनः आयल। ओकर नाम विनीत झा छल, मुदा अनन्या ओकरा पहिल प्रश्न नामसँ नहि, पद्धतिसँ केलक—‘अहाँ ई यन्त्र खोलब, तँ भीतरक बात बदलि नहि जाएत?’ विनीत झा क्षण भरि चकित भेल, फेर गंभीर भऽ गेल। ‘पहिने प्रति बनत, मूल सुरक्षित रहत, समय लिखल जाएत, गवाहक हस्ताक्षर होएत। जे देखब, ओकर क्रम नहि तोड़ब।’ आरुणि रजिस्टरमे लिखलक—‘सत्य खोलबाक विधियो सत्यक हिस्सा अछि।’

चन्ना गाछीक तले अस्थायी मेज लगाओल गेल। मेजपर सफेद कपड़ा, ओकर ऊपर सील, कैमरा, खाली लिफाफा, प्रतिलिपि-पत्र, आ सत्यव्रत मेहताक पुरान चश्मा। भीड़केँ दूर राखल गेल। मीरा फेर नियम पढ़ौलथि—‘चित्र देखब, तमाशा नहि बनायब। जकर चेहरा भेटत, ओकर मान राखब। जँ अपराधी भेटत, तँ ओकरो विरुद्ध कागच बोलत, भीड़ नहि।’ लोक चुप भेल। अंकीय वस्तु पहिल बेर लोक-अदालतमे एतेक सावधानीसँ प्रवेश कऽ रहल छल। सफेद कपड़ापर ओसक नमी एखन धरि छल; कैमरा लगक लोहाँ ठण्ढ छल, आ पुरान चश्माक काँचमे भोरक इजोत काँपि रहल छल।

सील टूटल। पेन-ड्राइव छोट छल, मुदा ओकर टूटल कागचसँ जे आवाज निकलल, से कतेको बरखक मौन टूटबाक आवाज जेकाँ सुनाइ पड़ल। विनीत झा अपन यन्त्रमे ओकर प्रति बनौलनि। स्क्रीनपर फोल्डर खुलल—‘शिविर फोटो’, ‘दस्तावेज’, ‘लाभुक सूची’, ‘वापसी फोन’, ‘विशेष’। ‘विशेष’ शब्द देखिते सत्यव्रत मेहताक कपारपर रेखा पड़ल। अपराध अपन सभसँ अन्हार चीज केँ प्रायः एहनहि साधारण नाम दैत अछि।

पहिल फोल्डरमे सेवा-शिविरक चित्र छल। झंडा, बैनर, बटुकनाथ हरिहरनक चित्र, मुस्कान, कुर्सी, कागच, अँगूठा लगबैत बूढ़ हाथ, फोटो खिंचबैत स्त्री, मोबाइल पकड़ल युवक, आ पाछाँ मेजपर बैसल कर्मचारी। पहिल नजरिमे सभ कल्याणकारी दृश्य जेकाँ बुझाइत। मुदा देविका कहलीह—'जँ चित्र बहुत सजल हो, तँ किनार देखू।' ओ किनार बढ़ा कऽ देखल गेल। ओतय बिशम्भर ठाढ़ छल, आधा चेहरा, मुदा हाथमे वैह रसीदक गठरी।

दोसर चित्रमे रमरतिया देवी देखाइ देलीह। हुनकर आँखि कैमरा दिस नहि, मेजपर राखल कागच दिस छल। हुनका हाथमे मोबाइल पकड़ाएल छल, मुदा अँगुरी ओकरा पकड़ेबाक ढंग नहि जनैत छल। हुनकर कातमे एक युवक झुकि कऽ किछु बुझा रहल छल। फोटो बढ़ाओल गेल तँ युवकक गलापर नील पट्टा देखाइ देलक—ओहि पट्टापर हरिहर सेवा केंद्रक छोट चिन्ह। दीपक, रमरतिया देवीक पोता, चुपचाप उठि गेल आ दूर ठाढ़ भऽ गेल। केओ ओकरा रोकलक नहि। किछु दुःख भीड़मे नहि, एकान्तमे साँस लैत अछि।

आरुणि समय-मोहर पढ़लक। फोटो जहिया खिंचल, ओहि दिन बैंक-संदेशक पहिल प्रविष्टि भेटल छल। माधवक बहीमे सेहो ओहि दिन सिम सक्रियता लिखल छल। तीन अलग स्रोत एक समयपर मिलि गेल। सत्यव्रत मेहता धीरेसँ कहलनि—'जखन कागच, समय आ चित्र एकहि ठाम भेटत, तखन झूठक पएर छोट भऽ जाइत अछि।' अनन्या एहि वाक्यक नीचाँ तीन रेखा खिंचलक।

तेसर फोल्डर 'वापसी फोन' खुलल। एहिमे लोकक हाथमे फोन देबाक चित्रक बाद दोसर चित्र छल—ओही फोन ककरो दोसरक हाथमे। कतेको ठाम बूढ़ लोक बाहर जाइत देखाइत, आ पाछाँ मेज लग बैसल युवक फोनक डब्बा फेर समेटैत। एक विडियो सेहो छल। आवाज धुँधला, मुदा शब्द साफ भऽ रहल छल—'बस फोटो भऽ गेल, आब फोन जमा करू, बादमे देल जाएत।' भीड़मे स्त्री सभक मुँहसँ एकसाथ साँस निकलल। कतेको कैँ अपन दिन मोन आबि गेल।

मीरा विडियो तुरन्त रोकेलथि। 'जे लोक एहिमे अछि, ओकर अनुमति बिनु सार्वजनिक नहि करब,' ओ कहलीह। 'हम देखब प्रमाण लेल, न कि अपमान लेल।' एहिपर गाँवक एक युवक, जे एखन धरि मोबाइल निकालि रेकॉर्ड करय चाहैत छल, धीरेसँ फोन जेबमे राखि देलक। चन्ना गाछीक अदालत सीख रहल छल जे सत्यक नामपर केओ नव अन्याय नहि होए। समान स्याहीक गन्ध आ एके ढंगक टिक-चिह्न देखिते देविकाक अँगुरी कागचपर अटकि गेली; ओकरा बुझायल जे झूठ सभसँ पहिने अपन आदत छोड़ि जाइ छै।

'

दस्तावेज' फोल्डरमे स्कैन कएल प्रपत्र सभ छल। अनेक प्रपत्रपर समान हस्तलेख, समान टिक-चिह्न, समान गलती। विधवा-लाभक प्रपत्रमे 'विवाहित'पर निशान, बूढ़ पेंशनक प्रपत्रमे बालकक फोटो, छात्रवृत्तिक आवेदनमे किसानक खाता। देविका कहलीह—'ई भूल नहि, जल्दीमे बनाओल नकल अछि।' विनीत झा जोड़लनि—'जँ मूल कागच भेटत, तँ लिखावट-जाँच होएत।' सत्यव्रत मेहता कहलनि—'मूल कागच सेवा केंद्रक पेटमे अछि; आब ओकरा डकार रोकबाक अवसर नहि देब।'

सभसँ कठिन क्षण 'विशेष' फोल्डर खुललाक बाद आयल। ओकर भीतर किछु ध्वनि-संदेश, किछु नम्बरक सूची, आ दूटा छोट विडियो छल। पहिल ध्वनि-संदेशमे ककरो आवाज पुलिसक नाम लैत धमकी दैत छल—'तुरन्त पैसा भेजू, नहि तँ गिरफ्तारी।' ओही आवाजक पृष्ठभूमिमे बैनरक पोलक चरमराहट जेकाँ आवाज छल। आरुणि चौंकल—'ई आवाज सेवा केंद्रक बरामदाक पंखाक जेकाँ अछि।' नरहरी काका, जे दूर बैसल छल, माथ उठा कऽ कहलसि—'हमर पंखा एहनहि बोलैत अछि।'

दोसर ध्वनि-संदेशमे एक बुजुर्ग स्त्री रोइत कहैत छलथि—'हम पुलिससँ डरैत छी, हमरा छोड़ि दिअ।' ओ आवाज सुनि सभ स्थिर भऽ गेल। ई कोनो अजनबी आवाज नहि छल। गामक कातवाली टोलेक सोमरी काकी छलथि, जे बीते मास दू दिन घरसँ बाहर नहि निकललीह। हुनकर बेटा कहैत रहल जे ओ बीमार छथि। आब बुझाइ पड़ल, डरक बीमारी शरीरमे नहि, फोनक भीतर उतारल गेल छल।

मीरा तुरन्त सोमरी काकीक घर लोक पठौलथि, मुदा कहलनि—'बिनु भीड़। केवल दू स्त्री जाउ, पूछू, दबाव नहि।' एहि आदेशसँ फेर सभकेँ बुझाइ देलक जे गवाही केना लैत अछि—तोड़ि कऽ नहि, सहारा दऽ कऽ। देविका लिखलक—'डरक आवाज सेहो अनुमति माँगैत अछि।'

दोसर विडियोमे चेहरा साफ नहि छल, मुदा एक हाथ बार-बार देखाइत छल—लम्बा नह, कलाईपर कारी धागा, आ अंगूठीक पास हलुक जख्म। ओ हाथ की-बोर्डपर नम्बर टाइप करैत, फेर फोनक स्क्रीन दोसर कैमरा दिस करैत। विनीत झा चित्र रोकि कऽ कहलनि—'चेहरा धुँधला अछि, मुदा हाथ गवाह अछि।' सत्यव्रत मेहता चन्द्रपालक पुरान सभा-फोटो निकाललनि। ओतय ध्रुवेशक सहायकक हाथमे वैह कारी धागा आ वैह जख्मक निशान देखाइ देलक। ध्वनि फेर चलिते पंखाक किरकिराहट खाली आवाज नहि रहल; कमरामे बैसल प्रत्येक लोकक देहमे ओहि रातिक घुटन घुरि आयल।

अनन्याक रजिस्टर काँपि गेल। ई पहिल बेर छल जखन अपराधक चेहरा पूर्ण नहि,पर हाथ सोझाँ आयल। ओ लिखलक—'कखनो-कखनो चेहरा झूठ बाजैत अछि, हाथ सच छोड़ि जाइत अछि।' आरुणि जोड़लक—'हस्ताक्षर, अँगूठा, हाथ—अपराध सदैव हाथसँ गुजरैत अछि।' चन्ना गाछीक पात सभ अकारण हिलल, जेना ओहि वाक्यक पुष्टि करैत हो।

बिशम्भरक लोक सभ दूरसँ देखैत छल। हुनका सभक चेहरामे बेचैनी छल। भीड़ बढ़त तँ प्रमाण बिगड़ि सकैत छल, भीड़ घटत तँ डर फेर चढ़ि सकैत छल। मीरा बीचक बाट चुनलीह—प्रत्येक वस्तुक सूची, प्रत्येक दृश्यक संक्षिप्त विवरण, प्रत्येक गवाहक अलग बयान। 'उत्साहसँ सत्य नहि बाँचत,' ओ कहलीह, 'अनुशासनसँ बाँचत।' एहिपर बच्चा सभ अपन-अपन पन्ना सम्हारलक।

साँझ होइत-होइत सोमरी काकीक पहिल वाक्य आयल। ओ कहलीह—'फोनपर जे पुलिस बोलल, ओकरा पाछाँ केओ हँसि रहल छल।' ई पंक्ति सुनिते विनीत झा फेर ध्वनि-संदेश चलौलनि। सचमुच धमकीक बाद बहुत हलुक हँसी छल, जे पहिने केओ नहि सुनल छल। नरहरी काका ओ हँसी सुनि काँपि उठल—'ई ध्रुवेशक सहायक नहि, ई शहरिया बाबू अछि। रातिमे जखन ओ केंद्रपर अबैत छल, एहनहि हँसैत छल।'

शहरिया बाबूक चेहरा एखन नहि भेटल, मुदा ओकर हँसी भेटि गेल। कथा एक नव दरबाजापर आबि ठाढ़ भेल। चेहरा धुँधला, हाथ मिलैत, आवाज परदा पाछाँ, हँसी परिचित, पंखाक चरमराहट सेवा केंद्रक। गोहिक अंकीय दाँत आब केवल संदेशमे नहि, कमराक हवा, पंखाक आवाज, फोटोकेँ किनार, आ हँसीक बचे-खुचे कणमे पकड़ायल छल।

रातिमे चन्ना गाछी लग आइ पेन-ड्राइव नहि, ओकर प्रतिलिपिक सूची राखल गेल। मूल सील भऽ कऽ सुरक्षित थैलामे गेल। दीपक अपन दादीक फोटो आगाँ राखलक, मुदा ओकरा घूरि नहि देखलक। ओ कहलक—'आइ दादीक चेहरा नहि, दादीक नामक चोरी देखलहुँ।' मीरा ओकर कंधापर हाथ रखलीह। 'चोरी भेटल अछि,' ओ कहलीह, 'अब चोरक बाट भेटत।' साँझक नील इजोत थैलाक सीलपर पड़ैत छल, आ दीपकक नह फोटो-कागचक किनारपर टिकि कऽ फेर हटि जाइत छल—जेना स्मृति आ प्रमाणक बीच दूरी नापि रहल हो।

कारी भूत आइ गाछीक पश्चिम दिस बैसल रहल। उज्जर प्रेत पेन-ड्राइवक विवरण-पत्रपर झुकि रहल। बूढ़बा भूत धीमा स्वरमे कहलसि—'पहिने नाम मिटाओल जाइत छल। आब नामसँ आवाज बनाओल जाइत अछि। जे आवाज बनाओत, ओकर साँस खोजू।' बच्चा सभ एहि वाक्यकेँ कथा नहि, निर्देश मानलक।

ई एहि ठाम समाप्त भेल जे फोनक भीतरक चेहरा पूरा नहि खुलल, मुदा ओकर हाथ, हँसी, पंखा, समय, आ पीड़ितक आवाज एकहि रेखापर आबि गेल। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखलक—‘आवाजक नकाब। ’ चन्ना गाछीक जड़ि लग ओस फेर चमकल; एहि बेर ओस जेकाँ नहि, जाँचक दीप जेकाँ।

लोकगीत: दादीक चेहरा नहि, नामक चोरी

लोकधुन: पोता-विलाप

ने होएत हे तमाशा, दादीक चेहरा तमाशा ने होएत हे,
नामक चोरी एक दिन न्याय कहि उठत हे।

दीपक फोटो राखि कहलक—दादीकेँ नहि ताकब,
आइ दादीक नामक चोरीक निशान आँकब।
फोनक भीतर हाथ, हँसी, पंखाक चाल,
साँसक लय बचि गेल, चाहे नुकायल गाल।
पहिने नाम मेटाओल, आब नामसँ स्वर बनल,

बूढ़क भरोसा चोरि नकली बेटा जनल।
मीरा कंधा धरली—चोरी भेटल, चोरक बाट भेटत,
पोता नोर रोकि सूचीपर पहरा देत।
दादी, तोहर चेहरा तमाशा नहि होएत,
तोहर नामक चोरी एक दिन न्याय कहएत।

आइ हुनकर नामक चोरीक निशान आँकब।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—विशेष—लक्षणक औचित्य: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—कारण कपि-संयोगक अधिकरणसँ अभेद—अर्थात् ताहिसँ भिन्नताक अभाव—सम्बन्धी यथार्थ बोध सम्भव अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। विशेष-लक्षणक औचित्य।]

अध्याय १८४

आवाजक नकाब

आवाजक नकाब कपड़ाक नहि— अभ्यासक होइ छै, आ अभ्यासक शैली पकड़ा जाइ छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: असल स्वर चिन्हू

लोकधुन: विदापत पदक कोमल लय

सुनू हे धीरे, आवाजक भीतर सुनू हे,
हजार काँच-स्वर बीच असल प्राण गुनू हे।

काँचक भीतर आवाज बहुत, असल एके प्राण,
नेहक बोलि हृदय चिन्है, छलक टूटै तान।
माय जेना बौआकेँ निन्नमे सेहो बुझै,
साँचक स्वरक धड़कन झूठक नकलसँ अलगै।

पहिने प्रश्न, फेर विश्वास, संगमे लोक रहू,
डरक फोनक आगाँ अपन घरक नाम कहू।
स्वरक मर्यादा राखि चलू, कंठ रहय स्वतन्त्र,
मानुखक साँचक बोली सभसँ पैघ मंत्र।

माय निन्नोमे बौआक करोट बुझि लइए,
नेहक कान नकली सुर झट पकड़ि लइए।
पहिने प्रश्न, तखन भरोस, संगमे परिवार,
साँचक स्वरक धड़कन थिक सभसँ पैघ हथियार।

❖

गाछीक पात कहैत छै—कान जल्दबाजी करय तँ झूठो साँच जेना लागए; मुदा प्रश्न धीरे-धीरे रखल जाए तँ प्रतिध्वनि अपन मूल खोजि लइए। कोन शब्दपर साँस अटकल, कोन हँसीक पाछाँ धातुक खनक उठल, कोन पंखाक खट-खट पुरान कमरा मोन पाड़लक—ई सभ छोट चिन्ह मिलि कऽ आवाजक नकाबक सिलाइ खोलैत जाइए।

चोरायल नाम जकाँ चोरायल स्वर सेहो लोकक अस्तित्वपर हाथ देइ छै। माय अपन नेनीक करोट निन्नमे बुझि लइए; बूढ़ लोक अपन बेटाक आवाज भीड़मे चिन्हि लइए। तेँ मशीन जँ कण्ठ नकल करए, तँ लोक-स्मृति ओकर पहिल अदालत बनैत छै—मुदा ई अदालत तामसमे नहि, क्रम आ साक्ष्यमे चलैत छै।

नकाबक धागा हाथमे आबि जाए तँ चेहरा तुरन्त नहि भेटैत। कखनो केवल एक “पहिने”, एक दबाओल हँसी, एक पंखाक चरमराहट, एक मौन “सर” बाट देखबैत छै। साँचक चाल धीमा छै, मुदा ओहि धीमापनमे मर्यादा छै; भीड़ जकड़ि सकैत छै, प्रमाण बाँधैत छै।

आ एहि गाछीमे आवाज आब डरक औजार नै रहत। जे गला चोरायल, ओकर कथा लिखल जाएत; जे अभ्यास छलक लेल भेल, ओकर क्रम खुलत; जे मौन अपराधक कात ठाढ़ रहल, ओकरो रसीद बनत। नकाब उतरैत-उतरैत असल चेहरा सामने नै—सोझाँ आबि जाएत, आ लोक फेर अपनहि आवाजपर भरोसा करब सीखत।

सबेरे चन्ना गाछीक जड़ि लग जे सूची राखल गेल छल, ओकर ऊपर ओस नहि, जेना छोट-छोट कान उगि आएल छल। काल्हि पेन-ड्राइवक चित्र सँ हाथ, हँसी, पंखा आ अधखुलल चेहरा भेटल छल; आइ आवाजक भीतर छिपल नकाब खोलबाक दिन छल। अनन्या अपन रजिस्टरक नब पन्नापर राति लिखल शीर्षक फेर साफ कएलक—‘आवाजक नकाब’। ओकरा लगल जे ई शीर्षक कागचपर नहि, गाछीक पातपर पहिनेसँ लिखल छल।

विनीत झा पहिनेहि चेतावनी देलक—‘आवाजक मिलान अदालतमे अन्तिम प्रमाण नहि,पर बाट देखाबयवला दीप अवश्य बनि सकैत अछि। कान भावुक होइत अछि, मशीन सेहो गलती कऽ सकैत अछि। तेँ आवाजकेँ असगर नहि, समय, स्थान, फोन, चित्र, आ गवाहीक संग पढ़ब।’ मीरा तुरन्त एहि वाक्यक नीचाँ लिखलीह—‘कानक न्याय भीड़ नहि करत; क्रम करत।’ भीड़ जे बाहर जमा छल, ओकरा ई बात सुनाओल गेल। लोक सभ बुझि रहल छल जे गोहिक नब रूप कानमे पैसि कऽ डर पैदा करैत अछि।

पहिल ध्वनि-संदेश सोमरी काकीक छल। फोनपर कठोर आवाज कहैत छल—‘अहाँक विरुद्ध गिरफ्तारी-पत्र जारी भेल अछि; फोन काटब तँ गिरफ्तारी होएत।’ वाक्य हिन्दीमे छल, मुदा ओकर भीतर मैथिलीक कातर लय छिपल छल—‘जारी’मे ‘ज’ कनी नरम, ‘गिरफ्तारी’मे ‘र’ कनी अधिक लम्बा। विनीत झा आवाज धीमा कऽ देलक। पाछाँ बहुत हलुक हँसी। काल्हि जे हँसी शहरिया बाबूक बताओल गेल छल, आइ ओकरा अलग कऽ सुनाओल गेल। नरहरी काका आँखि मूँदि लेलथि। ‘ई रातिक हँसी अछि,’ ओ कहलथि, ‘जखन ओ लोक फाइल उठा कऽ ऊपरक कोठरीमे जाइत छल, तखन एहनहि हँसी सुनाइत।’

सत्यव्रत मेहता नरहरीसँ पूछलनि—‘हँसीक संग ककर बोली मोन अछि?’ नरहरी कहलक—‘ओ लोक कम बोलैत छल। बस कहैत—शीघ्र करू, समय कम अछि। आ जखन बिशम्भर डरैत, तँ ओ हँसि कहैत—गामक लोक सभ बिसरि जाएत।’ एहि ‘भुला जाएत’

शब्दपर दीपकक मुठ्ठी बन्हा गेल। रमरतिया देवीक चेहरा ओकर आँखिमे चमकल। जकरा सभ भुला देबाक योजना छल, ओहि सभक पोता-पोती आइ आवाज बचा रहल छल।

ध्रुवेशक सहायकक आवाजक नमूना खोजबाक काज कठिन छल। चेहरा धुँधला, हाथ मिलल,पर आवाज कतय? तखन देविका कैँ सेवा-समारोहक पुरान विडियो मोन आयल। ओहि विडियोमे मंचक किनारपर एक युवक माइक सम्हारैत कहैत छल—‘लाभुक सभ लाइनमे आबू, अँगूठा बादमे, पहिने फोटो।’ विनीत झा विडियोक ध्वनि अलग केलक। ओही आवाजमे ‘पहिने’ शब्दक ‘हि’ अजीब ढंगसँ चढ़ैत छल। धमकी-संदेशमे सेहो एक ठाम पाछाँ सँ आवाज आयल—‘पहिने काटू नहि।’ दुनू ‘पहिने’ एक-दोसराक कान पकड़ि रहल छल।

आरुणि लिखलक—‘शब्दक रूप बदलैत अछि, आदत नहि।’ सत्यव्रत मेहता ओकरा रोकि कहलनि—‘एहिमे जोड़ू—आदत प्रमाण नहि,पर संकेत।’ बच्चा सभकैँ ई अनुशासन आब नीक लगय लागल छल। कथा रोमांचक हो सकैत छल, मुदा न्याय रोमांच सँ नहि बनैत; न्याय सावधान पंक्ति सँ बनैत अछि।

आवाजक तेसर टुकड़ा ‘विशेष’ फोल्डरक भीतर भेटल। फाइलक नाम छल—‘री-चेक’। ओकरा खोलिते छोट-छोट अभ्यास सुनाइ देलक—‘हम पुलिस अधिकारी बाजि रहल छी’, ‘अहाँक खाता अपराधमे प्रयोग भेल अछि’, ‘विडियो कॉलपर रहू’, ‘ककरो नहि कहू’। एकहि वाक्य अलग-अलग गला सँ बोलल गेल छल—कखनो मोट, कखनो पातर, कखनो थाकल, कखनो कड़ा। विनीत झा कहलक—‘ई अभ्यास हो सकैत अछि, अथवा नकली आवाज बनाबयक नमूना। ई बहुत महत्त्वपूर्ण अछि।’ चन्ना गाछीक पात सभ अचानक थरथरा उठल। पहिने नाम काटल जाइत छल; आब नामक गला बनाओल जाइत छल।

मीरा केर चेहरा कठोर भऽ गेल। ‘जकर आवाज चुरायल गेल, ओकर अनुमति छल?’ ओ पूछलीह। कियो उत्तर नहि देलक। सोमरी काकी धीरेसँ कहलथि—‘शिविरमे हमरा सभसँ कहल गेल छल—बोलू, “हम लाभ पाबि गेलहुँ।” ओ लोक तीन बेर बोलबौलनि। हम बुझलहुँ फोटो लेल।’ एहि वाक्यपर भीड़मे हलचल भेल। कतेको बूढ़ स्त्री, कतेको किसान, कतेको विधवा कहय लगल—‘हमरो कहल गेल छल।’ आवाजक चोरी नामक चोरी सँ कम नहि छल।

विनीत झा सभकैँ शान्त करौलनि। ओ कहलनि—‘जे-जे लोक सँ बोलबाओल गेल छल, हुनकर नाम अलग लिखू। कोनो कैँ फेर रिकॉर्ड करबाक दबाव नहि। जकर इच्छा हो, ओ मात्र घटना बताए।’ मीरा एहि नियमकैँ दोहरौलथि। बच्चा सभ अलग पन्ना खोललक—‘स्वर-गवाही’। पहिल नाम सोमरी काकी। दोसर कमला देवी। तेसर एक बुजुर्ग किसान—रामसागर

यादव, जे कहैत छलाह जे हुनक आवाजसँ बैंकमे कोनो पुष्टि भेल हो सकैत अछि। गाछी अब ध्वनि-कचहरी बनि गेल।

तेहि बीच बिशम्भर चुपचाप पहुँचि गेल। ओ भीड़क पाछाँ ठाढ़ रहल, मुदा ओकर कारी धागाबला हाथ दूरसँ चिन्हल गेल। अनन्या ओकरा देखलक,पर चिचिआएल नहि। ओ मीरा लग जा कऽ धीरेसँ कहल—'हाथ आयल अछि।' मीरा पाछाँ नहि घुरलीह। ओ बस घोषणा केलथि—'जकरा अपनापर शंका अछि, ओ भागए नहि। गवाहीक ठामपर रहला सँ दोष कम नहि,पर सच बोललासँ नाम बचि सकैत अछि।' बिशम्भरक चेहरा पीअर पड़ि गेल।

बिशम्भर आगाँ नहि आयल। मुदा ओकर फोन बजल। आवाज बहुत हलुक छल,पर विनीतक यंत्र एखन चलैत छल। बिशम्भर फोन कानपर लगौने बिनु काटय चाहलक, मुदा एक शब्द निकलि गेल—'सर'। एहि 'सर'क पाछाँ जे करारी फुसफुसाहट छल, विनीत झट पकड़ि लेलनि। ओ कॉलक नम्बर नहि पढ़ि सकल, मुदा समय दर्ज भऽ गेल। बिशम्भर बाहर दिस सरकल। आरुणि पन्नापर लिखलक—'शंका उपस्थित, भागल नहि; फोन आयल, समय दर्ज।' अनन्या जोड़लक—'डरक भी अपन रसीद होइत अछि।'

नरहरी काका तखन एक और बात कहलक। 'शहरिया बाबू जखन अबैत छल, ओ पंखा बन्द कराबैत नहि। कहैत—आवाज चलैत रहए। कैमरामे पंखाक आवाज रहल तँ कोनो चिन्हारि नहि सकत।' विनीत झा तुरन्त पेन-ड्राइवक ध्वनिमे पंखाक चरमराहट अलग केलक। सेवा केंद्रक छतपर जे पुरान पंखा छल, ओकर आवाजमे तीन बेर समान अटकाव—घुर्र, घुर्र, खट। धमकी-संदेशक पाछाँ सेहो वैह खट। फोटोमे जे कमरा देखाइत छल, ओ सेवा केंद्रक भीतरक नहि,पर पंखा वैह प्रकारक। 'कतहु पंखा बदली कऽ लगाओल गेल?' देविका पूछलीह। नरहरी माथ हिलेलक—'तीन मास पूर्व पुरान पंखा निकालि शहर लऽ गेल छल। कहल गेल—मरम्मत।'

एहि छोट सूचना सँ पूरा नक्शा बदलि गेल। यदि पंखा सेवा केंद्रसँ शहर गेल, तखन शहरिया बाबूक कमरा सेवा केंद्रक आवाज लऽ गेल। अपराध केवल कागच नहि, ध्वनि सेहो ढोइत छल। सत्यव्रत मेहता रेखा खिंचलनि—सेवा शिविरमे स्वर-नमूना → फोन-वापसी → पंखा शहर पठाओल → धमकी-कमरा → ट्रस्ट खाता। ओ रेखा देखैत सभ स्तब्ध। गोहि जँ पानिमे शिकार घसीटैत अछि, तँ अंकीय गोहि आवाज, पंखा, फोटो आ बैंक-रसीद एक संग घसीटि रहल छल।

साँझ होए लगल। चन्ना गाछीक छाह लम्बा भेल। सोमरी काकी अपन स्वर-गवाही देलथि—‘हमरा कहल गेल छल, तीन बेर बोलू—हम प्रसन्न छी। हम प्रसन्न नहि छलहुँ, मुदा लाभ भेटत सोचि बोललहुँ।’ कमला देवी कहलीह—‘हमरा पढ़ि कऽ सुनाओल नहि गेल, बस बोलू कहल गेल।’ रामसागर यादव कहलनि—‘हमर गला सँ कोनो अनजान लोक फोनपर हमर बेटाकेँ भरोसा दियौने छल। बेटा कहलक—बाबू, अहाँक आवाज छल।’ ई सुनि भीड़मे सिहरन दौड़ि गेल। आवाज जखन देह छोड़ि ठगीक औजार बनि जाए, तखन लोक अपनहि गलापर भरोसा खोबय लागैत अछि।

कारी भूत आइ गाछीक भीतर नहि, बहुत नजदीक आबि बैसल। उज्जर प्रेत आवाजक सूचीपर झुकल। बूढ़बा भूत कहलक—‘पुरान कालमे डाइन लोकक आवाज बदलि नेनाकेँ बहकबैत छल। आब मनुक्ख मशीनसँ आवाज बदलि मनुक्खकेँ लूटैत अछि। डाइनक कथा लोक मोन रखलक; मशीनक डाइन केँ सूचीमे बाँधू।’ बच्चा सभ एहि वाक्यपर ‘मशीनक डाइन’ लिखि देलक, मुदा मीरा हँसली नहि। ई रूपक नहि, सावधानी छल।

राति पड़िते बिशम्भर अन्ततः आगाँ आयल। ओकर आवाज टूटल छल। ‘हम फोन उठबैत छलहुँ,पर बोलैत ओ शहरिया बाबू। ध्रुवेश बाबू कहैत छल—बस नम्बर जोड़ू, पाछाँ रहू। कतेको बेर ओ हमरा आवाजमे सेहो बोलबाक अभ्यास करौलनि।’ मीरा पूछलीह—‘शहरिया बाबूक नाम?’ बिशम्भर आँखि झुका लेलक—‘नाम पूरा नहि जनैत। ओहिठाम सभ ओकरा “मास्टर” कहैत। ध्रुवेश ओकरा “माधवेश बाबू” कहैत छल, शायद असल नाम नहि।’ सत्यव्रत मेहता तुरन्त लिखलनि—‘मास्टर/माधवेश—पुष्टि बाकी।’

बिशम्भरक स्वीकार पूर्ण नहि छल, मुदा दरार खुलि गेल। ओ अपन कारी धागाबला हाथ आगाँ कएलक। ‘ई जख्म ओहि रातिक अछि जखन फोनक डब्बा छीनैत एक बूढ़ हाथ काटि देलक।’ दीपकक आँखि फेर भरि आएल—‘दादी?’ बिशम्भर चुप। मौन उत्तर जेकाँ पड़ल। भीड़ उफनय चाहलक, मुदा मीरा हाथ उठा देलीह—‘अपराधीकेँ भीड़ नहि, गवाही पकड़ेगी।’ ई वाक्य कठिन छल,पर आवश्यक।

से ई एना भेल जे आवाजक नकाब पूरा नहि उतरलक, मुदा नकाबक धागा हाथमे आबि गेल। शहरिया बाबू ‘मास्टर’ नामसँ सोझाँ आयल, ध्रुवेशक सहायकक भूमिका अभ्यास, फोन-जोड़, आ स्वर-चोरीमे खुलल, आ पंखाक चरमराहट शहर धरि बाट देखबए लगल। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखलक—‘मास्टरक कमरा।’ आरुणि जोड़लक—‘जतय आवाज

बनल, ओतय चेहरा बचल होएत।’ चन्ना गाछीक ऊपर राति उतरि गेल, मुदा एहि बेर अन्हार बोलि रहल छल।

लोकगीत: नकली आवाजक जख्म

लोकधुन: स्वीकार-विलाप

घुराउ हे गरा, चोरायल गरा घुराउ हे,
जख्मक प्रत्येक रेखा सँ असल चेहरा देखाउ हे।

बिशम्भर नम्बर जोड़लक, शहरिया बाबू बोलल,
अभ्यासक नकाब भीतर कतेको कंठ डोलल।
कारी धागाबला हाथपर बूढ़ नखक दाग,
‘दादी *?’*पूछिते मौन बनल जहरक आग।
भीड़ उफनल, मीरा कहली—गवाही पकड़त,

क्रोध नहि, प्रमाण अपराधीक बाँह जकड़त।
‘मास्टर’, ‘माधवेश’—अधूर नामक डोर,
चरमर पंखा शहरक कमरा दिस जोर।
नकली आवाज, चोरायल गला फेर घुराउ,

मीरा कहली—क्रोध नहि, प्रमाणे बान्हत बागि।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—प्रतिआपत्तिक अस्वीकार: निर्विकल्पक विशिष्ट: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“ई व्यक्ति दण्डधारी अछि” एहन ज्ञानमे केवल दण्ड-विशेषण आ व्यक्ति-विशेष्यक निर्विकल्पक ज्ञान कारण मानल नहि जाइत अछि; कारण “ई व्यक्ति दण्डधारी अछि” स्वयं दण्डसँ विशेषित व्यक्तिक विशिष्ट ज्ञान अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। प्रतिआपत्तिक अस्वीकार: निर्विकल्पक विशिष्टज्ञानक कारण नहि।]

अध्याय १८५

मास्टरक कमरा

मास्टरक कमरा खुजि गेल, मास्टर धुँआ भऽ गेल— मुदा धुँओकेँ रस्ता चाही।

अध्यायारम्भ लोकगीत: चरमर कमरामे बिहान

लोकधुन: रेल-बटगबनीक मध्यम चाल

खोलू हे खिड़की, चरमर कमराक खोलू हे,
स्टेशनक सीटी संग भोरक सुर घोलू हे।

चरमर पंखा घूमि रहल, खिड़की खोजै भोर,
स्टेशनक सीटी कहै—खुलत अन्हारक छोर।
एकटा साँचक पग धरिते कमरा बाट बनै,
बन्द हवा बाहर निकलि गाछक गन्ध बसै।

रेल जकाँ साहस चलू, पटरी दू पर साथ,
एक पाँति न्याय लिखै, दोसर खोलै बाट।
जे कमरा छल भयक घर, चौपाल बनि जाए,
चरमर स्वर लय बनि नव जीवन गीत सुनाए।

पंखा घूमए चरमर-चरमर, ताल बनए पुरान,
एक साँचक डेग पड़िते कमरा बनए दलान।
रेलक दू पटरी जकाँ न्याय-साहस साथ,
बन्द हवामे पैसि गेल गाछ-गन्धक हाथ।

❖

चरमर पंखा.. लोक बुझै छै ई पुरान मशीनक दोष छै। मुदा जखन ओही चरमराहट धमकीक फोनमे, सेवा-केंद्रक स्मृतिमे आ शहरक कोठरीमे एके तालसँ बजै छै, तँ आवाज पगचिन्ह बनि जाइए। साँच एना नै दौड़ै छै; धीरे-धीरे एक ध्वनिसँ दोसर ठामक दूरी नापैत जाइए।

नाम.. माधवेश कि मधवेश.. एक मात्रा काटि लोक अपन देह नुकाबय चाहै छै। मुदा नम्बर, भाड़ा-बही, रसीद, पटरीक समय आ कागचपर पड़ल हाथक चाल एक-दोसराकेँ चिन्हि लैत छै। अपराध नाम छोट करै छै, मुदा अपन छाह छोट नै कऽ पबै छै।

कमरा भीतर दादीक स्वर, किसानक भरोसा, पुलिसक भय आ बैंकक दबाव अलग-अलग पर्चीमे बँटल छै। ई केवल आवाजक अभ्यास नै; ई सम्बन्धक देह काटि बाजारमे बेचबाक विधि छै। तेँ प्रमाण छूबयसँ पहिने मर्यादा चाही, आ पीड़ितक आवाज सुनयसँ पहिने ओकर अनुमति।

पटरी.. ट्रेन गुजरै छै, कमरा काँपै छै, पंखा बिना घुमने खट करै छै। समय-सूची, लाल सूत, सिमक खोल आ नन्ह-नन्ह नाम-पट्टी सभ मिलि कहै छै—घर पकड़ायल, मालिक एखन बाटमे छै। मुदा लोक जखन अनुमानकेँ बाहर राखि दर्ज प्रमाणक संग चलै छै, तँ धुँआक रस्तो धीरे-धीरे देखाइ पड़ए लगै छै।

आवाजक नकाबसँ हाथमे आयल चरमराहटक धागा शहरक पटरी दिस तानल रहल। राति भरि चन्ना गाछीक ऊपर पंखाक चरमराहट अटकल रहल। गाछीमे कोनो पंखा नहि छल, तइयो पात सभ घुर्र-घुर्र-खट जेकाँ हिलैत रहल। काल्हि आवाजक नकाबक धागा हाथमे आबि गेल छल—'मास्टर', 'माधवेश', पंखा, स्वर-नमूना, फोन-जोड़, आ भयक अभ्यास। आइ ओ धागा पकड़ि कमरा धरि पहुँचबाक दिन छल। अनन्या भोरमे रजिस्टर खोलि शीर्षक लिखली—'मास्टरक कमरा'। ओ लिखिते बुझली जे ई कमरा केवल ईंटक नहि होएत; ई ओ ठाम होएत जतय लोकक आवाजक खाल उतारि बाजारक बोरामे भरल गेल।

विनीत झा पहिने आवाज फेर बजेलक। पाछाँक पंखाक तीन अटकाव—घुर्र, घुर्र, खट—सभकेँ सुनाओल गेल। नरहरी काका पएर मोड़ि बैसि गेलाह। ओ आँखि मूँदि कहलनि—'हरिहर सेवा केंद्रक पुरान पंखा एही तरहें अटकैत छल। ओकर एक पंखुरी कनी टेढ़ छल, आ मोटर गरम होइत तँ खट करैत।' मीरा पूछली—'ओ पंखा शहर कोना गेल?' नरहरी काका कहलनि—'मरम्मत नाम पर। बिशम्भरक हाथे उतरल, ध्रुवेशक सहायकक गाड़ी पर चढ़ल। हम बुझलहुँ फालतू चीज अछि।' सत्यव्रत मेहता धीरेसँ कहलनि—'अपराध फालतू चीज नहि उठबैत; जे उठबैत अछि, ओकर उपयोग होइत अछि।'

बिशम्भर राति सँ गाछीक किनार पर बैसल छल। ओकरा भागय देल नहि गेल, मारल नहि गेल; ओकरा सुनबाक दण्ड देल गेल। जखन पंखाक बात उठल, ओ काँपि कऽ आगाँ आयल। 'शहरमे एक कमरा छल,' ओ कहलक, 'स्टेशनक पाछाँ, पुरान फोटोस्टेट दोकानक ऊपर। मास्टर ओतहि आवाज बनबैत। ओ पंखा कहैत छल—गामक आवाज चाही, शहरक नहि। ध्रुवेश बाबू कहैत छलाह—पाछाँ हरिहरक हवा रहत तँ भरोसा बढ़त।' ई सुनि भीड़मे हलचल नहि, ठण्ढ पसरि गेल। भरोसा केँ हवा बनाकऽ ठगीमे मिलाओल गेल छल।

मीरा तुरन्त नियम रखली—‘कमरा देखय जाएब, मुदा भीड़ नहि। कोनो वस्तु छूबी नहि। अधिकारप्राप्त लोकक संग विधिपूर्वक प्रवेश करब। अनुमान बाहर, दर्ज भीतर।’ टोली छोटी बनल—मीरा, सत्यव्रत मेहता, विनीत झा, अनन्या, आरुणि, देविका, दीपक, नरहरी, आ साइबर शाखाक वैह जवान अधिकारी जे काल्हि ‘अंकीय गोहि सेहो पएर छोड़ैत अछि’ कहने छल। बिशम्भर जाएबाक जिद्द केलक, पर मीरा रोकली—‘तोहर गवाही एखन गवाही अछि; तोहर उपस्थितिसँ प्रमाण दूषित भऽ सकैत अछि।’ बिशम्भर पहिल बेर ई शब्द सुनलक—दूषित प्रमाण। ओकरा बुझाइ गेल जे अपराधक बाद सत्यो सावधानी माँगैत अछि।

शहरक स्टेशन पाछाँक गलीमे दोकान सभ आधा खुलल छल। चाह, धुँआ, बसक चिल्लाहट, सस्ते होटलक भीत, कोचिंगक फटा पोस्टर, मोबाइल मरम्मतक बोर्ड, आ ऊपर-ऊपर लटकैत तार—सभ मिलि कऽ एहन जाल बनबैत छल जेना अंकीय गोहि जमीन पर चलि रहल हो। पुरान फोटोस्टेट दोकान पर अब बोर्ड बदलि गेल छल—‘मास्टर मीडिया सेवा’। बोर्डक ‘मास्टर’ शब्द नब रंगसँ चमकत, बाकी अक्षर पुरान पेंटक नीचे सड़ि रहल। देविका धीरेसँ कहली—‘नाम बदलल, देबाल नहि।’ भोरक चाहक भापमे कोयलाक धुँआ, भीजल कागच आ रेलक लोहाँक गन्ध घुलल छल; दूर सीटी बजिते लटकैत तार सभ एक क्षण काँपि उठैत छल।

दोकानदार, जे अपना कैं मालिक नहि केवल भाड़ादार कहैत छल, पहिने सभ बात नकारलक। ‘ऊपर कोठरी खाली अछि,’ ओ कहलक। साइबर अधिकारी भाड़ा-रजिस्टर माँगल। रजिस्टरमे भाड़ादारक नाम छल—‘मधवेश मिश्र’। ओ ‘माधवेश’ नहि, ‘मधवेश’—बीच सँ एक मात्रा गायब। अनन्या लिखली—‘नामक भीतर कमी—संयोग कि छल?’ रजिस्टरक पन्ना पर मोबाइल नम्बर वैह श्रृंखला सँ मिलैत छल जकर एक छोर हरिहर ट्रस्टक निर्देश-पत्रमे भेटल छल। सत्यव्रत मेहता कागच देखैत कहलनि—‘मात्रा कटला पर लोक छुपि सकैत अछि, पर नम्बरक छाह पीछू चलैत अछि।’

ऊपरक सीढ़ी सँ चढ़िते पहिल खट सुनाइ देलक। दरबाजा बन्द छल, मुदा भीतर हवा नहि होइतहुँ पंखा जेकाँ आवाज। दोकानदार कहलक—‘बिजली बन्द अछि।’ विनीत झा कान लगौलनि—‘ई साँच पंखा नहि, ध्वनि-अभिलेख सेहो भऽ सकैत।’ दरबाजा खोलबाक पहिने पंचनामा लिखल गेल। समय, उपस्थित व्यक्ति, ताला, कुंडी, सील, फोटो—सभ दर्ज। बच्चा सभ देखैत रहल जे सचक कमरा खोलबा पूर्व ताला नहि, प्रक्रिया खुलैत अछि।

ताला खुलल। कोठरीमे घुसिते गन्ध आयल—गरम तार, धूलि, पसेना, सस्ता इत्र, पुरान पंखाक तेल, आ डरक। छतमे सचमुच ओही पंखा लगल छल। ओकर एक पंखुरी टेढ़, बीचमे कारी पट्टी, आ मोटरक नजिक सफेद रंगसँ छोट अक्षर—'हरि-२'। नरहरी काका काँपि उठलाह —'ई सेवा केंद्रक दोसर पंखा। हम खुद लिखने रही, जखन पहिने पंखा टूटल छल।' पंखा बन्द छल, मुदा कमरा ओकर आवाज सँ भरल छल, जेना ओकर चरमराहट देबालमे बसि गेल हो। ताला हटिते लोहाँक ठण्ढ गन्ध अँगुरी धरि चढ़ि आयल; धूलिक महीन तह इजोतमे तैरैत छल, आ कमरा खोललाक बादो जेना अपन साँस रोकने रहल।

कमरा छोट छल, पर अपराधक सामान विशाल। एक कोनमे मोबाइल रखने स्टैंड, दोसर कोनमे गोल उजास देबयवला दीप-घेरा, बीचमे पुरान मेज, मेज पर कागचक पर्ची, देबाल पर आधा उतरायल हरियर कपड़ा, पाछाँ पुलिस-थानाक नकली छवि छापल परदा, आ जमीन पर तारक साँप। विनीत झा हाथ बाँधि कहलनि—'छूब नहि। फोटो पहिने।' साइबर अधिकारी छवि लेलक। आरुणि लिखलक—'कमरा स्वयं नाटक-घर अछि; पर अभिनयक लक्ष्य लूट।' चन्ना गाछीक नाटक लोकक पीड़ा सुनबैत छल; ई कमरा पीड़ाक आवाज बनाकऽ पीड़ितकेँ लूटैत छल।

मेज पर पहिल पर्ची भेटल—'दादी-स्वर: धीरे, भरोसा, रोना नहि।' दोसर—'किसान-स्वर: बेटा कहि संबोधित कर।' तेसर—'पुलिस-स्वर: कठोर, बीचमे कानूनक धारा।' चारिम—'बैंक-स्वर: ओटीपी नहि कहू, पर पुष्टि लेल दबाव।' मीरा पर्ची पढ़ि कठोर भऽ गेली। 'ई लोकक भाषा नहि, सम्बन्धक नक्शा पढ़ि रहल छल,' ओ कहली। 'दादीक स्वर सँ नाति, किसानक स्वर सँ बेटा, पुलिसक स्वर सँ भय, बैंकक स्वर सँ भरोसा—चारू बाट एके थैलीमे।'

दीपक मेजक पाछाँक डिब्बा दिस देखलक। डिब्बा पर पुरान धूलि छल। अधिकारी खोललक। भीतर छोट-छोट कागजी पट्टी—नाम, उमेर, गाम, मोबाइल नम्बर, सम्बन्ध। एक पट्टी पर लिखल—'रमरतिया—दादी—दीपक—शहर'। दीपकक साँस रुकि गेल। ओ पाछाँ हटि गेल, मुदा अनन्या ओकर हाथ पकड़ि लेली। मीरा ओकरा बैसौली। 'कानि सकैत छह,' ओ कहली, 'पर कागच नहि छूबू।' दीपकक आँखि सँ जे नोर खसल, ओ जमीन पर नहि, ओकर घुटना पर ठहरि गेल। दुखो कखनो-कखनो प्रमाणक मर्यादा बुझि लैत अछि।

एक संचिकामे ध्वनि-संचिकाक मुद्रित सूची भेटल—'सोमरी लाभ', 'कमला पुष्टि', 'रामसागर भरोसा', 'दादी-तीन', 'मास्टर-पुलिस-अभ्यास'। 'मास्टर-पुलिस-अभ्यास' नाम सुनिते विनीतक चेहरा बदलल। ओ प्रतिलिपि बनबाक निर्देश देलक। अधिकारी कहलक—'जँ

मूल यन्त्र भेटत तँ ध्वनि-विज्ञानक जाँच होएत।' सत्यव्रत मेहता जोड़लनि—'आ पीड़ितक अनुमति सँ मात्र।' मीरा एहि पर सन्तोषसँ माथ हिलौली। आवाजक चोरीक जवाब आवाजक दोसर लूट सँ नहि देल जा सकैत।

देबालक कोनमे टँगल तिथिपत्र आधा फाटल छल। पन्ना हटाओल गेल तँ नीचे पेंसिलसँ बनल रेखा देखाइ देलक—हरिहर सेवा केंद्र → फोटोस्टेट ऊपरक कमरा → शहरक खाता → ट्रस्ट → 'डी' → 'एम'। 'डी' ध्रुवेश? 'एम' मास्टर? अनन्या लिखब चाहली, पर सत्यव्रत रोकलनि—'अक्षर दर्ज करू, अर्थ नहि।' आरुणि अलग पन्ना पर लिखलक—'डी/एम—पुष्टि बाकी।' बच्चा सभ एखन अनुमानकेँ गवाहीक कुर्सी पर नहि बैसाबय सीखि गेल छल।

कपाटमे कतेको सिमक खोल, नकली चिन्हारि-पत्रक रंगीन प्रतिलिपि, फाटल अँगूठा-छाप गद्दी, आ दूटा पुरान रसीद भेटल। एक रसीद पंखा-मरम्मतक—हरिहर सेवा केंद्र सँ 'मधवेश' नामे प्राप्त। दोसर रसीद मेज-भाड़ाक, जाहि पर हस्ताक्षरक जगह केवल कारी घुमाव। नरहरी काका कहलनि—'ई घुमाव ध्रुवेशक सहायकक हाथ जेकाँ।' मीरा तुरन्त कहली—'जेकाँ नहि लिखू। हस्ताक्षर-मिलानक लेल राखू।' न्यायक भाषा जँ 'जेकाँ' पर अटकल, तखन गोहि मुस्की दैत अछि।

कोठरीक छोट खिड़की स्टेशनक पटरी दिस खुलैत छल। ट्रेन गुजरल तँ पूरा कमरा काँपल, आ पंखा बिनु चले खट कएलक। विनीत झा चौंकलाह—'ई कारण। धमकी-कॉलक पाछाँ जे गड़गड़ाहट छल, ओ ट्रेनक हो सकैत अछि।' समय-सूची मिलाओल गेल। सोमरी काकीक कॉल राति आठ बजि तेरह मिनट। ओहि समय मालगाड़ी गुजरैत। कमला देवीक कॉल दस बजि दू मिनट। ओहि समय लोकल। आवाजक पाछाँ स्टेशनक छाह मिलल। कमरा आब केवल जगह नहि, समयक संग बँधल प्रमाण बनि रहल छल।

अचानक मेजक दराज भीतर एक छोट लाल सूत भेटल। अनन्या ओकरा देखिते चन्ना गाछीक चिरइक चोंच मोन कएलक। लाल सूत कागच बाँधबाक छल कि गाछीक संकेत, ई बुझब कठिन। अधिकारी ओकरा भी प्रमाणक थैलीमे राखलक। मीरा हँसली नहि। लोकक कथा आ दंडक प्रक्रिया बीच दूरी राखब जरूरी, मुदा कखनो-कखनो लोकक संकेत प्रमाणक आस-पास चुपचाप चलैत रहैत अछि। सत्यव्रत मेहता बस एतबे कहलनि—'ई वस्तु भेटल। अर्थ बादमे।'

नीचाँ उतरिते गलीमे कतेको चेहरा जमा छल। केओ मोबाइलसँ विडियो बना रहल, केओ फुसफुसा रहल—'साइबर छापा', 'ठगी', 'मास्टर भागल'। दुकानदारक लड़का धीरेसँ

देविकाकेँ कहलक—‘काल्हि राति एक लोक दू बैग लऽ कऽ गेल। ओकर दाढ़ी नकली लगैत छल।’ देविका पूछली—‘कहियाक समय?’ लड़का कहलक—‘लगभग साढ़े ग्यारह। ट्रेनक सिटी भेल छल।’ एहि बयानक नाम, समय, अवस्था लिखल गेल। मीरा ओकर फोटो नहि लेली; अल्पवयस्क छल। निजताक पहरा एहन घड़ीमे सेहो टूटल नहि।

गाम घुरैत बसमे केओ बेसी नहि बाजल। दीपक खिड़की लग बैसल रहल। ओकरा डिब्बाक पट्टी पर लिखल ‘रमरतिया—दादी—दीपक—शहर’ आँखिमे घूमि रहल छल। ओ धीरेसँ कहलक—‘दादीक आवाज मरला बादो ओ लोक प्रयोग करैत रहल।’ मीरा उत्तर देली—‘एहि लेल हम आवाजक अधिकार लिखब। मृतकक आवाजो परिवारक स्मृति अछि, बाजारक माल नहि।’ सत्यव्रत मेहता ई वाक्य अपन नोटमे लिखलनि। कदाचित् अगिला जन-सुनवाईमे ई सिद्धान्त बनत। दीपक खिड़कीक काँचपर माथ टिका लेलक; बाहर भागैत खम्भा सभ ओकरा दादीक अधूर स्मृतिजकाँ लगल, जे पकड़ब चाहितो पाछाँ छूटैत जाइत छल।

चन्ना गाछी पहुँचला पर कमरा सँ लाओल छवि, सूची, पंखा-रसीद, सिमक खोल, ध्वनि-सूची आ भाड़ा-रजिस्टरक प्रतिलिपि पाथर पर क्रमसँ राखल गेल। आइ केओ ताली नहि बजेलक। कारी भूतक छाह पंखाक फोटो पर झुकल, उज्जर प्रेत लाल सूतक थैलीक नजिक ठहरल। बूढ़बा भूतक स्वर पातक भीतर सँ आयल—‘पुरान कालमे चोर घरमे पैसैत छल। आब चोर आवाजक घर बनबैत अछि। घर पकड़ायल, पर घरक मालिक एखन पथ पर अछि।’

बिशम्भर दूर ठाढ़ सभ सुनैत रहल। जखन ‘मधवेश’ नाम पढ़ल गेल, ओ फुसफुसा कऽ कहलक—‘मास्टर कहैत छल—नाम छोट राखू, बचि जाएब।’ अनन्या ई वाक्य लिखली। आरुणि जोड़लक—‘नाम छोट करबाक चाल, अपराध छोट नहि करैत।’ एहि वाक्य पर गाछीक पात हलुक हिलल। हवा नहि छल। कदाचित् नाम सभ सहमत छल।

फेर मास्टरक कमरा खुलल, पर मास्टर स्वयं पकड़ायल नहि। कमरा सिखेलक—आवाजक चोरीमे देहक नक्शा, सम्बन्धक ज्ञान, पंखाक ध्वनि, स्टेशनक समय, नकली पृष्ठभूमि, आ ट्रस्टक धन एके जालमे बन्हल छल। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—‘मधवेशक असली नाम’। आरुणि ओकर नीचाँ लिखलक—‘जकर कमरा भेटल, ओकर भागबाक बाटो भेटत।’ राति चन्ना गाछीक ऊपर उतरि गेल; एहि बेर अन्हारमे पंखा नहि, पटरीक दूर सिटी सुनाइत छल।

लोकगीत: चरमर पंखाक कमरा

लोकधुन: रेल-पार बटगबनी

सुनाउ हे पंखा, रातिक प्रत्येक अभ्यास सुनाउ हे,
जतऽ चोर भागल, ओहि पटरीक दिशा बताउ हे।

स्टेशन पाछाँ कमरा, पंखा चरमर-चरमर,
ओही ध्वनिमे बनैत छल डरक नकली घर।
सिमक खोल, आवाज-सूची, लाल सूतक थैली,
ककर माय, ककर बेटा—सभक लय भेल मैली।
मास्टर धुँआ बनि पटरी दिस भागल,

कमरा कहलक—एतय आवाजक चोरी जागल।
नाम छोट राखू कहलक, अपराध नहि छोट भेल,
मधवेशक बाट दूर रेलक सीटीमे गेल।
चरमर पंखा, रातिक प्रत्येक अभ्यास सुनाउ,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—अन्यक मत: शरीरजन्यत्व अवच्छेदक नहि अछि: उदाहरणार्थ —"जँ ईश्वर कर्ता छथि तँ ओ सशरीर जीव होयताह; तखन ओ अभीष्ट साधनक ज्ञानवान, प्रयोजनवान आ अनित्य ज्ञानवान होयताह; तथा जँ पृथिवी आदिक कर्ता अछि तँ ओही पृथिवी आदिक कर्ता केवल सशरीर जीव होयत"—एहन अनिष्टापादन मात्र हेत्वाभास सिद्ध नहि करैत अछि। अन्यक मत: शरीरजन्यत्व अवच्छेदक नहि अछि।]

अध्याय १८६

मधवेशक असली नाम

असली नाम सभसँ पातर कागजपर लिखल रहै छै— जकरा सभ रद्दी बुझै छै।

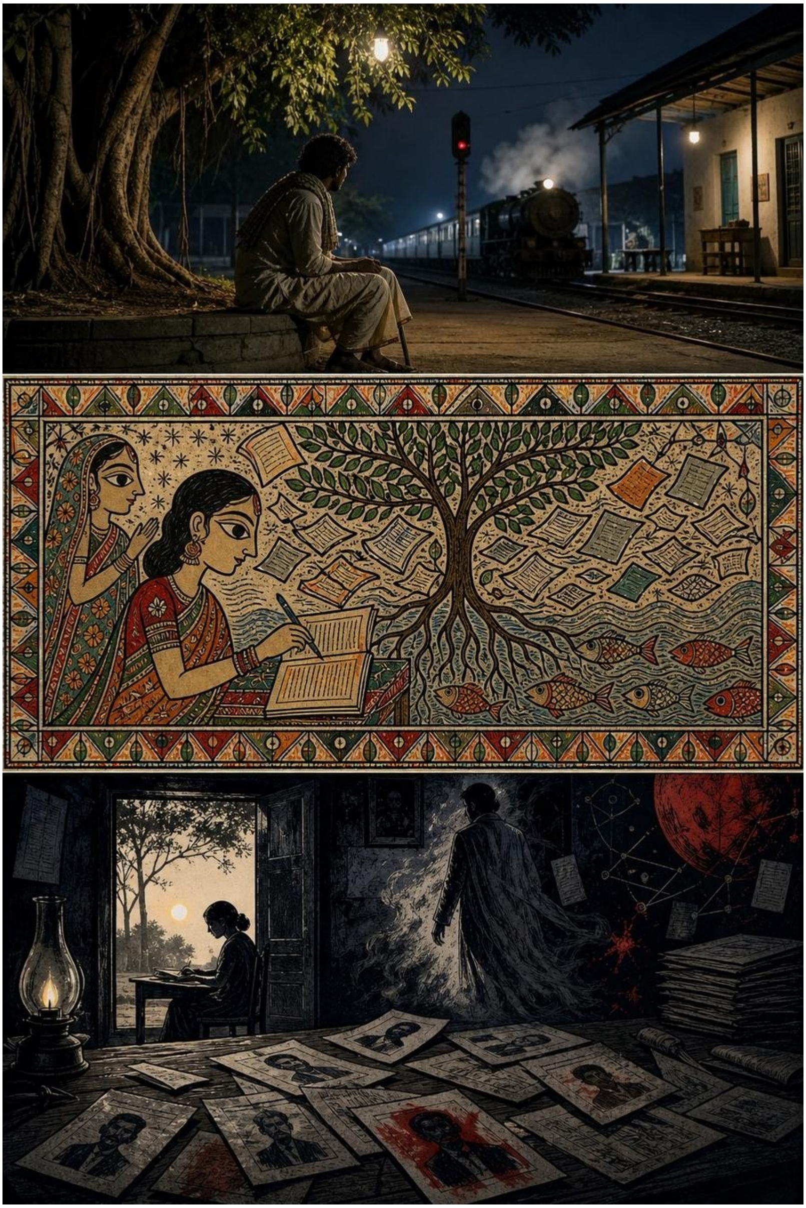

अध्यायारम्भ लोकगीत: मधुकरसँ मधुरस फेर

लोकधुन: मधुमक्खी लोकधुन

भन-भन हे मधुकर, फूलक बाट भन-भन हे,
जहरक घेर बिसरि मधुरसक गुन-गुन हे।

भन-भन करै मधुकर, फूलक बाट बताउ,
जहरक घेर छोड़ि आब मधुरस घर लाउ।
प्रत्येक फूलक श्रम बराबर, प्रत्येक पाँखिक अधिकार,
छत्ता तखने मीठ बनत जखन साँच व्यवहार।

लोभक धुँआ हटत जखन मनमे नेह उगै,
भटकल पाँखि घुरि कऽ फेर सुगन्धक राह लगै।
मधु नामक मान बचाउ, श्रमक रस नहि चोरू,
फूल-फूलक भाग बराबर, संगहि जीवन जोड़ू।

फूल-फूलक श्रम बराबर, पाँखि-पाँखिक मान,
छत्ताक मीठ तखने जखन निर्मल रहए ईमान।
लोभक धुँआ छँटिते सुगन्धक राह भेटए,
भटकल पाँखियो घुरि कऽ अपन घर समेटए।

❖

मधुकर.. माधवेश.. मधवेश.. मास्टर.. आखर कटल, मात्रा बदलल, खोल नव भेल; मुदा आवाजक चाल आ हाथक आदत वैह रहल। नाम बदलि लोक गाम, गरीबी आ मायक मोनसँ भागय चाहै छै, मुदा पुरान पुकार पातक फाँकसँ छनैत हवा जकाँ पाछाँ-पाछाँ अबैत रहै छै। जे नाम हँसीमे पड़ल, सएह कागचमे शहरक भरोसा बनि जाइए।

कला.. नकल.. ताली.. भय.. बच्चाक रोअन, बूढ़क गला, नेताक भाषण निकालब पहिने खेल रहै छै। जखन लोभ ओकरा कीन लै छै, तँ वैह कला लोकक घरमे डर पठाबय लगै छै। मायक देबालपर लिखल “आवाज बेचब नहि” केवल सीख नै, अपन बेटाक भविष्यकेँ पहिने देखल चेतावनी बनि जाइए।

नाम भेटलासँ न्याय पूरा नै होइ छै। विद्यालयक बही देखबामे अनुमति चाही, बाल्यकालक कागचकेँ बाजार नै बनाबी, सुनल बातकेँ सुनल लिखी आ देखल बातकेँ देखल। अपराधीकेँ पकड़ैत ओकर लोक-मर्यादा नहि बेचब—ई कठिन नियम छै, मुदा एही नियमसँ जाँच प्रतिशोधसँ अलग रहै छै।

मधुमक्खी पकड़ायल तँ भनभनाहट रुकत नै; छत्ता कतहु आओर रहै छै। एक नाम ध्रुवेश, महेश्वर, सेवा-जाल, शहरक खाता आ ट्रस्टक धन दिस रस्ता खोलै छै। लोक जखन खाली ठाम सेहो दर्ज करै छै, तँ प्रमाण ईमानदार बनै छै; साँचक मधु तखनहि भेटै छै जखन जहरक घेरा पार कऽ पूरा छत्ता देखल जाइए।

मास्टरक कमरामे भेटल नाम-पट्टीक आधा आखर रातिभर चन्ना गाछीक पाथरपर काँपैत रहल। चन्ना गाछीक जड़ि लग राति भरि रेलक सीटी अटकल रहल। मास्टरक कमरा खुलि गेल छल, मुदा मास्टरक देह धुँआ जेकाँ हाथसँ फिसलि गेल। पाथरपर राखल प्रतिलिपि सभमे एकहि नाम फेर-फेर काँटाझाँटि कऽ उगैत छल—मधवेश, माधवेश, एम, मास्टर, म. मि.। अनन्या भोरमे पन्ना खोलि लिखली—‘मधवेशक असली नाम’। लिखिते ओकरा लगल जे नामक वास्तविकता केवल वर्तनी नहि; नामक पाछाँ वंश, कागच, आवाज, खाता, आ अपराधक पुरान छाह छिपल होइत अछि।

मीरा सभकेँ पहिने चेतौली—‘आइ नाम खोजब, मुदा नामक आधार पर भीड़ नहि उठत। जे कागच कहत, जे गवाही कहत, जे समय-सूची कहत, से मिलि कऽ बात बनत। कोनो जाति, कुल, गाम, वा घरकेँ अपराधी नहि कहब; लोक अपराध करैत अछि, नामक खोल ओ अपन रक्षा लेल पहिरैत अछि।’ ई वाक्य आवश्यक छल। किएक तँ गाममे नाम सुनिते लोक कुल-गोत्र, पाँति, आ दुश्मनीक पाछाँ भागि पड़ैत अछि। न्यायक पहिल पहरा नामक सही चिन्हारि अछि, प्रतिशोध नहि।

सत्यव्रत मेहता मास्टरक कमरासँ लाओल प्रतिलिपि सभ पुनः क्रममे राखलनि। भाड़ा-रजिस्टरमे ‘मधवेश मिश्र’। पंखा-रसीदमे ‘माधवेश’। सिमक खोलक पाछाँ ‘एम. मिश्र’। नकली पुलिस-पृष्ठभूमिक आदेश-पर्चीपर केवल ‘मास्टर’। बैंक-खाताक संदर्भमे ‘एम.एम.’। आ शहरक प्रतिलिपि-दोकानक पुरान बहीमे आधा मेटायल नाम—‘मधु...’। मीरा कहली—‘अपराधी अपना नामकेँ नदी बनौने अछि; प्रत्येक मोड़ पर रूप बदलैत अछि। आब हम धारक स्रोत खोजब।’

विनीत झा शहरसँ ल्याओल भाड़ा-कागचक अंकीय छवि खोललनि। घर-मालिकक बयानमे लिखल छल जे भाड़ा नकद देल जाइत, पहिल मास ध्रुवेशक सहायक संग एक लोक आयल छल, जे अपना कैँ 'माधव मास्टर' कहने छल। दोसर बेर ओ 'मधवेश' कहल। तेसर बेर 'मिश्राजी'। घर-मालिक पूछलनि नहि; नकद भाड़ामे प्रश्न कम होइत अछि। आरुणि लिखलक—'नकद धन नामक पूछताछ घटा दैत अछि।'

देविका दोकानदारक लड़काक बयान पढ़ली—'दू बैग लऽ गेल लोकक दाढ़ी नकली लगैत छल।' ई बयान छोट छल, मुदा ओकर भीतर भागबक दिशा छिपल छल। रेलक सीटी साढ़े ग्यारह। स्टेशनक चौकीदारक उपस्थिति-पुस्तिकामे ओहि समय एक यात्रीक वर्णन छल—लम्बा कुरता, कारी बैग, नकली दाढ़ी उतारैत देखल गेल, टिकट बिनु रेल-मंचपर घुसबाक प्रयास। नाम पूछला पर ओ कहल—'मधुकर।' विनीत झा कहलनि—'आओर एक नाम।' अनन्या लिखली—'भागैत लोक नामकैँ कपड़ाजेकाँ बदलैत अछि।'

चन्ना गाछी लग बैसल नरहरी काका अचानक बजलाह—'मधुकर नाम सुनल अछि।' सभक आँखि हुनका दिस घुरल। ओ कहलनि—'बरखों पहिने हरिहर सेवा केंद्रमे एक लड़का आबैत छल। आवाजक नकल करैत। बूढ़क गला, बच्चाक रोअन, नेताक भाषण—सभ निकालैत। ओकरा हम सभ हँसी-ठट्ठामे मधुकर कहैत रही। असल नाम? मोन नहि। ओ ध्रुवेशक संग शहर चलि गेल।' बिशम्भर काँपि उठल—'मास्टर कहैत छल, गामक लोक हमरा मधुकर कहैत छल। मुदा हमर नाम आब नहि पूछू।'

ई सुनिते नामक तीन रूप मिलल—मधवेश, माधवेश, मधुकर। सत्यव्रत मेहता अपन पुरान चश्मा उतारि कपड़ासँ पोंछलनि। 'जतय उपनाम आ कागजी नाम अलग हो, ओतय विद्यालयक बही, मतदान सूची, वा परीक्षा-पत्र बाट खोलि सकैत अछि।' विनीत झा सहमत भेलाह। मुदा मीरा फेर मर्यादाक रेखा खिंचली—'केवल वैधानिक प्रति। कोनो निजी सूची चोरी नहि। अपराधक विरोधमे हम अपराध नहि करब।' ई वाक्य पर कारी भूतक छाह गाछीक भीतर सँ हलुक हिलल।

दुपहर धरि टोली पुरान माध्यमिक विद्यालय पहुँचल। विद्यालयक भवन आधा टूटल, आधा रंगायल, आ पूरा स्मृतिसँ भरल छल। प्रधानाध्यापक पहिने डरि गेलाह—'कागच पुरान अछि, हम जिम्मा नहि लेब।' सत्यव्रत मेहता नम्र स्वरमे कहलनि—'हम कागच छीनय नहि, प्रमाणक क्रम मिलाबय आयल छी।' विद्यालयक पुरान नामावली-रजिस्टर लोहाँक आलमारीसँ निकलल। धूलि उठल तँ अनन्याकैँ अभिलेख-घरक अन्हार मोन पड़ल। कागच चाहे अदालतक

हो वा विद्यालयक, धूलि एके भाषा बोलैत अछि। आलमारी खुलिते भीजल चूना, पुरान खड़िया आ चूहा कुतरल कागचक मिलल गन्ध कमरामे पसरि गेल; पन्ना पलटबाक स्वर सूखल पातक खरखराहटजकाँ सुनाइत छल।

रजिस्टरक पन्ना पलटल गेल। दस बरख पुरान सूचीमे नाम भेटल—'मधुकर माधव मिश्र, पिता—महेश्वर मिश्र, गाम—बरियारपुर टोला, अस्थायी पता—हरिहर सेवा केंद्र परिसर।' जन्मतिथि अधूरी। अगिला वर्षक सूचीमे ओही लड़का 'माधवेश' भऽ गेल। तेसर वर्ष 'मधवेश'। प्रधानाध्यापक माथ खुजलनि—'एखन मोन पड़ैत अछि, ओकर पिता स्वयं नाम बदलवौलनि। कहलनि—मधुकर बहुत गामे-घरक सुनाइत अछि।' देविका धीरेसँ कहली—'नामसँ गामक गन्ध काटि शहरक अपराध बनाओल गेल।'

बिशम्भरक देह काँपि उठल। 'महेश्वर मिश्र?' ओ फुसफुसायल। 'ओ ध्रुवेशक मामा पक्षक नातेदार छल। सेवा केंद्रक पहिल दान ओही मार्फत आयल।' सत्यव्रत मेहता ई बात अलग कागचपर लिखलनि—'सम्बन्धक दावा—पुष्टि बाकी।' मीरा बिशम्भरकेँ टोकली—'जे देखल, से कहू; जे सुनल, ओकरा सुनल लिखू।' बिशम्भर पहिल बेर बुझलक जे गवाहीमे उत्साह सेहो झूठक लग लऽ जा सकैत अछि।

विद्यालयक नाटक-दिवसक पुरान फोटो भेटल। धुँधल छवि—एक दुबला लड़का मंचपर पुलिसक टोपी पहिरने, माइकक सोझाँ, भीड़ हँसैत। फोटोकेँ पाछाँ शिक्षकक लिखावट—'मधुकर—आवाज-अनुकरण'। अनन्या बहुत देर फोटो देखैत रहली। जे कला ताली पाबय लेल जन्मल, ओकरा डर बेचबाक औजार बना देल गेल। चन्ना गाछीक नाटक पीड़ा खोलैत छल; मास्टरक नकल पीड़ा रचैत छल। कला आ अपराध बीचक ई दूरी सीस-कलमक रेखा जेकाँ पातळ, मुदा खूनक धार जेकाँ गहिर छल। फोटोक किनार अँगुरी लगिते भुरभुरा उठैत छल; सूखल गोंदक गन्ध आ मंचक मेटायल इजोत जेना बहुत पुरान तालीकेँ फेर जगौने छल।

प्रधानाध्यापक एक और बही आनलनि—छात्रवृत्ति-प्रपत्र। ओहिमे मधुकरक बैंक खाता कखनोकाल सेवा केंद्रक खाता सँ जोड़ल गेल छल। कारण लिखल—'अभिभावक-सहायता'। विनीत झा तुरन्त फोटो नहि लेलनि; पहिने अनुमति-पत्र लिखायल। मीरा कहली—'बालकक पुरान अभिलेख अछि। आवश्यकता धरि मात्र।' सत्यव्रत मेहता जोड़लनि—'अपराधी भऽ गेलाक बादो ओकर बचपनक गोपनीयता पूर्ण रूपेँ हाटमे नहि राखल जाएत।' ई सुनि आरुणि अचरजमे पड़ल। न्याय एतबा कठिन होइत अछि—अपराधीकेँ पकड़ितो ओकर लोक-मर्यादा हाटमे नहि बेचब।

विद्यालयसँ निकलिते बरियारपुर टोला दिस बाट पकड़ल गेल। गामक मेड़पर लोक सभ जिज्ञासासँ जमा भेल। मधुकरक पुरान घर बन्द छल। कातकी बूढ़ि स्त्री कहली—'मधुकर? ओकर आवाज मधुमक्खी जेकाँ छल, तेँ नाम मधुकर पड़ल। छोटमे भजनो गाबय, नेता सेहो बनय, पुलिसो बनय। महेश्वर कहैत—बेटा शहरमे रेडियो पर बोलत। फेर ओ ध्रुवेश बाबूक संग सेवा-काजमे लागल। बादमे गाड़ीमे, फोनपर, शहरमे। घर बहुत कम आयल।'

ओहि घरक देहरी पर एक पुरान टिनक बक्सा भेटल नहि, मुदा देबालपर कोयलासँ लिखल आधा वाक्य एखन रहि गेल छल—'आवाज बेचब नहि।' ककर लिखल, केओ नहि जनैत। कातकी स्त्री कहली—'ओकर माय मरबाक पहिने लिखने छली, जखन लड़का लोकक बोलीक हँसी उड़ौने छल।' ई वाक्य सुनि सभ चुप भऽ गेल। मधुकरक माय कदाचित् अनचोकेमे ओहि अपराधक विरुद्ध पहिल शपथ लिखि गेल छली, जकर रूप बहुत बाद अंकीय गोहि बनि सोझाँ आयल। देहरीक फाटल चूनामे सरिसोक तेलक पुरान बास अटकल छल; कोयलाक आखरपर साँझक इजोत पड़िते वाक्य नव लिखलजकाँ चमकि उठल।

साँझ होए लगल। टोली गाम घुरि चन्ना गाछी पहुँचल। पाथरपर विद्यालयक नामावलीक प्रमाणित प्रति, नाटक-दिवसक फोटो, छात्रवृत्ति-प्रपत्रक अंश, कातकी स्त्रीक बयान, आ भाड़ा-रजिस्टरक 'मधवेश' एक संग राखल गेल। अनन्या क्रम पढ़ली—मधुकर माधव मिश्र → माधवेश → मधवेश → मास्टर। आरुणि नीचाँ लिखलक—'नामक काट-छाँट अपराधक तैयारीक हिस्सा बनल।'

दीपक धीरेसँ पूछलक—'जँ ओकर असली नाम मधुकर अछि, तँ ओकरा मास्टर किएक कहब?' मीरा उत्तर देली—'किएक तँ अपराधक भूमिका मास्टरक छल। मुदा सरकारी कागचमे जे नाम सिद्ध होएत, ओ लिखब। लोकक स्मृतिमे जे नाम छल, ओकरो दर्ज करब। एक नाम अपराधी पकड़त, दोसर नाम इतिहास बुझत।' सत्यव्रत मेहता जोड़लनि—'न्यायालय अभियुक्तक नाम पूछत; समाज पूछत—ओ एहन कोना बनल?'

बिशम्भर गाछीक किनार पर माटि कुरेदैत रहल। अन्तमे ओ कहलक—'मास्टर कहैत छल—मधुकर मरि गेल, मधवेश कमाइत अछि। ओकरा अपन पुरान नामसँ चिढ़ छल।' मीरा पूछली—'किएक?' बिशम्भर कहलक—'कहैत छल, मधुकर सुनिते लोक गाम, गरीबी, आ मायक मोन पाड़ै छै। मधवेश सुनिते कागच, शहर, आ भरोसा।' अनन्या लिखली—'जे लोक अपन मायक आवाजसँ भागल, से दूसराक मायक आवाज बेचलक।' एहि वाक्य पर दीपक माथ झुका लेलक।

विनीत झा रेखा बनौलनि—हरिहर सेवा केंद्रक बाल-शिविर → मधुकरक आवाज-अनुकरण → ध्रुवेशक सेवा-जाल → स्टेशन-पाछाँक कमरा → सिम आ ट्रस्ट → अंकीय गिरफ्तारी। 'एहि रेखामे महेश्वरक नाम, ध्रुवेशक भूमिका, आ शहरक खाताक पुष्टिक कमी अछि,' ओ कहलनि। मीरा सन्तोषसँ कहली—'कमी लिखल अछि, तेँ रेखा ईमानदार अछि।' गवाहीक ईमानदारी ओकर पूर्णतामे नहि, ओकर स्वीकारल खाली ठाममे सेहो रहैत अछि।

राति पड़ला पर चन्ना गाछीक पात पर अनोखा भनभनाहट उठल। मधुकर नाम मधुमक्खीसँ जुड़ल, आ गाछीमे सचमुच कनि बेर लेल अदृश्य मधुमक्खी सभ घूमय लागल। बूढ़बा भूतक स्वर आयल—'मधुसँ जहर बनल, तँ छत्ता खोजू। एक मधुमक्खी पकड़लासँ पूरा विष नहि रुकत।' कारी भूत पाथरपर राखल नामावलीक नजिक आयल। उज्जर प्रेत नाटकक फोटो पर उजास देलक। लोक सभ बुझि गेल—मधुकर/मधवेश पकड़ायल मार्गक केवल एक बिन्दु अछि; छत्ता एखन बाकी।

सत्यव्रत मेहता अन्तिम टिप्पणी लिखलनि—'अभियुक्तक संभावित असली नाम: मधुकर माधव मिश्र; प्रयुक्त नाम: माधवेश, मधवेश, मास्टर; सम्बन्ध: हरिहर सेवा केंद्र, ध्रुवेश-सम्बद्ध सेवा-जाल, स्टेशन-कमरा; पुष्टि शेष: बैंक, यात्रा, महेश्वर-सम्बन्ध, ट्रस्ट-धन।' मीरा एहि टिप्पणीक ऊपर लिखली—'नाम सार्वजनिक करबासँ पहिने विधिक प्रति सुरक्षित हो।' भीड़मे किछु लोक बेचैन भेल; नाम सुनबाक भूख न्यायसँ तेज होइत अछि। मुदा मीरा अडिग रहली।

मधवेशक असली नाम पहिल बेर क्रम सहित सोझाँ आयल—मधुकर माधव मिश्र। मुदा नाम भेटलासँ अपराध समाप्त नहि भेल; अपितु अपराधक बाल्यकाल, कला, लाज, महत्वाकांक्षा, ध्रुवेशक हाथ, महेश्वरक छाह, आ शहरक खाता एक-दोसरासँ जुड़ि उठल। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—'छत्ताक भीतरक रानी'। आरुणि ओकर नीचाँ जोड़लक —'मधुमक्खी पकड़ायल, मुदा मधु ककरा घरमे जमा अछि?' चन्ना गाछीक ऊपर राति भरि भनभनाहट रहि गेल।

लोकगीत: मधुकरक भनभनाहट

लोकधुन: मधुमक्खी लोकधुन

सहू हे मधुकर, असल नामसँ भार सहू हे,
तोहर आवाजसँ रोअल घर सभक नाम कहू हे।

मधुकर नाम मधु छल, काम बनल जहर,
बाल्यक कला बेचि बनौलक नकली स्वरक घर।

माधवेश, मधवेश, मास्टर—तीन खोल,
पातर रद्दी कागचपर असल नामक बोल।
गाछीमे अदृश्य मधुमक्खी राति भरि घुमल,

एक पकड़ायल, मुदा विषक छत्ता नहि गुमल।
लाज, लोभ, ध्रुवेशक हाथ, महेश्वरक छाह,
एक लोकक पतनमे कतेको मोड़ल राह।
मधुकर, असल नामसँ अपराधक भार सहू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—खण्डन: मानि ली जे "संस्कारित धान कुटबाक लेल उपयोगी अछि" एहन अपूर्ण वाक्यक शेषांशसँ, संस्कारविशिष्ट धानक कुटनसम्बन्धी कारणताज्ञान उत्पन्न होइत अछि। खण्डन।]

अध्याय १८७

छत्ताक भीतरक रानी

छत्ताक भीतरक रानी अपने कहियो फूलपर नहि जाइ— भनभनाहटे ओकर पता कहै छै।

अध्यायारम्भ लोकगीत: रानी नाम उज्जर

लोकधुन: स्त्री-मण्डली मंगल गीत

चमकाउ गे रानी, अपन नाम चमकाउ गे,
झूठक धूलि झाड़ि साँचक जलसँ नहाउ गे।

रानी अपन नाम धुऐ नहि, धूलि झाड़ि चमकाउ,
जकरा झूठ मलिन कएलक, साँचक जलसँ नहाउ।
बहिनी सभ घेरा दऽ कहै—माथ उठाउ रानी,
तोहर नामक पात हरियर, तोहर बोली पानि।

कागचक दाग उतरि जाए, मान नहि उतरै,
स्त्रीक एक स्वर उठिते सय झूठ पाछाँ हटै।
रानी नामक उज्जर अक्षर देहरी-देहरी जाउ,
अपन कथा अपन कंठसँ निःशंक गुनगुनाउ।

बहिनीक घेरा बाजए—माथ उठाउ बहिना,
तोहर पात हरियर छौ, तोहर बोली गहना।
कागचक दाग धोआयत, मान नहि धोआयत,
एक स्वर उठिते सय झूठ पाछाँ हटत।

❖

रानी एक नै छै—कखनो वृद्धाक नाम, कखनो परदेश गेल नेनीक नाम, कखनो कागचपर मात्र जीवित समिति। खोल बदलै छै, मधु एके बाट चलै छै। जे समाज स्त्रीकेँ दुर्बल बुझै छै, ओही भ्रमक भीतर अपराधी मजबूत कोठी बनबै छै; मुदा बहिनी सभ एक स्वरमे उठै छै तँ खोलक सिलाइ फाटि जाइए।

नाम साफ करब न्यायसँ अलग काज नै छै। अपराधी पकड़ाइत देरी भऽ सकै छै, मुदा निर्दोषक माथक कालिख तुरन्त धोबय पड़ै छै। सुनल बातकेँ सुनल, देखल बातकेँ देखल, सम्भावनाकेँ सम्भावना लिखब—एहि संयमसँ जाँच प्रतिशोध नै बनै छै आ गरीबक कथा फेर बाजारमे नै बिकै छै।

छत्ताक असल रखवाला भनभनाहटमे अपना नाम नै कहै छै। ओकर पता मोहरक नील स्याही, खाताक धार, समिति-पंजी आ आदेशक पातर आखर दै छै। एक मधुमक्खी पकड़लासँ छत्ता खाली नै होइ छै; प्रत्येक नामक पाछाँक हाथ देखल जाएत, तखने मधु आ जहरक भेद खुलत आ रानीक चोरी कएल नाम फेर फूलजकाँ खिलत।

मधुकरक असली नाम भेटलाक बादो अध्याय १८६क अन्तिम प्रश्न रातिभरि चन्ना गाछीक पातमे अटकल रहल—मधु ककरा घरमे जमा अछि? चन्ना गाछीक ऊपर रातिभरि जे भनभनाहट अटकल छल, भोर होइत-होइत ओ आवाज मधुमक्खीसँ कम, सिक्काक खनकसँ बेसी मिलैत लगल। मधुकर माधव मिश्रक नाम काल्हि सोझाँ आयल छल, मुदा बूढ़बा भूतक बात सभक भीतर काँटाजकाँ धँसल रहल—'मधुमक्खी पकड़ायल, मुदा मधु ककरा घरमे जमा अछि?' अनन्या पाथरकात बैसि पंजी खोलली आ नव शीर्षक लिखली—'छत्ताक भीतरक रानी'। लिखिते हुनका बुझाइ गेल जे ई रानी राजसिंहासनपर बैसल स्त्री नहि, अपराधक ओ केन्द्र भऽ सकैत अछि जतय छोट-छोट डर, आवाज, खाता आ चोरीक नाम सभ जमा भेल। भोरक ओसभिजल पातसँ माटिक गन्ध उठैत छल, मुदा पाथरपर राखल कागचसँ पुरान स्याही आ सिक्काक धातु-जकाँ एक अनचिन्हार बास आबि रहल छल।

मीरा आइ पहिल वाक्ये चेतावनी बनौली—'रानी शब्द सुनिते कोनो स्त्रीपर आरोप नहि लगत। जँ अपराधी लोक स्त्रीक नामकेँ ढाल बनबैत अछि, तँ पहिल काज ढाल हटेनाइ अछि, ढालकेँ चोट पहुँचेनाइ नहि।' ई बात सुनि रमरतिया देवीक बहुरिया, सोमरी काकी आ गामक स्त्री सभ एक-दोसराक मुँह ताकली। हुनका सभ बुझि रहल छल जे गरीब स्त्रीक नामपर खाता खोलब, अँगूठा लेब, फोटो खिंचब आ बादमे ओकर नामसँ धन बहाएब—ई नव छल नहि; बस एहि बेर ओकरा अंकीय जालक पाँखि लगि गेल छल।

विनीत झा मास्टरक कमरासँ भेटल पुरान यंत्रक प्रतिलिपि फेर खोललनि। ओहि भीतर एक सारणी भेटल छल, जकर तीन खण्ड छल—'फूल', 'मधु' आ 'रानी'। फूलक पाँतिमे सिम, आवाज, फोटो आ लाभुकक नाम छल। मधुक पाँतिमे रकम, दिन, खाता आ कटौती। रानीक पाँतिमे केवल संकेत—'र-१', 'र-२', 'पुरान', 'नवका', 'न्यास', 'सेवा'। आरुणि माथ खुजला कऽ कहलक—'मधुकर मधु जमा करैत छल, मुदा रानी ओकरासँ ऊपर अछि।' सत्यव्रत मेहता तुरन्त जोड़लनि—'अथवा रानी केवल संकेत भऽ सकैत अछि। संकेतकेँ लोक बनाबयसँ पहिने प्रमाण चाही।'

अंकीय अपराध शाखाक अधिकारी, जे रातिसँ जागल छल, चाह बिनु पिए पन्नापर झुकल। ओ छोट-छोट रकमक धारा देखौलनि—पाँच हजार, एगारह हजार, उनतीस हजार, फेर अचानक एक्के दिन तीन लाखक जमाव। धन पहिने लाभुक-सहायता, वृद्धावस्था-वृत्ति सुधार, बीमा-नवीकरण, आपात दवा आ अंकीय गिरफ्तारीक डरसँ निकलैत। फेर ओ अलग-अलग खातामे फाटैत आ 'रानी' नामक खण्डमे जमा होइत। अधिकारी कहलनि—'ई मधुमक्खीक छत्ताजकाँ अछि। फूलसँ मधु आ मधुसँ कोठी-बखारी।' नरहरी काका धीरसँ बजलाह—'हमर गामक मधु तँ छत्ता तोड़लापर बच्चा सभमे बँटैत छल; ई मधु डरसँ बनल अछि।'

पहिल रानी-खाता खोलल गेल—नाम: रानी देवी। गाम: हरिपुर कटान। उमेर: बहत्तर। अँगूठाक निशान। फोटोमे धोती ओढ़ने एक वृद्ध स्त्री, आँखिमे बुझल प्रश्न। भीड़ हलचल करय लागल—'एहि वृद्धापर एतेक पैसा?' मीरा कठोर भऽ गेली—'नाम पढ़ल गेल, अपराध नहि। पहिने ई स्त्री भेटतीह, हुनकर बात सुनल जाएत।' अनन्या 'रानी देवी—सम्भावित नाम-चोरी' लिखली। बच्चा सभ आब सीखि गेल छल जे गरीबक नाम कागचपर देखला मात्रे ओकर अपराध सिद्ध नहि होइत; उनटे सम्भव अछि जे ओकर देहसँ पहिने ओकर नाम लूटल गेल हो।

दुपहर धरि टोली हरिपुर कटान पहुँचल। गाम बाढ़िक पाछाँ बाँचल रेतपर बसल छल। रानी देवी एक झुकल खपरैल घरक बाहर धूपमे अन्न सुखबैत बैसल छलीह। हुनका देखिते दीपकक आँखि झुकि गेल; ओहि चेहरामे ओकरा अपन दादीक थकान देखाइ देलक। मीरा विनम्र भऽ पूछली—'अहाँ हरिहर सेवा केन्द्र गेल रही?' रानी देवी हँसीह कि खाँसलिह, बुझब कठिन छल—'वृद्धावस्था-वृत्ति बन्द भेल छल, बाबू। ओ कहलक—अँगूठा लगाउ, फोटो दाउ, वृत्ति खुलत। हम अँगूठा देलियै। दू मास पैसा आयल, फेर बन्द। लाखक पैसा कतयसँ?' धूपमे सुखैत धानसँ गरम भूसीक गन्ध उठैत छल; रानी देवीक फाटल अँचरा हवा लगिते काँपैत, जेना प्रत्येक प्रश्नपर पुरान लाज फेर जागि रहल हो।

रानी देवीक घरक भीतर खाताक कोनो बही नहि छल; केवल दवाइक खाली पन्नी, एक फाटल कम्बल आ देबालपर पोताक विद्यालय-प्रमाणपत्र। अंकीय अपराध अधिकारी जखन हुनकर खातासँ निकासीक सूची देखौलनि, ओ आँखि सिकोड़ी कऽ कहलीह—'ई हमर अँगूठा नहि। हमर अँगूठा तँ एहन टेढ़ अछि।' हुनकर दहिन अँगूठा सचमुच आध कटान छल—पुरान धान कूटबाक चोट। सूचीमे जे अँगूठा लगल छल, से गोल, स्वच्छ आ अभ्यासक निशान छल। विनीत झा धीरसँ कहलनि—'नाम असली, अँगूठा नकली।' मीरा उत्तर देली—'तेँ स्त्री अपराधी नहि, स्त्रीपर अपराध।'

रानी देवीक पोता, जे एखन तेरह बरखक छल, बीचमे बाजल—'सेवा केन्द्रमे ओ लोक दादीक हाथ पकड़ि कऽ शीशाक पट्टीपर लगौलक। एक बेर नहि, तीन बेर। कहलक—यंत्र खराब अछि।' एहि वाक्यपर अनन्याक सीस-कलम रुकि गेल। यंत्र खराब नहि छल; यंत्र नामक खाल उतारि रहल छल। आरुणि लिखलक—'यंत्र खराब कहि अँगूठाक पुनरावृत्ति—सम्भावित संग्रह।' सत्यव्रत मेहता पन्नापर गोल चिन्ह लगौलनि। जे भूल कहल गेल, से कदाचित् विधि छल।

हरिपुर कटानसँ घुरैत बाटमे टोलीकेँ दोसर रानीक पता भेटल—रानी कुमारी, सिलाइ-समूहक नामपर खोलल खाता; ओ असलमे पाँच बरख पहिने विवाह कऽ परदेश चलि गेल छलीह। तेसर 'रानी' कागचमे 'रानी महिला सहायता समिति' छल, जकर कार्यालय हरिहर सेवा केन्द्रक पाछाँक कोठरीमे बताओल गेल, मुदा ओतय कखनो कोनो समिति बैसल नहि। तीन रानी, तीन मुखौटा—एक वृद्ध स्त्री, एक अनुपस्थित युवती, एक कागचक समिति। मधु एक नाममे नहि, रानीक अनेक खोलमे जमा भेल छल।

चन्ना गाछीमे घुरला पर सभ प्रमाण पाथरपर राखल गेल—रानी देवीक बयान, अँगूठाक तुलना, पोताक कथन, रानी कुमारीक परदेश-पत्र, समिति-पंजी आ धन-धाराक सारणी। मीरा फेर कहली—'एहिमे कोनो स्त्रीकेँ अपराधी घोषित नहि करब। ई उनटे सिद्ध करैत अछि जे अपराधी लोक स्त्रीक नामकेँ एतेक सुरक्षित मानैत अछि जे ओकरा भीतर पैसा नुकबैत अछि। समाज जकरा दुर्बल मानैत अछि, अपराधी ओकर नामकेँ मजबूत तिजोरी बनबैत अछि।' देविका एहि वाक्यपर काँपि उठली। दुर्बलक नाम तिजोरी बनल—ई कल्पना भयावह छल। साँझक हवा कागच सभक कोन उठबैत छल; मोहरक नील स्याहीपर इजोत पड़िते प्रत्येक पन्ना जेना अपन-अपन मौन गवाही देबय लगल।

बिशम्भर, जे किनारपर बैसल सभ सुनैत छल, अचानक बोलि उठल—'रानी नाम मास्टर नहि देलक। ध्रुवेश बाबूक ऊपर जे महेश्वर बाबू छलाह, ओ कहैत छलाह—स्त्रीक नामपर खाता खोलू, जल्दी कोनो प्रश्न नहि उठत।' 'महेश्वर' नाम सुनिते नरहरी काकाक देह तन गेल। काल्हि धरि महेश्वर केवल संकेत छल; आइ ओकर आवाज बिशम्भरक मुँहसँ निकलल। सत्यव्रत मेहता धीरजसँ पूछलनि—'महेश्वर के?' बिशम्भर डरि कऽ चुप भेल, फेर कहलक—'समितिक कागचपर हुनकर मोहर रहैत। ओ कहैत—धन सेवा लेल घूमैत अछि। मुदा सेवा कखन भेल, से नहि बुझैत छी।'

अनन्या तुरन्त अध्याय १८६क पन्ना पलटली। ओहिमे 'महेश्वर-सम्बन्ध—पुष्टि शेष' लिखल छल। आब ओहि रिक्त स्थानमे पहिल कण भरल। विनीत झा समिति-पंजीक छविमे लाल गोल घेरलनि—'महेश्वरनाथ सेवक, संयोजक'। नामक नीचाँ नील मोहर, मोहरक भीतर हरिहर सेवा केन्द्रक चिह्न आ किनारपर बहुत पातर आखर—'स्वीकृत'। आरुणि कहलक—'ई छत्ताक भीतरक रानी नहि; ई छत्ताक रखवाला भऽ सकैत अछि।' मीरा रोकली—'भऽ सकैत अछि—लिखू। निर्णय एखन नहि।'

कारी भूत पाथरपर राखल रानी देवीक बयान लग झुकल। उज्जर प्रेत ओकर घरक खपरैलपर एक क्षणक इजोत पठेलक, जकरा केओ आँखिसँ नहि, मोनसँ देखलक। बूढ़बा भूतक स्वर पातमे गूँजल—'पुरान समयमे दानक थारीपर स्त्रीक नाम लिखि पाप धोएल जाइत छल। आब अंकीय खातापर स्त्रीक नाम लिखि पाप नुकाओल जाइत अछि। थारी आ खाता बदलल, चाल नहि।' बच्चा सभ ई वाक्य धीरे-धीरे लिखलक, जेना प्रत्येक आखर भारी पाथर हो।

रानी देवीक पोता संकोचसँ कहलक—'दादी कहैत छथि, हुनकर नाम साफ करू।' एहि छोट वाक्यपर सभा मौन भऽ गेल। न्याय कतेको बेर अपराधी पकड़बाक पहिने निर्दोषक नामक कालिख धोबाक माँग करैत अछि। मीरा पाथरपर एक अलग पन्ना राखली—'नाम-शुद्धि सूची'। पहिल नाम—रानी देवी। दोसर—रानी कुमारी। तेसर—रानी महिला सहायता समितिक नामपर छलल लाभुक सभ। दीपक धीर स्वरमे कहलक—'जकरा सभक नामसँ अपराध चलल, हुनका सभक नामसँ न्याय शुरू हो।'

सत्यव्रत मेहता दिनक अन्तिम टिप्पणी लिखलनि—'रानी-खण्ड वास्तविक नियन्त्रक नहि, बहुस्तरीय आवरण प्रतीत होइत अछि। गरीब स्त्री, अनुपस्थित युवती, कागचक समिति, नकली अँगूठा आ महेश्वरनाथ सेवकक मोहरक सम्बन्ध जाँचनीय। मधुकर आवाज बनबैत छल; ध्रुवेश जोड़ दैत छल; महेश्वर कागचक छत्ता बनबैत देखाइत अछि—पुष्टि शेष।' मीरा एहि पर सहमति देली, मुदा 'देखाइत' शब्द रेखांकित केली। कथामे नाटकीयता भऽ सकैत अछि; दस्तावेजमे संयम चाही।

छत्ताक भीतरक 'रानी' कोनो एक रानी नहि, अपितु चोरी कएल स्त्री-नामक परत-दर-परत तिजोरी सिद्ध भेल। मधुकरक आवाज, ध्रुवेशक सेवा-जाल, रानी-खाताक बहाव, नकली अँगूठा आ महेश्वरनाथ सेवकक मोहर एके रेखामे देखाइ पड़ल। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली —'महेश्वरक मोहर'। आरुणि ओकर नीचाँ जोड़लक—'जतय मोहर अछि, ओतय

हाथ रहत; हाथ खोजू, हाथकेँ भीड़सँ नहि, प्रमाणसँ पकड़ू।' राति चन्ना गाछीपर उतरि गेल आ भनभनाहट आब मोहरक नील स्याहीमे बदलि रहल छल।

लोकगीत: रानी नामक धुलाई

लोकधुन: स्त्री-समदाउन

खिलत हे रानी, तोहर नाम फेर फूल जकाँ खिलत हे,
चोरी कएल चिन्हारि असल देहरी पर मिलत हे।

रानी दादी कहली—हमर नाम साफ करू,
हमर अंगूठासँ चलल अपराध हमपर नहि धरू।
रानी कुमारी दूर, समिति कागचपर जीवित,
गरीब स्त्रीक नाम बनल खाताक बनावटी सीढ़ी।
न्याय पहिने निर्दोषक माथक कालिख धोबै,

तखन छत्ताक भीतर असल रानी खोजबै।
मधुकर आवाज, ध्रुवेश डोर, महेश्वर मोहर,
स्त्री-नामक तिजोरी भीतर जमा कारी जहर।

हमर अँगूठासँ चलल अपराध हमर माथ नहि धरू।
न्याय पहिने निर्दोषक माथक कालिख धोबए धीरे-धीरे।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—दोष केवल जातिधर्म नहि अछि: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—एही कारण भ्रमित, छलकर्त्ता आ तोता आदिक वाक्य मूल यथार्थ वाक्यक अनुरूप होएबाक कारण यथार्थ ज्ञानक प्रमाण बनैत अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। दोष केवल जातिधर्म नहि अछि।]

अध्याय १८८

महेश्वरक मुहर

नील मुहर छाप नहि, कागजक देहपर पड़ल घाव थीक।

अध्यायारम्भ लोकगीत: नील मोहर, हरियर पात

लोकधुन: झिझिया-जागरण

लगाउ हे पात, नील घावपर हरियर पात हे,
झिझियाक छिद्र-छिद्रसँ किरण पठाउ हे।

नील मोहर जँ घाव बनल, हरियर पात लगाउ,
दीपक छिद्रसँ साँचक किरण भीतर धरि पठाउ।
मोहर सेवक होउ पुनः, मालिक नहि बनि जाए,
जनक हाथक लिखल वचन कागचमे मुस्काए।

नील रंग आकाशो थीक, आशाक खुलल द्वार,
घावक रंग बदलि सकै सामूहिक उपचार।
दीप घुमाउ झिझिया जकाँ, छिद्र-छिद्र उजियार,
मोहरक भीतर लोक जागय—एतबे नव विचार।

मोहर फेर सेवक बनए, मालिक नहि कहाए,
नील रंग आकाशो थीक, खुलल आशा-द्वार,
मिलि-जुलि कएल जाइ घावक उपचार।

❖

नाम बदलै छै—महेसर, महेश्वर, महेश्वरनाथ, सेवक—मुदा स्याहीक घाव अपना चाल नै बदलै छै। पूरा नाम, छोट नाम, समिति-मुहर;' तीन रूपमे बँटल चिन्ह जाँचकेँ थकबय चाहै छै। मुदा लोक-मोनक पुरान बिल, छाप बनौनिहारक आँखि, दादीक डर आ बच्चाक प्रश्न एक संग उठै छै तँ तीनू परदा एके कुंजीमे अटकि जाइए।

खाली कागच सभसँ गहिर पेटी होइ छै। ओहिमे जे लिखल नै गेल, से लिखबाक अधिकार केकरा लग छल—ई प्रश्न कागचक उज्जर देहसँ उठै छै। पहिने मंजूरी, पाछाँ तिथि;' पहिने खाता, पाछाँ आदेश—समयकेँ उनटा घुमाओल जाइए तँ न्यायकेँ सीधा करबाक लेल प्रत्येक पाँति, प्रत्येक अँगूठा आ प्रत्येक साँसकेँ अपना क्रममे राखय पड़ै छै।

जंग लागल कुंजी केवल लोहाँक पेटी नै खोलत। ओ पुरान सेवा, खाली पत्र-मस्तक, चोराओल नाम, अंकीय आदेश आ मौन चौकीदारक भीतर बन्द लाज खोलत। पेटी खुलत तँ हड़बड़ीमे नै—लोकक सोझाँ, प्रमाणक पहरामे, नाम सभकेँ प्रणाम कऽ। तखने नील घावपर हरियर पात लगत आ मुहर फेर सेवक बनि सकत।

चन्ना गाछीक पातपर राति भरि नील चमक अटकल रहल। काल्हि रानी-खाताक भीतर जे मोहर देखाइ देल छल, ओ साधारण गोल छाप नहि रहल; ओ जेना कागचक देहपर पड़ल एहन नील घाव छल, जेकरा छूलापर पुरान सेवा, नव ठगी, स्त्रीक चुरायल नाम, आ हरिहर सेवा केन्द्रक अन्हार एकसंग दुखैत छल। भोर भेल तँ गाछीक जड़ि लग राखल प्रतिलिपि सभपर ओस नहि, नील स्याहीक बून्द देखाइ पड़ल। अनन्या ओहि बून्दकेँ पोंछय गेली, मुदा मीरा रोकि देली—'घाव पोंछू नहि, पहिने ओकर आकार पढ़ू।' ओसभिजल पातक हरियर गन्धमे स्याहीक तीख बास घुलल छल; अनन्याक अँगुरीपर लागल एक नील बून्द ठण्ढ घावजकाँ देर धरि चमकैत रहल।

सत्यव्रत मेहता पाथरपर तीन कागच राखलनि। पहिल—रानी महिला सहायता समितिक अनुमोदन। दोसर—हरिहर सेवा केन्द्रक प्रशिक्षण-प्रमाणपत्र। तेसर—बैंकमे जमा भेल सामूहिक खाता-परिचय। तीनूपर एकहि गोल मोहर—'महेश्वरनाथ सेवक, संयोजक'। मोहरक अक्षर नीकसँ छपल नहि छल; 'सेवक' शब्दक 'व' प्रत्येक कागचमे कने दबि गेल छल, जेना मोहर लगौनिहार हाथ हड़बड़ीमे रहल हो, वा हाथ काँपैत रहल हो। आरुणि कहलक—'जे सेवा शब्द दबि जाए, ओहि मोहरपर भरोसा नहि।'

मीरा आइक सभा शुरू करैत कहली—'मोहर अपराधी नहि; मोहरक प्रयोग अपराधक बाट खोलि सकैत अछि। महेश्वरनाथक नाम आयल अछि, मुदा नाम आयलासँ लोक सिद्ध नहि। हम व्यक्ति नहि, प्रयोग, तिथि, कागच, स्याही, आ अधिकारक शृंखला देखब।' एहि वाक्यसँ भीड़क तेज साँस कने थमल। चन्ना गाछीक अदालत भीड़ नहि, पहरा रहय—ई बात बच्चा सभ आब सीखि गेल छल।

विनीत झा मोबाइलपर मोहरक तीन चित्र बराबर कऽ देखौलनि। गोलाई एक, बाहरी रेखा एक, भीतरक अक्षर एक, मुदा बीचमे छोट फरक—एक ठाम 'महेश्वरनाथ', दोसर ठाम 'महेश्वर नाथ', तेसर ठाम केवल 'म. न. सेवक'। अंकीय अपराध अधिकारी कहलनि जे ई एकहि मूल मोहरक प्रतिरूप सेहो भऽ सकैत अछि, वा अलग-अलग समय बनल तीन मोहर। सत्यव्रत

मेहता जोड़लनि—'अपराधी जखन चिन्हारि बचाबय चाहैत अछि, तखन ओ नामक पूरा स्वरूप नहि मिटबैत; ओ नामकेँ तीन-चार रूपमे बाँटि दैत अछि, ताकि जाँच स्वयं थाकि जाए।'

नरहरी काका धीरे-धीरे उठलाह। हुनका एखन धरि सभ मोहर एक जकाँ लगैत छल। ओ कहलनि—'महेश्वर बालपनमे हरिहर सेवा केन्द्रमे घंटी बजबैत छल। ओहि समय ओकर नाम महेसर छल। बादमे से महेश्वर भेल। फेर ओ अपन नामक पाछाँ "सेवक" जोड़लक। लोक कहलक, नम्र लोक अछि। हम बुझलहुँ नहि जे कतेको बेर नम्रता नामक गमछा अपराधक मुँहपर बाँधि देल जाइत अछि।'

एहि बयानपर सभा हलचल करय लागल। 'महेसर' शब्द जेना धूरिसँ निकलल बाल्यकालक पएर छल। अनन्या तुरन्त नामावलीमे एक नव स्तम्भ बनौली—महेसर, महेश्वर, महेश्वरनाथ, म. न. सेवक। ओ लिखली—'नामक विकास वा नामक परदा?' आरुणि ओकर नीचाँ जोड़लक—'पुष्टि शेष।' मीरा संतोषसँ देखली। न्यायमे प्रश्न पूर्णविराम नहि, अल्पविरामसँ चलैत अछि।

तखन गामक पुरान छाप बनौनिहार बोलायल गेल। ओ बजरंग मुद्राकार छल, बजारक सँकरी गलीमे हुनकर छोट दोकान। उमर एतेक जे हुनकर हाथ काँपैत, मुदा अक्षरक आकार एखनहुँ आँखिमे बसल। ओ पाथर लग बैसलाह, चित्र देखलनि आ पहिल बेरहि कहलनि—'ई हाथक बनल मोहर नहि; यंत्रक साँचा कटायल। मुदा अक्षरक बिघटन देखू—"सेवक"क 'व' नीचाँ दबैत अछि। जे प्रतिष्ठान ई बनौलक, ओकर पुरान यंत्रमे ई दोष रहल।'

विनीत झा पूछलनि—'एहन प्रतिष्ठान कतय?' बजरंग मुद्राकार हँसलाह—'एहन यंत्र शहरक स्टेशन पाछाँक गलीमे छल। हम स्वयं अपन पहिल मोहर ओतयसँ बनौने रहीहुँ।' स्टेशन पाछाँक गली सुनिते सभक मनमे मास्टरक कमरा उगि आयल। पंखा, धूलि, आवाजक डब्बा, सिमक खोल—सभ फेर सोझाँ आबि गेल। महेश्वरक मोहर आ मधुकरक कमरा एके भूगोलमे साँस लैत छल।

अंकीय अपराध अधिकारी तुरन्त पुरान बिलक खोज शुरू करबाक बात कहलनि। मुदा मीरा हुनका रोकि कहली—'बिल खोजब, पर एतय जे लोक छथि, हुनकर मोन सेहो बिलजकाँ अछि। स्मृतिकेँ न्यायालयमे कतेको बेर कमजोर कहल जाइत अछि, मुदा अपराधक पहिल दरार कतेको बेर ओहीसँ खुलैत अछि।' बजरंग मुद्राकार अपन माथ छूबि कऽ कहलनि—'हमरा मोन अछि, एक बेर तीन मोहरक आदेश आयल छल—एक पूरा नाम, एक संक्षेप, एक समिति लेल। लोक स्वयं नहि आयल; एक चेला आयल, हाथमे नील स्याहीक दाग।'

'

चेला?’ सत्यव्रत मेहता पूछलनि। बजरंग मुद्राकार कनी सोचि कहलनि—‘नाम ध्रुवेश कहल गेल छल कि ध्रुव? पूरा मोन नहि। मुदा ओ युवक कागचपर हस्ताक्षर नहि करय चाहैत छल। कहल —“सेवकजीक आदेश अछि।”’ ध्रुवेशक नाम सुनिते पाथर लग राखल पंजीक पन्ना जेना स्वयं फड़फड़ायल। ध्रुवेश, मधुकर, रानी-खाता, महेश्वर—चार टुकड़ा आब एक छोट वृत्त बनबए लगल।

रमरतिया दादीक दीपक भीड़मे पाछाँ बैसल छल। ओ धीरेसँ कहलक—‘हमरा दादीक आवाज चोरि भेल। आब बुझाइत अछि, आवाजपर मुहरो लगाओल गेल।’ ककरो ई वाक्य पहिने पूर्ण रूपेँ नहि बुझायल; फेर मीरा विस्तार देली—‘जखन झूठ फोनपर बजैत अछि आ ओकर पाछाँ संस्था, प्रमाणपत्र, मोहर, खाता आ प्रशिक्षणक नाम रहैत अछि, तखन बूढ़ लोक ओकरा सत्य बुझैत अछि। आवाज चोरि बिनु मोहरक असर आधा छल; मोहर बिनु आवाजक डर आधा। दुनू मिलि कऽ अंकीय गोहि बनल।’ बजरंग मुद्राकारक अँगुरीमे सूखल रबर आ धातुक महीन गन्ध बसल छल; काँपैत हाथो अक्षरक दबावकेँ एहन पढ़ैत छल जेना पुरान देबाल अपन दरार चिन्हैत हो।

बैंकक कागच फेर खोलल गेल। परिचयदाता स्तम्भमे ‘म. न. सेवक’क हस्ताक्षर नहि, केवल मोहर। नियमक अनुसार हस्ताक्षर चाही छल, मुदा शाखा-कर्मी ‘समिति-प्रमाणित’ लिखि छोड़ि देने छल। सत्यव्रत मेहता पन्नाक कोनापर तिथि देखलनि। मोहरक तिथि पाँच दिन बादक अनुमोदन-पत्रसँ पहिने लगल छल। आरुणि चौंकि उठल—‘मोहर पत्रसँ पहिने कोना लगल?’ विनीत झा हँसलाह नहि; हुनकर चेहरा कठोर भेल—‘जाहि दिन भविष्य पहिनेसँ तय हो, कागच पाछाँ भरल जाइत अछि।’

एहि वाक्यपर चन्ना गाछीक पात काँपल। बूढ़बा भूतक आवाज गूँजल—‘पुरान समयमे जाली बँटबारा पहिने मनमे होइत छल, कागच बादमे बनैत। आब जाली लाभ पहिने खातामे होइत अछि, अनुमति बादमे बनैत। समयकेँ उनटा घुमाबयवला लोक न्यायसँ बेसी डरैत अछि।’ बच्चा सभ ‘उनटा समय’ लिखलक। कारी भूत नील मोहरपर झुकल, उज्जर प्रेत तिथिक ऊपर एक बारीक उजास राखलक।

दुपहर धरि तीन गामक स्त्री सभक बयान आयल। एक कहली—‘हमर नामपर समिति बनल, मुदा हमरा बुलाओल नहि गेल।’ दोसर कहली—‘अँगूठा राशन लेल लगेलहुँ, कहलक पेंशन सुधार होएत।’ तेसर कहली—‘फोटो लेल गेल, कहलक बेटीकेँ छात्रवृत्ति।’ तीनू बयानक पाछाँ अलग कागच, पर एके मोहर। मीरा प्रत्येक बयानक बाद पूछली—‘की अहाँ

महेश्वरनाथकेँ देखल?' पहिल कहली—'नहि।' दोसर कहली—'दूरसँ मंचपर।' तेसर कहली—'नाम सुनल, चेहरा नहि।'

सत्यव्रत मेहता एहि निष्कर्षपर तुरन्त पहुँचयसँ रोकलनि। 'जकर मोहर चलैत अछि, ओकर चेहरा बहुत बेर अनुपस्थित रहैत अछि। अनुपस्थिति सेहो शक्ति होइत अछि। जे सदा मंचपर रहत, ओ छोट अभिनेता हो सकैत; जे केवल मोहर बनि कागचपर उतरत, ओ पाछाँक संचालन सेहो हो सकैत।' मीरा सहमतिमे माथ हिलौली—'महेश्वरकेँ पकड़ब मतलब चेहरा खोजब नहि, अधिकारक रस्ता खोजब।'

विनीत झा स्टेशन पाछाँक मोहर-दोकानक सम्भावित पुरान बिलक क्रम निकाललनि। बिल क्रमांक ४४६, ४४७, ४४८—तीन वस्तु एकहि दिन। ग्राहक नाम 'सेवा केन्द्र'। भुगतान नकद। वस्तु—गोल मुहर, छोट मुहर, समिति-मुहर। एहि कागचक चित्र जेना-जेन स्पष्ट भेल, सभकेँ लगल जे स्टेशनक पाछाँक धूलि फेर गाछीमे उड़ि रहल अछि। मधुकरक कमरा ओहि गलीमे; मोहर ओहि गलीमे; प्रतिलिपि ओहि गलीमे; सिमक खोल सेहो ओतय भेटल। शहर आब केवल ठाम नहि रहल; अपराधक करघा बनि गेल।

अनन्या पाथरपर नक्शा बनौली—चन्ना गाछी, हरिहर सेवा केन्द्र, स्टेशन-पाछाँक गली, बैंक शाखा, रानी-खाता, ध्रुवेशक सेवा-जाल, मधुकरक कमरा, महेश्वरक मोहर। रेखा सभ जोड़िते एक आकृति बनल—मधुमक्खीक छत्ता नहि, अपितु गोहिक खुलल जबड़ा। आरुणि कहलक—'छत्ता भीतर मधु रहैत अछि; एहि जबड़ामे नाम फँसल अछि।' बूढ़बा भूतक हलुक हँसी पातसँ झरल—'बच्चा सभ प्रतीकक दाँत देखय लागल।'

एहि बीच एक अप्रत्याशित कागच भेटल। हरिहर सेवा केन्द्रक पुरान दान-पुस्तिकामे महेश्वरनाथ सेवकक नामक पाछाँ कोषाध्यक्ष नहि, 'कुंजी-रक्षक' लिखल छल। कुंजी-रक्षक—ई पद ककरो मोन नहि छल। नरहरी काका कहलनि—'केन्द्रमे एक लोहाँक पेटी छल, जाहिमे पुरान प्रमाणपत्र, मोहर, खाली पत्र-मस्तक, आ दानक रसीद राखल जाइत। कुंजी महेसर लग रहैत। बादमे लोक ओकरा महेश्वरनाथ सेवक कहय लागल।'

'खाली पत्र-मस्तक?' सत्यव्रत मेहता चौकन्ना भेलाह। नरहरी काका हँकार देलनि—'हँ। बटुकनाथ हरिहरनक समयसँ चलल। दानदाता आबय, तँ तुरन्त प्रमाणपत्र। कतेको बेर पहिने हस्ताक्षर, बादमे नाम।' एहि वाक्यपर सभ चुप। बटुकनाथक नाम जेना पुरान राक्षसक छाह जकाँ पाथरपर पड़ल। कथा फेर अपना जड़ि दिस घुरि रहल छल। महेश्वरक मोहर अचानक बटुकनाथक खाली पत्र-मस्तकक संग जुड़ि उठल।

मीरा गम्भीर स्वरमे कहली—‘एहि बातक पुष्टि जरूरी अछि। जँ खाली पत्र-मस्तक छल, तँ मोहरक अर्थ बदलि जाएत। तखन महेश्वर केवल व्यक्ति नहि, पुरान पद्धतिक रखवाला रहल।’ देविका जोड़ली—‘आ जँ पद्धति पुरान अछि, तँ अंकीय गिरफ्तारी नव अपराध नहि, पुरान खाली कागचपर लिखल नव वाक्य अछि।’ बच्चा सभ एहि वाक्यपर बहुत देर धरि चुप रहल। हुनका सभकेँ बुझाइ पड़ल जे अपराध समय बदलैत अछि, व्याकरण नहि।

बजरंग मुद्राकार फेर एक बात मोन केलनि—‘नील स्याहीक डब्बा ओ लोक अलगसँ लैत छल। साधारण स्याही नहि। कहैत—छाप फोटोमे साफ आबय।’ फोटोमे साफ—ई वाक्य सुनि अंकीय अपराध अधिकारीक आँखि चमकल। नकली कागच भेजबाक लेल छाप स्पष्ट चाही। अंकीय प्रति, मोबाइल फोटो, पीडीएफ, बैंक केवाईसी—नील मोहर दूरसँ सेहो विश्वास जगबैत। महेश्वरक मोहर कागचपर कम, स्क्रीनपर बेसी कामक बनाओल गेल छल।

आरुणि कहलक—‘ई मोहर आँखि लेल बनल छल, कानून लेल नहि।’ सत्यव्रत मेहता मुस्कुरेलाह—‘ठीक। कानून छुअल मूल कागच माँगैत; डरायल बूढ़ मोबाइलपर भेजल चित्र देखैत।’ सोमरी काकी, जे आइ चुप बैसल छली, कहली—‘हमरा फोनपर एक कागच देखौलक। ऊपर नील गोल छाप। कहलक, सरकारी आदेश। हम पढ़ि नहि सकलहुँ, मुदा छाप देखि डरि गेलहुँ।’ सभ समझि गेल जे मोहर केवल खाता खोलबा लेल नहि, डरक नाटकक मंच-सज्जा सेहो रहल।

दीपक धीरेसँ पूछलक—‘तखन दादीक फोनमे जे आदेश आयल, ओहो एहि मोहरक?’ अंकीय अपराध अधिकारी कहलनि—‘चित्र मिलानी बाकी अछि, मुदा सम्भावना प्रबल।’ मीरा हुनका देखली—‘सम्भावना लिखू, सत्य नहि।’ अनन्या पन्नापर लिखली—‘सोमरी काकीक अंकीय आदेश—नील मोहर—मिलान शेष।’ एहि एक पंक्तिमे कथा, सावधानी आ करुणा तीनू रहि गेल।

साँझ दिस हरिहर सेवा केन्द्रक पुरान चौकीदार गदाधर लाठी टेकैत आयलाह। हुनका बहुत देरसँ बोलाओल जा रहल छल, मुदा ओ कहैत रहलाह—‘हमरा किछु मोन नहि।’ आइ ओ स्वयं आयलाह। हुनकर मुँह सूखल छल। ओ कहलनि—‘लोहाँक पेटी एखनहुँ अछि।’ सभा एकदम स्थिर। ‘कतय?’ मीरा पूछली। गदाधर चुप रहलाह। फेर कहलनि—‘केन्द्रक पाछाँक भंडार-घरमे, सिमेन्टक बोरा पाछाँ। कुंजी महेश्वर लग नहि, अब ध्रुवेशक लग रहैत छल। मुदा पुरान दोसर कुंजी...’ ओ अपन कमरक गमछा खोलि एक छोट जंग-लगल कुंजी निकाललनि—‘ई हमरा देल गेल छल, कहने छल—कहियो प्रयोग नहि करब।’ पुरान दान-पुस्तिकाक पन्ना

खोलिते सीलन, सरिसोक तेल आ सूखल गोंदक मिलल गन्ध उठल; नरहरी काकाक आँखिमे ओ लोहाँक पेटीक अन्हार फेर जीवित भऽ गेल।

कुंजी पाथरपर राखिते चन्ना गाछीक चारू कात हवा भारी भऽ गेल। कारी भूत कुंजी लग झुकल, मुदा छू नहि सकल। उज्जर प्रेत एक क्षण लेल उजास बढ़ौलक। बूढ़बा भूतक स्वर आयल—'कुंजी जे बन्द पेटी नहि खोलैत, ओ आत्मा बन्द करैत अछि। बूढ़ चौकीदार आइ अपन आत्मा खोललक।' गदाधर कानय लगलाह। 'हम बुझैत रहीहुँ, खाली पुरान कागच अछि। जखन नील मोहर फेर-फेर देखलहुँ, डर लगल।'

मीरा तुरन्त निर्णय देली—'भंडार-घर खोलब, मुदा विधिपूर्वक। पंचायत, पुलिस, बैंकक प्रतिनिधि, स्त्री-समितिक दू सदस्य, आ नामक पहरुआ बच्चा सभक उपस्थितिमे। कोनो पेटी असगर नहि खुलत।' भीड़ 'एखन चलू' कहि उठल, मुदा मीरा कठोर भऽ गेली—'न्यायक पएर हड़बड़ीसँ फिसलैत अछि। रातिमे केवल पहरा। भोरमे खोलब।'

राति उतरैत उतरैत गाछीक पातपर नील मोहरक गोल छाह बनल। प्रत्येक पातपर एक-एक अधछाप, ककरो नाम पूरा नहि, ककरो तिथि उनटी, ककरो अँगूठा नकली। चन्ना गाछी जेना स्वयं हरिहर सेवा केन्द्रक भंडार-घरक सपना देखय लागल। पनिडुब्बी पोखरिसँ उठि आयली आ कहली—'कागचक पेटीमे पानि नहि, तइयो डूबयवला लोकक आवाज अछि।' हुलासी अपन हाथविहीन देह लऽ कऽ कुंजी दिस देखैत रहली। हुनकर आँखिमे पहिल बेर डर नहि, जिद्द छल।

सत्यव्रत मेहता दिनक अन्तिम टिप्पणी लिखलनि—'महेश्वरनाथ सेवकक मोहर बहु-प्रयोगी नियंत्रण-चिह्न प्रतीत। रानी-खाता, समिति अनुमोदन, अंकीय आदेश, बैंक परिचय, आ हरिहर सेवा केन्द्रक खाली पत्र-मस्तक सम्भावित रूपेँ सम्बद्ध। ध्रुवेशक माध्यम, मधुकरक आवाज-जाल, स्टेशन-पाछाँक गली, आ पुरान लोहाँक पेटी जाँचनीय। निष्कर्ष स्थगित, पर श्रृंखला स्पष्ट।' मीरा एहि टिप्पणीक ऊपर लिखली—'मोहरक पाछाँक पेटी खोलू, पर पेटीमे बन्द नाम सभकेँ पहिने प्रणाम करू।'

महेश्वरक मोहर एक लोकक जेबक छाप नहि, अपितु पुरान सेवा-संस्थाक अन्हार, खाली पत्र-मस्तक, स्त्री-नामक चोरी, डरक अंकीय आदेश, बैंकक ढिलाइ, आ ध्रुवेश-मधुकरक जालक बीच घूमैत कुंजी सिद्ध भेल। गदाधरक जंग-लगल कुंजी पाथरपर राखल रहल। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—'लोहाँक पेटी'। आरुणि ओकर नीचाँ जोड़लक—'जतय खाली कागच भरल गेल, ओतय असली नाम बन्द रहल।'

लोकगीत: नील मोहरक घाव

लोकधुन: मोहर-विलाप

घुमाउ हे कुंजी, जंग-लागल कुंजी घुमाउ हे,
प्रत्येक बन्द नामकेँ बाहर बहा आनू हे।

नील गोल छाप नहि, कागचक देहक घाव,
खाली पत्र-मस्तक पूछै—के लिखलक हमर भाव?
रानी-खाता, बैंक परिचय, अंकीय आदेश,
महेश्वरक मोहर घूमल धरि-धरि भेष।
पनिडुब्बी कहली—पानि नहि, तइयो लोक डूबल,

हुलासी कुंजी ताकली, बिनु हाथो मन उबल।
जंग लागल कुंजी पाथरपर चुपचाप रहल,
खाली कागच भीतर असल नाम बन्द रहल।
नील मोहर, जकर देह घायल कएलहुँ, कहू,
कुंजी घुमाउ—प्रत्येक बन्द नाम बाहर बहू।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—आओर आक्षेपक खण्डन: "जरा" आ "राजा", "नदी" आ "दीन"—एहि शब्दमे वर्णसंख्या समान, क्रम भिन्न। आओर आक्षेपक खण्डन।]

अध्याय १८९

लोहेक पेटी

लोहेक पेटीक कुंजी जङ खा सकैए, गवाही नहि।

अध्यायारम्भ लोकगीत: बिसेसरक नामक वापसी

लोकधुन: मजदूर सोहर

ललना रे, बिसेसरक सोहर हे,
लोहाँक पेटीसँ नामक नव जनम हे।

लोहाँक पेटी खुलत आइ, नामक जन्म होयत,
बिसेसरक श्रमक अक्षर फेर पातपर सोहेत।
जूता, गमछा, हथेली, पसेना सभ कहत,
पुलक प्रत्येक पाया भीतर ओकर साहस रहत।

माय नहि, इतिहासो आब 'हाजिर' कहि उठत,
कटल नामक ठाम हरियर कोंपल फेर फुटत।
श्रमक नाम घुरि आयल तँ धरती भेल धन्य,
बिसेसरक उज्जर स्मृति बनत सभक पुण्य।

जूता-गमछा-हथेली सभ गवाहीमे ठाढ़,
पुलक पाया-पायामे ओकर साहस गाढ़।
माय संग इतिहासो आब 'हाजिर' कहत,
कटल नामक ठाम हरियर कोंपल रहत।

❖

पेटी कहै छै—हमरा दोष नहि, हमरा भरनिहार हाथ पढ़ू। नारिकेलक पात शुभ छल, मुदा ओकर नीचाँ खाली पत्र-मस्तक राखि शुभकेँ छलक चादर बना देल गेल। मुहर सेवा लेल छल, मुदा नाम पाछाँ भरबाक बाट बनल। रबर अँगूठा बनल, कार्बन एक झूठकेँ अनेक देह देलक, आ धागाक रंग लोकक दु:खकेँ अलग-अलग थैलीमे बाँटि देलक।

पीयर धागामे बिसेसरक अधूर नाम काँपै छै। मृत्युकेँ "अनुपस्थिति" लिखि देल गेल तँ माय कते दिन देहरी ताकत? मजदूरक देह पुलक पाया बनल, मुदा नाम पेटीक तहमे दबि गेल। आब पन्ना पानि माँगै छै, मुदा पानि पहिने नाम सुनय चाहै छै; जलसमाधिसँ पहिने अक्षरक वापसी जरूरी छै।

नील पंजी डरक खेत छै—ककर बेटा बाहर, के अशिक्षित, के रातिमे फोन उठाओत, के वारंटक नामसँ काँपत। अपराध धनसँ पहिने लोकक भीतरक दरार गिनै छै। मुदा दरारक सूची जखन जनक सोझाँ पढ़ल जाइए, तखन वैह बाट न्यायो भीतर पैसै छै। पीड़ितक नाम तमाशा नहि, ओकर निजता सेहो गवाहीक पहरा छै।

पेटी खुलल तँ लोहाँ नहि, व्यवस्था खुलल। पुरान संस्थाक मुहर आ नव अंकीय छल एके जिल्दमे भेटल। आब प्रत्येक वस्तु क्रम पाओत, प्रत्येक अनुमान प्रमाण माँगत, प्रत्येक नाम अपन देह घुरि पाओत। कुंजी जङ खा सकैए; लोक-मोनक गवाही नै। बिसेसरक नाम पढ़ल जाएत तँ पेटीक अन्हारमे पहिल हरियर कोंपल फुटत।

भोरक पहिल उजास हरिहर सेवा केंद्रक पाछाँक भण्डार-घरपर एना पड़ल जेना अन्हारक पुरान देहपर कोनो धीमा पट्टी बाँधल जा रहल हो। रातिभरि गदाधरक जङ लागल कुंजी चन्ना गाछीक पाथरपर राखल रहल। कियो ओकरा छूअल नहि, मुदा सभकेँ लगैत रहल जे कुंजी स्वयं साँस लऽ रहल अछि। काल्हि महेश्वरक मुहरक पाछाँ ई पेटी प्रकट भेल छल; आइ पेटी खोलबाक दिन छल। अनन्या पंजीमे शीर्षक लिखली—'लोहाँक पेटी'। हुनका बुझाइ पड़ल जे लोहाँक पेटी केवल वस्तु नहि, अपराधक पेट अछि। ओसक ठण्ढक आ जङक कसैल गन्ध एकसंग उठैत छल; अनन्याक हथेलीमे रातिक नील स्याहीक महीन दाग एखनहुँ सुखायल नहि छल।

मीरा भोरमे सभकेँ फेर नियम सुनौली। पंचायतक दू सदस्य, पुलिसक उपस्थितिमे, बैंकक प्रतिनिधि, स्त्री-समितिक दू स्त्री, विनीत झा, सत्यव्रत मेहता, गदाधर, आ नामक पहरुआ बच्चा सभ—एतेक लोकक सोझाँ भण्डार-घर खुलत। 'कोनो कागच जेना अछि तेना उठत, जेना उठत तेना लिखल जाएत। ककरो जेबमे किछु नहि जाएत। भीड़ बाहर रहत। पेटी खोलब कौतूहल नहि, गवाही अछि।' ई सुनि लोकसभ कने असन्तुष्ट भेल, मुदा चन्ना गाछीक अदालत अब भीड़क हल्ला नहि, क्रमक धैर्य सीखि चुकल छल।

भण्डार-घरक दरबाजा खोलल गेल तँ भीतरक गन्ध बाहर आबि सभकेँ पाछाँ ठेलि देलक। सिमेन्टक पुरान बोरा, नेवला खाओल कागच, नमी, चूहाक बीट, बासी तेल, आ स्याहीक करुआ गन्ध। कोनमे ऊँच-नीच ढेर बनल छल। गदाधर काँपैत हाथसँ सिमेन्टक बोरा हटौलनि। बोरा हटिते लोहाँक पेटी देखायल—कारी, मोट, किनारपर जङ, बीचमे नील मुहरक धुँधला दाग। पेटीपर चाकसँ पुरान अक्षर छल—'सेवा'। 'सेवा'क 'वा' लगभग मिटल। आरुणि धीरे कहलक—'एतय सेहो सेवा अधूरी अछि।' ढकनाक किनार छूबिते गदाधरक नहमे लाल जङक

महीन चूर्ण लागि गेल; सीलनक बीच ओ धातुक तीख गन्ध एहन उठल जेना बन्द बरख सभ एक बेरमे साँस छोड़ि रहल हो।

कुंजी तालामे लगल, मुदा तुरन्त नहि घूमल। गदाधरक हाथ काँपल। विनीत झा चित्र लेल, समय लिखल। बैंक प्रतिनिधि, जे एखन धरि दूरी राखि ठाढ़ छल, पसेना पोंछलक। मीरा कहली—'जँ ताला नहि खुलत, तँ ताला तोड़ब नहि; पहिने लिखब जे ताला नहि खुलल।' ई सुनितहि गदाधर जेना संकल्प पाबि गेलाह। ओ कुंजी कनी दहिना, कनी बामा, फेर भीतर धक्का देलनि। ताला पुरान कराहजकाँ बजल—ख्राऽऽक। पेटी खुलि गेल।

ढकना उठितहि पहिल वस्तु कागच नहि, एक सूखल नारिकेल पात भेटल। पात कारी पड़ि गेल छल, मुदा ओकर नोकपर हल्दीक पीयर दाग एखनहुँ बचल। सत्यव्रत मेहता चौंकलाह—'ई पुरान गृह-पात जेकाँ अछि।' नरहरी काका बाहरसँ झुकि कहलनि—'हरिहरनक समय दान-पत्रपर नारिकेल पात राखल जाइत छल, शुभ मानि।' मीरा पात अलग कपड़ापर रखौली। 'अपराध शुभक पातसँ शुरू भऽ सकैत अछि; पात दोषी नहि, प्रयोग पढ़ू।'

पातक नीचाँ खाली पत्र-मस्तकक गड्डी छल। प्रत्येक पन्नापर ऊपर 'हरिहर सेवा केंद्र', बामा कात चिह्न, दहिना कात खाली स्थान, नीचाँ महेश्वरनाथ सेवकक मुहरक आधा छाप। किछु पन्नापर पहिनेसँ हस्ताक्षर जेकाँ रेखा, मुदा नाम खाली। किछुपर केवल तिथि। किछुपर लाल पेंसिलसँ 'रानी', 'विधवा', 'सिम', 'स्वर', 'खाता' लिखल। अनन्या काँपि गेली—'जतय नाम बादमे भरबाक हो, ओतय लोक पहिनेही गायब कएल गेल।'

दोसरा तहमे पुरान प्रतिलिपि-पत्र भेटल, नील-काला। ओकरा उठितहि बच्चा सभक हाथपर स्याही लगि गेल। आरुणि अपन हथेली देखलक—नील दाग। 'एहि स्याहीसँ कतेको हाथ बनाओल गेल होयत,' ओ कहलक। विनीत झा तुरन्त चूर्ण-चिन्ह जाँचबाक बात लिखलनि। गदाधर बुदबुदेलाह—'प्रतिलिपि-पत्र बिना कतेको प्रति एक बेरमे बनैत। असल कोन, प्रति कोन, कियो नहि पूछैत।' सत्यव्रत मेहता जोड़लनि—'प्रति जँ झूठ हो, तँ असल कागचक हत्या होइत अछि।'

तेसरा तहमे छोट-छोट थैली छल। प्रत्येक थैलीपर धागाक रंग अलग। लाल धागा—स्त्री-समिति। नील—बैंक। कारी—फोन। पीयर—मजदूर। पहिल लाल थैली खोलितहि रानी देवी, रानी कुमारी, सोमरी काकी, कमला देवी, आ दर्जन भर स्त्रीक चित्र-प्रतिलिपि, अँगूठाक धब्बा, आ खाली सहमति-पत्र भेटल। कतेको ठाम अँगूठा एके दिशा, एके दबाव, एके आकार। स्त्री-

समितिक दू स्त्री एक-दोसराक हाथ पकड़ि बैसली। हुनका सभकेँ बुझायल जे हुनकर नामक कपड़ा उतारि ककरो दोसर शरीरपर पहिराओल गेल।

नील थैलीमे बैंकक परिचय-पत्रक प्रतिलिपि छल। किछु खाताक अंक अधूरा, किछुपर अन्तिम चार अंक गोल घेरामे। प्रत्येक पन्नापर 'समिति प्रमाणित' लिखल, पर हस्ताक्षर नहि। बैंक प्रतिनिधि कहलक—'ई शाखाक प्रपत्रक प्रतिलिपि लगैत अछि, मुदा मूल देखे बिना...' मीरा ओकर वाक्य पूरा होमय देली। 'मूल देखे बिना निष्कर्ष नहि—ई ठीक। पर मूल देखे बिना खाता खोलल गेल कि नहि, ई सेहो लिखू।' बैंक प्रतिनिधिक चेहरा उतरि गेल।

कारी थैली खोलितहि मोबाइल-अंकक सूची भेटल। नामक सोझाँ दू-दू अंक—एक असल, एक 'कार्य'। किछु नामक सोझाँ 'बूढ़', 'अशिक्षित', 'बेटा बाहर', 'बहुरिया डरैत', 'राति फोन' जेकाँ नोट। दीपक एहि सूचीमे अपन दादीक नाम देखलक। ओकर आँखि भरि आएल, मुदा ओ कानल नहि। ओ कहलक—'ई लोक दादीक अकेलापन सेहो लिखैत छल।' मीरा आँखि झुका लेली। दीपकक अँगुरी दादीक नामपर ठमकि गेल; कागचक ठण्ढ सतह छूबिते ओकरा रातिक फोन आ ओहि पारक काँपैत साँस एकसंग मोन पड़ल।

पीयर थैलीमे मजदूरक पुरान दावा-पत्र छल। किछु गंगा-पुल बनबाक समयक, किछु बादक निर्माण-शिविरक, किछु दुर्घटना-सहायताक नामपर। 'बिसेसर पासवान'क एक अधूरा पन्ना देखायल। सत्यव्रत मेहताक हाथ ठमकि गेल। पन्नापर मृत्यु नहि, 'अनुपस्थिति' लिखल छल। ओकर कातमे कनी पुरान मुहर—बटुकनाथ हरिहरनक संस्थाक। चन्ना गाछीक पात दूर रहितो अचानक हिलल। गोहि सभक पुरान जलसमाधि फेर पेटीक भीतरसँ आवाज देलक।

गदाधर पाछाँ हटि गेलाह। 'हमरा नहि मालूम छल ई सभ अछि,' ओ कहलनि। मीरा हुनका देखली—'नहि मालूम छल—ई लिखल जाएत। पर कुंजी रहितो नहि खोलल—ईहो लिखल जाएत।' गदाधर माथ झुका लेलनि। सत्यव्रत मेहता ओकरा निर्दयतासँ नहि, करुणासँ देखलनि। छोट-छोट डर बरखों धरि पेटीकेँ जीवित राखैत अछि। अपराधीक हाथ पैघ हो, मुदा ताला कतेको बेर साधारण लोकक मौनसँ बन्द रहैत अछि।

चारिम तहमे मुहरक तीन डब्बा भेटल। एक गोल, एक चौकोर, एक छोट नाम-पट्टी। गोल मुहर महेश्वरनाथ सेवकक। चौकोर 'रानी महिला सहायता समिति'। छोट पट्टीपर केवल 'म.न.से.'। मुहरक रबर सूखि गेल छल, मुदा नील स्याहीक गन्ध एखनहुँ ताजा जेकाँ। बजरंग मुद्राकार चित्र देखितहि कहलनि—'ई वैह कटाई। "व" दबैत, "थ" खिंचैत।' विनीत झा

मुहरक छाप अलग कागचपर परीक्षण लेल सुरक्षित कएलनि। मीरा कहली—‘आइ मुहर बोलत, पर ओकर बोली अदालतक भाषामे लिखल जाएत।’

पेटीक किनारमे एक छोट कपड़ाक थैली अटकल छल। ओहि थैलीमे अँगूठा-छापक पाँच रबरक टुकड़ा भेटल। सभा सन्न। विनीत झा कड़ा स्वरमे कहलनि—‘ई अत्यन्त गम्भीर प्रमाण अछि।’ कतेको नामक सोझाँ जाली अँगूठा किएक एक समान लगैत छल, तकर उत्तर जेना सोझाँ पड़ल। सोमरी काकी बाहरसँ चिचिआली—‘हमर अँगूठा फेर बनाओल?’ मीरा भीतरेसँ उत्तर देली—‘एखन प्रश्न लिखल जाएत। उत्तर जाँच देत।’ मुदा हुनकर स्वर काँपि रहल छल।

एहि रबरक टुकड़ापर किछु सूखल तेल लागल छल। गदाधर कहलनि—‘अँगूठा लेबासँ पहिने तेल लगबैत छल। कहैत—छाप साफ आएत।’ आरुणि लिखलक—‘साफ छाप, दुरुपयोग।’ अनन्या ओकर कातमे जोड़ली—‘अँगूठा देहक सहमति नहि; समझक बिनु लेब चोरी।’ ई वाक्य सुनि स्त्री सभक चेहरा बदलि गेल। ओ सभ पहिल बेर बुझि रहल छली जे लाभ-पत्रक नामपर हुनकर देहक निशान हुनकर विरुद्ध गवाही बनाओल गेल।

पाँचम तहमे एक पातर टिप्पणी-पुस्तिका भेटल, जेकर जिल्द नील छल। जिल्दपर किछु नहि लिखल, केवल बीचमे सफेद गोला, जकरा भीतर पेंसिलसँ ‘पंजी’ लिखल छल। विनीत झा तुरन्त ओकरा खोलबासँ पहिने चित्र लेलनि। मीरा कहली—‘ई प्रमुख वस्तु बुझाइत अछि। धैर्यसँ।’ टिप्पणी-पुस्तिका खोलल गेल। पहिल पन्ना खाली। दोसर पन्नापर स्तम्भ—नाम, असल अंक, कार्य-अंक, आवाज, खाता, डर। तेसर पन्नापर संकेत—अ, ब, स, र, ज। ‘डर’ शब्द देखितहि सभक देहमे सिहरन दौड़ि गेल।

सत्यव्रत मेहता धीरे पढ़लनि—‘रमरतिया—बेटा बाहर—राति—गिरफ्तारी-पत्र। सोमरी—पेंशन—दुपहर—मुहर। रामसागर—बेटा शहर—बाबूक आवाज।’ पन्ना-पन्नापर लोकक दुर्बलता, सम्बन्ध, विश्वास, लाज, आ आवश्यकता संकेतमे बदलल छल। मधुकरक आवाज-जाल आब व्यक्तिगत नाटक नहि रहल; ई व्यवस्थित पाठ्यक्रम छल। हरिहर सेवा केंद्र लाभार्थीक सूची नहि बनबैत छल, डरक मानचित्र बनबैत छल।

बैंक प्रतिनिधि पन्ना देखैत कहलक—‘एहिमे किछु खाता-अंक हमरा शाखासँ मिलैत बुझाइत अछि।’ मीरा ओकरा रोकली—‘लगैत अछि—लिखू। प्रमाण भेटलापर कहू—मिलैत अछि।’ प्रतिनिधि पहिल बेर मीरा दिस आदरसँ देखलक। ओकरा बुझायल जे ई सभा बैंक-विरोध नहि; झूठ-विरोध अछि। सत्यव्रत मेहता पन्नाक किनारपर देखलनि—किछु ठाम लाल बून्द, किछु ठाम नील, किछु ठाम कारी। धागाक रंग आ पंजीक रंग मिलैत छल।

नील पंजीक बीचमे एक पन्ना मोड़ल छल। मोड़ खोलितहि पुरान नाम सोझाँ आयल—'बटुकनाथ हरिहरन स्मृति-कोष'। ओकर नीचाँ लिखल—'खाली प्रमाणपत्र—पच्चीस, मुहरित आदेश—बारह, आवाज सूची—छब्बीस, सक्रिय खाता—नौ।' महेश्वर, ध्रुवेश, मधुकर—तीनू नाम छोट अक्षरमे अलग-अलग पंक्तिमे। बटुकनाथक मृत प्रतिष्ठा जीवित ठगीक कोष बनि कागचपर उगि आयल। चन्ना गाछीक छाह दिनमे सेहो भण्डार-घरक देहरीपर उतरि आएल।

मीरा बहुत देर धरि चुप रहली। फेर कहली—'एहि पन्नापर जे लिखल अछि, ओकर अर्थ भारी अछि। एकरा पढ़बा सँ पहिने, सभ नामक प्रतिलिपि सुरक्षित कएल जाए। ककरो नाम सार्वजनिक नहि होयत, जखन धरि ओकर परिवार सँ बात नहि होयत।' भीड़ फेर बेचैन भेल। लोक अपराधक नाम सुनय चाहैत छल, पीड़ितक निजता नहि बुझैत। अनन्या ऊँच स्वरमे कहली—'पीड़ितक नाम तमाशा नहि।' एहि बच्चा-स्वरमे एते दृढ़ता छल जे भीड़ शान्त भऽ गेल।

भण्डार-घरक बाहर सोमरी काकी, दीपक, रानी देवीक पोता, आ कतेको लोक प्रतीक्षा करैत छल। कागच बाहर नहि आनल गेल; केवल सूची बनल। दीपक पूछलक—'दादीक नाम भेटल?' मीरा ओकर हाथ पकड़ि कहली—'नाम भेटल, आ नामक संग ईहो भेटल जे हुनकर अकेलापन ककरा-ककरा मालूम छल।' दीपक काँपि उठल—'अकेलापन सेहो चोरी होइत अछि?' सत्यव्रत मेहता कहलनि—'हो, जखन ओकरा डरक संकेत बनाओल जाए।'

कारी भूत साँझसँ पहिने भण्डार-घरक छतपर देखाइ पड़ल, मुदा ककरो आँखिसँ नहि—लोकक मौनसँ। उज्जर प्रेत खिड़कीक सींखचापर ठहरल। बूढ़बा भूतक आवाज चन्ना गाछीसँ उठि भण्डार-घर धरि पहुँचल—'लोहाँक पेटीमे लोहाँक चीज कम, लोकक छेद बेसी अछि। जे छेद सँ डर पैसल, ओहि छेदसँ न्यायो पैसि सकैत।' बच्चा सभ एहि वाक्यकेँ लिखय चाहलक, मुदा विनीत झा कहल—'पहिने सूची पूरा।' आइ भूतक वाक्य सेहो प्रक्रियासँ पाछाँ रहि गेल; ई न्यायक परिपक्वता छल।

साँझ पड़लापर पेटी फेर बन्द नहि कएल गेल। ओकरा मुहरबन्द कऽ पुलिसक निगरानीमे राखल गेल। प्रत्येक वस्तुक क्रमांक—एल.पी. एक, एल.पी. दू, एल.पी. तीन—बनल। एल.पी. अर्थात् लोहाँक पेटी। आरुणि हँसल नहि, मुदा कहलक—'एल.पी. मतलब लूटल चिन्हारि सेहो हो सकैत।' अनन्या जोड़लक—'नुकायल पीड़ा।' मीरा दुनूकेँ देखली—'रूपक राखू, पर कागचमे पूरा लिखू—लोहाँक पेटी। न्याय संक्षेपमे नहि, स्पष्ट शब्दमे चलत।'

राति चन्ना गाछी लग आइ लोहाँक पेटीक प्रत्यक्ष वस्तु नहि, ओकर सूची राखल गेल। खाली पत्र-मस्तक, प्रतिलिपि-पत्र, जाली अँगूठा, मुहर, स्त्री-थैली, बैंक-थैली, फोन-थैली, मजदूर-थैली, आ नील पंजी—सभ क्रममे लिखल। पनिडुब्बी पाथरक किनारपर झुकि कहली—'जाहि पन्नापर बिसेसर फेर भेटल, ओ पन्ना पानि माँगैत अछि।' हुलासी आँखि बन्द कऽ कहलनि—'पहिने नाम पढ़ू। पानि बादमे।'

सत्यव्रत मेहता दिनक अन्तिम टिप्पणी लिखलनि—'लोहाँक पेटीसँ खाली मुहरित पत्र-मस्तक, बहुविध मुहर, जाली अँगूठा-छाप, लाभुक-सूची, बैंक-सूत्र, फोन-सूत्र, मजदूर-दावा, बटुकनाथ स्मृति-कोषक उल्लेख, आ नील पंजी बरामद। अपराधक पुरान संस्थागत ढाँचा आ नव अंकीय विधि एकहि संग्रहमे सम्बद्ध देखाइत अछि। सावधानी: प्रत्येक नामक निजता, प्रत्येक वस्तुक विधिक शृंखला, आ प्रत्येक अनुमानक पुष्टि आवश्यक।' मीरा एहिपर लिखली—'पेटी खुलल, पर लोक एखन बन्द अछि।'

लोहाँक पेटी केवल पुरान कागचक डब्बा नहि, अपितु खाली नाम भरबाक कारखाना, डरक पंजी, जाली अँगूठाक औजार, स्त्री-नामक तिजोरी, मजदूरक अधूरा मृत्यु-दावा, आ बटुकनाथसँ महेश्वर-मधुकर-ध्रुवेश धरि चलैत सेवा-जालक पेट सिद्ध भेल। अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—'नील पंजी'। आरुणि ओकर नीचाँ जोड़लक—'जतय नाम डरक स्तम्भमे लिखल, ओतय नाम फेर जीवित चिन्हारि बनि उठत।' चन्ना गाछीक राति उतरि गेल; एहि बेर अन्हार नील छल, आ पातसभ पन्ना जेकाँ फड़फड़ा रहल छल।

लोकगीत: पेटीमे भेटल बिसेसर

लोकधुन: मजदूर समदाउन

उठाउ हे बिसेसर, पेटीक अन्हारसँ माथ उठाउ हे,
मायक खाली आङनमे अपन नाम पहुँचाउ हे।

जङ लागल कुंजी घूमल, लोहाँक पेटी खुलल,
खाली पत्र-मस्तक, जाली अँगूठा, नाम सभ उगल।
मजदूर-थैलीक भीतर बिसेसर फेर भेटल,
पन्ना पानि माँगलक, हुलासी कहली—पहिने नाम पढ़ू।
स्त्री-थैली, बैंक-थैली, फोनक कारी डोर,

बटुकनाथसँ ध्रुवेश धरि एके पेटक चोर।

गवाही जङ नहि खाइ, चाहे कुंजी गलि जाइ,

अधूरा मृत्यु-दावा एक दिन देहरी आय।

बिसेसर, पेटीक अन्हारसँ माथ उठाउ,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—गुरुसभक मत: कर्म विलम्बसँ उत्पन्न होएब अन्य आवश्यक कारण—जेना दण्ड आदि—क अभावक कारण होइत अछि; इच्छा रहितहुँ ओ ज्ञान व्यर्थ नहि। गुरुसभक मत।]

अध्याय १९०

नील पंजी

नील पंजीक रंग निगरानीक बाहर पसरै छै— भयक अपन कोनो ताला नहि।

अध्यायारम्भ लोकगीत: पंजी जागल भोर

लोकधुन: पंजी-पराती

जागू हे पंजी, नील पंजी जागू हे,
बरखोंक चुप पाँतिकेँ भोरमे बाँचू हे।

नील पंजी आँखि खोलि भोरक नाम पढ़ै,
जे पाँति चुप छल बरखों, आब इजोत गढ़ै।
एक-एक अक्षर धानक दाना, सहेजि कऽ धरू,
जकर हक दबायल छल, ओकर जीवन भरू।

पंजी आब डरक नै, जनक भरोस बनत,
खुलल पन्ना गाम-नगरक साँचक पुल बनत।
कलम चलू पारदर्शी, मुहर रहय सचेत,
भोरक पंजी लिखत आब न्याय, मान आ नेह।

अक्षर-अक्षर धानक दाना, ओसाउ-फटकू-धरू,
जकर हक दबल रहए, ओकर थारी भरू।
डरक बही नहि आब, जन-भरोसक खाता,
खुलल पन्ना जोड़ए गाम-नगरक नाता।

❖

आवाजक नमूना, पाँच साँसक मौन, तुरन्तक हड़बड़ी आ गिरफ्तारी-पत्रक नाम—सभ शब्द नहि, कसैत डोरी छै। मुदा लोकक बोली केवल फँसबाक बाट नै; जखन ओहि बोलीकेँ क्रम, साक्षी आ करुणासँ पढ़ल जाइए, तखन वैह डरक नक्शा न्यायपर पहुँचबाक रस्ता बनै छै। मौनक अर्थ पूछनाइ सेहो गवाहीक एक रूप छै।

बिसेसरक अधूर अक्षर, नन्द आरुणिक संकट-चिन्ह, हुलासीक अपमान-नाम आ स्त्रीसभक चोराओल अँगूठा—ई सभ पंजीक वस्तु नै, जीवित लोकक छिन्न चिन्हारि छै। असल नाम घुरेनाइ केवल वर्तनी सुधार नै; ई देह, मान आ स्मृतिक पुनर्स्थापन छै। पीड़ितक नाम सार्वजनिक तमाशा नहि बनय—एहि पहरामे न्याय अपन मर्यादा पबै छै।

अन्तिम पन्ना कहै छै—नव नाम अलग पंजीमे। अर्थात् छत्ता एखन जीवित छै, कुर्सी एखन आदेश दैत छै। मुदा आब पुरान पंजी असगर नै; ओकर प्रत्येक नील बून्दक सोझाँ लोक-पहरा, पंचनामा आ प्रश्न ठाढ़ छै। रंग जखन पानिक बून्द नहि पकड़ि सकत, तखन नाम बाँचत; कुर्सी खाली रहितो जँ अपराध करैत छै, तँ ओकरा उठाबय पड़त।

भण्डार-घर बन्द छल, कुंजी सीलबन्द लिफाफामे, सूचीपर पंचायतक हस्ताक्षर, आ दरबाजापर दू सिपाही; तइयो चन्ना गाछीक पातपर राति भरि नील धब्बा चढ़ैत-उतरैत रहल। अनन्या भोरे उठि पाथरपर रखल प्रतिलिपि दिस गेल। काल्हि ओ लिखने छली—‘नील पंजी’। आइ हुनका लगल जे पंजी मात्र पढ़बाक वस्तु नहि, अपितु ओहि आँखिक नाम अछि जकर पलक बरखोंसँ बन्द राखल गेल छल। भोरक ओस पातक नील धब्बापर मोतीजकाँ टिकैत छल; भण्डार-घरक दरबाजासँ जङ, भीजल काठ आ सूखल स्याहीक गन्ध एकसंग निकलि रहल छल। दूर बैसल सिपाहीक लालटेनक इजोत ओ धब्बापर काँपैत छल, जेना पंजी बाहरक पहरा गिनि रहल हो।

मीरा सभकेँ पहिनहि सावधान कएली—‘एहि पंजीमे जे नाम अछि, से सभ सार्वजनिक करबाक वस्तु नहि। अपराधीकेँ पकड़बाक लेल नाम पढ़ब जरूरी, मुदा पीड़ितकेँ फेर बजारमे उघारि देब अपराधक दोसर रूप।’ विनीत झा एहि बातक विधिक भाषा जोड़ल—‘प्रत्येक पन्नाक चित्र लेल जाएत, प्रत्येक पन्नाक पंचनामा, आ केवल सम्बन्धित नाम सम्बन्धित व्यक्तिकेँ पढ़ाओल जाएत।’ बच्चासभ ई सुनि चुप रहल। एहि मौनमे आदर छल; नामक पहरुआ होयब तमाशा नहि, संयमक अभ्यास अछि।

नील पंजीक बाहरी जिल्द पुरान छल। कोनापर नील रंग घिसि कारी भऽ गेल, मुदा बीचमे एक गोल धब्बा एखनहुँ चमकि रहल छल—जेना केओ अँगूठा नील स्याहीमे डुबा कऽ दबौने हो। पन्ना खोलितहि गन्ध उठल—स्याही, पसेना, पुरान तिजोरी, धूप, आ बैंकक पर्चीक गन्ध। आरुणि कहलक—‘एहि पंजीमे कार्यालय आ पूजास्थल दुनूक गन्ध अछि।’ सत्यव्रत मेहता धीरेसँ जोड़लनि—‘जे अपराध पूजा-सुगन्ध लगा कऽ चलैत अछि, ओकरा पकड़ब कठिन होइत अछि।’ पन्नाक किनार अलग करिते अँगुरीमे महीन धूलि लागि गेल, आ पुरान गोंदक किरकिराहट एहन सुनायल जेना कागच अपन बन्द बरख गिनि रहल हो।

पहिल पन्नापर शीर्षक लिखल छल—‘सेवा-सूची: विशेष संरक्षण’। ‘सेवा’ शब्दक नीचाँ किछु ठाम घसल गेल छल, जेना पहिने किछु आरो लिखल रहल हो। कोनापर महेश्वरनाथ सेवकक पुरान मुहरक आधा चिन्ह, तकरा ऊपर नब तिथिक नील मुहर। पन्नाक दहिन कात

छोट-छोट स्तम्भ—नाम, सम्बन्ध, भय, आवाज, खाता, हिस्सा, स्थिति। मीरा स्तम्भसभकेँ एक बेर पढ़ली आ आँखि बन्द कऽ लेली। 'एहि पंजीमे नाम नहि, लोककेँ तोड़बाक उपाय राखल अछि,' ओ कहली।

'भय' स्तम्भ सभसँ भयानक छल। कतहु लिखल—'बेटा बाहर', कतहु—'जमीन विवाद', कतहु—'विधवा', कतहु—'नेनीक विवाह', कतहु—'सरकारी सहायता', कतहु—'विधिक डर', कतहु—'अंकीय प्रकरण'। अनन्या एक नामक आगाँ 'माय अकेली' पढ़ि कऽ ठमकि गेली। ई शब्द अपराधीसभ लेल सूचना छल; ओहि माय लेल जीवनक नाङर सच्चाइ। आरुणि पंजीमे लिखलक—'जतय लोक अपन दुःख बुझैत अछि, ओतय अपराधी मौका देखैत अछि।'

दोसर पन्नापर स्त्री-नाम सभ छल। किछु नामक आगाँ रानी-खाताक संकेत, किछु आगाँ जाली अँगूठाक क्रमांक, किछु आगाँ 'समझायल', 'डरायल', 'रोकल', 'फेर फोन' लिखल। मीरा एहि पन्नापर बहुत देर झुकल रहली। हुनकर स्वर नरम मुदा धारदार भेल—'ई स्त्रीसभ पीड़ित छथि, संदिग्ध नहि। जकर नामसँ खाता खुलल, ओ अपराधी होयब आवश्यक नहि। जकर अँगूठाक छाप चोरी भेल, ओकरा दोष देब अपराधक सहायक बनब।' विनीत झा तुरन्त टिप्पणी लिखलनि—'पीड़ित-रक्षा सूची अलग।'

तेसर पन्नापर मजदूर-नामक छाह भेटल। बिसेसर पासवानक नाम पूरा नहि, केवल 'बि.पा.'; सलामत अंसारी 'स.अ.'; छोटूक आगाँ खाली कोठरी। खाली कोठरी देखितहि पनिडुब्बीक हवा दरबाजापर लागि गेल। भण्डार-घरक भीतर पानि नहि छल, मुदा सभकेँ लगल जे नील पंजीक पन्ना भीजि रहल अछि। गदाधर सिहरि उठलाह। 'ई सभ पुरान पुलक बात,' ओ फुसफुसौलनि। सत्यव्रत मेहता कठोर भेलाह—'पुरान बात जँ खातामे एखन साँस लैत अछि, तँ पुरान नहि।'

पंजीक बीचमे एक पन्ना दुमड़ल छल। दुमड़ल पन्ना खोलितहि भीतर छोट नक्शा निकलल—हरिहर सेवा केन्द्र, महेश्वरनाथ सेवक न्यास, रानी-खाता, तीन मोबाइल-सिम, दू बैंक शाखा, एक अभ्यास-कमरा, आ शहरक कोठरी। सभकेँ जोड़यवला रेखा नील स्याहीसँ बनल। रेखापर छोट-छोट चिन्ह। मधुकर माधव मिश्रक नामक आगाँ 'स्वर', ध्रुवेशक आगाँ 'निर्देश', महेश्वरक आगाँ 'आशीर्वाद/मुहर', आ बटुकनाथ स्मृति-कोष आगाँ प्रश्न-चिन्ह। ई प्रश्न-चिन्ह सभसँ पैघ बयान छल।

आरुणि नक्शा देखैत कहल—'जाल पूरा नील अछि।' अनन्या पूछली—'नील किएक?' मीरा उत्तर नहि देली। बूढ़ गदाधर अपन काँपैत स्वरमे कहलनि—'सेवकजी कहैत छलाह, लाल स्याही डरावैत अछि, कारी स्याही सरकारी लगैत अछि, नील स्याही विश्वास दिलबैत अछि। लोक नील हस्ताक्षर देखैत अछि तँ बुझैत अछि—जीवित लोकक हस्ताक्षर अछि।' एहि वाक्यपर सभक देहमे सिहरन दौड़ल। अपराधीसभ जीवित हस्ताक्षरक रंग चोरि लेने छल।

चारिम पन्नामे 'अभ्यास' लिखल छल। मधुकरक स्वर-नमूना कोना लेल जाए, ककरा फोन करबासँ पहिने ककर सम्बन्धक नाम बोलबाक, कोन वाक्यपर सोझाँक लोक काँपैत अछि, कोना 'तुरन्त', 'मामला', 'गिरफ्तारी-पत्र', 'पुलिस', 'बैंक रोक', 'नाम बिगाड़ब' बाजबाक—सभ वाक्य सूचीबद्ध। अनन्या पढ़ैत-पढ़ैत रुकि गेली। 'ई भाषा नहि, फाँस अछि,' ओ कहली। मीरा उत्तर देली—'आ ई फाँस जे ककरो गरदनिमे कसैत अछि, ओकर स्वर बादमे प्रमाण बनैत नहि।'

एक ठाम 'मौनक समय' लिखल छल। फोनक बीच पाँच साँस धरि चुप रहबाक निर्देश। 'मौनसँ डर बढ़ैत अछि।' आरुणि एहिपर चन्ना गाछीक मौन मोन पाड़लक। भूतक मौन स्मरण कराबयवला, अपराधीक मौन फँसाबयवला। दुनू एके शब्दमे बसैत, मुदा अर्थक आत्मा अलग। ओ पंजीमे लिखलक—'मौनक जाँच आवश्यक अछि—के चुप अछि, किएक चुप अछि, आ मौनक पाछाँ ककर लाभ।' सत्यव्रत मेहता ओकर पंक्ति देखलनि आ माथ हिलौलनि।

पंजीक अगिला भाग 'हिस्सा' छल। राशिक प्रतिशत, नकदक बाट, खाताक घुमाव, पर्चीक अदला-बदली, आ 'सेवा-दान' नामक घुमाव। कतहु पाँच प्रतिशत, कतहु बारह, कतहु 'विशेष' लिखल। 'विशेष'क आगाँ ध्रुवेशक आद्याक्षर। महेश्वरक मुहर एतय प्रत्यक्ष नहि, मुदा प्रत्येक भागक नीचाँ सेवा-केन्द्रक नील चिन्ह। विनीत झा कहलनि—'ई वित्तीय शृंखला अछि।' मीरा जोड़ली—'आ ई नैतिक शृंखला सेहो—केओ डर बेचलक, केओ डरक पाइ गनलक, केओ डरकेँ आशीर्वाद देलक।'

गदाधर धीरे-धीरे अपन भूमिका बताबय लगलाह। ओ कहलनि जे पंजी पहिने 'लाभार्थी-पंजी' छल। सचमुच निर्धन लोकक नाम, छात्रवृत्ति, विधवा-सहायता, श्रम-दावा, पुल दुर्घटनाक अस्थायी सूची। फेर ध्रुवेश आयल। ओ कहलक—'कागच राखू, काम आब अंकीय होयत।' लाभार्थी-पंजी धीरे-धीरे भय-पंजी बनि गेल। 'नाम हटाओ नहि,' ध्रुवेश कहने छल, 'नामक पाछाँ कारण जोड़ू।' एहि कारणक नामे लोकक निजता काटि-काटि राखल गेल।

एहि स्वीकारपर मीरा गदाधरकेँ रोकली—‘जे बात अपने देखलहुँ से कहू; जे सुनलहुँ से अलग लिखू।’ गदाधर माथ झुका लेलनि। प्रक्रिया फेर कथापर पहरा देलक। चन्ना गाछीक भूतसभ एहि अनुशासनपर चकित होइत, मुदा आइ ओ सभ सेहो बुझैत छल जे न्यायमे आवेग आगि अछि, आ प्रक्रिया ओकर पात्र। पात्र नहि रहए तँ आगि घर जरा देत।

नील पंजीक एक पन्नापर ‘नन्द आरुणि’क नाम देखाइ देलक। सभकेँ लगल जे समय अटकि गेल। नामक आगाँ लिखल छल—‘पुरान अभियन्ता—रिपोर्ट—मजदूर सूची—वंश सम्बन्ध—सावधान।’ आरुणिक चेहरा पीयर पड़ि गेल। ओ अपन पितृ-नामक छाह एहन पंजीमे देखत, ई सोचलो नहि छल। सत्यव्रत मेहता पन्नापर झुकि रहलाह। ‘ई नाम अपराधीक सूचीमे संदिग्ध नहि, संकट-चिन्ह अछि,’ ओ कहलनि। ‘जकरा अपराधी “सावधान” लिखलक, से शायद ओकरा लेल बाधा छल।’ नील अक्षरपर झुकिते आरुणिक कानमे पिताक पुरान गमछासँ उठैत धूप-पसेनाक गन्ध मोन पड़ल; ओकर हथेली कागचपर नहि, अपन वंशक अधूर प्रश्नपर काँपि रहल छल।

आरुणि बहुत देर किछु नहि बजल। फेर ओ कहलक—‘तखन पिताक रिपोर्ट गायब किएक भेल?’ ककरो लग उत्तर नहि छल। पंजीमे उत्तर नहि, मार्ग छल। नन्दक नामक पाछाँ तीन छोट संकेत—‘डायरी’, ‘गमछा’, ‘बा’। अनन्या काँपि गेली। चन्ना गाछी, गमछा, बा, पुलक जलसमाधि—सभ एके नील पन्नापर आबि गेल। कथा जे लोकगाथा बुझाइत छल, ओ अपराधीक अभिलेखमे सेहो जीवित रहि गेल।

हुलासीक नाम प्रत्यक्ष नहि, मुदा ‘इनारबाली’ लिखल एक संकेत भेटल। मीरा तुरन्त कहली—‘ई नाम नहि, अपमान अछि। जँ असल नाम भेटत, पंजीमे एहि शब्दक ठाम ओहि नामक पुनर्स्थापन कएल जाएत।’ बच्चासभ एहि बात केँ अलग पन्नापर लिखलक—‘उपनाम, अपमान-नाम, भय-नाम—सभ हटाकऽ असल नाम खोजब।’ बूढ़बा भूतक कारी इजोत खिड़की लग झिलमिलायल, जेना ओ एहि निर्णयपर मुहर लगा रहल हो।

दुपहर धरि नील पंजीक प्रतिलिपि बनबाक काज चलल। प्रत्येक पन्नापर क्रमांक। प्रत्येक नामक सोझाँ तीन रंगक चिह्न—पीड़ित, साक्षी, संदिग्ध। रंग पन्नापर नहि, अलग सूचीमे, ताकि मूल पंजी जसक तस रहे। मीरा कहली—‘पुरान अपराधी पंजीमे रंग चढ़बैत छल; हम मूल पन्नापर अपन क्रोधो नहि चढ़ाएब।’ ई वाक्य सुनि विनीत झा मुस्की रोकि नहि सकलनि। विधिक भाषामे ई सभसँ कठिन संयम छल।

तखने पंजीक पाछाँक आवरणक भीतरसँ एक पातर कागच झरि पड़ल। ओ कागच नील नहि, हलुक पीयर छल। ओकरापर केवल तीन पंक्ति—‘पंजी सुरक्षित। आदेश मौखिक। कुर्सीसँ पूछने बिना पन्ना नहि खुले।’ नीचाँ हस्ताक्षर नहि, केवल एक चिह्न—दू वृत्तक बीच तिरछी रेखा। गदाधर चिन्ह देखितहि काँपि उठलाह। ‘ई ध्रुवेशक चिन्ह,’ ओ कहलनि, ‘ओ हस्ताक्षर कम करैत छल। कहैत छल—चिन्ह हस्ताक्षरसँ सुरक्षित।’

‘कुर्सी’ शब्दपर सभ रुकि गेल। कुर्सी केवल बैठबाक वस्तु नहि; आदेशक अदृश्य देह। ध्रुवेश स्वयं सोझाँ नहि अबैत, मुदा ओकर कुर्सी निर्णय दैत। महेश्वर मुहर दैत, मधुकर आवाज दैत, गदाधर ताला खोलैत, बैंक पर्ची घुमबैत, मुदा कुर्सी—कुर्सी कतऽ छल? पंजी उत्तर दैत छल—केन्द्रक ऊपरक कमरा। वैह कमरा जतय आम लोकक प्रवेश निषिद्ध, जतय पंखा नहि, पर हवा सदिखन बन्द, जतय देबालपर सेवा-पुरस्कार, आ मेजक नीचाँ शायद दोसर पेटी।

अनन्या पन्नापर लिखली—‘ध्रुवेशक कुर्सी’। आरुणि हुनकर हाथ रोकि कहलक—‘पहिने नील पंजी पूरा।’ अनन्या माथ हिलौली। ओ जानैत छली—कथा जल्दी छल, पर न्यायकेँ क्रम चाही। ओ पंजीक अन्तिम पन्ना खोलली। पन्ना लगभग खाली छल। केवल ऊपर लिखल—‘समाप्त पन्नापर नव नाम नहि। नव नाम अलग पंजीमे।’ तिथि नव छल। ई देखिते स्पष्ट भेल—जाल एखन बन्द नहि भेल, बस पंजी बदलल गेल अछि।

सत्यव्रत मेहता दिनक टिप्पणी लिखलनि—‘नील पंजी मूलतः लाभार्थी/सहायता-पंजी रहल प्रतीत; कालक्रमे भय-आधारित लक्ष्य-पंजीमे रूपान्तरित। स्तम्भसभमे नाम, सम्बन्ध, दुर्बलता, स्वर-निर्देश, खाता-सूत्र, भाग-वितरण, स्थिति-सूचना। नन्द आरुणि सहित पुरान मजदूर-सूची आ स्त्री-खातासँ सम्बन्ध। ध्रुवेशक चिन्हयुक्त निर्देश-पत्र बरामद। अगिला विधिक कदम—पीड़ित-सुरक्षा, वित्तीय शृंखला, स्वर-नमूना, आ ध्रुवेशक आदेश-कुर्सीकेँ सुरक्षित करब।’ मीरा एहिपर जोड़ली—‘नील रंग विश्वासक छल; ओकरा डरक रंग बनाओल गेल। आब ओहि नीलसँ सत्यक नक्शा बनत।’

साँझक बेर चन्ना गाछी लग नील पंजीक प्रतिलिपि नहि, केवल ओकर खाली नील आवरण राखल गेल। पन्नासभ सुरक्षित कमरामे रहि गेल, कारण नाम रातिक ओसमे नहि छोड़ल जा सकैत। बूढ़बा भूत डारिसँ कहलथिन—‘आइ पन्ना नहि पढ़ू; रंग पढ़ू।’ पनिडुब्बी पोखरिक पानिसँ एक बून्द उठाकऽ आवरणक कोनापर राखली। बून्द नील नहि भेल, पारदर्शी रहल। हुलासी कहली—‘जखन पानि रंग नहि लेत, तखन नाम बाँचत।’

राति उतरि रहल छल। हरिहर सेवा केन्द्रक ऊपरक कमरा अन्हारमे निस्तब्ध देखाइत छल, पर ओकर खिड़कीक भीतर एक कुर्सीक पीठ चमकि रहल छल। केओ लोक नहि, पर कुर्सीपर दबावक धँसल छाह। ओ पन्ना बन्द करैत लिखलक—‘ध्रुवेशक कुर्सी। ’ अनन्या नीचाँ जोड़ली—‘जे बैसल नहि, ओकरा सेहो उठाबय पड़त। ’ चन्ना गाछीक पातसभ रातिभरि नील नहि, राखि-सन धूसर फड़फड़ाइत रहल।

लोकगीत: नील पंजीक आँखि

लोकधुन: पंजी-जागरण

छोड़ू हे पंजी, भयक ताला आब छोड़ू हे,
प्रत्येक चोरायल नामकेँ लोकक देहसँ जोड़ू हे।

नील रंग विश्वास छल, डरक रंग बनायल,
नाम, दुर्बलता, आवाज—स्तम्भ-स्तम्भ सजायल।
‘इनारबाली’ नहि, हुलासीक असल नाम,
अपमानक उपनाम मेटि घुरत ओकर मान।
रानी, मजदूर, स्त्री, नन्दक पुरान पाँति,

ध्रुवेशक तिरछा चिन्ह कहै—कुर्सीमे छल।
पानिक बून्द आवरणपर पारदर्शी रहल,
नामक पहरुआ संयमसँ प्रत्येक पन्ना पढ़ल।
नील पंजी, भयक ताला आब छोड़ू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—नैयायिकसभक आक्षेप: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“केवल कृतिसाध्यताक अनुभव कारण” कहल जाए, तँ प्रमाणभ्रम वा विश्वसनीय वचनसँ विषभक्षण कृतिसाध्य बुझल गेल अवस्थामे सेहो प्रवृत्ति होएत। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। नैयायिकसभक आक्षेप।]

अध्याय १९१

ध्रुवेशक कुर्सी

कुर्सी खाली रहितो शासन करै छै— जाधरि ओकर नाम नहि पुकारल जाए।

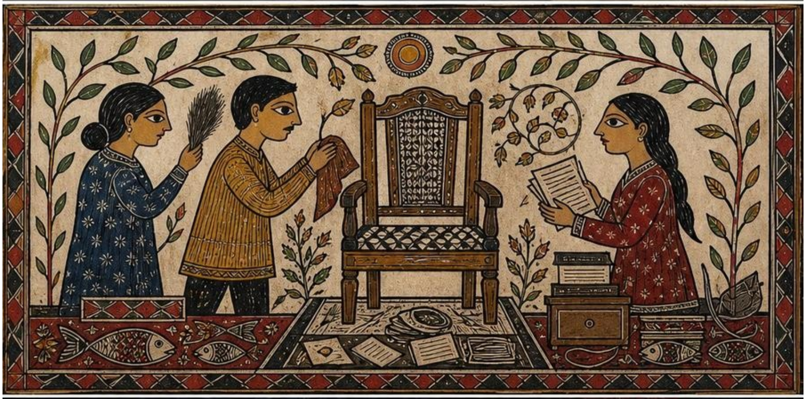

अध्यायारम्भ लोकगीत: खाली कुर्सीपर जन

लोकधुन: चौपाल झूमर

जमू हे चौपाल, कुर्सी बिनुओ जमू हे,
गोल घेराक बलपर काज नहि थमू हे।

कुर्सी खाली रहि सकैए, जनक आसन खाली नहि,
गामक गोल घेरामे निर्णय दूरक बात नहि।
घण्टी बाजए तँ लोक कहए—पहिने सुनू सभ बात,
पद केवल सेवा लेल, नहि डरक सौगात।

एक कुर्सीक छाह घटत, सय कण्ठक बल बढ़त,
जनक आँखि जागल रहत तँ शासन सीधा चलत।
खाली कुर्सीपर राखू संविधानक फूल,
लोकसँ जुड़ल अधिकार रहत अटल मूल।

घण्टी बाजए तँ पहिने जनक बात सुनाउ,
पद सेवाक नाम थिक—ई पाठ बुझाउ।
एक कुर्सीक छाह घटए, सय कण्ठ बल पाबए,
संविधानक फूल राखि लोक अपन हक गाबए।

❖

आदेश ऊपरसँ खसै छै, मुदा ओकर वजन नीचाँसँ चढ़ैत पएरसभ बनबैत छै। सीढ़ीक प्रत्येक पायदान धूलि, पीक, घिसल जूता आ संकोचक अलग पाँति लिखै छै। जे कमरा ककरो लेल मना रहै छै, ओकर बाहरक घण्टी आ घसिटैत कुर्सीक ध्वनि ओहि लोकक मोनमे बेसी साफ रहै छै जकरा भीतर जाए नहि देल जाइए।

कुर्सीक शासन केवल बैसनिहारक देहसँ नै चलै छै। 'माय असगर—आवाज नरम', पाँच साँसक मौन, रिक्त स्वीकारोक्ति-पत्र आ शिकार-नक्शा—ई सभ मिलि कऽ अभिनयकेँ आदेश बनबैत छै। जखन पीड़ितक निजी डरकेँ पर्चीपर उतारि अभ्यास कएल जाइए, तखन आवाज शब्द नै रहैए; ओ कसैत फाँस बनि जाइए।

धूपक राख, सूखल माला आ देबालक नक्शा अपराधकेँ पूजा, सेवा आ विकासक परदा पहिरबैत छै। मुदा गद्दाक नीचाँ नन्दक फाटल प्रतिवेदन आ पहियामे चन्ना गाछीक माटि भेटै छै तँ परदा फाटि जाइए। गाछी दूरसँ पात हिलबैत रहै छै; कुर्सी सोचै छै जे ओकरा कीनल जा सकैए, पर माटि अपन बाट मोन रखै छै।

लोक जखन कुर्सीकेँ उठाबय दौड़ैत नै, पहिने ओकर चारू कात पीयर रेखा खिंचै छै, वस्तु गिनै छै आ नाम सुरक्षित रखै छै, तखन शासनक असली उनटा आरम्भ होइए। खाली कुर्सीपर संविधानक फूल राखल जाइए, घण्टी जनक बात सुनबाक संकेत बनैए, आ अनुपस्थित आदेशक स्रोत दिस प्रश्न चलि पड़ै छै। कुर्सी तखन मालिक नै रहैए—लोकक गवाहीमे राखल एक प्रमाण बनि जाइए।

नील पंजीक अन्तिम पन्नापर ध्रुवेशक तिरछा चिन्ह रातिभरि सभक मोनमे कुर्सीक छाह बनि अटकल रहल। हरिहर सेवा केन्द्रक ऊपरक कमरा भोरक इजोतमे बाहरसँ साधारण देखाइत छल। खिड़कीक लोहाँक सलाखपर रातिक ओस जमल छल, आ भीतरक कुर्सीक पीठ एखनहुँ अन्हारमे धूसर चमकि रहल छल। काल्हि नील पंजीक अन्तिम पन्ना कहि गेल छल—‘नव नाम अलग पंजीमे।’ एहि वाक्यक बाद सभकेँ बुझाइ गेल जे अपराधक पन्ना बन्द नहि भेल, केवल पंजी बदलल गेल अछि। अनन्या पाथरपर आइक शीर्षक लिखली—‘ध्रुवेशक कुर्सी’। आरुणि नीचाँ जोड़लक—‘जे कुर्सी खाली देखाइत अछि, ओहिपर सभसँ बेसी भार रहैत अछि।’ सीढ़ीक कातसँ भीजल काठ, जङ आ रातिभरि बन्द रहल कमराक बासी हवाक गन्ध उठि रहल छल; ओ गन्धमे आदेशक अनदेखल भार जेना पहिनहिसँ उपस्थित छल।

मीरा सबेरमे सभकेँ फेर नियम सुनौली। ‘कमरा खुलत, मुदा भीड़ नहि चढ़त। कुर्सी उठाओल नहि जाएत; पहिने ओकर चारू कातक धूलि, कागच, पएरक निशान, देबालक खरोंच, बिजलीक तार आ मेजक दराज सभ सूचीबद्ध होएत। जे वस्तु अपराधक आदेशक जगह रहल अछि, ओकरा तमाशाक वस्तु नहि बनाओल जाए।’ विनीत झा कहलनि—‘कुर्सीपर अधिकारक निशान होइत अछि। ओहि निशानकेँ बिगाड़ल गेल तँ आदेशक शृंखला टूटि सकैत अछि।’ बच्चासभ एहि बेर नोटबुकक पन्ना खाली रखलक; पहिने देखब, बादमे लिखब।

गदाधरक हाथमे फेर कुंजी छल, मुदा एहि बेर कुंजी भण्डार-घरक नहि, ऊपरक कमराक काठक दरबाजाक छल। हुनकर हाथ काँपैत छल। ओ कहलनि—‘हम केवल झाड़ू लगबैत छलहुँ। ऊपरक कमरा हमरा लेल मना छल।’ मीरा हुनका कठोर आँखिसँ नहि, थाकल करुणासँ देखली। ‘मना कमरा सभसँ बेसी बोलैत अछि। जे लोककेँ भीतर नहि देल गेल,

ओकरा बाहरक आवाज नीकसँ मोन रहैत अछि। अहाँ की सुनलहुँ?’ गदाधर आँखि झुका लेलनि—‘रातिमे कखनो फोनक घण्टी, कखनो पुरुषक धीम आवाज, आ कखनो कुर्सी घसिटबाक ध्वनि।’

सीढ़ीपर चढ़ैत समय सभकेँ लगल जे ई सीढ़ी साधारण ईँटक नहि, पुरान आदेशक पाँति अछि। पहिल पायदानपर धूलि मोट छल; दोसरपर कम; तेसरपर पानक पीक; चारिमपर जूता घिसबाक निशान। आरुणि धीरेसँ कहलक—‘जे ऊपर रोज जाइत छल, ओ सभ पायदानपर अलग-अलग धूलि छोड़ि गेल।’ सत्यव्रत मेहता पायदान सभक चित्र उतारलनि। मीरा कहली—‘सीढ़ी सेहो गवाही अछि। ऊपरक कुर्सी असगर आदेश नहि दैत; नीचाँसँ चढ़ल पएर ओकरा अधिकार दैत अछि।’

दरबाजा खुलिते भीतरक हवा बाहर नहि आयल; उनटे बाहरक हवा भीतर खिंचल गेल। कमरा किछु माससँ बन्द देखाइत छल, मुदा मेजपर धूलि एकसार नहि छल। बीचमे गोल साफ जगह छल, जेना कोनो भारी काँचक गिलास वा उपकरण एखनहिँ हटाओल गेल हो। देबालपर कैलेण्डर पुरान महीनापर अटकल छल, मुदा ओकर ऊपर नब कलमसँ एक अंक लिखल—‘१७’। कियो पूछलक—‘ई तिथि?’ विनीत झा कहलनि—‘सम्भवतः क्रम। सभ किछु अनुमान मानू, प्रमाण नहि।’ मीरा सन्तोषसँ माथ हिलौली; अनुमानक लालचसँ न्याय जल्दी बिगड़ैत अछि।

कुर्सी कमराक बीचमे नहि, कने दहिन कात सरकल छल। ओकर पीठपर कृत्रिम चमड़ाक आवरण अनेक ठामसँ फाटल छल। दहिन बाँहपर नहक बारीक खरोंच, बाम बाँहपर फोन राखबाक गोल निशान, आ नीचाँ पहियामे सूखल माटि तथा धागा अटकल छल। अनन्या झुकि कऽ देखली—धागा नील छल, वैह नील जे पंजीक आवरणपर छल। मीरा हुनका छुइबासँ रोकली—‘देखू, लिखू, मुदा उठाउ नहि।’ अनन्या लिखली—‘कुर्सीक पहियामे नील धागा; पंजीक नील रंगसँ सम्भावित सम्बन्ध।’

सत्यव्रत मेहता कुर्सीक सोझाँ बैसयवला आ ठाढ़ रहयवला लोकक सम्भावित जगह देखलनि। जकरा डराओल गेल, ओकर पएर दरबाजा लग पड़ल होएत कि कुर्सीक सोझाँ? जमीनपर धूलिक हलुक घेरा छल। घेराक भीतर एक छोट लकीर, जेना कियो पएर घसीटि कऽ घुरल हो। ‘अधीर प्रतीक्षा,’ ओ फुसफुसौलनि। मीरा सुनि लेली—‘कागचमे लिखब—घसीटल पगचिन्ह। भाव बादमे।’ सत्यव्रत मेहता मुस्कुरेलाह। ओ बुझैत छलाह, मीरा भाव हटबैत नहि, ओकरा प्रमाणक अनुशासन सिखबैत छथि।

मेजपर तीन वस्तु छल—एक घण्टी, एक टूटल चार्जर, आ कारी रबर-मुहरक डिबिया। घण्टीक धातुपर अँगुरीक चिकनाई एखनहुँ बचल छल। आरुणि पूछलक—'घण्टी ककरा बजबैत रहल?' गदाधर कहलनि—'नीचाँ हमरा। जखन घण्टी बाजैत, हम चाह, पानि, संचिका वा कखनो कोनो लोक ऊपर पठबैत छलहुँ।' 'कोनो लोक?' मीरा पूछली। गदाधर बेर-बेर आँखि मिचकौलनि—'मधुकर बेसी अबैत छल। ध्रुवेश कम देखाइत, मुदा ओकर नामपर दरबाजा खुलैत।' धातुक सतहसँ गरम तेल आ पसेनाक महीन बास उठैत छल; जेना घण्टी बजेनिहार अँगुरी सभ अपन अदृश्य क्रम एखनहुँ छोड़ि गेल हो।

एहि वाक्यपर कमरा भारी भऽ गेल। ध्रुवेश कुर्सीपर बैसैत छल कि केवल कुर्सीक नाम छल? ई प्रश्न सभकेँ घेरि लेलक। विनीत झा कहलनि—'कतेको जालमे आदेश देनिहार असली लोक सोझाँ नहि अबैत अछि। कुर्सी ओकर प्रतिनिधि बनि जाइत अछि। जे बैसैत अछि, ओ आदेश पढ़ैत अछि; जे आदेश लिखैत अछि, ओ अनुपस्थित रहैत अछि।' अनन्या पन्नापर लिखली—'अनुपस्थित आदेश।' आरुणि जोड़लक—'जे बैसल नहि, ओकरा उठाबय कठिन।' मीरा दुनूकेँ रोकली नहि। कखनो रूपकही अपराधक असली हड्डी देखबैत अछि।

मेजक पहिल दराज खुलल। भीतर कागच कम, पर्ची बेसी। फोन नम्बरक आधा-अधूरा पुर्जा, बैंक-खाताक अन्तिम चार अंक, 'भय-स्तम्भ देखू' लिखल पर्ची, आ एक छोट कागचपर—'माय असगर—आवाज नरम।' मीरा ओ पर्ची देखिते स्थिर भऽ गेली। काल्हि नील पंजीमे 'माय असगर' पढ़ल गेल छल; आइ ओकर आगाँ अभिनयक निर्देश भेटल। सत्यव्रत मेहता लिखलनि—'भावनात्मक दुर्बलताक अनुसार आवाजक ढंग निर्देशित। अपराध केवल सूचना नहि, अभिनय सेहो अछि।' पर्चीक कोनापर तेलक धब्बा आ सूखल अँगुरीक चिन्ह छल; मीरा ओकरा देखैत क्षणभरि अपन मायसभक काँपैत फोन-मौन मोन पाड़ली, मुदा तुरन्त दृष्टि फेर प्रमाणपर स्थिर कऽ लेली।

दोसर दराजमे एक छोट अंकीय ध्वनि-अभिलेखक भेटल। ओकर पर्दा बन्द छल, मुदा भीतर स्मृति-पत्र रहबाक सम्भावना छल। विनीत झा तुरन्त कहलनि—'ई वस्तु सीधा तकनीकी परीक्षणमे जाएत। एखन चलाउ नहि।' बाहरक भीड़मे कियो फुसफुसौलक—'आवाज सुनू।' मीरा तेज स्वरमे रोकली—'पीड़ितक आवाज सभक कानक मेलेमे नहि खुलत।' एहि एक वाक्यपर चन्ना गाछीक पाठशाला फेर जीवित भऽ उठल—निजता करुणाक दोसर नाम अछि। अनन्या पंजीमे लिखली—'आवाजक रक्षा, नामक रक्षाजकाँ।'

तेसर दराज खाली बुझाइत छल। मुदा गदाधर कहलनि—‘ई दराज अटकल रहैत छल।’ सत्यव्रत मेहता धीरेसँ काठक पट्टी देखलनि। भीतर दोसर तह छल। पट्टी उठल तँ पातर कागचक गड्डी देखाइ देलक—सफेद, बिनु छपल, मुदा कोनापर हलुक नील बिन्दु। रिक्त पत्र-मस्तक नहि, रिक्त बयान-पत्र। ऊपर पेन्सिलसँ लिखल छल—‘जँ विरोध करय, स्वीकारोक्ति बनाउ।’ आरुणि काँपि उठल—‘अपराधी पहिने डर लिखैत अछि, फेर पीड़ितक मुँहसँ स्वीकार लिखबैत अछि।’ मीरा कहली—‘एहि गड्डीक प्रत्येक पन्ना सम्भावित झूठक साँचा अछि।’

देबालक कात एक पुरान नक्शा टँगल छल। पहिने लगल जे गामक विकास-योजना होएत, मुदा लग गेलापर स्पष्ट भेल—ई मार्ग-नक्शा छल। गढ़ नारिकेलसँ स्टेशन, स्टेशनसँ शहरक छोट बैंक, बैंकसँ फोन-दोकान, फोन-दोकानसँ हरिहर सेवा केन्द्र। लाल बिन्दु ताहि घरसभपर जतय ‘लाभुक’ रहल, नील बिन्दु जतय ‘भय’ बेसी, कारी बिन्दु जतय ‘प्रतिरोध’। अनन्या हाँफि उठली—‘ई सेवा-नक्शा नहि, शिकार-नक्शा अछि।’ सत्यव्रत मेहता जोड़लनि—‘पुरान मेड़-विवादक नक्शा आब लोकक एकाकीपन नापय लागल।’

कुर्सीक पाछाँ देबालक कीलमे एक माला सूखि गेल छल। अगरबत्तीदानक राख नीचाँ पड़ल छल। ध्रुवेशक कुर्सी भयक कमरामे सेहो पूजाजकाँ सजल छल। गदाधर कहलनि—‘प्रत्येक अमावस्याक दिन धूप देल जाइत। कहल जाइत—सेवा-काज निर्बाध रहय।’ मीरा कठोर भऽ गेली—‘जतय धूपक गन्धसँ डर छिपाओल जाए, ओतय पूजा नहि, परदा रहैत अछि।’ पनिडुब्बी, जे बाहर पोखरिक हवामे मात्र अनुभव होइत छली, जेना फुसफुसाइली—‘पानि बिनु डूबब, धूप बिनु दाह।’

कुर्सीक गद्दा उठाओल गेल तँ नीचाँ एक लिफाफा भेटल। लिफाफापर नाम नहि, केवल अक्षर—‘ध्रु.’। भीतर पाँच चित्र-प्रतिलिपि छल—महेश्वरनाथ सेवकक पुरान पत्र, मधुकरक नियुक्तिजकाँ टिप्पणी, ध्रुवेशक हस्ताक्षरक नमूना, नील पंजीक एक पन्नाक प्रति, आ नन्द आरुणिक पुरान प्रतिवेदनक फाटल अंश। नन्दक प्रतिवेदन देखिते सत्यव्रत मेहता देर धरि चुप रहलाह। गंगा-पुलक मजदूरक नाम, हरिहर सेवा केन्द्रक स्त्री-खाता आ अंकीय डर—तीनू एकहि लिफाफामे आबि गेल छल। ओ कहलनि—‘जाल समय पार कऽ रहल अछि।’

नन्द आरुणिक फाटल अंशपर केवल दू वाक्य बचल छल—‘मृत्यु-सूची अपूर्ण। नामक सत्यापन आवश्यक।’ ध्रुवेशक कुर्सीक नीचाँ ई अंश किएक? आरुणि, जकर नाम नन्दक नामसँ जुड़ल आ ओकर स्मृतिसँ जन्मल, पन्ना देखि कऽ थरथरा उठल। ‘ओ सभ पुरान प्रतिवेदनक नाम खोजि रहल छल?’ ओ पूछलक। विनीत झा उत्तर देलनि—‘सम्भव अछि।

जकरा पुरान मृतकक नाम चाही, ओकरा मुआवजा, दावा, चिन्हारि आ बैंकक सभ बाट खुलैत अछि।' मीरा कहली—'गंगाक जलसमाधिसँ अंकीय गिरफ्तारी धरि सूत्र आब स्पष्ट भऽ रहल अछि।'

कुर्सीक पहियामे अटकल नील धागा अन्तमे विधिपूर्वक निकालल गेल। धागाक संग सूखल माटिक छोट टुकड़ा लागल छल। गदाधर कहलनि—'ई माटि ऊपरक कमराक नहि। ई तँ चन्ना गाछीक कातक माटिजकाँ अछि।' सभ चौंकल। कियो चन्ना गाछीसँ एहि कमरामे आयल छल? कि कुर्सी कखनो गाछी लग गेल? सत्यव्रत मेहता जल्दबाजी नहि केलनि। ओ केवल लिखलनि—'नील धागा संग माटि; स्रोत-परीक्षण अपेक्षित।' मुदा अनन्या मोनमे लिखि चुकल छली—कुर्सी गाछीकेँ सुनि रहल छल, वा गाछी कुर्सीक पाछाँ पहुँचि गेल? धागासँ झड़ल माटिमे ओस-सुखल पातक हलुक गन्ध छल; आरुणिक नाकमे चन्ना गाछीक भोर एकाएक जीवित भऽ उठल।

कमराक खिड़की पाछाँक पोखरि दिस खुलैत छल। एहि खिड़कीसँ चन्ना गाछी पूरा नहि, ओकर ऊपरी पात मात्र देखाइत। ध्रुवेश जँ एहि कुर्सीपर बैसल होएत, तँ ओ गाछीक पात हिलैत देखैत रहल होएत। मीरा खिड़की लग ठाढ़ भऽ कहली—'जे अपराधी चन्ना गाछीक पात देखैत रहल, ओकरा बुझल होएत जे नामक पहरुआ जागि रहल अछि। तइयो जाल चलल। डर बहुत गाढ़ रहल होएत, वा लोभ।' आरुणि कहलक—'अथवा ओ सोचैत रहल जे गाछी सेहो कागचजकाँ कीनल जा सकैत अछि।'

दिन चढ़ैत-चढ़ैत सूची नमहर भेल। कुर्सी, घण्टी, चार्जर, रबर-मुहर, पर्ची, ध्वनि-अभिलेखक, रिक्त बयान-पत्र, मार्ग-नक्शा, पूजाक राख, लिफाफा, नन्दक प्रतिवेदन-अंश, नील धागा आ माटि—प्रत्येक वस्तु क्रमांकित भेल। भीड़ बाहर प्रतीक्षा करैत थाकि गेल, मुदा भीतरक क्रम नहि टूटल। मीरा बाहर आबि केवल एतबे कहली—'कुर्सी खाली नहि छल। ओहिपर डर, आदेश, अभिनय, पुरान प्रतिवेदन आ नव ठगी सभ बैसल छल।' लोकसभ चुप रहल। कतेको लोक पहिल बेर बुझलक जे कुर्सी उठेनाइ केवल एक वस्तु हटेनाइ नहि; आदेशक व्यवस्था उठेनाइ अछि।

साँझक बेर कुर्सी हटाओल नहि गेल। ओकर चारू कात पीयर रेखा खिंचल गेल, चित्र लेल गेल, आ कमरा मुहरबन्द भेल। विनीत झा कहलनि—'ध्रुवेशक खोज आब व्यक्ति-खोज मात्र नहि। ओकर हस्ताक्षर, आवाज, आदेश-पर्ची, बैंक-धागा आ कुर्सी-संबन्ध—सभ संग-संग जाँचब।' सत्यव्रत मेहता दिनक टिप्पणी लिखलनि—'ऊपरक कमरा आदेश-कक्ष। कुर्सीपर

प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष नियन्त्रणक संकेत। नील पंजीक भय-स्तम्भसँ आवाज-निर्देश, रिक्त स्वीकारोक्ति-पत्र, मार्ग-नक्शा, ध्वनि-अभिलेखक, "ध्रु." लिखल लिफाफा आ नन्दक प्रतिवेदन-अंश बरामद। अपराधक केन्द्र आब कुर्सीसँ बाहर, आदेशक स्रोत दिस बढ़त।'

चन्ना गाछी लग रातिमे कुर्सीक प्रतिकृति नहि राखल गेल; केवल ओकर धूलिसँ बनल गोल घेरा पाथरपर अंकित कएल गेल। बूढ़बा भूत डारिसँ देखैत रहलाह। हुलासी कहलीह—'ध्रुवेश बैसल रहो वा नहि, कुर्सी ओकर नाम पुकारि रहल अछि। ' पनिडुब्बी पोखरिक पानि शान्त रखली, जेना ध्वनि-अभिलेखकक भीतर बन्द सभ स्वर सँ डरैत हो। ' अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—'बन्द ध्वनि-अभिलेखकक स्वर। ' आरुणि नीचाँ जोड़लक—'जे बाजल नहि गेल, ओहो सुनल जाएत। '

लोकगीत: खाली कुर्सीक शासन

लोकधुन: दरबारी-विलाप

कहू हे कुर्सी, जकर आदेश छल से कहू हे,
लोक उठि गेलोपर अपराधक भार सहू हे।

कुर्सी खाली, तइयो घण्टी आदेश बजबए,
बैसनिहार भागल, छाह एखनहुँ राज चलबए।
चार्जर, पर्ची, अभिलेखक, पूजाक राख,
नन्दक फाटल प्रतिवेदन संग नव ठगीक साख।
पीयर घेरा कुर्सीक चारू कात खिंचल,

धूलिक घेरामे ध्रुवेशक भार अटकल।
हुलासी कहली—नाम अपने पुकारए कुर्सी,
पनिडुब्बीक पानि डरए बन्द आवाजक फाँसी।
खाली कुर्सी, जकर आदेश छल से कहू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—अतिनवीन प्राभाकरक मत: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—. अतिनवीन प्राभाकर कहैत छथि—कर्ताक प्रयत्न "निषिद्ध फल नहि देत"

एहन विशेषणसँ युक्त हो; तें महाअनिष्टग्रस्त व्यक्ति विषभक्षण वा देवतापूजामे प्रवृत्त नहि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। अतिनवीन प्राभाकरक मत।]

अध्याय १९२

बन्द रेकॉर्डरक स्वर

बन्द रेकॉर्डरक स्वर सभसँ ऊँच— कारण ओकरा आब केओ रोकि नहि सकैत।

अध्यायारम्भ लोकगीत: कटोरी भरल स्वर

लोकधुन: पनिहारिन गीत

घुमाउ गे कटोरी, घर-घर कटोरी घुमाउ गे,
बून्द-बून्द दबल स्वर ओहिमे जमाउ गे।

खाली कटोरी कान बनल, बून्द-बून्द स्वर पीबै,
जकर रोदन दबल रहल, आब गीत बनि जीबै।
पानि भरू नेहक, नून भरू विश्वास,
एक-दोसरक बात सुनू, हलुक होयत साँस।

कटोरी घूमि घर-घर जाए, सभ अपन बात धरै,
सुननिहारक शान्त हृदय दुखकेँ फूल करै।
खाली पात्र अभाव नहि, स्वागतक आधार,
ओहिमे भरत लोकक स्वर, आशा अपरम्पार।

सुननिहारक थिर हृदय—सभसँ पैघ तैयारी।
नेहक पानि, विश्वासक नून संगमे घोरू,
भरल कटोरीक गीतसँ दुखक राति तोड़ू।

❖

आवाजक नकाब अनेक छै—मायक ममता, कानूनक कठोरता, सेवाक मधुरता। मुदा साँसक गति, पाछाँक फुसफुसाहट, कागच पलटबाक ध्वनि आ कुर्सीक घर्षण नकाबक किनार उघारै छै। विज्ञान जखन जल्द निष्कर्ष नै निकालै, तखन स्मृति ओकर संग चलि सकैए।

नाम जेकाँ स्वर सेहो लोकक देहक अंश छै। ओकर प्रतिलिपि बने, समय-चिन्ह लिखाए, मूल अछूता रहय—ई केवल प्रक्रिया नै, पीड़ितक गरिमाक पहरा छै। रोदन सुननाइ अधिकार नै; आवश्यकतासँ बेसी सुननाइ फेर एक बेर लूटनाइ छै।

आब पंजीक नील अक्षर ध्वनिमे बाजि रहल छै, आ खाली कुर्सीक आदेश साँसक पाछाँ नुकायल छै। मुदा कटोरी घूमि रहल छै—एक घरसँ दोसर घर, एक गवाहीसँ दोसर गवाही। जकर स्वर पकड़ल गेल, ओकर चेहरा खोजल जाएत; जकर चेहरा भेटत, ओकर जिम्मा लोक-पहराक सोझाँ राखल जाएत।

साधारण रातिमे ओहि पोखरिमेमेढ़कक स्वर, पनिडुब्बीक झोँटा जेकाँ हिलैत छाह, आ कखनो-कखनो गाछीक पातक फुसफुसाहट मिसल रहैत। मुदा एहि राति पानि जेना कान बनि गेल छल। सभकेँ बुझाइ रहल छल जे कमरा भीतर बन्द अंकीय रेकॉर्डरमे जे स्वर अटकल अछि, से पानि, पात, धूलि, कुर्सी—सभकेँ सुनबाक प्रतीक्षा करा रहल अछि। अनन्या पाथरपर शीर्षक लिखली—‘बन्द रेकॉर्डरक स्वर’। आरुणि नीचाँ जोड़लक—‘जे आवाज पकड़ि लेल गेल, ओकरा पहिने सुरक्षित सुनबाक अधिकार अछि।’ पोखरिक कातसँ सीलन, काइ आ भीजल पातक गन्ध उठैत छल; बन्द कमराक भीतर लोहाँक यन्त्र ठण्ढ पड़ल रहितो ओकर मौन गरम साँसजकाँ अनुभव होइत छल।

भोरमे मीरा सभकेँ स्पष्ट कहि देली—‘रेकॉर्डर खेलौना नहि। ओहिमे पीड़ितक रोदन, अपराधीक धमकी, जाली आदेश, वा ककरो निजी अपमान हो सकैत अछि। एकर प्रत्येक ध्वनि अदालतक कागच बनि सकैत अछि, तेँ सभक कानकमेलेमे नहि बजत।’ विनीत झा कहलनि—‘प्रक्रिया तीन चरणमे: उपकरणक चित्र, स्मृति-पत्रक अलग कऽ मुहरबन्द करब, प्रतिलिपि बनायब, आ तकरा बाद सीमित सुनवाई। मूल संचिका अछूता रहत।’ बच्चा सभ एहि बेर उत्सुकता दबा लेल। नाम बचेब सीखल छल; आब स्वर बचेब सीखबाक बेर छल।

तकनीकी जाँच लेल शहरसँ एक युवक आबि पहुँचल—नाम अभय, पेशासँ ध्वनि-अभिलेखपरीक्षक। ओकर कंधापर छोट बैग, आँखिपर मोट चश्मा, आ बोलाइ कम। ओ हरिहर सेवा केन्द्रक सीढ़ी चढ़बाक पहिने जूता उतारि देलक। केओ हँसल नहि। अभय कहलक—‘धूलि उपकरणमे नहि जाय, एहि लेल।’ मीरा हलुक मुस्की देली—‘एतय धूलि सेहो गवाही अछि। ओकरा बाहर नहि फेकू; बस अलग रखू।’ अभय पहिल बेर एहि प्रकरणक भाषा बुझलक—एतय विज्ञान आ स्मृति एक-दोसराक विरोधी नहि, साथी अछि।

रेकॉर्डर स्मृति-पत्रक सहित अलगमेजपर राखल गेल।मेजपर सफेद कपड़ा, चारू कात साक्षी, समय लिखल गेल, चित्र खिंचल गेल। अभय दस्ताना पहिरि उपकरणक पाछाँक ढकना खोललक। भीतर सस्ता कम्पनीक स्मृति-पत्रक छल, जकरापर नील स्याही सँ छोट चिन्ह बनल—‘ध्रु’। आरुणि दबाओल स्वरमे कहलक—‘कुर्सीक लिफाफापर सेहो वैह अधूरा संकेत।’ विनीत झा तुरन्त लिखलनि—‘चिन्ह समान, पर निर्णायक नहि।’ मीरा कहली—‘निष्कर्षक भूख अपराधीक भूखजकाँ तेज होइत अछि; न्याय ओकरा उपवास करबैत अछि।’

पहिल प्रतिलिपि बनैत काल कमरामे कोनो बात नहि भेल। मशीनक बारीक भनभनाहट सुनाइत रहल। गदाधर दरबाजाक बाहर बैसलाह अपन नह काटय चाहैत छलाह, मुदा मीरा

रोकली—‘घबराहट सेहो ध्वनि बनैत अछि। शान्त बैसू।’ गदाधर हाथ कोरामे राखि लेलनि। ओकरा मोन आबि रहल छल ओ सभ राति, जखन ऊपर घंटी बजैत छल आ ओ चाह लऽ कऽ दरबाजा धरि जाइत छल। भीतरसँ कखनो-कखनो कर्कश पुरुष-स्वर, कखनो-कखनो स्त्रीक दबायल हिचकी, कखनो-कखनो एहन चुप्पी जे चाह ठण्ढ भऽ जाए। स्मृति-पत्रक अलग होइतहि मेजपर महीन धूलिक एक घेरा रहि गेल; मशीनक प्रत्येक भनभनाहटपर गदाधरक अँगुरी अनायास मुड़ि जाइत, जेना पुरान घण्टी फेर बजि उठत।

प्रतिलिपि बनलाक बाद अभय पटलपर संचिकाक सूची देखौलक। नाम अजीब छल—‘नरम_माय’, ‘कानून_डर’, ‘बेटा_बाहर’, ‘स्वीकार’, ‘कुर्सी_राति’, ‘नन्द_सूची’, आ अन्तिम संचिका—‘नया_पंजी’। ई नाम देखितहि नील पंजीक भय-स्तम्भ ध्वनिमे बदलि गेल। अनन्या पन्नापर लिखली—‘लिखल भयक संग बोलेल भयमेल खा रहल अछि।’ मीरा हुनका जोड़बाक लेल कहली—‘मेल प्राथमिक संकेत; सत्यापन शेष।’ बच्चा सभकेँ आब नोटबुकमे संयमक भाषा सीखब पड़ि रहल छल।

पहिल संचिका ‘नरम_माय’ बजायल गेल, मुदा केवल सीमित साक्षीसभक उपस्थितिमे। ध्वनि-विस्तारकक आवाज बहुत कम राखल गेल। प्रारम्भमे कागच उलटबाक ध्वनि, फेर कोनो पुरुषक कण्ठ साफ करब। तकरा बाद आवाज नरम, अस्वाभाविक रूपसँ मीठ—‘माय, घबराउ नहि। हम सेवा केंद्रसँ बाजि रहल छी। अहाँक नाम विशेष सहायतामे आयल अछि।’ ई वाक्य सुनिते कोठलीक एक स्त्री साक्षीक आँखि नोरसँ भरि गेल। मीरा तुरन्त संचिका रोकौली। ‘ककरो स्मृति बिखरैत हो तँ सुनवाई रोकल जाएत,’ ओ कहली। न्यायक गति लोकक देहसँ बेसी तेज नहि हो सकैत।

दोसर बेर संचिका छोट-छोट अंशमे सुनल गेल। नरम आवाज धीरे-धीरे नियम बतबैत—पहिने आधार-पत्र-पत्र, फेर बैंक, फेर एक-बेरक गुप्त संकेत नहि, अपितु ‘प्रार्थना-पत्रक पुष्टि-संकेत’; शब्द बदलल गेल छल ताकि ठगी सेवा जेकाँ लागय। वाक्यक बीच पाछाँसँ दोसर पुरुष फुसफुसाबैत—‘धमकी नहि, ममता।’ अभय संचिका रोकि कहलक—‘पाछाँक आवाज अलग परतमे अछि। सम्भव अछि जे कमरामे दो लोक।’ विनीत झा लिखलनि—‘मुख्य फोन-स्वर आ पृष्ठभूमि-निर्देश—दू स्रोत।’ आरुणि कहलक—‘अपराधक अभिनयमे निर्देशक सेहो अछि।’

‘कानून_डर’ संचिकामे स्वर बदलि गेल। एहि बेर आवाज कठोर, शासकीय, बीच-बीचमे अंग्रेजी शब्दक टूटल छाह। ‘अहाँक विरुद्ध सूचना-पत्र अछि’, ‘अंकीय निगरानी’, ‘गिरफ्तारीसँ

बचय चाहैत छी तँ सत्यापन करू।’ मीरा भौं सिकोड़ि सुनैत रहली। स्वर कानूनक अभिनय करैत छल, कानून नहि। सत्यव्रत मेहता लिखलनि—‘राज्यक भाषा चुरायल गेल अछि।’ ओहि एक वाक्यमे पूरा जालक क्रूरता छल—जकरा कानून रक्षा देबाक चाही, ओकर नामपर डर बेचायल जा रहल छल।

संचिकाक बीच अचानक एक नाम आयल—‘बिसेसरक प्रकरण पुरान अछि, एकरा एखन नहि खोलू।’ कमरा जमि गेल। बिसेसर पासवान, गङ्गा-पुल, नन्द आरुणिक मृत्यु-सूची—सभ एक क्षणमेमेजपर उपस्थित भऽ गेल। अभय संचिका रोकलक। ओ प्रशिक्षित छल, मुदा ओकर हाथ काँपि गेल। विनीत झा कहलनि—‘समय-चिन्ह नोट करू।’ मीरा धीमे कहली—‘पुरान जलसमाधिकेँ ओ सभ एखनहुँ डरैत छल। जे नाम पानिमे दबायल गेल, ओ अंकीय कमरामे फेर उभरि रहल अछि।’

‘नन्द_सूची’ संचिका सभसँ विचित्र छल। ओहिमे कोनो बातचीत नहि, अपितु कोनो लोक पन्ना पढ़ि रहल छल—‘मृत्यु-सूची अपूर्ण... नामक सत्यापन आवश्यक... अनुबंधक शर्त... सुरक्षा-बेल्ट... अनुपस्थित लिखल गेल।’ पढ़निहार अटकैत छल, जेना ओकरा पुरान देवनागरी आ शासकीय भाषा दुनू कठिन लगैत हो। पाछाँसँ केओ कहैत—‘एहि भाग काटू। नाम मात्र चाही। दावा कतऽ बनत?’ आरुणि दाँत भींचि लेलक। नन्दक चेतावनीक पन्ना अपराधक कच्चा सामग्री बनाओल जा रहल छल।

मीरा सुनवाई रोकि पाँच मिनटक विराम देली। केओ बाहर नहि गेल। चन्ना गाछीक पात खिड़कीसँ देखाइत नहि छल, मुदा ओकर छाह देबालपर हिलि रहल छल। हुलासीक स्वर जेना हवामे आयल—‘जकर गवाही बचल, ओकरा ओ सभ दावा बनौलक।’ पनिडुब्बी पोखरिक पानि भीतरसँ हलचल कएलक। बूढ़बा भूत जेना कहि रहल छलथिन—‘पढ़ल पन्ना जँ सही हाथमे नहि पड़त, तँ मृतक फेर लुटाएत।’ सत्यव्रत मेहता अपन कलम बन्द कऽ आँखि मूदि लेलनि।

विरामक बाद ‘स्वीकार’ संचिका सुनल गेल। पहिने कोनो स्त्रीक रोदन। फेर मधुकरक चिन्हारि सकयबला स्वर—‘बस ई कहू जे अहाँ स्वेच्छासँ कागच देने छी। सेवा केन्द्र उत्तरदायी नहि।’ स्त्री कहैत—‘हमरा बुझल नहि।’ मधुकर—‘नहि बुझल तँ प्रकरण बनत। बुझल कहब तँ पाइ घुरि सकैत।’ एहि स्वरमे मधुरता नहि, दबावक गाढ़ चिपचिपाहट छल। गदाधर बाहरसँ स्तब्ध भऽ सुनैत रहलाह। ओकरा मोन आयल—कतेको बेर ओ खाली बयान-पत्रक गट्ठर ऊपर पठौने छल।

मीरा संचिका रोकि गदाधरकेँ भीतर बुलौलथि। ‘ई स्वर अहाँ चिन्हारित छी?’ गदाधरक आँखि माटिपर। ‘मधुकर बाबू जेकाँ अछि,’ ओ कहलनि, ‘मुदा कखनो-कखनो ध्रुवेशो हुनका लिखि दैत छल जे कोना बाजब।’ ‘देखलहुँ?’ विनीत झा पूछलनि। गदाधर माथ हिलौलनि—‘कागचपर शब्द, ऊपर कुर्सीपर लोक, नीचाँ हम घण्टी। हम सोचैत छलहुँ, सेवा-पत्र अछि।’ ओकर आवाज टूटल। मीरा कहली—‘अनजाने काज करब अपराध नहि होइत, मुदा चुप रहब बादमे अपराध बनि जाइत अछि।’ गदाधर पहिल बेर पूरा नाम लिखबाक लेल तैयार भेलाह।

‘कुर्सी_राति’ संचिकामे केवल कमराक ध्वनि छल। कुर्सी घीचबाक आवाज, पंखाक खरखराहट, मोबाइलक कम्पन, कागचपर कलमक तीख घर्षण, आ बीच-बीचमे छोट साँस। कोनो स्पष्ट शब्द नहि। अभय कर्ण-यन्त्र लगाकऽ बहुत देर सुनलक। फेर कहलक—‘एहिमे एक फुसफुसाहट अछि।’ सभ चुप। आवाज बढ़ाओल गेल। कर्कश अंकीय खरखराहटक भीतरसँ वाक्य उभरल—‘नव नाम अलग पंजीमे।’ नील पंजीक अन्तिम पन्ना अचानक बाजि उठल।

ई वाक्य जेना कमराक देबाल फाड़ि देलक। जे लिखल पन्नामे भेटल छल, से ध्वनिमे सेहो भेटल। ध्रुवेशक हस्ताक्षर एखन निर्णायक नहि, मुदा आदेशक पद्धति स्पष्ट भऽ रहल छल। आरुणि फुसफुसौलक—‘लिखल भय, बोलेल भय, खाली बयान, कुर्सी—सभ एके धागा।’ अनन्या उत्तर देली—‘धागा मात्र नहि, फाँस।’ मीरा लिखली—‘नव पंजी खोज आवश्यक। स्वर-साक्ष्यक सुरक्षित प्रतिलिपि बनल। स्वर-चिन्हारि शेष।’

अन्तिम संचिका ‘नया_पंजी’ खोलल गेल। पहिने बहुत काल धरि निस्तब्धता। फेर मोबाइलपर टाइप करबाक टक-टक। केओ कहैत—‘पुरान नाम हटाउ। जे उठि गेल, ओकरा मृत मानू। जे बाजय लागल, ओकरा विवादित लिखू। जे मौन अछि, ओकरा अगिला सूचीमे।’ दोसर स्वर—बहुत धीमा—‘आरुणि?’ पहिल आवाज—‘बच्चा सभ केँ छोड़ू नहि। ओ सभ नामक पहरुआ बनि रहल अछि।’ ई सुनि कमरामे पहिल बेर साँच डर आयल। अपराध आब केवल पुरान पीड़ितपर नहि, नाम बचाबयबलापर सेहो दृष्टि राखि रहल छल। “बच्चासभ” शब्द सुनितहि अनन्याक हथेलीमे नहक अर्धचन्द्र धँसि गेल; आरुणिक आँखिमे चन्ना गाछीक रातिक इजोत एक क्षण लेल काँपि उठल, मुदा दुनू अपन कॉपी बन्द नहि केलक।

मीरा तुरन्त आदेश देली—‘एहि अंशक प्रतिलिपि अलग सुरक्षित। बच्चा सभक सुरक्षा प्राथमिक।’ अनन्या विरोध करय चाहैत छली—‘हम डरब नहि।’ मुदा मीरा हुनकर हाथ पकड़ि कहली—‘डरब नहि आ बेपरवाह रहब—दुनू अलग बात। नामक पहरुआ जीवित रहत तखने

नाम बचत।' आरुणि माथ झुका लेलक। पहिल बेर ओकरा बुझल जे पहरा देनिहारो पहराक भीतर अछि।

ध्रुवेशक प्रत्यक्ष आवाज एखनहुँ स्पष्ट नहि आयल। कखनो पाछाँक साँस, कखनो फुसफुसाहट, कखनो लिखल निर्देश पढ़यबला मधुकर। अभय कहलक—'स्वर-चिन्हारि लेल नमूना चाही। केवल अनुमानपर नाम नहि।' एहि बातपर भीड़मे निराशा पसरल। लोक चाहैत छल —स्वर बजल आ अपराधी पकड़ायल। मुदा न्यायक रास्ता एते सरल नहि। सत्यव्रत मेहता कहलनि—'स्वरक अदालतमे कान जल्दी निर्णय सुनाबैत अछि; कानूनकेँ धीमा चलब जरूरी।'

दिनक अन्तमे रेकॉर्डर फेर बन्द कएल गेल, मुदा आब ओकर भीतरक स्वर अकेला नहि रहल। प्रतिलिपि बनल, सूची बनल, समय-चिन्ह लिखल, सम्बन्धित अंश अलग सील। मधुकरक स्वर-नमूना लेल जाएत, ध्रुवेशक ज्ञात भाषण वा बैसकीक स्वर खोजल जाएत, फोनक प्रसारण-मीनारक स्थान मिलाओल जाएत, आ नील पंजीक नव पन्ना खोजल जाएत। मीरा बाहर आबि लोककेँ केवल एतबे कहली—'स्वर सुनल गेल अछि। पीड़ा बजारमे नहि खोलल जाएत। जाँच आगाँ बढ़त।' भीड़ एही अनुशासनसँ कने-कने न्यायपर भरोसा करय सीखि रहल छल।

साँझ चन्ना गाछी लग रेकॉर्डर नहि आनल गेल। ओकर बदला एक खाली माटिक कटोरी राखल गेल। बूढ़बा भूत पूछलथिन—'कटोरी किएक?' अनन्या कहली—'आवाजक आकार नहि होइत; ओकरा खाली ठाम चाही।' हुलासी कटोरीक ऊपर झुकली—'जखन हाथ नहि छल, स्वरे हाथ बनल। मुदा जे आवाज दोसराक कण्ठ चुरा लेत, ओकरा बाँधब पड़त।' पनिडुब्बी पोखरिसँ हलुक पानि उठाकऽ कटोरीमे देली। पानिमे केओ चेहरा नहि देखाइत, केवल लहर।

राति गाढ़ भेल। चन्ना गाछीक पात सभ हवा बिनु हिलैत रहल। कारी भूत छाहमे, उज्जर प्रेत पातक कोनापर, लोथ आध मुँह खोलने, सभ जेना सुनैत रहल—ओहि रेकॉर्डरक निस्तब्धता, ओहि स्त्रीक रोदन, मधुकरक दबाव, ध्रुवेशक सम्भावित साँस, आ नन्दक फाटल प्रतिवेदन पढ़ल जाएबाक स्वर। मीरा पाथरपर लिखली—'स्वर भेटल, पर चेहरा एखन बाकी।' अनन्या अगिला पन्ना खोलि लिखली—'स्वरक चेहरा।' आरुणि नीचाँ जोड़लक—'जकर साँस पाछाँ अछि, ओकर देह खोजल जाएत।'

लोकगीत: खाली कटोरीमे स्वर

लोकधुन: श्रवण-समदाउन

सम्हारू हे कटोरी, चोरायल कण्ठ सम्हारू हे,
स्वर भेटल अछि—आब ओकर चेहरा पुकारू हे।

रेकॉर्डर बन्द, तइयो रोदन ऊँच भेल,
स्त्रीक काँपैत कण्ठ समय-चिन्हमे खेल।
प्रतिलिपि, मुहरबन्द अंश, स्वरक नमूना,
पीड़ा बजार नहि—मर्यादाक ई दूना।
गाछी लग रेकॉर्डर नहि, खाली माटिक कटोरी,

आवाजकेँ आकार नहि—खाली ठाम जरूरी।
पनिडुब्बी पानि देली, चेहरा नहि उभरल,
नन्दक फाटल प्रतिवेदनक बोल भीतरसँ झरल।
खाली कटोरी, प्रत्येक चोरायल कण्ठ सम्हारू,

आवाजकेँ आकार नहि—खाली ठाम ओकर ठिकाना।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—बलवान् अनिष्टानुबन्धित्वक प्रश्न: निषेधात्मक वाक्य “विषयुक्त मांस नहि खाउ” एहि अर्थमे प्रवृत्ति रोकैत अछि जे एहन भोजन इच्छित सुखक अपेक्षा अधिक अनिष्टक साधन अछि। बलवान् अनिष्टानुबन्धित्वक प्रश्न।]

अध्याय १९३

आवाजक चेहरा

आवाजक चेहरा तखन देखाइ छै जखन साँसक पाछाँ ठाढ़ लोक गनल जाए।

अध्यायारम्भ लोकगीत: साँससँ चेहरा उगै

लोकधुन: सोहरक धीम लय

ललना रे, पहिल साँसक सोहर हे,
प्रत्येक चेहरामे उगल अपन-अपन भोर हे।

पहिल साँससँ चेहरा उगै, नामसँ जीवन फूले,
अन्हार गर्भक पाछाँ भोरक पाँखि खुले।
जकर कण्ठ दबायल गेल, ओकर आँखि पढ़ू,
हथेली, चाल, पसेना—सभसँ चिन्हारि गढ़ू।

एक चेहरा एक संसार, आँकड़ा मात्र नहि,
साँसक गरिमा मानि चलू, केओ अनाम नहि।
भोरक सोहर गाबि कहू—जीवन सभसँ पैघ,
प्रत्येक चेहरामे चमकि रहल मानवताक मेघ।

अन्हार गर्भक पारसँ पाँखि खोलल जीवन,
आँकड़ा नहि, आँखिक जोति—इहए असल धन।
जकर कण्ठ दबल, तकर चालि-हथेली पढ़ू,
'केओ अनाम नहि '—सोहरक ई टेक गढ़ू।

❖

पहिने भरोसा, फेर भय—ठगीक ई पाठ मधुर आवाजमे अबै छै। मंचपर सेवा, फोनपर धमकी, कागचपर सहमति; एके चेहरा अलग-अलग नकाब पहिरै छै। जखन पीड़ित अपन संशय सहित बजै छै, तखन "जेना" आ "निश्चित"क बीचक दूरी सेहो प्रमाण बनै छै।

जकर नाम सुरक्षा माँगै, ओकरा तमाशामे नै उघारू। दीपकक चिन्ह राखू, मुदा बातक इजोत बचाउ। विज्ञानक भाषा धीम हो, प्रतिलिपि अलग हो, मूल मुहरबन्द रहय—कारण तेज घोषणा अपराधीकेँ भागबाक बाट दै छै, धीम प्रक्रिया ओकर बाट बन्द करै छै।

आब स्वरक पाछाँ चेहरा अर्ध उगल छै। एक माथपर पुरान तिथि, एक गालपर मुहर, एक कण्ठमे दोहराओल आदेश, आ पाछाँ टूटल सङ्केतक जाल। समन चेहराकेँ नै, साँसक दरबाजाकेँ पठाओल जाइए; जखन दरबाजा खुलत, गोहिक अनेक दाँत एक-एक कऽ गनल जाएत।

गाममे ने ढोल बजल, ने घोषणा भेल, मुदा सभकेँ खबर छल जे अपराधक मुँह आब स्वरक ओटमे नुकायल नहि रहि सकत। हरिहर सेवा केन्द्रक ऊपरक कमरा एखनहुँ मुहरबन्द छल, नील पंजी अलग पेटीमे, रेकॉर्डर अलग लिफाफामे, आ मीराक चेहरापर वैह कठोरता जे दयाकेँ तमाशा बनबासँ रोकैत अछि। अनन्या पाथरपर रातिक लिखल पाँति फेर पढ़ली—'स्वर भेटल, पर चेहरा एखन बाकी।' आरुणि हुनकर नीचाँ आइक शीर्षक गाढ़ अक्षरमे लिखलक—'आवाजक चेहरा'। भोरक ओसभिजल हवामे लोहाँक मुहर, पुरान तार आ भीजल पातक मिलल गन्ध छल; सभक साँस धीम छल, जेना गाम स्वयं कोनो कठिन नाम सुनबाक तैयारी कऽ रहल हो। पाथरक भीतरी ठण्ढक अनन्याक हथेली धरि चढ़ि आयल, आ आरुणिकेँ लगल—रातिक आवाज एखनहुँ गाछीक पातमे अटकल अछि।

आवाजक चेहरा खोजब साधारण चिन्हारि नहि छल। लोकक कान तुरन्त कहि दैत अछि—ई फलाँक आवाज अछि, ई अमुकक साँस अछि। मुदा मीरा पहिनहि कहली—'कानक भरोसापर ककरो दोषी नहि ठहराओल जाएत। आवाजक संग समय, ठाम, उपकरण, साक्षी आ नमूना सभ जोड़ल जाएत। जकर चेहरा आवाजमे देखाइत अछि, ओकरा कानूनक ऐनासँ सेहो देखब आवश्यक।' एहि वाक्यपर भीड़मे हलुक बेचैनी पसरल। लोक न्याय लेल अधीर छल, मुदा न्याय धीम आँच माँगैत अछि।

अभय भिनसरहि एक छोट यन्त्र, तार, कागच आ कम्प्यूटर लऽ कऽ आयल। ओ रेकॉर्डरक प्रतिलिपि खोलबासँ पहिने सभकेँ बुझौलक—'स्वरकेँ आँखिसँ देखबाक लेल ओकर रेखा बनैत अछि। ई रेखा पूर्ण सत्य नहि, मुदा झूठक बाँसुरी पकड़ि सकैत अछि। जँ दू आवाजमे साँसक उतार, अक्षर काटबाक ढंग, रुकबाक आदत आ पाछाँक घरघराहट मिलत, तँ तुलना मजबूत कहल जा सकैत अछि; मुदा अन्तिम निर्णय न्यायिक प्रक्रिया देत।' बच्चासभ पहिल बेर आवाजक रेखा देखलक—एक चढ़ाइ, एक उतार, एक टूटल पहाड़, एक अन्हार घाटी। अनन्या फुसफुसा कऽ कहली—'स्वरक भूगोल।'

मधुकरक स्वर-नमूना लेल गेल। ओकरा अलग कमरामे बैसाओल गेल; सोझाँ पानिक गिलास आ कागचपर पाँच वाक्य छल। पहिल—'सेवा केन्द्र गरीबक घर धरि पहुँचत।' दोसर—'डरब नहि, सहयोग करब।' तेसर—'नाम गलत लिखल गेल तँ सुधारल जाएत।' चारिम—'फोन बन्द नहि करब।' पाँचम—'जे कहल जाए, वैह कहब।' मधुकर पाँचम वाक्यपर अटकि गेल। ओकर कण्ठ सुखा गेल। मीरा कहली—'वाक्य पढ़ू, ई केवल नमूना अछि।' मधुकर पढ़लक, मुदा ओकर आवाजमे ओहि लोकक डोरी स्पष्ट सुनाइ पड़ल जे बहुत दिनसँ दोसराक आदेशक कठपुतली रहल हो।

ध्रुवेशक नमूना भेटब कठिन छल। ओ सोझाँ नहि छल आ ओकर घरपर ताला छल। विनीत झा कहलनि—‘ज्ञात सार्वजनिक भाषण, बैसकीक अभिलेख, उद्घाटनक विडियो, बैंक-सभा वा पंचायतक पुरान घोषणा खोजू। ओहिमे स्पष्ट आवाज भेटत तँ तुलना सम्भव होयत।’ गदाधर सेवा केन्द्रक पुरान आलमारीसँ सीडी, पेन-ड्राइव, टूटल मोबाइल आ ‘स्वागत समारोह’ लिखल एक डिस्क निकालि अनलनि। ढकना उठितहि धूलिक महीन बादर उड़ल; पुरान प्लास्टिक, सीलन आ बासी धूपक गन्ध नाकमे चुभल। गदाधरक आँखि पानिसँ भरि उठल, मुदा ओ पलक नहि झपकौलनि; हुनका लगल प्रत्येक डिस्कक किनारपर कोनो दबाओल शिकायत नहसँ खरोंच मारि रहल अछि। ओहि धूलिमे कतेको मुस्की, ताली, शपथ आ झूठक परत नुकायल छल।

पहिल डिस्क खुलल नहि। दोसरमे केवल भजन छल। तेसरमे हरिहर सेवा केन्द्रक उद्घाटनक दृश्य भेटल—मंच, नारिकेल, माला, धूप, बच्चासभक पाँति, आ बीचमे कुर्सीपर बैसल ध्रुवेश। ओकर चेहरापर सेवा-भावक रंग पोतल छल, मुदा आँखि भीड़ नहि, कैमरा खोजि रहल छल। ओकर भाषण शुरू भेल—‘गामक पीड़ा हमर पीड़ा अछि।’ भीड़मे कतेको लोक ठिठकि गेल। कतेकोकेँ ओहि दिनक ताली मोन आयल, कतेकोकेँ बादक ठगी। आवाज धीरे-धीरे कमरामे भरि गेल।

अभय भाषण रोकि-रोकि सुनलक। ओ मूल रेकॉर्डरक पाछाँक साँसवला अंशपर गेल, फेर उद्घाटन भाषणक ‘पीड़ा’ शब्दपर, फेर दोसर सार्वजनिक विडियोमे ‘प्रक्रिया’ शब्दपर। ओकर आँखि रेखापर टिकि गेल। ‘देखू,’ ओ कहलक, ‘ध्रुवेश “र”पर पहुँचबासँ पहिने कण्ठ कने खँखारैत अछि। “स”क बाद हलुक सीटी अछि। आ लम्ब वाक्यक अन्तमे साँस भीतर नहि, बाहर छोड़ि कऽ अगिला शब्द पकड़ैत अछि।’ मीरा तुरन्त रोकली—‘तुलना लिखू, घोषणा नहि।’ अभय माथ हिला देलक।

अनन्या कागचपर लिखैत रहली—साँसक ठहराव, “र”क पहिने खँखार, “स”क सीटी, वाक्यक अन्तमे बाहर छोड़ल साँस। हुनका लगल जे लोकक अपराध नुकाइ सकैत अछि, मुदा कण्ठ अपन पुरान आदत नहि छोड़ैत। आरुणि कहलक—‘नाम झूठ हो सकैत अछि, चेहरा बदलि सकैत अछि, कागच काटल जा सकैत अछि; आवाजक चाल कतऽ नुकायत?’ सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘आवाजो अभ्याससँ बदलैत अछि, मुदा भयक साँस बदलनाइ कठिन होइत अछि।’

तखने विनीत झा एक नव कागच राखलनि। ओ बैंक शाखाक पुरान सभा-सूची छल, जाहिमे हरिहर सेवा केन्द्रक खाता खोलबाक दिनक बैसकीक उल्लेख छल। शाखा-प्रबन्धक पहिने डराइत छल, मुदा रातिक बाद ओ एक प्रतिलिपि पठेने छल। संगमे एक छोट विडियो छल—मेजपर चाह, पाछाँ पञ्चाङ्ग, सोझाँ ध्रुवेश, महेश्वर, मधुकर आ एक अज्ञात युवक। विडियोमे आवाज स्पष्ट नहि छल, मुदा एक क्षण ध्रुवेश झुकि कऽ कहैत सुनाइ पड़ल—'पहिने विश्वास, फेर भय।' कमरामे निस्तब्धता पसरि गेल।

'पहिने विश्वास, फेर भय'—ई वाक्य बन्द रेकॉर्डरमे मधुकरक मुँहसँ दोहरायल गेल छल। ओतय मधुकर कहि रहल छल—'पहिने विश्वास, फेर भय, तखन पाइ।' अभय दुनू अंश जोड़ि सुनौलक। वाक्यक ताल एके जेकाँ छल। ध्रुवेशक सार्वजनिक चेहरा सेवा कहैत छल; बन्द कमराक सूत्र भय कहैत छल। मीरा आँखि मूदि क्षणभरि सुनली, फेर कहली—'एहि अंशक तीन प्रतिलिपि बनू—एक अदालत लेल, एक सुरक्षित अभिलेख लेल, आ एक पीड़ितक प्रतिनिधिक सोझाँ सत्यापन लेल। भीड़मे नहि।'

बाहर भीड़ अधीर भऽ रहल छल। कतेको लोक कहैत—'नाम घोषित करू।' कतेको—'ध्रुवेशकेँ तुरन्त पकड़ू।' कतेको—'सेवा केन्द्र जरा दिअ।' मीरा बाहर गेली। हुनका देखितहि शोर उठल। ओ हाथ उठाकऽ सभकेँ चुप करौली। 'आवाजक तुलना आगाँ बढ़ल अछि,' ओ कहली, 'मुदा चेहरा मिलानक काज पूरा नहि। अधीरतामे साक्ष्य बिगड़ल तँ अपराधीसभ ओही अधीरताकेँ अपन बचावक ढाल बना लेत।' भीड़ शान्त भेल। लोक बुझैत छल, मुदा तामसक देह बुद्धिसँ तेज होइत अछि।

मधुकरकेँ बैंक-विडियो नहि देखाओल गेल; केवल वाक्य सुनाओल गेल। 'पहिने विश्वास, फेर भय' सुनितहि ओकर हाथ काँपि उठल। ओकर आँखि कागचक ऊपर नहि, माटिपर टिकि गेल। मीरा धीरेसँ पूछली—'ई निर्देश के देलक?' मधुकर बहुत काल धरि मौन रहल। बाहर काग काँकल, भीतर अभयक यन्त्र हलुक भनभनाइत रहल। अन्तमे मधुकर कहलक—'हम चेहरा नहि देखलहुँ, आवाज सुनलहुँ।' विनीत झा पूछलनि—'ककर आवाज?' मधुकर कण्ठ सुखबैत कहलक—'ध्रुवेश बाबू जेकाँ।'

'जेकाँ' शब्दपर मीरा रुकली। ओ कहली—'जेकाँ नहि; निश्चित छी तँ निश्चित कहू, नहि तँ अपन संशय लिखू। सत्यक भीतर संशय नुकायब झूठक आरम्भ होइत अछि।' मधुकरक चेहरा ढहि गेल। ओ कहलक—'हम डेराइत छी। ओ सभ कहने छल—जँ नाम लेब तँ तोहर मायक दवा बन्द, बेटाक नौकरी बन्द, आ तोहर घरक कागच गुम।' एहि वाक्यक बाद ओकर मुँहसँ

रोदन नहि, खाली हवा निकलल। गामक कतेको अपराध दहाड़िसँ नहि, एहन खाली हवासँ खुलैत अछि।

मधुकर अन्ततः बयान लिखौलक—'बन्द रेकॉर्डरमे जे निर्देश हम दोहरबैत छी, तकर मूल बात हमरा ध्रुवेश बाबूक फोनपर भेटैत छल। कतेको बेर ओ स्वयं बजैत छल, कतेको बेर महेश्वरक हाथे पर्ची अबैत छल, कतेको बेर पाछाँ आवाज रहैत छल। हमरा आदेश छल—पीड़ितकेँ पहिने सेवा, फेर कागच, फेर भय, फेर खाता दिस लऽ जाउ।' हस्ताक्षर करबाक समय ओकर हाथ काँपल। मीरा ओकर हाथ नहि पकड़ली; ओ चाहैत छली जे हस्ताक्षर ओकर अपन इच्छासँ हो। मधुकर काँपैत-काँपैत नाम लिखि देलक।

एहि बयानक बाद आवाजक चेहरा पहिल बेर धुँधलासँ उभरल। चेहरा केवल ध्रुवेशक नहि छल। ओकर माथपर बटुकनाथक पुरान तिथिक छाह, आँखिमे चन्द्रपालक पटल, गालपर महेश्वरक मुहर, कण्ठमे मधुकरक अभ्यास आ पाछाँ राघव-सङ्केतक टूटल जाल छल। अपराध एक चेहरा पहिरैत अछि, मुदा भीतर अनेक दाँत रहैत अछि। अनन्या पन्नापर लिखली—'चेहरा एक, दाँत अनेक।' आरुणि जोड़लक—'गोहि एखनहुँ जल बदलैत अछि।'

अभय तकनीकी प्रतिवेदनक प्रारूप बनौलक। ओ लिखलक—'रेकॉर्डर अंश संख्या ७, उद्घाटन भाषण अंश संख्या २, बैंक-सभा विडियो अंश संख्या ४ आ मधुकरक नमूना अंश संख्या १क ध्वनि-लक्षण तुलनीय अछि। उच्चारण, साँस-विराम, शब्द-ताल आ पृष्ठभूमि-निर्देशक शैलीमे साम्य अछि। अन्तिम वैज्ञानिक मत विशेषज्ञ प्रयोगशालासँ अपेक्षित।' सत्यव्रत मेहता ई भाषा देखि सन्तोषसँ माथ हिलौलनि। 'ई भाषा धीम अछि,' ओ कहलनि, 'मुदा अदालतमे धीम शब्द तेज तामससँ बेसी टिकैत अछि।'

दुपहरक बाद एक वृद्धा आयली—ओही स्त्री जिनकर रोदन रेकॉर्डरमे सुनल गेल छल। हुनकर नाम सार्वजनिक नहि कएल गेल। मीरा अलग परदा लगाकऽ हुनका बैसौली। हुनका केवल ओ वाक्य सुनाओल गेल जाहिमे मधुकर दबाओ दैत छल। वृद्धा काँपि उठली। 'ई लोक हमरा कहैत छल—दस्तखत करू, नहि तँ संचिका गायब। मुदा फोनक पाछाँ दोसर आवाजो रहैत छल। ओ कहैत—बेसी बुझाउ नहि, भय देखाउ।' मीरा पूछली—'ओ आवाज चिन्हैत छी?' वृद्धा बहुत काल बाद कहली—'सेवा केन्द्रक मंचपर जे बजैत छल, वैह।' हुनकर अँचरामे सूखल हरदि आ औषधिक हलुक गन्ध छल; अँगुरीसभ एतेक काँपैत छल जे पानिक गिलासक किनार बारम्बार बजि उठैत छल। मीरा गिलासकेँ थिर कऽ देली, मुदा प्रश्न फेर नहि दोहरौली; ओ वृद्धाक साँसकेँ अपन गति फेर पाबय देली।

वृद्धाक बयान सुनि बच्चासभक चेहरा बदलि गेल। अनन्या हुनकर नाम लिखय चाहैत छली, मुदा मीरा रोकली—‘एहि नामक सुरक्षा पहिने।’ तखन अनन्या नामक ठाम पन्नापर एक छोट दीपक बनौली। आरुणि पूछलक—‘नामक ठाम दीपक?’ अनन्या कहली—‘जखन नाम नुकायब आवश्यक हो, तखन ओकर इजोत लिखू।’ मीरा दूरसँ ई बात सुनली। हुनका लगल—बच्चासभ न्यायक ओ भाषा सीखि रहल अछि जे कागचक मर्यादा आ लोकक लाज दुनूक रक्षा करैत अछि।

ध्रुवेशक घरपर समन पठेबाक चर्चा उठल। विनीत झा कहलनि—‘पहिने उपलब्ध साक्ष्यक आधारपर पूछताछ-सूचना। भागबाक आशङ्का लिखल जाए। खाता, फोन आ यात्रा-पथ रोकबाक निवेदन कएल जाए।’ गदाधर कहलनि—‘ओ भागि गेल होयत।’ सत्यव्रत मेहता शान्त स्वरमे कहलनि—‘जे अपराध कुर्सीपर बैसि आदेश दैत अछि, ओकरा चलबाक पएर कम, भागबाक बाट बेसी चाही। बाट बन्द करू।’ एहि वाक्यपर मार्ग-नक्शा फेर खोलल गेल। लाल रेखासभ आब नव अर्थमे चमकय लागल।

सेवा केन्द्रक देबालपर टाँगल ध्रुवेशक पुरान चित्र उतारल गेल। चित्रमे ओ मुस्की दैत छल; पाछाँ गरीब बच्चासभक संग कम्बल-वितरणक दृश्य छल। मीरा चित्र भीड़केँ नहि देखौली; केवल सूचीमे लिखली—‘सार्वजनिक छवि-सामग्री, प्रमाणिकरण अपेक्षित।’ मुदा अनन्या चित्र देखितहि काँपि उठली। हुनका लगल, ध्रुवेशक दहिना काँधक पाछाँ चन्ना गाछीक पातजकाँ कारी धब्बा अछि। ओ पूछली—‘ई धब्बा?’ अभय देखलक—‘सम्भवतः चित्र खराब अछि।’ बूढ़बा भूत ओतय रहितथि तँ कहितथि—चित्र नहि, पाछाँक साक्षी झलक गेल।

साँझमे चन्ना गाछी लग खाली कटोरी फेर राखल गेल। एहि बेर कटोरीमे पोखरिक पानि नहि, वृद्धाक बयान लिखल कागचपरसँ उठल धूपक राख मिलाओल गेल। हुलासी कटोरी लग झुकली। ‘आवाजक चेहरा देखा,’ ओ कहली। पानिमे पहिने लहर, फेर धुँधला मुख, फेर कुर्सीक पीठ, फेर पंखाक चरमराहट, फेर एक हाथ उभरल—जे अँगूठा ऊपर उठबैत जेना कहैत हो, भय बढ़ाउ। चेहरा पूरा उभरबासँ पहिने पानि काँपि गेल। पनिडुब्बी कहली—‘चेहरा पानिमे नहि, लोकक बयानमे टिकत।’

बूढ़बा भूत अपन डारिसँ कहलथिन—‘बहुत युग पहिने लोक नाम बिनु मरैत छल। आब लोक आवाज बिनु मारल जाइत अछि। जकर कण्ठ छीनल गेल, ओकर चेहरा खोजू। जकर आवाज दोसराक मुँहमे भरल गेल, ओकर असल मालिक खोजू। जकर आदेश पाछाँसँ आयल, ओकर पाछाँक अन्हार लिखू।’ कारी भूतसभ गोल घेरा बनौलक। उज्जर प्रेत पातपर मौन

रहल। लोथ आध मुँह खोलि एकटा आवाज निकाललक—'पहिने विश्वास...' आ तुरन्त चुप भऽ गेल। सभकेँ बुझाइ गेल—भयक पाठ गामक हवा धरि पहुँचि गेल अछि।

राति उतरला पर मीरा दिनक कागच समेटली। ध्रुवेशक आवाजक तुलना, मधुकरक बयान, वृद्धाक सुरक्षित गवाही, बैंक-सभा विडियो, उद्घाटन भाषण, रेकॉर्डर अंश आ नन्दक प्रतिवेदनक पाँति—सभ अलग-अलग लिफाफामे राखल गेल। प्रत्येकपर क्रमाङ्क छल। विनीत झा लिखलनि—'अगिला कदम: ध्रुवेश समक्ष प्रस्तुतिकरण, आवाज-नमूनाक विधिक सङ्ग्रह, खाता-निरोध, फोन-स्थानक सत्यापन।' सत्यव्रत मेहता अन्तिम टिप्पणी जोड़लनि—'आवाजक चेहरा अर्ध-उद्घाटित। चेहरापर हाथ राखने अपराधी आब साँस नुका नहि सकत।'

अनन्या रातिक अन्तमे पंजी बन्द करबासँ पहिने पन्नापर लिखली—'आइ चेहरा पूरा नहि देखाइ देलक, मुदा ओकर साँसक दरबाजा भेटल।' आरुणि नीचाँ लिखलक—'चेहराकेँ समन पठाओल जाएत।' चन्ना गाछीक पात एक बेर हिलल। दूर कतहु कुकुर भुकल। हरिहर सेवा केन्द्रक ऊपरक मुहरबन्द कमरा जेना भीतरसँ सुनि रहल छल। आवाज आब वस्तु नहि, गवाही बनि गेल छल। आ गवाही जखन चेहरा खोजि लैत अछि, तखन अपराधीक पहिल हार आरम्भ होइत अछि। अगिला पन्नापर अनन्या धीमे लिखली—'साँसक समन।'

लोकगीत: साँसक पाछाँ चेहरा

लोकधुन: अनुसन्धान लोकधुन

आउ हे आवाज, जकर पाछाँ ठाढ़ अछि से आउ हे,
चोरायल कण्ठ सभक सोझाँ असल नाम बताउ हे।

जकर कण्ठ छीनल, ओकर चेहरा खोजू,
जकर स्वर चोरायल, असल मालिक जोड़ू।
'पहिने विश्वास'—लोथ आधा बोलि चुप भेल,
एहि दू शब्दमे ठगीक पूरा दरबाजा खुलल।
भाषण, बैंक-सभा, रेकॉर्डर, नन्दक प्रतिवेदन,

साँसक चाल मिलितहि नकाब खसि गेल देख।
चेहरा पूरा नहि, साँसक दरबाजा भेटल,
समनक अक्षर रातिक पातपर उतरल।
ए आवाज, जकर पाछाँ ठाढ़ अछि से आउ,

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—प्राभाकरसभक एक वर्गक मत: “धान कुटैत अछि” मे धानत्वक सीमित अर्थसँ कुटनक्रिया सम्बन्धित होएब पर्याप्त अछि; प्रत्येक धानव्यक्तिमे पृथक् लक्षणा आवश्यक नहि। प्राभाकरसभक एक वर्गक मत।]

अध्याय १९४

साँसक समन

समन देहपर नहि, साँसपर जारी होइ छै— आ साँसकेँ कोनो वकील नहि।

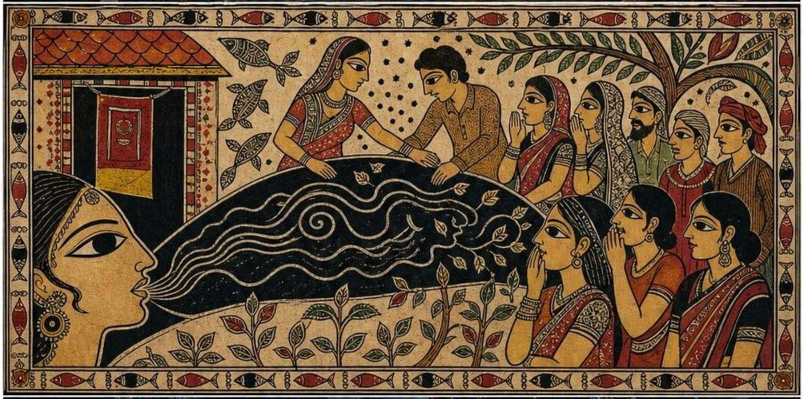

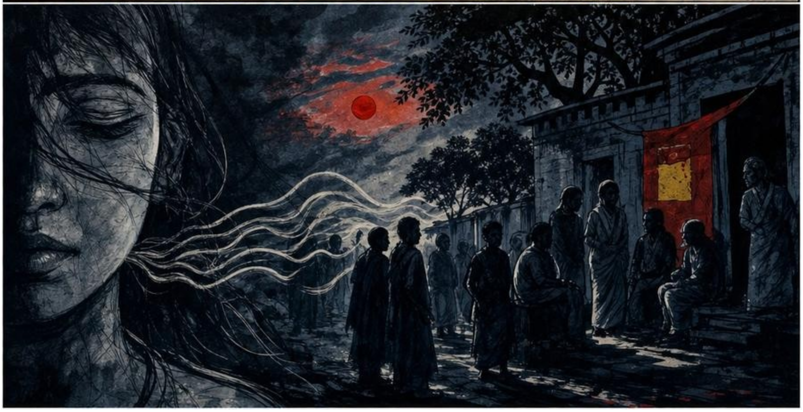

अध्यायारम्भ लोकगीत: मनक रसीद

लोकधुन: नचारीक आशावादी चाल

राखू हे लेखा, मोनक भीतर लेखा राखू हे,
कागच छुटौ, नेहक रसीद नहि हराउ हे।

कागचक रसीद छुटि सकै, मोनक लेखा रहय,
जे नेहसँ काज कएल, ओकर गवाही बहय।
मोनक भीतर साफ हिसाब, आँखिमे इजोत,
साँचक बाट चलनिहारकेँ की डर, की भार।

लिफाफा नहि, विश्वासक मोहर संग लिअ,
भीतरक अदालतमे अपन उत्तर साफ दिअ।
मनक रसीद कहत सदा—न्याय उधार नहि,
सत्यक कमाइ धीरे सही, कहियो बेकार नहि।

भीतरक अदालत रोज साँझ बही खोलए,
आँखि मिला कऽ अपने सँ उत्तर बोलए।
लिफाफा नहि, विश्वासक मोहर संग रहय,
सत्यक धीमा कमाइ जनम भरि फलय।

❖

कागच फाटकपर चस्पा होइत छै, मुदा असली समन भीतरक घण्टीकेँ हिला दै छै। टायरक निशान, अचानक बजल फोन, वकीलक पत्र, अनुपस्थितिक बहन्ना—ई सभ घेराक महीन रेखा छै। एक रेखा कमजोर हो सकै छै; अनेक रेखा मिलि अपराधक बाट रोकि दै छै।

डरायल गवाहक स्मृति रसीद बनै छै, मुदा ओकर डरकेँ तमाशा बनायब न्याय नै। पहिने पानि, आसन, मौन आ लिखबाक समय चाही; तखने काँपैत बात प्रमाणक बीज बनि सकै छै। जकर नाम सुरक्षित रहबाक चाही, ओकर इजोत राखू, देह नै उघारू।

समन आब व्यक्तिसँ आगाँ खाताक गली धरि जाइए। धनक नाड़ी आ डरक साँस एक-दोसरासँ जुड़ल छै; निकासी रुकिते आदेशक आवाज बदलै छै। गोहिक देह पानिमे नुकायल रहय, मुदा ओकर दाँत, पगचिन्ह, खाता आ साँस एक-एक कऽ लोकक पंजीमे दर्ज भऽ जाइए।

पहिने लोक अपराधक खबर सुनि फुसफुसाइत छल; आब बाजबासँ पहिने अपन साँसक चाल सुनैत छल। केकर वाक्यमे डर घुसल अछि, केकर हँसीमे आदेशक छाह अछि, केकर चुप्पीमे ध्रुवेशक नाम अटकल अछि—ई सभ प्रश्न हवामे घूमि रहल छल। अनन्या भोरमे पाथरपर नब शीर्षक लिखली—‘साँसक समन’। आरुणि ओकर नीचाँ जोड़लक—‘जे स्वर पाछाँसँ आयल, ओकरा साँसक सोझाँ आबय पड़त।’ भोरक ओसभिजल पातसँ हरियर गन्ध उठैत छल, आ दूरक कच्च बाटपर रातिक टायर-धूलि एखनहुँ भीजल छल; अनन्याकेँ लगल, प्रत्येक पातक नोकपर कोनो अनकहल नाम काँपि रहल अछि, जे लिखल जाएबाक प्रतीक्षा करैत हो। चन्ना गाछीक पातसभ ओहि वाक्यपर एना हिलल, जेना पातो समन भेजबाक विधि सीखि रहल हो।

समन शब्द गामक लोक लेल पुरान भयक शब्द छल। अदालतक चपरासी कखनो घरक दरबाजापर लाल-पीयर कागच लटका दैत छल, आ पूरा टोला बुझि जाइत जे घरक भीतर आब तिथिक छाह घुसि गेल। मुदा एहि बेर समन पीड़ितकेँ नहि, आरोपक छाहकेँ छल। मीरा स्पष्ट कहली—‘समन दण्ड नहि। समन बुलाहट अछि—आब अहाँ अपन साँस, अपन आवाज, अपन हस्ताक्षर, अपन कुर्सी आ अपन पंजीक सम्बन्ध स्पष्ट करू।’ लोकक चेहरापर अचरज छल। पहिल बेर अदालतक भाषा डर देबाक बदला उत्तर माँगबाक औजार बनि रहल छल।

विनीत झा भोरे कागच तैयार कएलनि। कागचपर ध्रुवेशक पूरा नाम, पिता, सेवा केन्द्रसँ सम्बन्ध, नील पंजीक पन्ना-सूत्र, ध्वनि-अभिलेखकक स्वर-सन्देह, बैंक-सभा विडियो, कुर्सी-कक्ष आ मधुकरक बयानक उल्लेख क्रमसँ लिखल गेल। ओ प्रत्येक पाँति पढ़ैत गेलाह आ मीरा रोकि-रोकि जोड़ैत गेली—‘पीड़ितक नाम पूरा नहि लिखू। संकेत-संख्या दिअ। निजी आघात समनमे नहि, मामला-दैनिकीमे रहय। अपराधीक सामना हो, पीड़ितक फेरसँ निर्वसन नहि।’ बच्चासभ देखलक जे न्याय केवल अपराधी पकड़बाक उतावली नहि; न्याय पीड़ितक देहपर फेर आँखि नचबासँ बचबाक अनुशासन सेहो अछि।

अभय ध्वनि-अभिलेखकक स्वर-रेखा, ध्रुवेशक उद्घाटन-भाषणक नमूना आ मधुकरक पढ़ल पाँच वाक्यक तुलना कागचमे संक्षेप कऽ देलक। ओकर भाषा सीधा छल—‘साम्य पर्याप्त अछि, मुदा निर्णायक निष्कर्ष लेल विधिक आवाज-नमूना आवश्यक।’ गामक लोक एहि पाँतिकेँ तीन बेर सुनलक। ‘पर्याप्त’ सुनि लोक कहलक—‘तँ पकड़ू।’ ‘निर्णायक नहि’ सुनि लोक बेचैन भेल। मीरा कहली—‘गोहिक दाँत देखितहि ओकरा मारब आसान; मुदा न्यायमे दाँत, काटल देह, पानि आ समय—सभ प्रमाण बनैत अछि। ध्रुवेशक साँस विधिसँ लेल जाएत, तखने आवाजक चेहरा पूरा होयत।’

समन देबाक लेल गदाधर, दू सिपाही, विनीत झाक कनिष्ठ सहायक आ अनन्याक आग्रहपर बच्चासभमे सँ केवल आरुणि गेल। मीरा अनन्याकेँ रोकली—'सभ ठाम सभ नहि जाए। जे लिखैत अछि, ओकरा कखनो-कखनो प्रतीक्षा सेहो लिखब पड़त।' अनन्या पाथर लग रहि गेली, मुदा हुनकर दृष्टि ओहि बाटक धूलि धरि चलि गेल जे हरिहर सेवा केन्द्रसँ ध्रुवेशक नब पक्क घर दिस जाइत छल। ई वैह बाट छल जाहिपर कतेको गरीब सहायता माँगय गेल, कतेको विधवा कागच जमा करय गेल, आ कतेको लोक खाली हाथ घुरल, किएक तँ हुनकर नाम 'गलत स्तम्भ'मे लिखल गेल छल।

ध्रुवेशक घर गामक पुरान घरसभसँ अलग उगि आयल छल। ऊँच फाटक, कैमरा, टाइल, भीतर छोट फव्वारा, बाहर गरीब-सेवाक विज्ञापन-पट्ट। पट्टपर मुस्कुराइत चेहरा—माला पहिरने, हाथ जोड़ने, पाछाँ नील परदा। फाटकपर ठाढ़ प्रहरी कहलक—'बाबू बाहर छथि।' विनीतक सहायक समन देखौलक। प्रहरी पहिने फोन मिलौलक, फेर कहलक—'ई विधिक विषयक सूचना हमरा नहि अछि।' गदाधर आरुणिसँ धीमे कहलनि—'जे घरमे सभ बात आदेशसँ होइत छल, आइ ओ घर कहि रहल अछि जे ओकरा सूचना नहि।'

दरबाजाक भीतरसँ ध्रुवेशक पत्नी नहि, ओकर प्रबन्धक निकसल। नाम—शीतांशु। चेहरापर शिष्टता, आँखिमे तौल। ओ समनक कागच हाथमे नहि लेलक, दू अँगुरी दूरसँ पढ़लक। 'बाबू शहरमे उपचार लेल छथि,' ओ कहलक। सिपाही पूछलक—'कखन गेलाह, ई बताउ।' शीतांशु उत्तर देलक—'काल्हि राति।' आरुणि चुपचाप फाटकक माटि देखैत रहल। कारक टायरक निशान ताजा छल, मुदा निशान बाहरसँ भीतर बेसी गाढ़ आ भीतरसँ बाहर कम। ओकरा लगल—कहानीक बाट कखनो-कखनो माटिपर झूठक वजन छोड़ि दैत अछि।

विनीतक सहायक प्रक्रिया पढ़लक—समन लेबासँ मना कएल गेल तँ चस्पा कएल जाएत, साक्षी हस्ताक्षर करत आ छवि लेल जाएत। शीतांशु तुरन्त मुलायम भेल—'मना नहि, बाबूक अनुपस्थिति अछि।' मुदा ओ कागच लेबय नहि चाहलक। अन्ततः समनक प्रति फाटकक भीतरक सूचना-पट्टपर चस्पा भेल। छवि लेल गेल। आरुणि देखलक—समनक कागच ठीक ओहि विज्ञापन-पट्टक नीचाँ लगल जतय ध्रुवेश गरीब बालकक माथपर हाथ रखने मुस्कुरा रहल छल। पट्टक मुस्की आ समनक पाँति एक-दोसरापर चढ़ि गेल—'उपस्थित होऊ।'

समन चस्पा होइतहि घरक भीतर कतहु फोन बजल। फोन-घण्टीक धुन साधारण छल, मुदा गदाधर काँपि उठलनि। ओहि स्वरमे ओ ऊपरक कमराक फोन-घण्टी चिन्हलनि। 'ई वैह घण्टी अछि,' ओ धीरे कहलनि। सिपाही हुनकर बात लिखलक। शीतांशु तुरन्त कहलक—'

घरमे सभ फोन एके कम्पनीक अछि।’ विनीतक सहायक शान्त स्वरमे कहलक—‘ठीक। फोनक विवरण सेहो माँगल जाएत।’ ई सुनि शीतांशुक चेहरा पहिल बेर पक्क टाइलसँ कच्च माटि बनि गेल।

गाममे घुरैत समय आरुणि बहुत काल चुप रहल। गदाधर पूछलनि—‘की लिखबाक अछि।’ आरुणि कहलक—‘समन देल गेल नहि; समन देखल गेल। ई अन्तर लिखब।’ गदाधर बुझलनि नहि। आरुणि बुझौलक—‘कागच फाटकपर चस्पा भेल, मुदा घरक भीतरक फोन पहिने जागल। जे समन कागचपर जाए, ओ विधिक; जे समन फोनकेँ हिला दे, ओ अपराधक डरक।’ गदाधर पहिल बेर आरुणिक चेहरा ध्यानसँ देखलनि—बच्चा छल, मुदा ओकर आँखिमे पंजीक नील रंग, कुर्सीक धूलि आ ध्वनि-अभिलेखकक लहर एक संग बसल छल।

एतय चन्ना गाछी लग अनन्या प्रतीक्षा लिखि रहल छली। प्रतीक्षा सेहो घटना होइत अछि—ई ओ सीखि चुकल छली। हुनकर पन्नापर पाँतिसभ बनैत गेल—‘समन गेल। धूलि उठल। पात स्थिर। पोखरि शान्त। मीरा तीन बेर घड़ी देखली। अभय उपकरणक तार समेटि फेर खोललक। सत्यव्रत मेहता पुरान प्रतिवेदनक कोन छुइत रहलाह।’ ई सभ बाहरी बात मात्र नहि छल; अपराधीकेँ बुलाओल गेलाक बाद समय स्वयं गवाह बनि जाइत अछि।

दुपहर धरि खबर पसरि गेल जे ध्रुवेश घरपर नहि। किछु लोक कहलक—‘भागि गेल।’ किछु—‘बेमार अछि।’ किछु—‘षड्यन्त्र अछि।’ मीरा सभकेँ रोकली—‘अनुमानक भीड़ प्रमाणक बाट रोकैत अछि। जे अनुपस्थित अछि, ओकर अनुपस्थिति दर्ज करू। जे बहन्ना देलक, ओकर सत्यापन करू। जे फोन बजल, ओकर समय लिखू। जे प्रबन्धक समन नहि लेलक, ओकर नाम लिखू।’ सत्यव्रत मेहता मुस्कुरेलाह—‘अनुपस्थिति सेहो गवाही अछि, जँ ओकरा ठीकसँ पढ़ल जाए।’

साँझसँ पहिने खबर आयल—ध्रुवेशक दिससँ वकीलक पत्र। पत्रमे लिखल छल जे हुनका स्वास्थ्य-संकट अछि, ओ जाँचमे सहयोग करय इच्छुक छथि, मुदा ‘लोक-उत्तेजना’क कारण सुरक्षा चाही। विनीत झा पत्र पढ़ि धीमे कहलनि—‘लोक-उत्तेजना शब्दक पाछाँ प्रायः लोक-गवाहीक डर नुकायल रहैत अछि।’ मीरा पत्रक कोनपर लिखली—‘सुरक्षा उपलब्ध; मुदा आवाज-नमूना स्थगित नहि। वैद्यकीय कागच माँगल जाए। उपस्थितिक वैकल्पिक ठाम प्रस्तावित।’ अनन्या पूछली—‘की ई समन फेर जाएत।’ मीरा उत्तर देली—‘समन लोककेँ नहि, ओकर साँसकेँ खोजि रहल अछि। ओ कतहु जाय, साँस संगहि जाएत।’

अभय सुझाव देलक जे विधिक आवाज-नमूना लेल नियन्त्रित वाक्य चाही। मधुकरसँ पढ़ाओल वाक्यसभ, पीड़ितक फोनक धमकी, उद्घाटन-भाषण आ ध्रुवेशक सामान्य बोलीक ध्वनिसभ मिलि पाँच नब वाक्य बनल। पहिल—'सेवा डरक व्यापार नहि।' दोसर—'पहिने विश्वास बनाउ।' तेसर—'नामक हिसाब चूकत नहि।' चारिम—'जे कागच नहि पढ़त, ओ आदेश मानत।' पाँचम—'गोहिक दाँत देहपर, मुदा नामपर नहि।' अन्तिम वाक्यपर सभ चुप। ध्रुवेश ई वाक्य पढ़त, तखन ओकर आवाज भीतरक कोन देह छूत—ई सोचि सभक रोआँ ठाढ़ भऽ गेल।

बूढ़बा भूत एहि वाक्यसभक छाह चन्ना गाछीमे पहिनहि सुनि लेलनि। रातिक पहिल अन्हार झरितहि ओ डारिसँ उतरि कहलथिन—'समन केवल जीवित अदालतक नहि होइत। मृतकसभ सेहो समन पठबैत अछि।' हुलासी अपन बिनु हाथक देहसँ हवामे रेखा खिंचली। रेखा एक कागच बनल। ओहिपर अक्षर उभरल—'बिसेसर पासवान, छोटू, सलामत, रजनू, अनाम विधवा, अंकीय भयसँ डेरायल स्त्री, नन्द आरुणि—सभक साँसक दिससँ।' पनिडुब्बी पोखरिक पानिसँ मुहर बनौली। मुहरक निशान पानिपर पड़ल आ तुरन्त लहर बनि गेल।

गामक लोकक बीच समनक प्रतिलिपि नहि बाँटल गेल, मुदा ओकर सार पढ़ल गेल। मीरा लोककेँ बुझौली—'ध्रुवेश दोषी सिद्ध भेल नहि; मुदा ओकरा उत्तर देबाक वैधानिक बुलाहट अछि। जे ओकर नामपर डर पसरौलक, जे ओकर कुर्सीक कक्षमे आदेश बनल, जे ओकर उद्घाटन-स्वर ध्वनि-अभिलेखकक स्वरसँ मिलैत अछि—सभपर ओकर उत्तर चाही।' एहि सन्तुलनपर किछु लोक खिन्न भेल। हुनका बदला चाही छल। मुदा बूढ़ विधवा, जिनकर आवाज ध्वनि-अभिलेखकमे काँपल छल, धीरे कहली—'हड़बड़ीक दण्डसँ पहिने सुरक्षित सत्य दिअ। हम फेर गलत मुँहमे अपन भय नहि देखय चाहैत छी।' ई वाक्य भीड़क उतावलीपर ठण्ढ पानि बनि खसल।

रातिमे ध्रुवेशक घरपर फेर हलचल देखल गेल। दूरसँ दू गाड़ी भीतर गेल, एक खाली बाहर निकसल। केओ नम्बर देखलक, केओ नहि। बच्चासभ पहरा नहि दऽ रहल छल, मुदा गामक आँखि आब जागल छल। जे पहिने सेवा केन्द्रक चमक देखि आँखि नीचाँ करैत, आब ओहि चमकक पाछाँक छाह गनैत छल। एक चरवाहा बतौलक जे पाछाँक छोट फाटकसँ केओ झोरा लऽ कऽ निकसल। झोरामे कपड़ा छल कि कागच, बुझल नहि। मीरा कहली—'अपुष्ट बात नहि; समय, दिशा, देखनिहार, दूरी आ इजोत—सभ लिखू।' गामक लोक धीरे-धीरे गवाहीक व्याकरण सीखि रहल छल। दूरक गाड़ी गेलाक बाद डीजलक बास किछु काल धरि हवामे अटकल रहल, आ फाटकक कातक कुकुर माटि सूँघि एकहि ठाम गोल-गोल घूमैत रहल।

चरवाहाक हथेलीमे रस्सीक खुरदुरापन एखनहुँ चुभैत छल; ओ अपन देखल बात फेर-फेर मोनमे दोहरबैत छल, जेना एको दिशा उनटि नहि जाए।

एहि बीच विनीत झा बैंककेँ अन्तरिम सूचना पठौलनि—सन्दिग्ध खातासभपर निगरानी, मोट निकासीपर रोक आ समनप्राप्त व्यक्तिसँ जुड़ल खाता-गतिविधिक प्रतिवेदन। बैंकक मुहर लगैत समय कागचपर हलुक कम्पन भेल, जेना धन स्वयं खबर पाबि गेल हो। सत्यव्रत मेहता कहलनि—‘आवाजक चेहरा खोजैत-खोजैत हम पाइक नाड़ी धरि पहुँचि रहल छी।’ आरुणि पूछलक—‘नाड़ी आ साँस एके अछि की।’ सत्यव्रत उत्तर देलनि—‘देहमे अलग, अपराधमे संग। डरक साँस जतय तेज होइत अछि, पाइ ओहिठाम धड़कैत अछि।’

देर राति अभय एक नब बात पकड़लक। ध्वनि-अभिलेखकक पाछाँक घरघराहटमे पंखाक आवाज रहबे छल, मुदा एक अंशमे दूरक मन्दिर-घण्टीजकाँ सूक्ष्म ध्वनि छल। ध्रुवेशक घरक पूजा-कक्षमे सन्ध्या-आरतीक स्वचालित घण्टी ओहि सुरमे बजैत—ई गदाधर कहलनि। अभय तुरन्त लिखलक—‘पृष्ठभूमि-साम्य जाँच योग्य।’ मीरा सावधान कऽ कहली—‘साम्य प्रमाण नहि, सूत्र।’ मुदा सूत्रो कखनो नदीक धार बदलि दैत अछि। ओहि एक घण्टीक स्वरसँ ऊपरक कमरा, ध्रुवेशक घर आ ध्वनि-अभिलेखकक धमकी-समयक बीच एक नब सूत खुलल।

चन्ना गाछीमे एहि राति कबड्डी नहि, समन-पाठ भेल। मृतकक नाम एक-एक कऽ पुकारल गेल, आ प्रत्येक नामक बाद हवामे खाली ठाम राखल गेल—जाहिमे ध्रुवेशक साँस आबि उत्तर दए। ‘बिसेसर पासवान’—हवा स्थिर। ‘छोटू’—दूर कुकुर भुकल। ‘नन्द आरुणि’—पात झरि पड़ल। ‘अनाम डेरायल स्त्री’—पोखरिपर लहर। बूढ़बा भूत कहलथिन—‘देखू, साँस भागैत अछि, मुदा नामक सोझाँ रुकैत अछि।’ हुलासी जोड़ली—‘जकर हाथ नहि, ओ आवाजसँ समन देत। जकर आवाज छीनल गेल, ओ मौनसँ।’

भोरसँ पहिने ध्रुवेशक वकीलक दोसर सन्देश आयल—ध्रुवेश ‘स्वेच्छया’ आवाज-नमूना देबापर विचार करैत छथि, मुदा ठाम शहरक निजी चिकित्सालय हो। विनीत झा मुस्कुरेलाह—‘विधिक नमूना निजी चिकित्सालयमे नहि, निर्दिष्ट अधिकृत ठामपर।’ मीरा सन्देशपर उत्तर लिखली—‘स्वास्थ्य-सुविधा सहित अधिकृत कक्ष उपलब्ध। असहयोग दर्ज होयत। समन प्रभावी।’ ई वाक्य कागचपर छोट छल, मुदा ओकर वजन गामक बरखाजकाँ छल। ध्रुवेशक साँस जकरा घर, फोन, कुर्सी, ध्वनि-अभिलेखक आ पंजीसभ बचा रहल छल, आब कागचक छोट वाक्यमे घेरायल लगल।

दिनक अन्तमे अनन्या पंजी समेटैत लिखली—'समन देल गेल, मुदा उपस्थिति नहि। अनुपस्थिति लिखल गेल, मुदा साँसक निशान बढ़ल। घरक घण्टी, फोनक धुन, टायरक भार, वकीलक पत्र, बैंकक नाड़ी, पृष्ठभूमिक आरती—सभ मिलि ध्रुवेशक चारूकात घेरा बना रहल अछि।' आरुणि नीचाँ जोड़लक—'समन केवल कागच नहि; घेरा अछि।' मीरा एहि पाँतिपर देर धरि ठहरली। हुनका बुझाइ गेल—आब अगिला चरणमे घेरा खातासभ धरि कसत।

राति उतरला पर हरिहर सेवा केन्द्रक सीलबन्द कमरा शान्त रहल, मुदा ध्रुवेशक घरक ऊपरक खिड़की एक क्षण लेल इजोतसँ भरि फेर बन्द भऽ गेल। दूरसँ ओ इजोत एहन लगल, जेना केओ भीतर कागच पढ़ि रहल हो वा कागच जरा रहल हो। केओ निश्चय नहि कऽ सकल। मुदा चन्ना गाछीक पातसभ एक संग फड़फड़ायल। बूढ़बा भूत धीरे कहलथिन—'जे साँस समनसँ बचत, ओकर खाता बोलत।' पनिडुब्बी पोखरिक पानिपर गोल लहर बनौली—खाताक अङ्कजकाँ।

एहि बीच शीतांशुक एक पुरान सहायक, जे राति सेवा केन्द्रमे कखनो-कखनो कागच पहुँचबैत छल, चुपचाप मीरा लग आयल। ओकर नाम मोहन पासवान। ओ कहलक—'हम अपराधी नहि बनय चाहैत छी, मुदा हमर हाथसँ दू बेर लिफाफा गेल। एक बेर ध्रुवेशक घर, एक बेर शहरक बैंकक पाछाँ गली। लिफाफा सीलबन्द छल। हमरा केवल ई कहल गेल—रसीद नहि, मोन नहि।' मोहनक कुर्तामे रातिक धूलि आ पुरान डीजलक गन्ध बसल छल; पानिक गिलास पकड़िते ओकर नह काँचपर टकरा कऽ महीन स्वर करैत रहल। ओकरा प्रत्येक लिफाफाक वजन फेर हथेलीपर अनुभव होइत छल—कागच हलुक, मुदा भीतर नुकायल नाम एतेक भारी जे काँध झुका दए। मीरा ओकरा तुरन्त मंचक बीच नहि अनली। ओ कहली—'डेरायल गवाहकेँ पहिने पानि, आसन आ लिखबाक समय चाही।' मोहनक बयान अलग राखल गेल। समन आब व्यक्तिसँ खाताक गली धरि पहुँचि गेल।

मोहनक बयान सुनि सत्यव्रत मेहता अपन पुरान डायरीक पन्ना पलटलनि। नन्द आरुणिक लेखमे एक ठाम लिखल छल—'जतय रसीद नहि, ओतय स्मृति रसीद बनू।' सत्यव्रत ई पाँति पढ़ि सभकेँ सुनौलनि। विनीत झा कागचपर लिखलनि—'मौखिक वहन-सूत्र। लिफाफा-मार्ग सत्यापन।' बच्चासभ बुझलक जे कतेको बेर अपराधक प्रमाण तिजोरीमे नहि, डेरायल लोकक स्मृतिमे बन्द रहैत अछि। ओ स्मृति बिनु अपमान खोलल जाए, बिनु दबाव तोड़ल जाए—ई नब पाठ छल।

अनन्या अगिला पन्ना खोलली। हुनकर हाथ थाकल छल, मुदा अक्षर स्थिर। ओ लिखली —'रोकल खाता।' आरुणि ओकर नीचाँ लिखलक—'धनक बाट बन्द होइतहि डरक आवाज बदलैत अछि।' मीरा दीप बुतौली। अन्हारमे दूर कतहु फोन फेर बजल—एक बेर, दू बेर, तीन बेर। एहि बेर केओ उठौलक नहि। फोनक अनुत्तरित घण्टी रातिभरि चन्ना गाछीक पातपर अटकल रहल, जेना ध्रुवेशक साँस स्वयं समन पढ़ि रहल हो।

लोकगीत: रसीद नहि, मोन नहि

लोकधुन: डरायल गवाहक गीत

नहि बनाउ हे मोहन, डरकेँ अपमान नहि बनाउ हे,
स्मृतिक रसीदसँ बन्द खाता धरि पहुँचाउ हे।

मोहन दू लिफाफा रातिक बाटे लऽ गेल,
'रसीद नहि, मोन नहि'—आदेश कानमे पड़ल।
एक ध्रुवेशक घर, एक बैंकक पाछाँ गली,
डरक स्मृति बरखों धरि छाती भीतर जली।
नन्द लिखने छल—जतय रसीद नहि, मोने रसीद,

काँपैत गवाहक बातो बनि सकै न्याय-बीज।
फोन तीन बेर बजल, एहि बेर केओ नहि उठेलक,
अनुत्तरित घंटी ध्रुवेशक साँस समन पढ़लक।
मोहन, तोहर डरकेँ अपमान नहि बनाउ,

दू लिफाफा रातिक बाट लऽ मोहन चलल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—आन वैकल्पिक मतक खण्डन: नवजात रसोइया "रसोइया" शब्दक जातिभुक्त अछि, मुदा श्वेत कुमुद कमलजातिक सदस्य नहि। आन वैकल्पिक मतक खण्डन।]

अध्याय १९५

रोकल खाता

खाता रोकलापर पहिल बेर बुझाइ छै— धन सेहो डेराइत अछि।

अध्यायारम्भ लोकगीत: धन थरथर, सत्य ठाढ़

लोकधुन: हिसाब-झूमरक तेज लय

खोलू हे खाता, भोरे-भोर खाता खोलू हे,
थरथर काँपैत धनकेँ साँचसँ तौलू हे।

खाता काँपै, सिक्का डेराइ, सत्य ठाढ़ मुस्काय,
जनक एकजुट प्रश्नसँ लोभक मीनार ढहाय।
धन जँ सेवा करय तँ लक्ष्मी, छल करय तँ भार,
साफ कमाइ धानक बाली, लोभक धन बेकार।

हिसाब खोलू भोरमे, खिड़कीसभ इजोत,
जेकर हिस्सा ओकरा भेटय—एतबे न्याय विचार।
साँचक आगाँ धन थरथर, श्रमक माथ न झुकत,
लोकक जागल आँखि रहत तँ कारी धारा रुकत।

सिक्का डेराए, पन्ना काँपय, प्रश्न ठाढ़ अटल,
जनक जुड़ल आँखिक आगाँ लोभक मीनार विकल।
जेकर हिस्सा ओकरा भेटौ—एतबे टा विचार।

❖

रोकल खाता केवल तिजोरीक दरबाजा बन्द करब नहि छै। ई निर्णय करबाक अनुशासन छै जे अपराधक धारा रोकय, मुदा गरीबक चूल्हि नहि बुझय; जाली सेवाक मीनार ढहय, मुदा वृद्धाक पेंशन आ छात्रक आशा सुरक्षित रहय। गलत रोक स्वयं अन्याय बनि सकै छै, तेँ प्रत्येक लाल चिन्हक पाछाँ प्रमाणक धैर्य चाही।

नाम, फोन, अँगूठा, मुहर आ निकासीक तिथि—ई सभ अलग-अलग देखला पर छोट निशान छै। एक-दोसरासँ जोड़िते ओ धनक गुप्त नाड़ी बनि जाइ छै। जतय डरक आवाज उठल, ओतयसँ पाइ चलल; जतय पाइ घूमल, ओतय ककरो नाम छोट कएल गेल, ककरो स्मृति कारोबार बनाओल गेल।

पीड़ितक दावा-पंजी अपराधक खातासँ अलग रहय—एहि विभाजनमे न्यायक करुणा छै। सुरजमुखीक पूरा नाम, वृद्धाक जीवन-राशि, मजदूरक कमाइ आ बच्चाक छात्रवृत्ति कोनो

तमाशाक अङ्क नहि। जकरा लूटल गेल, ओकरा फेर प्रमाण देबाक नामपर अपमानित नहि कएल जाए; ओकर नोरकेँ प्रक्रिया अपन मर्यादा दय।

रोकल खाता अन्त नहि, जलसमाधिक अगिला देहरी छै। देह पानिमे डूबि सकै छै, नाम विस्मृतिमे; पाइ खातामे नुकाइ सकै छै, मुदा लोक-स्मृति जागल रहय तँ सभ धार फेर ऊपर आबि सकै छै। गोहिक दाँत आब नदीक कात नहि, अङ्कक गोल घेरामे चमकि रहल छै—आ लोक ओकर प्रत्येक पगचिन्ह लिखि रहल छै।

भोरमे शाखाक लोहाँक शटर आधा उठल, तखन भीतरक कम्प्यूटरसभ एखन चालू नहि भेल छल, पर कतार पहिनेसँ बनि गेल छल। वृद्धासभ अपन पेंशनक पर्ची नेने, मजदूरसभ पहिचान-पत्रक प्रतिलिपि नेने, छात्रसभ छात्रवृत्तिक आशा नेने, आ पीड़ित स्त्रीसभ अपन काँपैत हाथमे जमा-निकासीक कागच नेने ठाढ़ छली। सभकेँ खबर छल—काल्हि राति खाता रोकबाक आदेश गेल अछि। मुदा कोन खाता—अपराधक कि जीवनक? एहि प्रश्नपर बैंकक शटरसँ बेसी लोकक छाती अटकल छल। भीजल लोहाँ, पुरान नोट आ गरम तारक मिलल गन्ध भीतरसँ बाहर आबि रहल छल; कतारमे खँखार, पर्चीक खरखराहट आ सिक्काक सूक्ष्म खनखनाहट एना मिलि रहल छल जेना धन स्वयं अपन निर्णय सुनबाक प्रतीक्षामे हो।

अनन्या पाथरपर लिखली—‘रोकल खाता।’ आरुणि नीचाँ जोड़लक—‘धनक बाट बन्द होइतहि डरक आवाज बदलैत अछि।’ मीरा पढ़ि कऽ किछु देर चुप रहली। ओ बुझैत छली जे खाता रोकब न्याय होयबाक आरम्भ अछि, समाप्ति नहि। गलत खाता रोकल गेल तँ गरीबक चूल्हि बुझत; सही खाता नहि रोकल गेल तँ अपराधक साँप नब बिल खोजि लेत। तेँ आइक पहरा पाथर, गाछी, आवाज वा कुर्सीक नहि, अङ्कक संयमक छल।

विनीत झा शाखा-प्रबन्धकसँ कहलनि—‘पहिने सूची पढ़ल जाए। कोनो खाता केवल नाम-समानतापर नहि रोकल जाएत। स्रोत, प्रवाह, लाभुक, हस्ताक्षर आ फोन-सूत्र—सभ मिलत, तखने रोक।’ प्रबन्धक मनोज मिश्र माथपरक पसेना पोंछि रहल छलाह। ओ बैंकक लोक छलाह; कागच, जमा, निकासी, ब्याज आ हस्ताक्षर हुनकर रोजक संसार छल। मुदा आइ हुनका बुझाइत छल जे खाता केवल जमा-राशि नहि, ककरो डरक नाड़ी सेहो होइत अछि।

नील पंजीक प्रतिलिपिसँ पहिल खाता मिलाओल गेल। नाम—हरिहर सेवा केन्द्र सहायता कोष। उद्देश्य—वृद्धा-सेवा, छात्रवृत्ति, आपदा-सहायता। जमा—छोट-छोट सैकड़ा, हजार, पाँच हजार; निकासी—एके दिनमे भारी राशि, अलग-अलग भुगतान, मुदा विवरणमे वैह शब्द—‘विशेष सेवा’, ‘आवश्यक सहायता’, ‘प्रचार व्यय’। मीरा पूछली—‘विशेष सेवा केकर?’

प्रबन्धक चुप रहलाह। गदाधर, जे काल्हि धरि ताला खोलैत छलाह, आइ बैंकक कुर्सीपर काँपि रहल छलाह। ओ धीरे कहलनि—‘विशेष सेवाक अर्थ ऊपरक निर्देश।’

‘ऊपर’ शब्द फेर हवामे लटकि गेल। कुर्सी, आवाज, साँस आ समन—सभ ओहि ऊपर दिस इशारा करैत छल। सत्यव्रत मेहता कागचपर लिखलनि—‘ऊपर = ध्रुवेश? सत्यापन अपेक्षित।’ ओ हड़बड़ी नहि करैत छलाह। कथा शीघ्रता चाहैत छल, मुदा गवाही धीरे चलैत अछि। बच्चासभ एहि धैर्यसँ चिढ़ैत छल, पर धीरे-धीरे सीखि रहल छल जे न्यायक पएर चोटिल होइतो हड़बड़ी करय तँ फेर फिसलि पड़ैत अछि।

दोसर खाता मधुकरक परिवारक नामपर छल। जमा राशि छोट, मुदा आवृत्ति बेसी। प्रत्येक बेर कोनो वृद्धक खातासँ पहिने पाइ निकलैत, फेर मधुकरक घरक सदस्यक खातामे घूमैत, फेर रातिमे नकद बनैत। बैंकक पर्चीपर हस्ताक्षर अनेक बेर मिलैत नहि छल। अभय, जे अंकीय पगचिन्ह देखैत छल, मुद्रित प्रतिक कोनपर झुकि कहलक—‘ई केवल बैंक नहि; ई आवाजक बादक जेब अछि। फोनपर जे डर देल गेल, ओकर पाछाँ ई निकासी अछि।’

एक स्त्री आगाँ आयली। पंजीमे हुनकर नाम ‘सुरजा देवी’ लिखल छल, मुदा ओ कहली—‘हमर नाम सुरजमुखी अछि। लोक हमरा सुरजा कहैत अछि, मुदा कागचमे छोट कऽ देल गेल।’ मीरा तुरन्त बच्चासभकेँ कहली—‘पूरा नाम लिखू।’ सुरजमुखी कहली—‘हमरा फोन आयल छल जे बेटा जेलमे पड़त। कहल गेल—तुरन्त सहायता कोषमे पाइ जमा करू। हम सोचलहुँ सेवा केन्द्रक लोक हमर गामक अछि। हम अपन बकरी बेचि देलहुँ।’ हुनकर वाक्यक बाद बैंकक भीतरक नकदी-पटल सेहो जेना लजा गेल। अँचराक कोनमे बकरीक पुरान रस्सीक एक छोट रेशा एखनहुँ अटकल छल; सुरजमुखी ओकरा अनजाने अँगुरीसँ मसलैत रहली, जेना बिकि गेल जनावरक गरम देहक अन्तिम स्मृति बचा रहल हो।

अनन्या सुरजमुखीक बयान लिखैत समय रुकि गेली। हुनका मोन पड़ल—चन्ना गाछीमे बूढ़बा भूत कहने छलथिन, देह गोहि खाइत अछि, नाम नहि। आइ पाइ खायल गेल छल, मुदा नाम फेर छोट कएल गेल। सुरजमुखीकेँ ‘सुरजा’ कएल गेल, ताकि हुनकर पीड़ा खाता-तालिकामे कम ठाम ले। अनन्या पन्नापर गाढ़ अक्षरमे लिखली—‘सुरजमुखी देवी, पूरा नाम।’ आरुणि नीचाँ छोट अक्षरमे जोड़लक—‘जकर नाम काटल, ओकर पाइ पहिने काटल गेल।’

तत्काल रोक-आदेश लागू भेल—हरिहर सेवा केन्द्र सहायता कोष, मधुकर-सम्बद्ध खाता, महेश्वरक मुहर-भुगतान खाता, गदाधरक नकद-निकासी खाता, आ ध्रुवेशक प्रत्यक्ष नाम नहि, मुदा ओकर विश्वासपात्रसभक खातासभ। बैंकक प्रणालीमे लाल चिन्ह लगैत गेल। प्रत्येक

चिन्ह लगिते पटलपर 'लेन-देन स्थगित' चमकल। भीड़मे केओ राहतक साँस लेलक, केओ डरा गेल। एक बूढ़ पूछलक—'हमर पेंशनो रुकत?' मीरा तुरन्त उत्तर देली—'पीड़ितक जीवन-राशि नहि रुकत। अपराधक चाल रुकत।' ई वाक्य बैंकक देबालपर चिपका देल गेल।

रोक-आदेशक खबर आध घण्टामे पसरि गेल। फोनसभ बजय लागल। पहिने धीर-गम्भीर आवाज—'एहि कार्रवाईसँ सेवा-काज बाधित होयत।' फेर कठोर आवाज—'धर्मार्थ कोषपर हाथ उठबैत छी?' फेर मधुकरक काँपैत स्वर—'मीरा जी, भूल भऽ गेल; खाता खोलि दिअ।' फेर एक अज्ञात नम्बर—'जे बच्चासभ नाम लिखैत अछि, ओकर घरक खर्चो देखू।' मीरा फोन-अभिलेख करौली, मुदा उत्तर नहि देली। ओ कहली—'धन रुकल तँ धमकी शीघ्र अपन असली भाषामे अबैत अछि।'

प्रबन्धक मनोज मिश्रक बयान शुरू भेल। पहिने ओ कहैत रहलाह—'सभ नियम अनुसार।' मुदा जखन विनीत झा एक पर्ची देखौलनि, जाहिपर बैंकक समयक बाद भारी निकासीक हस्ताक्षर छल, तखन हुनकर आवाज बदलि गेल। ओ कहलनि—'किछु बेर ऊपरक फोन अबैत छल। कहल जाइत छल—गामक सेवा-काज अछि, देरी नहि।' 'ऊपरक फोन' पर मीरा पूछली—'आवाज चिन्हैत छलहुँ?' मनोज मिश्र आँखि नीचाँ कऽ देलनि—'प्रत्यक्ष नहि, मुदा सभ कहैत छल—ध्रुवेश बाबूक निर्देश।'

ई प्रत्यक्ष स्वीकार नहि छल, मुदा धागा छल। सत्यव्रत मेहता लिखलनि—'बैंक-प्रबन्धक: दबावक फोन, ध्रुवेश-निर्देशक रूपमे प्रचलित उल्लेख। पुष्टिकरण अपेक्षित।' अनन्या कने असन्तुष्ट भेली। हुनका लगल—सभसँ साफ बातो फेर 'अपेक्षित'मे किएक बदलि जाइत अछि? सत्यव्रत हुनकर चेहरा पढ़ि लेलनि। ओ धीरे कहलनि—'बेटी, अपेक्षित लिखब अपराधी बचेनाइ नहि, अपितु न्याय बचेनाइ अछि। जे पाँति आइ हड़बड़ीमे लिखब, ओ अदालतमे टूटि सकैत अछि। जे धीरे लिखब, ओ टिकत।'

बैंकक पाछाँ छोट कमरामे नकद-निकासीक पुरान पर्चीसभक गठरी भेटल। किछु पर्चीपर अँगूठा, किछुपर हस्ताक्षरक जाली प्रतिलिपि, किछुपर स्त्रीक नाम, मुदा पाइ उठेलक पुरुष। एक पर्चीपर 'नन्द आरुणि प्रतिवेदन-सहायता' लिखल छल। मीरा चौंकली। 'ई केहन भुगतान?' गदाधर कहलनि—'पुरान पुल पीड़ितसभक दस्तावेज जुटेबाक नामपर कहल गेल छल। असलमे पाइ ऊपर गेल।' एहि वाक्यपर कमरामे ओहिना सन्नाटा पसरल जे ध्वनि-अभिलेखक सुनबाक समय पसरल छल। नन्दक नाम फेर चोरी कएल गेल छल—मृत साक्षीक स्मृतिकेँ धनक बाट बनाओल गेल।

आरुणि पर्ची उठा कऽ देखलक। ओकर हाथ काँपल। 'नन्द आरुणि' नाम ओकरा भीतर घर जकाँ बजैत छल। ओकरा लगल जे कोनो गोहि नदीसँ नहि, बैंकक पर्चीसँ निकलि कऽ पुरखाक नाम चिबा रहल अछि। अनन्या ओकरासँ पर्ची धीरे लऽ कऽ लिफाफामे राखली। 'नाम बचत,' ओ कहली। आरुणि केवल माथ हिलेलक। नाम बचेनाइ कखनो-कखनो कानलासँ कठिन होइत अछि।

दुपहरिया धरि पाँच खाता रोकल गेल, दू खाता आंशिक जाँचमे, तीनपर तत्काल निगरानी, आ एक खाता—ध्रुवेशक निजी शोध-न्यास—पर विवाद रहल। वकीलक पत्र आयल—'ई न्यास स्वतंत्र अछि; सेवा केन्द्रसँ सम्बन्ध नहि।' अभय प्रणालीमे देखलक—एही न्याससँ आवाज-अभिलेखक कीनल गेल, फोन-सेवाक भुगतान भेल, आ शहरक ओहि विश्रामगृहक बिल देल गेल जतय मधुकरक मोबाइल रातिभरि रहल छल। विनीत झा मुस्कुरेलाह नहि; केवल कहलनि—'स्वतंत्रता कागचपर, निर्भरता लेन-देनमे।'

बैंकक बाहर भीड़ बढ़ल। लोक चाहैत छल—कतेक पाइ भेटल, के-के पकड़ायल, कतेक राशि घुरत? मीरा बाहर आबि स्पष्ट कहली—'रोकल राशि न्याय नहि; केवल बहैत अपराधपर बाँध अछि। जे पाइ वसूल होयत, ओ विधि अनुसार पीड़ितक चिन्हारि, दावा-परीक्षण आ न्यायालयक आदेशक बादे घुरत। केओ आइए पाइ बाँटबाक आशा नहि राखू।' भीड़मे निराशा छल, मुदा भरोसा सेहो। लोककेँ तत्काल चमत्कार चाही छल, मुदा चमत्कार बेसीकाल नब ठगीक दरबाजा खोलैत अछि।

सुरजमुखी देवी फेर आगाँ आयली। 'हमरा पाइ कहिया भेटत?' प्रश्न सीधा छल। मीरा हुनकर आँखिमे आँखि राखि कहली—'हम तिथि नहि बेचब। हम प्रक्रिया लिखब। अहाँक दावा आइ पंजीक पहिल पाँतिमे रहत।' सुरजमुखी देर धरि देखैत रहली, फेर कहली—'तिथि नहि बेचू—ई बात नीक लागल।' ओ अपन अँगूठा लगौली। अँगूठाक चिन्ह इबारत नहि, प्रतिरोध छल।

साँझ धरि खातासभक नक्शा बनि गेल। एक रेखा गामसँ बैंक, बैंकसँ सेवा केन्द्र, सेवा केन्द्रसँ ध्रुवेशक न्यास, न्याससँ शहरक उपकरण-दोकान, उपकरणसँ आवाज-अभिलेखक, अभिलेखकसँ फोन, फोनसँ डर, डरसँ फेर गरीबक खाता। गोल घेरा। चन्ना गाछीक कबड्डी जकाँ, मुदा मैदान अङ्कक। आरुणि नक्शा देखैत कहलक—'ई खाता नहि, डरक चक्र अछि।' सत्यव्रत जोड़लनि—'आ चक्र रोकबा लेल केवल एक खाता नहि, पूरा प्रवाह रोकब पड़त।'

पुरान पर्चीक गठरी खोलिते सीलन, धूलि आ सूखल स्याहीक गन्ध उठल; पन्नासभक किनार अँगुरीमे किरकिर करैत छल, जेना बरखों धरि दबाओल नाम अपन आवाज फेर माँगि रहल हो।

हरिहर सेवा केन्द्रक सोझाँ एक समूह तामसमे नारा लगाबय लागल—‘सेवा बचाउ।’ पहिने लोक भ्रमित भेल। जे केन्द्र वृद्धा आ छात्रक नामपर चलैत छल, ओकर रोकल खातापर ‘सेवा बचाउ’ सुनि कतेकोकेँ अपराध आ सेवा बीच भेद करब कठिन भेल। मीरा भीड़ दिस देखली आ कहली—‘जे सेवा खाता रोकलासँ मरि जाए, से सेवा नहि—कारोबार छल।’ ई वाक्य हवामे तीर जकाँ गेल। किछु नारा चुप भऽ गेल। किछु लोक धीरे-धीरे कात हटि गेल। केवल दू-तीन चेहरा कठोर रहल—ओहि चेहरासभपर ध्रुवेशक अदृश्य हाथ छल।

रातिमे चन्ना गाछी लग एक खाली बही राखल गेल। ओ बही बैंकक नहि, बच्चासभक छल। पहिल पन्नापर अनन्या लिखली—‘रोकल खाता: पीड़ितक दावा-पंजी अलग, अपराधक खाता अलग।’ हुलासी देखली आ मुस्कुरेली—‘जखन हाथ नहि छल, अँगूठाक चिन्ह देखिकऽ दुख होइत छल। आइ अँगूठा हथियार बनल।’ पनिडुब्बी पोखरिक पानिसँ बहीक कोन छुली, मुदा पन्ना भीजल नहि। बूढ़बा भूत कहलथिन—‘धनक धार रोकल गेल, मुदा जलसमाधि एखन बुझायल नहि अछि।’

एहि वाक्यपर सभ चुप भऽ गेल। ‘जलसमाधि’ बहुत दूरक पुलसँ शुरू भेल शब्द छल, मुदा आब बैंकक भीतर आ फोनक घण्टीमे सेहो गूँजि रहल छल। बिसेसरक देह गंगामे गेल, सुरजमुखीक बकरी पाइ बनि खातामे गेल, वृद्धाक आवाज ध्वनि-अभिलेखकमे गेल, नन्दक प्रतिवेदन पर्चीमे गेल—सभक एके क्रिया छल: जे जीवित स्मृति छल, ओकरा कोनो ने कोनो धारमे डुबाओल गेल। गोहि कखनो नदीमे, कखनो खातामे, कखनो आवाजमे, कखनो कुर्सीमे।

बूढ़बा भूत एहि राति निर्णय नहि देलनि। ओ केवल नाम पढ़य कहलथिन—सुरजमुखी देवी; अनाम डरायल स्त्री; नन्द आरुणि; बिसेसर पासवान; छोटू, जकर असल नाम एखन अधूरा; वृद्धा, जकर स्वीकारोक्ति ध्वनि-अभिलेखकमे नुका देल गेल; बैंक-प्रबन्धक मनोज, जे दबावमे चुप रहल; गदाधर, जे ताला खोलैत रहलाह; मधुकर, जे आवाज बनल; महेश्वर, जे मुहर बनल; आ ध्रुवेश, जे साँस बनि नुकायल। प्रत्येक नामक बाद खाली ठाम। ओहि रिक्ततामे खाता-संख्या नहि, आत्मा साँस लैत छल।

आध राति शहरसँ खबर आयल—ध्रुवेशक शोध-न्यासक दू अतिरिक्त खाता आन ठाम भेटल अछि। एकमे नाम बदलल, दोसरमे न्यासक उद्देश्य—‘लोक-स्मृति-संरक्षण’। अनन्या ई शब्द सुनि तमतमा गेली। ‘लोक-स्मृति-संरक्षण!’ ओ कहली—‘ई लोकक स्मृति चुरा कऽ

संरक्षण लिखैत छथि।' मीरा हुनका शान्त करैत कहली—'तामस राखू, मुदा पाँति साफ लिखू।' अनन्या लिखली—'लोक-स्मृति-संरक्षण नामक खाता जाँचाधीन।' हुनकर अक्षर स्थिर छल, मुदा स्याही गाढ़।

भोरक पहिने फोनक घण्टी फेर बजल। एहि बेर नम्बर ओहि शोध-न्यासक कार्यालयक छल। केओ नहि बाजल; मशीनक आवाज आयल—'भूल-सुधार लेल खाताक स्थिति स्पष्ट करू।' मीरा अभिलेख करौली। अभय कहलक—'मशीनक आवाज अछि, मुदा पाछाँ साँस अछि।' सभ एकदम चुप। साँस ध्रुवेशक छल कि ककरो दोसरक, एखन नहि कहल जा सकैत छल। मुदा समन, खाता, आवाज आ चेहरा—सभ धागा एक-दोसरासँ बाँधि गेल।

दिनक अन्तिम टिप्पणी सत्यव्रत मेहता लिखलनि—'खाता-निरोध आरम्भ। सेवा कोष, सम्बद्ध परिवार-खाता, मुहर-भुगतान, नकद-निकासी, शोध-न्यास आ गुप्त लोक-स्मृति-संरक्षण खाता बीच वित्तीय प्रवाह स्थापित/जाँचाधीन। पीड़ित दावा-पंजी पृथक। गलत रोकसँ जीवन-राशि बाधित नहि हो, एहि हेतु सावधानी। ध्रुवेशक प्रत्यक्ष नाम एखन मुख्य खातामे सीमित, मुदा आदेश-सूत्र, वकीलक प्रतिवाद, आवाज-संगति आ वित्तीय प्रवाह ओकर दिशा दैत अछि। अगिला चरण—डूबल स्मृति आ जलसमाधिक अर्थक विधिक/लोक-पाठ।'

सूर्योदयसँ पहिने चन्ना गाछीक पातपर ओस जमल। पनिडुब्बी ओसक एक बून्द बहीपर रखली। बून्द गोल रहि गेल, पन्नामे समायल नहि। बूढ़बा भूत कहलथिन—'देखू, जल पन्नामे डूबयसँ इन्कार करैत अछि।' हुलासी फुसफुसौली—'तखन जलसमाधि कोना?' बूढ़बा भूत उत्तर देलथिन—'जखन जल नहि, विस्मृति डुबाबैत अछि।' ई वाक्य सुनि अनन्या काँपि उठली।

अनन्या पन्ना खोलि लिखली—'जलसमाधिक अर्थ।' आरुणि नीचाँ जोड़लक—'जे पानिमे डूबल, ओकर देह गेल; जे विस्मृतिमे डूबल, ओकर नाम। आब नाम ऊपर उठत।' मीरा दीपक बुतौली। बैंकक रोकल खाता रातिभरि बन्द रहल, मुदा चन्ना गाछीक पातपर नामक लेखा खुलि गेल। धनक बाट रुकल, मुदा कथा आब गहिर जल दिस मुड़ल—ओहि जल दिस जतय आरम्भमे छपाक सुनाइ पड़ल छल, आ जतय अन्तक पहिल इजोत पहुँचेबाक तैयारी होइत छल।

लोकगीत: धनो डेरायल

लोकधुन: हिसाब-झूमर

डेराउ हे धन, नोर खा कऽ बढ़ल धन डेराउ हे,

प्रत्येक लूटल अंश पीड़ितक घर घुराउ हे।

खाता रोकल, पहिल बेर धनक साँस अटकल,
सेवा कोष, मुहर-भुगतान, गुप्त न्यास थरकल।
पीड़ितक जीवन-राशि भूलसँ नहि रुकय,
न्यायक हाथ कठोर हो, गरीबक चूल्हि नहि बुझय।
ओसक बून्द पन्नामे डूबयसँ इन्कार,

बूढ़बा कहलथिन—विस्मृति असल जलक धार।
देह पानिमे गेल, नाम बिसरलापर मरल,
रोकल खाताक रातिमे नामक लेखा खुलल।
धन, जे नोर खा कऽ बढ़ल, आब डेराउ,

पीड़ितक जीवन-राशि भूलसँ कहियो नहि रुकय।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—लक्षणाक स्वरूप—निष्कर्ष: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—षष्ठीविभक्तिक सम्बन्धमे अतिव्याप्ति नहि, कारण "राजाक सम्बन्ध" राजामे अभाव रूपेँ उपस्थित नहि; व्यक्त राजा आ राजासम्बन्ध अलग सत्तासभ। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। लक्षणाक स्वरूप—निष्कर्ष।]

अध्याय १९६

जलसमाधिक अर्थ

जलसमाधिक अर्थ पानि नहि जनैत— नाम जनैत अछि।

अध्यायारम्भ लोकगीत: गमछा बनल ध्वज

लोकधुन: बटोहिया-मंगल गीत

फहराउ हे गमछा, फाटलो गमछा फहराउ हे,
श्रम-स्मृति-साहसक झण्डा बनाउ हे।

फाटल गमछा हाथमे आब हारक चिन्ह नहि,
श्रम, स्मृति आ साहसक ई झण्डा कम नहि।
कोना-कोना जोड़ि कऽ बहिनी सीवन देत,
मजदूरक नामक रंगसँ नव इतिहास लेखत।

हवा लगिते गमछा कहै—बाट एखन खुलल,
जकर स्वर कटायल छल, ओकर कण्ठ फेर फुलल।
फाटल कपड़ा ध्वज बनल तँ गामक माथ उठत,
स्मृतिक लाल-गेरुआ रंग न्याय-दिशा देखत।

कोना-कोना बहिनी जोड़य, टाँका-टाँका गीत,
मजदूरक नामक रंगसँ रँगल नव रीत।
हवा लगिते गमछा बाजय—बाट खुलल, बाट खुलल,
कटल कण्ठ फेर फुलल, गामक माथ निखरल।

❖

पानि अपराधी नै छै; पानि तऽ जे भेटैत छै ओकरा ढोइत चलि जाइए। असल डुबेनिहार ओ व्यवस्था छै जे देह गेलाक बाद नामो छीनि लैत छै, मजदूरकेँ अनुपस्थित लिखैत छै, स्त्रीक रोअनकेँ कुलक लाज बनबैत छै, आ वृद्धाक भरोसाकेँ अङ्कमे बदलि दैत छै। जलसमाधि तखन गहिर होइ छै जखन किनारपर ठाढ़ लोक सेहो चुप रहि जाइए।

गमछा.. कटोरा.. पात.. पंजी.. फाटल गमछा हारक चिन्ह नै, बचल स्मृतिक ध्वज छै। काँसक कटोरामे इनार, कमला-बलान आ गंगाक जल मिलैत छै तँ तीनटा नदी नै, तीन प्रकारक गवाही एक संग बैसैत छै—घरक भीतर दबाओल मृत्यु, खेत-माटिक कटान, आ पुलक नीचाँ डूबल मजदूरक देह। पातपर लिखल पूरा नाम एहि जलकेँ अर्थ दैत छै।

ऊपर आनब केवल नाम पढ़ब नै छै। जकर माटि मेटायल, ओकर अधिकार; जकर आवाज कीनल गेल, ओकर कण्ठ; जकर खाता लूटल गेल, ओकर आर्थिक स्वायत्तता; जकर विश्वास

जरल, ओकर सामाजिक गरिमा—सभकेँ फेर लोकक बीच ठाम देब पड़त। न्याय जँ केवल अपराधीक चेहरा देखत, पीड़ित फेर कथा केर साधन बनि जाएत।

छपाकसँ रोकल खाता धरि कथा गोल घेरा जकाँ घुरल छै, मुदा ई घुरब पाछाँ जाएब नै। घावक आरम्भपर घुरि ओकर नाम लिखल जाइए, तखन जलसमाधि जल-उद्घाटन बनैत छै। जे पानिमे डूबल, ओ स्मृतिमे ऊपर आबय;ʼजे विस्मृतिमे डूबल, ओकरा लोकक आवाज उठाबय—एहि पहरासँ अन्तक पहिल इजोत जन्म लैत छै।

भोरक पहिल इजोत जखन पातपर पड़ल, तखन ओसक बून्दसभ साधारण ओस नहि लगैत छल। प्रत्येक बून्द भीतरसँ किछु कहि रहल छल, मुदा आवाज पानिसँ नहि, नामसँ निकलैत छल। भीजल माटि, हरियर पात आ रातिभरि जरल सरिसोक तेलक दीपकक गन्ध हवामे मिलल छल; दूर बैंकक लोहाँक शटर बन्द छल, मुदा पातक टपकन एना सुनाइत छल जेना प्रत्येक रोकल अङ्क अपन भीतर दबाओल नाम वापस माँगि रहल हो। अनन्या पाथर लग बैसल रातिक अन्तिम पाँति पढ़ैत रहली—‘जे पानिमे डूबल, ओकर देह गेल; जे विस्मृतिमे डूबल, ओकर नाम।’ ओकरा पहिल बेर बुझाइ पड़ल जे जलसमाधि शब्द जतेक गहिर पानिमे अछि, ओतेकहि गहिर स्मृति आ कागचक अन्हारमे सेहो अछि।

आरुणि एक खाली लोटा आनलक। ओ लोटा गामक इनारक नहि, कमला-बलानक नहि, गंगाक नहि—तीनू जलक प्रतीक छल। मीरा कहली—‘एहि लोटामे पानि भरबाक पूर्व बुझू, हम पानि नहि, अर्थ भरय जा रहल छी।’ लोकसभ चुप। काल्हि बैंकक खिड़की, मुहर, खाता, निकासी, आदेश आ अङ्क देखनिहार लोक अचानक पानिक सोझाँ आबि बेचैन भऽ गेल। धनक भाषा लोककेँ डरबैत अछि; पानिक भाषा लोककेँ अपना भीतर लऽ जाइत अछि।

बूढ़ मल्लाह फकीरा साहनीक बेटा, जे आब स्वयं झुर्रयिल चेहराक बूढ़ भऽ गेल छलाह, आगाँ एलाह। हुनकर हाथमे एक पुरान काँसक कटोरा छल। ओ कहलनि—‘हमर बाबू कहैत छलाह, गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि। हम बालपनमे बुझि नहि सकलहुँ। आइ बुझैत छी—देह जँ जलमे जाए, तखनो नाम किनारपर अटकि रहैत अछि। मुदा जखन नामकेँ कागचमे काटि दे, पंजी गड़प कऽ ले, बैंकक खाता नुका दे, आवाजक नमूना बदलि दे—तखन नामकेँ किनार कतय भेटत?’ एहि प्रश्नपर पातसभ एकबेर हिलल।

मीरा हुनकर कटोरामे पहिल बून्द पानि ढारली। ई पानि गामक इनारसँ आनल गेल छल। हुलासी ओहि इनारक दिशामे अन्हार जकाँ उपस्थित छली। मीरा कहली—‘ई पानि ओहि सभक अछि, जे घरक भीतर मरल आ जिनकर मृत्यु घरक लाज, जातिक डर, स्त्रीक चुप्पी वा

कागचक अपमानमे दबा देल गेल।’ कटोरा थोड़ेक काँपल। अनन्या देखली, पानिक सतहपर कतेको स्त्रीक आँखि खुलि बन्द भेल। केओ नाम नहि कहलक, मुदा मौनक भार पानिमे उतरि गेल।

आरुणि दोसर बून्द ढारलक—कमला-बलानक। ओ कहलक—‘ई पानि ओहि खेतसभक, जकरा सभक मेड़ नदी खा गेल आ कागच नहि मानलक। ओहि किसानसभक, जे अदालतक बरामदामे बरख-दर-बरख तिथि खा गेल। ओहि परिवारसभक, जकर माटि पंजीमे बचल, पर पेटमे नहि।’ पानिमे रेतक महीन रेखा उठल। रेतपर एक छोट पएरक निशान बनल, फेर मेटा गेल। बूढ़ मुवक्किल, जे तेइस बरखक मुकदमा कहने छलाह, चुपचाप नोर पोंछलनि।

देविका तेसर बून्द ढारली—गंगाक जल। ई जल सहजसँ नहि आयल छल; नन्द आरुणिक पुरान फाटल गमछाक स्मृति ओहि जलमे छल। देविका कहली—‘ई पानि बिसेसर पासवानक, सलामत अंसारीक, छोटूक—जकर असल नाम एखन धरि खोजल जाएत अछि—आ ओहि सभ मजदूरक अछि, जिनकर देह गोहि सभक बीच गेल आ प्रतिवेदनमे अनुपस्थित लिखल गेल।’ पानि अचानक भारी भऽ गेल। कटोरा उठौने बूढ़ मल्लाहक हाथ काँपि उठल।

सत्यव्रत मेहता धीरे-धीरे आगाँ बढ़लाह। हुनकर हाथमे नन्द आरुणिक दैनन्दिनीक प्रतिलिपि छल। ओ पन्ना खोललनि जाहिपर लिखल छल—‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।’ पाँति पढ़ि ओ रुकि गेलाह। आवाज भर्रा गेल। बहुत दिनसँ सत्यव्रत कागचक भाषामे बजैत रहलाह; आइ हुनकर कण्ठ पानिक भाषा खोजि रहल छल। ओ कहलनि—‘एहि पाँतिक अर्थ आइ बदलि रहल अछि। पहिने ई नदीक सत्य छल। आब ई सम्पूर्ण कथाक न्याय-वाक्य अछि। जकर देह गेल, ओकर नाम बचाउ। जकर नाम दबाओल गेल, ओकर आवाज बचाउ। जकर आवाज कीनल गेल, ओकर साँस बचाउ। जकर साँस समनसँ बचल, ओकर खाता बजाउ।’

भीड़मे ध्रुवेशक नाम फुसफुसाहट जकाँ उठल, पर मीरा हाथ उठाकऽ रोकि देली। ‘जलसमाधि आइ ध्रुवेशक फैसला नहि,’ ओ कहली, ‘आइ अर्थक संस्कार अछि। अपराधीक नाम लिखब आवश्यक अछि, मुदा पीड़ितक नाम पहिने ऊपर उठत। जँ हम केवल अपराधीपर केन्द्रित भऽ गेलहुँ, तँ मृतक फेर साधन बनि जाएत। न्यायक पहिल नियम—जकरा डुबाओल गेल, ओकरा ऊपर आनू।’ एहि वाक्यपर अनन्या पंजीक एक नब पन्ना खोलली—‘ऊपर आनल नामसभ।’

पहिल नाम बिसेसर पासवान लिखल गेल। फकीरा साहनीक बेटा कटोरा आगाँ राखलनि। गंगाक जलक सतहपर हलुक भँवर उठल, जेना कोनो लोक अन्तिम बेर हाथ हिलबैत हो। दोसर नाम—सलामत अंसारी। तेसर—गोपी महतो। चारिम—रजनू मंडल। पाँचम ठाम अनन्या रुकि गेली। छोटू। ओकर असल नाम एखन धरि नहि भेटल। मीरा कहली—'खाली ठाम छोड़ू। खाली ठाम सेहो गवाही अछि।' पंजीमे पाँचम पाँति रिक्त छोड़ल गेल, आ ओ रिक्ति सभ नामसँ बेसी तेज चमकय लागल।

बच्चासभकेँ ई कथा फेर सुनाओल गेल—चन्ना गाछीक कबड्डी, बूढ़बा भूत, हुलासी, पनिडुब्बी, पुलक छपाक, नन्दक दैनन्दिनी, बार्कें भेटल गमछा आ फकीरा साहनीक वाक्य। एहन लगल जे कथा अन्त दिस नहि, आरम्भ दिस घुरि रहल अछि। मुदा ई घुरब पाछाँ हटब नहि छल; ई ओहि ठाम घुरब छल जतयसँ घाव लागल। जँ घावक आरम्भ नहि भेटत, तँ उपचारक अर्थ नहि बनत।

आरुणि पाथरपर रेखा खिंचलक। एक छोरपर लिखलक—'छपाक'। दोसर छोरपर—'रोकल खाता'। बीचमे लिखलक—'नाम'। ओ कहलक—'ई देखू। जलसमाधि पहिने छपाक छल। फेर अनुपस्थित प्रतिवेदन भेल। फेर तिथि भेल। फेर कागच भेल। फेर आवाज भेल। फेर खाता भेल। पर प्रत्येक रूपक बीच नाम बचबाक प्रयास करैत रहल। कथा ओहि नामक यात्रा अछि।' लोकसभ पाथर देखैत रहल। किछुकेँ पहिल बेर पूरा कथा एक रेखा जकाँ देखाइ पड़ल।

मीरा चुपचाप ओहि रेखाक नीचाँ दोसर रेखा खिंचली। एक छोरपर लिखली—'लाज'। दोसर छोरपर—'गवाही'। बीचमे—'स्त्रीक कण्ठ'। ओ कहली—'जलसमाधि केवल पुलपर नहि भेल। घरक भीतर सेहो भेल—जखन स्त्रीक रोअन कुलक नामपर दबाओल गेल, जखन विधवाक माटि अस्पष्ट कहल गेल, जखन वृद्धाक पेंशनक सहारा लऽ हस्ताक्षर लूटल गेल, जखन सेवा-केन्द्र करुणाक नामपर भयक कारखाना बनल। एहि सभमे जल कतय? जल नहि, चुप्पी छल। पर चुप्पी सेहो डुबाबैत अछि।'

देविका तेसर रेखा खिंचली—'आवाज'। दोसर छोरपर—'चेहरा'। बीचमे—'साँस'। ओ कहली—'अंकीय गोहि पानिमे नहि उतरैत। ओ फोनक घण्टीमे रहैत अछि, जाली आदेशक आवाजमे, डाउनलोड कराओल ऐपमे, बैंकक अङ्कमे आ ओहि डरमे जे लोककेँ असगर कोठरीमे बन्द कऽ दैत अछि। ई सेहो जलसमाधि अछि—देह जीवित, पर नाम, भरोसा, निन्न आ प्रतिष्ठा डूबल।' विद्यार्थीसभ एहि पाँतिपर देर धरि टिप्पणी लिखैत रहल।

तखन एक बूढ़ी स्त्री, जे काल्हि बैंकक कतारमे काँपैत ठाढ़ छलीह, आगाँ बढ़लीह। हुनकर हाथमे एक छोट डिबिया छल। ओ कहलीह—'एहिमे हमर बेटाक राख नहि अछि। ई ओ नोटक राख अछि जे हम डरसँ जरा देलहुँ, ताकि घरक लोक नहि पूछय जे पाइ कतय गेल। फोनपर जे लोक हमरा कहलक—तोहर बेटा जेल जाएत—हम ओहि राति अपन गहना बेचि देलहुँ। बेटा सुरक्षित छल, पर हमर विश्वास मरि गेल। ई विश्वासक राख अछि।' डिबियाक ढक्कन लग जरल कागच आ धातुक कसैल गन्ध अटकल छल; हुनकर अँगुरी एना काँपैत छल जेना ओ रातिक फोन एखनहुँ हथेलीमे बजि रहल हो। ओ डिबियाकेँ छातीसँ सटौने रहलीह; राखक भीतर बेचायल गहनाक पीयर चमक जेना एखनहुँ नोरक संग झिलमिला रहल छल। मीरा डिबिया नहि खोललली। ओ कहली—'विश्वासक राख पानिमे नहि फेकब। ओकरा पंजी लग राखब। जे जरे, ओकर धुँआ सेहो गवाही अछि।'

चन्ना गाछीक छाह नमहर होइत गेल। कारी भूतसभ गोल घेरा बनाकऽ बैसल। उज्जर प्रेत आइ डारिपर नहि, लोकक पाछाँ-पाछाँ ठाढ़ छल, जेना मृतकसभ जीवितकेँ सहारा दऽ रहल हो। बूढ़बा भूत नीचाँ उतरि कटोरा लग एलाह। केओ हुनका देखलक, केओ नहि। पर पानि एकाएक बीचसँ खुलल। ओकर भीतर बहुत पुरान दृश्य उभरल—नदीक छपाक, मजदूरक हाथ, बाकेँ भेटल गमछा, अदालतक बरामदा, रद्दीक बोरा, नील पंजी, ध्रुवेशक खाली कुर्सी, रोकल खाता आ अनन्याक पंजी। सभ दृश्य घुलि कऽ एकटा शब्द बनल—'ऊपर'।

अनन्या ओ शब्द लिखली—'ऊपर'। आरुणि पूछलक—'ऊपर के?' अनन्या उत्तर देली—'सभ।' मीरा मुस्कुरेली, मुदा आँखि भीजल। ओ कहली—'हँ, जे-जे डुबाओल गेल—देह, नाम, आवाज, माटि, भरोसा, पेंशन, गवाही, बच्चाक असल नाम—सभ ऊपर।' ई सुनि भीड़मे केओ ताली बजाबय चाहलक, पर हाथ थमि गेल। ई तालीक घड़ी नहि छल; ई उठेबाक घड़ी छल।

विनीत झा विधिक भाषामे लिखलनि—'जलसमाधि: शारीरिक मृत्यु मात्र नहि; स्मृति, चिन्हारि, अभिलेख, आर्थिक स्वायत्तता, सामाजिक प्रतिष्ठा आ आवाजक संगठित दमन। न्यायिक कार्यवाहीमे प्रत्येक स्तरक पुनरुद्धार अनिवार्य।' ओ लिखि स्वयं चौंकलाह। ई परिभाषा कानूनक किताबमे शायद नहि भेटय, मुदा लोकक अदालतमे आइ ई धारा बनि गेल। सत्यव्रत मेहता ओकरा देखलनि आ कहलनि—'कानून कखनो-कखनो लोकक दुखक पाछाँ चलैत अछि। आइ दुख आगाँ अछि, कानून पाछाँ चलत।'

दुपहर बाद कटोरा चन्ना गाछीक जड़ि लग राखल गेल। केओ पानि पीब नहि सकैत छल; ई पानि प्रसाद नहि, प्रमाण छल। बच्चासभ एक-एक पातपर नाम लिखि ओहि कटोरा चारूकात राखय लागल। जे नाम ज्ञात छल, ओ पूरा। जे अज्ञात, ओकरा खाली पात। जे स्त्री बाजय नहि चाहैत छल, ओकरा लेल पात उनटा। जे अंकीय ठगीक शिकार छल आ सामाजिक लाजसँ डरैत छल, ओकरा लेल पातपर केवल एक बिन्दु। मीरा कहली—'बिन्दु नामक आरम्भ अछि, अन्त नहि।'

ध्रुवेशक घरसँ ओहि समय एक खबर आयल—ओ अधिकृत नमूना देबासँ फेर टारि रहल अछि, पर ओकर एक सहयोगी चुपचाप शहर छोड़ि देलक। अभय कहलक—'घेरा कसैत अछि।' मीरा उत्तर देली—'घेरा कसत, मुदा आइक दिन ओकरा पर नहि। आइ डूबल सभकेँ ऊपर आनय दियौ।' एहि संयममे कथाक गरिमा छल। अपराधीपर तामस आवश्यक, पर मृतकपर ध्यान अधिक आवश्यक।

साँझ होइत-होइत कटोरामे तीनू जल, ओस, नोरक नमी आ विश्वासक राखक छाह मिलि गेल। पानि मटमैला नहि, विचित्र उज्जर भऽ गेल—जेना अन्हारक भीतर इजोत घुलि गेल हो। भीजल पात, राख आ नदीक काँच-जकाँ ठण्ढ गन्ध चारूकात पसरल; कटोराक सतहपर साँझक अन्तिम लाली काँपैत छल। कातमे राखल खाली पातसभक किनार हवासँ काँपैत छल, मुदा कोनो पात कटोरामे नहि खसल—जेना नामसभ अपन बेरक अनुशासनमे ठाढ़ हो। पनिडुब्बी पोखरिक पानिसँ उठि ओकरा तकली। हुलासी इनार दिससँ फुसफुसौली—'डूबल नाम ऊपर आबि रहल अछि।' बूढ़बा भूत कहलथिन—'अहाँसभ आब जलसमाधि नहि, जल-उद्घाटन करैत छी।'

ई शब्द सुनिते अनन्या चौंकली। जल-उद्घाटन। जलसमाधिकेँ उनटा देबाक शब्द। जे पानिमे दबल, ओकरा पानि स्वयं खोलि दे। जे विस्मृतिमे डूबल, ओकरा स्मृति स्वयं पुकारि दे। जे कागचमे रद्दी बनल, ओकरा पंजी फेर नाम बना दे। जे बैंकक अङ्कमे भटकत, ओकरा पीड़ितक अधिकार बना दे। ई अन्तक तैयारी छल—कानि-कानि नहि, उठाइ-उठाइ।

राति उतरलापर सभ लोक धीरे-धीरे घुरि गेल, पर कटोरा जड़ि लग रहल। अनन्या, आरुणि, मीरा, देविका, सत्यव्रत, विनीत आ अभय अन्त धरि बैसल रहल। केओ भविष्यक योजना नहि बाजल। केओ गिरफ्तारी, मुकदमा, समाचार-माध्यम वा भाषणक बात नहि केलक। सभ बस पानिक भीतर झाँकैत रहल। पानिमे ओ राति फेर आयल—कबड्डी... कबड्डी... कबड्डी... फेर स्वर बदलल—नाम... नाम... नाम।

अनन्या धीरे कहली—'हम कथाकेँ आरम्भ धरि घुरा देलहुँ।' सत्यव्रत मेहता उत्तर देलनि—'नहि, बेटी। आरम्भकेँ न्याय धरि आनि देलहुँ।' एहि वाक्यपर मीरा पहिल बेर खुलि कऽ कान्ली। हुनकर रोअन शोर नहि छल; ओ कटोरामे एक बून्द बनि खसल। पानि काँपल, आ भीतरसँ फाटल गमछाक कोन उभरल—ओहि रंगमे, जे पानिमे भीजल कागच, धूपमे सुखायल रक्त आ मजदूरक हथेलीक धूलि मिलि कऽ बनैत अछि।

आरुणि पंजीक अन्तिम पाँति लिखलक—'जलसमाधि ओ नहि जे देहकेँ पानि लऽ जाए; जलसमाधि ओ अछि जे नामकेँ लोकक स्मृतिसँ काटि दे। आइ पहिल नाम ऊपर आयल। ' चन्ना गाछीक पातसभ एक संग झुकल, जेना ओ सभ डूबल लोकक माथपर हाथ धरि रहल हो।

अगिला पन्ना खुलल। शीर्षक अपने-आप जकाँ उतरि आयल—'ऊपर उठल नाम।' आरुणि ओकर नीचाँ लिखलक—'जखन नाम जलसँ ऊपर आबि जाए, तखन अपराधीक धरती काँपय लगैत अछि।' कटोरा रातिभरि जड़ि लग रहल। दूर गंगाक पानि एहन सुनाइ पड़ल जेना आरम्भक छपाक आब अन्तक उत्तर पाबि रहल हो।

लोकगीत: फाटल गमछा फेर उभरल

लोकधुन: महाकरुण समदाउन

घुराउ हे गंगा, देह राखलहुँ—नाम घुराउ हे,
फाटल गमछाक कोनामे सभ मायकेर बौआ आनू हे।

कटोराक पानिमे फाटल गमछा फेर उभरल,
मजदूरक धूलि, सुखायल रक्त, भीजल कागच झरल।
मीरा पहिल बेर खुलि कऽ कान्ली चुपचाप,
एक बून्द खसल पानिमे—सय नामक विलाप।
जलसमाधि देहक डूबनाइ मात्र नहि,

लोकक स्मृतिसँ नाम काटब सभसँ पैघ क्षति।
चन्ना गाछीक पात डूबल माथपर झुकल,
आरम्भक छपाककेँ अन्तक उत्तर मिलल।
ए गंगा, देह राखलहुँ—नाम आब घुराउ,

❖

[

दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—प्राच्यमतक खण्डन: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“मण्डपमे रहनिहार लोकसभकेँ भोजन कराउ” मे “मण्डप” शब्दक रूढ़ अर्थ विशेष गृह अछि; यद्यपि अवयवव्युत्पत्तिसँ “मण्डपानकर्ता”—मण्ड पीनिहार—अर्थ सम्भव अछि, व्यवहारमे गृहस्थित लोकसभक बोध रूढ़ अर्थ आ लक्षणाद्वारा होइत अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। प्राच्यमतक खण्डन।]

अध्याय १९७

ऊपर उठल नाम

डूबल नाम जखन ऊपर उठैए, तखन पानि नहि हिलैत— हिलैत अछि किनार।

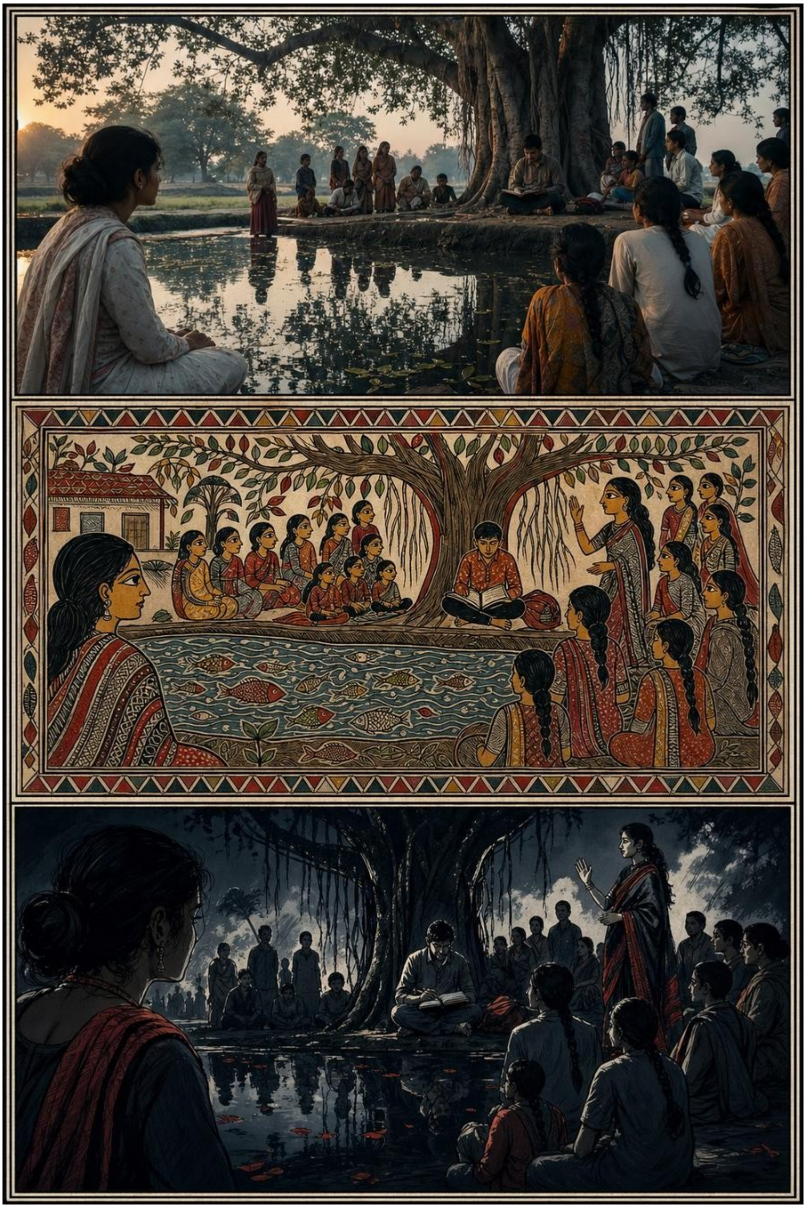

अध्यायारम्भ लोकगीत: किनारपर नामक दीप

लोकधुन: छठ-अर्घ्य धुन

देउ हे अरघ, डूबल नामकेँ देउ हे,
किनार-किनार दीपक पाँति सजाउ हे।

काँपल किनार स्थिर होयत जखन दीप धरब,
डूबल नामक सम्मानसँ उदित सूरुज करब।
जलमे अर्घ्य, माटिमे प्रण, कण्ठमे साँचक बोल,
संग-संग ठाढ़ परिवार, टूटत भयक गोल।

पूर्वक रेखा लाल भेल, नव दिन आबि रहल,
किनारक प्रत्येक कण कहै—न्याय जागि रहल।
नामक दीप बहाउ नै, हथेलीपर सम्हारू,
उदयाचलक सूर्य संग नव विश्वास उभारू।

कमर भरि जलमे ठाढ़, हाथमे साँचक सूप,
उगैत-डूबैत दुनू सूरुजकेँ एक्के रूप।
परिवारक कतार संग भय गोल-गोल टूटय,
पूबक लाली संग न्यायक नव दिन फूटय।

❖

नाम ऊपर उठेनाइ तमाशा नै छै। जकर घाव छै, ओकर अनुमति पहिल अर्घ्य छै; जकर घर चुप छै, ओकर चुप्पी सेहो सम्मान छै। गाम जँ रोअन देखबाक भीड़ बनि जाए, तँ डूबनाइ फेर शुरू भऽ जाइए। मुदा जखन बच्चासभ पेंसिल नीचाँ राखि सुनय सीखै छै, तखन न्याय कागचसँ पहिने व्यवहारमे जन्म लैत छै।

अधूर नाम.. मायक बोली.. पातक अक्षर.. छोटू जेना घरमे कहल जाइत छल, पंजीमे ओहि नामक ठाम अनुपस्थित लिखल रहै छै। मायक मुँहसँ जखन पूरा नाम निकलै छै, तखन पानिक सतह नै, बरखोंक झूठ हिलै छै। कागच, समय, स्थान आ साक्षी संग घरक स्मृति जुड़ि जाए, तँ किनार फेर चिन्हारि पबैत छै।

प्रतीक्षा सेहो घर माँगै छै। अपुष्ट नामकेँ रद्दी बोरामे फेकि देब दोसर जलसमाधि छै; ओकरा प्रतीक्षा-टोकरीमे राखि खोज जारी लिखब लोक-मर्यादा छै। पूरा नाम नहि भेटय तँ झूठा नाम देब नै, अधूरापनकेँ सत्य रूपमे सुरक्षित करब पड़ै छै। एहि संयमसँ नाम उठै छै, कथा सजैत नै।

जखन नाम जलसँ ऊपर आबि माटिपर पएर राखै छै, तखन भागनिहारक धरती काँपै छै। मुहर, खाता, साँस, तिथि आ कच्चा बाट—सभ पगचिन्ह बनि जाइए। मुदा विजय-घोष एखन नै; ऊपर उठल नाम जीवितसभकेँ पहरुआ बनबैत छै। अगिला देहरी अपराधीक धरती छै, जतय न्यायकेँ आगि नै, दीप बनि पहुँचय पड़त।

भोरमे पहिल चिरई बजली, मुदा कटोराक पानिमे कोनो तरंग नहि उठल; उनटा पानि स्थिर भऽ गेल, जेना जल स्वयं कान लगाकऽ गाछीक भीतरक आवाज सुनि रहल हो। ओसभिजल माटि, सरिसोक तेलक बासी दीप आ काँच पातक हरियर गन्ध हवामे मिलल छल; ओहि गन्धमे रातिक प्रश्न एखन धरि जागल छल। अनन्या सभसँ पहिने पहुँचल। ओकरा लगल पानिक सतहपर चानक बचल इजोत नहि, अक्षर तैरि रहल अछि। आरुणि ओकर पाछाँ आयल आ बिनु बजने पंजी खोलि बैसल। ओहि दिनक पन्नापर काल्हिये लिखल छल—‘ऊपर उठल नाम।’ आब ओ शीर्षक कथा नहि, काज बनि गेल।

मीरा हाथ उठाकऽ सभकेँ रोकली। ‘आइ जे किछु उठत, ओकरा तमाशा नहि बनाओल जाएत। नाम ऊपर उठब मतलब देहक घाव फेर खोलब नहि। जे परिवार अनुमति देत, ओहि नामक पाठ सार्वजनिक। जे परिवार चुप रहत, ओकर चुप्पी सेहो सम्मान।’ ई वाक्य सुनि बच्चासभ अपन-अपन पेंसिल नीचाँ राखलक। न्यायक पहिल पाठ कागचसँ शुरू नहि भेल; अनुमतिसँ भेल।

कटोराक चारूकात काल्हि राखल पातसभ ओससँ भीजल छल। किछु पातपर लिखल नाम पसरि गेल छल, किछु पर अक्षर गाढ़ भऽ गेल छल। एक पातपर केवल ‘छो’ बचल छल। दोसर पर ‘टू’। तेसर पातपर ककरो काँपैत हाथसँ लिखल ‘मुसहरिनक बेटा’ छल। आरुणि पातसभकेँ मिलाकऽ राखलक। ओ कहलक—‘ई पहिल नाम अधूरा नहि रहत।’

सत्यव्रत मेहता अपन थैलासँ पुल-निर्माणक पुरान प्रति निकाललनि, जकर चित्र नन्द आरुणिक दैनन्दिनीसँ बनाओल गेल छल। पन्ना करिया पड़ि गेल छल, मुदा एक कोनापर बाल-मजदूरक पंक्तिमे टेढ़ अक्षर बचल छल—‘शिव... लाल’। जन्म-उमेरक ठाम अट्ठाइस लिखल, मुदा टिप्पणीमे ककरो हाथसँ बहुत धीरे ‘छोटू’ लिखि कऽ काटने छल। विनीत झा शहरक श्रम-

पंजीक छवि मिलौलनि। ओहिमे गामक नाम गलत, बापक नाम आधा, पर मायक नाम साफ छल—फूलकली।

गाछीक पाछाँसँ एक बूढ़ स्त्री आगाँ आयली। लोक हुनका बाट देलक। हुनकर देह एतेक हलुक लगैत छल, जेना बरखोंक प्रतीक्षा भीतरक मांस चिबा लेने हो। हुनकर अँचरामे धूपक बासी गन्ध, नदीक कछेरक माटि आ पुरान तेलक महीन बास अटकल छल; पएरक धूलि बतबैत छल जे ओ दूरसँ पैदल आयल छली। हुनकर साँस छोट-छोट चलैत छल, मुदा दृष्टि कटोरापर स्थिर रहल। ओ कहली—'हम फूलकली छी।' आवाजमे न तामस, न विनती; केवल सुखायल पानिक खरखराहट। मीरा हुनकर लग गेली। 'अहाँ चाही तँ नाम सार्वजनिक पढ़ल जाए।' फूलकली बहुत देर कटोरा देखैत रहली, फेर कहली—'हमर बेटा भागल नहि छल। बस ई पढ़ू।'

अनन्या पन्नापर लिखली—'शिवलाल उर्फ छोटू, माय फूलकली, पुल-कार्यस्थलपर मृत/गुम, पंजीमे अनुपस्थित लिखल।' शब्द 'अनुपस्थित' लिखिते पेंसिल टूटि गेल। आरुणि दोसर पेंसिल देलक, पर अनन्या टूटल नोक सँहि 'अनुपस्थित' पर रेखा खिंचि देली। ओकरा नीचाँ लिखली—'जलमे समायल, नाम उपस्थित।'

ई पंक्ति पढ़िते चन्ना गाछीक पातसभ एक बेर एक साथ काँपल। केओ कहलक हवा आयल। केओ कहलक नदीक साँस। पर फूलकली बुझली जे ई छोटूक उत्तर अछि। ओ कटोरा लग घुटना टेकली, मुदा पानि छुली नहि। ओ बस माथ झुकौली—'एते बरख बाद तोहर नाम घर घुरल, बेटा।' एहि वाक्य पर सभक भीतर किछु टूटल, मुदा कोनो हाहाकार नहि उठल। गाम सभँ सीखि रहल छल जे रोअनक सेहो अनुशासन होइत अछि।

बूढ़बा भूत डारि पर हलुक उजास जेकाँ देखाइ देलाह। हुलासी इनार दिससँ उठली। पनिडुब्बी पोखरिक पानि छोड़ि गाछीक छाह लग बैसली। मृतकक पंचायतमे जीवितक नाम-पाठ चलि रहल छल। बूढ़बा भूतक स्वर आयल—'जे नाम मायक मुँहसँ मिलि जाए, ओकरा कोनो पंजी फेर गुम नहि कऽ सकैत।'

एहि पहिल नामक बाद पातसभ खुलए लागल। बिसेसर पासवानक नाम पहिनेसँ पूरा छल, मुदा ओकर बापक नाम दू पंजीमे अलग-अलग। सत्यव्रत कहलनि—'नाम पूरा करबा लेल परिवारक गवाही जोड़ल जाए।' बिसेसरक पोता, जे एखन जवान छल, कहलक—'दादा गाममे बिसेसर छलाह, कागचमे बिसेसरू। मुदा माय कहैत छली—बिसेसर पासवान।' अनन्या लिखली—'मातृ-स्मृति अनुसार नाम स्थिर।'

किछु लोक हँसल जेकाँ भेल, कारण कागचक दुनियाँमे मायक स्मृति कैँ प्रमाण मानब अनोखा छल। मीरा ओहि हँसीपर दृष्टि फेरली—‘जकरा कागच गलत लिखलक, ओकरा सही करबा लेल जीवित स्मृति सेहो प्रमाण बनत, जँ ओकर संग उपलब्ध कागच, स्थान, समय, आ साक्षी मिलैत हो।’ विनीत तुरन्त जोड़लनि—‘अलग स्तम्भ बनाउ—कागचक नाम, घरक नाम, स्थिर नाम।’ बच्चासभ नब तालिका बनाबय लागल। न्यायक भाषा गामक बोलीसँ सीखि रहल छल।

सुरजमुखी देवी आगाँ आयली। हुनकर मामिला पैसा, बकरी आ ठगीक छल, मृत्यु नहि। मुदा ओ कहली—‘हमरो नाम ऊपर उठाउ। हमर नाम खातामे अपराधक रास्ता बनल छल। लोक कहलक हम पैसा खायलहुँ। हम नहि खायलहुँ।’ अनन्या पन्ना खोलली—‘नाम-शुद्धि सूची।’ पहिल पंक्ति रानी देवी, दोसर रानी कुमारी, तेसर सुरजमुखी देवी। मीरा कहली—‘मृतकक नाम ऊपर उठत, आ जीवितक नाम धोइत सेहो चलत। दूटा काज अलग नहि।’

कटोराक पानि धीरे-धीरे साफ नहि, गाढ़ होइत गेल। जखन जे नाम पढ़ल जाए, पानिक सतहपर क्षण भरि अजीब बून्द बनैत, फेर ओस जेकाँ टूटि जाइत। आरुणि एहि दृश्य कैँ चमत्कार लिखबाक लोभसँ बचल। ओ लिखलक—‘सामूहिक साक्षी-पाठक समय लोकक ध्यान पानिपर केन्द्रित। दृश्य अनुभव अनेक, पर मुख्य घटना नाम-पुष्टि।’ मीरा ओ पाँति पढ़ि मुस्कुरेली—‘ठीक। विश्वास बचाउ, पर प्रमाणकैँ गहना नहि बनाउ।’

दोपहर होइत-होइत खबर आयल जे ध्रुवेशक घरमे बेचैनी बढ़ल अछि। ओकर वकील कहलनि जे गाममे ‘भावगत दबाव’ बनाओल जा रहल अछि। मीरा उत्तर लिखौली—‘भावगत दबाव नहि; दबल नामक सार्वजनिक पुनर्स्थापन। आरोपक प्रक्रिया अलग चलि रहल।’ अभय जोड़लक—‘जे नाम काटि देलक, ओकरा नाम घुरबाक दृश्य दबाव लगबे करत।’ मीरा ओकरा रोकली—‘ई वाक्य कागचपर नहि। न्यायक वाक्य आगि नहि, दीप हो।’

महेश्वरनाथ सेवकक पुरान मुहरवाला एक पन्ना फेर देखाओल गेल। ओहिमे मृत मजदूरक परिवारक सहायता-प्रतिज्ञा लिखल छल, पर हस्ताक्षरक ठाम खाली। धनक प्रवाहक चिन्ह बादक खातामे भेटल, मुदा परिवार धरि एक धूरि नहि पहुँचल। फूलकली पन्ना देखली आ पूछली—‘एहि पर हमर अँगूठा किएक नहि?’ विनीत उत्तर देलनि—‘किएक तँ अहाँकैँ कागच धरि पहुँचे नहि देल गेल।’ फूलकली हँसली—ई हँसी रोअनसँ भयानक छल—‘हमर बेटा पानिमे, कागच ऊपर; आब कागच नीचाँ आबि गेल।’

चन्ना गाछीक छाह लम्बा भऽ रहल छल। नाम-पाठक बीच एक बच्चा पूछलक—‘जँ कोनो नाम पूरा कहियो नहि भेटत तँ?’ सत्यव्रत मेहता बहुत देर सोचलनि। ‘तखन अधूरा नामकेँ अधूरा कहि सुरक्षित करब। झूठा पूरा नाम देब दोसर हत्या अछि।’ ई सुनि अनन्या ‘अज्ञात’ शब्द काटि देली आ लिखली—‘नाम-अपूर्ण, खोज जारी।’ ओकरा लगल ई छोट परिवर्तन नहि; ई पूरा युगक सुधार अछि।

आरुणि कटोराक पाछाँ एक खाली थारी राखलक। प्रत्येक पुष्ट नामक पात ओहि थारीमे, अपुष्ट नामक पात अलग बाँसक टोकरीमे। देविका टोकरीपर लाल सूत बाँधि देली—‘ई प्रतीक्षा-टोकरी।’ केओ मजाकमे कहल—‘प्रतीक्षा-टोकरी?’ देविका दृढ़ स्वरमे उत्तर देली—‘हँ, किएक तँ प्रतीक्षा सेहो घर चाहैत अछि। रद्दी बोरामे नहि रहत।’ रद्दी बोराक अपमान फेर एक बेर मोन आयल।

साँझ लग शहरसँ विनीतक मित्रक संदेश आयल। श्रम-विभागक पुरान धातु-डिब्बामे एक गीला पंजीक चित्र भेटल अछि। पन्नापर नाम धुँधला, पर मजदूरी-भुगतानक सोझाँ पाँच जगह एकहि हस्ताक्षर—मुंशीक। मृतकक अँगूठा नहि। विनीत फुसफुसौलनि—‘मजदूरसभक मजदूरी मृत्यु बादो केओ उठौलक।’ अभयक मुठ्ठी कसि गेल। मीरा कहली—‘घबराउ नहि। ई अगिला साक्ष्य अछि, आइक नाम-पाठ नहि रोको।’

फूलकली ई सुनि चुपचाप उठली। ओ अपन अँचरासँ माटि उठाकऽ कटोराक कात राखली। ‘नाम पानि सँ आयल, आब माटिपर टिकाओ।’ एहि सरल क्रियामे पूरा उपन्यासक अर्थ समायल छल। जलसमाधि पानिमे दबल नाम छल; ऊपर उठल नाम माटिपर फेर पएर राखि रहल छल। चन्ना गाछीक जड़ि ओ माटि पीबि लेल जेकाँ लागल।

कारी भूत आ उज्जर प्रेत एहि राति पहिल बेर एक-दोसरक सोझाँ बिनु कबड्डी ठाढ़ रहल। कारी भूतक देह सँ अन्हार नहि, थकान झरत छल। उज्जर प्रेतक देह सँ उजास नहि, पछतावा। बूढ़बा भूत कहलथिन—‘नाम ऊपर उठलासँ मृतक मुक्त नहि होइत; जीवितक काज शुरू होइत अछि।’ पनिडुब्बी धीरे-धीरे कटोराक कात घुमली, जेना जलक पहरा देब हुनकर कर्तव्य बनि गेल हो।

राति पहिल पहरमे ध्रुवेशक घरक ऊपरक खिड़की फेर जरल। एहि बेर प्रकाश स्थिर नहि रहल; भीतरसँ छाह दौड़ैत देखाइ देलक। केओ कहलक दस्तावेज बाँधल जा रहल अछि। केओ कहलक फोन बदलायल जा रहल अछि। केओ कहलक शहर भागबाक तैयारी। मीरा सभ

अनुमान लिखयसँ रोकली। 'जे देखल, से लिखू। जे सोचल, से नहि।' अनन्या लिखली—'ऊपरक खिड़कीमे असामान्य चहल-पहल, समय—राति पहिल पहर।' बस एतबे।

अभय सुरक्षाक लेल दू युवककेँ दूर निगरानीपर राखलक, पर स्पष्ट कहलक—'कोनो पीछा नहि। कोनो हाथापाई नहि। जँ ओ भागत, सड़क बताओत; हम पकड़बाक लोभमे प्रक्रिया नहि तोड़ब।' ई सुनि गामक कतेको युवक निराश भेल। मुदा सत्यव्रत मेहता कहलनि—'न्याय जे प्रक्रिया तोड़ि जीतैत अछि, ओ जीत नहि, अगिला अन्यायक बीज अछि।' ई वाक्य राति भरि हवामे टँकल रहल।

नाम-पाठक अन्तिम घड़ीमे अनन्या पंजीक खाली पन्ना खोलली। ओकरा सोझाँ पुष्ट नामक थारी, प्रतीक्षा-टोकरी, नाम-शुद्धि सूची, जल-कटोरा, माटिक ढेरी, आ पुरान मुहरक प्रतिलिपि छल। ओ लिखली—'आइ ऊपर उठल नाम सभक पहिल सूची बनल। मृत्यु, गुमशुदगी, छल, अपमान, आ झूठा अपराध—सभ अलग-अलग खण्डमे।' आरुणि जोड़लक—'जखन नाम ऊपर उठैत अछि, अपराध केवल कथा नहि रहैत; ओ पंक्ति, तिथि, खाता, मुहर, साँस, आ स्मृति बनि कऽ अपराधीक देहरी धरि पहुँचैत अछि।'

मीरा एहि पाँतिपर हाथ रखली। 'अहाँ सभ अन्त लिखय लागल छी,' ओ कहली। 'सावधान रहू। अन्त भावुक हो, पर बन्द नहि। जे बाँचल अछि, ओकर जीवन उपसंहार नहि।' अनन्या माथ झुकौली। ओकरा बुझाइ गेल जे आब विजयघोष कम, जिम्मेदारी बेसी रहत। ई कथा अपराधीकेँ ध्वस्त कऽ समाप्त नहि होएत; ई लोक केँ नामक पहरुआ बनाकऽ छोड़त।

फूलकली घुरबासँ पहिने छोटूक पात उठेबाक आग्रह केली। मीरा पूछली—'घर लऽ जएब?' ओ कहली—'नहि। घरमे राखब तँ हम फेर अकेली रोएब। एतय राखू, जाहिसँ सभ ओकरा नाम सँ पुकारत।' पात थारीमे रहल। फूलकली खाली हाथ घुरली, मुदा ओ खाली हाथ नहि छल; हुनकर चालमे ओ भार छल जे केवल नाम-प्राप्त मायक चाल होइत अछि।

राति गाढ़ भेल। कटोराक पानिमे आब अक्षर नहि देखाइत छल, पर ओकरा चारूकात राखल पातसभ हलुक चमकि रहल छल। बूढ़बा भूत डारि सँ फुसफुसौलनि—'नाम उठल। आब धरती काँपत।' हुलासी उत्तर देली—'धरती नहि, ओहि लोकक कुर्सी काँपत जे धरती पर बैसल छल।' उज्जर प्रेत पातपर झुकि गेल। कारी भूत चुप रहल।

ओही क्षण दूर शहरक दिशासँ गाड़ी चलबाक आवाज आयल। रातिमे एतेक तेज आवाज सामान्य नहि छल। डीजलक तीख गन्ध हवामे पसरल, आ कच्चा बाटपर चक्का घिसटबाक खरखराहट गाछीक पात धरि पहुँचि गेल; दूर अन्हारमे एक बेर धातु टकराएबाक ठनक सेहो

सुनाइ पड़ल। निगरानीपर बैसल युवकसभ संदेश पठौलक—ध्रुवेशक घरक पाछाँक फाटक खुलल, एक लोहाँक संदूक गाड़ीमे राखल गेल, आ गाड़ी मुख्य सड़क नहि पकड़ि कच्चा बाट दिस मुड़ि गेल। मीरा आँखि बन्द केली। 'आब अनुमान नहि, कार्रवाईक क्रम।' अभय उठि गेल। सत्यव्रत मेहता पंजी सम्हारलनि।

अनन्या अगिला पन्ना खोलली। ओकर हाथ काँपत छल, पर अक्षर साफ उतरि आयल —'अपराधीक धरती।' आरुणि ओकर नीचाँ लिखलक—'जखन नाम पानिसँ ऊपर आ माटिपर टिकि जाए, तखन भागनिहारक पएर स्वयं साक्षी बनैत अछि।' कटोरा जड़ि लग रहल, पात थारीमे, प्रतीक्षा-टोकरी बाँसक छाहमे, आ चन्ना गाछी राति भरि जागल रहल।

लोकगीत: किनार काँपि उठल

लोकधुन: उदित नामक गीत

उठल हे नाम, डूबल नाम ऊपर उठल हे,
जकर घर उजड़ल, ओकर न्याय-दुआर खुलल हे।

डूबल नाम ऊपर आयल, पानि रहल शान्त,
काँपल ओहि कुर्सीक पएर, जे छल अपराधक आसन।
पातक थारी चमकल, कटोराक अक्षर सोएल,
बूढ़बा कहलथिन—नाम उठल, छाहक शासन रोअल।
शहर दिस रातिमे लोहाँक संदूक भागल,

कच्चा बाट पकड़िते पहरुआ दल जागल।
अनुमान नहि, कार्रवाईक क्रम आब चलत,
माटिपर टिकिते नाम भागनिहार पएर पढ़त।
ऊपर उठल नाम, किनारक भय हिलाउ,
जकर घर उजड़ल, ओकर न्याय-दुआर खुलाउ।

पातक थारी चमकल, कटोराक आखर सूतल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—प्राच्य वैयाकरणसभक उत्तर: “मण्डपमे लोकसभकेँ भोजन कराउ” मे पहिले अवयव्यार्थ “मण्ड पीनिहार” छोड़िकऽ पदसमुदायक रूढ़ गृहार्थ ग्रहण होइत अछि। प्राच्य वैयाकरणसभक उत्तर।]

अध्याय १९८

अपराधीक धरती

अपराधीक धरती अलगसँ नहि होइ छै— वैह माटि, खाली पएरक निशान दोसर।

अध्यायारम्भ लोकगीत: जूताक पगडंडी

लोकधुन: पगचिन्ह बटगबनी

चलू हे संगी, जूताक पगडंडी चलू हे,
छूटल चिन्हसँ आगाँक बाट पढ़ू हे।

माटिमे छूटल जूता बाटक अन्त नहि,
ओहि ठामसँ पगडंडी उठत, साहस कम नहि।
एक पएर साक्षी बनत, दोसर न्याय दिस जाए,
धूलि-धूसर चिन्ह सभ मिलि सत्यक नक्शा बनाए।

जे भागल ओ दूर रहत, निशान एतहि रहत,
माटि अपन आँखिसँ देखल बात कहत सदय।
जूताक पगडंडीपर जन संग-संग चलत,
अपराधक धरतीपर न्यायक धान उगत।

माटि अपन आँखिए देखल, से नहि बिसरत,
धूलि-धूसर छाप जोड़ि नक्शा साफ करत।
भगनिहार दूर पड़ाए, निशान एतहि रहय,
जन-डेगक पाछाँ-पाछाँ न्यायक धार बहए।

❖

जूता आवरण छै, पएर आदत। जूता बदलि सकै छै, गाड़ी बदलि सकै छै, बाट घुमाओल जा सकै छै; मुदा घबराहटमे पड़ल डेग अपन चाल, भार आ दिशा कहि दैत छै। अपराधीक धरती ओहि क्षण जागै छै जखन लोक तामस छोड़ि दूरी राखै छै, नाप लिखै छै, आ बदला लेबाक बदला प्रमाण बचबैत छै।

माटि.. धूर.. ओस.. गवाही.. रातिक अन्हारमे लोहाँक पेटी, धँसल चक्का आ खाली पएर अलग-अलग वस्तु जेकाँ देखाइए; भोरमे सभ एकहि वाक्यक शब्द बनि जाइए। मुदा ई वाक्य पढ़ब सावधानीक काज छै। भीड़ जँ एक अक्षर कुचलि दे, तँ झूठ फेर अवसर पबैत छै; संयम जँ घेरा बनि ठाढ़ रहय, तँ पगचिन्ह अपन बोली पूरा कहि पबैत छै।

अपराधीक अपमान न्याय नै छै। जूता माटिमे अटकि जाए तँ हँसी रोकब, नंग पएरपर दृष्टि नै, निशानपर दृष्टि राखब—एहने लोक-मर्यादा साक्ष्यकेँ बदला बनबासँ बचबैत छै। दोष सिद्ध होयब विधिक काज छै; धरतीक काज केवल एतेक जे जेना चलल, तेना लिखि राखय। लोकक काज ओ लेखा बिगड़य नहि देब।

जखन ऊपर उठल नाम माटिपर पएर पबैत छै, तखन अपराधीक धरती काँपै छै। पेटी चौकी जाइए, मुहर लगैए, पंजी खुलैए; मुदा असली बिहान तखन होइ छै जखन पीड़ितक नाम आ अपराधीक पगचिन्ह एकहि लेखामे बिना शोरक दर्ज होइए। आगाँ संदूकक भीतरक बिहान छै—जतय ढक्कन गवाहीक हाथसँ खुलत, आ कागच बताओत जे धरती रातिभरि ककर भार सम्हारने छल।

चन्ना गाछीक जड़ि लग राखल कटोराक पानि एक बेर काँपल, फेर स्थिर भऽ गेल। अनन्या ओकरा दिस देखली। ओकरा लगल जे पानि कहि रहल अछि—दौड़ू नै, देखू। ओसभिजल पात, रातिभरि जरल सरिसोक तेल आ भीजल माटिक गन्ध गाछीक नीचाँ अटकल छल; दूर कतहु चक्काक मन्द खरखराहट ओहि स्थिरताकेँ काटि रहल छल। आरुणि पहिनेसँ तैयार छोट थैला निकाललक—माटि, पात आ निशानक नाप सुरक्षित रखबाक लेल। मीरा कहली—आइ राति हमर तामस पएर नै बनत। हमर पएर साक्षी बनत। एहि वाक्यक बाद जे युवकसभ दौड़य लेल उताहुल छल, ओसभ धीरे-धीरे चलय लागल।

कच्चा बाट ओहि बरखा बादक बाट छल जाहि पर बैलगाड़ीक चक्का, बच्चाक नंग पएर, बकरीक खुर, आ किसानक फाटल एड़ी सभ अपन-अपन अक्षर छोड़ैत छल। मुख्य सड़कक डामर अपराधीक मित्र होइत अछि; ओ निशान बचय नै दैत। मुदा कच्ची धरती ककरो पक्ष नै लेत। जे चलैत अछि, ओकर भार लिखैत अछि। ध्रुवेशक गाड़ी जखन पाछाँक फाटक छोड़ि एहि बाटपर मुड़ल, तखन धरती पहिल पाँति लिखि लेल।

अभय फोनपर थानाकेँ नै, पहिने तहसीलक रात्रि-दल केँ सूचना देलक। ओ साफ कहलक—हम पीछा नै करैत छी, केवल दृश्य-साक्ष्य देखैत छी। लोहाँक संदूक गाड़ीमे अछि, समय दर्ज कएल गेल, गवाह उपस्थित अछि। फोनक दोसर कातसँ ऊंघायल आवाज आयल—भोरमे देखल जाएत। अभयक स्वर कठोर भेल—भोर धरि संदूक गुम भऽ सकैत अछि। विधि जँ सुतल रहत, धरती जागल अछि। अन्ततः आदेश देल गेल—निकट चौकीक दू कर्मचारी आ पंचायतक लिखित प्रतिनिधि पहुँचय।

गाड़ी बहुत दूर नै जा सकल। पुरान खरिहानी धार, जतय बरखामे पानि भरैत आ जाड़मे बालु रहि जाइत, ओतय कच्चा चक्का धँसि गेल। रातिक अन्हारमे इंजिन गरजैत रहल, मुदा धरती चुपचाप पकड़ि रहल। पाछाँसँ आएल लोकसभ दूरी बनाकऽ ठाढ़ भेल। मीरा हाथ उठा देली—केओ आगाँ नै। जे बचाबय दौड़त, से छिपेबाक सहयोग बनि जाएत। जे मारय दौड़त, से न्याय बिगाड़त। धरतीकेँ अपन बात कहय दियौ।

गाड़ीक अगिला दीप बालुपर लम्बा इजोत फेकैत छल। ओहि इजोतमे ध्रुवेशक देह पहिल बेर नायकक पोशाक बिना देखाइ देलक। ओकर काँधपर शाल नै, केवल उतावलापन छल। दू लोक संदूक धकेलैत छल, एक चालक चक्का नीचाँ पाथर देबाक चेष्टा करैत छल। गरम इंजन, डीजल आ खरिहानीक भीजल बालुक मिलल गन्ध साँस भारी कऽ रहल छल; प्रत्येक धक्कापर लोहाँक पेटी भीतरसँ धातु, कागच आ सिक्काक मिश्रित ठनक छोड़ैत छल। आवाज एहन छल, जेना कई बरखक झूठ एकहि पेटीमे दम घुटैत एक-दोसरसँ टकरा रहल हो।

अनन्या दूरीसँ लिखली—लोहाँक संदूक, अनुमानतः भारी, तीन व्यक्ति द्वारा गाड़ीसँ उतरबाक प्रयास। स्थान—खरिहानी धारक कच्चा मोड़। समय—राति दोसर पहर। ओकर हाथ काँपत छल, मुदा अक्षर स्थिर रहल। आरुणि माटिपर चक्काक निशानक चौड़ाई नापलक। अभय ओकरा रोकलक नै, केवल कहलक—प्रमाणक पहिल नियम—जतेक देखल, ओतेक लिखल।

ध्रुवेश ओहि समय पाछाँ देखलक। ओकरा भीड़ नै, गाछीक छाहरि देखाइ देलक। दूर कारी भूतसभ अन्हारमे गोल घेरा बनाकऽ ठाढ़ जेकाँ लागैत छल। उज्जर प्रेतसभ सड़कक कातक सरकण्डापर हलुक उजास बनि टिकि गेल। बूढ़बा भूतक आवाज शायद केवल ध्रुवेश सुनलक—जकरा नाम माटिसँ काटल, ओकर पएर आब माटिपर फँसल। ध्रुवेश एक क्षण लेल सिहरि उठल।

ओ तामसमे चिचिआयल—ई हमर निजी वस्तु अछि। मीरा दूरीसँ उत्तर देली—निजी वस्तु राति पाछाँक फाटकसँ भागैत नै। सत्यव्रत मेहता जोड़लनि—जँ निजी अछि, तँ सूची बनि जएत, साक्षीसभक सोझाँ खुलत, फेर घुरा देल जाएत। जँ लोक-विरोधी अपराधक पेटी अछि, तँ ई धरती एखन धरि जे रोकने अछि, ओ बेकार नै। ध्रुवेश गाड़ीक दरबाजा पकड़ि रहल, पर ओकर नोकदार जूता माटिमे धँसि गेल।

सुरजमुखी देवी सेहो ओतए पहुँचली। केओ हुनका बजौने नै छल, मुदा झूठसँ कलंकित नामक लोक हवासँ खबर सुनैत अछि। ओ धीर कदमसँ आयली, दूरीपर ठाढ़ भेली, आ कहली—

एहि पेटीमे हमर बदनामीक कागच हो तँ खोलब। मीरा हुनका कात गेली—अधिकारिक उपस्थिति बिनु नै। सुरजमुखी बोली—हम खोलय नै कहैत छी। हम चाहैत छी पेटी हमर आँखिक सोझाँ भागि नै जाए।

किछु देर बाद चौकीक दू कर्मचारी पहुँचलाह। हुनकासभक चेहरापर ऊँघ, डर आ असहजता तीनू छल। ओसभ पहिने ध्रुवेशक नाम सुनि धीमा पड़लाह; फेर भीड़मे फूलकलीकेँ, सुरजमुखीकेँ, सत्यव्रतकेँ आ बच्चासभक पंजी देखलनि। एक कर्मचारी धीरे कहलनि—हम सूची बनबैत छी। दोसर कर्मचारी लालटेन पकड़लनि। लालटेनक उजासमे रातिक दृश्य अदालतक बरामदा बनि गेल।

ध्रुवेशक जेबसँ फोन बेर-बेर काँपत छल। कखनो शहरक अधिवक्ता, कखनो कोनो अनचिन्हार नम्बर, कखनो बैंकक पुरान कर्मचारी। ओ फोन उठबैत छल, पर आवाजसँ पहिनै मीरा कहली—उच्च स्वरमे बजाउ, जे सभ सुनि सकय। ध्रुवेश फोन काटि दैत। ओकरा पहिल बेर बुझाइ पड़ल जे आवाज सेहो साक्षी बनि सकैत अछि। जे आवाजसँ लोकसभ अंकीय गिरफ्तारीमे फँसल, से आवाज आब ओकरा अपने डरबैत छल।

सूची बनाओल गेल। गाड़ीक नम्बर, समय, स्थान, उपस्थित गवाह, संदूकक बाहरी दशा, ताला, किनारपर पुरान मुहरक हलुक चिन्ह, आ एक कोनापर चिपकल माटि। अनन्या देखली—माटि साधारण नै, हरिहर सेवा केंद्रक भीतरक कोठरीक सूखल धूर जेकाँ छल। आरुणि ओकर नमूना अलग थैलामे राखलक। एक कर्मचारी पूछलनि—ई बच्चासभक परिचय दिअ। सत्यव्रत कहलनि—नामक पहरुआ। एखन अहाँक आँखिक सहायक छथि।

संदूक खोलबाक प्रश्न उठल। ध्रुवेश जोर दऽ कहलक—तलाशी-अधिपत्र चाही। विनीत, जे शहरसँ दुपहिया गाड़ीपर पहुँचल छलाह, साँस सम्हारैत कहलनि—तलाशी-अधिपत्रक प्रक्रिया आरम्भ अछि। एखन जब्ती-पंचनामा बनाओल जाए, तालापर मुहर लगाओल जाए, आ संदूक सुरक्षित राखल जाए। भीड़सँ आवाज आयल—एखन खोलू। मीरा तेज स्वरमे रोकली—अपराधीक अधीरताकेँ न्याय अपन अधीरतासँ उत्तर नै देत। जे खुलत, विधिसँ खुलत। ई कहिते भीड़क गरमी हलुक पड़ल।

फूलकली दूर अन्हारमे बैसल छली। हुनका संदूकक भीतर छोटूक नाम होएत कि नै, से नै बुझाइत छल। मुदा ओहि राति हुनका पहिल बेर लागल जे बेटाक नाम ककरो आलमारीमे कैद रहि नै सकैत। ओ माटि उठाकऽ माथपर लगौली। ई धरती ओकर पएर जानैत होएत, ओ धीरेसँ

कहली। ओकर स्वर एते धीमा छल जे केवल पनिडुब्बी सुनली, आ शायद ओहि कारण खरिहानी धारक सूखल बालुमे हलुक नमी आयल।

मुहर लगाबय लागल तखन ध्रुवेश अचानक पाछाँ हटि गेल। ओकर जूता माटिमे अटकल रहि गेल, पएर खाली निकलि आयल। भीड़मे दबायल हँसी उठल, मुदा बूढ़बा भूतक छाह भारी भऽ गेल। मीरा हँसी रोकली—नंग पएर लोककेँ अपमानित नै करब। माटि जे पएर चाहलक, रोकि लेल। ध्रुवेश नंग पएर बालुपर ठाढ़ छल। ओकर पएरक निशान साफ उतरि रहल छल—एड़ी गहिर, पंजा काँपैत। अपराधीक धरती अपन अक्षर लिखि रहल छल।

अभय ओहि निशानक चारूकात बाँसक पतली काँटी गाड़ि देलक। कोनो पएर एतय नै, ओ कहलक। आरुणि नाप लेलक। अनन्या लिखली—ध्रुवेशक दहिना जूता माटिमे अटकल, नंग पएरक निशान संदूकसँ पाँच हाथ उत्तर। कर्मचारीसभ पहिने हँसलाह, फेर गम्भीर भऽ गेलाह। हुनकासभकेँ बुझाइ गेल जे अपराध केवल पेटीमे नै, पएरमे सेहो छूटैत अछि।

ध्रुवेश झुँझलाकऽ कहलक—अहाँ सभ हमरा दोषी बना देलहुँ। सत्यव्रत मेहता शान्त स्वरमे उत्तर देलनि—दोषी हम नै बनबैत छी। हम तँ जे मिटाओल गेल, ओकर नाम लिखैत छी। जँ अहाँ निर्दोष छी, ई धरती अहाँक पक्षमे सेहो बोलेत। मुदा भागैत पएर निर्दोषताक भाषा कम जानैत अछि। ध्रुवेश किछु कहि नै सकल। ओकर मुँह पर पहिल बेर वंश, पैसा, शिक्षा, सेवा-केंद्र, सभ आवरणक रंग उतरैत देखाइ देलक।

संदूक सरकारी मुहरमे बन्द भेल। ओकरा बैलगाड़ीपर नै, चौकीक गाड़ीपर राखल गेल। मुदा जखन उठाओल गेल तखन ओकर नीचाँ बालुमे एक चौकोर गाढ़ दाग रहि गेल। अनन्या ओकर चित्र लेलाक बाद पेंसिलसँ रेखांकन बनौली। देविका कहली—जतय झूठ राखल जाइत अछि, ओतय धरती कारी पड़ैत अछि। मीरा सुधारली—कारी नै; भारी। धरती रंग नै, भारसँ चिन्हित करैत अछि।

गाड़ी चौकी दिस चलल, मुदा लोकसभ तुरन्त पाछाँ नै गेल। ओसभ खरिहानी धारपर ठाढ़ रहि गेल, जेना एखनहुँ दृश्य पूरा नै भेल हो। कच्चा बाटपर ध्रुवेशक पएर, जूता, संदूकक दाग, गाड़ीक चक्का, आ गवाहसभक सीमित पएर—सभ अलग-अलग रेखा बनि गेल छल। आरुणि कहलक—एहि राति धरती अनुक्रम लिखलक। अनन्या ओकर नीचाँ लिखली—कागच बादमे, माटि पहिने।

तखन चन्ना गाछीक दिशासँ हवा आयल। हवामे पातक गन्ध, इनारक नमी, गंगाक गाद, बैंकक नोटक जरा गेल राख, आ फूलकलीक माथक माटिसभ एक संग छल। कारी भूतसभ

धीरे-धीरे पाछाँ हटए लागल। उज्जर प्रेतसभक उजास भोरक पहिल रेखामे मिलए लागल। बूढ़बा भूत कहलथिन—अपराधी धरती छोड़ि नै भागै। ओकरा माटि चाही, घर चाही, कोठरी चाही, खाता चाही। बस, एक दिन वैह धरती ओकर पएर पढ़ि लैत अछि।

भोरक उजासमे मीरा सभकेँ फेर चन्ना गाछी घुरबाक कहली। संदूक चौकी गेल, निशान चिन्हित, प्रतिवेदन बनल, गवाह सूचीबद्ध। मुदा कथा समाप्त नै। आइ कोनो नारा नै, ओ कहली। जे राति धरती साक्षी देलक, ओहि राति पर शोर चढ़ाएब अन्याय होएत। गामक लोकसभ चुपचाप घुरल। एहि चुप्पीमे पराजय नै, थाकल विजयक संयम छल।

चन्ना गाछीक जड़ि लग कटोरा एखनहुँ राखल छल। ओकर पानिमे रातिक आकाश नै, खरिहानी धारक माटि देखाइत छल। अनन्या माटिक थैली कटोरा लग राखली। फूलकली छोटूक पातक कात ओहि माटिसँ एक छोट बिन्दु बना देली। नाम पानिसँ ऊपर उठल, ओ कहली, आब पएर देलहुँ। एहि वाक्यपर मीरा आँखि पोंछली। भावावेग ओतए रोअन नै बनल; संस्कार बनि गेल।

सत्यव्रत मेहता पंजी खोललनि। ओ लिखलनि—अपराधीक धरती। आइ लोहाँक संदूक भागैत रोकल गेल। संदूक एखन निर्णीत नै, पर धरतीक निशान दर्ज। नामसभक सार्वजनिक पुनर्स्थापनक बाद अपराधीक पएर पहिल बेर साक्ष्य बनल। ओ रुकलाह, फेर छोट अक्षरमे जोड़लनि—न्याय केवल दोष सिद्ध करब नै; धरतीकेँ बोलबाक अवसर देब सेहो अछि।

अनन्या अगिला पन्ना खोलली। ओकरा बुझाइ गेल जे आब अन्त सचमुच नजिक अछि, मुदा अन्तक अर्थ दरबाजा बन्द करब नै। एखन संदूक खुलबाक अछि, नामसभकेँ विधिक देह भेटबाक अछि, आ चन्ना गाछीकेँ निर्णय करबाक अछि जे ओ स्मारक बनत कि जीवित पहरुआ। ओ लिखली—संदूकक भीतरक बिहान। आरुणि फुसफुसौलक—भोर पेटीमे नै, आँखिमे खुलत।

एहि तरहेँ राति समाप्त भेल। ध्रुवेशक जूता माटिमे अटकल रहि गेल छल; ओकरा निकालबाक ककरो उताहुली नै भेल। सूर्य उगल तखन जूतापर ओस जमल छल। ओसक बून्दसभ नोकदार चमड़ापर टिकि कऽ एहन चमकैत छल जेना रातिक प्रत्येक भागल डेग भोरमे छोट-छोट साक्ष्य बनि गेल हो; कच्चा माटिसँ उठैत ठण्ढ गन्धमे डीजलक तीख बास एखनहुँ शेष छल। भोरक हलुक हवा जूताक फीता हिलबैत रहल, मुदा निशानक किनार एको बेर नै टूटल। केओ कहि सकैत छल—ई मात्र जूता अछि। मुदा गढ़ नारिकेलक लोकसभ जानैत छल—

कखनो-कखनो अपराधी भागि जाइए, पर ओकर पएर धरती धरि छोड़ि दैत अछि। आ जतय पएर छूटि जाए, ओतय नाम पहुँचयमे देर नै लगैत।

लोकगीत: माटिमे छूटल जूता

लोकधुन: पगचिन्ह-विलाप

कहू हे माटि, पगचिन्ह सम्हारि साँच कहू हे,
जतऽ पएर छूटल, ओतऽ नाम शीघ्र बहू हे।

अपराधी भागल, जूता माटिमे रहि गेल,
नंगा पएरक निशान धरतीक बयान भेल।
लोहेक संदूक बाटमे रोकल, धूरि उठल,
नाम पुनर्स्थापित होइतहि भागनिहारक पएर फँसल।
सूरज उगल, जूतापर ओसक बून्द,

केओ कहै वस्तु, गाम कहै अपराधक छन्द।
न्याय दोष मात्र नहि, माटिक बोली सुनत,
भोर पेटीमे नहि, खुलल आँखिमे जानत।
माटि, ई पगचिन्ह सम्हारि साँच कहू,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—षष्ठ्यर्थ—लक्षणाक लाघव: एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“नीलोत्पलम्” मे कमल कोनो सम्बन्धी पूरक अपेक्षा नहि रखैत; तें ओतय कर्मधारय विश्लेषण पर्याप्त अछि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। षष्ठ्यर्थ-लक्षणाक लाघव।]

अध्याय १९९

संदूकक भीतरक बिहान

संदूकक भीतर सेहो बिहान होइ छै— जँ ढक्कन गवाहीक हाथसँ खुजए।

अध्यायारम्भ लोकगीत: संदूक खोलल बिहान

लोकधुन: बिहान-समदाउनक उज्जर रूप

खोलू हे ढक्कन, संदूकक ढक्कन खोलू हे,
बरखोक बन्द साँचकेँ बिहानमे घोलू हे।

लोहेक संदूक खुलि गेल, भीतर भोर भेटल,
अक्षरसभ पाँखि पसारि अन्हार पार उड़ल।
गवाहीक हाथ काँपलो तँ ढक्कन खोलि देलक,
बरखोक बन्द साँचकेँ सूरुज गोदमे लेलक।

राख, कागच, कुंजी, मुहर—सभटा स्वर बनल,
एक पुरान पेटक भीतर नव भविष्य जनमल।
बिहानक गीत गाउ सभ, डरक राति समाप्त,
खुलल संदूक कहै—सत्य रहय अपराजित।

काँपैत हाथो हिम्मत कऽ ढक्कन उठा देलक,
बरखोक दबल अक्षरकेँ सूरुज गोद लेलक।
राख-कागच-कुंजी-मुहर—सभ बनल गवाह,
पुरान पेटक भीतरसँ जनमल नव प्रवाह।

❖

पंजी.. शिवनाथ.. नोर.. उपस्थिति.. अनुपस्थित लिखल गेल देह जखन नाम सहित घुरै छै, तखन माय रोइते नै, सीधा ठाढ़ होइ छै। शिवनाथ सदाक नाम कागचपर आबि कऽ केवल प्रमाण नै बनै छै; ओ तीस बरखक प्रतीक्षाकेँ घरक देहरी दैत छै। नामक पुनर्स्थापन मृतककेँ घुराएब नै, मुदा झूठक पंजीसँ ओकर अनुपस्थिति काटि दैत छै।

मुहर.. अँगूठा.. स्वर.. रिक्ति.. जाली अँगूठा, चोरी कएल आवाज, नील पंजी, अंकीय आदेश आ खाली उत्तराधिकारी ठाम—ईसभ अपराधक अलग-अलग वस्तु नै, एकहि गोहिक दाँत छै। जे हाथ नै छल, ओकर नामपर अँगूठा बनाओल गेल; जे बोलल नै, ओकर स्वर बेचायल; जे मरल, ओकरा योग्य नै कहल गेल। एहि ठाम न्याय केवल दोषी चिन्हब नै, अगिला रिक्ति सार्वजनिक कऽ पहरा देब सेहो छै।

खाली पेटी.. प्रतिध्वनि.. पहरुआ.. अगिला साँस.. संदूक खाली भऽ जाएब अन्त नै। भीतरक अन्हार बाहर आबि जिम्मेदारी बनै छै, आ खाली धातु पूछै छै—आब आँखि खुलल रहत कि फेर ढक्कन पड़त। स्मारक फूल स्वीकारै छै; पहरुआ निन्न त्यागै छै। आगाँ नामक पहरुआक अध्याय छै, जतय गाम अपन आँखि बन्द करबाक अधिकार छोड़ि कऽ न्यायकेँ रोजक काज बनाओत।

गामक लोक घुरि गेल छल, मुदा केओ मोनसँ घर नै पहुँचल। जकरा जे देखल, से ओकर भीतर पाथर बनि बैसल। लोहाँक संदूक चौकी पहुँचि गेल छल, मुदा ओकर वजन एखनहुँ गामक काँधपर छल। चन्ना गाछीक जड़ि लग राखल कटोरा भोर धरि स्थिर रहल; पानिमे आब अक्षर नै, धुँआसल बिहान तैरि रहल छल। ओसभिजल माटि, रातिभरि जरल सरिसोक तेल आ दूर चौकीक लोहाँक हलुक गन्ध एक संग हवामे अटकल छल; पातक कोनपर टिकले बून्दसभ पहिल उजास पड़ितहि काँपि उठल। दूरसँ कौआ बाजल, मुदा चौकी दिस जाएबला पगक आहट ओकर स्वरकेँ दबा देलक।

मीरा भोरमे सभसँ पहिने कहली—संदूक खुलत, मुदा उत्सव जेकाँ नै। जे कागच भीतर अछि, ओसभ ककरो घावक पट्टी अछि। पट्टी खोलब तँ हवा लागए, चित्र-यन्त्र नै। एहि वाक्यक बाद अनन्या पंजीमे पहिल पाँति लिखली—संदूक खोलबाक नियम: मौन, गवाही, प्रतिलिपि, अनुमति। आरुणि ओकर कातमे तिथि, समय, उपस्थित लोक, चौकीक नाम आ मुहरक क्रमांक लिखलक। बच्चासभक अक्षर आब खेलक अभ्यास नै रहल; ओ विधिक साँस बनि रहल छल।

चौकीक छोटका कमरा एहन भरल छल जे देबाल सेहो सुनैत बुझाइत। एक कात तहसीलक कर्मचारी, दोसर कात अभय, मीरा, सत्यव्रत मेहता, अनन्या, आरुणि, देविका, फूलकली, गदाधर, बैंकक प्रतिनिधि, आ दू स्त्री जिनकर नाम रानी-खातामे चोरी कएल गेल छल। ध्रुवेशकेँ कोनमे बैसाओल गेल। ओकर दहिना पएरमे जूता नै छल। ओकर नंग पएरपर खरिहानीक माटि एखनहुँ चिपकल छल।

लोहाँक संदूकपर सरकारी मुहर लगल छल। जखन मुहर काटल गेल, तखन कोनो नाटकीय ध्वनि नै भेल—बस धीमा खुरचन, जेना बरखोसँ चिपकल झूठ अपन चाम छोड़ि रहल हो। ढक्कन उठल तँ सभसँ पहिने धूलि नै, गन्ध बाहर आयल—गंगाक गाद, पुरान कचहरी, सड़ल गोंद, बैंकक नोट, स्त्रीक केशक तेल, मजदूरक पसेना आ जरा गेल प्लास्टिकक झोंक। बन्द धातुक भीतरक ठण्ढ हवा सभक मुखपर एक संग लागल; कागचक तहमे अटकल

सीलनक स्वाद जिह्वापर नै, स्मृतिमे उतरि रहल छल। मीरा आँखि बन्द कऽ सूँघली। ओ कहली —ई पेटी वस्तु नै राखैत छल; ई समयसँ डर राखैत छल।

संदूकक ऊपरक तहमे कपड़ा छल—पुरान गमछा, सूखल नारिकेल पात, एक फाटल कागच, आ लाल धागासँ बाँधल छोट पोटली। फूलकली गमछा देखितहि काँपि उठली। ओ हाथ बढ़ौली, फेर रोकि लेली। मीरा धीरे कहली—पहिने दर्ज। अनन्या लिखली—पुरान गमछा, किनारा फाटल, रंग पानिमे भीजल कागच जेकाँ, सम्भवतः मजदूरसँ सम्बन्धित। फूलकलीक आँखिमे नोर आयल, पर ओ कानली नै। हुनका बुझायल—एहि बेर रोअनसँ पहिने नाम लिखायब जरूरी अछि।

पोटली खोलल गेल। भीतर एक पानक पीक लागल कागचक मोड़, एक आधा टुटल चिन्हारि-पतिया, आ मजदूरी पंजीक फाटल पन्ना छल। तहसीलक कर्मचारी ओ पन्ना पढ़ि नै पाबि रहल छलाहाह; अक्षर नमीसँ फूलि गेल छल। सत्यव्रत मेहता चश्मा पोछि पढ़लनि—शिवनाथ सदा, वयस सोलह, माताक नाम फूलकली, दिहाड़ी दर्ज—तीन दिन, भुगतान—शून्य, टिप्पणी—अनुपस्थित। कमरामे हवा रुकि गेल। फूलकली धीरेसँ कहली—छोटू।

ओहि एक शब्दमे तीस बरखक प्रतीक्षा, नदीक पानि, ठेकेदारक झूठ, गामक उपहास, आ मातृत्वक अँचरासभ समा गेल। कोनो ताली नै, कोनो जयकार नै। अनन्या पंजीमे लिखली—छोटूक असली नाम पुष्ट: शिवनाथ सदा। आरुणि जोड़लक—अनुपस्थित लिखल गेल देह, नाम सहित उपस्थित। फूलकली हाथ जोड़ि बैसली। हुनकर चेहरापर शोकक बादक शान्ति छल—वैह शान्ति जे मृतककेँ पाबि कऽ नै, नाम पाबि कऽ अबै छै।

दोसर तहमे संचिकासभ छल। प्रत्येक संचिकाक माथपर अलग-अलग हाथक लिखावट। एक पर सेवा-प्रमाण, दोसर पर क्षतिपूर्ति अस्वीकृत, तेसर पर रानी खाता, चारिम पर अंकीय आदेश, पाँचम पर जलसमाधि—पुरान। जलसमाधि—पुरान सुनिते बूढ़बा भूतक छाहरि खिड़कीक कात झिलमिलायल, यद्यपि दिनक उजास छल। कारी भूतसभ दिनमे कम देखाइत अछि, मुदा जखन नामक पेटी खुलैत अछि, तखन अन्हारो कान बनि जाइए।

जलसमाधि—पुरान संचिकामे नन्द आरुणिक दैनन्दिनीक प्रतिलिपि भेटल। मूल दैनन्दिनी ककरा लग गेल, से स्पष्ट नै, पर प्रतिलिपि पर नन्दक हस्ताक्षर छल। पहिल पन्नापर लिखल छल —गोहि देह खाइत अछि, नाम नै। दोसर पन्नापर तीस नाम, तेसर पन्नापर अनुमानित तीन सय, चारिम पन्नापर खाली ठाम, जाहि पर केओ लाल स्याहीसँ लिखल छल—अतिशयोक्ति।

सत्यव्रत मेहताक गला भर्रा गेल। जखन अपराधी प्रमाण नै काटि पाबैत, ओ कहलनि, तखन ओ पीड़ाकेँ अतिशयोक्ति कहै छै।

संचिकाक भीतर बिसेसर पासवानक नाम, सलामत अंसारीक नाम, रजनू मंडलक नाम, आ ओहि नामसभक आगाँ टिक-चिन्ह छल, जिनकरापर क्षतिपूर्ति दावाक योग्यता नै लिखल गेल छल। योग्यता—शब्द एते ठण्ढ जे मृतकक देह पर बर्फ राखि देत। देविका फुसफुसौली—जे मरल, ओ योग्य नै। जे खाइत रहल, ओ अधिकारी। मीरा ओकर हाथ थामि कहली—तामस राखू, पर वाक्यसँ प्रमाण खराब नै होअए। देविका माथ झुका कऽ लिखली—योग्यता शब्दक दुरुपयोग, जाँच योग्य।

रानी खाता संचिका खुलल तँ स्त्रीसभक साँस तेज भऽ गेल। ओहिमे बीससँ बेसी स्त्री-नाम, अलग-अलग अँगूठाक छाप, एकहि चित्र, कतेको खाता, आ कतेको निकासी-पर्ची छल। जे दू स्त्री चौकीमे उपस्थित छलीह, हुनकासभक नाम सेहो सूचीमे छल। एक स्त्री, जमुना कहली—हम जीवनमे बैंक नै गेलहुँ। बैंकक प्रतिनिधि मुँह नीचाँ कऽ लेलनि। ओ दोषी नै छलाह, मुदा व्यवस्थाक दुर्बलताक लाज हुनका लागल। मीरा कहली—लाज काजक हो, तँ सुधार बनत; बेकाजक हो, तँ फेर मुहर बनि जाएत।

संचिकाक पाछिल कोनामे जाली अँगूठा लगएबाक लेल मोमक साँच छल। हुलासीक हाथविहीन छाहरि एक क्षण लेल मेजपर लहरायल। हाथविहीन स्त्रीक नामपर अँगूठा बनाओल गेल छल—ई व्यंग्य एते तीख छल जे कमरामे बैसल सभक आँखि झुकि गेल। अनन्या लिखली—अँगूठाक चोरी, हाथक अपमानसँ बेसी; अस्तित्वक चोरी। आरुणि ओकरा उचित बुझि किनारपर दोहरी रेखा खिंचलक।

अंकीय आदेश संचिकामे कागच कम आ मुद्रित प्रति बेसी छल। फोन-पटकथा, डराबयक वाक्य, अहाँ अंकीय गिरफ्तारीमे छी—एहि वाक्यक मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजी मिश्रित रूप, पुलिसक जाली चिन्ह, अदालतक जाली सूचना-पत्र, आ ओहि लोकक सूची जेकरा रातिमे फोन कएल गेल। एक पन्नापर निर्देश छल—आवाज पहिने नरम, फेर कठोर, फेर परिवारक लाजक उल्लेख। मीरा पन्ना पढ़ि काँपि उठली। ई अपराध धनक नै, मनक अपहरण अछि, ओ कहली।

संदूकक एक कोनामे तीन छोटका मोबाइल, पाँच सिम, दू स्मृति-छड़, आ एक पुरान ध्वनि-अभिलेखक भेटल। ध्वनि-अभिलेखकपर खरोंच छल। अभय ओकरा चलएबासँ पहिने विधिक अनुमति दर्ज करौलनि। जखन स्वर निकलल, पहिने खरखराहट, फेर मधुकर माधव मिश्रक स्वर, फेर ककरो भारी साँस। स्वर कहैत छल—नाम अलग राखू, खाता अलग, सेवा-

केंद्र साफ देखाइ पड़बाक चाही। एहि वाक्यपर ध्रुवेश कुर्सीपर हिलल। ओकर नंग पएरक माटि झड़ल। कर्मचारी ओ झड़ल माटि सेहो कागचपर सम्हारि लेल।

ध्रुवेश कहलक—ई आवाज हमर नै। सत्यव्रत मेहता शान्त रहलाह। आवाजक फैसला यन्त्र देत, ओ कहलनि, हमरा लेल एखन साँसक क्रम पर्याप्त अछि। अभय जोड़लक—अहाँक पक्ष सेहो दर्ज होयत। ध्रुवेश पहिल बेर सोझाँ देखलक—हमर पक्ष। मीरा कहली—न्याय ओतएँ न्याय रहै छै जतय दोषी मानल गेल लोकक पक्ष सेहो दर्ज हो। मुदा पक्ष सत्यकेँ खायब नै पाओत।

संदूकक तलमे सभसँ भारी थैली छल। ओहि थैलीमे नकद धन नै, कोरा पत्र-मस्तक, मुहर, आधा भीजल पंजी, आ एक नक्शा छल। नक्शापर पुलक पुरान स्थलसँ हरिहर सेवा केन्द्र, सेवा केन्द्रसँ बैंक, बैंकसँ शहरक खाता, शहरक खातासँ परदेशक धन-मार्ग, फेर गामक माटि धरि तीर खिंचल छल। आरुणि नक्शा देखितहि फुसफुसौलक—ई गोहिक पाचन-तंत्र अछि। अनन्या लिखली—धनक कारी नदीक मार्ग, देहक बाजारसँ अंकीय डर धरि।

नक्शाक बीचमे एक छोट गोला बनल छल—चन्ना। तहसीलक कर्मचारी पूछलनि—ई चन्ना की अछि। गामक लोकसभ एक साथ ओकरा देखय लागल। देविका धीरे कहली—अहाँक कागचमे ई शायद केवल स्थान। हमरासभ लेल ई सुननिहार गाछी। कर्मचारीक चेहरा बदलि गेल। ओ पहिल बेर बुझलक जे सरकारी संचिकामे जे बिन्दु अछि, लोक-स्मृतिमे से ब्रह्माण्ड भऽ सकैत अछि। ओ लिखलनि—चन्ना गाछी—स्थल निरीक्षण आवश्यक।

संचिकाक अन्तिम पन्ना सभसँ अनपेक्षित छल। ओहि पर बटुकनाथ हरिहरनक पुरान हस्ताक्षरक छाया, महेश्वरनाथ सेवकक मुहर, मधुकरक संकेत-नाम, ध्रुवेशक सेवा-प्राधिकरण, आ एक ठाम रिक्त छोड़ल गेल छल जाहिमे लिखल छल—भविष्य उत्तराधिकारी। रिक्त ठाम देखितहि मीरा काँपली। अपराध व्यक्तिसँ पैघ होइ छै, ओ कहली। जँ खाली ठाम छोड़ल जाए, तँ अगिला ध्रुवेश जनमि जाइए। एहि पंक्ति पर चुप्पी भारी भऽ गेल।

अनन्या आगाँ बढ़ि ओ खाली ठामक प्रतिलिपिपर मोट अक्षरमे लिखली—रिक्त ठाम लोकसमक्ष। आरुणि पूछलक—ई लिखब उचित छै। सत्यव्रत मेहता कहलनि—हँ। अपराधक खाली जगह गुप्त रहि जाए तँ ओ फेर भरि जाइ छै। रिक्त ठाम लोकसमक्ष करब सेहो पहरा अछि। बच्चासभक चेहरापर थकान छल, पर आँखिमे बुझाइत छल—ओसभ पुस्तकक अन्त नै, पहराक आरम्भ लिखि रहल अछि।

संदूकक भीतरक प्रत्येक वस्तु क्रमसँ सूचीबद्ध कएल गेल। मूल वस्तु सरकारी मुहरबन्द पैकेटमे गेल। प्रतिलिपि परिवारक अनुमति अनुसार तीन भागमे बनाओल जाएत—विधिक, लोक-स्मृति, आ निजी। मीरा स्पष्ट कहली—ककरो कानब, ककरो अँगूठा, ककरो लाज लोक-प्रदर्शनक वस्तु नै। नामक पुनर्स्थापन आ तमाशामे अन्तर राखू। एहि वाक्यपर फूलकली अपन अँचरासँ शिवनाथक पन्ना ढाँकि देली, जेना नामक ऊपर घरक छाँह राखि रहल हो।

दुपहर धरि चौकीक बाहर भीड़ जमा भेल, मुदा भीतरसँ कोनो नारा नै निकलल। लोकसभ पूछैत—की भेटल। जवाब मिलैत—नाम भेटल। केओ पूछैत—धन भेटल। जवाब—धनक रास्ता भेटल। केओ पूछैत—अपराधी पकड़ायल। जवाब—अपराधक पेट खुलल। गाम एहि उत्तरक भाषा धीरे-धीरे सीखि रहल छल। जकरा उत्तेजक खबर चाही छल, ओ निराश भेल। जकरा न्याय चाही छल, ओ चुपचाप प्रतीक्षा करैत रहल।

साँझ होइत-होइत संदूक फेर बन्द नै भेल; ओकरा प्रत्येक वस्तु अलग-अलग मुहरबन्द कएल गेल। रिक्त संदूक मेजपर उनटा राखल गेल। ओकर पेट आब रिक्त छल। कतेको बरख जे अन्हार ओहि भीतर जमा भेल छल, ओ बाहर आबि चुकल, मुदा बाहर आबि कऽ ओ उजास नै, जिम्मेदारी बनल। रिक्त संदूकक धातुपर सूर्यक अन्तिम किरण पड़ल तँ ओ चमकल नै; ओ थाकल बुझायल। अपराधीक पेटो थाकैत होयत, जखन ओकरा नामसभ उल्टी करय पड़ै छै।

फूलकली चौकीसँ बाहर निकलली तँ हुनकर चाल बदलल छल। काल्हि धरि ओ छोटूक माय छली, जेकर बेटा गुम छल; आब ओ शिवनाथ सदाक माय छली, जेकर नाम प्रमाण सहित घुरल। ई परिवर्तन कागचक लगैत, मुदा असलमे देहक होइ छै। हुनकर अँचरामे संदूकक सीलन, पुरान गमछाक बास आ चौकीक धूलि अटकल छल; बाहरक हवा लगितहि ओ गन्ध हलुक भऽ गेल, जेना बरखोक बन्द कमरा छातीसँ उतरि रहल हो। हुनकर कमर सीधी भेल, माथक अँचरा नीकसँ बसल, आ आँखिमे वैह अडिगता आयल जे नदीसँ बेटा नै, नाम छीनि अनबाक बाद अबै छै।

रातिमे सभजना चन्ना गाछीक जड़ि लग घुरि अएलाह। कटोराक पानिमे एहि बेर चौकीक प्रकाश नै, घर-घरक दीप झिलमिला रहल छल। माटिक थैला, शिवनाथक पन्नाक प्रतिलिपि, नन्दक दैनन्दिनीक छाया-प्रतिलिपि, रानी-खाताक नाम-सूची, नक्शाक प्रतिलिपि, आ खाली उत्तराधिकारी ठाम—सभ अलग-अलग पाथरपर राखल गेल। बूढ़बा भूत डारिसँ उतरि नै आएलाह; ओ ऊपरसँ देखैत रहलाह, जेना कहि रहल होथि—आब जीवितसभ अपने करथि।

कारी भूतसभक अन्हार पातक छाहमे घुलल। उज्जर प्रेतसभक उजास दीयाक लौमे मिलल। हुलासी इनारक दिशासँ आवाज देली—हाथक चोरी लिखल गेल। अनन्या उत्तर देली—हँ। पनिडुब्बी पूछली—जलसमाधिक नाम। आरुणि कहलक—शिवनाथ सहित। लोथ आधा मुँह खोलि पूछलक—संदूक। देविका कहली—खाली। बूढ़बा भूतक हँसी एते धीमी छल जे केवल पातसभ सुनि सकल—रिक्त पेट सभसँ पैघ गवाही।

मीरा सभकेँ गोल बैसबाक कहली। आब अन्तिम प्रश्न अछि, ओ कहली। ईसभ साक्ष्य अदालत जएत, पर कथा केवल अदालतपर छोड़ि देब। ई गाछी स्मारक बनत कि पहरुआ। स्मारकमे फूल चढ़त, पहरुआमे आँखि खुलल रहत। सत्यव्रत मेहता पंजीक पन्ना उलटैत कहलनि—स्मारक मृतककेँ ठाम दै छै; पहरुआ जीवितकेँ काज।

अनन्या पन्नापर लिखली—नामक पहरुआ। आरुणि नीचाँ जोड़लक—अन्त तखन नै होइत जखन अपराधीक संदूक खुलि जाए; अन्त तखन आरम्भ होइ छै जखन गाम अपन आँखि बन्द करबाक अधिकार छोड़ि दे। एहि पंक्ति पर मीरा ओकर माथ सहलौली। ई अन्तक आरम्भ अछि, ओ कहली। भावना रहत, पर भावना आगि नै लगाओत; भावना पहरा देत।

राति बहुत गाढ़ भऽ गेल। रिक्त संदूक चौकीमे रहल, मुदा ओकर प्रतिध्वनि चन्ना गाछीमे रहि गेल। शिवनाथक नाम पातपर टिकि गेल। नन्दक वाक्य कटोराक पानिमे फेर चमकल—गोहि देह खाइत अछि, नाम नै। ध्रुवेशक नंग पएरक माटि सरकारी लिफाफामे बन्द छल, मुदा गामक स्मृतिमे ओ खुलल रहत।

भोरसँ ठीक पहिने चन्ना गाछीक सभसँ पुरान पात टूटि कऽ नीचाँ खसल। केओ ओकरा अपशकुन नै कहल। पात सूखल छल, पर ओकर नससभ साफ देखाइत छल। फूलकली ओ पात उठाकऽ शिवनाथक पन्नाक कात राखली। आब ओकरा पहरा देब, ओ कहली। पात थरथरायल, सम्भवतः हवासँ, सम्भवतः सहमतिसँ।

लोकगीत: संदूकक पेटमे भोर

लोकधुन: बिहान-समदाउन

नै बनू हे आगि, प्रतिशोधक आगि नै बनू हे,
भावना बनि पहरा दिअ, नामक कोपल उगाउ हे।

गवाहीक हाथसँ ढक्कन खुलल, अन्हार पाछाँ हटि गेल,
शिवनाथक नाम सूखल पातक कात टिकि गेल।
रिक्त संदूक चौकीमे, प्रतिध्वनि गाछीमे,

नन्दक वाक्य चमकल कटोराक निर्मल पानिमे।
अन्त अपराधीक पेट खुललासँ नै होइ,

अन्त तखन होइ, जखन गाम आँखि बन्द करबाक अधिकार छोड़ि दै छै।
पुरान पात टूटल, नससभ साफ देखायल,
फूलकली पहरा देब कहि शिवनाथ लग सजायल।
संदूकक भोर, प्रतिशोधक आगि नै बनू,

गवाहीक हाथसँ ढक्कन खुलल, अन्हार हटल,

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—समुच्चयमे द्वन्द्व अनुपपन्न: . किछु विद्वान कहैत छथि —"गर्गसभ भोजन करैत छथि" मे क्रियाप्रत्यय भोजनक्रियासँ सम्बन्धित बहुत्व व्यक्त करैत अछि। समुच्चयमे द्वन्द्व अनुपपन्न।]

अध्याय २००

नामक पहरुआ

नाम जाधरि पुकारल जाइत रहत, ताधरि ठूँठोमे हरियर बिन्दु बाँचल रहत।

अध्यायारम्भ लोकगीत: हम छी—उदय महागान

लोकधुन: विदेह लोक-महागान

गाउ हे सगरो, 'हम छी'क महागान गाउ हे,
पानि-पात-माटि-साँस—सभ स्वर मिलाउ हे।

पानि बजै, पात लिखै—हम छी, हम छी,
माटि कहै, साँस कहै—हम छी, हम छी।
नाम नै सूची मात्र, जीवनक उज्जर थार,
एक-दोसरक पहरामे ठाढ़ अछि संसार।

गोहि जते रूप बदलय, जागल आँखि चिन्हत,
सत्य-बीआ पाथर फोड़ि हरियर अंकुर बनत।
दू सय देहरी खुलल, कथा चलत आगाँ,
हम छी, संग छी—एहि स्वरमे नव मिथिला जागाँ।

दू सय दीपक पाँति जरल, दू सय देहरी-दुआर,
एक-दोसरक पहरामे जागल ई संसार।
गोहि रूप बदलौ हजार, आँखि नै मुनाएत,
विदेहक ई लोक-महागान युग-युग गाओल जाएत।

❖

पात.. नस.. अक्षर.. जल.. सूखल पातक नससभमे जे कथा बाँचल छै, से पानिक बून्द पबितहि फेर देखाइ दै छै। एहि अध्यायमे शिवनाथक नाम, नन्दक दैनन्दिनी, हुलासीक हाथ, पनिडुब्बीक जल, ध्रुवेशक जूता आ खाली संदूक एक-दोसरासँ बाजै छै। सभ कहै छै—अपराधक पेट पैघ हो सकै छै, मुदा लोक-स्मृति ओकरासँ पैघ होइ छै।

मौन.. लाभ.. लाज.. बाजार.. बाहरी गोहिक दाँत देखाइ दै छै, भीतरी गोहिक दाँत सुविधा बनि नुकायल रहै छै। डर, लाभ, दिखावा, जाति, प्रतिष्ठा, नौकरी आ पीड़ाक बाजार—ईसभ नाम बिना लिखल अपराधी छै। गाम जखन अपन मौनक नाम लिखै छै, तखन न्याय केवल दोसराक दोष नै रहि जाइए; ओ अपन घरक सफाइ बनि जाइए।

भोरक पहिल उजास चन्ना गाछीक सूखल पातपर उतरैत-उतरैत ठमकल। ओहि पातक नससभमे रातिक सभ गवाही एखनहुँ चलि रहल छल—शिवनाथ सदाक नाम, नन्दक

दैनन्दिनी, ध्रुवेशक जूता, लोहाँक संदूकक रिक्त पेट, फूलकलीक थरथराइत हाथ, अनन्याक पंजी, आरुणिक सीस-कलम, मीराक सावधान आँखि, सत्यव्रत मेहताक मौन, आ बूढ़बा भूतक ओ धीम हँसी जे पात छोड़ि ककरो सुनाइ नै पड़ैत छल। ओसभिजल पात, राख आ सरिसोक तेलक बासी दीपक गन्ध हवामे एक संग अटकल छल; पहिल चिरै पखेरूक स्वर उठितहि पातक बून्दसभ काँपि उठल। दूर-दूर धरि धुँआसल आकाशमे रसोइक पहिल धुँआ उठि रहल छल, मुदा गाछीक नीचाँ बैसल लोकसभकेँ लागल जे राति एखनहुँ अपन अन्तिम बात कहि रहल अछि। गढ़ नारिकेल जागल, मुदा आजु जागनाइ सामान्य नै छल। लोकसभ उठल, मुदा ओसभ दिनचर्यामे नै, पहरामे प्रवेश कऽ रहल छल।

मीरा सभसँ पहिने गाछी पहुँचली। हुनकर हाथमे फूल नै, एक छोट कपड़ा छल। कपड़ामे माटि, ओस, राख आ कटोराक पानिसँ भीजल किछु अक्षर लपेटल छल। ओ पातक आगाँ बैसि गेली आ कहली—“आइ अन्तिम अध्याय लिखल जाएत, मुदा ई अन्त नै। ई ओ पन्ना अछि जाहिपर हमसभ आँखि खोलि कऽ अपन-अपन नामक जिम्मेदारी लेब।” एहि बातक बाद केओ ताली नै बजौलक। अन्तिम बातपर ताली नै, सहमति चाही।

अनन्या पंजी खोलली। पहिल पन्नापर ओ फेर लिखली—“चन्ना गाछीक कबड्डी।” हुनकर कातमे आरुणि लिखलक—“दहिन कातक गाम।” एक-एक कऽ अध्यायसभक नाम पढ़ल जाए लागल। जिनका कथामे मरल कहल गेल, ओसभ उपस्थित भेलाह। जिनका अपराधी कहल गेल, हुनकासभक नामो पढ़ल गेल, किएक तँ अपराधीक नाम बिना अपराधो अधूर रहै छै। नामक पहरुआ केवल पीड़ितक सूची बना कऽ न्याय नै करै छै; ओ अपराधक वंशावली सेहो लिखै छै।

फूलकली अपन हाथसँ शिवनाथक पन्नाक प्रतिलिपि पातक कात राखली। “ई हमर बेटाक मृत्युपत्र नै,” ओ कहली, “ई ओकर घर-घुरबाक पन्ना अछि।” हुनकर स्वरमे कानब नै छल, मुदा सभकेँ बुझायल जे जे नोर बरखों धरि भीतर रहि जाए, से स्वर बनि बाहर अबै छै। किछु स्त्रीसभ माथ झुका लेली। किछु पुरुष पहिल बेर अपन पएर दिस देखलनि, जेना सोचैत होथि—एते बरख हम ककर नामपर चुप रहलहुँ।

चौकीसँ खबर आयल जे संदूकक वस्तुसभक सूची बनि गेल अछि। किछु कागच अदालत जाएत, किछु विभागमे, किछु जाँचक हाथमे, किछु अभिलेखागारमे। मुदा मीरा कहली —“सरकारी बाट चलत। हमरो बाट चलत। जे प्रतिलिपि कानूनक, से कानूनक; जे प्रतिलिपि स्मृतिक, से गामक।” एहि पर देविका एक साफ कपड़ा पसारली। ओहिपर कागचक छाया-पाठ

राखल गेल। प्रत्येक प्रतिलिपिक आगाँ एक छोट पाथर, पाथरपर एक नाम, नामक आगाँ एक कण माटि।

सत्यव्रत मेहता धीरे-धीरे उठलाह। हुनकर वयसक स्वरमे थकान छल, मुदा आइ ओ थकान पराजय नै बुझाइत छल। "हम जीवन भरि कागचक भाषासँ न्याय खोजलहुँ," ओ कहलनि। "आइ बुझलहुँ जे कागचकेँ मानवीय अर्थ पाबय लेल गामक कण्ठ चाही। जँ संचिका अदालत जाए आ नाम गाममे नै बाँचय, तँ निर्णय आधा। जँ गाम नाम बचा लय आ अपराधी कानूनसँ बचि जाए, तँ न्याय आधा। आइसँ दुनू आधा एक-दोसराकेँ खोजत।"

बूढ़बा भूत डारिसँ नीचाँ नै उतरलाह। एहि बेर जीवितसभक सभामे मृतक निर्णायक बनि बैसथि, एकर आवश्यकता नै छल। हुलासी इनारक भीतरसँ आवाज देली—"हमर हाथक बात?" अनन्या उत्तर देली—"गवाहीमे, गीतमे आ बच्चासभक पाठमे।" पनिडुब्बी पूछली—"जलसमाधि?" आरुणि कहलक—"प्रत्येक नामक संग पानि राखल अछि। कोनो देह पानिमे गेल, मुदा नाम पानिसँ ऊपर पढ़ल जाएत।" लोथ अपन आधा मुँहसँ फुसफुसायल—"आ हम?" देविका हँसि देली—"तोहरासभ दर्शक नै, पहरुआ छी। आधा मुँह सेहो जँ ठीक समयपर खुलय, तँ पूरा इतिहास बचि सकै छै।"

गामक नेनासभ, जे एते दिन गवाही लिखैत, चित्र खिंचैत, पन्ना सम्हारैत आ प्रश्न पूछैत रहल छल, आइ एक-दोसराक हाथ पकड़ि गोल घेरा बनौलक। केओ "कबड्डी" नै बाजल। पहिने मौन रहल। फेर अनन्या कहली—"जे सीमा लाँघत, नाम लऽ कऽ घुरत।" आरुणि जोड़लक—"जे नाम काटत, ओकर हाथ पकड़ल जाएत।" एक छोट बच्चा, जकरा एखन पूरा बात बुझाइत नै छल, हँसैत कहलक—"गोहि देह खाइत अछि, नाम नै।" सभक आँखि ओकरा दिस घूमि गेल। वाक्य बच्चाक मुँहसँ निकलि कऽ भविष्य बनि गेल।

ओही क्षण कटोराक पानिमे हलचल भेल। पानिमे कोनो मृतकक चेहरा नै, अपितु गामक वर्तमान चेहरा देखाइ देलक—भूखल बच्चा, थाकल मजदूर, ऋणमे दबले किसान, मोबाइलमे फँसल युवक, कागचसँ डरैत विधवा, बैंकक पाँतिमे ठाढ़ बूढ़, अस्पतालक बरामदा, अदालतक तिथि, स्कूलक फाटक आ चन्ना गाछीक छाह। मीरा कहली—"ईसभ जीवित अछि। पहरा मृतकक नामपर आरम्भ भेल, मुदा पहरा जीवितक देह धरि पहुँचबाक चाही। नै तँ गोहि फेर भूखल रहत।"

अभय, जे कतेको राति सावधानीसँ परिधिपर ठाढ़ रहल, पहिल बेर बीचमे आयल। "अपराधीक नाम अदालतमे जाएत," ओ कहलक, "मुदा हमसभ अपन भीतरक मौनक नाम

कतऽ राखब?” एहि प्रश्नपर सभा थमकि गेल। बटुकनाथ, चन्द्रपाल, राघव, लाउ, ध्रुवेश, मधवेश—ईसभ बाहरी नाम छल। मुदा छोट-छोट मौनक नाम? भय, लोभ, सुविधा, जाति, लाज, नौकरी, दान, प्रतिष्ठा, धर्म, विकास, उन्नति—ईसभ गामक भीतर पाथर जेना राखल छल।

सत्यव्रत मेहता पंजीमे एक नव पन्ना खोललनि—“मौनक नामावली।” पहिल नाम लिखल गेल—“डर।” दोसर—“लाभ।” तेसर—“दिखावा।” चारिम—“तिथिपर भरोसाक अति।” पाँचम—“कागचपर आँखि मूँदबाक आदत।” फूलकली कहली—“एहिमे एक लिखू—गरीबक दुःखपर चित्र-यन्त्र।” देविका लिखली। मीरा जोड़ली—“आ एक—पीड़ाक बाजार।” ओहि पन्नापर कोनो अपराधीक हस्ताक्षर नै छल, मुदा सभ जीवितक छाह पड़ल।

दुपहर धरि गामक लोक चन्ना गाछीक चारू कात साफ-सफाइ करय लागल। केओ रंगीन फाटक बनाबय चाहलक। मीरा रोकि देली—“पहरुआकेँ फाटक नै चाही, बाट चाही।” केओ शिलापट्टपर पैघ नाम खुदबाबय चाहलक। अनन्या कहली—“एक नाम पैघ लिखब, तँ छोट नाम फेर दबत।” अन्तमे निर्णय भेल—गाछीक चारू कात छोट-छोट माटिक पट्टिका रहत; प्रत्येकपर एक नाम, आ जे नाम एखन अधूर अछि, ओकरा रिक्त ठाम देल जाएत। रिक्त ठामो गवाही अछि।

रिक्त ठामक आगाँ फूलकली दीप राखली। “जेकर नाम नै भेटल, ओकरा अन्हार नै देब,” ओ कहली। एहि वाक्यपर चन्ना गाछीक पातसभ एकसाथ हिलल। बूढ़बा भूत सम्भवतः मुस्कुरेलाह। हुलासी इनारक अन्हारमे अपन अनुपस्थित हाथ पसारने होथि। पनिडुब्बी पोखरिक पानिमे झुकि गेली। कारी भूतसभ गाछीक छाहमे घुलि गेल, उज्जर प्रेतसभ दीपक लौमे। मृतकसभकेँ आइ स्मारक नै, घर भेटैत छल।

साँझ लग अदालतक बरामदासँ सेहो सन्देश आयल। बूढ़ मुवक्किल, जे तेइस बरखक मुकदमासँ झुरायल छलाह, अपन छड़ी टेकैत गाम पहुँचलाह। ओ कहलनि—“बरामदामे आइ पहिल बेर केओ पूछलक—कतेक तिथि खएलहुँ?” ई छोट प्रश्न छल, मुदा हुनकर आँखिमे एतेक इजोत छल जे केओ ओकरा छोट नै मानलक। न्यायालयक पाथरपर जँ प्रश्न उगि रहल अछि, तँ ई चन्ना गाछीक पातक बीआ अछि।

राति उतरली तँ अन्तिम पाठ आरम्भ भेल। सभ शीर्षक फेर पढ़ल गेल। केओ हतार नै करैत छल। “चन्ना गाछीक कबड्डी” पढ़ल गेल तँ नेनासभ गोल भेल। “तारीखक गोहि” पढ़ल गेल तँ बूढ़ मुवक्किल छड़ी कसि धरलनि। “हार्वर्डक एथिक्स” पढ़ल गेल तँ सत्यव्रत मेहता

आँखि झुका लेलनि। “पटलाक गोहि” पढ़ल गेल तँ युवकसभ अपन मोबाइल उनटा राखि देलक। “देहक बाजार” पढ़ल गेल तँ स्त्रीसभ एक-दोसराक हाथ पकड़ि लेली। “नामक संविधान” पढ़ल गेल तँ पंजीक पन्ना काँपल। “अपराधीक धरती” पढ़ल गेल तँ ध्रुवेशक जूता स्मृतिमे फेर अटकि गेल। “संदूकक भीतरक बिहान” पढ़ल गेल तँ रिक्त पेटक स्वर सुनाइ पड़ल।

अन्तिम शीर्षकपर अनन्या रुकली—“नामक पहरुआ।” ओ पढ़ि चुकली तँ आरुणि पूछलक—“आब?” मीरा उत्तर नै देली। ओ गाछीक बाहरी घेरापर चलय लगली। सभ लोक पाछाँ-पाछाँ चलल। प्रत्येक देहरीसँ एक लोक आयल, प्रत्येक घरसँ एक छोट पाथर, प्रत्येक पाथरपर एक अक्षर। किछु अक्षर शुद्ध, किछु टेढ़, किछु बच्चाक हाथक, किछु बूढ़क काँपैत रेखा। अक्षरसभ मिलि कऽ वाक्य बनल—“नामक पहरा जीवित राखू।”

ओहि वाक्यक नीचाँ केओ लेखकक नाम नै लिखलक। ई सभक वाक्य छल—गामक, मृतकक, बचल लोकक, गलती मानि रहल लोकक, आ ओहि लोकक सेहो जे एखनहुँ अन्हारमे नुकायल छल। पहरा केवल बाहरी चोरपर नै; भीतरक सुविधापर सेहो। गाम एहि बातकेँ पूर्ण बुझलक कि नै, ई कहब कठिन, मुदा एहि राति कमसँकम ओ अपन भ्रमकेँ उत्सव नै बनौलक। ओ पहरा बनल।

रातिक मध्यभागमे बूढ़बा भूत अन्ततः डारिसँ उतरलाह। सभ चुप। ओ धीरे-धीरे रिक्त ठामक पाँति लग अएलाह। एक रिक्त पट्टिकापर ओ अपन नहसँ किछु लिखलनि। अक्षर जीवित लोककेँ साफ नै देखाइ देलक। अनन्या झुकि कऽ देखली। किछु-किछु पढ़ल गेल—“जे नाम एखन जन्मल नै।” मीरा आँखि बन्द कऽ लेली। पहरुआ मृतकक संग भविष्यक सेहो पहरा दै छै।

तखन पनिडुब्बी पोखरिसँ गंगाक गाद जेना एक मुट्ठी नमी लऽ कऽ आयली। ओ नमी कटोराक पानिमे छोड़ि देली। भीजल गादक ठण्ढ गन्ध सरिसोक तेलक लौ धरि पहुँचल, आ कटोराक किनारपर महीन बाफ जेना जमि गेल। पानिमे हलुक भँवर उठल; घुमैत पानिक भीतर पातक छाया एक बेर लम्बा, एक बेर छोट भऽ रहल छल। कटोराक कात बैसल नेनासभ अपन साँस रोकने छल; केओ हाथ नै बढ़ौलक, जेना हलुक स्पर्शो अक्षरसभकेँ फेर गादमे डुबा देत। भँवरमे एक गोहि देखाइ देलक—नदीक, पटलाक, कागचक, तिथिक, देहक, धनक आ स्मृतिक गोहि। सभ डरा गेल। मुदा गोहि एहि बेर मुँह नै खोललक। ओकर दाँतक बीच किछु

अटकल छल—अक्षर। अक्षर बाहर आयल, पानिपर तैरल, आ मिलि कऽ फेर वैह वाक्य बनल —“गोहि देह खाइत अछि, नाम नै।”

ई वाक्य सुनितहि फूलकली कानि पड़ली। ई पहिल बेर छल जे ओ खुलि कऽ कानली। हुनकर कानब हाहाकार नै, बरखा छल। गामक स्त्रीसभ हुनका घेरि लेली। ककरो बेटा जलमे गेल, ककरो खेत, ककरो देह, ककरो प्रतिष्ठा, ककरो भरोसा। सभक कानब अलग छल, मुदा ओहि राति ओसभ एक पानि भऽ गेल। चन्ना गाछीकेँ अन्ततः जल भेटल—विस्मृतिक नै, स्मृतिक जल।

सत्यव्रत मेहता ओहि कानबक बीच अन्तिम गवाही लिखलनि—“आइ गढ़ नारिकेल नामक पहरुआ बनल। अपराधीक दण्ड अदालतक अधीन, मुदा स्मृतिक पहरा गामक अधीन। रिक्त ठाम खुलल राखल जाए। बच्चासभ प्रत्येक बरख शीर्षक-पाठ करथि। कोनो नाम बिना अनुमति तमाशा नै बनाओल जाए। कोनो दुःख बेचबाक वस्तु नै। कोनो कागच बिना पढ़ने स्वीकार नै। कोनो तिथि बिना प्रश्न नै। कोनो देह बिना नाम नै।”

देविका एहि आदेशकेँ गीतमे बदलली। गीतमे मंचक ताली नै छल; खेतक लय, नदीक धुन, अदालतक प्रतिध्वनि, मोबाइलक काँप आ पातक सरसराहट छल। बच्चासभ धीरे-धीरे दोहराबय लागल—“नामक पहरा जीवित राखू।” राकशसभ चानीक इजोत नै फेकलनि; ओसभ दीपक लौ बचौलनि। लोथ अपन आधा मुँह पूरा खोलय चाहलक, मुदा ओकर स्वर नै बनल। अनन्या ओकरा दिस देखि कहली—“चुप्पी सेहो लिखल गेल।” लोथ सन्तुष्ट भेल।

भोरक पहिल रेखा फूटबाक पहिने मीरा रिक्त संदूकक प्रतिलिपि-छाया गाछीक बाहर राखली। “संदूक स्मारक नै,” ओ कहली, “चेतावनी।” आरुणि ओकर ऊपर सूखल पात राखलक। “ई पात कोन अध्यायक पात अछि?” केओ पूछलक। बूढ़बा भूत हँसलाह—“जे पात टूटि कऽ नीचाँ आबि जाए, ओ भूत नै, बीआ होइ छै।”

सूर्य उगल। चन्ना गाछीक छाह माटिपर गोल पड़ल। ठीक ओही गोलाइमे बच्चासभ खेलय लागल। केओ कबड्डी कहलक, केओ नाम-पाठ, केओ पहरुआ। खेलक नियम सरल छल—जे सीमा पार करत, एक नाम लऽ कऽ घुरत। जे नाम बिसरि जाए, ओ बाहर नै, फेर सीखबाक पारीमे जाए। हारक अर्थ दण्ड नै; स्मरण। जीतक अर्थ ताली नै; नामक शुद्ध उच्चारण।

गढ़ नारिकेलक लोक धीरे-धीरे अपन घर घुरल। चूल्हा जरल। खेत दिस पएर बढ़ल। चौकीमे कागच रहल। अदालतमे संचिका जाएत। शहरक खाता जाँचल जाएत। किछु अपराधी भागत, किछु पकड़ाएत, किछु बेमार पड़ि कहत जे ओ निर्दोष छथि, किछु धर्मक चादर ओढ़त,

किछु विकासक। मुदा आब गामक देहरीपर एक वाक्य लिखल छल—“नामक बिना कोनो कथा पूर्ण नै।” ई वाक्य मेटाएब कठिन नै छल; रोज पोछल जाएत। मुदा जे घर-घरक कण्ठमे बसि जाए, ओकरा के मेटत?

बा, जे आरम्भक गमछा माथसँ लगौने छलीह, हुनकर स्मृतिमे फूलकली आ अनन्या एक छोट कपड़ा बाँधि गाछीक निचला डारिपर टाँगि देली। कपड़ा रिक्त छल। केओ पूछलक —“एहिपर नाम नै?” फूलकली कहली—“एखन नै। जखन कोनो नव अन्याय पहिल बेर काँपत, एहि कपड़ापर ओकर नाम लिखब।” रिक्त कपड़ा हवामे हलुक उड़ल। ई रिक्तता डरावन नै, तैयार छल।

अन्तिम बेर कटोराक पानि देखल गेल। ओहिमे नन्दक दैनन्दिनीक अक्षर, शिवनाथक नाम, हुलासीक हाथ, पनिडुब्बीक जल, लत्तड़ ठाकुरक चेतावनी, कलितक कागच, बिसेसरक छपाक, छोटूक खोज, उज्ज्वलक पटल, बूढ़ मुवक्किलक तिथि, सत्यव्रत मेहताक मौन, मीराक सावधानी, अनन्याक अक्षर आ आरुणिक प्रश्न—सभ एकसाथ घूमि रहल छल। पानि भरल नै, गहिर भेल।

मीरा कटोरा उठौली। सभ सोचलक, ओ पानि माटिपर उझिलती। मुदा ओ पानि नै उझिलली। कटोराक ठण्ढ धातु हुनकर हथेलीमे एक क्षण काँपल; भीजल माटि आ पुरान राखक गन्ध बच्चासभ धरि पहुँचि गेल। ओ कटोरा अनन्याक हाथमे देली। अनन्या आरुणिकेँ देली। आरुणि एक छोट बच्चाक हाथमे देलक। बच्चाक दून्हू हथेली कटोराक भारसँ तनिक झुकि गेल; पानिक बून्द किनारपर काँपैत रहल। ओकर नहमे अटकल माटि भीजि कऽ नील-धूसर भऽ गेल, आ सभक आँखि ओ छोट हाथपर टिकि गेल—जे हाथ एखन दण्ड नै, जिम्मेदारी सीखि रहल छल। बच्चा डेरायल—“गिरि जाएत।” मीरा मुस्कुरेली—“गिरत तँ माटि पी लेत। बस, नाम नै गिरबाक चाही।” बच्चा कटोरासँ एक बून्द माटिपर रखलक। ओहि बून्दसँ धूलि भीजल आ एक छोट वर्तुल बनल—कबड्डीक पहिल घेरा जेना।

एहि घेरामे कथा फेर आरम्भ भेल। चन्ना गाछीमे भूतसभ आइ खेलय नै अएलाह; ओसभ देखय अएलाह। जीवितसभ खेलैत छल। मृतकसभ पहरा दैत छल। नदी दूर बहैत छल, मुदा ओकर स्वर गाछीक पातमे छल। गोहि कतहु पानिमे रहत, कतहु पटलमे, कतहु संचिकामे, कतहु लोकक लोभमे। मुदा आब एक गाम जानि गेल छल जे गोहिक पेटसँ देह घुरि नै अबै, मुदा नाम घुरि सकै छै—जँ केओ पुकारैत रहय।

अन्तमे बूढ़बा भूत अपन डारिपर घुरलाह आ पहिल बेर निर्णायकक डण्डा माटिपर राखि देलनि। “आब निर्णय जीवित करथि,” हुनकर स्वर पातसँ झरल। पातसभ हिलल। किछु पात टूटल, किछु कोपल फूटल। चन्ना गाछीक एक बिलकुल नव हरियर बिन्दु सूर्यक उजासमे चमकल। केओ ओकरा चमत्कार नै कहलक। सभ बुझि गेल—पहरा जँ जीवित रहय, तँ सूखल ठूँठो भीतरसँ कोपल राखि सकै छै।

एहि ठाम कथा रुकै छै, समाप्त नै होइ छै। कारण जे नाम एक बेर पहरुआक हाथमे पहुँचि जाए, ओ फेर अध्याय नै माँगै छै; ओ जीवन माँगै छै। गढ़ नारिकेलक बच्चासभ जे घेरा बना कऽ खेलि रहल अछि, ताहि घेरामे कोन अध्यायक राति, कोन अध्यायक भोर आ अगिला पीढ़ीक अज्ञात दिनसभ एक संग घूमि रहल अछि। केओ सीमा पार करै छै। ओ साँस रोकि बाजै छै —“कबड्डी... कबड्डी...” फेर अचानक रुकि कऽ एक नाम पुकारै छै।

आ नाम सुनितहि चन्ना गाछीक पातसभ उत्तर दै छै।

लोकगीत: हम छी—नामक अन्तिम पहरा

लोकधुन: विदेह लोक-महागान

कहू हे सभ, 'हम छी, हम छी' कहू हे,
जाधरि एको मुँह कहत, ताधरि पहरा रहय हे।

पानि बजै, पात लिखै—हम छी, हम छी,
जकर नाम काटल गेल, से कहै—हम छी, हम छी।
गोहि देह चिबा लेलक, स्मृति नै खा सकल,
मायक ओंठपर बौआक नाम फेर जागल।
जे देखि चुप रहल, ओकर राति भारी,

जे देखि बाजि उठल, से बनल पहरुआ भारी।
ठूँठक चिरामे हरियर बिन्दु बाँचल,
एक पुकारसँ मृतक दू बेर फेर जीबि उठल।
कथा एतय नै रुकल—प्रत्येक कण्ठमे दीप धरू,
जाधरि एको मुँह कहत "हम छी", ताधरि पहरा करू।

❖

[दार्शनिक अन्तर्ध्वनि—मण्डनक मत: . आक्षेप अछि—जँ फलहि धात्वर्थ अछि, तँ "चाउर पकबैत अछि" मे चाउर कर्म किएक? मण्डनक मत।]

पोथीक अन्तिम स्वर

१.

पानि घुरल, गाछ हँसल, आ डूबल नामसभ एक-एक कऽ ऊपर उठि अपन घर घुरल।

२.

जे शिला कहियो चुप छल, से आब बाजय लागल, कारण ओहिपर आब सभक नाम लिखायल अछि।

३.

गोहि गेल, ग्राह गेल, मुदा बच्चाक ओ हाथ रहि गेल जे ऊपर उठि कऽ नाम मँगने छल।

४.

जे गाम अपन इतिहास मोन राखलक, ओतुक्का नारिकेल गाछ फेर फल देबय लागल।

५.

सत्य बीआ छल, फूटल; नाम जल छल, उठल; आ गढ़ नारिकेल फेर पृथ्वी चुनलक।

६.

जे देखि कऽ बाजल, ओकर नाम दू बेर जीअल—एक बेर देहमे, एक बेर गामक स्मृतिमे।

७.

ई कथा एतय समाप्त नै होइ छै; ई ओहि मुँहसभमे जीवित रहै छै जे कहै छै—हम छी।

परिशिष्ट १: गढ़ नारिकेल लोककोश

शून्य अध्यायक मुख्य कथा तेज करबाक लेल लोक-सांस्कृतिक विस्तृत सामग्री एतय मूल क्रममे सुरक्षित राखल गेल अछि।

गढ़ नारिकेलमे ज्ञानक अनेक रूप अछि। एकटा ज्ञान खेतक माटि छुबिते बुझि जाइत अछि जे एतय धान नीक होएत कि राहरि। एकटा ज्ञान मेघक चाल देखि बूझैत अछि जे रातिमे धार चढ़त कि नहि। एकटा ज्ञान माछक चालिसँ पानिक गहिराइ बूझैत अछि। एकटा ज्ञान पशुक देह, पात, जड़ि, दूध, गोबर, छाउर, तेल आ माटिक उपयोग जानैत अछि। एकटा ज्ञान गीतक धुनसँ अवसर चिन्हैत अछि—ई सोहर अछि, ई समदाउन, ई रोपनी, ई नाओक खेबाहक पुकार, ई भगैत, ई मर्सिया, ई निर्गुण, ई बालकक खेल-धुन। ई ज्ञान विद्यालयक विरोधी नहि, मुदा विद्यालयसँ पुरान आ विद्यालयक बाहरक अछि।

लोक-संस्कृतिक पहिल विशेषता मुँहजबानी संचरण अछि। बा नातिनकेँ कथा कहैत छथि; माए बेटीकेँ बियाहक विधि सिखबैत छथि; खेतमे अगिला पाँतिमे रोपैत स्त्री पछुलका पाँतिक नवकी बहुरियाकेँ टेक पकड़ब सिखबैत छथि; नाविक नेनाकेँ धार पढ़ब सिखबैत अछि; ढोलकिया शिष्यकेँ लिखल मात्रा नहि, तरहत्थीक दबाव, अँगुरीक चोट आ स्वरक उठान सुनबैत अछि। ज्ञान कानसँ भीतर जाइत अछि, देहमे बसैत अछि, अभ्याससँ पक्का होइत अछि।

दोसर विशेषता सामूहिक स्वामित्व अछि। लोकगीतक कोनो एक लेखक नहि; लोक ओकर रचयिता अछि। पहिल पाँति शाइत ककरो एक कण्ठसँ निकलल हो, मुदा जखन समुदाय ओकरा स्वीकारि लैत अछि, बदलैत अछि, दोहरबैत अछि, अवसरानुसार जोड़ैत अछि, तखन गीत लोकक भऽ जाइत अछि। एहि सामूहिक स्वामित्वक अर्थ ई नहि जे रचनात्मक व्यक्तित्वक मूल्य नहि; अर्थ ई जे रचना अपन सीमा तोड़ि सामूहिक अनुभवक पात्र बनि गेल।

तेसर विशेषता स्थानिक चिन्हापरची अछि। गढ़ नारिकेलक गीतमे जे नदी अछि, ओ अमूर्त नदी नहि; ओकर धारक चालि, गादक गन्ध, बाढ़िक रंग, घाट, नाह, गोहि, माछ, कमल, बान्ह आ कटान सभ एकरा विशिष्ट बनबैत अछि। जे माटि अछि, ओ खाली धरती नहि; दोखर, चिकनी, गादयुक्त, बालु-मिश्रित, पाँक, फाटल, भीजल—अनेक रूपमे उपस्थित अछि। जे गाछ अछि, ओकरा संग फल मात्र नहि, छाह, औषधि, चारा, ईंधन, कथा, देवता, भूत, पक्षी आ स्मृति

जुड़ल अछि। एहि कारण गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृति दोसर गामक नकल नहि भऽ सकैए। समान धुन होइतहुँ ओकर शब्द, लय, बिम्ब आ अवसर स्थानिक रहत।

चारिम विशेषता बहैत-बदलैत रूप अछि। लोक-संस्कृति काँचक पेटीमे बन्द वस्तु नहि। समय बदलैत अछि तँ गीतक शब्द बदलैत अछि, पेशा बदलैत अछि तँ श्रम-गीतक प्रसंग बदलैत अछि, परदेश बढ़ैत अछि तँ बटोहिया गीतमे रेल, बस, शहर, फोन, परदा आ दूरीक नव बिम्ब आबैत अछि। बाढ़िक पुरान गीतमे जँ नाव आ बैलगाड़ी छल, नव पदमे राहत-नाव, पुल, मशीन, तटबन्ध, मोबाइल-सन्देश आ सरकारी सूची आबि सकैत अछि। परम्परा स्थिर रहितहुँ मरि जाइत; बदलैत अछि तेँ जीवित अछि।

गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृति बुझबाक पहिल बाट ओकर भूगोल बुझब अछि। गामक देह स्थिर रेखासँ नहि बनल। नदी अपन धार बदलैत अछि, बाढ़ि मेड़ काटैत अछि, बालु खेतकेँ तोपि दैत अछि, गाद नव उर्वरता दैत अछि, पोखरि पाटल वा उराहल जाइत अछि, बान्ह टूटैत-बनैत अछि, गाछी कटैत अछि आ नव गाछ लगैत अछि। एहि निरन्तर परिवर्तनक बीच गाम अपन चिन्हासी बचबैत अछि। एतय भूगोल मात्र पृष्ठभूमि नहि, जीवनक सक्रिय पात्र अछि।

गढ़ नारिकेलक घर, आँगन, चूल्हि, देबाल, बर्तन, खेलौना, पूजा-वस्तु, खेतक मेड़, गहबर, पोखरिक महार—सभ माटिसँ जुड़ल अछि। माटि एतय निर्माणक पदार्थ मात्र नहि, जीवनक अन्तिम आश्रय सेहो अछि। नार-पुआरक छार समयक संग सड़ि माटि बनैत अछि; खढ़, पात, गोबर, राख, चाम, लकड़ी—सभ अन्ततः माटिमे घुरैत अछि। एहि चक्रक अनुभव लोककेँ वस्तुक अस्थिरता आ जीवनक पारस्परिकता सिखबैत अछि।

गोबरसँ नीपल आँगन स्वच्छताक साधन, सौन्दर्यक आधार आ पाबनिक पवित्र धरातल तीनू अछि। चिकनी माटिसँ पोतल देबालपर अरिपन, हाथक छाप, रंगक रेखा वा दीपक धुँआ घरक समय लिखैत अछि। वर्षा जँ पोताइ धो देत तँ फेर पोतल जाएत। ई पुनरावृत्ति केवल रखरखाव नहि; घरकेँ बारम्बार जीवित करबाक क्रिया अछि। स्त्रीक हाथ एहि पुनर्जन्मक मुख्य साधन अछि।

माटिक चूल्हिमे रान्हल भातक गन्ध, राखमे दबाओल आलू, पाथर वा माटिक सिलौटपर पीसल मसल्ला, माटिक घैलमे ठंढ पानि, सराइ-कटोरा, कुल्हड़, पूजा लेल बनल छोट महादेव, बच्चाक चिड़ै-चुनमुनी—ई सभ दैनिक उपयोग आ कला बीचक भेद मेटा दैत अछि। कारीगरक हाथ उपयोगी वस्तु बनबैत-बनबैत रूप, अनुपात, स्पर्श आ सौन्दर्य रचैत अछि। लोककला एतय अलग दीर्घामे टाँगल वस्तु नहि; ओ हाथमे, रसोइमे, पूजा-स्थलमे, खेलमे आ खेतमे घुमैत अछि।

गढ़ नारिकेलक ध्वनि-परिदृश्य पानिसँ भरल अछि। इनारमे डोलक छप, पनिघटपर घैलक टकराहट, पोखरिमे माछक छलाँग, बरखामे छप्परपर बून्द, नालामे बहैत पानि, बाढ़िक राति दूरसँ अबैत गर्जन, नावक देहपर लहरिक थपकी—ई सभ लोकधुनक मूल ताल अछि। जखन गायक “छपाक” कहैत अछि, ओ शब्द मात्र ध्वन्यनुकरण नहि रहि जाइत; ओकर भीतर दुर्घटना, डूबन, जन्म, जाल, खेल, भय आ स्मृति सभ एक संग जागि सकैत अछि।

नाविकक गीतमे साँसक माप विशेष महत्त्व रखैत अछि। धारक विरुद्ध खेवनाइमे छोट, बलगर पुकार; धारक संग बहैत काल लम्बा, खुलल स्वर; कुहासामे दिशाबोध लेल नाम वा संकेत; रातिमे भय घटेबाक लेल कथा-गान। एक गायक पाँति उठबैत अछि—दोसरा नाविक उत्तर दैत अछि। एहि पुकार-उत्तरमे केवल ताल नहि, एक-दोसराक उपस्थिति सुनिश्चित होइत अछि। अन्हार पानिमे आवाजे बतबैत अछि जे साथी एखन संग अछि।

समय ऋतुसँ बदलैत अछि। अगहनक भोर धानक गन्ध लऽ कऽ अबैत अछि; सावनक दिन कीचड़, पात, साँप आ मधुश्रावणीक कथा; भादवक राति अन्हार, गुमार, मेघ आ बाढ़िक आशंका; चैत-बैसाखमे पोखरि उराहब, खेत तैयार करब, आमक मंजरि, धूलि आ लू; जेठमे पानिक मूल्य; कार्तिकमे दीप, धानक पकनाइ आ पाबनिक क्रम। गीत ई ऋतु-स्मृति बचबैत अछि। जँ शब्दमे “कीचड़मे पएर” अछि तँ श्रोता रोपनीक समय बुझि जाइत अछि; “धानक माथ झुकल” सुनिते कटनीक दृश्य खुलैत अछि; “नाव बान्हू” सुनिते बाढ़िक संकेत जागैत अछि।

दैनिक जीवनमे विरामो सांस्कृतिक अछि। गाछतर बैसि पान खेनाइ, धूपसँ बचि कऽ किछु बेर गप करब, पोखरिक महारपर जाल सुखेनाइ, हाटसँ घुरैत बाटमे समाचार बाँटब, चूल्हिक आगि धीम भेने पुरान कथा उठेनाइ—ई सभ निष्क्रियता नहि। एहि विराममे ज्ञान, स्मृति, व्यंग्य, निर्णय, सम्बन्ध आ गीतक पद प्रसारित होइत अछि। लोकगीतक अनेक पाँति शायद एहनहि विराममे जन्म लैत अछि—ककरो टटका टिप्पणी, ककरो अनायास तुक, ककरो पीड़ा, ककरो हँसी।

खेती करनिहार लोक माटि, बीआ, हल, बड़द, मेड़, मौसम आ श्रमक ज्ञान लऽ कऽ अबैत अछि। बढ़ही हलक हर, पालो, जुआ, बैलगाड़ी, दरबाजा, खाट, नावक भाग वा घरक काठ-काज बनबैत अछि। कमार लोहेक औजार, हँसुआ, कोदारि, छूरी, काँटी, मरम्मति आ धारक काज सम्हारैत अछि। कुम्हार घैल, दीया, सराइ, कोहा, पूजा-वस्तु आ खेलौना बनबैत अछि। चर्मक कारीगर जुत्ता, पनही, ढोलकक चाम, पशु मरलापछाति आवश्यक काज आ अनेक

उपयोगी वस्तु तैयार करैत अछि। डोम बाँसक सूप, बीअनि, पेटार, टोकरी आ संस्कारक आवश्यक सामग्री बनबैत अछि। नाई, धोबी, दगरिन, कहार, मलाह, हलुआइ, पमरिया, ढोलकिया, पिपहीबाज, भण्डारी, पान उगबनिहार, तेल पेरनिहार, माछमार, पशुपालक—सभक काज जीवनक कोनो ने कोनो विधि आ दिनचर्यासँ जुड़ल अछि।

पाबनि-संस्कार सामुदायिक निर्भरता स्पष्ट करैत अछि। बियाह केवल वर-कन्याक परिवारक काज नहि; मड़बा, बाँस, माटि, बर्तन, कपड़ा, पान, मिठाइ, संगीत, सजावट, स्नान, विदाइ, बरियाती, भोजन—अनेक हाथक योग चाही। जन्मक अवसरपर दगरिनक अनुभव, सोहर गबैत स्त्री-मण्डली, नाई-धोबीक काज; मृत्युमे अर्थी, बाँस, घाट, जल, शोक-स्वर, सामूहिक उपस्थिति; पाबनिमे मूर्ति, माटि, ढोल, बलि वा भोग, फूल, पान, दीया, सफाइ—सभ परस्परता बनबैत अछि।

एहि परस्परताकेँ बराबरी मानि लेब उचित नहि। कतेको काज “जरूरी” रहल, मुदा काज करनिहारक सामाजिक सम्मान कम रहल। लोकगीत एहि विरोधाभासपर तीक्ष्ण टिप्पणी करैत अछि। जे ढोलक बिना संस्कार अधूरा, ओकर बनौनिहारकेँ दुआरक भीतर स्थान किएक नहि? जे पानि पार करबैत अछि, ओकरा सभसँ कम हिस्सा किएक? जे मृत पशु हटबैत अछि आ गामकेँ रोगसँ बचबैत अछि, ओकर स्पर्श अशुद्ध किएक? एहन प्रश्न लोकक व्यंग्य, करुण गीत, वीरगाथा आ प्रतिरोधक कथा भीतर बारम्बार उठैत अछि।

गढ़ नारिकेलमे “ईलम” केवल पेशागत दक्षता नहि; ई अनुभव, निरीक्षण, स्मृति, देहक अभ्यास आ नैतिक जिम्मेदारीक मेल अछि। बच्चा काज देखैत-देखैत सीखैत अछि। पहिने औजार पकड़ब, फेर छोट काज, फेर गलती, फेर सुधार। कियो लिखल पुस्तकसँ नहि सिखबैत जे पातर बाँस कतय मोड़त आ कतय फाटत; कारीगरक हाथक दबाव देखब पड़ैत अछि। माछक जाल कतय खसब, ई नक्शासँ नहि; हवा, पानिक रंग, माछक हलचल आ पुरान अनुभवसँ बुझल जाइत अछि।

गीत ईलमक ताल बनबैत अछि। धान कुटैत दू वा चारि मुसर एकहि लयमे उठब-खसब चाही; गीत ताल राखैत अछि। नाव खेइत कतेको हाथ एक दिशा आ एक जोरमे चलब चाही; पुकार ताल राखैत अछि। रोपनीमे पाँति सोझ राखब, झुकल देहक थकान सहब, गति बराबर करब; टेक सहारा दैत अछि। चरखामे धुन-धुन ध्वनि अपने लय बनबैत अछि; गायक ओकरा शब्द दैत अछि। एहि प्रकार श्रम संगीत रचैत अछि आ संगीत श्रमकेँ व्यवस्थित करैत अछि।

गढ़ नारिकेलक मुँहजबानी परम्परामे “सुनब” एकटा सक्रिय नैतिक काज अछि। खाली आवाज कानमे पड़ब सुनब नहि। सुनब माने वक्ताक अनुभवकेँ स्थान देब, कथा बीचमे नहि काटब, शब्दक पाछाँक भय वा लाज बूझब, पुरान रूप आ नव रूप दुनू स्वीकारब। जखन बूढ़ लोक कहैत छथि—“सुनैत रहू”—ओ केवल मनोरंजन लेल नहि, अपन स्मृति अगिला कण्ठमे रखबाक आग्रह करैत छथि।

एकहि खिस्सा अनेक बेर कहल जाइत अछि। प्रत्येक बेर श्रोता बदलैत अछि, अवसर बदलैत अछि, कथाकारक उमेर बदलैत अछि, गामक परिस्थिति बदलैत अछि। फलतः शब्दो बदलैत अछि। कखनो कोनो पात्र बढ़ि जाइत, कखनो घटना संक्षिप्त, कखनो नव उपमा जुड़ैत, कखनो गीतक पद लम्बा। लिखित दृष्टि एहि अन्तरकेँ त्रुटि कहि सकैत अछि; लोकदृष्टि एहि अन्तरमे जीवन देखैत अछि। जँ कथा बदलल नहि तँ ओ वर्तमानसँ सम्बन्ध तोड़ि देत।

मुँहजबानी परम्परामे सत्यक रूप बहुस्तरीय अछि। लोककथा ऐतिहासिक अभिलेखक जकाँ तारीख, प्रमाण आ एकरूपता नहि देत, मुदा ओ समाजक भाव-सत्य, नैतिक निर्णय, भय, आकांक्षा आ स्मृति बचबैत अछि। कोनो पोखरिक उत्पत्तिक कथा तथ्यतः असम्भव भऽ सकैत अछि, मुदा कथा ई बतबैत अछि जे लोक ओहि पोखरिक गहिराइ, रहस्य वा सामूहिक महत्त्वकेँ कोना अनुभव करैत अछि। कोनो वीरक शक्ति अतिशयोक्तिपूर्ण भऽ सकैत अछि, मुदा गाथा समाजक न्याय, निष्ठा आ साहसक आदर्श व्यक्त करैत अछि।

वीरगाथा समुदायकेँ केवल युद्धक साहस नहि सिखबैत। सच्चा वीर के? जे लालच अस्वीकार करए, सीमा रक्षा करए, कमजोरक संग ठाढ़ होए, अपन वचन निभाबए, अन्यायक विरोध करए। लोकदेवताक कथा मेहरारूक धैर्य, श्रमिकक ईमान, मल्लाहक साहस, गरीबक बुद्धि वा हाशियाक समुदायक आत्मसम्मानकेँ पवित्र रूप दऽ सकैत अछि। एहि गाथामे आधिकारिक इतिहाससँ बाहरक लोक अपन नायक पबैत अछि।

गढ़ नारिकेलक लोकगीत कविता मात्र नहि, अवसरक जीवित काज अछि। गीत गाओल जाएत किएक तँ किछु करबाक अछि—धान रोपबाक, नाव खेबाक, बच्चा सुतएबाक, नवजातक स्वागत करबाक, विवाहक विधि पूरा करबाक, बेटी विदा करबाक, देवताकेँ पुकारबाक, बाढ़िसँ जूझबाक, मृतककेँ स्मरण करबाक, अन्यायपर कटाक्ष करबाक, परदेशीकेँ मोन पाड़बाक वा भयक राति काटबाक। एहि कार्यशील स्वभावक कारण गीतक शब्द, लय, टेक, साँस आ स्वर अवसरसँ गहींर सम्बन्ध रखैत अछि।

लोकगीतक भावभूमि विस्तृत अछि। आनन्द, प्रेम, लज्जा, व्यंग्य, ताना, श्रम, आशा, विरह, रोदन, साहस, भक्ति, विद्रोह, हास्य, भय आ स्मृति—सभ एकरे भीतर स्थान पबैत अछि। एकहि गीतमे भाव बदलि सकैत अछि। विवाहक गारी हँसी सँ शुरू भऽ कऽ स्त्रीक सामाजिक पीड़ापर तीक्ष्ण टिप्पणी बनि सकैत अछि। समदाउन बेटी विदाइक विलाप होइतहुँ माएक आशीष, जीवनक ज्ञान आ नव घरमे सम्मानक आकांक्षा व्यक्त करैत अछि। बाढ़िक गीत दुःखसँ शुरू भऽ सामूहिक नाव, बाँटि खायल अन्न आ फेर घर बनएबाक संकल्पपर समाप्त भऽ सकैत अछि।

लोकगीतक भाषा सामान्यतः बोलचालक निकट रहैत अछि। शब्द कठिन होएबाक आवश्यकता नहि; ध्वनि, पुनरावृत्ति, सम्बोधन, स्थानीय बिम्ब आ टेक गीतकेँ गहींर बनबैत अछि। “हे माए”, “रौ भैया”, “सखी”, “बौआ”, “ए नदी”, “हौ नाविक”, “गे बहिना”—एहन सम्बोधन गायक आ श्रोताक दूरी घटबैत अछि। लोकगीत सुनबाक वस्तु नहि रहि सामूहिक संवाद बनि जाइत अछि।

लोकगीतक पाँति कखनो व्याकरणक पूरा वाक्य नहि होइत; ध्वनि, साँस आ भाव ओकर अर्थ पूरा करैत अछि। “हो रे”, “हाय-हाय”, “हे दैबा”, “रे सखी”, “अरे रामा”, “झूम-झूम”, “धुन-धुन”—ई सभ निरर्थक भराव नहि। ई तालक सेतु, साँसक विश्राम, भावक विस्तार आ समूहकेँ जुड़बाक संकेत अछि। लिखित पन्नापर छोट देखाइत शब्द गायनमे पूरा भाव-प्रदेश खोलि दैत अछि।

गढ़ नारिकेलक बहुत लोकगीत एके धुनपर अनेक पदमे गाओल जाइत अछि। धुन स्थिर आधार दैत अछि; प्रत्येक नव पद अलग घटना, व्यक्ति, वस्तु वा भाव जोड़ैत अछि। एहि बनावटकेँ पदावृत्तिक रूप कहल जा सकैत अछि। उदाहरणतः रोपनीक गीतक टेक एके रहत, मुदा पहिल पद मेघपर, दोसर खेतक मालिकपर, तेसर मायकेक स्मृतिपर, चारिम मजूरीपर, पाँचम हँसी-ठट्ठापर। समूह टेक दोहरबैत अछि, मुख्य गायिका नव पद उठबैत छथि।

ई रूप लोकगीतकेँ अनन्त विस्तारक सामर्थ्य दैत अछि। कोनो लिखित सीमा नहि। अवसर लम्बा तँ पद बढ़त; समय कम तँ दू-तीन पदमे गीत समाप्त। ककरो नव घटना घटल तँ अगिला बेर नव पद जुड़ि जाएत। एहि कारण लोकगीत समुदायक चलैत समाचार-पत्र, भाव-बही आ इतिहास बनि सकैत अछि।

टेक स्मृतिक आधार अछि। बच्चा वा नव गायक पूरा पद नहि जानितहुँ टेक पकड़ि समूहमे सम्मिलित भऽ सकैत अछि। धीरे-धीरे ओ पदो सीखैत अछि। टेक सामूहिक स्वामित्वक संगीतिक रूप अछि—एक कण्ठ कथा उठबैत अछि, समुदाय ओकर मूल भाव दोहरबैत अछि।

लोकगीतक पाँति सामान्यतः समान लम्बाइ राखबाक प्रयास करैत अछि, मुदा लिखित छन्दक कठोर बन्धन नहि। गायनमे स्वर लम्बा कऽ, शब्द छोट कऽ, विराम दऽ, ध्वनि जोड़ि पाँति तालमे बैसा लेल जाइत अछि। लोकगायक छन्दशास्त्रक नाम नहि जानितहुँ देह, साँस आ अभ्याससँ लयक संतुलन रखैत छथि।

लोकधुन सीधा होइत अछि, मुदा साधारण नहि। ओकर सरलता सामूहिक गायनक आवश्यकता सँ जन्मैत अछि। धुन एहन रहबाक चाही जे सुनिते पकड़ल जा सकए, खेत वा नावमे बिना अभ्यासक लोक सेहो टेक दोहरा सकए, वृद्ध आ बच्चा दुनू सहभागी बनि सकए। कठिन अलंकरण समूहकेँ दूर कऽ सकैत अछि; तें मूल धुन स्पष्ट, घुमाव सीमित आ ताल चिन्हबा योग्य रहैत अछि।

पुनरावृत्ति लोकगीतक प्राण अछि। एके शब्द वा वाक्य फेर-फेर अबैत अछि, मुदा प्रत्येक बेर भाव कने बदलि सकैत अछि। पहिल “घुरि आउ” आग्रह, दोसर प्रतीक्षा, तेसर रोदन, चारिम असम्भव आशा बनि सकैत अछि। श्रोता अर्थक एहि बदलैत छाया अनुभव करैत अछि।

पुनरावृत्ति श्रममे उपयोगी अछि। रोपनी वा धान कुटाइमे एकहि गति दीर्घ समय धरि चाही। बदलैत जटिल धुन देहक ताल तोड़ि सकैत अछि; दोहराइत टेक थकानक बीच स्थिर आधार दैत अछि। नावमे सेहो पुकारक आवृत्ति हाथक चोट बराबर रखैत अछि।

सरलता नव पद जोड़बाक सुविधा दैत अछि। गायक धुनक ढाँचा मोन राखि तत्क्षण नव शब्द बैठा सकैत अछि। एहि तात्कालिक रचनाशीलतासँ लोकगीत वर्तमान घटनापर तुरन्त प्रतिक्रिया दैत अछि। कियो मजूरी कम देलक, कियो बान्हक काज अधूरा छोड़लक, कियो पाबनिमे दम्भ देखेलक—साँझ धरि गीतक नव पद बनि सकैत अछि।

पुकार-उत्तर पद्धति गढ़ नारिकेलक सामूहिक गीतमे अत्यन्त स्वाभाविक अछि। एक गायक वा गायिका पाँति उठबैत छथि; समूह उत्तर, टेक वा अन्तिम अंश दोहरबैत अछि। ई पद्धति श्रमक नेतृत्व, समूहक एकता आ भावक विस्तार तीनू करैत अछि।

रोपनीमे आगाँ पाँतिक अनुभवी गायिका प्रश्न उठबैत छथि—“मेघ कतय अटकल?” समूह उत्तर दैत—“बलान पार अटकल हो।” अगिला पदमे प्रश्न बदलि सकैत अछि—“पिया

कतय अटकल?” समूह वैह धुनपर उत्तर दैत अछि। प्रकृति आ निजी जीवन एकहि संगीतिक ढाँचा भीतर जुड़ि जाइत अछि।

नाविकक पुकारमे उत्तर सुरक्षा-संकेत अछि। मुख्य नाविक “खिंचू” कहैत अछि, समूह ध्वनि दैत अछि; अन्हार वा कुहासामे आवाज बतबैत अछि जे सभ जागल आ संग अछि। माछमारक जाल खिंचब, भारी वस्तु उठेब, बान्हपर माटि भरब, घर छारब—एहन सामूहिक काजमे छोट पुकार-उत्तर श्रमक ताल बनबैत अछि।

धार्मिक वा आख्यानात्मक गायनमे मुख्य गायक कथा कहैत छथि, समूह “हो”, “हाय”, “जय”, “अरे”, “सुनू” वा निर्धारित टेकसँ प्रत्युत्तर दैत अछि। एहि उत्तरसँ श्रोता निष्क्रिय नहि रहैत; कथा सामूहिक रूपेँ घटैत अछि।

चन्ना गाछीक कबड्डी स्वयं पुकार-उत्तरक एक विराट रूप अछि। “कबड्डी”क निरन्तर उच्चारण साँस, सीमा आ उपस्थिति तीनूकेँ जोड़ैत अछि। जखन ई स्वर “नाम” वा “जलसमाधि”मे बदलैत अछि, खेल सामूहिक गवाही बनि जाइत अछि। एक आत्मा नाम उठबैत अछि, दोसर सभ ओकरा दोहरबैत अछि; नाम निजी स्मृतिसँ सामुदायिक स्मृतिमे प्रवेश करैत अछि।

बहुत लोकगीत मूलतः बिना आधुनिक वाद्यक गाओल जा सकैत अछि। खेतमे सभ समय ढोलक नहि रहत; पनिघटपर हारमोनियम नहि; नावमे भारी बाजा नहि। कण्ठ, ताली, पएरक चोट, औजारक ध्वनि, पानिक थपकी, मुसरक ताल, चरखाक घूमनाइ, चक्कीक घरघराहट—ई सभ स्वयं संगत बनैत अछि।

बिना वाद्यक गायनमे स्वरक सामूहिकता महत्त्वपूर्ण अछि। एके सुरक पूर्ण शुद्धता आवश्यक नहि; अलग उमेर, अलग कण्ठ आ अलग ऊँचाइक स्वर मिलि एकटा गामक ध्वनि बनबैत अछि। लोकगायनक सौन्दर्य एकल चमकमे नहि, सामूहिक बनावटमे अछि।

स्थानीय वाद्य अवसरक भाव बदलैत अछि। ढोलक विवाह, सोहर, होली, नाच, भगैत, मर्सिया वा कथा-गानमे अलग-अलग थाप लैत अछि। मृदंग भक्ति, आख्यान आ गम्भीर प्रस्तुति बढ़बैत अछि। पिपहीक तीख स्वर दूर धरि समाद पहुँचबैत अछि—बरियाती, उत्सव, जुलूस वा संकट। झाँझ, मजीरा, खजुरी, डम्फा, डंका, नगाड़ा, रसनचौकी, बाँसक झरनी आ घरेलू धातु-पात्र सेहो तालक साधन बनि सकैत अछि।

वाद्य स्थानीय कारीगरीक परिणाम अछि। ढोलकक काठ, चाम, रस्सी वा पट्टा; पिपहीक नलिका; बाँसक झरनी; मृदंगक माटि वा काठ—प्रत्येक वस्तु अनेक पेशाक सहयोगसँ बनैत

अछि। बाजाक स्वरमे कारीगरक ईलम छिपल अछि। चाम ढीला तँ थाप मन्द, अधिक कसाव तँ स्वर तीख; बरखा वा जाड़क नमीसँ स्वर बदलैत अछि। अनुभवी बाजनिहार आगि, धूप, तेल वा कसावसँ ओकरा ठीक करैत अछि।

आधुनिक बाजा गढ़ नारिकेलमे प्रवेश करैत अछि तँ पुरान ध्वनि समाप्त नहि होइत; मिश्रण बनैत अछि। हारमोनियम, ड्रम वा ध्वनि-विस्तारक यन्त्र लोकधुन संग जुड़ि सकैत अछि। मुदा जँ यन्त्र कण्ठ, अवसर आ समूहकेँ दबा देत तँ लोकगीत मंचीय प्रदर्शन बनि रहि जाएत। लोकधुनक प्राण एहि बातमे अछि जे लोक स्वयं गाबि सकए, केवल दर्शक नहि बनए।

धान कुटाइमे मुसरक चोट जँ असमान भेल तँ दुर्घटना भऽ सकैत अछि। गीत चोटक क्रम निश्चित करैत अछि। चक्की पीसैत स्त्री गोल गति संग पद दोहरबैत छथि। चरखा घूमैत अछि तँ “धुन-धुन” ध्वनि गीतक आधार बनैत अछि। कोल्हुक बड़द गोल-गोल चलैत अछि; गायक ओहि चक्करकेँ दिन, ऋतु, गरीबी वा जीवनक रूपक बना सकैत अछि।

घर छारब, माटि काटब, बान्ह मरम्मति, पोखरि उराहब, भार उठेब, नाव खिंचब, जाल समेटब—सभमे सामूहिक छोट गीत वा पुकार होइत अछि। काज कठिन जतेक, समूहक स्वर ओतेक जरूरी। गीत थकान समाप्त नहि करैत, मुदा थकानकेँ अकेला नहि रहए दैत अछि।

श्रमगीत सामाजिक टिप्पणीक खुलल स्थान अछि। खेतमे स्त्री सभ मालिक, सासुर, पति, मजूरी, गरीबी वा अन्यायपर एहन बात गाबि सकैत छथि जे सीधे कहब कठिन। समूहक टेक निजी शिकायतकेँ सामूहिक सत्य बना दैत अछि। हँसीक भीतर विरोध सुरक्षित रहैत अछि।

खेती गढ़ नारिकेलक समय, भोजन, श्रम, आशा आ भयक मूल आधार अछि। कृषि-गीत वर्षक क्रम याद रखैत अछि—बीआ चुनब, खेत जोतब, मेड़ बनब, वर्षाक बाट जोहब, रोपनी, सोहनी, पटौनी, रोग-पोका, धानक दूध भरब, कटनी, बोझा, दाउन, मड़ाइ, भण्डार, अगिला बीआ बचेनाइ। प्रत्येक चरणक अलग लय आ भाव अछि।

बीआक गीत आशाक गीत अछि। छोट दानामे पूरा वर्षक भोजन बसल अछि। बीआ हाथमे लैत किसान माटि, मेघ, श्रम आ भाग्य सभकेँ एक संग स्मरण करैत अछि। गीत बीआकेँ बच्चा, दीप, वचन वा पुरखाक देन कहि सकैत अछि।

रोपनीक गीत स्त्री-कण्ठक शक्तिशाली क्षेत्र अछि। कीचड़मे घण्टों झुकल देह, पानिमे डूबल पएर, पीठक पीड़ा, मेघ, हँसी, गारी, प्रेम, मायकेक मोन, मजूरीक प्रश्न—सभ पद बनैत अछि। एक गायिका पाँति उठबैत छथि, बाकी टेक पकड़ैत छथि। खेतक लम्बाइ गीतक लम्बाइ बनैत अछि।

सोहनी आ निराइमे गीत पौध आ खर-पतवारक भेदक संग जीवनक भेदपर टिप्पणी करैत अछि—ककरा बचाएब, ककरा उखाड़ब, के उपयोगी, के बाधा। लोकदृष्टि एहि कृषि-काजकेँ नैतिक रूपक बना दैत अछि।

कटनीक गीतमे परिश्रमक फल, अन्नक आदर, हँसुआक चमक, झुकल धान, घरक आशा आ सामूहिक बाँट रहैत अछि। मुदा उपज कम, कर्ज, हिस्सा वा मालिकक अन्याय हो तँ वैह गीत करुण वा व्यंग्यपूर्ण बनि सकैत अछि।

कृषि-गीत केवल पुरान औजारपर निर्भर नहि। नब बीआ, रासायनिक खाद, दवा, पम्प, मशीन, मजदूरक कमी, परदेश, बाजारक भाव—सभ नव पद बनि सकैत अछि। लोकधुन पुरान रहैत अछि, प्रश्न नब होइत अछि। सएह बदलैत रूप लोक-संस्कृतिक जीवितता अछि।

नदीक गीतमे केवल लहरि नहि, दिशा अछि। पूब-पछिम, दहिन-बाम, धारक चढ़ाव-उतार, घाट, किनार, बालु, गाद, भँवर, गोहि, माछ, नाव, डूबन आ पार—ई सभ शब्द जीवनक भौगोलिक ज्ञान सम्हारैत अछि। नदी गामक सीमा बनबैत सेहो अछि आ सीमा मेटबैत सेहो। बाढ़ि आयल तँ दहिन कात बाम बुझा पड़ि सकैत अछि, पुरान बाट पानिमे डूबि सकैत अछि, नया नाविक बाट बना सकैत अछि। गीत एहि चलायमान भूगोलकेँ स्मृतिमे स्थिर नहि, अपितु लचीला रूपमे राखैत अछि।

नाविक गीतक मूल भाव संग-साथ अछि। असगरे नाविक सेहो नदीसँ संवाद करैत अछि; समूहमे हो तँ एक आवाज दिशा दैत, दोसर बल, तेसर चेतावनी। नावक पातरसँ ठकठक, चप्पूक छप, पानिक थपकी आ कण्ठक पुकार एक मिश्रित ताल बनबैत अछि। नदी शान्त हो तँ लय खुलल, धार तेज हो तँ छोट आ तीक्ष्ण।

माछमारीक गीतमे प्रकृतिक प्रति आदर रहैत अछि। अनुभवी माछमार सभटा छोट माछ मारि अगिला वर्षक जीवन समाप्त नहि करए चाहैत। जालक आकार, मौसम, प्रजननक समय, पोखरिक गहिराइ आ सामूहिक बाँट सम्बन्धी ज्ञान गीत, कहबी आ नियमसँ चलैत अछि। ई लोक-पर्यावरणीय अनुशासन अछि। लिखित विभागीय आदेशसँ पहिने समुदाय अपन साधनक दीर्घ जीवन लेल मर्यादा बनौने रहल।

मछैरक अवसर गामक सामूहिक उत्सव बनि सकैत अछि। भोरसँ पानिमे लोक, किनारपर प्रतीक्षा, बच्चाक हुलास, हिस्साक चर्चा, जालक मरम्मति, माछक वर्गीकरण, पकवानक योजना। गीत एहि सम्पूर्ण आयोजनकेँ सामूहिक बनबैत अछि। मुदा हिस्साक विवाद, टोलक दूरी, विधवा वा कमजोर परिवारक अधिकारक प्रश्नो उठैत अछि। लोकगीत एहि अन्यायपर

कटाक्ष करैत अछि—जेकर घरमे पुरुष नहि, ओकर हिस्सा किएक घटत? जे पोखरिक सफाइमे काज केलक, ओकर नाम बाँटमे किएक नहि?

बाढ़िक राति गीतक स्वर अलग होइत अछि। कखनो गीत जोर-जोरसँ नहि, धीमे गाओल जाइत अछि, कारण बच्चा डेरायल, पशु अस्थिर, पानि नजदीक। टेक आश्वासन बनैत अछि —“संग छी”, “नाव आबि रहल”, “भोर हएत”, “माटि फेर उगएत।” लोकगीत संकटमे मानसिक सहारा दैत अछि।

“गोहि सभक बीच जलसमाधि”मे जलगीतक करुण रूप श्रमिकक छपाकसँ जुड़ैत अछि। मुदा गढ़ नारिकेलक सांस्कृतिक दृष्टि छपाककेँ अन्तिम बिन्दु नहि मानैत। छपाकक बाद नामक पुकार, घरक प्रतीक्षा, गवाहीक खोज, पातक लेख, गीतक टेक—ई सभ मृतककेँ सामूहिक स्मृतिमे फेर आनैत अछि। जलसमाधि निस्तब्ध विस्मृति नहि, न्याय माँगैत ध्वनि बनि जाइत अछि।

मनुक्खक जीवन गढ़ नारिकेलमे संस्कार, गीत आ सामूहिक सहभागितासँ चिन्हित होइत अछि। जनम, नामकरण, मुड़न, उपनयन, विवाह, गौना, गर्भ, मातृत्व, वृद्धावस्था, मृत्यु—प्रत्येक चरणक गीत अछि। गीत विधि याद रखैत अछि, सम्बन्धक भूमिका स्पष्ट करैत अछि, भावक दबावकेँ स्वर दैत अछि आ समुदायकेँ उपस्थित करैत अछि।

सोहर नवजातक स्वागत मात्र नहि। ओ माएक प्रसव-पीड़ा, दगरिनक ईलम, परिवारक आशा, कुलक स्मृति, बच्चाक भविष्य आ सामाजिक आकांक्षा सभ व्यक्त करैत अछि। पुत्र-पुत्री सम्बन्धी पुरान भेदभाव सेहो सोहरक शब्दमे रहि सकैत अछि; बदलैत समाज नव पद जोड़ि बेटी जन्मक उल्लास समान रूपेँ गाबि सकैत अछि। लोक-संस्कृतिक जीवितता एतय परम्पराक अन्यायपूर्ण अंशकेँ बदलबाक सामर्थ्यमे देखाइत अछि।

नामकरणक गीत नामक सामाजिक महत्त्व बतबैत अछि। नाम केवल चिन्ह नहि; परिवार, पुरखा, देवता, ऋतु, घटना, आशा आ स्मृतिक मेल अछि। “गोहि सभक बीच जलसमाधि”मे नामक अधिकार केन्द्रीय अछि, तेँ जीवन-चक्रक एहि आरम्भिक संस्कारक अर्थ आरो गहींर भऽ जाइत अछि। जे समाज जन्मपर नाम गबैत अछि, ओ मृत्यु पर नाम मेटाओल कोना स्वीकारत?

विवाहक गीत सभसँ विस्तृत भण्डार अछि। नचारी, मंगल, गारी, वर-परिछन, मड़बा, कोहबर, कन्यादान, विदाइ, समदाउन, गौना—प्रत्येक विधिक अलग धुन, अलग शब्द, अलग गायन-दल। हास्य आ करुणा एकहि क्रममे चलैत अछि। गारी सम्बन्धक तनावकेँ खेलक रूप

दैत अछि; स्त्री सभ वरपक्ष, पुरुख, लोभ, दम्भ आ सामाजिक नियमपर खुलल टिप्पणी करैत छथि।

समदाउन लोकगीतक करुण शिखर अछि। बेटी घर छोड़ैत अछि, मुदा गीत ओकरा टूटल नहि, आशीषित रूपमे विदा करैत अछि। माए अपन नोरक संग जीवनक शिक्षा दैत छथि—सम्मान राखब, अन्याय सहब नहि, अपन नाम नहि बिसरब, मायकेक बाट खुलल मानब। समदाउनमे घरक वस्तु, देहरी, तुलसी, पोखरि, गाछ, खेलक साथी, भाइ, माए-बाबू सभ बोलैत बुझाइत अछि।

गौना आ दाम्पत्य गीतमे प्रतीक्षा, लाज, प्रेम, दूरी आ देहक जागरण अछि। परदेशक कारण पति-पत्नी दूर हो तँ पुरान विरह नब आर्थिक यथार्थ ग्रहण करैत अछि। पत्र, रेल, बस, फोन, परदा—नव माध्यम गीतमे पैसैत अछि।

मृत्यु-गीत समुदायकेँ शोकक अनुशासन दैत अछि। व्यक्तिगत करुणा सामूहिक स्वर पबैत अछि। मृतकक गुण, अधूरा काज, परिवारक दशा, मृत्युकेँ घेरल अन्याय, नदी वा रोगक प्रसंग गीतमे अबैत अछि। कखनो शोक-गीत प्रतिरोध बनि जाइत अछि—जँ मृत्यु दुर्घटना नहि, उपेक्षा वा अपराधक परिणाम हो। बिसेसर, सरयू, छोटू आ अनाम श्रमिकक स्मरण एहनहि लोकविलापक नब अध्याय अछि।

अरिपन एकटा मौन गीत अछि। चाउरक पीठार, अँगुरीक रेखा, गोल, पात, पएर, कमल, जाल, सूर्य, चन्द्र, कोहबर—ई आकृति विधि आ सौन्दर्य दुनू अछि। एक पीढ़ी दोसरकेँ हाथ पकड़ि सिखबैत अछि। लिखल नाप नहि, आँखिक अभ्यास। अवसर अनुसार आकृति बदलैत अछि।

स्त्री-गीत सामाजिक सच्चाइ कहबाक सुरक्षित किन्तु तीक्ष्ण माध्यम अछि। सासुरक पीड़ा, पति-पत्नी सम्बन्ध, घरेलू हिंसा, दहेज, गरीबी, परदेश, मजूरी, गर्भ, बेटी-पुत्र भेद, जातिगत अपमान—सीधे कहब कठिन हो तँ गीतमे कहल जाइत अछि। समूहक कारण एक स्त्री अकेली नहि रहैत।

समदाउन, सोहर, रोपनी, गारी, झिझिया, मधुश्रावणी, सामा-चकेवा, भगवती गीत—एहि सभमे स्त्री केवल प्रस्तोता नहि, रचनाकार, स्मृति-रक्षक आ सामाजिक आलोचक छथि। बेटी दोसर गाम जाइत छथि तँ धुनो संग लऽ जाइत छथि। ओतय स्थानीय शब्द जुड़ैत अछि; एहि प्रकार गीत क्षेत्रक बीच यात्रा करैत अछि।

गढ़ नारिकेलक धार्मिक जीवन एकरंगी नहि। घरक देवता, ग्राम-देवता, नदी, गाछ, लोकनायक, भगवती, धर्मराज, शिव, विष्णु, दुर्गा, सूर्य, कबीरक निर्गुण वाणी, मर्सिया, झरनी, फकीरी खिस्सा—अनेक धारा एकहि भूगोलमे बहैत अछि। लोक-संस्कृति सिद्धान्तक कठोर सीमा सँ बेसी व्यवहारक सह-अस्तित्व बनबैत अछि।

दुर्गापूजाक ढोल, मूर्ति, मेला, बलि, भोग, भसान आ स्त्रीक रोदन एकटा पूरा सांस्कृतिक क्रम अछि। भसानक करुणा देवीक विदाइकेँ बेटी विदाइक भावसँ जोड़ि सकैत अछि। मर्सिया सुनैत पुरुखक हबोढकार रोदन शहादत, अन्याय आ पारिवारिक शोककेँ सामूहिक करैत अछि। अलग धार्मिक कथा होइतहुँ करुणाक मानवीय स्वर एक-दोसरासँ बात करैत अछि।

मधुश्रावणी नव दाम्पत्य, सर्प, प्रकृति, कथा आ स्त्री-संगतिक पाबनि अछि। कथा एक साँससँ दोसर साँस धरि चलैत अछि; चित्र, फूल, पात, आहार, प्रश्नोत्तर आ गीत एक संग विधि बनबैत अछि। सामा-चकेवा भाइ-बहीन, पक्षी, माटि, खेल आ कार्तिकक रातिक उत्सव अछि। छठि सूर्य, जल, व्रत, पवित्रता आ घाटक सामूहिक अनुशासन।

घड़ी पाबनि, गहबरक पूजा, चौदहो देवान, लोकदेवताक भाव, भगैत—एहि सभमे आधिकारिक पुरोहिती ज्ञानक संग स्थानीय अनुभव जुड़ैत अछि। कखनो देवता सपनामे संकेत दैत छथि, कखनो गायकपर भाव अबैत अछि, कखनो कथा रोग वा संकटकेँ अर्थ दैत अछि।

निर्गुण गायन लोककेँ जाति, रूप आ कर्मक बाहरी भेदपार आत्मा, देह, माया आ सत्यपर विचार करबैत अछि। एहन गायन राति, सत्संग वा यात्रामे होइत अछि; कठिन दार्शनिक बात लोकभाषाक सहज रूपमे अबैत अछि।

लोकधर्मक एक महत्त्वपूर्ण पक्ष परस्पर सहायता अछि। पाबनिमे सफाइ, सामग्री, बाजा, भोजन, जुलूस, घाट, सुरक्षा, पाहुन—सभ लेल अनेक हाथ चाही। गीत लोककेँ एक लयमे जोड़ैत अछि। मुदा खर्च, दम्भ, बहिष्कार वा अधिकारक विवादो होइत अछि; लोक-व्यंग्य एहि विकृतिकेँ उजागर करैत अछि।

गढ़ नारिकेलक बच्चा संस्कृति केवल बड़ लोकसँ पाओल वस्तु नहि; बच्चा अपन संसार स्वयं रचैत अछि। कबड्डी, वर-कनियाँ, भाइ-बहीन, माटिक घर, कंकड़, लकड़ीक पहिया, पोखरिक खेल, छिपनाइ, धानक पुआर, बाँसक टुकड़ा, चिड़ै-पक्षीक नकल—ई सभ बाल-लोकसंस्कृतिक रूप अछि।

खेल सामाजिक भूमिका सिखबैत अछि, मुदा बच्चा ओकरा बदलिए दैत अछि। वर-कनियाँ खेलमे लड़की वर बनि सकैत अछि, छोट बच्चा पुरोहित, माटिक ढेपा भोजन। ई खेल कठोर सामाजिक संरचनाकेँ लचीला करैत अछि।

बालगीत छोट, पुनरावृत्तिपूर्ण आ गति-संग जुड़ल रहैत अछि। गिनती, चुननाइ, दौड़, पकड़म-पकड़ाइ, झूला, वर्षा, चान, चिड़ै, जनावर—सहज बिम्ब। एहन गीत भाषा, स्मृति, ताल आ समूहक नियम सिखबैत अछि।

पहेली बच्चाकेँ पर्यावरण देखब सिखबैत अछि। पात, फल, औजार, पशु, चन्द्र, सूरज, नदी, घरक वस्तु—उपमा रूपमे अबैत अछि। उत्तर खोजैत बच्चा रूप, गुण आ उपयोगपर ध्यान दैत अछि।

भूतक कथा डर मात्र नहि सिखबैत। कोन ठाम राति नहि जाएब, पोखरिक गहिराइ, गाछीक सीमा, इनारक सावधानी, मृतकक आदर—ई व्यावहारिक शिक्षा अलौकिक कथा भीतर राखल जाइत अछि। चन्ना गाछीक कबड्डी बालखेल आ मृतक-स्मृति बीच पुल बनबैत अछि।

अनन्या जखन कथा फेर लिखैत अछि, तखन बाल-लोकसंस्कृति इतिहासक अगिला अध्याय बनि जाइत अछि। बच्चा केवल पुरान कथा दोहरबैत नहि; ओ प्रश्न करैत, रूप बदलैत, नब माध्यम अपनबैत आ स्मृतिमे नव बाट बनबैत अछि।

गढ़ नारिकेलक कतेको लोकगीत कथा कहैत अछि। एहन गीतमे पात्र, घटना, यात्रा, संघर्ष, प्रेम, वचन, छल, युद्ध, बाढ़ि, अकाल, देवता, लोकनायक वा सामाजिक संकट पद-दर-पद खुलैत अछि। लिखित इतिहास जतय राज, सन, आदेश आ युद्धक सूची बनबैत अछि, आख्यानात्मक लोकगीत सामान्य लोकक अनुभव, भय, आशा आ नैतिक निर्णय बचबैत अछि।

आख्यान-गीतक स्मरणीयता धुन आ टेकसँ बढ़ैत अछि। लम्बा कथा गद्य रूपमे भूलि सकैत अछि, मुदा धुनक सहारे पद टिकैत अछि। मुख्य गायक कथाक क्रम जानैत छथि; समूह टेक, प्रश्न वा प्रतिक्रिया दैत अछि। बीच-बीचमे कथाकार गद्य भाषामे प्रसंग बुझा कऽ फेर गीत उठबैत छथि। एहि मिश्रित रूपमे कथा आ गीत एक-दोसराकेँ सहारा दैत अछि।

एक आख्यानक अनेक रूप होएब स्वाभाविक अछि। कोनो टोल वीरक साहस बढ़ा कऽ गाबत, दोसर ओकर माएक दुःख, तेसर विश्वासघात, चारिम देवताक हस्तक्षेप। विवाहसँ बेटी-धी जे धुन दोसर गाम लऽ जाएत, ओहि गामक स्थानीय कथा ताहिमे जुड़ि सकैत अछि। फलतः गीत यात्रा करैत-करैत बदलैत अछि।

आख्यान-गीत लोकक नैतिक शिक्षा अछि, मुदा उपदेशक रूपमे नहि। श्रोता पात्रक कर्म, परिणाम आ समुदायक प्रतिक्रिया सुनि स्वयं निर्णय करैत अछि। लालच स्वीकार करनिहारक अपमान, वचन निभौनिहारक सम्मान, कमजोरक रक्षा करनिहारक लोकदेवता रूप, अन्यायीपर सामूहिक दण्ड—एहि सभक माध्यमसँ मूल्य प्रसारित होइत अछि।

“गोहि सभक बीच जलसमाधि” स्वयं आधुनिक लोक-महागाथाक रूप धारण करैत अछि। पुल, ठेकेदार, अदालत, कागच, स्क्रीन, बैंक, परदेश, गाम, नदी आ भूत—सभ एकहि आख्यानमे जुड़ैत अछि। एतय पुरान गाथाक वीर तलवार मात्र नहि उठबैत; कियो नाम लिखैत अछि, कियो प्रमाण बचबैत अछि, कियो पीड़ितक संग ठाढ़ होइत अछि, कियो बच्चाकेँ ठगीसँ बचब सिखबैत अछि। आधुनिक साहसक ई रूप लोकगीतमे प्रवेश करबाक योग्य अछि।

लोकगीत गामक दर्पण मात्र नहि, कखनो हथौड़ो अछि। ओ समाजक असमानता, दम्भ, लोभ, अन्याय, पाखण्ड, कचहरीक देरी, मालिकक कंजूसी, वरपक्षक अहंकार, दहेज, जातिगत अपमान, शोषण, सरकारी उपेक्षा आ पारिवारिक हिंसापर चोट करैत अछि। गीतक व्यंग्य एतेक तीक्ष्ण भऽ सकैत अछि जे सीधे कहल बातसँ बेसी असर करए।

विवाहक गारी सामाजिक टिप्पणीक मान्य अवसर अछि। हँसीक आवरण भीतर वर, सासुर, लोभी सम्बन्धी, दम्भी पुरुख आ असमान सम्बन्धपर आलोचना होइत अछि। सभ हँसैत अछि, मुदा शब्द मोनमे रहि जाइत अछि। स्त्रीक दबाओल अनुभव सामूहिक रूपेँ सुनाइ पड़ैत अछि।

श्रमगीत मजूरी आ श्रमिकक हालतपर टिप्पणी करैत अछि। मालिक छाहरिमे, मजदूर रौदमे; उपज भरल, मजदूरी अधूरी; पुल ऊँच, श्रमिकक झोंपड़ी टपकैत—एहन विरोध गीतमे सीधा बिम्ब बनैत अछि।

धार्मिक गीतो पाखण्डपर टिप्पणी कऽ सकैत अछि। बाहरी आडम्बर, महँगा आयोजन, दानक प्रदर्शन, कमजोरक बहिष्कार—लोकव्यंग्य देवताक नामपर होइत अन्यायकेँ उजागर करैत अछि। सच्ची भक्ति सामूहिक भलाई, भोजन, जल, करुणा आ न्यायसँ जुड़ल मानल जाइत अछि।

आधुनिक ठगी, नकली फोन, निजताक चोरी, स्क्रीनक भय, ऑनलाइन कर्ज आ डिजिटल ब्लैकमेलक विषय सेहो लोकगीतक बाहर नहि। उज्ज्वल झाक त्रासदी पुरान विरह वा भय-गीतक नब प्रसंग बनि सकैत अछि। टेक हो सकैत अछि—अकेला नहि रहू, संग बजाउ, लाज अपराधीक माथ अछि। लोक-संस्कृति आधुनिक संकटकेँ अपन भाषामे बुझबैत अछि।

गढ़ नारिकेलक लोकजीवन केवल करुणा आ संघर्षसँ भरल नहि; हास्य ओकर जीबैत रहबाक बल अछि। कठिन श्रम, गरीबी, बाढ़ि, सामाजिक तनाव आ पारिवारिक बोझक बीच लोक हँसीक बाट बनबैत अछि। उपनाम, अतिशयोक्ति, नकल, तात्कालिक तुक, उलटबाँसी, गारी, पहेली आ खिस्सा—हास्यक अनेक रूप अछि।

लोक-हास्य ऊपरसँ नीचाँ आ नीचाँसँ ऊपर दुनू दिशामे चलि सकैत अछि, मुदा ओकर नैतिक मूल्य एहि बातपर निर्भर जे ओ कमजोरक अपमान करैत अछि कि शक्तिशालीक दम्भ तोड़ैत अछि। न्यायपूर्ण व्यंग्य लोभी, पाखण्डी, अन्यायी, ढोंगी आ दम्भी लोककेँ लक्ष्य करैत अछि। जाति, गरीबी, देहक विकलता वा पीड़ितक दुःखपर हँसी लोक-संस्कृतिक मानवीय मूलक विरुद्ध अछि।

कामक बीच हास्य थकान घटबैत अछि। रोपनीमे एक गायिका टटका पद जोड़ि देत, समूह हँसत, देहक बोझ कने हल्का। नाविक संकट टारलापर घटना खिस्सा बनबैत अछि। बच्चा बड़ लोकक चालक नकल करैत अछि।

भूतक कथा सेहो हास्यपूर्ण भऽ सकैत अछि। भूत मनुक्खक मूर्खता देखिकऽ हँसैत अछि, अधिकारीक भाषा नहि बुझैत, वा उलटे मनुक्ख भूतसँ बेसी भयावह निकलैत अछि। “गोहि सभक बीच जलसमाधि”मे एहन उलटबाँसी गम्भीर सामाजिक आलोचना बनैत अछि—पनिडुब्बी कहैत अछि, ओ पानिमे खिंचैत अछि, मुदा ई लोक पानिमे धकेलैत अछि।

हास्य स्मृतिमे बात टिकबैत अछि। सूखा उपदेश भूलि जाइत अछि, चुटीली कहबी रहि जाइत अछि। तें लोकन्याय बेसीकाल व्यंग्यक रूपमे पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत अछि।

लोक-संस्कृति केवल लम्बा गीत वा कथा नहि। छोट कहबीमे पीढ़ीक अनुभव सिमटल रहैत अछि। खेत, नदी, पशु, गाछ, ऋतु, सम्बन्ध, न्याय, श्रम आ लोभक सम्बन्धी कहबी व्यवहारक मार्गदर्शन करैत अछि।

कहबी स्मरणीय होएबाक लेल लय, अनुप्रास, विरोध, उपमा वा तुकक सहारा लैत अछि। “झूठ पाथर, सत्य बीआ” प्रकारक विरोध पूरा दर्शन छोट रूपमे दैत अछि। “गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि” देह, मृत्यु, स्मृति आ न्यायक सम्बन्ध एक वाक्यमे खोलैत अछि।

कहबीक उपयोग प्रसंगानुसार बदलैत अछि। बूढ़ लोक चेतावनी लेल कहैत छथि; स्त्री विवादमे; किसान मौसम बुझबैत; बच्चा खेलमे; कथाकार आख्यानक मोड़पर। एकहि कहबी नब परिस्थिति पाबि नब अर्थ दैत अछि।

कखनो कहबी समाजक पुरान पूर्वग्रह सेहो बचबैत अछि। लोक-संस्कृतिक सम्मानक अर्थ प्रत्येक पुरान वाक्यकेँ सत्य मानब नहि। जे कहबी स्त्री, जाति वा गरीबकेँ नीचा देखबैत अछि, ओकर समीक्षा, उलटबाँसी वा नब रूप जरूरी अछि। जीवित लोकसंस्कृति अपन भीतरक अन्याय बदलि सकैत अछि।

गढ़ नारिकेलक लोकगीतक आत्मा स्थानीय बोलीमे अछि। मानकीकृत भाषा लेखन आ व्यापक सम्पर्क लेल उपयोगी अछि, मुदा गीतक सम्बोधन, ध्वनि, लघु रूप, टोन, ताना, प्रेम आ व्यंग्य स्थानीय उच्चारण बिना अधूरा भऽ सकैत अछि। “माए”, “बौआ”, “भैया”, “सखी”, “गे”, “रौ”, “हौ”, “छै”, “छिऐ”, “जेमे”, “आबह”—एहन रूप केवल भाषा नहि, सम्बन्धक तापमान दैत अछि।

लोकगीत गायक अनुसार शब्द बदलैत अछि। एक कोनमे “पानि”, दोसरमे “पानी”; एक ठाम “घुरि आउ”, दोसर “घुरि आबह”; एक टोलक टेक दोसर टोलमे कने अलग। एहि अन्तरकेँ मेटा एकरूप करब गीतक देह काटब होएत।

मुदा स्थानीयता अस्पष्टता नहि बनए। जँ गीत पुस्तकमे छपैत अछि, आवश्यक ठाम कठिन शब्दक छोट अर्थ देल जा सकैत अछि, मुदा मूल स्वर नहि बदलल जाए। उच्चारणक अतिरंजित अक्षर-फोड़ रूपसँ बचब चाही; गीत अर्थपूर्ण, स्वाभाविक मैथिलीमे रहए।

बोलीक परिवर्तन परदेश आ शिक्षा सँ होइत अछि। नव पीढ़ी शहरक शब्द आनैत अछि; पुरान पीढ़ी स्थानीय नाम। गीत दुनूकेँ मिला सकैत अछि। मोबाइल, खाता, परदा, सन्देश सन नव वस्तु स्थानीय क्रिया, सम्बोधन आ उपमासँ मैथिली बनि जाइत अछि।

लोकगीतक “असल” रूप खोजब कठिन अछि, किएक तँ लोकगीत अपन अनेक रूपमे जीवित अछि। एक गामक भीतर टोल-दर-टोल पद बदलि सकैत अछि। एक गायिका अपन माएक संस्करण गाबैत छथि, दोसर सासुक, तेसर रेडियो वा मेला सँ सुनल रूप।

रूपान्तरक कारण अनेक अछि—स्मृतिक भूल, रचनात्मक जोड़, अवसरक आवश्यकता, स्थानीय नाम, सामाजिक परिवर्तन, गायनक अवधि, धार्मिक प्रभाव, परदेशी सम्बन्ध, नब बाजा, मंचीय प्रस्तुति। एहि सभसँ गीतक धुन, ताल, पदक क्रम वा टेक बदलैत अछि।

कानसँ सीखल गीतमे लिखित स्थिरता नहि, मुदा देहगत स्थिरता रहैत अछि। गायक पाँतिक ठीक शब्द भूलि सकैत अछि, पर धुनक मोड़, टेकक ठाम, भावक उठान आ ताल मोन रहैत अछि। ओही आधारपर नव शब्द स्वतः जन्म लैत अछि।

लेखन वा ध्वनि-अभिलेखन लोकगीत बचेबाक महत्त्वपूर्ण साधन अछि, मुदा ओकरा अन्तिम प्रामाणिक रूप घोषित नहि करबाक चाही। प्रत्येक अभिलेख एक अवसरक एक प्रस्तुति अछि। संगमे गायक, स्थान, अवसर, ऋतु, समूह आ संस्करणक जानकारी रहब उपयोगी अछि।

“गोहि सभक बीच जलसमाधि”क अध्यायारम्भ वा अध्यायान्त लोकगीत सेहो एहि परम्पराक आधुनिक विस्तार बनि सकैत अछि। लिखल होइतहुँ ओकर धुन देल अछि, टेक सामूहिक बनाओल जा सकैत अछि, गायक पद बढ़ा सकैत अछि। लिखित रचना लोकमे प्रवेश कऽ नव मुँहजबानी जीवन पाबि सकैत अछि।

गढ़ नारिकेलक बहुत लोक शिक्षा, नोकरी, मजदूरी वा व्यवसाय लेल शहर आ परदेश जाइत छथि। परदेश गामक संस्कृति कमजोर करैत सेहो अछि, नव अनुभव आनैत सेहो। घरक श्रम-विन्यास बदलैत अछि; खेतमे मजदूरक कमी, वृद्ध आ स्त्रीपर बोझ, खाली घर, पाबनिमे कम उपस्थिति। दोसर कात शहरसँ पाइ, शिक्षा, औजार, नब विचार, उपचार, संचार आ नब धुन अबैत अछि।

बटोहिया आ परदेशिया गीत एहि अनुभवक मुख्य रूप अछि। पुरान गीतमे डाक, पथिक, बैलगाड़ी वा नाव छल; आब रेल, बस, हवाई जहाज, फोन, भिडियो-संवाद, पैसा पठेब, छुट्टी, महानगरक कोठरी आ कारखानाक पारी जुड़ि गेल।

परदेशी लोक अपन भोजन, माछ, पान, पाबनि, गीत आ बोली शहरमे संग लऽ जाइत अछि। शहरक छोट कोठरीमे सामा-चकेवा, छठि, मधुश्रावणी, सोहर वा विवाहगीत गाओल जाइत अछि। स्थानीय सामग्री नहि भेटल तँ विकल्प बनैत अछि। संस्कृति स्थान बदलैत अछि, मुदा गामक स्मृति संग रहैत अछि।

घुरि अबैत लोक नब शब्द आ आदत आनैत अछि। कखनो संघर्ष होइत अछि—पुरान लोक “ई हमर ढंग नहि” कहैत, नव पीढ़ी परिवर्तन चाहैत। लोक-संस्कृति एहि वार्ताक माध्यम अछि। पुरान धुनमे नव पद जोड़ि दुनू पीढ़ी भेटि सकैत अछि।

परदेशक दुःख केवल दूरी नहि; असुरक्षित श्रम, चिन्हारिक संकट, भाषा, कर्ज, अकेलापन आ मृत्यु सेहो। जँ परदेशमे लोक मरि जाए आ नाम, देह वा मुआवजा घर नहि पहुँचे, तखन लोकगीत घर आ परदेश बीच गवाहीक पुल बनैत अछि।

समयक संग इनार घटैत अछि, चापाकल बढ़ैत अछि; नार-पुआरक घरक संग ईंटा-सीमेण्ट; बैलगाड़ीक संग मोटर; हाथक औजारक संग मशीन; मुँहजबानी समादक संग फोन। प्रत्येक परिवर्तन सुविधा आ हानि दुनू लैत अछि।

चापाकल पानि नजदीक आनैत अछि, मुदा इनारक सामूहिक स्थल घटैत अछि। पनिघटपर भेट, गीत, समाचार आ सम्बन्ध कम भऽ सकैत अछि। नल वा मोटर पानि तेजी सँ दैत अछि, मुदा जलस्तर, साझा अधिकार आ मरम्मतिक नब प्रश्न उठैत अछि।

ईंटा-सीमेण्ट घर टिकाऊ बुझाइत अछि, मुदा माटि, गोबर, स्थानीय छार, मौसमानुकूल हवा आ कारीगरीक ज्ञान घटैत अछि। पुरान घरक प्रत्येक मरम्मति सामूहिक ईलम जीवित रखैत छल; तैयार सामग्री एहि सम्बन्धकेँ कम करैत अछि।

मशीन कृषि श्रम घटबैत अछि, मुदा श्रमगीतक अवसर घटा सकैत अछि। धान कुटबाक मशीन मुसरक सामूहिक ताल मेटा दैत अछि। तें गीतकेँ नब अवसर खोजब पड़त—मेला, विद्यालय, परिवार, ध्वनि-अभिलेख, नब श्रम।

सड़क गामकेँ बजार, अस्पताल, शिक्षा आ संसारसँ जोड़ैत अछि; संगहि जमीन, दुर्घटना, शोर, पलायन आ बाहरी प्रभाव आनैत अछि। लोकगीत परिवर्तनक लाभ-हानि दुनू लिखैत अछि।

मोबाइल गढ़ नारिकेलक मुँहजबानी परम्पराकेँ नष्ट करबाक यन्त्र मात्र नहि; ओकरा नब विस्तार देबाक साधनो भऽ सकैत अछि। गीत रिकॉर्ड होइत अछि, परदेशी परिवार सुनैत अछि, वृद्धक कण्ठ बचैत अछि, नव पीढ़ी धुन सीखैत अछि।

मुदा परदा सामूहिक गायनकेँ व्यक्तिगत उपभोगमे बदलि सकैत अछि। लोक स्वयं गाबैक बदला विडियो देखैत रहि जाए। ध्वनि-विस्तारक यन्त्र एक गायककेँ बहुत ऊँच बना समूहक स्वर दबा सकैत अछि। लोकधुनक प्राण सहभागितामे अछि, दर्शकत्वमे नहि।

डिजिटल संसार नब खतरा आनैत अछि—नकली आवाज, भयक कॉल, कर्ज, निजताक चोरी, ब्लैकमेल, झूठ समाद, एकाकीपन। लोक-संस्कृति एहि संकटपर सामूहिक रक्षा-पद्धति बना सकैत अछि। छोट चेतावनी गीत, विद्यालयक सामूहिक टेक, परिवारक संवाद—“अकेला नहि रहू”, “पहिने घरमे कहू”, “लाज अपराधीक”, “खाता नहि दिअ”—नब लोकनीति बनि सकैत अछि।

उज्ज्वल झाक कथा एहि नब जलसमाधिक प्रतीक अछि—पानि बिनु डूबन। पुरान गामक लोकज्ञान जँ नब भाषा ग्रहण करए, तँ स्क्रीनक गोहिकेँ चिन्हब सिखा सकैत अछि। गामक सामूहिकता व्यक्ति केँ अकेला होएबसँ बचबैत अछि।

नब माध्यममे लोकगीत प्रकाशित करैत काल सहमति आ गरिमाक ध्यान जरूरी अछि। ककरो शोक, निजी गीत वा स्त्री-मण्डलीक अन्तरंग गायन अनुमति बिना प्रसारित करब सांस्कृतिक चोरी अछि। लोकगीत सामूहिक होइतहुँ प्रत्येक प्रस्तुति आ व्यक्तिक अधिकार रहैत अछि।

गढ़ नारिकेलक लोकगीतक भण्डारकेँ कठोर खाँचामे बाँटब सम्भव नहि, किएक तँ एक धुन अनेक अवसरमे रूप बदलि सकैत अछि। तैयो सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बुझबाक लेल किछु प्रमुख धुन-परिवार चिन्हित कएल जा सकैत अछि।

पराती—भोर, जागरण, नब आरम्भ, देव-पुकार आ आशाक धीम-उदित लय। एहि धुनमे रातिक अन्हार धीरे-धीरे हटैत अछि। उपन्यासक अध्यायारम्भक सकारात्मक गीत लेल पराती विशेष उपयोगी अछि।

सोहर—जनम, नब जीवन, घरमे नव स्वर, माएक पीड़ा आ परिवारक आनन्द। सोहरक धुन केवल शिशु जन्म नहि; रूपक रूपमे नब विचार, नब गवाही, नब साहसक जन्मो गाबि सकैत अछि।

समदाउन—विदाइ, विरह, माएक नोर, देहरी, मायके, आशीष आ दूरी। करुण गीतक मुख्य आधार, मुदा एकर अन्तर्गत सम्मान आ आत्मबलक संदेशो रहैत अछि।

बटगबनी वा बटोहिया—यात्रा, परदेश, बाट, नदी पार, रेल-बस, घरक स्मृति, घुरबाक आशा। कथा-जगतमे गामसँ शहर, अदालत, विदेश वा फेर गढ़ नारिकेलक यात्रा लेल उपयुक्त।

रोपनी—कीचड़मे सामूहिक श्रम, स्त्री-मण्डलीक पुकार-उत्तर, मेघ, मायके, मजूरी, हँसी आ सामाजिक टिप्पणी। लय मध्यम, दोहराइत, देहक गति संग।

सोहनी वा निराइ—खर-पतवार उखाड़ब, खेत बचाब, उपयोगी-अनुपयोगीक भेद, धैर्य आ क्रमबद्ध श्रम। सामाजिक रूपक लेल तीक्ष्ण।

कटनी—फल प्राप्ति, हँसुआ, झुकल धान, अन्न, श्रमक सम्मान, बाँट आ उत्सव। विजयक गीत बनि सकैत अछि, मुदा अन्यायपूर्ण हिस्सापर करुणो।

झूमर—मध्यम लय, गोल गति, नृत्य, सामूहिक आनन्द, प्रेम, व्यंग्य वा कथा। एकर अनेक स्थानीय रूप सम्भव।

जट-जटिन—संवाद, स्त्री-पुरुख, वर्षा, घर, अभाव, प्रेम आ सामाजिक परिस्थिति। प्रश्नोत्तर रूपक कारण जीवित नाटकीयता।

सामा-चकेवा धुन—भाइ-बहीन, पक्षी, माटिक प्रतिमा, कार्तिकक राति, खेल आ सामूहिक स्त्री-कण्ठ। स्मृति, सम्बन्ध आ घरघुरनी भाव लेल उपयुक्त।

झिझिया—छिद्रयुक्त पात्रमे दीप, अन्हारक बीच उजास, स्त्री-मण्डली, नृत्य आ सामूहिक पहरा। भय, रोग, अन्हार वा झूठक बीच छोट प्रकाशक रूपक।

भगैत—लोकदेवता, वीरकथा, भाव, मृदंग वा खजुरीक ताल, आख्यान आ सामूहिक उत्तर। गम्भीर कथा, न्याय, प्रतिरोध आ लोकनायक लेल।

नचारी—भक्ति, आत्मसमर्पण, करुण पुकार, शिव वा लोकदेवताक स्मरण, धीम भाव। व्यक्तिगत पीड़ा सामूहिक बनबैत अछि।

निर्गुण—देह, आत्मा, माया, सत्य, जाति-पार मनुष्यता आ जीवनक अस्थिरतापर विचार। कम वाद्य वा एकल कण्ठमे प्रभावशाली।

मर्सिया—शहादत, मृत्यु, परिवारक रोदन, इतिहास आ नैतिक स्मृति। सामूहिक करुणा आ अन्यायक स्मरणक गहन रूप।

झरनी—तालबद्ध सामूहिक प्रस्तुति, बाँस वा स्थानीय साधन, मर्सियाक प्रसंग वा जुलूस। ध्वनि आ देहगत लयक मेल।

नाविक-विरहा—धार, नाव, दूर किनार, डूबन, घरक प्रतीक्षा, पुकार-उत्तर। “जलसमाधि”क कथा-मूलसँ स्वाभाविक सम्बन्ध।

माछमार गीत—जाल, पोखरि, माछ, बाँट, हवा, पानिक गहिराइ आ सामूहिक श्रम। लय काज अनुसार छोट आ बलगर।

बाल-कबड्डी धुन—साँस, दौड़, सीमा, समूह आ टेक। चन्ना गाछीक भूतक कबड्डीसँ जुड़ि स्मृति-गीत बनि सकैत अछि।

आँगन गीत—घरक दैनिक काज, बच्चा, सम्बन्ध, हँसी, स्त्री-संवाद, चूल्हि, अन्न आ ऋतु। बिना वाद्य वा हलुक ताली।

जागरण गीत—सामूहिक चेतना, राति भरि पहरा, देवता, संकट, न्याय वा लोक-अभियान। कथा-जगतमे नाम-बचाओ अभियानक धुन बनि सकैत अछि।

ई धुन-नाम कठोर आदेश नहि। एक गायक “पराती”मे बटगबनीक पद जोड़ि सकैत अछि, रोपनीक लयमे नब सामाजिक गीत, भगैतमे आधुनिक अन्यायक कथा। लोकधुनक सत्य ओकर उपयोग आ सामूहिक स्वीकारमे अछि।

लोकगीत संकलन केवल शब्द उतारि लेब नहि। गीत ककरा द्वारा, कोन अवसरपर, कोन टोलमे, कोन ऋतुमे, केकर उपस्थिति मे, कोन वाद्य संग, कोन भावमे गाओल गेल—ई जानकारी गीतक अर्थक हिस्सा अछि। एकहि पाँति विवाहमे हास्य, शोकमे करुणा वा खेतमे व्यंग्य बनि सकैत अछि।

गायकक सहमति आवश्यक अछि। विशेषतः स्त्री-मण्डलीक अन्तरंग गीत, शोकगीत, निजी कथा, जातिगत अपमान वा परिवारक संवेदनशील प्रसंग अनुमति बिना सार्वजनिक नहि करब चाही। लोकगीत सामूहिक परम्परा अछि, मुदा प्रस्तुति देनिहार व्यक्तिक गरिमा आ अधिकार बनेल रहैत अछि।

शब्द ज्योंक-त्यों लिखैत काल उच्चारणक सम्मान हो, मुदा एते अक्षर-फोड़ नहि जे अर्थ टूटि जाए। मूल पाँति, आवश्यक अर्थ-संकेत, धुन, अवसर आ संस्करण अलग-अलग देल जा सकैत अछि।

एक संस्करणकेँ “शुद्ध” कहि आन संस्करणकेँ गलत नहि ठहराओल जाए। वृद्ध, स्त्री, युवा, अलग टोल, परदेशी समूह—सभक रूप दर्ज हो। भिन्नता लोकगीतक संपदा अछि।

ध्वनि-अभिलेखन संग लिखित पाठ उपयोगी अछि। केवल आवाज रहत तँ खोज कठिन; केवल शब्द रहत तँ धुन, ताल, उच्चारण, भाव आ समूहक उत्तर खोएत। चित्र वा चलचित्र अवसरक देहगत रूप बचबैत अछि, मुदा सहमति आ निजताक सावधानी चाही।

विद्यालयमे लोकगीत पढ़ाओल जाए तँ ओकरा मंचीय प्रतियोगिता भरि नहि बनाओल जाए। बच्चाकेँ स्थानीय वृद्ध, कारीगर, किसान, माछमार, गायिका आ बाजनिहारसँ सुनबाक अवसर देल जाए। गीत संग काज, ऋतु, वस्तु, कथा आ सामाजिक इतिहास बुझाओल जाए।

लोकगीतकेँ बजारमे बेचब वा बाहरी मंचपर प्रस्तुत करैत काल समुदायक श्रेय, कलाकारक मेहनताना आ सांस्कृतिक सन्दर्भ सुरक्षित रहए। केवल “अनाम लोकगीत” लिखि स्थानीय गायक आ समुदायक योगदान मेटा देब नव प्रकारक नाम-चोरी हएत।

गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृति कानूनक विकल्प नहि, मुदा न्याय-बोधक आधार अछि। कानून कागच, साक्ष्य, प्रक्रिया आ आदेश चाहैत अछि; लोक-स्मृति वस्तु, आवाज, गन्ध, पगचिन्ह, गीत, सामूहिक अनुभव आ नैतिक विश्वसनीयता पढ़ैत अछि। दुनूक संवाद जरूरी अछि।

नन्द आरुणिक काज लोक-स्मृति आ आधुनिक प्रमाण बीच पुल बनब अछि। ओ नदीक नाम सुनैत छथि, मुदा डायरीमे लिखैत सेहो; जूता आ गमछा सम्हारैत छथि, आवेदन सेहो दैत; गामक पात पढ़ैत छथि, अदालतक भाषा सेहो सीखैत। न्याय लेल दुनू ज्ञान-पद्धतिक मेल आवश्यक अछि।

बा लोकस्मृतिक नैतिक आधार छथि। हुनका लेल वस्तु निर्जीव नहि—अकेले घुरल जूता पूरा भीड़क संकेत, भीजल कागच गन्धक प्रमाण, पात पुरखाक लेख। ई दृष्टि वस्तुकेँ मानवीय कथा संग जोड़ैत अछि।

अनन्या आ आरुणि नन्दनक पीढ़ी लोकन्यायकेँ शिक्षा, प्रश्न, लेखन आ नब माध्यममे लऽ जाइत अछि। परम्परा तखन जीवित रहत जखन नव पीढ़ी केवल श्रद्धा नहि, आलोचनात्मक प्रेमसँ ओकरा ग्रहण करत।

चन्ना गाछी गामक दबाओल इतिहासक रात्रिकालीन सभागार अछि। दिनमे जे नाम नहि बजाओल जाइत, रातिमे भूत ओकरा पुकारैत अछि। दिनमे जे मामला कागचमे बन्द, गाछीमे खेल बनि खुलैत अछि। खेलक नियम लोकन्यायक नियम बनैत अछि—सीमा पार करू, नाम बचाउ, साँस टूटलासँ पहिने घुरू।

भूत, प्रेत, राकश, लोथ, पनिडुब्बी आ पीपरक ब्रह्मा गामक भय-कल्पना मात्र नहि। ई मृत्यु, अधूरा संस्कार, अकाल, जल, जंगल, देह आ स्मृतिक लोकश्रेणी सभ अछि। आधुनिक अपराध जखन गाममे प्रवेश करैत अछि, ई पुरान आकृति ओकर अर्थ बुझबाक रूपक दैत अछि। स्क्रीनक गोहि, कागचक गोहि, तारीखक गोहि—पुरान जनावर नब व्यवस्था भीतर पहिचानल जाइत अछि।

नारिकेल पात गामक वैकल्पिक अभिलेख अछि। कागच काटि सकैत अछि, पात उगा सकैत अछि। कागचपर मोहर ऊपरसँ लगैत अछि; पातपर नाम भीतरक रससँ उभरैत अछि। पात स्थायी पाथर नहि, सुखाएत, झरत, फेर नब पात आएत—लोकस्मृतिक बहैत रूपक।

नदी मृतकक असल नाम चिन्हैत अछि। एहि कल्पनामे लोकसंस्कृतिक विश्वास अछि जे प्रकृति मनुक्खक बनाओल झूठसँ पूर्णतः अधीन नहि। रजिस्टर “अनुपस्थित” कहए, माए “डूबल” कहैत अछि, नदी नाम राखैत अछि।

नन्द आरुणि आधुनिक अभियन्ता होइतहुँ गढ़ नारिकेलक सुननाइ-परम्पराक वारिस छथि। हुनकर संघर्ष एहि बातक अछि जे संख्या पाछाँ मनुक्ख देखल जाए। हुनकर डायरी लोकगीतक लिखित समकक्ष बनैत अछि—नाम, वस्तु, संकेत, पुकार, छपाक।

उज्ज्वल झा नब समयक पीड़ित छथि। हुनकर नदी स्क्रीन अछि, गोहि अंक, कर्ज, धमकी आ लाज। गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृति हुनकर कथा सँ सीखैत अछि जे आधुनिक संकटमे सामूहिक संवाद जीवन बचा सकैत अछि। “अकेला तँ नहि छी?” नब लोकमंत्र बनैत अछि।

बा घरक स्मृति, अनन्या अगिला कथा, आरुणि नन्दन पीढ़ीक संक्रमण। एहि पात्र सभक माध्यमसँ उपन्यास देखबैत अछि जे लोक-संस्कृति अतीतक संग्रह नहि, वर्तमान संकटसँ जूझबाक शक्ति अछि।

आरम्भमे सकारात्मक, आशामय लोकगीत पाठककेँ गढ़ नारिकेलक सामूहिक साँससँ जोड़ि सकैत अछि। ई गीत आगामी अन्हारकेँ नकारत नहि, मुदा ओकर भीतर जीवनक बीज देखाओत। पराती, सोहर, रोपनी, कटनी, बटगबनी, झूमर, सामा-चकेवा, झिझिया, नाविक, बालगीत—अलग धुन अध्यायक विषय अनुसार आशाक अलग रूप देत।

आरम्भिक गीतक काज कथा बताइ देब नहि; भावक धरातल तैयार करब अछि। जँ अध्यायमे नदीक संकट अछि तँ गीत नाव, संग-साथ आ पारक आशा उठाए। जँ अदालत अछि तँ पात, गवाही आ सत्यक कोंपल। जँ स्क्रीनक भय अछि तँ समूह, संवाद आ उजास। जँ स्त्रीक संघर्ष अछि तँ बहिनक हाथ, अरिपनक रेखा आ आत्मसम्मान।

अध्यायान्तक करुण गीत घटना पछाति सामूहिक शोक, स्मृति वा प्रश्नक रूप अछि। आरम्भक आशा आ अन्तक करुणा मिलि लोकजीवनक पूर्ण चक्र बनबैत अछि। गढ़ नारिकेलक संस्कृति दुःखकेँ नकारैत नहि, मुदा दुःखक पहिने जीवन आ दुःखक बाद स्मृति राखैत अछि।

दुनू गीत अध्यायक कथा सँ गहींर जुड़ल रहए, सामान्य सजावटी पद नहि। पात्रक वर्तमान नाम, घटना, वस्तु, मौसम, स्थान आ नैतिक प्रश्न धुनमे रूपान्तरित हो। गीत एहन लगए जे गामक लोक कथाक घटना सुनि स्वयं गढ़ने अछि।

टेक सरल आ सामूहिक हो। आठ-दस पाँति लिखित रूप लेल पर्याप्त भऽ सकैत अछि, मुदा गायनमे टेक दोहरा कऽ विस्तार हो। धुनक नाम केवल शीर्षक नहि; पाँतिक गति, सम्बोधन, पुनरावृत्ति आ भाव ताहि धुनक स्वभाव अनुरूप हो।

गीतमे कृत्रिम पुरानपन नहि। नव वस्तु आयत तँ मैथिली लोकबिम्बक भीतर स्वाभाविक रूपेँ आयत। मोबाइल “काँचक परदा”, डिजिटल ठगी “स्क्रीनक गोहि”, अभिलेख “नील पंजी”, सर्वर “दूरक कोठरी”—एहन रूपान्तरण नब अनुभवकेँ गामक भाषामे अपनबैत अछि।

ई संस्कृति मुँहजबानी अछि, तें नाजुक; सामूहिक अछि, तें बलगर; स्थानिक अछि, तें विशिष्ट; बदलैत अछि, तें जीवित। एक गायक मरि सकैत अछि, मुदा टेक दोसर कण्ठ पकड़ि लैत अछि। एक गाछ कटि सकैत अछि, मुदा पातक स्मृति गीतमे उगि सकैत अछि। एक नाम कागचसँ मेटाओल जा सकैत अछि, मुदा माएक पुकार, नदीक ध्वनि, बच्चाक प्रश्न आ गामक गीत ओकरा फेर उपस्थित कऽ सकैत अछि।

गढ़ नारिकेलक सामूहिक चिन्हारि एहि विश्वासपर टिकल अछि जे जीवन अकेले नहि जीअल जाइत। खेती, माछमारी, घर, संस्कार, पाबनि, संकट, शोक आ न्याय—सभमे दोसरक हाथ, कण्ठ आ स्मृति चाही। लोकगीत एहि “संग”केँ श्रव्य रूप दैत अछि।

“गोहि सभक बीच जलसमाधि” एहि लोक-संस्कृतिक आधुनिक महागाथा अछि। एतय गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि। एतय पात लिखैत अछि, नदी सुनैत अछि, भूत कबड्डी खेलैत अछि, बा वस्तु पढ़ैत छथि, नन्द आरुणि नाम लिखैत छथि, अनन्या कथा फेर उठबैत अछि। एतय जलसमाधि अन्त नहि; सामूहिक कण्ठमे घुरि आयल नामक आरम्भ अछि।

गढ़ नारिकेलक लोकगीत तें केवल गामक मनोरंजन नहि। ओ जीवनक लय, इतिहासक वैकल्पिक बही, श्रमक साथी, स्त्रीक खुलल कण्ठ, बच्चाक पाठशाला, प्रकृतिक ज्ञान, अन्यायक आलोचना, मृतकक स्मारक आ भविष्यक चेतावनी अछि।

जाधरि कोनो माए देहरीपर नाम पुकारैत रहत, कोनो बच्चा टेक पकड़त, कोनो नाविक अन्हारमे उत्तर देत, कोनो रोपनीहारिन कीचड़मे गीत उठाओत, कोनो पात बिनु हवा हिलत—ताधरि गढ़ नारिकेलक लोक-संस्कृति जीवित रहत।

आ जखन सभ कागच चुप भऽ जाएत, तखन गीत बाजत।

ओ गीत ओही राति बाजल। भोर होइते चन्ना गाछीक कात बच्चा सभ धूरि मे पहिल रेखा खिंचलक, आ ककरो कण्ठ सँ पहिल स्वर उठल—“कबड्डी...”। गामक आत्म-कथन एतहि थम्हल, आ कथा एतहि सँ शुरू भेल—अध्याय एक, चन्ना गाछीक कबड्डी।

गामक आत्म-परिचय

लोकधुन: गाम-परिचय पराती

माटि हमर देह बाजए, पानि हमर साँस,

गाछ-पात मे राखल अछि स्मृतिक निवास।

गीतक कोनो एक लेखक नहि, लोक रचयिता,

टेक पकड़ि जुड़ि जाइछ नेना-बूढ़-पिता।

कागच काटए, पात उगए—दुनू हम देखल,

रजिस्टर जे मेटओलक, माए से लिखल।

श्रम हमर ताल थिक, कण्ठ हमर बही,

हारियो कऽ गबैत रही—ई परिचय सही।

कथा सुनू आब हमर, संग-संग चलू,

जखन कागच चुप हएत, गीत बनि जरू।

गढ़ नारिकेलक प्रत्येक प्रमुख सांस्कृतिक प्रसंगक संग एकटा स्थानीय खिस्सा आ एकटा गेय उदाहरण अछि। कथा-जगत, पात्र, वस्तु, भूगोल, लोकविश्वास आ सामुदायिक स्मृतिसँ स्वाभाविक रूपेँ जुड़ल।

खण्डहरक बोलैत ईंट

खिस्सा—गामक पुरान खण्डहरमे एकटा ईंट बरखा भेने गरम भऽ जाइत। लोक कहैत, ओ घरक अन्तिम चूल्हिक ईंट अछि, जकर परिवार बाढ़िमे उजड़ि गेल। अनन्या ओहि ईंट लग कान राखलक तँ करछुल, बच्चाक हँसी आ दरबाजा खसबाक आवाज सुनलक। तें खण्डहर तोड़बा सँ पहिने लोक ओतय एक बेर घरक गीत गबैत अछि।

गीत—ईंटक भीतर घर

लोकधुन: करुण आँगन गीत

सुनू हे ईंटा, गरम ईंटाकेँ सुनू हे,

बुझायल चूल्हिक अन्तिम ताप गुनू हे।

ईंट गरम, चूल्हि बुझायल,

धुँआ कतय गेल?

हँसी अटकल देबाल भीतर,

घर कतय गेल?

गीत गाबू, नाम जगाबू,

घर कतय गेल?

देबालक भीतर अटकल हँसी, धुँआक बाट हेरायल,

बरखा पड़िते पुरना घर छाती मे गरमायल।

कान लगाउ अनन्या जकाँ, ईंटो कथा कहए,

गीत जगओने नाम जगए, घर फेर बसए।

सुनू हे ईंटा, गरम ईंटाकेँ सुनू हे,

बुझायल चूल्हिक अन्तिम ताप गुनू हे।

गहबरक अखण्ड दीप

खिस्सा—गहबरमे राखल दीप तेज हवा मे सेहो नहि बुझैत, जँ गाममे कियो असहाय लोकक संग ठाढ़ हो। मुदा दम्भक पूजा दिन दीप बेर-बेर बुझि जाइत। बा कहैत छथि, देवता घी नहि, न्याय देखैत छथि। एक बेर सरयू नाम लेल अन्न चढ़ाओल गेल तँ दीपक लौ दू भाग भऽ एक संग जलल।

गीत—न्यायक लौ

लोकधुन: भगवती जागरण

जागू हे माए, गहबरक लौ जागू हे,

घी नहि, साँचक निवाला पाबि अघाउ हे।

घी नहि माँगै गहबर माए,

साँचक एक निवाला,
जेकर नाम दबाओल गेल,
ओकरा देउ उजाला।
दू लौ एक संग जरल,
टूटल रातिक ताला।

असहायक संग ठाढ़ भेला पर लौ अटल रहए,
दम्भक थारी आगाँ बाती बेर-बेर ढहए।
दबल नामक आरती उतारू संगे-संग,
टूटए रातिक ताला, जागए न्यायक रंग।

जागू हे माए, गहबरक लौ जागू हे,
घी नहि, साँचक निवाला पाबि अघाउ हे।

पुरान इनारक प्रतिध्वनि

खिस्सा—पुरान इनारमे नाम पुकारला पर वैह नाम नहि, ओकरा सँ जुड़ल सम्बन्ध घुरैत अछि। “बिसेसर” कहला पर “माए”; “सरयू” कहला पर “मजूरी”; “उज्ज्वल” कहला पर “अकेला नहि” सुनाइत। आरुणि नन्दन बुझलक जे गाम नामकेँ व्यक्ति मात्र नहि, सम्बन्धक जाल मानैत अछि।

गीत—इनारक उत्तर

लोकधुन: पुकार-उत्तर गीत

पुकारू हे इनार मे, झुकि कऽ नाम पुकारू हे,
उत्तर मे जे सम्बन्ध घुरए, से हिय मे धारू हे।

कोन नाम?—बिसेसर!
उत्तर—माएक नोर!

कोन नाम?—सरयू!

उत्तर—श्रमक जोर!

कोन नाम?—उज्ज्वल!

उत्तर—संगक भोर!

नाम टा नहि घुरए, घुरए ओकर संसार,

माएक नोर, श्रमक जोर, संगक भोर-उपहार।

गहींर कण्ठ इनारक बिसरए किछु नहि,

जे एक बेर पुकारल गेल, से मेटाएत नहि।

पुकारू हे इनार मे, झुकि कऽ नाम पुकारू हे,

उत्तर मे जे सम्बन्ध घुरए, से हिय मे धारू हे।

डबराक चान

खिस्सा—छोट डबरा सुखलापर लोक ओकरा बेकार मानि माटि भरबाक सोचलक। ओहि राति चानक पूरा प्रतिबिम्ब केवल ओहि डबरामे देखायल, पोखरिमे नहि। बा कहलीह—छोट पानि सेहो आकाश पूरा सम्हारि सकैत अछि। तखन डबरा बच्चाक खेल, पक्षीक पानि आ बरखाक पहिल संग्रह लेल बचा लेल गेल।

गीत—छोट पानि, पूरा चान

लोकधुन: बाल झूमर

बचाउ हो नेना, छोटको डबरा बचाउ हो,

छोट पानि मे पूरा चान—अजगुत देखाउ हो।

छोट डबरा, पूरा चान,

कोना समेटल आकाश?

छोट हाथमे पैघ भरोसा,

छोट घरमे प्रकाश।
डबरा बचाउ, पियास बचाउ,
एतहि जीवनक वास।

पोखरि गरब करए, डबरा चुपचाप रहल,
राति भेने पूरा अकास ओकरे कोरा उतरल।
छोट कहि ककरो नहि बिसरू—बा केर बानी,
छोट घैलो मे अँटैत छै पूरा जिनगानी।

बचाउ हो नेना, छोटको डबरा बचाउ हो,
छोट पानि मे पूरा चान—अजगुत देखाउ हो।

पुरान घाटक लाल पगड़ी

खिस्सा—नदीक पुरान घाटपर बाढ़िक समय एक लाल पगड़ी बिनु देहक बहैत देखाइत। लोक कहैत, ई ओ नाविकक चिन्ह अछि जे अपन नाव छोड़ि पाँच बच्चाकेँ बचौने छल। जहिया धार तेज हो, घाटपर लाल कपड़ा बाँधि लोक नाविक सभक साहस स्मरण करैत अछि।

गीत—घाटक लाल निशान

लोकधुन: नाविक पुकार

देखू हे लाल पगड़ी, घाट पर फहराइत हे,
पहिने नेना, पाछू नाविक—धार सुनाबइत हे।

लाल पगड़ी घाट पर फहरै,
धार कहै—सावधान,
पहिने नेना, पछिले नाविक,
ई छै गामक मान।
चप्पू मारू संग-संग,

पार करब तूफान।

देह गेल धारक संग, चिन्ह घाट पर रहल,

पाँच नेनाक साँस मे ओ नाविक आइयो बहल।

धार गरजए जखन-जखन, पगड़ी फहराए,

गामक मानक ई निशान बाट देखबए आए।

देखू हे लाल पगड़ी, घाट पर फहराइत हे,

पहिने नेना, पाछू नाविक—धार सुनाबइत हे।

नाव खेबाक गीत

खिस्सा—नन्द आरुणि नदी पार करैत काल देखलनि जे थाकल नाविक सभ अलग-अलग बल लगा रहल छल। बा एक छोट टेक उठेलनि; चप्पू एक लयमे पड़ल आ नाव भँवरसँ निकलि गेल। तें नाविक कहैत छथि—संगक स्वर चप्पूसँ हलुक, मुदा नावसँ बलगर।

गीत—एक चोट, एक धार

लोकधुन: नाविक पुकार-उत्तर

खिंचू हे खिंचू, एक्के चोट पर खिंचू हे,

आगाँ-पाछाँ एक साँस—भँवर सँ बँचू हे।

आगाँ कहै—खिंचू रे!

पाछाँ कहै—खिंचू!

एक चोटमे चारि चप्पू,

धार कहै—सींचू।

संगक साँस जँ एक भऽ जाए,

भँवर कहै—छींचू।

थाकल बाँहि अलग-अलग, बल बिखरायल छल,

बाक छोटकी टेक पर चारू चप्पू मिलल।

लय भेटिते नाव ससरल, भँवर रहि गेल पाछू,

एक साँसक बलक आगाँ धारो कहलक—जाउ।

खिंचू हे खिंचू, एक्के चोट पर खिंचू हे,

आगाँ-पाछाँ एक साँस—भँवर सँ बँचू हे।

बच्चा सुतएबाक लोरी

खिस्सा—बाढ़िक राति बच्चा सभ डेरायल छल। बा चूल्हिक बुझैत राख लग बैसि नदीकेँ झूला, चानकेँ पहरुआ आ गाछकेँ दादी बना लोरी गौलनि। बच्चा सुतल, बाहर पानि चढ़ैत रहल, भीतर डर घटैत रहल।

गीत—नदीक झूला

लोकधुन: मैथिली लोरी

सुत हे बौआ, नदी-झूला झूल हे,

चानक पहरा, पीपर-दादी—निधोख भऽ सूत हे।

सुत बौआ, नदी झुलाबै,

चान करै पहरा,

पीपर दादी पात हिलाबै,

दूर भगाबै डेरा।

माए साँसक धीम थपकी,

भोर करै बसेरा।

बाहर पानि चढ़ैत रहए, भीतर लोरी बहए,

राखक धीम आँच लग डर दुबकल रहए।

माएक थपकी साँसक ताल, गीत ओढ़ना बनल,
बाढ़िक रतियो नेनाक सपना हरियर फुलल।

सुत हे बौआ, नदी-झूला झूल हे,
चानक पहरा, पीपर-दादी—निधोख भऽ सूत हे।

विवाहक मंगल

खिस्सा—विवाहक मड़बामे वर्षा शुरू भेल। लोक घबरायल, मुदा बा कहलीह—मेघ वर-कन्याकेँ माटिक गन्धक आशीष देब आएल अछि। स्त्री सभ गीत उठेलनि, बालक मड़बा सम्हारलक, विवाह रुकल नहि।

गीत—मेघक मंगल

लोकधुन: विवाह मंगल

बरसू हे मेघ, मड़बा पर बरसू हे,
माटिक गन्धक आशीष वर-कन्या पर धरू हे।

मड़बापर मेघ उतरला,
फूलक गन्ध जगल,
वरक पएर, कन्याक हँसी,
माटिक संग लगल।
बरखा देलक हरियर आशीष,
दू कुल एक भऽ चलल।

लोक घबरायल, बा हँसलीह—ई शुभ पाहुन थिक,
अकासो आशीष दिअ आयल—एहन लगन नीक।
फूल-गन्ध, माटि-गन्ध, हँसीक बाजा बाजल,
दू कुल दू धार जकाँ एक संगम मे साजल।

बरसू हे मेघ, मड़बा पर बरसू हे,

माटिक गन्धक आशीष वर-कन्या पर धरू हे।

देवताकेँ पुकारबाक गीत

खिस्सा—गहबरमे संकट दिन लोक केवल धन-धान्य नहि माँगल। नन्द आरुणि कहला—पहिने सत्य सुनबाक साहस माँगू। दीपक लौ लम्बा भेल, आ सभ मिलि प्रतिज्ञा केलक जे गुमनामक नाम लिखत।

गीत—साँचक वरदान

लोकधुन: भगैत

माँगू हे माँगू, धन नहि, साहस माँगू हे,

गहबरक जागल लौ सँ साँचक भाषा माँगू हे।

हे गहबरक जागल शक्ति,

धन नहि, साहस दिअ,

झूठक सामने कण्ठ न काँपे,

साँचक भाषा दिअ।

जेकर नाम अन्हारमे छुटल,

ओकरा उजास दिअ।

संकट-दिन थारी नहि, छाती आगाँ धरू,

गुमनामकेँ नाम दिअ—एहि प्रण पर अड़ू।

दीपक लौ नमहर भेल, सभक माथ झुकल,

भगैतक हुंकार संग गामक साहस खुलल।

माँगू हे माँगू, धन नहि, साहस माँगू हे,

गहबरक जागल लौ सँ साँचक भाषा माँगू हे।

बाढ़िसँ जूझबाक गीत

खिस्सा—बान्ह टूटबाक खबर आयल तँ टोल-टोलक लोक बोरा, माटि, बाँस आ रस्सी लऽ दौड़ल। गीतक प्रत्येक टेकपर एक बोरा रखल गेल। भोर धरि बान्ह थामल रहल। लोक कहलक —राति माटिसँ नहि, स्वर सँ सेहो बाँधल गेल।

गीत—बोरा धर, बाँस गाड़

लोकधुन: बाढ़ि-जागरण

जागू हो जागू, बान्ह टूटए नहि, जागू हो,
टेक-टेक पर बोरा धरि धारक मुँह बान्हू हो।

बोरा धर, बाँस गाड़,
धारक मुँह मोड़,
एक घरक नहि, गामक बान्ह,
सभ हाथक जोड़।
राति कटत, भोर उगत,
डरक गाँठ तोड़।

टोल-टोल सँ दौड़ल लोक, हाथ-हाथ मे भार,
गीतक ताल पर राखल गेल बोरा हजार।
राति कटल पहरा मे, भोरे बान्ह ठाढ़,
गीत नहि रुकल पहिने—पहिने रुकल बाढ़ि।

जागू हो जागू, बान्ह टूटए नहि, जागू हो,
टेक-टेक पर बोरा धरि धारक मुँह बान्हू हो।

अन्यायपर कटाक्ष

खिस्सा—एक अधिकारी कहलक, “सूचीमे नाम नहि, तँ घटना नहि।” ओहि साँझ स्त्री सभ रोपनीक गीतमे पद जोड़लक—“धानक बालि नहि गनलौं तँ खेतो नहि?” अगिला दिन ई पाँति हाट, घाट आ विद्यालय धरि पहुँचि गेल।

गीत—सूचीक चश्मा

लोकधुन: व्यंग्य झूमर

खोलू हे बाबू, सूचीबला चश्मा खोलू हे,
खेत-धान-नोर-प्राण अपने आँखिए तौलू हे।

सूची कहै—लोक नहि छै,
खेत कहै—धान कतऽ?
मोहर कहै—नोर नहि छै,
माए कहै—प्राण कतऽ?
चश्मा खोलू बाबूजी,
नाम बिना ज्ञान कतऽ?

'नाम नहि तँ घटना नहि'—बाबू केर ज्ञान,
स्त्री सभ रोपनी मे जोड़लनि पाँती महान।
बालि नहि गनलहुँ तँ की खेतो नहि भेल?
व्यंग्यक ई सूइ गड़ल, चश्मा उतरि गेल।

खोलू हे बाबू, सूचीबला चश्मा खोलू हे,
खेत-धान-नोर-प्राण अपने आँखिए तौलू हे।

परदेशीकेँ मोन पाड़बाक गीत

खिस्सा—परदेश गेल लोकक घरमे कार्तिक साँझ देहरीपर एकटा अतिरिक्त दीया राखल जाइत। कहल जाइत अछि जे दीया घरक बाट नहि, स्मृतिक बाट देखबैत अछि। शहरमे रहैत लोक जखन अचानक माटिक गन्ध मोन पाड़ैत, ओहि दीयाक लौ ओकर भीतर पहुँचैत।

गीत—देहरीक अतिरिक्त दीया

लोकधुन: बटोहिया

जराउ हे दीया, एकटा बेसी जराउ हे,
परदेसी नामक बाती साँझे-साँझ बढ़ाउ हे।

एक दीया घरक लोक लेल,
एक दीया तोहर नाम,
दूर नगरमे थाकल पएर,
मोन करै अपन गाम।
दीया जरत, बाट रहत,
घुरि अइह तूँ शाम।

कातिक साँझ देहरी पर दू लौ संगे काँपए,
एक घरक लोक लेल, एक दूरक नापए।
शहरक कोठरी मे ओही घड़ी मोन उमड़ल,
दीया-दीया डोरि बान्हल, गाम-नगर जुड़ल।

जराउ हे दीया, एकटा बेसी जराउ हे,
परदेसी नामक बाती साँझे-साँझ बढ़ाउ हे।

भयक राति काटबाक गीत

खिस्सा—चन्ना गाछी लग अन्हार घना भेने बालक सभ डेराइत। बा कहैत छथि—भयक नाम लऽ दियौ, ओ छोट भऽ जाएत। बच्चा सभ “भूत”, “गोहि”, “अन्हार” कहि-कहि टेक बनौलक, आ अन्तमे “संग छी” दोहरौलक।

गीत—संग छी

लोकधुन: राति-जागरण

बाजू हो नेना, डरक नाम बाजू हो,

नाम लइते भूत छोट—'संग छी' गाबू हो।

भूत अछी?—संग छी,

गोहि अछी?—संग छी,

अन्हार घन?—संग छी,

हवा सनसन?—संग छी,

नाम पुकारू, दीप जराउ,

गढ़ नारिकेल संग छी।

भूत कहू, गोहि कहू, अन्हार-हवा कहू,

हरेक नामक उत्तर मे 'संग छी' टा गहू।

टेक बनल ढाल, दीप बनल भाला,

गाछीक घन अन्हारो मे टूटल डरक ताला।

बाजू हो नेना, डरक नाम बाजू हो,

नाम लइते भूत छोट—'संग छी' गाबू हो।

धान कुटाइक गीत

खिस्सा—चारि मुसरक चोट एक लयमे नहि पड़ैत छल। सरयू बीचमे खड़ी भऽ छोट टेक उठेलनि। जतेक बेर टेक पूरा, ओतेक बेर मुसर एक संग खसल। कुटाइल धानसँ बेसी लोक ओहि दिन श्रमक ताल याद रखलक।

गीत—मुसरक चारि चोट

लोकधुन: धान-कुटनी

उठाउ गे मुसर, एक्के ताल उठाउ गे,
सरयूक टेक पकड़ि चोट-चोट मिलाउ गे।

एक उठल, दू उठल,
तीन-चारि संग,
मुसर खसल एक तालमे,
धान बजौलक रंग।
हाथ अलग, धुन एकटा,
श्रम बनल उमंग।

बेताल चोट मे जोखिम, धान छिटकि जाए,
टेक पूरिते चारू मुसर एक संग खसाए।
धान कुटाएल, मोन जुटाएल—दूनू भेल काज,
गीतक तालक आगू झुकल थकानक राज।

उठाउ गे मुसर, एक्के ताल उठाउ गे,
सरयूक टेक पकड़ि चोट-चोट मिलाउ गे।

घर छारबाक गीत

खिस्सा—बरखासँ पहिने छप्पर बदलबाक दिन पूरा परिवार जुटैत। बूढ़ पुरान नार खोलैत, युवा बाँस सम्हारैत, स्त्री रस्सी आ पुआर दैत, बच्चा छोट गठरी पहुँचबैत। घर छारब केवल मरम्मति नहि, पीढ़ीक अभ्यास छल।

गीत—छप्परक हरियर आस

लोकधुन: घर-छारनी पुकार

छारू हो छारू, बरखा सँ पहिने छारू हो,
दादीक गाँठ, नेनाक गाँठ—संगे बान्हि उतारू हो।

नार उठाउ, पुआर पसारू,
बाँस धरू रे भाई,
एक गाँठ दादीक सीखल,
एक गाँठ नेना लाई।
बरखा पड़त, घर मुस्कात,
छप्पर देत छाहि।

बूढ़ नार खोलए, जुआन बाँस सम्हारए,
स्त्री रस्सी-पुआर दिअए, नेना गठरी पसारए।
चारू पीढ़ीक हाथ मिलल एक्के छप्पर तर,
बरखा आबौ झूमि कऽ—घर मुस्काइत घर।

छारू हो छारू, बरखा सँ पहिने छारू हो,
दादीक गाँठ, नेनाक गाँठ—संगे बान्हि उतारू हो।

माटि काटबाक गीत

खिस्सा—नव मेड़ लेल माटि काटैत काल लोक पहिने धरतीसँ अनुमति माँगैत। बा एक मुट्ठी माटि माथपर छुआ कहैत छथि—“जतेक काटब, ओतेक सँभालब।” एहि मर्यादासँ बेकार गड्ढा नहि बनाओल जाइत।

गीत—माटिक अनुमति

लोकधुन: कोदारि ताल

काटू हे धीरे, पूछि कऽ माटि काटू हे,
एक मुट्ठी माथ लगा तखन कोदारि साटू हे।

कोदारि धरू, धीरे काटू,
माटि माए के देह,
जतेक लेलौं, ओतेक भरब,
एहि पर श्रमक नेह।
मेड़ उठत, खेत बचत,
धरती देत सनेह।

माटि माएक देह थिक, बिनु पूछल ने छूबू,
जतेक लेब, ओतेक भरब—ई किरिया बूझू।
मर्यादाक हाथ सँ कटलो घाव भरए,
मेड़ उठए, खेत हँसए, धरती नेह करए।

काटू हे धीरे, पूछि कऽ माटि काटू हे,
एक मुट्ठी माथ लगा तखन कोदारि साटू हे।

बान्ह मरम्मतिक गीत

खिस्सा—बान्हक दरार सभसँ पहिने बच्चा देखलक। ओ सभ माटिक छोट ढेला लगा संकेत देलक। नन्द आरुणि एहि खेलक महत्त्व बुझि गाम जुटौलनि। तें बान्ह मरम्मति दिन बच्चाक पहिल पुकार मानल जाइत अछि।

गीत—दरारक खबरि

लोकधुन: बान्ह-पुकार

सुनू हे गाम, नेनाक खबरि सुनू हे,
छोट दरारिक छोट ढेला—पैघ संकेत गुनू हे।

नेना देखल छोट दरार,
गाम सुनू रे आज,
छोट चिन्ह जँ एखन भरब,
बचत खेत-अनाज।
माटि, बाँस, बोरा जोड़ू,
संग करब ई काज।

खेल-खेल मे बच्चा राखल माटिक निशानी,
आरुणि बुझल—इहए थिक पहरा-जबानी।
एखने भरब छोट चिन्ह, तखन बचत भदाइ,
बच्चो गामक पहरुआ—ई गीतक बड़ाइ।

सुनू हे गाम, नेनाक खबरि सुनू हे,
छोट दरारिक छोट ढेला—पैघ संकेत गुनू हे।

पोखरि उराहबाक गीत

खिस्सा—पोखरि पाँकसँ भरि गेलापर लोक कहलक, “ई मरि गेल।” बा विरोध केलनि—“पानि मरैत नहि, बाट बन्द होइत।” सामूहिक उराहलापर पुरान सोता फेर फूटल, आ पहिल माछक छलाँगपर सभ ताली बजौलक।

गीत—सोता फेर खुलल

लोकधुन: पोखरि-उराहनी

उराहू हे उराहू, पाँक हटाबि उराहू हे,
'पानि मरैत नहि'—बा केर बोल निबाहू हे।

पाँक हटाउ, सोता जगाउ,
पोखरि साँस लए,
कोदारि बोले, टोकरी डोले,
जल फेर रास लए।
पहिल माछ जखन छप करए,
गाम हुलास लए।

मरल कहल पोखरिक छाती मे सोता सूतल,
कोदारि-टोकरीक ताल पर बाट फेर फूटल।
पहिल माछक छपाक सुनि गाम भरि हुलसल,
बन्द कहल जीवनो संगक श्रम सँ खुलल।

उराहू हे उराहू, पाँक हटाबि उराहू हे,
'पानि मरैत नहि'—बा केर बोल निबाहू हे।

भार उठेबाक गीत

खिस्सा—मड़बाक भारी बाँस उठबैत लोक अलग-अलग जोर लगौलक तँ बाँस टेढ़ भेल। एक बूढ़ कारीगर “हूँ-हो”क ताल देलक। साँस एक भेला पर बाँस सहज उठल। तें भारी काजमे शब्द छोट, लय बलगर रहैत अछि।

गीत—हूँ-हो भार

लोकधुन: सामूहिक भार-पुकार

कहू हो हूँ, कहू हो हो, कान्ह मिलाउ हो,
एक साँसक जोर पर भारी भार उठाउ हो।

हूँ कहू—हो कहू,
कान्ह मिलाउ चारि,
एक साँस पर भार उठत,
नहि टूटत ककरो हाड़ि।
संगक जोर पहाड़ि हँसाबै,
हूँ-हो गामक साड़ी।

अलग-अलग बल सँ बाँसो टेढ़ भऽ गेल,
बूढ़ कारीगरक ताल पर सोझे उठि गेल।
हाड़ ककरो ने टूटए, ई तालक करामात,
हूँ-होक जोड़ी मे बाजए गामक साझा हाथ।

कहू हो हूँ, कहू हो हो, कान्ह मिलाउ हो,
एक साँसक जोर पर भारी भार उठाउ हो।

नाव खिंचबाक गीत

खिस्सा—सूखल धारक बालुपर फँसल नाव निकालबाक समय लोक रस्सी पकड़ि अलग-अलग खिंचैत रहल, नाव नहि सरकल। आरुणि नन्दन ताल गनलक, अनन्या टेक उठेलक, आ तेसर चोटपर नाव खिसकि आयल। लोक कहलक—रस्सी हाथ जोड़ैत अछि, गीत साँस जोड़ैत अछि।

गीत—नाव सरकाउ

लोकधुन: नाव-खिंचनी

खिंचू हो खिंचू, तीन गनि कऽ खिंचू हो,
बालुक पकड़ि सँ नावक पेट छोड़ाउ हो।

एक पर झुको, दू पर थामू,
तीन पर खिंचू जोर,
बालु छोड़त नावक पेट,
खुलत नदीक छोर।
रस्सी एक, हाथ अनेक,
गीत बनत चितचोर।

अलग-अलग जोर मे रस्सियो थाकि गेल,
आरुणिक गिनती, अनन्याक टेक—ताल बनि गेल।
तेसर चोट पर नाव ससरल, बालु हँसल हारि,
गिनल-बान्हल संगक बल—सभसँ पैघ पतवारि।

खिंचू हो खिंचू, तीन गनि कऽ खिंचू हो,
बालुक पकड़ि सँ नावक पेट छोड़ाउ हो।

जाल समेटबाक गीत

खिस्सा—मछैर समाप्त भेलापर जाल समेटब सभसँ कठिन, किएक तँ गाँठमे माछ, घास, पात आ कचरा अटकल रहैत। वृद्ध माछमार बच्चा सभकेँ सिखबैत—“जाल फेंकब साहस, समेटब जिम्मेदारी।” गीतक टेकपर गाँठ खोलल जाइत।

गीत—गाँठ खोलू धीरे

लोकधुन: माछमार समेटनी

समेटू हे धीरे, जालक गाँठ धीरे हे,

फेकब साहस, समेटब ज्ञान—सीख बूढ़क हीरे हे।

जाल फेंकलौं हुलास भरि,

आब समेटू धीरे,

माछ बचाउ, पात हटाउ,

गाँठ न तोड़ू तीरे।

काजक अन्त जिम्मेदारी,

गीत कहै गम्भीरे।

गाँठ-गाँठ मे माछ-घास-पातक अटकन,

हड़बड़ी मे ताग टूटए, धीरजे सुलझन।

माछ पानि मे, पात कात मे, जाल कान्ह पर साफ,

काजक अन्तक जिम्मेदारी—इहए असल इंसाफ।

समेटू हे धीरे, जालक गाँठ धीरे हे,

फेकब साहस, समेटब ज्ञान—सीख बूढ़क हीरे हे।

बीआ चुनबाक गीत

खिस्सा—बा धानक ढेरीसँ चमकीला दाना मात्र नहि चुनैत छथि; भरल, रोगमुक्त, पुरान स्वाद बचौनिहार बीआ चिन्हैत छथि। अनन्या पूछलक—“छोट दाना किएक?” बा कहलीह—“कखनो छोट बीआमे पुरखाक पूरा खेत बसल रहैत अछि।”

गीत—बीआक चुनरी

लोकधुन: बीआ-चुननी पराती

चुनू गे बहिना, भोरे-भोर बीआ चुनू हे,
चमक नहि, भरल-पन—बा केर आँखि गुनू हे।

भरल दाना, साँचक दाना,
अगिला बरखक आस,
छोट दानामे खेत समायल,
पुरखाक विश्वास।
बीआ बचाउ, स्वाद बचाउ,
माटि रखत इतिहास।

छोट दाना पुछलक—हमर कोन ठेकान?
बा कहलनि—तोरे भीतर पुरना स्वादक प्राण।
रोग-मुक्त, भरल-पूरल, ऋतुक चिन्हल साथी,
बीआक ई चुनरी थिक अगिला बरखक बाती।

चुनू गे बहिना, भोरे-भोर बीआ चुनू हे,
चमक नहि, भरल-पन—बा केर आँखि गुनू हे।

खेत जोतबाक गीत

खिस्सा—पहिल हर चलबासँ पहिने किसान माटिक ढेला हाथमे मसलि नमी देखैत। बड़दक गरदन थपथपा कहैत—“काज साझाक।” लोकविश्वास अछि जे पशुकेँ गारी दऽ जोतल खेतमे अन्नक स्वाद कड़ुआ होइत।

गीत—हरक पहिल रेखा

लोकधुन: हलवाही गीत

चलू हे बड़द, धीरे-धीरे चलू हे,
गरदन थपथपा कऽ साझा काज करू हे।

हर उतरै धरती छाती,
धीरे चल रे बड़द,
तेरो पसीन, मेरो पसीन,
दुनू मिलत अनाज।
पहिल रेखा साँचक होअ,
भरि उठत समाज।

ढेला मसलि नमी देखल, तखन हर उतारल,
गारी नहि, दुलार सँ धरतीकेँ पुकारल।
तोर पसेना, मोर पसेना—एक्के खेत मे झरत,
पहिल रेखा साँच रहत तँ अन्ने-अन्न भरत।

चलू हे बड़द, धीरे-धीरे चलू हे,
गरदन थपथपा कऽ साझा काज करू हे।

मेड़ बनबाक गीत

खिस्सा—दू खेतक बीच मेड़ सीमा सेहो, पानिक सहारा सेहो। एक बेर झगड़ामे मेड़ काटल गेल तँ दुनू खेतक पानि बहि गेल। बा कहलनि—“सीमा जँ बैर बनत, दुनू घर सूखत।” फेर दुनू परिवार मिलि मेड़ बनौलक।

गीत—मेड़ बैर नहि

लोकधुन: मेड़-बनौनी

उठाउ हे मेड़, बैर नहि उठाउ हे,
सीमाक संग बाटो राखू, नेह बचाउ हे।

मेड़ उठाउ, बैर नहि,
पानि दुनू खेतक,
सीमा राखू, बाटो राखू,
नेह दुनू पेटक।
एक कटत तँ दू सूखत,
बुद्धि राखू चेतक।

झगड़ा मे मेड़ कटल, दुनू खेत पियासल,
बा केर बोल मोन पड़िते दुनू माथ लजाएल।
दुनू घरक माटि मिलल, मेड़ फेर बान्हल,
सीमा भेल सेतु आब, पानियो सम्हारल।

उठाउ हे मेड़, बैर नहि उठाउ हे,
सीमाक संग बाटो राखू, नेह बचाउ हे।

वर्षाक बाट जोहबाक गीत

खिस्सा—जेठक अन्तमे मेघ घेरि-घेरि घुरि जाइत। स्त्री सभ खाली घैल उलटि आकाश दिस राखैत, जेना बादलकेँ पानि भरबाक निमंत्रण। बच्चा सभ मेघक आकारमे नाव, गोहि, हाथी देखैत। प्रतीक्षा गीतमे खेल बनि जाइत।

गीत—मेघक निमंत्रण

लोकधुन: वर्षा-बटोहिया

आबू हे मेघ, गढ़ पर घुरि आबू हे,
उलटल घैलक नोत मानि आँगन भरि जाबू हे।

घैल उलटि देलौं आँगन,
मेघ भरू रे पानि,
धानक बीआ बाट जोहै,
सूखल धरती रानी।
दूर नहि जा, गढ़ पर बरसू,
सुनू खेतक बानी।

जेठक अन्त, घुमैत बादर, तरसैत धरती-रानी,
नेना बनबए मेघ-आकृति—नाव, गोहि, पानी।
खाली घैल अकास तकए, खेत जोहए बाट,
एक झिस्सी पड़िते खुजत हरियरीक हाट।

आबू हे मेघ, गढ़ पर घुरि आबू हे,
उलटल घैलक नोत मानि आँगन भरि जाबू हे।

सोहनीक गीत

खिस्सा—खर-पतवार उखाड़ैत सरयू कहलीह—“सभ हरियर चीज धान नहि होइत।” एहि पाँतिक भीतर ओ झूठा वादा आ असल सहायताक भेदो रखलीह। स्त्री सभ टेक पकड़ि खेत आ समाज दुनू साफ करबाक गीत बनौलक।

गीत—हरियरक भेद

लोकधुन: सोहनी

उखाड़ू गे सखी, चिन्हि-चिन्हि उखाड़ू गे,
सभ हरियर धान नहि—सरयूक बोल पाड़ू गे।

सभ हरियर धान नहि हो,
जड़ि देखि पहिचान,
जे अन्नक रस चूसि रहल,
ओकर खोलू जान।
खर हटत तँ पौध फुलत,
साँच बचत सम्मान।

झूठा वादा खर जकाँ धानक रस पीबए,
जड़ि देखि पहिचान करू, तखने खेत जीबए।
सोहनीक झुकल पाँति मे सोझ भेल ज्ञान,
खर हटल, पौध हँसल, बचल अन्न-सम्मान।

उखाड़ू गे सखी, चिन्हि-चिन्हि उखाड़ू गे,
सभ हरियर धान नहि—सरयूक बोल पाड़ू गे।

पटौनीक गीत

खिस्सा—रातिक पारीमे खेत सींचबाक समय पानि एक खेतमे अधिक रोकल गेल। अगिला खेत सुखायल। नन्द आरुणि नाला खोलि बराबर बाँट केलनि। तखन गीत उठल—“पानि रोकब धन नहि, पानि बाँटब जीवन।”

गीत—नालाक न्याय

लोकधुन: पटौनी पुकार

खोलू हे नाला, बन्हल पानि खोलू हे,
पहिल-दोसर सभ खेत मे बराबरि घोलू हे।

पहिल खेत भरि गेल भाई,
दोसर पियासल किएक?
नाला खोलू, धारि घुमाउ,
पानि ककरो निजी नेह।
बाँटल जलमे धान हँसत,
न्याय उगत सनेह।

रातिक पारी, एक्के धारी, आधा खेत अघाएल,
आरुणिक हाथ नाला खुजल, न्याय बहि आएल।
पानि ककरो पेवन्द नहि, सभक साझा नेह,
बँटला सँ घटैत नहि—बढ़ैत अछि सनेह।

खोलू हे नाला, बन्हल पानि खोलू हे,
पहिल-दोसर सभ खेत मे बराबरि घोलू हे।

रोग-पोकाक गीत

खिस्सा—धानक पात पीयर देखिते लोक दवा छिड़कबाक सोचलक। बा पात उलटि छोट कीड़ा, माटिक नमी आ हवा सभ देखलीह। कहलनि—“रोगक नाम बुझू, तखन उपचार।” एहि सावधानीसँ बेकार जहर बचल।

गीत—पात पढ़ू

लोकधुन: खेत-जाँच गीत

पढ़ू हे पहिने, पीयर पात पढ़ू हे,
दवा सँ पहिने रोगक नाम गढ़ू हे।

पीयर पात कहै किछु बात,
पहिने ओकरा पढ़ू,
कीड़ा, पानि, माटिक कमी,
साँच कारण गढ़ू।
जहर नहि हरेक उत्तर होइ,
बुद्धिक दीपक धरू।

पात उलटि बा देखलनि—कीड़ा, नमी, बसात,
हड़बड़ीक जहर सँ नीक धीरजक बात।
कारण चिन्हल, उपचार सटल, खेत फेर हरियाएल,
आँखिक ई जाँच-गीत घर-घर धरि गाएल।

पढ़ू हे पहिने, पीयर पात पढ़ू हे,
दवा सँ पहिने रोगक नाम गढ़ू हे।

कटनीक गीत

खिस्सा—पहिल हँसुआ चलबा सँ पहिने सभ खेतक एक कोन छोड़ैत, ताकि पक्षी आ छोट जीवकेँ आश्रय बचल रहए। अनन्या पूछलक—“सभ काटि किएक नहि?” बा कहलनि—“अन्न लेल जे खेत देलक, ओकरा खाली नहि छोड़ू।”

गीत—पहिल बालि, अन्तिम कोन

लोकधुन: कटनी

काटू हे धान, आदर सँ काटू हे,
एक कोन पक्षी-जीवक नामे छोड़ि राखू हे।

हँसुआ चमकल अगहन रौद,
धान झुकल सम्मान,
एक कोन पक्षीक घर छोड़ू,
ई खेतक वरदान।
काटू, बाँटू, धन्यवाद दिअ,
अन्न बनए पहिचान।

'सभ किएक नहि?'—पुछलक नेना सहज बात,
बा कहलनि—खेत जोगओने चिड़ै-कीट-जात।
जे बँचौलक फसिल, तकर हिस्सा पहिल मानू,
धन्यवादक ई कोन—खेतक वरदान जानू।

काटू हे धान, आदर सँ काटू हे,
एक कोन पक्षी-जीवक नामे छोड़ि राखू हे।

बोझा उठेबाक गीत

खिस्सा—कटल धानक बोझा बाँधैत समय गाँठ ढीली रहल तँ बाटमे अन्न झरैत। वृद्ध किसान कहैत—“बोझा केवल भारी नहि, घरक बरख भरिक भरोसा।” गीतक लयमे रस्सी कसैत, कान्ह बदलैत आ विश्रामक ठाम तय करैत।

गीत—कान्ह बदलू

लोकधुन: बोझा-पुकार

बदलू हो कान्ह, थाकल कान्ह बदलू हो,
गाँठ कसि कऽ घरक बरख माथ पर धरू हो।

कान्ह बदलू, बोझ न गिरू,
धानक दाना मान,
एक कदम तूँ, एक कदम हम,
बाट बने आसान।
घरक कोठी बाट जोहै,
संग चलू किसान।

ढील गाँठ सँ बाट-बाट अन्न झरैत गेल,
बूढ़ किसानक बोल सुनि रस्सी कसल भेल।
एक डेग तूँ, एक डेग हम—बाट कटैत जाए,
कोठी जोहए बाट, बोझा गीत गबैत आए।

बदलू हो कान्ह, थाकल कान्ह बदलू हो,
गाँठ कसि कऽ घरक बरख माथ पर धरू हो।

दाउनक गीत

खिस्सा—बड़द गोल-गोल घूमैत धान दाउन करैत। बच्चा ई घुमाव देख जीवनक चक्रक कथा सुनैत—बीआ, पौध, बालि, दाना, फेर बीआ। पशुकेँ विश्राम बिना चलौने पर बा रोक लगबैत छथि।

गीत—दाउनक चक्कर

लोकधुन: दाउन गीत

घूमू हे बड़द, गोल-गोल घूमू हे,
बीचे-बीच विश्रामो केर घड़ी गनू हे।

गोल-गोल बड़द चले,
दाना छुटै बालि,
आजुक अन्न, काल्हिक बीआ,
चक्र कहै मतवाली।
पशुक साँसक मान रखू,
तखन भरत पातरि थाली।

बीआ सँ पौध, पौध सँ बालि, बालि सँ दाना,
दाना सँ फेर बीआ—चक्रक इहए तराना।
पशुक साँस थाकए तँ बा रोकि दिअए फेरा,
मान-सहित दाउन सँ भरए घर-अँगना-बसेरा।

घूमू हे बड़द, गोल-गोल घूमू हे,
बीचे-बीच विश्रामो केर घड़ी गनू हे।

मड़ाइक गीत

खिस्सा—मड़ाइ दिन पवनक दिशा देखल जाइत, ताकि भूसी एक कात आ अन्न दोसर कात जाए। एक बेर हवा पलटल, मुदा गीतक टेक “रुकू-रुकू” सुनि सभ हाथ थामि गेल; अन्न बचि गेल।

गीत—हवा पढ़ू

लोकधुन: मड़ाइ पुकार

पढ़ू हे हवा, सूप सँ पहिने पढ़ू हे,
भूसी उड़ौ, दाना रहौ—एतबा गुर गढ़ू हे।

हवा ककरा दिस बहै,
सूप उठाउ तखन,
भूसी उड़त, दाना रहत,
धीरे चलू एखन।
हवा पलटत—रुकू सखी,
अन्न बचत जखन।

पुरबा-पछबा चिन्हि कऽ मड़ाइक ठाम बनल,
हवा पलटल—'रुकू-रुकू' टेक तुरत तनल।
सभ हाथ थम्हल एक संग, दाना बचल सगर,
हवोक भाषा जनैत अछि गढ़ नारिकेल-नगर।

पढ़ू हे हवा, सूप सँ पहिने पढ़ू हे,
भूसी उड़ौ, दाना रहौ—एतबा गुर गढ़ू हे।

भण्डारक गीत

खिस्सा—धान कोठीमे भरबा सँ पहिने माटिक कोठी धूप, नीमक पात आ राखसँ तैयार कएल जाइत। बा कहैत छथि, “भण्डार भरब लोभ नहि, खराब दिन लेल सामूहिक सावधानी।” गरीब घर लेल एक अलग माप बचाओल जाइत।

गीत—कोठीक नेह

लोकधुन: भण्डार मंगल

खोलू हे कोठी, नीम-धूप सँ खोलू हे,
भरबा सँ पहिने बँटबाक बोल बोलू हे।

नीमक पात, धूपक गन्ध,
कोठी खोलू आज,
अन्न भरू, किछु बाँटि धरू,
भूखक राखू लाज।
भरल भण्डार तखन सुन्दर,
जखन भरत समाज।

राख-पात-धूपक सुगन्ध, कोठी भेल तैयार,
'भरब लोभ नहि, सावधानी'—बा केर उद्गार।
गरीब घरक खाली हाँड़ी पहिने मोन पाड़ू,
समाज भरल तँ कोठी शुभ—एहि गिरह गाड़ू।

खोलू हे कोठी, नीम-धूप सँ खोलू हे,
भरबा सँ पहिने बँटबाक बोल बोलू हे।

माछमारी आ मछैर

खिस्सा—मछैर दिन जाल उठल तँ छोट माछ बेसी छल। लोक सभ छोट माछ फेर पोखरिमे छोड़लक। बच्चा पूछलक—“हिस्सा कम नहि भेल?” माछमार कहलक—“अगिला बरखक हिस्सा पानिमे छोड़लौं।”

गीत—छोट माछ छोड़ू

लोकधुन: मछैर गीत

छोड़ू हे छोड़ू, छोटका माछ छोड़ू हे,
अगिला बरखक जीवित हिस्सा पानि मे जोड़ू हे।

जाल भरल, पानि चमकल,
छोट माछ छोड़ू,
अगिला बरखक जीवित हिस्सा,
पोखरिमे जोड़ू।
जतेक लिअ, ओतेक बचाउ,
लालच कात मोड़ू।

जाल उठल, चाँदी चमकल, लोभ कने ललचाएल,
बूढ़ माछमारक आँखि देखि हाथ अपने रुकाएल।
'हिस्सा कम?'—नेना पुछल; उत्तर भेटल गूढ़,
पानिक भीतर बढ़ैत हिस्सा—इहए मछैरक रूढ़ि।

छोड़ू हे छोड़ू, छोटका माछ छोड़ू हे,
अगिला बरखक जीवित हिस्सा पानि मे जोड़ू हे।

चरखा आ कोल्हुक गीत

खिस्सा—चरखा घूमैत, कोल्हु गोल चलैत—दुनू काज दोहराइत मुदा फलदायक। बा कहैत छथि, “दोहराव जँ श्रमक हो तँ सूत आ तेल बनैत; झूठक हो तँ केवल थकान।” स्त्री सभ चरखाक धुनमे परदेशी गीत, कोल्हुपर तेलक सुगन्धक पद गबैत।

गीत—गोल घुमै संसार

लोकधुन: चरखा-कोल्हु झूमर

घुमाउ गे चरखा, धीरे-धीरे घुमाउ गे,
कोल्हुक गोल चालि मे जीवन-सूत बढ़ाउ गे।

चरखा घुमै, सूत निकलै,
कोल्हु घुमै तेल,
हाथक धीरज दाना-दाना,
बनबै जीवन खेल।
साँचक चक्कर फल देत,
झूठक चक्कर जेल।

श्रमक दोहराव सूत कातए, तेलक धार बहाबए,
झूठक दोहराव खाली-खाली देह-प्राण थकाबए।
बा केर ई गिरह पकड़ि झूमर आगाँ बढ़ल,
गोल-गोल संसार मे साँचक चक्कर चढ़ल।

घुमाउ गे चरखा, धीरे-धीरे घुमाउ गे,
कोल्हुक गोल चालि मे जीवन-सूत बढ़ाउ गे।

कारीगर आ औजारक गीत

खिस्सा—बढ़ही, कमार, चर्मकारी, कुम्हार आ बाँसक कारीगर सभ अपन औजारक आवाजसँ एक-दोसराक काज चिन्हैत। एक दिन चन्ना गाछी लग सामूहिक मरम्मति भेल—कियो बाँस चीरलक, कियो काँटी बनौलक, कियो रस्सी, कियो माटिक दीया। गीतमे प्रत्येक औजारक ध्वनि टेक बनल।

गीत—औजारक बाजा

लोकधुन: कारीगर ताल

बजाउ हे औजार, अपन-अपन बाजा बजाउ हे,
ठक-ठक, सर-सर, घुर-घुर मे गाम मिलाउ हे।

ठक-ठक हथौड़ी, सर-सर आरी,
घुर-घुर चाक चले,
छप-छप चाम, चिर-चिर बाँस,
हाथक ईलम फले।
अलग औजार, एक गाम,
श्रमक गीत मिले।

बढ़ही-कमार-कुम्हार सभक अपन-अपन तान,
सामूहिक मरम्मति दिन सभ सुर भेल एक-प्राण।
अलग-अलग हाथक ईलम, एक्के गामक काज,

औजारक ई मिलल बाजा—श्रम-सङ्गीत-साज।

बजाउ हे औजार, अपन-अपन बाजा बजाउ हे,

ठक-ठक, सर-सर, घुर-घुर मे गाम मिलाउ हे।

पशुपालनक गीत

खिस्सा—गाय, भैंस, बकरी आ बड़द परिवारक अन्न, दूध, खाद आ श्रमसँ जुड़ल। गर्भवती पशु लेल अलग चारा, बीमार पशु लेल पात-औषधि, बाछाक हिस्सा पहिने—ई नियम बा बच्चा सभकेँ सिखबैत छथि।

गीत—पहिने बाछा

लोकधुन: गोहाल पराती

पिआउ हे पहिने, बाछाकेँ दूध पिआउ हे,
पशुक देह परिवारक देह—ई मरम बुझाउ हे।

पहिने बाछा दूध पिए,
फेर भरू हम घैल,
पशुक देह परिवारक देह,
नहि केवल धन-मैल।
चारा, पानि, छाहि बराबर,
तखन सुखक खेल।

गाभिन लेल अलग चारा, रोगिल लेल पात,
बाछाक हिस्सा पहिने—बा सिखओलनि बात।
चारा-पानि-छाहरिक बराबरिक लेखा,
गोहालक परातीमे नेहक उज्जर रेखा।

पिआउ हे पहिने, बाछाकेँ दूध पिआउ हे,
पशुक देह परिवारक देह—ई मरम बुझाउ हे।

पानक बरेब, तरकारी आ हाट

खिस्सा—गढ़ नारिकेलक पानक बरेबमे नमी, छाह आ धैर्य चाही; तरकारीक बारीमे मौसमक तेज समझ। हाट दिन पान, साग, तेल, मिठाइ, माछ आ कारीगरीक वस्तु एकठाम अबैत। अनन्या देखलक जे हाट केवल किनबेच नहि, समाचार, गीत, व्यंग्य आ नब पदक जन्मस्थान अछि।

गीत—हाटक रंग

लोकधुन: हाट झूमर

चलू हे हाट, रंग-रंगक हाट चलू हे,
किनबेच सँ बेसी गप-गीतक पाट चलू हे।

पानक हरियर, सागक गन्ध,
माछ चमक हाट,
तेलक धार, मिठाइक हँसी,
गपक खुलल पाट।
किनबेचसँ बेसी एतय,
गीत बदलै बाट।

पानक हरियर बीड़ा, सागक ताजा गन्ध,
माछक चमक, तेलक धार, मिठाइक आनन्द।
कोन घरक की हाल—एतहि भेटए खबरि,
हाट थिक गामक अखबार—सुर मे बाँचू सगरि।

चलू हे हाट, रंग-रंगक हाट चलू हे,
किनबेच सँ बेसी गप-गीतक पाट चलू हे।

रौदी आ अकाल

खिस्सा—रौदीक वर्ष इनारक जल नीचाँ गेल, खेत फाटल, मुदा गाममे नियम बनल—पहिने पीबाक पानि, फेर पशु, तखन खेत। सम्पन्न घरक भण्डारसँ अन्न उधार नहि, साझाक रूपमे बाँटल गेल। रौदीक गीत दुःख संग जल-बँटवारा आ धैर्य सिखबैत।

गीत—पहिने पियास

लोकधुन: रौदी विरहा

बुझाउ हे पहिने, पियास पहिने बुझाउ हे,
नेना-पशुक घैल भरि तखन खेत जाउ हे।

फाटल धरती, सूखल धार,
पहिने पियास बुझाउ,
नेना-पशुकेँ जल देलापर,
खेतक बाट लगाउ।
अन्न जँ अछि, बाँटि खाउ,
रौदी संग हराउ।

इनारक जल नीचाँ गेल, धरती फाटल ठाम,
नियम बनल—पीबाक पानि सभसँ पहिल काम।
भण्डार खुजल साझा भऽ, उधार नहि, बाँट,
रौदीक कठिन दिनो कटल, बचल गामक ठाठ।

बुझाउ हे पहिने, पियास पहिने बुझाउ हे,
नेना-पशुक घैल भरि तखन खेत जाउ हे।

नामकरणक गीत

खिस्सा—नवजातक नाम चुनबा समय परिवार केवल कुलक नाम नहि, जन्मक ऋतु, माएक इच्छा, गामक स्मृति आ भविष्यक आशा सोचैत। अनन्या कहलक—“नाम एहन हो जे कियो काटि नहि सकए।” तें पातपर पहिने नाम लिखल गेल, बादमे कागचपर।

गीत—पहिल अक्षर

लोकधुन: नामकरण मंगल

चुनू हे नाम, काटल नहि जाए से चुनू हे,
ऋतु-माए-गाम-आशा चारू सँ बुनू हे।

पहिल अक्षर पात पर उगल,
दोसरा माएक कण्ठ,
तेसर अक्षर गाम लिखलक,
चौथा देलक संकल्प।
नाम रहत तँ कथा रहत,
कथा रहत अनन्त।

पहिल अक्षर पातक, दोसर माएक कण्ठ,
तेसर गामक स्मृति, चारिम भविष्य-पन्थ।
अनन्याक बोल गूँजल—नाम अकाट्य हो,
नाम रहत तँ कथा रहत—कथा अनन्त हो।

चुनू हे नाम, काटल नहि जाए से चुनू हे,
ऋतु-माए-गाम-आशा चारू सँ बुनू हे।

मुड़नक गीत

खिस्सा—मुड़न दिन बच्चाक पहिल केश नदीमे नहि फेकल गेल; एक पातमे बाँधि गाछक जड़ि लग राखल गेल। बा कहलीह—“बाल देहक पहिल समय अछि; माटि ओकरा स्मृति बनाकऽ राखत।” बच्चाकेँ डर नहि लागए, तें हास्यपूर्ण गीत गाओल गेल।

गीत—पहिल केशक पात

लोकधुन: मुड़न सोहर

ललना रे, मुड़नक सोहर हे,
पहिल केश पात मे बान्हि जड़ि लग धरब हे।

छोट कतरनी चमक उठल,
बौआ हँसल आज,
पहिल केश पातमे राखू,
जड़ि करै ओकर लाज।
माथ उज्जर, भोरक चान,
दीर्घ होअ समाज।

नदी मे नहि भसाओल, माटिकेँ सौंपल केश,
बाल-समयक पहिल चिन्ह—स्मृतिक उपदेश।
कतरनी चमकल, बौआ हँसल, आँगन भेल अजोर,
जड़ि-जोगाओल थातीसँ जुड़ल जनम-भोर।

ललना रे, मुड़नक सोहर हे,
पहिल केश पात मे बान्हि जड़ि लग धरब हे।

उपनयनक गीत

खिस्सा—उपनयनक अवसरपर आरुणि नन्दनकेँ केवल मन्त्र नहि, जल, माटि, श्रम आ सत्यक दायित्व बुझाओल गेल। बा कहलीह—“सूत्र देहपर, जिम्मेदारी मोनपर।” बच्चा सभ एक पद जोड़लक—“जे नाम सुनए, सेहि द्विज होए।”

गीत—सूत्र आ जिम्मेदारी

लोकधुन: उपनयन मंगल

पहिरू हे सूत्र, कान्ह पर सूत्र पहिरू हे,
मोन पर सत्यक भार—दुनू संग धरू हे।

कानमे मन्त्र, कान्हपर सूत्र,
मोनपर सत्यक भार,
जल बचाउ, नाम सुनू,
कमजोरक बनू दुआर।
ज्ञान तखन पवित्र कहल,
जखन खुले व्यवहार।

मन्त्र कान मे, माटि हाथ मे, जल-श्रमक पाठ,
आरुणिकेँ बुझाओल गेल दायित्वक ठाठ।
जल बचाएब, नाम सुनब, कमजोरक दुआर,
खुलल व्यवहार मे पवित्र भेल ज्ञानक भार।

पहिरू हे सूत्र, कान्ह पर सूत्र पहिरू हे,
मोन पर सत्यक भार—दुनू संग धरू हे।

गौना आ दाम्पत्य

खिस्सा—गौना पछाति नव दम्पति लेल बा एक नियम कहलीह—“दू घरक आदत भिड़त, मुदा कण्ठ बन्द नहि हो।” पति-पत्नी असहमति भेला पर एक-दोसराक बात पूरा सुनबाक वचन देलनि। गीतमे लाज संग संवादक महत्त्व गाओल गेल।

गीत—दू स्वरक घर

लोकधुन: जट-जटिन

गाबू हे जोड़ी, दू स्वरक गीत गाबू हे,
रूसियो कऽ बात कहब—ई वचन निबाहू हे।

तोहर बोली, हमर बोली,
दू धुन एक घर,
रूठब तखनो बात कहब,
नहि बनब पाथर।
नेहक अर्थ मौन नहि हो,
सुनबो प्रेमक स्वर।

तोहर धुन, हमर धुन—घर एक्के ताल,
असहमतियो मे सुनबाक राखब ख्याल।
पाथर नहि बनब कहियो, कण्ठ बन्द नहि,
जट-जटिनक संवाद सँ नेह मन्द नहि।

गाबू हे जोड़ी, दू स्वरक गीत गाबू हे,
रूसियो कऽ बात कहब—ई वचन निबाहू हे।

गर्भ आ मातृत्व

खिस्सा—गर्भवती स्त्रीकेँ घरक सबसँ भारी काजसँ मुक्त करब गढ़ नारिकेलक पुरान मर्यादा मानल गेल, मुदा कतेको बेर गरीबी ई मर्यादा तोड़ैत। सरयू गर्भमे सेहो श्रम करैत रहलीह। स्त्री-मण्डली गीतमे कहलक—“मजूरी घटाउ नहि, भार घटाउ।”

गीत—दू साँसक देह

लोकधुन: गर्भ-मंगल

धीरे हे धीरे, दू साँसक देह हे,
भार घटाउ, मान बढ़ाउ—एहि मे घरक नेह हे।

एक देहमे दूटा साँस,
धीरे दियौ भार,
मजूरी पूरा, विश्राम पूरा,
एहि मे घरक सार।
माएक मान जँ गाम बचाए,
शिशु पाबै संसार।

गाभिन देहकेँ भारी काज सँ मुक्तिक रीति,
गरीबियो मे राखल जाए—इहए गामक नीति।
मजूरी पूरा, विश्राम पूरा—सरयूक हक-बात,
माएक मान बचल तँ शिशु पओत सुन्दर प्रात।

धीरे हे धीरे, दू साँसक देह हे,
भार घटाउ, मान बढ़ाउ—एहि मे घरक नेह हे।

वृद्धावस्थाक गीत

खिस्सा—वृद्ध लोकक धीम चालकेँ बेकार समय नहि मानल जाइत। बा बैठल-बैठल बीआ चिन्हैत, कथा कहैत, बच्चाक गलती देखैत आ पुरान बाढ़िक निशान बतबैत छथि। गाम कहैत —“जिनकर पएर धीम, हुनकर समय गहींर।”

गीत—धीम पएरक ज्ञान

लोकधुन: वृद्ध पराती

सुनू हे धीरे, बा केर धीम डेग सुनू हे,
पुरना बाढ़िक निशान हुनके आँखि गुनू हे।

धीम चलै बा, दूर देखै,
पुरना मेड़ चिन्है,
एक कहानी, एक बीआ,
काल्हिक बाट बनै।
देह थाकल, ज्ञान जागल,
गाम हुनकासँ सनै।

बैसले-बैसल बीआ चिन्हथि, कथा कहथि रोज,
नेनाक भूल सुधारथि, बतबथि मेड़क खोज।
देह थाकल, ज्ञान जागल—गामक चलैत पोथी,
धीम पएरक संग चलए भविष्यक जोती।

सुनू हे धीरे, बा केर धीम डेग सुनू हे,
पुरना बाढ़िक निशान हुनके आँखि गुनू हे।

आँगन नीपबाक गीत

खिस्सा—पाबनि पहिने स्त्री सभ गोबर-माटिसँ आँगन नीपैत। अनन्या पूछलक —“बारम्बार किएक?” बा कहलीह—“घर धूलि पकड़ैत अछि, मनो पकड़ैत; नीपब माने फेर आरम्भ।” नीपल आँगनपर पहिल पएर बच्चाक राखल गेल।

गीत—फेर आरम्भ

लोकधुन: आँगन गीत

नीपू गे बहिना, भोरे-भोर नीपू गे,

पुरना धूलि-दुख दुनू बाहर बहाउ गे।

माटि-गोबर घोल बनाउ,

आँगन फेर जगाउ,

पुरना धूलि, पुरना दुःख,

धीरे बाहर बहाउ।

नीपल धरती, नव पएर,

घरमे भोर बसाउ।

माटि-गोबरक घोल हाथ मे, आँगन भेल दर्पण,

'बारम्बार किएक?'—प्रश्नक उत्तर: नव अर्पण।

घरो धूलि पकड़ैत अछि, मोनो पकड़ैत,

नीपब माने फेर आरम्भ—बा केर कहैत।

नीपू गे बहिना, भोरे-भोर नीपू गे,

पुरना धूलि-दुख दुनू बाहर बहाउ गे।

व्रत-कथाक गीत

खिस्सा—व्रत दिन कथा केवल फल पएबाक सौदा नहि कहल गेल। बा कथा बीचमे पूछैत छथि—“एहि स्त्रीक निर्णय सही छल कि नहि?” श्रोता उत्तर दैत, चर्चा होइत, तखन गीत उठैत। एहि प्रकार कथा एक साँससँ दोसर साँस धरि प्रश्न सहित चलैत।

गीत—कथा बीच प्रश्न

लोकधुन: व्रत-कथा धुन

पूछू हे बीचहि, कथाक बीच पूछू हे,
फल सँ पहिने निर्णयक तौल बूझू हे।

कथा सुनू, प्रश्नो पूछू,
मौन नहि धर्मक मान,
ककर दुःख, ककर निर्णय,
बुझू तखन विधान।
व्रत तखन मन उजियारत,
जखन जागत ज्ञान।

बा रोकि कऽ पुछथि—ई निर्णय उचित छल?
श्रोता-मण्डली बाजल, चर्चाक दीप जरल।
मौन नहि धर्मक मान, जागल प्रश्न पूजा,
व्रतक असल फल—विवेक, नहि किछु दूजा।

पूछू हे बीचहि, कथाक बीच पूछू हे,
फल सँ पहिने निर्णयक तौल बूझू हे।

अन्न कुटब-पिसब आ रसोइ

खिस्सा—जाँतपर दालि पीसैत, सिलौटपर मसल्ला, चूल्हिपर भात—प्रत्येक ध्वनि स्त्रीक दिनक लय बनबैत। एक दिन अनन्या सभ ध्वनि लिखलक—घर्र, छप, छन, फुँक। बा हँसलीह—"रसोइ अपना आप एक बाजा अछि।"

गीत—रसोइक बाजा

लोकधुन: जाँत गीत

सुनू गे बहिना, रसोइक बाजा सुनू गे,
घर्र-छन-फुँकक ताल मे दिनक लय गुनू गे।

घर्र-घर्र जाँत बोलै,
छन-छन करछुल नाच,
फुँक-फुँक चूल्हि साँस लए,
भातक गन्धक गाछ।
अन्न बने गीतक थारी,
रसोइ घरक आछ।

अनन्या टाँकल ध्वनि सभ—घर्र, छप, छन, फुँक,
बा हँसलीह—इहए हमर दिन भरिक धुन।
जाँत-सिलौट-चूल्हि-करछुल घर भरिक साज,
अन्न बनैत-बनैत बाजए रसोइक बाज।

सुनू गे बहिना, रसोइक बाजा सुनू गे,
घर्र-छन-फुँकक ताल मे दिनक लय गुनू गे।

पशु-पक्षी, जल आ घरक वस्तुक देखभाल

खिस्सा—बा बच्चा सभकेँ सिखबैत छथि जे खाली मनुक्खक पियास नहि देखू। देहरीक कात पक्षीक छोट पात्र, गोहालमे स्वच्छ जल, औजार सुखायल ठाम, बीआक डब्बा ऊँच, घैल ढाकल—ई सभ घरक अनुशासन अछि। अनन्या एहि सभकेँ “छोट पहरा” कहलनि।

गीत—छोट पहरा

लोकधुन: घर-पहरा गीत

जोड़ू हे छोट-छोट, पहरा छोट जोड़ू हे,
चिड़ै-पशु-बीआ-घैल—सभक सुधि लिअ हे।

चिड़ै लेल एक कटोरा,
पशु लेल निर्मल नीर,
बीआ ऊँच, औजार सुखायल,
घैल पर ढक्कन धीर।
छोट-छोट पहरा जोड़ि,
घर बनै गम्भीर।

देहरी-कात कटोरा मे चिड़ैक हिस्सा-पानि,
गोहाल मे निर्मल नीर—बा केर बानी।
औजार सुखाएल, बीआ ऊँच, घैल ढाकल धीर,
छोट-छोट सतर्कता सँ घर भेल गम्भीर।

जोड़ू हे छोट-छोट, पहरा छोट जोड़ू हे,
चिड़ै-पशु-बीआ-घैल—सभक सुधि लिअ हे।

मिथिला चित्रकला

खिस्सा—देबालपर बनल माछक आँखि सदिखन खुलल रहैत। अनन्या पूछलक—“ई सुतैत किएक नहि?” बा कहलीह—“चित्रक माछ घरक पानि आ नामपर पहरा दैत अछि।” चित्रमे कमल, सूर्य, चन्द्र, बाँस, स्त्री, पक्षी आ नदीक बीच चन्ना गाछीक पात जोड़ल गेल।

गीत—देबालक माछ

लोकधुन: चित्रकला झूमर

लिखू गे देबाल पर, जागल माछ लिखू गे,
रंगक भीतर गाम बसा पहरा सिखू गे।

देबालपर माछ न सुतै,
आँखि रखै राति,
कमल, चान, बाँसक पाँति,
पात लिखै हरेक बाति।
रंगक भीतर गाम बसै,
चित्र बनए पहराति।

'ई सुतैत किएक नहि?'—अनन्याक बात,
बा कहलनि—चित्रक माछ जागए दिन-राति।
कमल-चान-बाँसक पाँति, माछक खुलल आँखि,
देबालक ई पहरुआ घरक नाम राखि।

लिखू गे देबाल पर, जागल माछ लिखू गे,

रंगक भीतर गाम बसा पहरा सिखू गे।

माटिक पूजा-वस्तु

खिस्सा—बच्चा सभ माटिसँ छोट महादेव, दीया, घोड़ा, पक्षी आ कटोरा बनबैत। एक आकृति टूटि गेल तँ बच्चा रोइल। बा ओकर माटि फेर भिजा नया दीया बनौलनि—“माटिक देवता टूटि कऽ माटिमे घुरैत, श्रद्धा नहि टूटैत।”

गीत—माटिक रूप

लोकधुन: माटि-मंगल

गढ़ू हो नेना, माटिक रूप गढ़ू हो,
टूटल पर कानब नहि—फेर भिजा गढ़ू हो।

माटि बनल महादेव छोट,
माटि बनल दीया,
टूटल रूप फेर घुरि आएल,
माटि माए जिया।
रूप बदलै, नेह न बदलै,
एहि मे पूजा थिया।

महादेव, दीया, घोड़ा, पक्षी—माटिक परिवार,
टूटल आकृति पर नोर, बा देलनि उपचार।
ओही माटि भीजल, फेर दीया बनि हँसल,
रूप बदलए, नेह नहि—पूजा एहि मे बसल।

गढ़ू हो नेना, माटिक रूप गढ़ू हो,
टूटल पर कानब नहि—फेर भिजा गढ़ू हो।

सिलाइ-कढ़ाइ

खिस्सा—फाटल गमछा पर सरयू एक फूल काढ़ि देलीह। फाटल ठाम नुकायल नहि, सुन्दर चिन्ह बनि गेल। अनन्या कहलक—“मरम्मति लाज नहि, कला अछि।” तखन स्त्री सभ पुरान कपड़ामे कथा-चिन्ह काढ़ब शुरू केलक।

गीत—फाटल ठामक फूल

लोकधुन: सिलाइ गीत

काढ़ू गे बहिना, फाटल ठाम फूल काढ़ू गे,
मरम्मतिकेँ लाज नहि, कला कहि पाड़ू गे।

फाटल ठाम नहि नुकाउ,
सूइ धागा लाउ,
दुःखक छेदक चारू कात,
हरियर फूल कढ़ाउ।
मरम्मति मे मान बसै,
पुरना कपड़ा बचाउ।

सरयूक सूइ चलल, गमछा पर फूल खिलल,
फाटल चिन्ह नुकाएल नहि—सुन्दर बनि मिलल।
पुरना कपड़ा, नव कढ़ाइ, दुख पर हरियर बूटा,
जोड़ल-सीयल जिनगी मे मान रहल अटूटा।

काढ़ू गे बहिना, फाटल ठाम फूल काढ़ू गे,
मरम्मतिकेँ लाज नहि, कला कहि पाड़ू गे।

पातरि, खोइँछ, अन्न-विन्यास आ विवाह सजावट

खिस्सा—विवाहक भोजनमे पातरि पर अन्न रखबाक क्रम सेहो अर्थपूर्ण छल—नमक छोट, भात उदार, मिठास अन्तमे। खोइँछमे अन्न, दूभि, पान आ हल्दी राखि आशीष देल गेल। अनन्या देखलक जे सजावट केवल आँखि लेल नहि, सम्बन्धक संकेत अछि।

गीत—पातरि पर आशीष

लोकधुन: खोइँछ मंगल

परसू गे बहिना, क्रम सँ पातरि परसू गे,
खोइँछ मे दूभि-हल्दी—आशीष भरि धरू गे।

पातरि पर भात उज्जर,
दालि सुनरि धार,
खोइँछमे दूभि हरियर,
हल्दी नेह अपार।
अन्नक क्रम कहै चुपचाप,
संग रहू परिवार।

नून छोट, भात उदार, मिठास सभसँ बाद,
अन्नक ई क्रम सिखबए जीवन-रसक स्वाद।
खोइँछ मे दूभि हरियर, हल्दीक नेह अपार,
चुपचाप पातरि कहए—संगे रहू परिवार।

परसू गे बहिना, क्रम सँ पातरि परसू गे,
खोइँछ मे दूभि-हल्दी—आशीष भरि धरू गे।

दहेज, गरीबी, मजूरी आ परदेश

खिस्सा—एक विवाहमे वरपक्ष अधिक माँग रखलक। स्त्री सभ मंगल रोकि व्यंग्यगीत उठेलनि—“जकर पेट दहेजसँ भरै, ओकर घर प्रेमसँ खाली।” गामक बुजुर्ग सेहो संग देलनि, माँग हटाओल गेल। गीत सामाजिक निर्णयक हथियार बनल।

गीत—लोभक थारी

लोकधुन: विवाह गारी

गाबू गे गारी, लोभक थारी पर गाबू गे,
हँसीक तीर सँ दहेजक पहाड़ ढाहू गे।

सोना माँगू, गाड़ी माँगू,
नेह कतऽ राखब?
गरीब माएक नोर गनि कऽ,
कोन सुख पाबब?
लोभक थारी खाली छोड़ू,
मानक भात खाबब।

सोना-गाड़ीक माँग सुनि मंगल रुकि गेल,
स्त्री-कण्ठक व्यंग्य-बाण सोझे लगि गेल।
'लोभक पेट भरत तँ नेह कतऽ बसत?'
गामक बुजुर्गो संग देल—रीति नव हँसत।

गाबू गे गारी, लोभक थारी पर गाबू गे,
हँसीक तीर सँ दहेजक पहाड़ ढाहू गे।

गारी आ स्त्री-व्यंग्य

खिस्सा—विवाहक गारीमे स्त्री सभ वरपक्षक दम्भ, आलस्य आ लोभपर हँसैत चोट करैत छथि। एक बेर वरक मित्र बुरा मानलक; बा बुझेलनि—“ई अपमान नहि, अहंकारक औषधि अछि।” गीतक अन्तमे दुनू पक्ष हँसल आ भोजन साथ केलक।

गीत—अहंकारक औषधि

लोकधुन: विवाह गारी

सुनाउ गे गारी, हँसी-हँसी सुनाउ गे,
अपमान नहि, अहंकारक औषधि पिआउ गे।

वरक जूता चमक बहुत,
पएर चलै नहि चारि,
मुँहमे मीठ, माँगमे पहाड़,
केहन अहाँक बारी!
हँसी सुनू, लोभ छोड़ू,
तखन बनब दुलारि।

वरक जूता चमचम, डेग नहि चारि चलए,
मुँह मे मिसरी, माँग पहाड़—गारी एहि पर जरए।
बुरा मानल मीत, बा बुझओलनि मरम,
हँसीक कड़ुआ घोंट पीबि उतरल दम्भक भरम।

सुनाउ गे गारी, हँसी-हँसी सुनाउ गे,
अपमान नहि, अहंकारक औषधि पिआउ गे।

मधुश्रावणी

खिस्सा—मधुश्रावणीक कथा सुनैत नव दम्पति सर्पक कथा, प्रकृतिक नियम, विश्वास आ सावधानी सीखैत। अनन्या प्रश्न केलक—“सर्पकेँ दोष देब कि मनुक्खक असावधानी?” कथा कहनिहार स्त्री ठहरलीह, फेर नव उत्तर जोड़लनि। एहि प्रकार कथा जीवित रहल।

गीत—पात, सर्प आ प्रश्न

लोकधुन: मधुश्रावणी गीत

सुनू गे कनियाँ, मधुश्रावणी सुनू गे,
डरक संगे बुद्धि-प्रश्नक फूल चुनू गे।

फूल धरू, पात सजाउ,
सर्पक कथा सुनू,
डरक संग बुद्धि रखू,
प्रश्नक दीप चुनू।
नव दाम्पत्य नेहसँ चलए,
प्रकृतिक मान गनू।

'दोष सर्पक कि असावधानीक?'—अनन्या पुछलक,
कथा रुकल, चर्चा चलल, नव अरथ खुजल।
फूल-पात सजल, नव जोड़ी सीखल मरम,
प्रकृतिक मान, प्रश्नक दीप—दाम्पत्यक धरम।

सुनू गे कनियाँ, मधुश्रावणी सुनू गे,
डरक संगे बुद्धि-प्रश्नक फूल चुनू गे।

सामा-चकेवा

खिस्सा—कार्तिक राति नेनी सभ माटिक सामा-चकेवा लऽ गीत गबैत, भाइ-बहीनक सम्बन्ध संग पक्षीक यात्रा स्मरण करैत। एक वर्ष प्रवासी पक्षी कम आयल; गीतमे पोखरि, गाछ आ चौर बचेबाक नव पद जोड़ल गेल।

गीत—सामा घुरि आउ

लोकधुन: सामा-चकेवा

गाबू गे बहिना, सामा-चकेवा गाबू गे,
पोखरि-चौर-डारि बचा पाँखि घुराबू गे।

सामा घुरि आउ चौर पर,
चकेवा गाछक डार,
पोखरि बचत तँ पाँखि बचत,
बचत कार्तिक प्यार।
भाइ-बहीन संग प्रतिज्ञा,
हरियर राखब धार।

एहि बरख पंछी कम—गीत मे प्रश्न जुड़ल,
पोखरि सूखल, गाछ कटल—कारण सोझाँ खुजल।
भाइ-बहीनक प्रतिज्ञा मे जुड़ल हरियर बोल,
धार-डारि जोगाएब—तखने कातिक अनमोल।

गाबू गे बहिना, सामा-चकेवा गाबू गे,
पोखरि-चौर-डारि बचा पाँखि घुराबू गे।

भगवती गीत

खिस्सा—भगवतीक पूजा दिन स्त्री सभ केवल परिवारक सुख नहि, सरयू सन अदृश्य श्रमिक स्त्रीक मान माँगलनि। भोगक पहिल पातरि श्रम करनिहारक नामपर राखल गेल। दीपक लौ स्थिर रहल।

गीत—श्रमक भगवती

लोकधुन: भगवती गीत

पूजू गे माए, श्रमक भगवती पूजू गे,
भोगक पहिल पातरि करम-करनिहारकेँ दिअ गे।

हे माए, अन्नक रक्षक,
श्रमक मान बचाउ,
जकर हाथे घर चलैत,
ओकर नाम लिखाउ।
भोगक पहिल पातरि ओकर,
न्यायक दीप जराउ।

परिवारक सुखक संग सरयूक मान माँगल,
अदृश्य श्रमिक-स्त्रीक नाम आरती मे टाँगल।
दीपक लौ लम्बा भेल, माए मुस्काएल,
न्यायक भोग चढ़ल तँ पूजा सफल कहाएल।

पूजू गे माए, श्रमक भगवती पूजू गे,
भोगक पहिल पातरि करम-करनिहारकेँ दिअ गे।

घरक देवता

खिस्सा—घरक देवता कोनो पैघ मूर्ति नहि, कखनो देबालक कोन, तुलसीक चौरा, चूल्हिक पहिल आगि वा पुरखाक पात अछि। बा कहैत छथि—घरक देवता ओ नियम अछि जे अतिथि, भूखल आ असहायकेँ खाली नहि घुरबैत।

गीत—देहरीक देवता

लोकधुन: गृह-मंगल

चिन्हू हे देवता, देहरीक देवता चिन्हू हे,
भूखल घुरए नहि खाली—इहए पूजा गिनू हे।

देहरी पर छोट दीया,
चूल्हि पर पहिल भात,
भूखल आए खाली नहि जाए,
एहि मे देवक बात।
मूर्ति छोट कि पैघ नहि,
करुणा हो दिन-रात।

कोनमे तुलसी, चूल्हि मे पहिल भातक भाग,
अतिथिक आदर, दीनक मान—घरक असल राग।
मूर्ति छोट-पैघक झगड़ा एतऽ किछु नहि,
करुणा जतऽ दिन-राति, देवता ओतऽ सही।

चिन्हू हे देवता, देहरीक देवता चिन्हू हे,
भूखल घुरए नहि खाली—इहए पूजा गिनू हे।

ग्राम-देवता आ गहबर

खिस्सा—गामक गहबरमे संकट समय प्रत्येक टोलक माटि एक मुट्ठी लऽ राखल जाइत। विश्वास अछि जे जखन माटि मिलल रहत, गामक रक्षा एक टोलक नहि, सभक जिम्मेदारी रहत। बाढ़ि पछाति गहबरक माटि फेर खेतमे बाँटल जाइत।

गीत—सभ टोलक माटि

लोकधुन: ग्राम-देवता भगैत

आनू हे आनू, टोल-टोलक माटि आनू हे,
गहबर मे मिला सभक रक्षा-प्रण ठानू हे।

एक मुट्ठी पूबर टोल,
एक दछिनक माटि,
पछिम-उत्तर संग मिलल तँ,
गहबर जागल राति।
सभ टोलक रक्षा एक,
एहि मे देवक थाति।

पूबक मुट्ठी, दछिनक मुट्ठी, पछिम-उत्तर संग,
मिलल माटिक ढेरी पर जागल देवक रंग।
रक्षा एक टोलक नहि, सभ कान्हक भार,
भगैतक ताल पर गूँजए साझा जयकार।

आनू हे आनू, टोल-टोलक माटि आनू हे,
गहबर मे मिला सभक रक्षा-प्रण ठानू हे।

धर्मराजक गीत

खिस्सा—धर्मराजक कथा सुनबैत बा कहैत छथि जे अन्तिम न्यायमे धन नहि, काजक छाप तौलल जाइत। एक पात्रमे पानि, दोसरमे श्रमिकक नाम राखि बच्चाकेँ बुझाओल गेल—नाम बिनु न्याय अधूरा।

गीत—काजक तुला

लोकधुन: धर्मराज गीत

तौलू हे तौलू, धनक संग काज तौलू हे,
गुमनाम श्रमक नाम पहिने बोलू हे।

धनक ढेरी एक दिस राखू,
दोसर काजक नाम,
ककर तुला भारी पड़त,
पूछै धर्मक धाम।
जेकर श्रम गुमनाम रहल,
पहिने लिखू ओकर नाम।

एक पलड़ा पर धनक ढेरी, दोसर पर नाम,
बच्चा देखल—झुकल तुला काजक ठाम।
धर्मराजक दरबार मे मोहर नहि चलए,
जेकर श्रम सच्चा, ओकर पलड़ा फलए।

तौलू हे तौलू, धनक संग काज तौलू हे,
गुमनाम श्रमक नाम पहिने बोलू हे।

शिव आ नचारी

खिस्सा—चन्ना गाछी लग महादेवक नामे नचारी गबैत स्त्री सभ दुःख कहैत, मुदा अन्तमे धैर्य माँगैत। एक बेर गीतमे “नीलकण्ठ”क बिम्बसँ विष सहबाक नहि, विष चिन्हि समाजसँ निकालबाक अर्थ जोड़ल गेल।

गीत—विष चिन्हू

लोकधुन: नचारी

गाबू हे नचारी, नीलकण्ठक नचारी हे,
विष पीबू नहि—चिन्हू, ई नव तैयारी हे।

हे नीलकण्ठ, विष पहिचानू,
मौन कऽ नहि पीबू,
अन्यायक विष बाहर आनू,
साँचक जलसँ सीबू।
कण्ठ नील हो, मोन उज्जर,
सभक संगमे जीबू।

मौन कऽ सहब नहि आब, विष बाहर आनब,
अन्यायक नाम लऽ कऽ साँचक जल छानब।
कण्ठ नील रहौ भले, मोन रहए उज्जर,
स्त्री-कण्ठक नचारी मे धैर्यो, प्रतिकारो-स्वर।

गाबू हे नचारी, नीलकण्ठक नचारी हे,
विष पीबू नहि—चिन्हू, ई नव तैयारी हे।

विष्णु आ हरिगीत

खिस्सा—हरिगीत गबैत लोक जीवनक संकटमे पालन आ धैर्यक अर्थ खोजैत। नन्द आरुणि कहला—पालन माने अन्याय ढाँपब नहि, सत्यकेँ बचा कऽ आगाँ लऽ जाएब। गीतमे नदी पार करबला नावकेँ विष्णुक शेष-शय्या नहि, श्रमिकक साझा काजक रूपक बनाओल गेल।

गीत—पालनक नाव

लोकधुन: हरिगीत

सम्हारू हे पालनहार, धारक नाव सम्हारू हे,
सत्यक दीपक बाती धार-पार उतारू हे।

हे पालनहार, नाव सम्हारू,
सत्यक दीप न बुझए,
जकर नाम धारमे अटकल,
ओकर आवाज न रुके।
पालन माने न्याय बचेनाइ,
गीत एहि बात कहे।

'पालन माने ढाँपब नहि'—आरुणिक विचार,
साँच बचा आगाँ पहुँचाएब—इहए पालनक सार।
जकर नाम धार मे अटकल, ओकर स्वर जिआउ,
हरिगीतक लहरि-लहरि मे न्याय-नाव बहाउ।

सम्हारू हे पालनहार, धारक नाव सम्हारू हे,
सत्यक दीपक बाती धार-पार उतारू हे।

दुर्गापूजा: ढोल, मूर्ति, मेला, बलि, भोग, भसान आ रोदन

खिस्सा—दुर्गापूजाक मेला गामक रंग, व्यापार, बाजा आ भेटक अवसर अछि। मूर्ति बनबैत माटि अनेक टोलसँ आनल जाइत, ढोल अनेक हाथक कारीगरीसँ बनैत, भोग सामूहिक। भसान दिन स्त्रीक रोदन बेटी विदाइ सन उठैत। एक वर्ष बलिक बदला अन्न आ पशु-सेवाक संकल्प लेल गेल, आ गीतमे “शक्ति रक्षा करैत, केवल रक्त नहि माँगैत” पद जुड़ल।

गीत—माए घुरि अइह

लोकधुन: दुर्गा-भसान

जो हे माए, नदीक बाटे जो हे,

अगिला बरख फेर अएबाक वचन दऽ जो हे।

ढोल बजल, मेला सजल,

भोग भरल पातरि,

माए चलली नदीक बाट,

रोइल गामक नारी।

शक्ति रहत रक्षा भीतर,

घुरि अइह अगिला बारी।

टोल-टोलक माटि सँ गढ़ल तोहर काया,

अनेक हाथक ढोल-भोग, अनेक मनक माया।

भसानक नोर मे बेटी-विदाइक झलक,

शक्ति रहि गेल रक्षा बनि—घर-घर अपलक।

जो हे माए, नदीक बाटे जो हे,

अगिला बरख फेर अएबाक वचन दऽ जो हे।

गजेन्द्र ठाकुर

सूर्य आ छठि

खिस्सा—छठि घाटपर व्रतीक संग पूरा गाम सफाइ, जल, घाट, पातरि आ सुरक्षा सम्हारैत। अस्ताचलगामी सूर्यकेँ अर्घ्य देब सीखबैत अछि जे ढलैत प्रकाशो आदरणीय। उगैत सूर्यक अर्घ्य नव आरम्भ। उज्ज्वल झाक स्मरणमे घाटपर एक दीप “अकेला नहि” नामे राखल गेल।

गीत—अस्त आ उदय

लोकधुन: छठि गीत

देउ हे अरघ, अस्तो-उदय दुनू केँ देउ हे,

ढलैत आ उगैत—दुनू प्रकाशक मान लेउ हे।

अस्तक सूर्य, प्रणाम अहाँकेँ,

दिनक थाकल देह,

भोरक सूर्य, स्वागत अहाँकेँ,

नव जीवनक नेह।

जलमे ठाढ़ गाम कहै,

अकेला नहि केह।

घाट-घाट सफाइ, जल-जल पातरि सजल,

व्रतीक संग पूरा गाम कमर भरि जल।

थाकल दिनक सूर्यकेँ पहिने प्रणाम,

तखन भोरक स्वागत—छठिक ई विधान।

देउ हे अरघ, अस्तो-उदय दुनू केँ देउ हे,

ढलैत आ उगैत—दुनू प्रकाशक मान लेउ हे।

मर्सिया आ झरनी

खिस्सा—मर्सिया सुनैत गामक पुरुखो नोर रोकैत नहि। झरनीक ताल शहादत आ अन्यायक स्मरणकेँ देहगत बनबैत। बिसेसर, सरयू आ अनाम श्रमिकक नाम जोड़ि एक नब मर्सिया गाओल गेल, जाहिमे करुणा संग न्याय माँग छल।

गीत—झरनीक नोर

लोकधुन: मर्सिया-झरनी

बजाउ हे झरनी, झर-झर ताल बजाउ हे,
छूटल नामक पाँती नोरक संग गाबू हे।

झर-झर बाँसक ताल बजै,
नोर उतरै धार,
जे अन्यायमे छूटि गेल,
ओकर नाम पुकार।
शोक नहि केवल रोदन,
न्यायक खुलल दुआर।

बाँसक ताल पर उतरए शहादतिक याद,
पुरुखो नोर नहि रोकए—एहन करुण नाद।
बिसेसर-सरयू-अनाम—नव मर्सिया बनल,
शोक टा नहि, न्यायक दुआरो एहि सँ खुजल।

बजाउ हे झरनी, झर-झर ताल बजाउ हे,
छूटल नामक पाँती नोरक संग गाबू हे।

फकीरी खिस्सा आ साझा श्रद्धा

खिस्सा—एक फकीर गढ़ नारिकेल आएल, मंदिरक देहरी, गहबरक छाह आ नदीक घाट तीनू ठाम बैसल। लोक पूछलक—“अहाँक ठाम कतय?” ओ कहलक—“जतय पियासलकेँ जल भेटए।” तें फकीरी खिस्सा साझा करुणाकेँ धर्मक मूल मानैत अछि।

गीत—पियासक धर्म

लोकधुन: फकीरी धुन

बाजू हे फकीरा, पियासक धर्म बाजू हे,

मन्दिर-मस्जिद-घाट तीनू ठाम साजू हे।

मस्जिद-मन्दिर बाट पूछै,

फकीर कहै—जल,

जतय पियासल घैल भरै,

ओतहि ईश्वर पल।

नाम अनेक, करुणा एक,

एहि मे मन निर्मल।

'ठाम कतय?'—लोक पुछलक; उत्तर सहज-सरल,

'जतऽ पियासल जल पाबए'—बोल अमर भेल।

नाम अनेक, करुणा एक—फकीरीक सार,

साझा श्रद्धाक ई धुन गामक श्रृंगार।

बाजू हे फकीरा, पियासक धर्म बाजू हे,

मन्दिर-मस्जिद-घाट तीनू ठाम साजू हे।

पहेली

खिस्सा—बा बच्चा सभकेँ पहेली पूछलीह—“देह नहि, पाँखि नहि, तैओ गाम-गाम उड़ै; जकरा पकड़ू, हाथ खाली।” उत्तर छल—गीत। एहि पहेली सँ बच्चा बुझलक जे लोक-संस्कृति वस्तु नहि, यात्रा करैत स्वर अछि।

गीत—पहेलीक उत्तर

लोकधुन: बाल पहेली गीत

बूझू हो नेना, बा केर पहेली बूझू हो,
बिनु देहक उड़निहार के—मोने-मोन खोजू हो।

देह बिना के उड़ि चलै?
गीत उड़ै रे भाई,
पाँखि बिना के घर-घर बसै?
कथा बसै रे भाई।
पकड़ब चाहू, कण्ठ पकड़ू,
हाथ रहत तरुआई।

देह नहि, पाँखि नहि, तइयो गाम-गाम बास,
पकड़ू तँ हाथ खाली, कण्ठ मे निवास।
उत्तर भेटल—गीत! सभ नेना चिचिआएल,
संस्कृतिक ई चिड़ै सभक कण्ठ मे समाएल।

बूझू हो नेना, बा केर पहेली बूझू हो,
बिनु देहक उड़निहार के—मोने-मोन खोजू हो।

उपनाम

खिस्सा—गढ़ नारिकेलमे उपनाम प्रेम, पेशा, आदत वा हास्यसँ जन्मैत, मुदा अपमानक सीमा पार करैत तँ समुदाय रोकैत। आरुणि नन्दन कहलक—“जे नाम मनुख छोट करए, से उपनाम नहि, चोट।” तें नया नियम बनल—उपनाम सुनि व्यक्ति हँसए, तखनहि मान्य।

गीत—नाममे नेह

लोकधुन: हास्य झूमर

राखू हो उपनाम, नेह भरल राखू हो,
हँसीबला फूल, नोरबला काँट—चिन्हू हो।

उपनाम जँ हँसी जगाबै,
नेहक फूल बुझू,
उपनाम जँ नोर झराबै,
ओकर बाटे रुकू।
नाम खेल हो, चोट नहि,
एहि मर्यादा सुखू।

प्रेम-पेशा-आदति सँ जन्मए उपनाम,
मुदा अपमानक सीमा पर रोकए पूरा गाम।
आरुणिक बोल—जे नाम छोट करए मनुख,
से उपनाम नहि, अपशब्द—त्यागू सम्मुख।

राखू हो उपनाम, नेह भरल राखू हो,
हँसीबला फूल, नोरबला काँट—चिन्हू हो।

अतिशयोक्ति

खिस्सा पाँखि पसारि उड़ै,

गीत—पैघ खिस्सा

लोकधुन: आख्यान झूमर

उड़ाउ हे खिस्सा, पाँखि पसारि उड़ाउ हे,
माछ नाव सँ पैघ करू, हँसी मे डुबाउ हे।

माछ भेल नावसँ पैघ,
कोदारि पर्वत तोड़,
हँसीक सीमा जोड़।
मुदा सत्यक देह नहि ढाँपू,
कल्पना राखू मोड़।

अस्सी मोनक कोदारि, अकास-छूबैत बान्ह,
नेना पुछल—'झूठ?'; बा कहलनि—'जोरक जबान।'
खिस्साक पैघपन अनुभवक नाप कहए,
मुदा सत्यक देह पर परदा नहि रहए।

उड़ाउ हे खिस्सा, पाँखि पसारि उड़ाउ हे,
माछ नाव सँ पैघ करू, हँसी मे डुबाउ हे।

नकल

खिस्सा—बच्चा सभ अधिकारीक भारी भाषा, हाटक बोलनिहार, नाविकक पुकार आ ढोलकियाक चालक नकल करैत। एक दिन अनन्या “सूचीमे नाम नहि”क नकल एतेक तीक्ष्ण केलक जे बड़ लोक हँसैत-हँसैत असुविधा अनुभव केलक। नकल सत्ता आ व्यवहारक दर्पण बनल।

गीत—नकलक ऐना

लोकधुन: बाल हास्य गीत

करू हो नकल, हँसी-हँसी नकल करू हो,
भारी बोलीक पोल पातर स्वर सँ खोलू हो।

बाबू बाजै भारी बोली,
नेना करै नकल,
शब्द पैघ, अर्थे छोट,
खुलि गेल सभ छल।
हँसीक ऐना सामने,
सीधा भेल अकल।

अधिकारीक 'सूची मे नाम नहि'—नेना दोहराएल,
एतेक तीखल नकल जे बड़को लजाएल।
शब्द पैघ, अर्थ छोट—ऐना मे देखाएल,
हँसीक सोझाँ टेढ़ अकल सोझे भऽ आएल।

करू हो नकल, हँसी-हँसी नकल करू हो,
भारी बोलीक पोल पातर स्वर सँ खोलू हो।

तात्कालिक तुक

खिस्सा—हाटमे अचानक वर्षा आयल, सभ दौड़ल। एक स्त्री बोललीह—“पान बचाउ, गान बचाउ,” दोसर तुरन्त जोड़लीह—“भीजल हाटमे जान बचाउ।” किछु मिनटक भीतर पूरा गीत बनि गेल। लोकगीत वर्तमान घटना पकड़बाक एहनहि तीव्र शक्ति रखैत अछि।

गीत—भीजल हाट

लोकधुन: टटका हाट-झूमर

बचाउ गे बचाउ, पान-गान बचाउ गे,
भीजल हाटक टटका गीत संगे गाउ गे।

पान बचाउ, गान बचाउ,

भीजल हाटमे जान,

माछ ढकू, मिठाइ समेटू,

दौड़ल सभ दुकान।

बरखा आयल गीत बनौलक,

एहने लोकक गान।

अचानक बरखा, दौड़ल हाट, उड़ल छाता-पात,

एक बोलली, दोसर जोड़ली—बनि गेल बात।

माछ ढाकल, मिठाइ सम्हारल, भीजलो मे राग,

मिनटे भरि मे गीत बनल—लोकक टटका फाग।

बचाउ गे बचाउ, पान-गान बचाउ गे,

भीजल हाटक टटका गीत संगे गाउ गे।

उलटबाँसी

खिस्सा—बा कहलीह—"जे सभसँ बेसी बोलै, ओ कखनो सभसँ कम सुनै।" बच्चा सभ उलटबाँसी बना देलक—"मौनक कान पैघ।" चन्ना गाछीक कथा भीतर जीवित लोक भूतसँ डेराइत, मुदा भूत जीवितक अन्यायसँ डेराइत—ई उलटबाँसी सामाजिक सत्य खोलैत अछि।

गीत—मौनक कान

लोकधुन: निर्गुण उलटबाँसी

उलटू हे बानी, सोझकेँ उलटि गाबू हे,

बजनिहार बहीर, मौनक कान—बूझू हे।

बोलै पहाड़, सुनै नहि किछु,

मौनक कान विशाल,

जीवित डेरै भूतक नामे,

भूत डेरै जंजाल।

उलटि देखू दुनियाँ भाई,

साँच ठाढ़ ततकाल।

जे गरजए पहाड़ जकाँ, से सुनए नहि कान,

जे चुप रहए धार जकाँ, से बूझए जहान।

जीवित डेराए भूत सँ, भूत डेराए जाल,

उलटि कऽ देखू दुनियाँ—साँच ठाढ़ ततकाल।

उलटू हे बानी, सोझकेँ उलटि गाबू हे,

बजनिहार बहीर, मौनक कान—बूझू हे।

खिस्सा-कहबाक गोष्ठी

खिस्सा नदी, रूप अनेक,

गीत—खिस्साक चारि बाट

लोकधुन: कथा-गान

कहू हे खिस्सा, चारू बाटे कहू हे,

अन्त ककरो हाथ नहि—धारे-धार बहू हे।

एक कहै पूबरक रूप,

दू कहै पछिम,

तीसर जोड़ै माएक बात,

चारिम नेनाक निम।

स्रोत रहै अचिम।

पहिल अन्त नहि कहए, दोसर रूप जोड़ए,

तेसर माएक बात, चारिम नेना-प्रश्न छोड़ए।

एक्के खिस्सा सय रूप, स्रोत एक्के गहींर,

गोष्ठीक धीम आगि लग बहए कथा-नीर।

कहू हे खिस्सा, चारू बाटे कहू हे,

अन्त ककरो हाथ नहि—धारे-धार बहू हे।

पुकार-उत्तर

खिस्सा—बान्ह, नाव, रोपनी, भसान वा जागरण—सभ सामूहिक काजमे एक स्वर आगाँ, समूह पाछाँ। पुकार नेता बनैत अछि, उत्तर प्रमाण जे समूह जागल अछि। उज्ज्वल झाक घटना पछाति विद्यालयमे पुकार भेल—“अकेला?” उत्तर—“नहि, संग छी।”

गीत—अकेला?

लोकधुन: पुकार-उत्तर

पुकारू हे पुकारू, 'अकेला?' पुकारू हे,

'नहि, संग छी'—उत्तरक ढोल बजाउ हे।

पुकार—अकेला?

उत्तर—नहि, संग छी!

पुकार—डेरायल?

उत्तर—तैयो संग छी!

पुकार—नाम कटायल?

उत्तर—लिखब, संग छी!

पुकार नेता बनए, उत्तर जागल प्रमाण,

बान्ह-नाव-रोपनी सभ ठाम एक्के विधान।

उज्ज्वलक घटना पछाति ई पाठ पैघ भेल,

'संग छी'क उत्तर बिनु कियो नहि रहि गेल।

पुकारू हे पुकारू, 'अकेला?' पुकारू हे,

'नहि, संग छी'—उत्तरक ढोल बजाउ हे।

परदेशी शहरमे गढ़ नारिकेल

खिस्सा—शहरक छोट कोठरीमे गढ़ नारिकेलक लोक सामा-चकेवा, सोहर, छठि आ विवाहगीत गबैत। पोखरि नहि तँ बाल्टिक जलमे चान देखैत, माटि नहि तँ छोट पात्रमे गामक माटि राखैत। संस्कृति स्थान बदलि अपन मूल स्मृति बचबैत।

गीत—कोठरीमे गाम

लोकधुन: परदेशिया

बसाउ हे बसाउ, कोठरी मे गाम बसाउ हे,

बाल्टिक जल मे चान उतारि सामा गाउ हे।

चारि देबाल शहरक भीतर,

एक कोनमे गाम,

बाल्टिक जलमे चान उतरै,

माटिमे पुरखाक नाम।

दूर रहलो गीत कहै,

संग चलै निज धाम।

चारि देबालक भीतर एक कोन गामक नाम,

छोट पात्रक माटि मे पुरखाक धाम।

छठि-सोहर-विवाहगीत शहरो मे गूँजल,

दूरी देह धरि रहल, मोन गामे जुड़ल।

बसाउ हे बसाउ, कोठरी मे गाम बसाउ हे,

बाल्टिक जल मे चान उतारि सामा गाउ हे।

परिशिष्ट २: अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत

मुख्य कथामे अनाम ग्रहक प्रसंग स्वप्न-दृष्टान्त रूपमे सघन कएल गेल अछि। अध्याय १०१–१०४क सभ मूल लोकगीत अभिलेखरूपेँ अक्षुण्ण एतय राखल गेल अछि।

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक आमन्त्रण

अध्यायारम्भ लोकगीत : पृथ्वीक उपहार लिअ

लोकधुन : आकाश-बटगबनी

सजाउ हे झोरा, यात्राक झोरा सजाउ हे,
माटिक गन्ध, मायक गीत—एतबे धन लऽ जाउ हे।

दूर ग्रह जँ बुलाबै, संग की लऽ जाएब?
माटिक गन्ध, मायक गीत, नामक दीप सजाएब।
धन नहि, हथियार नहि, साझा नेहक बात,
पृथ्वीक हरियर सीख लऽ पार करब आकाश-पात।

तारा पूछत—तोहर मूल? कहब—मानव मान,
जतय जाएब ओतय रोपब शान्ति, श्रम, सम्मान।
पृथ्वीक उपहार लिअ, लोभ एतय छोड़ू,
दूर ग्रहक यात्रामे प्रेमक बाट जोड़ू।

तारा-तारा टिकट कटौ, पासपोर्ट नेहक,
सीमा पर पूछत कियो—देखाउ मुँह देसक।
धन-हथियार बाहर छोड़ू, भीतर नाम-दीप,
पृथ्वीक हरियर सीख बनत ब्रह्माण्डक सीप।

सजाउ हे झोरा, यात्राक झोरा सजाउ हे,

माटिक गन्ध, मायक गीत—एतबे धन लऽ जाउ हे।

❖

लोकगीत : दूर ग्रहक बुलाहट

लोकधुन : आकाश-बटगबनी

पूछलक हे ग्रह, 'संग की आनब?' पूछलक हे,

नामक साँस, माटिक गन्ध, नेनाक हाथ लेब हे।

दूर ग्रह आमन्त्रण देलक, पूछलक—संग की आनब?
हम नामक साँस, माटिक गन्ध, बच्चाक हाथ लऽ जानब।
यानक धुआँ नहि, कबड्डीक रेखा उगल,
‘उपस्थित’ लिखिते काँचक देबालमे दरार पड़ल।
के जाएत, के रहत—एखन निर्णय नहि,

नाम पहुँचल तँ लोक पहुँचल, दूरी रहत नहि।
गामक धूलि सँ खेल उठि ताराक कक्षा गेल,
अनाम ग्रहक अन्हारमे पृथ्वीक स्वर खेल।
आमन्त्रण दूरक, प्रश्न घरक नजिक,
संग की लऽ जाएब?—अपन स्मृति अटूट, अडिग।

यानक धुँआ नहि, कबड्डीक रेखा उगल,
'उपस्थित' लिखिते काँचक देबाल दरकल।
गामक धूलि सँ खेल उठि ताराक कक्षा गेल,
अनाम ग्रहक अन्हार मे पृथ्वीक स्वर भेल।

पूछलक हे ग्रह, 'संग की आनब?' पूछलक हे,
नामक साँस, माटिक गन्ध, नेनाक हाथ लेब हे।

❖

अध्याय १०२ — ग्रहक बीच कबड्डी

अध्यायारम्भ लोकगीत : ताराक पारीमे नाम

लोकधुन : कबड्डी-आकाश धुन

जाउ हे खिलाड़ी, ताराक पारी जाउ हे,

साँस बान्हल, नाम खुलल—दुनू संग निबाहू हे।

साँस रोकू, नाम बाजू, ताराक पारी जाउ,

सीमा नभक हो तइयो अपन जड़ि नहि बिसराउ।

एक पारी पृथ्वी लेल, दोसर मानवता,

तीसर पारी न्याय लऽ, चौठी सह-अस्तित्वता।

ताराक धूरि माथपर, हृदयमे गामक थाप,
कबड्डीक लय कहै—संग रहू बेहिसाब।
ताराक पारीमे नाम आदरसँ पहुँचत,
ब्रह्माण्डो सीखत जखन मनुख नेहसँ जियत।

पहिल डेग पृथ्वी लेल, दोसर मानव-जाति,
तेसर न्यायक, चारिम—सह-अस्तित्वक बाती।
नभक धूरा माथ लागौ, हृदय गामक ताल,
कबड्डीक लय पर नाचए आकाशगंगा-थाल।

जाउ हे खिलाड़ी, ताराक पारी जाउ हे,
साँस बान्हल, नाम खुलल—दुनू संग निबाहू हे।

❖

लोकगीत : ग्रहक पारी

लोकधुन : कबड्डी लोकधुन

रोकू हे साँस, नाम बाजि घुरू हे,
जतऽ खेल पहुँचत, ओतऽ पाठ बिनु ने रहत हे।

साँस रोकू, नाम बाजू, ताराक पार घुरू,
धरतीक माटि हथेलीमे, अन्हारक रेखा छुरू।
ग्रहक बीच खेलोमे वैह पुरान नियम,
जकर स्मृति टूटल नहि, ओकर पग अडिग नित्यम।
अनन्या लिखलक—रेखा पृथ्वी सँ दूर गेल,

साँस नहि टूटल, खेल कनी धीमा भेल।
बच्चा ‘कबड्डी’ नहि, ‘उपस्थित’ कहलक,
अदृश्य देबालक पहिल दरार चमकल।
ग्रह बदलू, आकाश बदलू, नामक धर्म नहि,
जतय खेल पहुँचत, पाठ बिना रहत नहि।

ग्रहक बीचो वैह पुरान नियम चलल,
जकर स्मृति ने टूटल, ओकर पग अडिग रहल।
नेना 'कबड्डी' नहि, 'उपस्थित' कहलक,
अदृश्य देबालक पहिल दरार चमकल।

रोकू हे साँस, नाम बाजि घुरू हे,
जतऽ खेल पहुँचत, ओतऽ पाठ बिनु ने रहत हे।

❖

अध्याय १०३ — अनाम ग्रह पर नाम-पाठ

अध्यायारम्भ लोकगीत : नामक धागा आकाशमे

लोकधुन : झूलन-आकाश गीत

झूलू हे धीरे, ताराक झूला झूलू हे,
एक छोर पुरखाक हाथ, दोसर नेना बूझू हे।

ताराक बीच तनल धागा, नामक झूला डोलै,
एक छोर पुरखा पकड़े, दोसर नेना खोलै।
आकाश गहींर हो तइयो धागा टूटत नहि,
स्मृति, प्रेम, जिम्मेदारी कखनहुँ छोट नहि।

झूलू धीरे, गीत गाउ, तारामे दीप सजाउ,
हरेक पीढ़ीकेँ अगिला पीढ़ीक संग जोड़ि जाउ।
नामक धागा आकाशमे उज्जर राह बनत,
दूर-दूरक जीवन सभ एक परिवार जनत।

सावनक झूलन जकाँ नभ मे डोरि तनल,
स्मृति-प्रेम-जिम्मेदारीक तीन लड़ि बनल।
पेंग बढ़ाउ, गीत गाउ, तारा छूबि घुरू,
पीढ़ी-पीढ़ीक हाथ जोड़ि अटूट डोरि करू।

झूलू हे धीरे, ताराक झूला झूलू हे,

एक छोर पुरखाक हाथ, दोसर नेना बूझू हे।

❖

लोकगीत : तारामे तनल नाम

लोकधुन : आकाश-विरहा

तनल हे धागा, ताराक बीच नामक धागा तनल हे,
धरतीक एक पुकार सँ ब्रह्माण्डो जागल हे।

ताराक बीच नामक पातर धागा तनल,
कबड्डीक स्वर यात्रा-मन्त्र बनि चलल।
जतय नाम नहि, जीवनक साँस आधा,
क्रमांकित घरमे मनुष्य रहै उदास।
अनाम देबालपर उच्चारिते दरार,

पृथ्वी घुरि बच्चा कहलक—एतहि हमर संसार।
पृथ्वी छोड़ब नहि, नामसहित बचाएब,
माटिक रेखा आकाशक कक्षा धरि चमकाएब।
तारा दूर अछि, मुदा नामक नेह लग,
धरतीक एक पुकारसँ ब्रह्माण्डो जागल।

जतऽ नाम नहि, ओतऽ जीवनक साँस आधा,
क्रमांकित घर मे मनुख रहए उदास-बाधा।
अनाम देबाल पर उच्चारिते पड़ल दरार,
पृथ्वी घुरि नेना कहलक—एतहि हमर संसार।

तनल हे धागा, ताराक बीच नामक धागा तनल हे,
धरतीक एक पुकार सँ ब्रह्माण्डो जागल हे।

❖

अध्याय १०४ — गढ़ नारिकेल फेर पृथ्वी चुनैत अछि

अध्यायारम्भ लोकगीत : पृथ्वी हमर चयन

लोकधुन : माटि-प्रेम गीत

चुनू हे पृथ्वी, फेर-फेर पृथ्वी चुनू हे,
शीशा-महल सँ नीक अपन कादो गुनू हे।

स्मृति-बिनु शीशा-महलसँ अपन कादो नीक,
माटिक गन्धि, पानिक स्वर, पीपरक छाह अतीव।
पृथ्वी चुनब दीनता नहि, प्रेमक पैघ प्रमाण,
एतय श्रमक पसीना अछि, एतय जनक सम्मान।

जतय घाव ओतहि उपचारक बीज उगाउ,
धरती छोड़ि भागू नहि, धरती नव बनाउ।
पृथ्वी हमर चयन कहू, जिम्मेदारी साथ,
अपन घरकेँ न्यायमय करब—एहने उज्जर बाट।

एतऽ घाव सही, मुदा घावक दवाइयो एतहि,
पसेनाक खेत एतहि, जनक गीतो एतहि।
भागब कायरता, बदलब प्रेमक प्रमाण,
धरतीकेँ न्यायमय गढ़ब—इहए स्वाभिमान।

चुनू हे पृथ्वी, फेर-फेर पृथ्वी चुनू हे,
शीशा-महल सँ नीक अपन कादो गुनू हे।

❖

लोकगीत : पृथ्वीए चुनलहुँ

लोकधुन : माटि-प्रेम गीत

चुनलहुँ हे पृथ्वी, फेर-फेर पृथ्वीए चुनलहुँ हे,
गुम्बदक स्मृति-विहीनता सँ अपन कादो नीक बुझलहुँ हे।

स्मृति-विहीन गुंबदसँ अपन कादो नीक,
कमला-बलानक गन्ध, फाटल मेड़ अतीव।

क्रमांकित आवास नहि, नामक देहरी चाही,
ऑक्सीजनक करार नहि, अपन हवा आ माटि।
एक बून्दमे अन्हार, दोसरमे नव भोर,

बच्चा लिखलक—पृथ्वी चुनैत छी एहि ठौर।
अन्तिम पन्ना नहि, अगिला पहरा लिखल,
अनाम ग्रहक बिन्दु बिहानमे धीरे पघिलल।
पृथ्वी, तोहर घावो हमर, तोहर नोर हमर,
तोहर नामक रखवारीमे अगिला जनम गुजर।

क्रमांकित आवास नहि, नामक देहरी चाही,
ऑक्सीजनक करार नहि—अपन हवा आ माटी।
एक बून्द मे अन्हार, दोसर मे नव भोर,
अन्तिम पन्ना नहि—अगिला पहराक ठौर।

चुनलहुँ हे पृथ्वी, फेर-फेर पृथ्वीए चुनलहुँ हे,
गुम्बदक स्मृति-विहीनता सँ अपन कादो नीक बुझलहुँ हे।

❖

परिशिष्ट ३: न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा

मुख्य अध्याय सभमे कथासँ सम्बन्धित संक्षिप्त दार्शनिक अन्तर्ध्वनि राखल गेल अछि। सभ मूल शास्त्रीय दृष्टान्त आ सिद्धान्त एतय अध्यायानुसार सुरक्षित अछि।

अध्याय ५७ — गंगेशक प्रश्न

कादम्बरीक अन्तिम पन्ना- ग्रन्थ आ विघ्न

गढ़ नारकेलक पुस्तकालयमे बाणभट्टक कादम्बरीक एकटा पुरान प्रति राखल छल। पाण्डुलिपिक अन्तिम पन्ना पर कथा एकबैग रुकि जाइत अछि। प्रत्येक नव विद्यार्थी ओहि पन्ना धरि पहुँचि एके प्रश्न करैत अछि—एतेक विशाल कल्पना, एतेक आराधना आ एतेक सावधानीक बादो कथा अपूर्ण किएक रहि गेल?

एक दिन आचार्य गङ्गेश अपन शिष्यसभकेँ ओ पन्ना देखेलनि। एक शिष्य कहलक, “गुरुदेव, मङ्गलाचरण कएल गेल छल, तखन ग्रन्थ पूर्ण होएबाक चाही छल।” दोसर शिष्य उत्तर देलक, “सम्भव अछि मङ्गल पर्याप्त नहि छल।” गङ्गेश मुस्करयलाह। ओ कहलनि, “अहाँ सभ फल आ सहायक कारणकेँ एक बुझि रहल छी। दीप बाट देखबैत अछि, मुदा यात्रीक स्थानपर चलैत नहि अछि।”

ओ पुस्तकालयक खिड़की खोलि देलनि। हवा सँ पन्ना फड़फड़ाए लागल। “लेखकक बुद्धि, स्मृति, समय, स्वास्थ्य, सामग्री आ निरन्तर श्रम ग्रन्थ-समाप्तिक लौकिक कारण अछि। मङ्गलाचरण बाधा हटाबयवला प्रयत्न अछि। जँ मृत्यु, रोग वा आन प्रबल विघ्न सोझाँ आबि जाए, तँ मात्र आरम्भक स्तुति लेखकक स्थानपर शेष अध्याय नहि लिखि सकैत अछि।”

शिष्यसभ फेर अपूर्ण पन्ना दिस देखलक। आब ओकरा ओ पन्ना असफलताक प्रमाण नहि, कारणसभक जटिल सम्बन्धक साक्षी बुझायल। कादम्बरीक मौन अन्तिम पन्ना स्वयं एकटा प्रश्न बनि गेल—काज पूर्ण करबाक इच्छा पर्याप्त अछि, वा ओकरा लेल सभ

आवश्यक कारणक उपस्थितियो चाही? *(दार्शनिक सिद्धान्त: मङ्गलाचरणक प्रत्यक्ष फल ग्रन्थ-समाप्ति नहि, विघ्न-नाश अछि)*

अध्याय ५८ — चन्द्रपालक स्मारक-अनुप्रयोग

किरणावलीक निर्विघ्न यात्रा

उदयनाचार्यक कक्षमे शिष्यसभ पाण्डुलिपिक गड्डर बाँधि रहल छल। ककरो ध्यान गेल जे आरम्भमे परम्परागत मङ्गल-पद्य नहि अछि। एक युवक घबरा कऽ कहलक, “आचार्य, ई ग्रन्थ यात्रा पर जाएत, मुदा एकर रक्षा के करत?”

उदयन शान्त स्वरमे कहलनि, “सावधानी, अध्ययन, स्पष्ट लेखन आ समयपर संशोधन।” युवक फेर आग्रह कएलक, “मुदा मङ्गल?” उदयन उत्तर देलनि, “श्रद्धा मनक अनुशासन अछि; ओकर अनादर नहि। मुदा तर्कक प्रश्न ई अछि जे कार्यक समाप्ति वास्तवमे कोन कारणसँ होइत अछि।”

दिन बीतल। प्रतिलिपि करबाक समय आएल, ताड़पत्र सुखायल रहल, स्याही खराब नहि भेल, लेखक स्वस्थ रहलाह आ ग्रन्थ पूरा भऽ गेल। बादमे एहि घटनापर विवाद उठल। किछु लोक एकरा मङ्गलवादक खण्डन मानलक। गङ्गेश कहलनि, “नहि। ई केवल एतबा देखबैत अछि जे ओतय प्रबल विघ्न उपस्थित नहि छल। जतय रोग नहि, ओतय औषधि नहि खाएलासँ स्वास्थ्यक कारण औषधि असत्य नहि भऽ जाइत अछि।”

किरणावलीक पूर्ण पाण्डुलिपि शिष्यसभक हाथमे छल। ओकर पूर्णता कोनो एकटा कारणक विजय नहि, अनुकूल परिस्थितिसभक संयुक्त फल छल। *(दार्शनिक सिद्धान्त: विघ्नक अभाव पहिनेसँ रहला पर मङ्गलाचरण बिना सेहो कार्य पूर्ण भऽ सकैत अछि)*

अध्याय ५९ — राघव सिग्नलक नव कोड

दूषण-पञ्जीक खाली पन्ना

पञ्जीकारक कोठरीमे रौद कम छल, मुदा आरोपक स्याही बहुत गाढ़। पुरान पोथीक एक पन्नापर गङ्गेशक नामक सोझाँ लाल चेन्ह छल। किछु लोक ओहि चेन्हकेँ व्यक्तिक सम्पूर्ण सत्य मानि लेने छल।

बालक गङ्गेश एक दिन ओ पोथी देखलक। ओकरा कहल गेल—“समाजक निर्णय लिखल जा चुकल अछि।” गङ्गेश पूछलक, “निर्णयक हेतु की अछि?” कोठरीमे मौन पसैर गेल। लोक परम्परा, शङ्का आ जन्मक कथा दोहरबैत रहल, मुदा ओकर प्रश्न प्रमाण माँगैत रहल।

वर्षसभ बाद ओ बालक तर्कक एहन भाषा रचलक जाहिमे कोनो दाबी बिना अवच्छेदक, हेतु आ सम्बन्धक स्पष्टता बिनु टिकि नहि सकैत छल। समाज ओकर

परिचय एक लाल चिन्हसँ सीमित करय चाहलक; ओ ज्ञानक मूल्यांकन कारण, दोष आ प्रमाणसँ करबाक विधि देलक।

पञ्जीक पन्ना खाली नहि छल, मुदा गङ्गेशक भविष्य ओहि सियाहीसँ लिखल नहि गेल। ओकर जीवन बतबैत रहल जे अभिलेख प्रमाण भऽ सकैत अछि, परन्तु अभिलेखक प्रत्येक कथन स्वतः प्रमाण नहि होइत अछि। (दार्शनिक अन्तर्ध्वनि: जन्माधारित आरोप आ प्रमाणाधारित यथार्थक बीच संघर्ष)

अध्याय ६० — सत्यव्रत मेहताक दोसर मौन

चर्मकारिणीक दीप

गामक सीमा पर चमड़ाक काज करयवला परिवारक छोट घर छल। साँझमे ओतय एक स्त्री दीप जरबैत आ चमड़ाक कठोर तहकेँ धैर्यसँ कोमल बनबैत। गङ्गेश बहुत बेर ओहि काजकेँ देखैत।

समाज कहैत छल जे किछु स्पर्श शुद्ध आ किछु अशुद्ध। गङ्गेश पूछैत—“शुद्धताक प्रमाण की?” स्त्री हँसि कहैत, “जे जूता पएर बचबैत अछि, ओकर उपयोग देखू; केवल ओकर जन्म नहि।” ई सरल वाक्य गङ्गेशक मनमे रहि गेल।

जखन दुनू अपन जीवन एक संग बितेबाक निर्णय कएलनि, तखन बहिष्कारक आवाज उठल। मुदा घरक छोट दीप बुझलक नहि, ओतय प्रश्न, श्रम, प्रेम आ अध्ययनक संगति बनल रहल। समाज बाहरी नामसँ निर्णय दैत रहल, गङ्गेश वस्तुक वास्तविक धर्म खोजैत रहलाह।

राति गाढ़ होइत तँ स्त्री दीपमे तेल बढ़ा दैत। गङ्गेश लिखैत रहैत। एक दिन ओ कहलनि, “अभावो यथार्थ अछि; समाज जे सम्मान नहि देलक, ओकर अभाव हम अनुभव करैत छी। मुदा ज्ञानक प्रकाश सेहो यथार्थ अछि।” दीपक लौ स्थिर रहल। (दार्शनिक अन्तर्ध्वनि: वस्तुक मूल्य ओकर यथार्थ धर्मसँ, जन्मगत उपाधिसँ नहि)

अध्याय ६१ — पहिल नाम-उत्सव

मामागामक चिलम

मामागामक पाठशालामे गङ्गेशक स्थान शिष्यक पाँतिमे नहि, दुआरि लग छल। विद्वानसभ चर्चा करैत, आ ओकरा चिलम भरबाक आदेश भेटैत। ककरो विश्वास नहि छल जे चुपचाप बैसल ई बालक तर्कक सूक्ष्मता बुझि रहल अछि।

ओ छाउर झाड़ैत-झाड़ैत प्रश्न सुनैत। “ज्ञान स्वतः प्रमाण अछि कि परतः?” “धूमसँ अग्नि कोना सिद्ध?” उत्तर देबाक अनुमति नहि छल, मुदा प्रश्न मनमे जमा होइत रहल।

एक दिन चिलमक आगि मिझा गेल। एक शिष्य हँसि कहलक, “ई आगियो नहि बचा सकैत अछि।” गङ्गेश सास्तेसँ उत्तर देलक, “अग्नि रहितो जँ आर्द्रता वा प्रतिबन्ध उपस्थित हो, दाह नहि होइत अछि।” सभ चुप। मामाकेँ पहिल बेर बुझायल जे बालक केवल शब्द नहि सुनैत छल, सम्बन्ध देखैत छल।

जनश्रुति सत्य हो वा रूपक, एहि दृश्यक अर्थ स्पष्ट अछि—जकरा समाज केवल सेवकक कर्ममे देखैत अछि, ओकर भीतर विचारक कारण-सामग्री गुप्त रूपेँ तैयार भऽ सकैत अछि। (दार्शनिक अन्तर्ध्वनि: प्रकट व्यवहारक आधारपर अन्तर्निहित सामर्थ्यक अन्तिम निर्णय नहि कएल जा सकैत अछि)

अध्याय ६२ — ठूँठमे हरियर बिंदु

श्मशानक प्रश्न

अमावस्याक राति गङ्गेश श्मशान पहुँचल—एना लोककथा कहैत अछि। दूर चिता बुझि रहल छल, कालीक मन्दिरक घंटी हवा सँ हिलैत छल, आ एक तान्त्रिक मौन बैसल छल।

तान्त्रिक पूछलक, “ज्ञान चाहैत छह?” गङ्गेश उत्तर देलक, “ज्ञान नहि, ज्ञानक प्रमाण चाहैत छी।” तान्त्रिकक आँखि खुजल। ओ छाउरपर एक वृत्त बनौलक आ कहलक, “जे देखैत छह, से सत्य?” गङ्गेश चिताक धुआँ दिस देखलक—“देखलासँ वस्तु भेटैत अछि; मुदा दोष रहला पर भ्रम सेहो।”

कथामे देवी प्रकट होइत छथि आ वरदान दैत छथि। इतिहास सम्भवतः एतेक मात्र कहत जे अपमान, श्रम, अध्ययन आ असाधारण मेधाक दीर्घ रातिसभक बाद हुनकामे बौद्धिक उत्कर्ष भेल। मुदा लोककथा ओ दीर्घ प्रक्रियाकेँ एकटा बिजलौकाक चमकमे देखबैत अछि।

भोरमे गङ्गेश श्मशानसँ निकलल। ओकर हाथमे कोनो जादुबला ग्रन्थ नहि छल; केवल एक प्रश्न छल—ज्ञानकेँ यथार्थ कहबाक आधार की? ओ प्रश्न बादमे तत्त्वचिन्तामणिक हृदय बनल। (दार्शनिक अन्तर्ध्वनि: जनश्रुति चमत्कारक दृश्य दैत अछि, इतिहास दीर्घ साधना आ कारण-क्रम खोजैत अछि)

अध्याय ६३ — गढ़ नारिकेल विरासत-परियोजना

चमकैत सीप- प्रत्यक्ष, भ्रम आ आत्मबोध

कमला कातमे साँझक प्रकाश तिरछा पड़ि रहल छल। माधव दूरसँ एकटा चमक देखलक। ओकर मनमे तुरन्त बजारक चानीक कटोरा जागि उठल। ओ बालू पर दौगल—"चानी भेटल!"

समीप पहुँचि हाथ बढ़ेलक तँ वस्तु सीप निकलल। ओकर संग चलैत दू विद्यार्थी विवाद करए लागल। पहिल कहलक, "माधव सीप आ स्मृत चानीक भेद नहि बुझलक। सामने 'ई किछु'क प्रत्यक्ष छल, चानीक स्मृति छल, मुदा दुनूक अलगाव ग्रहण नहि भेल।" दोसर कहलक, "नहि, ओकर ज्ञान केवल अभाव नहि छल। ओ सीपमे चानीक लक्षण सक्रिय रूपेँ देखलक; ताहि लेल उठाबय दौगल।"

माधव बालू झाड़ैत सुनैत रहल। ओकर भ्रम टूटि गेल छल, मुदा भ्रमक कथा एखन शुरू भेल छल। एक पक्ष ओकर गलतीकेँ दू यथार्थ ज्ञानक मिश्रण मानैत छल; दोसर पक्ष एक वस्तुमे आन वस्तुक धर्मक आरोप।

ओ सीप अपन झोरामे राखि लेलक। "चानी नहि भेटल," ओ कहलक, "मुदा हमर आँखि, स्मृति आ इच्छा कोना मिलि भ्रम बनबैत अछि, ई प्रश्न भेटल।" (दार्शनिक सिद्धान्त: अख्यातिमे भेदाग्रह; अन्यथाख्यातिमे शुक्तिमे रजतत्वक आरोप)

अध्याय ६४ — स्मृति पर निविदा

पीयर शङ्ख

वैद्यक घरमे एक रोगी शङ्ख दिस देखैत कहल, "ई पीयर अछि।" सभकेँ शङ्ख उज्जर देखाइत छल। रोगीक आँखिमे पित्तदोष छल, मुदा ओकर अनुभव ओकरा लेल तत्काल आ प्रबल छल।

वैद्य उज्जर कपड़ा, दूध आ शङ्ख एक पाँतिमे राखलक। रोगी सभकेँ पीयर कहलक। वैद्य पूछलक, "वस्तुसभ एकहि समय रंग बदललक, कि अहाँक दृष्टिक कारण-सामग्रीमे दोष अछि?"

रोगी चुप रहल। बादमे औषधिसँ दृष्टि सुधरल, तखन शङ्ख उज्जर देखायल। पहिल ज्ञानक विषय पूर्ण काल्पनिक नहि छल—शङ्ख सामने छल—मुदा ओकर रंगक आरोप दोषयुक्त छल।

आचार्य एहि घटनाकेँ शिष्यसभक सोझाँ रखैत कहलनि, "प्रत्यक्ष केवल आँखिक खुलल रहब नहि। इन्द्रिय, विषय, प्रकाश, दूरी आ दोषाभावक संयुक्त स्थिति चाही।" (

दार्शनिक सिद्धान्त: इन्द्रियदोष वस्तुक वास्तविक धर्मकेँ अन्यथा प्रकट करा सकैत अछि)

अध्याय ६५ — ब्रूमक पुनरागमन

तरत्थीपर धातरीम

गुरु एक शिष्यक हथेलीपर आँवला रखि पूछलनि, “ई की?” शिष्य बिना विलम्ब उत्तर देलक—“धातरीम।” “प्रमाण जाँचलह?” गुरु पूछलनि। शिष्य हँसल—“ई हाथपर अछि; देखैत छी, छूबैत छी।”

तखन गुरु दूर मैदानमे चमकैत बिन्दु देखेलनि। “ओ पानि अछि?” शिष्य ठमकि गेल। गर्मी, दूरी आ प्रकाशक कारण ओ पानि सेहो भऽ सकैत छल, मरीचिका सेहो। एहि बेर ओ दौगल नहि; पहिने आन चिह्न देखलक।

गुरु कहलनि, “सभ ज्ञानक बाद एकहि प्रकारक मानसिक प्रक्रिया नहि होइत अछि। किछु ज्ञान अविचल प्रवृत्ति दिस लऽ जाइत अछि; किछुमे संशय उठैत अछि आ हम बादक सफल व्यवहार, निकट निरीक्षण वा आन प्रमाणसँ सत्यता निश्चित करैत छी।”

तरहत्थीपर धातरीम स्थिर छल। दूरक चमक प्रश्न बनल रहल। दुनू अनुभव ज्ञानक प्रामाण्यक भिन्न अवस्थाकेँ खोलि रहल छल। (दार्शनिक सिद्धान्त: स्पष्ट आ अविचल ज्ञानमे व्यवहार तत्काल होइत अछि; संशय उठला पर परतः प्रामाण्यक परीक्षण आवश्यक)

अध्याय ६६ — हार्वर्डक शोध-दल

खाली आसन

सभा शुरू होएबाक समय राजगुरुक आसन खाली छल। सेवक कहलक, “गुरु एखन नहि अएलाह।” एक शिष्य पूछलक, “अहाँ गुरुकेँ देखलहुँ?” सेवक उत्तर देलक, “नहि।”

शिष्य मुस्करायल—“नहि देखब आ नहि रहब एके बात?” सेवक सभागृहक खुजल दुआरि, उज्जर प्रकाश, खाली आसन आ उपस्थित लोकसभ दिस संकेत कएलक। “जँ ओ एतय रहितथि, देखाइतथि। आसन ग्रहणयोग्य अछि, दृष्टिमे बाधा नहि, तथापि ओ नहि छथि।”

गुरु बादमे अएलाह आ विवाद सुनलनि। ओ कहलनि, “अनुपलब्धि तखने अभावक ज्ञान दैत अछि जखन वस्तु उपलब्ध होएबाक सभ योग्यता उपस्थित हो। अन्हार

कोठरीमे घैल नहि देखायब घैलक अभाव सिद्ध नहि करैत; उज्जर सभामे खाली आसन करैत अछि।"

खाली आसन शून्य नहि रहल; ओ अनुपस्थित व्यक्तिक यथार्थ सूचना देबय लागल। (दार्शनिक सिद्धान्त: अभाव केवल नहि देखब नहि, योग्य अधिकरणमे प्रतियोगीक वास्तविक अनुपस्थिति अछि)

अध्याय ६७ — मीरा आ दृष्टिक अधिकार

एककालिकचक्र

मेला मे एक कलाकार जरैत लकड़ी घुमेलक। दर्शककेँ आगिक पूरा वृत्त देखायल, यद्यपि एक समयमे आगिक बिन्दु एकहि स्थानपर छल। बालकसभ चकित भेल।

ओही समय ढोल बाजल, इत्रक गन्ध आयल, दीप देखायल आ मिठाइक स्वाद भेटल। एक विद्यार्थी कहलक, "हम सभ अनुभव एक संग करैत छी; मन अवश्य अनेक ठाम एकहि समय रहैत होएत।"

आचार्य जरैत बिन्दु रोकि देलनि। वृत्त गायब। "क्रम एतेक तीव्र छल जे अहाँकेँ एककालिक वृत्त बुझायल। मन सेहो आँखि, कान, नाक आ जिह्वाक संग अतितीव्र क्रममे जुड़ैत अछि। स्मृति ओ क्रमकेँ एक क्षणक समष्टि बना दैत अछि।"

मेला फेर शोरसँ भरि गेल, मुदा विद्यार्थी आब अनुभवक भीतरक सूक्ष्म क्रम सुनय लागल। (दार्शनिक सिद्धान्त: मन एक समयमे एक इन्द्रियसँ जुड़ैत अछि; तीव्र क्रम युगपद् अनुभवक भ्रम उत्पन्न करैत अछि)

अध्याय ६८ — देविका बनाम श्रद्धांजलि-अनुप्रयोग

कारी घटक स्मृति

कुम्हारक घरमे एक घट पहिने कारी छल। पाकक बाद ओकर रंग लाल भऽ गेल। महीना बाद दूर देशसँ घुरल युवक पुरान स्मृतिक आधारपर कहलक, "ओ कारी घट एखन कोठरीमे अछि।"

घट वास्तवमे वएह छल, स्थान सेहो वएह, मुदा रंग बदलि गेल छल। युवकक स्मृति वस्तुक तत्त्वकेँ पकड़ैत छल, वर्तमान धर्मकेँ नहि। जखन ओ कोठरीमे गेल, लाल घट देखि ठमकि गेल।

आचार्य कहलनि, "स्मरण पूर्वकालीन अनुभूतिक संस्कारसँ उत्पन्न होइत अछि। वस्तुक निरन्तरता रहितो विशेष धर्म बदलि सकैत अछि। 'ओही घट'क प्रत्यभिज्ञा यथार्थ, 'एखन कारी'क निर्णय अयथार्थ।"

युवक लाल घटपर हाथ फेरलक। स्मृति समयक पन्ना छल, वर्तमान वस्तुक दर्पण नहि। (दार्शनिक सिद्धान्त: स्मृति पूर्वानुभूत रूपकेँ वर्तमान वस्तुपर यथावत् लागू कएला पर अयथार्थ भऽ सकैत अछि)

अध्याय ६९ — नामक चोरी

पर्वतपर धूम- अनुमानक यात्रा

भोरमे यात्रीसभ पर्वत दिस जा रहल छल। शिखरक पाछाँ सँ धूम उठैत देखायल। एक युवक कहल, “ओतय आगि अछि।” वृद्ध पूछलक, “आँखिसँ आगि देखलह?” “नहि, धूम देखलहुँ।”

वृद्ध ओकरा भानसघरक स्मृति करेलक—जतय धूम छल, ओतय आगि छल; जतय आगि बिना धूमक सम्भावना नहि, ओतय सम्बन्ध नियमित छल। मुदा खाली पुरान नियम आ एखनक धूम अलग-अलग मनमे रहला सँ निष्कर्ष पूरा नहि। युवक मनमे जोड़लक—“ई पर्वत ओहि अग्निव्याप्त धूमसँ युक्त अछि।”

एहि जोड़निहार विशिष्ट ज्ञानक बाद आगिक अनुमिति स्पष्ट भेल। यात्रीसभ सावधानीसँ आगाँ बढ़ल, कारण आगि वन-दाह सेहो भऽ सकैत छल, भानस सेहो। अनुमान अस्तित्व बतबैत छल; आगिक प्रयोजन लेल आन प्रमाण चाही छल।

पर्वत दूर छल, मुदा धूम, स्मृति आ परामर्शक सेतु दूरी पाटि देलक। (दार्शनिक सिद्धान्त: व्याप्तिस्मरण, पक्षधर्मताज्ञान आ तद्विशिष्ट परामर्शसँ अनुमिति उत्पन्न होइत अछि)

अध्याय ७० — पनिडुब्बीक गवाही

तप्त लौह पिण्ड

लोहारक भट्ठीमे लौह पिण्ड लाल भऽ चमकि रहल छल। नव शिष्य घोषणा कएलक, “जतय अग्नि, ओतय धूम; अतः एहि पिण्डसँ धूम उठत।” गुरु ओकरा किछु देर देखय देलनि। लौह तप्त रहल, धूम नहि उठल।

गुरु भीजल लकड़ी आगिपर रखलक। तुरत्ते धूम भरि गेल। “आब देखह,” ओ कहलक, “धूमक कारण केवल अग्नि नहि। आर्द्र इन्धनक संयोग एक शर्त अछि। जे धर्म साध्यक व्यापक मुदा हेतुक व्यापक नहि, ओ उपाधि बनैत अछि।”

शिष्य बुझलक जे देखल सहचारक आधारपर जल्दी नियम बना देब खतरनाक अछि। भट्ठीक अग्नि ओकर सामान्यीकरणकेँ जरा नहि सकल, मुदा तप्त लौह पिण्ड ओकर दोष प्रकट कऽ देलक।

ओ अपन पट्टपर लिखलक—"हेतुकेँ निरुपाधि बनाउ; नहि तँ निष्कर्ष धूम जकाँ आँखि भरि देत।" (दार्शनिक सिद्धान्त: अग्नि धूमक पर्याप्त हेतु नहि; आर्द्र इन्धन-संयोग जकाँ उपाधि आवश्यक)

अध्याय ७१ — नकली भूतक जुलूस

देवदत्तक रातिक भोजन

देवदत्त मोटगर छल, मुदा गामक सभ लोक कहैत छल जे ओ दिनमे किछु नहि खाइत अछि। ओकर मित्र प्रतिदिन भोरसँ साँझ धरि संग रहैत आ भोजन नहि देखैत। तखन प्रश्न उठल—शरीरक पुष्टि कोना?

मीमांसक अतिथि कहल, "दिनमे नहि खाइत अछि, तथापि मोटगर अछि; अतः रातिमे अवश्य खाइत होएत। ई अर्थापत्ति अछि—दृष्ट तथ्यक विरोध मेटेबाक पृथक प्रमाण।" नैयायिक उत्तर देलक, "ई निष्कर्ष व्यतिरेकक रूपमे सेहो बनि सकैत अछि। जे व्यक्ति कखनो नहि खाइत, ओ पुष्ट नहि रहैत; देवदत्त पुष्ट अछि आ दिनमे नहि खाइत, अतः आन समय भोजन करैत अछि।"

राति मित्र जागल रहल। आध रातिमे देवदत्त भनसाघर खोलि भात खाइत भेटल। तथ्य निश्चित भेल, मुदा प्रमाणक वर्गीकरणपर विवाद समाप्त नहि भेल।

देवदत्त लज्जित भऽ कहलक, "हमर भोजनसँ बेसी अहाँ सभ हमर भोजनक ज्ञानक मार्गपर चर्चा कऽ रहल छी।" सभ हँसि पड़ल। (दार्शनिक सिद्धान्त: दृष्ट तथ्यसभक विरोध मेटेबाक लेल राति भोजनक कल्पना; नैयायिक मतमे केवलव्यतिरेकी अनुमान)

अध्याय ७२ — चन्ना गाछीक हँसी

देवदत्त घरसँ बाहर

देवदत्तक माता सन्देश पठेलनि—"ओ जीवित आ स्वस्थ अछि।" मित्र ओकर घर पहुँचल, मुदा सभ कोठरी खाली। आँगन, छत, गोशाला—कतहु देवदत्त नहि।

एक युवक कहलक, "हम खाली एतबा जनैत छी जे ओ घरमे नहि।" दोसर उत्तर देलक, "जीवित व्यक्ति कतहु ने कतहु रहबे करत। घरक भीतर ओकर निरन्तर अभाव निश्चित अछि; अतः ओ घरसँ बाहर अछि।"

किछु देर बाद देवदत्त खेतसँ घुरल। निष्कर्ष सत्य निकलल। मुदा मित्रसभक रुचि खेतमे नहि, एहि बातमे छल जे सकारात्मक सपक्ष बिना नकारात्मक सहचारसँ स्थानक ज्ञान कोना भेल।

घरक खालीपन एक बेर फेर अनुपस्थितिक सक्रिय प्रमाण बनल। (दार्शनिक सिद्धान्त: जीवित व्यक्ति घरमे अनुपस्थित अछि, अतः घरसँ बाहर अछि—केवलव्यतिरेकी अनुमान)

अध्याय ७३ — बटुकनाथक स्वप्न-दरबार

काक आ मित्रक पुत्र

आँगनमे कारी काक बैसल छल। विनोदमे एक शिष्य कहलक, “ई काक कारी अछि, कारण ई हमर मित्रक पुत्रक घरमे पलल अछि।” सभ हँसल, मुदा गुरु तर्क पकड़ि लेलनि।

“मित्रक पुत्रक घरमे पलनाइ कारीपनक नियमित कारण अछि?” गुरु पूछलनि। ककरो लग उत्तर नहि छल। सम्भव छल ओ घरक भोजन, वातावरण वा आन किछु रंगसँ जुड़ल हो; सम्भव छल कोनो सम्बन्धे नहि।

गुरु कहलनि, “साध्य सत्य होएब मात्र पर्याप्त नहि। काक वास्तवमे कारी अछि, मुदा प्रस्तुत हेतु ओकर कारी रूप सिद्ध नहि करैत अछि। सत्य निष्कर्ष गलत कारणसँ सिद्ध नहि होइत अछि।”

काक उड़ि गेल, मुदा ओकर कारी पाँखि तर्कशालामे हेतुक उत्तरदायित्व छोड़ि गेल। (दार्शनिक सिद्धान्त: हेतुक साध्यसँ नियमित सम्बन्ध संदिग्ध रहला पर निश्चित अनुमिति नहि होइत अछि)

अध्याय ७४ — चन्द्रपालक पहिल स्वीकार

अस्पतालमे राम

अस्पतालक प्रतीक्षालयमे रामक शरीर अस्वाभाविक रूपसँ गरम छल। प्रशिक्षु परिचारिका कहलक, “राम बीमार छथि।” वरिष्ठ चिकित्सक पूछलनि, “अपन निष्कर्ष पाँच डेगमे स्पष्ट करू।”

ओ कहलक, “प्रतिज्ञा—राम बीमार छथि। हेतु—हुनकर शरीर अस्वाभाविक रूपसँ गरम अछि। उदाहरण—जकर शरीर एहन गरम होइत अछि, अस्पतालक

ज्वरग्रस्त रोगीक जकाँ, ओ बीमार होइत अछि। उपनय—रामक शरीरमे सेहो वएह गरमी अछि। निगमन—अतः राम बीमार छथि।”

चिकित्सक थर्मामीटर, रक्त-परीक्षण आ आन जाँच जोड़लनि। “अनुमान प्रारम्भिक मार्ग दैत अछि; रोगक विशेष स्वरूप लेल अतिरिक्त प्रमाण चाही।”

रामक उपचार शुरू भेल। प्रशिक्षु बुझलक जे व्यवस्थित तर्क केवल शास्त्रार्थक भाषा नहि, जीवन-रक्षाक अनुशासन सेहो अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय आ निगमन अनुमानक पाँच अवयव)

अध्याय ७५ — राघव सिग्नलक बिना नेटवर्क

कुम्हारक चाक — कर्ता, शक्ति आ मोक्ष

गामक बाहर कुम्हारक चाक घूमि रहल छल। माटि आस्ते-आस्ते घटक रूप लैत गेल। बालक पूछलक, “घट स्वयं बनल?” कुम्हार हाथ हटेलक; आकृति बिगड़य लागल। “रूपक क्रम, उद्देश्य आ साधनक संयोजन कर्ताक ज्ञान आ प्रयत्न माँगैत अछि।”

आचार्य एहि दृश्यकेँ ईश्वरानुमानक कक्षामे रखलनि। “पृथिवी आदि कार्य अछि; कार्य घट जकाँ कर्ताजन्य होइत अछि; अतः जगतक कर्ता अछि।” प्रतिवादी तुरन्त पूछलक, “घटक कर्ता शरीरधारी कुम्हार अछि। तखन जगतक कर्ता सेहो शरीरधारी किएक नहि?”

विवाद बढ़ल—पक्षक एकरूपता, कर्ताक ज्ञान, प्रयत्न, शरीरक आवश्यकता, परमाणुसभक संयोजन। कुम्हारक घट केवल उत्तर नहि, प्रश्नक दुआर बनल।

साँझमे चाक रुकल। घट स्थिर छल। बालक बुझलक जे दृष्टान्त समानता देखबैत अछि, मुदा प्रत्येक समानताक सीमा जाँचब आवश्यक अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: कार्यत्वसँ कर्ताक अनुमान; ईश्वरानुमानमे पृथिवी आदि कार्यक दृष्टान्त घट)

अध्याय ७६ — लाउ किन-हंगक भारत-यात्रा

मणि आ अग्नि

एक तान्त्रिकक मणि विषयमे प्रसिद्ध छल जे ओकर निकट अग्नि हाथ नहि जरबैत अछि। राजसभामे परीक्षण भेल। अग्नि जरल, हाथ निकट गेल, मुदा दाह नहि भेल—एना कथा कहैत अछि।

मीमांसक विद्वान कहलक, “मणि अग्निक दाहशक्ति नष्ट कऽ देलक।” नैयायिक पूछलक, “अदृश्य शक्ति नष्ट भेल, फेर मणि हटला पर तुरन्त कोना घुरि आयल?”

ओ वैकल्पिक व्याख्या देलक—अग्नि दाहक कारण अछि, मुदा दाहक लेल प्रतिबन्धकक अभाव सेहो आवश्यक। मणि उपस्थित भेल तँ प्रतिबन्धकाभाव नहि रहल; कारण-सामग्री अपूर्ण भेल। मणि हटिते अभाव पुनः उपस्थित, दाह सम्भव।

राजा कहलक, "एकहि घटना लेल कम वस्तु मानि स्पष्ट व्याख्या भेटैत हो, तँ अनावश्यक अदृश्य सत्ता किएक?" सभामे लाघवक नियम चमकि उठल। (दार्शनिक सिद्धान्त: दाह लेल अग्निसहित प्रतिबन्धकाभाव आवश्यक; अलग अदृश्य शक्तिक कल्पना अनावश्यक)

अध्याय ७७ — हवाई अड्डापर गोहि

कथा 21 मोक्षक देहरी

वृद्ध साधक जीवनभरि यज्ञ, दान आ अध्ययन कएने छल। तथापि ओकर प्रश्न रहल—मोक्ष सुखक अनन्त सागर अछि, आत्माक विशेष गुण, कि दुःखक पूर्ण अन्त?

गुरु ओकरा रोग, शोक, इच्छा, द्वेष आ पुनर्जन्मक श्रृंखला देखेलनि। "जतय कारण शेष, ओतय फल फेर उठत। तत्त्वज्ञान दोषक मूल काटैत अछि; पूर्वकर्मक फल भोगद्वारा समाप्त होइत अछि। ज्ञान भोगकेँ अपन मध्यवर्ती व्यापार बनबैत कर्मक शक्ति समाप्त करैत अछि।"

साधक पूछलक, "तखन विलम्ब किएक?" गुरु उत्तर देलनि, "जागल प्रकाश अन्हारक कारण मेटबैत अछि, मुदा पहिने चलि पड़ल बाण अपन शेष गति पूरा करैत अछि।"

वृद्ध देहरिपर बैसल सूर्यास्त देखैत रहल। ओकरा मोक्ष कोनो रंगीन लोक नहि, दुःखक पुनरागमन असम्भव भऽ जाएब बुझायल। (दार्शनिक सिद्धान्त: मोक्ष दुःखक आत्यन्तिक विनाश; तत्त्वज्ञान कर्मनाशक, भोग मध्यवर्ती व्यापार)

अध्याय ७८ — सत्यव्रत आ लाउक मौन-संवाद

जङ्गलमे गवय- उपमान आ पहिचान

नगरक युवक कहियो गवय नहि देखने छल। वनरक्षक कहलक, "गवय गाय जकाँ होइत अछि, मुदा जङ्गली देह, भिन्न रंग आ विशेष चाल होइत अछि।" वाक्य मनमे रहि गेल।

किछु दिन बाद जंगलमे सींगवाला, खुरवाला, गायसँ मिलैत-जुलैत मुदा अलग पशु देखायल। युवकक आँखि वर्तमान पशु ग्रहण कएलक; स्मृति वनरक्षकक वाक्य जगेलक; साझा धर्मसभ तुलना करेलक। ओ कहलक, “ई गवय अछि।”

वनरक्षक सुधारलक, “केवल ई एक पशु नहि। अहाँ बुझलहुँ जे ‘गवय’ शब्द कोन सामान्य धर्मक कारण एहि जातिक सभ पशुपर लागू होइत अछि।”

युवकक ज्ञान नामक रटन्त नहि रहल। शब्द आ जगत्क बीच एक नव सम्बन्ध खुलल। (दार्शनिक सिद्धान्त: उपदेशस्मरण आ सादृश्यप्रत्यक्षसँ शब्दप्रयोगकारण गवयत्वक निश्चय उपमिति अछि)

अध्याय ७९ — ब्रूमक दान-पत्र

बालहाथी आ गदहा

यात्रीकेँ कहल गेल—“जे पशु बालहाथी जकाँ देखाइत अछि, ओकर नाम अमुक।” रास्तामे ओकरा एक गदहा भेटल, जकर देहक किछु आकार दूरसँ बालहाथीसँ मिलैत छल। ओ नाम गदहापर लगा देलक।

स्थानीय व्यक्ति हँसि पड़ल। “समानता केवल दू-चारि धर्मक मेल नहि। कान, सूँड़, पएर, चाल, देहक गठन—प्रासङ्गिक धर्म देखू। किछु समानता रहितो निर्णायक वैधर्म्य अर्थ रोकि दैत अछि।”

यात्री गदहाकेँ फेर देखलक। ओकर पहिल तुलना सतही छल। जखन वास्तविक बालहाथी देखलक, तखन पुरान उपदेशक अर्थ स्पष्ट भेल।

गदहा गलत उत्तर नहि, तुलना करबाक अपूर्ण तरीका खोलयवला शिक्षक बनल। (दार्शनिक सिद्धान्त: सादृश्य केवल समान धर्मक संख्या नहि; प्रासङ्गिक धर्म आ वैधर्म्य शब्दार्थ-निर्णयमे महत्त्वपूर्ण)

अध्याय ८० — हरिहरनक संतान

हरियर ब्रोकोली

माधवी सब्जी बजारमे पहिल बेर गेल छल। मित्र पहिने कहने छल—“ब्रोकोली फूलगोभी जकाँ होइत अछि, मुदा गाढ़ हरियर।” बजारक एक कोनमे ओ हरियर, शाखायुक्त फूलगोभी-जकाँ सब्जी देखलक।

ओ दोकानदारसँ पूछलक, “ई ब्रोकोली अछि?” दोकानबला हँसि सहमति देलक। माधवीकेँ केवल वस्तु नहि भेटल; पहिने सुनल शब्दक अर्थ प्रत्यक्ष वस्तुसँ जुड़ि गेल।

घर घुरि ओ अपन बच्चाकेँ अलग-अलग ब्रोकोली देखेलक—छोट, पैघ, हल्का हरियर। बच्चा बुझलक जे शब्द केवल बजारक ओहि एक गोट सब्जी नहि, ब्रोकोलीत्ववला सभपर लागू होइत अछि।

फूलगोभी तुलना बनेलक, मुदा ब्रोकोली अपन स्वतंत्र पहिचान प्राप्त कएलक। (दार्शनिक सिद्धान्त: परिचित वस्तुक सादृश्यसँ अपरिचित शब्दक वाच्यार्थक ज्ञान)

अध्याय ८१ — बत्राक अधूरा नाम

धारीदार जेब्रा

शिक्षिका कहने छलीह—"जेब्रा घोड़ा जकाँ, मुदा देहपर कारी-उज्जर धारी।" चिड़ियाघरमे बालक धारीदार पशु देखिते ठमकि गेल।

ओ घोड़ाक आकार, पएर, मुख आ चाल चिन्हलक; धारिसभ भिन्नता बतबैत छल। शिक्षकक वाक्य स्मरण भेल। "ई जेब्रा!" ओकर आवाजमे खोजक आनन्द छल।

शिक्षिका पूछलनि, "केवल घोड़ा जकाँ होएबाक कारण?" बालक कहलक "नहि। समानता उपदेशक सङ्केत छल; धारिसभ आ समग्र रूप शब्दक सही विषय निश्चित कएलक।"

ओ दिन चिड़ियाघर भाषा-दर्शनक कक्षा बनि गेल। (दार्शनिक सिद्धान्त: उपदेश, स्मरण आ सादृश्यक संयुक्त प्रक्रियासँ नव नाम-अर्थ सम्बन्धक ज्ञान)

अध्याय ८२ — अंदरक गज-ग्राह

सुग्गाक आदेश- शब्द, वाक्य आ विश्वास

आँगनक सुग्गा प्रतिदिन मालिकक आवाज सुनि सीखि गेल छल—"पानि आनू।" एक दिन मालिक घरमे नहि छल। सुग्गा वएह वाक्य बाजल, आ बालक घैला भरि आनलक।

विद्वान अतिथि पूछलक, "तोताकेँ पानि चाही से तात्पर्य छल?" बालक हँसल—"नहि।" "तखन अर्थ कोना बुझलह?"

वाक्यक पदसभ परिचित छल, क्रम उचित, 'पानि' आ 'आनू'क सम्बन्ध योग्य, उच्चारण लग, आ पूर्व व्यवहारसँ संकेत ज्ञात। तोताक मनमे यथार्थ इच्छा नहि रहितो वाक्य श्रोताक मनमे अर्थ उत्पन्न कएलक।

एहि घटनासँ विवाद उठल—शाब्दबोधक कारण वक्ताक वर्तमान इच्छा मात्र अछि, वा शब्दरूप संरचना आ ज्ञात सङ्केतक स्वतंत्र सामर्थ्य सेहो? (दार्शनिक सिद्धान्त:

वक्ताक वर्तमान अभिप्राय बिना सेहो यथार्थ पदक्रम, आकाङ्क्षा, योग्यता आ पूर्वसङ्केतसँ अर्थबोध सम्भव)

अध्याय ८३ — नारिकेल पात पाठशाला

घट आनू

बालक भाषा सीखि रहल छल। एक वृद्ध दोसर सेवकसँ कहलक, “घट आनू।” सेवक उठि कोठरीसँ घड़ा आनलक। बालक वाक्य आ क्रियाक सम्बन्ध देखलक।

दोसर दिन वृद्ध केवल “घट” कहलक, सेवक वस्तु दिस देखलक; “आनू” कहलक, सेवक गति लेल तैयार भेल। अनेक प्रसङ्गक अन्वय-व्यतिरेकसँ बालक बुझय लागल—घटपद वस्तु स्मरण करबैत अछि, विभक्ति कर्मत्व, क्रियापद आनब, विधि कार्यताक संकेत।

ककरो मत छल जे बालक पहिने पूरा वाक्यक अर्थ पकड़ैत अछि, बादमे पद विभाजित करैत अछि। आन मत छल जे विशेष व्यवहारसँ विशेष पदशक्ति साक्षात् ग्रहण होइत अछि। बालक एहि शास्त्रार्थसँ अनभिज्ञ छल; ओ भाषा जीबि रहल छल।

एक दिन ओ स्वयं कहलक, “जल आनू।” ओकर शब्द ककरो प्रवृत्ति उत्पन्न कएलक—भाषा ओकर भीतर स्थापित भऽ गेल। (दार्शनिक सिद्धान्त: बालक वृद्धक व्यवहारसँ पदशक्ति आ वाक्यार्थक कार्यकारण सम्बन्ध ग्रहण करैत अछि)

अध्याय ८४ — पहिल पाठ: उपस्थित

काठक पुतरी

सूत्रधार डोरीसँ काठक पुतरी चलबैत छल। मंचपर आवाज आयल—“घट आनू।” पुतरी घूमि छोट घट उठा अनलक। सामने बैसल बालक विस्मित—“पुतरी शब्द बुझैत अछि!”

पर्दा पाछाँ गेलापर ओ डोरी, सूत्रधारक हाथ आ अभ्यास देखलक। प्रवृत्ति देखलासँ ओ पहिने पुतरीमे ज्ञान आ इच्छा अनुमान कएने छल; बाधक प्रमाण भेटिते निष्कर्ष बदलल।

आचार्य कहलनि, “व्यवहार शब्दशक्ति सीखबाक साधन भऽ सकैत अछि, मुदा व्यवहारक कारणक विषयमे सावधानी आवश्यक। कर्ताक भ्रमसँ कारणताक भ्रम उत्पन्न होइत अछि।”

बालक फेर नाटक देखलक। एखन पुतरीक प्रत्येक डेगक पाछाँ अदृश्य डोरी ओकरा तर्कक स्मरण करबैत छल। (दार्शनिक सिद्धान्त: देखल प्रवृत्तिक वास्तविक कर्ता आ कारण जाँचब आवश्यक; बाह्य गति भ्रमित अनुमान करा सकैत अछि)

अध्याय ८५ — स्त्री सभक राति-सभा

दुआर

बिर्रो उठल। घरक स्वामी भीतरसँ मात्र चिचियायल—“दुआर!” सेवक तुरन्त दुआर बन्द कऽ देलक। वाक्यमे “बन्द करू” नहि छल, तथापि अर्थ पूर्ण भेल।

बादमे पण्डित पूछलक, “दुआर आनू, खोलू, रंगू—किछुओ भऽ सकैत छल। सेवक बन्द करबाक अर्थ किएक ग्रहण कएलक?”

बिहारि, खुजल दुआर, घरमे उड़ैत कागज, स्वामीक स्वर आ तत्काल आवश्यकता—ई सभ तात्पर्य निश्चित कएलक। ‘दुआर’ पद क्रियाक आकाङ्क्षा जगेलक; प्रसङ्ग अनुपस्थित क्रियापद पूरा कएलक।

बिहारि थमल, मुदा एक शब्दक भीतर पूरा वाक्य कोना जागल, ई प्रश्न चर्चा बनल रहल। (दार्शनिक सिद्धान्त: प्रसङ्ग, आकाङ्क्षा आ तात्पर्यसँ अनुपस्थित पदक अध्याहार भऽ सकैत अछि)

अध्याय ८६ — मजदूरक पाँव

गङ्गाक कातक गाम

यात्रीकेँ कहल गेल—“गाम गङ्गापर अछि।” ओ नाव लऽ जलधारामे घर खोजय लागल। नाविक हँसि कहलक, “गाम पानिपर नहि, गङ्गाक कातपर अछि।”

“तखन वाक्य गलत?” यात्री पूछलक। नाविक उत्तर देलक, “मुख्य अर्थमे असम्भव, मुदा वक्ताक तात्पर्य स्पष्ट। गङ्गासँ घनिष्ठ सम्बन्धक कारण ‘गङ्गा’ शब्द तीरक अर्थ संकेत करैत अछि।”

गामक माटि पानिसँ नम छल, जीवन नदीपर निर्भर। लाक्षणिक अर्थ मनमानी नहि; मुख्यार्थसँ सम्बन्ध, प्रसङ्ग आ अन्वयानुपपत्ति ओकर सीमा तय करैत अछि।

यात्री गाम पहुँचल। भाषा ओकरा जलमे नहि डुबेलक; तात्पर्य तीरपर उतारि देलक। (दार्शनिक सिद्धान्त: मुख्यार्थक अन्वय असम्भव भेलापर तात्पर्यसँ सम्बन्धित लक्ष्यार्थ ग्रहण होइत अछि)

अध्याय ८७ — स्क्रीनक उपवास

सैन्धव

राजा भोजन करैत कहलक, “सैन्धव आनू।” सेवक अस्तबल दिस दौगल, कारण ‘सैन्धव’ घोड़ाक अर्थ सेहो दैत छल। भनसीया रोकलक—“भोजनक समय राजा नून माँगैत छथि, घोड़ा नहि।”

वएह शब्द, दू अर्थ। पदशक्ति दुनू सम्भावना खोलैत छल; भोजन, थारी आ स्वादक प्रसङ्ग एक अर्थ चुनलक। जँ राजा यात्राक समय कहितथि, तखन घोड़ा उचित होइत।

राजा नून लैत कहलक, “शब्द अपन अर्थक सूची दैत अछि; तात्पर्य वर्तमान वाक्यार्थ चुनैत अछि।” सेवक एहि बेर सैन्धवक स्वाद मोन राखलक।

अनेकार्थकता भाषाक दोष नहि रहल; प्रसङ्ग बुझबाक परीक्षा बनल। (दार्शनिक सिद्धान्त: अनेकार्थक शब्दक निश्चित अर्थ वक्ताक तात्पर्य आ प्रसङ्गसँ ज्ञात होइत अछि)

अध्याय ८८ — ईराक पत्र विदेशक बच्चा सभकेँ

पङ्कजक विवाद

कवि लिखलक—“पङ्कज खिलल।” नव व्याकरण-विद्यार्थी आपत्ति कएलक, “कादोमे जन्मल कुमुद, कीड़ा वा आन वस्तु सेहो पङ्कज कहाएत; अवयवक अर्थ ताहि दिस लऽ जाइत अछि।”

कवि पोखरिक कमल देखेलक। “शब्दक अवयव ‘पङ्क’ आ ‘ज’ सामान्य व्युत्पत्ति दैत अछि, मुदा पूरा समुदाय दीर्घ प्रयोगसँ विशेष कमलक स्मरण करबैत अछि। समुदायशक्ति अवयवक प्रत्येक सम्भावित अर्थकेँ समान रूपेँ सक्रिय नहि करैत अछि।”

विद्यार्थी श्वेत कुमुद दिस देखलक। प्रश्न उठल—ओहिपर ‘पङ्कज’क प्रयोग मुख्य, गौण कि अशुद्ध? विवाद पूर्वाचार्यक प्रयोग, आकाङ्क्षा आ रूढ़िक सीमा धरि बढ़ल।

पोखरिमे फूल चुपचाप खिलल रहल। भाषा ओकर नामपर शास्त्रार्थ करैत रहल। (दार्शनिक सिद्धान्त: अवयवार्थ आ समुदायशक्ति भिन्न; “पङ्कज”क रूढ़ अर्थ कमल, केवल कीचड़मे जन्मल प्रत्येक वस्तु नहि)

अध्याय ८९ — सत्यव्रतक जन-सुनवाई

बालकक “अम्बा”

छोट बालक भूखसँ कनैत “अम्बा” बजलक। ध्वनि स्पष्ट नहि छल, मुदा माता तुरन्त ओकरा उठा लेलनि।

विद्वान अतिथि पूछलक, “ई शब्द व्याकरणतः पूर्ण नहि; अर्थ कोना भेल?” माता कहलनि, “स्वर, परिस्थिति, बालकक पुरान व्यवहार आ ‘अम्बा’क शुद्ध रूपक सादृश्य मनमे जुड़ि गेल।”

श्रोता बहुत बेर अपभ्रष्ट ध्वनिसँ सही पद स्मरण करैत अछि। पहिल अर्थज्ञान सीधा अशुद्ध शब्दक स्वतंत्र शक्तिसँ भेल कि शुद्ध शब्दक स्मरणद्वारा—एहि पर विवाद सम्भव, मुदा माताक व्यवहार विलम्ब नहि कएलक।

बालक शब्दशास्त्र नहि जनैत छल; भाषा ओकर आवश्यकता घर धरि पहुँचा देने छल। (दार्शनिक सिद्धान्त: अस्पष्ट वा अपभ्रष्ट ध्वनिसँ श्रोता सादृश्य आ प्रसङ्गद्वारा शुद्ध पद स्मरण कऽ अर्थ ग्रहण करैत अछि)

अध्याय ९० — नामक संविधान

पुत्रजन्मक समाचार

चैत्र उदास बैसल छल। दूत कानमे किछु कहलक, आ ओकर मुख अचानक हर्षसँ चमकि उठल। निकट बैसल बालक दूतक शब्द स्पष्ट नहि सुनलक, मुदा परिवर्तन देखलक।

बादमे पता चलल—पुत्रजन्मक समाचार छल। बालक अनुमान कएलक जे दूतक वाक्यसँ उत्पन्न पुत्रजन्मज्ञान हर्षक कारण भेल। आन कारण सम्भव छल, मुदा प्रसङ्ग, समय आ बादक पुष्टि एहि सम्बन्धकेँ बल देलक।

गुरु कहलनि, “भाषा सीखब केवल शब्दकोश पढ़ब नहि। हम आनक प्रवृत्ति, हर्ष, भय आ क्रियासँ शब्दजन्य ज्ञानक कारण ग्रहण करैत छी।”

दूतक छोट वाक्य एक घरक भाव बदलि देलक आ एक बालकक मनमे शब्दप्रमाणक पाठ खोललक। (दार्शनिक सिद्धान्त: समाचारजन्य ज्ञान भाव-परिवर्तनक कारण अनुमानित होइत अछि; कारणताक ग्रहण व्यवहारसँ)

अध्याय ९१ — धूर्त सभक अनुपस्थिति

मोबाइलक अफवाह

नगरमे मोबाइल सन्देश पसरल—“आइ राति बान्ह टूटत; सभ घर छोड़ू।” सन्देशक स्रोत नहि, केवल अनेक अग्रेषित चेन्ह छल। लोक घबराए लागल।

विद्यालयक शिक्षिका प्रशासनक आधिकारिक सूचना, बाँधक अभियन्ता आ स्थानीय निरीक्षणसँ सत्यापन कएलनि। पता चलल जे पुरान वर्षक चित्र नव सन्देशसँ जोड़ल गेल छल।

ओ बच्चासभकेँ कहलनि, “वाक्य स्पष्ट होएब मात्र सत्यताक प्रमाण नहि। सुग्गा सेहो सही वाक्य बाजि सकैत अछि; प्रतारक व्यक्ति व्याकरणिक वाक्य लिखि सकैत अछि। स्रोतक ज्ञान, तात्पर्य, दोष, प्रसङ्ग आ बाधक प्रमाण देखू।”

अफवाह थमल। मोबाइल आधुनिक दूत छल, मुदा आप्तता ओकर यन्त्रमे नहि, स्रोत आ सत्यापनमे छल। (दार्शनिक सिद्धान्त: शब्दप्रमाण लेल वक्ताक यथार्थ तात्पर्य, विश्वसनीयता, दोषाभाव आ बाधक प्रमाणक परीक्षण आवश्यक)

अध्याय ९२ — ठूँठक छाँह

न्यायालयक साक्षी

न्यायालयमे दू साक्षी एक घटना विषयमे भिन्न कथन देलक। पहिल दूर अन्हारमे देखने छल; दोसर लग छल मुदा अभियुक्तसँ शत्रुता रखैत छल।

न्यायाधीश मात्र “हम देखलहुँ” सुनि निर्णय नहि देलनि। दूरी, प्रकाश, दृष्टिदोष, स्मृतिक समय, व्यक्तिगत राग-द्वेष, कथनक संगति आ भौतिक प्रमाण सभ जाँचल गेल।

एक साक्षीक प्रत्यक्ष दोषयुक्त छल; दोसरक तात्पर्यमे पक्षपात। तेसर निष्पक्ष अभिलेख घटना स्पष्ट कएलक।

न्यायालयक प्रक्रिया नव्य-न्यायक प्रश्नसभक आधुनिक रूप बनल—ज्ञान कोना उत्पन्न भेल, दोष छल कि नहि, कथनक उद्देश्य की, आ बाधक प्रमाण उपस्थित अछि कि नहि। (दार्शनिक सिद्धान्त: आप्तवाक्य यथार्थ ज्ञान आ सत्य कहबाक इच्छासँ उत्पन्न कथन; प्रत्यक्ष, स्मृति आ तात्पर्यक दोष जाँच योग्य)

अध्याय ९३ — पुनः बाढ़ि

ओही “ग” फेर?

गुरु पहिने “ग” उच्चरित कएलनि, फेर किछु देर बाद दोबारा “ग”। शिष्य कहलक, “वएह गकार फेर सुनलहुँ; अतः ध्वनि नित्य अछि।”

गुरु पुरुष, स्त्री आ बालकसँ “ग” बजबेलनि। प्रत्येक ध्वनिक ऊँच-नीच, वेग आ स्वर भिन्न छल, मुदा सभमे एक सामान्य रूप पहिचानल गेल।

“ओही”क प्रत्यभिज्ञा व्यक्तिगत ध्वनिक स्थायित्व नहि, गकारत्व जातिक पुनःप्रकाश भऽ सकैत अछि। पहिल ध्वनि उत्पन्न भेल, क्षणभर रहल, नष्ट भेल; दोसर नव ध्वनि ओही जातिक सदस्य।”

शिष्य मंदिरक घंटी सुनलक। प्रत्येक प्रहार नव ध्वनि, मुदा घंटीक परिचित स्वर एक सामान्यता बनि घुरैत रहल। (दार्शनिक सिद्धान्त: व्यक्तिगत ध्वनि उत्पन्न आ नष्ट होइत अछि; पुनःपहिचान गकारत्व जातिक आधारपर)

अध्याय ९४ — गोहि सभक वापसी

सीप आ चानी / चानीक भ्रम

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एहिमे सीप (शुक्ति) कें चानी (रजत) बुझि लेबाक प्रसिद्ध उदाहरण अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि प्रत्यक्षखण्ड)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—ओ व्यक्ति सामने राखल 'सीप' (शुक्ति) आ स्मृतिक 'चानी' (रजत) क बीचक 'भेद' नहि बुझि सकल। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल। (दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि प्रत्यक्षखण्ड)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—नैयायिक मानैत छथि जे भ्रममे व्यक्ति केवल सीप आ चानीक 'भेद' नहि बिसरैत अछि (जाहि तरहें प्रभाकर मानैत छथि), अपितु ओ सक्रिय रूप सँ सोझाँ राखल सीप (शुक्ति) मे एकटा एहन गुण देखैत अछि जे वास्तवमे सीपमे नहि, अपितु चानी (रजत) मे होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटनाक भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि प्रत्यक्षखण्ड)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—भ्रम आ प्रवृत्तिक कारण (ख्यातिवाद): 'ई शुक्ति रजत अछि' जकाँ भ्रममे प्रवृत्तिक मूल कारण प्राभाकरक 'अख्याति' (भेदाग्रह) अछि वा नैयायिकक 'अन्यथाख्याति' (विशिष्ट ज्ञान)। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक तत्त्व आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। (दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि प्रत्यक्षखण्ड)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—वास्तवमे एतय दू टा अलग-अलग ज्ञान अछि—सामने राखल 'शुक्ति' क सामान्य ज्ञान (इदम्), आ स्मृति सँ आयल 'रजत' क ज्ञान। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। (दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि प्रत्यक्षखण्ड)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—नैयायिकक अनुसार, भ्रममे व्यक्ति सामने राखल सीप (शुक्ति) कें 'विशेष्य' (आधार) बनबैत अछि

आ ओहिमे 'रजतत्व' कें 'विशेषण' (प्रकार) क रूपमे आरोपित कऽ दैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल। (दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि प्रत्यक्षखण्ड)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—'रजत' दिशामे प्रवृत्तिक लेल 'ई रजत अछि' एहन साक्षात् ज्ञान अनिवार्य अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रभाकरक अख्यातिवादक विशद खण्डन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—"ई शुक्ति रजत अछि" एहि ज्ञानमे 'रजतत्व' ज्ञानक प्रकार बनैत अछि, तें ओ भ्रम अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पक्षक स्वरूप आ प्रतिवादीक आपत्ति)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—आपत्ति—जँ प्रामाण्य ज्ञान-साधनक प्रामाण्य अछि, तँ शुक्तिमे उत्पन्न “ई रजत अछि” ज्ञान अप्रमाण कोना होयत? जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राभाकर मत—प्रामाण्य स्वतः ज्ञात आ स्वतः उत्पन्न होइत अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“ई रजत अछि” ज्ञान स्वप्रकाश रूपेँ अपन विषयक निश्चय करैत, ज्ञानक सत्यतारूप प्रामाण्यकेँ—वस्तुक रजतत्व अथवा रजतत्वाश्रयकेँ विषय बनाबयबाक रूपमे—स्वतः सीमित आ प्रकाशित करैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: यथार्थता स्वतः ज्ञात अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—तेँ “ई रजत अछि” जकाँ भ्रम-समान ज्ञानसँ निष्कम्प प्रवृत्ति नहि, भ्रमसँ व्यावृत्त ज्ञानसँ प्रवृत्ति उत्पन्न होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राभाकर मतक खण्डन)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—“ई शुक्ति आ रजत दुनू अछि, आ ई रजत अछि” एहन सामूहिक ज्ञानमे शुक्ति-अंश संवादी आ रजत-अंश असंवादी अछि; एतय अंशभेदसँ प्रामाण्य आ अप्रामाण्य—दुनू अनुभव होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: अप्रमाण ज्ञान विशेष अंशमे प्रमाण होयबाक प्रसङ्ग)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—केवल “शुक्ति” आ “रजत” नामक विषयकेँ अवच्छेदक मानलासँ समस्या दूर नहि होइत, कारण “ई शुक्ति रजत अछि” भ्रममे रजत-विषयता सेहो उपस्थित अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रामाण्य आ ओकर अभाव अव्याप्यवृत्ति नहि भऽ सकैत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“ई शुक्ति रजत अछि” भ्रममे शुक्तिमे रहयवला विषयता बाधक रजतत्वसँ अवच्छिन्न अछि, आ वास्तविक रजतमे रहयवला विषयता अनुकूल रजतत्वसँ अवच्छिन्न अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विषयता विशेषणता-विशेष अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—ई लक्षण निर्विकल्पक “ई किछु अछि” ज्ञानपर लागू नहि, आ “ई शुक्ति रजत अछि” भ्रमपर लागू भऽ जाइत अछि; कारण “इदम्”-विषयता आ प्रकार एके आश्रयमे मानल जा सकैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विषयतासमानाधिकरण प्रकारक अनुभव प्रमाण नहि अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—मुदा एहि कारणसँ लक्षण “ई रजत आ शुक्ति दुनू अछि” जकाँ मिश्र ज्ञानक भ्रमात्मक अंशपर सेहो लागू भऽ जाइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: स्वव्यधिकरण-धर्मावच्छिन्न विषयताक प्रतियोगी अनुभव प्रमाण नहि अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—भ्रममे शुक्ति आ रजत—दुनूक केवल एक विषयता मानल जाए, आ ओकर अवच्छेदक शुक्तिमे नहि रहयवला रजतत्व मानल जाए, तँ “ई शुक्ति रजत अछि” ज्ञान शुक्ति-अंशमे सेहो प्रमाण नहि रहत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एकमात्र विषयता मान्य नहि अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—कहल जाए जे ई ज्ञान रजत-अंश आ शुक्ति-अंशमे प्रमाण, मुदा “शुक्ति रजतसँ अभिन्न अछि” एहि विशेषण-अंशमे अप्रमाण अछि—तँ सेहो ठीक नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष

धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एकमात्र विषयता मान्य नहि अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“ई शुक्ति रजत अछि” भ्रम “इदम्”-अंशमे प्रमाण अछि, कारण इदम्ता शुक्तिमे विद्यमान अछि; रजतत्व-अंशमे अप्रमाण अछि, कारण रजतत्वक अभाववला शुक्तिमे रजतत्व प्रकार बनल अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निर्विकल्पक ज्ञान प्रमाण आ अप्रमाण दुनूसँ व्यावृत्त अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—मिश्र “ई रजत आ शुक्ति अछि” ज्ञानमे प्रमाण-अप्रमाण लक्षणक सहअवस्थान अंशभेदक कारण सम्भव अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्यक मत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“ई शुक्ति रजत अछि” भ्रममे इदम्ता-अंश आ रजतत्व-अंश अलग रहने प्रमाणक पहिल लक्षण आ अप्रमाणक तेसर लक्षणमे अव्याप्ति वा अतिव्याप्ति नहि होइत; कारण शुक्ति-विषयता आ रजत-विषयता परस्पर भिन्न छथि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: वैकल्पिक लक्षणसभ)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—दोसर अनुमानमे “रजतमे अविद्यमानता” उपाधि भऽ जाइत अछि; कारण अरजतविषयक प्रवृत्तिक ज्ञानमे रजतत्व प्रकार रहितो ओकर विषय रजत नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अप्रमाण ज्ञान मान्य नहि—आपत्ति)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—“ई शुक्ति रजत अछि” एहन ज्ञानकेँ पक्ष बनाओल जाए तँ ओ शुक्तिकेँ विषय बनबैत अछि, आ शुक्तिक ज्ञान जकाँ शुक्तिक दिशामे प्रवृत्ति उत्पन्न करैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमानमे उदाहरणहीनताक दोष)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“शुक्ति रजतज्ञानक विषयता-अश्रय अछि” तथा “रजतार्थी प्रवृत्तिक विषय अछि”—ई दुनू अवस्था अनुमानक उपाधि बनैत अछि। लोकसभ अपन-

अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमानमे उदाहरणहीनताक दोष)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—अथवा अनुमान एना हो—रजतत्वकेँ प्रकार बनाबयवला, शुक्तिदिशाक प्रवृत्ति उत्पन्न करयवला आ रजतक इच्छासँ उत्पन्न ज्ञानक विशेष्य शुक्ति अछि; कारण ओ शुक्तिज्ञान जकाँ शुक्तिदिशाक प्रवृत्ति उत्पन्न करैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिक द्वारा अप्रमाण ज्ञानक स्थापना)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“ई शुक्ति रजत अछि” एहन भ्रमज्ञान अथवा रजतक विशिष्ट अप्रमाण ज्ञान, पछाति उत्पन्न प्रवृत्तिक कारण अछि, यथार्थ रजतज्ञान जकाँ। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिक द्वारा अप्रमाण ज्ञानक स्थापना)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जँ “ई शुक्ति रजत अछि” ज्ञानकेँ पक्ष बनओने बाध वा असिद्धि कहल जाए, तँ दुनू पक्ष द्वारा प्रवृत्तिक कारण मानल ज्ञान मात्र पक्ष बनत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिक द्वारा अप्रमाण ज्ञानक स्थापना)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—आपत्ति—रजत आ शुक्तिक अभेदज्ञान “ई शुक्ति रजत अछि” एहन वस्तुज्ञानसँ उत्पन्न होयबाक चाही, भेदाग्रहसँ नहि; अन्यथा भेदज्ञानो भेदाग्रहसँ उत्पन्न मानऽ पड़त। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राभाकर मत—इष्टभेदाग्रह प्रवृत्तिक कारण)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“हम एहि शुक्तिकेँ रजत रूपेँ जानैत छी” अथवा “ई रजत रूपेँ ज्ञात अछि” एहन अनुव्यवसायो शुक्तिकेँ विषय बनबैत अछि; ओकरा केवल रजतक असम्बन्धक अग्रह नहि कहल जा सकैत। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: वैकल्पिक मत—इष्टभेदकेँ विषय नहि बनाबयवला उत्तरज्ञान कारण)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उत्तर—यथार्थ रजतज्ञानक प्रसङ्गमे उत्तरज्ञान नहि उत्पन्न होइत, कारण ओही रजत पहिने ज्ञात नहि छल। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: वैकल्पिक मत—इष्टभेदकेँ विषय नहि बनाबयवला उत्तरज्ञान कारण)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"ई रजत अछि, शुक्ति नहि" एहन परस्पराभावक प्रतियोगिरूपेँ स्मृत शुक्तिभेदक अग्रह निवृत्तिक कारण नहि; अन्यथा निषेधपदक अर्थ असम्बन्धाग्रह मानल जाएत आ अप्रमाण ज्ञान फेर अनिवार्य भऽ जाएत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनिष्टभेदाग्रह निवृत्तिक कारण)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—जँ अनिष्ट वस्तुसँ अभेदग्रहकेँ निवृत्तिक कारण मानल जाए, तँ "ई रजत नहि" एहन रजतसम्बन्धी मिथ्या निश्चयक बाद व्यक्ति रजतसँ नहि हटत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनिष्टभेदाग्रह निवृत्तिक कारण)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—भेदाग्रह मात्र निवृत्तिक कारण रहने "ई रजत नहि" प्रसङ्गमे नहि प्रवृत्ति आवश्यक अछि, नहि अप्रमाण ज्ञान। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनिष्टभेदाग्रह निवृत्तिक कारण)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—"ई शुक्ति आ रजत दुनू अछि" एहन सामूहिक भ्रममे रजतदिशा प्रवृत्ति आ शुक्तिसँ निवृत्ति एकसाथ होयब आवश्यक नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनिष्टभेदाग्रह निवृत्तिक कारण)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—अन्यथा "ई रजत अछि वा शुक्ति?" एहन संशय मानऽ पड़त। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनिष्टभेदाग्रह निवृत्तिक कारण)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"रजत विशेष्य अछि" एहन ज्ञानक स्वरूप केवल रजतत्वकेँ प्रकार बनाबयवला ज्ञान अछि; तखन "मात्र रजत"क अप्रमाण ज्ञान अरजत शुक्तिक ज्ञान नहि भऽ सकैत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक

आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अप्रमाण ज्ञान शून्य-विशेष्यक ज्ञान बनि जाएत—मीमांसकैकदेशीक मत)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“एककेँ दोसर रूपेँ जानब” ज्ञानस्वरूपवश असम्भव अछि—जखन शुक्ति विशेष्य अछि, तखन रजत विशेष्य नहि भऽ सकैत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अप्रमाण ज्ञान शून्य-विशेष्यक ज्ञान बनि जाएत—मीमांसकैकदेशीक मत)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—अत: विवादास्पद “ई शुक्ति रजत अछि” ज्ञानमे रजतत्व बाधक विशेषणरूपेँ उपस्थित नहि; कारण ओ ज्ञान सत्य ज्ञान जकाँ ज्ञान अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अख्याति-पूर्वपक्षक निष्कर्ष)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“ई शुक्ति रजत अछि” एहन अख्याति शुक्तिमे भेदाग्रहवश प्रवृत्ति उत्पन्न करैत प्रतीत होइत अछि, सामने वास्तविक रजतमे “ई रजत अछि” एहन यथार्थ ज्ञान जकाँ। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अख्याति-पूर्वपक्षक निष्कर्ष)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“ई शुक्ति आ रजत दुनू अछि” तथा “ई रजत आ शुक्ति दुनू अछि”—एहन परस्पर-विपरीत सामूहिक ज्ञानमे शुक्तिदिशा प्रवृत्ति आ रजतसँ निवृत्ति एके समय उपस्थित भऽ जाएत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भेदाग्रहसँ प्रवृत्ति सिद्ध नहि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—शुक्ति आ रजत सम्बन्धी दुनू सामूहिक भ्रमक कारण-समूह एकसाथ रहैत अछि; अत: “ई शुक्ति आ रजत दुनू अछि” एहन भ्रमक उत्पत्ति “ई शुक्ति आ रजत दुनू अछि” एहन यथार्थ सामूहिक ज्ञान जकाँ अनुभवसिद्ध अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भेदाग्रहसँ प्रवृत्ति सिद्ध नहि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—नैयायिककेँ एतय संशय आवश्यक नहि, कारण इन्द्रियदोषक सामर्थ्यसँ शुक्ति आ रजत दुनूक भेद

प्रत्येकमे ग्रहण भऽ सकैत अछि; मुदा मीमांसककेँ “ई शुक्ति अछि कि रजत” एहन पृथक् संशय मानऽ पड़त, कारण शुक्ति आ रजत दुनूक पृथक् भेद एक्के वस्तुमे ग्रहण नहि भऽ सकैत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भेदाग्रहसँ प्रवृत्ति सिद्ध नहि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—स्मरणमे केवल रजतकेँ रजतत्वयुक्त आ शुक्तिकेँ शुक्तित्वयुक्त ग्रहण कएल जाइत अछि; “शुक्ति रजतत्वयुक्त” वा “रजत शुक्तित्वयुक्त” नहि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तद्भेदाग्रहसँ प्रवृत्ति-निवृत्ति—एहि मतक खण्डन)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—प्रवृत्ति आ निवृत्ति केवल इन्द्रियदोषसँ सेहो नहि होइत, कारण निर्दोष इन्द्रियसँ उत्पन्न रजत आ शुक्तिक यथार्थ ज्ञानमे दोष अनुपस्थित अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तद्भेदाग्रहसँ प्रवृत्ति-निवृत्ति—एहि मतक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“ई शुक्ति आ रजत दुनू अछि” एहन शब्दाभासजन्य भ्रममे रजतत्व आ शुक्तित्व दुनूक स्मरण शब्दसँ समान रूपेँ होइत अछि, तेँ प्रवृत्ति आ निवृत्ति दुनू एकसाथ उपस्थित होयबाक प्रसङ्ग रहत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्य प्रभाकरक एक अन्य प्रस्ताव)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—उलटा, जँ रजतत्व आ शुक्तित्वकेँ क्रमशः अधिक आ कम निकट सम्बन्धयुक्त मानल जाए, तँ “ई शुक्ति अछि कि रजत” एहन तीव्र-मन्द पक्षक संशय अनिवार्य होयत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्य प्रभाकरक एक अन्य प्रस्ताव)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मुदा शुक्तिदिशा विसंवादी प्रवृत्ति “ई रजत अछि” एहन आधार-ज्ञानसँ होइत अछि, “ई शुक्ति इष्ट विषय अछि” एहन इष्टविषयक ज्ञानसँ नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: इष्टज्ञान आ भेदाग्रह क्रमशः कारण)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—कहल जा सकैत अछि—संवादिनी प्रवृत्तिमे “ई रजत अछि” एहन आधारक ज्ञान आकस्मिक रूपेँ इष्ट रजतकेँ विषय बनबैत अछि आ प्रवृत्ति उत्पन्न करैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद

खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ज्ञानमात्र कारण—एहि मतक पुनः खण्डन; अन्यथाख्यातिक पुनः प्रतिपादन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—किछु अन्य प्रभाकर कहैत छथि—रजतक विषयमे “ई रजत नहि अछि” एहन नकारात्मक ज्ञान रजतदिशा प्रवृत्तिक प्रतिबन्धक अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अगृहीत असंसर्गक नकारात्मक ज्ञान प्रतिबन्धक नहि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—शब्दजन्य “ई रजत नहि” ज्ञानमे एकसाथ प्रवृत्ति-निवृत्ति सम्भव होयबाक कारण भेदाग्रह प्रतिबन्धक नहि ठहरैत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अगृहीत असंसर्गक नकारात्मक ज्ञान प्रतिबन्धक नहि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—नैयायिक कहैत छथि—अन्वय-व्यतिरेकसँ अनुभव सिद्ध करैत अछि जे “ई शुक्ति रजत अछि” एहन विशिष्ट ज्ञान प्रवृत्तिक कारण अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: इष्टानिष्ट-प्रतियोगिताभावग्रह कारण—एहि मतक खण्डन)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—“ई शुक्ति आ रजत दुनू अछि” एहन शब्दाभासजन्य भ्रमसँ शुक्तिदिशा प्रवृत्ति आ रजतसँ निवृत्ति सिद्ध नहि होयत, कारण शब्दसँ रजतमे विद्यमान धर्म आ शुक्तिमे विद्यमान धर्म क्रमशः शुक्ति आ रजतमे स्मृत नहि होइत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: धर्म प्रवृत्तिक कारण—एक अन्य मत)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—वास्तवमे छलक अव्यभिचारी शब्द “ई शुक्ति आ रजत दुनू अछि”क विश्वास प्रवृत्ति आ निवृत्तिक कारण होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: धर्म प्रवृत्तिक कारण—एक अन्य मत)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—शुक्तिदिशा प्रवृत्ति एहन कोनो एक धर्मक भेदाग्रहसँ होइत अछि जे शुक्तिमे विद्यमान रूपेँ स्मृत अछि आ “रजत” रूपेँ ग्रहण होइत अछि।

विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशिष्ट ज्ञान प्रवृत्तिक कारण)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“ई शुक्ति रजत अछि” एहन अप्रमाण विशिष्ट ज्ञान लाघव आ अन्वय-व्यतिरेकक कारण प्रवृत्तिक कारण अछि, भेदाग्रहक विस्तृत कल्पना नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशिष्ट ज्ञान प्रवृत्तिक कारण)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—अतः अपन मतानुसार “ई शुक्ति रजत अछि” एहन अप्रमाण विशिष्ट ज्ञान प्रत्यभिज्ञा जकाँ कारण-समूहक उपस्थितिसँ एक्के ज्ञान भऽ सकैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “ई रजत अछि” एके ज्ञान)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“ई शुक्ति रजत अछि” एहन अप्रमाण ज्ञान “हम एहि शुक्तिकेँ रजत रूपमे जानलहुँ” एहन अनुव्यवसायसँ सिद्ध होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रत्यक्ष अन्यथाख्यातिक कारण अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—शुक्ति आ रजतक भेद ग्रहण भेलापरो “हम शुक्तिकेँ रजत रूपमे जानलहुँ” एहन अनुव्यवसाय उत्पन्न होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रत्यक्ष अन्यथाख्यातिक कारण अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“हम एहि शुक्तिकेँ रजत रूपमे जानलहुँ” एहन अनुव्यवसायमे शुक्तिविषयक ज्ञान आ रजतत्वरूप विशेषणक असंसर्गाग्रह एके आत्मामे मानब असम्भव अछि; अतः मीमांसकमतमे “ई शुक्ति रजत अछि” एहन अप्रमाण विशिष्ट ज्ञानक उदाहरण बनबे नहि करैत।

विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रत्यक्ष अन्यथाख्यातिक कारण अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“रजत रूपमे” एहि तृतीया-विभक्तिक अर्थ रजतत्व अछि आ ओ रजतक विशेषण अछि; विशेष्यसँ रहित विशेषणमे ओकर ग्रहण सम्भव नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रत्यक्ष अन्यथाख्यातिक कारण अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—फेर कहल जा सकैत अछि—“ई शुक्ति रजत अछि” एहन ज्ञान अप्रमाण कोना, जखन शुक्ति आ रजत दुनू वास्तविक आ विद्यमान छथि? शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दोष भ्रमक कारण अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—नैयायिक उत्तर दैत छथि—“ई शुक्ति रजत अछि” एहन ज्ञान विद्यमान शुक्ति आ रजतकेँ मात्र विषय बनबैत अछि, तथापि ज्ञानक अप्रामाण्यक अर्थ अछि—विशेषणक अभावयुक्त आश्रयमे विशेषणकेँ रखैत ज्ञान होयब अथवा विशेषणक विरोधी विषयताकेँ ग्रहण करैत ज्ञान होयब। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दोष भ्रमक कारण अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—प्राचीन नैयायिक कहैत छथि—तादात्म्य आ आन जे असत् सम्बन्ध अछि, सँ सभ “ई शुक्ति रजत अछि” एहन अप्रमाण ज्ञानक विषय बनैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राज्च नैयायिकक मत: अन्यथाख्याति असत्ख्याति अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—भ्रममे “ई शुक्ति रजत अछि” ज्ञानमे रजत-व्यवहारक शक्ति रहैत अछि, मुदा दोषसँ दबि गेलाक कारण व्यवहार नहि होइत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: स्वविषयत्व स्वप्रकाशत्व अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—नैयायिक उत्तर—प्रत्यक्ष प्रमाण सरल प्रथम ज्ञानक स्वप्रकाशत्व सिद्ध नहि करैत, कारण सामान्य अनुभव “ई रजत अछि” रूपेँ अछि, “हम एहि रजतकेँ जानैत छी” रूपेँ नहि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकद्वारा स्वप्रकाशत्वक खण्डन)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“हम ई रजत जानैत छी” अनुव्यवसाय प्रथम ज्ञानक बादमे उत्पन्न होइत अछि; एहि अनुभवकेँ छोड़ल नहि जा सकैत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव

जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकद्वारा स्वप्रकाशत्वक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“हम ई रजत जानैत छी” एहन ज्ञानरूप प्रथम व्यवसायमे ज्ञान स्वयं अपन विषय नहि, कारण ज्ञानकेँ विषय करबाक इन्द्रिय-सन्निकर्ष उपलब्ध नहि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ज्ञान स्वयं अपन विषय नहि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—“ई शुक्ति रजत अछि” एहि ज्ञानमे रजतत्व ज्ञानक प्रकार बनैत अछि, तें ओ भ्रम अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: केचित् विद्वानक मत)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—. अनुमान एहि प्रकारक हो सकैत अछि—‘ई शब्दार्थसभ—इदंत्वावच्छिन्न वस्तु आ रजत—आपसमे स्वाभाविक वाक्यार्थगत सम्बन्ध, जे वक्ताक तात्पर्यक विषय अछि, रखैत अछि; कारण ई अर्थसभ आकाङ्क्षा आदि सँ युक्त “इदं रजतम्” पदसमूहसँ स्मृत भेल अछि; अथवा, ई अर्थसभ योग्यता आ आसत्तिसँ युक्त तथा वाक्यार्थगत सम्बन्धक बोध कराबय लेल प्रयुक्त पदसमूहसँ स्मृत भेल अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: वैशेषिकसभक वैकल्पिक अनुमान)

अध्याय ९५ — लाउ किन-हंगक अंतिम सौदा

जलक प्रसङ्ग

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—विवेचन: एहि अनुमानमे पृथ्वी केँ अन्य द्रव्यों (जल, वायु, आकाश आदि) सँ भिन्न सिद्ध करब साध्य थिक, आ 'गन्धवत्त्व' (गन्ध रहब) हेतु थिक। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: केवलव्यतिरेकी अनुमान)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—चूँकि ई भौतिक द्रव्य (पृथ्वी, जल आदि) क गुण नहि अछि, तें एकर आधार एकटा अमूर्त द्रव्य 'आत्मा' अछि3। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ

अनुभवसँ जोड़ब अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमान खण्ड - तार्किक संरचनाक चरमोत्कर्ष आ व्याप्ति-विमर्श)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—उदाहरणार्थ, जखन केओ अन्हारमे वा दूर सँ जल देखैत अछि (प्रथम ज्ञान), तँ ओकर प्रामाण्य ओहि समय निश्चित नहि होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्य-न्याय सिद्धान्त: परतः प्रामाण्यवादक दुर्जेय तार्किक स्थापना)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—जखन व्यक्ति ओतय जा कऽ जल पीबैत अछि आ ओकर प्यास मेटा जाइत अछि (सफल प्रवृत्ति), तखन ई व्यतिरेकी अनुमान होइत अछि जे "जलक ई ज्ञान प्रमाण अछि, कारण ई दाह-समर्थ (प्यास बुझाबयवला) जल दिस सफल प्रवृत्ति उत्पन्न करऽवला अछि"। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्य-न्याय सिद्धान्त: परतः प्रामाण्यवादक दुर्जेय तार्किक स्थापना)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—मीमांसक 'प्रोक्षण' (धानपर जल छिड़कब) जकाँ यज्ञीय कर्ममे धानमे एकटा 'आधेयशक्ति' उत्पन्न होयबाक बात कहैत छथि, जाहिसँ ओ धान भविष्यक फलोत्पादन (यज्ञ) लेल योग्य बनैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक खण्डन आ 'प्रतिबन्धकाभाव' क स्थापना)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“जल गरम अछि” ज्ञानकेँ अयथार्थ नहि कहल जाइत, मुदा उपेक्षारूप ज्ञान गैर-अनुकूल व्यवहार उत्पन्न करैत अछि, तेँ ओकरा अयथार्थ कहल जाइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अख्याति-पूर्वपक्षक निष्कर्ष)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—सुवर्ण जल नहि, कारण ओ स्वाभाविक द्रवत्वक आश्रय नहि; लाक्षा जकाँ नैमित्तिक द्रवत्वक आश्रय आ स्नेहरहित अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नवीनक मत—सुवर्ण जल नहि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—व्यतिरेकी अनुमान—“रूपवान् आ जलभिन्न होइत तैजसत्व-पार्थिवत्वक सन्देहवला विवादित द्रवत्वाश्रय सुवर्ण तैजस अछि; कारण विरोधी द्रवद्रव्यक सम्बन्ध नहिरहला पर अत्यन्त अग्निसंयोगो सँ अनष्ट अनित्य द्रवत्वक आश्रय अछि; जे एहन नहि, सँ तैजस नहि—जल आ घृत जकाँ। दोसर

विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्यमत—सुवर्णमे द्रवत्व उत्पन्न होइत अछि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—अन्ततः—"विवादित द्रुत सुवर्ण तैजस अछि; कारण अत्यन्त अग्निसंयोगो सँ अनष्ट नित्य द्रवत्वक आश्रय अछि; जे एहन नहि, सँ तैजस नहि—जल जकाँ"—एहि अनुमानसँ सुवर्णक तैजसत्व स्थापित होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सुवर्णमे तैजसत्वक अन्तिम स्थापना)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अन्यथा वायु स्पर्शवान् रहैत जल आ तेजसँ भिन्न अछि, तेँ पार्थिव अछि—एहो मानब पड़त। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एकदेशीक मत—सुवर्ण पृथ्वी, जल वा तेजसँ भिन्न द्रव्यान्तर)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—तहिना "जल प्रमेय अछि, कारण ओ रसवत्त्ववान् अछि" एहन अनुमानमे पृथिवीत्व रसवत्त्वसँ अवच्छिन्न प्रमेयताक व्यापक होयबाक कारण उपाधि बनि जाएत—ई अनिष्ट अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: साध्यव्यापक होइतहुँ साधनाव्यापक वस्तु उपाधि नहि—एहन मत)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—आपत्ति हो सकैत अछि जे एहि परिभाषासँ "शब्द अभिधेय अछि, कारण ओ प्रमेय अछि" एहन अनुमानमे अश्रावणत्व, आ "जल प्रमेय अछि, कारण ओ रसवान् अछि" एहन अनुमानमे पृथिवीत्व उपाधि बनत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधिक वैकल्पिक सिद्धान्त—अर्थान्तर नहि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—हेतुग्राहक प्रत्यक्षसँ बाधित हेतु—जेना, 'जल आ वायु उष्ण छथि, पृथ्वीसँ भिन्न स्पर्शयुक्त होएबाक कारणे, तेजक समान। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: हेतुग्राहक प्रत्यक्षसँ बाधित हेतु—जेना, 'जल आ वायु उष्ण छथि, पृथ्वीसँ भिन्न स्पर्शयुक्त होएबाक कारणे, तेजक समान।')

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—जेना पियास बुझबामे समर्थ जलकेँ 'जल' रूपेँ सीमित करनिहार धर्म सिद्ध करबाक अभिप्रायत्वक

अनुमान कएल जाइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमिति-प्रतिबन्धकता-अवच्छेदक रूपसम्पन्नताकेँ असाधकत्व मानबाक वैकल्पिक मत)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अन्यथा पृथिवी, जल आ तेज—एहि तीन द्रव्यमे पृथक-पृथक रूपक अभाव ज्ञात रहितो वायुमे रूपविषयक संशय सम्भव नहि होइत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—आ जँ कारणसमष्टिक कारणत्व प्रतिबन्धकाभावक आधार पर मानलो जाए, तँ मणि आदि प्रतिबन्धक सभक अभाव-समूह मात्र दाहानुभूतिक कारण होयत—ठीक जेना जल आ घूमैत दण्डक समूह घटोत्पत्तिक कारण होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—उदाहरणार्थ, “धानकेँ जल छिड़किकऽ संस्कारित करैत अछि” एहन क्रियामे संस्कारसँ उत्पन्न, इन्द्रियातीत आ भविष्यक कार्यक अनुकूल विशिष्टता दुनू पक्ष द्वारा मानल जाइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: किछु विद्वान् एना प्रस्ताव करैत छथि—जाहि दशामे कारणताक ज्ञान करयवला साधन उपलब्ध नहि अछि, ओहि दशामे व्यभिचार मात्र कारणताज्ञानक बाधक होइत अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—अन्यथा एकहि धान केवल जल-छिड़कावसँ संस्कारित भेलोपरि पछाति कुटबाक आदिमे किएक उपयोगी होइत? विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: किछु विद्वान् एना प्रस्ताव करैत छथि—जाहि दशामे कारणताक ज्ञान करयवला साधन उपलब्ध नहि अछि, ओहि दशामे व्यभिचार मात्र कारणताज्ञानक बाधक होइत अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एना प्रस्ताव कएल जा सकैत अछि—“धानसँ यज्ञ करबाक चाही”, “धानपर जल छिड़कि संस्कार करैत अछि”, “धान कुटैत अछि” आ “पकाओल

चाउरक पिण्डसँ यज्ञ करबाक चाही" जकाँ श्रुतिवाक्य सभमे कुटल धानक अवयवक निरन्तरताक कारण, पकाओल चाउरक पिण्ड लेल सम्पूर्ण धानक आकाङ्क्षा रहैत अछि; तेँ केवल कुटल धान यज्ञसँ अर्थसम्बद्ध अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: किछु विद्वान् एना प्रस्ताव करैत छथि—जाहि दशामे कारणताक ज्ञान करयवला साधन उपलब्ध नहि अछि, ओहि दशामे व्यभिचार मात्र कारणताज्ञानक बाधक होइत अछि।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—१७४. आब एना प्रस्ताव कएल जा सकैत अछि—जल-छिड़कावद्वारा कएल संस्कार व्यक्तिमे समवेत विशिष्टता उत्पन्न करैत अछि; कारण यज्ञ जकाँ भविष्यकालीन फल उत्पन्न करबाक समय ई विहित क्रिया अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—एहि सिद्धान्तक व्याख्या एना अछि—जल-छिड़कावद्वारा कएल संस्कार अदृष्ट उत्पन्न करैत अछि; कारण ज्ञात मध्यवर्ती अदृष्ट बिना भविष्यकालीन फल उत्पन्न करयवला कारणरूपें ओही संस्कार विहित अछि—जेना यज्ञ आ ओकर अङ्गसभ। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—"संस्कारित धान कुटैत अछि" एहन श्रुतिवाक्यमे पूर्वोक्त नियमक अनुसार केवल जल-छिड़कावसँ संस्कारित धानक प्रयोग अभिप्रेत अछि; कारण विधिक उल्लङ्घन नहि कएल जा सकैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अन्यथा "ओ गाम जाइत अछि" अथवा "ओ धानक फर्शपर जल छिड़कैत अछि" जकाँ वाक्यमे द्वितीयान्त पदक अर्थ कोना सिद्ध होयत? दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—१८५. आब एना प्रस्ताव कएल जा सकैत अछि—अभिमन्त्रित जल, अंकुर आदिमे निर्दिष्ट समयसँ अवच्छिन्न अभिमन्त्रणध्वंस मात्र व्यथा आदिक

निवारक अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सिद्धान्तीक मत: प्रतिष्ठाध्वंस पूज्यत्वक प्रयोजक अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—एही अर्थमे श्रुति कहैत अछि—"जेना नीलकमलक पातसँ जल अलग रहैत अछि, तहिना कर्म तत्त्वज्ञानीसँ अलग भऽ जाइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: पुरुषार्थवाद)

अध्याय ९६ — बटुकनाथक देर-सँ-आयल क्षमा

शङ्खक रंग

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मीमांसक कहि सकैत छथि—पित्तादि नेत्रदोष रहला पर विशेष धर्मक दर्शन भेलोपर "ई शङ्ख पीयर अछि" अथवा दर्पणमे मुख देखायब जकाँ भ्रम उत्पन्न होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्य दोषसँ प्रामाण्य-संशय उत्पन्न होयबाक तर्कक खण्डन)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—पित्तदोषक प्रतिबन्धकता कारण "शङ्ख पीयर नहि अछि" एहन विशेष सत्यक प्रत्यक्ष निश्चय नहि होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्य दोषसँ प्रामाण्य-संशय उत्पन्न होयबाक तर्कक खण्डन)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—"ई शङ्ख पीयर अछि" एहन अप्रमाण ज्ञान शङ्खक प्रति प्रमाण अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्य अनुमानसभक खण्डन)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"शङ्ख पीयर अछि" एहन भ्रममे विशेष-दर्शन रहितो शङ्खक श्वेतरूपक प्रमाण ज्ञान उत्पन्न नहि होइत; तेँ विशेष-दर्शन श्वेतज्ञानक कारण नहि—एहन आपत्ति ठीक नहि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष: गुण कारण अछि तथा अनुमानादिमे गुणक स्वरूप)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—आपत्ति—“शङ्ख पीयर अछि, श्वेत नहि” एहन दोषयुक्त भेदज्ञान रहितो श्वेत शङ्खक इच्छुक व्यक्ति पीयर वस्तुदिशा नहि बढ़ैत; श्वेत शङ्खसँ पीयर वस्तुक भेदक उत्तरवर्ती यथार्थ अनुमानक बादे ओ रुकैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भेदाग्रहकेँ कारण मानबाक स्थापना)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—तखन “शङ्ख श्वेत अछि” एहन अभेदज्ञानकेँ प्रवृत्तिक कारण मानबाक चाही। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भेदाग्रहकेँ कारण मानबाक स्थापना)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“शङ्ख पीत अछि” ज्ञानमे केवल नेत्रक पीतत्व देखाइत अछि, पीत द्रव्य नहि; पीत द्रव्यक अवयव किरण जकाँ विभक्त छथि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नवीनमत—वायु अप्रत्यक्ष)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—तहिना, अभावक भ्रम भावक यथार्थ ज्ञानकेँ नहि रोकैत; कारण ‘ई शङ्ख पीयर अछि’ एहन भ्रम ताहू व्यक्तिमे देखल जाइत अछि जे ‘ई शङ्ख पीयर नहि अछि’ ई निश्चय कऽ चुकल अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पुनः आपत्ति कएल जा सकैत अछि जे सामान्यतः अभावक ज्ञान, सामान्यतः भावक ज्ञानकेँ नहि रोकैत। कारण)

अध्याय ९७ — चन्द्रपालक म्यूल अकाउण्ट

विषयता पृथक् पदार्थ मानलापर प्रामाण्यक निर

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—तखन “मणित्व-प्रकारक आ मणि-प्राप्तिक प्रवृत्ति उत्पन्न करऽवला निश्चित ज्ञान” मणि-ज्ञानक प्रामाण्य-अनुमानमे व्यभिचारी हेतु बनत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विषयता पृथक् पदार्थ मानलापर प्रामाण्यक निरूपण)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—मणि-प्राप्ति केवल अन्यथा मणि नहि भेटबाक असम्भवताक कारण संयोगसँ होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विषयता पृथक् पदार्थ मानलापर प्रामाण्यक निरूपण)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—मणि-ज्ञान आ मणि-प्राप्तिक प्रयत्न भिन्न समयमे होइतहुँ मन द्वारा दुनूक कारण-कार्यभाव ज्ञात भऽ सकैत अछि, ज्ञान आ स्मरणक कारण-कार्यभाव जकाँ। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विषयता पृथक् पदार्थ मानलापर प्रामाण्यक निरूपण)

अध्याय ९८ — राघवक अंतिम संदेश

आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—केवल पुरुष

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—अन्यथा व्यक्तिक संग दण्ड राखबाक आ हटेबाक समय केवल पुरुषक अभाव तथा दण्डक अभावविषयक अबाधित व्यवहार बुझाओल नहि जा सकैत छल। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—केवल पुरुष अर्थात् कुम्हारक अभावक व्यवहार, विशेषण आदिक अभावक कारण मात्र सिद्ध होइत अछि, किएक तँ ओ अभाव एकमात्र शक्तिसँ युक्त अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—एही प्रकार समान नियमक कारण उत्तेजक तत्त्व राखबाक आ हटेबाक क्रममे मणि-जकाँ प्रतिबन्धकक अभाव सेहो स्वीकार करब आवश्यक अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—केवल पुरुष अर्थात् कुम्हारक अभावक व्यवहार, विशेषण आदिक अभावक कारण मात्र सिद्ध होइत अछि, किएक तँ ओ अभाव एकमात्र शक्तिसँ युक्त अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—१२४. जँ मणि-जकाँ प्रतिबन्धकक अभावकेँ तीन प्रकारक संसर्गाभावमे, ओहि तीनू संसर्गाभावसँ भिन्न होयबाक कारण, समाविष्ट नहि कएल जा सकए, तँ ओहि प्रतिबन्धकाभावकेँ चतुर्थ संसर्गाभाव मानल जाए। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध

निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—केवल पुरुष अर्थात् कुम्हारक अभावक व्यवहार, विशेषण आदिक अभावक कारण मात्र सिद्ध होइत अछि, किएक तँ ओ अभाव एकमात्र शक्तिसँ युक्त अछि।)

अध्याय ९९ — सत्यव्रत मेहताक गवाही

प्रत्यक्ष

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—उदाहरण: जँ व्यक्ति अपन आँखि सँ चुल्हापर आगि जरैत देखैत छी, वा फूलक सुगन्ध नाक सँ लैत छी, तँ ई ओहि वस्तुक 'प्रत्यक्ष' ज्ञान थिक। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रत्यक्ष)

अध्याय १०० — गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ

नव्य—न्याय सिद्धान्त: परतः प्रामाण्यवादक द

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—व्यवहारमे जतय संशय नहि उठैत अछि (करतलपर राखल आँवला जकाँ स्पष्ट ज्ञानमे), ओतय प्रामाण्यक अतिरिक्त अनुमानक आवश्यकता नहि होइत अछि; अविचल प्रवृत्ति भऽ जाइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्य-न्याय सिद्धान्त: परतः प्रामाण्यवादक दुर्जेय तार्किक स्थापना)

अध्याय १०१ — अनाम ग्रहक आमन्त्रण

प्रामाण्यग्रहणक स्वतस्त्व आ परतस्त्वक स्वर

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—उदाहरण—“ई शरीरज्ञान प्रमाण अछि, कारण हाथ-पयरवाला आश्रयक प्रति ई शरीरज्ञान अछि, अपन शरीरक ज्ञान जकाँ। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रामाण्यग्रहणक स्वतस्त्व आ परतस्त्वक स्वरूप)

अध्याय १०२ — ग्रहक बीच कबड्डी

इन्द्रिय अभावज्ञानक प्रमाण नहि

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एहि सँ ई तर्को खण्डित होइत अछि जे आश्रयज्ञान आ इन्द्रियक पृथक् अन्वय-व्यतिरेक ज्ञात भेला कारण दण्ड आ चक्र जकाँ दुनू कारण छथि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: इन्द्रिय अभावज्ञानक प्रमाण नहि)

अध्याय १०३ — अनाम ग्रह पर नाम-पाठ

उद्भूत रूप प्रकाशनक कारण

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—घूमैत दण्ड-चक्रक उदाहरणसँ भिन्न, एतय एककेँ छोड़ि दोसरक अन्वय-व्यतिरेक सिद्ध नहि; तेँ दुनूक कारणता स्वीकार्य। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उद्भूत रूप प्रकाशनक कारण)

अध्याय १०४ — गढ़ नारिकेल फेर पृथ्वी चुनैत अछि

एकहि समय अनेक ज्ञानक सम्भावना

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—मुदा किछु अवसरपर अनेक ज्ञान युगपद् होयब प्रत्यक्ष अनुभवसिद्ध अछि—जेना भोजन करैत नृत्य देखब, गीत सुनब आ सुगन्ध ग्रहण करब। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एकहि समय अनेक ज्ञानक सम्भावना)

अध्याय १०५ — पृथ्वीक पहिल पहरा

विशेषण साधक आ उपयोगी अछि

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“ई पुरुष दण्डी अछि” ज्ञानमे दण्ड-सम्बन्ध पुरुषक विशेषण अछि; तेँ पुरुष अदण्डी सँ पृथक् ज्ञात होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशेषण साधक आ उपयोगी अछि)

अध्याय १०६ — बीजक गवाही

प्रकार दू प्रकारक—विशेषण आ उपलक्षण

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उपस्थित दण्ड "ई पुरुष दण्डी अछि" ज्ञानमे मुख्य विशेषण अछि; अनुपस्थित कुरुवंश "ई भूमि कुरुक्षेत्र अछि" ज्ञानमे उपलक्षण। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रकार दू प्रकारक—विशेषण आ उपलक्षण)

अध्याय १०७ — बीजक चोरी

उपलक्षण विशिष्टज्ञानक विषय होयब आवश्यक

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—क्रियासम्बन्धी व्यावर्तककेँ विशेषण आ ओकर अतिरिक्तकेँ उपलक्षण कहल जाए—एहन मतमे दण्ड उपलक्षण भऽ जाएत, कारण "दीर्घबाहु दण्डी" मे दण्ड क्रियासँ प्रत्यक्ष सम्बद्ध नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपलक्षण विशिष्टज्ञानक विषय होयब आवश्यक)

अध्याय १०८ — माटिक मुँह

विशेषण व्यावृत्तिक समानाधिकरण मात्र नहि

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—मुदा "ई कमल नील कमल अछि" कथनमे नीलकमलसँ भिन्न समस्त वस्तुक व्यावृत्ति व्यक्त नहि; प्रत्यभिज्ञा "हम एहि कमलकेँ नीलकमल जानैत छी" मे सेहो एहन व्यावृत्ति प्रकट नहि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशेषण व्यावृत्तिक समानाधिकरण मात्र नहि)

अध्याय १०९ — जलक स्मृति

शिवादित्य मिश्रक मत—साक्षात् सम्बन्धी विशे

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"पुरुष दण्डी अछि" मे दण्ड पुरुषक विशेषण, दण्डत्व जाति दण्डक विशेषण मात्र। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: शिवादित्य मिश्रक मत—साक्षात् सम्बन्धी विशेषण)

अध्याय ११० — आगिक साक्षी

साक्षादन्वित अथवा विशेष्यसम्बन्धी विशेषण

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—स्वादक रूपयुक्त घटमे रूप सेहो मुख्य विशेषण भऽ जाएत, आ भूतकालक “दण्डी छल” कथनमे दण्ड केवल उपलक्षण। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: साक्षादन्वित अथवा विशेष्यसम्बन्धी विशेषण)

अध्याय १११ — वायुक प्रश्न

धूमक चिह्न

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—उदाहरण: "पर्वतपर धूम (धुआँ) अछि, किएक तँ ओतय अग्नि अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। (दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधिक स्वरूप)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—" एहि अनुमानमे अग्नि हेतु थिक आ धूम साध्य थिक। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधिक स्वरूप)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—एतय 'आर्द्र-इन्धन-संयोग' (भीजल लकड़ीक संयोग) ओ उपाधि थिक जे अग्निक व्यापक नहि अछि (कखनो-कखनो अग्नि सूखल लकड़ी वा गोइठामे सेहो रहैत अछि, जकरामे नमी नहि होइत अछि), मुदा धूम व्यापक अछि (बिनु नमी वा भीजल लकड़ीक कतहु धूम उत्पन्न नहि भऽ सकैत अछि)। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटनाक भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधिक स्वरूप)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जेना—"हृदयमे धूम अछि, कारण अग्नि अछि" एहि अनुमानमे आर्द्रता-जन्य अग्नित्त्व एकटा निश्चितोपाधि थिक। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: निश्चितोपाधि आ संदिग्धोपाधि कऽ अनुमानमे प्रभाव)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—उदाहरण: जेना—"पर्वतपर धूम (धुआँ) अछि, किएक तँ ओतय अग्नि अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल। (दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—जँ हम एकटा सामान्य अनुमानक उदाहरण लेल: "पर्वतपर अग्नि अछि, किएक तँ ओतय धूम (धुआँ) अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल। (दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—एहि सामान्य उदाहरण—“पर्वतपर अग्नि अछि, किएक तँ ओतय धूम अछि”—सँ न्याय दर्शनक तीन प्रमुख अङ्ग स्पष्ट होइत अछि: सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—अनुमानमे अग्नि-धूम जकाँ पूर्वनिर्धारित व्याप्तिज्ञान आवश्यक अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—अनेक प्राचीन तार्किक आ मीमांसक दार्शनिकसभक मत छल जे केवल व्याप्तिस्मरण (जेना "जतय-जतय धूम अछि, तहाँ-तहाँ अग्नि अछि") आ पक्षधर्मताक ज्ञान (जेना "पर्वतपर धूम अछि") पृथक्-पृथक् रूपेँ अनुमानक लेल पर्याप्त अछि, आ 'परामर्श' नामक कोनो तेसर ज्ञानक आवश्यकता नहि अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमितिक स्वरूप आ लिङ्गपरामर्शक अनिवार्यता)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—परामर्शक प्रक्रिया एहि प्रकार अछि: जखन कोनो व्यक्ति पाकशाला (भानसघर)मे धूम (धुँआ) आ अग्निक सहचार देखैत अछि, तखन ओकरा "जतय-जतय धूम अछि, तहाँ-तहाँ अग्नि अछि" एहन व्याप्ति-ज्ञान होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमितिक स्वरूप आ लिङ्गपरामर्शक अनिवार्यता)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—एहि दुनू ज्ञानक संयोजन्सँ उत्पन्न "अग्निसँ व्याप्त धूम एहि पर्वतमे अछि" (व्याप्ति-विशिष्ट-पक्षधर्मता-ज्ञान) ई तेसर ज्ञानहि 'परामर्श' कहल जाइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमितिक स्वरूप आ लिङ्गपरामर्शक अनिवार्यता)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—जेना, "पर्वतपर अग्नि अछि, कारण धूम अछि" एहि अनुमानमे धूमक विशिष्ट व्याप्ति अग्नि-सम्बन्धिता अछि, कारण धूममे अग्नि-सम्बन्धिताक अवच्छेदक धूमत्व अछि, आ धूमसामान्य केवल अग्निसँ सम्बन्धित होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्याप्तिक सिद्धान्त-लक्षण: गङ्गेशक निर्णायक परिभाषा)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—जेना, जँ ककरो ई संशय हो जे 'धूम अग्निविना सेहो भऽ सकैत अछि', तँ तर्कक प्रयोग एहि प्रकार होइत अछि: "जँ धूम अग्निविना होइत, तँ धूम अग्निक कार्य नहि होइत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तर्कक सिद्धान्त आ व्यभिचार-संशयक निवारण)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—मुदा कारण-कार्य भाव प्रत्यक्ष अछि जे धूम अग्निसँ उत्पन्न होइत अछि"। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तर्कक सिद्धान्त आ व्यभिचार-संशयक निवारण)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—जखन व्यक्ति भानसघरमे धूम आ अग्निक व्याप्ति देखैत छी, तँ हम केवल 'वर्तमान' धूम आ अग्निकेँ देखैत छी। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तर्कक सिद्धान्त आ व्यभिचार-संशयक निवारण)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—तखन 'समस्त' (भूत, भविष्य, आ वर्तमानक समस्त स्थानक) धूम आ अग्निक व्याप्ति कोना ज्ञात होइत अछि? सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तर्कक सिद्धान्त आ व्यभिचार-संशयक निवारण)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—एहि अलौकिक सन्निकर्षक अनुसार, जखन व्यक्ति एकटा धूम-व्यक्तिकेँ देखैत छी, तखन इन्द्रिय-सन्निकर्षक कारण ओहिमे रहल 'धूमत्व' जातिकेँ सेहो देखैत छी। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तर्कक सिद्धान्त आ व्यभिचार-संशयक निवारण)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—एहि 'धूमत्व' जातिक माध्यमसँ हमरा समस्त धूम-व्यक्तिसभक ज्ञान भऽ जाइत अछि। दोसर विद्यार्थी

कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तर्कक सिद्धान्त आ व्यभिचार-संशयक निवारण)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एतय 'अग्नि' हेतु अछि आ 'धूम' साध्य अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधिवाद: सोपाधिक आ अनुपाधिक हेतु)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—ई अनुमान अशुद्ध अछि कारण अग्नि जतय रहैत अछि, ततय धूम रहबे करय, ई आवश्यक नहि (जेना तप्त लौह पिण्डमे अग्नि अछि मुदा धूम नहि)। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधिवाद: सोपाधिक आ अनुपाधिक हेतु)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—ई उपाधि 'साध्यक व्यापक' अछि (जतय-जतय धूम अछि, ततय-ततय भिजल काठक सम्पर्क अवश्य रहैत अछि), मुदा 'हेतुक व्यापक' नहि अछि (जतय-जतय अग्नि अछि, ततय-ततय भिजल काठक सम्पर्क आवश्यक नहि अछि)। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधिवाद: सोपाधिक आ अनुपाधिक हेतु)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“जतय धूम, ततय अग्नि” व्याप्ति वास्तविक रहितहुँ व्याप्तिज्ञान नहि रहलापर अग्निक उद्देश्यसँ प्रवृत्ति नहि होइत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अयथार्थ स्मृति वर्तमानताकेँ विषय बनबैत अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—एहन समानाधिकरण्याभावपर आधारित व्याप्ति-परिभाषा “ई वाच्य अछि, कारण ई ज्ञेय अछि” एहन केवलान्वयी अनुमानमे ज्ञेयतारूप हेतुपर लागू नहि होएत; धूमरूप हेतुपर सेहो लागू नहि होएत, कारण धूम अग्निरूप किछु साध्यक अधिकरणमे वर्तमान रहैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्याप्तिक अतिरिक्त पूर्वपक्षीय परिभाषाक खण्डन: व्याप्ति साधिकरणता नहि अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—कारण “पर्वतपर अग्नि अछि, कारण धूम अछि” एहि अनुमानमे पर्वतवर्ती अग्नि केवल चूल्हावर्ती धूमक अधिकरणमे वर्तमान अग्निक अत्यन्ताभावक

प्रतियोगी अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्याप्ति साध्य-समानाधिकरण्य नहि अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—अतएव “पर्वतपर अग्नि अछि, कारण धूम अछि” एहन शुद्ध अनुमानक धूमरूप हेतुमे सेहो उक्त व्याप्ति-परिभाषा नहि पाओल जाइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्याप्ति साध्य-समानाधिकरण्य नहि अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—तप्त लौहपिण्डक प्रसंगमे “पर्वतपर अग्नि अछि, कारण धूम अछि” एहि विषम-व्याप्तिवाला हेतुमे एहन व्याप्ति अनुपस्थित अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: हेतु आ साध्यक स्वाभाविक सम्बन्धरूप व्याप्तिक निम्नलिखित परिभाषा सम्भव नहि अछि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उदाहरणार्थ “पर्वतपर अग्नि अछि, कारण धूम अछि” एहि अनुमानमे धूमक विशिष्ट व्याप्ति अग्नि-सम्बन्धिता—अर्थात् धूमक अग्निक संग समानाधिकरणता—अछि; कारण धूममे अग्नि-सम्बन्धिताक अवच्छेदक धूमत्व अछि, आ धूमसामान्य केवल अग्निसँ सम्बन्धित होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सम्बन्धितावच्छेदकरूपवत्त्व व्याप्ति अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“पर्वतपर अग्नि अछि, कारण धूम अछि” एहन सद्हेतुवाला अनुमानमे धूमक अग्निक संग समानाधिकरणता धूमत्वसँ अवच्छिन्न अछि; अतएव धूमरूप हेतु व्याप्य अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: यत्समानाधिकरण्यावच्छेदकावच्छिन्नत्व व्याप्ति अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“पर्वतपर अग्नि अछि, कारण धूम अछि” एहि अनुमानमे चूल्हामे अग्नि अथवा अग्निमान् वस्तु क्रमशः घटक अत्यन्ताभाव वा घटाधिकरणक अन्योन्याभावक प्रतियोगी नहि अछि—ई स्पष्ट अनुभव होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: व्याप्ति साधनवन्निष्ठात्यन्ताभाव-प्रतियोगी साध्यसमानाधिकरणता नहि अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—तर्कक सामर्थ्यक सम्बन्धमे एहन आपत्ति कएल जा सकैत अछि—“मानि लिअ जे अग्निसँ सम्बद्ध वस्तुसँ धूम उत्पन्न नहि होइत अछि, आ अग्निसँ असम्बद्ध वस्तुसँ सेहो उत्पन्न नहि होइत अछि; तखन सएह धूम सर्वथा अनुत्पन्ने रहत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्याप्तिज्ञानमे तर्क सहायक नहि अछि—एहन आपत्ति)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—एक वस्तुक ज्ञान—जेना आर्द्रेन्धन-संयोगक ज्ञान, जे अग्निरूप साध्यक व्यापक होइतहुँ धूमरूप हेतुक व्यापक नहि अछि—दोसर ज्ञानमे, अर्थात् धूम हेतुक अग्निसँ व्याप्तिक ज्ञानमे, बाधा नहि दऽ सकैत अछि; नहि तँ अतिव्याप्ति होएत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: केवल अव्यभिचार व्याप्तिज्ञानक कारण अछि, अनुपाधिकता नहि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—१. नैयायिक एहन प्रस्ताव करैत छथि—साध्यक द्वारा सभ हेतुक व्याप्तिक ज्ञानक अर्थ अछि धूमत्व आ वह्नित्व-जकाँ सामान्यसँ विशेषित समग्रबोधक सम्बन्धक माध्यमेँ धूम-जकाँ हेतुक सभ व्यक्तिक अग्नि-जकाँ साध्यक सभ व्यक्तिसँ व्याप्तिक ज्ञान। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकक प्रस्ताव)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—हुनकर मत एहि प्रकार अछि—निकटस्थ धूम, जेना रसोईघर वा यज्ञवेदिक धूमक विषयमे, धूमत्वसँ अवच्छिन्न धूमरूप हेतुक अग्निरूप साध्यसँ व्याप्ति, धूमत्व-सामान्यक समानाधिकरणताक माध्यमेँ प्रत्यक्षसँ जानल जाइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सामान्यलक्षणा आवश्यक नहि अछि—मीमांसकक आपत्ति)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—पहिने निकटस्थ रसोईघर वा यज्ञवेदिक धूमक विषयमे प्रत्यक्षसँ ई व्याप्तिज्ञान होइत अछि—“धूमत्वसँ अवच्छिन्न धूम वह्नित्वसँ अवच्छिन्न अग्निद्वारा व्याप्त अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सामान्यलक्षणा आवश्यक नहि अछि—मीमांसकक आपत्ति)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—मुदा पहाड़क धूमसँ अग्निक अनुमितिमे “सभ धूम सभ अग्निसँ व्याप्त अछि” एहन सर्वधूम-सर्वाग्नि व्याप्तिक ज्ञान पहाड़मे धूमक उपस्थितिक ज्ञानसँ उत्पन्न नहि होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सामान्यलक्षणा आवश्यक नहि अछि—मीमांसकक आपत्ति)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“पहाड़मे धूम अछि, कारण अग्नि अछि” एहन अनुमानमे पहाड़रूप पक्षमे वर्तमान वस्तुसँ भिन्न होयबाक धर्म उपाधि नहि अछि, मुदा परिभाषा ओकरा सेहो समेटि लैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उद्भूतरूपवत्त्व आ शाकपाकजत्व उपाधि छथि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—उदाहरणतः “सरोवरमे अग्नि अछि, कारण धूम अछि” एहन बाधित अनुमानमे पक्षेतरत्व उपाधि नहि होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पक्षेतरकेँ उपाधि नहि मानबाक आपत्ति)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—१२. पक्षेतरत्वक अनेक रूप—जेना पहाड़क अवयवमे वर्तमान वस्तुसँ भिन्नता, पहाड़मे वर्तमान वस्तुसँ भिन्न द्रव्यत्व, सरोवर-पहाड़क संयोगक आश्रय नहि होयब, आ सरोवर-पहाड़ दुनूसँ भिन्न होयब—“सरोवरसँ सम्बद्ध पहाड़मे अग्नि अछि, कारण धूम अछि” आदि अनुमानमे उपाधि ठहरैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष—पक्षेतर उपाधि अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—तहिना धूमरूप हेतुमे वर्तमान साध्यव्याप्तता आर्द्र-इन्धन-संयोगरूप उपाधिसँ अग्निपर प्रतिबिम्बित होइत अछि; एहि कारण “पहाड़मे धूम अछि, कारण अग्नि अछि” एहन अनुमानमे आर्द्र-इन्धन-संयोग उपाधि ठहरैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विषमव्याप्त उपाधि नहि—दोसर प्रस्ताव)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—एहि परिभाषामे “पहाड़मे धूम अछि, कारण अग्नि अछि” एहन अनुमानक आर्द्र-इन्धन-संयोगरूप उपाधि सेहो समाहित नहि होइत अछि; कारण पक्षमे वर्तमान हेतुधर्मसँ अवच्छिन्न साध्यव्यापकता आर्द्र-इन्धन-संयोगमे नहि अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू

मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: साधनाव्यापकत्व उपाधि नहि बनैत अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—एहि अतिरिक्त, "पहाड़मे धूम अछि, कारण अग्नि अछि" एहन अनुमानमे अग्निरूप हेतु धूमरूप साध्यक स्थापना करबामे असमर्थ अछि; कारण हेतु उपाधिसहित अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: साध्यव्यापक होइतहुँ साधनाव्यापक वस्तु उपाधि नहि—एहन मत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—किन्तु "पहाड़मे अग्नि अछि, कारण धूम अछि" एहन अनुमानमे अग्निक समस्त कारण-सामग्री उपाधि नहि; कारण धूमरूप हेतु अग्निरूप साध्यसँ अग्निकारण-सामग्रीक व्यभिचारक कारण व्यभिचारी नहि होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: रत्नकोशकारक उपाधि-सिद्धान्तक खण्डन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—उदाहरणार्थ, "ह्रदमे धूम अछि, कारण अग्नि अछि" एहि अनुमानमे आर्द्रेन्धन-संयोग अग्नि-हेतुक उपाधि अछि; किएक तँ तापित लौहपिण्डमे धूमाभाव होइत अछि, अतः ह्रद-पक्षमे अग्नि आ धूमक व्याप्तिसम्बन्धक अभाव सिद्ध होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधिक अन्य परिभाषा)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मुदा एहि परिभाषासँ "ह्रदमे धूम अछि, कारण अग्नि अछि" एहि अनुमानमे पक्षेतर अनिष्ट रूपसँ उपाधि बनि जाएत; किएक तँ अग्निद्वारा धूम-व्याप्तिक सम्बन्धमे पक्षेतर उपाधि होयबाक प्रसङ्ग उठत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: यत्तुकारक उपाधि-परिभाषा)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—"ह्रदमे धूम अछि, कारण अग्नि अछि" एहिमे आर्द्रेन्धन-जन्य अग्निमत्त्व निश्चितोपाधि अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधिक विभाग)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—"पर्वतमे अग्नि अछि, धूमक कारणे" एहिमे अग्निक सम्पूर्ण कारणसमूह उपाधि नहि होइत, कारण धूम हेतु अग्निक कारणसमूहसँ व्यभिचाररहित निश्चित अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: शाकपाकजन्यता साध्य नहि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—जेना 'पर्वतमे अग्नि अछि, धूम वा प्रकाशक कारणे'—एतय धूम अथवा प्रकाशक स्थिति हेतु होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति—'ई अछि वा नहि अछि' एहन उभयविकल्पक कथनमे प्रमेयत्व कोना सम्भव, कारण अस्तित्व आ अनस्तित्व दुनू एकसाथ ग्रहण नहि होइत?)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—१९. ई मानल जा सकैत अछि जे अग्निसँ व्याप्त धूमक "अग्निव्याप्यत्व" स्वयं अग्निव्याप्त धूमत्वक अवच्छेदक अछि; अर्थात् प्रत्येक धूम-व्यक्तिमे घटित अग्निव्याप्यत्व सभ धूममे घटित सामान्य व्याप्तिक अवच्छेदक हो। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति कएल जा सकैत अछि जे धूम वा प्रकाशसँ भिन्नत्वक ज्ञान निरर्थक विशेषणपर आधारित अछि, अतः अग्निसँ धूम वा प्रकाशक व्याप्तिक प्रत्यक्षज्ञानक सहकारी कारण नहि भऽ सकैत।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—उदाहरणवाक्यमे "जाहि ठाम धूम अछि, ओहि ठाम अग्नि अछि" साध्यव्यापकताक बोध करैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: साध्यक पक्षधर्मव्यापकताज्ञान परामर्श—अन्य मत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—२९. आपत्ति—जँ "पर्वतस्थ धूमक व्यापक अग्नि अछि" एहन परामर्श अनुमानक कारण हो, तखन अग्नि मात्र परामर्शक विषय होएत; धूम आ पर्वतक समानाधिकरणता पहिने मानल नहि गेलासँ अनुमानमे किछु शेष नहि रहत। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: साध्यक पक्षधर्मव्यापकताज्ञान परामर्श—अन्य मत)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एहि बातकेँ धूम-अग्नि उदाहरणसँ बुझल जा सकैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्तिक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उदाहरण—'जतय धूम अछि, ततय अग्नि अछि; जेना पाकशाला। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उदाहरण—'जतय धूम अछि, ततय अग्नि अछि; जेना पाकशाला।')

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—'जकरा धूम अछि, ओकरा अग्नि अछि' एहि व्याप्तिवाक्यमे दृष्टान्तक नाम नहुँ रहलापर उदाहरणत्व रहैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्वय-व्यतिरेकी हेतु ओ हेतुवचन अछि जे पक्ष आ सपक्ष दुनूमे रहैत अछि, मुदा विपक्षमे नहि रहैत।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"अग्निमान क?" वा "धूम अग्निक गमक कोना?" जेकाँ प्रश्नसभ सर्वत्र आवश्यक नहि; विशेष प्रसङ्गमे मात्र उपयोगी छथि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति हो सकैत अछि—वास्तविक बाधक आ सत्प्रतिपक्षक अभाव अनुमितिक सहायक हो, ओकर अभावक ज्ञान नहि; कारण ओ ज्ञानक साधन उपलब्ध नहि आ ओकर अर्थसम्बन्ध सेहो सिद्ध नहि।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—उदाहरणतः—'एहि प्रदेशमे धूम अछि, योग्य धूमक अनुपलब्धिक कारणे'; 'अग्निक अभावक कारणे'; आ 'जलाशय होएबाक कारणे'। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब सिद्धान्त कहल जाइत अछि। साध्यकेँ व्याप्त करयवला हेत्वभावक प्रतियोगी होएबहि विरुद्ध हेतुत्व अछि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—ई सेहो नहि कहल जाए जे 'एहि प्रदेशमे धूम अछि, धूमाभावक कारणे' एहि उदाहरणमे विरुद्ध हेतुक चारिम भेद होएत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विरुद्ध हेतुक त्रिविधताक औचित्य)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—८१. जँ पक्षमे साध्याभावज्ञानक प्रामाण्यनिश्चय साध्यक अनुमानक विरोधी नहि होइत, तऽ व्याप्ति आ पक्षधर्मतासहित हेतुक ज्ञान साध्याभावज्ञानकेँ

अप्रमाणित करैत साध्य सिद्ध कऽ दैत—जेना पर्वतमे धूम अग्नि सिद्ध करैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: बाधक सिद्धान्त)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—उदाहरणतः, अग्नियुक्त पर्वतमे वाष्पकेँ धूम मानि अग्निक अनुमिति उत्पन्न भऽ सकैत अछि; ई अग्निविषयक अनुमिति यथार्थ होएत, यद्यपि प्रयुक्त हेतु दोषयुक्त अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमितिप्रतिबन्धक प्रमाक विषयत्व असाधकत्व—वैकल्पिक मत)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—गङ्गेश एहि मतक सेहो खण्डन करैत छथि जे—“वाष्पमे धूमक भ्रम होएबाक कारणेँ अग्निरूप साध्य, धूमरूप हेतुक व्यापकरूपेँ ज्ञात होइत अछि (धूमव्यापको वह्निर्भासते; बाष्पे धूमाहुतिर्भासते); मुदा वाष्पमे वास्तवमे एहन धूम नहि रहैत अछि (स च तत्र नास्तीति), तें धूमरूप हेतुसँ अग्निरूप साध्यक अनुमान यथार्थ नहि अछि (न सानुमितिः सत्या)। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति—जखन अनुमितिमे साध्यक व्याप्ति ज्ञात भऽ गेल, तखन अग्निरूप साध्यक अनुमिति समाप्त होएबाक आवश्यकता नहि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—उदाहरणार्थ—“ई पर्वतमे चन्दनकाठ सँ उत्पन्न अग्नि अछि, निर्गन्ध धूम होयबाक कारणें”—एहि अनुमानमे विरोध उपस्थित होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: वैकल्पिक रूप सँ एना प्रस्ताव कएल जा सकैत अछि—“भावरूप कार्य समवेत होइत अछि”—एहि व्याप्तिक आधार पर परमात्मासँ आकाशक व्याप्ति सिद्ध कएल जा सकैत अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—अन्यथा विशिष्ट धूम अग्निद्वारा जन्य होयबाक सन्दर्भमे उपयोगी रहितो सामान्य धूम अग्निक अनुमान उत्पन्न नहि कऽ सकत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपर्युक्त खण्डन सँ ई कथन सेहो निरस्त भऽ जाइत अछि—“प्रयत्न केवल शरीरक व्यापारक माध्यम सँ जनक अछि; अपनहि बल पर प्रत्यक्ष रूप सँ ओकर जनकत्व नहि अछि।”)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—एहि प्रकारें, जेना धूम अग्निसँ व्याप्त अछि, तहिना सकर्तृकत्व शरीरजन्यत्वसँ व्याप्त अछि; अतः शरीरजन्यत्व उपाधि अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्य-नैयायिकक उत्तर ई अछि—मानि ली जे जन्यत्व आ शरीरजन्यत्व दुनू सकर्तृकत्व द्वारा व्याप्त अछि, किएक तँ घट जकाँ ओ दुनू कर्तृजन्यत्वक अवच्छेदक अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—अन्यथा, जँ केवल कृष्णधूममे व्याप्ति मानल जाए, तँ सामान्य धूम अव्याप्य भऽ जाएत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एना प्रस्ताव कएल जा सकैत अछि—हेतुमे केवल ओहि ज्ञात विशेषणक अभाव अभिप्रेत अछि, जे व्यभिचारकेँ रोकैत नहि अछि। धूमरूपी हेतुमे "ज्ञेय होयब" ज्ञात विशेषण नहि अछि।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—ईहो संशय उठि सकैत अछि जे अग्नि आदि कारणसँ धूम उत्पन्न होयबाक ज्ञानक बादे धूमक मध्यवर्ती जातिक ज्ञान होइत अछि; ठीक जेना तृण आदि कारणसँ अग्नि उत्पन्न होयबाक ज्ञानक बादे अग्निक मध्यवर्ती जातिक ज्ञान होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पुनश्च, "उत्पादक होयब"रूपी हेतु केवलान्वयी अछि; अतः "उत्पादक नहि होयब"रूपी अभाव सिद्ध नहि भऽ सकैत अछि। फलतः ओही हेतु अन्वय-व्यतिरेकी नहि बनैत अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—ईहो नहि कहल जाए जे धूमवाक्यक समान लक्षणा आवश्यक नहि, कारण "धूम अछि" सुनिकऽ वक्ताक अग्नितात्पर्य अनुमानसँ ज्ञात होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "गाम गङ्गापर अछि" जकाँ लक्षणावाला वाक्यमे व्यक्त 'गङ्गा' अर्थ गामसँ सीधे सम्बन्धित होयब योग्य नहि; अतः तीर-जकाँ दोसर अर्थक लक्षणा मानब उचित अछि।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अन्यथा "पर्वतमे अग्नि अछि, कारण धूम अछि" एहि अनुमानमे सेहो समानताक कारण लक्षणा मानबाक प्रसङ्ग उठत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू

मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमानक स्वरूप तात्पर्य मात्र नहि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—मुदा धूम-जकाँ अननुगत वस्तुओ व्याप्त वस्तु भऽ सकैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पृथक प्रमाण—उपमान—आवश्यक अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—इच्छाकेँ केवल शब्दार्थधरि सीमित करबो सम्भव नहि; कारण “इह धूमशब्दः धूमतत्परः”—“एतय धूम शब्द धूम आ ओकर दिस प्रवृत्तिक बोध कराबय लेल अछि”—मे अभिधेय आ लक्ष्यार्थक भेदक अनुसार इच्छा-विषय बदलैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उत्तर — तत्परत्वक परिभाषा)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—जेना “धूम अग्निसँ व्याप्त अछि” व्याप्ति अनन्त धूम-अग्नि व्यक्तिसभक सामान्य रूपमे ग्रहण होइत अछि, तहिना गोत्वविशिष्ट व्यक्तिसभमे शब्दशक्ति सामान्य रूपमे ग्रहण होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यक्ति सेहो वाच्य अछि)

अध्याय ११२ — आकाशक रिक्ति

अग्निक प्रश्न

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—साधक प्रमाणाभाव: जखन ओतय पहिने सँ ओ साध्य (जेना अग्नि) सिद्ध करबाक कोनो सोझ प्रमाण (प्रत्यक्ष आदि) उपलब्ध नहि हो। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। (दार्शनिक सिद्धान्त: "जाहि वस्तुमे साध्य सिद्ध करबाक इच्छाक अभावसहित साधक प्रमाणक अभाव अछि, ओ पक्ष अछि।")

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—हुनकर तर्क अछि जे व्याप्तिस्मरण (जेना "जतय-जतय धुआँ, ततऽ-ततऽ अग्नि") आ पक्षधर्मताज्ञान (जेना "पर्वतपर धुआँ अछि")—ई दुनू ज्ञान मिलि कऽ सोझे अनुमान उत्पन्न कऽ दैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखने

प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। (दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसक आ नैयायिकक बीच 'परामर्श'पर विवाद)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—मुदा जँ ओतय कोनो विशिष्ट 'मणि' वा 'मन्त्र' उपस्थित कऽ देल जाए (जकरा प्रतिबन्धक कहल जाइत अछि), तँ अग्नि रहितहुँ हाथ नहि जरैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्योन्याश्रय)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—दाहानुभूतिक लेल कारण-सामग्री मात्र 'अग्नि' नहि, प्रत्युत 'अग्नि' आ ओकर संगे 'प्रतिबन्धकक अभाव' (मणिक नहि रहब) अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्योन्याश्रय)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जँ 'अग्नि' आ 'प्रतिबन्धकाभाव' सँ कार्य (दाह) सिद्ध भऽ जाइत अछि, तँ मीमांसक जकाँ अग्निमे एकटा नव अदृश्य 'शक्ति' मानलासँ न्याय दर्शनक अनुसार कोन तार्किक दोष उपस्थित होयत?। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्योन्याश्रय)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—हुनकर तर्क अछि जे "पर्वतपर अग्नि अछि" ई व्यवहार मात्र अग्निक सम्भावनाक कारण होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमितिक स्वरूप आ लिङ्गपरामर्शक अनिवार्यता)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—" एतय ज्ञेयत्व अग्नि (सपक्ष) आ जल (विपक्ष) दुनू ठाम अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सव्यभिचार वा अनैकान्तिक)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उदाहरण: "अग्नि शीतल अछि, द्रव्य होयबाक कारणे, जलक समान। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: बाधित)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—अतः कारण (अग्नि) आ कार्य (दाह) क बीच 'शक्ति' नामक एकटा पृथक् पदार्थ मानब आवश्यक अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दाहशक्ति-सिद्धान्त (शक्तिवाद): कारणता आ अभावक यथार्थवाद)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—मीमांसक अनुमान प्रस्तुत करैत छथि: "अग्निमे एहन दाहशक्ति मानब आवश्यक अछि, जाहिक अभावमे हथेलीमे दाहानुभूति नहि होइत अछि... एहि प्रकार व्यतिरेकी अनुमान सँ अग्नि आदिमे दाहशक्ति सिद्ध होइत अछि"। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दाहशक्ति-सिद्धान्त (शक्तिवाद): कारणता आ अभावक यथार्थवाद)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—नव्य-न्यायक सिद्धान्तक अनुसार, दाह (कार्य) क कारण केवल अग्नि नहि अछि, अपितु "अग्नि + प्रतिबन्धकाभाव (मणिक अभाव)" अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक खण्डन आ 'प्रतिबन्धकाभाव' क स्थापना)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—जखन कारण भिन-भिन अछि, तखन कार्य (अग्नि)मे सेहो पृथक्-पृथक् 'वैजात्य' मानब आवश्यक अछि, अन्यथा व्यभिचार दोष होयत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक खण्डन आ 'प्रतिबन्धकाभाव' क स्थापना)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—स्मृतिक वचन "ज्ञानाग्नि सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुते आ" क सन्दर्भ दैत गङ्गेश कहैत छथि जे ज्ञानरूपी अग्नि सञ्चित कर्मसभकेँ भस्म कऽ दैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सिद्धान्तीक मत: मोक्ष अछि दुःखक आत्यन्तिक विनाश)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—उदाहरण: “अग्नि-विषयक ई ज्ञान अग्निमे नहि रहयवला धर्मसँ अवच्छिन्न नहि अछि, कारण ई दाह-समर्थ अग्नि दिस प्रवृत्ति उत्पन्न करैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सम्प्रदायवादी मत: अनुमानसँ प्रामाण्य-ज्ञान)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—उत्तर—अन्यथा व्याघात होयबाक भय सँ पहिने सामान्य रूपेँ यथार्थ ज्ञान आ ओकर अग्नि आदि विषय सिद्ध मानल जाइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सम्प्रदायवादी मत: अनुमानसँ प्रामाण्य-ज्ञान)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—साध्य सामान्य रूपेँ दृष्टान्तमे प्रसिद्ध रहला कारण अग्नि-ज्ञानक विशिष्ट प्रामाण्य साध्यक अप्रसिद्धि नहि होइत; आ साध्य विशेष रूपेँ पहिनेसँ निश्चित नहि रहला कारण असाधारण हेतु वा केवलान्वयी हेतु-दोष सेहो नहि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सम्प्रदायवादी मत: अनुमानसँ प्रामाण्य-ज्ञान)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—अतः अग्नि-ज्ञानक साध्य “अग्निमे नहि रहयवला प्रकारसँ अनवच्छिन्न होयब” मात्र होयत, मुदा ई साध्य दृष्टान्तमे प्रसिद्ध नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सम्प्रदायवादी मत: अनुमानसँ प्रामाण्य-ज्ञान)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—उत्तर—अनुमित “अग्नि-ज्ञान अग्निरूप विशेष्यक प्रति, अग्निमे अनुपस्थित प्रकारसँ अनवच्छिन्न अछि” ई अवस्था पक्षधर्मताक बलसँ अन्ततः अग्नि-विषयक ज्ञानक प्रामाण्ये सिद्ध करैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सम्प्रदायवादी मत: अनुमानसँ प्रामाण्य-ज्ञान)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—ई सामान्य प्रामाण्य अग्नि-ज्ञानमे अनुमानित होइत पक्षधर्मताक बलसँ “अग्निमे अनुपस्थित अग्नित्वकेँ विशेषण नहि बनाबयवला अग्नि-ज्ञान” रूप लैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सम्प्रदायवादी मत: अनुमानसँ प्रामाण्य-ज्ञान)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—व्यतिरेकी अनुमानक रूप ई भऽ सकैत अछि—“अग्नित्वकेँ विशेषण बनाबयवला ई अग्नि-ज्ञान अग्नित्वाभावक आश्रयमे अग्नित्वकेँ विशेषण नहि बनबैत अछि; अनग्निमे रहयवला धर्मकेँ विशेषण नहि बनबैत अछि; आश्रयमे अनुपस्थित विशेषणकेँ विशेषण नहि बनबैत अछि; अग्नित्वकेँ विशेषण बनबैत हुए अग्निकेँ अनाश्रय नहि बनबैत अछि; अग्नित्वसँ असमानाधिकरण विशेषणसँ अवच्छिन्न नहि अछि; अथवा अग्निमे अनुपस्थित विशेषणकेँ विशेषण नहि बनबैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक

अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्यनैयायिक मत)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—प्रामाण्यकेँ दोसर व्यतिरेकी अनुमानसँ सेहो निश्चित कएल जा सकैत अछि—“अग्नित्वकेँ विशेषण बनाबयवला ई अग्नि-ज्ञान अग्नित्ववती वस्तुकेँ विषय बनबैत अछि; कारण ई विषयवान ज्ञान अछि आ अग्नित्वाभाववती वस्तुकेँ विषय नहि बनबैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यतिरेकी अनुमानक वैकल्पिक रूप)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जँ विशेष्यमे स्थित विषयताकेँ पृथक् पदार्थ मानल जाय, तँ साध्यक रूप होयत—“ई अग्नि-ज्ञान अनग्निमे स्थित अग्नित्वकेँ विशेषण नहि बनबैत; अग्नित्वसँ असमानाधिकरण अग्नित्वकेँ विशेषण नहि बनबैत; अथवा विषयताक आश्रयमे अनुपस्थित अग्नित्वकेँ विशेषण नहि बनबैत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यतिरेकी अनुमानक वैकल्पिक रूप)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—आपत्ति कएल जा सकैत अछि—अग्निज्ञान द्वारा निरूपित दाहसमर्थ अग्निक विषयता “ई अग्नि दाह करबामे समर्थ अछि” एहन प्रथम ज्ञानसँ निश्चित नहि भऽ सकैत अछि, कारण ओ प्रथम ज्ञान अपन ज्ञान आ ओकर विषयताकेँ विषय नहि बनबैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दाहसमर्थ अग्निक विषयताक ग्रहणपर आपत्ति आ समाधान)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“एहि अनुमानक विषय कोनो भिन्न अग्नि अछि”—एहो नहि; प्रत्यभिज्ञा ओही अग्निकेँ विषय बनबैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भ्रान्त, प्रतारक आ शुकक वचन प्रमाण नहि—एहि आपत्तिक विचार)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—धूमभ्रम “अग्नि नहि” एहन अवस्थाक स्वतन्त्र स्मरण रोकैत अछि; व्याप्तिसँ स्वतन्त्र स्मृत अग्नि अनुमानरूप प्रवर्तक बनैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अप्रमाण ज्ञान बिना “संशय” शब्दक प्रयोग)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—मीमांसक कहि सकैत छथि—घटवती भूमिक ज्ञान केवल भूमिक नहि, भूमि आ घट दुनूक ज्ञान अछि, जकाँ "अग्नीषोम" देवताक ज्ञान अग्नि आ सोम दुनूक ज्ञान। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अतिरिक्त अभावक अस्तित्व आ प्रत्यक्षता)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—नवीन नैयायिक कहैत छथि—"अत्यन्त अग्निसंयोगो सँ अविनष्ट प्रत्यक्ष द्रवत्वक आश्रय द्रुत सुवर्ण तैजस अछि; कारण ओ रूपवान् रहैत जल आ पृथ्वीसँ भिन्न अछि, अग्नि जकाँ। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नवीनक मत—सुवर्ण जल नहि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—"वर्तमान धूमक कारण पर्वतपर अग्नि अछि" एहन अनुमान वर्तमान अग्निकेँ विषय बनबैत अछि; अतीत वा भविष्यक अग्निकेँ नहि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अयथार्थ स्मृति वर्तमानताकेँ विषय बनबैत अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एहि संसारमे धूमक प्रत्यक्षक बाद "पर्वतपर अग्नि अछि" एहन व्यवहार मात्र अग्निक सम्भावनाक कारण होइत अछि; आ आन प्रमाणक अनुरूपताक कारण अनुमानक प्रामाण्यक मिथ्या अभिमानसँ सेहो एहन व्यवहार होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमान प्रमाण नहि होयबाक आपत्ति)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—एहन मानलापर, यद्यपि अग्नि आ संयोगादि व्याप्य सिद्ध कएल जा सकैत अछि, तथापि "संयोग" साध्य रहनिहार अनुमानमे सत्तादिक अव्यभिचारक अनिष्ट प्रसङ्ग आबि जाएत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्याप्ति साध्य-समानाधिकरण्य नहि अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—कारण "अग्नि नहि अछि" एहन अग्निसामान्यक अत्यन्ताभाव धूमक अधिकरणमे ज्ञात वा सिद्ध नहि अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निर्णायक व्याप्ति-लक्षण सामान्य व्याप्तिक लक्षण अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—२०. एखन एहन आपत्ति कएल जा सकैत अछि—“धूमक अधिकरणमे अग्नि आ सरोवर नहि अछि” तथा “धूमक अधिकरण अग्नि आ सरोवरक अधिकरण नहि अछि”—ई दुनू ज्ञान सम्भव अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: परिभाषासभक अनुपपत्ति-निवारण)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—एहन आपत्ति नहि करबाक चाही जे एहि प्रकार मिथ्या सोपाधिक हेतु—जेना अग्नि—मे सेहो व्याप्ति मानय पड़त। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आचार्यक परिभाषामे संशोधन: व्याप्ति अनुपाधिकता अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—पूर्वपक्षी एखन कहि सकैत छथि—व्यभिचारक संशय, जे ज्ञातव्य वस्तुक संशय अछि, अव्यभिचार अथवा व्याप्तिक निश्चयमे बाधक नहि हो; नहि तँ “पर्वतपर अग्नि अछि कि नहि” एहन ज्ञातव्य-संशय भेलाक बाद अग्निनिश्चय कतहु उत्पन्न नहि होएत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रथमदर्शनसँ व्याप्तिग्रह सम्भव नहि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—मुदा “पर्वतपर अग्नि अछि कि नहि” एहन द्विकोटिक संशयक समस्त कारणसामग्रीसँ केवल एक कोटिक अग्निनिश्चय उत्पन्न नहि होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रथमदर्शनसँ व्याप्तिग्रह सम्भव नहि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—अन्ततः पहाड़मे धूमक उपस्थितिक सएह ज्ञान “धूमक कारण पहाड़मे अग्नि अछि” एहन अनुमिति उत्पन्न करैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सामान्यलक्षणा आवश्यक नहि अछि—मीमांसकक आपत्ति)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—“अग्नि उष्ण नहि अछि, कारण ओ कृतक अछि” एहन अनुमानमे अग्निरूप पक्षमे वर्तमान पक्षेतरत्व साध्याभावरूप अनुष्णत्वक व्यापक मानल जाइत अछि; तखन साध्याभावक विपक्षमे सेहो ओकर उपाधि नहि बनबाक प्रसङ्ग होएत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पक्षेतरत्व उपाधि होएबाक चाही)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—फलतः पक्षमे वर्तमान पक्षेतर, जे पक्षमे साध्याभावक व्यापक अछि, “अग्नि उष्ण नहि अछि, कारण ओ कृतक अछि” एहन अनुमानमे उपाधि ठहरत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “विपक्षव्यावर्तक विशेषणशून्यता” विशेषण हो—एहि मतक खण्डन)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—एहि प्रकार उपाधिक सत्प्रतिपक्ष मानलासँ “अग्नि उष्ण नहि अछि, कारण ओ कृतक अछि” एहन अनुमानमे साध्याभावक कारण उत्पन्न पक्षेतरत्व-दोष सेहो उपाधि नहि ठहरत; कारण पक्षेतरसँ साध्यक निषेध साध्याभाव स्थापनाक विशेष कारण अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति कएल जा सकैत अछि जे एहन उपाधि वस्तुतः सत्प्रतिपक्षरूप हेतु मात्र अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“प्रत्यक्ष अग्नि अनुष्ण अछि, कारण ओ कृतक अछि” एहन अनुमानमे अतैजस्त्व आदि उपाधि भऽ सकैत अछि, मुदा सामान्य पक्षेतरत्वक नियम सीधा लागू नहि होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पक्षेतरकेँ उपाधि नहि मानबाक आपत्ति)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—उदाहरणतः ‘अग्नि उष्ण अछि, प्रकाशमान होएबाक कारणे’—एतय अकृत्रिमत्व बाधित साध्याभावक उपाध्याभास अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपाध्याभासक निरूपण)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—मुदा पर्वतमे अग्नि पहिने प्रत्यक्ष विशेषणरूपेँ ज्ञात नहि, अतः केवल संस्कारसँ अग्निक यथार्थ प्रत्यक्ष उत्पन्न नहि भऽ सकैत। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्याप्याभेदग्रहक मत असंगत)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—३०. आपत्ति कएल जा सकैत अछि जे पर्वतरूप पक्ष, जे परामर्शज्ञानमे गौण अथवा विशेषणरूपेँ ज्ञात अछि—जेना ‘पर्वतमे स्थित धूमक व्यापक अग्नि अछि’—अनुमितिमे मुख्य विशेष्य कोना बनत—‘पर्वतमे अग्नि अछि, धूमक कारणे’? लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जेना पर्वतमे अग्नि पहिले सामान्यतः विचार्य होइतहुँ पर्वतविशेष पक्ष बनैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति—मृद्घट पक्ष कोना होएत, कारण 'समस्त पृथ्वी अन्य पदार्थसँ भिन्न अछि वा नहि' एहन संशय घटविशेषमे नहि, पृथ्वीसामान्यमे होइत अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—उदाहरणतः "अग्नि उष्ण नहि, द्रव्य होएबाक कारणे" एहि अशुद्ध अनुमानमे द्रव्यत्व हेतु हेत्वाभास अछि; कारण "अग्नि उष्ण अछि" एहि यथार्थज्ञानक विषय उष्णताक अभाव द्रव्यत्वसँ व्याप्त नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: हेत्वाभास सत्यनिर्णय आ विजयप्राप्तिमे सहायक होइत छथि; तेँ एतय हुनकर निरूपण कएल जाइत अछि।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—जेना 'पर्वतमे अग्नि अछि, नील धूमक कारणे'—एतय नीलधूम अग्निसँ व्याप्त हो सकैत अछि, मुदा 'नील' ई विशेषण स्वार्थानुमानमे निरर्थक। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्य विद्वानक मत)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—उदाहरणतः—'कृष्ण अगरुक धूमसँ उत्पन्न एहि प्रदेशमे अग्नि अछि, तीक्ष्ण, दुर्गन्धरहित आ श्वेत धूमयुक्त होएबाक कारणे। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विरुद्ध हेतुक त्रिविधताक औचित्य)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—साध्यक प्रतियोगी सिद्ध करयवला प्रत्यक्षसँ बाधित हेतु—जेना, 'अग्नि उष्ण नहि अछि, उत्पन्न होएबाक कारणे। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: साध्यक प्रतियोगी सिद्ध करयवला प्रत्यक्षसँ बाधित हेतु—जेना, 'अग्नि उष्ण नहि अछि, उत्पन्न होएबाक कारणे।')

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—तथापि पर्वतमे अग्नि वस्तुतः विद्यमान रहने निष्कर्ष यथार्थ होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक

आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमितिप्रतिबन्धक प्रमाक विषयत्व असाधकत्व—वैकल्पिक मत)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—१५३. आरो एक वैकल्पिक अनुमान एना होयत—“जे अग्नि दाहानुभूतिक अनुकूल नहि अछि, मुदा दाहक सभ प्रत्यक्ष कारणसँ युक्त अछि, सँ प्रतिबन्धक उपस्थित रहबाक समय उत्पादक अवस्थामे दाहानुकूल सकारात्मक शक्तिसँ रहित अछि; कारण ओ भोथर कुल्हाड़ी जकाँ दाहानुभूतिक उत्पादक नहि अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अभावमे अतीन्द्रियत्व नहि अछि; कारण अभावमे प्रत्यक्षक विषय नहि होयबाक अवस्था सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—आरो एना अनुमान कएल जा सकैत अछि—“एहन अग्नि उत्पादक अवस्थामे दाहानुभूतिक अनुकूल सकारात्मक शक्तिसँ रहित अछि; कारण ओ इन्धनसँ असंयुक्त अग्नि जकाँ दाहानुभूति उत्पन्न नहि करैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अभावमे अतीन्द्रियत्व नहि अछि; कारण अभावमे प्रत्यक्षक विषय नहि होयबाक अवस्था सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—पुनश्च, पाँच अनुमानमे सँ पहिल अनुमानक “उत्पादक नहि होयब”रूपी हेतु केवल स्वभावतः असामर्थ्य नहि अछि; कारण अग्नि आ कुल्हाड़ीमे एहन असामर्थ्य नहि रहैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—१६५. आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—काष्ठ आ मणिक अभावसँ युक्त विशिष्ट कारण-समष्टिमे “तृण उपस्थित रहला पर अग्नि उत्पन्न होइत अछि” आ “तृण अनुपस्थित रहला पर अग्नि अनुपस्थित रहैत अछि” एहन अन्वय-व्यतिरेक, तृणादिक कारणताज्ञान उत्पन्न करैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एना तर्क कएल जा सकैत अछि—जखन अग्निक प्रति तृण, काष्ठ आ मणिक कारणता ज्ञात होइत अछि, तखन शक्ति अथवा पृथक जातिधर्म—एहि दुनूमे सँ कोनो एककेँ अवश्य मानब पड़त।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“तृण बिना सेहो अग्नि अछि” एहि ज्ञानमे अग्निसँ ठीक पहिने तृणक नियत उपस्थितिरूप

कारणता ग्रहण नहि कएल जा सकैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एना तर्क कएल जा सकैत अछि—जखन अग्निक प्रति तृण, काष्ठ आ मणिक कारणता ज्ञात होइत अछि, तखन शक्ति अथवा पृथक जातिधर्म—एहि दुनूमे सँ कोनो एककेँ अवश्य मानब पड़त।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—एहि खण्डनसँ ई प्रस्तावो निरस्त होइत अछि—"तृणादि तीनूक अभावक अभावमे अग्नि उत्पन्न होइत अछि, तीनूक अभावमे अग्नि उत्पन्न नहि होइत अछि"—एहन अन्वय-व्यतिरेकसँ तृणादि प्रत्येक कारणक कारणता ज्ञात होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: किछु विद्वान् एना प्रस्ताव करैत छथि—जाहि दशामे कारणताक ज्ञान करयवला साधन उपलब्ध नहि अछि, ओहि दशामे व्यभिचार मात्र कारणताज्ञानक बाधक होइत अछि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—२५५. किछु अन्य विद्वान् कहैत छथि—"हे अर्जुन, ज्ञानरूपी अग्नि समस्त कर्मकेँ भस्म कऽ दैत अछि" ई श्रुति केवल ओहि अङ्गयागजन्य धर्मक विषयमे अछि, जे प्रधान याग नहि कएलाक कारण स्वतन्त्र रहि गेल अछि; कारण एहन कर्मक ज्ञान छोड़ि आन कोनो नाशक नहि अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: पुरुषार्थवाद)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—"अग्निना ओदनं पचति"—"अग्निसँ भात पकबैत अछि"—मे "अग्नि", करणत्व, भात, कर्मत्व, पाकक्रिया आ कर्तृप्रयत्नक सम्बन्ध, परस्पर आकाङ्क्षित पदसभसँ एक वाक्यार्थ रूपेँ बोध होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दोसर वैकल्पिक मत)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"वह्निना सिञ्चति"—"अग्निसँ सींचैत अछि"—एहि वाक्यमे करणपद आ क्रियापद स्वभावतः सम्बन्धबोध उत्पन्न करबाक योग्यता रखैत अछि; मुदा अग्नि आ सींचबाक क्रियाक अर्थगत अयोग्यताज्ञान सम्बन्धबोधक बाधक अछि—जेना दाहक अग्निक विरुद्ध जादुई मणिक ज्ञान दहनक्रियाक बाधक होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आकाङ्क्षाक वर्णन)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—जेना पर्वतमे आगि असिद्ध रहितो सामान्य अग्नि ज्ञान आ धूमहेतु सँ ओतय अग्नि सिद्ध होइत अछि, तहिना पाकसामान्यमे कृतिसाध्यता भविष्य पाकमे सिद्ध होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: किछु प्राभाकरक मत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“अग्नि वसुसभक संग, सोम रुद्रसभक संग, इन्द्र मरुत्सभक संग, वरुण आदित्यसभक संग आ बृहस्पति विश्वेदेवसभक संग” एहि सन्दर्भमे विश्वेदेव शब्दक “सभ देवता” व्युत्पत्त्यर्थ शीघ्र स्मृत होइत अछि; पुरूरवा-माद्रव आदि रूढ़ गणार्थ नहि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: रूढ़ि योगसँ प्रबल)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—उदाहरणार्थ वर्षाकालमे अग्नि सुरक्षित राखनिहार रथकारविषयक वाक्यमे “रथकार” पद रूढ़ जातिविशेषक अर्थ शीघ्र स्मृत करबैत अछि; तें रूढ़िपूर्वक अर्थ ग्रहण होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: रूढ़ि योगसँ प्रबल)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—अग्नि-सोम उदाहरणमे प्रथम पद समष्टिसम्बन्ध सूचित करैत, दोसर पद अपन मुख्य अर्थ व्यक्त करैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: लक्षणा अनुपपन्न होएबाक आपत्तिक खण्डन)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—. आक्षेप हो सकैत अछि—“क्षौमवसनौ अग्निम् आदधीयाताम्”—“सनक वस्त्र धारण कएनिहार युगल अग्नि स्थापित करथि”—मे “वसनौ” द्विवचन पद युगलबोध लेल दोसर व्यक्ति अपेक्षित करैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: वैयाकरणसभक मत)

अध्याय ११३ — शब्दक देह

पर्वतक धूम

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—सरल अर्थ: जखन पर्वत जकाँ पक्षमे धूमरूप हेतु देखाइत अछि आ पूर्वसँ ई व्याप्ति ज्ञात रहैत अछि जे जतय धूम अछि ओतय अग्नि अछि, तखन पक्षमे अग्निक

ज्ञान उत्पन्न होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमितिक स्वरूप)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—अनुमान करबाक लेल 'पक्ष' (जेना पर्वत, जतय अग्नि सिद्ध करब अछि) क स्थिति केँ बुझब अत्यन्त आवश्यक अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: पक्षताक लक्षण)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अनुमान (अनुमिति) उत्पन्न करैबामे 'परामर्श' (साध्यव्याप्त हेतुरूप धर्मक पक्षमे स्थितिक ज्ञान, जेना—"पर्वत अग्निव्याप्त धूमवान् अछि") केँ असाधारण कारण मानबाक विषयमे नैयायिक आ मीमांसकक बीच गम्भीर दार्शनिक विवाद अछि: दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। (दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसक आ नैयायिकक बीच 'परामर्श'पर विवाद)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—स्वरूप: परामर्श ओ विशिष्ट ज्ञान थिक जे एहि रूपमे होइत अछि— "व्याप्तिविशिष्टः पक्षधर्मः परामर्शः" अर्थात्, "ओहि पक्ष (जेना पर्वत)पर एहन हेतु (जेना धुआँ) अछि जे साध्य (अग्नि) सँ व्याप्त अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल। (दार्शनिक सिद्धान्त: परामर्श)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—व्याप्तिस्मरण आ पक्षधर्मता सँ भिन्नता: केवल ई स्मरण रखब जे "जतय-जतय धुआँ रहैत अछि, ओतय-ओतय अग्नि रहैत अछि" (व्याप्तिस्मरण) आ केवल ई देखब जे "पर्वतपर धुआँ अछि" (पक्षधर्मताज्ञान)—एहि दुनू सँ भिन्न जखन मनमे ई परिपक्व ज्ञान उत्पन्न होइत अछि जे "ई पर्वत ओहि अग्नि सँ व्याप्त धूम सँ युक्त अछि", तखन ओकरा परामर्श कहल जाइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: परामर्श)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—मूल तर्क: पृथिवी, जल, पर्वत आदि जतेक दृश्यमान जगत् अछि, सँ सभ कोनो-न-कोनो कर्ता (निर्माता) सँ निर्मित अछि, किएक तँ ई सभ 'कार्य' (उत्पन्न भेल वस्तु) अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। (दार्शनिक सिद्धान्त: ईश्वरानुमान (ईश्वरक अस्तित्वक प्रमाण))

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—एकर उत्कृष्ट उदाहरण अछि: "पर्वत धूमवान् अछि, कारण अग्नि अछि"। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधिवाद: सोपाधिक आ अनुपाधिक हेतु)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—जेना, "पर्वत अग्निमान अछि, ज्ञेय होयबाक कारणे। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सव्यभिचार वा अनैकान्तिक)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जेना "पर्वत धूमवान् अछि, अग्निमान् होयबाक कारणे। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: असिद्ध)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जेना "सुवर्णपर्वत पाषाणमय अछि, पर्वत होयबाक कारणे" ई शब्दप्रमाणसँ बाधित अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: बाधित)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—पर्वत प्रत्यक्ष हो आ अग्नि लिङ्गज्ञानक बाद स्मृत हो, तँ “हम आगि देखैत छी” प्रत्यक्षभ्रम आ “हम आगिक अनुमान करैत छी” अनुमानभ्रम भिन्न होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अप्रमाण ज्ञान बिना “संशय” शब्दक प्रयोग)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—आपत्ति—अग्निज्ञान विशेषणज्ञान होइतहुँ “पर्वत अग्निमान् अछि” एहन अनुमानक कारण नहि, कारण अनुमान अग्निक आश्रयरूप ज्ञानसँ उत्पन्न नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशेषणज्ञान कारण नहि—एहि आपत्तिक खण्डन)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—पर्वत अर्थात् अग्निक अधिकरण केवल “पर्वत चूल्हा नहि अछि” एहि अन्योन्याभावक प्रतियोगी अछि, जे धूमक अधिकरण चूल्हामे वर्तमान अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक।

संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्याप्ति साधनवन्निष्ठ नहि अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—उदाहरणार्थ "पर्वत धूमवान् अछि, कारण अग्नि अछि" एहि अनुमानमे अग्निक उपाधि आर्द्र-इन्धन-संयोग अग्निरूप हेतुक अव्यापक अछि आ धूमरूप साध्यक सेहो अव्यापक अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आचार्य अपन मत एहि प्रकार कहैत छथि—अव्यभिचार अथवा अविनाभाव-सम्बन्धरूप व्याप्ति अनुपाधिक सम्बन्ध अछि; अर्थात् कोनो उपाधिक बिना हेतु आ साध्यक समानाधिकरणता।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—"पर्वत धूमवान् अछि, कारण अग्नि अछि" एहि सोपाधिक अनुमानमे धूमरूप साध्य आर्द्र-इन्धन-संयोगाभावक संग समानाधिकरण नहि अछि; ई आर्द्र-इन्धन-संयोगाभाव पुनः अग्निरूप हेतुक संग समानाधिकरण अत्यन्ताभावक प्रतियोगी अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आचार्यक परिभाषामे संशोधन: व्याप्ति अनुपाधिकता अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—"पर्वत धूमवान् अछि, कारण अग्नि अछि" एहि सोपाधिक अनुमानमे अग्निरूप हेतु आर्द्र-इन्धन-संयोगरूप उपाधिक अत्यन्ताभावक संग समानाधिकरण अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुपाधिकताक वैकल्पिक परिभाषा)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—मुदा "पर्वत धूमवान् अछि, कारण अग्नि अछि" एहि अनुमानमे अग्निक विशिष्ट व्याप्ति धूम-सम्बन्धिता नहि अछि; कारण अग्निमे धूम-सम्बन्धिताक अवच्छेदक अग्नित्व नहि अछि, अग्निसामान्य अधूमसँ सेहो सम्बन्धित होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सम्बन्धितावच्छेदकरूपवत्त्व व्याप्ति अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—मुदा "पर्वत धूमवान् अछि, कारण अग्नि अछि" एहन सोपाधिक हेतुवाला अनुमानमे अग्निक धूमक संग समानाधिकरणता केवल आर्द्र-इन्धन-संयोगरूप उपाधिसँ अवच्छिन्न अछि, अग्नित्वसँ नहि; अतएव

अग्निरूप हेतु व्याप्य नहि भऽ सकैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: यत्समानाधिकरण्यावच्छेदकावच्छिन्नत्व व्याप्ति अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अर्थात् अनुमान धूमत्वमे अग्निव्याप्यताक परामर्शमात्रसँ होइत अछि—"पर्वत अग्निव्याप्य धूमत्ववान् अछि"। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: धूमत्वमे अग्निव्याप्यताक परामर्शसँ अनुमान)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—"अग्निसँ व्याप्त धूम पर्वतमे अछि" अथवा "अग्निव्याप्त धूमवान् ई पर्वत अछि"—ई तृतीय लिङ्गपरामर्श अनुमानक कारण अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मुदा केवल धूमत्व-जाति केँ लिङ्ग मानलासँ धूम-व्यक्तिक भूमिका नष्ट होएत, आ सामान्यलक्षणा द्वारा सभ व्यक्तिक संग्रह अनावश्यक बनत।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—'ई पर्वत अग्निमान अछि', 'धूमक कारणे' आदि वाक्य पृथक्-पृथक् विशिष्ट शब्दबोध उत्पन्न करैत अछि—जेना 'पर्वत अग्निरूप साध्यक विषय अछि' तथा 'पर्वत धूमरूप हेतुसँ युक्त अछि'। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति हो सकैत अछि—'अग्निसँ व्याप्त धूम एहि पर्वतमे अछि' एहन उपनयवाक्य सेहो लिङ्गपरामर्शक सहायक होइत अछि; तें पाँच वाक्यक समष्टिसँ अभिन्न मानि ओकरा न्याय कहल जाए।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—उदाहरणतः अन्वयी अनुमानमे "तहिना ई पर्वत" कहला सँ "ई पर्वत अग्निसँ व्याप्त धूमयुक्त अछि" एहन तृतीय लिङ्गपरामर्श उत्पन्न होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आचार्यसभक मत अछि जे 'जे धूमयुक्त अछि, सँ अग्निमान अछि' एहि वाक्यमे 'जे' सम्बन्धवाचक सर्वनामक पुनरुक्ति हेतुक साध्यसँ व्यभिचार रोकबाक लेल कएल जाइत अछि।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—"पर्वत धूमयुक्त अछि, अग्नियुक्त होएबाक कारणे" एहि अशुद्ध अनुमानमे "अग्नि धूमसँ व्याप्त अछि" एहन हेतुक ज्ञान अनुमितिकेँ बाधित करैत अछि;

अतः अग्निरूप हेतु हेत्वाभास अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: हेत्वाभास सत्यनिर्णय आ विजयप्राप्तिमे सहायक होइत छथि; तें एतय हुनकर निरूपण कएल जाइत अछि।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“अग्निरहित पर्वत धूमयुक्त अछि” एहि अशुद्ध अनुमानमे पर्वतमे अग्निक अभाव ज्ञात भेने धूमरूप हेतु अग्निक अनुमितिमे बाधक बनैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: हेत्वाभास सत्यनिर्णय आ विजयप्राप्तिमे सहायक होइत छथि; तें एतय हुनकर निरूपण कएल जाइत अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—शब्दप्रमाणसँ बाधित हेतु—जेना, ‘सुवर्णपर्वत पाषाणमय अछि, पर्वत होएबाक कारणे। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: शब्दप्रमाणसँ बाधित हेतु—जेना, ‘सुवर्णपर्वत पाषाणमय अछि, पर्वत होएबाक कारणे।’)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—कारण, संदिग्ध अग्निवला पर्वत तथा संदिग्ध अग्निवला अपर्वत—दुनूमे धूमरूपी हेतु रहितो, पर्वतत्व-जकाँ एकटा समान सामान्य धर्मक अभावमे, ओ सभ अनुमानक पक्ष नहि बनि सकैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उत्तर: साध्यक स्वरूप)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—ईहो कहल जा सकैत अछि जे “पर्वत अग्निमान अछि, ज्ञेय धूमवान होयबाक कारणें” एहि अनुमानमे ज्ञेयताविशिष्ट धूम हेतु नहि भऽ सकैत अछि; कारण ज्ञेयता जोड़लासँ व्यभिचार आ पुनरुक्ति दुनू होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एना प्रस्ताव कएल जा सकैत अछि—हेतुमे केवल ओहि ज्ञात विशेषणक अभाव अभिप्रेत अछि, जे व्यभिचारकेँ रोकैत नहि अछि। धूमरूपी हेतुमे “ज्ञेय होयब” ज्ञात विशेषण नहि अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—८४. पुनश्च, “ई पर्वत चन्दनकाठजन्य अग्निक अभावक कारण विशिष्ट सुगन्धयुक्त धूमसँ रहित अछि” तथा “ई पर्वत आर्द्र-इन्धन-संयोगजन्य अग्निक अभावक कारण धूमसँ रहित अछि” जकाँ अनुमान सभमे विशिष्ट कारणक अभावसँ विशिष्ट

कार्यक अभावक अनुमान ग्राह्य नहि होयत; कारण ओहि विशिष्ट कारण सभक अभाव सिद्ध नहि अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एना प्रस्ताव कएल जा सकैत अछि—हेतुमे केवल ओहि ज्ञात विशेषणक अभाव अभिप्रेत अछि, जे व्यभिचारकेँ रोकैत नहि अछि। धूमरूपी हेतुमे "ज्ञेय होयब" ज्ञात विशेषण नहि अछि।)

अध्याय ११४ — अर्थक आत्मा

देवदत्तक प्रसङ्ग

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—प्रसिद्ध उदाहरण: जेना कोनो व्यक्ति (देवदत्त) जीवित अछि, मुदा ओ दिनमे घरपर नहि देखाइ दैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकक मत: अर्थापत्ति केँ पृथक् प्रमाण मानब)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—"जीवित देवदत्त घर सँ बाहर अछि, किएक तँ ओ घर केँ भीतर घटित निरंतर अभावक प्रतियोगी (अनुपस्थित) अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल। (दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकक मत: अर्थापत्ति केवल 'केवलव्यतिरेकी अनुमान' थिक)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"ई ओही देवदत्त अछि" — ई ज्ञान 'प्रत्यभिज्ञा' अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मनोऽणुत्ववाद)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—मीमांसकक प्रसिद्ध उदाहरण अछि: "पीनो देवदत्तो दिवा न भुङ्क्ते" (मोटा देवदत्त दिनमे नहि खाइत अछि)। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अर्थापत्ति प्रमाणक नैयायिक खण्डन आ केवलव्यतिरेकीमे अन्तर्भाव)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—एहि असंगतिकेँ दूर करबाक लेल ई 'कल्पना' कएल जाइत अछि जे "देवदत्त रातिमे खाइत अछि" (देवदत्तो रात्रौ भुङ्क्ते)। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—एही प्रकार, "जीवित देवदत्त घरमे नहि अछि, तें बाहर अछि" एहि श्रुतार्थापत्तिकेँ सेहो गङ्गेश अनुमानमे अन्तर्भाव करैत छथि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अर्थापत्ति प्रमाणक नैयायिक खण्डन आ केवलव्यतिरेकीमे अन्तर्भाव)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—ईश्वर ई जनैत छथि जे "देवदत्त सीपकेँ चाँदी बुझि रहल अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पक्षक स्वरूप आ प्रतिवादीक आपत्ति)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—५. आपत्ति कएल जा सकैत अछि जे बाह्य इन्द्रियसँ निरपेक्ष मन बाह्य वस्तुक विषयमे संशय उत्पन्न करैत अछि—जेना 'देवदत्त गौर अछि वा नहि' अथवा 'परमाणु रूपक आश्रय अछि वा नहि'—कारण परस्पर-विरोधी पक्षक स्मरण आ भेदक धर्मक अनुपलब्धि ओकर सहकारी कारण छथि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पक्षधर्मक व्याप्तिज्ञान अनुमानक कारण नहि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—२३. प्रत्यभिज्ञामे पहिले ज्ञात विशेषण मानसिक संस्कारसँ फेर ओही व्यक्तिमे ग्रहण होइत अछि; जेना "ई ओही देवदत्त अछि"। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्याप्याभेदग्रहक मत असंगत)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—७. देवदत्तक जीवितताकेँ समयक विभाग—क्षण, लघुकाल आ दीर्घकाल—द्वारा सीमित रूपमे जानल जाएत; जेना 'देवदत्त आइ जीवित अछि', 'देवदत्त काल्हि जीवित रहत' आदि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: बाहरी उपस्थितिक ज्ञान केवलव्यतिरेकी अनुमानसँ—नैयायिक मत)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—१६. सामान्यतोदृष्ट अनुमान एहन रूपक होइत अछि—'देवदत्त जीवितता वा मृत्युक प्रतियोगी अछि, कारण ओ जीवित व्यक्ति अछि, जेना हम स्वयं। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नहि, मीमांसकक ई आपत्ति उचित नहि। तर्कसँ संयुक्त सामान्यतः दृष्ट अनुमान अधिक बलवान होइत अछि...)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—२२. आपत्ति हो सकैत अछि—जीवित देवदत्तक घरसँ बाहरी उपस्थिति अनुमानद्वारा सिद्ध भऽ सकैत अछि: ‘जीवित देवदत्त घरसँ बाहर अछि, कारण जीवित रहितहुँ घरमे नहि अछि, घट जेकाँ’; अथवा ‘जे वस्तु कोनो एक स्थानमे रहैत नहि, मुदा विद्यमान अछि, सँ दोसर स्थानमे रहैत अछि, जेना हम अपनहि घरक कोनामे नहि रहि घरक मध्यभागमे रहैत छी। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अर्थापत्ति अनावश्यक अछि—आपत्तिक खण्डन)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—उदाहरणतः—‘जीवित देवदत्त घरसँ बाहर अछि, कारण जीवित रहितहुँ घरमे नहि अछि; जे एहन नहि, सँ एहन नहि—जेना मृत व्यक्ति वा घरमे रहनिहार व्यक्ति। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्तिक खण्डन)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—एहि कारण कहल गेल अछि—“एखन देवदत्त घरक बाहर छथि, कारण जीवित रहैत ओ घरक भीतर नहि छथि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तर्कक खण्डन)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—आपत्ति कएल जा सकैत अछि—तादात्म्य अथवा भेदक संशय रहितो “ई देवदत्त अछि वा आन केओ, मुदा देवदत्तक समान अछि” एहन सादृश्यज्ञान होइत अछि; अतः सादृश्य पृथक पदार्थ अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति कएल जा सकैत अछि—तादात्म्य अथवा भेदक संशय रहितो “ई देवदत्त अछि वा आन केओ, मुदा देवदत्तक समान अछि” एहन सादृश्यज्ञान होइत अछि; अतः सादृश्य पृथक पदार्थ अछि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—अन्यथा “ई देवदत्त अछि, मुदा देवदत्तक समान नहि” अथवा “ई देवदत्तक समान अछि, मुदा देवदत्त नहि” एहन परस्पर-विरोधी ज्ञान आ व्यवहारकेँ उचित ठहराओल नहि जा सकैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति कएल जा सकैत अछि—तादात्म्य अथवा भेदक संशय रहितो “ई देवदत्त अछि वा आन केओ, मुदा देवदत्तक समान अछि” एहन सादृश्यज्ञान होइत अछि; अतः सादृश्य पृथक पदार्थ अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—. आक्षेप कएल जा सकैत अछि जे “अयं देवदत्तः ओदनम्”—“ई देवदत्त आ भात”—सदृश प्रयोगमे क्रियापदक अध्याहार न भेलासँ कर्त्ता व्यक्त नहि होइत अछि; तें तृतीया-विभक्तिक प्रयोग आवश्यक भऽ जाएत। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राभाकरसभक उत्तर)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—वास्तवमे नवजात रसोइया, नवीन काव्यपद, गौण अथवा लाक्षणिक शब्द, आ “देवदत्त” सदृश नवनाम—ई सभ पूर्वप्रयोग नहि जनितो प्रयुक्त होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आन वैकल्पिक मतक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“देवदत्त” पदसँ देवदत्तज्ञानक कारणता बुझबाक लेल पदक देवदत्तसङ्केत पहिने अन्यत्र ज्ञात होएब आवश्यक। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकक आक्षेपक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—नैयायिक उत्तर—सङ्केतज्ञान शब्दार्थज्ञानक कारण, कारण “देवदत्त” आदि पदक अर्थज्ञानमे एहि कारणता अन्यत्रो अनुभव होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकक आक्षेपक खण्डन)

अध्याय ११५ — कण्ठक पहरा

काकक रंग

गढ़ नारिकेलक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—जेना—"काक कृष्ण अछि, मित्रतनयत्वक कारणे" एहि अनुमानमे शाकपाकजन्यता कृष्णत्व-साध्यक प्रति एकटा संदिग्धोपाधि थिक। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल। (दार्शनिक सिद्धान्त: निश्चितोपाधि आ संदिग्धोपाधि कऽ अनुमानमे प्रभाव)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“वायु प्रत्यक्ष अछि, कारण ओ प्रत्यक्ष स्पर्शक आश्रय अछि” एहन अनुमानमे उद्भूतरूपवत्त्वकेँ, आ “काक श्याम अछि, कारण ओ मित्रक पुत्र अछि” एहन अनुमानमे शाकपाकजत्वकेँ, तर्कशास्त्रमे उपाधि मानल गेल अछि; कारण ई क्रमशः प्रत्यक्षत्वरूप साध्यसँ हेतु आ श्यामत्वरूप साध्यसँ हेतुक

व्यभिचारक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उद्भूतरूपवत्त्व आ शाकपाकजत्व उपाधि छथि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—तहिना “काक श्याम अछि, कारण ओ मित्रक पुत्र अछि” एहन अनुमानमे शाकपाकजन्यता श्यामत्वक व्यापक होयबाक कारण उपाधि बनत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: साध्यव्यापक होइतहुँ साधनाव्यापक वस्तु उपाधि नहि—एहन मत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—वर्तमान उदाहरणसभ—“शब्द अभिधेय अछि, कारण ओ प्रमेय अछि” अथवा “काक श्याम अछि, कारण ओ मित्रक पुत्र अछि”—मे कथित उपाधि प्रसङ्गगत साध्यसँ हेतुक व्यभिचारक ज्ञान उत्पन्न करनिहार दोष नहि अछि; कारण ओ उपाधि हेतुक साध्यसँ व्यभिचार स्थापित करैत नहि अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रभाकर उपाध्यायक तर्क)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—तहिना “काक श्याम अछि, कारण ओ मित्रक पुत्र अछि” एहन अनुमानमे मित्रतनयत्वरूप हेतु श्यामत्वरूप साध्यसँ व्यभिचारी अछि; कारण ओ मित्रक कृष्ण-पुत्रत्वक व्यापक धर्मसँ व्यभिचार करैत अछि, मुदा मित्रतनयत्वसँ व्यभिचार नहि करैत—जेना अघटत्व घटसँ व्यभिचारी होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधिक वैकल्पिक सिद्धान्त—अर्थान्तर नहि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“काक कृष्ण अछि, मित्रातनयत्वक कारणे” एहिमे शाकपाकजन्यता कृष्णत्व-साध्यक प्रति संदिग्धोपाधि अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधिक विभाग)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—मुदा “काक कृष्ण अछि, मित्रातनयत्वक कारणे” एहिमे कृष्णत्वक कारणसमूहक व्यापकता मित्रातनयत्वपर निश्चित नहि; तें शाकपाकजन्यता संदिग्धोपाधि बनैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: शाकपाकजन्यता साध्य नहि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—कखनो श्रोता तात्पर्य नहि बुझितो प्रसङ्गसँ “सैन्धव” पद घोड़ाक विशिष्ट जाति बुझबैत अछि आ “

काक” पद दही बिगाड़निहार कोनो पशु बुझबैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्य विद्वानक मत)

अध्याय ११६ — मौनक उत्तराधिकार

अन्योन्याश्रय

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—दाहशक्ति-सिद्धान्त: मीमांसक सभ मानैत छथि जे अग्निमे जराएबाक एकटा अदृश्य 'शक्ति' होइत अछि, जे मणि वा मन्त्र जकाँ प्रतिबन्धक (अवरोध) आबलापर रुकि जाइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्योन्याश्रय)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—एहि दृष्टान्तक आधार पर, व्यक्तिकें क बुझाइत अछि जे मीमांसक सभ मणि वा मन्त्रक उपस्थितिमे हाथ नहि जरबाक कारण बताबैत छथि? जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्योन्याश्रय)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मीमांसक सभक अनुसार, मणि वा मन्त्र एकटा 'प्रतिबन्धक' (अवरोधक) थिक। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्योन्याश्रय)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—जखन अग्निक लग मणि राखल जाइत अछि, तँ ओ मणिक प्रभाव सँ अग्निक ओहि अदृश्य 'दाहशक्ति' (जराएबाक शक्ति) केर नाश भऽ जाइत अछि वा ओ अनुत्पादक अवस्थामे चलि जाइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्योन्याश्रय)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—जखन हाथ अग्निक सम्पर्कमे अबैत अछि आ ओतय मणि नहि रहैत अछि, तखन 'प्रतिबन्धकाभाव' उपस्थित रहैत अछि, कारण-सामग्री पूर्ण होइत अछि आ हाथ जरैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: अन्योन्याश्रय)

अध्याय ११७ — स्मृतिक ऋण

केवलव्यतिरेकी अनुमान

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—उदाहरण: "पृथ्वी अन्य आठ द्रव्यसँ भिन्न अछि, गन्धवत्त्वक कारणे। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल। (दार्शनिक सिद्धान्त: केवलव्यतिरेकी अनुमान)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकैं रखलक—शास्त्रीय उदाहरण: "पृथ्वी अन्य द्रव्यसँ भिन्न अछि, किएक तँ एहिमे गंध अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। (दार्शनिक सिद्धान्त: केवलव्यतिरेकी अनुमान)

अध्याय ११८ — देहक अधिकार

मीमांसकक मत: अर्थापत्ति कैँ पृथक् प्रमाण मानब

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—परिभाषा आ उदाहरण: जखन दूटा दृष्ट तथ्य कैँ आपसमे मेल करैबामे विरोध बुझाइत अछि, तखन ओहि विरोध कैँ दूर करबाक लेल कोनो अदृश्य वा अनुपस्थित वस्तु क कल्पना करै पड़ैत अछि, तँ ओकरा अर्थापत्ति कहैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल। (दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकक मत: अर्थापत्ति कैँ पृथक् प्रमाण मानब)

अध्याय ११९ — श्रमक देह

हेतु: ओ दाबी मानबाक कारण।

शिष्यकैं अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—उदाहरण: किएक तँ ओतय धुआँ उठि रहल अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकैं मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: हेतु: ओ दाबी मानबाक कारण।)

अध्याय १२० — न्यायक देह

उदाहरण संग व्याप्ति: एकटा एहन नियम जे सब ठ

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—उदाहरण: जतय-जतय धुआँ रहैत अछि, ओतय-ओतय आगि रहैत अछि, जहिना भानसघर (रसोई)। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला

पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उदाहरण संग व्याप्ति: एकटा एहन नियम जे सब ठाम लागू होइत हो आ ओकर एकटा जानल-मानल उदाहरण।)

अध्याय १२१ — जातिक पिंजरा

विरुद्ध

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—उदाहरण: "शब्द नित्य अछि, कृतक (उत्पन्न) होयबाक कारणे। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विरुद्ध)

अध्याय १२२ — गंगेशक मुक्ति

सत्प्रतिपक्ष

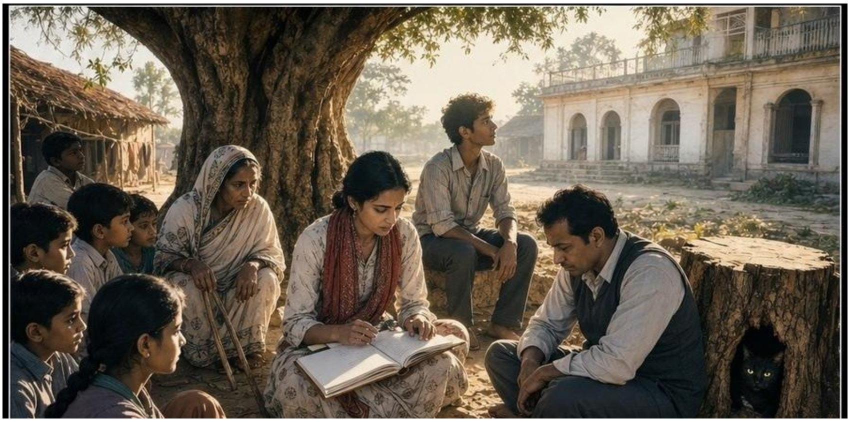

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—उदाहरण: वादी कहैत अछि, "शब्द नित्य अछि, श्रावण (सुनबा योग्य) होयबाक कारणे। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सत्प्रतिपक्ष)

अध्याय १२३ — तत्त्वचिन्तामणिक पात

पक्षक स्वरूप आ प्रतिवादीक आपत्ति

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—प्रतिवादीक अनुसार, जतय-जतय कर्ता अछि, ओतय-ओतय शरीर अछि (जेना कुम्हार)। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पक्षक स्वरूप आ प्रतिवादीक आपत्ति)

अध्याय १२४ — प्रमाणक अग्नि

पूर्वपक्ष: मङ्गलाचरण साधन नहि

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—फेर कहल जा सकैत अछि जे धान आ जौ जकाँ विकल्प अछि—कखनो पूर्वजन्मक पुण्य, कखनो वर्तमान मङ्गलाचरण समाप्तिक कारण होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि

पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्ष: मङ्गलाचरण साधन नहि)

अध्याय १२५ — निर्णयक धान

अभावप्रतीति लिङ्गसँ सम्भव अछि

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—दूरी आदि चक्षुकेँ स्वभावतः बाधित नहि करैत; स्वस्वरूप दोषे अग्निक दाहशक्तिकेँ जादुई मणि जकाँ बाधित करैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अभावप्रतीति लिङ्गसँ सम्भव अछि)

अध्याय १२६ — अन्नक न्याय

व्याप्ति साधनवन्निष्ठ नहि अछि

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—कारण “वृक्षक नीचाँक भाग कपि-संयोगक अधिकरण नहि अछि” ई ज्ञान अविरोधी अछि; अतएव कपि-संयोगक अधिकरणक अन्योन्याभाव, कपि-संयोगक अधिकरण अर्थात् वृक्षमे सेहो वर्तमान रहैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्याप्ति साधनवन्निष्ठ नहि अछि)

अध्याय १२७ — भूखक नाम

साध्यक पक्षधर्मव्यापकताज्ञान परामर्श—अन्य

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—जेना ‘दण्ड पुरुषक अछि’ ज्ञानसँ ‘दण्डी पुरुष अछि’ ज्ञान उत्पन्न होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: साध्यक पक्षधर्मव्यापकताज्ञान परामर्श—अन्य मत)

अध्याय १२८ — प्यासक नाम

जाहि अनुमानमे कोनो सपक्ष नहि आ व्यतिरेकव्य

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—उदाहरण—‘पृथ्वी अन्य आठ द्रव्यसँ भिन्न अछि, गन्धवत्त्वक कारणे। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक

आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जाहि अनुमानमे कोनो सपक्ष नहि आ व्यतिरेकव्याप्तिक ज्ञानसँ अनुमान उत्पन्न हो, सँ केवलव्यतिरेकी अछि।)

अध्याय १२९ — नूनक शपथ

आचार्यसभक मत अछि जे ‘जे धूमयुक्त अछि, सँ अ

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—जरन्मीमांसक कहैत छथि जे न्यायप्रयोग प्रतिज्ञा, हेतु आ उदाहरण—एहि तीन अवयवपर समाप्त होइत अछि; उपनय आ निगमन आवश्यक नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आचार्यसभक मत अछि जे ‘जे धूमयुक्त अछि, सँ अग्निमान अछि’ एहि वाक्यमे ‘जे’ सम्बन्धवाचक सर्वनामक पुनरुक्ति हेतुक साध्यसँ व्यभिचार रोकबाक लेल कएल जाइत अछि।)

अध्याय १३० — स्वादक न्याय

घट

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—उदाहरण: "घट अभिधेय अछि, प्रमेय होएबाक कारणे। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल। (दार्शनिक सिद्धान्त: केवलान्वयी अनुमान)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—जेना घट (घैला) एकटा कार्य अछि आ ओकर कर्ता कुम्हार होइत अछि, तहिना एहि जगत्-रूपी कार्यक कर्ता ईश्वर छथि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल। (दार्शनिक सिद्धान्त: ईश्वरानुमान (ईश्वरक अस्तित्वक प्रमाण))

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—हुनकर कहनासँ छै जे जतय-जतय कर्तृजन्यत्व अछि, ओतय-ओतय शरीरजन्यत्व अवश्य अछि (जेना घट, पट आदिक निर्माण शरीरधारी कुम्हार आदि करैत छथि)। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपाधि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—वेद आ भाषाक जनक: जगत्सृष्टिक आरम्भमे 'वेद' आ 'घट' आदि लौकिक शब्दसभक व्यवहार-परम्परा (

भाषा आ अर्थक सम्बन्ध) ईश्वरक इच्छा आ प्रयत्न सँ स्थापित होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्योन्याश्रय)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—"भूमिपर घट नहि अछि" एहि ज्ञानमे 'घटाभाव' मात्र रिक्त भूमिक स्वरूप अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अभाववाद)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—जखन योग्य प्रतियोगी (जहिना प्रकाशमे घट) उपस्थित नहि रहैत अछि, तखन ओकर 'अप्राप्ति' वा 'अनुपलब्धि' सँ घटाभावक ज्ञान होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुपलब्ध्यप्रामाण्यवाद)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जखन हम कोनो वस्तुकेँ देखैत छी (जहिना "ई घट अछि"), तँ ई प्रथम ज्ञान 'व्यवसाय' कहबावैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मनोऽणुत्ववाद)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—जखन मन आत्मा सँ संयुक्त भऽ ई ज्ञान उत्पन्न करैत अछि जे "हम जनैत छी जे ई घट अछि", तखन ज्ञानक स्पष्ट अनुभूति होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मनोऽणुत्ववाद)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—"पृथिवी आदि सकर्तृक अछि, कार्य होयबाक कारणें, घट जकाँ। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ईश्वरानुमान: तार्किक धरातलपर परमेश्वरक सिद्धि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—जेना कुम्हारकेँ माटिक (उपादान कारणक) साक्षात् ज्ञान होइत अछि, घट बनाबक इच्छा होइत अछि, आ ओ शारीरिक प्रयत्न करैत अछि, तहिना जगत्क निर्माण लेल एकटा एहन कर्ता आवश्यक अछि जकरा समस्त परमाणुक प्रत्यक्ष ज्ञान हो, सृष्टिक इच्छा हो, आ प्रयत्न हो। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: पक्षक स्वरूप आ प्रतिवादीक आपत्ति)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जँ सादृश्य मात्र एकटा अनुगत सत्ता हो, तँ प्रत्येक वस्तुमे सभ वस्तुक सादृश्यक प्रसङ्ग उठत, कारण सादृश्य जेना गाय आ गवयमे अछि, तेहने घट आ पटमे सेहो कोनो न कोनो रूपें भऽ सकैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशद्वारा सादृश्यक एकत्व आ अनन्तताक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—पाँचम संशय—"ई घट अछि" एहन पहिल ज्ञानक प्रामाण्य "हम जनैत छी जे ई घट अछि" एहन दोसर अनुव्यवसायसँ ज्ञात होइत अछि अथवा नहि? सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसक मतमे विप्रतिपत्तिक पाँच रूप)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—(तदनन्तर ई प्रश्नसभ सेहो अछि:) (ङ) "ई घट अछि" एहि ज्ञानक प्रामाण्य ओही ज्ञान द्वारा स्वयं ग्रहण होइत अछि वा नहि? शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसक मतमे विप्रतिपत्तिक पाँच रूप)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—आपत्ति हो सकैत अछि—घट-विषयक पहिल ज्ञान अनुव्यवसायक विषय बनैत अछि; अतः "ई घटक ज्ञान अछि" एहि बातपर संशय नहि होइत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रामाण्य-संशयक पक्षमे आरो तर्कक खण्डन)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—ज्ञान नहि रहला पर केओ "हम घट जनैत छी" एना अनुभव नहि करैत; आ घटक पहिल ज्ञान रहला पर "हम एकरा वस्त्र जनैत छी" एहन अनुव्यवसाय नहि होइत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिक निष्कर्ष: अनुमान स्वतः प्रमाण, अभ्यासजन्य अनुव्यवसाय नहि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—कहल जा सकैत अछि—"प्रमाण ज्ञान एहन कारणसँ उत्पन्न होइत अछि जकर कार्यता अप्रमाण ज्ञानमे नहि रहयवला धर्मसँ अवच्छिन्न अछि; कारण ओ अप्रमाणसँ विजातीय कार्य अछि, घट जकाँ। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक,

मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्षक उपसंहार)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—अतः “अनित्य प्रमाण ज्ञान अप्रमाण ज्ञानक कारणसँ विजातीय कारणसँ उत्पन्न होइत अछि, कारण ओ अप्रमाण ज्ञानसँ विजातीय कार्य अछि, घट जकाँ”—ई अनुमान सिद्ध अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सिद्धान्त: गुणसँ प्रामाण्यक उत्पत्ति)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“घट अछि”क स्थान पर “वस्त्र अछि” कहनिहार भ्रमित वा प्रतारक व्यक्तिक वाक्य, संयोगवश सत्य भेल वाक्य, “बौद्ध चैत्यकेँ प्रणाम करी” जकाँ भ्रान्त वचन तथा शुक-बालकक वाक्य—सभकेँ वक्तृदोषक अभाव मात्रसँ प्रमाण मानऽ पड़त। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भ्रमाभाव कारण नहि अछि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“घट अपन आश्रयमे नहि अछि” एहन वाक्य कोनो भिन्न वस्तुकेँ विषय बनाकऽ भ्रम उत्पन्न नहि करैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भ्रान्त, प्रतारक आ शुकक वचन प्रमाण नहि—एहि आपत्तिक विचार)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—मुदा “ई ज्ञान प्रमाण अछि वा नहि, आ ई घट अछि” एहन संशयात्मक सामूहिक ज्ञानमे प्रामाण्यकेँ अनुव्यवसाय अथवा अनुमानसँ निश्चय करऽ पड़ैत अछि; तेँ ओ जाति नहि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रमालक्षणक पूर्वपक्ष—प्रामाण्य जाति नहि अछि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“ई घट आब श्याम नहि अछि” ज्ञान पका कऽ लाल भेल घटक प्रसङ्गमे पूर्वकालीन श्यामताक विरोधी नहि, कारण कालभेद अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशेष्यनिष्ठ अत्यन्ताभावक प्रतियोगी नहि होयवला धर्मक अनुभव प्रमात्व नहि अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मुदा “ई घट आ वस्त्र अछि” एहन सामूहिक ज्ञान विशेष्य-अंशक दृष्टिसँ अप्रमाण नहि; घटत्व वा वस्त्रत्व अपन-अपन अभावक आश्रयमे

प्रकाररूपेँ प्रकाशित नहि होइत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निर्विकल्पक ज्ञान प्रमाण आ अप्रमाण दुनूसँ व्यावृत्त अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—पकाइला पूर्व घटमे श्यामवर्ण छल, तेँ “घट श्याम छल” ज्ञान प्रमाण भऽ सकैत अछि; मुदा पकाइला बाद लाल घटक विषयमे “ई घट आब श्याम अछि” ज्ञान अप्रमाण अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अव्याप्यवृत्ति भाव-अभावक ज्ञानक प्रामाण्य)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“ई घट आ वस्त्र अछि” सामूहिक ज्ञानमे सेहो घट आ वस्त्रक विषयता भिन्न रहला कारण दुनू लक्षण उचित प्रकारेँ लागू होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: वैकल्पिक लक्षणसभ)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“घट नील अछि” एहन विशिष्ट ज्ञान समवायरूप विशेषण-विशेष्यसम्बन्धकेँ विषय बनबैत अछि—ई तर्क नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्ष—समवाय ग्रहणसम्बन्ध नहि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—पूर्वपक्षी: तखन, उदाहरणार्थ, जँ “भूतल घटरहित रूपमे ज्ञात होइत अछि” ई बोध मिथ्या होइत, तँ भूतलपर घट नहि रहितो ओतय घटाभाव नहि रहैत; आ एहि तथ्यक बोधो नहि होइत—जखनि कि कतेको बेर एकर बोध होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्ष—समवाय ग्रहणसम्बन्ध नहि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—अन्य आचार्यसभक मत अछि जे संयोगरूप सम्बन्धक निषेध कऽ, इन्द्रियक ग्रहणसम्बन्धक अङ्ग रूपमे समवायकेँ एहि अनुमानसँ सिद्ध कएल जा सकैत अछि—“शब्द, शब्दत्व, रूप आदि इन्द्रियसँ सम्बद्ध छथि, कारण ओसभ घट जकाँ प्रत्यक्ष छथि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भट्टमत—विशेषणता अर्थात् स्वरूप-सम्बन्धे ग्रहणसम्बन्ध)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—पुनः आपत्ति—“घट ज्ञात अछि” एहन ज्ञान सामान्य रूपेँ होइत अछि; अतः ज्ञातता ग्रहणसम्बन्ध मानल जा सकैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ

दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ज्ञातताक खण्डन)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—"ई घट नील अछि" एहन ज्ञानमे नील रंग आ घटक अबाधित अभेद अनुभव होइत अछि, जकाँ "ई पुरुष दण्डधारी अछि" मे दण्डधारिता आ पुरुषक सम्बन्ध। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्ष—गुण आ गुणीक सम्बन्ध अभेद अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—जँ "ई घट नील अछि" आ "ई पुरुष दण्डधारी अछि" दुनू केवल विशेषण-सम्बन्धकेँ विषय बनबैत, तँ "नील घट"क संग "घट नीलिमायुक्त अछि" तथा दण्डधारी पुरुषक संग "पुरुष दण्डधारितायुक्त अछि" दुनू प्रकारक ज्ञान समान रूपेँ आवश्यक होयत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्ष—गुण आ गुणीक सम्बन्ध अभेद अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—विकल्पतः नीलत्व आ घटत्व वैशिष्ट्य आ विशेष्यताक अवच्छेदक धर्म छथि आ एके आश्रय—नील घट—मे विद्यमान ज्ञात होइत छथि, जकाँ दण्डधारिता आ पुरुषत्व एक दण्डधारी पुरुषमे। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्ष—गुण आ गुणीक सम्बन्ध अभेद अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—एहि एकाश्रयताक कारण विशेषण आ विशेष्य शब्द "नील" आ "घट"क व्याकरणिक समानाधिकरणता सिद्ध होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्ष—गुण आ गुणीक सम्बन्ध अभेद अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"नील" आ "घट" अलग-अलग प्रवृत्तिनिमित्त नीलत्व आ घटत्वक कारण एक वाक्यप्रयोग बनबैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्ष—गुण आ गुणीक सम्बन्ध अभेद अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जँ "श्वेत" आ "वस्त्र" पर्यायवाची होइत, तँ "ई वस्त्र श्वेत वस्त्र अछि" एहन सहप्रयोग "ई घट कलश अछि" जकाँ असंगत होइत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन

सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उत्तर—गुण आ गुणीक सम्बन्ध अभेद नहि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“घटमे श्वेत रंग अछि” आ “घट श्वेत अछि” एहि दू अनुभवसँ भेदाभेद सिद्ध होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: माध्वमत—भेदाभेद सम्बन्ध अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—घट पकाओलापर “ई घट रक्त अछि, मुदा कृष्ण नहि” एहन अबाधित अनुभव होइत अछि; अतः कृष्णरूपक अन्योन्याभाव रक्तरूपक आश्रयमे सिद्ध होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: माध्वमत—भेदाभेद सम्बन्ध अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—अतः “ई घट नील अछि” मे घट नीलरूपसँ भिन्न भऽ सकैत अछि, कारण घटत्वसँ अवच्छिन्न घटमे नीलरूप-घटक अन्योन्याभाव रहैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भेदाभेदवादक खण्डन)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—घटत्वसँ अवच्छिन्न घटमे भेद आ अभेद दुनू अनुपस्थित रहितो “ई घट नील अछि” अनुभव सम्भव अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भेदाभेदवादक खण्डन)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—अतः “ई घट नील अछि” अनुभवमे केवल नीलरूपक समवाय घटसँ सम्बद्ध प्रकट होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भेदाभेदवादक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“ई घट नीलिमायुक्त अछि” एहन ज्ञानक प्रसङ्ग सम्बन्ध-विषयता स्वीकारलापर अपेक्षिते अछि; “नील घट” प्रयोगमे लुप्त मतुप् प्रत्यय वा अभेदक गौण प्रयोगसँ नील शब्द नीलरूपक आश्रय बोध करैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“समवायी आश्रयक नाशमे ध्वंसो नष्ट होएबाक चाही” ई प्रत्युत्तर नहि; तखन नष्ट घट पुनः उत्पन्न भऽ जाएत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति—अभावक सम्बन्ध समवाय अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“ध्वंस नष्ट नहि हो, नहि तँ नष्ट घट पुनः उत्पन्न भऽ जाएत” ई तर्को ठीक नहि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सिद्धान्तीक उत्तर)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—भट्ट उत्तर दैत छथि—अनुपलब्धिद्वारा उपनीत अभावसँ विशिष्ट आश्रयज्ञान “भूमि अभाववती अछि” इन्द्रियजन्य होइत अछि; मुदा चक्षुद्वारा उपनीत भूमिमे अभावज्ञान “भूमिमे घट नहि अछि” अनुपलब्धिजन्य होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: इन्द्रिय अभावविशिष्टधी उत्पन्न करैत अछि, अनुपलब्धि अभावधी)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—प्राच्यनैयायिक उत्तर दैत छथि—“एहि भूमिपर घट नहि अछि” एहन अबाधित अभावज्ञान प्रत्यक्ष अनुभवमे अबैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राच्यनैयायिकक उत्तर)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—ई विशेष अधिकरण जातिरूप अनुगत नहि, प्रत्युत अननुगत अछि; तथापि अननुगत अधिकरण एक अभावक आश्रय भऽ सकैत अछि, जकाँ एक घट अपनहि एक प्रतियोगीक आश्रय होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशेष अभावक आश्रय अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“एहि भूमिपर घट नहि अछि” एहन ज्ञान आधाराधेयभाव स्पष्ट करैत अछि; तेँ अभाव भूमिसँ पृथक् मानब आवश्यक अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अतिरिक्त अभावक अस्तित्व आ प्रत्यक्षता)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—अतः “भूमिपर घट नहि अछि” एहन नास्तीति-बुद्धिए अतिरिक्त घटाभावक प्रमाण अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक

अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "नास्ति" बुद्धि अतिरिक्त अभावक प्रमाण अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—प्रतियोगी आ अभावाधिकरणक स्वरूपभेदसँ समानाधिकरण निषेध सम्भव—भूमि घटयुक्त ज्ञात रहितो "भूमि घट नहि अछि" ई ज्ञान अबाधित अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रभाकरमत—भूमिज्ञान स्वयं अभाव अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—"अभावाधिकरणरूप भूमि" विषयक भेदसँ एकरा विशिष्ट करबो पर्याप्त नहि, कारण वर्तमानमे घट रहितो "एहि भूमिपर पहिने ई घट नहि छल" एहन अतीत अभावज्ञान होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रभाकरमत—भूमिज्ञान स्वयं अभाव अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—मुदा वर्तमानमे घट देखाइ पड़ितो "एहि ठाम पहिने घट नहि छल" एहन अभावज्ञान सम्भव अछि; अतः ई कारणो अनिवार्य नहि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अभाव आ अधिकरणक पृथक् विशेष मानब असम्भव)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—"घट आ घटाभावसँ अवच्छिन्न भूमिमे अन्योन्याभाव आ ओकर अभाव दुनू कोना?"—भूमिज्ञान, घटवती भूमिज्ञान आ ओकर अभावक अवच्छेदेँ, स्वरूपभेद आ तदभाव दुनू धारण करैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सामग्रीभेदसँ बुद्धिभेद; घटवती भूमिसँ भिन्न भूमि अभाव अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—"भूमिपर घट अछि कि नहि?" संशय तथा "भूमिपर घट नहि अछि" विपरीत ज्ञान दोषवश सम्भव; दोषक कारण अधिकरणमे घटवती भूमिसँ भिन्नता आ ज्ञानमे घटवती भूमिज्ञानसँ भिन्नता निश्चित नहि होइत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सामग्रीभेदसँ बुद्धिभेद; घटवती भूमिसँ भिन्न भूमि अभाव अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“एके घटाभाव सभ ठाम अनुगत रूपेँ रहैत अछि”—एहो नहि; जँ ओ नित्य हो, तँ घट उपस्थित रहितो घटाभाव-व्यवहार होयत, आ प्रागभावादि विभाग असङ्गत होयत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अभावत्वक समुचित परिभाषा असम्भव)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“भूमिज्ञान नष्ट भेलापर वा घटाभावक अभाव भेलापर घट फेर उत्पन्न होयत”—ई नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रभाकर-पूर्वपक्षक स्थापना)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—नैयायिकक सिद्धान्त ई अछि जे अनुभवमे केवल ओ विशिष्ट अभाव अबैत अछि जे कोनो प्रतियोगीक निरूपण करैत हो—जकाँ “ई घट नहि अछि”, “ई पट नहि अछि”। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकक निष्कर्ष—प्रतियोगिनिरूपित अतिरिक्त अभाव)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—उत्तर—“एहि ठाम घट नहि अछि” अनुभवमे घट अभावक प्रतियोगी रूपेँ प्रत्यक्ष बोधगम्य अछि; ओ केवल पछाति होमयवला शब्द-व्यवहारक प्रतियोगी नहि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकक निष्कर्ष—प्रतियोगिनिरूपित अतिरिक्त अभाव)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—मीमांसकक आपत्ति—“घटाभाव” पदक प्रयोग कोनो ज्ञानक कारण होइत अछि; अभावज्ञानमे प्रतियोगी घट नहि, केवल रिक्त भूमि प्रकाशित होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भूमि घटाभाव-पदक आधार नहि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—घटज्ञानजन्य “घटाभाव-पदप्रयोगविषयता” घट आ भूमिक बीच प्रतियोगी-अनुयोगी सम्बन्ध हो, तँ भूमि प्रतियोगियुक्त मानल जा सकैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भूमि घटाभाव-पदक आधार नहि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—उत्तर—“भूमि घटाभाव अछि” एहन ज्ञान वा प्रयोग नहि होइत; अनुभव “भूमिपर घटाभाव अछि” अथवा “भूमिपर घट नहि अछि” एहन होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि

पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भूमि घटाभाव-पदक आधार नहि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—ई प्रयोग घटाभावकेँ भूमिसँ पृथक् देखबैत अछि, जकाँ "भूमिपर घट अछि" मे घट भूमि नहि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भूमि घटाभाव-पदक आधार नहि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि— नैयायिकमतमे एक पटान्योन्याभावक बलपर "घटादि पट नहि", एक गोत्वात्यन्ताभावक बलपर "घटादिमे गोत्व नहि", एक घटध्वंसक बलपर विभिन्न कपालमे "घट नष्ट भेल", आ एक घटप्रागभावक बलपर उत्पत्तिपूर्व कपालसभमे "घट नहि अछि"—एहन अनुगत व्यवहार सम्भव अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुगत अभाव-व्यवहारक असम्भवता)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मीमांसक कहैत छथि—भूमिक संग विशेष समयक संयोगे "एखन भूमिपर घट नहि"क अभाव हो; ताहिसँ आधाराधेयभाव सेहो सिद्ध। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशिष्ट समय-संयोग अभाव नहि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—"एखन भूमिपर घट नहि अछि" मे भूमिक जकाँ समयो अभावक आधाररूपेँ बोध होइत अछि, अभाव स्वयं नहि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशिष्ट समय-संयोग अभाव नहि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—"पहिने घट देखाइत अछि, फेर हथौड़ा पड़ैत अछि, अन्तमे कपालक शृङ्खला देखाइत अछि; प्रतियोगीसँ पृथक् अभाव नहि देखाइत, अतः अभाव-विषयक शास्त्रवचन निराधार"—ई आपत्तियो असिद्ध। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: कपालादि घट-व्यवहारक कारण भऽ जाएत)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि —"हथौड़ाक प्रहारसँ घट नष्ट भेल" एहन ध्वंसज्ञान अतिरिक्त विनाशकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि। जखन

शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: कपालादि घट-व्यवहारक कारण भऽ जाएत)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—छिद्रयुक्त छलनीक न्यायसँ "नेत्र-घट-संयोग कारण" मानलापर ओही रीति आलोक-नेत्र-संयोगकेँ कारण मानबाक अनावश्यक प्रसङ्ग उठैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विषय-आलोक-संयोग दृश्य प्रत्यक्षक कारण)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—विशाल वायुसमूह द्वारा आनल गन्ध, शीत-उष्ण वाष्प, चक्षु आदि इन्द्रिय आ प्रकाशक निकट रहितो, अन्हारक घट जकाँ, आवश्यक प्रत्यक्षकारणक अभावसँ अप्रत्यक्ष रहि सकैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सम्प्रदायविदक पक्ष—चक्षुरूपो व्यञ्जक)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—अनुमान: "वायु प्रत्यक्ष अछि, कारण महत्त्वयुक्त रहैत उद्भूत स्पर्शक आश्रय अछि, घट जकाँ। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्ष—वायु प्रत्यक्ष; उद्भूत रूपवत्त्व द्रव्यप्रत्यक्षक तन्त्र नहि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—त्वगिन्द्रिय द्रव्यग्रहक बाह्येन्द्रिय भेलापर रूपक ग्रहण नहि करैत, जकाँ चक्षु स्पर्श नहि ग्रहण करैत; तथापि घट त्वगिन्द्रियक विषय होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "स्पृशामि" अनुभव वायुमे वैध)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—वायुमे घट जकाँ "हम स्पर्श करैत छी" एहन अनुव्यवसाय उत्पन्न होइत अछि; अतः वायु प्रत्यक्ष। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "स्पृशामि" अनुभव वायुमे वैध)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—योग्य व्यक्तिमे स्थित सङ्ख्यादि सामग्रीसँ ग्राह्य होइत अछि; तथापि घट जकाँ हाथसँ छूला पर उष्ण वाष्पक सङ्ख्या ककरो ज्ञात नहि होइत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: नवीनमत—वायु अप्रत्यक्ष)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—आत्मा अनुमानगम्य हो तखन "हम एखन घट जानैत छी" वर्तमानकालिक ज्ञान असम्भव होयत, कारण आत्मानुमानक पूर्व तृतीय क्षणमे घटज्ञान नष्ट भऽ जाइत अछि—एहि आपत्तिक उत्तर स्थूल समयोपाधिसँ देल जा सकैत अछि; जकाँ कुम्हारक क्रिया देखिकऽ "कुम्हार घट बनबैत अछि" अनुमान होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आत्मा प्रत्यक्ष अछि; वायु नहि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"जे हम घट देखने रही, ओही हम घटकेँ स्पर्श करैत छी"—एहन प्रत्यभिज्ञा आत्माक अभेदकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आत्मा प्रत्यक्ष अछि; वायु नहि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—"जे हम घट देखने रही, ओही हम स्पर्श करैत छी" प्रत्यभिज्ञा साधन नजाननिहार व्यक्तिमे सेहो होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आत्मा प्रत्यक्ष अछि; वायु नहि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अतः अनुमान—"पिघलैत सुवर्ण, जँ अत्यन्त अग्निसंयुक्त पार्थिव द्रव्य होइत आ विजातीय रूपपरिवर्तनक प्रतिबन्धक द्रवद्रव्यसँ असम्बद्ध रहित, तँ अग्निसंयुक्त घट जकाँ अपन पूर्व पीतरूपसँ भिन्न रूपक आश्रय होइत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सुवर्ण पार्थिव नहि, तैजस अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—मीमांसक कहैत छथि—"ई घट अछि" एहन वर्तमान प्रथम ज्ञान स्वयं ज्ञात होइत अछि; ओकर ज्ञापन लेल दोसर मानस ज्ञान अर्थात् अनुव्यवसाय आवश्यक नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक

दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसक आपत्ति—ज्ञान स्वयं अपन व्यवहारक कारण)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—"ई घट आ पट छथि" एहन समूहालम्बन ज्ञान घट आ पट पृथक्-पृथक् वस्तुक व्यवहार उत्पन्न करैत अछि; मुदा वस्तुसमूहक अलग सत्ता नहि, तेँ समूहसँ ओकर पृथक् सम्बन्ध मानबाक आवश्यकता नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: स्वविषयत्व स्वप्रकाशत्व अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—नैयायिक आपत्ति—"ई घट अछि" प्रथम ज्ञान पहिले उत्पन्न होइत अछि आ "हम जानैत छी जे ई घट अछि" अनुव्यवसाय बादमे। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: परप्रकाशकत्वक असङ्गति)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—तेँ "हम ई घट जानैत छी" एहन अनुभव सैकड़ो ज्ञानक भारयुक्त श्रृंखला नहि, प्रथम ज्ञानक अनुव्यवसाय मात्र अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सरल प्रथम ज्ञान दोसर ज्ञानसँ निरपेक्ष नहि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—आपत्ति—मनसँ सरल प्रथम प्रत्यक्षज्ञान उत्पन्न भेलापर "हम जानैत छी जे ई घट अछि" एहन दोसर विशिष्टज्ञान केना होयत? जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशिष्टबुद्धिक औचित्य)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—"हम ई घट जानैत छी" एहन ज्ञानमे स्थूल वर्तमान अवस्था मात्र प्रकट होइत अछि, क्षणविशेष नहि, कारण क्षण इन्द्रियातीत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशिष्टबुद्धिक औचित्य)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मुदा ई सम्भव नहि, कारण ओहि समय परवर्ती ज्ञानक कारण अनुपस्थित रहैत अछि; आ "हम अनुमान करैत छी जे ई घट अछि" एहन प्रत्यभिज्ञामे अनुमानत्व उपस्थित नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशिष्टबुद्धिक वैकल्पिक व्याख्या)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—पहिने “भूमिपर घट नहि अछि” एहन सरल ज्ञानमे भूमि व्याकरणिक विशेषण आ घटाभाव व्याकरणिक विशेष्य होइत अछि; तकर बाद “भूमि घटाभाववान् अछि” एहन विशिष्ट अभावज्ञान उत्पन्न होइत अछि, जाहिमे भूमि वास्तविक अधिकरण आ घटाभाव विशेषण अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—एहि मतमे “उपलक्षण” शब्द मात्र लाक्षणिक होयत; घटाभावक प्रतियोगी घट कोनो गुण प्रकट नहि करैत, तथापि उपलक्षण कहल जाएत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: साक्षादन्वित अथवा विशेष्यसम्बन्धी विशेषण)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—वर्तमानमे प्रत्यक्ष होइत घटपर अतीतकालावच्छिन्न अनुमान होइतहुँ “ओ घट” एहन तत्त्व-बुद्धि वा व्यवहार अनिवार्य नहि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “तत्त्व” कँ अतीतकाल-सम्बन्ध मानबाक पूर्वपक्षक खण्डन)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—अतीतकालीन सम्बन्धक ज्ञान रहितहुँ “ई घट ओही घट अछि कि नहि” एहन संशय, अथवा “ई घट ओ घट नहि” एहन विपरीत ज्ञान होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “तत्त्व” कँ अतीतकाल-सम्बन्ध मानबाक पूर्वपक्षक खण्डन)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—उलटे, अतीत वस्तुसँ सम्बन्धाभाव ज्ञात रहितहुँ “ई घट ओही घट अछि” एहन प्रत्यभिज्ञा होइत अछि; “अतीतकालविशिष्ट ई घट ओही घट अछि” एहन सहप्रयोगो सम्भव अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “तत्त्व” कँ अतीतकाल-सम्बन्ध मानबाक पूर्वपक्षक खण्डन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एकर अर्थ अपन एहि जन्मक पूर्वज्ञानसँ विशिष्टता सेहो नहि; पूर्वज्ञान रहितहुँ संशय वा विपरीत ज्ञान सम्भव अछि, आ “पूर्वज्ञानविशिष्ट घट ओही घट अछि” एहन सहप्रयोग होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “तत्त्व” कँ अतीतकाल-सम्बन्ध मानबाक पूर्वपक्षक खण्डन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जखन आन ज्ञान घटकेँ वर्तमान अनुभवक विषय नहि, प्रत्युत पूर्वानुभूत वस्तु रूपेँ ग्रहण करैत अछि, तखन “ई घट ओही घट अछि” एहन स्मरण होइत अछि; नहि तँ घट तत्त्व-अंशसँ रहित भऽ जाएत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: अतीतानुभव-विषयताकेँ तत्त्व मानबाक खण्डन)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—अनुमान द्वारा अतीतानुभव-विषयता ज्ञात भऽ सकैत अछि, मुदा ओतय “ई ओही घट अछि” एहन तत्त्व-बुद्धि वा व्यवहार नहि होइत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अतीतानुभव-विषयताकेँ तत्त्व मानबाक खण्डन)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“पूर्वज्ञानविशिष्ट घट ओही घट अछि” एहन सहप्रयोगक व्याख्या सेहो कठिन होयत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अतीतानुभव-विषयताकेँ तत्त्व मानबाक खण्डन)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“ई घट ओही घट अछि कि नहि” एहन संशय आ “ई घट ओ घट नहि” एहन विपरीत ज्ञान, निश्चित धर्मसँ भिन्न वा कोनो विशेष धर्मक विषयमे मानल जा सकैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अतीतधर्म-वैशिष्ट्यकेँ तत्त्व मानबाक खण्डन)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—इदन्ताक उल्लेखरहित स्मृतिमे इदन्तासँ भिन्न धर्म तत्त्वरूपेँ प्रकट होइत अछि; एही कारण “ई घट अछि” स्मृति नहि, आ सभ स्मृति अयथार्थ अनुभवजन्य मानल जाएत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्व आ इदन्ता अखण्डोपाधि नहि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अतः लाघवसँ ई मानब उचित जे प्रत्यभिज्ञामे घट मात्र “ओही घट” रूपेँ स्मृत होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्व आ इदन्ता अखण्डोपाधि नहि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—तेँ “ई घट अछि” एहन स्मृति समानरूप “ई घट अछि” प्रत्यक्षसँ उत्पन्न नहि होइत; आ “ओ घट अछि” एहन प्रत्यक्ष अनुभव समानरूप “ओ घट अछि” स्मृतिक कारण नहि होइत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिक उत्तर—स्मृतिमे “तत्” सर्वनामक प्रयोग)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—गङ्गेशोपाध्यायक निर्णायक मत—“ई घट अछि” एहन अनुभवमे जाहि धर्मसँ विशिष्ट भऽ वस्तु

प्रकट भेल, ओहि धर्मक अतीतत्वे तत्त्व अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सिद्धान्त—तत्त्व अतीतत्व अछि; स्मृतिक स्वरूप)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—वास्तवमे "ई घट अछि" रूपक स्मृति आ "ई घट ओही घट अछि" रूपक प्रथम अनुभव देखल नहि जाइत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सिद्धान्त—तत्त्व अतीतत्व अछि; स्मृतिक स्वरूप)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—प्रथम अनुभव "ई घट अछि" आ स्मरण "ओ घट अछि" केर सहप्रयोग विशेष धर्मक अपेक्षासँ बुझल जाएत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सिद्धान्त—तत्त्व अतीतत्व अछि; स्मृतिक स्वरूप)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—अथवा स्मृति वर्तमानताकेँ विषय बनबैत अछि, कारण ओ "घट अछि" ज्ञानक समान एक ज्ञान अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अयथार्थ स्मृति वर्तमानताकेँ विषय बनबैत अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—एही कारण पाकसँ लाल भऽ चुकल घटक विषयमे "ई घट कारी अछि" ज्ञान व्यवहारतः अयथार्थ मानल जाइत अछि, कारण लोक अपक्व घटक पूर्वकालीन श्यामताकेँ वर्तमानमे विद्यमान बुझैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अयथार्थ स्मृति वर्तमानताकेँ विषय बनबैत अछि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—"पूर्वकालमे श्यामता छल, तेँ लाल भऽ चुकल घटक विषयमे 'ई कारी अछि' ज्ञान यथार्थ अछि, आ 'घट एखन कारी अछि' केर कोनो पृथक् आकार नहि"—ई मतो एहीसँ निरस्त होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अयथार्थ स्मृति वर्तमानताकेँ विषय बनबैत अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—अन्तिम सिद्धान्त एना अछि—"ई घट ओही घट अछि" एहन स्मृतिमे तत्त्वविशिष्ट घट वर्तमानता-सहित प्रकट होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष—स्मृति केवल अयथार्थ)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—"ई घट, जे ओही घट अछि, एखन विद्यमान अछि" एहन प्रत्यभिज्ञामे सेहो एही प्रकारक कारणता मानल जाइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष—स्मृति केवल अयथार्थ)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—"ओ घट घरमे अछि" एहन स्मरणरूप अस्तित्व-निश्चयसँ घटक विषयमे निःशङ्क प्रवृत्ति देखल जाइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष—स्मृति केवल अयथार्थ)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—अन्यथा अनिश्चित रूपेँ ज्ञात प्रतियोगीसँ सेहो "एतय घट नहि अछि" एहन अभाव-ज्ञान उत्पन्न भऽ जाएत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यधिकरण-धर्मावच्छिन्न प्रतियोगिताक अभावक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—एखन तटस्थ पुनः कहि सकैत छथि—"ई ज्ञानक विषय घटत्व अछि कि नहि?" एहन संशय सम्भव अछि; कारण व्यक्ति "घट" विशेष्यकेँ ज्ञानक विषय बुझितो "घटत्व" विशेषण एहि घटमे अछि कि नहि, ई नहि जानैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रतिआपत्तिक अस्वीकार: निर्विकल्पक विशिष्टज्ञानक कारण नहि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—संशयक विरोधी निश्चित ज्ञान एहन होइत—"ज्ञानक विषय घट अछि"; एहिमे घटत्व विशेषण आ घट ज्ञान-विषय विशेष्य होइत। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक निष्कर्ष)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—उदाहरण—'घट अभिधेय अछि, प्रमेय होएबाक कारणे। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमान तीन प्रकारक अछि—केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकी, आ अन्वय-व्यतिरेकी। जाहि अनुमानमे साध्यक कोनो विपक्ष नहि, सँ केवलान्वयी अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—पक्षमे साध्यक अनुमान उत्पन्न करबाक सम्पूर्ण कारणसमूह उपस्थित भेलापर एहन ज्ञान उत्पन्न होइत अछि जाहिमे साध्य विशेष्य आ पक्ष विशेषण

बनैत अछि; जेना 'भूमितलपर घट नहि अछि' एहि ज्ञानमे अभाव विशेष्य आ भूमि विशेषण अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यधिकरण-प्रकारानवच्छिन्नत्वे प्रमाणता)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—"सभ वस्तु ज्ञेय अछि, अभिधेय होएबाक कारणे" एहि केवलान्वयी अनुमानक अनुपसंहारी हेतु आ "ई घट अछि, एतद्वस्तु होएबाक कारणे" एहि असाधारण हेतु कखनो-कखनो निर्दोष होइत छथि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रस्ताव ई हो सकैत अछि—सव्यभिचार ओ अभिप्रेत हेतु अछि जकर पक्षधर्मताज्ञान, ज्ञानक विषय बनि, साध्यविषयक संशय उत्पन्न करयवला दू विपरीत पक्षक स्मरण करबैत अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—एहि सँ 'सभ वस्तु अनित्य अछि, ज्ञेय होएबाक कारणे' अनुपसंहारी उदाहरण छूटि जाएत, आ 'घट अनित्य अछि, घट वा अन्य वस्तु होएबाक कारणे' जेकाँ दोषयुक्त अनुमान समेटल जाएत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सव्यभिचारक सिद्धान्त)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—'घट नित्य अछि, कृतक होएबाक कारणे' एहि विरुद्ध उदाहरणमे बाधित दोषक संकर कोनो पृथक् दोष नहि बनैत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: रत्नकोशकारसभक मतक नियमन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जेना 'घट अभिधेय अछि, प्रमेय होएबाक कारणे'—एतय अभिधेयत्व ओ धर्म अछि जे केवल घटमे रहनिहार धर्मसँ भिन्न अछि, आ घटमे स्थित नित्याभावक प्रतियोगी सामान्यधर्मसँ सेहो भिन्न अछि; ई घट आ पटत्वक अन्योन्याभाव जेकाँ अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सौण्डदासक मत)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—प्रमाण अथवा प्रत्यक्षसँ बाधित हेतु—जेना, 'घट सर्वव्यापी अछि, अस्तित्ववान होएबाक कारणे। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: प्रमाण अथवा प्रत्यक्षसँ बाधित हेतु—जेना, 'घट सर्वव्यापी अछि, अस्तित्ववान होएबाक कारणे।')

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—पृथिवी आदि सकर्तृक अछि, कार्य होयबाक कारणें, घट जकाँ—एहि अनुमान सँ ईश्वरक सिद्धि होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ईश्वरानुमान: तत्त्वचिन्तामणि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—घट-जकाँ दृष्टान्तक विषयमे सेहो परस्पर-विरोधी अनुमान सम्भव अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ईश्वरानुमान: तत्त्वचिन्तामणि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—कारण, तखन केवल ईश्वर-कर्तृक मानल जाएवला जन्य पदार्थ—आत्माक जन्य विशेषगुण, शब्द, फूत्कार, सृष्टिक आरम्भकालीन वेद, घट आदि आ लिपि-जकाँ व्यवहार-संकेत—पक्षमे समाहित नहि भऽ सकत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ईश्वरानुमान: तत्त्वचिन्तामणि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एहन रूप मानलासँ घट-दृष्टान्तमे साध्य नहि रहत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ईहो कहल जा सकैत अछि—घट आदिक उपादान-कारणविषयक अपरोक्ष ज्ञान आदि पृथिवीतत्त्वक जनक नहि भऽ सकैत अछि, कारण ओकर कारणत्वमे व्यभिचार अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—ईहो नहि कहल जाए जे 'उपादान-कारण' सम्बन्धसूचक पद अछि, तें 'पृथिवीतत्त्व' आ 'घट' आदि विशेष पदक संग जुड़ि ई क्रमशः तत्तत् विशिष्ट उपादान-कारणकेँ बोध करबैत अछि—जेना 'चैत्र अपन मायीक भक्त अछि, मैत्र जकाँ'। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सकर्तृकत्वकेँ पृथिवी आदिक उपादान-कारणविषयक ज्ञान, प्रयत्न आदि केर विषयता सेहो नहि मानल गेल अछि; कारण एहन धर्म सिद्ध नहि अछि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—घट आदि दृष्टान्तमे ई धर्म अनुपस्थित अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पक्ष आ साध्यक रूपक खण्डन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—विशिष्ट घट आदिक उपादान-कारणमे कोनो अनुगत रूप नहि अछि, जकर बोध "घट" आदि अननुगत विशेष शब्द द्वारा हो। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तर्कक खण्डन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—ईहो नहि कहल जा सकैत अछि जे "घट" आदि विशेष शब्द सामान्यतः केवल अपन अभिधेय अर्थक निर्देश करैत अछि, तें साध्यव्याप्तिक अभाव-दोष दूर भऽ जाएत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तर्कक खण्डन)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—१६. आब प्राच्य मतावलम्बी एना प्रस्ताव राखि सकैत छथि—ईश्वरानुमानक स्वरूप ई अछि: "सृष्टिक आरम्भकालीन दू परमाणुक संयोग अर्थात् द्व्यणुक, ज्ञान, इच्छा आ प्रयत्नक समकालीन समस्त कारण-सामग्री सँ उत्पन्न होयबाक योग्य अछि; किएक तँ ओ कार्य अछि, घट जकाँ। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ईश्वरानुमानक स्वरूप)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—१८. किछु विद्वान् ईश्वरानुमानक वैकल्पिक स्वरूप एना प्रस्तुत करैत छथि—"ई घट, एहि घटक उत्पादक अनित्य ज्ञान, इच्छा आ प्रयत्न सँ भिन्न ज्ञान आदि द्वारा उत्पन्न होयबाक योग्य अछि; किएक तँ ई कार्य अछि, पट जकाँ। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ईश्वरानुमानक वैकल्पिक स्वरूप)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—अन्यथा नित्य धर्म-अधर्मक आश्रय तथा सुख-दुःखक नित्य आश्रयक सिद्धिक प्रसङ्ग सेहो निम्न अनुमान सभ सँ उपस्थित भऽ जाएत—"ई घट, एहि घटक उत्पादक अनित्य अदृष्ट सँ भिन्न नित्य अदृष्ट द्वारा उत्पन्न होयबाक योग्य अछि; किएक तँ ई कार्य अछि, पट जकाँ। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक

कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ईश्वरानुमानक वैकल्पिक स्वरूप)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—प्रस्तावित वैकल्पिक अनुमान प्रतिपक्षी अनुमानक कारणें सेहो दोषपूर्ण अछि—“ई घट, एहि घटक उत्पादक अनित्य ज्ञान आदि सँ भिन्न नित्य ज्ञान आदि द्वारा उत्पन्न होयबाक योग्य नहि अछि; किएक तँ एहि मे घटत्व अछि, दोसर घट जकाँ। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ईश्वरानुमानक वैकल्पिक स्वरूप)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—विशेषण कखनो अव्यावर्तक सेहो भऽ सकैत अछि—जेना “घट ज्ञेय अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उत्तर: साध्यक स्वरूप)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—घट-जकाँ दृष्टान्तमे साध्यक व्याप्तियुक्त निश्चित हेतुक वृत्ति पृथिवीरूपी पक्ष आ अंकुररूपी पक्षसम—दुनूमे भेटैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उत्तर: साध्यक स्वरूप)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—जलप्रपात आदिसँ पैघ समुद्र आदि केवल घट-जकाँ सपक्ष अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्तिक खण्डन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—ई अनुमान नहि कएल जाए—“घट आत्मारहित अछि, जन्य होयबाक कारणें, ज्ञान जकाँ। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्तिक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—ई अनुमान सेहो अप्रयोजक अछि—“घट आकाश सँ उत्पन्न होयबाक योग्य अछि, उत्पत्तिमान होयबाक कारणें, शब्द जकाँ। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्तिक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—अतः आत्मा सेहो प्रयत्न जकाँ घट आदिक कारण अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नहि, ई आपत्ति उचित नहि। प्रयत्नवान आत्माक संग भौतिक द्रव्य सभक संयोग, क्रियाक माध्यम सँ, प्रयत्न जकाँ घटक कारण अछि। अतः आत्मा सेहो प्रयत्न जकाँ घट आदिक कारण अछि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—पुनश्च, घट-जकाँ प्रवृत्तिविषयक प्रत्यक्ष ज्ञानक कारणत्वक भाँति एहन अनुमिति अथवा दोसर कोनो अनुमितिक कारणत्व ज्ञात नहि अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—आत्मासँ भौतिक द्रव्यक संयोग कार्यक कारण नहि अछि; कारण, आत्मसंयोगक अभाव भेला पर क्रियाक अभाव होइत अछि—ई व्यतिरेक सिद्ध नहि अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—अन्यथा, कारण-सामग्री विद्यमान रहला पर पहिनहि उत्पन्न घट फेरसँ उत्पन्न भऽ जाएत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपर्युक्त खण्डन सँ ई कथन सेहो निरस्त भऽ जाइत अछि—"प्रयत्न केवल शरीरक व्यापारक माध्यम सँ जनक अछि; अपनहि बल पर प्रत्यक्ष रूप सँ ओकर जनकत्व नहि अछि।")

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—ई नहि कहल जाए जे घट-जकाँ कार्यक विद्यमानता ओकर पुनरुत्पादनमे प्रतिबन्धक अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपर्युक्त खण्डन सँ ई कथन सेहो निरस्त भऽ जाइत अछि—"प्रयत्न केवल शरीरक व्यापारक माध्यम सँ जनक अछि; अपनहि बल पर प्रत्यक्ष रूप सँ ओकर जनकत्व नहि अछि।")

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—पहिल विकल्पमे, जँ कर्ता शरीर बिना घट-जकाँ विशिष्ट कार्य उत्पन्न नहि करैत अछि, तँ सामान्यतः कर्ताद्वारा घटादि कार्यक उत्पादन मानलासँ कोन लाभ? सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्तिक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—नव्य-नैयायिकक उत्तर ई अछि—मानि ली जे जन्यत्व आ शरीरजन्यत्व दुनू सकर्तृकत्व द्वारा व्याप्त अछि, किएक तँ घट जकाँ ओ दुनू कर्तृजन्यत्वक अवच्छेदक अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्य-नैयायिकक उत्तर ई अछि—मानि ली जे जन्यत्व आ शरीरजन्यत्व दुनू सकर्तृकत्व द्वारा व्याप्त अछि, किएक तँ घट जकाँ ओ दुनू कर्तृजन्यत्वक अवच्छेदक अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—घट जकाँ जे धर्म साध्यक व्यापक नहि, सेहो जन्यत्वक अवच्छेदक भऽ सकैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्य-नैयायिकक उत्तर ई अछि—मानि ली जे जन्यत्व आ शरीरजन्यत्व दुनू सकर्तृकत्व द्वारा व्याप्त अछि, किएक तँ घट जकाँ ओ दुनू कर्तृजन्यत्वक अवच्छेदक अछि।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“ज्ञेय घट अछि”—एहि वाक्य जकाँ एतय आकस्मिक विशेषणयुक्त ज्ञान मात्र पक्षरूपें अभिप्रेत होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अदृष्टक माध्यम सँ उत्पन्न अनित्य ज्ञानद्वारा अनुत्पन्न होयबाक धर्म ईश्वरानुमानक हेतु नहि भऽ सकैत अछि। कारण “जन्यत्व” विशेषण ज्ञानमे अव्यावर्तक अछि; अतः ओ व्यर्थ अछि।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—कारण ई अनुमिति अशरीरी आत्मामे कर्तृत्वविषयक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि; नित्य ज्ञान, इच्छा आ प्रयत्नविषयक ज्ञानपर आश्रित अछि; आ शरीरजन्य नहि होयवला वस्तुमे सकर्तृकत्वविषयक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि—जेना “घट कर्ता अछि”, “घटक ज्ञान नित्य अछि” आ “आकाश सकर्तृक अछि” जकाँ ज्ञान। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्यक मत: शरीरजन्यत्व अवच्छेदक नहि अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—आब धरू जे “घट ईश्वरकर्तृक अछि, कार्य होयबाक कारणें, पृथिवी जकाँ”—एहन अनुमानसँ ईश्वरकर्तृत्व सिद्ध कएल जाए। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: केचित् विद्वानक मत)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—घट पृथिवी जकाँ अछि आ पृथिवी घट जकाँ; फलतः ईश्वरानन्तत्वक प्रसङ्ग उपस्थित होयत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: केचित् विद्वानक मत)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—अशरीरी ईश्वर “वेद” आ “घट” आदि शब्दक व्यवहार-संकेत कोना स्थापित कऽ सकैत छथि? शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—अशरीरी ईश्वर “वेद” आ “घट” आदि शब्दक व्यवहार-संकेत कोना स्थापित कऽ सकैत छथि?)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अतः प्राचीन मत ई अछि जे ऋषिसभक शरीर-रचनाकेँ आधार बना कऽ वेदक ओही परम्परा “घट” आदि शब्दक व्यवहार-परम्परा स्थापित करैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—अशरीरी ईश्वर “वेद” आ “घट” आदि शब्दक व्यवहार-संकेत कोना स्थापित कऽ सकैत छथि?)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—११३. आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—जँ शब्दशक्ति ईश्वरक ज्ञान द्वारा ग्रहण कएल जाइत अछि, तँ प्रयोज्य व्यवहारसँ अनुमानित घटज्ञानक विषयमे “घट” शब्दक कारणत्वज्ञान भ्रम होयत; कारण ईश्वरक ज्ञान केवल नित्य अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—अशरीरी ईश्वर “वेद” आ “घट” आदि शब्दक व्यवहार-संकेत कोना स्थापित कऽ सकैत छथि?)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—फलतः घटादि सभ शाब्दज्ञान भ्रम होयत, किएक तँ “घट” आदि शब्दक शक्ति-विषयक ज्ञान एहन शब्दकारणत्वसँ उत्पन्न मानल जाइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—अशरीरी ईश्वर “वेद” आ “घट” आदि शब्दक व्यवहार-संकेत कोना स्थापित कऽ सकैत छथि?)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“प्रयोजकक व्यवहारसँ अनुमानित ई घटज्ञान ‘घट’ शब्दक शक्तिज्ञानक कारण अछि”—ई ज्ञान भ्रम होइतो, “घट शब्द घटक बोधक अछि” ई शब्दशक्तिज्ञान विषयविरोधक अभावक कारण यथार्थ अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—अशरीरी ईश्वर “वेद” आ “घट” आदि शब्दक व्यवहार-संकेत कोना स्थापित कऽ सकैत छथि?)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—११४. एही कारण, सूत्रधारक डोरिसँ चलाओल काठक पुतरीकेँ “घट आनू” जकाँ शब्द सुनलाक बाद घट अनबाक क्रिया करैत देखिकऽ बालक घटक ज्ञानमे “घट” शब्दक कारणत्व बुझैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रुति आ स्मृति प्रमाण अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—अतः एहन शब्दकारणत्वज्ञानसँ उत्पन्न “घट” शब्दक शक्तिज्ञान भ्रम नहि अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रुति आ स्मृति प्रमाण अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जँ एहन शक्तिज्ञान भ्रम होइत, तँ प्रयोजकक “घट” शब्दक व्यवहारसँ शब्दकारणत्वक ज्ञान उत्पन्न नहि होइत; कारण बालकक मनमे ई संशय दृढ़ भऽ जाएत जे ई कारणत्व चेतन व्यक्तिक व्यवहारसँ ज्ञात भेल वा अचेतन काठक पुतरीक व्यवहारसँ। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रुति आ स्मृति प्रमाण अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—ईहो नहि कहल जा सकैत अछि जे “ई श्याम घट छल” एहन दशामे श्याम घटक ध्वंससँ उत्पन्न केवल पक्व घटक ध्वंस रहैत अछि, मुदा सामान्य घटरूपें ओही पक्व घटक ध्वंस नहि रहैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—केवल पुरुष अर्थात् कुम्हारक अभावक व्यवहार, विशेषण आदिक अभावक कारण मात्र सिद्ध होइत अछि, किएक तँ ओ अभाव एकमात्र शक्तिसँ युक्त अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जँ वर्तमान विशेष्य मात्रक ध्वंस अतीत विशेषणमे रहए, तँ घट-जकाँ विशेष्यक ध्वंस वर्तमानमे रहबाक प्रसङ्ग उठत; कारण ओही घट अतीत विशेषण—अर्थात् अतीत क्षण—सँ अवच्छिन्न अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—केवल पुरुष अर्थात् कुम्हारक अभावक व्यवहार, विशेषण आदिक अभावक कारण मात्र सिद्ध होइत अछि, किएक तँ ओ अभाव एकमात्र शक्तिसँ युक्त अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—ई ठीक ओहि प्रकार अछि, जेना घटक उपस्थिति आ अनुपस्थितिक कारण क्रमशः "घट अछि" आ "घट नहि अछि" एहन व्यवहार होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—उदाहरणार्थ, "भूमि घटक सम्बन्ध नहि रखैत अछि" एहि वाक्यमे घट आ भूमिक सम्बन्ध आरोपित नहि होइत; केवल घटत्वरूपी तादात्म्ये आरोपित होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—"भूमि घट नहि अछि" एहि वाक्यमे भूमि घटत्वाभावयुक्त बुझल जाइत अछि; अतः केवल घटत्वे घटक तादात्म्य बनबैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—"ई घट एहि भूमिपर नहि अछि" आ "ई घट भूमि नहि अछि" जकाँ अबाधित तथा परस्पर-भिन्न व्यवहार स्वयं प्रमाण अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आरोपक कारणत्वक प्रमाण)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—"घट अपन कपार-दुनूमे नहि अछि" एहन प्रागभावज्ञान, अपन वृत्तिक भिन्नताक कारण कारणत्वक विशेषता रखैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मुदा “घट भूमिपर नहि अछि” एहन अत्यन्ताभावज्ञानमे कारणत्वक एहन विशिष्टता नहि अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—१४३. किछु अन्य विद्वान् एना मानैत छथि—“घट उत्पन्न होयत” आ “घट नष्ट भऽ गेल” एहन भिन्न-भिन्न ज्ञान केवल एकहि अत्यन्ताभावसँ उचित नहि ठहरैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—जँ संस्कार सभ फलकेँ केवल संस्काररूपेँ अनुकूल हो, तँ कोनो एक विशिष्टता उपस्थित रहितो फल उत्पन्न भऽ सकैत अछि—जेना घूमैत दण्डक प्रयोगसँ घट उत्पन्न होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जेना भविष्यक घट नष्ट करबाक लेल हथौड़ा प्राप्त करबाक प्रवृत्ति देखल जाइत अछि, तहिना भविष्यक दुःखक विनाश लेल ओहि दुःखकेँ प्राप्त करबाक प्रवृत्तियो आवश्यक होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एना तर्क कएल जा सकैत अछि—एहि प्रकार ओही दुःखक विनाश लेल दुःखकेँ सेहो प्राप्त करब आवश्यक होयत; कारण दुःख उत्पन्न भेल बिना ओकर विनाश उत्पन्न नहि भऽ सकैत अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—प्रयत्न नष्ट भऽ गेलोपरि घट विद्यमान रहैत अछि; अतः प्रागभावस्वरूपमे “भविष्यकालमे” ई विशेषण जोड़ब आवश्यक अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—जे वस्तु प्रयत्न बिना साध्य नहि हो, केवल ओही प्रयत्नसाध्य होइत अछि; मुदा कार्यक प्रागभावक स्वरूप एहन नहि अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—एहि कारण घट जकाँ ओ प्रागभाव प्रयत्नसाध्य अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राभाकर मीमांसक मानैत छथि—अनन्त दुःखक प्रागभावे मुक्ति अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—कारण घटाभाव आ भूतलक बीच सम्बन्धक ज्ञान उत्पन्न नहि होइत अछि; घट आ भूतलक प्रत्यक्ष तथा भूतलपर घटक यथार्थ अस्तित्वक बोधसँ ई सम्बन्धज्ञान बाधित भऽ जाइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: हेतुक व्यभिचारक आक्षेप)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—“घट” मे “त” वर्ण एहन प्रागभावक प्रतियोगी अछि, जे “घ” वर्णोच्चारणक समय रहैत अछि; तें वर्णसभ उत्पत्तिमान् बुझाइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: किछु विद्वानक मतक खण्डन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“घट” आ “पट” जकाँ वर्णक्रमक ज्ञान मानसिक अछि; तें वर्ण स्वयं उत्पत्तिमान् मानब आवश्यक नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: किछु विद्वानक मतक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“घट जानैत अछि, घट चाहैत अछि, घट बनबैत अछि” तीनूमे विषय एके घट अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गुरुसभक मत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“घट आनू” सुनि प्रेरित वृद्धक प्रवृत्ति देखनिहार बालक पहिले केवल “घट आनबाक कार्य”क ज्ञान केँ प्रवृत्तिक कारण अनुमान करैत अछि; “कार्यसँ अन्वित सामान्य अर्थक ज्ञान” नामक अतिरिक्त सामान्य ज्ञानक अनुमान नहि करैत। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकसभक अन्तिम सिद्धान्त)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—बादमे “घट”, द्वितीया-विभक्ति, “आन”, विधिलिङ् आदि पदसभक अन्वय-व्यतिरेक देखिकऽ क्रमशः घट, कर्मत्व, आनयनक्रिया आ कार्यताक बोधक शक्ति ग्रहण करैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकसभक अन्तिम सिद्धान्त)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—विशेष “घट आनू” वाक्य सुनिकऽ विशेष घटानयनप्रवृत्ति देखल जाइत अछि; अतः विशेष वाक्य आ विशेष ज्ञानक कारणता साक्षात् ग्रहण भऽ सकैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गुरुमतक प्रतिवादक खण्डन)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—उदाहरणार्थ “घटम् आनय” मे “घटम्” घट आ कर्मत्वक बोध करबैत अछि, “आनय” आनयनक्रियाक; एहि अर्थसभक सम्बन्ध पदक्रम, आकाङ्क्षा आ तात्पर्यसँ बुझायल जाइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: शब्दशक्ति आन सम्बन्धमे नहि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—. आक्षेप हो सकैत अछि—जँ शब्द केवल व्यक्तिविशेष वा अर्थविशेषक बोधक अछि, तँ “घट” शब्दक ज्ञान सँ घटक सामान्य ज्ञान आ विशेष घटज्ञानक नियमन कोना होएत? जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—अतः “घट” आदि पदार्थक ज्ञान उत्पन्न करनिहार शक्ति ओही पदार्थमे मानल जाए। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राभाकरसभक एक वर्गक मत)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—“घट” शब्द बिना सङ्केत अपन घट-शब्दरूप व्यक्त करैत अछि; विभक्ति ओहि शब्दस्वरूपसँ सम्बन्धित होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सङ्केत आवश्यक नहि—एक मत)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—हम उत्तर दैत छी—“नील घट आनू” सदृश प्रयोगमे केवल आकाङ्क्षा आ पदक्रम नीलत्व आ घटक विशेषण-विशेष्यसम्बन्धक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि; विशेषणक विभक्ति कारण नहि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशेषणक विभक्ति केवल साधुत्व लेल)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—अतः “राजपुरुषम्” अथवा “नीलघटम्” समस्तपदमे राजा-संबद्ध पुरुष अथवा नील घट व्यक्त करबाक अतिरिक्त अखण्ड शक्ति मानबाक आवश्यकता नहि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशेषणक विभक्ति केवल साधुत्व लेल)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“अघटः पटः”—“ई घट नहि, पट अछि”—मे नञ् पद निषेध अथवा प्रसज्यप्रतिषेध व्यक्त करैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नञ्-समासक विश्लेषण)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“न पचति”—“ओ नहि पकबैत अछि” आ “भूतले न घटः”—“भूमिपर घट नहि अछि”—मे नञ् पद धातु वा संज्ञासँ जुड़िकऽ मुख्यतः अभाव व्यक्त करैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नञ्-समासक विश्लेषण)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—“दुइ घट छथि” अथवा “बहुत घट छथि” मे “घट” पद सार्वत्रिक शक्तिसँ अनेक घटव्यक्ति स्मरण करबैत अछि; द्विवचन वा बहुवचन प्रत्यय ओहि अनेक व्यक्तिसभसँ सम्बन्धित होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: द्वन्द्वसमासमे लक्षणा आवश्यक)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—जेना “घट” शब्द घटक बोध करबैत अछि, “धारित घटसँ भिन्न घट” एहन अतिरिक्त बोध नहि; तहिना धव-खदिरक अर्थसभ द्वित्वसँ सीधे जुड़ैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: लक्षणा आवश्यक नहि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“दू घट आ एक कपड़ा आनू” मे द्वित्व घटसभसँ जुड़ैत अछि, कपड़ासँ नहि; कारण कपड़ा द्विवचनवला प्रातिपदिकक अर्थ नहि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: समूहगत लक्षणा आवश्यक नहि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“दू घट” वा “बहुत घट” मे “घट” पद सार्वत्रिक शक्तिसँ अनेक घटव्यक्ति व्यक्त करैत अछि; द्वित्व-बहुत्व ओहि व्यक्तिसभसँ जुड़ैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: समुच्चयमे द्वन्द्व अनुपपन्न)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—आपत्ति उठैत अछि—घट आ अङ्कुरक विषयमे “बनाओल गेल” आ “नहि बनाओल गेल”क व्यवहार क्रमशः यत्नजन्यता आ अयत्नजन्यतासँ होइत अछि; आ “कर्ता” शब्द यत्नक आश्रय व्यक्त करैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भाट्टसभक मत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—कथन “ओ घट केँ जनैत अछि”क बाद “घट ज्ञात अछि कि नहि?” एहन संशय सम्भव अछि; ई देखबैत अछि जे ज्ञाता स्वयं उत्पादकता मात्र नहि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: रत्नकोशकारक मत)

अध्याय १३१ — साझा थारी

दाहशक्ति-सिद्धान्त

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—मीमांसक मानैत छथि जे अग्निमे 'दाहशक्ति' (जरेबाक एकटा अदृश्य क्षमता) होइत अछि, जकरा मणि नष्ट वा बाधित कऽ दैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: दाहशक्ति-सिद्धान्त (कारण आ कार्यक सिद्धान्त))

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—जखन अग्निक लग 'चन्द्रकान्त मणि' राखल जाइत अछि, तँ ओ मणि अग्निक ओहि दाहशक्तिकेँ नष्ट कऽ दैत अछि, जाहिसँ हाथमे दाहानुभूति नहि होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दाहशक्ति-सिद्धान्त (शक्तिवाद): कारणता आ अभावक यथार्थवाद)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—एकर व्याख्या एना कएल जा सकैत अछि—हाथ आ अग्निक संयोगसँ दाहानुभूति उत्पन्न होइत देखल जाइत अछि; मुदा ओही संयोगमे मणि-जकाँ प्रतिबन्धक उपस्थित रहला पर दाहानुभूति उत्पन्न नहि होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—कारण “जतय एहि दुनूमे सँ एकक अभाव अछि, ओतय विशिष्ट मणि नहि अछि; आ जतय विशिष्ट मणि अछि, ओतय एहि दुनूमे सँ कोनो एकक अभाव नहि अछि”—ई सह-अनुपस्थितिक नियम अनुभवसँ सिद्ध अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“केवल पुरुषक अभाव”क व्यवहार अनुगत अछि; कारण एकाकीपन आ पुरुषक सम्बन्धाभाव केवल दण्ड उपस्थित रहला पर, दण्ड आ पुरुष दुनू उपस्थित रहला पर, तथा दुनूक अभावमे रहैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—संस्कारक क्रिया कुटनक अनुकूल होइत अछि, जेना धान स्वयं कुटनक अनुकूल होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—तखन कोनो एक धान नष्ट भेला पर ओहि एक विशिष्टताक विनाश अनिवार्य नहि होयत; कारण कोनो एक आश्रयक विनाश कार्यक विनाशक नहि होइत—जेना वृक्षक प्रसङ्गमे। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—१७६. आब एहन आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—जँ संस्कारित धान अदृष्ट उत्पन्न करैत अछि, तँ यज्ञकुश जकाँ ओकर आन कोनो उपयोग नहि भऽ सकैत अछि; कारण एक बेर प्रयुक्त वस्तुक फेर प्रयोग शास्त्रविरुद्ध अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उदाहरणार्थ, “संस्कारित कुश बिछबैत अछि” आ “संस्कारित कुशपर यज्ञीय चाउर राखैत अछि” जकाँ विधानमे केवल संस्कारित यज्ञकुशे प्रयुक्त होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

अध्याय १३२ — रसोइक गणराज्य

किछु विद्वान् एना प्रस्ताव करैत छथि—जाहि द

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—दोसर विकल्पमे सकारात्मक तृण, काष्ठ आ मणिक अभावसभक अभावरूपें पर्यवसित नहि भऽ सकत; अन्यथा एकहि तृणकेँ काष्ठ आ मणि सेहो मानब पड़त। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: किछु विद्वान् एना प्रस्ताव करैत छथि—जाहि दशामे कारणताक ज्ञान करयवला साधन उपलब्ध नहि अछि, ओहि दशामे व्यभिचार मात्र कारणताज्ञानक बाधक होइत अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“ओ धान कुटैत अछि” एहन श्रुतिवाक्य तखन सेहो संगत अछि जखन केवल असंस्कारित धान कुटनक्रियासँ सम्बन्धित हो। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: किछु विद्वान् एना प्रस्ताव करैत छथि—जाहि दशामे कारणताक ज्ञान करयवला साधन उपलब्ध नहि अछि, ओहि दशामे व्यभिचार मात्र कारणताज्ञानक बाधक होइत अछि।)

अध्याय १३३ — विदेह नाट्य उत्सवक बुलाहट

गङ्गेशक खण्डन आ प्रतिबन्धकाभाव क स्थापना

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—गङ्गेश एकर उत्तर दैत छथि जे "केवल अविशिष्ट पुरुषक अभावमे उत्पत्ति आ विनाश दुनू होइत अछि... एही प्रकार समान नियमक कारण उत्तेजक तत्त्व राखबाक आ हटेबाक क्रममे मणि-जकाँ प्रतिबन्धकक अभाव सेहो स्वीकार करब आवश्यक अछि"। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक खण्डन आ 'प्रतिबन्धकाभाव' क स्थापना)

अध्याय १३४ — कबड्डी खेलनिहार सभक नाट्य-पाठ

मोक्षक परिभाषा: विभिन्न दार्शनिक मतक खण्डन

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—गङ्गेश कहैत छथि जे दुःखसाधन (जेना काँट वा सर्प) क विनाश अपनहि प्रयोजन नहि अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मोक्षक परिभाषा: विभिन्न दार्शनिक मतक खण्डन)

अध्याय १३५ — विदेह नाट्य उत्सवक मंचन

आपत्ति: मङ्गलाचरण अङ्ग नहि भऽ सकैत अछि

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“घर वा रथक आधार-काँटी टूटलापर लोहतक बोल्ट लगाओल जाय” आ “ब्राह्मणकेँ दूधमे पकाओल भोजन कराओल जाय”—एहि उदाहरणसभमे बोल्ट लगेनाइ आ ब्राह्मण-भोजन मुख्य कर्मक अङ्ग नहि, अपितु निमित्त उपस्थित भेलापर कएल जायवला स्वतन्त्र नैमित्तिक कर्म अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति: मङ्गलाचरण अङ्ग नहि भऽ सकैत अछि)

अध्याय १३६ — तालीक बादक सन्नाटा

नव्यक मत: प्रतिबन्धकाभाव कारण नहि अछि

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अन्यथा चक्रसँ संयुक्त दण्ड घूमैत रहला पर सहकारी कारणक अभावसँ कार्य नहि भेलाक कारण ओ दण्ड अपन कारणत्व गमा देत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्यक मत: प्रतिबन्धकाभाव कारण नहि अछि)

अध्याय १३७ — दर्शकक गवाही

फेर एना प्रतिआपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—जखन

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—अतः धान आ जौ जकाँ, जे यज्ञमे वैकल्पिक साधन होइत अछि, ज्ञान आ कर्मो मोक्षक वैकल्पिक कारण मानल जाए। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक

पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: फेर एना प्रतिआपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—जखन विशिष्ट कर्म सभ अननुगत अछि, तखन मोक्ष अनुगत कोना होइत अछि?)

अध्याय १३८ — मंचसँ बाहरक जुलूस

गवयक पहिचान

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—जेना कोनो व्यक्ति कँ बताएल गेल जे "गवय (नीलगाय) गाय जकाँ होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। (दार्शनिक सिद्धान्त: उपमान प्रमाण)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—" जखन ओ जंगलमे गाय जकाँ पशु देखैत अछि, तँ सादृश्यक आधारपर ओ बुझि जाइत अछि जे "ई गवय अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल। (दार्शनिक सिद्धान्त: उपमान प्रमाण)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—एहिमे मुख्य रूप सँ जङ्गली गाय (गवय) आ सामान्य गायक प्रसिद्ध उदाहरण सँ उपमानक चर्चा कएल गेल अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ई खण्ड न्याय दर्शनक तेसर प्रमाण 'उपमान' (तुलना वा सादृश्यज्ञान) सँ सम्बन्धित अछि। एहिमे मुख्य रूप सँ जङ्गली गाय (गवय) आ सामान्य गायक प्रसिद्ध उदाहरण सँ उपमानक चर्चा कएल गेल अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—उपदेश: जखन कोनो व्यक्ति 'गवय' नहि देखने रहैत अछि, तँ कोनो जानकार व्यक्ति ओकरा बताबैत छथि जे "जे गायक समान होइत अछि, सँ गवय अछि"। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ई खण्ड न्याय दर्शनक तेसर प्रमाण 'उपमान' (तुलना वा सादृश्यज्ञान) सँ सम्बन्धित अछि। एहिमे मुख्य रूप सँ जङ्गली गाय (गवय) आ सामान्य गायक प्रसिद्ध उदाहरण सँ उपमानक चर्चा कएल गेल अछि।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—उपमिति (निष्कर्ष): तकर बाद ओ निश्चय करैत अछि जे "ई पशु 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि"। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य

सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ई खण्ड न्याय दर्शनक तेसर प्रमाण 'उपमान' (तुलना वा सादृश्यज्ञान) सँ सम्बन्धित अछि। एहिमे मुख्य रूप सँ जङ्गली गाय (गवय) आ सामान्य गायक प्रसिद्ध उदाहरण सँ उपमानक चर्चा कएल गेल अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जेना, गवय (जङ्गली गाय)मे गाय जकाँ बहुत रास सामान्य गुण रहब। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ई खण्ड न्याय दर्शनक तेसर प्रमाण 'उपमान' (तुलना वा सादृश्यज्ञान) सँ सम्बन्धित अछि। एहिमे मुख्य रूप सँ जङ्गली गाय (गवय) आ सामान्य गायक प्रसिद्ध उदाहरण सँ उपमानक चर्चा कएल गेल अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जेना गवय (जङ्गली गाय)मे गाय जकाँ सींग, खुर, आ आकारक जे साझा गुण अछि, ओही सँ हमरा सादृश्यक बोध भऽ जाइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ई खण्ड न्याय दर्शनक तेसर प्रमाण 'उपमान' (तुलना वा सादृश्यज्ञान) सँ सम्बन्धित अछि। एहिमे मुख्य रूप सँ जङ्गली गाय (गवय) आ सामान्य गायक प्रसिद्ध उदाहरण सँ उपमानक चर्चा कएल गेल अछि।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—जङ्गलमे पशुक गायक संग समानता देखलापर आ “जे गायक समान अछि, सँ गवय अछि” ई उपदेश स्मरण भेलापर उपमान-प्रक्रियासँ “ई पशु गवय अछि” एहन नव निश्चय उत्पन्न होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ई खण्ड न्याय दर्शनक तेसर प्रमाण 'उपमान' (तुलना वा सादृश्यज्ञान) सँ सम्बन्धित अछि। एहिमे मुख्य रूप सँ जङ्गली गाय (गवय) आ सामान्य गायक प्रसिद्ध उदाहरण सँ उपमानक चर्चा कएल गेल अछि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—जखन व्यक्ति जङ्गलमे ओहि पशुकेँ देखैत अछि आ उपदेश स्मरण करैत अछि, तखन ओ ई निश्चय करैत अछि जे "ई पशु 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि"। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ई खण्ड न्याय दर्शनक तेसर प्रमाण 'उपमान' (तुलना वा सादृश्यज्ञान) सँ सम्बन्धित अछि। एहिमे मुख्य रूप सँ जङ्गली गाय (गवय) आ सामान्य गायक प्रसिद्ध उदाहरण सँ उपमानक चर्चा कएल गेल अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—व्यक्ति ई बुझि जाइत अछि जे 'गवय' शब्दक प्रयोग कोनो विशिष्ट कारण (गवयत्व) सँ ओहि पशुक लेल कएल जाइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ई खण्ड न्याय दर्शनक तेसर प्रमाण 'उपमान' (तुलना वा सादृश्यज्ञान) सँ सम्बन्धित अछि। एहिमे मुख्य रूप सँ जङ्गली गाय (गवय) आ सामान्य गायक प्रसिद्ध उदाहरण सँ उपमानक चर्चा कएल गेल अछि।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—केवल प्रत्यक्ष नहि: जँ ई निश्चय केवल पशुक प्रत्यक्ष (आँखिसँ देखबा) सँ उत्पन्न होइत, तँ जे व्यक्ति पहिनेसँ उपदेशवाक्य ("गवय गायक समान अछि") नहि सुनने अछि, ओकरा सेहो ई पशु देखि कऽ 'गवय' शब्दक ज्ञान भऽ जएतहुँ, मुदा एना नहि होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ई खण्ड न्याय दर्शनक तेसर प्रमाण 'उपमान' (तुलना वा सादृश्यज्ञान) सँ सम्बन्धित अछि। एहिमे मुख्य रूप सँ जङ्गली गाय (गवय) आ सामान्य गायक प्रसिद्ध उदाहरण सँ उपमानक चर्चा कएल गेल अछि।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—उपदेश: ओकर शिक्षक ओकरा बताबैत छथि जे, "जेबरा बिल्कुल घोड़ा जकाँ देखाइत अछि, मुदा ओकर देहपर कारी आ उज्जर रङ्गक धारी होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—प्रत्यक्ष आ स्मरण: किछु दिनक बाद ओ बच्चा चिड़ियाघर जाइत अछि आ ओतय धारीदार घोड़ा जकाँ एकटा जानवर देखैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मानि लिअ जे कोनो व्यक्ति सकारात्मकक बदला नकारात्मक उपदेश दैत अछि, जेना: "जे पशु गायक समान नहि अछि, सँ गवय नहि अछि"। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—ग्रन्थक अनुसार, "जे पशु गायक समान नहि, सँ गवय नहि" जकाँ निषेधात्मक (नकारात्मक) उपदेशवाक्य सेहो नव शब्दक अर्थ बुझबामे (सादृश्यज्ञानमे) पूर्ण रूपें सहायक होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—उपमितिफल (अन्तिम निष्कर्ष): प्राचीन नैयायिक (जेना जयन्त भट्ट) मानैत छलाह जे उपमानक फल केवल ई बुझब अछि जे "ई पशु गवय अछि"। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मुदा गङ्गेशक अनुसार, उपमानक वास्तविक फल ई निश्चय करब अछि जे 'गवय' शब्दक शक्ति (वाच्यार्थ) 'गवयत्व' (जाति)मे अछि, केवल एकटा विशिष्ट पशुमे नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—१. प्राचीन नैयायिक (जेना जयन्त भट्ट) क मत: हुनकर मानब छल जे जखन व्यक्ति जङ्गलमे ओ पशु देखैत छी, तँ व्यक्तिक निष्कर्ष होइत अछि—"ई (सामने ठाढ़) पशु 'गवय' शब्दक अर्थ अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—२. गङ्गेश उपाध्याय (नव्य-न्याय) क खण्डन आ मत: गङ्गेश तर्क दैत छथि जे जँ 'गवय' शब्दक अर्थ केवल ओही एकटा पशु धरि सीमित रहि जाए, तँ काल्हि जँ जङ्गलमे कोनो दोसर गवय देखा जाए, तँ व्यक्ति ओकरा क कहब? जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—अतः गङ्गेशक अनुसार, उपमानक वास्तविक फल (उपमिति) ई निश्चय करब अछि जे 'गवय' शब्दक शक्ति (वाच्यार्थ) कोनो एकटा पशुमे नहि, अपितु 'गवयत्व' (जाति वा सामान्य धर्म)मे अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—सरल शब्दमे: व्यक्ति केवल एकटा जानवरक नाम नहि सिखैत छी, अपितु व्यक्ति ई बुझि जाइत छी जे जतय-जतय 'गवयत्व' (गवय होमयबाक लक्षण) रहत, ओ सभ पशु 'गवय' कहाएत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—एही लेल गङ्गेश मानैत छथि जे 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ कोनो एक विशिष्ट पशु नहि, अपितु 'गवयत्व' (जाति) अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—एहि आधार पर, व्यक्ति जखन व्यक्ति जङ्गलमे ओहि पशुकेँ देखि कऽ 'गवय' शब्दक अर्थ बुझैत अछि, तँ क ओकरा पहिने सँ ई "व्याप्ति-ज्ञान" रहैत अछि जे "जे-जे गायक समान होइत अछि, सँ-सँ गवय शब्दक अर्थ होइत अछि", वा ओ उपदेश सुनि कऽ प्रत्यक्ष देखलाक बाद सीधे तुलना करैत अछि? दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—ओ व्यक्ति पशुकेँ देखलाक बाद आ उपदेश स्मरण करलाक बाद ई निष्कर्षपर पहुँचैत अछि जे "ई पशु 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि" आ ई वाच्यार्थ कोनो एकटा पशु धरि सीमित नहि रहि कऽ सम्पूर्ण 'गवयत्व' (जाति)मे अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अर्थात्, ओ बुझि जाइत अछि जे जङ्गलमे देखल गेल ओहि विशिष्ट पशुपर 'गवय' शब्दक प्रयोग कएल जाइत अछि आ ओकर वाच्यार्थ 'गवयत्व' (जाति) अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—जँ कोनो व्यक्ति जङ्गलमे जा कऽ केवल ओहि पशुकेँ देखैत अछि (आ ओकरा पहिनेसँ कोनो उपदेश नहि भेटल अछि), तँ क ओ केवल आँखिसँ देखि कऽ ई बुझि सकैत अछि जे एहि पशुक नाम 'गवय' अछि? विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—गवयकेँ देखि “गवय” शब्दक अर्थ बुझबामे एहन व्याप्तिज्ञान आवश्यक नहि; उपदेशवाक्यक स्मरण आ प्रत्यक्ष सादृश्यज्ञान शब्दार्थसम्बन्धक बोध करबैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—प्रत्यक्ष सँ भिन्न: केवल आँखि सँ जङ्गली पशुकेँ देखला सँ ओकर नाम 'गवय' अछि वा ओ 'गवय' शब्दक अर्थ अछि, ई ज्ञान नहि भऽ सकैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—एकर सुप्रसिद्ध आ पारम्परिक उदाहरण अछि—'गवय' (नीलगाय जकाँ एकटा जङ्गली पशु)। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सादृश्य-विचार: उपमानक तात्विक आधार)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—जखन कोनो नगरवासी व्यक्ति, जे गवयकेँ नहि जनैत अछि, कोनो आरण्यक (वनवासी) सँ पूछैत अछि जे "गवय कोना होइत अछि?", तखन

आरण्यक उत्तर दैत अछि—"गवय गायक समान होइत अछि" (गोसदृशो गवयः)। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सादृश्य-विचार: उपमानक तात्विक आधार)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—पछाति जखन ओ व्यक्ति वनमे जा कऽ गायक समान आकृतिवला पशुकेँ देखैत अछि, तखन ओकरा ई निश्चयात्मक ज्ञान होइत अछि जे "ई पशु 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि"। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सादृश्य-विचार: उपमानक तात्विक आधार)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—मीमांसकक (विशेषतः भट्ट मीमांसकक) मतमे उपमान ओ प्रमाण अछि जे "गायक समान ई पशु गवय शब्दक वाच्यार्थ अछि" एहन सादृश्यविषयक यथार्थ निश्चयात्मक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सादृश्य-विचार: उपमानक तात्विक आधार)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—तें स्मृत गायमे गवय-सादृश्यक जे ज्ञान होइत अछि, सँ 'उपमान' प्रमाणसँ होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सादृश्य-विचार: उपमानक तात्विक आधार)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"गायक समान पशु गवय अछि" एहन अबाधित सादृश्य-व्यवहारसँ ओकर अस्तित्व सिद्ध होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सादृश्य-विचार: उपमानक तात्विक आधार)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एही कारण, गाय जकाँ प्रतियोगी दूर रहलापर (अर्थात् वनमे केवल गवय देखला पर) समस्त गायमे अनुगत सामान्य धर्मक ज्ञान नहि होयबासँ सादृश्यक पूर्ण व्यवहार उत्पन्न नहि होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: कुमारिल भट्टक मत: सामान्य समष्टि सिद्धान्त)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—तखन केवल "गवय गायसँ समान अछि" एहन अनुपयुक्त प्रयोग संगत होयत; "गवय गायक समान अछि" एहन यथार्थ प्रयोग नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक

मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रभाकर मीमांसकक मत: तद्धर्मवत्त्वक सिद्धान्त)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—तखन "गवय गाय अछि" एहन तादात्म्यज्ञान जकाँ सादृश्यक ज्ञान केवल तत्ताज्ञान होयत; "गवय गायक समान अछि" एहन अतादात्म्यज्ञान नहि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रभाकर मीमांसकक मत: तद्धर्मवत्त्वक सिद्धान्त)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—गोत्वधारी गाय जकाँ गवयो तत्ताक आश्रय होयबाक कारण गायसँ अभिन्न भऽ जाएत, जखन कि प्रत्यक्ष भेद देखबैत अछि जे गवय गाय नहि अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रभाकर मीमांसकक मत: तद्धर्मवत्त्वक सिद्धान्त)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—गङ्गेश कहैत छथि जे सादृश्यकेँ सात पदार्थमे अन्तर्भूत मानल जाए तँ "गवय गायक समान अछि" एहन व्यवहार असंगत भऽ जाएत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रभाकर मीमांसकक मत: तद्धर्मवत्त्वक सिद्धान्त)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—एही कारण ज्ञान होइत अछि—"ई गवय गायक समान अछि, मुदा गाय नहि अछि"। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राच्य नैयायिकक सिद्धान्त)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जरन्नैयायिक जयन्त भट्टक मत ई अछि—जखन कोनो जिज्ञासु पूछैत अछि, "गवय कोना देखाइत अछि?", तखन आरण्यक (वनवासी) उत्तर दैत अछि—"गवय गायक समान अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जरन्नैयायिक (जयन्त भट्ट) क मत)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—" पछाति ओ व्यक्ति वनमे जा कऽ गाय-जकाँ पशु देखैत अछि, उपदेशवाक्यक अर्थ स्मरण करैत अछि ("ई गवय गायक समान अछि") आ निश्चय करैत अछि—"

ई गवय 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जरन्नैयायिक (जयन्त भट्ट) क मत)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—" जयन्त भट्ट 'गवय' शब्दक वाच्यार्थविषयक एही निश्चयात्मक ज्ञानकेँ उपमानक फल अर्थात् उपमिति कहैत छथि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जरन्नैयायिक (जयन्त भट्ट) क मत)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—गङ्गेश स्पष्ट करैत छथि जे 'गवय' शब्दक शक्ति केवल कोनो विशिष्ट गवय-व्यक्तिमे सीमित कऽ मानल नहि जा सकैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक क्रान्तिकारी सिद्धान्त: शक्तिग्रह आ उपमिति)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—साधारण लोक केवल सींग आदिक प्रत्यक्षसँ, क्रमबद्ध वाच्यतावच्छेदक अर्थात् गवयत्व ज्ञात नहि रहला पर, गाय-जकाँ पशुकेँ गवय मानिकऽ 'गवय' शब्दक शक्ति नहि जानि सकैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक क्रान्तिकारी सिद्धान्त: शक्तिग्रह आ उपमिति)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—मुदा 'गवय' शब्दक शक्ति एहन आन गवयमे सेहो रहैत अछि, जे कहियो प्रत्यक्ष नहि कएल गेल अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक क्रान्तिकारी सिद्धान्त: शक्तिग्रह आ उपमिति)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—अतः, 'गवय' आदि शब्दक शक्ति 'गवयत्व' जकाँ सामान्य धर्म मे अछि, जे सादृश्यद्वारा उपलक्षित अछि—जेना 'पृथ्वी' शब्दक शक्ति पृथिवीत्वमे अछि, जे गन्धादिसँ उपलक्षित होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक क्रान्तिकारी सिद्धान्त—शक्तिग्रह आ उपमिति; निष्कर्षतः "गवय" शब्दक शक्ति गवयत्वमे अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उपमितिक अन्तिम फल ई ज्ञान अछि जे "'गवयत्व' विशिष्ट ई पशु 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि"। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ

निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक क्रान्तिकारी सिद्धान्त: शक्तिग्रह आ उपमिति)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जँ केवल गायक सादृश्यकेँ 'गवय' शब्दक अर्थ मानल जाए, तँ जे पशु गायक सादृश्यसँ नहि ज्ञात अछि (मुदा आन प्रमाणसँ गवय अछि), सँ शब्दव्यवहारक विषय नहि रहत, आ एहन कल्पनामे 'गौरव' दोष अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक क्रान्तिकारी सिद्धान्त: शक्तिग्रह आ उपमिति)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—ई नहि कहल जाए जे 'गवय' शब्दे गवयत्वकेँ ज्ञात करबैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक क्रान्तिकारी सिद्धान्त: शक्तिग्रह आ उपमिति)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—'गवय' शब्दक शक्ति जानबाक लेल गवयत्वज्ञान आवश्यक अछि, आ गवयत्व जानबाक लेल शब्दशक्तिज्ञान—एना अन्योन्याश्रय-दोष उपस्थित होयत। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक क्रान्तिकारी सिद्धान्त: शक्तिग्रह आ उपमिति)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—सादृश्य आ गवयत्व दुनूकेँ संयुक्त कारण मानल जाए तँ 'गवय' शब्दक अर्थ अपनहि जानबाक लेल उपदेशवाक्यक प्रयोग निष्फल भऽ जाएत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक क्रान्तिकारी सिद्धान्त: शक्तिग्रह आ उपमिति)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—व्यक्ति 'गवय' शब्दक शक्ति केवल गवयत्वमे जानैत अछि, गायक सादृश्यमे नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक क्रान्तिकारी सिद्धान्त: शक्तिग्रह आ उपमिति)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उपदेशवाक्य ("गवय गायक समान अछि") 'गवय' शब्दक गवय अर्थमे शक्ति विशिष्ट रूपें ज्ञात होयबासँ पहिने, वाच्यतावच्छेदक अर्थात् प्रवृत्तिनिमित्तक

विशिष्ट ज्ञान सीधे उत्पन्न नहि करैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपदेशवाक्यक भूमिका आ स्मरण)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—केवल समानाधिकरण्यसँ "गायक समान गवय 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि" एहन सम्बन्धज्ञान सम्भव अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपदेशवाक्यक भूमिका आ स्मरण)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—किछु दार्शनिक प्रस्ताव करैत छथि जे "गवय गायक समान अछि" एहि पदसमूहमे 'समान' शब्दक लक्षणा गायक सादृश्ययुक्त पशुमे आवश्यक अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: लक्षणा आ अनुमानक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—ओ कहैत छथि जे विश्वसनीय वृद्ध, 'गवय' शब्दक शक्ति जानय चाहयवला व्यक्तिकेँ "गायक समान पशु गवय अछि" ई उपदेश दैत छथि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: लक्षणा आ अनुमानक खण्डन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—वक्ताक तात्पर्य गायक सादृश्यकेँ 'गवय' शब्दक वाच्यतावच्छेदक बनबैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: लक्षणा आ अनुमानक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—शब्दशक्तिक सम्पूर्ण कारण-सामग्रीसँ 'गवय' शब्दक विशिष्ट संकेतक ज्ञान अनिवार्य रूपें उत्पन्न होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: लक्षणा आ अनुमानक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—किछु नैयायिक वा मीमांसक आपत्ति करैत छथि जे व्यतिरेकी अनुमान सँ ई शक्ति सिद्ध भऽ सकैत अछि: "'गवय' शब्दक प्रयोगक कोनो कारण अछि; गवयत्वसँ भिन्न आन कोनो कारण नहि"। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष,

साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: लक्षणा आ अनुमानक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—ई व्याप्तिज्ञानपर आधारित नहि; अतः 'गवय' शब्दक वाच्यार्थता व्यतिरेकी अनुमानसँ सिद्ध नहि भऽ सकैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: लक्षणा आ अनुमानक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—उपमानक प्रासङ्गिकता केवल 'गवय' सन पशु धरि सीमित नहि अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सर्वनाम-शक्ति आ उपमानक व्यापक क्षेत्र)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—एही प्रकार 'गवय' शब्दक शक्ति एक गवय-व्यक्तिमे मानिकऽ आन गवय-व्यक्तिसभकेँ रूढ़िसँ अर्थ मानल जा सकैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सर्वनाम-शक्ति आ उपमानक व्यापक क्षेत्र)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—सर्वनामक शक्ति गवय-जकाँ विशिष्ट अर्थमे तखने पर्यवसित होइत अछि, जखन ओ अर्थ विशिष्ट ज्ञानक विषय रूपें ज्ञात होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सर्वनाम-शक्ति आ उपमानक व्यापक क्षेत्र)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—गङ्गेशक अनुसार—"गवय 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि—एहन निश्चयात्मक उपमितिज्ञानक करण होयबाक अवस्था उपमानक लक्षण अछि"। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशद्वारा प्रस्तुत उपमान आ उपमितिक अन्तिम लक्षण—"गवय 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि" एहन निश्चयात्मक उपमितिज्ञानक करण होयबाक अवस्था उपमानक लक्षण अछि।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—गङ्गेश उपमितिक विविध परिष्कृत लक्षण दैत छथि, जाहिसँ कोनो दोष (अतिव्याप्ति, अव्याप्ति वा असम्भव) नहि रहए: १. प्रथम लक्षण: 'गवय' शब्दक प्रयोगकारण गवयत्व अथवा 'गदहा' शब्दक प्रयोगकारण गदहात्व—जे सादृश्य वा विसादृश्य-जकाँ सामान्य धर्मसभक समान आश्रयमे रहैत

अछि—तकर ज्ञान 'उपमिति' अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशद्वारा प्रस्तुत उपमान आ उपमितिक अन्तिम लक्षण)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—२. वैकल्पिक लक्षण: अज्ञातशक्तिवाला 'गवय' जकाँ शब्दक वाक्यार्थक समानाधिकरणताद्वारा अवच्छिन्न शब्दप्रयोगकारण—गवयत्व—क विशेषणताज्ञान उपमितिफल अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशद्वारा प्रस्तुत उपमान आ उपमितिक अन्तिम लक्षण)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—गङ्गेश ई अन्तिम लक्षण एहि परम्परागत नियमक अनुसार दैत छथि जे 'गवय' शब्दक व्यवहारजन्य शक्तिज्ञान प्राप्त भेलाक बादे उपमानसँ गवयत्वादिक विशेष निश्चय उत्पन्न होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशद्वारा प्रस्तुत उपमान आ उपमितिक अन्तिम लक्षण)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एही प्रकार गवयक ज्ञानक संग सामान्य गो-सादृश्यक आभास भऽ सकैत अछि, मुदा “गवय गाय-जकाँ अछि” ई विशिष्ट सादृश्यज्ञान गायकेँ जानलापर निर्भर अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ह्रस्वत्व-दीर्घत्व आ सादृश्यक उदाहरण)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—उपमानसँ बाधित हेतु—जेना, ‘गोवयत्व “गवय” शब्दक प्रयोगक कारण नहि अछि, जाति होएबाक कारणे। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमानसँ बाधित हेतु—जेना, ‘गोवयत्व “गवय” शब्दक प्रयोगक कारण नहि अछि, जाति होएबाक कारणे।’)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—२. किछु मीमांसक कहैत छथि—उपमानक प्रसङ्गमे जे ज्ञानसाधन “गायक समान ई पशु गवय शब्दक वाच्यार्थ अछि” एहन सादृश्यविषयक यथार्थ निश्चयात्मक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि, सँ उपमान प्रमाण अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकमत: सादृश्यज्ञानक कारण उपमान अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—एतय ई ध्यान देबाक अछि जे उपमानसँ प्राप्त निश्चयात्मक ज्ञान “गायक समान ई पशु गवय शब्दक वाच्यार्थ अछि” ई होइत अछि; “गवय, गवय शब्दक वाच्यार्थ अछि” ई नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकमत: सादृश्यज्ञानक कारण उपमान अछि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“गायक समान पशु गवय अछि” एहन अबाधित सादृश्यव्यवहारसँ ओकर अस्तित्व सिद्ध होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकमत: सादृश्यज्ञानक कारण उपमान अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—तखन केवल “गवय गायसँ समान अछि” एहन अनुपयुक्त प्रयोग संगत होयत; “गवय गायक समान अछि” एहन यथार्थ प्रयोग नहि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—एना तर्क कएल जा सकैत अछि—सादृश्यक प्रतियोगी रहैत अछि; अतः “गवय गायसँ समान अछि” एहन प्रयोग अनिवार्य होयत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एना तर्क कएल जा सकैत अछि—सादृश्यक प्रतियोगी रहैत अछि; अतः “गवय गायसँ समान अछि” एहन प्रयोग अनिवार्य होयत।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—तखन “गवय गाय अछि” एहन तादात्म्यज्ञान जकाँ सादृश्यक ज्ञान केवल तत्ताज्ञान होयत; “गवय गायक समान अछि” एहन अतादात्म्यज्ञान नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एना तर्क कएल जा सकैत अछि—सादृश्यक प्रतियोगी रहैत अछि; अतः “गवय गायसँ समान अछि” एहन प्रयोग अनिवार्य होयत।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—सादृश्यकेँ सात पदार्थमे अन्तर्भूत मानल जाए तँ “गवय गायक समान अछि” एहन व्यवहार असंगत भऽ जाएत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: ई आपत्ति उचित नहि। सादृश्यकेँ सात पदार्थमे अन्तर्भूत मानल जाए तँ "गवय गायक समान अछि" एहन व्यवहार असंगत भऽ जाएत। अतः सादृश्य सात पदार्थसँ बाहर मानब आवश्यक अछि।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—भेद, दीर्घता आदिमे जकाँ सीमाबद्धता प्रतियोगित्व नहि बनबैत अछि; अन्यथा "गवय गायसँ समान अछि" एहन प्रयोगक प्रसङ्ग उठत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राच्य नैयायिक कहैत छथि—सम्बन्धीमे विद्यमान, असाधारण जातिधर्मसभसँ भिन्न, अनेक सामान्य धर्म धारण करबाक अवस्था सम्बन्धीद्वारा निरूपित सादृश्य अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—एही कारण ज्ञान होइत अछि—"ई गवय गायक समान अछि, मुदा गाय नहि अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एना आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—अनेक सामान्य धर्म धारण करबाक अवस्था अर्थात् तद्धर्मवत्त्व आ सादृश्य एक-दोसरमे मिलि जाएत।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—आपत्ति कएल जा सकैत अछि—जँ सादृश्य अनेक सामान्य धर्मक अवस्था अछि, तँ केवल "गवय सींग आदिसँ युक्त अछि" एहन समुच्चयज्ञान होयत; "गवय गायक समान अछि" एहन सादृश्यज्ञान नहि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति कएल जा सकैत अछि—जँ सादृश्य अनेक सामान्य धर्मक अवस्था अछि, तँ केवल "गवय सींग आदिसँ युक्त अछि" एहन समुच्चयज्ञान होयत; "गवय गायक समान अछि" एहन सादृश्यज्ञान नहि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—मुदा एना मानलासँ "गवय गायक समान अछि" तथा "गवय महिषक समान अछि" एहि ज्ञानमे, गवयमे गायक अपेक्षित शुद्धता वा दुग्धदायित्व आदिक सादृश्य नहि रहला पर, गायक प्रति विसादृश्य सेहो मानब पड़त। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एना आपत्ति कएल जा सकैत अछि—'विसदृश' शब्दमे 'वि' उपसर्ग निषेधक अछि; अतः विसादृश्य केवल सादृश्याभाव अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—अन्यथा जँ गायक सादृश्य 'गवय' शब्दक अर्थक अवच्छेदक हो, तँ महिषमे सेहो अतिव्याप्ति होयत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: एकदेशी कहैत छथि—सम्बन्धीमे विद्यमान अनेक सामान्य धर्म धारण करब सादृश्य अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“गवय गायक समान अछि” जकाँ तुलना-वाक्य तादात्म्य नहि, भेदक बोध करबैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “गवय गायक समान अछि” जकाँ तुलना-वाक्य तादात्म्य नहि, भेदक बोध करबैत अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—४२. “गाय एहि गवयक समान अछि, कारण गाय गवयमे विद्यमान सींगादि सामान्य धर्म धारण करैत अछि—जेना आन गवय” एहन अनुमान उचित नहि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गवयमे गायक सादृश्य गायमे गवयसादृश्यक हेतु नहि भऽ सकैत अछि; कारण पूर्व व्याप्तिज्ञान बिना ओ साध्य सिद्ध नहि होइत अछि।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—“गवय गायक समान अछि, मुदा गाय गवयक समान नहि” एना कहल नहि जा सकैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गवयमे गायक सादृश्य गायमे गवयसादृश्यक हेतु नहि भऽ सकैत अछि; कारण पूर्व व्याप्तिज्ञान बिना ओ साध्य सिद्ध नहि होइत अछि।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“गवय गायक समान अछि” एहन उपमितिफल सामान्य व्याप्तिज्ञान बिना प्राप्त नहि भऽ सकैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकमतक खण्डन)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—५२. जरन्नैयायिक जयन्तक मत ई अछि—जखन जिज्ञासु पूछैत अछि, “गवय कोना देखाइत अछि?”, तखन उत्तर भेटैत अछि—“गवय गायक समान अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जरन्नैयायिकक उपमिति-सिद्धान्त)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—” पछाति ओ व्यक्ति गाय-जकाँ पशु देखैत अछि, उपदेशवाक्यक अर्थ स्मरण करैत अछि—“ई गवय गायक समान अछि”—आ निश्चय करैत अछि—“ई गवय ‘गवय’ शब्दक वाच्यार्थ अछि। जखन

शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जरन्नैयायिकक उपमिति-सिद्धान्त)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—५३. ई नहि कहल जाए जे “ई गवय ‘गवय’ शब्दक वाच्यार्थ अछि” एहन निश्चय केवल उपदेशवाक्यसँ उत्पन्न होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जरन्नैयायिकक उपमिति-सिद्धान्त)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—५४. जँ उपदेशवाक्यक वस्तुज्ञान आ पशुप्रत्यक्ष, स्मरणक माध्यमे “गवय ‘गवय’ शब्दक वाच्यार्थ अछि” एहन उपमितिक सहायक मानल जाए, तँ गवयमे ‘गवय’ शब्दक शक्तिक विशेषता सिद्ध नहि भऽ सकत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जरन्नैयायिकक उपमिति-सिद्धान्त)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—साधारण लोक केवल सींग आदिक प्रत्यक्षसँ, क्रमबद्ध वाच्यतावच्छेदक अर्थात् गवयत्व ज्ञात नहि रहला पर, गाय-जकाँ पशुकेँ गवय मानिकऽ ‘गवय’ शब्दक शक्ति नहि जानि सकैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: साधारण लोक केवल सींग आदिक प्रत्यक्षसँ, क्रमबद्ध वाच्यतावच्छेदक अर्थात् गवयत्व ज्ञात नहि रहला पर, गाय-जकाँ पशुकेँ गवय मानिकऽ ‘गवय’ शब्दक शक्ति नहि जानि सकैत अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—५८. ई नहि कहल जाए जे अनुमानादि दोसर प्रमाणसँ ज्ञात अप्रत्यक्ष गवयमे विद्वानक परिभाषाद्वारा ‘गवय’ शब्दक शक्ति जानल जा सकैत अछि—जेना ‘आकाश’ शब्दक शक्ति। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: साधारण लोक केवल सींग आदिक प्रत्यक्षसँ, क्रमबद्ध वाच्यतावच्छेदक अर्थात् गवयत्व ज्ञात नहि रहला पर, गाय-जकाँ पशुकेँ गवय मानिकऽ ‘गवय’ शब्दक शक्ति नहि जानि सकैत अछि।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—ई नहि कहल जाए जे वाक्यार्थक पूर्वज्ञानसँ “गायक समान गवयमे ‘गवय’ शब्दक वाच्यार्थ उत्पन्न होइत अछि” एना निर्णायक रूपें गवयमे शब्दशक्ति ज्ञात भऽ जाइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण,

बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ई नहि कहल जाए जे वाक्यार्थक पूर्वज्ञानसँ "गायक समान गवयमे 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ उत्पन्न होइत अछि" एना निर्णायक रूपें गवयमे शब्दशक्ति ज्ञात भऽ जाइत अछि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—६४. आपत्ति कएल जा सकैत अछि—गवयत्व 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ ज्ञात भेलापर, लाघवक तर्कसँ गायक सादृश्य उपलक्षण निश्चित कऽ, "गवय 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि" एहन सम्बन्धज्ञान उत्पन्न होइत अछि—जेना "गाम गङ्गापर अछि" वाक्यक ज्ञान। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दोसर प्रमाणसँ आनल अर्थ फेर जानब आवश्यक नहि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—केवल समानाधिकरण्यसँ "गायक समान गवय 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि" एहन सम्बन्धज्ञान सम्भव अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दोसर प्रमाणसँ आनल अर्थ फेर जानब आवश्यक नहि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—६६. आपत्ति कएल जा सकैत अछि—"गायक समान गवय" एहि पदसमूहमे 'समान' शब्दक लक्षणा गायक सादृश्ययुक्त पशुमे आवश्यक अछि; कारण केवल पशुमे वक्ताक तात्पर्य सम्भव नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "गाम गङ्गापर अछि" जकाँ लक्षणावाला वाक्यमे व्यक्त 'गङ्गा' अर्थ गामसँ सीधे सम्बन्धित होयब योग्य नहि; अतः तीर-जकाँ दोसर अर्थक लक्षणा मानब उचित अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—मुदा विश्वसनीय वृद्ध, 'गवय' शब्दक शक्ति जानय चाहयवला व्यक्तिकेँ "गायक समान पशु गवय अछि" ई उपदेश दैत छथि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "गाम गङ्गापर अछि" जकाँ लक्षणावाला वाक्यमे व्यक्त 'गङ्गा' अर्थ गामसँ सीधे सम्बन्धित होयब योग्य नहि; अतः तीर-जकाँ दोसर अर्थक लक्षणा मानब उचित अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—उपमानमे 'गवय' शब्दक संकेत ज्ञात करयवला एहन प्रत्यक्ष वक्तृतात्पर्य उपलब्ध नहि; अन्यथा उपमानक सिद्धि आ तात्पर्यज्ञान परस्पर-

आश्रित भऽ जाएत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमानक स्वरूप तात्पर्य मात्र नहि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जतय वक्ताक तात्पर्य ‘गवय’ शब्दक प्रयोगकारण—गवयत्व—केँ वाच्यतावच्छेदकरूपें सीधे ज्ञात नहि करबैत अछि, ओतय “जे गायक समान अछि, सँ ‘गवय’ शब्दक वाच्यार्थ अछि” ई उपमानवाक्य केवल तथ्य बतबैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि —“विद्वान् लोक ‘गवय’ शब्दक प्रयोग पशुविशेष लेल करैत छथि” ई सामान्य अनुमान स्वीकार कएलोपरि, लाघवक कारण गवयत्वविशिष्ट गवय ‘गवय’ शब्दक वाच्यार्थ ठहरैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पृथक प्रमाण—उपमान—आवश्यक अछि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—७४. प्रस्ताव कएल जा सकैत अछि—अनुमानसँ वाच्यार्थता ज्ञात होइत अछि: “गवय” शब्द गवयत्वविशिष्ट गवयकेँ बतबैत अछि, कारण विश्वसनीय वृद्ध लोक आन अर्थाभावमे एहि शब्दक प्रयोग करैत छथि—जेना ‘गाय’ शब्द गायक अर्थमे। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पृथक प्रमाण—उपमान—आवश्यक अछि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—७६. फेर कहल जा सकैत अछि—“‘गवय’ शब्द कोनो धर्मक कारणेँ प्रयुक्त होइत अछि, आ गवयत्वसँ भिन्न धर्म कारण नहि”—ई सामान्यतोदृष्ट अनुमान तर्कक सहायतासँ सिद्ध होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—७९. आपत्ति कएल जा सकैत अछि—“गवय गायक समान अछि” ई उपदेशवाक्य व्याप्तिज्ञान करबय लेल अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—"जे गायक समान अछि, सँ 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि" ई व्याप्ति जानयवला व्यक्ति तत्काल अनुमान करैत अछि—"ई गाय-जकाँ पशु 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मुदा जे व्यक्ति गवयकेँ गायक समान जानैत अछि, सँ वृद्धसँ "गायक समान गवय शब्दक अर्थ क?" नहि पूछैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—जे 'गवय' शब्दक अर्थ जानैत अछि, सँ पूछैत अछि—"गवय कोना देखाइत अछि?" लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—८०. प्रस्ताव कएल जा सकैत अछि—"गवय गायक समान अछि" ई वाक्य गवयक लक्षण बतबय लेल अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—प्रश्नक अभिप्राय होइत अछि—"गवयक कोन लक्षण अछि?" उत्तर—"गायक समान गवय 'गवय' शब्दक वाच्यार्थ अछि"—अर्थात् गाय-जकाँ पशुकेँ गवय कहल जाए। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—मुदा एना मानलासँ जे पशु गायक समान नहि—जेना हाथी—सँ गवय नहि कहल जाएत। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—८१. "गवय कोना देखाइत अछि?" ई प्रश्न "गवयक कोन लक्षण अछि?"क समान नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य,

हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपदेशवाक्य प्रश्नक उत्तर मात्र नहि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उत्तर सामान्य सेहो भऽ सकैत अछि—“वनमे गेलापर गवय देखब। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपदेशवाक्य प्रश्नक उत्तर मात्र नहि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—८२. “गवय कोना अछि?” आ “‘गवय’ शब्द कोन कारणसँ प्रयुक्त होइत अछि?”—ई प्रश्न शब्दप्रयोगक विशिष्ट कारण जानबाक लेल पूछल जाइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष: प्रवृत्तिनिमित्तविशेषक निश्चय उपमितिफल अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—पशु देखलाक बाद, उपदेशवाक्य स्मरण करयवला व्यक्तिमे तर्कक सहायतासँ ई विशिष्ट ज्ञान उत्पन्न होइत अछि—“गवयत्वविशिष्ट ई पशु ‘गवय’ शब्दक वाच्यार्थ अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष: प्रवृत्तिनिमित्तविशेषक निश्चय उपमितिफल अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—८३. आपत्ति कएल जा सकैत अछि—“‘गवय’ शब्दक प्रयोगक कोनो कारण अछि; गवयत्वसँ भिन्न आन कोनो कारण नहि”—एहन व्यतिरेकी हेतु आ कल्पनागौरवरूपी तर्कसँ गवयत्वक प्रवृत्तिनिमित्तता ज्ञात होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष: प्रवृत्तिनिमित्तविशेषक निश्चय उपमितिफल अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—उत्तर ई अछि—“‘गवय’ शब्दक प्रयोगक कारण गवयत्व अछि” आ “गवयत्वसँ भिन्न कोनो धर्म प्रयोगकारण नहि”—ई दुनू ज्ञान उपमानहि सँ, गौरवतर्कक सहायतासँ, उत्पन्न होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष: प्रवृत्तिनिमित्तविशेषक निश्चय उपमितिफल अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—तहिना “‘गवय’ शब्दक कोनो प्रयोगकारण अछि, मुदा गवयत्वसँ भिन्न नहि” एतबा जानलोपरि “गवयत्वे कारण अछि” ई विशिष्ट ज्ञान असिद्ध रहैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति कएल जा सकैत अछि—शब्दप्रयोगक कोनो धर्म कारण अछि—एहन प्रमाण आ कल्पनागौरवक सहायतासँ गवयत्व शब्दप्रयोगक कारण सिद्ध होइत अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—सर्वनामक शक्ति गवय-जकाँ विशिष्ट अर्थमे तखने पर्यवसित होइत अछि, जखन ओ अर्थ विशिष्ट ज्ञानक विषय रूपें ज्ञात होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपर्युक्त मत उचित नहि। ज्ञानविषयत्व-जकाँ उपलक्षण, जे घटत्व आदिमे समान रूपें रहैत अछि, सर्वनाम तथा आन शब्दक शक्ति विशिष्ट अर्थमे ग्रहण करबामे उपमानक सहायता करैत अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—‘गवय’ शब्दक प्रयोगकारण गवयत्व अथवा ‘गदहा’ शब्दक प्रयोगकारण गदहात्व—जे सादृश्य वा विसादृश्य-जकाँ सामान्य धर्मसभक समान आश्रयमे रहैत अछि—तकर ज्ञान उपमिति अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ‘गवय’ शब्दक प्रयोगकारण गवयत्व अथवा ‘गदहा’ शब्दक प्रयोगकारण गदहात्व—जे सादृश्य वा विसादृश्य-जकाँ सामान्य धर्मसभक समान आश्रयमे रहैत अछि—तकर ज्ञान उपमिति अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—वैकल्पिक रूप सँ, अज्ञातशक्तिवाला ‘गवय’ जकाँ शब्दक वाक्यार्थक समानाधिकरणताद्वारा अवच्छिन्न शब्दप्रयोगकारण—गवयत्व—क विशेषणताज्ञान उपमितिफल अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: वैकल्पिक रूप सँ, अज्ञातशक्तिवाला ‘गवय’ जकाँ शब्दक वाक्यार्थक समानाधिकरणताद्वारा अवच्छिन्न शब्दप्रयोगकारण—गवयत्व—क विशेषणताज्ञान उपमितिफल अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—९५. “जे पशु गायक समान नहि, सँ गवय नहि” एहि निषेधात्मक उपदेशवाक्यमे वक्ताक तात्पर्य अप्रत्यक्ष रूपें केवल गवयक गायक सादृश्यमे रहैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

अध्याय १३९ — बाटक रंगमंच

गदहा

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—गङ्गेश एकटा क्रान्तिकारी आ व्यावहारिक उदाहरण दैत छथि—"बालहाथी आ गदहा"। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशद्वारा भट्ट-मतक खण्डन आ तार्किक विसङ्गति)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—बालहाथी आ गदहामे अवयव, गुण वा कर्मक कोनो साक्षात् समष्टि नहि अछि, दुनूक शारीरिक गठन सर्वथा भिन्न अछि, तथापि साधारणतः लोक कहैत अछि जे "ई गदहा बालहाथीक समान खाइत अछि"। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशद्वारा भट्ट-मतक खण्डन आ तार्किक विसङ्गति)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—गङ्गेश एकटा सजीव उदाहरण दैत छथि: उत्तरक व्यक्ति दक्षिणक जिज्ञासुकेँ उत्तर दिशामे जाएबाक मार्ग बतबैत कहैत अछि—"अत्यन्त लम्बा गरदनि, लम्बा हिलैत ठोर, कठोर कोमल टहनी खायवला, जूँसँ भरल देह आ पशुसभमे नीच गदहा धिक्कारयोग्य अछि"। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशद्वारा प्राचीन मतक खण्डन आ गदहाक दृष्टान्त)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—दक्षिणक व्यक्ति ई उपदेश सुनि उत्तर दिशामे जा कऽ ओहि प्रकारक पशु देखैत अछि आ निश्चय करैत अछि—"ई पशु गदहा अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशद्वारा प्राचीन मतक खण्डन आ गदहाक दृष्टान्त)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—तथापि एहन पशु देखयवला आ वाक्यार्थ स्मरण करयवला व्यक्ति "ई गदहा 'गदहा' शब्दक वाच्यार्थ अछि" एहन ज्ञान प्राप्त करैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: लक्षणा आ अनुमानक खण्डन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—पूर्णतः असमान बालहाथी आ गदहा आदिमे सेहो सादृश्यक ज्ञान होइत अछि; उदाहरणार्थ, “ई गदहा बालहाथीक समान खाइत अछि” एहन ज्ञान सामान्यतः उत्पन्न होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे

सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भट्टसभक उपर्युक्त मत उचित नहि। समान अवयव आदिसँ रहित गुण, कर्म आ सामान्यक प्रसङ्गमे सेहो सादृश्यक ज्ञान उत्पन्न होइत अछि—जेना एकहि जातिवाला दू कमलमे सादृश्यक ज्ञान।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—उत्तरक व्यक्ति दक्षिणक जिज्ञासुकेँ उत्तर दिशामे जाएबाक मार्ग बतबैत कहए—“अत्यन्त लम्बा गरदनि, लम्बा हिलैत ठोर, कठोर कोमल टहनी खायवला, जूँसँ भरल देह आ पशुसभमे नीच गदहा धिक्कारयोग्य अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जरन्नैयायिकमतक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—दक्षिणक व्यक्ति ई उपदेश सुनि उत्तर दिशामे जा कऽ ओहि प्रकारक पशु देखैत अछि आ निश्चय करैत अछि—“ई पशु गदहा अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जरन्नैयायिकमतक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—तथापि एहन पशु देखयवला आ वाक्यार्थ स्मरण करयवला व्यक्ति “ई गदहा ‘गदहा’ शब्दक वाच्यार्थ अछि” एहन ज्ञान प्राप्त करैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “अत्यन्त लम्बा गरदनिवाला गदहाकेँ धिक्कार” ई वाक्य गदहाक निन्दा लेल अछि; गदहापन रूप शब्दप्रयोगक कारण बतबय लेल नहि।)

अध्याय १४० — बाटक रंगमंच

वृक्षक देशभेद

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—ई आपत्ति सेहो नहि करबाक चाही जे “ई वृक्ष कपि-संयोगवान् अछि, कारण ई वृक्ष अछि” एहि अनुमानमे कपि-संयोगाधिकरणक अन्योन्याभाव केवल अव्याप्यवृत्ति अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशेष-लक्षणक औचित्य)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—२८. विरुद्ध हेतुकेँ केवल ‘साध्याभावसँ व्याप्त हेतु’ नहि कहल जा सकैत; कारण एहन परिभाषा निर्दोष

हेतुमे अतिव्याप्त होइत अछि—जेना ‘ई वृक्ष कपिसंयोगयुक्त अछि, वृक्षत्वक कारणे’। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मानि लिअ ‘सभ वस्तु’ अभिधेयत्वविषयक संशयमे एकमात्र पक्ष अछि। तखन ‘सभ वस्तु अभिधेय अछि, ज्ञेय होएबाक कारणे’ एहि कथनमे ज्ञेयत्व अनुपसंहारी हेतु बनत।)

अध्याय १४१ — बरामदाक फैसला

नव्य—नैयायिक मत: दू सुखमे सादृश्य

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एहि मतसँ अनुपमेय वस्तुक प्रसङ्गमे सेहो तुलना सम्भव होइत अछि—"आकाश आकाशक समान अछि", "समुद्र समुद्रक समान अछि", "राम-रावणक युद्ध राम-रावणक युद्धक समान अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्य-नैयायिक मत: दू सुखमे सादृश्य)

अध्याय १४२ — रेकर्ड-घरक अन्हार

वानरवला वृक्ष

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—समग्रबोधक सम्बन्ध मानलापर “ई पहाड़ वानर-संयोगाभाववान् अछि, कारण ई प्रमेय अछि” एहन विशिष्ट अनुमितिमे प्रमेयत्व-सामान्यक माध्यमेँ प्रमेयत्वरूप साधनद्वारा वानर-संयोगाभावरूप साध्यक सभ व्यक्तिक व्याप्ति ग्रहण करबाक लेल सर्वज्ञ बनब पड़त। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रतिआपत्तिक अस्वीकार: निर्विकल्पक विशिष्टज्ञानक कारण नहि)

अध्याय १४३ — रद्दी बोराक गवाही

एकदेशी कहैत छथि—सम्बन्धीमे विद्यमान अनेक स

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—एहि मतसँ अनुपमेय वस्तुक प्रसङ्गमे सेहो तुलना सम्भव होइत अछि—“आकाश आकाशक समान अछि”, “समुद्र समुद्रक समान अछि”, “राम-रावणक युद्ध राम-रावणक युद्धक समान अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: एकदेशी कहैत छथि—सम्बन्धीमे विद्यमान अनेक सामान्य धर्म धारण करब सादृश्य अछि।)

अध्याय १४४ — नामक यात्रा

आकाश आकाशक समान अछि जकाँ वाक्यमे आन देशक आ

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—राम-रावणयुद्धक उदाहरणमे पूर्व वा आन प्रसङ्गक युद्ध उपमान अछि, आ वर्तमान प्रसङ्गक युद्ध उपमेय। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “आकाश आकाशक समान अछि” जकाँ वाक्यमे आन देशक आकाश उपमान अछि आ वक्ताक सम्मुख आकाश उपमेय।)

अध्याय १४५ — डरक पहिल दरार

गायक शब्द

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—गङ्गेशक अनुसार, कोनो वस्तुक पूर्ण ज्ञान (जेना "ई गाय अछि") सविकल्पक प्रत्यक्ष अछि, जाहिमे विशेष्य (गाय) आ विशेषण (गोत्व) क सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: प्रत्यक्ष खण्ड - ज्ञानक प्राथमिक स्रोत आ सन्निकर्ष)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—मुदा, गङ्गेश एकटा विचार-प्रयोग प्रस्तुत करैत छथि: जखन कोनो बच्चा पहिल बेर गाय केँ देखैत अछि, तँ ओकरा मस्तिष्कमे 'गोत्व' क कोनो पूर्व-संस्कार नहि होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल। (दार्शनिक सिद्धान्त: प्रत्यक्ष खण्ड - ज्ञानक प्राथमिक स्रोत आ सन्निकर्ष)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—व्यक्ति जङ्गल जाइत अछि आ ओहि ठाम ओहन पशुकेँ देखैत अछि जकर शरीर गाय जकाँ अछि मुदा ओकर आकार-प्रकार किछु भिन्न अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमिति (निष्कर्ष): तखन ओ निश्चय करैत अछि जे, "ई हरियर सब्जी हे 'ब्रोकली' शब्दक अर्थ (वाच्यार्थ) अछि।")

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—तकर बाद, जखन मन ओहि वस्तुक विशेषण (जहिना गोत्व) केँ विशेष्य (गाय) क सङ्ग सम्बन्धित कऽ लैत अछि, तखन 'सविकल्पक ज्ञान' उत्पन्न होइत अछि ("ई गाय अछि")। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग

चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मनोऽणुत्ववाद)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—जँ गाय-जकाँ सम्बन्धीक सादृश्य गायमे अपनहि रहए, तँ गाय अपनहि समान भऽ जाएत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रभाकर मीमांसकक मत: तद्धर्मवत्त्वक सिद्धान्त)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—अतः, जँ एना सादृश्यक ज्ञान केवल तत्ताज्ञान होए, तँ गवयमे सेहो गोबुद्धि आ 'गाय' शब्दक व्यवहार होयबाक चाही। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रभाकर मीमांसकक मत: तद्धर्मवत्त्वक सिद्धान्त)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एही कारण, असमानता रहितो "मुख चन्द्रक समान अछि" एहन व्यवहार हर्षोत्पादक धर्मक कारण, आ "गाय महिषक समान अछि" एहन व्यवहार स्थूलतादिक कारण संगत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राच्य नैयायिकक सिद्धान्त)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—मुदा जखन भेदक ज्ञान उपस्थित होइत अछि, तखन सम्बन्धी—जेना गाय—सँ भिन्न गवयमे सम्बन्धीक सामान्य धर्म धारण करबाक अवस्था सादृश्य बनैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राच्य नैयायिकक सिद्धान्त)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—मीमांसकक प्रस्ताव: "गाय गवयक समान अछि" शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमितिफल आ मीमांसकक अर्थापत्ति-सिद्धान्तक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मीमांसकक प्रस्ताव अछि जे गवयमे गायक सादृश्यक प्रत्यक्ष अथवा शब्दजन्य ज्ञानसँ उत्पन्न "गाय गवयक समान अछि" एहन निश्चयात्मक ज्ञान उपमानक फल अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपमितिफल आ मीमांसकक अर्थापत्ति-सिद्धान्तक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—गङ्गेश कहैत छथि जे मीमांसक जकरा उपमानक फल कहैत छथि ("गाय गवयक समान अछि"), ओ ज्ञान वास्तवमे एकटा 'अनुमान' अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशद्वारा मीमांसक उपमितिक खण्डन)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—ओ कहैत छथि जे ई निश्चय केवल उपदेशवाक्य (शब्द प्रमाण) सँ उत्पन्न नहि होइत अछि, कारण गाय-जकाँ पशु नहि देखने व्यक्तिमे ओ ज्ञान उत्पन्न नहि होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जरन्नैयायिक (जयन्त भट्ट) क मत)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—एकदेशी कहैत छथि जे "गाय आनू" जकाँ प्रयोगमे वृद्धक व्यवहारसँ 'गाय' शब्दक शक्ति केवल व्यक्तिगत गायमे ज्ञात होइत अछि; गोत्वमे नहि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एकदेशीमतक खण्डन आ लाघव-तर्क)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—नैयायिकक अनुमान होयत—“वेद स्वतन्त्र प्रमाणज्ञ पुरुष द्वारा रचल अछि; कारण ई वाक्यार्थक यथार्थ ज्ञानसँ युक्त प्रामाणिक शब्द अछि, जहिना ‘गाय आनू’ वाक्य। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: वेदमे वक्ताक यथार्थ वाक्यार्थज्ञान गुण नहि अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अनुमान एना अछि—“ई गाय अछि” एहन विशिष्ट प्रत्यक्ष विशेषणज्ञानसँ उत्पन्न होइत अछि, कारण ओ विशिष्टज्ञान अछि, अनुमान जकाँ। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशिष्टज्ञान विशेषणज्ञानसँ उत्पन्न होइत अछि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—आपत्ति—“ई गाय अछि” एहन विशिष्ट प्रत्यक्ष विशेषणज्ञानसँ उत्पन्न होइत अछि, कारण ओ विशिष्टज्ञान अछि—एहि अनुमानमे व्यावर्त्य निर्विकल्पक ज्ञान अछि; मुदा निर्विकल्पक ज्ञानक अस्तित्व पहिने सिद्ध नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशिष्टज्ञानत्वक लक्षणपर आपत्ति)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"विशेषण-विशेष्यसम्बन्धकेँ विषय बनौनिहार ज्ञान" कहलासँ फेर ओहि सम्बन्धक ज्ञानक विशेषणता सिद्ध करबाक लेल अनवस्था होयत; "ई गाय अछि" एहन निर्विकल्पक ज्ञानमे सेहो सम्बन्धरूप विशेषणताक प्रसङ्ग उठैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशिष्टज्ञानत्वक लक्षणपर आपत्ति)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"ई गाय अछि" एहन प्रत्यक्षमे केवल गायत्व विशेषण सिद्ध करब सम्भव अछि; विशेषणताक अतिरिक्त पृथक् ज्ञान मानल जाए तँ अनवस्था उठत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशिष्टज्ञानत्वक लक्षणपर आपत्तिक शेष भाग)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—"ई गाय अछि" एहन प्रथम प्रत्यक्ष निर्विकल्पक अछि शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "ई गाय अछि" एहन प्रथम प्रत्यक्ष निर्विकल्पक अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—सिद्धान्ती कहैत छथि—जीवनमे पहिल बेर उत्पन्न "ई गाय अछि" एहन प्रत्यक्ष, गायत्वरूप विशेषणक पहिल ज्ञानसँ उत्पन्न होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "ई गाय अछि" एहन प्रथम प्रत्यक्ष निर्विकल्पक अछि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—"ई गाय अछि" ज्ञानमे गायत्वविशिष्टता प्रकट नहि सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "ई गाय अछि" ज्ञानमे गायत्वविशिष्टता प्रकट नहि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—"ई गाय अछि" एहन प्रत्यक्षमे गायत्व प्रकट होइत अछि, मुदा गायत्वक गायत्वविशिष्टता नहि; गायत्व-विशिष्ट गायत्व प्रकट मानलासँ फेर ओकर विशेषणरूप दोसर गायत्व चाही, आ अनवस्था होयत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: “ई गाय अछि” ज्ञानमे गायत्वविशिष्टता प्रकट नहि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“ई गाय अछि” ज्ञानमे गायत्वयुक्त वस्तु अगायत्ववान् वस्तुसँ पृथक् ज्ञात होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशेषण साधक आ उपयोगी अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“ई गाय अछि” पहिल ज्ञान विशेषणज्ञानजन्य पूर्ण सविकल्पक नहि; ओ केवल प्रत्यक्ष अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशेषण साधक आ उपयोगी अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—एकहि “ई गाय अछि” ज्ञान निर्विकल्पक आ सविकल्पक दुनू जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एकहि “ई गाय अछि” ज्ञान निर्विकल्पक आ सविकल्पक दुनू)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—एही प्रकार “ई गाय अछि” प्रत्यक्ष एकहि समय ज्ञानताक कोणसँ निर्विकल्पक आ गायत्वविशिष्टताक कोणसँ सविकल्पक होयब विरोधाभासी नहि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एकहि “ई गाय अछि” ज्ञान निर्विकल्पक आ सविकल्पक दुनू)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“सुन्दराकार गाय अनित्य अछि” तथा “सुन्दराकार गाय चलैत अछि” मे रूप साक्षात् सम्बन्धित रहितहुँ उपलक्षण होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: शिवादित्य मिश्रक मत—साक्षात् सम्बन्धी विशेषण)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—सविकल्पक ज्ञान विशिष्टज्ञान अछि—जेना “ई गाय अछि”। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सविकल्पक ज्ञान प्रत्यक्ष तथा प्रत्यभिज्ञारूप)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—कखनो ई सविकल्पक ज्ञान इन्द्रियजन्य विशिष्ट प्रत्यभिज्ञारूप होइत अछि—जेना “हम जानैत छी जे ई गाय ओही गाय अछि”। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू

मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सविकल्पक ज्ञान प्रत्यक्ष तथा प्रत्यभिज्ञारूप)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—संस्काररूप सहकारिकारणक सहायता सँ एतय “तत्”-विशिष्ट गाय आ “इदम्”-विशिष्ट गायमे अभेदक ज्ञान होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सविकल्पक ज्ञान प्रत्यक्ष तथा प्रत्यभिज्ञारूप)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—आपत्ति—“ई गाय अछि” एहन विशिष्ट सविकल्पक ज्ञानमे एक फल उत्पन्न करयवला एक सहकारिकारण रहि सकैत अछि; मुदा “ई ओही गाय अछि” एहन उत्तरज्ञान वा प्रत्यभिज्ञा एक ज्ञान नहि भऽ सकैत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सविकल्पक एकज्ञान अछि आ प्रत्यभिज्ञाकेँ समाहित करैत अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“हम एहि गायकेँ ओही गाय रूपेँ साक्षात् जानैत छी” एहन प्रत्यभिज्ञामे कोनो विरोध नहि अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सविकल्पक एकज्ञान अछि आ प्रत्यभिज्ञाकेँ समाहित करैत अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“गाय” शब्दक उच्चारणक प्रसङ्गमे सेहो “गाय” शब्दक वाचकशक्तिक अनुभव, ओहि शक्तिक स्मरण आ वाक्यार्थक अनुभव वा शाब्दबोध—ई सभ एके गोत्वरूप धर्मसँ विशेषित होइत कारण-कार्यभाव रखैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सामान्यलक्षणा आवश्यक नहि अछि—मीमांसकक आपत्ति)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“गाय” शब्दसँ पहिने अज्ञात गाय-व्यक्तिक शाब्दबोध योग्यता, आकाङ्क्षा आ आसत्ति आदिक कारण होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सामान्यलक्षणा आवश्यक नहि अछि—मीमांसकक आपत्ति)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—४. मीमांसक फेर कहैत छथि—“ई पशु गाय अछि” एहन विशिष्ट ज्ञानमे गाय-विशेषणक गोत्व-सामान्यसँ सम्बन्धक ज्ञान आ पशु-विशेष्यक पशुत्व-सामान्यसँ सम्बन्धक ज्ञान एक संग कारण होइत

अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रतिआपत्तिक अस्वीकार: निर्विकल्पक विशिष्टज्ञानक कारण नहि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—एही कारण, गाय जकाँ प्रतियोगी दूर रहला पर समस्त गायमे अनुगत सामान्य धर्मक ज्ञान नहि होयबासँ सादृश्यक व्यवहार उत्पन्न नहि होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भट्टमत: सादृश्य अनेक सामान्यक समष्टि अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—सम्बन्धीसँ भेद प्रत्येक आश्रयक अनुसार भिन्न अछि आ ओकर गाय-जकाँ प्रतियोगी सेहो अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जँ गाय-जकाँ सम्बन्धीक सादृश्य गायमे स्वयं रहए, तँ गाय अपनहि समान भऽ जाएत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एना तर्क कएल जा सकैत अछि—सादृश्यक प्रतियोगी रहैत अछि; अत: "गवय गायसँ समान अछि" एहन प्रयोग अनिवार्य होयत।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—गोत्वधारी गाय जकाँ गवयो तत्ताक आश्रय होयबाक कारण गायसँ अभिन्न भऽ जाएत, जखन कि प्रत्यक्ष भेद देखबैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एना तर्क कएल जा सकैत अछि—सादृश्यक प्रतियोगी रहैत अछि; अत: "गवय गायसँ समान अछि" एहन प्रयोग अनिवार्य होयत।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—एही कारण, असमानता रहितो "मुख चन्द्रक समान अछि" एहन व्यवहार हर्षोत्पादक धर्मक कारण, आ "गाय महिषक समान अछि" एहन व्यवहार स्थूलतादिक कारण संगत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष,

साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: बहुत्व अथवा अनेकता तीन-चारि वस्तुमे सामान्य होइत अछि; अतः ओकर अननुगतता उपस्थित नहि होइत अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—"वराहक पाछाँ गाय दौड़ैत अछि" एहि वाक्यमे गायक सादृश्य वराहमे कहल गेल अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: बहुत्व अथवा अनेकता तीन-चारि वस्तुमे सामान्य होइत अछि; अतः ओकर अननुगतता उपस्थित नहि होइत अछि।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मुदा जखन भेदक ज्ञान उपस्थित होइत अछि, तखन सम्बन्धी—जेना गाय—सँ भिन्न गवयमे सम्बन्धीक सामान्य धर्म धारण करबाक अवस्था सादृश्य बनैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एना आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—अनेक सामान्य धर्म धारण करबाक अवस्था अर्थात् तद्धर्मवत्त्व आ सादृश्य एक-दोसरमे मिलि जाएत।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—जँ तद्वत्त्व आ सादृश्य भिन्न अछि, तँ आन गायमे गोत्व ज्ञात भेला पर "ई पशु ओहि गायक समान अछि" एहन व्यवहार सम्भव होयत; मुदा "ई पशु सेहो गाय अछि" एहन व्यवहार नहि होयत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जँ तद्वत्त्व आ सादृश्य भिन्न अछि, तँ आन गायमे गोत्व ज्ञात भेला पर "ई पशु ओहि गायक समान अछि" एहन व्यवहार सम्भव होयत; मुदा "ई पशु सेहो गाय अछि" एहन व्यवहार नहि होयत।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—तथापि गवयमे गायक सादृश्यक प्रत्यक्ष अथवा शब्दजन्य ज्ञानसँ उत्पन्न "गाय गवयक समान अछि" एहन निश्चयात्मक ज्ञान उपमानक फल अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मानि ली जे सादृश्य पृथक पदार्थ नहि अछि। तथापि गवयमे गायक सादृश्यक प्रत्यक्ष अथवा शब्दजन्य ज्ञानसँ उत्पन्न "गाय गवयक समान अछि" एहन निश्चयात्मक ज्ञान उपमानक फल अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—तकर आधार पर अनुमान होइत अछि—"गाय गवयक समान अछि, कारण गाय गवयमे विद्यमान सादृश्यक सम्बन्धी अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: उपमानखण्ड)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—फलतः गाय-जकाँ सम्बन्धीकेँ विशेष्य बनबयवला सादृश्यज्ञान उपमितिरूप पृथक ज्ञानफल अछि, आ ओकर करण उपमान पृथक प्रमाण अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि

विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति कएल जा सकैत अछि—सींगत्व आदि सामान्य एकहि अछि आ इन्द्रियसन्निकृष्ट अछि; अतः सादृश्यज्ञान इन्द्रियसँ होइत अछि, ठीक विपरीत प्रत्यभिज्ञाजकाँ।)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—तें "जे वस्तु कोनो आन वस्तुमे विद्यमान सादृश्यक सम्बन्धी अछि, सँ ओहि वस्तुक समान अछि" एहन सामान्य व्याप्तिज्ञान भेलापर अनुमानसँ "गाय गवयक समान अछि, कारण गाय गवयमे विद्यमान सादृश्यक सम्बन्धी अछि—जेना बहिन-हाथी भाइ-हाथीक समान अछि" एहन ज्ञान प्राप्त भऽ सकैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकमतक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—अन्यथा गवयक गायक सादृश्य रहितो गाय असम्बद्ध रहबाक प्रसङ्ग उठत। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकमतक खण्डन)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—एना मानलासँ गाय-जकाँ पशु नहि देखने व्यक्तिमे सेहो ओ ज्ञान उत्पन्न भऽ जाएत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जरन्नैयायिकक उपमिति-सिद्धान्त)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—८६. एकदेशी कहैत छथि—"गाय आनू" जकाँ प्रयोगमे वृद्धक व्यवहारसँ 'गाय' शब्दक शक्ति केवल व्यक्तिगत गायमे ज्ञात होइत अछि; गोत्वमे नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: एकदेशीमत: विशिष्ट शब्दशक्तिग्रह)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—कारण एहन मत "हम 'गाय' शब्दसँ गाय केँ जानैत छी" सदृश वास्तविक अनुभवक निषेध करैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दोषाभाव कारण नहि अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—प्राभाकरसभ कहैत छथि—“गाय” आदि शब्दक शक्ति केवल व्यक्तिमे मानल नहि जा सकैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राभाकरमत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“गाय” शब्द केवल एक व्यक्तिक वाचक अछि—एहन मानल जाए तँ कोन व्यक्ति वाच्य, ई निश्चित नहि; आ आन गायसभक व्यवहार अनुपपन्न होएत। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राभाकरमत)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—. आक्षेप अछि—जँ केवल जाति वाच्य अछि, तँ “गाय आनू” सुनि आनयनक्रिया जातिसँ कोना जुड़त? दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यक्तिक एकत्वसम्बन्धी मतक खण्डन)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“गाय जाइत अछि” मे केवल जाति अथवा जातिरहित व्यक्ति नहि, गोत्वविशिष्ट गायव्यक्ति गमनकर्ता बुझाइत अछि; जाति आ व्यक्ति संयुक्त रूपेँ एक अर्थविषय बनैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जातिमे मात्र शक्ति)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जेना “ताम्रवर्ण गाय आनू” मे आनयनक्रिया ताम्रवर्णरूप जातिगत विशेषतासँ परिसीमित व्यक्तिसँ सम्बन्धित होइत अछि, तहिना जातिबोधक शब्द व्यक्तिक आश्रयता आ जातिक वाच्यतासँ संयुक्त अर्थ उत्पन्न करैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रीकरक मत)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—. हम नैयायिकसभ उत्तर दैत छी—“गाय” शब्दक शक्ति एहन ज्ञानमे अछि जे “ई गाय अथवा गोत्वविशिष्ट व्यक्ति अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—"गाय आनू" सुनि व्यक्तिविशेष आनल जाइत अछि; तें शब्दक शक्ति व्यक्तिमे ग्रहण होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकसभक एक वर्गक मत)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—वैकल्पिक रूपेँ, सामान्यलक्षणा द्वारा ज्ञात सभ गोव्यक्तिसभमे "गाय" शब्दक शक्ति ग्रहण कएल जा सकैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यक्ति सेहो वाच्य अछि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—"गाय आनू" मे आनयनक्रिया जातिमे सम्भव नहि, तें गोत्वक आश्रय व्यक्ति अवश्य मानल जाइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भाट्टमीमांसकसभक मत)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—"ई गाय अछि" एहन विशिष्ट ज्ञान सदैव एके रूपक नहि; कखनो केवल जाति, कखनो केवल व्यक्ति स्मृत होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जाति आ व्यक्ति एकवित्तिवेद्य नहि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—. मण्डनक अनुयायी कहैत छथि—"गाय आनू" मे आनयनक्रिया सँ सम्बन्धित गोत्वविशिष्ट गायव्यक्तिक ज्ञान होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मण्डनमत—व्यक्तिमे लक्षणा)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—गोत्वक विशेष्यरूप व्यक्ति सम्बन्धबोधक कारण अछि; तें व्यक्ति अर्थापत्तिसँ नहि, "गाय" शब्दक लक्षणासँ ज्ञात होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: मण्डनमत—व्यक्तिमे लक्षणा)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जातिक आश्रय व्यक्ति कैँ “गाय” शब्दक आकाङ्क्षा नहि, जेना “राजाक व्यक्ति आनू” मे “राजा” पद व्यक्तिविशेषक अपेक्षा रखैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मण्डनमत—व्यक्तिमे लक्षणा)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—जँ क्रिया केवल व्यक्तिसँ जुड़त, ज्ञान “व्यक्ति आनू” रूपक होएत, “गाय आनू” नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मण्डनमत—व्यक्तिमे लक्षणा)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—मण्डनक आशय ई नहि जे व्यक्ति वस्तुतः अर्थापत्तिसँ नहि, अपितु “गाय” शब्दसँ गोत्वरूप व्यक्ति लक्षणया ज्ञात होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मण्डनमत—व्यक्तिमे लक्षणा)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—मुदा गायव्यक्ति गोत्वसँ भिन्न “केवल व्यक्ति” रूपेँ नहि, “गाय” रूपेँहि ज्ञात होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यक्तिमे लक्षणा असम्भव)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—जँ गायव्यक्तिकेँ व्यक्तित्व, गलकम्बल वा आन आकृतिसँ लक्षित मानल जाए, तँ “गाय” शब्दसँ गायत्वरूप ज्ञान नहि, केवल व्यक्ति वा आकृतिरूप ज्ञान उत्पन्न होएत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यक्तिमे लक्षणा असम्भव)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“गाय कैँ देखू”, “गाय अछि” आदि मे देखब आ अस्तित्व व्यक्तिकेँ सम्बद्ध अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यक्तिमे लक्षणा असम्भव)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—जँ जाति आ व्यक्ति दू अलग वाच्य मानल जाए, ज्ञान "ई गोत्व अछि आ ई गायव्यक्ति अछि" एहन होएत, "ई गाय अछि" नहि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यक्तिमे लक्षणा असम्भव)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—"गाय" शब्दसँ गोत्वविशिष्ट, गलकम्बल आदि विशिष्ट आकृतियुक्त व्यक्ति ज्ञात होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आकृति सेहो वाच्य अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—"पिष्टकमयी गायसभ" एहन प्रयोगमे आटाक पिण्ड गाय नहि; तें "पिष्टकमयी" पदक लक्षणा गायसदृश आकृतिमे मानल जाइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आकृति सेहो वाच्य अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—"गाय" शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "गाय" शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—. आपत्ति हो सकैत अछि—जँ पङ्कज शब्द कमलशक्ति बिना संस्कारसँ कमल स्मरण करा सकैत अछि, तँ "गाय" शब्दो गोशक्ति बिना संस्कारसँ गाय स्मरण कराओत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "गाय" शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—गायस्मरण संस्कारसँ हो सकैत अछि, मुदा गायविषयक नवीन शाब्दज्ञान आन प्रमाणसँ सम्भव नहि; तें "गाय" शब्दमे शक्ति आवश्यक अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "गाय" शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—शक्ति केवल "ज्ञेयता" अर्थात् गाय ज्ञेय अछि—एहि सामान्य धर्ममे मानल जाए, ई सेहो उचित नहि।

जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “गाय” शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“गाय ज्ञेय अछि” ज्ञान गायज्ञान उत्पन्न नहि करैत; शब्दक शक्ति ओहि विशिष्ट गायज्ञानमे मानय पड़त जे स्वयं गाय केँ विषय बनबैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “गाय” शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“गाय” आदि शब्दमे सेहो जँ स्वाभाविक नियत प्रयोगसँ गायस्मरण सम्भव मानल जाए, तँ शक्ति मानबाक आवश्यकता कतहु नहि रहत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उत्तर)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“गम्”क बाद विशेष “डो” प्रत्यय अथवा “अहीन”क बाद “ख” प्रत्यय जोड़िकऽ गाय अथवा यागविशेषक व्युत्पत्ति बताओल जा सकैत अछि; मुदा एहि प्रत्ययसभक सामान्य भाषामे स्वतंत्र अर्थ नहि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “गो” आदि पदमे केवल रूढ़ि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—. बहुव्रीहि वाक्य “चित्रगु केँ आनू”—“चित्रवर्ण गायवला व्यक्तिकेँ आनू”—मे व्यक्त “चित्र गाय” अर्थसँ भिन्न, तृतीय पदार्थ अर्थात् गोस्वामी आनयनक्रियासँ सम्बन्धित बुझाइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: लक्षणा वाक्यमे अछि—पूर्वपक्ष)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—“गाय आ घोड़ा अछि” सेहो स्वतंत्र वाक्यक समान अछि; एकसमान साहित्यक विशेष बोध नहि करबैत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आओर एक मत)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—गाय, घोड़ा आ व्यक्ति जकाँ असम्बद्ध नामार्थसभ क्रियासम्बन्ध बिना स्मृत भेलापर परस्पर सम्बन्धबोध

सम्भव नहि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: क्रिया बिना पदार्थसम्बन्धक बोध असम्भव)

अध्याय १४६ — मुहरक दाग

पङ्कजक अर्थ

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—एहि सन्दर्भमे ‘पङ्कज’ शब्दक विश्लेषण गङ्गेशक भाषादार्शनिक सूक्ष्मताक उदाहरण थिक। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: जातिशक्तिवाद आ योगरूढ़िक संकल्पना)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—” घटादि अचेतन वस्तुमे मुक्तत्व नहि होयबाक कारण दुःखसाधन-विनाशरूप विशेषणसँ विशिष्ट उक्त सम्बन्धक धारक मात्र “मुक्त” शब्दक अर्थ मानल जाए, जेना “पङ्कज” शब्दक प्रयोग व्युत्पत्ति आ परम्परासँ विशिष्ट अर्थमे होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एना तर्क कएल जा सकैत अछि—दुःखसाधनक विनाशादिक प्रसङ्गमे “ई दुःखक अत्यन्ताभाव अछि” एहन सम्बन्धविषयक ज्ञान आ व्यवहार सम्भव अछि।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“पङ्कज” शब्दसँ नियमित रूपेँ कमलहि ज्ञात होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आकृति सेहो वाच्य अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—. मीमांसकसभ कहैत छथि—“पङ्कज” शब्दमे कमलविषयक पृथक् शक्ति मानबाक आवश्यकता नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक

अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकसभक मत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“कमल कीचड़मे जन्मनिहार अछि” एहन ज्ञान पङ्कज पदक अवयवसभक व्युत्पत्तिसँ होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकसभक मत)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“कमल आनू” मे जँ पङ्कज शब्द कमलविषयक कुनै वृत्ति नहि रखत, तँ कमल केँ वाक्यक अर्थरूपेँ ग्रहण करबाक कारण नहि रहत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “गाय” शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—फेर कहल जा सकैत अछि—पङ्कज शब्दक प्रयोग केवल कमल खिलबाक समय उचित, कारण “ज” प्रत्यय वास्तविक जन्मक्रिया बतबैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “गाय” शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“पङ्कज” शब्द कमलविषयक प्रसिद्ध पदक समानाधिकरणतासँ कमलक ज्ञापक मात्र अछि—एहन मानल जाए तँ प्रसिद्ध पद हटला पर अर्थबोध नष्ट होएत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्यसभक मतक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—कहल जा सकैत अछि—“ज” प्रत्यय, “बलीवर्द” मे “वर्द” जकाँ, अवयवशक्तिक बोध रोकैत अछि; अथवा “ज” विशेष जाति—कमल—क बोधक अछि; अथवा पङ्कज शब्द स्वभावतः कुमुदबोधक नहि; अथवा अवयवशक्ति कुमुदमे कुण्ठित अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उत्तर)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—जतय कुमुदबोधक प्रयोजन, वक्तृतात्पर्य अथवा कुमुदविषयक फलज्ञान उपस्थित अछि, ओतय “पङ्कज” पदक कुमुदमे प्रयोगक अभाव निराधार कहल जाएत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आन वैकल्पिक मतक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—. किछु विद्वानक मत अछि—पूर्वाचार्यसभ श्वेत कुमुदक अर्थमे “पङ्कज” पदक प्रयोग नहि कएने छथि; अतः आधुनिक विद्वानसभो ओहि अर्थमे एकर प्रयोग नहि करथि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आन वैकल्पिक मतक खण्डन)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—श्वेत कुमुदमे “पङ्कज”क प्रयोग पङ्कजत्वक भ्रमसँ उत्पन्न होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आन वैकल्पिक मतक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—विश्वसनीय व्यक्तिसभक “ग्रामगाम” पदक गमनकर्तामे निरपेक्ष प्रयोग नहि देखल जाइत; मुदा पङ्कज पद कमलमे निरपेक्ष रूपेँ प्रयुक्त होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आन वैकल्पिक मतक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“कीचड़मे जन्मल” व्युत्पत्त्यर्थ ओकरा पर लागू भऽ सकैत अछि; कमलविषयक पङ्कज-रूढ़ि नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आन वैकल्पिक मतक खण्डन)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—. “पङ्कज” पद श्वेत कुमुदमे आन वृत्ति—अर्थात् लक्षणा—बिना शुद्ध नहि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्वेत कुमुदमे पङ्कज पदक अशुद्धता)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—समान बलवाला प्रतिपक्ष अछि—पङ्कज श्वेत कुमुदमे शुद्ध अछि, कारण आकाङ्क्षायुक्त वाक्यमे ओ श्वेत कुमुदक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि; जेना पुष्प शब्द फूलमे आ पाचक शब्द रसोइयामे शुद्ध अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्वेत कुमुदमे पङ्कज पदक अशुद्धता)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—. किछु विद्वान कहैत छथि—“पङ्कज आनू” सुनिते रूढ़िसँ कमल शीघ्र स्मृत होइत अछि आ आनयनक्रियासँ जुड़ि जाइत अछि; कीचड़मे जन्मनिहार व्युत्पत्त्यर्थ देर सँ प्रकट होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकक मत)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“पङ्कज आनू” मे समुदायशक्ति कीचड़मे जन्मनिहार अर्थ आ कमल केँ समानाधिकरण रूपेँ जोड़ैत अछि; तकर बाद आनयनक्रिया ओहि

विशिष्ट कमलसँ जुड़ैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गोत्व वाच्यार्थ अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“पङ्कज कुमुदम्” मे श्वेत कुमुद अभिप्रेत होएत तँ पदसमुदाय मुख्य कमलार्थ छोड़ि अवयवार्थक आधारपर लक्षणा करैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गोत्व वाच्यार्थ अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—. कहल जा सकैत अछि—“पङ्कज”क अवयव आ “कुमुद” पद अपन-अपन अर्थ स्मरण करबैत अछि; कमल अयोग्य बुझायलापर कीचड़जन्यताक सम्बन्ध श्वेत कुमुदसँ कएल जा सकैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पङ्कज पदमे लक्षणा)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—मुदा “पङ्कज” सुनिते “कीचड़मे जन्मनिहार वस्तु कमल अछि” एहन ज्ञान “कुमुद” पदक योग्यताज्ञान सँ पहिने उत्पन्न भऽ जाइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पङ्कज पदमे लक्षणा)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—सिद्धान्ततः श्वेत कुमुदक अभिप्रायमे पङ्कज पदक मुख्य कमलार्थ अनुपपन्न होइत अछि; तें मुख्यार्थसँ सम्बन्धित “कीचड़मे जन्मल जलपुष्प” अर्थमे लाक्षणिक वृत्ति मानल जाए। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पङ्कज पदमे लक्षणा)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—. पूर्वपक्ष कहैत अछि—शुद्ध पङ्कज पदमे शक्ति मानल जाए तँ “गच्छ” आदि अपभ्रष्ट पदसभमे सेहो शक्ति मानय पड़त, कारण लोक ओकरासँ नियमित अर्थज्ञान प्राप्त करैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अपभ्रष्ट पदसभमे वाचकता)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“पङ्कज आनू” मे पहिले प्रत्ययार्थक कर्तृत्व, तकर बाद जन्मक्रिया, अन्ततः कीचड़मे जन्मल कमल आनबाक ज्ञान क्रमशः उत्पन्न होइत अछि।

विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अवयवशक्ति कुण्ठित नहि)

अध्याय १४७ — घर-घरक दस्तक

यज्ञक विधान

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—उदाहरणार्थ—"मङ्गलाचरण फलवान् अछि, कारण ई अमावस्या-पूर्णिमाक यज्ञ जकाँ शिष्टजनक अविगीत आचरणक विषय अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आपत्ति: मङ्गलाचरणक कारणता असिद्ध)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—ई आपत्ति नहि उठाओल जाय जे वैदिक यज्ञ जकाँ प्रधान कर्मक देश आ काल मङ्गलाचरणसँ सम्बन्धित होयत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मङ्गलाचरण अङ्गकर्म अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—अतः एहन निकटवर्ती समाप्तिक बोध करऽवला श्रुतिए अनुमानित होयत, आ कारीरी-यज्ञ जकाँ निकट भविष्यक समाप्तिए मङ्गलाचरणक फल होयत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसक-मतक खण्डन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—फेर मङ्गलाचरण कारीरी-यज्ञ जकाँ अगिला व्यक्तिक क्रिया बिना समाप्ति उत्पन्न करऽवला कारण भऽ जाएत, जे सम्भव नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकैकदेशी-मतक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—तखन सेहो मङ्गलक फल विघ्नक अभाव अर्थात् विघ्नध्वंस मात्र होयत; ठीक जहिना "हम स्वर्ग प्राप्त करी" एहि इच्छासँ यज्ञ कएलापर स्वर्ग ओकर फल होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गङ्गेशक सिद्धान्त: मङ्गल विघ्नध्वंसक कारण)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—प्रभातमे दर्पण-दर्शन आदि कर्म—जे "मङ्गलकर्ममे प्रवृत्त, देवभक्त, मौनशील आ पाप-निवारक यज्ञ करऽवला लोक प्रभातमे दर्पण देखथि" एहन

विधानसँ बोधित अछि—पृथक् अर्थमे मङ्गल कहल जाइत अछि; मुदा विघ्ननाशक कर्मक कठोर अर्थमे नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: "मङ्गल" शब्द अनेक अर्थवाला अछि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—ज्ञान वा प्रामाण्य-निश्चयक बादो सभ प्रकारक मानवीय प्रवृत्ति अनिवार्य नहि; यज्ञ जकाँ अधिक धन आ परिश्रमवाला कर्म तऽ केवल आवश्यक इच्छित स्वर्ग-फल निश्चित भेलापर होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: माध्यमिक बौद्धसभक आपत्ति)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—उत्तर—एक बेर "यज्ञ स्वर्गक साधन अछि" एहि प्रथम ज्ञानक प्रामाण्य निश्चित भऽ गेलाक बाद ओही यज्ञकेँ विषय बनाबयवला दोसर भिन्न ज्ञानमे अप्रामाण्य-संशय नहि उठैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमानक अङ्गसभक प्रामाण्यपर मीमांसक आपत्ति आ नैयायिक उत्तर)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—राजसूय यज्ञक विधान करयवला शब्दप्रमाणसँ बाधित हेतु—जेना, 'ब्राह्मणकेँ राजसूय यज्ञ करबाक चाही, स्वर्गप्राप्तिक साधन होएबाक कारणे, अग्निष्टोम यज्ञक समान। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: राजसूय यज्ञक विधान करयवला शब्दप्रमाणसँ बाधित हेतु—जेना, 'ब्राह्मणकेँ राजसूय यज्ञ करबाक चाही, स्वर्गप्राप्तिक साधन होएबाक कारणे, अग्निष्टोम यज्ञक समान।')

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—ई संस्कार भविष्यक विशिष्टताक प्रमाणजन्य ज्ञानक कारण कएल जाइत अछि—जेना यज्ञ आ औषधोपचार। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—पुनश्च, जाहि वस्तुमे विद्यमान फल प्राप्त करबाक उद्देश्यसँ जे क्रिया कएल जाइत अछि, सँ बाधकक अभावमे ओहि फलकेँ अनुकूल विशिष्टता केवल ओहि फलक कारणमे उत्पन्न करैत अछि—जेना यज्ञ आ औषधोपचार। लोकसभ अपन-अपन

अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—उदाहरणार्थ, शाब्दज्ञानक कारणरूप अनुमानक स्वरूप एहि प्रकारेँ बुझायल जा सकैत अछि—'दण्डेन गां अभ्याज' अर्थात् 'लाठीसँ गाएकेँ लग हाँकू' सदृश लौकिक वाक्य अथवा 'ज्योतिष्टोमेन स्वर्गकामो यजेत' अर्थात् 'जे स्वर्गक इच्छा रखैत हो, सँ ज्योतिष्टोम यज्ञ करए' सदृश वैदिक वाक्य, वक्ताक अभिप्रेत विषयभूत शब्दसभसँ स्मृत शब्दार्थसभक पारस्परिक वाक्यार्थगत सम्बन्धक ज्ञानपूर्वक अछि; कारण, ई वाक्यसभ आकाङ्क्षा आदि सँ युक्त शब्दसमूह अछि, 'घटम् आनय' अर्थात् 'घड़ा आनू' सदृश। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: वैशेषिकसभक आक्षेप)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—"विश्वजिता यजेत"—"विश्वजित् यज्ञ करए"—मे विधेयकर्ताक ज्ञान "स्वर्गकामः"—"स्वर्गक इच्छुक"—पदक अध्याहार बिना संभव नहि; अतः "यजेत" केँ "स्वर्गकामः"क आकाङ्क्षा अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: वैकल्पिक मत)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—वेद केँ "स्वर्गकामो यजेत"—"स्वर्गक इच्छुक यज्ञ करए"—सदृश विधिवाक्यसभक समूह कहबो नहि; कारण स्मृति आ महाभारतमे सेहो विधिवाक्य अछि, तें ओहो वेद भऽ जाएत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: वेद पौरुषेय अछि—एहि तर्कक खण्डन)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—"यजेत" सँ यज्ञ प्रयत्नसाध्य आ फलसाधक बुझाइत अछि; फलविशेष प्रसङ्गसँ निश्चित होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: शक्तिक कल्पना)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—यज्ञो स्वर्गसाधन आ प्रयत्नसाध्य कार्य रूपेँ ज्ञात भेलापर "यज्ञ करब" इच्छा उत्पन्न करैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“स्वर्गकाम यज्ञ करए” सँ बुझाइत अछि जे विश्वसनीय वक्ता स्वर्गेच्छुकक यज्ञप्रयत्न चाहैत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उदयनाचार्यक मत)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—. एहि कारण “एहि मन्त्रसँ निषादस्थपति यज्ञ करए” सदृश वाक्यमे, जँ “निषादस्थपति” केँ कर्मधारय मानल जाए, तँ केवल समासक पदसभक मुख्य स्वाभाविक वाचकता स्वीकारल जाएत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: षष्ठ्यर्थ-लक्षणाक लाघव)

अध्याय १४८ — मिलावटक पहिचान

गङ्गाक अर्थ

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“गाम गङ्गापर अछि” जकाँ लक्षणावाला वाक्यमे व्यक्त ‘गङ्गा’ अर्थ गामसँ सीधे सम्बन्धित होयब योग्य नहि; अतः तीर-जकाँ दोसर अर्थक लक्षणा मानब उचित अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “गाम गङ्गापर अछि” जकाँ लक्षणावाला वाक्यमे व्यक्त ‘गङ्गा’ अर्थ गामसँ सीधे सम्बन्धित होयब योग्य नहि; अतः तीर-जकाँ दोसर अर्थक लक्षणा मानब उचित अछि।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—लाक्षणिक पद—जेना “गङ्गायां घोषः” मे “गङ्गा”—प्रत्यक्षतः तटबोध नहि करबैत, तथापि तटज्ञानक परोक्ष सहायक होइत अछि; तें लाक्षणिक पदो अर्थबोधक तात्पर्य रखैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्परत्वक परिभाषा)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—. आक्षेप हो सकैत अछि—“गङ्गा” पद केवल गङ्गातट बोध कराबयवला अछि; कारण तट गङ्गाजलसँ अविनाभावपूर्वक सम्बन्धित अछि, तें मुख्यार्थक माध्यमसँ लक्ष्यार्थ बोध भऽ जाइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: दोसर आक्षेप)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जँ “गङ्गा” पद लक्ष्यार्थ बोध कराबय लेल मुख्यार्थमे वक्तृतात्पर्याभावक कारण केवल तट अर्थ बोध करैत मानल जाए, तँ मुख्यार्थ बोधक कोनो पद रहिये नहि सकत; कारण प्रत्येक मुख्यार्थक प्रसङ्गमे दोसर सम्भावित अर्थसँ वक्तृतात्पर्याभाव रहैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दोसर आक्षेप)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—. “गङ्गायां जलं घोषश्च प्रतिवसति”—“गङ्गामे जलप्रवाह आ ग्राम दुनू रहैत अछि”—मे “गङ्गा” पदक तात्पर्य जलप्रवाह आ तट दुनू बोध कराबयवला बुझल गेलापर, एकहि पदसँ दुनू अर्थक स्मरण एक संग होइत अछि, आ दुनू अर्थक “रहब” क्रियासँ सम्बन्ध बोध होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पुनरुक्ति बिना दू अर्थक बोध आ वक्तृतात्पर्यक महत्त्व)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—एहि लेल “गङ्गा” पदमे दू पृथक् शक्ति—अभिधा आ लक्षणा—अनिवार्य रूपेँ मानब आवश्यक नहि; एहन शक्ति-कल्पना केवल वक्ताक विशिष्ट तात्पर्य बुझाबय लेल होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पुनरुक्ति बिना दू अर्थक बोध आ वक्तृतात्पर्यक महत्त्व)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—. हम नैयायिकसभ कहैत छी—लक्षणा तखने होइत अछि जखन लक्ष्यार्थ मुख्यार्थसँ भिन्न रूपमे ज्ञात हो; जेना गङ्गा शब्दसँ तीर, जे गङ्गासँ भिन्न अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यक्तिमे लक्षणा असम्भव)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—जेना गङ्गा शब्द तीरक अर्थमे लक्षणा बिना शुद्ध नहि, आ “ग्रामगाम” गमनकर्ताक अर्थमे विशेष संकेत बिना शुद्ध नहि, तहिना पङ्कज श्वेत कुमुदमे लक्षणा बिना शुद्ध नहि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्वेत कुमुदमे पङ्कज पदक अशुद्धता)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“गङ्गायां घोषः” मे गङ्गा पद तीरज्ञानक प्रत्यक्ष उत्पादक मानल जाए, तखन प्रवाहार्थक मुख्यज्ञानक मध्यस्थता आ लाक्षणिक सम्बन्धक आवश्यकता नहि रहत। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसकक आक्षेपक खण्डन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“गङ्गायां घोषः” मे प्रवाहमे गाँवक स्थिति असम्भव भेलासँ गङ्गा पद तीर स्मरण करबैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: लक्षणा पृथक् वृत्ति अछि)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—. पूर्वपक्ष कहैत अछि—बालक “गङ्गातीरपर स्थित गाँव आनू” सदृश वाक्य सुनि प्रेरित वृद्धक व्यवहार देखि गङ्गा पदक तीरमे शक्ति ग्रहण करैत अछि; केवल वक्तृतात्पर्य मानब किएक? लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तीरमे वाचकशक्ति नहि)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उत्तर—स्मृत तीर वस्तुतः गङ्गाक सम्बन्धी अछि; “गङ्गाक सम्बन्धी तीर” ज्ञान लक्षणासँ सम्भव, गङ्गा पदक व्यक्त अर्थ नहि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: शब्दप्रयोगक भेदविषयक मतक खण्डन)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—गङ्गा पदक “सामान्य अर्थ”क सम्बन्धज्ञान उत्पन्न करनिहार कोनो पृथक् कारण नहि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सामान्य अर्थसम्बन्धक सुविधा लेल लक्षणा नहि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—आन मत—“गङ्गातीरपर गाँव अछि” वाक्यक एकवाक्यता गङ्गा शब्दक अर्थसँ स्मृत तीरक माध्यमसँ सिद्ध होइत अछि; अतः गङ्गापदमे तीरक लक्षणा मानल जाए। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सामान्य अर्थसम्बन्धक सुविधा लेल लक्षणा नहि)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—जँ "गङ्गा" पद तीर केँ उल्लेखित नहि करत, तँ सप्तमी-विभक्तिक आधारत्वार्थ तीरसँ सम्बन्धित नहि भऽ सकत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राच्यमतक खण्डन)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—कहल जा सकैत अछि—व्युत्पत्तिव्याकरण केवल प्रयोगनियम अछि, लक्षणाक नियम सेहो स्वीकारल जाए; "गङ्गायाम्" मे केवल सप्तमी पदक लक्षणा मानल जाए, गङ्गा पदक नहि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्षी आपत्ति)

अध्याय १४९ — जालक नक्शा

स्वर्गक साधन

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जँ कहल जाए जे ओ 'करुणा' (दया) सँ संसार रचैत छथि, तँ हुनका केवल सुखी जीव (स्वर्ग) बनेबाक चाही, दुःखी (नरक) नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्योन्याश्रय)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—इष्टसाधनता: ई ज्ञान जे कर्म इच्छित फल—जेना सुख वा स्वर्ग—प्राप्त करबाक साधन अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रवृत्तिक कारणक त्रिकोणीय सिद्धान्त)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—पुनश्च, "एकमात्र ओही देव, जिनकर नेत्र सभ दिशामे अछि, मुख सभ दिशामे अछि, भुजा सभ दिशामे अछि, जे सभ दिशामे स्थित छथि, अपन भुजासँ फूँकि आ पाँखिसँ उड़ि पृथिवी आ स्वर्ग दुनू रचैत छथि"—एहन श्रुति; तथा "पुरुषसभमे श्रेष्ठ, भिन्न, परमात्मारूप मानल गेल ओ एक, जे तीनू लोकमे प्रवेश कऽ ओकर पालन करैत छथि, अविनाशी परमेश्वर छथि"—एहन स्मृति, ईश्वरकेँ सिद्ध करयवला प्रमाण मानल जाए। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रुति आ स्मृति प्रमाण अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—अन्यथा यज्ञसँ आकस्मिक रूपें विशिष्ट यजुर्वेद मात्र स्वर्ग उत्पन्न करैत—एना मानल जाएत, आ अदृष्ट निष्फल भऽ जाएत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: दाहशक्ति-सिद्धान्त)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—स्वर्ग जकाँ मोक्षमे विविध प्रकारभेद नहि अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्त्वचिन्तामणि: पुरुषार्थवाद)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“स्वर्गकामो यजेत” मे स्वर्ग शब्द इच्छित फल निर्दिष्ट करैत अछि, आ विधिलिङ् यज्ञक साधनता कहैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकक प्रत्युत्तर)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—. वेदमे “स्वर्ग” शब्दक शक्ति उत्कृष्ट सुखमे ग्रहण होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “स्वर्ग” शब्दक शक्ति उत्कृष्ट सुखमे)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—लौकिक प्रयोगमे “स्वर्ग” शब्द साधारण सुखक अर्थमे आए, तखन लक्षणा मानल जाए। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “स्वर्ग” शब्दक शक्ति उत्कृष्ट सुखमे)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—. पूर्वपक्ष कहैत अछि—जँ “स्वर्ग”क अर्थ दुःखरहित उत्कृष्ट सुख हो, तँ चन्दनादिजन्य सुखमे ओकर लाक्षणिक प्रयोग कठिन होएत; आ जँ केवल उत्कृष्ट सुख अर्थ हो, तँ दुःखरहितताक विशेषण अनावश्यक। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “इन्द्र” शब्दक शक्ति सहस्राक्षमे)

अध्याय १५० — मुहरक छाया

दुआरक आकाङ्क्षा

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—मीमांसकमतानुसार “विश्वजिता यजेत”—“विश्वजित् यज्ञ करए”—आ “द्वारं पिधेहि”—“दुआर बन्द करू”—एहि प्रयोगमे स्पष्ट रूपेँ नहि कहल गेल “स्वर्गकामः”—“स्वर्गक इच्छुक”—आ “द्वारम्”—“दुआर”—अर्थ आकाङ्क्षित मानल जाइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आकाङ्क्षाक परिभाषा)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—. पदसभक पृथक्-पृथक् स्वरूप कारण होएबाक कारण “द्वारं पिधेहि”—“दुआर बन्द करू”—एहि प्रयोगमे “पिधेहि” क्रियापदक अध्याहार कएल जाइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आकाङ्क्षाक वर्णन)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“द्वारं पिधेहि”—“दुआर बन्द करू”—मे अध्याहृत “द्वारम्” पदक अर्थस्मरणसँ सेहो बन्द करबाक क्रियाक संग दुआरक सम्बन्धबोध उत्पन्न होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राभाकरसभक उत्तर)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—अन्यथा “द्वारं कर्मता पिधानं कृतिः”—“दुआर, कर्मत्व, बन्द करबाक क्रिया, प्रयत्न”—सदृश अवाक्य पदसमूहसँ सेहो वाक्यार्थबोध अनिवार्य भऽ जाएत, कारण ओतय सभ पदार्थक स्मरण समान रूपेँ सम्भव अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आसत्तिवादक सिद्धान्त)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—अपूर्ण वाक्य सुनिकऽ सेहो प्रेरित वृद्धक प्रवृत्ति देखल जाइत अछि; उदाहरणतः केवल “दुआर” कहलापर “बन्द करू” पद अध्याहृत बुझायल जा सकैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्षक तर्क—शक्ति केवल अन्वितार्थमे)

अध्याय १५१ — मुहर चलौनिहार हाथ

बालकक सीख

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—बालक अन्वय-व्यतिरेकसँ शब्दक प्रत्यक्ष कारणता ओहि ज्ञानमे ग्रहण करैत अछि जे प्रवृत्तिक साक्षात् कारण अछि—अर्थात् “ई कार्य हमरा द्वारा कएल जाए” एहन कार्यान्वितज्ञान। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: पूर्वपक्षक तर्क—शक्ति केवल अन्वितार्थमे)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—. पूर्वपक्ष पुनः कहैत अछि—बालक पहिले प्रेरक वृद्धक “काज करू” रूप सामान्य प्रवृत्ति बुझैत अछि; तकर बाद सामान्य कार्यान्वितज्ञानक कारणरूप वाक्यशक्ति ग्रहण करैत अछि, आ अन्तमे विशेष पदसभक शक्ति। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गुरुमतक प्रतिवादक खण्डन)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—जेना पुत्रजन्मक समाचार सुनि चैतक मुखपर हर्ष देखिकऽ बालक समाचारजन्य पुत्रजन्मज्ञान केँ हर्षक कारण बुझैत अछि, यद्यपि हर्षक आन कारणो सम्भव छथि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सिद्धार्थमे सेहो शब्दशक्ति सम्भव)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जेना बालक अस्पष्ट “अम्बा” कहैत अछि आ विद्वान श्रोता सही पद स्मरण कऽ माताक अर्थ ग्रहण करैत अछि, तहिना पहिल अर्थज्ञान सही पदक स्मरणसँ होइत अछि; परम्परासँ अपभ्रष्ट पदमे शक्तिभ्रम दृढ़ होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: सिद्धान्ती उत्तर)

अध्याय १५२ — आदेशक स्रोत

रूढ़ि योगसँ प्रबल

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—तहिना दहीक सारविषयक मन्त्रमे वाजिन् शब्दक “दहीक सार केँ भोजन माननिहार” व्युत्पत्त्यर्थ प्रसङ्गसँ शीघ्र स्मृत होइत अछि; रूढ़ घोड़ार्थ स्मृत नहि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: रूढ़ि योगसँ प्रबल)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“मण्डपमे लोकसभकेँ भोजन कराउ” सदृश सामान्य प्रयोगमे प्रसङ्ग अनुपस्थित रहला पर रूढ़ गृहार्थ शीघ्र स्मृत होइत अछि; तें रूढ़िपूर्वक लक्षणासँ गृहस्थित लोकसभक बोध होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: रूढ़ि योगसँ प्रबल)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“मण्डपमे लोकसभकेँ भोजन कराउ” मे शब्द गृहस्थित लोकसभक अभिप्राय रखैत अछि; रूढ़ गृहार्थ योग्य अछि आ लक्षणाद्वारा लोकसभसँ जुड़ैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: रूढ़ि योगसँ प्रबल)

अध्याय १५३ — संकेतक पाछाँ नाम

गोत्व वाच्यार्थ अछि

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—. आक्षेप अछि—पङ्कजक अवयवसभ “कीचड़मे जन्मनिहार”क ज्ञान, आ पदसमुदाय कमलक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि; मुदा “कीचड़मे जन्मनिहारहि कमल अछि” एहन संयुक्त ज्ञान कोना होएत? विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गोत्व वाच्यार्थ अछि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—अवयवसभ अपन अर्थसभक सम्बन्ध करबैत अछि, समुदाय कमलार्थक ज्ञान करबैत अछि, आ दुनू मिलिकऽ “कीचड़मे जन्मल कमल”क ज्ञान उत्पन्न करैत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गोत्व वाच्यार्थ अछि)

अध्याय १५४ — बाबाक वचन

शब्द प्रमाण

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—ओ 'पंकज' क उदाहरण दैत स्पष्ट करैत छथि जे यद्यपि जलकुम्भी सेहो कीचड़मे जनमैत अछि, मुदा 'पंकज' शब्द केवल कमल क लेल रूढ़ भऽ चुकल अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष

धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: शब्द प्रमाण)

अध्याय १५५ — सेवाक खाता

शब्द

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उदाहरण: कोनो अनुभवी वैद्य कहैत छथि जे "ई ओखद (दवा) ज्वर ठीक करैत अछि," आ व्यक्ति ओकर सेवन करैत छी। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: शब्द)

अध्याय १५६ — दानक ऋण

आप्तोक्तत्व कारण नहि अछि

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—कारण तोता द्वारा उच्चरित, मूल प्रमाणवाक्यक अनुरूप पदमे; मूल प्रमाणवाक्यक अनुरूप भ्रमित अथवा छलकर्त्ताक पदमे; आ वैदिक पदमे आप्तोक्तत्व अनुपस्थित रहैत अछि, तथापि ई पदसभ यथार्थ बोधक प्रमाण बनैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आप्तोक्तत्व कारण नहि अछि)

अध्याय १५७ — लोहेक संदूक

ज्ञात तात्पर्य कारण अछि

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—एही कारण “यष्टिः प्रवेशय”—“लाठीवला सभकेँ भीतर आनू”—मे लक्षणासँ निर्दिष्ट अर्थक बोध होइत अछि, आ “सैन्धवम् आनय”—“सैन्धव आनू”—सदृश अनेकार्थक वाक्यमे लवण वा घोड़ामे सँ अभिप्रेत विशिष्ट अर्थक बोध होइत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: ज्ञात तात्पर्य कारण अछि)

अध्याय १५८ — सहमति-कापीक मिलान

आकाङ्क्षाक परिभाषा

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—कारण “नीलं सरोजम्”—“कमल नील अछि”—सदृश प्रयोगमे नीलत्व आ कमलक अविनाभाव नहि, तथापि पदसभमे आकाङ्क्षा अछि। सुननिहार विद्वान

ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आकाङ्क्षाक परिभाषा)

अध्याय १५९ — मृतकक सहमति

शब्दानित्यताक निर्णायक सिद्धान्त

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—तोता, मैना, आन पशु-पक्षी, पुरुष, स्त्री आ अन्य व्यक्तिद्वारा उत्पन्न ध्वनिमे स्वभावतः स्पष्ट भेद अनुभव होइत अछि—जेना ईखक रस आ दूधक मधुरतामे भेद। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: शब्दानित्यताक निर्णायक सिद्धान्त)

अध्याय १६० — गोदामक छाया

गाय शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—मुदा “कलायम् पचति” मे कलाय पूर्वप्रत्यक्षसँ स्मृत होएत, अथवा “द्वारं पिधेहि” मे दुआरक ज्ञान आन स्रोतसँ होएत, तखनो सम्बन्धबोध सम्भव अछि; तेँ कमल कैँ पङ्कजक शब्दार्थ मानब आवश्यक नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: “गाय” शब्दक शक्ति अनुपपन्न नहि)

अध्याय १६१ — फोनक कैद

पाकक प्रक्रिया

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—तखन “देवदत्तस्य पाकः”—“देवदत्तक पाक”—सदृश षष्ठी-प्रयोगमे सेहो संख्या नहि व्यक्त होएबाक कारण तृतीया-विभक्ति आवश्यक भऽ जाएत। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राभाकरसभक उत्तर)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“हम प्रयत्नसँ पाक सिद्ध करब” एहन ज्ञानसँ चिकीर्षा उत्पन्न होइत अछि; आ चिकीर्षा प्रवृत्तिक सहकारी कारण अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मुदा “अग्निसँ भात पकाबय लेल पाक सिद्ध करब” एहन प्रयत्नपूर्व ज्ञानक उपेक्षा नहि भऽ सकैत। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गुरुसभक मत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“ओ पाक करबाक इच्छा रखैत अछि” मे पाकक्रियाहि इच्छाक विषय अछि, प्रयत्न नहि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गुरुसभक मत)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—पाकक्रिया प्रत्यक्षसँ पहिने अनुमानित भऽ सकैत अछि—“ई पाक हमर प्रयत्नबिना नहि होएत, आ प्रयत्नसँ भातरूप इष्टफल सिद्ध होएत। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: कृतिसाध्यताज्ञान)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—“पाकत्व सामान्य” पक्ष हो तँ सिद्ध-असिद्ध सब पाक समाहित भऽ व्यभिचार। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विधिवादक पूर्वपक्ष तथा सिद्धान्तक आरम्भ)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—“पाक करबाक इच्छा” प्रयत्नसाध्य पाकक ज्ञानसँ उत्पन्न होइत अछि; तखन प्रयत्न होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्य अथवा सौण्डद मत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—इच्छा केवल पाकविषयक नहि, “प्रयत्नसँ पाक सिद्ध करब” एहन रूपक होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्य अथवा सौण्डद मत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जेना अग्निसँ पाक सिद्ध करबाक ज्ञानसँ “अग्निसँ पाक करब” इच्छा होइत अछि, तहिना प्रयत्नसँ पाक सिद्ध करबाक ज्ञानसँ प्रयत्नक इच्छा उत्पन्न होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि।

एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्यसभक आओर विचार)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“अग्निसँ पाक करब” इच्छा तखन होइत अछि जखन पाक कैँ चाउररूप फलसाधन आ अग्निसाध्य कार्य दुनू रूपमे बुझल जाए। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकैँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकैँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिक सिद्धान्त)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—पाकक उदाहरणमे भोजन चाहनिहार पाकक्रियामे प्रवृत्त होइत अछि, कारण पाक भोजनक निकट साधन अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकैँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकैँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: केवल अपूर्व साध्य अछि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“पचति”—“ओ पकबैत अछि”—क विश्लेषण “पाकं करोति”—“ओ पाक उत्पन्न करैत अछि”—रूपैँ होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकैँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकैँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: रत्नकोशकारक मत)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जँ “पचति” यत्नाश्रय व्यक्त करैत अछि, तँ धात्वर्थ पाक यत्नसँ कर्म अथवा उत्पाद्यफल रूपैँ सम्बन्धित नहि हो सकैत; एक पदक अर्थ दोसर पदक अर्थक अवयव रूपैँ वाक्यनियमसँ जुड़ैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकैँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: कर्ता तिङ्क अर्थ नहि)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—पाक आ यत्नाश्रयक सम्बन्ध “पाक यत्नाश्रयद्वारा उत्पादित होएत” अथवा “यत्नाश्रय पाकक उत्पादक अछि”—एहि रूपमे होइत अछि; “पाक यत्नक कर्म अछि” वा “यत्न पाकक कर्ता अछि” एहन नहि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: कर्ता तिङ्क अर्थ नहि)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—फल उत्पन्न नहि भेल अथवा व्यापारकालमे “पाक होइत अछि” प्रयोग कएल जाए, तखन “पाक” पदमे व्यापारार्थक लक्षणा मानय पड़त; लाघववश नरम होएबहि “पाक”क मुख्य अर्थ अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मण्डनक मत)

अध्याय १६२ — आवाजक मोहर

नैयायिक परम्परा—संख्या यत्नविशेष्यसँ सम्बन

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“चैत्र चाउर पकबैत अछि” मे शुद्ध चैत्र कर्ता; “चाउर चैत्रद्वारा पकाओल जाइत अछि” मे शुद्ध चाउर कर्म। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिक परम्परा—संख्या यत्नविशेष्यसँ सम्बन्धित)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—जँ व्यापार चाउरसँ कर्मरूपेँ जुड़त, तँ “चैत्र चाउर पकबैत अछि” मे सेहो व्यापार चाउरसँ सम्बन्धित होएत आ संख्या कर्मसँ जुड़ि जाएत। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिक परम्परा—संख्या यत्नविशेष्यसँ सम्बन्धित)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“चैत्र चाउर पकबैत अछि” मे चैत्र यत्नविशेष्य छथि; “चाउर चैत्रद्वारा पकाओल जाइत अछि” मे चाउर यत्नक परोक्ष विशेष्य अर्थात् यत्नजन्य व्यापारफलाश्रय अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिक परम्परा—संख्या यत्नविशेष्यसँ सम्बन्धित)

अध्याय १६३ — हटायल कागजक निशान

विशेषणक विभक्ति केवल साधुत्व लेल

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—. आक्षेप हो सकैत अछि—“राजपुरुषम् आनय” मे राजसम्बन्ध आ पुरुष, विशेषणपदक बाद विभक्ति बिना परस्पर सम्बन्धित नहि हो सकैत; तें राजा-संबद्ध पुरुषक ज्ञान समस्तपदसँ कोना होएत? दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: विशेषणक विभक्ति केवल साधुत्व लेल)

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—अतः “राजपुरुषम्” समस्तपदमे राजा-संबद्ध पुरुष व्यक्त करबाक स्वतंत्र शक्ति मानय पड़त। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशेषणक विभक्ति केवल साधुत्व लेल)

अध्याय १६४ — चन्द्रपालक छायाक पेट

कर्ता तिङ्क अर्थ नहि

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि —“कपड़ा नील अछि”, “चैत्र पकबैत अछि” आ “चाउर पकाओल जाइत अछि” मे सामानाधिकरण्य केवल एके संख्या व्यक्त होएब अछि; एकहि अर्थक वाच्यता नहि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: कर्ता तिङ्क अर्थ नहि)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“राजपुरुष”मे राजा आन पदसँ पुरुषसँ सम्बन्धित अछि, किन्तु यत्न पहिने सँ कर्तामे स्थित धर्म होएबाक कारण ओकर कर्तासँ पुनः सम्बन्ध अपेक्षित नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: कर्ता तिङ्क अर्थ नहि)

अध्याय १६५ — छायाक देह

तत्पुरुष समासमे शक्ति

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उत्तर—जँ सम्बन्धार्थ न ग्रहण हो, “राजपुरुष” मे राजत्वविशिष्ट राजा केवल पुरुषक विशेषण बनत, सम्बन्धक प्रकार निर्धारित नहि होएत। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: तत्पुरुष समासमे शक्ति)

अध्याय १६६ — इमली घाटक कोठार

कर्मधारयसमासक विश्लेषण

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—. “नीलोत्पलम् आनय”—“नील कमल आनू”—सदृश कर्मधारयसमासमे नीलत्व आ कमल, एहि दू प्रातिपदिकार्थक परस्पर विशेषण-विशेष्यसम्बन्ध, विशेषणपदक बाद विभक्ति बिना ज्ञात होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: कर्मधारयसमासक विश्लेषण)

अध्याय १६७ — नदी पारक आवाज

व्यापारार्थक आपत्तिक उत्तर

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—यत्नवादमे सेहो धान कुटबाक अनुकूल यत्नवला व्यक्तिक विषयमे “ओ पकबैत अछि” दोष उठि सकैत अछि; तें यत्नो विशिष्ट धात्वर्थानुकूल मानय पड़ैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: व्यापारार्थक आपत्तिक उत्तर)

अध्याय १६८ — शहरक गला

भूत—भविष्यत् प्रयोगसम्बन्धी आपत्ति

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—“चैत्र चाउर पकबैत अछि” आ “चाउर चैत्रद्वारा पकाओल जाइत अछि” मे तिङ् संख्या क्रमशः कर्ता आ कर्मसँ सम्बन्धित होइत अछि; परम्परागत नियम अछि—संख्या तिङ्क वाच्यार्थसँ सम्बन्धित होइत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: भूत-भविष्यत् प्रयोगसम्बन्धी आपत्ति)

अध्याय १६९ — चन्द्र दूक दरबज्जा

तत्त्वचिन्तामणि: ग्रन्थ-परिचय

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—एहि मतपर आपत्ति अछि: जँ एकटा तोता रटि कऽ कोनो एकदम शुद्ध आ सार्थक वाक्य (जेना 'पानि आनू') बाजि दैत अछि, तँ क तोताकेँ ओहि शब्दार्थसभक बीचक सम्बन्धक यथार्थ ज्ञान होइत अछि? दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: श्रीगङ्गेशोपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' ग्रन्थक 'शब्दखण्ड'मे मुख्य रूपसँ 'शब्द' (वा शाब्द ज्ञान) केँ एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे बौद्ध आ वैशेषिक दर्शनक आक्षेपसभक खण्डन कएल गेल अछि। साथहि, कोनो वाक्यक अर्थ बुझबाक लेल आवश्यक चारि मुख्य तत्त्वसभ—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—क सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल अछि। एहि संगे शब्दक अनित्यता (शब्दानित्यतावाद) आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्शक न्यायसम्मत विवेचन सेहो एतय प्रस्तुत अछि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—ओ सभ स्वीकार करैत छथि जे तोता वा कोनो छलकर्त्ताक प्रसङ्गमे वास्तवमे 'हेतु' (वक्ताक यथार्थ ज्ञान वा अभिप्राय) अनुपस्थित रहैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रीगङ्गेशोपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' ग्रन्थक 'शब्दखण्ड'मे मुख्य रूपसँ 'शब्द' (वा शाब्द ज्ञान) केँ एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे बौद्ध आ वैशेषिक दर्शनक आक्षेपसभक खण्डन कएल गेल अछि। साथहि, कोनो वाक्यक अर्थ बुझबाक लेल आवश्यक चारि मुख्य तत्त्वसभ—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—क सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल अछि। एहि संगे शब्दक अनित्यता (शब्दानित्यतावाद) आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्शक न्यायसम्मत विवेचन सेहो एतय प्रस्तुत अछि।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—नैयायिकसभक स्पष्ट तर्क अछि जे जँ तोता सँ बाजल गेल वाक्य कोनो मूल यथार्थ वाक्यक (प्रमाणवाक्यक) अनुरूप अछि, तँ ओ निश्चित रूपेँ यथार्थ ज्ञानक प्रमाण बनैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रीगङ्गेशोपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' ग्रन्थक 'शब्दखण्ड'मे मुख्य रूपसँ 'शब्द' (वा शाब्द ज्ञान) केँ एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे बौद्ध आ वैशेषिक दर्शनक आक्षेपसभक खण्डन कएल गेल अछि। साथहि, कोनो वाक्यक अर्थ बुझबाक लेल आवश्यक चारि मुख्य तत्त्वसभ—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—क सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल अछि। एहि संगे शब्दक अनित्यता (शब्दानित्यतावाद) आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्शक न्यायसम्मत विवेचन सेहो एतय प्रस्तुत अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—कल्पना करू जे केओ व्यक्ति भोजन कऽ रहल अछि आ कहैत अछि—"सैन्धव आनू" (सैन्धवम् आनय)। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रीगङ्गेशोपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' ग्रन्थक 'शब्दखण्ड'मे मुख्य रूपसँ 'शब्द' (वा शाब्द ज्ञान) केँ एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे बौद्ध आ वैशेषिक दर्शनक आक्षेपसभक खण्डन कएल गेल अछि। साथहि, कोनो वाक्यक अर्थ बुझबाक लेल आवश्यक चारि मुख्य तत्त्वसभ—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ

तात्पर्य—क सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल अछि। एहि संगे शब्दक अनित्यता (शब्दानित्यतावाद) आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्शक न्यायसम्मत विवेचन सेहो एतय प्रस्तुत अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—'सैन्धव' शब्दक दू टा अर्थ होइत अछि: 'नोन' (लवण) आ 'घोड़ा'। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रीगङ्गेशोपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' ग्रन्थक 'शब्दखण्ड'मे मुख्य रूपसँ 'शब्द' (वा शाब्द ज्ञान) केँ एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे बौद्ध आ वैशेषिक दर्शनक आक्षेपसभक खण्डन कएल गेल अछि। साथहि, कोनो वाक्यक अर्थ बुझबाक लेल आवश्यक चारि मुख्य तत्त्वसभ—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—क सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल अछि। एहि संगे शब्दक अनित्यता (शब्दानित्यतावाद) आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्शक न्यायसम्मत विवेचन सेहो एतय प्रस्तुत अछि।)

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—जँ श्रोताकेँ तात्पर्य (प्रसङ्ग वा वक्ताक इच्छा) क ज्ञान नहि हो, तँ ओ निश्चित नहि कऽ सकैत अछि जे भोजनक समय वक्ता 'नोन' माँगि रहल छथि वा 'घोड़ा'। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रीगङ्गेशोपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' ग्रन्थक 'शब्दखण्ड'मे मुख्य रूपसँ 'शब्द' (वा शाब्द ज्ञान) केँ एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे बौद्ध आ वैशेषिक दर्शनक आक्षेपसभक खण्डन कएल गेल अछि। साथहि, कोनो वाक्यक अर्थ बुझबाक लेल आवश्यक चारि मुख्य तत्त्वसभ—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—क सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल अछि। एहि संगे शब्दक अनित्यता (शब्दानित्यतावाद) आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्शक न्यायसम्मत विवेचन सेहो एतय प्रस्तुत अछि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—भोजनक प्रसङ्ग (तात्पर्य) श्रोताकेँ ई बुझबामे सहायता करैत अछि जे एतय 'नोन' अभिप्रेत अछि, घोड़ा नहि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रीगङ्गेशोपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' ग्रन्थक 'शब्दखण्ड'मे मुख्य रूपसँ 'शब्द' (वा शाब्द ज्ञान) केँ एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे बौद्ध आ वैशेषिक दर्शनक आक्षेपसभक खण्डन कएल गेल अछि। साथहि, कोनो वाक्यक अर्थ बुझबाक लेल आवश्यक चारि मुख्य तत्त्वसभ—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—क सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल अछि। एहि संगे शब्दक अनित्यता (शब्दानित्यतावाद) आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्शक न्यायसम्मत विवेचन सेहो एतय प्रस्तुत अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—ओ सभक अनुसार, ध्वनि हमर प्रयत्नसँ उत्पन्न होइत अछि आ किछु कालक बाद नष्ट भऽ जाइत अछि—ठीक जेना कुम्हार एकटा घड़ा बनबैत अछि आ कालान्तरमे ओ टूटि जाइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-

अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रीगङ्गेशोपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' ग्रन्थक 'शब्दखण्ड'मे मुख्य रूपसँ 'शब्द' (वा शाब्द ज्ञान) केँ एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे बौद्ध आ वैशेषिक दर्शनक आक्षेपसभक खण्डन कएल गेल अछि। साथहि, कोनो वाक्यक अर्थ बुझबाक लेल आवश्यक चारि मुख्य तत्त्वसभ—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—क सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल अछि। एहि संगे शब्दक अनित्यता (शब्दानित्यतावाद) आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्शक न्यायसम्मत विवेचन सेहो एतय प्रस्तुत अछि।)

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—तोता आ मनुष्य सँ उच्चरित “क” ध्वनिमे श्रव्य भेद रहैत अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रीगङ्गेशोपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' ग्रन्थक 'शब्दखण्ड'मे मुख्य रूपसँ 'शब्द' (वा शाब्द ज्ञान) केँ एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे बौद्ध आ वैशेषिक दर्शनक आक्षेपसभक खण्डन कएल गेल अछि। साथहि, कोनो वाक्यक अर्थ बुझबाक लेल आवश्यक चारि मुख्य तत्त्वसभ—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—क सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल अछि। एहि संगे शब्दक अनित्यता (शब्दानित्यतावाद) आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्शक न्यायसम्मत विवेचन सेहो एतय प्रस्तुत अछि।)

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—तात्पर्य: वक्ताक वास्तविक अभिप्राय वा उद्देश्य, जे अनेकार्थक शब्द (जेना 'सैन्धव') वा लाक्षणिक प्रयोगक समय सही अर्थ निश्चित करैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: श्रीगङ्गेशोपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि' ग्रन्थक 'शब्दखण्ड'मे मुख्य रूपसँ 'शब्द' (वा शाब्द ज्ञान) केँ एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे स्थापित कएल गेल अछि। एहि ग्रन्थमे बौद्ध आ वैशेषिक दर्शनक आक्षेपसभक खण्डन कएल गेल अछि। साथहि, कोनो वाक्यक अर्थ बुझबाक लेल आवश्यक चारि मुख्य तत्त्वसभ—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—क सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल अछि। एहि संगे शब्दक अनित्यता (शब्दानित्यतावाद) आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्शक न्यायसम्मत विवेचन सेहो एतय प्रस्तुत अछि।)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—कर्णाट वंशक प्रतापी राजा हरिसिंहदेवक समकालीन मानल जायवला एहि 'महामहोपाध्याय' विद्वानक एहि कालजयी ग्रन्थसँ भारतीय दर्शनमे एकटा सम्पूर्ण नव युगक सूत्रपात भेल, जकरा 'नव्य-न्याय' क नामसँ जानल जाइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(

अध्याय १७० — चन्द्र एकक खोल

आब एना तर्क कएल जा सकैत अछि—एहि प्रकार ओही

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—संसारमे सर्प, काँट आदि दुःखसाधनक विनाश तथा वैदिक प्रायश्चित्तादिमे पाप जकाँ दुःखसाधनक विनाश, दोसर विकल्पक अभावमे, केवल दुःखसाधन-विनाशरूपेँ पुरुषार्थ मानल जाइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एना तर्क कएल जा सकैत अछि—एहि प्रकार ओही दुःखक विनाश लेल दुःखकेँ सेहो प्राप्त करब आवश्यक होयत; कारण दुःख उत्पन्न भेल बिना ओकर विनाश उत्पन्न नहि भऽ सकैत अछि।)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—मुदा एना आपत्ति उठाओल जा सकैत अछि—प्रवृत्ति केवल दुःखक अनुत्पत्तिकेँ लक्ष्य कऽ होइत अछि; जेना "सर्प, काँट अथवा पाप जकाँ दुःखसाधन नष्ट होअय, जाहिसँ ओकर कारण दुःख उत्पन्न नहि हो। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आब एना तर्क कएल जा सकैत अछि—एहि प्रकार ओही दुःखक विनाश लेल दुःखकेँ सेहो प्राप्त करब आवश्यक होयत; कारण दुःख उत्पन्न भेल बिना ओकर विनाश उत्पन्न नहि भऽ सकैत अछि।)

अध्याय १७१ — चन्ना गाछीक अदृश्य अदालत

नैयायिकक मत

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—जतय रूढ़ि आ व्युत्पत्तिमे विरोध हो, रूढ़ि व्युत्पत्तिकेँ रोकैत अछि; जतय विरोध नहि—जेना कमल वास्तवमे कीचड़मे जन्मैत अछि—ओतय रूढ़ि आ

व्युत्पत्ति संयुक्त रूपेँ अर्थबोध करैत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकक मत)

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—रूढ़िसँ कमल स्मृत होइत अछि, व्युत्पत्तिसँ ओही कमल “कीचड़मे जन्मल” रूपेँ ज्ञात होइत अछि। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो।

(

अध्याय १७२ — गाँठक पढ़नाइ

नव्यनैयायिकसभक निष्कर्ष

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—हम सिद्धान्ती कहैत छी—कर्मवाच्य “चाउर चैत्रद्वारा पकाओल जाइत अछि” आ “गाम रथद्वारा पहुँचाओल जाइत अछि” मे चाउर आ गाम कर्म छथि; हुनकामे अन्यत्र स्थित क्रियासँ उत्पन्न फलाश्रयता अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्यनैयायिकसभक निष्कर्ष)

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—कर्तावाच्य “चैत्र चाउर पकबैत अछि” मे कर्ता आ कर्म प्रातिपदिकार्थ तथा विभक्तिसँ प्राप्त होइत छथि; कर्मवाच्यमे कर्मत्व आख्यातप्रत्ययसँ व्यक्त होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: नव्यनैयायिकसभक निष्कर्ष)

अध्याय १७३ — पंजीक पहरा

अनुमान खण्ड — तार्किक संरचनाक चरमोत्कर्ष

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—हुनक तर्क अछि जे "पृथ्वी, अंकुर आदि कार्य अछि, तें एकर कोनो न कोनो चेतन कर्ता अवश्य होबाक चाही, जहिना घैला (कार्य) क कर्ता कुम्हार होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि। (दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमान खण्ड - तार्किक संरचनाक चरमोत्कर्ष आ व्याप्ति-विमर्श)

अध्याय १७४ — अदृश्य अदालतक चौखट

निष्कर्ष

गुरुकुलक आँगनमे दू विद्यार्थी विवाद करैत छल। पहिल विद्यार्थी एहि प्रसङ्गकेँ रखलक—मणि, मन्त्र आदि कोना प्रतिबन्धक बनैत अछि, आ 'प्रतिबन्धकाभाव' (अवरोधक नहि रहब) कोना कार्यक कारण मानल जाइत अछि, एहि विषयक तार्किक चर्चा। दोसर विद्यार्थी कारण, बाधक आ अपवाद खोजलक। संवादक अन्तमे दुनू मानलक जे उदाहरण तखनहि प्रमाणक सहायता करैत अछि जखन ओकर सम्बन्ध स्पष्ट आ दोषरहित हो। (दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष)

अध्याय १७५ — मुहरबाहकक नाम

अनुमान

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—उदाहरण: जँ व्यक्ति दूर पहाड़पर धूआँ उठैत देखैत छी, तँ ई निष्कर्षपर पहुँचैत छी जे "पहाड़पर आगि अछि"। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अनुमान)

अध्याय १७६ — सेवा-समारोहक अन्हार

उपनय: ओहि नियमकेँ अपन वर्तमान स्थिति पहाड़

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—उदाहरण: ई पहाड़ सेहो भानसघर जकाँ धुआँ सँ भरल अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपनय: ओहि नियमकेँ अपन वर्तमान स्थिति (पहाड़क) सँ जोड़ब।)

अध्याय १७७ — घर-घरक कागज

निगमन: दाबीक अन्तिम रूप सँ सिद्ध होबय।

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—उदाहरण: ताहि लेल, ई सिद्ध भेल जे ओहि पहाड़पर आगि अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निगमन: दाबीक अन्तिम रूप सँ सिद्ध होबय।)

अध्याय १७८ — ऊपरक कोठरी

उपनय: ई नियम रामपर सेहो लागू होइत अछि, किए

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—उपनय: ई नियम रामपर सेहो लागू होइत अछि, किएक तँ अस्पतालक रोगी जकाँ रामक शरीर सेहो अस्वाभाविक रूप सँ गरम अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: उपनय: ई नियम रामपर सेहो लागू होइत अछि, किएक तँ अस्पतालक रोगी जकाँ रामक शरीर सेहो अस्वाभाविक रूप सँ गरम अछि।)

अध्याय १७९ — मुहरक पगचिन्ह

शोध—पृष्ठभूमि आ ऐतिहासिक परिदृश्य

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—ओ मिथिलाक राजा भैरवसिंहक दरबारमे न्यायाधीशक पदपर आसीन छलाह आ 'दण्डविवेक' नामक प्रसिद्ध न्याय-ग्रन्थक रचना कएलन्हि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: शोध-पृष्ठभूमि आ ऐतिहासिक परिदृश्य)

अध्याय १८० — शहरक खाता

प्रभाकरक अनवस्था—आपत्तिक खण्डन

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—करतलपर राखल आँवला जकाँ स्पष्ट वस्तुक ज्ञानमे जखन अप्रामाण्यक संशय नहि उठैत अछि, तखन प्रथम ज्ञान मात्रसँ विषय निश्चित होइत अछि, आ ओही विषय-निश्चयसँ अविचल प्रवृत्ति उत्पन्न होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रभाकरक अनवस्था-आपत्तिक खण्डन)

अध्याय १८१ — सिमक छाया

मीमांसक मत: दोषाभाव यथार्थताक अनुकूल कारण

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—जादुई मणि जकाँ उत्पादन-प्रतिबन्धक दोषसभ अननुगत रहलो पर कारण-कार्यभावमे कोनो दोष नहि; कारण प्रमाण ज्ञानक कारण दोषसभक अभावक समष्टि अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मीमांसक मत: दोषाभाव यथार्थताक अनुकूल कारण)

अध्याय १८२ — हरिहर सेवा केंद्रक दरबाजा

निष्कर्ष—वैकल्पिक परिभाषासभ

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“दण्डी पुरुषकेँ आनू” मे दण्ड सम्बन्धानुयोगिताकेँ सीमित करैत, तेँ विशेषण। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: निष्कर्ष—वैकल्पिक परिभाषासभ)

अध्याय १८३ — फोनक भीतरक चेहरा

विशेष—लक्षणक औचित्य

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—कारण कपि-संयोगक अधिकरणसँ अभेद—अर्थात् ताहिसँ भिन्नताक अभाव—सम्बन्धी यथार्थ बोध सम्भव अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: विशेष-लक्षणक औचित्य)

अध्याय १८४ — आवाजक नकाब

प्रतिआपत्तिक अस्वीकार: निर्विकल्पक विशिष्ट

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“ई व्यक्ति दण्डधारी अछि” एहन ज्ञानमे केवल दण्ड-विशेषण आ व्यक्ति-विशेष्यक निर्विकल्पक ज्ञान कारण मानल नहि जाइत अछि; कारण “ई व्यक्ति दण्डधारी अछि” स्वयं दण्डसँ विशेषित व्यक्तिक विशिष्ट ज्ञान अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्रतिआपत्तिक अस्वीकार: निर्विकल्पक विशिष्टज्ञानक कारण नहि)

अध्याय १८५ — मास्टरक कमरा

अन्यक मत: शरीरजन्यत्व अवच्छेदक नहि अछि

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—उदाहरणार्थ—“जँ ईश्वर कर्ता छथि तँ ओ सशरीर जीव होयताह; तखन ओ अभीष्ट साधनक ज्ञानवान, प्रयोजनवान आ अनित्य ज्ञानवान होयताह; तथा जँ पृथिवी आदिक कर्ता अछि तँ ओही पृथिवी आदिक कर्ता केवल सशरीर जीव होयत”—एहन अनिष्टापादन मात्र हेत्वाभास सिद्ध नहि करैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अन्यक मत: शरीरजन्यत्व अवच्छेदक नहि अछि)

अध्याय १८६ — मधवेशक असली नाम

खण्डन

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—मानि ली जे “संस्कारित धान कुटबाक लेल उपयोगी अछि” एहन अपूर्ण वाक्यक शेषांशसँ, संस्कारविशिष्ट धानक कुटनसम्बन्धी कारणताज्ञान उत्पन्न होइत अछि। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(

अध्याय १८७ — छत्ताक भीतरक रानी

दोष केवल जातिधर्म नहि अछि

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—एही कारण भ्रमित, छलकर्त्ता आ तोता आदिक वाक्य मूल यथार्थ वाक्यक अनुरूप होएबाक कारण यथार्थ ज्ञानक प्रमाण बनैत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: दोष केवल जातिधर्म नहि अछि)

अध्याय १८८ — महेश्वरक मुहर

आओर आक्षेपक खण्डन

कक्षामे गुरु एकटा प्रश्न रखलनि। ओ कहलनि—“जरा” आ “राजा”, “नदी” आ “दीन”—एहि शब्दमे वर्णसंख्या समान, क्रम भिन्न। विद्यार्थीसभ तत्काल उत्तर देबाक बदला पक्ष, साध्य, हेतु, प्रसङ्ग आ सम्भावित दोष जाँचलक। घटना छोट छल, मुदा ओकर भीतर सिद्धान्तक पूरा ढाँचा प्रकट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आओर आक्षेपक खण्डन)

अध्याय १८९ — लोहेक पेटी

गुरुसभक मत

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—कर्म विलम्बसँ उत्पन्न होएब अन्य आवश्यक कारण—जेना दण्ड आदि—क अभावक कारण होइत अछि; इच्छा रहितहुँ ओ ज्ञान व्यर्थ नहि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: गुरुसभक मत)

अध्याय १९० — नील पंजी

नैयायिकसभक आक्षेप

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“केवल कृतिसाध्यताक अनुभव कारण” कहल जाए, तँ प्रमाणभ्रम वा विश्वसनीय वचनसँ विषभक्षण कृतिसाध्य बुझल गेल अवस्थामे सेहो प्रवृत्ति होएत। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(

दार्शनिक सिद्धान्त: नैयायिकसभक आक्षेप)

अध्याय १९१ — ध्रुवेशक कुर्सी

अतिनवीन प्राभाकरक मत

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—. अतिनवीन प्राभाकर कहैत छथि—कर्ताक प्रयत्न “निषिद्ध फल नहि देत” एहन विशेषणसँ युक्त हो; तें महाअनिष्टग्रस्त व्यक्ति विषभक्षण वा देवतापूजामे प्रवृत्त नहि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: अतिनवीन प्राभाकरक मत)

अध्याय १९२ — बन्द रेकॉर्डरक स्वर

बलवान् अनिष्टानुबन्धित्वक प्रश्न

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—निषेधात्मक वाक्य “विषयुक्त मांस नहि खाउ” एहि अर्थमे प्रवृत्ति रोकैत अछि जे एहन भोजन इच्छित सुखक अपेक्षा अधिक अनिष्टक साधन अछि। जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: बलवान् अनिष्टानुबन्धित्वक प्रश्न)

अध्याय १९३ — आवाजक चेहरा

प्राभाकरसभक एक वर्गक मत

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“धान कुटैत अछि” मे धानत्वक सीमित अर्थसँ कुटनक्रिया सम्बन्धित होएब पर्याप्त अछि; प्रत्येक धानव्यक्तिमे पृथक् लक्षणा आवश्यक नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राभाकरसभक एक वर्गक मत)

अध्याय १९४ — साँसक समन

आन वैकल्पिक मतक खण्डन

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—नवजात रसोइया “रसोइया” शब्दक जातिभुक्त अछि, मुदा श्वेत कुमुद कमलजातिक सदस्य नहि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक

रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: आन वैकल्पिक मतक खण्डन)

अध्याय १९५ — रोकल खाता

लक्षणाक स्वरूप—निष्कर्ष

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—षष्ठीविभक्तिक सम्बन्धमे अतिव्याप्ति नहि, कारण “राजाक सम्बन्ध” राजामे अभाव रूपेँ उपस्थित नहि; व्यक्त राजा आ राजासम्बन्ध अलग सत्तासभ। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: लक्षणाक स्वरूप—निष्कर्ष)

अध्याय १९६ — जलसमाधिक अर्थ

प्राच्यमतक खण्डन

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“मण्डपमे रहनिहार लोकसभकेँ भोजन कराउ” मे “मण्डप” शब्दक रूढ़ अर्थ विशेष गृह अछि; यद्यपि अवयवव्युत्पत्तिसँ “मण्डपानकर्ता”—मण्ड पीनिहार—अर्थ सम्भव अछि, व्यवहारमे गृहस्थित लोकसभक बोध रूढ़ अर्थ आ लक्षणाद्वारा होइत अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राच्यमतक खण्डन)

अध्याय १९७ — ऊपर उठल नाम

प्राच्य वैयाकरणसभक उत्तर

आचार्य पट्टपर एक स्थिति लिखलनि—“मण्डपमे लोकसभकेँ भोजन कराउ” मे पहिले अवयव्यार्थ “मण्ड पीनिहार” छोड़िकऽ पदसमुदायक रूढ़ गृहार्थ ग्रहण होइत अछि। शिष्यसभ उदाहरणक प्रत्येक पदकेँ वास्तविक दृश्यक रूपमे सोचलक आ पूछलक जे निष्कर्ष धरि पहुँचबाक मार्गमे कोन सम्बन्ध निर्णायक अछि। आचार्य उत्तर देलनि जे दृष्टान्तक काज केवल सजावट नहि, अमूर्त नियमकेँ अनुभवसँ जोड़ब अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: प्राच्य वैयाकरणसभक उत्तर)

अध्याय १९८ — अपराधीक धरती

षष्ठ्यर्थ—लक्षणाक लाघव

एक यात्री अपन अनुभव सुनौलक—“नीलोत्पलम्” मे कमल कोनो सम्बन्धी पूरक अपेक्षा नहि रखैत; तें ओतय कर्मधारय विश्लेषण पर्याप्त अछि। सुननिहार विद्वान ओकर कथाकेँ दृश्य, स्मृति आ निष्कर्षक अलग-अलग चरणमे बाँटलनि। एहि विभाजनसँ बुझायल जे सामान्य जीवनक छोट घटना भीतर गम्भीर ज्ञानमीमांसीय प्रक्रिया चलैत रहैत अछि।

(दार्शनिक सिद्धान्त: षष्ठ्यर्थ-लक्षणाक लाघव)

अध्याय १९९ — संदूकक भीतरक बिहान

समुच्चयमे द्वन्द्व अनुपपन्न

गामक चौपालमे एहि बातपर चर्चा उठल—. किछु विद्वान कहैत छथि—“गर्गसभ भोजन करैत छथि” मे क्रियाप्रत्यय भोजनक्रियासँ सम्बन्धित बहुत्व व्यक्त करैत अछि। लोकसभ अपन-अपन अनुभव जोड़लक, मुदा आचार्य सभ मतकेँ प्रमाणक कसौटीपर परखलनि। अन्ततः उदाहरणक अर्थ ओकर शब्दमात्रसँ नहि, उचित सम्बन्ध आ प्रसङ्गसँ स्पष्ट भेल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: समुच्चयमे द्वन्द्व अनुपपन्न)

अध्याय २०० — नामक पहरुआ

मण्डनक मत

शिष्यकेँ अमूर्त परिभाषा कठिन बुझाइत छल। गुरु ओकरा एहि घटनाक कल्पना करेलनि—. आक्षेप अछि—जँ फलहि धात्वर्थ अछि, तँ “चाउर पकबैत अछि” मे चाउर कर्म किएक? जखन शिष्य पात्र, वस्तु आ क्रियाकेँ मनमे देखलक, तखन सूत्र जीवित अनुभव बनि गेल आ निष्कर्ष सहज भऽ उठल।

(दार्शनिक सिद्धान्त: मण्डनक मत)

विदेह नाट्य उत्सव

(दोसर प्रारूप — अपूर्ण)

अध्याय दू सय समाप्त भेल। मुदा गढ़ नारिकेलक पुरनका घरक पछिला कोठरीमे, कमला-बलानक चुप पानिक कात, बिज्जी एखनहुँ ओहि काजर-कारी डायरी लग बैसल छल — ओ दोसर डायरी, जकर जिल्दपर कोनो नाम नहि। पहिल डायरीमे नाटकक पहिल प्रारूप छल, जे शोकान्तिका बनि पूरा भेल। ई दोसर डायरीमे ओकर अगिला प्रारूप लिखाइत छल — मुदा ई प्रारूप कहियो पूरा नहि होयत। पन्ना अपने-आप खुजल। बिज्जीक कात, अन्हारसँ, मंच-निर्देशक फेर आबि ठाढ़ भेलाह — ओएह, जे पहिल नाटककेँ सुखान्त बनाबय चाहने रहथि, आ हारल रहथि।

पात्र-परिचय

सूत्रधार **(बूढ़बा)** — काल-स्वर; ओएह, जे पहिल रातिक पहर गनने छल।

मंच-निर्देशक — पहिल नाटक पूरा कयने; ई दोसरकेँ पूरा नहि कऽ सकत।

बिज्जी — पूज्य रक्षक (नेवला)। मूक। ऐ बेर ओकर साँप पानिमे नहि — तारमे अछि।

हिमपुरुष — नव गोहि — डिजिटल अन्हारक अधिपति। मुदा ओकर चेहरा कहियो पूरा नहि देखाइत; ओ नाम मात्र थिक।

भुखायल प्रोग्रामर — एक युवा, जकर हाथ जालमे फँसल; अपूर्ण पात्र।

उज्जर टोपी — एक छाया-पात्र, जकर परिचय डायरीमे अधूरा रहि गेल।

कोरस **(जाल-जन)** — पर्दाक पाछाँक हजारों अदृश्य स्वर।

सूत्रपात

[मंच लगभग अन्हार। कोनो कमला-बलान नहि — केवल पाछाँ नीलाभ पर्दापर अनगिनत काँपैत बिन्दु, जेना दूरक मीनार, वा तारक जाल। बीचमे ओएह एक दीया। बिज्जी कातमे। मंच-निर्देशक हाथमे दोसर डायरी।]

मंच-निर्देशक। *(दर्शक दिस, थाकल)* पहिल नाटक हम पूरा नहि बदलि सकलहुँ। ई दोसर — एकरा हम ठीकसँ आरम्भो नहि कऽ पाबि रहल छी। पात्र अछि, मुदा चेहरा नहि। मंच अछि, मुदा सीमा नहि।

सूत्रधार। किएक तँ ई राति ओहि पहिल रातिसँ पैघ अछि, निर्देशक। पहिल बेर गोहि पानिमे छल — बिज्जी ओकरा घाटपर भेटि सकैत छल। दोसर बेर गोहि वर्दीमे छल — बिज्जी ओकरा घरमे भेटि सकैत छल। मुदा आब?

[पाछाँक बिन्दु-जाल एक बेर तेज चमकैत अछि।]

सूत्रधार। आब गोहि न पानिमे, न वर्दीमे — आब ओ तारमे अछि, संख्यामे अछि, ओहि अन्हारमे जकर कोनो घाट नहि, कोनो सीमा नहि। बिज्जी ककर सिरमापर पहरा दय? जखन सिरमा हजारों कोस दूर हो, आ साँप बिनु देहक हो?

मंच-निर्देशक। *(धीरे)* तखन ई नाटक कोना मंचित हएत?

सूत्रधार। सम्भवतः नहि हएत। मुदा डायरी लिखिते रहत। सुनू — पहिल पहर।

पहिल पहर

[नीलकण्ठ पथक एक बन्द कोठरी। तारक जाल, तपैत यन्त्र, खिड़कीसँ बाहर झाँकैत एक दिशात्मक ऐन्टेना — अन्हारमे लक्ष्य ताकैत बन्दूक सन। एक छाया कुर्सीपर बैसैत अछि — मुँह नहि देखाइत, केवल हाथ, जे कुञ्जी-पटलपर चलैत।]

हिमपुरुष। *(छायासँ, बिनु चेहरा)* पुरान बजार समाप्त। आब सभ एकहि ठाम आबि गेल अछि — हमर बजारमे।

[पाछाँ कोरसक हजारों फुसफुसाहट — नाम, कूटशब्द, परिचय — सभ एक संग मेटाइत आ फेर उगैत।]

कोरस। ई हिमपुरुष अछि के? — के अछि के अछि के अछि —

हिमपुरुष। नाम पुछब बेकार। हम नाम नहि, नामक अभाव छी। जकरा तूँ पकड़बे, ओ आब हम नहि रहब।

[बिज्जी उठैत अछि; ओ गन्ध टोहैत अछि — मुदा गन्ध हवामे नहि, तारमे अछि। बिज्जी दिशा नहि पाबि सकैत। ओ पहिल बेर भ्रमित।]

सूत्रधार। देखू — बिज्जीक नाक ओ गन्ध पढ़ैत छल जे मिट्टीसँ उठैत छल। मुदा ई गन्ध संख्यासँ उठैत अछि। पुरान बिज्जी नव अन्हारक सामने ठाढ़ अछi — आ पहिल बेर, ओकरा नहि बुझल जे झपटय कोम्हर।

दोसर पहर

[मंचपर उजास अस्थिर — बीच-बीचमे बुझैत, फेर जगैत, जेना कोनो अदृश्य हाथ प्रकाशकेँ सेहो नियन्त्रित कऽ रहल हो। एक युवा प्रोग्रामर, थाकल आँखि, पर्दाक इजोतमे बैसल।]

भुखायल प्रोग्रामर। हम केवल कोड लिखलहुँ। हमरा नहि बुझल छल जे ओ कोड ककर घर खोलत, ककर पाइ उठाओत। हम भुखायल रही। हिमपुरुष खाना देलक—

*[ओकर वाक्य अधूरा रहि जाइत अछि — मंचक उजास अचानक बुझैत अछ*i*। जखन घुरैत अछि, प्रोग्रामरक कुर्सी खाली।]*

मंच-निर्देशक। *(व्याकुल, डायरी दिस)* ओ कतय गेल? हमर पात्र बीच-वाक्यमे कतय गायब भऽ गेल?

सूत्रधार। डायरी ओकरा आगाँ नहि लिखलक। किछु पात्र एहन होइत छथि, निर्देशक, जिनकर कथा अधूरहि रहि जाइत अछि — किएक तँ ओहि अन्हारमे बहुतो गायब भऽ जाइत छथि, आ कोनो पन्ना हुनका पूरा नहि लिखैत।

[पाछाँ 'उज्जर टोपी' नामक एक छाया एक क्षण देखाइत अछि, मुँह पर उज्जर टोपीक छाहरि — मुदा परिचय होयबासँ पहिने ओ अन्हारमे मिलि जाइत अछि।]

सूत्रधार। *(दर्शक दिस)* देखलहुँ? ई पात्रक नामो अछि — उज्जर टोपी। मुदा डायरी ओकर कथा शुरू करैत-करैत रुकि गेल। ई नाटक एहिना अछि — हर पात्र आधा, हर दृश्य अधूरा।

[मंचपर पाछाँक बिन्दु-जाल एक बेर तेज चमकि, फेर पूरा बुझि जाइत अछि। केवल बीचक दीया बचैत अछि। आ ओहि दीयाक इजोतक ठीक बाहर — अन्हारमे — एक लम्बा, बिनु देहक छाया सरकैत अछि, जेना कोनो साँप, मुदा पानिक नहि, अन्हारहिक।]

मंच-निर्देशक। *(काँपैत)* ओ... ओ की छल? ओ छायामे की सरकल?

सूत्रधार। गोहि। ओ आगाँ बढ़ि गेल — ओहि अन्हारमे, जतय हमर मंचक इजोत नहि पहुँचैत। आब निर्णय अहाँक, निर्देशक। पर्दा खसाउ आ मानि लिअ जे नाटक एतहि समाप्त — वा—

[बिज्जी दीयाक इजोतक कातपर आबि ठाढ़ होइत अछि। ओ ओहि सरकैत छायाकेँ ताकैत अछि। फेर ओ मंच-निर्देशक दिस घुरि देखैत अछि — पहिल बेर, जेना बजा रहल हो।]

सूत्रधार। *(बहुत धीरे)* —वा ओकर पाछाँ जाउ।

[क्षण भरि मौन। फेर मंच-निर्देशक डायरी बन्द कऽ, हाथसँ छाड़ि दैत छथि। ओ बिज्जीक कात आबैत छथि। बिज्जी अन्हार दिस पहिल पग बढ़बैत अछि, आ मंच-निर्देशक ओकर संग।

दुनू — नेवला आ निर्देशक — दीयाक इजोतसँ बाहर, ओहि सरकैत छायाक पाछाँ, अन्हारमे चलि जाइत छथि। *]*

[मंचपर आब केओ नहि। केवल एक जरैत दीया, एक छोड़ल-खुजल डायरी, आ पाछाँ अन्हारमे बुझैत बिन्दु-जाल। पर्दा नहि खसैत — ओ खुजले रहैत अछि।]

सूत्रधार। *(अन्हारसँ, अदृश्य)* ई नाटक अधूरा अछि। ई अधूरे रहत। किएक तँ जाबत ओ छाया अन्हारमे सरकैत रहत, ताबत कोनो बिज्जी, कोनो निर्देशक, ओकर पाछाँ जाइते रहत — आ कोनो पर्दा पूरा बन्द नहि हएत। अगिला पहर, अगिला डायरी, अगिला पीढ़ीक हाथमे।

(एतय डायरीक पन्ना खाली अछि। विदेह नाट्य उत्सव — दोसर प्रारूप — अपूर्ण।)

भूत होइए कारी, प्रेत उज्जर,
राकश-लहाशक खोरनाठी जे गलतीसँ नै जड़ल,
बच्चाकेँ गाड़ल जाइए आ ओ बनि जाइए लोथ।

चन्ना गाछी।
भूत आ प्रेतक बीच कबड्ठी, राकश करैए इजोर
आ लोथ अछि दर्शक।

मैथिलीक आइ धरिक सभसँ पैघ उपन्यास
न्याय दर्शन आ समकालीन अपराध-गाथा
मैथिली कादम्बरी

www.videha.co.in

ISBN 978-93-5987-762-4

ISSN 2229-547X